कलामुर - रहमान
हिन्दी में कुरआने मजीद
कन्जुल ईमान
अरबी मत्न, अनुवाद व तफ़्सीर
उर्दू अनुवाद :
अअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ
मुहद्दिसे बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह
तफसीर :
हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
सद्रुल अफ़ाज़िल रहमतुल्लाहे तआला अलैह
हिन्दी रूपान्तर :
सैयद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी
सज्जादानशीन, ख़ानक़ाहे बरकातियह,
मारेहरा शरीफ़.
प्रकाशकः
बरकाती पब्लिशर्स
मिलने के पते
फ़ारूक़िया बुक डिपो
४२२, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–११०००६
रज़ा अकेडमी
२६, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंबई–४००००३

कलामुर - रहमान

हिन्दी में कुरआने मजीद

कन्ज़ुल ईमान

अरबी मत्न, अनुवाद व तफ़सीर

उर्दू अनुवाद : **अअला हज़रत इमाम अहमद** रज़ा ख़ाँ
मुहद्दिसे बरैलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह

तफ़सीर : **हज़रत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब**
सद्रुल अफ़ाज़िल रहमतुल्लाहे तआला अलैह

हिन्दी रुपान्तर : **सैयद शाह आले रसूल हसनैन** मियाँ नज़्मी
सज्जादानशीन, ख़ानक़ाहे बरकातियह,
मारेहरा शरीफ़.

प्रकाशकः

बरकाती पब्लिशर्स

मिलने के पतेः

दारूल उलूम ग़रीब नवाज़ रज़ा नगर, जान्सापुरा उज्जैन (एम० पी०)
फ़ारूक़िया बुक डिपो ४२२, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली–११०००६
रज़ा अकेडमी २६, काम्बेकर स्ट्रीट, मुंबई–४००००३

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान रहमत वाला

७ सितम्बर, २००२. मुंबई का मशहूर हज हाऊस ख़चाख़च भरा हुआ. ये लोग कन्ज़ुलईमान के हिन्दी अनुवाद कलामुर्रहमान के इज्रा की तक़रीब में शिरकत करने जमा हुए हैं. हज हाऊस के अन्दर बनाए गए मिम्बर पर उलमाए किराम और अइम्मए मसाजिद का मजमअ है. बाहर के उलमा भी तशरीफ़ फ़रमा हैं. अचानक सवाल उठता है कि इज्रा किस के हाथों कराया जाए. यह बड़ा ही नाज़ुक मरहला है. एक को ख़ुश करें तो दूसरा नाराज़. ऐसे में एक ख़याल आया. फ़ौरन रज़ा अकादमी के बानी अलहाज मुहम्मद सईद नूरी को फ़ोन किया कि वह मुंबई के क़ुलाबा मक़ाम पर वाक़े दारुल उलूम हनफ़िया चले जाएं और वहाँ के सबसे कमसिन हाफ़िज़ को बुला लाएँ. दस ग्यारह साल के हाफ़िज मुहम्मद शमीम नूरी के वहमो गुमान में भी न होगा कि भरे जलसे में उसका नाम पुकारा जाएगा और वह सैंकड़ों लोगों की तवज्जह का मरकज़ बन जाएगा. एक और सवाल यह उठा कि मुहम्मद शमीम हिन्दी अनुवाद की पहली कॉपी किसे पेश करे. यहाँ भी ग़ैबी मदद हुई. मिम्बर पर बराऊँ शरीफ़ के शहज़ादे और मुल्क के एक नामवर आलिम अल्लामा ग़ुलाम अब्दुल क़ादिर अलवी तशरीफ़ फ़रमा थे. मेहमान आलिम और हुज़ूर सैय्यिदुल उलमा के ख़लीफ़ा को जिस वक़्त पहली कॉपी पेश की गई तो हज हाऊस नारों से गूंज उठा.

पहला ऍडीशन हाथों हाथ निक्ल गया. अब यह दूसरा ऍडीशन आपके हाथों में है. मुल्क के कोने कोने से ख़त आरहे हैं जिनमें हिन्दी अनुवाद की तारीफ़ की गई है. मेरा इरादा था कि दूसरे ऍडीशन में सूरतों का ख़ुलासा शामिल करूं मगर अपनी अलालत की वजह से यह काम न कर सका. आप सब हज़रात मेरी सेहत के लिये दुआ करें.

हमारी यही कोशिश रही है कि जो चीज़ पेश करें वह मेअयारी हो. इसी लिये कलामुर्रहमान का काग़ज़, इसकी जिल्दबन्दी और छपाई में ख़ूब से ख़ूबतर की तलाश रही है.

अल्लाह तआला अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े में हमारी यह ख़िदमत कुबूल फ़रमाए और उन सब हज़रात को अज्रे जमील अता फ़रमाए जिन्होंने इस अनुवाद की इशाअत में हमारी मुआविनत की है. आमीन.

आपका अपना
सैयद आले रसूल हसनैन मियाँ क़ादरी बरकाती नूरी
सज्जादा नशीन, ख़ानक़ाहे बरकातियह, मारेहरा शरीफ़
१२ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र १४२४ हिजरी.

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सूरतुल फ़ातिहा

मक्का में उतरी : आयतें: सात, रूकू एक.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[1] सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का﴾१﴿ बहुत मेहरबान रहमत वाला﴾२﴿ रोज़े जज़ा(इन्साफ़ के दिन) का मालिक﴾३﴿ हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें﴾४﴿ हम को सीधा रास्ता चला﴾५﴿ रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया﴾६﴿ न उनका जिनपर ग़ज़ब(प्रकोप) हुआ और न बहके हुओं का﴾७﴿
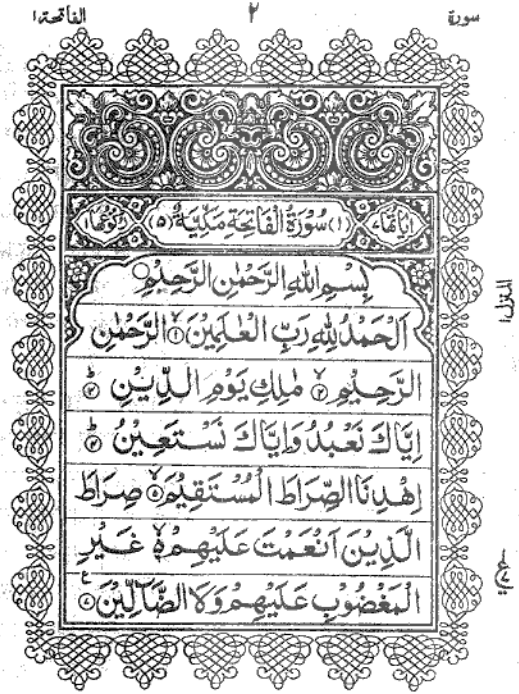
तफ़सीर - सूरतुल फ़ातिहा

अल्लाह के नाम से शुरु जो बहुत मेहरबान रहमत वाला.
अल्लाह की तअरीफ़ और उसके हबीब पर दरूद.

सूरए फ़ातिहा के नाम :

इस सूरत के कई नाम हैं - फ़ातिहा, फ़ातिहतुल किताब, उम्मुल क़ुरआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सबए मसानी, नूर, रुक़ैया, सूरतुल हम्द, सूरतुद दुआ, तअलीमुल मसअला, सूरतुल मनाजात, सूरतुल तफ़वीद, सूरतुस सवाल, उम्मुल किताब, फ़ातिहतुल क़ुरआन, सूरतुस सलात.

इस सूरत में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सौ चालीस अक्षर हैं. कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं.

शाने नज़ूल यानी किन हालात में उतरी :

ये सूरत मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनव्वरा या दोनों जगह उतरी . अम्र बिन शर्जील का कहना है कि नबीये करीम(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम - उनपर अल्लाह तआला के दुरूद और सलाम हों) ने हज़रत ख़दीजा(रदियल्लाहो तआला अन्हा - उनसे अल्लाह राज़ी) से फ़रमाया- मैं एक पुकार सुना करता हूँ जिसमें इक़रा यानी 'पढ़ो' कहा जाता है. वरक़ा बिन नोफ़िल को ख़बर दी गई, उन्होंने अर्ज़ किया- जब यह पुकार आए, आप इत्मीनान से सुनें. इसके बाद हज़रत जिब्रील ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया- फ़रमाइये : **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम. अल्हम्दु लिल्लाहे रब्बिल आलमीन**- यानी अल्लाह के नाम से शुरु जो बहुत मेहरबान, रहमत वाला, सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का. इससे मालूम होता है कि उतरने के हिसाब से ये पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायत से मालूम होता है कि पहले सूरए इक़रा उतरी. इस सूरत में सिखाने के तौर पर बन्दों की ज़बान में कलाम किया गया है.

नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब यानी ज़रूरी है. इमाम और अकेले नमाज़ी के लिये तो हक़ीक़त में अपनी ज़बान से, और मुक्तदी के लिये इमाम की ज़बान से. सही हदीस में है कि इमाम का पढ़ना ही उसके पीछे नमाज़ पढ़ने वाले का पढ़ना है. क़ुरआन शरीफ़ में इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले को ख़ामोश रहने और इमाम जो पढ़े उसे सुनने का हुक्म दिया गया है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे सुनो और ख़ामोश रहो. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि जब इमाम क़ुरआन पढ़े, तुम ख़ामोश रहो. और बहुत सी हदीसों में भी इसी तरह की बात कही गई है. जनाज़े की नमाज़ में दुआ याद न हो तो दुआ की नियत से सूरए फ़ातिहा पढ़ने की इजाज़त है. क़ुरआन पढ़ने की नियत से यह सूरत नहीं पढ़ी जा सकती.

सूरतुल फ़ातिहा की ख़ूबियाँ :

हदीस की किताबों में इस सूरत की बहुत सी ख़ूबियाँ बयान की गई हैं. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तौरात व इंजील व ज़ुबूर में इस जैसी सूरत नहीं उतरी.(तिरमिज़ी). एक फ़रिश्ते ने आसमान से उतरकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर सलाम अर्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की ख़ुशख़बरी सुनाई जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले किसी नबी को नहीं दिये गए . एक सूरए फ़ातिहा दूसरे सूरए बक़्र की आख़िरी आयतें.(मुस्लिम शरीफ़) सूरए फ़ातिहा हर बीमारी के लिये दवा है.(दारमी) सूरए फ़ातिहा सौ बार पढ़ने के बाद जो दुआ मांगी जाए, अल्लाह तआला उसे क़ुबूल फ़रमाता है.(दारमी)

इस्तिआज़ा : क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने से पहले "अऊज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रजीम" (अल्लाह की पनाह मांगता हूँ भगाए हुए शैतान से) पढ़ना प्यारे नबी का तरीक़ा यानी सुन्नत है. (ख़ाज़िन) लेकिन शागिर्द अगर उस्ताद से पढ़ता हो तो उसके लिये सुन्नत नहीं है.(शामी) नमाज़ में इमाम और अकेले नमाज़ी के लिये सना यानी सुब्हानकल्लाहुम्मा पढ़ने के बाद आहिस्ता से "अऊज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रजीम" पढ़ना सुन्नत है.(शामी)

तस्मियह : "बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम" क़ुरआने पाक की आयत है मगर सूरए फ़ातिहा या किसी और सूरत का हिस्सा नहीं है, इसी लिये नमाज़ में ज़ोर के साथ न पढ़ी जाए. बुख़ारी और मुस्लिम में लिखा है कि प्यारे नबी(उनपर अल्लाह के दुरूद और सलाम) और हज़रत सिद्दीक़ और फ़ारूक़(अल्लाह उनसे राज़ी) अपनी नमाज़ "अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन" यानी सूरए फ़ातिहा की पहली आयत से शुरू करते थे. तरावीह(रमज़ान में रात की ख़ास नमाज़) में जो ख़त्म किया जाता है उसमें कहीं एक बार पूरी बिस्मिल्लाह ज़ोर से ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए.

क़ुरआन शरीफ़ की हर सूरत बिस्मिल्लाह से शुरू की जाए, सिवाय सूरए बराअत या सूरए तौबह के. सूरए नम्ल में सज्दे की आयत के बाद जो बिस्मिल्लाह आई है वह मुस्तक़िल आयत नहीं है बल्कि आयत का एक टुकड़ा है. इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जाएगी, आवाज़ से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में आवाज़ के साथ और ख़ामोशी से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में ख़ामोशी से. हर अच्छे काम की शुरूआत बिस्मिल्लाह पढ़कर करना अच्छी बात है. बुरे काम पर बिस्मिल्लाह पढ़ना मना है.

सूरए फ़ातिहा में क्या क्या है ?

इस सूरत में अल्लाह तआला की तारीफ़, उसकी बड़ाई, उसकी रहमत, उसका मालिक होना, उससे इबादत, अच्छाई, हिदायत, हर तरह की मदद तलब करना, दुआ मांगने का तरीक़ा, अच्छे लोगों की तरह रहने और बुरे लोगों से दूर रहने, दुनिया की ज़िन्दगी का ख़ातिमा, अच्छाई और बुराई के हिसाब के दिन का साफ़ साफ़ बयान है.

हम्द यानी अल्लाह की बड़ाई बयान करना :

हर काम की शुरूआत में बिस्मिल्लाह की तरह अल्लाह की बड़ाई का बयान भी ज़रूरी है. कभी अल्लाह की तारीफ़ और उसकी बड़ाई का बयान अनिवार्य या वाजिब होता है जैसे जुमुए के ख़ुत्बे में, कभी मुस्तहब यानी अच्छा होता है जैसे निकाह के ख़ुत्बे में या दुआ में या किसी अहम काम में और हर खाने पीने के बाद. कभी सुन्नते मुअक्कदा(यानी नबी का वह तरीक़ा जिसे अपनाने की ताकीद आई हो) जैसे छींक आने के बाद.(तहतावी)

"रब्बिल आलमीन" (यानी मालिक सारे जहान वालों का) में इस बात की तरफ़ इशारा है कि सारी कायनात या समस्त सृष्टि अल्लाह की बनाई हुई है और इसमें जो कुछ है वह सब अल्लाह ही की मोहताज है. और अल्लाह तआला हमेशा से है और हमेशा के लिये है, ज़िन्दगी और मौत के जो पैमाने हमने बना रखे हैं, अल्लाह उन सब से पाक है . वह क़ुदरत वाला है . "रब्बिल आलमीन" के दो शब्दों में अल्लाह से तअल्लुक़ रखने वाली हमारी जानकारी की सारी मन्ज़िलें तय हो गईं .

"मालिके यौमिद्दीन" (यानी इन्साफ़ वाले दिन का मालिक) में यह बता दिया गया कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है क्योंकि सब उसकी मिल्क में है और जो ममलूक यानी मिल्क में होता है उसे पूजा नहीं जा सकता. इसी से मालूम हुआ कि दुनिया कर्म की धरती है और इसके लिये एक आख़िर यानी अन्त है . दुनिया के ख़त्म होने के बाद एक दिन जज़ा यानी बदले या हिसाब का है . इससे पुनर्जन्म का सिद्धान्त या नज़रिया ग़लत साबित हो गया.

"इय्याका नअबुदु" (यानी हम तुझी को पूजें) अल्लाह की ज़ात और उसकी ख़ूबियों के बयान के बाद यह फ़रमाना इशारा करता है कि आदमी का अक़ीदा उसके कर्म से ऊपर है और इबादत या पूजा पाठ का क़ुबूल किया जाना अक़ीदे की अच्छाई पर है. इस आयत में मूर्ति पूजा यानी शिर्क का भी रद है कि अल्लाह तआला के सिवा इबादत किसी के लिये नहीं हो सकती.

"व इय्याका नस्तईन" (यानी और तुझी से मदद चाहें) में यह सिखाया गया कि मदद चाहना, चाहे किसी माध्यम या वास्ते से हो, या फिर सीधे सीधे या डायरैक्ट, हर तरह अल्लाह तआला के साथ ख़ास है. सच्चा मदद करने वाला वही है, बाक़ी मदद के जो ज़रिये या माध्यम हैं वो सब अल्लाह ही की मदद के प्रतीक या निशान हैं. बन्दे को चाहिये कि अपने पैदा करने वाले पर नज़र रखे और हर चीज़ में उसी के दस्ते क़ुदरत को काम करता हुआ माने . इससे यह समझना कि अल्लाह के नबियों और वलियों से मदद चाहना शिर्क है, ऐसा समझना ग़लत है क्योंकि जो लोग अल्लाह के क़रीबी और ख़ास बन्दे हैं उनकी इमदाद दर अस्ल अल्लाह ही की मदद है. अगर इस आयत के वो मानी होते जो वहाबियों ने समझे तो क़ुरआन शरीफ़ में "अईनूनी बि क़ुव्वतिन" और "इस्तईनू बिस सब्रे वस्सलाह" क्यों आता, और हदीसों में अल्लाह वालों से मदद चाहने की तालीम क्यों दी जाती.

"इहदिनस सिरातल मुस्तक़ीम" (यानी हम को सीधा रास्ता चला) इसमें अल्लाह तआला की ज़ात और उसकी ख़ूबियों की पहचान के बाद उसकी इबादत, उसके बाद दुआ की तालीम दी गई है. इससे यह मालूम हुआ कि बन्दे को इबादत के बाद दुआ

सूरतुल बक़रह

यह क़ुरआन शरीफ़ की दूसरी सूरत है. मदीने में उतरी, आयतें: २८६, रूकू ४०.

पहला रुकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[1] अलिफ़ लाम मीम[2]﴿१﴾ वह बुलन्द रूत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं[3]﴿२﴾ इसमें हिदायत है डर वालों को[4] वो जो बेदेखे ईमान लाएं[5] और नमाज़ क़ायम रखें[6] और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं[7]﴿३﴾ और वो कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मेहबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[8] और आख़िरत पर यक़ीन रखें[9]﴿४﴾

में लगा रहना चाहिये. हदीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बाद दुआ की तालीम दी गई है.(तिबरानी और बेहिक़ी) सिराते मुस्तक़ीम का मतलब इस्लाम या क़ुरआन या नबीये करीम (अल्लाह के दुरूद और सलाम उनपर) का रहन सहन या हुज़ूर या हुज़ूर के घर वाले और साथी हैं. इससे साबित होता है कि सिराते मुस्तक़ीम यानी सीधा रास्ता एहले सुन्नत का तरीक़ा है जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के घराने वालों, उनके साथी और सुन्नत व क़ुरआन और मुस्लिम जगत सब को मानते हैं.

"सिरातल लज़ीना अनअम्ता अलैहिम" (यानी रास्ता उनका जिनपर तूने एहसान किया) यह पहले वाले वाक्य या जुमले की तफ़सीर यानी विवरण है कि सिराते मुस्तक़ीम से मुसलमानों का तरीक़ा मुराद है. इससे बहुत सी बातों का हल निकलता है कि जिन बातों पर बुज़ुर्गों ने अमल किया वही सीधा रास्ता की तारीफ़ में आता है.

"ग़ैरिल मग़दूबे अलैहिम वलद दॉल्लीन" (यानी न उनका जिनपर ग़ज़ब हुआ और न बहके हुओं का) इसमें हिदायत दी गई है कि सच्चाई की तलाश करने वालों को अल्लाह के दुश्मनों से दूर रहना चाहिये और उनके रास्ते, रस्मों और रहन सहन के तरीक़े से परहेज़ रखना ज़रूरी है. हदीस की किताब तिरमिज़ी में आया है कि "मग़दूबे अलैहिम" यहूदियों और "दॉल्लीन" ईसाइयों के लिये आया है.

सूरए फ़ातिहा के ख़त्म पर "आमीन" कहना सुन्नत यानी नबी का तरीक़ा है. "आमीन" के मानी हैं "ऐसा ही कर" या "क़ुबूल फ़रमा". ये क़ुरआन का शब्द नहीं है. सूरए फ़ातिहा नमाज़ में पढ़ी जाए या नमाज़ के अलावा, इसके आख़िर में आमीन कहना सुन्नत है.

हज़रत इमामे अअज़म का मज़हब यह है कि नमाज़ में आमीन आहिस्ता या धीमी आवाज़ में कही जाए.

सूरए बक़रह - पहला रुकू

(१) सूरए बक़रह : यह सूरत मदीना में उतरी. हज़रत इब्ने अब्बास (अल्लाह तआला उनसे राज़ी रहे) ने फ़रमाया मदीनए तैय्यिबह में सबसे पहले यही सूरत उतरी, सिवाय आयत "वत्तक़ू यौमन तुर जऊन" के कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आख़िरी हज में मक्कए मुकर्रमा में उतरी.(ख़ाज़िन) इस सूरत में दो सौ छियासी आयतें, चालीस रुकू, छ हज़ार एक सौ इक्कीस कलिमे (शब्द) पच्चीस हज़ार पांच सौ अक्षर यानी हुरूफ़ हैं.(ख़ाज़िन)

पहले क़ुरआन शरीफ़ में सूरतों के नाम नहीं लिखे जाते थे. यहे तरीक़ा हज्जाज बिन यूसुफ़े सक़फ़ी ने निकाला. इब्ने अरबी का कहना है कि सूरए बक़रह में एक हज़ार अम्र यानी आदेश, एक हज़ार नही यानी प्रतिबन्ध, एक हज़ार हुक्म और एक हज़ार ख़बरें हैं. इसे अपनाने में बरकत और छोड़ देने में मेहरूमी है. बुराई वाले जादूगर इसकी तासीर बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखते. जिस

घर में ये सूरत पढ़ी जाए, तीन दिन तक सरकश शैतान उस में दाख़िल नहीं हो सकता. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि शैतान उस घर से भागता है जिस में यह सूरत पढ़ी जाय. बेहिक़ी और सईद बिन मन्सूर ने हज़रत मुग़ीरा से रिवायत की कि जो कोई सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा, वह क़ुरआन शरीफ़ को नहीं भूलेगा. वो आयतें ये हैं : चार आयतें शुरू की और आयतल कुर्सी और दो इसके बाद की और तीन सूरत के आख़िर की.

तिबरानी और बेहिक़ी ने हज़रत इब्ने उमर(अल्लाह उन से राज़ी रहे) से रिवायत की कि हुज़ूर(अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) ने फ़रमाया- मैयत को दफ़्न करके क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़रह की शुरू की आयतें और पांव की तरफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो.

शाने नुज़ूल यानी किन हालात में उतरी :- अल्लाह तआला ने अपने हबीब(अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) से एक ऐसी किताब उतारने का वादा फ़रमाया था जो न पानी से धोकर मिटाई जा सके, न पुरानी हो. जब क़ुरआन शरीफ़ उतरा तो फ़रमाया ''ज़ालिकल किताबु'' कि वह किताब जिसका वादा था, यही है. एक कहना यह है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल से एक किताब उतारने का वादा फ़रमाया था, जब हुज़ूर ने मदीनए तैय्यिबह को हिजरत फ़रमाई जहाँ यहूदी बड़ी तादाद में थे तो ''अलिफ़, लाम, मीम, ज़ालिकल किताबु'' उतार कर उस वादे के पूरे होने की ख़बर दी.(ख़ाज़िन)

(२) अलिफ़ लाम मीम :- सूरतों के शुरू में जो अलग से हुरूफ़ या अक्षर आते हैं उनके बारे में यही मानना है कि अल्लाह के राज़ों में से हैं और मुतशाबिहात यानी रहस्यमय भी. उनका मतलब अल्लाह और रसूल जानें. हम उसके सच्चे होने पर ईमान लाते हैं.

(३) इस लिये कि शक उसमें होता है जिसका सुबूत या दलील या प्रमाण न हो. क़ुरआन शरीफ़ ऐसे खुले और ताक़त वाले सुबूत या प्रमाण रखता है जो जानकार और इन्साफ़ वाले आदमी को इसके किताबे इलाही और सच होने के यक़ीन पर मज़बूत करते हैं. तो यह किताब किसी तरह शक के क़ाबिल नहीं, जिस तरह अन्धे के इन्कार से सूरज का वुजूद या अस्तित्व संदिग्ध या शुबह वाला नहीं होता, ऐसे ही दुश्मनी रखने वाले काले दिल के इन्कार से यह किताब शुबह वाली नहीं हो सकती.

(४) ''हुदल लिल मुत्तक़ीन'' (यानी इसमें हिदायत है डर वालों को) हालांकि क़ुरआन शरीफ़ की हिदायत या मार्गदर्शन हर पढ़ने वाले के लिये आम है, चाहे वह मूमिन यानी ईमान वाला हो या काफ़िर, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया ''हुदल लिन नासे'' यानी ''हिदायत सारे इन्सानों के लिये'' लेकिन चूंकि इसका फ़ायदा अल्लाह से डरने वालों या एहले तक़वा को होता है इसीलिये फ़रमाया गया - हिदायत डर वालों को. जैसे कहते हैं बारिश हरियाली के लिये है यानी फ़ायदा इससे हरियाली का ही होता है हालांकि यह बरसती ऊसर और बंजर ज़मीन पर भी है.

'तक़वा' के कई मानी आते हैं. नफ़्स या अन्तःकरण को डर वाली चीज़ से बचाना तक़वा कहलाता है. शरीअत की भाषा में तक़वा कहते हैं अपने आपको गुनाहों और उन चीज़ों से बचाना जिन्हें अपनाने से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है. हज़रत इब्ने अब्बास(अल्लाह उन से राज़ी रहे) ने फ़रमाया मुत्तक़ी या अल्लाह से डरने वाला वह है जो अल्लाह के अलावा किसी की इबादत और बड़े गुनाहों और बुरी बातों से बचा रहे. दूसरों ने कहा है कि मुत्तक़ी वह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे. कुछ कहते हैं तक़वा हराम या वर्जित चीज़ों का छोड़ना और अल्लाह के आदेशों या एहकामात का अदा करना है. औरों के अनुसार आदेशों के पालन पर डटे रहना और ताअत पर ग़ुरूर से बचना तक़वा है. कुछ का कहना है कि तक़वा यह है कि तेरा रब तुझे वहाँ न पाए जहाँ उसने मना फ़रमाया है. एक कथन यह भी है कि तक़वा हुज़ूर(अल्लाह के दूरूद और सलाम हों उनपर) और उनके साथी सहाबा(अल्लाह उन से राज़ी रहे) के रास्ते पर चलने का नाम है.(ख़ाज़िन) यह तमाम मानी एक दूसरे से जुड़े हैं.

तक़वा के दर्जे बहुत हैं - आम आदमी का तक़वा ईमान लाकर कुफ़्र से बचना, उनसे ऊपर के दर्जे के आदमियों का तक़वा उन बातों पर अमल करना जिनका अल्लाह ने हुक्म दिया है और उन बातों से दूर रहना जिनसे अल्लाह ने मना किया है. ख़वास यानी विशेष दर्जे के आदमियों का तक़वा ऐसी हर चीज़ को छोड़ना है जो अल्लाह तआला से दूर कर दे या उसे भुला दे.(जुमल) इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ, मुहद्दिसे बरेलवी (अल्लाह की रहमत हो उनपर) ने फ़रमाया- तक़वा सात तरह का है (१) कुफ़्र से बचना, यह अल्लाह तआला की मेहरबानी से हर मुसलमान को हासिल है (२) बद-मज़हबी या अधर्म से बचना- यह हर सुन्नी को नसीब है. (३) हर बड़े गुनाह से बचना (४) छोटे गुनाह से भी दूर रहना (५) जिन बातों की अच्छाई में शक या संदेह हो उनसे बचना (६) शहवात यानी वासना से बचना (७) ग़ैर की तरफ़ खिंचने से अपने आप को रोकना. यह बहुत ही विशेष आदमियों का दर्जा है. क़ुरआन शरीफ़ इन सातों मरतबों या श्रेणियों के लिये हिदायत है.

(५) ''अल लज़ीना यूमिनूना बिल ग़ैब''(यानी वो जो बे देखे ईमान लाएं) से लेकर''मुफ़लिहून''(यानी वही मुराद को पहुंचने वाले) तक की आयतें सच्चे दिल से ईमान लाने और उस ईमान को संभाल कर रखने वालों के बारे में हैं. यानी उन लोगों के हक़ में जो अन्दर बाहर दोनों से ईमानदार हैं. इसके बाद दो आयतें खुले काफ़िरों के बारे में हैं जो अन्दर बाहर दोनों तरह से काफ़िर हैं. इसके बाद''व मिनन नासे''(यानी और कुछ कहते हैं) से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ों के बारे में हैं जो अन्दर से काफ़िर हैं और बाहर से अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं.(जुमल) 'ग़ैब' वह है जो हवास यानी इन्द्रियों और अक़्ल से मालूम न हो सके. इस की दो क़िस्में हैं- एक वो जिसपर कोई दलील या प्रमाण न हो, यह इल्मे ग़ैब यानी अज्ञात की जानकारी ज़ाती या व्यक्तिगत है और यही मतलब निकलता है आयत ''इन्दहू मफ़ातिहुल ग़ैबे ला यालमुहा इल्ला हू''(और अल्लाह के पास ही अज्ञात की कुंजी है, और अज्ञात की जानकारी उसके अलावा किसी को नहीं) में और उन सारी आयतों में जिनमें अल्लाह के सिवा किसी को भी अज्ञात की जानकारी

न होने की बात कही गई है. इस क़िस्म का इल्मे ग़ैब यानी ज़ाती जिस पर कोई दलील या प्रमाण न हो, अल्लाह तआला के साथ विशेष या ख़ास है.

ग़ैब की दूसरी क़िस्म वह है जिस पर दलील या प्रमाण हो जैसे दुनिया और इसके अन्दर जो चीज़ें हैं उनको देखते हुए अल्लाह पर ईमान लाना, जिसने ये सब चीज़ें बनाई हैं, इसी क़िस्म के तहत आता है क़यामत या प्रलय के दिन का हाल, हिसाब वाले दिन अच्छे और बुरे कामों का बदला इत्यादि की जानकारी, जिस पर दलीलें या प्रमाण मौजूद हैं और जो जानकारी अल्लाह तआला के बताए से मिलती है. इस दूसरे क़िस्म के ग़ैब, जिसका तअल्लुक़ ईमान से है, की जानकारी और यक़ीन हर ईमान वाले को हासिल है, अगर न हो तो वह आदमी मूमिन ही न हो.

अल्लाह तआला अपने क़रीबी चहीते बन्दों, नबियों और वलियों पर जो ग़ैब के दरवाज़े खोलता है वह इसी क़िस्म का ग़ैब है. ग़ैब की तफ़सीर या व्याख्या में एक कथन यह भी है कि ग़ैब से क़ल्ब यानी दिल मुराद है. उस सूरत में मानी ये होंगे कि वो दिल से ईमान लाएं. (जुमल)

ईमान :- जिन चीज़ों के बारे में हिदायत और यक़ीन से मालूम है कि ये दीने मुहम्मदी से हैं, उन सबको मानने और दिल से तस्दीक़ या पुष्टि करने और ज़बान से इक़रार करने का नाम सही ईमान है. कर्म या अमल ईमान में दाख़िल नहीं इसीलिये "यूमिनूना बिल ग़ैबे" के बाद "युक़ीमूनस सलाता"(और नमाज़ क़ायम रखें) फ़रमाया गया.

(६) नमाज़ के क़ायम रखने से ये मुराद है कि इसपर सदा अमल करते हैं और ठीक वक़्तों पर पूरी पाबन्दी के साथ सभी अरकान यानी संस्कारों के साथ नमाज़ की अदायगी करते हैं और फ़र्ज़, सुन्नत और मुस्तहब अरकान की हिफ़ाज़त करते हैं, किसी में कोई रूकावट नहीं आने देते. जो बातें नमाज़ को ख़राब करती हैं उन का पूरा पूरा ध्यान रखते हैं और जैसी नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुआ है वैसी नमाज़ अदा करते हैं.

नमाज़ के संस्कार :- नमाज़ के हुक़ूक़ या संस्कार दो तरह के हैं एक ज़ाहिरी, ये वो हैं जो अभी अभी ऊपर बताए गए. दूसरे बातिनी, यानी आंतरिक, पूरी यकसूई या एकाग्रता, दिल को हर तरफ़ से फेरकर सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले की तरफ़ लगा देना और दिल की गहराईयों से अपने रब की तारीफ़ या स्तुति और उससे प्रार्थना करना.

(७) अल्लाह की राह में ख़र्च करने का मतलब या ज़कात है, जैसा दूसरी जगह फ़रमाया "युक़ीमूनस सलाता व यूतूनज़ ज़काता" (यानी नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं), या हर तरह का दान पुण्य मुराद है चाहे फ़र्ज़ हो या वाजिब, जैसे ज़कात, भेंट, अपनी और अपने घर वालों की गुज़र बसर का प्रबन्ध. जो क़रीबी लोग इस दुनिया से जा चुके हैं उनकी आत्मा की शान्ति के लिये दान करना भी इसमें आ सकता है. बग़दाद वाले बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ग्यारहवीं की नियाज़, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवाँ वग़ैरह भी इसमें दाख़िल हैं कि ये सब अतिरिक्त दान हैं. क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ना और कलिमा पढ़ना नेकी के साथ अतिरिक्त नेकी मिलाकर अज्र और सवाब बढ़ाता है.

क़ुरआन शरीफ़ में इस तरफ़ ज़रूर इशारा किया गया है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करते वक़्त, चाहे अपने लिये हो या अपने क़रीबी लोगों के लिये, उसमें बीच का रास्ता अपनाया जाए, यानी न बहुत कम, न बहुत ज़्यादा.

'रज़क़नाहुम'(और हमारी दी हुई रोज़ी में से) में यहे स्पष्ट कर दिया गया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुआ नहीं, बल्कि हमारा दिया हुआ है. इसको अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम बहुत ही कंजूस हो और ये कंजूसी बहुत ही बुरी है.

(८) इस आयत में किताब वालों से वो ईमान वाले मुराद हैं जो अपनी किताब और सारी पिछली किताबों और नबियों (अल्लाह के दुरूद और सलाम हों उनपर) पर भेजे गए अल्लाह के आदेशों पर भी ईमान लाए और क़ुरआन शरीफ़ पर भी. और "मा उन्ज़िला इलैका"(जो तुम्हारी तरफ़ उतरा) से तमाम क़ुरआन शरीफ़ और सारी शरीअत मुराद है.(जुमल)

जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है उसी तरह पिछली आसमानी किताबों पर ईमान लाना भी अनिवार्य है जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर(अल्लाह के दुरूद और सलाम हों उनपर) से पहले नबियों पर उतारीं. अलबत्ता उन किताबों के जो अहकाम या आदेश हमारी शरीअत में मन्सूख़ या स्थगित कर दिये गए उन पर अमल करना दुरूस्त नहीं, मगर ईमान रखना ज़रूरी है. जैसे पिछली शरीअतों में बैतुल मक़दिस क़िबला था, इसपर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अमल यानी नमाज़ में बैतुल मक़दिस की तरफ़ मुंह करना जायज़ नहीं, यह हुक्म उठा लिया गया.

क़ुरआन शरीफ़ से पहले जो कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके नबियों पर उतरा उन सब पर सामूहिक रुप से ईमान लाना फ़र्ज़े ऐन है और क़ुरआन शरीफ़ में जो कुछ है उस पर ईमान लाना फ़र्ज़े किफ़ाया है, इसीलिये आम आदमी पर क़ुरआन शरीफ़ की तफ्सीलात की जानकारी फ़र्ज़ नहीं जबकि क़ुरआन शरीफ़ के जानकार मौजूद हों जिन्हों ने क़ुरआन के ज्ञान को हासिल करने में पूरी मेहनत की हो.

(९) यानी दूसरी दुनिया और जो कुछ उसमें है, अच्छाइयों और बुराइयों का हिसाब वग़ैरह सब पर ऐसा यक़ीन और इत्मीनान रखते हैं कि ज़रा शक और शुबह नहीं. इसमें एहले किताब(ईसाई और यहूदी) और काफ़िरों वग़ैरह से बेज़ारी है जो आख़िरत यानी दूसरी दुनिया के बारे में ग़लत विचार रखते हैं.

أُولَٰٓئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ
تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ
سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰٓ أَبْصَٰرِهِمْ غِشَٰوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَ
بِالْيَوْمِ الْءَاخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝ يُخَٰدِعُونَ اللَّهَ وَ
الَّذِينَ ءَامَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا
تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوٓا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝
أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا كَمَآ ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ
كَمَآ ءَامَنَ السُّفَهَآءُ ۗ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلَٰكِن

वही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले《५》 बेशक वो जिन की क़िसमत में कुफ़्र है[१०] उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं《६》 अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर मुहर कर दी और उनकी आँखों पर घटा टोप है[११] और उनके लिये बड़ा अज़ाब《७》

दूसरा रूकू

और कुछ लोग कहते हैं[१] कि हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाए और वो ईमान वाले नहीं《८》 धोखा दिया चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को[२] और हक़ीक़त में धोखा नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शऊर (या आभास) नहीं《९》उनके दिलों में बीमारी है[३] तो अल्लाह ने उनकी बीमारी और बढ़ाई और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है बदला उनके झूठ का[४]《१०》 और जो उनसे कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो[५] तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं《११》 सुनता है ! वही फ़सादी हैं मगर उन्हें शऊर नहीं《१२》 और जब उनसे कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं[६] तो कहें क्या हम मूर्खों की तरह ईमान लाएं[७] सुनता है ! वही मूर्ख हैं मगर जानते नहीं

(१०) अल्लाह वालों के बाद, अल्लाह के दुश्मनों का बयान फ़रमाना हिदायत के लिये है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की हक़ीक़त और उसके नतीजों या परिणाम पर नज़र हो जाए.

यह आयत अबू जहल, अबू लहब वग़ैरह काफ़िरों के बारे में उतरी जो अल्लाह के इल्म के तहत ईमान से मेहरूम हैं, इसी लिये उनके बारे में अल्लाह तआला की मुख़ालिफ़त या दुश्मनी से डराना या न डराना दोनों बराबर हैं, उन्हें फ़ायदा न होगा. मगर हुज़ूर की कोशिश बेकार नहीं क्योंकि रसूल का काम सिर्फ़ सच्चाई का रास्ता दिखाना और अच्छाई की तरफ़ बुलाना है. कितने लोग सच्चाई को अपनाते हैं और कितने नहीं, यह रसूल की जवाबदारी नहीं है. अगर क़ौम हिदायत क़ुबूल न करे तब भी हिदायत देने वाले को हिदायत का पुण्य या सवाब मिलेगा ही.

इस आयत में हुज़ूर(अल्लाह के दुरूद और सलाम हों उनपर) की तसल्ली की बात है कि काफ़िरों के ईमान न लाने से आप दुखी न हों, आप की तबलीग़ या प्रचार की कोशिश पूरी है, इसका अच्छा बदला मिलेगा. मेहरूम तो ये बदनसीब हैं जिन्हों ने आपकी बात न मानी.

कुफ़्र के मानी : अल्लाह तआला की ज़ात या उसके एक होने या किसी के नबी होने या दीन की ज़रूरतों में से किसी एक का इन्कार करना या कोई ऐसा काम जो शरीअत से मुंह फेरने का सुबूत हो, कुफ़्र है.

(११) इस सारे मज़मून का सार यह है कि काफ़िर गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि सच्चाई के देखने, सुनने, समझने से इस तरह मेहरूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मुहर लगी हो और आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ हो.

इस आयत से मालूम हुआ कि बन्दों के कर्म भी अल्लाह की क़ुदरत के तहत हैं.

सूरए बक़रह - दूसरा रुकू

(१) इस से मालूम हुआ कि हिदायत की राहें उनके लिए पहले ही बन्द न थीं कि बहाने की गुंजायश होती . बल्कि उनके कुफ़्र, दुश्मनी और सरकशी व बेदीनी, सत्य के विरोध और नबियों से दुश्मनी का यह अंजाम (परिणाम) है जैसे कोई आदमी डॉक्टर का विरोध करे और उसके लिये दवा से फ़ायदे की सूरत न रहे तो वह ख़ुद ही अपनी दुर्दशा का ज़िम्मेदार ठहरेगा.

(२) यहाँ से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ों (दोग़ली प्रवृत्ति वालों) के लिये उतरीं जो अन्दर से काफ़िर थे और अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करते थे. अल्लाह तआला ने फ़रमाया *''माहुम बिमूमिनीन''* वो ईमान वाले नहीं यानी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का दावा करना, नमाज़ रोज़े अदा करना मूमिन होने के लिये काफ़ी नहीं, जब तक दिलों में तस्दीक़ न हो. इससे मालूम हुआ कि जितने फ़िरक़े (समुदाय) ईमान का दावा करते हैं और कुफ़्र का अक़ीदा रखते हैं सब का यही हुक्म है कि काफ़िर इस्लाम से बाहर हैं. शरीअत

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَ
إِذَا خَلَوْا إِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا إِنَّا مَعَكُمْ ۙ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۠
فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ أَضَآءَتْ
مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ
لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝ صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ
يَجْعَلُوْنَ أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ
الْمَوْتِ ۗ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ
يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۗ كُلَّمَآ أَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَإِذَآ
أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

منزل ١

(८)﴾१३﴿ और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले हों(९) तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो यूं ही हंसी करते हैं(१०)﴾१४﴿ अल्लाह उनसे इस्तहज़ा फ़रमाता है (अपनी शान के मुताबिक़)(११)﴾१५﴿ और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें. ये वो लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी,(१२) तो उनका सौदा कुछ नफ़ा न लाया और वो सौदे की राह जानते ही न थे(१३)﴾१६﴿ उनकी कहावत उसकी तरह है जिसने आग रौशन की तो जब उससे आसपास सब जगमगा उठा, अल्लाह उनका नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता(१४)﴾१७﴿ बहरे, गूंगे, अन्धे, तो वो फिर आने वाले नहीं﴾१८﴿ या जैसे आसमान से उतरता पानी कि उसमें अंधेरियां हैं और गरज और चमक(१५) अपने कानों में उंगलियां ठूंस रहे हैं, कड़क के कारण मौत के डर से(१६) और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है (१७)﴾१९﴿ बिजली यूं मालूम होती है कि उनकी निगाहें उचक ले जाएगी(१८) जब कुछ चमक हुई उस में चलने लगे(१९) और जब अंधेरा हुआ, खड़े रह गए और अल्लाह चाहता तो उनके कान और

में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं. उनका नुक़सान खुले काफ़िरों से ज़्यादा है. *मिनन नास* (कुछ लोग) फ़रमाने में यह इशारा है कि यह गिरोह बेहतर गुणों और इन्सानी कमाल से ऐसा ख़ाली है कि इसका ज़िक्र किसी वस्फ़ (प्रशंसा) और ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वो भी आदमी हैं. इस से मालूम हुआ कि किसी को बशर कहने में उसके फ़ज़ाइल और कमालात (विशेष गुणों) के इन्कार का पहलू निकलता है. इसलिये कुरआन में जगह जगह नबियों को बशर कहने वालों को काफ़िर कहा गया और वास्तव में नबियों की शान में ऐसा शब्द अदब से दूर और काफ़िरों का तरीक़ा है. कुछ तफ़सीर करने वालों ने फ़रमाया कि *मिनन नास* (कुछ लोगों) में सुनने वालों को आश्चर्य दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे धोखेबाज़, मक्कार और ऐसे महामूर्ख भी आदमियों में हैं.

(३) अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको कोई धोखा दे सके. वह छुपे रहस्यों का जानने वाला है. मतलब यह है कि मुनाफ़िक़ अपने गुमान में ख़ुदा को धोखा देना चाहते हैं या यह कि ख़ुदा को धोखा देना यही है कि रसूल अलैहिस्सलाम को धोखा देना चाहें क्योंकि वह उसके ख़लीफ़ा हैं, और अल्लाह तआला ने अपने हबीब को रहस्यों (छुपी बातों) का इल्म दिया है, वह उन दोग़लों यानी मुनाफ़िक़ों के छुपे कुफ़्र के जानकार हैं और मुसलमान उनके बताए से बाख़बर, तो उन अधर्मियों का धोखा न ख़ुदा पर चले न रसूल पर, न ईमान वालों पर, बल्कि हक़ीक़त में वो अपनी जानों को धोखा दे रहे हैं. इस आयत से मालूम हुआ कि तक़ैय्या (दिलों में कुछ और ज़ाहिर कुछ) बड़ा ऐब है. जिस धर्म की बुनियाद तक़ैय्या पर हो, वो झूठा है. तक़ैय्या वाले का हाल भरोसे के क़ाबिल नहीं होता, तौबह इत्मीनान के क़ाबिल नहीं होती. इस लिये पढ़े लिखों ने फ़रमाया है *'ला तुक़बलो तौबतुज़ ज़िन्दीक़'* यानी अधर्मी की तौबह क़ुबूल किये जाने के क़ाबिल नहीं.

(४) बुरे अक़ीदे को दिल की बीमारी बताया गया है. इससे मालूम हुआ कि बुरा अक़ीदा रुहानी ज़िन्दगी के लिये हानिकारक है. इस आयत से साबित हुआ कि झूठ हराम है, उसपर भारी अज़ाब दिया जाता है.

(५) काफ़िरों से मेल जोल, उनकी ख़ातिर दीन में कतर ब्यौंत और असत्य पर चलने वालों की ख़ुशामद और चापलूसी और उनकी ख़ुशी के लिये सुलह कुल्ली (यानी सब चलता है) बन जाना और सच्चाई से दूर रहना, मुनाफ़िक़ की पहचान और हराम है. इसी को मुनाफ़िक़ों का फ़साद फ़रमाया है कि जिस जल्से में गए, वैसे ही हो गए. इस्लाम में इससे मना फ़रमाया गया है. ज़ाहिर और बातिन (बाहर और अन्दर) का एकसा न होना बहुत बड़ी बुराई है.

(६) यहाँ *"अन्नासो"* से या सहाबए किराम मुराद है या ईमान वाले, क्योंकि ख़ुदा के पहचानने, उसकी फ़रमाँबरदारी और आगे की चिन्ता रखने की बदौलत वही इन्सान कहलाने के हक़दार हैं. *"आमिनू कमा आमना"* (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए) से साबित हुआ कि अच्छे लोगों का इत्तिबाअ (अनुकरण) अच्छा और पसन्दीदा है . यह भी साबित हुआ कि एहले सुन्नत का मज़हब सच्चा है क्योंकि इसमें अच्छे नेक लोगों का अनुकरण है. बाक़ी सारे समुदाय अच्छे लोगों से मुंह फेरे हैं इसलिये गुमराह हैं. कुछ विद्वानों ने इस आयत को ज़िन्दीक़ (अधर्मी) की तौबह क़ुबूल होने की दलील क़रार दिया है. (बैज़ावी). ज़िन्दीक़ वह है जो नबुव्वत को माने,

इस्लामी उसूलों को ज़ाहिर करे मगर दिल ही दिल में ऐसे अक़ीदे रखे जो आम राय में कुफ़्र हों, यह भी मुनाफ़िक़ों में दाख़िल है.
(७) इससे मालूम हुआ कि अच्छे नेक आदमियों को बुरा कहना अधर्मियों और असत्य को मानने वालों का पुराना तरीक़ा है आजकल के बातिल फ़िर्क़े भी पिछले बुज़ुर्गों को बुरा कहते हैं. राफ़ज़ी समुदाय वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत से सहाबा को, ख़ारिजी समुदाय वाले हज़रत अली और उनके साथियों को, ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्मए मुज्तहिदीन (चार इमामों) विशेषकर इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा को, वहाबी समुदाय के लोग अकसर औलिया और अल्लाह के प्यारों को, मिर्ज़ाई समुदाय के लोग पहले नबियों तक को, चकड़ालवी समुदाय के लोग सहाबा और मुहद्दिसीन को, नेचरी तमाम बुज़ुर्गाने दीन को बुरा कहते हैं और उनकी शान में गुस्ताख़ी करते हैं. इस आयत से मालूम हुआ कि ये सब सच्ची सीधी राह से हटे हुए हैं. इसमें दीनदार आलिमों के लिये तसल्ली है कि वो गुमराहों की बद-ज़बानियों से बहुत दुखी न हों, समझ लें कि ये अधर्मियों का पुराना तरीक़ा है. (मदारिक)
(८) मुनाफ़िक़ों की ये बद-ज़बानी मुसलमानों के सामने न थी. उनसे तो वो यही कहते थे कि हम सच्चे दिल से ईमान लाए हैं जैसा कि अगली आयत में है *"इज़ा लक़ुल्लज़ीना आमनू क़ालू आमन्ना"* (और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए). ये तबर्राबाज़ियाँ (बुरा भला कहना) अपनी ख़ास मज्लिसों में करते थे. अल्लाह तआला ने उनका पर्दा खोल दिया. (ख़ाज़िन) उसी तरह आज कल के गुमराह फ़िर्क़े (समुदाय) मुसलमानों से अपने झूटे ख़यालों को छुपाते हैं मगर अल्लाह तआला उनकी किताबों और उनकी लिखाइयों से उनके राज़ खोल देता है. इस आयत से मुसलमानों को ख़बरदार किया जाता है कि अधर्मियों की धोखे बाज़ियों से होशियार रहें, उनके जाल में न आएं.
(९) यहाँ शैतानों से काफ़िरों के वो सरदार मुराद है जो अग़वा (बहकावे) में मसरूफ़ रहते हैं.(ख़ाज़िन और बैज़ावी) ये मुनाफ़िक़ जब उनसे मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसलमानों से मिलना सिर्फ़ धोखा और मज़ाक़ उड़ाने की ग़रज़ से इसलिये है कि उनके राज़ मालूम हों और उनमें फ़साद फैलाने के अवसर मिलें. (ख़ाज़िन)
(१०) यानी ईमान का ज़ाहिर करना यानी मज़ाक़ उड़ाने के लिये किया, यह इस्लाम का इन्कार हुआ. नबियों और दीन के साथ मज़ाक़ करना और उनकी खिल्ली उड़ाना कुफ़्र है. यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबई इत्यादि मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी. एक रोज़ उन्होंने सहाबए किराम की एक जमाअत को आते देखा तो इब्ने उबई ने अपने यारों से कहा- देखो तो मैं इन्हें कैसा बनाता हूँ. जब वो हज़रात क़रीब पहुंचे तो इब्ने उबई ने पहले हज़रते सिद्दीक़े अकबर का हाथ अपने हाथ में लेकर आपकी तअरीफ़ की फिर इसी तरह हज़रत उमर और हज़रत अली की तअरीफ़ की. हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया- ऐ इब्ने उबई, ख़ुदा से डर, दोग़लेपन से दूर रह, क्योंकि मुनाफ़िक़ लोग बदतरीन लोग हैं. इसपर वह कहने लगा कि ये बातें दोग़लेपन से नहीं की गईं. ख़ुदा की क़सम, हम आपकी तरह सच्चे ईमान वाले हैं. जब ये हज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने यारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा. इसपर यह आयत उतरी कि मुनाफ़िक़ लोग ईमान वालों से मिलते वक़्त ईमान और महब्बत ज़ाहिर करते हैं और उनसे अलग होकर अपनी ख़ास बैठकों में उनकी हंसी उड़ाते और खिल्ली करते हैं. इससे मालूम हुआ कि सहाबए किराम और दीन के पेशवाओं की खिल्ली उड़ाना कुफ़्र है.
(११) अल्लाह तआला इस्तहज़ा (हंसी करने और खिल्ली उड़ाने) और तमाम ऐबों और बुराइयों से पाक है. यहाँ हंसी करने के जवाब को इस्तहज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिल में बैठ जाए कि यह सज़ा उस न करने वाले काम की है. ऐसे मौक़े पर हंसी करने के जवाब को अस्ल क्रिया की तरह बयान करना फ़साहत का क़ानून है. जैसे बुराई का बदला बुराई. यानी जो बुराई करेगा उसे उसका बदला उसी बुराई की सूरत में मिलेगा.
(१२) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना यानी ईमान की जगह कुफ़्र अपनाना बहुत नुक़सान और घाटे की बात है. यह आयत या उन लोगों के बारे में उतरी जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, या यहूदियों के बारे में जो पहले से तो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम पर ईमान रखते थे मगर जब हुज़ूर तशरीफ़ ले आए तो इन्कार कर बैठे, या तमाम काफ़िरों के बारे में कि अल्लाह तआला ने उन्हें समझने वाली अक़्ल दी, सच्चाई के प्रमाण ज़ाहिर फ़रमाए, हिदायत की राहें खोलीं, मगर उन्होंने अक़्ल और इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की. इस आयत से साबित हुआ कि ख़रीदो फ़रोख़्त (क्रय -विक्रय) के शब्द कहे बिना सिर्फ़ रज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जायज़ है.
(१३) क्योंकि अगर तिजारत का तरीक़ा जानते तो मूल पूंजी (हिदायत) न खो बैठते.
(१४) यह उनकी मिसाल है जिन्हें अल्लाह तआला ने कुछ हिदायत दी या उसपर क़ुदरत बख़्शी, फिर उन्होंने उसको ज़ाया कर दिया और हमेशा बाक़ी रहने वाली दौलत को हासिल न किया. उनका अंजाम हसरत, अफ़सोस, हैरत और ख़ौफ़ है. इसमें वो मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्होंने ईमान की नुमाइश की और दिल में कुफ़्र रखकर इक़रार की रौशनी को ज़ाया कर दिया, और वो भी जो ईमान लाने के बाद दीन से निकल गए, और वो भी जिन्हें समझ दी गई और दलीलों की रौशनी ने सच्चाई को साफ़ कर दिया मगर उन्होंने उससे फ़ायदा न उठाया और गुमराही अपनाई और जब हक़ सुनने, मानने, कहने और सच्चाई की राह देखने से मेहरुम हुए तो कान, ज़बान, आँख, सब बेकार हैं.
(१५) हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की यह दूसरी मिसाल है कि जैसे बारिश ज़मीन की ज़िन्दगी का कारण होती है और उसके साथ ख़ौफ़नाक अंधेरियाँ और ज़ोरदार गरज और चमक होती है, उसी तरह क़ुरआन और इस्लाम दिलों की ज़िन्दगी का सबब हैं और कुफ़्र, शिर्क, निफ़ाक़ (दोग़लेपन) का बयान तारीकी (अंधेरे) से मिलता जुलता है. जैसे अंधेरा राहगीर को मंज़िल तक पहुंचने से रोकता है, ऐसे ही कुफ़्र और निफ़ाक़ राह पाने से रोकते हैं, और सज़ाओं का ज़िक्र गरज से और हुज्जतों का वर्णन चमक

وَاَبْصَارِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؀ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ؀ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
فِرَاشًا وَّالسَّمَاۗءَ بِنَاۗءً ۠ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَخْرَجَ
بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ
اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ؀ وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰي
عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۠ وَادْعُوْا شُهَدَاۗءَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ؀ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا
وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُھَا النَّاسُ وَ
الْحِجَارَةُ ښ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ؀ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَھُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۭ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا
هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۭ وَلَهُمْ

منزل ١

आँखें ले जाता[२०], बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है[२१]﴿२०﴾

तीसरा रूकू

ऐ लोगो[१] अपने रब को पूजो जिसने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया ये उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़गारी मिले[२]﴿२१﴾ और जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना और आसमान को इमारत बनाया और आसमान से पानी उतारा[३] तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो अल्लाह के लिये जान बूझकर बराबर वाले न ठहराओ[४]﴿२२﴾ और अगर तुम्हें कुछ शक हो उसमें जो हमने अपने (उन ख़ास) बन्दे[५] पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ[६] और अल्लाह के सिवा अपने सब हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो,﴿२३﴾ फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं[७] तैयार रखी है काफ़िरों के लिये[८]﴿२४﴾ और ख़ुशख़बरी दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहें[९] जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा (सूरत देखकर) कहेंगे यह तो वही रिज़्क़ (जीविका) है जो हमें पहले मिला था[१०] और वह (सूरत में) मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उनके लिये

से मिलते जुलते हैं.

मुनाफ़िक़ों में से दो आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास से मुश्रिकों की तरफ़ भागे, राह में यही बारिश आई जिसका आयत में ज़िक्र है. इसमें ज़ोरदार गरज, कड़क और चमक थी. जब गरज होती तो कानों में उंगलियाँ ठूंस लेते कि यह कानों को फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती, अंधे रह जाते. आपस में कहने लगे- ख़ुदा ख़ैर से सुबह करे तो हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने हाथ हुज़ूर के मुबारक हाथों में दे दें. फिर उन्होंने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम (डटे) रहे. उनके हाल को अल्लाह तआला ने मुनाफ़िक़ों के लिये कहावत बनाया जो हुज़ूर की पाक मज्लिस में हाज़िर होते तो कानों में उंगलियाँ ठूंस लेते कि कहीं हुज़ूर का कलाम उनपर असर न कर जाए जिससे मर ही जाएं और जब उनके माल व औलाद ज़्यादा होते और फ़त्ह और ग़नीमत का माल मिलता तो बिजली की चमक वालों की तरह चलते और कहते कि अब तो मुहम्मद का दीन ही सच्चा है. और जब माल और औलाद का नुक़सान होता और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में ठिठक रहने वालों की तरह कहते कि यह मुसीबतें इसी दीन की वजह से हैं और इस्लाम से पलट जाते.

(१६) जैसे अंधेरी रात में काली घटा और बिजली की गरज-चमक जंगल में मुसाफ़िरों को हैरान करती हो और वह कड़क की भयानक आवाज़ से मौत के डर के मारे कानों में उंगलियाँ ठूंसते हों. ऐसे ही काफ़िर क़ुरआन पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें यह अन्देशा (डर) होता है कि कहीं इसकी दिल में घर कर जाने वाली बातें इस्लाम और ईमान की तरफ़ खींच कर बाप दादा का कुफ़्र वाला दीन न छुड़वा दें जो उनके नज़्दीक मौत के बराबर है.

(१७) इसलिये ये बचना उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं दे सकता क्योंकि वो कानों में उंगलियाँ ठूंस कर अल्लाह के प्रकोप से छुटकारा नहीं पा सकते.

(१८) जैसे बिजली की चमक, मालूम होता है कि दृष्टि को नष्ट कर देगी, ऐसे ही खुली साफ़ दलीलों की रौशनी उनकी आँखों और देखने की क़ुव्वत को चौंधिया देती है.

(१९) जिस तरह अंधेरी रात और बादल और बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर आश्चर्यचकित होता है, जब बिजली चमकती है तो कुछ चल लेता है, जब अंधेरा होता है तो खड़ा रह जाता है, उसी तरह इस्लाम के ग़लबे और मोजिज़ात की रौशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की तरफ़ राग़िब होते (खिंचते) हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं. इसी मज़्मून (विषय) को दूसरी आयत में इस तरह इरशाद फ़रमाया *"इज़ा दुऊ इलल्लाहे व रसूलिही लियहकुमा बैनहुम इज़ा फ़रीक़ुम मिन्हुम मुअरिदून."* (सूरए नूर , आयत ४८) यानी जब बुलाए जाएं अल्लाह व रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उनका एक पक्ष मुंह फेर जाता है. (ख़ाज़िन वग़ैरह)

(२०) यानी यद्यपि मुनाफ़िक़ों की हरकतें इसी की हक़दार थीं, मगर अल्लाह तआला ने उनके सुनने और देखने की ताक़त को नष्ट न किया. इससे मालूम हुआ कि असबाब की तासीर अल्लाह की मर्ज़ी के साथ जुड़ी हुई है कि अल्लाह की मर्ज़ी के बिना किसी चीज़ का कुछ असर नहीं हो सकता. यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह की मर्ज़ी असबाब की मोहताज नहीं, अल्लाह को कुछ करने के लिये किसी वजह की ज़रूरत नहीं.

(२१) 'शै' उसीको कहते हैं जिसे अल्लाह चाहे और जो उसकी मर्ज़ी के तहत आ सके. जो कुछ भी है सब 'शै' में दाख़िल हैं इसलिये वह अल्लाह की क़ुदरत के तहत है. और जो मुमकिन नहीं यानी उस जैसा दूसरा होना सम्भव नहीं अर्थात वाजिब, उससे क़ुदरत और इरादा सम्बन्धित नहीं होता जैसे अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात वाजिब है, इस लिये मक़दूर (किस्मत) नहीं. अल्लाह तआला के लिये झूट बोलना और सारे ऐब मुहाल (असंभव) है इसीलिये क़ुदरत को उनसे कोई वास्ता नहीं.

सूरए बक़रह - तीसरा रुकू

(१) सूरत के शुरु में बताया गया कि यह किताब अल्लाह से डरने वालों की हिदायत के लिये उतारी गई है, फिर डरने वालों की विशेषताओं का ज़िक्र फ़रमाया, इसके बाद इससे मुंह फेरने वाले समुदायों का और उनके हालात का ज़िक्र फरमाया कि फ़रमाँबरदार और क़िस्मत वाले इन्सान हिदायत और तक़वा की तरफ़ राग़िब हों और नाफ़रमानी व बग़ावत से बचें. अब तक़वा हासिल करने का तरीक़ा बताया जा रहा है. "ऐ लोगो" का ख़िताब (सम्बोधन) अकसर मक्के वालों को और "ऐ ईमान वालो" का सम्बोधन मदीने वालों को होता है. मगर यहाँ यह सम्बोधन ईमान वालों और काफ़िर सब को आम है. इसमें इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी अल्लाह से डरे यानी तक़वा हासिल करे और इबादत में लगा रहे. इबादत वह संस्कार (बंदगी) है जो बन्दा अपनी अब्दीयत और माबूद की उलूहियत (ख़ुदा होना) के एतिक़ाद और एतिराफ़ के साथ पूरे करे. यहाँ इबादत आम है अर्थात पूजा पाठ की सारी विधियों, तमाम उसूल और तरीक़ों को समोए हुए है. काफ़िर इबादत के मामूर (हुक्म किये गए) हैं जिस तरह बेवुज़ू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने को नहीं रोकता उसी तरह काफ़िर होना इबादत के वाजिब होने को मना नहीं करता और जैसे बेवुज़ू व्यक्ति पर नमाज़ की अनिवार्यता बदन की पाकी को ज़रूरी बनाती है ऐसे ही काफ़िर पर इबादत के वाजिब होने से कुफ़्र का छोड़ना अनिवार्य ठहरता है.

(२) इससे मालूम हुआ कि इबादत का फ़ायदा इबादत करने वाले ही को मिलता है, अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको इबादत या और किसी चीज़ से नफ़ा हासिल हो.

(३) पहली आयत में बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को शून्य से अस्तित्व किया और दूसरी आयत में गुज़र बसर, जीने की सहूलतों, अन्न और पानी का बयान फ़रमाकर स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह ही सारी नेअमतों का मालिक है. फिर अल्लाह को छोड़कर दूसरे की पूजा सिर्फ़ बातिल है.

(४) अल्लाह तआला के एक होने के बयान के बाद हुज़ूर सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और क़ुरआने करीम के देववाणी और नबी का मोजिज़ा होने की वह ज़बरदस्त दलील बयान फरमाई जाती है जो सच्चे दिल वाले को इत्मीनान बख़्शे और इन्कार करने वालों को लाजवाब कर दे.

(५) ख़ास बन्दे से हुज़ुर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं.

(६) यानी ऐसी सूरत बनाकर लाओ जो फ़साहत (अच्छा कलाम) व बलाग़त और शब्दों के सौंदर्य और प्रबन्ध और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआने पाक की तरह हो.

(७) पत्थर से वो बुत मुराद हैं जिन्हें काफ़िर पूजते हैं और उनकी महब्बत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम का इन्कार दुश्मनी के तौर पर करते हैं.

(८) इस से मालूम हुआ कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है. यह भी इशारा है कि ईमान वालों के लिये अल्लाह के करम से हमेशा जहन्नम में रहना नहीं.

(९) अल्लाह तआला की सुन्नत है कि किताब में तरहीब (डराना) के साथ तरग़ीब ज़िक्र फ़रमाता है. इसी लिये काफ़िर और उनके कर्मों और अज़ाब के ज़िक्र के बाद ईमान वालों का बयान किया और उन्हें जन्नत की बशारत दी. *"सालिहातुन"* यानी नेकियाँ वो कर्म हैं जो शरीअत की रौशनी में अच्छे हों. इनमें फ़र्ज़ और नफ़्ल सब दाख़िल हैं . (जलालैन) नेक अमल का ईमान पर अत्फ़ इसकी दलील है कि अमल ईमान का अंग नहीं. यह बशारत ईमान वाले नेक काम करने वालों के लिये बिना क़ैद है और गुनाहगारों को जो बशारत दी गई है वह अल्लाह की मर्ज़ी की शर्त के साथ है कि अल्लाह चाहे तो अपनी कृपा से माफ़ फ़रमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा देकर जन्नत प्रदान करे. (मदारिक)

(१०) जन्नत के फल एक दूसरे से मिलते जुलते होंगे और उनके मज़े अलग अलग. इसलिये जन्नत वाले कहेंगे कि यही फल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर खाने से नई लज़्ज़त पाएंगे तो उनका लुत्फ़ बहुत ज़्यादा हो जाएगा.

فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝ إِنَّ ٱللَّهَ
لَا يَسْتَحْىِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا
فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ وَأَمَّا
ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا
يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا
ٱلْفَٰسِقِينَ ۝ ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ
مِيثَٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَ
يُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ۝ كَيْفَ
تَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَٰكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ لَكُم مَّا
فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ ٱسْتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَسَوَّىٰهُنَّ
سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى جَاعِلٌ فِى ٱلْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوٓا۟ أَتَجْعَلُ

उन बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं[११] और वो उनमें हमेशा रहेंगे[१२]《२५》 बेशक अल्लाह इस से हया नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र या वर्णन फ़रमाए मच्छर हो या उससे बढ़कर[१३] तो वो जो ईमान लाए वो तो जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़(सत्य) है[१४] रहे काफ़िर वो कहते हैं ऐसी कहावत में अल्लाह का क्या मक़सूद है, अल्लाह बहुतेरों को इससे गुमराह करता है[१५] और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और उससे उन्हें गुमराह करता है जो बेहुक्म हैं[१६]《२६》 वह जो अल्लाह के अहद(इक़रार) को तोड़ देते हैं[१७] पक्का होने के बाद और काटते हैं उस चीज़ को जिसके जोड़ने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[१८] वही नुक़सान में हैं《२७》 भला तुम कैसे ख़ुदा का इन्कार करोगे हालांकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिलाया(जीवंत किया) फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ़ पलटकर जाओगे[१९]《२८》 वही है जिसने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन में है[२०] फिर आसमान की तरफ़ इस्तिवा(क़सद, इरादा) फ़रमाया तो ठीक सात आसमान बनाए और वह सब कुछ जानता है[२१]《२९》

चौथा रूकू

और(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नायब बनाने वाला हूँ[१] बोले क्या ऐसे

(११) जन्नती बीबियाँ चाहें हूरें हों या और, स्त्रियों की सारी जिस्मानी इल्लतों (दोषों) और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से पाक होंगी, न जिस्म पर मैल होगा, न पेशाब पख़ाना, इसके साथ ही वो बदमिज़ाजी और बदख़ल्क़ी (बुरे मिजाज़) से भी पाक होंगी. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(१२) यानी जन्नत में रहने वाले न कभी फ़ना होंगे, न जन्नत से निकाले जाएंगे. इससे मालूम हुआ कि जन्नत और इसमें रहने वालों के लिये फ़ना नहीं.

(१३) जब अल्लाह तआला ने आयत मसलुहुम कमसलिल लज़िस्तौक़दा नारा (उनकी कहावत उसकी तरह है जिसने आग रौशन की) और आयत *''कसैय्यिबिम मिनस समाए''* (जैसे आसमान से उतरता पानी) में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाईं तो मुनाफ़िक़ों ने एतिराज़ किया कि अल्लाह तआला इससे बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए . उसके रद में यह आयत उतरी.

(१४) चूंकि मिसालों का बयान हिक्मत (जानकारी,बोध) देने और मज़मून को दिल में घर करने वाला बनाने के लिये होता है और अरब के अच्छी ज़बान वालों का तरीक़ा है, इसलिये मुनाफ़िक़ों का यह एतिराज़ ग़लत और बेजा है और मिसालों का बयान सच्चाई से भरपूर है.

(१५) *''युदिल्लो बिही''* (इससे गुमराह करता है) काफ़िरों के उस कथन का जवाब है कि अल्लाह का इस कहावत से क्या मतलब है. *''अम्मल लज़ीना आमनू''* (वो जो ईमान लाए) और *''अम्मल लज़ीना कफ़रू''* (वो जो क़ाफ़िर रहे), ये दो जुम्ले जो ऊपर इरशाद हुए, उनकी तफ़सीर है कि इस कहावत या मिसाल से बहुतों को गुमराह करता है जिनकी अक़्लों पर अज्ञानता या जिहालत ने ग़लबा किया है और जिनकी आदत बड़ाई छाँटना और दुश्मनी पालना है और जो हक़ बात और खुली हिक्मत के इन्कार और विरोध के आदी हैं और इसके बावजूद कि यह मिसाल बहुत मुनासिब है, फिर भी इन्कार करतें हैं और इससे अल्लाह तआला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर और तहक़ीक़ (अनुसंधान) के आदी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते कि हिक्मत (बोध) यही है कि बड़े रूत्बे वाली चीज़ की मिसाल किसी क़द्र वाली चीज़ से और हक़ीर (तुच्छ) चीज़ की अदना चीज़ से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में हक़ (सच्चाई) की नूर (प्रकाश) से और बातिल (असत्य) की ज़ुलमत (अंधेरे) से मिसाल दी गई.

(१६) शरीअत में फ़ासिक़ उस नाफ़रमान को कहते हैं जो बड़े गुनाह करे. ''फ़िस्क़'' के तीन दर्जे हैं- एक तग़ाबी, वह यह कि आदमी इत्तिफ़ाक़िया किसी गुनाह का मुर्तकिब (करने वाला) हुआ और उसको बुरा ही जानता रहा, दूसरा इन्हिमाक कि बड़े गुनाहों का आदी

हो गया और उनसे बचने की परवाह न रही, तीसरा जुहूद कि हराम को अच्छा जान कर इर्तिकाब करे. इस दर्जे वाला ईमान से मेहरूम हो जाता है. पहले दो दर्जों में जब तक बड़ों में बड़े गुनाह (शिर्क व कुफ़्र) का इर्तिकाब न करे, उसपर मूमिन का इतलाक़ (लागू होना) होता है. यहाँ ''फ़ासिक़ीन'' (बेहुक्म) से वही नाफ़रमान मुराद हैं जो ईमान से बाहर हो गए. क़ुरआने करीम में काफ़िरों पर भी फ़ासिक़ का इतलाक़ हुआ है: *इन्नल मुनाफ़िक़ीना हुमुल फ़ासिक़ून'* (सूरए तौबह, आयत ६७) यानी बेशक मुनाफ़िक़ वही पक्के बेहुक्म हैं. कुछ तफ़सीर करने वालों ने यहाँ फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये, कुछ ने मुनाफ़िक़, कुछ ने यहूद.

(१७) इससे वह एहद मुराद है जो अल्लाह तआला ने पिछली किताबों में हुज़ुर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया. एक क़ौल यह है कि एहद तीन हैं- पहला एहद वह जो अल्लाह तआला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उसके रब होने का इक़रार करें. इसका बयान इस आयत में है *''व इज़ अख़ज़ा रब्बुका मिम बनी आदमा....''* (सूरए अअराफ़, आयत १७२) यानी और ऐ मेहबूब, याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उनपर गवाह किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं, सब बोले- क्यों नहीं, हम गवाह हुए. दूसरा एहद नबियों के साथ विशेष है कि रिसालत की तबलीग़ फ़रमाएं और दीन क़ायम करें. इसका बयान आयत *''व इज़ अख़ज़ना मिनन नबिय्यीना मीसाक़हुम''* (सूरए अलअहज़ाब, आयत सात)में है, यानी और ऐ मेहबूब याद करो जब हमने नबियों से एहद लिया और तुम से और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा मरयम के बेटे से और हम ने उनसे गाढ़ा एहद लिया. तीसरा एहद उलमा के साथ ख़ास है कि सच्चाई को न छुपाएं. इसका बयान *'' वइज़ अख़ज़ल्लाहो मीसाक़ल्लज़ीना ऊतुल किताब''*में है, यानी और याद करो जब अल्लाह ने एहद लिया उनसे जिन्हें किताब अता हुई कि तुम ज़रूर उसे उन लोगों से बयान कर देना और न छुपाना.(सूरए आले इमरान, आयत १८७)

(१८) रिश्ते और क़राबत के तअल्लुक़ात(क़रीबी संबन्ध) मुसलमानों की दोस्ती और महब्बत, सारे नबियों को मानना, आसमानी किताबों की तस्दीक़, हक़ पर जमा होना, ये वो चीज़ें हैं जिनके मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया. उनमें फूट डालना, कुछ को कुछ से नाहक़ अलग करना, तफ़र्क़ो (अलगाव) की बिना डालना हराम क़रार दिया गया.

(१९) तौहीद और नबुव्वत की दलीलों और कुफ़्र और ईमान के बदले के बाद अल्लाह तआला ने अपनी आम और ख़ास नेअमतों का, और क़ुदरत की निशानियों, अजीब बातों और हिक्मतों का ज़िक्र फ़रमाया और कुफ़्र की ख़राबी दिल में बिठाने के लिये काफ़िरों को सम्बोधित किया कि तुम किस तरह ख़ुदा का इन्कार करते हो जबकि तुम्हारा अपना हाल उसपर ईमान लाने का तक़ाज़ा करता है कि तुम मुर्दा थे. मुर्दा से बेजान जिस्म मुराद है. हमारे मुहावरे में भी बोलते हैं- ज़मीन मुर्दा हो गई. मुहावरे में भी मौत इस अर्थ में आई. ख़ुद क़ुरआने पाक में इरशाद हुआ *''युहयिल अरदा बअदा मौतिहा''* (सूरए रूम, आयत ५०) यानी हमने ज़मीन को ज़िन्दा किया उसके मरे पीछे. तो मतलब यह है कि तुम बेजान जिस्म थे, अन्सर (तत्व) की सुरत में, फिर ग़िज़ा की शक्ल में, फिर इख़्तलात (मिल जाना) की शान में, फिर नुत्फ़े (मादे) की हालत में. उसने तुमको जान दी, ज़िन्दा फ़रमाया. फिर उम्र की मीआद पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा. फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा. इससे या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सवाल के लिये होगी या हश्र की. फिर तुम हिसाब और जज़ा के लिये उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे. अपने इस हाल को जानकर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अजीब है. एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है कि *''कैफ़ा तकफ़ुरूना''* (भला तुम कैसे अल्लाह के इन्कारी हो गए) का ख़िताब मूमिनीन से है और मतलब यह है कि तुम किस तरह काफ़िर हो सकते हो इस हाल में कि तुम जिहालत की मौत से मुर्दा थे, अल्लाह तआला ने तुम्हें इल्म और ईमान की ज़िन्दगी अता फ़रमाई, इसके बाद तुम्हारे लिये वही मौत है जो उम्र गुज़रने के बाद सबको आया करती है. उसके बाद तुम्हें वह हक़ीक़ी हमेशगी की ज़िन्दगी अता फ़रमाएगा, फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे और वह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी दिल ने उसे मेहसूस किया.

(२०) यानी खानें,सब्ज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह तआला ने तुम्हारे दीनी और दुनियावी नफ़े के लिये बनाए. दीनी नफ़ा इस तरह कि ज़मीन के अजायबात देखकर तुम्हें अल्लाह तआला की हिक्मत और क़ुदरत की पहचान हो और दुनियावी मुनाफ़ा यह कि खाओ पियो, आराम करो, अपने कामों में लाओ. तो इन नेअमतों के बावुजूद तुम किस तरह कुफ़्र करोगे. कर्ख़ी और अबूबक्र राज़ी वग़ैरह ने *''ख़लक़ा लकुम''* (तुम्हारे लिये बनाया) को फ़ायदा पहुंचाने वाली चीज़ों की मूल वैधता (मुबाहुल अस्ल) की दलील ठहराया है.

(२१) यानी यह सारी चीज़ें पैदा करना और बनाना अल्लाह तआला के उस असीम इल्म की दलील है जो सारी चीज़ों को घेरे हुए है. क्योंकि ऐसी सृष्टि का पैदा करना, उसकी एक एक चीज़ की जानकारी के बिना मुमकिन नहीं. मरने के बाद ज़िन्दा होना काफ़िर लोग असम्भव मानते थे. इन आयतों में उनकी झूठी मान्यता पर मज़बूत दलील क़ायम फ़रमादी कि जब अल्लाह तआला क़ुदरत वाला (सक्षम) और जानकार है और शरीर के तत्व जमा होने और जीवन की योग्यता भी रखते हैं तो मौत के बाद ज़िन्दगी कैसे असंभव हो सकती है. आसमान और ज़मीन की पैदाइश के बाद अल्लाह तआला ने आसमान में फ़रिश्तों को और ज़मीन में जिन्नों को सुकूनत दी. जिन्नों ने फ़साद फैलाया तो फ़रिश्तों की एक जमाअत भेजी जिसने उन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया.

सूरए बक़रह - चौथा रुकू

(१) ख़लीफ़ा निर्देशों और आदेशों के जारी करने और दूसरे अधिकारों में अस्ल का नायब होता है. यहाँ ख़लीफ़ा से हज़रत आदम (अल्लाह की सलामती उनपर) मुराद हैं. अगरचे और सारे नबी भी अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा हैं. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के

فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنبَأَهُم بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا

को(नायब) करेगा जो उसमें फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहाएगा[२] और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह(जाप) करते हैं और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मालूम है जो तुम नहीं जानते[३]﴿३०﴾ और अल्लाह तआला ने आदम को सारी(चीज़ों के) नाम सिखाए[४] फिर सब (चीज़ों) को फ़रिश्तों पर पेश करके फ़रमाया सच्चे हो तो उनके नाम तो बताओ[५]﴿३१﴾ बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म और हिकमत वाला है[६]﴿३२﴾ फ़रमाया ऐ आदम बतादे उन्हें सब(चीज़ों के) नाम जब उसने(यानी आदम ने) उन्हें सब के नाम बता दिये[७] फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूँ आसमानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो[८]﴿३३﴾ और (याद करो) जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सिजदा करो तो सबने सिजदा किया सिवाए इबलीस (शैतान) के कि इन्कारी हुआ और घमंड किया और काफ़िर होगया[९]﴿३४﴾ और हमने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी बीवी इस जन्नत में रहो और खाओ इसमें से बे रोक टोक जहाँ तुम्हारा जी चाहे मगर उस पेड़ के पास न जाना[१०] कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे[११]﴿३५﴾ तो शैतान ने उससे(यानी जन्नत से) उन्हें लग़ज़िश(डगमगाहट) दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया[१२] और हमने फ़रमाया नीचे उतरो[१३]

बारे में फ़रमाया : *"या दाऊदो इन्ना जअलनाका ख़लीफ़तन फ़िलअर्दे"* (सूरए सॉद, आयत २६) यानी ऐ दाऊद, बेशक हमने तुझे ज़मीन में नायब किया, तो लोगों में सच्चा हुक्म कर.

फ़रिश्तों को हज़रत आदम की ख़िलाफ़त की ख़बर इसलिये दी गई कि वो उनके ख़लीफ़ा बनाए जाने की हिकमत (रहस्य) पूछ कर मालूम करलें और उनपर ख़लीफ़ा की बुज़ुर्गी और शान ज़ाहिर हो कि उनको पैदाइश से पहले ही ख़लीफ़ा का लक़ब अता हुआ और आसमान वालों को उनकी पैदाइश की ख़ुशख़बरी दी गई. इसमें बन्दों को तालीम है कि वो काम से पहले मशवरा किया करें और अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसको मशवरे की ज़रूरत हो.

(२) फ़रिश्तों का मक़सद एतिराज़ या हज़रत आदम पर लांछन नहीं, बल्कि ख़िलाफ़त का रहस्य मालूम करना है. और इन्सानों की तरफ़ फ़साद फैलाने की बात जोड़ना इसकी जानकारी या तो उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ से दी गई हो या लौहे मेहफ़ूज़ से प्राप्त हुई हो या ख़ुद उन्होंने जिन्नात की तुलना में अन्दाज़ा लगाया हो.

(३) यानी मेरी हिक्मतें (रहस्य) तुम पर ज़ाहिर नहीं. बात यह है कि इन्सानों में नबी भी होंगे, औलिया भी, उलमा भी, और वो इल्म और अमल दोनों एतिबार से फ़ज़ीलतों (महानताओं) के पूरक होंगे.

(४) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर तमाम चीज़ें और सारे नाम पेश फ़रमाकर उनके नाम, विशेषताएं, उपयोग, गुण इत्यादि सारी बातों की जानकारी उनके दिल में उतार दी.

(५) यानी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़लूक़ (प्राणी जीव) तुमसे ज़्यादा जगत में पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़त के तुम्हीं हक़दार हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्योंकि ख़लीफ़ा का काम तसर्रुफ़ (इख़्तियार) और तदबीर, इन्साफ़ और अदल है और यह बग़ैर इसके सम्भव नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों की जानकारी हो जिनपर उसको पूरा अधिकार दिया गया और जिनका उसको फ़ैसला करना है. अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के फ़रिश्तों पर अफ़ज़ल (उच्चतर) होने का कारण ज़ाहिरी इल्म फ़रमाया. इससे साबित हुआ कि नामों का इल्म अकेलेपन और तनहाइयों की इबादत से बेहतर है. इस आयत से यह भी साबित हुआ कि नबी फ़रिश्तों से ऊंचे हैं.

(६) इसमें फ़रिश्तों की तरफ़ से अपने इज्ज़ (लाचारी) और ग़लती का ऐतिराफ़ और इस बात का इज़हार है कि उनका सवाल केवल जानकारी हासिल करने के लिये था, न कि ऐतिराज़ की नियत से. और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत (बड़ाई) और उसकी पैदाइश का रहस्य मालूम हो गया जिसको वो पहले न जानते थे.

(७) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हर चीज़ का नाम और उसकी पैदाइश का राज़ बता दिया. सज

(८) फ़रिश्तों ने जो बात ज़ाहिर की थी वह यह थी कि इन्सान फ़साद फैलाएगा, ख़ून ख़राबा करेगा और जो बात छुपाई थी वह यह थी कि ख़िलाफ़त के हक़दार वो ख़ुद हैं और अल्लाह तआला उनसे ऊंची और जानकार कोई मख़लूक़ पैदा न फ़रमाएगा. इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इल्म की बड़ाई साबित होती है और यह भी कि अल्लाह तआला की तरफ़ तालीम की निस्बत करना सही है. अगरचे उसको मुअल्लिम (उस्ताद) न कहा जाएगा, क्योंकि उस्ताद पेशावर तालीम देने वाले को कहते हैं . इससे यह भी मालूम हुआ कि सारे शब्दकोष, सारी ज़बानें अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं. यह भी साबित हुआ कि फ़रिश्तों के इल्म और कमालात में बढ़ौत्री होती है.

(९) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सारी सृष्टि का नमूना और रूहानी व जिस्मानी दुनिया का मजमूआ बनाया और फ़रिश्तों के लिये कमाल हासिल करने का साधन किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि हज़रत आदम को सज्दा करें क्योंकि इसमें शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) और हज़रत आदम के बड़प्पन के एतिराफ़ और अपने कथन की माफ़ी की शान पाई जाती है. कुछ विद्वानों ने कहा है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को पैदा करने से पहले ही सज्दे का हुक्म दिया था, उसकी सनद (प्रमाण) यह आयत है : " फ़ इज़ा सब्बैतुहू व नफ़ख़्तो फ़ीहे मिर रूही फ़क़ऊ लहू साजिदीन " (सूरए अल-हिजर, आयत २९) यानी फिर जब मैं उसे ठीक बनालूं और उसमें अपनी तरफ़ की ख़ास इज़्ज़त वाली रूह फूंकूं तो तुम उसके लिये सज्दे में गिरना. (बैज़ावी). सज्दे का हुक्म सारे फ़रिशतों को दिया गया था, यही सब से ज़्यादा सही है. (ख़ाज़िन) सज्दा दो तरह का होता है एक इबादत का सज्दा जो पूजा के इरादे से किया जाता है, दुसरा आदर का सज्दा जिससे किसी की ताज़ीम मंज़ूर होती है न कि इबादत. इबादत का सज्दा अल्लाह तआला के लिए ख़ास है, किसी और के लिये नहीं हो सकता न किसी शरीअत में कभी जायज़ हुआ. यहाँ जो मुफ़स्सिरीन इबादत का सज्दा मुराद लेते हैं वो फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास अल्लाह तआला के लिऐ था और हज़रत आदम क़िबला बनाए गए थे. मगर यह तर्क कमज़ोर है क्योंकि इस सज्दे से हज़रत आदम का बड़प्पन, उनकी बुज़ुर्गी और महानता ज़ाहिर करना मक़सूद थी. जिसे सज्दा किया जाए उस का सज्दा करने वाले से उत्तम होना कोई ज़रूरी नहीं, जैसा कि काबा हुज़ुर सैयदुल अंबिया का क़िबला और मस्जूद इलैह (अर्थात जिसकी तरफ़ सज्दा हो) है, जब कि हुज़ूर उससे अफ़ज़ल (उत्तम) हैं. दूसरा कथन यह है कि यहाँ इबादत का सज्दा न था बल्कि आदर का सज्दा था और ख़ास हज़रत आदम के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रखकर था न कि सिर्फ़ झुकना. यही कथन सही है, और इसी पर सर्वानुमति है. (मदारिक). आदर का सज्दा पहली शरीअत में जायज़ था, हमारी शरीअत में मना किया गया. अब किसी के लिये जायज़ नहीं क्योंकि जब हज़रत सलमान (अल्लाह उनसे राज़ी हो) ने हूज़ुर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सज्दा करने का इरादा किया तो हूज़ुर ने फ़रमाया मख़लूक़ को न चाहिये कि अल्लाह के सिवा किसीको सज्दा करे. (मदारिक). फ़रिश्तों में सबसे पहले सज्दा करने वाले हज़रत जिब्रील हैं, फिर मीकाईल, फिर इसराफ़ील, फिर इज़्राईल, फिर और क़रीबी फ़रिश्ते. यह सज्दा शुक्रवार के रोज़ ज़वाल के वक़्त से अस्र तक किया गया. एक कथन यह भी है कि क़रीबी फ़रिश्ते सौ बरस और एक कथन में पाँच सौ बरस सज्दे में रहे. शैतान ने सज्दा न किया और घमण्ड के तौर पर यह सोचता रहा कि वह हज़रत आदम से उच्चतर है, और उसके लिये सज्दे का हुक्म (मआज़ल्लाह) हिक्मत (समझदारी) के ख़िलाफ़ है. इस झूटे अक़ीदे से वह काफ़िर हो गया. आयत में साबित है कि हज़रत आदम फ़रिश्तों से ऊपर हैं कि उनसे उन्हें सज्दा कराया गया. घमण्ड बहुत बुरी चीज़ है. इससे कभी घमण्डी की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है. (बैज़ावी और जुमल)

(१०) इससे गेहूँ या अंगूर वग़ैरह मुराद हैं. (जलालैन)

(११) ज़ुल्म के मानी हैं किसी चीज़ को बे-महल वज़अ करना. यह मना है. और अंबियाए किराम मासूम हैं, उनसे गुनाह सरज़द नहीं होता. और अंबियाए किराम को ज़ालिम कहना उनकी तौहीन और कुफ़्र है, जो कहे वह काफ़िर हो जाएगा. अल्लाह तआला मालिक व मौला है जो चाहे फ़रमाए, इसमें उनकी इज़्ज़त है. दूसरे की क्या मजाल कि अदब के ख़िलाफ़ कोई बात ज़बान पर लाए और अल्लाह तआला के कहे को अपने लिये भी मुनासिब जाने. हमें अदब, इज़्ज़त, फ़रमाँबरदारी का हुक्म फ़रमाया, हम पर यही लाज़िम है.

(१२) शैतान ने किसी तरह हज़रत आदम और हव्वा के पास पहुंचकर कहा, क्या मैं तुम्हें जन्नत का दरख़्त बता दूँ ? हज़रत आदम ने इन्कार किया. उसने क़सम खाई कि में तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ. उन्हें ख़याल हुआ कि अल्लाह पाक की झूठी क़सम कौन खा सकता है. इस ख़याल से हज़रत हव्वा ने उसमें से कुछ खाया फिर हज़रत आदम को दिया, उन्होंने भी खाया. हज़रत आदम को ख़याल हुआ कि *"ला तक़रबा"* (इस पेड़ के पास न जाना) की मनाही तन्ज़ीही (हल्की ग़ल्ती) है, तहरीमी नहीं क्योंकि अगर वह हराम के अर्थ में समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अंबिया मासूम होते हैं. यहाँ हज़रत आदम से इज्तिहाद (फैसला) में ग़लती हुई और इज्तिहाद की ग़लती गुनाह नहीं होती.

(१३) हज़रत आदम और हव्वा और उनकी औलाद को जो उनके सुल्ब (पुश्त) में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुआ. हज़रत आदम हिन्द की धरती पर सरअन्दीप (मौजूदा श्रीलंका) के पहाड़ों पर और हज़रत हव्वा जिद्दा में उतारे गए (ख़ाज़िन). हज़रत आदम की बरकत से ज़मीन के पेड़ों में पाकीज़ा ख़ुश्बू पैदा हुई. (रूहुल बयान)

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ
إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ
إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا
فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾
يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾ وَ
آمِنُوا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ
كَافِرٍ بِهِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ
فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا
الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا
الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ

आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है[१४]《३६》 फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे (शब्द) तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़ुबूल की[१५] बेशक वही है बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान《३७》 हमने फ़रमाया तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पालन करने वाला हुआ उसे न कोई अन्देशा न कुछ ग़म[१६]《३८》 और वो जो कुफ़्र और मेरी आयतें झुटलाएंगे वो दोज़ख़ वाले हैं उनको हमेशा उस में रहना《३९》

पाँचवां रूकू

ऐ याक़ूब की सन्तान[१] याद करो मेरा वह एहसान जो मैं ने तुमपर किया[२] और मेरा अहद पूरा करो मैं तुम्हारा अहद पूरा करूंगा[३] और ख़ास मेरा ही डर रखो[४]《४०》 और ईमान लाओ उसपर जो मैं ने उतारा उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करता हुआ जो तुम्हारे साथ है और सबसे पहले उसके मुनकिर यानी इन्कार करने वाले न बनो[५] और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो[६] और मुझी से डरो《४१》 और हक़ (सत्य) से बातिल (झूठ) को न मिलाओ और जान बूझकर हक़ न छुपाओ《४२》 और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और रूकू करने वालों (झुकने वालों) के साथ रूकू करो[७]《४३》 क्या लोगों को भलाई

(१४) इससे उम्र का अन्त यानी मौत मुराद है. और हज़रत आदम के लिए बशारत है कि वह दुनिया में सिर्फ़ उतनी मुद्दत के लिये हैं उसके बाद उन्हें जन्नत की तरफ़ लौटना है और आपकी औलाद के लिये मआद (आख़िरत) पर दलालत है कि दुनिया की ज़िन्दगी निश्चित समय तक है. उम्र पूरी होने के बाद उन्हें आख़िरत की तरफ़ पलटना है.

(१५) आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद तीन सौ बरस तक हया (लज्जा) से आसमान की तरफ़ सर न उठाया, अगरचे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बहुत रोने वाले थे, आपके आँसू तमाम ज़मीन वालों के आँसूओं से ज़्यादा हैं, मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इतना रोए कि आप के आँसू हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और तमाम ज़मीन वालों के आँसुओं के जोड़ से बढ़ गए (ख़ाज़िन). तिब्रानी, हाकिम, अबूनईम और बैहक़ी ने हज़रत अली मुर्तज़ा (अल्लाह उनसे राज़ी रहे) से मरफ़ूअन रिवायत की है कि जब हज़रत आदम पर इताब हुआ तो आप तौबह की फ़िक्र में हैरान थे. इस परेशानी के आलम में याद आया कि पैदाइश के वक़्त मैं ने सर उठाकर देखा था कि अर्श पर लिखा है **"ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह"** मैं समझा था कि अल्लाह की बारगाह में वह रूत्बा किसी को हासिल नहीं जो हज़रत मुहम्मद (अल्लाह के दुरूद हों उनपर और सलाम) को हासिल है कि अल्लाह तआला ने उनका नाम अपने पाक नाम के साथ अर्श पर लिखवाया. इसलिये आपने अपनी दुआ में **"रब्बना ज़लमना अन्फ़ुसना व इल्लम तग़फ़िर लना व तरहमना लनकूनन्ना मिनल ख़ासिरीन."** यानी ऐ रब हमारे हमने अपना आप बुरा किया तो अगर तू हमें न बख़्शे और हमपर रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़सान वालों में हुए. (सूरए अअराफ़, आयत २३) के साथ यह अर्ज़ किया **"अस अलुका बिहक़्क़े मुहम्मदिन अन तग़फ़िर ली"** यानी ऐ अल्लाह मैं मुहम्मद के नाम पर तुझसे माफ़ी चाहता हूँ. इब्ने मुन्ज़र की रिवायत में ये कलिमे हैं ***"अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका बिजाहे मुहम्मदिन अब्दुका व करामतुहू अलैका व अन तग़फ़िर ली ख़तीअती"*** यानी यारब मैं तुझ से तेरे ख़ास बन्दे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इज़्ज़त और मर्तबे के तुफ़ैल में, और उस बुज़ुर्गी के सदक़े में, जो उन्हें तेरे दरबार में हासिल है, मग़फ़िरत चाहता हूँ". यह दुआ करनी थी कि हक़ तआला ने उनकी मग़फ़िरत फ़रमाई. इस रिवायत से साबित है कि अल्लाह के प्यारों के वसीले से दुआ ***उनके नाम पर, उनके वसीले से*** कहकर मांगना जायज़ है. और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है. अल्लाह तआला पर किसी का हक़ (अधिकार) अनिवार्य नहीं होता लेकिन वह अपने प्यारों को अपने फ़ज़्ल और करम से हक़ देता है. इसी हक़ के वसीले से दुआ की जाती है. सही हदीसों से यह हक़ साबित है जैसे आया ***"मन आमना बिल्लाहे व रसूलिही व अक़ामस सलाता व सौमा रमदाना काना हक़्क़न अलल्लाहे अैंय यदख़ुलल जन्नता"***. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह दसवीं मुहर्रम को क़ुबूल हुई. जन्नत से निकाले जाने के वक़्त और नेअमतों के साथ अरबी ज़बान भी आप

से सल्ब कर ली गई थी उसकी जगह ज़बाने मुबारक पर सुरियानी जारी कर दी गई थी. तौबह क़ुबूल होने के बाद फ़िर अरबी ज़बान अता हुई. (फ़तहुल अज़ीज़) तौबह की अस्ल अल्लाह की तरफ़ पलटना है. इसके तीन भाग हैं- एक ऐतिराफ़ यानी अपना गुनाह तस्लीम करना, दूसरे निदामत यानी गुनाह की शर्म, तीसरे कभी गुनाह न करने का एहद. अगर गुनाह तलाफ़ी (प्रायश्चित) के क़ाबिल हो तो उसकी तलाफ़ी भी लाज़िम है. जैसे नमाज़ छोड़ने वाले की तौबह के लिये पिछली नमाज़ों का अदा करना अनिवार्य है. तौबह के बाद हज़रत जिब्रील ने ज़मीन के तमाम जानवरों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त का ऐलान किया और सब पर उनकी फ़रमाँबरदारी अनिवार्य होने का हुक्म सुनाया. सबने हुक्म मानने का इज़हार किया. (फ़त्हुल अज़ीज़)
(१६) यह ईमान वाले नेक आदमियों के लिये ख़ुशख़बरी है कि न उन्हें बड़े हिसाब के वक़्त ख़ौफ़ हो और न आख़िरत में ग़म. वो बेग़म जन्नत में दाख़िल होंगे.

सूरए बक़रह - पाँचवां रूकू

(१) इस्राईल यानी अब्दुल्लाह, यह इब्रानी ज़बान का शब्द है. यह हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है.(मदारिक). कल्बी मुफ़स्सिर ने कहा अल्लाह तआला ने *"या अय्युहन्नासोअ बुदू"* (ऐ लोगो इबादत करो) फ़रमाकर पहले सारे इन्सानों को आम दावत दी, फिर *"इज़क़ाला रब्बुका"* फ़रमाकर उनके मुब्दअ का ज़िक्र किया. इसके बाद ख़ुसूसियत के साथ बनी इस्राईल को दावत दी. ये लोग यहूदी हैं और यहाँ से "सयक़ूल" तक उनसे कलाम जारी है. कभी ईमान की याद दिलाकर दावत की जाती है, कभी डर दिलाया जाता है, कभी हुज्जत (तर्क) क़ायम की जाती है, कभी उनकी बदअमली पर फटकारा जाता है, कभी पिछली मुसीबतों का ज़िक्र किया जाता है.
(२) यह एहसान कि तुम्हारे पूर्वजों को फ़िरऔन से छुटकारा दिलाया, दरिया को फाड़ा, अब्र को सायबान किया. इनके अलावा और एहसानात, जो आगे आते हैं, उन सब को याद करो. और याद करना यह है कि अल्लाह तआला की बन्दगी और फ़रमाँबरदारी करके शुक्र बजा लाओ क्योंकि किसी नेअमत का शुक्र न करना ही उसका भुलाना है.
(३) यानी तुम ईमान लाकर और फ़रमाँबरदारी करके मेरा एहद पूरा करो, मैं नेक बदला और सवाब देकर तुम्हारा एहद पूरा करूंगा. इस एहद का बयान आयत : **"व लक़द अख़ज़ल्लाहो मीसाक़ा बनी इस्राईला"** यानी और बेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से एहद लिया.(सूरए मायदा, आयत १२) में है.
(४) इस आयत में नेअमत का शुक्र करने और एहद पूरा करने के वाजिब होने का बयान है और यह भी कि मूमिन को चाहिये कि अल्लाह के सिवा किसी से न डरे.
(५) यानी क़ुरआने पाक और तौरात और इंजील पर, जो तुम्हारे साथ हैं, ईमान लाओ और किताब वालों में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तिबाअ (अनुकरण) में कुफ़्र करे उसका वबाल भी तुम पर हो.
(६) इन आयतों से तौरात व इंजील की वो आयतें मुराद हैं जिन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और बड़ाई है. मक़सद यह है कि हुज़ूर की नअत या तारीफ़ दुनिया की दौलत के लिये मत छुपाओ कि दुनिया का माल छोटी पूंजी और आख़िरत की नेअमत के मुक़ाबले में बे हक़ीक़त है.

यह आयत कअब बिन अशरफ़ और यहूद के दूसरे रईसों और उलमा के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके वुसूल कर लेते और उनपर सालाने मुक़र्रर करते थे और उन्होंने फलों और नक़्द माल में अपने हक़ ठहरा लिये थे. उन्हें डर हुआ कि तौरात में जो हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत और सिफ़त (प्रशंसा) है, अगर उसको ज़ाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएगी और उन्हें कोई पूछने वाला न होगा. ये तमाम फ़ायदे और मुनाफ़े जाते रहेंगे. इसलिये उन्होंने अपनी किताबों में बदलाव किया और हुज़ूर की पहचान और तारीफ़ को बदल डाला. जब उनसे लोग पूछते कि तौरात में हुज़ूर की क्या विशेषताएं दर्ज हैं तो वो छुपा लेते और हरगिज़ न बताते. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन वग़ैरह)
(७) इस आयत में नमाज़ और ज़कात के फ़र्ज़ होने का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उनके हुक़ूक़ (संस्कारों) के हिसाब से अदा करो. जमाअत (सामूहिक नमाज़) की तर्ग़ीब भी है. हदीस शरीफ़ में है जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से सत्ताईस दर्जे ज़्यादा फ़ज़ीलत (पुण्य) रखता है.

بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا
لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ
اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ وٰعَدْنَا
مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ

का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[८] ﴾४४﴿ और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उनपर (नहीं) जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं[९] ﴾४५﴿ जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ़ फिरना[१०] ﴾४६﴿

छटा रूकू

ऐ यअक़ूब की सन्तान, याद करो मेरा वह अहसान जो मैं ने तुमपर किया और यह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी[१] ﴾४७﴿ और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला न हो सकेगी[२] और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ लेकर उसकी जान छोड़ी जाए और न उनकी मदद हो[३] ﴾४८﴿ और (याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी (छुटकारा दिलाया)[४] कि तुमपर बुरा अज़ाब करते थे[५] तुम्हारे बेटों को ज़िब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते[६] और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी बला थी या बड़ा इनाम[७] ﴾४९﴿ और जब हमने तुम्हारे लिये दरिया फ़ाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया. और फ़िरऔन वालों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया[८] ﴾५०﴿ और जब हमने मूसा से चालीस रात का वादा फ़रमाया फिर उसके पीछे तुमने बछड़े

(८) यहूदी उलमा से उनके मुसलमान रिश्तेदारों ने इस्लाम के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा तुम इस दीन पर क़ायम रहो. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन भी सच्चा और कलाम भी सच्चा. इसपर यह आयत उतरी. एक कथन यह है कि आयत उन यहूदियों के बारे में उतरी जिन्होंने अरब मुश्रिकों को हुज़ूर के नबी होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर का इत्तिबा (अनुकरण) करने की हिदायत की थी. फिर जब हुज़ूर की नबुव्वत ज़ाहिर होगई तो ये हिदायत करने वाले हसद (ईर्ष्या) से ख़ुद काफ़िर हो गए. इसपर उन्हें फटकारा गया. (ख़ाज़िन व मदारिक)

(९) यानी अपनी ज़रूरतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो. सुबहान अल्लाह, क्या पाकीज़ा तालीम है. सब्र मुसीबतों का अख़्लाक़ी मुक़ाबला है. इन्सान इन्साफ़ और सत्यमार्ग के संकल्प पर इसके बिना क़ायम नहीं रह सकता. सब्र की तीन क़िस्में हैं - (१) तकलीफ़ और मुसीबत पर नफ़्स को रोकना, (२) ताअत (फ़रमाँबरदारी) और इबादत की मशक़्क़तों में मुस्तक़िल (अडिग) रहना, (३) गुनाहों की तरफ़ खिंचने से तबीअत को रोकना. कुछ मुफ़स्सिरों ने यहाँ सब्र से रोज़ा मुराद लिया है. वह भी सब्र का एक अन्दाज़ है. इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ मदद की तालीम भी फ़रमाई क्योंकि वह बदन और नफ़्स की इबादत का संगम है और उसमें अल्लाह की नज़्दीकी हासिल होती है. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अहम कामों के पेश आने पर नमाज़ में मशग़ूल हो जाते थे. इस आयत में यह भी बताया गया कि सच्चे ईमान वालों के सिवा औरों पर नमाज़ भारी पड़ती है.

(१०) इसमें ख़ुशख़बरी है कि आख़िरत में मूमिनों को अल्लाह के दीदार की नेअमत मिलेगी.

सूरए बक़रह - छटा रूकू

(१) *अलआलमीन* (सारे ज़माने पर) उसके वास्तविक या हक़ीक़ी मानी में नहीं. इससे मुराद यह है कि मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को उनके ज़माने वालों पर बुज़ुर्गी दी. यह बुज़ुर्गी किसी विशेष क्षेत्र में हो सकती है, जो और किसी उम्मत की बुज़ुर्गी को कम नहीं कर सकती. इसी लिये उम्मते मुहम्मदिया के बारे में इरशाद हुआ *"कुन्तुम ख़ैरा उम्मतिन"* यानी तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई (सूरए आले इमरान, आयत ११०). (रूहुल बयान, जुमल वग़ैरह)

(२) वह क़यामत का दिन है. आयत में नफ़्स दो बार आया है, पहले से मूमिन का नफ़्स, दूसरे से काफ़िर मुराद है. (मदारिक)

(३) यहाँ से रूकू के आख़िर तक दस नेअमतों का बयान है जो इन बनी इस्राईल के बाप दादा को मिलीं.

(४) क़िब्त और अमालीक़ की क़ौम से जो मिस्र का बादशाह हुआ, उस को फ़िरऔन कहते हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के फ़िरऔन का नाम वलीद बिन मुसअब बिन रैयान है. यहाँ उसी का ज़िक्र है. उसकी उम्र चार सौ बरस से ज़्यादा हुई. आले

وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ
الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ
فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى
اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَ
ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ
كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا

منزل ١

की पूजा शुरू कर दी और तुम ज़ालिम थे[९] ﴿५१﴾ फिर उसके बाद हमने तुम्हें माफ़ी दी[१०] कि कहीं तुम अहसान मानो[११] ﴿५२﴾ और जब हमने मूसा को किताब दी और सत्य और असत्य में पहचान कर देना कि कहीं तुम राह पर आओ ﴿५३﴾ और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुमने बछड़ा बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ लौट आओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो.[१२] यह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उसने तुम्हारी तौबह क़ुबूल की, बेशक वही है बहुत तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान[१३] ﴿५४﴾ और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़(कदाचित) तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक खुले बन्दों ख़ुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे ﴿५५﴾ फिर मरे पीछे हमने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो ﴿५६﴾ और हमने बादल को तुम्हारा सायबान किया[१४] और तुमपर मन्न और सलवा उतारा, खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें[१५] और उन्होंने कुछ हमारा न बिगाड़ा, हाँ अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे ﴿५७﴾ और जब हमने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ[१६] फिर उसमें जहां चाहो, बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सजदा करते

फ़िरऔन से उसके मानने वाले मुराद हैं. (जुमल वग़ैरह)

(५) अज़ाब सब बुरे होते हैं "सूअल अज़ाब" वह कहलाएगा जो और अज़ाबों से ज़्यादा सख़्त हो. इसलिये आला हज़रत ने "बुरा अज़ाब" अनुवाद किया. फ़िरऔन ने बनी इस्राईल पर बड़ी बेदर्दी से मेहनत व मशक़्क़त के दुश्वार काम लाज़िम किये थे. पत्थरों की चट्टानें काटकर ढोते ढोते उनकी कमरें गर्दनें ज़ख़्मी हो गई थीं . ग़रीबों पर टैक्स मुक़र्रर किये थे जो सूरज डूबने से पहले ज़बरदस्ती वुसूल किये जाते थे. जो नादार किसी दिन टैक्स अदा न कर सका, उसके हाथ गर्दन के साथ मिलाकर बाँध दिये जाते थे, और महीना भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था, और तरह तरह की सख़्तियाँ निर्दयता के साथ की जाती थीं. (ख़ाज़िन वग़ैरह)

(६) फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़्दिस की तरफ़ से आग आई उसने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्तियों को जला डाला, बनी इस्राईल को कुछ हानि न पहुंचाई . इससे उसको बहुत घबराहट हुई . काहिनों (तांत्रिकों) ने ख़्वाब की तअबीर (व्याख्या) में बताया कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरी मौत और तेरी सल्तनत के पतन का कारण होगा . यह सुनकर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो, क़त्ल कर दिया जाए . दाइयाँ छान बीन के लिये मुक़र्रर हुई . बारह हज़ार और दूसरे कथन के अनुसार सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नब्बे हज़ार हमल (गर्भ) गिरा दिये गये . अल्लाह की मर्ज़ी से इस क़ौम के बूढ़े जल्द मरने लगे . क़िब्ती क़ौम के सरदारों ने घबराकर फ़िरऔन से शिकायत की कि बनी इस्राईल में मौत की गर्मबाज़ारी है इसपर उनके बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं, तो हमें सेवा करने वाले कहाँ से मिलेंगे . फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़े जाएं . तो जो साल छोड़ने का था उसमें हज़रत हारून पैदा हुए, और क़त्ल के साल हज़रत मूसा की पैदाइश हुई .

(७) बला इम्तिहान और आज़माइश को कहते हैं. आज़माइश नेअमत से भी होती है और शिद्दत व मेहनत से भी. नेअमत से बन्दे की शुक्रगुज़ारी, और मेहनत से उसके सब्र (संयम और धैर्य) का हाल ज़ाहिर होता है. अगर "ज़ालिकुम" (और इसमें) का इशारा फ़िरऔन के मज़ालिम (अत्याचारों) की तरफ़ हो तो बला से मेहनत और मुसीबत मुराद होगी, और अगर इन अत्याचारों से नजात देने की तरफ़ हो, तो नेअमत.

(८) यह दूसरी नेअमत का बयान है जो बनी इस्राईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔन वालों के ज़ुल्म और सितम से नजात दी और फ़िरऔन को उसकी क़ौम समेत उनके सामने डुबो दिया. यहाँ आले फ़िरऔन (फ़िरऔन वालों) से फ़िरऔन और उसकी क़ौम दोनों मुराद हैं . जैसे कि *"कर्रमना बनी आदमा"* यानी और बेशक हमने औलादे आदम को इज़्ज़त दी(सूरए इसरा, आयत ७०) में हज़रत आदम और उनकी औलाद दोनों शामिल हैं. (जुमल). संक्षिप्त वाक़िआ यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से

रात में बनी इस्राईल को मिस्र से लेकर रवाना हुए. सुब्ह को फ़िरऔन उनकी खोज में भारी लश्कर ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा लिया. बनी इस्राईल ने फ़िरऔन का लश्कर देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रियाद की. आपने अल्लाह के हुक्म से दरिया में अपनी लाठी मारी, उसकी बरकत से दरिया में बारह ख़ुश्क रास्ते पैदा हो गए. पानी दीवारों की तरह खड़ा हो गया. उन दीवारों में जाली की तरह रौशनदान बन गए. बनी इस्राईल की हर जमाअत इन रास्तों में एक दूसरे को देखती और आपस में बातें करती गुज़र गई. फ़िरऔन दरियाई रास्ते देखकर उनमें चल पड़ा. जब उसका सारा लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया जैसा था वैसा हो गया और तमाम फ़िरऔनी उसमें डूब गए. दरिया की चौड़ाई चार फ़रसंग थी. ये घटना बेहरे क़ुलज़ुम की है जो बेहरे फ़ारस के किनारे पर है, या बेहरे मा-वराए मिस्र की, जिसको असाफ़ कहते हैं. बनी इस्राईल दरिया के उस पार फ़िरऔनी लश्कर के डूबने का दृश्य देख रहे थे. यह वाक़िआ दसवीं मुहर्रम को हुआ. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उस दिन शुक्र का रोज़ा रखा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक भी यहूदी इस दिन का रोज़ा रखते थे. हुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की विजय की ख़ुशी मनाने और उसकी शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूदियों से ज़्यादा हक़दार हैं. इस से मालूम हुआ कि दसवीं मुहर्रम यानी आशुरा का रोज़ा सुन्नत है. यह भी मालूम हुआ कि नबियों पर जो इनाम अल्लाह का हुआ उसकी यादगार क़ायम करना और शुक्र अदा करना अच्छी बात है . यह भी मालूम हुआ कि ऐसे कामों में दिन का निशिचत किया जाना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत है. यह भी मालूम हुआ कि नबियों की यादगार अगर काफ़िर लोग भी क़ायम करते हों जब भी उसको छोड़ा न जाएगा.

(९) फ़िरऔन और उसकी क़ौम के हलाक हो जाने के बाद जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को लेकर मिस्र की तरफ़ लौटे और उनकी प्रार्थना पर अल्लाह तआला ने तौरात अता करने का वादा फ़रमाया और इसके लिये मीक़ात निशिचत किया जिसकी मुद्दत बढ़ौतरी समेत एक माह दस दिन थी यानी एक माह ज़िलक़ाद और दस दिन ज़िलहज के. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम में अपने भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा व जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाकर, तौरात हासिल करने तूर पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए, चालीस रात वहाँ ठहरे . इस अर्से में किसी से बात न की. अल्लाह तआला ने ज़बरजद की तख़्तियों में, आप पर तौरात उतारी . यहाँ सामरी ने सोने का जवाहरात जड़ा बछड़ा बनाकर क़ौम से कहा कि यह तुम्हारा माबूद है. वो लोग एक माह हज़रत का इन्तिज़ार करके सामरी के बहकाने पर बछड़ा पूजने लगे, सिवाए हज़रत हारून अलैहिस्सलाम और आपके बारह हज़ार साथियों के तमाम बनी इस्राईल ने बछड़े को पूजा. (ख़ाज़िन)

(१०) माफ़ी की कैफ़ियत (विवरण) यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तौबह की सूरत यह है कि जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की है, वो पूजा करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम राज़ी ख़ुशी क़त्ल हो जाएं. वो इसपर राज़ी हो गए. सुबह से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए तब हज़रत मूसा और हज़रत हारून ने गिड़गिड़ा कर अल्लाह से अर्ज़ की. *वही* (देववाणी) आई कि जो क़त्ल हो चुके वो शहीद हुए, बाक़ी माफ़ फ़रमाए गए. उनमें के क़ातिल और क़त्ल होने वाले सब जन्नत के हक़दार हैं. शिर्क से मुसलमान मुर्तद (अधर्मी) हो जाता है. मुर्तद की सज़ा क़त्ल है क्योंकि अल्लाह तआला से बग़ावत क़त्ल और रक्तपात से भी सख़्ततर जुर्म है. बछड़ा बनाकर पूजने में बनी इस्राईल के कई जुर्म थे. एक मूर्ति बनाना जो हराम है, दूसरे हज़रत हारून यानी एक नबी की नाफ़रमानी, तीसरे बछड़ा पूजकर मुश्रिक (मूर्ति पूजक) होजाना. यह ज़ुल्म फ़िरऔन वालों के ज़ुल्मों से भी ज़्यादा बुरा है. क्योंकि ये काम उनसे ईमान के बाद सरज़द हुए, इसलिये हक़दार तो इसके थे कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें मुहलत न दे, और फ़ौरन हलाकत से कुफ़्र पर उनका अन्त हो जाए लेकिन हज़रत मूसा और हज़रत हारून की बदौलत उन्हें तौबह का मौक़ा दिया गया. यह अल्लाह तआला की बड़ी कृपा है.

(११) इसमें इशारा है कि बनी इस्राईल की सलाहियत फ़िरऔन वालों की तरह बातिल नहीं हुई थी और उनकी नस्ल से अच्छे नेक लोग पैदा होने वाले थ. यही हुआ भी, बनी इस्राईल में हज़ारों नबी और नेक गुणवान लोग पैदा हुए.

(१२) यह क़त्ल उनके कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) के लिये था.

(१३) जब बनी इस्राईल ने तौबह की और प्रायश्चित में अपनी जानें दे दीं तो अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें बछड़े की पूजा की माफ़ी माँगने के लिये हाज़िर लाएं. हज़रत उनमें से सत्तर आदमी चुनकर तूर पहाड़ पर ले गए. वो कहने लगे- ऐ मूसा, हम आपका यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को रूबरू न देख लें. इसपर आसमान से एक भयानक आवाज़ आई जिसकी हैबत से वो मर गए. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने गिड़गिड़ाकर अर्ज की कि ऐ मेरे रब, मैं बनी इस्राईल को क्या जवाब दूंगा. इसपर अल्लाह तआला ने उन्हें एक के बाद एक ज़िन्दा फ़रमाया. इससे नबियों की शान मालूम होती है कि हज़रत मूसा से *"लन नूमिना लका"* (ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे) कहने की सज़ा में बनी इस्राईल हलाक किये गए. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के एहद वालों को आगाह किया जाता है कि नबियों का निरादर करना अल्लाह के प्रकोप का कारण बनता है, इससे डरते रहें. यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला अपने प्यारों की दुआ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमा देता है.

(१४) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़ारिग़ होकर बनी इस्राईल के लश्कर में पहुंचे और आपने उन्हें अल्लाह का हुक्म सुनाया कि मुल्के शाम हज़रत इब्राहीम और उनकी औलाद का मदफ़न (अन्तिम आश्रय स्थल) है, उसी में बैतुल मक़दिस है. उसको अमालिक़ा से आज़ाद कराने के लिए जिहाद करो और मिस्र छोड़कर वहीं अपना वतन बनाओ. मिस्र का छोड़ना बनी इस्राईल पर बड़ा भारी था. पहले तो वो काफ़ी आगे पीछे हुए और जब अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से मजबूर होकर हज़रत हारून और हज़रत मूसा के साथ रवाना हुए तो रास्ते में जो कठिनाई पेश आती, हज़रत मूसा से शिकायतें करते. जब उस सहरा (मरुस्थल) में

وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۭ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ
رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ
قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ
قِثَّآىِٕهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۭ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ
الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ۭ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ
لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ۭ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۤ
وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

दाख़िल हो[१७] और कहो हमारे गुनाह माफ़ हों हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़्यादा दें[१८] (५८) तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उसके सिवा[१९] तो हमने आसमान से उनपर अज़ाब उतारा[२०] बदला उनकी बे हुकमी का (५९)

सातवाँ रूकू

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हमने फ़रमाया इस पत्थर पर अपनी लाठी मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले.[१] हर समूह ने अपना घाट पहचान लिया, खाओ और पियो ख़ुदा का दिया[२] और ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो[३] (६०) और जब तुम ने कहा ऐ मूसा[४] हम से तो एक खाने पर[५] कभी सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज़. फ़रमाया क्या मामूली चीज़ को बेहतर के बदले मांगते हो[६] अच्छा मिस्र[७] या किसी शहर में उतरो वहाँ तुम्हें मिलेगा जो तुम ने मांगा[८] और उनपर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी (ज़िल्लत) और नादारी[९] (या दरिद्रता) और ख़ुदा के ग़ज़ब में लौटे[१०] ये बदला था

पहुँचे जहाँ हरियाली थी न छाया, न ग़ल्ला साथ था. वहाँ धूप की तेज़ी और भूख की शिकायत की. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की दुआ से सफ़ेद बादल को उनके सरों पर छा दिया जो दिन भर उनके साथ चलता. रात को उनके लिए प्रकाश का एक सुतून (स्तम्भ) उतरता जिसकी रौशनी में काम करते. उनके कपड़े मैले और पुराने न होते, नाख़ुन और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो बच्चा पैदा होता उसका लिबास उसके साथ पैदा होता, जितना वह बढ़ता, लिबास भी बढ़ता.

(१५) मन्न, तरंजबीन (दलिया) की तरह एक मीठी चीज़ थी, रोज़ाना सुब्ह पौ फटे सूरज निकलने तक हर आदमी के लिये एक साअ के बराबर आसमान से उतरती. लोग उसको चादरों में लेकर दिन भर खाते रहते. सलवा एक छोटी चिड़िया होती है. उसको हवा लाती. ये शिकार करके खाते. दोनों चीज़ें शनिवार को बिल्कुल न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं. शुक्रवार को और दिनों से दुगुनी आतीं. हुक्म यह था कि शुक्रवार को शनिवार के लिये भी ज़रूरत के अनुसार जमा करलो मगर एक दिन से ज़्यादा का न जमा करो. बनी इस्राईल ने इन नेअमतों की नाशुक्री की. भंडार जमा किये, वो सड़ गए और आसमान से उनका उतरना बन्द हो गया. यह उन्होंने अपना ही नुक़सान किया कि दुनिया में नेअमत से मेहरूम और आख़िरत में अज़ाब के हक़दार हुए.

(१६) "उस बस्ती" से बैतुल मक़दिस मुराद है या अरीहा जो बैतुल मक़दिस से क़रीब है, जिसमें अमालिक़ा आबाद थे और उसको ख़ाली कर गए. वहाँ ग़ल्ले मेवे की बहुतात थी.

(१७) यह दर्वाज़ा उनके लिये काबे के दर्जे का था कि इसमें दाख़िल होना और इसकी तरफ़ सज्दा करना गुनाहों के प्रायश्चित का कारण क़रार दिया गया.

(१८) इस आयत से मालूम हुआ कि ज़बान से माफ़ी मांगना और बदन की इबादत सज्दा वग़ैरह तौबह का पूरक है. यह भी मालूम हुआ कि मशहूर गुनाह की तौबह ऐलान के साथ होनी चाहिये. यह भी मालूम हुआ कि पवित्र स्थल जो अल्लाह की रहमत वाले हों, वहाँ तौबह करना और हुक्म बजा लाना नेक फलों और तौबह जल्द क़ुबूल होने का कारण बनता है. (फ़त्हुल अज़ीज़). इसी लिये बुज़ुर्गों का तरीक़ा रहा है कि नबियों और वलियों की पैदाइश की जगहों और उनके मज़ारात पर हाज़िर होकर तौबह और अल्लाह की बारगाह में सर झुकाते हैं . उर्स और दर्गाहों पर हाज़िरी में भी यही फ़ायदा समझा जाता है.

(१९) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि बनी इस्राईल को हुक्म हुआ था कि दर्वाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से *"हित्तुन"* यानी तौबह और माफ़ी का शब्द कहते जाएं. उन्होंने इन दोनों आदेशों के विरुद्ध किया . दाख़िल तो हुए पर चूतड़ों के बल घिसरते और तौबह के शब्द की जगह मज़ाक़ के अंदाज़ में *"हब्बतुन फ़ी शअरतिन"* कहा जिसके मानी हैं बाल में दाना.

(२०) यह अज़ाब ताऊन (प्लेग) था जिससे एक घण्टे में चौबीस हज़ार हलाक हो गए. यही हदीस की किताबों में है कि ताऊन पिछली उम्मतों के अज़ाब का शेष हिस्सा है. जब तुम्हारे शहर में फैले, वहाँ से न भागो. दूसरे शहर में हो तो ताऊन वाले शहर में न जाओ. सही हदीस में है कि जो लोग वबा के फैलने के वक़्त अल्लाह की मर्ज़ी पर सर झुकाए सब्र करें तो अगर वो वबा (महामारी)

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۞ وَاِذْ
اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ
اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۞
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۞ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا
قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ۞ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا

उसका कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते और नबियों को नाहक़ शहीद करते[११] ये बदला उनकी नाफ़रमानियों और हद से बढ़ने का﴾६१﴿

आठवाँ रूकू

बेशक ईमान वाले और यहूदियों और ईसाइयों और सितारों के पुजारियों में से वो कि सच्चे दिल से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं और नेक काम करें उन का सवाब (पुण्य) उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा (आशंका) हो और न कुछ ग़म[१]﴾६२﴿ और जब हमने तुमसे एहद लिया[२] और तुमपर तूर (पहाड़) को ऊंचा किया[३] और जो कुछ हम तुमको देते हैं ज़ोर से[४]और उसके मज़मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़गारी मिले﴾६३﴿ फिर उसके बाद तुम फिर गए तो अगर अल्लाह की कृपा और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम टोटे वालों में हों जाते[५]﴾६४﴿ और बेशक ज़रूर तुम्हें मालूम है तुम में के वो जिन्होंने हफ़्ते (शनिवार) में सरकशी की[६] तो हमने उनसे फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए﴾६५﴿ तो हमने (उस बस्ती का) ये वाक़िआ (घटना) उसके आगे और पीछे वालों के लिये इबरत कर दिया और परहेज़गारों के लिये नसीहत﴾६६﴿ और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़िब्ह करो[७]

से बच जाएं तो भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा.

सूरए बक़रह - सातवाँ रुकू

(१) जब बनी इस्राईल ने सफ़र में पानी न पाया तो प्यास की तेज़ी की शिकायत की. हज़रत मूसा को हुक्म हुआ कि अपनी लाठी पत्थर पर मारें. आपके पास एक चौकोर पत्थर था. जब पानी की ज़रूरत होती, आप उस पर अपनी लाठी मारते, उससे बारह चश्मे जारी हो जाते, और सब प्यास बुझाते. यह बड़ा मोजिज़ा (चमत्कार) है. लेकिन नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक उंगलियों से चश्मे जारी फ़रमाकर एक बड़ी जमाअत की प्यास और दूसरी ज़रूरतों को पूरा फ़रमाना इससे बहुत बड़ा और उत्तम चमत्कार है. क्योंकि मनुष्य के शरीर के किसी अंग से पानी की धार फूट निकलना पत्थर के मुक़ाबले में ज़्यादा आश्चर्य की बात है. (ख़ाज़िन व मदारिक)

(२) यानी आसमानी खाना मन्न व सलवा खाओ और पत्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें अल्लाह की कृपा से बिना परिश्रम उपलब्ध है.

(३) नेअमतों के ज़िक्र के बाद बनी इस्राईल की अयोग्यता, कम हिम्मती और नाफ़रमानी की कुछ घटनाएं बयान की जाती हैं.

(४) बनी इस्राईल की यह अदा भी बहुत बेअदबी की थी कि बड़े दर्जे वाले एक नबी को नाम लेकर पुकारा. या नबी, या रसूलल्लाह या और आदर का शब्द न कहा. (फ़त्हुल अज़ीज़). जब नबियों का ख़ाली नाम लेना बेअदबी है तो उनको मामूली आदमी और एलची कहना किस तरह गुस्ताख़ी न होगा. नबियों के ज़िक्र में ज़रा सी भी बेअदबी नाजायज़ है.

(५) 'एक खाने' से एक क़िस्म का खाना मुराद है.

(६) जब वो इसपर भी न माने तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की, हुक्म हुआ 'इहबितू' (उतरो).

(७) मिस्र अरबी में शहर को भी कहते हैं, कोई शहर हो और ख़ास शहर यानी मिस्र मूसा अलैहिस्सलाम का नाम भी है. यहाँ दोनों में से एक मुराद हो सकता है. कुछ का ख़याल है कि यहाँ ख़ास शहर मुराद नहीं हो सकता. मगर यह ख़याल सही नहीं है.

(८) यानी साग, ककड़ी वग़ैरह,हालांकि इन चीज़ों की तलब गुनाह न थी लेकिन मन्न व सलवा जैसी बेमेहनत की नेअमत छोड़कर उनकी तरफ़ खिंचना तुच्छ विचार है. हमेशा उन लोगों की तबीयत तुच्छ चीज़ों और बातों की तरफ़ खिंची रही और हज़रत हारून और हज़रत मूसा वग़ैरह बुज़ुर्गी वाले बलन्द हिम्मत नबियों के बाद बनी इस्राईल की बदनसीबी और कमहिम्मती पूरी तरह ज़ाहिर हुई

और जालूत के तसल्लुत (अधिपत्य) और बख़्ते नस्सर की घटना के बाद तो वो बहुत ही ज़लील व ख़्वार हो गए. इसका बयान *"दुरेबत अलैहिमुज़ ज़िल्लतु"* (और उनपर मुक़र्रर करदी गई ख़्वारी और नादारी) (सूरए आले ईमरान, आयत : ११२) में है.
(९) यहूद की ज़िल्लत तो यह कि दुनिया में कहीं नाम को उनकी सल्तनत नहीं और नादारी यह कि माल मौजूद होते हुए भी लालच की वजह से मोहताज ही रहते हैं.
(१०) नबियों और नेक लोगों की बदौलत जो रूत्बे उन्हें हासिल हुए थे उनसे मेहरूम हो गए. इस प्रकोप का कारण सिर्फ़ यही नहीं कि उन्होंने आसमानी ग़िज़ाओं के बदले ज़मीनी पैदावार की इच्छा की या उसी तरह और ख़ताएं जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में उनसे हुईं, बल्कि नबुव्वत के एहद से दूर होने और लम्बा समय गुज़रने से उनकी क्षमताएं बातिल हुईं और निहायत बुरे कर्म और बड़े पाप उनसे हुए. ये उनकी ज़िल्लत और ख़्वारी के कारण बने.
(११) जैसा कि उन्होंने हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया को शहीद किया और ये क़त्ल ऐसे नाहक़ थे जिनकी वजह ख़ुद ये क़ातिल भी नहीं बता सकते.

सूरए बक़रह - आठवाँ रुकू

(१) इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम ने सदी से रिवायत की कि यह आयत हज़रत सलमान फ़ारसी (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के साथियों के बारे में उतरी.
(२) कि तुम तौरात मानोगे और उसपर अमल करोगे. फिर तुमने उसके निर्देशों को बोझ जानकर क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया. जबकि तुमने ख़ुद अपनी तरफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ऐसी आसमानी किताब की प्रार्थना की थी जिसमें शरीअत के क़ानून और इबादत के तरीक़े विस्तार से दर्ज हों. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने तुमसे बार बार इसके क़ुबूल करने और इसपर अमल करने का एहद लिया था. जब वह किताब दी गई तो तुमने उसे क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और एहद पूरा न किया.
(३) बनी इस्राईल के एहद तोड़ने के बाद हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से तूर पहाड़ को उठाकर उनके सरों पर लटका दिया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम एहद क़ुबूल करो वरना ये पहाड़ तुमपर गिरा दिया जाएगा, और तुम कुचल डाले जाओगे. वास्तव में पहाड़ का सर पर लटका दिया जाना अल्लाह की निशानी और उसकी क़ुदरत का खुला प्रमाण है. इससे दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक यह रसूल अल्लाह की क़ुव्वत और क़ुदरत के ज़ाहिर करने वाले हैं. यह इत्मीनान उनको मानने और एहद पूरा करने का अस्ल कारण है.
(४) यानी पूरी कोशिश के साथ.
(५) यहाँ फ़ज़्ल व रहमत से या तौबह की तौफ़ीक़ मुराद है या अज़ाब में विलम्ब (देरी). एक कथन यह भी है कि अल्लाह की कृपा और रहमत से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक ज़ात मुराद है. मानी ये हैं कि अगर तुम्हें नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वुजूद (अस्तित्व) की दौलत न मिलती और आपका मार्गदर्शन नसीब न होता तो तुम्हारा अंजाम नष्ट होना और घाटा होता.
(६) इला शहर में बनी इस्राईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शनिवार का दिन इबादत के लिये ख़ास करदें, उस रोज़ शिकार न करें, और सांसारिक कारोबार बन्द रखें. उनके एक समूह ने यह चाल की कि शुक्रवार को दरिया के किनारे बहुत से गढ़े खोदते और सनीचर की सुबह को दरिया से इन गढ़ों तक नालियाँ बनाते जिनके ज़रिये पानी के साथ मछलियाँ आकर गढ़ों में क़ैद हो जातीं. इतवार को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से सनीचर के दिन नहीं निकालते. चालीस या सत्तर साल तक यह करते रहे. जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की नबुव्वत का एहद आया तो आपने उन्हें मना किया और फ़रमाया कि क़ैद करना ही शिकार है, जो सनीचर को करते हो, इससे हाथ रोको वरना अज़ाब में गिरफ़्तार किये जाओगे. वह बाज़ न आए. आपने दुआ फ़रमाई. अल्लाह तआला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में कर दिया, उनकी अक़्ल और दूसरी इन्द्रियाँ (हवास) तो बाक़ी रहे, केवल बोलने की क़ुव्वत छीन ली गई. शरीर से बदबू निकलने लगी. अपने इस हाल पर रोते रोते तीन दिन में सब हलाक हो गए. उनकी नस्ल बाक़ी न रही. ये सत्तर हज़ार के क़रीब थे. बनी इस्राईल का दूसरा समूह जो बारह हज़ार के क़रीब था, उन्हें ऐसा करने से मना करता रहा. जब ये न माने तो उन्होंने अपने और उनके मुहल्लों के बीच एक दीवार बनाकर अलाहिदगी कर ली. इन सबने निजात पाई. बनी इस्राईल का तीसरा समूह ख़ामोश रहा, उसके बारे में हज़रत इब्ने अब्बास के सामने अकरमह ने कहा कि वो माफ़ कर दिये गए क्योंकि अच्छे काम का हुक्म देना फ़र्ज़े किफ़ाया है, कुछ ने कर लिया तो जैसे कुल ने कर लिया. उनकी ख़ामोशी की वजह यह थी कि ये उनके नसीहत मानने की तरफ़ से निराश थे. अकरमह की यह तक़रीर हज़रत इब्ने अब्बास को बहुत पसन्द आई और आप ख़ुशी से उठकर उनसे गले मिले और उनका माथा चूमा. (फ़त्हुल अज़ीज़). इससे मालूम हुआ कि ख़ुशी में गले मिलना रसूलुल्लाह के साथियों का तरीक़ा है. इसके लिये सफ़र से आना और जुदाई के बाद मिलना शर्त नहीं.
(७) बनी इस्राईल में आमील नाम का एक मालदार था. उसके चचाज़ाद भाई ने विरासत के लालच में उसको क़त्ल करके दूसरी बस्ती के दर्वाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुबह को उसके ख़ून का दावेदार बना. वहाँ के लोगों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से विनती की कि आप दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला सारी हक़ीक़त खोल दे. इसपर हुक्म हुआ कि एक गाय ज़िब्ह करके उसका कोई हिस्सा मक़्तूल (मृतक) को मारें, वह ज़िन्दा होकर क़ातिल का पता देगा.

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا
وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ
مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ
فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا
فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾
فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ

ع

बोले कि आप हमें मसख़रा बनाते हैं[८] फ़रमाया ख़ुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से हूं[९]﴾६७﴿ बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि वह हमें बता दे गाय कैसी? कहा, वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है न बूढ़ी और न ऊसर, बल्कि उन दोनों के बीच में, तो करो जिसका तुम्हें हुक्म होता है﴾६८﴿ बोले अपने रब से दुआ कीजिये हमें बता दे उसका रंग क्या है ? कहा वह फ़रमाता है वह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती, देखने वालों को ख़ुशी देती﴾६९﴿ बोले अपने रब से दुआ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करदे वह गाय कैसी है ? बेशक गायों में हमको शुबह पड़ गया और अल्लाह चाहे तो हम राह पा जाएंगे[१०]﴾७०﴿ कहा वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है जिससे ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे . बे एब है, जिसमें कोई दाग़ नहीं. बोले अब आप ठीक बात लाए[११], तो उसे ज़िब्ह किया और ज़िब्ह करते मालूम न होते थे[१२]﴾७१﴿

नवाँ रूकू

और जब तुमने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उसकी तोहमत(आरोप) डालने लगे और अल्लाह को ज़ाहिर करना था जो तुम छुपाते थे﴾७२﴿ तो हमने फ़रमाया उस मक़्तूल को उस गाय का एक टुकड़ा मारो[१] अल्लाह यूं ही मुर्दे

(८) क्योंकि मक़्तूल (मृतक) का हाल मालूम होने और गाय के ज़िब्ह में कोई मुनासिबत (तअल्लुक़) मालूम नहीं होती.

(९) ऐसा जवाब जो सवाल से सम्बन्ध न रखे जाहिलों का काम है. या ये मानी हैं कि मुहाकिमे (न्याय) के मौक़े पर मज़ाक़ उड़ाना या हंसी करना जाहिलों का काम है, और नबियों की शान उससे ऊपर है. बनी इस्राईल ने समझ लिया कि गाय का ज़िब्ह करना अनिवार्य है तो उन्होंने अपने नबी से उसकी विशेषताएं और निशानियाँ पूछीं. हदीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इस्राईल यह बहस न निकालते तो जो गाय ज़िब्ह कर देते, काफ़ी हो जाती.

(१०) हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर वो इन्शाअल्लाह न कहते, हरगिज़ वह गाय न पाते. हर नेक काम में इन्शाअल्लाह कहना बरकत का कारण है.

(११) यानी अब तसल्ली हुई और पूरी शान और सिफ़त मालूम हुई. फिर उन्होंने गाय की तलाश शुरू की. उस इलाक़े में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी. उसका हाल यह है कि बनी इस्राईल में एक नेक आदमी थे और उनका एक छोटा सा बच्चा था उनके पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था. उन्हों ने उसकी गर्दन पर मुहर लगाकर अल्लाह के नाम पर छोड़ दिया और अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया- ऐ रब, मैं इस बछिया को इस बेटे के लिये तेरे पास अमानत रखता हूँ. जब मेरा बेटा बड़ा हो, यह उसके काम आए. उनका तो इन्तिक़ाल हो गया. बछिया जंगल में अल्लाह की हिफ़ाज़त में पलती रही. यह लड़का बड़ा हुआ और अल्लाह के फ़ज़्ल से नेक और अल्लाह से डरने वाला, माँ का फ़रमाँबरदार था. एक रोज़ उसकी माँ ने कहा बेटे तेरे बाप ने तेरे लिये अमुक जंगल में ख़ुदा के नाम पर एक बछिया छोड़ी है. वह अब जवान हो गई होगी. उसको जंगल से ले आ और अल्लाह से दुआ कर कि वह तुझे अता फ़रमाए. लड़के ने गाय को जंगल में देखा और माँ की बताई हुई निशानियाँ उसमें पाईं और उसको अल्लाह की क़सम देकर बुलाया, वह हाज़िर हुई. जवान उसको माँ की ख़िदमत में लाया. माँ ने बाज़ार लेजाकर तीन दीनार में बेचने का हुक्म दिया और यह शर्त की कि सौदा होने पर फिर उसकी इजाज़त हासिल की जाए. उस ज़माने में गाय की क़ीमत उस इलाक़े में तीन दीनार ही थी. जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़रिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उसने गाय की क़ीमत छः दीनार लगा दी, मगर इस शर्त से कि जवान माँ की इजाज़त का पाबन्द न हो. जवान ने ये स्वीकार न किया और माँ से यह तमाम क़िस्सा कहा. उसकी माँ ने छः दीनार क़ीमत मंज़ूर करने की इजाज़त तो दे दी मगर सौदे में फिर दोबारा अपनी मर्ज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त रखी. जवान फिर बाज़ार में आया. इस बार फ़रिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि माँ की इजाज़त पर मौक़ूफ़ (आधारित) न रखो. जवान न माना और माँ को सूचना दी. वह समझदार थी, समझ गई कि यह ख़रीदार नहीं कोई फ़रिश्ता है जो आज़मायश के लिये आता है. बेटे से कहा कि अब की बार उस ख़रीदार से यह कहना कि आप हमें इस गाय की फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं. लड़के ने यही कहा. फ़रिश्ते ने जवाब दिया अभी इसको रोके रहो. जब बनी इस्राईल ख़रीदने आएं तो इसकी क़ीमत यह मुक़र्रर करना

وَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ
قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ
قَسْوَةً ۭ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ۭ
وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاۗءُ ۭ وَاِنَّ مِنْهَا
لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ۝ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ
مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا لَقُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ
قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاۗجُّوْكُمْ
بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

ज़िन्दा करेगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अक़्ल हो[२] ﴾७३﴿ फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त होगए[३] तो वह पत्थरों जैसे हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा करें और पत्थरों में तो कुछ वो हैं जिनसे नदियां बह निकलती हैं और कुछ वो हैं जो फट जाते हैं तो उनसे पानी निकलता है और कुछ वो हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं[४] और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं ﴾७४﴿ तो ऐ मुसलमानो, क्या तुम्हें यह लालच है कि यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और उनमें का तो एक समूह वह था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर समझने के बाद उसे जान बूझकर बदल देते[५] ﴾७५﴿ और जब मुसलमानों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए[६] और जब आपस में अकेले हों तो कहें वह इल्म जो अल्लाह ने तुमपर खोला मुसलमानों से बयान किये देते हो कि उससे तुम्हारे रब के यहाँ तुम्हीं पर हुज्जत (तर्क) लाएं, क्या तुम्हें अक़्ल नहीं ﴾७६﴿ क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ वो ज़ाहिर करते हैं ﴾७७﴿ और उनमें कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब[७] को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना[८] या कुछ अपनी मनघड़त और वो निरे गुमान (भ्रम) में

कि इसकी खाल में सोना भर दिया जाए. जवान गाय को घर लाया और जब बनी इस्राईल खोजते खोजते उसके मकान पर पहुंचे तो यही क़ीमत तय की और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़मानत पर वह गाय बनी इस्राईल के सुपुर्द की. इस क़िस्से से कई बातें मालूम हुईं. (१) जो अपने बाल बच्चों को अल्लाह के सुपुर्द करे, अल्लाह तआला उसकी ऐसी ही ऊमदा पर्वरिश फ़रमाता है. (२) जो अपना माल अल्लाह के भरोसे पर उसकी अमानत में दे, अल्लाह उसमें बरकत देता है. (३) माँ बाप की फ़रमाँबरदारी अल्लाह तआला को पसन्द है. (४) अल्लाह का फ़ैज़ (इनाम) क़ुर्बानी और ख़ैरात करने से हासिल होता है. (५) ख़ुदा की राह में अच्छा माल देना चाहिये. (६) गाय की क़ुरबानी उच्च दर्जा रखती है.

(१२) बनी इस्राईल के लगातार प्रश्नों और अपनी रूस्वाई के डर और गाय की महंगी क़ीमत से यह ज़ाहिर होता था कि वो ज़िब्ह का इरादा नहीं रखते, मगर जब उनके सवाल मुनासिब जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़िब्ह करना ही पड़ा.

सूरए बक़रह - नवाँ रूकू

(१) बनी इस्राईल ने गाय ज़िब्ह करके उसके किसी अंग से मुर्दे को मारा. वह अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा हुआ. उसके हल्क़ से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे. उसने अपने चचाज़ाद भाई को बताया कि इसने मुझे क़त्ल किया है. अब उसको भी क़ुबूल करना पड़ा और हज़रत मूसा ने उसपर क़िसास का हुक्म फ़रमाया और उसके बाद शरीअत का हुक्म हुआ कि क़ातिल मृतक की मीरास से मेहरूम रहेगा. लेकिन अगर इन्साफ़ वाले ने बाग़ी को क़त्ल किया या किसी हमला करने वाले से जान बचाने के लिये बचाव किया, उसमें वह क़त्ल हो गया तो मृतक की मीरास से मेहरूम न रहेगा.

(२) और तुम समझो कि बेशक अल्लाह तआला मुर्दे ज़िन्दा करने की ताक़त रखता है और इन्साफ़ के दिन मुर्दों को ज़िन्दा करना और हिसाब लेना हक़ीक़त है.

(३) क़ुदरत की ऐसी बड़ी निशानियों से तुमने इबरत हासिल न की.

(४) इसके बावुजूद तुम्हारे दिल असर क़ुबूल नहीं करते. पत्थरों में अल्लाह ने समझ और शऊर दिया है, उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ होता है, वो तस्बीह करते हैं *इम मिन शैइन इल्ला युसब्बिहो बिहम्दिही'* यानी कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह की तारीफ़ में उसकी पाकी न बोलती हो. (सूरए बनी इस्राईल, आयत ४४). मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर (अल्लाह उनसे राज़ी) से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मेरी नबुव्वत के इज़्हार से पहले मुझे सलाम किया करता था. तिरमिज़ी में हज़रत अली (अल्लाह उनसे राज़ी) से रिवायत है कि मैं सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मक्का के आस पास के इलाक़े में गया. जो पेड़ या पहाड़ सामने आता था *अस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह* अर्ज़ करता था.

يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتٰبَ بِأَيْدِيهِمْ
ثُمَّ يَقُولُونَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيلًا
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا
يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً
قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗ
أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّأَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيٓئَتُهٗ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِينَ أٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٨٢﴾ وَإِذْ
أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللّٰهَ وَ
بِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِينِ
وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَأٰتُوا الزَّكٰوةَ
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

हैं﴾७८﴿ तो ख़राबी है उनके लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कह दें ये ख़ुदा के पास से है कि इसके बदले थोड़े दाम हासिल करें[९] तो ख़राबी है उनके लिये उनके हाथों के लिखे से और ख़राबी उनके लिये उस कमाई से﴾७९﴿ और बोले हमें तो आग न छुएगी मगर गिन्ती के दिन[१०] तुम फ़रमादो क्या ख़ुदा से तुमने कोई एहद (वचन) ले रखा है ? जब तो अल्लाह कभी अपना एहद ख़िलाफ़ न करेगा[११] या ख़ुदा पर वह बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं﴾८०﴿ हाँ क्यों नहीं, जो गुनाह कमाए और उसकी ख़ता उसे घेर ले[१२] वह दोज़ख़ वालों में है, उन्हें हमेशा उसमें रहना﴾८१﴿ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वो जन्नत वाले हैं, उन्हें हमेशा उस में रहना﴾८२﴿

दसवाँ रूकू

और जब हमने बनी इस्राईल से एहद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ भलाई करो[१] और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों(दरिद्रों) से और लोगों से अच्छी बात कहो[२] और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो, फिर तुम फिर गए[३] मगर तुम में के थोड़े[४] और तुम मुंह फेरने वाले हो[५]﴾८३﴿

(५) जैसे उन्होंने तौरात में कतर ब्योंत की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ के अल्फ़ाज़ बदल डाले.

(६) यह आयत उन यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में थे. इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यहूदी मुनाफ़िक़ जब सहाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिसपर तुम ईमान लाए, उसपर हम भी ईमान लाए. तुम सच्चाई पर हो और तुम्हारे सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सच्चे हैं, उनका क़ौल सच्चा है. उनकी तारीफ़ और गुणगान अपनी किताब तौरात में पाते हैं. इन लोगों पर यहूद के सरदार मलामत करते थे. "*व इज़ा ख़ला बअदुहुम*" (और जब आपस में अकेले हों) में इसका बयान है. (ख़ाज़िन). इससे मालूम हुआ कि सच्चाई छुपाना और उनके कमालात का इन्कार करना यहूदियों का तरीक़ा है. आजकल के बहुत से गुमराहों की यही आदत है.

(७) किताब से तौरात मुराद है .

(८) अमानी का अर्थ है ज़बानी पढ़ लेना. यह उमनिया का बहुवचन है. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि आयत के मानी ये हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना, बिना समझे (ख़ाज़िन). कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी भी बयान किये हैं कि "अमानी" से वो झूटी गढ़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने विद्वानों से सुनकर बिना जांच पड़ताल किये मान ली थीं.

(९) जब सैयदे अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो यहूदियों के विद्वानों और सरदारों को यह डर हुआ कि उनकी रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्योंकि तौरात में हुज़ूर का हुलिया (नख़शिख़) और विशेषताएं लिखी है. जब लोग हुज़ूर को इसके अनुसार पाएंगे, फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने विद्वानों और सरदारों को छोड़ देंगे. इस डर से उन्होंने तौरात के शब्दों को बदल डाला और हुज़ूर का हुलिया कुछ का कुछ कर दिया. मिसाल के तौर पर तौरात में आपकी ये विशेषताएं लिखी थीं कि आप बहुत ख़ूबसूरत हैं, सुंदर बाल वाले, सुंदर आँख़ें सुर्मा लगी जैसी, क़द औसत (मध्यम) दर्जे का है. इसको मिटाकर उन्होंने यह बनाया कि हुज़ूर का क़द लम्बा, आँख़ें कंजी, बाल उलझे हुए हैं. यही आम लोगों को सुनाते, यही अल्लाह की किताब का लिखा बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस हुलिये से अलग पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे. हमारे ही असर में रहेंगे और हमारी कमाई में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा.

(१०) हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि यहूदी कहते कि दोज़ख़ में वो हरगिज़ न दाख़िल होंगे मगर सिर्फ़ उतनी मुद्दत के लिये जितने अर्से उनके पूर्वजों ने बछड़ा पूजा था और वो चालीस दिन हैं, उसके बाद वो अज़ाब से छूट जाएंगे. इसपर यह आयत उतरी.

(११) क्योंकि झूट बड़ी बुराई है और बुराई अल्लाह की ज़ात से असम्भव. इसलिये उसका झूट तो मुमकिन नहीं लेकिन जब अल्लाह तआला ने तुमसे सिर्फ़ चालीस रोज़ अज़ाब के बाद छोड़ देने का वादा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा कहना झूट हुआ.

(१२) इस आयत में गुनाह से शिर्क और कुफ़्र मुराद है. और "घेर लेने" से यह मुराद है कि निजात के सारे रास्ते बन्द हो जाएं और कुफ़्र तथा शिर्क पर ही उसको मौत आए क्योंकि ईमान वाला चाहे कैसा ही गुनाहगार हो, गुनाहों से घिरा नहीं होता, इसलिये

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا
مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ
وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ
مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ

और जब हमने तुमसे एहद लिया कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर तुमने उस का इक़रार किया और तुम गवाह हो﴿८४﴾ फिर ये जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे और अपने में से एक समूह को उनके वतन से निकालते हो उनपर मदद देते हो(उनके मुख़ालिफ़ या दुश्मन को) गुनाह और ज़्यादती में और अगर वो क़ैदी होकर तुम्हारे पास आएं तो बदला देकर छुड़ा लेते हो और उनका निकालना तुपर हराम है[६] तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते हो और कुछ से इन्कार करते हो ? तो जो तुम में ऐसा करे उसका बदला क्या है, मगर यह कि दुनिया में रूसवा(ज़लील)[७] हो, और क़यामत में सख़्ततर अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं[८]﴿८५﴾ ये हैं वो लोग जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी मोल ली, तो न उनपर से अज़ाब हल्का हो और उनकी मदद की जाए﴿८६﴾

ग्यारहवाँ रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब अता की[१] और उसके बाद एक के बाद एक रसूल भेजे[२] और हमने मरयम के

कि ईमान जो सबसे बड़ी फ़रमाँबरदारी है, वह उसके साथ है.

सूरए बक़रह - दसवाँ रूकू

(१) अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बाद माँ बाप के साथ भलाई करने का आदेश दिया. इससे मालूम होता है कि माँ बाप की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है. माँ बाप के साथ भलाई के ये मानी हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और कोई ऐसा काम न करे जिससे उन्हें तकलीफ़ पहुंचे और अपने शरीर और माल से उनकी ख़िदमत में कोई कसर न उठा रखे. जब उन्हें ज़रूरत हो उनके पास हाज़िर रहे. अगर माँ बाप अपनी ख़िदमत के लिये नफ़्ल (अतिरिक्त) इबादत छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे, उनकी ख़िदमत नफ़्ल से बढ़कर है. जो काम वाजिब (अनिवार्य) है वो माँ बाप के हुक्म से छोड़े नहीं जा सकते. माँ बाप के साथ एहसान के तरीक़े जो हदीसों से साबित हैं ये हैं कि दिल की गहराइयों से उनसे महब्बत रखे,बोल चाल, उठने बैठने में अदब का ख़याल रखे, उनकी शान में आदर के शब्द कहे, उनको राज़ी करने की कोशिश करता रहे, अपने अच्छे माल को उनसे न बचाए. उनके मरने के बाद उनकी वसीयतों को पूरा करे, उनकी आत्मा की शांति के लिये दानपुन करे, क़ुरआन का पाठ करे, अल्लाह तआला से उनके गुनाहों की माफ़ी चाहे, हफ़्ते में कम से कम एक दिन उनकी क़ब्र पर जाए. (फ़त्हुल अज़ीज़). माँ बाप के साथ भलाई करने में यह भी दाख़िल है कि अगर वो गुनाहों के आदी हों या किसी बदमज़हबी में गिरफ़्तार हों तो उनको नर्मी के साथ अच्छे रास्ते पर लाने की कोशिश करता रहे. (ख़ाज़िन)

(२) अच्छी बात से मुराद नेकियों की रुचि दिलाना और बुराइयों से रोकना है. हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में सच बात कहो. अगर कोई पूछे तो हुज़ूर के कमालात और विशेषताएं सच्चाई के साथ बयान करदो और आपके गुण मत छुपाओ.

(३) एहद के बाद.

(४) जो ईमान ले आए, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों की तरह, तो उन्होंने एहद पूरा किया.

(५) और तुम्हारी क़ौम की आदत ही विरोध करना और एहद से फिर जाना है.

(६) तौरात में बनी इस्राईल से एहद लिया गया था कि वो आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें, वतन से न निकालें और जो बनी इस्राईल किसी की क़ैद में हो उसको माल देकर छुड़ा लें, इसपर उन्होंने इक़रार भी किया,अपने नफ़्स पर गवाह भी हुए लेकिन क़ायम न रहे और इससे फिर गए. मदीने के आसपास यहूदियों के दो समुदाय बनी क़ुरैज़ा और बनी नुज़ैर रहा करते थे. मदीने के अन्दर दो समुदाय औस और ख़ज़रज रहते थे. बनी क़ुरैज़ा औस के साथी थे और बनी नुज़ैर ख़ज़रज के, यानी हर एक क़बीले ने अपने

مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ اَفَكُلَّمَا
جَاۗءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۡ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا
مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَاۗءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَي
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ښ فَلَمَّا جَاۗءَھُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۡ
فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ
اَنْفُسَھُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَاۗءُوْ
بِغَضَبٍ عَلٰي غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَاۗءَهٗ ۤ وَھُوَ الْحَقُّ

बेटे ईसा को खुली निशानियाँ अता फ़रमाईं(३) और पवित्र आत्मा(४) से उसकी मदद की(५) तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वह लेकर आए जो तुम्हारे नफ़्स(मन) की इच्छा नहीं, घमण्ड करते हो तो उन(नबियों) में एक गिरोह(समूह) को तुम झुटलाते हो और एक गिरोह को शहीद करते हो(६)﴿٨٧﴾ और यहूदी बोले हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं(७) बल्कि अल्लाह ने उनपर लानत की उनके कुफ़्र के कारण तो उनमें थोड़े ईमान लाते हैं(८)﴿٨٨﴾ और जब उनके पास अल्लाह की वह किताब(क़ुरआन) आई जो उनके साथ वाली किताब(तौरात) की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती है(९) और इससे पहले वो इसी नबी के वसीले(ज़रिये) से काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे(१०) तो जब तशरीफ़ लाया उनके पास वह जाना पहचाना, उस से इन्कार कर बैठे(११) तो अल्लाह की लानत इन्कार करने वालों पर﴿٨٩﴾ किस बुरे मोलों उन्होंने अपनी जानों को ख़रीदा कि अल्लाह के उतारे से इन्कार करें(१२) इस जलन से कि अल्लाह अपनी कृपा से अपने जिस बन्दे पर चाहे वही(देव वाणी) उतारे(१३) तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब(प्रकोप) के सज़ावार(अधिकारी) हुए(१४) और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है(१५)﴿٩٠﴾ और जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ(१६) तो कहते हैं वह जो हमपर उतरा उसपर ईमान लाते हैं(१७) और बाक़ी से इन्कार करते हैं हालांकि वह सत्य है उनके पास

सहयोगी के साथ क़समाक़समी की थी कि अगर हम में से किसी पर कोई हमला करे तो दूसरा उसकी मदद करेगा. औस और ख़ज़रज आपस में लड़ते थे. बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नुज़ैर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे, और सहयोगी के साथ होकर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे. बनी क़ुरैज़ा बनी नुज़ैर को और वो बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उनके घर वीरान कर देते थे, उन्हें उनके रहने की जगहों से निकाल देते थे, लेकिन जब उनकी क़ौम के लोगों को उनके सहयोगी क़ैद करते थे तो वो उनको माल देकर छुड़ा लेते थे. जैसे अगर बनी नुज़ैर का कोई व्यक्ति औस के हाथों में गिरफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस को माल देकर उसको छुड़ा लेते जबकि अगर वही व्यक्ति लड़ाई के वक़्त उनके निशाने पर आ जाता तो उसके मारने में हरगिज़ नहीं झिझकते. इस बात पर मलामत की जाती है कि जब तुमने अपनों का ख़ून न बहाने और उनको बस्तियों से न निकालने और उनके क़ैदियाँ को छुड़ाने का एहद किया था तो इसके क्या मानी कि क़त्ल और खदेड़ने में तो झिझको नहीं, और गिरफ़्तार हो जाएं तो छुड़ाते फिरो. एहद में कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मानी रखता है. जब तुम क़त्ल और अत्याचार से न रूक सके तो तुमने एहद तोड़ दिया और हराम किया और उसको हलाल जानकर काफ़िर हो गए . इस आयत से मालूम हुआ कि ज़ुल्म और हराम पर मदद करना भी हराम है. यह भी मालूम हुआ कि यक़ीनी हराम को हलाल जानना कुफ़्र है, यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह की किताब के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का इन्कार और कुफ़्र है. इस में यह चेतावनी है कि जब अल्लाह के निर्देशों में से कुछ का मानना कुछ का न मानना कुफ़्र हुआ तो यहूदियों का हज़रत सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इन्कार करने के साथ हज़रत मूसा की नबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता.

(७) दुनिया में तो यह रूसवाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा सन ३ हिजरी में मारे गए. एक दिन में उनके सात सौ आदमी क़त्ल किये गये थे. और बनी नुज़ैर इससे पहले ही वतन से निकाल दिये गए थे. सहयोगियों की ख़ातिर अल्लाह के एहद के विरोध का यह वबाल था. इससे मालूम हुआ कि किसी की तरफ़दारी में दीन का विरोध करना आख़िरत के अज़ाब के अलावा दुनिया में भी ज़िल्लत और रूसवाई का कारण होता है.

(८) इस में जैसे नाफ़रमानों के लिये सख़्त फटकार है कि अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं है, तुम्हारी नाफ़रमानियों पर भारी अज़ाब फ़रमाएगा, ऐसे ही ईमान वालों और नेक लोगों के लिये ख़ुशख़बरी है कि उन्हें अच्छे कामों का बेहतरीन इनाम मिलेगा. (तफ़सीरे कबीर)

सूरए बक़रह - ग्यारहवाँ रूकू

(१) इस किताब से तौरात मुराद है जिसमें अल्लाह तआला के तमाम एहद दर्ज थे. सबसे अहम एहद ये थे कि हर ज़माने के नबियों की इताअत (अनुकरण) करना, उनपर ईमान लाना और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर करना.

(२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक एक के बाद एक नबी आते रहे. उनकी तादाद चार हज़ार बयान की गई है. ये सब हज़रत मूसा की शरीअत के मुहाफ़िज़ और उसके आदेश जारी करने वाले थे. चूंकि नबियों के सरदार के बाद किसी को नबुव्वत नहीं मिल सक्ती, इसलिये हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीअत की हिफ़ाज़त और प्रचार प्रसार की ख़िदमत विद्वानों और दीन की रक्षा करने वालों को सौंपी गई.

(३) इन निशानियों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े (चमत्कार) मुराद हैं जैसे मुर्दे ज़िन्दा कर देना, अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देना, चिड़िया पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरह.

(४) रूहिल क़ुदुस से हज़रत जिब्रील मुराद हैं कि रूहानी हैं, वही (देववाणी) लाते हैं जिससे दिलों की ज़िन्दगी है. वह हज़रत ईसा के साथ रहने पर मामूर थे. आप ३३ साल की उम्र में आसमान पर उठाए गए, उस वक्त तक हज़रत जिब्रील सफ़र व सुकूनत में कभी आप से जुदा न हुए. रूहुल क़ुदुस की ताईद (समर्थन) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बड़ी फ़ज़ीलत है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुछ मानने वालों को भी रूहुल क़ुदुस की ताईद (मदद) हासिल हुई. सही बुख़ारी वग़ैरह में है कि हज़रत हस्सान (अल्लाह उनसे राज़ी) के लिये मिम्बर बिछाया जाता. वह नात शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उनके लिये फ़रमाते *"अल्लाहुम्मा अय्यिदहु बिरुहिल क़ुदुस"* (ऐ अल्लाह, रूहुल क़ुदुस के ज़रिये इसकी मदद फ़रमा).

(५) फिर भी ऐ यहूदियो, तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ नहीं आया.

(६) यहूदी, पैग़म्बरों के आदेश अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ पाकर उन्हें झुटलाते और मौक़ा पाते तो क़त्ल कर डालते थे, जैसे कि उन्होंने हज़रत ज़करिया और दूसरे बहुत से अम्बिया को शहीद किया. सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पीछे भी पड़े रहे. कभी आप पर जादू किया, कभी ज़हर दिया, क़त्ल के इरादे से तरह तरह के धोखे किये.

(७) यहूदियों ने यह मज़ाक़ उड़ाने को कहा था. उनकी मुराद यह थी कि हुज़ूर की हिदायत को उनके दिलों तक राह नहीं है. अल्लाह तआला ने इसका रद्द फ़रमाया कि अधर्मी झूटे हैं. अल्लाह तआला ने दिलों को प्रकृति पर पैदा फ़रमाया है, उनमें सच्चाई क़ुबूल करने की क्षमता रखी है. उनके कुफ़्र की ख़राबी है कि उन्होंने नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत का इक़रार करने के बाद इन्कार किया. अल्लाह तआला ने उनपर लअनत फ़रमाई. इसका असर है कि हक़ (सत्य) क़ुबूल करने की नेअमत से मेहरूम हो गए.

(८) यह बात दूसरी जगह इरशाद हुई : *"बल तबअल्लाहो अलैहा बिकुफ़्रिहिम फ़ला यूमिनूना इल्ला क़लीला"* यानी बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के कारण उनके दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े.(सूरए निसा, आयत ५५).

(९) सैयदे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ (ख़ूबियों)के बयान में. (ख़ाज़िन व तफ़सीरे कबीर)

(१०) सैयदे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी बनाए जाने और क़ुरआन उतरने से पहले यहूदी अपनी हाजतों के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ करते और कामयाब होते थे और इस तरह दुआ किया करते थे - *"अल्लाहुम्मफ्तह अलैना वन्सुरना बिन्नबीयिल उम्मीय्ये"* यानी ऐ अल्लाह, हमें नबिय्ये उम्मी के सदक़े में फ़त्ह और कामयाबी अता फ़रमा. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह के दरबार में जो क़रीब और प्रिय होते हैं उनके वसीले से दुआ कुबूल होती है. यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर से पहले जगत में हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की बात मशहूर थी, उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से लोगों की ज़रूरत पूरी होती थी.

(११) यह इन्कार दुश्मनी, हसद और हुकूमत की महब्बत की वजह से था.

(१२) यानी आदमी को अपनी जान बचाने के लिये वही करना चाहिये जिससे छुटकारे की उम्मीद हो. यहूद ने यह बुरा सौदा किया कि अल्लाह के नबी और उसकी किताब के इन्कारी हो गए.

(१३) यहूदियों की ख़्वाहिश थी कि आख़िरी नबी का पद बनी इस्राईल में से किसी को मिलता. जब देखा कि वो मेहरूम रहे और इस्माईल की औलाद को श्रेय मिला तो हसद के मारे इन्कार कर बैठे . इस से मालूम हुआ कि हसद हराम और मेहरूमी का कारण है.

(१४) यानी तरह तरह के ग़ज़ब और यातनाओं के हक़दार हुए.

(१५) इससे मालूम हुआ कि ज़िल्लत और रूस्वाई वाला अज़ाब काफ़िरों के साथ ख़ास है . ईमान वालों को गुनाहों की वजह से अज़ाब हुआ भी तो ज़िल्लत और रूस्वाई के साथ न होगा. अल्लाह तआला ने फ़रमाया : *"व लिल्लाहिल इज़्ज़तु व लिरसूलिही व लिलमूमिनीना"* यानी और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं. (सूरए मुनाफ़िक़ून, आयत ८)

(१६) इससे क़ुरआने पाक और वो तमाम किताबें मुराद हैं जो अल्लाह तआला ने उतारीं, यानी सब पर ईमान लाओ.

(१७) इससे उनकी मुराद तौरात है.

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۚ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ۚ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۚ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ

منزل١

वाली की तस्दीक़ (पुष्टि) फ़रमाता हुआ[१८]. तुम फ़रमाओ कि फिर अगले नबियों को क्यों शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब पर ईमान था[१९] ﴾९१﴿ और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियाँ लेकर तशरीफ़ लाया फिर तुमने उसके बाद[२०] बछड़े को मावूद (पूजनीय) बना लिया और तुम ज़ालिम थे[२१] ﴾९२﴿ और याद करो जब हमने तुमसे पैमान (वादा) लिया[२२] और तूर पर्वत को तुम्हारे सरों पर बलन्द किया, लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो. बोले हम ने सुना और न माना और उनके दिलों में बछड़ा रच रहा था उनके कुफ़्र के कारण. तुम फ़रमादो क्या बुरा हुक्म देता है तुमको तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो[२३] ﴾९३﴿ तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर अल्लाह के नज़दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो[२४] ﴾९४﴿ और कभी उसकी आरज़ू न करेंगे[२५] उन बुरे कर्मों के कारण जो आगे कर चुके[२६] और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को ﴾९५﴿ और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़्यादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) से प्रत्येक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये[२७] और वह उसे अज़ाब से दूर न करेगा इतनी उम्र का दिया जाना और

(१८) यानी तौरात पर ईमान लाने का दावा ग़लत है. चूंकि क़ुरआने पाक जो तौरात की तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला है, उसका इन्कार तौरात का इन्कार हो गया.

(१९) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि अगर तौरात पर ईमान रखते तो नबियों को हरगिज़ शहीद न करते.

(२०) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बाद.

(२१) इसमें भी उनकी तकज़ीब है कि हज़रत मूसा की लाठी और रौशन हथेली वग़ैरह खुली निशानियों के देखने के बाद बछड़ा न पूजते.

(२२) तौरात के आदेशों पर अमल करने का.

(२३) इसमें भी उनके ईमान के दावे को झुटलाया गया है.

(२४) यहूदियों के झूटे दावों में एक यह दावा था कि जन्नत ख़ास उन्हीं के लिये है. इसका रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे सोच के मुताबिक़ जन्नत तुम्हारे लिये ख़ास है, और आख़िरत की तरफ़ से तुम्हें इत्मीनान है, कर्मों की ज़रूरत नहीं, तो जन्नत की नेअमतों के मुक़ाबले में दुनिया की तकलीफ़ क्यों बर्दाश्त करते हो. मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दावे की बुनियाद पर तुम्हारे लिये राहत की बात है. अगर तुमने मौत की तमन्ना न की तो यह तुम्हारे झूटे होने की दलील होगी. हदीस शरीफ़ में है कि अगर वो मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और धरती पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता.

(२५) यह ग़ैब की ख़बर और चमत्कार है कि यहूदी काफ़ी ज़िद और सख़्त विरोध के बावुजूद मौत की तमन्ना ज़बान पर न ला सके.

(२६) जैसे आख़िरी नबी और क़ुरआन के साथ कुफ़्र और तौरात में काँट छाँट वग़ैरह. मौत की महब्बत और अल्लाह से मिलने का शौक़, अल्लाह के क़रीबी बन्दों का तरीक़ा है . हज़रत उमर (अल्लाह उनसे राज़ी) हर नमाज़ के बाद दुआ फ़रमाते. *"अल्लाहुम्मर ज़ुक़्नी शहादतन फ़ी सबीलिका व वफ़ातन बिबल्दि रसूलिका"* (ऐ अल्लाह, मुझे अपने रास्ते में शहादत अता कर और अपने प्यारे हबीब के शहर में मौत दे). आम तौर से सारे बड़े सहाबा और विशेष कर बद्र और उहद के शहीद और बैअते रिज़्वान के लोग अल्लाह की राह में मौत की महब्बत रखते थे. हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (अल्लाह उनसे राज़ी) ने काफ़िर लश्कर के सरदार रूस्तम बिन फ़र्रूख़ज़ाद के पास जो ख़त भेजा उसमें तहरीर फ़रमाया था. *"इन्ना मअना क़ौमन युहिब्बून मौता कमा युहिब्बुल अआजिमुल ख़म्रा"* यानी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मेहबूब रखती है जितना अजमी लोग शराब को. इसमें सुन्दर इशारा था कि शराब की दूषित मस्ती को दुनिया की महब्बत के दीवाने पसन्द करते हैं और अल्लाह वाले मौत को हक़ीक़ी मेहबूब से मिलने का ज़रिया समझकर चाहते हैं. सारे ईमान वाले आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर लम्बी ज़िन्दगी की तमन्ना भी करें तो वह इसलिये

يُّعَمَّرَ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ
عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ
وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا
الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ
فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ
ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا
الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ
وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ

अल्लाह उनके कौतुक देख रहा है﴾९६﴿

बारहवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ जो कोई जिब्रील का दुश्मन हो[१] तो उस(जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से यह क़ुरआन उतारा अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बशारत(ख़ुशख़बरी) मुसलमानों को[२]﴾९७﴿ जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का[३]﴾९८﴿ और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें उतारीं[४] और उनके इन्कारी न होंगे मगर फ़ासिक़(कुकर्मी) लोग﴾९९﴿ और क्या जब कभी कोई एहद करते हैं उनमें का एक फ़रीक़(पक्ष) उसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं[५]﴾१००﴿ और जब उनके पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल[६] उनकी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता[७] तो किताब वालों से एक गिरोह(दल) ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी[८] जैसे कि वो कुछ इल्म ही नहीं रखते(कुछ जानते ही नहीं)[९]﴾१०१﴿ और उसके मानने वाले हुए जो शैतान पढ़ा करते थे सुलैमान की सल्तनत के ज़माने में[१०] और सुलैमान ने कुफ़्र न किया[११] हाँ शैतान काफ़िर हुए[१२] लोगों को जादू सिखाते हैं और वह(जादू) जो बाबुल में दो

होती है कि नेकियाँ करने के लिये कुछ और समय मिल जाए जिससे आख़िरत के लिये अच्छा तोशा ज़्यादा जमा कर सकें. अगर पिछले दिनों में गुनाह ज़्यादा हुए हैं तो उनसे तौबह और क्षमा याचना करलें. सही हदीस की किताबों में है कि कोई दुनिया की मुसीबत से परेशान होकर मौत की तमन्ना न करे और वास्तव में दुनिया की परेशानियों से तंग आकर मौत की दुआ करना सब्र और अल्लाह की ज़ात पर भरोसे और उसकी इच्छा के आगे सर झुका देने के ख़िलाफ़ और नाजायज़ है.

(२७) मुश्रिकों का एक समूह मजूसी (आग का पुजारी) है. आपस में मिलते वक़्त इज़्ज़त और सलाम के लिये कहते हैं "ज़िह हज़ार साल" यानी हज़ार बरस जियो. मतलब यह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं. यहूदी उनसे भी बढ़ गए कि उन्हें ज़िन्दगी का लालच सब से ज़्यादा है.

सूरए बक़रह - बारहवाँ रूकू

(१) यहूदियों के आलिम अब्दुल्लाह बिन सूरिया ने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, आपके पास आसमान से कौन फ़रिश्ता आता है. फ़रमाया, जिब्रील. इब्ने सूरिया ने कहा वह हमारा दुश्मन है कि हमपर कड़ा अज़ाब उतारता है. कई बार हमसे दुश्मनी कर चुका है. अगर आपके पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते.

(२) तो यहूदियों की दुश्मनी जिब्रील के साथ बेमानी यानी बेकार है. बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वो जिब्रीले अमीन से महब्बत करते और उनके शुक्रगुज़ार होते कि वो ऐसी किताब लाए जिससे उनकी किताबों की पुष्टि होती है. और *"बुशरा लिल मूमिनीन"* (और हिदायत व बशारत मुसलमानों को) फ़रमाने में यहूदियों का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत और ख़ुशख़बरी ला रहे हैं फिर भी तुम दुश्मनी से बाज़ नहीं आते.

(३) इससे मालूम हुआ कि नबियों और फ़रिश्तों की दुश्मनी कुफ़्र और अल्लाह के ग़ज़ब का कारण है. और अल्लाह के प्यारों से दुश्मनी अल्लाह से दुश्मनी करना है.

(४) यह आयत इब्ने सूरिया यहूदी के जवाब में उतरी, जिसने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद, आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई खुली (स्पष्ट) आयत उतरी जिसका हम पालन करते.

(५) यह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में उतरी जब हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यहूदियों को अल्लाह तआला के वो एहद याद दिलाए जो हुज़ूर पर ईमान लाने के बारे में किये थे तो इब्ने सैफ़ ने एहद ही का इन्कार कर दिया.

أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ
وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ
فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ
وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ

फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतरा और वो दोनों किसी को कुछ न सिखाते जब तक यह न कह लेते कि हम तो निरी आज़मायश हैं तू अपना ईमान न खो[१३] तो उनसे सीखते वह जिससे जुदाई डालें मर्द और उसकी औरत में और उस से ज़रर (हानि) नहीं पहुंचा सकते किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से[१४] और वो सीखते हैं जो उन्हें नुक़सान देगा नफ़ा न देगा और बेशक ज़रूर उन्हें मालूम है कि जिसने यह सौदा लिया आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वह जिसके बदले उन्होंने अपनी जानें बेचीं किसी तरह उन्हें इल्म होता[१५] ﴿१०२﴾ और अगर वो ईमान लाते[१६] और परहेज़गारी करते तो अल्लाह के यहाँ का सवाब बहुत अच्छा है किसी तरह उन्हें ईल्म होता ﴿१०३﴾

तेरहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो[१] ''राइना'' न कहो और यूं अर्ज़ करो कि हुज़ूर हमपर नज़र रखें और पहले ही से ग़ौर से सुनो[२] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अज़ाब है[३] ﴿१०४﴾ वो जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक[४] वो नहीं चाहते कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से[५] और अल्लाह अपनी रहमत से ख़ास करता है जिसे चाहे और अल्लाह

(६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(७) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तौरात और ज़ुबूर वग़ैरह की पुष्टि फ़रमाते थे और ख़ुद इन किताबों में भी हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की ख़ुशख़बरी और आपके गुणों का बयान था. इसलिये हुज़ूर का तशरीफ़ लाना और आपका मुबारक अस्तित्व ही इन किताबों की पुष्टि है. तो होना यह चाहिये था कि हुज़ूर के आगमन पर एहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़्यादा पक्का होता, मगर इसके विपरीत उन्होंने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया. सदी का कथन है कि जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो यहूदीयों ने तौरात से मुक़ाबला करके तौरात और क़ुरआन को एकसा पाया तो तौरात को भी छोड़ दिया.

(८) यानी उस किताब की तरफ़ ध्यान नहीं दिया. सुफ़ियान बिन ऐनिया का कहना है कि यहूदियों ने तौरात को क़ीमती रेशमी कपड़ों में सोने चांदी से मढ़कर रख लिया और उसके आदेशों को न माना.

(९) इन आयतों से मालूम होता है कि यहूदियों के चार सम्प्रदाय थे. एक तौरात पर ईमान लाया और उसने उसके अहकाम भी अदा किये. ये मूमिनीने एहले किताब हैं. इनकी तादाद थोड़ी है. और *''अक्सरोहुम''* (उनमें बहुतेरों को) से उस दूसरे समुदाय का पता चलता है जिसने खुल्लम खुल्ला तौरात के एहद तोड़े, उसकी सीमाओं का उल्लंघन किया, सरकशी का रास्ता अपनाया, *''नबज़हू फ़रीक़ुम मिन्हुम''* (उनमें एक पक्ष उसे फेंक देता है) में इनका ज़िक्र है. तीसरा सम्प्रदाय वह जिसने एहद तोड़ने का एलान तो न किया लेकिन अपनी जिहालत से एहद तोड़ते रहे. उनका बयान *''बल अकसरोहुम ला यूमिनून''* (बल्कि उनमें बहुतेरों को ईमान नहीं) में है. चौथे सम्प्रदाय ने ज़ाहिर में तो एहद माने और छुपवाँ विद्रोह और दुश्मनी से विरोध करते रहे. यह बनावटी तौर से जाहिल बनते थे. *''कअन्नहुम ला यअलमून''* (मानो वो कुछ इल्म ही नहीं रखते) में उनका चर्चा है.

(१०) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने में बनी इस्राईल जादू सीखने में मशग़ूल हुए तो आपने उनको इससे रोका और उनकी किताबें लेकर अपनी कुर्सी के नीचे दफ़्न करदीं. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद शैतानों ने वो किताबें निकाल कर लोगों से कहा कि सुलैमान इसी के ज़ोर से सल्तनत करते थे. बनी इस्राईल के आलिमों और नेक लोगों ने तो इसका इनकार किया मगर जाहिल लोग जादू को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का इल्म बताकर उसके सीखने पर टूट पड़े. नबियों की किताबें छोड़ दीं और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर लांछन शुरू की. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक इसी हाल पर रहे. अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की सफ़ाई के लिये हुज़ूर पर यह आयत उतारी.

(११) क्योंकि वो नबी हैं और नबी कुफ़्र से बिल्कुल मासूम होते हैं, उनकी तरफ़ जादू की निस्बत करना बातिल और ग़लत है, क्योंकि जादू का कुफ़्रियात से ख़ाली होना लगभग असम्भव है.

(१२) जिन्होंने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर जादूगरी का झूटा इल्ज़ाम लगाया.

مَنْ يَّشَاۤءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ
اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ۭ اَلَمْ تَعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ
اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَسْـَٔـلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۤءَ السَّبِيْلِ ۝
وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ
كُفَّارًا ښ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَقَالُوْا

बड़े फ़ज़्ल(अनुकम्पा) वाला है(१०५) जब कोई आयत हम मन्सूख़(निरस्त) फ़रमाएं या भुला दें[६] तो उससे बेहतर या उस जैसी ले आएंगे, क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है(१०६) क्या तुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई हिमायती न मददगार(१०७) क्या यह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सवाल करो जो मूसा से पहले हुआ था[७] और जो ईमान के बदले कुफ़्र लें[८] वह ठीक रास्ता बहक गया (१०८) बहुत किताबियों ने चाहा[९] काश तुम्हें ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से[१०] बाद इसके कि हक़ उनपर ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है, तो तुम छोड़ो और दरगुज़र(क्षमा) करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर(शक्तिमान) है(१०९) और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो[११] और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है(११०) और किताब वाले

(१३) यानी जादू सीख कर और उसपर अमल और विश्वास करके और उसको दुरुस्त जान कर काफ़िर न बन. यह जादू फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान के बीच अन्तर जानने और परखने के लिये उतरा. जो इसको सीखकर इसपर अमल करे, काफ़िर हो जाएगा. शर्त यह है कि जादू में ईमान के विरूद्ध जो बातें और काम हों और जो उससे बचे, न सीखे या सीखे और उसपर अमल न करे और उसके कुफ़्रियात पर विश्वास न रखे वह मूमिन रहेगा,यही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का कहना है. जो जादू कुफ़्र है उसपर अमल करने वाला अगर मर्द है, क़त्ल कर दिया जाएगा. जो जादू कुफ़्र नहीं, मगर उससे जानें हलाक की जाती हैं, उसपर अमल करने वाला तरीक़े को काटने वालों के हुक्म में है, मर्द हो या औरत. जादूगर की तौबह क़ुबूल है. (मदारिक)

(१४) इससे मालूम हुआ कि असली असर रखने वाला अल्लाह तआला है. चीज़ों की तासीर उसी की मर्ज़ी पर है.

(१५) अपने अंजामेकार और अज़ाब के कड़ेपन का.

(१६) हज़रत सैयदे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआने पाक पर.

सूरए बक़रह - तेरहवाँ रूकू

(१) जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा को कुछ बताते या सिखाते तो वो कभी कभी बीच में अर्ज़ किया करते "राइना या रसूलल्लाह". इसके मानी ये थे कि या रसूलल्लाह हमारे हाल की रिआयत कीजिये, यानी अपनी बातों को समझने का मौक़ा दीजिये. यहूदियों की ज़बान में यह कलिमा तौहीन का अर्थ रखता था. उन्हों ने उस नियत से कहना शुरु किया. हज़रत सअद बिन मआज़ यहूदियों की बोली के जानकार थे. आपने एक दिन उनकी ज़बान से यह कलिमा सुनकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह के दुशमनो, तुम पर अल्लाह की लअनत . अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से यह कलिमा सुना तो उसकी गर्दन मार दूंगा. यहूदियों ने कहा, हमपर तो आप गर्म होते हैं, मुसलमान भी तो यही कहते हैं. इसपर आप रंजीदा होकर अपने आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे कि यह आयत उतरी, जिसमें " राइना " कहने को मना कर दिया गया और इस मतलब का दूसरा लफ़्ज़ "उन्ज़ुरना" कहने का हुक्म हुआ. इससे मालूम हुआ कि नबियों का आदर सत्कार और उनके समक्ष अदब की बात बोलना फ़र्ज़ है, और जिस बात में ज़रा सी भी हतक या तौहीन का संदेह हो उसे ज़बान पर लाना मना है.

(२) और पूरी तरह कान लगाकर ध्यान से सुनो ताकि यह अर्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर तवज्जुह फ़रमाएं, क्योंकि नबी के दरबार का यही अदब है . नबीयों के दरबार में आदमी को अदब के ऊंचे रूत्बों का लिहाज़ अनिवार्य है.

(३) *"लिल काफ़िरीन"* (और काफ़िरों के लिये) में इशारा है कि नबियों की शान में बेअदबी कुफ़्र है.

(४) यहूदियों की एक जमाअत मुसलमानों से दोस्ती और शुभेच्छा ज़ाहिर करती थी. उसको झुटलाने के लिये यह आयत उतरी

मुसलमानों को बताया गया कि काफ़िर दोस्ती और शुभेच्छा के दावे में झूटे हैं.(जुमल)
(५) यानी काफ़िर एहले किताब और मुश्रिकीन दोनों मुसलमानों से दुश्मनी और कटुता रखते हैं और इस दुख में है कि उनके नबी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पैग़म्बरी और वही (देववाणी) अता हुई और मुसलमानों को यह बड़ी नेअमत मिली. (ख़ाज़िन वग़ैरह)
(६) क़ुरआने करीम ने पिछली शरीअतों और पहली किताबों को मन्सूख़ यानी स्थगित फ़रमाया तो काफ़िरों को बड़ी घबराहट हुई और उन्होंने इसपर ताना किया. तब यह आयत उतरी और बताया गया कि जो स्थगित हुआ वह भी अल्लाह की तरफ़ से था और जिसने स्थगित किया (यानी क़ुरआन), वह भी अल्लाह की तरफ़ से है. और स्थगित करने वाली चीज़ कभी स्थगित होने वाली चीज़ से ज़्यादा आसान और नफ़ा देने वाली होती है. अल्लाह की क़ुदरत पर ईमान रखने वाले को इसमें शक करने की कोई जगह नहीं है. कायनात (सृष्टि) में देखा जाता है कि अल्लाह तआला दिन से रात को, गर्मी से ठण्डी को, जवानी को बचपन से, बीमारी को तंदुरूस्ती से, बहार से पतझड़ को स्थगित फ़रमाता है. यह तमाम बदलाव उसकी क़ुदरत के प्रमाण हैं. तो एक आयत और एक हुक्म के स्थगित होने में क्या आश्चर्य . स्थगन आदेश दरअस्ल पिछले हुक्म की मुद्दत तक के लिये था, और उस समय के लिये बिल्कुल मुनासिब था. काफ़िरों की नासमझी कि स्थगन आदेश पर ऐतिराज़ करते हैं और एहले किताब का ऐतिराज़ उनके अक़ीदों के लिहाज़ से भी ग़लत है. उन्हें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की शरीअत के आदेश का स्थगन मानना पड़ेगा. यह मानना ही पड़ेगा कि सनीचर के दिन दुनिया के काम उनसे पहले हराम नहीं थे, यह भी इक़रार करना होगा कि तौरात में हज़रते नूह की उम्मत के लिये तमाम चौपाए हलाल होना बयान किया गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर बहुत से चौपाए हराम करदिये गए. इन बातों के होते हुए स्थगन आदेश का इन्कार किस तरह सम्भव है.

जिस तरह एक आयत दूसरी आयत से स्थगित होती है, उसी तरह हदीसे मुतवातिर से भी होती है. स्थगन आदेश कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत और हुक्म दोनों का. बेहक़ी ने अबू इमामा से रिवायत की कि एक अन्सारी सहाबी रात को तहज्जुद के लिये उठे और सूरए फ़ातिहा के बाद जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उसे पढ़ना चाहा लेकिन वह बिल्कुल याद न आई और बिस्मिल्लाह के सिवा कुछ न पढ़ सके. सुबह को दूसरे सहाबा से इसका ज़िक्र किया. उन हज़रात ने फ़रमाया हमारा भी यही हाल है. वह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारी याददाश्त में भी न रही. सबने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वाक़िआ अर्ज़ किया. हुज़ूर ने फ़रमाया आज रात वह सूरत उठा ली गई. उसका हुक्म और लितावत दोनों स्थगित हुए. जिन काग़ज़ों पर वह लिखी हुई थी उनपर निशान तक बाक़ी न रहे.
(७) यहूदियों ने कहा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आसमान से एक साथ उतरे. उनके बारे में यह आयत नाज़िल हुई.
(८) यानी जो आयतें उतर चुकी हैं उनके क़ुबूल करने में बेजा (व्यर्थ) बहस करे और दूसरी आयतें तलब करे. इससे मालूम हुआ कि जिस सवाल में ख़राबी हो उसे बुज़ुर्गों के सामने पेश करना जायज़ नहीं और सबसे बड़ी ख़राबी यह कि उससे नाफ़रमानी ज़ाहिर होती हो.
(९) उहद की जंग के बाद यहूदियों की जमाअत ने हज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहो अन्हुमा से कहा कि अगर तुम हक़ पर होते तो तुम्हें हार न होती. तुम हमारे दीन की तरफ़ वापस आ जाओ. हज़रत अम्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़दीक एहद का तोड़ना कैसा है ? उन्होंने कहा, निहायत बुरा. आपने फ़रमाया, मैं ने एहद किया है कि ज़िन्दगी के अन्तिम क्षण तक सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से न फिरूंगा और कुफ़्र न अपनाऊंगा और हज़रत हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया, मैं राज़ी हुआ अल्लाह के रब होने, मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, क़ुरआन के ईमान होने, काबे के क़िबला होने और मूमिनीन के भाई होने से. फिर ये दोनों सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको वाक़ए की ख़बर दी. हुज़ूर ने फ़रमाया तुमने बेहतर किया और भलाई पाई. इसपर यह आयत उतरी.
(१०) इस्लाम की सच्चाई जानने के बाद यहूदियों का मुसलमानों के काफ़िर और मुर्तद होने की तमन्ना करना और यह चाहना कि वो ईमान से मेहरूम हो जाएं, हसद के कारण था. हसद बड़ी बुराई है. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हसद से बचो वह नेकियों को इस तरह खाता है जैसे आग सूखी लकड़ी को. हसद हराम है. अगर कोई शख़्स अपने माल व दौलत या असर और प्रभाव से गुमराही और बेदीनी फैलाता है, तो उसके फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रहने के लिये उसको हासिल नेअमतों के छिन जाने की तमन्ना हसद में दाख़िल नहीं और हराम भी नहीं.
(११) ईमान वालों को यहूदियों से बचने का हुक्म देने के बाद उन्हें अपने नफ़्स की इस्लाह की तरफ़ ध्यान दिलाता है.

لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ
تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى
شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ
وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ

बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वह जो यहूदी या ईसाई हो[१२] ये उनकी ख़यालबंदियां हैं, तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील[१३] अगर सच्चे हो﴾१११﴿ हाँ क्यों नहीं जिसने अपना मुंह झुकाया अल्लाह के लिये और वह नेकी करने वाला है[१४] तो उसका नेग उसके रब के पास है, और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म[१५]﴾११२﴿

चौदहवाँ रूकू

और यहूदी बोले नसरानी(ईसाई) कुछ नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं[१] हालांकि वो किताब पढ़ते हैं[२] इसी तरह जाहिलों ने उनकी सी बात कही[३] तो अल्लाह क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं﴾११३﴿ और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन[४] जो अल्लाह की मस्जिदों को रोके उनमें ख़ुदा का नाम लिये जाने से[५] और उनकी वीरानी में कोशिश करे[६] उनको न पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उनके लिये दुनिया में रूस्वाई है[७] और उनके लिये आख़िरत में बड़ा अज़ाब[८]﴾११४﴿ और पूरब पश्चिम सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह (ख़ुदा की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह)

(१२) यानी यहूदी कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ वही दाख़िल होंगे, और ईसाई कहते हैं कि फ़क़त ईसाई जाएंगे, और ये मुसलमानों को दीन से हटाने के लिये कहते हैं. जैसे स्थगन आदेश वग़ैरह के तुच्छ संदेह उन्होंने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसलमानों को अपने दीन में कुछ संदेह हो जाए. इसी तरह उनको जन्नत से मायूस करके इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनांचे पारा के अन्त में उनका यह कथन दिया हुआ है *"वक़ालू कूनू हूदन औ नसारा तहतदू"* (यानी और किताब वाले बोले यहूदी या ईसाई हो जाओ,राह पा जाओगे). अल्लाह तआला उनके इस बातिल ख़याल का रद फ़रमाता है.

(१३) इस आयत से मालूम हुआ कि इन्कार का दावा करने वाले को भी दलील या प्रमाण लाना ज़रूरी है. इसके बिना दावा बातिल और झूठा होगा.

(१४) चाहे किसी ज़माने,किसी नस्ल, किसी क़ौम का हो.

(१५) इसमें इशारा है कि यहूदी और ईसाईयों का यह दावा कि जन्नत के फ़क़त वही मालिक हैं, बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि जन्नत में दाख़िला सही अक़ीदे और नेक कर्मों पर आधारित है, और यह उनको उपलब्ध नहीं .

सूरए बक़रह - चौदहवाँ रूकू

(१) नजरान के ईसाइयों का एक दल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आया तो यहूदी उलमा भी आए और दोनों में मुनाज़िरा यानी वार्तालाप शुरू हो गया. आवाज़ें बलन्द हुईं, शोर मचा. यहूदियों ने कहा कि ईसाइयों का दीन कुछ नहीं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया . इसी तरह ईसाईयों ने यहूदियों से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरात शरीफ़ और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इन्कार किया. इस बाब में यह आयत उतरी.

(२) यानी जानकारी के बावजूद उन्होंने ऐसी जिहालत की बात की. हालांकि इन्जील शरीफ़ जिसको ईसाई मानते हैं, उसमें तौरात शरीफ़ और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के नबी होने की पुष्टि है. इसी तरह तौरात जिसे यहूदी मानते हैं, उसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नबी होने और उन सारे आदेशों की पुष्टि है जो आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हुए.

(३) किताब वालों के उलमा की तरह उन जाहिलों ने जो इल्म रखते थे न किताब, जैसे कि मूर्तिपूजक, आग के पुजारी, वग़ैरह, उन्होंने हर एक दीन वाले को झुटलाना शुरु किया, और कहा कि वह कुछ नहीं. इन्हीं जाहिलों में से अरब के मूर्तिपूजक मुश्रिकीन भी हैं, जिन्होंने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके दीन की शान में ऐसी ही बातें कहीं.

(४) यह आयत बैतुल मक़दिस की बेहुरमती या निरादर के बारे में उतरी. जिसका मुख़्तसर वाक़िआ यह है कि रोम के ईसाईयों ने बनी इस्राईल पर चढ़ाई की. उनके सूरमाओं को क़त्ल किया, औरतों बच्चों को क़ैद किया, तौरात शरीफ़ को जलाया, बैतुल

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ
اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا
اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا
وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾ وَلَنْ
تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ
مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ اَلَّذِيْنَ

وقف منزل

منزل١

है बेशक अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है ﴾११५﴿ और बोले ख़ुदा ने अपने लिये औलाद रखी, पाकी है उसे[९] बल्कि उसीकी मिल्क (संपत्ति) है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है[१०] सब उसके हुज़ूर (प्रत्यक्ष) गर्दन डाले हैं ﴾११६﴿ नया पैदा करने वाला आसमानों और ज़मीन का[११] और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही फ़रमाता है कि हो जा और वह फ़ौरन हो जाती है[१२] ﴾११७﴿ और जाहिल बोले[१३] अल्लाह हम से क्यों नहीं कलाम करता[१४] या हमें कोई निशानी मिले[१५] उनसे अगलों ने भी ऐसी ही कही उनकी सी बात. उनके दिल एक से हैं[१६] बेशक हमने निशानियाँ खोल दीं यक़ीन वालों के लिये[१७] ﴾११८﴿ बेशक हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता और तुमसे दोज़ख़ वालों का सवाल न होगा[१८] ﴾११९﴿ और कभी तुमसे यहूदी और नसारा (ईसाई) राज़ी न होंगे जबतक तुम उनके दीन का अनुकरण न करो[१९] तुम फ़रमाओ अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[२०] और (ऐ सुनने वाले, कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चलने वाला हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आचुका तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार[२१] ﴾१२०﴿ जिन्हें हमने किताब दी है वो जैसी

मक़दिस को वीरान किया, उसमें गन्दगी डाली, सुवर ज़िबह किये (मआज़ल्लाह). बैतुल मक़दिस हज़रत उमरे फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त तक इसी वीरानी में पड़ा रहा. आपके एहदे मुबारक (समयकाल) में मुसलमानों ने इसको नए सिरे से बनाया. एक क़ौल यह भी है कि यह आयत मक्का के मुश्रिकों के बारे में उतरी, जिन्हों ने इस्लाम की शुरुआत में हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके साथियों को काबे में नमाज़ पढ़ने से रोका था, और हुदैबिया की जंग के वक़्त उसमें नमाज़ और हज से मना किया था.

(५) ज़िक्र नमाज़, ख़ुत्बा, तस्बीह, वअज़, नअत शरीफ़, सबको शामिल है. और अल्लाह के ज़िक्र को मना करना हर जगह बुरा है, ख़ासकर मस्जिदों में, जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं. जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र और नमाज़ से महरूम कर दे, वह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत बड़ा ज़ालिम है.

(६) मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र और नमाज़ के रोकने से होती है, ऐसे ही उसकी इमारत को नुक़सान पहुंचाने और निरादर करने से भी.

(७) दुनिया में उन्हें यह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरफ़्तार हुए, वतन से निकाले गए. ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी और उस्मानी में मुल्के शाम उनके क़ब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक़दिस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए.

(८) सहाबए किराम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे. क़िबले की दिशा मालूम न हो सकी. हर एक शख़्स ने जिस तरफ़ उस का दिल जमा, नमाज़ पढ़ी. सुबह को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाल अर्ज़ किया तो यह आयत उतरी. इससे मालूम हुआ कि क़िबले की दिशा मालूम न हो सके तो जिस तरफ़ दिल जमे कि यह क़िबला है, उसी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़े. इस आयत के उतरने के कारण के बारे में दूसरा क़ौल यह है कि यह उस मुसाफ़िर के हक़ में उतरी, जो सवारी पर नफ़्ल अदा करे, उसकी सवारी जिस तरफ़ मुंह फेर ले, उस तरफ़ उसकी नमाज़ दुरुस्त है. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों से यह साबित है. एक क़ौल यह है कि जब क़िबला बदलने का हुक्म दिया गया तो यहूदियों ने मुसलमानों पर ताना किया. उनके रद में यह आयत उतरी. बताया गया कि पूर्व पश्चिम सब अल्लाह का है, जिस तरफ़ चाहे क़िबला निश्चित करे. किसी को एतिराज़ का क्या हक़ ? (ख़ाज़िन). एक क़ौल यह है कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है. हुज़ूर से पूछा गया कि किस तरफ़ मुंह करके दुआ की जाए. इसके जवाब में यह आयत उतरी. एक क़ौल यह है कि यह आयत हक़ से गुरेज़ व फ़रार में है. और *"ऐनमा तुवल्लू"* (तुम जिधर मुंह करो) का ख़िताब उन लोगों को है जो अल्लाह के ज़िक्र से रोकते और मस्जिदों की वीरानी की कोशिश करते हैं. वो दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से कहीं भाग नहीं सकते, क्योंकि पूरब पश्चिम सब अल्लाह का है, जहाँ भागेंगे, वह गिरफ़्तार फ़रमाएगा. इस संदर्भ में *"वज्हुल्लाह"* का मतलब ख़ुदा का क़ुर्ब और हुज़ूर है. (फ़त्ह). एक क़ौल यह भी है कि मानी यह हैं कि अगर काफ़िर ख़ानए काबा में नमाज़ से मना करें तो तुम्हारे लिये सारी ज़मीन मस्जिद बनादी गई है, जहाँ से चाहे क़िबले की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ो.

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا
يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ
قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ
قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا
الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ
مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ
اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ
وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ

منزل ١

चाहिये उसकी तिलावत(पाठ) करते हैं वही उसपर ईमान रखते हैं और जो उसके इन्कारी हों तो वही घाटे वाले हैं[२२] ﴾१२१﴿

पंद्रहवाँ रूकू

ऐ यअक़ूब की सन्तान, याद करो मेरा एहसान जो मैं ने तुमपर किया और वह जो मैंने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी ﴾१२२﴿ और डरो उस दिन से कि कोई जान दूसरे का बदला न होगी और न उसको कुछ लेकर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़ा दे[१] और न उनकी मदद हो ﴾१२३﴿ और जब[२] इब्राहीम को उसके रब ने कुछ बातों से आज़माया[३] तो उसने वो पूरी कर दिखाईं[४] फ़रमाया मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूँ अर्ज़ की मेरी औलाद से, फ़रमाया मेरा एहद ज़ालिमों को नहीं पहुंचता[५] ﴾१२४﴿ और याद करो जब हमने उस घर को[६] लोगों के लिये मरजअ(शरण स्थल) और अमन बनाया[७] और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ[८] और हमने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो तवाफ़ वालों(परिक्रमा वालों) और एतिकाफ़ वालों(मस्जिद में बैठने वालों) और रूकू व सिजदे वालों के लिये ﴾१२५﴿ और जब अर्ज़ की

(९) यहूदियों ने हज़रत उज़ैर को और ईसाईयों ने हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा. अरब के मुश्रिकीन ने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताया. उनके रद में यह आयत उतरी . फ़रमाया *'सुब्हानहू'* वह पाक है इससे कि उसके औलाद हो. उसकी तरफ़ औलाद की निस्बत करना उसको ऐब लगाना और बेअदबी है. हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है इब्ने आदम ने मुझे गाली दी, मेरे लिये औलाद बताई. मैं औलाद और बीवी से पाक हूँ.

(१०) और ममलूक होना औलाद होने के मनाफ़ी है . जब तमाम जगत उसका ममलूक है, तो कोई औलाद कैसे हो सकता है अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए, वह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी.

(११) जिसने बग़ैर किसी पिछली मिसाल के चीज़ों को शून्य से अस्तित्व प्रदान किया.

(१२) यानी कायनात या सृष्टि उसके इरादा फ़रमाते ही अस्तित्व में आ जाती है.

(१३) यानी एहले किताब या मूर्तिपूजक मुश्रिकीन.

(१४) यानी वास्ते या माध्यम के बिना ख़ुद क्यों नही फ़रमाता जैसा कि फ़रिश्तों और नबियों से कलाम फ़रमाता है. यह उनके घमण्ड की सर्वोच्च सीमा और भारी सरकशी थी, उन्होंने अपने आप को फ़रिश्तों और नबियों के बराबर समझा. राफ़ेअ बिन ख़ुज़ैमा ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह से फ़रमाइये वह हमसे कलाम करे, हम ख़ुद सुनें. इसपर यह आयत उतरी.

(१५) यह उन आयतों का दुश्मनी से इन्कार है जो अल्लाह तआला ने अता फ़रमाईं.

(१६) नासमझी, नाबीनाई, कुफ़्र और दुश्मनी में. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आप उनकी सरकशी और ज़िद और इन्कार से दुखी न हों . पिछले काफ़िर भी नबियों के साथ ऐसा ही करते थे.

(१७) यानी क़ुरआनी आयतें और खुले चमत्कार इन्साफ़ वाले को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी होने का यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं, मगर जो यक़ीन करने का इच्छुक न हो वह दलीलों या प्रमाणों से फ़ायदा नहीं उठा सकता.

(१८) कि वो क्यों ईमान न लाए, इसलिये कि आपने अपना तबलीग़ का फ़र्ज़ पूरे तौर पर अदा फ़रमा दिया.

(१९) और यह असम्भव है, क्योंकि वो झूठे और बातिल हैं.

(२०) वही अनुकरण के क़ाबिल है और उसके सिवा हर एक राह झूटी और गुमराही वाली.

(२१) यह सम्बोधन उम्मते मुहम्मदिया यानी मुसलमानों के लिये है कि जब तुमने जान लिया कि नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम्हारे पास सत्य और हिदायत लेकर आए, तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना. अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला नहीं है. (ख़ाज़िन)

(२२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़माया यह आयत एहले सफ़ीना के बारे में उतरी जो जअफ़र बिन अबी तालिब

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ
اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ
فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ
بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ
مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ
اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا
مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾
رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ
اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ
وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ

इब्राहीम ने कि ऐ मेरे रब इस शहर को अमान वाला कर दे और इसके रहने वालों को तरह तरह के फलों से रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं[९] फ़रमाया और जो काफ़िर हुआ थोड़ा बरतने को उसे भी दूंगा फिर उसे दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर दूंगा और वह बहुत बुरी जगह है पलटने की﴿१२६﴾ और जब उठाता था इब्राहीम उस घर की नींव और इस्माईल यह कहते हुए ऐ रब हमारे हम से क़ुबूल फ़रमा[१०] बेशक तू ही है सुनता जानता﴿१२७﴾ ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गर्दन रखने वाला[११] और हमारी औलाद में से एक उम्मत(जन समूह) तेरी फ़रमाँबरदार(आज्ञाकारी) और हमें हमारी इबादत के क़ायदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रूजू(तवज्जुह) फ़रमा[१२] बेशक तू ही है बहुत तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान﴿१२८﴾ ऐ रब हमारे और भेज उन में[१३] एक रसूल उन्हीं में से कि उन्हें तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब[१४] और पुख़्ता(पायदार) इल्म सिखाए[१५] और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे[१६] बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला﴿१२९﴾

सोलहवाँ रूकू

और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे[१] सिवा उसके जो दिल का मूर्ख है और बेशक ज़रूर हम ने दुनिया में उसे चुन लिया[२] और बेशक वह आख़िरत में हमारे ख़ास क़ुर्ब (समीपता) की योग्यता वालों में हैं[३]﴿१३०﴾ जबकि उससे

के साथ रसूले पाक के दरबार में हाज़िर हुए थे. उनकी तादाद चालीस थी. बत्तीस हबशा वाले और आठ शाम वाले पादरी. उनमें बुहैरा राहिब (पादरी) भी थे. मतलब यह है कि वास्तव में तौरात शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वही हैं जो इसके पढ़ने का हक़ अदा करते हैं और उसके मानी समझते और मानते हैं और उसमें हुज़ूर सैयदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और गुण देखकर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के इन्कारी होते हैं वो तौरात शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते.

सूरए बक़रह - पंद्रहवाँ रूकू

(१) इसमें यहूदियों का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, हमें शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करके छुड़वा लेंगे. उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़ाअत काफ़िर के लिये नहीं.

(२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश अहवाज़ क्षेत्र में सूस स्थान पर हुई. फिर आपके वालिद आपको नमरूद के मुल्क बाबुल में ले आए. यहूदी और ईसाई और अरब के मुश्रिक सब आपकी बुज़ुर्गी मानते और आपकी नस्ल में होने पर गर्व करते हैं. अल्लाह तआला ने आपके वो हालात बयान फ़रमाए जिनसे सब पर इस्लाम क़ुबूल करना लाज़िम हो जाता है, क्योंकि जो चीज़ें अल्लाह तआला ने आप पर वाजिब कीं वो इस्लाम की विशेषताओं में से हैं.

(३) ख़ुदाई आज़माइश यह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमाकर दूसरों पर उसके खरे खोटे होने का इज़हार कर दे.

(४) जो बातें अल्लाह तआला ने हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आज़माइश के लिये वाजिब की थीं, उनमें तफ़सीर करने वालों के चन्द क़ौल हैं. क़तादा का कहना है कि वो हज के मनासिक हैं. मुजाहिद ने कहा इससे वो दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयतों में बयान की गईं हैं. हज़रत इब्ने अब्बास का एक क़ौल यह है कि वे दस चीज़ें ये हैं, मूंछें कतरवाना, कुल्ली करना, नाक में सफ़ाई के लिये पानी इस्तेमाल करना, मिस्वाक करना, सर में मांग निकालना, नाख़ुन तरशवाना, बग़ल के बाल दूर करना, पेडू के नीचे की सफ़ाई, ख़तना, पानी से इस्तंजा करना. ये सब चीज़ें हज़रत इब्राहीम पर वाजिब थीं और हम पर उनमें से कुछ वाजिब हैं.

(५) यानी आपकी औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वो इमामत की पदवी न पाएंगे . इससे मालूम हुआ कि काफ़िर मुसलमानों का पेशवा नहीं हो सकता और मुसलमानों को उसका अनुकरण जायज़ नहीं.

(६) बैत से काबा शरीफ़ मुराद है और इसमें तमाम हरम शरीफ़ दाख़िल है.

(७) अम्न बनाने से यह मुराद है कि हरमे काबा में क़त्ल व लूटमार हराम है या यह कि वहाँ शिकार तक को अम्न है. यहाँ तक कि हरम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते, छोड़ कर लौट जाते हैं. एक क़ौल यह है कि ईमान वाला इसमें दाख़िल होकर अज़ाब से सुरक्षित हो जाता है. हरम को हरम इसलिये कहा जाता है कि उसमें क़त्ल, ज़ुल्म, शिकार हराम और मना है. (अहमदी) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहाँ उसपर हाथ न डाला जाएगा. (मदारिक)

(८) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिसपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबए मुअज़्ज़मा की बिना फ़रमाई और इसमें आपके क़दम मुबारक का नशान था. उसको नमाज़ का मक़ाम बनाने का मामला महब्बत के लिये है. एक क़ौल यह भी है कि इस नमाज़ से तवाफ़ की दो रकअतें मुराद हैं. (अहमदी वग़ैरह)

(९) चूंकि इमारत के बारे में *"ला यनालो अहदिज़ ज़ालिमीन"* (यानी मेरा एहद ज़ालिमों को नहीं पहुंचता) इरशाद हो चुका था, इसलिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस दुआ में ईमान वालों को ख़ास फ़रमाया और यही अदब की शान थी. अल्लाह ने करम किया. दुआ क़ुबूल हुई और इरशाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा, ईमान वाले को भी, काफ़िर को भी. लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है, यानी सिर्फ दुनियावी ज़िन्दगी में वह फ़ायदा उठा सकता है.

(१०) पहली बार काबए मुअज़्ज़मा की बुनियाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने रखी और तूफ़ाने नूह के बाद फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसी बुनियाद पर तामीर फ़रमाई . यह तामीर ख़ास आपके मुबारक हाथ से हुई. इसके लिये पत्थर उठाकर लाने की ख़िदमत और सआदत हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को प्राप्त हुई. दोनों हज़रात ने उस वक़्त यह दुआ की कि या रब हमारी यह फ़रमाँबरदारी और ख़िदमत क़ुबूल फ़रमा.

(११) वो हज़रात अल्लाह तअला के आज्ञाकारी और मुख़लिस बन्दे थे, फिर भी यह दुआ इसलिये है कि ताअत और इख़लास में और ज़्यादा कमाल की तलब रखतें हैं. ताअत का ज़ौक़ सेर नहीं होता, सुब्हानल्लाह ,हर एक की फ़िक्र उसकी हिम्मत पर है.

(१२) हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिमस्सलाम मासूम हैं. आपकी तरफ़ तो यह तवाज़ो है और अल्लाह वालों के लिये तालीम है. यह मक़ाम दुआ की क़ुबूलियत की जगह है, और यहाँ दुआ और तौबह हज़रत इब्राहीम की सुन्नत है.

(१३) यानी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की ज़ुर्रियत में यह दुआ सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये थी, यानी काबए मुअज़्ज़मा की तामीर की अज़ीम ख़िदमात बजा लाने के लिये और तौबह और प्रायश्चित करने के बाद हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने यह दुआ की, कि या रब, अपने मेहबूब नबीये आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हमारी नस्ल में प्रकट फ़रमा और यह बुज़ुर्गी हमें इनायत कर. यह दुआ क़ुबूल हुई और उन दोनों साहिबों की नस्ल में हुज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुआ, औलादे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में बाक़ी तमाम नबी हज़रते इसहाक़ की नस्ल से हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना मीलाद शरीफ़ ख़ुद बयान किया. इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की, कि हुज़ूर ने फ़रमाया मैं अल्लाह तआला के नज़्दीक ख़ातिमुन नबिय्यीन लिखा हुआ था. उस वक़्त भी जब हज़रत आदम के पुतले का ख़मीर हो रहा था. मैं तुम्हें अपनी शुरुआत की ख़बर दूँ. मैं इब्राहीम की दुआ हूँ, ईसा की ख़ुशख़बरी हूँ, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ताबीर हूँ जो उन्होंने मेरी पैदाइश के वक़्त देखा और उनके लिये एक चमकता नूर ज़ाहिर हुआ जिससे मुल्के शाम के महल उनके लिये रौशन हो गए. इस हदीस में इब्राहीम की दुआ से यही दुआ मुराद है जो इस आयत में दी गई है. अल्लाह तआला ने यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सैयदे अम्बिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपना आख़िरी रसूल बनाकर भेजा. यह हम पर अल्लाह का एहसान है. (जुमल व ख़ाज़िन)

(१४) इस किताब से क़ुरआने पाक और इसकी तालीम से इसकी हक़ीक़तों और मानी का सीखना मुराद है.

(१५) हिकमत के मानी में बहुत से अक़वाल हैं. कुछ के नज़्दीक हिकमत से फ़िक़्ह मुराद है. क़तादा का कहना है कि हिकमत सुन्नत का नाम है. कुछ कहते हैं कि हिकमत अहकाम के इल्म को कहते हैं. ख़ुलासा यह कि हिकमत रहस्यों की जानकारी का नाम है.

(१६) सुथरा करने के मानी यह हैं कि नफ़्स की तख़्ती और आत्मा को बुराईयों से पाक करके पर्दे उठा दें और क्षमता के दर्पण को चमका कर उन्हें इस क़ाबिल करदें कि उनमें हक़ीक़तों की झलक नज़र आने लगे.

सूरए बक़रह - सोलहवाँ रुकू

(१) यहूदी आलिमों में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बाद अपने दो भतीजों मुहाजिर और सलमह को इस्लाम की तरफ़ बुलाया और उनसे फ़रमाया कि तुमको मालूम है कि अल्लाह तआला ने तौरात में फ़रमाया है कि मैं इस्माईल की औलाद से एक नबी पैदा करूंगा जिनका नाम अहमद होगा. जो उनपर ईमान लाएगा, राह पाएगा और जो उनपर ईमान न लाएगा, उसपर लअनत पड़ेगी. यह सुनकर सलमह ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने ख़ुद इस रसूले मुअज़्ज़म के भेजे जाने की दुआ फ़रमाई, तो जो उनके दीन से फिरे वह हज़रत इब्राहीम के दीन से फिरा. इसमें यहूदियों, ईसाईयों और अरब के मूर्ति पूजकों पर ऐतिराज़ है, जो अपने आपको बड़े गर्व से हज़रत इब्राहीम के साथ जोड़ते थे. जब उनके दीन से फिर गए तो शराफ़त कहाँ रही.

(२) रिसालत और क़ुर्बत के साथ रसूल और ख़लील यानी क़रीबी दोस्त बनाया.

(३) जिनके लिये बलन्द दर्जे हैं. तो जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दीन दुनिया दोनों की करामतों के मालिक हैं, तो उनकी तरीक़त यानी रास्ते से फिरने वाला ज़रूर नादान और मूर्ख है.

رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَوَصّٰی
بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِیْهِ وَیَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰی
لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمْ
كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ یَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ
لِبَنِیْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ
وَ اِلٰهَ اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ
وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْــٴَـلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا
یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ
قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِیْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۳۵﴾ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ مَاۤ
اُنْزِلَ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ
وَ الْاَسْبَاطِ وَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰى وَ عِیْسٰى وَ مَاۤ اُوْتِیَ

उसके रब ने फ़रमाया गर्दन रख, अर्ज़ की मैं ने गर्दन रखी जो रब है सारे जहान का﴾१३१﴿ अर्ज़ की वसीयत की इब्राहीम ने अपने बेटों को और यअक़ूब ने कि ऐ मेरे बेटो बेशक अल्लाह ने यह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना मगर मुसलमान﴾१३२﴿ बल्कि तुम में के ख़ुद मौजूद थे[४] जब यअक़ूब को मौत आई जबकि उसने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बाद किसकी पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आपका और आपके आबा (पूर्वज) इब्राहीम और इस्माईल[५] और इस्हाक़ का एक ख़ुदा और हम उसके हुज़ूर गर्दन रखे हैं﴾१३३﴿ यह[६] एक उम्मत है कि गुज़र चुकी[७] उनके लिये है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिये है जो तुम कमाओ और उनके कामों की तुम से पूछगछ न होगी﴾१३४﴿ और किताबी बोले[८] यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पा जाओगे, तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल (असत्य) से अलग थे, और मुश्रिकों से न थे[९]﴾१३५﴿ यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम और इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनकी औलाद जो प्रदान किये गए मूसा व ईसा और जो अता किये गए बाक़ी

(४) यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई. उन्होंने कहा था कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसिय्यत की थी. अल्लाह तआला ने उनके इस झूठ के रद में यह आयत उतारी (ख़ाज़िन). मतलब यह कि ऐ बनी इस्राईल, तुम्हारे लोग हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के आख़िरी वक़्त उनके पास मौजूद थे, जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों को बुलाकर उनसे इस्लाम और तौहीद यानी अल्लाह के एक होने का इक़रार लिया था और यह इक़रार लिया था जो इस आयत में बताया गया है.

(५) हज़रत इस्माईल औलेहिस्सलाम को हज़रत यअक़ूब के पूर्वजों में दाख़िल करना तो इसलिये है कि आप उनके चचा हैं और चचा बाप बराबर होता है . जैसा कि हदीस शरीफ़ में है. और आपका नाम हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वजह से है, एक तो यह कि आप हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से चौदह साल बड़े हैं, दूसरे इसलिये कि आप सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पूर्वज हैं.

(६) यानी हज़रत इब्राहीम और यअक़ूब अलैहिमस्सलाम और उनकी मुसलमान औलाद.

(७) ऐ यहूदियो, तुम उनपर लांछन मत लगाओ.

(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों के रईसों और नजरान के ईसायों के जवाब में उतरी. यहूदियों ने तो मुसलमानों से यह कहा था कि हज़रत मूसा सारे नबियों में सबसे अफ़ज़ल यानी बुज़ुर्गी वाले हैं. और यहूदी मज़हब सारे मज़हबों से ऊंचा है. इसके साथ उन्होंने हज़रत सैयदे कायनात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और इन्जील शरीफ़ और क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र करके मुसलमानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ. इसी तरह ईसाइयों ने भी अपने ही दीन को सच्चा बताकर मुसलमानों से ईसाई होने को कहा था. इसपर यह आयत उतरी.

(९) इसमें यहूदियों और ईसाइयों वग़ैरह पर एतिराज़ है कि तुम मुश्रिक हो, इसलिये इब्राहीम की मिल्लत पर होने का दावा जो तुम करते हो वह झूटा है . इसके बाद मुसलमानों को ख़िताब किया जाता है कि वो उन यहूदियों और ईसाइयों से यह कहदें "यूँ कहो कि हम ईमान लाए, अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतारा गया इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनकी औलाद पर....... (आयत के अन्त तक).

(१०) और उनमें सच्चाई तलाश करने की भावना नहीं.

(११) यह अल्लाह की तरफ़ से ज़िम्मा है कि वह अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ग़लबा अता फ़रमाएगा, और इस में ग़ैब की ख़बर है कि आयन्दा हासिल होने वाली विजय और कामयाबी को पहले से ज़ाहिर कर दिया. इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चमत्कार है कि अल्लाह तआला का यह ज़िम्मा पूरा हुआ और यह ग़ैबी ख़बर सच हो कर रही. काफ़िरों के हसद,

النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ
وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ
فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ
فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ
اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ
عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَ
رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ
مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ
نَصٰرٰى ۭ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ
كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾

नबी अपने रब के पास से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते और हम अल्लाह के हुज़ूर गर्दन रखे हैं﴿१३६﴾ फिर अगर वो भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो वो हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वो निरी ज़िद में हैं।[१०] तो ऐ मेहबूब शीघ्र ही अल्लाह उनकी तरफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा(काफ़ी होगा) और वही है सुनता जानता[११]﴿१३७﴾ हमने अल्लाह की रैनी ली[१२] और अल्लाह से बेहतर किसकी रैनी, और हम उसी को पूजते हैं﴿१३८﴾ तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के बारे में झगड़ते हो[१३] हालांकि वह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी[१४] और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं[१५]﴿१३९﴾बल्कि तुम यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व यअक़ूब और उनके बेटे यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़्यादा है या अल्लाह को [१६] और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसके पास अल्लाह की तरफ़ की गवाही हो और वह उसे छुपाए [१७] और ख़ुदा तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं﴿१४०﴾वह एक गिरोह(समूह)है कि गुज़र गया उनके लिये उनकी कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उनके कामों की तुम से पूछगछ न होगी﴿१४१﴾

दुश्मनी और उनकी शरारतों से हुज़ूर को नुक़्सान न पहुंचा. हुज़ूर की फ़तह हुई. बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए. बनी नुज़ैर वतन से निकाले गए. यहूदियों और ईसाइयों पर जिज़िया मुक़र्रर हुआ.

(१२) यानी जिस तरह रंग कपड़े के ज़ाहिर और बातिन पर असर करता है, उसी तरह अल्लाह के दीन के सच्चे एतिक़ाद हमारी रग रग में समा गए. हमारा ज़ाहिर और बातिन, तन और मन उसके रंग में रंग गया. हमारा रंग दिखावे का नहीं, जो कुछ फ़ायदा न दे, बल्कि यह आत्मा को पाक करता है. ज़ाहिर में इसका असर कर्मों से प्रकट होता है. ईसाई जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उनके यहाँ कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डालकर उस व्यक्ति या बच्चे को ग़ौता देते और कहते कि अब यह सच्चा हुआ. इस आयत में इसका रद फ़रमाया कि यह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं.

(१३) यहूदियों ने मुसलमानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं, हमारा क़िबला पुराना है, हमारा दीन क़दीम और प्राचीन है. हम में से नबी हुए हैं. अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नबी होते तो हम में से ही होते. इसपर यह मुबारक आयत उतरी.

(१४) उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अरब में से हो या दूसरों में से.

(१५) किसी दूसरे को अल्लाह के साथ शरीक नहीं करते और इबादत और फ़रमाँबरदारी ख़ालिस उसी के लिये करते हैं. तो हम महरबानियों और इज़्ज़त के मुस्तहिक़ हैं.

(१६) इसका भरपूर जवाब यह है कि अल्लाह ही सबसे ज़्यादा जानता है. तो जब उसने फ़रमाया *"मा काना इब्राहीमो यहूदिय्यन व ला नसरानिय्यन"* (इब्राहीम न यहूदी थे, न ईसाई) तो तुम्हारा यह कहना झूटा हुआ.

(१७) यह यहूदियों का हाल है जिन्हों ने अल्लाह तआला की गवाहियाँ छुपाईं जो तौरात शरीफ़ में दर्ज थीं कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके नबी हैं और उनकी यह तारीफ़ और गुण हैं और हज़रत इब्राहीम मुसलमान हैं और सच्चा दीन इस्लाम है, न यहूदियत न ईसाइयत.

पारा एक समाप्त

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ
قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَ
الْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ
وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ
كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ
اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ
قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ
قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

منزل ١

पारा दो - सयक़ूल
(सूरए बक़रह जारी)
सत्तरहवाँ रूकू

अब कहेंगे[१] बेवक़ूफ़ लोग किसने फेर दिया मुसलमानों को, उनके इस क़िबले से, जिसपर थे[२] तुम फ़रमा दो कि पूरब और पश्चिम सब अल्लाह ही का है[३] जिसे चाहे सीधी राह चलाता है(१४२) और बात यूं ही है कि हमने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल, कि तुम लोगों पर गवाह हो[४] और ये रसूल तुम्हारे निगहबान और गवाह[५] और ऐ मेहबूब तुम पहले जिस क़िबले पर थे हमने वह इसी लिये मुक़र्रर (निश्चित) किया था कि देखें कौन रसूल के पीछे चलता है और कौन उलटे पाँव फिर जाता है[६] और बेशक यह भारी थी मगर उनपर, जिन्हें अल्लाह ने हिदायत की, और अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हारा ईमान अकारत करे[७] बेशक अल्लाह आदमियों पर बहुत मेहरबान, मेहर(कृपा) वाला है(१४३) हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आसमान की तरफ़ मुंह करना[८] तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िबले की तरफ़ जिसमें तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे हराम की तरफ़, और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की तरफ़ करो[९] और वो जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि यह उनके रब की

दूसरा पारा : सयक़ूल
सूरए बक़रह - सत्तरहवाँ रूकू

(१) यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई, जब बैतुल मक़दिस की जगह काबे को क़िबला बनाया गया. इसपर उन्होंने ताना किया क्योंकि उन्हें यह नागवार था और वो स्थगन आदेश के क़ायल न थे. एक क़ौल पर, यह आयत मक्के के मुश्रिकों के और एक क़ौल पर, मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी और यह भी हो सकता है कि इससे काफ़िरों के ये सब गिरोह मुराद हों, क्योंकि ताना देने और बुरा भला कहने में सब शरीक थे. और काफ़िरों के ताना देने से पहले क़ुरआने पाक में इसकी ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है. तअना देने वालों को बेवक़ूफ़ इसलिये कहा गया कि वो निहायत खुली बात पर ऐतिराज़ करने लगे जबकि पिछले नबीयों ने आपका लक़ब "दो क़िबलों वाला" बताया भी था और क़िबले का बदला जाना ख़बर देते आए. ऐसे रौशन निशान से फ़ायदा न उठाना और ऐतिराज़ किये जाना परले दर्जे की मुर्ख़ता है.

(२) क़िबला उस दिशा को कहते हैं जिसकी तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है. यहाँ क़िबला से बैतुल मक़दिस मुराद है.

(३) उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िबला बनाए. किसी को ऐतिराज़ का क्या हक़. बन्दे का काम फ़रमाँबरदारी है.

(४) दुनिया और आख़िरत में. दुनिया में तो यह कि मुसलमान की गवाही ईमान वाले और काफ़िर सबके हक़ में शरई तौर से भरोसे वाली है और काफ़िर की गवाही मुसलमान पर माने जाने के क़ाबिल नहीं. इससे यह भी मालूम हुआ कि किसी बात पर इस उम्मत की सर्वसहमति अनिवार्य रूप से क़ुबूल किये जाने योग्य है. गुज़रे लोगों के हक़ में भी इस उम्मत की गवाही मानी जाएगी. रहमत और अज़ाब के फ़रिश्ते उसके मुताबिक़ अमल करते हैं. सही हदीस की किताबों में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने एक जनाज़ा गुज़रा. आपके साथियों ने उसकी तारीफ़ की. हुज़ूर ने फ़रमाया "वाजिब हुई". फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा. सहाबा ने उसकी बुराई की. हुज़ूर ने फ़रमाया "वाजिब हुई". हज़रत उमर ने पूछा कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुमने तारीफ़ की, उसके लिये जन्नत वाजिब हुई. दूसरे की तुमने बुराई की, उसके लिये दोज़ख़ वाजिब हुई. तुम ज़मीन में अल्लाह के गवाह हो. फिर हुज़ूर ने यह आयत तिलावत फ़रमाई. ये तमाम गवाहियाँ उम्मत के नेक और सच्चे लोगों के साथ ख़ास हैं, और उनके विश्वसनीय होने के लिये ज़बान की एहतियात शर्त है. जो लोग ज़बान की एहतियात नहीं करते और शरीअत के ख़िलाफ़ बेजा बातें उनकी ज़बान से निकलती हैं और नाहक़ लानत करते हैं, सही हदीस की किताबों में है कि क़यामत के दिन न

رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَئِنْ
اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ
بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

तरफ़ से हक़ है[१०] और अल्लाह उनके कौतुकों से बेख़बर नहीं﴾१४४﴿ और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी लेकर आओ वो तुम्हारे क़िबले की पैरवी (अनुकरण) न करेंगे[११] और न तुम उनके क़िबले की पैरवी करो[१२] और वो आपस में एक दूसरे के क़िबले के तावे (फ़रमाँबरदार) नहीं[१३] और (ऐ सुनने वाले जो कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चला बाद इसके कि तुझे इल्म मिल चुका तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (अन्यायी) होगा﴾१४५﴿ जिन्हें हमने किताब अता फ़रमाई[१४] वो उस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है[१५]. और बेशक उनमें एक गिरोह (समूह) जान बूझ कर हक़ (सच्चाई) छुपाते हैं[१६]﴾१४६﴿ (ऐ सुनने वाले) ये सच्चाई है तेरे रब की तरफ़ से (या सच्चाई वही है जो तेरे रब की तरफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना﴾१४७﴿

अट्ठारहवाँ रूकू

और हर एक के लिये तवज्जह की सम्त (दिशा) है कि वह उसी की तरफ़ मुंह करता है तो ये चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो अल्लाह तुम सब को इकट्ठा ले आएगा[१] बेशक अल्लाह जो चाहे करे﴾१४८﴿ और जहां से आओ[२] अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और वह ज़रूर तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं﴾१४९﴿ और ऐ मेहबूब तुम जहां से आओ अपना मुंह मस्जिदे हराम

वो सिफ़ारिशी होंगे और न गवाह. इस उम्मत की एक गवाही यह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अगली पिछली उम्मतें जमा होंगी और काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा, क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और निर्देश पहुंचाने वाले नहीं आए, तो वो इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया . नबियों से पूछा जाएगा, वो अर्ज़ करेंगे कि ये झूटे हैं, हमने इन्हें तेरे निर्देश बताए. इसपर उनसे दलील तलब की जाएगी. वो अर्ज़ करेंगे कि हमारी गवाह उम्मते मुहम्मदिया है. ये उम्मत पैग़म्बरों की गवाही देगी कि उन हज़रात ने तबलीग़ फ़रमाई. इसपर पिछली उम्मतों के काफ़िर कहेंगे, इन्हें क्या मालूम, ये हमसे बाद हुए थे. पूछा जाएगा तुम कैसे जानते हो. ये अर्ज़ करेंगे, या रब तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजा, क़ुरआन पाक उतारा, उनके ज़रिये हम क़तई यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि नबियों ने तबलीग़ का फ़र्ज़ भरपूर तौर से अदा किया. फिर नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपकी उम्मत के बारे में पूछा जाएगा. हुज़ूर उनकी पुष्टि फ़रमाएंगे. इससे मालूम हुआ कि जिन चीज़ों की यक़ीनी जानकारी सुनने से हासिल हो उसपर गवाही दी जा सकती है.

(५) उम्मत को तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बताए से उम्मतों के हाल और नबियों की तबलीग़ की क़तई यक़ीनी जानकारी है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के करम से नबुव्वत के नूर के ज़रिये हर आदमी के हाल और उसके ईमान की हक़ीक़त और अच्छे बुरे कर्मों और महब्बत व दुश्मनी की जानकारी रखते हैं. इसीलिये हुज़ूर की गवाही दुनिया में शरीअत के हुक्म से उम्मत के हक़ में मक़बूल है. यही वजह है कि हुज़ूर ने अपने ज़माने के हाज़िरीन के बारे में जो कुछ फ़रमाया, जैसे कि सहाबा और नबी के घर वालों की बुज़ुर्गी और बड़ाई, या बाद वालों के लिये, जैसे हज़रत उवैस और इमाम मेहदी वग़ैरह के बारे में, उसपर अक़ीदा रखना वाजिब है. हर नबी को उसकी उम्मत के कर्मों की जानकारी दी जाती है. ताकि क़यामत के दिन गवाही दे सकें चूंकि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की गवाही आम होगी इसलिये हुज़ूर तमाम उम्मतों के हाल की जानकारी रखते हैं. यहाँ शहीद का मतलब जानकार भी हो सकता है, क्योंकि शहादत का शब्द जानकारी और सूचना के लिये भी आया है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया *"वल्लाहो अला कुल्ले शैइन शहीद"* यानी और अल्लाह हर चीज़ की जानकारी रखता है. (सूरए मुजादलह, आयत ६)

(६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पहले काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे. हिजरत के बाद बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुआ. सत्तरह महीने के क़रीब उस तरफ़ नमाज़ पढ़ी. फिर काबा शरीफ़ की तरफ़ मुंह करने का हुक्म हुआ. क़िबला बदले जाने की एक वजह यह बताई गई कि इससे ईमान वाले और काफ़िर में फ़र्क़ और पहचान साफ़ हो जाएगी. चुनान्चे ऐसा ही हुआ.

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ
عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۚ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۚ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا
عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝
فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ
بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ
الْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَآ

की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसीकी तरफ़ करो कि लोगों को तुमपर कोई हुज्जत (तर्क) न रहे[३] मगर जो उनमें ना इन्साफ़ी करें[४] तो उनसे न डरो और मुझसे डरो और यह इसलिये है कि मैं अपनी नेअमत (अनुकम्पा) तुमपर पूरी करूं और किसी तरह तुम हिदायत पाओ ﴾१५०﴿ जैसा हमने तुममें भेजा एक रसूल तुम में से[५] कि तुमपर हमारी आयतें तिलावत करता है (पढ़ता है) और तुम्हें पाक करता[६] और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है[७] और तुम्हें वह तालीम फ़रमाता है जिसकी तुम्हें जानकारी न थी ﴾१५१﴿ तो मेरी याद करो, मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा[८] और मेरा हक़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो ﴾१५२﴿

उन्नीसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो[९] बेशक अल्लाह साबिरों (सब्र करने वालों) के साथ है ﴾१५३﴿ और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो[२] बल्कि वो ज़िन्दा हैं, हाँ तुम्हें ख़बर नहीं[३] ﴾१५४﴿ और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूख से[४] और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से[५] और ख़ुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को ﴾१५५﴿ कि जब उनपर कोई मुसीबत पड़े

(७) बैतुल मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सहाबा ने वफ़ात पाई उनके रिश्तेदारों ने क़िबला बदले जाने के बाद उनकी नमाज़ों के बारे में पूछा था, उसपर ये आयत उतरी और इत्मीनान दिलाया गया कि उनकी नमाज़ें बेकार नहीं गईं, उनपर सवाब मिलेगा. नमाज़ को ईमान बताया गया क्योंकि इसकी अदा और जमाअत से पढ़ना ईमान की दलील है.

(८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काबे का क़िबला बनाया जाना पसन्द था और हुज़ूर इसी उम्मीद में आसमान की तरफ़ नज़र फ़रमाते थे. इसपर यह आयत उतरी. आप नमाज़ ही में काबे की तरफ़ फिर गए. मुसलमानों ने भी आपके साथ उसी तरफ़ रूख़ किया. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रज़ा और पसन्द मन्ज़ूर है और आपकी ख़ातिर ही काबे को क़िबला बनाया गया.

(९) इससे साबित हुआ कि नमाज़ में क़िबले की तरफ़ मुंह होना फ़र्ज़ है.

(१०) क्योंकि उनकी किताबों में हुज़ूर की तारीफ़ के सिलसिले में यह भी दर्ज था कि आप बैतुल मक़दिस से काबे की तरफ़ फ़िरेंगे और उनके नबियों ने बशारतों के साथ हुज़ूर का यह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़दिस और काबा दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे.

(११) क्योंकि निशानी उसको लाभदायक हो सकती है जो किसी शुबह की वजह से इन्कारी हो. ये तो हसद और दुश्मनी के कारण इन्कार करते हैं, इन्हें इससे क्या नफ़ा होगा.

(१२) मानी ये हैं कि यह क़िबला स्थगित न होगा. तो अब किताब वालों को यह लालच न रखना चाहिये कि आप उनमें से किसी के क़िबले की तरफ़ रूख़ करेंगे.

(१३) हर एक का क़िबला अलग है. यहूदी तो बैतुल मक़दिस के गुम्बद को अपना क़िबला क़रार देते हैं और ईसाई बैतुल मक़दिस के उस पूर्वी मकान को, जहाँ हज़रत मसीह की रूह डाली गई. (फ़त्ह).

(१४) यानी यहूदियों और ईसाइयों के उलमा.

(१५) मतलब यह कि पिछली किताबों में आख़िरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण ऐसे साफ़ शब्दों में बयान किये गए हैं जिनसे किताब वालों के उलमा को हुज़ूर के आख़िरी नबी होने में कुछ शक शुबह बाक़ी नहीं रह सकता और वो हुज़ूर के इस उच्चतम पद को पूरे यक़ीन के साथ जानते हैं. यहूदी आलिमों में से अब्दुल्लाह बिन सलाम इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उनसे पूछा कि आयत *"यअरिफ़ूनहू"* (वो इस नबी को ऐसा पहचानते हैं.....) में जो पहचान बयान की गई है उसकी शान क्या है. उन्होंने फ़रमाया, ऐ उमर, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा तो बग़ैर किसी शुबह के पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से कहीं ज़्यादा भरपूर और सम्पूर्ण है. हज़रत उमर ने पूछा, वह कैसे?

उन्होंने कहा मैं गवाही देता हूँ कि हुज़ूर अल्लाह की तरफ़ से उसके भेजे हुए रसूल हैं, उनके गुण अल्लाह तआला ने हमारी किताब तौरात में बयान फ़रमाए हैं. बेटे की तरफ़ से ऐसा यक़ीन किस तरह हो. औरतों का हाल ऐसा ठीक ठीक किस तरह मालूम हो सकता है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उनका सर चूम लिया . इससे मालूम हुआ कि ऐसी दीनी महब्बत में जिसमें वासना शामिल न हो, माथा चूमना जायज़ है.

(१६) यानी तौरात और इन्जील में जो हुज़ूर की नअत और गुणगान है, किताब वालों के उलमा का एक गुट उसको हसद, ईर्ष्या और दुश्मनी से जानबूझ कर छुपाता है. सच्चाई का छुपाना गुनाह और बुराई है.

सूरए बक़रह - अठ्ठारहवाँ रूकू

(१) क़यामत के दिन सबको जमा फ़रमाएगा और कर्मों का बदला देगा.

(२) यानी चाहे किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो, नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे हराम (काबे) की तरफ़ करो.

(३) और काफ़िर को यह ताना करने का मौक़ा न मिले कि उन्होंने क़ुरैश के विरोध में हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहिमस्सलाम का क़िबला भी छोड़ दिया जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनकी औलाद में हैं और उनकी बड़ाई और बुज़ुर्गी को मानते भी हैं.

(४) और दुश्मनी के कारण बेजा ऐतिराज़ करें.

(५) यानी सैयदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(६) नापाकी, शिर्क और गुनाहों से.

(७) हिक्मत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक्ह मुराद ली है.

(८) ज़िक्र तीन तरह का होता है (१) ज़बान से (२) दिल में (३) शरीर के अंगों से. ज़बानी ज़िक्र तस्बीह करना, पाकी बोलना और तारीफ़ करना वग़ैरह है. ख़ुत्बा, तौबा इस्तिग़फ़ार, दुआ वग़ैरह इसमें आते हैं. दिल में ज़िक्र यानी अल्लाह तआला की नेअमतों को याद करना, उसकी बड़ाई और शक्ति और क्षमता में ग़ौर करना. उलमा जो दीन की बातों में विचार करते हैं, इसी में दाख़िल है. शरीर के अंगों के ज़रिये ज़िक्र यह है कि शरीर अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में मशग़ूल हो, जैसे हज के लिये सफ़र करना, यह शारीरिक ज़िक्र में दाख़िल है. नमाज़ तीनों क़िस्मों के ज़िक्र पर आधारित है. तस्बीह, तक्बीर, सना व क़ुरआन का पाठ तो ज़बानी ज़िक्र है. और एकाग्रता व यकसूई, ये सब दिल के ज़िक्र में है, और नमाज़ में ख़ड़ा होना, रूकू व सिजदा करना वग़ैरह शारीरिक ज़िक्र है. इब्ने अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम फ़रमाँबरदारी के साथ मेरा हुक्म मान कर मुझे याद करो, मैं तुम्हें अपनी मदद के साथ याद करूंगा. सही हदीस की किताबों में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे एकान्त में याद करता है तो मैं भी उसको ऐसे ही याद फ़रमाता हूँ और अगर वह मुझे जमाअत में या सामूहिक रुप से याद करता है तो मैं उसको उससे बेहतर जमाअत में याद करता हूँ. क़ुरआन और हदीस में ज़िक्र के बहुत फ़ायदे आए हैं, और ये हर तरह के ज़िक्र को शामिल हैं, ऊंची आवाज़ में किये जाने वाले ज़िक्र भी और आहिस्ता किये जाने वाले ज़िक्र को भी.

सूरए बक़रह - उन्नीसवाँ रूकू

(१) हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को जब कोई सख़्त या कड़ी मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मशग़ूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में बरसात की दुआ वाली नमाज़ और हाजत की दुआ वाली नमाज़ भी शामिल है.

(२) यह आयत बद्र के शहीदों के बारे में उतरी. लोग शहीदों के बारे में कहते थे कि वह व्यक्ति मर गया. वह दुनिया की सहूलतों से मेहरूम हो गया. उनके बारे में यह आयत उतरी.

(३) मौत के बाद ही अल्लाह तआला शहीदों को ज़िन्दगी अता फ़रमाता है. उनकी आत्माओं पर रिज़्क़ पेश किये जाते हैं, उन्हें राहतें दी जाती हैं, उनके कर्म जारी रहते हैं, सवाब और इनाम बढ़ता रहता है. हदीस शरीफ़ में है कि शहीदों की आत्माएं हरे परिन्दों के रूप में जन्नत की सैर करती हैं और वहाँ के मेवे और नेअमतें ख़ाती हैं. अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती नेअमतें मिलती हैं. शहीद वह सच्चा मुसलमान है जो तेज़ हथियार से ज़बरदस्ती मारा गया हो और उसके क़त्ल से माल भी वाजिब न हुआ हो. या युद्ध में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया हो, और उसने कुछ आसायश न पाई. उसपर दुनिया में यह अहकाम हैं कि उसको न नहलाया जाय, न कफ़न. अपने कपड़ों ही में रखा जाय. उसी तरह उसपर नमाज़ पढ़ी जाए, उसी हालत में दफ़्न किया जाए. आख़िरत में शहीद का बड़ा रुत्बा है. कुछ शहीद वो हैं कि उनपर दुनिया के ये अहकाम तो जारी नहीं होते, लेकिन आख़िरत में उनके लिए शहादत का दर्जा है, जैसे डूब कर या जलकर या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, इल्म की तलाश में या हज के सफ़र में मरने वाला, यानी ख़ुदा की राह में मरने वाला, ज़चगी के बाद की हालत में मरने वाली औरत, और पेट की बीमारी और प्लेग और ज़ातुल जुनुब और सिल की बीमारी और जुमे के दिन मरने वाले, वग़ैरह.

(४) आज़मायश से फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है.

(५) इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमत ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से अल्लाह का डर, भूख से रमज़ान के रोज़े, माल की कमी से ज़कात और सदक़ात देना, जानों की कमी से बीमारियों से मौतें होना, फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है. इसलिये कि औलाद दिल का फल होते हैं. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रुह निकाली. वो अर्ज़ करते हैं, हाँ.

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ
رٰجِعُوْنَ ۞ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ
رَحْمَةٌ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۞ اِنَّ الصَّفَا وَ
الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ
اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ
لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ
اللّٰعِنُوْنَ ۞ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا
فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۞
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۞ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۞

तो कहें हम अल्लाह के माल में हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना(६)(१५६) ये लोग हैं जिनपर उनके रब की दुरूदें हैं और रहमत, और यही लोग राह पर हैं(१५७) बेशक सफ़ा और मर्वा (पहाड़ियां)(७) अल्लाह के निशानों से हैं(८) तो जो उस घर का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे(९) और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो अल्लाह नेकी का सिला (इनाम) देने वाला ख़बरदार है(१५८) बेशक वो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं(१०) बाद इसके कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह (स्पष्ट) फ़रमा चुके उनपर अल्लाह की लअनत है और लअनत करने वालों की लअनत(११)(१५९) मगर वो जो तौबह करें और संवारें और ज़ाहिर करें तो मैं उनकी तौबह क़ुबूल फ़रमाऊंगा और मैं ही हूँ बड़ा तौबह क़ुबूल फ़रमाने वाला मेहरबान(१६०) बेशक वो जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर ही मरे उनपर लअनत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों सबकी(१२)(१६१) हमेशा रहेंगे उसमें न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए(१६२)

फिर फ़माता है तुमने उसके दिल का फल ले लिया. अर्ज़ करते हैं, हाँ या रब. फ़रमाता है उसपर मेरे बन्दे ने क्या कहा? अर्ज़ करते हैं उसने तेरी तारीफ़ की और *''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन''* (यानी हम अल्लाह की तरफ से है और उसीकी तरफ़ हमें लौटना है) पढ़ा, फ़रमाता है उसके लिये जन्नत में मकान बनाओ और उसका नाम बैतुल हम्द रखो . मुसीबत के पेश आने से पहले ख़बर देने में कई हिकमते हैं, एक तो यह कि इससे आदमी को मुसीबत के वक़्त सब्र आसान हो जाता है, एक यह कि जब काफ़िर देखें कि मुसलमान बला और मुसीबत के वक़्त सब्र, शुक्र और साबित क़दमी के साथ अपने दीन पर क़ायम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मालूम हो और उसकी तरफ़ दिल खिंचे. एक यह कि आने वाली मुसीबत पेश आने से पहले की सूचना अज्ञात की ख़बर और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चमत्कार है. एक हिकमत यह कि मुनाफ़िक़ों के क़दम मुसीबत की ख़बर से उखड़ जाएं और ईमान वाले और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़ मालूम हो जाए.

(६) हदीस शरीफ़ में है कि मुसीबत के वक़्त *''इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन''* पढ़ना अल्लाह की रहमत लाता है. यह भी हदीस में है कि मूमिन की तकलीफ़ को अल्लाह गुनाह मिटाने का ज़रिया बना देता है.

(७) सफ़ा और मर्वा मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं, जो काबे के सामने पूर्व की ओर स्थित हैं. मर्वा उत्तर की तरफ़ झुका हुआ और सफ़ा दक्षिण की तरफ़ जबले अबू क़ुबैस के दामन में है . हज़रत हाजिरा और हज़रत इस्माईल ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब उस मक़ाम पर जहाँ ज़मज़म का कुआँ है, अल्लाह के हुक्म से सुकूनत इख़्तियार की. उस वक़्त यह जगह पथरीली वीरान थी, न यहाँ हरियाली थी न पानी, न खाने पीने का कोई साधन. अल्लाह की ख़ुशी के लिये इन अल्लाह के प्यारे बन्दों ने सब्र किया. हज़रत इस्माईल बहुत छोटे से थे, प्यास से जब उनकी हालत नाज़ुक हो गई तो हज़रत हाजिरा बेचैन होकर सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गईं. वहाँ भी पानी न पाया तो उतर कर नीचे के मैदान में दौड़ती हुई मर्वा तक पहुंचीं. इस तरह सात बार दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ीं और अल्लाह तआला ने *''इन्नल्लाहा मअस साबिरीन''* (अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है) का जलवा इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा ज़मज़म नमूदार किया और उनके सब्र और महब्बत की बरकत से उनके अनुकरण में इन दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ने वालों को अपना प्यारा किया और इन दोनों जगहों को दुआ क़ुबूल होने की जगहें बनाया.

(८) *''शआइरिल्लाह''* से दीन की निशानियाँ मुराद हैं, चाहे वो मकानात हों जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, शैतान को कंकरी मारने की तीनों जगहें, सफ़ा, मर्वा, मिना, मस्जिदें, या ज़माने जैसे रमज़ान, ज़िलक़ाद, ज़िलहज्ज और मुहर्रम के महीने, ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्हा, जुमा, अय्यामे तशरीक़ यानी दस, ग्यारह, बारह, तेरह ज़िल हज्जा, या दूसरे चिन्ह जैसे अज़ान, अक़ामत, बा-जमाअत नमाज़, जुमे की नमाज़, ईद की नमाज़ें, ख़तना, ये सब दीन की निशानियाँ हैं.

(९) इस्लाम से पहले के दिनों में सफ़ा और मर्वा पर दो मूर्तियाँ रखी थीं. सफ़ा पर जो मूर्ति थी उसका नाम असाफ़ था और जो मर्वा पर थी उसका नाम नायला था. काफ़िर जब सफ़ा और मर्वा के बीच सई करते या दौड़ते तो उन मूर्तियों पर अदब से हाथ फेरते.

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ
الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَ
اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي
فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ
السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَ
السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ
آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا
وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ

और तुम्हारा मअबूद (आराध्य) एक मअबूद है[१३] उसके सिवा कोई माबूद नहीं मगर वही बड़ी रहमत वाला मेहरबान ﴾१६३﴿

बीसवाँ रूकू

बेशक आसमानों[१] और ज़मीन की पैदायश और रात व दिन का बदलते आना और किश्ती कि दरिया में लोगों के फ़ायदे लेकर चलती है और वह जो अल्लाह ने आसमान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को उससे ज़िन्दा कर दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश (चक्कर) और वह बादल कि आसमान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अक़्लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं ﴾१६४﴿ और कुछ लोग अल्लाह के सिवा और माबूद बना लेते हैं कि उन्हें अल्लाह की तरह मेहबूब रखते हैं और ईमान वालों को अल्लाह के बराबर किसी की महब्बत नहीं, और कैसी हो अगर देखें ज़ालिम वह वक़्त जबकि अज़ाब उनकी आँखों के सामने आएगा इसलिये कि सारा ज़ोर अल्लाह को है और इसलिये कि अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है ﴾१६५﴿ जब बेज़ार होंगे पेशवा अपनें मानने वालों से[२] और देखेंगे अज़ाब और कट जाएंगी उनसब की डोरें[३] ﴾१६६﴿ और कहेंगे अनुयायी

इस्लाम के एहद में बुत तो तोड़ दिये गए थे लेकिन चूंकि काफ़िर यहाँ शिर्क के काम करते थे इसलिये मुसलमानों को सफ़ा और मर्वा के बीच सई करना भारी लगा कि इसमें काफ़िरों के शिर्क के कामों के साथ कुछ मुशाबिहत है. इस आयत में उनका इत्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी नियत ख़ालिस अल्लाह की इबादत की है, तुम्हें मुशाबिहत का डर नहीं करना चाहिये और जिस तरह काबे के अन्दर जाहिलियत के दौर में काफ़िरों ने मूर्तियाँ रखी थीं, अब इस्लाम के एहद में वो मूर्तियाँ उठा दी गईं और काबे का तवाफ़ दुरुस्त रहा और वह दीन की निशानियों में से रहा, उसी तरह काफ़िरों की बुत परस्ती से सफ़ा और मर्वा के दीन की निशानी होने में कोई फ़र्क़ नहीं आया. सई (यानी सफ़ा और मर्वा के बीच दौड़ना) वाजिब है, हदीस से साबित है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमेशा इसे किया है. इसे छोड़ देने से दम यानी क़ुर्बानी वाजिब हो जाती है . सफ़ा और मर्वा के बीच दौड़ना हज और उमरा दोनों में ज़रूरी है. फ़र्क़ यह है कि हज के अन्दर अरफ़ात में जाना और वहाँ से काबे के तवाफ़ के लिये आना शर्त है. और उमरे के लिये अरफ़ात में जाना शर्त नहीं. उमरा करने वाला अगर मक्का के बाहर से आए, उसको सीधे मक्कए मुकर्रमा में आकर तवाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का रहने वाला हो, तो उसको चाहिये कि हरम से बाहर जाए, वहाँ से काबे के तवाफ़ के लिये एहराम बाँधकर आए. हज व उमरा में एक फ़र्क़ यह भी है कि हज साल में एक ही बार हो सकता है, क्योंकि अरफ़ात में अरफ़े के दिन यानी ज़िलहज्जा की नौ तारीख़ को जाना, जो हज में शर्त है, साल में एक बार ही सम्भव हो सकता है. उमरा हर दिन हो सकता है, इसके लिये कोई वक़्त निर्धारित नहीं है.

(१०) यह आयत यहूदियों के उन उलमा के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात शरीफ़ और आयते रज्म और तौरात के दूसरे आदेश छुपाया करते थे . यहाँ से मालूम हुआ कि दीन की जानकारी को ज़ाहिर करना फ़र्ज़ है.

(११) लानत करने वालों से फ़रिश्ते और ईमान वाले लोग मुराद हैं. एक क़ौल यह है कि अल्लाह के सारे बन्दे मुराद हैं.

(१२) मूमिन तो काफ़िरों पर लानत करेंगे ही, काफ़िर भी क़यामत के दिन एक दूसरे पर लानत करेंगे. इस आयत में उन पर लानत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे. इससे मालूम हुआ कि जिसकी मौत कुफ़्र पर मालूम हो, उसपर लानत करनी जायज़ है. गुनहगार मुसलमान पर तअय्युन के साथ लानत करना जायज़ नहीं. लेकिन अलल इतलाक़ जायज़ है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़ोर वग़ैरह पर लानत आई है.

(१३) काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, आप अपने रब की शान और सिफ़त बयान कीजिये. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बता दिया गया कि मअबूद सिर्फ़ एक है न उसके टुकड़े हो सकते हैं, न उसको बाँटा जा सकता है, न उसके लिये मिस्ल न नज़ीर. पूजे जाने और रब होने के मामले में कोई उसका शरीक नहीं, वह यकता है, अपने कामों में. चीज़ों को तनहा उसीने बनाया, वह अपनी ज़ात में अकेला है, कोई उसका जोड़ नहीं. अपनी विशेषताओं और गुणों में वह यगाना है, कोई उस जैसा नहीं. अबूदाऊद और तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला का इसमे आज़म इन दो आयतों में है. एक यही

الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا

منزل ١

काश हमें लौट कर जाना होता(दुनिया में) तो हम उनसे तोड़ देते जैसे उन्होंने हम से तोड़ दी. यूंही अल्लाह उन्हें दिखाएगा उनके काम उनपर हसरतें होकर[४] और वो दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं《१६७》

इक्कीसवाँ रूकू

ऐ लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में[१] हलाल और पाकीज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है《१६८》 वह तो तुम्हें यही हुक्म देगा बदी और बेहयाई का और यह कि अल्लाह पर वह बात जोड़ो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं《१६९》 और जब उनसे कहा जाए अल्लाह के उतारे पर चलो[२] तो कहें बल्कि हम तो उसपर चलेंगे जिसपर अपने बाप दादा को पाया क्या अगरचे(यद्यापि) उनके बाप दादा न कुछ अक़्ल रखते हों न हिदायत[३]《१७०》 और काफ़िरों की कहावत उसकी सी है जो पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने[४] बहरे गूंगे अंधे तो उन्हें समझ नहीं[५]《१७१》 ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और अल्लाह का अहसान मानो

आयत *''व इलाहोकुम''* दूसरी *''अलिफ़ लाम मीम अल्लाहो लाइलाहा इल्लाहुवा......''*

सूरए बक़रह - बीसवाँ रूकू

(१) काबए मुअज़्ज़मा के चारों तरफ़ मुश्रिकों के ३६० बुत थे, जिन्हें वो मअबूद मानते थे. उन्हें यह सुनकर बड़ी हैरत हुई कि मअबूद सिर्फ़ एक है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं. इसलिये उन्होंने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ऐसी आयत तलब की जिससे अल्लाह के एक होने पर सही दलील हो. इसपर यह आयत उतरी. और उन्हें बताया गया कि आसमान और उसकी बलन्दी और उसका बिना किसी खम्भे और इलाक़े के क़ायम रहना, और जो कुछ उसमें नज़र आता है, चाँद सूरज सितारे वग़ैरह, ये तमाम और ज़मीन और इसका फैलाव और पानी पर टिका हुआ होना और पहाड़, दरिया, चश्मे, खानें, पेड़ पौधे, हरियाली, फल और रात दिन का आना जाना घटना बढ़ना, किश्तियाँ और उनका भारी बोझ और वज़न के साथ पानी पर चलते रहना और आदमियों का उनपर सवार होकर दरिया के चमत्कार देखना और व्यापार में उनसे माल ढोने का काम लेना और बारिश और इससे ख़ुश्क और मुर्दा हो जाने के बाद ज़मीन का हरा भरा करना और नई ज़िन्दगी अता करना और ज़मीन को क़िस्म क़िस्म के जानवरों से भरदेना, इसी तरह हवाओं का चलना और उनकी विशेषताएं और हवा के चमत्कार और बादल और उसका इतने ज़्यादा पानी के साथ आसमान और ज़मीन के बीच टिका रहना, यह आठ बातें हैं जो क़ुदरत और सर्वशक्तिमान अल्लाह के इल्म और हिकमत और उसके एक होने को साबित करती हैं. ये जो चीज़ें ऊपर बयान हुई ये सब संभव चीज़े हैं और उनका अस्तित्व बहुत से विभिन्न तरीक़ों से मुमकिन था. मगर वो मख़सूस शान से अस्तित्व में आईं. यह प्रमाण है कि ज़रूर उनके लिये कोई ईजाद करने वाला भी है. सर्वशक्तिमान अल्लाह अपनी इच्छा और इरादे से जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़्ल देने या ऐतिराज़ की मजाल नहीं. वो मअबूद यक़ीनन एक और यक्ता है, क्योंकि अगर उसके साथ कोई दूसरा मअबूद भी माना जाए तो उसको भी यह सब काम करने की शक्ति रखने वाला मानना पड़ेगा. असरदार बनाए रखने में दोनों एक इरादा, एक इच्छा रखने वाले होंगे या नहीं होंगे. अगर हों, तो एक ही चीज़ की बनावट में दो असर करने वालों का असर करना लाज़िम आएगा और यह असम्भव है. और अगर यह फ़र्ज़ करो कि तासीर उनमें से एक की है, तो दूसरे की शक्तिहीनता ठहरेगी, जो मअबूद होने के ख़िलाफ़ है. और अगर यह होगा कि एक किसी चीज़ के होने का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उसके न होने का, तो वह चीज़ एक ही हाल में मौजूद या ग़ैरमौजूद या दोनों न होगी. ज़रूरी है कि या मौजूदगी होगी या ग़ायब, एक ही बात होगी. अगर मौजूद हुई तो ग़ायब का चाहने वाला शक्तिहीन ठहरे और मअबूद न रहे, और अगर ग़ायब हुई तो मौजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा, मअबूद न रहा. लिहाज़ा यह साबित हो गया कि ''इलाह'' यानी मअबूद एक ही हो सक्ता.

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ
الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ
اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ
عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى
النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع
لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ

अगर तुम उसी को पुजते हो[६] ﴿१७२﴾ उसने यही तुमपर हराम किये हैं मुर्दार (मृत)[७] और ख़ून[८] और सुअर का गोश्त[९] और वो जानवर जो ग़ैर ख़ुदा का नाम लेकर ज़िब्ह किया गया[१०] तो जो नाचार हो[११] न यूं कि ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उसपर गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ﴿१७३﴾ वो जो छुपाते हैं[१२] अल्लाह की उतारी किताब और उसके बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं[१३] वो अपने पेट में आग ही भरते हैं[१४] और अल्लाह क़यामत के दिन उनसे बात न करेगा और न उन्हें सुथरा करे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है ﴿१७४﴾ वो लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख़्शिश (इनाम) के बदले अज़ाब तो किस दर्जा उन्हें आग की सहार है ﴿१७५﴾ ये इसलिये कि अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी, और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) डालने लगे[१५] वो ज़रूर परले सिरे के झगड़ालू हैं ﴿१७६﴾

बाईसवाँ रूकू

कुछ अस्ल नेकी यह नहीं कि मुंह मश्रिक़ (पूर्व) या मग़रिब (पश्चिम) की तरफ़ करो[१] हाँ अस्ल नेकी ये कि ईमान लाए अल्लाह और क़यामत और फ़रिश्तों और किताब

(२) यह क़यामत के दिन का बयान है, जब शिर्क करने वाले और उनके सरदार, जिन्होंने उन्हें कुफ़्र की तरफ़ बुलाया था, एक जगह जमा होंगे और अज़ाब उतरता हुआ देखकर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे.

(३) यानी वो सारे सम्बन्ध जो दुनिया में उनके बीच थे, चाहे वो दोस्तीयाँ हों या रिश्तेदारीयाँ, या आपसी सहयोग के एहद.

(४) यानी अल्लाह तआला उनके बुरे कर्म उनके सामने करेगा तो उन्हें काफ़ी हसरत होगी कि उन्होंने ये काम क्यों किये थे . एक क़ौल यह है कि जन्नत के मक़ामात दिखाकर उनसे कहा जाएगा कि अगर तुम अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी करते तो ये तुम्हारे लिये थे. फिर वो जगहें ईमान वालों को दी जाएंगी . इसपर उन्हें हसरत और शर्मिन्दगी होगी.

सूरए बक़रह - इक्कीसवाँ रूकू

(१) ये आयत उन लोगों के बारे में उतरी जिन्हों ने बिजार वग़ैरह को हराम क़रार दिया था . इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों को हराम क़रार देना उसकी रिज़्क़ देने वाली शक्ति से बग़ावत है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है जो माल मैं अपने बन्दों को अता फ़रमाता हूं वह उनके लिये हलाल है. और उसी में है कि मैंने अपने बन्दों को बातिल से बेतअल्लुक़ पैदा किया, फिर उनके पास शैतान आए और उन्होंने दीन से बहकाया, और जो मैंने उनके लिये हलाल किया था, उसको हराम ठहराया. एक और हदीस में है, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मैंने यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने पढ़ी तो हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास ने खड़े होकर अर्ज़ की, या रसूलल्लाह दुआ फ़रमाइये कि अल्लाह तआला मुझे मुस्तजाबुद दावत (यानी वह आदमी जिसकी हर दुआ अल्लाह क़ुबूल फ़रमाए) कर दे. हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ सअद, अपनी ख़ुराक पाक करो, मुस्तजाबुद दावत हो जाओगे. उस ज़ाते पाक की क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद की जान है, जो आदमी अपने पेट में हराम का लुक़्मा डालता है, तो चालीस रोज़ तक क़ुबूलियत से मेहरूमी रहती है. (तफ़सीरे इब्ने कसीर)

(२) तौहीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को हलाल जानो, जिन्हें अल्लाह ने हलाल किया.

(३) जब बाप दादा दीन की बातों को न समझते हों और सीधी राह पर न हों तो उनका अनुकरण करना मूर्खता और गुमराही है.

(४) यानी जिस तरह चौपाए चरवाहे की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं, कलाम के मानी नहीं समझते, यही हाल उन काफ़िरों का है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आवाज़ को सुनते हैं, लेकिन उसके मानी दिल में बिठाकर आपके इरशाद से फ़ायदा नहीं उठाते.

(५) यह इसलिये कि वो सच्ची बात सुनकर लाभ न उठा सके, सच्ची बात उनकी ज़बान पर जारी न हो सकी, नसीहतों से उन्होंने

कोई फ़ायदा न उठाया.
(६) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की नेअमतों पर शुक्र वाजिब है.
(७) जो हलाल जानवर बग़ैर ज़िब्ह किये मर जाए या उसको शरई तरीक़े के ख़िलाफ़ मारा गया हो जैसे कि गला घोंट कर, या लाठी, पत्थर, ढेले, गुल्ले, गोली मार कर हलाल किया गया हो, या वह गिरकर मर गया हो, या किसी जानवर ने सींग से मारा हो या किसी दरिन्दे ने हलाल किया हो, उसको मुर्दार कहते हैं. और इसी के हुक्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वह अंग जो काट लिया गया हो. मुर्दार जानवर का खाना हराम है, मगर उसका पका हुआ चमड़ा काम में लाना और उसके बाल, सींग, हड्डी, पट्ठे, खुरी वग़ैरह से फ़ायदा उठाना जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी)
(८) ख़ून हर जानवर का हराम है, अगर बहने वाला हो . दूसरी आयत में फ़रमाया ***"औ दमम मस्फ़ूहन"*** (यानी या रगों का बहता ख़ून या बद जानवर का गोश्त, वह नजासत है) (सूरए अनआम - १४५).
(९) सुअर नजिसुल ऐन है, यानी अत्यन्त अपवित्र है, उसका गोश्त पोस्त, बाल, नाख़ुन वग़ैरह तमाम अंग नजिस, नापाक और हराम हैं. किसी को काम में लाना जायज़ नहीं. चूंकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इसलिये यहाँ गोश्त के ज़िक्र को काफ़ी समझा गया.
(१०) जिस जानवर पर ज़िब्ह के वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम लिया जाए, चाहे अकेले या ख़ुदा के नाम के साथ "और" मिलाकर, वह हराम है. और अगर ख़ुदा के नाम के साथ ग़ैर का नाम "और" कहे बिना मिलाया तो मकरूह है. अगर ज़िब्ह फ़क़त अल्लाह के नाम पर किया और उससे पहले या बाद में ग़ैर का नाम लिया, जैसे कि यह कहा अक़ीक़े का बकरा या वलीमे का दुम्बा या जिसकी तरफ़ से वह ज़बीहा है उसी का नाम लिया या जिन वलियों के लिये सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर है, उनका नाम लिया, तो यह जायज़ है, इसमें कुछ हर्ज नहीं. (तफ़सीरे अहमदी)
(११) "मुज़्तर" अर्थात नाचार वह है जो हराम चीज़ खाने पर मजबूर हो और उसको न खाने से जान जाने का डर हो, चाहे तो कड़ी भूक या नादारी के कारण जान पर बन जाए और कोई हलाल चीज़ हाथ न आए या कोई व्यक्ति हराम के खाने पर जब्र करता हो और उससे जान का डर हो. ऐसी हालत में जान बचाने के लिये हराम चीज़ का ज़रूरत भर यानी इतना खालेना जायज़ है कि मरने का डर न रहे.
(१२) यहूदियों के उलमा और सरदार, जो उम्मीद रखते थे कि आख़िरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनमें से आएंगे. जब उन्होंने देखा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दूसरी क़ौम में से भेजे गए, तो उन्हें यह डर हुआ कि लोग तौरात और इंजील में हुज़ूर के गुण देखकर आपकी फ़रमाँबरदारी की तरफ़ झुक पड़ेंगे और उनके नज़राने, तोहफ़े, हदियें, सब बन्द हो जाएंगे, हुकूमत जाती रहेगी . इस ख़याल से उन्हें हसद पैदा हुआ और तौरात व इंजील में जो हुज़ूर की नअत और तारीफ़ और आपके वक़्ते नबुव्वत का बयान था, उन्होंने उसको छुपाया. इसपर यह मुबारक आयत उतरी . छुपाना यह भी है कि किताब के मज़मून पर किसी को सूचित न होने दिया जाए, न वह किसी को पढ़ के सुनाया जाए, न दिखाया जाए. और यह भी छुपाना है कि ग़लत मतलब निकाल कर मानी बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मानी पर पर्दा डाला जाए.
(१३) यानी दुनिया के तुच्छ नफ़े के लिये सत्य को छुपाते हैं.
(१४) क्योंकि ये रिश्वतें और यह हराम माल जो सच्चाई को छुपाने के बदले उन्होंने लिया है, उन्हें जहन्नम की आग में पहुंचाएगा.
(१५) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी कि उन्होंने तौरात में विरोध किया. कुछ ने उसको सच्चा कहा, कुछ ने बातिल, कुछ ने ग़लत सलत मतलब जोड़े, कुछ ने इबारत बदल डाली. एक क़ौल यह है कि यह आयत शिर्क करने वालों के बारे में नाज़िल हुई. उस सूरत में किताब से मुराद क़ुरआन है और उनका विरोध यह है कि उनमें से कुछ इसको शायरी कहते हैं, कुछ जादू, कुछ टोना टोटका.

सूरए बक़रह - बाईसवाँ रूकू

(१) यह आयत यहूदियों और ईसाईयों के बारे में नाज़िल हुई, क्योंकि यहूदियों ने बैतुल मक़दिस के पूर्व को और ईसाइयों ने उसके पश्चिम को क़िबला बना रखा था और हर पक्ष का ख़याल था कि सिर्फ़ इस क़िबले ही की तरफ़ मुंह करना काफ़ी है. इस आयत में इसका रद फ़रमाया गया कि बैतुल मक़दिस का क़िबला होना स्थगित हो गया. (मदारिक). तफ़सीर करने वालों का एक क़ौल यह भी है कि यह सम्बोधन किताब वालों और ईमान वालों सब को आम है. और मानी ये हैं कि सिर्फ़ क़िबले की ओर मुंह करलेना अस्ल नेकी नहीं जबतक अक़ीदे दुरूस्त न हों और दिल सच्ची महब्बत के साथ क़िबले के रब की तरफ़ मुतवज्जेह न हो.

الْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى
حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى
الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى
بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ
فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ
يّٰاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا

और पैग़म्बरों पर[२] और अल्लाह की महब्बत में अपना अज़ीज़ माल दे रिश्तदरों और अनाथों और दरिद्रों और राहगीर और सायलों (याचकों) को और गर्दनें छुड़ाने में[३] और नमाज़ क़ायम रखे और ज़कात दे, और अपना कहा पूरा करने वाले जब अहद करें, और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त, यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की, और यही परहेज़गार हैं (१७७) ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है[४] कि जो नाहक़ मारे जाएं उनके ख़ून का बदला लो[५] आज़ाद के बदले अज़ाद, और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत[६] तो जिसके लिये उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हुई[७] तो भलाई से तक़ाज़ा हो और अच्छी तरह अदा, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हल्का करना है और तुमपर रहमत, तो इसके बाद जो ज़्यादती करे[८] उसके लिये दर्दनाक अज़ाब है (१७८) और ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है, ऐ अक़्लमन्दो[९] कि तुम कहीं बचो (१७९) तुमपर फ़र्ज़

(२) इस आयत में नेकी के छ तरीक़े इरशाद फ़रमाए - (क) ईमान लाना (ख) माल देना (ग) नमाज़ क़ायम करना (घ) ज़कात देना (ण) एहद पूरा करना (६) सब्र करना. ईमान की तफ़सील यह है कि एक अल्लाह तआला पर ईमान लाए कि वह ज़िन्दा है, क़ायम रखने वाला है, इल्म वाला, हिकमत वाला, सुनने वाला, देखने वाला, देने वाला, क़ुदरत वाला, अज़ल से है, हमेशा के लिये है, एक है, उसका कोई शरीक नहीं. दूसरे क़यामत पर ईमान लाए कि वह सच्चाई है. उसमें बन्दों का हिसाब होगा, कर्मों का बदला दिया जाएगा . अल्लाह के प्रिय-जन शफ़ाअत करेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सआदत-मन्दों या फ़रमाँबरदारों को हौज़े कौसर से जी भर कर पिलाएंगे, सिरात के पुल पर गुज़र होगा और उस रोज़ के सारे अहवाल जो क़ुरआन में आए या सैयदुल अम्बीया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बयान फ़रमाए, सब सत्य हैं. तीसरे, फ़रिश्तों पर ईमान लाए कि वो अल्लाह के पैदा किये हुए और फ़रमाँबरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं, न औरत, उनकी तादाद अल्लाह ही जानता है , उनमें से चार बहुत नज़दीकी और बुज़ुर्गी वाले हैं, जिब्रईल, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़राईल (अल्लाह की सलामती उन सब पर). चौथे, अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना कि जो किताब अल्लाह तआला ने उतारी, सच्ची है. उनमें चार बड़ी किताबें हैं - (१) तौरात हज़रत मूसा पर (२) इंजल हज़रत ईसा पर, (३) ज़ुबूर हज़रत दाऊद पर और (४) क़ुरआन हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व अलैहिम अजमईन पर नाज़िल हुई. और पचास सहीफ़े हज़रत शीस पर, तीस हज़रत इद्रीस पर, दस हज़रत आदम पर और दस हज़रत इब्राहीम पर नाज़िल हुए. पाँचवें, सारे नबीयों पर ईमान लाना कि वो सब अल्लाह के भेजे हुए हैं और मासूम यानी गुनाहों से पाक हैं. उनकी सही तादाद अल्लाह ही जानता है. उनमें ३१३ रसूल हैं. ''नबिय्यीन'' बहुवचन पुल्लिंग में ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि नबी मर्द होते हैं. कोई औरत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि *''वमा अरसलना मिन क़बलिका इल्ला रिजालन''* (और हमने नहीं भेजे तुमसे पहले अपने रसूल मगर सिर्फ़ मर्द) सूरए नहल की ४३वीं आयत से साबित है. ईमाने मुजमल यह है : *''आमन्तो बिल्लाहे व बिजमीए मा जाआ बिहिन नबिय्यो''* (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) यानी मैं अल्लाह पर ईमान लाया और उन तमाम बातों पर जो नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के पास से लाए. (तफ़सीरे अहमदी)

(३) ईमान के बाद कर्मो का और इस सिलसिले में माल देने का बयान फ़रमाया. इसके छः उपयोग ज़िक्र किये. गर्दनें छुड़ाने से ग़ुलामों का आज़ाद करना मुराद है. यह सब मुस्तहब तौर पर माल देने का बयान था. इस आयत से मालूम होता है कि सदक़ा देना, तनदुरुस्ती की हालत में ज़्यादा पुण्य रखता है, इसके विपरीत कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से निराश होकर दे. हदीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदक़ा देन में दो सवाब हैं, एक सदक़े का, दूसरा ज़रूरतमन्द रिश्तेदार के साथ मेहरबानी का. (नसाई शरीफ़)

(४) यह आयत औस और ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई. उनमें से एक क़बीला दूसरे से जनसंख्या में, दौलत और बुज़ुर्गी में ज़्यादा था. उसने क़सम खाई थी कि वह अपने ग़ुलाम के बदले दूसरे क़बीले के आज़ाद को, और औरत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा. जाहिलियत के ज़माने में लोग इसी क़िस्म की बीमारी में फंसे थे. इस्लाम के काल में यह मामला सैयदे

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰي سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ وَعَلَي الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۭ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۭ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ

منزل ١

हुआ कि जब तुम में किसी को मौत आए अगर कुछ माल छोड़े वसीयत करजाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये दस्तूर के अनुसार[१०] यह वाजिब है परहेज़गारों पर(१८०) तो जो वसीयत को सुन सुनकर बदल दे[११] उसका गुनह उन्हीं बदलने वालों पर है[१२] बेशक अल्लाह सुनता जानता है(१८१) फिर जिसे डर हुआ कि वसीयत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या गुनाह किया तो उसने उसमें सुल्ह करा दी उसपर कुछ गुनाह नहीं[१३] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(१८२)

तेईसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो[१] तुमपर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले[२](१८३) गिनती के दिन हैं[३] तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो[४] तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इसकी ताक़त न हो वो बदला दें एक दरिद्र का खाना[५] फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़्यादा करे[६] तो वह उसके लिये बेहतर है, और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़्यादा भला है अगर तुम जानो[७](१८४) रमज़ाम का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा[८]

आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ तो यह आयत उतरी और इन्साफ़ और बराबरी का हुक्म दिया और इसपर वो लोग राज़ी हुए. क़ुरआने करीम में ख़ून का बदला लेने यानी क़िसास का मसअला कई आयतों में बयान हुआ है. इस आयत में क़िसास और माफ़ी दोनों के मसअले हैं और अल्लाह तआला के इस एहसान का बयान है कि उसने अपने बन्दों को बदला लेने और माफ़ कर देने की पूरी आज़ादी दी, चाहें बदला लें, चाहें माफ़ करदें . आयत के शुरू में क़िसास के वाजिब होने का बयान है.

(५) इससे जानबूझ कर क़त्ल करने वाले हर क़ातिल पर किसास का वुजूब अर्थात अनिवार्यता साबित होती है. चाहे उसने आज़ाद को क़त्ल किया हो या ग़ुलाम को ,मुसल्मान को या काफ़िर को, मर्द को या औरत को. क्योंकि "क़तला" जो क़तील का बहुवचन है, वह सबको शामिल है. हाँ जिसको शरई दलील ख़ास करे वह मख़सूस हो जाएगा. (अहकामुल क़ुरआन)

(६) इस आयत में बताया गया है कि जो क़त्ल करेगा वही क़त्ल किया जाएगा चाहे आज़ाद हो या ग़ुलाम, मर्द हो या औरत. और जाहिलों का यह तरीक़ा ज़ुल्म है जो उनमें रायज या प्रचलित था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वह एक के बदले दो को क़त्ल करते, ग़ुलामों में होती तो ग़ुलाम के बजाय आज़ाद को मारते. औरतों में होती तो औरत के बदले मर्द का क़त्ल करते थे और केवल क़ातिल के क़त्ल पर चुप न बैठते. इसको मना फ़रमाया गया.

(७) मानी ये हैं कि जिस क़ातिल को मृतक के वली या वारिस कुछ माफ़ करें और उसके ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए, उसपर मृतक के वारिस तक़ाज़ा करने में नर्मी इख़्तियार करें और क़ातिल ख़ून का मुआविज़ा समझबूझ के माहौल में अदा करे. (तफ़सीरे अहमदी). मृतक के वारिस को इख़्तियार है कि चाहे क़ातिल को बिना कुछ लिये दिये माफ़ करदे या माल पर सुलह करे. अगर वह इसपर राज़ी न हो और ख़ून का बदला ख़ून ही चाहे, तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा(जुमल). अगर मृतक के तमाम वारिस माफ़ करदें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता. अगर माल पर सुलह करें तो क़िसास साक़ित (शून्य) हो जाता है और माल वाजिब होता है (तफ़सीरे अहमदी). मृतक के वली को क़ातिल का भाई फ़रमाने में इसपर दलालत है कि क़त्ल अगरचे बड़ा गुनाह है मगर इससे ईमान का रिशता नहीं टूटता. इसमें ख़ारजियों का रद है जो बड़े गुनाह करने वाले को काफ़िर कहते हैं.

(८) यानी जाहिलियत के तरीक़े के अनुसार, जिसने क़त्ल नहीं किया है उसे क़त्ल करे या दिय्यत क़ुबूल करे और माफ़ करने के बाद क़त्ल करे.

(९) क्योंकि क़िसास मुक़र्रर होने से लोग क़त्ल से दूर रहेंगे और जानें बचेंगी.

(१०) यानी शरीअत के क़ानून के मुताबिक़ इन्साफ़ करे और एक तिहाई माल से ज़्यादा की वसिय्यत न करे और मुहताजों पर मालदारों को प्राथमिक्ता न दे. इस्लाम की शुरूआत में यह वसिय्यत फ़र्ज़ थी. जब मीरास यानी विरासत के आदेश उतरे, तब स्थगित की गई. अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में वसिय्यत करना मुस्तहब है. शर्त यह है कि वारिस मुहताज न हों, या तर्का मिलने पर मुहताज न रहें, वरना तर्का वसिय्यत से अफ़ज़ल है. (तफ़सीरे अहमदी)

الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ
الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ
كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۗ
يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ
قَرِيْبٌ ۗ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ
لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ۗ هُنَّ لِبَاسٌ
لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ
كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ
فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا
وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ

लोगों के लिये हिदायत और राहनुमाई और फ़ैसला की रौशन बातें, तो तुम में जो कोई यह महीना पाए ज़रूर इसके रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में, अल्लाह तुमपर आसानी चाहता है और तुमपर दुशवारी नहीं चाहता और इसलिये कि तुम गिनती पूरी करो[९] और अल्लाह की बड़ाई बोलो इसपर कि उसने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हक़गुज़ार हो(यानी कृतज्ञ)(१८५) और ऐ मेहबूब जब तुमसे मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक़ हूँ[१०] दुआ क़ुबूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारते[११] तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझपर ईमान लाएं कि कहीं राह पाएं(१८६) रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल(वैद्य) हुआ[१२] वो तुम्हारी लिबास हैं और तुम उनके लिबास, अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़यानत(बेईमानी) में डालते थे तो उसने तुम्हारी तौबह क़ुबूल की और तुम्हें माफ़ फ़रमाया[१३] तो अब उनसे सोहबत करो[१४] और तलब करो जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो[१५] और खाओ और पियो[१६] यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फटकर[१७]

(११) चाहे वह व्यक्ति हो जिसके नाम वसिय्यत की गई हो, चाहे वली या सरपरस्त हो, या गवाह. और वह तबदीली वसिय्यत की लिखाई में करे या बँटवारे में या गवाही देने में . अगर वह वसिय्यत शरीअत के दायरे में है तो बदलने वाला गुनहगार होगा.

(१२) और दूसरे, चाहे वह वसिय्यत करने वाला हो या वह जिसके नाम वसिय्यत की गई है, बरी हैं.

(१३) मतलब यह है कि वारिस या वसी यानी वह जिसके नाम वसिय्यत की जाय. या इमाम या क़ाज़ी जिसको भी वसिय्यत करने वाले की तरफ़ से नाइन्साफ़ी या नाहक़ कार्रवाई का डर हो वह अगर, जिसके लिये वसिय्यत की गई, या वारिसों में, शरीअत के मुवाफ़िक़ सुलह करादे तो गुनाह नहीं क्योंकि उसने हक़ की हिमायत के लिये बातिल को बदला. एक क़ौल यह भी है कि मुराद वह शख़्स है जो वसिय्यत के वक़्त देखे कि वसिय्यत करने वाला सच्चाई से आगे जाता है और शरीअत के ख़िलाफ़ तरीक़ा अपनाता है तो उसको रोक दे और हक़ व इन्साफ़ का हुक्म करे.

सूरए बक़रह - तेईसवाँ रूकू

(१) इस आयत में रोज़े फ़र्ज़ होने का बयान है. रोज़ा शरीअत में इसका नाम है कि मुसलमान, चाहे मर्द हो या शारीरिक नापाकी से आज़ाद औरत, सुबह सादिक़ से सूरज डूबने तक इबादत की नियत से खाना पीना और सहवास से दूर रहे. (आलमगीरी). रमज़ान के रोज़े दस शव्वाल सन दो हिजरी को फ़र्ज़ किये गये (दुर्रे मुख़्तार व ख़ाज़िन). इस आयत से साबित होता है कि रोज़े पुरानी इबादत हैं. आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से सारी शरीअतों में फ़र्ज़ होते चले आए, अगरचे दिन और संस्कार अलग थे, मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे.

(२) और तुम गुनाहों से बचो, क्योंकि यह कसरे-नफ़्स का कारण और तक़वा करने वालों का तरीक़ा है.

(३) यानी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना.

(४) सफ़र से वह यात्रा मुराद है जिसकी दूरी तीन दिन से कम न हो. इस आयत में अल्लाह तआला ने बीमार और मुसाफ़िर को छूट दी कि अगर उसको रमज़ान में रोज़ा रखने से बीमारी बढ़ने का या मौत का डर हो या सफ़र में सख़्ती या तकलीफ़ का, तो बीमारी या सफ़र के दिनों में रोज़ा खोल दे और जब बीमारी और सफ़र से फ़ारिग़ होले, तो पाबन्दी वाले दिनों को छोड़कर और दिनों में उन छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा पूरी करे. पाबन्दी वाले दिन पांच है जिन में रोज़ा रखना जायज़ नहीं, दोनों ईदें और ज़िल्हज की ग्यारहवीं, बारहवीं और १३ वीं तारीख़. मरीज़ को केवल वहम पर रोज़ा खोल देना जायज़ नहीं. जब तक दलील या तजुर्बा या परहेज़गार और सच्चे तबीब की ख़बर से उसको यह यक़ीन न हो जाए कि रोज़ा रखने से बीमारी बढ़ जाएगी. जो शख़्स उस वक़्त बीमार न हो मगर मुसलमान तबीब यह कहे कि रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा, वह भी मरीज़ के हुक्म में है. गर्भवती या दूध पिलाने वाली औरत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उसके बीमार होजाने का डर हो तो उसको भी रोज़ा खोल

देना जायज़ है. जिस मुसाफ़िर ने फ़ज्र तुलू होने से पहले सफ़र शुरू किया उसको तो रोज़े का खोलना जायज़ है, लेकिन जिसने फ़ज्र निकलने के बाद सफ़र किया, उसको उस दिन का रोज़ा खोलना जायज़ नहीं.

(५) जिस बूढ़े मर्द या औरत को बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण रोज़ा रखने की ताक़त न रहे और आगे भी ताक़त हासिल करने की उम्मीद न हो, उसको शैख़े फ़ानी कहते हैं. उसके लिये जायज़ है कि रोज़ा खोल दे और हर रोज़े के बदले एक सौ पछहत्तर रुपये और एक अठन्नी भर गेहूँ या गेहूँ का आटा या उससे दुगने जौ या उसकी क़ीमत फ़िदिया के तौर पर दे. अगर फ़िदिया देने के बाद रोज़ा रखने की ताक़त आगई तो रोज़ा वाजिब होगा. अगर शैख़े फ़ानी नादार हो और फ़िदिया देने की क्षमता न रखता हो तो अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता रहे और दुआ व तौबा में लगा रहे.

(६) यानी फ़िदिया की मिक़दार से ज़्यादा दे.

(७) इससे मालूम हुआ कि अगरचे मुसाफ़िर और मरीज़ को रोज़ा खोलने की इजाज़त है लेकिन बेहतरी रोज़ा रखने में ही है.

(८) इसके मानी में तफ़सीर करने वालों के चन्द अक़वाल हैं :(१) यह कि रमज़ान वह है जिसकी शान व शराफ़त में क़ुरआने पाक उतरा (२)यह कि क़ुरआने करीम के नाज़िल होने की शुरुआत रमज़ान में हुई. (३) यह कि क़ुरआन करीम पूरा रमज़ाने मुबारक की शबे क़द्र में लौहे मेहफ़ूज़ से दुनिया के आसमान की तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़्ज़त में रहा. यह उसी आसमान पर एक मक़ाम है. यहाँ से समय समय पर अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा जिब्रीले अमीन लाते रहे. यह नुज़ूल तेईस साल में पूरा हुआ.

(९) हदीस में है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि महीना उनतीस दिन का भी होता है तो चाँद देखकर खोलो. अगर उनतीस रमज़ान को चाँद न दिखाई दे तो तीस दिन की गिनती पूरी करो.

(१०) इसमें हक़ और सच्चाई चाहने वालों की उस तलब का बयान है जो अल्लाह को पाने की तलब है, जिन्हों ने अपने रब के इश्क़ में अपनी ज़रूरतों को क़ुरबान कर दिया, वो उसी के तलबगार हैं, उन्हें क़ुर्ब और मिलन की ख़ुशख़बरी सुनाकर ख़ुश किया गया. सहाबा की एक जमाअत ने अल्लाह के इश्क़ की भावना में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा कि हमारा रब कहाँ है, इसपर क़ुर्ब की ख़ुशख़बरी दी गई और बताया गया कि अल्लाह तआला मकान से पाक है. जो चीज़ किसी से मकानी क़ुर्ब रखती हो वह उसके दूर वाले से ज़रूर दूरी रखती है. और अल्लाह तआला सब बन्दों से क़रीब है. मकानी की यह शान नहीं. क़ुर्बत की मन्ज़िलों में पहुँचने के लिये बन्दे को अपनी ग़फ़लत दूर करनी होती है.

(११) दुआ का मतलब है हाजत बयान करना और इजाबत यह है कि परवर्दिगार अपने बन्दे की दुआ पर *"लब्बैका अब्दी"* फ़रमाता है. मुराद अता फ़रमाना दूसरी चीज़ है. वह भी कभी उसके करम से फ़ौरन होती है, कभी उसकी हिक्मत के तहत देरी से, कभी बन्दे की ज़रूरत दुनिया में पूरी फ़रमाई जाती है, कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़ा दूसरी चीज़ में होता है, वह अता की जाती है. कभी बन्दा मेहबूब होता है, उसकी ज़रूरत पूरी करने में इसलिये देर की जाती है कि वह अर्से तक दुआ में लगा रहे, कभी दुआ करने वाले में सिदक़ व इख़लास वग़ैरह शर्तें पूरी नहीं होतीं, इसलिये अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दों से दुआ कराई जाती है. नाजायज़ काम की दुआ कराना जायज़ नहीं. दुआ के आदाब में है कि नमाज़ के बाद हम्दो सना और दरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ करे.

(१२) पिछली शरीअतों में इफ़्तार के बाद खाना पीना सहवास करना ईशा की नमाज़ तक हलाल था, ईशा बाद ये सब चीज़ें रात में भी हराम हो जातीं थी. यह हुक्म सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़मानए अक़दस तक बाक़ी था. कुछ सहाबा ने रमज़ान की रातों में नमाज़ ईशा के बाद सहवास किया, उनमें हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो भी थे. इसपर वो हज़रात लज्जित हुए और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपना हाल अर्ज़ किया. अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमाया और यह आयत उतरी और बयान कर दिया गया कि आयन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुबह सादिक़ तक अपनी पत्नी के साथ सहवास हलाल किया गया.

(१३) इस ख़यानत से वह सहवास मुराद है जो इजाज़त मिलने से पहले के रमज़ान की रातों में मुसलमानों ने किया. उसकी माफ़ी का बयान फ़रमाकर उनकी तसल्ली फ़रमा दी गई.

(१४) यह बात इजाज़त के लिये है कि अब वह पाबन्दी उठाली गई और रमज़ान की रातों में सहवास हलाल कर दिय गया.

(१५) इसमें हिदायत है कि सहवास नस्ल और औलाद हासिल करने की नियत से होना चाहिये, जिससे मुसलमान बढ़ें और दीन मज़बूत हो . मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि मानी ये हैं कि सहवास शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ हो जिस महल में जिस तरीक़े से इजाज़त दी गई उससे आगे न बढ़ा जाए. (तफ़सीरे अहमदी). एक क़ौल यह भी है जो अल्लाह ने लिखा उसको तलब करने के मानी हैं रमज़ान की रातों में इबादत की कसरत (ज़्यादती) और जाग कर शबे-क़द्र की तलाश करना.

(१६) यह आयत सरमआ बिन क़ैस के बारे में उतरी. आप महनती आदमी थे. एक दिन रोज़े की हालत में दिन भर अपनी ज़मीन में काम करके शाम को घर आए. बीवी से खाना माँगा. वह पकाने में लग गई यह थके थे आँख लग गई. जब खाना तैयार करके उन्हें बेदार किया उन्होंने खाने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस ज़माने में सो जाने के बाद रोज़ेदार पर खाना पीना बन्द हो जाता था और उसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया. कमज़ोरी बहुत बढ़ गई. दोपहर को चक्कर आगया. उनके बारे में यह आयत उतरी और रमज़ान की रातों में उनके कारण खाना पीना हलाल किया गया, जैसे कि हज़रत उमर रदियअल्लाहो अन्हो की अनाबत और रूजू के सबब क़ुर्बत हलाल हुई.

(१७) रात को सियाह डोरे से और सुबह सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तशबीह दी गई. मानी ये हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान

الخيط الاسود من الفجر ثم اتموا الصيام الى
الليل ولا تباشروهن وانتم عكفون في
المسجد تلك حدود الله فلا تقربوها كذلك
يبين الله ايته للناس لعلهم يتقون ۝ ولا
تاكلوا اموالكم بينكم بالباطل وتدلوا بها الى
الحكام لتاكلوا فريقا من اموال الناس بالاثم
وانتم تعلمون ۝ يسئلونك عن الاهلة قل هي
مواقيت للناس والحج وليس البر بان تاتوا
البيوت من ظهورها ولكن البر من اتقى واتوا
البيوت من ابوابها واتقوا الله لعلكم تفلحون ۝
وقاتلوا في سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا
تعتدوا ان الله لا يحب المعتدين ۝ واقتلوهم
حيث ثقفتموهم واخرجوهم من حيث اخرجوكم

फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो[१८] और औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ से हो (यानी दुनिया से अलग थलग बैठे हो)[१९] ये अल्लाह की हदें हैं, इनके पास न जाओ, अल्लाह यूंही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले (१८७) और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उनका मुक़दमा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का कुछ माल नाजायज़ तौर पर खालो[२०] जान बूझ कर (१८८)

चौबीसवाँ रूकू

तुमसे नए चांद को पूछते हैं[१] तुम फ़रमादो वो वक़्त की अलामतें (चिन्ह) हैं लोगों और हज के लिये[२] और यह कुछ भलाई नहीं कि[३] घरों में पछैत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़गारी है, और घरों में दरवाज़ों से आओ[४] और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह (भलाई) पाओ (१८९) और अल्लाह की राह में लड़ो[५] उनसे जो तुमसे लड़ते हैं[६] और हद से न बढ़ो[७] अल्लाह पसन्द नहीं रखता हद से बढ़ने वालों को (१९०) और काफ़िरों को जहाँ पाओ मारो[८] और उन्हें निकाल दो[९]

की रातों में मग़रिब से सुबह सादिक़ तक हलाल कर दिया गया. (तफ़सीरे अहमदी). सुबह सादिक़ तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत या शरीर की नापाकी रोज़े में रूकावट नहीं है. जिस शख़्स को नापाकी के साथ सुबह हुई, वह नहाले, उसका रोज़ा जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी). इसी से उलमा ने यह मसअला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की नियत दिन में जायज़ है.

(१८) इससे रोज़े की आख़िरी हद मालूम होती है और यह मसअला साबित होता है कि रोज़े की हालत में खाने पीने और सहवास में से हर एक काम करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम हो जाता है (मदारिक). उलमा ने इस आयत को सौमे विसाल यानी तय के रोज़े यानी एक पर एक रोज़ा रखने की मनाही की दलील क़रार दिया है.

(१९) इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ेदार के लिये बीवी से हमबिस्तरी हलाल है जब कि वह मस्जिद में एतिकाफ़ में न बैठा हो. एतिकाफ़ में औरतों से क़ुरबत और चूमा चाटी, लिपटाना चिपटाना सब हराम हैं. मर्दों के एतिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है. एतिकाफ़ में बैठे आदमी को मस्जिद में खाना पीना सोना जायज़ है. औरतों का एतिकाफ़ उनके घरों में जायज़ है. एतिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें जमाअत क़ायम हो. एतिकाफ़ में रोज़ा शर्त है.

(२०) इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना हराम फ़रमाया गया है, चाहे वह लूट कर छीन कर या चोरी से या जुए से या हराम तमाशों से या हराम कामों या हराम चीज़ों के बदले या रिशवत या झूटी गवाही या चुग़लख़ोरी से, यह सब मना और हराम है. इससे मालूम हुआ कि नाजायज़ फ़ायदे के लिये किसी पर मुक़दमा बनाना और उसको हाकिम तक लेजाना हराम और नाजायज़ है. इसी तरह अपने फ़ायदे के लिये दूसरे को हानि पहुंचाने के लिये हाकिम पर असर डालना, रिशवत देना हराम है. हाकिम तक पहुंच वाले लोग इन आदेशों को नज़र में रखें . हदीस शरीफ़ में मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने वाले पर लानत आई है.

सूरए बक़रह - चौबीसवाँ रूकू

(१) यह आयत हज़रत मआज़ बिन जबल और सअलबा बिन ग़िनम अन्सारी के जवाब में उतरी. उन दोनों ने दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, चाँद का क्या हाल है, शुरु में बहुत बारीक निकलता है, फिर दिन ब दिन बढ़ता है यहाँ तक कि पूरा रौशन हो जाता है फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की तरह बारीक हो जाता है. एक हालत में नहीं रहता. इस सवाल का मक़सद चाँद के घटने बढ़ने की हिकमत जानना था. कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि सवाल का मक़सद चाँद के इख़्तिलाफ़ात का कारण मालूम करना था.

(२) चाँद के घटने बढ़ने के फ़ायदे बयान फ़रमाए कि वह वक़्त की निशानियाँ हैं और आदमी के हज़ारों दीनी व दुनियावी काम इससे जुड़े हैं. खेती बाड़ी, लेन देन के मामले, रोज़े और ईद का समय, औरतों की इद्दतें, माहवारी के दिन, गर्भ और दूध पिलाने

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَاتَلُوكُمْ
فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنِ انتَهَوْا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ
فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا
عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾ الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ
الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾
وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى
التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾
وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ

जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला था[१०] और उनका फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है[११] और मस्जिदे हराम के पास उन से न लड़ो जबतक वो तुम से वहां न लड़ें[१२] और अगर तुमसे लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो[१३] काफ़िरों की यही सज़ा है﴾१९१﴿ फिर अगर वो बाज़(रूके) रहें[१४] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾१९२﴿ और उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो, फिर अगर वो बाज़ आएं[१५] तो ज़्यादती नहीं मगर ज़ालिमों पर﴾१९३﴿ माहे हराम के बदले माहे हराम और अदब के बदले अदब है[१६] जो तुमपर ज़ियादती करे उसपर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उसने की, और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है﴾१९४﴿ और अल्लाह की राह में ख़र्च करो[१७] और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो,[१८] और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले अल्लाह के मेहबूब हैं﴾१९५﴿ और हज व उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो[१९] फिर अगर तुम रोके जाओ[२०] तो क़ुरबानी भेजो जो मयस्सर(उपलब्ध) आए[२१] और अपने सर न मुंडाओ जब तक क़ुरबानी अपने ठिकाने न

की मुद्दतें और दूध छुड़ाने का वक़्त और हज के औक़ात इससे मालूम होते हैं क्योंकि पहले जब चाँद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि यह शुरू की तारीख़ें हैं. और जब चाँद पूरा रौशन हो जाता है तो मालूम हो जाता है कि यह महीने की बीच की तारीख़ है, और जब चाँद छुप जाता है तो यह मालूम होता है कि महीना ख़त्म पर है. इसी तरह उनके बीच दिनों में चाँद की हालतें दलालत किया करती हैं. फिर महीनों से साल का हिसाब मालूम होता है. यह वह क़ुदरती जनतरी है जो आसमान के पन्ने पर हमेशा खुली रहती है. और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग, पढ़े भी और बे पढ़े भी, सब इससे अपना हिसाब मालूम कर लेते हैं.

(३) जाहिलयत के दिनों में लोगों की यह आदत थी कि जब वो हज का इहराम बांधते तो किसी मकान में उसके दरवाज़े से दाख़िल न होते. अगर ज़रूरत होती तो पिछैत तोड़ कर आते और इसको नेकी जानते. इसपर यह आयत उतरी.

(४) चाहे इहराम की हालत हो या ग़ैर इहराम की.

(५) सन छ हिजरी में हुदैबिया का वाक़िआ पेश आया. उस साल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह से उमरे के इरादे से मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए. मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इसपर सुलह हुई कि आप अगले साल तशरीफ़ लाएं तो आपके लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा. अगले साल सन सात हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़ज़ा उमरे के लिये तशरीफ़ लाए. अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सौ की जमाअत थी. मुसलमानों को यह डर हुआ कि काफ़िर अपने वचन का पालन न करेंगे और हरमे मक्का में पाबन्दी वाले महीने यानी ज़िलक़ाद के माह में जंग करेंगे और मुसलमान इहराम की हालत में हैं. इस हालत में जंग करना भारी है क्योंकि जाहिलियत के दिनों से इस्लाम की शुरूआत तक न हरम में जंग जायज़ थी न माहे हराम में, न हालते इहराम में. तो उन्हें फ़िक्र हुई कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं. इसपर यह आयत उतरी.

(६) इसके मानी या तो ये हैं कि जो काफ़िर तुमसे लड़ें या जंग की शुरूआत करें तुम उनसे दीन की हिमायत और इज़्ज़त के लिये लड़ो. यह हुक्म इस्लाम की शुरूआत में था, फिर स्थगित कर दिया गया और काफ़िरों से क़िताल या जंग करना वाजिब हुआ, चाहे वो शुरूआत करें या न करें. या ये मानी हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं, यह बात सारे ही काफ़िरों में है क्योंकि वो सब दीन के दुश्मन और मुसलमानों के मुख़ालिफ़ हैं, चाहे उन्होंने किसी वजह से जंग न की हो लेकिन मौक़ा पाने पर चूकने वाले नहीं. ये मानी भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे सामने आएं और तुम से लड़ने वाले हों, उनसे लड़ो. उस सूरत में बूढ़े, बच्चे, पागल, अपाहिज, अन्धे, बीमार, औरतें वग़ैरह जो जंग की ताक़त नहीं रखते, इस हुक्म में दाख़िल न होंगे. उनका क़त्ल करना जायज़ नहीं.

(७) जो जंग के क़ाबिल नहीं उनसे न लड़ो या जिनसे तुमने एहद किया हो या बग़ैर दावत के जंग न करो क्योंकि शरई तरीक़ा यह है कि पहले काफ़िरों को इस्लाम की दावत दी जाए, अगर इन्कार करें तो जिज़िया माँगा जाए, उससे भी इन्कारी हों तो जंग की

जाए. इस मानी पर आयत का हुक्म बाक़ी है, स्थगित नहीं. (तफ़सीरे अहमदी)

(८) चाहे हरम हो या ग़ैर हरम.

(९) मक्कए मुकर्रमा से.

(१०) पिछले साल, चुनांचे फ़त्हे मक्का के दिन जिन लोगों ने इस्लाम क़ुबूल न किया उनके साथ यही किया गया.

(११) फ़साद से शिर्क मुराद है या मुसलमानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना.

(१२) क्योंकि ये हरम की पाकी के विरुद्ध है.

(१३) कि उन्होंने हरम शरीफ़ की बेहुरमती या अपमान किया.

(१४) क़त्ल और शिर्क से.

(१५) क़ुफ़्र और बातिल परस्ती से.

(१६) जब पिछले साल ज़िलक़ाद सन छ हिजरी में अरब के मुश्रिकों ने माहे हराम की पाकी और अदब का लिहाज़ न रखा और तुम्हें उमरे की अदायगी से रोका तो ये अपमान उनसे वाक़े हुआ और इसके बदले अल्लाह के दिये से सन सात हिजरी के ज़िलक़ाद में तुम्हें मौक़ा मिला कि तुम क़ज़ा उमरे को अदा करो.

(१७) इससे सारे दीनी कामों में अल्लाह की ख़ुशी और फ़रमाँबरदारी के लिये ख़र्च करना मुराद है चाहे जिहाद हो या और नेकियाँ.

(१८) ख़ुदा की राह में ज़रूरत भर की हलाल चीज़ों का छोड़ना भी अच्छा नहीं और फ़ुज़ूल ख़र्ची भी और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरे और मौत का कारण हो, उन सब से दूर रहने का हुक्म है यहाँ तक कि बिना हथियार जंग के मैदान में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह आत्म हत्या करना. उलमा ने इससे यह निष्कर्ष भी निकाला है कि जिस शहर में प्लेग हो वहाँ न जाएं अगरचे वहाँ के लोगों का वहाँ से भागना मना है.

(१९) और इन दोनों को इनके फ़रायज़ और शर्तों के साथ ख़ास अल्लाह के लिये बे सुस्ती और बिला नुक़सान पूरा करो . हज नाम है इहराम बाँधकर नवीं ज़िलहज को अरफ़ात में ठहरने और काबे के तवाफ़ का. इसके लिये ख़ास वक़्त मुक़र्रर है, जिसमें ये काम किये जाएं तो हज है. हज सन नौ हिजरी में फ़र्ज़ हुआ . इसकी अनिवार्यता निश्चित है. हज के फ़र्ज़ ये हैं : (१) इहराम (२) नौ ज़िल्हज को अरफ़ात के मैदान में ठहरना (३) तवाफ़े ज़ियारत. हज के वाजिबात ये हैं : (१) मुज़्दलिफ़ा में ठहरना, (२)सफ़ा मर्वा के बीच सई, (३) शैतानों को कंकरियाँ मारना. (४) बाहर से आने वाले हाजी के लिये काबे का तवाफ़े रूख़सत और (५) सर मुंडाना या बाल हल्के कराना. उमरा के रुक्न तवाफ़ और सई हैं और इसकी शर्त इहराम और सर मुंडाना है. हज और उमरा के चार तरीक़े हैं. (१) इफ़राद बिलहज : वह यह है कि हज के महीनों में या उनसे पहले मीक़ात से या उससे पहले हज का इहराम बाँध ले और दिलसे उसकी नियत करे चाहे ज़बान से. लब्बैक पढ़ते वक़्त चाहे उसका नाम ले या न ले. (२) इफ़राद बिल उमरा. वह यह है कि मीक़ात से या उससे पहले हज के महीनों में या उनसे पहले उमरे का इहराम बाँधे और दिल से उसका इरादा करे चाहे तलबियह यानी लब्बैक पढ़ते वक़्त ज़बान से उसका ज़िक्र करे या न करे और इसके लिये हज के महीनों में या उससे पहले तवाफ़ करे चाहे उस साल में हज करे न करे मगर हज और उमरे के बीच सही अरकान अदा करे इस तरह कि अपने बाल बच्चों की तरफ़ हलाल होकर वापस हो. (३) क़िरान यह है कि हज और उमरा दोनों को एक इहराम में जमा करे. वह इहराम मीक़ात से बाँधा हो या उससे पहले, हज के महीनों में या उनसे पहले . शुरु से हज और उमरा दोनों की नियत हो चाहे तलबियह या लब्बैक कहते वक़्त ज़बान से दोनों का ज़िक्र करे या न करे. पहले उमरे के अरकान अदा करे फिर हज के. (४) तमत्तो यह है कि मीक़ात से या उससे पहले हज के महीने में या उससे पहले उमरे का इहराम बाँधे और हज के माह में उमरा करे या अक्सर तवाफ़ उसके हज के माह में हों और हलाल होकर हज के लिये इहराम बाँधे और उसी साल हज करे और हज और उमरा के बीच अपनी बीवी के साथ सोहबत न करे. इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है.

(२०) हज या उमरे से बाद शुरु करने और घर से निकलने और इहराम पहन लेने के, यानी तुम्हें कोई रूकावट हज या उमरे की अदायगी में पेश आए चाहे वह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या बीमारी वग़ैरह, ऐसी हालत में तुम इहराम से बाहर आजाओ.

(२१) ऊंट या गाय बकरी, और यह क़ुरबानी भेजना वाजिब है.

पहुंच जाए[२२] फिर जो तुममें बीमार हो उसके सर में कुछ तकलीफ़ है[२३] तो बदला दे रोज़े[२४] या ख़ैरात[२५] या क़ुरबानी. फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उमरा मिलाने का फ़ायदा उठाए[२६] उसपर क़ुरबानी है जैसी मयस्सर आए[२७] फिर जिसकी ताक़त न हो तीन रोज़े हज के दिनों में रखे[२८] और सात जब अपने घर पलट कर जाओ, ये पूरे दस हुए, यह हुक्म उसके लिये है जो मक्के का रहने वाला न हो,[२९] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है(१९६)

पच्चीसवाँ रूकू

हज के कई महीने हैं जाने हुए[१] तो जो उनमें हज की नियत करे[२] तो न औरतों के सामने सोहबत(संभोग) का तज़किरा(चर्चा) हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा[३] हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई करो अल्लाह उसे जानता है[४] और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़गारी है.[५] और मुझसे डरते रहो ऐ अक़्ल वालो[६](१९७) तुमपर कुछ गुनाह नहीं[७] कि अपने रब का फ़ज़्ल(कृपा) तलाश करो तो जब अरफ़ात(के मैदान) से पलटो[८] तो

(२२) यानी हरम में जहाँ उसके ज़िब्ह का हुक्म है. यह क़ुरबानी हरम के बाहर नहीं हो सकती.
(२३) जिससे वह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडाले.
(२४) तीन दिन के.
(२५) छ मिस्कीनों का खाना, हर मिस्कीन के लिये पौने दो सेर गेहूँ.
(२६) यानी तमत्तो करे.
(२७) यह क़ुरबानी तमत्तो की है, हज के शुक्र में वाजिब हुई, चाहे तमत्तो करने वाला फ़क़ीर हो. ईदुज़ ज़ुहा की क़ुरबानी नहीं, जो फ़क़ीर और मुसाफ़िर पर वाजिब नहीं होती.
(२८) यानी पहली शव्वाल से नवीं ज़िल्हज तक इहराम बांधने के बाद इस दरमियान में जब चाहे रखले, चाहे एक साथ या अलग अलग करके. बेहतर यह है कि सात, आठ, नौ ज़िल्हज को रखे.
(२९) मक्का के निवासी के लिये न तमत्तो है न क़िरान. और मीक़ात की सीमाओं के अन्दर रहने वाले, मक्का के निवासियों में दाख़िल हैं. मीक़ात पाँच हैः ज़ुल हलीफ़ा, ज़ाते इर्क़, जहफ़ा, क़रन, यलमलम. ज़ुल हलीफ़ा मदीना निवासियों के लिये, जहफ़ा शाम के लोगों के लिये, क़रन नज्द के निवासियों के लिये, यलमलम यमन वालों के लिये. (हिन्दुस्तान चूंकि यमन की तरफ़ से पड़ता है इसलिये हमारी मीक़ात भी यलमलम ही है)

सूरए बक़रह - पच्चीसवाँ रूकू

(१) शव्वाल, ज़िल्क़ाद और दस तारीख़ें ज़िल्हज की, हज के काम इन्हीं दिनों में दुरूस्त हैं. अगर किसी ने इन दिनों से पहले हज का इहराम बाँधा तो जायज़ है लेकिन कराहत के साथ.
(२) यानी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे इहराम बाँधकर, या तलबियह कहकर, या क़ुरबानी का जानवर चलाकर. उसपर ये चीज़ें लाज़िम हैं, जिनका आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है.
(३) ''रिफ़स'' सहवास या औरतों के सामने हमबिस्तरी का ज़िक्र या गन्दी और अश्लील बातें करना है. निकाह इसमें दाख़िल नहीं. इहराम वाले मर्द और इहराम वाली औरत का निकाह जायज़ है अलबत्ता सहवास यानी हमबिस्तरी जायज़ नहीं. ''फ़ुसूक़'' से गुनाह और बुराइयाँ और ''जिदाल'' से झगड़ा मुराद है, चाहे वह अपने दोस्तों या ख़ादिमों के साथ हो या ग़ैरों के साथ.
(४) बुराइयों या बुरे कामों से मना करने के बाद नेकियों और पुण्य की तरफ़ बुलाया कि बजाय गुनाह के तक़वा और बजाय झगड़े के अच्छे आचरण और सदव्यवहार अपनाओ.

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ۞ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۞ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۞ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۞ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقٰى

अल्लाह की याद करो[९] मशअरे हराम के पास[१०] और उसका ज़िक्र करो जैसे उसने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक इससे पहले तुम बहके हुए थे[११] (१९८) फिर बात यह है कि ऐ क़ुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहाँ से लोग पलटते हैं[१२] और अल्लाह से माफ़ी मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (१९९) फिर जब अपने हज के काम पूरे कर चुको[१३] तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे[१४] बल्कि उससे ज़्यादा और कोई आदमी यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में दे, और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं (२००) और कोई यूँ कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा[१५] (२०१) ऐसों को उनकी कमाई से भाग है[१६] और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है[१७] (२०२) और अल्लाह की याद करो गिने हुए दिनों में[१८] तो जो जल्दी करके दो दिन में चला जाए उसपर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उसपर गुनाह नहीं परहेज़गार के

(५) कुछ यमन के लोग हज के लिये बेसामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आपको मुतवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुंचकर सवाल शुरू करते और कभी दूसरे का माल छीनते या अमानत में ख़यानत करते, उनके बारे में यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि तोशा लेकर चलो, औरों पर बोझ न डालो, सवाल न करो, कि बेहतर तोशा परहेज़गारी है. एक क़ौल यह है कि तक़वा का तोशा साथ लो जिस तरह दुनियावी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है, ऐसे ही आख़िरत के सफ़र के लिये परहेज़गारी का तोशा लाज़िम है.

(६) यानी अक़्ल का तक़ाज़ा अल्लाह का डर है, जो अल्लाह से न डरे वह बेअक़्लों की तरह है.

(७) कुछ मुसलमानों ने ख़याल किया कि हज की राह में जिसने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उसका हज ही क्या, इसपर यह आयत उतरी. जब तक व्यापार से हज के अरकान की अदायगी में फ़र्क़ न आए, उस वक़्त तक तिजारत जायज़ है.

(८) अरफ़ात एक स्थान का नाम है जो मौक़फ़ यानी ठहरने की जगह है. ज़हाक का क़ौल है कि हज़रत आदम और हव्वा जुदाई के बाद ९ ज़िलहज को अरफ़ात के स्थान पर जमा हुए और दोनों में पहचान हुई, इसलिये उस दिन का नाम अरफ़ा यानी पहचान का दिन और जगह का नाम अरफ़ात यानी पहचान की जगह हुआ. एक क़ौल यह है कि चूंकि उस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ऐतिराफ़ करते हैं इसलिये उस दिन का नाम अरफ़ा है. अरफ़ात में ठहरना फ़र्ज़ है.

(९) तलबियह यानी लब्बैक, तस्बीह, अल्लाह की तारीफ़, तकबीर और दुआ के साथ या मग़रिब व इशा की नमाज़ के साथ.

(१०) मशअरे हराम क़ुज़ह पहाड़ है जिसपर इमाम ठहरता है. मुहस्सिर घाटी के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा ठहरने की जगह है. उसमें ठहरना वाजिब है. बिला उज़्र छोड़ने से जुर्माने की क़ुरबानी यानी दम लाज़िम आता है. और मशअरे हराम के पास ठहरना अफ़ज़ल है.

(११) ज़िक्र और इबादत का तरीक़ा कुछ न जानते थे.

(१२) क़ुरैश मुज़्दलिफ़ा में ठहरते थे और सब लोगों के साथ अरफ़ात में न ठहरते. जब लोग अरफ़ात से पलटते तो ये मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इसमें अपनी बड़ाई समझते. इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अरफ़ात में ठहरें और एक साथ पलटें. यही हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहुमस्सलाम की सुन्नत है.

(१३) हज के तरीक़े का संक्षिप्त बयान यह है कि हाजी आठ ज़िलहज की सुबह को मक्कए मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना हो. वहाँ अरफ़ा यानी नवीं ज़िलहज की फ़ज्र तक ठहरे. उसी रोज़ मिना से अरफ़ात आए. ज़वाल के बाद इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े. यहाँ हाजी ज़ोहर और असर की नमाज़ इमाम के साथ ज़ोहर के वक़्त में जमा करके पढ़े, इन दोनों नमाज़ों के बीच ज़ोहर की सुन्नत के सिवा कोई नफ़्ल न पढ़ी जाए. इस जमा के लिये इमाम आज़म ज़रूरी है. अगर इमाम आज़म न हो या गुमराह और बदमज़हब हो तो हर एक नमाज़ अलग अलग अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए. और अरफ़ात में सूर्यास्त तक ठहरे. फिर मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ लौटे और

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ

लिये[१९] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की तरफ़ उठना है(२०३) और कुछ आदमी वह है कि दुनिया की ज़िन्दगी में उसकी बात तुझे भली लगे[२०] और अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह लाए और वो सबसे बड़ा झगड़ालू है(२०४) और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता फिरे और खेती और जानें तबाह करे और अल्लाह फ़साद से राज़ी नहीं(२०५) और जब उससे कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की[२१] ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वह ज़रूर बहुत बुरा बिछौना है(२०६) और कोई आदमी अपनी जान बेचता है[२२] अल्लाह की मर्ज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है(२०७) ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो[२३] और शैतान के क़दमों पर न चलो[२४] बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है(२०८) और इसके बाद भी बच लो कि तुम्हारे पास रौशन हुक्म आचुके[२५] तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है(२०९) काहे के इन्तिज़ार में हैं[२६] मगर यही कि अल्लाह का अज़ाब आए,

जबले क़ज़ह के क़रीब उतरे. मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा करके इशा के वक़्त पढ़े और फ़ज्र की नमाज़ ख़ूब अव्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े. मुहस्सिर घाटी के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा और बत्न अरना के सिवा तमाम अरफ़ात ठहरने या वक़ूफ़ की जगह है. जब सुबह ख़ूब रौशन हो तो क़ुरबानी के दिन यानी दस ज़िल्हज को मिना की तरफ़ आए और वादी के बीच से बड़े शैतान को सात बार कंकरियाँ मारे. फिर अगर चाहे क़ुरबानी के दिनों में से किसी दिन तवाफ़े ज़ियारत करे. फिर मिना आकर तीन रोज़ स्थाई रहे और ग्यारहवीं ज़िल्हज के ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी करे यानी तीनों शैतानों को कंकरी मारे. उस जमरे से शुरू करे जो मस्जिद के क़रीब है, फिर जो उसके बाद है, फिर जमरए अक़बा, हर एक को सात सात कंकरियाँ मारे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही. फिर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ चला आए. (तफ़सील फ़िक़्ह की किताबों में मौजूद है)

(१४) जाहिलियत के दिनों में अरब हज के बाद काबे के क़रीब अपने बाप दादा की बड़ाई बयान करते थे. इस्लाम में बताया गया कि यह शोहरत और दिखावे की बेकार बातें हैं. इसकी जगह पूरे ज़ौक़ शौक़ और एकाग्रता से अल्लाह का ज़िक्र करो. इस आयत से बलन्द आवाज़ में ज़िक्र और सामूहिक ज़िक्र साबित होता है.

(१५) दुआ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाई, एक वो काफ़िर जिनकी दुआ में सिर्फ़ दुनिया की तलब होती थी. आख़िरत पर उनका अक़ीदा न था, उनके बारे में इरशाद हुआ कि आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं. दूसरे वो ईमानदार जो दुनिया और आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ करते हैं. मूमिन दुनिया की बेहतरी जो तलब करता है वह भी जायज़ काम और दीन की हिमायत और मज़बूती के लिये, इसलिये उसकी यह दुआ भी दीनी कामों से है.

(१६) इस आयत से साबित हुआ कि दुआ कोशिश और कर्म में दाख़िल है. हदीस शरीफ़ मे है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अक्सर यही दुआ फ़रमाते थे *"अल्लाहुम्मा आतिना फ़िद दुनिया हसनतौं व फ़िल आख़िरते हसनतौं वक़िना अज़ाबन नार"* यानी ऐ रब हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा. (सूरए बक़रह, आयत २०१)

(१७) बहुत जल्द क़यामत क़ायम करके बन्दों का हिसाब फ़रमाएगा तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्र व दुआ व फ़रमाँबरदारी में जल्दी करें. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(१८) इन दिनों से अय्यामे तशरीक़ और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बाद और शैतानों को कंकरियाँ मारते वक़्त तकबीर कहना मुराद है.

(१९) कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि जाहिलियत के दिनों में लोग दो पक्ष थे. कुछ जल्दी करने वालों को गुनाहगार बताते थे, कुछ रह जाने वाले को . क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनाहगार नहीं.

(२०) यह और इससे अगली आयत अख़नस बिन शरीफ़ मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जो हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बहुत लजाजत से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और सरकार की महब्बत का दावा करता और उसपर क़स्में खाता और छुपवाँ फ़साद भड़काने में लगा रहता. मुसलमानों के मवेशी को उसने हलाक किया और

الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ؕ وَإِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۭ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ
مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾
كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ إِلَّا الَّذِيْنَ أُوْتُوْهُ مِنْۭ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهٖ

छाए हुए बादलों में और फ़रिश्ते उतरें[२७] और काम हो चुके और सब कामों का पलटना अल्लाह की तरफ़ है﴿२१०﴾

छब्बीसवाँ रूकू

बनी इस्राईल से पूछो हमने कितनी रौशन निशानियाँ उन्हें दीं[१] और जो अल्लाह की आई हुई नेअमत को बदल दे[२] तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है﴿२११﴾ काफ़िरों की निगाह में दुनिया की ज़िन्दगी सजाई गई[३] और मुसलमानों से हंसते हैं[४] और डर वाले उनसे ऊपर होंगे क़यामत के दिन[५] और ख़ुदा जिसे चाहे बेगिन्ती दे﴿२१२﴾ लोग एक दीन पर थे[६] फिर अल्लाह ने नबी भेजे ख़ुशख़बरी देते[७] और डर सुनाते[८] और उनके साथ सच्ची किताब उतारी[९] कि वह लोगों में उनके मतभेदों का फैसला कर दे और किताब में मतभेद उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी[१०] बाद इसके कि उनके पास रौशन हुक्म आ चुके[११] आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वह सच्ची बात सुझा दी जिसमें झगड़ रहे थे अपने हुक्म से और

उनकी खेती में आग लगा दी.

(२१) गुनाह से ज़ुल्म और सरकशी और नसीहत की तरफ़ ध्यान न देना मुराद है.

(२२) हज़रत सुहैब इब्ने सनान रूमी मक्कए मुकर्रमा से हिजरत करके हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में मदीनए तैय्यिबह की तरफ़ रवाना हुए. क़ुरैश के मुश्रिकों की एक जमाअत ने आपका पीछा किया तो आप सवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ क़ुरैश तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न करदूं और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उससे मारूं. उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअत का खेत हो जाएगा. अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में ज़मीन के अन्दर गड़ा है. तो मैं तुम्हें उसका पता बता दूँ, तुम मुझसे मत उलझो. वो इसपर राज़ी हो गए. और आपने अपने तमाम माल का पता बता दिया. जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो यह आयत उतरी. हुज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी यह जाँफ़रोशी बड़ी नफ़े वाली तिजारत है.

(२३) किताब वालों में से अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके असहाब यानी साथी हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने के बाद शरीअते मूसवी के कुछ अहकाम पर क़ायम रहे, सनीचर का आदर करते, उस दिन शिकार से अलग रहना अनिवार्य जानते, और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते, और यह ख़याल करते कि ये चीज़ें इस्लाम में तो वैध यानी जायज़ हैं, इनका करना ज़रूरी नहीं, और तौरात में इससे परहेज़ अनिवार्य बताया गया है, तो उनके छोड़ने में इस्लाम की मुख़ालिफ़त भी नहीं है. और हज़रत मूसा की शरीअत पर अमल भी होता है. उसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के आदेश का पूरा पालन करो यानी तौरात के आदेश स्थगित हो गए, अब उनकी पाबन्दी न करो. (ख़ाज़िन)

(२४) उसके उकसाने और बहकाने में न आओ.

(२५) और खुली दलीलों के बावजूद इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रास्ता इख़्तियार करो.

(२६) इस्लामी मिल्लत छोड़ने और शैतान की फ़रमाँबरदारी करने वाले.

(२७) जो अज़ाब देने के काम पर लगे हुए हैं.

सूरए बक़रह - छब्बीसवाँ रूकू

(१) कि उनके नबियों के चमत्कारों को उनकी नबुव्वत की सच्चाई का प्रमाण बनाया. उनके इरशाद और उनकी किताबों को दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत और इसके सच्चे होने का गवाह किया.

(२) अल्लाह की नेअमत से अल्लाह की आयतें मुराद हैं. जो मार्गदर्शन और हिदायत का कारण हैं और उनकी बदौलत गुमराही

وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ
الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَ
الضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ
مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ
وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
عَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ
الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ

منزل ١

अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए﴿२१३﴾ क्या इस गुमान(भ्रम) में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुमपर अगलों की सी रूदाद(वृतांत) न आई[१२] पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत(कठिनाई) और हिला हिला डाले गए यहाँ तक कि कह उठा रसूल[१३] और उसके साथ के ईमान वाले, कब आएगी अल्लाह की मदद[१४] सुन लो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है﴿२१४﴾ तुमसे पूछते हैं[१५] क्या ख़र्च करें. तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वह माँ बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों(दरिद्रों) और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो[१६] बेशक अल्लाह उसे जानता है[१७]﴿२१५﴾ तुमपर फ़र्ज़ हुआ अल्लाह की राह में लड़ना और वह तुम्हें नागवार है[१८] और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो . और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[१९]﴿२१६﴾

सत्ताईसवाँ रूकू

तुमसे पूछते हैं माहे हराम में लड़ने का हुक्म[१] तुम फ़रमाओ इसमें लड़ना बड़ा गुनाह है[२] और अल्लाह की राह से

से छुटकारा मिलता है. उन्हीं में से वो आयतें हैं जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और गुणगान और हुज़ूर की नबुव्वत व रिसालत का बयान है. यहूदियों और ईसाईयों ने इस बयान में जो तबदीलियाँ की हैं वो इस नेअमत की तबदीली है.

(३) वो इसी की क़द्र करते हैं और इसी पर मरते हैं.

(४) और दुनिया की माया से उनकी अरुचि देखकर उनको तुच्छ समझते हैं, जैसा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अम्मार बिन यास्सिर और सुहैब और बिलाल रदियल्लाहो अन्हुम को देखकर काफ़िर मज़ाक़ उड़ाया करते थे, और दुनिया की दौलत के घमण्ड में अपने आपको ऊंचा समझते थे.

(५) यानी ईमान वाले क़यामत के दिन जन्नत के ऊंचे दर्जों में होंगे और घमण्डी काफ़िर जहन्नम में ज़लील और ख़्वार.

(६) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से हज़रत नूह के एहद तक सब लोग एक दीन और एक शरीअत पर थे. फिर उनमें मतभेद हुआ तो अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा. ये रसूल बनाकर भेजे जाने वालों में पहले हैं (ख़ाज़िन).

(७) ईमान वालों और फ़रमाँबरदारों को सवाब की. (मदारिक और ख़ाज़िन)

(८) काफ़िरों और नाफ़रमानों को अज़ाब का. (ख़ाज़िन)

(९) जैसा कि हज़रत आदम व शीस व इद्रीस पर सहीफ़े और हज़रत मूसा पर तौरात, हज़रत दाऊद पर ज़ुबूर, हज़रत ईसा पर इन्जील और आख़िरी नबी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर क़ुरआन.

(१०) यह मतभेद धर्मग्रन्थों में काँटछाँट और रद्दोबदल और ईमान व कुफ़्र के साथ था, जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों से हुआ. (ख़ाज़िन)

(११) यानी ये मतभेद नादानी से न था बल्कि ....

(१२) और जैसी यातनाएं उनपर गुज़र चुकीं, अभी तक तुम्हें पेश न आईं. यह आयत अहज़ाब की जंग के बारे में उतरी, जहाँ मुसलमानों को सर्दी और भूख वग़ैरह की सख़्त तकलीफ़ें पहुंची थीं . इस आयत में उन्हें सब्र का पाठ दिया गया और बताया गया कि अल्लाह की राह में तकलीफ़ें सहना पहले से ही अल्लाह के ख़ास बन्दों की विशेषता रही है. अभी तो तुम्हें पहलों की सी यातनाएं पहुंची भी नहीं हैं. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत ख़ुबाब बिन अरत रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम काबे के साए में अपनी चादरे मुबारक से तकिया लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे. हमने हुज़ूर से अर्ज़ किया कि सरकार हमारे लिये क्यों दुआ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यों मदद नहीं करते. फ़रमाया, तुमसे पहले लोग गिरफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोदकर उसमें दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उनके गोश्त नोचे जाते थे और इनमें की

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

रोकना और उसपर ईमान न लाना और मस्जिदे हराम से रोकना और इसके बसने वालों को निकाल देना[३] अल्लाह के नज़्दीक ये गुनाह उससे भी बड़े हैं और उनका फ़साद[४] क़त्ल से सख़्ततर है[५] और हमेशा तुमसे लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े[६] और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर होकर मरे तो उन लागों का किया अकारत गया दुनिया में और आखिरत में[७] और वो दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना﴿२१७﴾ वो जो ईमान लाए और वो जिन्होंने अल्लाह के लिये अपने घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े वो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[८]﴿२१८﴾ तुमसे शराब और जुए का हुक्म पूछते हैं, तुम फ़रमादो कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुनियावी नफ़े भी और उनका गुनाह उनके नफ़े से बड़ा है[९] और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें[१०] तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल(अतिरिक्त) बचे[११] इसी तरह अल्लाह तुमसे आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं सोचकर करो

कोई मुसीबत उन्हें उनके दीन से रोक न सकती थी.

(१३) यानी सख़्ती इस चरम सीमा पर पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उनके फ़रमाँबरदार मूमिन भी मदद मांगने में जल्दी करने लगे. इसके बावजूद कि रसूल बड़े सब्र करने वाले होते हैं. और उनके साथी भी. लेकिन बावजूद इन सख़्ततरीन मुसीबतों के वो लोग अपने दीन पर क़ायम रहे और कोई मुसीबत और बला उनके हाल को बदल न सकी.

(१४) इसके जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और यह इरशाद हुआ.

(१५) यह आयत अम्र बिन जमूह के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े आदमी थे और बड़े मालदार थे उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सवाल किया था कि क्या ख़र्च करें और किसपर ख़र्च करें. इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल कम या ज़्यादा ख़र्च करो, उसमें सवाब है. और ख़र्च की मदें ये हैं. आयत में नफ़्ल सदक़े का बयान है. माँ बाप को ज़कात और वाजिब सदक़ा (जैसे कि फ़ित्रा) देना जायज़ नहीं.(जुमल वग़ैरह).

(१६) यह हर नेकी को आम है. माल का ख़र्च करना हो या और कुछ. और बाक़ी ख़र्च की मदें भी इसमें आ गईं.

(१७) उसकी जज़ा यानी बदला या इनाम अता फ़रमाएगा.

(१८) जिहाद फ़र्ज़ है, जब इसकी शर्तें पाई जाएं. अगर काफ़िर मुसलमानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद अत्यन्त अनिवार्य हो जाता है. वरना फ़र्ज़े किफ़ाया यानी एक के करने से सब का फ़र्ज़ अदा हो गया.

(१९) कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है. तो तुम पर लाज़िम है, अल्लाह के हुक्म का पालन करो और उसी को बेहतर समझो, चाहे वह तुम्हारी अन्तरआत्मा पर भारी हो.

सूरए बक़रह - सत्ताईसवाँ रूकू

(१) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन जहश के नेतृत्व में मुजाहिदों की एक जमाअत रवाना फ़रमाई थी. उसने मुश्रिकों से जंग की. उनका ख़याल था कि वह दिन जमादियुल आख़िर का अन्तिम दिन है. मगर दर हक़ीक़त चाँद २९ को होगया था, और वह रजब की पहली तारीख़ थी. इसपर काफ़िरों ने मुसलमानों को शर्म दिलाई कि तुमने पाबन्दी वाले महीने में जंग की और हुज़ूर से इसके बारे में सवाल होने लगे. इसपर यह आयत उतरी.

(२) मगर सहाबा से यह गुनाह वाक़े नहीं हुआ,क्योंकि उन्हें चाँद होने की ख़बर ही न थी. उनके ख़याल में वह दिन माहे हराम यानी पाबन्दी वाले महीने रजब का न था. पाबन्दी वाले महीनों में जंग न करने का हुक्म *"उक़्तुलुल मुश्रिकीना हैसो वजद तुमूहुम"* यानी मुश्रिकों को मारो जहां पाओ (९: ५) की आयत द्वारा स्थगित हो गया.

(३) जो मुश्रिकों से वाक़े हुआ कि उन्होंने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा को, हुदैबिया वाले

साल, काबए मुअज़्ज़मा से रोका और मक्के में आपके क़याम के ज़माने में आपको और आपके साथियों को इतनी तक्लीफ़ें दीं कि वहाँ से हिजरत करना पड़ी.

(४) यानी मुश्रिकों का, कि वह शिर्क करते हैं और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और मूमिनों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं और तरह तरह के कष्ट देते हैं.

(५) क्योंकि क़त्ल तो कुछ हालतों में जायज़ होता है, और कुफ़्र किसी हाल में जायज़ नहीं. और यहाँ तारीख़ का मशकूक यानी संदेह में होना मुनासिब वजह है. और काफ़िरों के कुफ़्र के लिये तो कोई वजह ही नहीं है.

(६) इसमें ख़बर दी गई कि काफ़िर मुसलमानों से हमेशा दुश्मनी रखेंगे. कभी इसके ख़िलाफ़ न होगा. और जहाँ तक उनसे संभव होगा वो मुसलमानों को दीन से फेरने की कोशिश करते रहेंगे. *''इनिस्तताऊ''* (अगर बन पड़े) से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआला के करम से वो अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे.

(७) इस आयत से मालूम हुआ कि दीन से फिर जाने से सारे कर्म बातिल यानी बेकार हो जाते हैं. आख़िरत में तो इस तरह कि उनपर कोई पुण्य, इनाम या सवाब नहीं. और दुनिया में इस तरह कि शरीअत मुर्तद यानी दीन से फिर जाने वाले के क़त्ल का हुक्म देती है. उसकी औरत उसपर हलाल नहीं रहती, वो अपने रिश्तेदारों की विरासत पाने का अधिकारी नहीं रहता, उसका माल छीना या लूटा या चुराया जा सकता है. उसकी तारीफ़ और मदद जायज़ नहीं. (रूहुल बयान वग़ैरह).

(८) अब्दुल्लाह बिन जहश की सरदारी में जो मुजाहिद भेजे गए थे उनके बारे में कुछ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि यह दिन रजब का है इसलिये इस दिन जंग करना गुनाह तो न हुआ लेकिन उसका कुछ सवाब भी न मिलेगा. इसपर यह आयत उतरी. और बताया गया कि उनका यह काम जिहादे मक़बूल है. और इसपर उन्हें अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार रहना चाहिये और यह उम्मीद ज़रूर पूरी होगी. (ख़ाज़िन). *''यरजूना''* (उम्मीदवार हैं) से ज़ाहिर हुआ कि अमल यानी कर्म से पुण्य या इनाम वाजिब या अनिवार्य नहीं होता, बल्कि सवाब देना केवल अल्लाह की मर्ज़ी और उसके फ़ज़्ल पर है.

(९) हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, अगर शराब की एक बूंद कुंवें में गिर जाए फिर उस जगह एक मीनार बनाया जाए तो मैं उसपर अज़ान न कहूँ. और अगर नदी में शराब की बूंद पड़े, फिर नदी ख़ुश्क हो और वहाँ घास पैदा हो तो उसमें मैं अपने जानवरों को न चराऊं. सुब्हानअल्लाह ! गुनाह से किस क़द्र नफ़रत है. अल्लाह तआला हमें इन बुज़ुर्गों के रस्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता करे. शराब सन तीन हिजरी में ग़ज़वए अहज़ाब से कुछ दिन बाद हराम की गई. इससे पहले यह बताया गया था कि जुए और शराब का गुनाह उनके नफ़े से ज़्यादा है. नफ़ा तो यही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इसकी क्रय विक्रय से तिजारती फ़ायदा होता है. और जुए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है और गुनाहों और बुराइयों की क्या गिनती, अक़्ल का पतन, ग़ैरत, शर्म, हया और ख़ुददारी का पतन, इबादतों से मेहरूमी, लोगों से दुश्मनी, सबकी नज़र में ख़्वार होना, दौलत और माल की बर्बादी. एक रिवायत में है कि जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अल्लाह तअला को जअफ़रे तैयार की चार विशेषताएं पसन्द हैं. हुज़ूर ने हज़रत जअफ़र तैयार से पूछा, उन्होंने अर्ज़ किया कि एक तो यह है कि मैंने शराब कभी नहीं पी यानी हराम होजाने के हुक्म से पहले भी और इसकी वजह यह थी कि मैं जानता था कि इससे अक़्ल भ्रष्ट होती है और मैं चाहता था कि अक़्ल और भी तेज़ हो. दूसरी आदत यह है कि जाहिलियत के ज़माने में भी मैंने मूर्ति पूजा नहीं की क्योंकि मैं जानता था कि यह पत्थर है, न नफ़ा दे, न नुक़सान पहुंचा सके, तीसरी ख़सलत यह है कि मैं कभी ज़िना में मुब्तिला नहीं हुआ कि उसको मैं बेग़ैरती और निर्लज्जता समझता था. चौथी ख़सलत यह कि मैंने कभी झूट नहीं बोला क्योंकि मैं इसको कमीना-पन ख़याल करता था. शतरंज, ताश वग़ैरह हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए, सब जुए में दाख़िल हैं, और हराम हैं. (रूहुल बयान)

(१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसलमानों को सदक़ा देने की रग़बत दिलाई तो आपसे दर्याफ़्त किया गया कि मिक़दार इरशाद फ़रमाएं कि कितना माल ख़ुदा की राह में दिया जाय. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)

(११) यानी जितना तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा हो. इस्लाम की शुरूआत में ज़रूरत से ज़्यादा माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था. सहाबए किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत भर का लेकर बाक़ी सब ख़ुदा की राह में दे डालते थे. यह हुक्म ज़कात की आयत के बाद

تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَيَسْـَٔـلُوْنَكَ
عَنِ الْيَتٰمٰي ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّھُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ
تُخَالِطُوْھُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ
وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ
وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝
وَيَسْـَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى
يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ

तुम﴾२१९﴿ दुनिया और आख़िरत के काम [१२] और तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं[१३] तुम फ़रमाओ उनका भला करना बेहतर है और अगर अपना उनका ख़र्च मिला लो तो वो तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक़्क़त(परिश्रम) में डालता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है﴾२२०﴿ और शिर्क वाली औरतों से निकाह न करो जब तक मुसलमान न हो जाएं[१४] और बेशक मुसलमान लौंडी मुश्रिका औरत से अच्छी है[१५] अगरचे वह तुम्हें भाती हो और मुश्रिकों के निकाह में न दो जबतक वो ईमान न लाएं[१६] और बेशक मुसलमान ग़ुलाम मुश्रिकों से अच्छा है अगरचे वो तुम्हें भाता हो, वो दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं[१७] और अल्लाह जन्नत और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वो नसीहत मानें﴾२२१﴿

अठ्ठाईसवाँ रूकू

और तुमसे पूछते हैं हैज़ का हुक्म[१] तुम फ़रमाओ वह नापाकी है तो औरतों से अलग रहो हैज़ के दिनों और उनके क़रीब न जाओ जबतक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उनके पास जाओ जहां से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म

स्थगित हो गया.

(१२) कि जितना तुम्हारी सांसारिक आवश्यकता के लिये काफ़ी हो, वह लेकर बाक़ी सब अपनी आख़िरत के नफ़े के लिये दान कर दो. (ख़ाज़िन)

(१३) कि उनके माल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है. आयत *"इन्नल लज़ीना याकुलूना अमवालल यतामा ज़ुलमन"* यानी वो जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं. (सूरए निसा , आयत दस) उतरने के बाद लोगों ने यतीमों के माल अलग कर दिये और उनका खाना पीना अलग कर दिया. इसमें ये सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिये पकाया गया और उसमें से कुछ बच रहा वह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया. इस में यतीमों का नुक़सान हुआ. ये सूरतें देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि अगर यतीम के माल की हिफ़ाज़त की नज़र से उसका खाना उसके सरपरस्त अपने खाने के साथ मिलालें तो उसका क्या हुक्म है. इसपर यह आयत उतरी और यतीमों के फ़ायदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई.

(१४) हज़रत मरसद ग़नवी एक बहादुर सहाबी थ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना किया ताकि वहाँ से तदबीर के साथ मुसलमानों को निकाल लाएं. वहाँ उनाक़ नामक एक मुश्रिक औरत थी जो जाहिलियत के ज़माने में इनसे महब्बत रखती थी. ख़ूबसूरत और मालदार थी. जब उसको इनके आने की ख़बर हुई तो वह आपके पास आई और मिलन की चाह ज़ाहिर की. आपने अल्लाह के डर से उससे नज़र फेर ली और फ़रमाया कि इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता. तब उसने निकाह की दरख़्वास्त की. आपने फ़रमाया कि यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इजाज़त पर निर्भर है. अपने काम से छुट्टी पाकर जब आप सरकार की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हाल अर्ज़ करके निकाह के बारे में दर्याफ़्त किया. इसपर यह आयत उतरी. (तफ़सीरे अहमदी). कुछ उलमा ने फ़रमाया जो कोई नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ कुफ़्र करे वह मुश्रिक है, चाहे अल्लाह को एक ही कहता हो और तौहीद का दावा रखता हो. (ख़ाज़िन)

(१५) एक रोज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने किसी ग़लती पर अपनी दासी के थप्पड़ मारा फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसका ज़िक्र किया . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसका हाल दर्याफ़्त किया. अर्ज़ किया कि वह अल्लाह तआला के एक होने और हुज़ूर के रसूल होने की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब वुज़ू करती है और नमाज़ पढ़ती है. हुज़ूर ने फ़रमाया वह ईमान वाली है. आप ने अर्ज़ किया, तो उसकी क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर भेजा, मैं उसको आज़ाद करके उसके साथ निकाह करूंगा और आपने ऐसा ही किया. इसपर लोगों ने ताना किया कि तुमने एक काली दासी से निकाह किया इसके बावुजूद कि अमुक मुश्रिक आज़ाद औरत तुम्हारे लिये हाज़िर है. वह सुंदर भी है, मालदार

اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾
نِسَاۗؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۡ
وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
مُّلٰقُوْهُ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً
لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ
بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوْبُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ
مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَاۗءُوْ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ
فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ
بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْۗءٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

दिया बेशक अल्लाह पसन्द करता है बहुत तौबह करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को﴾२२२﴿ तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो(२) और अपने भले का काम पहले करो(३) और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उससे मिलना है और ऐ मेहबूब बशारत दो ईमान वालों को﴾२२३﴿ और अल्लाह को अपनी क़िस्मतों का निशाना न बना लो(४) कि एहसान और परहेज़गारी और लोगों में सुलह करने की क़सम कर लो और अल्लाह सुनता जानता है﴾२२४﴿ अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़स्मों में जो बेईरादा ज़बान से निकल जाएं, हाँ उसपर पकड़ फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिलों ने किये(५) और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म (सहिष्णुता) वाला है﴾२२५﴿ और वो जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औरतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत(अवकाश) है तो अगर इस मुद्दत में फिर आए तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾२२६﴿ और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता जानता है(६)﴾२२७﴿ और तलाक़ वालियाँ अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़(माहवारी) तक(७) और उन्हें हलाल नहीं कि छुपाएं वह जो अल्लाह ने उनके पेट में पैदा किया(८) अगर अल्लाह

भी है. इसपर नाज़िल हुआ *''वला अमतुम मूमिनतुन''* यानी मुसलमान दासी मुश्रिका औरत से अच्छी है. चाहे आज़ाद हो और हुस्न और माल की वजह से अच्छी मालूम होती हो.

(१६) यह औरत के सरपरस्तों को सम्बोधन है . मुसलमान औरत का निकाह मुश्रिक व काफ़िर के साथ अवैध व हराम है.

(१७) तो उनसे परहेज़ ज़रूरी है और उनके साथ दोस्ती और रिश्तेदारी ना पसन्दीदा.

सूरए बक़रह - अट्ठाईसवाँ रूकू

(१) अरब के लोग यहूदियों और मजूसीयों यानी आग के पुजारियों की तरह माहवारी वाली औरतों से सख़्त नफ़रत करते थे. साथ खाना पीना, एक मकान में रहना गवारा न था, बल्कि सख़्ती यहाँ तक पहुँच गई थी कि उनकी तरफ़ देखना और उनसे बात चीत करना भी हराम समझते थे, और ईसाई इसके विपरीत माहवारी के दिनों में औरतों के साथ बड़ी महब्बत से मशग़ूल होते थे, और सहवास में बहुत आगे बढ़ जाते थे. मुसलमानों ने हुज़ूर से माहवारी का हुक्म पूछा. इसपर यह आयत उतरी और बहुत कम तथा बहुत ज़्यादा की राह छोड़ कर बीच की राह अपनाने की तालीम दी गई और बता दिया गया कि माहवारी के दिनों में औरतों से हमबिस्तरी करना मना है.

(२) यानी औरतों की क़ुर्बत से नस्ल का इरादा करो न कि वासना दूर करने का.

(३) यानी नेक और अच्छे कर्म या हमबिस्तरी से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना.

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अपने बेहनोई नोमान बिन बशीर के घर जाने और उनसे बात चीत करने और उनके दुश्मनों के साथ उनकी सुलह कराने से क़सम खाली थी. जब इसके बारे में उनसे कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क़सम खा चुका हूँ इसलिय यह काम कर ही नहीं सकता. इस सिलसिले में यह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क़सम खा लेने को मना किया गया. अगर कोई व्यक्ति नेकी से दूर रहने की क़सम खाले तो उसको चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वह नेक काम ज़रूर करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे. मुस्लिम शरिफ़ की हदीस में है, रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने किसी बात पर क़सम खाली फिर मालूम हुआ कि अच्छाई और बेहतरी इसके ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अच्छे काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे. कुछ मुफ़स्सिरों ने यह भी कहा है कि इस आयत से बार बार क़सम खाने की मुमानिअत यानी मनाही साबित होती है.

(५) क़सम तीन तरह की होती है :(१) लग्व (२) ग़मूस (३) मुनअक़िदा. लग्व यह है कि किसी गुज़री हुई बात पर अपने ख़याल में सही जानकर क़सम खाए और अस्ल में वह उसके विपरीत हो, यह माफ़ है, और इसपर कफ़्फ़ारा नहीं. ग़मूस यह है कि किसी

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ
بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪
فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ
لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ
يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا
افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ
وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾
فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ
اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

منزل ١

और क़यामत पर ईमान रखती हैं[९] और उनके शौहरों को इस मुद्दत के अन्दर उनके फेर लेने का हक़ पहुंचता है अगर मिलाप चाहे[१०] और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा उनपर है शरीअत के अनुसार[११] और मर्दों को फ़ज़ीलत (प्रधानता) है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है ﴾२२८﴿

उन्तीसवाँ रूकू

यह तलाक़[१] दो बार तक है फिर भलाई के साथ रोक लेना है[२] या नेकी के साथ छोड़ देना है[३] और तुम्हें रवा नहीं कि जो कुछ औरतों को दिया[४] उसमें से कुछ वापिस लो[५] मगर जब दोनों को डर हो कि अल्लाह की हदें क़ायम न करेंगे[६] फिर अगर तुम्हें डर हो कि वो दोनों ठीक उन्हीं हदों पर न रहेंगे तो उनपर कुछ गुनाह नहीं इसमें जो बदला देकर औरत छुट्टी ले[७] ये अल्लाह की हदें हैं इनसे आगे न बढ़ो तो वही लोग ज़ालिम हैं ﴾२२९﴿ फिर अगर तीसरी तलाक़ उसे दी तो अब वह औरत उसे हलाल न होगी जब तक दूसरे शौहर के पास न रहे[८] फिर वह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि आपस में मिल जाएं[९] अगर समझते हों कि अल्लाह की हदें निभाएंगे और

गुज़री हुई बात पर जान बूझकर झूठी क़सम खाए, इसमें गुनाहगार होगा. मुनअक़िदा यह है कि किसी आने वाली बात पर इरादा करके क़सम खाए. क़सम को अगर तोड़े तो गुनाहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम.

(६) जाहिलियत के दिनों में लोगों का यह तरीक़ा था कि अपनी औरतों से माल तलब करते, अगर वह देने से इनकार करतीं तो एक साल, दो साल, तीन साल या इससे ज़्यादा समय तक उनके पास ना जाते और उनके साथ सहवास न करने की क़सम खालेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे. न वो बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं, न शौहर वाली कि शौहर से आराम पातीं. इस्लाम ने इस अत्याचार को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत निश्चित फ़रमादी कि अगर औरत से चार माह के लिये सोहबत न करने की क़सम खाले जिसको ईला कहते हैं तो उसके लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है. इस अर्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औरत को छोड़ना उसके लिये बेहतर है या रखना. अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रूजू करले तो निकाह बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा, और अगर इस मुद्दत में रूजू न किया और क़सम न तोड़ी तो औरत निकाह से बाहर होगई और उसपर तलाक़े बायन वाक़े हो गई. अगर मर्द सहवास की क्षमता रखता हो तो रूजू हमबिस्तरी से ही होगा और अगर किसी वजह से ताक़त न हो तो ताक़त आने के बाद सोहबत का वादा रूजू है. (तफ़सीरे अहमदी)

(७) इस आयत में तलाक़ शुदा औरतों की इद्दत का बयान है. जिन औरतों को उनके शौहरों ने तलाक़ दी, अगर वो शौहर के पास न गई थीं और उनसे तनहाई में सहवास न हुआ था, जब तो उनपर तलाक़ की इद्दत ही नहीं है जैसा कि आयत *"फ़मालकुम अलैहिन्ना मिन इद्दतिन"* यानी निकाह करो फिर उन्हें बेहाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं जिसे गिनो. (सूरए अहज़ाब, आयत ४९) में इरशाद है और जिन औरतों को कमसिनी या बुढ़ापे की वजह से हैज़ या माहवारी न आती हो या जो गर्भवती हों, उनकी इद्दत का बयान सूरए तलाक़ में आएगा. बाक़ी जो आज़ाद औरतें हैं, यहाँ उनकी इद्दत और तलाक़ का बयान है कि उनकी इद्दत तीन माहवारी हैं.

(८) वह गर्भ हो या माहवारी का ख़ून, क्योंकि उसके छुपाने से, रजअत और बलद में जो शौहर का हक़ है, वह नष्ट होगा.

(९) यानी ईमानदारी का यही तक़ाज़ा है.

(१०) यानी तलाक़े रजई में इद्दत के अन्दर शौहर औरत की तरफ़ पलट सकता है, चाहे औरत राज़ी हो या न हो. लेकिन अगर शौहर को मिलाप मंज़ूर हो तो ऐसा करे. कष्ट पहुंचाने का इरादा न करे जैसा कि जाहिल लोग औरतों को परेशान करने के लिये करते थे.

(११) यानी जिस तरह औरतों पर शौहरों के अधिकार की अदायगी वाजिब है, उसी तरह शौहरों पर औरतों के हुक़ूक़ की रिआयत लाज़िम है.

حُدُوْدُ اللهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ
النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا
لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوْآ اٰيٰتِ اللهِ هُزُوًا ۚ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ
اللهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ
وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۚ وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوْآ اَنَّ
اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ
فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ
اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ ذٰلِكَ
يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۚ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ۚ وَاللهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ

ये अल्लाह की हदें हैं जिन्हें बयान करता है अक़्ल वालों के लिये(२३०) और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उनकी मीआद(अवधि) आ लगे[१०] तो उस वक़्त तक या भलाई के साथ रोक लो[११] या नेकी के साथ छोड़ दो[१२] और उन्हें ज़रर(तकलीफ़) देने के लिये रोकना न हो कि हद से बढ़ो और जो ऐसा करे वह अपना ही नुक़सान करता है[१३] और अल्लाह की आयतों को ठठ्ठा न बना लो.[१४] और याद करो अल्लाह का एहसान जो तुमपर है[१५] और वह जो तुमपर किताब और हिकमत[१६] उतारी तुम्हें नसीहत देने को और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है[१७](२३१)

तीसवाँ रूकू

और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उनकी मीआद पूरी हो जाए[१] तो ऐ औरतों के वालियो(स्वामियो), उन्हें न रोको इससे कि अपने शौहरों से निकाह कर लें[२] जब कि आपस में शरीअत के अनुसार रज़ामंद हो जाएं[३] यह नसीहत उसे दी जाती है जो तुम में से अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखता हो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा सुथरा और पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते(२३२) और माएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को[४] पूरे दो बरस

सूरए बक़रह - उन्तीसवाँ रूकू

(१) यानी तलाक़े रजई. एक औरत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि उसके शौहर ने कहा है कि वह उसको तलाक़ देता और रूजू करता रहेगा. हर बार जब तलाक़ की इद्दत गुज़रने के क़रीब होगी रूजू कर लेगा, फिर तलाक़ दे देगा, इसी तरह उम्र भर उसको क़ैद में रखेगा. इसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया कि तलाक़ रजई दो बार तक है. इसके बाद फिर तलाक़ देने पर रूजू करने का हक़ नहीं.

(२) रूजू करके.

(३) इस तरह कि रूजू न करे और इद्दत गुज़रकर औरत बायना हो जाए.

(४) यानी मेहर.

(५) तलाक़ देते वक़्त.

(६) जो मियाँ बीवी के हुक़ूक़ के बारे में है.

(७) यानी तलाक़ हासिल करे. यह आयत जमीला बिन्ते अब्दुल्लाह के बारे में उतरी. यह जमीला साबित बिन क़ैस इब्ने शमास के निकाह में थीं और शौहर से सख़्त नफ़रत रखतीं थीं. रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में अपने शौहर की शिकायत लाईं और किसी तरह उनके पास रहने पर राज़ी न हुईं, तब साबित ने कहा कि मैं ने इनको एक बाग़ दिया है अगर यह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझसे अलग होना चाहती हैं तो वह बाग़ मुझे वापस करें, मैं इनको आज़ाद कर दूँ. जमीला ने इसको मंज़ूर कर लिया. साबित ने बाग़ ले लिया और तलाक़ दे दी. इस तरह की तलाक़ को ख़ुला कहते हैं. ख़ुला तलाक़े बायन होता है. ख़ुला में 'ख़ुला' शब्द का ज़िक्र ज़रूरी है. अगर जुदाई की तलबगार औरत हो तो ख़ुला में मेहर की मिक़दार से ज़्यादा लेना मकरूह है और अगर औरत की तरफ़ से नुशूज़ न हो, मर्द ही अलाहिदगी चाहे तो मर्द को तलाक़ के बदले माल लेना बिल्कुल मकरूह है.

(८) तीन तलाक़ों के बाद औरत शौहर पर हराम हो जाती है, अब न उससे रूजू हो सकता है न दोबारा निकाह, जब तक कि हलाला हो, यानी इद्दत के बाद दूसरे से निकाह करे और वह सहवास के बाद तलाक़ दे, फिर इद्दत गुज़रे.

(९) दोबारा निकाह कर लें.

(१०) यानी इद्दत ख़त्म होने के क़रीब हो. यह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के बारे में उतरी. उन्होंने अपनी औरत को तलाक़ दी थी और जब इद्दत ख़त्म होने के क़रीब होती थी, रूजू कर लिया करते थे ताकि औरत क़ैद में पड़ी रहे.

(११) यानी निबाहने और अच्छा मामला करने की नियत से रूजू करो.

(१२) और इद्दत गुज़र जाने दो ताकि इद्दत के बाद वो आज़ाद हो जाएं.

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۗ
وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ
بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ
مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ
مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ
مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ وَلَا

उसके लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे(५) और जिसका बच्चा है(६) उसपर औरतों का खाना और पहनना है दस्तूर के अनुसार(७) किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उसकी ताक़त भर. माँ को ज़रर न दिया जाए उसके बच्चे से(८) और न औलाद वाले को उसकी औलाद से(९) या माँ बाप ज़रर न दें अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को(१०) और जो बाप की जगह है उसपर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर माँ बाप दोनों आपस की रज़ा और सलाह से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर गुनाह नहीं. और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को दूध पिलाओ तो भी तुमपर हरज नहीं कि जब जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा करदो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है(२३३) और तुम में जो मरें और बीवियां छोड़ें वो चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें(११) तो जब उनकी मुद्दत(अवीध) पूरी हो जाए तो ऐ वालियो(स्वामियो) तुम पर मुआख़ज़ा(पकड़) नहीं उस काम में जो औरत अपने मामले में शरीअत के अनुसार करें और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है(२३४) और तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा

(१३) कि अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफ़त करके गुनहगार होता है.
(१४) कि उनकी पर्वाह न करो और उनके ख़िलाफ़ अमल करो.
(१५) कि तुम्हें मुसलमान किया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का उम्मती बनाया.
(१६) किताब से क़ुरआन और हिकमत से क़ुरआन के आदेश और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत मुराद है.
(१७) उससे कुछ छुपा हुआ नहीं है.

सूरए बक़रह - तीसवाँ रूकू

(१) यानी उनकी इद्दत गुज़र चुके.
(२) जिनको उन्होंने अपने निकाह के लिये चुना हो, चाहे वो नए हों या यही तलाक़ देने वाले या उनसे पहले जो तलाक़ दे चुके थे.
(३) अपने कुफ़्व यानी बराबर वाले में मेहरे मिस्ल पर, क्योंकि इसके ख़िलाफ़ की सूरत में सरपरस्त हस्तक्षेप और एतिराज़ का हक़ रखते हैं. मअक़्ल बिन यसार मुज़नी की बहन का निकाह आसिम बिन अदी के साथ हुआ था. उन्होंने तलाक़ दी और इद्दत गुज़रने के बाद फिर आसिम ने दरख़्वास्त की तो मअक़्ल बिन यसार आड़े आए. उनके बारे में यह आयत उतरी. (बुख़ारी शरीफ़)
(४) तलाक़ के बयान के बाद यह सवाल अपने आप सामने आता है कि अगर तलाक़ वाली औरत की गोद में दूध पीता बच्चा हो तो उसके अलग होने के बाद बच्चे की परवरिश का क्या तरीक़ा होगा इसलिये यह ज़रूरी है कि बच्चे के पालन पोषण के बारे में माँ बाप पर जो अहकाम हैं वो इस मौक़े पर बयान फ़रमा दिये जाएं. लिहाज़ा यहाँ उन मसाइल का बयान हुआ: माँ चाहे तलाक़ शुदा हो या न हो, उसपर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है, शर्त यह है कि बाप को उजरत या वेतन पर दूध पिलवाने की क्षमता और ताक़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली उपलब्ध न हो. या बच्चा माँ के सिवा किसी का दूध क़ुबूल न करे. अगर ये बात न हो, यानी बच्चे की परवरिश ख़ास माँ के दूध पर निर्भर न हो तो माँ पर दूध पिलाना वाजिब नहीं, मुस्तहब है. (तफ़सीरे अहमदी व जुमल वग़ैरह)
(५) यानी इस मुद्दत का पूरा करना अनिवार्य नहीं. अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उसके लिये ख़तरा न हो तो इससे कम मुद्दत में भी छुड़ाना जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी, ख़ाज़िन वग़ैरह)
(६) यानी वालिद . इस अन्दाज़े बयान से मालूम हुआ कि नसब बाप की तरफ़ पलटता है.
(७) बच्चे की परवरिश और उसको दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है. इसके लिये वह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे. लेकिन

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝ وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْفُوا

रखकर तुम औरतों के निकाह का पयाम दो या अपने दिल में छुपा रखो.[१२] अल्लाह जानता है कि अब तुम उनकी याद करोगे[१३] हाँ उनसे छुपवां वादा न कर रखो मगर यह कि उतनी बात कहो जो शरीअत में चलती है और निकाह की गांठ पक्की न करो जबतक लिखा हुआ हुक्म अपने समय को न पहुंच ले[१४] और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है तो उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, हिल्म(सहिष्णुता) वाला है(२३५)

इकत्तीसवाँ रूकू

तुमपर कुछ मुतालिबा(अभियाचना) नहीं[१] तुम औरतों को तलाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई मेहर(रक़म,दैन) निश्चित कर लिया हो.[२] और उनको कुछ बरतने को दो.[३] हैसियत वाले पर उसके लायक़ और तंगदस्त पर उसके लायक़, दस्तूर के अनुसार कुछ बरतने की चीज़, ये वाजिब है भलाई वालों पर[४](२३६) और अगर तुमने औरतों को बे छुए तलाक़ दे दी और उनके लिये कुछ मेहर निश्चित कर चुके थे तो जितना ठहरा था उसका आधा अनिवार्य है मगर यह कि औरतें कुछ छोड़ दें[५] या वह ज़्यादा दे[६] जिसके हाथ में निकाह की गिरह है[७] और

अगर माँ अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो बेहतर है. शौहर अपनी बीवी पर बच्चे को दूध पिलाने के लिये ज़बरदस्ती नहीं कर सकता, और न औरत शौहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत या मज़दूरी तलब कर सकती है. जब तक कि उसके निकाह या इद्दत में रहे. अगर किसी शख़्स ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और इद्दत गुज़र चुकी तो वह उस बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती ह. अगर बाप ने किसी औरत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर रखा और उसकी माँ उसी वेतन पर या बिना पैसे दूध पिलाने पर राज़ी हुई तो माँ ही दूध पिलाने की ज़्यादा हक़दार है. और अगर माँ ने ज़्यादा वेतन तलब किया तो बाप को उससे दूध पिलवाने पर मजबूर नहीं किया जाएगा. (तफ़सीरे अहमदी व मदारिक). *"अलमअरूफ़"* (दस्तूर के अनुसार) से मुराद यह है कि हैसियत के मुताबिक़ हो, तंगी या फ़ुज़ूलख़र्ची के बग़ैर.

(८) यानी उसको उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए.

(९) ज़्यादा वेतन तलब करके.

(१०) माँ का बच्चे को कष्ट देना यह है कि उसको वक़्त पर दूध न दे और उसकी निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बाद छोड़ दे. और बाप का बच्चे को कष्ट देना यह है कि हिले हुए बच्चे को माँ से छीन ले या माँ के हक़ में कमी करे जिससे बच्चे को नुक़सान हो.

(११) गर्भवती की इद्दत तो गर्भ के अन्त तक यानी बच्चा पैदा हो जाने तक है, जैसा कि सूरए तलाक़ में ज़िक्र है. यहाँ बिना गर्भ वाली औरत का बयान है जिसका शौहर मर जाए, उसकी इद्दत चार माह दस रोज़ है. इस मुद्दत में न वह निकाह करे न अपना घर छोड़े, न बिना ज़रूरत तेल लगाए, न ख़ुश्बू लगाए, न मेहंदी लगाए, न सिंगार करे, न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने, न नए निकाह की बात चीत खुलकर करे. और जो तलाक़े बायन की इद्दत में हो, उसका भी यही हुक्म है. अल्बत्ता जो औरत तलाक़े रजई की इद्दत में हो, उसको सजना सँवरना और सिंगार करना मुस्तहब है.

(१२) यानी इद्दत में निकाह और निकाह का खुला हुआ प्रस्ताव तो मना है लेकिन पर्दे के साथ निकाह की इच्छा प्रकट करना गुनाह नहीं. जैसे यह कहे कि तुम बहुत नेक औरत हो या अपना इरादा दिल में ही रखे और ज़बान से किसी तरह न कहे.

(१३) और तुम्हारे दिलों में इच्छा होगी इसी लिये तुम्हारे लिये तारीज़ जायज़ कर दी गई.

(१४) यानी इद्दत गुज़र चुके.

सूरए बक़रह - इकत्तीसवाँ रूकू

(१) मेहर का.

(२) यह आयत एक अन्सारी के बारे में नाज़िल हुई जिन्हों ने बनी हनीफ़ा क़बीले की एक औरत से निकाह किया और कोई मेहर

أَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۚ وَلَا تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ حٰفِظُوا عَلَى
الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُومُوا لِلّٰهِ قٰنِتِينَ ۝
فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۚ فَإِذَا أَمِنتُمْ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۚ
وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ
إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ آيٰتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا
مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ

ऐ मर्दो, तुम्हारा ज़्यादा देना परहेज़गारी से नज़्दीकतर है और आपस में एक दूसरे पर एहसान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[८] (२३७) निगहबानी करो सब नमाज़ों की[९] और बीच की नमाज़ की[१०] और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से[११] (२३८) फिर अगर डर में हो तो प्यादा या सवार जैसे बन पड़े, फिर जब इत्मीनान से हो तो अल्लाह की याद करो जैसा उसने सिखाया जो तुम न जानते थे (२३९) और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़ जाएं वो अपनी औरतों के लिये वसीयत कर जाएं[१२] साल भर तक नान नफ़्क़ा देने की बे निकाले[१३] फिर अगर वो ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर उसका कोई हिसाब नहीं जो उन्होंने अपने मामले में मुनासिब तौर पर किया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (२४०) और तलाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब तौर पर नान नफ़्क़ा है ये वाजिब है परहेज़गारों पर (२४१) अल्लाह यूं ही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो (२४२)

बत्तीसवाँ रूकू

ऐ मेहबूब क्या तुमने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वो हज़ारों थे मौत के डर से तो अल्लाह ने

निश्चित न किया. फिर हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दी. इससे मालूम हुआ कि जिस औरत का मेहर निश्चित न किया हो, अगर उसको छूने से पहले तलाक़ दे दी तो मेहर की अदायगी लाज़िम नहीं. हाथ लगाने या छूने से हम बिस्तरी मुराद है, और ख़िलवते सहीहा यानी भरपूर तनहाई उसके हुक्म में है. यह भी मालूम हुआ कि मेहर का ज़िक्र किये बिना भी निकाह दुरूस्त है, मगर उस सूरत में निकाह के बाद मेहर निश्चित करना होगा. अगर न किया तो हमबिस्तरी के बाद मेहरे मिस्ल लाज़िम हो जाएगा, यानी वो मेहर जो उसके ख़ानदान में दूसरों का बंधता चला आया है.

(३) तीन कपड़ों का एक जोड़ा.

(४) जिस औरत का मेहर मुक़र्रर न किया हो, उसको दुख़ूल यानी संभोग से पहले तलाक़ दी हो उसको तो जोड़ा देना वाजिब है. और इसके सिवा हर तलाक़ वाली औरत के लिये मुस्तहब है. (मदारिक)

(५) अपने इस आधे में से.

(६) आधे से जो इस सूरत में वाजिब है.

(७) यानी शौहर.

(८) इसमें सदव्यवहार और महब्बत और नर्मी से पेश आने की तरग़ीब है.

(९) यानी पाँच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ों को उनके औक़ात पर भरपूर संस्कारों और शर्तों के साथ अदा करते रहो. इसमें पाँचों नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का बयान है. और औलाद और बीवी के मसाइल और अहकाम के बीच नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचाता है कि उनको नमाज़ की अदायगी से ग़ाफ़िल न होने दो और नमाज़ की पाबन्दी से दिल की सफ़ाई होती है, जिसके बिना मामलों के दुरूस्त होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

(१०) हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और अक्सरो बेशतर सहाबा का मज़हब यह है कि इससे अस्र की नमाज़ मुराद है. और हदीसों से भी प्रमाण मिलता है.

(११) इससे नमाज़ के अन्दर क़याम का फ़र्ज़ होना साबित हुआ.

(१२) अपने रिश्तेदारों को.

(१३) इस्लाम की शुरूआत में विधवा की इद्दत एक साल की थी और पूरे एक साल वह शौहर के यहाँ रहकर रोटी कपड़ा पाने की अधिकारी थी. फिर एक साल की इद्दत तो *"यतरब्बसना बि अन्फ़ुसेहिन्ना अरबअता अशहुरिन व अशरा"* (यानी चार माह दस दिन अपने आप को रोके रहें - सूरए बक़रह - आयत २३४) से स्थगित हुई, जिसमें विधवा की इद्दत चार माह दस दिन निश्चित फ़रमा दी गई और साल भर का नान नफ़्क़ा मीरास की आयत से मन्सूख़ यानी रद्द हुआ जिसमें औरत का हिस्सा शौहर के छोड़े हुए माल से मुक़र्रर किया गया. लिहाज़ा अब वसिय्यत का हुक्म बाक़ी न रहा. हिकमत इसकी यह है कि अरब के लोग अपने पूर्वज की विधवा

(१३) इसमें विरासत को कुछ दख़्ल नहीं.
(१४) जिसे चाहे ग़नी यानी मालदार करदे और माल में विस्तार अता फ़रमा दे. इसके बाद बनी इस्राईल ने हज़रत शमवील अलैहिस्लाम से अर्ज़ किया कि अगर अल्लाह ने उन्हें सल्तनत के लिये मुक़र्रर किया है तो इसकी निशानी क्या है. (ख़ाज़िन व मदारिक)
(१५) यह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक सोने से जड़ाऊ सन्दूक़ था जिसकी लम्बाई तीन हाथ की और चौड़ाई दो हाथ की थी. इसको अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर उतारा था. इसमें सारे नबियों की तस्वीरें थीं उनके रहने की जगहें और मकानों की तस्वीरें थीं और आख़िर में नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की और हुज़ूर के मुक़द्दस मकान की तस्वीर एक सुर्ख़ याक़ूत में थी कि हुज़ूर नमाज़ की हालत में खड़े हैं और आपके चारों तरफ़ सहाबए किराम. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इन सारी तस्वीरों को देखा. यह सन्दूक़ विरासत में चलता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुंचा. आप इसमें तौरात भी रखते थे और अपना ख़ास सामान भी. चुनान्चे इस ताबूत में तौरात की तख़्तियों के टुकड़े भी थे, और हज़रत मूसा की लाठी और आपके कपड़े, जूते और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की पगड़ी और उनकी लाठी और थोड़ा सा मन्न, जो बनी इस्राईल पर उतरता था. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जंग के अवसरों पर इस सन्दूक़ को आगे रखते थे, इससे बनी इस्राईल के दिलों को तस्कीन रहती थी. आपके बाद यह ताबूत बनी इस्राईल में लगातार विरासत में चला आया. जब उन्हें कोई मुश्किल पेश आती, वो इस ताबूत को सामने रखकर दुआएं करते और कामयाब होते. दुश्मनों के मुक़ाबले में इसकी बरकत से फ़तह पाते. जब बनी इस्राईल की हालत ख़राब हुई और उनके कुकर्म बहुत बढ़ गए तो अल्लाह तआला ने उनपर अमालिक़ा को मुसल्लत किया तो वो उनसे ताबूत छीन लेगए और इसको अपवित्र और गन्दे स्थान पर रखा और इसकी बेहुरमती यानी निरादर किया और इन गुस्ताख़ियों की वजह से वो तरह तरह की मुसीबतों में गिरफ़्तार हुए. उनकी पाचँ बस्तियाँ तबाह हो गईं और उन्हें यक़ीन हो गया कि ताबूत के निरादर से उनपर बर्बादी और मौत आई है. तो उन्होंने एक बेल गाड़ी पर ताबूत रखकर बैलों को हाँक दिया और फ़रिश्ते उसको बनी इस्राईल के सामने तालूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इस्राईल के लिये तालूत की बादशाही की निशानी मुक़र्रर हुआ. बनी इस्राईल यह देखकर उसकी बादशाही पर राज़ी हो गए और फ़ौरन जिहाद के लिये तैयार हो गए क्योंकि ताबूत पाकर उन्हें अपनी फ़तह का यक़ीन हो गया. तालूत ने बनी इस्राईल में से सत्तर हज़ार जवान चुने जिनमें हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी थे. (जलालैन व जुमल व ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह) इससे मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों की चीज़ों का आदर और एहतिराम लाज़िम है. उनकी बरकत से दुआएं क़ूबूल होती हैं और हाजतें पूरी होती हैं और तबर्रूकात का निरादर गुमराहों का तरीक़ा और तबाही का कारण है. ताबूत में नबियों की जो तस्वीरें थीं वो किसी आदमी की बनाई हुई न थीं, अल्लाह की तरफ़ से आई थीं.

सूरए बक़रह - तैंतीसवाँ रूकू

(१) यानी बैतुल मक़दिस से दुश्मन की तरफ़ रवाना हुआ. वह वक़्त निहायत सख़्त गर्मी का था. लश्करियों ने तालूत से इसकी शिकायत की और पानी की मांग की.
(२) यह इम्तिहान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि सख़्त प्यास के वक़्त जो फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहा वह आगे भी क़ायम रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी इच्छा के दबाव में आए और नाफ़रमानी करे वह आगे की सख़्तियों को क्या बर्दाश्त करेगा.

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوۡا مِنۡهُ اِلَّا قَلِيۡلًا مِّنۡهُمۡ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ
هُوَ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ ۙ قَالُوۡا لَا طَاقَةَ لَنَا الۡيَوۡمَ
بِجَالُوۡتَ وَجُنُوۡدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيۡنَ يَظُنُّوۡنَ اَنَّهُمۡ
مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمۡ مِّنۡ فِئَةٍ قَلِيۡلَةٍ غَلَبَتۡ فِئَةً
كَثِيۡرَةًۢ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ﴿٢٤٩﴾
وَلَمَّا بَرَزُوۡا لِجَالُوۡتَ وَجُنُوۡدِهٖ قَالُوۡا رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ
عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَى
الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَزَمُوۡهُمۡ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۙ
وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوۡتَ وَاٰتٰٮهُ اللّٰهُ الۡمُلۡكَ وَ
الۡحِكۡمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوۡلَا دَفۡعُ اللّٰهِ
النَّاسَ بَعۡضَهُمۡ بِبَعۡضٍ لَّفَسَدَتِ الۡاَرۡضُ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوۡ فَضۡلٍ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٥١﴾ تِلۡكَ اٰيٰتُ
اللّٰهِ نَتۡلُوۡهَا عَلَيۡكَ بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿٢٥٢﴾

सब ने उससे पिया मगर थोड़ों ने[३] फिर जब तालूत और उसके साथ के मुसलमान नहर के पार गए बोले हम में आज ताक़त नहीं जालूत और उसके लश्करों की बोले वो जिन्हें अल्लाह से मिलने का यक़ीन था कि अकसर कम जमाअत ग़ालिब आई है ज़्यादा गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है[४]﴿२४९﴾ फिर जब सामने आए जालूत और उसके लश्करों के, अर्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल और हमारे पाँव जमे रख काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर﴿२५०﴾ तो उन्हों ने उनको भगा दिया अल्लाह के हुक्म से और क़त्ल किया दाऊद ने जालूत को[५] और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिकमत (बोध)[६] अता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया[७] और अगर अल्लाह लोगों में कुछ से कुछ को दफ़ा(निवारण) न करे[८] तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर अल्लाह सारे जहान पर फ़ज़्ल(कृपा) करने वाला है﴿२५१﴾ ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम ऐ मेहबूब तुमपर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो[९]﴿२५२﴾

(३) जिनकी तादाद तीन सौ तेरह थी, उन्होंने सब्र किया और एक चूल्लू उनके और उनके जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उनके दिल और ईमान को क़ुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए और जिन्होंने ख़ूब पिया था उनके होंट काले हो गए, प्यास और बढ़ गई और हिम्मत टूट गई.

(४) उनकी मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है.

(५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के वालिद ऐशा तालूत के लश्कर में थे और उनके साथ उनके सारे बेटे भी. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम उन सब में सबसे छोटे थे, बीमार थे, रंग पीला पड़ा हुआ था, बकरियाँ चराते थे. जब जालूत ने बनी इस्राईल को मुक़ाबले के लिये ललकारा, वो उसकी जसामत देख कर घबराए, क्योंकि वह लम्बा चौड़ा ताक़तवर था. तालूत ने अपने लश्कर में ऐलान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे, मैं अपनी बेटी उसके निकाह में दूंगा और आधी जायदाद उसको दूंगा. मगर किसीने उसका जवाब न दिया तो तालूत ने अपने नबी शमवील अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि अल्लाह के सामने दुआ करें. आपने दुआ की तो बताया गया कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जालूत को क़त्ल करेंगे. तालूत ने आपसे अर्ज़ की कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आपके निकाह में दूँ और आधी जायदाद पेश करूँ. आपने क़ुबूल फ़रमाया और जालूत की तरफ़ रवाना हो गए. मुक़ाबले की सफ़ क़ायम हुई. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने मुबारक हाथों में ग़ुलेल या गोफ़न लेकर सामने आए. जालूत के दिल में आपको देखकर दहशत पैदा हुई मगर उसने बड़े घमण्ड की बातें कीं और आपको अपनी ताक़त के रोब में लाना चाहा. आपने गोफ़न में पत्थर रखकर मारा वह उसकी पेशानी को तोड़कर पीछे से निकल गया और जालूत गिर कर मर गया. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उसको लाकर तालूत के सामने डाल दिया. सारे बनी इस्राईल बहुत ख़ुश हुए और तालूत ने वादे के मुताबिक़ आधी जायदाद दी और अपनी बेटी का आपके साथ निकाह कर दिया. सारे मुल्क पर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सल्तनत हुई. (जुमल वग़ैरह)

(६) हिकमत से नबुव्वत मुराद है.

(७) जैसे कि ज़िरह बनाना और जानवरों की बोली समझना.

(८) यानी अल्लाह तआला नेकों के सदक़े में दूसरों की बलाएं भी दूर फ़रमाता है. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला एक नेक मुसलमान की बरकत से उसके पड़ोस के सौ घर वालों की बला दूर करता है. सुब्हानल्लाह ! नेकों के साथ रहना भी फ़ायदा पहुंचाता है. (ख़ाज़िन)

(९) ये हज़रात जिनका ज़िक्र पिछली आयतों में और ख़ास कर आयत *"इन्नका लमिनल मुरसलीन"* (और तुम बेशक रसूलों में हो) में फ़रमाया गया.

पारा दो समाप्त

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۚ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۗ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۗ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِیْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

منزل ١

तीसरा पारा तैंतीसवाँ रुकू (जारी)

ये रसूल हैं कि हमने इन में एक को दूसरे पर अफ़ज़ल(प्रधान) किया[१०] इन में किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया[११] और कोई वह है जिसे सब पर दर्जों बलन्द किया[१२] और हमने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ दीं[१३] और पाकीज़ा रूह से उसकी मदद की[१४] और अल्लाह चाहता तो उनके बाद वाले आपस में न लड़ते बाद इसके कि उनके पास खुली निशानियां आचुकीं[१५] लेकिन वो मुख़्तलिफ़ हो गए उनमें कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर होगया[१६] और अल्लाह चाहता तो वो न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहे करे[१७]﴿२५३﴾

चौंतीसवाँ रुकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वह दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद फ़रोख़्त (क्रिय-विक्रिय) है न काफ़िरों के लिये दोस्ती और न शफ़ाअत(सिफ़ारिश) और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं[१]﴿२५४﴾ अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं[२] वह आप ज़िन्दा, औरों का क़ायम रखने वाला[३] उसे न ऊंघ आए न नींद[४] उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में[५] वह कौन है जो उसके यहां सिफ़ारिश करे बे उसके हुक्म के[६] जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो

तीसरा पारा - तिल्कर रूसुल
तैंतीसवाँ रुकू (जारी)

(१०) इससे मालूम हुआ कि नबियों के दर्जे अलग अलग हैं. कुछ हज़रात से कुछ अफ़ज़ल हैं. अगरचे नबुव्वत में कोई फ़र्क़ नहीं, नबुव्वत की ख़ूबी में सब शरीक हैं, मगर अपनी अपनी विशेषताओं, गुणों और कमाल में अलग अलग दर्जे हैं. यही आयत का मज़मून है और इसी पर सारी उम्मत की सहमति है. (ख़ाज़िन व जुमल)

(११) यानी बिला वास्ता या बिना माध्यम के, जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तूर पहाड़ पर संबोधित किया और नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मेराज में.(जुमल).

(१२) वह हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं कि आपको कई दर्जों के साथ सारे नबियों पर अफ़ज़ल किया. इसपर सारी उम्मत की सहमति है. और कई हदीसों से साबित है. आयत में हुज़ूर के इस बलन्द दर्जे का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह यानी विवरण न किया गया. इससे भी हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की शान की बड़ाई मक़सूद है, कि हुज़ूर की मुबारक ज़ात की यह शान है कि जब सारे नबियों पर फ़ज़ीलत या बुज़ुर्गी का बयान किया जाए तो आपकी पाक ज़ात के सिवा किसी और का ख़याल ही न आए और कोई शक न पैदा हो सके. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वो विशेषताएं और गुण जिनमें आप सारे नबियों से फ़ायक़ और अफ़ज़ल हैं और आपका कोई शरीक नहीं, बेशुमार हैं कि क़ुरआने पाक में यह इरशाद हुआ *''दर्जों बलन्द किया''* इन दर्जों की कोई गिनती क़ुरआन शरीफ़ में ज़िक्र नहीं फ़रमाई, तो अब कौन हद लगा सकता है. इन बेशुमार विशेषताओं में से कुछ का इजमाली और संक्षिप्त बयान यह है कि आपकी रिसालत आम है, तमाम सृष्टि आपकी उम्मत है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया *''वमा अरसलनाका इल्ला काफ़्फ़तल लिन्नासे बशीरौं व नज़ीरा''* (यानी ऐ मेहबूब हमने तुमको न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है, ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता) (३४:२८). दूसरी आयत में फ़रमायाः *''लियकूना लिलआलमीना नज़ीरा''* (यानी जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो) (२५:१). मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में इरशाद हुआ *''उरसिलतो इलल ख़लाइक़े काफ़्फ़तन''* (और आप पर नबुव्वत ख़त्म की गई). क़ुरआने पाक में आपको *ख़ातिमुन्नबीय्यीन* फ़रमाया हदीस शरीफ़ में इरशाद हुआ *''ख़ुतिमा बियन नबिय्यूना''*. आयतों और मोजिज़ात में आपको तमाम नबियों पर अफ़ज़ल फ़रमाया

أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ
عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ
مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ
إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي
رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ
الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ۖ

कुछ उनके पीछे[७] और वो नहीं पाते उसके इल्म में से मगर जितना वह चाहे[८] उसकी कुर्सी में समाए हुए है आसमान और ज़मीन[९] और उसे भारी नहीं उनकी निगहबानी और वही है बलन्द बड़ाई वाला[१०]﴿२५५﴾ कुछ ज़बरदस्ती नहीं[११] दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए[१२] उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है﴿२५६﴾ अल्लाह वाली है मुसलमानों का उन्हें अंधेरियों से[१३] नूर की तरफ़ निकालता है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वो उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़ निकालते हैं यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उन्हें हमेशा उसमें रहना﴿२५७﴾

पैंतीसवाँ रूकू

ऐ मेहबूब क्या तुमने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उसके रब के बारे में इस पर[१] कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी[२] जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है कि जिलाता और मारता है[३] बोला मै जिलाता और मारता

गया . आपकी उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़ज़ल किया गया. शफ़ाअते कुबरा आपको अता फ़रमाई गई. मेराज में ख़ास कुर्ब आपको मिला . इल्मी और अमली कमालात में आपको सबसे ऊँचा किया और इसके अलावा बे इन्तिहा विशेषताएं आपको अता हुई. (मदारिक, जुमल, ख़ाज़िन, बैज़ावी वग़ैरह).

(१३) जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरूस्त करना, मिट्टी से चिड़ियाँ बनाना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरह.

(१४) यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम से जो हमेशा आपके साथ रहते थे.

(१५) यानी नबियों के चमत्कार.

(१६) यानी पिछले नबियों की उम्मतें भी ईमान और कुफ़्र में विभिन्न रहीं, यह न हुआ कि तमाम उम्मत मुतीअ हो जाती.

(१७) उसके मुल्क में उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और यही ख़ुदा की शान है.

सूरए बक़रह - चौंतीसवाँ रूकू

(१) कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगानी में हाजत के दिन यानी क़यामत के लिये कुछ न किया.

(२) इसमें अल्लाह तआला की उलूहियत और उसके एक होने का बयान है. इस आयत को आयतल कुर्सी कहते हैं. हदीसों में इसकी बहुत सी फ़ज़ीलत आई है.

(३) यानी वाजिबुल वुजूद और आलम का ईजाद करने वाला और तदबीर फ़रमाने वाला.

(४) क्योंकि यह दोष है और वह दोष और ऐब से पाक है.

(५) इसमें उसकी मालिकियत और हुक्म के लागू करने की शक्ति का बयान है, और बहुत ही सुंदर अन्दाज़ में शिर्क का रद है कि जब सारी दुनिया उसकी मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है. मुश्रिक या तो सितारों को पूजते हैं जो आसमानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पत्थरों और दरख़्तों और जानवरों वग़ैरह को कि जो ज़मीन में हैं. जब आसमान और ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो ये कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं.

(६) इसमें मुश्रिकों का रद है जिनका गुमान था कि मूर्तियाँ सिफ़ारिश करेंगी. उन्हें बता दिया गया कि काफ़िरों के लिये सिफ़ारिश या शफ़ाअत नहीं. अल्लाह के दरबार से जिन्हें इसकी इजाज़त मिली है उनके सिवा कोई शफ़ाअत नहीं कर सकता और इजाज़त वाले नबी, फ़रिश्ते और ईमान वाले हैं.

(७) यानी गुज़रे हुए या आगे आने वाले दुनिया और आख़िरत के काम.

(८) और जिनको वह मुत्तला फ़रमाए, वो नबी और रसूल हैं जिनको ग़ैब पर सूचित फ़रमाना, उनकी नबुव्वत का प्रमाण है. दूसरी

قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَ
اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۟ۚ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ
عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى
يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ
عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا
اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ
اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى
الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ
الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

منزل ١

हूँ[४] इब्राहीम ने फ़रमाया तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब से, तू उसको पश्चिम से ले आ[५] तो होश उड़ गए काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को (२५८) या उसकी तरह जो गुज़रा एक बस्ती पर[६] और वह ढई पड़ी थी अपनी छतों पर[७] बोला इसे कैसे जिलाएगा अल्लाह इसकी मौत के बाद, तो अल्लाह ने उसे मुर्दा रखा सौ बरस फिर ज़िन्दा कर दिया, फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा, अर्ज़ की दिन भर ठहरा हूंगा या कुछ कम, फ़रमाया नहीं, तुझे सौ बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख कि जिसकी हड्डियां तक सलामत न रहीं, और यह इसलिये कि तुझे हम लोगों के वास्ते निशानी करें और उन हड्डियों को देखकर कैसे हम उन्हें उठान देते फिर उन्हें गोश्त पहनाते हैं. जब यह मामला उसपर ज़ाहिर होगया बोला मैं ख़ूब जानता हूँ कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है (२५९) और जब अर्ज़ की इब्राहीम ने[८] ऐ रब मेरे मुझे दिखादे तू किस तरह मुर्दे जिलाएगा, फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं[९] अर्ज़ की यक़ीन क्यों नहीं मगर यह चाहता हूँ कि मेरे दिल को क़रार

आयत में इरशाद फ़रमाया *''ला युज़हिरो अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर तदा मिर रसूलिन''* (यानी अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता सिवाय अपने पसन्दीदा रसूलों के. (७२:२६) (ख़ाज़िन).

(९) इसमें उसकी शान की अज़मत का इज़हार है, और कुर्सी से या इल्म और क्षमता मुराद है या अर्श या वह जो अर्श के नीचे और सातों आसमानों के ऊपर है. और मुमकिन है कि यह वही हो जो *''फ़लकुल बुरूज''* के नाम से मशहूर है.

(१०) इस आयत में इलाहिय्यात के ऊंचे मसायल का बयान है और इससे साबित है कि अल्लाह तआला मौजूद है.अपने अल्लाह होने में एक है, हयात यानी ज़िन्दगी के साथ मुत्तसिफ़ है. वाजिबुल वुजूद, अपने मासिवा का मूजिद है. तग़ैय्युरो हुलूल से मुनज़्ज़ा और तबदीली व ख़राबी से पाक है, न किसी को उससे मुशाबिहत, न मख़लूक़ के अवारिज़ को उस तक रसाई, मुल्को मलकूत का मालिक, उसूलो फ़रअ का मुब्देअ, क़वी गिरफ़्त वाला, जिसके हुज़ूर सिवाए माज़ून के कोई शफ़ाअत नहीं कर सकता. सारी चीज़ों का जानने वाला, ज़ाहिर का भी और छुपी का भी, कुल का भी, और कुछ का भी. उसका मुल्क वसीअ और क़ुदरत लामेहदूद, समझ और सोच से ऊपर.

(११) अल्लाह की सिफ़ात के बाद *''ला इकराहा फ़िद दीन''* (कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में) फ़रमाने में यह राज़ है कि अब समझ वाले के लिये सच्चाई क़ुबूल करने में हिचकिचाहट की कोई वजह बाक़ी न रही.

(१२) इसमें इशारा है कि काफ़िर के लिये पहले अपने कुफ़्र से तौबह और बेज़ारी ज़रूरी है, उसके बाद ईमान लाना सही होता है.

(१३) कुफ़्र और गुमराही की रौशनी, ईमान और हिदायत की रौशना और........

सूरए बक़रह - पैंतीसवाँ रूकू

(१) घमण्ड और बड़ाई पर.

(२) और तमाम ज़मीन की सल्तनत अता फ़रमाई, इस पर उसने शुक्र और फ़रमाँबरदारी के बजाय घमण्ड किया और ख़ुदा होने का दावा करने लगा, उसका नाम नमरूद बिन कनआन था. सब से पहले सर पर ताज रखने वाला यही है. जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसको ख़ुदा परस्ती की दावत दी, चाहे आग में डाले जाने से पहले या इसके बाद, तो वह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो.

(३) यानी जिस्मों में मौत और ज़िन्दगी पैदा करता है, एक ख़ुदा को न पहचानने वाले के लिये यह बेहतरीन हिदायत थी, और इसमें बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उसके अस्तित्व की गवाह है कि तू एक बेजान नुत्फ़ा था, उसने उसे इन्सानी सूरत दी और ज़िन्दगी प्रदान की. वह रब है और ज़िन्दगी के बाद फिर ज़िन्दा जिस्मों को जो मौत देता है. वो परवर्दिगार है, उसकी क़ुदरत की गवाही ख़ुद तेरी अपनी मौत और ज़िन्दगी में मौजूद है. उसके अस्तित्व से बेख़बर रहना अत्यन्त अज्ञानता और सख़्त बद-नसीबी है. यह

दलील ऐसी ज़बरदस्त थी कि इसका जवाब नमरूद से न बन पड़ा और इस ख़याल से कि भीड़ के सामने उसको लाजवाब और शर्मिन्दा होना पड़ता है, उसने टेढ़ा तर्क अपनाया.

(४) नमरूद ने दो व्यक्तियों को बुलाया. उनमें से एक को क़त्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूँ, यानी किसी को गिरफ़्तार करके छोड़ देना उसको जिलाना है . यह उसकी अत्यन्त मूर्खता थी, कहाँ क़त्ल करना और छोड़ना और कहाँ मौत और ज़िन्दगी पैदा करना. क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आजिज़ रहना और बजाय उसके ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उसकी ज़िल्लत के लिये काफ़ी था. समझ वालों पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो तर्क हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने क़ायम किया है वह अन्तिम है, और उसका जवाब मुमकिन नहीं. लेकिन चूंकि नमरूद के जवाब में दावे की शान पैदा हो गई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसपर मुनाज़िरे वाली गिरफ़्त फ़रमाई कि मौत और ज़िन्दगी का पैदा करना तो तेरी ताक़त से बाहर है, ऐ ख़ुदा बनने के झूटे दावेदार, तू इससे सरल काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्रिक जिस्म की हरकत का बदलना है.

(५) यह भी न कर सके तो ख़ुदा होने का दावा किस मुंह से करता है. इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़िरा करने का सुबूत मिलता है.

(६) बहुतों के अनुसार यह घटना हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम की है और बस्ती से मुराद बैतुल मक़दिस है. जब बुख़्तेनस्सर बादशाह ने बैतुल मक़दिस को वीरान किया और बनी इस्राईल को क़त्ल किया, गिरफ़्तार किया, तबाह कर डाला, फिर हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम वहाँ गुज़रे. आपके साथ एक बरतन खजूर और एक प्याला अंगूर का रस और आप एक गधे पर सवार थे. सारी बस्ती में फिरे, किसी शख़्स को वहाँ न पाया. बस्ती की इमारतों को गिरा हुआ देखा तो आपने आश्चर्य से कहा *"अन्ना युहयी हाज़िहिल्लाहो बादा मौतिहा"* (कैसे जिलाएगा अल्लाह उसकी मौत के बाद) और आपने अपनी सवारी के गधे को वहाँ बाँध दिया, और आपने आराम फ़रमाया. उसी हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया. यह सुबह के वक़्त की घटना है. उससे सत्तर बरस बाद अल्लाह तआला ने फ़ारस के बादशाहों में से एक बादशाह को मुसल्लत किया और वह अपनी फ़ौजें लेकर बैतुल मक़दिस पहुंचा और उसको पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया और बनी इस्राईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे, अल्लाह तआला उन्हें फिर यहाँ लाया और वो बैतुल मक़दिस और उसके आस पास आबाद हुए और उनकी तादाद बढ़ती रही. इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को दुनिया की आँखों से छुपाए रखा और कोई आपको न देख सका. जब आपकी वफ़ात को सौ साल गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने आपको ज़िन्दा किया, पहले आँखों में जान आई, अभी तक सारा बदन मुर्दा था. वह आपके देखते देखते ज़िन्दा किया गया. यह घटना शाम के वक़्त सूरज डूबने के क़रीब हुई. अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तुम यहाँ कितने दिन ठहरे. आपने अन्दाज़े से अर्ज़ किया कि एक दिन या कुछ कम. आप का ख़याल यह हुआ कि यह उसी दिन की शाम है जिसकी सुबह को सोए थे. फ़रमाया बल्कि तुम सौ बरस ठहरे. अपने खाने और पानी यानी खजूर और अंगूर के रस को देखो कि वैसा ही है, उसमें बू तक न आई और अपने गधे को देखो. देखा कि वह मरा हुआ था, गल गया था, अंग बिखर गए थे, हड्डियाँ सफ़ेद चमक रही थीं. आपकी निगाह के सामने उसके अंग जमा हुए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले, फिर उसमें रूह फूंकी गई. वह उठ खड़ा हुआ और आवाज़ करने लगा. आपने अल्लाह तआला की क़ुदरत का अवलोकन किया और फ़रमाया मैं ख़ूब जानता हूँ कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है. फिर आप अपनी उसी सवारी पर सवार होकर अपने महल्ले में तशरीफ़ लाए. सरे अक़दस और दाढ़ी मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उम्र वही चालीस साल की थी, कोई आपको पहचानता न था. अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे. एक बुढ़िया मिली, जिसके पाँव रह गए थे, वह अन्धी हो गई थी. वह आपके घर की दासी थी. उसने आपको देखा था. आपने उससे पूछा कि यह उज़ैर का मकान है, उसने कहा हाँ. और उज़ैर कहाँ, उन्हें ग़ायब हुए सौ साल गुज़र गए. यह कहकर ख़ूब रोई. आपने फ़रमाया, मैं उज़ैर हूँ. उसने कहा सुब्हानल्लाह, यह कैसे हो सकता है, आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मुझे सौ साल मुर्दा रखा, फिर ज़िन्दा किया. उसने कहा, हज़रत उज़ैर दुआ की क़ुबूलियत वाले थे, जो दुआ करते, क़ुबूल होती. आप दुआ कीजिये कि मैं देखने वाली हो जाऊं, ताकि मैं अपनी आँखों से आपको देखूँ. आपने दुआ फ़रमाई, वह आँखों वाली हो गई. आपने उसका हाथ पकड़ कर फ़रमाया, उठ ख़ुदा के हुक्म से. यह फ़रमाते ही उसके मारे हुए पाँव दुरूस्त हो गए. उसने आपको देखकर पहचाना और कहा, मैं गवाही देती हूँ कि आप बेशक उज़ैर हैं. वह आपको बनी इस्राईल के महल्ले में ले गई. वहाँ एक बैठक में आपके बेटे थे, जिनकी उम्र एक सौ अठारह साल की हो चुकी थी और आपके पोते भी, जो बूढ़े हो चुके थे. बुढ़िया ने बैठक में पुकारा कि यह हज़रत उज़ैर तशरीफ़ ले आए. बैठक में मौजूद लोगों ने उसे झुटलाया. उसने कहा मुझे देखो, आपकी दुआ से मेरी यह हालत हो गई. लोग उठे और आपके पास आए. आपके बेटे ने कहा कि मेरे वालिद साहब के कन्धों के बीच काले बालों का एक हिलाल था. जिस्मे मुबारक खोलकर दिखाया गया तो वह मौजूद था. उस ज़माने में तौरात की कोई प्रतिलिपि यानी नुस्ख़ा न रहा था. कोई उसका जानने वाला मौजूद न था. आपने सारी तौरात ज़बानी पढ़ दी. एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मालूम हुआ कि बुख़्तेनस्सर के अत्याचारों के बाद गिरफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरात एक जगह दफ़्न करदी थी उसका पता मुझे मालूम है. उस पते पर तलाश करके तौरात का वह नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने अपनी याद से जो तौरात लिखाई थी, उससे मुक़ाबला किया गया तो एक अक्षर का फ़र्क़ न था. (जुमल)

(७) कि पहले छतें गिरीं फिर उनपर दीवारें आ पड़ीं.

(८) मुफ़स्सिरों ने लिखा है कि समन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था. ज्वार भाटे में समन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता

لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ
فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ
مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ
سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ
لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا
مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ
وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ
غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا
صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ

आजाए[१०] फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे लेकर अपने साथ हिला ले[११] फिर उनका एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वो तेरे पास चले आएंगे पाँव से दौड़ते[१२] और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (२६०)

छत्तीसवाँ रूकू

उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं[१] उस दिन की तरह जिसने उगाईं सात बालें[२] हर बाल में सौ दाने[३] और अल्लाह इस से भी ज़्यादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुसअत (विस्तार) वाला इल्म वाला है (२६१) वो जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं[४] फिर दिये पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें[५] उन का नेग उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ डर हो न कुछ ग़म (२६२) अच्छी बात कहना और दरगुज़र (क्षमा) करना[६] उस ख़ैरात से बेहतर है जिसके बाद सताना हो[७] और अल्लाह बे-परवाह हिल्म (सहिष्णुता) वाला है (२६३) ऐ ईमान वालो अपने सदक़े (दान) बातिल न करदो एहसान रखकर और ईज़ा (दुखः) देकर[८] उसकी तरह जो अपना

है. जब पानी चढ़ता तो मछलियाँ उसकी लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्दे खाते. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह देखा तो आपको शौक़ हुआ कि आप देखें कि मुर्दे किस तरह ज़िन्दा किये जाएंगे. आपने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया, या रब मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उनके अंग दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पेटों से जमा फ़रमाएगा. लेकिन मैं यह अजीब दृश्य देखने की इच्छा रखता हूँ. मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल यह भी है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना ख़लील यानी दोस्त किया, मौत के फ़रिश्ते इज़्राईल अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से इजाज़त लेकर आपको यह ख़ुशख़बरी देने आए. आपने बशारत सुनकर अल्लाह की तारीफ़ की और फ़रिश्ते से फ़रमाया कि इस ख़ुल्लत यानी ख़लील बनाए जाने की निशानी क्या है ? उन्होंने अर्ज़ किया, यह कि अल्लाह तआला आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाए और आपके सवाल पर मुर्दे ज़िन्दा कर दे. तब आपने यह दुआ की. (ख़ाज़िन)

(९) अल्लाह तआला हर ज़ाहिर छुपी चीज़ का जानने वाला है, उसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान और यक़ीन के कमाल यानी सम्पूर्णता का इल्म है. इसके बावजूद यह सवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यक़ीन नहीं, इसलिये है कि सुनने वालों को सवाल का मक़सद मालूम हो जाए और वो जान लें कि यह सवाल किसी शक व शुबह की बुनियाद पर न था. (बैज़ावी व जुमल वग़ैरह)

(१०) और इन्तिज़ार की बेचैनी दूर हो. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि इस निशानी से मेरे दिल को तसल्ली हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील यानी दोस्त बनाया.

(११) ताकि अच्छी तरह पहचान हो जाए.

(१२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने चार चिड़ियाँ लीं, मोर, मुर्ग़, कबूतर और कौवा. उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़िब्ह किया, उनके पर उखाड़े और क़ीमा करके उनके अंग आपस में मिला दिये और इस मजमूए के कई हिस्से किये. एक एक हिस्से को एक एक पहाड़ पर रखा और सबके सर अपने पास मेहफ़ूज़ रखे. फिर फ़रमाया, चले आओ अल्लाह के हुक्म से. यह फ़रमाना था, वो टुकड़े दौड़े और हर हर जानवर के अंग अलग अलग होकर अपनी तरतीब से जमा हुए और चिड़ियों की शक्लें बनकर अपने पाँव से दौड़ते हुए हाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिलकर जैसे पहले थे वैसे ही सम्पूर्ण बनकर उड़ गए. सुब्हानल्लाह !

सूरए बक़रह - छत्तीसवाँ रूकू

(१) चाहे ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल, भलाई के कामों से जुड़ा होना आम है. चाहे किसी विद्यार्थी को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या मरने वालों के ईसाले सवाब के लिये सोयम, दसवें, बीसवें, चालीसवें के तरीक़े पर मिस्कीनों को खाना खिलाया जाए.

(२) उगाने वाला हक़ीक़त में अल्लाह ही है. दाने की तरफ़ उसकी निस्बत मजाज़ी है. इससे मालूम हुआ कि मजाज़ी सनद जायज़

مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ
وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ
مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ
اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ
يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝

माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और अल्लाह और क़यामत पर ईमान न लाए तो उसकी कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उसपर मिट्टी है अब उसपर ज़ोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा.(९) अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता (२६४) और उनकी कहावत, जो अपने माल अल्लाह की रज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को(१०), उस बाग़ की सी है जो भोड़(रेतीली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दो ने मेवा लाया फिर अगर ज़ोर का मेंह उसे न पहुंचे तो ओस काफ़ी है(११) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है(१२) (२६५) क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा(१३) कि उसके पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का(१४) जिसके नीचे नदियां बहतीं उसके लिये उसमें हर क़िस्म के फलों से है(१५) और उसे बुढ़ापा आया(१६) और उसके नातवाँ(कमज़ोर) बच्चे हैं(१७) तो आया उसपर एक बगोला जिसमें आग थी तो जल गया(१८) ऐसा ही बयान करता है अल्लाह तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम ध्यान लगाओ(१९) (२६६)

है जबकि सनद करने वाला ग़ैर ख़ुदा के तसर्रुफ़ में मुस्तक़िल एतिक़ाद न करता हो. इसी लिये यह कहना भी जायज़ है कि ये दवा फ़ायदा पहुंचाने वाली है, यह नुक़सान देने वाली है, यह दर्द मिटाने वाली है, माँ बाप ने पाला, आलिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने हाजत पूरी की, वग़ैरह. सबमें मजाज़ी सनदें हैं और मुसलमान के अक़ीदे में करने वाला हक़ीक़त में अल्लाह ही है, बाक़ी सब साधन हैं.

(३) तो एक दाने के सात सौ दाने हो गए, इसी तरह ख़ुदा की राह में ख़र्च करने से सात सौ गुना अज्र हो जाता है.

(४) यह आयत हज़रत उस्माने ग़नी और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रदियल्लाहो अन्हुमा के बारे में उतरी. हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो ने ग़ज़वए तबूक के मौक़े पर इस्लामी लश्कर के लिये एक हज़ार ऊंट सामान के साथ पेश किये और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रदियल्लाहो अन्हो ने चार हज़ार दरहम सदक़े के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किये और अर्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दरहम थे, आधे मैंने अपने और अपने बाल बच्चों के लिये रख लिये और आधे ख़ुदा की राह में हाज़िर हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जो तुमने दिये और जो तुमने रखे, अल्लाह तआला दोनों में बरकत अता फ़रमाए.

(५) एहसान रखना तो यह कि देने के बाद दूसरों के सामने ज़ाहिर करें कि हमने तेरे साथ ऐसे सुलूक किये और उसको परेशान कर दें. और तकलीफ़ देना यह कि उसको शर्म दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था, हमने तेरी देखभाल की,या और तरह दबाव दें, यह मना फ़रमाया गया.

(६) यानी अगर सवाल करने वाले को कुछ न दिया जाए तो उससे अच्छी बात कहना और सदव्यवहार के साथ जवाब देना, जो उसको नागवार न गुज़रे और अगर वह सवाल किये ही जाए या ज़बान चलाए, बुरा भला कहने लगे, तो उससे मुंह फेर लेना.

(७) शर्म दिला कर या एहसान जताकर या और कोई तकलीफ़ पहुंचा कर.

(८) यानी जिस तरह मुनाफ़िक़ को अल्लाह की रज़ा नहीं चाहिये, वह अपना माल रियाकारी यानी दिखावे के लिये ख़र्च करके बर्बाद कर देता है, इसी तरह तुम एहसान जताकर और तकलीफ़ देकर अपने सदक़ात और दान का पुण्य तबाह न करो.

(९) ये मुनाफ़िक़ रियाकार के काम की मिसाल है कि जिस तरह पत्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वह सब दूर हो जाती है, ख़ाली पत्थर रह जाता है, यही हाल मुनाफ़िक़ के कर्म का है और क़यामत के दिन वह तमाम कर्म झूटे ठहरेंगे, क्योंकि अल्लाह की रज़ा और ख़ुशी के लिये न थे.

(१०) ख़ुदा की राह में ख़र्च करने पर.

(११) यह ख़ुलूस वाले मूमिन के कर्मों की एक मिसाल है कि जिस तरह ऊंचे इलाक़े की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर हाल में ख़ूब फलता है, चाहे बारिश कम हो या ज़्यादा, ऐसे ही इख़लास वाले मूमिन का दान और सदक़ा ख़ैरात चाहे कम हो या ज़्यादा, अल्लाह

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ
تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾
اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ
وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا
يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ
مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ اِنْ تُبْدُوا
الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا
الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

منزل ١

सैंतीसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो[१] और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला[२] और ख़ास नाक़िस(दूषित) का इरादा न करो कि दो तो उसमें से[३] और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उसमें चश्मपोशी न करो और जान रखो कि अल्लाह बे-परवाह सराहा गया है﴾२६७﴿ शैतान तुम्हें अन्देशा (आशंका) दिलाता[४] मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का[५] और अल्लाह तुम से वादा फ़रमाता है बख़्शिश(इनाम) और फ़ज़्ल(कृपा) का[६] और अल्लाह वुसअत(विस्तार) वाला इल्म वाला है﴾२६८﴿ अल्लाह हिकमत(बोध) देता है[७] जिसे चाहे और जिसे हिकमत मिली उसे बहुत भलाई मिली और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले﴾२६९﴿ और तुम जो ख़र्च करो[८] या मन्नत मानो[९] अल्लाह को उसकी ख़बर है[१०] और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं﴾२७०﴿ अगर ख़ैरात खुलेबन्दों दो तो वह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है.[११] और

तआला उसको बढ़ाता है.

(१२) और तुम्हारी नियत और इख़लास को जानता है.

(१३) यानी कोई पसन्द न करेगा क्योंकि यह बात किसी समझ वाले के गवारा करने के क़ाबिल नहीं है.

(१४) अगरचे उस बाग़ में भी क़िस्म क़िस्म के पेड़ हों मगर खजूर और अंगूर का ज़िक्र इसलिये किया कि ये ऊमदा मेवे हैं.

(१५) यानी वह बाग़ आरामदायक और दिल को लुभाने वाला भी है, और नफ़ा देने वाली ऊमदा जायदाद भी.

(१६) जो हाजत या आवश्यकता का समय होता है और आदमी कोशिश और परिश्रम के क़ाबिल नहीं रहता.

(१७) जो कमाने के क़ाबिल नहीं और उनके पालन पोषण की ज़रूरत है, और आधार केवल बाग़ पर, और बाग़ भी बहुत ऊमदा है.

(१८) वह बाग़, तो इस वक़्त उसके रंजो ग़म और हसरतो यास की क्या इन्तिहा है. यही हाल उसका है जिसने अच्छे कर्म तो किये हों मगर अल्लाह की ख़ुशी के लिये नहीं, बल्कि दिखावे के लिये, और वह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का भंडार है. मगर जब सख़्त ज़रूरत का वक़्त यानी क़यामत का दिन आए, तो अल्लाह तआला उन कर्मों को अप्रिय करदे. उस वक़्त उसको कितना दुख और कितनी मायूसी होगी. एक रोज़ हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने सहाबए किराम से फ़रमाया कि आप की जानकारी में यह आयत किस बारे में उतरी है. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये उदाहरण है एक दौलतमंद व्यक्ति के लिये जो नेक कर्म करता हो, फिर शैतान के बहकावे से गुमराह होकर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाया या नष्ट कर दे. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(१९) और समझो कि दुनिया फ़ानी, मिटजाने वाली और आक़िबत आनी है.

सूरए बक़रह - सैंतीसवाँ रूकू

(१) इससे रोज़ी के लिये कोशिश करने की अच्छाई और तिजारत के माल में ज़कात साबित होती है (ख़ाज़िन व मदारिक). यह भी हो सकता है कि आयत नफ़्ल सदक़े और फ़र्ज़ सदक़े दोनों को लागू हो . (तफ़सीरे अहमदी)

(२) चाहे वो अनाज हों या फल या खानों से निकली चीज़ें.

(३) कुछ लोग ख़राब माल सदक़े में देते थे, उनके बारे में यह आयत उतरी . सदक़ा वुसूल करने वाले को चाहिये कि वह बीच का माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सब से बढ़िया.

(४) कि अगर ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो नादार या दरिद्र हो जाओगे.

उसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है(२७१) उन्हें राह देना तुम्हारे ज़िम्मे अनिवार्य नहीं(१२) हाँ अल्लाह राह देता है जिसे चाहता है. और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है(१३) और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर अल्लाह की मर्ज़ी चाहने के लिये और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़सान न दिये जाओगे(२७२) उन फ़क़ीरों के लिये जो ख़ुदा की राह में रोके गए(१४) ज़मीन में चल नहीं सकते(१५) नादान उन्हें तवन्गर (मालदार) समझे बचने के सबब(१६) तू उन्हें उनकी सूरत से पहचान लेगा,(१७) लोगों से सवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है(२७३)

अड़तीसवाँ रूकू

वो जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर(१) उनके लिये उनका नेग है उनके रब के पास उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म(२७४) वो जो सूद खाते हैं(२) क़यामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वह जिसे आसेब (प्रेतबाधा) ने छू कर मख़बूत (पागल)

سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۞ لَيْسَ
عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ
اِلَّا ابْتِغَاۤءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ
يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۞ لِلْفُقَرَاۤءِ
الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ؗ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَاۤءَ مِنَ
التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ
وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۞
اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ
عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۞ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ
الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

(५) यानी कंजूसी का, और ज़कात या सदक़ा न देने का, इस आयत में यह बात है कि शैतान किसी तरह कंजूसी की ख़ूबी दिमाग़ में नहीं बिठा सकता. इसलिये वह यही करता है कि ख़र्च करने से नादारी और दरिद्रता का डर दिलाकर रोके. आजकल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर उतारू हैं, वो भी इसी एक बहाने से काम लेते हैं.

(६) सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर.

(७) हिकमत से या क़ुरआन व हदीस व फ़िक़्ह का इल्म मुराद है, या तक़वा या नबुव्वत. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(८) नेकी में, चाहे बदी में.

(९) फ़रमाँबरदारी की या गुनाह की, नज़्र आम तौर से तोहफ़ा और भेंट को बोलते हैं और शरीअत में नज़्र इबादत और रब की क़ुर्बत की चाह है. इसीलिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वह सही नहीं हुई. नज़्र ख़ास अल्लाह तआला के लिये होती है और किसी वली के आस्ताने के फ़क़ीरों को नज़्र पूरा करने का साधन ख़याल करे, जैसे किसी ने यह कहा, ऐ अल्लाह मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा ये काम पूरा करा दे तो मैं उस वली के आस्ताने के फ़क़ीरों को खाना खिलाऊंगा या वहाँ के ख़ादिमों को रुपया पैसा दूँगा या उनकी मस्जिद के लिये तेल या चटाई वग़ैरह हाज़िर करूंगा, तो यह नज़्र जायज़ है. (रद्दुल मोहतार)

(१०) वह तुम्हें इसका बदला देगा.

(११) सदक़ा चाहे फ़र्ज़ हो या नफ़्ल, जब सच्चे दिल से अल्लाह के लिये दिया जाए और दिखावे से पाक हो तो चाहे ज़ाहिर कर के दें या छुपाकर, दोनों बेहतर हैं. लेकिन फ़र्ज़ सदक़े का ज़ाहिर करके देना अफ़ज़ल है, और नफ़्ल का छुपाकर. और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर करके दे तो यह ज़ाहिर करना भी अफ़ज़ल है. (मदारिक)

(१२) आप ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले और दावत देने वाले बनाकर भेजे गए हैं आपका फ़र्ज़ लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाने पर पूरा होजाता है. इस से ज़्यादा कोशिश और मेहनत आप पर लाज़िम नहीं. इस्लाम से पहले मुसलमानों की यहूदियों से रिश्तेदारियाँ थीं. इस वजह से वो उनके साथ व्यवहार किया करते थे. मुसलमान होने के बाद उन्हें यहूदियों के साथ व्यवहार करना नागवार होने लगा और उन्हों ने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उनके ऐसा करने से यहूदी इस्लाम की तरफ़ आएं. इसपर ये आयत उतरी.

(१३) तो दूसरों पर इसका एहसान न जताओ.

(१४) यानी वो सदक़ात जो आयत *"वमा तुनफ़िक़ू मिन ख़ैरिन"* (और तुम जो अच्छी चीज़ दो) में ज़िक्र हुए, उनका बेहतरीन मसरफ़ वह फ़क़ीर है जिन्हों ने अपने नफ़्सों को जिहाद और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी पर रोका. यह आयत एहले सुफ़्फ़ा के बारे में नाज़िल हुई. उन लोगों की तादाद चार सौ के क़रीब थी. ये लोग हिजरत करके मदीनए तैय्यिबह हाज़िर हुए थे, न यहाँ उनका मकान था, न परिवार, न क़बीला, न उन हज़रात ने शादी की थी. उनका सारा वक़्त इबादत में जाता था, रात में क़ुरआने करीम सीखना,

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا
الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ
فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا
سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا
وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ
لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

منزل ١

बना दिया हो[३] यह इसलिये कि उन्होंने कहा बेअ(विक्रय) भी तो सूद ही के समान है, और अल्लाह ने हलाल किया बेअ को और हराम किया सूद तो जिसे उसके रब के पास से नसीहत आई और वह बाज़ (रूका) रहा तो उसे हलाल है जो पहले ले चुका[४] और उस का काम ख़ुदा के सुपुर्द है[५] और जो अब ऐसी हरकत करेगा तो वह दोज़ख़ी है, वो इस में मुद्दतों रहेंगे[६]﴿२७५﴾ अल्लाह हलाक करता है सूद को[७] और बढ़ाता है ख़ैरात को[८] और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई नाशुक्रा बड़ा गुनहगार﴿२७६﴾ बेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी उनका नेग उनके रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा(डर) हो न कुछ ग़म﴿२७७﴾ ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद, अगर मुसलमान हो[९]﴿२७८﴾ फिर अगर ऐसा न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का[१०] और अगर तुम तौबह करो तो अपना अस्ल माल लेलो न तुम किसी को नुक़सान पहुंचाओ[११] न तुम्हें नुक़सान हो[१२]﴿२७९﴾ और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है

दिन में जिहाद के काम में रहना. आयत में उनकी कुछ विशेषताओं का बयान है.
(१५) क्योंकि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुर्सत नहीं कि वो चल फिर कर रोज़ी रोटी की भाग दौड़ कर सकें.
(१६) यानी चूंकि वो किसी से सवाल नहीं करते इसलिये न जानने वाले लोग उन्हें मालदार ख़याल करते हैं.
(१७) कि मिज़ाज में तवाज़ो और इन्किसार है, चेहरों पर कमज़ोरी के आसार हैं, भूख से रंगत पीली पड़ गई है.

सूरए बक़रह - अड़तीसवाँ रूकू

(१) यानी ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का बहुत शौक़ रखते हैं और हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं. यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में नाज़िल हुई, जबकि आपने ख़ुदा की राह में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में, और दस हज़ार छुपाकर और दस हज़ार ज़ाहिर में. एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत मौला अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो के बारे में नाज़िल हुई, जबकि आपके पास फ़क़त चार दरहम थे और कुछ न था. आपने इन चारों को ख़ैरात कर दिया. एक रात में, एक दिन में, एक छुपा कर, एक ज़ाहिर में. आयत में रात की ख़ैरात को दिन की ख़ैरात पर, और छुपवाँ ख़ैरात को ज़ाहिर ख़ैरात पर प्राथमिकता दी गई है. इसमें इशारा है कि छुपाकर देना ज़ाहिर करके देने से अफ़ज़ल है.

(२) इस आयत में सूद के हराम होने और सूद खाने वालों के बुरे परिणाम का बयान है. सूद को हराम फ़रमाने में बहुत सी हिकमतें हैं. उनमें से कुछ ये हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वह माली मुआवज़े में माल की एक मात्रा का बिना बदल और एवज़ के लेना है. यह खुली हुई नाइन्साफ़ी है. दूसरे, सूद का रिवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद खाने वाले को बे मेहनत माल का हासिल होता तिजारत की मशक़्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़्यादा आसान मालूम होता है और तिजारतों में कमी इन्सानी समाज को हानि पहुंचाती है. तीसरे, सूद के रिवाज से आपसी व्यवहार को नुक़सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आदी हो जाता है तो वह किसी को क़र्ज़े हसन से मदद करना पसन्द नहीं करता. चौथे, सूद से आदमी की तबीयत में जानवरों की सी बेरहमी और कठोरता पैदा हो जाती है और सूद ख़ोर अपने क़र्ज़दार की तबाही और बर्बादी की इच्छा करता रहता है. इसके अलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़सान हैं और शरीअत ने इससे जिस तरह हमें रोका है, वह अल्लाह की ख़ास हिकमत से है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सूद खाने वाले और उसके काम करने वाले और सूद का काग़ज़ लिखने वाले और उसके गवाहों पर लानत की और फ़रमाया, वो सब गुनाह में बराबर हैं.

(३) मानी ये हैं कि जिस तरह आसेब अर्थात भूत प्रेत का शिकार सीधा खड़ा नहीं हो सकता, गिरता पड़ता चलता है, क़यामत के दिन सूद खाने वाले का ऐसा ही हाल होगा कि सूद से उसका पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वह उसके बोझ से

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ
فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۟ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا
تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ
وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ
كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ
مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا
اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ
رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ
مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

منزل ١

तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उसपर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो[१३] ﴾२८०﴿ और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फिरोगे और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा[१४] ﴾२८१﴿

उन्तालीसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो जब तुम एक निश्चित मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो[१] तो उसे लिख लो[२] और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला ठीक ठीक लिखे[३] और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है[४] तो उसे लिख देना चाहिये और जिस पर हक़ आता है वह लिखता जाए और अल्लाह से डरो जो उसका रब है और हक़ में से कुछ रख न छोड़े फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे-अक़्ल या कमज़ोर हो या लिखा न सके[५] तो उस का वली (सरपरस्त) इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह करलो अपने मर्दों में से[६] फिर अगर दो मर्द न हों[७] तो एक मर्द और दो औरतें, ऐसे गवाह जिनको पसन्द करो[८] कि कहीं उनमें एक औरत भूले तो उस एक को

गिर पड़ेगा. सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह निशानी उस सूदख़ोर की है जो सूद को हलाल जाने.

(४) यानी सूद हराम होने से पहले जो लिया, उसपर कोई पकड़ नहीं.

(५) जो चाहे हुक्म फ़रमाए, जो चाहे हराम और मना करे. बन्दे पर उसकी आज्ञा का पालन लाज़िम है.

(६) जो सूद को हलाल जाने वह काफ़िर है. हमेशा जहन्नम में रहेगा, क्योंकि हर एक हरामे क़तई का हलाल जानने वाला क़ाफ़िर है.

(७) और उसको बरकत से मेहरूम करता है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उससे न सदक़ा क़ुबूल करे, न हज, न जिहाद, न और भलाई के काम.

(८) उसको ज़्यादा करता है और उसमें बरकत फ़रमाता है. दुनिया में और आख़िरत में उसका बदला और सवाब बढ़ाता है.

(९) यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो सूद के हराम होने के आदेश उतरने से पहले सूद का लैन दैन करते थे, और उनकी भारी रक़में दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं . इसमें हुक्म दिया गया कि सूद के हराम हो जाने के बाद पिछली सारी माँगें और सारे उधार छोड़ दिये जाएं और पहला मुक़र्रर किया हुआ सूद भी अब लेना जायज़ नहीं.

(१०) किसकी मजाल कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई की कल्पना भी करे. चुनान्चे उन लोगों ने अपने सूदी मुतालिबे और माँगें और उधार छोड़ दिये और यह अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल से लड़ाई की हम में क्या ताक़त. और सब ने तौबह की.

(११) ज़्यादा लेकर.

(१२) मूल धन घटा कर.

(१३) क़र्जदार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उसको मोहलत देना या क़र्ज़ का कुछ भाग या कुल माफ़ करदेना बड़े इनाम का कारण है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिसने तंगदस्त को मोहलत दी या उसका क़र्ज़ा माफ़ किया, अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत का साया अता फ़रमाएगा, जिस रोज़ उसके साए के सिवा कोई साया न होगा.

(१४) यानी न उसकी नेकियाँ घटाई जाएं न बुराईयाँ बढ़ाई जाएं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह सबसे आख़िरी आयत है जो हुज़ूर पर नाज़िल हुई इसके बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इक्कीस रोज़ दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल के अनुसार नौ रातें, और एक में सात. लेकिन शअबी ने हज़रत इब्ने अब्बास से यह रिवायत की, कि सब से आख़िर में आयते "रिबा" नाज़िल हुई.

सूरए बक़रह - उन्तालीसवाँ रूकू

(१) चाहे वह दैन मबीअ हो या समन. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे बैअे सलम मुराद है. बैअे

فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ
اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا
اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪
وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ۬ وَاِنْ تَفْعَلُوْا
فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ
وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ
يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝

दूसरी याद दिला दे और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें[९] और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा है या बड़ा उसकी मीआद तक लिखित कर लो यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ़ की बात है, इस में गवाही ख़ूब ठीक रहेगी और यह उससे क़रीब है कि तुम्हें शुबह न पड़े मगर यह कि कोई सरेदस्त(तात्कालिक) का सौदा हाथों हाथ हो तो उसके न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं[१०] और जब क्रय विक्रय करो तो गवाह कर लो[११] और न किसी लिखने वाले को ज़रर दे न गवाह)[१२] और जो तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारा फ़िस्क़(दुराचार) होगा और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है﴿२८२﴾ और अगर तुम सफ़र में हो[१३] और लिखने वाला न पाओ[१४] तो गिरौ हो क़ब्ज़े में दिया हुआ[१५] और अगर तुम में एक को दूसरे पर इत्मीनान हो तो वह जिसे उसने अमीन(विश्वस्त) समझा था[१६] अपनी अमानत अदा करदे[१७] और अल्लाह से डरो जो उसका रब है और गवाही न छुपाओ[१८] और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उसका दिल गुनाहगार है[१९] और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है﴿२८३﴾

सलम यह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत लेकर बेचा जाए और मबीअ मुश्तरी को सुपुर्द करने के लिये एक मुद्दत तय कर ली जाए. इस बैअ के जवाज़ के लिये जिन्स, नौअ, सिफ़्त, मिक़्दार, मुद्दत और मकाने अदा और मूल धन की मात्रा, इन चीज़ों का मालूम होना शर्त है.

(२) यह लिखना मुस्तहब है, फ़ायदा इसका यह है कि भूल चूक और क़र्ज़दार के इन्कार का डर नहीं रहता.

(३) आपनी तरफ़ से कोई कमी बेशी न करे, न पक्षों में से किसी का पक्षपात या रिआयत.

(४) मतलब यह कि कोई लिखने वाला लिखने से मना न करे जैसे कि अल्लाह तआला ने उसको वसीक़ा लिखने का इल्म दिया. उसके साथ पूरी ईमानदारी बरतते हुए, बिना कुछ रद्दो बदल किये दस्तावेज़ लिखे. यह लिखना एक क़ौल के मुताबिक़ फ़र्ज़े किफ़ाया है और एक क़ौल पर ऐन फ़र्ज़, उस सुरत में जब उसके सिवा और कोई लिखने वाला न पाया जाए. और एक क़ौल के अनुसार मुस्तहब है, क्योंकि इसमें मुसलमान की ज़रुरत पूरी होने और इल्म की नेअमत का शुक्र है. और एक क़ौल यह है कि पहले यह लिखना फ़र्ज़ था, फ़िर *"ला युदार्रो कातिबुन"* से स्थगित हुआ.

(५) यानी अगर क़र्ज़ लेने वाला पागल और मंदबुद्धि वाला हो या बच्चा या बहुत ज़्यादा बूढ़ा हो या गूंगा होने या ज़बान न जानने की वजह से अपने मतलब का बायान न कर सकता हो.

(६) गवाह के लिये आज़ाद होना, बालिग़ होना और मुसलमान होना शर्त है. काफ़िरों की गवाही सिर्फ़ काफ़िरों पर मानी जाएगी.

(७) अकेली औरतों की गवाही जायज़ नहीं, चाहे वो चार क्यों न हों, मगर जिन कामों पर मर्द सूचित नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, ऐसी जवान लड़की या औरत होना जिसका कौंवार्य भगं न हुआ हो और औरतों के ऐब, इसमें एक औरत की गवाही भी मानी जाती है. बड़े जुर्मो की सज़ा या क़त्ल वग़ैरह के क़िसास में औरतों की गवाही बिल्कुल नहीं मानी जाएगी. सिर्फ़ मर्दो की गवाही मानी जाएगी. इसके अलावा और मामलों में एक मर्द और दो औरतों की गवाही भी मानी जाएगी. (तफ़सीरे अहमदी).

(८) जिनका सच्चा होना तुम्हें मालूम हो और जिनके नेक और शरीफ़ होने पर तुम विश्वास रखते हो.

(९) इस आयत से मालूम हुआ कि गवाही देना फ़र्ज़ है. जब मुद्दई गवाहों को तलब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जायज़ नहीं. यह हुक्म बड़े गुनाहों की सज़ा के अलावा और बातों में है. लेकिन हुदूद में गवाह को ज़ाहिर करने या छुपाने का इख़्तियार है, बल्कि छुपाना अच्छा है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान की पर्दा पोशी करे, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसके ऐबों और बुराइयों पर पर्दा डालेगा. लेकिन चोरी में माल लेने की गवाही देना वाजिब है, ताकि जिसका माल चोरी गया है उसका हक़ नष्ट न हो. गवाह इतनी ऐहतियात कर सकता है कि चोरी का शब्द न कहे. गवाही में केवल इतना ही कह दे कि यह माल अमुक व्यक्ति ने लिया.

(१०) चूंकि इस सूरत में लेन देन होकर मामला ख़त्म हो गया और कोई डर बाक़ी न रहा, साथ ही ऐसी तिजारत और क्रय विक्रय

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا

चालीसवाँ रूकू

अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ[१] तुम्हारे जी में है या छुपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा[२] तो जिसे चाहे बख़्शेगा[३] और जिसे चाहे सज़ा देगा[४] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सर्व-सक्षम) है (२८४) रसूल ईमान लाया उसपर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना[५] अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को[६] यह कहते हुए कि हम उसके किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते[७] और अर्ज़ की कि हमने सुना और माना[८] तेरी माफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है (२८५) अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उसकी ताक़त भर, उसका फ़ायदा है जो अच्छा कमाया और उसका नुक़सान है जो बुराई कमाई.[९] ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें[१०] या चूकें, ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था, ऐ रब हमारे और हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें सहार न हो और हमें माफ़ फ़रमादे और बख़्श दे और हम पर मेहर कर, तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे (२८६)

अधिकतर जारी रहती है. इसमें किताब यानी लिखने और गवाही की पाबन्दी भी पड़ेगी.

(११) यह मुस्तहब है, क्योंकि इसमें एहतियात है.

(१२) *"युदार्रो"* में हज़रत इब्ने अब्बास के मुताबिक़ मानी ये हैं कि दोनों पक्ष कातिबों और गवाहों को हानि नहीं पहुंचाएं, इस तरह कि वो अगर अपनी ज़रूरतों में मशग़ूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उनके काम छुड़ाएं या लिखाई का वेतन न दें या गवाह को सफ़र ख़र्च न दें, अगर वह दूसरे शहर से आया है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल "युदार्रो" में यह है कि लिखने वाले और गवाह क़र्ज़ लेने वाले और क़र्ज़ देने वाले, दोनों पक्षों को हानि न पहुंचाएं. इस तरह कि फ़ुरसत और फ़राग़त होने के बावुजूद बुलाने पर न आएं, या लिखने में अपनी तरफ़ से कुछ घटा बढ़ा दें.

(१३) और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए.

(१४) और वसीक़ा व दस्तावेज़ की लिखाई का अवसर न मिले तो इत्मीनान के लिये.

(१५) यानी कोई चीज़ क़र्ज़ देने वाले के क़ब्ज़े में गिरवी के तौर पर दे दो. यह मुस्तहब है और सफ़र की हालत में रहन या गिरवी इस आयत से साबित हुआ. और सफ़र के अलावा की हालत में हदीस से साबित है. चुनांचे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीनए तैय्यिबह में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रखकर बीस साअ जौ लिये. इस आयत से रहन या गिरवी रखने की वैधता और क़ब्ज़े का शर्त होना साबित होता है.

(१६) यानी क़र्ज़दार, जिसको क़र्ज़ देने वाले ने अमानत वाला समझा.

(१७) इस अमानत से दैन मुराद है.

(१८) क्योंकि इसमें हक़ रखने वाले के हक़ का नुक़सान है. यह सम्बोधन गवाहों को है कि वो जब गवाही के लिये तलब किये जाएं तो सच्चाई न छुपाएं और एक क़ौल यह भी है कि यह सम्बोधन क़र्ज़दारों को है कि वो अपने अन्तःकरण पर गवाही देने में हिचकिचाएं नहीं.

(१९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अनहुमा से एक हदीस है कि बड़े गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक करना और झूठी गवाही देना और गवाही को छुपाना है.

सूरए बक़रह - चालीसवाँ रूकू

(१) बुराई.

(२) इन्सान के दिल में दो तरह के ख़याल आते हैं, एक वसवसे के तौर पर. उनसे दिल का ख़ाली करना इन्सान की ताक़त में

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾ ع

(۳) سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ (۸۹) — اٰيَاتُهَا ۲۰۰ — رُكُوْعَاتُهَا ۲۰

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿۲﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿۳﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿۵﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

तीसरा पारा (जारी)

सुरए आले इमरान

मदीने में उतरी[१] आयतें २००, रूकू २०

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

पहला रूकू

अलिफ़ लाम मीम(१) अल्लाह है जिसके सिवा किसी की पूजा नहीं[२] आप ज़िन्दा, औरों का क़ायम रखने वाला(२) उसने तुम पर यह सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती और उसने इस से पहले तौरात और इन्जील उतारी(३) लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वो जो अल्लाह की आयतों के इन्कारी हुए[३] उनके लिये सख़्त अज़ाब है. और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है(४) अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आसमान में(५) वही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है माओं के पेट में जैसी चाहे[४] उसके सिवा किसी की इबादत नहीं, इज़्ज़त वाला हिकमत वाला[५](६) वही है जिसने तुमपर यह किताब उतारी इसकी कुछ आयतें साफ़ मानी रखती हैं[६] वो किताब की अस्ल हैं[७] और दूसरी वो हैं जिनके मानी में इश्तिबाह(शक) है[८] वो जिनके दिलों में कजी है[९]

नहीं. लेकिन वह उनको बुरा जानता है और अमल में लाने का इरादा नहीं करता. उनको हदीसे नफ़्स और वसवसा कहते हैं. इसपर कोई पकड़ नहीं. बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वसवसे गुज़रते हैं, अल्लाह तआला उस वक़्त तक उनपर पकड़ नहीं करता जब तक वो अमल में न लाए जाएं या उनके साथ कलाम न करें. ये वसवसे इस आयत में दाख़िल नहीं. दूसरे वो ख़यालात जिनको मनुष्य अपने दिल में जगह देता है और उनको अमल में लाने का इरादा करता है. कुफ़्र का इरादा करना कुफ़्र है और गुनाह का इरादा करके अगर आदमी उसपर साबित रहे और उसका इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अमल में लाने के साधन उसको उपलब्ध न हों और वह मजबूरन उसको न कर सके तो उससे हिसाब लिया जाएगा. शेख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अइम्मा हलवाई इसी तरफ़ गए हैं. और उनकी दलील आयत *"इन्नल लज़ीना युहिब्बूना अन तशीउल फ़ाहिशतो"* और हज़रत आयशा की हदीस, जिसका मज़मून यह है कि बन्दा जिस गुनाह का इरादा करता है, अगर वह अमल में न आए, जब भी उसपर पकड़ की जाती है. अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया फिर उसपर शर्मिन्दा हुआ और तौबह की तो अल्लाह उसे माफ़ फ़रमाएगा.

(३) अपने फ़ज़्ल से ईमान वालों को.

(४) अपने इन्साफ़ से.

(५) ज़ुजाज ने कहा कि जब अल्लाह तआला ने इस सूरत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, हज की फ़र्ज़ियत और तलाक़, ईला, हैज़ और जिहाद के अहकाम और नबियों के क़िस्से बयान फ़रमाए, तो सूरत के आख़िर में यह ज़िक्र फ़रमाया कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ईमान वालों ने इस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और उसके सारे क़ानून और अहकाम अल्लाह की तरफ़ से उतरने की तस्दीक़ की.

(६) ये उसूल और ईमान की ज़रूरतों के चार दर्जे हैं (१) अल्लाह पर ईमान लाना, यह इस तरह कि अक़ीदा रखे, और तस्दीक़ करे कि अल्लाह एक और केवल एक है, उसका कोई शरीक और बराबर नहीं. उसके सारे नामों और सिफ़ात पर ईमान लाए और यक़ीन करे और माने कि वह जानने वाला और हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है और उसके इल्म और क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं है. (२) फ़रिश्तों पर ईमान लाना. यह इस तरह है कि यक़ीन करे और माने कि वो मौजूद हैं, मासूम हैं, पाक हैं, अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अहकाम और पैग़ाम लाने वाले हैं. (३) अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना, इस तरह कि जो किताबें अल्लाह तआला ने उतारीं और अपने रसूलों पर **वही** के ज़रिये भेजीं, बेशक बेशुबह सब सच्ची और अल्लाह की तरफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तबदील, काट छाँट, रद्दो बदल से मेहफ़ूज़ है, और अल्लाह के आदेशों और उसके रहस्यों पर आधारित है. (४) रसूलों पर ईमान लाना, इस तरह कि ईमान लाए कि वो अल्लाह के भेजे हुए हैं जिन्हें उसने अपने बन्दों की तरफ़ भेजा. उसकी *वही* के अमीन हैं, गुनाहों से पाक, मासूम हैं, सारी सृष्टि से अफ़ज़ल हैं. उनमें कुछ नबी कुछ नबियों से अफ़ज़ल हैं.

(७) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने किया कि कुछ पर ईमान लाए और कुछ का इन्कार किया.
(८) तेरे हुक्म और इरशाद को.
(९) यानी हर जान को नेक कर्म का इनाम और सवाब मिलेगा और बुरे कर्मों का अज़ाब होगा. इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने मूमिन बन्दों को दुआ मांगने का तरीक़ा बताया कि वो इस तरह अपने परवर्दिगार से अर्ज़ करें.
(१०) और ग़लती या भूल चूक से तेरे किसी आदेश के पालन से मेहरूम रहें.

सूरए आले इमरान - पहला रूकू

(१) सूरए आले इमरान मदीनए तैय्यिबह में उतरी. इसमें बीस रुकू, दो सौ आयतें, तीन हज़ार चार सौ अस्सी शब्द और चौदह हज़ार पाँच सौ बीस अक्षर हैं.
(२) मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत नजरान के प्रतिनिधि मण्डल के बारे में उतरी जो साठ सवारों पर आधारित था. उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बुज़ुर्ग और नेता. एक आक़िब जिसका नाम अब्दुल मसीह था. यह व्यक्ति क़ौम का अमीर अर्थात मुखिया था और उसकी राय के बिना ईसाई कोई काम नहीं करते थे. दूसरा सैयद जिसका नाम एहम था. यह व्यक्ति अपनी क़ौम का मुख्य सचिव और वित्त विभाग का बड़ा अफ़सर था. खाने पीने और रसद के सारे प्रबन्ध उसी के हुक्म से होते थे. तीसरा अबू हारिस बिन अलक़मा था. यह शख़्स ईसाइयों के तमाम विद्वानों और पादरियों का सबसे बड़ा पेशवा था. रूम के बादशाह उसके इल्म और उसकी धार्मिक महानता के लिहाज़ से उसका आदर सत्कार करते थे. ये तमाम लोग ऊमदा क़ीमती पोशाकें पहनकर बड़ी शान से हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुनाज़िरा यानी धार्मिक बहस करने के इरादे से आए और मस्जिदे अक़दस में दाख़िल हुए. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उस वक़्त अस्र की नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे. उन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आगया और उन्होंने भी मस्जिद शरीफ़ ही में पूर्व दिशा की ओर मुंह करके नमाज़ शुरू कर दी. पूरी करने के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बातचीत शुरू की. हुज़ूर ने फ़रमाया तुम इस्लाम लाओ. कहने लगे हम आपसे पहले इस्लाम ला चुके. फ़रमाया यह ग़लत है, यह दावा झूटा है, तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा यह दावा रोकता है कि अल्लाह के औलाद है. और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है, और तुम्हारा सुअर खाना रोकता है. उन्होंने कहा अगर ईसा ख़ुदा के बेटे न हों तो बताइये उनका बाप कौन है. और सब के सब बोलने लगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह होता है. उन्होंने इक़रार किया. फिर फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब ज़िन्दा है, उसे मौत नहीं, उसके लिये मौत मुहाल है, और ईसा अलैहिस्सलाम पर मौत आने वाली है. उन्होंने इसका भी इक़रार किया. फिर फ़रमायाँ, क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों के काम बनाने वाला और उनकी हक़ीक़ी हिफ़ाज़त करने वाला है और रोज़ी देने वाला है. उन्होंने कहा, हाँ. हुज़ूर ने फ़रमाया क्या हज़रत ईसा भी ऐसे ही हैं. वो बोले नहीं. फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआला पर आसमान और ज़मीन की कोई चीज़ छुपी हुई नहीं. उन्होंने इक़रार किया. हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अल्लाह की तालीम के बिना उसमें से कुछ जानते हैं. उन्होंने कहा, नहीं . हुज़ूर ने फ़रमाया, क्या तुम नहीं जानते कि हज़रत ईसा गर्भ में रहे, पैदा होने वालों की तरह पैदा हुए, बच्चों की तरह खिलाए पिलाए गए, आदमियों वाली ज़रूरतें रखते थे. उन्होंने इसका इक़रार किया. हुज़ूर ने फ़रमाया, फिर वह कैसे इलाह यानी मअबूद हो सकते हैं जैसा कि तुम्हारा गुमान है. इसपर वो सब ख़ामोश रह गए और उनसे कोई जवाब न बन पड़ा. इस पर सूरए आले इमरान की पहली से कुछ ऊपर अस्सी आयतें उतरीं. अल्लाह की विशेषताओं में *हैय्य* का मतलब है दायम बाक़ी यानी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिसकी मौत मुमकिन ही न हो. ***क़ैय्यूम*** वह है जो अपनी ज़ात से क़ायम हो और दुनिया वाले अपनी दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी में जो हाजतें रखते हैं, उसका प्रबन्ध फ़रमाए.
(३) इसमें नजरान के प्रतिनिधि मण्डल के ईसाई भी शामिल हैं.
(४) मर्द, औरत, गोरा, काला, ख़ूबसूरत, बदसूरत, वग़ैरह. बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी पैदाइश का माद्दा माँ के पेट में चालीस रोज़ जमा होता है, फिर इतने ही दिन गोश्त के टुकड़े की सूरत में रहता है, फिर अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, उसके कर्म, उसका अन्त, यानी उसका सौभागय और दुर्भाग्य लिखता है. फिर उसमें रूह डालता है, तो उसकी क़सम, जिसके सिवा कोई पूजे जाने के क़ाबिल नहीं है, आदमी जन्नतियों के से कर्म करता रहता है, यहाँ तक कि उसमें और जन्नत में हाथ भर का यानी बहुत कम फ़र्क़ रह जाता है. तो किताब सबक़त करती है, और वह दोज़ख़ियों के से अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसमें और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सबक़त करती है और उसकी ज़िन्दगी का नक़्शा बदलता है और वह जन्नतियों के से अमल करने लगता है. उसी पर उसका ख़ात्मा होता है और वह जन्नत में दाख़िल होता है.
(५) इसमें भी ईसाइयों का रद है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते और उनकी पूजा करते थे.
(६) जिसमें कोई संदेह या शक नहीं.
(७) कि अहकाम में उनकी तरफ़ रुजू किया जाता है और हलाल व हराम में उन्हीं पर अमल.
(८) वो कुछ कारणों का ऐहतिमाल रखती हैं. उनमें से कौन सी वजह, कौन सा कारण मुराद है अल्लाह ही जानता है या जिसको अल्लाह तआला उसकी जानकारी दे.

वो इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते हैं[१०] गुमराही चाहने[११] और उसका पहलू ढूंढने को[१२] और उसका ठीक पहलू अल्लाह ही को मालूम है[१३] और पुख़्ता इल्म वाले[१४] कहते हैं हम उसपर ईमान लाए[१५] सब हमारे रब के पास से है[१६] और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले[१७]﴿७﴾ ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बाद इसके कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर. बेशक तू है बड़ा देने वाला﴿८﴾ ऐ रब हमारे बेशक तू सब लोगों को जमा करने वाला है[१८] उस दिन के लिये जिसमें कोई शुबह नहीं[१९] बेशक अल्लाह का वादा नहीं बदलता[२०]﴿९﴾

दूसरा रूकू

बेशक वो जो काफ़िर हुए[१] उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह से उन्हें कुछ न बचा सकेंगे और वही दोज़ख़ के ईंधन हैं﴿१०﴾ जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीक़ा, उन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं तो अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ा और अल्लाह का अज़ाब सख़्त﴿११﴾ फ़रमादो काफ़िरों से, कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब (पराजित)

(९) यानी गुमराह और अधर्मी लोग, जो अपने नफ़्स के बहकावे के पाबन्द हैं.
(१०) और उसके ज़ाहिर पर हुक्म करते हैं या झूटी व्याख्या करते हैं और यह नेक नियत से नहीं बल्कि ...
(११) और शक शुबह में डालने.
(१२) अपनी इच्छा के अनुसार, इसके बावुजूद कि वो व्याख्या के योग्य नहीं. (जुमल और ख़ाज़िन)
(१३) हक़ीक़त में .(जुमल). और अपने करम और अता से जिसको वह नवाज़े.
(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है, आप फ़रमाते थे कि मैं पक्का इल्म जानने वालों में से हूँ. और मुजाहिद से रिवायत है कि मैं उनमें से हूँ जो रहस्य वाली आयतों की तावील या व्याख्या जानते हैं. हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि पक्का इल्म जानने वाले वो हैं जिनमें चार विशेषताएं हों, अल्लाह से डर, लोगों से अच्छा व्यवहार, दुनिया के जीवन में पाकीज़गी, और नफ़्स के साथ निरन्तर लड़ाई. (ख़ाज़िन)
(१५) कि वह अल्लाह की तरफ़ से है और जो मानी उसकी मुराद हैं, सच्ची हैं और उसका नाज़िल फ़रमाना हिकमत है.
(१६) अहकाम हों या रहस्य.
(१७) और पक्के इल्म वाले कहते हैं.
(१८) हिसाब या बदले के वास्ते.
(१९) वह क़यामत का दिन है.
(२०) तो जिसके दिल में कजी या टेढ़ापन हो वह हलाक होगा, और जो तेरे एहसान से हिदायत पाए वह नसीब वाला होगा, निजात पाएगा. इस आयत से मालूम हुआ कि झूट उलूहियत यानी अल्लाह होने के विरूद्ध है. लिहाज़ा अल्लाह की तरफ़ झूट का ख़याल और निस्बत सख़्त बेअदबी है. (मदारिक व अबू मसऊद वग़ैरह)

सूरए आले इमरान - दूसरा रूकू

(१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विरोध करके.
(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब बद्र में काफ़िरों को रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम परास्त कर चुके और मदीनए तैय्यिबह वापस तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर ने यहूदियों को जमा किया और फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इस्लाम लाओ, इससे पहले कि तुम पर ऐसी मुसीबत आए जैसी बद्र में क़ुरैश पर आई. तुम जान चुके हो मैं अल्लाह का

होगे और दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाओगे[२] और वह बहुत ही बुरा बिछौना﴾१२﴿ बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी[३] दो दलों में जो आपस में भिड़ पड़े[४] एक जत्था अल्लाह की राह में लड़ता[५] और दूसरा काफ़िर[६] कि उन्हें आँखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है[७] बेशक इसमें अक़्लमन्दों के लिये ज़रूर देखकर सीखना है﴾१३﴿ लोगों के लिये सजाई गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत[८] औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती, यह जीती दुनिया की पूंजी है[९] और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना[१०]﴾१४﴿ तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इससे[११] बेहतर चीज़ बतादूं परहेज़गारों के लिये, उनके रब के पास जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी, हमेशा उनमें रहेंगे और सुथरी बीबियां[१२] और अल्लाह की ख़ुशनूदी (रज़ामन्दी)[१३] और अल्लाह बन्दों को देखता है[१४]﴾१५﴿ वो जो कहते हैं, ऐ रब हमारे हम ईमान लाए

جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ
فِىْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ
وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ
الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ
مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ
الْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ
بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا

भेजा हुआ रसूल हूं. तुम अपनी किताब में यह लिखा हुआ पाते हो. इसपर उन्होंने कहा कि क़ुरैश तो जंग की कला से अनजान हैं, अगर हम से मुक़ाबला हुआ तो आपको मालूम हो जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें ख़बर दी गई कि वो परास्त होंगे और क़त्ल किये जाएंगे, गिरफ़्तार किये जाएंगे, उनपर जिज़िया मुक़र्रर होगा. चुनांचे ऐसा ही हुआ कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक रोज़ में छः सौ की तादाद को क़त्ल फ़रमाया और बहुतों को गिरफ़्तार किया और ख़ैबर वालों पर जिज़िया मुक़र्रर फ़रमाया.

(३) इसके मुख़ातब यहूदी हैं, पर कुछ का कहना है कि सारे काफ़िर और कुछ के अनुसार ईमान वाले. (जुमल).

(४) बद्र की लड़ाई में.

(५) यानी नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा, उनकी कुल संख्या तीन सौ तेरह थी. सत्तर मुहाजिर और २३६ अनसारी, मुहाजिरीन के सलाहकार हज़रत अली मुरतज़ा थे और अनसार के हज़रत सअद बिन उबादा रदियल्लाहो अन्हुम. इस पूरे लश्कर में कुल दो घोड़े, सत्तर ऊंट और छ ज़िरहें, आठ तलवारें थीं. और इस घटना में चौदह सहाबा शहीद हुए, छ मुहाजिर और आठ अनसार.

(६) काफ़िरों की संख्या नौसौ पचास थी। उनका सरदार उतबा बिन रबीआ था. और उनके पास सौ घोड़े थे, और सात सौ ऊंट और बहुत सी ज़िरहें और हथियार थे. (जुमल)

(७) चाहे उसकी संख्या कम हो और सामान की कितनी ही कमी हो.

(८) ताकि वासना के पुजारियों और अल्लाह की इबादत करने वालों के बीच फ़र्क़ और पहचान ज़ाहिर हो, जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया *"इन्ना जअलना मा अलल अर्दे ज़ीनतल लहा लिनबलूहुम अय्युहुम अहसना अमला"* (यानी बेशक हमने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है कि उन्हें आजमाएं उनमें किस के काम बेहतर हैं) (सूरए अल-कहफ़, आयत सात)

(९) इससे कुछ अर्सा नफ़ा पहुंचता है, फिर नष्ट हो जाती है. इन्सान को चाहिये कि दुनिया के माल को ऐसे काम में ख़र्च करे जिसमें उसकी आख़िरत की दुरुस्ती और सआदत हो.

(१०) जन्नत, तो चाहिये कि इसकी रग़बत की जाय और नाशवान दुनिया की नश्वर चीज़ों से दिल न लगाया जाए.

(११) दुनिया की पूंजी से.

(१२) जो ज़नाना बीमारियों और हर नापसन्द और नफ़रत के क़ाबिल चीज़ से पाक.

(१३) और यह सबसे उत्तम नेअमत है.

(१४) और उनके कर्म और अहवाल जानता और उनका अज्र या बदला देता है.

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ وَ
الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾ فَاِنْ
حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ
وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाले, सब्र वाले[१५] ﴿१६﴾ और सच्चे[१६] और अदब वाले और ख़ुदा की राह में ख़र्चने वाले और पिछले पहर से माफ़ी मांगने वाले[१७] ﴿१७﴾ अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई मअबूद नहीं[१८] और फ़रिश्तों ने और आलिमों ने[१९] इन्साफ़ से क़ायम होकर, उसके सिवा किसी की इबादत नहीं, इज़्ज़त वाला हिकमत वाला ﴿१८﴾ बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है[२०] और फूट में न पड़े किताब[२१] मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आचुका[२२] अपने दिलों की जलन से[२३] और जो अल्लाह की आयतों का इन्कारी हो तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है ﴿१९﴾ फिर ऐ मेहबूब, अगर वो तुम से हुज्जत (तर्क वितर्क) करें तो फ़रमादो मैं अपना मुंह अल्लाह के हुज़ूर झुकाए हूँ और जो मेरे अनुयायी हुए[२४] और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ[२५] क्या तुमने गर्दन रखी[२६] तो अगर वो गर्दन रखें जब तो राह पागए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो यही हुक्म पहुंचा देना है[२७] और अल्लाह बन्दों को देख रहा है ﴿२०﴾

तीसरा रूकू

वो जो अल्लाह की आयतों से इन्कारी होते और पैग़म्बरों

(१५) जो ताअत और मुसीबत पर सब्र करें और गुनाहों से रूके रहें.

(१६) जिनके क़ौल और इरादे और नियतें सब सच्ची हों.

(१७) इसमें रात के आख़िर में नमाज़ पढ़ने वाले भी. यह वक़्त तन्हाई और दुआ क़ुबूल होने का है. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से फ़रमाया, मुर्ग़े से कम न रहना कि वह तो सुबह से पुकार लगाए और तुम सोते रहो.

(१८) शाम के लोगों में से दो व्यक्ति हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए. जब उन्होंने मदीनए तैय्यिबह को देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि आख़िरी ज़माने के नबी के शहर की यह विशेषता है जो इस शहर में पाई जाती है. जब हुज़ूर के आस्ताने पर हाज़िर हुए तो उन्होंने हुज़ूर की शक्ले पाक और हुलिये को तौरात के मुताबिक़ देखकर पहचान लिया और अर्ज़ किया, आप मुहम्मद हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया, हाँ. फिर अर्ज़ किया कि आप अहमद हैं (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) फ़रमाया, हाँ. अर्ज़ किया, हम एक सवाल करते हैं, अगर आपने ठीक ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएंगे. फ़रमाया, पूछो. उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह की किताब में सब से बड़ी शहादत कौन सी है ? इस पर आयते करीमा उतरी और इसको सुनकर वह दोनों व्यक्ति मुसलमान हो गए. हज़रत सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि काबए मुअज़्ज़मा में तीन सौ साठ बुत थे. जब मदीनए तैय्यिबह में यह आयत उतरी तो काबे के अन्दर वो सब सिजदे में गिर गए.

(१९) यानी नबियों और वलियों ने.

(२०) उसके सिवा कोई और दीन अल्लाह का पसन्दीदा नहीं . यहूदी और ईसाई वग़ैरह काफ़िर जो अपने दीन को अफ़ज़ल और मक़बूल कहते हैं, इस आयत में उनके दावे को बातिल कर दिया.

(२१) यह आयत यहूदियों और ईसाईयों के बारे में उतरी. जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ा और सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत में विरोध किया.

(२२) वो अपनी किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात और सिफ़त देख चुके और उन्होंने पहचान लिया कि यही वह नबी हैं जिनकी आसमानी किताबों में ख़बरें दी गई है.

(२३) यानी उनके विरोध का कारण उनका हसद और दुनियावी नफ़े का लालच है.

(२४) यानी मैं और मेरे मानने वाले पूरी तरह अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार और मुतीअ हैं, हमारा दीन तौहीद का दीन है जिसकी सच्चाई भी साबित हो चुकी है वह भी ख़ुद तुम्हारी अपनी किताबों से, तो इसमें तुम्हारा हमसे झगड़ना बिल्कुल ग़लत है.

(२५) जितने क़ाफ़िर ग़ैर किताबी हैं वो *"उम्मीयीन"* (अनपढ़ों) में दाख़िल हैं, उन्हीं में से अरब के मुश्रिक भी हैं.

(२६) और दीने इस्लाम के सामने सर झुकाया या खुले प्रमाण क़ायम होने के बावुजूद तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो. यह दावते

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ
مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۬ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۟ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ
مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ
مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ

को नाहक़ शहीद करते[१] और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें ख़ुशख़बरी दो दर्दनाक अज़ाब की﴾२१﴿ ये हैं वो जिनके कर्म अकारत गए दुनिया और आख़िरत में[२] और उनका कोई मददगार नहीं[३]﴾२२﴿ क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला[४] अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि वह उनका फ़ैसला करे फिर इनमें का एक दल उससे मुंह फेर कर फिर जाता है[५]﴾२३﴿ यह साहस[६] उन्हें इसलिये हुआ कि वो कहते हैं कभी हमें आग न छुएगी मगर गिनती के दिनों .[७] और उनके दीन में उन्हें धोखा दिया उस झूठ ने जो बांधते थे[८]﴾२४﴿ तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकट्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिसमें शक नहीं[९] और हर जान को उसकी कमाई पूरी भर दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा﴾२५﴿ यूं अर्ज़ कर ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे, सारी

इस्लाम का एक अन्दाज़ है, और इस तरह उन्हें सच्चे दीन की तरफ़ बुलाया जाता है.

(२७) वह तुमने पुरा कर ही दिया. इस से उन्होंने नफ़ा न उठाया तो नुक़सान में वो रहे. इसमें हुज़ुर सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्कीन फ़रमाई गई है कि आप उनके ईमान न लाने से दुखी न हों.

सूरए आले इमरान - तीसरा रूकू

(१) जैसा कि बनी इस्राईल ने सुबह को एक साअत के अन्दर तैंतालीस नबियां को क़त्ल किया फिर जब उनमें से एक सौ बारह आबिदों यानी नेक परहेज़गार लोगों ने उठकर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और गुनाहों से रोका, उसी शाम उन्हें भी क़त्ल कर दिया. इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने के यहूदियां को फटकार है, क्योंकि वो अपने पूर्वजों के ऐसे बदतरीन कर्म से राज़ी हैं.

(२) इस आयत से मालूम हुआ कि नबियां की शान में बेअदबी कुफ़्र है. और यह भी कि कुफ़्र से तमाम कर्म अकारत हो जाते हैं.

(३) कि उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाए.

(४) यानी यहूदी, कि उन्हें तौरात शरीफ़ के उलूम और अहकाम सिखाए गए थे, जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विशेषताएं और अहवाल और इस्लाम की सच्चाई का बयान है. इससे लाज़िम आता था कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें क़ुरआने करीम की तरफ़ बुलाएं तो वो हुज़ूर पर और क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और उसके आदेशों का पालन करें, लेकिन उनमें से बहुतों ने ऐसा नहीं किया . इस पहलू से *मिनल किताब* से तौरात और किताबुल्लाह से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है.

(५) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से एक रिवायत आई है कि एक बार सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बैतुल मक़दिस में तशरीफ़ ले गए और वहाँ यहूदियों को इस्लाम की तरफ़ बुलाया. नुएम इब्ने अम्र और हारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आप किस दीन पर हैं ? फ़रमाया, मिल्लते इब्राहीमी पर. वो कहने लगे, हज़रत इब्राहीम तो यहूदी थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तौरात लाओ, अभी हमारे तुम्हारे बीच फ़ैसला हो जाएगा. इसपर न जमे और इन्कारी हो गए. इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई. इस पहलू से आयत में किताबुल्लाह से तौरात मुराद है. इन्हीं हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से एक रिवायत यह भी है कि ख़ैबर के यहूदियों में से एक मर्द ने एक औरत के साथ बलात्कार किया था और तौरात में ऐसे गुनाह की सज़ा पत्थर मार मार कर हलाक करदेना है. लेकिन चूंकि ये लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे, इसलिये उन्होंने उनका संगसार करना गवारा न किया और इस मामले को इस

عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ٘ وَتُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ٘ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾ لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ٘ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً٘ وَیُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ٘ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸﴾ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ اللّٰهُ٘ وَیَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ٘ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا٘ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ٘ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَبَیْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیْدًا٘ وَیُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ٘ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾

منزل

भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है[१०]《२६》 तू दिन का हिस्सा रात में डाले और रात का हिस्सा दिन में डाले[११] और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले[१२] और जिसे चाहे बेगिनती दे《२७》 मुसलमान काफ़िरों को अपना दोस्त न बनालें मुसलमानों के सिवा[१३] और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा नहीं, मगर यह कि तुम उनसे कुछ डरो.[१४] और अल्लाह तुम्हें अपने क्रोध से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है《२८》 तुम फ़रमादो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह को सब मालूम है और जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है《२९》 जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी[१५] और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझमें और इसमें दूर का फ़ासला होता[१६] और अल्लाह तुम्हें अपने अज़ाब से डराता है और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है《३०》

उम्मीद पर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास लाए कि शायद आप पत्थरों से हलाक करने का हुक्म न दें. मगर हुज़ूर ने उन दोनों को संगसार करने का हुक्म दिया. इस पर यहूदी गुस्से में आगए और कहने लगे कि इस गुनाह की यह सज़ा नहीं. आपने ज़ुल्म किया. हुज़ूर ने फ़रमाया, फ़ैसला तौरात पर रखो. कहने लगे यह इन्साफ़ की बात है. तौरात मंगाई गई और अब्दुल्लाह बिन सूरिया बड़े यहूदी आलिम ने उसको पढ़ा. उसमें संगसार करने का जो हुक्म था, उस को छोड़ गया. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने उसका हाथ हटाकर आयत पढ़ दी. यहूदी बहुत ज़लील हुए और वो यहूदी मर्द औरत हुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए. इसपर यह आयत उतरी.

(६) अल्लाह की किताब से मुंह फेरने की.

(७) यानी चालीस दिन या एक हफ़्ता, फिर कुछ ग़म नहीं.

(८) और उनका यह क़ौल था कि हम अल्लाह के बेटे हैं और उसके प्यारे हैं, वह हमें गुनाहों पर अज़ाब न करेगा, मगर बहुत थोड़ी मुद्दत के लिये.

(९) और वह क़यामत का दिन है.

(१०) फ़त्हे मक्का के वक़्त सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी उम्मत को मुल्के फ़ारस और रोम की सल्तनत का वादा दिया तो यहूदी और मुनाफ़िक़ों ने उसको असम्भव समझा और कहने लगे, कहाँ मुहम्मद और कहाँ फ़ारस और रोम के मुल्क. वो बड़े ज़बरदस्त और निहायत मज़बूत हैं. इसपर यह आयते करीमा उतरी. और आख़िरेकार हुज़ूर का वह वादा पूरा होकर रहा.

(११) यानी कभी रात को बढ़ाए और दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ाकर रात को घटाए. यह उसकी क़ुदरत है, तो फ़ारस और रोम से मुल्क लेकर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ुलामों को अता करना उसकी ताक़त से क्या दूर है.

(१२) मुर्दे से ज़िन्दा का निकालना इस तरह है जैसे कि ज़िन्दा इन्सान को बेजान नुत्फ़े से और चिड़िया के ज़िन्दा बच्चे को बेरूह अण्डे से, और ज़िन्दा दिल मूमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से, और ज़िन्दा इन्सान से बेजान नुत्फ़े और ज़िन्दा चिड़िया से बेजान अण्डे और ज़िन्दा दिल मूमिन से मुर्दा दिल काफ़िर.

(१३) हज़रत उबादा बिन सामित ने अहज़ाब की जंग के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरे साथ पाँच सौ यहूदी हैं जो मेरे हिमायती हैं. मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबले उनसे मदद हासिल करूं. इसपर यह आयत उतरी और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने से मना फ़रमाया गया.

(१४) काफ़िरों से दोस्ती और महब्बत मना और हराम है, उन्हें राज़दार बनाना, उनसे व्यवहार करना नाजायज़ है. अगर जान या माल का डर हो तो ऐसे वक़्त में सिर्फ़ ज़ाहिरी बर्ताव जायज़ है.

(१५) यानी क़यामत के दिन हर नफ़्स को कर्मों की जज़ा यानी बदला मिलेगा और उसमें कुछ कमी व कोताही न होगी.

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ذُرِّيَّةً ۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا

चौथा रूकू

ऐ मेहबूब, तुम फ़रमादो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमाँबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा[१] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾३१﴿ तुम फ़रमादो कि हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का[२] फिर अगर वो मुंह फेरें तो अल्लाह को ख़ुश नहीं आते काफ़िर﴾३२﴿ बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की सन्तान और इमरान की सन्तान को सारे जहान से[३]﴾३३﴿ यह एक नस्ल है एक दूसरे से[४] और अल्लाह सुनता जानता है﴾३४﴿ जब इमरान की बीबी ने अर्ज़ की[५] ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूँ जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे[६] तो तू मुझ से क़ुबूल करले बेशक तू ही सुनता जानता﴾३५﴿ फिर जब उसे जना बोली ऐ रब मेरे यह तो मैं ने लड़की जनी[७] और अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वह जनी और वह लड़का जो उसने मांगा इस लड़की सा नहीं[८] और मैं ने उसका नाम मरयम रखा[९] और मैं उसे और उसकी औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ रांदे हुए शैतान से﴾३६﴿ तो उसे उसके रब ने अच्छी तरह क़ुबूल किया[१०] और उसे अच्छा परवान चढ़ाया[११] और

(१६) यानी मैने यह बुरा काम न किया होता.

सूरए आले इमरान - चौथा रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह की महब्बत का दावा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण करने वाला हो और हुज़ूर की इताअत इख़्तियार करे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़ुरैश के पास ठहरे जिन्होंने ख़ानए काबा में बुत स्थापित किये थे और उन्हें सजा सजा कर उनको सिज्दा कर रहे थे. हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ क़ुरैश, ख़ुदा की क़सम तुम अपने पूर्वजों हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल के दीन के ख़िलाफ़ हो गए. क़ुरैश ने कहा, हम इन बुतों को अल्लाह की महब्बत में पूजते हैं ताकि ये हमें अल्लाह से क़रीब करें. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि अल्लाह की महब्बत का दावा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अनुकरण और फ़रमाँबरदारी के बिना क़ाबिले क़ुबूल नहीं. जो इस दावे का सुबूत देना चाहे, हुज़ूर की ग़ुलामी करे और हुज़ूर ने बुतों को पूजने से मना फ़रमाया, तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का नाफ़रमान और अल्लाह की महब्बत के दावे में झूटा है.

(२) यही अल्लाह की महब्बत की निशानी है और अल्लाह तआला की इताअत रसूल के अनुकरण के बिना नहीं हो सकती. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है, जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की.

(३) यहूदियों ने कहा था कि हम हज़रत इब्राहीम व इसहाक़ व याक़ूब अलैहिमुस्सलाम की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं. इसपर यह आयत उतरी, और बता दिया गया कि अल्लाह तआला ने इन हज़रात को इस्लाम के साथ बुज़ुर्गी अता फ़रमाई थी और तुम ऐ यहूदियो, इस्लाम पर नहीं हो, तुम्हारा यह दावा ग़लत है.

(४) उनमें आपस में नस्ल के सम्बन्ध भी हैं और आपस में ये हज़रात एक दूसरे के सहायक और मददगार भी.

(५) इमरान दो हैं, एक इमरान बिन यसहुर बिन फ़ाहिस बिन लावा बिन याक़ूब, ये तो हज़रत मूसा व हारून के वालिद हैं, दूसरे इमरान बिन मासान, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वालिदा मरयम के वालिद हैं. दोनों इमरानों के बीच एक हज़ार आठ सौ साल का अन्तर है. यहाँ दूसरे इमरान मुराद हैं. उनकी बीबी साहिबा का नाम हन्ना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है. यह मरयम की वालिदा हैं.

(६) और तेरी इबादत के सिवा दुनिया का कोई काम उसके मुतअल्लिक़ न हो. बैतुल मक़दिस की ख़िदमत इसके ज़िम्मे हो. उलमा ने वाक़िआ इस तरह ज़िक्र किया है कि हज़रत ज़करिया और इमरान दोनों हमज़ुल्फ़ थे, यानी दो सगी बहनें एक एक के निकाह में

حَسَنًا ۙ وَّ كَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى
لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۞ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا
رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۞ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ
وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ سَيِّدًا وَّ
حَصُوْرًا وَّ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۞ قَالَ رَبِّ اَنّٰى
يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّ قَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ
قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۞ قَالَ رَبِّ
اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

उसे ज़करिया की निगहबानी में दिया जब ज़करिया उसके पास उसकी नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उसके पास नया रिज़्क़ (जीविका) पाते[१२] कहा ऐ मरयम यह तेरे पास कहां से आया बोलीं वह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसे चाहे बे गिन्ती दे[१३] (३७) यहाँ[१४] पुकारा ज़करिया ने अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला (३८) तो फ़रिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था[१५] बेशक अल्लाह आपको ख़ुशख़बरी देता है यहया की जो अल्लाह की तरफ़ के एक कलिमे की[१६] पुष्टि करेगा और सरदार[१७] हमेशा के लिये औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों से[१८] (३९) बोला ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा[१९] और मेरी औरत बांझ[२०] फ़रमाया अल्लाह यूं ही करता है जो चाहे[२१] (४०) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये कोई निशानी कर दे[२२] फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तीन दिन तू लोगों से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर[२३] और कुछ दिन रहे और तड़के

थीं. फ़ाक़ूज़ा की बेटी ईशाअ जो हज़रत यहया की वालिदा हैं और उनकी बहन हन्ना जो फ़ाक़ूज़ा की दूसरी बेटी और हज़रत मरयम की वालिदा हैं. वह इमरान की बीबी थीं. एक ज़माने तक हन्ना के औलाद नहीं हुई यहाँ तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई. ये नेकों का ख़ानदान था और ये सब लोग अल्लाह के मक़बूल बन्दे थे. एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे को दाना चुगा रही थी. यह देखकर आपके दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुआ और अल्लाह की बारगाह में दुआ की कि ऐ रब अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उसे बैतुल मक़दिस का सेवक बनाऊं और इस ख़िदमत के लिये हाज़िर कर दूँ. जब वह गर्भवती हुईं और उन्होंने यह नज़्र मान ली तो उनके शौहर ने फ़रमाया कि यह तुमने क्या किया. अगर लड़की हो गई तो वह इस क़ाबिल कहाँ है. उस ज़माने में लड़कों को बैतुल मक़दिस की ख़िदमत के लिये दिया जाता था और लड़कियाँ औरतों की क़ुदरती मजबूरियों और ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वजह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं. इसलिये इन साहिबों को सख़्त फ़िक्र हुई . हन्ना की ज़चगी से पहले इमरान का देहान्त हो गया.

(७) हन्ना ने ये कलिमा ऐतिज़ार के तौर पर कहा और उनको हसरत व ग़म हुआ कि लड़की हुई तो नज़्र किस तरह पूरी हो सकेगी.

(८) क्योंकि यह लड़की अल्लाह तआला की अता है और उसकी मेहरबानी से बेटे से ज़्यादा बुज़ुर्गी रखने वाली है. यह बेटी हज़रत मरयम थीं और अपने ज़माने की औरतों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और अफ़ज़ल थीं.

(९) मरयम के मानी हैं आबिदा यानी इबादत करने वाली.

(१०) और नज़्र में लड़के की जगह हज़रत मरयम को क़ुबूल फ़रमाया. हन्ना ने विलादत के बाद हज़रत मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़दिस में पादरियों के सामने रख दिया . ये पादरी हज़रत हारून की औलाद में थे और बैतुल मक़दिस में इनका बड़ा मान था. चूंकि हज़रत मरयम उनके इमाम और उनकी क़ुरबानियों के सरदार की बेटी थीं और इल्म वालों का ख़ानदान था, इस लिये उन सब ने, जिनकी संख्या सत्ताईस थी, हज़रत मरयम को लेने और उनका पालन पोषण करने की इच्छा दिखाई. हज़रत ज़करिया ने फ़रमाया मैं इनका (मरयम का) सब से ज़्यादा हक़दार हूँ क्योंकि मेरी बीबी इनकी ख़ाला हैं. मामला इस पर ख़त्म हुआ कि क़ुरआ डाला जाए . क़ुरआ हज़रत ज़करिया ही के नाम पर निकला.

(११) हज़रत मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं जितना और बच्चे एक साल में.

(१२) बे फ़स्ल मेवे जो जन्नत से उतरते और हज़रत मरयम ने किसी औरत का दूध न पिया.

(१३) हज़रत मरयम ने छोटी उम्र में बात शुरू की, जबकि वह पालने में परवरिश पा रही थीं, जैसा कि उनके बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने भी पालने से ही कलाम फ़रमाया. यह आयत वलियों की करामतों अथवा चमत्कारों के सुबूत में है कि अल्लाह तआला उनके हाथों पर चमत्कार ज़ाहिर कर देता है. हज़रत ज़करिया ने जब यह देखा तो फ़रमाया जो पाक ज़ात मरयम को बेवक़्त बेफ़स्ल और बिना साधन के मेवे अता फ़रमाने की क्षमता रखती है, वह बेशक इसपर भी क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ
وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝ ذٰلِكَ
مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ إِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُوْنَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ص
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ۝ إِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۙ
اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝
قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ
بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ إِذَا قَضٰى

उसकी पाकी बोल﴾४१﴿

पाँचवां रूकू

और जब फ़रिश्ते ने कहा ऐ मरयम बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया[१] और ख़ूब सुथरा किया[२] और आज सारे जहान की औरतों से तुझे पसन्द किया[३]﴾४२﴿ ऐ मरयम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो[४] और उस के लिये सिजदा कर और रूकू वालों के साथ रूकू कर﴾४३﴿ ये ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम खुफ़िया तौर पर तुम्हें बताते हैं[५] और तुम उनके पास न थे जब वो अपनी क़लमों से क़ुरआ (लाटरी) डालते थे कि मरयम किसकी परवरिश में रहें और तुम उनके पास न थे जब वो झगड़ रहे थे[६]﴾४४﴿ और याद करो जब फ़रिश्तों ने मरयम से कहा कि ऐ मरयम अल्लाह तुझे बशारत (ख़ुशख़बरी) देता है अपने पास से एक कलिमे की[७] जिसका नाम है मसीह ईसा मरयम का बेटा, रूदार (प्रतापी) होगा[८] दुनिया और आख़िरत में और क़ुर्ब (समीपता) वाला[९]﴾४५﴿ और लोगों से बात करेगा पालने में[१०] और पक्की उम्र में[११] और ख़ासों में होगा﴾४६﴿ बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो किसी शख़्स ने हाथ न लगाया[१२] फ़रमाया अल्लाह यूं ही पैदा करता है जो चाहे

तंदुरूस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद टूट जाने के बाद भी बेटा अता फ़रमाए. इसी ख़याल से आप ने दुआ की जिसका बयान अगली आयत में है.

(१४) यानी बैतुल मक़दिस की मेहराब में दरवाज़े बन्द करके दुआ की.

(१५) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम बहुत बड़े विद्वान थे. अल्लाह के हुज़ूर क़ुरबानियाँ आप ही पेश करते थे और मस्जिद शरीफ़ में आपकी आज्ञा के बिना कोई दाख़िल नहीं हो सकता था. जिस वक़्त मेहराब में आप नमाज़ पढ़ रहे थे और बाहर आदमी दाख़िले की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे थे, दर्वाज़ा बन्द था, अचानक आपने एक सफ़ेदपोश जवान देखा. वो हज़रत जिब्रील थे. उन्हों ने आपको बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाई जो *"अन्नल्लाहा युबश्शिरुका"* (बेशक अल्लाह आपको ख़ुशख़बरी देता है) में बयान फ़रमाई गई.

(१६) 'कलिमा' से मुराद मरयम के बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं, कि उन्हें अल्लाह तआला ने "कुन" (होजा) फ़रमाकर बिना बाप के पैदा किया और उनपर सबसे पहले ईमान लाने और उनकी तस्दीक़ करने वाले हज़रत यहया हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से उम्र में छ माह बड़े थे. ये दोनों ख़ाला ज़ाद भाई थे. हज़रत यहया की वालिदा अपनी बहन मरयम से मिलीं तो उन्हें गर्भवती होने की सूचना दी. हज़रत मरयम ने फ़रमाया मैं भी गर्भ से हूँ. हज़रत यहया की वालिदा ने कहा ऐ मरयम मुझे मालूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है.

(१७) सैय्यिद उस रईस को कहते हैं जो बुज़ुर्गी वाला हो और लोग उसकी ख़िदमत और इताअत करें हज़रत यहया ईमान वालों के सरदार और इल्म, सहिष्णुता और दीन में उनके रईस अर्थात सरदार थे.

(१८) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने आश्चर्य के साथ अर्ज़ किया.

(१९) और उम्र एक सौ बीस साल की हो चुकी.

(२०) उनकी उम्र अठानवे साल की. सवाल का मक़सद यह है कि बेटा किस तरह अता होगा, क्या मेरी जवानी लौटाई जाएगी और बीबी का बांझपन दूर किया जाएगा, या हम दोनों अपने हाल पर रहेंगे.

(२१) बुढ़ापे में बेटा देना उसकी क़ुदरत से कुछ दूर नहीं.

(२२) जिससे मुझे अपनी बीबी के गर्भ का समय मालूम हो ताकि मैं और ज़्यादा शुक्र और इबादत में लग जाऊं.

(२३) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि आदमियों के साथ बात चीत करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही, अल्लाह का ज़िक्र तथा तस्बीह आप कर सकते थे. यह एक बड़ा चमत्कार है कि जिस आदमी के शरीर के सारे अंग सही और सालिम हों और ज़बान से तस्बीह और ज़िक्र अदा होती रहे मगर लोगों के साथ बात चीत न कर सके. और यह निशानी इसलिये मुक़र्रर की गई थी कि इस अज़ीम इनाम का शुक्र अदा करने के अलावा ज़बान और किसी बात में मशग़ूल न हो.

اَمۡرًا فَاِنَّمَا یَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَیَكُوۡنُ ۝ وَ یُعَلِّمُهُ الۡكِتٰبَ وَ الۡحِكۡمَةَ وَ التَّوۡرٰىةَ وَ الۡاِنۡجِیۡلَ ۝ وَ رَسُوۡلًا اِلٰى بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ ۙ اَنِّیۡ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِاٰیَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ۙ اَنِّیۡۤ اَخۡلُقُ لَكُمۡ مِّنَ الطِّیۡنِ كَهَیۡـَٔةِ الطَّیۡرِ فَاَنۡفُخُ فِیۡهِ فَیَكُوۡنُ طَیۡرًۢا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُبۡرِئُ الۡاَكۡمَهَ وَ الۡاَبۡرَصَ وَ اُحۡیِ الۡمَوۡتٰى بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُنَبِّئُكُمۡ بِمَا تَاۡكُلُوۡنَ وَ مَا تَدَّخِرُوۡنَ ۙ فِیۡ بُیُوۡتِكُمۡ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ۝ وَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوۡرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ لَكُمۡ بَعۡضَ الَّذِیۡ حُرِّمَ عَلَیۡكُمۡ وَ جِئۡتُكُمۡ بِاٰیَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیۡعُوۡنِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیۡ وَ رَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِیۡمٌ ۝ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیۡسٰى مِنۡهُمُ

जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए तो उससे यही कहता है कि हो जा वह फ़ौरन हो जाता है(४७) और अल्लाह सिखाएगा किताब और हिकमत(बोध) और तौरात और इंजील(४८) और रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ़ यह फ़रमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं[१३] तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की मूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से[१४] और मैं शिफ़ा देता हूँ मादरज़ाद(पैदायशी) अंधे और सफ़ेद दाग वाले को[१५] और मैं मुर्दे जिलाता हूँ अल्लाह के हुक्म से[१६] और तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो[१७] बेशक उन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो(४९) और पुष्टि करता आया हूँ अपने से पहली किताब तौरात की और इसलिये कि हलाल करूं तुम्हारे लिये कुछ वो चीज़ें जो तुमपर हराम थीं[१८] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूँ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो(५०) बेशक मेरा तुम्हारा सबका रब अल्लाह है तो उसी को पूजो[१९] यह है सीधा रास्ता(५१) फिर जब

सूरए आले इमरान - पाँचवां रूकू

(१) कि औरत होने के बावुजूद बैतुल मक़दिस की ख़िदमत के लिये भेंट में क़ुबूल फ़रमाया और यह बात उनके सिवा किसी औरत को न मिली. इसी तरह उनके लिये जन्नती खाना भेजना, हज़रत ज़करिया को उनका पालक बनाना, यह हज़रत मरयम की महानता का प्रमाण है.

(२) मर्द की पहुंच से और गुनाहों से और कुछ विद्वानों के अनुसार ज़नाना दोषों और मजबूरियों से.

(३) कि बग़ैर बाप के बेटा दिया और फ़रिश्तों का कलाम सुनाया.

(४) जब फ़रिश्तों ने यह कहा, हज़रत मरयम ने इतना लम्बा क़याम किया यानी इतनी देर तक नमाज़ में खड़ी रहीं कि आपके क़दमे मुबारक पर सूजन आ गई और पाँव फट कर ख़ून जारी हो गया.

(५) इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ग़ैब के इल्म अता फ़रमाए.

(६) इसके बावुजूद आपका इन घटनाओं की सूचना देना ठोस प्रमाण है इसका कि आपको अज्ञात का ज्ञान यानी ग़ैब की जानकारी अता फ़रमाई गई.

(७) यानी एक बेटे की.

(८) बड़ी शान और मान और ऊंचे दर्जे वाला.

(९) अल्लाह की बारगाह में.

(१०) बात करने की उम्र से पहले.

(११) आसमान से उतरने के बाद. इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतरेंगे जैसा कि हदीसों में आया है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे.

(१२) और क़ायदा यह है कि बच्चा औरत और मर्द के मिलाप से होता है तो मुझे बच्चा किस तरह अता होगा. निकाह से या यूंही बिना मर्द के.

(१३) जो मेरे नबुव्वत के दावे की सच्चाई का प्रमाण है.

(१४) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत का दावा किया और चमत्कार दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की कि आप एक चिमगादड़ पैदा करें. आपने मिट्टी से चिमगादड़ की सूरत बनाई फिर उसमें फूंक मारी तो वह उड़ने लगी. चिमगादड़ की विशेषता यह है कि वह उड़ने वाले जानवरों में बहुत सम्पूर्ण और अजीबतर जानवर है, और अल्लाह की क़ुदरत पर दलील बनने में सबसे बढ़कर, क्योंकि वह बिना परों के उड़ती है, और दांत रखती है, और हंसती है, और उसकी मादा के छाती होती है, और बच्चा जनती है,

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِيٓ إِلَى اللّٰهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۖ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰىٓ إِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ

منزل ١

ईसा ने उनसे कुफ़्र पाया[२०] बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़. हवारियों (अनुयाइयों) ने कहा[२१] हम ख़ुदा के दीन के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह होजाएं कि हम मुसलमान हैं[२२]﴿५२﴾ ऐ रब हमारे हम उसपर ईमान लाए जो तूने उतारा और रसूल के ताबे (अधीन) हुए तू हमें हक़ पर गवाही देने वालों में लिख ले﴿५३﴾ और काफ़िरों ने मक्र (कपट) किया[२३] और अल्लाह ने उनके हलाक की छुपवां तदबीर (युक्ति) फ़रमाई और अल्लाह सबसे बेहतर छुपी तदबीर वाला है[२४]﴿५४﴾

छटा रूकू

याद करो जब अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उम्र पहुंचाऊंगा[१] और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा[२] और तुझे काफ़िरों से पाक करदूंगा और तेरे मानने वालों को[३] क़यामत तक तेरा इन्कार करने वालों पर[४] ग़लबा (आधिपत्य) दूंगा फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमादूंगा जिस बात में झगड़ते हो﴿५५﴾ तो वो जो काफ़िर हूए मैं उन्हें दुनिया व आख़िरत में सख़्त अज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा﴿५६﴾ और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उनका नेग उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते﴿५७﴾

जब कि उड़ने वाले जानवरों में ये बात नहीं है.

(१५) जिसका कोढ़ आम हो गया हो और डॉक्टर उसका इलाज करने से आजिज़ या अयोग्य हों. चूंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में तिब यानी चिकित्सा शास्त्र चरम सीमा पर था और इसके जानने वाले इलाज में चमत्कार रखते थे. इस लिये उनको उसी क़िस्म के चमत्कार दिखाए गए ताकि मालूम हो कि तिब के तरीक़े से जिसका इलाज सम्भव नहीं है उसको तंदुरूस्त करदेना यक़ीनन चमत्कार और नबी के सच्चे होने की दलील है. वहब का क़ौल है कि अकसर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास एक दिन में पचास पचास हज़ार बीमारों का जमघट हो जाता था. उनमें जो चल सकता था वह ख़िदमत में हाज़िर होता था और जिसे चलने की ताक़त न होती थी उसके पास ख़ुद हज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ फ़रमाकर उसको तन्दुरूस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त कर लेते.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने चार व्यक्तियों को ज़िन्दा किया, एक आज़िर जिसको आपके साथ महब्बत थी. जब उसकी हालत नाज़ुक हुई तो उसकी बहन ने आपको सूचना दी मगर वह आपसे तीन दिन की दूरी पर था. जब आप तीन रोज़ में वहाँ पहुंचे तो मालूम हुआ कि उसके इन्तिक़ाल को तीन दिन हो चुके हैं. आपने उसकी बहन से फ़रमाया हमें उसकी क़ब्र पर ले चल. वह ले गई. आपने अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाई. अल्लाह की क़ुदरत से आज़िर ज़िन्दा होकर क़ब्र से बाहर आया और लम्बे समय तक ज़िन्दा रहा और उसके औलाद हुई. एक बुढ़िया का लड़का, जिसका जनाज़ा हज़रत के सामने जा रहा था, आपने उसके लिये दुआ फ़रमाई, वह ज़िन्दा होकर जनाज़ा लेजाने वालों के कन्धों से उतर पड़ा. कपड़े पहने, घर आया, ज़िन्दा रहा, औलाद हुई. एक आशिर की लड़की शाम को मरी. अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उसे ज़िन्दा किया. एक साम बिन नूह जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे. लोगों ने ख़्वाहिश की कि आप उनको ज़िन्दा करें. आप उनके बताए से क़ब्र पर पहुंचे और अल्लाह तआला से दुआ की. साम ने सुना कोई कहने वाला कहता है *"अजिब रूहुल्लाह"* यह सुनते ही वो डर के मारे उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुआ कि क़यामत क़ायम हो गई. इस हौल से उनका आधा सर सफ़ेद हो गया, फिर वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और उन्हों ने हज़रत से दरख़्वास्त की कि दोबारा उन्हें सकरात यानी जान निकलने की तकलीफ़ न हो, उसके बिना वापस किया जाए. चुनांचे उसी वक़्त उनका इन्तिक़ाल हो गया. और *"बिइज़निल्लाह"* (अल्लाह के हुक्म से) फ़रमाने में ईसाईयों का रद है जो हज़रत मसीह के ख़ुदा होने के क़ायल या मानने वाले थे.

(१७) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो कुछ लोगों ने कहा कि यह तो जादू है, कोई और चमत्कार दिखाइये. तो आपने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जमा कर रखते हो, मैं उसकी तुम्हें ख़बर देता

مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۭ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاۗجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَاۗءَنَا وَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَنِسَاۗءَنَا وَنِسَاۗءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۣ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَي الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَھُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاۗءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـــًٔـا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا

यह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ आयतें और हिकमत(बोध) वाली नसीहत﴿५८﴾ ईसा की कहावत अल्लाह के नज़दीक आदम की तरह है[५] उसे मनी से बनाया फिर फ़रमाया होजा वह फ़ौरन हो जाता है﴿५९﴾ ऐ सुनने वाले यह तेरे रब की तरफ़ से हक़ है तू शक वालों में न होना﴿६०﴾ फिर ऐ मेहबूब, जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत(बहस) करें बाद इसके कि तुम्हें इल्म आचुका तो उन से फ़रमादो आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहिला करें तो झूटों पर अल्लाह की लानत डालें[६]﴿६१﴾ यही बेशक सच्चा बयान है[७] और अल्लाह के सिवा कोई मअबूद(पूजनीय) नहीं[८] और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब है हिकमत वाला﴿६२﴾ फिर अगर वो मुंह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को जानता है﴿६३﴾

सातवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ, ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की तरफ़ आओ जो हम में तुम में यकसाँ(समान) है[१] यह कि इबादत न करें मगर ख़ुदा की और उसका शरीक किसी को न करें [२] और हम में कोई एक दूसरे को रब न बना ले अल्लाह के सिवा[३]

हूँ . इसी से साबित हुआ कि ग़ैब के उलूम नबियों के चमत्कार हैं, और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक पर यह चमत्कार भी ज़ाहिर हुआ. आप आदमी को बता देते थे जो वह कल खाचुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिये तैयार कर रखा है. आप के पास बच्चे बहुत से जमा हो जाते थे. आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर अमुक चीज़ तैयार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने अमुक अमुक चीज़ खाई है, अमुक चीज़ तुम्हारे लिये उठा रखी है. बच्चे घर जाते, रोते, घर वालों से वह चीज़ मांगते, घर वाले वह चीज़ देते और उनसे कहते कि तुम्हें किसने बताया. बच्चे कहते हज़रत ईसा ने. तो लोगों ने अपने बच्चों को आपके पास आने से रोका और कहा वो जादूगर हैं, उनके पास न बैठो. और एक मकान में सब बच्चों को जमा कर दिया. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा, यहाँ नहीं हैं. आपने फ़रमाया फिर इस मकान में कौन है. उन्होंने कहा, सुअर हैं. फ़रमाया, ऐसा ही होगा. अब जो दर्वाज़ा खोलते हैं तो सब सुअर ही सुअर थे. मतलब यह कि ग़ैब की ख़बरें देना नबियों का चमत्कार है और नबियों के माध्यम के बिना कोई आदमी ग़ैब की बातों पर सूचित नहीं हो सकता.

(१८) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में हराम थीं जैसे कि ऊंट का गोश्त, मछली, चिड़ियाँ.

(१९) यह अपने बन्दे होने का इक़रार और अपने ख़ुदा होने का इन्कार है. इसमें ईसाइयों का रद है.

(२०) यानी मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि यहूदी अपने कुफ़्र पर क़ायम हैं और आपके क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी खुली निशानियों और चमत्कारों से प्रभावित नहीं होते और इसका कारण यह था कि उन्होंने पहचान लिया था कि आप ही वह मसीह हैं जिनकी बशारत तौरात में दी गई है और आप उनके दीन को स्थगित करेंगे तो जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दावत का इज़हार फ़रमाया तो यह उनको बड़ा नागवार गुज़रा और वो आपको तकलीफ़ पहुंचाने और मार डालने पर तुल गए और आपके साथ उन्होंने कुफ़्र किया.

(२१) हवारी वो महब्बत और वफ़ादारी वाले लोग हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन के मददगार थे और आप पर पहले ईमान लाए. ये बारह लोग थे.

(२२) इस आयत से ईमान और इस्लाम के एक होने की दलील दी जाती है. और यह भी मालूम होता है कि पहले नबियों का दीन इस्लाम था न कि यहूदियत या ईसाइयत.

(२३) यानी बनी इस्राईल के काफ़िरों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ कपट किया कि धोखे के साथ आपके क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक आदमी को इस काम पर लगा दिया.

(२४) अल्लाह तआला ने उनके कपट का यह बदला दिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया और उस आदमी को हज़रत की शक्ल दे दी जो उनके क़त्ल के लिये तैयार हुआ था. चुनांचे यहूदियों ने उसको इसी शुबह पर क़त्ल कर दिया. 'मक्र' शब्द अरब में 'सत्र' यानी छुपाने के मानी में है. इसीलिये छुपवाँ तदबीर को भी 'मक्र' कहते हैं. और वह तदबीर अगर अच्छे

मक़सद के लिये हो तो अच्छी और किसी बुरे काम के लिये हो तो नापसन्दीदा होती है. मगर उर्दू ज़बान में यह शब्द धोखे के मानी में इस्तेमाल होता है. इसलिये अल्लाह के बारे में हरगिज़ न कहा जाएगा और अब चूंकि अरबी में भी यह शब्द बुरे मतलब में इस्तेमाल होने लगा है इसलिये अरबी में भी अल्लाह की शान में इसका इस्तेमाल जायज़ नहीं. आयत में जहाँ कहीं आया वह छुपवाँ तदबीर के मानी में है.

सूरए आले इमरान - छटा रूकू

(१) यानी तुम्हें कुफ़्फ़ार क़त्ल न कर सकेंगे. (मदारिक वग़ैरह)
(२) आसमान पर बुज़ुर्गी और करामत का महल और फ़रिश्तों के रहने की जगह में बिना मौत के. हदीस शरीफ़ है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हज़रत ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा होकर उतरेंगे, सलीब तोड़ेंगे, सुअरों को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह फ़रमाएंगे, औलाद होगी, फिर आप का विसाल यानी देहान्त होगा. वह उम्मत कैसे हलाक हो जिसके अव्वल मैं हूँ और आख़िर ईसा, और बीच में मेरे घर वालों में से. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दमिश्क़ में पूर्वी मिनारे पर उतरेंगे. यह भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हुजरे में दफ़्न होंगे.
(३) यानी मुसलमानों को, जो आपकी नबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले हैं .
(४) जो यहूदी हैं .
(५) नजरान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आया और वो लोग हुज़ूर से कहने लगे आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे है. फ़रमाया हाँ, उसके बन्दे और उसके रसूल हैं और उसके कलिमे, जो कुंवारी बुतूल अज़रा की तरफ़ भेजे गए. ईसाई यह सुनकर बहुत ग़ुस्से में आए और कहने लगे, ऐ मुहम्मद, क्या तुमने कभी बे बाप का इन्सान देखा है. इससे उनका मतलब यह था कि वह ख़ुदा के बेटे हैं (अल्लाह की पनाह). इसपर यह आयत उतरी और यह बताया गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सिर्फ़ बग़ैर बाप ही के हुए और हज़रत आदम अलैहिस्सालाम तो माँ और बाप दोनों के बग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह का पैदा किया हुआ मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पैदा किया हुआ और उसका बन्दा मानने में क्या हिचकिचाहट और आशचर्य है.
(६) जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नजरान के ईसाईयों को यह आयत पढ़कर सुनाई और मुबाहिले की दावत दी तो कहने लगे कि हम ग़ौर और सलाह करलें, कल आपको जवाब देंगे. जब वो जमा हुए तो उन्होंने अपने सबसे बड़े आलिम और सलाहकार व्यक्ति आक़िब से कहा ऐ अब्दुल मसीह, आपकी क्या राय है. उसने कहा तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुए रसूल ज़रूर हैं. अगर तुमने उनसे मुबाहिला किया तो सब हलाक हो जाओगे. अब अगर ईसाइयत पर क़ायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर लौट चलो . यह सलाह होने के बाद वो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर की गोद मे तो इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में हसन का हाथ और फ़ातिमा और अली हुज़ूर के पीछे हैं (रदियल्लाहो अन्हुम) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूं तो तुम सब आमीन कहना. नजरान के सबसे बड़े आलिम (पादरी) ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा कि ऐ ईसाइयो, मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर ये लोग अल्लाह से पहाड़ को हटाने की दुआ करें तो अल्लाह पहाड़ को हटा दे. इनसे मुबाहिला न करना, हलाक हो जाओगे और क़यामत तक धरती पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा. यह सुनकर ईसाइयों ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुबाहिले की तो हमारी राय नहीं है. अन्त में उन्होंने जिज़िया देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहिले के लिये तैयार न हुए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है, नजरान वालों पर अज़ाब क़रीब ही आचुका था, अगर वो मुबाहिला करते तो बन्दरों और सुअरों की सूरत में बिगाड़ दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता और नजरान और वहाँ की निवासी चिड़ियाँ तक नाबूद हो जातीं और एक साल के अर्से में सारे ईसाई हलाक हो जाते.
(७) कि हज़रत ईसा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उनका वह हाल है जो ऊपर बयान हो चुका.
(८) इसमें ईसाइयों का भी रद है और सारे मुश्रिकों का भी.

सूरए आले इमरान - सातवाँ रुकू

(१) और क़ुरआन, तौरात और इन्जील इसमें मुख़्तलिफ़ नहीं हैं.
(२) न हज़रत ईसा को, न हज़रत उज़ैर को, न किसी और को.
(३) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने पादरियों और रब्बियों को बनाया कि उन्हें सज्दा करते और उनकी पूजा करते. (जुमल)

فَقُوۡلُوا اشۡهَدُوۡا بِاَنَّا مُسۡلِمُوۡنَ ۝ يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوۡنَ فِىۡۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَمَاۤ اُنۡزِلَتِ التَّوۡرٰٮةُ وَالۡاِنۡجِيۡلُ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ‌ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝ هٰۤاَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجۡتُمۡ فِيۡمَا لَـكُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوۡنَ فِيۡمَا لَـيۡسَ لَـكُمۡ بِهٖ عِلۡمٌ‌ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝ مَا كَانَ اِبۡرٰهِيۡمُ يَهُوۡدِيًّا وَّلَا نَصۡرَانِيًّا وَّلٰكِنۡ كَانَ حَنِيۡفًا مُّسۡلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝ اِنَّ اَوۡلَى النَّاسِ بِاِبۡرٰهِيۡمَ لَـلَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُ وَهٰذَا النَّبِىُّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ‌ؕ وَاللّٰهُ وَلِىُّ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝ وَدَّتۡ طَّآٮِٕفَةٌ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَوۡ يُضِلُّوۡنَكُمۡ ؕ وَمَا يُضِلُّوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡفُسَهُمۡ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ۝ يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تَكۡفُرُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنۡتُمۡ تَشۡهَدُوۡنَ ۝ يٰۤاَهۡلَ

फिर अगर वो न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं《६४》 ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो . तौरात और इंजील तो न उतरी मगर उनके बाद तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[४]《६५》 सुनते हो यह जो तुम हो[५] उस में झगड़े जिसकी तुम्हें जानकारी थी[६] तो उस में[७] क्यों झगड़ते हो जिसकी तुम्हें जानकारी ही नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[८]《६६》 इब्राहीम यहूदी न थे और न ईसाई बल्कि हर बातिल (असत्य) से अलग मुसलमान थे और मुश्रिकों से न थे[९]《६७》 बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़्यादा हक़दार वो थे जो उनके मानने वाले हुए[१०] और यह नबी[११] और ईमान वाले[१२] और ईमान वालों का वाली (सरपरस्त) अल्लाह है《६८》 किताबियों का एक दल दिल से चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह करदें और वो अपने ही आप को गुमराह करते हैं और उन्हें शऊर (आभास) नहीं[१३]《६९》 ऐ किताबियो, अल्लाह की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो हालांकि तुम ख़ुद गवाह हो[१४]《७०》 ऐ किताबियो हक़ में

(४) नजरान के ईसाइयों और यहूदियों के विद्वानों में बहस हुई. यहूदियों का दावा था कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहूदी थे और ईसाइयों का दावा था कि आप ईसाई थे. यह झगड़ा बहुत बढ़ा तो दोनों पक्षों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हकम यानी मध्यस्त बनाया और आप से फ़ैसला चाहा. इस पर यह आयत उतरी और तौरात के विद्वानों और इन्जील के जानकारों पर उनकी अज्ञानता ज़ाहिर कर दी गई कि उनमें से हर एक का दावा उनकी जिहालत की दलील है. यहूदियत व ईसाइयत तौरात और इंजील उतरने के बाद पैदा हुईं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना, जिन पर तौरात उतरी, हज़रत इब्राहीब अलैहिस्सलाम से सदियों बाद का है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, जिनपर इंजील उतरी, उनका ज़माना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद दो हज़ार बरस के क़रीब हुआ है और तौरात व इंजील किसी में आपको यहूदी या ईसाई नहीं कहा गया है, इसके बावजुद आपकी निस्बत यह दावा जिहालत और मूर्ख़ता की चरम सीमा है.

(५) ऐ किताब वालो, तुम.

(६) और तुम्हारी किताबों में इसकी ख़बर दी गई थी यानी आख़िरी ज़माने के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़ाहिर होने और आपकी तारीफ़ और विशेषताओं की. जब ये सब कुछ पहचान कर भी तुम हुज़ूर पर ईमान न लाए और तुमने इसमें झगड़ा किया.

(७) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यहूदी या ईसाई कहते हैं.

(८) और वास्तविकता यह है कि.

(९) तो न किसी यहूदी या ईसाई का अपने आपको दीन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब करना या जोड़ना सही हो सकता है, न किसी मुश्रिक का . कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इसमें यहूदियों और ईसाईयों पर ऐतिराज़ है कि वो मुश्रिक हैं.

(१०) और उनकी नबुव्वत के दौर में उनपर ईमान लाए और उनकी शरीअत का पालन किया.

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(१२) और आपकी उम्मत के लोग.

(१३) यह आयत हज़रत मआज़ बिन जबल और हुज़ैफ़ा बिन यमान और अम्मार बिन यासिर के बारे में उतरी जिनको यहूदी अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदियत की दावत देते थे और इसमें बताया गया कि यह उनकी ख़्याली हविस है, वो उन्हें गुमराह न कर सकेंगे.

(१४) और तुम्हारी किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और विशेषताएं मौजूद हैं और तुम जानते हो कि वो सच्चे नबी है और उनका दीन सच्चा दीन है.

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ
وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ
النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْۤا
اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ
اَنْ یُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ
عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ یُؤْتِیْهِ مَنْ
یَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٧٣﴾ یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ
یَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ یُّؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِیْنَارٍ لَّا یُؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ
عَلَیْهِ قَآئِمًا ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَیْسَ عَلَیْنَا فِی
الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌ وَیَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

बातिल क्यों मिलाते हो[१५] और हक़ क्यों छुपाते हो हालांकि तुम्हें ख़बर है﴿७१﴾

आठवाँ रूकू

और किताबियों का एक दल बोला[१] वह जो ईमान वालों पर उतरा[२] सुब्ह को उसपर ईमान लाओ और शाम को इन्कारी हो जाओ शायद वो फिर जाएं[३]﴿७२﴾ और यक़ीन न लाओ मगर उसका जो तुम्हारे दीन का मानने वाला हो तुम फ़रमादो कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[४] (यक़ीन काहे का न लाओ) उसका कि किसी को मिले[५] जैसा तुम्हें मिला या कोई तुमपर हुज्जत(तर्क) ला सके तुम्हारे रबके पास[६] तुम फ़रमादो कि फ़ज़्ल(कृपा) तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत(विस्तार) वाला इल्म वाला है﴿७३﴾ अपनी रहमत से[७] ख़ास करता है जिसे चाहे[८] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है﴿७४﴾ और किताबियों में कोई वह है कि अगर तू उसके पास एक ढेर अमानत रखे तो वह तुझे अदा कर देगा[९] और इनमें कोई वह है कि अगर एक अशरफ़ी उसके पास अमानत रखे तो वह तुझे फेर कर न देगा मगर जबतक तू उसके सर पर खड़ा हो[१०] यह इसलिये कि वो कहते हैं कि अनपढ़ों[११] के मामले में हम पर कोई मुवाख़िज़ा(पकड़) नहीं और अल्लाह पर जानबूझ कर झूठ

(१५) अपनी किताबों में फेर बदल करके.

सूरए आले इमरान - आठवाँ रूकू

(१) और उन्होंने आपसी सलाह करके यह कपट सोचा.

(२) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(३) यहूदी इस्लाम के विरोध में रात दिन नए नए छल कपट किया करते थे. ख़ैबर के यहूदियों के विद्वानों में से बारह ने आपस में सलाह करके एक यह कपट सोचा कि उनकी एक जमाअत सुब्ह को इस्लाम लाए और शाम को इस्लाम से फिर जाए और लोगों से कहे कि हमने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुआ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) वो वादा किये गए नबी नहीं हैं जिनकी हमारी किताबों में ख़बर है, ताकि इस हरकत से मुसलमानों को दीन में संदेह पैदा हो. लेकिन अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर उनका यह राज़ खोल दिया और उनकी यह चाल न चल सकी और मुसलमान पहले से ख़बरदार हो गए.

(४) और जो इसके सिवा है वह बातिल और गुमराह है.

(५) दीन व हिदायत और किताब व हिकमत और बुज़ुर्गी.

(६) क़यामत का दिन.

(७) यानी नबुव्वत और रिसालत से.

(८) इससे यह साबित होता है कि नबुव्वत जिस किसी को मिलती है, अल्लाह के फ़ज़्ल से मिलती है. इसमें हक़ या अधिकार की बात नहीं होती. (ख़ाज़िन)

(९) यह आयत किताब वालों के बारे में उतरी और इसमें ज़ाहिर फ़रमाया गया कि उनमें दो क़िस्म के लोग हैं, अमानत वाले और ख़यानत वाले. कुछ तो ऐसे हैं कि बहुत सा माल उनके पास अमानत या सुरक्षित रखा जाए तो ज़रा सी कमी के बिना वक़्त पर अदा करदें, जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जिनके पास एक क़ुरैशी ने बारह सौ औक़िया (एक औक़िया = एक आऊन्स) सोना अमानत रखा था. आपने उसको वैसा ही अदा किया. और कुछ किताब वाले इतने बेईमान हैं कि थोड़े पर भी उनकी नियत बिगड़ जाती है, जैसे कि फ़ख़ास बिन आज़ूरा जिसके पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी, माँगते वक़्त उससे इनकारी हो गया.

(१०) और जैसे ही देने वाला उसके पास से हटे, वह अमानत का माल डकार जाता है.

يَعۡلَمُوۡنَ ۝ بَلٰى مَنۡ اَوۡفٰى بِعَهۡدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَشۡتَرُوۡنَ بِعَهۡدِ اللّٰهِ
وَاَيۡمَانِهِمۡ ثَمَنًا قَلِيۡلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمۡ فِى
الۡاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنۡظُرُ اِلَيۡهِمۡ يَوۡمَ
الۡقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيۡهِمۡ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝ وَاِنَّ
مِنۡهُمۡ لَفَرِيۡقًا يَّلۡوٗنَ اَلۡسِنَتَهُمۡ بِالۡكِتٰبِ لِتَحۡسَبُوۡهُ
مِنَ الۡكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الۡكِتٰبِ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ مِنۡ
عِنۡدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ وَيَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ
الۡكَذِبَ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّؤۡتِيَهُ
اللّٰهُ الۡكِتٰبَ وَالۡحُكۡمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوۡلَ لِلنَّاسِ
كُوۡنُوۡا عِبَادًا لِّىۡ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰكِنۡ كُوۡنُوۡا رَبّٰنِيّٖنَ
بِمَا كُنۡتُمۡ تُعَلِّمُوۡنَ الۡكِتٰبَ وَبِمَا كُنۡتُمۡ تَدۡرُسُوۡنَ ۝
وَلَا يَاۡمُرَكُمۡ اَنۡ تَتَّخِذُوا الۡمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرۡبَابًا

बांधते हैं[१२] ﴾७५﴿ हां क्यों नहीं जिसने अपना अहद पूरा किया और परहेज़गारी की और बेशक परहेज़गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं ﴾७६﴿ वो जो अल्लाह के अहद और अपनी क़समों के बदले ज़लील (तुच्छ) दाम लेते हैं[१३] आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं और अल्लाह न उनसे बात करे न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमाए क़यामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[१४] ﴾७७﴿ और इनमें कुछ वो हैं जो ज़बान फेरकर किताब में मेल करते हैं कि तुम समझो यह भी किताब में है और वह किताब में नहीं और वो कहते हैं यह अल्लाह के पास से है और वह अल्लाह के पास से नहीं और अल्लाह पर जान बूझकर झूठ बांधते हैं[१५] ﴾७८﴿ किसी आदमी का यह हक़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे[१६] फिर वह उन लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ[१७] हाँ यह कहेगा कि अल्लाह वाले[१८] हो जाओ इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इससे कि तुम दर्स (पठन) करते हो[१९] ﴾७९﴿ और न तुम्हें यह हुक्म होगा[२०] कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा

(११) यानी जो किताब वाले नहीं है, उनका.

(१२) कि उसने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़्म कर जाने का हुक्म दिया है, इसके बावुजूद कि वो ख़ूब जानते हैं कि उनकी किताबों में ऐसा कोई हुक्म नहीं है.

(१३) यह आयत यहूदियों के पादरी और उनके रईस अबू राफ़े व कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ और कअब बिन अशरफ़ और हैय्यी बिन अख़्तब के बारे में उतरी जिन्हों ने अल्लाह तआला का वह एहद छुपाया था जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने के बारे में उनसे तौरात में लिया गया . उन्होंने उसको बदल दिया और उसकी जगह अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूटी क़सम खाई कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और ये सब कुछ उन्होंने अपनी जमाअत के जाहिलों से रिश्वतें और पैसा हासिल करने के लिये किया.

(१४) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तीन लोग ऐसे हैं कि क़यामत के दिन अल्लाह न उनसे कलाम फ़रमाए और न उनकी तरफ़ रहमत की नज़र करे, न उन्हें गुनाहों से पाक करे, और उन्हें दर्दनाक अज़ाब है फ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस आयत को तीन बार पढ़ा. हज़रत अबूज़र रावी ने कहा कि वो लोग टोटे और नुक़सान में रहे. या रसूलल्लाह, वह कौन लोग हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया इज़ार को टख़्नों से नीचे लटकाने वाला और एहसान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूटी क़सम से रिवाज देने वाला. हज़रत अबू उमामा की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जो किसी मुसलमान का हक़ मारने के लिये क़सम खाए, अल्लाह उसपर जन्नत हराम करता है और दोज़ख़ लाज़िम करता है. सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, अगरचे थोड़ी ही चीज़ हो. फ़रमाया अगरचे बबूल की शाख़ ही क्यों न हो.

(१५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों दोनों के बारे में उतरी कि उन्हों ने तौरात और इंजिल में फेर बदल किया और अल्लाह की किताब में अपनी तरफ़ से जो चाहा मिलाया.

(१६) और इल्म और अमल में कमाल अता फ़रमाए और गुनाहों से मासूम करे.

(१७) यह नबियों से असंभव है और उनकी तरफ़ इसकी निस्बत बोहतान है. नजरान के ईसाइयों ने कहा कि हमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें . इस आयत में अल्लाह तआला ने उनके इस क़ौल को झुटलाया और बताया कि नबियों की शान से ऐसा कहना संभव ही नहीं है . इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में दूसरा क़ौल यह है कि अबू राफ़े यहूदी और सैयद नसरानी ने सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा "या मुहम्मद, आप चाहते हैं कि हम आपकी इबादत करें और आपको रब मानें'. हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह की पनाह, कि मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म करूं, न मुझे अल्लाह ने इस का हुक्म दिया, न मुझे इसलिये भेजा.

(१८) रब्बानी के मानी आलिम, फ़क़ीह और बाअमल आलिम और निहायत दीनदार के है.

أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذْ
أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّن كِتَابٍ
وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ ۚ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ
عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا
وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ۝ فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ
ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ
يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ
وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَمَن يَبْتَغِ

लो, क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो लिये[२१]《८०》

नवाँ रुकू

और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उनका एहद लिया[१] जो मैं तुमको किताब और हिकमत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वो रसूल[२] कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाए[३] तो तुम ज़रूर ज़रूर उसपर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उसकी मदद करना फ़रमाया क्यों तुमने इक़रार किया और उस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अर्ज़ की हमने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं《८१》 तो जो कोई इस[४] के बाद फिरे[५] तो वही लोग फ़ासिक़(दुराचारी) हैं[६]《८२》 तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं[७] और उसी के हुज़ूर गर्दन रखे हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं[८] ख़ुशी से[९] और मजबूरी से[१०] और उसी की तरफ़ फिरेंगे《८३》 यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनके बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा और नबियों को उनके रब से, हम उनमें किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते[११] और हम उसी के हुज़ूर गर्दन झुकाए हैं《८४》 और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन

(१९) इससे साबित हुआ कि इल्म और तालीम का फल ये होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए . जिसे इल्म से यह फ़ायदा न हो, उसका इल्म व्यर्थ और बेकार है.
(२०) अल्लाह तआला या उसका कोई नबी.
(२१) ऐसा किसी तरह नहीं हो सकता.

सूरए आले इमरान -- नवाँ रुकू

(१) हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनके बाद जिस किसी को नबुव्वत अता फ़रमाई उनसे सैयदुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत एहद लिया और उन नबियों ने अपनी क़ौमों से एहद लिया कि अगर उनकी ज़िन्दगी में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ लाएं तो आप पर ईमान लाएं और आपकी मदद करें. इससे साबित हुआ कि हुज़ूर सारे नबियों में सबसे अफ़ज़ल हैं.
(२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(३) इस तरह कि उनकी विशेषताएं और हाल इसके अनुसार हों जो नबियों की किताबों में बयान फ़रमाए गए हैं.
(४) एहद.
(५) और आने वाले नबी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से पीछे हटे.
(६) ईमान से बाहर.
(७) एहद लिये जाने के बाद और दलीलें साफ़ हो जाने के बावुजूद.
(८) फ़रिश्ते और इन्सान और जिन्न.
(९) दलीलों और प्रमाणों में नज़र करके और इन्साफ़ इख़्तियार करके. और ये फ़रमाँबरदारी उनको फ़ायदा देती और नफ़ा पहुंचाती है.
(१०) किसी डर से या अज़ाब के देख लेने से, जैसा कि काफ़िर मौत के क़रीब मजबूर और मायूस होकर ईमान लाता है. यह ईमान उसको क़यामत में नफ़ा न देगा.

غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا
كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ
جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ
اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝

चाहेगा वह कभी उससे क़ुबूल न किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों से है﴿٨٥﴾ किस तरह अल्लाह ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान लाकर काफ़िर हो गए[१२] और गवाही दे चुके थे कि रसूल[१३] सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आचुकी थीं[१४] और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता﴿٨٦﴾ उनका बदला यह है कि उनपर लानत है अल्लाह और फ़रिश्तों और आदमियों की सब की﴿٨٧﴾ हमेशा उसमें रहें न उनपर से अज़ाब हल्का हो और न उन्हें मोहलत दी जाए﴿٨٨﴾ मगर जिन्होंने उसके बाद तौबह की[१५] और आपा संभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴿٨٩﴾ बेशक वह जो ईमान लाकर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[१६] उनकी तौबह कभी क़ुबूल न होगी[१७] और वही हैं बहके हुए﴿٩٠﴾ जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा अगरचे (यद्यापि) अपनी ख़लासी (छुटकारा) को दे उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है और उनका कोई यार (सहायक) नहीं﴿٩١﴾

(११) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों ने किया कि कुछ पर ईमान लाए और कुछ का इनकार किया.

(१२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में उतरी कि यहूदी हुज़ूर के तशरीफ़ लाने से पहले आपके वसीले से दुआएं करते थे. आपकी नबुव्वत के इक़रारी थे और आपके तशरीफ़ लाने की प्रतीक्षा करते थे. जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो हसद से आप का इनकार करने लगे और काफ़िर हो गए. मानी यह है कि अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को कैसे ईमान की तौफ़ीक़ दे जो जान पहचान कर और मान कर इन्कारी हो गई.

(१३) यानी नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(१४) और वो रौशन चमत्कार देख़ चुके थे.

(१५) और कुफ़्र से रुक गए. हारिस बिन सवीद अन्सारी को काफ़िरों के साथ जा मिलने के बाद शर्मिन्दगी हुई तो उन्हों ने अपनी क़ौम के पास संदेश भेजा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछें कि क्या मेरी तौबह क़ुबूल हो सकती है ? उनके बारे में यह आयत उतरी. तब वह मदीनए मुनव्वरा में तौबह करके हाज़िर हुए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी तौबह क़ुबूल फ़रमाई.

(१६) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी, जिन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इंजील के साथ कुफ़्र किया. फिर कुफ़्र में और बढ़े. सैयदे अंबिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन के साथ कुफ़्र किया और एक क़ौल यह है कि यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले तो अपनी किताबों में आपकी नात और विशेषताएं देखकर आप पर ईमान रखते थे और आपके तशरीफ़ लाने के बाद काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और सख़्त हो गए.

(१७) इस हाल में या मरते वक़्त या अगर वह कुफ़्र पर मरे.

पारा तीन समाप्त

(चौथा पारा - लन-तनालु)

सूरए आले इमरान जारी

दसवाँ रुकू

तुम कभी भलाई को न पहुंचोगे जब तक ख़ुदा की राह में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो[1] और तुम जो कुछ ख़र्च करो अल्लाह को मालूम है《९२》 सब खाने बनी इस्राईल को हलाल थे मगर वह जो यअक़ूब ने अपने ऊपर हराम कर लिया था तौरात उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरात लाकर पढ़ो अगर सच्चे हो[2]《९३》 तो उसके बाद जो अल्लाह पर झूठ बांधे[3] तो वही ज़ालिम हैं《९४》 तुम फ़रमाओ अल्लाह सच्चा है तो इब्राहीम के दीन पर चलो[4] जो हर बातिल(असत्य) से अलग थे और शिर्क वालों में न थे《९५》 बेशक सबमें पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे संसार का राहनुमा[5]《९६》 उसमें खुली हुई निशानियां हैं[6] इब्राहीम के खड़े होने की जगह[7] और जो उसमें आए, अम्न में हो[8] और अल्लाह के लिये लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके[9] और जो इन्कारी हो तो अल्लाह सारे संसार से बे परवाह है[10]《९७》

सूरए आले इमरान - दसवाँ रुकू

(१) 'बिर' भलाई से अल्लाह तआला का डर और फ़रमाँबरदारी मुराद है . हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यहाँ ख़र्च करना आम है सारे सदक़ों का, यानी वाजिब हों या नफ़्ल, सब इसमें दाख़िल हैं. हसन का क़ौल है कि जो माल मुसलमानों को मेहबूब हो उसे अल्लाह की रज़ा के लिये ख़र्च करे, वह इस आयत में दाख़िल है, चाहे एक ख़जूर ही हो. (ख़ाज़िन) उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ शकर की बोरियाँ ख़रीद कर सदक़ा करते थे, उनसे कहा गया इसकी क़ीमत ही क्यों नहीं देते. फ़रमाया, शकर मुझे पसन्द है. यह चाहता हूँ कि ख़ुदा की राह में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं.(मदारिक). बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस है कि हज़रत अबू तलहा अन्सारी मदीने में बड़े मालदार थे. उन्हें अपनी जायदाद में बैरहा नाम का बाग़ बहुत प्यारा था. जब यह आयत उतरी तो उन्हों ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में खड़े होकर अर्ज़ किया कि मुझे अपने माल में यह बाग़ सबसे प्यारा है. मैं इसको ख़ुदा की राह में सदक़ा करता हूँ. हुज़ूर ने इसपर ख़ुशी ज़ाहिर की, और हज़रत अबू तलहा ने हुज़ूर की इजाज़त से अपने रिश्तेदारों में उसको तक़सीम कर दिया. हज़रत उमर फ़ारुक़ रदियल्लाहो अन्हो ने अबू मूसा अशअरी को लिखा कि मेरे लिये एक दासी ख़रीद कर भेजो . जब वह आई तो आपको बहुत पसन्द आई, आपने यह आयत पढ़कर अल्लाह के लिये उसे आज़ाद कर दिया.

(२) यहूदियों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि हुज़ूर अपने आपको हज़रत इब्राहीम की मिल्लत पर ख़याल करते हैं, इसके बावुजूद कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ऊंट का दूध और गोश्त नहीं खाते थे, और आप खाते हैं, तो आप हज़रत इब्राहीम की मिल्लत पर कैसे हुए? हुज़ूर ने फ़रमाया कि ये चीज़ें हज़रत इब्राहीम पर हलाल थीं . यहूदी कहने लगे कि ये हज़रत नूह पर भी हराम थीं. और हम तक हराम ही चली आईं. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बताया गया कि यहूदियों का यह दावा ग़लत है, बल्कि ये चीज़ें हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़, व याक़ूब पर हलाल थीं. हज़रत याक़ूब ने किसी वजह से इनको अपने ऊपर हराम फ़रमाया और यह पाबन्दी उनकी औलाद में बाक़ी रही. यहूदियों ने इसका इन्कार किया तो हुज़ूर सल्लेल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तौरात इस मज़मून पर गवाह है, अगर तुम्हें इन्कार है तो तौरात लाओ . इसपर यहूदियों को अपनी बेइज़्ज़ती और रुस्वाई का डर हुआ और वो तौरात न ला सके. उनका झूट ज़ाहिर हो गया और उन्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़ी. इससे साबित हुआ कि पिछली शरीअतों में अहकाम स्थगित होते थे. इसमें यहूदियों का रद है जो स्थगन के क़ायल न थे. हुज़ूर सैयदे आलम उम्मी थे, यानी ज़ाहिर में पढ़े लिखे न थे. इसके बावुजूद यहूदियों को तौरात से इल्ज़ाम देना और तौरात में लिखी बातों के आधार पर अपनी बात प्रमाणित करना आपका चमत्कार और आपके नबी होने की दलील है. और इससे आपके ख़ुदादाद ग़ैबी इल्म

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖۗ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो, अल्लाह की आयतें क्यों नहीं मानते[११] और तुम्हारे काम अल्लाह के सामने हैं﴾९८﴿ तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यों अल्लाह की राह से रोकते हो[१२] उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम ख़ुद उसपर गवाह हो[१३] और अल्लाह तुम्हारे कौतुकों से बेख़बर नहीं﴾९९﴿ ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ किताबियों के कहे पर चले तो वो तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें काफ़िरों पर छोड़ेंगे[१४]﴾१००﴿ और तुम किस तरह कुफ़्र करोगे तुमपर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उसका रसूल तशरीफ़ लाया और जिसने अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वह सीधी राह दिखाया गया﴾१०१﴿

ग्यारहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और कभी न मरना मगर मुसलमान﴾१०२﴿ और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो[१] सब मिलकर और आपस में फट न जाना[२] और अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था उसने तुम्हारे दिलों में

का पता चलता है.

(३) और कहे कि इब्राहीम की मिल्लत में ऊंट के गोश्त और दूध को अल्लाह तआला ने हराम किया था.

(४) कि वह इस्लाम और दीने मुहम्मदी है.

(५) यहूदियों ने मुसलमानों से कहा था कि बैतुल मक़दिस हमारा क़िबला है, काबे से अफ़ज़ल और इससे पहला है, नबियों की हिजरत की जगह और इबादत का क़िबला है. मुसलमानों ने कहा कि काबा अफ़ज़ल है. इसपर यह आयत उतरी और इसमें बताया गया कि सबसे पहला मकान जिसको अल्लाह तआला ने ताअत और इबादत के लिये मुक़र्रर किया, नमाज़ का क़िबला और हज और तवाफ़ का केन्द्र बनाया, जिसमें नेकियों के सवाब ज़्यादा होते हैं, वह काबए मुअज़्ज़मा है, जो मक्का शहर में स्थित है. हदीस शरीफ़ में है कि काबए मुअज़्ज़मा बैतुल मक़दिस से चालीस साल पहले बनाया गया.

(६) जो इसकी पाकी और फ़ज़ीलत के प्रमाण हैं. इन निशानियों में से कुछ ये हैं कि चिड़ियाँ काबा शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठतीं और इसके ऊपर से होकर नहीं उड़तीं बल्कि उड़ती हुई आती हैं तो इधर उधर हट जाती हैं, और जो चिड़ियाँ बीमार हो जाती हैं वो अपना इलाज यही करती हैं कि काबे की हवा में होकर गुज़र जाएं, इसी से उनको अच्छाई हो जाती है. और वहशी जानवर एक दूसरे को हरम में तकलीफ़ नहीं पहुँचाते, यहाँ तक कि कुत्ते इस ज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहाँ शिकार नहीं करते. और लोगों के दिल काबे की तरफ़ खिंचते हैं और उसकी तरफ़ नज़र करने से आँसू जारी होते हैं और हर जुमे की रात वलियों की रूहें इसके चारों तरफ़ हाज़िर होती हैं और जो कोई इसके निरादर और अपमान का इरादा करता है, बर्बाद हो जाता है. इन्हीं आयतों में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरह वो चीज़ें हैं जिनका आयत में बयान किया गया है. (मदारिक, ख़ाज़िन व तफ़सीरे अहमदी)

(७) मक़ामे इब्राहीम वह पत्थर है जिसपर हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम काबा शरीफ़ के निर्माण के वक़्त खड़े होते थे और इसमें आपके क़दमों के निशान थे जो इतनी सदियाँ गुज़र जाने के बाद आज भी बाक़ी हैं .

(८) यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति क़त्ल करके हरम में दाख़िल हो तो वहाँ न उसको क़त्ल किया जाए, न उसपर हद क़ायम की जाए. हज़रत उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उसको हाथ न लगाऊं यहाँ तक कि वह वहां से बाहर आए.

(९) इस आयत में हज फ़र्ज़ होने का बयान है और इसका कि हज करने की क्षमता या ताक़त शर्त है. हदीस शरीफ़ में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इसकी तफ़सीर *ज़ाद* और *राहिला* से फ़रमाई. *ज़ाद* यानी तोशा, ख़ाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़द्र होना चाहिये कि जाकर वापिस आने तक के लिये काफ़ी हो और यह वापसी के वक़्त तक बाल बच्चों के नफ़्क़े यानी आजीविका के अलावा होना चाहिये. रास्ते का सुरक्षित होना भी ज़रूरी है क्योंकि उसके बग़ैर क्षमता साबित नहीं होती.

(१०) इससे अल्लाह तआला का क्रोध ज़ाहिर होता है और यह मसअला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़तई का इन्कार करने वाला

فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ
مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ
يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾ يَوْمَ
تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾ وَأَمَّا
الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ ۖ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾

मिलाप कर दिया तो उसके फ़ज़्ल से तुम आपस में भाई हो गए[३] और तुम एक दोज़ख़ के ग़ार के किनारे पर थे[४] तो उसने तुम्हें उससे बचा दिया[५] अल्लाह तुमसे यूंही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ (१०३) और तुम में एक दल ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुराई से मना करें[६] और यही मुराद को पहुंचे[७] (१०४) और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उनमे फूट पड़ गई[८] बाद इसके कि रौशन निशानियां उन्हें आचुकी थीं[९] और उनके लिये बड़ा अज़ाब है (१०५) जिस दिन कुछ मुंह उजाले होंगे और कुछ मुंह काले तो वो जिनके मुंह काले हुए[१०] क्या तुम ईमान लाकर काफ़िर हुए[११] तो अब अज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला (१०६) और वो जिनके मुंह उजाले हुए[१२] वो अल्लाह की रहमत में हैं वो हमेशा उसमें रहेंगे (१०७) ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुमपर पढ़ते हैं और अल्लाह संसार वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता[१३] (१०८)

काफ़िर है.

(११) जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सच्चे नबी होने को प्रमाणित करती है.

(१२) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटला कर और आपकी तारीफ़ और विशेषताएं छुपाकर, जो तौरात में बयान की गई हैं.

(१३) कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ तौरात में लिखी हुई है और अल्लाह को जो दीन प्रिय है वह इस्लाम ही है.

(१४) औस और ख़ज़रज के क़बीलों में पहले बड़ी दुश्मनी थी और मुद्दतों उनमें जंग जारी रही. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े में इन क़बीलों के लोग इस्लाम लाकर आपस में दोस्त बने . एक दिन वो एक बैठक में प्यार महब्बत की बातें कर रहे थे. शास बिन क़ैस यहूदी जो इस्लाम का बड़ा दुश्मन था, उस तरफ़ से गुज़रा और उनके आपसी मेल मिलाप को देख कर जल गया, और कहने लगा कि जब ये लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या ठिकाना है. एक जवान को मुक़र्रर किया कि उनकी बैठक में बैठकर उनकी पिछली लड़ाइयों का ज़िक्र छेड़े और उस ज़माने में हर एक क़बीला जो अपनी तारीफ़ और दूसरों की आलोचना में शेर लिखता था, पढ़े. चुनांचे उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उसकी शरारत और भड़काने से दोनों क़बीलों के लोग गुस्से में आगए और हथियार उठा लिये. क़रीब था कि क़त्ल ख़ून शुरू हो जाए, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह ख़बर पाकर मुहाजिरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ इस्लामी जमाअत, यह क्या जिहालत की हरकतें हैं. मैं तुम्हारे बीच हूँ . अल्लाह ने तुम को इस्लाम की इज़्ज़त दी, जिहालत की बला से निजात दी, तुम्हारे बीच उल्फ़त और महब्बत डाली, तुम फिर कुफ़्र के ज़माने की तरफ़ लौटते हो. हुज़ूर के इरशाद ने उनके दिलों पर असर किया और उन्होंने समझा कि यह शैतान का धोखा और दुश्मन का कपट था. उन्होंने हाथों से हथियार फ़ेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ फ़रमाँबरदारी के साथ चले आए, उनके बारे में यह आयत उतरी.

सूरए आले इमरान - ग्यारहवाँ रुकू

(१) ''हब्लिल्लाह'' यानी अल्लाह की रस्सी की व्याख्या में मुफ़स्सिरों के कुछ क़ौल हैं. कुछ कहते हैं इससे क़ुरआन मुराद है. मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में आया कि क़ुरआन पाक अल्लाह की रस्सी है, जिसने इसका अनुकरण किया वह हिदायत पर है, जिसने इसे छोड़ा वह गुमराही पर है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ''हब्लिल्लाह'' से जमाअत मुराद है और फ़रमाया कि तुम जमाअत को लाज़िम करो कि वह हब्लिल्लाह है, जिसको मज़बूती से थामने का हुक्म दिया गया है.

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ
لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۗ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾
لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۚ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
الْاَدْبَارَ ۟ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ
مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً ۚ مِنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

منزل ١

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों का पलटना है﴾१०९﴿

बारहवाँ रूकू

तुम बेहतर हो(१) उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते(२) तो उनका भला था उनमें कुछ मुसलमान हैं(३) और ज़्यादा काफ़िर﴾११०﴿ वो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर यही सताना(४) और अगर तुमसे लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे(५) फिर उनकी मदद न होगी﴾१११﴿ उनपर जमा दी गई ख़्वारी (ज़िल्लत) जहां हों अमान न पाएं(६) मगर अल्लाह की डोर(७) और आदमियों की डोर से(८) और अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) के सज़ावार (हक़दार) हुए और उनपर जमा दी गई मोहताजी(९) यह इसलिये कि वो अल्लाह की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते यह इसलिये कि नाफ़रमांबरदार और सरकश (बाग़ी) थे﴾११२﴿ एक से नहीं, किताबियों में कुछ वो हैं कि हक़ पर क़ायम हैं(१०) अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में

(२) जैसे कि यहूदी और ईसाई अलग अलग हो गए . इस आयत में उन कामों और हरकतों को मना किया गया है जो मुसलमानों के बीच फूट का कारण बनें . मुसलमानों का तरीक़ा अहले सुन्नत का मज़हब है, इसके सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में फूट डालना है जिससे मना किया गया है.

(३) और इस्लाम की बदौलत दुश्मनी से दूर होकर आपस में दीनी महब्बत पैदा हुई यहाँ तक कि औस और ख़ज़रज की वह मशहूर लड़ाई जो एकसौ बीस साल से जारी थी और उसके कारण रात दिन क़त्ल का बाज़ार गर्म रहता था, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़रिये अल्लाह तआला ने मिटा दी और जंग की आग ठंडी कर दी गई और युद्ध-ग्रस्त क़बीलों के बीच प्यार, दोस्ती और महब्बत की भावना पैदा कर दी.

(४) यानी कुफ़्र की हालत में, कि अगर उसी हाल में मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते.

(५) ईमान की दौलत अता करके.

(६) इस आयत से जायज़ काम किये जाने और नाजायज़ कामों से अलग रहने की अनिवार्यता और बहुमत तथा सहमति को मानने की दलील दी गई.

(७) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म देना और बुराइयों से रोकना बेहतरीन जिहाद है.

(८) जैसा कि यहूदी और ईसाई आपस में विरोधी हुए और उनमें एक दूसरे के साथ दुश्मनी पक्की हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम इस्लाम से पहले जिहालत के दौर में अलग अलग थे. तुम्हारे बीच शत्रुता थी. इस आयत में मुसलमानों को आपस में एक रहने का हुक्म दिया गया और मतभेद और उसके कारण पैदा करने से मना किया गया. हदीसों में भी इसकी बहुत ताकीदें आई हैं. और मुसलमानों की जमाअत से अलग होने की सख़्ती से मनाही फ़रमाई गई है. जो फ़िर्क़ा पैदा होता है, इस हुक्म का विरोध करके ही पैदा होता है और मुसलमानों की जमाअत में फूट डालने का जुर्म करता है और हदीस के इरशाद के अनुसार वह शैतान का शिकार है. अल्लाह तआला हमें इससे मेहफ़ूज़ रखे.

(९) और सच्चाई सामने आ चुकी.

(१०) यानी काफ़िर,तो उनसे ज़रूर कहा जाएगा.

(११) इसके मुख़ातब या तो तमाम काफ़िर हैं, उस सूरत में ईमान से मीसाक़ के दिन का ईमान मुराद है, जब अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ. सबने "बला" यानी "बेशक" कहा था और ईमान लाए थे. अब जो दुनिया में काफ़िर हुए तो उनसे फ़रमाया जाता है कि मीसाक़ के दिन ईमान लाने के बाद तुम काफ़िर हो गए . हसन का क़ौल है कि इससे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं जिन्होंने ज़बान से ईमान ज़ाहिर किया था और उनके दिल इन्कारी थे. इकरमा ने कहा कि वो किताब वाले हैं जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले तो हुज़ूर पर ईमान लाए और हुज़ूर के तशरीफ़ लाने के

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ
تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾
مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا
بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۭ وَدُّوْا
مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاۗءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ

और सज्दा करते हैं[११] ﴿११३﴾ अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मना करते हैं[१२] और नेक कामों पर दौड़ते है और ये लोग लायक़ हैं ﴿११४﴾ और वो जो भलाई करें उनका हक़ न मारा जाएगा और अल्लाह को मालूम हैं डर वाले[१३] ﴿११५﴾ वो जो काफ़िर हुए उनके माल और औलाद[१४] उनको अल्लाह से कुछ न बचा लेंगे और वह जहन्नमी हैं उनको हमेशा उसी में रहना[१५] ﴿११६﴾ कहावत उसकी जो इस दुनिया की ज़िन्दगी में[१६] ख़र्च करते हैं उस हवा की सी है जिसमें पाला हो वह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई[१७] और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म न किया हाँ वो ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं ﴿११७﴾ ऐ ईमान वालो, ग़ैरों को अपना राज़दार न बनाओ[१८] वो तुम्हारी बुराई में कमी नहीं करते उनकी आरज़ू है जितनी ईज़ा (कष्ट) तुम्हें पहुंचे बैर उनकी बातों से झलक उठा और

बाद आपका इनकार करके काफ़िर हो गए. एक क़ौल यह है कि इसके मुख़ातब मुर्तद लोग हैं जो इस्लाम लाकर फिर गए और काफ़िर हो गए.

(१२) यानी ईमान वाले कि उस रोज़ अल्लाह के करम से वो ख़ुश होंगे, उनके चेहरे चमकते दमकते होंगे, दाएं बाएं और सामने नूर होगा .

(१३) और किसी को बेजुर्म अज़ाब नहीं देता और किसी नेकी का सवाब कम नहीं करता .

सूरए आले इमरान - बारहवाँ रुकू

(१) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत ! यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद वग़ैरह असहाबे रसूल से कहा, हम तुमसे बढ़कर हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है, जिसकी तुम हमें दावत देते हो. इसपर यह आयत उतरी. तिरमिज़ी की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला मेरी उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं करेगा और अल्लाह तआला का दस्ते रहमत जमाअत पर है, जो जमाअत से अलग हुआ वह दोज़ख़ में गया.

(२) नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.

(३) जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और यहूदियों में से उनके साथी और नजाशी और ईसाइयों में से उनके साथी.

(४) ज़बानी बुरा भला कहने और धमकी वग़ैरह से. यहूदियों में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी, यहूदियों के सरदार उनके दुश्मन हो गए और उन्हें यातनाएं देने की फ़िक्र में रहने लगे। इसपर यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने ईमान लाने वालों को संतुष्ट कर दिया कि ज़बानी बुरा भला कहने के अलावा वो मुसलमानों को कोई कष्ट न पहुंचा सकेंगे. ग़लबा मुसलमानों को ही रहेगा और यहूदियों का अन्त ज़िल्लत और रुस्वाई है.

(५) और तुम्हारे मुक़ाबले की हिम्मत न कर सकेंगे. ये ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही सच साबित हुई.

(६) हमेशा ज़लील ही रहेंगे, इज़्ज़त कभी न पाएंगे. उसका असर है कि आजतक यहूदियों को कहीं की सल्तनत मयस्सर न आई. जहाँ रहे, रिआया और ग़ुलाम ही बन कर रहे.

(७) थाम कर यानी ईमान लाकर.

(८) यानी मुसलमानों की पनाह लेकर और उन्हें जिज़िया देकर.

(९) चुनांचे यहूदी को मालदार होकर भी दिल की दौलत नसीब नहीं होती.

وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ
كُلِّهِ ۚ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا
عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِنْ تَمْسَسْكُمْ
حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ
شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ
مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾ إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ
أَنْ تَفْشَلَا ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَ

منزل١

वो[१९] जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है हमने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अक़्ल हो[२०] (११८) सुनते हो यह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो[२१] और वो तुम्हें नहीं चाहते[२२] और हाल यह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो[२३] और वो जब तुमसे मिलते हैं कहते हैं ईमान लाए[२४] और अकेले हों तो तुमपर उंगलियां चबाएं गुस्से से तुम फ़रमादो कि मर जाओ अपनी घुटन में[२५] अल्लाह ख़ूब जानता है दिलों की बात (११९) तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे[२६] और तुम को बुराई पहुंचे तो उसपर ख़ुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़गारी किये रहो[२७] तो उनका दाँव तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उनके सब काम ख़ुदा के घेरे में हैं (१२०)

तेरहवाँ रूकू

और याद करो ऐ मेहबूब, जब तुम सुबह[१] अपने दौलतख़ाने (मकान) से बाहर आए मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चों पर क़ायम करते[२] और अल्लाह सुनता जानता है (१२१) जब तुममें के दो दलों का इरादा हुआ कि नामर्दी कर जाएं[३] और अल्लाह उनका संभालने वाला है और मुसलमानों का अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये (१२२) और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल

(१०) जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी ईमान लाए तो यहूदी पादरियों ने जलकर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) पर हममें से जो ईमान लाए हैं वो बुरे लोग हैं. अगर बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते. इसपर यह आयत उतरी. अता का क़ौल है कि *"मिन अहलिल किताबे उम्मतुम क़ाइमतुन"* (यानी किताब वालों में कुछ वो हैं कि सत्य पर क़ायम हैं) से चालीस मर्द नजरान वालों के, बत्तीस हबशा के, आठ रोम के मुराद हैं. जो हज़रत ईसा के दीन पर थे. फिर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(११) यानी नमाज़ पढ़ते हैं, इससे या तो इशा की नमाज़ मुराद है जो किताब वाले नहीं पढ़ते या तहज्जुद की नमाज़ .

(१२) और दीन में ख़राबी नहीं लाते .

(१३) यहूदियों ने अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों से कहा था कि तुम इस्लाम क़ुबूल कर के टोटे में पड़े तो अल्लाह तआला ने उन्हें ख़बर दी कि वो ऊंचे दर्जों के हक़दार हुए और अपनी नेकियों का इनाम पाएंगे . यहूदियों की बकवास बेहूदा है.

(१४) जिनपर उन्हें बहुत नाज़ और गर्व है .

(१५) यह आयत बनी क़ुरैज़ा और नुज़ैर के बारे में उतरी. यहूदियों के सरदारों ने रियासत और माल हासिल करने की ग़रज़ से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी की थी. अल्लाह तआला ने इस आयत में इरशाद फ़रमाया कि उनके माल और औलाद कुछ काम न आएंगे. वो रसूल की दुश्मनी में नाहक़ अपनी आक़िबत ख़राब कर रहे हैं. एक क़ौल यह भी है कि यह आयत क़ुरैश के मुश्रिकों के बारे में उतरी क्योंकि अबू जहल को अपनी दौलत और माल पर बड़ा घमण्ड था, और अबू सुफ़ियान ने बद्र और उहद में मुश्रिकों पर बहुत माल ख़र्च किया था. एक क़ौल यह है कि यह आयत सारे काफ़िरों के बारें में आई है, उन सब को बताया गया कि माल और औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अल्लाह के अज़ाब से बचने वाला नहीं.

(१६) मुफ़स्सिरों का कहना है कि इससे यहूदियों का वह ख़र्च मुराद है जो अपने आलिमों और सरदारों पर करते थे. एक क़ौल यह है कि काफ़िरों के सारे नफ़क़ात और सदक़ात मुराद हैं. एक क़ौल यह है कि रियाकार का ख़र्च करना मुराद है. क्योंकि इन सब लोगों का ख़र्च करना या दुनियावी नफ़े के लिये होगा या आख़िरत के फ़ायदे के लिये. अगर केवल दुनियावी नफ़े के लिये हो, तो आख़िरत और अल्लाह की ख़ुशी मक़सूद ही नहीं होती, उसका अमल दिखावे और ज़ाहिर के लिये होना है. ऐसे अमल का आख़िरत में क्या नफ़ा. और क़ाफ़िर के सारे कर्म अकारत हैं. वह अगर आख़िरत की नियत से भी ख़र्च करे तो नफ़ा नहीं पा सकता. उन लोगों के लिये वह मिसाल बिल्कुल पूरी उतरती है जो आयत में बयान की जाती है.

(१७) यानी जिस तरह कि बरफ़ानी हवा खेती को बर्बाद कर देती है उसी तरह कुफ़्र इन्फ़ाक़ यानी दान को बातिल कर देता है.

(१८) उनसे दोस्ती न करो . महब्बत के तअल्लुक़ात न रखो, वो भरोसे के क़ाबिल नहीं हैं. कुछ मुसलमान यहूदियों से रिश्तेदारी

اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾
اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ
رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾
بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ
هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾
لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ
يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

बेसरोसामान थे[४] तो अल्लाह से डरो कहीं तुम शुक्रगुज़ार हो﴾१२३﴿ जब ऐ मेहबूब, तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें यह क़ाफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर﴾१२४﴿ हां क्यों नहीं अगर तुम सब्र और तक़वा करो और उसी दम तुमपर आ पड़ें तो तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़रिश्ते निशान वाले भेजेगा[५]﴾१२५﴿ और यह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी ख़ुशी के लिये और इसीलिये कि इससे तुम्हारे दिलों को चैन मिले[६] और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाले के पास से[७]﴾१२६﴿ इसलिये कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे[८] या उन्हें ज़लील करे कि नामुराद फिर जाएं﴾१२७﴿ यह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ (शक्ति) दे या उनपर अज़ाब करे कि वो ज़ालिम हैं﴾१२८﴿ और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब करे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान﴾१२९﴿

और दोस्ती और पड़ोस वग़ैरह के सम्बन्धों की बुनियाद पर मेल जोल रखते थे, उनके हक़ में यह आयत उतरी. काफ़िरों से दोस्ती और महब्बत करना और उन्हें अपना बनाना नाजायज़ और मना है.

(१९) ग़ुस्सा और दुश्मनी .

(२०) तो उनसे दोस्ती न करो .

(२१) रिश्तेदारी और दोस्ती वग़ैरह सम्बन्धों के आधार पर .

(२२) और दीनी मतभेद की बुनियाद पर तुम से दुश्मनी रखते हैं .

(२३) और वो तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते .

(२४) यह मुनाफ़िक़ों यानी दोग़ली प्रवृत्ति वालों का हाल है .

(२५) ऐ हसद करने वाले, मर जा ताकि तेरा रंज दूर हो सके, क्योंकि हसद की तकलीफ़ सिवाय मौत के और कोई दूर नहीं कर सकता .

(२६) और इसपर वो दुखी हों .

(२७) और उनसे दोस्ती और महब्बत न करो . इस आयत से मालूम हुआ कि दुश्मन के मुक़ाबले में सब्र और तक़वा काम आता है .

सूरए आले इमरान - तेरहवाँ रूकू

(१) मदीनए तैय्यिबह में उहद के इरादे से .

(२) सभी मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि बद्र की जंग में हारने के बाद काफ़िरों को बड़ा दुख था इसलिये उन्होंने बदला लेने के लिये एक बड़ा लश्कर इकट्ठा करके चढ़ाई की. जब रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर मिली कि काफ़िरों की फ़ौज उहद में उतरी है तो आपने सहाबा से सलाह की. इस बैठक में अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इससे पहले कभी किसी सलाह के लिये बुलाया न गया था. अक्सर अन्सार की और इस अब्दुल्लाह की यह राय हुई कि हुज़ूर मदीनए तैय्यिबह में ही क़ायम रहें और जब काफ़िर यहाँ आएं तब उनसे मुक़ाबला किया जाए. यही सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मर्ज़ी थी, लेकिन कुछ सहाबा की राय यह हुई कि मदीनए तैय्यिबह से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्होंने ज़ोर दिया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने मकान में तशरीफ़ ले गये और हथियार लगाकर बाहर तशरीफ़ लाए. अब हुज़ूर को देखकर सहाबा को शर्मिन्दगी हुई और उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और उसपर ज़ोर देना हमारी ग़लती थी, इसे माफ़ फ़रमाया जाए और जो सरकार की मर्ज़ी हो वही किया जाए . हुज़ूर ने फ़रमाया कि नबी के लिये अच्छा नहीं कि हथियार पहन कर जंग से पहले उतार दे. मुश्रिक फ़ौज उहद में बुध/जुमेरात को पहुंची थी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ وَ اتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ
لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ
لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ
الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَ الْعَافِیْنَ
عَنِ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ وَ الَّذِیْنَ
اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا
اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَ مَنْ یَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۫ وَ لَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا
وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓىِٕكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ
مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

चौदहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो, सूद दूना दून न खाओ[1] और अल्लाह से डरो इस उम्मीद पर कि भलाई मिले《१३०》 और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तैयार रखी है[2]《१३१》 और अल्लाह व रसूल के फ़रमाँबरदार रहो[3] इस उम्मीद पर कि तुम रहम किये जाओ《१३२》 और दौड़ो[4] अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ान में सब आसमान व ज़मीन आजाएं[5] परहेज़गारों के लिये तैयार रखी है[6]《१३३》 वो जो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं खुशी में और रंज में[7] और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दरगुज़र(क्षमा) करने वाले और नेक लोग अल्लाह के मेहबूब हैं《१३४》 और वो कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें[8] अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें[9] और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझकर अड़ न जाएं《१३५》 ऐसों को बदला उनके रब की बख़्शिश और जन्नते हैं[10] जिनके नीचे नेहरें जारी हमेशा उनमें रहें और

वसल्लम जुमे के दिन नमाज़े जुमा के बाद एक अन्सारी के जनाज़े की नमाज़ पढ़कर रवाना हुए और पन्द्रह शव्वाल सन तीन हिजरी इतवार के दिन उहद में पहुंचे. यहाँ आप और आपके साथी उतरे और पहाड़ का एक दर्रा जो इस्लामी लश्कर के पीछे था, उस तरफ़ से डर था कि किसी वक्त दुश्मन पीछे से आकर हमला करे, इसलिये हुज़ूर ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहाँ लगाया और फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तरफ़ से हमला करे तो तीरों की बारिश करके उसको भगा दिया जाए और हुक्म दिया कि कुछ भी हो जाए, यहाँ से न हटना और इस जगह को न छोड़ना, चाहे जीत हो या हार. अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़, जिसने मदीनए तैय्यिबह में रहकर जंग करने की राय दी थी, अपनी राय के ख़िलाफ़ किये जाने की वजह से क्रुद्ध हुआ और कहने लगा कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नई उम्र के लड़कों का कहना माना और मेरी बात की परवाह नहीं की. इस अब्दुल्लाह बिन उबई के साथ तीन सौ मुनाफ़िक़ थे उनसे उसने कहा, जब दुश्मन इस्लामी लश्कर के सामने आजाए उस वक्त भाग पड़ना ताकि इस्लामी लश्कर तितर बितर हो जाए और तुम्हें देखकर और लोग भी भाग निकलें. मुसलमानों के लश्कर की कुल संख्या इन मुनाफ़िक़ों समेत एक हज़ार थी और मुश्रिकों की तादाद तीन हज़ार. मुक़ाबला शुरु होते ही अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ मुनाफ़िक़ साथियों को लेकर भाग निकला और हुज़ूर के सात सौ सहाबा हुज़ूर के साथ रह गए. अल्लाह तआला ने उनको साबित क़दम रखा, यहाँ तक कि मुश्रिकों को पराजय हुई. अब सहाबा भागते हुए मुश्रिकों के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जहां क़ायम रहने के लिये फ़रमाया, वहाँ क़ायम न रहे तो अल्लाह तआला ने उन्हें यह दिखाया कि बद्र में अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी की बरक्त से जीत हुई थी, यहाँ हुज़ूर के हुक्म का विरोध करने का नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने मुश्रिकों के दिल से डर और दहशत दूर फ़रमादी और वो पलट पड़े और मुसलमानों को परास्त होना पड़ा. रसूले करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एक जमाअत रही, जिसमें अबूबक्र व अली व अब्बास व तलहा व सअद थे. इसी जंग में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक दांत शहीद हुए और चेहरे पर ज़ख़्म आया. इसी के सम्बन्ध में यह आयत उतरी.

(३) ये दोनों समुदाय अन्सार में से थे, एक बनी सलाम ख़ज़रज में से और एक बनी हारिस औस में से. ये दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो इन्हों ने भी जाने का इरादा किया. अल्लाह तआला ने करम किया और इन्हें इससे मेहफ़ूज़ रखा और वो हुज़ूर के साथ डटे रहे यहाँ उस नेअमत और एहसान का ज़िक्र फ़रमाया है.

(४) तुम्हारी तादाद भी कम थी, तुम्हारे पास हथियारों और सवारों की भी कमी थी.

(५) चुनांचे ईमान वालों ने बद्र के दिन सब्र और तक़्वा से काम लिया . अल्लाह तआला ने वादे के मुताबिक़ पांच हज़ार फ़रिश्तों की मदद भेजी और मुसलमानों की विजय और काफ़िरों की पराजय हुई.

(६) और दुश्मन की बहुतात और अपनी अल्पसंख्या से परेशानी और बेचैनी न हो .

(७) तो चाहिये कि बन्दा उस ज़ात पर नज़र रखे जो हाजतमन्द को उसकी हाजत की पूर्ति के साधन उपलब्ध कराता है. यानी अल्लाह तआला. और उसीपर भरोसा रखे.

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ ھٰذَا
بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَھُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُھَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاۗءَ ۭ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ
وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ
مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

अमल करने वालों का क्या अच्छा नेग है[११] ﴾१३६﴿ तुमसे पहले कुछ तरीक़े बर्ताव में आचुके हैं[१२] तो ज़मीन में चलकर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का[१३] ﴾१३७﴿ यह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है ﴾१३८﴿ और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ[१४] तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो ﴾१३९﴿ अगर तुम्हें[१५] कोई तकलीफ़ पहुंची तो वो लोग भी वैसी ही तकलीफ़ पा चुके हैं[१६] और ये दिन हैं जिनमें हमने लोगों के लिये बारियां रखी हैं[१७] और इसलिये कि अल्लाह पहचान करादे ईमान वालों की[१८] और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मरतबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को ﴾१४०﴿ और इसलिये कि अल्लाह मुसलमानों का निखार करदे[१९] और काफ़िरों को मिटा दे[२०] ﴾१४१﴿ क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों (धर्मयौद्धाओं) का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़मायश की[२१] ﴾१४२﴿ और तुम तो मौत की तमन्ना किया करते थे उसके मिलने से पहले[२२] तो अब वह तुम्हें नज़र आई आँखों के सामने ﴾१४३﴿

(८) इस तरह कि उनके बड़े बड़े सरदार क़त्ल हों और गिरफ़्तार किये जाएं जैसा कि बद्र में पेश आया.

सूरए आले इमरान - चौदहवाँ रूकू

(१) इस आयत में सूद की मनाही फ़रमाई गई और उस ज़ियादती पर फटकारा गया जो उस ज़माने में प्रचलित थी कि जब मीआद आ जाती थी और क़र्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ल न होती तो क़र्ज़ देने वाला माल ज़्यादा करके मुद्दत बढ़ा देता और ऐसा बार बार करते, जैसा कि इस मुल्क के सूद ख़ोर करते हैं और उसको सूद दर सूद कहते हैं. इससे साबित हुआ कि बड़े गुनाह से आदमी ईमान से बाहर नहीं हो जाता.

(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, इसमें ईमान वालों को हिदायत है कि सूद वग़ैरह जो चीज़ें अल्लाह तआला ने हराम फ़रमाईं उनको हलाल न जानें क्योंकि स्पष्ट (क़तई) हराम को हलाल जानना कुफ़्र है.

(३) कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण अल्लाह की फ़रमाँबरदारी है और रसूल की नाफ़रमानी करने वाला अल्लाह का फ़रमाँबरदार नहीं हो सकता.

(४) तौबह और फ़र्ज़ों की अदायगी और फ़रमाँबरदारी और कर्म निष्ठा अपना कर.

(५) यह जन्नत के फैलाव का बयान है, इस तरह कि लोग समझ सकें क्योंकि उन्होंने सबसे वसीअ लम्बी चौड़ी जो चीज़ देखी है वह आसमान व ज़मीन ही है. इससे वो अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आसमान और ज़मीन के दर्जे दर्जे और परत परत बनाकर जोड़ दिये जाएं और सबका एक परत कर दिया जाए, इससे जन्नत के अरज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी विस्तृत है. हिरक़िल बादशाह ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की ये वुसअत अर्थात फैलाव है कि आसमान और ज़मीन उसमें आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहाँ है . हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया, सुब्हानल्लाह, जब दिन आता है तो रात कहाँ होती है. इस बात का अर्थ अत्यन्त गहरा है. ज़ाहिरी पहलू यह है कि आसमान की चाल से एक दिशा में दिन हासिल होता है तो उसकी विपरीत दिशा में रात होती है . इसी तरह जन्नत ऊपर की दिशा में है और दोज़ख़ नीचे की तरफ़ है. यहूदियों ने यही सवाल हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से किया था, तो आपने भी यही जवाब दिया था. इसपर उन्होंने कहा कि तौरात में भी इसी तरह समझाया गया है. मानी ये हैं कि अल्लाह की क़ुदरत और इख़्तियार से कुछ दूर नहीं, जिस चीज़ को जहाँ चाहे रखे. यह इन्सान की तंगनज़री है कि किसी चीज़ का विस्तार और फैसला देखकर हैरान होता है और पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहाँ समाएगी. हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हो से पूछा गया कि जन्नत आसमान में है या ज़मीन में. फ़रमाया, कौन सी ज़मीन और कौन सा असमान है जिसमें जन्नत समा सके. अर्ज किया गया फिर कहां है, फ़रमाया आसमानों

के ऊपर, अर्श के नीचे.

(६) इस आयत और इस से ऊपर की आयत *"वत्तकुन्नारल्लती उईद्दत लिलकाफ़िरीन"* से साबित हुआ कि जन्नत दोज़ख़ पैदा हो चुकीं, मौजूद हैं .

(७) यानी हर हाल में ख़र्च करते हैं . बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ख़र्च करो, तुमपर ख़र्च किया जाएगा, यानी ख़ुदा की राह में दो, तुम्हें अल्लाह की रहमत से मिलेगा .

(८) यानी उनसे कोई बड़ा या छोटा गुनाह सरज़द हो .

(९) और तौबह करें और गुनाह से बाज़ आएं और आइन्दा के लिए इस से दूर रहने का पक्का निश्चय करें कि यह क़ुबूल की जाने वाली तौबह की शर्तों में से है .

(१०) ख़जूर बेचने वाले तैहान के पास एक सुंदर औरत खजूर ख़रीदने आई. उसने कहा ये खजूरें तो अच्छी नहीं हैं, ऊमदा ख़ूजूरें मकान के अन्दर हैं. इस बहाने से उसको मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुंह चूम लिया. औरत ने कहा ख़ुदा से डर. यह सुनते ही उसको छोड़ दिया और शर्मिन्दा हुआ. और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर हाल अर्ज़ किया. इस पर यह आयत *"वल्लज़ीना इज़ा फ़अलू"* (और वो कि जब करें) उतरी. एक क़ौल यह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों में महब्बत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था. सक़फ़ी जिहाद में गया और अपने मकान की देखरेख अपने भाई अन्सारी के सुपुर्द कर गया. एक रोज़ अन्सारी गोश्त लाया. जब सक़फ़ी की औरत ने गोश्त लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो अन्सारी ने उसका हाथ चूम लिया और चूमते ही उसको सख़्त पछतावा और शर्मीन्दगी हुई और वह जंगल में निकल गया, अपने सर पर ख़ाक डाली और मुंह पर तमांचे मारे . जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उसने अपनी बीवी से अन्सारी का हाल पूछा. उसने कहा ख़ुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और फिर सारी घटना बताई. अन्सारी पहाड़ों में रोता तौबह करता था. सक़फ़ी उसको तलाश करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में लाया, उसके बारे में यह आयत उतरी.

(११) यानी फ़रमाँबरदारों के लिये बेहतर बदला है .

(१२) पिछली उम्मतों के साथ जिन्होंने दुनिया के लालच और इसकी लज़्ज़तों की तलब में नबियों रसूलों का विरोध किया . अल्लाह तआला ने उन्हें मोहलतें दीं, फिर भी वो सीधी राह पर न आए, तो उन्हें हलाक व बर्बाद कर दिया.

(१३) ताकि तुम सबक़ हासिल करो .

(१४) उसका जो उहद की जंग में पेश आया .

(१५) उहद की जंग में .

(१६) बद्र की लड़ाई में, इसके बावुजूद उन्होंने दुस्साहस या कम-हिम्मती नहीं की और उनसे मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती और कम-हिम्मती न चाहिये .

(१७) कभी किसी की बारी है, कभी किसी की .

(१८) सब्र और महब्बत के साथ, कि उनको परिश्रम और नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और उनके पाँव डगमगा नहीं सकते.

(१९) और उन्हें गुनाहों से पाक कर दे .

(२०) यानी काफ़िरों से जो मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुंचती हैं वो तो मुसलमानों के लिये शहादत और पाकीज़गी है, और मुसलमान जो काफ़िरों को क़त्ल करें तो यह काफ़िरों की बर्बादी और उनका उन्मूलन यानी जड़ से उखाड़ फैंकना है .

(२१) कि अल्लाह की रज़ा के लिये कैसे ज़ख़्म खाते और तकलीफ़ उठाते हैं, इससे उनपर कोप है जो उहद के दिन काफ़िरों के मुक़ाबले से भागे .

(२२) जब बद्र के शहीदों के दर्जे और मरतबे और उनपर अल्लाह तआला के इनाम और अहसान बयान फ़रमा दिये गए, तो जो मुसलमान वहाँ हाज़िर न थे उन्हें हसरत हुई और उन्हों ने आरज़ू की काश किसी जिहाद में उन्हें हाज़िरी नसीब हो जाए और शहादत के दर्जे मिलें . उन्हीं लोगो ने हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उहद पर जाने के लिये आग्रह किया था . उनके बारे में यह आयत उतरी .

تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ
عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ
يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا
مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى
الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ
اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

منزل ۱

पंद्रहवाँ रूकू

और मुहम्मद तो एक रसूल हैं[१] उनसे पहले और रसूल हो चुके[२] तो क्या वो इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पाँव फिर जाओगे और जो उल्टे पाँव फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा और जल्द ही अल्लाह शुक्र वालों को सिला(इनाम) देगा[३]﴿१४४﴾ और कोई जान ख़ुदा के हुक्म के बिना नहीं मर सकती[४] सब का वक़्त लिखा रखा है[५] और जो दुनिया का ईनाम चाहे[६] हम उसमें से उसे दें और जो आख़िरत का ईनाम चाहे, हम उसमें से उसे दें[७] और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अता करें﴿१४५﴾ और कितने ही नबियों ने जिहाद किया उसके साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो सुस्त न पड़े उन मुसीबतों में जो अल्लाह की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे[८] और सब्र वाले अल्लाह को मेहबूब हैं﴿१४६﴾ और वो कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ के[९] कि ऐ रब हमारे बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़्यादतियाँ हमने अपने काम में कीं[१०] और हमारे क़दम जमा दे और हमें काफ़िर लोगों पर मदद दे[११]﴿१४७﴾

सूरए आले इमरान - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) और रसूलों के भेजे जाने का उद्देश्य रिसालत की तबलीग़ और हुज्जत का लाज़िम कर देना है, न कि अपनी क़ौम के बीच हमेशा मौजूद रहना .

(२) और उनके मानने वाले उनके बाद उनके दीन पर बाक़ी रहे. उहद की लड़ाई में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शहीद हो गए और शैतान ने यह झूटी अफ़वाह मशहूर की तो सहाबा को बहुत बेचैनी हुई और उनमें से कुछ लोग भाग निकले. फिर जब पुकार लगाई गई कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ रखते हैं तो सहाबा की एक जमाअत वापस आई. हुज़ूर ने उन्हें इस तरह भाग जाने पर बुरा भला कहा. उन्हों ने अर्ज़ किया कि हमारे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों, आपकी शहादत की ख़बर सुनकर हमारे दिल टूट गए और हमसे ठहरा न गया. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि नबियों के बाद भी उम्मतों पर उनके दीन का अनुकरण लाज़िम रहता है. तो अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का पालन और उसकी हिमायत लाज़िम रहती.

(३) जो न फिरे और अपने दीन पर जमा रहे. उनको *शुक्र करने वाले* फ़रमाया क्योंकि उन्होंने अपने डटे रहने से इस्लाम की नेअमत का शुक्र अदा किया. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो फ़रमाते थे कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो शुक्र करने वालों के अमीन हैं.

(४) इसमें जिहाद की तरग़ीब है, और मुसलमानों को दुश्मन के मुक़ाबले पर बहादुर बनाया जाता है कि कोई व्यक्ति अल्लाह के हुक्म के बिना मर नहीं सकता, चाहे वो मौत के मुंह में घुस जाए . और जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती .

(५) इससे आगे पीछे नहीं हो सकता.

(६) और उसको अपने अमल और फ़रमाँबरदारी से दुनिया के फ़ायदे की तलब हो .

(७) इससे साबित हुआ कि नियत पर सारा आधार है, जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में आया है .

(८) ऐसा ही ईमानदार को चाहिये .

(९) यानी दीन की हिमायत और जंग के मैदान में उनकी ज़बान पर कोई ऐसा शब्द न आता जिसमें घबराहट या परेशानी या डगमगाहट का शुबह भी होता, बल्कि वह दृढ़ संकल्प के साथ डटे रहते और दुआ करते .

(१०) यानी तमाम छोटे बड़े गुनाह, इसके बावुजूद कि वो लोग अल्लाह से डरने वाले थे फिर भी गुनाहों का अपनी तरफ़ जोड़ना उनकी विनीति, इन्किसारी और नम्रता और बन्दगी के अदब में से है .

(११) इससे यह मसअला मालूम हुआ कि हाजत तलब करने से पहले तौबह इस्तिग़फ़ार दुआ के तरीक़ों में से है .

الْكٰفِرِيْنَ ۞ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۞ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۞ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ

منزل ١

तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया का ईनाम दिया[१२] और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी[१३] और नेकी वो अल्लाह को प्यारे हैं﴿१४८﴾

सोलहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो ! अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले[१] तो वो तुम्हें उल्टे पाँव लौटा देंगे[२] फिर टोटा खाके पलट जाओगे[३]﴿१४९﴾ बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और वह सबसे बेहतर मददगार﴿१५०﴾ कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिल में रोब(भय) डालेंगे[४] कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ठहराया जिस पर उसने कोई समझ न उतारी उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा ठिकाना नाइन्साफ़ों का﴿१५१﴾ और बेशक अल्लाह ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वादा जबकि तुम उसके हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल करते थे[५] यहां तक कि जब तुमने बुज़दिली या कायरता की और हुक्म में झगड़ा डाला[६] और नाफ़रमानी की[७] बाद इसके कि अल्लाह तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात[८] तुम में कोई दुनिया चाहता था[९] और तुम में कोई आख़िरत चाहता था[१०] फिर तुम्हारा मुंह उनसे फेर दिया कि तुम्हें आज़माए[११] और बेशक उसने तुम्हें माफ़ कर दिया और अल्लाह मुसलमानों पर फ़ज़्ल करता है﴿१५२﴾

(१२) यानी विजय और कामयाबी और दुश्मनों पर ग़लबा .
(१३) मग़फ़िरत और जन्नत और जितना हक़ बनता है, उससे कहीं ज़्यादा इनआम .

सूरए आले इमरान - सोलहवाँ रूकू

(१) चाहे वो यहूदी और ईसाई हों या मुनाफ़िक़ और मुश्रिक .
(२) कुफ़्र और बेदीनी की तरफ़.
(३) इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमानों पर लाज़िम है कि वो काफ़िरों से अलग रहें और हरगिज़ उनकी राय और सलाह पर अमल न करें और उनके कहे पर न चलें .
(४) उहद की लड़ाई से वापस होकर जब अबू सुफ़ियान वग़ैरह अपने लश्कर वालों के साथ मक्कए मुकर्रमा की तरफ रवाना हुए तो उन्हें इसपर अफ़सोस हुआ कि हमने मुसलमानों को बिल्कुल ख़त्म क्यों न कर डाला . आपस में सलाह करके इसपर तैयार हुए कि चलकर उन्हें ख़त्म कर दें. जब यह इरादा पक्का हुआ तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाला और उन्हें डर हुआ और वो मक्कए मुकर्रमा ही की तरफ़ वापस हो गए. अगरचे कारण तो विशेष था लेकिन रोब तमाम काफ़िरों के दिलों में डाल दिया गया कि दुनिया के सारे काफ़िर मुसलमानों से डरते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम सारे धर्मों पर ग़ालिब है.
(५) उहद की लड़ाई में .
(६) काफ़िरों की पराजय के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ जो तीर अंदाज़ थे वो कहने लगे कि मुश्रिकों को पराजय हो चुकी, अब यहाँ ठहरकर क्या करें. चलो कुछ लूट का माल हासिल करने की कोशिश करें. कुछ ने कहा कि अपनी जगह मत छोड़ो. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह क़ायम रहना, किसी हाल में जगह मत छोड़ना, जब तक मेरा हुक्म न आए. मगर लोग लूट के माल के लिये चल पड़े और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से कम साथी रह गए.
(७) कि मरकज़ छोड़ दिया और लूट का माल हासिल करने में लग गए.
(८) यानी काफ़िरों की पराजय.
(९) जो मरकज़ छोड़ कर लूट के लिये चल दिया.
(१०) जो अपने सरदार अब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ अपनी जगह पर क़ायम रहकर शहीद हो गया.
(११) और मुसीबतों पर तुम्हारे सब्र करने और डटे रहने की परीक्षा हो.

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُنَ
عَلَىٰ أَحَدٍ وَّالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرٰىكُمْ
فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ
وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾ ثُمَّ
أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا
يَّغْشٰى طَائِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۗ
يَقُولُونَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ
الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّٰهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَّا لَا
يُبْدُونَ لَكَ ۗ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۗ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۚ
وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअत में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे[१२] तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया[१३] और माफ़ी इसलिये सुनाई कि जो हाथ से गया और जो उफ़ताद (मुसीबत) पड़ी उसका रंज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है (१५३) फिर तुम पर ग़म के बाद चैन की नींद उतारी[१४] कि तुम्हारी एक जमाअत को घेरे थी[१५] और एक दल को[१६] अपनी जान की पड़ी थी[१७] अल्लाह पर बेजा गुमान करते थे[१८] जाहिलियत या अज्ञानता के से गुमान, कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार (अधिकार) है तुम फ़रमादो कि इख़्तियार तो सारा अल्लाह का है[१९] अपने दिलों में छुपाते हैं[२०] जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं हमारा कुछ बस होता[२१] तो हम यहां न मारे जाते, तुम फ़रमादो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्लगाहों तक निकल कर आते[२२] और इसलिये कि अल्लाह तुम्हारे सीनों की बात आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों

(१२) कि ख़ुदा के बन्दो, मेरी तरफ़ आओ .

(१३) यानी तुमने जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म की अवहेलना करके आपको दुख पहुंचाया, उसके बदले तुम्हें पराजय के ग़म में डाल दिया.

(१४) जो रोब और डर दिलों में था, उसको अल्लाह तआला ने दूर कर दिया और अम्न और राहत के साथ उनपर नींद उतारी. यहाँ तक कि मुसलमानों को ऊंघ आगई और नींद उनपर छा गई . हज़रत अबू तलहा फ़रमाते हैं कि उहद के दिन नींद हमपर छा गई, हम मैदान में थे, तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी . फिर उठाते थे, फिर छूट जाती थी.

(१५) और वह जमाअत सच्चे ईमान वालों की थी.

(१६) जो दोग़ली प्रवृत्ति के यानी मुनाफ़िक़ थे.

(१७) और वो ख़ौफ़ से परेशान थे. अल्लाह तआला ने वहाँ ईमान वालों को मुनाफ़िक़ों से इस तरह अलग किया था कि ईमान वालों पर तो अम्न और इत्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक़ डर और दहशत में अपनी जानों के भय से परेशान थे. और यह खुली निशानी और साफ़ चमत्कार था.

(१८) यानी मुनाफ़िक़ों को यह गुमान हो रहा था कि अल्लाह तआला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद न फ़रमाएगा, या यह कि हुज़ूर शहीद हो गए . अब आपका दीन बाक़ी न रहेगा.

(१९) विजय और कामयाबी, मौत और ज़िन्दगी सब उसके हाथ है.

(२०) मुनाफ़िक़ अपना कुफ़्र और अल्लाह के वादे में अपना संदेह करना और जिहाद में मुसलमानों के चले आने पर पछताना.

(२१) और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते, मुसलमानों के साथ मक्के वालों से लड़ाई के लिये न आते और हमारे सरदार न मारे जाते . पहले क़ौल का क़ायल अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ है और इस क़ौल का क़ायल मुअत्तब बिन क़ुशैर.

(२२) और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता, क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से जो लिख गया है उसके सामने तदबीर और बहाना बेकार है.

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ
اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ
وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ
كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا
قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَ
اللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ
اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ

में है[२३] उसे खोल दे और अल्लाह दिलों की बात ख़ूब जानता है[२४]﴾१५४﴿ बेशक वो जो तुम में से फिर गए[२५] जिस दिन दोनों फौज़ें मिली थीं उन्हें शैतान ही ने लग़ज़िश(भुलावा) दी उनके कुछ कर्मों के कारण[२६] और बेशक अल्लाह ने उन्हें माफ़ फ़रमाद दिया बेशक अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म(सहिष्णुता) वाला है﴾१५५﴿

सत्तरहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो, इन काफ़िरों[१] की तरह न होना जिन्होंने अपने भाइयों की निस्बत कहा जब वो सफ़र या जिहाद को गए[२] कि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते इसलिये कि अल्लाह उनके दिलों में उसका अफ़सोस रखे और अल्लाह जिलाता और मारता है[३] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है﴾१५६﴿ और बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ[४] तो अल्लाह की बख़्शिश(इनाम) और रहमत[५] उनके सारे धन दौलत से बेहतर है﴾१५७﴿ और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो अल्लाह की तरफ़ उठना है [६]﴾१५८﴿ तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ मेहबूब, तुम उनके लिये नर्म दिल

(२३) इख़्लास या दोग़लापन.
(२४) उससे कुछ छुपा नहीं और यह आज़माइश दूसरों को ख़बरदार करने के लिये है.
(२५) और उहद की लड़ाई में भाग गए और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ तेरह या चौदह सहाबा के सिवा कोई बाक़ी न रहा.
(२६) कि उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म के विपरीत अपनी जगह छोड़ी.

सूरए आले इमरान - सत्तरहवाँ रूकू

(१) यानी इब्ने उबई वग़ैरह दोग़ली प्रवृत्ति वाले लोग .
(२) और इस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए .
(३) मौत और ज़िन्दगी उसी के इख़्तियार में है, चाहे तो मुसाफ़िर और ग़ाज़ी को सलामत लाए और सुरक्षित घर में बैठे हुए को मौत दे. उन मुनाफ़िक़ों के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है. और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है. और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वह मौत घर की मौत से कहीं ज़्यादा अच्छी है, लिहाज़ा मुनाफ़िक़ों का यह क़ौल बातिल और ख़ाली धोखा है. और उनका मक़सद मुसलमानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना है, जैसा कि अगली आयत में इरशाद होता है.
(४) और मान लो वह सूरत पेश ही आजाती है जिसका तुम्हें डर दिलाया जाता है.
(५) जो ख़ुदा की राह में मरने पर हासिल होती है.
(६) यहाँ बन्दगी के दर्जों में से तीनों दर्जों का बयान फ़रमाया गया . पहला दर्जा तो यह है कि बन्दा दोज़ख़ के डर से अल्लाह की इबादत करे, तो उसको दोज़ख़ के अज़ाब से अम्न दिया जाता है. इसकी तरफ़ *''लमग़फ़िरतुम मिनल्लाह''* (तो अल्लाह की बख़्शिश) में इशारा है. दूसरी क़िस्म वो बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में अल्लाह की इबादत करते हैं, इस की तरफ़ *''व-रहमतुन''* (और रहमत) में इशारा है, क्योंकि रहमत भी जन्नत का एक नाम है. तीसरी क़िस्म वह मुख़्लिस बन्दे हैं जो अल्लाह के इश्क़ और उसकी पाक ज़ात से महब्बत में उसकी इबादत करते हैं और उनका लक्ष्य उसकी ज़ात के सिवा और कुछ नहीं है. उन्हें अल्लाह तआला अपने करम के दायरे में अपनी तजल्ली या प्रकाश से नवाज़ेगा. इसकी तरफ़ *''ल इलल्लाहे तोहशरून''* (तो अल्लाह की तरफ़ उठना है) में इशारा है.

لَا نْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝ إِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّغُلَّ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهِ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

हुए(७) और अगर तुन्दमिज़ाज(क्रुद्ध स्वभाव) सख़्त दिल होते(८) तो वो ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान होजाते तो तुम उन्हें माफ़ फ़रमाओ और उनकी शफ़ाअत करो(९) और कामों में उनसे मशवरा लो(१०) और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो(११) बेशक तवक्कुल (भरोसा करने) वाले अल्लाह को प्यारे हैं(१५९) और अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता(१२) और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर तुम्हारी मदद करे और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये(१६०) और किसी नबी पर ये गुमान नहीं हो सकता कि वह कुछ छुपा रखे(१३) और जो छुपा रखे वह क़यामत के दिन अपनी छुपाई हुई चीज़ लेकर आएगा फिर हर जान को उनकी कमाई भरपूर दी जाएगी और उनपर ज़ुल्म न होगा(१६१) तो क्या जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला(१४) वह उस जैसा होगा जिसने अल्लाह का ग़ज़ब(प्रकोप) ओढ़ा(१५) और उसका ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की(१६२) वो अल्लाह के यहाँ दर्जा दर्जा हैं(१६) और अल्लाह उनके काम देखता है(१६३) बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ(१७) मुसलमानों पर कि उनमें उन्हीं में से(१८) एक रसूल(१९) भेजा जो उनपर उसकी आयतें पढ़ता है(२०) और उन्हें पाक करता

(७) और आपके मिज़ाज में इस दर्जा लुत्फ़ व करम और मेहरबानी और रहमत हुई कि उहद के दिन ग़ुस्सा न फ़रमाया.

(८) और सख़्ती और दबाव से काम लेते.

(९) ताकि अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़रमाए.

(१०) कि इसमें उनका दिल रखना भी है और सत्कार भी, और यह फ़ायदा भी कि सलाह व मशवरा सुन्नत हो जाएगा और आयन्दा उम्मत इससे नफ़ा उठाती रहेगी. मशवरा के मानी हैं कि काम में राय लेना. इससे इज्तिहाद का जायज़ होना और क़यास का तर्क होना साबित होता है. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(११) तवक्कुल के मानी हैं अल्लाह तआला पर भरोसा करना और कामों को उसके हवाले कर देना. उदेश्य यह है कि बन्दे का भरोसा तमाम कामों में अल्लाह पर होना चाहिये. इससे मालूम हुआ कि मशवरा तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है.

(१२) और अल्लाह की मदद वही पाता है जो अपनी शक्ति और ताक़त पर भरोसा नहीं करता, बल्कि अल्लाह तआला की क़ुदरत और रहमत का अभिलाषी रहता है .

(१३) क्योंकि यह नबुव्वत यानी नबी होने की शान के ख़िलाफ़ है और सारे नबी मासूम हैं. उन से ऐसा संभव नहीं. न वही (देव वाणी) में न ग़ैर वही में. और जो कोई व्यक्ति कुछ छुपा रखे उसका हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है .

(१४) और उसकी आज्ञा की अवहेलना से बचा जैसे कि मुहाजिर और अन्सार और उम्मत के नेक लोग.

(१५) यानी अल्लाह का नाफ़रमान हुआ जैसे कि दोग़ली प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक़ और काफ़िर.

(१६) हर एक का दर्जा और उसका स्थान अलग, नेक का अलग, बुरे का अलग.

(१७) मन्नत बड़ी नेअमत को कहते हैं और बेशक सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का रसूल बनकर तशरीफ़ लाना एक बड़ी नेअमत है, क्योंकि आदमी की पैदायश जिहालत, नासमझी और कम अक़्ली पर है तो अल्लाह तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनमें भेज कर उन्हें गुमराही से रिहाई दी और हुज़ूर की बदौलत उन्हें दृष्टि प्रदान करके जिहालत या अज्ञानता से निकाला और आपके सदक़े में सीधी सच्ची राह दिखाई . और आपके तुफ़ैल में अनगिनत नेअमतें अता कीं.

(१८) यानी उनके हाल पर मेहरबानी और अनुकम्पा फ़रमाने वाला और उनके लिये गौरव और इज़्ज़त का कारण, जिसकी पाकबाज़ी, सच्चाई, ईमानदारी और सदव्यवहार से वो परिचित हैं.

(१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(२०) और उसकी किताब क़ुरआने मजीद उनको सुनाता है, इसके बावुजूद कि उनके कान पहले कभी अल्लाह के कलाम या देववाणी से परिचित न हुए थे.

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾
أَوَلَمَّا أَصَٰبَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا
قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا أَصَٰبَكُمْ يَوْمَ
الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
قَٰتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ
قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَٰكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ
مِنْهُمْ لِلْإِيمَٰنِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَٰهِهِم مَّا لَيْسَ
فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ
قَالُوا لِإِخْوَٰنِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ
قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ
صَٰدِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ

منزل ١

है[२१] और उन्हें किताब व हिकमत (बोध) सिखाता है[२२] और वो ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही में थे[२३] ﴾१६४﴿ क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[२४] कि उससे दूनी तुम पहुंचा चुके हो[२५] तो कहने लगो कि ये कहाँ से आई[२६] तुम फ़रमादो कि वह तुम्हारी ही तरफ़ से आई[२७] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है ﴾१६५﴿ और वह मुसीबत जो तुम पर आई[२८] जिस दिन दो फौजें[२९] मिली थीं वह अल्लाह के हुक्म से थी और इसलिये कि पहचान करादे ईमान वालों की ﴾१६६﴿ और इसलिये कि पहचान करा दे उनकी जो मुनाफ़िक़ (दोग़ले) हुए[३०] और उनसे[३१] कहा गया कि आओ[३२] अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ[३३] बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और इस दिन ज़ाहिरी ईमान के मुक़ाबले में खुले कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब हैं अपने मुंह से कहते हैं जो उनके दिल में नहीं और अल्लाह को मालूम है जो छुपा रहे हैं[३४] ﴾१६७﴿ वो जिन्होंने अपने भाइयों के बारे[३५] में कहा और आप बैठ रहे कि वो हमारा कहा मानते[३६] तो न मारे जाते तुम फ़रमाओ तो अपनी ही मौत टाल दो अगर सच्चे हो[३७] ﴾१६८﴿ और जो अल्लाह की राह में मारे गए[३८] कभी उन्हें मुर्दा ख़याल न करना बल्कि वो अपने रब के

(२१) कुफ़्र और गुमराही और गुनाहों की प्रवृत्ति और दुर्व्यवहार और बुरी आदतों से.
(२२) और नफ़्स की, जानने और अमल करने, दोनों क्षमताओं को सम्पूर्ण करता है.
(२३) कि सत्य और असत्य, भलाई और बुराई में पहचान न रखते थे, और जिहालत और दिल के अंधेपन में गिरफ़्तार थे.
(२४) जैसी कि उहद की लड़ाई में पहुंची कि तुम में से सत्तर क़त्ल हुए.
(२५) बद्र में कि तुम ने सत्तर को क़त्ल किया, सत्तर को बन्दी बनाया.
(२६) और क्यों पहुंची जब कि हम मुसलमान हैं और हममें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मौजूद हैं.
(२७) कि तुम ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मदीनए तैय्यिबह से बाहर निकल कर जंग करने पर ज़ोर दिया फिर वहाँ पहुंचने के बाद हुज़ूर के सख़्त मना फ़रमाने के बावुजूद लूट के माल के लिये अपनी जगह छोड़ी . यह कारण तुम्हारे क़त्ल और पराजय का हुआ.
(२८) उहद में.
(२९) ईमान वालों और मुश्रिकों की .
(३०) यानी ईमान वाले और दोग़ली प्रवृति वाले यानी मुनाफ़िक़ छिक गए.
(३१) यानी अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल वग़ैरह मुनाफ़िक़ों से.
(३२) मुसलमानों की संख्या बढ़ाओ, दीन की हिफ़ाज़त के लिये.
(३३) अपने घर और माल को बचाने के लिये.
(३४) यानी दोहरी प्रवृत्ति, ज़बान पर कुछ, दिल में कुछ.
(३५) यानी उहद के शहीद जो वंश के हिसाब से उनके भाई थे. उनके हक़ में अब्दुल्लाह बिन उबई वग़ैरह मुनाफ़िक़ों ने .
(३६) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में न जाते या वहाँ से फिर आते.
(३७) रिवायत है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ों ने यह बात कही, उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए .
(३८) अक्सर मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि यह आयत उहद के शहीदों के बारे में उतरा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे भाई उहद में शहीद हुए, अल्लाह तआला ने उनकी रूहों को हरी चिड़ियों के जिस्म अता फ़रमाए, वो जन्नती नेहरों पर सैर करते फिरते हैं, जन्नती मेवे खाते हैं. जब उन्होंने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐश पाए, तो कहा कि हमारे भाइयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वो जन्नत से बेरग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें. अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा. फिर यह आयत उतरी (अबू दाऊद). इससे साबित हुआ कि रूहें बाक़ी हैं, जिस्म के नष्ट होने के साथ नष्ट नहीं होतीं.

اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۙ
فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ
بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۘ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ
مِنْ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ
النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ
فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ
سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ

पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं[३९] ﴿१६९﴾ शाद (प्रसन्न) हैं उसपर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) से दिया[४०] और खुशियाँ मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उनसे न मिले[४१] कि उनपर न कुछ अन्देशा (डर) है और न कुछ ग़म ﴿१७०﴾ ख़ुशियाँ मनाते हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल की और यह कि अल्लाह ज़ाया (नष्ट) नहीं करता अज्र (इनाम) मुसलमानों का[४२] ﴿१७१﴾

अठ्ठारहवाँ रूकू

वो जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर हाज़िर हुए बाद इसके कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था[१] उनके निकोकारों (सदाचारी) और परहेज़गारों के लिये बड़ा सवाब है ﴿१७२﴾ वो जिनसे लोगों ने कहा[२] कि लोगों ने[३] तुम्हारे लिये जत्था जोड़ा तो उनसे डरो तो उनका ईमान और ज़्यादा हुआ और बोले अल्लाह हमको बस है ﴿१७३﴾ और क्या अच्छा कारसाज़ (काम बनाने वाला)[४] तो पलटे अल्लाह के एहसान और फ़ज़्ल से[५] कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची और अल्लाह की ख़ुशी पर चले[६] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है[७] ﴿१७४﴾ वह तो शैतान ही है कि अपने दोस्तों से धमकाता है[८] तो उनसे न डरो[९] और मुझसे डरो अगर ईमान रखते हो[१०] ﴿१७५﴾ और ऐ मेहबूब, तुम उनका कुछ ग़म न

(३९) और ज़िन्दों की तरह ख़ाते पीते ऐश करते हैं. आयत की पृष्ठभूमि इस बात को ज़ाहिर करती है कि ज़िन्दगी रूह और जिस्म दोनों के लिये है. उलमा ने फ़रमाया कि शहीदों के जिस्म क़ब्रों में मेहफ़ूज़ रहते हैं. मिट्टी उनको नुक़सान नहीं पहुंचाती और सहाबा के ज़माने में और उसके बाद अक्सर यह देखा गया है कि अगर कभी शहीदों की क़ब्रें खुल गई तो उनके जिस्म ताज़ा पाए गए. (ख़ाज़िन वग़ैरह).

(४०) फ़ज़्ल और करामत और इनाम व एहसान, मौत के बाद ज़िन्दगी दी, अपना मुक़र्रब यानी प्रिय किया, जन्नत का रिज़्क़ और उसकी नेअमतें अता फ़रमाईं, और इन मंज़िलों के हासिल करने के लिये शहादत की तौफ़ीक़ दी .

(४१) और दुनिया में ईमान और तक़वा पर हैं, जब शहीद होंगे, उनके साथ मिलेंगे और क़यामत के दिन अम्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे .

(४२) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है, हुज़ूर ने फ़रमाया, जिस किसी को ख़ुदा की राह में ज़ख़्म लगा वह क़यामत के दिन वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था. उसके ख़ून की ख़ुशबू कस्तूरी की होगी और रंग ख़ून का. तिरमिज़ी और नसाई की हदीस में है कि शहीद को क़त्ल से तकलीफ़ नहीं होती, मगर ऐसी जैसे किसी को एक ख़राश लगे. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है शहीद के सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं, सिवाय क़र्ज़ के.

सूरए आले इमरान - अठारहवाँ रूकू

(१) उहद की लड़ाई से निपटने के बाद जब अबू सुफ़ियान अपने साथियों के हमराह रोहा मक़ाम पर पहुंचे तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि वो वापस क्यों आगए, मुसलमानों का बिल्कुल ख़ात्मा ही क्यों न कर दिया. यह ख़याल करके उन्होंने फिर वापस होने का इरादा किया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अबू सुफ़ियान के पीछे अपनी रवानगी का ऐलान फ़रमा दिया. सहाबा की एक जमाअत, जिनकी तादाद सत्तर थी, और जो उहद की लड़ाई के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे, हुज़ूर के ऐलान पर हाज़िर हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस जमाअत को लेकर अबू सुफ़ियान के पीछे रवाना हो गए. जब हुज़ूर हमराउल असद स्थान पर पहुंचे, जो मदीने से आठ मील है, वहाँ मालूम हुआ कि मुश्रिक डर कर भाग गए, इस घटना के बारे में यह आयत उतरी.

(२) यानी नुऐम बिन मसऊद अशजई ने .

(३) यानी अबू सुफ़ियान वग़ैरह मुश्रिकों ने .

(४) उहद की लड़ाई से वापस हुए अबू सुफ़ियान ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आपकी बद्र में लड़ाई होगी. हुज़ूर ने उनके जवाब में फ़रमाया, इन्शा-अल्लाह. जब वह वक़्त आया और अबू सुफ़ियान मक्का वालों को

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ۗ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[11] वो अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उनका कोई हिस्सा न रखे[12] और उनके लिये बड़ा अज़ाब है(१७६) वो जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया[13] अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है(१७७) और कभी काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वो जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उनके लिये भला है हम तो इसीलिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह बढ़ें[14] और उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है(१७८) अल्लाह मुसलमानों को इस हाल पर छोड़ने का नहीं जिसपर तुम हो[15] जब तक जुदा न कर दे गन्दे को[16] सुथरे से[17] और अल्लाह की शान यह नहीं ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे[18] तो ईमान लाओ[19] अल्लाह और उसके रसूलों पर और अगर ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है(१७९) और जो बुख़्ल(कंजूसी) करते हैं[20] उस चीज़ में जो अल्लाह ने

लेकर जंग के लिये रवाना हुए तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में डर डाला और उन्होंने वापस हो जाने का इरादा किया. इस मौक़े पर अबू सुफ़ियान की नुएम बिन मसऊद अशजई से मुलाक़ात हुई जो उमरा करने आया था. अबू सुफ़ियान ने कहा कि ऐ नुएम इस ज़माने में मेरी लड़ाई बद्र में मुहम्मद के साथ हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब यह मालूम होता है कि मैं जंग में न जाऊं, वापस हो जाऊं. तू मदीने जा और तदबीर के साथ मुसलमानों को जंग के मैदान में जाने से रोक, इसके बदले में मैं तुझे दस ऊंट दूंगा. नुएम ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसलमान जंग की तैयारी कर रहे हैं. उनसे कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो . मक्का वालों ने तुम्हारे लिये बड़ी फ़ौजें जमा की हैं. ख़ुदा की क़सम तुम में से एक भी फिर कर न आएगा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो. फिर हुज़ूर सत्तर सवारों को साथ लेकर *"हस्बुनल्लाहो व नेमल वकील"* पढ़ते हुए रवाना हुए. बद्र में पहुंचे, वहाँ आठ रात क़याम किया. तिजारत का माल साथ था, उसको फ़रोख़्त किया, ख़ूब नफ़ा हुआ और सलामती के साथ मदीने वापस हुए, जंग नहीं हुई क्योंकि अबू सुफ़ियान और मक्का वाले डर कर मक्का को लौट गए थे. इस घटना के सम्बन्ध में यह आयत उतरी.

(५) अम्न और आफ़ियत के साथ तिजारत का मुनाफ़ा हासिल करके .

(६) और दुश्मन के मुक़ाबले के लिये हिम्मत से निकले और जिहाद का सवाब पाया .

(७) कि उसने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी और जिहाद की तैयारी की तौफ़ीक़ दी और मुश्रिकों के दिलों में डर डाल दिया कि वो मुक़ाबले की हिम्मत न कर सके और रास्ते से ही लौट गए.

(८) और मुसलमानों को मुश्रिकों की बड़ी संख्या से डराते हैं जैसा कि नुएम बिन मसऊद अशजई ने किया.

(९) यानी मुनाफ़िक़ और मुश्रिक जो शैतान के दोस्त हैं, उनका ख़ौफ़ न करो.

(१०) क्योंकि ईमान का तक़ाज़ा ही यह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो.

(११) चाहे वो क़ुरैश के काफ़िर हों या मुनाफ़िक़ या यहूदियों के सरदार या अधर्मी, वो आपके मुक़ाबले के लिये कितने ही लश्कर जमा करें, कामयाब न होंगे.

(१२) इसमें क़दरिय्या और मोअतज़िला का रद है, और आयत इसपर दलील है कि अच्छाई और बुराई अल्लाह के इरादे से है.

(१३) यानी मुनाफ़िक़ जो ईमान का कलिमा पढ़ने के बाद काफ़िर हुए या वो लोग जो ईमान की क्षमता रखने के बावुजूद काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए.

(१४) सच्चाई से दुश्मनी और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विरोध करके . हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दर्याफ़्त किया गया, कौन शख़्स अच्छा है . फ़रमाया जिसकी उम्र लम्बी हो और कर्म नेक हों . अर्ज़ किया गया और बदतर कौन है . फ़रमाया, जिसकी उम्र लम्बी हो और कर्म ख़राब.

(१५) ऐ इस्लाम का कलिमा पढ़ने वालो !

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَ
اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ
قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾
اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ
لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ
قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ
قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾
فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वह उनके लिये बुरा है जल्द ही वह जिसमें बुख़्ल किया था क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा[२१] और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का[२२] और अल्लाह तुम्हारे कामों का ख़बरदार है (१८०)

उन्नीसवाँ रूकू

बेशक अल्लाह ने सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी (मालदार)[१] और अब हम लिख रखेंगे उनका कहा[२] और नबियों को उनका नाहक़ शहीद करना[३] और फ़रमाएंगे कि चखो आग का अज़ाब (१८१) यह बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता (१८२) वो जो कहते हैं अल्लाह ने हमसे इक़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब ऐसी क़ुरबानी का हुक्म न लाएं जिसे आग खाए[४] तुम फ़रमादो मुझसे पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां और यह हुक्म लेकर आए जो तुम कहते हो फिर तुमने उन्हें क्यों शहीद किया अगर सच्चे हो[५] (१८३) तो ऐ मेहबूब, अगर वो तुम्हारी तकज़ीब करते हैं या तुम्हें झुटलाते हैं तो तुमसे अगले रसूलों को भी झुटलाया गया है

(१६) यानी मुनाफ़िक़ को.

(१७) सच्चे पक्के ईमान वाले से, यहाँ तक कि अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तुम्हारे अहवाल पर सूचित करके मूमिन और मुनाफ़िक़ हर एक को अलग कर दे . रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि सृष्टि के बनाने से पहले मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी. उसी वक़्त वह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश किये गये, जैसे कि हज़रत आदम पर पेश किये गए थे. और मुझे इल्म दिया गया, कौन मुझ पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा. यह ख़बर जब मुनाफ़िक़ों को पहुंची तो उन्हों ने मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में कहा कि मुहम्मद का गुमान है कि वो यह जानते है कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए, उनमें से कौन उनपर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा, इसके बावुजूद कि हम उनके साथ हैं और वो हमें नहीं पहचानते. इसपर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मिम्बर पर क़याम फ़रमाकर अल्लाह तआला की हम्द और तारीफ़ बयान करने के बाद फ़रमाया, उन लोगों का क्या हाल है जो मेरे इल्म पर ज़बान रखते हैं. आज से क़यामत तक जो कुछ होने वाला है उसमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझसे सवाल करो और मैं तुम्हें उसकी ख़बर न दे दूँ. अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े होकर कहा कि मेरा बाप कौन है या रसूलल्लाह ? फ़रमाया हुज़ाफ़ा. फिर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो खड़े हुए, उन्होंने फ़रमाया या रसूलल्लाह हम अल्लाह के मअबूद और रब होने पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए, आपके नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप से माफ़ी चाहते हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया क्या तुम बाज़ आओगे, क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी. इस हदीस से साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़यामत तक की तमाम चीज़ों का इल्म अता किया गया है और हुज़ूर के इल्मे ग़ैब पर ज़बान खोलना मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा है.

(१८) तो उन बुज़ुर्गी वाले रसूलों को आज्ञात का ज्ञान यानी ग़ैब देता है. और सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के हबीब, रसूलों में सबसे बुज़ुर्गी वाले और बलन्द है. इस आयत से और इसके सिवा कई आयतों और हदीसों से साबित है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ग़ैब के इल्म अता फ़रमाए. और अज्ञात का यह ज्ञान आपका चमत्कार है.

(१९) और तस्दीक़ करो कि अल्लाह ने अपने बुज़ुर्गी वाले रसूलों को ग़ैब पर सूचित किया है.

(२०) बुख़्ल के मानी में अकसर आलिम इस तरफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल यानी कंजूसी है. इसीलिये बुख़्ल पर सख़्त फटकारें आई हैं. चुनांचे इस आयत में भी एक फटकार आ रही है . तिरमिज़ी की हदीस में है, बुख़्ल और दुर्व्यवहार ये दो आदतें ईमानदार में जमा नहीं होतीं. अकसर मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यहाँ बुख़्ल यानी कंजूसी से ज़कात न देने का तात्पर्य है.

(२१) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि जिसको अल्लाह ने माल दिया और उसने ज़कात अदा न की, क़यामत के दिन वह माल साँप बनकर उसके गले में हार की तरह लिपटेगा और यह कहकर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ.

(२२) वही हमेशा रहने वाला, बाक़ी है, और सब मख़्लूक़ फ़ानी . उन सब की मिल्क बातिल होने वाली है. तो निहायत नासमझी है कि इस न ठहरने वाले माल पर कंजूसी की जाए और ख़ुदा की राह में न दिया जाए .

بالبينت والزبر والكتب المنير ۝ كل نفس
ذائقة الموت وانما توفون اجوركم يوم القيمة
فمن زحزح عن النار وادخل الجنة فقد فاز
وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور ۝ لتبلون
في اموالكم وانفسكم ولتسمعن من الذين
اوتوا الكتب من قبلكم ومن الذين اشركوا
اذى كثيرا وان تصبروا وتتقوا فان ذلك
من عزم الامور ۝ واذ اخذ الله ميثاق
الذين اوتوا الكتب لتبيننه للناس ولا
تكتمونه فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به
ثمنا قليلا فبئس ما يشترون ۝ لا تحسبن
الذين يفرحون بما اتوا ويحبون ان يحمدوا
بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب

जो साफ़ निशानियां[६] और सहीफ़े (धर्म ग्रन्थ) और चमकती किताब[७] लेकर आए थे (१८४) हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़यामत ही को पूरे मिलेंगे, जो आग से बचकर जन्नत में दाख़िल किया गया वह मुराद को पहुंचा और दुनिया की ज़िन्दगी तो यही धोखे का माल है[८] (१८५) बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में[९] और बेशक ज़रूर तुम किताब वालों[१०] और मुश्रिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो[११] तो यह बड़ी हिम्मत का काम है (१८६) और याद करो जब अल्लाह ने अहद लिया उनसे जिन्हें किताब दी गई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना[१२] तो उन्होंने उसे अपनी पीठ के पीछे फैंक दिया और उसके बदले ज़लील दाम हासिल किये[१३] तो कितनी बुरी ख़रीदारी है[१४] (१८७) कभी न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उनकी तारीफ़ हो[१५] ऐसों को कभी अज़ाब से दूर न जानना और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब

सूरए आले इमरान - उन्नीसवाँ रूकू

(१) यहूद ने यह आयत *"मन ज़ल्लज़ी युक़रिदुल्लाह क़र्दन हसनन"* (कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ हसना दे) सुनकर कहा था कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मअबूद हम से क़र्ज़ मांगता है तो हम मालदार हुए और वह फ़क़ीर हुआ . इसपर यह आयत उतरी .

(२) अअमाल नामों या कर्म लेखों में .

(३) नबियों के क़त्ल को इस क़ौल के साथ मिला दिये जाने से मालूम होता है कि ये दोनों जुर्म बहुत सख़्त हैं और अपनी ख़राबी में बराबर है, और नबियों की शान में गुस्ताख़ी करने वाला अल्लाह की शान में बेअदब हो जाता है .

(४) यहूदियों की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हमसे तौरात में एहद लिया गया है कि जो नबी होने का दावेदार ऐसी क़ुरबानी न लाए जिसको आसमान से सफ़ेद आग उतर कर खाए, उसपर हरगिज़ हम ईमान न लाएं. इस पर यह आयत उतरी और उनके इस ख़ालिस झूट और छूठे इल्ज़ाम का रद किया गया, क्योंकि इस शर्त का तौरात में कहीं नामो निशान भी नहीं है, और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिये चमत्कार काफ़ी है. कोई भी चमत्कार हो. जब नबी ने कोई चमत्कार दिखाया, उसके नबी होने पर दलील क़ायम हो गई और उसकी तस्दीक़ करना और उसकी नबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया. अब किसी ख़ास चमत्कार पर ज़ोर देना, तर्क पूरा होने के बाद, नबी की तस्दीक़ का इन्कार है.

(५) जब तुमने यह निशानी लाने वाले नबियों को क़त्ल किया और उनपर ईमान न लाए तो साबित हो गया कि तुम्हारा यह दावा झूटा है.

(६) यानी साफ़ खुले चमत्कार .

(७) तौरात और इंजील .

(८) दुनिया की हक़ीक़त इस मुबारक जुमले ने खोल दी . आदमी ज़िन्दगी पर रीझता है, इसी को पूंजी समझता है और इस फ़ुर्सत को बेकार नष्ट करदेता है. अन्तिम समय उसे मालूम होता है कि उस में बक़ा यानी हमेशा की ज़िन्दगी न थी और उसके साथ दिल लगाना हमेशा की ज़िन्दगी और आख़िरत की ज़िन्दगी के लिये सख़्त हानिकारक हुआ. हज़रत सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि दुनिया, दुनिया चाहने वाले के लिये घमण्ड की पूंजी और धोके का माल है, लेकिन आख़िरत चाहने वाले के लिये बाक़ी रहने वाली दौलत हासिल करने का ज़रिया और नफ़ा देने वाली पूंजी है. यह मज़मून इस आयत के ऊपर के वाक्यों से हासिल होता है.

(९) अधिकार और कर्तव्य और नुक़सान और मुसीबतें और बीमारियाँ और ख़तरे और क़त्ल और रंज और ग़म वग़ैरह, ताकि मूमिन और ग़ैर मूमिन में पहचान हो जाए . मुसलमानों को यह सम्बोधन इसलिये फ़रमाया गया कि आने वाली मुसीबतों और सख़्तियों

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾

है﴿१८८﴾ और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही[१६] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (शक्तिमान, समक्ष) है﴿१८९﴾

बीसवाँ रूकू

बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदायश और रात और दिन की आपसी बदलियों में निशानियां हैं[१] अक़्ल वालों के लिये[२]﴿१९०﴾ जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे [३]और आसमानों और ज़मीन की पैदायश में ग़ौर करते हैं[४] ऐ रब हमारे तूने यह बेकार न बनाया[५]. पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाले﴿१९१﴾ ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तूने रूस्वाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं﴿१९२﴾ ऐ रब हमारे हमने एक मुनादी (उदघोषक) को सुना[६] कि ईमान के लिये निदा (घोषणा) फ़रमाता है कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए, ऐं रब हमारे तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां महव फ़रमादे (भुला दे) और हमारी मौत अच्छों के साथ कर[७]﴿१९३﴾ ऐ रब हमारे और हमें दे वह[८] जिस का तूने हमसे वादा किया है अपने रसूलों के ज़रिये और हमें क़यामत के दिन रूस्वा न कर बेशक तू वादा ख़िलाफ़ नहीं करता﴿१९४﴾

पर उन्हें सब्र आसान हो जाए .

(१०) यहूदी और ईसाई .

(११) गुनाहों से .

(१२) अल्लाह तआला ने तौरात और इंजील के विद्वानों पर यह वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत साबित करने वाली जो दलीलें हैं वो लोगों को ख़ूब अच्छी तरह खोल कर समझाएं और हरगिज़ न छुपाएं.

(१३) और रिशवतें लेकर हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुणों और विशेषताओं को छुपाया जो तौरात और इंजील में बयान किये गए थे.

(१४) दीन की जानकारी का छुपाना मना है. हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस व्यक्ति से कुछ पूछा गया जिसको वह जानता है और उसने उसे छुपाया, क़यामत के दिन उसके आग की लगाम लगाई जाएगी . उलमा पर वाजिब है कि अपने इल्म से फ़ायदा पहुंचाएं और सच्चाई ज़ाहिर करें और किसी बुरी ग़रज़ के लिये उसमें से कुछ न छुपाएं.

(१५) यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी जो लोगों को धोखा देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और नादान होने के बावुजूद यह पसन्द करते कि उन्हें आलिम कहा जाए. इस आयत में ख़ुद पसंदी करने वाले पर फिटकार है, और उसके लिये भी जो लोगों से अपने आपको आलिम कहलवाते हैं या इसी तरह और कोई ग़लत विशेषता या गुण अपने लिये पसन्द करते हैं ,उन्हें इससे सबक़ हासिल करना चाहये.

(१६) इसमें उन गुस्ताख़ों का रद है जिन्हों ने कहा था कि अल्लाह फ़क़ीर है.

सूरए आले इमरान - बीसवाँ रूकू

(१) सानेअ यानी निर्माता या विधाता, क़दीम यानी आदि, अलीम यानी जानकार, हकीम यानी हिकमत वाला और क़ादिर यानी शक्ति वाला, अर्थात अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण देने वाली.

(२) जिनकी अक़्ल गन्दे ख़यालों से पाक हो और सृष्टि के चमत्कारों को विश्वास और तर्क की नज़र से देखते हों .

(३) यानी तमाम एहवाल में . मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम मजलिसों में अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते थे . बन्दे का कोई हाल अल्लाह की याद से ख़ाली नहीं होना चाहिये . हदीस शरीफ़ में है, जो जन्नती बाग़ों के फलों का मज़ा लेना चाहे उसे चाहिये कि अल्लाह के ज़िक्र की कसरत यानी ज़ियादती करे .

(४) और इससे उनके बनाने वाले की क़ुदरत और हिकमत पर दलील लाते हैं यह कहते हुए कि ...

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۖ بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ

منزل ١

तो उनकी दुआ सुन ली उनके रब ने कि मैं तुम में काम वाले की मेहनत अकारत नहीं करता मर्द हो या औरत तुम आपस में एक हो[९] तो वो जिन्होंने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं ज़रूर उनके सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिनके नीचे नेहरें बहती हैं[१०] अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास का सवाब है﴿१९५﴾ ऐ सुनने वाले काफ़िरों का शहरों में अहले गहले फिरना कभी तुझे धोखा न दे[११]﴿१९६﴾ थोड़ा बरतना उनका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछौना﴿१९७﴾ लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं उनके लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें अल्लाह की तरफ़ की मेहमानी और जो अल्लाह के पास है वह नेकों के लिये सबसे भला[१२]﴿१९८﴾ और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो उनकी तरफ़ उतरा[१३] उनके दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए[१४] अल्लाह की

(५) बल्कि अपनी पहचान का प्रमाण बनाया .

(६) इस निदा करने वाले या पुकारने वाले से मुराद या सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं, जिनकी शान में *"दाइयन इलल्लाहे बिइज़्निही"* (अल्लाह की तरफ़ बुलाते हैं उसी के हुक्म से) आया है या क़ुरआन शरीफ़ .

(७) नबियों और नेक लोगों के कि हम उनके फ़रमाँबरदारों में दाख़िल किये जाएं .

(८) वह फ़ज़्ल, मेहरबानी और रहमत .

(९) और कर्मों के बदले में औरत व मर्द के बीच कोई अन्तर नहीं. उम्मुल मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मैं हिजरत में औरतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती, यानी मर्दों की फ़ज़ीलतें तो मालूम हुईं लेकिन यह भी मालूम हो कि औरतों को हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा. इस पर यह आयत उतरी और उनकी तसल्ली फ़रमादी गई कि सवाब का आधार कर्म पर है, औरत का हो या मर्द का .

(१०) यह सब अल्लाह का फ़ज़्ल और करम है .

(११) मुसलमानों की एक जमाअत ने कहा कि काफ़िर और मुश्रिक, अल्लाह तआला के दुश्मन तो ऐश व आराम से हैं और हम तंगी और मशक़्क़त में. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि काफ़िरों का यह ऐश थोड़ी देर की पूंजी है और अन्त ख़राब.

(१२) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकान पर हाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि जगत के सरदार एक बोरिये पर आराम फ़रमा हैं, चमड़े का तकिया जिसमें नारियल के रेशे भरे हुए हैं, सरे मुबारक के नीचे है . बदने मुबारक पर बोरिये के निशान आगए हैं. यह हाल देखकर हज़रत फ़ारूक़ रो पड़े. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रोने का कारण पूछा तो अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह क़ैसर और किसरा (रोम और ईरान के बादशाह) तो ऐश और राहत में हों और आप अल्लाह के रसूल होकर इस हालत में. फ़रमाया, क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उनके लिये दुनिया हो और हमारे लिये आख़िरत.

(१३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत नजाशी हबशा के बादशाह के बारे में उतरी. उनकी वफ़ात के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिसने दूसरे मुल्क में वफ़ात पाई है. हुज़ूर बक़ीअ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और हबशा की ज़मीन आपके सामने की गई और नजाशी बादशाह का जनाज़ा पेश नज़र हुआ. उसपर आपने चार तक्बीरों के साथ नमाज़ पढ़ी और उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ की. सुब्हानल्लाह, क्या नज़र है, क्या शान है . हबशा की धरती अरब में सरकार के सामने पेश करदी जाती है. मुनाफ़िक़ों ने इसपर ताना मारा और कहा देखो हबशा के ईसाई पर नमाज़ पढ़ रहे है जिसको आपने कभी देखा ही नहीं और वह आपके दीन पर भी न था . इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी.

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ١٩٩
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۣ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ٢٠٠

سُوْرَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ (٩٢) (٤)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا
رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاۗءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَاۗءَلُوْنَ
بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ١
وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ
بِالطَّيِّبِ ۠ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ۭ
اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا

منزل ١

आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते[१५] ये वो हैं जिनका सवाब(पुण्य) उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है﴾१९९﴿ ऐ ईमान वालो, सब्र करो[१६] और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी(चौकसी) करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो﴾२००﴿

सूरए निसा

सूरए [१] निसा मदीने में उतरी, आयतें १७६, रूकू चौबीस. अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला

पहला रूकू

ऐ लोगो[२] अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया[३] और उसी में उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिये और अल्लाह से डरो जिसके नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो[४] बेशक अल्लाह हर वक़्त तुम्हें देख रहा है﴾१﴿ और यतीमों को उनके माल दो[५] और सुथरे[६] के बदले गन्दा न लो[७] और उनके माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक यह बड़ा गुनाह है﴾२﴿ और अगर तुम्हें डर हो कि

(१४) नम्रता, विनीति, इन्किसारी और ख़ुलूस के साथ.
(१५) जैसा कि यहूदियों के सरदार लेते हैं.
(१६) अपने दीन पर और उसको किसी सख़्ती और तक्लीफ़ वग़ैरह की वजह से न छोड़ो. सब्र के मानी में जुनैद बग़दादी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि सब्र नफ़्स को नागवार और नापसन्दीदा काम पर रोकना है, बग़ैर पछतावे के. कुछ का कहना है कि सब्र की तीन क़िस्में हैं (१) शिकायत का छोड़ देना (२)जो भाग्य मे लिखा है उसे क़ुबूल कर लेना और (३) सच्चे दिल से अल्लाह की रज़ा तलाश करना.

(४) सूरए निसा - पहला रूकू

(१) सूरए निसा मदीनए तैय्यिबह में उतरी, इसमें २४ रूकू, १७६ आयतें, ३०४५ कलिमे और १६०३० अक्षर हैं .
(२) ये सम्बोधन आया है तमाम आदमी की औलाद को .
(३) अबुल बशर हज़रत आदम से, जिनको माँ बाप के बग़ैर मिट्टी से पैदा किया था. इन्सान की पैदाइश के आरम्भ का बयान करके अल्लाह की क़ुदरत की महानता का बयान फ़रमाया गया. अगरचे दुनिया के बेदीन अपनी बेअक़्ली और नासमझी से इसका मज़ाक़ उड़ाते हैं लेकिन समझ वाले और अक़्ल वाले जानते हैं कि ये मज़मून ऐसी ज़बरदस्त बुरहान से साबित है जिसका इन्कार असंभव है. जन गणना का हिसाब बता देता है कि आज से सौ बरस पहले दुनिया में इन्सानों की संख्या आज से बहुत कम थी और इससे सौ बरस पहले और भी कम. तो इस तरह अतीत की तरफ़ चलते चलते इस कमी की हद एक ज़ात क़रार पाएगी या यूँ कहिये कि क़बीलों की बहुसंख्या एक व्यक्ति की तरफ़ ख़त्म हो जाती है. मसलन, सैयद दुनिया में करोड़ों पाए जाएंगे मगर अतीत की तरफ़ उनका अन्त सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक ज़ात पर होगा और बनी इस्राईल कितने भी ज़्यादा हों मगर इस तमाम ज़ियादती का स्रोत हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की एक ज़ात होगी. इसी तरह और ऊपर को चलना शुरू करें तो इन्सान के तमाम समुदायों और क़बीलों का अन्त एक ज़ात पर होगा, उसका नाम अल्लाह की किताबों में आदम अलैहिस्सलाम है और मुमकिन नहीं कि वह एक व्यक्ति मानव उत्पत्ति या इन्सानी पैदायश के मामूली तरीक़े से पैदा हो सके. अगर उसके लिये बाप भी मान लिया जाय तो माँ कहाँ से आए. इसलिये ज़रूरी है कि उसकी पैदायश बग़ैर माँ बाप के हो और जब बग़ैर माँ बाप के पैदा हुआ तो यक़ीनन उन्हीं अनासिर या तत्वों से पैदा होगा जो उसके अस्तित्व या वुजूद में पाए जाते हैं. फिर तत्वों में से वह तत्व उसका ठिकाना हो और जिसके सिवा दूसरे में वह न रह सके, लाज़िम है कि वही उसके वुजूद में ग़ालिब हो इसलिये पैदायश की निस्बत उसी तत्व की तरफ़ की जाएगी. यह भी ज़ाहिर है कि मानव उत्पत्ति का मामूली तरीक़ा एक व्यक्ति से जारी नहीं हो सकता, इसलिये उसके साथ एक और भी हो कि जोड़ा होजाए और वह दूसरा व्यक्ति जो उसके बाद पैदा हो तो हिकमत का तक़ाज़ा यही है कि उसी के जिस्म से

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى
وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۭ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ
شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـــًٔا مَّرِيْٓـــًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا
وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ۝٥ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ
اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ
غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ
بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ
فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ

यतीम (अनाथ) लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे[८] तो निकाह में लाओ जो औरतें तुम्हें ख़ुश आएं दो दो और तीन तीन और चार चार[९] फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें (दासियां) जिनके तुम मालिक हो पर उससे ज़्यादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो[१०] ﴿३﴾ और औरतों को उनके मेहर ख़ुशी से दो[११] फिर अगर वो अपने दिल की ख़ुशी से मेहर में से तुम्हें कुछ दें तो उसे खाओ रचता पचता[१२] ﴿४﴾ और बेअक़्लों को[१३] उनके माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिनको अल्लाह ने तुम्हारी बसर औक़ात (गुज़ारा) किया है और उन्हें उसमें से खिलाओ और पहनाओ और उनसे अच्छी बात कहो[१४] ﴿५﴾ और यतीमों को आज़माते रहो[१५] यहां तक कि जब वह निकाह के क़ाबिल हों तो अगर तुम उनकी समझ ठीक देखो तो उनके माल उन्हें सुपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ हद से बढ़कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएं और जिसे हाजत (आवश्यकता) न हो वह बचता रहे[१६] और जो हाजत वाला हो वह मुनासिब हद तक खाए फिर जब तुम उनके माल उन्हें सुपुर्द करो तो उनपर गवाह करलो और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने को ﴿६﴾ मर्दों के लिये हिस्सा

पैदा किया जाए क्योंकि एक व्यक्ति के पैदा होने से नस्ल तो पैदा हो चुकी मगर यह भी लाज़िम है कि उसकी बनावट पहले इन्सान से साधारण उत्पत्ति के अलावा किसी और तरीक़े से हो, क्योंकि साधारण उत्पत्ति दो के बिना संभव ही नहीं और यहाँ एक ही है. लिहाज़ा अल्लाह की हिकमत ने हज़रत आदम की एक बाईं पसली उनके सोते में निकाली और उससे उनकी बीबी हज़रत हव्वा को पैदा किया . चूंकि हज़रत हव्वा साधारण उत्पत्ति के तरीक़े से पैदा नहीं हुईं इसलिये वह औलाद नहीं हो सकतीं जिस तरह कि इस तरीक़े के ख़िलाफ़ मानव शरीर से बहुत से कीड़े पैदा हुआ करते हैं, वो उसकी औलाद नहीं हो सकते हैं . नींद से जागकर हज़रत आदम ने अपने पास हज़रत हव्वा को देखा तो अपने जैसे दुसरे को पाने की महब्बत दिल में पैदा हुई. उनसे फ़रमाया तुम कौन हो. उन्हों ने अर्ज़ किया औरत. फ़रमाया, किस लिये पैदा की गई हो. अर्ज़ किया आपका दिल बहलाने के लिये. तो आप उनसे मानूस हुए.

(४) उन्हें तोड़ो या काटो मत. हदीस शरीफ़ में है, जो रिज़्क़ में बढ़ौतरी चाहे उसको चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के साथ मेहरबानी से पेश आए और उनके अधिकारों का ख़याल रखे.

(५) एक व्यक्ति की निगरानी में उसके अनाथ भतीजे का बहुत सा माल था. जब वह यतीम बालिग़ हुआ और उसने अपना माल तलब किया तो चचा ने देने से इन्कार कर दिया. इसपर यह आयत उतरी. इसको सुनकर उस व्यक्ति ने यतीम का माल उसके हवाले किया और कहा कि हम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं.

(६) यानी अपने हलाल माल .

(७) यतीम का माल जो तुम्हारे लिये हराम है, उसको अच्छा समझकर अपने रद्दी माल से न बदलो क्योंकि वह रद्दी तुम्हारे लिये हलाल और पाक है, और यह हराम और नापाक.

(८) और उनके अधिकार का ख़याल न रख सकोगे .

(९) आयत के मानी में विभिन्न क़ौल हैं. हसन का क़ौल है कि पहले ज़माने में मदीने के लोग अपनी सरपरस्ती वाली यतीम लड़की से उसके माल की वजह से निकाह कर लेते जबकि उसकी तरफ़ रग़बत न होती. फिर उसके साथ सहवास में अच्छा व्यवहार न करते और उसके माल के वारिस बनने के लिये उसकी मौत की प्रतीक्षा करते. इस आयत में उन्हें इससे रोका गया. एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की सरपरस्ती से तो बेइन्साफ़ी होने के डर से घबराते थे और ज़िना की पर्वाह न करते थे. उन्हें बताया गया कि अगर तुम नाइन्साफ़ी के डर से यतीमों की सरपरस्ती से बचते हो तो ज़िना से भी डरो और इससे बचने के लिये जो औरतें तुमहारे लिये हलाल हैं उनसे निकाह करो और हराम के क़रीब मत जाओ. एक क़ौल यह है कि लोग यतीमों की विलायत और सरपरस्ती में तो नाइन्साफ़ी का डर करते थे और बहुत से निकाह करने में कुछ भी नहीं हिचकिचाते थे. उन्हें बताया गया कि जब ज़्यादा औरतें निकाह में हों तो उनके हक़ में नाइन्साफ़ी होने से डरो. उतनी ही औरतों से निकाह करो जिनके अधिकार अदा कर सको. इकरिमा ने हज़रत

نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَ
لِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ الْاَقْرَبُوْنَ
مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَ اِذَا
حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنُ
فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَ قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝
وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا
خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۪ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا
يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝ ع
يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْۤ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ
ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَ اِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ
وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

है उसमें से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत (रिश्तेदार) वाले और औरतों के लिये हिस्सा है उसमें से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले तर्का (माल व जायदाद) थोड़ा हो या बहुत, हिस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुआ[१७] (७) फिर बांटते वक़्त अगर रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन (दरिद्र)[१८] आजाएं तो उसमें से उन्हें भी कुछ दो[१९] और उनसे अच्छी बात कहो[२०] (८) और डरें[२१] वो लोग अगर अपने बाद कमज़ोर औलाद छोड़ते तो उनका कैसा उन्हें ख़तरा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें[२२] और सीधी बात करें[२३] (९) वो जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वो तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं[२४] और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े में जाएंगे (१०)

दूसरा रूकू

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है[१] तुम्हारी औलाद के बारे में[२] बेटे का हिस्सा दो बेटियों के बराबर है[३] फिर अगर निरी लड़कियां हों अगरचे दो से ऊपर[४] तो उनको तर्के की दो तिहाई और अगर एक लड़की हो तो उसका आधा[५] और मैयत के मां बाप को हर एक को उसके तर्के से छटा, अगर

इब्ने अब्बास से रिवायत की कि क़ुरैश दस दस बल्कि इससे ज़्यादा औरतें करते थे और जब उनका बोझ न उठ सकता तो जो यतीम लड़कियाँ उनकी सरपरस्ती में होतीं उनके माल ख़र्च कर डालते. इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी क्षमता देख लो और चार से ज़्यादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल ख़र्च करने की ज़रूरत पेश न आए. इस आयत से मालूम हुआ कि आज़ाद मर्द के लिये एक वक़्त में चार औरतों तक से निकाह जायज़ है, चाहे वो आज़ाद हों या दासी . तमाम उम्मत की सहमति है कि एक वक़्त में चार औरतों से ज़्यादा निकाह में रखना किसी के लिये जायज़ नहीं सिवाय रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के. यह आप की विशेषताओं में से हैं. अबू दाऊद की हदीस में है कि एक व्यक्ति इस्लाम लाए उनकी आठ बीबीयाँ थीं. हुज़ूर ने फ़रमाया उनमें से चार रखना. तिरमिज़ी की हदीस में है कि ग़ीलान बिन सलमा सक़फ़ी इस्लाम लाए. उनकी दस बीबीयाँ थीं. वो साथ मुसलमान हुईं. हुज़ूर ने हुक्म दिया, इनमें से चार रखो.

(१०) इससे मालूम हुआ कि बीबीयों के बीच इन्साफ़ फ़र्ज़ है. नई पुरानी, सब अधिकारों में बराबर हैं. ये इन्साफ़ लिबास में, खाने पीने में, रहने की जगह में, और रात के सहवास में अनिवार्य है. इन बातों में सब के साथ एक सा सुलूक हो.

(११) इससे मालूम हुआ कि मेहर की अधिकारी औरतें हैं न कि उनके सरपरस्त. अगर सरपरस्तों ने मेहर वसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वो मेहर हक़दार औरत को पहुंचा दें.

(१२) औरतों को इख़्तियार है कि वो अपने शौहरों को मेहर का कोई हिस्सा हिबा करें या कुल मेहर मगर मेहर बख़्शवाने के लिये उन्हें मजबूर करना, उनके साथ दुर्व्यवहार न करना चाहिये क्योंकि अल्लाह तआला ने "*तिबना लकुम*" फ़रमाया जिसका मतलब है दिल की ख़ुशी के साथ माफ़ करना.

(१३) जो इतनी समझ नहीं रखते कि माल कहाँ ख़र्च किया जाए इसे पहचानें. और जो माल को बेमहल ख़र्च करते हैं और अगर उनपर छोड़ दिया जाए तो वो जल्द नष्ट कर देंगे.

(१४) जिससे उनके दिल की तसल्ली हो और वो परेशान न हों जैसे यह कि माल तुम्हारा है और तुम होशियार हो जाओगे तो तुम्हारे सुपुर्द कर दिया जाएगा .

(१५) कि उनमें होशियारी और मामला जानने की समझ पैदा हुई या नहीं .

(१६) यतीम का माल खाने से .

(१७) जिहालत के ज़माने में औरतों और बच्चों को विरासत न देते थे . इस आयत में उस रस्म को बातिल किया गया .

(१८) अजनबी, जिन में से कोई मैयत का वारिस न हो .

(१९) तक़सीम से पहले, और यह देना मुस्तहब है .

(२०) इसमें ख़ूबसूरत बहाना, अच्छा वादा और भलाई की दुआ, सब शामिल हैं. इस आयत में मैयत के तर्के से ग़ैर वारिस

ان كان له ولد فان لم يكن له ولد وورثه
ابوه فلامه الثلث فان كان له اخوة فلامه
السدس من بعد وصية يوصي بها او دين
اباؤكم وابناؤكم لا تدرون ايهم اقرب لكم
نفعا فريضة من الله ان الله كان عليما
حكيما ﴿۱۱﴾ ولكم نصف ما ترك ازواجكم ان لم
يكن لهن ولد فان كان لهن ولد فلكم
الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها
او دين ولهن الربع مما تركتم ان لم يكن لكم
ولد فان كان لكم ولد فلهن الثمن مما
تركتم من بعد وصية توصون بها او دين و
ان كان رجل يورث كللة او امراة وله اخ
او اخت فلكل واحد منهما السدس فان كانوا

منزل ۱

मैयत के औलाद हो(६) फिर अगर उसकी औलाद न हो और मां बाप छोड़े(७) तो मां का तिहाई फिर अगर उसके कई बहन भाई हों(८) तो मां का छटा(९) बाद उस वसिय्यत के जो कर गया और दैन के(१०) तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि उनमें कौन तुम्हारे ज़्यादा काम आएगा(११) यह हिस्सा बांधा हुआ है अल्लाह की तरफ़ से बेशक अल्लाह इल्म वाला हिकमत(बोध) वाला है(११) और तुम्हारी बीबियाँ जो छोड़ जाएं उसमें तुम्हें आधा है अगर उनके औलाद न हो फिर अगर उनकी औलाद हो तो उनके तर्के में से तुम्हें चौथाई है(१२) जो वसिय्यत वो कर गईं और दैन(ऋण) निकाल कर और तुम्हारे तर्के में औरतों का चौथाई है अगर तुम्हारे औलाद न हो. फिर अगर तुम्हारे औलाद हो तो उनका तुम्हारे तर्के में से आठवाँ(१३) जो वसिय्यत तुम कर जाओ और दैन(ऋण) निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औरत का तर्का बटता हो जिसने माँ बाप औलाद कुछ न छोड़े और मां की तरफ़ से उसका भाई या बहन है तो उनमें से हर एक को छटा फिर अगर

रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों को कुछ सदक़े के तौर पर देने और अच्छी बात कहने का हुक्म दिया. सहाबा के ज़माने में इसपर अमल था. मुहम्मद बिन सीरीन से रिवायत है कि उनके वालिद ने विरासत की तक़सीम के वक़्त एक बकरी ज़िबह कराके खाना पकाया और रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों को खिलाया और यह आयत पढ़ी. इब्ने सीरीन ने इसी मज़मून की उबैदा सलमानी से भी रिवायत की है. उसमें यह भी है कि कहा अगर यह आयत न आई होती तो यह सदक़ा मैं अपने माल से करता. तीजा, जिसको सोयम कहते हैं और मुसलमानों का तरीक़ा है, वह भी इसी आयत का अनुकरण है कि उसमें रिश्तेदारों यतीमों और मिस्कीनों पर सदक़ा होता है और कलिमे का ख़त्म और क़ुरआने पाक की तिलावत और दुआ अच्छी बात है. इसमें कुछ लोगों को बेजा इसरार होगया है जो बुज़ुर्गों के इस अमल का स्रोत तो तलाश कर न सके, जब कि इतना साफ़ क़ुरआन पाक में मौजूद था, अलबत्ता उन्होंने अपनी राय को दीन में दख़्ल दिया और अच्छे काम को रोकने में जुट गये, अल्लाह हिदायत करे.

(२१) जिसके नाम वसिय्यत की गई वह और यतीमों के सरपरस्त और वो लोग जो मौत के क़रीब मरने वाले के पास मौजूद हों.

(२२) और मरने वाले की औलाद के साथ मेहरबानी के अलावा कोई कार्यवाही न करें जिससे उसकी औलाद परेशान हो.

(२३) मरीज़ के पास उसकी मौत के क़रीब मौजूद होने वालों की सीधी बात तो यह है कि उसे सदक़ा और वसिय्यत में यह राय दें कि वह उतने माल से करे जिससे उसकी औलाद तंगदस्त और नादार न रह जाए और वसी यानी जिसके नाम वसिय्यत की जाए और वली यानी सरपरस्त की सीधी बात यह है कि वो मरने वाले की ज़ुर्रियत के साथ सदव्यवहार करें, अच्छे से बात करें जैसा कि अपनी औलाद के साथ करते हैं.

(२४) यानी यतीमों का माल नाहक़ खाना मानो आग खाना है. क्योंकि वह अज़ाब का कारण है . हदीस शरीफ़ में है, क़यामत के दिन यतीमों का माल खाने वाले इस तरह उठाए जाएंगे कि उनकी क़ब्रों से और उनके मुंह से और उनके कानों से धुवाँ निकलता होगा तो लोग पहचानेंगे कि यह यतीम का माल खाने वाला है.

सूरए निसा - दूसरा रूकू

(१) विरासत के बारे में.

(२) अगर मरने वाले ने बेटे बेटियाँ दोनों छोड़ी हों तो .

(३) यानी बेटी का हिस्सा बेटे से आधा है और अगर मरने वाले ने सिर्फ़ लड़के छोड़े हों तो कुल माल उन का.

(४) या दो .

(५) इससे मालूम हुआ कि अगर लड़का अकेला वारिस रहा हो तो कुल माल उसका होगा क्योंकि ऊपर बेटे का हिस्सा बेटियों से दूना बताया गया है तो जब अकेली लड़की का आधा हुआ तो अकेले लड़के का उससे दूना हुआ और वह कुल है .

أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً
مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ
وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾
وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٤﴾
وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا
عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ
فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ
لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ
فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿١٦﴾ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ

वो बहन भाई एक से ज़्यादा हों तो सब तिहाई में शरीक हैं[१४] मैयत की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिसमें उसने नुक़सान न पहुंचाया हो[१५] यह अल्लाह का इरशाद (आदेश) है और अल्लाह इल्म वाला हिल्म (सहिष्णुता) वाला है﴾१२﴿ ये अल्लाह की हदें हैं और जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का, अल्लाह उसे बाग़ों में लेजाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी﴾१३﴿ और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब है[१६]﴾१४﴿

तीसरा रूकू

और तुम्हारी औरतें जो बदकारी करें उनपर ख़ास अपने में[१] के चार मर्दों की गवाही लो फिर अगर वो गवाही दे दें तो उन औरतों को घर में बंद रखो[२] यहां तक कि उन्हें मौत उठाले या अल्लाह उनकी कुछ राह निकाले[३]﴾१५﴿ और तुम में जो मर्द औरत ऐसा काम करें उनको ईज़ा (कष्ट) दो[४] फिर अगर वो तौबह कर लें और नेक होजाएं तो उनका पीछा छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान है[५]﴾१६﴿ वह तौबह जिसका क़ुबूल करना अल्लाह

(६) चाहे लड़का हो या लड़की कि उनमें से हर एक को औलाद कहा जाता है.

(७) यानी सिर्फ़ माँ बाप छोड़े और अगर माँ बाप के साथ शौहर या बीवी में से किसी को छोड़ा, तो माँ का हिस्सा बीवी का हिस्सा निकालने के बाद जो बाक़ी बचे उसका तिहाई होगा न कि कुल का तिहाई.

(८) सगे चाहे सौतेले.

(९) और एक ही भाई हो तो वह माँ का हिस्सा नहीं घटा सकता.

(१०) क्योंकि वसिय्यत और क़र्ज़ विरासत की तक़सीम से पहले है. और क़र्ज़ वसिय्यत से भी पहले है. हदीस शरीफ़ में है *"इन्नद दैना क़बलल वसिय्यते"* जिसका अर्थ यह होता है कि वसिय्यत पर अमल करने से पहले मरने वाले का क़र्ज़ अदा करना ज़रूरी है.

(११) इसलिये हिस्सों का मुक़र्रर करना तुम्हारी राय पर न छोड़ा.

(१२) चाहे एक बीवी हो या कई. एक होगी तो वह अकेली चौथाई पाएगी. कई होंगी तो सब उस चौथाई में बराबर शरीक होंगी चाहे बीवी एक हो या कई, हिस्सा यही रहेगा.

(१३) चाहे बीवी एक हो या ज़्यादा.

(१४) क्योंकि वो माँ के रिश्ते की बदौलत हक़दार हुए और माँ तिहाई से ज़्यादा नहीं पाती और इसीलिये उनमें मर्द का हिस्सा औरत से ज़्यादा नहीं है.

(१५) अपने वारिसों को तिहाई से ज़्यादा वसिय्यत करके या किसी वारिस के हक़ में वसिय्यत करके. वारिस के क़र्ज़ कई क़िस्म हैं. असहाबे फ़राइज़ वो लोग हैं जिनके लिये हिस्सा मुक़र्रर है जैसे बेटी एक हो तो आधे माल की मालिक, ज़्यादा हों तो सब के लिये दो तिहाई. पोती और पड़पोती और उससे नीचे की हर पोती, अगर मरने वाले के औलाद न हो तो बेटी के हुक्म में है. और अगर मैयत ने एक बेटी छोड़ी है तो यह उसके साथ छटा पाएगी और अगर मैयत ने बेटा छोड़ा तो विरास्त से वंचित हो जाएगी, कुछ न पाएगी और अगर मरने वाले ने दो बेटियाँ छोड़ीं तो भी पोती वंचित यानी साक़ित हो गई. लेकिन अगर उसके साथ या उसके नीचे दर्जे में कोई लड़का होगा तो वह उसको इसबा बना देगा. सगी बहन मैयत के बेटा या पोता न छोड़ने की सूरत में बेटियों के हुक्म में है. अल्लाती बहनें, जो बाप में शरीक हों और उनकी माएं अलग अलग हों, वो सगी बहनों के न होने की सूरत में उनकी मिस्ल है और दोनों क़िस्म की बहनें, यानी सगी और अल्लाती, मैयत की बेटी या पोती के साथ इसबा हो जाती हैं और बेटे और पोते और उसके मातहत पोते और बाप के साथ साक़ित या वंचित और इमाम साहब के नज़दीक दादा के साथ भी मेहरूम हैं. सौतेले भाई बहन जो फ़क़त माँ में शरीक हों, उनमें से एक हो तो छटा और ज़्यादा हों तो तिहाई और उनमें मर्द और औरत बराबर हिस्सा पाएंगे. और बेटे पोते और उसके मातहत के पोते और बाप दादा के होते मेहरूम हो जाएंगे. बाप छटा हिस्सा पाएगा अगर मैयत ने बेटा या पोता या उससे नीचे की कोई पोती छोड़ी हो तो बाप छटा और वह बाक़ी भी पाएगा जो असहाबे फ़र्ज़ को लेकर बचे. दादा यानी बाप का

يَعْمَلُونَ السُّوٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ
فَأُولٰٓئِكَ يَتُوبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰىٓ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ
إِنِّي تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ
أُولٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾ يٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَرِثُوا النِّسَآءَ
كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا
اٰتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَسٰىٓ أَن تَكْرَهُوا شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيهِ خَيْرًا
كَثِيرًا ﴿١٩﴾ وَإِنْ أَرَدتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۙ وَاٰتَيْتُمْ إِحْدٰىهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ

ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से लाज़िम कर लिया है वह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा करलें[६] ऐसों पर अल्लाह अपनी रहमत से रूजू (तवज्जुह) करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴿१७﴾ और वह तौबा उनकी नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं[७] यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की[८] और न उनकी जो काफ़िर मरें उनके लिये हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है[९]﴿१८﴾ ऐ ईमान वालो, तुम्हें हलाल नहीं कि औरतों के वारिस बन जाओ ज़बरदस्ती[१०] और औरतों को रोको नहीं इस नियत से कि जो मेहर उनको दिया था उसमें से कुछ ले लो[११] मगर उस सूरत में कि खुल्लमखुल्ला बेहयाई का काम करें,[१२] और उनसे अच्छा बर्ताव करो[१३] फिर अगर वो तुम्हें पसन्द न आएं[१४] तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई रखे[१५]﴿१९﴾ और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो[१६] और उसे ढेरों माल दे चुके हो[१७] तो उसमें से कुछ वापिस न लो[१८] क्या उसे वापिस

बाप, बाप के न होने की सूरत में बाप की मिस्ल है सिवाय इसके कि माँ को मेहरूम न कर सकेगा. माँ का छटा हिस्सा है, अगर मैयत ने अपनी औलाद या अपने बेटे या पोते या पड़पोते की औलाद या बहन भाई में से दो छोड़े हों चाहे वो सगे भाई हों या सौतेले और अगर उनमें से कोई छोड़ा न हो तो तो माँ कुल माल का तिहाई पाएगी और अगर मैयत ने शौहर या बीबी और माँ बाप छोड़े हों तो माँ को शौहर या बीबी का हिस्सा देने के बाद जो बाक़ी रहे उसका तिहाई मिलेगा और जद्दा का छटा हिस्सा है चाहे वह माँ की तरफ़ से हो यानी नानी या बाप की तरफ़ से हो यानी दादी. एक हो, ज़्यादा हों,और क़रीब वाली दूर वाली के लिये आड़ हो जाती है. और माँ हर एक जद्दा यानी नानी और दादी को मेहरूम कर देती है. और बाप की तरफ़ की जद्दात यानी दादियाँ बाप के होने की सूरत में मेहजूब यानी मेहरूम हो जाती हैं. इस सूरत में कुछ न मिलेगा. ज़ौज को चौथा हिस्सा मिलेगा. अगर मैयत ने अपनी या अपने बेटे पोते परपोते वग़ैरह की औलाद छोड़ी हो और अगर इस क़िस्म की औलाद न छोड़ी हो तो शौहर आधा पाएगा. बीबी मैयत की और उसके बेटे पोते वग़ैरह की औलाद होने की सूरत में आठवाँ हिस्सा पाएगी और न होने की सूरत में चौथाई . इसबात वो वारिस है जिनके लिये कोई हिस्सा निश्चित नहीं है. फ़र्ज़ वारिसों से जो बाक़ी बचता है वो पाते हैं. इन में सबसे ऊपर बेटा है फिर उसका बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर उसका बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर दादा फिर बाप के सिलसिले में जहाँ तक कोई पाया जाए. फिर सगा भाई फिर सौतेला यानी बाप शरीक भाई फिर सगे भाई का बेटा फिर बाप शरीक भाई का बेटा,फिर आज़ाद करने वाला और जिन औरतों का हिस्सा आधा या दो तिहाई है वो अपने भाईयों के साथ इसबा हो जाती हैं और जो ऐसी न हों वो नहीं. ख़ून के रिश्तों, फ़र्ज़ वारिस और इसबात के सिवा जो रिश्तेदार हैं वो ज़विल अरहाम में दाख़िल हैं और उनकी तरतीब इसबात की मिस्ल है.

(१६) क्योंकि कुल हदों के फलांगने वाला काफ़िर है. इसलिये कि मूमिन कैसा भी गुनाहगार हो, ईमान की हद से तो न गुज़रेगा.

सूरए निसा - तीसरा रूकू

(१) यानी मुसलमानों में के .

(२) कि वो बदकारी न करने पाएं .

(३) यानी हद निश्चित करे या तौबह और निकाह की तौफ़ीक़ दे. जो मुफ़स्सिर इस आयत *"अलफ़ाहिशता"* (बदकारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वो कहते हैं कि हब्स का हुक्म हुदूद यानी सज़ाएं नाज़िल होने से पहले था. सज़ाएं उतरने के बाद स्थगित किया गया. (ख़ाज़िन, जलालैन व तफ़सीरे अहमदी)

(४) झिड़को, घुड़को, बुरा कहो, शर्म दिलाओ, जूतियाँ मारो. (जलालैन, मदारिक व ख़ाज़िन वग़ैरह)

(५) हसन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा यानी यातना मुक़र्रर की गई फिर क़ैद फिर कोड़े मारना या संगसार करना. इब्ने बहर का क़ौल है कि पहली आयत *"वल्लती यातीना"* (और तुम्हारी औरतों में ....) उन औरतों के बारे में है जो औरतों के

شَيْئًا ۚ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ
تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّ
اَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا
مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ
اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۚ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ ع
حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَ
عَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَ
اُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ
وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ
مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۚ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ
اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

लोगे झूठ बांधकर और खुले गुनाह से[१९] ﴿२०﴾ और किस तरह वापिस लोगे हालांकि तुम में एक दूसरे के सामने बेपर्दा हो लिया और वो तुम से गाढ़ा अहद (प्रतिज्ञा) ले चुकीं[२०] ﴿२१﴾ और बाप दादा की मनकूहा (विवाहिता) से निकाह न करो[२१] मगर जो हो गुज़रा वह बेशक बेहयाई[२२] और ग़ज़ब (प्रकोप) का काम है और बहुत बुरी राह[२३] ﴿२२﴾

चौथा रूकू

हराम हुई तुम पर तुम्हारी माएं[१] और बेटियां[२] और बहनें और फुफियां और ख़ालाएं और भतीजियां[३] और भान्जियां और तुम्हारी माएं जिन्होंने दूध पिलाया[४] और दूध की बहनें और औरतों की माएं[५] और उनकी बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं[६] तो उनकी बेटियों में हर्ज नहीं[७] और तुम्हारे नस्ली बेटों की बीवियां[८] और दो बहनें इकट्ठी करना[९] मगर जो हो गुज़रा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ﴿२३﴾

साथ बुरा काम करती हैं और दूसरी आयत *"वल्लज़ाने"* (और तुममें जो मर्द....) लौंडे बाज़ी या इग़लाम करने वालों के बारे में उतरी. और ज़िना करने वाली औरतें और ज़िना करने वाले मर्द का हुक्म सूरए नूर में बयान फ़रमाया गया. इस तक़दीर पर ये आयतें मन्सूख़ यानी स्थगित हैं और इनमें इमाम अबू हनीफ़ा के लिये ज़ाहिर दलील है उसपर जो वो फ़रमाते हैं कि लिवातत यानी लौंडे बाज़ी में छोटी मोटी सज़ा है, बड़ा धार्मिक दण्ड नहीं.

(६) ज़ुहाक का क़ौल है कि जो तौबह मौत से पहले हो, वह क़रीब है यानी थोड़ी देर वाली है.

(७) और तौबह में देरी कर जाते हैं.

(८) तौबह क़ुबूल किये जाने का वादा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वह ऐसे लोगों के लिये नहीं है. अल्लाह मालिक है, जो चाहे करे. उनकी तौबह क़ुबूल करे या न करे. बख़्श दे या अज़ाब फ़रमाए, उस की मर्ज़ी. (तफ़सीरे अहमदी)

(९) इससे मालूम हुआ कि मरते वक़्त काफ़िर की तौबह और उसका ईमान मक़बूल नहीं.

(१०) जिहालत के दौर में लोग माल की तरह अपने रिश्तेदारों की बीवियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो मेहर के बिना उन्हें अपनी बीवी बनाकर रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और ख़ुद मेहर ले लेते या उन्हें क़ैद कर रखते कि जो विरासत उन्हों ने पाई है वह देकर रिहाई हासिल करलें या मर जाएं तो ये उनके वारिस हो जाएं. ग़रज़ वो औरतें बिल्कुल उनके हाथ में मजबूर होती थीं और अपनी मर्ज़ी से कुछ भी नहीं कर सकती थीं. इस रस्म को मिटाने के लिये यह आयत उतारी गई.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह उसके सम्बन्ध में है जो अपनी बीवी से नफ़रत रखता हो और इस लिये दुर्व्यवहार करता हो कि औरत परेशान होकर मेहर वापस करदे या छोड़ दे. इसकी अल्लाह तआला ने मनाही फ़रमाई. एक क़ौल यह है कि लोग औरत को तलाक़ देते फिर वापस ले लेते, फिर तलाक़ देते. इस तरह उसको लटका कर रखते थे. न वह उनके पास आराम पा सकती, न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती. इसको मना फ़रमाया गया. एक क़ौल यह है कि मरने वाले के सरपरस्त को ख़िताब है कि वो उसकी बीवी को न रोकें.

(१२) शौहर की नाफ़रमानी या उसकी या उसके घर वालों की यातना, बदज़बानी या हरामकारी ऐसी कोई हालत हो तो ख़ुलअ चाहने में हर्ज नहीं.

(१३) खिलाने पहनाने में, बात चीत में और मियाँ बीवी के व्यवहार में.

(१४) दुर्व्यवहार या सूरत नापसन्द होने की वजह से, तो सब्र करो और जुदाई मत चाहो.

(१५) नेक बेटा वग़ैरह.

(१६) यानी एक को तलाक़ देकर दूसरी से निकाह करना.

(१७) इस आयत से भारी मेहर मुक़र्रर करने के जायज़ होने पर दलील लाई गई है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने मिम्बर पर से फ़रमाया

कि औरतों के मेहर भारी न करो. एक औरत ने यह आयत पढ़कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त्ताब, अल्लाह हमें देता है और तुम मना करते हो. इसपर अमीरूल मूमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, ऐ उमर, तुझसे हर शख़्स ज़्यादा समझदार है. जो चाहो मेहर मुक़र्रर करो. सुब्हानल्लाह, ऐसी थी रसूल के ख़लीफ़ा के इन्साफ़ की शान और शरीफ़ नफ़्स की पाकी. अल्लाह तआला हमें उनका अनुकरण करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए. आमीन.

(१८) क्योंकि जुदाई तुम्हारी तरफ़ से है .

(१९) यह जिहालत वालों के उस काम का रद है कि जब उन्हें कोई दूसरी औरत पसन्द आती तो वो अपनी बीबी पर तोहमत यानी लांछन लगाते ताकि वह इससे परेशान होकर जो कुछ ले चुकी है वापस कर दे. इस तरीक़े को इस आयत में मना फ़रमाया गया और झूट और गुनाह बताया गया .

(२०) वह अहद अल्लाह तआला का यह इरशाद है *''फ़ इम्साकुन बि मअरूफ़िन फ़ तसरीहुम बि इहसानिन''* यानी फिर भलाई के साथ रोक लेना है या नेकूई के साथ छोड़ देना है. (सूरए बक़रह, आयत २२९) यह आयत इस पर दलील है कि तन्हाई में हमबिस्तरी करने से मेहर वाजिब हो जाता है.

(२१) जैसा कि जिहालत के ज़माने में रिवाज था कि अपनी माँ के सिवा बाप के बाद उसकी दूसरी औरत को बेटा अपनी बीवी बना लेता था.

(२२) क्योंकि बाप की बीवी माँ के बराबर है. कहा गया है कि निकाह से हम-बिस्तरी मुराद है. इससे साबित होता है कि जिससे बाप ने हमबिस्तरी की हो, चाहे निकाह करके या ज़िना करके या वह दासी हो, उसका वह मालिक होकर, उनमें से हर सूरत में बेटे का उससे निकाह हराम है.

(२३) अब इसके बाद जिस क़द्र औरतें हराम हैं उनका बयान फ़रमाया जाता है. इनमें सात तो नसब से हराम हैं .

सूरए निसा - चौथा रूकू

(१) और हर औरत जिसकी तरफ़ बाप या माँ के ज़रिये से नसब पलटता हो, यानी दादियाँ व नानियाँ,चाहे क़रीब की हों या दूर की, सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं.

(२) पोतियाँ और नवासियाँ किसी दर्जे की हों, बेटियों में दाख़िल हैं.

(३) ये सब सगी हों या सौतेली. इनके बाद उन औरतों का बयान किया जाता है जो सबब से हराम हैं .

(४) दूध के रिश्ते, दूध पीने की मुद्दत में थोड़ा दूध पिया जाय या बहुत सा, उसके साथ हुरमत जुड़ जाती है. दूध पीने की मुद्दत हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो के नज़दीक दो साल है. दूध पीने की मुद्दत के बाद जो दूध पिया जाए उससे हुरमत नहीं जुड़ती. अल्लाह तआला ने रिज़ाअत (दूध पीने) को नसब की जगह किया है और दूध पिलाने वाली को दूध पीने वाले बच्चे की माँ और उसकी लड़की को बच्चे की बहन फ़रमाया. इसी तरह दूध पिलाई का शौहर दूध पीने वाले बच्चे का बाप और उसका बाप बच्चे का दादा और उसकी बहन उसकी फुफी और उसका हर बच्चा जो दूध पिलाई के सिवा और किसी औरत से भी हो, चाहे वह दूध पीने से पहले पैदा हुआ या उसके बाद, वो सब उसके सौतेले भाई बहन हैं. और दूध पिलाई की माँ दूध पीने वाले बच्चे की नानी और उसकी बहन उसकी ख़ाला और उस शौहर से उसके जो बच्चे पैदा हों वो दूध पीने वाले बच्चे के दूध शरीक भाई बहन, और उस शौहर के अलावा दूसरे शौहर से जो हों वह उसके सौतेले भाई बहन. इसमें अस्ल यह हदीस है कि दूध पीने से वो रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब से हराम हैं. इसलिये दूध पीने वाले बच्चे पर उसके दूध माँ बाप और उनके नसबी और रिज़ाई उसूल व फ़रोअ सब हराम हैं.

(५) बीवियों की माएं, बीवियों की बेटियाँ और बेटों की बीवियाँ. बीवियों की माएं सिर्फ़ निकाह का बन्धन होते ही हराम हो जाती हैं चाहें उन बीवियों से सोहबत या हमबिस्तरी हुई हो या नहीं.

(६) गोद में होना ग़ालिबे हाल का बयान है, हुरमत के लिये शर्त नहीं .

(७) उनकी माओं से तलाक़ या मौत वग़ैरह के ज़रीये से,सोहबत से पहले जुदाई होने की सूरत में उनके साथ निकाह जायज़ है.

(८) इससे लेपालक निकल गए. उनकी औरतों के साथ निकाह जायज़ है. और दूध बेटे की बीवी भी हराम है क्योंकि वह सगे के हुक्म में है. और पोते परपोते बेटों में दाख़िल हैं.

(९) यह भी हराम है चाहे दोनों बहनों को निकाह में जमा किया जाए या मिल्के यमीन के ज़रिये से वती में. और हदीस शरीफ़ में फुफी भतीजी और ख़ाला भांजी का निकाह में जमा करना भी हराम फ़रमाया गया. और क़ानून यह है कि निकाह में हर ऐसी दो औरतों का जमा करना हराम है जिससे हर एक को मर्द फ़र्ज़ करने से दूसरी उसके लिये हलाल न हो, जैसे कि फुफी भतीजी, कि अगर फुफी को मर्द समझा जाए तो चचा हुआ, भतीजी उसपर हराम है और अगर भतीजी को मर्द समझा जाए तो भतीजा हुआ, फुफी उसपर हराम है, हुरमत दोनों तरफ़ है. और अगर सिर्फ़ एक तरफ़ से हो तो जमा हराम न होगी जैसे कि औरत और उसके शौहर की लड़की को मर्द समझा जाए तो उसके लिये बाप की बीवी तो हराम रहती है मगर दूसरी तरफ़ से यह बात नहीं है यानी शौहर की बीवी कि अगर मर्द समझा जाए तो यह अजनबी होगा और कोई रिश्ता ही न रहेगा.

पारा चार समाप्त

पाँचवां पारा - वल-मुहसनात
(सूरए निसा - चौथा रुकू जारी)

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ
كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ
فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ
مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ
الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

और हराम हैं शौहरदार औरतें मगर काफ़िरों की औरतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं(१०) यह अल्लाह का लिखा हुआ है तुमपर और उन(११) के सिवा जो रहीं वो तुम्हें हलाल हैं कि अपने मालों के इवज़ तलाश करो क़ैद लाते(१२) न पानी गिराते(१३) तो जिन औरतों को निकाह में लाना चाहो उनके बंधे हुए मेहर उन्हें दे दो और क़रारदाद (समझौते) के बाद अगर तुम्हारे आपस में कुछ रज़ामन्दी हो जावे तो उसमें गुनाह नहीं(१४) बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (२४) और तुममें बेमक़दूरी (असामर्थ्य) के कारण जिनके निकाह में आज़ाद औरतें ईमान वालियां न हों तो उनसे निकाह करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली कनीज़ें(१५) और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है. तुम में एक, दूसरे से है तो उनसे निकाह करो(१६) उनके मालिकों की इजाज़त से(१७) और दस्तूर के मुताबिक़ उनके मेहर उन्हें दो(१८) क़ैद में आतियां, न मस्ती निकालती और न यार बनाती(१९), जब वो क़ैद में आजाएं(२०) फिर बुरा काम करें तो उनपर उसकी सज़ा आधी है जो आज़ाद औरतों पर है(२१) यह(२२) उसके लिये

(१०) गिरफ़्तार होकर बग़ैर अपने शौहरों के, वो तुम्हारे लिये इस्तबरा (छुटकारा हो जाने) के बाद हलाल हैं, अगरचे दारुल हर्ब में उनके शौहर मौजूद हों क्योंकि तबायने दारैन (अलग अलग सुकूनत) की वजह से उनकी शौहरों से फ़ुर्क़त हो चुकी. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाह अन्हो ने फ़रमाया हमने एक रोज़ बहुत सी क़ैदी औरतें पाईं जिनके शौहर दारुल हर्ब में मौजूद थे, तो हमने उनसे क़ुर्बत में विलम्ब किया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मसअला पूछा. इसपर यह आयत उतरी.

(११) वो मेहरम औरतें जिनका ऊपर बयान किया गया.

(१२) निकाह से या मिल्के यमीन से. इस आयत से कई मसअले साबित हुए. निकाह में मेहर ज़रूरी है और मेहर निश्चित न किया हो, जब भी वाजिब होता है. मेहर माल ही होता है न कि ख़िदमत और तालीम वग़ैरह जो चीज़ें माल नहीं हैं, इतना क़लील जिसको माल न कहा जाए, मेहर होने की सलाहियत नहीं रखता. हज़रत जाबिर और हज़रत अली मुरतज़ा रदीयल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि मेहर की कम मिक़दार दस दरहम है, इससे कम नहीं हो सकता.

(१३) इससे हरामकारी मुराद है और यहाँ चेतावनी है कि ज़िना करने वाला सिर्फ़ अपनी वासना की पूर्ति करता है और मस्ती निकालता है और उसका काम सही लक्ष्य और अच्छे उद्देश्य से ख़ाली होता है, न औलाद हासिल करना, न नस्ल, न नसब महफ़ूज़ रखना, न अपने नफ़्स को हराम से बचाना, इनमें से कोई बात उसके सामने नहीं होती, वह अपने नुत्फ़े और माल को नष्ट करके दीन और दुनिया के घाटे में गिरफ़्तार होता है.

(१४) चाहे औरत निश्चित मेहर से कम करदे या बिलकुल बख़्श दे या मर्द मेहर की मात्रा और ज़्यादा कर दे.

(१५) यानी मुसलमानों की ईमानदार दासियाँ, क्योंकि निकाह अपनी दासी से नहीं होता; वह निकाह के बिना ही मालिक के लिये हलाल है. मतलब यह है कि जो शख़्स ईमान वाली आज़ाद औरत से निकाह की क्षमता और ताक़त न रखता हो वह ईमानदार दासी से निकाह करे, यह बात शर्माने की नहीं. जो शख़्स आज़ाद औरत से निकाह की क्षमता रखता हो उसको भी मुसलमान बांदी से निकाह करना जायज़ है. यह मसअला इस आयत में तो नहीं है, मगर ऊपर की आयत *"व उहिल्ला लकुम मा वराआ ज़ालिकुम"* से साबित है. ऐसे ही किताब वाली दासी से भी निकाह जायज़ है और मूमिना यानी ईमान वाली के साथ अफ़ज़ल व मुस्तहब है. जैसा कि इस आयत से साबित हुआ.

(१६) यह कोई शर्म की बात नहीं. फ़ज़ीलत ईमान से है. इसी को काफ़ी समझो.

(१७) इससे मालूम हुआ कि दासी को अपने मालिक की आज्ञा के बिना निकाह का हक़ नहीं, इसी तरह ग़ुलाम को.

(१८) अगरचे मालिक उनके मेहर के मालिक हैं लेकिन दासियों को देना मालिक ही को देना है क्योंकि ख़ुद वो और जो कुछ उनके क़ब्ज़े में हो, सब मालिक का है. या ये मानी हैं कि उनके मालिकों की इजाज़त से उन्हें मेहर दो.

الْعَذَابِ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۚ وَأَنْ
تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللَّهُ
يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ
الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيدُ اللَّهُ
أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۚ
وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ
نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾ إِنْ تَجْتَنِبُوا
كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

منزل ١

जिसे तुम में से ज़िना (व्यभिचार) का डर है और सब्र करना तुम्हारे लिये बेहतर है[२३] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (२५)

पाँचवां रूकू

अल्लाह चाहता है कि अपने आदेश तुम्हारे लिये बयान करदे और तुम्हें अगलों के तरीक़े बतादे[१] और तुमपर अपनी रहमत से रूजू (तवज्जुह) फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है (२६) और अल्लाह तुमपर अपनी रहमत से रूजू फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वो चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ[२] (२७) अल्लाह चाहता है कि तुमपर तख़फ़ीफ़ (कमी) करे[३] और आदमी कमज़ोर बनाया गया[४] (२८) ऐ ईमान वालो, आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ[५] मगर यह कि कोई सौदा तुम्हारी आपसी रज़ामन्दी का हो[६] और अपनी जानें क़त्ल न करो[७] बेशक अल्लाह तुमपर मेहरबान है (२९) और जो ज़ुल्म व ज़्यादती से ऐसा करेगा तो जल्द ही हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और यह अल्लाह को आसान है (३०) अगर बचते रहो बड़े गुनाहों से जिनकी तुम्हें मनाई है[८] तो तुम्हारे और गुनाह[९] हम बख़्श देंगे और

(१९) यानी खुले छुपे किसी तरह बदकारी नहीं करतीं.
(२०) और शौहर-दार हो जाएं.
(२१) जो शौहरदार न हों, यानी पचास कोड़े, क्योंकि आज़ाद के लिये सौ कोड़े हैं और दासियों को संगसार नहीं किया जाता.
(२२) दासी से निकाह करना.
(२३) दासी के साथ निकाह करने से, क्योंकि इससे गुलाम औलाद पैदा होगी.

सूरए निसा - पाँचवां रूकू

(१) नबियों और नेक बन्दों की.
(२) और हराम में लगकर उन्हीं की तरफ़ हो जाओ.
(३) और अपने फ़ज़्ल व मेहरबानी से अहकाम आसान करे.
(४) उसको औरतों से और वासना से सब्र दुशवार है. हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, औरतों में भलाई नहीं और उनकी तरफ़ से सब्र भी नहीं हो सकता. नेकों पर वो ग़ालिब आती हैं, बुरे उनपर ग़ालिब आ जाते हैं.
(५) चोरी, ग़बन, ख़ुर्द बुर्द और नाजायज़ तौर से क़ब्ज़ा करलेना, जुआ, सूद जितने हराम तरीक़े हैं सब नाहक़ है, सब की मनाही है.
(६) वह तुम्हारे लिये हलाल है.
(७) ऐसे काम इख़्तियार करके जो दुनिया या आख़िरत में हलाकत का कारण हों, इसमें मुसलमानों का क़त्ल करना भी आगया है और मूमिन का क़त्ल ख़ुद अपना ही क़त्ल है, क्योंकि तमाम ईमान वाले एक जान की तरह हैं. इस आयत से ख़ुदकुशी यानी आत्महत्या की अवैधता भी साबित हुई. और नफ़्स का अनुकरण करके हराम में पड़ जाना भी अपने आपको हलाक करना है.
(८) और जिनपर फटकार उतरी यानी अज़ाब का वादा दिया गया मिस्ल क़त्ल, ज़िना, चोरी वग़ैरह के.
(९) छोटे गुनाह. कुफ़्र और शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर आदमी उसी पर मरा (अल्लाह की पनाह). बाक़ी सारे गुनाह, छोटे हों या बड़े, अल्लाह की मर्ज़ी में हैं, चाहे उनपर अज़ाब करे, चाहे माफ़ फ़रमाए.

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا
اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾
وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ
وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ اَلرِّجَالُ
قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى
بَعْضٍ وَّبِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ
تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی
الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا
عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे (३१) और उसकी आरज़ू न करो जिससे अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी[१०] मर्दों के लिये उनकी कमाई से हिस्सा है और औरतों के लिये उनकी कमाई से हिस्सा[११] और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल (कृपा) मांगो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है (३२) और हमने सबके लिये माल के मुस्तहक़ (हक़दार) बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां बाप और क़राबत वाले (रिश्तेदार) और वो जिनसे तुम्हारा हलफ़ बंध चुका[१२] उन्हें उनका हिस्सा दो बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है (३३)

छटा रूकू

मर्द अफ़सर हैं औरतों पर[१] इसलिये कि अल्लाह ने उनमें एक को दूसरे पर बड़ाई दी[२] और इसलिये कि मर्दों ने उनपर अपने माल ख़र्च किये[३] तो नेकबख़्त (ख़ुशनसीब) औरतें अदब वालियां हैं ख़ाविन्द (शौहर) के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं[४] जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औरतों की नाफ़रमानी का तुम्हें डर हो[५] तो उन्हें समझाओ और उनसे अलग सोओ और उन्हें मारो[६] फिर अगर वो तुम्हारे हुक्म में आजाएं तो उनपर ज़ियादती की कोई राह न चाहो बेशक अल्लाह बलन्द बड़ा है[७] (३४)

(१०) चाहे दुनिया के नाते से या दीन के, कि आपस में ईर्ष्या, हसद और दुश्मनी न पैदा हो. ईर्ष्या यानी हसद अत्यन्त बुरी चीज़ है. हसद वाला दूसरे को अच्छे हाल में देखता है तो अपने लिये उसकी इच्छा करता है और साथ में यह भी चाहता है कि उसका भाई उस नेअमत से मेहरूम हो जाए. यह मना है. बन्दे को चाहिये कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उसे जो दिया गया है, उसपर राज़ी रहे. उसने जिस बन्दे को जो बुज़ुर्गी दी, चाहे दौलत और माल की, या दीन में ऊंचे दर्जे, यह उसकी हिक्मत है. जब मीरास की आयत में *"लिज़्ज़करे मिस्लो हज़्ज़िल उनसयेन"* उतरा और मरने वाले के तर्के में मर्द का हिस्सा औरत से दूना मुक़र्रर किया गया, तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औरतों से दुगना मिलेगा और औरतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा. इसपर यह आयत उतरी और इसमें बताया गया कि अल्लाह तआला ने जिसको जो फ़ज़्ल दिया वह उसकी हिक्मत है.

(११) हर एक को उसके कर्मों का बदला. उम्मुल मूमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो जिहाद करते और मर्दों की तरह जान क़ुर्बान करने का महान सवाब पाते. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि मर्द जिहाद से सवाब हासिल कर सकते हैं तो औरतें शौहरों की फ़रमाँबरदारी और अपनी पवित्रता की हिफ़ाज़त करके सवाब हासिल कर सकती हैं.

(१२) इससे अक़्दे मवालात मुराद है. इसकी सूरत यह है कि कोई मजहूलुन नसब शख़्स दूसरे से यह कहे कि तू मेरा मौला है, मैं मर जाऊँ तो मेरा वारिस होगा और मैं कोई जिनायत करूँ तो तुझे दय्यत देनी होगी. दूसरा कहे मैंने क़ुबूल किया. उस सूरत में यह अक़्द सहीह हो जाता है और क़ुबूल करने वाला वारिस बन जाता है और दय्यत भी उसपर आजाती है और दूसरा भी उसी की तरह से मजहूलुन नसब हो और ऐसा ही कहे और यह भी क़ुबूल करले तो उनमें से हर एक दूसरे का वारिस और उसकी दय्यत का ज़िम्मेदार होगा. यह अक़्द साबित है. सहाबा रदियल्लाहो अन्हुम इसके क़ायल हैं.

सूरए निसा - छटा रूकू

(१) तो औरतों को उनकी इताअत लाज़िम है और मर्दों को हक़ है कि वो औरतों पर रिआया की तरह हुक्मरानी करें. हज़रत सअद बिन रबीअ ने अपनी बीवी हबीबा को किसी ख़ता पर एक थप्पड़ मारा. उनके वालिद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में ले गए और उनके शौहर की शिकायत की. इस बारे में यह आयत उतरी.

(२) यानी मर्दों को औरतों पर अक़्ल और सूझबूझ और जिहाद व नबुव्वत, ख़िलाफ़त, इमामत, अज़ान, ख़ुत्बा, जमाअत, जुमुआ, तक्बीर,

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ
اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا
يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾
وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ
بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ﴿۳٦﴾
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا

और अगर तुमको मियां बीबी के झगड़े का डर हो[८] तो एक पंच मर्द वालों की तरफ़ से भेजो और एक पंच औरत वालों की तरफ़ से[९] ये दोनों अगर सुलह करना चाहें तो अल्लाह उनमें मेल करदेगा बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है[१०]﴾३५﴿ और अल्लाह की बन्दगी करो और उसका शरीक किसी को न ठहराओ[११] और मां बाप से भलाई करो[१२] और रिश्तेदारों[१३] और यतीमों और मोहताजों[१४] और पास के पड़ोसी और दूर के पड़ोसी[१५] और करवट के साथी[१६] और राहगीर[१७] और अपनी बांदी(दासी) ग़ुलाम से[१८] बेशक अल्लाह को ख़ुश नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला[१९]﴾३६﴿ जो आप कंजूसी करें और औरों से कंजूसी के लिये कहें[२०] और अल्लाह ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं[२१] और काफ़िरों के लिये हमने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है﴾३७﴿ और वो जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं[२२] और ईमान नहीं लाते अल्लाह और न क़यामत पर और जिसका साथी शैतान हुआ[२३] तो

तशरीक़ और हद व क़िसास की शहादत के, और विरासत में दूने हिस्से और निकाह व तलाक़ के मालिक होने और नसबों के उनकी तरफ़ जोड़े जाने और नमाज़ रोज़े के पूरे तौर पर क़ाबिल होने के साथ, कि उनके लिये कोई ज़माना ऐसा नहीं है कि नमाज़ रोज़े के क़ाबिल न हों, और दाढ़ियों और अमामों के साथ फ़ज़ीलत दी.

(३) इस आयत से मालूम हुआ कि औरतों की आजीविका मर्दों पर वाजिब है.

(४) अपनी पवित्रता और शौहरों के घर,माल और उनके राज़ों की.

(५) उन्हें शौहर की नाफ़रमानी और उसकी फ़रमाँबरदारी न करने और उसके अधिकारों का लिहाज़ न रखने के नतीजे समझाओ, जो दुनिया और आख़िरत में पेश आते हैं और अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाओ और बताओ कि हमारा तुमपर शरई हक़ है और हमारी आज्ञा का पालन तुमपर फ़र्ज़ है. अगर इसपर भी न मानें....

(६) हल्की मार.

(७) और तुम गुनाह करते हो फिर भी वह तुम्हारी तौबह क़ुबूल फ़रमा लेता है. तो तुम्हारे हाथ के नीचे की औरतें अगर ग़लती करने के बाद माफ़ी चाहें तो तुम्हें ज़्यादा मेहरबानी से माफ़ करना चाहिये और अल्लाह की क़ुदरत और बरतरी का लिहाज़ रखकर ज़ुल्म से दूर रहना चाहिये.

(८) और तुम देखो कि समझाना, अलग सोना, मारना कुछ भी कारामद न हो और दोनों के मतभेद दूर न हुए.

(९) क्योंकि क़रीब के लोग अपने रिश्तेदारों के घरेलू हालात से परिचित होते हैं और मियाँ बीबी के बीच मिलाप की इच्छा भी रखते हैं और दोनों पक्षों को उनपर भरोसा और इत्मीनान भी होता है और उनसे अपने दिल की बात कहने में हिचकिचाहट भी नहीं होती है.

(१०) जानता है कि मियाँ बीबी में ज़ालिम कौन है . पंचों को मियाँ बीबी में जुदाई करदेने का इख़्तियार नहीं.

(११) न जानदार को न बेजान को,न उसके रब होने में, न उसकी इबादत में.

(१२) अदब और आदर के साथ और उनकी ख़िदमत में सदा चौकस रहना और उनपर ख़र्च करने में कमी न करना. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया, उसकी नाक ख़ाक में लिपटे. हज़रत अबू हुरैरा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह किसकी ? फ़रमाया, जिसने बूढ़े माँ बाप पाए या उनमें से एक को पाया और जन्नती न हो गया.

(१३) हदीस शरीफ़ में है, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने वालों की उम्र लम्बी और रिज़्क़ वसीअ होता है. (बुख़ारी व मुस्लिम)

(१४) हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मैं और यतीम की सरपरस्ती करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे कलिमे और बीच की उंगली (बुख़ारी शरीफ़). एक और हदीस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, बेवा और मिस्कीन की इमदाद और ख़बरगीरी करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है.

(१५) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जिब्रील मुझे हमेशा पड़ोसियों के साथ एहसान करने की ताकीद करते रहे,

فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ
اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ
وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿۴۱﴾ؕ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ
وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿۴۲﴾ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا
مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى
تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ
اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

منزل۱

कितना बुरा साथी है(३८) और उनका क्या नुक़सान था अगर ईमान लाते अल्लाह और क़यामत पर और अल्लाह के दिये में से उसकी राह में ख़र्च करते[२४] और अल्लाह उनको जानता है(३९) अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है(४०) तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं[२५] और ऐ मेहबूब, तुम्हें उन सबपर गवाह और निगहबान बनाकर लाएं[२६](४१) उस दिन तमन्ना करेंगे वो जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की नाफ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में दबाकर ज़मीन बराबर करदी जाए और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे[२७](४२)

सातवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो, नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ[१] जबतक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की हालत में बे नहाए मगर मुसाफ़िरी में[२] और अगर तुम बीमार हो[३] या सफ़र में या तुम में से कोई क़ज़ाए हाजत (पेशाब पाख़ाना) से आया[४] या तुमने औरतों को छुआ[५] और पानी न पाया[६] तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो[७] तो अपने मुंह और हाथों का मसह (हाथ फेरना)

इस हद तक कि गुमान होता था कि उनको वारिस क़रार दे दें.

(१६) यानी बीवी या जो सोहबत में रहे या सफ़र का साथी हो या साथ पढ़े या मजलिस और मस्जिद में बराबर बैठे.

(१७) और मुसाफ़िर व मेहमान. हदीस में है, जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखे उसे चाहिये कि मेहमान की इज़्ज़त करे. (बुख़ारी व मुस्लिम)

(१८) कि उन्हें उनकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ न दो और बुरा भला न कहो और खाना कपड़ा उनकी ज़रूरत के अनुसार दो. हदीस में है, रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत में बुरा व्यवहार करने वाला दाख़िल न होगा. (तिरमिज़ी)

(१९) अपनी बड़ाई चाहने वाला घमण्डी, जो रिश्तेदारों और पड़ोसियों को ज़लील समझे.

(२०) बुख़्ल यानी कंजूसी यह है कि ख़ुद खाए, दूसरे को न दे. "शेह" यह है कि न खाए न खिलाए. "सख़ा" यह है कि ख़ुद भी खाए दूसरों को भी खिलाए. "जूद" यह है कि आप न खाए दूसरे को खिलाए. यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ बयान करने में कंजूसी करते और आपके गुण छुपाते थे. इस से मालूम हुआ कि इल्म को छुपाना बुरी बात है.

(२१) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह को पसन्द है कि बन्दे पर उसकी नेअमत ज़ाहिर हो. अल्लाह की नेअमत का इज़हार ख़ुलूस के साथ हो तो यह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैसियत के लायक़ जायज़ लिबासों में बेहतर लिबास पहनना मुस्तहब है.

(२२) बुख़्ल यानी कंजूसी के बाद फ़ुज़ूलख़र्ची की बुराई बयान फ़रमाई. कि जो लोग केवल दिखावे के लिये या नाम कमाने के लिये ख़र्च करते हैं और अल्लाह की ख़ुशी हासिल करना उनका लक्ष्य नहीं होता, जैसे कि मुश्रिक और मुनाफ़िक़, ये भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया.

(२३) दुनिया और आख़िरत में, दुनिया में तो इस तरह कि वह शैतानी काम करके उसको ख़ुश करता रहा और आख़िरत में इस तरह कि हर काफ़िर एक शैतान के साथ आग की ज़ंजीर में जकड़ा होगा. (ख़ाज़िन)

(२४) इसमें सरासर उनका नफ़ा ही था.

(२५) उस नबी को, और वह अपनी उम्मत के ईमान और कुफ़्र पर गवाही दें क्योंकि नबी अपनी उम्मतों के कामों से बा-ख़बर होते हैं.

(२६) कि तुम नबियों के सरदार हो और सारा जगत तुम्हारी उम्मत.

(२७) क्योंकि जब वो अपनी ग़लती का इन्कार करेंगे और क़सम खाकर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे और हमने ख़ता न की थी तो उनके मुंहों पर मुहर लगा दी जाएगी और उनके शरीर के अंगों को ज़बान दी जाएगी, वो उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे.

सूरए निसा - सातवाँ रूकू

(१) हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ ने सहाबा की एक जमाअत की दावत की. उसमें खाने के बाद शराब पेश की गई. कुछ ने

بِوُجُوهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ
يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى
بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ
الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا
فِي الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَ
لٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ
وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

करो[८] बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है﴾४३﴿ क्या तुमने उन्हें न देखा जिनको किताब से एक हिस्सा मिला[९] गुमराही मोल लेते हैं[१०] और चाहते हैं[११] कि तुम भी राह से बहक जाओ﴾४४﴿ और अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को[१२] और अल्लाह काफ़ी है वाली (मालिक)[१३] और अल्लाह काफ़ी है मददगार﴾४५﴿ कुछ यहूदी कलामों को उनकी जगह से फेरते हैं[१४] और[१५] कहते हैं हमने सुना और न माना और[१६] सुनिये आप सुनाए न जाएं[१७] और राइना कहते हैं[१८] ज़बानें फेर कर[१९] और दीन में तअने (लांछन) के लिये[२०] और अगर वो[२१] कहते कि हमने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हमपर नज़र फ़रमाएं तो उनके लिये भलाई और रास्ती में ज़्यादा होता लेकिन उनपर तो अल्लाह ने लानत की उनके कुफ़्र की वजह से तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा[२२]﴾४६﴿ ऐ किताब वालो ईमान लाओ उसपर जो हमने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब[२३] की पुष्टि फ़रमाता इससे पहले कि हम बिगाड़ें कुछ मुंहों को[२४] तो उन्हें फेर दें उनकी पीठ की तरफ़ या उन्हें लानत करें जैसी

पी, क्योंकि उस वक़्त तक शराब हराम न हुई थी. फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी. इमाम नशे में *"कुल या अय्युहल काफ़िरूना अअबुदो मा तअबुदूना व अन्तुम आबिदूना मा अअबुद"* पढ़ गए और दोनों जगह "ला" (नहीं) छोड़ गए और नशे में ख़बर न हुई. और आयत का मतलब ग़लत हो गया. इसपर यह आयत उतरी और नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमा दिया गया. तो मुसलमानों ने नमाज़ के वक़्तों में शराब छोड़ दी. इसके बाद शराब बिल्कुल हराम कर दी गई. इस से साबित हुआ कि आदमी नशे की हालत में कुफ़्र का कलिमा ज़बान पर लाने से काफ़िर नहीं होता. इसलिये कि *"कुल या अय्युहल काफ़िरूना"* में दोनों जगह "ला" का छोड़ देना कुफ़्र है, लेकिन उस हालत में हुज़ूर ने उसपर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि क़ुरआने पाक में उनको *"या अय्युहल लज़ीना आमनू"* (ऐ ईमान वालो) से ख़िताब फ़रमाया गया.

(२) जबकि पानी न पाओ, तयम्मुम कर लो.

(३) और पानी का इस्तेमाल ज़रूर करता हो.

(४) यह किनाया है बे वुज़ू होने से.

(५) यानी हमबिस्तरी की.

(६) इसके इस्तेमाल पर क़ादिर न होने, चाहे पानी मौजूद न होने के कारण या दूर होने की वजह से या उसके हासिल करने का साधन न होने के कारण या साँप, ख़तरनाक जंगली जानवर, दुश्मन वग़ैरह कोई रूकावट होने के कारण.

(७) यह हुक्म मरीज़ों, मुसाफ़िरों, जनाबत और हदस वालों को शामिल है, जो पानी न पाएं या उसके इस्तेमाल से मजबूर हों (मदारिक). माहवारी, हैज़ व निफ़ास से पाकी के लिये भी पानी से मजबूर होने की सूरत में तयम्मुम जायज़ है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है.

(८) तयम्मुम का तरीक़ा :- तयम्मुम करने वाला दिल से पाकी हासिल करने की नियत करे. तयम्मुम में नियत शर्त है क्योंकि अल्लाह का हुक्म आया है. जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे धूल, रेत, पत्थर, उन सबपर तयम्मुम जायज़ है. चाहे पत्थर पर धूल भी न हो लेकिन पाक होना इन चीज़ों में शर्त है. तयम्मुम में दो ज़र्बें हैं, एक बार हाथ मार कर चेहरे पर फेर लें, दूसरी बार हाथों पर. पानी के साथ पाक अस्ल है और तयम्मुम पानी से मजबूर होने की हालत में उसकी जगह लेता है. जिस तरह हदस पानी से ज़ायल होता है, उसी तरह तयम्मुम से. यहाँ तक कि एक तयम्मुम से बहुत से फ़र्ज़ और नफ़्ल पढ़े जा सकते हैं. तयम्मुम करने वाले के पीछे गुस्ल और वुज़ू वाले की नमाज़ सही है. ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ में जब इस्लामी लश्कर रात को एक वीराने में उतरा जहाँ पानी न था और सुबह वहाँ से कूच करने का इरादा था, वहाँ उम्मुल मूमिनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा का हार खो गया. उसकी तलाश के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वहाँ क़याम फ़रमाया. सुबह हुई तो पानी न था. अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयत उतारी. उसैद बिन हदीर रदियल्लाहो अन्हो ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र, यह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है, यानी तुम्हारी

لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى

लानत की हफ़्ते वालों पर[२५] और ख़ुदा का हुक्म होकर रहे﴿४७﴾ बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उसके साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है[२६] और जिसने ख़ुदा का शरीक ठहराया उसने बड़ा गुनाह का तूफ़ान बांधा﴿४८﴾ क्या तुमने उन्हें न देखा जो ख़ुद अपनी सुथराई बयान करते हैं[२७] कि अल्लाह जिसे चाहे सुथरा करे और उनपर ज़ुल्म न होगा ख़ुर्मे के दाने के डोरे बराबर[२८]﴿४९﴾ देखो कैसा अल्लाह पर झूठ बांध रहे हैं[२९] और यह काफ़ी है खुल्लम खुल्ला गुनाह﴿५०﴾

आठवाँ रूकू

क्या तुमने वो न देखे जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैतान पर और काफ़िरों को कहते हैं कि ये मुसलमानों से ज़्यादा राह पर हैं﴿५१﴾ ये हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की और जिसे ख़ुदा लानत करे तो कभी उसका कोई यार न पाएगा[१]﴿५२﴾ क्या मुल्क में उनका कुछ हिस्सा है[२] ऐसा हो तो लोगों को तिल भर न दें﴿५३﴾ या लोगों से हसद(ईर्ष्या) करते हैं[३] उसपर जो अल्लाह ने

बरकत से मुसलमानों को बहुत आसानियाँ हुई और बहुत से फ़ायदे पहुंचे. फिर ऊंट उठाया गया तो उसके नीचे हार मिला. हार खो जाने और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के न बताने में बहुत हिकमत हैं. हज़रत सिद्दीक़ा के हार की वजह से क़याम उनकी बुज़ुर्गी और महानता ज़ाहिर करता है. सहाबा का तलाश में लग जाना, इसमें हिदायत है कि हुज़ूर की बीबियों की ख़िदमत ईमान वालों की ख़ुशनसीबी है, और फिर तयम्मुम का हुक्म होना, मालूम होता है कि हुज़ूर की पाक बीबियों की ख़िदमत का ऐसा इनआम है, जिससे क़यामत तक मुसलमान फ़ायदा उठाते रहेंगे. सुब्हानल्लाह !

(९) वह यह कि तौरात से उन्होंने सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को पहचाना और उसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जो बयान था उस हिस्से से मेहरूम रहे और आपके नबी होने का इन्कार कर बैठे. यह आयत रिफ़ाआ बिन ज़ैद और मालिक बिन दख़्शम यहूदियों के बारे में उतरी. ये दोनों जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बात करते तो ज़बान टेढ़ी करके बोलते.

(१०) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत का इन्कार करके.

(११) ऐ मुसलमानो !

(१२) और उसने तुम्हें भी उनकी दुश्मनी पर ख़बरदार कर दिया तो चाहिये कि उनसे बचते रहो.

(१३) और जिसके काम बनाने वाला अल्लाह हो उसे क्या डर.

(१४) जो तौरात शरीफ़ में अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात में फ़रमाए.

(१५) जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन्हें कुछ हुक्म फ़रमाते हैं तो.

(१६) कहते हैं.

(१७) यह कलिमा दो पहलू रखता है . एक पहलू तो यह कि कोई नागवार बात आपको सुनने में न आए और दूसरा पहलू यह कि आपको सुनना नसीब न हो.

(१८) इसके बावुजूद कि इस कलिमे के साथ सम्बोधन करने को मना किया गया है क्योंकि उनकी ज़बान में ख़राब मानी रखता है.

(१९) हक़ यानी सच्चाई से बातिल यानी बुराई की तरफ़.

(२०) कि वो अपने दोस्तों से कहते थे कि हम हुज़ूर की बुराई करते हैं . अगर आप नबी होते तो आप इसको जान लेते . अल्लाह तआला ने उनके दिल में छुपी कटुता और ख़बासत को ज़ाहिर फ़रमा दिया.

(२१) इन कलिमात की जगह अदब और आदर करने वालों के तरीक़े पर.

(२२) इतना कि अल्लाह ने उन्हें पैदा किया और रोज़ी दी और इतना काफ़ी नहीं जबतक कि ईमान वाली बातों को न मानें और सब की तस्दीक़ न करें.

(२३) तौरात.
(२४) आँख नाक कान पलकें वग़ैरह नक़्शा मिटा कर.
(२५) इन दोनों बातों में से एक ज़रूर लाज़िम है. और लानत तो उनपर ऐसी पड़ी कि दुनिया उन्हें बुरा कहती है. यहाँ मुफ़स्सिरों के कुछ अलग अलग क़ौल हैं. कुछ इस फटकार का पड़ना दुनिया में बताते हैं, कुछ आख़िरत में. कुछ कहते हैं कि लानत हो चुकी और फटकार पड़ गई. कुछ कहते हैं कि अभी इन्तिज़ार है. कुछ का क़ौल है कि यह फटकार उस सूरत में थी जबकि यहूदियों में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूदी ईमान ले आए, इसलिये शर्त नहीं पाई गई और फटकार उठ गई. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूदी आलिमों के बड़ों में से हैं, उन्होंने मुल्के शाम से वापस आते हुए रास्ते में यह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इसलाम लाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह मैं नहीं ख़याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की तरफ़ फिर जाने से पहले और चेहरे का नक़्शा मिट जाने से पहले आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो सकूंगा, यानी इस डर से उन्होंने ईमान लाने में जल्दी की क्योंकि तौरात शरीफ़ से उन्हें आपके सच्चे रसूल होने का यक़ीनी इल्म था, इसी डर से कअब अहबार जो यहूदियों में बड़ी बुज़ुर्गी रखते थे, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से यह आयत सुनकर मुसलमान हो गए.
(२६) मानी यह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उसकी बख़्शिश नहीं. उसके लिये हमेशगी का अज़ाब है और जिसने कुफ़्र न किया हो, वह चाहे कितना ही बड़ा गुनाह करने वाला हो, और तौबह के बग़ैर मर जाए, तो उसका बदला अल्लाह की मर्ज़ी पर है, चाहे माफ़ फ़रमाए या उसके गुनाहों पर अज़ाब करे फिर अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए. इस आयत में यहूदियों को ईमान की तरग़ीब है और इसपर भी प्रमाण है कि यहूदियों पर शरीअत के शब्दों में मुश्रिक शब्द लागू होना सही है.
(२७) यह आयत यहूदियों और ईसाईयों के बारे में नाज़िल हुई जो अपने आपको अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूदियों और ईसाईयों के सिवा कोई जन्नत में दाख़िल न होगा . इस आयत में बताया गया कि इन्सान का, दीनदारी, नेक काम, तक़्वा और अल्लाह की बारगाह में क़ुर्ब और मक़बूलियत का दावेदार होना और मुंह से अपनी तारीफ़ करना काम नहीं आता.
(२८) यानी बिल्कुल ज़ुल्म न होगा . वही सज़ा दी जाएगी जो उनका हक़ है.
(२९) अपने आपको बेगुनाह और अल्लाह का प्यारा बताकर.

सूरए निसा - आठवाँ रूकू

(१) यह आयत कअब बिन अशरफ़ वग़ैरह यहूदी आलिमों के बारे में उतरी जो सत्तर सवारों की जमाअत लेकर क़ुरैश से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जंग करने पर हलफ़ लेने पहुंचे, क़ुरैश ने उनसे कहा कि चूंकि तुम किताब वाले हो इसलिये तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के साथ ज़्यादा क़ुर्ब रखते हो, हम कैसे इत्मीनान करें कि तुम हमसे धोखे के साथ नहीं मिल रहे हो. अगर इत्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सज्दा करो. तो उन्होंने शैतान की फ़रमाँबरदारी करके बुतों को सज्दा किया, फिर अबू सुफ़ियान ने कहा कि हम ठीक राह पर हैं या मुहम्मद ? कअब बिन अशरफ़ ने कहा, तुम्हीं ठीक राह पर हो. इसपर यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने उनपर लानत फ़रमाई कि उन्होंने हुज़ूर की दुश्मनी में मुश्रिकों के बुतों तक को पूज लिया.
(२) यहूदी कहते थे कि हम सल्तनत और नबुव्वत के ज़्यादा हक़दार हैं तो हम कैसे अरबों का अनुकरण और फ़रमाँबरदारी करें. अल्लाह तआला ने उनके दावे को झुटला दिया कि उनका सल्तनत में हिस्सा ही क्या है. और मान लिया जाय कुछ होता भी, तो उनका बुख़्ल और कंजूसी इस दर्जे की है कि...
(३) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ऐहले ईमान से.

مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ
وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا
حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا

उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया(४) तो हमने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिकमत(बोध) अता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया(५)﴾५४﴿ तो उनमें कोई उसपर ईमान लाया(६) और किसी ने उससे मुंह फेरा(७) और दोज़ख़ काफ़ी है भड़कती आग(८)﴾५५﴿ जिन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया जल्द ही हम उनको आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उनकी खालें पक जाएंगी हम उनके सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अज़ाब का मज़ा लें बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है﴾५६﴿ और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये जल्द ही हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहेंगे, उनके लिये वहां सुथरी बीबीयां हैं(९) और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा(१०)﴾५७﴿ बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सुपुर्द करो(११) और यह कि जब तुम लोगों में फैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फैसला करो(१२) बेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीहत फ़रमाता

(४) नबुव्वत और विजय और ग़लबा और सम्मान वग़ैरह नेअमतें.

(५) जैसा कि हज़रत यूसुफ़ और हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिमुस्सलाम को, तो अगर अपने हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर करम और मेहरबानी की तो उससे क्यों जलते और हसद करते हो.

(६) जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथ वाले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(७) और ईमान से मेहरूम रहा.

(८) उसके लिये जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान ना लाए.

(९) जो हर निजासत, गन्दगी और नफ़रत के क़ाबिल चीज़ों से पाक हैं.

(१०) यानी जन्नत का साया, जिसकी राहत, आसायश को न समझा जा सकता है, न ही बयान किया जा सकता है.

(११) अमानतें रखने वालों और हाकिमों को अमानतें ईमानदारी के साथ हक़्दार को अदा करने और फ़ैसलों में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया. मुफ़स्सिरों का कहना है कि फ़राइज़ भी अल्लाह तआला की अमानतें हैं, उनकी अदायगी का हुक्म भी इसमें दाख़िल है.

(१२) पक्षों में से बिल्कुल किसी की रिआयत न हो. उलमा ने फ़रमाया कि हाकिम को चाहिये कि पांच बातों में पक्षों के साथ बराबर का सुलूक करे.(१) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़ा दे दूसरे को भी दे.(२) बैठने की जगह दोनों को एक सी दे.(३) दोनों की तरफ़ बराबर ध्यान दे.(४) बात सुनने में हर एक के साथ एक ही तरीक़ा रखे.(५) फ़ैसला देने में हक़ की रिआयत करे, जिसका दूसरे पर अधिकार हो पूरा दिलाए. हदीस शरीफ़ में है, इन्साफ़ करने वालों को अल्लाह के क़ुर्ब में नूरी मिम्बर अता होंगे. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में इस घटना का ज़िक्र किया है कि मक्का की विजय के वक़्त सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसमान बिन तलहा, काबे के ख़ादिम से काबे की चाबी ले ली. फिर जब यह आयत उतरी तो आपने वह चाबी उन्हें वापस दी और फ़रमाया कि अब यह चाबी हमेशा तुम्हारी नस्ल में रहेगी. इसपर उसमान बिन तलहा हजबी इस्लाम लाए. अगरचे यह घटना थोड़ी थोड़ी तबदीलियों के साथ बहुत से मुहद्दिसों ने बयान की है मगर हदीसों पर नज़र करने से यह सही मालूम नहीं होती. क्योंकि इब्ने अब्दुल्लाह और इब्ने मुन्दा और इब्ने असीर की रिवायतों से मालूम होता है कि उसमान बिन तलहा आठ हिजरी में मदीनए तैय्यिबह हाज़िर होकर ईस्लाम ला चुके थे और उन्होंने फ़त्हे मक्का के रोज़ चाबी अपनी ख़ुशी से पेश की थी. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों से यही निष्कर्ष निकलता है.

بَصِيرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ
تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ
اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ
خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ
يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ
وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ
اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ
الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ۝ فَكَيْفَ اِذَآ
اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ
جَاۗءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا

है बेशक अल्लाह सुनता देखता है﴾५८﴿ ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का[१३] और उनका जो तुम में हुकूमत वाले हैं[१४] फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रूजू (पेश) करो और अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते हो[१५] यह बेहतर है और इसका अंजाम सब से अच्छा﴾५९﴿

नवाँ रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जिनका दावा है कि वो ईमान लाए उसपर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उसपर जो तुमसे पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनाएं और उनको तो हुक्म यह था कि उसे बिल्कुल न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे[१]﴾६०﴿ और जब उनसे कहा जाए कि अल्लाह की उतारी हुई किताब और रसूल की तरफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ (दोग़ले लोग) तुमसे मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं﴾६१﴿ कैसी होगी जब उनपर कोई उफ़ताद (मुसीबत) पड़े[२] बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा[३] फिर ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों अल्लाह की क़सम खाते कि हमारा इरादा तो

(१३) कि रसूल की फ़रमाँबरदारी अल्लाह ही की फ़रमाँबरदारी है. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने मेरी फ़रमाँबरदारी की उसने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की.

(१४) इसी हदीस में हुज़ूर फ़रमाते हैं, जिसने सरदार की फरमाँबरदारी की उसने मेरी फ़रमाँबरदारी की. जिसने सरदार की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की. इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमान सरदारों और हाकिमों की आज्ञा का पालन वाजिब है जब तक वो हक़ के अनुसार रहें और अगर हक़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें, तो उनकी फ़रमाँबरदारी नहीं.

(१५) इस आयत से मालूम हुआ कि अहकाम तीन क़िस्म के हैं, एक वो जो ज़ाहिरे किताब यानी क़ुरआन से साबित हो, एक वो जो ज़ाहिरे हदीस से, एक वो जो क़ुरआन और हदीस की तरफ़ क़यास के तौर पर रूजू करने से. *''उलिल अम्र''* (जो हुकूमत करते हैं) में इमाम, अमीर, बादशाह, हाकिम, क़ाज़ी सब दाख़िल हैं. ख़िलाफ़ते कामिला तो ज़मानए रिसालत के बाद तीस साल रही, मगर ख़िलाफ़ते नाक़िसा अब्बासी ख़लीफ़ाओं में भी थी और अब तो इमामत भी नहीं पाई जाती. क्योंकि इमाम के लिये क़ुरैश से होना शर्त है और यह बात अक्सर जगहों में ग़ायब है. लेकिन सुल्तान और इमारत बाक़ी है और चूंकि सुल्तान और अमीर भी *उलुल अम्र* में दाख़िल हैं इसलिये हमपर उनकी इताअत भी लाज़िम है.

सूरए निसा - नवाँ रूकू

(१) बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था. यहूदी ने कहा चलो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तय करा लें. मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हुज़ूर तो रिआयत किये बिना केवल सच्चा ही फ़ैसला देंगे, उसका मतलब हासिल न होगा. इसलिये उसने ईमान का दावा रखने के बावुजूद यह कहा कि कअब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाओ (क़ुरआने मजीद में ताग़ूत से इस कअब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि कअब रिशवत खाता है, इसलिये उसने सहधर्मी होने के बावुजूद उसको पंच तसलीम नहीं किया. नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आना पड़ा. हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया, वह यहूदी के हक़ में हुआ. यहाँ से फ़ैसला सुनने के बाद फिर मुनाफ़िक़ यहूदी से ज़िद करने लगा और उसे मजबूर करके हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के पास लाया. यहूदी ने आपसे अर्ज़ किया कि मेरा इसका मामला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तय फ़रमा चुके, लेकिन यह हुज़ूर के फ़ैसले से राज़ी नहीं. आप से फ़ैसला चाहता है. फ़रमाया कि हाँ मैं अभी आकर फ़ैसला करता हूँ. यह फ़रमाकर मकान में तशरीफ़ ले गए और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया और फ़रमाया जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हो उसका मेरे पास यह फ़ैसला है.

وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾ وَإِذًا لَآتَيْنَاهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ

भलाई और मेल ही था(४)﴿६२﴾ उनके दिलों की तो बात अल्लाह जानता है तो तुम उनसे चश्मपोशी करो(नज़र फेरलो) और उन्हें समझा दो और उनके मामले में उनसे रसा बात कहो(५)﴿६३﴾ और हमने कोई रसूल न भेजा मगर इसलिये कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत(आज्ञा पालन) की जाए(६) और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें(७) तो ऐ मेहबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान पाएँ(८)﴿६४﴾ तो ऐ मेहबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जबतक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रूकावट न पाएं और जिसे मान लें(९)﴿६५﴾ और अगर हम उनपर फ़र्ज़ करते कि अपने आपको क़त्ल कर दो या अपने घरबार छोड़ कर निकल जाओ(१०) तो उनमें थोड़े ही ऐसा करते और अगर वो करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती है(११) तो इसमें उनका भला था और ईमान पर ख़ूब जमना﴿६६﴾ और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा सवाब देते﴿६७﴾ और ज़रूर उनको सीधी राह की हिदायत करते﴿६८﴾ और जो अल्लाह

(२) जिससे भागने बचने की कोई राह न हो जैसी कि बिशर मुनाफ़िक़ पर पड़ी कि उसको हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने क़त्ल कर दिया.

(३) कुफ़्र और दोहरी प्रवृत्ति और गुनाह, जैसा कि बिशर मुनाफ़िक़ ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़ैसले से मुंह फेर कर किया.

(४) और वह माफ़ी और शर्मिन्दगी कुछ काम न दे, जैसा कि बिशर मुनाफ़िक़ के मारे जाने के बाद उसके सरपरस्त उसके ख़ून का बदला तलब करने आए और बेजा माज़िरतें करने और बातें बनाने लगे. अल्लाह तआला ने उसके ख़ून का कोई बदला न दिया क्योंकि वह मारे ही जाने के क़ाबिल था.

(५) जो उनके दिल में असर कर जाए.

(६) जबकि रसूल का भेजना ही इसलिये है कि वो फ़रमाँबरदारी के मालिक बनाए जाएं और उनकी आज्ञा का पालन फ़र्ज़ हो. तो जो उनके हुक्म से राज़ी न हो उसने रिसालत को तसलीम न किया, वह काफ़िर क़त्ल किये जाने के क़ाबिल है.

(७) गुनाह और नाफ़रमानी करके.

(८) इससे मालूम हुआ कि अल्लाह की बारगाह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वसीला और आपकी शफ़ाअत काम बनजाने का ज़रिया है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ाते शरीफ़ के बाद एक अरब देहाती आपके मुबारक रौज़े पर हाज़िर हुआ और रोज़ए शरीफ़ की पाक मिट्टी अपने सर पर डाली और अर्ज़ करने लगा, या रसूलल्लाह, जो आपने फ़रमाया हमने सुना और जो आप पर उतरा उसमें यह आयत भी है *"वलौ अन्नहुम इज़ ज़लमू"*. मैंने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आपके हुज़ूर में अल्लाह से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने हाज़िर हुआ तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराईये. इसपर क़ब्र शरीफ़ से आवाज़ आई कि तेरी बख़्शिश की गई. इससे कुछ मसअले मालूम हुए. अल्लाह तआला की बारगाह में हाजत अर्ज़ करने के लिये उसके प्यारों को वसीला बनाना कामयाबी का ज़रिया है. क़ब्र पर हाजत के लिये जाना भी *"जाऊका"* में दाख़िल है. और पिछले नेक लोगों का तरीक़ा रहा है. वफ़ात के बाद अल्लाह के प्यारों को "या" के साथ पुकारना जायज़ है. अल्लाह के मक़बूल बन्दे मदद फ़रमाते हैं और उनकी दुआ से हाजत पूरी होती है.

(९) मानी ये हैं कि जब तक आपके फ़ैसले और हुक्म को दिल की सच्चाई से न मान लें, मुसलमान नहीं हो सकते. सुब्हानल्लाह, इससे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान ज़ाहिर होती है. पहाड़ से आने वाला पानी जिससे बाग़ों में सिंचाई करते हैं, उसमें एक अन्सारी का हज़रत ज़ुबैर रदियल्लाहो अन्हो से झगड़ा हुआ. मामला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर पेश किया गया. हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ ज़ुबैर तुम अपने बाग़ को पानी देकर अपने पड़ोसी की तरफ़ पानी छोड़ दो. यह अन्सारी को बुरा लगा और उसकी ज़बान से यह कलिमा निकला कि ज़ुबैर आपके फुफीज़ाद भाई हैं. इसके बावुजूद कि फ़ैसले में हज़रत ज़ुबैर"

وَ الرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ
وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا
حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِانْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ
مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ
قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾
وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ
تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ
فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ وَمَنْ
يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ

और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिनपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी नबी,[१२] और सिद्दिक़ीन (सच्चाई वाले)[१३] और शहीद[१४] और नेक लोग[१५] ये क्या ही अच्छे साथी हैं ﴿६९﴾ यह अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला ﴿७०﴾

दसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो[१] फिर दुश्मन की तरफ़ थोड़े थोड़े होकर निकलो या इकट्ठे चलो ﴿७१﴾ और तुम में कोई वह है कि ज़रूर देर लगाएगा[२] फिर अगर तुमपर कोई मुसीबत पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझपर एहसान था कि मैं उनके साथ हाज़िर न था ﴿७२﴾ और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल मिले[३] तो ज़रूर कहे[४] गोया तुममें उसमें कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उनके साथ होता तो बड़ी मुराद पाता ﴿७३﴾ तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिये जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचकर आख़िरत लेते हैं और जो अल्लाह की राह में[५] लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब (विजयी) आए तो जल्द ही हम उसे बड़ा सवाब देंगे ﴿७४﴾ और तुम्हें क्या हुआ कि न लड़ो अल्लाह की राह

को अन्सारी के साथ ऐहसान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अन्सारी ने इसकी क़द्र न की तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को भरपुर पानी देकर पानी रोक लो. इसपर आयत उतरी.

(१०) जैसा कि बनी इस्राईल को मिस्र से निकल जाने और तौबह के लिये अपने आपको क़त्ल का हुक्म दिया था. साबित बिन क़ैस बिन शम्मास से एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह ने हमपर अपना क़त्ल और घरबार छोड़ना फ़र्ज़ किया था, हमने उसको पूरा किया. साबित ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह हमपर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर हुक्म पूरा करते. इसपर यह आयत उतरी.

(११) यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी और आपकी आज्ञा के पालने की.

(१२) तो नबियों के मुख़लिस फ़रमाँबरदार, जन्नत में उनकी सोहबत और दर्शन से मेहरूम न होंगे.

(१३) "सिद्दीक़" नबियों के सच्चे अनुयाइयों को कहते हैं, जो सच्चे दिल से उनकी राह पर क़ायम रहें. मगर इस आयत में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बड़ी बुज़ुर्गी वाले सहाबा मुराद है जैसे कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो तआला अन्हो.

(१४) जिन्हों ने ख़ुदा की राह में जानें दीं.

(१५) वह दीनदार जो बन्दों के हक़ और अल्लाह के हक़ दोनों अदा करें और उनके ज़ाहिर और छुपवाँ हाल अच्छे और पाक हों. हज़रत सोअबान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ बहुत महब्बत रखते थे. जुदाई की ताक़त न थी. एक रोज़ इस क़द्र ग़मगीन और रंजीदा हाज़िर हुए कि रंग बदल गया था. हुज़ूर ने फ़रमाया आज रंग क्यों बदला हुआ है. अर्ज़ किया न मुझे कोई बीमारी है न दर्द, सिवाय इसके कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो बहुत ज़्यादा वहशत और परेशानी होती है. जब आख़िरत को याद करता हूँ तो यह अन्देशा होता है कि वहाँ में किस तरह दीदार पा सकूंगा. आप सबसे ऊंचे दर्जे में होंगे, मुझे अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से जन्नत दी भी तो उस ऊंचे मक़ाम तक पहुंच कहाँ. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि दर्जों के फ़र्क़ के बावुजूद फ़रमाँबरदारों को मुलाक़ात और साथ रहने की नेअमत से नवाज़ा जाएगा.

सूरए निसा - दसवाँ रूकू

(१) दुश्मन की घात से बचो और उसे अपने ऊपर मौक़ा न दो. एक क़ौल यह भी है कि हथियार साथ रखो. इससे मालूम हुआ कि दुश्मन के मुक़ाबले में अपनी हिफ़ाज़त की तदबीरें जायज़ हैं.

(२) यानी दोगली प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक़.

(३) तुम्हारी जीत हो और दुश्मन का माल यानी ग़नीमत हाथ आए.

(४) वही जिसके कथन से यह साबित होता है कि...

(५) यानी जिहाद फ़र्ज़ है और इसे छोड़ देने का तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है.

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ
هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ
لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ
الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝ اَلَمْ تَرَ
اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ
مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى

में और कमज़ोर मर्दों और औरतों और बच्चों के वास्ते यह दुआ कर रहे हैं कि ऐ हमारे रब हमें इस बस्ती से निकाल जिसके लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हिमायती दे दे और हमें अपने पास से कोई मददगार दे दे﴾७५﴿ ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं[६] और काफ़िर शैतान की राह में लड़ते हैं तो शैतान के दोस्तों से[७] लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है[८]﴾७६﴿

ग्यारहवाँ रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जिनसे कहा गया अपने हाथ रोक लो[१] और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो फिर जब उनपर जिहाद फ़र्ज़ किया गया[२] तो उनमें से कुछ लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरे या इससे भी ज़्यादा[३] और बोले ऐ रब हमारे तूने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया[४] थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने दिया होता तुम फ़रमादो कि दुनिया का बरतना थोड़ा है[५] और डर वालों

(६) इस आयत में मुसलमानों को जिहाद की रूचि दिलाई गई ताकि वो उन कमज़ोर मुसलमानों को काफ़िरों के अत्याचारी पंजे से छुड़ाएं जिन्हें मक्कए मुकर्रमा में मुश्रिकों ने क़ैद कर लिया था और तरह तरह की यातनाएं और तकलीफ़ें दे रहे थे और उनकी औरतों और बच्चों तक पर बेरहमी से अत्याचार कर रहे थे और वो लोग उनके हाथों में मजबूर थे. इस हालत में वो अल्लाह तआला से रिहाई और मदद की दुआएं करते थे. ये दुआएं क़ुबूल हुईं और अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनका सरपरस्त और मददगार बनाया और उन्हें मुश्रिकों के हाथों से छुड़ाया और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह करके उनकी ज़बरदस्त मदद फ़रमाई.

(७) दीन के प्रचार और अल्लाह की ख़ुशी के लिये.

(८) यानी काफ़िरों का और वह अल्लाह की मदद के मुक़ाबले में क्या चीज़ है.

सूरए निसा - ग्यारहवाँ रूकू

(१) जंग से. मक्के के मुश्रिक मुसलमानों को बहुत तकलीफ़ें देते थे. हिजरत से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की एक जमाअत ने हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप हमें काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये, उन्हों ने हमें बहुत सताया है और बहुत तकलीफ़ें पहुंचाते हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया कि उनके साथ जंग करने से हाथ रोको, नमाज़, और ज़कात, जो तुमपर फ़र्ज़ है, वह अदा करते रहो. इससे साबित हुआ कि नमाज़ और ज़कात जिहाद से पहले फ़र्ज़ हुए.

(२) मदीनए तैय्यिबह में और बद्र की हाज़िरी का हुक्म दिया गया.

(३) यह डर क़ुदरती था कि इन्सान की आदत है कि मौत और हलाकत से घबराता और डरता है.

(४) इसकी हिकमत क्या है, यह सवाल हिकमत की वजह दरियाफ़्त करने के लिये था न कि एतिराज़ के तौर पर. इसीलिये उनको इस सवाल पर फटकारा न गया, बल्कि तसल्ली वाला जवाब अता फ़रमा दिया गया.

(५) ख़त्म होजाने वाला और नश्वर है.

وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ اَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُّمُ
الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ ۗ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
حَدِيْثًا ۝ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ
اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۗ وَاَرْسَلْنٰكَ
لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝ مَنْ يُّطِعِ
الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ
عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۗ
وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

के लिये आख़िरत अच्छी और तुमपर तागे बराबर ज़ुल्म न होगा[६] ﴿७७﴾ तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी[७] अगरचे मज़बूत क़िलों में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे[८] तो कहें यह अल्लाह की तरफ़ से है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे[९] तो कहें यह हुज़ूर की तरफ़ से आई[१०] तुम फ़रमा दो सब अल्लाह की तरफ़ से है[११] तो उन लोगों को क्या हुआ कोई बात समझते मालूम ही नहीं होते ﴿७८﴾ ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुंचे वह अल्लाह की तरफ़ से है[१२] और जो बुराई पहुंचे वह तेरी अपनी तरफ़ से है[१३] और ऐ मेहबूब हमने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा[१४] और अल्लाह काफ़ी है गवाह[१५] ﴿७९﴾ जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना[१६] और जिसने मुंह फेरा[१७] तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा ﴿८०﴾ और कहते हैं हमने हुक्म माना[१८] फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उनमें एक दल जो कह गया था उसके ख़िलाफ़ रात को मन्सूबे (योजनाएं) गांठता है और अल्लाह लिख रखता है उनके रात के मन्सूबे[१९] तो ऐ मेहबूब तुम उनसे चश्मपोशी करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काफ़ी है काम बनाने को ﴿८१﴾ तो क्या

(६) और तुम्हारे इनाम कम न किये जाएंगे तो जिहाद में डर और हिचकिचाहट से काम न लो.

(७) और इससे रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत अटल है तो बिस्तर पर मर जाने से ख़ुदा की राह में जान देना बेहतर है कि यह आख़िरत की सआदत या ख़ुशनसीबी का कारण है.

(८) पैदावार वग़ैरह के सस्ता और ज़्यादा होने की.

(९) मेंहगाई और अकाल वग़ैरह.

(१०) यह हाल मुनाफ़िक़ों का है कि जब उन्हें कोई सख़्ती पेश आती है तो उसको सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ जोड़ देते और कहते जब से यह आए हैं ऐसी ही सख़्तियाँ पेश आया करती हैं.

(११) मेंहगाई हो या सस्तापन, अकाल हो या ख़ुशहाली, रंज हो या राहत, आराम हो या तक्लीफ़, विजय हो या पराजय, हक़ीक़त में सब अल्लाह की तरफ़ से है.

(१२) उसकी मेहरबानी और रहमत है.

(१३) कि तूने ऐसे गुनाह किये कि तू इसका हक़दार हुआ. यहाँ बुराई की निस्बत बन्दे की तरफ़ मजाज़ है और ऊपर जो बयान हुआ वह हक़ीक़त थी. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि बुराई की निस्बत बन्दे की तरफ़ अदब के तौर पर है. ख़ुलासा यह है कि बन्दा जब अल्लाह की तरफ़ नज़र करे तो हर चीज़ को उसीकी तरफ़ से जाने और जब कारणों पर नज़र करे तो बुराइयों को अपने नफ़्स की बुराई के कारण से समझे.

(१४) अरब हों या अजम, आप तमाम सृष्टि के लिये रसूल बनाए गए और सारा जगत उम्मत बनाया गया. यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊंचे दर्जे और इज़्ज़त का बयान है.

(१५) आपकी आम रिसालत पर, तो सबपर आपकी आज्ञा का पालन और आपका अनुकरण फ़र्ज़ है.

(१६) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने मेरी फ़रमाँबरदारी की उसने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की और जिसने मुझसे महब्बत की उसने अल्लाह से महब्बत की. इसपर आजकल के गुस्ताख़ बददीनों की तरह उस ज़माने के कुछ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह चाहते हैं कि हम उन्हें रब मान लें, जैसा ईसाईयों ने हज़रत ईसा बिन मरयम को रब माना, इसपर अल्लाह तआला ने उसके रद में यह आयत उतार कर अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कलाम की तस्दीक़ फ़रमादी कि बेशक रसूल की फ़रमाँबरदारी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी है.

(१७) और आपकी फ़रमाँबरदारी से मुंह फेरा.

(१८) यह आयत मुनाफ़िक़ों के हक़ में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में ईमान और फ़रमाँबरदारी ज़ाहिर करते थे और कहते थे कि हम हुज़ूर पर ईमान लाए हैं, हमने हुज़ूर की तस्दीक़ की है. हुज़ूर हमें जो हुक्म फ़रमाएं उसकी

السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمۡ عَلَيۡهِمۡ سَبِيۡلًا ۞ سَتَجِدُوۡنَ اٰخَرِيۡنَ يُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ يَّاۡمَنُوۡكُمۡ وَ يَاۡمَنُوۡا قَوۡمَهُمۡ ؕ كُلَّمَا رُدُّوۡۤا اِلَى الۡفِتۡنَةِ اُرۡكِسُوۡا فِيۡهَا ۚ فَاِنۡ لَّمۡ يَعۡتَزِلُوۡكُمۡ وَيُلۡقُوۡۤا اِلَيۡكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوۡۤا اَيۡدِيَهُمۡ فَخُذُوۡهُمۡ وَاقۡتُلُوۡهُمۡ حَيۡثُ ثَقِفۡتُمُوۡهُمۡ ؕ وَاُولٰٓـئِكُمۡ جَعَلۡنَا لَكُمۡ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنًا مُّبِيۡنًا ۞ وَمَا كَانَ لِمُؤۡمِنٍ اَنۡ يَّقۡتُلَ مُؤۡمِنًا اِلَّا خَطَـئًا ۚ وَمَنۡ قَتَلَ مُؤۡمِنًا خَطَـئًا فَتَحۡرِيۡرُ رَقَبَةٍ مُّؤۡمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهۡلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ يَّصَّدَّقُوۡا ؕ فَاِنۡ كَانَ مِنۡ قَوۡمٍ عَدُوٍّ لَّكُمۡ وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَتَحۡرِيۡرُ رَقَبَةٍ مُّؤۡمِنَةٍ ؕ وَاِنۡ كَانَ مِنۡ قَوۡمٍۢ بَيۡنَكُمۡ وَبَيۡنَهُمۡ مِّيۡثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهۡلِهٖ وَتَحۡرِيۡرُ رَقَبَةٍ مُّؤۡمِنَةٍ ۚ

और सुलह का पयाम डालें तो अल्लाह ने तुम्हें उन पर कोई राह न रखी[१२]﴿९०﴾ अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो ये चाहते हैं कि तुम से भी अमान में रहें और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें[१३] जब कभी उनकी क़ौम उन्हें फ़साद[१४] की तरफ़ फेरे तो उसपर औंधे गिरते हैं फिर अगर वो तुमसे किनारा न करें और[१५] सुलह की गर्दन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और ये हैं जिनपर हमने तुम्हें खुला इख़्तियार दिया[१६]﴿९१﴾

तेरहवाँ रूकू

और मुसलमानों को नहीं पहुंचता कि मुसलमान का ख़ून करे मगर हाथ बहक कर[१] और जो किसी मुसलमान को भूले से क़त्ल करे तो उसपर एक ममलूक(ग़ुलाम) मुसलमान का आज़ाद करना है और ख़ूं बहा(जुर्माना) कि मक़तूल(मृतक) के लोगों को सुपुर्द की जाए[२] मगर यह कि वो माफ़ करदें फिर अगर वह[३] उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है[४] और ख़ुद मुसलमान है तो सिर्फ़ एक ममलूक(ग़ुलाम) मुसलमान का आज़ाद करना[५] और अगर वह उस क़ौम में हो कि तुम में उनमें मुआहिदा (समझौता) है तो उसके लोगों को ख़ूंबहा(जुर्माना) सुपुर्द की जाए और एक मुसलमान ममलूक(ग़ुलाम) आज़ाद करना[६] तो जिसका हाथ न पहुंचे[७]

(४०) यानी उससे ज़्यादा कोई सच्चा नहीं इसलिये कि उसका झूट असंभव, नामुमकिन और मुहाल है क्योंकि झूट बुराई और ऐब है, हर बुराई और ऐब अल्लाह पर मुहाल है. वह सारे ऐबों से पाक है.

सूरए निसा - बारहवाँ रूकू

(१) मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में जाने से रूक गई थी. उसके बारे में सहाबा के दो पक्ष हो गए. एक पक्ष क़त्ल पर ज़ोर देता था और एक उनके क़त्ल से इन्कार करता था. इस मामले में यह आयत उतरी.

(२) कि वो हुज़ूर के साथ जिहाद में जाने से मेहरूम रहें.

(३) उनके कुफ़्र और इर्तिदाद और मुश्रिकों के साथ मिलने के कारण, तो चाहिये कि मुसलामान भी उनके कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ न करें.

(४) इस आयत में काफ़िरों के साथ मेल जोल को मना किया गया है . चाहे वो ईमान का इज़हार ही करते हों.

(५) और इससे उनके ईमान की तहक़ीक़ न हो ले.

(६) ईमान और हिजरत से, और अपनी हालत पर क़ायम रहें.

(७) और अगर तुम्हारी दोस्ती का दावा करें और मदद के लिये तैयार हों तो उनकी मदद क़ुबूल न करो.

(८) यह छूट क़त्ल की तरफ़ राजेअ है. क्योंकि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ीन के साथ मेल जोल किसी हाल में जायज़ नहीं और एहद से वह एहद मुराद है कि उस क़ौम को और जो उस क़ौम से जा मिले उसको अम्न है जैसा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते वक़्त हिलाल बिन उमैर असलमी से मामला किया था.

(९) अपनी क़ौम के साथ होकर.

(१०) तुम्हारे साथ होकर.

(११) लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और मुसलमानों को उनके शर से मेहफ़ूज़ रखा.

(१२) कि तुम उनसे जंग करो. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि यह हुक्म आयत *"उक़्तुलुल मुश्रिकीना हैसो वजद तुमूहुम"* (यानी तो मुश्रिकों को मारो जहां पाओ) (सूरए तौबह, आयत पांच) से मन्सूख़ हो गया.

(१३) मदीनए तैय्यिबह में असद और ग़तफ़ान क़बीले के लोग दिखावे के लिये इस्लाम का कलिमा पढ़ते और अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करते और जब उनमें से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वो लोग उनसे कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाए तो वो लोग कहते कि बन्दरों बिच्छुओं वग़ैरह पर. इस अन्दाज़ से उनका मतलब यह था कि दोनों मुनाफ़िक़ थे. उनके बारे में यह आयत उतरी.

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۚ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۭ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे[८] यह अल्लाह के यहाँ उसकी तौबह है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है﴾९२﴿ और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उसका बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उसमें रहे[९] और अल्लाह ने उसपर ग़ज़ब(प्रकोप) किया और उसपर लानत की और उसके लिये तैयार रखा बड़ा अज़ाब﴾९३﴿ ऐ ईमान वालो जब तुम जिहाद को चलो तो तहक़ीक़(जांच पड़ताल) करलो और जो तुम्हें सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं[१०] तुम जीती दुनिया का असबाब(सामान) चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुतेरी ग़नीमतें(परिहार) हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे[११] फिर अल्लाह ने तुमपर ऐहसान किया[१२] कि तुम पर तहक़िक़(जांच) करना लाज़िम है[१३] बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है﴾९४﴿ बराबर नहीं वो मुसलमान कि बेउज़्र(बिना मजबूरी) जिहाद से बैठ रहें और वो कि ख़ुदा की राह में अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करते हैं[१४] अल्लाह ने अपनी जानों के साथ जिहाद करने वालों का दर्जा बैठने वालों से बड़ा किया[१५] और अल्लाह ने सब से भलाई का वादा फ़रमाया[१६] और अल्लाह ने जिहाद वालों को[१७] बैठने वालों पर बड़े सवाब

(१४) शिर्क या मुसलमानों से जंग.
(१५) जंग से बाज़ आकर.
(१६) उनके खुले कुफ़्र और मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुंचाने के कारण.

सूरए निसा - तेरहवाँ रूकू

(१) यानी मूमिन काफ़िर की तरह मार डालने के क़ाबिल नहीं है, जिसका हुक्म ऊपर की आयत में आया. तो मुसलमान का क़त्ल करना बिना हक़ के रवा नहीं और मुसलमान की शान नहीं कि उससे किसी मुसलमान का क़त्ल हो, सिवाय इसके कि भूल से हो, इस तरह कि मारता था शिकार को, या हर्बी काफ़िर को, और हाथ बहक कर लग गया मुसलमान को, या यह कि किसी शख़्स को हर्बी काफ़िर समझ कर मारा और था वह मुसलमान.
(२) यानी उसके वारिसों को दी जाए, वो उसे मीरास की तरह तक़सीम कर लें. दिय्यत क़त्ल होने वाले के तर्के के हुक्म में है. इससे मक़तूल का क़र्ज़ भी अदा किया जाएगा, वसिय्यत भी जारी की जाएगी.
(३) जो भूल से क़त्ल किया गया.
(४) यानी काफ़िर.
(५) लाज़िम है, और दिय्यत नहीं.
(६) यानी अगर मक़तूल ज़िम्मी हो तो उसका वही हुक्म है जो मुसलामात का.
(७) यानी वह किसी ग़ुलाम का मालिक न हो.
(८) लगातार रोज़ा रखना यह है कि इन रोज़ों के बीच रमज़ान और १० से १३ ज़िलहज यानी तशरीक़ के दिन न हों और बीच में रोज़ों का सिलसिला किसी मजबूरी या बिना मजबूरी, किसी तरह तोड़ा न जाए. यह आयत अयाश बिन रबीआ मख़्ज़ूमी के हक़ में उतरी. वह हिजरत से पहले मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम लाए और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीनए तैय्यिबह जाकर पनाह ली. उनकी माँ को इससे बहुत बेक़रारी हुई और उसने हारिस और अबूजहल, अपने दोनों बेटों से जो अयाश के सौतेले भाई थे, यह कहा कि ख़ुदा की क़सम न मैं साए में बैठूं, न खाना चखूं, न पानी पियूं, जब तक तुम अयाश को मेरे पास न ले आओ. वो दोनों हारिस बिन ज़ैद बिन अबी उनीसा को साथ लेकर तलाश के लिये निकले और मदीनए तैय्यिबह पहुंचकर अयाश को पालिया और उनको माँ की बेक़रारी बैचेनी और खाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और अल्लाह को बीच में देकर यह एहद किया कि हम दीन के बारे में तुम से कुछ न कहेंगे, इस तरह वो अयाश को मदीने से निकाल लाए और मदीने से बाहर आकर उनको बाँधा और हर एक ने सौ सौ कोड़े मारे, फिर माँ के पास लाए, तो माँ ने कहा मैं तेरे बन्धन न खोलूंगी जबतक तू अपना दीन न छोड़ दे. फिर अयाश को

धूप में बंधा हुआ डाल दिया और इन मुसीबतों में पड़कर अयाश ने उनका कहा मान लिया और अपना दीन छोड़ दिया तो हारिस बिन ज़ैद ने उनको बुरा भला कहा और कहा तू इसी दीन पर था, अगर यह सच्चा था तो तू ने सच्चाई को छोड़ दिया और अगर तू बातिल था तो तू बातिल दीन पर रहा. यह बात अयाश को बड़ी बुरी लगी और अयाश ने कहा कि मैं तुझको अकेला पाउंगा तो ख़ुदा की क़सम ज़रूर क़त्ल कर दूंगा. इसके बाद अयाश इस्लाम लाए और उन्होंने मदीनए तैय्यिबह हिजरत की और उनके बाद हारिस भी इस्लाम लाए और हिजरत करके रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचे. लेकिन उस रोज़ अयाश मौजूद न थे, न उन्हें हारिस के इस्लाम की सूचना मिली. क़ुबा के क़रीब अयाश ने हारिस को पालिया और क़त्ल कर दिया तो लोगों ने कहा, अयाश तुमने बहुत बुरा किया, हारिस मुसलमान हो चुके थे. इसपर अयाश को बहुत अफ़सोस हुआ और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में जा कर वाक़िआ अर्ज़ किया और कहा कि मुझे क़त्ल के वक़्त तक उनके इस्लाम लाने की ख़बर ही न हुई, इसपर यह आयत उतरी.

(९) मुसलमान को जान बूझकर क़त्ल करना सख़्त गुनाह और बड़ा बुरा काम है. हदीस शरीफ़ में है कि दुनिया का हलाक करना अल्लाह के नज़दीक एक मुसलमान के हलाक करने से हलका है. फिर यह क़त्ल अगर ईमान की दुश्मनी से हो या क़ातिल इस क़त्ल को हलाल जानता हो तो यह भी कुफ़्र है. *"ख़ुलूद"* लम्बे समय के अर्थ में भी इस्तेमाल होता है. और क़ातिल अगर सिर्फ़ दुनियावी दुश्मनी से मुसलमान को क़त्ल करे और उसके क़त्ल को अच्छा ना जाने जब भी उसका बदला लम्बे समय के लिये जहन्नम है. *"ख़ुलूद"* का लफ़्ज़ लम्बी मुद्दत के लिये इस्तेमाल होता तो क़ुरआने करीम में लफ़्ज़ *अबद* मज़कूर नहीं होता और काफ़िर के बारे में *ख़ुलूद* हमेशा के अर्थ में आया है तो इसके साथ *अबद* भी ज़िक्र फ़रमाया गया है. यह आयत मुक़ैय्यस बिन ख़ुबाबा के बारे में उतरी. उसके भाई बनी नज्जार क़बीले में मक़तूल पाए गए थे और क़ातिल मालूम न था. बनी नज्जार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से *दियत* अदा करदी उसके बाद मुक़ैय्यस ने शैतान के बहकावे में एक मुसलमान को बेख़बरी में क़त्ल कर दिया और दियत के ऊंट लेकर मक्के को चलता होगया और मुर्तद हो गया. यह इस्लाम में पहला शख़्स है जो मुर्तद हुआ, यानी इस्लाम लाकर उससे फिर गया.

(१०) या जिसमें इस्लाम की अलामत व निशानी पाओ उससे हाथ रोको और जब तक उसका कुफ़्र साबित न हो जाए, उसपर हाथ न डालो. अबू दाऊद व तिरमिज़ी की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब कोई लश्कर रवाना फ़रमाते तो हुक्म देते अगर तुम मस्जिद देखो या अज़ान सुनो तो क़त्ल न करना. अक्सर फ़ुक़हाए किराम ने फ़रमाया कि अगर यहूदी या ईसाई यह कहे कि मैं मूमिन हूँ तो उसको मूमिन न माना जाए, क्योंकि वह अपने अक़ीदे को ही ईमान कहता है. और अगर *"ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह"* कहे जब भी उसके मुसलमान होने का हुक्म न किया जाएगा जब तक कि वह अपने दीन से बेज़ारी का इज़हार और उसके बातिल होने का ऐतिराफ़ न करे. इससे मालूम हुआ कि जो शख़्स किसी कुफ़्र में मुब्तला हो उसके लिये उस कुफ़्र से बेज़ारी और उसको कुफ़्र जानना ज़रूरी है.

(११) यानी जब तुम इस्लाम में दाख़िल हुए थे तो तुम्हारी ज़बान से कलिमए शहादत सुनकर तुम्हारे जान माल मेहफ़ूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़हार बेएतिबार क़रार न दिया गया था. ऐसा ही इस्लाम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिये. यह आयत मर्वास बिन नहीक के बारे में उतरी जो एहले फ़िदक में से थे और उनके सिवा उनकी क़ौम का कोई शख़्स इस्लाम न लाया था. इस क़ौम को ख़बर मिली कि इस्लामी लश्कर उनकी तरफ़ आरहा है तो क़ौम के सब लोग भाग गए, मगर मर्वास ठहरे रहे. जब उन्हों ने दूर से लश्कर को देखा तो इस ख़याल से कि कहीं कोई ग़ैर मुस्लिम जमाअत हो, यह पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियाँ लेकर चढ़ गए. जब लश्कर आया और इन्होंने अल्लाहो अकबर की आवाज़ें सुनीं तो ख़ुद भी तकबीर पढ़ते हुए उतर आए और कहने लगे *"ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम.* मुसलमानों ने ख़्याल किया कि फ़िदक वाले तो सब काफ़िर है, यह शख़्स मुग़ालता देने के लिये ईमान का इज़हार कर रहा है, इस ख़याल से उसामा बिन ज़ैद ने उनको क़त्ल कर दिया और बकरियाँ ले आए. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर हुए तो तमाम माजरा अर्ज़ किया. हुज़ूर को बहुत दुख हुआ और फ़रमाया, तुमने उसके सामान के कारण उसको क़त्ल कर दिया. इस पर यह आयत उतरी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसामा को हुक्म दिया कि मक़तूल की बकरियाँ उसके घर वालों को वापस कर दो.

(१२) कि तुम को इस्लाम पर ठहराव बख़्शा और तुम्हारा मूमिन होना मशहूर किया.

(१३) ताकि तुम्हारे हाथ से कोई ईमान वाला क़त्ल न हो.

(१४) इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं. जिहाद करने वालों के ऊंचे दर्जे और सवाब हैं. और यह मसअला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या बुढ़ापे या कमज़ोरी या अन्धेपन या हाथ पाँव के नाकारा होने और मजबूरी के कारण जिहाद में हाज़िर न हों, वो फ़ज़ीलत और इनाम से मेहरूम न किये जाएंगे, अगर सच्ची नियत रखते हों. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक से वापसी के वक़्त फ़रमाया, कुछ लोग मदीने में रह गए हैं. हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वो हमारे साथ होते हैं. उन्हें मजबूरी ने रोक लिया है.

(१५) जो मजबूरी के कारण जिहाद में हाज़िर न हो सके, अगरचे वो नियत का सवाब पाएंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अमल की फ़ज़ीलत उससे ज़्यादा हासिल है.

(१६) जिहाद करने वाले हों या मजबूरी से रह जाने वाले.

(१७) बग़ैर मजबूरी के.

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿٩٥﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ
قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ
تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ
فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾
اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَ
الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ
سَبِيْلًا ۙ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا

से फ़ज़ीलत(प्रधानता) दी है﴾९५﴿ उसकी तरफ़ से दर्जे और बख़्शिश और रहमत[१८] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾९६﴿

चौदहवाँ रूकू

वो लोग जिनकी जान फ़रिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वो अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे उनसे फ़रिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर थे[१] कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा(विस्तृत) न थी कि तुम उसमें हिजरत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है और बहुत बुरी जगह पलटने की[२]﴾९७﴿ मगर वो जो दबा लिये गए मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें न कोई तदबीर बन पड़े[३] न रास्ता जानें﴾९८﴿ तो क़रीब है अल्लाह ऐसों को माफ़ फ़रमाए[४] और अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है﴾९९﴿ और जो अल्लाह की राह में घरबार छोड़कर निकलेगा वह ज़मीन में बहुत जगह और गुंजायश पाएगा

(१८) हदीस शरीफ़ में है, अल्लाह तआला ने मुजाहिदों के लिये जन्नत में सौ दर्जे रखे हैं, हर दो दर्जों में इतना फ़ासला है जैसे आसमान और ज़मीन में.

सूरए निसा - चौदहवाँ रूकू

(१) यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने इस्लाम का कलिमा तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़माने में हिजरत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिजरत न की और जब मुश्रिक बद्र की लड़ाई में मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये गए तो ये लोग उनके साथ हुए और काफ़िरों के साथ ही मारे भी गए. उनके हक़ में यह आयत उतरी और बताया गया कि काफ़िरों के साथ होना और हिजरत का फ़र्ज़ तर्क करना अपनी जान पर ज़ुल्म करना है.

(२) यह आयत साबित करती है जो शख़्स किसी शहर में अपने दीन पर क़ायम न रह सकता हो और यह जाने कि दूसरी जगह जाने से अपने दीनी कर्तव्य अदा कर सकेगा, उसपर हिजरत वाजिब हो जाती है. हदीस में है जो शख़्स अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये एक जगह से दूसरी जगह चला जाए, अगरचे एक बालिश्त ही क्यों न हो, उसके लिये जन्नत वाजिब हो जाती है. और उसको हज़रत इब्राहीम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साथ मिलेगा.

(३) कुफ़्र की ज़मीन से निकलने और हिजरत करने की.

(४) कि वह मेहरबानी और करम वाला है और मेहरबान जो उम्मीद दिलाता है, पूरी करता है और यक़ीनन माफ़ फ़रमाएगा.

وَّ سَعَةً ۚ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى
اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾
وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ
فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ
طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ
وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ

और जो अपने घर से निकला[५] अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आलिया तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया[६] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(१००)

पन्द्रहवाँ रूकू

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुमपर गुनाह नहीं कि कुछ नमाज़ें क़स्र(लघुता) से पढ़ो[१](यानी चार रकत वाली फ़र्ज़ नमाज़ दो रकत) अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा(कष्ट) देंगे[२] बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं(१०१) और ऐ मेहबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो[३] फिर नमाज़ में उनकी इमामत करो[४] तो चाहिये कि उनमें एक जमाअत तुम्हारे साथ हो[५] और वो अपने हथियार लिये रहें[६] फिर जब वो सिजदा कर लें[७] तो हटकर तुम से पीछे हो जाएं[८] और अब दूसरी जमाअत आए जो उस वक़्त तक नमाज़ में शरीक न थी[९] अब वो तुम्हारे मुक़्तदी(अनुयायी) हों और चाहिये कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें[१०] काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने माल असबाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़ा तुमपर झुक पड़ें[११] और तुमपर मुज़ायक़ा(हर्ज) नहीं अगर तुम्हें मेंह के कारण तकलीफ़ हो या बीमार हो कि अपने

(५) इससे पहली आयत जब उतरी तो जुन्दअ बिन ज़मरतुल लैसी ने उसे सुना. ये बहुत बूढ़े शख़्स थे. कहने लगे कि मैं छूट दिये गए लोगों में से तो हूँ नहीं, क्योंकि मेरे पास इतना माल है कि जिससे मैं मदीनए तैय्यिबह हिजरत करके पहुंच सकता हूँ. ख़ुदा की क़सम मक्कए मुकर्रमा में अब एक रात न ठहरूंगा. मुझे ले चलो. चुनांचे उनको चारपाई पर लेकर चले. तनईम आकर उनका इन्तिक़ाल हो गया. आख़िर वक़्त उन्होंने अपना दायाँ हाथ बाएं हाथ पर रखा और कहा, या रब यह तेरा और यह तेरे रसूल का. मैं उसपर बैअत करता हूँ जिसपर तेरे रसूल ने बैअत की. यह ख़बर पाकर सहाबए किराम ने फ़रमाया, काश वो मदीना पहुंचते तो उनका अज्र कितना बड़ा होता. और मुश्रिक हंसे और कहने लगे कि जिस मतलब के लिये निकले थे वह न मिला. इस पर यह आयत उतरी.

(६) उसके वादे और उसकी मेहरबानी और कृपा से, क्योंकि हक़ और अधिकार के तरीक़े से कोई चीज़ उसपर वाजिब नहीं उसकी शान इससे ऊपर है. जो कोई नेकी का इरादा करे और उसको पूरा करने से मजबूर हो जाए, वह उस फ़रमाँबरदारी का सवाब पाएगा. इल्म की तलब, जिहाद, हज, ज़ियारत, फ़रमाँबरदारी, पाक और सब्र वाली ज़िन्दगी और हलाल रोज़ी की तलाश के लिये वतन छोड़ना अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करने जैसा है. इस राह में मरने वाला इनाम पाएगा.

सूरए निसा - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) यानी चार रकअत वाली दो रकअत.

(२) काफ़िरों का डर क़स्र नमाज़ के लिये शर्त नहीं. यअली बिन उमैया ने हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से कहा कि हम तो अम्न में हैं फिर हम क्यों क़स्र करते हैं ? फ़रमाया इसका मुझे भी तअज्जुब हुआ था तो मैंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया. हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये यह अल्लाह की तरफ़ से सदक़ा है. तुम उसका सदक़ा क़ुबूल करो. इस से यह मसअला मालूम होता है कि सफ़र में चार रकअत वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जायज़ नहीं है. आयत उतरने के वक़्त सफ़र ख़तरे से ख़ाली नहीं होते थे इसलिये इस आयत में इसका ज़िक्र बयाने हाल है, क़स्र की शर्त नहीं. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की क़िरअत भी इसकी दलील है जिसमें *"अँय्यफ़तिनाकुम"* (तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाएंगे) बग़ैर *इन-ख़िफ़तुम* (अगर तुम्हें डर हो) के है. सहाबा का भी यही अमल था कि अम्न के सफ़र में भी क़स्र फ़रमाते थे, जैसा कि ऊपर की हदीस से साबित होता है. और हदीसों से भी यह साबित है. और पूरी चार पढ़ने में अल्लाह तआला के सदक़े का रद करना लाज़िम आता है, लिहाज़ा क़स्र ज़रूरी है.

सफ़र की मुद्दत :- जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उसकी कम से कम मुद्दत तीन रात दिन की दूरी है जो ऊंट या पैदल की दरमियानी रफ़्तार से तय की जाती हो और उसकी मिक़दारें ख़ुश्की और दरिया और पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हैं. जो

عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰۤى اَنْ تَضَعُوْۤا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۰۲﴾ فَاِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ
عَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ
اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾
وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ
فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾ اِنَّاۤ
اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَاۤ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾
وَّ اسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ

منزل ١

हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिये रहो[११] बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ख़्वारी का अज़ाब तैयार कर रखा है (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लेटे[१३] फिर जब मुतमइन(संतुष्ट) हो जाओ तो दस्तूर के अनुसार नमाज़ क़ायम करो बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुआ फ़र्ज़ है[१४](१०३) और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो वो नहीं रखते और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है[१५](१०४)

सोलहवाँ रूकू

ऐ मेहबूब बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो[१] जिस तरह तुम्हें अल्लाह दिखाए[२] और दग़ा वालों की तरफ़ से न झगड़ो(१०५) और अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(१०६) और उनकी तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़यानत(बेईमानी) में डालते हैं[३] बेशक

मसाफ़त या दूरी औसत रफ़्तार से चलने वाले तीन दिन में तय करते हों, उनके सफ़र में क़स्र होगा. मुसाफ़िर की जल्दी या देर का ऐतिबार नहीं, चाहे वह तीन दिन की दूरी तीन घंटों में तय करे, जब भी क़स्र होगा और अगर एक रोज़ की मसाफ़त तीन दिन से ज़्यादा में तय करे तो क़स्र न होगा. ग़रज़ ऐतिबार दूरी का है.

(३) यानी अपने असहाब में.

(४) इसमें ख़ौफ़ की नमाज़ की जमाअत का बयान है. जिहाद में जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुश्रिकों ने देखा कि आपने तमाम सहाबा के साथ ज़ोहर की नमाज़ जमाअत से अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़सोस हुआ कि उन्होंने उस वक़्त क्यों न हमला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़ा था. उनमें से कुछ ने कहा, इसके बाद एक और नमाज़ है जो मुसलमानों को अपने माँ बाप से ज़्यादा प्यारी है यानी अस्र की नमाज़. जब मुसलमान इस नमाज़ के लिये खड़े हों तो पूरी क़ुव्वत से हमला करके उन्हें क़त्ल कर दो. उस वक़्त हज़रत जिब्रील हाज़िर हुए और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह यह नमाज़े ख़ौफ़ है और अल्लाह तआला फ़रमाता है ***"वइज़ा कुन्ता फ़ीहिम."*** (और ऐ मेहबूब जब तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो).

(५) यानी हाज़िरीन को दो जमाअतों में तक़सीम कर दिया जाए. एक उनमें से आपके साथ रहे, आप उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और एक जमाअत दुश्मन के मुक़ाबले में क़ायम रहे.

(६) यानी जो लोग दुश्मन के मुक़ाबिल हों, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि अगर जमाअत के नमाज़ी मुराद हों तो वो लोग ऐसे हथियार लगाए रहें जिनसे नमाज़ में कोई ख़लल न हो जैसे तलवार, ख़ंजर वग़ैरह. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि हथियार साथ रखने का हुक्म दोनों पक्षों के लिये है और यह एहतियात के क़रीब है.

(७) यानी दोनों सिजदे करके रकअत पूरी कर लें.

(८) ताकि दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो सकें.

(९) और अबतक दुश्मन के मुक़ाबिल थी.

(१०) पनाह से ज़िरह वग़ैरह ऐसी चीज़ें मुराद हैं जिससे दुश्मन के हमले से बचा जासके. उनका साथ रखना बहरहाल वाजिब है जैसा कि क़रीब ही इरशाद होगा. ***"वख़ुज़ू हिज़रकुम"*** (और चाहिये कि अपनी पनाह लिये रहें) और हथियार साथ रखना मुस्तहब है. नमाज़े ख़ौफ़ का मुख़्तसर तरीक़ा यह है कि पहली जमाअत इमाम के साथ एक रकअत पूरी करके दुश्मन के मुक़ाबिल जाए और दूसरी जमाअत जो दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ी थी वह आकर इमाम के साथ दूसरी रकअत पढ़े. फिर फ़क़त इमाम सलाम फेरे और पहली जमाअत आकर दूसरी रकअत बग़ैर क़िरअत के पूरी करके सलाम फेरे क्योंकि ये लोग मस्बूक़ हैं और पहली लाहिक़. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इसी तरह नमाज़े ख़ौफ़ अदा फ़रमाना रिवायत किया है.

हुज़ूर के बाद सहाबा नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ते रहे हैं. ख़ौफ़ की हालत में दुश्मन के सामने इस तरीक़े से नमाज़ अदा करने से मालूम होता है कि जमाअत किस क़द्र ज़रूरी है. सफ़र की हालत में अगर ख़ौफ़ की सूरत पेश आए तो उसका यह बयान हुआ. लेकिन अगर मुक़ीम को ऐसी हालत पेश आए तो वह चार रकअत वाली नमाज़ों में हर हर जमाअत को दो दो रकअत पढ़ाए और तीन रकअत वाली नमाज़ में पहली जमाअत को दो रकअत और दूसरी को एक.

(११) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ज़वए ज़ातुर्रक़ाअ से जब फ़ारिग़ हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों को गिरफ़्तार किया और लूट का माल हाथ आया और कोई दुश्मन मुक़ाबिल बाक़ी न रहा तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़ज़ाए हाजत के लिये जंगल तन्हा तशरीफ़ लेगए तो दुश्मन की जमाअत में से हुवैरिस बिन हारिस महारबी यह ख़बर पाकर तलवार लिये हुए छुपा छुपा पहाड़ से उतरा और अचानक हुज़ूर के पास पहुंचा और तलवार खींचकर कहने लगा या मुहम्मद, अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएग. हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला, और दुआ फ़रमाई. जब उसने हुज़ूर पर तलवार चलाने का इरादा किया, औंधे मुंह गिर पड़ा और तलवार हाथ से छुट गई . हुज़ूर ने वह तलवार लेकर फ़रमाया कि अब तुझे मुझसे कौन बचाएगा. कहने लगा मेरा बचाने वाला कोई नहीं है. फ़रमाया "*अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो व अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह* पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दूंगा. उसने इससे इन्कार किया और कहा मैं इसकी शहादत देता हूँ कि मैं कभी आपसे न लडूंगा और ज़िन्दगी भर आपके किसी दुश्मन की मदद न करूंगा. आपने उसको उसकी तलवार दे दी. कहने लगा, या मुहम्मद, आप मुझसे बेहतर हैं. फ़रमाया, हाँ हमारे लिये यही ठीक है. इसपर यह आयत उतरी और हथियार और बचाव साथ रखने का हुक्म दिया गया. (तफ़सीरे अहमदी)

(१२) कि उसका साथ रखना हमेशा ज़रूरी है. इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अब्दुर रहमान बिन औफ़ ज़ख़्मी थे और उस वक़्त हथियार रखना उनके लिये बहुत तकलीफ़दह और बोझ था. उनके बारे में यह आयत उतरी और मजबूरी की हालत में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई.

(१३) यानी अल्लाह का ज़िक्र हर हाल में करते रहो और किसी हाल में अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने हर फ़र्ज़ की एक हद निश्चित की है, सिवाए ज़िक्र के. इसकी कोई हद न रखी. फ़रमाया, ज़िक्र करो ख़ड़े बैठे, करवटों पर लेटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्की में हो या तरी में, सफ़र में हो या अपने घर में, छुपवाँ और ज़ाहिर में. इससे नमाज़ों के बाद सलाम फेरते ही कलिमए तौहीद पढ़ने का प्रमाण मिलता है, जैसा कि मशायख़ की आदत है, और सही हदीसों से साबित है. ज़िक्र में तस्बीह, तहमीद, तहलील, तकबीर, सना, दुआ सब दाख़िल हैं.

(१४) तो लाज़िम है कि उसके औक़ात की रिआयत की जाय.

(१५) उहद की लड़ाई से जब अबू सुफ़ियान और उनके साथी लौटे तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने, जो सहाबा उहद में हाज़िर हुए थे, उन्हें मुश्रिकों के पीछे जाने का हुक्म दिया. सहाबा ज़ख़्मी थे. उन्हों ने अपने ज़ख़्मों की शिकायत की, इसपर यह आयत उतरी.

सूरए निसा - सोलहवाँ रूकू

(१) अनसार के क़बीले बनी ज़फ़र के एक शख़्स तोअमा बिन उबैरक ने अपने पड़ोसी क़तादा बिन नोअमान की ज़िरह चुराकर आटे की बोरी में ज़ैद बिन सीमीन यहूदी के यहाँ छुपाई. जब ज़िरह की तलाश हुई और तोअमा पर शुबह किया गया तो वह इन्कार कर गया और क़सम खा गय. बोरी फटी हुई थी और उसमें से आटा गिरता जाता था. उसके नशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुंचे और बोरी वहाँ पाई गई. यहूदी ने कहा कि तोअमा उस के पास रख गया है. यहूदियों की एक जमाअत ने इसकी गवाही दी. और तोअमा की क़ौम बनी ज़फ़र ने यह निश्चय कर लिया कि यहूदी को चोर बताएंगे और उसपर क़सम खालेंगे ताकि क़ौम रूस्वा न हो और उनकी ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तोअमा को बरी करदें और यहूदी को सज़ा दें . इसीलिये उन्होंने हुज़ूर के सामने यहूदी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी और तोअमा की हिमायत में बोले. और इस गवाही पर कोई तर्क वितर्क न हुआ.(इस घटना के मुतअल्लिक़ कई रिवायतें आई हैं और उनमें आपसी मतभेद भी हैं)

(२) और इल्म अता फ़रमाए. इल्मे यक़ीनी को ज़ुहूर की क़ुव्वत की वजह से रूयत से ताबीर फ़रमाया. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हरगिज़ कोई न कहे, जो अल्लाह ने मुझे दिखाया उसपर मैं ने फ़ैसला किया, क्योंकि अल्लाह तआला ने ये मन्सब ख़ास अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता फ़रमाया. आपकी राय हमेशा सही होती है, क्योंकि अल्लाह तआला ने हक़ीक़तों और होने वाली बातों को आपके सामने कर दिया है और दूसरे लोगों की राय अन्दाज़े का दर्जा रखती है.

(३) गुनाह करके.

اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝ يَّسْتَخْفُوْنَ
مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ
اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝
وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ
اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ
يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ
طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ

अल्लाह नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनहगार को﴿१०७﴾ आदमियों से छुपाते हैं और अल्लाह से नहीं छुपते[४] और अल्लाह उनके पास है[५] जब दिल में वह बात तजवीज़(प्रस्तावित) करते हैं जो अल्लाह को नापसन्द है[६] और अल्लाह उनके कामों को घेरे हुए है﴿१०८﴾ सुनते हो यह जो तुम हो[७] दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ़ से झगड़े तो उनकी तरफ़ से कौन झगड़ेगा अल्लाह से क़यामत के दिन या कौन उनका वकील होगा﴿१०९﴾ और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा﴿११०﴾ और जो गुनाह कमाए तो उसकी कमाई उसी की जान पर पड़े और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है[८]﴿१११﴾ और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए[९] फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उसने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया﴿११२﴾

सत्तरहवाँ रूकू

और ऐ मेहबूब अगर अल्लाह का फ़ज़्ल व रहमत तुमपर न होता[१] तो उनमें के कुछ लोग यह चाहते कि तुम्हें धोखा दे दें और वो अपने ही आपको बहका रहे हैं[२] और तुम्हारा

(४) शर्म नहीं करते.
(५) उनका हाल जानता है. उसपर उनका कोई राज़ छुप नहीं सकता.
(६) जैसे तोअमा की तरफ़दारी में झूठी क़सम और झूठी गवाही.
(७) ऐ तोअमा की क़ौम.
(८) किसी को दूसरे के गुनाह पर अज़ाब नहीं फ़रमाता.
(९) छोटे या बड़े.

सूरए निसा - सत्तरहवाँ रूकू

(१) तुम्हें नबी और मासूम करके और राज़ों पर मुत्तला फ़रमा के.
(२) क्योंकि इसका वबाल उन्हीं पर है.

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ
عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ
تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ۝ لَا خَيْرَ
فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ
مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا
عَظِيْمًا ۝ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ
نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ
ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ
ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ۝ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ
وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ۝ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

कुछ न बिगाड़ेंगे[३] और अल्लाह ने तुमपर किताब[४] और हिकमत(बोध) उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे[५] और अल्लाह का तुमपर बड़ा फ़ज़्ल है[६]《११३》 उनके अकसर मशवरों में कुछ भलाई नहीं[७] मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुलह करने का और जो अल्लाह की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे जल्द ही हम बड़ा सवाब देंगे《११४》 और जो रसूल का विरोध करे बाद इसके कि हक़(सच्चा) रास्ता उसपर खुल चुका और मुसलमानों की राह से अलग राह चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की[८]《११५》

अट्ठारहवाँ रूकू

अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उसका कोई शरीक ठहराया जाए और उससे नीचे जो कुछ है जिसे चाहे माफ़ फ़रमा देता है[१] और जो अल्लाह का शरीक ठहराए वह दूर की गुमराही में पड़ा《११६》 ये शिर्क वाले अल्लाह के सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औरतों को[२] और नहीं पूजते मगर सरकश(बाग़ी) शैतान को[३]《११७》 जिसपर

(३) क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको हमेशा के लिये मासूम यानी गुनाहों से पाक किया है.

(४) यानी क़ुरआने करीम.

(५) दीन की बातों और शरीअत के आदेश और ग़ैब के इल्म. इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तमाम कायनात के उलूम अता फ़रमाए और किताब व हिकमत के रहस्यों और हक़ीक़तों पर सूचित किया. यह मसअला क़ुरआने करीम की बहुत सी आयतों और कई हदीसों से साबित है.

(६) कि तुम्हें इन नेअमतों के साथ मुमताज़ किया.

(७) यह सब लोगों के हक़ में आम है.

(८) यह आयत दलील है इसकी कि सर्वसम्मति आख़िरी चीज़ है इसकी मुख़ालिफ़त जायज़ नहीं जैसे कि किताब व सुन्नत का विरोध जायज़ नहीं (मदारिक). और इस से साबित हुआ कि मुसलमानों का तरीक़ा ही सीधी सच्ची राह है. हदीस शरीफ़ में आया है कि जमाअत पर अल्लाह का हाथ है. एक और हदीस में है कि बड़ी जमाअत का अनुकरण करो. जो मुसलमानों की जमाअत से अलग हुआ वह दोज़ख़ी है. इससे साफ़ है कि मज़हबे एहले सुन्नत वल जमाअत ही सच्चा मज़हब है.

सूरए निसा - अट्ठारहवाँ रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा का क़ौल है कि यह आयत एक बूढ़े अअराबी के बारे में नाज़िल हुई जिसने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी, मैं बूढ़ा हूँ, गुनाहों में डूबा हुआ हूँ, सिवाय इसके कि जब से मैंने अल्लाह को पहचाना और उसपर ईमान लाया, उस वक़्त से कभी मैं ने उसके साथ शिर्क न किया और उसके सिवा किसी और को वली न बनाया और जुरअत के साथ गुनाहों में मुब्तला न हुआ और एक पल भी मैं ने यह गुनाह न किया कि मैं अल्लाह से भाग सकता हूँ, शर्मिन्दा हूँ, ताइब हूँ, मग़फ़िरत चाहता हूँ, अल्लाह के यहाँ मेरा क्या हाल होगा. इस पर यह आयत उतरी. यह आयत इस बात पर क़ुरआन की दलील है कि शिर्क बख़्शा न जाएगा, अगर मुश्रिक अपने शिर्क से तौबह करे और ईमान लाए तो उसकी तौबा व ईमान क़ुबूल है.

(२) मादा बुतों को जैसे लात, उज़्ज़ा, मनात वग़ैरह. ये सब देवियाँ हैं. और अरब के हर क़बीले का एक बुत था, जिसकी वो इबादत करते थे और उसको उस क़बीले की उनसा (औरत) कहते थे. हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा की क़िरअत और हज़रत इब्ने अब्बास की क़िरअत से भी साबित होता है कि "इनास" (कुछ औरतों) से मुराद बुत हैं. एक क़ौल यह भी है कि अरब के मुश्रिक अपने बातिल मअबूदों को ख़ुदा की बेटियाँ कहते थे और एक क़ौल यह है कि मुश्रिक बुतों को ज़ेवर पहनाकर औरतों की तरह सजाते थे.

(३) क्योंकि उसी के बहकावे से बुतों को पूजते थे.

وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ۝ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ۝ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ

अल्लाह ने लअनत की और बोला[४] क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुआ हिस्सा लूंगा[५] ﴾११८﴿ क़सम है मैं ज़रूर बहकाऊंगा और ज़रूर उन्हें आरज़ुएं दिलाऊंगा[६] और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो चौपायों के कान चीरेंगे[७] और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें बदल देंगे[८] और जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाए वह खुल्लम खुल्ला टोटे में पड़ा ﴾११९﴿ शैतान उन्हें वादे देता है और आरज़ुएं दिलाता है[९] और शैतान उन्हें वादे नहीं देता मगर धोखे के[१०] ﴾१२०﴿ उनका ठिकाना दोज़ख़ है उससे बचने की जगह न पाएंगे ﴾१२१﴿ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें अल्लाह का सच्चा वादा और अल्लाह से ज़्यादा किस की बात सच्ची ﴾१२२﴿ काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है[११] और न किताब वालों की हवस पर[१२] जो बुराई करेगा[१३] उसका बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार[१४] ﴾१२३﴿ और जो कुछ भले काम करेगा

(४) शैतान.
(५) उन्हें अपना मुतीअ बनाऊंगा.
(६) तरह तरह की, कभी लम्बी उम्र की, कभी दुनिया के मज़ों की, कभी बातिल ख़्वाहिशात की, कभी और कभी और.
(७) चुनांचे उन्हों ने ऐसा किया कि ऊंटनी जब पांच बार ब्याह लेती तो वह उसको छोड़ देते और उससे नफ़ा उठाना अपने ऊपर हराम कर लेते और उसका दूध बुतों के लिये कर लेते और उसको बहीरा कहते थे. शैतान ने उनके दिल में यह डाल दिया था कि ऐसा करना इबादत है.
(८) मर्दों का औरतों की शक्ल में ज़नाना लिबास पहनना, औरतों की तरह बात चीत और हरकतें करना, जिस्म को गोद कर सुरमा या सिंदूर वग़ैरह खाल में पैवस्त करके बेल-बूटे बनाना भी इसमें दाख़िल है.
(९) और दिल में तरह तरह की उम्मीदें और वसवसे डालता है ताकि इन्सान गुमराही में पड़े.
(१०) कि जिस चीज़ के नफ़े और फ़ायदे की आशा दिलाता है, वास्तव में उसमें सख़्त घाटा और नुक़सान होता है.
(११) जो तुमने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़ा पहुंचाएंगे.
(१२) जो कहते कि हम अल्लाह के बेटे और प्यारे हैं हमें आग कुछ दिन से ज़्यादा न जलाएगी. यहूदियों और ईसाइयों का यह ख़याल भी मुश्रिकों की तरह बातिल है.
(१३) चाहे मुश्रिकों में से हो या यहूदियों और ईसाइयों में से.
(१४) यह फटकार काफ़िरों के लिये है.

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ
اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ
اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ ع وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي
النِّسَآءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ
مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَ
الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا
نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا

मर्द हो या औरत और हो मुसलमान[१५] तो वो जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़सान न दिया जाएगा (१२४) और उससे बेहतर किसका दीन जिसने अपना मुंह अल्लाह के लिये झुका दिया[१६] और वह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर[१७] जो हर बातिल (असत्य) से अलग था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया[१८] (१२५) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और हर चीज़ पर अल्लाह का क़ाबू है[१९] (१२६)

उन्नीसवाँ रूकू

और तुमसे औरतों के बारे में फ़तवा पूछते हैं[१] तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें उनका फ़तवा देता है और वह जो तुमपर क़ुरआन में पढ़ा जाता है उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उनका मुक़र्रर है[२] और उन्हें निकाह में भी लाने से मुंह फेरते हो और कमज़ोर[३] बच्चों के बारे में और यह कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ पर क़ायम रहो[४] और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उसकी ख़बर है (१२७) और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़ियादती या बेरग़बती (अरूचि) का डर करे[५] तो उनपर गुनाह नहीं कि आपस में सुल्ह करलें[६] और सुल्ह ख़ूब

(१५) इसमें इशारा है कि अअमाल यानी कर्म ईमान में दाख़िल नहीं.

(१६) यानी फ़रमाँबरदारी और इख़्लास इख़्तियार किया.

(१७) जो मिल्लते इस्लामिया के मुवाफ़िक़ है. हज़रत इब्राहीम की शरीअत और मिल्लत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिल्लत में दाख़िल है और दीने मुहम्मदी की विशेषताएं इसके अलावा हैं. दीने मुहम्मदी पर चलने से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शरीअत और मिल्लत का अनुकरण हो जाता है. चूंकि अरब और यहूदी और ईसाई सब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से होने में गर्व रखते थे और आपकी शरीअत उन सबको प्यारी थी और शरीअते मुहम्मदी उसपर हावी है, तो उन सबको दीने मुहम्मदी में दाख़िल होना और उसको क़ुबूल करना लाज़िम है.

(१८) *''ख़िल्लत''* सच्ची यगानगत और ग़ैर से नाता तोड़ने को कहते हैं. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यह गुण रखते थे इसलिये आपको ''ख़लील'' कहा गया. एक क़ौल यह भी है कि ख़लील उस मुहिब को कहते हैं जिसकी महब्बत सम्पूर्ण हो और उसमें किसी क़िस्म की रूकावट और नुक़सान न हो. यह मानी भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में पाए जाते हैं. सारे नबियों के जो कमालात हैं सब नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हासिल हैं. हुज़ूर अल्लाह के ख़लील भी हैं जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है और हबीब भी, जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि मैं अल्लाह का हबीब हूँ और यह गर्व से नहीं कहता.

(१९) और वह उसके इल्म और क़ुदरत के इहाते में है. *इहाता-बिल-इल्म* यह है कि किसी चीज़ के लिये जितने कारण हो सकते हैं उसमें कोई कारण इल्म से बाहर न हो.

सूरए निसा - उन्नीसवाँ रूकू

(१) जाहिलियत के ज़माने में अरब के लोग औरत और छोटे बच्चों को मैयत के माल का वारिस नहीं मानते थे. जब मीरास की आयत उतरी तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, क्या औरत और छोटे बच्चे वारिस होंगे. आपने उनको इस आयत से जवाब दिया. हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि यतीमों के सरपरस्तों का तरीक़ा यह था कि अगर यतीम लड़की माल और सौंदर्य वाली होती तो उससे थोड़े से मेहर पर निकाह कर लेते और अगर हुस्न और माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर ख़ूबसूरत न होती और मालदार होती तो उससे निकाह न करते और इस डर से दूसरे के निकाह में न देते कि वह माल में हिस्सेदार हो जाएगा. अल्लाह तआला ने ये आयतें उतार कर उन्हें इन आदतों से मना फ़रमाया.

(२) मीरास से.

(३) यतीम या अनाथ.

(४) उनके पूरे अधिकार उनको दो.

بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ
الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَن تَسْتَطِيعُوا أَن تَعْدِلُوا بَيْنَ
النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِن تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ
كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٢٩﴾ وَإِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا
مِّن سَعَتِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلَّهِ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ۚ
وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٣٢﴾ إِن يَشَأْ
يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۚ وَكَانَ

है[७] और दिल लालच के फंदे में हैं[८] और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो[९] तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है[१०] ﴾१२८﴿ और तुम से कभी न हो सकेगा कि औरतों को बराबर रखो और चाहे कितनी ही हिर्स(लालच) करो[११] तो यह तो न हो कि एक तरफ़ पूरा झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती छोड़दो[१२] और अगर तुम नेकी और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ﴾१२९﴿ और अगर वो दोनों[१३] अलग हो जाएं तो अल्लाह अपनी कुशायश(बरकत) से तुम में हर एक को दूसरे से बेनियाज़(बेपरवाह) कर देगा[१४] और अल्लाह कुशायश(वृद्धि) वाला हिकमत वाला है ﴾१३०﴿ और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हमने उनसे जो तुमसे पहले किताब दिये गए और तुमको कि अल्लाह से डरते रहो[१५] और अगर कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में[१६] और अल्लाह बेनियाज़ है[१७] सब ख़ूबियों सराहा ﴾१३१﴿ और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह काफ़ी है कारसाज़ ﴾१३२﴿ ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाए[१८] और औरों को ले आए और

(५) ज़ियादती तो इस तरह कि उससे अलग रहे, खाने पहनने को न दे या कमी करे या मारे या बदज़बानी करे, और बेरग़बती यह कि महब्बत न रखे, बोल चाल छोड़ दे या कम करदे.
(६) और इस सुल्ह के लिये अपने अधिकारों का बोझ कम करने पर राज़ी हो जाएं.
(७) और ज़ियादती और जुदाई दोनों से बेहतर है.
(८) हर एक अपनी राहत और आसाइश चाहता और अपने ऊपर कुछ मशक़्क़त गवारा करके दूसरे की आसाइश को प्राथमिकता नहीं देता.
(९) और नापसन्द होने के बावुजूद अपनी मौजूदा औरतों पर सब्र करो और उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और उन्हें तकलीफ़ दुख देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और सोहबत और सहवास में नेक सुलूक करो और यह जानते रहो कि वो तुम्हारे पास अमानतें हैं.
(१०) वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों का इनाम देगा.
(११) यानी अगर कई बीवियाँ हों तो यह तुम्हारी क्षमता में नहीं कि हर काम में तुम उन्हें बराबर रखो. किसी को किसी पर तर्जीह न होने दो, न मेल महब्बत में, न ख़्वाहिश और रग़बत में, न इशरत और इख़्तिलात में, न नज़र और तवज्जुह में, तुम कोशिश करके यह तो कर नहीं सकते लेकिन अगर इतना तुम्हारी क्षमता या बस में नहीं है और इस वजह से इन तमाम पाबन्दियों का बोझ तुम पर नहीं रखा गया है और दिली महब्बत और सच्चा प्यार जो तुम्हारा इख़्तियार नहीं है उसमें बराबरी करने का तुम्हें हुक्म नहीं दिया गया.
(१२) बल्कि यह ज़रूर है कि जहाँ तक तुम्हें क़ुदरत और इख़्तियार है वहां तक एक सा बर्ताव करो. महब्बत इख़्तियारी चीज़ नहीं, तो बातचीत, सदव्यवहार, खाने पहनने, साथ रखने, ऐसी बातों में बराबरी करना तुम्हारे बस में है. इन बातों में दोनों के साथ एक सा सुलूक करना लाज़िम और ज़रूरी है.
(१३) मियाँ बीवी आपस में सुल्ह न करें और वो जुदाई ही बेहतर समझें और ख़ुलअ के साथ अलाहदगी हो जाए या मर्द औरत को तलाक़ देकर उसका मेहर और इद्दत का ख़र्चापानी अदा करदे और इस तरह वह....
(१४) और हर एक को बेहतर बदल या पर्याय अता फ़रमाएगा.
(१५) उसकी फ़रमाँबरदारी करो और उसके हुक्म के ख़िलाफ़ न करो, तौहीद और शरीअत पर क़ायम रहो . इस आयत से मालूम हुआ कि तक़वा और परहेज़गारी का हुक्म पहले से है. तमाम उम्मतों को इसकी ताकीद होती रही है.
(१६) तमाम जगत उसके फ़रमाँबरदारों से भरा है. तुम्हारे कुफ़्र से उसका क्या नुक़सान.
(१७) तमाम सृष्टि से और उनकी इबादत से.

اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ
اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا
فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ
الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا
بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ
كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ

अल्लाह को इसकी क़ुदरत(क्षमता) है﴾१३३﴿ जो दुनिया का इनाम चाहे तो अल्लाह ही के पास दुनिया और आख़िरत दोनों का इनाम है(१९) और अल्लाह ही सुनता देखता है﴾१३४﴿

बीसवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो इन्साफ़ पर ख़ूब क़ायम हो जाओ अल्लाह के लिये गवाही देते चाहे इसमें तुम्हारा अपना नुक़सान हो या मां बाप का या रिश्तेदारों का, जिसपर गवाही दो वह ग़नी(मालदार) हो या फ़क़ीर हो(१) हर हाल में अल्लाह को उसका सबसे ज़्यादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे न जाओ कि हक़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेर फेर करो(२) या मुंह फेरो(३) तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है(४)﴾१३५﴿ ऐ ईमान वालो ईमान रखो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर(५) और इस किताब पर जो अपने इन रसूल पर उतरी और उस किताब पर जो पहले उतरी(६) और जो न माने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और किताबों और रसूलों और क़यामत को(७) तो वह ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा﴾१३६﴿ बेशक वो लोग जो ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े(८) अल्लाह कभी न उन्हें

(१८) मादूम यानी ख़त्म कर दे.

(१९) मतलब यह है कि जिसको अपने अमल से दुनिया की तलब हो और उसकी मुराद उतनी ही जो अल्लाह उसको दे देता है और आख़िरत के सवाब के लिये किया तो अल्लाह दुनिया और आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला है. जो शख़्स अल्लाह से फ़क़त दुनिया का तालिब हो, वह नादान, ख़सीस और कम हिम्मत है.

सूरए निसा - बीसवाँ रूकू

(१) किसी की रिआयत और तरफ़दारी में इन्साफ़ से न हटो और कोई सम्बन्ध और रिश्ता सत्य कहने में आड़े न आने पाए .

(२) सत्य कहने में और जैसा चाहिये न कहो.

(३) गवाही देने से.

(४) जैसे कर्म होंगे वैसा बदला देगा.

(५) यानी ईमान पर डटे रहो. यह अर्थ उस सूरत में है कि *"या अय्युहल्लज़ीना आमनू"* का सम्बोधन मुसलमानों से हो और अगर ख़िताब यहूदियों और ईसाईयों से हो तो मानी ये होंगे कि ऐ कुछ किताबों और कुछ रसूलों पर ईमान लाने वालो, तुम्हें यह हुक्म है. और अगर सम्बोधन मुनाफ़िक़ीन से हो तो मानी ये हैं कि ऐ ईमान का ज़ाहिरी दावा करने वालो, सच्चे दिल से ईमान लाओ. यहाँ रसूल से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और किताब से क़ुरआने पाक मुराद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यह आयत अब्दुल्लाह बिन सलाम और असद व उसैद और सअलबा बिन क़ैस और सलाम व सलमा व यामीन के बारे में उतरी. ये लोग किताब वालों के मूमिनीन में से थे. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, हम आपपर और आपकी किताब पर और हज़रत मूसा पर, तौरात पर और उज़ैर पर ईमान लाते हैं और इसके सिवा बाक़ी किताबों और रसूलों पर ईमान न लाएंगे. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर और उसके रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) पर और क़ुरआन पर और इससे पहली हर किताब पर ईमान लाओ. इस पर यह आयत उतरी.

(६) यानी क़ुरआने पाक पर और उन तमाम किताबों पर ईमान लाओ जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन से पहले अपने नबियों पर नाज़िल फ़रमाई.

(७) यानी उनमें से किसी एक का भी इन्कार करे कि एक रसूल और एक किताब का इन्कार भी सब का इन्कार है.

(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत यहूदियों के बारे में उतरी जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ
فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ
يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ
حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۝ الَّذِيْنَ
يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا
اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا
اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۝ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ

बख़्शे[९] न उन्हें राह दिखाए﴾१३७﴿ ख़ुशख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को कि उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है﴾१३८﴿ वो जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं[१०] क्या उनके पास इज़्ज़त ढूंढते हैं तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह ही के लिये है[११]﴾१३९﴿ और बेशक अल्लाह तुमपर किताब[१२] में उतार चुका कि जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो कि उनका इन्कार किया जाता और उनकी हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ न बैठो जबतक वो और बात में मशग़ूल न हों[१३] वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो[१४] बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को जहन्नम में इकट्ठा करेगा﴾१४०﴿ वो जो तुम्हारी हालत तका करते हैं तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुमको फ़तह मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे[१५] और अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो उनसे कहें क्या हमें तुमपर क़ाबू न था[१६] और हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया[१७] तो अल्लाह तुम सब में[१८] क़यामत के दिन फ़ैसला करदेगा[१९] और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर कोई राह न देगा[२०]﴾१४१﴿

इक्कीसवाँ रूकू

बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को धोखा

पर ईमान लाए फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हुए फिर उसके बाद ईमान लाए. फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और इंजील का इन्कार करके काफ़िर हो गए फिर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन का इन्कार करके और कुफ़्र में बढ़े. एक क़ौल यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी कि वो ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए. ईमान के बाद फिर ईमान लाए. यानी उन्होंने अपने ईमान का इज़हार किया ताकि उनपर ईमान वालों के एहकाम जारी हों. फिर कुफ़्र में बढ़े यानी कुफ़्र पर उनकी मौत हुई.

(९) जबतक कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्योंकि कुफ़्र बख़्शा नहीं जाता मगर जबकि काफ़िर तौबह करे और ईमान लाए, जैसा कि फ़रमाया *"कुल लिल्लज़ीना कफ़रू ईंय्यन्तहू युग़फ़र लहुम मा क़द सलफ़"* (तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वो बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ फ़रमा दिया जाएगा) (सूरए अन्फ़ाल, आयत ३८).

(१०) यह मुनाफ़िक़ों का हाल है जिन का ख़याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इसलिये वो काफ़िरों को क़ुव्वत और शानो शौकत वाला समझकर उनसे दोस्ती करते थे और उनसे मिलने में बड़ाई जानते थे जबकि काफ़िरों के साथ दोस्ती वर्जित और उनके मिलने से इज़्ज़त की तलब बातिल.

(११) और उसके लिये जिसे वह इज़्ज़त दे, जैसे कि नबी और ईमान वाले.

(१२) यानी क़ुरआन.

(१३) काफ़िरों के साथ दोस्ती और उनकी बैठकों में शरीक होना ऐसे ही और अधर्मियों और गुमराहों की मजलिसों में शिरकत और उनके साथ याराना और उठना बैठना मना फ़रमाया गया.

(१४) इससे साबित हुआ कि कुफ़्र के साथ राज़ी होने वाला भी काफ़िर है.

(१५) इससे उनकी मुराद लूट के माल में शिरकत करना और हिस्सा चाहना है.

(१६) कि हम तुम्हें क़त्ल करते, गिरफ़्तार करते, मगर हमने यह कुछ नहीं किया.

(१७) और उन्हें तरह तरह के बहानों से रोका और उनके राज़ों पर तुम्हें बाख़बर किया. तो अब हमारे इस सुलूक की क़द्र करो और हिस्सा दो. (यह मुनाफ़िक़ों का हाल है)

(१८) ऐ ईमानदारो और मुनाफ़िक़ो.

(१९) कि ईमान वालों को जन्नत अता करेगा और मुनाफ़िक़ों को जहन्नम में दाख़िल करेगा.

(२०) यानी काफ़िर न मुसलमानों को मिटा सकेंगे, न तर्क में परास्त कर सकेंगे. उलमा ने इस आयत से चन्द मसअले निकाले हैं. (१) काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं. (२) काफ़िर मुसलमान के माल पर इस्तीला पाकर मालिक नहीं हो सकता. (३) काफ़िर को मुसलमान ग़ुलाम ख़रीदने का हक़ नहीं. (४) ज़िम्मी के बदले मुसलमान क़त्ल न किया जाएगा (जुमल).

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا
كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا
قَلِيْلًا ۙ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ
وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
سَبِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا
الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ اِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ
تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا
وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ
شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

दिया चाहते हैं[१] और वही उन्हें ग़ाफ़िल करके मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों[२] तो हारे जी से[३] लोगों को दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा[४] (१४२) बीच में डगमगा रहे हैं[५] न इधर के और न उधर के[६] और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उसके लिये कोई राह न पाएगा (१४३) ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ मुसलमानों के सिवा[७] क्या यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये खुली हुज्जत कर लो[८] (१४४) बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे दर्जे में हैं[९] और तू कभी उनका मददगार न पाएगा (१४५) मगर वो जिन्होंने तौबह की[१०] और संवरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो ये मुसलमानों के साथ हैं[११] और जल्द ही अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा (१४६) और अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ और अल्लाह है सिला (इनाम) देने वाला जानने वाला (१४७)

सूरए निसा - इक्कीसवाँ रूकू

(१) क्योंकि हक़ीक़त में तो अल्लाह को धोखा देना सम्भव नहीं.

(२) ईमान वालों के साथ.

(३) क्योंकि ईमान तो है नहीं जिससे फ़रमाँबरदारी की लज़्ज़त और इबादत का लुत्फ़ हासिल हो. केवल दिखावा है. इसलिये मुनाफ़िक़ को नमाज़ बोझ मालूम होती है.

(४) इस तरह कि मुसलमानों के पास हुए तो नमाज़ पढ़ ली और अलग हुए तो ग़ायब.

(५) कुफ़्र और ईमान के.

(६) न ख़ालिस मूमिन, न खुले काफ़िर.

(७) इस आयत में मुसलमानों को बताया गया कि काफ़िरों को दोस्त बनाना मुनाफ़िक़ों की आदत है, तुम इससे बचो.

(८) अपने दोग़लेपन की, और जहन्नम के हक़दार हो जाओ.

(९) मुनाफ़िक़ का अज़ाब काफ़िर से भी सख़्त है क्योंकि वह दुनिया में इस्लाम ज़ाहिर करके मुजाहिदों के हाथों से बचता रहा है और कुफ़्र के बावुजूद मुसलमानों को धोखे में रखना और इस्लाम के साथ ठट्ठा करना उसकी आदत रही है.

(१०) दोग़ली प्रवृत्ति से.

(११) दोनों दुनियाओं में.

पारा पाँच समाप्त

छटा पारा - ला-युहिब्बुल्लाह
(सूरए निसा - जारी)

अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का ऐलान करना(१२) मगर मज़्लूम से(१३) और अल्लाह सुनता जानता है(१४८) अगर तुम कोई भलाई खुले आम करो या छुपाकर या किसी की बुराई से दरगुज़र(क्षमा) करो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला क़ुदरत वाला है(१४)(१४९) वो जो अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और चाहते हैं कि अल्लाह से उसके रसूलों को अलग कर दें(१५) और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और किसी के इन्कारी हुए(१६) और चाहते हैं कि ईमान और कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें(१५०) यही हैं ठीक ठीक काफ़िर(१७) और हमने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है(१५१) और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए और उनमेंसे किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें जल्द ही अल्लाह उनके सवाब देगा(१८) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(१९)(१५२)

बाईसवाँ रूकू

ऐ मेहबूब, किताब वाले(१) तुमसे सवाल करते हैं कि उनपर आसमान से एक किताब उतार दो(२) तो वो तो मूसा से इससे भी बड़ा सवाल कर चुके(३) कि बोले हमें अल्लाह को खुल्लमखुल्ला दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उनके

(१२) यानी किसी के छुपे हाल का ज़ाहिर करना. इसमें पीठ पीछे बुराई भी आगई, चुग़लख़ोरी भी. समझदार वह है जो अपने दोषों को देखे. एक क़ौल यह भी है कि बुरी बात से गाली मुराद है.

(१३) कि उसको जायज़ है कि ज़ालिम के ज़ुल्म का बयान करे. वह चोर या ग़ासिब के बारे में कह सकता है कि उसने मेरा माल चुराया या ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा किया. एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुआ था. उन्होंने अच्छी तरह उसकी मेज़बानी न की. जब वह वहाँ से निकला तो उनकी शिकायत करता निकला. इस घटना के बारे में यह आयत उतरी. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के बारे में उतरी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने आपकी शान में एक शख़्स ज़बान दराज़ी करता रहा. आपने कई बार ख़ामोशी की, मगर वह न रूका तो एक बार आपने उसको जवाब दिया. इसपर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उठ खड़े हुए. हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, यह शख़्स मुझको बुरा भला कहता रहा तो हुज़ूर ने कुछ न फ़रमाया, मैं ने एक बार जवाब दिया तो हुज़ूर उठ गए. फ़रमाया, एक फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था, जब तुमने जवाब दिया तो फ़रिश्ता चला गया और शैतान आ गया. इसके बारे में यह आयत उतरी.

(१४) तुम उसके बन्दों को माफ़ करो, वह तुम्हें माफ़ फ़रमाएगा. हदीस में है, तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा.

(१५) इस तरह कि अल्लाह पर ईमान लाएं और उसके रसूलों पर न लाएं.

(१६) यह आयत यहूदियों और ईसाइयों के बारे में नाज़िल हुई कि यहूदी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ कुफ़्र किया.

(१७) कुछ रसूलों पर ईमान लाना उन्हें कुफ़्र से नहीं बचाता क्योंकि एक नबी का इन्कार भी सारे नबियों के इन्कार के बराबर है.

(१८) बड़े गुनाह करने वाला भी इसमें दाख़िल है. क्योंकि वह अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान रखता है. मुअतज़िला सिर्फ़ कबीरा गुनाह करने वालों के लिये अज़ाब दिये जाने का अक़ीदा रखते हैं. इस आयत से उनके इस अक़ीदे का रद किया गया.

(१९) यह आयत सिफ़ाते फ़ेअलिया (जैसे कि मग़फ़िरत व रहमत) के क़दीम होने को प्रमाणित करती है क्योंकि हुदूस के मानने वाले को कहना पड़ता है कि अल्लाह तआला (मआज़ल्लाह) अज़ल में ग़फ़ूर व रहीम नहीं था, फिर होगया. उसके इस क़ौल को यह आयत बातिल करती है.

الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا
مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ
بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا
لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا
غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا
غُلْفٌ ۚ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا
صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا

गुनाहों पर फिर बछड़ा ले बैठे(४) बाद इसके कि रौशन आयतें(५) उनके पास आ चुकीं तो हमने यह माफ़ फ़रमा दिया(६) और हमने मूसा को रौशन (खुला) ग़लबा दिया(७)(१५३) फिर हमने उनपर तूर को ऊंचा किया उनसे एहद लेने को और उनसे फ़रमाया कि हफ़्ते में हद से न बढ़ो(८) और हमने उनसे गाढ़ा एहद लिया(९)(१५४) तो उनकी कैसी बद-एहदियों के सबब हमने उनपर लअनत की और इसलिये कि वो अल्लाह की निशानियों के इन्कारी हुए(१०) और नबियों को नाहक़ शहीद करते(११) और उनके इस कहने पर कि हमारे दिलों पर ग़लाफ़ हैं(१२) बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र के सबब उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े(१५५) और इसलिये कि उन्होंने कुफ़्र किया(१३) और मरयम पर बड़ा बोहतान (आरोप) उठाया(१५६) और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा मरयम के बेटे अल्लाह के रसूल को शहीद किया(१४) और है यह कि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिये उनकी शबीह का (उनसे मिलता जुलता) एक बना दिया गया(१५) और वो जो उसके बारे में विरोध कर रहे हैं ज़रूर उसकी तरफ़ से शुबह में पड़े हुए हैं(१६) उन्हें उसकी कुछ भी

सूरए निसा - बाईसवाँ रूकू

(१) बग़ावत के अन्दाज़ में.

(२) एक साथ ही. यहूदियों में कअब बिन अशरफ़ फ़ख़्ख़ास बिन आज़ूरा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आसमान से एक साथ एक बार में ही किताब लाइये जैसा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तौरात लाए थे. यह सवाल उनका हिदायत और अनुकरण की तलब के लिये न था बल्कि सरकशी और बग़ावत से था. इसपर यह आयत उतरी.

(३) यानी यह सवाल उनका भरपूर जिहालत से है और इस क़िस्म की जिहालतों में उनके बाप दादा भी गिरफ़्तार थे. अगर सवाल हिदायत की तलब के लिये होता तो पूरा कर दिया जाता मगर वो तो किसी हाल में ईमान लाने वाले न थे.

(४) उसको पूजने लगे.

(५) तौरात और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार जो अल्लाह तआला के एक होने और हज़रत मूसा की सच्चाई पर खुली दलील थे, और इसके बावुजूद कि तौरात हमने एक साथ ही उतारी थी, लेकिन "बुरी ख़सलत वाले को हज़ार बहाने", अनुकरण के बजाय उन्होंने ख़ुदा के देखने का सवाल किया.

(६) जब उन्होंने तौबह की. इसमें हुज़ूर के ज़माने के यहूदियों के लिये उम्मीद है कि वो भी तौबह करें तो अल्लाह तआला उन्हें भी अपने करम से माफ़ फ़रमाए.

(७) ऐसा क़ब्ज़ा अता फ़रमाया कि जब आपने बनी इस्राईल को तौबह के लिये ख़ुद उनके अपने क़त्ल का हुक्म दिया, वो इन्कार न कर सके और उन्होंने हुक्म माना.

(८) यानी मछली का शिकार वग़ैरह जो अमल उस दिन तुम्हारे लिये हलाल नहीं, न करो. सूरए बक़रह में इन तमाम आदेशों की तफ़सील गुज़र चुकी.

(९) कि जो उन्हें हुक्म दिया गया है, करें और जिससे रोका गया है, उससे दूर रहें. फिर उन्होंने इस एहद को तोड़ा.

(१०) जो नबियों की सच्चाई के प्रमाण थे, जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार.

(११) नबियों का क़त्ल करना तो नाहक़ है ही, किसी तरह हक़ हो ही नहीं सकता. लेकिन यहाँ मक़सूद यह है कि उनके घमण्ड में भी उन्हें इसका कोई हक़ न था.

(१२) लिहाज़ा कोई नसीहत और उपदेश कारगर नहीं हो सकता.

(१३) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ भी.

(१४) यहूदियों ने दावा किया कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया और ईसाइयों ने उसकी तस्दीक़ की थी.

اِتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۝ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ
اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۝ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا
عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ
فِى الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ
وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّآ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ

منزل ۱

ख़बर नहीं[१७] मगर यह गुमान की पैरवी[१८] और बेशक उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया[१९]﴾१५७﴿ बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया[२०] और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है﴾१५८﴿ कोई किताबी ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उसपर ईमान न लाए[२१] और क़यामत के दिन वह उनपर गवाह होगा[२२]﴾१५९﴿ तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म के[२३] सबब हमने वो कुछ सुथरी चीज़ें कि उनके लिये हलाल थीं[२४] उनपर हराम फ़रमा दीं और इसलिये कि उन्होंने बहुतों को अल्लाह की राह से रोका﴾१६०﴿ और इसलिये कि वो सूद लेते हालांकि वो इससे मना किये गए थे और लोगों का माल नाहक़ खा जाते[२५] और उनमें जो काफ़िर हुए हमने उनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है﴾१६१﴿ हाँ जो उनमें इल्म में पक्के[२६] और ईमान वाले हैं वो ईमान लाते हैं उसपर जो ऐ मेहबूब, तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुमसे पहले उतरा[२७] और नमाज़ क़ायम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को जल्द ही हम बड़ा सवाब देंगे﴾१६२﴿

तेईसवाँ रूकू

बेशक ऐ मेहबूब, हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी जैसी वही नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों को भेजी[१] और हमने

अल्लाह तआला ने इन दोनों के दावे ग़लत कर दिये.

(१५) जिसको उन्होंने क़त्ल किया और ख़याल करते रहे कि यह हज़रत ईसा हैं, जबकि उनका यह ख़याल ग़लत था.

(१६) और यक़ीनी नहीं कह सकते कि वह क़त्ल होने वाला शख़्स कौन है. कुछ कहते हैं कि यह मक़तूल ईसा हैं, कुछ कहते हैं कि यह चेहरा तो ईसा का है और जिस्म उनका नहीं. लिहाज़ा यह वह नहीं. इसी संदेह में हैं.

(१७) जो वास्तविकता और हक़ीक़त है.

(१८) और अटकलें दौड़ाना.

(१९) उनका क़त्ल का दावा झूटा है.

(२०) सही व सालिम आसमान की तरफ़. हदीसों में इसकी तफ़सील आई है. सूरए आले इमरान में इस घटना का ज़िक्र गुज़र चुका.

(२१) इस आयत की तफ़सीर में कुछ क़ौल हैं, एक क़ौल यह है कि यहूदियों और ईसाइयों को अपनी मौत के वक़्त जब अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आते हैं तो वो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आते हैं जिनके साथ उन्होंने कुफ़्र किया था और उस वक़्त का ईमान क़ुबूल और विश्वसनीय नहीं. दूसरा क़ौल यह है कि क़यामत के क़रीब जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे उस वक़्त के सारे किताब वाले उनपर ईमान ले आएंगे. उस वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शरीअते मुहम्मदी के मुताबिक़ हुक्म देंगे और उसी दीन के इमामों में से एक इमाम की हैसियत में होंगे. और ईसाइयों ने उनकी निस्बत जो गुमान बांधा रखे हैं उनको झुटलाएंगे, दीने मुहम्मदी का प्रचार करेंगे. उस वक़्त यहूदियों और ईसाइयों को या तो इस्लाम क़ुबूल करना होगा या क़त्ल करदिये जाएंगे. जिज़िया क़ुबूल करने का हुक्म हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने के वक़्त तक है. तीसरे क़ौल के अनुसार आयत के मानी यह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान ले आएगा. लेकिन मौत के वक़्त का ईमान मक़बूल नहीं, फ़ायदा न पहुंचाएगा.

(२२) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों पर तो यह गवाही देंगे कि उन्होंने आपको झुटलाया और आपके बारे में बुरा भला कहा. और ईसाइयों पर यह कि उन्होंने आपको रब ठहराया और ख़ुदा का शरीक माना और किताब वालों में से जो लोग ईमान ले आएं उनके ईमान की भी आप गवाही देंगे.

(२३) एहद तोड़ने वग़ैरह, जिनका ऊपर की आयत में ज़िक्र हो चुका.

(२४) जिनका सूरए अनआम की आयत नं.१४६ *"व अलल्लज़ीना हादू हर्रमना"* (और यहूदियों पर हमने हराम किया) में बयान है.

(२५) रिश्वत वग़ैरह हराम तरीक़ों से.

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ
وَ الْاَسْبَاطِ وَ عِيْسٰى وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَ هٰرُوْنَ
وَ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ﴿١٦٣﴾ وَ رُسُلًا قَدْ
قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۚ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا
مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ
حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ
وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ﴿١٦٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ
ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ ظَلَمُوْا
لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۙ﴿١٦٨﴾
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَ كَانَ

इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनके बेटों और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान को वही की और हमने दाऊद को ज़ुबूर अता फ़रमाई (१६३) और रसूलों को जिनका ज़िक्र आगे हम तुमसे[2] फ़रमा चुके और उन रसूलों को जिनका ज़िक्र तुमसे न फ़रमाया[3] और अल्लाह ने मूसा से हक़ीक़त में कलाम फ़रमाया[4] (१६४) रसूल ख़ुशख़बरी देते[5] और डर सुनाते[6] कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहां लोगों को कोई मजबूरी न रहे[7] और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (१६५) लेकिन ऐ मेहबूब अल्लाह उसका गवाह है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा वह उसने अपने इल्म से उतारा है और फ़रिश्ते गवाह हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी (१६६) वो जिन्होंने कुफ़्र किया[8] और अल्लाह की राह से रोका[9] बेशक वो दूर की गुमराही में पड़े (१६७) बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया[10] और हद से बढ़े[11] अल्लाह कभी उन्हें न बख़्शेगा[12] और न उन्हें कोई राह दिखाए (१६८) मगर जहन्नम का रास्ता कि उसमें हमेशा हमेशा रहेंगे और यह

(२६) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों की तरह कि जो पुख़्ता इल्म और ख़ुली अक़्ल और भरपूर नज़र रखते थे. उन्होंने अपने इल्म से इस्लाम की हक़ीक़त को जाना और नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(२७) पहले नबियों पर.

सूरए निसा - तेईसवाँ रूकू

(१) यहूदियों और ईसाईयों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जो यह सवाल किया था कि उनके लिये आसमान से एक साथ ही किताब उतारी जाए तो वो आपकी नबुव्वत पर ईमान लाएं. इस पर यह आयत उतरी और उनपर तर्क क़ायम किया गया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिवा बहुत से नबी हैं जिनमें से ग्यारह के नाम यहाँ आयत में बयान किये गए हैं. किताब वाले इन सबकी नबुव्वत को मानते हैं. इन सब हज़रात में से किसी पर एक साथ किताब न उतरी तो इस वजह से उनकी नबुव्वत तस्लीम करने में किताब वालों को कुछ ऐतिराज़ न हुआ तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत तस्लीम करने में क्या मजबूरी है. और रसूलों के भेजने का मक़सद लोगों की हिदायत और उनको अल्लाह तआला की तौहीद और पहचान का पाठ देना और ईमान को पुख़्ता करना और इबादत के तरीक़े की सीख देना है. किताब के कई चरणों में उतरने से यह उद्देश्य भरपूर तरीक़े से हासिल होता है कि थोड़ा थोड़ा आसानी से दिल में बैठता चला जाता है. इस हिकमत को न समझना और ऐतिराज़ करना हद दर्जे की मूर्खता है.

(२) क़ुरआन शरीफ़ में नाम बनाम फ़रमा चुके हैं.

(३) और अबतक उनके नामों की तफ़सील क़ुरआने पाक में ज़िक्र नहीं फ़रमाई गई.

(४) तो जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बेवास्ता कलाम फ़रमाना दूसरे नबियों की नबुव्वत के आड़े नहीं आता, जिनसे इस तरह कलाम नहीं फ़रमाया गया, ऐसे ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर किताब का एक साथ उतरना दूसरे नबियों की नबुव्वत में कुछ भी आड़े नहीं आता.

(५) सवाब की, ईमान लाने वालों को.

(६) अज़ाब का, कुफ़्र करने वालों को.

(७) और यह कहने का मौक़ा न हो कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उनका हुक्म मानते और अल्लाह के आज्ञाकारी और फ़रमाँबरदार होते. इस आयत से यह मसअला मालूम होता है कि अल्लाह तआला रसूलों की तशरीफ़ आवरी से पहले लोगों पर अज़ाब नहीं फ़रमाता जैसा दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया *"वमा कुन्ना मुअज़्ज़िबीना हत्ता नबअसा रसूलन"* (और हम अज़ाब करने वाले नहीं जबतक रसूल न भेज लें- सूरए बनी इस्राईल, आयत १५) और यह मसअला भी साबित होता है कि अल्लाह की पहचान शरीअत के बयान और नबियों की

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ؗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

وقف لازم

منزل ١

अल्लाह को आसान है ﴿१६९﴾ ऐ लोगो तुम्हारे पास ये रसूल[13] हक़ के साथ तुम्हारे रब की तरफ़ से तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो[14] तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है ﴿१७०﴾ ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़ियादती न करो[15] और अल्लाह पर न कहो मगर सच[16] मसीह ईसा मरयम का बेटा[17] अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कलिमा[18] कि मरयम की तरफ़ भेजा और उसके यहां की एक रूह, तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ[19] और तीन न कहो[20] बाज़ रहो अपने भले को, अल्लाह तो एक ही ख़ुदा है[21] पाकी उसे इससे कि उसके कोई बच्चा हो . उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है[22] और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है ﴿१७१﴾

चौबीसवाँ रूकू

मसीह अल्लाह का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता[1] और न मुक़र्रब फ़रिश्ते और जो अल्लाह की बन्दगी से नफ़रत और तकब्बुर (घमण्ड) करे तो कोई दम जाता है कि वह सबको अपनी तरफ़ हांकेगा[2] ﴿१७२﴾

ज़बान से ही हासिल होती है. सिर्फ़ अक़्ल से इस मंज़िल तक पहुंचना मयस्सर नहीं होता.

(८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत का इन्कार करके.

(९) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत और विशेषताएं छुपाकर और लोगों के दिलों में शुबह डाल कर. (यह हाल यहूदियों का है)

(१०) अल्लाह के साथ.

(११) अल्लाह की किताब में हुज़ूर के गुण बदलकर और आपकी नबुव्वत का इन्कार करके.

(१२) जब तक वो कुफ़्र पर क़ायम रहें या कुफ़्र पर मरें.

(१३) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(१४) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत का इन्कार करो तो इस में उनका कुछ नुक़सान नहीं और अल्लाह तुम्हारे ईमान से बेनियाज़ है.

(१५) यह आयत ईसाइयों के बारे में उतरी जिनके कई सम्प्रदाय होगए थे और हर एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निस्बत अलग अलग कुफ़्री अक़ीदा रखता था. नस्तूरी आपको ख़ुदा का बेटा कहते थे. मरक़ूसी कहते कि वो तीन में के तीसरे हैं और इस कलिमे की तौजीहात में भी मतभेद था. कुछ तीन ताक़तें मानते थे और कहते थे कि बाप, बेटा और रूहुलक़ुदुस, बाप से ज़ात, बेटे से ईसा, रूहुल क़ुदुस से उनमें डाली जाने वाली ज़िन्दगी मुराद लेते थे. तो उनके नज़दीक मअबूद तीन थे और इस तीन को एक बताते थे: "तीन में एक और एक तीन में" के चक्कर में गिरफ़्तार थे. कुछ कहते थे कि ईसा नासूतियत और उलूहियत के संगम हैं, माँ की तरफ़ से उनमें नासूतियत आई और बाप की तरफ़ से उलूहियत आई. यह फ़िरक़ाबन्दी ईसाइयों में एक यहूदी ने पैदा की जिसका नाम पोलूस था और उसीने उन्हें गुमराह करने के लिये इस क़िस्म के अक़ीदों की तालीम दी. इस आयत में किताब वालों को हिदायत की गई कि वो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इफ़रात व तफ़रीत (बहुत ज़्यादा, बहुत कम) से बाज़ रहें. ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा भी न कहें और उनकी तौहीन भी न करें.

(१६) अल्लाह का शरीक और बेटा भी किसी को न बनाओ और हुलूल व इत्तिहाद के ऐब भी मत लगाओ और इस सच्चे अक़ीदे पर रहो कि.....

(१७) है और उस मोहतरम के लिये इसके सिवा कोई नसब नहीं.

(१८) कि 'हो जा' फ़रमाया और वह बग़ैर बाप और बिना नुत्फ़े के केवल अल्लाह के हुक्म से पैदा हो गए.

(१९) और तस्दीक़ करो कि अल्लाह एक है, बेटे और औलाद से पाक है, और उसके रसूलों की तस्दीक़ करो और इसकी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूलों में से हैं.

فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ
اُجُوْرَهُمْ وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِیْنَ اسْتَنْكَفُوْا
وَاسْتَكْبَرُوْا فَیُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۙ وَّلَا یَجِدُوْنَ
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا ۝ یٰۤاَیُّهَا
النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ
اِلَیْكُمْ نُوْرًا مُّبِیْنًا ۝ فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا
بِهٖ فَسَیُدْخِلُهُمْ فِیْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّیَهْدِیْهِمْ
اِلَیْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِیْمًا ۝ یَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ
یُفْتِیْكُمْ فِی الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَیْسَ لَهٗ
وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ یَرِثُهَاۤ
اِنْ لَّمْ یَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَیْنِ فَلَهُمَا
الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَیَیْنِ ؕ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तो लोग जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनकी मज़दूरी उन्हें भरपूर देकर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़्यादा देगा और वो जिन्होंने[३] नफ़रत और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और अल्लाह के सिवा न अपना कोई हिमायती पाएंगे न मददगार (१७३) ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से खुली दलील आई[४] और हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन नूर उतारा[५] (१७४) तो वो जो अल्लाह पर ईमान लाए और उसकी रस्सी मज़बूत थामी तो जल्द ही अल्लाह उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा[६] और उन्हें अपनी तरफ़ सीधी राह दिखाएगा (१७५) ऐ मेहबूब तुमसे फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें कलाला[७] में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द का देहान्त हो जो बेऔलाद है[८] और उसकी एक बहन हो तो तर्के में उसकी बहन का आधा है[९] मर्द अपनी बहन का वारिस होगा अगर बहन की औलाद न हो[१०] फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उनका दो तिहाई और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औरतें भी तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर, अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़

(२०) जैसा कि ईसाइयों का अक़ीदा है कि वह कुफ़्रे महज़ है.
(२१) कोई उसका शरीक नहीं.
(२२) और वह सब का मालिक है, और जो मालिक हो, वह बाप नहीं हो सकता.

सूरए निसा - चौबीसवाँ रूकू

(१) नजरान के ईसाइयों का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ. उसने हुज़ूर से कहा कि आप हज़रत ईसा को ऐब लगाते हैं कि वह अल्लाह के बन्दे हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा के लिये यह आर या शर्म की बात नहीं. इसपर यह आयत उतरी.
(२) यानी आख़िरत में इस घमण्ड की सज़ा देगा.
(३) अल्लाह की इबादत बजा लाने से.
(४) ''वाज़ेह दलील'' या खुले प्रमाण से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक ज़ात मुराद है, जिनकी सच्चाई पर उनके चमत्कार गवाह हैं, और इन्कार करने वालों को हैरत में डाल देते हैं.
(५) यानी क़ुरआने पाक.
(६) और जन्नत और ऊंचे दर्जे अता फ़रमाएगा.
(७) कलाला उसको कहते है जो अपने बाद न बाप छोड़े न औलाद.
(८) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि वह बीमार थे तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो के साथ तबीयत पूछने तशरीफ़ लाए. हज़रत जाबिर बेहोश थे. हज़रत ने वुज़ू फ़रमाकर वुज़ू का पानी उनपर डाला. उन्हें फ़ायदा हुआ. आँख खोल कर देखा तो हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं. अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं अपने माल का क्या इन्तज़ाम करूं. इसपर यह आयत उतरी. (बुख़ारी व मुस्लिम). अबू दाऊद की रिवायत में यह भी है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया, ऐ जाबिर मेरे इल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है. इस हदीस से कुछ मसअले मालूम हुए. बुज़ुर्गों के वुज़ू का पानी तबर्रूक है और उसको शिफ़ा पाने के लिये इस्तेमाल करना सुन्नत है. मरीज़ों की मिज़ाजपुर्सी और अयादत सुन्नत है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने ग़ैब के उलूम अता किये हैं, इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मालूम था कि हज़रत जाबिर की मौत इस बीमारी में नहीं है.
(९) अगर वह बहन सगी या बाप शरीक हो.
(१०) यानी अगर बहन बेऔलाद मरी और भाई रहा तो वह भाई उसके कुल माल का वारिस होगा.

बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ जानता है(१७६)

५- सूरए माइदा

सूरए माइदा मदीना में उतरी और इसमें एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ ईमान वालो अपने क़ौल(वचन) पूरे करो(२) तुम्हारे लिये हलाल हुए बे ज़बान मवेशी मगर वो जो आगे सुनाया जाएगा तुमको(३) लेकिन शिकार हलाल न समझो जब तुम एहराम में हो(४) बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है जो चाहे(१) ऐ ईमान वालो हलाल न ठहरा लो अल्लाह के निशान(५) और न अदब वाले महीने(६) और न हरम को भेजी हुई क़ुर्बानियां और न(७) जिनके गले में अलामतें(चिन्ह) लटकी हुई(८) और न उनका माल और आबरू जो इज़्ज़त वाले घर का इरादा करके आएं(९) अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशी चाहते और जब एहराम से निकलो तो शिकार कर सकते हो(१०) और तुम्हें किसी क़ौम की दुश्मनी, कि उन्होंने तुम को मस्जिदे हराम से रोका था, ज़ियादती करने पर न उभारे(११) और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर आपस में मदद न दो(१२) और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह का

(५) सूरए माइदा - पहला रूकू

(१) सूरए माइदा मदीनए तैय्यिबह में उतरी, सिवाय आयत *''अल यौमा अकमल्तो लकुम दीनकुम''* के. यह आयत हज्जतुल वदाअ में अरफ़े के दिन उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुत्बे में इसको पढ़ा. इस सूरत में सोलह रूकू, एक सौ बीस आयतें और बारह हज़ार चारसौ चौंसठ अक्षर हैं.

(२) *''क़ौल''* के मानी में मुफ़स्सिरों के कुछ क़ौल हैं. इब्ने जरीर ने कहा कि किताब वालों को ख़िताब फ़रमाया गया है. मानी यह हैं कि ऐ किताब वालों में के ईमान वालो, हमने पिछली किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी फ़रमाँबरदारी करने के सम्बन्ध में जो एहद लिये हैं वो पूरे करो. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि ख़िताब ईमान वालों को है, उन्हें क़ौल के पूरे करने का हुक्म दिया गया है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़ौल से मुराद ईमान और वो एहद हैं जो हलाल और हराम के बारे में क़ुरआने पाक में लिये गए हैं. कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि इसमें ईमान वालों के आपसी समझौते मुराद हैं.

(३) यानी जिनकी हुरमत शरीअत में आई है. उनके सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये हलाल किये गए.

(४) कि ख़ुश्की का शिकार एहराम की हालत में हराम है, और दरियाई शिकार जायज़ है, जैसा कि इस सूरत के आख़िर में आएगा.

(५) उसके दीन की बातें, मानी ये हैं कि जो चीज़ें अल्लाह ने फ़र्ज़ कीं और जो मना फ़रमाईं, सबकी हुरमत का लिहाज़ रखो.

(६) हज के महीने, जिन में क़िताल यानी लड़ाई वग़ैरह जाहिलियत के दौर में भी मना था, और इस्लाम में भी यह हुक्म बाक़ी रहा.

(७) वो क़ुरबानियाँ.

(८) अरब के लोग क़ुरबानियों के गले में हरम शरीफ़ के दरख़्तों की छाल वग़ैरह से गुलूबन्द बुनकर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि ये हरम को भेजी हुई क़ुरबानियाँ हैं और उनसे न उलझें.

(९) हज और उमरा करने के लिये. शरीह बिन हिन्द एक मशहूर शक़ी (दुश्मन) था. वह मदीनए तैय्यिबह में आया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि आप ख़ल्क़े ख़ुदा को क्या दावत देते हैं. फ़रमाया,

الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ
الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ
وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ
السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَ
اَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ
نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا فَمَنِ اضْطُرَّ
فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ
الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ
مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا
اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝

अज़ाब सख़्त है(२) तुमपर हराम है[१३] मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जिसके ज़िब्ह में ग़ैर ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वो जो गला घोंटने से मरे और बेधार की चीज़ से मारा हुआ और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया, मगर जिन्हें तुम ज़िब्ह कर लो और जो किसी थान पर ज़िब्ह किया गया और पाँसे डाल कर बाँटा करना यह गुनाह का काम है आज तुम्हारे दीन की तरफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई[१४] तो उनसे न डरो और मुझसे डरो आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल(पूर्ण) कर दिया[१५] और तुमपर अपनी नेमत पूरी करी[१६] और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया[१७] तो जो भूख प्यास की शिद्दत(तेज़ी)में नाचार हो यूं कि गुनाह की तरफ़ न झुके[१८] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(३) ऐ मेहबूब, तुम से पूछते हैं कि उनके लिये क्या हलाल हुआ तुम फ़रमा दो कि हलाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें[१९] और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा लिये[२०] उन्हें शिकार पर दौड़ाते जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उसमें से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वो मारकर तुम्हारे लिये रहने दें[२१] और उसपर अल्लाह का नाम लो[२२] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह को हिसाब करते देर नहीं लगती(४)

अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की. कहने लगा, बहुत अच्छी दावत है. मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम ले आऊंगा और उन्हें भी लाऊंगा. यह कहकर चला गया. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसके आने से पहले ही अपने सहाबा को ख़बर दे दी थी कि रबीआ क़बीले का एक शख़्स आने वाला है जो शैतानी ज़बान बोलेगा. उसके चले जाने के बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा लेकर आया था और ग़द्दार और बदएहद की तरह पीठ फेर कर चला गया. यह इस्लाम लाने वाला नहीं. चुनांचे उसने बहाना किया और मदीना शरीफ़ से निकलते हुए वहाँ के मवेशी और माल ले गया. अगले साल यमामा के हाजियों के साथ तिजारत का बहुत सा सामान और हज की क़लावा पोश क़ुरबानियाँ लेकर हज के इरादे से निकला. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ तशरीफ़ ले जारहे थे. राह में सहाबा ने शरीह को देखा और चाहा कि मवेशी उससे वापस ले लें. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मना फ़रमाया. इसपर यह आयत उतरी और हुक्म दिया गया कि जिसकी ऐसी हालत हो उससे तआरूज़ नहीं करना चाहिये.

(१०) यह बयाने अबाहत है कि एहराम के बाद शिकार मुबाह हो जाता है.

(११) यानी मक्का वालों ने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आपके सहाबा को हुदैबिया के दिन उमरे से रोका. उनके इस दुश्मनी वाले काम का तुम बदला न लो.

(१२) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया, जिसका हुक्म दिया गया उसका बजा लाना *बिर,* और जिससे मना फ़रमाया गया उसको छोड़ देना *तक़वा,* और जिसका हुक्म दिया गया उसको न करना **"इस्म"** (गुनाह), और जिससे मना किया गया उसको करना *उदवान* (ज़ियादती) कहलाता है.

(१३) आयत ***"इल्ला मा युतला अलैकुम"*** में जो ज़िक्र फ़रमाया गया था, यहाँ उसका बयान है और ग्यारह चीज़ों की हुरमत का ज़िक्र किया गया. एक मुर्दार यानी जिस जानवर के लिये शरीअत में ज़िबह का हुक्म हो और वह बेज़िबह मर जाए, दूसरे बहने वाला ख़ून, तीसरे सुअर का गोश्त और उसके तमाम अंग, चौथे वह जानवर जिसके ज़िबह के वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में लोग बुतों के नाम पर ज़िबह करते थे और जिस जानवर को ज़िबह तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे औक़ात में वह ग़ैर ख़ुदा की तरफ़ मन्सूब रहा वह हराम नहीं जैसे कि अब्दुल्लाह की गाय, अक़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर या वह जानवर जिनसे वलियों की आत्माओं को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो, उनको ग़ैर वक़्ते ज़िबह में वलियों के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़िबह उनका फ़क़त अल्लाह के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वो हलाल और पाक हैं. इस आयत में सिर्फ़ उसी को हराम फ़रमाया गया है जिसको ज़िबह करते वक़्त ग़ैरख़ुदा का नाम लिया गया हो. वहाबी जो ज़िबह की क़ैद नहीं लगाते वो आयत के मानी में ग़लती करते हैं और उनका क़ौल तमाम जानी मानी तफ़सीरों के

ख़िलाफ़ है. और ख़ुद आयत उनके मानी को बनने नहीं देती क्योंकि *"मा उहिल्ला बिही"* को अगर ज़िबह के वक़्त के साथ सीमित न करें तो *"इल्ला मा ज़क्कैतुम"* की छूट उसको लाहिक़ होगी और वो जानवर जो ग़ैर वक़्ते ज़िबह ग़ैर ख़ुदा के नाम से मौसूम रहा हो वह *"इल्ला मा ज़क्कैतुम"* से हलाल होगा. ग़रज़ वहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सबील नहीं. पाँचवां गला घोंट कर मारा हुआ जानवर, छटे वह जानवर जो लाठी, पत्थर, ढेले, गोली, छर्रे यानी बिना धार दार चीज़ से मारा गया हो, सातवें जो गिर कर मरा हो चाहे पहाड़ से या कुंवे वग़ैरह में, आठवें वह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वह उसके सदमे से मर गया हो, नवें वह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वह उसके ज़ख़्म की तकलीफ़ से मर गया हो लेकिन अगर ये जानवर मर गए हों और ऐसी घटनाओं के बाद ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बाक़ायदा ज़िबह करलो तो वो हलाल हैं, दसवें वह जो किसी थान पर पूजा की तरह ज़िबह किया गया हो जैसे कि जाहिलियत वालों ने काबे के चारों तरफ़ ३६० पत्थर नसब किये थे जिनकी वो इबादत करते थे और उनके लिये ज़िबह करते थे, ग्यारहवें, हिस्सा और हुक्म जानने के लिये पाँसा डालना. जाहिलियत के दौर के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह वग़ैरह के काम दरपेश होते तो वो तीरों से पाँसे डालते और जो निकलता उसके मुताबिक़ अमल करते और उसको ख़ुदा का हुक्म मानते. इन सब से मना फ़रमाया गया.

(१४) यह आयत अरफ़े के दिन जो जुमे का था, अस्र बाद नाज़िल हुई. मानी ये हैं कि काफ़िर तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए.

(१५) और उमूरे तकलीफ़ा में हराम और हलाल के जो एहकाम हैं वो और क़यास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये. इसीलिये इस आयत के उतरने के बाद हलाल व हराम के बयान की कोई आयत नाज़िल न हुई. अगरचे *"वत्तक़ू यौमन तुरजऊना फ़ीहे इलल्लाह"* नाज़िल हुई मगर वह आयत नसीहत और उपदेश की है. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि दीन कामिल करने के मानी इस्लाम को ग़ालिब करना है, जिसका यह असर है कि हज्जतुल वदाअ में जब यह आयत उतरी, कोई मुश्रिक मुसलमानों के साथ हज में शरीक न हो सका. एक क़ौल यह भी है कि दीन का पूरा होना यह है कि वह पिछली शरीअतों की तरह स्थगित न होगा और क़यामत तक बाक़ी रहेगा. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के पास एक यहूदी आया और उसने कहा कि ऐ अमीरुल मूमिनीन, आप की किताब में एक आयत है अगर वह हम यहूदियों पर उतरी होती तो हम उसके उतरने वाले दिन ईद मनाते. फ़रमाया, कौनसी आयत. उसने यही आयत *"अलयौमा अकमल्तु लकुम"* पढ़ी. आपने फ़रमाया, मैं उस दिन को जानता हूँ जिस दिन यह उतरी थी और इसके उतरने की जगह को भी पहचानता हूँ. वह जगह अरफ़ात की थी और दिन जुमे का. आप की मुराद इससे यह थी कि हमारे लिये वह दिन ईद है. तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है, आप से भी एक यहूदी ने ऐसा ही किया. आपने फ़रमाया कि जिस दिन यह आयत उतरी उस दिन दो ईदें थीं, जुमा और अरफ़ा . इससे मालूम हुआ कि किसी दीनी कामयाबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जायज़ और सहाबा से साबित है, वरना हज़रत उमर व इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ हो उसकी यादगार क़ायम करना और उस रोज़ को ईद मानना हम बिदअत जानते हैं. इससे साबित हुआ कि ईदे मीलाद मनाना जायज़ है क्योंकि वह अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत की यादगार और शुक्र गुज़ारी है.

(१६) मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह फ़रमाकर.

(१७) कि उसके सिवा कोई और दीन क़ुबूल नहीं.

(१८) मानी ये है कि ऊपर हराम चीज़ों का बयान कर दिया गया है, लेकिन जब खाने पीने की कोई हलाल चीज़ मयस्सर ही न आए और भूख प्यास की सख़्ती से जान पर बन जाए, उस वक़्त जान बचाने के लिये ज़रूरत भर का खाने पीने की इजाज़त है, इस तरह कि गुनाह की तरफ़ मायल न हो यानी ज़रूरत से ज़्यादा न खाए और ज़रूरत उसी क़दर खाने से रफ़ा हो जाती है जिससे जान का ख़तरा जाता रहे.

(१९) जिनकी हुरमत क़ुरआन व हदीस, इजमाअ और क़यास से साबित नहीं है. एक क़ौल यह भी है कि तैय्यिबात वो चीज़ें हैं जिनको अरब और पाक तबीअत लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वो चीज़ें हैं जिनसे पाक तबीअतें नफ़रत करती हैं. इससे मालूम हुआ कि किसी चीज़ की हुरमत पर दलील न होना भी उसके हलाल होने के लिये काफ़ी है. यह आयत अदी इब्ने हातिम और ज़ैद बिन महलहल के बारे में उतरी जिनका नाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़ैदुल ख़ैर रखा था. इन दोनों साहिबों ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह, हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रिये से शिकार करते हैं, तो क्या हमारे लिये हलाल है. तो इस पर यह आयत उतरी.

(२०) चाहे वह दरिन्दों में से हों, कुत्ते और चीते जैसे, या शिकारी परिन्दों में से, शिकरे, बाज़, शाहीन वग़ैरह जैसे . जब उन्हें इस तरह सधा लिया जाए कि जो शिकार करें उसमें से न खाएं और जब शिकारी उनको छोड़े तब शिकार पर जाएं, जब बुलाए, वापस आजाएं. ऐसे शिकारी जानवरों को मुअल्लम कहते हैं.

(२१) और ख़ुद उसमें से न खाएं.

(२२) आयत से जो निष्कर्ष निकलता है उसका ख़ुलासा यह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिकरा वग़ैरह कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उसका शिकार कुछ शर्तों से हलाल है (१) शिकारी जानवर मुसलमान का हो और सिखाया हुआ. (२) उसने शिकार को ज़ख़्म लगाकर मारा हो. (३) शिकारी जानवर *बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर* कहकर छोड़ा गया हो. (४) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उसको *बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर* कहकर ज़िबह करे . अगर इन शर्तों में से कोई शर्त न पाई

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ
مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ۠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى
الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى
سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें हलाल हुईं और किताबियों का खाना[२३] तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है और पारसा औरतें मुसलमान[२४] और पारसा औरतें उनमें से जिनको तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उनके मेहर दो क़ैद में लाते हुए[२५] न मस्ती निकालते हुए और न आशना बनाते[२६] और जो मुसलमान से काफ़िर हो उसका किया धरा सब अकारत गया और वह आख़िरत में घाटे वाला है[२७] (५)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो[१] तो अपना मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ[२] और सरों का मसह करो[३] और गट्टों तक पाँव धोओ[४] और अगर तुम्हें नहाने की हाजत जो तो ख़ूब सुथरे हो लो[५] और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई पेशाब पाख़ाने से आया या तुमने औरतों से सोहबत की और उन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का उससे मसह करो अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर

गई, तो हलाल न होगा. मसलन, अगर शिकारी जानवर मुअल्लम (सिखाया हुआ) न हो या उसने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त *बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर* न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उसको ज़िबह न किया हो या सधाए हुए शिकारी जानवर के साथ बिना सिखाया हुआ जानवर शिकार में शरीक़ हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिसको छोड़ते वक़्त *बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर* न पढ़ा गया हो या वह शिकारी जानवर मजूसी काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वह शिकार हराम है. तीर से शिकर करने का भी यही हुक्म है, अगर **बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर** कह कर तीर मारा और उससे शिकार ज़ख़्मी हो कर गिर गया तो हलाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को *बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर* पढ़कर फिर से ज़िबह करे. अगर उसपर बिस्मिल्लाह न पढ़े या तीर का ज़ख़्म उस को न लगा या ज़िन्दा पाने के बाद उस को ज़िबह न किया, इन सब सूरतों में हराम है.

(२३) यानी उन के ज़बीहे . मुसलमान और किताबी का ज़िब्ह किया हुआ जानवर हलाल है चाहे वह मर्द हो, औरत हो, या बच्चा .

(२४) निकाह करने में औरत की पारसाई का लिहाज़ मुस्तहब है लेकिन निकाह की सेहत के लिए शर्त नहीं .

(२५) निकाह करके.

(२६) नाजायज़ तरीक़े से मस्ती निकालने से बेधड़क ज़िना करना, और आशना बनाने से छुपवाँ ज़िना मुराद है.

(२७) क्योंकि इस्लाम लाकर उससे फिर जाने से सारे अमल अकारत हो जाते हैं.

सूरए माइदा - दूसरा रूकू

(१) और तुम बेवज़ू हो तो तुम पर वुज़ू फ़र्ज़ है और वुज़ू के फ़राइज़ ये चार हैं जो आगे बयान किए जाते हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू करते थे. अगरचे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें, फ़र्ज़ हों या नफ़्ल, पढ़ी जा सकती हैं मगर हर नमाज़ के लिए अलग वुज़ू करना ज़्यादा बरकत और सवाब दिलाता है. कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि इस्लाम की शुरूआत में हर नमाज़ के लिए अलग वुज़ू फ़र्ज़ था, बाद में मनसूख़ यानी स्थगित किया गया और जबतक हदस वाक़े न हो, एक ही वुज़ू से फ़र्ज़ और नफ़्ल नमाज़ अदा करना जायज़ हुआ.

(२) कोहनियाँ भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि हदीस से साबित है. अकसर उलमा इसी पर हैं.

(३) चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है. यह मिक़दार हदीसे मुग़ीरा से साबित है और यह हदीस आयत का बयान है.

(४) यह वुज़ू का चौथा फ़र्ज़ है. सही हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुछ लोगों को पाँव पर मसह करते देखा तो मना फ़रमाया . और अता से रिवायत है वह कसम खाकर फ़रमाते हैं कि मेरी जानकारी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा में से किसी ने भी वुज़ू में पाँव का मसह न किया .

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ
اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاۗءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓي اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ
لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ
اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ

कुछ तंगी रखे, हाँ यह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम एहसान मानो (६) और याद करो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर[६] और वह एहद जो उसने तुम से लिया[७] जब कि तुमने कहा हमने सुना और माना[८] और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है (७) ऐ ईमान वालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ायम हो जाओ इन्साफ़ के साथ गवाही देते[९] और तुम को किसी क़ौम की दुश्मनी इसपर न उभारे कि इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करो वह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है (८) ईमान वाले नेकी करने वालों से अल्लाह का वादा है कि उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है (९) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं, वही दोज़ख़ वाले हैं[१०] (१०) ऐ ईमान वालो, अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर दस्तदराज़ी (अत्याचार) करें तो उसने हाथ तुमपर से रोक दिये[११]

(५) जनाबत यानी शारीरिक तौर से नापाक हो जाने से पूरी तहारत लाज़िम होती है. जनाबत कभी जागते में जोश या वासना के साथ वीर्य के निकलने से होती है और कभी नींद में वीर्य निकलने से. जिसके बाद असर पाया जाए. यहाँ तक कि अगर ख़्वाब याद आया मगर तरी न पाई तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा. और कभी आगे पीछे की जगहों में लिंग के अगले भाग के दाख़िल किये जाने से काम करने वाले दोनों व्यक्तियों के हक़ में, चाहे वीर्य निकले या न निकले, ये तमाम सूरतें जनाबत (नापाकी) में दाख़िल हैं. इनसे ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है. हैज़ (माहवारी) और ज़चगी के बाद की नापाकी से भी ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है . माहवारी का मसअला सूरए बक़रह में गुज़र चुका और ज़चगी की नापाकी का मूजिबे ग़ुस्ल होना इजमाअ से साबित है. तयम्मुम का बयान सूरए निसा में गुज़र चुका.

(६) कि तुम्हें मुसलमान किया .

(७) नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बैअत करते वक़्त अक़बा की रात और बैअते रिज़वान में .

(८) नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हर हुक्म हर हाल में.

(९) इस तरह कि क़राबत और दुश्मनी का कोई असर तुम्हें इन्साफ़ से न हटा सके.

(१०) यह आयत पुख़्ता प्रमाण है इस पर कि दौज़ख़ में दाख़ला सिवाए काफ़िर के और किसी के लिये नहीं.

(११) एक बार नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मन्ज़िल में क़याम किया. सहाबा अलग अलग दरख़्तों के साए में आराम करने लगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी तलवार एक पेड़ में लटका दी . एक अअराबी मौक़ा पाकर आया और छुपकर उसने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूर से कहने लगा, ऐ मुहम्मद, तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा. हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह. यह फ़रमाना था कि हज़रत जिब्रील ने उसके हाथ से तलवार गिरा दी. नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तलवार लेकर फ़रमाया कि तुझे मुझसे कौन बचाएगा. कहने लगा, कोई नहीं. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं. (तफ़सीरे अबुस्सऊद)

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا
مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۚ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۚ
لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ
بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ
مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ
يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى

और अल्लाह से डरो और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये《११》

तीसरा रुकू

और बेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से एहद लिया[1] और हमने उनमें बारह सरदार क़ायम किये[2] और अल्लाह ने फ़रमाया बेशक मैं[3] तुम्हारे साथ हूँ ज़रूर अगर तुम नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उनकी ताज़ीम(आदर) करो और अल्लाह को क़र्ज़े हसन दो[4] बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिनके नीचे नेहरें बहें फिर उसके बाद जो तुम में से कुफ्र करे वह ज़रूर सीधी राह से बहका[5]《१२》 तो उनकी कैसी बद-एहदियों(वचन भंग)[6] पर हमने उन्हें लअनत की और उनके दिल सख़्त कर दिये अल्लाह की बातों को[7] उनके ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गई[8] और तुम हमेशा उनकी एक न एक दग़ा पर मुत्तला(सूचित) होते रहोगे[9] सिवा थोड़ों के[10] तो उन्हें माफ़ करदो और उनसे दरगुज़रो(क्षमा करो)[11] बेशक एहसान वाले अल्लाह को मेहबूब हैं《१३》 और वो जिन्हों ने दावा किया कि हम नसारा(ईसाई) हैं हमने उनसे

सूरए माइदा - तीसरा रुकू

(१) कि अल्लाह की इबादत करेंगे, उसके साथ किसी को शरीक न करेंगे. तौरात के आदेशों का पालन करेंगे.

(२) हर गिरोह पर एक सरदार, जो अपनी क़ौम का ज़िम्मेदार हो कि वो एहद पूरा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे.

(३) मदद और सहायता से.

(४) यानी उसकी राह में ख़र्च करो.

(५) वाक़िआ यह था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया था कि उन्हें और उनकी क़ौम को पाक सरज़मीन का वारिस बनाएगा जिसमें कनआनी जब्बार यानी अत्याचारी रहते थे . तो फ़िरऔन के हलाक के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को पाक सरज़मीन की तरफ़ ले जाओ, मैं ने उसको तुम्हारे लिये सुकून की जगह बनाया है तो वहाँ जाओ और जो दुश्मन वहाँ हैं उनपर जिहाद करो. मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा . और ऐ मूसा, तुम अपनी क़ौम के हर हर गिरोह में से एक एक सरदार बनाओ इस तरह बारह सरदार मुक़र्रर करो. हर एक उनमें से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और एहद पूरा करने का ज़िम्मेदार हो. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सरदार चुनकर बनी इस्राईल को लेकर रवाना हुए. जब अरीहा के क़रीब पहुंचे तो जासूसों को हालात का जायज़ा लेने के लिये भेजा. वहाँ उन्होंने देखा कि लोग बहुत लम्बे चौड़े, ताक़तवर, दबदबे और रोब वाले हैं. ये उनसे डर कर वापस आगए और आकर उन्होंने अपनी क़ौम से सारा हाल कहा. जबकि उनको इससे मना किया गया था. लेकिन सब ने एहद तोड़ा, सिवाय कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ बिन नून के कि ये एहद पर क़ायम रहे.

(६) कि उन्होंने अल्लाह का एहद तोड़ा और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आने वाले नबियों को झुटलाया और क़त्ल किया, किताब के आदेशों की अवहेलना की.

(७) जिसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और गुणगान है और जो तौरात में बयान की गई हैं.

(८) तौरात में, कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अनुकरण करें और उनपर ईमान लाएं.

(९) क्योंकि दग़ा और ख़यानत और एहद तोड़ना और नबियों के साथ बदएहदी उनकी और उनके पूर्वजों की पुरानी आदत है.

(१०) जो ईमान लाए.

(११) और जो कुछ उनसे पहले हुआ उसपर पकड़ न करो. कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि यह आयत उस क़ौम के बारे में उतरी जिन्होंने पहले तो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एहद किया फिर तोड़ा. फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उसपर सूचित किया और यह आयत उतारी. उस सूरत में मानी ये हैं कि उनके इस एहद तोड़ने से दरगुज़र कीजिये जबतक कि वो जंग से रुके रहें और जिज़िया अदा करने से मना न करें.

أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا
بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ
تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُم
مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ يَهْدِي بِهِ اللَّهُ
مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم
مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ

एहद किया[१२] तो वो भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं[१३] तो हमने उनके आपस में क़यामत के दिन तक बैर और बुग़ज़(द्वेष) डाल दिया[१४] और बहुत जल्द अल्लाह उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे[१५]﴿१४﴾ ऐ किताब वालो[१६] बेशक तुम्हारे पास हमारे यह रसूल[१७] तशरीफ़ लाए कि तुमपर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वो चीज़ें जो तुमने किताब में छुपा डाली थीं[१८] और बहुत सी माफ़ फ़रमाते हैं[१९] बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया[२०] और रौशन किताब[२१]﴿१५﴾ अल्लाह उससे हिदायत देता है उसे जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हें सीधी राह दिखाता है﴿१६﴾ बेशक काफ़िर हुए वो जिन्होंने कहा कि अल्लाह मसीह मरयम का बेटा ही है[२२] तुम फ़रमा दो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है अगर वह चाहे कि हलाक करदे मसीह मरयम के बेटे और उसकी माँ और तमाम ज़मीन वालों को[२३] और अल्लाह ही के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह सब कुछ

(१२) अल्लाह तआला और उसके रसूलों पर ईमान लाने का.
(१३) इन्जील में, और उन्होंने एहद तोड़ा.
(१४) क़तादा ने कहा कि जब ईसाईयों ने अल्लाह की किताब (इंजील) पर अमल करना छोड़ दिया, और रसूलों की नाफ़रमानी की, फ़र्ज़ अदा न किये, हुदूद की परवाह न की, तो अल्लाह तआला ने उनके बीच दुश्मनी डाल दी.
(१५) यानी क़यामत के दिन वो अपने चरित्र का बदला पाएँगे.
(१६) यहूदियों और ईसाईयों.
(१७) सैयदे आलम, मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम).
(१८) जैसे कि आयते रज्म और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण और हुज़ूर का इसको बयान फ़रमाना चमत्कार है.
(१९) और उनका ज़िक्र भी नहीं करते, न उनकी पकड़ करते हैं. क्योंकि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिसमें मसलिहत हो.
(२०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नूर फ़रमाया गया क्योंकि आपसे कुफ़्र का अंधेरा दूर हुआ और सच्चाई का रास्ता खुला.
(२१) यानी क़ुरआन शरीफ़.
(२२) हज़रत इब्ने अब्बास (रदियल्लाहो अन्हुमा) ने फ़रमाया कि नजरान के ईसाईयों से यह कथन निकला. और ईसाईयों के याक़ूबिया व मल्कानिया(सम्प्रदायों) का यह मज़हब है कि वो हज़रत मसीह को अल्लाह बताते हैं क्योंकि वो हुलूल के क़ायल हैं. और उनका झूटा अक़ीदा यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बदन में प्रवेश किया. अल्लाह तअला ने इस आयत में इस अक़ीदे पर कुफ़्र का हुक्म दिया और उनके मज़हब का ग़लत होना बयान फ़रमाया.
(२३) इसका जवाब यही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर हज़रत मसीह को खुदा बताना कितनी खुली ग़लती है.

مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۷﴾ وَقَالَتِ
الۡيَهُوۡدُ وَالنَّصٰرٰى نَحۡنُ اَبۡنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلۡ
فَلِمَ يُعَذِّبُكُمۡ بِذُنُوۡبِكُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ بَشَرٌ مِّمَّنۡ
خَلَقَ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَ
لِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۚ وَاِلَيۡهِ
الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمۡ عَلٰى فَتۡرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا
جَآءَنَا مِنۡۢ بَشِيۡرٍ وَّلَا نَذِيۡرٍ ۚ فَقَدۡ جَآءَكُمۡ بَشِيۡرٌ
وَّنَذِيۡرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۹﴾ وَاِذۡ قَالَ
مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ
اِذۡ جَعَلَ فِيۡكُمۡ اَنۡۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمۡ مُّلُوۡكًا ۖ وَّاٰتٰٮكُمۡ
مَّا لَمۡ يُؤۡتِ اَحَدًا مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوۡمِ ادۡخُلُوا
الۡاَرۡضَ الۡمُقَدَّسَةَ الَّتِىۡ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمۡ وَلَا

منزل ٢

कर सकता है (१७) और यहूदी और ईसाई बोले कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं[२४] तुम फ़रमादो फिर तुम्हें क्यों तुम्हारे गुनाहों पर अज़ाब फ़रमाता है[२५] बल्कि तुम आदमी हो उसकी मख़लूक़ात(सृष्टि) से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और अल्लाह ही के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन और इन के दरमियान की और उसीकी तरफ़ फिरना है (१८) ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे ये रसूल[२६] तशरीफ़ लाए कि तुमपर हमारे आदेश ज़ाहिर फ़रमाते हैं बाद इसके कि रसूलों का आना मुद्दतों(लम्बे समय तक) बन्द रहा था[२७] कि कभी कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो ये ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और अल्लाह को सब क़ुदरत है (१९)

चौथा रूकू

और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये[१] और तुम्हें बादशाह किया[२] और तुम्हें वह दिया जो आज सारे संसार में किसी को न दिया[३] (२०) ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखा

(२४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास किताब वाले आए और उन्होंने दीन के मामले में आपसे बात चीत शुरू की. आपने उन्हें इस्लाम की दावत दी और अल्लाह की नाफ़रमानी करने से उसके अज़ाब का डर दिलाया तो वो कहने लगे कि ऐ मुहम्मद ! आप हमें क्या डराते हैं ? हम तो अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं. इसपर यह आयत उतरी और उनके इस दावे का ग़लत होना ज़ाहिर फरमाया गया.

(२५) यानी इस बात का तुम्हें भी इक़रार है कि गिन्ती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे, तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ? जब ऐसा नहीं, तो तुम्हारे दावे का ग़लत होना तुम्हारे इक़रार से साबित है.

(२६) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(२७) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक ५६९ बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही. इसके बाद हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत का इज़हार फ़रमाया जाता है कि निहायत ज़रूरत के वक़्त तुम पर अल्लाह तआला की बड़ी नेमत भेजी गई और अब ये कहने का मौक़ा न रहा कि हमारे पास चेतावनी देने वाले तशरीफ न लाए.

सूरए माइदा - चौथा रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि नबियों की तशरीफ़ आवरी नेमत है. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को उसके ज़िक्र करने का हुक्म दिया कि वह बरकतों और इनाम का सबब है. इससे मीलाद की मेहफ़िलों के अच्छी और बरकत वाली होने की सनद मिलती है.

(२) यानी आज़ाद और शान व इज़्ज़त वाले होने और फ़िरऔनियों के हाथों क़ैद होने के बाद उनकी गुलामी से छुटकारा हासिल करके ऐश व आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी नेमत है. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल में जो ख़ादिम और औरत और सवारी रखता, वह मलक कहलाया जाता.

(३) जैसे कि दरिया में रास्ता बनाना, दुश्मन को डूबो देना, मन्न और सलवा उतरना, पत्थर से चश्मे जारी करना, बादल को सायबान बनाना वग़ैरह.

تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٢١ قَالُوْا
يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا
حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا
دٰخِلُوْنَ ۝٢٢ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ
فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢٣ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا
مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا
هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝٢٤ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا
نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٥
قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ
يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۭ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٦ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ

है और पीछे न पलटो[४] कि नुक़सान पर पलटोगे (२१) बोले ऐ मूसा उसमें तो बड़े ज़बरदस्त लोग हैं और हम उसमें हरगिज़ दाख़िल न होंगे जबतक वो वहाँ से निकल न जाएं, हाँ वो वहां से निकल जाएं तो हम वहां जाएं (२२) दो मर्द कि अल्लाह से डरने वालों में से थे[५] अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा (प्रदान किया)[६] बोले कि ज़बरदस्ती दर्वाज़े में[७] उनपर दाख़िल हो अगर तुम दर्वाज़े में दाख़िल हो जाओगे तो तुम्हारा ही ग़ल्बा है[८] और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है (२३) बोले[९] ऐ मूसा हम तो वहां[१०] कभी न जाएंगे जबतक वो वहां हैं तो आप जाइये और आपका रब, तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं (२४) मूसा ने अर्ज़ की कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हमको उन बेहुकमों से अलग रख[११] (२५) फ़रमाया तो वह ज़मीन उनपर हराम है[१२] चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में[१३] तो तुम उन बेहुकमों का अफ़सोस न खाओ (२६)

पाँचवां रूकू

और उन्हें पढ़कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची

(४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अल्लाह की नेमतें याद दिलाने के बाद उनको अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम, पाक सरज़मीन में दाख़िल हो जाओ. उस ज़मीन को पाक इसलिये कहा गया कि वह नबियों की धरती थी. इससे मालूम हुआ कि नबियों के रहने से ज़मीनों को भी इज़्ज़त मिलती है और दूसरों के लिये वह बरकत का कारण होती है. कलबी से मन्क़ूल है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम लबनान पर्वत पर चढ़े तो आप से कहा गया, देखिये जहां तक आपकी नज़र पहुंचे वह जगह पाक है, और आपकी ज़ुर्रियत की मीरास है. यह सरज़मीन तूर और उसके आसपास की थी और एक क़ौल यह है कि तमाम मुल्के शाम.

(५) कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ बिन नून जो उन नक़ीबों में से थे जिन्हें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब्बारों का हाल दरियाफ़्त करने के लिये भेजा था.

(६) हिदायत और एहद पूरा करने के साथ. उन्होंने जब्बारों का हाल सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया और इसको ज़ाहिर न किया, दूसरे नक़ीबों के विपरीत कि उन्होंने ज़ाहिर कर दिया था.

(७) शहर के.

(८) क्योंकि अल्लाह तआला ने मदद का वादा किया है और उसका वादा ज़रूर पूरा होना. तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से मत डरो, हमने उन्हें देखा है. उनके जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं. उन दोनों ने जब यह कहा तो बनी इस्राईल बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने चाहा कि उनपर पत्थर बरसाएं.

(९) बनी इस्राईल.

(१०) जब्बारीन के शहर में.

(११) और हमें उनकी सोहबत और क़ुर्ब से बचाया, यह मानी कि हमारे उनके बीच फ़ैसला फ़रमाया.

(१२) उसमें दाख़िल न हो सकेंगे.

(१३) वह ज़मीन जिसमें ये लोग भटकते फिरे, नौ फ़रसंग थी और क़ौम छ लाख जंगी जो अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे. जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहाँ से चले थे. यह उनपर उक़ूबत थी सिवाय हज़रत मूसा व हारून व यूशअ व कालिब के, कि उनपर अल्लाह तआला ने आसानी फ़रमाई और उनकी मदद की, जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये आग को ठण्डा और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअत का इतनी छोटी ज़मीन में चालीस बरस आवारा और हैरान फिरना और किसी का वहाँ से निकल न सकना, चमत्कारों में से है. जब बनी इस्राईल ने उस जंगल में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से खाने पीने वग़ैरह ज़रूरतों और तकलीफ़ों की शिकायत की तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा की दुआ से उनको आसमानी ग़िज़ा मन्नो सलवा अता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उनके बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पत्थर तूर पर्वत का इनायत किया कि जब सफ़र से रूकते और कहीं ठहरते तो हज़रत उस पत्थर पर लाठी मारते, इससे बनी इस्राईल के बारह गिरोहों के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिये एक बादल भेजा और तीह में जितने

إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ
مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ
أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ
النَّارِ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُ
نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ
كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يَا وَيْلَتَا أَعَجَزْتُ
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ
أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾ مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ
كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

ख़बर[१] जब दोनों ने एक नियाज़(भेंट) पेश की तो एक की क़ुबूल हुई और दूसरे की क़ुबूल न हुई बोला क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा[२] कहा अल्लाह उसी से क़ुबूल करता है जिसे डर है[३] (२७) बेशक अगर तू अपना हाथ मुझपर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुमपर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं[४] मैं अल्लाह से डरता हूँ जो मालिक है सारे संसार का (२८) मैं तो यह चाहता हूँ कि मेरा[५] और तेरा गुनाह[६] दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोज़ख़ी हो जाए और बेइन्साफ़ों की यही सज़ा है (२९) तो उसके नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाव दिलाया तो उसे क़त्ल करदिया तो रह गया नुक़सान में[७] (३०) तो अल्लाह ने एक कौवा भेजा ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए कैसे अपने भाई की लाश छुपाए[८] बोला हाय ख़राबी, मैं इस कौवे जैसा भी न होसका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता तो पछताता रह गया[९] (३१) इस सबब से हमने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिसने

लोग दाख़िल हुए थे उनमें से चौबीस साल से ज़्यादा उम्र के थे, सब वहीं मरगए, सिवाय यूशअ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के, और जिन लोगों ने पाक सरज़मीन में दाख़िल होने से इन्कार किया उनमें से कोई भी दाख़िल न हो सका और कहा गया है कि तीह में ही हज़रत दाऊद और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात हुई. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात से चालीस बरस बाद हज़रत यूशअ को नबुव्वत अता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया. आप बाक़ी बचे बनी इस्राईल को साथ लेकर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया.

सूरए माइदा - पाँचवां रूकू

(१) जिनका नाम हाबील और क़ाबील था. इस ख़बर को सुनाने से मक़सद यह है कि हसद की बुराई मालूम हो और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हसद करने वालों को इस से सबक़ हासिल करने का मौक़ा मिले. सीरत वग़ैरह के उलमा का बयान है कि हज़रत हव्वा के हमल में एक लड़का एक लड़की पैदा होते थे और एक हमल के लड़के का दूसरे हमल की लड़की के साथ निकाह किया जाता था और जबकि आदमी सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में सीमित थे, तो निकाह की और कोई विधि ही न थी. इसी तरीक़े के अनुसार हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने क़ाबील का निकाह ल्यूज़ा से, जो हाबील के साथ पैदा हुई थी, और हाबील का इक़लीमा से, जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी, करना चाहा. क़ाबील इसपर राज़ी न हुआ और चूंकि इक़लीमा ज़्यादा ख़ूबसूरत थी इसलिये उसका तलबगार हुआ. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह तेरे साथ पैदा हुई है, इसलिये तेरी बहन है, उसके साथ तेरा निकाह हलाल नहीं है. कहने लगा यह तो आपकी राय है. अल्लाह ने यह हुक्म नहीं दिया. आपने फ़रमाया, तो तुम दोनों क़ुरबानीयाँ लाओ जिसकी क़ुरबानी क़ुबूल हो जाए वही इक़लीमा का हक़दार है. उस ज़माने में जो क़ुरबानी मक़बूल होती थी, आसमान से एक आग उतरकर उसको खा लिया करती थी. क़ाबील ने एक बोरी गेहूँ और हाबील ने एक बकरी क़ुरबानी के लिये पेश की. आसमानी आग ने हाबील की क़ुरबानी को ले लिया और क़ाबील के गेहूँ छोड़ गई. इसपर क़ाबील के दिल में बहुत जलन और हसद पैदा हुआ

(२) जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा, मैं तुझको क़त्ल करूंगा. हाबिल ने कहा क्यों ? कहने लगा, इसलिये कि तेरी क़ुरबानी क़ुबूल हुई, मेरी न हुई और तू इक़लीमा का हक़दार ठहरा, इसमें मेरी ज़िल्लत है.

(३) हाबील के इस कहने का यह मतलब है कि क़ुरबानी का क़ुबूल फ़रमाना अल्लाह का काम है. वह परहेज़गारों की क़ुरबानी क़ुबूल फ़रमाता है. तू परहेज़गार होता तो तेरी क़ुरबानी क़ुबूल होती. यह ख़ुद तेरे कर्मों का नतीजा है, इसमें मेरा क्या दख़्ल है.

(४) और मेरी तरफ़ से शुरूआत हो जबकि मैं तुझ से ज़्यादा मज़बूत और ताक़त वाला हूँ, यह सिर्फ़ इसलिये है कि...

(५) यानी मुझे क़त्ल करने का.

(६) जो इससे पहले तूने किया कि वालिद की नाफ़रमानी की, हसद किया और अल्लाह के फ़ैसले को न माना.

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ
النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا
النَّاسَ جَمِيْعًا ۗ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ
لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا
اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ
خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ۗ ذٰلِكَ لَهُمْ
خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا
عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ
وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّ

कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद किये[१०] तो जैसे उसने सब लोगों को क़त्ल किया[११] और जिसने एक जान को जिला लिया उसने जैसे सब लोगों को जिला लिया[१२] और बेशक उनके[१३] पास हमारे रसूल रौशन दलीलों के साथ आए[१३] फिर बेशक उनमें बहुत उसके बाद ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं[१४]﴾३२﴿ वो कि अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते[१५] और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उनका बदला यही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उनके एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं, यह दुनिया में उनकी रूस्वाई है और आख़िरत में उनके लिये बड़ा अज़ाब﴾३३﴿ मगर वो जिन्होंने तौबह करली इससे पहले कि तुम उनपर क़ाबू पाओ[१६] तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾३४﴿

छटा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूंडो[१] और उसकी राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह(भलाई) पाओ﴾३५﴿

(७) और परेशानी में पड़ा कि इस लाश को क्या करे क्योंकि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था. एक मुद्दत तक लाश को पीठ पर लादे फिरा.

(८) रिवायत है कि दो कौए आपस में लड़े उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला फिर ज़िन्दा कौए ने अपनी चोंच से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा किया, उसमें मरे हुए कौए को डाल कर मिट्टी से दबा दिया. यह देखकर क़ाबील को मालूम हुआ कि लाश को दफ़्न करना चाहिये. चुनांचे उसने ज़मीन ख़ोद कर दफ़्न कर दिया. (जलालैन, मदारिक वग़ैरह)

(९) अपनी नादानी और परेशानी पर, और यह शर्मिन्दगी गुनाह पर न थी कि तौबह में शुमार हो सक्ती या शर्मिन्दगी का तौबह होना सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत के साथ ख़ास हो. (मदारिक).

(१०) यानी नाहक़ ख़ून किया कि न तो मक़्तूल को किसी ख़ून के बदले क़िसास के तौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़ानून तोड़ने वग़ैरह किसी सख़्त जुर्म के कारण मारा.

(११) क्योंकि उसने अल्लाह तआला की रिआयत और शरीअत की हदों का लिहाज़ न रखा.

(१२) इस तरह कि क़त्ल होने या डूबने या जलाने जैसे हलाकत के कारणों से बचाया.

(१३) यानी बनी इस्राईल के.

(१४) खुले चमत्कार भी लाए और अल्लाह के एहकाम और शरीअत भी.

(१५) कि कुफ़्र और क़त्ल वग़ैरह जुर्म करके सीमाओं का उल्लंघन करते हैं.

(१६) अल्लाह तआला से लड़ना यही है कि उसके वलियों से दुश्मनी करे जैसे कि हदीस शरीफ़ में आया. इस आयत में डाकुओं की सज़ा का बयान है. सन ६ हिजरी में अरीना के कुछ लोग मदीनए तैय्यिबह आकर इस्लाम लाए और बीमार हो गए. उनके रंग पीले होगए, पेट बढ़ गए. हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सदक़े के ऊंटों का दूध और पेशाब मिला कर पिया करें. ऐसा करने से वो तन्दुरूस्त हो गए, अच्छे होकर वो मुर्तद हो गए और पन्द्रह ऊंट लेकर अपने वतन को चलते बने. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी तलाश में हज़रत यसार को भेजा. उन लोगों ने उनके हाथ पाँव काटे और तकलीफ़ें देकर उन्हें शहीद कर डाला, फिर जब ये लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरफ़्तार करके हाज़िर किये गए तो उनके बारे में यह आयत उतरी. (तफ़सीरे अहमदी)

(१७) यानी गिरफ़्तारी से पहले तौबह करलेने से वह आख़िरत के अज़ाब और डकैती की सज़ा से तो बच जाएंगे मगर माल की वापसी और क़िसास बन्दों का हक़ है, यह बाक़ी रहेगा. (तफ़सीरे अहमदी)

सूरए माइदा - छटा रूकू

(१) जिसकी बदौलत तुम्हें उसका क़ुर्ब हासिल हो.

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا
وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ
ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ
مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

منزل ٢

बेशक वो जो काफ़िर हुए जो कुछ ज़मीन में हैं सब और उसकी बराबर और अगर उनकी मिल्क हो कि उसे देकर क़यामत के अज़ाब से अपनी जान छुड़ाएं तो उनसे न किया जाएगा और उनके लिये दुख का अज़ाब है[२] (३६) दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे और वो उससे न निकलेंगे और उनको दवामी (स्थाई) सज़ा है (३७) और जो मर्द या औरत चोर हो[३] तो उनके हाथ काटो[४] उनके किये का बदला अल्लाह की तरफ़ से सज़ा और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (३८) तो जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबह करे और संवर जाए तो अल्लाह अपनी मेहर (अनुकम्पा) से उसपर रूजू फ़रमाएगा[५] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (३९) क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे चाहे और अल्लाह सब कुछ कर सकता है[६] (४०) ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन (दुखी) न करें वो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[७] जो कुछ वो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और उनके दिल

(२) यानी काफ़िरों के लिये अज़ाब लाज़िम है और इससे रिहाई पाने का कोई रास्ता नहीं है.

(३) और उसकी चोरी दोबार के इक़रार या दो मर्दों की शहादत (गवाही) से हाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है, दस दरहम से कम का न हो. (इब्ने मसऊद की हदीस)

(४) यानी दायाँ, इसलिये कि हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो की क़िरअत में *"ऐमानुहुमा"* आया है. पहली बार की चोरी में दायाँ हाथ काटा जाएगा, फिर दोबारा अगर करे तो बायाँ पाँव. उसके बाद भी अगर चोरी करे, तो क़ैद किया जाए, यहाँ तक कि तौबह करे. चोर का हाथ काटना तो वाजिब है और चोरी गया माल मौजूद हो तो उसका वापस करना भी वाजिब और अगर वह ज़ाया हो गया हो तो ज़मान (मुआवज़ा) वाजिब नहीं (तफ़सीरे अहमदी).

(५) और आख़िरत के अज़ाब से उसको निजात देगा.

(६) इससे मालूम हुआ कि अज़ाब करना और रहमत फ़रमाना अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर है. वह मालिक है, जो चाहे करे, किसी को ऐतिराज़ की हिम्मत नहीं. इससे क़दरिया और मोअतज़िला सम्प्रदायों की काट हो गई जो फ़रमाँबरदार पर रहमत और गुनहगार पर अज़ाब करना अल्लाह तआला पर वाजिब कहते हैं.

(७) अल्लाह तआला सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को *'या अय्युहर रसूल'* के इज़्ज़त वाले सम्बोधन के साथ मुख़ातब फ़रमाकर आपकी तस्कीन फ़रमाता है कि ऐ हबीब, मैं आपका मददगार और सहायक हूँ. मुनाफ़िक़ों के कुफ़्र में जल्दी करने यानी उनके कुफ़्र ज़ाहिर करने और काफ़िरों के साथ दोस्ती और सहयोग कर लेने से आप दुखी न हों.

قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۛ سَمّٰعُونَ
لِلْكَذِبِ سَمّٰعُونَ لِقَوْمٍ اٰخَرِينَ ۙ لَمْ يَاْتُوكَ ؕ
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُولُونَ
اِنْ اُوتِيتُمْ هٰذَا فَخُذُوهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ
فَاحْذَرُوا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ
لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ
اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚۖ
وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿۴۱﴾ سَمّٰعُونَ
لِلْكَذِبِ اَكّٰلُونَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوكَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ
فَلَنْ يَّضُرُّوكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿۴۲﴾ وَكَيْفَ
يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيهَا حُكْمُ اللّٰهِ

मुसलमान नहीं[८] और कुछ यहूदी झूठ ख़ूब सुनते हैं[९] और लोगों की ख़ूब सुनते हैं[१०] जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातों को उनके ठिकानों के बाद बदल देते हैं कहते हैं यह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और यह न मिले तो बचो[११] और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उसका कुछ बना न सकेगा वो हैं कि अल्लाह ने उनका दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुनिया में रूस्वाई है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब《४१》 बड़े झूठ सुनने वाले, बड़े हरामख़ोर[१२] तो अगर तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों[१३] तो उनमें फ़ैसला फ़रमाओ या उनसे मुंह फेर लो[१४] और अगर तुम उनसे मुंह फेर लोगे तो वो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[१५] और अगर उनमें फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को पसन्द हैं《४२》 और वो तुम से किस तरह फ़ैसला चाहेंगे हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है[१६] फिर भी

(८) यह उनकी दोग़ली प्रवृत्ति का बयान है.

(९) अपने सरदारों से और उनकी झूटी बातों को क़ुबूल करते है .

(१०) माशाअल्लाह, आलाहज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत सही अनुवाद फ़रमाया. इस जगह आम मुफ़स्सिरों और अनुवादकों से ग़लती हुई कि उन्हों ने आयत के ये मानी बयान किये कि मुनाफ़िक़ और यहूदी अपने सरदारों की झूटी बातें सुनते हैं. आपकी बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर कान धर कर सुनते हैं जिसके वो जासूस हैं. मगर ये मानी सही नहीं हैं और क़ुरआन का अन्दाज़ इससे बिल्कुल मेल नहीं खाता. यहाँ मुराद यह है कि ये लोग अपने सरदारों की झूटी बातें ख़ूब सुनते हैं और लोगों यानी ख़ैबर के यहूदियों की बातों को ख़ूब मानते हैं जिनके अहवाल का आयत में बयान आ रहा है. (तफ़सीरे अबूसऊद, जुमल)

(११) ख़ैबर के यहूदियों के शरीफ़ों में से एक विवाहित मर्द और विवाहित औरत ने ज़िना किया. इसकी सज़ा तौरात में संगसार करना थी. यह उन्हें गवारा न था, इसलिये उन्होंने चाहा कि इस मुक़दमे का फ़ैसला हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कराएं. चुनांचे इन दोनों मुजरिमों को एक जमाअत के साथ मदीनए तैय्यिबह भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर हद का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना. वो लोग बनी क़ुरैज़ा और बनी नुज़ैर के यहूदियों के पास आए और ख़याल किया कि ये हुज़ूर के हम-वतन हैं और उनके साथ आपकी सुलह भी है, उनकी सिफ़ारिश से काम बन जाएगा. चुनांचे यहूदियों के सरदारों में से कअब बिन अशरफ़ व कअब बिन असद व सईद बिन अम्र व मालिक बिन सैफ़ व किनाना बिन अबिलहक़ीक़ वग़ैरह, उन्हें लेकर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मसअला दरियाफ़्त किया. हुज़ूर ने फ़रमाया क्या मेरा फ़ैसला मानोगे ? उन्होंने इक़रार किया. और तब आयते रज्म उतरी और संगसार करने का हुक्म दिया गया. यहूदियों ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया. हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक जवान गोरा काना फ़िदक का रहने वाला इब्ने सूरिया नाम का है, तुम उसको जानते हो. कहने लगे हाँ. फ़रमाया वह कैसा आदमी है. कहने लगे कि आज धरती पर यहूदियों में उसकी टक्कर का आलिम नहीं. तौरात का अकेला आलिम है. फ़रमाया उसको बुलाओ. चुनांचे बुलाया गया. जब वह हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने फ़रमाया, यहूदियों में सबसे बड़ा आलिम तू ही है ? अर्ज़ किया लोग तो ऐसा ही कहते हैं. हुज़ूर ने यहूद से फ़रमाया, इस मामले में इसकी बात मानोगे ? सब ने इक़रार किया. तब हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया, मैं तुझे अल्लाह की क़सम देता हूँ जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं, जिसने हज़रत मूसा पर तौरात उतारी और तुम लोगों को मिस्र से निकाला, तुम्हारे लिये दरिया में रास्ते बनाए, तुम्हें निजात दी, फ़िरऔनियों को डुबोया, तुम्हारे लिये बादल को सायबान बनाया, मन्न व सलवा उतारा, अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिसमें हलाल हराम का बयान है. क्या तुम्हारी किताब में ब्याहे मर्द व औरत के लिये संगसार करने का हुक्म है. इब्ने सूरिया ने अर्ज़ किया, बेशक है, उसीकी क़सम जिसका आपने मुझसे ज़िक्र किया. अज़ाब नाज़िल होने का डर न होता तो मैं इक़रार न करता और झूट बोल देता मगर यह फ़रमाइये कि आपकी किताब में इसका क्या हुक्म है. फ़रमाया जब चार सच्चे और भरोसे वाले गवाहों की गवाही से खुले तौर पर ज़िना साबित हो जाए तो संगसार करना वाजिब हो जाता है. इब्ने सूरिया ने अर्ज़ किया अल्लाह की क़सम ऐसा ही तौरात में है, फिर हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से दरियाफ़्त फ़रमाया कि अल्लाह के हुक्म में तबदीली किस तरह वाक़े

उसी से मुंह फेरते हैं(१७) और वो ईमान लाने वाले नहीं﴿४३﴾

सातवाँ रूकू

बेशक हमने तौरात उतारी उसमें हिदायत और नूर है उसके मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे हमारे फ़रमाँबरदार नबी और आलिम और फ़क़ीह(धर्मशास्त्री) कि उनसे अल्लाह की किताब की हिफ़ाज़त चाही गई थी(१) और वो उसपर गवाह थे तो(२) लोगों से न डरो और मुझसे डरो और मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो(३) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे(४) वही लोग काफ़िर हैं﴿४४﴾ और हमने तौरात में उनपर वाजिब किया(५) कि जान के बदले जान(६) और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बदला है(७) फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करा दे तो वह उसका गुनाह उतार देगा(८) और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वही लोग ज़ालिम हैं﴿४५﴾ और हम उन नबियों के पीछे उनके निशाने क़दम(पदचिन्ह) पर ईसा मरयम के बेटे

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾ إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ أَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ

हुई. उसने अर्ज़ किया कि हमारा दस्तूर यह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर हद क़ायम करते. इस तरह शरीफ़ों में ज़िना बहुत बढ़ गया,यहाँ तक कि एक बार बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हमने उसको संगसार न किया, फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औरत से ज़िना किया तो बादशाह ने उसको संगसार करना चाहा. उसकी क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्होंने कहा कि जबतक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इसको हरगिज़ संगसार न किया जाएगा. तब हमने जमा होकर ग़रीब शरीफ़ सबके लिय संगसार करने के बजाय यह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएं और मुंह काला करके गधे पर उलटा बिठाकर घुमाया जाए. यह सुनकर यहूदी बहुत बिगड़े और इब्ने सूरिया से कहने लगे, तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हमने जितनी तेरी तारीफ़ की थी, तू उसका हक़दार नहीं. इब्ने सूरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरात की क़सम दिलाई, अगर मुझे अज़ाब के नाज़िल होने का डर न होता तो मैं आपको ख़बर न देता. इसके बाद हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़िना करने वालों को संगसार किया गया. और यह आयत उतरी (ख़ाज़िन).

(१२) यह यहूदियों के हाकिमों के बारे में है जो रिशवतें लेकर हराम को हलाल करते और शरीअत के हुक्म बदल देते थे. रिशवत का लेना देना दोनों हराम हैं. हदीस शरीफ़ में रिशवत लेने देने वाले दोनों पर लअनत आई है.

(१३) यानी किताब वाले.

(१४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इख़्तियार दिया गया कि किताब वाले आपके पास कोई मुक़दमा लाएं तो आपको इख़्तियार है, फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं.

(१५) क्योंकि अल्लाह तआला आपका निगहबान है.

(१६) कि विवाहित मर्द और शौहरदार औरत के ज़िना की सज़ा रज्म यानी संगसार करना है.

(१७) इसके बावुजूद कि तौरात पर ईमान लाने के दावेदार भी हैं और उन्हें यह भी मालूम है कि तौरात में संगसार का हुक्म है, उसको न मानना और आपकी नबुव्वत के इन्कारी होते हुए भी आपसे फ़ैसला चाहना अत्यन्त आश्चर्य की बात है.

सूरए माइदा - सातवाँ रूकू

(१) कि इसको अपने सीनों में मेहफ़ूज़ रखें और इसके पाठ में लगे हैं ताकि वह किताब भुलाई न जासके और उसके आदेश ज़ाया न हों. (ख़ाज़िन). तौरात के मुताबिक़ नबियों का हुक्म देना जो इस आयत में आया है उससे साबित होता है कि हम से पहली शरीअतों के जो अहकाम अल्लाह और रसूल ने बयान फ़रमाए हों और उनके छोड़ने का हमें हुक्म न दिया हो, स्थगित न किये गए हों, वो हमपर लाज़िम होते हैं. (जुमल व अबूसऊद)

(२) ऐ यहूदियो, तुम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्रशंसा और विशेषताओं और रज्म का हुक्म जो तौरात में आया है, उसके ज़ाहिर करने में.

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ عَمَّا جَاۗءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۭ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاَنِ احْكُمْ

को लाए, तस्दीक़(पुष्टि) करता हुआ तौरात की जो उससे पहले थी[९] और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरात की कि उससे पहले थे और हिदायत[१०] और नसीहत परहेज़गारों को﴿४६﴾ और चाहिये कि इंजील वाले हुक्म करें उसपर जो अल्लाह ने उसमें उतारा[११] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वही लोग फ़ासिक़(दुराचारी) हैं﴿४७﴾ और ऐ मेहबूब हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती[१२] और उनपर मुहाफ़िज़ और गवाह तो उनमें फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से[१३] और ऐ सुनने वाले उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करना अपने पास आया हुआ हक़(सत्य) छोड़कर, हमने तुम सबके लिये एक एक शरीअत और रास्ता रखा[१४] और अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देता मगर मंज़ूर यह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उसमें तुम्हें आज़माए[१५] तो भलाईयों की तरफ़ सबक़त(पहल करो) चाहो तुम सबका फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम झगड़ते थे﴿४८﴾ और यह कि ऐ मुसलमान

(३) यानी अल्लाह के आदेशों में हेर फेर हर सूरत मना है, चाहे लोगों के डर और उनकी नाराज़ी के अन्देशे से हो, या माल दौलत और शान व शौकत के लालच से.

(४) इसका इन्कारी होकर.

(५) इस आयत में अगरचे यह बयान है कि तौरात में यहूदियों पर क़िसास के ये अहकाम थे लेकिन चूंकि हमें उनके छोड़ देने का हुक्म नहीं दिया गया इसलिये हम पर ये अहकाम लाज़िम रहेंगे, क्योंकि पिछली शरीअतों के जो अहकाम ख़ुदा व रसूल के बयान से हम तक पहुंचे और स्थगित न हुए हों वो हमपर लाज़िम हुआ करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुआ.

(६) यानी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उसकी जान मक़्तूल के बदले में ली जाएगी चाहे वह मक़्तूल मर्द हो या औरत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि मर्द को औरत के बदले क़त्ल न करते थे. इसपर यह आयत उतरी. (मदारिक)

(७) यानी एक सा होने और बराबरी की रिआयत ज़रूरी है.

(८) यानी जो क़ातिल या जनायत करने वाला अपने जुर्म पर शर्मिन्दा होकर गुनाहों के वबाल से बचने के लिये ख़ुशी से अपने ऊपर शरीअत का हुक्म जारी कराए तो क़िसास उसके जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उसपर अज़ाब न होगा. (जलालैन व जुमल). कुछ मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी बयान किये हैं कि जो हक़ वाला क़िसास (ख़ून के तावान) को माफ़ करदे तो यह माफ़ी उसकी लिये कफ़्फ़ारा है. (मदारिक). तफ़सीरे अहमदी में है, यह तमाम क़िसास जब ही होंगे जब कि हक़ वाला माफ़ न करे. और अगर वह माफ़ करदे तो क़िसास साक़ित हो जाएगा.

(९) तौरात के अहकाम के बयान के बाद इंजील के अहकाम का ज़िक्र शुरू हुआ और बताया गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तौरात की तस्दीक़ फ़रमाने वाले थे कि वह अल्लाह की तरफ़ से उतरी और स्थगन से पहले इसपर अमल वाजिब था. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में इसके कुछ अहकाम स्थगित हुए.

(१०) इस आयत में इंजील के लिये लफ़्ज़ *"हुदन"* (हिदायत) दो जगह इरशाद हुआ, पहली जगह गुमराही व जिहालत से बचाने के लिये रहनुमाई मुराद है, दूसरी जगह *"हुदन"* से नबियों के सरदार अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की बशारत मुराद है. जो हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की नबुव्वत की तरफ़ लोगों की राहयाबी का सबब है.

(११) यानी नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी नबुव्वत की तस्दीक़ करने का हुक्म.

(१२) जो इससे पहले नबियों पर उतरीं.

(१३) यानी जब किताब वाले अपने मुक़दमे आपके पास लाएं तो आप क़ुरआने पाक से फ़ैसला फ़रमाएं.

(१४) यानी व्यवहार और कर्म हर एक के ख़ास है और अस्ल दीन सबका एक. हज़रत अली मुर्तज़ा रदीयल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ईमान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से यही है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" की शहादत और जो अल्लाह तआला की तरफ़ से आया है उसका

بينهم بما انزل الله ولا تتبع اهواءهم
واحذرهم ان يفتنوك عن بعض ما انزل الله
اليك ط فان تولوا فاعلم انما يريد الله
ان يصيبهم ببعض ذنوبهم ط وان كثيرا من
الناس لفسقون ﴿٤٩﴾ افحكم الجاهلية يبغون ط
ومن احسن من الله حكما لقوم يوقنون ﴿٥٠﴾
يايها الذين امنوا لا تتخذوا اليهود والنصرى
اولياء م بعضهم اولياء بعض ط ومن يتولهم
منكم فانه منهم ط ان الله لا يهدي القوم
الظلمين ﴿٥١﴾ فترى الذين في قلوبهم مرض
يسارعون فيهم يقولون نخشى ان تصيبنا
دائرة ط فعسى الله ان ياتي بالفتح او امر
من عنده فيصبحوا على ما اسروا في انفسهم

अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उनकी ख़्वाहिशों पर न चल और उनसे बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश(डगमगा) न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी तरफ़ उतरा फिर अगर वो मुंह फेरें[१६] तो जान लो कि अल्लाह उनके कुछ गुनाहों की[१७] सज़ा उनको पहुंचाता है[१८] और बेशक बहुत आदमी बेहुक्म﴿४९﴾ हैं तो क्या जाहिलियत(अज्ञानता) का हुक्म चाहते हैं[१९] और अल्लाह से बेहतर किसका हुक्म यक़ीन वालों के लिये﴿५०﴾

आठवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ[१] वो आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं[२] और तुम में जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है[३] बेशक अल्लाह बे इन्साफ़ों को राह नहीं देता[४]﴿५१﴾ अब तुम उन्हें देखोगे जिनके दिलों में आज़ार है[५] कि यहूद और नसारा(ईसाई)की तरफ़ दौड़ते हैं और कहते हैं हम डरते हैं कि हमपर कोई गर्दिश(मुसीबत) आजाए[६] तो नज़दीक है कि अल्लाह फ़त्ह(विजय) लाए[७] या अपनी तरफ़ से कोई हुक्म[८] फिर उसपर जो अपने दिलों में छुपाया था[९]

इक़रार करना और शरीअत व तरीक़ा हर उम्मत का ख़ास है.

(१५) और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर होजाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अहकाम दिये, क्या तुम उनपर इस यक़ीन और अक़ीदे के साथ अमल करते हो कि उनका विरोध अल्लाह तआला की मर्ज़ी से हिक्मत और दुनिया व आख़िरत की लाभदायक मसलिहतों पर आधारित है या सत्य को छोड़कर नफ़्स के बहकावे का अनुकरण करते हो. (तफ़सीरे अबूसऊद)

(१६) अल्लाह के उतारे हुए हुक्म से.

(१७) जिन में यह एराज़ यानी अवज्ञा भी है.

(१८) दुनिया में क़त्ल व गिरफ़्तारी और जिला-वतनी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा.

(१९) जो सरदार गुमराही और ज़ुल्म और अल्लाह के अहकाम के विरुद्ध होता था. बनी नुज़ैर और बनी क़ुरैज़ा यहूदियों के दो क़बीले थे, उनमें आपस में एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था, जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो ये लोग अपना मुक़द्दमा हुज़ूर की ख़िदमत में लाए और बनी क़ुरैज़ा ने कहा कि बनी नुज़ैर हमारे भाई हैं. हम वो एक ही दादा की औलाद हैं, एक दीन रखते हैं, एक किताब (तौरात) मानते हैं, लेकिन अगर बनी नुज़ैर हम में से किसी को क़त्ल करें तो उसके तावान में हम सत्तर वसक़ ख़जूरें देते हैं, और अगर हममें से कोई उनके किसी आदमी को क़त्ल करे तो हमसे उसके बदले में एक सौ चालीस वसक़ लेते हैं. आप इसका फ़ैसला फ़रमादें. हुज़ूर ने फ़रमाया, मैं हुक्म देता हूँ कि क़ुरैज़ा वालों और नुज़ैर वालों का ख़ून बराबर है. किसी को दूसरे पर बरतरी नहीं. इसपर बनी नुज़ैर बहुत नाराज़ हुए और कहने लगे हम आपके फ़ैसले से राज़ी नहीं हैं, आप हमारे दुश्मन हैं, हमें ज़लील करना चाहते हैं. इस पर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलियत की गुमराही और ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं.

सूरए माइदा - आठवाँ रूकू

(१) इस आयत में यहूदियों और ईसाईयों के साथ दोस्ती और सहयोग यानी उनकी मदद करना, उनसे मदद चाहना, उनके साथ महब्बत के रिश्ते रखना, मना फ़रमाया गया. यह हुक्म आम है अगरचे आयत किसी ख़ास घटना के मौक़े पर उतरी हो. यह आयत हज़रत इबादा बिन सामित सहाबी और अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल के बारे में उतरी जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था. हज़रत इबादा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यहूदियों में मेरे बहुत से दोस्त हैं जो बड़ी शान वाले, बड़ी ताक़त वाले हैं, अब मैं उनकी दोस्ती से बेज़ार हूँ, और अल्लाह व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की महब्बत की गुंजायश नहीं. इसपर अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा कि मैं तो यहूदियों की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता, मुझे पेश आने वाले हादसों का डर है, और मुझे उनके साथ राहो रस्म रखनी ज़रूरी है. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उससे फ़रमाया कि यहूदियों की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, इबादा का यह काम नहीं. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)

نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ
لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ
فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ
اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫
يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ
لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ
اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

منزل ٢

पछताते रह जाएं﴿५२﴾ और[१०] ईमान वाले कहते हैं क्या यही हैं जिन्होंने अल्लाह की क़सम खाई थी अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि वो तुम्हारे साथ हैं, उनका किया धरा सब अकारत गया तो रह गए नुक़सान में[११]﴿५३﴾ ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा[१२] तो बहुत जल्द अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा, मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत(भर्त्सना) करने वाले की मलामत का अन्देशा(भय) न करेंगे[१३] यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे. और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है﴿५४﴾ तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले[१४] कि नमाज़ क़ायम रखते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं[१५]﴿५५﴾ और जो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह ही का दल ग़ालिब है﴿५६﴾

(२) इससे मालूम हुआ कि काफ़िर कोई भी हों, उनमें आपस में कितने ही इख़्तिलाफ़ हों, मुसलमानों के मुक़ाबले में वो सब एक हैं *"अल कुफ़्रो उम्मतुन वाहिदतुन"*. (मदारिक)

(३) इसमें बहुत सख़्ती और ताकीद है कि मुसलमानों पर यहूदियों और ईसाइयों और इस्लाम के हर विरोधी से अलग रहना वाजिब है. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(४) जो काफ़िरों से दोस्ती करके अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं. हज़रत अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहो अन्हो का कातिब ईसाई था. हज़रत अमीरुल मूमिनीन उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उनसे फ़रमाया कि ईसाई से क्या वास्ता. तुमने यह आयत नहीं सुनी, *"या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तत्तख़िज़ुल यहूद"* (ऐ ईमान वालो, यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ- सूरए मायदह, आयत ५१). उन्हों ने अर्ज़ किया, उसका दीन उसके साथ, मुझे तो उसकी किताबत से मतलब है. अमीरुल मूमिनीन ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इज़्ज़त न दो, अल्लाह ने उन्हें दूर किया, तुम उन्हें क़रीब न करो. हज़रत अबू मूसा ने अर्ज़ किया कि बग़ैर उसके बसरा की हुकूमत का काम चलाना कठिन है, यानी इस ज़रूरत से, मजबूरी से उसको रखा है कि इस योग्यता का दूसरा आदमी मुसलमानों में नहीं मिलता. इस पर अमीरुल मूमिनीन ने फ़रमाया, ईसाई मर गया वस्सलाम. यानी फ़र्ज़ करो कि वह मर गया, उस वक़्त जो इन्तिज़ाम करोगे वही अब करो और उससे हरगिज़ काम न लो, यह आख़िरी बात है. (ख़ाज़िन)

(५) यानी दोहरी प्रवृत्ति .

(६) जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ने कहा.

(७) और अपने रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को विजयी और कामयाब करे और उनके दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब करे. और मुसलमानों को उनके दुश्मन यहूदियों और ईसाइयों वग़ैरह काफ़िरों पर ग़लबा दे. चुनांचे यह ख़बर सच्ची साबित हुई और अल्लाह तआला के करम से मक्कए मुकर्रमा और यहूदियों के इलाक़े फ़त्ह हुए. (ख़ाज़िन वग़ैरह)

(८) जैसे कि सरज़मीने हिजाज़ को यहूदियों से पाक करना और वहाँ उनका नामो निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ों के राज़ खोल कर उन्हें रुस्वा करना. (ख़ाज़िन व जलालैन)

(९) यानी दोग़ली प्रवृत्ति या ऐसी प्रवृत्ति रखने वालों का यह ख़याल कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुक़ाबले में कामयाब न होंगे.

(१०) मुनाफ़िक़ों का पर्दा खुलने पर.

(११) कि दुनिया में ज़लील व रुस्वा हुए और आख़िरत में हमेशा के अज़ाब के सज़ावार.

(१२) काफ़िरों के साथ दोस्ती और सहयोग बेदीनी और अधर्म के बराबर है, इसके मना किये जाने के बाद अधर्मियों का ज़िक्र फ़रमाया, और मुर्तद होने से पहले लोगों के दीन से फिर जाने की ख़बर दी. चुनांचे यह ख़बर सच हुई और बहुत लोग दीन से फिरे.

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ
لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا
هُزُوًا وَّلَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ
اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ
الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَاۗءِ السَّبِيْلِ ۝ وَ
اِذَا جَاۗءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

नवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है[१] वो जो तुमसे पहले किताब दिये गए और काफ़िर[२] उनमें किसी को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो[३] ﴾५७﴿ और जब तुम नमाज़ के लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं[४] यह इसलिये कि वो निरे बेअक़्ल लोग हैं[५] ﴾५८﴿ तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा यही न कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और उसपर जो पहले उतरा[६] और यह कि तुम में अक्सर बेहुक्म हैं ﴾५९﴿ तुम फ़रमाओ क्या मैं बतादूं जो अल्लाह के यहाँ इससे बदतर दर्जे में हैं[७] वो जिनपर अल्लाह ने लअनत की और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया और उनमें से कर दिया बन्दर और सुअर[८] और शैतान के पुजारी उनका ठिकाना ज़्यादा बुरा है[९] और ये सीधी राह से ज़्यादा बहके ﴾६०﴿ और जब तुम्हारे पास आए[१०] तो कहते हैं कि हम मुसलमान हैं और वो आते वक़्त भी काफ़िर थे और

---

(१३) यह सिफ़त जिनकी है वो कौन हैं, इसमें कई क़ौल हैं. हज़रत अली मुरतज़ा व हसन व क़तादा ने कहा कि ये लोग हज़रत अबूबक्र और उनके साथी हैं, जिन्हों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद मुर्तद होने और ज़कात से इन्कारी होने वालों पर जिहाद किया. अयाज़ बिन ग़नम अशअरी से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अबू मूसा अशअरी की निस्बत फ़रमाया कि यह उनकी क़ौम है. एक क़ौल यह है कि ये लोग यमन निवासी हैं जिनकी तारीफ़ बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीसों में आई है. सदी का क़ौल है कि ये लोग अन्सार हैं जिन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत की और इन क़ौलों में कुछ विरोध नहीं क्योंकि इन सब हज़रात में ये गुण होना सही हैं.

(१४) जिनके साथ सहयोग हराम है, उनका ज़िक्र फ़रमाने के बाद उनका बयान फ़रमया जिनके साथ सहयोग वाजिब है. हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के हक़ में नाज़िल हुई. उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, हमारी क़ौम क़ुरैज़ा और नुज़ैर ने हमें छोड़ दिया और क़स्में खालीं कि वो हमारे साथ हम-नशीनी न करेंगे. इसपर यह आयत उतरी तो अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने पर, उसके रसूल के नबी होने पर, मूमिनीन के दोस्त होने पर और आयत का हुक्म सारे ईमान वालों के लिये आम है. सब एक दूसरे के दोस्त और प्यारे हैं.

(१५) वाक्य *"वहुम राकिऊन"* (समक्ष झुके हुए हैं) दो वजह रखता है, एक यह कि पहले जुमलों पर मअतूफ़ हो, दूसरी यह कि हाल वाक़े हो. पहली वजह सबसे ज़ाहिर और मज़बूत है, और आलाहज़रत मुहद्दिसे बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह का अनुवाद भी इसी के मुताबिक़ है. दूसरी वजह पर दो पहलू हैं, एक यह कि *" युक़ीमूना व यूतूना "* दोनों क्रियाओं के कर्ताओं से हाल वाक़े हुआ. उस सूरत में मानी ये होंगे कि वह पूरी एकाग्रता और दिल की गहराई से नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं. (तफ़सीरे अबूसऊद). दूसरा पहलू यह है कि सिर्फ़ *"यूतून"* के कर्ता से हाल वाक़े हुआ. उस सूरत में मानी ये होंगे कि नमाज़ क़ायम करते हैं और विनम्रता के साथ ज़कात देते हैं. (जुमल) कुछ का कहना है कि यह आयत हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो की शान में है कि आपने नमाज़ में सवाल करने वाले को अंगूठी सदक़ा दी थी. वह अंगूठी आपकी उंगली में ढीली थी, आसानी से एक ही बार में निकल गई. लेकिन इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने तफ़सीरे कबीर में इसका सख़्ती से रद किया है और इसके ग़लत होने के कई कारण बताए हैं.

सूरए माइदा - नवाँ रूकू

(१) रफ़ाआ बिन ज़ैद और सवीद बिन हारिस दोनों इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद मुनाफ़िक़ हो गए. कुछ मुसलमान उनसे महब्बत रखते थे. अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बताया कि ज़बान से इस्लाम ज़ाहिर करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना, दीन को हंसी खेल बनाना है.

وَهُمۡ قَدۡ خَرَجُوۡا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا كَانُوۡا يَكۡتُمُوۡنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيۡرًا مِّنۡهُمۡ يُسَارِعُوۡنَ فِى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَاَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝ لَوۡلَا يَنۡهٰٮهُمُ الرَّبَّانِيُّوۡنَ وَالۡاَحۡبَارُ عَنۡ قَوۡلِهِمُ الۡاِثۡمَ وَاَكۡلِهِمُ السُّحۡتَ ؕ لَبِئۡسَ مَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ۝ وَقَالَتِ الۡيَهُوۡدُ يَدُ اللّٰهِ مَغۡلُوۡلَةٌ ؕ غُلَّتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ وَلُعِنُوۡا بِمَا قَالُوۡا ۘ بَلۡ يَدٰهُ مَبۡسُوۡطَتٰنِ ۙ يُنۡفِقُ كَيۡفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيۡدَنَّ كَثِيۡرًا مِّنۡهُمۡ مَّاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ طُغۡيَانًا وَّكُفۡرًا ؕ وَاَلۡقَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَالۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ اَوۡقَدُوۡا نَارًا لِّلۡحَرۡبِ اَطۡفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسۡعَوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝ وَلَوۡ اَنَّ اَهۡلَ الۡكِتٰبِ اٰمَنُوۡا وَاتَّقَوۡا لَكَفَّرۡنَا عَنۡهُمۡ

जाते वक़्त भी काफ़िर और अल्लाह ख़ूब जानता है जो छुपा रहे हैं (६१) और उन[११] में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और हरामख़ोरी पर दौड़ते हैं[१२] बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं (६२) इन्हें क्यों नहीं मना करते उनके पादरी, और दरवेश गुनाह की बात कहने और हराम खाने से बेशक बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं[१३] (६३) और यहूदी बोले अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है[१४] उनके हाथ बांधे जाएं[१५] और उनपर इस कहने से लअनत है बल्कि उसके हाथ कुशादा हैं[१६] अता फ़रमाता है जैसे चाहे[१७] और ऐ महबूब ये[१८] जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उससे उनमें बहुतों को शरारत और कुछ कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी[१९] और बैर डाल दिया[२०] जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है[२१] और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता (६४) और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उनके

(२) यानी मूर्तिपूजक मुश्रिक जो किताब वालों से भी बुरे हैं. (ख़ाज़िन)

(३) क्योंकि ख़ुदा के दुश्मनों के साथ दोस्ती करना ईमान वाले का काम नहीं.

(४) कलबी का क़ौल है कि जब रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये अज़ान कहता और मुसलमान उठते तो यहूदी हंसते और ठट्ठा करते. इसपर यह आयत उतरी. सदी का कहना है कि मदीनए तैय्यिबह में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में "अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह" और "अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" कहता तो एक यहूदी यह कहा करता कि जल जाए झूटा. एक रात उसका ख़ादिम आग लाया, वह और उसके घर के लोग सो रहे थे. आग से एक चिंगारी उड़ी और वह यहूदी और उसके घर के लोग और सारा घर जल गया.

(५) जो ऐसी बुरी और जिहालत की बातें करते हैं. इस आयत से मालूम हुआ कि अज़ान क़ुरआनी आयत से भी साबित है.

(६) यहूदियों की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि आप नबियों में से किस को मानते हैं, इस सवाल से उनका मतलब यह था कि आप हज़रत ईसा को न मानें तो वो आप पर ईमान ले आएं. लेकिन हुज़ूर ने इसके जवाब में फ़रमाया कि मैं अल्लाह पर ईमान रखता हूँ और जो उसने हम पर उतारा और जो हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याक़ूब और उनकी औलाद पर उतारा और जो हज़रत मूसा व ईसा को दिया गया यानी तौरात और इंजील और जो और नबियों को उनके रब की तरफ़ से दिया गया, सब को मानता हूँ. हम नबियों में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें. जब उन्हें मालूम हुआ कि आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को भी मानते हैं तो वो आपकी नबुव्वत का इन्कार कर बैठे और कहने लगे जो ईसा को माने, हम उसपर ईमान न लाएंगे. इसपर यह आयत उतरी.

(७) कि इस सच्चे दीन वालों को तो तुम सिर्फ़ अपनी दुश्मनी ही से बुरा कहते हो और तुमपर अल्लाह तआला ने लअनत की है और ग़ज़ब फ़रमाया और आयत में जो बयान है, वह तुम्हारा हाल हुआ तो बदतर दर्जे में तो तुम ख़ुद हो, कुछ दिल में सोचो.

(८) सूरतें बिगाड़ के.

(९) और वह जहन्नम है.

(१०) यह आयत यहूदियों की एक जमाअत के बारे में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने ईमान और महब्बत का इज़्हार किया और कुफ़्र और गुमराही छुपाई. अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनके हाल की ख़बर दी.

(११) यानी यहूदी.

(१२) गुनाह हर बुराई और नाफ़रमानी को शामिल है. कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि गुनाह से तौरात के मज़मून का छुपाना और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जो विशेषताएं और गुण हैं उनको छुपाना और ज़ियादती से तौरात के अन्दर अपनी तरफ़ से कुछ बढ़ा

سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ
مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ط وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا
يَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ط وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ط
وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى
شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ط وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ج فَلَا تَاْسَ
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ

गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते (६५) और अगर वो क़ायम रखते तौरात और इंजील[२२] और जो कुछ उनकी तरफ़ उनके रब की तरफ़ से उतरा[२३] तो उन्हें रिज़्क़ मिलता है ऊपर से और उनके पांव के नीचे से[२४] उनमें कोई गिरोह (दल) अगर ऐतिदाल (संतुलन) पर है[२५] और उनमें अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं[२६] (६६)

दसवाँ रूकू

ऐ रसूल पहुंचादो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से[१] और ऐसा न हो तो तुम ने उसका पयाम (संदेश) न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से[२] बेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता (६७) तुम फ़रमा दो ऐ किताब वालो तुम कुछ भी नहीं हो[३] जबतक न क़ायम करो तौरात और इंजील और जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[४] और बेशक ऐ मेहबूब वह जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उनमें बहुतों को शरारत और कुफ़्र की ओर तरक़्क़ी होगी[५] तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ (६८) बेशक वो जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं[६] और इसी तरह यहूदी और सितारों को पूजने वाले और ईसाई, इनमें जो कोई

देना और हरामख़ोरी से रिशवतें वग़ैरह मुराद हैं. (ख़ाज़िन)

(१३) कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोकते. इससे मालूम हुआ कि उलमा पर नसीहत और बुराई से रोकना वाजिब है, और जो शख़्स बुरी बात से मना करने को छोड़े, और बुराई के इन्कार से रूका रहे, वह गुनाह करने वाले जैसा है.

(१४) यानी मआज़ल्लाह वह बख़ील यानी कंजूस है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहूदी बहुत ख़ुशहाल और काफ़ी मालदार थे. जब उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया और विरोध किया तो उनकी रोज़ी कम हो गई. उस वक़्त एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह का हाथ बंधा है, यानी मआज़ल्लाह वह रिज़्क़ देने और ख़र्ज करने में कंजूसी करता है. उनके इस कहने पर किसी यहूदी ने मना न किया बल्कि राज़ी रहे, इसीलिये यह सबका कहा हुआ क़रार दिया गया और यह आयत उनके बारे में उतरी.

(१५) तंगी और दादो-दहिश से. इस इरशाद का यह असर हुआ कि यहूदी दुनिया में सबसे ज़्यादा कंजूस हो गए या ये मानी हैं कि उनके हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इसतरह उन्हें दोज़ख़ की आग में डाला जाए, उनकी इस बेहूदा बात और गुस्ताख़ी की सज़ा में.

(१६) वह सख़ावत वाला और करम वाला है.

(१७) अपनी हिकमत के अनुसार, इसमें किसी को ऐतिराज़ की मजाल नहीं.

(१८) क़ुरआन शरीफ़.

(१९) यानी जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा उतना हसद और दुश्मनी बढ़ती जाएगी और वो उसके साथ कुफ़्र और सरकशी में बढ़ते रहेंगे.

(२०) वो हमेशा आपस में अलग अलग रहेंगे और उनके दिल कभी न मिलेंगे.

(२१) और उनकी मदद नहीं फ़रमाता, वह ज़लील होता है.

(२२) इस तरह कि नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाते और आपकी फ़रमाँबरदारी करते कि तौरात व इंजील में इसका हुक्म दिया गया है.

(२३) यानी तमाम किताबें जो अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर उतारीं, सबमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है.

(२४) यानी रिज़्क़ की बहुतात होती और हर तरफ़ से पहुंचता. इस आयत से मालूम हुआ कि दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी से रिज़्क़ में विस्तार होता है.

(२५) हद से आगे नहीं जाता, ये यहूदियों में से वो लोग हैं जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए.

(२६) जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं.

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا
مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ
كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ
فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا
تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ
اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

सच्चे दिल से अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो उनपर न कुछ डर है और न कुछ ग़म (६९) बेशक हमने बनी इस्राईल से एहद लिया[७] और उनकी तरफ़ रसूल भेजे जब कभी उनके पास कोई रसूल वह बात लेकर आया जो उनके नफ़्स की ख़्वाहिश न थी[८] एक दल को झुटलाया और एक दल को शहीद करते हैं[९] (७०) और इस गुमान में हैं कि कोई सज़ा न होगी[१०] तो अंधे और बेहरे होगए[११] फिर अल्लाह ने उनकी तौबह क़ुबूल की[१२] फिर उनमें बहुतेरे अंधे और बेहरे होगए और अल्लाह उनके काम देख रहा है (७१) बेशक काफ़िर हैं वो जो कहते हैं कि अल्लाह वही मसीह मरयम का बेटा है[१३] और मसीह ने तो यह कहा था ऐ बनी इसराईल अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब[१४] है और तुम्हारा रब बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो अल्लाह ने उसपर जन्नत हराम करदी और उसका ठिकाना दोज़ख़ है. और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (७२) बेशक काफ़िर हैं वो जो कहते हैं

सूरए माइदा - दसवाँ रूकू

(१) और कुछ अन्देशा न करो.

(२) यानी काफ़िरों से जो आपके क़त्ल का इरादा रखते हैं. सफ़रों में रात को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पहरा दिया जाता था, जब यह आयत उतरी, पहरा हटा दिया गया और हुज़ूर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ. अल्लाह तआला ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई.

(३) किसी दीन व मिल्लत में नहीं.

(४) यानी क़ुरआने पाक इन किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात और आप पर ईमान लाने का हुक्म है, जब तक हुज़ूर पर ईमान न लाएं. तौरात व इन्जील के अनुकरण का दावा सही नहीं हो सकता.

(५) क्योंकि जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा, ये मक्कार दुश्मनी से इसके इन्कार में और सख़्ती करते जाएंगे.

(६) और दिल में ईमान नहीं रखते, मुनाफ़िक़ हैं.

(७) तौरात में, कि अल्लाह ताआला और उसके रसूलों पर ईमान लाएं और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अमल करें.

(८) और उन्होंने नबियों के आदेशों को अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ पाया तो उनमें से. . .

(९) नबियों को झुटलाने में तो यहूदी और ईसाई सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना, यह ख़ास यहूदियों का काम है. उन्होंने बहुत से नबियों को शहीद किया जिनमें से हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया अलैहुमस्सलाम भी हैं.

(१०) और ऐसे सख़्त जुर्मों पर भी अज़ाब न किया जाएगा.

(११) सच्चाई को देखने और सुनने से, यह उनकी असीम अज्ञानता और अत्यन्त कुफ़्र और सत्य क़ुबूल करने से बिल्कुल ही मुँह फेर लेने का बयान है.

(१२) जब उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद तौबह की उसके बाद दोबारा.

(१३) ईसाइयों के कई सम्प्रदाय हैं उनमें से याक़ूबिया और मल्कानिया का यह कहना था कि मरयम ने मअबूद जना और यह भी कहते थे कि मअबूद ने ईसा की ज़ात में प्रवेश किया और वह उनके साथ एक हो गया तो ईसा मअबूद हो गए.

(१४) और मैं उसका बन्दा हूँ, मअबूद नहीं.

अल्लाह तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है[१५] और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा[१६] और अगर अपनी बात से बाज़ न आए[१७] तो जो उनमें काफ़िर मरेंगे उनको ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा﴾७३﴿ तो क्यों नहीं रूजू करते अल्लाह की तरफ़ और उससे बख़्शीश मांगते और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान﴾७४﴿ मसीह मरयम का बेटा नहीं मगर एक रसूल[१८] उससे पहले बहुत रसूल हो गुज़रे[१९] और उसकी माँ सिद्दीक़ा(सच्ची)है[२०] दोनों खाना खाते थे[२१] देखो तो हम कैसी साफ़ निशानियां इनके लिये बयान करते हैं फिर देखो वो कैसे औंध जाते हैं﴾७५﴿ तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो तुम्हारे नुक़सान का मालिक न नफ़ा का[२२] और अल्लाह ही सुनता जानता है﴾७६﴿ तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो[२३] और ऐसे लोगों की ख़्वाहिश पर न चलो[२४] जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से बहक गए﴾७७﴿

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ
لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى
اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا
يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ
ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ
وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ
اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝ع

(१५) यह क़ौल ईसाइयों के सम्प्रदाय मरक़सिया व नस्तूरिया का है. अक्सर मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि इससे उनकी मुराद यह थी कि अल्लाह और मरयम और ईसा तीनों इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है. मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं कि ईसाई कहते हैं कि बाप, बेटा, रूहुलक़ुदुस, ये तीनों एक इलाह हैं.

(१६) न उसका कोई सानी न सालिस. वह वहदानियत के साथ मौसूफ़ है, उसका कोई शरीक नहीं. बाप, बेटे, बीवी, सबसे पाक.

(१७) और त्रिमूर्ति के मानने वाले रहे, तौहीद इख़्तियार न की.

(१८) उनको मअबूद मानना ग़लत, बातिल और कुफ़्र है.

(१९) वो भी चमत्कार रखते थे. ये चमत्कार उनके सच्चे नबी होने की दलील थे. इसी तरह हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी रसूल हैं, उनके चमत्कार भी उनकी नबुव्वत के प्रमाण हैं, उन्हें रसूल ही मानना चाहिये, जैसे और नबियों को चमत्कार पर ख़ुदा नहीं मानते, उनको भी ख़ुदा न मानो.

(२०) जो अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं.

(२१) इसमें ईसाइयों का रद है कि इलाह यानी मअबूद ग़िज़ा का मोहताज नहीं हो सकता, तो जो ग़िज़ा खाए, जिस्म रखे, उस जिस्म में तबदली हो, ग़िज़ा उसका बदल बने, वह कैसे मअबूद हो सकता है.

(२२) यह शिर्क के बातिल होने की एक और दलील है. इसका ख़ुलासा यह है कि मअबूद (जिसकी पूजा की जा सके) वही हो सकता है जो नफ़ा नुक़सान वग़ैरह हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत और इख़्तियार रखता हो. जो ऐसा न हो, वह इलाह यानी पूजनीय नहीं हो सकता और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नफ़ा नुक़सान के अपनी ज़ात से मालिक न थे, अल्लाह तआला के मालिक करने से मालिक हुए, तो उनकी निस्बत अल्लाह होने का अक़ीदा बातिल है. (तफ़सीरे अबूसऊद)

(२३) यहूदियों की ज़ियादती तो यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत ही नहीं मानते और ईसाइयों की ज़ियादती यह कि उन्हें मअबूद ठहराते हैं.

(२४) यानी अपने अधर्मी बाप दादा वग़ैरह की.

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَآءِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ
دَاوٗدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى كَثِيرًا
مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ
كَثِيرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ
عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ اٰمَنُوا
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصٰرٰى ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ
قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَّأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾

ग्यारहवाँ रूकू

लअनत किये गए वो जिन्होंने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दाऊद और ईसा मरयम के बेटे की ज़बान पर[१] ये[२] बदला उनकी नाफ़रमानी और सरकशी का ﴿७८﴾ जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे[३] ﴿७९﴾ उनमें तुम बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी यह कि अल्लाह का उनपर ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और वो अज़ाब में हमेशा रहेंगे[४] ﴿८०﴾ और अगर वो ईमान लाते[५] अल्लाह और उन नबी पर और उसपर जो उन की तरफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते[६] मगर उन में तो बहुतेरे फ़ासिक़ (दुराचारी) हैं ﴿८१﴾ ज़रूर तुम मुसलमानों का सबसे बढ़कर दुश्मन यहूदियों और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सबसे ज़्यादा क़रीब उनको पाओगे जो कहते थे हम नसारा (ईसाई) हैं[७] यह इसलिये कि उनमें आलिम और दर्वेश (महात्मा) हैं और ये घमण्ड नहीं करते[८] ﴿८२﴾

सूरए माइदा - ग्यारहवाँ रूकू

(१) ईला के रहने वालों ने जब सीमा का उल्लंघन किया और सनीचर के दिन शिकार न करने का जो हुक्म था, उसकी अवहेलना की तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने उनपर लअनत की और उनके हक़ में बददुआ फ़रमाई तो वो बन्दरों और सुअरों की सूरत में कर दिये गए, और मायदा वालों ने जब आसमान से उतरी नेमतें खाने के बाद कुफ़्र किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उनके हक़ में बददुआ की तो वो सुअर और बन्दर हो गए और उनकी संख्या पांच हज़ार थी. (जुमल वग़ैरह) कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि यहूदी अपने पूर्वजों पर गर्व किया करते थे और कहते थे हम नबियों की औलाद हैं, इस आयत में उन्हें बताया गया कि इन नबियों ने उनपर लअनत की है. एक क़ौल यह है कि हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहुमस्सलाम ने सैयदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशख़बरी दी और हुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर लअनत की.

(२) लअनत.

(३) आयत से साबित हुआ कि बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है. और बुराई को मना करने से रुका रहना सख़्त गुनाह है. तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब बनी इस्राईल गुनाहों में गिरफ़्तार हुए तो उनके उलमा ने पहले तो उन्हें मना किया, जब वो न माने तो फिर वो उलमा भी उनसे मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उनके साथ शामिल हो गए. उनके इस गुनाह और ज़िद का यह नतीजा हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहुमस्सलाम की ज़बान से उनपर लअनत उतारी.

(४) इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िरों से दोस्ती और उनके साथ रिश्तेदारी हराम और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का कारण है.

(५) सच्चाई और महब्बत के साथ, बग़ैर दोग़ली प्रवृत्ति के.

(६) इससे साबित हुआ कि मुश्रिकों के साथ दोस्ती और सहयोग दोग़ली प्रवृत्ति की निशानी है.

(७) इस आयत में उनकी प्रशंसा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन पर रहे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत मालूम होने पर हुज़ूर पर ईमान ले आए. इस्लाम की शुरूआत में जब क़ुरैश के काफ़िरों ने मुसलमानों को बहुत तकलीफ़ें दीं तो सहाबए किराम में से ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हुज़ूर के हुक्म से हबशा की तरफ़ हिजरत की. इन मुहाजिरों के नाम ये हैं : हज़रत उस्मान और उनकी ज़ौजए ताहिरा हज़रत रुक़ैया दुख़्तरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा और उनकी बीवी हज़रत सहेला बिन्ते सुहैल और हज़रत मुसअब बिन उमैर, हज़रत अबू सलमा और उनकी बीवी हज़रत उम्मे सलमा बिन्ते उमैया, हज़रत उस्मान बिन मतऊन, हज़रत आमिर बिन रबीआ और उनकी बीवी हज़रत लैला बिन्ते अबी ख़सीमा, हज़रत हातिब बिन अम्र,

हज़रत सुहैल बिन बैदा रदियल्लाहो अन्हुम. ये हज़रात नबुव्वत के पांचवें साल रजब मास में दरिया का सफ़र करके हबशा पहुंचे. इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं. उनके बाद हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब गए और फिर मुसलमान रवाना होते रहे यहाँ तक कि बच्चों और औरतों के अलावा मुहाजिरों की तादाद बयासी मर्दों तक पहुंच गई. जब क़ुरैश को इस हिजरत के बारे में मालूम हुआ तो उन्होंने एक जमाअत तोहफ़े वग़ैरह लेकर नजाशी बादशाह के पास भेजी. उन लोगों ने शाही दरबार में जाकर बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नबुव्वत का दावा किया है और लोगों को नादान बना डाला है. उनकी जमाअत जो आपके मुल्क में आई है वह यहाँ फ़साद फैलाएगी और आपकी रिआया को बाग़ी बनाएगी. हम आपको ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे हवाले कीजीये. नजाशी बादशाह ने कहा, हम उन लोगों से बात करलें. यह कहकर मुसलमानों को तलब किया और उनसे पूछा कि तुम हज़रत ईसा और उनकी वालिदा के हक़ में क्या अक़ीदा रखते हो. हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अल्लाह के बंदे और उसके रसूल और कलिमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं और हज़रत मरयम कुंवारी पाक हैं. यह सुनकर नजाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठाकर कहा, ख़ुदा की क़सम तुम्हारे आक़ा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी यह लकड़ी. यानी हुज़ूर का इरशाद हज़रत ईसा के कलाम के बिलकुल अनुकूल है. यह देखकर मक्के के मुश्रिकों के चेहरे उतर गए. फिर नजाशी ने क़ुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की. हज़रत जअफ़र ने सूरए मरयम तिलावत की. उस वक़्त दरबार में ईसाई आलिम और दर्वेश मौजूद थे. क़ुरआने करीम सुनकर बे इख़्तियार रोने लगे और नजाशी ने मुसलमानों से कहा तुम्हारे लिये मेरी सल्तनत में कोई ख़तरा नहीं. मक्के के मुश्रिक नाकाम फिरे और मुसलमान नजाशी के पास बहुत इज़्ज़त और आसायश के साथ रहे और अल्लाह के फ़ज़्ल से नजाशी को ईमान की दौलत हासिल हुई. इस घटना के बारे में यह आयत उतरी.

(८) इससे साबित हुआ कि इल्म हासिल करना और अहंकार और घमण्ड छोड़ देना बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और इनकी बदौलत हिदायत नसीब होती है.

पारा छः समाप्त

सातवाँ पारा - व इज़ासमिऊ
(सुरए माइदा जारी)

और जब सुनते हैं वह जो रसूल की तरफ़ उतरा[९] तो उनकी आँखें देखो कि आँसुओं से उबल रही हैं[१०] इसलिये कि वो हक़ को पहचान गए कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाए[११] तो हमें हक़ के गवाहों में लिख ले[१२]﴿८३﴾ और हमें क्या हुआ कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर कि हमारे पास आया और हम तमा(लालच) करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाख़िल करे[१३]﴿८४﴾ तो अल्लाह ने उनके इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहेंगे यह बदला है नेकों का[१४]﴿८५﴾ और वो जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वो हैं दोज़ख़ वाले﴿८६﴾

बारहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो[१] हराम न ठहराओ वो सुथरी चीज़ें कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल कीं[२] और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले अल्लाह को नापसन्द हैं﴿८७﴾ और खाओ जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिसपर तुम्हें ईमान है﴿८८﴾ अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लतफ़हमी की क़समों पर[३] हाँ उन क़समों पर पकड़ फ़रमाता है जिन्हें तुमने

---

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(१०) यह उनके दिल की रिक़्क़त का बयान है कि क़ुरआने करीम के दिल पर असर करने वाली बातें सुनकर रो पड़ते हैं. चुनांचे नजाशी बादशाह की दरख़्वास्त पर हज़रत जअफ़र ने उसके दरबार में सूरए मरयम और सूरए तॉहा की आयतें पढ़ कर सुनाईं तो नजाशी बादशाह और उसके दरबारी जिन में उसकी क़ौम के उलमा मौजूद थे सब फूटफूट कर रोने लगे. इसी तरह नजाशी की क़ौम के सत्तर आदमी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे, हुज़ूर से सूरए यासीन सुन कर बहुत रोए.

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर और हमने उनके सच्चे होने की गवाही दी.

(१२) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत में दाख़िल कर जो क़यामत के दिन सारी उम्मतों के गवाह होंगे. (ये उन्हें इंजील से मालूम हो चुका था)

(१३) जब हबशा का प्रतिनिधि मण्डल इस्लाम अपनाकर वापस हुआ तो यहूदियों ने उसपर मलामत की, उसके जवाब में उन्होंने यह कहा कि सच्चाई साफ़ हो गई तो हम क्यों ईमान न लाते यानी ऐसी हालत में ईमान न लाना मलामत की बात है, न कि ईमान लाना क्योंकि यह दोनों जगत में भलाई का कारण है.

(१४) जो सच्चाई और दिल की गहराई के साथ ईमान लाएं और सच्चाई का इक़रार करें.

सूरए माइदा - बारहवाँ रूकू

(१) सहाबा की एक जमाअत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वअज़ (व्याख्यान) सुनकर एक रोज़ हज़रत उस्मान बिन मतऊन के यहाँ जमा हुई और उन्होंने आपस में दुनिया छोड़ने का एहद किया और इसपर सहमति हुई कि वो टाट पहनेंगे, हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे, रात अल्लाह की इबादत में जाग कर गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लेटेंगे, गोश्त और चिकनाई न खाएंगे, औरतों से जुदा रहेंगे, ख़ुश्बू न लगाएंगे. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया.

(२) यानी जिस तरह हराम को छोड़ा जाता है, उस तरह हलाल चीज़ों को मत छोड़ो और न किसी हलाल चीज़ को बढ़ा चढ़ाकर यह कहो कि हमने इसे अपने ऊपर हराम कर लिया.

(३) ग़लत फ़हमी की क़सम यह है कि आदमी किसी घटना को अपने ख़याल में सही जान कर क़सम खाले और हक़ीक़त में वह ऐसी न हो. ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं.

وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٩٦ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ
الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ
وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝٩٧ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٩٨ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَ
اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝٩٩ قُلْ لَّا يَسْتَوِي
الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠٠ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ
تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

उसका खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे को और तुम पर हराम है ख़ुश्की का शिकार[१०] जब तक तुम एहराम में हो और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है﴿९६﴾ अल्लाह ने अदब वाले घर काबे को लोगों के क़याम का बाइस(कारण) किया[११] और हुरमत(इज़्ज़त) वाले महीने[१२] और हरम की क़ुरबानी और गले में अलामत(निशानी) लटकी जानवरों को[१३] यह इसलिये कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और यह कि अल्लाह सब कुछ जानता है﴿९७﴾ जान रखो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है[१४] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान﴿९८﴾ रसूल पर नहीं मगर हुक्म पहुंचाना[१५] और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो[१६]﴿९९﴾ तुम फ़रमादो कि गन्दा और सुथरा बराबर नहीं[१७] अगरचे तुझे गन्दे की कसरत(बहुतात) भाए तो अल्लाह से डरते रहो ऐ अक़्ल वालो कि तुम फ़लाह(भलाई) पाओ﴿१००﴾

चौदहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न पूछो जो तुमपर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें[१] और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है तो तुमपर ज़ाहिर करदी जाएंगी

जानवर की तरह होना मुराद है. (मदारिक व तफ़्सीरे अहमदी)

(६) यानी क़ीमत का अन्दाज़ा करें और क़ीमत वहाँ की मानी जाएगी जहाँ शिकार मारा गया हो या उसके क़रीब के मक़ाम की.

(७) यानी कफ़्फ़ारे के जानवर का हरम शरीफ़ के बाहर ज़िब्ह करना दुरूस्त नहीं है. मक्कए मुकर्रमा में होना चाहिये और ख़ास काबे में भी ज़िब्ह जायज़ नहीं, इसी लिये काबे को पहुंचती फ़रमाया, काबे के अन्दर न फ़रमाया . और कफ़्फ़ारा खाने या रोज़े से अदा किया जाए तो उसके लिये मक्कए मुकर्रमा में होने की क़ैद नहीं, बाहर भी जायज़ है. (तफ़्सीरे अहमदी वग़ैरह)

(८) यह भी जायज़ है कि शिकार की क़ीमत का गल्ला ख़रीद कर फ़क़ीरों को इस तरह दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र के बराबर पहुंचे और यह भी जायज़ है कि इस क़ीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे हिस्से होते थे उतने रोज़े रखे.

(९) यानी इस हुक्म से पहले जो शिकार मारे.

(१०) इस आयत में यह मसअला बयान फ़रमाया गया कि एहराम पहने आदमी के लिये दरिया का शिकार हलाल है और ख़ुश्की का हराम. दरिया का शिकार वह है जिसकी पैदाइश दरिया में हो और ख़ुश्की का वह जिसकी पैदाइश ख़ुश्की में हो.

(११) कि वहाँ दीनी और दुनियावी कामों का क़याम होता है. डरा हुआ वहाँ पनाह लेता है. बूढ़ों को वहाँ अम्न मिलता है, व्यापारी वहाँ नफ़ा पाते हैं, हज उमरा करने वाले वहाँ हाज़िर होकर मनासिक (संस्कार) अदा करते हैं.

(१२) यानी ज़िल्हज को जिसमें हज किया जाता है.

(१३) कि उनमें सवाब ज़्यादा है. उन सब को तुम्हारी भलाइयों के क़याम का कारण बनाया.

(१४) तो हरम और एहराम की पाकी का ख़याल रखो. अल्लाह तआला ने अपनी रहमतों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद अपनी सिफ़त *"शदीदुल इक़ाब"* (सख़्त अज़ाब देने वाला) ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ और रिजा से ईमान की पूर्ति हो. इसके बाद अपनी वुसअत व रहमत का इज़हार फ़रमाया.

(१५) तो जब रसूल हुक्म पहुंचाकर फ़ारिग़ हो गए तो तुमपर फ़रमाँबरदारी लाज़िम और हुज्जत क़ायम हो गई और बहाने की गुंजाइश बाक़ी न रही.

(१६) उसको तुम्हारे ज़ाहिर और बातिन, दोग़लेपन और फ़रमाँबरदारी सब की जानकारी है.

(१७) यानी हलाल व हराम, अच्छे और बुरे, मुस्लिम और काफ़िर और खरा व खोटा एक दर्जे में नहीं हो सकता.

सूरए माइदा - चौदहवाँ रूकू

(१) कुछ लोग सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत से बेफ़ायदा सवाल किया करते थे. यह सरकार के मिज़ाज पर बोझ होता

تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका है[२] और अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म(सहिष्णुता) वाला है﴾१०१﴿ तुमसे अगली एक क़ौम ने उन्हें पूछा[३] फिर उनसे इन्कारी हो बैठे﴾१०२﴿ अल्लाह ने मुक़र्रर नहीं किया है काम चरा हुआ और न बिजार और न वसीला और न हामी [४] हाँ, काफ़िर लोग अल्लाह पर झूठ इफ़तिरा(मिथ्यारोप) बांधते हैं[५] और उनमें अकसर निरे बेअक़्ल हैं[६]﴾१०३﴿ और जब उनसे कहा जाए आओ उस तरफ़ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ़[७] कहें हमें वह बहुत है जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया, क्या अगरचे उनके बाप दादा न कुछ जानें न राह पर हों[८]﴾१०४﴿ ऐ ईमान वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुआ जब कि तुम राह पर हो[९] तुम सबकी रूजू(पलटना) अल्लाह ही की तरफ़ है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे﴾१०५﴿ ऐ ईमान वालो[१०] तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए[११] वसीयत करते वक़्त तुम में के दो विश्वसनीय शख़्स हैं या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ फिर तुम्हें

था. एक दिन फ़रमाया कि जो जो पूछना हो पूछ लो. मैं हर बात का जवाब दूंगा. एक शख़्स ने पूछा कि मेरा अंजाम क्या है. फ़रमाया जहन्नम. दूसरे ने पूछा कि मेरा बाप कौन है, आपने उसके अस्ली बाप का नाम बता दिया जिसके नुत्फ़े से वह था जबकि उसकी माँ का शौहर और था जिसका यह शख़्स बेटा कहलाता था. इसपर यह आयत उतरी. और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पूछो जो ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें नागवार गुज़रें. (तफ़सीरे अहमदी) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया कि जिसको जो पूछना हो पूछ ले. अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े होकर पूछा कि मेरा बाप कौन है. फ़रमाया हुज़ाफ़ा. फिर फ़रमाया और पूछो. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उठकर ईमान और रिसालत के इक़रार के साथ माज़िरत पेश की. इब्ने शहाब की रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की माँ ने उनसे शिकायत की और कहा कि तू बहुत नालायक़ बेटा है, तुझे क्या मालूम कि जिहालत के ज़माने की औरतों का क्या हाल था. अल्लाह न करे तेरी माँ से कोई क़ुसूर हुआ होता तो आज वह कैसी रूस्वा होती. इसपर अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी हबशी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि लोग ठट्ठा बनाने के अन्दाज़ में इस क़िस्म के सवाल किया करते थे, कोई कहता मेरा बाप कौन है, कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम होगई है वह कहाँ है. इसपर यह आयत उतरी. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुत्बे में हज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया. इसपर एक शख़्स ने कहा क्या हर साल हज फ़र्ज़ है. हुज़ूर ने ख़ामोशी रखी. सवाल करने वाले ने सवाल दोहराया तो इरशाद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उसपर मत अड़ो. अगर मैं हाँ कह देता तो हर साल हज फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकते. इससे मालूम हुआ कि अहकाम हुज़ूर के इरशाद के तहत है, जो फ़र्ज़ फ़रमा दें वह फ़र्ज़ हो जाए, न फ़रमाएं, न हो.

(२) इस आयत से साबित हुआ कि जिस काम की शरीअत में मना न आए वह किया जासकता है. हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हो की हदीस में है कि हलाल वह है जो अल्लाह ने अपनी किताब में हलाल फ़रमाया, हराम वह है जिसको उसने अपनी किताब में हराम फ़रमाया और जिस के बारे में कुछ न फ़रमाया वह माफ़ है तो तकलीफ़ में न पड़ो . (ख़ाज़िन)

(३) अपने नबियों से और बे ज़रूरत सवाल किये . नबियों ने अहकाम बयान फ़रमाए तो उनपर अमल न कर सके.

(४) जिहालत के ज़माने में काफ़िरों का यह तरीक़ा था कि जो ऊंटनी पाँच बार बच्चे जनती और आख़िरी बार उसके नर होता उसका कान चीर देते, फिर न उसपर सवारी करते न उसको ज़िबह करते. न पानी और चारे से हंकाते. और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो यह मन्नत मानते कि अगर मैं सफ़र से सकुशल वापस आऊं या स्वस्थ होजाऊं तो मेरी ऊंटनी साइबा (बिजार) है और उससे भी नफ़ा उठाना हराम जानते और उसको आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात बार बच्चा जन चुकती तो अगर सातवाँ बच्चा नर होता तो उसको मर्द खाते और अगर मादा होती तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर व मादा दोनों होते और कहते कि यह अपने भाई से मिल गई है उसको वसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गर्भ हासिल होजाते तो उसको छोड़ देते न उसपर सवारी करते न उससे काम लेते न उसको चारे पानी पर से रोकते, उसको हामी कहते. (मदारिक) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि बहीरा वह है जिसका दूध बुतों के लिये रोकते थे. कोई उस जानवर का दूध

إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ
الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا
نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ
عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا
مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا
إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ
عَلَىٰ وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾ ع يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا
أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾
إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي

منزل ٢

मौत का हादसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बाद रोको[१२] वो अल्लाह की क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े[१३] हम हलफ़ के बदले कुछ माल न खरीदेंगे[१४] अगरचे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनाहगारों में हैं(१०६) फिर अगर पता चले कि वो किसी गुनाह के सज़ावार(हक़दार) हुए[१५] तो उनकी जगह दो और खड़े हों उनमें से कि उस गुनाह यानी झूठी गवाही ने उनका हक़ लेकर उनको नुक़सान पहुंचाया[१६] जो मैयत से ज़्यादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़्यादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम हद से न बढ़े[१७] ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों(१०७) यह क़रीबतर है उससे कि गवाही जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद करदी जाएं उनकी क़समों के बाद[१८] और अल्लाह से डरो और हुक्म सुनो और अल्लाह बेहुक्मों को राह नहीं देता(१०८)

पन्द्रहवाँ रूकू

जिस दिन अल्लाह जमा फ़रमाएगा रसूलों को[१] फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला[२] अर्ज़ करेंगे हमें कुछ इल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों (अज्ञात) का जानने वाला[३](१०९) जब अल्लाह फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद करो

न दोहता और साड़बा वह जिसको अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे कोई उससे काम न लेता. ये रस्में जिहालत के ज़माने से इस्लाम के दौर तक चली आरही थीं. इस आयत में उनको ग़लत क़रार दिया गया.

(५) क्योंकि अल्लाह तआला ने इन जानवरों को हराम नहीं किया . उसकी तरफ़ इसकी निस्बत ग़लत है.

(६) जो अपने सरदारों के कहने से इन चीज़ों को हराम समझते है, इतनी समझ नहीं रखते कि जो चीज़ अल्लाह और उसके रसूल ने हराम न की उसको कोई हराम नहीं कर सकता.

(७) यानी अल्लाह और रसूल के हुक्म का अनुकरण करो और समझलो कि ये चीज़ें हराम नहीं.

(८) यानी बाप दादा का अनुकरण जब दुरूस्त होता कि वो जानकारी रखते और सीधी राह पर होते.

(९) मुसलमान काफ़िरों की मेहरूमी पर अफ़सोस करते थे और उन्हें दुख होता था कि काफ़िर दुश्मनी में पड़कर इस्लाम की दौलत से मेहरूम रहे. अल्लाह तआला ने उनकी तसल्ली फ़रमादी कि इसमें तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं. अल्लाह की हाँ को हाँ और ना को ना मानने का फ़र्ज़ अदा करके तुम अपना कर्तव्य पूरा कर चुके. तुम अपनी नेकी का सवाब पाओगे. अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया इस आयत में *"अम्र बिल मअरूफ़ व नहीये अनिल मुन्कर"* यानी अल्लाह ने जिस काम का हुक्म दिया उसे करना और जिससे मना किया उससे रूके रहना, इसकी अनिवार्यता की बहुत ताकीद की है. क्योंकि अपनी फ़िक्र रखने के मानी ये है कि एक दूसरे की ख़बरगीरी करे, नेकियों की रूचि दिलाए और बुराइयों से रोके. (ख़ाज़िन)

(१०) मुहाजिरों में से बदील, जो हज़रत अम्र इब्ने आस के मवाली में से थे, तिजारत के इरादे से शाम की तरफ़ दो ईसाइयों के साथ रवाना हुए. उनमें से एक का नाम तमीम बिन औस दारी था और दूसरे का अदी बिन बुदा. शाम पहुंचते ही बदील बीमार हो गए और उन्होंने अपने सारे सामान की एक सूची लिखकर सामान में डाल दी और साथियों को इसकी सूचना न दी. जब बीमारी बढ़ी तो बदील ने तमीम व अदी दोनों को वसीयत की कि उनकी सारी पूंजी मदीना शरीफ़ पहुंच कर उनके घर वालों को दें. बदील की वफ़ात हो गई . इन दोनों ने उनकी मौत के बाद उनका सामान देखा, उसमें एक चांदी का प्याला था, जिसपर सोने का काम बना हुआ था, उसमें तीन सौ मिस्क़ाल चांदी था. बदील यह प्याला बादशाह को भेंट करने के इरादे से लाए थे. उनकी मृत्यु के बाद उनके दोनों साथियों ने इस प्याले को ग़ायब कर दिया और अपने काम से निपटने के बाद जब ये लोग मदीनए तैय्यिबह पहुंचे तो उन्होंने बदील का सामान उनके घर वालों के सुपुर्द कर दिया. सामान खोलने पर सूची उनके हाथ आगई जिसमें सारी पूंजी की तफ़सील थी. जब सामान को सूची से मिलाया तो प्याला न पाया. अब वो तमीम और अदी के पास पहुंचे और उन्होंने पूछा कि क्या बदील ने कुछ सामान बेचा भी था. उन्होंने कहा, नहीं. पूछा, क्या कोई तिजारती मामला किया था. उन्होंने कहा, नहीं. फिर पूछा बदील बहुत समय तक बीमार रहे, क्या उन्होंने अपने इलाज में कुछ ख़र्च किया. उन्होंने कहा, नहीं. वो तो शहर पहुंचते ही बीमार होगए और जल्द ही उनका इन्तिक़ाल हो गया. इसपर घरवालों ने कहा कि उनके सामान में एक सूची मिली है उसमें चांदी का एक प्याला सोने का काम किया हुआ, जिसमें तीन सौ मिस्क़ाल चांदी है, यह भी लिखा है. तमीम व अदी ने कहा हमें नहीं मालूम. हमें तो जो वसीयत की थी उसके

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۟ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ۞ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۭ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۞ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَىِٕنَّ

وقف لازم

منزل ٢

मेरा एहसान अपने ऊपर और अपनी मां पर[४] जब मैं ने पाक रूह से तेरी मदद्र की[५] तू लोगों से बातें करता पालने में[६] और पक्की उम्र हो कर[७] और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और हिकमत(बोध)[८] और तौरात और इंजील और जब तू मिट्टी से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उसमें फूंक मारता तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगती[९] और तू मादरज़ाद(जन्मजात) अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से ज़िन्दा निकालता[१०] और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुझ से रोका[११] जब तू उन के पास रौशन निशानियां लेकर आया तो उनमें के काफ़िर बोले कि यह[१२] तो नहीं मगर खुला जादू﴿११०﴾ और जब मैं ने हवारियों(अनुयाइयों)[१३] के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर[१४] ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं[१५]﴿१११﴾ जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा मरयम के बेटे क्या आपका रब ऐसा करेगा कि हम पर आसमान से एक ख़्वान उतारे[१६] कहा अल्लाह से डरो अगर ईमान रखते हो[१७]﴿११२﴾ बोले हम चाहते हैं[१८] कि उसमें से खाएं और हमारे दिल ठहरें[१९] और हम आँखों देख लें कि आपने

अनुसार सामान हमने तुम्हें दे दिया. प्याले की हमें ख़बर भी नहीं. मुक़दमा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दरबार में पेश हुआ. तमीम व अदी वहाँ भी इन्कार पर जमे रहे और क़सम खाली. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की रिवायत में है कि फिर वह प्याला मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया. जिस व्यक्ति के पास था उसने कहा कि मैंने यह प्याला तमीम व अदी से ख़रीदा है. प्याले के मालिक के सरपरस्तों में से दो व्यक्तियों ने खड़े होकर क़सम खाई कि हमारी गवाही इनकी गवाही से ज़्यादा सच्ची है. यह प्याला हमारे बुज़ुर्ग का है. इस बारे में यह आयत उतरी. (तिरमिज़ी)

(११) यानी मौत का वक़्त क़रीब आए, ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत की निशानियाँ ज़ाहिर हों.

(१२) इस नमाज़ से अस्त्र की नमाज़ मुराद है, क्योंकि वह लोगों के जमा होने का वक़्त होता है . हसन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि नमाज़े ज़ोहर या अस्त्र, क्योंकि हिजाज़ के लोग मुक़दमे उसी वक़्त करते थे. हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत उतरी तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अस्त्र की नमाज़ पढ़कर अदी और तमीम को बुलाया . उन दोनों ने क़समें खाईं. इसके बाद मक्कए मुकर्रमा में वह प्याला पकड़ा गया तो जिस व्यक्ति के पास था उसने कहा कि मैंने अदी और तमीम से ख़रीदा है. (मदारिक)

(१३) उनकी अमानत और दयानत में और वो यह कहें कि.....

(१४) यानी झूटी क़सम न खाएंगे और किसी की ख़ातिर ऐसा न करेंगे.

(१५) ख़ियानत के या झूट वग़ैरह के .

(१६) और वो मरने वाले के घर वाले और रिश्तेदार हैं .

(१७) चुनांचे बदील की घटना में जब उनके दोनों साथियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बदील के वारिसों में से दो व्यक्ति खड़े हुए और उन्होंने क़सम खाई कि यह प्याला हमारे बुज़ुर्ग का है, और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़्यादा ठीक है.

(१८) मानी का हासिल यह है कि इस मामले में जो हुक्म दिया गया कि अदी व तमीम की क़समों के बाद माल बरामद होने पर मरने वाले के वारिसों की क़समें ली गईं, यह इसलिये कि लोग इस घटना से सबक़ लें और गवाहियों में सच्चाई का रास्ता न छोड़ें और इससे डरते रहें कि झूटी गवाही का अंजाम शर्मिन्दगी और रूस्वाई है. मुद्दई पर क़सम नहीं, लेकिन यहाँ जब माल पाया गया तो मुद्दआ अलैहिमा ने दावा किया कि उन्होंने मरने वाले से ख़रीद लिया था. अब उनकी हैसियत मुद्दई की हो गई और उनके पास इसका कोई सुबूत न था लिहाज़ा उनके ख़िलाफ़ मरने वाले के वारिसों से क़सम ली गई.

सूरए माइदा - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) यानी क़यामत के दिन.

(२) यानी जब तुमने अपनी उम्मतों को ईमान की दावत दी तो उन्होंने क्या जवाब दिया. इस सवाल में इन्कार करने वालों की

قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا
مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ
رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا
عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ
فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ
اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ
وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ
لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ
عَلِمْتَهٗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ
اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ
اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ

منزل ٢

हम से सच फ़रमाया[२०] और हम उसपर गवाह हो जाएं[२१] ﴿११३﴾ ईसा मरयम के बेटे ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह ऐ रब हमारे हमपर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वह हमारे लिये ईद हो[२२] हमारे अगले पिछलों की[२३] और तेरी तरफ़ से निशानी[२४] और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है ﴿११४﴾ अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं इसे तुम पर उतारता हूँ फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा[२५] तो बेशक मैं उसे वह अज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा[२६] ﴿११५﴾

सोलहवाँ रूकू

और जब अल्लाह फ़रमाएगा[१] ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह के सिवा[२] अर्ज़ करेगा पाकी है तुझे[३] मुझे रवा नहीं कि वह बात कहूँ जो मुझे नहीं पहुंचती[४] अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मालूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों (अज्ञात) का जानने वाला[५] ﴿११६﴾ मैंने तो उनसे न कहा मगर वही जो तूने मुझे हुक्म दिया था कि अल्लाह को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उनपर मुत्तला (बाख़बर) था

तरफ़ इशारा है.

(३) नबियों का यह जवाब उनके हद दर्जा अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वो अल्लाह के इल्म के सामने अपने इल्म को बिल्कुल नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्र क़रार न देंगे और मामला अल्लाह तआला के इल्म और इन्साफ़ पर छोड़ देंगे.

(४) कि मैंने उनको पाक किया और जगत की औरतों पर उनको फ़ज़ीलत दी.

(५) यानी हज़रत जिब्रील से कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद करते.

(६) कम उम्र में, और यह चमत्कार है.

(७) इस आयत से साबित होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़यामत से पहले तशरीफ़ लाएंगे क्योंकि पक्की उम्र का वक़्त आने से पहले आप उठा लिये गए . दोबारा तशरीफ़ लाने के वक़्त आप तैंतीस साल के जवान की सूरत में होंगे और इस आयत के अनुसार कलाम फ़रमाएंगे और जो पालने में फ़रमाया "इन्नी अब्दुल्लाह" (मैं अल्लाह का बन्दा हूँ) वही फ़रमाएंगे. (जुमल)

(८) यानी इल्मों के राज़ .

(९) यह भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का चमत्कार था.

(१०) अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को आँख वाला और स्वस्थ करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा करके निकालना, यह सब अल्लाह के हुक्म से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के महान चमत्कार हैं.

(११) यह एक और नेअमत का बयान है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को यहूदियों की शरारतों से मेहफ़ूज़ रखा जिन्हों ने हज़रत के खुले चमत्कार देखकर आपके क़त्ल का इरादा किया. अल्लाह तआला ने आप को आसमान पर उठा लिया और यहूदी नामुराद रह गए.

(१२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार.

(१३) हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथी और आपके ख़ास लोग हैं.

(१४) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर.

(१५) ज़ाहिर और बातिन में महब्बत रखने वाले और फ़रमाँबरदार.

(१६) मानी ये हैं कि क्या अल्लाह ताअला इस बारे में आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएगा.

(१७) और अल्लाह से डरो ताकि यह मुराद हासिल हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा, मानी ये हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सवाल करने में अल्लाह से डरो, या ये मानी हैं कि उसकी क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो इसमें आगे पीछे न हो. हवारी ईमान वाले, अल्लाह को पहचानने वाले और उसकी क़ुदरत पर यक़ीन करने वाले थे. उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया .

عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ
أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾
إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ
أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ
الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

(٦) سُورَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ (٥٥)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ
الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ۖ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَ

منزل ٢

जब तक मैं उनमें रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया[६] तू ही उनपर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे सामने हाज़िर है[७]﴿११७﴾ अगर तू उन्हें अज़ाब करे तो वो तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला[८]﴿११८﴾ अल्लाह ने फ़रमाया कि यह[९] है वह दिन जिसमें सच्चों को[१०] उनका सच काम आएगा उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह उन से राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी यह है बड़ी कामयाबी﴿११९﴾ अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब की सल्तनत और वह हर चीज़ पर क़ादिर है[११]﴿१२०﴾

६- सूरए अनआम

सूरए अनआम मक्के में उतरी, इसमें १६५ आयतें और बीस रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

पहला रूकू

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने आसमान और ज़मीन बनाए[२] और अंधेरियां और रौशनी पैदा की[३] उसपर[४] काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं[५]﴿१﴾ वही है जिसने तुम्हें[६] मिट्टी से पैदा किया फिर एक मीआद (मुद्दत) का हुक्म रखा[७] और एक निश्चित वादा उसके यहां है[८] फिर

(१८) बरकत हासिल करने के लिये.

(१९) और पक्का यक़ीन हो और जैसा कि हमने अल्लाह की क़ुदरत को दलील से जाना है, आँखों से देखकर उसको और पक्का कर लें.

(२०) बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं.

(२१) अपने बाद वालों के लिये. हवारियों के यह अर्ज़ करने पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें तीस रोज़े रखने का हुक्म फ़रमाया और कहा जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो अल्लाह तआला से जो दुआ करोगे, क़ुबूल होगी. उन्होंने रोज़े रखकर आसमान से खाना उतरने की दुआ की. उस वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ग़ुस्ल फ़रमाया और मोटा लिबास पहना और दो रकअत नमाज़ अदा की और सर झुकाया और रोकर यह दुआ की जिसका अगली आयत में बयान है.

(२२) यानी हम इसके उतरने के दिन को ईद बनाएं, इसका आदर करें, ख़ुशियाँ मनाएं, तेरी इबादत करें, शुक्र अदा करें. इस से मालूम हुआ कि जिस रोज़ अल्लाह तआला की ख़ास रहमत उतरे उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियाँ मनाना, ईबादतें करना, अल्लाह का शुक्र अदा करना नेक लोगों का तरीक़ा है और कुछ शक नहीं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तशरीफ़ लाना अल्लाह तआला की सबसे बड़ी नेअमत और रहम है, इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पैदायश के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़कर अल्लाह का शुक्र अदा करना और ख़ुशी ज़ाहिर करना अच्छी बात है और अल्लाह के प्यारे बन्दों का तरीक़ा है.

(२३) जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उनकी और जो हमारे बाद आएं उनकी.

(२४) तेरी क़ुदरत की और मेरी नबुव्वत की.

(२५) यानी आसमान से खाना उतरने के बाद.

(२६) चुनांचे आसमान से खाना उतरा, इसके बाद जिन्होंने उनमें से कुफ़्र किया उनकी शक्लें बिगाड़ दी गईं और वो सुअर बना दिये गये और तीन दीन के अन्दर सब मर गए.

सूरए माइदा - सोलहवाँ रूकू

(१) क़यामत के दिन ईसाइयों की तौबीख़ के लिये.

(२) इस सम्बोधन को सुनकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम काँप जाएंगे और......
(३) सारे दोषों और बुराइयों से और इससे कि तेरा कोई शरीक हो सके.
(४) यानी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं यह लोगों से कैसे कह सकता था.
(५) इल्म को अल्लाह की तरफ़ निस्बत करना और मामला उसको सौंप देना और अल्लाह की बड़ाई के सामने अपनी मिस्कीनी ज़ाहिर करना, यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अदब की शान है.
(६) "तवफ़्फ़ैतनी" (तूने मुझे उठा लिया) के शब्द से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत साबित करना सही नहीं क्योंकि अव्वल तो शब्द "तवफ़्फ़ा" यानी उठा लेना मौत के लिये ख़ास नहीं. किसी चीज़ के पूरे तौर पर लेने को कहते हैं चाहे वह बिना मौत के हो जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में इरशाद हुआ *"अल्लाहो यतवफ़्फ़ल अनफ़ुसा मौतिहा वल्लती लम तमुत फ़ी मनामिहा"*(अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उनके सोते में) (सूरए ज़ुमर, आयत ४२). दूसरे, जब यह सवाल जवाब क़यामत के दिन का है तो अगर शब्द "तवफ़्फ़ा" मौत के मानी में भी मान लिया जाए जब भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत दोबारा उतरने से पहले इससे साबित न हो सकेगी.
(७) और मेरा इनका किसी का हाल तुझसे छुपा नहीं.
(८) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मालूम है कि क़ौम में कुछ लोग कुफ़्र पर अड़े रहे, कुछ ईमान की दौलत से मालामाल हुए, इसलिये आप अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करते हैं कि इनमें से जो कुफ़्र पर क़ायम रहे, उनपर तू अज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल सही और मुनासिब और इन्साफ़ है क्योंकि इन्हों ने तर्क पूरा होने के बाद कुफ़्र अपनाया. और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरी मेहरबानी है और तेरा हर काम हिकमत है.
(९) क़यामत का दिन.
(१०) जो दुनिया में सच्चाई पर रहे, जैसे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम.
(११) सच्चे को सवाब देने पर भी और झूठे को अज़ाब फ़रमाने पर भी. आयत के मानी ये हैं कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर, जो हो सकती है, क़ुदरत रखता है. (जुमल) झूट वग़ैरह ऐब और बुराईयाँ अल्लाह तआला के लिये सोची भी नहीं जा सकतीं. उनको अल्लाह की क़ुदरत के अन्तर्गत और इस आयत से साबित करना ग़लत और बातिल है.

(६) सूरए अनआम - पहला रूकू

(१) सूरए अनआम मक्के में उतरी. इसमें बीस रूकू और १६५ आयतें, तीन हज़ार एक सौ कलिमे और बारह हज़ार नौसौ पैंतीस अक्षर हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कुल सूरत एक ही रात में मक्कए मुकर्रमा में उतरी और इसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आए जिन से आसमानों के किनारे भर गए. यह भी एक रिवायत में है कि वो फ़रिश्ते तस्बीह करते और अल्लाह की पाकी बोलते आए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम "सुब्हाना रब्बियल अज़ीम" फ़रमाते हुए सिजदे में चले गए.
(२) हज़रत कअब अहबार रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, तौरात में सब से पहली यही आयत है. इस आयत में बन्दों को इस्तग़ना की शान के साथ अल्लाह की तारीफ़ बयान करने की तालीम फ़रमाई गई है और आसमान व ज़मीन की उत्पत्ति का ज़िक्र इसलिये है कि उनमें देखने वालों के लिये क़ुदरत के बहुत से चमत्कार, हिकमतें और सबक़ लेने वाली और फ़ायदे वाली बातें हैं.
(३) यानी हर एक अन्धेरी और रौशनी, चाहे वह अन्धेरी रात की हो या कुफ़्र की या जिहालत की या जहन्नम की. और रौशनी चाहे दिन की हो या ईमान और हिदायत व इल्म व जन्नत की. अन्धेरी को बहुवचन और रौशनी को एक वचन से बयान करने में इस तरफ़ इशारा है कि बातिल की राहें बहुत सी हैं और सच्चाई का रास्ता सिर्फ़ एक, दीने इस्लाम.
(४) यानी ऐसे प्रमाणों पर सूचित होने और क़ुदरत की ऐसी निशानियाँ देखने के बावुजूद.
(५) दूसरों को, यहाँ तक कि पत्थरों को पूजते हैं जबकि इस बात का इक़रार करते हैं कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है.
(६) यानी तुम्हारी अस्ल हज़रत आदम को, जिनकी नस्ल से तुम पैदा हुए. इसमें मुश्रिकों का रद है जो कहते थे कि जब हम गल कर मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे. उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या आश्चर्य . जिस क़ुदरत वाले ने पहले पैदा किया उसकी क़ुदरत से मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को असंभव समझना नादानी है.
(७) जिसके पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे.
(८) मरने के बाद उठाने का.

اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللّٰهُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ط يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ
وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ
اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤﴾ فَقَدْ
كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ط فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ
اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ
اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ص
وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ
بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٦﴾
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ
بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ط وَلَوْ

तुम लोग शक करते हो ﴿२﴾ और वही अल्लाह है आसमानों और ज़मीन का[९] उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मालूम है और तुम्हारे काम जानता है ﴿३﴾ और उनके पास कोई भी निशानी अपने रब की निशानियों से नहीं आती मगर उससे मुंह फेर लेते हैं ﴿४﴾ तो बेशक उन्होंने सत्य को झुटलाया[१०] जब उनके पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुआ चाहती है उस चीज़ की जिसपर हंस रहे थे[११] ﴿५﴾ क्या उन्होंने न देखा कि हमने उनसे पहले[१२] कितनी संगतें खपा दीं उन्हें हमने ज़मीन में वह जमाव दिया[१३] जो तुमको न दिया और उनपर मूसलाधार पानी भेजा[१४] और उनके नीचे नेहरें बहाईं[१५] तो उन्हें हमने उनके गुनाहों के सबब हलाक किया[१६] और उनके बाद और संगत उठाई[१७] ﴿६﴾ और अगर हम तुमपर काग़ज़ में कुछ लिखा हुआ उतारते[१८] कि वो उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि यह नहीं मगर खुला जादू ﴿७﴾ और बोले[१९] उनपर[२०] कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया और अगर हम फ़रिश्ता उतारते[२१]

(९) उसका कोई शरीक नहीं.
(१०) यहाँ सत्य से या क़ुरआन शरीफ़ की आयतें मुराद हैं या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके चमत्कार.
(११) कि वह कैसी महानता वाली है और उसकी हंसी बनाने का अंजाम कैसा वबाल और अज़ाब.
(१२) पिछली उम्मतों में से.
(१३) ताक़त व माल और दुनिया के बहुत से सामान देकर.
(१४) जिससे खेतियाँ हरी भरी हों.
(१५) जिससे बाग़ फले फूले और दुनिया की ज़िन्दगानी के लिये ऐश व राहत के साधन उपलब्ध हों.
(१६) कि उन्होंने नबियों को झुटलाया और उनका यह सामान उन्हें हलाक से न बचा सका.
(१७) और दूसरे ज़माने वालों को उनका उत्तराधिकारी किया. मतलब यह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से सबक़ और नसीहत हासिल करनी चाहिये कि वो लोग ताक़त, दौलत और माल की कसरत और औलाद की बहुतात के बावजूद कुफ़्र और बग़ावत की वजह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उनके हाल से सबक़ हासिल करके ग़फ़लत की नींद से जागें.
(१८) यह आयत नज़र बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमैया और नोफ़ल बिन ख़ूलद के बारे में उतरी जिन्होंने कहा था कि मुहम्मद पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जबतक तुम हमारे पास अल्लाह की तरफ़ से किताब न लाओ जिसके साथ चार फ़रिश्ते हों, वो गवाही दें कि यह अल्लाह की किताब है और तुम उसके रसूल हो. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि ये सब हीले बहाने हैं अगर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वो उसे अपने हाथों से छूकर और टटोल कर देख भी लेते और यह कहने का मौक़ा भी न होता कि नज़रबन्दी करदी गई थी. किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं, तो भी ये बदनसीब ईमान लाने वाले न थे, उसको जादू बताते और जिस तरह चाँद चिर जाने को जादू बताया था और उस चमत्कार को देखकर ईमान न लाए थे उसी तरह इसपर भी ईमान न लाते क्योंकि जो लोग दुश्मनी के कारण इन्कार करते हैं वो आयतों और चमत्कारों से फ़ायदा नहीं उठा पाते.
(१९) मुश्रिक लोग.
(२०) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
(२१) और फिर भी ये ईमान न लाते.

انزلنا ملكا لقضي الامر ثم لا ينظرون ﴿٨﴾ ولو جعلنه
ملكا لجعلنه رجلا وللبسنا عليهم ما يلبسون ﴿٩﴾
ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين
سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ﴿١٠﴾ قل
سيروا في الارض ثم انظروا كيف كان عاقبة
المكذبين ﴿١١﴾ قل لمن ما في السموت والارض ط
قل لله ط كتب على نفسه الرحمة ط ليجمعنكم الى
يوم القيمة لا ريب فيه ط الذين خسروا انفسهم
فهم لا يؤمنون ﴿١٢﴾ وله ما سكن في اليل والنهار ط
وهو السميع العليم ﴿١٣﴾ قل اغير الله اتخذ وليا
فاطر السموت والارض وهو يطعم ولا يطعم ط
قل اني امرت ان اكون اول من اسلم ولا
تكونن من المشركين ﴿١٤﴾ قل اني اخاف ان

ع ١

तो काम तमाम हो गया होता[२२] फिर उन्हें मोहलत(अवकाश) न दी जाती[२३]﴾८﴿ और अगर हम नबी को फ़रिश्ता करते[२४] जब भी उसे मर्द ही बनाते[२५] और उनपर वही शुबह रखते जिसमें अब पड़े हैं﴾९﴿ और ज़रूर ऐ मेहबूब तुमसे पहले रसूलों के साथ भी ठठ्ठा किया गया तो वो जो उनसे हंसते ये उनकी हंसी उनको ले बैठी[२६]﴾१०﴿

दूसरा रूकू

तुम फ़रमा दो[१] ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ[२]﴾११﴿ तुम फ़रमाओ किस का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है[३]. तुम फ़रमाओ अल्लाह का है[४] उसने अपने करम(दया) के ज़िम्मे पर रहमत लिख ली है[५] बेशक ज़रूर तुम्हें क़यामत के दिन जमा करेगा[६] इसमें कुछ शक नहीं वो जिन्हों ने अपनी जान नुक़सान में डाली[७] ईमान नहीं लाते﴾१२﴿ और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में[८] और वही है सुनता जानता[९]﴾१३﴿ तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं[१०] वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किये और वह खिलाता है और खाने से पाक है[११] तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुआ है कि सबसे पहले गर्दन रखूं[१२] और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना﴾१४﴿ तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे

(२२) यानी अज़ाब वाजिब हो जाता और यह अल्लाह की सुन्नत है कि जब काफ़िर कोई निशानी तलब करें और उसके बाद भी ईमान न लाएं तो अज़ाब वाजिब हो जाता है और वो हलाक कर दिये जाते हैं.

(२३) एक क्षण की भी, और अज़ाब में देरी न की जाती तो फ़रिश्ते का उतारना जिसको वो तलब करते हैं, उन्हें क्या नफ़ा देता.

(२४) यह उन काफ़िरों का जवाब है जो नबी अलैहिस्सलाम को कहा करते थे कि यह हमारी तरह आदमी हैं और इसी पागलपन में वो ईमान से मेहरूम रहते थे. इन्हीं इन्सानों में से रसूल भेजने की हिकमत बताई जाती है कि उनके फ़ायदा उठाने और नबी की तालीम से फ़ैज़ उठाने की यही सूरत है कि नबी आदमी की सूरत में आए क्योंकि फ़रिश्ते को उसकी अस्ली सूरत में देखने की तो ये लोग हिम्मत न कर सकते, देखते ही दहशत से बेहोश हो जाते या मरजाते, इसलिये अगर मान लो रसूल फ़रिश्ता ही बनाया जाता.

(२५) और इन्सान की सूरत ही में भेजते ताकि ये लोग उसको देख सकें, उसका कलाम सुन सकें, उससे दीन के अहकाम मालूम कर सकें . लेकिन अगर फ़रिश्ता आदमी की सूरत में आता तो उन्हें फिर वही कहने का मौक़ा रहता कि यह आदमी है. तो फ़रिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ायदा होता.

(२६) वो अज़ाब में जकड़े गए. इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप दुखी न हों, काफ़िरों का पहले नबियों के साथ भी यही तरीक़ा रहा है और इसका वबाल उन काफ़िरों को उठाना पड़ा है. इसके अलावा मुश्रिकों को चेतावनी है कि पिछली उम्मतों के हाल से सबक़ लें और नबियों के साथ अदब से पेश आएं ताकि पहलों की तरह अज़ाब में न जकड़े जाएं.

सूरए अनआम - दूसरा रूकू

(१) ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इन हंसी बनाने वालों से कि तुम.

(२) और उन्होंने कुफ़्र और झुटलाने का क्या फल पाया.

(३) अगर वो इसका जवाब न दें तो...

(४) क्योंकि इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं और वो इसके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्योंकि बुत, जिनको मुश्रिक पूजते हैं, वो बेजान हैं, किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहियत नहीं रखते. ख़ुद दूसरे की मिलकियत में हैं. आसमान व ज़मीन का वही मालिक हो सकता है जो आप ज़िन्दा रखने की क़ुदरत रखने वाला, अनादि व अनन्त, हर चीज़ पर सक्षम, और सब का हाकिम हो, तमाम चीज़ें उसके पैदा करने से अस्तित्व में आई हों, ऐसा सिवाय अल्लाह के कोई नहीं. इसलिये तमाम सृष्टि का मालिक उसके सिवा कोई नहीं हो सकता.

عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُصْرَفْ
عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾
وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ
وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾
قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ
بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ
آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ

बड़े दिन[१३] के अज़ाब का डर है (१५) उस दिन जिससे अज़ाव फेर दिया जाए[१४] ज़रूर उसपर अल्लाह की मेहर (कृपा) हुई और यही खुली कामयाबी है (१६) और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई[१५] पहुंचाए तो उसके सिवा उसका कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए[१६] तो वह सब कुछ कर सकता है[१७] (१७) और वही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और वही है हिकमत वाला ख़बरदार (१८) तुम फ़रमाओ सबसे बड़ी गवाही किसकी[१८] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह गवाह है मुझमें और तुममें[१९] और मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की वही (देववाणी) हुई है कि मैं इससे तुम्हें डराऊं[२०] और जिन जिनको पहुंचे[२१] तो क्या तुम[२२] यह गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ[२३] कि मैं यह गवाही नहीं देता[२४] तुम फ़रमाओ कि वह तो एक ही मअबूद (आराध्य) है[२५] और मैं बेज़ार हूँ उनसे जिनको तुम शरीक ठहराते हो[२६] (१९) जिनको हमने किताब दी[२७] उस नबी को पहचानते हैं[२८] जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं[२९] जिन्हों ने अपनी जान नुक़सान में डाली वो ईमान नहीं लाते (२०)

तीसरा रूकू

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे[१] या उसकी आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह न

(५) यानी उसने रहमत का वादा किया और उसका वादा तोड़े जाने और झूट से दूर है और रहमत आम है, दीनी हो या दुनियावी. अपनी पहचान और तौहीद और इल्म की तरफ़ हिदायत फ़रमाना भी रहमत में दाख़िल है और काफ़िरों को मोहलत देना और अज़ाब में जल्दी न करना भी, कि इससे उन्हें तौबह और सिफ़ारिश का मौक़ा मिलता है. (जुमल वग़ैरह)

(६) और कर्मों का बदला देगा.

(७) कुफ़्र इख़्तियार करके.

(८) यानी सारी सृष्टि उसी की मिल्क है, और वह सबका पैदा करने वाला मालिक और रब है.

(९) उससे कोई चीज़ छुपी नहीं.

(१०) जब काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने बाप दादा के दीन की तरफ़ बुलाया तो यह आयत उतरी.

(११) यानी सृष्टि सब उसकी मोहताज है, वह सब से बेनियाज़, बे पर्वाह.

(१२) क्योंकि नबी अपनी उम्मत से दीन में पहले होते हैं.

(१३) यानी क़यामत के दिन.

(१४) और निजात दी जाए.

(१५) बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला.

(१६) सेहत व दौलत वग़ैरह की तरह.

(१७) क़ादिरे मुतलक़ है यानी सर्वशक्तिमान. हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत रखता है. कोई उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उसके सिवा पूजनीय हो सकता है. यह शिर्क का रद करने वाली एक असरदार दलील है.

(१८) मक्का वाले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहने लगे कि ऐ मुहम्मद, हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आपके नबी होने की गवाही देता हो. इसपर यह आयत उतरी.

(१९) और इतनी बड़ी और क़ुबूल करने के क़ाबिल गवाही और किसकी हो सकती है.

(२०) यानी अल्लाह तआला मेरी नबुव्वत की गवाही देता है ऐसा इसलिये कि उसने मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की वही फ़रमाई और यह ऐसा चमत्कार है कि तुम ज़बान वाले होने के बावुजूद इसके मुक़ाबले से आजिज़ रहे तो इस किताब का मुझपर उतरना अल्लाह की तरफ़ से मेरे रसूल होने की गवाही है. जब यह क़ुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से यक़ीनी गवाही है और मेरी तरफ़ वही फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफ़त न करो.

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ
رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ
يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا
يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْــــَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى
النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

पाएंगे﴾२१﴿ और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं तुम्हारे वो शरीक जिन का तुम दावा करते थे﴾२२﴿ फिर उनकी कुछ बनावट न रही[२] मगर यह कि बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम कि हम मुश्रिक न थे﴾२३﴿ देखो कैसा झूठ बांधा ख़ुद अपने ऊपर[३] और गुम गईं उन से जो बातें बनाते थे﴾२४﴿ और उनमें कोई वह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाता है[४] और हमने इनके दिलों पर ग़लाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कान में टैंट (रूई) और अगर सारी निशानियां देखें तो उनपर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुज़ूर तुमसे झगड़ते हाज़िर हों तो काफ़िर कहें ये तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें[५]﴾२५﴿ और वो इससे रोकते[६] और इससे दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें[७] और उन्हें शऊर (आभास) नहीं﴾२६﴿ और कभी तुम देखो जब वो आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जाएं[८] और अपने रब की आयतें न झुटलाएं और मुसलमान हो जाएं﴾२७﴿ बल्कि उनपर खुल गया जो पहले छुपाते थे[९] और अगर वापस

(२१) यानी मेरे बाद क़यामत तक आने वाले जिन्हें क़ुरआने पाक पहुंचे चाहे वो इन्सान हों या जिन्न, उन सबको मैं अल्लाह के हुक्म के विरोध से डराऊं. हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को क़ुरआने पाक पहुंचा, मानो कि उसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा और आपका मुबारक कलाम सुना. हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जब यह आयत उतरी तो हुज़ूर ने किसरा और क़ैसर वग़ैरह बादशाहों को इस्लाम की दावत के पत्र रवाना किये. (मदारिक व ख़ाज़िन) इसकी तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि "मन बलग़ा" (जिन जिनको पहुंचे) के मानी ये हैं कि इस क़ुरआन से मैं तुमको डराउंगा और वो डराएं जिनको यह क़ुरआन पहुंचे. तिरमिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तरोताज़ा करे उसको जिसने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना, वैसा पहुंचाया. बहुत से पहुंचाए हुए, सुनने वाले से ज़्यादा एहल होते हैं और एक रिवायत में है, सुनने वाले से ज़्यादा अफ़क़ह यानी समझने बूझने वाले होते हैं. इससे फ़िक़्ह के जानकारों की महानता मालूम होती है.

(२२) ऐ मुश्रिक लोगो.

(२३) ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(२४) जो गवाही तुम देते हो और अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद ठहराते हो.

(२५) उसका तो कोई शरीक नहीं.

(२६) इस आयत से साबित हुआ कि जो शख़्स इस्लाम लाए उसको चाहिये कि तौहीद और रिसालत की गवाही के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ अक़ीदे और दीन से विरोध ज़ाहिर करे.

(२७) यानी यहूदियों और ईसाइयों के उलमा जिन्हों ने तौरात व इंजील पाई.

(२८) आपके हुलियए शरीफ़ यानी नखशिख और आपके गुण और विशेषताओं से, जो इन किताबों में दर्ज हैं.

(२९) किसी शक व संदेह के बिना.

सूरए अनआम - तीसरा रूकू

(१) उसका शरीक ठहराए या जो बात उसकी शान के लायक़ न हो, उसकी तरफ़ जोड़े.

(२) यानी कुछ माज़िरत न मिली, कोई बहाना न पा सके.

(३) कि उम्र भर के शिर्क ही से इन्कार कर बैठे.

(४) अबू सुफ़ियान, वलीद, नज़र और अबू जहल वग़ैरह जमा होकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की क़ुरआने पाक की तिलावत सुनने लगे तो नज़र से उसके साथियों ने कहा कि मुहम्मद क्या कहते हैं. कहने लगा, मैं नहीं जानता, ज़बान को हरकत

يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَ
اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ
قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا
يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ
عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ
لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ
مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى

भेजे जाएं तो फिर वही करें जिससे मना किये गए थे और बेशक वो ज़रूर झूठे हैं ﴿२८﴾ और बोले[१०] वह तो यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं[११] ﴿२९﴾ और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे फ़रमाएगा क्या यह हक़ (सच) नहीं[१२] कहेंगे क्यों नहीं हमें अपने रब की क़सम, फ़रमाएगा तो अब अज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का ﴿३०﴾

चौथा रूकू

बेशक हार में रहे वो जिन्होंने अपने रब से मिलने से इन्कार किया यहां तक कि जब उनपर क़यामत अचानक आगई बोले हाय अफ़सोस हमारा इसपर कि इसके मानने में हमने चूक की और वो अपने[१] बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं और कितना बुरा बोझ उठाए हुए हैं[२] ﴿३१﴾ और दुनिया की ज़िन्दगी नहीं मगर खेल कूद[३] और बेशक पिछला घर भला उनके लिये जो डरते हैं[४] तो क्या तुम्हें समझ नहीं ﴿३२﴾ हमें मालूम है कि तुम्हें रंज देती है वह बात जो ये कह रहे हैं[५] तो वो तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं ﴿३३﴾ और तुम से पहले झुटलाए गए तो उन्होंने सब्र किया इस झुटलाने और ईज़ाएं (पीड़ाएं) पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई[६] और

देते हैं और पहलों के क़िस्से कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूँ. अबू सुफ़ियान ने कहा कि इसका इक़रार करने से मर जाना बेहतर है. इसपर यह आयत उतरी.

(५) इससे उनका मतलब कलामे पाक के अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होने का इन्कार करना है.

(६) यानी मुश्रिक लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से और आपपर ईमान लाने और आपका अनुकरण करने से रोकते हैं . यह आयत मक्के के काफ़िरों के बारे में उतरी जो लोगों को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने और आपकी मजलिस में हाज़िर होने और क़ुरआन सुनने से रोकते थे और ख़ुद भी दूर रहते थे कि कहीं मुबारक कलाम उनके दिलों पर असर न कर जाए. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत हुज़ूर के चचा अबू तालिब के बारे में उतरी जो मुश्रिकों को तो हुज़ूर को तकलीफ़ पहुंचाने से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे.

(७) यानी इसका नुक़सान ख़ुद उन्हीं को पहुंचता है.

(८) दुनिया में.

(९) जैसा कि ऊपर इसी रूकू में बयान हो चुका कि मुश्रिकों से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहाँ हैं तो वो अपने कुफ़्र को छुपा जाएंगे और अल्लाह की क़सम खाकर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे. इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर हो जाएगा जो वो छुपाते थे, यानी उनका कुफ़्र इस तरह ज़ाहिर होगा कि उनके शरीर के अंग उनके कुफ़्र और शिर्क की गवाहीयाँ देंगे, तब वो दुनिया में वापस जाने की तमन्ना करेंगे.

(१०) यानी काफ़िर जो रसूल भेजे जाने और आख़िरत के इन्कारी हैं. इसका वाक़िआ यह था कि जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों को क़यामत के एहवाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी, ईमानदारों और फ़रमाँबरदारों के सवाब, काफ़िरों और नाफ़रमानों पर अज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की है.

(११) यानी मरने के बाद.

(१२) क्या तुम मरने के बाद ज़िन्दा नहीं किये गए.

सूरए अनआम - चौथा रूकू

(१) गुनाहों के.

(२) हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसके सामने बहुत भयानक डरावनी और बहुत बदबूदार

اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ
مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِیْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَیْكَ
اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِیَ نَفَقًا فِی الْاَرْضِ
اَوْ سُلَّمًا فِی السَّمَآءِ فَتَاْتِیَهُمْ بِاٰیَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَی الْهُدٰی فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ۝
اِنَّمَا یَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ یَسْمَعُوْنَ ؔ وَالْمَوْتٰی یَبْعَثُهُمُ
اللّٰهُ ثُمَّ اِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤی اَنْ یُّنَزِّلَ اٰیَةً
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ
وَلَا طٰٓئِرٍ یَّطِیْرُ بِجَنَاحَیْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا
فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ ثُمَّ اِلٰی رَبِّهِمْ یُحْشَرُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِی الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ یَّشَاِ اللّٰهُ
یُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ یَّشَاْ یَجْعَلْهُ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝

अल्लाह की बातें बदलने वाला कोई नहीं[७] और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आही चुकी हैं[८] (३४) और अगर उनका मुंह फेरना तुमको बुरा लगा है[१०] तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश करलो या आसमान में कोई ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ[११] और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन (३५) मानते तो वही हैं जो सुनते हैं[१२] और उन मुर्दा दिलों[१३] को अल्लाह उठाएगा[१४] फिर उसकी तरफ़ हांके जाएंगे[१५] (३६) और बोले[१६] उनपर कोई निशानी क्यों न उतरी उनके रब की तरफ़ से[१७] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उनमें बहुत निरे जाहिल हैं[१८] (३७) और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्दा कि अपने परों पर उड़ता है मगर तुम जैसी उम्मतें[१९] हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा[२०] फिर अपने रब की तरफ़ उठाए जाएंगे[२१] (३८) और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बेहरे और गूंगे हैं[२३] अंधेरों में[२४] अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रास्ते डाल दे[२५] (३९) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुमपर अल्लाह का

सूरत आएगी. वह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है. काफ़िर कहेगा, नहीं. तो वह काफ़िर से कहेगी, मैं तेरा ख़बीस अमल यानी कुकर्म हूँ. दुनिया में तू मुझपर सवार रहा, आज मैं तुझपर सवार हूं और तुझे तमाम सृष्टि में रूस्वा करूंगा. फिर वह उसपर सवार हो जाता है.

(३) जिसे बक़ा अर्थात ठहराव नहीं, जल्द गुज़र जाती है, और नेकियाँ और फ़रमाँबरदारियाँ अगरचे मूमिन से दुनिया ही में हुई हों, लेकिन वो आख़िरत के कामों में से हैं.

(४) इससे साबित हुआ कि पाकबाज़ों और नेक लोगों के कर्मों के सिवा दुनिया में जो कुछ है, सब बुराई ही बुराई है.

(५) अख़नस बिन शरीक़ और अबू जहल की आपसी मुलाक़ात हुई तो अख़नस ने अबू जहल से कहा, ऐ अबुल हिकम (काफ़िर अबू जहल को यही पुकारते थे) यह एकान्त की जगह है और यहाँ कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर सूचित हो सके. अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) सच्चे हैं या नहीं. अबू जहल ने कहा कि अल्लाह की क़सम, मुहम्मद बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटी बात उनकी ज़बान पर न आई, मगर बात यह है कि ये क़ुसई की औलाद हैं और लिवा (झंडा), सिक़ायत (पानी पिलाना), हिजाबत, नदवा वग़ैरह, तो सारे सत्कार उन्हें हासिल ही हैं, नबुव्वत भी उन्हीं में हो जाए तो बाक़ी क़ुरैशियों के लिये सम्मान क्या रह गया. तिरमिज़ी ने हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत की कि अबू जहल ने हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा, हम आपको नहीं झुटलाते, हम तो उस किताब को झुटलाते हैं जो आप लाए. इसपर यह आयत उतरी.

(६) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि क़ौम हुज़ूर की सच्चाई का विश्वास रखती है लेकिन उनके ज़ाहिरी झुटलाने का कारण उनका हसद और दुश्मनी है.

(७) आयत के ये मानी भी होते हैं कि ऐ हबीब, आपका झुटलाया जाना अल्लाह की आयतों का झुटलाया जाना है और झुटलाने वाले ज़ालिम.

(८) और झुटलाने वाले हलाक कर दिये गए.

(९) उसके हुक्म को कोई पलट नहीं सकता. रसूलों की मदद और उनके झुटलाने वालों की हलाकत, उसने जिस समय लिख दी है, ज़रूर होगी.

(१०) और आप जानते हैं कि उन्हें काफ़िरों से कैसी तकलीफ़ें पहुंचीं, ये नज़र के सामने रखकर आप दिल को इत्मीनान में रखें.

(११) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत इच्छा थी कि सब लोग इस्लाम ले आएं. जो इस्लाम से मेहरूम रहते, उनकी मेहरूमी आपको बहुत अखरती.

(१२) मक़सद उनके ईमान की तरफ़ से रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मीद तोड़ना है, ताकि आपको उनके इन्कार

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَ تَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۗ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْآ اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۗ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۗ اُنْظُرْ

अज़ाब आए या क़यामत क़ायम हो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे[२६] अगर सच्चे हो[२७] ﴿४०﴾ बल्कि उसी को पुकारोगे तो वह अगर चाहे[२८] जिसपर उसे पुकारते हो उसे उठाले और शरीकों को भूल जाओगे[२९] ﴿४१﴾

पाँचवां रूकू

और बेशक हमने तुमसे पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो उन्हें सख़्ती और तकलीफ़ से पकड़ा[१] कि वो किसी तरह गिड़गिड़ाएं[२] ﴿४२﴾ तो क्यों न हुआ कि जब उनपर अज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन दिल तो सख़्त हो गए[३] और शैतान ने उनके काम निगाह में भले कर दिखाए ﴿४३﴾ फिर जब उन्होंने भुला दिया जो नसीहतें उनको की गईं थीं[४] हमने उनपर हर चीज़ के दर्वाज़े खोल दिये[५] यहाँ तक कि जब ख़ुश हुए उसपर जो उन्हें मिला[६] तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया[७] अब वो आस टूटे रह गए ﴿४४﴾ तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की[८] और सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह रब सारे संसार का[९] ﴿४५﴾ तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान और आँख लेले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे[१०] तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें यह चीज़ ला दे[११]

करने और ईमान न लाने से दुख और तकलीफ़ न हो.

(१३) दिल लगाकर समझने के लिये वही नसीहत क़ुबूल करते हैं और सच्चे दीन की दावत तसलीम करते हैं.

(१४) यानी काफ़िर लोग.

(१५) क़यामत के दिन.

(१६) और अपने कर्मों का बदला पाएंगे.

(१७) मक्के के काफ़िर.

(१८) काफ़िरों की गुमराही और सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वो कई निशानियों और चमत्कार, जो उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से देखे थे, उनपर भरोसा न किया और सबका इन्कार कर दिया और ऐसी आयत तलब करने लगे जिसके साथ अल्लाह का अज़ाब हो जैसा कि उन्होंने कहा था *"अल्लाहुम्मा इन काना हाज़ा हुवल हक़्क़ा मिन इन्दिका फ़-अमतिर अलैना हिजारतम मिनस समाए"* यानी यारब अगर यह सत्य है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा. (तफ़सीरे अबूसऊद)

(१९) नहीं जानते कि इसका उतरना उनके लिये बला है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे.

(२०) यानी तमाम जानदार चाहे वो मवेशी हों या जंगली जानवर या चिड़ियाँ, तुम्हारी तरह उम्मतें हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि ये पशु पक्षी तुम्हारी तरह अल्लाह को पहचानते, एक मानते, उसकी तस्बीह पढ़ते, इबादत करते हैं. कुछ का कहना है कि वो मख़लूक़ होने में तुम्हारी तरह हैं. कुछ ने कहा कि वो इन्सान की तरह आपसी प्रेम रखते हैं और एक दूसरे की बात समझते हैं. कुछ का क़ौल है कि रोज़ी तलब करने, हलाकत से बचने, नर मादा की पहचान रखने में तुम्हारी तरह हैं. कुछ ने कहा पैदा होने, मरने, मरने के बाद हिसाब के लिये उठने में तुम्हारी तरह हैं.

(२१) यानी सारे उलूम और तमाम *"माकाना व मायकून"* (यानी जो हुआ और जो होने वाला है) का इसमें बयान है और सारी चीज़ों की जानकारी इसमें है. इस किताब से या क़ुरआन शरीफ़ मुराद है या लौहे मेहफ़ूज़. (जुमल वग़ैरह)

(२२) और तमाम जानदारों, पशु पक्षियों का हिसाब होगा. इसके बाद वो ख़ाक कर दिये जाएंगे.

(२३) कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें हासिल नहीं.

(२४) जिहालत और आश्चर्य और कुफ़्र के.

(२५) इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

(२६) और जिनको दुनिया में मअबूद मानते थे, उनसे हाजत रवाई चाहोगे.

(२७) अपने इस दावे में कि मआज़ल्लाह बुत मअबूद हैं, तो इस वक़्त उन्हें पुकारो मगर ऐसा न करोगे.

(२८) तो इस मुसीबत को.

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۗ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं फिर वो मुंह फेर लेते हैं (४६) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आए अचानक[१२] या खुल्लमखुल्ला[१३] तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के[१४] (४७) और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर ख़ुशी और डर सुनाते[१५] तो जो ईमान लाए और संवरे[१६] उनको न कुछ डर न कुछ ग़म (४८) और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अज़ाब पहुंचेगा बदला उनकी बेहुक्मी का (४९) तुम फ़रमा दो मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कहूं कि मैं आप ग़ैब जान लेता हूँ और न तुमसे यह कहूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ[१७] मैं तो उसीका ताबे (अधीन) हूँ जो मुझे वही आती है[१८] तुम फ़रमाओ क्या बराबर होजाएंगे अंधे और अंखियारे[१९] तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते (५०)

छटा रूकू

और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें ख़ौफ़ (भय) हो कि अपने रब की तरफ़ यूं उठाए जाएं कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती हो न कोई सिफ़ारिशी इस उम्मीद पर कि वो परहेज़गार होजाएं (५१) और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम उसकी रज़ा

(२९) जिन्हें अपने झूटे अक़ीदे में मअबूद जानते थे और उनकी तरफ़ नज़र भी न करोगे क्योंकि तुम्हें मालूम है कि वो तुम्हारे काम नहीं आ सकते.

सूरए अनआम - पाँचवां रूकू

(१) दरिद्रता, ग़रीबी और बीमारी वग़ैरह में जकड़ा.
(२) अल्लाह की तरफ़ रूजू करें, अपने गुनाहों से बाज़ आएं.
(३) वो अल्लाह की बारगाह में तौबा करने, माफ़ी मांगने के बजाय कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहे.
(४) और वो किसी तरह नसीहत लेने को तैयार न हुए, न पेश आई मुसीबतों से, न नबियों के उपदेशों से.
(५) सेहत व सलामती और रिज़्क़ में बढ़ौतरी और आराम वग़ैरह से.
(६) और अपने आपको उसका हक़दार समझने और क़ारून की तरह घमण्ड करने लगे.
(७) और अज़ाब में जकड़ा.
(८) और सब के सब हलाक कर दिये गए, कोई बाक़ी न छोड़ा गया.
(९) इससे मालूम हुआ कि गुमराहों, बेदीनों और ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआला की नेअमत है, इसपर शुक्र करना चाहिये.
(१०) और इल्म व मअरिफ़त का निज़ाम दरहम बरहम हो जाए.
(११) इसका जवाब यही है कि कोई नहीं. तो अब तौहीद यानी अल्लाह के एक होने पर दलील क़ायम होगई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी क़ुदरत और अधिकार वाला नहीं तो इबादत का हक़दार सिर्फ़ वही है और शिर्क बहुत बुरा ज़ुल्म और जुर्म है.
(१२) जिसके नशान और चिन्ह पहले से मालूम न हों.
(१३) आँखों देखते.
(१४) यानी काफ़िरों के, कि उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और यह हलाकत उनके हक़ में अज़ाब है.
(१५) ईमानदारों को जन्नत व सवाब की बशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अज़ाब से डराते.
(१६) नेक अमल करे.
(१७) काफ़िरों का तरीक़ा था कि वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तरह तरह के सवाल किया करते थे. कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों. हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये.

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

चाहते[१] तुमपर उनके हिसाब से कुछ नहीं और उनपर तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं[२] फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से परे है﴿५२﴾ और यूंही हमने उन्हें एक को दूसरे के लिये फ़ितना (मुसीबत) बनाया कि मालदार काफ़िर मोहताज मुसलमानों को देखकर[३] कहें क्या ये हैं जिनपर अल्लाह ने एहसान किया हम में से[४] क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता हक़ मानने वालों को﴿५३﴾ और जब तुम्हारे हुज़ूर वो हाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उनसे फ़रमाओ तुमपर सलाम हो तुम्हारे रब ने अपने करम के ज़िम्मे पर रहमत लाज़िम करली है[५] कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा करे और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴿५४﴾ और इसी तरह हम आयतों को तफ़सील से बयान फ़रमाते हैं[६] और इसलिये कि मुजरिमों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए[७]﴿५५﴾

सातवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ मुझे मना किया गया है कि उन्हें पूजूं जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[१] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता[२] यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह पर न रहूं﴿५६﴾ तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील (प्रमाण) पर हूँ[३] और तुम उसे

कभी कहते कि पिछली और आगे की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे भविष्य की ख़बर दीजिये, क्या क्या होगा ताकि हम मुनाफ़ा हासिल करें और नुक़सान से बचने के लिये पहले से प्रबन्ध कर लें. कभी कहते, हमें क़यामत का वक़्त बताइये कब आएगी. कभी कहते आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं, निकाह भी करते हैं . उनकी इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि यह कलाम निहायत बेमहल और जिहालत का है. क्योंकि जो व्यक्ति किसी बात का दावा करे उससे वही बातें पूछी जा सकती हैं जो उसके दावे से सम्बन्धित हों. ग़ैर ज़रूरी बातों का पूछना और उनको उस दावे के ख़िलाफ़ तर्क बनाना अत्यन्त दर्जे की जिहालत और अज्ञानता है. इस लिये इरशाद हुआ कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दावा यह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से माल दौलत का सवाल करो और उसकी तरफ़ तवज्जह न करूं तो नबुव्वत का इन्कार करदो. न मेरा दावा ज़ाती ग़ैब दानी का है कि अगर मैं तुम्हें पिछली या आयन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी रिसालत मानने में उज़्र कर सको. न मैं ने फ़रिश्ता होने का दावा किया है कि खाना पीना निकाह करना ऐतिराज़ की बात हो. तो जिन चीज़ों का दावा ही नहीं किया उनका सवाल बेमहल और उसका जवाब देना मुझपर लाज़िम नहीं. मेरा दावा नबुव्वत और रिसालत का है और जब उसपर ज़बरदस्त दलीलें और मज़बूत प्रमाण क़ायम हो चुके तो ग़ैर मुतअल्लिक़ बातें पेश करना क्या मानी रखता है. इस से साफ़ स्पष्ट हो गया कि इस आयत को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ैब पर सूचित किये जाने की नफ़ी के लिये तर्क बनाना ऐसा ही बेमहल है जैसा काफ़िरों का इन सवालों को नबुव्वत के इन्कार की दस्तावेज़ बनाना बेमहल था. इसके अलावा इस आयत से हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता किये गए इल्म का इन्कार किसी तरह मुराद ही नहीं हो सकता क्योंकि उस सूरत में आयतों के बीच टकराव और परस्पर विरोध का क़ायल होना पड़ेगा जो ग़लत है. मुफ़स्सिरों का यह भी कहना है कि हुज़ूर का *"ला अक़ूलो लकुम."* फ़रमाना विनम्रता के रूप में है. (ख़ाज़िन, मदारिक व जुमल वग़ैरह)

(१८) और यही नबी का काम है. तो मैं तुम्हें वही दूंगा जिसकी मुझे इजाज़त होगी, वही करुंगा जिसका मुझे हुक्म मिला हो.

(१९) मूमिन व काफ़िर, आलिम व जाहिल.

सूरए अनआम - छटा रूकू

(१) काफ़िरों की एक जमाअत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आई तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर के चारों तरफ़ ग़रीब सहाबा की एक जमाअत हाज़िर है जो मामूली दर्जे के लिबास पहने हुए हैं. यह देखकर वो कहने लगे कि हमें इन लोगों

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا
يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ
ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَ
يَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ
لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ
عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ
اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

झुटलाते हो, मेरे पास नहीं जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो[४] हुक्म नहीं मगर अल्लाह का वह हक़ फ़रमाता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला (५७) तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे हो[५] तो मुझमें तुम में काम ख़त्म हो चुका होता[६] और अल्लाह ख़ूब जानता है सितम करने वालों को (५८) और उसीके पास हैं कुंजियां ग़ैब (अज्ञात) की उन्हें वही जानता है[७] और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है, और जो पत्ता गिरता है वह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और ख़ुश्क जो एक रौशन किताब में न लिखा हो[८] (५९) और वही है जो रात को तुम्हारी रूहें निकालता है[९] और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआद पूरी हो[१०] फिर उसीकी तरफ़ फिरना है[११] फिर वह बता देगा जो कुछ तुम करते थे (६०)

आठवाँ रूकू

और वही ग़ालिब (बलवान) है अपने बन्दों पर और तुमपर निगहबान भेजता है[१] यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह निकालते हैं[२] और वो क़ुसूर (ग़लती) नहीं करते[३] (६१)

के पास बैठते शर्म आती है. अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में हाज़िर रहें. हुज़ूर ने इसको स्वीकार न फ़रमाया. इसपर यह आयत उतरी.

(२) सब का हिसाब अल्लाह पर है, वही सारी सृष्टि को रोज़ी देने वाला है. उसके सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का हिसाब नहीं. मतलब यह कि वह कमज़ोर फ़क़ीर जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ आपके दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तहिक़ हैं. उन्हें दूर न करना ही ठीक है.

(३) हसद के तौर पर.

(४) कि उन्हें ईमान और हिदायत नसीब की, इसके बावुजूद कि वो लोग फ़क़ीर ग़रीब हैं. और हम रईस और सरदार हैं. इससे उनका मतलब अल्लाह तआला पर ऐतिराज़ करना है कि ग़रीब अमीर पर सबक़त का हक़ नहीं रखते तो अगर वह हक़ होता जिस पर ये ग़रीब हैं तो वो हमसे ऊंचे न होते.

(५) अपने फ़ज़्ल व करम से वादा फ़रमाया.

(६) ताकि सच्चाई ज़ाहिर हो और उसपर अमल किया जाए.

(७) ताकि उससे परहेज़ किया जाए, दूर रहा जाए.

सूरए अनआम - सातवाँ रूकू

(१) क्योंकि यह अक़्ल और नक़्ल दोनों के ख़िलाफ़ है.

(२) यानी तुम्हारा तरीक़ा नफ़्स का अनुकरण है न कि दलील का अनुकरण, इसलिये तुम्हारे तरीक़े को अपनाया नहीं जा सकता.

(३) और मुझे उसकी पहचान हासिल है . मैं जानता हूँ कि उसके सिवा कोई पूजे जाने के क़ाबिल नहीं. रौशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और चमत्कार और तौहीद के प्रमाण सबको शामिल है.

(४) काफ़िर हंसी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अज़ाब उतरवाइये. इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से यह सवाल करना निहायत बेजा है.

(५) यानी अज़ाब.

(६) मैं तुम्हें एक घड़ी की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देखकर बेधड़क हलाक कर डालता. लेकिन अल्लाह तआला हिल्म वाला है, अज़ाब देने में जल्दी नहीं फ़रमाता.

(७) तो जिसे वह चाहे, वही ग़ैब पर सूचित हो सकता है. बिना उसके बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता. (वाहिदी)

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۝ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़, सुनता है उसी का हुक्म है[४] और वह सबसे जल्द हिसाब करने वाला[५] (६२) तुम फ़रमाओ वह कौन है जो तुम्हें निजात (छुटकारा) देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वह हमें इससे बचावे तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे[६] (६३) तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें निजात देता है उस से और हर बेचैनी से फिर तुम शरीक ठहराते हो[७] (६४) तुम फ़रमाओ वह क़ादिर है कि तुमपर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पांव के तले (नीचे) से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गिरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए, देखो हम कैसे तरह तरह से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उनको समझ हो[८] (६५) और उसे[९] झुटलाया तुम्हारी क़ौम ने और यही हक़ (सत्य) है, तुम फ़रमाओ मैं तुमपर कुछ करोड़ा नहीं[१०] (६६) हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर (निश्चित) है[११] और बहुत जल्द जान जाओगे (६७) और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं[१२] तो उनसे मुंह फेर ले[१३] जबतक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुला दे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ

(८) रौशन किताब से लौहे मेहफ़ूज़ मुराद है. अल्लाह तआला ने पिछले और अगले सारे उलूम इसमें दर्ज फ़रमा दिये.
(९) तो तुमपर नींद छा जाती है और तुम्हारी क्षमताएं अपने हाल पर बाक़ी नहीं रहती हैं.
(१०) और उम्र अपनी हद को पहुंचे .
(११) आख़िरत में. इस आयत में मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई. जिस तरह रोज़ सोने के वक़्त एक तरह की मौत तुमपर भेजी जाती है जिससे तुम्हारे हवास मुअत्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और जागते के सारे काम शिथिल हो जाते हैं, उसके बाद बेदारी के वक़्त अल्लाह तआला सारे अंगों को उनकी क्षमताएं प्रदान करता है. यह खुला प्रमाण है इस बात का कि वह तमाम ज़िन्दगानी की क्षमताओं को मौत के बाद अता करने पर इसी तरह की क़ुदरत रखता है.

सूरए अनआम - आठवाँ रूकू

(१) फ़रिश्ते, जिनको किरामन कातिबीन कहते हैं. वो आदमी की नेकी और बदी लिखते रहते हैं. हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते हैं, एक दाएं एक बाएं . दाएं तरफ़ का फ़रिश्ता नेकियाँ लिखता है और बाएं तरफ़ का फ़रिश्ता बुराईयाँ. बन्दों को चाहिये कि होशियार रहें और बुराइयों और गुनाहों से बचें क्योंकि हर एक काम लिखा जा रहा है और क़यामत के दिन वह लेखा तमाम सृष्टि के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रूसवाई का कारण होंगे. अल्लाह पनाह दे. आमीन.
(२) इन फ़रिश्तों से मुराद या तो अकेले मलकुल मौत हैं. उस सूरत में बहुवचन आदर और सम्मान के लिये है. या मलकुल मौत उन फ़रिश्तों समेत मुराद हैं जो उनके सहायक हैं. जब किसी की मौत का वक़्त क़रीब आता है तो मौत का फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से अपने सहायक फ़रिश्तों को उसकी रूह निकालने का हुक्म देता है. जब रूह हलक़ तक पहुंचती है तो ख़ुद मलकुल मौत रूह निकालते हैं. (ख़ाज़िन)
(३) और अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में उनसे कोताही नहीं होती और उनके कामों में सुस्ती और विलम्ब का सवाल नहीं होता. वो अपने कर्तव्य ठीक वक़्त पर अदा करते हैं.
(४) और उस दिन उसके सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं.
(५) क्योंकि उसको सोचने, जांचने या गिन्ती करने की ज़रूरत नहीं जिस में देर हो.
(६) इस आयत में काफ़िरों को चेतावनी दी गई है कि ख़ुश्की और तरी के सफ़र में जब वो आफ़तों में मुबतिला होकर परेशान होते हैं और ऐसी सख़्तियाँ पेश आती हैं जिनसे दिल काँप जाते हैं और ख़तरे दिलों को बेचैन करदेते हैं, उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और अल्लाह तआला ही से दुआ करता है, उसी के समक्ष गिड़गिड़ाता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तूने मुझे छुटकारा दिलाया तो मैं शुक्रगुज़ार होऊंगा और तेरी नेअमत का हक़ बजा लाऊंगा.
(७) और शुक्रगुज़ारी के बजाय ऐसी बड़ी नाशुक्री करते हो, यह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं, किसी काम के नहीं, फिर उन्हें अल्लाह का

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾
وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ
تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ
اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا
بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ
فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۠ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى
الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ

﴿६८﴾ और परहेज़गारों पर उनके हिसाब से कुछ नहीं[१४] हां नसीहत देना शायद वो बाज़ आएं[१५]﴿६९﴾ और छोड़ दे उनको जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखा दिया और क़ुरआन से नसीहत दो[१६] कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए[१७] अल्लाह के सिवा न उसका कोई हिमायती हो न सिफ़ारशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उससे न लिये जाएं, ये हैं[१८] वो जो अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने का खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का﴿७०﴾

नवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ[१] क्या हम अल्लाह के सिवा उसको पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा[२] और उलटे पांव पलटा दिये जाएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई[३] उसकी तरह जिसे शैतान ने ज़मीन में राह भुला दी[४] हैरान है उसके साथी उसे राह की तरफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[५] और

शरीक करते हो, कितनी बड़ी गुमराही है.

(८) मुफ़स्सिरों का इसमें मतभेद है कि इस आयत में कौन लोग मुराद हैं. एक जमाअत ने कहा कि इससे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत मुराद है और आयत उन्हीं के बारे में उतरी है. बुख़ारी की हदीस में है कि जब यह उतरा कि वह क़ादिर है, तुमपर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से, तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तेरी ही पनाह मांगता हूँ. और जब यह उतरा क्या तुम्हारे पाँव के नीचे से, तो फ़रमाया मैं तेरी ही पनाह माँगता हूँ. और जब यह उतरा, या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गिरोह करके और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए, तो फ़रमाया यह आसान है. मुस्लिम की हदीस में है कि एक दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिदे बनी मुआविया में दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई और इसके बाद लम्बी दुआ की. फिर सहाबा की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाया, मैंने अपने रब से तीन सवाल किये, इन में से सिर्फ़ दो क़ुबूल फ़रमाए गए.एक सवाल तो यह था कि मेरी उम्मत को आम अकाल से हलाक न फ़रमाए, यह क़ुबूल हुआ . एक यह था कि उन्हें ग़र्क़ यानी पानी में डुबोकर हलाक न फ़रमाए, यह भी क़ुबूल हुआ. तीसरा सवाल यह था कि उनमें आपस में जंग और झगड़ा न हो, यह क़ुबूल न हुआ.

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़ को, या अज़ाब के उतरने को.

(१०) मेरा काम हिदायत है, दिलों की ज़िम्मेदारी मुझपर नहीं.

(११) यानी अल्लाह तआला ने जो ख़बरें दीं उनके लिये समय निश्चित हैं. वो ठीक उसी समय घटेंगी.

(१२) तानों, गालियों और हंसी मज़ाक़ के साथ.

(१३) और उनके साथ उठना बैठना छोड़कर. इस आयत से मालूम हुआ कि बेदीनों की जिस मजलिस में दीन का सत्कार न किया जाता हो, मुसलमान को वहाँ बैठना जायज़ नहीं. इससे साबित हो गया कि काफ़िरों और बेदीनों के जलसे, जिनमें वो दीन के ख़िलाफ़ बोलते हैं, उनमें जाना, उन्हें सुनना जायज़ नहीं और उनके रद और जवाब के लिये जाना उनके साथ उठने बैठने में शामिल नहीं, बल्कि यह सच्चाई ज़ाहिर करना है, और यह मना नहीं जैसा कि अगली आयत में आता है.

(१४) यानी ताना देने और मज़ाक़ उड़ाने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इसका हिसाब होगा, परहेज़गारों पर नहीं. मुसलमानों ने कहा था कि हमें गुनाह का डर है, जबकि हम उन्हें छोड़दें और मना न करें. इसपर यह आयत नाज़िल हुई.

(१५) इस आयत से मालूम हुआ कि नसीहत और उपदेश और सच्चाई के इज़हार के लिये उनके पास बैठना जायज़ है.

(१६) और शरीअत के आदेश बताओ.

(१७) और अपने जुर्मों के कारण जहन्नम के अज़ाब में गिरफ़्तार न हो.

(१८) दीन को हंसी खेल बनाने वाले और दुनिया के दीवाने.

وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْۤ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

منزل٢

हमें हुक्म है कि हम उसके लिये गर्दन रख दें[६] जो रब है सारे संसार का﴾७१﴿ और यह कि नमाज़ क़ायम रखो और उस से डरो और वही है जिसकी तरफ़ तुम्हें उठना है﴾७२﴿ और वही है जिसने आसमान व ज़मीन ठीक बनाए[७] और जिस दिन फ़ना(नष्ट) हुई हर चीज़ को कहेगा होजा वह फ़ौरन हो जाएगी, उसकी बात सच्ची है और उसीकी सल्तनत है जिस दिन सूर(शंख) फूंका जाएगा[८] हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला और वही है हिकमत वाला ख़बरदार﴾७३﴿ और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप[९] आज़र से कहा क्या तुम बुतों को ख़ुदा बनाते हो, बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूँ[१०]﴾७४﴿ और इसी तरह हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आसमानों और ज़मीन की[११] और इसलिये कि वह आँखों देखे यक़ीन वालों में हो जाए[१२]﴾७५﴿ फिर जब उनपर रात का अन्धेरा आया एक तारा देखा[१३] बोले इसे मेरा रब ठहराते हो, फिर जब वह डूब गया बोले मुझे ख़ुश नहीं आते डूबने वाले﴾७६﴿ फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब

सूरए अनआम - नवाँ रूकू

(१) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उन मुश्रिकों से जो अपने बाप दादा के दीन की तरफ़ आपको बुलाते हैं .

(२) और उसमें कोई क़ुदरत नहीं.

(३) और इस्लाम और तौहीद की नेअमत अता फ़रमाई और बुतपरस्ती के बदतरीन वबाल से बचाया.

(४) इस आयत में सच और झूट की तरफ़ बुलाने वालों की एक उपमा बयान फ़रमाई गई कि जिस तरह मुसाफ़िर अपने साथियों के साथ था, जंगल में भूतों और शैतानों ने उसको रास्ता बहका दिया और कहा मंज़िले मक़सूद की यही राह है और उसके साथी उसको सीधी राह की तरफ़ बुलाने लगे. वह हैरान रह गया, किधर जाए. अंजाम उसका यही होगा कि अगर वह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाए या और साथियों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मंज़िल पर पहुंच जाएगा. यही हाल उस शख़्स का है जो इस्लाम के तरीक़े से बहका और शैतान की राह पर चला. मुसलमान उसको सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते हैं. अगर उनकी बात मानेगा, राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा.

(५) यानी जो रास्ता अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये साफ़ और खुला फ़रमा दिया और जो दीन (इस्लाम) उनके लिये निश्चित किया वही हिदायत व नूर है और जो इसके सिवा है वह बातिल दीन है.

(६) और उसीकी फ़रमाँबरदारी करें और ख़ास उसीकी इबादत करें.

(७) जिनसे उसकी भरपूर क़ुदरत और उसका सम्पूर्ण इल्म और उसकी हिकमत और कारीगरी ज़ाहिर है.

(८) कि नाम को भी कोई सल्तनत का दावा करने वाला न होगा . सारे शासक सारे बादशाह और सब दुनिया की सल्तनत का घमण्ड करने वाले देखेंगे कि दुनिया में जो वो सल्तनत का दावा करते थे, वह ग़लत और झूटा था.

(९) क़ामूस में है कि आज़र हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चचा का नाम है. इमाम अल्लामा जलालुद्दीन सियूती ने "मसालिकुल हुनफ़ा" में भी ऐसा ही लिखा है. चचा को बाप कहना सारे मुल्कों में आम है ख़ासकर अरब में. कुरआने करीम में है, *"नअबुदो इलाहका व इलाहा आबाइका इब्राहीमा व इस्माईला व इस्हाक़ा इलाहौं वाहिदन"* यानी बोले हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आपका और आपके बाप के आबा इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ का एक ख़ुदा. (सूरए बक़रह, आयत १३३) इसमें हज़रत इस्माईल को हज़रत याक़ूब के 'आबा' में ज़िक्र किया गया है जब कि आप चचा हैं. हदीस शरीफ़ में भी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा को "अब" फ़रमाया. चुनांचे इरशाद किया *"रूद्दू अलैया अबी"* और यहाँ अबी से हज़रत अब्बास मुराद हैं.

(१०) यह आयत अरब के मुश्रिकों पर हुज्जत है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बुज़ुर्ग जानते थे और उनकी बुज़ुर्गी को

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ
وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا
وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۚ قَالَ
اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَآ اَخَافُ مَا
تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ۚ وَسِعَ رَبِّيْ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ
اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۚ فَاَيُّ
الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ
لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता[१४] (७७) फिर जब सूरज जगमगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो[१५] यह तो इन सब से बड़ा है फिर जब वह डूब गया कहा ऐ क़ौम में बेज़ार हूँ इन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो[१६] (७८) मैं ने अपना मुंह उसकी तरफ़ किया जिसने आसमान और ज़मीन बनाए एक उसीका होकर[१७] और मैं मुश्रिकों में नहीं (७९) और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी कहा क्या अल्लाह के बारे में मुझसे झगड़ते हो तो वह मुझे राह बता चुका[१८] और मुझे उनका डर नहीं जिन्हें तुम शरीक बताते हो[१९] हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे[२०] मेरे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते (८०) और मैं तुम्हारे शरीकों से कैसे डरूं[२१] और तुम नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का शरीक उसको ठहराया जिसकी तुमपर उसने कोई सनद न उतारी, तो दोनों गिरोहों में अमान का ज़्यादा हक़दार कौन है[२२] अगर तुम जानते हो (८१) वो जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ चीज़ की आमेज़िश (मिश्रण) न की उन्हीं के लिये अमान है और वही राह पर हैं (८२)

दसवाँ रुकू

और यह हमारी दलील है कि हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम

मानते थे. उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुतपरस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं. अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो.

(११) यानी जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दीन में समझ अता फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आसमानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे आसमानों और ज़मीन की उत्पत्ति मुराद है. मुजाहिद और सईद बिन ज़ुबैर कहते हैं यह इस तरह कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पत्थर पर खड़ा किया गया और आपके लिये आसमानों के पर्दे खोल दिये गए यहाँ तक कि आपने अर्श व कुर्सी और आसमानों के सारे चमत्कार और जन्नत में अपने मक़ाम को देखा. आपके लिये ज़मीन के पर्दे उठा दिये गए यहाँ तक कि आपने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम चमत्कार देखे. मुफ़स्सिरों का इसमें मतभेद है कि यह देखना सर की आँखों से था या दिल की आँखों से. (दुर्रे मन्सूर, ख़ाज़िन वग़ैरह)

(१२) क्योंकि हर ज़ाहिर और छुपी चीज़ उनके सामने करदी गई और इन्सानों के कर्मों में से कुछ भी उनसे छुपा न रहा.

(१३) तफ़सीर के जानकार और सीरत के माहिरों का बयान है कि नमरूद इब्ने कनआन बड़ा अत्याचारी बादशाह था. सबसे पहले उसीने ताज सर पर रखा. यह बादशाह लोगों से अपनी पूजा कराता था. उसके दरबार में ज्योतिषी और जादूगर बहुत से थे. नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा निकला है, उसकी रौशनी के सामने चाँद सूरज बिल्कुल बेनूर हो गए. इससे वह बहुत डरा. जादूगरों से इसकी ताबीर पूछी. उन्होंने कहा कि इस साल तेरे राज्य में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे पतन का कारण बनेगा और तेरे दीन वाले उसके हाथ से हलाक होंगे. यह ख़बर सुनकर वह परेशान हुआ और उसने हुक्म दिया कि जो बच्चा पैदा हो, क़त्ल कर दिया जाए और मर्द औरतों से अलग रहें और इसकी चौकसी के लिये एक विभाग क़ायम कर दिया गया. अल्लाह के हुक्म को कौन टाल सकता है. हज़रत इब्राहीम की वालिदा गर्भवती हुईं और जादूगरों ने नमरूद को इसकी ख़बर भी दे दी कि वह बच्चा गर्भ में आगया है. लेकिन चूंकि हज़रत की वालिदा की उम्र कम थी, उनका गर्भ किसी तरह पहचाना ही न गया. जब ज़चगी का समय निकट आया तो आपकी वालिदा एक तहख़ाने में चली गईं जो आपके वालिद ने शहर से दूर खोदकर तैयार किया था. वहाँ आप की पैदायश हुई और वहीं आप रहे. पत्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था. रोज़ाना वालिदा साहिबा दूध पिला आती थीं और जब वहाँ पहुंचतीं तो देखतीं कि आप अपनी उंगली के पोर चूस रहे हैं और उनसे दूध निकल रहा है. आप बहुत जल्द बढ़ते थे, एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में. इसमें मतभेद है कि आप तहख़ाने में कितने साल रहे. कुछ कहते हैं सात साल, कुछ तेरह बरस, कुछ सत्तरह बरस. यह बात यक़ीनी है कि नबी हर हाल में मासूम होते हैं और वो अपनी ज़िन्दगी की शुरूआत से आख़िर तक अल्लाह वाले होते हैं. एक दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से पूछा मेरा रब (पालने वाला) कौन है ? उन्होंने फ़रमाया, मैं. फ़रमाया, तुम्हारा पालन वाला कौन है ? कहा, तुम्हारे वालिद. फ़रमाया, उनका रब कौन है. वालिदा ने कहा, ख़ामोश रहो. और अपने शौहर से जाकर कहा कि जिस लड़के की निस्बत यह मशहूर है कि वह ज़मीन वालों का दीन बदल

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝٨٣ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ
كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ
وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٤ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٥ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَ
لُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٦ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٨٧ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝٨٨ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَ
النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝٨٩ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

منزل ٢

पर अता फ़रमाई हम जिसे चाहें दर्जो बलन्द करें[१] बेशक तुम्हारा रब हिकमत व इल्म वाला है﴾८३﴿ और हमने उन्हें इस्हाक़ और यअक़ूब अता किये, उन सबको हमने राह दिखाई और उनसे पहले नूह को राह दिखाई और उसकी औलाद में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकी करने वालों को﴾८४﴿ और ज़करिया और यहया और ईसा और इलियास को ये सब हमारे क़ुर्ब के लायक़ हैं,﴾८५﴿ और इस्माईल और यसअ और यूनुस और लूत को और हमने हर एक को उसके वक़्त में सबपर फ़ज़ीलत(बुज़ुर्गी) दी[२]﴾८६﴿ और कुछ उनके बाप दादा और औलाद और भाइयों में से कुछ को[३] और हमने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई﴾८७﴿ यह अल्लाह की हिदायत है कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वो शिर्क करते तो ज़रूर उनका किया अकारत जाता﴾८८﴿ ये हैं जिनको हमने किताब और हुक्म और नबुव्वत(पैग़म्बरी) अता की तो अगर ये लोग[४] इससे इन्कारी हों तो हमने उसके लिये एक ऐसी क़ौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं[५]﴾८९﴿ ये हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह

देगा, वह तुम्हारा ही बेटा है. और सारी बात चीत बयान की. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शुरू ही से तौहीद की हिमायत और कुफ़्र का रद शुरू फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से रात के वक़्त आपने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारा देखा तो हुज्जत क़ायम करनी शुरू करदी. क्योंकि उस ज़माने के लोग बुतों और सितारों का पूजा करते थे. आपने एक अत्यन्त उमदा तरीक़े से उन्हें प्रमाण की तरफ़ बुलाया जिससे वो इस नतीजे पर पहुंचे कि सारा जगत किसी का पैदा किया हुआ है और ऐसी चीज़ मअबूद नहीं हो सकती. मअबूद वही है जिसके इख़्तियार और क़ुदरत से जगत में परिवर्तन होते रहते हैं.

(१४) इसमें क़ौम को चेतावनी है कि चाँद को मअबूद ठहराए वह गुमराह है. क्योंकि उसका एक हालत से दूसरी हालत में बदलना इस बात का सुबूत है कि वह किसी का पैदा किया हुआ है, अपने में कोई क़ुदरत नहीं रखता.

(१५) 'शम्स' यानी सूरज के लिये अरबी में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग दोनों ही इस्तेमाल किये जा सकते हैं यहाँ ''हाज़ा'' पुल्लिंग लाया गया. इसमें सम्मान की सीख़ है कि 'रब' शब्द की रिआयत के लिये स्त्रीलिंग न लाया गया.

(१६) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की योग्यता नहीं रखता. उनका मअबूद होना बातिल है और क़ौम जिस शिर्क में गिरफ़्तार है आपने उससे बेज़ारी ज़ाहिर की और इसके बाद सच्चे दीन का बयान फ़रमाया जो आगे आता है.

(१७) यानी इस्लाम के, बाक़ी सब धर्मों से अलग रहकर. इससे मालूम हुआ कि सच्चे दीन की स्थापना और मज़बूती तब ही हो सकती है जब कि झूठे धर्मों से बेज़ारी हो.

(१८) अपनी तौहीद और पहचान की.

(१९) क्योंकि वो बेजान बुत हैं, न नुक़सान पहुंचा सकते है न नफ़ा दे सकते हैं उनसे क्या डरना. आपने मुश्रिकों से जवाब में फ़रमाया था जिन्होंने आपसे कहा था कि बुतों से डरो, उनको बुरा कहने से कहीं आपको कुछ नुक़सान न पहुंच जाए.

(२०) वह होगी क्योंकि मेरा रब हर चीज़ पर भरपूर क़ुदरत रखता है.

(२१) जो बेजान और नफ़ा नुक़सान पहुंचाने से मेहरूम हैं.

(२२) अल्लाह के एक होने में विश्वास रखने वाला या उसके साथ शरीक ठहराने वाला.

सूरए अनआम - दसवाँ रूकू

(१) इल्म और सूझ बूझ, समझदारी और बुज़ुर्गी के साथ जैसे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दर्जे ऊंचे किये दुनिया में इल्म व हिकमत व नबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्ब और सवाब के साथ.

اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى
لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ
الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ
قَرَاطِیْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِیْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ
تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَ لَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ
یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ
بَیْنَ یَدَیْهِ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ الَّذِیْنَ
یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ
یُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
اَوْ قَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَ لَمْ یُوْحَ اِلَیْهِ شَیْءٌ وَّ مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ
مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ
الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ بَاسِطُوْۤا اَیْدِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ

चलो[६] तुम फ़रमाओ मैं क़ुरआन पर तुम से कोई उजरत (वेतन) नहीं मांगता, वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत को[७] ﴿९०﴾

ग्यारहवाँ रूकू

और यहूद ने अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[१] जब बोले अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाए थे रौशनी और लोगों के लिये हिदायत जिसके तुमने अलग अलग क़ाग़ज़ बनाए ज़ाहिर करते हो[२] और बहुत से छुपा लेते हो[३] और तुम्हें वह सिखाया जाता है[४] जो न तुम को मालूम था न तुम्हारे बाप दादा को, अल्लाह कहो[५] फिर उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगी में उन्हें खेलता[६] ﴿९१﴾ और यह है बरकत वाली किताब कि हमने उतारी[७] तस्दीक़ (पुष्टि) फ़रमाती उन किताबों की जो आगे थीं और इसलिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को[८] और जो कोई सारे जगत में उसके गिर्द हैं और जो आख़िरत पर ईमान लाते हैं[९] उस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं ﴿९२﴾ और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे[१०] या कहे मुझे वही (देव वाणी) हुई और वही न हुई[११] और जो कहे अभी मैं डराता हूँ ऐसा जैसा अल्लाह ने उतारा[१२] और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हैं फ़रिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं[१३] कि निकालो अपनी जानें, आज तुम्हें

(२) नबुव्वत और रिसालत के साथ. इस आयत से इसपर सनद लाई जाती है कि नबी फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं क्योंकि आलम अल्लाह के सिवा सारी मौजूद चीज़ों को शामिल है. फ़रिश्ते भी इसमें दाख़िल हैं तो जब तमाम जगत वालों पर फ़ज़ीलत दी तो फ़रिश्तों पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई. यहाँ अल्लाह तआला ने अठ्ठारह नबियों का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब या क्रम न ज़माने के ऐतिबार से है न बुज़ुर्गी के. लेकिन जिस शान से नबियों के नाम बयान फ़रमाए गए हैं उसमें एक अजीब लतीफ़ा है, वह यह कि अल्लाह तआला ने नबियों की हर एक जमाअत को एक ख़ास तरह की करामत और बुज़ुर्गी के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो हज़रत नूह व इब्राहीम व इस्हाक़ व याक़ूब का पहले ज़िक्र किया क्योंकि ये नबियों के उसूल हैं यानी उनकी औलाद में बहुत से नबी हुए जिनका नसब उन्हीं की तरफ़ पलटता है. नबुव्वत के बाद दर्जों के लिहाज़ से मुल्क, इख़्तियार और सल्तनत और सत्ता है. अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद और सुलैमान को इनमें से बहुत कुछ अता फ़रमाया. ऊंचे दर्जों में मुसीबत और बला पर सब्र करना भी शामिल है. अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब को इसके साथ मुमताज़ किया. फिर मुल्क और सब्र के दोनों दर्जे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बख़्शे कि आपने मुद्दतों सख़्तियों और तकलीफ़ों पर सब्र फ़रमाया. फिर अल्लाह तआला ने नबुव्वत के साथ मिस्र प्रदेश अता किया. चमत्कार और ताक़त भी ऊंचे दर्जों में आती है. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून को ये दोनों चीज़ें अता फ़रमाई. पाकबाज़ी और माया मोह का त्याग भी ऊंचे दर्जे की निशानी है. हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा और हज़रत इलियास को इसके साथ मख़सूस फ़रमाया. इन नबियों के बाद अल्लाह तआला ने उन नबियों का बयान फ़रमाया कि जिनके न अनुयायी बाक़ी रहे न उनकी शरीअत, जैसे कि हज़रत इस्माईल, हज़रत यसअ, हज़रत यूनुस, हज़रत लूत अलैहिमुस्सलाम. इस शान से नबियों का बयान फ़रमाने में उनकी करामतों और विशेषताओं का एक अदभुत क्रम नज़र आता है.

(३) हमने बुज़ुर्गी दी.

(४) यानी मक्का वाले.

(५) इस क़ौम से या ईसाई मुराद हैं या मुहाजिर या रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग. इस आयत से साबित है कि अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद फ़रमाएगा और आपके दीन को क़ुव्वत देगा और उसको दूसरे तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा. चुनांचे ऐसा ही हुआ और यह ग़ैबी ख़बर सच हुई.

(६) उलमा ने इस आयत से यह मसअला साबित किया है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम नबियों से अफ़ज़ल हैं क्योंकि जो विशेषताएं, चमत्कार और गुण अलग अलग दूसरे नबियों को दिये गए थे, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये उन सब को जमा फ़रमा दिया और आपको हुक्म दिया *''फ़बिहुदाहुमुक़्तदिह''* यानी तो तुम उन्हीं की राह चलो. (सूरए अनआम, आयत ९०) तो जब आप तमाम नबियों की विशेषताएं रखते हैं तो बेशक सबसे अफ़ज़ल हुए.

الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ
جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم
مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ
الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ
وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾ إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ
وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ
الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَ
جَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ
تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ
لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

ख़्वारी का अज़ाब दिया जाएगा बदला उसका कि अल्लाह पर झूठ लगाते थे[१४] और उसकी आयतों से तकब्बुर (घमण्ड) करते﴿९३﴾ और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था[१५] और पीठ पीछे छोड़ आए जो माल व मत्ता हमने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिनका तुम अपने में साझा बताते थे[१६] बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई[१७] और तुम से गए जो दावे करते थे[१८]﴿९४﴾

बारहवाँ रूकू

बेशक अल्लाह दाने और गुठली को चीरने वाला है[१] ज़िन्दा को मुर्दे से निकालने[२] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने[३] यह है अल्लाह, तुम कहां औंधे जाते हो[४]﴿९५﴾ तारीकी (अंधेरा) चाक करके सुबह निकालने वाला और उसने रात को चैन बनाया[५] और सूरज और चांद को हिसाब[६] यह साधा है ज़बरदस्त जानने वाले का﴿९६﴾ और वही है जिसने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि उनसे राह पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हमने निशानियां तफ़सील से (विस्तार से) बयान कर दीं इल्म वालों के लिये﴿९७﴾ और वही है जिसने तुमको एक जान से पैदा किया[७] फिर कहीं तुम्हें ठहरना है[८] और कहीं अमानत रहना[९] बेशक हमने

(७) इस आयत से साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि की तरफ़ भेजे गए हैं और आपकी दावत सारी सृष्टि को आम है और सारा जगत आपकी उम्मत है. (ख़ाज़िन)

सूरए अनआम - ग्यारहवाँ रूकू

(१) और उसको पहचानने से मेहरूम रहे और अपने बन्दों पर उसकी जो रहमत और करम है उसको न जाना. यहूदियों की एक जमाअत अपने बड़े पादरी मालिक इब्ने सैफ़ को लेकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहस करने आई. हुज़ूर ने फ़रमाया मैं तुझे उस परवर्दिगार की क़सम देता हूँ जिसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात उतारी, क्या तौरात में तूने यह देखा है *"इन्नल्लाहा यबग़दुल हिब्रल समीन"* यानी अल्लाह को मोटा आलिम नापसन्द है. कहने लगा, हाँ यह तौरात में है. हुज़ूर ने फ़रमाया तू मोटा आलिम ही तो है. इसपर वह गुस्से में भरकर कहने लगा कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा. इसपर यह आयत उतरी और इसमें फ़रमाया गया, किसने उतारी वह किताब जो मूसा लाए थे. तो वह लाजवाब हो गया और यहूदी उस से नाराज़ हो गए और उसको झिड़कने लगे और उसको पादरी के ओहदे से हटा दिया. (मदारिक और ख़ाज़िन)

(२) इन में से कुछ को जिसका इज़हार अपनी इच्छा के अनुसार समझते हो.

(३) जो तुम्हारी इच्छा के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरात के वो हिस्से जिनमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और उनकी विशेषताओं का बयान है.

(४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तालीम और क़ुरआन शरीफ़ से.

(५) यानी जब वो इसका जवाब न दे सकें कि वह किताब किसने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह ने.

(६) क्योंकि जब आपने तर्क पूरा कर दिया और उपदेश और संदेश अन्त तक पहुंचा दिया और उनके लिये बहाने बनाने की कोई गुंजायश न छोड़ी, इसपर भी वो बाज़ न आएं, तो उन्हें उनकी बेहूदगी में छोड़ दीजिये. यह काफ़िरों के हित में फिटकार है.

(७) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(८) "बस्तियों का सरदार" मक्कए मुकर्रमा है, क्योंकि वह तमाम ज़मीन वालों का क़िबला है.

(९) और क़यामत व आख़िरत और मरने के बाद उठने का यक़ीन रखते हैं और अपने अंजाम से ग़ाफ़िल और बेख़बर नहीं हैं.

(१०) और नबुव्वत का झूठा दावा करे.

(११) यह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में उतरी जिसने यमामा यमन प्रदेश में नबुव्वत का झूटा दावा किया था. बनी हनीफ़ा क़बीले के कुछ लोग उसके धोखे में आ गए थे. यह कज़्ज़ाब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त के ज़माने में अमीर हमज़ा

يَفْقَهُونَ ۝٩٨ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَخْرَجْنَا
بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ
حَبًّا مُتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ
وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا
وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ انْظُرُوا إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝٩٩ وَجَعَلُوا لِلَّهِ
شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ ۖ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَصِفُونَ ۝١٠٠ بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ ۖ
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١٠١ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝١٠٢ لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ
الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝١٠٣ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ

तफ़सील से आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये ﴾९८﴿ और वही है जिसने आसमान से पानी उतारा तो हमने उससे हर उगने वाली चीज़ निकाली[१०] तो हमने उससे निकाली सब्ज़ी जिसमें से दाने निकलते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास अच्छे और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग, उसका फल देखो जब फले और उसका पकना बेशक उसमें निशानियां हैं ईमान वालों के लिये ﴾९९﴿ और[११] अल्लाह का शरीक ठहराया जिन्नों को[१२] हालांकि उसी ने उनको बनाया और उसके लिये बेटे और बेटियाँ घड़ लीं जिहालत से, पाकी और बरतरी है उसको उनकी बातों से ﴾१००﴿

तेरहवाँ रूकू

बे किसी नमूने के आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला, उसके बच्चा कहाँ से हो हालांकि उसकी औरत नहीं[१] और उसने हर चीज़ पैदा की[२] और वह सब कुछ जानता है ﴾१०१﴿ यह है अल्लाह तुम्हारा रब[३] और उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो वह जो हर चीज़ पर निगहबान है[४] ﴾१०२﴿ आँखें उसे इहाता (घिराव) नहीं करतीं[५] और सब आँखें उसके इहाते (घेरे) में हैं, और वही है पूरा बातिन पूरा ख़बरदार ﴾१०३﴿ तुम्हारे पास आँखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की

रदियल्लाहो अन्हो के क़ातिल वहशी के हाथों मारा गया.

(१२) यह आयत अब्दुल्लाह बिन अबी सरह, जो वही की किताबत करता था, उसके बारे में उतरी. जब आयत *"वलक़द ख़लक़नल इन्साना"* उतरी उसने इसे लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते इन्सान की पैदायश की तफ़सील पर सूचित होकर आश्चर्य में पड़ गया और इस हालत में आयत का आख़िरी हिस्सा *"तबारकल्लाहो अहसनुल ख़ालिक़ीन"* बेइख़्तियार उसकी ज़बान पर जारी हो गया. इसपर उसको यह घमण्ड हुआ कि मुझपर वही आने लगी और वह इस्लाम से फिर गया. यह न समझा कि वही के नूर और कलाम की शक्ति और हुस्न से आयत का आख़िरी कलिमा ज़बान पर आगया, इसमें उसकी योग्यता का कोई दख़्ल न था. कलाम की शक्ति ख़ुद अपने आख़िर को बता दिया करती है. जैसे कभी कोई शायर अच्छा मज़मून पढ़े, वह मज़मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शायर से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं. उनमें ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शेर कहने की क्षमता नहीं रखते, तो क़ाफ़िया बताना उनकी योग्यता नहीं, कलाम की शक्ति है. और यहाँ तो वही का नूर और नबी के नूर से सीने में रौशनी आती थी. चुनांचे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और इस्लाम से फिर जाने के बाद फिर वह एक जुमला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुआ, जो क़ुरआन के कलाम से मिल सकता. अन्त में हुज़ूर के ज़माने में ही मक्का की विजय से पहले फिर इस्लाम ले आया.

(१३) आत्माएं निकालने के लिये झिड़के जाते हैं और कहते जाते हैं.

(१४) नबुव्वत और वही के झूटे दावे करके और अल्लाह के लिये शरीक और बीवी बच्चे बताकर.

(१५) न तुम्हारे साथ माल है न ऐश्वर्य, न औलाद, जिनकी महब्बत में तुम उम्र भर गिरफ़्तार रहे, न वो बुत, जिन्हें पूजा किये. आज उनमें से कोई तुम्हारे काम न आया . यह काफ़िरों से क़यामत के दिन फ़रमाया जाएगा.

(१६) कि वो इबादत के हक़दार होने में अल्लाह के शरीक हैं (मआज़ल्लाह).

(१७) और इलाक़े टूट गए, जमाअत बिखर गई.

(१८) तुम्हारे वो तमाम झूटे दावे जो तुम दुनिया में किया करते थे, बातिल हो गए.

सूरए अनआम - बारहवाँ रूकू

(१) तौहीद और नबुव्वत के बाद अल्लाह तआला ने अपनी भरपूर क़ुदरत व इल्म और हिकमत की दलीलें बयान फ़रमाईं क्योंकि सबसे बड़ा लक्ष्य अल्लाह तआला और उसकी सिफ़त और अहकाम की पहचान है, और यह जानना कि वही सारी चीज़ों को पैदा

करने वाला है और जो ऐसा हो वही पूजने के क़ाबिल हो सकता है, न कि वो बुत जिन्हें मुश्रिक पूजते हैं. ख़ुश्क दाना और गुठली को चीर कर उनसे सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी पथरीली ज़मीनों में उनके नर्म रेशों को रवाँ करना जहाँ लोहे की सलाख़ें और कुदालें भी काम न कर सकें, उसकी क़ुदरत के कैसे चमत्कार हैं.

(२) जानदार सब्ज़े को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व हैवान को वीर्य से और चिड़िया को अन्डे से.

(३) जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को, और इन्सान और हैवान से नुत्फ़े को, और चिड़िया से अन्डे को, यह उसके चमत्कार और क़ुदरत और हिक्मत है.

(४) और ऐसे प्रमाण क़ायम होने के बाद क्यों ईमान नहीं लाते और मौत के बाद उठने का यक़ीन नहीं करते . जो बेजान नुत्फ़े से जानदार हैवान पैदा करता है, उसकी क़ुदरत से मुर्दे को ज़िन्दा करना क्या दूर है.

(५) कि आदमी उसमें चैन पाता है और दिन की थकान और कसलमन्दी को सुकून से दूर करती है और रातों को जागने वाले इबादत गुज़ार एकान्त में अपने रब की इबादत से चैन पाते हैं.

(६) कि उनके दौर और सैर से इबादतों और मामलात के समय मालूम हों.

(७) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से.

(८) माँ के गर्भ में या ज़मीन के ऊपर.

(९) बाप की पीठ में या क़ब्र के अन्दर.

(१०) पानी एक और उससे जो चीज़ें उगाईं वो क़िस्म क़िस्म की और रंगारंग.

(११) इसके बावजूद कि क़ुदरत, हिक्मत और चमत्कारों की इन दलीलों और इस इनआम और इकराम और इन नेअमतों के पैदा करने और अता फ़रमाने का तक़ाज़ा यह था कि उस मेहरबान बिगड़ी बनाने वाले रब पर ईमान लाते, इसके बजाय बुत परस्तों ने यह सितम किया . (जो आयत में आगे दिया है) कि ...

(१२) कि उनकी फ़रमाँबरदारी और अनुकरण करके मूर्तिपूजक हो गए.

सूरए अनआम - तेरहवाँ रूकू

(१) और बे औरत औलाद नहीं होती और पत्नी उसकी शान के लायक़ नहीं क्योंकि कोई चीज़ उस जैसी नहीं.

(२) तो जो हैं वह उसकी मख़्लूक़ यानी उसकी पैदा की हुई है . और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना ग़लत और बातिल है.

(३) जिसकी विशेषताएं बयान हुईं और जिसकी ये विशेषताएं हों वही पूजनीय है.

(४) चाहे वो रिज़्क़ हो, या मौत या गर्भ.

(५) 'इदराक' यानी इहाता करने के मानी हैं कि जो चीज़ देखें, उसके हर तरफ़ और सारी हदों की जानकारी रखना. इदराक की यही तफ़सीर हज़रत सईद बिन मुसैयब और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से नक़्ल की गई है. और मुफ़स्सिरों की बड़ी जमाअत इदराक की तफ़सीर इहाते से करती है और इहाता उसी चीज़ का हो सकता है जिसकी दिशाएं और सीमाएं हों. अल्लाह तआला के लिये दिशा और सीमा असंभव है तो उसका इदराक और इहाता भी संभव नहीं. यही एहले सुन्नत का मज़हब है. ख़ारिजी और मोअतज़िली वग़ैरह गुमराह फ़िरक़े इदराक और रिवायत में फ़र्क़ नहीं करते इसलिये वो इस गुमराही में गिरफ़्तार हो गए कि उन्होंने दीदारे इलाही को मुहाले अक़्ली क़रार दे दिया, इसके बावुजूद कि न देख सकना न जानने के लिये लाज़िम है. वरना जैसा कि अल्लाह तआला तमाम मौजूदात के विपरीत बिला कैफ़ियत व दिशा जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्योंकि अगर दूसरी चीज़ें बग़ैर कैफ़ियत और दिशा के देखी नहीं जा सकतीं तो जानी भी नहीं जा सकतीं. राज़ इसका यह है कि रूयत और दीद अर्थात दर्शन के मानी ये हैं कि नज़र किसी चीज़ को, जैसी कि वह हो, वैसा जाने तो जो चीज़ दिशा वाली होगी उसकी दीद या दर्शन दिशा अर्थात आकार में होगा और जिसके लिये आकार न होगा उसका दर्शन बिना आकार होगा. अल्लाह का दीदार आख़िरत में ईमान वालों को होगा, यह एहले सुन्नत का अक़ीदा और क़ुरआन व हदीस और सहाबा के क़ौल और बहुत सी दलीलों से साबित है. क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया *"वुजूहुंई यौमइज़िन नादिरतुन इला रब्बिहा नाज़िरह"* कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते. (सूरए क़ियामह, आयत २२). इससे साबित है कि ईमान वालों को क़यामत के दिन उनके रब का दीदार उपलब्ध होगा. इसके अलावा और बहुत सी आयतों और कई सही हदीसों की रिवायतों से साबित है. अगर अल्लाह का दीदार असंभव होता तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दीदार का सवाल न करते *"रब्बे अरिनी उन्ज़ुर इलैका"* (ऐ रब मैं तुझे देखना चाहता हूँ) इरशाद न करते और उनके जवाब में *"इनिस तक़र्रा मकानहू फ़सौफ़ा तरानी"* न फ़रमाया जाता. इन दलीलों से साबित होगया कि आख़िरत में ईमान वालों के लिये अल्लाह का दीदार शरीअत में साबित है और इसका इनकार गुमराही है.

ربكم ۚ فمن أبصر فلنفسه ۖ ومن عمي فعليها ۚ
وما أنا عليكم بحفيظ ﴿١٠٤﴾ وكذلك نصرف الآيات و
ليقولوا درست ولنبينه لقوم يعلمون ﴿١٠٥﴾ اتبع ما
أوحي إليك من ربك ۖ لا إله إلا هو ۖ وأعرض عن
المشركين ﴿١٠٦﴾ ولو شاء الله ما أشركوا ۗ وما جعلناك
عليهم حفيظا ۖ وما أنت عليهم بوكيل ﴿١٠٧﴾ ولا تسبوا
الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير
علم ۗ كذلك زينا لكل أمة عملهم ثم إلى ربهم
مرجعهم فينبئهم بما كانوا يعملون ﴿١٠٨﴾ وأقسموا بالله
جهد أيمانهم لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها ۚ قل
إنما الآيات عند الله ۖ وما يشعركم أنها إذا جاءت
لا يؤمنون ﴿١٠٩﴾ ونقلب أفئدتهم وأبصارهم كما لم
يؤمنوا به أول مرة ونذرهم في طغيانهم يعمهون ﴿١١٠﴾

तरफ़ से तो जिसने देखा तो अपने भले को और जो अंधा हुआ अपने बुरे को और मैं तुमपर निगहबान नहीं﴾१०४﴿ और हम इसी तरह आयतें तरह तरह से बयान करते हैं(६) और इसलिये कि काफ़िर बोल उठें कि तुम तो पढ़े हो और इसलिये कि उसे इल्म वालों पर वाज़ेह(सपष्ट) कर दें﴾१०५﴿ उसपर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से वही होती है(७) उसके सिवा कोई मअबूद(पूजनीय) नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो﴾१०६﴿ और अल्लाह चाहता तो वो शिर्क नहीं करते और हमने तुम्हें उनपर निगहबान नहीं किया और तुम उनपर करोड़े नहीं﴾१०७﴿ और उन्हें गाली न दो जिनको वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वो अल्लाह की शान में बेअदबी करेंगे ज़ियादती और जिहालत से(८) यूंही हमने हर उम्मत की निगाह में उसके अमल(कर्म) भले करदिये हैं फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है और वह उन्हें बता देगा जो करते थे﴾१०८﴿ और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उनके पास कोई निशानी आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, तुम फ़रमादो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं(९) और तुम्हें(१०) क्या ख़बर कि जब वो आएं तो ये ईमान न लाएंगे﴾१०९﴿ और हम फेर देते हैं उनके दिलों और आँखों को(११) जैसा कि वो पहली बार ईमान न लाए थे(१२) और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी(बग़ावत)में भटका करें﴾११०﴿

(६) कि हुज्जत या तर्क लाज़िम हो.

(७) और काफ़िरों की फ़ुज़ूल बातों पर ध्यान न दो. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप काफ़िरों की बकवास से दुखी न हों. यह उनकी बदनसीबी है कि ऐसी रौशन दलीलों से फ़ायदा न उठाएं.

(८) क़तादा का क़ौल है कि मुसलमान काफ़िरों के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि काफ़िरों को नसीहत हो और वो बुत परस्ती की बुराई जान जाएं मगर उन जाहिलों ने बजाए नसीहत पकड़ने के अल्लाह की शान में बेअदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरू की . इसपर यह आयत नाज़िल हुई. अगरचे बुतों को बुरा कहना और उनकी हक़ीक़त का इज़हार ताअत और सवाब है, लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में काफ़िरों की बेअदबी को रोकने के लिये इसको मना फ़रमाया गया. इब्ने अंबारी का क़ौल है कि यह हुक्म पहले ज़माने में था, जब अल्लाह तआला ने इस्लाम को क़ुव्वत अता फ़रमाई, यह हुक्म स्थगित हो गया.

(९) वह जब चाहता है अपनी हिकमत के हिसाब से उतारता है.

(१०) ऐ मुसलमानो !

(११) सच्चाई के मानने और देखने से .

(१२) उन निशानियों पर जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथ पर ज़ाहिर हुई थीं, जैसे चाँद का दो टुकड़ों में चिर जाना, वग़ैरह जैसे खुले चमत्कार.

पारा सात समाप्त

आठवाँ पारा - वलौ-अन्नना
(सूरए अनआम जारी)
चौदहवाँ रूकू

और अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते उतारते[१] और उनसे मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़ उनके सामने उठा लाते जब भी वो ईमान लाने वाले न थे[२] मगर यह कि ख़ुदा चाहता[३] मगर उनमें बहुत निरे जाहिल हैं[४]﴾१११﴿ और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों और जिन्नों में के शैतान कि उनमें से एक दूसरे पर छुपवां डालता है बनावट की बात[५] धोखे को और तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न करते[६] तो उन्हें उनकी बनावटों पर छोड़ दो[७]﴾११२﴿ और इसलिये कि उस[८] की तरफ़ उनके दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें गुनाह कमाना है﴾११३﴿ तो क्या अल्लाह के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूँ और वही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल(विस्तार से) किताब उतारी[९] और जिनको हमने किताब दी वो जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ़ से सच उतरा है[१०] तो ऐ सुनने वाले तू कभी शक वालों में न हो﴾११४﴿ और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं[११] और वही है सुनता जानता﴾११५﴿

सूरए अनआम - चौदहवाँ रूकू

(१) इब्ने जरीर का क़ौल है कि यह आयत हंसी बनाने वाले क़ुरैश के बारे में उतरी. उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि ऐ मुहम्मद, आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये. हम उनसे पूछ लें कि आप जो कहते हैं वह सच है या नहीं. और हमें फ़रिश्ते दिखाइये जो आपके रसूल होने की गवाही दें या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाइये. इसके जवाब में यह आयत उतरी.

(२) वो सख़्त दिल वाले हैं.

(३) उसकी मर्ज़ी जो होती है वही होता है. जो उसके इल्म में ख़ुशनसीब है वो ईमान से माला माल होते हैं.

(४) नहीं जानते कि ये लोग वो निशानियाँ बल्कि इससे भी ज़्यादा देखकर ईमान लाने वाले नहीं. (जुमल व मदारिक)

(५) यानी वसवसे और छलकपट की बातें बहकाने के लिये.

(६) लेकिन अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है परीक्षा में डालता है ताकि उसके मेहनत पर सब्र करने से ज़ाहिर हो जाए कि यह बड़े सवाब पाने वाला है.

(७) अल्लाह उन्हें बदला देगा, रूस्वा करेगा और आपकी मदद फ़रमाएगा.

(८) बनावट की बात.

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिसमें अच्छे कामों का हुक्म, बुरे कामों से दूर रहने के आदेश, सवाब के वादे, अज़ाब की चेतावनी, सच और झूट का फ़ैसला और मेरी सच्चाई की गवाही और तुम्हारे झूटे इल्ज़ामों का बयान है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुश्रिक कहा करते थे कि आप हमारे और अपने बीच एक मध्यस्थ मुक़र्रर कर लीजिये . उनके जवाब में यह आयत उतरी.

(१०) क्योंकि उनके पास इसकी दलीलें हैं.

(११) न कोई उसके निश्चय को बदलने वाला, न हुक्म को रद करने वाला, न उसका वादा झुठा हो सके. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि कलाम जब सम्पूर्ण है तो उसमें दोष या तबदीली हो ही नहीं सकती और वह क़यामत तक हर क़िस्म के रद्दोबदल से मेहफ़ूज़ है. कुछ मुफ़स्सिर फ़रमाते हैं मानी ये हैं कि किसी की क़ुदरत नहीं कि क़ुरआने पाक में तहरीफ़ यानी रद्दोबदल कर सके क्योंकि अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त की ज़मानत अपने करम के ज़िम्मे ले ली है. (तफ़सीरे अबू सऊद)

الْعَلِيْمُ ۝١١٥ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ
يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ
وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝١١٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ
مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝١١٧
فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ
مُؤْمِنِيْنَ ۝١١٨ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا
مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ۝١١٩
وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ
الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ۝١٢٠ وَلَا تَاْكُلُوْا
مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ
الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ

और ऐ सुनने वाले ज़मीन में अक्सर वो हैं कि तू उनके कहे पे चले तो तुझे अल्लाह की राह से बहकादें, वो सिर्फ़ गुमान के पीछे हैं[१२] और निरी अटकलें दौड़ाते हैं[१३] ﴾११६﴿ तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका उसकी राह से और ख़ूब जानता है हिदायत वालों को ﴾११७﴿ तो खाओ उसमें से जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया[१४] अगर तुम उसकी आयतें मानते हो ﴾११८﴿ और तुम्हें क्या हुआ कि उसमें से न खाओ जिस[१५] पर अल्लाह का नाम लिया गया वह तुम से मुफ़स्सल(स्पष्ट) बयान कर चुका जो कुछ तुमपर हराम हुआ[१६] मगर जब तुम्हें उससे मजबूरी हो[१७] और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने, बेशक तेरा रब हद से बढ़ने वालों को ख़ूब जानता है ﴾११९﴿ और छोड़दो खुला और छुपा गुनाह, वो जो गुनाह कमाते हैं जल्द ही अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे ﴾१२०﴿ और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया[१८] और वह बेशक नाफ़रमानी है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उनका कहना

(१२) अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा का अनुकरण करते हैं, दूरदृष्टि और सच्चाई को पहचानने से मेहरूम हैं.

(१३) कि यह हलाल है और यह हराम और अटकल से कोई चीज़ हलाल हराम नहीं हो जाती जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हलाल किया वह हलाल, और जिसे हराम किया वह हराम.

(१४) यानी जो अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह किया गया, न वह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया, वह हराम है. हलाल होना अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह होने से जुड़ा हुआ है. यह मुश्रिकों के उस ऐतिराज़ का जवाब है जो उन्होंने मुसलमानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुआ खाते हो और अल्लाह का मारा हुआ यानी जो अपनी मौत मरे, उसको हराम जानते हो.

(१५) ज़बीहा .

(१६) इससे साबित हुआ कि हराम चीज़ों का तफ़सील से ज़िक्र होता है और हराम होने के सुबूत के लिये हराम किये जाने का हुक्म दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअत में हराम होने का हुक्म न हो वह मुबाह यानी हलाल है.

(१७) तो बहुत ही मजबूरी की हालत में या अगर जान जाने का ख़ौफ़ है तो जान बचाने भर की ज़रूरत के लिये जायज़ है.

(१८) ज़िब्ह के वक़्त. चाहे इस तरह कि वह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस तरह कि उसको बग़ैर बिस्मिल्लाह के या ग़ैर ख़ुदा के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो, ये सब हराम हैं. लेकिन जहाँ मुसलमान ज़िब्ह करने वाला ज़िब्ह के वक़्त *"बिस्मिल्लाहे अल्लाहो अकबर"* कहना भूल गया, वह ज़िब्ह जायज़ है.

اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا
فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ
كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ
كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ
جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ
وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا
جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَا
اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ
سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ
شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ
يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ
يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ
فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

मानो[१९] तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो[२०] ﴿१२१﴾

पन्द्रहवाँ रूकू

और क्या वह कि मुर्दा था हमने उसे ज़िन्दा किया[१] और उसके लिये एक नूर कर दिया[२] जिससे लोगों में चलाता है[३] वह उस जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है[४] उनसे निकलने वाला नहीं, यूंही काफ़िरों की आंख में उनके कर्म भले कर दिये गए हैं ﴿१२२﴾ और इसी तरह हमने हर बस्ती में उसके मुजरिमों के सरग़ने (सरदार) किये कि उसमें दाव खेलें[५] और दाव नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें समझ नहीं[६] ﴿१२३﴾ और जब उनके पास कोई निशानी आए तो कहते हैं हम कभी ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला[७] अल्लाह ख़ूब जानता है जहाँ अपनी रिसालत रखे[८] जल्द ही मुजरिमों को अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अज़ाब, बदला उनके मक्र (मक्कारी) का ﴿१२४﴾ और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है[९] और जिसे गुमराह करना चाहे उसका सीना तंग ख़ुब रूका हुआ कर देता है[१०] जैसे किसी की ज़बरदस्ती से आसमान पर चढ़ रहा है, अल्लाह यूंही अज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को ﴿१२५﴾

(१९) और अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल जाने.

(२०) क्योंकि दीन में अल्लाह के हुक्म को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना, अल्लाह के सिवा किसी और को हाकिम क़रार देना शिर्क है.

सूरए अनआम - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) मुर्दों से काफ़िर और ज़िंदा से मूमिन मुराद है, क्योंकि कुफ़्र दिलों के लिये मौत है और ईमान ज़िन्दगी.

(२) नूर से ईमान मुराद है जिसकी बदौलत आदमी कुफ़्र की अन्धेरियों से छुटकारा पाता है. क़तादा का क़ौल है कि नूर से अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन मुराद है.

(३) और बीनाई यानी दृष्टि हासिल करके सच्चाई की राह पहचान लेता है.

(४) कुफ़्र व जिहालत और दिल के अंधेपन की यह एक मिसाल है जिसमें मूमिन और काफ़िर का हाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मूमिन उस मुर्दे की तरह है जिसने ज़िन्दगी पाई और उसको नूर मिला जिससे वह अपनी मंज़िल की राह पाता है. और काफ़िर की मिसाल उसकी तरह है जो तरह तरह की अन्धेरियों में गिरफ़्तार हुआ और उनसे निकल न सके, हमेशा हैरत में पड़ा रहे. ये दोनों मिसालें हर मूमिन और काफ़िर के लिये आम हैं, अगरचे हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के क़ौल के मुताबिक़ इनके उतरने की परिस्थिति यह है कि अबू जहल ने एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर कोई नापाक चीज़ फैंकी थी. उस रोज़ हज़रत अमीर हमज़ा रदियल्लाहो अन्हो शिकार को गए हुए थे. जिस वक़्त वह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस घटना की सूचना मिली. अगरचे वह अभी तक ईमान नहीं लाए थे, मगर यह ख़बर सुनकर उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया. वह अबू जहल पर चढ़ गए और उसको कमान से मारने लगे और अबू जहल आजिज़ी और ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा, अबू युअला (हज़रत अमीर हमज़ा की कुनियत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुहम्मद कैसा दीन लाए और उन्होंने हमारे मअबूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालिफ़त की और हमें बदअक़्ल बताया. इसपर हज़रत अमीर हमज़ा ने फ़रमाया तुम्हारे बराबर बदअक़्ल कौन है कि अल्लाह को छोड़ कर पत्थरों को पूजते हो. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं. उसी वक़्त हज़रत अमीर हमज़ा इस्लाम ले आए. इसपर यहे आयत उतरी. तो हज़रत अमीर हमज़ा का हाल उसके जैसा है जो मुर्दा था, ईमान न रखता था, अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और अन्दर का नूर अता किया और अबू जहल का हाल यही है कि वह कुफ़्र और जिहालत की तारीकी में गिरफ़्तार रहे और...

لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۗ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ لَهُمْ دَارُ
السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا
اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ
نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ ع
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۚ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

और यह[११] तुम्हारे रब की सीधी राह है, हमने आयतें तफ़सील से बयान कर दीं नसीहत वालों के लिये (१२६) उनके लिये सलामती का घर है अपने रब के यहां और वह उनका मौला है यह उनके कामों का फल है (१२७) और जिस दिन उन सब को उठाएगा और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गिरोह तुमने बहुत आदमी घेर लिये[१२] और उनके दोस्त आदमी अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ायदा उठाया[१३] और हम अपनी उस मीआद (मुद्दत) को पहुंच गए जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी[१४] फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा उसमें रहो मगर जिसे ख़ुदा चाहे[१५] ऐ मेहबूब बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला इल्म वाला है (१२८) और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत (सवार) करते हैं बदला उनके किये का[१६] (१२९)

सोलहवाँ रूकू

ऐ जिन्नों और आदमियों के गिरोह, क्या तुम्हारे पास तुम में के रसूल न आए थे तुमपर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें ये दिन[१] देखने से डराते[२] कहेंगे हमने अपनी जानों पर गवाही दी[३] और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वो काफ़िर थे[४] (१३०) यह[५] इसलिये कि तेरा रब बस्तियों को[६]

(५) और तरह तरह के बहानों और धोखे और मक्कारी से लोगों को बहकाते और बातिल को रिवाज देने की कोशिश करते हैं.
(६) कि उसका वबाल उन्हीं पर पड़ता है.
(७) यानी जबतक हमारे पास वही न आए और हमें नबी न बनाया जाए. वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा था कि अगर नबुव्वत हक़ हो तो उसका ज़्यादा हक़दार मैं हूँ क्योंकि मेरी उम्र मुहम्मद से ज़्यादा है, और माल भी. इसपर यह आयत उतरी.
(८) यानी अल्लाह जानता है कि नबुव्वत की योग्यता और इसका हक़ किसको है, किसको नहीं . उम्र और माल से कोई नबुव्वत का हक़दार नहीं हो सकता. ये नबुव्वत के तलबगार तो हसद, छलकपट, बद एहदी वग़ैरह बुरे कामों में गिरफ़्तार हैं, ये कहाँ और नबुव्वत की महान उपाधि कहाँ.
(९) उसको ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उसके दिल में रौशनी पैदा करता है.
(१०) कि उसमें इल्म और तौहीद और ईमान की दलीलों की गुंजायश न हो तो उसकी ऐसी हालत होती है कि जब उसको ईमान की दअवत दी जाती है और इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है तो वह उसपर भारी गुज़रता है और उसको बहुत दुशवार मालूम होता है.
(११) दीने इस्लाम.
(१२) उनको बहकाया और अपने रास्ते पर ले गए .
(१३) इस तरह कि इन्सानों ने वासनाओं और गुनाहों में उनसे मदद पाई और जिन्नों ने इन्सानों को अपना मुतीअ बनाया . आख़िरकार उसका नतीजा पाया.
(१४) वक़्त गुज़र गया. क़यामत का दिन आगया, हसरत और शर्मिन्दगी बाक़ी रह गई.
(१५). हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह छूट उस क़ौम की तरफ़ पलटती है जिसकी निस्बत अल्लाह के इल्म में है कि वो इस्लाम लाएंगे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ करेंगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे.
(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उनपर मुसल्लत करता है, बुराई चाहता है तो बुरों को. इससे यह नतीजा निकलता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उसपर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किया जाता है. तो जो उस ज़ालिम के पंजे से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म करना छोड़ दें.

सूरए अनआम - सोलहवाँ रूकू

(१) यानी क़यामत का दिन.
(२) और अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाते.

كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا
عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ
الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ
قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ
الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا
ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا
لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى
شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ

ज़ुल्म से तबाह नहीं करता कि उनके लोग बेख़बर हों[७] ﴾१३१﴿ और हर एक के लिये[८] उनके कामों से दर्जे हैं और तेरा रब उनके आमाल (कर्मों) से बेख़बर नहीं ﴾१३२﴿ और ऐ मेहबूब तुम्हारा रब बेपर्वाह है रहमत वाला, ऐ लोगो वह चाहे तो तुम्हें ले जाए[९] और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लादे जैसे तुम्हें औरों की औलाद से पैदा किया[१०] ﴾१३३﴿ बेशक जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है[११] ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते ﴾१३४﴿ तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूँ, तो अब जानना चाहते हो किसका रहता है आख़िरत का घर, बेशक ज़ालिम फ़लाह (भलाई) नहीं पाते ﴾१३५﴿ और[१२] अल्लाह ने जो खेती और मवेशी पैदा किये उनमें उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले यह अल्लाह का है उनके ख़याल में और यह हमारे शरीकों का[१३] तो वह जो उनके शरीकों का है वह तो ख़ुदा को नहीं पहुंचता, और जो ख़ुदा का है वह उनके शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं[१४] ﴾१३६﴿ और यूंही बहुत मुश्रिकों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है[१५] कि

(३) काफ़िर, जिन्न और इन्सान इक़रार करेंगे कि रसूल उनके पास आए और उन्होंने ज़बानी संदेश पहुंचाए और उस दिन के पेश आने वाले हालात का ख़ौफ़ दिलाया, लेकिन काफ़िरों ने उनको झुटलाया और उनपर ईमान न लाए. काफ़िरों का यह इक़रार उस वक़्त होगा जबकि उनके शरीर के सारे अंग उनके शिर्क और कुफ़्र की गवाही देंगे.

(४) क़यामत का दिन बहुत लम्बा होगा और इसमें हालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आएंगे. जब काफ़िर ईमान वालों के इनआम और इज़्ज़त व सम्मान को देखेंगे तो अपने कुफ़्र और शिर्क से इन्कारी हो जाएंगे और इस ख़याल से कि शायद इन्कारी हो जाने से कुछ काम बने, यह कहेंगे *"वल्लाहे रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन"* यानी ख़ुदा की क़सम हम मुश्रिक न थे. उस वक़्त उनके मुंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उनके शरीर के अंग उनके कुफ़्र और शिर्क की गवाही देंगे . इसी के बारे में इस आयत में इरशाद फ़रमाया *"व शहिदू अला अन्फ़ुसिहिम अन्नहुम कानू काफ़िरीन"* (और ख़ुद अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वो काफ़िर थे)

(५) यानी रसूलों का भेजा जाना.

(६) उनकी पाप करने की प्रवृत्ति और...

(७) बल्कि रसूल भेजे जाते हैं, वो उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं, तर्क स्थापित करते हैं इसपर भी वो सरकशी करते हैं, तब हलाक किये जाते हैं.

(८) चाहे वह नेक हों या बुरे. नेकी और बदी के दर्जे हैं. उन्हीं के मुताबिक़ सवाब और अज़ाब होगा.

(९) यानी हलाक कर दे.

(१०) और उनका उत्तराधिकारी बनाया.

(११) वह चीज़ चाहे क़यामत हो या मरने के बाद या हिसाब या सवाब और अज़ाब.

(१२) जिहालत के ज़माने में मुश्रिकों का तरीक़ा था कि वो अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते थे. उसको तो मेहमानों और दरिद्रों पर ख़र्च कर देते थे. और जो बुतों के लिये मुक़र्रर करते थे, वह ख़ास उनपर और उनके सेवकों पर ख़र्च करते. जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते, अगर उसमें से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते. और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इसमें मिलता तो उसको निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते. इस आयत में उनकी इस जिहालत और बदअक़्ली का बयान फ़रमा कर उनपर तंबीह फ़रमाई गई.

(१३) यानी बुतों का .

(१४) और अत्यन्त दर्जे की अज्ञानता में गिरफ़्तार हैं. अपने पैदा करने वाले, नेअमतें देने वाले रब की इज़्ज़त और जलाल की उन्हें ज़रा भी पहचान नहीं. और उनकी मूर्खता इस हद तक पहुंच गई कि उन्होंने बेजान बुतों, पत्थर की तस्वीरों को जगत के सारे काम बनाने वाले के बराबर कर दिया और जैसा उसके लिये हिस्सा मुक़र्रर किया, वैसा ही बुतों के लिये भी किया. बेशक यह बहुत ही

مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ
وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ
وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ
وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ
الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ
وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ
وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ
قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا
رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ

ع

उन्हें हलाक करें और उनका दीन उनपर मुशतबह(संदिग्ध) करदें[१६] और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वो हैं और उनके इफ़तिरा(मिथ्यारोप) (१३७) और बोले[१७] ये मवेशी और खेती रोकी[१८] हुई है इसे वही खाए जिसे हम चाहें अपने झूठे ख़याल से[१९] और कुछ मवेशी हैं जिनपर चढ़ना हराम ठहराया[२०] और कुछ मवेशी के ज़िब्ह पर अल्लाह का नाम नहीं लेते[२१] यह सब अल्लाह पर झूठ बांधना है बहुत जल्द वह उन्हें बदला देगा उनके इफ़तिराओं(आरोपों) का (१३८) और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वह निरा हमारे मर्दों का है[२२] और हमारी औरतों पर हराम है, और मरा हुआ निकले तो वह सब[२३] उसमें शरीक हैं, क़रीब है कि अल्लाह उन्हें उनकी बातों का बदला देगा बेशक वह हिकमत व इल्म वाला है (१३९) बेशक तबाह हुए वो जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं अहमक़ाना(मुर्खपना) जिहालत से[२४] और हराम ठहराते हैं वह जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी दी[२५] अल्लाह पर झूट बांधने को[२६] बेशक वो बहके और राह न पाई[२७] (१४०)

सत्तरहवाँ रूकू

और वही है जिसने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए हुऐ[१] और कुछ बे छए(फैले) और खजूर और खेती जिसमें

बुरा काम और अत्यन्त गुमराही है. इसके बाद उनकी अज्ञानता और गुमराही की एक और हालत बयान की जाती है.

(१५) यहाँ शरीकों से मुराद वो शैतान हैं जिनकी फ़रमाँबरदारी के शौक़ में मुश्रिक अल्लाह तआला की नाफ़रमानी गवारा करते थे और ऐसे बुरे काम और जिहालत की बातें करते थे जिनको सही बुद्धि कभी गवारा न कर सके और जिनके बुरे होने में मामूली समझ के आदमी को भी हिचकिचाहट न हो. बुत परस्ती की शामत से वो भ्रष्ट बुद्धि में गिरफ़्तार हुए कि जानवरों से बदतर हो गए और औलाद, जिसके साथ हर जानवर को क़ुदरती प्यार होता है, शैतान के अनुकरण में उसका बे गुनाह ख़ून करना उन्होंने गवारा किया और इसको अच्छा समझने लगे.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये लोग पहले हज़रत इस्माईल के दीन पर थे, शैतानों ने उनको बहका कर इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें हज़रत इस्माईल के रास्ते से फेर दें.

(१७) मुश्रिक लोग अपने कुछ मवेशियों और खेतियों को अपने झूटे मअबूदों के साथ नामज़द करके कि.

(१८) वर्जित यानी इसके इस्तेमाल पर प्रतिबन्ध है.

(१९) यानी बुतों की सेवा करने वाले वग़ैरह.

(२०) जिनको बहीरा, सायबा, हामी कहते हैं.

(२१) बल्कि उन बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते हैं और इन तमाम कामों की निस्बत ख़याल करते हैं कि उन्हें अल्लाह ने इसका हुक्म दिया है.

(२२) सिर्फ़ उन्हीं के लिये हलाल है, अगर ज़िन्दा पैदा हो.

(२३) मर्द और औरत.

(२४) यह आयत जिहालत के दौर के उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बेरहमी के साथ ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया करते थे. रबीआ और मुदिर वग़ैरह क़बीलों में इसका बहुत रिवाज था और जिहालत के ज़माने के कुछ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे. और बेरहमी का यह आलम था कि कुत्तों का पालन पोषण करते और औलाद को क़त्ल करते थे. उनकी निस्बत यह इरशाद हुआ कि तबाह हुए. इसमें शक नहीं कि औलाद अल्लाह तआला की नेअमत है और इसकी हलाकत से अपनी संख्या कम होती है. अपनी नस्ल मिटती है. यह दुनिया का घाटा है, घर की तबाही है, और आख़िरत में उसपर बड़ा अज़ाब है, तो यह अमल दुनिया और आख़िरत दोनों में तबाही का कारण हुआ और अपनी दुनिया और आख़िरत को तबाह कर लेना और औलाद जैसी प्यारी चीज़ के साथ इसतरह की बेरहमी और क्रूरता गवारा करना बहुत बड़ी अज्ञानता और मूर्खता है.

(२५) यानी बहीरे सायबा हामी वग़ैरह जो बयान हो चुके.

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ
كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖؗ
وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ وَمِنَ
الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ
اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

रंग रंग के खाने(२) और ज़ैतून और अनार किसी वात में मिलते(३) और किसी में अलग(४) खाओ उसका फल जब फल लाए और उसका हक़ दो जिस दिन कटे(५) और बेजा न खर्चो(६) बेशक बेजा ख़र्चने वाले उसे पसन्द नहीं(१४१) और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे(७) खाओ उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है(१४२) आठ नर और मादा एक जोड़ भेड़ का और एक जोड़ बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं(८) किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो(१४३) और एक जोड़ ऊंट का और एक जोड़ गाय का तुम फ़रमाओ क्या उसने दोनों नर हराम किये या दोनों मादा या वह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं(९) क्या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें यह हुक्म दिया(१०) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बांधे कि लोगों को अपनी

(२६) क्योंकि वो ये गुमान करते हैं कि ऐसे बुरे कामों का अल्लाह ने हुक्म दिया है और उनका यह ख़याल अल्लाह पर झूट बांधना है.
(२७) सच्चाई की.

सूरए अनआम - सत्तरहवाँ रूकू

(१) यानी टट्टियों पर क़ायम किये हुए अंगूर वग़ैरह क़िस्म के.
(२) रंग और मज़े और मात्रा और ख़ुश्बू में आपस में मुख़्तलिफ़.
(३) जैसे कि रंग में या पत्तों में.
(४) जैसे मज़े और असर में.
(५) मानी ये हैं कि ये चीज़ें जब फलें, खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये जायज़ है और उसकी ज़कात यानी दसवाँ हिस्सा उसके पूरे होने के बाद वाजिब होता है, जब खेती काटी जाए या फल तोड़े जाएं. लकड़ी, बाँस, घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में, अगर यह पैदावार बारिश से हो, तो उसमें दसवाँ हिस्सा वाजिब होता है. और अगर रहट वग़ैरह से हो तो पांचवाँ हिस्सा.
(६) इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रेहमतुल्लाह अलैह ने *इसराफ़* का अनुवाद बेजा ख़र्च करना फ़रमाया. बहुत ही उमदा अनुवाद है. अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने बाल बच्चों को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो सदी का क़ौल है कि यह बेजा ख़र्च है. और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो यह भी बेजा है, जैसा कि सईद बिन मुसैयब रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया. सुफ़ियान का क़ौल है कि अल्लाह की इताअत के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जाए वह कम भी हो तो बेजा ख़र्च है. ज़हरी का क़ौल है कि इसके मानी ये हैं कि बुराई में ख़र्च न करो. मुजाहिद ने कहा कि अल्लाह के हक़ में कमी करना बेजा ख़र्च है. अगर बूक़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस पूरे को ख़ुदा की राह में ख़र्च करदो तो बेजा ख़र्च न हो और एक दरहम बुरे काम में ख़र्च करो तो बेजा ख़र्च कहलाए.
(७) चौपाए दो क़िस्म के होते हैं, कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं, कुछ छोटे जैसे कि बकरी वग़ैरह जो इस क़ाबिल नहीं. उनमें से जो अल्लाह तआला ने हलाल किये, उन्हें खाओ और जिहालत के दौर के लोगों की तरह अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम न ठहराओ.
(८) यानी अल्लाह तआला ने न भेड़ बकरी के नर हराम किये, न उनकी मादाएं हराम कीं. न उनकी औलाद. तुम्हारा यह काम कि कभी नर हराम ठहराओ, कभी मादा कभी उनके बच्चे, ये सब तुम्हारे दिमाग़ की उपज है और नफ़्स के बहकावे का अनुकरण. कोई हलाल चीज़ किसी के हराम करने से हराम नहीं होती.
(९) इस आयत में जिहालत के दौर के लोगों को फटकारा गया, जो अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम ठहरा लिया करते

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ
مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ
يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ
رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ
بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِيْنَ
هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ
اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖؗ
وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ
رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ

जिहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता(१४४)

अट्ठारहवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ[1] मैं नहीं पाता उसमें जो मेरी तरफ़ वही(देव वाणी) हुई किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम[2] मगर यह कि मुर्दार हो या रगों का बहता हुआ ख़ून[3] या बद जानवर(सुअर) का गोश्त वह निजासत(अपवित्रता) है या वह बेहुक्मी का जानवर जिसके ज़िब्ह में ग़ैर ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुआ[4] न यूं कि आप ख़्वाहिश करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[5](१४५) और यहूदियों पर हमने हराम किया हर नाख़ुन वाला जानवर[6] और गाय और बकरी की चर्बी उनपर हराम की मगर जो उनकी पीठ में लगी हो या आँत या हड्डी से मिली हो, हमने यह उनकी सरकशी(विद्रोह) का बदला दिया[7] और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं(१४६) फिर अगर वो तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब वसीअ(व्यापक) रहमत वाला है[8] और उसका अज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता[9](१४७) अब कहेंगे मुश्रिक कि[10] अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा न हम कुछ हराम ठहराते[11] ऐसा ही उनसे अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा अज़ाब चखा[12]

थे, जिनका बयान ऊपर की आयतों में आचुका है . जब इस्लाम में अहकाम का बयान हुआ तो उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से झगड़ा किया और उनका वक्ता मालिक बिन औफ़ जिश्मी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा कि या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम), हमने सुना है आप उन चीज़ों को हराम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते आए हैं . हुज़ूर ने फ़रमाया, तुमने बग़ैर किसी अस्ल के कुछ क़िस्में चौपायों की हराम करलीं और अल्लाह तआला ने आठ नर और मादा अपने बन्दों के खाने और उनसे नफ़ा उठाने के लिये पैदा किये. तुमने कहाँ से इन्हें हराम किया. इन में नापाकी नर की तरफ़ से आई या मादा की तरफ़ से. मालिक बिन औफ़ यह सुनकर स्तब्ध और भौचक्का रह गया, कुछ बोल न सका. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, बोलता क्यों नहीं ? कहने लगा, आप फ़रमाइए, मैं सुनूंगा. सुब्हानल्लाह, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कलाम की क़ुव्वत और ज़ोर ने जिहालत वालों के वक्ता को साकित और हैरान कर दिया और वह बोल ही क्या सकता था. अगर कहता कि नर की तरफ़ से नापाकी आई, तो लाज़िम होता कि सारे नर हराम हों. अगर कहता कि मादा की तरफ़ से, तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा हराम हो और अगर कहता कि जो पेट में हैं वह हराम है, तो फिर सब ही हराम हो जाते, क्योंकि जो पेट में रहता है वह नर होता है या मादा. वो जो सीमाएं क़ायम करते थे और कुछ को हराम और कुछ को हलाल ठहराते थे. इस तर्क ने उनके इस दावे को झूटा साबित कर दिया. इसके अलावा उनसे ये पूछना कि अल्लाह ने नर हराम किये हैं या मादा या उनके बच्चे, यह नबुव्वत के इन्कार करने वाले विरोधी को नबुव्वत का इक़रार करने पर मजबूर करता था क्योंकि जब तक नबुव्वत का वास्ता न हो तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसका किसी चीज़ को हराम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है. चुनांचे अगले वाक्य ने इसको साफ़ किया है.

(१०) जब यह नहीं है और नबुव्वत का तो इक़रार नहीं करते, तो हलाल हराम के इन अहकाम को अल्लाह की तरफ़ जोड़ना खुला झूट और ख़ालिस मन घडन्त है.

सूरए अनआम - अट्ठारहवाँ रूकू

(१) इन जाहिल मुश्रिकों से जो हलाल चीज़ों को अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से हराम कर लेते हैं.

(२) इसमें चेतावनी है कि किसी चीज़ का हराम होना शरीअत के हुक्म से होता है न कि नफ़्स की ख़्वाहिश से. तो जिस चीज़ का हराम होना शरीअत में न आए उसको नाजायज़ और हराम कहना ग़लत है. हराम होने का सुबूत चाहे क़ुरआन से हो या हदीस से, यही विश्वसनीय है.

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا
بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ قُلْ
تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ
شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا
النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ

तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो, तुम तो निरे गुमान के पीछे हो और तुम यूंही तख़मीने(अनुमान) करते हो[१३] (१४८) तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हुज्जत(तर्क) पूरी है[१४] तो वह चाहता तो तुम सबकी हिदायत फ़रमाता (१४९) तुम फ़रमाओ लाओ अपने वो गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने उसे हराम किया[१५] फिर अगर वो गवाही दे बैठें[१६] तो तू ऐ सुनने वाले उनके साथ गवाही न देना और उनकी ख़्वाहिशों के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान लाते और अपने रब का बराबर वाला ठहराते हैं[१७] (१५०)

उन्नीसवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुमपर तुम्हारे रब ने हराम किया[१] यह कि उसका कोई शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो[२] और अपनी औलाद क़त्ल न करो मुफ़लिसी के कारण, हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे[३] और बेहयाइयों के पास न जाओ जो उसमें खुली हैं और जो छुपी[४] और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत(इज़्ज़त) रखी उसे नाहक़ न मारो[५] यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अक़्ल हो (१५१) और यतीमों के माल

(३) तो जो ख़ून बहता न हो जैसे कि जिगर, तिल्ली, वह हराम नहीं है.
(४) और ज़रूरत ने उसे उन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया, ऐसी हालत में बेचैन होकर उसने कुछ खाया.
(५) उसपर पकड़ न फ़रमाएगा.
(६) जो उंगली रखता हो, चाहे चौपाया हो या पक्षी. इसमें ऊंट और शुतुर मुर्ग़ दाख़िल हैं. (मदारिक) कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि यहाँ शुतुर मुर्ग़ और बतख़ और ऊंट ख़ास तौर से मुराद हैं.
(७) यहूदी अपनी सरकशी के कारण इन चीज़ों से महरूम किये गए, लिहाज़ा ये चीज़ें उनपर हराम रहीं और हमारी शरीअत में गाय बकरी की चर्बी और बतख़ और शुतुर मुर्ग़ हलाल हैं. इसीपर सहाबा और ताबईन की सहमति है. (तफ़सीरे अहमदी)
(८) झूठों को मोहलत देता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता, ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़ा मिले.
(९) अपने वक़्त पर आ ही जाता है.
(१०) यह ख़बर ग़ैब है कि जो बात वो कहने वाले थे वह बात पहले से बयान फ़रमा दी.
(११) हमने जो कुछ किया, यह सब अल्लाह की मर्ज़ी से हुआ. यह दलील है इसकी कि वह उससे राज़ी है.
(१२) और यह झूट बहाना उनके कुछ काम न आया, क्योंकि किसी काम का मशीयत अर्थात मर्ज़ी में होना उसकी इच्छा और निश्चित होने को लाज़िम नहीं. मर्ज़ी वही है जो नबियों के वास्ते से बताई गई और उसका हुक्म फ़रमाया गया.
(१३) और ग़लत अटकलें चलाते हो.
(१४) कि उसने रसूल भेजे. किताबें उतारीं और सच्ची राह साफ़ कर दी.
(१५) जिसे तुम अपने लिये हराम क़रार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआला ने हमें इसका हुक्म दिया है. यह गवाही इसलिये तलब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि काफ़िरों के पास कोई गवाह नहीं है और जो वो कहते हैं वह उनकी बनाई हुई बात है.
(१६) इसमें चेतावनी है कि अगर यह गवाही वाक़े हो भी तो वह केवल अनुकरण हुआ और झूट और बातिल होगा.
(१७) बुतों को मअबूद मानते हैं और शिर्क में गिरफ़्तार हैं.

सूरए अनआम - उन्नीसवाँ रूकू

(१) उसका बयान यह है .
(२) क्योंकि तुमपर उनके बहुत अधिकार हैं. उन्होंने तुम्हारा पालन पोषण किया, तुम्हारी तरबियत की, तुम्हारे साथ शफ़क़त और

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا
بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا
فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَ
تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ
رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ
فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا
اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا

के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे तरीक़े से[६] जबतक वह अपनी जवानी को पहुंचे[७] और नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरी करो, हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उसकी ताक़त भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिश्तेदार का मामला हो, और अल्लाह ही का अहद पूरा करो यह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो﴾१५२﴿ और यह कि[८] यह है मेरा सीधा रास्ता तो इसपर चलो और और राहें न चलो[९] कि तुम्हें उसकी राह से जुदा करदेंगी यह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले﴾१५३﴿ फिर हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई[१०] पूरा एहसान करने को उसपर जो नेकी करने वाला है और हर चीज़ की तफ़सील और हिदायत और रहमत कि कहीं वो[११] अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं[१२]﴾१५४﴿

बीसवाँ रूकू

और यह बरकत वाली किताब[१] हमने उतारी तो इसकी पैरवी (अनुकरण) करो और परहेज़गारी करो कि तुमपर रहम हो﴾१५५﴿ कभी कहो कि किताब तो हमसे पहले दो गिरोहों पर उतरी थी[२] और हमें उनके पढ़ने पढ़ाने की कुछ

मेहरबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़तरे से चौकसी की. उनके अधिकारों का ख़याल न करना और उनके साथ अच्छे सुलूक न करना हराम है.

(३) इसमें औलाद ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ देने और मार डालने की हुरमत यानी अवैधता बयान फ़रमाई गई है, जिसका जाहिलों में रिवाज था कि वो अक्सर दरिद्रता के डर से औलाद को हलाक करते थे. उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा उनका सब का अल्लाह है फिर क्यों क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म में पड़ते हो.

(४) क्योंकि इन्सान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उसका ज़ाहिर गुनाह से बचना भी अल्लाह के लिये नहीं, लोगों को दिखाने और उनकी बदगोई अर्थात आलोचना से बचने के लिये है. और अल्लाह की रज़ा और सवाब का हक़दार वह है जो उसके डर से गुनाह छोड़ दे.

(५) वो काम जिनसे क़त्ल जायज़ होता है, यह हैं :- मुर्तद होना यानी इस्लाम से फिर जाना या क़िसास या ब्याहे हुए का ज़िना. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, कोई मुसलमान जो लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही देता हो उसका ख़ून हलाल नहीं, मगर इन तीन कारणों में से, कि एक कारण से या तो ब्याहे होने के बावुजूद उससे ज़िना सरज़द हुआ हो, या उसने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उसका बदला उसपर आता हो या वह दीन छोड़कर मुर्तद हो गया हो.

(६) जिससे उसका फ़ायदा हो.

(७) उस वक़्त उसका माल उसके सुपुर्द कर दो.

(८) इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया गया.

(९) जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों, यहूदियत हो या ईसाईयत या कोई और मिल्लत.

(१०) तौरात शरीफ़.

(११) यानी बनी इस्राईल.

(१२) और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब होने और सवाब और अज़ाब दिये जाने और अल्लाह का दीदार होने की तस्दीक़ करें.

सूरए अनआम - बीसवाँ रूकू

(१) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिसमें अत्यन्त भलाई, अत्यन्त फ़ायदे और अत्यन्त बरकतें है. और जो क़यामत तक बाक़ी रहेगा और रद्दो बदल, परिवर्तन और संशोधन वग़ैरह से मेहफ़ूज़ रहेगा.

وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

منزل ٢

ख़बर न थी[३] (१५६) या कहो कि अगर हमपर किताब उतरती तो हम उनसे ज़्यादा ठीक राह पर होते[४] तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रौशन दलील और हिदायत और रहमत आई[५] तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उनसे मुंह फेरे, बहुत जल्द वो जो हमारी आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बड़े अज़ाब की सज़ा देंगे बदला उनके मुंह फेरने का (१५७) काहे के इन्तिज़ार में हैं[६] मगर यह कि आएं उनके पास फ़रिश्ते[७] या तुम्हारे रब का अज़ाब या तुम्हारे रब की एक निशानी आए[८] जिस दिन तुम्हारे रब की वह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी[९] तुम फ़रमाओ रस्ता देखो[१०] हम भी देखते हैं (१५८) वो जिन्हों ने अपने दीन में अलग अलग राहें निकालीं और कई गिरोह होगए[११] ऐ मेहबूब तुम्हें उनसे कुछ इलाक़ा नहीं, उनका मामला अल्लाह ही के हवाले है फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वो करते थे[१२] (१५९) जो एक नेकी लाए तो उसके लिये उस जैसी दस हैं[१३] और जो बुराई लाए तो उसे बदला न

(२) यानी यहूदियों और ईसाईयों पर तौरात और इंजील.

(३) क्योंकि वह हमारी ज़बान ही में न थी, न हमें किसीने उसके मानी बताए. अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ उतार के उनके इस बहाने की काट फ़रमा दी.

(४) काफ़िरों की एक जमाअत ने कहा था कि यहूदियों और ईसाइयों पर किताबें उतरीं मगर वो बदअक़्ली में गिरफ़्तार रहे, उन किताबों से नफ़ा न उठा सके. हम उनकी तरह कमअक़्ल और नादान नहीं हैं. हमारी अक़्लें सही हैं. हमारी अक़्ल और समझ बूझ ऐसी है कि अगर हमपर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते. क़ुरआन उतार कर उनका यह बहाना भी काट दिया गया. चुनांचे आगे इरशाद होता है.

(५) यानी यह क़ुरआने पाक जिसमें खुला तर्क और साफ़ बयान और हिदायत व रहमत है.

(६) जब वहदानियत और रिसालत पर ज़बरदस्त तर्क क़ायम हो चुके, और कुफ़्र व गुमराही के अक़ीदों का झूट ज़ाहिर कर दिया गया, तो अब ईमान लाने में क्यों हिचकिचाहट है, क्या इन्तिज़ार बाक़ी है.

(७) उनकी रूहें निकालने के लिये.

(८) क़यामत की निशानियों में से. अक्सर मुफ़स्सिरों के नज़दीक इस निशानी से सूरज का पश्चिम से निकलना मुराद है. तिरमिज़ी की हदीस में भी ऐसी ही आया है. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत क़ायम न होगी जबतक सूरज पश्चिम से न निकले और जब वह पश्चिम से निकलेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और यह ईमान नफ़ा न देगा.

(९) यानी फ़रमाँबरदारी न की थी. मानी ये हैं कि निशानी आनेसे पहले जो ईमान न लाए, निशानी के बाद उसका ईमान क़ुबूल नहीं. इसी तरह जो निशानी से पहले तौबा न करे, निशानी के बाद उसकी तौबा क़ुबूल नहीं. जो ईमानदार पहले से नेक काम करते होंगे, निशानी के बाद भी उनके कर्म मक़बूल होंगे.

(१०) उनमें से किसी एक का यानी मौत के फ़रिश्तों का आगमन या अज़ाब या निशानी आने का.

(११) यहूदियों और ईसाइयों के जैसे. हदीस शरीफ़ में है, यहूदी ७१ सम्प्रदाय हो गए उनमें से सिर्फ़ एक निजात पाया हुआ है, बाक़ी सब दोज़ख़ी. और ईसाई बहत्तर सम्प्रदाय हो गए, एक निजात पाया हुआ, बाक़ी दोज़ख़ी. और मेरी उम्मत तेहत्तर सम्प्रदाय हो जाएगी, वो सब के सब दोज़ख़ी होंगे सिवाए एक के, जो बड़ी जमाअत है. और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे सहाबा की राह पर है.

(१२) और आख़िरत में उन्हें अपने किये का अंजाम मालूम हो जाएगा.

(१३) यानी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों का सवाब और यह भी सीमित तरीक़े पर नहीं, बल्कि अल्लाह तआला जिसके लिये जितना चाहे उसकी नेकियों को बढ़ाए. एक के सात सौ करे या बेहिसाब अता फ़रमाए. अस्ल यह है कि नेकियों का सवाब केवल

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۚ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

मिलेगा मगर उसके बराबर और उनपर ज़ुल्म न होगा﴿१६०﴾ तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने सीधी राह दिखाई[१४] ठीक इब्राहीम के दीन की मिल्लत जो हर बातिल से अलग थे, और मुश्रिक न थे[१५]﴿१६१﴾ तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है जो रब सारे जगत का﴿१६२﴾ उसका कोई शरीक नहीं मुझे यही हुक्म हुआ है और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ[१६]﴿१६३﴾ तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूँ हालांकि वह हर चीज़ का रब है[१७] और जो कोई कुछ कमाए वह उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[१८] फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है[१९] वह तुम्हें बता देगा जिसमें विरोध करते थे ﴿१६४﴾ और वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया[२०] तुम में एक को दूसरे पर दर्जों बलन्दी दी[२१] कि तुम्हें आज़माए[२२] उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है﴿१६५﴾

फ़ज़्ल है. यही मज़हब है एहले सुन्नत का और बुराई की उतनी ही सज़ा, यहे इन्साफ़ है.

(१४) यानी इस्लाम जो अल्लाह को मक़बूल है.

(१५) इसमें क़ुरैश के काफ़िरों का रद है जो गुमान करते थे कि वो हज़रत इब्राहीम के दीन पर हैं. अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुश्रिक और बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकों का यह दावा कि वह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं, बातिल है.

(१६) अव्वलियत या तो इस ऐतिबार से है कि नबियों का इस्लाम उनकी उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ऐतिबार से कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारी सृष्टि में पहले हैं तो ज़रूर मुसलमानों यानी इस्लाम वालों में अव्वल हुए.

(१७) काफ़िरों ने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि आप हमारे दीन की तरफ़ लौट आइये और हमारे मअबूदों की इबादत कीजिये. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरह कहता था कि मेरा रास्ता इख़्तियार करो. इसमें अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गर्दन पर. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि वह रस्ता बातिल है. ख़ुदाशनास किस तरह गवारा कर सकता है कि अल्लाह के सिवा किसी और को रब बताए और यह भी बातिल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके.

(१८) हर शख़्स की पकड़ उसके अपने गुनाह में होगी, दूसरे के गुनाह में नहीं.

(१९) क़यामत के दिन.

(२०) क्योंकि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं. आपके बाद कोई नबी नहीं और आपकी उम्मत आख़िरी उम्मत है, इसलिये उनको ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि उसके मालिक हों.

(२१) शक्ल सूरत में, हुस्नो जमाल में, रिज़्क़ व माल में, इल्म व अक़्ल में, क़ुव्वत और कलाम में.

(२२) यानी आज़माइश में डाले कि तुम इज़्ज़त और शान की नेअमत पाकर कैसे शुक्रगुज़ार रहते हो और आपस में एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो.

७ - सूरतुल अअराफ़

सूरए अअराफ़ मक्का में उतरी, इसमें दो सौ छ आयतें और चौबीस रूकू हैं.

पहला रुकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) अलिफ़-लाम-मीम-सॉद,﴾१﴿ ऐ मेहबूब ! एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी उससे न रूके(२) इसलिये कि तुम उससे डर सुनाओ और मुसलमानों को नसीहत﴾२﴿ ऐ लोगो उसपर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा(३) और उसे छोड़कर और हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो﴾३﴿ और कितनी ही बस्तियां हमने हलाक कीं(४) तो उनपर हमारा अज़ाब रात में आया या जब वो दोपहर को सोते थे(५)﴾४﴿ तो उनके मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अज़ाब उनपर आया मगर यही बोले कि हम ज़ालिम थे(६)﴾५﴿ तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है जिनके पास रसूल गए(७) और बेशक हमें पूछना है रसूलों से(८)﴾६﴿ तो ज़रूर हम उनको बता देंगे(९) अपने इल्म से और हम कुछ ग़ायब न थे﴾७﴿ और उस दिन तौल ज़रूर होनी है(१०) तो जिनके पल्ले भारी हुए(११) वही मुराद को पहुंचे﴾८﴿ और जिनके पल्ले हलके हुए(१२) तो वही हैं जिन्होंने अपनी जान

७ - सूरए अअराफ़ - पहला रूकू

(१) यह सूरत मक्कए मुकर्रमा में उतरी. एक रिवायत में है कि यह सूरत मक्की है, सिवाय पाँच आयतों के, जिनमें से पहली *"व असअलुहुम अनिल क़रयतिल्लती"* है. इस सूरत में दो सौ छ आयतें, चौबीस रूकू, तीन हज़ार तीन सौ पच्चीस कलिमे और चौदह हज़ार दस हुरूफ़ हैं.

(२) इस ख़याल से कि शायद लोग न मानें और इससे अलग रहें और इसे झुटलाने पर तुले हों.

(३) यानी क़ुरआन शरीफ़, जिसमें हिदायत व नूर का बयान है. ज़ुजाज ने कहा कि अनुकरण करो क़ुरआन का और उस चीज़ का जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लाए, क्योंकि यह सब अल्लाह का उतारा हुआ है, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया *"मा आताकुमुर्रसूलो फ़ख़ुज़ूहो.."* यानी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएं उसे अपना लो और जिससे मना फ़रमाएं उससे बाज़ रहो.

(४) अब अल्लाह के हुक्म का अनुकरण छोड़ने और उससे आँख फेरने के नतीजे पिछली क़ौमों के हालात में दिखाए जाते हैं.

(५) मानी ये हैं कि हमारा अज़ाब ऐसे वक़्त आया जबकि उन्हें ख़याल भी न था. या तो रात का वक़्त था, और वो आराम की नींद सोते थे, या दिन में क़ैलूले का वक़्त था, और वो राहत में मसरूफ़ थे. न अज़ाब उतरने की कोई निशानी थी, न क़रीना, कि पहले से अगाह होते. अचानक आ गया. इससे काफ़िरों को चेतावनी दी जाती है कि वो अम्न और राहत के साधनों पर घमण्ड न करें. अल्लाह का अज़ाब जब आता है तो अचानक आता है.

(६) अज़ाब आने पर उन्होंने अपने जुर्म का ऐतिराफ़ किया और उस वक़्त का ऐतिराफ़ भी कोई फ़ायदा नहीं देता.

(७) कि उन्होंने रसूलों की दअवत का क्या जवाब दिया और उनके हुक्म की क्या तामील आर्थात अनुकरण किया.

(८) कि उन्होंने अपनी उम्मतों को हमारे संदेश पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया.

(९) रसूलों को भी और उनकी उम्मतों को भी कि उन्होंने दुनिया में क्या किया.

(१०) इस तरह कि अल्लाह तआला एक तराज़ू क़ायम फ़रमाएगा जिसका हर पलड़ा इतना विस्तृत होगा जितना पूर्व और पश्चिम के बीच विस्तार है. इब्ने जौज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने तराज़ू (मीज़ान) देखने की दरख़्वास्त की . जब मीज़ान दिखाई गई और आपने उसके पलड़ों का विस्तार देखा तो अर्ज़ किया यारब, किसकी ताक़त है कि इनको नेकियों से भर सके. इरशाद हुआ कि ऐ दाऊद, मैं जब अपने बन्दों से राज़ी होता हूँ तो एक खजूर से इसको भर देता हूँ. यानी थोड़ी सी नेकी भी क़ुबूल हो जाए तो अल्लाह के फ़ज़्ल से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे.

(११) नेकियाँ ज़्यादा हुई.

بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ
جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ ع
وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ
اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ط لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ط
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ج خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ
طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ
اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآئِلِهِمْ ط وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ

घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे[१३]﴾९﴿ और बेशक हमने तुम्हें ज़मीन में जमाव बनाए[१४] बहुत ही कम शुक्र करते हो[१५]﴾१०﴿

दूसरा रूकू

और बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, यह सज्दे वालों में न हुआ﴾११﴿ फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तूने सज्दा न किया जब मैंने हुक्म दिया था[१] बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[२]﴾१२﴿ फ़रमाया तू यहाँ से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रहकर घमण्ड करे निकल[३] तू है ज़िल्लत वालों में[४]﴾१३﴿ बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं﴾१४﴿ फ़रमाया तुझे मोहलत है[५]﴾१५﴿ बोला तो क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उनकी ताक में बैठूंगा[६]﴾१६﴿ फिर ज़रूर मैं उनके पास आऊंगा उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाएं और उनके बाएं से[७] और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न

(१२) और उनमें कोई नेकी न हुई. यह काफ़िरों का हाल होगा जो ईमान से मेहरूम है और इस वजह से उनका कोई अमल मक़बूल नहीं.
(१३) कि उनको छोड़ते थे, झुटलाते थे, उनकी इताअत से मुंह मोड़ते थे.
(१४) और अपनी मेहरबानी से तुम्हें राहतें दीं, इसके बावुजूद तुम...
(१५) शुक्र की हक़ीक़त, नेअमत का तसव्वुर और उसका इज़्हार है और नाशुक्री, नेअमत को भूल जाना और उसको छुपाना.

सूरए अअराफ़ - दूसरा रूकू

(१) इससे साबित होता है कि हुक्म अनिवार्यता के लिये होता है और सज्दा न करने का कारण दरियाफ़्त फ़रमाना तौबीख़ के लिये है, और इसलिये कि शैतान की दुश्मनी और उसका कुफ़्र और घमण्ड और अपनी अस्ल पर गर्व करना और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के अस्ल का निरादर करना ज़ाहिर हो जाए.
(२) इससे उसकी मुराद यह थी कि आग मिट्टी से उत्तम और महान है तो जिसकी अस्ल आग होगी वह उससे उत्तम होगा जिसकी अस्ल मिट्टी हो. और उस ख़बीस का यह ख़याल ग़लत और बातिल है, क्योंकि अफ़ज़ल वह है जिसे मालिक व मौला फ़ज़ीलत दे. फ़ज़ीलत का आधार अस्ल व जौहर पर नहीं, बल्कि मालिक की फ़रमाँबरदारी पर है. और आग का मिट्टी से उत्तम होना, यह भी सही नहीं है, क्योंकि आग में क्रोध और तेज़ी और ऊंचाई छूने की हविस है. यह कारण घमण्ड का होता है. और मिट्टी से इल्म, हया और सब्र का आदर प्राप्त होता है. मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं, आग से नष्ट, मिट्टी अमानतदार है, जो चीज़ उसमें रखी जाए, उसको मेहफ़ूज़ रखे और बढ़ाए. आग फ़ना कर देती है. इसके बावुजूद लुत्फ़ यह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती. इसके अलावा इब्लीस की मूर्खता और कटुता यह कि उसने खुले प्रमाण के होते हुए उसके मुक़ाबले में अपने अन्दाज़े से काम लेना चाहा और जो अन्दाज़ा खुले हुक्म और प्रमाण के ख़िलाफ़ हो वह ज़रूर मरदूद है.
(३) जन्नत से, कि यह जगह फ़रमाँबरदारी और विनम्रता वालों के लिये है, इन्कार और सरकशी करने वालों की नहीं.
(४) कि इन्सान तेरा तिरस्कार करेगा और हर ज़बान तुझपर लअनत करेगी और यही घमण्ड वाले का अंजाम है.
(५) और इस मुद्दत की मोहलत सूरए हिज्र में बयान फ़रमाई गई *''इन्नका मिनल मुन्ज़रीना इला यौमिल वक़्तिल मअलूम''* तू उनमें है जिनको उस मअलूम वक़्त के दिन तक मोहलत है. (सूरए हिज्र, आयत ३७). और यह वक़्त पहली बार के सूर फूंके जाने का है, जब सब लोग मर जाएंगे. शैतान ने मुर्दों के ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और इससे उसका मतलब यह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए. यह क़ुबूल न हुआ और पहले सूर तक की मोहलत दी गई.
(६) कि बनी आदम के दिल में वसवसे डालूं और उन्हें बातिल की तरफ़ माइल करूं, गुनाहों की रुचि दिलाऊं, तेरी इताअत और इबादत से रोकूं, और गुमराही में डालूं.

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ
مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ وَيَا آدَمُ
اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا
وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا
مِن سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا
مِنَ الْخَالِدِينَ ۝ وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ
النَّاصِحِينَ ۝ فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن
وَرَقِ الْجَنَّةِ ۖ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن
تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ
مُّبِينٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ

पाएगा[८] ﴿१७﴾
फ़रमाया यहाँ से निकल जा रद किया गया, रांदा हुआ, ज़रूर जो उनमें से तेरे कहे पर चला मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा[९] ﴿१८﴾ और ऐ आदम तू और तेरा जोड़ा[१०] जन्नत में रहो तो उससे जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना कि हद से बढ़ने वालों में होगे ﴿१९﴾ फिर शैतान ने उनके जी में ख़तरा डाला कि उनपर खोलदे उनकी शर्म की चीज़ें[११] जो उनसे छुपी थीं[१२] और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसी लिये मना फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़रिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले[१३] ﴿२०﴾ और उनसे क़सम खाई कि मैं तुम दोनों का भला चाहने वाला हूँ ﴿२१﴾ तो उतार लाया उन्हें धोखे से[१४] फिर जब उन्होंने वह पेड़ चखा उनपर उनकी शर्म की चीज़ें खुल गईं[१५] और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे, और उन्हें उनके रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें इस पेड़ से मना न किया और न फ़रमाया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है ﴿२२﴾ दोनों ने अर्ज़ की ऐ रब हमारे हमने अपना

(७) यानी चारों तरफ़ से उन्हें घेर कर सीधी राह से रोकूंगा.
(८) चूंकि शैतान बनी आदम को गुमराह करने और वासनाओं तथा बुराइयों में गिरफ़्तार करने में अपनी अत्यन्त कोशिश ख़र्च करने का इरादा कर चुका था, इसलिये उसे गुमान था कि वह बनी आदम को बहका लेगा, उन्हें धोखा देकर अल्लाह की नेअमतों के शुक्र और उसकी फ़रमाँबरदारी से रोक देगा.
(९) तुझको भी और तेरी सन्तान को भी, और तेरा अनुकरण करने वाले आदमियों को भी, सबको जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा. शैतान को जन्नत से निकाल देने के बाद हज़रत आदम को ख़िताब फ़रमाया जो आगे आता है.
(१०) यानी हज़रत हव्वा.
(११) यानी ऐसा वसवसा डाला कि जिसका नतीजा यह हो कि वो दोनों आपस में एक दूसरे के सामने नंगे हो जाएं. इस आयत से यह मसअला साबित हुआ कि वह जिस्म जिसको औरत कहते हैं उसका छुपाना ज़रूरी और खोलना मना है. और यह भी साबित हुआ कि उसका खोलना हमेशा से अक़्ल के नज़दीक ख़राब और तबीअत के नागवार रहा है.
(१२) इससे मालूम हुआ कि इन दोनों साहिबों ने अबतक एक दूसरे का मुंह न देखा था.
(१३) कि जन्नत में रहो और कभी न मरो.
(१४) मानी ये हैं कि इब्लीस मलऊन ने झूटी क़सम खाकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को धोखा दिया और पहला झूटी क़सम खानेवाला इब्लीस ही है. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को गुमान भी न था कि कोई अल्लाह की क़सम खाकर झूट बोल सकता है.
(१५) और जन्नती लिबास जिस्म से अलग हो गए और उनमें एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका. उस वक़्त तक उनमें से किसी ने ख़ुद भी अपना छुपा हुआ बदन न देखा था और न उस वक़्त तक इसकी ज़रूरत ही पेश आई थी.
(१६) ऐ आदम और हव्वा, अपनी सन्तान समेत जो तुम में है.

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ
اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ
فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ
قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ
وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا
وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۗ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

आप बुरा किया तो अगर तू हमें बख़्शे और हमपर रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़सान वालों में हुए﴾२३﴿ फ़रमाया उतरो[१६] तुम में एक दूसरे का दुश्मन है और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरतना है﴾२४﴿ फ़रमाया उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में उठाए जाओगे[१७]﴾२५﴿

तीसरा रूकू

ऐ आदम की औलाद बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वह कि तुम्हारी आरायश(सजावट) हो[१] और परहेज़गारी का लिबास वह सब से भला[२] यह अल्लाह की निशानीयों में से है कि कहीं वो नसीहत मानें﴾२६﴿ ऐ आदम की औलाद[३] ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने(मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त(स्वर्ग) से निकाला उतरवा दिये उनके लिबास कि उनकी शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं, बेशक वह और उसका कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देखते[४] बेशक हमने शैतानों को उनका दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते﴾२७﴿ और जब कोई बेहयाई करें[५] तो कहते हैं हमने इसपर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इसका हुक्म दिया[६] तो फ़रमाओ

(१७) क़यामत के दिन हिसाब के लिये.

सूरए अअराफ़ - तीसरा रूकू

(१) यानी एक लिबास तो वह है जिससे बदन छुपाया जाए और गुप्तांग ढके जाएं और एक लिबास वह है जिससे ज़ीनत और श्रृंगार हो और यह भी उचित कारण है .

(२) परहेज़गारी का लिबास ईमान, शर्म, नेक आदतें, अच्छे कर्म हैं. यह बेशक ज़ाहिरी श्रृंगार के लिबास से बेहतर हैं.

(३) शैतान की हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के साथ दुश्मनी का बयान फ़रमाकर बनी आदम को चेतावनी दी जा रही है और होशियार किया जारहा है कि वह शैतान के वसवसे और उसके छलकपट और बहकावे से बचते रहें. जो हज़रत आदम के साथ ऐसा धोखा कर चुका है वह उनकी औलाद के साथ कब चूकने वाला है.

(४) अल्लाह तआला ने जिन्नों को ऐसी समझ दी है कि वो इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसी दृष्टि नहीं मिली कि वो जिन्नों को देख सकें. हदीस शरीफ़ में है कि शैतान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर जाता है. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अगर शैतान ऐसा है कि वह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते, तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उसको देखता है और वह उसे न देख सके यानी अल्लाह करीम, सत्तार, रहीम, ग़फ़्फ़ार से मदद चाहो.

(५) और कोई बुरा काम या गुनाह उनसे हो, जैसा कि जिहालत के दौर में लोग, मर्द और औरत, नंगे होकर काबे का तवाफ़ करते थे. अता का क़ौल है कि बेहयाई शिर्क है और हक़ीक़त यह है कि हर बुरा काम और तमाम गुनाह छोटे बड़े इसमें दाख़िल हैं. अगरचे यह आयत ख़ास नंगे होकर तवाफ़ करने के बारे में आई हो. जब काफ़िरों की ऐसी बेहयाई के कामों पर उनकी कटु आलोचना की गई तो इसपर उन्होंने जो कहा वह आगे आता है.

(६) काफ़िरों ने अपने बुरे कामों के दो बहाने बयान किये, एक तो यह कि उन्होंने अपने बाप दादा को यही काम करते पाया, लिहाज़ा उनके अनुकरण में ये भी करते हैं. यह तो जाहिल बदकार का अनुकरण हुआ और यह किसी समझ वाले के नज़दीक जायज़ नहीं. अनुकरण किया जाता है इल्म और तक़वा वालों का, न कि जाहिल गुमराह का. दूसरा बहाना उनका यह था कि अल्लाह ने उन्हें इन कामों का हुक्म दिया है. यह केवल झूट और बोहतान था . चुनांचे अल्लाह तआला रद फ़रमाता है.

(७) यानी जैसे उसने तुम्हें शून्य से अस्तित्व दिया ऐसे ही मौत के बाद ज़िन्दा फ़रमाएगा. ये आख़िरत की ज़िन्दगी का इन्कार करने

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِيْمُوْا
وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۬ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَرِيْقًا هَدٰى
وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ
كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾
قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا

منزل ۲

बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या अल्लाह पर वह बात लगाते हो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं﴾२८﴿ तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उसकी इबादत करो निरे उसके वैसे होकर जैसे उसने तुम्हारा आग़ाज़(आरम्भ) किया वैसे ही पलटोगे[७]﴾२९﴿ एक फ़िरक़े(समुदाय) को राह दिखाई[८] और एक फ़िरक़े की गुमराही साबित हुई[९] उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को वाली(सरपरस्त) बनाया[१०] और समझते यह हैं कि वो राह पर हैं﴾३०﴿ ऐ आदम की औलाद, अपनी ज़ीनत(सजावट) लो जब मस्जिद में आओ[११] और खाओ पियो[१२] और हद से न बढ़ो, बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं﴾३१﴿

चौथा रूकू

तुम फ़रमाओ, किस ने हराम की अल्लाह की वह ज़ीनत जो उसने अपने बन्दों के लिये निकाली[१] और पाक रिज़्क़(रोज़ी)[२], तुम फ़रमाओ कि वह ईमान वालों के लिये है दुनिया में और क़यामत में तो ख़ास उन्हीं की है हम यूंही मुफ़स्सल(विस्तार से) आयतें बयान करते हैं[३] इल्म वालों के लिये[४]﴾३२﴿ तुम फ़रमाओ, मेरे रब ने तो बेहयाइयां हराम फ़रमाई हैं[५] जो उनमें खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक़ ज़ियादती और यह[६] कि अल्लाह का शरीक करो जिसकी

वालों पर तर्क है और इससे यह भी मालूम होता है कि जब उसीकी तरफ़ पलटना है और वह कर्मों का बदला देगा तो फ़रमाँबरदारी और इबादतों को उसके लिये विशेष करना ज़रूरी है.

(८) ईमान और अल्लाह की पहचान की और उन्हें फ़रमाँबरदारी और इबादत की तौफ़ीक़ दी.

(९) वो काफ़िर हैं.

(१०) उनकी फ़रमाँबरदारी की, उनके कहे पर चले, उनके हुक्म से कुफ़्र और गुनाहों का रास्ता अपनाया.

(११) यानी सजधज और श्रंगार का लिबास. और एक कथन यह है कि कंघी करना, ख़ुशबू लगाना श्रंगार में दाख़िल है. और सुन्नत यह है कि आदमी अच्छी सूरत के साथ नमाज़ के लिये हाज़िर हो क्योंकि नमाज़ में रब से मांगना होता है, तो इसके लिये श्रंगार करना, इत्र लगाना मुस्तहब, जैसा कि गुप्तांग ढाँपना और पाकी वाजिब है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जाहिलियत के दौर में दिन में मर्द और औरतें नंगे होकर तवाफ़ करते थे. इस आयत में गुप्तांग छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इसमें दलील है कि गुप्तांग का ढाँपना नमाज़ व तवाफ़ और हर हाल में वाजिब है.

(१२) कल्बी का क़ौल है कि बनी आमिर हज के ज़माने में अपनी ख़ुराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त व चिकनाई तो बिल्कुल ही न छूते थे और इसको हज का आदर जानते थे. मुसलमानों ने उन्हें देखकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, हमें ऐसा करने का ज़्यादा हक़ है. इसपर उतरा कि खाओ और पियो, गोश्त हो या सिर्फ़ चिकनाई. और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो और वह यह है कि पेट भर जाने के बाद भी खाते रहो या हराम की पर्वाह न करो और यह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची है कि जो चीज़ अल्लाह तआला ने हराम नहीं की, उसको हराम कर लो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अनहुमा ने फ़रमाया जो चाहे खा और जो चाहे पहन, फ़ुज़ूल ख़र्ची और घमण्ड से बचता रह. इस आयत में दलील है कि खाने पीने की तमाम चीज़ें हलाल हैं, सिवाय उनके जिनपर शरीअत में हुरमत की दलील क़ायम हो क्योंकि यह क़ायदा निश्चत और सर्वमान्य है कि अस्ल तमाम चीज़ों में अबाहत है मगर जिसपर शरीअत ने पाबन्दी लगाई हो और उसकी हुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो.

सूरए अअराफ़ - चौथा रूकू

(१) चाहे लिबास हो या और ज़ीनत व श्रंगार का सामान.

(२) और खाने पीने की मज़ेदार चीज़ें. आयत में आम बयान है. हर खाने की चीज़ इसमें दाख़िल है कि जिसके हराम होने पर कोई खुला हुक्म न आया हो(ख़ाज़िन). तो जो लोग तोशा ग्यारहवीं, मीलाद शरीफ़, बुज़ुर्गों की फ़ातिहा, उर्स, शहादत की मजलिसों

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا [illegible]رِيْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ [illegible] خَلَتْ مِنْ

उसने सनद न उतारी और यह[७] कि अल्लाह पर वह बात कहो जिसका इल्म नहीं रखते﴿३३﴾ और हर गिरोह का एक वादा है[८] तो जब उनका वादा आएगा एक घड़ी न पीछे हो न आगे﴿३४﴾ ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आएं[९] मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़गारी करे[१०] और संवरे[११] तो उसपर न कुछ डर और न कुछ ग़म﴿३५﴾ और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं और उनके मुक़ाबले घमण्ड किया वो दोज़ख़ी हैं, उन्हें उसमें हमेशा रहना﴿३६﴾ तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूट बांधा या उसकी आयतें झुटलाईं उन्हें उनके नसीब का लिखा पहुंचेगा[१२] यहां तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए[१३] उनकी जान निकालने आएं तो उनसे कहते हैं कहां हैं वो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे, कहते हैं वो हम से गुम गए[१४] और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वो काफ़िर थे﴿३७﴾ अल्लाह उनसे[१५] फ़रमाता है कि तुमसे पहले जो और जमाअतें (दल)

वग़ैरह की शीरीनी, सबील के शरबत को वर्जित कहते हैं, वो इस आयत का ख़िलाफ़ करके गुनाहगार होते हैं और इसको अवैध कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और यही बिदअत और गुमराही है.

(३) जिनसे हलाल और हराम के अहकाम मालूम हों.

(४) जो ये जानते हैं कि अल्लाह एक है, उसका कोई शरीक नहीं है, वह जो हराम करे वही हराम है.

(५) यह सम्बोधन मुश्रिकों से है जो नंगे होकर काबे का तवाफ़ करते थे और अल्लाह तआला की हलाल की हुई पाक चीज़ों को हराम कर लेते थे. उनसे फ़रमाया जाता है कि अल्लाह तआला ने ये चीज़ें हराम नहीं कीं और उनसे अपने बन्दों को नहीं रोका. जिन चीज़ों को उसने हराम फ़रमाया वो ये हैं जो अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है. इनमें से बेहयाइयाँ हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई . यानी जिनका सम्बन्ध बातों से है या कर्मों से.

(६) हराम किया.

(७) हराम किया.

(८) निशिचित समय, जिसपर मोहलत ख़त्म हो जाती है.

(९) मुफ़स्सिरों के इसमें दो क़ौल हैं. एक तो यह कि "रूसुल" से तमाम रसूल मुराद हैं. दूसरा यह कि ख़ास सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं जो तमाम सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाए गए और बहुवचन सम्मान के लिये है.

(१०) मना की हुई चीज़ों से बचे.

(११) आज्ञा का पालन करे और इबादतें पूरी करे.

(१२) यानी जितनी उम्र और रोज़ी अल्लाह ने उनके लिये लिख दी है, उनको पहुंचेगी.

(१३) मौत का फ़रिश्ता और उसके सहायक, इन लोगों की उम्रें और रोज़ियाँ पूरी होने के बाद.

(१४) उनका कहीं नाम निशान ही नहीं.

(१५) उन काफ़िरों से क़यामत के दिन.

(१६) दोज़ख़ में.

قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ
أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا حَتّٰى إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا
قَالَتْ أُخْرٰىهُمْ لِأُولٰىهُمْ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا
فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولٰىهُمْ
لِأُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ
لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتّٰى
يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا

थीं जिन्न और आदमियों की, आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक दल(१६) दाख़िल होता है दूसरे पर लअनत करता है(१७) यहां तक कि जब सब उसमें जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे(१८) ऐ रब हमारे, इन्होंने हमको बहकाया था तो उन्हें आग का दूना अज़ाब दे, फ़रमाएगा, सबको दूना है(१९) मगर तुम्हें ख़बर नहीं(२०)﴿३८﴾ और पहले पिछलों से कहेंगे, तो तुम कुछ हमसे अच्छे न रहे(२१) तो चखो अज़ाब, बदला अपने किये का(२२)﴿३९﴾

पाँचवां रुकू

वो जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं और उनके मुक़ाबले में घमण्ड किया उनके लिये आसमान के दर्वाज़े न खोले जाएंगे(१) और न वो जन्नत में दाख़िल हों जबतक सुई के नाके ऊंट दाख़िल न हो(२) और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं(३)﴿४०﴾ उन्हें आग ही बिछौना और आग ही ओढ़ना(४) और ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं﴿४१﴾ और वो जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, वो जन्नत वाले हैं उन्हें

(१७) जो उसके दीन पर था तो मुश्रिकों पर लानत करेंगे और यहूदी यहूदीयों पर और ईसाई ईसाइयों पर.
(१८) यानी पहलों की निस्बत अल्लाह तआला से कहेंगे.
(१९) क्योंकि पहले ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि ख़ुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही अनुकरण करते रहे.
(२०) कि तुम में से हर पक्ष के लिये कैसा अज़ाब है.
(२१) कुफ़्र और गुमराही में दोनों बराबर हैं.
(२२) कुफ़्र का और बुरे कर्मों का.

सूरए अअराफ़ - पाँचवां रूकू

(१) न उनके कर्मों के लिये, न उनकी आत्माओं के लिये, क्योंकि उनके कर्म और आत्माएं दोनों ख़बीस हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरों की आत्माओं के लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और ईमान वालों की आत्माओं के लिये खोले जाते हैं. इब्ने जरीह ने कहा कि आसमान के दरवाज़े न काफ़िरों के अमल के लिये खोले जाएं न आत्माओं के लिये यानी न ज़िन्दगी में उनका अमल ही आसमान पर जा सकता है, न मौत के बाद आत्मा. इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि आसमान के दरवाज़े न खोले जाने के ये मानी हैं कि वह ख़ैर व बरकत और रहमत उतरने से मेहरूम रहते हैं.
(२) और यह असम्भव, तो काफ़िरों का जन्नत में दाख़िल होना असम्भव, क्योंकि असम्भव पर जो निर्भर हो वह असम्भव होता है. इससे साबित हुआ कि काफ़िरों का जन्नत से मेहरूम रहना यक़ीनी बात है.
(३) मुजरिमीन से यहाँ काफ़िर मुराद हैं क्योंकि ऊपर उनकी सिफ़त में अल्लाह की निशानियों को झुटलाने और उनसे घमण्ड करने का बयान हो चुका है.
(४) यानी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है.
(५) जो दुनिया में उनके बीच थे और तबीअतें साफ़ करदी गईं और उनमें आपस में न बाक़ी रही मगर महब्बत और भाई चारगी.

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ
نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا
لِهٰذَا ۙ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْٓا اَنْ
تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا
وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ الَّذِيْنَ
يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ
وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ
وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ

हमेशा उसी में रहना(४२) और हमने उनके सीनों में से कीने(द्वेष) खींच लिये(५) उनके नीचे नेहरें बहेंगी और कहेंगे(६) सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें इसकी राह दिखाई(७) और हम राह न पाते अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए(८) और निदा(पुकार) हुई कि यह जन्नत तुम्हें मीरास मिली(९) सिला(इनाम) तुम्हारे कर्मों का(४३) और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि हमें तो मिल गया जो सच्चा वादा हमसे हमारे रब ने किया था(१०) तो क्या तुमने भी पाया जो तुम्हारे रब ने(११) सच्चा वादा तुम्हें दिया था, बोले हां और बीच में मनादी(उदघोषक) ने पुकार दिया कि अल्लाह की लअनत ज़ालिमों पर(४४) जो अल्लाह की राह से रोकते हैं(१२) और उससे कजी(टेढ़ापन) चाहते हैं(१३) और आख़िरत का इन्कार रखते हैं(४५) और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है(१४) और अअराफ़(ऊंचाइयों) पर कुछ मर्द होंगे(१५) कि दोनों फ़रीक़(पक्षों) को उनकी परेशानियों से पहचानेंगे(१६)

हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह हम बद्र वालों के बारे में उतरा. और यह भी आप से रिवायत है कि आप ने फ़रमाया, मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तलहा और ज़ुबैर उनमें से हों जिनके बारे में अल्लाह तआला ने *''व नज़अना माफ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन''* (और हमने उनके सीनों में से कीने ख़ींच लिये) फ़रमाया . हज़रत अली मुरतज़ा के इस इरशाद ने राफ़ज़ियत की बुनियाद ही काटकर रख दी .

(६) ईमान वाले, जन्नत में दाख़िल होते वक़्त.

(७) और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिसका यह इनाम और सवाब है, और हमपर मेहरबानी और रहमत फ़रमाई और अपने करम से जहन्नम के अज़ाब से मेहफ़ूज़ किया.

(८) और जो उन्होंने हमें दुनिया में सवाब की ख़बरें दीं वो सब हमने ज़ाहिर देख लीं. उनकी हिदायत हमारे लिये अत्यन्त लुत्फ़ और करम की बात थी.

(९) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जब जन्नत में दाख़िल होंगे, एक पुकारने वाला पुकारेगा, तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है, कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरूस्ती है, कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये राहत है, कभी तंग हाल न होगे. जन्नत को मीरास फ़रमाया गया, इसमें इशारा है कि वह सिर्फ़ अल्लाह के करम से हासिल हुई.

(१०) और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान और फ़रमाँबरदारी पर इनाम और सवाब पाओगे.

(११) कुफ़्र और नाफ़रमानी पर अज़ाब का.

(१२) और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मना करते हैं.

(१३) यानी यह चाहते हैं कि अल्लाह के दीन को बदल दें और जो तरीक़ा अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है, उसमें परिवर्तन कर दें. (ख़ाज़िन)

(१४) जिसको अअराफ़ कहते हैं.

(१५) ये किस तबक़े के होंगे, इसमें विभिन्न कथन हैं. एक क़ौल तो यह है कि ये वो लोग होंगे जिनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर हों, वो आराम पर ठहरे रहेंगे. जब जन्नत वालों की तरफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ वालों की तरफ़ देखेंगे तो कहेंगे, यारब हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर. आख़िरकार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे. एक क़ौल यह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उनके माँ बाप उनसे नाराज़ थे, वो अअराफ़ में ठहराए जाएंगे. एक क़ौल यह है कि जो लोग ऐसे हैं कि उनके माँ बाप में से एक उनसे राज़ी हो, एक नाराज़, वो अअराफ़ में रखे जाएंगे. इन कथनों से मालूम होता है कि अअराफ़ वालों का दर्जा जन्नत वालों से कम है. मुजाहिद का क़ौल है कि अअराफ़ में नेक लोग, फ़क़ीर और उलमा होंगे और उनका वहाँ ठहरना इसलिये होगा कि दूसरे उनके दर्जे और बुज़ुर्गी को देखें. और एक क़ौल यह है कि अअराफ़ में नबी होंगे और वो उस ऊंचे मकाम में सारे क़यामत वालों पर

وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا وَمَا

منزل ٢

और वो जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुमपर ये[१७] जन्नत में न गए और इसका लालच रखते हैं﴿४६﴾ और जब उनकी[१८] आंखें दोज़ख़ियों की तरफ़ फिरेंगी कहेंगे ऐ रब हमारे हमें ज़ालिमों के साथ न कर﴿४७﴾

छटा रूकू

और अअराफ़ वाले कुछ मर्दों को[१] पुकारेंगे जिन्हें उनकी पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जत्था और वह जो तुम घमण्ड करते थे[२]﴿४८﴾ क्या ये हैं वो लोग[३] जिनपर तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह इनपर अपनी रहमत कुछ न करेगा[४] इनसे तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को डर न कुछ ग़म﴿४९﴾ और दोज़ख़ वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़(लाभ) दो या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया[५] कहेंगे बेशक अल्लाह ने इन दोनों को काफ़िरों पर हराम किया है﴿५०﴾ जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया[६] और दुनिया की ज़िन्दगी में उन्हें धोखा दिया[७] तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा हमारी आयतों से इन्कार

विशिष्ट किये जाएंगे और उनकी फ़ज़ीलत और महानता का इज़हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उनको देखें और वो उन सबके अहवाल और सवाब व अज़ाब की मात्रा का अवलोकन करें. इन क़ौलों पर अअराफ़ वाले जन्नतियों से अफ़ज़ल लोग होंगे क्योंकि वो बाक़ियों से दर्जे में महान हैं. इन तमाम कथनों में कोई टकराव नहीं है. इसलिये कि हो सकता है कि हर तबक़े के लोग अअराफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराए जाने की हिकमत अलग है.

(१६) दोनों पक्षों से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं. जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे काले और आँखें नीली, यही उनकी निशानियां हैं.

(१७) अअराफ़ वाले अभी तक.

(१८) अअराफ़ वालों की.

सूरए अअराफ़ - छटा रूकू

(१) काफ़िरों में से.

(२) और अअराफ़ वाले ग़रीब मुसलमानों की तरफ़ इशारा करके काफ़िरों से कहेंगे.

(३) जिनको तुम दुनिया में हक़ीर या तुच्छ समझते थे, और....

(४) अब देख लो कि जन्नत के हमेशा के ऐश और राहत में किस इज़्ज़त और सम्मान के साथ हैं.

(५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब अअराफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी लालच आएगा और वो अर्ज़ करेंगे, यारब जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त अता फ़रमा कि हम उन्हें देखें, उनसे बात करें. इजाज़त दी जाएगी तो वो अपने रिश्तेदारों को जन्नत की नेअमतों में देखेंगे और पहचानेंगे. लेकिन जन्नत वाले उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्योंकि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ी हुई होंगी. तो वो जन्नतियों का नाम ले लेकर पुकारेंगे. कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को, और कोई कहेगा, मैं जल गया मुझपर पानी डालो और तुम्हें अल्लाह ने दिया है, खाने को दो, इसपर जन्नत वाले.

(६) कि हलाल और हराम में अपनी नफ़्सानियत के ग़ुलाम हुए, जब ईमान की तरफ़ उन्हें दअवत दी गई तो हंसी उड़ाने लगे.

(७) इसकी लज़्ज़तों में आख़िरत को भूल गए.

(८) क़ुरआन शरीफ़.

كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ
فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا
لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ
وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ
تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾

منزل ٢

करते थे ﴿५१﴾ और बेशक हम उनके पास एक किताब लाए[८] जिसे हमने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल (विस्तृत) किया हिदायत व रहमत ईमान वालों के लिये ﴿५२﴾ काहे की राह देखते हैं मगर इसकी कि इस किताब का कहा हुआ अन्जाम सामने आए जिस दिन इसका बताया हुआ अंजाम वाके होगा[९] बोल उठेंगे वो जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे[१०] कि बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए थे तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के ख़िलाफ़ करें[११] बेशक उन्होंने अपनी जानें नुक़सान में डालीं और उनसे खोए गए जो बोहतान (लांछन) उठाते थे[१२] ﴿५३﴾

सातवाँ रूकू

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन[१] छ दिन में बनाए[२] फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है[३] रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उसके पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उसके हुक्म के दबे हुए, सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जगत का ﴿५४﴾ अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं[४] ﴿५५﴾ और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ[५] उसके संवरने के बाद[६]

(९) और वह क़यामत का दिन है.
(१०) न उसपर ईमान लाते थे न उसके अनुसार अमल करते थे.
(११) यानी बजाय कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाय बुराई और नाफ़रमानी के ताअत और फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करें. मगर न उन्हें शफ़ाअत मिलेगी न दुनिया में वापस भेजे जाएंगे.
(१२) और झूट बकते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअत करेंगे. अब आख़िरत में उन्हें मालूम हो गया कि उनके ये दावे झूठे थे.

सूरए अअराफ़ - सातवाँ रूकू

(१) उन तमाम चीज़ों समेत जो उनके बीच है, जैसा कि दूसरी आयत में आया *"वलक़द ख़लक़नस समावाते वल अर्दा वमा बैनहुमा फ़ी सित्तते अय्यामिन"* (बेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिन में बनाया- सूरए क़ाफ़, आयत ३८)
(२) छः दिन से दुनिया के छः दिनों की मिक़दार मुराद है क्योंकि ये दिन तो उस वक़्त थे नहीं. सूरज ही न था, जिससे दिन होता और अल्लाह तआला क़ादिर था कि एक क्षण में या उससे कम में पैदा फ़रमाता. लेकिन इतने अर्से में उनकी पैदाइश फ़रमाना उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है और इससे बन्दों को अपने काम एक के बाद एक करने का सबक़ मिलता है.
(३) यह इस्तिवा मुतशाबिहात में से है, यानी क़ुरआन के वो राज़ जिनका इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को और उसके बताए से किसी और को है. हम इसपर ईमान लाते हैं कि अल्लाह तआला की इस "इस्तिवा" से जो मुराद है, वह हक़ है. हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इस्तिवा मालूम है और उसकी कैफ़ियत मजहूल और उसपर ईमान लाना वाजिब. आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इसके मानी ये हैं कि आफ़रीनश का ख़ात्मा अर्श पर जा ठहरा. अपने कलाम के राज़ अल्लाह ही बेहतर जाने.
(४) दुआ अल्लाह तआला से भलाई तलब करने को कहते हैं और यह इबादत में दाख़िल है, क्योंकि यह दुआ करने वाला अपने आपको आजिज़ व मोहताज और अपने परवर्दिगार को हक़ीक़ी क़ुदरत वाला और हाजत पूरी करने वाला मानता है, इसीलिये हदीस शरीफ़ में आया "अद दुआओ मुख़्ख़ुल इबादते" यानी दुआ इबादत का गूदा है. गिड़गिड़ाने से अपनी आजिज़ी और फ़रियाद मुराद है और दुआ का अदब यह है कि आहिस्ता दुआ करना, खुलेआम दुआ करने से सत्तर दर्जा ज़्यादा अफ़ज़ल है. इसमें उलमा का

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا
وَّطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٦
وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهٖ ۚ حَتّٰىٓ إِذَآ أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ
لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهٖ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۚ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۝٥٧ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ
بِإِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ
كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝٥٨
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ إِنِّيْٓ
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥٩ قَالَ
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهٖٓ إِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٠

और उससे दुआ करो डरते और तमा(लालच) करते, बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है(५६) और वही है कि हवाएं भेजता है उसकी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी सुनाती[७] यहां तक कि जब उठा लाएं भारी बादल हमने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया[८] फिर उससे पानी उतारा फिर उससे तरह तरह के फल निकाले . इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे[९] कहीं तुम नसीहत मानो(५७) और जो अच्छी ज़मीन है उसका सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है[१०] और जो ख़राब है उसमें नहीं निकलता मगर थोड़ा मुश्किल[११] से हम यूंही तरह तरह से आयतें बयान करते हैं[१२] उनके लिये जो एहसान मानें(५८)

आठवाँ रूकू

बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा[१] तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[२] उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद(आराध्य) नहीं[३] बेशक मुझे तुमपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है[४](५९) उसकी क़ौम से सरदार बोले बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं(६०) कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें गुमराही नहीं, मैं तो सारे जगत के रब का रसूल

इख़्तिलाफ़ है कि इबादतों में इज़हार अफ़ज़ल है, या इख़्फ़ा. कुछ कहते हैं कि इख़्फ़ा यानी छुपाना अफ़ज़ल है क्योंकि वह रिया यानी दिखावे से बहुत दूर है. कुछ कहते हैं कि इज़हार यानी ज़ाहिर करना, खोलना अफ़ज़ल है इसलिये कि इससे दूसरों को इबादत की रुचि पैदा होती है. तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उसके लिये इख़्फ़ा यानी छुपाना अफ़ज़ल है. और अगर दिल साफ़ हो, रिया का अन्देशा न हो तो इज़हार अफ़ज़ल है. कुछ हज़रात ये फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़हार अफ़ज़ल है. फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात का इज़हार करके देना ही अफ़ज़ल और नफ़्ल इबादतों में, चाहे वह नमाज़ हो या सदक़ा वग़ैरह, इनमें इख़्फ़ा बेहतर है. दुआ में हद से बढ़ना कई तरह होता है, इसमें से एक यह भी है कि बहुत बलन्द आवाज़ से चीख़े.

(५) कुफ़्र और बुराई और ज़ुल्म करके.

(६) नबियों के तशरीफ़ लाने, हक़ की दअवत फ़रमाने, अहकाम बयान करने, इन्साफ़ क़ायम फ़रमाने के बाद.

(७) बारिश और रहमत से यहाँ मेंह मुराद है.

(८) जहाँ बारिश न हुई थी, सब्ज़ा न जमा था.

(९) यानी जिस तरह मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बाद ज़िन्दगी अता फ़रमाता और उसको हराभरा और तरो ताज़ा करता है और उसमें खेती, दरख़्त, फल फूल पैदा करता है, ऐसे ही मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा करके उठाएगा, क्योंकि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उसे मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है. क़ुदरत की निशानी देख लेने के बाद अक़्ल वाले और सही समझ वाले को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कोई शक बाक़ी नहीं रहता.

(१०) यह ईमान वाले की मिसाल है. जिस तरह उमदा ज़मीन पानी से नफ़ा पाती है और उसमें फूल फल पैदा होते हैं उसी तरह जब मूमिन के दिल पर क़ुरआनी नूर की बारिश होती है तो वह उससे नफ़ा पाता है, ईमान लाता है, ताअतों और इबादतों से फलता फूलता है.

(११) यह काफ़िर की मिसाल है, जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़ा नहीं पाती, ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से फ़ायदा नहीं उठा पाता.

(१२) जो तौहीद और ईमान पर तर्क और प्रमाण हैं.

सूरए अअराफ़ - आठवाँ रूकू

(१) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम लमक है. वह मतूशलख़ के, वह अख़नूख़ अलैहिस्सलाम के फ़रज़न्द हैं. अख़नूख़ हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का नाम है. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चालीस या पचास साल की उम्र में नबुव्वत से सम्मानित किये

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

हूँ﴿६१﴾ तुम्हें अपने रब की रिसालतें (संदेश) पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह इल्म रखता हूँ जो तुम नहीं रखते﴿६२﴾ और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मारिफ़त (द्वारा)[५] कि वह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुमपर रहम हो﴿६३﴾ तो उन्होंने उसे[६] झुटलाया तो हमने उसे और जो[७] उसके साथ किश्ती में थे निजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को डुबो दिया, बेशक वह अंधा गिरोह था[८]﴿६४﴾

नवाँ रूकू

और आद की तरफ़[१] उनकी बिरादरी से हूद को भेजा[२] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[३]﴿६५﴾ उसकी क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं[४]﴿६६﴾ कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बेवक़ूफ़ी से क्या सम्बन्ध मैं तो परवर्दिगारे आलम का रसूल हूँ﴿६७﴾ तुम्हें अपने रब की

गए. ऊपर की आयतों में अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत की दलीलें और अपनी सनअत के चमत्कार बयान फ़रमाए जिनसे उसके एक होने और मअबूद होने का सुबूत मिलता है. और मरने के बाद उठने और ज़िन्दा होने की सेहत पर खुली दलीलें क़ायम कीं. इसके बाद नबियों का ज़िक्र फ़रमाता है और उनके उन मामलों का, जो उन्हें उम्मतों के साथ पेश आए. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि केवल आप ही की क़ौम ने हक़ क़ुबूल करने से इन्कार नहीं किया, बल्कि पहली उम्मतें भी इन्कार करती रहीं और नबियों को झुटलाने वालों का अंजाम दुनिया में हलाकत और आख़िरत में भारी अज़ाब है. इससे ज़ाहिर है कि नबियों को झुटलाने वाले अल्लाह के ग़ज़ब और प्रकोप के हक़दार होते हैं. जो व्यक्ति सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाएगा, उसका भी यही अंजाम होगा. नबियों के इन तज़किरों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत की ज़बरदस्त दलील है, क्योंकि हुज़ूर उम्मी थे यानी ज़ाहिर में पढ़े लिखे न थे. फिर आपका इन घटनाओं को तफ़सील से बयान करना, ख़ास तौर से ऐसे मुल्क में, जहाँ किताब वालों के उलमा काफ़ी मौजूद थे, और सख़्त विरोधी भी थे, ज़रासी बात पाते तो बहुत शोर मचाते, वहाँ हुज़ूर का इन घटनाओं को बयान करना और किताब वालों का ख़ामोश और स्तब्ध तथा आश्चर्य चकित रह जाना, खुली दलील है कि आप सच्चे नबी हैं और अल्लाह तआला ने आपपर उलूम के दर्वाज़े खोल दिये हैं.

(२) वही इबादत के लायक़ है.

(३) तो उसके सिवा किसी को न पूजो.

(४) क़यामत के दिन का या तूफ़ान के दिन का, अगर तुम मेरी नसीहत क़ुबूल न करो और सीधी राह पर न आओ.

(५) जिसको तुम ख़ूब जानते हो और उसके नसब को पहचानते हो.

(६) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को.

(७) उनपर ईमान लाए और.

(८) जिसे सत्य नज़र न आता था . हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि उनके दिल अन्धे थे, मअरिफ़त यानी रब को पहचानने के नूर से उनको फ़ायदा न था.

सूरए अअराफ़ - नवाँ रूकू

(१) यहाँ आद प्रथम मुराद है. यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम है, और आद द्वितीय हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम है, उसी को समूद कहते हैं. इन दोनों के बीच सौ बरस का फ़ासला है. (जुमल)

(२) हूद अलैहिस्सलाम ने.

(३) अल्लाह के अज़ाब का.

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِى الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

منزل٢

रिसालतें (संदेश) पहुंचाता हूँ और तुम्हारा मोअतमिद (विशवासपात्र) और भला चाहने वाला हूँ[५] ﴿६८﴾ और क्या तुम्हें इसका अचंभा हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में से एक मर्द की मअरिफ़त कि वह तुम्हें डराए और याद करो जब उसने तुम्हें नूह की क़ौम का जानशीन (उत्तराधिकारी) किया[६] और तुम्हारे बदन का फैलाव बढ़ाया[७] तो अल्लाह की नेअमतें याद करो[८] कि कहीं तुम्हारा भला हो ﴿६९﴾ बोले क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो[९] कि हम एक अल्लाह को पूजें और जो[१०] हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़दें तो लाओ[११] जिसका हमें वादा दे रहे हो अगर सच्चे हो ﴿७०﴾ कहा[१२] ज़रूर तुमपर तुम्हारे रब का अज़ाब और ग़ज़ब (क्रोध) पड़ गया[१३] क्या मुझसे ख़ाली इन नामों में झगड़ रहे हो जो तुमने अपने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये[१४] अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी, तो रास्ता देखो[१५] मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूँ ﴿७१﴾ तो हमने उसे और उसके साथ वालों को[१६] अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमाकर निजात दी[१७] और जो

(४) यानी रिसालत के दावे में सच्चा नहीं जानते.

(५) काफ़िरों का हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की शान में यह निरादर और अपमान का कलाम, कि तुम्हें बेवक़ूफ़ समझते हैं, झूटा ख़याल करते हैं, अत्यन्त दर्जे की बेअदबी और कमीनगी थी. और वो हक़दार इस बात के थे कि उन्हें सख़्त से सख़्त जवाब दिया जाता, मगर आपने अपने अख़लाक़ और अदब और विनम्रता की शान से जो जवाब दिया, उसमें मुक़ाबले की शान ही न पैदा होने दी और उनकी जिहालत से चश्मपोशी फ़रमाई. इससे दुनिया का सबक़ मिलता है कि गिरे हुए और ख़राब ख़सलत वाले लोगों से इस तरह सम्बोधन करना चाहिये. इसके साथ ही आपने अपनी रिसालत और ख़ैरख़्वाही और अमानत का ज़िक्र फ़रमाया. इससे यह मसअला मालूम हुआ कि इल्म और कमाल वाले को ज़रूरत के वक़्त अपने मन्सब और कमाल का ज़ाहिर करना जायज़ है.

(६) यह उसका कितना बड़ा एहसान है.

(७) और बहुत ज़्यादा क़ुव्वत और लंबा क़द प्रदान किया.

(८) और ऐसे नेअमत देने वाले पर ईमान लाओ और फ़रमाँबरदारी और इबादतें बजा लाकर उसके एहसान का शुक्र अदा करो.

(९) यानी अपने इबादत ख़ाने से. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम की बस्ती से अलग एक एकान्त जगह में इबादत किया करते थे. जब जब आपके पास वही आती तो क़ौम के पास आकर सुना देते.

(१०) बुत.

(११) वह अज़ाब.

(१२) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने.

(१३) और तुम्हारी सरकशी से तुमपर अज़ाब आना वाजिब और लाज़िम होगा.

(१४) और उन्हें पूजने लगे और मअबूद मानने लगे जबकि उनकी कुछ हक़ीक़त ही नहीं है और उलूहियत के मानी से बिल्कुल ख़ाली और अनजान है.

(१५) अल्लाह के अज़ाब का.

(१६) जो उनके अनुयायी थे और उनपर ईमान लाए थे.

(१७) उस अज़ाब से जो हूद क़ौम पर उतरा.

مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ
صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ
نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ
اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّ
بَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا
قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ
اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ
الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ
اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ
صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ

हमारी आयतें झुटलाते[१८] थे उनकी जड़ काट दी [१९]और वो ईमान वाले न थे﴾७२﴿

दसवाँ रूकू

और समूद की तरफ़[१] उनकी बिरादरी से सालेह को भेजा, कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से[२] रौशन दलील आई[३] यह अल्लाह का नाक़ा(ऊंटनी) है[४] तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ[५] कि तुम्हें दर्दनाक अज़ाब आएगा﴾७३﴿ और याद करो[६] जब तुमको आद का जानशीन किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो[७] और पहाड़ों में मकान तराशते हो[८] तो अल्लाह की नेअमतें याद करो[९] और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो﴾७४﴿ उसकी क़ौम के घमण्डी कमज़ोर मुसलमानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब के रसूल हैं बोले वह जो कुछ लेकर भेजे

(१८) और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को झुटलाते.

(१९) और इस तरह हलाक करदिया कि उनमें से एक भी न बचा. संक्षिप्त घटना यह है कि आद क़ौम अहक़ाफ़ में रहती थी जो अम्मान और हज़रमौत के बीच यमन इलाक़े में एक रेगिस्तान है. उन्होंने ज़मीन को फ़िस्क़(व्यभिचार) से भर दिया था, और दुनिया की क़ौमों को, अपनी जफ़ा-कारियों से, अपने ज़ोर और शक्ति के घमण्ड में कुचल डाला था. ये लोग बुत परस्त थे. उनके एक बुत का नाम सदा, एक का समूद, एक का हबा था. अल्लाह तआला ने उनमें हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को भेजा. आपने उन्हें तौहीद का हुक्म दिया, शिर्क और बुत परस्ती और ज़ुल्म और जफ़ाकारी से मना किया. इसपर वो लोग इन्कारी हुए, आपको झुटलाने लगे और कहने लगे हम से ज़्यादा बलवान कौन है. कुछ आदमी उनमें से हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए, वो थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रहते थे. उन ईमान लाने वालों में से एक शख़्स का नाम मुर्सिद बिन सअद बिन अदीर था, वह अपना ईमान छुपाए रखते थे. क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को झुटलाया और ज़मीन में फ़साद किया और सितमगारियों में ज़ियादती की और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाई. मालूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वो दुनिया में हमेशा ही रहेंगे. जब उनकी नौबत यहाँ तक पहुंची तो अल्लाह तआला ने बारिश रोक दी. तीन साल बारिश न हुई. अब वो बहुत मुसीबत में पड़े. उस ज़माने में दस्तूर यह था कि जब कोई बला या मुसीबत उतरती थी, तो लोग बैतुल्लाहिल हराम में हाज़िर होकर अल्लाह तआला से उसके दूर होने की दुआ करते थे. इसीलिये उन लोगों ने एक प्रतिनिधि मण्डल बैतुल्लाह को रवाना किया. इस प्रतिनिधि मण्डल में क़ील बिन अन्ज़ा और नईम बिन हज़ाल और मुर्सिद बिन सअद थे. ये वही साहिब हैं जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए थे और अपना ईमान छुपाए रखते थे. उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अमालीक़ की सुकूनत थी और उन लोगों का सरदार मुआविया बिन बक्र था. इस शख़्स का ननिहाल आद क़ौम में था. इसी नाते से यह प्रतिनिधि मण्डल मक्कए मुकर्रमा के हवाली में मुआविया बिन बक्र के यहाँ मुक़ीम हुआ. उसने उन लोगों का बहुत सम्मान किया, अच्छी आओ भगत की. ये लोग वहाँ शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे. इस तरह उन्होंने ऐशो आराम में एक महीना बसर किया. मुआविया को ख़याल आया कि ये लोग तो राहत में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए, जो वहाँ बला में फंसी हुई है. मगर मुआविया बिन बक्र को यह ख़याल भी था कि अगर वह इन लोगों से कहे तो शायद वो ये ख़याल करें कि अब इसको मेज़बानी भारी पड़ने लगी है. इसलिय उसने गाने वाली बांदी को ऐसे शेर दिये जिनमें आद क़ौम की हाजत का बयान था. जब बांदी ने वह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं. अब उन्हें ख़याल हुआ कि हरम शरीफ़ में दाख़िल होकर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ करें. उस वक़्त मुर्सिद बिन सअद ने कहा कि अल्लाह की क़सम तुम्हारी दुआ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की फ़रमाँबरदारी करो और अल्लाह तआला से तौबह करो तो बारिश होगी. उस वक़्त मुर्सिद ने अपने इस्लाम का इज़हार कर दिया. उन लोगों ने मुर्सिद को छोड़ दिया और ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जाकर दुआ की. अल्लाह तआला ने तीन बादल भेजे, एक

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا
عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ
قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ
لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ وَ لُوْطًا
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝

गए हम उसपर ईमान रखते हैं[१०]﴿७५﴾ घमण्डी बोले जिसपर तुम ईमान लाए हमें उससे इन्कार है﴿७६﴾ फिर[११] नाक़े की कूंचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह हमपर ले आओ[१२] जिसका तुम वादा कर रहे हो अगर तुम रसूल हो﴿७७﴾ तो उन्हें ज़लज़ले ने आलिया तो सुबह को अपने घरों में औंधे पड़े रह गए﴿७८﴾ तो सालेह ने उनसे मुंह फेरा[१३] और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत(संदेश) पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम भला चाहने वालों के ग़र्ज़ी(पसन्द करने वाले) ही नहीं﴿७९﴾ और लूत को भेजा[१४] जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या यह वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले जगत में किसी ने न की﴿८०﴾ तो मर्दों के पास शहवत(वासना) से जाते हो[१५] औरतें छोड़कर बल्कि तुम लोग हद से गुज़र गए[१६]﴿८१﴾ और उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यही कहना कि उन[१७] को अपनी बस्ती से निकाल दो ये लोग तो पाकीज़गी(पवित्रता) चाहते हैं[१८]﴿८२﴾ तो हमने उसे[१९] और उसके घर वालों को छुटकारा दिया मगर उसकी औरत वह रह जाने वालों में हुई[२०]﴿८३﴾

सफ़ेद, एक सुर्ख़, एक सियाह, और आसमान से पुकार हुई कि ऐ क़ील, अपने और अपनी क़ौम के लिये इनमें से एक बादल इख़्तियार कर. उसने काला बादल चुना, इस ख़याल से कि इससे बहुत सा पानी बरसेगा. चुनांचे वह अब्र आद क़ौम की तरफ़ चला और वो लोग उसको देखकर बहुत ख़ुश हुए. मगर उसमें से एक हवा चली. वह इस शिद्दत की थी कि ऊँटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी. यह देखकर वो लोग घरों में घुस गए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये. मगर हवा की तेज़ी से बच न सके. उसने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया. और अल्लाह की क़ुदरत से काली चिड़ियाँ आईं, जिन्होंने उनकी लाशों को उठाकर समन्दर में फेंक दिया. हज़रत हूद ईमान वालों को लेकर क़ौम से अलग हो गए थे. इसलिये वो सलामत रहे. क़ौम के हलाक होने के बाद ईमानदारों को साथ लेकर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उम्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआला की इबादत करते रहे.

सूरए अअराफ़ - दसवाँ रुकू

(१) जो हिजाज़ और शाम के बीच सरज़मीने हजर में रहते थे.

(२) मेरी नबुव्वत की सच्चाई पर.

(३) जिसका बयान यह है कि...

(४) जो न किसी पीठ में रही न किसी पेट में. न किसी नर से पैदा हुई, न मादा से, न गर्भ में रही न उसकी उत्पत्ति दर्जा व दर्जा पूरी हुई, बल्कि आद के तरीक़े के ख़िलाफ़ वह पहाड़ के एक पत्थर से यकायक पैदा हुई. उसकी यह पैदायश चमत्कार है. वह एक दिन पानी पीती है और तमाम समूद सम्प्रदाय एक दिन. यह भी एक चमत्कार है कि एक ऊंटनी एक क़बीले के बराबर पी जाए. इसके अलावा उसके पीने के रोज़ उसका दूध दोहा जाता था और वह इतना होता था कि सारे क़बीले को काफ़ी हो और पानी की जगह ले ले. यह भी चमत्कार. और तमाम वहशी जानवर और हैवानात उसकी बारी के रोज़ पानी पीने से रुके रहते थे. यह भी चमत्कार. इतने चमत्कार हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के सच्चे नबी होने की खुली दलीलें हैं.

(५) न मारो, न हंकाओ, अगर ऐसा किया तो यही नतीजा होगा.

(६) ऐ समूद क़ौम.

(७) गर्मी के मौसम में आराम करने के लिये.

(८) सर्दी के मौसम के लिये.

(९) और उसका शुक्र बजा लाओ.

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۷﴾

और हमने उनपर एक मेंह बरसाया[२१] तो देखो कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का[२२] (८४)

ग्यारहवाँ रूकू

और मदयन की तरफ़ उनकी बिरादरी से शुऐब को भेजा[१] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं, बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आई[२] तो नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटाकर न दो[३] और ज़मीन में इन्तिज़ाम के बाद फ़साद न फैलाओ यह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ (८५) और हर रास्ते पर यूं न बैठो की राहगीरों को डराओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको[४] जो उसपर ईमान लाए और उसमें कजी (टेढ़ापन) चाहो, और याद करो जब तुम थोड़े थे उसने तुम्हें बढ़ा दिया[५] और देखो[६] फ़सादियों का कैसा अंजाम हुआ (८६) और अगर तुम में एक गिरोह उसपर ईमान लाया जो मैं लेकर भेजा गया और एक गिरोह ने न माना[७] तो ठहरे रहो यहाँ तक कि अल्लाह हम में फ़ैसला करे,[८] और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर[९] (८७)

---

(१०) उनके दीन को क़ुबूल करते हैं, उनकी रिसालत को मानते हैं.

(११) समूद क़ौम ने.

(१२) वह अज़ाब.

(१३) जब कि उन्होंने सरकशी की. नक़्ल है कि इन लोगों ने बुध को ऊंटनी की कूँचें काटी थीं तो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम इसके बाद तीन दिन ज़िन्दा रहोगे. पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे पीले हो जाएंगे, दूसरे रोज़ लाल और तीसरे रोज़ काले. चौथे दिन अज़ाब आएगा. चुनांचे ऐसा ही हुआ, और इतवार को दोपहर के क़रीब आसमान से एक भयानक आवाज़ आई जिससे उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक हो गए.

(१४) जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे हैं, आप सदूम वालों की तरफ़ भेजे गए और जब आपके चचा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शाम की तरफ़ हिजरत की तो हज़रत इब्राहीम ने सरज़मीने फ़लस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम उरदुन में उतरे. अल्लाह तआला ने आपको समूद निवासियों की तरफ़ भेजा. आप उन लोगों को सच्चे दीन की तरफ़ बुलाते थे और बुरे काम से रोकते थे, जैसा कि आयत में ज़िक्र आता है.

(१५) यानी उनके साथ बुरा काम करते हो.

(१६) कि हलाल को छोड़कर हराम में पड़ गए और ऐसे ख़बीस और बुरे काम को अपनाया. इन्सान को जिन्सी जोश या काम वासना नस्ल मेहफ़ूज़ रखने और दुनिया की आबादी के लिये दी गई है और औरतों को इसका साधन बनाया गया है कि उनसे जाने पहचाने तरीक़े से शरीअत की सीमाओं में रहकर औलाद हासिल की जाए. जब आदमियों ने औरतों को छोड़कर उनका काम मर्दों से लेना चाहा तो वह हद से गुज़र गए और उन्होंने इस क़ुव्वत के सही उद्देश्य को ख़त्म कर दिया. मर्द को न गर्भ रहता है न वह बच्चा जनता [illegible] हमबिस्तरी करना शैतानी काम के सिवा और क्या है. उलमा का बयान है कि लूत क़ौम की बस्तियाँ बहुत ही हरी भरी और तरो ताज़ा थीं और वहाँ ग़ल्ले और फल कसरत से पैदा होते थे. दुनिया का दूसरा क्षेत्र इसके बराबर न था. इसलिये जगह जगह से लोग यहाँ आते थे और उन्हें परेशान करते थे. ऐसे वक़्त में इब्लीस लईन एक बूढ़े की सूरत में ज़ाहिर हुआ और उनसे कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस बहुतात से छुटकारा चाहते हो तो जब वो लोग आएं तो उनके साथ बुरा काम करो. इस तरह [illegible] बुरा काम उन्होंने शैतान से सीखा और उनके यहाँ इसका चलन हुआ.

(१७) यानी हज़रत लूत और उनके मानने वाले.

(१८) और पाकीज़गी ही अच्छी होती है. वही सराहनीय है. लेकिन इस क़ौम का स्तर इतना गिर गया था कि उन्होंने पाकीज़गी जैसी प्रशंसनीय विशेषता को ऐब क़रार दिया.

(१९) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को.

(२०) वह काफ़िरा थी और उसी क़ौम से महब्बत रखती थी.

(२१) अजीब तरह का, जिसमें ऐसे पत्थर बरसे कि गन्धक और आग से बने थे. एक क़ौल यह है कि बस्ती में रहने वाले, जो वहाँ ठहरे हुए थे, वो तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वो इस बारिश से हलाक कर दिये गए.

(२२) मुजाहिद ने कहा कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरे और उन्होंने अपना बाज़ू लूत क़ौम की बस्तियों के नीचे डाल कर उस टुकड़े को उखाड़ लिया और आसमान के क़रीब पहुंचकर उसको औंधा करके गिरा दिया . इसके बाद पत्थरों की बारिश की गई.

सूरए अअराफ़ - ग्यारहवाँ रूकू

(१) हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने.

(२) जिससे मेरी नबुव्वत व रिसालत यक़ीनी तौर पर साबित होती है . इस दलील से चमत्कार मुराद है.

(३) उनके हक़ ईमानदारी के साथ पूरे पूरे अदा करो.

(४) और दीन का अनुकरण करने में लोगों के रास्ते में अड़चन न बनो.

(५) तुम्हारी संख्या ज़्यादा कर दी तो उसकी नेअमत का शुक्र करो और ईमान लाओ.

(६) सबक़ सीखने के उद्देश्य से पिछली उम्मतों के हालात और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अंजाम देखो और सोचो.

(७) यानी अगर तुम मेरी रिसालत में विरोध करके दो सम्प्रदाय हो गए, एक सम्प्रदाए ने माना और एक इन्कारी हुआ.

(८) कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इज़्ज़त दे और उनकी मदद फ़रमाए और झुटलाने वालों और इन्कार करने वालों को हलाक करे और उन्हें अज़ाब दे.

(९) क्योंकि वह सच्चा हाकिम है.

पारा आठ समाप्त

قَالَ الْمَلَأُ ٩ — ٢٢٥ — الْأَعْرَاف ٧

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ
يٰشُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ
لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾
قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَ
بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ
إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا
كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا
هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ

منزل ٢

नवां पारा - क़ालल-मलउ
(सूरए अअराफ़ जारी)
ग्यारहवाँ रुकू (जारी)

उसकी क़ौम के घमण्डी सरदार बोले ऐ शुऐब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आजाओ, कहा(१०) क्या अगरचे हम बेज़ार हों(११)﴾८८﴿ ज़रूर हम अल्लाह पर झूठ बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आजाएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें इससे बचाया है(१२) और हम मुसलमानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर यह कि अल्लाह चाहे(१३) जो हमारा रब है, हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे है, अल्लाह ही पर भरोसा किया(१४) ऐ हमारे रब हम में और हमारी क़ौम में हक़(सच्चा) फ़ैसला कर(१५) और तेरा फ़ैसला सबसे बेहतर है﴾८९﴿ और उसकी क़ौम के काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐब के तावे(अधीन) हुए तो ज़रूर तुम नुक़सान में रहोगे﴾९०﴿ तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुबह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए(१६)﴾९१﴿ शुऐब को झुटलाने वाले मानो उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐब को झुटलाने वाले ही तबाही में पड़े﴾९२﴿ तो शुऐब ने उनसे मुंह

नवां पारा -
सूरए अअराफ़ - ग्यारहवाँ रुकू जारी

(१०) शुऐब अलैहिस्सलाम ने.

(११) मतलब यह है कि हम तुम्हारा दीन न क़ुबूल करेंगे और अगर तुमने हमपर ज़बरदस्ती की, जब भी न मानेंगे क्योंकि...

(१२) और तुम्हारे झूटे दीन के दोषों और ग़लत होने का इल्म दिया है.

(१३) और उसको हलाक करना मंज़ूर हो और ऐसा ही लिखा हो.

(१४) अपने सारे कामों में वही हमें ईमान पर क़ायम रखेगा, वही अक़ीदे और विश्वास को ज़्यादा और मज़बूत करेगा.

(१५) ज़ुजाज ने कहा कि इसके ये मानी हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे काम को ज़ाहिर फ़रमादे. मुराद इससे यह है कि इनपर ऐसा अज़ाब उतार जिससे इनका झूटा और ग़लती पर होना और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम और उनके अनुयाइयों का सच्चाई पर होना ज़ाहिर हो.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उनपर दोज़ख़ की शदीद गर्मी भेजी जिससे साँस बन्द हो गए. अब न उन्हें साया काम देता था, न पानी. इस हालत में वो तहख़ाने में दाख़िल हुए ताकि वहाँ कुछ अम्न मिले लेकिन वहाँ बाहर से ज़्यादा गर्मी थी. वहाँ से निकल कर जंगल की तरफ़ भागे. अल्लाह तआला ने एक बादल भेजा जिसमें बहुत ठण्डी और अच्छी लगने वाली हवा थी. उसके साए में आए और एक ने दूसरे को पुकार कर जमा कर लिया. मर्द औरतें बच्चे सब इकट्ठा हो गए, तो वह अल्लाह के हुक्म से आग बनकर भड़क उठा और वो उसमें इस तरह जल गए जैसे भाड़ में कोई चीज़ भुन जाती है. क़तादा का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को ऐका वालों की तरफ़ भी भेजा था और मदयन वालों की तरफ़ भी. ऐका वाले तो बादल से हलाक किये गए और मदयन वाले ज़लज़ले में गिरफ़्तार हुए और एक भयानक आवाज़ से हलाक हो गए.

أَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى
عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ
نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ
يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى
عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ
فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ اَنَّ
اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ
بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى
اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا
مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾
اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ

फेरा[१७] और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत (संदेश) पहुंचा चुका और तुम्हारे भले को नसीहत की[१८] तो कैसे ग़म करूं काफ़िरों का﴾९३﴿

बारहवाँ रूकू

और न भेजा हमने किसी बस्ती में कोई नबी[१] मगर यह कि उसके लोगों ने सख़्ती और तकलीफ़ में पकड़ा[२] कि वो किसी तरह ज़ारी करें[३] (रोएं)﴾९४﴿ फिर हमने बुराई की जगह भलाई बदल दी[४] यहाँ तक कि वो बहुत होगए[५] और बोले बेशक हमारे बाप दादा को रंज और राहत पहुंचे थे[६] तो हमने उन्हें अचानक उनकी ग़फ़लत में पकड़ लिया[७]﴾९५﴿ और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते[८] तो ज़रूर हम उनपर आसमान और ज़मीन से बरकतें खोल देते[९] मगर उन्होंने तो झुटलाया[१०] तो हमने उन्हें उनके किये पर गिरफ़्तार किया[११]﴾९६﴿ क्या बस्तियों वाले[१२] नहीं डरते कि उनपर हमारा अज़ाब रात को आए जब वो सोते हों﴾९७﴿ या बस्तियों वाले नहीं डरते कि उनपर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आए जब वो खेल रहे हों[१३]﴾९८﴿ क्या अल्लाह की छुपवाँ तदबीर (युक्ति) से बेख़बर हैं[१४] तो अल्लाह की छुपी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले[१५]﴾९९﴿

तेरहवाँ रूकू

और क्या वो जो ज़मीन के मालिकों के बाद उसके वारिस हुए उन्हें

(१७) जब उनपर अज़ाब आया.
(१८) मगर तुम किसी तरह ईमान न लाए.

सूरए अअराफ़ - बारहवाँ रूकू

(१) जिसको उसकी क़ौम ने न झुटलाया हो.
(२) दरिद्रता और तंगदस्ती और बीमारी में गिरफ़्तार किया.
(३) घमण्ड छोड़ें, तौबा करें, अल्लाह के आदेशों का पालन करें.
(४) कि सख़्ती और तकलीफ़ के बाद राहत और आसायश पहुंचना और बदनी व माली नेअमतें मिलना इताअत व शुक्रगुज़ारी चाहता है.
(५) उनकी तादाद भी ज़्यादा हुई और माल भी बढ़े.
(६) यानी ज़माने का दस्तूर ही यह है कि कभी तकलीफ़ होती है, कभी राहत. हमारे बाप दादा पर भी ऐसे हालात गुज़र चुके हैं. इससे उनका मक़सद यह था कि पिछला ज़माना जो सख़्तियों में गुज़रा है, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से कुछ फिटकार और सज़ा न थी. तो अपना दीन नहीं छोड़ना चाहिये. न उन लोगों ने सख़्ती और तकलीफ़ से कोई नसीहत हासिल की, न राहत और आराम से उनमें कोई शुक्र और फ़रमाँबरदारी की भावना पैदा हुई, वो ग़फ़लत में डूबे रहे.
(७) जब कि उन्हें अज़ाब का ख़याल भी न था . इन घटनाओं से सबक़ हासिल करना चाहिये. और बन्दों को गुनाह व सरकशी छोड़ कर, अपने मालिक की ख़ुशी और रज़ा चाहने वाला होना चाहिये.
(८) और ख़ुदा व रसूल की इताअत इख़्तियार करते और जिस चीज़ को अल्लाह और रसूल ने मना फ़रमाया, उससे रूके रहते.
(९) हर तरफ़ से उन्हें अच्छाई पहुंचती, वक़्त पर नफ़ा देने वाली बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फल कसरत से पैदा होते, रिज़्क़ की फ़राख़ी होती, अम्न व सलामती रहती, आफ़तों से महफ़ूज़ रहते.
(१०) अल्लाह के रसूलों को.
(११) और तरह तरह के अज़ाब में जकड़ा.
(१२) काफ़िर, चाहे वो मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हों या आस पास के, या कहीं और के.
(१३) और अज़ाब आने से ग़ाफ़िल हों.

أَهْلِهَآ أَن لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنٰهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ
عَلٰى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ تِلْكَ الْقُرٰى
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن
قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوبِ الْكٰفِرِينَ ۝ وَمَا
وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَإِن وَجَدْنَآ أَكْثَرَهُمْ
لَفٰسِقِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسٰى بِاٰيٰتِنَآ إِلٰى
فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهٖ فَظَلَمُوا بِهَا ۚ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عٰقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَقَالَ مُوسٰى يٰفِرْعَوْنُ إِنِّى
رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلٰٓى أَن لَّآ أَقُولَ
عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَآءِيلَ ۝ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ
بِاٰيَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝ فَأَلْقٰى

हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उनके गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं[१] और हम उनके दिलों पर मोहर करते हैं कि वो कुछ नहीं सुनते[२] ﴾१००﴿ ये बस्तियाँ हैं[३] जिनके अहवाल हम तुम्हें सुनाते हैं[४] और बेशक उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें[५] लेकर आए तो वो[६] इस क़ाबिल न हुए कि वो उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे[७] अल्लाह यूं ही छाप लगा देता है काफ़िरों के दिलों पर[८] ﴾१०१﴿ और उनमें अक्सर को हमने क़ौल का सच्चा न पाया[९] और ज़रूर उनमें अक्सर को बेहुक्म ही पाया ﴾१०२﴿ फिर उन[१०] के बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों[११] के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने उन निशानियों पर ज़ियादती की[१२] तो देखो कैसा अंजाम हुआ फ़साद फैलाने वालों का ﴾१०३﴿ और मूसा ने कहा ऐ फ़िरऔन मैं सारे जगत के रब का रसूल हूँ ﴾१०४﴿ मुझे सज़ावार (लाज़िम) है कि अल्लाह पर न कहूँ मगर सच्ची बात[१३] मैं तुम सबके पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ[१४] तो बनी इस्राईल को मेरे साथ छोड़ दे[१५] ﴾१०५﴿ बोला अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो लाओ अगर सच्चे हो ﴾१०६﴿ तो मूसा

(१४) और उसके ढील देने और दुनिया की नेअमत देने पर घमण्डी होकर, उसके अज़ाब से बे फ़िक्र हो गए.
(१५) और उसके सच्चे बन्दे उसका डर रखते है. रबीअ बिन ख़सीम की बेटी ने उनसे कहा, क्या कारण है, मैं देखती हूँ सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते . फ़रमाया, ऐ आँखों की रौशनी, तेरा बाप रात को सोने से डरता है, यानी यह कि ग़ाफ़िल होकर सोजाना कहीं अज़ाब का कारण न हो.

सूरए अअराफ़ - तेरहवाँ रूकू

(१) जैसा कि हमने उनके पूर्वजों को उनकी नाफ़रमानी के कारण हलाक किया.
(२) और कोई उपदेश व नसीहत नहीं मानते.
(३) हज़रत नूह की क़ौम और आद व समूद और हज़रत लूत की क़ौम और हज़रत शुऐब की क़ौम.
(४) ताकि मालूम हो कि हम अपने रसूलों की और उनपर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों यानी काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद किया करते हैं.
(५) यानी खुले चमत्कार.
(६) मरते दम तक.
(७) अपने कुफ़्र और झुटलाने पर जमे ही रहे.
(८) जिनकी निस्बत उसके इल्म में है कि कुफ़्र पर क़ायम रहेंगे और कभी ईमान न लाएंगे.
(९) उन्होंने अल्लाह के एहद पूरे न किये. उनपर जब भी कोई मुसीबत आती तो एहद करते कि यारब तू अगर हमें छुड़ा दे तो हम ज़रूर ईमान ले आएंगे. फिर जब छूट जाते तो एहद से फिर जाते. (मदारिक).
(१०) जिनका बयान हुआ वो नबी.
(११) यानी खुले चमत्कार, जैसे कि चमकती हथेली और ज़िन्दा होती लाठी वग़ैरह.
(१२) उन्हें झुटलाया और कुफ़्र किया.
(१३) क्योंकि रसूल की यही शान है, वो कभी ग़लत बात नहीं कहते और अल्लाह का संदेश पहुंचाने में उनका झूट संभव नहीं.
(१४) जिससे मेरा नबी होना साबित है और वह निशानी चमत्कार है.
(१५) और अपनी क़ैद से आज़ाद कर दे ताकि वो मेरे साथ पाक सरज़मीन में चले जाएं जो उनका वतन है.

عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ ثُعْبَانٌ مُّبِیْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ یَدَهٗ فَاِذَا
هِیَ بَیْضَآءُ لِلنّٰظِرِیْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ
فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِیْمٌ ﴿١٠٩﴾ یُّرِیْدُ اَنْ یُّخْرِجَكُمْ مِّنْ
اَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَ
اَرْسِلْ فِی الْمَدَآئِنِ حٰشِرِیْنَ ﴿١١١﴾ یَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ
عَلِیْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا
لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِیْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ
الْمُقَرَّبِیْنَ ﴿١١٤﴾ قَالُوْا یٰمُوْسٰٓی اِمَّآ اَنْ تُلْقِیَ وَاِمَّآ اَنْ
نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِیْنَ ﴿١١٥﴾ قَالَ اَلْقُوْا فَلَمَّآ اَلْقَوْا
سَحَرُوْٓا اَعْیُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ
عَظِیْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَیْنَآ اِلٰی مُوْسٰٓی اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ فَاِذَا
هِیَ تَلْقَفُ مَا یَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا
كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

ने अपना असा (लाठी) डाल दिया वह फ़ौरन एक अज़दहा (अजगर) हो गया[१६] ﴾१०७﴿ और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला तो वह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा[१७] ﴾१०८﴿

चौदहवाँ रूकू

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले यह तो एक इल्म वाला जादूगर है[१] ﴾१०९﴿ तुम्हें तुम्हारे मुल्क[२] से निकालना चाहता है, तो तुम्हारी क्या सलाह है ﴾११०﴿ बोले इन्हें और इनके भाई[३] को ठहरा और शहरों में लोग जमा करने वाले भेज दे ﴾१११﴿ कि हर इल्म वाले जादूगर को तेरे पास लेआएं[४] ﴾११२﴿ और जादूगर फ़िरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इनाम मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजयी) आएं ﴾११३﴿ बोला हाँ और उस वक़्त तुम मुक़र्रब (नज़दीकी) हो जाओगे ﴾११४﴿ बोले ऐ मूसा या तो[५] आप डालें या हम डालने वाले हों[६] ﴾११५﴿ कहा तुम्हीं डालो[७], जब उन्होंने डाला[८] लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डराया और बड़ा जादू लाए ﴾११६﴿ और हमने मूसा को वही फ़रमाई कि अपना असा (लाठी) डाल तो नागाह (अचानक) उनकी बनावटों को निगलने लगा[९] ﴾११७﴿ तो हक़ (सत्य) साबित हुआ और उनका काम बातिल (निरस्त) हुआ ﴾११८﴿ तो यहाँ वो मग़लूब (पराजित) पड़े और ज़लील होकर

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने असा डाला तो वह एक बड़ा अजगर बन गया, पीले रंग का. मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उसने ज़मीन पर रखा और एक शाही महल की दीवार पर. फिर उसने फ़िरऔन की तरफ़ रूख़ किया तो फ़िरऔन अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उसकी हवा निकल गई और लोगों की तरफ़ रूख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए. फ़िरऔन घर में जाकर चीख़ने लगा, ऐ मूसा, तुम्हें उसकी क़सम जिसने तुम्हें रसूल बनाया, इसको पकड़ लो, मैं तुमपर ईमान लाता हूँ और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को भेजे देता हूँ. हज़रत मूसा ने असा उठा लिया तो पहले की तरह लाठी ही था.

(१७) और उसकी रौशनी और चमक सूरज के प्रकाश पर ग़ालिब आ गई.

सूरए अअराफ़ - चौदहवाँ रूकू

(१) जिसने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों को लाठी अजगर नज़र आने लगी और गेहुँवाँ रंग का हाथ सूरज से ज़्यादा चमकदार मालूम होने लगा.

(२) मिस्र.

(३) हज़रत हारून.

(४) जो जादू में माहिर हो और सबसे योग्य . चुनांचे लोग रवाना हुए और आसपास के क्षेत्रों में तलाश करके जादूगरों को ले आए.

(५) पहले अपनी लाठी.

(६) जादूगरों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह अदब किया कि आपको पहल करने को कहा और आपकी इजाज़त के बिना अपने अमल या मंत्र तंत्र में मश्ग़ूल न हुए. इस अदब का बदला उन्हें यह मिला कि अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान और हिदायत से पुरस्कृत किया.

(७) यह फ़रमाना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का इसलिये था कि आप उनकी कुछ परवाह न करते थे और पक्का भरोसा रखते थे कि उनके चमत्कारों के सामने जादू नाकाम और परास्त होगा.

(८) अपना सामान, जिसमें बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे. तो वो अजगर नज़र आने लगे और मैदान उनसे भरा मालूम होने लगा.

(९) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी डाली तो वह एक बड़ा अजगर बन गई. इब्ने ज़ैद का कहना है कि यह

صٰغِرِيْنَ ۝ وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝
قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ
هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا
مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ
اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ اَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ
وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ
مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ

पलटे(११९) और जादूगर सिजदे में गिरा दिये गए[१०](१२०) बोले हम ईमान लाए जगत के रब पर(१२१) जो रब है मूसा और हारून का(१२२) फ़िरऔन बोला तुम उसपर ईमान लाए पहले इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ यह तो बड़ा जअल(धोखा) है जो तुम सबने[११] शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इससे निकाल दो[१२] तो अब जान जाओगे[१३](१२३) क़सम है कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूंगा फिर तुम सब को सूली दूंगा[१४](१२४) बोले हम अपने रब की तरफ़ फिरने वाले हैं[१५](१२५) और तुझे हमारा क्या बुरा लगा यही ना कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वो हमारे पास आईं, ऐ हमारे रब हमपर सब्र उंडेल दे[१६] और हमें मुसलमान उठा[१७](१२६)

पन्द्रहवाँ रूकू

और फ़िरऔन की क़ौम के सरदार बोले क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इस लिये छोड़ता है कि वो ज़मीन में फ़साद फैलाएं[१] और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मअबूदों को छोड़ दे[२] बोला अब हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी बेटियों को ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक उनपर ग़ालिब(विजयी) हैं[३](१२७) मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया अल्लाह की मदद चाहो[४] और सब्र करो[५] बेशक ज़मीन

सम्मेलन इस्कंदरिया में हुआ था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अजगर की दुम समन्दर के पार पहुंच गई थी. वह जादूगरों की सहरकारियों को एक एक करके निगल गया और तमाम रस्से लट्ठे, जो उन्होंने जमा किये थे, जो तीन सौ ऊंटों का बोझा था, सब का अन्त कर दिया. जब मूसा अलैहिस्सलाम ने लाठी को अपने दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की तरह लाठी हो गई और उसकी मोटाई और वज़न अपनी हालत पर रहा. यह देखकर जादूगरों ने पहचान लिया कि मूसा की लाठी जादू नहीं और इन्सान की क़ुदरत ऐसा चमत्कार नहीं दिखा सकती. ज़रूर यह आसमानी बात है. यह बात समझकर बोले, *"आमन्ना बि रब्बिल आलमीन"* यानी हम ईमान लाए जगत के रब पर, कहते हुए सज्दे में गिर गए.

(१०) यानी यह चमत्कार देखकर उनपर ऐसा असर हुआ कि वो बेइख़्तियार सज्दे में गिर गए. मालूम होता था कि किसीने माथे पकड़कर ज़मीन पर लगा दिये.

(११) यानी तुमने और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने, सब ने मिलकर.

(१२) और ख़ुद इस पर क़ब्ज़ा करलो.

(१३) कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आता हूँ.

(१४) नील के किनारे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि दुनिया में पहला सूली देने वाला, पहला हाथ पाँव काटने वाला, फ़िरऔन है. फ़िरऔन की इस बात पर जादूगरों ने यह जवाब दिया जो अगली आयत में आया है.

(१५) तो हमें मौत का क्या ग़म, क्योंकि मर कर हमें अपने रब की मुलाक़ात और उसकी रहमत नसीब होगी. और जब सबको उसी की तरफ़ पलटना है तो वह ख़ुद हमारे तेरे बीच फ़ैसला फ़रमा देगा.

(१६) यानी हमको भरपूर सब्र अता फ़रमा और इतना अधिक दे जैसे किसी पर पानी उंडेल दिया जाता है.

(१७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, ये लोग दिन के पहले पहर में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर पहर में शहीद.

सूरए अअराफ़ - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) यानी मिस्र में तेरा विरोध करें और वहाँ के निवासियों का दीन बदलें, और यह उन्होंने इसलिये कहा था कि जादूगरों के साथ छः लाख आदमी ईमान ले आए थे. (मदारिक)

(२) कि न तेरी उपासना करें, न तेरे मुक़र्रर किये हुए देवी देवताओं की. सदी का कहना है कि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के

الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ قَالُوْۤا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ
اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ
كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ
بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳۰﴾
فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ
اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ
الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَ
الدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

منزل ٢

का मालिक अल्लाह है(६) अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाए(७) और आख़िर मैदान परहेज़गारों के हाथ है(८) ﴿१२८﴾ बोले हम सताए गए आपके आने से पहले(९) और आपके तशरीफ़ लाने के बाद(१०) कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उसकी जगह ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखें कैसे काम करते हो(११) ﴿१२९﴾

सोलहवाँ रूकू

और बेशक हमने फ़िरऔन वालों को बरसों के क़हत(अकाल) और फलों के घटाने से पकड़ा(१) कि कहीं वो नसीहत मानें(२) ﴿१३०﴾ तो जब उन्हें भलाई मिलती(३) कहते यह हमारे लिये है(४) और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उसके साथ वालों से बदगुमानी लेते(५) सुन लो उनके नसीबे की शामत तो अल्लाह के यहाँ है(६) लेकिन उनमें अक्सर को ख़बर नहीं ﴿१३१﴾ और बोले तुम कैसी भी निशानी लेकर हमारे पास आओ कि हमपर उससे जादू करो हम किसी तरह तुमपर ईमान लाने वाले नहीं(७) ﴿१३२﴾ तो भेजा हमने उनपर तूफ़ान(८) और टिड्डी और घुन (या कलनी या जुएं) और मेंडक और ख़ून अलग अलग निशानियाँ(९) तो उन्होंने

लिये बुत बनवा दिये थे और उनकी पूजा का हुक्म देता था, और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूँ और इन बुतों का भी. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि फ़िरऔन दहरिया था, यानी दुनिया के पैदा करने वाले का इन्कार करने वाला. उसका ख़याल था कि आलमे सिफ़्ली के चलाने वाले सितारे हैं. इसीलिये उसने सितारों की सूरतों पर मूर्तियाँ बनवाई थीं. उनकी ख़ुद भी इबादत करता था और दूसरों को भी उनकी इबादत का हुक्म देता था और अपने आपको ज़मीन का मालिक और स्वामी कहता था, इसीलिये ''अना रब्बुकुमुल अअला '' कहता था.

(३) फ़िरऔनी क़ौम के सरदारों ने फ़िरऔन से यह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को इसलिये छोड़ता है कि वो ज़मीन में फ़साद फैलाएं. इससे उनका मतलब फ़िरऔन को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आपकी क़ौम के क़त्ल पर उभारना था. जब उन्होंने ऐसा किया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उनको अज़ाब उतरने का डर दिलाया और फ़िरऔन अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्योंकि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार की क़ुव्वत से प्रभावित हो चुका था. इसीलिये उसने अपनी क़ौम से यह कहा कि हम बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे, लड़कियों को छोड़ देंगे. इससे उसका मतलब यह था कि इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम की संख्या घटाकर उनकी क़ुव्वत को कम करेंगे और जनता में अपनी बात रखने के लिये यह भी कह दिया कि हम बेशक उनपर ग़ालिब हैं. लेकिन फ़िरऔन के इस क़ौल से कि हम बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे, बनी इस्राईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई. और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से इसकी शिकायत की. इसके जवाब में आपने यह फ़रमाया जो इसके बाद आता है.

(४) वह काफ़ी है.

(५) मुसीबतों और बलाओं पर, और घबराओ नहीं.

(६) और मिस्र प्रदेश भी इसमें दाख़िल है.

(७) यह फ़रमाकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को आशा दिलाई कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम हलाक होगी और बनी इस्राईल उनकी ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे.

(८) उन्हीं के लिये विजय और कामयाबी है, और उन्हीं के लिये बेहतर और उमदा अंजाम.

(९) कि फ़िरऔनियों ने तरह तरह की मुसीबतों में जकड़ रखा था और लड़कों को बहुत ज़्यादा क़त्ल किया था.

(१०) कि अब वह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है, तो हमारी मदद कब होगी और ये मुसीबतें कब दूर की जाएंगी.

(११) और किस तरह नेअमत का शुक्र अदा करते हो.

مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ بِمَا صَبَرُوْا ۚ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا

घमण्ड किया[10] और वो मुजरिम क़ौम थी ﴿१३३﴾ और जब उनपर अज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ करो उस अहद के कारण जो उसका तुम्हारे पास है[11] बेशक अगर तुम हमपर अज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ करदेंगे ﴿१३४﴾ फिर जब हम उन से अज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वो फिर जाते ﴿१३५﴾ तो हमने उनसे बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया[12] इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उनसे बेख़बर थे[13] ﴿१३६﴾ और हमने उस क़ौम को[14] जो दबाली गई थी उस ज़मीन[15] के पूरब पश्चिम का वारिस किया जिसमें हमने बरकत रखी[16] और तेरे रब का अच्छा वादा बनी इस्राईल पर पूरा हुआ, बदला उनके सब्र का और हमने बर्बाद कर दिया[17] जो कुछ फ़िरऔन और उसकी क़ौम बनाती और जो चुनाइयाँ उठाते थे ﴿१३७﴾ और हमने[18] बनी इस्राईल को दरिया पार उतारा तो उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ कि अपने बुतों के आगे आसन मारे थे[19] बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बनादे जैसा इनके लिये इतने ख़ुदा हैं, बोला तुम

सूरए अअराफ़ - सोलहवाँ रूकू

(१) और दरिद्रता और भुखमरी की मुसीबत में जकड़ा.

(२) और कुफ़्र और बुराइयों से बाज़ आएं. फ़िरऔन ने अपनी चार सौ बरस की उम्र में तीन सौ बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूख में नहीं पड़ा था. अब दुष्काल की सख़्ती उनपर इसलिये डाली गई कि वो इस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और उसकी तरफ़ पलटें. लेकिन वो अपने कुफ़्र में इतने पक्के हो चुके थे कि इन तकलीफ़ों से भी उनकी सरकशी बढ़ती ही रही.

(३) और सस्ताई व बहुतात व अम्न और आफ़ियत होती.

(४) यानी हम इसके मुस्तहिक़ यानी हक़दार ही हैं, और इसको अल्लाह का फ़ज़्ल न मानते और अल्लाह का शुक्र न अदा करते.

(५) और कहते कि ये बलाएं इनकी वजह से पहुंचीं. अगर ये न होते तो ये मुसीबतें न आतीं.

(६) जो उसने लिख दिया है, वही पहुंचता है. और यह उनके कुफ़्र के कारण है. कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि मानी ये हैं कि बड़ी शामत तो वह है जो उनके लिये अल्लाह के यहाँ है, यानी दोज़ख़ का अज़ाब.

(७) जब उनकी सरकशी यहाँ तक पहुंची तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके हक़ में बददुआ की आपकी दुआ क़ुबूल हुई.

(८) जब जादूगरों के ईमान लाने के बाद भी फ़िरऔनी अपने कुफ़्र और सरकशी पर जमे रहे, तो उनपर अल्लाह की निशानियाँ एक के बाद एक उतरने लगीं. क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की थी कि या रब, फ़िरऔन ज़मीन में बहुत सरकश हो गया है और उसकी क़ौम ने एहद तोड़ा है, उन्हें ऐसे अज़ाब में जकड़, जो उनके लिये सज़ा हो, और मेरी क़ौम और बाद वालों के लिये सबक़. तो अल्लाह तआला ने तूफ़ान भेजा, बादल आया, अन्धेरा हुआ, कसरत से बारिश होने लगी, फ़िरऔन के घरों में पानी भरगया, यहाँ तक कि वो उसमें खड़े रह गए और पानी उनकी गर्दन की हंसलियों तक आगया. उनमें जो बैठा डूब गया, न हिल सकते थे, न कुछ काम कर सकते थे. सनीचर से सनीचर तक, सात रोज़ तक इसी मुसीबत में रहे. हालांकि बनी इस्राईल के घर उनके घरों से मिले हुए थे, उनके घरों में पानी न आया. जब ये लोग तंग आगए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया, हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि यह मुसीबत दूर हो तो हम आपपर ईमान लाएं और बनी इस्राईल को आपके साथ भेजदें. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई. तूफ़ान की मुसीबत दूर हुई. ज़मीन में वह हरियाली आई जो पहले कभी न देखी थी. खेतियाँ ख़ूब हुईं, दरख़्त ख़ूब फले. तो फ़िरऔनी कहने लगे, यह पानी तो नेअमत था और ईमान न लाए. एक महीना तो ठीक से गुज़रा, फिर अल्लाह तआला ने टिड्डी भेजी. वह खेतियाँ और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्ते, सामान, यहाँ तक कि लोहे की कीलें तक खा गईं और फ़िरऔनियों के घरों में भर गईं. अब मिस्रियों ने परेशान होकर फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ
لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ
لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ
قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ
رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ
انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

ज़रूर जाहिल लोग हो[२०] (१३८) यह हाल तो बर्बादी का है जिसमें ये[२१] लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा बातिल (मिथ्या) है (१३९) कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत (बुज़ुर्गी) दी[२२] (१४०) और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से छुटकारा दिलाया कि तुम्हें बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़िब्ह करते और तुम्हारी बेटियाँ बाक़ी रखते, और इसमें रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ[२३] (१४१)

सत्तरहवाँ रूकू

और हमने मूसा से[१] तीस रात का वादा फ़रमाया और उनमें[२] दस और बढ़ाकर पूरी कीं तो उसके रब का वादा पूरी चालीस रात का हुआ[३] और मूसा ने[४] अपने भाई हारून से कहा मेरी क़ौम पर मेरे नायब (सहायक) रहना और इस्लाह (सुधार) करना और फ़सादियों की राह को दख़ल न देना (१४२) और जब मूसा हमारे वादे पर हाज़िर हुआ और उससे उसके रब ने कलाम फ़रमाया[५] अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार (दर्शन) दिखा कि मैं तुझे देखूं, फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा[६] हाँ इस पहाड़ की

की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वादा किया. उसपर एहद लिया. सात दिन यानी सनीचर से सनीचर तक टिड्डी की मुसीबत में जकड़े रहे, फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से छुटकारा पाया. खेतियाँ और फल जो बाक़ी रह गए थे, उन्हें देखकर कहने लगे, ये हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनांचे ईमान न लाए और एहद पूरा न किया और अपने बुरे कर्मों में लग गए. एक महीना ठीक से गुज़रा. फिर अल्लाह तआला ने जूंएं या घुन का अज़ाब उतारा. कुछ का कहना है कि जूंएं, कुछ कहते हैं घुन, कुछ कहते हैं एक और छोटा कीड़ा. इस कीड़े ने जो खेतियाँ और फल बाक़ी बचे थे वह खा लिये. कपड़ों में घुस जाता था और खाल को काटता था. खाने में भर जाता था. अगर कोई दस बोरी गेहूँ चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े खा जाते. ये कीड़े फ़िरऔनियों के बाल, पलकें, भौंवें चाट गए, जिस्म पर चेचक की तरह भर जाते. सोना दूभर कर दिया था. इस मुसीबत से फ़िरऔनी चीख़ पड़े और उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया हम तौबह करते हैं. आप इस बला के दूर होने की दुआ फ़रमाइये. चुनांचे सात रोज़ के बाद यह मुसीबत भी हज़रत की दुआ से दूर हुई, लेकिन फ़िरऔनियों ने फिर एहद तोड़ा और पहले से ज़्यादा बुरे काम करने लगे. एक महीना अम्न में गुज़रने के बाद फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बद दुआ की तो अल्लाह तआला ने मेंढक भेजे और यह हाल हुआ कि आदमी बैठता था तो उसकी बैठक में मेंढक भर जाते थे. बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंढक कूद कर मुंह में पहुंचता. हांडियों में मेंढक, खानों में मेंढक, चूल्हों में मेंढक भर जाते थे, आग बुझ जाती थी . लेटते थे तो मेंढक ऊपर सवार होते थे. इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की, अबकी बार हम पक्की तौबह करते हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनसे एहद लिया और दुआ की तो सात दिन बाद यह मुसीबत भी दूर हुई. एक महीना आराम से गुज़रा, लेकिन फिर उन्होंने एहद तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की तरफ़ लौटे. फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बददुआ फ़रमाई तो तमाम कुंओं का पानी, नेहरों और चश्मों का पानी, नील नदी का पानी, यहाँ तक कि उनके लिये हर पानी ख़ून बन गया. उन्होंने फ़िरऔन से इसकी शिकायत की तो कहने लगा कि मूसा ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी. उन्होंने कहा, कैसी नज़र बन्दी, हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नाम निशान ही नहीं. तो फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि मिस्री बनी इस्राईल के साथ एक ही बर्तन से पानी लें. तो जब बनी इस्राईल निकालते तो पानी निकलता, मिस्री निकालते तो उसी बर्तन से ख़ून निकलता. यहाँ तक कि फ़िरऔनी औरतें प्यास से आजिज़ होकर बनी इस्राईल की औरतों के पास आईं, उनसे पानी मांगा तो वह पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया. तो फ़िरऔनी औरतें कहने लगीं कि तू अपने मुंह में पानी लेकर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे. जबतक वह पानी इस्राईली औरत के मुंह में रहा, पानी था, जब फ़िरऔनी औरत के मुंह में पहुंचा, ख़ून हो गया. फ़िरऔन ख़ुद प्यास से परेशान हुआ तो उसने गीले दरख़्तों की नमी चूसी, वह नमी मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई. सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने को न मिली तो फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दुआ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वादा किया. हज़रत मूसा ने दुआ फ़रमाई. यह मुसीबत भी दूर हुई मगर ईमान फिर भी न लाए.

(९) एक के बाद दूसरी और हर अज़ाब एक हफ़्ता क़ायम रहता और दूसरे अज़ाब से एक माह का फ़ासला होता.

تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ

तरफ़ देख ये अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो बहुत जल्द तू मुझे देख लेगा[७] फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया और मूसा गिरा बेहोश, फिर जब होश हुआ बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ़ रुजू लाया(पलटा) और मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ[८] ﴾१४३﴿ फ़रमाया ऐ मूसा मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों(संदेश) और अपने कलाम से तो ले जो मैंने तुझे अता फ़रमाया और शुक्र वालों में हो ﴾१४४﴿ और हमने उसके लिये तख़्तियों में[९] लिख दी हर चीज़ की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील, और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इसकी अच्छी बातें अपनाएं[१०] बहुत जल्द मैं तुम्हें दिखाऊंगा बेहुक्मों का घर[११] ﴾१४५﴿ और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं[१२] और अगर सब निशानियां देखें उनपर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत की राह देखें उसमें चलना पसन्द न करें[१३] और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उसमें चलने को मौजूद हो जाएं यह इसलिये कि उन्होंने हमारी आयतें झुटलाई और उनसे बेख़बर बने ﴾१४६﴿ और जिन्होंने

(१०) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाए.

(११) कि वह आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएगा.

(१२) यानी नील नदी में. जब बार बार उन्हें अज़ाबों से निजात दी गई और वो किसी एहद पर क़ायम न रहे और ईमान न लाए और कुफ़्र न छोड़ा, तो वह मीआद पूरी होने के बाद, जो उनके लिये मुक़र्रर फ़रमाई गई थी, उन्हें अल्लाह तआला ने डुबो कर हलाक कर दिया.

(१३) बिल्कुल भी ध्यान न देते और तवज्जह न करते थे.

(१४) यानी बनी इस्राईल को.

(१५) यानी मिस्र और शाम.

(१६) नहरों, दरख़्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की बहुतात से.

(१७) इन तमाम इमारतों, महलों और बाग़ों को.

(१८) फ़िरऔन और उसकी क़ौम को दसवीं मुहर्रम के डुबाने के बाद.

(१९) और उनकी इबादत करते थे. इब्ने जरीह ने कहा कि ये बुत गाय की शक्ल के थे. उनको देखकर बनी इस्राईल.

(२०) कि इतनी निशानियाँ देखकर भी न समझे कि अल्लाह एक है, उसका कोई शरीक नहीं. उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं, और किसी की इबादत जायज़ नहीं .

(२१) बुत परस्त, मूर्ति पूजक.

(२२) यानी ख़ुदा वह नहीं होता जो तलाश करके बना लिया जाए, बल्कि ख़ुदा वह है जिसने तुम्हें बुज़ुर्गी दी क्योंकि वह बुज़ुर्गी देने और एहसान पर सक्षम है, तो वही इबादत के लायक़ है.

(२३) यानी जब उसने तुम पर ऐसी अज़ीम नेअमतें फ़रमाई तो तुम्हें कब सजता है कि तुम उसके सिवा और किसी की इबादत करो.

सूरए अअराफ़ - सत्तरहवाँ रूकू

(१) तौरात अता फ़रमाने के लिये ज़िलक़अदा महीने की.

(२) ज़िलहज की.

(३) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का बनी इस्राईल से वादा था कि जब अल्लाह तआला उनके दुश्मन फ़िरऔन को हलाक फ़रमा

الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۟ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۟ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۟ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖؗ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۟ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا

हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार को झुटलाया उनका सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वही जो वो करते थे﴾१४७﴿

अट्ठारहवाँ रूकू

और मूसा के[१] बाद उसकी क़ौम अपने ज़ेवरों से[२] एक बछड़ा बना बैठी बेजान का धड़[३] गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वह उनसे न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए[४] उसे लिया और वो ज़ालिम थे[५]﴾१४८﴿ और जब पछताए और समझे कि हम बहके बोले अगर हमारा रब हमपर मेहर(मेहरबानी) न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए﴾१४९﴿ और जब मूसा[६] अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा ग़ुस्से में भरा झुंझलाया हुआ[७] कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जानशीनी(उत्तराधिकार) की मेरे बाद[८] क्या तुमने अपने रब के हुक्म से जल्दी की[९] और तख़्तियाँ डालदीं[१०] और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा[११] कहा ऐ मेरे माँ जाए[१२] क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे मार डालें तू मुझपर दुश्मनों को न हँसा[१३] और मुझे ज़ालिमों में न मिला[१४]﴾१५०﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई

देगा तो वह उनके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक किताब लाएंगे जिसमें हलाल और हराम का बयान होगा. जब अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को हलाक किया तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब से उस किताब के उतारने की दरख़्वास्त की. हुक्म हुआ कि तीस रोज़े रखो. जब वो रोज़े पूरे कर चुके तो आपको अपने मुहं में एक तरह की बू मेहसूस हुई आपने मिसवाक की. फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि हमें आपके मुबारक मुंह से बड़ी अच्छी ख़ुश्बू आया करती थी, आपने मिसवाक करके उसको ख़त्म कर दिया. अल्लाह तआला ने हुक्म फ़रमाया कि माहे ज़िलहज में दस रोज़े और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुश्बू मेरे नज़दीक कस्तूरी की सुगंध से ज़्यादा अच्छी है.

(४) पहाड़ पर प्रार्थना के लिये जाते वक़्त .

(५) आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया. इसपर हमारा ईमान है. और हमारी क्या हक़ीक़त है कि हम इस कलाम की हक़ीक़त से बहस कर सकें. किताबों में आया है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कलाम सुनने के लिये हाज़िर हुए तो आपने तहारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रखकर तूर पहाड़ पर हाज़िर हुए. अल्लाह तआला ने एक बादल उतारा जिसने पहाड़ को हर तरफ़ से चार फ़रसंग के बराबर ढक लिया. शैतान और ज़मीन के जानवर, यहाँ तक कि साथ रहने वाले फ़रिश्ते तक वहाँ से अलग कर दिये गए और आपके लिये आसमान खोल दिया गया. आपने फ़रिश्तों को साफ़ देखा कि हवा में खड़े हैं. और आपने अल्लाह के अर्श को साफ़ देखा, यहाँ तक कि तख़्तियों पर क़लमों की आवाज़ सुनी और अल्लाह तआला ने आप से कलाम फ़रमाया. आपने उसकी बारगाह में अपनी बातें पेश कीं. उसने अपना कलामे करीम सुनाकर नवाज़ा. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आपके साथ थे लेकिन जो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया वह उन्हों ने कुछ न सुना. हज़रत मूसा को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उसके दीदार का आरज़ूमन्द बनाया. (ख़ाज़िन वग़ैरह)

(६) इन आँखों से सवाल करके, बल्कि अल्लाह का दीदार बिना सवाल के, केवल उसकी अता और मेहरबानी से हासिल होगा, वह भी इन फ़ानी यानी नश्वर आँखों से नहीं, बल्कि बाक़ी आँख से, यानी कोई इन्सान मुझे दुनिया में देखने की ताक़त नहीं रखता. अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना सम्भव नहीं. इससे साबित हुआ कि अल्लाह का दीदार सम्भव है, अगरचे दुनिया में न हो. क्योंकि सही हदीसों में है कि क़यामत के दिन ईमान वाले अपने रब के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे. इसके अलावा यह कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आरिफ़ बिल्लाह यानी अल्लाह को पहचानने वाले हैं. अगर अल्लाह का दीदार सम्भव न होता तो आप हरगिज़ सवाल न फ़रमाते.

(७) और पहाड़ का साबित रहना सम्भावना की बात है, क्योंकि उसकी निस्बत फ़रमाया *''जअलहू दक्कन''* उसको पाश पाश कर दिया. तो जो चीज़ अल्लाह तआला की की हुई हो, और जिसको वह मौजूद फ़रमाए, मुमकिन है कि वह न मौजूद हो अगर

فِیْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۱۵۱﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَیَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُفْتَرِیْنَ ﴿۱۵۲﴾
وَالَّذِیْنَ عَمِلُوا السَّیِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا ؗ
اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۵۳﴾ وَلَمَّا سَكَتَ
عَنْ مُّوْسَی الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِیْ نُسْخَتِهَا
هُدًی وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِیْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ یَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾
وَاخْتَارَ مُوْسٰی قَوْمَهٗ سَبْعِیْنَ رَجُلًا لِّمِیْقَاتِنَا ۚ
فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِیَّایَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِیَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِیْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِیُّنَا فَاغْفِرْ
لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُ الْغٰفِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَاكْتُبْ لَنَا

को बख़्श दे(१५) और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला﴾१५१﴿

उन्नीसवाँ रूकू

बेशक वो जो बछड़ा ले बैठे बहुत जल्द उन्हें उनके रब का ग़ज़ब(क्रोध) और ज़िल्लत पहुंचना है दुनिया की ज़िन्दगी में, और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों(आरोपियों) को﴾१५२﴿ और जिन्होंने बुराइयां कीं और उनके बाद तौबा की और ईमान लाए तो उसके बाद तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है(१)﴾१५३﴿ और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तख़्तियाँ उठालीं और उनकी तहरीर(लेख) में हिदायत और रहमत है उनके लिये जो अपने रब से डरते हैं﴾१५४﴿ और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वादे के लिये चुने(२) फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने लिया(३) मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही इन्हें और मुझे हलाक कर देता(४) क्या तू हमें उस काम पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बेअक़्लों ने किया(५) वह नहीं मगर तेरा आज़माना, तू उससे बहकाए जिसे चाहे और राह दिखाए जिसे चाहे, तू हमारा मौला(मालिक) है तो हमें बख़्श दे और हमपर मेहर(कृपा) कर और तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है﴾१५५﴿ और हमारे लिये

उसको न मौजूद करे, क्योंकि वह अपने काम में मुख़्तार है. इससे साबित हुआ कि पहाड़ का ठहरा रहना सम्भव बात है, असम्भव नहीं और जो चीज़ सम्भव बात पर मुअल्लक़ की जाए, वह भी मुमकिन ही होती है, मुहाल नहीं होती. लिहाज़ा अल्लाह का दीदार, जिसको पहाड़ के साबित रहने पर मुअल्लक़ फ़रमाया गया, वह मुमकिन हुआ तो उनका क़ौल ग़लत है, जो अल्लाह का दीदार असम्भव बताते हैं.

(८) बनी इस्राईल में से.

(९) तौरात की, जो सात या दस थीं, ज़बरजद या ज़मर्रूद की.

(१०) उसके आदेशों का अनुकरण करें.

(११) जो आख़िरत में उनका ठिकाना है. हसन और अता ने कहा कि बेहुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है. क़तादा का क़ौल है कि मानी ये हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों की मंज़िलें दिखाऊंगा जिन्हों ने अल्लाह तआला की मुख़ालिफ़त की, ताकि तुम्हें इससे सबक़ मिले. अतिया औफ़ी का क़ौल है कि "बेहुक्मों का घर" से फ़िरऔन और उसकी क़ौम के मकानात मुराद हैं, जो मिस्र में हैं. सदी का क़ौल है कि इससे काफ़िरों की मंज़िलें मुराद हैं. कलबी का कहना है कि आद व समूद और हलाक हुई उम्मतों की मंज़िलें मुराद हैं, जिनपर अरब के लोग अपने सफ़रों में होकर गुज़रा करते थे.

(१२) ज़ुन्नून रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़ुरआन की हिकमत से एहले बातिल के दिलों का सम्मान नहीं फ़रमाता. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मुराद यह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर ज़ुल्म करते हैं और मेरे वलियों से लड़ते हैं, मैं उन्हें अपनी आयतों के क़ुबूल और तस्दीक़ से फेर दूंगा ताकि वो मुझपर ईमान न लाएं. यह उनकी दुश्मनी की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से मेहरूम किया गया.

(१३) यही घमण्ड का फल और घमण्डी का अंजाम है.

सूरए अअराफ़ - अठारहवाँ रूकू

(१) तूर की तरफ़ अपने रब की प्रार्थना के लिये जाने के.

(२) जो उन्होंने फ़िरऔन की क़ौम से अपनी ईद के लिये कुछ समय के लिये उधार लिये थे.

(३) और उसके मुंह में हज़रत जिब्रील की घोड़ी के क़दमों के नीचे की मिट्टी डाली जिसके असर से वह...

(४) दूषित है, आजिज़ है, जमाद है या हैवान, दोनों तक़दीरों पर सलाहियत नहीं रखता कि पूजा जाए.

(५) कि उन्होंने अल्लाह तआला की इबादत से मुंह फेरा और ऐसे आजिज़ और नाक़िस बछड़े को पूजा.

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَ رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۚ﴿۱۵۶﴾ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ ؗ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ِۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ

इस दुनिया में भलाई लिख[६] और आख़िरत में बेशक हम तेरी तरफ़ रुजू लाएं फ़रमाया[७] मेरा अज़ाब जिसे चाहूँ दूँ और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे है[८] तो बहुत जल्द मैं[९] नेमतों को[१०] उनके लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं (१५६) वो जो गुलामी करेंगे उस रसूल बेपढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की[११] जिसे लिखा हुआ पाएंगे अपने पास तौरात और इंजील में[१२] वो उन्हें भलाई का हुक्म देगा और बुराई से मना फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उनके लिये हलाल फ़रमाएगा और गन्दी चीज़ें उनपर हराम करेगा और उनपर से वो बोझ[१३] और गले के फंदे[१४] जो उनपर[१५] थे उतारेगा तो वो जो उसपर ईमान लाएं और उसकी ताज़ीम (आदर) करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी (अनुकरण) करें जो उसके साथ उतरा[१६] वही बामुराद हुए (१५७)

बीसवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूँ[१] कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी को है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, जिलाए और मारे, तो ईमान

(६) अपने रब की उपासना पूरी करके तूर पर्वत से...
(७) इसलिये कि अल्लाह तआला ने उनको ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उनकी क़ौम को गुमराह कर दिया.
(८) कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका.
(९) और मेरे तौरात लेकर आने का इन्तिज़ार न किया.
(१०) तौरात की, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने.
(११) क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी क़ौम का ऐसी बदतरीन बुराई में पड़ जाना बहुत बुरा लगा, तब हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
(१२) मैंने क़ौम को रोकने और उनको उपदेश और नसीहत करने में कोई कमी नहीं की, लेकिन.
(१३) और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिससे वो ख़ुश हों.
(१४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने भाई की बात क़ुबूल करके अल्लाह की बारगाह में.
(१५) अगर हम में किसी से कोई कमी या ज़ियादती हो गई . यह दुआ आपने भाई को राज़ी करने और दुश्मनों की जलन दूर करने के लिये फ़रमाई.

सूरए अअराफ़ - उन्नीसवाँ रूकू

(१) इस आयत से साबित हुआ कि गुनाह, चाहे छोटे हों या बड़े, जब बन्दा उनसे तौबह करता है तो अल्लाह तबारक व तआला अपने फ़ज़्ल व रहमत से उन सबको माफ़ कर देता है.
(२) कि वो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह के समक्ष हाज़िर होकर क़ौम की गौपूजा की ख़ता पर माफ़ी माँगें. चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें लेकर हाज़िर हुए.
(३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि भूकम्प में जकड़े जाने का कारण यह था कि क़ौम ने जब बछड़ा क़ायम किया था, ये उनसे अलग न हुए थे. (ख़ाज़िन)
(४) यानी मीक़ात में हाज़िर होने से पहले, ताकि बनी इस्राईल उन सबकी हलाकत अपनी आँखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़ा न मिलता.
(५) यानी हमें हलाक न कर, और अपनी मेहरबानी फ़रमा.
(६) और हमें फ़रमाँबरदारी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा.

(७) अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
(८) मुझे इख़्तियार है, सब मेरे ममलूक और बन्दे हैं, किसी को ऐतिराज़ की मजाल नहीं.
(९) दुनिया में नेक और बद सब को पहुंचती है.
(१०) आख़िरत की.
(११) यहाँ मुफ़स्सिरों की सहमति के अनुसार, रसूल से सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं. आपका ज़िक्र रिसालत के गुण से किया गया, क्योंकि आप अल्लाह और उसकी सृष्टि के बीच माध्यम हैं. रिसालत के कर्तव्य अदा करते हैं. अल्लाह तआला के आदेश, शरीअत और वैध-अवैध बातों के अहकाम बन्दों तक पहुंचाते हैं. इसके बाद आपकी प्रशंसा में नबी फ़रमाया गया. इसका अनुवाद आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने अज्ञात की ख़बरें देने वाले किया है, और यह अत्यन्त दुरुस्त अनुवाद है, क्योंकि "नबा" ख़बर को कहते हैं, जो जानकारी की नज़र से मुफ़ीद हो और झूट से ख़ाली. क़ुरआन शरीफ़ में यह शब्द इस अर्थ में कसरत से इस्तेमाल हुआ है. एक जगह इरशाद हुआ ***"क़ुल हुवा नबउन अज़ीमुन"*** (तुम फ़रमाओ वह बड़ी ख़बर है - सूरए स्वॉद, आयत ६७) एक जगह फ़रमाया ***"तिल्का मिन अम्बाइल ग़ैबे नूहीहा इलैक"*** (ये ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ वही करते हैं - सूरए हूद, आयत ४९) एक जगह फ़रमाया ***"फ़लम्मा अम्बाअहुम बि अस्माइहिम"*** (जब उसने यानी आदम ने उन्हें सबके नाम बता दिये - सूरए बक़रह - आयत ३३) और कई आयतें हैं जिनमें यह शब्द इस मानी में आया है. फिर यह शब्द या कर्ता के मानी में होगा या कर्म के मानी में. पहली सूरत में इसके मानी ग़ैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूरत में इसके मानी होंगे ग़ैब की ख़बरें दिये हुए, और दोनों मानी को क़ुरआन शरीफ़ से पुष्टि मिलती है. पहले अर्थ की पुष्टि इस आयत से होती है "नब्बिअ इबादी" (यानी ख़बर दो मेरे बन्दों को - सूरए हिजर, आयत ४९). दूसरी आयत में फ़रमाया "क़ुल अउ नब्बिउकुम" (तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें उस से बेहतर चीज़ बता दूं - सूरए आले इमरान, आयत १५). और इसी प्रकार का है हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का इरशाद जो क़ुरआन शरीफ़ में आया ***"उनब्बिउकुम बिमा ताकुलूना वमा तद्दख़िरून"*** (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो - सूरए आले इमरान, आयत ४९) . और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है ***"नब्बानियल अलीमुल ख़बीर"*** (मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया - सूरए तहरीम, आयत ३). और हक़ीक़त में नबी ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं. तफ़सीरे ख़ाज़िन में है कि आपके गुण में नबी फ़रमाया क्योंकि नबी होना महान और उत्तम दर्जों में से है और यह इसका प्रमाण है कि आप अल्लाह के नज़दीक बहुत बलन्द दर्जा रखने वाले और उसकी तरफ़ से ख़बर देने वाले हैं. उम्मी का अनुवाद आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने बे पढ़े फ़रमाया. यह अनुवाद बिल्कुल हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के इरशाद के मुताबिक़ है और यक़ीनन उम्मी होना आपके चमत्कारों में से एक चमत्कार है कि दुनिया में किसी से पढ़े नहीं और किताब वह लाए जिसमें पिछलों और आने वालों और अज्ञात की जानकारी है. (ख़ाज़िन)
(१२) यानी तौरात व इंजील में आपकी नात और प्रशंसा और आपका नबी होना लिखा पाएंगे. हज़रत अता इब्ने यसार ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहो अन्हो से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वो गुण दरियाफ़्त किये जो तौरात में बयान किये गए हैं. उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर के जो औसाफ़ अर्थात गुण और विशेषताएं क़ुरआन शरीफ़ में आए हैं उन्हीं में की कुछ विशेषताएं तौरात में बयान की गई हैं. इसके बाद उन्होंने पढ़ना शुरू किया "ऐ नबी हमने तुम्हें भेजा गवाह और ख़ुशख़बरी देने और डराने वाला और उम्मतों का निगहबान बनाकर. तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो. मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्कल रखा, न बुरे व्यवहार वाले हो, न सख़्त मिज़ाज, न बाज़ारों में आवाज़ बलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दूर करो, लेकिन ख़ताकारों को माफ़ करते हो और उनपर एहसान फ़रमाते हो. अल्लाह तआला तुम्हें न उठाएगा जबतक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत को इस तरह रास्त न फ़रमादे कि लोग सच्चाई और विशवास के साथ "लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अंधी आँखें देखने वाली और बेहरे कान सुनने वाले और पर्दों में लिपटे हुए दिल कुशादा हो जाएंगे." हज़रत कअब अहबार से हुज़ूर की विशेषताओं में तौरात शरीफ़ का यह मज़मून भी नक़्ल हुआ कि अल्लाह तआला ने आपकी प्रशंसा में फ़रमाया कि मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर अच्छी सिफ़त और आदत अता फ़रमाऊंगा और दिल के इत्मीनान और प्रतिष्ठा को उनका लिबास बनाऊंगा और ताअतों व एहसान को उनका तरीक़ा करूंगा और तक़वा को उनका ज़मीर और हिकमत को उनका राज़दार और सच्चाई और निष्ठा को उनकी तबीअत और माफ़ करने तथा मेहरबान होने को उनकी आदत और इन्साफ़ को उनकी प्रकृति और हक़ के इज़हार को उनकी शरीअत और हिदायत को उनका इमाम और इस्लाम को उनकी मिल्लत बनाऊंगा. अहमद उनका नाम है. सृष्टि को उनके सदक़े में गुमराही के बाद हिदायत और जिहालत के बाद इल्म व मअरिफ़त और गुमनामी के बाद बलन्दी और इज़्ज़त अता करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बाद महब्बत इनायत करूंगा. उन्हीं की बदौलत विभिन्न क़बीलों, अलग अलग ख़्वाहिशों और विरोध रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उनकी उम्मत को सारी उम्मतों से बेहतर करूंगा. एक और हदीस में तौरात शरीफ़ से हुज़ूर की ये विशेषताएं नक़्ल की गई हैं. मेरे बन्दे अहमदे मुख़्तार, उनका जन्मस्थान मक्कए मुकर्रमा और हिजरत स्थल मदीनए तैय्यिबह है, उनकी उम्मत हर हाल में अल्लाह की बहुत प्रशंसा करने वाली है. ये कुछ नक़्लें अहादीस से पेश की गईं. आसमानी किताबें हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्रशंसा और गुणगान से भरी हुई थीं. किताब वाले हर ज़माने में अपनी किताबों में काट छाँट करते रहे और उनकी बड़ी कोशिश इसी में रही कि हुज़ूर का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें. तौरात व इंजील वग़ैरह उनके हाथ में थीं इसलिये उन्हें इसमें कुछ मुश्किल न थी, लेकिन हज़ारों परिवर्तन करने के बाद भी मौजूदा ज़माने की बायबल में हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया.

لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ وَ
رَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهِ
وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوسٰى
أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ
اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلٰى مُوسٰى
إِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ
فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ
أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۚ كُلُوا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئٰتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

लाओ अल्लाह और उसके रसूल बेपढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान लाते हैं और उनकी गुलामी करो कि तुम राह पाओ﴾१५८﴿ और मूसा की क़ौम से एक गिरोह है कि हक़ की राह बताता और उसी से[२] इन्साफ़ करता﴾१५९﴿ और हमने उन्हें बाँट दिया बारह क़बीले गिरोह गिरोह और हमने वही भेजी मूसा को जब उससे उसकी क़ौम ने[३] पानी मांगा कि उस पत्थर पर अपना असा(लाठी) मारो तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले[४] हर गिरोह ने अपना घाट पहचान लिया और हमने उनपर अब्र(बादल) सायबान किया[५] और उनपर मन्नो सलवा उतारा, खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्होंने[६] हमारा कुछ नुक़सान न किया लेकिन अपनी ही जानों का बुरा करते थे﴾१६०﴿ और याद करो जब उन[७] से फ़रमाया गया इस शहर में बसो[८] और इसमें जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे और दर्वाज़े में सिजदा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे, बहुत जल्द नेकों को ज़्यादा अता फ़रमाएंगे﴾१६१﴿

चुनांचे ब्रिटिश एन्ड फॉरेन बायबल सोसायटी लाहौर १९३१ ई. की छपी हुई बायबल में यूहन्ना की इंजील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे.'' ''मददगार'' शब्द पर टिप्पणी है उसमें इसके मानी वकील या शफ़ीअ लिखे तो अब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ हो, और अबदुल आबाद तक रहे यानी उसका दीन कभी स्थगित न हो, सिवाय सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कौन है.

फिर उन्तीसवीं और तीसवीं आयत में है : ''और अब मैंने तुमसे उसके होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यक़ीन करो इसके बाद मैं तुमसे बहुत सी बातें नहीं करूंगा क्योंकि दुनिया का सरदार आता है और मुझ में उसका कुछ नहीं''. कैसी साफ़ बशारत है और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को हुज़ूर की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है, और दुनिया का सरदार ख़ास सैयदे आलम का अनुवाद है और यह फ़रमाना कि मुझ में उसका कुछ नहीं, हुज़ूर की महानता का इज़हार और उनके हुज़ूर अपना भरपूर अदब और विनम्रता है. फिर इसी किताब के अध्याय सोलह की सातवीं आयत में है : ''लेकिन मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ायदेमन्द है क्योंकि अगर मैं न जाऊं तो वह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा''. इसमें हुज़ूर की बशारत के साथ इसका भी साफ़ इज़हार है कि हुज़ूर ख़ातिमुल अम्बिया हैं. आपका ज़ुहूर जब ही होगा जब हज़रत ईसा अलैहिस्साम भी तशरीफ़ ले जाएं.

इसकी तेरहवीं आयत में है: लेकिन जब वह यानी सच्चाई की रूह आएगा तो तुमको सारी सच्चाई की राह दिखाएगा, इसलिये कि वह अपनी तरफ़ से न कहेगा, लेकिन जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और तुम्हें आयन्दा की ख़बरें देगा .'' इस आयत में बताया गया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आगमन पर दीने इलाही की तकमील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह यानी सच्चे दीन को पूरा कर देंगे. इससे यही नतीजा निकलता है कि उनके बाद कोई नबी न होगा और ये कलिमे कि अपनी तरफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, ख़ास *''मा यन्तिक़ो अनिल हवा इन हुवा इल्ला वहयुंय यूहा''* (और वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते, वह तो नहीं मगर वही जो उन्हें की जाती है - सूरए नज्म, आयत ३) का अनुवाद है, और यह जुमला कि तुम्हें आयंदा की ख़बर देगा, इसमें साफ़ बयान है कि वह नबीये अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ैबी उलूम तालीम फ़रमाएंगे जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : ***युअल्लिमुकुम मालम तकूनू तअलमून*** (और तुम्हें वो सिखाया जो तुम नहीं जानते थे) और ***''मा हुवा अलल ग़ैबे बिदनीन''*** (और यह नबी ग़ैब बताने में कंजूस नहीं - सूरए तकवीर, आयत २४).

(१३) यानी सख़्त तकलीफ़ें जैसे कि तौबह में अपने आप को क़त्ल करना और शरीर के जिन अंगों से गुनाह हुए हों, उनको काट डालना.

(१४) यानी मुश्किल आदेश जैसे कि बदन और कपड़े के जिस स्थान को नापाकी लगे उसको कैंची से काट डालना और ग़नीमतों

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ
لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَظْلِمُوْنَ ۚ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ
تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا
يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ
تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ
يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
بِعَذَابٍۭ بَىِٕيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ فَلَمَّا
عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

तो उनमें के ज़ालिमों ने बात बदल दी उसके ख़िलाफ़ जिसका उन्हें हुक्म था[९] तो हमने उनपर आसमान से अज़ाब भेजा बदला उनके ज़ुल्म का[१०]﴾१६२﴿

इक्कीसवाँ रूकू

और उनसे हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी[१] जब वो हफ़्ते के बारे में हद से बढ़ते[२] जब हफ़्ते के दिन उनकी मछलियां पानी पर तैरती उनके सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता, न आतीं, इस तरह हम उन्हें आज़माते थे उनकी बेहुक्मी के कारण﴾१६३﴿ और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा क्यों नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अज़ाब देने वाला, बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर माज़िरत (क्षमा याचना) को[३] और शायद उन्हें डर हो[४]﴾१६४﴿ फिर जब भुला बैठे जो नसीहत उन्हें हुई थी हमने बचा लिये वो जो बुराई से मना करते थे और ज़ालिमों को बुरे अज़ाब में पकड़ा बदला उनकी नाफ़रमानी का﴾१६५﴿ फिर जब उन्हों ने मुमानिअत (निषेध) के हुक्म से सरकशी (बग़ावत) की

का जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरह.
(१५) यानी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
(१६) इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है, जिससे मूमिन का दिल रौशन होता है और शक व जिहालत की अंधेरियाँ दूर होती हैं और शक व यक़ीन का प्रकाश फैलता है.

सूरए अअराफ़ - बीसवाँ रूकू

(१) यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आम नबुव्वत की दलील है कि आप सारे जगत के रसूल हैं और कुल सृष्टि आपकी उम्मत. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है, हुज़ूर फ़रमाते है, पाँच चीज़ें मुझे ऐसी अता हुई जो मुझसे पहले किसी को न मिलीं (१) हर नबी ख़ास क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था, और मैं लाल और काले की तरफ़ भेजा गया. (२) मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं और मुझसे पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं. (३) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (तयम्मुम के क़ाबिल) और मस्जिद की गई, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले. (४) दुश्मन पर एक महीने की मुसाफ़त तक मेरा रोब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई. (५) और मुझे शफ़ाअत अता फ़रमाई गई. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में यह भी है कि मैं तमाम सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए.
(२) यानी सच्चाई से.
(३) तेह में.
(४) हर गिरोह के लिये एक चश्मा.
(५) ताकि धूप से अम्न में रहें.
(६) नाशुक्री करके.
(७) बनी इस्राईल .
(८) यानी बैतुल मक़दिस में .
(९) यानी हुक्म तो यह था कि "हित्तुन" कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों. हित्तत तौबह और इस्तग़फ़ार का कलिमा है, लेकिन वो बजाय इसके हंसी से "*हित्तत फ़ी शईरा*" कहते हुए दाख़िल हुए.
(१०) यानी अज़ाब भेजने का कारण उनका ज़ुल्म और अल्लाह के अहकाम का विरोध करना है.

خٰسِـِٕیْنَ ۝ وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَیَبْعَثَنَّ عَلَیْهِمْ
اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَنْ یَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِؕ
اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِیْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝
وَ قَطَّعْنٰهُمْ فِی الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَ
مِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ٘ وَ بَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّیِّاٰتِ
لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۝ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
وَّرِثُوا الْكِتٰبَ یَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ
یَقُوْلُوْنَ سَیُغْفَرُ لَنَا ۚ وَ اِنْ یَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
یَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ یُؤْخَذْ عَلَیْهِمْ مِّیْثَاقُ الْكِتٰبِ
اَنْ لَّا یَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَ دَرَسُوْا مَا فِیْهِ ؕ
وَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَ الَّذِیْنَ یُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَ اَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِیْنَ ۝ وَ اِذْ

हमने उनसे फ़रमाया हो जाओ बन्दर धुतकारे हुए[५] ﴿१६६﴾ और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर क़यामत के दिन तक उन[६] पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए[७] बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द अज़ाब वाला है[८] और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है[९] ﴿१६७﴾ और उन्हें हमने ज़मीन में बिखेर दिया गिरोह गिरोह, उनमें कुछ नेक हैं[१०] और कुछ और तरह के[११] और हमने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़माया कि कहीं वो रूजू लाएं[१२] ﴿१६८﴾ फिर उनकी जगह उनके बाद वो[१३] नाख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए[१४] इस दुनिया का माल लेते हैं[१५] और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी[१६] और अगर वैसा ही माल उनके पास और आए तो ले लें[१७] क्या उनपर किताब में अहद न लिया गया कि अल्लाह की तरफ़ निस्बत न करें मगर हक़ और उन्होंने इसे पढ़ा[१८] और बेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़गारों को[१९] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं ﴿१६९﴾ और वो जो किताब को मज़बूत थामते हैं[२०] और उन्होंने नमाज़ क़ायम रखी, और हम नेकों का नेग नहीं गंवाते ﴿१७०﴾

सूरए अअराफ़ - इक्कीसवाँ रूकू

(१) हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूदीयों से इस बस्ती वालों का हाल पूछें. इस सवाल का मकसद यह था कि काफ़िरों पर ज़ाहिर कर दिया जाय कि कुफ़्र और बुराई उनका पुराना तरीक़ा है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के चमत्कारों का इन्कार करना, यह उनके लिये कोई नई बात नहीं है. उनके पहले भी कुफ़्र पर अड़े रहे हैं. इसके बाद उनके पूर्वजों का हाल बयान फ़रमाया, कि वो अल्लाह के हुक्म के विरोध के कारण बन्दरों और सुअरों की शक्ल में बिगाड़ दिये गए. इस बस्ती में इख़्तिलाफ़ है कि वह कौन सी थी. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह एक गाँव मिस्र और मदीना के बीच है. एक क़ौल है कि मदयन व तूर के बीच. ज़हरी ने कहा कि वह गाँव तबरियिए शाम है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की एक रिवायत में है कि वह मदयन है. कुछ ने कहा ईला है. हक़ीक़त का इल्म अल्लाह तआला को है.

(२) कि पाबन्दी के बावुजूद शनिवार के रोज़ शिकार करते. इस बस्ती के लोग तीन गिरोहों में बंट गए थे. एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मना करते थे और एक तिहाई ख़ामोश थे, दूसरों को मना न करते थे, और मना करने वालों से कहते थे, ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है. और एक गिरोह वो ख़ताकार लोग थे जिन्हों ने अल्लाह के हुक्म का विरोध किया और शिकार किया और खाया और बेचा और जब वो इस बुराई से बाज़ न आए तो मना करने वाले गिरोह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ रहन सहन न रखेंगे और गाँव को तक़सीम करके बीच में एक दीवार खींच दी. मना करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था, जिससे आते जाते थे. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ताकारों पर लअनत की. एक रोज़ मना करने वालों ने देखा कि ख़ताकारों में से कोई न निकला, तो उन्होंने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे. उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वो बन्दरों की शक्ल कर दिये गए थे. अब ये लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वो बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे, और उनके पास आकर कपड़े सूंघते थे और ये लोग इन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे. इन लोगों ने उनसे कहा, क्या हम लोगों ने तुम से मना नहीं किया था, उन्हों ने सर के इशारे से कहा हाँ. और वो सब हलाक हो गए और मना करने वाले सलामत रहे.

(३) ताकि हमपर बुरी बातों से रोकना छोड़ने का इल्ज़ाम न रहे.

(४) और वो नसीहत से नफ़ा उठा सकें.

(५) वो बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी हाल में रहकर हलाक हो गए.

(६) यहूदी लोग.

الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَاۗءَ مَثَلَا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ڮ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ

हमला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले[१२] यह हाल है उनका जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वो ध्यान करें﴾१७६﴿ क्या बुरी कहावत है उनकी जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे﴾१७७﴿ जिसे अल्लाह राह दिखाए तो वही राह पर है और जिसे गुमराह करे तो वही नुक़सान में रहे﴾१७८﴿ और बेशक हमने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत जिन्न और आदमी[१३] वो दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं[१४] और वो आँखें जिन से देखते नहीं[१५] और वो कान जिन से सुनते नहीं[१६] वो चौपायों की तरह हैं[१७] बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह[१८] वही ग़फ़लत में पड़े हैं﴾१७९﴿ और अल्लाह ही के हैं बहुत अच्छे नाम[१९] तो उसे उनसे पुकारो और उन्हें छोड़ दो जो उसके नामों में हक़ से निकलते हैं[२०] वो जल्द अपना किया पाएंगे﴾१८०﴿ और हमारे बनाए

(२१) जब बनी इस्राईल ने सख़्त तकलीफ़ों की वजह से तौरात के अहकाम के क़ुबूल करने से इन्कार किया तो हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से एक पहाड़ जिसका आकार उनके लश्कर के बराबर यानी एक फ़रसंग लम्बाई और एक फ़रसंग चौड़ाई थी, उठाकर सायबान की तरह उनके सरों के क़रीब कर दिया और उनसे कहा गया कि तौरात के आदेश क़ुबूल करो वरना यह पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा. पहाड़ को सरों पर देखकर सब सिज्दे में गिर गए मगर इस तरह कि बायाँ गाल और भौं तो उन्होंने सिज्दे में रख दी और दाईं आँख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े. चुनांचे अबतक यहूदियों के सज्दे की यही शान है.

(२२) इरादे और कोशिश से.

सूरए अअराफ़ - बाईसवाँ रूकू

(१) हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से उनकी सन्तान निकाली और उनसे एहद लिया. आयतों और हदीसों दोनों पर नज़र करने से यह मालूम होता है कि सन्तान का निकालना इस सिलसिले के साथ था जिस तरह कि दुनिया में एक दूसरे से पैदा होंगे और उनके लिये रबूबियत और वहदानियत की दलीलें क़ायम फ़रमा कर और अक़्ल देकर उनसे अपनी रबूबियत की शहादत तलब फ़रमाई.

(२) अपने ऊपर, और हमने तेरी रबूबियत और वहदानियत का इक़रार किया . यह गवाह होना इसलिये है...

(३) हमें कोई चेतावनी नहीं दी गई थी.

(४) जैसा उन्हें देखा, उनके अनुकरण और शासन में वैसा ही करते रहे.

(५) यह उज़्र करने का मौक़ा न रहा, जब कि उनसे एहद ले लिया गया और उनके पास रसूल आए और उन्होंने उस एहद को याद दिलाया और तौहीद पर प्रमाण क़ायम हुए.

(६) ताकि बन्दे समझ से काम लेकर और विचार करके सत्य और ईमान क़ुबूल करें.

(७) शिर्क व कुफ़्र से तौहीद व ईमान की तरफ़ और चमत्कार वाले नबी के बताने से अपने एहदे मीसाक़ को याद करें और उसके अनुसार अमल करें.

(८) यानी बलअम बाऊर जिसका वाक़िआ मुफ़स्सिरों ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब्बारीन से जंग करने का इरादा किया और साम प्रदेश में तशरीफ़ लाए तो बलअम बाऊर की क़ौम उसके पास आई और उससे कहने लगी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उनके साथ बड़ा लश्कर है. वो यहाँ आए हैं, हमें हमारे क्षेत्र से निकाल देंगे और क़त्ल करेंगे और हमारी जगह बनी इस्राईल को इस प्रदेश में आबाद करेंगे. तेरे पास इस्मे आज़म है और तेरी दुआ क़ुबूल

أُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْــَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ

हुओं में एक गिरोह वह है कि हक़ बताएं और उसपर इन्साफ़ करें[२१] ﴾१८१﴿

तेईसवाँ रूकू

और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता[१] अज़ाब की तरफ़ ले जाएंगे जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी ﴾१८२﴿ और मैं उन्हें ढील दूंगा[२] बेशक मेरी छुपवाँ तदबीर (युक्ति) बहुत पक्की है[३] ﴾१८३﴿ क्या सोचते नहीं कि उनके साहब को जुनून से कोई इलाक़ा नहीं, वो तो साफ़ डर सुनाने वाले हैं[४] ﴾१८४﴿ क्या उन्होंने निगाह की आसमानों और ज़मीन की सल्तनत में और जो चीज़ अल्लाह ने बनाई[५] और यह कि शायद उनका वादा नज़दीक आगया हो[६] तो इसके बाद और कौन सी बात पर यक़ीन लाएंगे[७] ﴾१८५﴿ जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें ﴾१८६﴿ तुम से क़यामत को पूछते हैं[८] कि वह कब को ठहरी है, तुम फ़रमाओ इसका इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वही उसके वक़्त पर ज़ाहिर करेगा[९] भारी पड़ रही है आसमानों और ज़मीन में, तुम पर न आएगी मगर अचानक, तुम से ऐसा पूछते हैं मानो तुमने उसे ख़ूब तहक़ीक़

होती है तो निकल और अल्लाह तआला से दुआ कर कि अल्लाह तआला उन्हें यहाँ से हटा दे. बलअम बाऊर ने कहा, तुम्हारा बुरा हो, हज़रत मूसा नबी हैं और उनके साथ फ़रिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं, मैं कैसे उनपर दुआ करूं. मैं जानता हूँ, जो अल्लाह तआला के नज़दीक उनका दर्जा है. अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुनिया और आख़िरत बर्बाद हो जाएगी. मगर क़ौम उसपर ज़ोर देती रही और बहुत रोई पीटी. बलअम बाऊर ने कहा कि मैं अपने रब की मर्ज़ी मालूम कर लूं और उसका यही तरीक़ा था कि जब कोई दुआ करता, पहले अल्लाह की मर्ज़ी मालूम कर लेता और ख़्वाब में उसका जवाब मिल जाता. चुनांचे इस बार भी उसको यही जवाब मिला कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथियों के ख़िलाफ़ दुआ न करना. उसने क़ौम से कह दिया कि मैंने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उनपर दुआ करने की मुमानिअत फ़रमा दी. तब क़ौम ने उसको तोहफ़े और नज़राने दिये जो उसने क़ुबूल किये. और क़ौम ने अपना सवाल जारी रखा तो फिर दूसरी बार बलअम बाऊर ने रब तबारक व तआला से इजाज़त चाही. उसका कुछ जवाब न मिला. उसने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस बार कुछ जवाब ही न मिला. क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर अल्लाह को मंज़ूर न होता तो वह पहले की तरह दोबारा भी मना फ़रमाता और क़ौम का ज़ोर और भी ज़्यादा हुआ. यहाँ तक कि उन्होंने उसको फ़ितने में डाल दिया और आख़िरकार वह बददुआ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बददुआ करता था, अल्लाह तआला उसकी ज़बान उसकी क़ौम की तरफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो भलाई की दुआ करता था, बजाय क़ौम के बनी इस्राईल का नाम उसकी ज़बान पर आता था. क़ौम ने कहा, ऐ बलअम यह क्या कर रहा है, बनी इस्राईल के लिये दुआ कर रहा है और हमारे लिये बददुआ. कहा यह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ाबू में नहीं है. और उसकी ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उसने अपनी क़ौम से कहा, मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद हो गईं. इस आयत में उसका बयान है.

(९) और उनका अनुकरण न किया.

(१०) और ऊंचा दर्जा अता फ़रमा कर नेकों की मंज़िल में पहुंचाते.

(११) और दुनिया के जादू में आ गया.

(१२) यह एक ज़लील जानवर के साथ तशबीह है कि दुनिया का लालच रखने वाला अगर उसको नसीहत करो तो मुफ़ीद नहीं, वह लालच में जकड़ा रहता है, छोड़ दो तो उसी लालच में गिरफ़्तार. जिस तरह ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़मी तबीअत है, ऐसे ही लालच उनके लिये लाज़िम हो गया.

(१३) यानी काफ़िर जो अल्लाह की निशानियों को अच्छी तरह जान कर उनसे मुंह फेरते हैं और उनका काफ़िर होना अल्लाह के इल्मे अज़ली में है.

(१४) यानी सच्चाई से मुंह फेर के अल्लाह की निशानियों के देखने समझने से मेहरूम हो गए और यही दिल का ख़ास काम था.

(१५) सच्चाई और हिदायत की राह और अल्लाह की निशानियाँ और उसके एक होने के प्रमाण.
(१६) उपदेश और नसीहत को मानने वाले कानों से सुनने और दिल व हवास रखने के बावुजूद वो दीन की बातों में उनसे नफ़ा नहीं उठाते, लिहाज़ा...
(१७) कि अपने दिल और सोचने, देखने, समझने की शक्तियों से अल्लाह तआला की पहचान नहीं करते हैं. खाने पीने के दुनियवी कामों में सारे हैवानात भी अपने हवास से काम लेते हैं. इन्सान भी इतना ही करता रहा तो उसको जानवरों पर क्या बरतरी और बुज़ुर्गी.
(१८) क्योंकि चौपाया भी अपने फ़ायदे की तरफ़ बढ़ता है और नुक़सान से बचता और उससे पीछे हटता है. और काफ़िर जहन्नम की राह चलकर अपना नुक़सान इख़्तियार करता है, तो उससे बदतर हुआ. जब आदमी की रूह शहवात यानी वासनाओं पर ग़ालिब आ जाती है तो वह फ़रिश्तों से बढ़ जाता है, और जब वासनाएं रूह पर ग़ालिब आ जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है.
(१९) हदीस शरीफ़ में है, अल्लाह तआला के निनानवे नाम जिस किसी ने याद कर लिये, जन्नती हुआ. उलमा की इसपर सहमति है कि अल्लाह के नाम निनानवे की संख्या में घिरे नहीं हैं . हदीस का मतलब सिर्फ़ यह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है. अबू जहल ने कहा था कि मुहम्मद का दावा तो यह है कि यह एक परवर्दिगार की इबादत करते हैं फिर वह अल्लाह और रहमान दो को क्यों पुकारते हैं. इसपर यह आयत उतरी और उस कम अक़्ल जाहिल को बताया गया कि मअबूद तो एक ही है, नाम उसके बहुत हैं.
(२०) उसके नामों में हक़ और इस्तिक़ामत से निकलना कई तरह पर है. एक तो यह है कि उसके नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर लागू करना, जैसे कि मुश्रिकों ने इलाह का लात, और अज़ीज़ का उज़्ज़ा, और मन्नान का मनात करके अपने बुतों के नाम रखे थे, यह नामों में सच्चाई से मुंह फेरना और नाजायज़ है. दूसरे यह कि अल्लाह तआला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जो क़ुरआन व हदीस में न आया हो, यह भी जायज़ नहीं जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना. तीसरे हुस्ने अदब की रिआयत करना, तो फ़क़त या-दार्रो, या-मानिओ कहना जायज़ नहीं. बल्कि दूसरे नामों के साथ मिलाकर कहा जाएगा, या दार्रो, या नाफ़िओ, या मुअतियो, या ख़ालिक़ुल ख़ल्क़. चौथे यह कि अल्लाह तआला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए, जिसके मानी ग़लत हों, यह भी सख़्त नाजायज़ है. पाँचवें, ऐसे नाम रखना जिनका मतलब मालूम नहीं, और यह नहीं जाना जा सकता कि वो अल्लाह तआला की शान के लायक़ हैं या नहीं.
(२१) यह गिरोह सच्चाई की राह दिखाने वाले उलमा का है. इस आयत से यह मसअला साबित हुआ कि हर ज़माने के एहले हक़ की सहमति हुज्जत है. और यह भी साबित हुआ कि कोई ज़माना हक़ परस्तों और दीन की हिदायत देने वालों से ख़ाली न होगा, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि मेरी उम्मत का एक गिरोह क़यामत तक सच्चे दीन पर क़ायम रहेगा, उसको किसी की दुश्मनी और विरोध नुक़सान न पहुंचा सकेगी.

सूरए अअराफ़ - तेईसवाँ रूकू

(१) यानी एक के बाद एक, दर्जा ब दर्जा.
(२) उनकी उम्रें लम्बी करके.
(३) जब नबीये अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ कर रात के वक़्त एक एक क़बीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से डराने वाला हूँ. और आपने उन्हें अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले वाक़िआत और घटनाओं का ज़िक्र किया तो उनमें से किसी ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत की . इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया क्या उन्हों ने सोच और समझदारी से काम न लिया और आक़िबत अन्देशी और दूरदर्शता बिल्कुल छोड़ दी और यह देखकर कि नबियों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बातों और कामों में उनके विपरीत हैं और दुनिया और इसकी लज़्ज़तों से आपने मुंह फेर लिया है और आख़िरत की तरफ़ ध्यान लगा दिया है और अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाने और उसका ख़ौफ़ दिलाने में रात दिन मशग़ूल हैं, उन लोगों ने आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत करदी, यह उनकी ग़लती है.
(५) इन सब में उसकी वहदानियत और भरपूर हिकमत और क़ुदरत की रौशन दलीलें हैं.
(६) और वो कुफ़्र पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं, ऐसे हाल में समझ वाले पर ज़रूरी है कि वह सोचे समझे, दलीलों पर नज़र करे.
(७) यानी क़ुरआन शरीफ़ के बाद और कोई रसूल आने वाला नहीं जिसका इंन्तिज़ार हो, क्योंकि आप पर नबियों का सिलसिला ख़त्म हो गया.
(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यहूदियों ने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़यामत कब क़ायम होगी, क्योंकि हमें उसका वक़्त मालूम है. इसपर यह आयत उतरी.

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ
مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ
وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ
نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ
بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا
صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا
صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى
اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ
شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا
وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى

कर (खोज) रखा है तुम फ़रमाओ इसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं(१०)《१८७》 तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं(११) मगर जो अल्लाह चाहे(१२) और अगर मैं ग़ैब जान लिया करता तो यूं होता कि मैंने बहुत भलाई जमा करली और मुझे कोई बुराई न पहुंची(१३) मैं तो यही डर(१४) और ख़ुशी सुनाने वाला हूँ उन्हें जो ईमान रखते हैं《१८८》

चौबीसवाँ रूकू

वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया(१) और उसी में से उसका जोड़ा बनाया(२) कि उससे चैन पाए, फिर जब मर्द उसपर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया(३) तो उसे लिये फिरा की, फिर जब बोझल पड़ी, दोनों ने अपने रब से दुआ की - ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहे बच्चा देगा तो बेशक हम शुक्रगुज़ार होंगे《१८९》 फिर जब उसने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अता फ़रमाया, उन्होंने उसकी अता में उसके साझी ठहराए, तो अल्लाह को बरतरी है उनके शिर्क से(४)《१९०》 क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए(५) और वो ख़ुद बनाए हुए हैं《१९१》 और न वो उनको कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें(६)《१९२》 और अगर तुम उन्हें(७) राह की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारे

(९) क़यामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुमने क़रार दिया और ऐ यहूदियो, तुम ने जो उसका वक़्त जानने का दावा किया, ये भी ग़लत है. अल्लाह तआला ने इसको छुपा कर रखा है, और इसमें उसकी हिक्मत है.

(१०) इसके छुपा कर रखे जाने की हिक्मत तफ़सीरे रूहुल ब्यान में है कि कुछ बुज़ुर्ग इस तरफ़ गए हैं कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला के बताए से क़यामत का वक़्त मालूम है और ये इस आयत के विषय के विरुध्द नहीं.

(११) ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली. चौपाए भागे तो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़बर दी कि मदीनए तैय्यिबह में रिफ़ाआ का इन्तिक़ाल हो गया और यह भी फ़रमाया कि देखो मेरी ऊंटनी कहाँ है. अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इनका कैसा अजब हाल है कि मदीने में मरने वाले की ख़बर तो दे रहे हैं और अपनी ऊंटनी का पता नहीं मालूम कि कहाँ है . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उसका यह क़ौल भी छुपा न रहा. हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरी ऊंटनी उस घाटी में है और उसकी नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है. चुनांचे जैसा फ़रमाया था उसी शान से ऊंटनी पाई गई . इसपर यह आयत उतरी.(तफ़सीरे कबीर)

(१२) वह हक़ीक़ी मालिक है, जो कुछ है उसकी अता से है.

(१३) यह कलाम अदब और विनम्रता के तौर पर है. मानी ये हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता. जो जानता हूँ वह अल्लाह तआला के बताए से और उसकी अता से . (ख़ाज़िन). आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, भलाई जमा करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती क़ुदरत रखे और ज़ाती क़ुदरत वही रखेगा जिसका इल्म भी ज़ाती हो, क्योंकि जिसकी एक सिफ़त ज़ाती है, उसकी सारी सिफ़ात ज़ाती. तो मानी ये हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो क़ुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जमा कर लेता और बुराई न पहुंचने देता . भलाई से मुराद राहतें और कामयाबियाँ और दुश्मनों पर ग़ल्बा है. यह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ, और नाफ़रमानों का फ़रमाँबरदार, और काफ़िरों का मूमिन कर लेना हो और बुराई से बदबख़्त लोगों का बावुजूद दावत के मेहरूम रह जाना. तो हासिले कलाम यह होगा कि अगर मैं नफ़ा नुक़सान का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ो और काफ़िरो, तुम सबको मूमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्र की हालत देखने की तकलीफ़ मुझे न पहुंचती.

(१४) सुनाने वाला हूँ काफ़िरों को.

सूरए अअराफ़ - चौबीसवाँ रूकू

(१) अकरमा का क़ौल है कि इस आयत में आम ख़िताब है हर एक शख़्स को, और मानी ये हैं कि अल्लाह वही है जिसने

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ
اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ
بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ
يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ؗ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ
ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾
اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ
وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّا

منزل ٢

पीछे न आएं[८] तुमपर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या चुप रहो[९]﴿१९३﴾ बेशक वो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी तरह बन्दे हैं[१०] तो उन्हें पुकारो फिर वो तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो﴿१९४﴾ क्या उनके पाँव हैं जिनसे चलें या उनके हाथ हैं जिनसे गिरफ़तार (पकड़) करें या उनकी आँखें हैं जिनसे देखें या उनके कान हैं जिनसे सुनें[११] तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझपर दाव चलो और मुझे मोहलत न दो[१२]﴿१९५﴾ बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिसने किताब उतारी[१३] और वह नेकों को दोस्त रखता है[१४]﴿१९६﴾ और जिन्हें उसके सिवा पूजते हो वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न ख़ुद अपनी मदद करें[१५]﴿१९७﴾ और अगर तुम उन्हें राह की तरफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वो तेरी तरफ़ देख रहे हैं[१६] और उन्हें कुछ भी नहीं सूझता﴿१९८﴾ ऐ मेहबूब माफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो﴿१९९﴾ और ऐ सुनने वाले

तुममें से हर एक को एक जान से यानी उसके बाप से पैदा किया और उसकी जिन्स से उसकी बीबी को बनाया, फिर जब वो दोनों जमा हुए और गर्भ ज़ाहिर हुआ और इन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ की और ऐसा बच्चा मिलने पर शुक्र अदा करने का एहद किया फिर अल्लाह तआला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया, उनकी हालत यह हुई कि कभी तो वो उस बच्चे की निस्बत प्राकृतिक तत्वों की तरफ़ करते जैसा कि दहरियों का हाल है. कभी सितारों की तरफ़, जैसे सितारों की पूजा करने वालों का हाल है . कभी बुतों की तरफ़, जैसा कि बुत परस्तों का तरीक़ा है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह उनके शिर्क से बरतर है. (तफ़सीरे कबीर)

(२) यानी उसके बाप की जिन्स से उसकी बीबी बनाई.

(३) मर्द का छाना इशारा है हमबिस्तर होने से और हलका सा पेट रहना, गर्भ के शुरू की हालत का बयान है.

(४) कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि इस आयत में क़ुरैश को ख़िताब है जो क़ुसई की औलाद हैं उनसे फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स क़ुसई से पैदा किया और उसकी बीबी उसी की जिन्स से अरबी क़र्शी की, ताकि उससे चैन व आराम पाए. फिर जब उनकी दरख़्वास्त के मुताबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्होंने अल्लाह की इस अता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अबदे मनाफ़, अब्दुल उज़्ज़ा, अब्दे क़ुसई और अब्दुद दार रखा.

(५) यानी बुतों को, जिन्हों ने कुछ नहीं बनाया.

(६) इसमें बुतों की बेक़ुदरती, शिर्क के ग़लत होने का बयान और मुश्रिकों की भरपूर जिहालत का इज़हार है, और बताय गया है कि इबादत का मुस्तहक़ वही हो सकता है जो इबादत करने वाले को नफ़ा पहुंचाए और उसका नुक़सान दूर करने की क़ुदरत रखता हो. मुश्रिक जिन बुतों को पूजते हैं उनकी बेक़ुदरती इस दर्जे की है कि वो किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं, किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते, ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बेनियाज़ नहीं, आप मख़्लूक़ हैं, बनाने वाले के मोहताज हैं. इससे बढ़कर बेइख़्तियारी यह है कि वो किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें, ख़ुद उन्हें नुक़सान पहुंचे तो दूर नहीं कर सकते . कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे, जो चाहे करे, वो उससे अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते. ऐसे मजबूर, बेइख़्तियार को पूजना इन्तिहा दर्जे की जिहालत है.

(७) यानी बुतों को.

(८) क्योंकि वो न सुन सकते हैं, न समझ सकते हैं.

(९) वो हर हाल में मजबूर व बेबस हैं. ऐसे को पूजना और मअबूद बनाना बड़ी कमअक़्ली है.

(१०) और अल्लाह के बन्दे और मख़्लूक़ किसी तरह पूजने के क़ाबिल नहीं. इसपर भी अगर तुम उन्हें मअबूद कहते हो.

(११) यह कुछ भी नहीं तो फिर अपने से कमतर को पूजकर क्यों ज़लील होते हो.

يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۞ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۞ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۞ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۞

अगर शैतान तुझे कोई कौंचा[१७] दे तो अल्लाह की पनाह मांग बेशक वही सुनता जानता है﴾२००﴿ बेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं[१८]﴾२०१﴿ और वो जो शैतानों के भाई हैं[१९] शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर कमी नहीं करते﴾२०२﴿ और ऐ मेहबूब जब तुम उनके पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुमने दिल से क्यों न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ मेरे रब से वही(देव वाणी) होती है, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आँखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसलमानों के लिये﴾२०३﴿ और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुमपर रहम हो[२०]﴾२०४﴿ और अपने रब को अपने दिल में याद करो[२१] ज़ारी(विलाप) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुबह और शाम[२२] और ग़ाफ़िलों में न होना﴾२०५﴿ बेशक वो जो तेरे रब के पास हैं[२३] उसकी इबादत से घमण्ड नहीं करते और उसकी पाकी बोलते और उसीको सज्दा करते हैं[२४]﴾२०६﴿

(१२) सैयदे आलम सल्लेल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब बुत परस्ती की आलोचना और त्रस्कार किया और बुतों की बेइख़्तियारी का बयान फ़रमाया, तो मुश्रिकों ने धमकाया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बर्बाद हो जाते हैं. ये बुत उन्हें हलाक कर देते हैं. इसपर यह आयत उतरी कि अगर बुतों में कुछ क़ुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो और मुझे नुक़सान पहुंचाने में उनसे मदद लो, और तुम भी जो धोखा धड़ी कर सकते हो, वह मेरे मुक़ाबले में करो और उसमें देर न करो मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअबूदों की कुछ भी परवाह नहीं. और तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते.

(१३) और मेरी तरफ़ वही भेजी, और मेरी इज़्ज़त की .

(१४) और उनकी रक्षा और सहायता करने वाला है. उसपर भरोसा रखने वालों को मुश्रिकों वग़ैरह का क्या डर. तुम और तुम्हारे मअबूद मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते.

(१५) तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे.

(१६) क्योंकि बुतों की तस्वीरें इस शक्ल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है.

(१७) कोई वसवसा डाले.

(१८) और वो इस वसवसे को दूर कर देते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ रूजू करते हैं.

(१९) यानी काफ़िर लोग.

(२०) इस आयत से साबित हुआ कि जिस वक़्त क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा जाए, चाहे नमाज़ में या नमाज़ से बाहर, उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है. सारे सहाबए किराम इस तरफ़ हैं कि यह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बारे में है. और एक क़ौल यह भी है कि इस से नमाज़ व ख़ुत्बा दोनों में ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो की हदीस में है, आपने कुछ लोगों को सुना कि वो नमाज़ में इमाम के साथ क़िरअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मानी समझो. ग़रज़ इस आयत से इमाम के पीछे क़िरअत करने की मुमानिअत साबित होती है. और कोई हदीस ऐसी नहीं है जिसको इसके मुक़ाबले में तर्क क़रार दिया जासके. इमाम के पीछे क़िरअत की ताईद में सबसे ज़्यादा भरोसा जिस हदीस पर किया जाता है वह है *"ला सलाता इल्ला बि फ़ातिहतल किताब"* मगर इस हदीस से इमाम के पीछे क़िरअत वाजिब होना तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिना फ़ातिहा नमाज़ कामिल नहीं होती . तो जबकि हदीस *"क़िरअतुल इमाम लहू क़िरअतुन"* से साबित है कि इमाम का क़िरअत करना ही मुक़्तदी का क़िरअत करना है तो जब इमाम ने क़िरअत की और मुक़्तदी ख़ामोश रहा तो उसकी क़िरअत हुक्मिया हुई, उसकी नमाज़ बे क़िरअत कहाँ रही. यह क़िरअते हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िरअत न करने से क़ुरआन व हदीस दोनों पर अमल हो जाता है. और क़िरअत करने से आयत के अनुकरण से दूरी होती है लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिहा वग़ैरह कुछ न पढ़े.

८- सूरए अनफ़ाल

सूरए अनफ़ाल मदीने में उतरी, इसमें ७५ आयतें और दस रूकू हैं .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

पहला रूकू

ऐ मेहबूब ! तुम से ग़नीमतों(युद्ध के बाद हाथ आने वाला माल) को पूछते हैं[२] तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह और रसूल हैं[३] तो अल्लाह से डरो[४] और आपस में मेल रखो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो(१) ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए[५] उनके दिल डर जाएं और जब उनपर उसकी आयतें पढ़ी जाएं उनका ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें[६](२) वो जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये से हमारी राह में ख़र्च करें(३) यही सच्चे मुसलमान हैं उनके लिये दर्जे हैं उनके रब के पास[७] और बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी[८](४) जिस तरह ऐ मेहबूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ बरामद किया[९] और बेशक मुसलमानों का एक गिरोह उसपर नाख़ुश था[१०](५) सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे[११] बाद इसके कि ज़ाहिर हो चुकी[१२] मानो वो आँखों

(२१) ऊपर की आयत के बाद इस आयत के देखने से मालूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और आवाज़ निकाले बिना दिल में ज़िक्र करना लाज़िम है . (तफ़सीरे इब्ने जरीर). इससे इमाम के पीछे ऊंची या नीची आवाज़ से क़िरअत की मुमानिअत साबित होती है. और दिल में अल्लाह की अज़मत और जलाल का तसव्वुर ज़िक्रे क़ल्बी है . ज़िक्र-बिल-जहर और ज़िक्र-बिल-इख़्फ़ा दोनों के खुले प्रमाण हैं. जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ शौक़ और भरपूर एकाग्रता मिले, उसके लिये वही अफ़ज़ल है. (रद्दुल मोहतार वग़ैरह)

(२२) शाम, अस्र और मग़रिब के बीच का वक़्त है . इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़ज़ल है, क्योंकि फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक, इसी तरह अस्र नमाज़ के बाद सूरज डूबने तक, नमाज़ मना है. इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तहब हुआ, ताकि बन्दे के तमाम औक़ात क़ुर्बत और ताअत में मश्ग़ूल रहें.

(२३) यानी मलायकए मुक़र्रबीन. बुज़ुर्गी वाले फ़रिश्ते.

(२४) यह आयत सज्दे वाली आयतों में से है जिनके पढ़ने और सुनने से सज्दा लाज़िम आता है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, जब आदमी सज्दे की आयत पढ़कर सज्दा करता है तो शैतान रोता है और कहता है, अफ़सोस, बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया. वह सज्दा करके जन्नती हो गया और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार करके जहन्नमी हो गया.

(८) सूरए अनफ़ाल - पहला रूकू

(१) यह सूरत मदनी है, सिवाय सात आयतों के, जो मक्कए मुकर्रमा में उतरीं और *"इज़ यमकुरो बिकल्लज़ीना"* से शुरू होती हैं. इसमें दस रूकू, पछहत्तर आयतें, एक हज़ार पछहत्तर कलिमे और पाँच हज़ार अस्सी अक्षर हैं.

(२) हज़रत उबादा बिन सामित रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया कि यह आयत हम बद्र वालों के हक़ में उतरी. जब शत्रु के माल के बारे में हमारे बीच मतभेद हुआ और झगड़े की नौबत आ गई तो अल्लाह तआला ने मामला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सुपुर्द कर दिया. आपने वह माल बराबर तक़सीम कर दिया.

(३) जैसे चाहें तक़सीम फ़रमाएं.

(४) और आपस में इख़्तिलाफ़ न करो.

(५) तो उसकी अज़मत व जलाल से.

(६) और अपने सारे काम उसके सुपुर्द कर दें.

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ؕ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ۝
اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ
مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝ وَمَا
جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ
وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ ع اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ
يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ
وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى
قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ؕ۝ اِذْ يُوْحِيْ

देखी मौत की तरफ़ हाँके जाते हैं(१३)﴾६﴿ और याद करो जब अल्लाह ने तुम्हें वादा दिया था कि इन दोनों गिरोहों(१४) में एक तुम्हारे लिये है और तुम यह चाहते थे कि तुम्हें वह मिले जिसमें काँटें का खटका नहीं और कोई नुक़सान न हो(१५) अल्लाह यह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए(१६) और काफ़िरों की जड़ काट दे(१७)﴾७﴿ कि सच को सच करे और झूट को झूट(१८) पड़े बुरा मानें मुजरिम﴾८﴿ जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे(१९) तो उसने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूँ हज़ारों फ़रिश्तों की क़तार से(२०)﴾९﴿ और यह तो अल्लाह ने किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इसलिये कि तुम्हारे दिल चैन पाएं और मदद नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से(२१) बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है﴾१०﴿

दूसरा रूकू

जब उसने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उसकी तरफ़ से चैन थी(१) और आसमान से तुमपर पानी उतारा कि तुम्हें उससे सुथरा करदे और शैतान की नापाकी तुमसे दूर फ़रमादे और तुम्हारे दिलों को ढारस बंधाए और उससे तुम्हारे क़दम

(७) उनके कर्मों के बराबर, क्योंकि ईमान वालों के एहवाल इन विशेषताओं में अलग अलग हैं इसलिये उनके दर्जे भी अलग अलग हैं.

(८) जो हमेशा इज़्ज़त और सम्मान के साथ बिना मेहनत और मशक़्क़त अता की जाए.

(९) यानी मदीनए तैय्यिबह से बद्र की तरफ़.

(१०) क्योंकि वो देख रहे थे कि उनकी संख्या कम है, हथियार थोड़े हैं, दुश्मन की तादाद भी ज़्यादा है, और वह हथियार वग़ैरह का बड़ा सामान रखता है. मुख़्तसर वाक़िआ यह है कि अबू सुफ़ियान के शाम प्रदेश से एक क़ाफ़िले के साथ आने की ख़बर पाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ उनके मुक़ाबले के लिये रवाना हुए. मक्कए मुकर्रमा से अबू जहल क़ुरैश का एक भारी लश्कर लेकर क़ाफ़िले की सहायता के लिये रवाना हुआ. अबू सुफ़ियान तो रास्ते से कतराकर अपने क़ाफ़िले के साथ समन्दर तट की राह चल पड़े. अबू जहल से उसके साथियों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्का वापस चलें. तो उसने इन्कार कर दिया और वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से लड़ने के इरादे से बद्र की तरफ़ चल पड़ा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा से सलाह मशवरा किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि वह काफ़िरों के दोनों गिरोहों में से एक पर मुसलमानों को विजयी करेगा, चाहे क़ाफ़िला हो या क़ुरैश का लश्कर. सहाबा ने इससे सहमति की, मगर कुछ को यह बहाना हुआ कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे और न हमारी संख्या इतनी है न हमारे पास काफ़ी हथियार हैं. यह रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा लगा और हुज़ूर ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला तो साहिल की तरफ़ निकल गया और अबू जहल सामने से आरहा है. इसपर उन लोगों ने फिर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, क़ाफ़िले का ही पीछा कीजिये और दुश्मन के लश्कर को छोड़ दीजिये. यह बात हुज़ूर के मिज़ाज को नागवार हुई तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हुमा ने खड़े होकर अपनी महब्बत, फ़रमाँबरदारी और क़ुरबानी की ख़्वाहिश का इज़हार किया और बड़ी क़ुव्वत और मज़बूती के साथ अर्ज़ किया कि वो किसी तरह हुज़ूर की मुबारक मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं. फिर और सहाबा ने भी अर्ज़ किया कि अल्लाह ने हुज़ूर को जो हुक्म दिया उसके मुताबिक़ तशरीफ़ ले चलें, हम साथ हैं, कभी पीछे न हटेंगे. हम आप पर ईमान लाए, हमने आपकी तस्दीक़ की, हमने आपके साथ चलने के एहद किये हैं. हमें आपके अनुकरण में समन्दर के अन्दर कूद जाने से भी कोई हिचकिचाहट नहीं है. हुज़ूर ने फ़रमाया, चलो, अल्लाह की बरकत पर भरोसा करो, उसने मुझे वादा दिया है. मैं तुम्हें बशारत देता हूँ. मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है. और हुज़ूर ने काफ़िरों के मरने और गिरने की जगहें नाम बनाम बतादीं और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और यह चमत्कार देखा गया कि उनमें से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा, उससे इधर उधर न हुआ.

(११) और कहते थे कि हमें क़ुरैश के लश्कर का हाल ही मालूम न था कि हम उनके मुक़ाबले की तैयारी करके चलते.

जमादे[२]﴾११﴿ जब ऐ मेहबूब, तुम्हारा रब फ़रिश्तों को वही भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मुसलमानों को साबित रखो[३] बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गर्दनों से ऊपर मारो और उनकी एक एक पोर (जोड) पर चोट लगाओ[४]﴾१२﴿ यह इसलिये कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है﴾१३﴿ यह तो चखो[५] और उसके साथ यह है कि काफ़िरों को आग का अज़ाब है[६]﴾१४﴿ ऐ ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो[७]﴾१५﴿ और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअत में जा मिलने को तो वह अल्लाह के ग़ज़ब में पलटा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरी जगह पलटने की[८]﴾१६﴿ तो तुमने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि अल्लाह ने[९] उन्हें क़त्ल किया और ऐ मेहबूब वह ख़ाक जो तुमने

رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ
دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ
فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

(१२) यह बात कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जो कुछ करते हैं अल्लाह के हुक्म से करते हैं और आपने ऐलान फ़रमा दिया है कि मुसलमानों को ग़ैबी मदद पहुंचेगी.

(१३) यानी क़ुरैश से मुक़ाबला उन्हें ऐसा भयानक मालूम होता है.

(१४) यानी अबू सुफ़ियान के क़ाफ़िले और अबूजहल के लश्कर.

(१५) यानी अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला.

(१६) सच्चे दीन को ग़लबा दे, उसको ऊंचा और बलन्द करे.

(१७) और उन्हें इस तरह हलाक करे कि उनमें से कोई बाक़ी न बचे.

(१८) यानी इस्लाम को विजय और मज़बूती अता फ़रमाए और कुफ़्र को मिटाए.

(१९) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है, बद्र के रोज़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुश्रिकों को देखा कि हज़ार हैं और आपके साथी तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा, तो हुज़ूर क़िबले की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अपने मुबारक हाथ फैला कर अपने रब से यह दुआ करने लगे, यारब, जो तूने मुझसे वादा फ़रमाया है, पूरा कर. यारब, जो तूने मुझसे वादा फ़रमाया, इनायत फ़रमा, यारब, अगर तू एहले इस्लाम की इस जमाअत को हलाक कर देगा, तो ज़मीन में तेरी पूजा नहीं होगी. इसी तरह हुज़ूर दुआ करते रहे यहाँ तक कि आपके कन्धे से चादर शरीफ़ उतर गई तो हज़रत अबूबक्र हाज़िर हुए और चादर मुबारक हुज़ूर के कन्धे पर डाली और अर्ज़ किया, या नबीयल्लाह, आपकी दुआ अपने रब के साथ काफ़ी हो गई. वह बहुत जल्द अपना वादा पूरा फ़रमाएगा. इस पर यह आयत उतरी.

(२०) चुनांचे पहले हज़ार फ़रिश्ते आए, फिर तीन हज़ार, फिर पांच हज़ार. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान उस रोज़ काफ़िरों का पीछा करते थे और काफ़िर मुसलमान के आगे आगे भागता जाता था, अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सवार का यह कलिमा सुना जाता था **"इक़दम ख़ैरोम"** यानी आगे बढ़ एक ख़ैरोम (ख़ैरोम हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उसकी नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया. सहाबा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपने यह आँखों देखे मंज़र बयान किये तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह तीसरे आसमान की मदद है. अबू जहल ने हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से कहा कि कहाँ से मार आती थी, मारने वाला तो हमको नज़र नहीं आता था. आपने फ़रमाया फ़रिश्तों की तरफ़ से, तो कहने लगा फिर वही तो ग़ालिब हुए, तुम तो ग़ालिब नहीं हुए.

(२१) तो बन्दे को चाहिये कि उसीपर भरोसा करे और अपने ज़ोर और क़ुव्वत और सामान व संख्या पर नाज़ न करे.

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ
كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۞ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا
نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّ لَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا
تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۞ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۞ اِنَّ
شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا
يَعْقِلُوْنَ ۞ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ
اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

फैंकी तुमने न फैंकी बल्कि अल्लाह ने फैंकी और इसलिये कि मुसलमानों को उससे अच्छा इनाम अता फ़रमाए, बेशक अल्लाह सुनता जानता है[१०] ﴾१७﴿ तो लो और उसके साथ यह है कि अल्लाह काफ़िरों का दाव सुस्त करने वाला है ﴾१८﴿ ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो यह फ़ैसला तुमपर आचुका[११] और अगर बाज़ आओ तो तुम्हारा भला है[१२] और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और उसके साथ यह है कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है ﴾१९﴿

तीसरा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो[१] और सुन सुनाकर उससे न फिरो ﴾२०﴿ और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हमने सुना और वो नहीं सुनते[२] ﴾२१﴿ बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जो बहरे गूंगे हैं जिनको अक़्ल नहीं[३] ﴾२२﴿ और अगर अल्लाह उन्हें कुछ भलाई[४] जानता तो उन्हें सुना देता और अगर[५] सुना देता जब भी आख़िर मुंह फेर कर पलट जाते[६] ﴾२३﴿ ऐ ईमान वालो अल्लाह और

सूरए अनफ़ाल - दूसरा रूकू

(१) हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ग़नूदगी अगर जंग में हो तो अम्न है और अल्लाह की तरफ़ से है, और नमाज़ में हो तो शैतान की तरफ़ से है. जंग में ऊंघ का अम्न होना इससे ज़ाहिर है कि जिसे जान का डर हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती, वह ख़तरे और बेचैनी में रहता है. सख़्त डर के वक़्त ऊंघ आना, अम्न पाने और डर निकल जाने की दलील है. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि जब मुसलमानों को डर हुआ और बहुत ज़्यादा प्यास लगी तो उनपर ऊंघ डाल दी गई जिससे उन्हें राहत हासिल हुई और थकन और प्यास दूर हुई और वो दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए. यह ऊंघ उनके हक़ में नेअमत थी और एक साथ सबको आई. बड़ी जमाअत का सख़्त डर की हालत में इस तरह एक साथ ऊंघ जाना, ख़िलाफ़े आदत है. इसलिये कुछ उलमा ने फ़रमाया, यह ऊंघ चमत्कार के हुक्म में है. (ख़ाज़िन)

(२) बद्र के दिन मुसलमान रेगिस्तान में उतरे. उनके और उनके जानवरों के पाँव रेत में धंस जाते थे और मुश्रिक उनसे पहले पानी पर क़ब्ज़ा कर चुके थे. सहाबा में कुछ हज़रात को वुज़ू की, कुछ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और प्यास की सख़्ती थी, तो शैतान ने वसवसा डाला कि तुम गुमान करते हो कि तुम हक़ पर हो, तुम में अल्लाह के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और हाल यह है कि मुश्रिक लोग ग़ालिब होकर पानी पर पहुंच गए, तुम बग़ैर वुज़ू और ग़ुस्ल किये नमाज़ें पढ़ते हो तो तुम्हें दुश्मन पर विजयी होने की किस तरह उम्मीद है. तो अल्लाह तआला ने मेंह भेजा जिससे जंगल सैराब हो गया और मुसलमानों ने उससे पानी पिया और ग़ुस्ल किये और वुज़ू किये और अपनी सवारियों को पिलाया और अपने बर्तनों को भरा और ग़ुबार बैठ गया, ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उसपर क़दम जमने लगे और यह नेअमत विजय और कामयाबी हासिल होने की दलील है.

(३) उनकी मदद करके और उन्हें बशारत दे कर.

(४) अबूदाउद ज़मानी, जो बद्र में हाज़िर हुए थे, फ़रमाते हैं कि मैं मुश्रिक की गर्दन मारने के लिये उसके दरपे हुआ. उसका सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया, तो मैंने जान लिया कि उसको किसी और ने क़त्ल किया. सहल बिन हनीफ़ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उसकी तलवार पहुंचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिस्म से जुदा होकर गिर जाता था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मुट्ठी कंकरियाँ काफ़िरों पर फैंक कर मारीं तो कोई काफ़िर ऐसा न बचा जिसकी आँखों में उसमें से कुछ पड़ा न हो. बद्र का यह वाक़िआ शुक्रवार की सुबह सत्तरह रमज़ान सन दो हिजरी में पेश आया.

(५) जो बद्र में पेश आया और काफ़िर मक़तूल और क़ैद हुए, यह तो दुनिया का अज़ाब है.

(६) आख़िरत में.

لِمَا يُحْيِيكُمْ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ ع يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ

रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो[७] जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी[८] और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उसके दिली इरादों में हायल(बाधक) हो जाता है और यह कि तुम्हें उसकी तरफ़ उठना है﴿२४﴾ और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ालिस ज़ालिमों को ही न पहुंचेगा[९] और जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है﴿२५﴾ और याद करो[१०] जब तुम थोड़े थे मुल्क में दबे हुए[११] डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें अचानक न ले जाएं तो उसने तुम्हें[१२] जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दें[१३] कि कहीं तुम एहसान मानो﴿२६﴾ ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल से दग़ा न करो[१४] और न अपनी अमानतों में जान बूझकर ख़यानत﴿२७﴾ और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितने हैं[१५] और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है[१६]﴿२८﴾

चौथा रूकू

ऐ ईमान वालो अगर अल्लाह से डरोगे[१] तो तुम्हें वह देगा जिस से हक़(सत्य) को बातिल(झूट) से अलग कर लो और तुम्हारी बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल(बुज़ुर्गी) वाला है﴿२९﴾

(७) यानी अगर काफ़िर तुमसे ज़्यादा भी हों तो उनके मुक़ाबले से न भागो.

(८) यानी मुसलमानों में से जो जंग में काफ़िरों के मुक़ाबले से भागा वह अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हुआ, उसका ठिकाना दोज़ख़ है. सिवाय दो हालतों के, एक तो यह कि लड़ाई का हुनर या कर्तब करने के लिये पीछे हटा हो, वह पीठ देने और भागने वाला नहीं है. दूसरे, जो अपनी जमाअत में मिलने के लिये पीछे हटा, वह भी भागने वाला नहीं समझा जाएगा.

(९) जब मुसलमान बद्र की लड़ाई से लौटे तो उनमें से एक कहता था कि मैं ने फ़लाँ को क़त्ल किया दूसरा कहता कि मैंने उसको क़त्ल किया. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोर और क़ुव्वत से मत जोड़ो कि हक़ीक़त में अल्लाह की मदद और उसकी तक़वियत और ताईद है.

(१०) विजय और कामयाबी.

(११) यह सम्बोधन मुश्रिकों से हैं जिन्होंने बद्र में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग की और उनमें से अबू जहल ने अपनी और हुज़ूर की निस्बत यह दुआ कि यारब हम में जो तेरे नज़दीक अच्छा हो, उसकी मदद कर और जो बुरा हो, उसे मुसीबत में जकड़. और एक रिवायत में है कि मुश्रिकों ने मक्कए मुकर्रमा से बद्र को चलते वक़्त काबए मुअज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर यह दुआ की थी कि यारब अगर मुहम्मद सच्चाई पर हों, तो उनकी मदद फ़रमा और अगर हम हक़ पर हैं, तो हमारी मदद कर. इसपर यह आयत उतरी कि जो फ़ैसला तुमने चाहा था वह कर दिया गया और जो समूह सच्चाई पर था, उसको विजय दी गई. यह तुम्हारा मांगा हुआ फ़ैसला है. अब आसमानी फ़ैसले से भी, जो उनका तलब किया हुआ था, इस्लाम की सच्चाई साबित हुई. अबू जहल भी इस जंग में ज़िल्लत और रूसवाई के साथ मारा गया और उसका सर रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर किया गया.

(१२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी और हुज़ूर के साथ जंग करने से.

सूरए अनफ़ाल - तीसरा रूकू

(१) क्योंकि रसूल की फ़रमाँबरदारी और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी एक ही चीज़ है, जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की.

(२) क्योंकि जो सुन कर फ़ायदा न उठाए, और नसीहत हासिल न करे, उसका सुनना सुनना ही नहीं है. यह मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों का हाल है. मुसलमानों को इस हाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है.

(३) न वो सत्य सुनते हैं, न सत्य बोलते हैं, न सच्चाई को समझते हैं, कान और ज़बान और अक़्ल से फ़ायदा नहीं उठाते. जानवरों से भी गए गुज़रे हैं. क्योंकि वो जान बूझकर बहरे गूंगे बनते हैं और अक़्ल से दुश्मनी करते हैं. यह आयत बनी अब्दुद दार बिन कुसई के हक़ में उतरी जो कहते थे कि जो कुछ मुहम्मद लाए, हम उससे बहरे गूंगे अंधे हैं . ये सब लोग उहद की लड़ाई

में मारे गए और उनमें से सिर्फ़ दो व्यक्ति ईमान लाए, मुसअब बिन उमैर और सुवैबित बिन हुरमला.

(४) यानी सिद्क़ और रग़बत.

(५) मौजूदा हालत में, यह जानते हुए, कि उनमें सिद्क़ और रग़बत नहीं है.

(६) अपनी दुशमनी, और सच्चाई से विरोध के कारण.

(७) क्योंकि रसूल का बुलाना अल्लाह ही का बुलाना है. बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन मुअल्ला से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था, मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पुकारा. मैं ने जवाब न दिया. फिर मैं ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं नमाज़ पढ़ रहा था. हुज़ूर ने फ़रमाया, क्या अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया है कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो . ऐसा ही दूसरी हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत उबई बिन कअब नमाज़ पढ़ते थे. हुज़ूर ने उन्हें पुकारा. उन्हों ने जल्दी नमाज़ पूरी करके सलाम अर्ज़ किया . हुज़ूर ने फ़रमाया तुम्हें जवाब देने से किस चीज़ ने रोका. अर्ज़ किया, हुज़ूर मैं नमाज़ में था. हुज़ूर ने फ़रमाया, क्या तुमने क़ुरआन पाक में यह नहीं पाया कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो. अर्ज़ किया, बेशक, आयन्दा ऐसा न होगा.

(८) इस चीज़ से या ईमान मुराद है, क्योंकि काफ़िर मुर्दा होता है, ईमान से उसको ज़िन्दगी हासिल होती है. क़तादा ने कहा कि वह चीज़ क़ुरआन है, क्योंकि इससे दिलों की ज़िन्दगी है और इसमें निजात है, और दोनों जगत की इस्मत है. मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि वह चीज़ जिहाद है, क्योंकि उसकी बदौलत अल्लाह तआला ज़िल्लत के बाद इज़्ज़त अता फ़रमाता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि वह शहादत है, इसलिये कि शहीद अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं.

(९) बल्कि अगर तुम उससे न डरे और उसके कारणों यानी ममनूआत को तर्क न किया और वह फ़ितना नाज़िल हुआ तो यह न होगा कि उसमें ख़ास ज़ालिम और बदकार ही जकड़े हों बल्कि वह नेक और बद सबको पहुंच जाएगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ईमान वालों को हुक्म दिया कि वो अपने बीच ममनूआत न होने दें, यानी अपनी ताक़त भर बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मना करें. अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अज़ाब उन सब को आम होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सबको पहुंचेगा . हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ख़ास लोगों के अमल पर आम अज़ाब नहीं करता जबतक कि आम तौर पर लोग ऐसा न करें कि ममनूआत को अपने बीच होता देखते रहें और उसके रोकने और मना करने पर क़ादिर हों, इसके बावुजूद न रोकें, न मना करें. जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआला अज़ाब में ख़ास और आम सब को जकड़ता है. अबू दाऊद की हदीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में बुराई में सक्रिय हो और वो लोग क़ुदरत के बावुजूद उसको न रोकें, तो अल्लाह तआला उन्हें मरने से पहले अज़ाब में जकड़ता है. इससे मालूम हुआ कि जो क़ौम अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से नहीं रुकती, और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती, वह अपने इस फ़र्ज़ के छोड़ने की सज़ा में अज़ाब में जकड़ी जाती है.

(१०) ऐ ईमान वाले मुहाजिरीन, इस्लाम के शुरू में हिजरत करने से पहले मक्कए मुकर्रमा में.

(११) क़ुरैश तुमपर ग़ालिब थे और तुम.

(१२) मदीनए तैय्यिबह में.

(१३) यानी ग़नीमत के माल, जो तुमसे पहले किसी उम्मत के लिये हलाल नहीं किये गए थे.

(१४) फ़र्ज़ों का छोड़ देना अल्लाह तआला से ख़यानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से. यह आयत अबू लुबाबा हारुन बिन अब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी के हक़ में नाज़िल हुई. वाक़िआ यह था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों का दो हफ़्ते से ज़्यादा समय तक घिराव किया . वो इस घिराव से तंग आगए और उनके दिल डर गए, तो उनसे उनके सरदार कअब बिन असद ने यह कहा कि अब तीन शक्लें हैं, या तो उस शख़्स यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ करो और उनकी बैअत करलो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, वह अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं, यह ज़ाहिर हो चुका. और यह वही रसूल हैं जिनका ज़िक्र तुम्हारी किताब में है. उनपर ईमान ले आए, तो जान माल आल औलाद सब मेहफ़ूज़ रहेंगे. मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो कअब ने दूसरी शक्ल पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीबी बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तलवारें खींचकर मुहम्मद और उनके साथियों के मुक़ाबले में आएं कि अगर हम इस मुक़ाबले में हलाक भी हो जाएं तो हमारे साथ अपने बाल बच्चों का ग़म तो न रहे. इसपर क़ौम ने कहा कि बाल बच्चों के बाद जीना ही किस काम का. तो कअब ने कहा कि यह भी मंज़ूर नहीं है तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुलह की दरख़्वास्त करो, शायद उसमें बेहतरी की कोई सूरत निकल आए. तो उन्होंने हुज़ूर से सुलह की दरख़्वास्त की लेकिन हुज़ूर ने मंज़ूर नहीं फ़रमाया, सिवाय इसके कि अपने हक़ में सअद बिन मआज़ के फ़ैसले को मंज़ूर करें. इसपर उन्होंने कहा कि हमारे पास अबू लुबाबा को भेज दीजिये क्योंकि अबू लुबाबा से उनके सम्बन्ध थे और अबू लुबाबा का माल और उनकी औलाद और उनके बाल बच्चे सब बनी क़ुरैज़ा के पास थे. हुज़ूर ने अबू लुबाबा को भेज दिया. बनी क़ुरैज़ा ने उनसे राय दरियाफ़्त की कि क्या हम सअद बिन मआज़ का फ़ैसला मंज़ूर करलें कि जो कुछ वो हमारे हक़ में फ़ैसला दें वह हमें क़ुबूल हो. अबू लुबाबा ने अपनी गर्दन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि यह तो गले कटवाने की बात है. अबू लुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में यह बात जम गई कि मुझसे अल्लाह और उसके रसूल की ख़यानत वाक़े हुई. यह सोचकर वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में तो न आए, सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आपको बंधवा लिया और अल्लाह की क़सम खाई कि न कुछ खाएंगे न पियेंगे यहाँ तक कि मर जाएं या अल्लाह तआला उनकी तौबह

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۤ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَ مَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَ هُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ مَا كَانُوْۤا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَ مَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ

और ऐ मेहबूब ! याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ धोखा करते थे कि तुम्हें बन्द करलें या शहीद करदें या निकाल दें[२] और वो अपना सा धोखा करते थे और अल्लाह अपनी छुपवां तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की छुपवाँ तदबीर सबसे बेहतर﴿३०﴾ और जब उनपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं हाँ हमने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते यह तो नहीं मगर अगलों के क़िस्से[३]﴿३१﴾ और जब बोले[४] कि ऐ अल्लाह अगर यही(क़ुरआन) तेरी तरफ़ से हक़ है तो हमपर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ला﴿३२﴾ और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ मेहबूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो[५] और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं जब तक वो बख़्शिश मांग रहे हैं[६]﴿३३﴾ और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न करे वो तो मस्जिदे हराम से रोक रहे हैं[७] और वो इसके अहल(योग्य) नहीं[८] इसके औलिया तो परहेज़गार ही हैं मगर उनमें अक्सर को इल्म नहीं﴿३४﴾ और काबे के पास उनकी नमाज़ नहीं मगर सीटी

क़ुबूल करे. समय समय पर उनकी बीबी आकर उन्हें नमाज़ों के लिये और इन्सानी हाजतों के लिये खोल दिया करतीं और फिर बांध दिये जाते थे . हुज़ूर को जब यह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबू लुबाबा मेरे पास आते तो मैं उनके लिये मग़फ़िरत की दुआ करता लेकिन जब उन्होंने यह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जबतक अल्लाह तआला उनकी तौबह क़ुबूल न करे. वह सात दिन बंधे रहे, न कुछ खाया न पिया . यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर गए. फिर अल्लाह तआला ने उनकी तौबह क़ुबूल की. सहाबा ने उन्हें तौबह क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी दी तो उन्होंने कहा मैं ख़ुदा की क़सम न खुलूँगा जब तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुझे ख़ुद न खोलें. हज़रत ने उन्हें अपने मुबारक हाथों से खोल दिया. अबू लुबाबा ने कहा, मेरी तौबह उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूँ जिसमें मुझ से यह ख़ता सरज़द हुई और मैं अपने कुल माल को अपनी मिल्क से निकाल दूँ. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है. उनके बारे में यह आयत उतरी.

(१५) कि आख़िरत के कामों में रूकावट बनता है.

(१६) तो समझ वाले को चाहिये कि उसी का तलबगार रहे और माल व औलाद के कारण उससे मेहरूम न हो.

सूरए अनफ़ाल - चौथा रूकू

(१) इस तरह कि गुनाह छोड़ो और ताअत बजा लाओ.

(२) इसमें उस घटना का बयान है जो हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने बयान फ़रमाई कि क़ुरैश के काफ़िर कमेटी घर (दारून नदवा) में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत मशवरा करने के लिये जमा हुए. इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं नज्द का शैख़ हूँ मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ या सम्मेलन की सूचना मिली तो मैं आया. मुझसे तुम कुछ न छुपाना. मैं तुम्हारा दोस्त हूँ और इस मामले में बेहतर राय से तुमहारी मदद करूंगा. उन्होंने उसको शामिल कर लिया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में रायज़नी शुरू हुई. अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राय यह है कि मुहम्मद को पकड़कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत बन्धनों से बांध दो और दरवाज़ा बन्द करदो, सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिससे कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं हलाक होकर रह जाएं. इसपर शैतान लईन जो नज्द का शैख़ बना हुआ था, बहुत नाख़ुश हुआ और कहा अत्यन्त बुरी राय है. यह ख़बर मशहूर होगी और उनके साथी आएंगे और तुमसे मुक़ाबला करेंगे और उनको तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे. लोगों ने कहा, शैख़े नज्दी ठीक कहता है. फिर हिशाम बिन अम्र खड़ा हुआ. उसने कहा मेरी राय यह है कि उनको ऊंट पर सवार करके अपने शहर से निकाल दो, फिर वह जो कुछ भी करें, उससे तुम्हें कुछ नुक़सान नहीं. इब्लीस ने इस राय को भी नापसन्द किया और कहा, जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे बुद्धिमानों को हैरान कर दिया, उसको तुम दूसरों की तरफ़ भेजते हो. तुमने उसकी मीठी ज़बान, तलवार की तरह काट करने वाले बोल, और दिलकशी नहीं देखी है, अगर

तुमने ऐसा किया तो वह दूसरी क़ौम के दिलों को अपने क़ाबू में कर के उन लोगों के साथ तुमपर चढ़ाई करेंगे. सबने कहा शैख़े नज्दी की राय ठीक मालूम होती है. इस पर अबू जहल खड़ा हुआ और उसने यह राय दी कि क़ुरैश के हर ख़ानदान से एक एक अच्छे नसब वाला जवान चुना जाए और उनको तेज़ तलवारें दी जाएं . वो सब एक बार में मुहम्मद पर हमला करके क़त्ल करदें तो बनी हाशिम क़ुरैश के सारे क़बीलों से न लड़ सकेंगे. ज़्यादा से ज़्यादा यह है कि ख़ून का मुआविज़ा देना पड़ेगा, वह दे देंगे. इब्लीसे लईन ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया और अबू जहल की बहुत तारीफ़ की और इसीपर सब की सहमति हो गई. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर वाक़िआ अर्ज़ किया और अर्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी ख़्वाबगाह में रात को न रहें. अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मदीनए तैय्यिबह का इरादा फ़रमाएं. हुज़ूर ने अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को रात में अपने बिस्तर पर रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर ओढ़ो, तुम्हें कोई नागवार बात पेश न आएगी. हुज़ूर अपने मकान से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुट्ठी धूल दस्ते मुबारक में ली और आयत *"इन्ना जअलना फ़ी अअनाक़िहिम अग़लालन---"* पढ़कर घिराव करने वालों पर मारी. सब की आँखों और सरों पर पहुंची, सब अंधे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के साथ ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और हज़रत अली को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा में छोड़ा. मुश्रिक रात भर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकान का पेहरा देते रहे. सुब्ह को जब क़त्ल के इरादे से आक्रमण किया तो देखा कि हज़रत अली हैं. उनसे हुज़ूर को दरियाफ़्त किया कि कहाँ हैं. उन्हों ने फ़रमाया, हमें मालूम नहीं . तो तलाश के लिये निकले. जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देखकर कहने लगे कि अगर इसमें दाख़िल होते तो ये जाले बाक़ी न रहते. हुज़ूर इस ग़ार में तीन दिन रहे फिर मदीने को रवाना हुए.

(३) यह आयत नज़र बिन हारिस के हक़ में उतरी जिसने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़ुरआने पाक सुनकर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही किताब कह लेते. अल्लाह तआला ने उनका यह कथन नक़्ल किया कि इसमें उनकी हद दर्जे की बेहयाई और बेशर्मी है कि क़ुरआने पाक की फ़साहत और बलाग़त देखने और अरब के चोटी के विद्वानों को क़ुरआने करीम जैसी एक सूरत बना लाने की चुनौती देने और उन सब के अपना सा मुंह लेकर रह जाने के बाद नज़र बिन हारिस का यह कलिमा कहना और ऐसा झूटा दावा करना निहायत ज़लील हरकत है.

(४) काफ़िर, और उनमें यह कहने वाला या नज़र बिन हारिस था या अबू जहल, जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है.

(५) क्योंकि रहमतुल-लिल-आलमीन बनाकर भेजे गए हो और अल्लाह की सुन्नत यह है कि जबतक किसी क़ौम में उसके नबी मौजूद हों, उनपर आम बर्बादी का अज़ाब नहीं भेजता, जिसके कारण सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे. मुफ़स्सिरों की एक जमाअत का क़ौल है कि यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उस वक़्त उतरी जब आप मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थे फिर जब आपने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसलमान रह गए, जो इस्तग़फ़ार किया करते थे तो *"वमा कानल्लाहो मुअज़्ज़िबहुम"* नाज़िल हुआ जिसमें बताया गया कि जब तक इस्तग़फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद रहेंगे उस वक़्त तक भी अज़ाब न आएगा. फिर जब वो हज़रात भी मदीनए तैय्यिबह को रवाना हो गए तो अल्लाह तआला ने मक्का की विजय का इज़्न दिया और ये अज़ाबे मौऊद आगया, जिसकी निस्बत इस आयत में फ़रमाया *"वमा लहुम अल्ला युअज़्ज़िबहुमुल्लाह"*. मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि *"मा कानल्लाहो लियुअज़्ज़िबहुम"* भी काफ़िरों का क़ौल है जो उनसे हिकायत के तौर पर नक़्ल किया गया है. अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उनकी जिहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़द्र अहमक़ हैं. आप ही तो यह कहते हैं कि यारब, ये तेरी तरफ़ से हक़ है तो हमपर नाज़िल कर और आप ही यह कहते हैं कि या मुहम्मद, जब तक आप हैं अज़ाब नाज़िल न होगा, क्योंकि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती.

(६) इस आयत से साबित हुआ कि इस्तग़फ़ार अज़ाब से अम्न में रहने का ज़रिया है. हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के लिये दो अमानें उतारीं, एक मेरा उनमें तशरीफ़ फ़रमा होना, एक उनका इस्तग़फ़ार करना.

(७) और ईमान वालों को काबे के तवाफ़ के लिये नहीं आने देते, जैसा कि हुदैबियह की घटना के साल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा को रोका.

(८) और काबे के प्रबन्ध में हिस्सा लेने का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्योंकि मुश्रिक हैं.

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝۳۵ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝۳۶ۙ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ
الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ
فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝۳۷ؑ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ
لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ
سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۳۸ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ
وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝۳۹ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝۴۰

منزل ۲

और ताली[९] तो अब अज़ाब चखो[१०] बदला अपने कुफ़्र का﴾३५﴿ बेशक काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें[११] तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे फिर वो उनपर पछतावा होंगे[१२] फिर मग़लूब(पराजित) कर दिये जाएंगे, और काफ़िरों का हश्र(अंजाम) जहन्नम की तरफ़ होगा﴾३६﴿ इसलिये कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से अलग फ़रमा दे[१३] और निजासतों(गन्दगियों) को तले ऊपर रखकर सब एक ढेर बनाकर जहन्नम में डाल दे वही नुक़सान पाने वाले हैं[१४]﴾३७﴿

पाँचवां रूकू

तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वो बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा[१] और अगर फिर वही करें तो अगलों का दस्तूर(तरीक़ा) गुज़र चुका[२]﴾३८﴿ और अगर उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़साद[३] बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह का होजाए फिर अगर वो बाज़ रहें तो अल्लाह उनके काम देख रहा है﴾३९﴿ और अगर वो फिरें[४] तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है[५] तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार﴾४०﴿

(९) यानी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़ुरैश नंगे होकर ख़ानए काबा का तवाफ़ करते थे और सीटियाँ तालियाँ बजाते थे और ये काम उनका या तो अक़ीदे से था कि सीटी और ताली बजाना इबादत है, या इस शरारत से कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को नमाज़ में परेशानी हो.

(१०) क़त्ल और क़ैद का, बद्र में.

(११) यानी लोगों को अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने से रोकें. यह आयत काफ़िरों में से उन बारह क़ुरैशियों के बारे में उतरी जिन्हों ने काफ़िर लश्कर का खाना अपने ज़िम्मे लिया था और हर एक उनमें से लशकर को खाना देता था हर रोज़ दस ऊंट.

(१२) कि माल भी गया और काम भी न बना.

(१३) यानी अगर वह काफ़िरों को ईमान वालों से मुमताज़ कर दे.

(१४) कि दुनिया और आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल ख़र्च करके आख़िरत का अज़ाब मोल लिया.

सूरए अनफ़ाल - पाँचवां रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आए और इस्लाम लाए तो उसका पहला कुफ़्र और गुनाह माफ़ हो जाते हैं.

(२) कि अल्लाह तआला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने नबियों और वलियों की मदद करता है.

(३) यानी शिर्क.

(४) ईमान लाने से.

(५) तुम उसकी मदद पर भरोसा रखो.

पारा नौ समाप्त

واعلموا انما غنمتم من شيء فان لله خمسه
وللرسول ولذي القربى واليتمى والمسكين و
ابن السبيل ان كنتم امنتم بالله وما انزلنا
على عبدنا يوم الفرقان يوم التقى الجمعن
والله على كل شيء قدير ﴿٤١﴾ اذ انتم بالعدوة
الدنيا وهم بالعدوة القصوى والركب اسفل
منكم ولو تواعدتم لاختلفتم في الميعد
ولكن ليقضي الله امرا كان مفعولا ليهلك
من هلك عن بينة ويحيى من حي عن
بينة وان الله لسميع عليم ﴿٤٢﴾ اذ يريكهم الله
في منامك قليلا ولو اريكهم كثيرا لفشلتم
ولتنازعتم في الامر ولكن الله سلم انه
عليم بذات الصدور ﴿٤٣﴾ واذ يريكموهم اذ

दसवां पारा- वअलमू

(सूरए अनफ़ाल जारी)

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत (युद्ध के बाद हाथ आया माल) लो(६) तो उसका पांचवाँ हिस्सा ख़ास अल्लाह और रसूल और क़राबत (रिशतेदार) वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है(७) अगर तुम ईमान लाए हो अल्लाह पर और उसपर जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा जिसमें दोनों फ़ौजें मिली थीं(८) और अल्लाह सब कुछ कर सकता है ﴿४१﴾ जब तुम नाले के किनारे थे(९) और काफ़िर परले किनारे और क़ाफ़िला(१०) तुमसे तराई में(११) और अगर तुम आपस में कोई वादा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते(१२) लेकिन यह इसलिये कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है(१३) कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो(१४) और जो जिये दलील से जिये(१५) और बेशक अल्लाह ज़रूर सुनता है ﴿४२﴾ जब कि ऐ मेहबूब अल्लाह तुम्हें काफ़िरों को तुम्हारे ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था(१६) और ऐ मुसलमानो अगर वह तुम्हें बहुत करके दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मामले में झगड़ा डालते(१७) मगर अल्लाह ने बचा लिया(१८) बेशक वह दिलों की बात जानता है ﴿४३﴾ और जब लड़ते वक़्त(१९)

सूरए अनफ़ाल - पाँचवाँ - रूकू (जारी)

(६) चाहे कम या ज़्यादा, ग़नीमत वह माल है जो मुसलमानों को काफ़िरों से जंग में विजय के बाद हासिल हो. माले ग़नीमत पाँच हिस्सों पर तक़सीम किया जाए, इसमें से चार हिस्से लड़ने वालों के लिये.

(७) ग़नीमत का पाँचवां हिस्सा, फिर पाँच हिस्सों पर तक़सीम होगा. इनमें से एक हिस्सा जो कुल माल का पच्चीसवाँ हिस्सा हुआ, वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये है, और एक हिस्सा आपके एहले क़राबत के लिये, और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों मुसाफ़िरों के लिये. रसूले करीम के बाद हुज़ूर और आपके एहले क़राबत के हिस्से भी यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और यह पांचवाँ हिस्सा इन्ही तीन पर तक़सीम हो जाएगा. यही क़ौल है इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो का.

(८) इस दिन से बद्र का दिन मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसलमानों और काफ़िरों की फ़ौजें. और यह घटना सत्रह या उन्नीस रमज़ान को पेश आई. रसूलुल्लाह के सहाबा की संख्या तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा थी और मुश्रिक हज़ार के क़रीब थे. अल्लाह तआला ने उन्हें परास्त किया . उनमें से सत्तर से ज़्यादा मारे गए और इतने ही गिरफ़्तार हुए.

(९) जो मदीनए तैय्यिबह की तरफ़ है.

(१०) क़ुरैश का, जिसमें अबू सुफ़ियान वग़ैरह थे.

(११) तीन मील के फ़ासले पर समुद्र तट की तरफ़.

(१२) यानी अगर तुम और वो आपस में जंग का कोई समय निर्धारित करते, फिर तुम्हें अपनी अल्पसंख्या और बेसामानी और उनकी कसरत और सामान का हाल मालूम होता तो ज़रूर तुम दहशत और अन्देशे से मीआद में इख़्तिलाफ़ करते.

(१३) यानी इस्लाम और मुसलामानों की जीत और दीन का सम्मान और दीन के दुश्मनों की हलाकत, इसलिये तुम्हें उसने बे मीआदी जमा कर दिया.

(१४) यानी खुला तर्क क़ायम होने और इबरत का मुआयना कर लेने के बाद.

(१५) मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि हलाक से कुफ़्र और हयात से ईमान मुराद है. मानी ये हैं कि जो कोई काफ़िर हो, उसको चाहिये कि पहले हुज्जत या तर्क क़ायम करे और ऐसे ही जो ईमान लाए वह यक़ीन के साथ ईमान लाए और हुज्जत एवं दलील से जान ले कि यह सच्चा दीन है. बद्र का वाक़िआ खुली निशानियों में से है. इसके बाद जिसने कुफ़्र इख़्तियार किया वह घमण्डी है और अपने नफ़्स को धोखा देता है.

(१६) यह अल्लाह तआला की नेअमत थी कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काफ़िरों की संख्या थोड़ी दिखाई गई और

الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ
لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ
تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ
تَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ زَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّىْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاۗءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰي عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ
مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ

तुम्हें करके दिखाए[२०] और तुम्हें उनकी निगाहों में थोड़ा किया[२१] कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है[२२] और अल्लाह की तरफ़ सब काम पलटने वाले हैं《४४》

छटा रूकू

ऐ ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम (डटे) रहो और अल्लाह की याद बहुत करो[१] कि तुम मुराद को पहुंचो《४५》 और अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई हवा जाती रहेगी[२] और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है[३]《४६》 और उन जैसे न होना जो अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते[४] और उनके सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं《४७》 और जबकि शैतान ने उनकी निगाह में उनके काम भले कर दिखाए[५] और बोला आज तुमपर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए उलटे पाँव भागा और बोला मैं तुमसे अलग हूँ[६] मैं वह देखता हूँ जो तुम्हें नज़र नहीं आता[७] मैं अल्लाह से

आपने अपना यह ख़्वाब सहाबा से बयान किया. इससे उनकी हिम्मतें बढ़ीं और अपनी कम ताक़ती का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और दिल मज़बूत हुए. नबियों का ख़्वाब सच्चा होता है. आपको काफ़िर दिखाए गए थे और ऐसे काफ़िर जो दुनिया से बे ईमान जाएं और कुफ़्र पर ही उनका अन्त हो. वो थोड़े ही थे, क्योंकि जो लश्कर मुक़ाबले पर आया था उसमें काफ़ी लोग वो थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुआ और ख़्वाब में कम संख्या की ताबीर कमज़ोरी से है. चुनांचे अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ग़ालिब फ़रमाकर काफ़िरों की कमज़ोरी ज़ाहिर फ़रमा दी.

(१७) और अडिग रहने या भाग छूटने के बीच हिचकिचाते हुए रहते.

(१८) तुमको बुज़दिली, हिचकिचाहट और आपसी मतभेद से.

(१९) ऐ मुसलमानो !

(२०) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वो हमारी नज़रों में इतने कम जचे कि मैंने अपने बराबर वाले एक आदमी से पूछा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे, उसने कहा मेरे ख़्याल में सौ हैं और थे हज़ार.

(२१) यहां तक कि अबूजहल ने कहा कि इन्हें रस्सियों में बाँध लो जैसे कि वह मुसलमानों की जमाअत को इतना कम देख रहा था कि मुक़बला करने और युद्ध करने के लायक़ भी ख़्याल नहीं करता था और मुश्रिकों को मुसलमानों की संख्या थोड़ी दिखाने में यह हिकमत थी कि मुश्रिक मुक़ाबले पर जम जाएं, भाग न पड़ें और यह बात शुरू में थी, मुक़ाबला होने के बाद उन्हें मुसलमान बहुत अधिक नज़र आने लगे.

(२२) यानी इस्लाम का ग़लबा और मुसलमानों की जीत और शिर्क की दमन और मुश्रिकों का अपमान और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कार का इज़हार कि जो फ़रमाया था वह हुआ कि अल्पसंख्यक जमाअत भारी भरकम लश्कर पर ग़ालिब आई.

सूरए अनफ़ाल - छटा रुकू

(१) उससे मदद चाहो और काफ़िरों पर क़ाबू पाने की दुआएं करो. इससे मालूम हुआ कि इन्सान को हर हाल में लाज़िम है कि वह अपने दिल और ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र में लगाए रखे और किसी सख़्ती और परेशानी में भी उससे ग़ाफ़िल न हो.

(२) इस आयत से मालूम हुआ कि आपसी झगड़े शिथिलता, कमज़ोरी और बेवक़ारी का कारण हैं और यह भी मालूम हुआ कि आपसी झगड़ों से मेहफ़ूज़ रहने की विधि ख़ुदा और रसूल की फ़रमाँबरदारी और दीन का पालन है.

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ إِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ۗ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾
وَلَوْ تَرٰٓى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ
يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْكُمْ
وَأَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ كَدَأْبِ اٰلِ
فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
أَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۙ وَ
أَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

डरता हूँ[८] और अल्लाह का अज़ाब सख़्त है﴿४८﴾

सातवाँ रुकू

जब कहते थे मुनाफ़िक़[१] और वो जिनके दिलों में आज़ार है[२] कि ये मुसलमान अपने दीन पर घमण्डी हैं[३], और जो अल्लाह पर भरोसा करे[४] तो बेशक अल्लाह[५] ग़ालिब हिकमत वाला है﴿४९﴾ और कभी तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मगर रहे हैं उनके मुंह और उनकी पीठ पर[६], और चखो आग का अज़ाब﴿५०﴾ यह[७] बदला है उसका जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा[८] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता[९]﴿५१﴾ जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीक़ा[१०], वो अल्लाह की आयतों से इन्कारी हुए तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला सख़्त अज़ाब वाला है﴿५२﴾ यह इसलिये कि अल्लाह किसी क़ौम से जो नेअमत उन्हें दी थी बदलता नहीं जबतक वो ख़ुद न बदल जाएं[११] और बेशक अल्लाह सुनता जानता है﴿५३﴾ जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे अगलों का तरीक़ा, उन्होंने अपने रब की

(३) उनका सहायक और मददगार.

(४) यह आयत क़ुरैश के काफ़िरों के बारे में उतरी जो बद्र में बहुत इतराते और घमण्ड करते आए थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दुआ की - यारब ये क़ुरैश आगए घमण्ड और अहंकार में डूबे हुए और जंग के लिये तैयार. तेरे रसूल को झुटलाते हैं. यारब, अब वह मदद इनायत हो जिसका तूने वादा किया था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़ियान ने देखा कि क़ाफ़िले को कोई ख़तरा नहीं रहा तो उन्होंने क़ुरैश के पास संदेश भेजा कि तुम क़ाफ़िले की मदद के लिये आए थे, अब उसके लिये कोई ख़तरा नहीं है, इस लिये वापस जाओ. इसपर अबू जहल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहाँ तक कि हम बद्र में उतरें, तीन दिन वहाँ ठहरें, ऊंट ज़िब्ह करें, बहुत से खाने पकाएं, शराब पियें, कनीज़ों का गाना बजाना सुनें. अरब में हमारी शोहरत हो और हमारी हैबत हमेशा बाक़ी रहे. लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंज़ूर था. जब वो बद्र में पहुंचे तो शराब के जाम की जगह उन्हें मौत का प्याला पीना पड़ा और कनीज़ों के गाने बजाने के बदले रोने वालियां उन्हें रोईं. अल्लाह तआला मूमिनों को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़ए से सबक़ पकड़ें और जान लें कि घमण्ड और अहंकार का अंजाम ख़राब है. बन्दे को इख़लास और ख़ुदा व रसूल की इताअत चाहिये.

(५) और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुशमनी और मुसलमानों के विरोध में जो कुछ उन्होंने किया था उसपर उनकी प्रशंसा की और उन्हें बुरे कामों पर क़ायम रहने की रुचि दिलाई और जब क़ुरैश ने बद्र में जाने पर सहमति कर ली तो उन्हें याद आया कि उनके और बनी बक्र क़बीले के बीच शत्रुता है. संभव था कि वो यह ख़याल करके वापसी का इरादा करते. यह शैतान को मंज़ूर न था. इसलिये उसने यह धोखा किया कि वह सुराक़ह बिन मालिक बिन जअसम बनी कनानह के सरदार की सूरत में नमूदार हुआ और एक लश्कर और एक झण्डा साथ लेकर मुश्रिकों से आ मिला. और उनसे कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार हूँ आज तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं. जब मुसलमानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर आमने सामने हुए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मुट्ठी मिट्टी मुश्रिकों के मुंह पर मारी और वो पीठ फेर कर भागे और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम इब्लीसे लईन की तरफ़ बढ़े जो सुराक़ह की शक्ल में हारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था. वह हाथ छुड़ा कर अपने गिरोह समेत भागा. हारिस पुकारता रह गया, सुराक़ह, सुराक़ह, तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे, कहाँ जाते हो. कहने लगा मुझे वह नज़र आता है जो तुम नहीं देख पा रहे हो. इस आयत में इसी घटना का बयान है.

(६) और अम्न की जो ज़िम्मेदारी ली थी उससे सुबुकदोश होता हूँ. इस पर हारिस बिन हिशाम ने कहा कि हम तेरे भरोसे पर आए थे, तू इस हालत में हमें रुस्वा करेगा. कहने लगा -

(७) यानी फ़रिश्तों की फ़ौज.

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ
كُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ
اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ
عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ
كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي
الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ
عَلٰى سَوَآءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَا
يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾
وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ
الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

आयतें झुटलाईं तो हमने उनको उनके गुनाहों के कारण हलाक किया और हमने फ़िरऔन वालों को डुबो दिया[११] और वो सब ज़ालिम थे﴿५४﴾ बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते﴿५५﴾ वो जिन से तुमने मुआहिदा(समझौता) किया था फिर हर बार अपना एहद तोड़ देते हैं[१३] और डरते नहीं[१४]﴿५६﴾ तो अगर तुम उन्हें कहीं लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिससे उनके बचे हुओं को भगाओ[१५] इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इबरत(सीख) हो[१६]﴿५७﴾ और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा का डर करो[१७] तो उनका एहद उनकी तरफ़ फैंक दो बराबरी पर[१८] बेशक दग़ा वाले अल्लाह को पसन्द नहीं﴿५८﴾

आठवाँ रुकू

और हरगिज़ काफ़िर इस घमण्ड में न रहें कि वो[१] हाथ से निकल गए बेशक वो आजिज़ नहीं करते[२]﴿५९﴾ और उनके लिये तैयार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े[३] और जितने घोड़े बांध सको कि उनसे उनके दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं[४] और उनके सिवा कुछ औरों के दिलों में जिन्हें तुम नहीं जानते[५] अल्लाह उन्हें जानता है, और अल्लाह की राह में

(८) कहीं वह मुझे हलाक न कर दे. जब काफ़िरों को हार हुई और वो पराजित होकर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे तो उन्होंने मशहूर किया कि हमारी हार और पराजय का कारण सुराक़ह हुआ. सुराक़ह को यह ख़बर पहुंची तो उसे अचंभा हुआ और उसने कहा ये लोग क्या कहते हैं, न मुझे उनके आने की ख़बर, न जाने की. पराजय हो गई तब मैंने सुना है. क़ुरैश ने कहा, तू अमुक अमुक दिन हमारे पास आया था. उसने क़सम खाई कि यह ग़लत है. तब मालूम हुआ कि वह शैतान था.

सूरए अनफ़ाल - सातवाँ रुकू

(१) मदीने के.

(२) ये मक्कए मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्होंने कलिमा तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उनके दिलों में शक शुबह बाक़ी था. जब क़ुरैश के काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग के लिये निकले, यह भी उनके साथ बद्र में पहुंचे. वहाँ जाकर मुसलमानों को कम तादाद में देखा तो शक और बढ़ा और मुर्तद हो गए और कहने लगे.

(३) कि अपनी कम संख्या के बावजूद ऐसे भारी लश्कर के मुक़ाबले में आगए. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(४) और अपना काम उसके सुपुर्द करदे और उसके फ़ज़्ल और एहसान पर संतुष्ट हो.

(५) उसका हाफ़िज़ और नासिर है.

(६) लोहे के गदा जो आग में लाल किये हुए हों और उनसे जो ज़ख़्म लगता है उससे आग पड़ती है और जलन होती है. उनसे मारकर फ़रिश्ते काफ़िरों से कहते हैं.

(७) मुसीबत और अज़ाब.

(८) यानी जो तुमने कमाया, कुफ़्र और गुनाह.

(९) किसी पर बेजुर्म अज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अज़ाब करना इन्साफ़ है.

(१०) यानी इन काफ़िरों की आदत कुफ़्र और सरकशी में फ़िरऔनी और उनसे पहलों जैसी है. तो जिस तरह वो हलाक किये गए, ये भी बद्र के दिन क़त्ल और क़ैद में मुब्तिला किये गए. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जिस तरह फ़िरऔनियों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत को यक़ीन जानकर उनको झुटलाया, यही हाल इन लोगों का है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को जान पहचान कर झुटलाते हैं.

(११) और अधिक बदतर हाल में मुब्तिला न हों जैसे कि अल्लाह तआला ने मक्के के काफ़िरों को रोज़ी देकर भूख की तकलीफ़ दूर की, अम्न देकर ख़ौफ़ से निजात दिलाई और उनकी तरफ़ अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबी बनाकर भेजा. उन्होंने

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۚ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۚ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

منزل٢

जो कुछ ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा[६] और किसी तरह घाटे में नहीं रहोगे﴾६०﴿ और अगर वो सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी झुको[७] और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वही है सुनता जानता﴾६१﴿ और अगर वो तुम्हें धोखा दिया चाहें[८] तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है, वही है जिसने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और मुसलमानों का﴾६२﴿ और उनके दिलों में मेल कर दिया[९] और अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर देते उनके दिल न मिला सकते[१०] लेकिन अल्लाह ने उनके दिल मिला दिये बेशक वही है ग़ालिब हिकमत वाला﴾६३﴿ ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और ये जितने मुसलमान तुम्हारे पैरो (मानने वाले) हुए[११]﴾६४﴿

नवाँ रूकू

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले ! मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब (प्रेरणा) दो, अगर तुम में के बीस सब्र वाले होंगे दो सौ पर ग़ालिब होंगे, और अगर तुम में के सौ हों तो काफ़िरों के हज़ार पर ग़ालिब आएंगे इसलिये कि वो समझ नहीं रखते[१]﴾६५﴿ अब अल्लाह ने तुमपर से तख़फ़ीफ़ (कटौती)

इन नेअमतों पर शुक्र तो न किया, उल्टे यह सरकशी की कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया, उनका ख़ून बहाने पर उतारू हुए और लोगों को अल्लाह की राह से रोका. सदी का क़ौल है कि अल्लाह की नेअमत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं.

(१२) ऐसे ही ये क़ुरैश के काफ़िर हैं जिन्हें बद्र में हलाक किया गया.

(१३) इन्न शर्रद दवाब्बे और इसके बाद की आयतें बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों के बारे में नाज़िल हुईं जिनका रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एहद था कि वो आप से न लड़ेंगे न आपके दुश्मनों की मदद करेंगे. उन्होंने एहद तोड़ा और मक्के के मुश्रिकों ने जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जंग की तो उन्हों ने हथियारों से उनकी मदद की फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मअज़िरत की कि हम भूल गए थे और हमसे ग़लती हो गई. फिर दोबारा एहद किया और उसको भी तोड़ा. अल्लाह तआला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्योंकि काफ़िर सब जानवरों से बदतर हैं और कुफ़्र के साथ साथ एहद तोड़ने वाले भी हों तो और भी ख़राब.

(१४) अल्लाह से, न एहद तोड़ने के ख़राब नतीजे से, और न इससे शरमाते हैं जब कि एहद तोड़ना हर समझ बूझ वाले के लिये शर्मनाक जुर्म है और एहद तोड़ने वाला सबके नज़दीक बे एतिबार हो जाता है. जब उनकी बेग़ैरती इस दर्जे पहुंच गई तो यक़ीनन वो जानवरों से बदतर हैं.

(१५) और उनकी हिम्मतें तोड़ दो और उनकी जमाअतों को मुन्तशिर कर दो.

(१६) और वो नसीहत क़ुबूल करें.

(१७) और ऐसी संभावनाएं पाई जाएं जिनसे साबित हो कि वो उज़्र करेंगे और एहद पर क़ायम न रहेंगे.

(१८) यानी उन्हें इस एहद की मुख़ालिफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी बद एहदी के निशान पाए गए इस लिये वह एहद ऐतिबार के क़ाबिल न रहा, उसकी पाबन्दी न की जाएगी.

सूरए अनफ़ाल - आठवाँ रूकू

(१) बद्र की लड़ाई से भाग कर क़त्ल और क़ैद से बच गए और मुसलमानों के

(२) अपने गिरफ़्तार करने वाले को, उसके बाद मुसलमानों को ख़िताब होता है.

(३) चाहे वो हथियार हों या क़िले या तीर अन्दाज़ी . मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस आयत की तफ़सीर में क़ुव्वत के मानी रमी यानी तीर अन्दाज़ी बताए.

(४) यानी काफ़िर मक्के वाले हों या दूसरे.

اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنْ فِىْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ

منزل ٢

फ़रमाई और उसे इल्म है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में से सौ सब्र वाले हों दो सौ पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर ग़ालिब आएंगे अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह सब्र वालों के साथ है (६६) किसी नबी को लायक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उनका ख़ून ख़ूब न बहाए[२] तुम लोग दुनिया का माल चाहते हो[३] और अल्लाह आख़िरत चाहता है[४] और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (६७) अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता[५] तो ऐ मुसलमानो तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उसमें तुमपर बड़ा अज़ाब आता (६८) तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली हलाल पाकीज़ा[६] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (६९)

दसवाँ रूकू

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले ! जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उनसे फ़रमाओ[१] अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल में भलाई जानी[२] तो जो तुमसे लिया गया[३] उससे बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[४] (७०) और ऐ मेहबूब अगर वो[५] तुमसे दग़ा चाहेंगे[६] तो उससे पहले अल्लाह ही की ख़यानत कर चुके

(५) इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यहाँ औरों से मुनाफ़िक़ मुराद हैं , हसन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न.

(६) उसको भरपूर इनाम मिलेगा.

(७) उसने सुलह क़ुबूल कर ली.

(८) उनसे सुलह का इज़हार धोखा देने के लिये करें.

(९) जैसा कि औस व ख़ज़रज क़बीलों में महब्बत और दोस्ती पैदा कर दी, जबकि उनमें सौ बरस से ज़्यादा की दुश्मनी थी और बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ होती रहती थीं . यह सिर्फ़ अल्लाह की मेहरबानी है.

(१०) यानी उनकी आपसी दुश्मनी इस हद तक पहंचु गई थी कि उन्हें मिला देने के सारे साधन बेकार हो चुके थे और कोई सूरत बाक़ी न रही थी. ज़रा ज़रा सी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती. किसी तरह दो दिल न मिल सकते. जब रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और अरब लोग आपपर ईमान लाए और उन्होंने आपका अनुकरण किया तो यह हालत दूर हुई और ईमानी महब्बतें पैदा हुईं. यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का रौशन चमत्कार है.

(११) सईद बिन जुबैर हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि यह आयत हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के ईमान लाने के बारे में उतरी . ईमान से सिर्फ़ तैंतीस मर्द और छः औरतें माला माल होचुकी थीं तब हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ईमान लाए . इस क़ौल की बिना पर यह आयत मक्की है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से मदनी सूरत में लिखी गई. एक क़ौल यह है कि यह आयत बद्र की लड़ाई में जंग शुरू होने से पहले उतरी. इस सूरत में यह आयत मदनी है. और मूमिनीन से यहाँ एक क़ौल में अन्सार, एक में तमाम मुहाजिर और अन्सार मुराद हैं.

सूरए अनफ़ाल - नवाँ रूकू

(१) यह अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा और बशारत है कि मुसलमानों की जमाअत साबिर रहे तो अल्लाह की मदद से दस गुने काफ़िरों पर ग़ालिब रहेगी, क्योंकि काफ़िर जाहिल हैं और उनकी ग़रज़ जंग से, न सवाब हासिल करने की है, न अज़ाब का ख़ौफ़ है. जानवरों की तरह लड़ते भिड़ते हैं. तो वो अल्लाह के लिये लड़ने वालों के मुक़ाबले में क्या ठहर सकेंगे. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो मुसलमानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसलमानों का एक नफ़र दस के मुक़ाबले से न भागे . फिर आयत *''अलआना ख़फ़्फ़फ़ल्लाहो''* नाज़िल हुई तो यह लाज़िम किया गया कि एक नफ़र सौ दो सौ के मुक़ाबले में क़ायम रहे यानी दस गुने से मुक़ाबले की अनिवार्यता स्थगित हुई और दुगने के मुक़ाबले से भागना मना रखा गया.

(२) और काफ़िरों के क़त्ल में बढ़ा चढ़ा कर कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शान का इज़हार न करें. मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरह की हदीसों में है कि जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के समक्ष लाए गए. हुज़ूर ने उनके बारे में सहाबा से मशवरा तलब किया. अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया कि यह आपकी क़ौम और क़बीले के लोग हैं मेरी राय में इन्हें फ़िदिया लेकर छोड़ दिया जाए . इससे मुसलमानों को क़ुव्वत भी पहुंचेगी और क्या अजब है कि अल्लाह तआला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि उन लोगों ने आपको झुटलाया, आपको मक्कए मुकर्रमा में न रहने दिया. ये कुफ़्र के सरदार और सरपरस्त हैं, इनकी गर्दनें उड़ाइये. अल्लाह तआला ने आपको फ़िदिया से ग़नी किया है. अली मुर्तज़ा को अक़ील पर और हज़रत हमज़ा को अब्बास पर और मुझे मेरे रिश्तेदार पर मुक़र्रर कीजिये कि उनकी गर्दनें मार दें. आख़िरकार फ़िदिया ही लेने की राय क़रार पाई और जब फ़िदिया लिया गया तो आयत उतरी.

(३) यह सम्बोधन ईमान वालों को है, और माल से फ़िदिया मुराद है.

(४) यानी तुम्हारे लिये आख़िरत का सवाब जो काफ़िरों के क़त्ल और इस्लाम की इज़्ज़त पर निर्भर है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह हुक्म बद्र में था जब कि मुसलमान थोड़े थे. फिर जब मुसलमानों की संख्या अधिक हुई और वो अल्लाह के करम से ताक़तवर हुए तो क़ैदियों के हक़ में नाज़िल हुई *"फ़ इम्मा मन्नम बअदु व इम्मा फ़िदाअन"* (फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो, चाहे फ़िदिया ले लो - सूरए मुहम्मद, आयत ४) और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और मूमिनीन को इख़्तियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें चाहें उन्हें ग़ुलाम बनाएं, चाहे फ़िदिया लें, चाहें आज़ाद करें. बद्र के क़ैदियों का फ़िदिया चालीस ओक़िया सोना प्रति क़ैदी था जिसके सोलह सौ दिरहम हुए.

(५) यह कि इज्तिहाद पर अमल करने वाले की पकड़ न की जाएगी. और यहाँ सहाबा ने इज्तिहाद ही किया था और उनकी फ़िक्र में यही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में उनके दीन को क़ुव्वत मिलती है और इसपर नज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इस्लाम की इज़्ज़त और काफ़िरों के लिये सबक़ है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इस दीनी मामले में सहाबा की राय दरियाफ़्त फ़रमाना इज्तिहाद के जायज़ होने की दलील है. या *"किताबुम मिनल्लाहे सबक़ा"* से वह मुराद है जो उसने लौहे मेहफ़ूज़ में लिखा कि बद्र वालों पर अज़ाब न किया जाएगा.

(६) जब ऊपर की आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा ने जो फ़िदिये लिये थे उनसे हाथ रोक लिये. इसपर यह आयत उतरी और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें हलाल की गईं, उन्हें खाओ. सही हदीसों में है अल्लाह तआला ने हमारे लिये ग़नीमतें हलाल कीं, हम से पहले किसी के लिये हलाल न की गईं थीं.

सूरए अनफ़ाल - दसवाँ रुकू

(१) यह आयत हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहो अन्हो के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चचा हैं. यह क़ुरैश के काफ़िरों के उन दस सरदारों में से थे जिन्होंने बद्र की लड़ाई में काफ़िरों के लश्कर के खाने की ज़िम्मेदारी ली थी और यह इस ख़र्च के लिये बीस ओक़िया सोना साथ लेकर चले थे (एक ओक़िया चालिस दिरहम का होता है) लेकिन उनके ज़िम्मे जिस दिन खिलाना ठहरा था, ख़ास उसी रोज़ जंग का वाक़िआ पेश आया और लड़ाई में खाना खिलाने की फ़ुर्सत और समय न मिला तो यह बीस ओक़िया उनके पास बच रहा. जब वह गिरफ़्तार हुए और यह सोना उनसे ले लिया गया तो उन्हों ने दरख़्वास्त की कि यह सोना उनके फ़िदिये में लगा लिया जाए. मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इन्कार फ़रमाया. इरशाद किया जो चीज़ हमारी मुख़ालिफ़त में ख़र्च करने के लिये लाए थे वह न छोड़ी जाएगी. और हज़रत अब्बास पर उनके दो भतीजों अक़ील इब्ने अबी तालिब और नोफ़ल बिन हारिस के फ़िदिये का बार भी डाला गया. तो हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया या मुहम्मद, तुम मुझे इस हाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उम्र क़ुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं. तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वह सोना कहाँ है जो तुम्हारे मक्कए मुकर्रमा से चलते वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़ज़्ल ने दफ़्न किया है और तुम उनसे कह आए हो कि ख़बर नहीं मुझे क्या हादसा पेश आए, अगर मैं जंग में काम आजाऊं तो यह तेरा है, और अब्दुल्लाह और उबैदुल्लाह का, और फ़ज़्ल और क़स्सिम का (सब उनके बेटे थे). हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया कि आपको कैसे मालूम हुआ. हुज़ूर ने फ़रमाया मुझे मेरे रब ने ख़बर दी है. इसपर हज़रत अब्बास ने अर्ज़ किया मैं गवाही देता हूँ बेशक आप सच्चे हैं और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और बेशक आप उसके बन्दे और रसूल हैं. मेरे इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई सूचित न था . और हज़रत अब्बास ने अपने भतीजों अक़ील और नोफ़ल को हुक्म दिया वो भी इस्लाम ले आए.

(२) ईमान की सच्चाई और नियत की दुरुस्ती से.

(३) यानी फ़िदिया.

(४) जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास बहरीन का माल आया जिसकी मिक़दार अस्सी हज़ार थी तो हुज़ूर ने ज़ोहर की नमाज़ के लिये वुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल माल तक़सीम कर दिया और हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अन्हु को हुक्म दिया कि इसमें से ले लो. तो जितना उनसे उठ सका उतना उन्होंने ले लिया. वह फ़रमाते थे कि यह उससे बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उसकी मग़फ़िरत की उम्मीद रखता हूँ. उनकी मालदारी का यह हाल हुआ कि उनके बीस ग़ुलाम थे, सब के सब ताजिर और उनमें सब से कम पूंजी जिसकी थी उसकी बीस हज़ार की थी.

(५) वो क़ैदी.

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا
اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ
مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾
وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا
تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾
وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

हैं जिस पर उसने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिये(६) और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है﴾७१﴿ बेशक जो ईमान लाए और अल्लाह के लिये(८) घर बार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े(९) और वो जिन्होंने जगह दी और मदद की(१०) वो एक दूसरे के वारिस हैं(११) और वो जो ईमान लाए(१२) और हिजरत न की तुम्हें उनका तर्का कुछ नहीं पहुंचता जबतक हिजरत न करें और अगर वो दीन में तुमसे मदद चाहें तो तुमपर मदद देना वाजिब(अनिवार्य)है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उनमें मुआहिदा है, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है﴾७२﴿ और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं(१३) ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा(१४)﴾७३﴿ और वो जो ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्होंने जगह दी और मदद की वही सच्चे ईमान वाले हैं, उनके लिये बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी(१५)﴾७४﴿

(६) तुम्हारी बैअत से फिर कर, और कुफ़्र इख़्तियार करके.

(७) जैसा कि वो बद्र में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए, गिरफ़्तार हुए. आयन्दा भी अगर उनके यही तौर तरीक़े रहे तो उन्हें उसी का उम्मीदवार रहना चाहिये.

(८) और उसी के रसूल की महब्बत में उन्होंने अपने.

(९) ये पहले पहले के मुहाजिर हैं.

(१०) मुसलमानों की, और उन्हें अपने मकानों में ठहराया. ये अन्सार हैं. इन मुहाजिरों और अन्सार दोनों के लिये इरशाद होता है.

(११) मुहाजिर अन्सार के और अन्सार मुहाजिर के. यह विरासत आयत ***"व उलुल अरहामे बादुहुम औला बि बअदिन"*** (और रिश्ते वाले अल्लाह की किताब में एक दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं - सूरए अहज़ाब, आयत ६) से स्थगित हो गई.

(१२) और मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे.

(१३) उनके और ईमान वालों के बीच विरासत नहीं . इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमानों को काफ़िरों के साथ उठने बैठने और उनकी विरासत से मना किया गया और उनसे अलग रहने का हुक्म दिया गया और मुसलमानों पर आपस में मेल जोल रखना लाज़िम किया गया.

(१४) यानी अगर मुसलमानों में आपस में सहकार्य और सहयोग न हो और वो एक दूसरे के मददगार होकर एक ताक़त न बन जाएं तो कुफ़्फ़ार मज़बूत होंगे और मुसलमान कमज़ोर, और यह बड़ा फ़ितना व फ़साद है.

(१५) पहली आयत में मुहाजिरों और अन्सार के आपसी सम्बन्धों और उनमें से हर एक के दूसरे के सहायक व मददगार होने का बयान था. इस आयत में उन दोनों के ईमान की तस्दीक़ और उनपर अल्लाह की रहमत होने का ज़िक्र है.

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

(٩) سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٣) — آياتها ١٢٩ — ركوعاتها ١٦

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾ فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿٢﴾ وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِن تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ

और जो बाद को ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वो भी तुम्हीं में से हैं[१६] और रिश्ते वाले एक दूसरे से ज़्यादा नज़दीक हैं अल्लाह की किताब में[१७] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है﴾७५﴿

९- सूरए तौबह

पहला रूकू

[१]सूरए तौबह मदीना में उतरी, इसमें १२९ आयतें और १६ रूकू हैं.

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुश्रिकों को जिनसे तुम्हारा मुआहिदा था और वो क़ायम न रहे[२]﴾१﴿ तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं सकते[३] और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रूस्वा करने वाला है[४]﴾२﴿ और मुनादी पुकार देना है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से सब लोगों में बड़े हज के दिन [५]कि अल्लाह बेज़ार है मुश्रिकों से और उसका रसूल तो अगर तुम तौबह करो[६] तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो[७] तो जान लो कि तुम अल्लाह को न थका सकोगे [८]और काफ़िरों को ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की﴾३﴿ मगर वो मुश्रिक जिनसे तुम्हारा मुआहिदा था फिर

(१६) और तुम्हारे ही हुक्म में है ऐ मुहाजिरो और ऐ अन्सार. मुहाजिरों के कई तबक़े हैं. एक वो हैं जिन्होंने पहली बार मदीनए तैय्यिबह को हिजरत की. इन्हें मुहाजिरीने अव्वलीन कहते हैं. कुछ वो हज़रात हैं जिन्हों ने पहले हबशा हिजरत की, फिर मदीनए तैय्यिबह की तरफ़, उन्हें असहाबुल हिजरतैन कहते हैं. कुछ हज़रात वो हैं जिन्हों ने सुलह हुदैबिया के बाद मक्का की विजय से पहले हिजरत की, ये असहाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं. पहली आयत में मुहाजिरीने अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में असहाबे हिजरते सानिया का.

(१७) इस आयत से हिजरत से सम्बन्धित विरासत स्थगित की गई और सगे सम्बन्धियों की विरासत साबित हुई.

(९) सूरए तौबह - पहला रूकू

(१) सूरए तौबह मदनी है मगर इसके आख़िर की आयतें *"लक़द जाअकुम रसूलुन"* से आख़िर तक, उनको कुछ उलमा मक्की कहते हैं. इस सूरत में सौलह रूकू, १२९ आयतें, चार हज़ार अठहत्तर कलिमे और दस हज़ार चार सौ अठासी अक्षर हैं. इस सूरत के दस नाम हैं इनमें से तौबह और बराअत दो नाम ख़ास हैं. इस सूरत के अव्वल में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गई. इसकी अस्ल वजह यह है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम इस सूरत के साथ बिस्मिल्लाह लेकर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बिस्मिल्लाह लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया . हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि बिस्मिल्लाह अमान है और यह सूरत तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये उतरी.

(२) अरब के मुश्रिकों और मुसलमानों के बीच एहद था. उनमें से कुछ के सिवा सब ने एहद तोड़ा तो इन एहद तोड़ने वालों का एहद ख़त्म कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वो अम्न के साथ जहाँ चाहें गुज़ारें, उनसे कोई रोक टोक न की जाएगी. इस अर्से में उन्हें मौक़ा है, ख़ूब सोच समझ लें कि उनके लिये क्या बेहतर है. और अपनी एहतियातें कर लें और जान लें कि इस मुद्दत के बाद इस्लाम क़ुबूल करना होगा या क़त्ल. यह सूरत सन नौ हिजरी में मक्का की विजय से एक साल बाद उतरी. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस सन में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो को अमीरे हज मुक़र्रर फ़रमाया था और उनके बाद अली मुर्तज़ा को हाजियों की भीड़ में यह सूरत सुनाने के लिये भेजा . चुनांचे हज़रत अली ने दस ज़िलहज को बड़े शैतान के पास खड़े होकर निदा की, ऐ लोगो, मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह के रसूल का भेजा हुआ आया हूँ . लोगों ने कहा, आप क्या पयाम लाए हैं ? तो आपने तीस या चालीस आयतें इस मुबारक सूरत की पढ़ीं. फिर फ़रमाया, मैं चार हुक्म लाया हूँ (१) इस साल के बाद कोई मुश्रिक काबे के पास न आए (२) कोई शख़्स नंगा होकर काबे का तवाफ़

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ
اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ
الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ
فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ
اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى
يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ
عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا
لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

उन्होंने तुम्हारे एहद में कुछ कमी नहीं की[९]और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी तो उनका एहद ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है﴾४﴿ फिर जब हुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो [१०]जहाँ पाओ[११]और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उनकी ताक में बैठो फिर अगर वो तौबह करें[१२] और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो उनकी राह छोड़ दो, [१३]बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾५﴿ और ऐ मेहबूब अगर कोई मुश्रिक तुमसे पनाह मांगे[१४] तो उसे पनाह दो कि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसकी अम्न की जगह पहुंचा दो[१५] यह इसलिये कि वो नादान लोग हैं[१६]﴾६﴿

दूसरा रूकू

मुश्रिकों के लिये अल्लाह और उसके रसूल के पास कोई एहद क्योंकर होगा[१] मगर वो जिनसे तुम्हारा मुआहिदा मस्जिदे हराम के पास हुआ,[२]तो जबतक वो तुम्हारे लिये एहद पर क़ायम रहें तुम उनके लिये क़ायम रहो बेशक परहेज़गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं﴾७﴿

न करे (३) जन्नत में ईमान वाले के अलावा कोई दाख़िल न होगा. (४) जिसका रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ एहद है वह एहद अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिसकी मुद्दत निर्धारित नहीं है उसकी मीआद चार माह पर पूरी हो जाएगी. मुश्रिकों ने यह सुनकर कहा कि ऐ अली, अपने चचा के बेटे को ख़बर दो कि हमने एहद पीठ पीछे फैंक दिया हमारे उनके बीच कोई एहद नहीं है, सिवाय नेज़े बाज़ी और तलवार बाज़ी के. इस वाक़ए में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त की तरफ़ लतीफ़ इशारा है कि हुज़ूर ने हज़रत सिद्दीक़ अकबर को तो अमीरे हज बनाया और हज़रत अली को उनके पीछे सूरए बराअत पढ़ने के लिये भेजा, तो हज़रत अबू बक्र इमाम हुए और हज़रत अली मुक़्तदी. इससे हज़रत अबू बक्र की हज़रत अली पर फ़ज़ीलत साबित हुई.

(३) और इस मोहलत के बावुजूद उसकी पकड़ से बच नहीं सकते.

(४) दुनिया में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अज़ाब के साथ.

(५) हज को हज्जे अकबर फ़रमाया इसलिये कि उस ज़माने में उमरे को हज्जे असग़र कहा जाता था . एक क़ौल यह भी है कि इस हज को हज्जे अकबर इसलिये कहा गया कि उस साल रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज फ़रमाया था और चूंकि यह जुमए को वाक़े हुआ था इसलिये मुसलमान उस हज को, जो जुमए के दिन हो, हज्जे वदाअ जैसा जान कर हज्जे अकबर कहते हैं.

(६) कुफ़्र और उज़्र से.

(७) ईमान लाने और तौबह करने से.

(८) यह बड़ी चुनौती है और इसमें यह ललकार है कि अल्लाह तआला अज़ाब उतारने पर क़ादिर और सक्षम है.

(९) और उसको उसकी शर्तों के साथ पूरा किया . ये लोग बनी ज़मरह थे जो कनाना का एक क़बीला है. उनकी मुद्दत के नौ माह बाक़ी रहे थे.

(१०) जिन्हों ने एहद तोड़ा.

(११) हरम से बाहर या हरम में, किसी वक़्त या स्थान का निर्धारण नहीं है.

(१२) शिर्क और कुफ़्र से, और ईमान क़ुबूल कर लें.

(१३) और क़ैद से रिहा कर दो और उनके साथ सख़्ती न करो.

(१४) मोहलत के महीने गुज़रने के बाद, ताकि आप से तौहीद के मसअले और क़ुरआन शरीफ़ सुनें जिसकी आप दावत देते हैं.

(१५) अगर ईमान न लाए. इस से साबित हुआ कि मोहलत दिये गए शख़्स को तकलीफ़ न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बाद उसको दारूल इस्लाम में ठहरने का हक़ नहीं.

(१६) इस्लाम और उसकी हक़ीक़त को नहीं जानते, तो उन्हें अम्न देना ख़ास हिकमत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें.

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ تَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

भला किस तरह(३) उनका हाल तो यह है कि तुमपर क़ाबू पाएं तो न क़राबत का लिहाज़ करें न एहद का, अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं(४) और उनके दिलों में इन्कार है और उनमें अक्सर बेहुक्म हैं(५)(८) अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये(६) तो उसकी राह से रोका(७) बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं(९) किसी मुसलमान में न क़राबत का लिहाज़ करें न एहद का(८) और वही सरकश हैं(१०) फिर अगर वो(९) तौबह करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो वो तुम्हारे दीनी भाई हैं,(१०) और हम आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं जानने वालों के लिये(११)(११) और अगर एहद करके अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुँह आएं तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो(१२) बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वो बाज़ आएं(१३)(१२) क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ीं(१४) और रसूल के निकालने का इरादा किया(१५), हालांकि उन्हीं की तरफ़ से पहल हुई है,

सूरए तौबह - दूसरा रूकू

(१) कि वो बहाना बाज़ी और एहद-शिकनी किया करते हैं.
(२) और उनसे कोई एहद-शिकनी ज़ाहिर न हुई जैसा कि बनी कनाना और बनी ज़मरह ने की थी.
(३) एहद पूरा करेंगे और कैसे क़ौल पर क़ायम रहेंगे.
(४) ईमान और एहद पूरा करने के वादे करके.
(५) एहद तोड़ने वाले कुफ़्र में सरकश, बे मुरव्वत, झूट से न शर्माने वाले. उन्होंने....
(६) और दुनिया के थोड़े से नफ़े के पीछे ईमान और क़ुरआन छोड़ बैठे, और जो रसूले करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एहद किया था वह अबू सुफ़ियान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया.
(७) और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से तोड़ दिया.
(८) जब मौक़ा पाएं क़त्ल कर डालें, तो मुसलमानों को भी चाहिये कि जब मुश्रिकों पर पकड़ मिल जाए तो उनसे दरगुज़र न करें.
(९) कुफ़्र और एहद तोड़ने से बाज़ आएं और ईमान क़ुबूल करके.
(१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुआ कि क़िबला वालों के ख़ून हराम हैं.
(११) इससे साबित हुआ कि आयतों की तफ़सील पर जिसकी नज़र हो, वह आलिम है.
(१२) इस आयत से साबित हुआ कि जो काफ़िर ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर तअन करे उसका एहद बाक़ी नहीं रहता और वह ज़िम्मे से ख़ारिज हो जाता है, उसको क़त्ल करना जायज़ है.
(१३) इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िरों के साथ जंग करने से मुसलमानों की ग़रज़ उन्हें कुफ़्र और बदआमाली से रोक देना है.
(१४) और सुलह हुदैबिया का एहद तोड़ा और मुसलमानों के हलीफ़ ख़ुज़ाआ के मुक़ाबिल बनी बक्र की मदद की.
(१५) मक्कए मुकर्रमा से दारून नदवा में मशवरा करके.

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ
قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ
وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ
اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ
وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ ع
اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
بِالْكُفْرِ ۗ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚ وَفِى النَّارِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ

क्या उनसे डरते हो, तो अल्लाह इसका ज़्यादा मुस्तहक़ है कि उससे डरो अगर ईमान रखते हो﴿१३﴾ तो उनसे लड़ो अल्लाह उन्हें अज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा [१६] और तुम्हें उनपर मदद देगा [१७]और ईमान वालों का जी ठण्डा करेगा ﴿१४﴾ और उनके दिलों की घुटन दूर फ़रमाएगा[१८], और अल्लाह जिसकी चाहे तौबह क़ुबूल फ़रमाए[१९], और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴿१५﴾ क्या इस गुमान में हो यूंही छोड़ दिये जाओगे, और अभी अल्लाह ने पहचान न कराई उनकी जो तुम में से जिहाद करेंगे[२०] और अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना राज़दार न बनाएंगे[२१] और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है﴿१६﴾

तीसरा रूकू

मुश्रिकों को नहीं पहुंचता कि अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें[१] ख़ुद अपने कुफ़्र की गवाही देकर[२] उनका तो सब किया-धरा अकारत है, और वो हमेशा आग में रहेंगे[३]﴿१७﴾अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ायम

---

(१६) क़त्ल व क़ैद से.

(१७) और उनपर ग़लबा अता फ़रमाएगा.

(१८) यह तमाम वादे पूरे हुए, और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़बरें सच्ची हुईं और नबुव्वत का सुबूत साफ़ से साफ़तर हो गया.

(१९) इसमें ख़बर है कि कुछ मक्का वाले कुफ़्र से बाज़ आकर तौबह कर लेंगे. यह ख़बर भी ऐसी ही वाक़े हुई. चुनांचे अबू सुफ़ियान और इकरिमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अम्र ईमान से मुशर्रफ़ हुए.

(२०) इख़्लास के साथ अल्लाह की राह में.

(२१) इससे मालूम हुआ कि मुख़्लिस और ग़ैर-मुख़्लिस में इम्तियाज़ कर दिया जाएगा और तात्पर्य इससे मुसलमानों को मुश्रिकों के साथ उठने बैठने और उनके पास मुसलमानों के राज़ पहुंचाने से मना करना है.

सूरए तौबह - तीसरा रूकू

(१) मस्जिदों से मस्जिदे हराम काबए मुअज़्ज़मा मुराद है. इसको बहुवचन से इसलिये ज़िक्र फ़रमाया कि वह तमाम मस्जिदों का क़िबला और इमाम है. उसका आबाद करने वाला ऐसा है जैसे तमाम मस्जिदों का आबाद करने वाला. बहुवचन लाने की यह वजह भी हो सकती है कि मस्जिदे हराम का हर कोना मस्जिद है, और यह भी हो सकती है कि मस्जिदों से जिन्स मुराद हो और काबए मुअज़्ज़मा इसमें दाख़िल हो क्योंकि वह उस जिन्स का सदर है. क़ुरैश के काफ़िरों के सरदारों की एक जमाअत जो बद्र में गिरफ़्तार हुई और उनमें हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास भी थे, उनको सहाबा ने शिर्क पर शर्म दिलाई और अली मुर्तज़ा ने तो ख़ास हज़रत अब्बास को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुक़ाबिल आने पर बहुत सख़्त सुस्त कहा. हज़रत अब्बास कहने लगे कि तुम हमारी बुराइयाँ तो बयान करते हो और हमारी ख़ूबियाँ छुपाते हो. उनसे कहा गया, क्या आपकी कुछ ख़ूबियाँ भी हैं. उन्हों ने कहा, हाँ हम तुम से अफ़ज़ल हैं, हम मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं, काबे की ख़िदमत करते हैं, हाजियों को सैराब करते हैं, असीरों को रिहा कराते हैं. इसपर यह आयत उतरी कि मस्जिदों का आबाद करना काफ़िरों को नहीं पहुंचता क्योंकि मस्जिद आबाद की जाती है अल्लाह की इबादत के लिये, तो जो ख़ुदा ही का इन्कारी हो, उसके साथ कुफ़्र करे, वह क्या मस्जिद आबाद करेगा. आबाद करने के मानी में भी कई क़ौल हैं, एक तो यह कि आबाद करने से मस्जिद का बनाना, बलन्द करना, मरम्मत करना मुराद है. काफ़िर को इससे मना किया जाएगा. दूसरा क़ौल यह है कि मस्जिद आबाद करने से उसमें दाख़िल होना बैठना मुराद है.

(२) और बुत परस्ती का इक़रार करके, यानी ये दोनों बातें किस तरह जमा हो सकती हैं कि आदमी काफ़िर भी हो और ख़ास

وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى أُولٰٓئِكَ أَنْ يَّكُوْنُوْا
مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۙ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ
وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۭ إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
أَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
اٰبَآءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْإِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَأُولٰٓئِكَ

وقف لازم

منزل٢

करते हैं और ज़कात देते हैं[४] और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते,[५] तो क़रीब है कि ये लोग हिदायत वालों में हों﴿१८﴾ तो क्या तुमने हाजियों की सबील (प्याऊ) और मस्जिदे हराम की ख़िदमत उसके बराबर ठहराली जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वो अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता[६]﴿१९﴾ वो जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहाँ उनका दर्जा बड़ा है,[७] और वही मुराद को पहुंचे[८]﴿२०﴾ उनका रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रज़ा की[९] और उन बाग़ों की जिनमें उन्हें सदा की नेअमत है﴿२१﴾ हमेशा हमेशा उनमें रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है﴿२२﴾ ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें, और तुम में जो कोई

इस्लामी और तौहीद के इबादत ख़ाने को आबाद भी करे.

(३) क्योंकि कुफ़्र की हालत के कर्म मक़बूल नहीं, न मेहमानदारी न हाजियों की ख़िदमत, न क़ैदियों का रिहा कराना, इसलिये कि काफ़िर का कोई काम अल्लाह के लिये तो होता नहीं, लिहाज़ा उसका अमल सब अकारत है, और अगर वह उसी कुफ़्र पर मरजाए तो जहन्नम में उनके लिये हमेशा का अज़ाब है.

(४) इस आयत में यह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक़ ईमान वाले हैं. मस्जिदों के आबाद करने में ये काम भी दाख़िल हैं, झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रौशनी करना और मस्जिदों को दुनिया की बातों से और ऐसी चीज़ों से मेहफ़ूज़ रखना जिनके लिये वो नहीं बनाई गईं. मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का पाठ भी ज़िक्र में दाख़िल है.

(५) यानी किसी की रज़ा को अल्लाह की रज़ा पर किसी अन्देशे से भी प्राथमिकता नहीं देते. यही मानी हैं अल्लाह से डरने और ग़ैर से न डरने के.

(६) मुराद यह है कि काफ़िरों को ईमान वालों से कुछ निस्बत नहीं, न उनके कर्मों को उनके कर्मों से, क्योंकि काफ़िर के कर्म व्यर्थ हैं चाहे वो हाजियों के लिये सबील लगाएं या मस्जिदे हराम की ख़िदमत करें, उनके आमाल को ईमान वालों के आमाल के बराबर क़रार देना ज़ुल्म है. बद्र के दिन जब हज़रत अब्बास गिरफ़्तार होकर आए तो उन्होंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा से कहा कि तुमको इस्लाम और हिजरत और जिहाद में सबक़त हासिल है. तो हमको भी मस्जिद हराम की ख़िदमत और हाजियों के लिये सबीलें लगाने का गौरव प्राप्त है. इसपर यह आयत उतरी और ख़बरदार किया गया कि जो अमल ईमान के साथ न हों वो बेकार हैं.

(७) दूसरों से.

(८) और उन्हीं को दुनिया और आख़िरत की ख़ुशनसीबी मिली.

(९) और यह सबसे बड़ी ख़ुशख़बरी है, क्योंकि मालिक की रहमत और ख़ुशनूदी बन्दे का सबसे बड़ा मक़सद और प्यारी मुराद है.

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ
وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِیْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ن
اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ
مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِیْ سَبِیْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ
اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۴﴾ ع
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِیْ مَوَاطِنَ كَثِیْرَةٍ ۙ وَّیَوْمَ
حُنَیْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَیْــٴًـا وَّضَاقَتْ عَلَیْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّیْتُمْ مُّدْبِرِیْنَ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ
تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ
الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ یَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى

منزل۲

उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम हैं[१०]﴿२३﴾ तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुटुम्ब और तुम्हारी कमाई के माल और वह सूद जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द का मकान ये चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए[११] और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता﴿२४﴾

चौथा रूकू

बेशक अल्लाह ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की[१] और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत (ज़्यादा नफ़री) पर इतरा गए थे तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई[२] और ज़मीन इतनी वसाअ (विस्तृत) होकर तुम पर तंग होगई[३] फिर तुम पीठ देकर फिर गए﴿२५﴾ फिर अल्लाह ने अपनी तसकीन उतारी अपने रसूल पर[४] और मुसलमानों पर[५] और वो लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे[६] और काफ़िरों को अज़ाब दिया[७] और इन्कार करने वालों की यही सज़ा है﴿२६﴾ फिर उसके बाद अल्लाह जिसे चाहेगा

(१०) जब मुसलमानों को मुश्रिकों के साथ मिलने जुलने, उठने बैठने और हर तरह के सम्बन्ध तोड़ने का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों ने कहा यह कैसे सम्भव है कि आदमी अपने बाप भाई वग़ैरह रिश्तेदारों से सम्बन्ध तोड़दे. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि काफ़िरों से सहयोग जायज़ नहीं चाहे उनसे कोई भी रिश्ता हो. चुनांचे आगे इरशाद फ़रमाया.

(११) और जल्दी आने वाले अज़ाब में जकड़े या देर में आने वाले में. इस आयत से साबित हुआ कि दीन के महफ़ूज़ रखने के लिये दुनिया की मशक़्क़त बरदाश्त करना मुसलमान पर लाज़िम है और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी के मुक़ाबिले दुनिया के ताल्लुक़ात की कुछ हैसियत नहीं और ख़ुदा व रसूल की महब्बत ईमान की दलील है.

सूरए तौबह - चौथा रूकू

(१) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ज़वात यानी लड़ाईयों में मुसलमानों को काफ़िरों पर ग़लबा अता फ़रमाया, जैसा कि बद्र और क़ुरैज़ा और नुज़ैर और हुदैबिया और मक्का की विजय में.

(२) हुनैन एक घाटी है ताइफ़ के क़रीब, मक्कए मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासले पर. यहाँ मक्का की विजय से थोड़े ही रोज़ बाद क़बीलए हवाज़िन व सक़ीफ़ से जंग हुई. इस जंग में मुसलमानों की संख्या बहुत ज़्यादा, बारह हज़ार या इससे अधिक थी और मुश्रिक चार हज़ार थे. जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए तो मुसलमानों में से किसी ने अपनी कसरत यानी बड़ी संख्या पर नज़र करके कहा कि अब हम हरगिज़ नहीं हारेंगे. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत बुरा लगा. क्योंकि हुज़ूर हर हाल में अल्लाह पर भरोसा फ़रमाते थे और तादाद के कम या ज़्यादा होने पर नज़र न रखते थे. जंग शुरू हुई और सख़्त लड़ाई हुई . मुश्रिक भागे और मुसलमान ग़नीमत का माल लेने में व्यस्थ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और तीरों की बारिश शुरू कर दी. और तीर अन्दाज़ी में वो बहुत माहिर थे. नतीजा यह हुआ कि इस हंगामे में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, लश्कर भाग पड़ा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास सिवाय हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास और आपके चचाज़ाद अबू सुफ़ियान बिन हारिस के और कोई बाक़ी न रहा. हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सवारी को काफ़िरों की तरफ़ आगे बढ़ाया और हज़रत अब्बास को हुक्म दिया कि वह बलन्द आवाज़ से अपने साथियों को पुकारें . उनके पुकारने से वो लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और काफ़िरों से जंग शुरू हो गई. जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई, तब हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में कंकरियाँ लेकर काफ़िरों के मुंहों पर मारीं और फ़रमाया, मुहम्मद के रब की क़सम, भाग निकले. कंकरियों का मारना था कि काफ़िर भाग पड़े और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी ग़निमतें मुसलमानों को तक़सीम फ़रमा दीं. इन आयतों में इसी घटना का बयान है.

(३) और तुम वहाँ ठहर न सके.

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً
فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ
صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ
وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِــُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْٓا
اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

तौबह देगा[८] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है《२७》 ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे नापाक हैं[९] तो इस बरस के बाद वो मस्जिदे हराम के पास न आने पाएं,[१०] और अगर तुम्हें मोहताजी (दरिद्रता) का डर है[११] तो बहुत जल्द अल्लाह तुम्हें धनवान कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे[१२] बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है《२८》 लड़ो उनसे जो ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और क़यामत पर[१३] और हराम नहीं मानते उस चीज़ को जिसको हराम किया अल्लाह और उसके रसूल ने[१४] और सच्चे दीन[१५] के ताबे (अधीन)नहीं देते यानी वो जो किताब दिये गए जबतक अपने हाथ से जिज़िया न दें ज़लील होकर[१६]《२९》

पाँचवां रूकू

और यहूदी बोले उज़ैर अल्लाह का बेटा है[१] और नसरानी (ईसाई) बोले मसीह अल्लाह का बेटा है, ये बातें वो अपने मुंह से बकते हैं[२]अगले काफ़िरों की सी बात बनाते हैं अल्लाह उन्हें मारे, कहाँ औंधे जाते हैं[३]《३०》 उन्होंने अपने पादरियों और जोगियों

(४) कि इत्मीनान के साथ अपनी जगह क़ायम रहे.

(५) कि हज़रत अब्बास रदियल्लाहो अन्हो के पुकारने से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वापस आए.

(६) यानी फ़रिश्ते जिन्हें काफ़िरों ने चितकबरे घोड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने अमामा बांधे देखा. ये फ़रिश्ते मुसलमानों की शौकत बढ़ाने के लिये आए थे. इस जंग में उन्होंने लड़ाई नहीं की . लड़ाई सिर्फ़ बद्र में की थी.

(७) कि पकड़े गए, मारे गए, उनके अयाल और अमवाल मुसलमानों के हाथ आए.

(८) और इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा, चुनांचे हवाज़िन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वो मुसलमान होकर रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर ने उनके क़ैदियों को रिहा फ़रमा दिया.

(९) कि उनका बातिन ख़बीस है और वो न तहारत करते हैं न नापाकियों से बचते हैं.

(१०) न हज के लिये, न उमरे के लिये. और इस साल से मुराद सन नौ हिजरी है. और मुश्रिकों के मना करने के मानी ये हैं कि मुसलमान उनको रोकें.

(११) कि मुश्रिकों को हज से रोक देने से व्यापार को नुक़सान पहुंचेगा और मक्का वालों को तंगी पेश आएगी.

(१२) इकरिमा ने कहा, ऐसा ही हुआ. अल्लाह तआला ने उन्हें ग़नी कर दिया . बारिशें ख़ूब हुईं, पैदावार कसरत से हुई. मक़ातिल ने कहा कि यमन प्रदेश के लोग मुसलमान हुए और उन्होंने मक्का वालों पर अपनी काफ़ी दौलत ख़र्च की. *अगर चाहे* फ़रमाने में तालीम है कि बन्दे को चाहिये कि अच्छाई और भलाई की तलब और आफ़तों के दूर होने के लिये हमेशा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहे और सारे कामों को उसीकी मर्ज़ी से जुड़ा जाने.

(१३) अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि उसकी ज़ात और सारी सिफ़ात और विशेषताओं को माने और जो उसकी शान के लायक़ न हो, उसकी तरफ़ निस्बत न करे. कुछ मुफ़स्सिरों ने रसूलों पर ईमान लाना भी अल्लाह पर ईमान लाने में दाख़िल क़रार दिया है. तो यहूदी और ईसाई अगरचे अल्लाह पर ईमान लाने का दावा करते हैं लेकिन उनका यह दावा बिल्कुल ग़लत है क्योंकि यहूदी अल्लाह के लिये जिस्म और तश्बीह के, और ईसाई अल्लाह के हज़रत ईसा के शरीर में प्रवेश कर जाने को मानते हैं. तो वो किस तरह अल्लाह पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं. ऐसे ही यहूदियों में से जो हज़रत उज़ैर को और ईसाई हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहते हैं, तो उनमें से कोई भी अल्लाह पर ईमान लाने वाला न हुआ. इसी तरह जो एक रसूल को झुटलाए, वह अल्लाह पर ईमान लाने वाला नहीं. यहूदी और ईसाई बहुत से नबियों को झुटलाते हैं लिहाज़ा वो अल्लाह पर ईमान लाने वालों में नहीं. मुजाहिद का क़ौल है कि यह आयत उस वक़्त उतरी जबकि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रोम से जंग करने का हुक्म दिया गया, और इसीके नाज़िल होने के बाद ग़ज़वए तबूक हुआ. कल्बी का क़ौल है कि यह आयत यहूदियों के क़बीले क़ुरैज़ा और नुज़ैर के हक़ में उतरी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे सुलह मंज़ूर फ़रमाई और यही पहला जिज़िया है जो मुसलमानों

وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا
اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى
اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ
الرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ
يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ
وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

को अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना लिया[४] और मरयम के बेटे मसीह को[५] और उन्हें हुक्म न था[६] मगर यह कि एक अल्लाह को पूजें उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है उनके शिर्क से﴿३१﴾ चाहते हैं कि अल्लाह का नूर[७] अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर अपने नूर का पूरा करना[८] पड़े बुरा मानें काफ़िर﴿३२﴾ वही हैं जिसने अपना रसूल[९] हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[१०] पड़े बुरा मानें मुश्रिक﴿३३﴾ ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं[११] और अल्लाह की राह से[१२] रोकते हैं और वो कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते[१३] उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की﴿३४﴾ जिस दिन वह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में[१४] फिर उससे दाग़ेंगे उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें[१५] यह है वह जो तुमने अपने लिये जोड़ कर रखा था तो अब चखो मज़ा उस

को मिला और पहली ज़िल्लत है जो काफ़िरों को मुसलमानों के हाथ से पहुंची.
(१४) क़ुरआन और हदीस में, और कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि मानी ये हैं कि तौरात व इंजील के मुताबिक़ अमल नहीं करते, उनमें हेर फेर करते हैं, और अहकाम अपने दिल से घड़ते हैं.
(१५) इस्लाम दीने इलाही.
(१६) एहद में बन्धे किताब वालों से जो ख़िराज लिया जाता है उसका नाम जिज़िया है. यह जिज़िया नक़्द लिया जाता है. इसमें उधार नहीं. जिज़िया देने वाले को ख़ुद हाज़िर होकर देना चाहिये. पैदल हाज़िर हो, खड़े होकर पेश करे. जिज़िया क़ुबूल करने में तुर्क व हिन्दू किताब वालों के साथ जुड़े हैं सिवा अरब के मुश्रिकों के, कि उनसे जिज़िया क़ुबूल नहीं. इस्लाम लाने से जिज़िया मुक़र्रर करने की हिक्मत यह है कि काफ़िरों को मोहलत दी जाए ताकि वो इस्लाम की विशेषताओं और दलीलों की शक्ति देखें और पिछली किताबों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़बर और हुज़ूर की तारीफ़ देखकर इस्लाम लाने का मौक़ा पाएं.

सूरए तौबह - पाँचवाँ रुकू

(१) किताब वालों की बेदीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया यह उसकी तफ़सील है कि वो अल्लाह की जनाब में ऐसे ग़लत अक़ीदे रखते हैं और मख़लूक़ को अल्लाह का बेटा बनाकर पूजते हैं. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में यहूदियों की एक जमाअत आई. वो लोग कहने लगे कि हम आपका अनुकरण कैसे करें, आपने हमारा क़िबला छोड़ दिया और आप उज़ैर को ख़ुदा का बेटा नहीं समझते. इसपर यह आयत उतरी.
(२) जिनपर न कोई दलील न प्रमाण, फिर अपनी जिहालत से इस खुले झूट को मानते भी हैं.
(३) और अल्लाह तआला के एक होने पर, तर्क क़ायम होने और खुले प्रमाण मिलने के बावुजूद, इस कुफ़्र में पड़ते हैं.
(४) अल्लाह के हुक्म को छोड़कर उनके हुक्म के पाबन्द हुए.
(५) कि उन्हें भी ख़ुदा बनाया और उनकी निस्बत यह ग़लत अक़ीदा रखा कि वो ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हैं या ख़ुदा ने उनके अन्दर प्रवेश किया है.
(६) उनकी किताबों में, न उनके नबियों की तरफ़ से.
(७) यानी इस्लाम या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत की दलीलें.
(८) और अपने दीन को ग़लबा देना.
(९) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(१०) और उसकी हुज्जत मज़बूत करे और दूसरे दीनों को उससे स्थगित करे. चुनांचे ऐसा ही हुआ. ज़ुहाक का क़ौल है कि यह

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ
اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ
الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ
وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِیْنَ كَآفَّةً كَمَا یُقَاتِلُوْنَكُمْ
كَآفَّةً ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ۝ اِنَّمَا
النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْكُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا
یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ یُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا
حَرَّمَ اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ
اَعْمَالِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ۝ ع
یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِیْلَ لَكُمُ
انْفِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ
اَرَضِیْتُمْ بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

منزل ٢

जोड़ने का(३५) बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं[१६] अल्लाह की किताब[१७] जब से उसने आसमान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत (धर्मनिषेध) वाले हैं,[१८] यह सीधा दीन है तो इन महीनों में[१९] अपनी जान पर ज़ुलम न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वो तुम से हर वक़्त लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[२०](३६) उनका महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना[२१] इससे काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे[२२] हलाल ठहराते हैं और दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई[२३] और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल करलें उनके बुरे काम उनकी आँखों में भले लगते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता(३७)

छटा रूकू

ऐ ईमान वालो तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाए कि ख़ुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन में बैठ जाते हो[१] क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जबकि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाए. हज़रत अबू हुरैरा की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इस्लाम के सिवा हर मिल्लत हलाक हो जाएगी.

(११) इस तरह कि दीन के आदेश बदल कर लोगों से रिश्वतें लेते हैं और अपनी किताबों में, सोने के लालच में, हेर फेर करते हैं और पिछली किताबों की जिन आयतों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और विशेषताएं दर्ज हैं, माल हासिल करने के लिये उनमें ग़लत व्याख्याएं और फेर बदल करते हैं.

(१२) इस्लाम से, और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से.

(१३) कंजूसी करते हैं और माल के हुक़ूक़ अदा नहीं करते, ज़कात नहीं देते. सदी का क़ौल है कि यह आयत ज़कात का इन्कार करने वालों के बारे में उतरी जबकि अल्लाह तआला ने पादरियों और राहिबों के लालच का बयान फ़रमाया, तो मुसलमानों को माल जमा करने और उसके हुक़ूक़ अदा न करने से डराया. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जिस माल की ज़कात दी गई वह ख़ज़ाना नहीं, चाहे दफ़ीना ही हो. और जिसकी ज़कात न दी गई, वह ख़ज़ाना है जिसका ज़िक्र क़ुरआन में हुआ कि उसके मालिक को उससे दाग़ दिया जाएगा. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सहाबा ने अर्ज़ किया कि सोने चांदी का तो यह हाल मालूम हुआ फिर कौन सा माल बेहतर है जिसको जमा किया जाए. फ़रमाया, ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल, और नेक बीबी जो ईमानदार की उसके ईमान पर मदद करे यानी परहेज़गार हो कि उसकी सोहबत से ताअत व इबादत का शौक़ बढ़े. (तिरमिज़ी). माल का जमा करना मुबाह है, मज़मूम नहीं जब कि उसके हुक़ूक़ अदा किये जाएं . हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ और हज़रत तलहा वग़ैरह सहाबा मालदार थे और जो सहाबा कि माल जमा करने से नफ़रत रखते थे वो उनपर ऐतिराज़ न करते थे.

(१४) और गर्मी की सख़्ती से सफ़ेद हो जाएगा.

(१५) जिस्म के चारों तरफ़, और कहा जाएगा.

(१६) यहाँ यह बयान फ़रमाया गया कि शरीअत के एहकाम चाँद के महीनों पर हैं.

(१७) यहाँ अल्लाह की किताब से, या लौहे मेहफ़ूज़ मुराद है या क़ुरआन, या वह हुक्म जो उसने अपने बन्दों पर लाज़िम किया.

(१८) तीन जुड़े ज़ुलक़ादा, ज़िलहज व मुहर्रम और एक अलग रजब. अरब लोग जिहालत के दौर में भी इन महीनों का आदर करते थे और इनमें लड़ाई क़त्ल और ख़ून हराम जानते थे . इस्लाम में इन महीनों की हुरमत और अज़मत और ज़्यादा की गई.

(१९) गुनाह और नाफ़रमानी से.

(२०) उनकी मदद फ़रमाएगा.

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾
اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَ
جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ
اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنْفِرُوْا
خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ

منزل ٢

बदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा[२]﴾३८﴿ अगर न कूच करोगे तो[३] तुम्हें सख़्त सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा[४] और तुम उसका कुछ न बिगाड सकोगे, और अल्लाह सब कुछ कर सकता है﴾३९﴿ अगर तुम मेहबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ लेजाना हुआ[५] सिर्फ़ दो जान से जब वो दोनों[६] ग़ार में थे जब अपने यार से[७] फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उसपर अपना सकीना उतारा[८] और उन फ़ौजों से उसकी मदद की जो तुमने न देखीं[९] और काफ़िरों की बात नीचे डाली[१०] अल्लाह ही का बोल वाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है﴾४०﴿ कूच करो हलकी जान से चाहे भारी दिल से[११] और अल्लाह ही राह में लड़ो अपने माल व जान से यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर जानो[१२]﴾४१﴿अगर कोई क़रीब माल या मुतवस्सित (दरमियानी) सफ़र होता[१३] तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते[१४] मगर उनपर तो मशक़्क़त

(२१) *नसी* शब्दकोष में समय के पीछे करने को कहते हैं और यहाँ शहरे हराम (वर्जित महीने) की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है. जिहालत के दौर में अरब, वर्जित महीनों यानी ज़ुलक़अदा व ज़िलहज व मुहर्रम व रजब की पाकी और महानता के मानने वाले थे. तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में ये वर्जित महीने आजाते तो उनको बहुत भारी गुज़रते. इसलिये उन्होंने यह किया कि एक महीने की पाकी दूसरे की तरफ़ हटाने लगे. मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाय इसके सफ़र को माहे हराम बना लेते और जब इससे भी हुरमत हटाने की ज़रूरत समझते तो उसमें भी जंग हलाल कर लेते और रबीउल अव्वल को माहे हराम क़रार देते इस तरह हुरमत साल के सारे महीनों में घूमती और उनके इस तरीक़े से वर्जित महीनों की विशेषता ही बाक़ी न रही. इसी तरह हज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज्जतुल वदाअ में ऐलान फ़रमाया कि नसी के महीने गए गुज़रे हो गए, अब महीनों के औक़ात जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किये गए हैं, उनकी हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए. इस आयत में नसी को वर्जित क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया, क्योंकि इसमें वर्जित महीनों में जंग की हुरमत को हलाल जानना और ख़ुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है.

(२२) यानी वर्जित महीने को या इस हटाने को.

(२३) यानी वर्जित महीने चार ही रहें, इसकी तो पाबन्दी करते हैं, और उनकी निश्चितता तोड़ कर अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफ़त. जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया, उसकी जगह दूसरे को हराम क़रार दे दिया.

सूरए तौबह - छटा रूकू

(१) और सफ़र से घबराते हो. यह आयत ग़ज़वए तबूक की तरग़ीब में नाज़िल हुई. तबूक एक जगह है शाम के आस पास, मदीनए तैय्यिबह से चौदह मंज़िल दूरी पर. रजब सन नौ हिजरी में ताइफ़ से वापसी के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर पहुंची कि अरब के ईसाइयों की तहरीक और प्रेरणा से हरक़्ल रूम के बादशाह ने रूमियों और शामियों का एक भारी लश्कर तैयार किया है और वह मुसलमानों पर हमले का इरादा रखता है. तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसलमानों को जिहाद का हुक्म दिया. यह ज़माना अत्यन्त तंगी, दुष्काल और सख़्त गर्मी का था. यहाँ तक कि दो दो आदमी एक एक खजूर पर बसर करते थे. सफ़र दूर का था. दुश्मन बड़ी तादाद में और मज़बूत थे. इसलिये कुछ क़बीले बैठ रहे और उन्हें उस वक़्त जिहाद में जाना भारी मालूम हुआ. इस ग़ज़वे में बहुत से मुनाफ़िक़ों का पर्दा फ़ाश और हाल ज़ाहिर हो गया. हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने इस ग़ज़वे में बड़ा दिल खोल कर ख़र्च किया. दस हज़ार मुजाहिदों को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़वे पर ख़र्च किये. नौ सौ ऊंट और सौ घोड़े साज़ सामान समेत इसके अलावा हैं. और सहाबा ने भी ख़ूब ख़र्च किया. उनमें सबसे पहले

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो हैं जिन्हों ने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया, जिसकी मिक़दार चार हज़ार दिरहम थी. और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अपना आधा माल हाज़िर किया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तीस हज़ार का लश्कर लेकर रवाना हुए. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को मदीनए तैय्यिबह में छोड़ा. अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथी मुनाफ़िक़ सनीयतुल वदाअ तक साथ चलकर रह गए. जब इस्लामी लश्कर तबूक में उतरा तो उन्होंने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसके पानी से उसमें कुल्ली फ़रमाई जिसकी बरकत से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया . लश्कर और उसके सारे जानवर अच्छी तरह सैराब हुए. हज़रत ने काफ़ी अरसा यहाँ क़याम फ़रमाया . हरक़्ल अपने दिल में आपको सच्चा नबी जानता था, इसीलिये उसे डर हुआ और उसने आप से मुक़ाबला न किया. हज़रत ने आस पास के इलाक़ों में लश्कर भेजे. चुनांचे हज़रत ख़ालिद को चार सौ से ज़्यादा सवारों के साथ दोम्मतुल जुन्दल के हाकिम अकीदर के मुक़ाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उसको नील गाय के शिकार में पकड़ लो. चुनांचे ऐसा ही हुआ. जब वह नील गाय के शिकार के लिये क़िले से उतरा तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रदियल्लाहो अन्हो उसको गिरफ़्तार करके हुज़ूर की ख़िदमत में लाए. हुज़ूर ने जिज़िया मुक़र्रर फ़रमाकर उसको छोड़ दिया. इसी तरह ईला के हाकिम पर इस्लाम पेश किया और जिज़िया पर सुलह फ़रमाई. वापसी के वक़्त जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने के क़रीब तशरीफ़ लाए तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे, वो हाज़िर हुए. हुज़ूर ने सहाबा से फ़रमाया कि उनमें से किसी से कलाम न करें और अपने पास न बिठाएं जबतक हम इजाज़त न दें. तो मुसलमानों ने उनसे मुंह फेर लिया, यहाँ तक कि बाप और भाई की तरफ़ भी तवज्जह न की . इसी बारे में ये आयतें उतरीं.

(२) कि दुनिया और उसकी सारी माया नश्वर है और आख़िरत और उसकी सारी नेअमतें बाक़ी रहने वाली हैं.

(३) ऐ मुसलमानो, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ अल्लाह तआला.

(४) जो तुम से बेहतर और फ़रमाँबरदार होंगे. तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विजय और उनके दीन को इज़्ज़त देने का ख़ुद ज़िम्मेदार है. तो अगर तुम रसूल की आज्ञा का पालन करने में जल्दी करोगे तो यह सआदत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुमने सुस्ती की तो अल्लाह तआला दूसरों को अपने नबी की ख़िदमत की नेअमत से नवाज़ेगा.

(५) यानी हिजरत के वक़्त मक्कए मुकर्रमा से, जबकि काफ़िरों ने कमेटी घर में हुज़ूर के क़त्ल और क़ैद वग़ैरह के बुरे बुरे मशवरे किये थे.

(६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो.

(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो से . हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो का सहाबी होना इस आयत से साबित है. हसन बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया जो शख़्स हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के सहाबी होने का इनकार करे वह क़ुरआनी आयत का इन्कारी होकर काफ़िर हुआ.

(८) और दिल को इतमीनान अता फ़रमाया.

(९) उनसे मुराद फ़रिश्तों की फ़ौजें हैं जिन्होंने काफ़िरों के मुंह फेर दिए और वो आपको देख न सके और बद्र व अहज़ाब व हुनैन में भी उन्हीं ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई.

(१०) कुफ़्र और शिर्क की दावत को पस्त फ़रमाया.

(११) यानी ख़ुशी से या भारी दिल से. और एक क़ौल यह है कि क़ुव्वत के साथ, या कमज़ोरी के साथ और बे सामानी से या भरपूर साधनों के साथ.

(१२) कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है. तो मुस्तइदी के साथ तैयार हो और आलस्य न करो.

(१३) और दुनियावी नफ़े की उम्मीद होती और सख़्त मेहनत और मशक़्क़त का अन्देशा न होता.

(१४) यह आयत उन मुनाफ़िक़ों की शान में उतरी जिन्होंने ग़ज़वए तबूक में जाने से हिचकिचाहट दिखाई थी.

وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاْاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

(मेहनत) का रास्ता दूर पड़ गया और अब अल्लाह की क़सम खाएंगे[१५] कि हमसे बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते,[१६] अपनी जानों को हलाक करते हैं[१७] और अल्लाह जानता है कि वो बेशक ज़रूर झूटे हैं﴿४२﴾

सातवाँ रूकू

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे[१] तुमने उन्हें क्यों इज़्न (आज्ञा) दे दिया जबतक खुले न थे तुमपर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूटे﴿४३﴾ और वो जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते हैं तुमसे छुट्टी न मांगेंगे उससे कि अपने माल और जान से जिहाद करें और अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़गारों को﴿४४﴾ तुमसे यह छुट्टी वही माँगते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखते[२] और उनके दिल शक में पड़े हैं तो वो अपने शक में डांवाडोल हैं[३]﴿४५﴾ उन्हें निकलना मंज़ूर होता[४] तो उसका सामान करते मगर ख़ुदा ही को उनका उठना नापसन्द हुआ तो उनमें काहिली भरदी[५] और फ़रमाया गया कि बैठे रहो बैठे रहनेवालों के साथ[६]﴿४६﴾ अगर वो तुम में निकलते तो उनसे सिवा नुक़सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में गुराबें (कौए) दौड़ाते[७]और तुम में उनके जासूस मौजूद

(१५) ये मुनाफ़िक़ और इस तरह विवशता दिखाएंगे.
(१६) मुनाफ़िक़ों की इस विवशता और बहाने बाज़ी से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और नबुव्वत की दलीलों में से है, चुनांचे जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्होंने यही बहाने बाज़ी की और झूटी क़समें खाईं.
(१७) झूटी क़सम खाकर. इस आयत से साबित हुआ कि झूटी क़समें खाना हलाकत का कारण है.

सूरए तौबह - सातवाँ रूकू

(१) *''अल्लाह तुम्हें माफ़ करे''* से कलाम की शुरूआत सम्बोधित व्यक्ति के आदर और सम्मान को बढ़ा चढ़ाकर दिखाने के लिये है. और अरब की भाषा में यह आम बात है कि सामने वाले की ताज़ीम और इज़्ज़त के लिये ऐसे कलिमे बोले जाते हैं. क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने शिफ़ा शरीफ़ में फ़रमाया, जिस किसी ने इस सवाल को प्रकोप क़रार दिया उसने ग़लती की, क्योंकि ग़ज़वए तबूक में हाज़िर न होने और घर रह जाने की इजाज़त माँगने वालों को इजाज़त देना न देना दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इख़्तियार में था और आप इसमें मुख़्तार थे. चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया *''फ़ाज़न लिमन शिअता मिन्हुम''* आप उनमें से जिसे चाहे इजाज़त दीजिये. तो **''लिम अज़िन्ता लहुम** (तुमने उन्हें क्यों इज़्न दे दिया) फ़रमाया, ग़ुस्से के लिये नहीं बल्कि यह इज़हार है कि अगर आप उन्हें इजाज़त न देते तो भी वो जिहाद में जाने वाले न थे. और ''अल्लाह तुम्हें माफ़ करे'' के मानी ये हैं कि अल्लाह तआला माफ़ करे, गुनाह से तो तुम्हें वास्ता ही नहीं. इस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भरपूर इज़्ज़त अफ़ज़ाई और तस्कीन व तसल्ली है कि मुबारक दिल पर **''तुमने उन्हें क्यों इजाज़त** दे दी'' फ़रमाने से कोई बोझ न हो.
(२) यानी मुनाफ़िक़ लोग.
(३) न इधर के हुए न उधर के हुए. न काफ़िरों के साथ रह सके न ईमान वालों का साथ दे सके.
(४) और जिहाद का इरादा रखते.
(५) उनके इजाज़त चाहने पर.
(६) बैठ रहने वालों से औरतें बच्चे बीमार और अपंग लोग मुराद हैं.
(७) और झूटी झूटी बातें बनाकर फ़साद फैलाते.

لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ
الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۗ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ
سَقَطُوْا ۗ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ
تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ
يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ
اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ ۗ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ
بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْا
اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ

हैं,[८] और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को﴿४७﴾ बेशक उन्होंने पहले ही फ़ितना चाहा था[९] और ऐ मेहबूब तुम्हारे लिये तदबीरें उलटी पलटीं[१०] यहां तक कि हक़ आया[११] और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हुआ[१२] और उन्हें नागवार था﴿४८﴾ और उनमें कोई तुमसे यूं अर्ज़ करता है कि मुझे रूख़सत दीजिये और फ़ितने में न डालिये[१३] सुन लो वो फ़ितने ही में पड़े[१४] और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को﴿४९﴾ अगर तुम्हें भलाई पहुंचे[१५] तो उन्हें बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[१६] तो कहें[१७] हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और ख़ुशियां मनाते फिर जाएं﴿५०﴾ तुम फ़रमाओ हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया, वह हमारा मौला है, और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये﴿५१﴾ तुम फ़रमाओ तुम हमपर किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हो मगर दो ख़ूबियों में से एक का[१८] और हम तुमपर इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह तुमपर अज़ाब डाले अपने पास से[१९] या हमारे हाथों[२०] तो अब राह देखो हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं[२१]﴿५२﴾ तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या नागवारी से तुमसे

(८) जो तुम्हारी बातें उनतक पहुंचाएं.

(९) और वो आपके सहाबा को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उबई सलोल मुनाफ़िक़ ने उहद के दिन किया कि मुसलमानों को बहकाने के लिये अपनी जमाअत लेकर वापस हो गया.

(१०) और उन्होंने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिये बहुत छल कपट किये.

(११) यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से सहायता और मदद.

(१२) और उसका दीन ग़ालिब रहा.

(१३) यह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जब नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक के लिये तैयारी फ़रमाई तो जद बिन क़ैस ने कहा, या रसूलल्लाह, मेरी क़ौम जानती है कि मैं औरतों का बड़ा शैदाई हूँ, मुझे डर है कि मैं रूम की औरतों को देखूंगा तो मुझसे सब्र न हो सकेगा. इसलिये आप मुझे यहीं ठहरने की इजाज़त दीजिये और उन औरतों में फ़ितना न डालिये. मैं आपकी माल से मदद करूंगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि यह उसका बहाना था और उसमें दोहरी प्रवृत्ति के सिवा कोई बुराई न थी. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसकी तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसे ठहर जाने की इजाज़त दे दी. उसके बारे में यह आयत उतरी.

(१४) क्योंकि जिहाद से रूक रहना और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म का विरोध बहुत बड़ा फ़ितना है.

(१५) और तुम दुश्मन पर विजयी हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आए.

(१६) और किसी तरह की सख़्ती पेश आए.

(१७) मुनाफ़िक़, कि चालाकी से जिहाद में न जाकर.

(१८) या तो विजय और ग़नीमत मिलेगी या शहादत और मग़फ़िरत, क्योंकि मुसलमान जब जिहाद में जाता है तो वह अगर ग़ालिब हो जब तो विजय और माल और बड़ा इनाम पाता है और अगर अल्लाह की राह में मारा जाए तो उसको शहादत हासिल होती है, जो उसकी सबसे बड़ी मुराद है.

(१९) और तुम्हें आद व समूद की तरह हलाक करे.

(२०) तुमको क़त्ल और क़ैद के अज़ाब में गिरफ़्तार करे.

(२१) कि तुम्हारा क्या अंजाम होता है.

كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ
اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ
الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ
كٰرِهُوْنَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَيَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ
قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ
اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا
رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ

हरगिज़ क़ुबूल न होगा[२२] बेशक तुम बेहुक्म लोग हो (५३) और वो जो ख़र्च करते हैं उसका क़ुबूल होना बन्द न हुआ मगर इसीलिये कि वो अल्लाह और रसूल के इन्कारी हुए और नमाज़ को नहीं आते मगर जी हारे और ख़र्च नहीं करते मगर नागवारी से[२३] (५४) तो तुम्हें उनके माल और उनकी औलाद का अचंभा न आए अल्लाह यही चाहता है कि दुनिया की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से उनपर वबाल डाले और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए[२४] (५५) और अल्लाह की क़समें खाते हैं[२५] कि वो तुम में से हैं[२६] और तुम में से नहीं[२७] हाँ वो लोग डरते हैं[२८] (५६) और अगर पाएं कोई पनाह या ग़ार (खोह) या समा जाने की जगह तो रस्सियां तुड़ाते उधर फिर जाएंगे[२९] (५७) और उनमें कोई वह है कि सदक़े (दान) बाँटने में तुमपर तअना करता है[३०] तो अगर उसमें[३१] से कुछ मिले तो राज़ी होजाएं और न मिले तो जभी वो नाराज़ हैं (५८) और क्या अच्छा होता अगर वो इस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया और कहते हमें अल्लाह

(२२) यह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के जवाब में उतरी जिसने जिहाद में न जाने की इजाज़त तलब करने के साथ यह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा. इस पर अल्लाह तआला नेफ़रमाया कि तुम ख़ुशी से दो या नाख़ुशी से, तुम्हारा माल क़ुबूल न किया जाएगा, यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसको न लेंगे क्योंकि यह देना अल्लाह के लिये नहीं है.

(२३) क्योंकि उन्हें अल्लाह की रज़ा और ख़ुशी मंज़ूर नहीं.

(२४) तो वह माल उनके हक़ में राहत का कारण न हुआ बल्कि वबाल हुआ.

(२५) मुनाफ़िक़ लोग इसपर.

(२६) यानी तुम्हारे दीन व मिल्लत पर हैं, मुसलमान हैं.

(२७) तुम्हें धोखा देते और झूठ बोलते हैं.

(२८) कि अगर उनकी दोग़ली प्रवृत्ति ज़ाहिर हो जाए तो मुसलमान उनके साथ वही मामला करेंगे जो मुश्रिकों के साथ करते हैं. इसलिये वो तक़ैय्या (सामने कुछ और अन्दर कुछ) करके अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करते हैं.

(२९) क्योंकि उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और मुसलमानों से इन्तिहा दर्जे की दुश्मनी है.

(३०) यह आयत ज़ुल-ख़ुवैसिरह तमीमी के बारे में उतरी. इस शख़्स का नाम हरक़ूस बिन ज़ुहैर है और यही ख़ारिजियों की अस्ल और बुनियाद है. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़नीमत का माल बाँट रहे थे तो ज़ुल-ख़ुवैसिरह ने कहा, या रसूलल्लाह इन्साफ़ कीजिये. हुज़ूर ने फ़रमाया, तुझे ख़राबी हो, मैं न इन्साफ़ करूंगा तो कौन करेगा. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया, मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ. हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो. इसके और भी साथी हैं कि तुम उनकी नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उनके रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को हक़ीर देखोगे. वो क़ुरआन पढ़ेंगे और उनके गलों से न उतरेगा. वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से.

(३१) सदक़ात और दीन.

وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّمَا
الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ
خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ
يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ

काफ़ी है अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और अल्लाह का रसूल हमें अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत (रूचि) है[३२]﴿५९﴾

आठवाँ रूकू

ज़कात तो उन्हीं लोगों के लिये है[१] मोहताज और निरे नादार और जो उसे तहसील (ग्रहण) करके लाएं और जिनके दिलों को इस्लाम से उलफ़त दी जाए और गर्दनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िर को, यह ठहराया हुआ है अल्लाह का और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴿६०﴾ और उनमें कोई वो हैं कि उन ग़ैब की ख़बरें देने वाले को सताते हैं[२] और कहते हैं वो तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की बात पर यक़ीन करते हैं[३] और जो तुम में मुसलमान हैं उनके वास्ते रहमत हैं और जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है﴿६१﴾ तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खाते हैं[४] कि तुम्हें राज़ी कर लें[५] और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़्यादा था कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे﴿६२﴾ क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे अल्लाह और उसके रसूल का तो उसके लिए जहन्नम की आग है कि

(३२) कि हमपर अपना फ़ज़्ल और फैलाए और हमें लोगों के मालों से बेपर्वाह करदे, बे नियाज़ कर दे.

सूरए तौबह - आठवाँ रूकू

(१) जब मुनाफ़िक़ों ने सदक़ात के बँटवारे में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर तअना कसा तो अल्लाह तआला ने इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तहिक़ सिर्फ़ यही आठ क़िस्म के लोग हैं, इन्हीं पर सदक़े ख़र्च किये जाएंगे. इसके सिवा और कोई मुस्तहिक़ नहीं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सदक़े के माल से कोई वास्ता ही नहीं . आप पर और आपकी औलाद पर सदक़ा हराम है तो तअना करने वालों को ऐतिराज़ का क्या मौक़ा. सदक़े से इस आयत में ज़कात मुराद है. ज़कात के मुस्तहिक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं. इनमें से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब बिइजमाए सहाबा साक़ित हो गए क्योंकि जब अल्लाह तबारक व तआला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इसकी हाजत न रही. यह इजमाअ ज़मानए सिद्दीक़ में मुनअक़िद हुआ. फ़क़ीर वह है जिसके पास अदना चीज़ हो और जबतक उसके पास एक वक़्त के लिये कुछ हो उसको सवाल हलाल नहीं. मिस्कीन वह है जिसके पास कुछ न हो, वह सवाल कर सकता है. आमिलीन वो लोग हैं जिन को इमाम ने सदक़े वसूल करने पर रखा हो. उन्हें इमाम इतना दे जो उनके और उनके सम्बन्धियों के लिये काफ़ी हो. अगर आमिल ग़नी हो तो भी उसको लेना जायज़ है. आमिल सैयद या हाशमी हो तो वह ज़कात में से न ले. गर्दनें छुड़ाने से मुराद यह है कि जिन ग़ुलामों को उनके मालिकों ने मकातिब कर दिया हो और एक मिक़दार माल की मुक़र्रर करदी हो कि इस क़द्र वो अदा करें तो आज़ाद हैं, वो भी मुस्तहिक़ हैं. उनको आज़ाद कराने के लिये ज़कात का माल दिया जाए. क़र्ज़दार जो बग़ैर किसी गुनाह के क़र्ज़ में जकड़े गए हों और इतना माल न रखते हों जिससे क़र्ज़ अदा करें तो उन्हें क़र्ज़ की अदायगी के लिये ज़कात के माल से मदद दी जाए. अल्लाह की राह में ख़र्च करने से बेसामान मुजाहिदों और नादार हाजियों पर ख़र्च करना मुराद है. इब्ने सबील से वो मुसाफ़िर मुराद हैं जिनके पास माल न हो. ज़कात देने वाले को यह भी जायज़ है कि वह इन तमाम क़िस्मों के लोगों को ज़कात दे, और यह भी जायज़ है कि इनमें से किसी एक ही क़िस्म को दे. ज़कात उन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई, तो उनके अलावा और दूसरे काम में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की तामीर में, न मुर्दे के कफ़न में, न उसके क़र्ज़ की अदायगी में. ज़कात बनी हाशिम को और ग़नी और उनके ग़ुलामों को न दी जाए. और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और ग़ुलामों को दे. (तफ़सीरे अहमदी व मदारिक)

(२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को. मुनाफ़िक़ लोग अपने जलसों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में बुरी बुरी बातें बका करते थे. उनमें से कुछ ने कहा कि अगर हुज़ूर को ख़बर हो गई तो हमारे हक़ में अच्छा न होगा. जुलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा हम जो चाहें कहें, हुज़ूर के सामने मुकर जाएंगे और क़सम खालेंगे. वह तो कान है, उनसे जो कह दिया जाए, सुन कर मान लेते हैं. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और यह फ़रमाया कि अगर वह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह के,

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ
الْعَظِيْمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ
لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ
وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا
تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ
عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ
كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ
مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَعَدَ
اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

हमेशा उसमें रहेगा, यही बड़ी रूसवाई है (६३) मुनाफ़िक़ डरते हैं कि इन[६] पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो[७] उनके दिलों की छुपी[८] जता दे, तुम फ़रमाओ हंसे जाओ, अल्लाह को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिसका तुम्हें डर है (६४) और ऐ मेहबूब अगर तुम उनसे पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे,[९] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल से हंसते हो (६५) बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान होकर,[१०] अगर हम तुम में से किसी को माफ़ करें[११] तो औरों को अज़ाब देंगे इसलिये कि वो मुजरिम थे[१२] (६६)

नवाँ रूकू

मुनाफ़िक़ मर्द (जिनके दिल में कुछ, ज़बान पर कुछ) और मुनाफ़िक़ औरतें एक थेली के चट्टे बट्टे हैं[१], बुराई का हुक्म दें[२] और भलाई से मना करें[३] और अपनी मुट्ठी बंद रखें[४] वो अल्लाह को छोड़ बैठे[५] तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया[६] बेशक मुनाफ़िक़ वही पक्के बेहुक्म हैं (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया

यानी अच्छी बातों के सुनने और मानने वाले हैं, शर और फ़साद के नहीं.

(३) न मुनाफ़िक़ों की बात पर.

(४) मुनाफ़िक़ इसलिये.

(५) मुनाफ़िक़ अपनी बैठकों में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा भला कहा करते थे और मुसलमानों के पास आकर उससे मुकर जाते थे और क़स्में खा खा कर अपनी सफ़ाई और बेगुनाही साबित करते थे. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि मुसलमानों को राज़ी करने के लिये क़स्में खाने से ज़्यादा अहम अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करना था, अगर ईमान रखते थे तो ऐसी हरकतें क्यों कीं जो ख़ुदा और रसूल की नाराज़ी का कारण हों.

(६) मुसलमानों.

(७) मुनाफ़िक़ों.

(८) दिलों की छुपी चीज़ उनकी दोहरी प्रवृत्ति है और वह दुश्मनी जो वो मुसलमानों के साथ रखते थे और उसको छुपाया करते थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कार देखने और आपकी ग़ैबी ख़बरें सुनने और उनको पूरा होते देखने के बाद मुनाफ़िक़ों को डर हुआ कि कहीं अल्लाह तआला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिससे उनकी पोल खुल जाए और उनकी रूस्वाई हो. इस आयत में इस का बयान है.

(९) ग़ज़वए तबूक में जाते हुए मुनाफ़िक़ों के तीन नफ़रों में से दो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत हंसी से कहते थे कि उनका ख़याल है कि रूम पर ग़ालिब आ जाएंगे. कितना दूर का ख़याल है. और एक नफ़र बोलता तो न था मगर इन बातों को सुनकर हंसता था. हुज़ूर ने उनको तलब फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे. उन्होंने कहा हम रास्ता काटने के लिये हंसी खेल के तौर पर दिल लगी की बातें कर रहे थे. इसपर यह आयत उतरी और उनका यह बहाना क़ुबूल न किया गया और उनके लिये फ़रमाया गया जो आगे इरशाद होता है.

(१०) इस आयत से साबित होता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी और अपमान कुफ़्र है, जिस तरह भी हो, उसमें बहाना क़ुबूल नहीं.

(११) उसके तौबह कर लेने और सच्चे दिल से ईमान लाने से. मुहम्मद बिन इस्हाक़ का क़ौल है कि इससे वही शख़्स मुराद है जो हंसता था, मगर उसने अपनी ज़बान से कोई गुस्ताख़ी की बात न कही थी. जब यह आयत उतरी तो उसने तौबह की और सच्चे दिल से ईमान लाया और उसने दुआ की कि यारब मुझे अपनी राह में ऐसी मौत दे कि कोई यह कहने वाला न हो कि मैं ने ग़ुस्ल दिया, मैंने कफ़न दिया, मैंने दफ़्न किया. चुनांचे ऐसा ही हुआ कि वह जंगे यमामा में शहीद हुए और उनका पता ही न चला, उनका नाम यहया बिन हमीर अशजई था और चूंकि उन्होंने हुज़ूर को बुरा कहने से ज़बान रोकी थी, इसलिये उन्हें तौबह और ईमान की तौफ़ीक़ मिली.

(१२) और अपने जुर्म पर क़ायम रहे और तौबह न की.

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّ
اَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ
كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ
بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

وقف لازم

है जिसमें हमेशा रहेंगे, वह उन्हें बस है, और अल्लाह की उनपर लानत है और उनके लिये क़ायम रहने वाला अज़ाब है(६८) जैसे वो जो तुम से पहले थे तुमसे ज़ोर में बढ़कर थे और उनके माल और औलाद तुमसे ज़्यादा तो वो अपना हिस्सा[७] बरत गए तो तुमने अपना हिस्सा बरता जैसे अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वो पड़े थे[८] उनके अमल अकारत गए दुनिया और आख़िरत में, और वही लोग घाटे में हैं[९](६९) क्या उन्हें[१०] अपने से अगलों की ख़बर न आई[११] नूह की क़ौम[१२] और आद[१३] और समूद[१४] और इब्राहीम की क़ौम[१५] और मदयन[१६] वाले और वो बस्तियाँ कि उलट दी गईं[१७] उनके रसूल रौशन दलीलें उनके पास लाए थे[१८] तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करता[१९] बल्कि वो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे[२०](७०) और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं[२१] भलाई का हुक्म

सूरए तौबह - नवाँ रूकू

(१) वो सब दोहरी प्रवृत्ति और बुरे अअमाल में एक से हैं, उनका हाल यह है कि.

(२) यानी कुफ़्र और गुनाह और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाने का. (ख़ाज़िन)

(३) यानी ईमान और रसूल की तस्दीक़ और उनकी फ़रमाँबरदारी से.

(४) ख़ुदा की राह में ख़र्च करने से.

(५) और उन्होंने उसकी इताअत और रज़ा तलबी न की.

(६) और सवाब व फ़ज़्ल से मेहरूम कर दिया.

(७) दुनिया की वासनाओं और लज़्ज़तों का.

(८) और तुमने बातिल का अनुकरण और अल्लाह व रसूल को झुटलाने और ईमान वालों के साथ मस़ख़ौल करने में उनकी राह इख़्तियार की.

(९) उन्हीं क़ाफ़िरों की तरह, ऐ मुनाफ़िक़ो, तुम टोटे में हो और तुम्हारे कर्म व्यर्थ हैं.

(१०) यानी मुनाफ़िक़ों को.

(११) गुज़री हुई उम्मतों का हाल मालूम न हुआ कि हमने उन्हें अपनी आज्ञा के विरोध और अपने रसूल की नाफ़रमानी पर किस तरह हलाक किया.

(१२) जो तूफ़ान से हलाक की गई.

(१३) जो हवा से हलाक किये गए.

(१४) जो ज़लज़ले और भूकम्प से हलाक किये गए.

(१५) जो नेअमतें छीन लिये जाने से हलाक की गई. और नमरूद मछर से हलाक किया गया.

(१६) यानी हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम, जो रोज़ बादल के अज़ाब से हलाक की गई.

(१७) और उलट पुलट कर डाली गई. वो लूत क़ौम की बस्तियाँ थीं. अल्लाह तआला ने उन छः का ज़िक्र फ़रमाया, इसलिये कि शाम व इराक़ व यमन के प्रदेश जो अरब प्रदेश से बिलकुल क़रीब क़रीब हैं, उनमें उन हलाक की हुई क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अरब लोग उन जगहों पर अक्सर गुज़रते रहते हैं.

(१८) उन लोगों ने तस्दीक़ करने की जगह अपने रसूलों को झुटलाया जैसा कि ऐ मुनाफ़िक़ो तुम कर रहे हो. डरो, कि उन्हीं की तरह अज़ाब में न जकड़ दिये जाओ.

(१९) क्योंकि वह हिकमत वाला है, बग़ैर जुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता.

وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَ رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَ لَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَ مَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ

दें(२२) और बुराई से मना करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें, ये हैं जिनपर बहुत जल्द अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है(७१) अल्लाह ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बाग़ों का वादा दिया है जिनके नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा मकानों का(२३) बसने के बाग़ों में, और अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी(२४) यही है, बड़ी मुराद पानी(७२)

दसवाँ रूकू

ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर(१) और उनपर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और क्या ही बुरी जगह पलटने की(७३) अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा(२) और बेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आकर काफ़िर होगए और वह चाहा था जो उन्हें न मिला(३) और उन्हें क्या बुरा लगा यही ना कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया(४) तो अगर वो तौबह करें

(२०) कि कुफ़्र और नबियों को झुटलाकर अज़ाब के हक़दार बने.
(२१) और आपस में दीनी महब्बत और सहयोग रखते हैं और एक दूसरे के मददगार और सहायक हैं.
(२२) यानी अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने और शरीअत का अनुकरण करने का.
(२३) हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जन्नत में मोती और सुर्ख़ याक़ूत और ज़बरजद के महल ईमान वालों को दिये जाएंगे.
(२४) और तमाम नेअमतों से बढ़कर और अल्लाह के चाहने वालों की सबसे बड़ी तमन्ना. अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदक़े में पूरी करे.

सूरए तौबह - दसवाँ रूकू

(१) काफ़िरों पर तो तलवार और जंग से और मुनाफ़िक़ों पर हुज्जत व तर्क क़ायम करके.
(२) इमाम बग़वी ने कलबी से नक़्ल किया कि यह आयत जुलास बिन सुवैद के बारे में उतरी. वाक़िआ यह था कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तबूक में ख़ुत्बा फ़रमाया उसमें मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र किया और उनकी बदहाली और दुर्दशा का ज़िक्र फ़रमाया. यह सुनकर जुलास ने कहा कि अगर मुहम्मद सच्चे हैं तो हम लोग गधों से बदतर. जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो आमिर बिन क़ैस ने हुज़ूर से जुलास का कहा बयान किया. जुलास ने इन्कार किया और कहा, या रसूलल्लाह, आमिर ने मुझ पर झूठ बोला. हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खाएं. जुलास ने अस्र के बाद मिम्बर के पास खड़े होकर अल्लाह की क़सम खाई कि यह बात उसने नहीं कही और आमिर ने उसपर झूठ बोला. फिर आमिर ने खड़े होकर क़सम खाई कि बेशक यह अल्फ़ाज़ जुलास ने कहे और मैं ने उसपर झूठ नहीं बोला. फिर आमिर ने हाथ उठाकर अल्लाह के हुज़ूर में दुआ की, यारब अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ फ़रमा. इन दोनों के जाने से पहले ही हज़रत जिब्रील यह आयत लेकर नाज़िल हुए. आयत में *''फ़इयं यतूबू यिका ख़ैरुल्लहुम''* सुनकर जुलास खड़े हो गए, अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सुनिये अल्लाह ने मुझे तौबह का मौक़ा दिया. आमिर बिन क़ैस ने जो कहा सच कहा. मैंने वह बात कही थी और अब मैं तौबह और इस्तग़फ़ार करता हूँ . हुज़ूर ने उनकी तौबह क़ुबूल फ़रमाई और वो अपनी तौबह पर जमे रहे.
(३) मुजाहिद ने कहा कि जुलास ने राज़ खुल जाने के डर से आमिर के क़त्ल का इरादा किया था. उसकी निस्बत अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह पूरा न हुआ.
(४) ऐसी हालत में उनपर शुक्र वाजिब था, न कि नाशुक्री.

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ
فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٧٤ وَمِنْهُمْ
مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٧٥ فَلَمَّآ
اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ۝٧٦ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ
اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا
وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝٧٧ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝٧٨ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ

तो उनका भला है और अगर मुंह फेरें(५) तो अल्लाह उन्हें सख़्त अज़ाब करेगा दुनिया और आख़िरत में, और ज़मीन में कोई न उनका हिमायती होगा न मददगार(६)(७४) और उनमें कोई वो हैं जिन्होंने अल्लाह से एहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल स देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे(७)(७५) तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उसमें कंजूसी करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए(७६) तो उसके पीछे अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे, बदला इसका कि उन्होंने अल्लाह से वादा झूटा किया और बदला इसका कि झूट बोलते थे(८)(७७) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी (खुसर फुसर, काना फूसी) को जानता है और यह कि अल्लाह सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है(९)(७८) वो जो ऐब लगाते हैं उन मुसलमानों को कि दिल से ख़ैरात करते हैं(१०) और उनको जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत से(११) तो उनसे हंसते हैं(१२) अल्लाह उनकी हंसी की सज़ा देगा और

(५) तौबह और ईमान से और कुफ़्र और दोगली प्रवृत्ति पर अड़े रहें.

(६) कि उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.

(७) सअलबा बिन हातिब ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरख़्वास्त की कि उसके लिये मालदार होने की दुआ फ़रमाएं. हुज़ूर ने फ़रमाया, ऐ सअल्बा, थोड़ा माल जिसका तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है, जिसका शुक्र अदा न कर सके. दोबारा फिर सअलबा ने हाज़िर होकर यही दरख़्वास्त की और कहा, उसी की क़सम जिस ने आप को सच्चा नबी बनाकर भेजा, अगर वह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूंगा. हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई. अल्लाह तआला ने उसकी बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उनकी गुन्जायश न हुई तो सअलबा उनको लेकर जंगल में चला गया और जुमा व जमाअत की हाज़िरी से भी मेहरूम हो गया. हुज़ूर ने उसका हाल पूछा तो सहाबा ने अर्ज़ किया कि उसका माल बहुत बढ़ गया है और अब जंगल में भी उसके माल की गुन्जायश न रही. हुज़ूर ने फ़रमाया कि सअलबा पर अफ़सोस. फिर हुज़ूर ने ज़कात वुसूल करने वाले भेजे. लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़े दिये. जब सअलबा से जाकर उन्होंने सदक़ा माँगा उसने कहा यह तो टैक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूं. जब ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर ने उनके कुछ अर्ज़ करने से पहले दो बार फ़रमाया सअलबा पर अफ़सोस. तब यह आयत उतरी. फिर जब सअलबा सदक़ा लेकर हाज़िर हुआ तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इसके क़ुबूल करने से मना फ़रमाया है. वह अपने सर पर ख़ाक डालकर वापस हुआ. फिर इस सदक़े को हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की ख़िलाफ़त के दौर में उनकी ख़िदमत में लाया. उन्होंने भी उसे क़ुबूल न फ़रमाया . फिर सैयदना उमर रदियल्लाहो अन्हो के दौरे ख़िलाफ़त में उनकी ख़िदमत में लाया. उन्होंने भी क़ुबूल न किया. और हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त के ज़माने में ये शख़्स हलाक हो गया. (मदारिक)

(८) इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि एहद तोड़ना और वादा करके फिर जाना, इस सबसे दोगली प्रवृत्ति पैदा होती है. मुसलमान पर लाज़िम है कि इन बातों से दूर रहे और एहद पूरा करने और वादा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे. हदीस शरीफ़ में है कि मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं, जब बात करे झूट बोले, जब वादा करे ख़िलाफ़ करे, जब उसके पास अमानत रखी जाए, ख़यानत करे.

(९) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं. मुनाफ़िक़ों के दिलों की बात भी जानता है और वो जो आपस में एक दूसरे से कहें वह भी.

(१०) जब सदक़े की आयत उतरी तो लोग सदक़ा लाए. उनमें कोई बहुत सारा सदक़ा लाया. उन्हें तो मुनाफ़िक़ों ने रियाकार कहा, और कोई एक साअ (साढ़े तीन सेर) लाए तो उन्हें कहा, अल्लाह को इसकी क्या परवाह. इसपर यह आयत उतरी. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोगों को सदक़े की रग़बत दिलाई तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लेकर आए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, मेरा कुल माल आठ हज़ार

مِنْهُمْ ؕ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ
اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ
مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الْفٰسِقِيْنَ ۝ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى
الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝
فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ
مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ
تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِىَ عَدُوًّا ؕ
اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ

उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है ﴾७९﴿ तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उनकी माफ़ी चाहो तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें नहीं बख़्शेगा,[13] यह इसलिये कि वो अल्लाह और उसके रसूल से इन्कारी हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों (व्यभिचारियों) को राह नहीं देता[14] ﴾८०﴿

ग्यारहवाँ रूकू

पीछे रह जाने वाले इसपर ख़ुश हुए कि वो रसूल के पीछे बैठ रहे[1] और उन्हें गवारा न हुआ कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और बोले इस गर्मी में न निकलो, तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सबसे सख़्त गर्म है किसी तरह उन्हें समझ होती[2] ﴾८१﴿ तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं[3] बदला उसका जो कमाते थे[4] ﴾८२﴿ फिर ऐ मेहबूब[5] अगर अल्लाह तुम्हें उनमें[6] से किसी गिरोह की तरफ़ वापस ले जाए और वो[7] तुमसे जिहाद को निकलने की इजाज़त मांगे तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुमने पहली बार बैठ रहना पसन्द किया तो बैठ रहो

दिरहम था. चार हज़ार तो यह ख़ुदा की राह में हाज़िर है और चार हज़ार मैंने घर वालों के लिये रोक लिये हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह उसमें भी बरकत फ़रमाए. हुज़ूर की दुआ का असर यह हुआ कि उनका माल बहुत बढ़ा, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हुई तो उन्होंने दो बीबियाँ छोड़ीं, उन्हें आठवाँ हिस्सा मिला, जिसकी मिक़दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी.

(११) अबू अक़ील अन्सारी एक साअ खजूरें लेकर हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैंने आज रात की पानी खींचने की मज़दूरी की. उसकी उजरत दो साअ खजूरें मिलीं. एक साअ तो मैंने घर वालों के लिये छोड़ा और एक साअ अल्लाह की राह में हाज़िर है. हुज़ूर ने यह सदक़ा क़ुबूल फ़रमाया और इसकी क़द्र की.

(१२) मुनाफ़िक़ और सदक़े की कमी पर शर्म दिलाते हैं.

(१३) ऊपर की आयतें जब उतरीं और मुनाफ़िक़ों की दोहरी प्रवृत्ति खुल कर सामने आ गई और मुसलमानों पर उनका हाल खुल गया तो मुनाफ़िक़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे माफ़ी मांगने लगे. कहने लगे कि आप हमारे लिये इस्तग़फ़ार कीजिये. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआला हरगिज़ उनकी मग़फ़िरत न फ़रमाएगा, चाहे आप कितना ही बढ़ा चढ़ाकर इस्तग़फ़ार करें.

(१४) जो ईमान से बाहर हों, जब तक कि वो कुफ़्र पर रहें. (मदारिक)

सूरए तौबह - ग्यारहवाँ रूकू

(१) और ग़ज़वए तबूक में न गए.

(२) तो थोड़ी देर की गर्मी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आपको बचाते.

(३) यानी दुनिया में ख़ुश होना और हंसना, चाहे कितनी ही लम्बी मुद्दत के लिये हो, मगर वह आख़िरत के रोने के मुक़ाबले में थोड़ा है, क्योंकि दुनिया मिटने वाली है और आख़िरत हमेशा के लिये क़ायम रहने वाली.

(४) यानी आख़िरत का रोना दुनिया में हंसने और बुरे काम करने का बदला है. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वह जो मैं जानता हूँ तो थोड़ा हंसते, बहुत रोते.

(५) ग़ज़वए तबूक के बाद.

(६) पीछे रह जाने वाले.

(७) अगर वह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था.

الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ
اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ
اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾
وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ
رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَ قَالُوْا
ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾
لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ

पीछे रह जाने वालों के साथ[८] ﴾८३﴿ और उनमें से किसी की मैयत पर कभी नमाज़ न पढ़ना न पढ़ाना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना, बेशक अल्लाह और रसूल से इन्कारी हुए और फ़िस्क़ (दुराचार)ही में मर गए[९] ﴾८४﴿ और उनके माल या औलाद पर अचंभा न करना, अल्लाह यही चाहता है कि उसे दुनिया में उनपर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उनका दम निकल जाए﴾८५﴿ और जब कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के हमराह जिहाद करो तो उनके मक़दूर(सामर्थ्य) वाले तुमसे रूख़सत माँगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ होलें﴾८६﴿ उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ होजाएं और उनके दिलों पर मोहर करदी गई[१०] तो वो कुछ नहीं समझते[११] ﴾८७﴿ लेकिन रसूल और जो उनके साथ ईमान लाए उन्होंने अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिये भलाइयाँ हैं[१२] और यही मुराद को पहुंचे﴾८८﴿ अल्लाह ने उनके लिये तैयार कर रखी हैं बहिश्तें जिनके नीचे नेहरें हमेशा उनमें रहेंगे, यही बड़ी मुराद मिलनी है﴾८९﴿

(८) औरतों, बच्चों, बीमारों, और अपाहिजों के. इससे साबित हुआ कि जिस व्यक्ति से छल कपट ज़ाहिर हो, उससे अलग रहना चाहिये और केवल इस्लाम का दावा करने वाला होने से मुसाहिबत और मुआफ़िक़त जायज़ नहीं होती. इसीलिये अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मुनाफ़िक़ों के जिहाद में जाने को मना फ़रमा दिया. आजकल जो लोग कहते हैं कि हर कलिमा पढ़ने वाले को मिला लो और उसके साथ इत्तिहाद और मेल जोल करो, यह इस क़ुरआनी हुक्म के बिल्कुल ख़िलाफ़ है.

(९) इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुनाफ़िक़ों के जनाज़े की नमाज़ और उनके दफ़्न में शिर्कत करने से मना फ़रमाया गया. इस आयत से साबित हुआ कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी हाल में जायज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़ा होना भी मना है. और यह जो फ़रमाया *और फ़िस्क़ ही में मर गए* यहाँ फ़िस्क़ से कुफ़्र मुराद है. क़ुरआने करीम में एक और जगह भी फ़िस्क़ कुफ़्र के मानी में आया है, जैसे कि आयत *''अफ़मन काना मूमिनन कमन काना फ़ासिक़न''* (तो क्या जो ईमान वाला है वह उस जैसा हो जाएगा जो बेहुक्म है - सूरए सज्दा, आयत १८) में. फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ है, इसपर सहाबा और ताबईन की सहमति है, और इसपर उलमाए सालिहीन का अमल और यही अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब है. इस आयत में मुसलमानों के जनाज़े की नमाज़ का सुबूत भी मिलता है. और इसका फ़र्ज़े किफ़ाया होना हदीसे मशहूर से साबित होता है. जिस शख़्स के मूमिन या काफ़िर होने में शुबह हो, उसके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए. जब कोई काफ़िर मर जाए और उसका सरपरस्त मुसलमान हो तो उसको चाहिये कि मसनून तरीक़े से ग़ुस्ल न दे बल्कि नजासत की तरह उसपर पानी बहा दे और न कफ़ने मसनून दे. बल्कि उतने कपड़े में लपेटे जिससे सतर छुप जाए और न सुन्नत तरीक़े पर दफ़्न करे, न सुन्नत तरीक़े पर क़ब्र बनाए, सिर्फ़ गढ़ा खोदे और दबा दे. अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़िक़ों का सरदार था. जब वह मर गया तो उसके बेटे अब्दुल्लाह ने जो नेक मुसलमान, मुख़्लिस सहाबी और कसरत से इबादत करने वाले थे, उन्होंने यह ख़्वाहिश की कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके बाप अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल के कफ़न के लिये अपनी मुबारक क़मीज़ इनायत फ़रमा दें और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की राय उसके ख़िलाफ़ थी. लेकिन चूंकि उस वक़्त तक मुमानिअत नहीं हुई थी और हुज़ूर को मालूम था कि मेरा यह अमल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का कारण होगा, इसलिये हुज़ूर ने अपनी क़मीज़ भी इनायत फ़रमाई और जनाज़े में शिर्कत भी की. कमीज़ देने की एक वजह यह थी कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास, जो बद्र में क़ैदी होकर आए थे, तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपना कुर्ता उन्हें पहनाया था. हुज़ूर को इसका बदला देना भी मंज़ूर था. इसपर यह आयत उतरी और इसके बाद फिर कभी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े में शिर्कत न फ़रमाई और हुज़ूर की वह मसलिहत भी पूरी हुई. चुनांचे काफ़िरों ने देखा कि ऐसा सख़्त दुश्मन जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के कुर्ते से बरकत हासिल करना चाहता है तो उसके अक़ीदे में भी आप अल्लाह

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى
وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا
نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ
سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ
اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ
اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۠ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ
الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ
اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ
وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

منزل ٢

बारहवाँ रूकू

और बहाने बनाने वाले गंवार आए(१) कि उन्हें रूख़सत दी जाए और बैठ रहे वो जिन्होंने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था(२) जल्द उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा(३)﴿९०﴾ बूढ़ों पर कुछ हरज नहीं(४) और न बीमारों पर(५) और न उनपर जिन्हें ख़र्च की ताक़त न हो(६) जबकि अल्लाह और रसूल के शुभ चिन्तक रहें(७) नेकी वालों पर कोई राह नहीं(८) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴿९१﴾ और न उनपर जो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों कि तुम उन्हें सवारी अता फ़रमाओ(९) तुमसे यह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिसपर तुम्हें सवार करूं इसपर यूं वापस जाएं कि उनकी आँखों से आँसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च की ताक़त न पाई﴿९२﴾ मुआख़ज़ा (जवाब तलबी) तो उनसे है जो तुमसे रूख़सत मांगते हैं और वो दौलतमंद हैं(१०) उन्हें पसन्द आया कि औरतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर करदी तो वो कुछ नहीं जानते﴿९३﴾(११)

के हबीब और उसके सच्चे रसूल हैं . यह सोचकर हज़ार काफ़िर मुसलमान हो गए.
(१०) उनके कुफ़्र और दोग़ली प्रवृत्ति इख़्तियार करने के कारण.
(११) कि जिहाद में कैसी हलाकत और दिल की ख़राबी है.
(१२) दोनों जहान की.

सूरए तौबह - बारहवाँ रूकू

(१) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में जिहाद से रह जाने का बहाना करने. ज़ुहाक का क़ौल है कि यह आमिर बिन तुफ़ैल की जमाअत थी. उन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ की कि या नबीयल्लाह, अगर हम आपके साथ जिहाद में जाएं तो क़बीलए तैय के अरब हमारी बीबियों बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने तुम्हारे हाल से ख़बरदार किया है और वह मुझे तुमसे बे नियाज़ करेगा. अम्र बिन उला ने कहा कि उन लोगों ने झूटा बहाना बनाकर पेश किया था.
(२) यह दूसरे गिरोह का हाल है जो बिना किसी विवशता के बैठ रहे. ये मुनाफ़िक़ थे, उन्होंने ईमान का झूटा दावा किया था.
(३) दुनिया में क़त्ल होने का, और आख़िरत में जहन्नम का.
(४) बातिल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद, सच्चे उज़्र वालों के बारे में फ़रमाया कि उनपर से जिहाद की अनिवार्यता उतर गई है. ये कौन लोग हैं, उनके कुछ तबक़े बयान फ़रमाए. पहले बूढ़े, फिर बूढ़े बच्चे औरतें, और वो शख़्स भी इन्हीं में दाख़िल है जो पैदायशी कमज़ोर, और नाकारा हों.
(५) यह दूसरा तबक़ा है जिसमें अन्धे, लंगड़े, अपाहिज भी दाख़िल हैं.
(६) और जिहाद का सामान न कर सकें, ये लोग रह जाएं तो इनपर कोई गुनाह नहीं.
(७) उनकी फ़रमाँबरदारी करें और मुजाहिदों के घर वालों का ध्यान रखें.
(८) हिसाब और पकड़ की.
(९) रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा में से कुछ लोग जिहाद में जाने के लिये हाज़िर हुए. उन्हों ने हुज़ूर से सवारी की दरख़्वास्त की. हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिसपर मैं तुम्हें सवार करूं, तो वो रोते वापस हुए. उनके बारे में यह आयत उतरी.
(१०) जिहाद में जाने की क़ुदरत रखते हैं इसके बावुजूद.
(११) कि जिहाद में क्या लाभ और पुण्य यानी सवाब है.

पारा दस समाप्त

ग्यारहवां पारा - यअतज़िरुन
(सूरए तौबह जारी)

तुमसे बहाने बनाएं[१२] जब तुम उनकी तरफ़ लौट कर जाओगे, तुम फ़रमाना, बहाने न बनाओ, हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे, अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं, और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे[१३] फिर उसकी तरफ़ पलटकर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबको जानता है वह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते थे﴿९४﴾ अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खाएंगे जब[१४] तुम उनकी तरफ़ पलट कर जाओगे इसलिये कि तुम उनके ख़याल में न पड़ो[१५] तो हाँ तुम उनका ख़याल छोड़ो[१६] वो तो निरे पलीद हैं[१७] और उनका ठिकाना जहन्नम है, बदला उसका जो कमाते थे[१८]﴿९५﴾ तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अगर तुम उनसे राज़ी होजाओ[१९] तो बेशक अल्लाह तो फ़ासिक़ (दुराचारी) लोगों से राज़ी न होगा[२०]﴿९६﴾ गंवार[२१] कुफ़्र और निफ़ाक़ (दोग़लेपन) में ज़्यादा सख़्त हैं[२२] और इसी क़ाबिल कि अल्लाह ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उससे जाहिल रहें और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴿९७﴾ और कुछ गंवार वो हैं कि जो अल्लाह की राह में ख़र्च करें तो उसे तावान समझें[२३] और तुमपर गर्दिशें आने के इन्तिज़ार में रहें[२४] उन्हीं पर है बुरी गर्दिश (आपत्ति)[२५] और अल्लाह

सूरए तौबह - बारहवाँ रूकू (जारी)

(१२) और झूटा बहाना पेश करेंगे, ये जिहाद से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक़्त.

(१३) कि तुम दोहरी प्रवृत्ति से तौबह करते हो, या इसपर क़ायम रहते हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि उन्होंने वादा किया था कि आगे चल कर वो मूमिनों की मदद करेंगे. हो सकता है कि उसी की निस्बत फ़रमाया गया हो कि अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस एहद को भी वफ़ा करते हो या नहीं.

(१४) अपने इस सफ़र से वापस होकर मदीनए तैय्यिबह में.

(१५) और उनपर मलामत और क्रोध न करो.

(१६) और उनसे परहेज़ करो. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया, मुराद यह है कि उनके साथ बैठना उनसे बोलना छोड़ दो. चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि मुनाफ़िक़ों के पास न बैठें, उनसे बात चीत न करें, क्योंकि उनके बातिन ख़बीस और कर्म बुरे हैं. और मलामत व इताब से उनकी इस्लाह न होगी, इसलिये कि.

(१७) और अपवित्रता के पाक करने का कोई तरीक़ा नहीं है.

(१८) दुनिया में बुरा कर्म. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह आयत जद बिन क़ैस और मअतब बिन क़ुशीर और उनके साथियों के हक़ में नाज़िल हुई . ये अस्सी मुनाफ़िक़ थे. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि उनके पास न बैठो, उनसे कलाम न करो. मक़ातिल ने कहा कि यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में उतरी. उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने क़सम खाई थी कि अब कभी वह जिहाद में जाने में सुस्ती न करेगा और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से प्रार्थना की थी कि हुज़ूर उससे राज़ी हो जाएं. इसपर यह आयत और इसके बाद वाली आयत उतरी.

(१९) और उनके उज़्र और बहाने क़ुबूल करलो तो इससे उन्हें कुछ नफ़ा न होगा, क्योंकि अगर तुम उनकी क़समों का ऐतिबार भी कर लो.

(२०) इसलिये कि वह उनके कुफ़्र और दोहरी प्रवृत्ति को जानता है.

(२१) जंगल के रहने वाले.

عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ
الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾ وَالسَّابِقُونَ
الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا
عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ
مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ
سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾
وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا
وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ

सुनता जानता है﴾९८﴿ और कुछ गाँव वाले वो हैं जो अल्लाह और क़यामत पर यक़ीन रखते हैं[२६] और जो ख़र्च करें उसे अल्लाह की नज़दीकियों और रसूल से दुआएं लेने का ज़रीया समझें[२७] हां हां वह उनके लिये क़रीब हो हाने का साधन है, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾९९﴿

तेरहवाँ रूकू

और सब में अगले पहले मुहाजिर[१] और अन्सार[२] और जो भलाई के साथ उनके पीछे चलने वाले हुए[३] अल्लाह उनसे राज़ी[४] और वो अल्लाह से राज़ी[५] और उनके लिये तैयार कर रखे हैं बाग़ जिनके नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उनमें रहें, यही बड़ी कामयाबी है﴾१००﴿ और तुम्हारे आस पास[६] के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं, और कुछ मदीना वाले उनकी आदत हो गई है निफ़ाक़(दोग़लापन), तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं[७] जल्द हम उन्हें दोबारा[८] अज़ाब करेंगे फिर बड़े अज़ाब की तरफ़ फेरे जाएंगे[९]﴾१०१﴿ और कुछ और हैं जो अपने गुनाहों के मुक़िर (इक़रारी) हुए[१०] और मिलाया एक काम अच्छा[११] और दूसरा बुरा[१२], क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबह क़ुबूल करे, बेशक

(२२) क्योंकि वो इल्म की मजलिसों और उलमा की सोहबत से दूर रहते हैं.
(२३) क्योंकि वो जो कुछ ख़र्च करते हैं, अल्लाह की ख़ुशी और सवाब हासिल करने के लिये तो करते नहीं, रियाकारी और मुसलमानों के ख़ौफ़ से ख़र्च करते हैं.
(२४) और ये राह देखते हैं कि कब मुसलमानों का ज़ोर कम हो और कब वो मग़लूब और परास्त हों. उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह को क्या मंज़ूर है. वह बतला दिया जाता है.
(२५) और वही रंज और बला और बदहाली में जकड़े जाएंगे. यह आयत असद व ग़ितफ़ान व तमीम के क़बीलों के देहातियों के हक़ में उतरी. फिर अल्लाह तआला ने उनमें से जिनको छूट दी उनका ज़िक्र अगली आयत में है. (ख़ाज़िन)
(२६) मुजाहिद ने कहा कि ये लोग क़बीलए मज़ैनह में से बनी मक़रिन हैं. कल्बी ने कहा, वो असलम और ग़फ़्फ़ार और जुहैना के क़बीले हैं. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरैश और अन्सार और जुहैना और मज़ैनह और असलम और शुजाअ और ग़फ़्फ़ार मवाली हैं, अल्लाह और रसूल के सिवा कोई उनका मौला नहीं.
(२७) कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में सदक़ा लाएं तो हुज़ूर उनके लिये ख़ैर बरकत व मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाएं. यही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तरीक़ा था. यही फ़ातिहा की अस्ल है कि सदक़े के साथ दुआए मग़फ़िरत की जाती है. लिहाज़ा फ़ातिहा को बिदअत और ना रवा बताना क़ुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ है.

सूरए तौबह - तेरहवाँ रूकू

(१) वो लोग जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं या बद्र वाले या बैअते रिज़वान वाले.
(२) बैअते अक़बए ऊला वाले, जो छः सहाबा थे और बैअते अक़बए सानिया वाले, जो बारह थे. और बैअते अक़बए सालिसा वाले जो सत्तर सहाबा थे, ये हज़रात साबिक़ीन अन्सार कहलाते हैं. (ख़ाज़िन)
(३) कहा गया है कि उनसे बाक़ी मुहाजिर और अन्सार मुराद हैं. तो अब तमाम सहाबा इसमें आगए और एक क़ौल यह है कि अनुयायी होने वालों से क़यामत तक के वो ईमानदार मुराद हैं जो ईमान व आज्ञा पालन और नेकी में अन्सार और मुहाजिरों की राह चलें.
(४) उसकी बारगाह में उनके नेक कर्म क़ुबूल.
(५) उसके सवाब और अता यानी इनाम से ख़ुश.
(६) यानी मदीनए तैय्यिबह के आस पास के प्रदेश.
(७) इसके मानी या तो ये हैं कि ऐसा जानना जिसका असर उन्हें मालूम हो, वह हमारा जानना है कि हम उन्हें अज़ाब करेंगे. या

غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذۡ مِنۡ اَمۡوَالِهِمۡ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمۡ
وَتُزَكِّيۡهِمۡ بِهَا وَصَلِّ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ
لَّهُمۡ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ
هُوَ يَقۡبَلُ التَّوۡبَةَ عَنۡ عِبَادِهٖ وَيَاۡخُذُ الصَّدَقٰتِ
وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۰۴﴾ وَقُلِ اعۡمَلُوۡا فَسَيَرَى
اللّٰهُ عَمَلَكُمۡ وَرَسُوۡلُهٗ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ وَسَتُرَدُّوۡنَ
اِلٰى عٰلِمِ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ
تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾ وَاٰخَرُوۡنَ مُرۡجَوۡنَ لِاَمۡرِ اللّٰهِ اِمَّا
يُعَذِّبُهُمۡ وَاِمَّا يَتُوۡبُ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ
حَكِيۡمٌ ﴿۱۰۶﴾ وَالَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا مَسۡجِدًا ضِرَارًا وَّكُفۡرًا
وَّتَفۡرِيۡقًا بَيۡنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَاِرۡصَادًا لِّمَنۡ حَارَبَ
اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَلَيَحۡلِفُنَّ اِنۡ اَرَدۡنَاۤ
اِلَّا الۡحُسۡنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشۡهَدُ اِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمۡ

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है《१०२》ऐ महबूब उनके माल में से ज़कात निकलवाओ जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआए ख़ैर करो[१३] बेशक तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह सुनता जानता है《१०३》क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबह क़ुबूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत में लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान है[१४]《१०४》 और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमान, और जल्द उसकी तरफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वो तुम्हारे काम तुम्हें जताएगा《१०५》और कुछ[१५] मौक़ूफ़ रखे गए अल्लाह के हुक्म पर या उनपर अज़ाब करे या उनकी तौबह क़ुबूल करे[१६] और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है《१०६》और वो जिन्होंने मस्जिद बनाई[१७] नुक़सान पहुंचाने को[१८] और कुफ़्र के कारण[१९] और मुसलमानों में तफ़रिक़ा[२०] डालने को और उसके इन्तिज़ार में जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल का विरोधी है[२१] और वो ज़रूर क़समें खाएंगे हमने तो भलाई ही चाही, और अल्लाह गवाह है कि वो बेशक झूटे हैं《१०७》

हुज़ूर से मुनाफ़िक़ों के हाल जानने की नफ़ी बएेतिबारे साबिक़ है और इसका इल्म बाद को अता हुआ जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया, *"वला तअरिफ़न्नहुम फ़ी लहनिल क़ौल"* (और ज़रूर तुम उन्हें बात के उस्लूब में पहचान लोगे - सूरए मुहम्मद, आयत ३०)(जुमल). कल्बी व सदी ने कहा कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जुमुए के रोज़ ख़ुत्बे के लिये खड़े होकर नाम बनाम फ़रमाया, निकल ऐ फ़लाँ, तू मुनाफ़िक़ है, निकल ऐ फ़लाँ तू मुनाफ़िक़ है. तो मस्जिद से चन्द लोगों को रुस्वा करके निकाला. इससे भी मालूम होता है कि हुज़ूर को इसके बाद मुनाफ़िक़ों के हाल का इल्म अता किया गया.

(८) एक बार तो दुनिया में रुस्वाई और क़त्ल के साथ और दूसरी बार क़ब्र में.

(९) यानी दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़, जिसमें हमेशा गिरफ़्तार रहेंगे.

(१०) और उन्होंने दूसरों की तरह झूटे बहाने न किये और अपने किये पर शर्मिन्दा हुए. अक्सर मुफ़स्सिरों का कहना है कि यह आयत मदीनए तैय्यिबह के मुसलमानों की एक जमाअत के हक़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़वए तबूक में हाज़िर न हुए थे. उसके बाद शर्मिन्दा हुए और तौबह की और कहा, अफ़सोस हम गुमराहियों के साथ या औरतों के साथ रह गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा जिहाद में हैं. जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और मदीना के क़रीब पहुंचे तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम अपने आपको मस्जिद के सुतूनों से बाँध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे, यहाँ तक कि हुज़ूर ही खोलें. ये क़समें खाकर वो मस्जिद के सुतूनों से बंध गए. जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए और उन्हें देखा तो फ़रमाया, ये कौन हैं ? अर्ज़ किया गया, ये वो लोग हैं जो जिहाद में हाज़िर होने से रह गए थे. इन्होंने अल्लाह से एहद किया है कि ये अपने आपको न खोलेंगे जबतक हुज़ूर उनसे राज़ी होकर ख़ुद उन्हें न खोलें. हुज़ूर ने फ़रमाया, और मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि मैं उन्हें न खोलूंगा, न उनकी माफ़ी क़ुबूल करूंगा जबतक कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उनके खोलने का हुक्म न मिल जाए. तब यह आयत उतरी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें खोला तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, ये माल हमारे रह जाने के कारण हुए, इन्हें लीजिये और सदक़ा कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिये मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाइये. हुज़ूर ने फ़रमाया, मुझे तुम्हारे माल लेने का हुक्म नहीं दिया गया. इसपर अगली आयत उतरी *"ख़ुज़ मिन अमवालिहिम"*.

(११) यहाँ नेक कर्मों से या क़ुसूर का ऐतिराफ़ और तौबह मुराद है या इस पीछे रह जाने से पहले ग़ज़वात में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ हाज़िर होना या फ़रमाँबरदारी और तक़वा के तमाम कर्म. इस सूरत में यह आयत सारे मुसलमानों के हक़ में होगी.

(१२) इससे जिहाद से रह जाना मुराद है .

(१३) आयत में जो सदक़ा आया है उसके मानी में मुफ़स्सिरों के कई क़ौल हैं. एक तो यह है कि वह ग़ैर वाजिब सदक़ा था जो

فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۞ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۞ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۞ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना[२२] बेशक वह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिसकी बुनियाद परहेज़गारी पर रखी गई है[२३] वह इस क़ाबिल है कि तुम उसमें खड़े हो, उसमें वो लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं[२४] और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं﴾१०८﴿ तो क्या जिसने अपनी बुनियाद रखी अल्लाह के डर और उसकी रज़ा पर[२५] वह भला या वह जिसने अपनी नीव चुनी एक गिराऊ गढ़े के किनारे तो[२६] वह उसे लेकर जहन्नम की आग में ढै पड़ा[२७] और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता﴾१०९﴿ वो तामीर जो चुनी हमेशा उनके दिलों में खटकती रहेगी[२८] मगर यह कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं[२९] और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴾११०﴿

चौदहवाँ रूकू

बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनके माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उनके लिये जन्नत है[१] अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें[२] और मरें[३] उसके करम के ज़िम्मे सच्चा वादा तौरात और इंजील और क़ुरआन में[४] और अल्लाह से ज़्यादा क़ौल (कथन) का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ अपने सौदे की जो तुमने उससे किया है,

कफ़्फ़ारे के तौर पर उन साहिबों ने दिया था जिनका ज़िक्र ऊपर की आयत में है. दूसरा क़ौल यह है कि इस सदक़े से मुराद वह ज़कात है जो उनके ज़िम्मे वाजिब थी, वो तायब हुए और उन्होंने ज़कात अदा करनी चाही तो अल्लाह तआला ने उसके लेने का हुक्म दिया. इमाम अबूबक्र राज़ी जस्सास ने इस क़ौल को तरजीह दी है कि सदक़े से ज़कात मुराद है (ख़ाज़िन). मदारिक में है कि सुन्नत यह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिये दुआ करे और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की हदीस है कि जब कोई नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास सदक़ा लाता, आप उसके हक़ में दुआ करते. मेरे बाप ने सदक़ा हाज़िर किया तो हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई *"अल्लाहुम्मा सल्ले अला अबी औफ़ा"*. इस आयत से साबित हुआ कि फ़ातिहा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पाकर दुआ करते हैं, यह क़ुरआन और हदीस के मुताबिक़ है.

(१४) इसमें तौबह करने वालों को बशारत दी गई कि उनकी तौबह और उनके सदक़ात मक़बूल हैं. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबह नहीं की, इस आयत में उन्हें तौबह और सदक़े की तरग़ीब दी गई.

(१५) पीछे रहजाने वालों से.

(१६) ग़ज़वए तबूक से रह जाने वाले तीन क़िस्म के थे, एक मुनाफ़िक़, जो दोहरी प्रवृत्ति के आदी थे, दूसरे वो लोग जिन्होंने क़ुसूर के एतिराफ़ और तौबह में जल्दी की, जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका, तीसरे वो जिन्हों ने देरी की, जो रूके रहे और जल्दी तौबह न की. यही इस आयत से मुराद है.

(१७) यह आयत मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत के बारे में उतरी जिन्होंने मस्जिदे क़ुबा को नुक़सान पहुंचाने और उसकी जमाअत बिखेरने के लिये इसके क़रीब एक मस्जिद बना ली थी . उसमें एक बड़ी चाल थी, वह यह कि अबू आमिर जो जिहालत के ज़माने में ईसाई पादरी हो गया था, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा, यह कौन सा दीन है जो आप लाए हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते हनीफ़िया, दीने इब्राहीम लाया हूँ. कहने लगा मैं उसी दीन पर हूँ. हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं. उसने कहा कि आपने इसमें कुछ और मिला दिया है. हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ालिस साफ़ मिल्लत लाया हूँ. अबू आमिर ने कहा, हम में से जो झूटा हो, अल्लाह उसको मुसाफ़िरत में तन्हा और बेकस करके हलाक करे. हुज़ूर ने आमीन फ़रमाया. लोगों ने उसका नाम अबू आमिर फ़ासिक़ रख दिया. उहद के दिन अबू आमिर फ़ासिक़ ने हुज़ूर से कहा कि जहाँ कहीं कोई क़ौम आपसे जंग करने वाली मिलेगी, मैं उसके साथ होकर आप से जंग करूंगा. चुनांचे जंगे हुनैन तक उसका यही मामूल रहा और वह हुज़ूर के साथ मसरूफ़े जंग रहा. जब हवाज़िन को हार हुई और वह मायूस होकर शाम प्रदेश की तरफ़ भागा तो उसने मुनाफ़िक़ों को ख़बर भेजी कि तुम से जो सामाने जंग हो सके, क़ुव्वत और हथियार, सब जमा करो और मेरे लिये एक मस्जिद बनाओ. मैं रूम के बादशाह के पास जाता हूँ वहाँ से रूम का लश्कर लेकर आऊंगा और (सैयदे आलम) मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) और उनके सहाबा को निकालूंगा. यह ख़बर पाकर उन लोगों ने मस्जिदे ज़िरार बनाई थी और सैयदे आलम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया था, यह मस्जिद हमने आसानी के लिये बनादी है कि जो लोग बूढ़े और कमज़ोर हैं वो इसमें फ़राग़त से नमाज़ पढ़ लिया करें. आप इसमें एक नमाज़ पढ़ दीजिये और बरकत की दुआ फ़रमा दीजिये. हुज़ूर ने फ़रमाया कि अब तो मैं सफ़रे तबूक के लिये तैयारी कर रहा हूँ. वापसी पर अल्लाह की मर्ज़ी होगी तो वहाँ नमाज़ पढ़ लूंगा. जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ज़वए तबूक से वापस होकर मदीनए शरीफ़ के क़रीब एक गाँव में ठहरे, तो मुनाफ़िक़ों ने आपसे दरख़्वास्त की कि उनकी मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें. इसपर यह आयत उतरी और उनके ग़लत इरादों का इज़हार फ़रमाया गया. तब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुछ सहाबा को हुक्म दिया कि इस मस्जिद को ढा दें और जला दें. चुनांचे ऐसा ही किया गया और अबू आमिर राहिब शाम प्रदेश में सफ़र की हालत में तन्हाई और बेकसी में हलाक हुआ.

(१८) मस्जिदे क़ुबा वालों के.

(१९) कि वहाँ ख़ुदा और रसूल के साथ कुफ़्र करें और दोहरी प्रवृत्ति को क़ुव्वत दें.

(२०) जो मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ के लिये जमा होते हैं.

(२१) यानी अबू आमिर राहिब.

(२२) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मस्जिदे ज़िरार में नमाज़ पढ़ने को मना किया गया. जो मस्जिद घमण्ड व दिखावा या अल्लाह की रज़ा के अलावा और किसी मक़सद के लिये या नापाक माल से बनाई गई हो वह मस्जिद ज़िरार के साथ लाहिक़ है. (मदारिक)

(२३) इससे मुराद मस्जिदे क़ुबा है, जिसकी बुनियाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रखी और जबतक हुज़ूर ने क़ुबा में क़याम फ़रमाया, उसमें नमाज़ पढ़ी. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने तशरीफ़ लाते थे. दूसरी हदीस में है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उमरे के बराबर है. मुफ़स्सिरों का एक क़ौल यह भी है कि इससे मस्जिदे मदीना मुराद है और इसमें भी हदीसें आई हैं. इन बातों में कुछ विरोधाभास नहीं, क्योंकि आयत का मस्जिदे क़ुबा के हक़ में नाज़िल होना इसको मुस्तलज़िम नहीं कि मस्जिदे मदीना में ये विशेषताएं न हों.

(२४) तमाम नजासतों या गुनाहों से. यह आयत मस्जिदे क़ुबा वालों के हक़ में नाज़िल हुई. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फ़रमाया, ऐ गिरोहे अन्सार, अल्लाह तआला ने तुम्हारी तारीफ़ फ़रमाई, तुम वुज़ू और इस्तंजे के वक़्त क्या अमल करते हो. उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, हम बड़ा इस्तंजा तीन ढेलों से करते हैं. उसके बाद फिर पानी से पाकी करते हैं. नजासत अगर निकलने की जगह से बढ़ जाए तो पानी से इस्तंजा वाजिब है, वरना मुस्तहब. ढेलों से इस्तंजा सुन्नत है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इसपर पाबन्दी फ़रमाई और कभी छोड़ा भी.

(२५) जैसे कि मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे मदीना.

(२६) जैसे कि मस्जिदे ज़िरार वाले.

(२७) मुराद यह है कि जिस शख़्स ने अपने दीन की बुनियाद तक़वा और अल्लाह की रज़ा की मज़बूत सतह पर रखी, वह बेहतर है, न कि वह जिसने अपने दीन की नीव बातिल और दोहरी प्रवृत्ति के गिराऊ गढ़े पर रखी.

(२८) और उसके गिराए जाने का सदमा बाक़ी रहेगा.

(२९) चाहे क़त्ल होकर या मरकर या क़ब्र में या जहन्नम में. मानी ये हैं कि उनके दिलों का ग़म व ग़ुस्सा मरते दम तक बाक़ी रहेगा और ये मानी भी हो सकते हैं कि जबतक उनके दिल अपने क़ुसूर की शर्मिन्दगी और अफ़सोस से टुकड़े टुकड़े न हों और वो सच्चे दिल से तौबह न कर लें, उस वक़्त तक वो इसी रंज और ग़म में रहेंगे. (मदारिक)

सूरए तौबह - चौदहवाँ रूकू

(१) ख़ुदा की राह में जान माल ख़र्च करके जन्नत पाने वाले ईमानदारों की एक मिसाल है जिससे भरपूर मेहरबानी का इज़हार होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें जन्नत अता फ़रमाना उनके जान व माल का एवज़ क़रार दिया और अपने आपको ख़रीदार फ़रमाया. यह सर्वोत्तम सम्मान है कि वह हमारा ख़रीदार बने और हमसे ख़रीदे, किस चीज़ को, न हमारी बनाई हुई, न हमारी पैदा की हुई. जान है तो उसकी पैदा की हुई, माल है तो उसका अता किया हुआ. जब अन्सार ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अक़्बा की रात बैअत की तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह अपने रब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त फ़रमा लीजिये जो आप चाहें. फ़रमाया मैं अपने रब के लिये तो यह शर्त करता हूँ कि तुम उसकी इबादत करो और किसी को उसका शरीक न ठहराओ. और अपने लिये यह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जान माल को बचाते और मेहफ़ूज़ रखते हो, उसको मेरे लिये भी गवारा न करो . उन्होंने अर्ज़ किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा. फ़रमाया जन्नत.

(२) ख़ुदा के दुश्मनों को.

(३) ख़ुदा की राह में.

(४) इससे साबित हुआ कि तमाम शरीअतों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था.

الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ

और यही बड़ी कामयाबी है﴿१११﴾ तौबह वाले[५] इबादत वाले[६] सराहने वाले[७] रोज़े वाले, रूकू वाले, सज्दा वाले[८] भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदें निगाह रखने वाले[९] और ख़ुशियाँ सुनाओ मुसलमानों को[१०]﴿११२﴾ नबी और ईमान वालों को लायक़ नहीं कि मुश्रिकों की बख़्शिश चाहें अगरचे वो रिश्तेदार हों[११] जबकि उन्हें खुल चुका कि वो दोज़ख़ी हैं[१२]﴿११३﴾और इब्राहीम का अपने बाप[१३] की बख़्शिश चाहना वह तो न था मगर एक वादे के कारण जो उससे कर चुका था[१४]फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है उससे तिनका तोड़ दिया[१५] बेशक इब्राहीम ज़रूर बहुत आहें करने वाला[१६] मुतहम्मिल(सहनशील) है﴿११४﴾ और अल्लाह की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत बाद गुमराह फ़रमाए[१७] जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना है[१८] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है﴿११५﴾ बेशक अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, जिलाता है और मारता है और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई वाली और न मददगार﴿११६﴾

(५) तमाम गुनाहों से.
(६) अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दे जो सच्चे दिल से उसकी इबादत करते हैं और इबादत को अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं.
(७) जो हर हाल में अल्लाह की प्रशंसा करते हैं.
(८) यानी नमाज़ों के पाबन्द और उनको ख़ूबी से अदा करने वाले.
(९) और उसके आदेशों का पालन करने वाले, ये लोग जन्नती हैं.
(१०) कि वो अल्लाह से किया हुआ एहद पूरा करेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा.
(११) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में मुफ़स्सिरों के विभिन्न क़ौल हैं. (१) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिये इस्तग़फ़ार करूंगा जबतक कि मुझे मना न किया जाए. तो अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर मना फ़रमा दिया. (२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त चाही. उसने मुझे इजाज़त दे दी. फिर मैंने उनके लिये इस्तग़फ़ार की इजाज़त चाही, तो मुझे इजाज़त न दी और मुझपर यह आयत नाज़िल हुई **"मा काना लिन नबिय्ये..."**(नबी और ईमान वालों के लायक़ नहीं कि मुश्रिकों की बख़्शिश चाहें अगरचे वो रिश्तेदार हों - सूरए तौबह, आयत ११३) आयत उतरने की परिस्थिति की यह वजह सही नहीं है, क्योंकि यह हदीस हाकिम ने रिवायत की और इसको सही बताया और ज़हबी ने हाकिम पर भरोसा करके मीज़ान में इसको सही बताया, लेकिन **मुख़्तसिरूल मुस्तदरक** में ज़हबी ने इस हदीस को ज़ईफ़ बताया और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईन ने ज़ईफ़ बताया है. इसके अलावा यह हदीस बुख़ारी की हदीस के विरुद्ध भी है जिसमें इस आयत के उतरने का कारण आपकी वालिदा के लिये इस्तग़फ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की हदीस से यही साबित है कि अबू तालिब के लिये इस्तग़फ़ार करने के बारे में यह हदीस आई. इसके अलावा और हदीसें, जो इस मज़मून की हैं जिनको तिबरानी और इब्ने सअद और इब्ने शाहीन वग़ैरह ने रिवायत किया है, वो सबकी सब ज़ईफ़ हैं. इब्ने सअद ने तबक़ात में हदीस निकालने के बाद उसको ग़लत बताया और मुहद्दिसों के सरदार इमाम जलालुद्दिन सियूती ने अपने रिसाले **अत्तअज़ीम वल मिन्नत** में इस मज़मून की सारी हदीसों को कमज़ोर बताया. लिहाज़ा यह वजह शाने नुज़ूल में सही नहीं और यह साबित है, इसपर बहुत दलीलें क़ायम हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वालिदा अल्लाह की वहदत को मानने वाली और दीने इब्राहीम पर थीं. (३) कुछ सहाबा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपने पूर्वजों के लिये इस्तिग़फ़ार करने की प्रार्थना की थी . इसपर यह आयत उतरी.
(१२) शिर्क पर मरे.
(१३) यानी आज़र.
(१४) इससे या तो वह वादा मुराद है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आज़र से किया था कि अपने रब से तेरी मग़फ़िरत की

تَابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ
قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۙ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۭ حَتّٰٓى
اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ
عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ
اِلَيْهِ ۭ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا
مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ
حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ
وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا
يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ

बेशक अल्लाह की रहमतें मुतवज्जह हुईं उन ग़ैब की ख़बरें बताने वाले और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्होंने मुश्किल की घड़ी में उनका साथ दिया[१९] बाद इसके कि क़रीब था कि उनमें कुछ लोगों के दिल फिर जाएं[२०] फिर उनपर रहमत से मुतवज्जेह हुआ[२१] बेशक वह उनपर बहुत मेहरबान रहम वाला है(११७) और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ (रोके)रखे गए थे[२२] यहाँ तक कि जब ज़मीन इतनी वसी(विस्तृत)होकर उनपर तंग होगई [२३]और वो अपनी जान से तंग आए[२४] और उन्हें यक़ीन हुआ कि अल्लाह से पनाह नहीं मगर उसी के पास फिर[२५] उनकी तौबह क़ुबूल की कि तौबह किये हुए रहें, बेशक अल्लाह ही तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान है(११८)

पन्द्रहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो[१] और सच्चों के साथ हो[२](११९) मदीना वालों[३] और उनके गिर्द देहातवालों को शोभा न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें[४] और न यह कि उनकी जान से अपनी जान प्यारी समझें[५] यह इसलिये कि उन्हें जो प्यास या तकलीफ़ या भूख अल्लाह की राह में पहुंचती है और जहाँ ऐसी जगह क़दम रखते हैं[६] जिससे काफ़िरों को ग़ुस्सा आए और जो

दुआ करूंगा या वह वादा मुराद है जो आज़र ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से इस्लाम लाने का किया था. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी, *"सअस्तग़फ़िरो लका रब्बी"* (क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से माफ़ी मांगूंगा - सूरए मरयम, आयत ४७) तो मैं ने सुना कि एक शख़्स अपने माँ बाप के लिये दुआए मग़फ़िरत कर रहा है. जबकि वो दोनों मुश्रिक थे. तो मैं ने कहा तू मुश्रिकों के लिये मग़फ़िरत की दुआ करता है. उसने कहा, क्या इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आज़र के लिये दुआ न की थी, वह भी तो मुश्रिक था. ये वाक़िआ मैंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस्तग़फ़ार इस्लाम की उम्मीद से था जिसका आज़र आपसे वादा कर चुका था और आप आज़र से इस्तग़फ़ार का वादा कर चुके थे. जब वह उम्मीद जाती रही तो आपने उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लिया.

(१५) और इस्तग़फ़ार करना छोड़ दिया.

(१६) कसरत से दुआ मांगने वाले, गिड़गिड़ाने वाले.

(१७) यानी उनपर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमा दे.

(१८) मानी ये हैं कि जो चीज़ वर्जित है और उससे रूका रहना वाजिब है, उसपर अल्लाह तआला तब तक अपने बन्दों की पकड़ नहीं फ़रमाता जबतक उसकी मुमानिअत यानी अवैधता का साफ़ ऐलान अल्लाह की तरफ़ से न आजाए. लिहाज़ा मुमानिअत से पहले उस काम को करने में हर्ज नहीं. (मदारिक) इससे मालूम हुआ कि जिस चीज़ की शरीअत से मुमानिअत न हो, वह जायज़ है. जब ईमान वालों को मुश्रिकों के लिये इस्तग़फ़ार करने से मना फ़रमाया गया तो उन्हें डर हुआ कि हम पहले जो इस्तग़फ़ार कर चुके हैं कहीं उसपर पकड़ न हो. इस आयत से उन्हें तसल्ली दी गई और बताया गया कि मुमानिअत का बयान होने के बाद उस काम को करते रहने से पकड़ की जाती है.

(१९) यानी ग़ज़वए तबूक में, जिसे ग़ज़वए उसरत भी कहते हैं. इस ग़ज़वे में उसरत का यह हाल था कि दस दस आदमियों की सवारी के लिये एक एक ऊंट था. थोड़ा थोड़ा करके इसी पर सवार हो लेते थे. और खाने की कमी का यह हाल था कि एक एक खजूर पर कई कई आदमी बसर करते थे. इस तरह कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूँट पानी पी लिया. पानी की भी अत्यन्त कमी थी. गर्मी सख़्त थी, प्यास का ग़लबा और पानी ग़ायब, इस हाल में सहाबा अपनी सच्चाई और यक़ीन और ईमान और महब्बत के साथ हुज़ूर पर मर मिटने के लिये डटे रहे. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, अल्लाह तआला से दुआ फ़रमाइये. फ़रमाया, क्या तुम्हें यह ख़्वाहिश है. अर्ज़ किया जी हाँ. तो हुज़ूर ने दस्ते मुबारक उठा कर दुआ फ़रमाई और अभी हाथ उठे हुए ही थे कि अल्लाह तआला ने बादल भेजा. बारिश हुई और लश्कर सैराब हुआ. लश्कर वालों ने अपने अपने बर्तन भर लिये. इसके बाद जब आगे चले तो ज़मीन सूखी थी. बादल ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की. वह ख़ास इसी लश्कर को सैराब करने

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ط
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ
نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا
اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ط فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ
كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ
وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْآ اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ط وَاعْلَمُوْآ
اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ج فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَ
اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلَى

कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं[७] इस सबके बदले उनके लिये नेक कर्म लिखा जाता है[८] बेशक अल्लाह नेकों का नेग नष्ट नहीं करता﴾१२०﴿ और जो कुछ ख़र्च करते हैं छोटा[९] या बड़ा[१०] और जो नाला तय करते हैं सब उनके लिये लिखा जाता है ताकि अल्लाह उनके सबसे बेहतर कर्मोंका उन्हें सिला (पुरस्कार) दे[११]﴾१२१﴿ और मुसलमानों से ये तो हो नहीं सकता कि सब के सब निकलें[१२] तो क्यों न हो कि उनके हर गिरोह में से[१३] एक दल निकले कि दीन की समझ हासिल करें और वापस आकर अपनी क़ौम को डर सुनाएं [१४]इस उम्मीद पर कि वो बचें[१५]﴾१२२﴿

सोलहवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब हैं[१] और चाहिये कि वो तुम में सख़्ती पाएं और जान रखो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है[२]﴾१२३﴿ और जब कोई सूरत उतरती है तो उनमें कोई कहने लगता है कि उसने तुम में किसके ईमान को तरक़्क़ी दी[३] और वो ख़ुशियाँ मना रहे हैं﴾१२४﴿ और जिनके दिलों में आज़ार है[४] उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई[५] और वो कुफ़्र ही

के लिये भेजा गया था.

(२०) और वो इस सख़्ती में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अलग होना गवारा करें.

(२१) और वो साबिर रहे और अडिग रहे और उनकी वफ़ादारी मेहफ़ूज़ रही और जो ख़तरा दिल में गुज़रा था उसपर शर्मिन्दा हुए.

(२२) तौबह से जिनका ज़िक्र आयत *"वआख़रूना मुरजौना लिअम्रिल्लाहे"* (और कुछ मौक़ूफ़ रखे गए अल्लाह के हुक्म पर - सूरए तौबह, आयत १०६) में है. ये तीन लोग, कअब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया और मराह बिन रबीअ हैं. ये सब अन्सारी थे. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तबूक से वापस होकर उनसे जिहाद में हाज़िर न होने के कारण पूछे और फ़रमाया, ठहरो जबतक अल्लाह तआला तुम्हारे लिये कोई फ़ैसला फ़रमाए. मुसलमानों को उन लोगों से मिलने जुलने बोलने चालने से मना फ़रमाया, यहाँ तक कि उनके रिश्तेदारों और दोस्तों ने उनसे बातचीत छोड़ दी . ऐसा मालूम होता था कि उनको कोई पहचानता ही नहीं और उनकी किसी से शनासाई ही नहीं. इस हाल पर उन्हें पचास दिन गुज़रे.

(२३) और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहाँ एक पल के लिये उन्हें क़रार होता. हर वक़्त परेशानी और रंज, बेचैनी में जकड़े हुए थे.

(२४) रंज और ग़म की सख़्ती से, न कोई साथी है,जिससे बात करें, न कोई दुख बाँटने वाला, जिसे दिल का हाल सुनाएं. वहशत और तन्हाई है, और रात दिन का रोना बिलकना.

(२५) अल्लाह तआला ने उनपर रहम फ़रमाया और.

सूरए तौबह - पन्द्रहवाँ रूकू

(१) गुनाह और बुराई छोड़ दो.

(२) जो ईमान में सच्चे हैं, वफ़ादार हैं, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ दिल की गहराइयों से करते हैं. सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि *सादिक़ीन* (सच्चों) से हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर मुराद हैं. इब्ने जरीर कहते हैं कि मुहाजिर लोग. हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि वो लोग जिनकी नियतें मज़बूत रहीं और दिल व कर्म सच्चे. और वो सच्चे दिल के साथ ग़ज़वए तबूक में हाज़िर हुए. इस आयत से साबित हुआ कि सहमति हुज्जत यानी तर्क है, क्योंकि सच्चों के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया, इससे उनके क़ौल का क़ुबूल करना लाज़िम आता है.

(३) यहाँ पहले मदीना से मदीनए तैय्यिबह के निवासी मुराद हैं , चाहे वो मुहाजिर हों या अन्सार.

(४) और जिहाद में हाज़िर न हों.

पर मर गए﴾१२५﴿ क्या उन्हें[६] नहीं सूझता कि हर साल एक या दोबारा आज़माए जाते हैं[७] फिर न तो तौबह करते हैं न नसीहत मानते हैं﴾१२६﴿ और जब कोई सूरत उतरती है उनमें एक दूसरे को देखने लगता है[८] कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं[९] फिर पलट जाते हैं[१०] अल्लाह ने उनके दिल पलट दिये[११]कि वो नासमझ लोग हैं[१२]﴾१२७﴿ बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुममें से वह रसूल[१३] जिनपर तुम्हारा मशक़्क़त(परिश्रम)में पड़ना भारी है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान[१४]﴾१२८﴿ फिर अगर वो मुंह फेरें[१५] तो तुम फ़रमा दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह बड़े अर्श का मालिक है[१६]﴾१२९﴿

१०- सूरए यूनुस

पहला रूकू

सूरए यूनुस मक्का में उतरी इसमें १०९ आयतें और ग्यारह रूकू हैं .

अल्लाह के नाम से शूरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] ये हिकमत (बोध) वाली किताब की आयतें हैं﴾१﴿ क्या लोगों को इसका अचम्भा हुआ कि हमने उनमें से एक मर्द

(५) बल्कि उन्हें हुक्म था कि सख़्ती और तक्लीफ़ में हुज़ूर का साथ न छोड़ें और सख़्ती के मौक़े पर अपनी जानें आप पर क़ुरबान करें.

(६) और काफ़िरों की धरती को अपने घोड़ों के सुमों से रौंदते हैं.

(७) क़ैद करके या क़त्ल करके, या ज़ख़्मी करके या परास्त करके.

(८) इस से साबित हुआ कि जो व्यक्ति अल्लाह के अनुकरण का इरादा करे, उसका उठना बैठना चलना फिरना ख़ामोश रहना सब नेकियाँ हैं. अल्लाह के यहाँ लिखी जाती हैं.

(९) यानी कम जैसे कि एक खजूर.

(१०) जैसा कि हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने जैशे उसरत में ख़र्च किया.

(११) इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और एक बेहतरीन अमल होना साबित हुआ.

(१२) और एक दम अपने वतन ख़ाली कर दें.

(१३) एक जमाअत वतन में रहे और.

(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि अरब के क़बीलों में से हर हर क़बीले से जमाअतें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर होतीं और वो हुज़ूर से दीन की बातें सीखते और इल्म हासिल करते और अहकाम दरियाफ़्त करते, अपने लिये और अपनी क़ौम के लिये. हुज़ूर उन्हें अल्लाह व रसूल की फ़रमाँबरदारी का हुक्म देते और नमाज़ ज़कात वग़ैरह की तालीम देते. जब वो लोग अपनी क़ौम में पहुंचते तो ऐलान कर देते कि जो इस्लाम लाए वह हमसे है और लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाते और दीन के विरोध से डराते यहाँ तक कि लोग अपने माँ बाप को छोड़ देते और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उलूम तालीम फ़रमा देते (ख़ाज़िन). यह रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़बरदस्त चमत्कार है कि बिल्कुल बे पढ़े लिखे लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अहकाम का आलिम और क़ौम का हादी बना देते. इस आयत से कुछ मसअले मालूम हुए. इल्मे दीन हासिल करना फ़र्ज़ है. जो चीज़ें बन्दे पर फ़र्ज़ वाजिब हैं और जो उसके लिये मना और हराम हैं उनका सीखना परम अनिवार्य है. और उससे ज़्यादा इल्म हासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया है. हदीस शरीफ़ में है, इल्म सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है. इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ से अफ़ज़ल है. इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करने का हुक्म हदीसे शरीफ़ में है. जो शख़्स इल्म हासिल करने के लिये राह चले, अल्लाह उसके लिये जन्नत की राह आसान करता है. (तिरमिज़ी). फ़िक़्ह सबसे ऊंचे दर्जे का इल्म है. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला जिसके लिये बेहतरी चाहता है उसको दीन में फ़क़ीह बना देता है. मैं तक़सीम करने वाल हूँ और अल्लाह देने वला (बुख़ारी व मुस्लिम). हदीस में है, एक फ़क़ीह शैतान पर हज़ार आबिदों से ज़्यादा सख़्त है. (तिरमिज़ी).

फ़िक़्ह दीन के अहकाम के इल्म को कहते हैं.
(१५) अज़ाबे इलाही से, दीन के अहकाम का पालन करके.

सूरए तौबह - सोलहवाँ रूकू

(१) क़िताल तमाम काफ़िरों से वाजिब है, क़रीब के हों या दूर के, लेकिन क़रीब वाले पहले आते हैं फिर उनसे जो जुड़े हों . ऐसे ही दर्जा ब दर्जा.
(२) उन्हें ग़ल्बा देता है और उनकी मदद फ़रमाता है.
(३) यानी मुनाफ़िक़ आपस में हंसी के तौर पर ऐसी बातें कहते हैं उनके जवाब में इरशाद होता है.
(४) शक और दोग़ली प्रवृत्ति का.
(५) कि पहले जितना उतरा था उसीके इन्कार के वबाल में गिरफ़्तार थे, अब जो और उतरा उसके इन्कार की लानत में भी गिरफ़्तार हुए.
(६) यानी मुनाफ़िक़ों को.
(७) बीमारियों, सख़्तियों और दुष्काल वग़ैरह के साथ.
(८) और आँखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है.
(९) अगर देखता हुआ तो बैठ गए वरना निकल गए.
(१०) कुफ़्र की तरफ़.
(११) इस कारण से.
(१२) अपने नफ़ा नुक़सान को नहीं सोचते.
(१३) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अरबी क़रशी, जिनके हसब नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आली नसब हैं, और तुम उनके सिदक़ यानी सच्चाई और अमानतदारी, पाकीज़ा चरित्र, तक़वा और सदगुणों को भी ख़ूब जानते हो. एक क़िरअत में *"अन्फ़सिकुम"* है, इसके मानी ये हैं कि तुम में सबसे ज़्यादा नफ़ीस और शरीफ़ और बुज़ुर्गी वाले. इस आयते करीमा में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी यानी आपके मीलादे मुबारक का बयान है. तिरमिज़ी की हदीस से भी साबित है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी पैदायश का बयान खड़े होकर फ़रमाया. इससे मालूम हुआ कि मीलादे मुबारक की मेहफ़िल की अस्ल क़ुरआन और हदीस से साबित है.
(१४) इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने दो नामों से इज़्ज़त बख़्शी. यह हुज़ूर की बुज़ुर्गी का कमाल है.
(१५) यानी मुनाफ़िक़ और काफ़िर आप पर ईमान लाने से इन्कार करें.
(१६) हाकिम ने मुस्तदरक में उबई बिन कअब से एक हदीस रिवायत की है कि "लक़द जाअकुम" से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआन शरीफ़ में सब के बाद उतरीं.

(१०) सूरए यूनुस - पहला रूकू

(१) सूरए यूनुस मक्की है, सिवाए तीन आयतों के *"फ़इन कुन्ता फ़ी शक्किन"* से. इसमें ग्यारह रूकू, एक सौ नौ आयतें, एक हज़ार आठ सौ बत्तीस कलिमे और नौ हज़ार निनावे अक्षर हैं.
(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रिसालत अता फ़रमाई और आपने उसका इज़हार किया तो अरब इन्कारी हो गए और उनमें से कुछ ने यह कहा कि अल्लाह इससे बरतर है कि किसी आदमी को रसूल बनाए. इसपर ये आयतें उतरीं.
(३) काफ़िरों ने पहले तो आदमी का रसूल होना आश्चर्य की बात और न मानने वाली चीज़ क़रार दिया, फिर जब हुज़ूर के चमत्कार देखे और यक़ीन हुआ कि ये आदमी की शक्ति और क्षमता से ऊपर हैं, तो आपको जादूगर बताया. उनका यह दावा तो झूट और ग़लत है, मगर इसमें भी अपनी तुच्छता और हुज़ूर की महानता का ऐतिराफ़ पाया जाता है.
(४) यानी तमाम सृष्टि के कामों का अपनी हिकमत और मर्ज़ी के अनुसार प्रबन्ध फ़रमाता है.
(५) इसमें बुत परस्तों के इस क़ौल का रद है कि बुत उनकी शफ़ाअत करेंगे. उन्हें बताया गया कि शफ़ाअत उनके सिवा कोई न कर सकेगा जिन्हें अल्लाह इसकी इजाज़त देगा. और शफ़ाअत की इजाज़त पाने वाले ये अल्लाह के मक़बूल बन्दे होंगे.
(६) जो आसमान और ज़मीन का विधाता और सारे कामों का प्रबन्धक है. उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, फ़क़त वही पूजे जाने के लायक़ है.
(७) क़यामत के दिन, और यही है.
(८) इस आयत में हश्र नश्र और मआद का बयान और इससे इन्कार करने वालों का रद है. और इसपर निहायत ख़ूबसूरत अन्दाज़

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا
مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّ الْقَمَرَ
نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَ
الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

को वही (देववाणी) भेजी कि लोगों को डर सुनाओ[२] और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दो कि उनके लिये उनके रब के पास सच का मक़ाम है, काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है[३]﴾२﴿ बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन छ दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है[४] कोई सिफ़ारिशी नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद[५] यह है अल्लाह तुम्हारा रब[६] तो उसकी बन्दगी करो, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते﴾३﴿ उसी की तरफ़ तुम सबको फिरना है[७] अल्लाह का सच्चा वादा, बेशक वह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा कि उनको जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला (इनाम) दे[८] और काफ़िरों के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उनके कुफ़्र का﴾४﴿ वही है जिसने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमकता और उसके लिये मंज़िलें ठहराईं[९] कि तुम बरसों की गिनती और[१०] हिसाब जानो अल्लाह ने उसे न बनाया मगर हक़[११] निशानियां तफ़सील से बयान फ़रमाता है इल्म वालों के लिये[१२]﴾५﴿ बेशक रात और दिन का

में दलील क़ायम फ़रमाई गई है, कि वह पहली बार बनाता है और विभिन्न अंगों को पैदा करता है और उन्हें जोड़ता है. तो मौत के साथ अलग होजाने के बाद उनको दोबारा जोड़ना और बने हुए इन्सान को नष्ट होजाने के बाद दोबारा बना देना और वही जान जो उस शरीर से जुड़ी थी, उसको इस बदन की दुरुस्ती के बाद फिर उसी शरीर से जोड़ देना, उसकी क़ुदरत और क्षमता से क्या दूर है. और इस दोबारा पैदा करने का उद्देश्य कर्मों का बदल देना यानी फ़रमाँबरदार को इनाम और गुनाहगार को अज़ाब देना है.

(९) अट्ठाईस मंज़िलें जो बारह बुर्जों में बंटी है. हर बुर्ज के लिये ढाई मंज़िलें हैं. चांद हर रात एक मन्ज़िल में रहता है. और महीना तीस दिन का हो तो दो रात, वरना एक रात छुपता है.

(१०) महीनों, दिनों, घड़ियों का.

(११) कि उससे उसकी क़ुदरत और उसके एक होने के प्रमाण ज़ाहिर हों.

(१२) कि उनमें ग़ौर करके नफ़ा उठाएं.

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِىَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى

منزل ٣

बदलता आना और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उनमें निशानियां हैं डर वालों के लिये﴾६﴿ बेशक वो जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते[१३] और दुनिया की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इसपर मुतमईन (संतुष्ट) हो गए[१४] और वो जो हमारी आयतों से ग़फ़लत करते हैं[१५]﴾७﴿ उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उनकी कमाई का﴾८﴿ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के कारण उन्हें राह देगा[१६] उनके नीचे नेहरें बहती होंगी नेअमत के बाग़ों में﴾९﴿ उनकी दुआ उसमें यह होगी कि अल्लाह तुझे पाकी है[१७] और उनके मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है[१८] और उनकी दुआ का ख़ातिमा यह है कि सब ख़ूबियों सराहा अल्लाह जो रब है सारे जगत का[१९]﴾१०﴿

दूसरा रूकू

और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वह भलाई की जल्दी करते हैं तो उनका वादा पूरा हो चुका होता[१] तो हम छोड़ते उन्हें जो हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते कि अपनी सरकशी (विद्रोह)में भटका करें[२]﴾११﴿ और जब आदमी को[३] तकलीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लेटे और बैठे और खड़े[४] फिर जब हम उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है[५] गोया कभी किसी तकलीफ़ के

(१३) क़यामत के दिन और सवाब व अज़ाब को नहीं मानते.
(१४) और इस नश्वर को हमेशा पर प्राथमिकता दी, और उम्र उसकी तलब में गुज़ारी.
(१५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यहाँ आयतों से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है. और ग़फ़लत करने से मुराद उनसे मुंह फेरना है.
(१६) जन्नतों की तरफ़. क़तादा का क़ौल है कि मूमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उसका अमल ख़ूबसूरत शक्ल में उसके सामने आएगा. यह शख़्स कहेगा, तू कौन है ? वह कहेगा, मैं तेरा अमल हूँ. और उसके लिये नूर होगा और जन्नत तक पहुंचाएगा. काफ़िर का मामला विपरीत होगा. उसका अमल बुरी शक्ल में नमूदार होकर उसे जहन्नम में पहुंचाएगा.
(१७) यानी जन्नत वाले अल्लाह तआला की तस्बीह, स्तुति, प्रशंसा में मशग़ूल रहेंगे और उसके ज़िक्र से उन्हें फ़रहत यानी ठण्डक और आनन्द और काफ़ी लज़्ज़त हासिल होगी.
(१८) यानी जन्नत वाले आपस में एक दूसरे का सत्कार सलाम से करेंगे या फ़रिश्ते उन्हें इज़्ज़त के तौर पर सलाम अर्ज़ करेंगे या फ़रिश्ते रब तआला की तरफ़ से उनके पास सलाम लाएंगे.
(१९) उनके कलाम की शुरूआत अल्लाह की बड़ाई और प्रशंसा से होगी और कलाम का अन्त अल्लाह की महानता और उसके गुणगान पर होगा.

सूरए यूनुस - दूसरा रूकू

(१) यानी अगर अल्लाह तआला लोगों की बद-दुआएं, जैसे कि वो ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने बाल बच्चों और माल के लिये करते हैं, और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बर्बाद करे और ऐसे ही कलिमे अपनी औलाद और रिश्तेदारों के लिये कह गुज़रते हैं, जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं, अगर वह दुआ ऐसी जल्दी क़ुबूल करली जाती जैसी जल्दी वो अच्छाई की दुआओं के क़ुबूल होने में चाहते हैं, तो उन लोगों का अन्त हो चुका होता और वो कब के हलाक हो गए होते, लेकिन अल्लाह तआला अपने करम से भलाई की दुआ क़ुबूल फ़रमाने में जल्दी करता है, बद-दुआ के क़ुबूल में नहीं. नज़र बिन हारिस ने कहा था या रब, यह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़दीक सच्चा है तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा. इसपर यह आयत उतरी और

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢
وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ
كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُوْنَ ۝١٤ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ
اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ
نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ
عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥ قُلْ لَّوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٦ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था, यूंही भले कर दिखाए हैं हद से बढ़ने वाले को[6] उनके काम[7] ﴾१२﴿ और बेशक हमने तुमसे पहली संगतें[8] हलाक फ़रमादीं जब वो हद से बढ़े[9] और उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलें लेकर आए[10] और वो ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते, हम यूंही बदला देते हैं मुजरिमों को ﴾१३﴿ फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में जानशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो[11] ﴾१४﴿ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें[12] पढ़ी जाती हैं तो वो कहने लगते हैं जिन्हें हमसे मिलने की उम्मीद नहीं[13] कि इसके सिवा और क़ुरआन ले आइये[14] या इसी को बदल दीजिये[15] तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी तरफ़ से बदल दूं, मैं तो उसी का ताबे(अधीन) हूँ जो मेरी तरफ़ वही(देववाणी)होती है[16] मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं[17] तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है[18] ﴾१५﴿ तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसे तुमपर न पढ़ता न वह तुमको उससे ख़बरदार करता[19] तो मैं इससे पहले तुम में अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ[20] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[21] ﴾१६﴿ तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[22] या उसकी आयतें झुटलाए, बेशक मुजरिमों का भला न

बताया गया कि अगर अल्लाह तआला काफ़िरों के अज़ाब में जल्दी फ़रमाता, जैसा कि उनके लिये माल और औलाद वग़ैरह दुनिया की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई, तो वो सब हलाक हो चुके होते.

(२) और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उनके अज़ाब में जल्दी नहीं करते.

(३) यहाँ आदमी से काफ़िर मुराद हैं.

(४) हर हाल में, और जबतक उसकी तकलीफ़ दूर न हो, दुआ में मश्ग़ूल रहता है.

(५) अपने पहले तरीक़े पर, और वही कुफ़्र की राह अपनाता है और तकलीफ़ के वक़्त को भूल जाता है.

(६) यानी काफ़िरों को.

(७) मक़सद यह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बेसब्रा है और राहत के वक़्त बहुत नाशुक्रा. जब तकलीफ़ पहुंचती है तो खड़े लेटे बैठे हर हाल में दुआ करता है. जब अल्लाह तकलीफ़ दूर करदेता है तो शुक्र नहीं अदा करता और अपनी पहली हालत की तरफ़ लौट जाता है. यह हाल ग़ाफ़िल का है. अक़्ल वाले मूमिन का हाल इसके विपरीत है. वह मुसीबत और बला पर सब्र करता है, राहत और आसायश में शुक्र करता है, तकलीफ़ और राहत की सारी हालतों में अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाता और दुआ करता है. एक मक़ाम इससे भी ऊंचा है, जो ईमान वालों में भी ख़ास बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत और बला आती है, उस पर सब्र करते हैं. अल्लाह की मर्ज़ी पर दिल से राज़ी रहते हैं और हर हाल में शुक्र करते हैं.

(८) यानी उम्मतें हैं.

(९) और कुफ़्र में जकड़े गए.

(१०) जो उनकी सच्चाई की बहुत साफ़ दलीलें थीं, उन्होंने न माना और नबियों की तसदीक़ न की.

(११) ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे कर्मों के हिसाब से मामला फ़रमाएं.

(१२) जिनमें हमारी तौहीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है.

(१३) और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते.

(१४) जिसमें बुतों की बुराई न हो.

(१५) काफ़िरों की एक जमाअत ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आएं तो आप इस क़ुरआन के सिवा दूसरा क़ुरआन लाइये जिसमें लात, उज़्ज़ा और मनात वग़ैरह देवी देवताओं की बुराई और उनकी पूजा छोड़ने का हुक्म न हो और अगर अल्लाह ऐसा क़ुरआन न उतारे तो आप अपनी तरफ़ से बना लीजिये या उसी क़ुरआन को बदल कर हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम आप पर ईमान ले आएंगे. उनका यह कलाम

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۞ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ
هٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا
لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَّاحِدَةً
فَاخْتَلَفُوْا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۞ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ
لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۞ وَإِذَا
أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا
لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْ اٰيَاتِنَا ۚ قُلِ اللّٰهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ
إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ۞ هُوَ الَّذِيْ
يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ حَتّٰى إِذَا كُنْتُمْ فِي

होगा(१७) और अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़[२३] को पूजते हैं जो उनका कुछ भला न करे और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं[२४] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वह बात बताते हो जो उसके इल्म में न आसमानों में है न ज़मीन में,[२५] उसे पाकी और बरतरी है उनके शिर्क से(१८) और लोग एक ही उम्मत थे[२६] फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती[२७] तो यहीं उनके इख़्तिलाफ़ों का उनपर फ़ैसला हो गया होता[२८](१९) और कहते हैं उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी[२९] तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिये है अब रास्ता देखो, मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ(२०)

तीसरा रूकू

और जब कि हम आदमियों को रहमत का मज़ा देते हैं किसी तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुंची थी जभी वो हमारी आयतों के साथ दाव चलते हैं[१] तुम फ़रमा दो अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है[२] बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे मक्र(कपट) लिख रहे हैं[३](२१) वही है कि तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है[४] यहां तक कि जब

या तो मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर था या उन्होंने तजुर्बे और इम्तिहान के लिये ऐसा कहा था कि अगर यह दूसरा क़ुरआन बना लाएं या इसको बदल दें तो साबित हो जाएगा कि क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से नहीं है. अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया कि इसका यह जवाब दें जो आयत में बयान होता है.

(१६) मैं इसमें कोई परिवर्तन, फेर बदल, कमी बेशी नहीं कर सकता. ये मेरा कलाम नहीं, अल्लाह का कलाम है.

(१७) या उसकी किताब के आदेशों को बदलूं.

(१८) और दूसरा क़ुरआन बनाना इन्सान की क्षमता ही से बाहर है और सृष्टि का इससे मजबूर होना ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है.

(१९) यानी इसकी तिलावत और पाठ केवल अल्लाह की मर्ज़ी से है.

(२०) और चालीस साल तुम में रहा हूँ इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया. तुमने मेरे हालात को ख़ूब देखा परखा है. मैं ने किसी से एक अक्षर नहीं पढ़ा, किसी किताब का अध्ययन नहीं किया. इसके बाद यह महान किताब लाया जिसके सामने हर एक कलाम तुच्छ और निरर्थक हो गया. इस किताब में नफ़ीस उलूम हैं, उसूल और अक़ीदे हैं, आदेश और संस्कार हैं, और सदव्यवहार की तालीम है, ग़ैबी ख़बरें हैं. इसकी फ़साहत व बलाग़त ने प्रदेश भर के बोलने वालों और भाषा शास्त्रियों को गूंगा बहरा बना दिया है. हर समझ वाले के लिये यह बात सूरज से ज़्यादा रौशन हो गई है कि यह अल्लाह की तरफ़ से भेजी गई वही के बिना सम्भव ही नहीं.

(२१) कि इतना समझ सको कि यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से है, बन्दों की क़ुदरत नहीं कि इस जैसा बना सकें.

(२२) उसके लिये शरीक बताए.

(२३) बुत.

(२४) यानी दुनिया के कामों में, क्योंकि आख़िरत और मरने के बाद उठने का तो वो अक़ीदा ही नहीं रखते.

(२५) यानी उसका वुजूद ही नहीं, क्योंकि जो चीज़ मौजूद है, वह ज़रूर अल्लाह के इल्म में है.

(२६) एक दीने इस्लाम पर, जैसा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने के वक़्त आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सन्तान एक ही दीन पर थे. इसके बाद उनमें मतभेद हुआ. एक क़ौल यह है कि नूह अलैहिस्सलाम तक एक दीन पर रहे फिर मतभेद हुआ तो नूह अलैहिस्सलाम भेजे गए. एक क़ौल यह है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किश्ती से उतरते वक़्त सब लोग एक ही दीन पर थे. एक क़ौल यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एहद से सब लोग एक दीन पर थे यहाँ तक कि अम्र बिन लहयी ने दीन बदला. इस सूरत में "अन्नास" से मुराद ख़ास अरब होंगे. एक क़ौल यह है कि लोग एक दीन पर थे यानी कुफ़्र पर. अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा, तो कुछ उनमें से ईमान लाए. कुछ उलमा ने कहा कि मानी ये हैं कि लोग अपनी पैदायश में नेक प्रकृति पर थे फिर उन में मतभेद हुआ. हदीस शरीफ़ में है, हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा होता है, फिर उसके

الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا
جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم ۖ
مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا
أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا
أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا
فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَٰلِكَ

तुम किश्ती में हो और वो अच्छी हवा से उन्हें लेकर चलें और उसपर ख़ुश हुए[६] उनपर आंधी का झौंका आया और हर तरफ़ लहरों ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसके बन्दे होकर कि अगर तू इससे हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र अदा करने वालों में होंगे[७]﴾२२﴿ फिर अल्लाह जब उन्हें बचा लेता है जभी वो ज़मीन में नाहक़ ज़ियादती करने लगते हैं[८] ऐ लोगो तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारी ही जानों का वबाल है दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे[९]﴾२३﴿ दुनिया की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वह पानी कि हमने आसमान से उतारा तो उसके कारण ज़मीन से उगने वाली चीज़ें सब घनी होकर निकालीं जो कुछ आदमी और चौपाए खाते हैं[१०] यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया[११] और ख़ूब सज गई और उसके मालिक समझे कि यह हमारे बस में आगई[१२] हमारा हुक्म उसपर आया रात में या दिन में[१३] तो हमने उसे कर दिया काटी हुई मानो कल थी ही नहीं[१४] हम यूंही आयतें तफ़सील

माँ बाप उसको यहूदी बनाते हैं या ईसाई बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं. हदीस में फ़ितरत से फ़ितरते इस्लाम मुराद है.

(२७) और हर उम्मत के लिये एक मीआद निश्चित न करदी गई होती या आमाल का बदला क़यामत तक उठाकर न रखा गया होता.

(२८) अज़ाब उतरने से.

(२९) एहले बातिल का तरीक़ा है कि जब उनके ख़िलाफ़ मज़बूत दलील क़ायम होती है और वो जवाब से लाचार हो जाते हैं, तो उस दलील का ज़िक्र इस तरह छोड़ देते हैं जैसे कि वह पेश ही नहीं हुई और यह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस भ्रम में पड़ जाएं कि उनके मुक़ाबले में अब तक कोई दलील ही क़ायम नहीं की गई है. इस तरह काफ़िरों ने हुज़ूर के चमत्कार, विशेषतः क़ुरआन शरीफ़ जो सबसे बड़ा चमत्कार है, उसकी तरफ़ से आँखें बन्द करके यह कहना शुरू किया कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी. मानो कि चमत्कार उन्होंने देखे ही नहीं और क़ुरआने पाक को वो निशानी समझते ही नहीं. अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिये है, अब रास्ता देखो, मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ. तक़रीर का जवाब यह है कि ख़ुली दलील इसपर क़ायम है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर क़ुरआने पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अज़ीमुश-शान चमत्कार है क्योंकि हुज़ूर उनमें पैदा हुए, उनके बीच पले बढ़े. तमाम ज़माने हुज़ूर के उनकी आँखों के सामने गुज़रे. वो ख़ूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का अध्ययन किया न किसी उस्ताद की शागिर्दी की. यकबारगी क़ुरआन आप पर ज़ाहिर हुआ और ऐसी बेमिसाल आलातरीन किताब का ऐसी शान के साथ उतरना वही के बग़ैर सम्भव ही नहीं. यह क़ुरआन के ख़ुले चमत्कार होने की दलील है. और जब ऐसी मज़बूत दलील क़ायम है तो नबुव्वत का इक़रार करने के लिये किसी दूसरी निशानी का तलब करना बिल्कुल ग़ैर ज़रूरी है. ऐसी हालत में इस निशानी का उतारना या न उतारना अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर है, चाहे करे चाहे न करे. तो यह काम ग़ैब हुआ और इसके लिये इन्तिज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है. लेकिन वह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो काफ़िरों ने तलब की है, उतारे या न उतारे. नबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूत चमत्कारों से कमाल को पहुंच चुका.

सूरए यूनुस - तीसरा रूकू

(१) मक्का वालों पर अल्लाह तआला ने दुष्काल डाल दिया जिसकी मुसीबत में वो सात बरस गिरफ़्तार रहे यहाँ तक कि हलाकत के क़रीब पहुंचे. फिर उसने रहम फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनों पर हरियाली छाई. तो अगरचे इस तकलीफ़ और राहत दोनों में क़ुदरत की निशानियाँ थीं और तकलीफ़ के बाद राहत बड़ी महान नेअमत थी, इसपर शुक्र लाज़िम था, मगर बजाय इसके उन्होंने नसीहत न मानी और फ़साद व कुफ़्र की तरफ़ पलटे.

(२) और उसका अज़ाब देर नहीं करता.

(विस्तार)से बयान करते हैं ग़ौर करने वालों के लिये(१५)﴾२४﴿ और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है(१६) और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है(१७)﴾२५﴿ भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी अधिक(१८) और उनके मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी(१९) वही जन्नत वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे﴾२६﴿ और जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं(२०) तो बुराई का बदला उसी जैसा(२१) और उनपर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, मानो उनके चेहरों पर अंधेरी रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं(२२) वही दोज़ख़ वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे﴾२७﴿ और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे(२३) फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे अपनी जगह रहो तुम और तुम्हारे शरीक(२४) तो हम उन्हें मुसलमानों से जुदा करदेंगे और उनके शरीक उनसे कहेंगे तुम हमें कब पूजते थे(२५)﴾२८﴿ तो अल्लाह गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी﴾२९﴿ यहाँ पर हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा(२६) और अल्लाह की तरफ़ फेरे जाएंगे जो उनका सच्चा मौला

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى
دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ
قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ ۭ
بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ
كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَيَوْمَ
نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا
مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ
شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۝ فَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ
لَغٰفِلِيْنَ ۝ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَ

(३) और तुम्हारी छुपवाँ तदबीरें कर्मों का लेखा जोखा रखने वाले फ़रिश्तों पर भी छुपी हुई नहीं हैं तो जानने वाले ख़बर रखने वाले अल्लाह से कैसे छुप सकती हैं.

(४) और तुम्हें दूरियाँ तय करने की क़ुदरत देता है. ख़ुश्की में तुम पैदल और सवार मंज़िलें तय करते हो और नदियों में, किश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो. वह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में घूमने फिरने के साधन अता फ़रमाता है.

(५) यानी किश्तियाँ.

(६) कि हवा अनुकूल है, अचानक.

(७) तेरी नेअमतों के, तुझपर ईमान लाकर और ख़ास तेरी इबादत करके.

(८) और वादे के ख़िलाफ़ करके कुफ़्र और गुनाहों में जकड़े जाते हैं.

(९) और उनका तुम्हें बदला देंगे.

(१०) ग़ल्ले और फल और हरियाली.

(११) ख़ूब फूली फली, हरी भरी और तरो ताज़ा हुई.

(१२) कि खेतियाँ तैयार हो गईं, फल पक गए, ऐसे वक़्त.

(१३) यानी अचानक हमारा अज़ाब आया, चाहे बिजली गिरने की शक्ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में.

(१४) यह उन लोगों के हाल की एक मिसाल है जो दुनिया के चाहने वाले हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवाह नहीं. इसमें बहुत अच्छे तरीक़े पर समझाया गया है कि दुनियावी ज़िन्दगानी उम्मीदों का हरा बाग़ है, इसमें उम्र खोकर जब आदमी उस हद पर पहुंचता है जहाँ उसको मुराद मिलने का इत्मीनान हो और वह कामयाबी के नशे में मस्त हो, अचानक उसको मौत पहुंचती है और वह सारी लज़्ज़तों और नेअमतों से मेहरूम हो जाता है. क़तादा ने कहा कि दुनिया का तलबगार जब बिल्कुल बेफ़िक्र होता है, उस वक़्त उसपर अल्लाह का अज़ाब आता है और उसका सारा सामान जिससे उसकी उम्मीदें जुड़ी थीं, नष्ट हो जाता है.

(१५) ताकि वो नफ़ा हासिल करें और शक तथा वहम के अंधेरों से छुटकारा पाएं और नश्वर दुनिया की नापायदारी से बाख़बर हों.

(१६) दुनिया की नापायदारी बयान फ़रमाने के बाद हमेशगी की दुनिया की तरफ़ दावत दी . क़तादा ने कहा कि दारे-सलाम जन्नत है. यह अल्लाह की भरपूर रहमत और मेहरबानी है कि अपने बन्दों को जन्नत की दावत दी.

(१७) सीधी राह दीने इस्लाम है. बुख़ारी की हदीस में है, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में फ़रिश्ते हाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे. उनमें से कुछ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और कुछ ने कहा कि आँखें ख़्वाब में हैं, दिल बेदार है. कुछ कहने लगे कि इनकी कोई मिसाल तो बयान करो, तो उन्होंने कहा, जिस तरह किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उसमें तरह तरह

رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَ
الْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ
الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝ كَذَٰلِكَ حَقَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
قُلْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّىٰ
تُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَهْدِي إِلَى
الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَن يَهْدِي إِلَى
الْحَقِّ أَحَقُّ أَن يُتَّبَعَ أَمَّن لَّا يَهِدِّي إِلَّا أَن يُهْدَىٰ

है और उनकी सारी बनावटें[२७] उनसे गुम हो जाएंगी।[२८]﴾३०﴿

चौथा रूकू

तुम फ़रमाओ तुम्हें कौन रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से[१] या कौन मालिक है कान और आँखों का[२] और कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दा से[३] और कौन तमाम कामों की तदबीर(युक्ति)करता है तो अब कहेंगे कि अल्लाह[४] तो तुम फ़रमाओ तो क्यों नहीं डरते[५]﴾३१﴿ तो यह अल्लाह है तुम्हारा सच्चा रब[६] फिर हक़ के बाद क्या है मगर गुमराही[७] फिर कहाँ फिरे जाते हो﴾३२﴿ यूंही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिक़ों(दुराचारियों)[८] पर तो वो ईमान नहीं लाएंगे﴾३३﴿ तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में[९] कोई ऐसा है कि पहले बनाए फिर फ़ना(विनाश) के बाद दोबारा बनाए[१०] तुम फ़रमाओ अल्लाह पहले बनाता है फिर फ़ना के बाद दोबारा बनाएगा तो कहाँ औंधे जाते हो[११]﴾३४﴿ तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि हक़ की राह दिखाए[१२] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह हक़ की राह दिखाता है, तो क्या जो हक़ की राह दिखाए उसके हुक्म पर चलना चाहिये या उसके जो ख़ुद ही राह न पाए जबतक राह न दिखाया

की नेअमतें उपलब्ध कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए. जिसने उस बुलाने वाले की फ़रमाँबरदारी की, उस मकान में दाख़िल हुआ और उन नेअमतों को खाया पिया और जिसने बुलाने वाले की आवाज़ न मानी, वह मकान में दाख़िल न हो सका न कुछ खा सका. फिर वो कहने लगे कि इस मिसाल पर गहराई से ग़ौर करो कि समझ में आए. मकान जन्नत है, बुलाने वाले मुहम्मद हैं, जिसने उनकी फ़रमाँबरदारी की, उसने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की.

(१८) भलाई वालों से अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दे, ईमान वाले मुराद हैं. और यह जो फ़रमाया कि उनके लिये भलाई है, इस भलाई से जन्नत मुराद है. और "इससे भी ज़्यादा" का मतलब है, अल्लाह का दीदार. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बाद अल्लाह तआला फ़रमाएगा, क्या तुम चाहते हो कि तुमपर और ज़्यादा इनायत करूं. वो अर्ज़ करेंगे या रब, क्या तूने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये, क्या तूने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तूने हमें दोज़ख़ से निजात नहीं दी. हुज़ूर ने फ़रमाया, फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो अल्लाह का दीदार उन्हें हर नेअमत से ज़्यादा प्यारा होगा. सही हदीस की किताबों में बहुत सी रिवायतें यह साबित करती हैं कि आयत में "इससे भी ज़्यादा" से अल्लाह का दीदार मुराद है.

(१९) कि यह बात जहन्नम वालों के लिये है.

(२०) यानी कुफ़्र और गुनाह में जकड़ गए.

(२१) ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सौ गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अज़ाब भी बढ़ा दिया जाए, बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अज़ाब किया जाएगा.

(२२) यह हाल होगा उनकी रूसियाही का, ख़ुदा की पनाह.

(२३) और तमाम सृष्टि को हिसाब के मैदान में जमा करेंगे.

(२४) यानी वो बुत जिन्हें तुम पूजते थे.

(२५) क़यामत के दिन एक घड़ी ऐसी सख़्ती की होगी कि बुत अपने पुजारियों की पूजा का इन्कार करदेंगे और अल्लाह की क़सम खाकर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो. इसपर बुत परस्त कहेंगे कि अल्लाह की क़सम हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे.

(२६) यानी उस मैदान में सब को मालूम हो जाएगा कि उन्होंने पहले जो कर्म किये थे वो कैसे थे. अच्छे या बुरे, नफ़ा वाले या घाटे वाले.

(२७) बुतों को ख़ुदा का शरीक बताना और मअबूद ठहराना.

(२८) और झूटी और बेहक़ीक़त साबित होंगी.

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا
ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ
يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ
مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ
وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَ
رَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّىْ
عَمَلِىْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ

जाए[१३] तो तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो﴿३५﴾ और[१४] उनमें अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर[१५] बेशक गुमान हक़ का कुछ काम नहीं देता, बेशक अल्लाह उनके कामों को जानता है﴿३६﴾ और क़ुरआन की यह शान नहीं कि कोई अपनी तरफ़ से बनाले बे अल्लाह के उतारे[१६] हाँ वह अगली किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) है[१७] और लौह में जो कुछ लिखा है सबकी तफ़सील है इसमें कुछ शक नहीं है जगत के रब की तरफ़ से है﴿३७﴾ क्या ये कहते हैं[१८] कि उन्होंने इसे बना लिया है, तुम फ़रमाओ[१९] तो इस जैसी कोई एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़कर जो मिल सकें सबको बुला लाओ[२०] अगर तुम सच्चे हो﴿३८﴾ बल्कि उसे झुटलाया जिसके इल्म पर क़ाबू न पाया[२१] और अभी उन्होंने इसका अंजाम नहीं देखा,[२२] ऐसे ही उनसे अगलों ने झुटलाया था[२३] तो देखो ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ[२४]﴿३९﴾ और उनमें[२५] कोई इस[२६] पर ईमान लाता है और उनमें कोई इसपर ईमान नहीं लाता है, और तुम्हारा रब फ़सादियों को ख़ूब जानता है[२७]﴿४०﴾

पाँचवां रूकू

और अगर वो तुम्हें झुटलाएं[१] तो फ़रमा दो कि मेरे लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी[२] तुम्हें मेरे काम से इलाक़ा नहीं और मुझे तुम्हारे काम से तअल्लुक़

सूरए यूनुस - चौथा रूकू

(१) आसमान से मेंह बरसाकर और ज़मीन से हरियाली उगाकर.

(२) और ये हवास या इन्द्रियाँ तुम्हें किसने दिये हैं, किसने ये चमत्कार तुम्हें प्रदान किये हैं, कौन इन्हें मुद्दतों सुरक्षित रखता है.

(३) इन्सान को वीर्य से और वीर्य को इन्सान से, चिड़िया को अन्डे से और अन्डे को चिड़िया से. मूमिन को काफ़िर से और काफ़िर को मूमिन से, आलिम को जाहिल से और जाहिल को आलिम से.

(४) और उसकी सम्पूर्ण क़ुदरत का ऐतिराफ़ करेंगे और इसके सिवा कुछ चारा न होगा.

(५) उसके अज़ाब से, और क्यों बुतों को पूजते और उनको मअबूद बनाते हो जबकि वो कुछ क़ुदरत नहीं रखते.

(६) जिसकी ऐसी भरपूर क़ुदरत है.

(७) यानी जब ऐसी ख़ुली दलीलें और साफ़ प्रमाणों से साबित होगया कि इबादत के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह है, तो उसके अलावा सब बातिल और गुमराही. और जब तुमने उसकी क़ुदरत को पहचान लिया और उसकी क्षमता का ऐतिराफ़ कर लिया तो.

(८) जो कुफ़्र में पक्के हो गए. रब की बात से मुराद है अल्लाह की तरफ़ से जो लिख दिया गया. या अल्लाह तआला का इरशाद *"लअम लअन्ना जहन्नमा...*(मैं तुम सबसे जहन्नम भर दूंगा - सूरए अअराफ़, आयत १८).

(९) जिन्हें ऐ मुश्रिको, तुम मअबूद ठहराते हो.

(१०) इसका जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्योंकि मुश्रिक भी यह जानते हैं कि पैदा करने वाला अल्लाह ही है, लिहाज़ा ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(११) और ऐसी रौशन दलीलें क़ायम होने के बाद सीधे रास्ते से मुंह फेरते हो.

(१२) तर्क और दलीलें क़ायम करके, रसूल भेजकर, किताबें उतार कर, समझ वालों को अक़्ल और नज़र अता फ़रमा कर. इसका खुला जवाब यह है कि कोई नहीं, तो ऐ हबीब.

(१३) जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जबतक कि कोई उठा लेजाने वाला उन्हें उठाकर न ले जाए. और न किसी चीज़ की हक़ीक़त को समझें और न सच्चाई की राह को पहचानें, बग़ैर इसके कि अल्लाह तआला उन्हें ज़िन्दगी, अक़्ल और नज़र दे. तो जब उनकी मजबूरी का यह आलम है तो वो दूसरों को क्या राह बता सकेंगे. ऐसों को मअबूद बनाना, फ़रमाँबरदारी करना

وَأَنَا بَرِيٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُونَ ۝ وَمِنۡهُم مَّن يَسۡتَمِعُونَ
إِلَيۡكَ ۚ أَفَأَنتَ تُسۡمِعُ ٱلصُّمَّ وَلَوۡ كَانُواْ لَا يَعۡقِلُونَ ۝
وَمِنۡهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيۡكَ ۚ أَفَأَنتَ تَهۡدِي ٱلۡعُمۡيَ
وَلَوۡ كَانُواْ لَا يُبۡصِرُونَ ۝ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظۡلِمُ ٱلنَّاسَ
شَيۡـًٔا وَلَٰكِنَّ ٱلنَّاسَ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ ۝ وَيَوۡمَ
يَحۡشُرُهُمۡ كَأَن لَّمۡ يَلۡبَثُوٓاْ إِلَّا سَاعَةً مِّنَ ٱلنَّهَارِ
يَتَعَارَفُونَ بَيۡنَهُمۡ ۚ قَدۡ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُواْ بِلِقَآءِ
ٱللَّهِ وَمَا كَانُواْ مُهۡتَدِينَ ۝ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعۡضَ
ٱلَّذِي نَعِدُهُمۡ أَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ
ٱللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفۡعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ
رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَآءَ رَسُولُهُمۡ قُضِيَ بَيۡنَهُم بِٱلۡقِسۡطِ
وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا ٱلۡوَعۡدُ
إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ۝ قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي ضَرًّا

नहीं[३]﴾४१﴿ और उनमें कोई वो हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं[४] तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगरचे उन्हें अक़्ल न हो[५]﴾४२﴿ और उनमें कोई तुम्हारी तरफ़ तकता है[६] क्या तुम अंधों को राह दिखा दोगे अगरचे वो न सूझें﴾४३﴿ बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता[७] हाँ लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं[८]﴾४४﴿ और जिस दिन उन्हें उठाएगा[९] मानो दुनिया में न रहे थे मगर उस दिन की एक घड़ी[१०] आपस में पहचान करेंगे[११] कि पूरे घाटे में रहे वो जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे[१२]﴾४५﴿ और अगर हम तुम्हें दिखादें कुछ[१३] उसमें से जो उन्हें वादा दे रहे हैं[१४] या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला ले[१५] हर हाल में उन्हें हमारी तरफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है[१६] उनके कामों पर﴾४६﴿ और हर उम्मत में एक रसूल हुआ[१७] जब उसका रसूल उनके पास आता[१८] उन पर इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता[१९] और उनपर ज़ुल्म न होता﴾४७﴿ और कहते हैं यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो[२०]﴾४८﴿ तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के बुरे भले का (ज़ाती) इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह चाहे[२१] हर गिरोह का एक वादा है[२२] जब उनका वादा

कितना ग़लत और बेहूदा है.

(१४) मुश्रिक लोग.

(१५) जिसकी उनके पास कोई दलील नहीं, न उसके ठीक होने का इरादा और यक़ीन. शक में पड़े हुए हैं और यह ख़याल करते हैं कि पहले लोग भी बुत पूजते थे, उन्होंने कुछ तो समझा होगा.

(१६) मक्का के काफ़िरों ने यह वहम किया था कि क़ुरआन शरीफ़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुद बना लिया है. इस आयत में उनका यह वहम दूर फ़रमाया गया कि क़ुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिसकी निस्बत शक हो सके. इसकी मिसाल बनाने से सारी सृष्टि लाचार है तो यक़ीनन वह अल्लाह की उतारी हुई किताब है.

(१७) तौरात और इंजील वग़ैरह की.

(१८) काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत.

(१९) अगर तुम्हारा यह ख़याल है तो तुम भी अरब हो, ज़बान और अदब, फ़साहत और बलाग़त के दावेदार हो, दुनिया में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिसके कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम असम्भव समझते हो. अगर तुम्हारे ख़याल में यह इन्सान का कलाम है.

(२०) और उनसे मदद लो और सब मिलकर क़ुरआन जैसी एक सूरत तो बनाओ.

(२१) यानी क़ुरआन शरीफ़ को समझने और जानने के बग़ैर उन्होंने इसे झुटलाया और यह निरी जिहालत है कि किसी चीज़ को जाने बग़ैर उसका इन्कार किया जाए. क़ुरआन शरीफ़ में ऐसे उलूम शामिल होना, जिसे इल्म और अक़्ल वाले न छू सकें, इस किताब की महानता और बुज़ुर्गी ज़ाहिर करता है. तो ऐसी उत्तम उलूम वाली किताब को मानना चाहिये था न कि इसका इन्कार करना.

(२२) यानी उस अज़ाब को जिसकी क़ुरआन शरीफ़ में चुनौतियाँ हैं.

(२३) दुश्मन से अपने रसूलों को, बग़ैर इसके कि उनके चमत्कार और निशानियाँ देखकर सोच समझ से काम लेते.

(२४) और पहली उम्मतें अपने नबियों को झुटलाकर कैसे कैसे अज़ाबों में जकड़ी गईं तो ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, आप को झुटलाने वालों को डरना चाहिये .

(२५) मक्का वाले.

(२६) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या क़ुरआन शरीफ़.

(२७) जो दुश्मनी से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर अड़े रहते हैं.

وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें(४९) तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उसका अज़ाब[२३] तुमपर रात को आए[२४] या दिन को[२५] तो उसमें वह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिसकी जल्दी है(५०) तो क्या जब[२६] हो पड़ेगा उस वक़्त उसका यक़ीन करेंगे[२७] क्या अब मानते हो पहले तो[२८] इसकी जल्दी मचा रहे थे(५१) फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा का अज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वही जो कमाते थे[२९](५२) और तुमसे पूछते हैं क्या वह[३०] हक़ है, तुम फ़रमाओ, हाँ मेरे रब की क़सम बेशक वह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका न सकोगे[३१](५३)

छटा रूकू

और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है[१] सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में देती[२] और दिल में चुपके चुपके पशेमान हुए जब अज़ाब देखा और उनमें इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया और उनपर ज़ुल्म न होगा(५४) सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में[३] सुन लो बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं(५५) वह

सूरए यूनुस - पाँचवां रूकू

(१) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, और उनकी राह पर आने और सच्चाई और हिदायत क़ुबूल करने की उम्मीद टूट जाए.

(२) हर एक अपने अमल का बदला पाएगा.

(३) किसी के अमल पर दूसरे की पकड़ न होगी. जो पकड़ा जाएगा अपने कर्मों पर पकड़ा जाएगा. यह फ़रमान चेतावनी के तौर पर है कि तुम नसीहत नहीं मानते और हिदायत क़ुबूल नहीं करते तो इसका वबाल ख़ुद तुमपर होगा, किसी दूसरे को इससे नुक़सान नहीं.

(४) और आपसे क़ुरआन शरीफ़ और दीन के अहकाम सुनते हैं और दुश्मनी की वजह से दिल में जगह नहीं देते और क़ुबूल नहीं करते, तो यह सुनना बेकार है. वो हिदायत से नफ़ा न पाने में बेहरों की तरह हैं.

(५) और वो न हवास से काम लें न अक़्ल से.

(६) और सच्चाई की दलीलों और नबुव्वत की निशानियों को देखता है, लेकिन तस्दीक़ नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकलता, फ़ायदा नहीं उठाता, दिल की नज़र से मेहरूम और बातिन यानी अन्दर का अन्धा है.

(७) बल्कि उन्हें हिदायत और राह पाने के सारे सामान अता फ़रमाता है और रौशन दलीलें क़ायम फ़रमाता है.

(८) कि इन दलीलों में ग़ौर नहीं करते और सच्चाई साफ़ स्पष्ट होजाने के बावुजूद ख़ुद गुमराही में गिरफ़्तार होते हैं.

(९) क़ब्रों से, हिसाब के मैदान में हाज़िर करने के लिये, तो उस दिन की हैबत और वहशत से यह हाल होगा कि वो दुनिया में रहने की मुद्दत को बहुत थोड़ा समझेंगे और यह ख़याल करेंगे कि....

(१०) और इसकी वजह यह है कि चूंकि काफ़िरों ने दुनिया की चाह में उम्रें नष्ट कर दीं और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी, जो आज काम आती, बजा न लाए तो उनकी ज़िन्दगी का वक़्त उनके काम न आया . इसलिये वो उसे बहुत ही कम समझेंगे.

(११) क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुनिया में पहचानते थे, फिर क़यामत के दिन की हौल और दहशतनाक मन्ज़र देखकर यह पहचान बाक़ी न रहेगी . एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन पल पल हाल बदलेंगे. कभी ऐसा हाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे.

(१२) जो उन्हें घाटे से बचाती.

(१३) अज़ाब.
(१४) दुनिया ही में आपके ज़मानए हयात में, तो वह मुलाहिज़ा कीजिये.
(१५) तो आख़िरत में आपको उनका अज़ाब दिखाएंगे . इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काफ़िरों के बहुत से अज़ाब और उनकी ज़िल्लत और रूसवाइयाँ आपकी दुनियावी ज़िन्दगी ही में दिखाएगा. चुनांचे बद्र वग़ैरह में दिखाई गई और जो अज़ाब काफ़िरों के लिये कुफ़्र और झुटलाने के कारण आख़िरत में मुक़र्रर फ़रमाता है वह आख़िरत में दिखाएगा.
(१६) ख़बर वाला है, अज़ाब देने वाला है.
(१७) जो उन्हें सच्चाई की तरफ़ बुलाता और फ़रमाँबरदारी और ईमान का हुक्म करता.
(१८) और अल्लाह के आदेशों की तबलीग़ या प्रचार करता, तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ झुटलाते और इन्कारी हो जाते हो.
(१९) कि रसूल को और उनपर ईमान लाने वालों को निजात दी जाती और झुटलाने वालों को अज़ाब से हलाक कर दिया जाता. आयत की तफ़सीर में दूसरा क़ौल यह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मानी ये हैं कि क़यामत के दिन हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिसकी तरफ़ वह मन्सूब होगी. जब वह रसूल हिसाब के मैदान में आएगा और मूमिन व काफ़िर पर शहदात देगा तब उनमें फ़ैसला किया जायगा कि ईमान वालों को निजात होगी और काफ़िर अज़ाब में जकड़े जाएंगे.
(२०) जब आयत "इम्मा नुरियन्नका" में अज़ाब की चेतावनी दी गई तो काफ़िरों ने सरकशी से यह कहा कि ऐ मुहम्मद, जिस अज़ाब का आप वादा देते हैं वह कब आएगा, उसमें क्या देर है . उस अज़ाब को जल्द लाइये. इसपर यह आयत उतरी.
(२१) यानी दुश्मनों पर अज़ाब उतरना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़ल्बा देना, यह सब अल्लाह की मर्ज़ी है और अल्लाह की मर्ज़ी में.
(२२) उसके हलाक और अज़ाब का एक समय निर्धारित है, लौहे मेहफ़ूज़ में लिखा हुआ है.
(२३) जिसकी तुम जल्दी करते हो.
(२४) जब तुम ग़ाफ़िल पड़े सोते हो.
(२५) जब तुम रोज़ी रोटी के कामों में मशग़ूल हो.
(२६) वह अज़ाब तुमपर नाज़िल.
(२७) उस वक़्त का यक़ीन कुछ फ़ायदा न देगा और कहा जाएगा.
(२८) झुटलाने और मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर.
(२९) यानी दुनिया में जो अमल करते थे और नबियों को झुटलाने और कुफ़्र में लगे रहते थे उसी का बदला.
(३०) उठाए जाने और अज़ाब, जिसके नाज़िल होने की आपने हमें ख़बर दी.
(३१) यानी वह अज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा.

सूरए यूनुस - छटा रूकू

(१) माल मत्ता, ख़ज़ाना और दफ़ीना.
(२) और क़यामत के दिन उसको रिहाई के लिये फ़िदिया कर डालती, मगर यह फ़िदिया क़ुबूल नहीं और तमाम दुनिया की दौलत ख़र्च करके भी रिहाई सम्भव नहीं, जब क़यामत में यह मंज़र पेश आया और काफ़िरों की उम्मीदें टूटीं.
(३) तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वह ख़ुद भी अल्लाह का ममलूक है, उसका फ़िदिया देना सम्भव ही नहीं.

يَعْلَمُوْنَ ۞ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۞ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۞ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۞ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۞ ع وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

जिलाता और मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे (५६) ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आई[४] और दिलों की सेहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये (५७) तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल (अनुकम्पा) और उसी की रहमत और उसीपर चाहिये कि ख़ुशी करें[५] वह उनके सब धन दौलत से बेहतर है (५८) तुम फ़रमओ भला बताओ तो वह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज़्क़ (जीविका) उतारा उसमें तुम ने अपनी तरफ़ से हराम व हलाल ठहरा लिया[६] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने इसकी तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूट बांधते हो[७] (५९) और क्या गुमान है उनका जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि क़यामत में उनका क्या हाल होगा, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करता है[८] मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (६०)

सातवाँ रूकू

और तुम किसी काम में हो[१] और उसकी तरफ़ से कुछ क़ुरआन पढ़ो और तुम लोग[२] कोई काम करो हम तुमपर गवाह होते हैं जब तुम उसको शुरू करते हो, और तुम्हारे रब से ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ायब नहीं ज़मीन में न आसमान

(४) इस आयत में क़ुरआन शरीफ़ के आने और इस में मौजूद नसीहतों, शिफ़ा, हिदायत और रहमत का बयान है कि यह किताब इन बड़े फ़ायदों से ओत प्रोत है. नसीहत के मानी है वह चीज़ जो इन्सान को उसकी पसन्द की चीज़ की तरफ़ बुलाए और ख़तरे से बचाए. ख़लील ने कहा कि यह नेकी की नसीहत करना है जिससे दिल में नर्मी पैदा हो. शिफ़ा से मुराद यह है कि क़ुरआन शरीफ़ दिल के अन्दर की बीमारियों को दूर करता है. दिल की ये बीमारियाँ दुराचार, ग़लत अक़ीदे और मौत की तरफ़ ले जाने वाली जिहालत हैं. क़ुरआने पाक इन तमाम रोगों को दूर करता है. क़ुरआने करीम की विशेषता में हिदायत भी फ़रमाया, क्योंकि वह गुमराही से बचाता और सच्चाई की राह दिखाता है और ईमान वालों के लिये रहमत, इसलिये फ़रमाया कि वह इससे फ़ायदा उठाते हैं.

(५) किसी प्यारी और मेहबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उसको फ़रह कहते हैं. मानी ये हैं कि ईमान वालों को अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत पर ख़ुश होना चाहिये कि उसने उन्हें नसीहतों, और दिलों की अच्छाई और ईमान के साथ दिल की राहत और सुकून अता फ़रमाए. हज़रत इब्ने अब्बास व हसन व क़तादा ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम और उसकी रहमत से क़ुरआन मुराद है. एक क़ौल यह है कि फ़ज़्लुल्लाह से क़ुरआन और रहमत से हदीसें मुराद हैं.

(६) जैसे कि जिहालत वालों ने बहीरा, सायबा वग़ैरह को अपनी मर्ज़ी से हराम क़रार दे लिया था.

(७) इस आयत से साबित हुआ कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से हलाल या हराम करना मना और ख़ुदा पर झूट जोड़ना है. आजकल बहुत लोग इसमें जकड़े हुए हैं. ममनूआत यानी वर्जित चीज़ों को हलाल कहते हैं और जिन चीज़ों के इस्तेमाल की अल्लाह व रसूल ने इजाज़त दी है, उसको हराम. कुछ सूद को हलाल करने पर अड़े हैं, कुछ तस्वीरों को, कुछ खेल तमाशों को, कुछ औरतों की बेक़ैदियों और बेपर्दगीयों को, कुछ भूख हड़ताल को, जो आत्म हत्या है, हलाल समझते हैं. और कुछ लोग हलाल चीज़ों को हराम ठहराने पर तुले हुए हैं, जैसे मीलाद की महफ़िल को, फ़ातिहा को, ग्यारहवीं को और ईसाले सवाब के दूसरे तरीक़ों को, कुछ मीलाद शरीफ़ और फ़ातिहा व तोशा की शीरीनी और तबर्रुक को, जो सब हलाल और पाक चीज़ें हैं, नाजायज़ और वर्जित बताते हैं.

(८) कि रसूल भेजता है, किताबें नाज़िल फ़रमाता है, और हलाल व हराम से बाख़बर फ़रमाता है.

सूरए यूनुस - सातवाँ रूकू

(१) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(२) ऐ मुसलमानो.

رَّبِّكَ مِنۡ مِّثۡقَالِ ذَرَّةٍ فِي الۡاَرۡضِ وَلَا فِي
السَّمَآءِ وَلَآ اَصۡغَرَ مِنۡ ذٰلِكَ وَلَآ اَكۡبَرَ اِلَّا
فِيۡ كِتٰبٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٦١﴾ اَلَآ اِنَّ اَوۡلِيَآءَ اللّٰهِ لَا
خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٢﴾ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَكَانُوۡا يَتَّقُوۡنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الۡبُشۡرٰى فِي الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا
وَفِي الۡاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبۡدِيۡلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحۡزُنۡكَ قَوۡلُهُمۡ ۘ
اِنَّ الۡعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيۡعًا ؕ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿٦٥﴾
اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنۡ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِي الۡاَرۡضِ ؕ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
شُرَكَآءَ ؕ اِنۡ يَّتَّبِعُوۡنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنۡ هُمۡ اِلَّا
يَخۡرُصُوۡنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيۡ جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ لِتَسۡكُنُوۡا
فِيۡهِ وَالنَّهَارَ مُبۡصِرًا ؕ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

وقف لازم

में और न उससे छोटी और न उससे बड़ी कोई नहीं जो एक रौशन किताब में न हो[३] ﴿६१﴾ सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ डर है न कुछ ग़म[४] ﴿६२﴾ वो जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं ﴿६३﴾ उन्हें ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी में[५] और आख़िरत में, अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं[६] यही बड़ी कामयाबी है ﴿६४﴾ और तुम उनकी बातों का ग़म न करो[७] बेशक इज़्ज़त सारी अल्लाह ही के लिये है[८] वही सुनता जानता है ﴿६५﴾ सुन लो बेशक अल्लाह ही के मुल्क हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में[९] और काहे के पीछे जा रहे हैं[१०] वो जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहे हैं, वो तो पीछे नहीं जाते मगर गुमान के और वो तो नहीं मगर अटकलें दौड़ाते[११] ﴿६६﴾ वही है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उसमें चैन पाओ और दिन बनाया तुम्हारी आँखें खोलता[१२]

(३) 'किताबे मुबीन' यानी रौशन किताब से लोहे मेहफ़ूज़ मुराद है.

(४) 'वली' की अस्ल विला से है जो क़ुर्ब और नुसरत के मानी में हैं. अल्लाह का वली वह है जो फ़र्ज़ों से अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करे और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में लगा रहे और उसका दिल अल्लाह के जलाल के नूर को पहचानने में डूबा हो जब देखे, अल्लाह की क़ुदरत की दलीलों को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने, और जब बोले तो अपने रब की प्रशंसा और तअरीफ़ ही के साथ बोले, और जब हरकत करे अल्लाह की आज्ञा के पालन में ही हरकत करे, और जब कोशिश करे उसी काम में कोशिश करे जो अल्लाह के क़रीब पहुंचने का ज़रिया हो. अल्लाह के ज़िक्र से न थके और दिल की आँख से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को न देखे. यह विशेषता वलियों की है. बन्दा जब इस हाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उसका वली और सहायक और मददगार होता है. मुतकल्लिमीन कहते हैं, वली वह है जो प्रमाण पर आधारित सही अक़ीदे रखता हो और शरीअत के मुताबिक़ नेक कर्म करता हो. कुछ आरिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है अल्लाह के क़ुर्ब और अल्लाह के साथ मश्ग़ूल रहने का. जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उसको किसी चीज़ का डर नहीं रहता और न किसी चीज़ से मेहरूम होने का ग़म होता है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वली वह है जिसे देखने से अल्लाह याद आए. यही तबरी की हदीस में भी है. इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वही है जिसमें वह सिफ़त और गुण हो जो इस आयत में बयान किया गया है. *"अल्लज़ीना आमनू वकानू यत्तक़ून"* यानी ईमान और तक़वा दोनों का संगम हो. कुछ उलमा ने फ़रमाया, वली वो है जो ख़ालिस अल्लाह के लिये महब्बत करे. वलियों की यह विशेषता कई हदीसों में आई है. कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया, वली वो हैं जो फ़रमाँबरदारी से अल्लाह के क़ुर्ब की तलब करते हैं और अल्लाह तआला करामत और बुज़ुर्गी से उनके काम बनाता है. या वो जिन की हिदायत के प्रमाण के साथ अल्लाह कफ़ील हो और वो उसकी बन्दगी का हक़ अदा करने और उसकी सृष्टि पर रहम करने के लिये वक़्फ़ हो गए. ये अर्थ और इबारतें अगरचे विभिन्न हैं लेकिन उनमें विरोधाभास कुछ भी नहीं है क्योंकि हर एक इबारत में वली की एक एक विशेषता बयान कर दी गई है जिसे अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होता है. ये तमाम विशेषताएं और गुण उसमें होते हैं. विलायत के दर्जों और मरतबों में हर एक अपने दर्जे के हिसाब से बुज़ुर्गी और महानता रखता है.

(५) इस ख़ुशख़बरी से या तो वह मुराद है जो परहेज़गार ईमानदारों को क़ुरआन शरीफ़ में जा बजा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद हैं जो मूमिन देखता है या उसके लिये देखा जाता है जैसा कि बहुत सी हदीसों में आया है और इसका कारण यह है कि वली का दिल और उसकी आत्मा दोनों अल्लाह के ज़िक्र में डूबे रहते हैं. तो ख़्वाब के वक़्त अल्लाह के ज़िक्र के सिवा उसके दिल में कुछ नहीं होता. इसलिये वली जब ख़्वाब देखता है तो उसका ख़्वाब सच्चा और अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके हक़ में ख़ुशख़बरी होती है. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस ख़ुशख़बरी से दुनिया की नेकनामी भी मुराद ली है. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सैयदे आलम

لِقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۞ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۞ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۞ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۞ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۞ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۞ فَكَذَّبُوْهُ

منزل ٣

बेशक उसमें निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिये(१४)(६७) बोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई(१५) पाकी उसको, वही बेनियाज़ है, उसी का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में(१६) तुम्हारे पास इसकी कोई भी सनद नहीं, क्या अल्लाह पर वह बात बताते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं(६८) तुम फ़रमाओ वो जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उनका भला न होगा(६९) दुनिया में कुछ बरत लेना है फिर उन्हें हमारी तरफ़ वापस आना फिर हम उन्हें सख़्त अज़ाब चखाएंगे बदला उनके कुफ़्र का(७०)

आठवाँ रूकू

और उन्हें नूह की ख़बर पढ़कर सुनाओ बस उसने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुमपर शाक़ (भारी) गुज़रा है मेरा खड़ा होना(१) और अल्लाह की निशानियाँ याद दिलाना(२) तो मैं ने अल्लाह ही पर भरोसा किया(३) तो मिलकर काम करो और अपने झूटे मअबूदों समेत अपना काम पक्का कर लो तुम्हारे काम में तुमपर कुछ गुंजलक न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और मुझे मुहलत न दो(४)(७१) फिर अगर तुम मुंह फेरो(५) तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता(६) मेरा अज्र(फल,बदला)तो नहीं मगर अल्लाह पर और(७) और मुझे हुक्म है कि मैं मुसलमानों से हूँ(७२)

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया गया, उस शख़्स के लिये क्या इरशाद फ़रमाते हैं जो नेक कर्म करता है और लोग उसकी तारीफ़ करते हैं. फ़रमाया यह मूमिन के लिये ख़ुशख़बरी है. उलमा फ़रमाते हैं कि यह ख़ुशख़बरी अल्लाह की रज़ा और अल्लाह के महब्बत फ़रमाने और सृष्टि के दिल में महब्बत डाल देने की दलील है, जैसा कि हदीस में आया है कि उसको ज़मीन में मक़बूल कर दिया जाता है. क़तादा ने कहा कि फ़रिश्ते मौत के समय अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुशख़बरी देते हैं. अता का क़ौल है कि दुनिया की ख़ुशख़बरी तो वह है जो फ़रिश्ते मौत के समय सुनाते हैं और आख़िरत की ख़ुशख़बरी वह है जो मूमिन को जान निकलने के बाद सुनाई जाती है कि उससे अल्लाह राज़ी है.

(६) उसके वादे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उसने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने वलियों और अपने फ़रमाँबरदार बन्दों से फ़रमाए.

(७) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि काफ़िर बदनसीब, जो आपको झुटलाते हैं और आपके ख़िलाफ़ बुरे बुरे मशवरे करते हैं, उसका कुछ ग़म न फ़रमाएं.

(८) वह जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे. ऐ सैयदुल अम्बिया, वह आपका नासिर और मददगार है. उसने आपको और आपके सदक़े में आपके फ़रमाँबरदारों को इज़्ज़त दी, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिये इज़्ज़त है और उसके रसूल के लिये और ईमान वालों के लिये.

(९) सब उसके ममलूक अर्थात ग़ुलाम हैं. उसके तहत क़ुदरत और अधिकार, और जो ग़ुलाम है वह रब नहीं हो सकता. इसलिये अल्लाह के सिवा हर एक को पूजना ग़लत है . यह तौहीद की एक ऊमदा दलील है.

(१०) यानी किस दलील का अनुकरण करते हैं. मुराद यह है कि उनके पास कोई दलील नहीं.

(११) और बेदलील केवल ग़लत गुमान से अपने बातिल और झूठे मअबूदों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं, इसके बाद अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत और नेअमत का इज़हार फ़रमाता है.

(१२) और आराम करके दिन की थकन दूर करो.

(१३) रौशन, ताकि तुम अपनी ज़रूरतों और रोज़ी रोटी के सामान पूरे कर सको.

(१४) जो सुनें और समझें कि जिसने इन चीज़ों को पैदा किया, वही मअबूद है. उसका कोई शरीक नहीं. इसके बाद मुश्रिकों का एक कथन ज़िक्र फ़रमाता है.

(१५) काफ़िरों का यह कलिमा अत्यन्त बुरा और इन्तिहा दर्जे की आज्ञानता का है. अल्लाह तआला इसका रद फ़रमाता है.

(१६) यहाँ मुश्रिकों के इस कथन के तीन रद फ़रमाए, पहला रद तो कलिमए सुब्हानहू में है जिसमें बताया गया कि उसकी ज़ात

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ
وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا
اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ
الْمُعْتَدِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ۭ اَسِحْرٌ هٰذَا ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ۭ وَمَا
نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ

तो उन्होंने उसे[८] झुटलाया तो हमने उसे और जो उसके आथ किश्ती में थे उसको निजात दी और उन्हें हमने नायब (प्रतिनिधि) किया[९] और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाईं उनको हमने डुबो दिया तो देखो डराए हुओं का अंजाम कैसा हुआ ﴿७३﴾ फिर उसके बाद और रसूल[१०] हमने उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे तो वो उनके पास रौशन दलीलें लाए तो वो ऐसे न थे कि ईमान लाते उसपर जिसे पहले झुटला चुके थे, हम यूंही मुहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर ﴿७४﴾ फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ अपनी निशानियाँ लेकर भेजा तो उन्होंने घमण्ड किया और वो मुजरिम लोग थे ﴿७५﴾ तो जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आया[११] बोले यह तो ज़रूर खुला जादू है ﴿७६﴾ मूसा ने कहा क्या हक़ की निस्बत ऐसा कहते हो जब वह तुम्हारे पास आया क्या यह जादू है[१२] और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते[१३] ﴿७७﴾ बोले क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें उससे[१४] फेरदो जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हारी दोनों की बड़ाई रहे और हम तुमपर ईमान लाने के नहीं ﴿७८﴾ और फ़िरऔन[१५] बोला हर जादूगर इल्म वाले को मेरे पास

बेटे या औलाद से पाक है कि वाहिदे हक़ीक़ी है, दूसरा रद हुवल ग़नियो फ़रमाने में है कि वह तमाम सृष्टि से बेनियाज़ है, तो औलाद उसके लिये कैसे हो सकती है. औलाद तो या कमज़ोर चाहते है जो उससे क़ुव्वत हासिल करें या फ़क़ीर चाहता है जो उससे मदद ले या ज़लील चाहता है जो उसके ज़रीये इज़्ज़त हासिल करे. ग़रज़ जो चाहता है वह हाजत रखता है. तो जो ग़नी हो या ग़ैर मोहताज हो उसके लिये औलाद किस तरह हो सकती है. इसके अलावा बेटा वालिद का एक हिस्सा होता है, तो वालिद होना, मिश्रित होना ज़रूरी, और मिश्रित होना संभव होने को, और हर संभव ग़ैर का मोहताज है, तो हादिस हुआ, लिहाज़ा मुहाल हुआ कि ग़नी क़दीम के बेटा हो. तीसरा रद लहू मा फ़िस्समावाते वमा फ़िल अर्दे में है कि सारी सृष्टि उसकी ममलूक है और ममलूक होना बेटा होने के साथ नहीं जमा होता. लिहाज़ा उनमें से कोई उसकी औलाद नहीं हो सकत.

सूरए यूनुस - आठवाँ रूकू

(१) और लम्बी मुद्दत तक तुममें ठहरना.
(२) और इसपर तुमने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है.
(३) और अपना मामला उस एक अल्लाह के सुपुर्द किया जिसका कोई शरीक नहीं .
(४) मुझे कुछ परवाह नहीं है. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का यह कलाम विनम्रता के तौर पर है. मतलब यह है कि मुझे अपने क़ुदरत वाले, क़ुव्वत वाले परवर्दिगार पर पूरा पूरा भरोसा है, तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मअबूद मुझे कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते.
(५) मेरी नसीहत से.
(६) जिसके फ़ौत होने का मुझे अफ़सोस है.
(७) वही मुझे बदला देगा. मतलब यह है कि मेरा उपदेश और नसीहत ख़ास अल्लाह के लिये है किसी दुनिया की ग़रज़ से नहीं.
(८) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को.
(९) और हलाक होने वालों के बाद ज़मीन में ठहराया.
(१०) हूद, सालेह, इब्राहीम, लूत, शुऐब वग़ैरहुम, अलैहिमुस्सलाम.
(११) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वास्ते से, और फ़िरऔनियों ने पहचान कर, कि ये सत्य है, अल्लाह की तरफ़ से है, तो नफ़्सानियत और हठधर्मी से.
(१२) हरगिज़ नहीं.
(१३) फ़िरऔनी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
(१४) दीन व मिल्लत और बुत परस्ती व फ़िरऔन परस्ती.

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ
لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾
فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ
مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا
اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

ले आओ﴾७९﴿ फिर जब जादूगर आए उनसे मूसा ने कहा डालो जो तुम्हें डालना है[१६]﴾८०﴿ फिर जब उन्होंने डाला मूसा ने कहा यह जो तुम लाए यह जादू है[१७] अब अल्लाह इसे बातिल करदेगा, अल्लाह फ़साद वालों का काम नहीं बनाता﴾८१﴿ और अल्लाह अपनी बातों से[१८] हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम﴾८२﴿

नवाँ रूकू

तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उसकी क़ौम की औलाद से कुछ लोग[१] फ़िरऔन और उसके दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें[२] हटने पर मजबूर न करदें और बेशक फ़िरऔन ज़मीन पर सर उठाने वाला था, और बेशक वह हद से गुज़र गया[३]﴾८३﴿ और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो[४] अगर तुम इस्लाम रखते हो﴾८४﴿ बोले हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया, इलाही हमको ज़ालिम लोगों के लिये आज़माइश न बना[५]﴾८५﴿ और अपनी रहमत फ़रमाकर हमें काफ़िरों से निजात दे[६]﴾८६﴿ और हमने मूसा और उसके भाई को वही भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के लिये

(१५) सरकश और घमण्डी ने चाहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार का मुक़ाबला बातिल से करे और दुनिया को इस भ्रम में डाले कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार जादू की क़िस्म से हैं इसलिये वह.

(१६) रस्से शहतीर वग़ैरह और जो तुम्हें जादू करना है करो. यह आपने इसलिये फ़रमाया कि हक़ और बातिल, सच और झूट ज़ाहिर हो जाए और जादू के कमाल, जो वो करने वाले हैं, उनका फ़साद साफ़ खुल कर सामने आ जाए.

(१७) न कि वो आयतें और अल्लाह की निशानियाँ, जिनको फ़िरऔन ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया.

(१८) यानी अपने हुक्म, अपनी क्षमता और क़ुदरत और अपने इस वादे से कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा.

सूरए यूनुस - नवाँ रूकू

(१) इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का बहुत एहतिमाम फ़रमाते थे, और उनके मुंह फेर लेने से दुखी हो जाते थे. आपकी तसल्ली फ़रमाई गई कि हालांकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इतना बड़ा चमत्कार दिखाया, फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़ुबूल किया. ऐसी हालतें नबियों को पेश आती रही हैं. आप अपनी उम्मत के मुंह फेर लेने से रंजीदा न हों. **मिन क़ौमिही** में जो ज़मीर है, वह या तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ पलटता है, उस सूरत में क़ौम की सन्तान से बनी इस्राईल मुराद होंगे जिनकी औलाद मिस्र में आपके साथ थी. एक क़ौल यह है कि इससे वो लोग मुराद हैं जो फ़िरऔन के क़त्ल से बच रहे थे क्योंकि जब बनी इस्राईल के लड़के फ़िरऔन के हुक्म पर क़त्ल किये जाते थे तो बनी इस्राइल की कुछ औरतें जो फ़िरऔन की औरतों से कुछ मेल जोल रखती थीं, वो जब बच्चा जनती थीं तो उसकी जान के डर से वह बच्चा फ़िरऔनी क़ौम की औरतों को दे डालतीं. ऐसे बच्चे जो फ़िरऔनियों के घरों में पले थे, उस रोज़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए जिस दिन अल्लाह तआला ने आपको जादूगरों पर विजय अता की थी. एक क़ौल यह है कि यह ज़मीर फ़िरऔन की तरफ़ पलटती है, और फ़िरऔनी क़ौम की सन्तान मुराद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि वह फ़िरऔनी क़ौम के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए.

(२) दीन से.

(३) कि बन्दा होकर ख़ुदाई का दावेदार हुआ.

(४) वह अपने फ़रमाँबरदारों की मदद और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है. इस आयत से साबित हुआ कि अल्लाह पर भरोसा करना ईमान के कमाल का तक़ाज़ा है.

(५) यानी उन्हें हमपर ग़ालिब न कर, ताकि वो ये गुमान न करें कि वो हक़ पर हैं.

بُيُوتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ
اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝
قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا
تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا
بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَ
جُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰىٓ اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ
قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِىْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ
بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ آٰلْـٰٔنَ
وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह करो[७] और नमाज़ क़ायम रखो और मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुनाओ[८] ﴾८७﴿ और मूसा ने अर्ज़ की ऐ रब हमारे तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को आरायश(अलंकार)[९] और माल दुनिया की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे इसलिये कि तेरी राह से बहकावें, ऐ रब हमारे उनके माल बर्बाद कर दे[१०] और उनके दिल सख़्त करदे कि ईमान न लाएं जबतक दर्दनाक अज़ाब न देख लें[११] ﴾८८﴿ फ़रमाया तुम दोनों की दुआ क़ुबूल हुई[१२] तुम साबित क़दम रहो नादानों की राह न चलो[१३] ﴾८९﴿ और हम बनी इस्राईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔन और उसके लश्करों ने उनका पीछा किया सरकशी और ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया[१५] बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मअबूद नहीं सिवा उसके जिसपर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूँ[१६] ﴾९०﴿ क्या अब[१७] और पहले से नाफ़रमान रहा और तू फ़सादी था[१८] ﴾९१﴿

(६) और उनके ज़ुल्म और सितम से बचा.
(७) कि क़िबले की तरफ़ मुंह करो. हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम का क़िबला काबा शरीफ़ था. और शुरू में बनी इस्राईल को यही हुक्म था कि वो घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िरऔनियों की शरारत और तकलीफ़ से सुरक्षित रहें.
(८) अल्लाह की मदद की और जन्नत की.
(९) उमदा लिबास, नफ़ीस फ़र्श, क़ीमती ज़ेवर, तरह तरह के सामान.
(१०) कि वो तेरी नेअमतों पर शुक्र के बजाय दिलेर और जरी होकर गुनाह करते हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की यह दुआ क़ुबूल हुई और फ़िरऔनियों के दिरहम व दीनार वग़ैरह पत्थर होकर रह गए. यहाँ तक कि फल और खाने की चीज़ें भी और ये उन निशानियों में से एक है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी गई थीं.
(११) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से निराश हो गए तब आपने उनके लिये यह दुआ की. और ऐसा ही हुआ कि वो डूबने के वक़्त तक ईमान न लाए. इससे मालूम हुआ कि किसी शख़्स के लिये कुफ़्र पर मरने की दुआ करना कुफ़्र नहीं है. (मदारिक)
(१२) दुआ की निस्बत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हज़रत हारून अलैहिस्सलाम दोनों की तरफ़ की गई हालांकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दुआ करते थे और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम आमीन कहते थे. इससे मालूम हुआ कि आमीन कहने वाला भी दुआ करने वालों में गिना जाता है. यह भी साबित हुआ कि आमीन दुआ है. लिहाज़ा उसके लिये छुपा रहना ही मुनासिब है. (मदारिक). हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ और उसके क़ुबूल होने के बीच चालीस बरस का फ़ासला हुआ.
(१३) दावत और तबलीग़ पर.
(१४) जो दुआ के क़ुबूल होने में देर होने की हिक्मत नहीं जानते.
(१५) तब फ़िरऔन.
(१६) फ़िरऔन ने क़ुबूल होने की तमन्ना के साथ ईमान का मज़मून तीन बार दोहरा कर अदा किया लेकिन यह ईमान क़ुबूल न हुआ क्योंकि फ़रिश्तों और अज़ाब के देखने के बाद ईमान मक़बूल नहीं. अगर इख़्तियार की हालत में वह एक बार भी यह कलिमा कहता तो उसका ईमान क़ुबूल कर लिया जाता. लेकिन उसने वक़्त खो दिया. इसलिये उससे यह कहा गया जो आयत में आगे बयान किया गया है.
(१७) बेचैनी की हालत में, जबकि ग़र्क़ में जकड़ा गया है और ज़िन्दगी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही, उस वक़्त ईमान लाता है.
(१८) ख़ुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था. रिवायत है कि एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास एक सवाल लाए जिसका मज़मून यह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के बारे में जिसने एक शख़्स के माल व नेअमत में

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا
لَغٰفِلُوْنَ ۟ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَاِنْ
كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ
يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ
عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ
كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ فَلَوْلَا

आज हम तेरी लाश को उतरा देंगे (बाक़ी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो[११] और बेशक लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं﴾९२﴿

दसवाँ रूकू

और बेशक हमने बनी इस्राईल को इज़्ज़त की जगह दी[१] और उन्हें सुथरी रोज़ी अता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़े[२] मगर इल्म आने के बाद[३] बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे[४]﴾९३﴿ और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबह हो उसमें जो हमने तेरी तरफ़ उतारा[५] तो उनसे पूछ देख जो तुम से पहले किताब पढ़ने वाले हैं[६] बेशक तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से हक़ आया[७] तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो﴾९४﴿ और हरगिज़ उनमें न होना जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुटलाईं कि तू ख़सारे (घाटे) वालों में हो जाएगा﴾९५﴿ बेशक वो जिनपर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है[८] ईमान न लाएंगे﴾९६﴿ अगरचे सब निशानियाँ उनके पास आईं जबतक दर्दनाक अज़ाब न देख लें[९]﴾९७﴿ तो हुई

परवरिश पाई फिर उसकी नाशुक्री की और उसके हक़ का इन्कारी हो गया और अपने आप मौला होने का दावेदार बन गया. इसपर फ़िरऔन ने यह जवाब लिखा कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा की नेअमतों का इन्कार करे और उसके मुक़ाबले में आए उसकी सज़ा यह है कि उसको दरिया में डुबो दिया जाए. जब फ़िरऔन डूबने लगा तो हज़रत जिब्रील ने वही फ़त्वा उसके सामने कर दिया और उसने उसको पहचान लिया.

(११) तफ़सीर के उलमा कहते हैं कि जब अल्लाह तआला ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम को डुबाया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को उनकी हलाकत की ख़बर दी तो कुछ बनी इस्राईल को शुबह रहा और फ़िरऔन की महानता और हैबत जो उनके दिलों में थी उसके कारण उन्हें उसकी हलाकत का यक़ीन न आया. अल्लाह के हुक्म से दरिया ने फ़िरऔन की लाश किनारे पर फैंक दी . बनी इस्राईल ने उसको देखकर पहचाना.

सूरए यूनुस - दसवाँ रूकू

(१) इज़्ज़त की जगह से या तो मिस्र देश और फ़िरऔनियों की सम्पत्तियाँ मुराद है या शाम प्रदेश और क़ुदस व उर्दुन जो अत्यन्त हरे भरे और उपजाऊ इलाक़े हैं.

(२) बनी इस्राईल, जिनके साथ ये घटनाएं हो चुकीं.

(३) इल्म से मुराद यहाँ या तो तौरात है जिसके मानी में यहूदी आपस में मतभेद रखते थे, या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी है कि इससे पहले तो यहूदी आपके मानने वाले और आपकी नबुव्वत पर सहमत थे और तौरात में जो आपकी विशेषताएं दर्ज थीं उनको मानते थे. लेकिन तशरीफ़ लाने के बाद विरोध करने लगे, कुछ ईमान लाए और कुछ लोगों ने हसद और दुश्मनी से कुफ़्र किया. एक क़ौल यह है कि इल्म से क़ुरआन मुराद है.

(४) इस तरह कि ऐ नबियों के सरदार, आप पर ईमान लाने वालों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और आपका इन्कार करने वालों को जहन्नम में अज़ाब देगा.

(५) अपने रसूल मुहम्मदे मुस्तफ़ा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वास्ते से.

(६) यानी किताब वालों के उलमा जैसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी, ताकि वो तुझको सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत का इत्मीनान दिलाएं और आपकी नात और तारीफ़, जो तौरात में लिखी है, वह सुनाकर शक दूर करें. शक इन्सान के नज़दीक किसी बात में दोनों तरफ़ों का बराबर होना है, चाहे वह इस तरह हो कि दोनों तरफ़ बराबर क़रीने पाए जाएं. चाहे इस तरह कि किसी तरफ़ भी कोई क़रीना न हो. तहक़ीक़ करने वालों के नज़दीक शक जिहालत की क़िस्मों से है और जिहालत

كَانَتۡ قَرۡيَةٌ اٰمَنَتۡ فَنَفَعَهَآ اِيۡمَانُهَآ اِلَّا قَوۡمَ
يُوۡنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوۡا كَشَفۡنَا عَنۡهُمۡ عَذَابَ الۡخِزۡىِ
فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَمَتَّعۡنٰهُمۡ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوۡ
شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنۡ فِى الۡاَرۡضِ كُلُّهُمۡ جَمِيۡعًا ؕ
اَفَاَنۡتَ تُكۡرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٩٩﴾
وَمَا كَانَ لِنَفۡسٍ اَنۡ تُؤۡمِنَ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَ
يَجۡعَلُ الرِّجۡسَ عَلَى الَّذِيۡنَ لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٠٠﴾
قُلِ انۡظُرُوۡا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَمَا
تُغۡنِى الۡاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنۡ قَوۡمٍ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٠١﴾
فَهَلۡ يَنۡتَظِرُوۡنَ اِلَّا مِثۡلَ اَيَّامِ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا
مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ قُلۡ فَانۡتَظِرُوۡۤا اِنِّىۡ مَعَكُمۡ مِّنَ
الۡمُنۡتَظِرِيۡنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّىۡ رُسُلَنَا وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كَذٰلِكَ
حَقًّا عَلَيۡنَا نُنۡجِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿١٠٣﴾ قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنۡ

होती न कोई बस्ती[१०] कि ईमान लाती[११] तो उसका ईमान काम आता हाँ यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हमने उनसे रूसवाई का अज़ाब दुनिया की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया[१२] ﴾९८﴿ और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में जितने हैं सबके सब ईमान ले आते[१३] तो क्या तुम लोगों को ज़बरदस्ती करोगे यहाँ तक कि मुसलमान हो जाएं[१४] ﴾९९﴿ और किसी जान की क़ुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से[१५] और अज़ाब उनपर डालता है जिन्हें अक़्ल नहीं ﴾१००﴿ तुम फ़रमाओ देखो[१६] आसमानों और ज़मीन में क्या है[१७] और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिनके नसीब में ईमान नहीं ﴾१०१﴿ तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उनसे पहले हो गुज़रे[१८] तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ[१९] ﴾१०२﴿ फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को निजात देंगे, बात यही है हमारे करम के ज़िम्मे पर हक़ है मुसलमानों को निजात देना ﴾१०३﴿

ग्यारहवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से

और शक में आम व ख़ास मुतलक़ की निस्बत है कि हर एक शक जिहालत है और हर जिहालत शक नहीं.

(७) जो साफ़ प्रमाणों और रौशन निशानियों से इतना रौशन है कि उसमें शक की मजाल नहीं.

(८) यानी वह क़ौल उनपर साबित हो चुका जो लौहे मेहफ़ूज़ में लिख दिया गया है और जिसकी फ़रिश्तों ने ख़बर दी है कि ये लोग काफ़िर मरेंगे, वो ...

(९) और उस वक़्त का ईमान लाभदायक नहीं.

(१०) उन बस्तियों में से जिनको हमने हलाक किया.

(११) और सच्चे दिल से तौबह करती, अज़ाब उतरने से पहले. (मदारिक)

(१२) क़ौमे यूनुस का हाल यह है कि नैनवा प्रदेश मूसल में ये लोग रहते थे और कुफ़्र व शिर्क में जकड़े हुए थे. अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ भेजा. आपने उनको बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का हुक्म दिया. उन लोगों ने इन्कार किया. हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को झुटलाया. आपने उन्हें अल्लाह के हुक्म से अज़ाब उतरने की ख़बर दी. उन लोगों ने आपस में कहा कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने कभी कोई बात ग़लत नहीं कही है देखो अगर वह रात को यहाँ रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्होंने रात यहाँ न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अज़ाब आएगा. रात में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम वहाँ से तशरीफ़ ले गए. सुबह को अज़ाब के चिन्ह ज़ाहिर हो गए. आसमान पर काला डरावना बादल आया और बहुत सा धुंआ जमा हुआ. सारे शहर पर छा गया. यह देखकर उन्हें यक़ीन होगया कि अज़ाब आने वाला है. उन्होंने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की तलाश की और आपको न पाया. अब उन्हें और ज़्यादा डर हुआ तो वो अपने बच्चों औरतों और जानवरों के साथ जंगल को निकल गए. मोटे कपड़े पहने और तौबह व इस्लाम का इज़हार किया. शौहर से बीबी और माँ से बच्चे अलग हो गए और सब ने अल्लाह की बारगाह में रोना और गिड़गिड़ाना शुरू किया और कहा, जो यूनुस अलैहिस्सलाम लाए, हम उस पर ईमान लाए और सच्ची तौबह की. जो अत्याचार उनसे हुए थे उनको दूर किया, पराए माल वापस किये, यहाँ तक कि अगर एक पत्थर दूसरे का किसी की बुनियाद में लग गया था तो बुनियाद उखाड़ कर पत्थर निकाल दिया और वापस कर दिया . और अल्लाह तआला से सच्चे दिल से मग़फ़िरत की दुआएं कीं. अल्लाह तआला ने उनपर रहम किया. दुआ क़ुबूल फ़रमाई, अज़ाब उठा दिया गया. यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जब अज़ाब उतरने के बाद फ़िरऔन का ईमान और उसकी तौबह क़ुबूल न हुई, क़ौमे यूनुस की तौबह क़ुबूल फ़रमाने और अज़ाब उठा देने में क्या हिक्मत है. उलमा ने इसके कई जवाब दिये हैं. एक तो यह कि यह ख़ास करम था, हज़रत यूनुस की क़ौम के साथ. दूसरा जवाब यह है कि फ़िरऔन अज़ाब में जकड़े जाने के बाद ईमान लाया, जब ज़िन्दगी की उम्मीद ही बाक़ी न रही और क़ौमे यूनुस से जब अज़ाब क़रीब हुआ तो वो उसमें मुब्तिला होने से पहले ईमान ले आए और अल्लाह दिलों का हाल जानने वाला है. सच्चे दिल वालों की सच्चाई और आचार का उसको इल्म है.

كُنْتُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِىْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ
يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ
وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا
مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَاۤدَّ
لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ
اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ

किसी शुबह में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[१] हाँ उस अल्लाह को पूजता हूँ जो तुम्हारी जान निकालेगा[२] और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में हूँ (१०४) और यह कि अपना मुंह दीन के लिये सीधा रख सबसे अलग होकर[३] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना (१०५) और अल्लाह के सिवा उसकी बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा, फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू ज़ालिमों में होगा (१०६) और अगर तुझे अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो उसका कोई टालने वाला नहीं उसके सिवा, और अगर तेरा भला चाहे तो उसके फ़ज़्ल (कृपा) का रद करने वाला कोई नहीं[४] उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे, और वही बख़्शने वाला मेहरबान है (१०७) तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आया[५] तो जो राह पर आया वह अपने भले को राह पर आया[६] और जो बहका वह अपने बुरे को बहका,[७] और कुछ में करोड़ा नहीं[८] (१०८) और उसपर

(१३) यानी ईमान लाना पहले से लिखी ख़ुशनसीबी पर निर्भर है. ईमान वही लाएंगे जिनको अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा. इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आएं और सीधी राह इख़्तियार करें. फिर जो ईमान से मेहरूम रह जाते हैं उनका आपको ग़म होता है. इसका आपको ग़म न होना चाहिये, क्योंकि जो पहले से बुरे दिल वाला लिखा हुआ है, वह ईमान न लाएगा.

(१४) और ईमान में ज़बरदस्ती नहीं हो सकती क्योंकि ईमान होता है तस्दीक़ और इक़रार से, और ज़बरदस्ती या दबाव से दिल की तस्दीक़ हासिल नहीं होती.

(१५) उसकी मर्ज़ी से.

(१६) दिल की आँखों से और ग़ौर करो कि.

(१७) जो अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण देता है.

(१८) नूह, आद व समूद वग़ैरह की तरह.

(१९) कि तुम्हारी हलाकत और अज़ाब के. रबीअ बिन अनस ने कहा कि अज़ाब का डर दिलाने के बाद अगली आयत में यह बयान फ़रमाया कि जब अज़ाब होता है तो अल्लाह तआला रसूल को और उनके साथ ईमान लाने वालों को निजात अता फ़रमाता है.

सूरए यूनुस - ग्यारहवाँ रूकू

(१) क्योंकि वह मख़लूक़ है, इबादत के लायक़ नहीं.

(२) क्योंकि वह क़ादिर, मुख़्तार, सच्चा मअबूद, इबादत के लायक़ है.

(३) यानी सच्चे दिल से मूमिन रहो.

(४) वही नफ़ा नुक़सान का मालिक है. सारी सृष्टि उसी की मोहताज है. वही हर चीज़ पर क़ादिर और मेहरबानी व रहमत वाला है. बन्दों को उसकी तरफ़ रग़बत और उसका ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर विश्वास चाहिये और नफ़ा नुक़सान जो कुछ भी है वही.

(५) हक़ से यहाँ क़ुरआन मुराद है या इस्लाम या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(६) क्योंकि इसका लाभ उसी को पहुंचेगा.

(७) क्योंकि उसका वबाल उसी पर है.

(८) कि तुमपर ज़बरदस्ती करूं.

وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

(١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ (٥٢)

اٰيَاتُهَا ١٢٣ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۚ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۚ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

منزل ٣

चलो जो तुमपर वही होती है और सब्र करो[९] यहाँ तक कि अल्लाह हुक्म फ़रमाए[१०] और वह सबसे बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है[११]﴿१०९﴾

११- सूरए हूद

सूरए हूद मक्का में उतरी, इसमें १२३ आयतें और दस रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान, रहमत वाला[१] यह एक किताब है जिसकी आयतें हिकमत(बोध) भरी हैं[२] फिर तफ़सील की गईं[३] हिकमत वाले ख़बरदार की तरफ़ से﴿१﴾ कि बन्दगी न करो मगर अल्लाह की, बेशक मैं तुम्हारे लिये उसकी तरफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूँ﴿२﴾ और यह कि अपने रब से माफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ तौबह करो, तुम्हें बहुत अच्छा बरतना देगा[४] एक ठहराए वादे तक और हर फ़ज़ीलत(प्रतिष्ठा) वाले को[५] उसका फ़ज़्ल(अनुकम्पा) पहुंचाएगा[६] और अगर मुंह फेरो तो तुमपर बड़े दिन[७] के अज़ाब का ख़ौफ़ करता हूँ﴿३﴾ तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है[८] और वह हर चीज़ पर क़ादिर(शक्तिमान) है[९]﴿४﴾ सुनो वो अपने सीने दोहरे करते हैं कि अल्लाह से पर्दा करें[१०] सुनो जिस वक़्त वो अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उनका छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है﴿५﴾

(९) काफ़िरों के झुटलाने और उनके तकलीफ़ पहुंचाने पर.
(१०) मुश्रिकों से जंग करने और किताबियों से जिज़िया लेने का.
(११) कि उसके हुक्म में ग़लती और ख़ता की गुंजायश नहीं और वह बन्दों के खुले छुपे हालात सबका जानने वाला है. उसका फ़ैसला दलील और गवाह का मोहताज नहीं.

११ - सूरए हूद - पहला रूकू

(१) सूरए हूद मक्की है. हसन व अकरमह वग़ैरह मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि आयत *"व अक़िमिस्सलाता तरफ़यिन्नहारे"* के सिवा बाक़ी सारी सूरत मक्की है. मक़ातिल ने कहा कि आयत *"फ़लअल्लका तारिकुन"* और *'उलाइका युमिनूना बिही'* और *"इन्नल हसनाते युज़हिब्नस सैयिआते"* के अलावा सारी सूरत मक्की है. इसमें दस रूकू, १२३ आयतें, एक हज़ार छ सौ कलिमे और नौ हज़ार पांच सौ सड़सठ अक्षर हैं. हदीस में है सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हुज़ूर पर बुढ़ापे के आसार दिखने लगे . फ़रमाया, मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ, सूरए अम्मा यतसाअलून और सूरए इज़श-शम्से कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया (तिरमिज़ी). सम्भवतः यह इस वजह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़यामत और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब किताब होने और जन्नत व दोज़ख़ का बयान है.

(२) जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद हुआ *"तिल्का आयातुल किताबिल हकीम"* (यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं - १०:१) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया *"उहकिमत"* (हिकमत से भरी) के मानी ये हैं कि उनकी नज़्म मोहकम और उस्तुवार की गई. इस सूरत में मानी ये होंगे कि इस में कोई ख़ामी राह पा ही नहीं सकती. वह बिनाए मोहकम है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि कोई किताब इनकी नासिख़ नहीं, जैसा कि ये दूसरी किताबों और शरीअतों की नासिख़ हैं.

(३) और सूरत सूरत और आयत आयत अलग अलग ज़िक्र की गई या अलग अलग उतारी गई या अक़ीदे, अहकाम, नसीहतें, क़िस्से और ग़ैबी ख़बरें इन में तफ़सील और विस्तार से बयान फ़रमाई गई.

(४) लम्बी उम्र और भरपूर राहत व ऐश और बहुत सा रिज़्क़. इससे मालूम हुआ कि सच्चे दिल से तौबह व इस्तग़फ़ार करना उम्र लम्बी होने और आजिविका में विस्तार होने के लिये बेहतरीन अमल है.

(५) जिसने दुनिया में अच्छे कर्म किये हों उसकी फ़रमाँबरदारियाँ और नेकियाँ ज़्यादा हों.

(६) उसको जन्नत में कर्मों के हिसाब से दर्जे अता फ़रमाएगा. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा आयत के मानी यह हैं कि जिसने अल्लाह के लिये अमल किया, अल्लाह तआला आयन्दा के लिये उसे नेक कर्म और फ़रमाँबरदारी की तौफ़ीक़ देता है.

(७) यानी क़यामत के दिन.

(८) आख़िरत में वहाँ नेकियों का इनाम और बुराइयों की सज़ा मिलेगी.

(९) दुनिया में रोज़ी देने पर भी. मौत देने पर भी, मौत के बाद ज़िन्दा करने और सवाब व अज़ाब पर भी.

(१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यह आयत अख़नस बिन शरीक़ के बारे में उतरी. यह बहुत मीठा बोलने वाला व्यक्ति था. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने आता तो बहुत ख़ुशामद की बातें करता और दिल में दुश्मनी छुपाए रखता. इसपर यह आयत उतरी. मानी ये हैं कि वो अपने सीनों में दुश्मनी छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है. एक क़ौल यह है कि कुछ दोहरी प्रवृत्ति वालों की आदत थी कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते, चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें हुज़ूर देख न पाएं. इसपर यह आयत उतरी. बुख़ारी ने इन लोगों में एक हदीस रिवायत की कि मुसलमान पेशाब पाख़ाने और हमबिस्तरी के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे. उनके हक़ में यह आयत उतरी कि अल्लाह से बन्दे का कोई हाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वह शरीअत की इजाज़तों पर अमल करता रहे.

पारा ग्यारह समाप्त
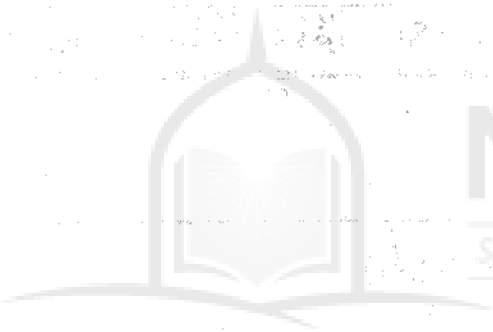
सूरए हूद पहला रूकू जारी

और ज़मीन पर चलने वाला कोई[११] ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़(रोज़ी) अल्लाह के करम के ज़िम्मे पर न हो[१२] और जानता है कि कहाँ ठहरेगा[१३] और कहाँ सुपुर्द होगा[१४] सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब[१५] में है﴿६﴾ और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ दिन में बनाया और उसका अर्श पानी पर था[१६] कि तुम्हें आज़माए[१७] तुम में किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमओ कि बेशक तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि यह[१८] तो नहीं मगर खुला जादू[१९]﴿७﴾ और अगर हम उनसे अज़ाब[२०] कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने रोका है[२१] सुन लो जिस दिन उनपर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेरेगा वही अज़ाब जिसकी हंसी उड़ाते थे﴿८﴾

दूसरा रूकू

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें[१] फिर उसे उससे छीन लें, ज़रूर वह बड़ा नाउम्मीद नाशुक्रा है[२]﴿९﴾ और अगर हम उसे नेमत का मज़ा दें उस मुसीबत के बाद जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराइयाँ मुझ से दूर हुईं, बेशक वह ख़ुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है[३]﴿१०﴾ मगर जिन्होंने सब्र किया और

सूरए हूद - पहला रूकू (जारी)

(११) जानदार हो.
(१२) यानी वह अपनी कृपा से हर जानदार की अजीविका की देखभाल करता है.
(१३) यानी उसके रहने की जगह को जानता है.
(१४) सुपुर्द होने की जगह से, या दफ़्न होने का स्थान मुराद है, या मकान या मौत या क़ब्र.
(१५) यानी लौहे मेहफ़ूज़.
(१६) यानी अर्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़्लूक़ न थी. इससे यह भी मालूम हुआ कि अर्श और पानी आसमानों और ज़मीनों की पैदायश से पहले पैदा फ़रमाए गए.
(१७) यानी आसमान व ज़मीन और उनके बीच सृष्टि को पैदा किया, जिसमें तुम्हारे फ़ायदे और मसलिहत हैं ताकि तुम्हें आज़मायश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार तक़्वा वाला फ़रमाँबरदार है और.
(१८) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बाद उठाए जाने का बयान है यह.
(१९) यानी झूट और धोखा.
(२०) जिसका वादा किया है.
(२१) वह अज़ाब क्यों नहीं उतरता, क्या देर है . काफ़िरों का यह जल्दी करना झुटलाने और हंसी बनाने के तौर पर है.

सूरए हूद - दूसरा रूकू

(१) स्वास्थ्य और अम्न का या आजीविका के विस्तार और धन का.
(२) कि दोबारा इस नेअमत के पाने से मायूस हो जाता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से अपनी आशा तोड़ लेता है और सब्र व रज़ा पर जमा नहीं रहता और पिछली नेअमत की नाशुक्री करता है .
(३) शुक्र गुज़ार होने और नेअमत का हक़ अदा करने के बजाय.

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

अच्छे काम किये[४] उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है﴾११﴿ तो क्या जो वही (देववाणी) तुम्हारी तरफ़ होती है उसमें से कुछ तुम छोड़ दोगे और उसपर दिलतंग होगे[५] इस बिना पर कि वो कहते हैं उनके साथ कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा या उनके साथ कोई फ़रिश्ता आता, तुम तो डर सुनाने वाले हो[६] और अल्लाह हर चीज़ पर मुहाफ़िज़ (रक्षक) है[७]﴾१२﴿ क्या ये कहते हैं कि इन्होंने इसे जी से बना लिया, तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ[८] और अल्लाह के सिवा जो मिल सके[९] सबको बुला लो अगर तुम सच्चे हो[१०]﴾१३﴿ तो ऐ मुसलमानो और वो तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें तो समझ लो कि वह अल्लाह के इल्म ही से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं, तो क्या अब तुम मानोगे[११]﴾१४﴿ जो दुनिया की ज़िन्दगी और आरायश चाहता हो[१२] हम उसमें उनका पूरा फल दे देंगे[१३] और उसमें कमी न देंगे﴾१५﴿ ये हैं वो जिनके लिये आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद

(४) मुसीबत पर साबिर और नेअमत पर शाकिर रहे.

(५) तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़हाम नकार के अर्थ में है यानी आपकी तरफ़ जो वही होती है वह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिल तंग न हो. यह तबलीग़े रिसालत की ताकीद है, हालांकि अल्लाह तआला जानता है कि उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी नबुव्वत का हक़ अदा करने में कमी करने वाले नहीं हैं और उसने उनको इससे मअसूम फ़रमाया है. इस ताकीद में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली भी है और काफ़िरों की मायूसी भी. उनका हंसी उड़ाना नबुव्वत और तबलीग़ के काम में अड़चन नहीं हो सकता. अब्दुल्लाह बिन उमैय्या मख़्ज़ूमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आपका ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उसने आप पर ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा या आपके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जो आपकी रिसालत की गवाही देता. इसपर यह आयत उतरी.

(६) तुम्हें क्या परवाह, अगर काफ़िर न मानें और हंसी बनाएं.

(७) मक्के के काफ़िर क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत.

(८) क्योंकि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो इस जैसा बनाना तुम्हारी क्षमता से बाहर न होगा. तुम अरब हो, अच्छी और साफ़ ज़बान वाले हो, कोशिश करो.

(९) अपनी मदद के लिये.

(१०) इसमें कि यह कलाम इन्सान का बनाया हुआ है.

(११) और यक़ीन रखोगे कि यह अल्लाह की तरफ़ से है यानी क़ुरआन का चमत्कार और कमाल देख लेने के बाद ईमान और इस्लाम पर जमे रहो.

(१२) और अपनी कायरता से आख़िरत पर नज़र न रखता हो.

(१३) और जो कर्म उन्होंने दुनिया की चाह के लिये किये हैं उनका बदला सेहत व दौलत, रिज़्क़ में विस्तार और औलाद में बहुतात वग़ैरह से दुनिया ही में पूरा कर देंगे.

(१४) ज़िहाक ने कहा कि यह आयत मुश्रिकों के बारे में है कि अगर वो दूसरों के काम आएं या मोहताजों को दें या किसी परेशान हाल की मदद करें या इस तरह कि कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआला रिज़्क़ में विस्तार वग़ैरह से उनके कर्मों का बदला दुनिया ही में दे देता है और आख़िरत में उनके लिये कोई हिस्सा नहीं. एक क़ौल यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी जो आख़िरत के सवाब पर तो विश्वास नहीं रखते थे और जिहादों में ग़नीमत का माल हासिल करने के लिये शामिल होते थे.

(१५) वह उसकी मिस्ल हो सकता है जो दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी आरायश चाहता हो ऐसा नहीं. इन दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है. रौशन दलील से वह अक़्ली दलील मुराद है जो इस्लाम की सच्चाई को प्रमाणित करे और उस व्यक्ति से जो अपने रब की तरफ़

يَعْمَلُوْنَ ۝ أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ
أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ
فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ أُولٰٓئِكَ
يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ
لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا

हुए जो उनके कर्म थे[१४] ﴾१६﴿ तो क्या वो जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो[१५] और उसपर अल्लाह की तरफ़ से गवाह आए[१६] और इस से पहले मूसा की किताब[१७] पेशवा और रहमत, वो उसपर[१८] ईमान लाते हैं और जो उसका इन्कारी हो सारे गिरोहों में[१९] तो आग उसका वादा है, तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ इस में शक न हो, बेशक वह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते ﴾१७﴿ और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[२०] वो अपने रब के हुज़ूर पेश किये जाएंगे[२१] और गवाह कहेंगे ये हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला था, अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की लअनत[२२] ﴾१८﴿ जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें कजी चाहते हैं और वही आख़िरत के इन्कारी हैं ﴾१९﴿ वो थकाने वाले नहीं ज़मीन में[२३] और न अल्लाह से अलग उनके कोई हिमायती[२४] उन्हें अज़ाब पर अज़ाब होगा[२५]

से रौशन दलील पर हो, वो यहूदी मुराद हैं जो इस्लाम लाए जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम.

(१६) और उसकी सेहत की गवाही दे. यह गवाह क़ुरआन शरीफ़ है.

(१७) यानी तौरात.

(१८) यानी क़ुरआन पर.

(१९) चाहे कोई भी हों. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसके दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद की जान है, इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी, जिसको भी मेरी ख़बर पहुंचे और वह मेरे दीन पर ईमान लाए बिना मर जाए, वह ज़रूर जहन्नमी है.

(२०) और उसके लिये शरीक और औलाद बताए. इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआला पर झूट बोलना ज़ुल्म है.

(२१) क़यामत के दिन, और उनसे कर्म पूछे जाएंगे और नबियों और फ़रिश्तों की उनपर गवाही ली जाएगी.

(२२) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत के दिन काफ़िरों और दोग़ली प्रवृत्ति वालों को सारी सृष्टि के सामने कहा जाएगा कि ये वो हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूठ बोला, ज़ालिमों पर ख़ुदा की लअनत. इस तरह वो सारी सृष्टि के सामने रुस्वा किये जाएंगे.

(२३) अल्लाह को . अगर वह उनपर अज़ाब करना चाहे, क्योंकि वो उसके क़ब्ज़े और उसकी मिल्क में हैं, न उससे भाग सकते हैं, न बच सकते हैं.

(२४) कि उनकी मदद करें और उन्हें इसके अज़ाब से बचाएं.

(२५) क्योंकि उन्होंने लोगों को ख़ुदा की राह से रोका और मरने के बाद उठने का इन्कार किया.

كَانُوا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ
فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ
كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ
مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى
قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا
اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ
الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا
بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ
اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ
فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ

वो न सुन सकते थे और न देखते[२६]﴾२०﴿ वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं और उनसे खोई गईं जो बातें जोड़ते थे﴾२१﴿ चाहे अनचाहे वही आख़िरत में सबसे ज़्यादा नुक़सान में हैं[२७]﴾२२﴿ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ़ रूजू लाए वो जन्नत वाले हैं वो उसमें हमेशा रहेंगे﴾२३﴿ दोनों फ़रीक़ (पक्षों)[२८] का हाल ऐसा है जैसे एक अंधा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता[२९] क्या उन दोनों का हाल एक सा है[३०] तो क्या तुम ध्यान नहीं करते﴾२४﴿

तीसरा रूकू

और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा[१] कि मैं तुम्हारे लिये साफ़ डर सुनाने वाला हूँ﴾२५﴿ कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुमपर एक मुसीबत वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ[२]﴾२६﴿ तो उसकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं[३] और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी (अनुकरण) किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने[४] सरसरी नज़र से[५] और हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते[६] बल्कि हम तुम्हें[७] झूटा ख़याल करते हैं﴾२७﴿ बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की

(२६) क़तादा ने कहा कि वो सत्य सुनने से बहरे हो गए, तो कोई ख़ैर की बात सुनकर नफ़ा नहीं उठाते और न वह क़ुदरत की निशानियाँ देखकर फ़ायदा उठाते हैं.

(२७) कि उन्होंने जन्नत की जगह जहन्नम को इख़्तियार किया.

(२८) यानी काफ़िर और मूमिन.

(२९) काफ़िर उसकी तरह है जो न देखे न सुने. यह दूषित है. और मूमिन उसकी तरह है जो देखता भी है और सुनता है. वह सम्पूर्ण है. सत्य और असत्य की पहचान रखता है.

(३०) हरगिज़ नहीं.

सूरए हूद - तीसरा रूकू

(१) उन्होंने क़ौम से फ़रमाया.

(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चालीस साल के बाद नबी बनाए गए और नौ सौ पचास साल अपनी क़ौम को दावत फ़रमाते रहे और तूफ़ान के बाद साठ बरस दुनिया में रहे, तो आपकी उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई . इसके अलावा उम्र शरीफ़ के बारे में और भी क़ौल हैं. (ख़ाज़िन)

(३) इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें पड़ कर. इस्लाम में भी बहुत से बदनसीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बशर कहते हैं और हमसरी और बराबरी का फ़ासिद ख़याल रखते हैं. अल्लाह तआला उन्हें गुमराही से बचाए.

(४) कमीनों से मुराद उनकी, वो लोग थे जो उनकी नज़र में छोटे पेशे रखते थे. हक़ीक़त यह है कि उनका यह क़ौल ख़ालिस जिहालत था, क्योंकि इन्सान का मर्तबा दीन के पालन और रसूल की फ़रमाँबरदारी से है. माल, मन्सब और पेशे को इसमें दख़ल नहीं. दीनदार, नेक सीरत, पेशावर को हिक़ारत से देखना और तुच्छ समझना जिहालत का काम है.

(५) यानी बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के.

(६) माल और रियासत में. उनका यह क़ौल भी जिहालत भरा था, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक बन्दे के लिये ईमान और फ़रमाँबरदारी बुज़ुर्गी का कारण है, न कि माल और रियासत.

(७) नबुव्वत के दावे में और तुम्हारे मानने वालों को इसकी तस्दीक़ में.

اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ
لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝٢٨ وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ۝٢٩ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ
طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣٠ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ
خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ
مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ
يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ
اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣١ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا
فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٣٢ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ

तरफ़ से दलील पर हूँ[८] और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख़्शी[९] तो तुम उससे अंधे रहे, क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो[१०]﴾२८﴿ और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इसपर[११] माल नहीं मांगता[१२] मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं[१३] बेशक वो अपने रब से मिलने वाले हैं[१४] लेकिन मैं तुमको निरे जाहिल लोग पाता हूँ[१५]﴾२९﴿ और ऐ क़ौम मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा, तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं﴾३०﴿ और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब (अज्ञात) जान लेता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ[१६] और मैं उन्हें नहीं कहता जिनको तुम्हारी निगाहें हक़ीर (तुच्छ) समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा, अल्लाह ख़ूब जानता है जो उनके दिलों में है[१७] ऐसा करूं[१८] तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूँ[१९]﴾३१﴿ बोले ऐ नूह हम से झगड़े और बहुत ही झगड़े तो लेआओ जिसका[२०] हमें वादा दे रहे हो अगर तुम सच्चे हो﴾३२﴿ बोला वह तो अल्लाह तुमपर लाएगा अगर चाहे और तुम

(८) जो मेरे दावे की सच्चाई पर गवाह हो.

(९) यानी नबुव्वत अता की.

(१०) और हुज्जत या तर्क को नापसन्द रखते हो.

(११) यानी तबलीग़े रिसालत पर.

(१२) कि तुमपर इसका अदा करना बोझ हो.

(१३) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उनकी उस बात के जवाब में फ़रमाया था जो लोग कहते थे कि ऐ नूह, नीचे लोगों को अपनी बैठक से निकाल दीजिये ताकि हमें आपकी मजलिस में बैठने से शर्म न आए.

(१४) और उसके क़ुर्ब से फ़ायज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूँ.

(१५) ईमानदारों को नीच कहते हो और उनकी क़द्र नहीं करते और नहीं जानते कि वो तुम से बेहतर है.

(१६) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने आपकी नबुव्वत में तीन संदेह किये थे. एक शुबह तो यह कि *''मा नरा लकुम अलैना मिन फ़दलिन''* कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते . यानी तुम माल दौलत में हमसे ज़्यादा नहीं हो. इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया *''ला अक़ूलो लकुम इन्दी ख़ज़ाइनुल्लाह''* यानी मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं. तो तुम्हारा यह ऐतिराज़ बिल्कुल बे बुनियाद है . मैंने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुनिया की दौलत की तुम को आशा नहीं दिलाई और अपनी दावत को माल के साथ नहीं जोड़ा. फिर तुम यह कैसे कह सकते हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते. और तुम्हारा यह ऐतिराज़ बिल्कुल बेहूदा है. दूसरा शुबह क़ौमे नूह ने यह किया था *''मा नराकत तबअका इल्लल लज़ीना हुम अराज़िलुना बादियर राये''* यानी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने. सरसरी नज़र से मतलब यह था कि वो भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मूमिन हैं, बातिन में नहीं. इसके जवाब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूँ तो मेरे अहकाम ग़ैब पर आधारित हैं ताकि तुम्हें यह ऐतिराज़ करने का मौक़ा होता. जब मैंने यह कहा ही नहीं तो ऐतिराज़ बे महल है और शरीअत में ज़ाहिर का ऐतिबार है. लिहाज़ा तुम्हारा ऐतिराज़ बिल्कुल बेजा है. साथ ही *''ला अअलमुल ग़ैबा''* फ़रमाने में क़ौम पर एक लतीफ़ तअरीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म लगाना उसका काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो. मैंने तो इसका दावा नहीं किया, जबकि मैं नबी हूँ, तुम किस तरह कहते हो कि वो दिल से ईमान नहीं लाए. तीसरा संदेह इस क़ौम का यह था कि *''मा नराका इल्ला बशरम मिस्लुना''* यानी हम तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं. इसके जवाब में फ़रमाया कि मैं ने अपनी दावत को अपने फ़रिश्ता होने पर आधारित नहीं किया था कि तुम्हें यह ऐतिराज़ का मौक़ा मिलता कि जताते तो थे वह अपने आप को फ़रिश्ता और थे बशर. लिहाज़ा तुम्हारा यह ऐतिराज़ भी झूटा है.

(१७) नेकी या बुराई, सच्ची वफ़ादारी या दोहरी प्रवृत्ति.

شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ
اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ
اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۭ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ۭ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ
وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ
اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا
تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ
بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۣ وَكُلَّمَا
مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ قَالَ
اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا
تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ۭ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ
يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا

थका न सकोगे[२१]﴾३३﴿ और तुम्हें मेरी नसीहत नफ़ा न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूँ जबकि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे, वह तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ फिरोगे[२२]﴾३४﴿ क्या ये कहते हैं कि इन्होंने उसे अपने जी से बना लिया[२३] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा तो मेरा गुनाह मुझ पर है[२४] और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूँ﴾३५﴿

चौथा रूकू

और नूह को वही हुई कि तुम्हारी क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उसपर जो वो करते हैं[१]﴾३६﴿ और किश्ती बनाओ हमारे सामने[२] और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न करना[३]वो ज़रूर डुबाए जाएंगे[४]﴾३७﴿ और नूह किश्ती बनाता है, और जब उसकी क़ौम के सरदार उसपर गुज़रते उसपर हंसते[५] बोले अगर तुम हमपर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुमपर हंसेंगे[६] जैसा तुम हंसते हो[७]﴾३८﴿ तो अब जान जाओगे किसपर आता है वह अज़ाब कि उसे रूसवा करे[८] और उतरता है वह अज़ाब जो हमेशा रहे[९]﴾३९﴿ यहाँ तक कि जब हमारा

(१८) यानी अगर मैं उनके ज़ाहिरी ईमान को झुटलाकर उनके बातिन पर इल्ज़ाम लगाऊं और उन्हें निकाल दूँ.
(१९) और अल्लाह का शुक्र है कि मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूँ तो ऐसा कभी न करूंगा.
(२०) अज़ाब .
(२१) उसको अज़ाब करने से, यानी न उस अज़ाब को रोक सकोगे और न उससे बच सकोगे.
(२२) आख़िरत में वही तुम्हारे अअमाल का बदला देगा.
(२३) और इस तरह ख़ुदा के कलाम और उसे मानने से बचते हैं और उसके रसूल पर लांछन लगाते हैं और उनकी तरफ़ झूट बाँधते हैं जिनकी सच्चाई खुले प्रमाणों और मज़बूत तर्कों से साबित हो चुकी है, लिहाज़ा अब उसने.
(२४) ज़रूर इसका वबाल आएगा लेकिन अल्लाह के करम से मैं सच्चा हूँ तो तुम समझ लो कि तुम्हारे झुटलाने और इन्कार का वबाल तुम पर पड़ेगा.

सूरए हूद - चौथा रूकू

(१) यानी कुफ़्र और आपको झुटलाना और आपको कष्ट देना, क्योंकि अब आपके दुश्मनों से बदला लेने का वक़्त आगया.
(२) हमारी हिफ़ाज़त में हमारी तालीम से.
(३) यानी उनकी शफ़ाअत और अज़ाब दूर होने की दुआ न करना, क्योंकि उनका डूबना लिख दिया गया है.
(४) हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से साल के दरख़्त बोए. बीस साल में ये दरख़्त तैयार हुए . इस अर्से में कोई बच्चा पैदा न हुआ. इससे पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वो बालिग़ हो गए और उन्होंने भी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दावत क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और हज़रत नूह किश्ती बनाने में मशग़ूल हुए.
(५) और कहते ऐ नूह क्या कर रहे हो, आप फ़रमाते ऐसा मकान बनाता हूँ जो पानी पर चले. यह सुनकर हंसते, क्योंकि आप किश्ती जंगल में बनाते थे, जहाँ दूर दूर तक पानी न था. वो लोग मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में यह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे, अब बढ़ई हो गए.
(६) तुम्हें हलाक होता देखकर.
(७) किश्ती देखकर. रिवायत है कि यह किश्ती दो साल में तैयार हुई. इसकी लम्बाई तीन सौ गज़, चौड़ाई पचास गज़, ऊंचाई तीस गज़ थी, (इस में और भी कथन हैं) इस किश्ती में तीन दर्जे बनाए गए थे. निचले दर्जे में जानवर और दरिन्दे, बीच के तबक़े में चौपाए वग़ैरह, और ऊपर के तबक़े में ख़ुद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और आपके साथी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ
كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾
وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ
اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ
كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ
يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾
قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ
ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ
الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

منزل ٣

हुक्म आया(१०) और तनूर उबला(११) हमने फ़रमाया किश्ती में सवार करले हर जिन्स(नस्ल) में से एक जोड़ा नर और मादा और जिनपर बात पड़ चुकी है(१२) उनके सिवा अपने घरवालों और बाक़ी मुसलमानों को और उसके साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े(१३)﴾४०﴿ और बोला इसमें सवार हो(१४) अल्लाह के नाम पर इसका चलना और इसका ठहरना(१५) बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है﴾४१﴿ और वह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़(१६) और नूह ने अपने बेटे को पुकारा और वह उससे किनारे था(१७) ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सवार होजा और काफ़िरों के साथ न हो(१८)﴾४२﴿ बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूँ वह मुझे पानी से बचा लेगा, कहा आज अल्लाह के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिसपर वह रहम करे, और उनके बीच में मौज आड़े आई तो वह डूबतों में रह गया(१९)﴾४३﴿ और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और आसमान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुआ और किश्ती(२०) जूदी पहाड़ पर ठहरी(२१) और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग﴾४४﴿ और नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी

जसदे मुबारक, जो औरतों और मर्दों के बीच हायल था, और खाने का सामान था. पक्षी भी ऊपर के ही तबक़े में थे. (ख़ाज़िन व मदारिक)

(८) दुनिया में और डूबने का अज़ाब है.

(९) यानी आख़िरत का अज़ाब.

(१०) अज़ाब व हलाकत का.

(११) और पानी ने इसमें से जोश मारा. तन्दूर से, या ज़मीन का ऊपरी हिस्सा मुराद है, या यही तन्दूर जिसमें रोटी पकाई जाती है. इसमें भी कुछ क़ौल हैं. एक यह है कि वह तन्दूर पत्थर का था, हज़रत हव्वा का, जो आपको तर्के में पहुंचा था, और वह या शाम में था, या हिन्द में. तन्दूर का जोश मारना अज़ाब आने की निशानी थी.

(१२) यानी उनके हलाक का हुक्म हो चुका है. और उन से मुराद आपकी बीबी वाइला जो ईमान न लाई थी और आपका बेटा कनआन है. चुनांचे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन सबको सवार किया . जानवर आपके पास आते थे और आपका दायाँ हाथ नर पर और बायां मादा पर पड़ता था और आप सवार करते जाते थे.

(१३) मक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द औरत बहत्तर थे. इसमें और कथन भी हैं. सही संख्या अल्लाह जानता है. उनकी तादाद और किसी सही हदीस में नहीं आई है.

(१४) यह कहते हुए कि ......

(१५) इसमें तालीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू करे ताकि उस काम में बरकत हो और वह भलाई का कारण बने. ज़िहाक ने कहा कि जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चाहते थे कि किश्ती चले तो बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे. किश्ती चलने लगती थी, और जब चाहते थे कि ठहर जाए, बिस्मिल्लाह फ़रमाते थे, ठहर जाती थी.

(१६) चालीस दिन रात आसमान से वर्षा होती रही और ज़मीन से पानी उबलता रहा, यहाँ तक कि सारे पहाड़ डूब गए.

(१७) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से अलग था, आपके साथ सवार न हुआ था.

(१८) कि हलाक हो जाएगा. यह लड़का दोग़ली प्रवृत्ति का था . अपने बाप पर ख़ुद को मुसलमान ज़ाहिर करता था और अन्दर अन्दर काफ़िरों के साथ मिला हुआ था. (हुसैनी)

(१९) जब तूफ़ान अपनी चरम सीमा पर पहुंचा और काफ़िर डूब चुके तो अल्लाह का हुक्म आया.

(२०) छः महीने सारी धरती की परिक्रमा यानी तवाफ़ करके.

(२१) जो मूसल या शाम की सीमाओं में स्थित है. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम किश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुहर्रम को किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी. तो आपने उसके शुक्र का रोज़ा रखा और अपने सारे साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया.

مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ
الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ
اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ
وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾
قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ
يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ
الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ
وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

منزل ٣

तो मेरा घर वाला है(२२) और बेशक तेरा वादा सच्चा है और तू सबसे बढ़कर हुक्म वाला(२३)﴾४५﴿ फ़रमाया ऐ नूह वह तेरे घरवालों में नहीं(२४) बेशक उसके काम बड़े नालायक़ हैं तो मुझ से वह बात न मांग जिसका तुझे इल्म नहीं(२५) मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूँ कि नादान न बन﴾४६﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि तुझसे वह चीज़ माँगू जिसका मुझे इल्म नहीं, और अगर तू मुझे न बख़्शे और रहम न करे तो मैं ज़ियाँकार(नुक़सान वाला) हो जाऊं﴾४७﴿ फ़रमाया गया ऐ नूह किश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतों के साथ(२६) जो तुझपर है और तेरे साथ के कुछ गिरोहों पर(२७) और कुछ गिरोह हैं जिन्हें हम दुनिया बरतने देंगे(२८) फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा(२९)﴾४८﴿ ये ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी तरफ़ वही(अल्लाह का कलाम) करते हैं(३०) इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस(३१) से पहले तो सब्र करो(३२), बेशक भला अंजाम परहेज़गारों का(३३)﴾४९﴿

पाँचवां रूकू

और आद की तरफ़ उनके हम क़ौम हूद को(१) कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो(२) उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद

(२२) और तूने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की निजात का वादा फ़रमाया.
(२३) तो इसमें क्या हिकमत है. शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का बेटा कनआन मुनाफ़िक़ था और आपके सामने ख़ुद को ईमान वाला ज़ाहिर करता था. अगर वह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो अल्लाह तआला से उसकी निजात की दुआ न करते. (मदारिक)
(२४) इससे साबित हुआ कि नसब के रिश्ते से दीन का रिश्ता ज़्यादा मज़बूत है.
(२५) कि वह मांगने के क़ाबिल है या नहीं.
(२६) इन बरकतों से आपकी सन्तान और आपके अनुयाइयों की कसरत और बहुतात मुराद है कि बहुत से नबी और दीन के इमाम आपकी पाक नस्ल से हुए. उनकी निस्बत फ़रमाया कि ये बरकतें...
(२७) मुहम्मद बिन कअब ख़ुज़ाई ने कहा कि इन गिरोहों में क़यामत तक होने वाला हर मूमिन दाख़िल है.
(२८) इससे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बाद पैदा होने वाले काफ़िर गिरोह मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआला उनकी मीआदों तक फ़राख़ी, ऐश और रिज़्क़ में बुहतात अता फ़रमाएगा.
(२९) आख़िरत में.
(३०) ये सम्बोधन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाया.
(३१) ख़बर देने.
(३२) अपनी क़ौम की तकलीफ़ों पर, जैसा कि नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम की तकलीफ़ों पर सब्र किया.
(३३) कि दुनिया में कामयाब और विजयी और आख़िरत में इनाम और अच्छा बदला पाए हुए.

सूरए हूद - पाँचवां रूकू

(१) नबी बनाकर भेजा. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को "अख़" नसब के ऐतिबार से कहा गया है इसी लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैहे ने इस शब्द का अनुवाद हम क़ौम किया.
(२) उसकी तौहीद को मानते रहो . उसके साथ किसी को शरीक न करो.

مُفْتَرُوْنَ ۝٥٠ يٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٥١ وَ يٰقَوْمِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ
مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝٥٢ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٣
اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ
قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِكُوْنَ ۝٥٤ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا
تُنْظِرُوْنِ ۝٥٥ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ
مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٦ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

नहीं तुम तो निरे मुफ़तरी (झूठे) हो[३] ﴿५०﴾ ऐ क़ौम मैं उसपर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरी मज़दूरी तो उसीके ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया[४] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[५] ﴿५१﴾ और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से माफ़ी चाहो[६] फिर उसकी तरफ़ रूजू लाओ तुमपर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुममें जितनी शक्ति है उससे और ज़्यादा देगा[७] और जुर्म करते हुए रूगर्दानी (विरोध) न करो[८] ﴿५२﴾ बोले ऐ हूद तुम कोई दलील लेकर हमारे पास न आए[९] और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं ﴿५३﴾ हम तो यही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की तुम्हें बुरी झपट पहुंची[१०] कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूँ उन सब से जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा उसका शरीक ठहराते हो ﴿५४﴾ तुम सब मिलकर मेरा बुरा चाहो[११] फिर मुझे मुहलत न दो[१२] ﴿५५﴾ मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब, कोई चलने वाला नहीं[१३] जिसकी चोटी उसकी क़ुदरत के क़ब्ज़े में न हो[१४] बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर मिलता है ﴿५६﴾ फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़ लेकर भेजा गया[१५] और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों

(३) जो बुतों को ख़ुदा का शरीक बताते हो.

(४) जितने रसूल तशरीफ़ लाए सबने अपनी क़ौमों से यही फ़रमाया और नसीहत ख़ालिस वही है जो किसी लालच से न हो.

(५) इतना समझ सको कि जो केवल बेग़रज़ नसीहत करता है वह यक़ीनन शुभचिंतक और सच्चा है. बातिल वाला जो किसी को गुमराह करता है, ज़रूर किसी न किसी मतलब और किसी न किसी उद्देश्य से करता है. इससे सच झूठ में आसानी से पहचान की जा सकती है.

(६) ईमान लाकर, जब आद क़ौम ने हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की दावत क़ुबूल न की तो अल्लाह तआला ने उनके कुफ़्र के कारण तीन साल तक बारिश बन्द करदी और बहुत सख़्त दुष्काल नमूदार हुआ और उनकी औरतों को बांझ कर दिया. जब ये लोग बहुत परेशान हुए तो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने वादा फ़रमाया कि अगर वो अल्लाह पर ईमान लाएं और उसके रसूल की तस्दीक़ करें और उसके समक्ष तौबह व इस्तग़फ़ार करें तो अल्लाह तआला बारिश भेजेगा और उनकी ज़मीनों को हरा भरा करके ताज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाएगा और क़ुव्वत और औलाद देगा. हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहो अन्हो एक बार अमीरे मुआविया के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से अमीर मुआविया के एक नौकर ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूँ मगर मेरे कोई औलाद नहीं है मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिससे अल्लाह मुझे औलाद दे. आपने फ़रमाया कि रोज़ाना इस्तग़फ़ार पढ़ा करो . उसने इस्तग़फ़ार की यहाँ तक कसरत की कि रोज़ाना सात सौ बार इस्तग़फ़ार पढ़ने लगा. इसकी बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए. यह ख़बर हज़रत मुआविया को हुई तो उन्होंने उस शख़्स से फ़रमाया कि तूने हज़रत इमाम से यह क्यों न दरियाफ़्त किया कि यह अमल हुज़ूर ने कहाँ से हासिल फ़रमाया. दूसरी बार जब उस शख़्स की हाज़िरी इमाम की ख़िदमत में हुई तो उसने यह दरियाफ़्त किया. इमाम ने फ़रमाया कि तू ने हज़रत हूद का क़ौल नहीं सुना जो उन्होंने फ़रमाया ***"यज़िदकुम क़ुव्वतन इला क़ुव्वतिकुम"*** और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का यह इरशाद ***"युमदिदकुम बि अमवालिंव व बनीन"***. रिज़्क़ में कसरत और औलाद पाने के लिये इस्तग़फ़ार का बहुतात के साथ पढ़ना क़ुरआनी अमल है.

(७) माल और औलाद के साथ.

(८) मेरी दावत से.

(९) जो तुम्हारे दावे की सच्चाई का प्रमाण है. और यह बात उन्होंने बिल्कुल ग़लत और झूट कही थी. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें जो चमत्कार दिखाए थे उन सब से इन्कार कर बैठे.

(१०) कभी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो, इसलिये उन्होंने तुम्हें दीवाना कर दिया. मतलब यह है कि अब जो कुछ कहते हो यह

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۵۷﴾
وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾
وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ
وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا
رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ
اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ
اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ
فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ
مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ

منزل ۳

को ले आएगा[१६] और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे[१७] बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है[१८]﴿५७﴾ और जब हमारा हुक्म आया हमने हूद और उसके साथ के मुसलमानों को[१९] अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया[२०] और उन्हें[२१] सख़्त अज़ाब से निजात दी﴿५८﴾ और ये आद हैं[२२] कि अपने रब की आयतों से इन्कारी हुए और उसके रसूलों की नाफ़रमानी की और हर बड़े सरकश (नाफ़रमान) हटधर्म के कहने पर चले﴿५९﴾ और उनके पीछे लगी इस दुनिया में लअनत और क़यामत के दिन, सुन लो बेशक आद अपने रब से इन्कारी हुए, अरे दूर हों आद हूद की क़ौम﴿६०﴾

छटा रूकू

और समूद की तरफ़ उनके हम क़ौम सालेह को[१] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[२] उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं[३] उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया[४] और उसमें तुम्हें बसाया[५] तो उससे माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रूजू लाओ,बेशक मेरा रब क़रीब है दुआ सुनने वाला﴿६१﴾ बोले ऐ सालेह इससे पहले तो तुम हम में होनहार मालूम होते थे[६] क्या तुम हमें इससे मना करते हो कि अपने बाप दादा के मअबूदों को पूजें और बेशक जिस बात की तरफ़ हमें बुलाते हो हम उससे एक बड़े धोखा डालने

दीवानगी की बातें हैं.

(११) यानी तुम और वो जिन्हें तुम मअबूद सझते हो, सब मिलकर मुझे नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करो.

(१२) मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मअबूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं है और मुझे तुम्हारी शानो शौकत और क़ुव्वत से कुछ डर नहीं. जिन को तुम मअबूद कहते हो, वो पत्थर बेजान हैं, न किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं न नुक़सान. उनकी क्या हक़ीक़त कि वो मुझे दीवाना बना सकते. यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का चमत्कार है कि आपने एक ज़बरदस्त और ताक़तवर क़ौम से, जो आपके ख़ून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस तरह के कलिमात फ़रमाए और कुछ भी ख़ौफ़ न किया और वह क़ौम अत्यन्त दुश्मनी के बावुजूद आपको तकलीफ़ न पहुंचा सकी.

(१३) इसी में बनी आदम और हैवान सब आगए.

(१४) यानी वह सबका मालिक है और सब पर ग़ालिब और क़ुदरत वाला और क्षमता वाला है.

(१५) और हुज्जत साबित हो चुकी .

(१६) यानी अगर तुमने ईमान से मुंह फेरा और जो अहकाम मैं तुम्हारी तरफ़ लाया हूँ उन्हें क़ुबूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक कर देगा और तुम्हारे बजाय एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे इलाक़ों और तुम्हारे मालों का मालिक बना देगा, जो उसकी तौहीद में अक़ीदा रखते हों और उसकी इबादत करें.

(१७) क्योंकि वह इस से पाक है कि उसे कोई तकलीफ़ पहुंचे लिहाज़ा तुम्हारे मुंह फेरने का जो नुक़सान है वह तुम्हीं को पहुंचेगा.

(१८) और किसी की कहनी करनी उससे छुपी नहीं. जब क़ौमे हूद ने नसीहत क़ुबूल न की तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उनके अज़ाब का हुक्म लागू हुआ.

(१९) जिनकी संख्या चार हज़ार थी.

(२०) और क़ौमे आद को हवा के अज़ाब से हलाक कर दिया.

(२१) यानी जैसे मुसलमानों को दुनिया के अज़ाब से बचाया ऐसे ही आख़िरत के.

(२२) यह सम्बोधन है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को और "तिल्का" इशारा है क़ौमे आद की क़ब्रों और उनके मकानों वग़ैरह की तरफ़. मक़सद यह है कि ज़मीन में चलो उन्हें देखो और सबक़ पकड़ो.

اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ
عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ
يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ
غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ
اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝ فَعَقَرُوْهَا
فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ
وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا
صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ
خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝
وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ
ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝

वाले शक में हैं﴿६२﴾ बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से रहमत बख़्शी(७) तो मुझे उससे कौन बचाएगा और मैं उसकी नाफ़रमानी करूं(८) तो तुम मुझे सिवा नुक़सान के कुछ न बढ़ाओगे(९)﴿६३﴾ और ऐ मेरी क़ौम यह अल्लाह का नाक़ा(ऊंटनी)है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुरी तरह हाथ न लगाना कि तुमको नज़दीक अज़ाब पहुंचेगा(१०)﴿६४﴾ तो उन्होंने(११) उसकी कूंचें काटीं तो सालेह ने कहा अपने घरों में तीन दिन और बरत लो(१२) यह वादा है कि झूटा न होगा(१३)﴿६५﴾ फिर जब हमारा हुक्म आया हमने सालेह और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर(१४) बचा लिया और उस दिन की रूसवाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी(शक्तिशाली) इज़्ज़त वाला है﴿६६﴾ और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया(१५) तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए﴿६७﴾ मानो कभी यहाँ बसे ही न थे, सुन लो बेशक समूद अपने रब से इन्कारी हुए, अरे लअनत हो समूद पर﴿६८﴾

सूरए हूद - छटा रूकू

(१) भेजा तो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन से.

(२) और उसकी वहदानियत को मानो.

(३) सिर्फ़ वही इबादत के लायक़ है, क्योंकि.

(४) तुम्हारे दादा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इससे पैदा करके और तुम्हारी नस्ल की अस्ल नुत्फ़ों के माद्दों को इस से बनाकर.

(५) और ज़मीन को तुमसे आबाद किया. ज़िहाक ने *''इस्तअमरकुम''* के मानी ये बयान किये हैं कि तुम्हें लम्बी उम्रें दीं यहाँ तक कि उनकी उम्रें तीन सौ बरस से लेकर हज़ार बरस तक की हुईं.

(६) और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्योंकि आप कमज़ोरों की मदद करते थे. फ़क़ीरों पर सख़ावत फ़रमाते थे. जब आपने तौहीद की दावत दी और बुतों की बुराइयाँ बयान कीं तो क़ौम की उम्मीदें आपसे कट गईं और कहने लगे.

(७) हिक्मत और नबुव्वत अता की.

(८) रिसालत की तबलीग़ और बुत परस्ती से रोकने में.

(९) यानी मुझे तुम्हारे घाटे का अनुभाव और ज़्यादा होगा.

(१०) क़ौमे समूद ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से चमत्कार तलब किया था (जिसका बयान सूरए अअराफ़ में हो चुका है) आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह के हुक्म से पत्थर से ऊंटनी पैदा हुई. यह ऊंटनी उनके लिये निशानी और चमत्कार था. इस आयत में उस ऊंटनी के बारे में अहकाम इरशाद फ़रमाए गए कि उसे ज़मीन में चरने दो और कोई तकलीफ़ न पहुंचाओ. वरना दुनिया ही में अज़ाब में जकड़े जाओगे और मोहलत न पाओगे.

(११) अल्लाह के हुक्म का विरोध किया और बुधवार के.

(१२) यानी जुमुए तक जो कुछ दुनिया का ऐश करना है करलो. शनिवार को तुमपर अज़ाब आएगा. पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे पीले हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़, यानी जुमुए को काले, और सनीचर को अज़ाब नाज़िल हो जाएगा.

(१३) चुनांचे ऐसा ही हुआ.

(१४) इन बलाओं से.

(१५) यानी भयानक आवाज़ ने जिसकी हैबत से उनके दिल फट गए और वो सब के सब मर गए.

सातवाँ रूकू

और बेशक हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास[१] ख़ुशख़बरी लेकर आए, बोले सलाम[२] कहा सलाम फिर कुछ देर न की कि एक बछड़ा भुना ले आए[३]﴾६९﴿ फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुंचते उनको ऊपरी समझा और जी ही जी में उनसे डरने लगा, बोले डरिये नहीं हम लूत क़ौम की तरफ़[४] भेजे गए हैं﴾७०﴿ और उसकी बीवी[५] खड़ी थी वह हंसने लगी तो हमने उसे[६] इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी और इसहाक़ के पीछे[७] यअक़ूब की[८]﴾७१﴿ बोली हाय ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा और मैं बूढ़ी हूँ[९] और ये हैं मेरे शौहर बूढ़े[१०] बेशक यह तो अचंभे की बात है﴾७२﴿ फ़रिश्ते बोले क्या अल्लाह के काम का अचंभा करती हो अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें तुमपर इस घर वालो, बेशक[११] वही है सब ख़ूबियों वाला इज़्ज़त वाला﴾७३﴿ फिर जब इब्राहीम का डर कम हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली हम से लूत क़ौम के बारे में झगड़ने लगा[१२]﴾७४﴿ बेशक इब्राहीम तहम्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रूजू लाने वाला है[१३]﴾७५﴿ ऐ इब्राहीम इस ख़याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका, और बेशक उनपर अज़ाब आने वाला है कि फेरा

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝ فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۭ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۭ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ

सूरए हूद - सातवाँ रूकू

(१) सादा-रूप नौजवानों की सुंदर शक्लों में हज़रत इस्हाक़ और हज़रत यअक़ूब अलैहुमस्सलाम की पैदाइश की.

(२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.

(३) मुफ़स्सिरों ने कहा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बहुत ही मेहमान नवाज़ थे. बग़ैर मेहमान के खाना न खाते. उस वक़्त ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि पन्द्रह रोज़ से कोई मेहमान न आया था. आप इस ग़म में थे. इन मेहमानों को देखते ही आपने उनके लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई. चूंकि आप के यहाँ गायें बहुत थीं इसलिये बछड़े का भुना हुआ गोश्त सामने लाया गया. इससे मालूम हुआ कि गाय का गोश्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दस्तरख़्वान पर ज़्यादा आता था और आप उसको पसन्द फ़रमाते थे. गाय का गोश्त खाने वाले अगर सुन्नतते इब्राहीम अलैहिस्सलाम अदा करने की नियत करें तो ज़्यादा सवाब पाएं.

(४) अज़ाब करने के लिये.

(५) हज़रत सारा पर्दे के पीछे.

(६) उसके बेटे.

(७) हज़रत इस्हाक़ के बेटे.

(८) हज़रत सारा को ख़ुशख़बरी देने की वजह यह थी कि औलाद की ख़ुशी औरतों को मर्दों से ज़्यादा होती है. और यह कारण भी था कि हज़रत सारा के कोई औलाद न थी और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम मौजूद थे. इस ख़ुशख़बरी के साथ साथ एक ख़ुशख़बरी यह भी थी कि हज़रत सारा की उम्र इतनी लम्बी होगी कि वो पोते को भी देखेंगी.

(९) मेरी उम्र नव्वे से ऊपर हो चुकी है.

(१०) जिनकी उम्र एक सौ बीस साल की हो गई है.

(११) फ़रिश्तों के कलाम के माने ये हैं कि तुम्हारे लिये क्या आश्चर्य की बात है, तुम इस घर में हो जो चमत्कारों और अल्लाह तआला की रहमतों और बरकतों का केन्द्र बना हुआ है. इस आयत से साबित हुआ कि बीबियाँ एहले बैत में शामिल हैं.

(१२) यानी कलाम और सवाल करने लगा और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुजादिला यह था कि आप ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे. फ़रिश्तों ने कहा, नहीं. फ़रमाया अगर चालीस हों, उन्होंने कहा जब भी नहीं. आपने फ़रमाया, और तीस हों. उन्होंने कहा, जब भी नहीं . आप इस तरह फ़रमाते रहे. यहाँ तक कि आपने फ़रमाया, अगर एक मुसलमान मर्द मौजूद हो तब हलाक कर दोगे. उन्होंने कहा, नहीं. तो आपने फ़रमाया, इस में लूत अलैहिस्सलाम हैं. इसपर फ़रिश्तों ने कहा, हमें मालूम है जो वहाँ हैं. हम हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को और उनके घर वालों को

رَبِّكَ ۚ وَإِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ

न जाएगा(७६) और जब लूत के पास हमारे फ़रिश्ते आए[१४] उसे उनका ग़म हुआ और उनके कारण दिल तंग हुआ और बोला यह बड़ी सख़्ती का दिन है[१५](७७) और उसके पास उसकी क़ौम दौड़ती आई और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आदत पड़ी थी[१६] कहा ऐ क़ौम यह मेरी क़ौम की बेटियाँ हैं ये तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो[१७] और मुझे मेरे मेहमानों में रूस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी भी नेक चलन नहीं(७८) बोले तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नहीं[१८] और तुम ज़रूर जानते हो जो हमारी ख़ाहिश है(७९) बोले ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता[१९](८०) फ़रिश्ते बोले ए लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं[२०] वो तुम तक नहीं पहुंच सकते[२१] तो अपने घर वालों को रातों रात ले जोओ और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे[२२] सिवाए तुम्हारी औरत के उसे भी वही पहुंचना है जो उन्हें पहुंचेगा,[२३] बेशक उनका वादा सुबह के वक़्त है[२४] क्या

बचाएंगे सिवाए उनकी औरत के. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मक़सद यह था कि आप अज़ाब में देर चाहते थे ताकि इस बस्ती वालों को कुफ़्र और गुनाह से बाज़ आने के लिये एक फ़ुर्सत और मिल जाए. चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विशेषता में इरशाद होता है.

(१३) इन विशेषताओं से आपकी रिक़्क़ते क़ल्ब और आपकी राफ़त व रहमत मालूम होती है. जो इस बहस का कारण हुई. फ़रिश्तों ने कहा.

(१४) हसीन सूरतों में, और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उनकी हैअत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत और बदअमली का ख़याल करके.

(१५) रिवायत है कि फ़रिश्तों को अल्लाह का हुक्म यह था कि वो क़ौमे लूत को उस वक़्त तक हलाक न करें जबतक कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ख़ुद इस क़ौम की बद अमली पर चार बार गवाही न दें. चुनांचे जब ये फ़रिश्ते हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से मिले तो आपने उनसे फ़रमाया क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का हाल मालूम न था. फ़रिश्तों ने कहा, इनका क्या हाल है. आपने फ़रमाया मैं गवाही देता हूँ कि अमल के ऐतिबार से धरती के ऊपर यह बदतरीन बस्ती है. यह बात आपने चार बार फ़रमाई. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की औरत जो काफ़िरा थी, निकली और उसने अपनी क़ौम को जाकर ख़बर कर दी कि हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ ऐसे ख़ूबसूरत मेहमान आए हैं जिनकी तरह का अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया.

(१६) और कुछ शर्मो-हया बाक़ी न रही थी. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने.

(१७) और अपनी बीबियों से तअल्लुक़ रखो कि ये तुम्हारे लिये हलाल है. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उनकी औरतों को जो क़ौम की बेटियाँ थीं बुज़ुर्गाना शफ़क़त से अपनी बेटियाँ फ़रमाया ताकि इस हुस्ने इख़्लाक़ से वो फ़ायदा उठाएं और हमिय्यत सीखें.

(१८) यानी हमें उनकी रग़बत नहीं.

(१९) यानी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला और लड़ाई करता. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने अपने मकान का द्वार बन्द कर लिया था और अन्दर से यह बातचीत फ़रमा रहे थे. क़ौम ने चाहा की दीवार तोड़ दे. फ़रिश्तों ने आपका दुख और बेचैनी देखी तो.

(२०) तुम्हारा पाया मज़बूत है. हम इन लोगों को अज़ाब करने के लिये आए हैं. तुम द्वार खोल दो और हमें और उन्हें छोड़ दो.

(२१) और तुम्हें कोई तकलीफ़ या नुक़सान नहीं पहुंचा सकते. हज़रत ने दरवाज़ा खोल दिया. क़ौम के लोग मकान में घुस आए. हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से अपना बाज़ू उनके मुंह पर मारा सब अंधे हो गए और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के मकान से निकल भागे. उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था. यह कहते जाते थे हाय हाय लूत के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्होंने हमें जादू कर दिया.

सुबह क़रीब नहीं﴿८१﴾ फिर जब हमारा हुक्म आया हमने उस बस्ती के ऊपर उसका नीचा करदिया[२५] और उसपर कंकर के पत्थर लगातार बरसाए﴿८२﴾ जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं[२६] और वो पत्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं[२७]﴿८३﴾

आठवाँ रूकू

और[१] मदयन की तरफ़ उनके हमक़ौम शुऐब को[२] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं[३] और नाप और तौल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल(ख़ुशहाल) देखता हूँ[४] और मुझे तुमपर घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर है[५]﴿८४﴾ और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो﴿८५﴾ अल्लाह का दिया जो बच रहे वह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो[६] और मैं कुछ तुमपर निगहबान नहीं[७]﴿८६﴾ बोले ऐ शुएब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें[८] या अपने माल में जो चाहे न करें[९] हाँ जी तुम्हीं बड़े अक़्लमन्द नेक चलन हो﴿८७﴾

بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ
بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَاقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا
تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَاقَوْمِ أَوْفُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يَاشُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ
تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

منزل٣

फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा.
(२२) इस तरह आपके घर के सारे लोग चले जाएं.
(२३) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कहा, यह अज़ाब कब होगा. हज़रत जिब्रील ने कहा.
(२४) हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं तो इससे जल्दी चाहता हूँ. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा.
(२५) यानी उलट दिया, इस तरह कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ज़मीन के जिस टुकड़े पर क़ौमे लूत के शहर थे, उसके नीचे अपना बाज़ू डाला और उन पाँचों शहरों को, जिनमें सबसे बड़ा सदूम था, और उनमें चार लाख आदमी बसते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहाँ के कुत्तों और मुर्गों की आवाज़ें आसमान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बर्तन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला न जागा. फिर उस बलन्दी से उस ज़मीन के टुकड़े को औंधा करके पलटा.
(२६) उन पत्थरों पर ऐसा निशान था जिन से वो दूसरों से मुमताज़ यानी छिके हुए थे. क़तादा ने कहा कि उनपर लाल लकीरें थीं. हसन व सदी का क़ौल है कि उनपर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल यह है कि जिस पत्थर से जिस शख़्स की हलाकत मंज़ूर थी, उसका नाम उस पत्थर पर लिखा था.
(२७) यानी मक्का वालों से.

सूरए हूद - आठवाँ रूकू

(१) हमने भेजा मदयन शहर के निवासियों की तरफ़.
(२) आपने अपनी क़ौम से.
(३) पहले तो आपने तौहीद और इबादत की हिदायत फ़रमाई कि वो सारे कामों में सब से अहम है. उसके बाद जिन बुरी आदतों में वो जकड़े हुए थे उनसे मना फ़रमाया और इरशाद किया.
(४) ऐसे हाल में आदमी को चाहिये कि नेअमत की शुक्र गुज़ारी करे और दूसरों को अपने माल से फ़ायदा पहुंचाए, न कि उनके अधिकारों में कमी करे. ऐसी हालत में इस ख़यानत की आदत से डर है कि कहीं इस नेअमत से मेहरूम न कर दिये जाओ.
(५) कि जिससे किसी को रिहाई मयस्सर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं. यह भी हो सकता है कि उस दिन के अज़ाब से आख़िरत का अज़ाब मुराद हो.
(६) यानी हराम माल छोड़ने के बाद हलाल जितना भी बचे वही तुम्हारे लिये बेहतर है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि पूरा तौलने और नापने के बाद जो बचे वह बेहतर है.

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْۤ اَنْ
يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ
قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوْا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝ قَالُوْا
يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَاۤ اَنْتَ
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْۤ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूँ[१०] और उसने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी[११] और में नहीं चाहता हूँ कि जिस बात से तुम्हें मना करता हूँ आप उसके ख़िलाफ़ करने लगूं[१२] मैं जहां तक बने संवारना ही चाहता हूँ, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रूजू होता हूँ (८८) और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद यह न कमवा दे कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर, और लूत की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं[१३] (८९) और अपने रब से माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रूजू लाओ, बेशक मेरा रब मेहरबान महब्बत वाला है (९०) बोले ऐ शुएब हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं[१४] और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता[१५] तो हमने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इज़्ज़त नहीं (९१) कहा, ऐ मेरी क़ौम क्या तुमपर मेरे कुम्बे का दबाव अल्लाह से ज़्यादा है[१६] और उसे तुमने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा[१७] बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के बस में है (९२) और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम

(७) कि तुम्हारे कर्मों पर पकड़ धकड़ करूं. उलमा ने फ़रमाया कि कुछ नबियों को जंग की इजाज़त थी, जैसे हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान अलैहिमुस्सलाम. कुछ वो थे जिन्हें लड़ने का हुक्म न था. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम उन्हीं में से हैं. सारा दिन नसीहत फ़रमाते, उपदेश देते और सारी रात नमाज़ में गुज़ारते. क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ायदा. आप फ़रमाते, नमाज़ अच्छाइयों का हुक्म देती है, बुराइयों से रोकती है. तो इसपर वो हंसी में यह कहते जो अगली आयत में आया है.

(८) मूर्ति पूजा न करें.

(९) मतलब यह था कि हम अपने माल के मालिक हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तौलें.

(१०) सूझबूझ और हिदायत पर.

(११) यानी नबुव्वत और रिसालत या हलाल माल और हिदायत व मअरिफ़त, तो यह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मना न करूं, क्योंकि नबी इसीलिये भेजे जाते हैं.

(१२) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी अलैहिर्रहमत ने फ़रमाया कि क़ौम ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के हिल्म और हिदायत वाला होने को स्वीकार किया था और उनका यह कलाम हंसी में न था, बल्कि मक़सद यह था कि आप हिल्म और महान बुद्धिमत्ता के बावुजूद हमको अपने माल का अपनी मर्ज़ी के अनुसार इस्तेमाल करने से क्यों रोकते हैं. इसका जवाब जो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसका हासिल यह है कि जब तुम मेरी सूझ बूझ को मानते हो तो तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जो बात पसन्द की है वह वही होगी जो सब के लिये बेहतर हो, और वह ख़ुदा की तौहीद को मानना और नाप तौल में ख़यानत से दूर रहना है. मैं इसका पाबन्दी से आमिल हूँ तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि यही तरीक़ा बेहतर है.

(१३) उन्हें कुछ ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा है न कुछ दूर के रहने वाले थे तो उनके हाल से सबक़ पकड़ो.

(१४) कि अगर हम आपके साथ कुछ ज़ियादती करें तो आपमें बचाव की ताक़त नहीं.

(१५) जो दीन में हमारा साथी है और जिसको हम अज़ीज़ रखते हैं.

(१६) कि अल्लाह के लिये तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे परिवार की वजह से बाज़ रहे और तुमने अल्लाह के नबी का तो ऐहतिराम न किया और परिवार का सम्मान किया.

(१७) और उसके हुक्म की कुछ परवाह न की.

إِنِّىْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ

منزل٣

करता हूँ, अब जाना चाहते हो किस पर आता है वह अज़ाब कि उसे रूस्वा करेगा और कौन झूटा है[१८] और इन्तिज़ार करो[१९] मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ﴿९३﴾ और जब[२०] हमारा हुक्म आया हमने शुऐब और उसके साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमाकर बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[२१] तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए﴿९४﴾ गोया कभी वहाँ बसे ही न थे, अरे दूर हों मदयन जैसे दूर हुए समूद[२२]﴿९५﴾

नवाँ रूकू

बेशक हमने मूसा को अपनी आयतों[१] और साफ़ ग़लबे के साथ﴿९६﴾ फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वो फ़िरऔन के कहने पर चले[२] और फ़िरऔन का काम रास्ती का न था[३]﴿९७﴾ अपनी क़ौम के आगे होगा क़यामत के दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा[४] और वह क्या ही बुरा घाट उतरने का﴿९८﴾ और उनके पीछे पड़ी इस जगत में लअनत और क़यामत के दिन[५] क्या ही बुरा इनाम जो उन्हें मिला﴿९९﴾ ये बस्तियों[६] की ख़बरें हैं कि हम तुम्हें सुनाते हैं[७] इनमें कोई खड़ी है[८] और कोई कट

(१८) अपने दावों में. यानी तुम्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि मैं सच्चाई पर हूँ या तुम, और अल्लाह के अज़ाब से शक़ी की शक़ावत ज़ाहिर हो जाएगी.

(१९) आक़िबते-अम्र और अन्जामे-कार का.

(२०) उनके अज़ाब और हलाक के लिये.

(२१) हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने भयानक आवाज़ में कहा *"मूतू जमीअन"* यानी सब मर जाओ. इस आवाज़ की दहशत से उनके दम निकल गए और सब मर गए.

(२२) अल्लाह की रहमत से, हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अज़ाब में नहीं जकड़ी गईं, सिवाय हज़रत शुऐब और हज़रत सालेह अलैहुमस्सलाम की उम्मतों के. लेकिन हज़रत सालेह की क़ौम को उनके नीचे से भयानक आवाज़ ने हलाक किया और हज़रत शुऐब की क़ौम को ऊपर से.

सूरए हूद - नवाँ रूकू

(१) और कुफ़्र में जकड़ गए और मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाए.

(२) वह खुली गुमराही में था, क्योंकि बशर होने के बावुजूद ख़ुदाई का दावा करता था और खुल्लमखुल्ला ऐसे अत्याचार करता था जिसका शैतानी काम होना ज़ाहिर और यक़ीनी था . वह कहाँ और ख़ुदाई कहाँ, और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हिदायत और सच्चाई थी. आपकी सच्चाई की दलीलों, खुली आयतों और चमत्कारों को वो लोग देख चुके थे, फिर भी उन्होंने आपके अनुकरण से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह का अनुकरण किया. तो जब वह दुनिया में कुफ़्र और गुमराही में अपनी क़ौम का पेशवा था, ऐसे ही जहन्नम में उनका इमाम होगा और.

(४) जैसा कि उन्हें नील नदी में ला डाला था.

(५) यानी दुनिया में भी मलऊन और आख़िरत में भी लअनत में जकड़े.

(६) यानी गुज़री हुई उम्मतें.

(७) कि तुम अपनी उम्मतों को उनकी ख़बरें दो ताकि वो सबक़ पकड़ें. उन बस्तियों की हालत खेतियों की तरह है कि.

(८) उसके मकानों की दीवारें मौजूद हैं. खंडहर पाए जाते हैं. निशान बाक़ी हैं जैसे कि आद व समूद के इलाक़े.

ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِیْ
یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ
رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَیْرَ تَتْبِیْبٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ
رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰی وَهِیَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ
اَلِیْمٌ شَدِیْدٌ ۝ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّمَنْ خَافَ
عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَ
ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ
مَّعْدُوْدٍ ۝ یَوْمَ یَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِیٌّ وَّسَعِیْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِیْنَ شَقُوْا فَفِی
النَّارِ لَهُمْ فِیْهَا زَفِیْرٌ وَّشَهِیْقٌ ۝ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا
دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا
فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

गई[९]﴾१००﴿ और हमने उनपर ज़ुल्म न किया बल्कि ख़ुद उन्होंने[१०] अपना बुरा किया तो उनके मअबूद जिन्हें[११] अल्लाह के सिवा पूजते थे उनके कुछ काम न आए[१२] जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उनसे[१३] उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा﴾१०१﴿ और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उनके ज़ुल्म पर बेशक उसकी पकड़ दर्दनाक कर्री है[१४]﴾१०२﴿ बेशक इसमें निशानी[१५] है उसके लिये जो आख़िरत के अज़ाब से डरे, वह दिन है जिसमें सब लोग[१६] इकट्ठे होंगे और वह दिन हाज़िरी का है[१७]﴾१०३﴿ और हम उसे[१८] पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये[१९]﴾१०४﴿ जब वह दिन आएगा कोई ख़ुदा के हुकुम बिना बात न करेगा[२०] तो उन में कोई बदबख़्त है और कोई ख़ुशनसीब﴾१०५﴿ तो वह जो बदबख़्त है वो तो दोज़ख़ में हैं वो उसमें गधे की तरह रेंकेंगे﴾१०६﴿ वो उसमें रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[२२] बेशक तुम्हारा रब जो चाहे करे﴾१०७﴿ और वह ख़ुशनसीब हुए वो जन्नत में हैं

(९) यानी कटी हुई खेती की तरह बिल्कुल बेनामो निशान हो गई और उसका कोई चिन्ह बाक़ी न रहा जैसे कि नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के इलाक़े.
(१०) कुफ़्र और गुमराही से.
(११) जिहालत और गुमराही से.
(१२) और एक कण अज़ाब दूर न कर सके.
(१३) बुतों और झूटे मअबूदों.
(१४) तो हर अत्याचारी को चाहिये कि इन वाक़िआत से सबक़ सीखे और तौबह में जल्दी करे.
(१५) सबक़ और नसीहत.
(१६) अगले पिछले हिसाब के लिये.
(१७) जिसमें आसमान वाले और ज़मीन वाले सब हाज़िर होंगे.
(१८) यानी क़यामत के दिन.
(१९) यानी जो मुद्दत हमने दुनिया के बाक़ी रहने की निश्चित की है उसके ख़त्म होने तक.
(२०) तमाम सृष्टि साकित अर्थात ख़ामोश होगी. क़यामत का दिन बहुत लम्बा होगा. इसमें अहवाल अलग अलग होंगे. कुछ हालतों में हैबत की सख़्ती से किसी को अल्लाह की आज्ञा के बिना बात ज़बान पर लाने की क़ुदरत न होगी. और कुछ हालतों में आज्ञा दी जाएगी कि लोग कलाम करेंगे और कुछ हालतों में हौल और दहशत कम होगी. उस वक़्त लोग अपने मामलों में झगड़ेंगे और अपने मुक़दमे पेश करेंगे.
(२१) शफ़ीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, ख़ुशनसीबी या सआदत की पाँच निशानियाँ हैं (१) दिल की नर्मी (२) रोने की कसरत (३) दुनिया से नफ़रत (४) उम्मीदों का छोटा होना (५) लज्जा या हया. और बदबख़्ती यानी दुर्भाग्य की निशानियाँ भी पाँच हैं (१) दिल की सख़्ती (२)आँख की ख़ुश्की (३) दुनिया की रग़बत (४)बड़ी बड़ी उम्मीदें (५) बेहयाई.
(२२) इतना और ज़्यादा रहेंगे, और इस ज़ियादती का कोई अन्त नहीं. तो मानी ये हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इससे रिहाई न पाएंगे. (तफ़सीरे जलालैन)

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾
فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ
اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ
نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى
الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ
كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ
النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ

منزل ٣

हमेशा उसमें रहेंगे. जब तक आसमान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[२३] यह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी﴾१०८﴿ तो ऐ सुनने वाले धोखे में न पड़ उससे जिसे ये काफ़िर पूजते हैं[२४] ये वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले इनके बाप दादा पूजते थे[२५] और बेशक हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा फेर देंगे जिसमें कमी न होगी﴾१०९﴿

दसवाँ रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब दी[१] तो उसमें फूट पड़ गई[२] अगर तुम्हारे रब की एक बात[३] पहले न हो चुकी होती तो जभी उनका फ़ैसला कर दिया जाता[४] और बेशक वो उसकी तरफ़ से[५] धोखा डालने वाले शक में हैं[६]﴾११०﴿ और बेशक जितने हैं[७] एक एक को तुम्हारा रब उसका अमल पूरा भर देगा, उसे उन कामों की ख़बर है[८]﴾१११﴿ तो क़ायम रहो[९] जैसा तुम्हें हुक्म है और जो तुम्हारे साथ रूजू लाया है[१०] और ऐ लोगो सरगोशी (कानाफूसी) न करो, बेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है﴾११२﴿ और ज़ालिमों की तरफ़ न झुको कि तुम्हें आग छुएगी[११] और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं[१२] फिर मदद न पाओगे﴾११३﴿ और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों

(२३) इतना और ज़्यादा रहेंगे और इस ज़ियादती की कोई हद नहीं. इससे हमेशागी मुराद है. चुनांचे इरशाद फ़रमाता है.
(२४) बेशक यह उस बुत परस्ती पर अज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें अज़ाब में जकड़ी गईं.
(२५) और तुम्हें मालूम हो चुका कि उनका अंजाम क्या होगा.

सूरए हूद - दसवाँ रूकू

(१) यानी तौरात .
(२) कुछ उसपर ईमान लाए और कुछ ने कुफ़्र किया.
(३) कि उनके हिसाब में जल्दी न फ़रमाएगा. मख़्लूक़ के हिसाब और बदले का दिन क़यामत का दिन है.
(४) और दुनिया ही में अज़ाब में जकड़े जाते.
(५) यानी आपकी उम्मत के काफ़िर क़ुरआने करीम की तरफ़ से.
(६) जिसने उनकी अक़्लों को हैरान कर दिया.
(७) तमाम ख़ल्क़, तस्दीक़ करने वाले हों या झुटलाने वाले, क़यामत के दिन.
(८) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं . इसमें नेकियों और तस्दीक़ करने वालों के लिये तो ख़ुशख़बरी है कि वो नेकी का बदला पाएंगे और काफ़िरों और झुटलाने वालों के लिये फटकार है कि वो अपने कर्मों की सज़ा में गिरफ़्तार होंगे.
(९) अपने रब के हुक्म और उसके दीन की दावत पर.
(१०) और उसने तुम्हारा दीन क़ुबूल किया है. वो दीन और फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहे. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है, सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी ने रसूले करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से पूछने की हाजत न रहे. फ़रमाया, *''आमन्तो बिल्लाह''* कह और क़ायम रह.
(११) किसी की तरफ़ झुकना उसके साथ मेल महब्बत रखने को कहते हैं. अबुल आलिया ने कहा कि मानी ये हैं कि ज़ालिमों के कर्मों से राज़ी न हो . सदी ने कहा उनके साथ उठना बैठना न रखो. क़तादा ने कहा मुश्रिकों से न मिलो. इससे मालूम हुआ कि ख़ुदा के नाफ़रमानों के साथ यानी काफ़िरों, बेदीनों और गुमराहों के साथ मेल जोल रिश्तेदारी सहयोग और महब्बत उनकी हाँ में हाँ मिलाना, उनकी ख़ुशामद में रहना वर्जित है.
(१२) कि तुम्हें उसके अज़ाब से बचा सके. यह हाल तो उनका है जो ज़ालिमों से मेल जोल और महब्बत रखें और इसीसे उनके

السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا
كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ
اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ
وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ
رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ
مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ
اَنْۢبَاۗءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ فِيْ
هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ

किनारों[१३] और कुछ रात के हिस्से में[१४] बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं[१५] यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को﴾११४﴿ और सब्र करो कि अल्लाह नेकों का नेग नष्ट नहीं करता﴾११५﴿ तो क्यों न हुए तुम से अगली संगतों में[१६] ऐसे जिन में भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते[१७] हाँ उनमें थोड़े थे वही जिनको हमने निजात दी[१८] और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया[१९] और वो गुनहगार थे﴾११६﴿ और तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वजह हलाक करदे और उनके लोग अच्छे हों﴾११७﴿ और अगर तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता[२०] और वो हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे[२१]﴾११८﴿ मगर जिनपर तुम्हारे रब ने रहम किया[२२] और लोग उसी लिये बनाए हैं[२३] और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा जिन्नों और आदमियों को मिला कर[२४]﴾११९﴿ और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं[२५] और उस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया[२६] और मुसलमानों को पन्द(उपदेश) व नसीहत[२७]﴾१२०﴿

हाल का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जो ख़ुद ज़ालिम हैं.

(१३) दिन के दो किनारों से सुबह शाम मुराद हैं. ज़वाल से पहले का वक़्त सुबह में और बाद का शाम में दाख़िल है . सुब्ह की नमाज़ फ़ज्र और शाम की नमाज़ ज़ोहर और अस्र है.

(१४) और रात के हिस्सों की नमाज़ें मग़रिब और इशा हैं.

(१५) नेकियों से मुराद या यही पंजगाना नमाज़ें हैं जो आयत में बयान हुईं या मुतलक़ ताअतें या *"सुब्हानल्लाहे वल हम्दु लिल्लाहे वला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर"* पढ़ना. आयत से मालूम हुआ कि नेकियाँ छोटे मोटे गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं चाहे वो नेकियाँ नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्र या इस्तग़फ़ार या कुछ और. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि पाँचों नमाज़ें और जुमुआ दूसरे जुमुए तक और एक रिवायत में है कि एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, ये सब क़फ़्फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इनके बीच हों जब कि आदमी बड़े गुनाहों से बचे. एक शख़्स ने किसी औरत को देखा और उससे कोई ख़फ़ीफ़ यानी मामूली सी हरकत बेहिजाबी की सरज़द हुई उसपर वह शर्मिन्दा हुआ और रसूले करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपना हाल अर्ज़ किया इसपर यह आयत उतरी. उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि छोटे गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़्फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है. फ़रमाया, नहीं सब के लिये.

(१६) यानी पहली उम्मतों में जो हलाक की गईं.

(१७) मानी ये हैं कि उन उम्मतों में ऐसे नेकी वाले नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मना करते, इसी लिये हमने उन्हें हलाक कर दिया.

(१८) वो नबियों पर ईमान लाए और उनके अहकाम पर फ़रमाँबरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे.

(१९) और नेअमतों, लज़ीज़ चीज़ों और ख़्वाहिशात और वासनाओं के आदी हो गए और कुफ़्र व गुमराही में डूबे रहे.

(२०) तो सब एक दीन पर होते.

(२१) कोई किसी दीन पर कोई किसी पर.

(२२) वो सच्चे दीन पर सहमत रहेंगे और उसमें इख़्तिलाफ़ न करेंगे.

(२३) यानी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिये और रहमत वाले सहमति के लिये.

(२४) क्योंकि उसको इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे.

(२५) और नबियों के हाल और उनकी उम्मतों के सुलूक देखकर आपको अपनी क़ौम की तकलीफ़ का बर्दाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो.

(२६) और नबियों और उनकी उम्मतों के तज़किरे वाक़ए के अनुसार बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को हासिल नहीं

لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا
عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

آیاتها ١١١ (١٢) سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ (٥٣) رکوعاتها ١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۱﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ
قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲﴾ نَحْنُ نَقُصُّ
عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا
الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۳﴾
اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ
كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿۴﴾
قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ

और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ[२८] हम अपना काम करते हैं[२९] ﴾१२१﴿ और राह देखो, हम भी राह देखते हैं[३०] ﴾१२२﴿ और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन के ग़ैब[३१] और उसी की तरफ़ सब कामों की रूजू है तो उसकी बन्दगी करो और उसपर भरोसा रखो, और तुम्हारा रब तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं ﴾१२३﴿

१२- सूरए यूसुफ़

सूरए यूसुफ़, मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] ये रौशन किताब की आयतें हैं[२] ﴾१﴿ बेशक हमने इसे अरबी क़ुरआन उतारा कि तुम समझो ﴾२﴿ हम तुम्हें सबसे अच्छा बयान सुनाते हैं[३] इसलिये कि हमने तुम्हारी तरफ़ इस क़ुरआन की वही (देववाणी) भेजी, अगरचे बेशक इससे पहले तुम्हें ख़बर न थी ﴾३﴿ याद करो जब यूसुफ़ ने अपने बाप[४] से कहा ऐ मेरे बाप मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें अपने लिये सिजदा करते देखा[५] ﴾४﴿ कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना[६] कि
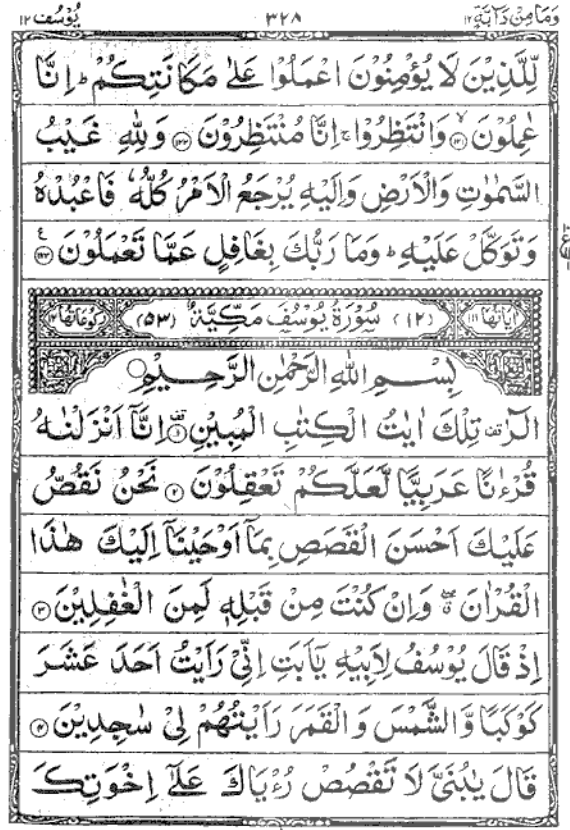
यानी जो वाक़िआत बयान फ़रमाए गए वो हक़ भी है.

(२७) ...भी कि गुज़री हुई उम्मतों के हालात और उनके अंजाम से सबक़ पकड़ें.
(२८) बहुत जल्द उसका नतीजा पा जाओगे.
(२९) जिसका हमें हमारे रब ने हुक्म दिया.
(३०) तुम्हारे अंजामेकार यानी अन्त की.
(३१) उससे कुछ छुपा नहीं सकता.

(१२) सूरए यूसुफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए यूसुफ़ मक्की है. इसमें बारह रूकू हैं , १११ आयतें, एक हज़ार छ सौ कलिमे और सात हज़ार एक सौ छियासठ अक्षर हैं. यहूदी उलमा ने अरब के शरीफ़ों से कहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) से दरियाफ़्त करो कि हज़रत यअक़ूब की औलाद शाम प्रदेश से मिस्र में किस तरह पहुंची और उनके वहाँ जाकर आबाद होने का क्या कारण हुआ और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ क्या है. इसपर ये मुबारक सूरत उतरी.

(२) जिसका चमत्कार और कमाल और अल्लाह की तरफ़ से होना साफ़ है और इल्म वालों के नज़दीक संदेह से परे है. इसमें हलाल व हराम, शरीअत की हदें और अहकाम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं. एक क़ौल यह है कि इसमें पहलों के हालात रौशन तौर पर दर्ज हैं और सच झूट को अलग अलग कर दिया गया है.

(३) जो बहुत से अजायब और अनोखी बातों और हिकमतों और इबारतों पर आधारित है. उसमें दीन व दुनिया के बहुत फ़ायदे और सुल्तानों और रिआया और उलमा के हालात और औरतों की विशेषताओं और दुश्मनों की तकलीफ़ों पर सब्र और उनपर क़ाबू पाने के बाद उनसे तजावुज़ करने का बढ़िया बयान है, जिससे सुनने वाले में सदचरित्र और पाकीज़ा आदतें पैदा होती हैं. बेहरूल्ल हक़ायक़ के लेखक ने कहा कि इस बयान का अहसन होना इस कारण से है कि यह क़िस्सा इन्सान के हालात के साथ भरपूर मुशाबिहत रखता है. अगर यूसुफ़ से दिल को, और यअक़ूब से रूह को, और राहील से नफ़्स को, युसुफ़ के भाइयों से मज़बूत हवास को ताबीर किया जाए और सारे क़िस्से को इन्सानों के हालात से मुताबिक़त दी जाए, चुनांचे उन्होंने वह मुताबिक़त बयान भी की है जो यहाँ तवालत के डर से दर्ज नहीं की ज.

(४) हज़रत यअक़ूब इब्ने इस्हाक़ इब्ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम .

(५) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब देखा कि आसमान से ग्यारह सितारे उतरे और उनके साथ सूरज और चांद भी हैं उन सब ने आप

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ
وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ
قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ ع
لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝
اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝ اقْتُلُوْا
يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ
وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ
مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ
يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا

वो तेरे साथ कोई चाल चलेंगे[७] बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है[८]﴿५﴾ और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा[९] और तुझे बातों का अंजाम निकालना सिखाएगा[१०] और तुझपर अपनी नेमत पूरी करेगा और याक़ूब के घर वालों पर[११] जिस तरह तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ पर पूरी की[१२] बेशक तेरा रब इल्म व हिकमत वाला है﴿६﴾

दूसरा रूकू

बेशक यूसुफ़ और उसके भाईयों में[१] पूछने वालों के लिये निशानियां हैं[२]﴿७﴾ जब बोले[३] कि ज़रूर यूसुफ़ और उसका भाई[४] हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं और हम एक जमाअत(समूह) हैं[५] बेशक हमारे बाप खुल्लम खुल्ला उनकी महब्बत में डूबे हुए हैं[६]﴿८﴾ यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फैंक आओ[७] कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही तरफ़ रहे[८] और उसके बाद फिर नेक हो जाना[९]﴿९﴾ उनमें एक कहने वाला[१०] बोला कि यूसुफ़ को मारो नहीं[११] और उसे अंधे कुंऐं में डाल दो कि कोई चलता उसे आकर ले जाए[१२] अगर तुम्हें करना है[१३]﴿१०﴾ बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुआ कि यूसुफ़ के मामले में हमारा भरोसा नहीं करते और हम तो

को सज्दा किया . यह ख़्वाब जुमुए की रात को देखा . यह रात शबे-क़द्र थी . सितारों की ताबीर आपके ग्यारह भाई हैं और सूरज आपके वालिद, और चाँद आपकी वालिदा या ख़ाला . आपकी वालिदा का नाम राहील है . सदी का क़ौल है कि चूंकि राहील का इन्तिक़ाल हो चुका था इसलिये क़मर से आपकी ख़ाला मुराद हैं . सज्दा करने से तवाज़ो करना और फ़रमाँबरदार होना मुराद है . एक क़ौल यह है कि हक़ीक़त में सज्दा ही मुराद है, क्योंकि उस ज़माने में सलाम की तरह ताज़ीम का सज्दा था . हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल थी और सात और सत्तरह के क़ौल भी आए हैं. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बहुत ज़्यादा महब्बत थी इस लिये उनके साथ उनके भाई हसद करते थे. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम इसपर बाख़बर थे इसलिये जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह ख़्वाब देखा तो हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने.

(६) क्योंकि वो इसकी ताबीर को समझ लेंगे. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम जानते थे कि अल्लाह तआला हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को नबुव्वत के लिये बुज़ुर्गी अता करेगा और दोनों जगत की नेअमतें और महानता इनायत करेगा, इस लिये आपको भाइयों के हसद का डर हुआ और आपने फ़रमाया.

(७) और तुम्हारी हलाकत की कोई तदबीर सोचेंगे.

(८) उनको दुश्मनी और हसद पर उभारेगा. इसमें ईमा है कि हज़रत यूसुफ़ के भाई अगर उनके लिये कष्ट और तकलीफ़ देने के प्रयास करेंगे, तो इसका कारण शैतान का बहकावा होगा . (ख़ाज़िन) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है. चाहिये कि उसको अपने प्यारे से बयान किया जाए और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है. जब कोई देखने वाला वह ख़्वाब देखे तो चाहिये कि अपनी बाईं तरफ़ तीन बार थुकथुकाए और यह पढ़े ***"अऊज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रजीम वमिन शर्रे हाज़िहिर रूया"***.

(९) "इज्तिबा" यानी चुन लेना, यानी अल्लाह तआला का किसी बन्दे को बुज़ुर्गी अता करना. इसके मानी ये हैं कि किसी बन्दे को अल्लाह अपने फ़ैज़ के साथ मख़सूस करे जिससे उसको तरह तरह के चमत्कार और कमालात बिना परिश्रम और कोशिश के हासिल हों. यह दर्जा नबियों के साथ ख़ास है और उनकी बदौलत उनके ख़ास क़रीबी नेकों, शहीदों और अच्छाई करने वालों को भी ये नेअमत अता की जाती है.

(१०) इल्म और हिकमत अता करेगा और पिछली किताबों और नबियों की हदीसों के राज़ खोलेगा. मुफ़स्सिरों ने इस से ख़्वाब की ताबीर मुराद ली है. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ख़्वाब की ताबीर के बड़े माहिर थे.

(११) नबुव्वत अता फ़रमाकर, जो ऊंची उपाधियों से है, और सृष्टि की सारी उपाधियाँ इससे कम हैं और सल्तनतें देकर, दीन और दुनिया की नेअमतों से मालामाल करके.

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝١١ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَ
اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ
غٰفِلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ
فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ
هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٥ وَجَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً
يَّبْكُوْنَ ۝١٦ قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا
يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝١٧ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ
كَذِبٍ ۗ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۗ فَصَبْرٌ
جَمِيْلٌ ۗ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝١٨ وَجَآءَتْ
سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۗ قَالَ يٰبُشْرٰى

منزل٣

इसका भला चाहने वाले हैं﴾११﴿ कल इसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले[१४] और बेशक हम इसके निगहबान हैं[१५]﴾१२﴿ बोला बेशक मुझे रंज देगा कि इसे ले जाओ[१६] और डरता हूँ कि इसे भेड़िया खाले[१७] और तुम इससे बेख़बर रहो[१८]﴾१३﴿ बोले अगर इसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअत (दल) हैं जब तो हम किसी मसरफ़ (काम) के नहीं[१९]﴾१४﴿ फिर जब उसे ले गए[२०] और सब की राय यही ठहरी कि उसे अंधे कुंएं में डालदें[२१] और हमने उसे वही (देववाणी) भेजी[२२] कि ज़रूर तू उन्हें उनका यह काम जता देगा[२३] ऐसे वक़्त कि वो न जानते होंगे[२४]﴾१५﴿ और रात हुए अपने बाप के पास रोते हुए आए[२५]﴾१६﴿ बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए[२६] और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे अगरचे हम सच्चे हों[२७]﴾१७﴿ और उसके कुर्ते पर एक झूटा ख़ून लगा लाए[२८] कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात तुम्हारे वास्ते बना ली है[२९] तो सब्र अच्छा और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उन बातों पर जो तुम बता रहे हो[३०]﴾१८﴿ और एक क़ाफ़िला आया[३१] उन्होंने अपना पानी लाने वाला भेजा[३२] तो उसने अपना डोल डाला[३३] बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है यह तो एक लड़का है

(१२) कि उन्हें नबुव्वत अता फ़रमाई. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इस नेअमत से मुराद यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमरूद की आग से छुटकारा दिया और अपना ख़लील यानी दोस्त बनाया और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम को हज़रत यअक़ूब और बेटे अता किये.

सूरए यूसुफ़ - दूसरा रूकू

(१) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की पहली बीबी लिया बिन्ते लियान आपके माँमू की बेटी हैं. उनसे आपके छः बेटे हुए रूबील, शमऊन, लावा, यहूदा, ज़बूलून, यशजर. और चार बेटे हरम से हुए दान, नफ़्ताली, जावा, आशर. उनकी माएं ज़ुल्फ़ह और बिल्हा. लिया के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत यअक़ूब ने उनकी बहन राहील से निकाह फ़रमाया. उनसे दो बेटे हुए यूसुफ़ और बिन यामीन. ये हज़रत यअक़ूब के बारह बेटे हैं. इन्हीं को **अस्बात** कहते हैं.

(२) पूछने वालों से यहूदी मुराद हैं जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हाल और औलादे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के कनआन प्रदेश से मिस्र प्रदेश की तरफ़ मुन्तक़िल होने का कारण दरियाफ़्त किया था. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हालात बयान फ़रमाए और यहूदियों ने उनको तौरात के मुताबिक़ पाया तो उन्हें हैरत हुई कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किताबें पढ़ने और उलमा और धर्मशास्त्रियों की मजलिस में बैठने और किसी से कुछ सीखने के बग़ैर इस क़द्र सही वाक़िआत कैसे बयान फ़रमाए. यह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और क़ुरआन शरीफ़ ज़रूर अल्लाह तआला का भेजा हुआ कलाम है और अल्लाह तआला ने आप को पाक इल्म से नवाज़ा. इसके अलावा इस वाक़ए में बहुत से सबक़ और हिक्मतें हैं.

(३) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई.

(४) हक़ीक़ी बिन यामीन.

(५) क़वी है, ज़्यादा काम आ सकते है, ज़्यादा फ़ायदा पहुंचा सकते हैं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम छोटे हैं क्या कर सकते हैं.

(६) और यह बात उनके ख़याल में न आई कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा का उनकी अल्पायु में इन्तिक़ाल हो गया इसलिये वह ज़्यादा प्यार दुलार और महब्बत के हक़दार हुए और उनमें हिदायत और साफ़ सुथरे होने की वो निशानियाँ पाई जाती हैं जो दूसरे भाइयों में नहीं हैं. यही कारण है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ ज़्यादा महब्बत है. ये सब बातें ख़याल में न लाकर, उन्हें अपने वालिद का हज़रत यूसुफ़ से ज़्यादा महब्बत करना बुरा लगा और उन्होंने आपस में

هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾
وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ
مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ
لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ
نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۘ
وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى
اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ
اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ
الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ
رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ
هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ
كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ

منزل ٣

और उसे एक पूंजी बनाकर छुपा लिया[३४] और अल्लाह जानता है जो वो करते हैं[३५] ﴿१९﴾ और भाइयों ने उसे खोटे दामों गिनती के रूपयों पर बेच डाला, और उन्हें उसमें कुछ रग़बत (रूचि) न थी[३६] ﴿२०﴾

तीसरा रूकू

और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा वह अपनी औरत से बोला[१] इन्हें इज़्ज़त से रखो[२] शायद इन से हमें नफ़ा पहुंचे[३] या इनको हम बेटा बनालें[४] और इसी तरह हमने यूसुफ़ को इस ज़मीन में जमाव दिया और इसलिये कि उसे बातों का अंजाम सिखाएं[५] और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब (बलवान) है मगर अक्सर आदमी नहीं जानते ﴿२१﴾ और जब अपनी पूरी क़ुव्वत को पहुंचा[६] हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया[७] और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को ﴿२२﴾ और वह जिस औरत[८] के घर में था उसने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके[९] और दरवाज़े सब बन्द कर दिये[१०] और बोली आओ मैं तुम्हीं से कहती हूँ[११] कहा अल्लाह की पनाह[१२] वह अज़ीज़ तो मेरा रब यानी पर्वरिश करने वाला है उसने मुझे अच्छी तरह रखा[१३] बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता ﴿२३﴾ और बेशक औरत ने उसका इरादा किया और वह भी औरत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता[१४] हमने यूंही किया कि उससे बुराई और बेहयाई को फेर दे[१५] बेशक वह हमारे

मिलकर मशवरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिये जिससे हमारे वालिद साहिब को हमारी तरफ़ ज़्यादा महब्बत हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि शैतान भी इस मशवरे की बैठक में शरीक हुआ और उसने हज़रत यूसुफ़ के क़त्ल की राय दी और मशवरे की बात चीत इस तरह हुई.

(७) आबादियों से दूर, बस यही सूरत है जिन से.
(८) और उन्हें बस तुम्हारी ही महब्बत हो और किसी की नहीं.
(९) और तौबह कर लेना.
(१०) यानी यहूदा या रूबील.
(११) क्योंकि क़त्ल महापाप है.
(१२) यानी कोई मुसाफ़िर वहाँ गुज़रे और उन्हें किसी मुल्क को ले जाए इससे भी उद्देश्य पूरा है कि न वहाँ रहेंगे न वालिद साहिब की मेहरबानी की नज़र इस तरह उनपर होगी.
(१३) इस में इशारा है कि चाहिये तो यह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुमने इरादा कर ही लिया है तो बस इतने पर ही सब्र कर लो. चुनांचे सब इसपर सहमत हो गए और अपने वालिद से.
(१४) यानी तफ़रीह के हलाल तरीक़ों से आनंद उठाएं जैसे कि शिकार और तीर अन्दाज़ी वग़ैरह.
(१५) उनकी पूरी देखभाल करेंगे.
(१६) क्योंकि उनकी एक घड़ी की जुदाई गवारा नहीं है.
(१७) क्योंकि उस इलाक़े में भेड़िये और ख़तरनाक जानवर बहुत हैं.
(१८) और अपनी सैर तफ़रीह में लग जाओ.
(१९) लिहाज़ा इन्हें हमारे साथ भेज दीजिये. अल्लाह की तरफ़ से यूंही तक़दीर थी. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने इजाज़त दे दी. चलते समय हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़मीज़, जो जन्नत की हरीर थी और जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम को कपड़े उतार कर आग में डाला गया था, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने वह क़मीज़ आपको पहनाई थी, वह मुबारक क़मीज़ हज़रत इब्राहीम से हज़रत इस्हाक़ को और उनसे उनके बेटे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को पहुंची थी, वह क़मीज़ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के गले में

हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने तावीज़ बनाकर डाल दी .

(२०) इस तरह जब तक हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम उन्हें देखते रहे वहाँ तक तो वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने कन्धों पर सवार किये हुए इज़्ज़त व एहतिराम के साथ ले गए. जब दूर निकल गए और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की नज़रों से ग़ायब हो गए तो उन्होंने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर पटका और दिलों में जो दुश्मनी थी वह ज़ाहिर हुई. जिसकी तरफ़ जाते थे ताने देता था, और ख़्वाब जो किसी तरह उन्होंने सुन पाया था, उसपर बुरा भला कहते थे, और कहते थे, अपने ख़्वाब को बुला कि वह अब तुझे हमारे हाथों से छुड़ाए. जब सख़्तियाँ हद को पहुंचीं तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यहूदा से कहा ख़ुदा से डरो और इन लोगों को इनकी ज़ियादतियों से रोको. यहूदा ने अपने भाइयों से कहा कि मैं ने तुम से एहद किया था याद करो, क़त्ल की नहीं ठहरी थी. तब वो उन हरकतों से बाज़ आए.

(२१) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया. यह कुंआँ कनआन से तीन फ़रसंग के फ़ासले पर बैतुल मक़दिस के आस पास या उर्दुन प्रदेश में स्थित था. ऊपर से इसका मुंह तंग था और अन्दर से चौड़ा था. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हाथ पाँव बांधकर क़मीज़ उतार कर कुंए में छोड़ा. जब वह उसकी आधी गहराई तक पहुंचे, तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर हलाक हो जाएं. हज़रत जिब्रील अल्लाह के हुक्म से पहुंचे और उन्होंने आपको एक पत्थर पर बिठा दिया जो कुंए में था और आपके हाथ खोल दिये और चलते वक़्त हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़मीज़ जो तावीज़ बनाकर आपके गले में डाल दी थी वह खोल कर आपको पहना दी. उससे अंधेरे कुंए में रौशनी हो गई. सुब्हानल्लाह. नबियों के मुबारक जिस्मों की क्या बरकत कि एक क़मीज़ जो उस बरकत वाले बदन से छुल गई, उसने अंधेरे कुंएं में उजाला कर दिया. इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के चहीतों और क़रीबी बन्दों के कपड़ों और दूसरी चीज़ों से बरकत हासिल करना शरीअत में साबित और नबियों की सुन्नत है.

(२२) हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के वास्ते से, या इल्हाम के तौर पर, कि आप दुखी न हों, हम तुम्हें गहरे कुंएं से बलन्द मक़ाम पर पहुंचाएंगे और तुम्हारे भाइयों को हाजतमन्द बनाकर तुम्हारे पास लाएंगे और उन्हें तुम्हारे हुक्म के मातहत करेंगे और ऐसा होगा.

(२३) जो उन्होंने इस वक़्त तुम्हारे साथ किया.

(२४) कि तुम यूसुफ़ हो, क्योंकि उस वक़्त तुम्हारी शान ऐसी ऊंची होगी. तुम सल्तनत व हुकूमत के तख़्त पर होगे कि वो तुम्हें न पहचानेंगे. अलहासिल, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई उन्हें कुंएं में डाल कर वापस हुए और उनकी क़मीज़ जो उतार ली थी उसको एक बकरी के बच्चे के ख़ून में रंग कर साथ ले लिया.

(२५) जब मकान के क़रीब पहुंचे, उनके चीख़ने की आवाज़ हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने सुनी तो घबराकर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे, क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नुक़सान हुआ. उन्होंने कहा, नहीं. फ़रमाया, फिर क्या मुसीबत पहुंची. और यूसुफ़ कहाँ हैं.

(२६) यानी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले. इस दौड़ में हम दूर निकल गए.

(२७) क्योंकि न हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील और निशानी है जिससे हमारी सच्चाई साबित हो.

(२८) और क़मीज़ को फाड़ना भूल गए. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम वह क़मीज़ अपने मुबारक चेहरे पर रखकर बहुत रोए और फ़रमाया, अनोखा और होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को तो खा गया और क़मीज़ को फाड़ा तक नहीं . एक रिवायत में यह भी है कि वह एक भेड़िया पकड़ लाए और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि यह भेड़िया है जिसने यूसुफ़ को खाया है. आपने उस भेड़िये से दरियाफ़्त फ़रमाया. वह अल्लाह के हुक्म से बोल उठा कि हुज़ूर न मैंने आपके बेटे को खाया और न नबियों के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है. हज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से.

(२९) और वाक़िआ इसके ख़िलाफ़ है.

(३०) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तीन रोज़ कुंएं में रहे, इसके बाद अल्लाह तआला ने उन्हें उससे निजात अता फ़रमाई.

(३१) जो मदयन से मिस्र की तरफ़ जा रहा था. वह रास्ता भटक कर उस जंगल में आ पड़ा जहाँ आबादी से बहुत दूर यह कुंआं था और इसका पानी खारी था, मगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बरकत से मीठा हो गया. जब वह क़ाफ़िले वाले उस कुंएं के क़रीब उतरे तो.

(३२) जिसका नाम मालिक बिन ज़अर ख़ज़ाई था. यह शख़्स मदयन का रहने वाला था. जब वह कुंएं पर पहुंचा.

(३३) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने वह डोल पकड़ लिया और उसमें लटक गए. मालिक ने डोल खींचा. आप बाहर तशरीफ़ लाए. उसने आपका सौंदर्य और ख़ूबसूरती देखी तो अत्यन्त प्रसन्नता में भरकर अपने यारों को ख़ुशख़बरी दी.

(३४) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई जो इस जंगल में अपनी बकरियाँ चराते थे वो देखभाल रखते थे. आज जो उन्होंने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंएं में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िले में पहुंचे. वहाँ उन्होंने मालिक बिन ज़अर के पास हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो वो उसे कहने लगे कि यह ग़ुलाम है. हमारे पास से भाग आया है, किसी काम का नहीं है. नाफ़रमान है. अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता बेच देंगे. फिर उसे कहीं इतनी दूर लेजाना कि उसकी ख़बर भी हमारे सुनने में न आए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनके डर से ख़ामोश खड़े रहे और कुछ बोले नहीं.

(३५) जिनकी तादाद क़तादा के क़ौल के मुताबिक़ बीस दिरहम थी.

(३६) फिर मालिक और उसके साथी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र में लाए. उस ज़माने में मिस्र का बादशाह रैयान बिन नज़दान अमलीक़ी था और उसने अपना राज पाट क़ित्फ़ीर मिस्री के हाथ में दे रखा था. सारे ख़ज़ाने उसी के हाथ में थे. उसको अज़ीज़े मिस्र कहते थे और वह बादशाह का वज़ीरे आज़म था. जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाए गए तो हर शख़्स के दिल

में आपकी तलब पैदा हुई. ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरू की यहाँ तक कि आपके वज़न के बराबर सोना, उतनी ही चांदी, उतनी ही कस्तूरी, उतना ही हरीर क़ीमत मुक़र्रर हुई आपका वज़न चार सौ रतल था, और उम्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सौलह साल की थी. अज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया. दूसरे ख़रीदार उसके मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए.

सूरए यूसुफ़ - तीसरा रूकू

(१) जिसका नाम ज़ुलैख़ा था.
(२) ठहरने की जगह ऊमदा हो, लिबास और खाना पीना उत्तम क़िस्म का हो.
(३) और वो हमारे कामों में अपनी सूझ बूझ और होशियारी से हमारे लिये नफ़ा पहुंचाने वाले और बेहतर मददगार हों और सल्तनत के कामों और हुकूमत की ज़िम्मेदारी संभालने में हमारे काम आएं क्योंकि हिदायत की निशानी उनके चहरे पर मौजूद है.
(४) यह क़ितफ़ीर ने इसलिये कहा कि उसके कोई औलाद न थी.
(५) यानी ख़्वाबों की ताबीर.
(६) शबाब और यौवन अपनी चरम सीमा पर आया और उम्र शरीफ़ ज़िहाक के क़ौल के मुताबिक़ बीस साल की, और सदी के अनुसार तीस की और कल्बी के कथनानुसार अठारह और तीस के बीच हुई.
(७) यानी इल्म के साथ अमल और दीन की जानकारी अता की. कुछ उलमा ने कहा कि हुक्म से सच्चा बोल और इल्म से ख़्वाब की ताबीर मुराद है. कुछ ने फ़रमाया इल्म चीज़ों की हक़ीक़त जानना और हिकमत इल्म के मुताबिक़ अमल करना है.
(८) यानी ज़ुलैख़ा.
(९) और उसके साथ मशग़ूल हो कर उसकी नाजायज़ ख़्वाहिश को पूरा करें. ज़ुलैख़ा के मकान में एक के बाद एक सात दरवाज़े थे. उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर तो यह ख़्वाहिश पेश की.
(१०) ताले लगा दिये.
(११) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने.
(१२) वह मुझे इस बुराई से बचाए जिसकी तू तलबगार है. मतलब यह था कि यह काम हराम है. मैं इसके पास जाने वाला नहीं.
(१३) उसका बदला यह नहीं कि मैं उसकी अमानत में ख़यानत करूं, जो ऐसा करे वह ज़ालिम है.
(१४) मगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने रब की बुरहान देखी और इस ग़लत इरादे से मेहफ़ूज़ रहे और बुरहाने इस्मत नबुव्वत है. अल्लाह तआला ने नबियों के पाक नफ़्सों को दुराचार और नीच कर्मों से पाक पैदा किया है और अच्छे संस्कारों और पाक अख़लाक़ पर उनको बनाया है इसलिये वो हर बुरे कर्म से दूर रहते हैं. एक रिवायत यह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आपके पीछे पड़ी उस वक़्त आपने अपने वालिद हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को देखा कि अपनी पाक उंगली मुबारक दातों के नीचे दबाकर दूर रहने का इशारा फ़रमाते हैं.
(१५) और ख़यानत तथा ज़िना से मेहफ़ूज़ रखें.
(१६) जिन्हें हमने बुज़ुर्गी दी है और जो हमारी इताअत व फ़रमाँबरदारी में सच्चे दिल से लगे हैं. अलहासिल, जब ज़ुलैख़ा आपके पीछे पड़ी तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भागे और ज़ुलैख़ा उनके पीछे उन्हें पकड़ने भागी. हज़रत जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे, उसका ताला खुल कर गिरता चला जाता था.
(१७) आख़िरकार ज़ुलैख़ा हज़रत तक पहुंची और आपका कुर्ता पीछे से पकड़ कर खींचा कि आप निकलने न पाएं, मगर आप ग़ालिब आए.
(१८) यानी अज़ीज़े मिस्र.
(१९) फ़ौरन ही ज़ुलैख़ा ने अपनी बेगुनाही ज़ाहिर करने और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने मक्र से डराने के लिये बहाना तराशा और शौहर से.
(२०) इतना कहकर उसे डर हुआ कि कहीं अज़ीज़ ग़ुस्से में आकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर न तुल जाए और यह ज़ुलैख़ा की महब्बत की तीव्रता कब गवारा कर सकती थी, इसलीये उसने कहा.
(२१) यानी इसको कोड़े लगाए जाएं. जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि ज़ुलैख़ा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है, आपके लिये क़ैद और सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आपने अपनी बेगुनाही का इज़हार और हालात की हक़ीक़त का बयान ज़रूरी समझा और.
(२२) यानी यह मुझसे बुरे काम की तलबगार हुई. मैंने उससे इन्कार किया और मैं भागा. अज़ीज़ ने कहा कि यह बात किस तरह मान ली जाए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि घर में एक चार माह का बच्चा पालने में है जो ज़ुलैख़ा के माँमूं का लड़का है उससे पूछना चाहिये. अज़ीज़ ने कहा कि चार माह का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उसको ज़बान देने और उससे मेरी बेगुनाही की गवाही अदा करा देने पर क़ादिर है. अज़ीज़ ने उस बच्चे से पूछा. अल्लाह की क़ुदरत से वह बच्चा बोल पड़ा और उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तस्दीक़ की और ज़ुलैख़ा के क़ौल को ग़लत

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ
مِنْ دُبُرٍ وَّأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا إِلَّآ أَنْ يُّسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَّفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ
دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيصَهُ
قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۚ إِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي
لِذَنْبِكِ ۚ إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِئِينَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ
فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهِ ۚ
قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرٰهَا فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ

चुने हुए बन्दों में से है(१६) ﴾२४﴿ और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े(१७) और औरत ने उसका कुर्ता पीछे से चीर लिया और दोनों को औरत का मियाँ(१८) दर्वाज़े के पास मिला(१९) बोली क्या सज़ा है इसकी जिसने तेरी घरवाली से बदी चाही(२०) मगर यह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार(२१) ﴾२५﴿ कहा इसने मुझको लुभाया कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं(२२) और औरत के घरवालों में से एक गवाह ने(२३) गवाही दी अगर इनका कुर्ता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है और इन्होंने ग़लत कहा(२४) ﴾२६﴿ और अगर इनका कुर्ता पीछे से चाक हुआ तो औरत झूठी है और ये सच्चे(२५) ﴾२७﴿ फिर जब अज़ीज़ ने उसका कुर्ता पीछे से चिरा देखा(२६) बोला बेशक यह तुम औरतों का चरित्र है, बेशक तुम्हारा चरित्र बड़ा है(२७) ﴾२८﴿ ऐ यूसुफ़ तुम इसका ख़याल न करो(२८) और ऐ औरत तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग(२९) बेशक तू ख़ता करने वालों में है(३०) ﴾२९﴿

चौथा रूकू

और शहर में कुछ औरतें बोलीं(१) अज़ीज़ की बीबी अपने नौजवान का दिल लुभाती है बेशक उनकी महब्बत उसके दिल में पैर गई है हम तो उसे खुल्लमखुल्ला ख़ुद-रफ़्ता पाते हैं(२) ﴾३०﴿ तो जब ज़ुलैख़ा ने उनका चर्चा सुना तो उन औरतों को बुला भेजा(३) और उनके लिये मसनदें तैयार

बताया. चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(२३) यानी उस बच्चे ने.

(२४) क्योंकि यह सूरत बताती है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आगे बढ़े और ज़ुलैख़ा ने उन्हें दूर किया तो कुर्ता आगे से फटा.

(२५) इसलिये कि यह हाल साफ़ बताता है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उससे भागते थे और ज़ुलैख़ा पीछे से पकड़ती थी इसलिये कुर्ता पीछे से फटा.

(२६) और जान लिया कि हज़रत यूसुफ़ सच्चे है और ज़ुलैख़ा झूटी हैं.

(२७) फिर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जह हो कर अज़ीज़ ने इस तरह मअज़िरत की.

(२८) और इसपर ग़म न करो बेशक तुम पाक हो. इस कलाम से यह मतलब भी था कि इसका किसी से ज़िक्र न करना ताकि चर्चा न हो और बात न फैल जाए. इसके अलावा भी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बेगुनाही की बहुत सी निशानीयाँ मौजूद थीं. एक तो यह कि कोई शरीफ़ तबीअत इन्सान अपने एहसान करने वाले के साथ इस तरह की ख़यानत रवा नहीं रखता. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने ऊंचे संस्कारों के साथ किस तरह ऐसा कर सकते थे. दूसरे यह कि देखने वालों ने आपको भागते आते देखा और तालिब की यह शान नहीं होती, वह पीछे होता है, भागता नहीं. भागता वही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाए और वह उसे गवारा न करे. तीसरे यह कि औरत ने बड़ा भारी सिंगार किया था और वह ग़ैर मामूली सजधज में थी. इससे मालूम होता है कि रग़बत और ऐहतिमाम केवल उसकी तरफ़ से था. चौथे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का तक़वा और तहारत जो एक लम्बी मुद्दत तक देखा जा चुका था उससे आपकी तरफ़ ऐसे बुरे काम को जोड़ना किसी तरह ऐतिबार के क़ाबिल नहीं हो सकता था. फिर अज़ीज़ ज़ुलैख़ा की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा.

(२९) कि तू ने बेगुनाह पर लांछन लगाया है.

(३०) अज़ीज़े मिस्र ने अगरचे इस क़िस्से को बहुत दबाया लेकिन यह ख़बर छुप न सकी और बात फ़ैल ही गई.

सूरए यूसुफ़ - चौथा रूकू

(१) यानी मिस्र के शरीफ़ और प्रतिष्ठित लोगों की औरतें.

(२) इस इश्क़ में उसको अपनी इज़्ज़त और पर्दे और शर्म का लिहाज़ भी न रहा.

(३) यानी जब उसने सुना कि मिस्र के शरीफ़ों की औरतें उसको हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की महब्बत पर मलामत करती हैं

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ
قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ
اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ
يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ
الْجٰهِلِيْنَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَ
قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ

कीं[४] और उनमें हर एक को छुरी दी[५] और यूसुफ़[६] से कहा इनपर निकल आओ[७] जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा उसकी बड़ाई बोलने लगीं[८] और अपने हाथ काट लिये[९] और बोलीं अल्लाह को पाकी है ये तो आदमी की जिन्स से नहीं[१०] मगर कोई इज़्ज़त वाला फ़रिश्ता﴿३१﴾ ज़ुलैख़ा ने कहा तो ये हैं वो जिनपर तुम मुझे ताना देती थीं[११] और बेशक मैंने इनका जी लुभाना चाहा तो इन्होंने अपने आपको बचाया[१२] और बेशक अगर वह यह काम न करेंगे जो मैं उनसे कहती हूँ तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वो ज़रूर ज़िल्लत उठाएंगे[१३]﴿३२﴾ यूसुफ़ ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैद खाना ज़्यादा पसन्द है इस काम से जिसकी तरफ़ ये मुझे बुलाती हैं और तू मुझसे इनका मक्र(छल-कपट) न फेरेगा[१४] तो मैं इनकी तरफ़ माइल(आकर्षित) होऊंगा और नादान बनूंगा﴿३३﴾ तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उससे औरतों का मक्र(कपट) फेर दिया, बेशक वही सुनता जानता है[१५]﴿३४﴾ फिर सब कुछ निशानियां देख दिखाकर पिछली मत उन्हें यही आई कि ज़रूर एक मुद्दत तक उसे क़ैद ख़ाने में डालें[१६]﴿३५﴾

पाँचवां रूकू

और उसके साथ क़ैद ख़ाने में दो जवान दाख़िल हुए[१] उनमें एक[२] बोला मैंने ख़्वाब देखा कि[३] शराब निचोड़ता हूँ और दूसरा बोला[४] मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर कुछ रोटियाँ

तो उसने चाहा कि वह अपना उज़्र उन्हें ज़ाहिर कर दे. इसलिये उसने उनकी दावत की और मिस्र के शरीफ़ों की चालीस औरतों को बुलाया. उनमें वो सब भी थीं जिन्होंने उसको बुरा भला कहा था. ज़ुलैख़ा ने उन औरतों को बहुत इज़्ज़त और सम्मान के साथ मेहमान बनाया.

(४) अत्यन्त शान्दार जिनपर वो बहुत इज़्ज़त और आराम से तकिये लगा कर बैठीं और दस्तर ख़्वान बिछाए गए और क़िस्म क़िस्म के ख़ाने और मेवे चुने गए.

(५) ताकि ख़ाने के लिये उससे गोश्त काटें और मेवे तराशें.

(६) ...को उमदा लिबास पहना कर.

(७) पहले तो आप ने इन्कार किया लेकिन जब ज़्यादा ज़ोर डाला गया तो उसकी मुख़ालिफ़त और दुश्मनी के अन्देशे से आप को आना ही पड़ा.

(८) क्योंकि उन्होंने इस सौंदर्य के साथ नबुव्वत और रिसालत के नूर और विनम्रता की निशानियों और शाहाना हैबत और इक़्तिदार और माया मोह और दुनिया की सुंदर चीज़ों की तरफ़ से बेनियाज़ी की शान देखी तो आशचर्य चकित रह गईं और आपकी महानता और देहशत दिलों में भर गई और आपकी ख़ूबसूरती ने ऐसा असर किया कि वह औरतें अपना आप भूल गईं.

(९) नीबू की बजाय. और दिल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ कटने की तक़लीफ़ का ज़रा एहसास न हुआ.

(१०) कि ऐसा सौंदर्य आदमी में देखा ही नहीं गया और उसके साथ नफ़्स की यह पाकी कि मिस्र के ऊंचे ख़ानदानों की ख़ूबसूरत औरतें अच्छे लिबासों और सिंगार तथा सजधज के साथ सामने मौजूद हैं और आप किसी की तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाते और बिल्कुल रूख़ नहीं करते.

(११) अब तुमने देख लिया और तुम्हें मालूम हो गया कि मेरी दीवानगी कुछ आश्चर्य की और मलामत करने वाली बात नहीं है.

(१२) और किसी तरह मेरी तरफ़ न झुके. इसपर मिस्री औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहा कि आप ज़ुलैख़ा का कहना मान लीजिये. ज़ुलैख़ा बोली.

(१३) और चोरों और क़ातिलों और नाफ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्योंकि उन्होंने मेरा दिल लिया और मेरी नाफ़रमानी की और वियोग की तलवार से मेरा ख़ून बहाया, तो यूसुफ़ को भी ख़ुशगवार ख़ाना पीना और आराम की नींद सोना नहीं मिलेगा, जैसा मैं

الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾
قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ
قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ
ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ
مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُونَ
مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا

हैं जिन में से परिन्दे खाते हैं, हमें इसकी ताबीर बताइये, बेशक हम आपको नेकी करने वाला देखते हैं[५]﴾३६﴿ यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं उसकी ताबीर उसके आने से पहले तुम्हें बता दूंगा[६] यह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है, बेशक मैंने उन लोगों का दीन न माना जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वो आख़िरत से इन्कारी हैं﴾३७﴿ और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब का दीन इख़्तियार किया[७] हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराएं[८] यह अल्लाह का एक फ़ज़्ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते[९]﴾३८﴿ ऐ मेरे क़ैद ख़ाने के दोनों साथियो क्या अलग अलग रब[१०] अच्छे या एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब (बलवान)[११]﴾३९﴿ तुम उसके सिवा नहीं पूंजते मगर निरे नाम जो तुम और तुम्हारे बाप दादा ने तराश लिये हैं[१२] अल्लाह ने उनकी कोई सनद न उतारी, हुक्म नहीं मगर अल्लाह का, उसने फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो[१३] यह सीधा दीन है[१४] लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[१५]﴾४०﴿ ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को

जुदाई की तक्लीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हूँ, यह भी तो कुछ तक्लीफ़ उठाएं. मेरे साथ मख़मल में शाहाना बिस्तर पर ऐश गवारा नहीं तो क़ैद ख़ाने के चुभने वाले बोरिये पर नंगे बदन को दुखाना गवारा करें. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यह सुनकर मजलिस से उठ गए और मिस्री औरतें मलामत करने के बहाने से बाहर आईं और एक एक ने आपसे अपनी इच्छाओं मुरादों का इज़हार किया. आपको उनकी बातें बहुत बुरी लगीं तो बारगाहे इलाही में. (ख़ाज़िन व मदारिक व हुसैनी)

(१४) और अपनी इस्मत की पनाह में न लेगा.

(१५) जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से उम्मीद पूरी होने की कोई सूरत न देखी तो मिस्री औरतों ने ज़ुलैख़ा से कहा कि अब यही मुनासिब मालूम होता है कि दो तीन दिन तक यूसुफ़ को क़ैद ख़ाने में रखा जाए ताकि वहाँ की सख़्तियाँ देखकर उन्हें नेअमत और राहत की क़द्र हो और वह तेरी दरख़्वास्त क़ुबूल करें. ज़ुलैख़ा ने इस राय को माना और अज़ीज़ से कहा कि मैं इस इब्री गुलाम की वजह से बदनाम हो गई हूँ और मेरी तबीअत उससे नफ़रत करने लगी है. मुनासिब यह है कि उनको क़ैद किया जाए ताकि लोग समझ लें कि वह ख़तावार हैं और मैं मलामत से बरी हूँ. यह बात अज़ीज़ की समझ में आ गई.

(१६) चुनांचे उन्होंने ऐसा किया और आपको क़ैदे ख़ाने में भेज दिया.

सूरए यूसुफ़ - पाँचवां रुकू

(१) उनमें से एक तो मिस्र के शाहे आज़म वलीद बिन नज़वान अमलीक़ी का रसोई प्रबन्धक था और दूसरा उसको शराब पिलाने वाला. उन दोनों पर यह इल्ज़ाम था कि उन्हों ने बादशाह को ज़हर देना चाहा. इस जुर्म में दोनों क़ैद किये गए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब क़ैद ख़ाने में दाख़िल हुए तो आपने अपने इल्म का इज़हार शुरु कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की ताबीर का इल्म रखता हूँ.

(२) जो बादशाह को शराब पिलाता था.

(३) मैं एक बाग़ में हूँ वहाँ एक अगूंर के दरख़्त में तीन ख़ोशे पके लगे हैं. बादशाह का प्याला मेरे हाथ में है. मैं उन ख़ोशों से.

(४) यानी रसोई प्रबन्धक.

(५) कि आप दिन में रोज़े से रहते हैं, सारी रात नमाज़ में गुज़ारते हैं. जब कोई जेल में बीमार होता है उसकी देखभाल करते हैं. जब किसी पर तंगी होती है, उसके लिये अच्छाई की राह निकालते हैं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनके ताबीर देने से पहले अपने चमत्कार का इज़हार और तौहीद की दावत शुरू कर दी और यह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आपका दर्जा इससे ज़्यादा है जितना वो लोग आपकी निस्बत मानते हैं. चूंकि ताबीर का इल्म अन्दाज़े पर आधारित है इसलिये आपने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमादें कि

فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ
الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ؕ۝٤١
وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫
فَاَنْسٰهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ
سِنِيْنَ ۝٤٢ ع وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ
كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝٤٣ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا
نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝٤٤ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ
فَاَرْسِلُوْنِ ۝٤٥ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ
سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ

शराब पिलाएगा(१६) रहा दूसरा(१७) वह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उसका सर खाएंगे(१८) हुक्म हो चुका उस बात का जिसका तुम सवाल करते थे(१९)﴾४१﴿ और यूसुफ़ ने उन दोनों से जिसे बचता समझा(२०) उससे कहा अपने रब(बादशाह) के पास मेरा ज़िक्र करना(२१) तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब(बादशाह) के सामने यूसुफ़ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाने में रहा(२२)﴾४२﴿

छटा रुकू

और बादशाह ने कहा मैं ने ख़्वाब में देखा सात गाएं मोटी कि उन्हें सात दुबली गाएं खा रही हैं और सात बालें हरी और दूसरी सात सूखी(१) ऐ दरबारियो मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ताबीर आती हो﴾४३﴿ बोले परेशान ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ताबीर नहीं जानते﴾४४﴿ और बोला वह जो उन दोनों में से बचा था(२) और एक मुद्दत बाद उसे याद आया(३) मैं तुम्हें इसकी ताबीर बताऊंगा मुझे भेजो(४)﴾४५﴿ ऐ यूसुफ़ सिद्दीक़(सच्चे) हमें ताबीर दीजिये सात मोटी गायों की जिन्हें सात दुबली खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात सूखी(५) शायद मैं लोगों की तरफ़

आप ग़ैब की यक़ीनी ख़बरें देने की क्षमता रखते हैं और इससे मख़लूक़ आजिज़ है. जिसको अल्लाह तआला ने ग़ैबी उलूम अता फ़रमाए हों उसके नज़दीक ख़्वाब की ताबीर क्या बड़ी बात है . उस वक़्त चमत्कार का इज़हार आपने इस लिये फ़रमाया कि आप जानते थे कि इन दोनों में एक जल्द ही फांसी दिया जाएगा. तो आपने चाहा कि उसको कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल कर दें और जहन्नम से बचालें . इससे मालूम हुआ कि आलिम अगर अपनी इल्मी महानता का इज़हार इसलिये करे कि लोग उससे नफ़ा उठाएं तो यह जायज़ है. (मदारिक व ख़ाज़िन)

(६) उसकी मात्रा और उसका रंग और उसके आने का वक़्त और यह कि तुमने क्या खाया या कितना खाया, कब खाया.

(७) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने चमत्कार का इज़हार फ़रमाने के बाद यह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप नबियों के ख़ानदान से हैं और आपके बाप दादा नबी हैं जिनका ऊंचा दर्जा दुनिया में मशहूर है. इससे आपका मक़सद यह था कि सुनने वाले आपकी दावत क़ुबूल करें और आपकी हिदायत को मानें.

(८) तौहीद इख़्तियार करना और शिर्क से बचना.

(९) उसकी इबादत बजा नहीं लाते और मख़लूक़ परस्ती करते हैं.

(१०) जैसे कि बुत परस्तों ने बना रखे हैं कोई सोने का, कोई चांदी का, कोई तांबे का, कोई लोहे का, कोई लकड़ी का, कोई पत्थर का, कोई और चीज़ का, कोई छोटा, कोई बड़ा. मगर सब के सब निकम्मे बेकार, न नफ़ा दे सकें, न नुक़सान पहुंचा सकें. ऐसे झूटे मअबूद.

(११) कि न कोई उसका मुक़ाबिल हो सकता है न उसके हुक्म में दख़्ल दे सकता है, न उसका कोई शरीक है, न उस जैसा. सब पर उसका हुक्म जारी और सब उसके ममलूक.

(१२) और उनका नाम मअबूद रख लिया है जबकि वो बेहक़ीक़त पत्थर हैं.

(१३) क्योंकि सिर्फ़ वही इबादत के लायक़ है.

(१४) जिस पर दलीलें और निशानियाँ क़ायम हैं.

(१५) तौहीद और अल्लाह की इबादत की दावत देने के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब की ताबीर की तरफ़ तवज्जह फ़रमाई और इरशाद किया.

(१६) यानी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ोशे जो ख़्वाब में बयान किये गए हैं ये तीन दिन हैं . इतने ही दिन क़ैद ख़ाने में रहेगा फिर बादशाह उसको बुला लेगा.

(१७) यानी रसोई और ख़ाने का इन्तिज़ाम रखने वाला.

(१८) हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ताबीर सुनकर उन दोनों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहा कि

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ
فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾
ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ
فِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْــَٔلْهُ مَا بَالُ
النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ
قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ؗ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

लौट कर जाऊं शायद वो आगाह हों[६]﴿४६﴾ कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार[७] तो जो करो उसे उसकी बाल में रहने दो[८] मगर थोड़ा जितना खालो[९]﴿४७﴾ फिर उसके बाद सात करें बरस आएंगे[१०] कि खा जाएंगे जो तुमने उनके लिये पहले से जमा कर रखा था[११] मगर थोड़ा जो बचालो[१२]﴿४८﴾ फिर उनके बाद एक बरस आएगा जिसमें लोगों को मेंह दिया जाएगा और उसमें रस निचोड़ेंगे[१३]﴿४९﴾

सातवाँ रूकू

और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ, तो जब उसके पास एलची आया[१] कहा अपने रब(बादशाह) के पास पलट जा फिर उससे पूछ[२] क्या हाल है उन औरतों का जिन्होंने अपने हाथ काटे थे बेशक मेरा रब उनका धोखा जानता है[३]﴿५०﴾ बादशाह ने कहा ऐ औरतो तुम्हारा क्या काम था जब तुमने यूसुफ़ का दिल लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हमने उनमें कोई बदी न पाई अज़ीज़ की औरत बोली अब असली बात खुल गई मैं ने उनका जी लुभाना चाहा था और वो बेशक सच्चे हैं[४]﴿५१﴾ यूसुफ़ ने कहा यह मैं ने इस लिये किया कि अज़ीज़ को मालूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे उसकी ख़यानत(विश्वास घात) न की और अल्लाह दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता﴿५२﴾

ख़्वाब तो हमने कुछ भी नहीं देखा हम तो हंसी कर रहे थे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया.
(१९) जो मैंने कह दिया वह ज़रूर वाक़े होगा, तुमने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो. अब यह हुक्म टल नहीं सकता.
(२०) यानी साक़ी को.
(२१) और मेरा हाल बयान करना कि क़ैद ख़ाने में एक मज़लूम बेगुनाह क़ैद है और उसकी क़ैद को एक ज़माना गुज़र चुका है.
(२२) अकसर मुफ़स्सिरों ने कहा है कि इस घटना के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम सात बरस और क़ैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे और इस मुद्दत के गुज़रने के बाद जब अल्लाह तआला को हज़रत यूसुफ़ का क़ैद से निकालना मन्ज़ूर हुआ तो मिस्र के शाहे आज़म रैयान बिन वलीद ने एक अजीब ख़्वाब देखा जिससे उसको बहुत परेशानी हुई और उसने मुल्क के तांत्रिकों और जादूगरों और ताबीर देने वालों को जमा करके उनसे अपना ख़्वाब बयान किया.

सूरए यूसुफ़ - छटा रूकू

(१) जो हरी पर लिपटीं और उन्होंने हरी को सुखा दिया.
(२) यानी साक़ी.
(३) कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया था कि अपने मालिक के सामने मेरा ज़िक्र करना. साक़ी ने कहा कि.
(४) क़ैद ख़ाने में . वहाँ ख़्वाब की ताबीर के एक आलिम हैं. तो बादशाह ने उसको भेज दिया. वह क़ैद ख़ाने में पहुंचकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ करने लगा.
(५) यह ख़्वाब बादशाह ने देखा है और मुल्क के सारे उलमा और जानकार लोग इसकी ताबीर से आजिज़ रहे हैं. हज़रत इसकी ताबीर इरशाद फ़रमाएं.
(६) ख़्वाब की ताबीर से, और आपके इल्म और बुज़ुर्गी और ऊंचे दर्जे को जानें और आपको इस मेहनत से रिहा करके अपने पास बुलाएं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ताबीर दी और.
(७) ज़माने में ख़ूब पैदावार होगी, सात मोटी गायों और सात हरी बालों से इसी की तरफ़ इशारा है.
(८) ताकि ख़राब न हो और आफ़तों से मेहफ़ूज़ रहे.

(९) उसपर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ करलो. बाक़ी को ज़ख़ीरा या भंडार बना कर मेहफ़ूज़ कर लो.
(१०) जिनकी तरफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है.
(११) और भंडार कर लिया था.
(१२) बीज के लिये ताकि उससे खेती करो.
(१३) अंगूर का और तिल ज़ैतून के तेल निकालेंगे. यह साल काफ़ी ख़ुशहाली का होगा. ज़मीन हरी भरी ताज़ा होगी. दरख़्त ख़ूब फलेंगे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से यह ताबीर सुनकर एलची वापस हुआ और बादशाह की ख़िदमत में जाकर ताबीर बयान की. बादशाह को यह ताबीर बहुत पसन्द आई और उसे यक़ीन हुआ कि जैसा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा है वैसा ज़रूर होगा. बादशाह को शौक़ पैदा हुआ कि इस ख़्वाब की ताबीर ख़ुद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुबारक ज़बान से सुने .

सूरए यूसुफ़ - सातवाँ रूकू

(१) और उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में बादशाह का संदेश अर्ज़ किया तो आपने..
(२) यानी उससे दरख़्वास्त कर कि वह पूछे, तफ़्तीश करे.
(३) यह आपने इसलिये फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आपकी बेगुनाही मालूम हो जाए और यह उसको मालूम हो कि यह लम्बी क़ैद बे वजह हुई ताकि आयन्दा हासिदों को डंक मारने का मौक़ा न मिले. इससे मालूम हुआ कि तोहमत या लांछन दूर करने की कोशिश करना ज़रूरी है. अब क़ासिद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास से यह पयाम लेकर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा. बादशाह ने सुनकर औरतों को जमा किया और उनके साथ अज़ीज़ की औरत को भी.
(४) ज़ुलैख़ा.
(५) बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पयाम भेजा कि औरतों ने आपकी पाकी बयान की और अज़ीज़ की औरत ने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया इस पर हज़रत.

पारा बारह समाप्त

तेरहवां पारा - वमा-उबर्रिओ
(सूरए यूसुफ़ जारी)

और मैं अपने नफ़्स(मन) को बेक़ुसूर नहीं बताता[६] बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिसपर मेरा रब रहम करे[७] बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[८]﴿५३﴾ और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने लिये चुन लूं[९] फिर जब उससे बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहाँ मुअज़्ज़ज़(सम्मानित) मोतमिद(विश्वस्त) हैं[१०]﴿५४﴾ यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर करदे, बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूँ[११]﴿५५﴾ और यूंही हमने यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी, उसमें जहाँ चाहे रहे[१२] हम अपनी रहमत[१३] जिसे चाहे पहुंचाएं और हम नेकों का नेग ज़ाया(नष्ट) नहीं करते﴿५६﴾ और बेशक आख़िरत का सवाब उनके लिये बेहतर जो ईमान लाए और परहेज़गार रहे[१४]﴿५७﴾

आठवाँ रूकू

और यूसुफ़ के भाई आए तो उसके पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें[१] पहचान लिया और वो उससे अंजान रहे[२]﴿५८﴾ और जब उनका सामान मुहैया कर दिया[३] कहा अपना सौतेला भाई[४] मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा नापता हूँ[५] और मैं सब से बेहतर मेहमान नवाज़ हूँ﴿५९﴾ फिर अगर उसे लेकर मेरे पास न आओ तो

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ۝ قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ

منزل ٣

सूरए यूसुफ़ - सातवाँ रूकू (जारी)

(६) ज़ुलैख़ा के इक़रार और ऐतिराफ़ के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़रमाया था कि मैंने अपनी बेगुनाही का इज़हार इसलिये चाहा था ताकि अज़ीज़ को यह मालूम हो जाए कि मैं ने उसकी ग़ैर हाज़िरी में उसकी ख़यानत नहीं की है और उसकी बीबी की इज़्ज़त ख़राब करने से दूर रहा हूँ और जो इल्ज़ाम मुझपर लगाए गए हैं, मैं उनसे पाक हूँ. इसके बाद आपका ख़याले मुबारक इस तरफ़ गया कि इसमें अपनी तरफ़ पाकी की निस्बत और अपनी नेकी का बयान है, ऐसा न हो कि इसमें घमण्ड और अहंकार की भावना भी आए. इसी लिये अल्लाह तआला की बारगाह में विनम्रता से अर्ज़ किया कि मैं अपने नफ़्स को बेक़ुसूर नहीं मानता, मुझे अपनी बेगुनाही पर घमण्ड नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ़्स की ख़ूबी क़रार नहीं देता. नफ़्स की जिन्स का यह हाल है कि.

(७) यानी अपने जिस ख़ास बन्दे को अपने करम से मासूम करे तो उसका बुराइयों से बचना अल्लाह के फ़ज़्ल और रहमत से है और गुनाहों से मेहफ़ूज़ रखना उसी की मेहरबानी है.

(८) जब बादशाह को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के इल्म और आपकी अमानत का हाल मालूम हुआ और वह आपके अच्छे सब्र और अच्छे अदब, क़ैद ख़ाने वालों के साथ एहसान, मेहनतों और तकलीफ़ों के बावुजूद साबित क़दम रहने पर सूचित हुआ तो उसके दिल में आपका बहुत ही ज़्यादा अक़ीदा पैदा हुआ.

(९) और अपना ख़ास बना लूं. चुनांचे उसने प्रतिष्ठित लोगों की एक जमाअत, बहतरीन सवारियाँ और शाही साज़ो सामान और उमदा लिबास लेकर क़ैद ख़ाने भेजी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अत्यन्त आदर और सत्कार के साथ शाही महल में लाएं. उन लोगों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बादशाह का संदेश अर्ज़ किया. आपने क़ुबूल फ़रमाया और क़ैद ख़ाने से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिये दुआ फ़रमाई. जब क़ैद ख़ाने से बाहर तशरीफ़ लाए तो उसके दरवाज़े पर लिखा कि यह बला का घर, ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चों के इम्तिहान की जगह है. फिर ग़ुस्ल फ़रमाया और पोशाक पहन कर शाही महल की तरफ़ रवाना हुए. जब क़िले के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया मेरा रब मुझे काफ़ी है, उसकी पनाह बड़ी और उसकी तारीफ़ महान. उसके सिवा कोई मअबूद नहीं. फिर क़िले में दाख़िल हुए. बादशाह के सामने पहुंचे तो यह दुआ की कि ऐ मेरे रब, मैं तेरे फ़ज़्ल से इसकी भलाई तलब करता हूँ और इसकी और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ. जब बादशाह

عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ۝ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ
اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا
بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَا اِذَا انْقَلَبُوْآ
اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَلَمَّا رَجَعُوْآ
اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ
مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝ قَالَ هَلْ
اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ
فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا
فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ
وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ
ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ۝ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى
تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

तुम्हारे लिये मेरे यहाँ नाप नहीं और मेरे पास न फटकना(६०) बोले हम इसकी ख़्वाहिश करेंगे उसके बाप से और हमें यह ज़रूर करना(६१) और यूसुफ़ ने अपने ग़ुलामों से कहा इनकी पूंजी इनकी ख़ुर्जियों में रख दो[6] शायद वो इसे पहचानें जब अपने घर की तरफ़ लौट कर जाएं[7] शायद वो वापस आएं(६२) फिर जब वो अपने बाप की तरफ़ लौटकर गए[8] बोले ऐ हमारे बाप हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया है[9] तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि ग़ल्ला लाएं और हम ज़रूर इसकी हिफ़ाज़त करेंगे(६३) कहा क्या इसके बारे में तुमपर वैसा ही भरोसा कर लूं जैसा पहले इसके भाई के बारे में किया था[10] तो अल्लाह सबसे बेहतर निगहबान और वह हर मेहरबान से बढ़कर मेहरबान(६४) और जब उन्होंने अपना सामान खोला अपनी पूंजी पाई कि उनको फेर दी गई है बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें यह है हमारी पूंजी कि हमें वापस करदी गई और एक ऊंट का बोझा और ज़्यादा पाएं, यह दुनिया बादशाह के सामने कुछ नहीं[11](६५) कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जबतक तुम मुझे अल्लाह का यह एहद न दे दो[12] कि ज़रूर उसे लेकर आओगे मगर

से नज़र मिली तो आपने अरबी में सलाम फ़रमाया. बादशाह ने दरियाफ़्त किया, यह क्या ज़बान है . फ़रमाया, यह मेरे चचा हज़रत इस्माईल की ज़बान है. फिर आपने उसको इब्रानी में दुआ दी. उसने पूछा, यह कौन ज़बान है. फ़रमाया यह मेरे अब्बा की ज़बान है. बादशाह ये दोनों ज़बानें न समझ सका, जबकि वह सत्तर ज़बानें जानता था. फिर उसने जिस ज़बान में हज़रत से बात की, आपने उसी ज़बान में उसको जवाब दिया. उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तीस साल की थी. इस उम्र में इल्म का यह चमत्कार देखकर बादशाह बहुत हैरान हुआ और उसने आप को अपने बराबर जगह दी.

(१०) बादशाह ने दरख़्वास्त की कि हज़रत उसके ख़्वाब की ताबीर अपनी मुबारक ज़बान से सुना दें. हज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़सील भी सुना दी, जिस जिस तौर से कि उसने देखा था. जबकि आपसे यह ख़्वाब पहले संक्षेप में बयान किया गया था. इससे बादशाह को बहुत आश्चर्य हुआ. कहने लगा कि आपने मेरा ख़्वाब हू बहू बयान फ़रमा दिया. ख़्वाब तो अजीब था ही, मगर आपका इस तरह बयान फ़रमा देना उससे भी ज़्यादा अजीब है. अब ताबीर इरशाद हो जाए. आपने ताबीर बयान फ़रमाने के बाद इरशाद फ़रमाया कि अब लाज़िम है कि ग़ल्ले जमा किये जाएं और इन ख़ुशहाली के सालों में कसरत से खेती कराई जाए और ग़ल्ले बालों समेत सुरक्षित किए जाएं और जनता की पैदावार में से पांचवां हिस्सा लिया जाए. इससे जो जमा होगा वह मिस्र और आस पास के प्रदेशों के रहने वालों के लिये काफ़ी होगा. फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहाँ इतने ख़ज़ाने और माल भंडार जमा होंगे जो तुझ से पहलों के लिये जमा न हुए. बादशाह ने कहा यह इन्तिज़ाम कौन करेगा.

(११) यानी अपनी सल्तनत के सारे ख़ज़ाने मेरे सुपुर्द कर दे. बादशाह ने कहा, आपसे ज़्यादा इसका मुस्तहिक़ और कौन हो सकता है. उसने इसको मंज़ूर कर लिया. हदीस के मसाइल में सरदारी की तलब को मना फ़रमाया गया है. इसके मानी ये हैं कि जब मुल्क में योग्य और सक्षम लोग हों और अल्लाह के आदेशों का क़ायम रखना किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो, उस वक़्त सरदारी तलब करना मकरूह है. लेकिन जब एक ही शख़्स योग्य और सक्षम हो तो उसको अल्लाह के एहकाम क़ायम करने के लिये इमारत यानी सरदारी तलब करना जायज़ बल्कि वाजिब है. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इसी हाल में थे. आप जानते थे कि सख़्त दुष्काल पड़ने वाला है जिसमें इन्सान को राहत और आसायश पहुंचाने का यही रास्ता है कि हुकूमत की बाग डोर को आप अपने हाथ में लें. इसलिये आपने सरदारी तलब फ़रमाई. ज़ालिम बादशाह की तरफ़ से ओहदे क़ुबूल करना इन्साफ़ क़ायम करने की नियत से जायज़ है. अगर दीन के अहकाम का जारी करना काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह की मदद के बिना सम्भव न हो तो ऐसी सूरत में उससे सहायता लेना जायज़ है. अपनी ख़ूबियों का बयान घमण्ड और अहंकार के लिये नाजायज़ है, लेकिन दूसरों को नफ़ा पहुंचाने या ख़ल्क़ के अधिकारों की हिफ़ाज़त करने के लिये अगर इज़हार की ज़रूरत पेश आए तो मना नहीं. इसी लिये हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बादशाह से फ़रमाया कि मैं हिफ़ाज़त और इल्म वाला हूँ.

(१२) सब उनके इस्तेमाल के तहत है. सरदारी तलब करने के एक साल बाद बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुलाकर

आपकी ताज पोशी की और तलवार और मोहर आपके सामने पेश की और आपको सोने के तख़्त पर बिठाया जिसमें जवाहिर जड़े हुए थे और अपना मुल्क आपके हाथ में दिया और क़ितफ़ीर (अज़ीज़े मिस्र) को गद्दी से उतार कर आपको उसकी जगह रखा. सारे ख़ज़ाने आपके मातहत कर दिये और ख़ुद आपकी रिआया की तरह हो गया कि आपकी राय में दख़्ल न देता और आपके हर हुक्म को मानता. उस ज़माने में अज़ीज़े मिस्र का इन्तिक़ाल हो गया. बादशाह ने उसके मरने के बाद ज़ुलैख़ा का निकाह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ कर दिया. जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़ुलैख़ा के पास पहुंचे और उससे फ़रमाया, क्या यह उससे बेहतर नहीं है जो तू चाहती थी. ज़ुलैख़ा ने अर्ज़ किया ऐ सिद्दीक़, मुझे मलामत न कीजिये. मैं ख़ूबसूरत थी, नौजवान थी, ऐश में थी और अज़ीज़े मिस्र औरतों से तअल्लुक़ ही न रखता था. आपको अल्लाह तआला ने यह हुस्न व जमाल अता किया है. मेरा दिल इख़्तियार से बाहर हो गया. अल्लाह तआला ने आप को गुनाहों से हमेशा के लिये मेहफ़ूज़ रखा है, आप मेहफ़ूज़ ही रहे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ज़ुलैख़ा को अनछुई पाया और उससे आपके दो बेटे हुए, इफ़रासीम और मयसा और मिस्र में आपकी हुकूमत मज़बूत हुई. आपने इन्साफ़ की बुनियादें क़ायम कीं. हर मर्द औरत के दिल में आपकी महब्बत पैदा हुई. और आपने दुष्काल के दिनों के लिये ग़ल्ले के भंडार जमा करने की तदबीर फ़रमाई. इसके लिये बड़े बड़े आलीशान भंडारख़ाने बनवाए और बहुत ज़्यादा ज़ख़ीरे जमा किये. जब ख़ुशहाली के साल गुज़र गए और क़हत और सूखा का ज़माना आया तो आपने बादशाह और उसके ख़ादिमों के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा दिया. एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने हज़रत से भूख की शिकायत की. आपने फ़रमाया, यह क़हत और दुष्काल की शुरूआत है. पहले साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे, सब ख़त्म हो गए. बाज़ार ख़ाली हो गए. मिस्र वाले हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से जिन्स ख़रीदने लगे और उनके सारे दिरहम दीनार आपके पास आगए. दूसरे साल ज़ेवर और जवाहिरात से ग़ल्ला ख़रीदा और वो तमाम आपके पास आगए. लोगों के पास ज़ेवर और जवाहिरात की क़िस्म से कोई चीज़ न रही. तीसरे साल चौपाए और जानवर देकर ग़ल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा. चौथे साल में ग़ल्ले के लिये तमाम गुलाम और दासियाँ बेच डालीं. पाँचवें साल सारी ज़मीनें और अमला और जागीरें बेच कर हज़रत से ग़ल्ला ख़रीदा और ये सारी चीज़ें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गईं. छटे साल जब कुछ न रहा तो उन्होंने अपनी औलादें बेचीं . इस तरह ग़ल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा. सातवें साल वो लोग ख़ुद बिक गए और गुलाम बन गए और मिस्र में कोई आज़ाद मर्द व औरत बाक़ी न रहा, जो मर्द था वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का गुलाम था, जो औरत थी वह आपकी दासी थी . लोगों की ज़बान पर था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की सी अज़मत और जलाल कभी किसी बादशाह को हासिल नहीं हुआ. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने बादशाह से कहा, तू ने देखा अल्लाह का मुझपर कैसा करम है. उसने मुझपर ऐसा अज़ीम एहसान फ़रमाया है. अब उनके हक़ में तेरी क्या राय है. बादशाह ने कहा जो हज़रत की राय, हम आपके फ़रमाँबरदार हैं. आपने फ़रमाया मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुझको गवाह करता हूँ कि मैं ने सारे मिस्र वासियों को आज़ाद कर दिया और उनके तमाम माल और जागीरें वापस कर दीं. उस ज़माने में हज़रत ने कभी पेट भर खाना नहीं खाया. आप से अर्ज़ किया गया इतने ज़बरदस्त ख़ज़ानों के मालिक होकर आप भूखे रहते हैं. फ़रमाया इस डर से कि पेट भर जाए तो कहीं भूखों को न भूल जाऊं. सुब्हानल्लाह, क्या पाकीज़ा संस्कार हैं. मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि मिस्र के सारे औरत मर्द को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ख़रीदे हुए गुलाम और दासियाँ बनाने में अल्लाह तआला की यह हिकमत थी कि किसी को कहने का मौक़ा न हो कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम गुलाम की शान में आए थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं बल्कि सब मिस्री उनके ख़रीदे और आज़ाद किये हुए गुलाम हों. और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो उस हालत में सब्र किया उसका यह इनाम दिया गया.

(१३) यानी मुल्क और दौलत या नबुव्वत.

(१४) इससे साबित हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिये आख़िरत का अज्र व सवाब उससे बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल और आला है, जो अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया में अता फ़रमाया. इब्ने ऐनिया ने कहा कि मूमिन अपनी नेकियों का फल दुनिया और आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है, दुनिया ही में पाता है. आख़िरत में उसको कोई हिस्सा नहीं. मुफ़स्सिरों ने बयान किया है कि जब दुष्काल और क़हत की तीव्रता बढ़ी और बला आम हो गई, तमाम प्रदेश सूखे की सख़्त मुसीबत में जकड़ गए और हर दिशा से लोग ग़ल्ला ख़रीदने के लिये मिस्र पहुंचने लगे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम किसी को एक ऊंट के बोझ से ज़्यादा ग़ल्ला नहीं देते थे ताकि बराबरी रहे और सब की मुसीबत दूर हो. क़हत की जैसी मुसीबत मिस्र और सारे प्रदेश में आई, ऐसी ही कनआन में भी आई. उस वक़्त हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने बिन यामीन के सिवा अपने दसों बेटों को ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र भेजा.

सूरए यूसुफ़ - आठवाँ रूकू

(१) देखते ही.

(२) क्योंकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंएं में डालने से अब तक चालिस साल का लम्बा ज़माना गुज़र चुका था. उनका यह ख़याल था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो चुका होगा. यहाँ आप शाही तख़्त पर शाहाना लिबास में शानो शौकत के साथ जलवा फ़रमा थे. इसलिये उन्होंने आपको न पहचाना और आपसे इब्रानी ज़बान में बात की. आप ने भी उसी ज़बान में जवाब दिया. आपने फ़रमाया तुम कौन लोग हो. उन्होंने अर्ज़ किया हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुनिया जकड़ी हुई

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى
مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا
مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۚ
وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا
لِلّٰهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝
وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۚ مَا كَانَ
يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ
نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ۚ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوْا
عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا
اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ
رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

यह कि तुम घिर जाओ(१३) फिर जब उन्होंने याक़ूब को एहद दे दिया कहा(१४) अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं(६६) और कहा ऐ मेरे बेटो(१५) एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और अलग अलग दरवाज़ों से जाना(१६) मैं तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता(१७) हुक्म तो सब अल्लाह ही का है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये(६७) और जब वो दाख़िल हुए जहाँ उनके बाप ने हुक्म दिया था(१८) वह उन्हें कुछ अल्लाह से बचा न सकता हाँ याक़ूब के जी में एक ख़ाहिश थी जो उसने पूरी करली और बेशक वह इल्म वाला है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं जानते(१९)(६८)

नवाँ रूकू

और जब वो यूसुफ़ के पास गए(१) उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी(२) कहा यक़ीन जान मैं ही तेरा भाई हूँ(३) तो ये जो कुछ करते हैं उसका ग़म न खा(४)(६९) फिर जब उनका सामान मुहैया कर दिया(५) प्याला अपने भाई के कजावे में रख दिया(६) फिर एक मुनादी (उदघोषक) ने निदा(एलान) की ऐ क़ाफ़िले वालो

है उसी में हम भी हैं. आप से ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं. आपने फ़रमाया, कहीं तुम जासूस तो नहीं हो. उन्होंने कहा हम अल्लाह की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं. हम सब भाई हैं एक बाप की औलाद हैं. हमारे वालिद काफ़ी बुज़ुर्ग उम्र वाले सीधे सच्चे आदमी हैं. उनका नाम हज़रत यअक़ूब है, वह अल्लाह के नबी हैं. आपने फ़रमाया तुम कितने भाई हो. कहने लगे, थे तो हम बारह, मगर एक भाई हमारा हमारे साथ जंगल में गया था, हलाक हो गया और वह वालिद साहब को हम सबसे प्यारा था. फ़रमाया अब तुम कितने हो. अर्ज़ किया दस. फ़रमाया ग्यारहवाँ कहाँ है. कहा वह वालिद साहब के पास है क्योंकि जो हलाक हो गया वह उसीका सगा भाई था. अब वालिद साहब की उसी से कुछ तसल्ली होती है. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इन भाइयों की बहुत इज़्ज़त की और बहुत आओ भगत की.

(३) हर एक का ऊंट भर दिया और सफ़र ख़र्च दे दिया.

(४) यानी बिन यामीन.

(५) उसको ले आओगे तो एक ऊंट ग़ल्ला उसके हिस्से का और ज़्यादा दूंगा.

(६) जो उन्होंने क़ीमत में दी थी ताकि जब वो अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाए और क़हत के ज़माने में काम आए और छुपकर उनके पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आए और यह करम और एहसान दुबारा आने के लिये उनकी रग़बत का कारण भी हो.

(७) और उसका वापस करना ज़रूरी समझें.

(८) और बादशाह के सदव्यवहार और उसके एहसान का ज़िक्र किया. कहा कि उसने हमारी वह इज़्ज़त और सम्मान किया कि अगर आपकी औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता. फ़रमाया अब अगर तुम मिस्र के बादशाह के पास जाओ तो मेरी तरफ़ से सलाम पहुंचा देना और कहना कि हमारे वालिद तेरे हक़ में तेरे इस सुलूक की वजह से दुआ करते हैं.

(९) अगर आप हमारे भाई बिन यामीन को न भेजेंगे तो ग़ल्ला न मिलेगा.

(१०) उस वक़्त भी तुमने हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था.

(११) क्योंकि उसने उससे ज़्यादा एहसान किये हैं.

(१२) यानी अल्लाह की क़सम न खाओ.

(१३) और उसको लेकर तुम्हारी ताक़त से बाहर हो जाए.

(१४) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम.

(१५) मिस्र में.

(१६) ताकि बुरी नज़र से मेहफ़ूज़ रहो. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि नज़र बरहक़ है. पहली बार हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने

لَسٰرِقُوْنَ ۝ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ ۝
قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ
وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا
لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝ قَالُوْا
فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ
مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ
كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ
نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝ قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ
فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ
فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ

बेशक तुम चोर हो ﴿७०﴾ बोले और उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए तुम क्या नहीं पाते ﴿७१﴾ बोले बादशाह का पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उसके लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं उसका ज़ामिन हूँ ﴿७२﴾ बोले ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ूब मालूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने नहीं आए और न हम चोर हैं ﴿७३﴾ बोले फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम झूटे हो[७] ﴿७४﴾ बोले उसकी सज़ा यह है कि जिस के असबाब में मिले वही उसके बदले में ग़ुलाम बने[८] हमारे यहां ज़ालिमों की यही सज़ा है[९] ﴿७५﴾ तो पहले उनकी ख़ुर्जियों की तलाशी शुरू की अपने भाई[१०] की ख़ुर्जी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ुर्जी से निकाल लिया[११] हमने यूसुफ़ को यही तदबीर बताई[१२] बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले[१३] मगर यह कि ख़ुदा चाहे[१४] हम जिसे चाहें दर्जों बलन्द करें[१५] और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है[१६] ﴿७६﴾ भाई बोले अगर यह चोरी करे[१७] तो बेशक इससे पहले इसका भाई चोरी कर चुका है[१८] तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रखी और उनपर ज़ाहिर न की, जी में कहा तुम बदतर जगह हो[१९] और अल्लाह ख़ूब

यह नहीं फ़रमाया था इसलिये कि उस वक़्त तक कोई यह न जानता था कि यह सब भाई एक बाप की औलाद हैं. लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इसलिये नज़र लग जाने की संभावना थी. इस वास्ते आपने अलग अलग होकर दाख़िल होने का हुक्म दिया. इससे मालूम हुआ कि आफ़तों और मुसीबतों से बचने की तदबीर और मुनासिब एहतियात नबियों का तरीक़ा है. इसके साथ ही आपने काम अल्लाह को सौंप दिया कि एहतियातों के बावुजूद अल्लाह पर तवक्कुल और ऐतिमाद है, अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं.

(१७) यानी जो तक़दीर में लिखा है वह तदबीर से टाला नहीं जा सकता.

(१८) यानी शहर के विभिन्न दरवाज़ों से तो उनका अलग अलग होकर दाख़िल होना.

(१९) जो अल्लाह तआला अपने नेकों को इल्म देता है.

सूरए यूसुफ़ - नवाँ रूकू

(१) और उन्होंने कहा कि हम आपके पास अपने भाई बिन यामीन को ले आए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छा किया. फिर उन्हें इज़्ज़त के साथ मेहमान बनाया और जगह जगह दस्तर ख़्वान लगाए गए और हर दस्तर ख़्वान पर दो दो को बिठाया गया. बिन यामीन अकेले रहगए तो वह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ ज़िन्दा होते तो मुझे अपने साथ बिठाते. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आपने बिन यामीन को अपने दस्तर ख़्वान पर बिठाया.

(२) और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाक शुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे? बिन यामिन ने कहा कि आप जैसा भाई किसे मिले. लेकिन यअक़ूब अलैहिस्सलाम का बेटा और राहील (हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वालिदा) की आँखों का नूर होना तुम्हें कैसे हासिल हो सकता है. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम रो पड़े और बिन यामीन को गले से लगा लिया और.

(३) यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम)

(४) बेशक अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें ख़ैर के साथ जमा फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाइयों को ख़बर न देना. यह सुनकर बिन यामीन ख़ुशी से झूम उठे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहने लगे, अब मैं आपसे जुदा न होऊंगा. आपने फ़रमाया, वालिद साहब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंच चुका है. अगर मैंने तुम्हें भी रोक लिया तो उन्हें और ज़्यादा ग़म होगा. इसके अलावा रोकने की इसके सिवा और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी तरफ़ कोई ग़लत बात जुड़ जाए. बिन यामीन ने कहा इसमें कोई हर्ज नहीं.

(५) और हर एक को एक ऊंट के बोझ के बराबर ग़ल्ला दे दिया और एक ऊंट के बोझ के बराबर बिन यामीन के नाम ख़ास कर दिया.

مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا
الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا
مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ
اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ
اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا
نَجِيًّا ۭ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ
قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ
مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ
حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ۝ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ
اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ
كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا

जानता है जो बातें बनाते हो (७७) बोले ऐ अज़ीज़ इसके एक बाप हैं बूढ़े बड़े[२०] तो हम में इसकी जगह किसी को ले लो बेशक हम तुम्हारे एहसान देख रहे हैं (७८) कहा[२१] ख़ुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिसके पास हमारा माल मिला[२२] जब तो हम ज़ालिम होंगे (७९)

दसवाँ रूकू

फिर जब इससे ना उम्मीद हुए अलग जाकर कानाफूसी करने लगे, उनका बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का एहद ले लिया था और उससे पहले यूसुफ़ के हक़ में तुमने कैसी तक़सीर (अपराध) की तो मैं यहाँ से न टलूंगा यहां तक कि मेरे बाप[१] इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए[२] और उसका हुक्म सबसे बेहतर है (८०) अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अर्ज़ करो कि ऐ हमारे बाप बेशक आपके बेटे ने चोरी की[३] और हम तो इतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इल्म में थी[४] और हम ग़ैब के निगहबान न थे[५] (८१) और उस क़ाफ़िले से जिसमें हम आए और हम बेशक सच्चे

(६) जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहिरात से जड़ा हुआ था और उस वक़्त उससे ग़ल्ला नापने का काम लिया जाता था. यह प्याला बिन यामीन के कजावे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कनआन के इरादे से रवाना हो गया. जब शहर के बाहर जा चुका तो भंडार ख़ाने के कारकुनों को मालूम हुआ कि प्याला नहीं है. उनके ख़्याल में यही आया कि यह क़ाफ़िले वाले ले गए. उन्होंने उसकी तलाश के लिये आदमी भेजे.

(७) इस बात में, और प्याला तुम्हारे पास निकले.

(८) और हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की शरीअत में चोरी की यही सज़ा मुक़र्रर थी. चुनांचे उन्होंने कहा कि.

(९) फिर यह क़ाफ़िला मिस्र लाया गया और उन साहिबों को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दरबार में हाज़िर किया गया.

(१०) यानी बिन यामीन.

(११) यानी बिन यामीन की ख़ुर्जी से प्याला बरामद किया.

(१२) अपने भाई के लेने की. इस मामले में भाइयों से पूछें ताकि वो हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की शरीअत का हुक्म बताएं जिससे भाई मिल सके.

(१३) क्योंकि मिस्र के बादशाह के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दो गुना माल लेना मुक़र्रर थी.

(१४) यानी यह बात ख़ुदा की मर्ज़ी से हुई कि उनके दिल में डाल दिया कि सज़ा भाइयों से पूछें और उनके दिल में डाल दिया कि वो अपनी सुन्नत के मुताबिक़ जवाब दें.

(१५) इल्म में जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दर्जे बलन्द फ़रमाए.

(१६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर आलिम के ऊपर उससे ज़्यादा इल्म रखने वाला आलिम होता है. यहाँ तक कि ये सिलसिला अल्लाह तआला तक पहुंचता है. उसका इल्म सबके इल्म से बरतर है. इस आयत से साबित हुआ कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई आलिम थे और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उन सबसे ज़्यादा आलिम थे. जब प्याला बिन यामीन के सामान से निकला तो भाई शर्मिन्दा हुए और उन्होंने सर झुकाए और.

(१७) यानी सामान में प्याला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यक़ीनी नहीं लेकिन अगरचे ये काम उसका हो.

(१८) यानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और जिसको उन्होंने चोरी क़रार देकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ निस्बत किया. वो घटना यह थी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के नाना का एक बुत था जिसको वह पूजते थे. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने चुपके से वह बुत लिया और तोड़कर रास्ते में गन्दगी के अन्दर डाल दिया. यह हक़ीक़त में चोरी न थी, बुत परस्ती का मिटाना था. भाईयों का इस ज़िक्र से यह मक़सद था कि हम लोग बिन यामीन के सौतेले भाई हैं. यह काम हो तो शायद बिन यामीन का हो, न हमारी इसमें शिर्कत, न हमें इसकी सूचना.

لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝

منزل ٣

हैं(६) ﴾८२﴿ कहा(७) तुम्हारे नफ़्स (मन) ने तुम्हें कुछ हीला (बहाना) बना दिया तो अच्छा सब्र है क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझ से ला मिलाए(८) बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है ﴾८३﴿ और उनसे मुंह फेरा(९) और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उसकी आँखें ग़म से सफ़ेद हो गईं(१०) तो वह ग़ुस्सा खाता रहा ﴾८४﴿ बोले(११) ख़ुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहाँ तक कि गोर किनारे जा लगें या जान से गुज़र जाएं ﴾८५﴿ कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूँ(१२) और मुझे अल्लाह की वो शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते(१३) ﴾८६﴿ ऐ बेटो जाओ यूसुफ़ और उसके भाई का पता लगाओ और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग(१४) ﴾८७﴿ फिर जब वो यूसुफ़ के पास पहुंचे बोले ऐ अज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची(१५) और हम बेक़दर पूंजी लेकर आए हैं(१६) तो हमें पूरा नाप दीजिये(१७) और हम पर ख़ैरात कीजिये(१८) बेशक अल्लाह ख़ैरात वालों को सिला देता है(१९) ﴾८८﴿

(१९) इससे जिसकी तरफ़ चोरी की निस्बत करते हो, क्योंकि चोरी की निस्बत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरफ़ तो ग़लत है. वह काम तो शिर्क का मिटाना और इबादत था और तुमने जो यूसुफ़ के साथ किया, बड़ी ज़ियादतियाँ हैं.

(२०) उनसे महब्बत रखते हैं और उन्हीं से उनके दिल को तसल्ली है.

(२१) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने.

(२२) क्योंकि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी को लेने के मुस्तहिक़ हैं जिसके सामान में हमारा माल मिला. अगर हम उसके बदले दूसरे को लें.

सूरए यूसुफ़ - दसवाँ रूकू

(१) मेरे वापस आने की.

(२) मेरे भाई को ख़लासी देकर या उसको छोड़कर तुम्हारे साथ चलने का.

(३) यानी उनकी तरफ़ चोरी की निस्बत की गई.

(४) कि प्याला उनके सामान में निकला .

(५) और हमें ख़बर न थी कि यह सूरत पेश आएगी . हक़ीक़त क्या है अल्लाह ही जाने और प्याला किस तरह बिन यामीन के सामान से निकला.

(६) फिर ये लोग अपने वालिद के पास आए और सफ़र में जो पेश आया था उसकी ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बता दिया वह सब वालिद से अर्ज़ किया.

(७) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने, कि चोरी की निस्बत बिन यामीन की तरफ़ ग़लत है और चोरी की सज़ा ग़ुलाम बनाना यह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़तवा न देते और तुम्हीं न बताते तो.

(८) यानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को और उनके दोनों भाइयों को.

(९) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने, बिन यामीन की ख़बर सुनकर, और आपका ग़म और दुख चरम सीमा को पहुंच गया.

(१०) रोते रोते आँख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई कमज़ोर हो गई. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने कहा कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अस्सी बरस रोते रहे. ऐसा रोना जो तकलीफ़ और नुमाइश से न हो और उसके साथ अल्लाह की शिकायत और बेसब्री न पाई जाए, रहमत है. उन ग़म के दिनों में हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बेसब्री का न आया.

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ؗ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ؗ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا

बोले कुछ ख़बर है तुम ने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे[२०] ﴿८९﴾ बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं कहा मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई बेशक अल्लाह ने हमपर एहसान किया[२१] बेशक जो परहेज़गारी और सब्र करे तो अल्लाह नेकों का नेग ज़ाया(नष्ट) नहीं करता[२२] ﴿९०﴾ बोले ख़ुदा की क़सम बेशक अल्लाह ने आपको हमपर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़ता वाले थे[२३] ﴿९१﴾ कहा आज [२४] तुमपर कुछ मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान है[२५] ﴿९२﴾ मेरा यह कुर्ता लेजाओ[२६] इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उनकी आँखें खुल जाएंगी और अपने सब घर भर को मेरे पास ले आओ ﴿९३﴾

ग्यारहवाँ रूकू

जब क़ाफ़िला मिस्र से जुदा हुआ[१] यहां उनके बाप ने[२] कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूँ अगर मुझे न कहो कि सठ गया है ﴿९४﴾ बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी सी पुरानी ख़ुदरफ़्तगी(बेख़ुदी) में हैं[३] ﴿९५﴾ फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया[४] उसने वह कुर्ता यअक़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उसकी आँखें फिर आईं कहा मैं न कहता

(११) यूसुफ़ के भाई अपने वालिद से.
(१२) तुम से या और किसी से नहीं.
(१३) इससे मालूम होता है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम जानते थे कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं और उनसे मिलने की उम्मीद रखते थे. यह भी जानते थे कि उनका ख़्वाब सच्चा है, ज़रूर सामने आएगा. एक रिवायत यह भी है कि आपने हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि क्या तुमने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह निकाली है. उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं. इस से भी आपको उनकी ज़िन्दगी का इत्मीनान हुआ और आपने अपने बेटों से फ़रमाया.
(१४) यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ के भाई फ़िर मिस्र की तरफ़ रवाना हुए.
(१५) यानी तंगी और भूख की सख़्ती और जिस्मों का दुबला हो जाना.
(१६) रद्दी, खोटी, जिसे कोई सौदागर माल की क़ीमत में क़ुबूल न करे. वो कुछ खोटे दिरहम थे और घर के सामान से कुछ पुरानी चीज़ें.
(१७) जैसा खरे दामों से देते थे.
(१८) यह नाक़िस और ख़राब पूंजी क़ुबूल करके.
(१९) उनका यह हाल सुनकर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को रोना आगया और आँखों से आँसू निकलने लगे और.
(२०) यानी यूसुफ़ को मारना, कुंए में गिराना, बेचना, वालिद से अलग करना और उनके बाद उनके भाई को तंग रखना, परेशान करना, तुम्हें याद है. यह फ़रमाते हुए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हंसी आ गई. उन्होंने आपके मोती जैसे दांतों को देखकर पहचान लिया कि यह यूसुफ़ के हुस्न की शान है.
(२१) हमें जुदाई के बाद सलामती के साथ मिलाया और दुनिया व दीन की नेअमतों से नवाज़ा.
(२२) हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई माफ़ी के तौर पर.
(२३) उसी का नतीजा है कि अल्लाह ने आप को इज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन और दरिद्र बनाकर आपके सामने लाया.
(२४) अगरचे मलामत और तिरस्कार करने का दिन है, मगर मेरी तरफ़ से.
(२५) इसके बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनसे अपने वालिद का हाल पूछा. उन्होंने कहा आपकी जुदाई के ग़म में रोते रोते उनकी आँखें जाती रहीं. आपने फ़रमाया.
(२६) जो मेरे वालिद ने तावीज़ बनाकर मेरे गले में डाल दिया था.

सूरए यूसुफ़ - ग्यारहवाँ रूकू

(१) और कनआन की तरफ़ रवाना हुआ.

تَعۡلَمُوۡنَ ۝ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا اسۡتَغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا
خٰطِـئِيۡنَ ۝ قَالَ سَوۡفَ اَسۡتَغۡفِرُ لَـكُمۡ رَبِّىۡ‌ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوۡا عَلٰى يُوۡسُفَ اٰوٰۤى
اِلَيۡهِ اَبَوَيۡهِ وَقَالَ ادۡخُلُوۡا مِصۡرَ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ
اٰمِنِيۡنَ ۝ وَرَفَعَ اَبَوَيۡهِ عَلَى الۡعَرۡشِ وَخَرُّوۡا لَهٗ
سُجَّدًا ‌ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاۡوِيۡلُ رُءۡيَاىَ مِنۡ
قَبۡلُ قَدۡ جَعَلَهَا رَبِّىۡ حَقًّا‌ ؕ وَقَدۡ اَحۡسَنَ بِىۡۤ اِذۡ
اَخۡرَجَنِىۡ مِنَ السِّجۡنِ وَجَآءَ بِكُمۡ مِّنَ الۡبَدۡوِ مِنۡ
بَعۡدِ اَنۡ نَّزَغَ الشَّيۡطٰنُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَ اِخۡوَتِىۡ‌ ؕ اِنَّ
رَبِّىۡ لَطِيۡفٌ لِّمَا يَشَآءُ‌ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ۝
رَبِّ قَدۡ اٰتَيۡتَنِىۡ مِنَ الۡمُلۡكِ وَعَلَّمۡتَنِىۡ مِنۡ
تَاۡوِيۡلِ الۡاَحَادِيۡثِ‌ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ
اَنۡتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ‌ ۚ تَوَفَّنِىۡ مُسۡلِمًا

था कि मुझे अल्लाह की वो शानें मालूम हैं जो तुम नहीं जानते[५]﴾९६﴿ बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की माफ़ी मांगिये बेशक हम ख़तावार हैं﴾९७﴿ कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है[६]﴾९८﴿ फिर जब वो सब यूसुफ़ के पास पहुंचे उसने अपने माँ[७] बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में[८] दाख़िल हो अल्लाह चाहे तो अमान के साथ[९]﴾९९﴿ और अपने माँ बाप को तख़्त पर बिठाया और सब[१०] उसके लिये सिजदे में गिरे[११] और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप यह मेरे पहले ख़्वाब की ताबीर है[१२] बेशक उसे मेरे रब ने सच्चा किया, और बेशक उसने मुझपर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला[१३] और आप सब को गाँव से ले आया बाद इसके कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी(शत्रुता) करा दी थी, बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान करदे, बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है[१४]﴾१००﴿ ऐ मेरे रब बेशक तूने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे छुपी बातों का अंजाम निकालना सिखाया, ऐ आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने

(२) अपने पोतों और पास वालों से.

(३) क्योंकि वह इस गुमान में थे कि अब हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कहाँ, उनकी वफ़ात भी हो चुकी होगी.

(४) लश्कर के आगे आगे, वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई यहूदा थे. उन्होंने कहा कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम के पास ख़ून लगी वह कमीज़ भी मैं ही लेकर गया था, मैंने ही कहा था कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया, मैं ने ही उन्हें दुखी किया था, आज कुर्ता भी मैं ही लेकर जाऊंगा और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी की ख़ुशख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा. तो यहूदा नंगे सर नंगे पाँव कुर्ता लेकर अस्सी फ़रसँग दौड़ते आए . रास्ते में खाने के लिये सात रोटियाँ साथ लाए थे. ख़ुशी का यह आलम था कि उनको भी रास्ते में खाकर तमाम न कर सके.

(५) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने दरियाफ़्त फ़रमाया, यूसुफ़ कैसे हैं. यहूदा ने अर्ज़ किया हुज़ूर वह मिस्र के बादशाह हैं. फ़रमाया, मैं बादशाह को क्या करूं. यह बताओ किस दीन पर हैं ? अर्ज़ किया, दीने इस्लाम पर. फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है. अल्लाह की नेअमत पूरी हुई हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई पर.

(६) हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने सुबह के वक़्त नमाज़ के बाद हाथ उठाकर अल्लाह तआला के दरबार में अपने बेटों के लिये दुआ की, वह क़ुबूल हुई और हज़रत यअक़ूब को वही फ़रमाई गई कि बेटों की ख़ता बख़्श दी गई. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिदे माजिद को उनके अहल और औलाद समेत बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ दो सौ सवारियाँ और बहुत सा सामान भेजा था. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने घर वालों को जमा किया. कुल मर्द औरतें बहत्तर या तिहत्तर जन थे. अल्लाह तआला ने उनमें यह बरकत अता फ़रमाई कि उनकी नस्ल इतनी बढ़ी कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बनी इस्राईल मिस्र से निकले तो छः लाख से ज़्यादा थे, जब कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना सिर्फ़ चार सौ साल बाद है. अलहासिल, जब हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने मिस्र के बादशाहे आज़म को अपने वालिद की तशरीफ़ आवरी की सूचना दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सवारों को हमराह लेकर आप अपने वालिद साहिब के स्वागत के लिये सैंकड़ों रेशमी झण्डे उड़ाते क़तार बांधे रवाना हुए. हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे यहूदा के हाथ का सहारा लिये तशरीफ़ ला रहे थे. जब आपकी नज़र लश्कर पर पड़ी और आपने देखा रेगिस्तान सजे धजे सवारों से भरा हुआ है, फ़रमाया ऐ यहूदा, क्या यह मिस्र का फ़िरऔन है? जिसका लश्कर इस शान से आ रहा है. अर्ज़ किया, नहीं यह हुज़ूर के बेटे यूसुफ़ हैं. हज़रत जिब्रील ने आपको हैरत में देखकर अर्ज़ किया, हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये. आपकी ख़ुशी में शरीक होने फ़रिश्ते हाज़िर हुए हैं, जो मुद्दतों आपके ग़म के कारण रोते रहे हैं. फ़रिश्तों की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने और तबल और नक़्क़ारों शहनाइयों की आवाज़ों ने अजीब दृश्य पैदा किया था. यह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी. जब ये दोनों हज़रात, वालिद और बेटे, क़रीब हुए. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सलाम अर्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया. हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि

وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ
نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ
هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا
مُعْرِضُوْنَ ۝ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ
مُّشْرِكُوْنَ ۝ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ
عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِىْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ
اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا
رِجَالًا نُّوْحِىْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

वाला है दुनिया और आख़िरत में, मुझे मुसलमान उठा और उनसे मिला जो तेरे ख़ास क़ुर्ब (समीपता) के लायक़ हैं[१५] ﴾१०१﴿ ये कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ वही (देव वाणी) करते हैं, और तुम उनके पास न थे[१६] जब उन्होंने अपना काम पक्का किया था और दाव चल रहे थे[१७] ﴾१०२﴿ और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लाएंगे ﴾१०३﴿ और तुम इसपर उनसे कुछ उजरत (मज़दूरी) नहीं मांगते यह[१८] तो नहीं मगर सारे जगत को नसीहत ﴾१०४﴿

बारहवाँ रूकू

और कितनी निशानियाँ हैं[१] आसमानों और ज़मीन में कि अक्सर लोग उनपर गुज़रते हैं[२] और उनसे बे ख़बर रहते हैं ﴾१०५﴿ और उनमें अक्सर वो हैं कि अल्लाह पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए[३] ﴾१०६﴿ क्या इससे निडर हो बैठे कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें आकर घेरले या क़यामत उनपर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो ﴾१०७﴿ तुम फ़रमाओ[४] यह मेरी राह है मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आँखें रखते हैं[५] और अल्लाह को पाकी है[६] और मैं शरीक करने वाला नहीं ﴾१०८﴿ और हमने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब मर्द ही थे[७] जिन्हें हम वही (देव वाणी) करते और सब शहर के रहने वाले थे[८] तो क्या ये लोग ज़मीन पर चले नहीं

ज़रा रूक जाइये और वालिद को सलाम से शुरूआत करने का मौक़ा दीजिये. चुनांचे हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, *"अस्सलामो अलैका या मुज़हिबल अहज़ान"* यानी ऐ दुख दर्द के दूर करने वाले सलामती हो तुमपर. और दोनों साहिबों ने उतर कर एक दूसरे को गले लगाया और ख़ूब रोए. फिर उस सजी हुई आरामगाह में दाख़िल हुए जो पहले से आपके इस्तक़बाल के लिये ऊमदा ख़ैमे वग़ैरह गाड़कर आरास्ता की गई थी. यह प्रवेश मिस्र की सीमा में अन्दर था. इसके बाद दूसरा प्रवेश ख़ास शहर में है. जिसका बयान अगली आयत में है.

(७) माँ से या ख़ास वालिदा मुराद हैं अगर उस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला . मुफ़स्सिरों के इस बारे में कई अक़वाल हैं.

(८) यानी ख़ास शहर में.

(९) जब मिस्र में दाख़िल हुए और हज़रत यूसुफ़ अपने तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हुए. आपने अपने वालिदैन का सत्कार किया.

(१०) यानी वालिदैन और सब भाई.

(११) यह सिज्दा सम्मान और विनम्रता का था जो उनकी शरीअत में जायज़ था जैसे कि हमारी शरीअत में किसी बुज़ुर्ग की ताज़ीम के लिये क़याम और मुसाफ़ह और हाथों को चूमना जायज़ है. इबादत का सिज्दा अल्लाह तआला के सिवा और किसी के लिये कभी जायज़ नहीं हुआ, न हो सकता है, क्योंकि यह शिर्क है और हमारी शरीअत में सिज्दए ताज़ीम भी जायज़ नहीं.

(१२) जो मैं ने बचपन की हालत में देखा था.

(१३) इस मौक़े पर आपने कुंएं का ज़िक्र न किया ताकि भाइयों को शर्मिन्दगी न हो.

(१४) इतिहासकारों का बयान है कि हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मिस्र में चौबीस साल बेहतरीन ऐशो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे. वफ़ात के क़रीब आपने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वसीयत की कि आपका जनाज़ा शाम प्रदेश में लेजाकर अर्ज़े मुक़द्दसा में आपके वालिद हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए. इस वसीयत की तामील की गई और वफ़ात के बाद साल की लकड़ी के ताबूत में आपका मुबारक जिस्म शाम में लाया गया. उसी वक़्त आपके भाई ऐस की वफ़ात हुई थी और आप दोनों भाइयों की पैदायश भी साथ हुई थी और दफ़्न भी एक ही क़ब्र में किये गए. दोनों साहिबों की उम्र एक सौ पैंतालीस साल की थी. जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने वालिद और चचा को दफ़्न करके मिस्र की तरफ़ वापस हुए तो आपने यह दुआ की जो अगली आयत में दर्ज है.

(१५) यानी हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्हाक़ व हज़रत यअक़ूब अलैहिमुस्सलाम नबी सब मअसूम हैं. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की यह दुआ उम्मत की तालीम के लिये ह. कि वह अच्छे अन्त की दुआ मांगते रहें. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने वालिद के

तो देखते उनसे पहलों का क्या अंजाम हुआ(१) और बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं《१०९》 यहाँ तक जब रसूलों को ज़ाहिरी असबाब की उम्मीद न रही(१०) और लोग समझे कि रसूलों ने उनसे ग़लत कहा था(११) उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हमने चाहा बचा लिया गया(१२) और हमारा अज़ाब मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता《११०》 बेशक उनकी ख़बरों से(१३) अक़्लमन्दों की आँखें खुलती हैं(१४) यह कोई बनावट की बात नहीं(१५) लेकिन अपने से अगले कामों की(१६) तस्दीक़ (पुष्टी) है और हर चीज़ का तफ़सीली (विस्तृत) बयान और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत《१११》

१३- सूरए रअद

सूरए रअद मदीने में उतरी, इसमें ४३ आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) ये किताब की आयतें हैं(२) और वो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा(३) हक़ है(४) मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते(५)《१》

बाद तेईस साल रहे. इसके बाद आपकी वफ़ात हुई. आपके दफ़्न की जगह में मिस्र वालों के बीच सख़्त मतभेद हुआ. हर महल्ले वाले बरकत हासिल करने के लिये अपने ही महल्ले में दफ़्न करने पर अड़े थे. आख़िर यह राय क़रार पाई कि आपको नील नदी में दफ़्न किया जाए ताकि पानी आपकी क़ब्र से छूता हुआ गुज़रे और इसकी बरकत से सारे मिस्र निवासियों को फ़ैज़ मिले. चुनांचे आपको संगे रिख़ाम या संगे मरमर के ताबूत में नील नदी के अन्दर दफ़्न किया गया और आप वहीं रहे यहाँ तक कि चार सौ बरस बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आपका ताबूत शरीफ़ निकाला और आपके बाप दादा के पास शाम प्रदेश में दफ़्न किया.

(१६) यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों के.

(१७) इसके बावुजूद ऐ नबीयों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लाहो अलैका वसल्लम, आपका इन तमाम घटनाओं को इस तफ़सील से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और चमत्कार है.

(१८) क़ुरआन शरीफ़.

सूरए यूसुफ़ - बारहवाँ रूकू

(१) ख़ालिक़ और उसकी तौहीद और सिफ़ात को साबित करने वाली. इन निशानियों से हलाक हुई उम्मतों के आसार या अवशेष मुराद हैं. (मदारिक)

(२) और उनका अवलोकन करते हैं लेकिन सोच विचार नहीं करते, सबक़ नहीं पकड़ते.

(३) अक्सर मुफ़स्सिरों के नज़्दीक यह आयत मुश्रिकों के रद में उतरी जो अल्लाह तआला के ख़ालिक़ और राज़िक़ होने का इक़रार करने के साथ बुत परस्ती करके ग़ैरों को इबादत में उसका शरीक करते थे.

(४) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उन मुश्रिकों से, कि अल्लाह के एक होने यानी तौहीद और दीने इस्लाम की दावत देना.

(५) इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनके सहाबा अच्छे तरीक़े पर और बड़ी हिदायत पर हैं. यह इल्म के ख़ज़ाने, ईमान के भंडार और रहमान के लश्कर हैं. इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया तरीक़ा इख़्तियार करने वालों को चाहिये कि गुज़रे हुओं का तरीक़ा अपनाएं, वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा हैं जिनके दिल उम्मत में सबसे ज़्यादा पाक, इल्म में सबसे गहरे, तकल्लुफ़ में सब से कम. ये ऐसे हज़रात हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सोहबत और उनके दीन की इशाअत के लिये बुज़ुर्गी दी.

(६) तमाम दोषों और कमियों और शरीकों और भिन्नताओं और समानताओं से.

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ

अल्लाह है जिसने आसमानों को बलन्द किया बे सुतूनों (खम्भों) के कि तुम देखो[६] फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (वशीभूत) किया[७] हर एक एक ठहराए हुए वादे तक चलता है[८] अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता और तफ़सील से निशानियां बताता है[९] कहीं तुम अपने रब का मिलना यक़ीन करो[१०] (२) और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें लंगर[११] और नेहरें बनाईं और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो तरह के बनाए[१२] रात से दिन को छुपा लेता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों को[१३] (३) और ज़मीन के मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) क़तए (खंड) हैं और हैं पास पास[१४] और बाग़ हैं अंगूर के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले से आगे और अलग अलग सब को एक ही पानी दिया जाता है, और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं, बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्लमन्दों के लिये[१५] (४) और अगर तुम अचंभा करो[१६] तो अचंभा तो उनके इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी होकर फिर नए बनेंगे[१७] वो हैं जो अपने रब से

(७) न फ़रिश्ते न किसी औरत को नबी बनाया गया. यह मक्का वालों का जवाब है जिन्होंने कहा था कि अल्लाह ने फ़रिश्तों को क्यों नबी बनाकर नहीं भेजा. उन्हें बताया गया कि यह क्या आश्चर्य की बात है. पहले ही से कभी फ़रिश्ते नबी होकर न आए.
(८) हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि एहले बादिया और जिन्नात और औरतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया.
(९) नबियों के झुटलाने से किस तरह हलाक किये गए.
(१०) यानी लोगों को चाहिये कि अल्लाह के अज़ाब में देरी होने और ऐशो आराम के देर तक रहने पर घमण्डी न हो जाएं क्योंकि पहली उम्मतों को भी बहुत मोहलतें दी जा चुकी हैं यहाँ तक कि जब उनके अज़ाबों में बहुत देरी हुई और ज़ाहिरी कारणों को देखते हुए रसूलों को क़ौम पर दुनिया में ज़ाहिर अज़ाब आने की उम्मीद न रही. (अबुस्सऊद)
(११) यानी क़ौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अज़ाब के वादे दिये थे वो पूरे होने वाले नहीं. (मदारिक वग़ैरह)
(१२) अपने बन्दों में से यानी फ़रमाँबरदारी करने वाले ईमानदारों को बचाया.
(१३) यानी नबियों की और उनकी क़ौमों की.
(१४) जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाक़ए से बड़े बड़े नतीजे निकलते हैं और मालूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामती और बुज़ुर्गी है और तक्लीफ़ पहुंचाने और बुरा चाहने का अंजाम शर्मिन्दगी. अल्लाह पर भरोसा रखने वाला कामयाब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिये. अल्लाह की रहमत साथ दे तो किसी के बुरा चाहने से कुछ न बिगड़े. इसके बाद क़ुरआने पाक की निस्बत इरशाद होता है.
(१५) जिसको किसी इन्सान ने अपनी तरफ़ से बना लिया हो क्योंकि इसका चमत्कार और अनोखापन इसके अल्लाह की तरफ़ से होने को क़तई तौर पर साबित करता है.
(१६) तौरात इंजील वग़ैरह आसमानी किताबों की.

१२ - सूरए रअद - पहला रूकू

(१) सूरए रअद मक्की है और एक रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से यह है कि दो आयतों *"ला यज़ालुल लज़ीना कफ़रू तुसीबहुम"* और *"यक़ूलुल लज़ीना कफ़रू लस्ता मुरसलन"* के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं. दूसरा क़ौल यह है कि यह सूरत मदनी है. इसमें छ: रूकू, तैंतालीस या पैंतालीस आयतें, आठ सौ पचपन कलिमे और तीन हज़ार पांच सौ छ: अक्षर हैं.
(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ की.
(३) यानी क़ुरआन शरीफ़.

الۡاَغۡلٰلُ فِىۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ ۚ وَاُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ۝ وَيَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالسَّيِّئَةِ
قَبۡلَ الۡحَسَنَةِ وَقَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِمُ الۡمَثُلٰتُ ؕ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوۡ مَغۡفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلۡمِهِمۡ ۚ وَ
اِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيۡدُ الۡعِقَابِ ۝ وَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ
كَفَرُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ
اَنۡتَ مُنۡذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوۡمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا
تَحۡمِلُ كُلُّ اُنۡثٰى وَمَا تَغِيۡضُ الۡاَرۡحَامُ وَمَا تَزۡدَادُ ؕ
وَكُلُّ شَىۡءٍ عِنۡدَهٗ بِمِقۡدَارٍ ۝ عٰلِمُ الۡغَيۡبِ وَ
الشَّهَادَةِ الۡكَبِيۡرُ الۡمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنۡكُمۡ مَّنۡ اَسَرَّ
الۡقَوۡلَ وَمَنۡ جَهَرَ بِهٖ وَمَنۡ هُوَ مُسۡتَخۡفٍۢ بِالَّيۡلِ وَ
سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَ
مِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

इन्कारी हुए और वो हैं जिन की गर्दनों में तौक़ होंगे[१८] और वो दोज़ख़ वाले हैं, उन्हें उसी में रहना﴿५﴾ और तुम से अज़ाब की जल्दी करते हैं रहमत से पहले[१९] और उनसे अगलों की सज़ाएं हो चुकीं[२०] और बेशक तुम्हारा रब तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की माफ़ी देता है[२१] और बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब सख़्त है[२२]﴿६﴾ और काफ़िर कहते हैं उनपर उनकी तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी[२३] तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी[२४]﴿७﴾

दूसरा रूकू

अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है[१] और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं[२] और हर चीज़ उसके पास एक अन्दाज़े से है[३]﴿८﴾ हर छुपे और खुले का जानने वाला सबसे बड़ा बलन्दी वाला[४]﴿९﴾ बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है[५]﴿१०﴾ आदमी के लिये बदली वाले फ़रिश्ते हैं उसके आगे और पीछे[६] कि ख़ुदा के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं[७] बेशक अल्लाह

(४) कि इस में कुछ शुबह नहीं.

(५) यानी मक्का के मुश्रिक यह कहते हैं कि यह कलाम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का है, उन्होंने ख़ुद ब[illegible] इस आयत में उनका रद फ़रमाया. इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने रब होने की दलीलें और अपनी क़ुदरत के चमत्कार बयान [illegible] जो उसके एक होने को प्रमाणित करते हैं.

(६) इसके दो मानी हो सकते हैं, एक यह कि आसमानों को बिना सुतूनों के बलन्द किया जैसा कि तुम उनको देखते हो यानी हक़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है. ये मानी भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बग़ैर बलन्द किया. इस तक़दीर पर मानी ये होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते. पहला क़ौल ज़्यादा सही है इसी पर सहमति है. (ख़ाज़िन व जुमल)

(७) अपने बन्दों के मुनाफ़े और अपने इलाक़ों के फ़ायदे के लिये वो आज्ञानुसार घूम रहे हैं.

(८) यानी दुनिया के नाश के समय तक. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि "अजले मुसम्मा" यानी "ठहराए हुए वादे" से उनके दर्जे और मंज़िलें मुराद है यानी वो अपनी मंज़िलों और दर्जों में एक हद तक गर्दिश करते हैं जिस से उल्लंघन नहीं कर सकते . सूरज और चांद में से हर एक के लिये सैरे ख़ास यानी विशेष दिशा की तरफ़ तेज़ या सुस्त रफ़्तार और हरकत की ख़ास मात्रा निर्धारित की है.

(९) अपनी वहदानियत और भरपूर क़ुदरत की.

(१०) और जानो कि जो इन्सान को शून्य के बाद फिर से मौजूद करने में सक्षम है वो उसको मौत के बाद भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.

(११) यानी मज़बूत पहाड़.

(१२) काले सफ़ेद, कड़वे मीठे, छोटे बड़े, ख़ुश्क और तर, गर्म और सर्द वग़ैरह.

(१३) जो समझें कि ये सारी निशानियाँ बनाने वाले और संभाल रखने वाले के अस्तित्व का प्रमाण देती हैं.

(१४) एक दूसरे से मिले हुए. उनमें से कोई खेती के क़ाबिल है कोई नहीं, कोई पथरीला कोई रेतीला.

(१५) हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया इस में बनी आदम के दिलों की एक मिसाल है कि जिस तरह ज़मीन एक थी, उसके विभिन्न टुकड़े हुए, उनपर आसमान से एक ही पानी बरसा, उससे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल फूल, बेल बूटे, अच्छे बुरे पैदा हुए. इसी तरह आदमी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किये गए. उनपर आसमान से हिदायत उतरी. इस से कुछ लोग नर्म दिल हुए उनमें एकाग्रता और लगन पैदा हुई. कुछ सख़्त हो गए, वो खेल तमाशों बुराइयों में गिरफ़्तार हुए तो जिस तरह ज़मीन के टुकड़े अपने फूल फल में अलग अलग हैं उसी तरह इन्सानी दिल अपनी भावनाओं और रहस्यों में अलग हैं.

(१६) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, काफ़िरों के झुटलाने से, जबकि आप उनमें सच्चे और अमानत वाले मशहूर थे.

(१७) और उन्होंने कुछ न समझा कि जिसने शुरू में बग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है.

(१८) क़यामत के दिन.
(१९) मक्का के मुश्रिक, और यह जल्दी करना हंसी के तौर पर था. और रहमत से सलामती और आफ़ियत मुराद है.
(२०) वो भी रसूलों को झुटलाते और अज़ाब की हंसी उड़ाते थे. उनका हाल देखकर सबक़ हासिल करना चाहिये.
(२१) कि उनके अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मोहलत देता है.
(२२) जब अज़ाब फ़रमाए.
(२२) काफ़िरों का यह क़ौल अत्यन्त बेईमानी का क़ौल था. जितनी आयतें उतर चुकी थीं और चमत्कार दिखाए जा चुके थे सबको उन्होंने शून्य क़रार दे दिया. यह परले दर्जे की नाइन्साफ़ी और सत्य से दुश्मनी है. जब हुज्जत क़ायम हो चुके, तर्क पूरा हो जाए और खुले और साफ़ प्रमाण पेश कर दिये जाएं और ऐसी दलीलों से मतलब साबित कर दिया जाए जिनके जवाब से मुख़ालिफ़ीन के सारे इल्म वाले हुनर वाले आश्चर्य चकित और विवश रह जाएं और उन्हें मुंह खोलना और ज़बान हिलाना असम्भव हो जाए, ऐसी खुली निशानियाँ और साफ़ प्रमाण और ज़ाहिर चमत्कार देखकर यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरती, चमकते दिन में उजाले का इन्कार कर देने से भी ज़्यादा ख़राब और बातिल है और हक़ीक़त में यह सच्चाई को पहचान कर उससे मुंह मोड़ लेना और दुश्मनी है. किसी बात पर जब मज़बूत प्रमाण क़ायम हो जाए, फिर उसपर दोबारा दलील क़ायम करनी ज़रूरी नहीं रहती. ऐसी हालत में दलील तलब करना मात्र दुश्मनी होती है. जबतक कि दलील को ज़ख़्मी न कर दिया जाए, कोई शख़्स दूसरी दलील के तलब करने का हक़ नहीं रखता. अगर यह सिलसिला क़ायम कर दिया जाए कि हर शख़्स के लिये नई दलील नया प्रमाण क़ायम किया जाय जिसको वह मांगे और वही निशानी लाई जाय जो वह तलब करे, तो निशानियों का सिलसिला कभी ख़त्म न होगा. इसलिये अल्लाह की हिकमत यह है कि नबियों को ऐसे चमत्कार दिये जाते हैं जिन से हर व्यक्ति उनकी सच्चाई और नबुव्वत का यक़ीन कर सके. उनके दौर के लोग ज़्यादा अभ्यास और महारत रखते हैं जैसे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में जादू का इल्म अपने कमाल को पहुंचा हुआ था और उस ज़माने के लोग जादू के बड़े माहिर कामिल थे तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वह चमत्कार अता हुआ जिसने जादू को बातिल कर दिया और जादूगरों को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल हज़रत मूसा ने दिखाया वह अल्लाह की निशानी है, जादू से उसका मुक़ाबला संभव नहीं. इसी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़माने में चिकित्सा विद्या यानी डाक्टरी का इल्म चरम सीमा पर था. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बीमारियाँ अच्छा करने और मुर्दे ज़िन्दा करने का वह चमत्कार अता फ़रमाया गया जिससे तिब के माहिर आजिज़ हो गए. वो इस यक़ीन पर मजबूर थे कि यह काम तिब से नामुमकिन है. ज़रूर यह अल्लाह की क़ुदरत का ज़बरदस्त निशान है. इसी तरह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक ज़माने में अरब की ज़बान दानी, फ़साहत और बलाग़त बलन्दी पर थी. वो लोग बोल चाल में सारी दुनिया पर छाए हुए थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को वह चमत्कार अता फ़रमाया गया जिसने आपके मुख़ालिफ़ों को आजिज़ और हैरान कर दिया. उनके बड़े से बड़े लोग और उनके एहले कमाल की जमाअतें क़ुरआन शरीफ़ के मुक़ाबले में एक छोटी सी इबारत न पेश कर सके और क़ुरआन शरीफ़ के इस कमाल ने साबित कर दिया कि बेशक यह अल्लाह का कलाम और उसकी महान निशानी है. और इस जैसा बना लाना इन्सान के बस की बात नहीं. इसके अलावा और सैकड़ों चमत्कार सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पेश फ़रमाए जिन्होंने हर तबक़े के इन्सानों को आपकी सच्चाई और रिसालत का यक़ीन दिला दिया. इन चमत्कारों के होते हुए यह कह देना कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, किस क़द्र हटधर्मी, दुश्मनी और सच्चाई से मुकरना है.
(२४) अपनी नबुव्वत की दलील पेश करने और संतोषजनक चमत्कार दिखाकर अपनी रिसालत साबित करदेने के बाद अल्लाह के अहकाम पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं. हर हर शख़्स के लिये उसकी तलब की हुई अलग अलग निशानियां पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों यानी नबियों का तरीक़ा रहा है.

सूरए रअद - दूसरा रूकू

(१) नर मादा, एक या ज़्यादा.
(२) यानी मुद्दत में किसी का गर्भ जल्दी बाहर आएगा किसी का देर में. गर्भ की कम से कम मुद्दत जिसमें बच्चा पैदा होकर ज़िन्दा रह सके, छः माह है और ज़्यादा से ज़्यादा दो साल . यह हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया और इसी के हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह क़ायल हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने यह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चे का मज़बूत, पूरा बनना या अधूरा बनना मुराद है.
(३) कि इससे घट बढ़ नहीं है.
(४) हर दोष से पाक.
(५) यानी दिल की छुपी बातें और ज़बान से खुल्लमखुल्ला कही हुई और रात को छुपकर किये हुए काम और दिन को ज़ाहिर तौर पर किये हुए काम, सब अल्लाह तआला जानता है, कोई उसके इल्म से बाहर नहीं है.
(६) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि तुम में फ़रिश्ते नौबत ब नौबत यानी बारी बारी आते हैं . रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अस्र में जमा होते हैं. नए फ़रिश्ते रह जाते हैं और जो फ़रिश्ते रह चुके हैं वो चले जाते हैं. अल्लाह तआला उनसे दरियाफ़्त फ़रमाता है कि तुमने मेरे बन्दे को किस हाल में छोड़ा. वो अर्ज़ करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छोड़ा.

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ
اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا
وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ
بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ
الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ
فِی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِیْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ
وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا یَسْتَجِیْبُوْنَ لَهُمْ
بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّیْهِ اِلَی الْمَآءِ لِیَبْلُغَ فَاهُ وَمَا
هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾
وَلِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ
كَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ

किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जबतक वह ख़ुद[८] अपनी हालत न बदलें और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई चाहे[९] तो वह फिर नहीं सकती और उसके सिवा उसका कोई हिमायती नहीं[१०]《११》 वही है तुम्हें बिजली दिखाता है डर को और उम्मीद को[११] और भारी बदलियाँ उठाता है《१२》 और गरज उसे सराहती हुई उसकी पाकी बोलती है[१२] और फ़रिश्ते उसके डर से[१३] और कड़क भेजता है[१४] तो उसे डालता है जिस पर चाहे, और वो अल्लाह में झगड़ते होते हैं[१५] और उसकी पकड़ सख़्त है《१३》 उसी का पुकारना सच्चा है[१६] और उसके सिवा जिनको पुकारते हैं वो[१७] उनकी कुछ नहीं सुनते मगर उसकी तरह जो पानी के सामने अपनी हथेलियां फैलाए बैठा है कि उसके मुंह में पहुंच जाए[१८] और वह कभी न पहुंचेगा और काफ़िरों की हर दुआ भटकती फिरती है《१४》 और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से[१९] चाहे मजबूरी से[२०] और उनकी परछाइयां हर सुब्ह शाम[२१]《१५》 तुम फ़रमाओ कौन रब है आसमानों और ज़मीन का, तुम ख़ुद ही फ़रमाओ अल्लाह[२२] तुम फ़रमाओ तो क्या उसके सिवा तुम ने वो हिमायती बना लिये

(७) मुजाहिद ने कहा, हर बन्दे के साथ एक फ़रिश्ता हिफ़ाज़त के लिये है जो सोते जागते जिन्न व इन्स और मूज़ी जानवरों से उसकी हिफ़ाज़त करता है और हर सताने वाली चीज़ को उससे रोक देता है सिवाय उसके जिसका पहुंचना अल्लाह के हुक्म से हो.

(८) गुनाहों में जकड़ कर.

(९) उसके अज़ाब और हलाक का इरादा फ़रमाए.

(१०) जो उसके अज़ाब को रोक सके.

(११) कि उससे गिर कर नुक़सान पहुंचाने का ख़ौफ़ होता है और बारिश से नफ़ा उठाने की उम्मीद या कुछ को ख़ौफ़ होता है. जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और कुछ को फ़ायदे की उम्मीद जैसे कि काश्तकार वग़ैरह.

(१२) गरज यानी बादल से जो आवाज़ होती है उसके तस्बीह करने के मानी ये हैं कि उस आवाज़ का पैदा होना क़ुदरत वाले पैदा, करने वाले, और हर दोष और कमी से पाक के वुजूद यानी अस्तित्व की दलील है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि तस्बीहे रअद से वह मुराद है कि उस आवाज़ को सुनकर अल्लाह के बन्दे उसकी तस्बीह करते हैं . कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि रअद एक फ़रिश्ता है जो बादल पर तैनात है उसको चलाता है.

(१३) यानी उसकी हैबत और जलाल से उसकी तस्बीह करते हैं.

(१४) सायक़ा (कड़क) वह सख़्त आवाज़ है जो आसमान और ज़मीन के बीच से उतरती है फिर उसमें आग पैदा हो जाती है. या अज़ाब या मौत और वह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और ये तीनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं. (ख़ाज़िन)

(१५) हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अरब के एक अत्यन्त सरकश काफ़िर को इस्लाम की दावत देने के लिये अपने सहाबा की एक जमाअत भेजी. उन्होंने उसको दावत दी. कहने लगा, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का रब कौन है जिसकी तुम दावत देते हो . क्या वह सोने या चांदी या लोहे का या तांबे का है. मुसलमानों को यह बात बहुत बुरी लगी और उन्होंने वापस आकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि ऐसा काफ़िर दिल सरकश देखने में नहीं आया. हुज़ूर ने फ़रमाया, उसके पास फिर जाओ. उसने फिर वही बात की और इतना और कहा कि मैं मुहम्मद की दावत क़ुबूल करके ऐसे रब को मान लूं जिसे न मैंने देखा है न पहचाना. ये हज़रात फिर वापस हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर उसकी ख़बासत तो और तरक़्क़ी पर है. फ़रमाया, फिर जाओ. ये फिर गए. जिस वक़्त उससे बातें कर रहे थे और वह ऐसी ही काले दिल की बातें बक रहा था, एक बादल आया, उससे बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला दिया. ये लोग उसके पास बैठे रहे. जब वहाँ से वापस हुए तो राह में उन्हें सहाबए किराम की एक और जमाअत मिली. वो कहने लगे, कहिये वह शख़्स जल गया. उन लोगों ने कहा कि आप लोगों को कैसे मालूम हो गया. उन्होंने कहा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास वही आई है *"व युर सिलुस सवाइक़ा फ़युसीबो बिहा मैंय यशाओ वहुम युजादिलूना फ़िल्लाह"* (और कड़क भेजता है तो उसे डालता है जिस पर चाहे और वह अल्लाह में झगड़ते होते हैं - सूरए रअद, आयत १३) कुछ मुफ़स्सिरों ने ज़िक्र किया

دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي
الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ ۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ
ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ
اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ
وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ
يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿١٧﴾ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ
الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

हैं जो अपना भला बुरा नहीं कर सकते हैं[२३] तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अंधा और अंखियारा[२४] या क्या बराबर हो जाएंगी अंधेरियां और उजाला[२५] क्या अल्लाह के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने अल्लाह की तरह कुछ बनाया तो उन्हें उनका और उसका बनाना एक सा मालूम हुआ[२६] तुम फ़रमाओ अल्लाह हर चीज़ का बनाने वाला है[२७] और वह अकेला सब पर ग़ालिब है[२८] (१६) उसने आसमान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लायक़ बह निकले तो पानी की रौ (धारा) उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई, और जिसपर आग दहकाते हैं[२९] गहना या और असबाब[३०] बनने को उससे भी वैसे ही झाग उठते हैं अल्लाह बताता है कि हक़ और बातिल की यही मिसाल है, तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है, और वह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है[३१] अल्लाह यूंही मिसालें बयान फ़रमाता है (१७) जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिये भलाई[३२] और जिन्होंने उसका हुक्म न माना[३३] अगर ज़मीन में जो कुछ है वह सब और उस जैसा और इसकी मिल्क में होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे

है कि आमिर बिन तुफ़ैल ने अरबद बिन रबीअ से कहा कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के पास चलो. मैं उन्हें बातों में लगाऊंगा, तू पीछे से तलवार मारना. यह सलाह करके वो हुज़ूर के पास आए और आमिर ने बात शुरु की. बहुत लम्बी बात चीत के बाद कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा भारी लश्कर आप पर लाएंगे. यह कहकर चला गया. बाहर आकर अरबद से कहने लगा कि तूने तलवार क्यों नहीं मारी. उसने कहा कि जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू बीच में आ जाता था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन लोगों के निकलते वक़्त यह दुआ फ़रमाई. *"अल्लाहुम्मक फ़िहिमा बिमा शिअता"*. जब ये दोनों मदीने शरीफ़ से बाहर आए तो उनपर बिजली गिरी. अरबद जल गया और आमिर भी उसी राह में बड़ी दुर्दशा में मरा. (हुसैनी)

(१६) मअबूद जानकर यानी काफ़िर जो बुतों की इबादत करते हैं और उनसे मुरादें मांगते हैं.

(१७) तो हथेलियाँ फैलाने और बुलाने से पानी कुंएं से निकल कर उसके मुंह में न आएगा क्योंकि पानी को न इल्म है न शऊर जो उसकी प्यास की ज़रूरत को जाने और उसके बुलाने को समझे और पहचाने न उसमें यह क़ुदरत है कि अपनी जगह से हरकत करे और अपनी प्रकृति के विपरीत ऊपर चढ़कर बुलाने वाले के मुंह में पहुंच जाए. यही हाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उनकी हाजत का शऊर. न वो उसके नफ़े पर कुछ क़ुदरत रखते हैं.

(१९) जैसे कि मूमिन.

(२०) जैसे कि मुनाफ़िक़ और काफ़िर.

(२१) अल्लाह को सज्दा करती हैं. ज़ुजाज ने कहा कि काफ़िर ग़ैर-अल्लाह को सज्दा करता है और उसका साया अल्लाह को. इब्ने अंबारी ने कहा कि कुछ बईद नहीं कि अल्लाह तआला परछाईयों में ऐसी समझ पैदा करे कि वो उसको सज्दा करें. कुछ कहते हैं सिजदे से साए का एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ माइल होना और आफ़्ताब चढ़ने और उतरने के साथ लम्बा और छोटा होना मुराद है. (ख़ाज़िन)

(२२) क्योंकि इस सवाल का इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिक ग़ैरुल्लाह की इबादत करने के बावुजूद इसके इक़रारी हैं कि आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है. जब यह बात सबको मान्य है तो.

(२३) यानी बुत, जब उनकी यह बेबसी और बेचारगी है तो दूसरों को क्या नफ़ा नुक़सान पहुंचा सकते हैं. ऐसों को मअबूद बनाना और हक़ीक़ी पैदा करने वाले, रिज़्क़ देने वाले, क़वी और सक्षम को छोड़ना अव्वल दर्जे की गुमराही है.

(२४) यानी काफ़िर और मूमिन.

(२५) यानी कुफ़्र और ईमान.

(२६) और इस वजह से हक़ उनपर मुश्तबह हो गया और वो बुत परस्ती करने लगे. ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वो पूजते हैं अल्लाह की मख़लूक़ की तरह कुछ बनाना तो दूर, वो बन्दों की चीज़ों की तरह भी कुछ बना नहीं सकते. विवश और निकम्मे हैं. ऐसे पत्थरों का पूजना अक़्ल और समझ के बिल्कुल ख़िलाफ़ है.

देते, यही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा(३४) और उनका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा बिछौना(१८)

तीसरा रूकू

तो क्या वह जो जानता है जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा हक़ है(१) वह उस जैसा होगा जो अंधा है(२) नसीहत वही मानते हैं जिन्हें अक़्ल है(१९) वो जो अल्लाह का एहद पूरा करते हैं(३) और क़ौल (वचन) बांधकर फिरते नहीं(२०) और वो कि जोड़ते हैं उसे जिसके जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया(४) और अपने रब से डरते हैं और हिसाब की बुराई से अन्देशा (शंका) रखते हैं(५)(२१) और वो जिन्होंने सब्र किया(६) अपने रब की रज़ा चाहने को और नमाज़ क़ायम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया(७) और बुराई के बदले भलाई करके टालते हैं(८) उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़ा है(२२) बसने के बाग़ जिनमें वो दाख़िल होंगे और जो लायक़ हों(९) उनके बाप दादा और बीबियों और औलाद में(१०) और फ़रिश्ते(११) हर दरवाज़े से उनपर(१२) यह कहते आएंगे(२३) सलामती हो तुम पर, तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला(२४) और वो जो अल्लाह का एहद उसके पक्के

(२७) जो मख़्लूक़ होने की सलाहियत रखे उस सब का ख़ालिक़ अल्लाह ही है और कोई नहीं तो दूसरे को इबादत में शरीक करना समझ वाला किस तरह गवारा कर सकता है.
(२८) सब उसके इख़्तियार और क़ुदरत के अन्तर्गत है.
(२९) जैसे कि सोना चांदी तांबा वग़ैरह.
(३०) बर्तन वग़ैरह.
(३१) ऐसे बातिल अगरचे कितना ही उभर जाए और कभी कभी झाग की तरह हद से ऊंचा हो जाए मगर आख़िर मिट जाता है और सच्चाई अस्ल चीज़ और साफ़ जौहर की तरह बाक़ी और सलामत रहती है.
(३२) यानी जन्नत.
(३३) और कुफ़्र किया.
(३४) कि हर बात पर पकड़ की जाएगी और उसमें से कुछ बख़्शा न जाएगा. (जलालैन व ख़ाज़िन)

सूरए रअद - तीसरा रूकू

(१) और उसपर ईमान लाता है और उसके मुताबिक़ अमल करता है.
(२) हक़ को नहीं जानता, क़ुरआन पर ईमान नहीं लाता, उसके मुताबिक़ अमल नहीं करता. यह आयत हज़रत हमज़ा इब्ने अब्दुल मुत्तलिब और अबू जहल के बारे में उतरी.
(३) उसके रब होने की गवाही देते हैं और उसका हुक्म मानते हैं.
(४) यानी अल्लाह की तमाम किताबों और उसके कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और कुछ को मान कर और कुछ से इन्कार करके उनमें फ़र्क़ नहीं करते. या ये मानी हैं कि रिश्तेदारी के हक़ का ख़याल रखते हैं और रिश्ता काटते नहीं. इसी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिश्तेदारियाँ और ईमानी रिश्ते भी दाख़िल हैं. सैयदों का आदर और मुसलमानों के साथ दोस्ती और एहसान और उनकी मदद और उनकी तरफ़ से मुदाफ़िअत यानी बचाव और उनके साथ शफ़क़त और सलाम दुआ और मुसलमान मरीज़ों की देखभाल और अपने दोस्तों ख़ादिमों पड़ोसियों और सफ़र के साथियों के अधिकारों का ख़याल रखना भी इसमें दाख़िल है. शरीअत में इसका लिहाज़ रखने पर बहुत जगह काफ़ी ज़ोर दिया गया है. अक्सर सही हदीसें भी इस विषय में आई हैं.
(५) और हिसाब के वक़्त से पहले ख़ुद अपने अन्दर का हिसाब करते हैं.
(६) ताअतों और मुसीबतों पर, और गुनाहों से रूके रहे.
(७) नवाफ़िल का छुपाना और फ़र्ज़ का ज़ाहिर करना अफ़ज़ल है.

مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوْٓءُ الدَّارِ ۝ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ
يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ
تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ
اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ
الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ
هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

होने[१३] के बाद तोड़ते और जिसके जोड़ने को अल्लाह ने फ़रमाया उसे क़ता करते (काटते) और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[१४] उनका हिस्सा लअनत ही है और उनका नसीब बुरा घर[१५] ﴾२५﴿ अल्लाह जिसके लिये चाहे रिज़्क़ कुशादा और[१६] तंग करता है और काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए[१७] और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना ﴾२६﴿

चौथा रूकू

और काफ़िर कहते उनपर कोई निशानी उनके रब की तरफ़ से क्यों न उतरी, तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है[१] और अपनी राह उसे देता है जो उसकी तरफ़ रूजू लाए ﴾२७﴿ वो जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है[२] ﴾२८﴿ वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनको ख़ुशी है और अच्छा अंजाम[३] ﴾२९﴿ इसी तरह हमने तुमको इस उम्मत में भेजा जिससे पहले उम्मतें हो गुज़रीं[४] कि तुम उन्हें पढ़कर सुनाओ[५] जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही (देववाणी) की और वो रहमान के इन्कारी हो रहे हैं[६] तुम फ़रमाओ वह मेरा रब है उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया

(८) बदकलामी का जवाब मीठे बोलों से देते हैं और जो उन्हें मेहरूम करता है उसपर अता करते हैं. जब उनपर ज़ुल्म किया जाता है, माफ़ करते हैं. जब उनसे पैवन्द काटा जाता है, मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं, तौबह करते हैं, जब नाजायज़ काम देखते हैं, उसे बदलते हैं. जिहालत के बदले हिल्म और तकलीफ़ के बदले सब्र करते हैं.

(९) यानी मूमिन हों.

(१०) अगरचे लोगों ने उनके से अमल न किये हों जब भी अल्लाह तआला उनके सम्मान के लिये उनको उनके दर्जे में दाख़िल फ़रमाएगा.

(११) हर एक रोज़ो शब में तोहफ़ों और रज़ा की ख़ुशख़बरी लेकर जन्नत के.

(१२) आदर और सम्मान के तौर पर.

(१३) और उसको क़ुबूल कर लेने.

(१४) कुफ़्र और गुनाह के काम करके.

(१५) यानी जहन्नम.

(१६) जिसके लिये चाहे.

(१७) और शुक्रगुज़ार न हुए. दुनिया की दौलत पर इतराना और घमण्ड करना हराम है.

सूरए रअद - चौथा रूकू

(१) कि वह आयतें और चमत्कार उतरने के बाद भी यह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, कोई चमत्कार क्यों नहीं आया. अनेक चमत्कारों के बावुजूद गुमराह रहता है.

(२) उसकी रहमत और फ़ज़्ल और उसके एहसान और करम को याद करके बेक़रार दिलों को क़रार और इत्मीनान हासिल होता है. अगरचे उसके इन्साफ़ और प्रकोप की याद दिलों को डरा देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : *"इन्नमल मूमिनूनल्लज़ीना इज़ा ज़ुकिरल्लाहो वजिलत क़ुलूबुहुम"* (यानी ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए, उनके दिल डर जाएं - सूरए अन्फ़ाल, आयत २). हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि मुसलमान जब अल्लाह का नाम लेकर क़सम खाता है, दूसरे मुसलमान उसका यक़ीन कर लेते हैं और उनके दिलों को इत्मीनान हो जाता है.

(३) तूबा बशारत है राहत व नेअमत और ख़ुशी व ख़ुशहाली की. सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने कहा तूबा हबशी ज़बान में जन्नत का नाम है. हज़रत अबू हुरैरा और दूसरे सहाबा से रिवायत है कि तूबा जन्नत के एक दरख़्त का नाम है जिसका साया हर

مَتَابِ ۝ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ
الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ
يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ
قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ
تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ
الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا
عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

और उसी की तरफ़ मेरी रूजू है(३०) और अगर कोई ऐसा क़ुरआन आता जिससे पहाड़ टल जाते[७] या ज़मीन फट जाती या मुर्दे बातें करते जब भी ये काफ़िर न मानते[८] बल्कि सब काम अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं[९] तो क्या मुसलमान इससे नाउम्मीद न हुए[१०] कि अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता[११] और काफ़िरों को हमेशा उनके किये की सख़्त धमक पहुंचती रहेगी[१२] या उनके घरों के नज़दीक उतरेगी[१३] यहां तक कि अल्लाह का वादा आए[१४] बेशक अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता[१५](३१)

पाँचवां रूकू

और बेशक तुम से अगले रसूलों से भी हंसी की गई तो मैंने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा[१] तो मेरा अज़ाब कैसा था(३२) तो क्या वह हर जान पर उसके कर्मों की निगहदाश्त रखता है[२] और वो अल्लाह के शरीक ठहराते हैं, तुम फ़रमाओ उनका नाम तो लो[३] या उसे वह बताते हो जो उसके इल्म में सारी ज़मीन में नहीं[४] या यूंही ऊपरी बात[५] बल्कि काफ़िरों की निगाह में उनका धोखा अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए[६] और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं(३३)

जन्नत में पहुंचेगा. यह दरख़्त जन्नते अदन में है और इसकी अस्ल जड़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बलन्द मकान में और इसकी शाख़ें जन्नत के हर घर हर महल में. इसमें सियाही को छोड़कर हर क़िस्म के रंग और ख़ुशनुमाइयाँ हैं, हर तरह के फल और मेवे इसमें फलते हैं. इसकी जड़ से काफ़ूर और सलसबील की नहरें जारी हैं.

(४) तो तुम्हारी उम्मत सब से पिछली उम्मत है और तुम नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हो . तुम्हें बड़ी शान से नबुव्वत अता की.

(५) वह महान किताब.

(६) क़तादा और मक़ातिल वग़ैरह का क़ौल है कि यह आयत सुलह हुदैबियह में उतरी जिसका संक्षिप्त वाक़िआ यह है कि सुहैल बिन अम्र जब सुलह के लिये आया और सुलहनामा लिखने पर सहमति हो गई तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया लिखो *''बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम''* काफ़िरों ने इसमें झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे तरीक़े के अनुसार *''बिस्मिकल्लाहुम्मा''* लिखवाइये . इसके बारे में आयत में इरशाद होता है कि वो रहमान के इन्कारी हो रहे हैं.

(७) अपनी जगह से.

(८) क़ुरैश के काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था अगर आप यह चाहें कि हम आपकी नबुव्वत मानें और आपका अनुकरण करें तो आप क़ुरआन पढ़कर इसकी तासीर से मक्का के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें खेतियाँ करने के लिये विस्तृत मैदान मिल जाएं और ज़मीन फाड़कर चश्मे जारी कीजिये ताकि हम खेतों और बाग़ों को उनसे सींच सकें और क़ुसई बिन क्लाब वग़ैरह हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये वो हम से कह जाएं कि आप नबी हैं. इसके जवाब में यह आयत उतरी और बता दिया गया कि ये हीले हवाले करने वाले किसी हाल में भी ईमान लाने वाले नहीं.

(९) तो ईमान वही लाएगा जिसको अल्लाह चाहे और तौफ़ीक़ दे. उसके सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं, अगरचे उन्हें वही निशान दिखा दिये जाएं जो वो तलब करें.

(१०) यानी काफ़िरों के ईमान लाने से चाहे उन्हें कितनी ही निशानियाँ दिखला दी जाएं और क्या मुसलमानों को इसका यक़ीनी इल्म नहीं.

(११) बग़ैर किसी निशानी के, लेकिन वह जो चाहता है और वही हिकमत है. यह जवाब है उन मुसलमानों का जिन्होंने काफ़िरों के नई नई निशानियाँ तलब करने पर यह चाहा था जो काफ़िर भी कोई निशानी तलब करे वही उसको दिखादी जाए. इसमें उन्हें बता दिया गया कि जब ज़बरदस्त निशान आ चुके और शक और वहम की सारी राहें बन्द करदी गईं, दीन की सच्चाई चमकते दिन से

उन्हें दुनिया के जीते अज़ाब होगा(७) और बेशक आख़िरत का अज़ाब सब से सख़्त है, और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं《३४》 अहवाल उस जन्नत का कि डर वालों के लिये जिसका वादा है उसके नीचे नेहरें बहती हैं, उसके मेवे हमेशा और उसका साया(८) डर वालों का तो यह अंजाम है(९) और काफ़िरों का अंजाम आग《३५》 और जिनको हमने किताब दी(१०) वो उसपर ख़ुश होते जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और उन गिरोहों में (११) कुछ वो हैं कि उसके बाज़(कुछ थोड़े) से इन्कारी हैं तुम फ़रमाओ मुझे तो यही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूं और उसका शरीक न ठहराऊं मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मुझे फिरना(१२)《३६》 और इसी तरह हमने उसे अरबी फ़ैसला उतारा(१३) और ऐ सुनने वाले अगर तू उनकी ख़्वाहिशों पर चलेगा(१४) बाद इसके कि तुझे इल्म आचुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई हिमायती होगा न बचाने वाला《३७》

छटा रूकू

और बेशक हमने तुम से पहले रसूल भेजे और उनके लिये बीबियाँ(१) और बच्चे किये और किसी रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से हर वादे की एक लिखत है(२)《३८》

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ
وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اُكُلُهَا
دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى
الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۗ
قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ
اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ
حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا
وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ
يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝

ज़्यादा ज़ाहिर हो चुकी, इन खुले प्रमाणों के बावुजूद लोग मुकर गए. सच्चाई को न माना. ज़ाहिर हो गया कि वो दुश्मनी पर तुले हैं और दुश्मन किसी दलील से भी नहीं माना करता. तो मुसलमानों को अब उनसे सच्चाई स्वीकार करने की क्या उम्मीद. क्या अब तक उनकी दुश्मनी देखकर और खुली और ज़ाहिर निशानियों से उनके मुंह फेर लेने को देखकर भी उनसे सच्चाई के क़ुबूल करने की उम्मीद की जा सकती है. अलबत्ता अब उनके ईमान लाने और मान जाने की यही सूरत है कि अल्लाह तआला उन्हें मजबूर करे और उनका इख़्तियार छीन ले. इस तरह की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों को हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता, मगर आज़माइश और मुसीबतों से गुज़रने की हिकमत का यह तक़ाज़ा नहीं.

(१२) यानी वो इस झुटलाने और दुश्मनी के कारण तरह तरह के हादसों, मुसीबतों और आफ़तों और बलाओं में जकड़े रहेंगे कभी कहत में, कभी लुटने में, कभी मारे जाने में, कभी क़ैद में.

(१३) और उनकी बेचैनी और परेशानी का कारण होगा और उनतक मुसीबतों के नुक़सान पहुंचेगें.

(१४) अल्लाह की तरफ़ से फ़त्ह और मदद आए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनका दीन ग़ालिब हो और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह किया जाए. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि इस वादे से क़यामत का दिन मुराद है जिसमें कर्मों का बदला दिया जाएगा.

(१५) इसके बाद अल्लाह तआला रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि इस क़िस्म के बेहूदा सवाल और हंसी ठट्ठे से आप दुखी न हों क्योंकि हादियों को हमेशा ऐसे वाक़िआत पेश आया ही करते हैं. चुनांचे इरशाद फ़रमाता है.

सूरए रअद - पाँचवां रूकू

(१) और दुनिया में उन्हें क़हत व क़त्ल व क़ैद में जकड़ा और आख़िरत में उनके लिये जहन्नम का अज़ाब.

(२) नेक की भी, बद की भी. यानी क्या अल्लाह तआला उन बुतों जैसा हो सकता है जो ऐसे नहीं हैं न उन्हें इल्म है, न क़ुदरत. जो आजिज़, मजबूर और बे शऊर हैं.

(३) वो हैं कौन.

(४) और जो उसके इल्म में न हो वह निरा झूट और बातिल है. हो ही नहीं सकता क्योंकि उसका इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है लिहाज़ा उसके लिये शरीक होना बातिल और ग़लत.

(५) के दरपै होते हो जिसकी कुछ अस्ल और हक़ीक़त नहीं.

(६) यानी हिदायत और दीन की राह से.

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ
الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ
اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ
وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ
نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ
بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع

(١٤) سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ (٧٢) — اٰيَاتُهَا ٥٢ — رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है(३) और अस्ल लिखा हुआ उसी के पास है(४) ﴾३९﴿ और अगर हम तुम्हें दिखादें कोई वादा(५) जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही(६) अपने पास बुलाएं तो हर हाल में तुमपर तो सिर्फ़ पहुंचाना है और हिसाब लेना(७) हमारा ज़िम्मा(८) ﴾४०﴿ क्या उन्हें नहीं समझता कि हम हर तरफ़ से उनकी आबादी घटाते आ रहे हैं(९) और अल्लाह हुक्म फ़रमाता है उसका हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं(१०) और उसे हिसाब लेते देर नहीं लगती ﴾४१﴿ और उनसे अगले (११) धोखा कर चुके हैं तो सारी छुपवाँ तदबीर का मालिक तो अल्लाह ही है(१२) जानता है जो कुछ कोई जान कमाए(१३) और अब जाना चाहते हैं काफ़िर किसे मिलता है पिछला घर(१४) ﴾४२﴿ और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं, तुम फ़रमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में (१५) और वह जिसे किताब का इल्म है(१६) ﴾४३﴿

१४- सूरए इब्राहीम

सूरए इब्राहीम मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, सात रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) अलिफ़ लाम रा, एक किताब है(२) कि हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी कि तुम लोगों को(३) अंधेरियों से(४) उजाले में लाओ

(७) क़त्ल और क़ैद का.
(८) यानी उसके मेवे और उसका साया हमेशा का है उसमें से कोई टूटने कटने या ख़त्म होने वाला नहीं. जन्नत का हाल अजीब है. उसमें न सूरज है न चाँद न अंधेरा है. इसके बावुजूद कभी न दूर होने वाला साया है.
(९) यानी तक़्वा वालों के लिये जन्नत है.
(१०) यानी वह यहूदी और ईसाई जो इस्लाम लाए जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह और हबशा और नजरान के ईसाई.
(११) यहूदियों, ईसाइयों और मुश्रिकों के, जो आपकी दुश्मनी में डूबे हैं और उन्होंने ख़ुद ही चढ़ाइयाँ की हैं.
(१२) इसमें क्या बात इन्कार के क़ाबिल है. क्यों नहीं मानते.
(१३) यानी जिस तरह पहले नबियों को उनकी ज़बानों में अहकाम दिये गए थे उसी तरह हमने यह क़ुरआन ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम आप पर अरबी ज़बान में उतारा. क़ुरआने करीम को **'हुक्म'** (फ़ैसला) इसलिये फ़रमाया कि इसमें अल्लाह की इबादत और उसकी तौहीद और उसके दीन की तरफ़ दावत और तमाम तकलीफ़ों और एहकाम और हलाल व हराम का बयान है. कुछ उलमा ने फ़रमाया चूंकि अल्लाह तआला ने तमाम ख़ल्क़ पर क़ुरआन शरीफ़ को क़ुबूल करने और उसके मुताबिक़ अमल करने का हुक्म फ़रमाया, इसलिये इसका नाम हुक्म रखा.
(१४) यानी काफ़िरों के, जो अपने दीन की तरफ़ बुलाते हैं.

सूरए रअद - छटा रूकू

(१) काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर यह ऐब लगाया कि वह निकाह करते हैं. अगर नबी होते तो दुनिया तर्क कर देते. बीबी बच्चे से कुछ वास्ता न रखते. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नबुव्वत के विरुद्ध नहीं है. लिहाज़ा ये एतिराज़ बेजा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वो भी निकाह करते थे उनके भी बीबियाँ और बच्चे थे.
(२) उस से पहले और बाद में नहीं हो सकता चाहे वह अज़ाब का वादा हो या कोई और.
(३) सईद बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि अल्लाह जिन अहकाम को चाहता है मन्सूख़ या स्थगित फ़रमाता है जिन्हें चाहता है बाक़ी रखता है. इन्हीं इब्ने जुबैर का एक क़ौल यह है कि बन्दों के गुनाहों में से अल्लाह जो चाहता है माफ़ फ़रमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है. अकरमह का क़ौल है कि अल्लाह तआला तौबह से जिस गुनाह

اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ۙ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ
الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ
وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ
فِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا
بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ
فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ

(५) उनके रब के हुक्म से उसकी राह(६) की तरफ़ जो इज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है अल्लाह(१) कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में(७) और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अज़ाब से(२) जिन्हें आख़िरत से दुनिया की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते(८) और उसमें कजी चाहते हैं . वो दूर की गुमराही में हैं(९)(३) और हमने हर रसूल उसकी क़ौम ही की ज़बान में भेजा(१०) कि वह उन्हें साफ़ बताए(११) फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और वही इज़्ज़त हिकमत वाला है(४) और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियां(१२) लेकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से(१३) उजाले में ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला(१४) बेशक उसमें निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र करने वाले को(५) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा(१५) याद करो अपने ऊपर अल्लाह का एहसान जब उसने तुम्हें फ़िरऔन वालों से निजात दी जो तुमको बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िबह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते और

को चाहता है मिटाता है और उसकी जगह नेकियाँ क़ायम फ़रमाता है. इसकी तफ़सीर में और भी बहुत क़ौल हैं.

(४) जिसको उसने आदिकाल में लिखा. यह अल्लाह का इल्म है या उम्मुल किताब से लौहे मेहफ़ूज़ मुराद है जिसमें सारे जगत और सृष्टि में होने वाले सारे वाक़िआत और घटनाओं और सारी चीज़ों का हाल दर्ज है और इसमें हेर फेर या परिवर्तन नहीं हो सकता.

(५) अज़ाब का.

(६) हम तुम्हें-

(७) और कर्मों का बदला देना.

(८) तो आप काफ़िरों के इन्कार करने से रंजीदा और दुखी न हों और अज़ाब की जल्दी न करें.

(९) और ज़मीने शिर्क की वुसअत और फैलाव दम बदम कम कर रहे हैं और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये काफ़िरों के आस पास की ज़मीनें एक के बाद एक फ़तह होती चली जाती है. और उनके लश्कर को विजयी करता है और उनके दीन को ग़ल्बा देता है.

(१०) उसका हुक्म लागू है किसी की मजाल नहीं कि उसमें क्यों और क्या, या फेर बदल कर सके. जब वह इस्लाम को ग़ल्बा देना चाहे और कुफ़्र को पस्त करना चाहे तो किसकी मजाल और ताक़त कि उसके हुक्म में दख़्ल दे सके.

(११) यानी गुज़री हुई उम्मतों के काफ़िर अपने नबियों के साथ.

(१२) फिर बग़ैर उसकी मर्ज़ी के किसी की क्या चल सकती है और जब हक़ीक़त यह है तो मख़्लूक़ का क्या डर.

(१३) हर एक की कोशिश अल्लाह तआला को मालूम है, उसके नज़दीक उनका बदला भी निर्धारित है.

(१४) यानी काफ़िर बहुत जल्द जान लेंगे कि आख़िरत की राहत ईमान वालों के लिये है और वहाँ की ज़िल्लत और ख़्वारी काफ़िरों के लिये है.

(१५) जिसने मेरे हाथों में खुले चमत्कार और मज़बूत निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबी होने की गवाही दी.

(१६) चाहे यहूदी उलमा में से तौरात का जानने वाला हो या ईसाईयों में से इंजील का आलिम, वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को अपनी किताबों में देखकर जानता है. इन उलमा में से अक्सर आपकी नबुव्वत की गवाही देते हैं.

१४ - सूरए इब्राहीम - पहला रूकू

(१) सूरए इब्राहीम मक्की है सिवाय आयत *"अलम तरा इलल्लज़ीना बद्दलू नेअमतल्लाहे कुफ़रन"* और इसके बाद वाली आयत के. इस सूरत में सात रूकू, बावन आयतें, आठ सौ इकसठ कलिमे और तीन हज़ार चार सौ चौंतीस अक्षर हैं.

(२) यह क़ुरआन शरीफ़.
(३) कुफ़्र व गुमराही व जिहालत व बहकावे की.
(४) ईमान के.
(५) ज़ुलमात को बहु वचन और नूर को एक वचन से बयान फ़रमाने में मक़सद यह है कि दीने हक़ की राह एक है और कुफ़्र और गुमराही के तरीक़े बहुत.
(६) यानी दीने इस्लाम.
(७) वह सब का ख़ालिक़ और मालिक है, सब उसके बन्दे और ममलूक, तो उसकी इबादत सब पर लाज़िम और उसके सिवा किसी की इबादत रवा नहीं.
(८) और लोगों को दीने इलाही क़ुबूल करने से रोकते हैं.
(९) कि सच्चाई से बहुत दूर हो गए हैं.
(१०) जिसमें वह रसूल बनाकर भेजा गया. चाहे उसकी दअवत आम हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उसका अनुकरण लाज़िम हो जैसा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत तमाम आदमियों और जिन्नों बल्कि सारी ख़ल्क़ की तरफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया *"लियकूना लिलआलमीना नज़ीरा"* (यानी उतारा कुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जगत को डर सुनाने वाला हो - सूरए फुरक़ान, आयत १).
(११) और जब उसकी क़ौम अच्छी तरह समझ ले तो दूसरी क़ौमों को अनुवाद के ज़रिये से वो आदेश पहुंचा दिये जाएं और उनके मानी समझा दिये जाएं. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस आयत की तफ़सीर में यह भी फ़रमाया है कि "क़ौमिही" की ज़मीर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ पलटती है और मानी ये हैं कि हमने हर रसूल को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बान यानी अरबी में वही फ़रमाई. ये मानी भी एक रिवायत में आए हैं कि वही हमेशा अरबी ज़बान में उतरी फिर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने अपनी क़ौमों के लिये उनकी ज़बानों में अनुवाद फ़रमा दिया. (इत्क़ान, हुसैनी) इससे मालूम होता है कि अरबी तमाम ज़बानों में सबसे अफ़ज़ल है.
(१२) जैसे लाठी और रौशन हथैली वग़ैरह, साफ़ चमत्कार.
(१३) कुफ़्र की निकाल कर, ईमान के-
(१४) क़ामूस में है कि अय्यामिल्लाह से अल्लाह की नेअमतें मुराद हैं. हज़रत इब्ने अब्बास व उबई बिन कअब व मुजाहिद व क़तादा ने भी "अय्यामिल्लाह" की तफ़सीर अल्लाह की नेअमतें फ़रमाई. मुक़ातिल का क़ौल है कि "अय्यामिल्लाह" से वो बड़ी बड़ी घटनाएं मुराद हैं जो अल्लाह के हुक्म से घटीं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि अय्यामिल्लाह से वो दिन मुराद हैं जिनमें अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनाम किये जैसे कि बनी इस्राईल पर मन्न और सलवा उतारने का दिन, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन.(ख़ाज़िन, मदारिक व मुफ़र्रदाते राग़िब). इन अय्यामिल्लाह में सब से बड़ी नेअमत के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पैदाइश और मअेराज के दिन हैं, उनकी याद क़ायम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है. इसी तरह और बुज़ुर्गों पर जो अल्लाह की नेअमतें हुई या जिन दिनों में वो महान घटनाएं पेश आई जैसा कि दसवीं मुहर्रम को कर्बला का वाक़िआ, उनकी यादगारें क़ायम करना भी "अल्लाह के दिनों की याद" में शामिल है. कुछ लोग मीलाद शरीफ़, मअेराज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के दिनों के मख़्सूस किये जाने में कलाम करते हैं. उन्हें इस आयत से नसीहत पकड़नी चाहिये.
(१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अपनी क़ौम को यह इरशाद फ़रमाना " अल्लाह के दिनों की याद" की तअमील है.

أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن
رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِى لَشَدِيدٌ ۝ وَ
قَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكْفُرُوٓا۟ أَنتُمْ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا۟
ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ
وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓا۟ أَيْدِيَهُمْ فِىٓ
أَفْوَٰهِهِمْ وَقَالُوٓا۟ إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ وَإِنَّا
لَفِى شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ
رُسُلُهُمْ أَفِى ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ
يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰٓ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا۟ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

उसमें[१६] तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुआ﴿६﴾

दूसरा रूकू

और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा[१] और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अज़ाब सख़्त है﴿७﴾ और मूसा ने कहा अगर तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ[२] तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह सब ख़ूबियों वाला है﴿८﴾ क्या तुम्हें उनकी ख़बरें न आईं जो तुम से पहले थीं नूह की क़ौम और आद और समूद और जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह ही जाने[३] उनके पास उसके रसूल रौशन दलीलें लेकर आए[४] तो वो अपने हाथ[५] अपने मुंह की तरफ़ ले गए[६] और बोले हम इन्कारी हैं उसके जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह[७] की तरफ़ हमें बुलाते हो इसमें हमें वह शक है कि बात खुलने नहीं देता﴿९﴾ उनके रसूलों ने कहा क्या अल्लाह में शक है[८] आसमान और ज़मीन का बनाने वाला, तुम्हें बुलाता है[९] कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे[१०] और मौत के निश्चित वक़्त तक तुम्हारी ज़िन्दगी बेअज़ाब काट दे, बोले तुम तो हमीं जैसे आदमी हो[११] तुम चाहते हो कि हमें उससे अलग रखो जो हमारे बाप दादा पूजते थे[१२]

(१६) यानी निजात देने में.

सूरए इब्राहीम - दूसरा रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि शुक्र से नेअमत ज़्यादा होती है. शुक्र की अस्ल यह है कि आदमी नेअमत का तसव्वुर और उसका इज़हार करे. शुक्र की हक़ीक़त यह है कि देने वाले की नेअमत का उसकी तअज़ीम के साथ एतिराफ़ करे और नफ़्स को उसका ख़ूगर बनाए. यहाँ एक बारीकी है वह यह कि बन्दा जब अल्लाह तआला की नेअमतों और उसके तरह तरह के फ़ज़्ल व करम और ऐहसान का अध्ययन करता है तो उसके शुक्र में लग जाता है. इससे नेअमतें ज़्यादा होती हैं और बन्दे के दिल में अल्लाह तआला की महब्बत बढ़ती चली जाती है. यह मक़ाम बहुत बरतर है और इससे ऊंचा मक़ाम यह है कि नेअमत देने वाले की महब्बत यहाँ तक ग़ालिब हो कि दिल को नेअमतों की तरफ़ ख़िंचाव बाक़ी न रहे. यह मक़ाम सिद्दीक़ों का है. अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

(२) तो तुम ही नुक़सान पाओगे और तुम ही नेअमतों से मेहरूम रहोगे.

(३) कितने थे.

(४) और उन्होंने चमत्कार दिखाए.

(५) अत्यन्त क्रोध से.

(६) हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वो ग़ुस्से में आकर अपने हाथ काटने लगे. हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि उन्होंने किताबुल्लाह सुनकर हैरत से अपने मुंह पर हाथ रखे. ग़रज़ यह कोई न कोई इन्कार की अदा थी.

(७) यानी तौहीद और ईमान.

(८) क्या उसकी तौहीद में हिचकिचाहट है. यह कैसे हो सकता है. उसकी दलीलें तो अत्यन्त ज़ाहिर हैं.

(९) अपनी ताअत और ईमान की तरफ़.

(१०) जब तुम ईमान ले आओ, इसलिये कि इस्लाम लाने के बाद पहले के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं सिवाए बन्दों के हुक़ूक़ के, और इसी लिये कुछ गुनाह फ़रमाया.

(११) ज़ाहिर में हमें अपने जैसे मालूम होते हो फिर कैसे माना जाए कि हम तो नबी न हुए और तुम्हें यह फ़ज़ीलत मिल गई.

(१२) यानी बुत परस्ती से.

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا
فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۰ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ
نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۱
وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۭ
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝۱۲ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَاَوْحٰٓى
اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۳ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ
خَافَ وَعِيْدِ ۝۱۴ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ۝۱۵ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

अब कोई रौशन सनद (प्रमाण) हमारे पास ले आओ[१३] (१०) उनके रसूलों ने उनसे कहा[१४] हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिसपर चाहे एहसान फ़रमाता है[१५] और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएं मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये[१६] (११) और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर भरोसा न करें[१७] उसने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं[१८] और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इसपर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये (१२)

तीसरा रूकू

और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन[१] से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन पर हो जाओ, तो उन्हें उनके रब ने वही (देववाणी) भेजी कि हम ज़रूर इन ज़ालिमों को हलाक करेंगे (१३) और ज़रूर हम तुमको उनके बाद ज़मीन में बसाएंगे[२] यह उसके लिये है जो[३] मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अज़ाब का हुक्म सुनाया है उससे ख़ौफ़ करे (१४) और उन्होंने[४] फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म नामुराद हुआ[५] (१५) जहन्नम

(१३) जिससे तुम्हारे दावे की सच्चाई साबित हो. यह कलाम उनका दुश्मनी और सरकशी से था और हालांकि नबी आयतें ला चुके थे, चमत्कार दिखा चुके थे, फिर भी उन्होंने नई सनद मांगी और पेश किये हुए चमत्कार को शून्य क़रार दिया.

(१४) अच्छा यही मानो.

(१५) और नबुव्वत और रिसालत के साथ बुज़ुर्गी देता है और इस महान उपाधि के साथ नवाज़ता है.

(१६) वही दुश्मनों का शर दफ़ा करता है और उससे मेहफ़ूज़ रखता है.

(१७) हमसे ऐसा हो ही नहीं सकता क्योंकि हम जानते हैं कि जो कुछ अल्लाह ने लिख दिया है वही होगा. हमें उसपर पूरा भरोसा और भरपूर ऐतिमाद है. अबू तुराब रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि तवक्कुल बदन को बन्दगी में डालना, दिल को अल्लाह के साथ जोड़े रखना, अता पर शुक्र, बला पर सब्र का नाम है.

(१८) और हिदायत व निजात के तरीक़े हम पर खोल दिये. हम जानते हैं कि सारे काम उसकी क़ुदरत और इख़्तियार में हैं.

सूरए इब्राहीम - तीसरा रूकू

(१) यानी अपने इलाक़े.

(२) हदीस शरीफ़ में है, जो अपने हमसाए को तकलीफ़ देता है अल्लाह उसके घर का उसी हमसाए को मालिक बनाता है.

(३) क़यामत के दिन.

(४) यानी नबियों ने अल्लाह तआला से मदद तलब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के बीच अल्लाह तआला से.

(५) मानी ये हैं कि नबियों की मदद फ़रमाई गई और उन्हें विजय दी गई और सच्चाई के दुश्मन सरकश काफ़िर नामुराद हुए और उनके छुटकारे की कोई सबील न रही.

صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ
وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ
يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ
يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا
اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا
لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ

उसके पीछे लगा और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा﴾१६﴿ मुश्किल से उसका थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी(६) और उसे हर तरफ़ से मौत आएगी, और मरेगा नहीं और उसके पीछे एक गाढ़ा अज़ाब(७)﴾१७﴿ अपने रब से इन्कारीयों का हाल ऐसा है कि उनके काम हैं(८) जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झौंका आया आंधी के दिन में(९) सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा, यही है दूर की गुमराही﴾१८﴿ क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान व ज़मीन हक़ के साथ बनाए(१०), अगर चाहे तो तुम्हें ले जाए(११) और एक नई मख़लूक़ (प्राणी-वर्ग) ले आए(१२)﴾१९﴿ और यह(१३) अल्लाह पर कुछ दुशवार नहीं﴾२०﴿ और सब अल्लाह के हुज़ूर(१४) खुल्लम खुल्ला हाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे(१५) बड़ाई वालों से कहेंगे(१६) हम तुम्हारे ताबे थे क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो,(१७) कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें करते,(१८) हम पर एक सा है चाहे बेक़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं﴾२१﴿

चौथा रूकू

और शैतान कहेगा जब फैसला हो चुकेगा(१) बेशक अल्लाह

(६) हदीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वह मुंह के पास आएगा तो उसको बहुत नागवार मालूम होगा. जब और क़रीब होगा तो उससे चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी . जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी. (अल्लाह की पनाह)

(७) यानी हर अज़ाब के बाद उससे ज़्यादा सख़्त और बुरा अज़ाब होगा. (अल्लाह की पनाह दोज़ख़ के अज़ाब से और अल्लाह के ग़ज़ब से).

(८) जिनको वो नेक काम समझते थे जैसे कि मोहताजों की मदद, मुसाफ़िरों की सहायता और बीमारों की ख़बरगीरी वग़ैरह, चूंकि ईमान पर मबनी नहीं इसलिये वो सब बेकार हैं और उनकी ऐसी मिसाल है.

(९) और वह सब उड़ गई और उसके कण बिखर गए और उसमें कुछ बाक़ी न रहा. यही हाल है काफ़िरों के कर्मों का कि उनके शिर्क और कुफ़्र की वजह से सब बर्बाद और बातिल हो गए.

(१०) उनमें बड़ी हिकमतें हैं और उनकी पैदाइश बेकार नहीं है.

(११) शून्य करदे, ख़त्म कर दे.

(१२) बजाय तुम्हारे जो फ़रमाँबरदार हो, उसकी क़ुदरत से यह क्या दूर है जो आसमान और ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है.

(१३) ख़त्म करना और मौजूद फ़रमाना.

(१४) क़यामत के दिन.

(१५) और दौलतमन्दों और प्रभावशाली लोगों के अनुकरण में उन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया था.

(१६) कि दीन और अक़ीदों में.

(१७) यह कलाम उनका फटकार और दुश्मनी के तौर पर होगा कि दुनिया में तुम ने गुमराह किया था और सीधी राह से रोका था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वो दावे क्या हुए. अब उस अज़ाब में से ज़रा सा तो टालो. काफ़िरों के सरदार इसके जवाब में.

(१८) जब ख़ुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते. अब छुटकारे की कोई राह नहीं है न काफ़िरों के लिये शफ़ाअत. आओ रोएं और फ़रियाद करें. पांच सौ बरस फ़रियाद करेंगे, रोएंगे और कुछ काम न आएगा तो कहेंगे कि अब सब्र करके देखो शायद उससे कुछ काम निकले. पांच सौ बरस सब्र करेंगे, वह भी काम न आएगा तो कहेंगे कि.

الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ
فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِیَ عَلَیْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ
اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِیْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِیْ وَلُوْمُوْۤا
اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِیَّ ؕ اِنِّیْ
كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۲﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ
فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾ اَلَمْ تَرَ
كَیْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَیِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَیِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِی السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾
تُؤْتِیْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِیْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَیَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَمَثَلُ
كَلِمَةٍ خَبِیْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِیْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ

ने तुमको सच्चा वादा दिया था[२] और मैं ने जो तुमको वादा दिया था[३] वह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था[४] मगर यही कि मैं ने तुमको[५] बुलाया तुमने मेरी मान ली[६] तो अब मुझपर इल्ज़ाम न रखो[७] ख़ुद अपने ऊपर इल्ज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुंच सकूं न तुम मेरी फ़रियाद को पहुंच सको, वह जो पहले तुमने मुझे शरीक ठहराया था[८] मैं उससे सख़्त बेज़ार हूँ बेशक ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है﴾२२﴿ और वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, वो बाग़ों में दाख़िल किये जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहतीं, हमेशा उनमें रहें अपने रब के हुक्म से, उसमें उनके मिलते वक़्त का इकराम(सत्कार) सलाम है[९]﴾२३﴿ क्या तुमने न देखा अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की[१०] जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिसकी जड़ क़ायम और शाख़ें आसमान में﴾२४﴿ हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से[११] और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वो समझें[१२]﴾२५﴿ और गन्दी बात[१३] की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़ [१४] कि ज़मीन के ऊपर से काट

सूरए इब्राहीम - चौथा रूकू

(१) और हिसाब से फ़ारिग़ हो जाएंगे. जन्नती जन्नत का और दोज़ख़ी दोज़ख़ का हुक्म पाकर जन्नत और दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे. दोज़ख़ी शैतान पर मलामत करेंगे और उसको बुरा कहेंगे कि बदनसीब तूने हमें गुमराह करके इस मुसीबत में डाला तो वह जवाब देगा कि.

(२) कि मरने के बाद फिर उठना है और आख़िरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा. अल्लाह का वादा सच्चा था सच्चा हुआ.

(३) कि न मरने के बाद उठना, न जज़ा, न जन्नत, न दोज़ख़.

(४) न मैं ने तुम्हें अपने अनुकरण पर मजबूर किया था, या यह कि मैं ने अपने वादे पर तुम्हारे सामने कोई तर्क और प्रमाण पेश नहीं किया था.

(५) वसवसे डालकर गुमराही की तरफ़.

(६) और बग़ैर तर्क और प्रमाण के तुम मेरे बहकाए में आगए जब कि अल्लाह तआला ने तुम से वादा फ़रमाया था कि शैतान के बहकावे में न आना. और उसके रसूल उसकी तरफ़ से दलीलें लेकर तुम्हारे पास आए और उन्होंने तर्क पेश किये और प्रमाण क़ायम किये तो तुमपर ख़ुद लाज़िम था कि तुम उनका अनुकरण करते और उनकी रौशन दलीलों और खुले चमत्कार से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी तरफ़ इल्तिफ़ात न करते, मगर तुमने ऐसा न किया.

(७) क्योंकि मैं दुश्मन हूँ और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से भले की आशा रखना ही मूर्खता है तो....

(८) अल्लाह का उसकी इबादत में. (ख़ाज़िन)

(९) अल्लाह तआला की तरफ़ से और फ़रिश्तों की तरफ़ से और आपस में एक दूसरे की तरफ़ से.

(१०) यानी कलिमए तौहीद की.

(११) ऐसे ही कलिमए ईमान है कि उसकी जड़ मूमिन के दिल की ज़मीन मे साबित और मज़बूत होती है और उसकी शाख़ें यानी अमल आसमान में पहुंचते हैं और उसके फल यानी बरकत और सवाब हर वक़्त हासिल होते हैं. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबए किराम से फ़रमाया, वह दरख़्त बताओ जो मूमिन की तरह है, उसके पत्ते नहीं गिरते और हर वक़्त फल देता है (यानी जिस तरह मूमिन के अमल अकारत नहीं होते) और उसकी बरकतें हर वक़्त हासिल रहती हैं. सहाबा ने सोचा कि ऐसा कौन सा दरख़्त है जिसके पत्ते न गिरते हों और उसका फल हर वक़्त मौजूद रहता हो. चुनांचे जंगल के दरख़्तों के

فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

दिया गया अब उसे कोई क़ियाम (स्थिरता) नहीं[१५] ﴿२६﴾ अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात पर[१६] दुनिया की ज़िन्दगी में[१७] और आख़िरत में[१८] और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है[१९] और अल्लाह जो चाहे करे ﴿२७﴾

पाँचवां रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जिन्होंने अल्लाह की नेअमत नाशुक्री से बदल दी[१] और अपनी क़ौम को तबाही के घर ला उतारा ﴿२८﴾ वो जो दौज़ख़ है उसके अन्दर जाएंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह ﴿२९﴾ और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराए[२] कि उसकी राह से बहकावें, तुम फ़रमाओ[३] कुछ बरत लो कि तुम्हारा अंजाम आग है[४] ﴿३०﴾ मेरे उन बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिसमें न सौदागरी होगी[५] न याराना[६] ﴿३१﴾ अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा तो उससे कुछ फल तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिये किश्ती को मुसख़्ख़र (वशीभूत) किया कि उसके हुक्म से दरिया में चले[७] और तुम्हारे लिये नदियाँ मुसख़्ख़र कीं[१०] ﴿३२﴾

नाम लिये . जब ऐसा कोई दरख़्त ख़्याल में न आया तो हुज़ूर से दरियाफ़्त किया. फ़रमाया, वह खजूर का दरख़्त है. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अपने वालिद हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से अर्ज़ किया कि जब हुज़ूर ने दरियाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि खजूर का दरख़्त है लेकिन बड़े बड़े सहाबा तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं छोटा था इसलिये मैं अदब से ख़ामोश रहा. हज़रत उमर ने फ़रमाया अगर तुम बता देते तो मुझे बड़ी ख़ुशी होती.

(१२) और ईमान लाएं, क्योंकि मिसालों से मानी अच्छी तरह दिल में बैठ जाते हैं.

(१३) यानी कुफ़्री कलाम.

(१४) इन्द्रायन की तरह का जिसका मज़ा कड़वा, बू नागवार या लहसन की तरह बदबूदार.

(१५) क्योंकि जड़ उसकी ज़मीन में साबित और मज़बूत नहीं, शाख़ें उसकी बलन्द नहीं होतीं. यही हाल है कुफ़्री कलाम का कि उसकी कोई अस्ल साबित नहीं और कोई तर्क और प्रमाण नहीं रखता, जिससे मज़बूती हो, न उसमें भलाई और बरकत कि वह क़ुबूलियत की ऊंचाई पर पहुंच सके.

(१६) यानी ईमान का कलिमा.

(१७) कि वो परेशानी और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर और अडिग रहते हैं और सच्चाई की राह और दीन से नहीं हटते यहाँ तक कि उनकी ज़िन्दगी का अन्त ईमान पर होता है.

(१८) यानी क़ब्र में कि आख़िरत की मंज़िलों की पहली मंज़िल है. जब मुन्कर-नकीर आकर उनसे पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा दीन क्या है, और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ इशारा करके दरियाफ़्त करते हैं कि इनकी निस्बत तू क्या कहता है. तो मूमिन इस मंज़िल में अल्लाह के फ़ज़्ल से जमा रहता है और कह देता है कि मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है और यह मेरे नबी हैं मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल. फिर उसकी क़ब्र चौड़ी कर दी जाती है और उसमें जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बुएं आती हैं और वह रौशन करदी जाती है और आसमान से पुकार होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा.

(१९) वो क़ब्र में मुन्कर-नकीर को सही जवाब नहीं दे सकते और हर सवाल के जवाब में यही कहते है हाय हाय मैं नहीं जानता. आसमान से पुकार होती है मेरा बन्दा झूटा है इसके लिये आग का फ़र्श बिछाओ, दोज़ख़ का लिबास पहनाओ, दोज़ख़ की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो. उसको दोज़ख़ की गर्मी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक तरफ़ की पसलियाँ दूसरी तरफ़ आ जाती हैं. अज़ाब करने वाले फ़रिश्ते उसपर मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उसे लोहे के गदाओं से मारते हैं.

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ
الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝٣٣ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ
تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ
كَفَّارٌ ۝٣٤ ع وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۝٣٥ رَبِّ
اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ
فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣٦
رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ
زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ
مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝٣٧ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا
نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ
فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝٣٨ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

منزل ٣

और तुम्हारे लिए सूरज और चांद मुसख़्ख़र किए जो बराबर चल रहे हैं[११] और तुम्हारे लिए रात और दिन मुसख़्ख़र किए[१२]﴾३३﴿ और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे, बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है[१३]﴾३४﴿

छटा रूकू

और याद करो जब इब्राहीम ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर[१] को अमान वाला कर दे[२] और मुझे मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा[३]﴾३५﴿ ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये[४] तो जिसने मेरा साथ दिया[५] वह तो मेरा है और जिसने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है[६]﴾३६﴿ ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद एक नाले में बसाई जिसमें खेती नहीं होती तेरे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले घर के पास[७] ऐ हमारे रब इसलिये कि वो[८] नमाज़ क़ायम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उनकी तरफ़ माइल करदे[९] और उन्हें कुछ फल खाने को दे[१०] शायद वो एहसान मानें﴾३७﴿ ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते है और जो ज़ाहिर करते, और अल्लाह पर कुछ छुपा नहीं, ज़मीन में और न आसमान में[११]﴾३८﴿ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्हाक़ दिये बेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है﴾३९﴿ ऐ

(अल्लाह हमें क़ब्र के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रखे और ईमान में मज़बूत रखे - आमीन)

सूरए इब्राहीम - पाँचवाँ रूकू

(११) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि उन लोगों से मुराद मक्का के काफ़िर हैं और वह नेअमत जिसकी शुक्रगुज़ारी उन्होंने न की वह अल्लाह के हबीब हैं सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि अल्लाह तआला ने उनके वुजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और उनकी ज़ियारत का सौभाग्य दिया. लाज़िम था कि इस महान नेअमत का शुक्र बजा लाते और उनका अनुकरण करके और ज़्यादा मेहरबानी के हक़दार बनते. इसके बदले उन्होंने नाशुक्री की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इन्कार किया और अपनी क़ौम को, जो दीन में उनके सहमत थे, हलाकत के मुंह में पहुंचाया.

(२) यानी बुतों को उसका शरीक किया.

(३) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) इन काफ़िरों से, कि थोड़े दिन दुनिया कि ख़्वाहिशों का..

(४) आख़िरत में.

(५) कि ख़रीद फ़रोख़्त यानी क्रय विक्रय यानी माली मुआवज़े और फ़िदिये ही से कुछ नफ़ा उठाया जा सके.

(६) कि उस से नफ़ा उठाया जाए बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे. इस आयत में नफ़्सानी और तबई दोस्ती की नफ़ी है और ईमानी दोस्ती जो अल्लाह की महब्बत के कारण से हो वह बाक़ी रहेगी जैसा कि सूरए ज़ुख़रफ़ में फ़रमाया *''अल अख़िल्लाओ यौमइज़िम बअदुहुम लिबअदिन अदुब्बन इल्लल मुत्तक़ीन''* (यानी गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार - सूरए ज़ुख़रफ़, आयत ६७)

(७) और इससे तुम फ़ायदे उठाओ.

(८) कि उनसे काम लो.

(९) न थकें न रूकें, तुम उनसे नफ़ा उठाते हो.

(१०) आराम और काम के लिये.

(११) कि कुफ़्र और गुनाह करके अपने आप पर ज़ुल्म करता है और अपने रब की नेअमत और उसके एहसान का हक़ नहीं मानता. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन्सान से यहाँ अबूजहल मुराद है. ज़ुजाज का क़ौल है कि इन्सान इस्मे-जिन्स है, यहाँ इससे काफ़िर मुराद है.

सूरए इब्राहीम - छटा रूकू

(१) मक्कए मुकर्रमा.
(२) कि क़यामत के क़रीब दुनिया के वीरान होने के वक़्त तक यह वीरानी से मेहफ़ूज़ रहे या इस शहर वाले अम्न में हों. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ क़ुबूल हुई. अल्लाह तआला ने मक्कए मुकर्रमा को वीरान होने से अम्न दिया और कोई भी उसके वीरान करने पर क़ादिर न हो सका. उसको अल्लाह तआला ने हरम बनाया कि उसमें न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न किसी पर ज़ुल्म किया जाए, न वहाँ शिकार मारा जाए, न सब्ज़ा काटा जाए.
(३) अल्लाह के नबी अलैहिमुस्सलाम बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मअसूम हैं. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह दुआ करना अल्लाह की बारगाह में विनम्रता और हाजत के इज़हार के लिये है कि हालांकि तूने अपने करम से मअसूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़्ल व रहम की तरफ़ हाजत का हाथ फैलाए रखते हैं.
(४) यानी उनकी गुमराही का सबब हुए कि वो उन्हें पूजने लगे.
(५) और मेरे अक़ीदे और दीन पर रहा.
(६) चाहे तो उसे हिदायत करे और तौबह की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.
(७) यानी इस वादी में जहाँ अब मक्कए मुकर्रमा है. ज़ुर्रियत से मुराद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं. आप शाम प्रदेश में हज़रत हाजिरा की मुबारक कोख से पैदा हुए. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी हज़रत सारा के कोई औलाद न थी इस वजह से उन्हें ईर्ष्या पैदा हुई और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा कि आप हाजिरा और उनके बेटे को मेरे पास से हटा दीजिये. अल्लाह की हिक्मत ने यह एक कारण पैदा किया था. चुनांचे वही आई कि आप हाजिरा व इस्माईल को उस धरती में ले जाएं (जहाँ अब मक्कए मुकर्रमा है). आप उन दोनों को अपने साथ बुराक़ पर सवार करके शाम से सरज़मीने हरम में लाए और काबए मुक़द्दसा के पास उतारा. यहाँ उस वक़्त न कोई आबादी थी, न कोई चश्मा, न पानी. एक तोशादान में ख़जूरें और एक बर्तन में पानी उन्हें देकर आप वापस हुए. हज़रत हाजिरा ने अर्ज़ किया कि आप कहाँ जाते हैं और हमें इस घाटी में बेसहारा छोड़े जाते हैं. लेकिन आपने इसका कोई जवाब नहीं दिया और उनकी तरफ़ नज़र न की. हज़रत हाजिरा ने कई बार यही अर्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है. आपने फ़रमाया, हाँ. उस वक़्त उन्हें इत्मीनान हुआ. हज़रत इब्राहीम चले गए और उन्होंने अल्लाह की बारगाह में हाथ उठाकर यह दुआ की जो आयत में बयान की गई है. हज़रत हाजिरा अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को दूध पिलाने लगीं. जब वह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की सख़्ती हुई और साहबज़ादे का गला भी प्यास से सूख गया तो आप पानी की तलाश में सफ़ा और मर्वा के बीच दौड़ीं. ऐसा सात बार हुआ. यहाँ तक कि फ़रिश्ते के पर मारने से या हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के मुबारक क़दम से इस सूखी ज़मीन में एक चश्मा (ज़मज़म) नमूदार हुआ. आयत में पाकी वाले घर से बैतुल्लाह मुराद है जो तूफ़ाने नूह से पहले काबए मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आसमान पर उठा लिया गया था. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह वाक़िआ आपके आग में डाले जाने के बाद हुआ. आग के वाक़ए में आपने दुआ न फ़रमाई थी और इस वाक़ए में दुआ भी की और गिड़गिड़ाए भी. अल्लाह तआला की कारसाज़ी पर भरोसा करके दुआ न करना भी तवक्कुल और बेहतर है लेकिन दुआ का मक़ाम उससे भी अफ़ज़ल है. तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस वाक़ए के आख़िर में दुआ फ़रमाना इसलिये है कि आप कमाल के ज़ीने पर दम बदम तरक़्क़ी पर हैं.
(८) यानी इस्माईल और उनकी औलाद इस वीरान घाटी में तेरे ज़िक्र और इबादत में मशग़ूल हों और तेरे बैतुल हराम के पास.
(९) दूसरे स्थानों से यहाँ आएं और उनके दिल इस पाक मकान के दर्शन के शौक़ में खिंचें. इसमें ईमानदारों के लिये यह दुआ है कि उन्हें बैतुल्लाह का हज नसीब हो और अपनी यहाँ रहने वाली सन्तान के लिये यह कि वो दर्शन के लिये आने वालों से फ़ायदा उठाते रहें. ग़रज़ यह दुआ दीन और दुनिया की बरक्तों पर आधारित है. हज़रत की दुआ क़ुबूल हुई. क़बीलए जुरहुम ने इस तरफ़ से गुज़रते हुए एक पक्षी देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि बयाबान में पक्षी कैसा. शायद कहीं चश्मा निकला. तलाश की तो देखा कि ज़मज़म शरीफ़ में पानी है. यह देखकर उन लोगों ने हज़रत हाजिरा से वहाँ बसने की इजाज़त चाही. उन्होंने इस शर्त पर इजाज़त दी कि पानी में तुम्हारा हक़ न होगा. वो लोग वहाँ बस गए. हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जवान हुए तो उन लोगों ने आपकी पाकी और तक़वा को देखकर अपने ख़ानदान में आपकी शादी कर दी. कुछ अरसा बाद हज़रत हाजिरा का इन्तिक़ाल हो गया. इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ पूरी हुई और आपने दुआ में यह भी फ़रमाया.
(१०) उसी का फ़ल्ल है कि कई तरह की फ़सलें रबी व ख़रीफ़ वग़ैरह के मेवे वहाँ एक ही वक़्त में मौजूद मिलते हैं.
(११) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक और बेटे की दुआ की थी . अल्लाह तआला ने क़ुबूल फ़रमाई तो आपने उसका शुक्र अदा किया और अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया.

وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا

मेरे रब, मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को(१२) ऐ हमारे रब, मेरी दुआ सुन ले﴿४०﴾ ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को(१३) और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा﴿४१﴾

सातवाँ रूकू

और हरगिज़ अल्लाह को बेख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से (१) उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये जिसमें(२)﴿४२﴾ आंखें खुली की खुली रह जाएंगी, बेतहाशा दौड़ते निकलेंगे(३) अपने सर उठाए हुए कि उनकी पलक उनकी तरफ़ लौटती नहीं(४) और उनके दिलों में कुछ सकत न होगी(५)﴿४३﴾ और लोगों को इस दिन से डराओ(६) जब उनपर अज़ाब आएगा तो ज़ालिम (७) कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें(८) मुहलत दे कि हम तेरा बुलाना मानें (९) और रसूलों की गुलामी करें (१०) तो क्या तुम पहले (११) क़सम न खा चुके थे कि हमें दुनिया से कहीं हटकर जाना नहीं(१२)﴿४४﴾ और तुम उनके घरों में बसे जिन्होंने अपना बुरा किया था (१३) और तुमपर ख़ूब खुल गया हमने उनके साथ कैसा किया(१४) और हम ने तुम्हें मिसालें देकर बता दिया(१५)﴿४५﴾ और बेशक वो(१६) अपना सा दाव चले(१७)

(१२) क्योंकि कुछ के बारे में तो आपको अल्लाह के बताए से मालूम था कि काफ़िर होंगे इसलिये कुछ सन्तान के वास्ते नमाज़ों की पाबन्दी और सुरक्षा की दुआ की.

(१३) ईमान की शर्त के साथ, या माँ बाप से हज़रत आदम और हव्वा मुराद हैं.

सूरए इब्राहीम - सातवाँ रूकू

(१) इसमें मज़लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआला ज़ालिम से उसका बदला लेगा.

(२) हौल और दहशत से.

(३) हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम की तरफ़ जो उन्हें मेहशर के मैदान की तरफ़ बुलाएंगे.

(४) कि अपने आप को देख सकें.

(५) आश्चर्य और दहशत की शिद्दत से . क़तादा ने कहा कि दिल सीनों से निकल कर गलों में आ फंसेंगे, न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे. मानी ये हैं कि उस दिन हौल और दहशत की तीव्रता का यह आलम होगा कि सर ऊपर उठे होंगे, आँखें खुली की खुली रह जाएंगी. दिल अपनी जगह ठहर न पाएंगे.

(६) यानी काफ़िरों को क़यामत के दिन का ख़ौफ़ दिलाओ.

(७) यानी काफ़िर.

(८) दुनिया में वापस भेज दे और.

(९) और तेरे एक होने यानी तेरी तौहीद पर ईमान लाएं.

(१०) और हम से जो क़ुसूर हो चुके उसकी तलाफ़ी करें. इसपर उन्हें फटकारा जाएगा और फ़रमाया जाएगा.

(११) दुनिया में.

(१२) और क्या तुमने मरने के बाद उठाए जाने और आख़िरत का इन्कार न किया था.

(१३) कुफ़्र और गुनाह करके, जैसे कि क़ौमे नूह व आद व समूद वग़ैरह.

(१४) और तुमने अपनी आँखों से उनकी मंज़िलों में अज़ाब के निशान देखे और तुम्हें उनकी हलाकत और बर्बादी की ख़बरें मिलीं. यह सब कुछ देखकर और जान कर तुमने सबक़ न पकड़ा और तुम कुफ़्र से बाज़ न आए.

(१५) ताकि तुम तदबीर न करो और समझो और अज़ाब और हलाकत से अपने आप को बचाओ.

(१६) इस्लाम को बचाने और कुफ़्र की सहायता करने के लिये नबीये अकरम सल्लाहो वसल्लम के साथ.

(१७) कि उन्होंने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़त्ल करने या क़ैद करने या निकाल देने का इरादा किया.

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ
لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ
وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ
تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ
مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ
وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

اٰيَاتُهَا ٩٩ (١٥) سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ (٥٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

और उनका दाव अल्लाह के क़ाबू में है और उनका दाव कुछ ऐसा न था कि जिससे ये पहाड़ टल जाएं[१८] ﴾४६﴿ तो हरगिज़ ख़याल न करना कि अल्लाह अपने रसूलों से वादा ख़िलाफ़ करेगा[१९] बेशक अल्लाह ग़ालिब है बदला लेने वाला ﴾४७﴿ जिस दिन[२०] बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आसमान[२१] और लोग सब निकल खड़े होंगे[२२] एक अल्लाह के सामने जो सब पर ग़ालिब है ﴾४८﴿ और उस दिन तुम मुजरिमों[२३] को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे[२४] ﴾४९﴿ उनके कुर्ते राल के होंगे[२५] और उनके चेहरे आग ढांप लेगी ﴾५०﴿ इसलिये कि अल्लाह हर जान को उसकी कमाई का बदला दे, बेशक अल्लाह को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती ﴾५१﴿. यह[२६] लोगों को हुक्म पहुंचाना है और इसलिये कि वो उससे डराए जाएं और इसलिये कि वो जान लें कि वह एक ही मअबूद है[२७] और इसलिये कि अक़्ल वाले नसीहत मानें ﴾५२﴿

१५-सूरए हिज्र

सूरए हिज्र मक्का में उतरी, इसमें ९९ आयतें और ६ रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
अलिफ़-लाम-रा ! ये आयतें हैं किताब और रौशन क़ुरआन की ﴾१﴿

(१८) यानी अल्लाह की आयतें और रसूल की शरीअत के अहकाम जो अपनी मज़बूती में अडिग पहाड़ों की तरह हैं, मुहाल है कि काफ़िरों के छल और उनकी बहाने बाज़ियों से अपनी जगह से टल सकें.
(१९) यह तो सम्भव ही नहीं है. वह ज़रूर वादा पूरा करेगा और अपने रसूल की मदद फ़रमाएगा, उनके दीन को ग़ालिब करेगा, उनके दुश्मनों को हलाक करेगा.
(२०) इस दिन से क़यामत का दिन मुराद है.
(२१) ज़मीन और आसमान की तबदीली में मुफ़स्सिरों के दो क़ौल हैं, एक यह कि उनकी विशेषताएं बदल दी जाएंगी जैसे ज़मीन समतल हो जाएगी, न उसपर पहाड़ बाक़ी रहेंगे, न ऊंचे टीले, न गहरे ग़ार, न दरख़्त, न इमारत, न किसी बस्ती और सल्तनत के निशान. आसमान पर कोई सितारा बाक़ी न रहेगा और सूरज चांद की रौशनियाँ ख़त्म हो जाएंगी. यह तबदीली विशेषतओं की है, ज़ात की नहीं. दूसरा क़ौल यह है कि आसमान और ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी. इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी. सफ़ेद और साफ़, जिसपर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आसमान सोने का होगा. यह दो क़ौल अगरचे आपस में अलग अलग मालूम होते हैं मगर इन में से हर एक सही है. और जमा की वजह यह है कि पहले गुण बदले जाएंगे और दूसरी बार हिसाब के बाद दूसरा परिवर्तन होगा, उसमें ज़मीन और आसमान की ज़ातें ही बदल जाएंगी.
(२२) अपनी क़ब्रों से.
(२३) यानी काफ़िरों.
(२४) अपने शैतानों के साथ बन्धे हुए.
(२५) काले रंग बदबूदार जिनसे आग के शोले और ज़्यादा तेज़ हो जाएं (मदारिक व ख़ाज़िन) . तफ़सीरे बैज़ावी में है कि उनके बदनों पर राल लीप दी जाएगी. वह कुर्ते की तरह हो जायगी. उसकी जलन और उसके रंग की वहशत और बदबू से तकलीफ़ पाएंगे.
(२६) क़ुरआन शरीफ़.
(२७) यानी इन आयतों से अल्लाह तआला की तौहीद की दलीलें पाएं.

१५ - सूरए हिज्र - पहला रूकू

(१) सूरए हिज्र मक्की है, इसमें छ रूकू, निनानवे आयतें, छ सौ चव्वन कलिमे और दो हज़ार सात सौ साठ अक्षर हैं.

चौदहवां पारा- रुबमा

(सूरए हिज्र - पहला रुकू जारी)

बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर[२] काश मुसलमान होते उन्हें छोड़ दो[३]﴿२﴾ कि खाएं और बरतें[४] और उम्मीद[५] उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं[६]﴿३﴾ और जो बस्ती हमने हलाक की उसका एक जाना हुआ नविश्ता (लेखा) था[७]﴿४﴾ कोई गिरोह (जनसमूह) अपने वादे से आगे न बढ़े न पीछे हटे﴿५﴾ और बोले[८] कि ऐ वो जिन पर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो[९]﴿६﴾ हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं लाते[१०] अगर तुम सच्चे हो[११]﴿७﴾ हम फ़रिश्ते बेकार नहीं उतारते और वो उतरें तो उन्हें मुहलत न मिले[१२]﴿८﴾ बेशक हमने उतारा है यह क़ुरआन और बेशक हम ख़ुद इसके निगहबान हैं[१३]﴿९﴾ और बेशक हमने तुमसे पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे﴿१०﴾ और उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उससे हंसी करते हैं[१४]﴿११﴾ ऐसे ही हम उस हंसी को उन मुजरिमों[१५] के दिलों में राह देते हैं﴿१२﴾ वो उसपर [१६] ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है[१७]﴿१३﴾ और अगर हम उनके लिये आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन

सूरए हिज्र - पहला रुकू जारी

(२) ये आरज़ूएं, या मौत के वक़्त अज़ाब देखकर होंगी जब काफ़िर को मालूम हो जाएगा कि वह गुमराही में था, या आख़िरत में क़यामत के दिन की सख़्तियों और हौल और अपना अन्त देखकर. ज़ुजाज का क़ौल है कि काफ़िर जब कभी अपने अज़ाब का हाल और मुसलमानों पर अल्लाह की रहमत देखेंगे, हर बार आरज़ूएं करेंगे कि.

(३) ऐ मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम).

(४) दुनिया की लज़्ज़तें.

(५) लम्बी ज़िन्दगी, नेअमतों और लज़्ज़तों की, जिसके कारण वो ईमान से मेहरूम हैं.

(६) अपना अन्त. इसमें चेतावनी है कि लम्बी उम्मीदों में गिरफ़्तार होना और दुनिया की लज़्ज़तों की तलब में डूब जाना ईमानदार की शान नहीं. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशों का अनुकरण सच्चाई से रोकता है.

(७) लौहे मेहफ़ूज़ में, उसी निर्धारित समय पर वह हलाक हुई.

(८) मक्का के काफ़िर, रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से.

(९) उनका यह क़ौल हंसी उड़ाने के तौर पर था जैसा कि फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निस्बत कहा था *"इन्ना रसूलकुमुल लज़ी उरसिला इलैकुम लमजनूनुन"* (यानी बोला, तुम्हारे ये रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं, ज़रूर अक़्ल नहीं रखते - सूरए शुअरा, आयत २७)

(१०) जो तुम्हारे रसूल होने और क़ुरआन शरीफ़ के अल्लाह की किताब होने की गवाही दें.

(११) अल्लाह तआला इसके जवाब में फ़रमाता है.

(१२) फ़िलहाल अज़ाब में गिरफ़्तार कर दिये जाएं.

(१३) कि फेर बदल और कमी बेशी से इसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं. तमाम जिन्न और इन्सान और सारी सृष्टि के बस में नहीं है कि इस में एक अक्षर की भी कमी बेशी करे या फेर बदल करे. चूंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम की हिफ़ाज़त का वादा फ़रमाया है, इस लिये यह विशेषता सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ ही की है, दूसरी किसी किताब को यह बात मयस्सर नहीं. यह हिफ़ाज़त कई तरह पर है. एक यह कि क़ुरआने करीम को चमत्कार बनाया कि बशर का कलाम इसमें मिल ही न सके, एक यह कि इसको ऐतिराज़ और मुक़ाबले से मेहफ़ूज़ किया कि कोई इस जैसा कलाम बनाने पर क़ादिर न हो, एक यह कि सारी सृष्टि को इसके नेस्त नाबूद और ख़त्म करने या मिटाने से आजिज़ कर दिया कि काफ़िर अपनी सारी दुश्मनी के बावुजूद इस पाक किताब को मिटाने से आजिज़ हैं.

فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ
جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾ وَ
حَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ
السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا
وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَن
لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا
خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾ وَأَرْسَلْنَا
الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ
وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَ
نُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا
الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

को उसमें चढ़ते﴾१४﴿ जब भी यही कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई . बल्कि हमपर जादू हुआ[१८]﴾१५﴿

दूसरा रूकू

और बेशक हमने आसमान में बुर्ज बनाए[१] और उसे देखने वालों के लिये आरास्ता किया[२]﴾१६﴿ और उसे हमने हर शैतान मरदूद से मेहफ़ूज़ रखा[३]﴾१७﴿ मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उसके पीछे पड़ता है रौशन शोला[४]﴾१८﴿ और हमने ज़मीन फैलाई और उसमें लंगर डाले[५] और उसमें हर चीज़ अंदाज़े से उगाई﴾१९﴿ और तुम्हारे लिये उसमें रोज़ियां कर दीं[६] और वो कर दिये जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते[७]﴾२०﴿ और कोई चीज़ नहीं जिसके हमारे पास ख़ज़ाने न हों[८] और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मालूम अंदाज़ से﴾२१﴿ और हम ने हवाएं भेजीं बादलों को बारवर (फलदायक) करने वालियाँ[९] तो हमने आसमान से पानी उतारा फिर वह तुम्हें पीने को दिया और तुम कुछ उसके ख़ज़ानची नहीं[१०]﴾२२﴿ और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम ही वारिस हैं[११]﴾२३﴿ और बेशक हमें मअलूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मअलूम है जो तुम में पीछे रहे[१२]﴾२४﴿

(१४) इस आयत में बताया गया है कि जिस तरह मक्का के काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जिहालत की बातें कीं और बेअदबी से आपको मजनून या पागल कहा, पुराने ज़माने से काफ़िरों की यही आदत रही है और वो रसूलों के साथ ठट्ठा करते रहे हैं. इसमें नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है.
(१५) यानी मक्का के मुश्रिक.
(१६) यानी नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या क़ुरआन पर.
(१७) कि वो नबियों को झुटलाकर अल्लाह के अज़ाब से हलाक होते रहे हैं, यही हाल उनका है, तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डरते रहना चाहिये.
(१८) यानी इन काफ़िरों की दुश्मनी इस दर्जे पहुंच गई है कि अगर उनके लिये आसमान में दरवाज़ा खोल दिया जाए और उन्हें उसमें चढ़ना मिले और दिन में उससे गुज़रें और आँखों से देखें, जब भी न मानें और यह कह दें कि हमारी नज़रबन्दी की गई और हम पर जादू हुआ. तो जब ख़ुद अपने आँखों देखे से उन्हें यक़ीन हासिल न हुआ, तो फ़रिश्तों के आने और गवाही देने से, जिसको ये तलब करते हैं, उन्हें क्या फ़ायदा होगा.

सूरए हिज्र - दूसरा रूकू

(१) जो गर्दिश (भ्रमण) करने वाले ग्रहों की मंज़िलें हैं. वो बारह हैं : हमल (मेष), सौर (वृषभ), जौज़ा (मिथुन), सरतान (कर्क), असद (सिंह), सम्बला (कन्या), मीज़ान (तुला), अक़रब (वृश्चिक), क़ौस (धनु), जदी (मकर), दलव (कुम्भ), हूत (मीन).
(२) सितारों से.
(३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, शैतान आसमानों में दाख़िल होते थे और वहाँ की ख़बरें ज्योतिषियों के पास लाते थे. जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो शैतान तीन आसमानों से रोक दिये गए. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत हुई, तो तमाम आसमानों से रोक दिये गए.
(४) शहाब उस सितारे को कहते हैं जो शोले की तरह रौशन होता है और फ़रिश्ते उससे शैतानों को मारते हैं.
(५) पहाड़ों के, ताकि वो सलामत और स्थिर रहे और हरकत न करे.
(६) ग़ल्ले, फल वग़ैरह.
(७) दासी, ग़ुलाम, चौपाए और सेवक वग़ैरह.
(८) ख़ज़ाने होना, यानी इक़्तिदार, सत्ता और इख़्तियार. मानी ये हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर हैं जितनी चाहें

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۗ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ
خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝
وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۝ وَاِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ
صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ
فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ
كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ
السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ
السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ
مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝
قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ

और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़यामत में उठाएगा[१३] बेशक वही इल्म व हिकमत वाला है﴾२५﴿

तीसरा रूकू

और बेशक हमने आदमी को[१] बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह गारा थी[२]﴾२६﴿ और जिन्न को उससे पहले बनाया बेधुंए की आग से[३]﴾२७﴿ और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है﴾२८﴿ तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उसमें अपनी तरफ़ की ख़ास इज़्ज़त वाली रूह फूंक दूं[४] तो उसके[५] लिये सिजदे में गिर पड़ना﴾२९﴿ तो जितने फ़रिश्ते थे सब के सब सिजदे में गिरे﴾३०﴿ सिवा इबलीस के, उसने सज्दा वालों का साथ न माना[६]﴾३१﴿ फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों से अलग रहा﴾३२﴿ बोला मुझे ज़ेबा (मुनासिब) नहीं कि बशर को सज्दा करूं जिसे तूने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी﴾३३﴿ फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू मरदूद है﴾३४﴿ और बेशक क़यामत तक तुझपर लअनत है[७]﴾३५﴿ बोला ऐ मेरे रब तू मुझे मुहलत दे उस दिन तक कि वो उठाए जाएं[८]﴾३६﴿फ़रमाया तू उनमें है जिनको मुहलत है ﴾३७﴿

और जो अन्दाज़ा हिक्मत के मुताबिक़ हो .

(९) आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं.

(१०) कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो, जबकि तुम्हें इसकी हाजत है. इसमें अल्लाह तआला की क़ुदरत और बन्दों की विवशता की बड़ी दलील है.

(११) यानी सारी सृष्टि नष्ट होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुल्क का दावा करने वाले की मिल्क ज़ाया(नष्ट) हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा.

(१२) यानी पहली उम्मतें और उम्मते मुहम्मदिया, जो उम्मतों में सबसे पिछली है या वो जो ताअत और भलाई में पहल करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वो जो बुज़ुर्गी हासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उज्र से पीछे रह जाने वाले हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नमाज़ की जमाअत की पहली सफ़ की अच्छाइयाँ बयान कीं, तो सहाबा में पहली सफ़ में शामिल होने की होड़ लगी और उनकी भीड़ होने लगी. जिन लोगों के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे, वो अपने मकान बेचकर क़रीब में मकान ख़रीदने की कोशिश करने लगे ताकि पहली सफ़ में जगह मिलने से कभी मेहरूम न हों. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब नियतों पर है और अल्लाह तआला अगलों को भी जानता है और जो उज्र से पीछे रह गए हैं उनको भी जानता है और उनकी नियतों से भी बाख़बर है और उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं है.

(१३) जिस हाल पर वो मरे होंगे.

सूरए हिज्र - तीसरा रूकू

(१) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सूख़ी.

(२) अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो दस्ते क़ुदरत ने ज़मीन से एक मुट्ठी ख़ाक ली, उसको पानी में ख़मीर किया. जब वह गारा सियाह हो गया और उसमें बू पैदा हुई, तो उसमें इन्सानी सूरत बनाई. फिर वह सूख कर ख़ुश्क हो गया, तो जब हवा उसमें जाती तो वह बजता और उसमें आवाज़ पैदा होती. जब सूरज की गर्मी से वह पक्का हो गया तो उसमें रूह फूंकी और वह इन्सान हो गया.

(३) जो अपनी गर्मी और लताफ़त से मसामों में दाख़िल हो जाती है.

(४) और उसको ज़िन्दगी अता फ़रमाई.

الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ
جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾
ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ
مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي
أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ
الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا
عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا

उस मालूम वक़्त के दिन तक[९] (३८) बोला ऐ रब मेरे क़सम इसकी कि तूने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन में भुलावे दूंगा[१०] और ज़रूर मैं उन सब को[११] बेराह करूंगा (३९) मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे हैं[१२] (४०) फ़रमाया यह रास्ता सीधा मेरी तरफ़ आता है (४१) बेशक मेरे[१३] बन्दों पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें[१४] (४२) और बेशक जहन्नम उन सबका वादा है[१५] (४३) उसके सात दरवाज़े हैं[१६] हर दरवाज़े के लिये उनमें से एक हिस्सा बटा हुआ है[१७] (४४)

चौथा रूकू

बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं[१] (४५) उनमें दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में[२] (४६) और हमने उनके सीनों में जो कुछ[३] कीने थे सब खींच लिये[४] आपस में भाई हैं[५] तख़्तों पर रू बरू बैठे (४७) न उन्हें उसमें कुछ तकलीफ़ पहुंचे न वो उसमें से निकाले जाएं (४८) ख़बर दो[६] मेरे बन्दों को कि बेशक मैं ही हूँ बख़्शने वाला मेहरबान (४९) और मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है (५०) और उन्हें अहवाल सुनाओ इब्राहीम के मेहमानों का[७] (५१) जब वो उसके पास आए तो बोले सलाम[८] कहा हमें तुम से डर मालूम होता है[९] (५२)

---

(५) ...के आदर और सम्मान.
(६) और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया तो अल्लाह तआला ने.
(७) कि आसमान और ज़मीन वाले तुमपर लअनत करेंगे और जब क़यामत का दिन आएगा तो उस लअनत के साथ हमेशा के अज़ाब में जकड़ दिया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी. यह सुनकर शैतान.
(८) यानी क़यामत के दिन तक. इससे शैतान का मतलब यह था कि कभी न मरे, क्योंकि क़यामत के बाद कोई न मरेगा और क़यामत तक की उसने मोहलत मांग ही ली. लेकिन उसकी दुआ को अल्लाह तआला ने इस तरह क़ुबूल किया कि.
(९) जिसमें सारी सृष्टि मर जाएगी और वह नफ़ख़ए ऊला है, तो शैतान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़ख़ए ऊला, यानी सूर के पहली बार फूंके जाने से दूसरी बार फूंके जाने तक, चालीस बरस है और उसको इस क़द्र मोहलत देना, उसके सम्मान के लिये नहीं, बल्कि उसकी बला, शक़ावत और अज़ाब की ज़ियादती के लिये है. यह सुनकर शैतान.
(१०) यानी दुनिया में गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा.
(११) दिलों में वसवसा डाल कर.
(१२) जिन्हें तूने अपनी तौहीद और इबादत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उसपर शैतान का वसवसा और उसका बहकावा न चलेगा
(१३) ईमानदार.
(१४) यानी जो काफ़िर कि तेरे अनुयायी और फ़रमाँबरदार हो जाएं और तेरे अनुकरण का इरादा कर लें.
(१५) इब्लीस का भी और उसका अनुकरण करने वालों का भी.
(१६) यानी सात तबक़े. इब्ने जुरैह का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दर्जे हैं - जहन्नम, लज़ा, हुतमा, सईर, सक़र, जहीम, हाविया.
(१७) यानी शैतान का अनुकरण करने वाले भी सात हिस्सों में बटे हैं उनमें से हर एक के लिये जहन्नम क एक दर्जा सुरक्षित है.

सूरए हिज्र - चौथा रूकू

(१) उनसे कहा जाएगा कि.
(२) यानी जन्नत में दाख़िल हो, अम्न व सलामती के साथ. न यहाँ से निकाले जाओ, न मौत आए, न कोई आफ़त रूनुमा हो, न कोई ख़ौफ़, न परेशानी.
(३) दुनिया में.

لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي
عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا۟
بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَن
يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا
خَطْبُكُمْ أَيُّهَا ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوٓا۟ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ
إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ
أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ قَدَّرْنَآ ۙ إِنَّهَا لَمِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾
فَلَمَّا جَآءَ ءَالَ لُوطٍ ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
مُّنكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا۟ بَلْ جِئْنَٰكَ بِمَا كَانُوا۟ فِيهِ
يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾ وَأَتَيْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ وَإِنَّا لَصَٰدِقُونَ ﴿٦٤﴾
فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ ٱلَّيْلِ وَٱتَّبِعْ أَدْبَٰرَهُمْ وَلَا
يَلْتَفِتْ مِنكُمْ أَحَدٌ وَٱمْضُوا۟ حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾
وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ ذَٰلِكَ ٱلْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰٓؤُلَآءِ

उन्होंने कहा डरिये नहीं हम आपको एक इल्म वाले लड़के की बशारत (ख़ुशख़बरी) देते हैं[१०] (५३) कहा क्या इसपर मुझे बशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बशारत देते हो[११] (५४) कहा हमने आपको सच्ची बशारत दी है[१२] आप नाउम्मीद न हों (५५) कहा अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद हो मगर वही जो गुमराह हुए[१३] (५६) कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़रिश्तो[१४] (५७) बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं[१५] (५८) मगर लूत के घर वाले, उन सबको हम बचालेंगे[१६] (५९) मगर उसकी औरत हम ठहराचुके हैं कि वह पीछे रह जाने वालों में हैं[१७] (६०)

पाँचवां रूकू

तो जब लूत के घर फ़रिश्ते आए[१] (६१) कहा तुम तो कुछ बेगाने लोग हो[२] (६२) कहा बल्कि हम तो आपके पास वह[३] लाए हैं जिसमें ये लोग शक करते थे[४] (६३) और हम आपके पास सच्चा हुक्म लाए हैं और बेशक हम सच्चे हैं (६४) तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे लेकर बाहर जाइये और आप उनके पीछे चलिये और तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे[५] और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये[६] (६५) और हमने उसे उस हुक्म का फ़ैसला सुना

(४) और उनके अन्तःकरण को ईर्ष्या, हसद, दुश्मनी और कटुता वग़ैरह, बुरी ख़सलतों से पाक कर दिया. वो -----

(५) एक दूसरे के साथ महब्बत करने वाले. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तलहा और ज़ुबैर उन्हीं में से हैं, यानी हमारे सीनों से दुश्मनी और कटुता और हसद व ईर्ष्या निकाल दी गई है. हम आपस में ख़ालिस महब्बत रखने वाले हैं. इसमें राफ़ज़ियों का रद है.

(६) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा, सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(७) जिन्हें अल्लाह तआला ने इसलिये भेजा था कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटे की ख़ुशख़बरी दें और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम को हलाक करें. ये मेहमान हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे, कई फ़रिश्तों के साथ.

(८) यानी फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सलाम किया और आपका आदर सत्कार किया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनसे.

(९) इसलिये कि बे इजाज़त और बे वक़्त आए और खाना नहीं खाया.

(१०) यानी हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की, इसपर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.

(११) यानी ऐसे बुढ़ापे में औलाद होना अजीब बात है, किस तरह औलाद होगी. क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी हालत में बेटा अता फ़रमाया जायगा. फ़रिश्तों ने--

(१२) अल्लाह का हुक्म इसपर जारी हो चुका कि आपके बेटा हो और उसकी सन्तान बहुत फैले.

(१३) यानी मैं उसकी रहमत से नाउम्मीद नहीं, क्योंकि रहमत से निराश काफ़िर होते हैं. हाँ उसकी सुन्नत, जो दुनिया में जारी है, उससे यह बात अजीब मालूम हुई. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से ---

(१४) यानी इस बशारत के सिवा और क्या काम है जिसके लिये तुम भेजे गए हो.

(१५) यानी क़ौमे लूत की तरफ़, कि हम उन्हें हलाक करें.

(१६) क्योंकि वो ईमानदार हैं.

(१७) अपने कुफ़्र के कारण.

सूरए हिज्र - पाँचवां रूकू

(१) ख़ूबसूरत नौजवानों की शक्ल में. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को डर हुआ कि क़ौम उनके पीछे पड़ जाएगी, तो आपने फ़रिश्तों से ---

(२) न तो यहाँ के निवासी हो, न कोई मुसाफ़िरत की निशानी तुम में पाई जाती है. क्यों आए हो, फ़रिश्तों ने ----

مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ
عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهَا
لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾
وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ
اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا
فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ

وقف لازم

दिया कि सुबह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी(७)﴾६६﴿ और शहर वाले(८) ख़ुशियां मनाते आए﴾६७﴿ लूत ने कहा ये मेरे मेहमान हैं(९) मुझे फ़ज़ीहत न करो(१०)﴾६८﴿ और अल्लाह से डरो और मुझे रूस्वा न करो(११)﴾६९﴿ बोले क्या हमने तुम्हें मना न किया था कि औरों के मामले में दख़्ल न दो﴾७०﴿ कहा ये क़ौम की औरतें मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है(१२)﴾७१﴿ ऐ मेहबूब तुम्हारी जान की क़सम(१३) बेशक वो अपने नशे में भटक रहे हैं﴾७२﴿ तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया(१४)﴾७३﴿ तो हमने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उसके नीचे का हिस्सा कर दिया(१५) और उनपर कंकर के पत्थर बरसाए﴾७४﴿ बेशक उसमें निशानियां हैं समझ वालों के लिये﴾७५﴿ और बेशक वह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चली है(१६)﴾७६﴿ बेशक उसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों को﴾७७﴿ और बेशक झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे(१७)﴾७८﴿ तो हमने उनसे बदला लिया(१८) और बेशक ये दोनों बस्तियाँ(१९) खुले रास्ते पर पड़ती हैं(२०)﴾७९﴿

छटा रूकू

और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुटलाया(१)﴾८०﴿ और हमने उनको अपनी निशानियां दीं(२) तो वो उनसे मुंह फेरे रहे(३)﴾८१﴿ और वो पहाड़ों में घर तराशते थे

(३) अज़ाब, जिसके उतरने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे.
(४) और आपको झुटलाते थे.
(५) कि क़ौम पर क्या बला नाज़िल हुई और वो किस अज़ाब में जकड़े गए.
(६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हुक्म शाम प्रदेश को जाने का था.
(७) और तमाम क़ौम अज़ाब से हलाक कर दी जाएगी.
(८) यानी सदूम शहर के रहने वाले हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग. हज़रत लूत के यहाँ ख़ूबसूरत नौजवानों के आने की ख़बर सुनकर ग़लत इरादे और नापाक नियत से.
(९) और मेहमान का सत्कार लाज़िम होता है, तुम उनके निरादर का इरादा करके.
(१०) कि मेहमान की रूस्वाई मेज़बान के लिये ख़िजालत और शर्मिन्दगी का कारण होती है.
(११) उनके साथ बुरा इरादा करके. इसपर क़ौम के लोग हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से -----
(१२) तो उनसे निकाह करो और हराम से बाज़ रहो. अब अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है.
(१३) और अल्लाह की सृष्टि में से कोई जान अल्लाह की बारगाह में आपकी पाक जान की तरह इज़्ज़त और पाकी नहीं रख़ती और अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र के सिवा किसी की उम्र और ज़िन्दगी की क़सम याद नहीं फ़रमाई. यह दर्जा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है. अब इस क़सम के बाद इरशाद होता है.
(१४) यानी हौलनाक और भयानक आवाज़ ने.
(१५) इस तरह कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उस ज़मीन के टुकड़े को उठाकर आसमान के क़रीब ले गए और वहाँ से औंधा करके ज़मीन पर डाल दिया.
(१६) और क़ाफ़िले उसपर गुज़रते हैं और अल्लाह के ग़ज़ब के निशान उनके देखने में आते हैं.
(१७) यानी काफ़िर थे. ऐका झाड़ी को कहते हैं. इन लोगों का शहर हरे भरे जंगलों और हरियालियों के बीच था. अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को उन लोगों पर रसूल बना कर भेजा. उन लोगों ने नाफ़रमानी की, और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को झुटलाया.
(१८) यानी अज़ाब भेज कर हलाक किया.
(१९) यानी क़ौमे लूत के शहर और ऐका वालों के ---

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾

منزل ٣

बेख़ौफ़[४] ﴿८२﴾ तो उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया[५] ﴿८३﴾ तो उनकी कमाई कुछ उनके काम न आई[६] ﴿८४﴾ और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके बीच है बेकार न बनाया और बेशक क़यामत आने वाली है[७] तो तुम अच्छी तरह दरगुज़र करो[८] ﴿८५﴾ बेशक तुम्हारा रब ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है[९] ﴿८६﴾ और बेशक हमने तुमको सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं[१०] और अज़मत (श्रेष्ठता) वाला क़ुरआन ﴿८७﴾ अपनी आंख उठाकर उस चीज़ को न देखो जो हमने उनके कुछ जोड़ों को बरतने को दी[११] और उनका कुछ ग़म न खाओ[१२] और मुसलमानों को अपने रहमत के परों में ले लो[१३] ﴿८८﴾ और फ़रमाओ कि मैं ही हूँ साफ़ डर सुनाने वाला (इस अज़ाब से) ﴿८९﴾ जैसा हमने बांटने वालों पर उतारा ﴿९०﴾ जिन्होंने कलामे इलाही को तिक्के बोटी कर लिया[१४] ﴿९१﴾ तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे[१५] ﴿९२﴾ जो कुछ वो करते थे[१६] ﴿९३﴾ तो साफ़ कहदो जिस बात का तुम्हें हुक्म है[१७] और मुश्रिकों से मुंह फेर लो[१८] ﴿९४﴾ बेशक उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं[१९] ﴿९५﴾ जो अल्लाह के साथ दूसरा मअबूद ठहराते हैं तो अब जान जाएंगे[२०] ﴿९६﴾ और बेशक हमें मालूम है कि उन की

(२०) जहाँ आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं तो ऐ मक्का वालो तुम उनको देखकर क्यों सबक़ नहीं पकड़ते.

सूरए हिज्र - छटा रूकू

(१) हिज्र एक घाटी है, मदीना और शाम के बीच, जिसमें क़ौमे समूद रहती थी. उन्होंने अपने नबी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाया और एक नबी को झुटलाना सारे नबियों का झुटलाना है, क्योंकि हर रसूल सारे नबियों पर ईमान लाने की दावत देता है.

(२) कि पत्थर से ऊंटनी पैदा की, जो बहुत से चमत्कारों पर आधारित थी, जैसे कि उसका बहुत बड़ा शरीर होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि सारी क़ौमे समूद को काफ़ी हो, वग़ैरह. यह सब हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के चमत्कार और क़ौमे समूद के लिये हमारी निशानियाँ थीं.

(३) और ईमान न लाए.

(४) कि उन्हें उसके गिरने और उसमें नक़्ब लगाए जाने का डर था, और वो समझते थे कि यह घर तबाह नहीं हो सकता, उनपर कोई आफ़त नहीं आ सकती.

(५) और वो अज़ाब में गिरफ़्तार हुए.

(६) और उनके मालमत्ता और उनके मज़बूत मकान उन्हें अज़ाब से न बचा सके.

(७) और हर एक को उसके कर्मों की जज़ा मिलेगी.

(८) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, और अपनी क़ौम की तकलीफ़ों और यातनाओं पर सब्र करो. यह हुक्म क़िताल की आयत से स्थगित हो गया.

(९) उसी ने सब को पैदा किया और वह अपनी सृष्टि के तमाम हाल जानता है.

(१०) नमाज़ की रकअतों में, यानी हर रकअत में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरए फ़ातिहा मुराद है, जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों में आया.

(११) मानी ये हैं कि ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हमने आपको ऐसी नेअमतें अता फ़रमाईं जिनके सामने दुनिया की नेअमतें हक़ीर हैं, तो आप दुनिया की माया से बेनियाज़ रहें, जो यहूदियों और ईसाइयों वग़ैरह, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को दी गईं. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो क़ुरआन की बदौलत हर चीज़ से बेनियाज़ न हो गया. यानी क़ुरआन ऐसी नेअमत है जिसके सामने दुनिया की नेअमतें कुछ भी नहीं.

(१२) कि वो ईमान न लाए.

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ۝
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝ وَاعْبُدْ
رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ۝

(١٦) سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (٧٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ
اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا
اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ
الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝
وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ

बातों से तुम दिल तंग होते हो[२१] ﴿९७﴾ तो अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो और सज्दे वालों में हो[२२] ﴿९८﴾ और मरते दम तक अपने रब की इबादत में रहो ﴿९९﴾

१६- सूरए नहल

पहला रूकू

सूरए नहल मक्का में उतरी, इसमें १२८ आयतें ,और १६ रूकू हैं .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

अब आता है अल्लाह का हुक्म तो इसकी जल्दी न करो[२] पाकी और बरतरी है उसे उन शरीकों से[३] ﴿१﴾ फ़रिश्तों को ईमान की जान यानी वही (देववाणी) लेकर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है[४] कि डर सुनाओ कि मेरा सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझसे डरो[५] ﴿२﴾ उसने आसमान और ज़मीन बजा बनाए[६] वह उनके शिर्क से बरतर (उत्तम) है ﴿३﴾ (उसने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया[७] तो जभी खुला झगड़ालू है ﴿४﴾ और चौपाए पैदा किये उनमें तुम्हारे लिये गर्म लिबास और फ़ायदे हैं[८] और उनमें से खाते हो ﴿५﴾ और तुम्हारा उनमें तजम्मुल (वैभव) है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते

(१३) और उन्हें अपने करम से नवाज़ो.

(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूदी और ईसाई मुराद हैं. चूंकि वो क़ुरआने पाक के कुछ हिस्से पर ईमान लाए जो उनके ख़याल में उनकी किताबों के अनुसार था, और कुछ से इन्कार कर दिया. क़तादा और इब्ने साइब ने कहा कि बाँटने वालों से क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं जिनमें कुछ क़ुरआन को जादू, कुछ ज्योतिष और कुछ मन घड़न्त क़िस्से कहते थे. इस तरह उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ के हक़ में अपने क़ौल बाँट रखे थे. एक क़ौल यह है कि बाँटने वालों से वो बारह लोग मुराद हैं जिन्हें काफ़िरों ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर तैनात किया था. हज के ज़माने में हर हर रास्ते पर उनका एक एक व्यक्ति बैठ जाता था और वह आने वालों को बहकाने और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से नफ़रत दिलाने के लिये एक एक बात मुक़र्रर कर लेता था. कोई आने वालों से यह कहता था कि उनकी बातों में न आना कि वह जादूगर हैं. कोई कहता कि वह झूटे हैं, कोई कहता कि वह पागल हैं, कोई कहता कि वह तांत्रिक हैं, कोई कहता वह शायर है. यह सुनकर लोग जब ख़ानए काबा के दरवाज़े पर आते वहाँ वलीद बिन मुग़ीरा बैठा रहता था. उससे नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हाल पूछते और कहते कि हमने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शहर के किनारे उनके बारे में ऐसा सुना . वह कह देता ठीक ही सुना. इस तरह लोगों को बहकाते और गुमराह करते. उन लोगों को अल्लाह तआला ने हलाक किया.

(१५) क़यामत के दिन.

(१६) और जो कुछ वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन की निस्बत कहते थे.

(१७) इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रिसालत की तबलीग़ और इस्लाम की दावत के इज़हार का हुक्म दिया गया. अब्दुल्लाह बिन उबैद का क़ौल है कि इस आयत के उतरने के वक़्त तक इस्लाम की दावत ऐलान के साथ नहीं की जाती थी.

(१८) यानी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्रिकों की मलामत करने की परवाह न करो और उनकी तरफ़ तवज्जह न दो और उनके मज़ाक़ उड़ाने का ग़म न करो.

(१९) क़ुरैश के काफ़िरों के पांच सरदार आस बिन वाइल सहमी, असवद बिन मुत्तलिब, असवद बिन अब्दे यग़ूस और हारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़सर वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, ये लोग नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत कष्ट देते थे और आपके साथ ठट्ठा करते थे. असवद बिन मुत्तलिब के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दुआ की थी कि यारब उस को अन्धा करदे. एक दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे. ये पाँचों आए और उन्होंने हमेशा की तरह तअने देना और मज़ाक़ उड़ाना शुरू किया और तवाफ़ में लग गए. उसी हाल में हज़रत जिब्रीले अमीन हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की तरफ़, आस के तलवे की तरफ़, असवद बिन मुत्तलिब की आँखों की तरफ़, असवद बिन अब्दे यग़ूस के पेट की तरफ़ और हारिस बिन क़ैस के सर की तरफ़ इशारा किया और कहा, मैं इनका शर

وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ
لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَى
اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ
لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً ۖ لَّكُم مِّنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝
يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَ
الْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ

हो﴾६﴿ और वो तुम्हारे बोझ उठाकर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि उस तक न पहुंचते मगर अधमरे होकर, बेशक तुम्हारा रब बहुत मेहरबान रहमत वाला है[९]﴾७﴿ और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि उनपर सवार हो और ज़ीनत (शोभा) के लिये और वह पैदा करेगा[१०] जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं[११]﴾८﴿ और बीच की राह[१२] ठीक अल्लाह तक है और कोई राह टेढ़ी है[१३] और चाहता तो तुम सब को राह पर लाता[१४]﴾९﴿

दूसरा रूकू

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा उससे तुम्हारा पीना है और उससे दरख़्त हैं जिन से चराते हो[१]﴾१०﴿ उस पानी से तुम्हारे लिये खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल[२] बेशक उसमें निशानी है[३] ध्यान करने वालों को﴾११﴿ और उसने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र किये रात और दिन और सूरज और चांद और सितारे उसके हुक्म के बांधे हैं, बेशक आयत में निशानियां है अक़्लमन्दों को[४]﴾१२﴿ और वह जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग बिरंग[५] बेशक उसमें निशानी है

दफ़ा करूंगा. चुनांचे थोड़े ही अर्से में ये हलाक हो गए. वलीद बिन मुग़ीरा तीर बेचने वाली की दुकान के पास से गुज़रा उसके तहबन्द में एक तीर चुभा मगर उसने घमण्ड से उसको निकालने के लिये सर नीचा न किया. इससे उसकी पिंडली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया. आस इब्ने वाईल के पाँव में काँटा लगा और नज़र न आया. उससे पाँव सूज गया और वह भी मर गया. असवद बिन मुत्तलिब की आँखों में ऐसा दर्द हुआ कि दीवानों की तरह सर दीवार में मारता था उसी में मर गया यह कहता हुआ मरा कि मुझे मुहम्मद ने क़त्ल किया. और असवद बिन अब्दे यग़ूस के बदन में पानी कम हो गया. कल्बी की रिवायत है कि उसको लू लगी और उसका मुंह इतना काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया. इसी हाल में यह कहता हुआ मर गया कि मुझको मुहम्मद के रब ने क़त्ल किया. और हारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुआ उसी में हलाक हो गया. उन्हीं के हक़ में यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)

(२०) अपना अन्त.

(२१) और उनके तअनों और मज़ाक़ और शिर्क और कुफ़्र की बातों से आपको मलाल होता है और दुख पहुंचता है.

(२२) कि ख़ुदा परस्तों के लिये तस्बीह और इबादत में मशग़ूल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है. हदीस शरीफ़ में है कि जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कोई अहम वाक़िआ पेश आता तो नमाज़ में मशग़ूल हो जाते.

१६ - सूरए नहल - पहला रूकू

(१) सूरह नहल मक्की है, मगर आयत *"फ़आक़िबू बिमिस्ले मा ऊक़िब्तुम बिही"* से आख़िर सूरत तक जो आयतें हैं, वो मदीनए तैय्यिबह में उतरीं. इसमें और अक़वाल भी हैं. इस सूरत में सोलह रूकू, १२८ आयतें, दो हज़ार आठ सौ चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सौ सात अक्षर हैं.

(२) जब काफ़िरों ने वादा किये गए अज़ाब के उतरने और क़यामत के क़ायम होने की जल्दी झुटलाने और मज़ाक़ के तौर पर की. इसपर यह आयत उतरी और बता दिया गया कि जिसकी तुम जल्दी करते हो वह कुछ दूर नहीं, बहुत ही क़रीब है और अपने वक़्त पर यक़ीनन होगा और जब होगा तो तुम्हें उससे छुटकारे की कोई राह न मिलेगी और वो बुत जिन्हें तुम पूजते हो, तुम्हारे कुछ काम न आएंगे.

(३) वह वाहिद है, उसका कोई शरीक नहीं.

(४) और उन्हें नबुव्वत और रिसालत के साथ बुज़ुर्गी देता है.

(५) और मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को न पूजो, क्योंकि मैं वह हूँ कि ---

(६) जिन में उसकी तौहीद की बेशुमार दलीलें हैं.

فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَعَلَامَاتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ۝ أَفَمَن يَخْلُقُ كَمَن لَّا يَخْلُقُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

याद करने वालों को﴾१३﴿ और वही है जिसने तुम्हारे लिये दरिया मुसख़्ख़र किया[६] कि उसमें से ताज़ा गोश्त खाते हो[७] और उसमें से गहना निकालते हो जिसे पहनते हो[८] और तू उसमें किश्तियां देखे कि पानी चीर कर चलती हैं और इसलिये कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं ऐहसान मानो﴾१४﴿ और उसने ज़मीन में लंगर डाले[९] कि कहीं तुम्हें लेकर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ[१०]﴾१५﴿ और अलामतें (लक्षण)[११] और सितारे से वो राह पाते हैं[१२]﴾१६﴿ तो क्या जो बनाए[१३] वह ऐसा होजाएगा जो न बनाए[१४] तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते﴾१७﴿ और अगर अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे[१५] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[१६]﴾१८﴿ और अल्लाह जानता है[१७] जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो﴾१९﴿ और अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं [१८] वो कुछ भी नहीं बनाते और[१९] वो ख़ुद बनाए हुए हैं[२०]﴾२०﴿ मुर्दे हैं[२१] ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएंगे[२२]﴾२१﴿

(७) यानी मनी या वीर्य से, जिसमें न हिस है न हरकत, फिर उसको अपनी भरपूर क़ुव्वत से इन्सान बनाया, शक्ति और ताक़त अता की. यह आयत उबई बिन ख़लफ़ के बारे में उतरी जो मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करता था. एक बार वह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहने लगा कि आपका यह ख़याल है कि अल्लाह तआला इस हड्डी को ज़िन्दगी देगा. इसपर यह आयत उतरी और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ शारीरिक शक्ल रखती है. अल्लाह तआला तो वीर्य के एक छोटे से बे हिसो हरकत क़तरे से तुझ जैसा झगड़ालू इन्सान पैदा कर देता है. यह देखकर भी तू उसकी क़ुदरत पर ईमान नहीं लाता.

(८) कि उनकी नस्ल से दौलत बढ़ाते हो, उनके दूध पीते हो और उनपर सवारी करते हो.

(९) कि उसने तुम्हारे नफ़े और आराम के लिये ये चीज़ें पैदा कीं.

(१०) ऐसी अजीब और अनोखी चीज़ें.

(११) इसमें वो तमाम चीज़ें आगईं जो आदमी के नफ़े, राहत, आराम और आसायश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं. अल्लाह तआला को उनका आइन्दा पैदा करना मन्ज़ूर था जैसे कि स्टीमर, रेलें, मोटर, हवाई जहाज़, विद्युत शक्ति से काम करने वाले आले व उपकरण, भाप और बिजली से चलने वाली मशीनें, सूचना और प्रसारण और ख़बर रसानी, दूर संचार के सामान और ख़ुदा जाने इसके अलावा उसको क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है.

(१२) यानी सीधा सच्चा रास्ता और दीने इस्लाम, क्योंकि दो जगहों के बीच जितनी राहें निकाली जाएं, उनमें जो बीच की राह होगी, सीधी होगी.

(१३) जिसपर चलने वाला अस्ल मंज़िल को नहीं पहुंच सकता. कुफ़्र की सारी राहें ऐसी ही हैं.

(१४) सीधे रस्ते पर.

सूरए नहल - दूसरा रूकू

(१) अपने जानवरों को और अल्लाह तआला -

(२) मुख़्तलिफ़ सूरत व रंग, मज़े, बू, ख़ासियत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के गुण दूसरे से जुदा हैं. ये सब अल्लाह की नेअमतें हैं.

(३) और उसकी क़ुदरत और हिकमत और वहदानियत की.

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَاۤ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

तीसरा रूकू

तुम्हारा मअबूद एक मअबूद है[१] तो वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल इन्कारी हैं[२] और वो मग़रूर (घमण्डी) हैं[३]﴿२२﴾ हक़ीक़त में अल्लाह जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं बेशक वह घमण्डियों को पसन्द नहीं फ़रमाता﴿२३﴾ और जब उनसे कहा जाए[४] तुम्हारे रब ने क्या उतारा[५] कहें अगलों की कहानियां हैं[६]﴿२४﴾ कि क़यामत के दिन अपने[७] बोझ पूरे उठाएं और कुछ बोझ उनके जिन्हें अपनी जिहालत से गुमराह करते हैं, सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं﴿२५﴾

चौथा रूकू

बेशक उनके अगलों ने[१] धोखा किया था तो अल्लाह ने उनकी चुनाई को नीव से लिया तो ऊपर से उनपर छत गिर पड़ी और अज़ाब उनपर वहां से आया जहां कि उन्हें ख़बर न थी[२]﴿२६﴾ फिर क़यामत के दिन उन्हें रूस्वा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वो शरीक[३] जिन में तुम झगड़ते थे[४] इल्म वाले[५] कहेंगे आज सारी रूस्वाई और बुराई[६] काफ़िरों पर है﴿२७﴾

(४) जो इन चीज़ों में ग़ौर करके समझें कि अल्लाह तआला ही इख़्तियार वाला और करने वाला है और सब ऊंच नीच उसकी क़ुदरत और शक्ति के अन्तर्गत है.

(५) चाहे जानदारों की क़िस्म से हो या दरख़्तों की या फलों की.

(६) कि उसमें किश्तियों पर सवार होकर सफ़र करो या ग़ौते लगा कर, उसकी तह तक पहुंचो या उस में से शिकार करो.

(७) यानी मछली.

(८) यानी मोती और मूंगा.

(९) भारी पहाड़ों के.

(१०) अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों की तरफ़.

(११) बनाईं, जिन से तुम्हें रस्ते का पता चले.

(१२) ख़ुश्की और तरी और इससे उन्हें रस्ते और क़िबले की पहचान होती है.

(१३) इन सारी चीज़ों के अपनी क़ुदरत व हिकमत से यानी अल्लाह तआला -

(१४) किसी चीज़ को और आजिज़ व बेक़ुदरत हो जैसे कि बुत, तो आक़िल को कब सज़ावार है कि ऐसे ख़ालिक़ और मालिक की इबादत छोड़कर आजिज़ और बेइख़्तियार बुतों की पूजा करे या उन्हें इबादत में उसका शरीक ठहराए.

(१५) उनके शुक्र की अदायगी की बात तो दूर रही.

(१६) कि तुम्हारे शुक्र की अदायगी से मअज़ूर होने के बावुजूद अपनी नेअमतों से तुम्हें मेहरूम नहीं फ़रमाता.

(१७) तुम्हारी सारी कहनी और करनी.

(१८) यानी बुतों को.

(१९) बनाएं क्या, कि -

(२०) और अपने अस्तित्व में बनाने वाले के मोहताज और वो -

(२१) बेजान.

(२२) तो ऐसे मजबूर और बेजान बेइल्म मअबूद कैसे हो सकते हैं . इन खुली दलीलों से साबित हो गया कि -

सूरए नहल - तीसरा रूकू

(१) अल्लाह तआला, जो अपनी ज़ात और सिफ़ात में नज़ीर और शरीक से पाक है.

वो कि फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं इस हाल पर कि वो अपना बुरा कर रहे थे[७] अब सुलह डालेंगे[८] कि हम तो कुछ बुराई न करते थे[९] हाँ क्यों नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतुक थे[१०] (२८) अब जहन्नम के दरवाज़ों में जाओ कि हमेशा उसमें रहो, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का (२९) और डर वालों[११] से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा, बोले ख़ूबी[१२] जिन्होंने इस दुनिया में भलाई की[१३] उनके लिये भलाई है[१४] और बेशक पिछला घर सबसे बेहतर, और ज़रूर[१५] क्या ही अच्छा घर परहेज़गारों का (३०) बसने के बाग़ जिनमें जाएंगे उनके नीचे नेहरें बहती उन्हें वहां मिलेगा जो चाहें[१६] अल्लाह ऐसा ही सिला देता है परहेज़गारों को (३१) वो जिनकी जान निकालते हैं फ़रिश्ते सुथरेपन में[१७] यह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर[१८] जन्नत में जाओ बदला अपने किये का (३२) काहे के इन्तिज़ार में हैं[१९] मगर इसके कि फ़रिश्ते उनपर आएं[२०] या तुम्हारे रब का अज़ाब आए[२१] उनसे अगलों ने भी ऐसा ही किया[२२] और अल्लाह

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا
اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى
الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ
رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ
يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

(२) वहदानियत के.
(३) कि सच्चाई ज़ाहिर हो जाने के बावुजूद उसका अनुकरण नहीं करते.
(४) यानी लोग उनसे पूछें कि -
(५) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर, तो -
(६) यानी झूटे क़िस्से कोई मानने की बात नहीं. यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी, उसने बहुत सी कहानियाँ याद कर ली थीं. उससे जब कोई क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत पूछता तो वह जानने के बावुजूद कि क़ुरआन शरीफ़ चमत्कृत किताब और सत्य व हिदायत से भरपूर है, लोगों को गुमराह करने के लिये यह कह देता कि ये पहले लोगों की कहानियां हैं और ऐसी कहानियाँ मुझे भी बहुत याद हैं. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि लोगों को गुमराह करने का अंजाम यह है -
(७) गुनाहों और गुमराही और सीधी राह से विचलित करने के -

सूरए नहल - चौथा रुकू

(१) यानी पहली उम्मतों ने अपने नबियों के साथ -
(२) यह एक मिसाल है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूल के साथ छलकपट करने के लिये कुछ योजनाएं बनाई थीं. अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उनका हाल ऐसा हुआ जैसे किसी क़ौम ने कोई बलन्द इमारत बनाई फिर वह इमारत उनपर गिर पड़ी और वो हलाक हो गए. इसी तरह काफ़िर अपनी मक्कारियों से ख़ुद बर्बाद हुए. मुफ़स्सिरों ने यह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले छलकपट करने वालों से नमरूद बिन कनआन मुराद है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में ज़मीन का सबसे बड़ा बादशाह था. उसने बाबुल में बहुत ऊंची एक इमारत बनाई थी जिसकी ऊंचाई पांच हज़ार गज़ थी और उसका छल यह था कि उसने यह ऊंची इमारत अपने ख़याल में आसमान पर पहुंचने और आसमान वालों से लड़ने के लिये बनाई थी. अल्लाह तआला ने हवा चलाई और वह इमारत उनपर गिर पड़ी और वो लोग हलाक हो गए.
(३) जो तुम ने घड़ लिये थे और -
(४) मुसलमानों से -
(५) यानी उन उम्मतों के नबी और उलमा जो उन्हें दुनिया में ईमान की दावत देते और नसीहत करते थे और ये लोग उनकी बात न मानते थे.
(६) यानी अज़ाब .

الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾ إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٧﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ

منزل ٣

ने उनपर कुछ ज़ुल्म न किया हां वो ख़ुद ही[२३] अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे﴾३३﴿ तो उनकी बुरी कमाइयां उनपर पड़ीं[२४] और उन्हें घेर लिया उसने[२५] जिस पर हंसते थे﴾३४﴿

पाँचवां रूकू

और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उसके सिवा कुछ न पूजते न हम और न हमारे बाप दादा और न उससे अलग होकर हम कोई चीज़ हराम ठहराते[१] ऐसा ही उनसे अगलों ने किया[२] तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना[३]﴾३५﴿ और बेशक हर उम्मत में हमने एक रसूल भेजा[४] कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो तो उनमें[५] किसी को अल्लाह ने राह दिखाई[६] और किसी पर गुमराही ठीक उतरी[७] तो ज़मीन में चल फिर कर देखो कैसा अंजाम हुआ झुटलाने वालों का[८]﴾३६﴿ अगर तुम उनकी हिदायत की हिर्स (लोभ) करो[९] तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उनका कोई मददगार नहीं﴾३७﴿ और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की

(७) यानी कुफ़्र में जकड़े हुए थे.
(८) और मरते वक़्त अपने कुफ़्र से मुकर जाएंगे और कहेंगे -
(९) इसपर फ़रिश्ते कहेंगे -
(१०) लिहाज़ा यह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं.
(११) यानी ईमानदारों.
(१२) यानी क़ुरआन शरीफ़ जो ख़ूबियों का जमा करने वाला और अच्छाइयों और बरकतों का स्रोत और दीन और दुनिया के खुले और छुपवाँ कमालात का सरचश्मा है. अरब के क़बीले हज के दिनों में हज़रत नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हाल की तहक़ीक़ के लिये मक्कए मुकर्रमा को एलची भेजते थे. ये एलची जब मक्कए मुकर्रमा पहुंचते और शहर के किनारे रास्तों पर उन्हें काफ़िरों के कारिन्दे मिलते, (जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है) उनसे ये एलची नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हाल पूछते तो वो बहकाने पर ही तैनात होते थे, उनमें से कोई हुज़ूर को जादूगर कहता, कोई तांत्रिक, कोई शायर, कोई झूटा, कोई पागल और इसके साथ यह भी कह देते कि तुम उनसे न मिलना यही तुम्हारे लिये बेहतर है. इसपर एलची कहते कि अगर हम मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर बग़ैर उनसे मिले अपनी क़ौम की तरफ़ वापस हों तो हम बुरे एलची होंगे और ऐसा करना एलची के कर्तव्यों की अवहेलना और क़ौम की ख़यानत होगी. हमें जांच पड़ताल के लिये भेजा गया है. हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनके अपनों और परायों सब से उनके हाल की तहक़ीक़ करें और जो कुछ मालूम हो उसमें कमी बेशी किये बिना क़ौम को सूचित करें. इस ख़याल से वो लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो कर सहाबए किराम से भी मिलते थे और उनसे आपके हाल की पूछ ताछ करते थे. सहाबए किराम उन्हें तमाम हाल बताते थे और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हालात और कमालात और क़ुरआन शरीफ़ के मज़ामीन से सूचित करते थे. उनका ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया.
(१३) यानी ईमान लाए और नेक कर्म किये.
(१४) यानी हयाते तैय्यिबह है और फ़त्ह व विजय व रिज़्क़ में बहुतात वग़ैरह नेअमतें.
(१५) आख़िरत की दुनिया.
(१६) और यह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी हासिल नहीं.
(१७) कि वो शिर्क और कुफ़्र से पाक होते हैं और उनकी कहनी व करनी और आचार व संस्कार और आदतें पवित्र और पाकीज़ा होती हैं. फ़रमाँबरदारी साथ होती है, हराम और वर्जित के दाग़ों से उनके कर्म का दामन मैला नहीं होता. रूह निकाले जाने के वक़्त उनको जन्नत और रिज़्वान और रहमत व करामत की ख़ुशख़बरी दी जाती है. इस हालत में मौत उन्हें ख़ुशगवार मालूम होती है और जान फ़रहत और सुरूर के साथ जिस्म से निकलती है और फ़रिश्ते इज़्ज़त के साथ उसे निकालते हैं. (ख़ाज़िन)

اَيۡمَانِهِمۡ ۙ لَا يَبۡعَثُ اللّٰهُ مَنۡ يَّمُوۡتُ ؕ بَلٰى وَعۡدًا
عَلَيۡهِ حَقًّا وَّلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۙ‏
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىۡ يَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ وَلِيَـعۡلَمَ الَّذِيۡنَ
كَفَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰذِبِيۡنَ‏ ۝ اِنَّمَا قَوۡلُـنَا لِشَىۡءٍ
اِذَاۤ اَرَدۡنٰهُ اَنۡ نَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ۝ وَالَّذِيۡنَ
هَاجَرُوۡا فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا ظُلِمُوۡا لَـنُبَوِّئَنَّهُمۡ
فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً‌ ؕ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ‌ۘ لَوۡ كَانُوۡا
يَعۡلَمُوۡنَۙ‏ ۝ الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ‏ ۝
وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ‌
فَسۡـئَلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَۙ‏ ۝
بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ‌ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ‏ ۝
اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ

कोशिश से कि अल्लाह मुर्दे न उठाएगा[१०] हां क्यों नहीं[११] सच्चा वादा उसके ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[१२]﴾३८﴿ इस लिये कि उन्हें साफ़ बतादे जिस बात में झगड़ते थे[१३] और इसलिये कि काफ़िर जान लें कि वो झूठे थे[१४]﴾३९﴿ जो चीज़ हम चाहें उससे हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें होजा वह फ़ौरन हो जाती है[१५]﴾४०﴿

छटा रूकू

और जिन्होंने अल्लाह की राह में[१] अपने घर बार छोड़े मज़लूम होकर ज़रूर हम उन्हें दुनिया में अच्छी जगह देंगे[२] और बेशक आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी तरह लोग जानते[३]﴾४१﴿ वो जिन्होंने सब्र किया[४] और अपने रब ही पर भरोसा करते हैं[५]﴾४२﴿ और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द[६] जिनकी तरफ़ हम वही (देववाणी) करते तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं[७]﴾४३﴿ रौशन दलीलें और किताबें लेकर[८] और ऐ मेहबूब हमने तुम्हारी तरफ़ यह यादगार उतारी[९] कि तुम लोगों से बयान करदो जो[१०] उनकी तरफ़ उतरा और कहीं वो ध्यान करें﴾४४﴿ तो क्या जो लोग बुरे मक्र (कपट) करते हैं[११] इससे नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे[१२] या उन्हें वहाँ से अज़ाब आए जहां से उन्हें ख़बर

(१८) रिवायत है कि मौत के वक़्त फ़रिश्ता ईमान वाले के पास आकर कहता है ऐ अल्लाह के दोस्त, तुझ पर सलाम और अल्लाह तआला तुझ पर सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उनसे कहा जाएगा...
(१९) काफ़िर क्यों ईमान नहीं लाते, किस चीज़ के इन्तिज़ार में हैं.
(२०) उनकी रूहें निकालने...
(२१) दुनिया में या क़यामत के दिन.
(२२) यानी पहली उम्मतों ने भी कि कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहे.
(२३) कुफ़्र अपना कर.
(२४) और उन्होंने अपने बुरे कर्मों की सज़ा पाई.
(२५) अज़ाब.

सूरए नहल - पाँचवां रूकू

(१) बहीरा और सायबा की तरह. इससे उनकी मुराद यह थी कि उनका शिर्क करना और इन चीज़ों को हराम क़रार दे लेना अल्लाह की मर्ज़ी से है. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया.
(२) कि रसूलों को झुटलाया और हलाल को हराम किया और ऐसे ही हंसी मज़ाक़ की बातें कहीं.
(३) सच्चाई का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के ग़लत और बुरा होने पर सूचित करना.
(४) और हर रसूल को हुक्म दिया कि वो अपनी क़ौम से फ़रमाएं.
(५) उम्मतों ---
(६) वो ईमान लाए.
(७) वो अपनी अज़ली दुश्मनी और हटधर्मी से कुफ़्र पर मरे और ईमान से मेहरूम रहे.
(८) जिन्हें अल्लाह ने हलाक किया और उनके शहर वीरान किये . उजड़ी बस्तियां उनके हलाक की ख़बर देती हैं. इसको देखकर समझ लो कि अगर तुम भी उनकी तरह कुफ़्र और झुटलाने पर अड़े रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अंजाम होना है.
(९) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इस हाल में कि ये लोग उनमें से हैं जिनकी गुमराही साबित हो चुकी और उनकी शक़ावत पुरानी है.
(१०) एक मुश्रिक एक मुसलमान का क़र्ज़दार था. मुसलमान ने उससे अपनी रक़म मांगी. बात चीन के दौरान उसने इस तरह की

न हो[13]﴾४५﴿ या उन्हें चलते फिरेत[14] पकड़ ले कि थका नहीं सकते[15]﴾४६﴿ या उन्हें नुक़सान देते देते गिरफ़तार करले कि बेशक तुम्हारा रब बहुत मेहरबान रहमत वाला है[16]﴾४७﴿ और क्या उन्होंने न देखा कि जो[17] चीज़ अल्लाह ने बनाई है उसकी परछाइयां दाएं और बाएं झुकती हैं[18] अल्लाह को सज्दा करती और वो उसके हुज़ूर ज़लील हैं[19]﴾४८﴿ और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है[20] और फ़रिश्ते और वो घमण्ड नहीं करते﴾४९﴿ अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो[21]﴾५०﴿

सातवाँ रूकू

अल्लाह ने फ़रमा दिया दो ख़ुदा न ठहराओ[1] वह तो एक ही मअबूद है तो मुझी से डरो[2]﴾५१﴿ और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी की फ़रमांबरदारी अनिवार्य है, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से डरोगे[3]﴾५२﴿ और तुम्हारे पास जो नेअमत है सब अल्लाह की तरफ़ से है फिर जब तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है[4] तो उसी की तरफ़ पनाह ले जाते हो[5]﴾५३﴿ फिर जब वह तुम से बुराई टाल देता है तो तुममें एक गिरोह अपने

क़सम खाई कि उसकी क़सम, जिससे मैं मरने के बाद मिलने की तमन्ना रखता हूँ. इसपर मुश्रिक ने कहा कि क्या तेरा यह ख़्याल है कि तू मरने के बाद उठेगा और मुश्रिक ने क़सम खा कर कहा कि अल्लाह मुर्दे न उठाएगा. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया.

(११) यानी ज़रूर उठाएगा.
(१२) इस उठाने की हिकमत और उसकी क़ुदरत, बेशक वह मुर्दों को उठाएगा.
(१३) यानी मुर्दों को उठाने में कि वह सत्य है.
(१४) और मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत.
(१५) तो हमें मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या दुशवार है.

सूरए नहल - छटा रूकू

(१) उसके दीन की ख़ातिर हिजरत की. क़तादा ने कहा यह आयत सहाबा के हक़ में उतरी जिनपर मक्का वालों ने बहुत ज़ुल्म किये और उन्हें दीन की ख़ातिर वतन छोड़ना ही पड़ा . कुछ उनमें से हबशा चले गये फिर वहाँ से मदीनए तैय्यिबह आए और कुछ मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए. उन्होंने.
(२) वह मदीनए तैय्यिबह है जिसको अल्लाह तआला ने उनके लिये हिजरत का शहर बनाया.
(३) यानी काफ़िर या वो लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इसका बदला कितना अज़ीम है.
(४) वतन की जुदाई और काफ़िरों का ज़ुल्म और जान माल के ख़र्च करने पर.
(५) और उसके दीन की वजह से जो पेश आए उसपर राज़ी हैं और दुनिया से नाता तोड़कर बिल्कुल हक़ की तरफ़ मुतवज्जह हैं. सालिक के लिये यह सुलूक की चरम सीमा है.
(६) यह आयत मक्का के मुश्रिकों के जवाब में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत का इस तरह इन्कार किया था कि अल्लाह तआला की शान इससे बरतर है कि वह किसी इन्सान को रसूल बनाए. उन्हें बताया गया कि अल्लाह की सुन्नत इसी तरह जारी है. हमेशा उसने इन्सानों में से मर्दों ही को रसूल बनाकर भेजा.
(७) हदीस शरीफ़ में है कि जिहालत की बीमारी का इलाज उलमा से पूछना है इसलिये उलमा से पूछो, वो तुम्हें बता देंगे कि

فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا
آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ
عَمَّا كُنتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ
سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم
بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ
عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا
تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا

रब का शरीक ठहराने लगता है[६] ﴾٥٤﴿ कि हमारी दी हुई नअेमतों की नाशुक्री करें तो कुछ बरत लो[७] कि बहुत जल्द जान जाओगे[८] ﴾٥٥﴿ और अनजानी चीज़ों के लिये[९] हमारी दी हुई रोज़ी में से[१०] हिस्सा मुक़र्रर करते हैं, ख़ुदा की क़सम तुम से ज़रूर सवाल होना है जो कुछ झूट बांधते थे[११] ﴾٥٦﴿ और अल्लाह के लिये बेटियां ठहराते हैं[१२] पाकी है उसको[१३] और अपने लिये जो अपना जी चाहता है[१४] ﴾٥٧﴿ और जब उनमें किसी को बेटी होने की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो दिन भर उसका मुंह[१५] काला रहता है और वह ग़ुस्सा खाता है ﴾٥٨﴿ लोगों से[१६] छुपता फिरता है उस बशारत की बुराई के कारण, क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा[१७] अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं[१८] ﴾٥٩﴿ जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और अल्लाह की शान सबसे बुलन्द[१९] और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है ﴾٦٠﴿

आठवाँ रूकू

और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर गिरफ़्त करता[१] तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता[२] लेकिन उन्हें एक ठहराए हुए वादे तक मुहलत देता है[३] फिर जब उनका वादा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे

अल्लाह की सुन्नत यूँही जारी रही कि उसने मर्दों को रसूल बना कर भेजा.

(८) मुफ़स्सिरों का एक क़ौल यह है कि मानी ये हैं कि रौशन दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछो अगर तुम को दलील और किताब का इल्म न हो. इस आयत से इमामों की तक़्लीद या अनुकरण का वाजिब होना साबित होता है.

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(१०) हुक्म.

(११) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा के साथ, और उनकी तकलीफ़ के दरपै रहते हैं और छुप छुप कर फ़साद-अंगेज़ी की तदबीरें करते हैं जैसे कि मक्का के काफ़िर.

(१२) जैसे क़ारून को धंसा दिया था.

(१३) चुनांचे ऐसा ही हुआ कि बद्र में हलाक किये गए जबकि वो यह नहीं समझते थे.

(१४) सफ़र और हज़र में, हर एक हाल में.

(१५) ख़ुदा को अज़ाब करने से.

(१६) कि हिल्म करता है और अज़ाब में जल्दी नहीं करता.

(१७) सायादार.

(१८) सुबह और शाम.

(१९) ख़्वार और आजिज़ और मुतीअ और मुसख़्ख़र.

(२०) सज्दा दो तरह पर है, एक ताअत और इबादत का सज्दा जैसा कि मुसलमानों का सज्दा अल्लाह के लिये, दुसरा सज्दा एकाग्रता, फ़रमाँबरदारी व ख़ुज़ूअ का सज्दा, जैसा कि साया वग़ैरह का सज्दा. हर चीज़ का सज्दा उसकी हैसियत के हिसाब से है. मुसलमानों और फ़रिश्तों का सज्दा इबादत और ताअत का सज्दा है और उनके सिवा हर एक का सज्दा फ़रमाँबरदारी और ख़ुज़ूअ का सज्दा है.

(२१) इस आयत से साबित हुआ कि फ़रिश्ते मुकल्लफ़ हैं और जब साबित कर दिया गया कि तमाम आसमान और ज़मीन की कायनात अल्लाह के हुज़ूर झुकने वाली और उसकी इबादत और ताअत करने वाली है और सब उसके ममलूक और उसी की क़ुदरत और ताक़त के मातहत हैं, तो शिर्क से मना फ़रमाया.

सूरए नहल - सातवाँ रूकू

(१) क्योंकि दो ख़ुदा तो हो ही नहीं सकते.
(२) मैं ही वह बरहक़ और सच्चा मअबूद हूँ जिसका कोई शरीक नहीं.
(३) इसके बावुजूद कि सच्चा मअबूद सिर्फ़ वही है.
(४) चाहे फ़क्र की, या मर्ज़ की, या और कोई.
(५) उसी से दुआ मांगते हो, उसी से फ़रियाद करते हो.
(६) और उन लोगों का अंजाम यह होता है.
(७) और कुछ रोज़ इस हालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो.
(८) कि उसका नतीजा क्या हुआ.
(९) यानी बुतों के लिये जिनका मअबूद और नफ़ा नुक़्सान पहुंचाने वाला होना उन्हें मालूम नहीं.
(१०) यानी खेतियों और चौपायों वग़ैरह में से.
(११) बुतों को मअबूद और क़ुर्बत देने वाले और बुत परस्ती को ख़ुदा का हुक्म बताकर.
(१२) जैसे कि ख़ुज़ाअह और कनानह कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं.
(१३) वह बरतर है औलाद से और उसकी शान में ऐसा कहना निहायत बेअदबी और कुफ़्र है.
(१४) यानी कुफ़्र के साथ, यह हद से ज़्यादा बदतमीज़ी भी है कि अपने लिये बेटे पसन्द करते हैं और बेटियाँ नापसन्द करते हैं और अल्लाह तआला के लिये, जो मुतलक़ औलाद से पाक है, औलाद का साबित करना ऐब लगाना है, उसके लिये औलाद में भी वह साबित करते हैं जिस को अपने लिये तुच्छ और शर्म का कारण मानते हैं.
(१५) ग़म से.
(१६) शर्म के मारे.
(१७) जैसा कि मुदर व ख़ुज़ाअह और तमीम के काफ़िर लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे.
(१८) कि अल्लाह तआला के लिये बेटियाँ साबित करते हैं जो अपने लिये उन्हें इस क़द्र नागवार हैं.
(१९) कि वह वालिद और वलद सब से पाक और मुनज़्ज़ है. कोई उसका शरीक नहीं, जलाल और कमाल की सारी विशेषताओं का मालिक.

सूरए नहल - आठवाँ रूकू

(१) यानी गुनाहों पर पकड़ और अज़ाब में जल्दी फ़रमाता.
(२) सबको हलाक कर देता, ज़मीन पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद हैं जैसा कि दूसरी आयत में आया है *"इन्ना शर्रद दवाब्बे इन्दल्लाहिल लज़ीना कफ़रू"* (बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़दीक वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया - सूरए अनफ़ाल, आयत ५५) या ये मानी हुए कि धरती पर किसी चलने वाले को बाक़ी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में जो कोई ज़मीन पर था, उन सब को हलाक कर दिया. सिर्फ़ वही बाक़ी रहे जो ज़मीन पर न थे, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के साथ किश्ती में थे. एक क़ौल यह भी है कि मानी ये हैं कि ज़ालिम को हलाक कर देता और उनकी नस्लें कट जातीं फिर ज़मीन में कोई बाक़ी न रहता.
(३) अपने फ़ज़्ल, करम और हिल्म से ठहराए . वादे से या उम्र का अन्त मुराद है या क़यामत.

يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ
لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ
مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ
وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَاۤ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ
نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ
لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرٰتِ

बढ़ें﴿६१﴾ और अल्लाह के लिये वह ठहराते हैं जो अपने लिये नागवार है[४] और उनकी ज़बाने झूटों कहती हैं कि उनके लिये भलाई है,[५] तो आप ही हुआ कि उनके लिये आग है और वो हद से गुज़ारे हुए हैं[६]﴿६२﴾ ख़ुदा की क़सम हमने तुमसे पहले कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके कौतुक उनकी आँखों में भले कर दिखाए[७] तो आज वही उनका रफ़ीक़ है[८] और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[९]﴿६३﴾ और हमने तुमपर यह किताब न उतारी[१०] मगर इसलिये कि तुम लोगों पर रौशन कर दो जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें[११] और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये﴿६४﴾ और अल्लाह ने आसमानों से पानी उतारा तो उससे ज़मीन को[१२] ज़िन्दा कर दिया उसके मरे पीछे[१३] बेशक इसमें निशानी है उनको जो कान रखते हैं[१४]﴿६५﴾

नवाँ रूकू

और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह हासिल होने की जगह है[१] हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से जो उनके पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से

(४) यानी बेटियाँ और शरीक.

(५) यानी जन्नत. काफ़िर अपने कुफ़्र और बोहतान और ख़ुदा के लिये बेटियाँ बताने के बावुजूद अपने आप को सच्चाई पर समझते थे और कहते थे कि अगर मुहम्मद सच्चे हों और सृष्टि मरने के बाद फिर उठाई जाए तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्योंकि हम सच्चाई पर हैं. उनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(६) जहन्नम में ही छोड़ दिये जाएंगे.

(७) और उन्होंने अपनी बुराईयों को नेकियां समझा.

(८) दुनिया में उसी के कहे पर चलते हैं. और जो शैतान को अपना दोस्त और मालिक बनाए वह ज़रूर ज़लील और ख़्वार हो. या ये मानी हैं कि आख़िरत के दिन शैतान के सिवा उन्हें कोई दोस्त और साथी न मिलेगा और शैतान ख़ुद ही अज़ाब में गिरफ़्तार होगा, उनकी क्या मदद कर सकेगा.

(९) आख़िरत में.

(१०) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(११) दीन के कामों से.

(१२) ज़िन्दगी से हरियाली और ताज़गी प्रदान करके.

(१३) यानी ख़ुश्क और उजाड़ होने के बाद.

(१४) और सुनकर समझते हैं और ग़ौर करते हैं वो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि जो सच्ची क़ुदरत वाला ज़मीन को उसकी मौत यानी उगाने की शक्ति नष्ट हो जाने के बाद फिर ज़िन्दगी देता है वह इन्सान को उसके मरने के बाद बेशक ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है.

सूरए नहल - नवाँ रूकू

(१) अगर तुम इसमें ग़ौर करो तो बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हो और अल्लाह की हिकमत के चमत्कार पर तुम्हें आगही हासिल हो सकती है.

النَّخِيلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ
رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۝
وَاَوْحٰی رَبُّكَ اِلَی النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ
الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا یَعْرِشُوْنَ ۝
ثُمَّ كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً
لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ
وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤی اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَیْ لَا یَعْلَمَ
بَعْدَ عِلْمٍ شَیْــًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ ۝
وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰی بَعْضٍ فِی الرِّزْقِ ۚ
فَمَا الَّذِیْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّیْ رِزْقِهِمْ عَلٰی مَا مَلَكَتْ
اَیْمَانُهُمْ فَهُمْ فِیْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

सहल उतरता पीने वालों के लिये[२] (६६) और खजूर और अंगूर के फलों में से[३] कि उससे नबीज़ (मदिरा) बनाते हो और अच्छा रिज़्क़[४] बेशक उसमें निशानी है अक़्ल वालों को (६७) और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इलहाम (गैबी निर्देश) किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छत्तों में (६८) फिर हर क़िस्म के फल में से खा और[५] अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं[६] उसके पेट से एक पीने की चीज़[७] रंग बिरंगी निकलती है[८] जिसमें लोगों की तंदुरुस्ती है[९] बेशक इसमें निशानी है[१०] ध्यान करने वालों को[११] (६९) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया[१२] फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ (निकालेगा) करेगा[१३] और तुम में कोई सबसे नाक़िस (अकर्मण्य) उम्र की तरफ़ फेरा जाता है[१४] कि जानने के बाद कुछ न जाने[१५] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है सब कुछ कर सकता है (७०)

दसवाँ रुकू

और अल्लाह ने तुम में एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी[१] तो जिन्हें बड़ाई दी है वो अपना रिज़्क़ अपने बांदी

(२) जिसमें किसी चीज़ की मिलावट का सवाल नहीं जबकि जानवर के जिस्म में ग़िज़ा की एक ही जगह जहाँ चारा घास भूसा पहुंचता है और दूध ख़ून गोबर सब उसी ग़िज़ा से पैदा होते हैं. उनमें से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता. दूध में न ख़ून की रंगत आपाती है न गोबर की बू. अत्यन्त साफ़ और उमदा निकलता है. इससे अल्लाह की हिकमत का चमत्कार ज़ाहिर है. ऊपर मसअला उठाए जाने का बयान हो चुका यानी मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने का. काफ़िर इससे इन्कारी थे और इसमें दो संदेह पेश थे एक तो यह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उसकी ज़िन्दगी जाती रही उसमें दोबारा फिर ज़िन्दगी किस तरह लौटेगी. इस शुबह को इस आयत से दूर फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहो कि हम मुर्दा ज़मीन को ख़ुश्क होने के बाद आसमान से पानी बरसा कर ज़िन्दगी अता फ़रमा दिया करते हैं. तो क़ुदरत का यह फ़ैज़ देखने के बाद किसी मख़लूक़ का मरने के बाद ज़िन्दा होना ऐसे क़ुदरत रखने वाले की ताक़त से दूर नहीं. दूसरा शुबह काफ़िरों का यह था कि जब आदमी मर गया और उसके शरीर के अंग बिखर गए और ख़ाक में मिल गए, वो अंग किस तरह जमा किये जाएंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उन्हें किस तरह अलग किया जाएगा. इस आयत में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया उस में ग़ौर करने से वह शुबह बिल्कुल मिट जाता है कि अल्लाह की क़ुदरत की यह शान तो रोज़ाना देखने में आती है कि वह ग़िज़ा के मिले जुले कणों से ख़ालिस दूध निकालता है और उसके आस पास की चीज़ों की मिलावट तक उसमें नहीं हो पाती. उस हिकमत वाले रब की क़ुदरत से क्या दूर है कि इन्सानी शरीर के अंगों के बिखर जाने के बाद फिर इकट्ठा फ़रमा दे. शफ़ीक़ बलख़ी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि नेअमत की सम्पूर्णता यही है कि दूध ख़ालिस नज़र आए और उसमें ख़ून और गोबर के रंग और बू का नाम तक न हो वरना नेअमत पूरी न होगी और तबीअत उसको क़ुबूल न करेगी जैसी साफ़ नेअमत रब की तरफ़ से पहुंचती है, बन्दे को लाज़िम है कि वह भी परवर्दिगार के साथ सच्चे दिल से मामला करे और उसके कर्म दिखावे और नफ़्स के बहकावे की मिलावट से पाक साफ़ हों ताकि क़ुबूल किये जाएं.

(३) हम तुम्हें रस पिलाते हैं.

(४) यानी सिर्का और राब और ख़ुर्मा और मवैज़. मवैज़ और अंगूर वग़ैरह का रस जब इस क़दर पका लिया जाए कि दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाए उसको नबीज़ कहते हैं. यह नशे की हद तक न पहुंचे और ख़ुमार न लाए तो शैख़ैन के नज़दीक हलाल है और यही आयत और बहुत सी हदीसें उनकी दलील हैं.

(५) फलों की तलाश में.

(६) अल्लाह के फ़ज़्ल से जिनका तुझे इल्हाम किया गया है यहाँ तक कि तुझे चलना फिरना दुशवार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाए, राह नहीं बहकती और अपनी जगह वापस आ जाती है.

يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَ
حَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا
مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَ
اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا
مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ
يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَا اَبْكَمُ لَا
يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا

गुलामों को न फेर देंगे कि वो सब उसमें बराबर हो जाएं[२] तो क्या अल्लाह की नेअमत से इन्कार करते हैं[३]﴾७१﴿ और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से औरतें बनाईं और तुम्हारे लिये तुम्हारी औरतों से बेटे और पोते नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी[४] तो क्या झूटी बात[५] पर यक़ीन लाते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल[६] से इन्कारी होते हैं﴾७२﴿ और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं[७] जो उन्हें आसमान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं﴾७३﴿ तो अल्लाह के लिये मानिंदा (समान) न ठहराओ[८] बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते﴾७४﴿ अल्लाह ने एक कहावत बयान फ़रमाई[९] एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक़दूर (सामर्थ्य) नहीं रखता और एक वह जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी अता फ़रमाई तो वह उसमें से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर[१०] क्या वो बराबर हो जाएंगे[११] सब ख़ूबियां अल्लाह को हैं बल्कि उनमें अक्सर को ख़बर नहीं[१२]﴾७५﴿ और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा जो कुछ काम नहीं कर सकता[१३] और वह अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न

(७) यानी शहद.
(८) सफ़ेद, पीला और लाल.
(९) और सबसे ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाने वाली दवाओं में से है और बहुत सी मअजूनों यानी च्यवनप्राश में शामिल किया जाता है.
(१०) अल्लाह तआला की क़ुदरत और हिकमत पर.
(११) कि उसने एक कमज़ोर मक्खी को ऐसी सूझ बूझ अता की और ऐसी शक्तियाँ प्रदान कीं. पाक है वह ज़ात और अपनी सिफ़ात में शरीक से मुनज़्ज़ह. इस से फ़िक्र करने वालों को इसपर भी तंबीह हो जाती है कि वह अपनी भरपूर क़ुदरत से एक अदना कमज़ोर सी मक्खी को यह सिफ़त अता फ़रमाता है कि वह विभिन्न प्रकार के फूलों और फलों से ऐसे स्वादिष्ट अंग हासिल करे जिनसे बढ़िया शहद बने जो निहायत ख़ुशगवार हो, पाक साफ़ हो, ख़राब होने और सड़ने से दूर हो. तो जो क़ुदरत और हिकमत वाली ज़ात एक मक्खी को इस माद्दे के जमा करने की क़ुदरत देती है वह अगर मरे हुए इन्सान के बिखरे हुए अंगों को जमा कर दे तो उसकी क़ुदरत से क्या दूर है. मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को असंभव समझने वाले कितने मूर्ख हैं. इसके बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों पर अपनी क़ुदरत की वो निशानियाँ ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उनमें और उनके हालात में नुमायाँ हैं.
(१२) शून्य से और नाश के बाद ज़िन्दगी अता फ़रमाई, कैसी अनोखी क़ुदरत है.
(१३) और तुम्हें ज़िन्दगी के बाद मौत देगा जब तुम्हारी मुद्दत पूरी हो जो उसने निर्धारित फ़रमाई है चाहे बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में.
(१४) जिसका ज़माना इन्सानी उम्र के दर्जों में साठ साल के बाद आता है कि अंग और शक्तियाँ सब नाकारा हो जाती हैं और इन्सान की यह हालत हो जाती है.
(१५) और नासमझी में बच्चों से गया गुज़रा हो जाए. इन परिवर्तनों में अल्लाह की क़ुदरत के कैसे चमत्कार दिखने में आते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुसलमान अल्लाह के फ़ज़्ल से इससे मेहफ़ूज़ हैं. लम्बी उम्र और ज़िन्दगी से उन्हें अल्लाह के हुज़ूर में बुज़ुर्गी और अक़्ल और मअरिफ़त की ज़ियादती हासिल होती है और हो सकता है कि अल्लाह की तरफ़ लौ लगाने का ऐसा ग़लबा हो कि इस दुनिया से रिश्ता कट जाए और मक़बूल बन्दा दुनिया की तरफ़ देखने से परहेज़ करे. अकरमा का क़ौल है कि जिसने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा वह इस तुच्छ उम्र की हालत को न पहुंचेगा कि इल्म के बाद केवल बे इल्म हो जाए.

सूरए नहल - दसवाँ रूकू

(१) तो किसी को ग़नी किया, किसी को फ़क़ीर, किसी को मालदार, किसी को नादार, किसी को मालिक, किसी को गुलाम.

يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِىْ هُوَ ۙ وَمَنْ
يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ وَلِلّٰهِ
غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا
كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى
الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا
اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَاللّٰهُ
جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ
ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَ
اَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾

लाए[१४] क्या बराबर हो जाएगा यह और वह जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वह सीधी राह पर है[१५] ﴿७६﴾

ग्यारहवाँ रूकू

और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[१] और क़यामत का मामला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना बल्कि उससे भी क़रीब[२] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है ﴿७७﴾ और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे[३] और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिये[४] कि तुम एहसान मानो[५] ﴿७८﴾ क्या उन्होंने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आसमान की फ़ज़ा में, उन्हें कोई नहीं रोकता[६] सिवा अल्लाह के, बेशक इसमें निशानियां हैं ईमान वालों का[७] ﴿७९﴾ और अल्लाह ने तुम्हें घर दिये बसने को[८] और तुम्हारे लिये चौपायों की खालों से कुछ घर बनाए[९] जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मंज़िलों पर ठहरने के दिन और उनकी ऊन और बबरी और बालों से कुछ गृहस्थी का सामान[१०] और बरतने की चीज़ें एक वक़्त तक ﴿८०﴾

---

(२) और दासी गुलाम आक़ाओं के शरीक हो जाएं. जब तुम अपने गुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो अल्लाह के बन्दों और उसके ममलूकों को उसका शरीक ठहराना कैसे गवारा करते हो. सुब्हानल्लाह ! यह बुत परस्ती का कैसा उमदा, दिल में घर कर लेने वाला, और समझ में आ जाने वाला रद है.

(३) कि उसको छोड़कर मख़लूक़ को पूजते हैं.

(४) क़िस्म क़िस्म के ग़ल्लों, फ़लों, मेवों, खाने पीने की चीज़ों से.

(५) यानी शिर्क और बुत परस्ती.

(६) अल्लाह के फ़ज़्ल और नेअमत से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक ज़ात या इस्लाम मुराद है. (मदारिक)

(७) यानी बुतों को.

(८) उसका किसी को शरीक न करो.

(९) यह कि.

(१०) जैसे चाहता है इस्तेमाल करता है . तो वह आजिज़ ममलूक ग़ुलाम और यह आज़ाद मालिक साहिबे माल जो अल्लाह के फ़ज़्ल से क़ुदरत और इख़्तियार रखता है.

(११) हरगिज़ नहीं . तो जब ग़ुलाम और आज़ाद बराबर नहीं हो सकते, जबकि दोनों अल्लाह के बन्दे हैं, तो पैदा करने वाले, मालिक, क़ुदरत वाले अल्लाह के साथ बेक़ुदरत और बेइख़्तियार बुत कैसे शरीक हो सकते हैं और उनको उसके जैसा क़रार देना कैसा बड़ा ज़ुल्म और जिहालत है.

(१२) कि ऐसे खुले प्रमाण और साफ़ तर्क के होते हुए शिर्क करना कितने बड़े वबाल और अज़ाब का कारण है.

(१३) न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सके.

(१४) और किसी काम न आए. यह मिसाल काफ़िर की है.

(१५) यह मिसाल ईमान वाले की है. मानी ये हैं कि काफ़िर नाकारा गूंगे ग़ुलाम की तरह है. वह किसी तरह मुसलमान की मिस्ल नहीं हो सकता जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और सीधी राह पर क़ायम है. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि गूंगे नाकारा ग़ुलाम से बुतों को उपमा दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना अल्लाह की शान का बयान हुआ. इस सूरत में मानी ये हैं कि अल्लाह तआला के साथ बुतों को शरीक करना ग़लत है क्योंकि इन्साफ़ क़ायम करने वाले बादशाह के साथ गूंगे और नाकारा ग़ुलाम का क्या जोड़.

सूरए नहल - ग्यारहवाँ रूकू

(१) इसमें अल्लाह तआला के कमाले इल्म का बयान है कि वो सारे अज्ञात का जानने वाला है. उसपर कोई छुपने वाली चीज़

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ِۨالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

منزل ٣

और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई चीज़ों[११] से साए दिये[१२] और तुम्हारे लिये पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई[१३] और तुम्हारे लिये कुछ पहनावे बनाए कि तुम्हें गर्मी से बचाएं और कुछ पहनावे[१४] कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करें[१५] यूंही अपनी नऐमत तुम पर पूरी करता है[१६] कि तुम फ़रमान मानो[१७] ﴾८१﴿ फिर अगर वो मुंह फेरें[१८] तो ऐ मेहबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[१९] ﴾८२﴿ अल्लाह की नेअमत पहचानते हैं[२०] फिर उसके इन्कारी होते हैं[२१] और उनमें अकसर काफ़िर हैं[२२] ﴾८३﴿

बारहवाँ रूकू

और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह[२] फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो [३] न वो मनाए जाएं[४] ﴾८४﴿ और ज़ुल्म करने वाले[५] जब अज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वह उनपर से हल्का हो न उन्हें मुहलत मिले ﴾८५﴿ और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे[६] कहेंगे ऐ हमारे रब ये हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वो उनपर बात फेंकेंगे कि तुम बेशक झूटे हो[७] ﴾८६﴿ और उस दिन[८] अल्लाह की तरफ़ आजिज़ी (विनीतता) से

छुपी नहीं रह सकती. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि इस से मुराद क़यामत का इल्म है.

(२) क्योंकि पलक मारना भी समय चाहता है जिसमें पलक की हरकत हासिल हो और अल्लाह तआला जिस चीज़ का होना चाहे, वह 'कुन' फ़रमाते ही हो जाती है.

(३) और अपनी पैदाइश की शुरूआत और बुनियादी प्रकृति में इल्म और मअरिफ़त से ख़ाली थे.

(४) कि इन से अपनी पैदाइशी अज्ञानता और जिहालत दूर करो.

(५) और इल्म व अमल से फ़ैज़ उठाकर देने वाले का शुक्र बजा लाओ और उसकी इबादत में लग जाओ और उसकी नेअमतों के हुक़ूक़ अदा करो.

(६) गिरने से जबकि जिस्म, जो प्रकृति से भारी है, गिरना चाहता है.

(७) कि उसने उन्हें ऐसा पैदा किया कि वह हवा में उड़ सकते हैं और अपने भारी बदन की प्रवृति के ख़िलाफ़ हवा में ठहरे रहते हैं, गिरते नहीं. और हवा को ऐसा पैदा किया कि इसमें उनकी उड़ान मुमकिन है. ईमानदार इस में ग़ौर करके अल्लाह की क़ुदरत का ऐतिराफ़ करते हैं.

(८) जिनमें तुम आराम करते हो.

(९) तम्बू या ख़ैमे वग़ैरह की तरह.

(१०) बिछाने ओढ़ने की चीज़ें. यह आयत अल्लाह की नेअमतों के बयान में है, मगर इससे इशारे के तौर पर ऊन और पशमीने और बालों की तहारत और उनसे नफ़ा उठाने की इजाज़त साबित होती है.

(११) मकानों, दीवारों, छतों, दरख़्तों और बादल वग़ैरह.

(१२) जिसमें तुम आराम करते हो.

(१३) ग़ार वग़ैरह कि अमीर ग़रीब सब आराम कर सकें.

(१४) ज़िरह और बाज़ूबन्द वग़ैरह.

(१५) कि तीर तलवार नेज़े वग़ैरह से बचाव का सामान हो.

(१६) दुनिया में तुम्हारी ज़रूरतों के साधन पैदा फ़रमाकर.

(१७) और उसकी नेअमतों का ऐतिराफ़ करके ईमान लाओ और सच्चा दीने इस्लाम क़ुबूल करो.

(१८) और ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, वो आप पर ईमान लाने और आपकी तस्दीक़ करने से मुहं मोड़ें और अपने कुफ़्र पर डटे रहें.

(१९) और जब आपने अल्लाह का संदेश पहुंचा दिया तो आपका काम पूरा हो चुका और न मानने का वबाल उनकी गर्दन पर रहा.

يَفْتَرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا
يُفْسِدُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى
هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ
شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي
الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا
عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ
قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ۭ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا

गिरेंगे[९] और उनसे गुम हो जाएंगी जो बनावटें करते थे[१०]﴾८७﴿ जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका हमने अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाया[११] बदला उनके फ़साद का﴾८८﴿ और जिस दिन हम हर गिरोह में एक गिरोह उन्हीं में से उठाएंगे कि उनपर गवाही दे[१२] और ऐ मेहबूब तुम्हें उन सब पर[१३] शाहिद (गवाह) बना कर लाएंगे और हमने तुमपर यह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है[१४] और हिदायत और रहमत और बशारत मुसलमानों को﴾८९﴿

तेरहवाँ रूकू

बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी[१] और रिश्तेदारों के देने का[२] और मना फ़रमाता है बेहयाई[३] और बुरी बात[४] और सरकशी से[५] तुम्हें नसीहत है कि तुम ध्यान करो﴾९०﴿ और अल्लाह का एहद पूरा करो[६] जब क़ौल बांधो और क़स्में मज़बूत करके न तोड़ो और तुम अल्लाह को[७] अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है﴾९१﴿ और[८] उस औरत की तरह न हो जिसने अपना सूत मज़बूती के बाद रेज़ा रेज़ा

(२०) यानी जो नेअमतें कि बयान की गईं उन सबको पहचानते हैं और जानते हैं कि ये सब अल्लाह की तरफ़ से हैं फिर भी उसका शुक्र अदा नहीं करते. सदी का कौल है कि अल्लाह की नेअमत से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं. इस तक़दीर पर मानी ये हैं कि वो हुज़ूर को पहचानते हैं और समझते है कि आपका वुजूद और आपकी ज़ात अल्लाह की बड़ी नेअमत है, इसके बावुजूद-
(२१) और दीने इस्लाम क़ुबूल नहीं करते.
(२२) दुश्मन, कि हसद और ईर्ष्या और दुश्मनी से कुफ़्र पर क़ायम रहते हैं.

सूरए नहल - बारहवाँ रूकू

(१) यानी क़यामत के दिन.
(२) जो उनकी तस्दीक़ करे और झुटलाए और ईमान और कुफ़्र की गवाही दे और ये गवाह नबी हैं. (अलैहिमुस्सलाम)
(३) उज़्र पेश करने की या किसी कलाम की या दुनिया की तरफ़ लौटने की.
(४) यानी न उनसे इताब और प्रकोप दूर किया जाए.
(५) यानी काफ़िर.
(६) बुतों वग़ैरह को जिन्हें पूजते थे.
(७) जो हमें मअबूद बताते हो . हमने तुम्हें अपनी इबादत की दावत नहीं दी.
(८) मुश्रिक लोग.
(९) और उसके फ़रमाँबरदार होना चाहेंगे.
(१०) दुनिया में बुतों को ख़ुदा का शरीक बताकर.
(११) उनके कुफ़्र का अज़ाब और दूसरों को ख़ुदा की राह से रोकने और गुमराह करने का अज़ाब.
(१२) ये गवाह अम्बिया होंगे जो अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही देंगे.
(१३) उम्मतों और उनके गवाहों पर जो अम्बिया होंगे, जैसा कि दूसरी आयत में आया *"फ़कैफ़ा इज़ा जिअना मिन कुल्ले उम्मतिम बिशहीदिवं व जिअना बिका अला हा उलाए शहीदन"* (तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ मेहबूब, तुम्हें उन सब पर गवाह व निगहबान बनाकर लाएं - सूरए निसा, आयत ४१) (अबू सऊद वग़ैरह).
(१४) जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया *"मा फ़र्रतना फ़िल किताबे मिन शैइन"* (और हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा

करके तोड़ दिया[९] अपनी क़समें आपस में एक बेअस्ल बहाना बनाते हो कि कहीं एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज़्यादा न हो[१०] अल्लाह तो इससे तुम्हें आज़माता है,[११] और ज़रूर तुमपर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़यामत के दिन[१२] जिस बात में झगड़ते थे[१३] (९२) और अल्लाह चाहता तो तुमको एक ही उम्मत करदेता[१४] लेकिन अल्लाह गुमराह करता है[१५] जिसे चाहे और राह देता है[१६] जिसे चाहे, और ज़रूर तुमसे[१७] तुम्हारे काम पूछे जाएंगे[१८] (९३) और अपनी क़समें आपस में बेअस्ल बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाँव[१९] जमने के बाद न डगमगाए और तुम्हें बुराई चखनी हो[२०] बदला उसका कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अज़ाब हो[२१] (९४) और अल्लाह के एहद पर थोड़े दाम मोल न लो,[२२] बेशक वह[२३] जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो (९५) जो तुम्हारे पास है[२४] हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है[२५] हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उनका वह सिला देंगे जो उनके सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो[२६] (९६) जो अच्छा काम करे

بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ
اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ
بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا
بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ
وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا
اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ

- सूरए अनआम, आयत ३८). तिरमिज़ी की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पेश आने वाले फ़ितनों की ख़बर दी. सहाबा ने उनसे छुटकारे का तरीक़ा दरियाफ़्त किया. फ़रमाया, अल्लाह की किताब में तुम से पहले वाक़िआत की भी ख़बर है और तुमसे बाद के वाक़िआत की भी. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है फ़रमाया जो इल्म चाहे वह क़ुरआन को लाज़िम कर ले. इसमें अगलों और पिछलों की ख़बरें हैं. इमाम शाफ़ई रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उलूम हदीस की शरह हैं और हदीस क़ुरआन की. यह भी फ़रमाया कि नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वह वही था जो आपको क़ुरआन शरीफ़ से मालूम हुआ. अबूबक्र बिन मुजाहिद से मन्क़ूल है उन्होंने एक दिन फ़रमाया कि दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन शरीफ़ में बयान न हुई हो. इसपर किसी ने उनसे कहा, सरायों का ज़िक्र कहाँ है. फ़रमाया इस आयत में *"लैसा अलैकुम जुनाहुन अन तदख़ुलू बुयूतन ग़ैरा मस्कूनतिन फ़ीहा मताऊल लकुम -----"* (इसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं और उनके बरतने का तुम्हें इख़्तियार है - सूरए नूर, आयत २९) इब्ने अबुल फ़ज़्ल मर्सी ने कहा कि अगलों पिछलों के तमाम उलूम क़ुरआन शरीफ़ में हैं. ग़रज़ यह किताब सारे उलूम की जमा करने वाली है. जिस किसी को इसका जितना इल्म मिला है, उतना ही जानता है.

सूरए नहल - तेरहवाँ रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो यह है कि आदमी "ला इलाहा इल्लल्लाह" की गवाही दे और नेकी और फ़र्ज़ अदा करे. आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी अल्लाह की इस तरह इबादत करना गोया वह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिये वही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो. अगर वह मूमिन हो तो उसके ईमान की बरकतों की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें यह पसन्द आए कि वह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए. उन्हीं से एक और रिवायत है उसमें है कि इन्साफ़ तौहीद है और नेकी इख़्लास. इन तमाम रिवायतों के बयान करने का ढंग अगरचे जुदा जुदा है लेकिन मतलब और तात्पर्य एक ही है.

(२) और उनके साथ अनुकंपा और नेक सुलूक करने का.

(३) यानी हर शर्मनाक और ख़राब क़ौल और काम.

(४) यानी शिर्क और कुफ़्र और गुनाह और शरीअत द्वारा मना की गई सारी बातें.

(५) यानी ज़ुल्म और अहंकार से. इब्ने ऐनिया ने इस आयत की तफ़सीर में कहा कि इन्साफ़ ज़ाहिर और बातिन दोनों में बराबर सच्चाई और फ़रमाँबरदारी निभाने को कहते हैं और एहसान यह है कि बातिन का हाल ज़ाहिर से बेहतर हो और बेहयाई, बुरी बात

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ
بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾
اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ
بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ
وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ
الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ
مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

मर्द हो या औरत और हो मुस्लमान[२७] तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे, और ज़रूर उन्हें उनका नेग देंगे जो उनके सब से बेहतर काम के लायक़ हों﴾९७﴿ तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो शैतान मरदूद से[२९]﴾९८﴿ बेशक उसका कोई क़ाबू उनपर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं[३०]﴾९९﴿ उसका क़ाबू तो उनहीं पर है जो उससे दोस्ती करते हैं और उसे शरीक ठहराते हैं﴾१००﴿

चौदहवाँ रूकू

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें[१] और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है[२] काफ़िर कहें तुम तो दिल से बना लाते हो[३]बल्कि उनमें अक्सर को जानकारी नहीं[४]﴾१०१﴿ तुम फ़रमाओ इसे पाकीज़गी (पवित्रता) की रूह[५] ने उतारा तुम्हारे रब की तरफ़ से ठीक ठीक कि इससे ईमान वालों को अडिग करे और हिदायत और ख़ुशख़बरी मुसलमानों को﴾१०२﴿ और बेशक हम जानते हैं कि वो कहते हैं यह तो कोई आदमी सिखाता है, जिसकी तरफ़ ढालते हैं उसकी ज़बान अजमी है और यह

और सरकशी यह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बातिन ऐसा न हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया इस आयत में अल्लाह तआला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मना फ़रमाया. इन्साफ़ का हुक्म दिया और वह न्याय और मसावात यानी बराबरी है कहनी और करनी में. इसके मुक़ाबले में फ़हश यानी बेहयाई है वह बुरे कर्म और बुरे बोल हैं. और एहसान का हुक्म फ़रमाया. वह यह है कि जिसने ज़ुल्म किया उसको माफ़ करो और जिसने बुराई की उसके साथ भलाई करो. इसके मुक़ाबले में मुनकर यानी बुरी बात है यानी एहसान करने वाले के एहसान का इन्कार करना. तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्ते दारों को देने और उनके साथ मेहरबानी और शफ़क़त और महब्बत का फ़रमाया, इसके मुक़ाबिल बग़्य है और वह अपने आप को ऊंचा खींचना और अपने सगे सम्बन्धियों के अधिकार ख़त्म करना है. इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत तमाम अच्छाई बुराई के बयान को जमा करने वाली है. यही आयत हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रदियल्लाहो अन्हो के इस्लाम का कारण बनी जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के उतरने से ईमान मेरे दिल में जड़ पकड़ गया. इस आयत का असर इतना ज़बरदस्त हुआ कि वलीद बिन मुग़ीरा और अबू जहल जैसे सख़्त दिल काफ़िरों की ज़बानों पर भी इसकी तअरीफ़ आ ही गई. इसलिये यह आयत हर ख़ुत्बे के आख़िर में पढ़ी जाती है.

(६) यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी जिन्हों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस्लाम पर बैअत की थी. उन्हें अपने एहद को पूरा करने का हुक्म दिया गया और यह हुक्म इन्सान के हर नेक एहद और वादे को शामिल है.

(७) उसके नाम की क़सम खाकर.

(८) तुम एहद और क़समें तोड़कर.

(९) मक्कए मुकर्रमा में रीतह बिन्ते अम्र एक औरत थी जिसकी तबीयत में बहुत वहम था और अक़्ल में फ़ुतूर. वह दोपहर तक मेहनत करके सूत काता करती और अपनी दासियों से भी कतवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए सूत को तोड़ डालती और दासियों से भी तुड़वाती. यही उसका रोज़ का काम था. मानी ये हैं कि अपने एहद को तोड़कर उस औरत की तरह बेवक़ूफ़ न बनो.

(१०) मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का तरीक़ा यह था कि एक क़ौम से हलफ़ करते और जब दूसरी क़ौम को उससे ज़्यादा तादाद या माल या ताक़त में ज़्यादा पाते तो पहलों से जो हलफ़ किये थे, तोड़ देते और अब दूसरे से हलफ़ करते. अल्लाह तआला ने इसको मना फ़रमाया और एहद पूरा करने का हुक्म दिया.

(११) कि फ़रमाँबरदार और गुनाहगार ज़ाहिर हो जाए.

(१२) कर्मों का बदला देकर.

(१३) दुनिया के अन्दर.

(१४) कि तुम सब एक दीन पर होते.

(१५) अपने इन्साफ़ से.

لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾
إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ
كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَ
قَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَٰكِنْ مَنْ شَرَحَ
بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ
مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ

रौशन अरबी ज़बान[६] (१०३) बेशक वो जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते[७] अल्लाह उन्हें राह नहीं देता और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[८] (१०४) झूट बुहतान वही बांधते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते[९] और वही झूठे हैं (१०५) जो ईमान लाकर अल्लाह का इन्कारी हो[१०] सिवा उसके जो मजबूर किया जाए और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो[११] हाँ वो जो दिल खोलकर[१२] काफ़िर हो उनपर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है और उनको बड़ा अज़ाब है (१०६) यह इसलिये कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत में प्यारी जानी[१३] और इसलिये कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता (१०७) ये हैं वो जिनके दिल और कान और आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है[१४] और वही ग़फ़लत में पड़े हैं[१५] (१०८) आप ही हुवा कि आख़िरत में वही ख़राब हैं[१६] (१०९) फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिये जिन्होंने अपने घर छोड़े[१७] बाद इसके कि सताए गए[१८] फिर उन्होंने[१९] जिहाद किया और साबिर रहे बेशक तुम्हारा रब

(१६) अपने फ़ज़्ल से.
(१७) क़यामत के दिन.
(१८) जो तुमने दुनिया में किये.
(१९) सीधी राह और इस्लाम के तरीक़े से.
(२०) यानी अज़ाब.
(२१) आख़िरत में.
(२२) इस तरह कि नश्वर दुनिया के थोड़े से नफ़े पर उसको तोड़ दो.
(२३) बदला और सवाब.
(२४) दुनिया का सामान, यह सब फ़ना हो जायगा और ख़त्म ---
(२५) उसकी रहमत का ख़ज़ाना और आख़िरत का सवाब.
(२६) यानी उनकी छोटी से छोटी नेकी पर भी वह अज्र और सवाब दिया जाएगा जो वो अपनी बड़ी नेकी पर पाते (अबू सऊद).
(२७) यह ज़रूर शर्त है क्योंकि काफ़िरों के अअमाल और कर्म बेकार हैं. नेक कर्मों का सवाब वाला होने के लिये ईमान शर्त है.
(२८) दुनिया में हलाल रिज़्क़ और क़नाअत अता फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत की नेअमतें देकर. कुछ उलमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से इबादत की लज़्ज़त मुराद है. मूमिन अगरचे फ़क़ीर भी हो, उसकी ज़िन्दगानी दौलतमन्द काफ़िर के ऐश से बेहतर और पाकीज़ा है क्योंकि ईमान वाला जानता है कि उसकी रोज़ी अल्लाह की तरफ़ से है. जो उसने लिख दिया उसपर राज़ी होता है और मूमिन का दिल लालच की परेशानियों से मेहफ़ूज़ और आराम में रहता है. काफ़िर जो अल्लाह पर नज़र नहीं रखता वह लालची रहता है और हमेशा दुख और हसद और माल हासिल करने के चक्कर में परेशान रहता है.
(२९) यानी क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत शुरू करते वक़्त *"अऊज़ो बिल्लाहे मिनश शैतानिर रजीम"* पढ़ो, यह मुस्तहब है. अऊज़ो के मसाइल सूरए फ़ातिहा की तफ़सीर में बयान हो चुके.
(३०) वो शैतानी वसवसे क़ुबूल नहीं करते.

सूरए नहल - चौदहवाँ रूकू

(१) और अपनी हिकमत से एक हुक्म को मन्सूख़ या स्थगित करके दूसरा हुक्म दें. मक्का के मुश्रिक अपनी जिहालत से नस्ख़ यानी स्थगन पर ऐतिराज़ करते थे और इसकी हिकमतों से अनजान होने के कारण इसको हंसी का विषय बनाते थे और कहते थे

بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ
نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ
مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ
اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا
كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾
فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا
حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَا
اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا
عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا

उस[२०] के बाद ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान﴾११०﴿

पन्द्रहवाँ रूकू

जिस दिन हर जान अपनी ही तरफ़ झगड़ती आएगी[१] और हर जान को उसका किया पूरा भर दिया जाएगा और उनपर ज़ुल्म न होगा[२]﴾१११﴿ और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई[३] एक बस्ती[४] कि अमान व इत्मीनान से थी[५] हर तरफ़ से उसकी रोज़ी कसरत से आती तो वह अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री करने लगी[६] तो अल्लाह ने उसे यह सज़ा चखाई कि उसे भूख और डर का पहनावा पहनाया[७] बदला उनके किये का﴾११२﴿ और बेशक उनके पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया[८] तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें अज़ाब ने पकड़ा[९] और वो बे इन्साफ़ थे﴾११३﴿ तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी[१०] हलाल पाकीज़ा खाओ[११] और अल्लाह की नेअमत का शुक्र करो अगर तुम उसे पूजते हो﴾११४﴿ तुम पर तो यही हराम किया है मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जिसके ज़िबह करते वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम पुकारा गया[१२] फिर जो लाचार हो[१३] न ख़्वाहिश करता न हद से बढ़ता[१४] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾११५﴿ और न

कि मुहम्मद एक रोज़ एक हुक्म देते हैं, दूसरे रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं. वो अपने दिल से बातें बनाते हैं. इसपर यह आयत उतरी.

(२) कि इसमें क्या हिकमत, और उसके बन्दों के लिये इसमें क्या मसलिहत है.

(३) अल्लाह तआला ने इसपर काफ़िरों की जिहालत का बयान किया और इरशाद फ़रमाया.

(४) और वो स्थान और तबदीली की हिकमत, और फ़ायदों से ख़बरदार नहीं और यह भी नहीं जानते कि क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ ग़लत बात जोड़ने की निस्बत हो ही नहीं सकती क्योंकि जिस कलाम के मिस्ल बनाना आदमी की ताक़त से बाहर है वह किसी इन्सान का बनाया हुआ कैसे हो सकता है. लिहाज़ा सैयदे आलम को ख़िताब हुआ.

(५) यानी हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम .

(६) क़ुरआन शरीफ़ की मिठास और उसके उलूम की नूरानियत जब दिलों को जीतने लगी और काफ़िरों ने देखा कि दुनिया इसकी गिरवीदा (वशीभूत) होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालिफ़त में कामयाब नहीं होती तो उन्होंने तरह तरह की बातें जोड़नी शुरू कर दीं. कभी इसको जादू बताया, कभी पहलों के क़िस्से और कहानियाँ कहा, कभी यह कहा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह ख़ुद बना लिया है. हर तहर कोशिश की कि किसी तरह लोग इस किताबे मुक़द्दस की तरफ़ से बदगुमान हों. इन्हीं मक्कारियों में से एक मक्र यह भी था कि उन्होंने एक अजमी गुलाम की निस्बत यह कहा कि वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सिखाता है. इसके रद में यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि ऐसी ग़लत बातें दुनिया में कौन क़ुबूल कर सकता है. जिस ग़ुलाम की तरफ़ काफ़िर निस्बत करते हैं वो तो अजमी है. ऐसा कलाम बनाना उसकी ताक़त में तो क्या होता, तुम्हारे फ़सीह और बलीग़ लोग जिनकी ज़बानदानी पर अरब वालों को गर्व है, वो सब के सब हैरान हैं और चन्द जुमले क़ुरआन जैसे बनाना उन्हें असम्भव और उनकी क्षमता से बाहर है तो एक ग़ैर अरब की तरफ़ ऐसी बात जोड़ना किस क़द्र ग़लत, झूट और बेशर्मी का काम है. ख़ुदा की शान, जिस ग़ुलाम की तरफ़ काफ़िर यह निस्बत करते थे उसको भी इस कलाम के चमत्कार ने जीत लिया और वह भी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाँबरदारों में शामिल हो गया और सच्चे दिल से ईमान ले आया.

(७) और उसकी पुष्टि या तस्दीक़ नहीं करते.

(८) क़ुरआन के इन्कार और रसूल अलैहिस्सलाम को झुटलाने के कारण.

(९) यानी झूट बोलना और ग़लत सलत बात जोड़ना बेईमानों ही का काम है . इस आयत से मालूम हुआ कि झूट बड़े गुनाहों में सबसे बुरा गुनाह है.

(१०) वह अल्लाह के ग़ज़ब में नहीं. यह आयत अम्मार बिन यासिर के हक़ में उतरी. उन्हें और उनके वालिद यासिर और उनकी

لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ
هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا
قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ
لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا
لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا
لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾
وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

ركوع ١٦

कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो[१५] बेशक जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उनका भला न होगा﴾११६﴿ थोड़ा बरतना है[१६] और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[१७]﴾११७﴿ और ख़ास यहूदियों पर हमने हराम फ़रमाई वो चीज़ें जो पहले तुम्हें हमने सुनाई,[१८] और हमने उनपर ज़ुल्म न किया हाँ वही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[१९]﴾११८﴿ फिर बेशक तुम्हारा रब उनके लिये जो नादानी से[२०] बुराई कर बैठें फिर उसके बाद[२१] तौबह करें और संवर जाएं बेशक तुम्हारा रब उसके बाद ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है﴾११९﴿

सोलहवाँ रूकू

बेशक इब्राहीम एक इमाम था[१] अल्लाह का फ़रमाँबरदार और सब से अलग[२] और मुश्रिक न था[३]﴾१२०﴿ उसके एहसानों पर शुक्र करने वाला, अल्लाह ने उसे चुन लिया[४] और उसे सीधी राह दिखाई﴾१२१﴿ और हमने उसे दुनिया में भलाई दी[५] और बेशक वह आख़िरत में क़ुर्ब (नज़दीकी)

वालिदा सुमैया और सुहैब और बिलाल और ख़बाब और सालिम रदियल्लाहो अन्हुम को पकड़कर काफ़िरों ने सख़्त तकलीफ़ें और यातनाएं दीं ताकि वो इस्लाम से फिर जाएं लेकिन ये लोग न फिरे. तो काफ़िरों ने अम्मार के माँ बाप को बहुत बेरहमी से क़त्ल किया और अम्मार बूढ़े थे, भाग नहीं सकते थे, उन्होंने मजबूर होकर जब देखा कि जान पर बन गई है तो अनचाहे दिल से कुफ़्र का कलिमा बोल दिया. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर दी गई कि अम्मार काफ़िर हो गए. फ़रमाया हरगिज़ नहीं. अम्मार सर से पाँव तक ईमान से भरे पुरे हैं और उनके गोश्त और ख़ून में ईमान रच बस गया है. फिर अम्मार रोते हुए ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए. हुज़ूर ने फ़रमाया क्या हुआ. अम्मार ने अर्ज़ किया, ऐ ख़ुदा के रसूल बहुत ही बुरा हुआ और बहुत ही बुरे कलिमे मेरी ज़बान पर जारी हुए. इरशाद फ़रमाया, उस वक़्त तेरे दिल का क्या हाल था? अर्ज़ किया दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुआ था. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शफ़क़त व रहमत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा वक़्त आ पड़े तो यही करना चाहिये. इसपर यह आयत उतरी (ख़ाज़िन). आयत से मालूम हुआ कि मजबूरी की हालत में अगर दिल ईमान पर जमा हुआ हो तो कलिमए कुफ़्र का बोलना जायज़ है जबकि आदमी को अपनी जान या किसी अंग के ज़ाया हो जाने का ख़ौफ़ हो. अगर इस हालत में भी सब्र करे और क़त्ल कर डाला जाय तो वह अज्र का हक़दार और शहीद होगा जैसा कि हज़रत ख़बीब रदियल्लाहो अन्हो ने सब्र किया और वह सूली पर चढ़ाकर शहीद कर दिये गए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें सैयदुश-शुहदा फ़रमाया. जिस शख़्स को मजबूर किया जाए, अगर उसका दिल ईमान पर जमा हुआ न हो, वह कुफ़्र का कलिमा ज़बान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा. अगर कोई शख़्स बिना मजबूरी के हंसी के तौर पर या जिहालत से कुफ़्र का कलिमा ज़बान पर लाए, काफ़िर हो जाएगा. (तफ़सीरे अहमदी)

(१२) रज़ामन्दी और ऐतिक़ाद के साथ.
(१३) और जब यह दुनिया इर्तिदाद यानी इस्लाम से फिर जाने पर इक़दाम करने का कारण है.
(१४) न वो ग़ौर करते हैं न उपदेश और नसीहतों पर कान धरते हैं, न हिदायत और सही बात का रास्ता देखते हैं.
(१५) अपनी आगे की ज़िन्दगी और अंजाम नहीं सोचते.
(१६) कि उनके लिये हमेशा का अज़ाब है.
(१७) और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए तैय्यिबह को हिजरत की.
(१८) काफ़िरों ने उनपर सख़्तियाँ कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया.
(१९) हिजरत के बाद.
(२०) हिजरत व जिहाद व सब्र.

सूरए नहल - पन्दरहवाँ रूकू

(१) वह क़यामत का दिन है जब हर एक 'नफ़्सी-नफ़्सी' कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी.
(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि क़यामत के दिन लोगों में दुश्मनी और बेज़ारी इस हद तक बढ़ेगी कि रूह और जिस्म में झगड़ा होगा. रूह कहेगी यारब न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती, न पाँव था कि चलती, न आँख थी कि देखती. जिस्म कहेगा या रब मैं तो लकड़ी की तरह था, न मेरा हाथ पकड़ सकता था, न पाँव चल सकता था, न आँख देख सकती थी. जब यह रूह नूरी किरन की तरह आई तो इससे मेरी ज़बान बोलने लगी, आँख देखने लगी, पाँव चलने लगे. जो कुछ किया रूह ने किया. अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फ़रमाएगा कि एक अंधा और एक लूला दोनों बाग़ में गए. अन्धे को फल नज़र नहीं आते थे और लूले का हाथ उन तक नहीं पहुंचता था तो अन्धे ने लूले को अपने ऊपर सवार कर लिया इस तरह उन्होंने फल तोड़े तो सज़ा के दोनों ही मुस्तहिक़ हुए. इसलिये रूह और जिस्म दोनों अपराधी हैं.
(३) ऐसे लोगों के लिये जिन पर अल्लाह तआला ने इनआम किया और वो इस नेअमत पर घमण्डी होकर नाशुक्री करने लगे और काफ़िर हो गए. यह कारण अल्लाह तआला की नाराज़ी का हुआ उनकी मिसाल ऐसी समझो जैसे कि ----
(४) मक्का जैसी.
(५) न उसपर दुश्मन चढ़ता, न वहाँ के लोग क़त्ल और क़ैद की मुसीबत में गिरफ़्तार किये जाते.
(६) और उसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया.
(७) कि सात बरस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बद दुआ से क़हत और सूखा की मुसीबत में गिरफ़्तार रहे यहाँ तक कि मुर्दार खाते थे. फिर अम्न और इत्मीनान के बजाय ख़ौफ़ और दहशत उनपर छा गया और हर वक़्त मुसलमानों के हमले का डर रहने लगा.
(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथों से अता फ़रमाई.
(९) भूख और भय से.
(१०) जो उसने सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथों से अता फ़रमाई.
(११) बजाय उन हराम और ख़बीस चीज़ों के जो खाया करते थे, लूट, छीन-झपट और बुरे तरीक़ों से हासिल की गई. सारे ही मुफ़स्सिरों के नज़दीक़ इस आयत का सम्बोधन मुसलमानों से है और एक क़ौल मुफ़स्सिरों का यह भी है कि यह ख़िताब मक्का के मुश्रिकों से है. कलबी ने कहा कि जब मक्का वाले क़हत और सूखा के कारण भूख से परेशान हुए और तकलीफ़ की बर्दाश्त न रही तो उनके सरदारों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं औरतों बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंच रही है उसका ख़याल फ़रमाइये. इसपर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इजाज़त दी कि उनके खाने पीने का इन्तिज़ाम किया जाए. इस आयत में इसका बयान हुआ. इन दोनों क़ौलों में पहला क़ौल ज़्यादा सही है. (ख़ाज़िन)
(१२) यानी उसको बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो.
(१३) और उन हराम चीज़ों से कुछ खाने पर मजबूर हो.
(१४) यानी ज़रूरत की मात्रा पर सब्र करके.
(१५) जिहालत के ज़माने के लोग अपनी तरफ़ से कुछ चीज़ों को हलाल कुछ चीज़ों को हराम कर लिया करते थे और इसकी निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ कर दिया करते थे. इससे मना फ़रमाया गया और इसको अल्लाह पर झूट जड़ना बताया गया. आजकल भी जो लोग अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम बता देते हैं, जैसे मीलाद शरीफ़ की मिठाई, फ़ातिहा, ग्यारहवीं, उर्स वग़ैरह ईसाले सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअत में नहीं आई, उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्बत यह कह देना कि यह शरीअत के हिसाब से हराम हैं, अल्लाह तआला पर झूट बोलना है.
(१६) और दुनिया की कुछ ही दिनों की आसाइश है जो बाक़ी रहने वाली नहीं.
(१७) है आख़िरत में.
(१८) सूरए अनआम की आयत *"व अलल्लज़ीना हादू व हर्रमना कुल्ला ज़ी ज़ुफ़ुरिन ----"* में (यानी और यहूदियों पर हमने हराम किया हर नाख़ुन वाला जानवर - सूरए अनआम, आयत १४७).
(१९) बग़ावत और गुनाह करके जिसकी सज़ा में वो चीज़ें उनपर हराम हुई जैसा कि आयत *"फ़ बिज़ुल्मिम मिनल्लज़ी हादू हर्रमना अलैहिम तय्यिबातिन उहिल्लत लहुम"* (तो यहूदियों के बड़े ज़ुल्म के कारण हमने वो कुछ सुथरी चीज़ें कि उनके लिये हलाल थीं, उनपर हराम फ़रमा दीं - सूरए निसा, आयत १६०) में इरशाद फ़रमाया गया.
(२०) बिना अंजाम सोचे.
(२१) यानी तौबह के.

सूरए नहल - सोलहवाँ रूकू

(१) नेक आदतें और पसन्दीदा अख़लाक़ और अच्छी सिफ़त का संगम.

لِمَنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

के क़ाबिल है(१२२) फिर हमने तुम्हें वही भेजी कि इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था[६] (१२३) हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था जो उसमें मुख़्तलिफ़ (अलग अलग) हो गए[७] और बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ (विरोध, मतभेद) करते थे[८] (१२४) अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ[९] पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से[१०] और उनसे उस तरीक़े पर बहस करो जो सब से बेहतर हो[११] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है राह वालों को(१२५) और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाई थी[१२] और अगर तुम सब्र करो[१३] तो बेशक सब्र वालों को सब्र सबसे अच्छा(१२६) और ऐ मेहबूब तुम सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और उनका ग़म न खाओ. और उनके धोखों से दिल तंग न हो[१५] (१२७) बेशक अल्लाह उनके साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं(१२८)

(२) दीने इस्लाम पर क़ायम.
(३) इसमें काफ़िरों को झुटलाया है जो अपने आपको हज़रत इब्राहीम के दीन पर ख़याल करते थे.
(४) अपना नबी और ख़लील यानी दोस्त बनाने के लिये.
(५) रिसालत व माल-दौलत व औलाद व लोकप्रियता, कि सारे दीन वाले, मुसलमान, यहूदी और ईसाई और अरब के मुश्रिक लोग सब उनका आदर करते और उनसे महब्बत रखते हैं.
(६) इत्तिबाअ से मुराद यहाँ अक़ीदों और दीन के उसूलों में सहमति है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस अनुकरण का हुक्म किया गया. इसमें आपकी महानता, यश और दर्जे की बलन्दी का इज़हार है कि आपका दीने इब्राहिमी से सहमत होना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये उनकी तमाम बुज़ुर्गी और कमाल में सबसे ऊंचा सम्मान है.
(७) यानी शनिवार की तअज़ीम, उस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त इबादत के लिये फ़ारिग़ करना यहूद के लिये फ़र्ज़ किया गया था. इसका वाक़िआ इस तरह हुआ था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें जुमुए के दिन का सत्कार करने का हुक्म दिया था और इरशाद किया था कि सप्ताह में एक दिन अल्लाह तआला की इबादत के लिये ख़ास करो. उस दिन में कुछ काम न करो. इसमें उन्होंने विरोध किया और कहा वह दिन शुक्रवार नहीं बल्कि शनिवार होना चाहिये. एक छोटी सी जमाअत को छोड़कर, जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हुक्म की तअमील में शुक्रवार पर ही राज़ी हो गई थी, अल्लाह तआला ने यहूदियों को इजाज़त दे दी और शिकार हराम फ़रमाकर आज़माइश में डाल दिया. तो जो लोग जुमुए यानी शुक्रवार पर राज़ी हो गए थे वो तो फ़रमाँबरदार रहे और उन्होंने इस हुक्म का पालन किया. बाक़ी लोग सब्र न कर सके, उन्होंने शिकार किये. नतीजा यह हुआ कि सूरतें बिगाड़ दी गईं. यह वाक़िआ तफ़सील के साथ सूरए अअराफ़ में बयान हो चुका है.
(८) इस तरह कि फ़रमाँबरदार को सवाब देगा और गुनाहगार को सज़ा. इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सम्बोधित किया जाता है.
(९) यानी ख़ल्क़ को दीने इस्लाम की तरफ़ बुलाओ.
(१०) पक्की तदबीर से वह मज़बूत दलील मुराद है जो सच्चाई को साफ़ और शुबह व संदेह को दूर कर दे. और अच्छी नसीहत से नेकी और अच्छाई की तरग़ीब मुराद है.
(११) बेहतर तरीक़े से मुराद यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ उसकी आयतों और दलीलों से बुलाएं. इससे मालूम हुआ कि सच्चाई की तरफ़ बुलाना और दीन की सच्चाई के इज़हार के लिये मुनाज़िरा या बहस करना जायज़ है.
(१२) यानी सज़ा ग़लती के हिसाब से हो, उससे ज़्यादा न हो. उहद की लड़ाई में काफ़िरों ने मुसलमानों के शहीदों के चेहरों को ज़ख़्मी करके उनकी शक्लों को बदल डाला था, उनके पेट चाक कर दिये थे, उनके अंग काटे थे, उन शहीदों में हज़रत हमज़ा भी

थे . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब उन्हें देखा तो हुज़ूर को बहुत दुख हुआ और हुज़ूर ने क़सम खाई कि एक हज़रत हमज़ा रदियल्लाहो अन्हो का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का यही हाल किया जाएगा. इसपर यह आयत उतरी, तो हुज़ूर ने वह इरादा तर्क फ़रमा दिया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया. मुस्ला यानी नाक कान वग़ैरह काट कर किसी की शक्ल और आकार बिगाड़ देना शरीअत में हराम है. (मदारिक)

(१३) और बदला न लो.

(१४) अगर वो ईमान लाएं.

(१५) क्योंकि हम तुम्हारे मददगार और सहायक हैं.

पारा चौदाह समाप्त

पन्द्रहवां पारा - सुब्हानल्लज़ी

१७ - सूरए बनी इस्राईल

पहला रूकू

सूरए बनी इस्राईल मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रूकू हैं .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) पाकी है उसे(२) जो अपने बन्दे(३) को रातों रात ले गया(४) मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक(५) जिसके गिर्दा गिर्द हमने बरकत रखी(६) कि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएं, बेशक वह सुनता देखता है﴿१﴾ और हमने मूसा को किताब(७) अता फ़रमाई और उसे बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराओ﴿२﴾ ऐ उनकी औलाद जिनको हमने नूह के साथ(८) सवार किया बेशक वह बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था(९)﴿३﴾ और हमने बनी इस्राईल को किताब(१०) में वही (देव वाणी) भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में दोबारा फ़साद मचाओगे(११) और ज़रूर बड़ा घमण्ड करोगे(१२)﴿४﴾ फिर जब उनमें पहली बार(१३) का वादा आया(१४) हमने तुमपर अपने बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले(१५) तो वो शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे(१६) और यह एक वादा था(१७) जिसे पूरा होना﴿५﴾ फिर हमने उनपर उलट कर तुम्हारा हमला कर दिया(१८) और तुमको मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जत्था बढ़ा दिया﴿६﴾

१७ - सूरए बनी इस्राईल - पहला रूकू

(१) सूरए बनी इस्राइल का नाम सुरए अस्रा और सूरए सुब्हान भी है. यह सूरत मक्की है मगर आठ आयतें व इन कादू ल-यफ़-तिन-नका से नसीरन तक, यह क़ौल क़तादा का है. मगर बैज़ावी का कहना है कि यह सूरत सारी की सारी मक्की है. इस सूरत में बारह रूकू और एक सौ दस आयतें बसरी हैं और कूफ़ी एक सौ ग्यारह और पांच सौ तैंतीस कलिमे और तीन हज़ार चार सौ साठ अक्षर हैं.

(२) पाक है उसकी ज़ात हर ऐब और दोष से.

(३) मेहबूब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(४) शबे मेअराज.

(५) जिसका फ़ासला चालीस मंज़िल यानी सवा महीने से ज़्यादा की राह है. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शबे मेअराज ऊंचे दर्जे और बलन्द रूत्बे पर बिराजमान हुए तो रब तआला ने ख़िताब फ़रमाया ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम यह फ़ज़ीलत और यह सम्मान मैंने तुम्हें क्यों अता फ़रमाया. अर्ज़ किया, इसलिये कि तूने मुझे अब्द यानी बन्दे की हैसियत से अपनी तरफ़ मन्सूब किया. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)

(६) दीनी भी, दुनियावी भी, कि वह पाक धर्ती, वही उतरने की जगह और नबियों की इबादत गाह और उनके ठहरने की जगह और इबादत का क़िबला है. और नहरों और दरख़्तों की बहुतात से वह ज़मीन हरी भरी तरो ताज़ा और मेवों और फलों की बहुतात से बेहतरीन आराम और राहत की जगह है. मेअराज शरीफ़ नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का एक बड़ा चमत्कार और अल्लाह तआला की भारी नेअमत है और इससे हुज़ूर का अल्लाह की बारगाह में वह कुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़ में आपके सिवा किसी को हासिल नहीं. नबुव्वत के बारहवें साल हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मेअराज से नवाज़े गए. महीने में इख़्तिलाफ़ है. मगर मशहूर यही है कि सत्ताईसवीं रजब को मेअराज हुई. मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूर पुरनूर का बैतुल मक़दिस तक रात के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना क़ुरआनी आयत से साबित है. इसका इन्कार करने वाला काफ़िर है. और आसमानों की सैर

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ﴿٧﴾ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ﴿٩﴾ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٠﴾ وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ

अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे(१९) और बुरा करोगे तो अपना, फिर जब दूसरी बार का वादा आया(२०) कि दुश्मन तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें(२१) और मस्जिद में दाख़िल हों(२२) जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे(२३) और जिस चीज़ पर क़ाबू पाएं(२४) तबाह करके बर्बाद कर दें ﴾७﴿ क़रीब है कि तुम्हारा रब तुमपर रहम करे(२५) और अगर तुम फिर शरारत करो(२६) तो हम फिर अज़ाब करेंगे(२७) और हमने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है ﴾८﴿ बेशक यह क़ुरआन वह राह दिखाता है जो सबसे सीधी है(२८) और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उनके लिये बड़ा सवाब है ﴾९﴿ और यह कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है ﴾१०﴿

दूसरा रूकू

और आदमी बुराई की दुआ करता है(१) जैसे भलाई मांगता है(२) और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है(३) ﴾११﴿ और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया(४) तो रात की निशानी मिटी हुई रखी(५) और दिन की निशानियाँ दिखाने वाली(६) कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो(७) और(८) बरसों की गिनती और हिसाब जानो(९) और हमने हर चीज़ ख़ूब अलग अलग ज़ाहिर फ़रमा दी(१०) ﴾१२﴿ और हर

और क़ुर्ब की मंज़िलों में पहुंचना सही हदीसों से साबित है जो हदे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं. इसका इन्कार करने वाला गुमराह है. मेअराज शरीफ़ बेदारी की हालत में जिस्म और रूह दोनों के साथ वाक़े हुई. इसी पर एहले इस्लाम की सर्वसम्मति है. और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा इसी को मानते हैं. क़ुरआनी आयतों और हदीसों से भी यही निष्कर्ष निकलता है. तीरा और माग़ान फ़ल्सफ़े के औहामे फ़ासिदा महज़ बातिल हैं. अल्लाह की क़ुदरत के मानने वाले के सामने वो सारे संदेह महज़ बेहक़ीक़त हैं. हज़रत जिब्रील का बुराक़ लेकर हाज़िर होना, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बेहद अदब और ऐहतिराम के साथ सवार करके ले जाना, बैतुल मक़दिस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नबियों की इमामत फ़रमाना, फिर वहाँ से आसमानों की सैर की तरफ़ मुतवज्जह होना, जिब्रीले अमीन का हर हर आसमान का दर्वाज़ा खुलवाना और हर हर आसमान पर वहाँ के साहिबे मक़ाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत करना और हुज़ूर का सम्मान करना, तशरीफ़ आवरी की मुबारक-बादें देना, हुज़ूर का एक आसमान से दूसरे आसमान की तरफ़ सैर फ़रमाना, वहाँ के चमत्कार देखना और तमाम मुक़र्रिबीन की आख़िरी मंज़िल सिद-रतुल-मुन्तहा को पहुंचना जहाँ से आगे बढ़ने की किसी बड़े से बड़े फ़रिश्ते की भी मजाल नहीं है. जिब्रीले अमीन का वहाँ मजबूरी ज़ाहिर करके रह जाना, फिर ख़ास क़ुर्ब के मक़ाम में हुज़ूर का तरक़्क़ियाँ फ़रमाना और उस अअला क़ुर्ब में पहुंचना कि जिसके तसव्वुर तक सृष्टि की सोचने और विचार करने की शक्ति नहीं पहुंच सकती, वहाँ अल्लाह की रहमत और करम का हासिल करना और इनआमों और अच्छी नेअमतों से नवाज़ा जाना और आसमान व ज़मीन के फ़रिश्तों और उनसे ज़्यादा इल्म पाना और उम्मत के लिये नमाज़ें फ़र्ज़ होना, हुज़ूर का शफ़ाअत फ़रमाना, जन्नत व दोज़ख़ की सैर और फिर वापस अपनी जगह तशरीफ़ लाना और इस वाक़ए की ख़बरें देना, काफ़िरों का उसपर आलोचना करना और बैतुल मक़दिस की इमारत का हाल और शाम प्रदेश जाने वाले क़ाफ़िलों की कैफ़ियत हुज़ूर अलैहिससलातो वस्सलाम से दरियाफ़्त करना, हुज़ूर का सब कुछ बताना और क़ाफ़िलों के आने पर उनकी पुष्टि होना, ये तमाम सहाबा की विश्वसनीय हदीसों से साबित है. और बहुत सी हदीसों में इन सारी बातों के बयान और उनकी तफ़सीलें आई हैं.

(७) यानी तौरात.

(८) किश्ती में.

(९) यानी नूह अलैहिस्सलाम बहुत शुक्र किया करते थे. जब कुछ खाते पीते पहनते तो अल्लाह तआला की हम्द यानी तअरीफ़ करते और उसका शुक्र बजा लाते और उनकी सन्तान पर लाज़िम है कि वह अपने इज़्ज़त वाले दादा के तरीक़े पर क़ायम रहे.

(१०) तौरात .

اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰی
بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ﴿۱۴﴾ مَنِ اهْتَدٰی فَاِنَّمَا
یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ
حَتّٰی نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً
اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا فَحَقَّ عَلَیْهَا الْقَوْلُ
فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ
مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰی بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا
بَصِیْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ
فِیْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ
یَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ
سَعٰی لَهَا سَعْیَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْیُهُمْ

इन्सान की क़िस्मत हमने उसके गले से लगा दी[११] और उसके लिये क़यामत के दिन एक नविश्ता (भाग्यपत्र) निकालेंगे जिसे खुला हुआ पाएगा[१२] ﴿१३﴾ फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (लेखा) पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है ﴿१४﴾ जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया,[१३] और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका[१४] और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[१५] और हम अज़ाब करने वाले नहीं जबतक रसूल न भेज लें[१६] ﴿१५﴾ और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उसके ख़ुशहालों[१७] पर एहकाम भेजते हैं फिर वो उसमें बेहुक्मी करते हैं तो उसपर बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह करके बर्बाद कर देते हैं ﴿१६﴾ और हमने कितनी ही संगतें (क़ौमें)[१८] नूह के बाद हलाक कर दीं[१९] और तुम्हारा रब काफी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला[२०] ﴿१७﴾ जो यह जल्दी वाली चाहे[२१] हम उसे उसमें जल्दी दे दें जो चाहें जिसे चाहें[२२] फिर उसके लिये जहन्नम करदें कि उसमें जाए मज़म्मत (निंदा) किया हुआ धक्के खाता ﴿१८﴾ और जो आख़िरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे[२३] और हो

(११) इससे ज़मीने शाम और बैतुल मक़दिस मुराद है और दो बार के फ़साद का बयान अगली आयत में आता है.
(१२) और ज़ुल्म और विद्रोह में जकड़ गए.
(१३) के फ़साद के अज़ाब.
(१४) और उन्होंने तौरात के आदेशों का विरोध किया और हराम कामों और गुनाहों में पड़ गए और हज़रत शोअया नबी अलैहिस्सलाम और एक क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अरमिया को क़त्ल किया. (बैज़ावी वग़ैरह)
(१५) बहुत ज़ोर और क़ुव्वत वाले, उनको तुमपर हावी किया और वो सन्जारीब और उसकी फ़ौजें हैं या बुख़्ते नसर या जालूत जिन्होंने बनी इस्राईल के उलमा को क़त्ल किया. तौरात को जलाया, मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उनमें से गिरफ़्तार किया.
(१६) कि तुम्हें लूटें और क़त्ल और क़ैद करें.
(१७) अज़ाब का, कि लाज़िम था.
(१८) जब तुम ने तौबह की और घमण्ड और फ़साद से बाज़ आए तो हमने तुमको दौलत दी और उनपर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुमपर मुसल्लत हो चुके थे.
(१९) तुम्हें उस भलाई का बदला मिलेगा.
(२०) और तुमने फिर फ़साद बरपा किया, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर तुले. अल्लाह तआला ने उन्हें बचाया और अपनी तरफ़ उठा लिया. और तुमने हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया अलैहुमस्सलाम को क़त्ल किया, तो अल्लाह तआला ने तुम पर फ़ारस और रूम वालों को मुसल्लत कर दिया कि तुम्हारे वो दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें या क़ैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें.
(२१) कि रंज और परेशानी के भाव तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों.
(२२) यानी बैतुल मक़दिस में और उसको वीरान करें.
(२३) और उसको वीरान किया था, तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त.
(२४) बनी इस्राईल के इलाक़ों से, उसको ----
(२५) दूसरी बार के बाद भी, अगर तुम दोबारा तौबह करो, और गुनाहों से बाज़ आओ.
(२६) तीसरी बार.
(२७) चुनांचे ऐसा ही हुआ, और उन्होंने फिर अपनी शरारत की तरफ़ पलटा खाया और मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पाक दौर में हुज़ुरे अक़दस को झुटलाया, तो क़यामत तक के लिये उनपर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसलमान उनपर मुसल्लत फ़रमा दिये गए, जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में यहूदियों की निस्बत आया "दुरिबत अलैहिमुज़ ज़िल्लतु "यानी उनपर

مَّشْكُوْرًا ⑲ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ
وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ⑳ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا
بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ
تَفْضِيْلًا ㉑ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ㉒ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيْمًا ㉓ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ㉔ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ
بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ㉕ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ㉖ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ
كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ㉗

मंज़िल ४

ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी[२४]《१९》 हम सबको मदद देते हैं उनको भी[२५] और उनको भी[२६] तुम्हारे रब की अता से[२७] और तुम्हारे रब की अता पर रोक नहीं[२८]《२०》 देखो हमने उनमें एक को एक पर कैसी बड़ाई दी[२९] और बेशक आख़िरत दर्जों में सब से बड़ी और फ़ज़्ल (इज़्ज़त) में सबसे अअला (उत्तम) है《२१》 ऐ सुनने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस[३०]《२२》

तीसरा रूकू

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने उनमें एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं[१] तो उनसे हूँ न कहना[२]《२३》 और उन्हें न झिड़कना और उनसे तअज़ीम (आदर) की बात कहना[३] और उनके लिये आजिज़ी (नम्रता) का बाज़ू बिछा[४] नर्म दिली से और अर्ज़ कर कि ऐ मेरे रब, तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला[५]《२४》 तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है[६] अगर तुम लायक़ हुए[७] तो बेशक वह तौबह करने वालों को बख़्शने वाला है《२५》 और रिश्तेदारों को उनका हक़ दे[८] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[९] और फ़ुज़ूल न उड़ा[१०]《२६》 बेशक उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं[११] और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है[१२]《२७》

जमा दी गई ख़्वारी - सूरए आले इमरान, आयत ११२)
(२८) वह अल्लाह की तौहीद और उसके रसूलों पर ईमान लाना और उनका अनुकरण करना है.

सूरए बनी इस्राईल - दूसरा रूकू

(१) अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और ग़ुस्से में आकर उन सबको कोसता है और उनके लिये बद दुआएं करता है.
(२) अगर अल्लाह तआला उसकी यह बद दुआ क़ुबूल करले तो वह शख़्स या उसके घर वाले और माल हलाक हो जाएं. लेकिन अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से उसको क़ुबूल नहीं फ़रमाता.
(३) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की बददुआ से उसका अज़ाब में जल्दी करना. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि नज़र बिन हारिस काफ़िर ने कहा, यारब अगर यह दीने इस्लाम तेरे नज़दीक सच्चा है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा, दर्दनाक अज़ाब भेज. अल्लाह तआला ने उसकी यह दुआ क़ुबूल कर ली और उसकी गर्दन मारी गई.
(४) अपनी वहदानियत और क़ुदरत पर दलील देने वाली.
(५) यानी रात को अंधेरा किया ताकि इसमें आराम किया जाए.
(६) रौशन, कि इसमें सब चीज़ें नज़र आएं.
(७) और रोज़ी की कमाई और मेहनत के काम आसानी से अंजाम दे सको.
(८) रात दिन के दौरे से.
(९) दीन और दुनिया के कामों के औक़ात.
(१०) चाहे उसकी ज़रूरत दीन में हो या दुनिया में. मतलब यह है कि हर चीज़ की तफ़सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद है **"मा फ़र्रतना फ़िल किताबे मिन शैइन"** यानी और हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा (सूरए अनआम, आयत ३८). और एक और आयत में इरशाद है :**"व नज़्ज़लना अलैकल किताबे तिब्यानल लिकुल्ले शैइन"** यानी और हमने तुमपर ये क़ुरआन उतारा

कि हर चीज़ का रौशन बयान है (सूरए नहल, आयत ८९). ग़रज़ इन आयतों से साबित है कि क़ुरआन शरीफ़ में सारी चीज़ों का बयान है. सुब्हानल्लाह ! क्या किताब है, कैसी इसकी सम्पूर्णता. (जुमल, ख़ाज़िन व मदारिक)
(११) यानी जो कुछ उसके लिये मुक़द्दर किया गया है, अच्छा या बुरा, ख़ुशनसीबी या बदनसीबी, वह उसको इस तरह लाज़िम है जैसे गले का हार, जहाँ जाए साथ रहे, कभी अलग न हो. मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उसकी सआदत यानी ख़ुशनसीबी या शक़ावत यानी बदक़िस्मती और हट धर्मी का लेखा डाल दिया जाता है.
(१२) वह उसका आमालनामा यानी कर्मों का लेखा होगा.
(१३) उसका सवाब वही पाएगा.
(१४) उसके बहकने का गुनाह और वबाल उसपर.
(१५) हर एक के गुनाहों का बोझ उसी पर होगा.
(१६) जो उम्मत को उसके कर्तव्यों से आगाह फ़रमाए और सीधी सच्ची राह उनको बता दे और हुज्जत क़ायम फ़रमाए.
(१७) और सरदारों...
(१८) यानी झुटलाने वाली उम्मतें.
(१९) आद, समूद वग़ैरह की तरह.
(२०) ज़ाहिर और बातिन का जानने वाला, उससे कुछ छुपाया नहीं जा सकता.
(२१) यानी दुनिया का तलबगार हो.
(२२) यह ज़रूरी नहीं कि दुनिया के तालिब की हर ख़्वाहिश पूरी की जाए और उसे दिया ही जाए और वह जो मांगे वही दिया जाए. ऐसा नहीं है, बल्कि उनमें से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं. कभी ऐसा होता है कि मेहरूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं. कभी ऐसा कि ऐश चाहता है, तकलीफ़ देते हैं. इन हालतों में काफ़िर दुनिया और आख़िरत के टोटे में रहा और अगर दुनिया में उसको उसकी मुराद देदी गई तो आख़िरत की बदनसीबी और शक़ावत जब भी है. इसके विपरीत मूमिन, जो आख़िरत का तलबगार है, अगर वह दुनिया में फ़क़्र से यानी दरिद्रता से भी बसर कर गया तो आख़िरत की हमेशा की नेअमत उसके लिये है. और अगर दुनिया में भी अल्लाह की कृपा से उसको ऐश मिला तो दोनों जगत में कामयाब, ग़रज़ मूमिन हर हाल में कामयाब है. और काफ़िर अगर दुनिया में आराम पा भी ले, तो भी क्या ? क्योंकि ---
(२३) और नेक अमल करे.
(२४) इस आयत से मालूम हुआ कि कर्म की मक़बूलियत के लिये तीन बातें ज़रूरी हैं, एक, नेक नियत, दूसरे कोशिश यानी अमल को उसके पूरे संस्कारों के साथ अदा करना, तीसरे ईमान जो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है.
(२५) जो दुनिया चाहते हैं.
(२६) जो आख़िरत के तलबगार हैं.
(२७) दुनिया में रोज़ी देते हैं और हर एक का अंजाम उसके हाल के अनुसार.
(२८) दुनिया में सब उससे फ़ैज़ उठाते हैं, अच्छे हों या बुरे.
(२९) माल व कमाल व शान शौकत और दौलत में.
(३०) दोस्त, साथी और मददगार के बिना.

सूरए बनी इस्राईल - तीसरा रूकू

(१) कमज़ोरी बढ़े, शरीर के अंगों में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उनके पास बेताक़त था ऐसे ही वो उम्र के आख़िर में तेरे पास कमज़ोर रह जाएं.
(२) यानी कोई ऐसा कलिमा ज़बान से न निकालना जिससे यह समझा जाए कि उनकी तरफ़ से तबीअत पर कुछ बोझ है.
(३) और बहुत ज़्यादा अदब के साथ उनसे बात करना. माँ बाप को उनका नाम लेकर न पुकारे, यह अदब के ख़िलाफ़ है. और इसमें उनके दिल दुखने का डर है. लेकिन वो सामने न हों तो उनका नाम लेकर ज़िक्र करना जायज़ है. माँ बाप से इस तरह कलाम करे जैसे ग़ुलाम और सेवक अपने मालिक से करता है.
(४) यानी विनम्रता और मेहरबानी और झुककर पेश आ और उनके साथ थके वक़्त में शफ़क़त व महब्बत का व्यवहार कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे प्यार दुलार से पाला था. और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वह उनपर ख़र्च करने में पीछे मत हट.
(५) मतलब यह है कि दुनिया में बेहतर सुलूक और ख़िदमत को कितना भी बढ़ाया चढ़ाया जाए, लेकिन माँ बाप के एहसान का हक़ अदा नहीं होता. इसलिये बन्दे को चाहिये कि अल्लाह की बारगाह में उनपर फ़ज़्ल व रहमत फ़रमाने की दुआ करे और अर्ज़ करे कि यारब मेरी ख़िदमतें उनके एहसान का बदला नहीं हो सकतीं, तू उनपर करम कर कि उनके एहसान का बदला हो. इस आयत से साबित हुआ कि मुसलमान के लिये रहमत और मग़फ़िरत की दुआ जायज़ और उसे फ़ायदा पहुंचाने वाली है. मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उनके लिये रहमत की दुआ होती है, लिहाज़ा इसके लिये यह आयत अस्ल है. माँ बाप काफ़िर हों तो उनके लिये हिदायत और ईमान की दुआ करे कि यही उनके हक़ में रहमत है. हदीस शरीफ़ में है कि माँ बाप की रज़ामन्दी में अल्लाह तआला की रज़ा

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿۳۳﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ

منزل ۴

और अगर तू उनसे[१३] मुंह फेरे अपने रब की रहमत के इन्तिज़ार में जिसकी तुझे उम्मीद है तो उनसे आसान बात कह[१४]﴿२८﴾ और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुआ थका हुआ[१५]﴿२९﴾ बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा देता और[१६] कसता है, बेशक वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता[१७] देखता है﴿३०﴾

चौथा रूकू

और अपनी औलाद को क़त्ल न करो मुफ़लिसी (दरिद्रता) के डर से[१] हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी, बेशक उनका क़त्ल बड़ी ख़ता है﴿३१﴾ और बदकारी के पास न जाओ बेशक वह बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह﴿३२﴾ और कोई जान जिसकी हुरमत (प्रतिष्ठा) अल्लाह ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़ मारा जाए तो बेशक हमने उसके वारिस को क़ाबू दिया है[२] तो वह क़त्ल में हद से न बढ़े[३] ज़रूर उसकी मदद होनी है[४]﴿३३﴾ और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सबसे भली है[५] यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंचे[६] और एहद पूरा करो[७] बेशक एहद से सवाल होना है﴿३४﴾ और नापो तो पूरा और बराबर तराज़ू से तोलो, यह बेहतर है और इसका

और उनकी नाराज़ी में अल्लाह तआला की नाराज़ी है. दूसरी हदीस में है, माँ बाप की आज्ञा का पालन करने वाला जहन्नमी न होगा और उनका नाफ़रमान कुछ भी अमल करे, अज़ाब में जकड़ा जाएगा. एक और हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया माँ बाप की नाफ़रमानी से बचो इसलिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और नाफ़रमान वह ख़ुश्बू न पाएगा. न सगे रिश्तों को तोड़ने वाला, न बूढ़ा बलात्कार, न घमण्ड से अपनी इज़ार टख़्नों से नीचे लटकाने वाला.

(६) माँ बाप की फ़रमाँबरदारी का इरादा और उनकी ख़िदमत का शौक़.

(७) और तुम से माँ बाप की ख़िदमत में कमी वाक़े हुई तो तुमने तौबह की.

(८) उनके साथ मेहरबानी करो और महब्बत और मेल जोल और ख़बरगीरी और मौक़े पर मदद और अच्छा सुलूक. और अगर वो मेहरमों में से हो और मोहताज हो जाएं तो उनका ख़र्च उठाना, यह भी उनका हक़ है. और मालदार रिश्तेदार पर लाज़िम है. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस आयत की तफ़सीर में कहा है कि रिश्तेदारों से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ रिश्ते रखने वाले मुराद हैं और उनका हक़ यानी पाँचवां हिस्सा देना और उनका आदर सत्कार करना है.

(९) उनका हक़ दो, यानी ज़कात.

(१०) यानी नाजायज़ काम में ख़र्च न कर . हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि "तबज़ीर" माल का नाहक़ में ख़र्च करना है.

(११) कि उनकी राह चलते हैं.

(१२) तो उसकी राह इख़्तियार करना न चाहिये.

(१३) यानी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से. यह आयत मेहजअ व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़ब्बाब सहाबए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में उतरी जो समय समय पर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अपनी ज़रूरतों की पूर्ति के लिये कुछ न कुछ मांगते रहते थे. अगर किसी वक़्त हुज़ूर के पास कुछ न होता तो आप हया से उनका सामना न करते और ख़ामोश हो जाते इस इन्तिज़ार में कि अल्लाह तआला कुछ भेजे तो उन्हें अता फ़रमाएं.

(१४) यानी उनकी ख़ुशदिली के लिये, उनसे वादा कीजिये या उनके हक़ में दुआ फ़रमाइये.

(१५) यह मिसाल है जिससे ख़र्च करने में मध्यमार्ग पर चलने की हिदायत मंज़ूर है और यह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिलकुल ख़र्च ही न करो और यह मालूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है, देने के लिये हिल ही नहीं सकता. ऐसा करना तो मलामत का कारण होता है कि कंजूस को सब बुरा कहते हैं. और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरतों से लिये भी कुछ बाक़ी न रहे. एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदी औरत ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सख़ावत का बयान

الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝ وَلَا تَقْفُ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ
كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُوْلًا ۝ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوْهًا ۝ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ۝ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۭ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا
نُفُوْرًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِـهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا
لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ۝ سُبْحٰنَهٗ وَ
تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ

منزل ٤

अंजाम अच्छा﴾३५﴿ और उस बात के पीछे न पड़ जिसका तुझे इल्म नहीं[८] बेशक कान और आँख और दिल इन सब से सवाल होना है[९]﴾३६﴿ और ज़मीन में इतराता न चल[१०] बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा[११]﴾३७﴿ यह जो कुछ गुज़रा इन में की बुरी बात तेरे रब को ना पसन्द है﴾३८﴿ यह उन वहियों (देव-वाणियों) में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ भेजीं हिकमत की बातें[१२] और ऐ सुन्ने वाले अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम में फेंका जाएगा तअने पाता धक्के खाता﴾३९﴿ क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिये फ़रिश्तों से बेटियां बनाईं[१३] बेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो[१४]﴾४०﴿

पाँचवां रूकू

और बेशक हमने इस क़ुरआन में तरह तरह से बयान फ़रमाया[१] कि वो समझें[२] और इससे उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत[३]﴾४१﴿ तुम फ़रमाओ अगर उसके साथ और ख़ुदा होते जैसा ये बकते हैं जब तो वो अर्श के मालिक की तरफ़ कोई राह ढूंड निकालते[४]﴾४२﴿ उसे पाकी और बरतरी उनकी बातों से बड़ी बरतरी﴾४३﴿ उसकी पाकी बोलते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं[५] और कोई चीज़ नहीं[६] जो उसे सराहती हुई उसकी

किया और उसमें इस हद तक बढ़ा चढ़ा कर कहा कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बढ़कर बता दिया और कहा कि हज़रत मूसा की सख़ावत इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरतों के अलावा जो कुछ भी उनके पास होता, मांगने वाले को देने से नहीं हिचकिचाते. यह बात मुसलमान बीबी को नागवार गुज़री और उन्होंने कहा कि सारे नबी बुज़ुर्गी व कमाल वाले हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उदारता और सख़ावत में कुछ संदेह नहीं, लेकिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दर्जा सबसे ऊंचा है और यह कहकर उन्होंने चाहा कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सख़ावत और करम की आज़माइश उस यहूदी औरत को कर दी जाए चुनांचे उन्होंने अपनी छोटी बच्ची को भेजा कि हुज़ूर से क़मीज़ माँग लाए. उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीज़ थी जो आप पहने हुए थे, वही उतार कर अता फ़रमा दी और आप ने मकान के अन्दर तशरीफ़ रखी, शर्म से बाहर न आए यहाँ तक कि अज़ान का वक़्त हो गया. अज़ान हुई. सहाबा ने इन्तिज़ार किया, हुज़ूर तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई. हाल मालूम करने के लिये सरकार के मुबारक मकान में हाज़िर हुए तो देखा कि पाक बदन पर क़मीज़ नहीं है. इसपर यह आयत उतरी.

(१६) जिसे चाहे उसके लिये तंगी करता और उसको.

(१७) और उनकी हालतों और मसलिहतों को.

सूरए बनी इस्राईल - चौथा रूकू

(१) जिहालत के दौर में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इसके कई कारण थे. नादारी व मुफ़लिसी क डर, लूट का ख़ौफ़. अल्लाह तआला ने इसको मना फ़रमाया.

(२) क़िसास लेने का . आयत से साबित हुआ कि क़िसास लेने का हक़ वली को है और वह ख़ून के रिश्ते के हिसाब से हैं. और जिसका वली न हो उसका वली सुल्तान है.

(३) और जिहालत के ज़माने की तरह एक मक़्तूल के बदले में कई कई को या बजाए क़ातिल के उसकी क़ौम और जमाअत के और किसी व्यक्ति को क़त्ल न करे.

(४) यानी वली की या मक़्तूले मज़लूम की या उस शख़्स की जिसको वली नाहक़ क़त्ल करे.

(५) वह यह है कि उसकी हिफ़ाज़त करो और उसको बढ़ाओ.

(६) और वह अठारह साल की उम्र है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हा के नज़दीक यही मुख़्तार है और हज़रत इमामे आज़म

السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِیْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَبَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿۴۵﴾ وَّ جَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓی اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿۴۶﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا یَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ یَسْتَمِعُوْنَ اِلَیْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓی اِذْ یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَبِیْلًا ﴿۴۸﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِیْدًا ﴿۴۹﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِیْدًا ﴿۵۰﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا یَكْبُرُ فِیْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَیَقُوْلُوْنَ مَنْ یُّعِیْدُنَا ؕ

الربع

पाकी न बोले[७] हाँ तुम उनकी तस्बीह नहीं समझते[८] बेशक वह हिल्म (सहिष्णुता) वाला बख़्शने वाला है[९] ﴿४४﴾ और ऐ मेहबूब तुमने क़ुरआन पढ़ा हमने तुम पर और उनमें कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुआ पर्दा कर दिया[१०] ﴿४५﴾ और हमने उनके दिलों पर ग़िलाफ़ (पर्दे) डाल दिये हैं कि उसे न समझें और उनके कानों में टैंट[११] और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की याद करते हो वो पीठ फेरकर भागते हैं नफ़रत करते ﴿४६﴾ हम ख़ूब जानते हैं जिस लिये वो सुनते हैं[१२] जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मशवरा करते हैं जब कि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द के जिस पर जादू हुआ[१३] ﴿४७﴾ देखो उन्होंने तुम्हें कैसी तशबीहें (उपमाएं) दीं तो गुमराह हुए कि राह नहीं पा सकते ﴿४८﴾ और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे क्या सच मुच नए बनकर उठेंगे[१४] ﴿४९﴾ तुम फ़रमाओ कि पत्थर या लोहा हो जाओ ﴿५०﴾ या और कोई मख़लूक़ (प्राणीवर्ग) जो तुम्हारे ख़याल में बड़ी हो[१५] तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा, तुम फ़रमाओ वही

अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने अलामात ज़ाहिर न होने की हालत में बालिग़ होने की मुद्दत की इन्तिहा अठारह साल क़रार दी. (अहमदी)

(७) अल्लाह का भी, बन्दों का भी.

(८) यानी जिस चीज़ को देखा न हो उसे न कहो कि मैं ने देखा . जिसको सुना न हो उसकी निस्बत यह न कहो कि मैं ने सुना. इब्ने हनीफ़ा से मन्क़ूल है कि झूटी गवाही न दो . इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा कहते हैं किसी पर वह इल्ज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो.

(९) कि तुमने उनसे क्या काम लिया.

(१०) घमण्ड और अपनी शान दिखाने से.

(११) मानी ये हैं कि घमण्ड और झूटी शान दिखाने से कुछ लाभ नहीं.

(१२) जिनकी सच्चाई पर अक़्ल गवाही दे और उनसे नफ़्स की दुरूस्ती हो, उनकी रिआयत या उनका ख़याल रखना लाज़िम है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इन आयतों का निष्कर्ष तौहीद और बेरग़बती और आख़िरत की तरफ़ रग़बत दिलाना है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया ये अठारह आयतें **"ला तजअल मअल्लाहे इलाहन आख़रा"** से **"मदहूरा"** तक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तख़्तियों में थीं. इनकी शुरूआत तौहीद के हुक्म से हुई और अन्त शिर्क की मुमानिअत पर. इससे मालूम हुआ कि हर हिकमत की बुनियाद तौहीद और ईमान है और कोई क़ौल और अमल इसके बिना क़ुबूल नहीं.

(१३) यह हिकमत के ख़िलाफ़ बात किस तरह कहते हो.

(१४) कि अल्लाह तआला के लिये औलाद साबित करते हो जो जिस्म की विशेषता से है और अल्लाह तआला इससे पाक. फिर उसमें भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हो और उसके लिये बेटियाँ बताते हो. कितनी बेअदबी और गुस्ताख़ी है.

सूरए बनी इस्राईल - पाँचवां रूकू

(१) दलीलों से भी, मिसालों से भी, हिकमतों से भी, इबरतों से भी और जगह जगह इस मज़मून को तरह तरह से बयान फ़रमाया.

(२) और नसीहत हासिल करें.

(३) और सच्चाई से दूरी.

(४) और उससे मुक़ाबला करते, जैसा बादशाहों का तरीक़ा है.

قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ
رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ
قَرِيْبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ تَظُنُّوْنَ
اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ
اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝ وَ رَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ
اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَ لَا تَحْوِيْلًا ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ
الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَ يَخَافُوْنَ

जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, तो अब तुम्हारी तरफ़ मसख़रगी (ठठोल) से सर हिलाकर कहेंगे यह कब है[१६] तुम फ़रमाओ शायद नज़दीक ही हो (५१) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा[१७] तो तुम उसकी हम्द करते चले आओगे[१८] और समझोगे कि न रहे थे[१९] मगर थोड़ा (५२)

छटा रूकू

और मेरे[१] बन्दों से फ़रमाओ[२] वह बात कहें जो सबसे अच्छी हो[३] बेशक शैतान उनके आपस में फ़साद डाल देता है, बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है (५३) तुम्हारा रब तुन्हें ख़ूब जानता है वह चाहे तो तुम पर रहम करे[४] चाहे तो तुम्हें अज़ाब करे, और हमने तुमको उनपर करोड़ा बना कर न भेजा[५] (५४) और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं[६] और बेशक हमने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी[७] और दाऊद को ज़ुबूर अता फ़रमाई[८] (५५) तुम फ़रमओ पुकारो उन्हें जिनको अल्लाह के सिवा गुमान करते हो तो वो इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने और न फेर देने का[९] (५६) वो मक़बूल (प्रिय) बन्दे जिन्हें ये काफ़िर पूजते हैं[१०] वो आप ही अपने रब की तरफ़ वसीला (आश्रय) ढूंडते हैं कि उनमें कौन ज़्यादा मुक़र्रब (समीपस्थ) है[११] उसकी रहमत की

(५) अपने अस्तित्व की ज़बान से, इस तरह कि उनके बुजूद बनाने वाले की क़ुदरत और हिकमत के प्रमाण हैं. या बोलती ज़बान से, और यही सही है. बहुत सी हदीसों में इसी तरह आया है और बुज़ुर्गो ने भी यही बताया है.

(६) पत्थर, सब्ज़ा (वनस्पति) और जानदार.

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया हर ज़िन्दा चीज़ अल्लाह तआला की तस्बीह करती है और हर चीज़ की ज़िन्दगी उसकी हैसियत के अनुसार है. मुफ़स्सिरों ने कहा कि दर्वाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़ना यह भी तस्बीह करना है और इन सब की तस्बीह "सुब्हानल्लाहे व बिहम्दिही" है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हु से मन्क़ूल है. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी होते हमने देखे और यह भी हमने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह करता था (बुख़ारी शरीफ़) हदीस शरीफ़ में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मैं उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मेरी नबुव्वत के ज़माने में मुझे सलाम करता थ. (मुस्लिम शरीफ़) इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लकड़ी के एक सुतून से तकिया फ़रमा कर ख़ुतबा दिया करते थे. जब मिम्बर बनाया गया और हुज़ूर उसपर जलवा अफ़रोज़ हुए तो वह सुतून रोया. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसपर मेहरबानी का हाथ फेरा और शफ़क़त फ़रमाई और तस्कीन दी (बुख़ारी शरीफ़). इन सारी हदीसों से बेजान चीज़ों का कलाम और तस्बीह करना साबित हुआ.

(८) ज़बानों की भिन्नता या अलग अलग होने के कारण या उनके मानी समझने में दुशवारी की वजह से.

(९) कि बन्दों की ग़फ़लत पर अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता.

(१०) कि वो आपको न देख सकें . जब आयत **"तब्बत यदा"** उतरी तो अबू लहब की औरत पत्थर लेकर आई. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो अन्हु के साथ तशरीफ़ रखते थे. उसने हुज़ूर को न देखा और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हु से कहने लगी, तुम्हारे आक़ा कहां हैं, मुझे मालूम हुआ है उन्हों ने मेरी बुराई की है. हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया, वो कविता नहीं करते हैं. तो वह यह कहती हुई वापस हुई कि मैं उनका सर कुचलने के लिये यह पत्थर लाई थी. हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हु ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि उसने हुज़ूर को देखा नहीं. फ़रमाया, मेरे और उसके बीच एक फ़रिश्ता खड़ा रहा. इस घटना के बारे में यह आयत उतरी.

(११) बोझ, जिसके कारण वो क़ुरआन नहीं सुनते.

(१२) यानी सुनते भी हैं तो ठट्ठा करने और झुटलाने के लिये.

(१३) तो उनमें से कुछ आपको पागल कहते हैं, कुछ जादूगर, कुछ तांत्रिक, कुछ शायर.

(१४) यह बात उन्होंने बड़े आश्चर्य से कही और मरने और ख़ाक में मिल जाने के बाद ज़िन्दा किये जाने को उन्हों ने बहुत दूर

عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ۝ وَاِنْ مِّنْ
قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا
عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا
الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ
وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ
رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ
اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ
وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ
ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ
كَرَّمْتَ عَلَىَّ ٘ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ
ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

उम्मीद रखते और उसके अज़ाब से डरते हैं[१२] बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब डर की चीज़ है﴾५७﴿ और कोई बस्ती नहीं मगर यह कि हम उसे क़यामत के रोज़ से पहले नेस्त कर देंगे या उसे सख़्त अज़ाब देंगे[१३] यह किताब में[१४] लिखा हुआ है﴾५८﴿ और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूंही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुटलाया,[१५] और हमने समूद को[१६] नाक़ा(ऊंटनी) दिया आँखें खोलने को[१७] तो उन्होंने उसपर ज़ुल्म किया[१८] और हम ऐसी निशानियां नहीं भेजते मगर डराने को[१९]﴾५९﴿ और जब हमने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में हैं[२०] और हमने न किया वह दिखावा[२१] जो तुम्हें दिखाया था[२२] मगर लोगों की आज़माइश(परीक्षा) को[२३] और वह पेड़ जिस पर क़ुरआन में लअनत है[२४] और हम उन्हें डराते हैं[२५] तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर सरकशी (नाफ़रमानी)﴾६०﴿

सातवाँ रूकू

और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो[१] तो उन सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के, बोला क्या मैं इसे सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया﴾६१﴿ बोला[२] देख तो जो यह तूने मुझसे इज़्ज़त वाला रखा[३] अगर तूने मुझे क़यामत तक मुहलत दी तो ज़रूर मैं उसकी औलाद को पीस डालूंगा[४] मगर थोड़ा[५]﴾६२﴿ फ़रमाया दूर हो[६] तो उनमें जो तेरे कहने पर चलेगा तो बेशक सब

समझा. अल्लाह तआला ने उनका रद किया और अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इरशाद फ़रमाया.

(१५) और ज़िन्दगी से दूर हो. जान उससे कभी न जुड़ी हो तो भी अल्लाह तआला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली हालत की तरफ़ वापस फ़रमाएगा. तो फिर हड्डियाँ और इस जिस्म के ज़र्रों का क्या कहना, उन्हें ज़िन्दा करना उसकी क़ुदरत से क्या दूर है. उनसे तो जान पहले जुड़ी रह चुकी है.

(१६) यानी क़यामत कब क़ायम होगी और मुर्दे कब उठाए जाएंगे.

(१७) क़ब्रों से क़यामत के मैदान की तरफ़.

(१८) अपने सरों से मिट्टी झाड़ते और **"सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका"** कहते और यह इक़रार करते कि अल्लाह ही पैदा करने वाला है, मरने के बाद उठाने वाला है.

(१९) दुनिया में या क़ब्रों में.

सूरए बनी इस्राईल - छटा रूकू

(१) ईमानदार.

(२) कि वो काफ़िरों से ---

(३) नर्म हो या पाकीज़ा हो, अदब और सभ्यता की हो, नेकी और हिदायत की हो. काफ़िर अगर बेहूदगी करें तो उनका जवाब उनके ही अन्दाज़ में न दिया जाए. मुश्रिक मुसलमानों के साथ बदकलामी करते और उन्हें कष्ट देते थे. उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इसकी शिकायत की, इसपर यह आयत उतरी. और मुसलमानों को बताया गया कि वो काफ़िरों की जिहालत वाली बातों का वैसा ही जवाब न दें, सब्र करें और "अल्लाह तुम्हें हिदायत दे" कह दिया करें. यह हुक्म जिहाद और क़िताल के हुक्म से पहले था, बाद को मन्सूख़ या स्थगित हो गया. इरशाद फ़रमाया गया **"या अय्युहन नबिय्यो जाहिदिल कुफ़्फ़ारा वल मुनाफ़िक़ीना वग़लुज़ अलैहिम"** यानी ऐ ग़ैब की ख़बर देने वाले (नबी), जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर और उनपर सख़्ती करो. (सूरए तौबह, आयत ७३) और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. एक काफ़िर ने उनकी शान में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था. अल्लाह तआला ने उन्हें सब्र करने और माफ़ फ़रमाने का हुक्म फ़रमाया.

(४) और तुम्हें तौबह और ईमान की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए.

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ
اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ
رَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىْ يُزْجِىْ
لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ
تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَ
كَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ
الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى
فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ
ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿۶۹﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا

का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा ﴾६३﴿ और डिगा दे उनमें से जिसपर क़ुदरत पाए अपनी आवाज़ से[७] और प्यादों का[८] और उनका साझी हो मालों और बच्चों में[९] और उन्हें वादा दे[१०] और शैतान उन्हें वादा नहीं देता मगर धोखे से ﴾६४﴿ बेशक जो मेरे बन्दे हैं[११] उनपर तेरा कुछ क़ाबू नहीं, और तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को[१२] ﴾६५﴿ तुम्हारा रब वह है कि तुम्हारे लिये दरिया में किश्ती रवाँ (प्रवाहित) करता है कि[१३] तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो, बेशक वह तुमपर मेहरबान है. ﴾६६﴿ और जब तुम्हें दरिया में मुसीबत पहुंचती है[१४] तो उसके सिवा जिन्हें पूजते हैं सब गुम हो जाते हैं[१५] फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ निजात देता है तो मुंह फेर लेते हो[१६] और आदमी बड़ा नाशुक्रा है ﴾६७﴿ क्या तुम[१७] इससे निडर हुए कि वह ख़ुश्की ही का कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे[१८] या तुमपर पथराव भेजे[१९] फिर अपना कोई हिमायती न पाओ[२०] ﴾६८﴿ या इससे निडर हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुमपर जहाज़ तोड़ने वाली आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि उसपर हमारा पीछा कर[२१] ﴾६९﴿ और बेशक हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी[२२] और

(५) कि तुम उनके कर्मों के ज़िम्मेदार होते.

(६) सब की हालतों को और इसको कि कौन किस लायक़ है.

(७) ख़ास बुज़ुर्गियों के साथ जैसे कि हज़रत इब्राहीम को ख़लील किया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलीम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हबीब.

(८) ज़ुबूर अल्लाह की किताब है जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर उतरी. इसमें एक सौ पचास सूरतें हैं. सब में दुआ और अल्लाह तआला की तारीफ़ और हम्द और बड़ाई है. न इसमें हलाल व हराम का बयान, न फ़रायज़, न हुदूद व एहकाम. इस आयत में ख़ास तौर से हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का नाम लेकर ज़िक्र फ़रमाया गया. मुफ़स्सिरों ने इसके कुछ कारण बयान किये हैं. एक यह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि नबियों में अल्लाह तआला ने कुछ को कुछ पर बुज़ुर्गी दी फिर इरशाद किया कि हज़रत दाऊद को ज़ुबूर अता की जबकि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को नबुव्वत के साथ मुल्क भी अता किया था लेकिन उसका ज़िक्र न फ़रमाया. इसमें तम्बीह है कि आयत में जिस बुज़ुर्गी का ज़िक्र है वह इल्म की बुज़ुर्गी है न कि राजपाट और दौलत की. दूसरी वजह यह है कि अल्लाह तआला ने ज़ुबूर में फ़रमाया है कि मुहम्मद ख़ातिमुल अम्बिया हैं और उनकी उम्मत सब उम्मतों से बेहतर. इसी वजह से आयत में हज़रत दाऊद और ज़ुबूर का ज़िक्र ख़ास तरीक़े पर फ़रमाया गया. तीसरी वजह यह है कि यहूदियों का गुमान था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद कोई नबी नहीं और तौरात के बाद कोई किताब नहीं. इस आयत में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ज़ुबुर अता फ़रमाने का ज़िक्र करके यहूदियों को झुटला दिया गया और उनके दावे को ग़लत साबित कर दिया गया. ग़रज़ कि यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सबसे ज़्यादा बुज़ुर्गी और महानता साबित करती है.

(९) काफ़िर जब सख़्त क़हत में गिरफ़्तार हुए और नौबत यहाँ तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में फ़रियाद लाए और आपसे दुआ की प्रार्थना की. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वो तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वो तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यों उन्हें मअबूद बनाते हो.

(१०) जैसे कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते. इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया यह आयत अरबों की एक जमाअत के बारे में उतरी जो जिन्नों के एक समूह को पूजते थे. वो जिन्नात इस्लाम ले आए और उनके पूजने वालों को ख़बर न हुई. अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उन्हें शर्म दिलाई.

(११) ताकि जो सबसे ज़्यादा क़रीब और प्यारा हो उसको वसीला बनाएं. इससे मालूम हुआ कि प्यारे और क़रीबी बन्दों को अल्लाह की बारगाह में वसीला बनाना जायज़ और अल्लाह के मक़बूल बन्दों का तरीक़ा है.

(१२) काफ़िर उन्हें किस तरह मअबूद समझते हैं.

بَنِیْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِیْلًا ۝٧٠ یَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ یَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ۝٧١ وَمَنْ كَانَ فِیْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰی فَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ اَعْمٰی وَاَضَلُّ سَبِیْلًا ۝٧٢ وَاِنْ كَادُوْا لَیَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ لِتَفْتَرِیَ عَلَیْنَا غَیْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِیْلًا ۝٧٣ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَیْهِمْ شَیْـًٔا قَلِیْلًا ۝٧٤ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَیٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَیْنَا نَصِیْرًا ۝٧٥ وَاِنْ كَادُوْا لَیَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِیُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا یَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِیْلًا ۝٧٦ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

उनको ख़ुश्की और तरी में[२३] सवार किया और उनको सुथरी चीज़ें रोज़ी दीं[२४] और उनको अपनी बहुत मख़लूक़ से अफ़ज़ल किया[२५]﴾७०﴿

आठवाँ रूकू

जिस दिन हम हर जमाअत को उसके इमाम के साथ बुलाएंगे[१] तो जो अपना नामा (कर्मलेखा) दाएं हाथ में दिया गया ये लोग अपना नामा पढ़ेंगे[२] और तागे भर उनका हक़ न दिया जाएगा[३]﴾७१﴿ और जो इस ज़िन्दगी में[४] अंधा हो वह आख़िरत में अंधा है[५] और भी ज़्यादा गुमराह﴾७२﴿ और वह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़ज़िश (डगमगाहट) देते हमारी वही से जो हमने तुमको भेजी किं तुम हमारी तरफ़ कुछ और निस्बत करदो और ऐसा होता तो वो तुमको अपना गहरा दोस्त बना लेते[६]﴾७३﴿ और अगर हम तुम्हें[७] अडिग न रखते तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते﴾७४﴿ और ऐसा होता तो हम तुमको दूनी उम्र और दोचन्द (दूनी) मौत[८] का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते﴾७५﴿ और बेशक क़रीब था कि वो तुम्हें इस ज़मीन से[९] डिगा दें कि तुम्हें इससे बाहर करदें और ऐसा होता तो वो तुम्हारे पीछे न ठहरते मगर थोड़ा[१०]﴾७६﴿ दस्तूर उनका जो हमने तुमसे पहले रसूल भेजे[११] और तुम हमारा

(१३) क़त्ल वग़ैरह के साथ जब वो कुफ़्र करें और गुनाहों में मुब्तिला हों. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो अल्लाह तआला उसकी हलाकत का हुक्म देता है.

(१४) लौहे मेहफ़ूज़ में.

(१५) इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मक्का वालों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि सफ़ा पहाड़ को सोना कर दें और पहाड़ों को मक्का की धरती से हटा दें. इसपर अल्लाह तआला ने अपने हबीब को वही फ़रमाई कि आप फ़रमाएं तो आपकी उम्मत को मोहलत दी जाए और अगर आप फ़रमाएं तो जो उन्हों ने तलब किया है वह पूरा किया जाए लेकिन अगर फिर भी वो ईमान न लाए तो उनको हलाक करके नेस्त-नाबूद कर दिया जाएगा, इस लिये कि हमारी सुन्नत यही है कि जब कोई क़ौम निशानी मांगे और फिर ईमान न लाए तो हम उसे हलाक कर देते हैं और मोहलत नहीं देते. ऐसा ही हमने पहलों के साथ किया है. इसी बयान में यह आयत उतरी.

(१६) उनकी तलब के अनुसार.

(१७) यानी ख़ुली और साफ़ हुज्जत या तर्क.

(१८) और कुफ़्र किया कि उसके अल्लाह की तरफ़ से होने से इन्कारी हो गए.

(१९) जल्द आने वाले अज़ाब स.

(२०) उसकी क़ुदरत के तहत, तो आप तबलीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये, अल्लाह आप का निगहबान है.

(२१) यानी अल्लाह की निशानियों के चमत्कारों का निरीक्षण.

(२२) मेअराज की रात, जागने की हालत में.

(२३) यानी मक्का की. चुनांचे जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें मेअराज की ख़बर दी तो उन्होंने उसे झुटलाया और कुछ इस्लाम से फिर गए और हंसी बनाने के अन्दाज़ में बैतुल मक़दिस का नक़्शा पूछने लगे. हुज़ूर ने सारा नक़्शा बता दिया तो इसपर काफ़िर आपको जादूगर कहने लगे.

(२४) यानी ज़क्क़ूम दरख़्त जो जहन्नम में पैदा होता है. उसको आज़माइश का कारण बना दिया. यहां तक कि अबू जहल ने कहा कि मुहम्मद तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वह पत्थरों को जला देगी फिर यह भी कहते हैं कि उसमें दरख़्त उगेंगे. आग में दरख़्त कहाँ रह सकता है. यह ऐतिराज़ उन्होंने किया और अल्लाह की क़ुदरत से ग़ाफ़िल रहे, यह न समझे कि उस क़ुदरत और इख़्तियार वाले की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना कुछ असंभव नहीं. समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता, आग ही में रहता है. तुर्क इलाक़ों में उसके ऊन की

तौलियाँ बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जाती थीं और जलती न थीं. शुतुर मुर्ग़ अंगारे खा जाता है. अल्लाह की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना क्या दूर है.
(२५) दीन और दुनिया के ख़ौफ़नाक कामों से.

सूरए बनी इस्राईल - सातवाँ रूकू

(१) तहिय्यत का यानी आदर और तअज़ीम का.
(२) शैतान.
(३) और इसको मुझपर बुज़ुर्गी दी और इसको सज्दा कराया तो मैं क़सम खाता हूँ कि ----
(४) गुमराह करके.
(५) जिन्हें अल्लाह बचाए और मेहफ़ूज़ रखे वो उसके मुख़्लिस बन्दे हैं. शैतान के इस कलाम पर अल्लाह तआला ने उससे.
(६) तुझे पहले सूर फूंके जाने तक मोहलत दी गई.
(७) वसवसे डाल कर और गुनाह की तरफ़ बुलाकर. कुछ उलमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद गाने बजाने, खेल तमाशे की आवाज़ें हैं. इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो आवाज़ अल्लाह तआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वह शैतानी आवाज़ है.
(८) यानी अपने सब छल पूरे कर ले और अपने सारे लश्करों से मदद ले.
(९) ज़ुजाज ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में, इब्लीस उसमें शरीक है जैसे कि सूद और माल हासिल करने के दूसरे हराम तरीक़े और फ़िस्क़ और ममनूआत में ख़र्च करना और ज़कात न देना, ये माली काम हैं जिनमें शैतान की शिरकत है और ज़िना और नाजायज़ तरीक़े से औलाद हासिल करना, ये औलाद में शैतान की हिस्सेदारी है.
(१०) अपनी ताअत या अनुकरण पर.
(११) नेक मुख़्लिस नबी और बुज़ुर्गी और अच्छाई वाले लोग.
(१२) उन्हें तुझ से मेहफ़ूज़ रखेगा और शैतानी विचार और वसवसों को दूर फ़रमाएगा.
(१३) उनमें व्यापार के लिये सफ़र करके.
(१४) और डूबने का भय होता है.
(१५) और उन झूटे मअबूदों में से किसी का नाम ज़बान पर नहीं आता. उस वक़्त अल्लाह तआला से हाजतरवाई चाहते हैं.
(१६) उसकी तौहीद से, और फिर उन्हीं नाकारा बुतों की पूजा शुरू कर देते हो.
(१७) दरिया से छुटकारा पाकर.
(१८) जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था. मक़सद यह है कि ख़ुश्की और तरी, सब उसकी क़ुदरत के अन्तर्गत हैं. जैसा वह समन्दर में डुबाने और बचाने दोनों में समक्ष है, ऐसा ही ख़ुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और मेहफ़ूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है. ख़ुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उसकी रहमत का मोहताज है. वह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और यह भी क्षमता रखता है कि -
----
(१९) जैसा क़ौमे लूत पर भेजा था.
(२०) जो तुम्हें बचा सके.
(२१) और हमसे पूछ सके कि हमने ऐसा क्यों किया, क्योंकि हम क़ुदरत और इख़्तियार वाले हैं, जो चाहते हैं करते हैं, हमारे काम में कोई दख़्ल देने वाला और दम मारने वाला नहीं.
(२२) अक़्ल व इल्म, बोलने की शक्ति, पाकीज़ा सूरत, अच्छा रंग रूप, और रोज़ी रोटी कमाने की युक्तियाँ और सारी चीज़ों पर क़ाबू और क़ब्ज़ा अता फ़रमाकर और इसके अलावा और बहुत सी बुज़ुर्गी देकर.
(२३) जानवरों और दूसरी सवारियों और किश्तियों और जहाज़ों इत्यादि में.
(२४) मज़ेदार और उमदा, हर तरह की गिज़ाएं, ख़ूब अच्छी तरह पकी हुई, क्योंकि इन्सान के सिवा सब जानवरों में पकी हुई गिज़ा और किसी की ख़ुराक नहीं.
(२५) हसन का क़ौल है कि 'बहुत मख़्लूक़' से कुल सृष्टि मुराद है. और बहुत का शब्द कुल के मानी में बोला जाता है. क़ुरआने करीम में भी इरशाद हुआ ''व अक्सरूहुम काज़िबूना'' यानी उनमें से बहुत से झूटे हैं (सूरए शुअरा, आयत २२३) और 'मा यत्तबिअ अक्सरुहुम इल्ला ज़न्ना'' यानी और उनमें अक्सर तो नहीं चलते मगर गुमान पर (सूरए यूनुस, आयत ३६), में ''अक्सर'' यानी बहुत शब्द कुल के अर्थ में है. लिहाज़ा इसमें फ़रिश्ते भी दाख़िल हैं और आदमियों में से सर्वोत्तम यानी नबी ख़ास फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं और आदमियों में से नेक और अच्छे लोग आम फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं. हदीस शरीफ़ में है कि मूमिन अल्लाह के नज़्दीक फ़रिश्तों से ज़्यादा बुज़ुर्गी रखता है. वजह यह है कि फ़रिश्ते ताअत पर मजबूर हैं यही उनकी सृष्टि है, उनमें अक़्ल है, वासना नहीं और जानवरों में शहवत है अक़्ल नहीं और आदमी अक़्ल और शहवत दोनों रखता है. तो जिसने अक़्ल को वासना या शहवत पर ग़ालिब किया

تَحْوِيلًا ۝ أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝ وَقُل رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلْطٰنًا نَّصِيرًا ۝ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبٰطِلُ ۚ إِنَّ الْبٰطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظّٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسٰنِ أَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوسًا ۝ قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدٰى سَبِيلًا ۝ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

منزل ۴

क़ानून बदलता न पाओगे(७७)

नवाँ रूकू

नमाज़ क़ायम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक[१] और सुबह का क़ुरआन[२] बेशक सुबह के क़ुरआन में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं[३](७८) और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद करो यह ख़ास तुम्हारे लिये ज़्यादा है[४] क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द(स्तुति) करें[५](७९) और यूं अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर ले जा[६] और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लबा दे[७](८०) और फ़रमओ कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया[८] बेशक बातिल(असत्य) को मिटना ही था[९](८१) और हम क़ुरआन में उतारते हैं वह चीज़[१०] जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रहमत है[११] और उससे ज़ालिमों को[१२] नुक़सान ही बढ़ता है(८२) और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं[१३] मुंह फेर लेता है और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है[१४] और जब उसे बुराई पहुंचे[१५] तो नाउम्मीद हो जाता है[१६](८३) तुम फ़रमाओ सब अपने कैंडे पर काम करते हैं[१७] तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़्यादा राह पर है(८४)

दसवाँ रूकू

और तुम से रूह को पूछते हैं, तुम फ़रमाओ, रूह मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इल्म न मिला मगर थोड़ा[१](८५)

वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है और जिसने शहवत को अक़्ल पर ग़ालिब किया वह जानवरों से गया गुज़रा है.

सूरए बनी इस्राईल - आठवाँ रूकू

(१) जिसका दुनिया में वह अनुकरण करता था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, इससे वह इमामे ज़माँ मुराद है जिसकी दावत पर दुनिया में लोग चले, चाहे उसने हक़ की तरफ़ बुलाया हो या बातिल की तरफ़. हासिल यह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जमा होगी, जिसके हुक्म पर दुनिया में चलती रही उन्हें उसीके नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़लाँ के अनुयाइयों !

(२) नेक लोग जो दुनिया में नज़र वाले थे और सीधी राह पर रहे, उनको उनका कर्म लेखा या नामए आमाल दाएं हाथ में दिया जाएगा. वो उसमें नेकियाँ और ताअतें देखेंगे तो उसको ज़ौक़-शौक़ से पढ़ेंगे और जो बदबख़्त हैं, काफ़िर हैं, उनके नामए अअमाल बाएं हाथ में दिये जाएंगे. वो उन्हें देखकर शर्मिन्दा होंगे और दहशत से पूरी तरह पढ़ न पाएंगे.

(३) यानी कर्मों के सवाब में उनसे ज़रा सी भी कमी न की जाएगी.

(४) दुनिया की, हक़ के देखने से.

(५) निजात की राह से मानी ये हैं कि जो दुनिया में काफ़िर गुमराह है, वह आख़िरत में अंधा होगा क्योंकि दुनिया में तौबह मक़बूल है और आख़िरत में तौबह मक़बूल नहा.

(६) सक़ीफ़ का एक प्रतिनिधि मण्डल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास आकर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मान लें तो हम आपकी बैअत कर लें. एक तो यह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं यानी रूकू सज्दा न करेंगे. दूसरे यह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे. तीसरे यह कि लात को पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उससे नफ़ा उठा लें कि उसके पूजने वाले जो चढ़ावे लाएं, उनको वुसूल कर लें. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिसमें रूकू और सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की बाबत तुम्हारी मर्ज़ी और लात उज़्ज़ा से फ़ायदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा. वो कहने लगे,

हम चाहते हैं कि आपकी तरफ़ से हमें ऐसा सम्मान मिले जो दूसरों को न मिला हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें. इसमें अगर आपको आशंका हो कि अरब शिकायत करेंगे तो आप उनसे कह दीजियेगा कि अल्लाह का हुक्म ऐसा ही था. इसपर यह आयत उतरी.
(७) मअसूम करके.
(८) के अज़ाब.
(९) यानी अरब से. मुश्रिकों ने सहमत होकर चाहा कि सब मिलकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अरब प्रदेश से बाहर कर दें लेकिन अल्लाह तआला ने उनका यह इरादा पूरा न होने दिया और उनकी यह मुराद बर न आई. इस वाक़ए के बारे में यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन)
(१०) और जल्दी हलाक कर दिये जाते.
(११) यानी जिस क़ौम ने अपने बीच से अपने रसूल को निकाला, उनके लिये अल्लाह की सुन्नत यही रही कि उन्हें हलाक कर दिया.

सूरए बनी इस्राईल - नवाँ रूकू

(१) इसमें ज़ोहर से इशा तक की चार नमाज़ें आ गईं.
(२) इससे फ़ज्र की नमाज़ मुराद है और इसको क़ुरआन इसलिये फ़रमाया गया कि क़िरअत एक रुक्न है और जुज़ से कुल तअबीर किया जाता है जैसा कि क़ुरआने करीम में नमाज़ को रूकू और सज्दों से भी बयान किया गया है. इससे मालूम हुआ कि क़िरअत नमाज़ का हिस्सा है.
(३) यानी नमाज़े फ़ज्र में रात के फ़रिश्ते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़रिश्ते भी आ जाते हैं.
(४) तहज्जुद, नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या इशा बाद एक नींद लेकर उठने पर जो नमाज़ पढ़ी जाए, उसको कहते हैं. हदीस शरीफ़ में तहज्जुद की नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं. तहज्जुद की नमाज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर फ़र्ज़ थी. जमहूर का यही क़ौल है. हुज़ूर की उम्मत के लिये यह नमाज़ सुन्नत है. तहज्जुद की कम से कम दो रकअतें और बीच की चार रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकअतें हैं. और सुन्नत यह है कि दो दो रकअत की नियत से पढ़ी जाए. अगर आदमी एक तिहाई रात की इबादत करना चाहे और दो तीहाई सोना तो रात के तीन हिस्से कर ले. बीच तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए और आधी रात इबादत करे तो आख़िरी तिहाई अफ़ज़ल है. जो शख़्स तहज्जुद की नमाज़ का आदी हो उसके लिये तहज्जुद छोड़ना मकरूह है. जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है. (रद्दुल मुहतार)
(५) और मक़ामे मेहमूद मक़ामे शफ़ाअत है कि उसमें अगले पिछले सब हुज़ूर की तअरीफ़ बयान करेंगे. इसी पर सर्वसहमति है.
(६) जहाँ भी मैं दाख़िल हूँ और जहाँ से भी मैं बाहर आऊं, चाहे वह कोई मकान हो या मन्सब यानी उपाधि हो या काम. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा मुराद यह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रज़ा और पाकी के साथ दाख़िल कर और दोबारा उठाते वक़्त इज़्ज़त और बुज़ुर्गी के साथ बाहर ला. कुछ ने कहा, मानी ये हैं कि मुझे अपनी इताअत में सच्चाई के साथ दाख़िल कर और अपनी मनाही (अवैद्यताओं) से सच्चाई के साथ ख़ारिज फ़रमा. और इसके मानी में एक क़ौल यह भी है कि नबुव्वत की उपाधि में मुझे सच्चाई के साथ दाख़िल कर और सच्चाई के साथ दुनिया से रुख़सत के वक़्त नबुव्वत के ज़रूरी अधिकार और कर्तव्य पूरे करा दे. एक क़ौल यह भी है कि मुझे मदीनए तैय्यिबह में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्कए मुकर्रमा से मेरा निकलना सच्चाई के साथ कर, इससे मेरा दिल दुखी न हो. मगर यह तर्क उस सूरत में सहीह हो सकता है जब कि यह आयत मदनी न हो जैसा कि अल्लामा सियूती ने 'क़ील' फ़रमा कर इस आयत के मदनी होने का क़ौल ज़ईफ़ होने की तरफ़ इशारा किया.
(७) वह शक्ति अता फ़रमा जिससे मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब रहूँ और वह तर्क और हुज्जत जिससे मैं हर मुख़ालिफ़ पर विजय पाऊं और वह खुला ग़लबा जिससे मैं तेरे दीन को मज़बूत करूं . यह दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआला ने अपने हबीब से उनके दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से मेहफ़ूज़ रखने का वादा फ़रमाया.
(८) यानी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया, या क़ुरआन आया और शैतान हलाक हुआ.
(९) क्योंकि अगरचे बातिल को किसी वक़्त में दौलत और शानो शौकत हासिल हो मगर उसको स्थिरता या पायदारी नहीं. उसका अन्त बर्बादी और ख़्वारी है. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़तह के दिन मक्कए मुर्कमा में दाख़िल हुए तो काबे के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत नसब किये हुए थे जिनको लोहे और रांग से जोड़ कर मज़बूत किया गया था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी. हुज़ूर यह आयत पढ़कर उस लकड़ी से जिस बुत की तरफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वह गिरता जाता था.
(१०) सूरतें और आयतें.
(११) कि उससे ज़ाहिर और बातिन, बाहर और अन्दर के रोग, गुमराही और अज्ञानता वग़ैरह दूर होते हैं और ज़ाहिर और बातिन की सेहत हासिल होती है. झूठे अक़ीदे और बुरे आचार विचार मिट जाते हैं और सच्चे अक़ीदे और अल्लाह तआला की सही पहचान और सदाचार और बढ़िया संस्कार हासिल होते हैं क्योंकि यह किताब यानी क़ुरआने मजीद ऐसे उलूम और दलीलों पर आधारित है जो वहमों और शैतानी अंधेरों को अपने प्रकाश से नेस्त नाबूद कर देती हैं और इसका एक एक अक्षर बरकतों का ख़ज़ाना है जिससे बदन के रोग और आसेब दूर होते हैं.

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۝ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ۝ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓي اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۡ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۝ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۝ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَاۗءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ قَبِيْلًا ۝ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَاۗءِ ۭ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا

और अगर हम चाहते तो यह वही (देव वाणी) जो हमने तुम्हारी तरफ़ की इसे ले जाते[२] फिर तुम कोई न पाते कि तुम्हारे लिये हमारे हुज़ूर इसपर विकालत करता《८६》 मगर तुम्हारे रब की रहमत[३] बेशक तुमपर उसका बड़ा फ़ज़्ल है[४]《८७》 तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हो जाएं कि[५] इस क़ुरआन की मानिंद (जैसा) ले आएं तो इसका मिस्ल न ला सकेंगे अगरचे उनमें एक दूसरे का मददगार हो[६]《८८》 और बेशक हमने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मसल (कहावत) तरह तरह बयान फ़रमाई तो अक्सर आदमियों ने न माना मगर ना शुक्री करना[७]《८९》 और बोले कि हम तुमपर हरगिज़ ईमान न लाएंगे यहां तक कि तुम हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा बहादो[८]《९०》 या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उसके अन्दर बहती नहरें रवां करो《९१》 या तुम हम पर आसमान गिरा दो जैसा तुमने कहा है टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़रिश्तों को ज़ामिन ले आओ[९]《९२》 या तुम्हारे लिये सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न

(१२) यानी काफ़िरों को जो इसे झुटलाते हैं.
(१३) यानी काफ़िर पर कि उसको सेहत और विस्तार अता करते हैं तो वह हमारे ज़िक्र व दुआ और फ़रमाँबरदारी और शुक्र की अदायगी से ...
(१४) यानी घमण्ड करता है.
(१५) कोई सख़्ती और हानि और कोई दरिद्रता और अकस्मात, तो गिड़गिड़ाकर और रो रो कर दुआएं करता है और उन दुआओं के क़ुबूल का असर ज़ाहिर नहीं होता.
(१६) मूमिन को ऐसा न चाहिये, अगर दुआ के क़ुबूल होने में देर हो तो वह निराश न हो. अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहे.
(१७) हम अपने तरीक़े पर, तुम अपने तरीक़े पर, जिसका जौहर बुज़ुर्गी, शराफ़त और पाकी वाली ज़ात है. उससे अच्छे कर्म और सच्चे और नेक संस्कार सादिर होते हैं और जिसका मन या नफ़्स ख़बीस है उससे बुरे कर्म सरज़द होते हैं.

सूरए बनी इस्राईल - दसवाँ रूकू

(१) क़ुरैश मशवरे के लिये जमा हुए और उनमें आपस में बातचीत यह हुई कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हममें रहे और कभी हमने उनको सच्चाई और अमानत में कमज़ोर न पाया. कभी उनपर लांछन लगाने का अवसर न आया. अब उन्हों ने नबी होने का दावा कर दिया तो उनकी सीरत, चरित्र और उनके चाल चलन पर कोई ऐब लगाना तो संभव नहीं. यहूदियों से पूछना चाहिये कि ऐसी हालत में क्या किया जाए. इस मतलब के लिये एक जमाअत यहूदियों के पास भेजी गई. यहूदियों ने कहा कि उनसे तीन सवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वह नबी नहीं और अगर तीनों के जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें, एक का जवाब न दें तो वह सच्चे नबी हैं. वो तीन सवाल ये हैं : असहाबे कहफ़ का वाक़िआ, ज़ुल क़रनैन का वाक़िआ और रूह का हाल. चुनांचे क़ुरैश ने हुज़ूर से ये सवाल किये. आपने असहाबे कहफ़ और ज़ुल क़रनैन के वाक़िआत तो विस्तार से बयान फ़रमा दिये और रूह का मामला अस्पष्टता में रखा जैसा कि तौरात में अस्पष्ट रखा गया था. क़ुरैश ये सवाल करके बड़े पछतावे और शर्मिन्दगी में पड़े. इसमें मतभेद है कि सवाल रूह की हक़ीक़त से था या उसकी मख़लूक़ियत या निर्मिति से सम्बन्धित था. जवाब दोनों का हो गया और आयत में यह भी बता दिया गया कि मख़लूक़ का इल्म अल्लाह के इल्म के सामने बहुत कम है अगरचे 'मा ऊतीतुम' यानी तुम्हें न मिला का सम्बोधन यहूदियों के साथ ख़ास हो.

كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا
رَّسُوْلًا ۠ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ
لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓىِٕكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَىِٕنِّیْنَ
لَنَزَّلْنَا عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ كَفٰى
بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ
خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ۝ وَمَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ
یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْیًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِیْرًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا وَقَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِیْدًا ۝ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ یَّخْلُقَ

ع ۱۰ — النصف

लाएंगे जब तक हमपर एक किताब न उतारो जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ, पाकी है मेरे रब को, मैं कौन हूँ मगर आदमी अल्लाह का भेजा हुआ[१०] ﴾९३﴿

ग्यारहवाँ रूकूं

और किस बात ने लोगों को ईमान लाने से रोका जब उनके पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा[१] ﴾९४﴿ तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते[२] चैन से चलते तो उनपर हम रसूल भी फ़रिश्ता उतारते[३] ﴾९५﴿ तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है गवाह मेरे तुम्हारे बीच[४] बेशक वह अपने बन्दों को जानता देखता है ﴾९६﴿ और जिसे अल्लाह राह दे वही राह पर है और जिसे गुमराह करे[५] तो उनके लिये उसके सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे[६] और हम उन्हें क़यामत के दिन उनके मुंह के बल[७] उठाएंगे अंधे और गूंगे और बहरे[८] उनका ठिकाना जहन्नम है, जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे ﴾९७﴿ यह उनकी सज़ा है इसपर कि उन्होंने हमारी आयतों से इन्कार किया और बोले क्या जब हम हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या सचमुच हम नए बना कर उठाए जाएंगे ﴾९८﴿ और क्या वो नहीं देखते कि वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन

(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ को सीनों और ग्रन्थों से मिटा देते और उसका कोई असर बाक़ी न छोड़ते.
(३) कि क़यामत तक उसको बाक़ी रखा और हर फेरबदल से मेहफ़ूज़ फ़रमाया. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ ख़ूब पढ़ो इससे पहले कि क़ुरआने पाक उठा लिया जाए, क्योंकि क़यामत क़ायम न होगी जबतक कि क़ुरआने पाक न उठाया जाए.
(४) कि उसने आप पर क़ुरआने पाक उतारा और उसको बाक़ी और मेहफ़ूज़ रखा और आपको तमाम बनी आदम का सरदार और ख़ातिमुन नबिय्यीन किया और मक़ामे मेहमूद अता फ़रमाया.
(५) बलाग़त और नज़्म व तरतीब के हुस्न और अज़ात की जानकारियों और अल्लाह तआला की पहचान में से किसी कमाल में.
(६) मुश्रिकों ने कहा था कि हम चाहें तो इस क़ुरआन जैसा बना लें. इसपर यह आयत उतरी और अल्लाह तबारक व तआला ने उन्हें झुटलाया कि ख़ालिक़ के कलाम जैसा मख़लूक़ का कलाम हो ही नहीं सकता. अगर वो सब आपस में मिल कर कोशिश करें, जब भी संभव नहीं कि इस कलाम के जैसा ला सकें. चुनांचे ऐसा ही हुआ. सारे काफ़िर लाचार हुए और उन्हें रूस्वाई उठानी पड़ी और वो एक पंक्ति भी क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल बनाकर पेश न कर सके.
(७) और सच्चाई से इन्कारी होना या मुंह फेरना इख़्तियार किया.
(८) जब क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार ख़ूब ज़ाहिर हो चुका और खुले चमत्कारों ने तर्क और हुज्जत क़ायम कर दी और काफ़िरों के लिये उज़्र का कोई जगह न रही तो वो लोगों को भ्रम में डालने के लिये तरह तरह की निशानियाँ तलब करने लगे. और उन्होंने कह दिया कि हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे. रिवायत है कि क़ुरैशी काफ़िरों के सरदार काबे के पास जमा हुए और उन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुलवाया. हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो उन्होंने कहा कि हमने आपको इसलिये बुलाया है कि आज बात चीत करके आपसे मामला तय करलें ताकि हम फिर आपके हक़ में मअज़ूर समझे जाएं. अरब में कोई आदमी ऐसा नहीं हुआ जिसने अपनी क़ौम पर वो सख़्तियाँ की हों जो तुमने की हैं. तुमने हमारे बाप दादा को बुरा भला कहा, हमारे धर्म पर आरोप लगाए, हमारे सियानों को मन्दबुद्धि और कम अक़्ल ठहराया, देवी देवतओं का अपमान किया, हम में फूट डाली. कोई बुराई उठा न रखी. इससे तुम्हारा उद्देश क्या है. अगर तुम माल चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये इतना माल जमा कर दें कि हमारी क़ौम में तुम सबसे अधिक धनवान हो जाओ. अगर सम्मान चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें, अगर मुल्क और राजपाट चाहते हो तो हम तुम्हें बादशाह स्वीकार कर लें, ये सब बातें करने के लिये हम तैयार हैं और अगर तुम्हें कोई दिमाग़ी बीमारी हो गई है या कोई चिन्ता हो गई है तो हम तुम्हारा इलाज करा दें और उसमें जितना ख़र्च हो, उठाएं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, इन में से कोई बात नहीं और मैं माल और राजपाट और सरदारी, किसी चीज़ का तलबगार नहीं. सच यह है कि अल्लाह

तआला ने मुझे रसूल बनाकर भेजा और मुझपर अपनी किताब उतारी और हुक्म दिया कि मैं तुम्हें उसके मानने पर अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की नेअमत की ख़ुशख़बरी दूँ और इन्कार करने पर अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाऊं. मैं ने तुम्हें अपने रब का संदेश पहुंचाया अगर तुम इसे क़ुबूल करो तो यह तुम्हारे लिये दुनिया और आख़िरत का सौभाग्य है और न मानो तो मैं सब्र करूंगा और अल्लाह के फ़ैसले की राह देखूंगा . इसपर उन लोगों ने कहा, ऐ मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)अगर आप हमारी बातों को क़ुबूल नहीं करते हैं तो इन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नेहरें जारी कर दीजिये और हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये, हम उनसे पूछ देखें कि आप जो फ़रमाते हैं क्या यह सच है. अगर वो कहदेंगे तो हम मान लेंगे. हुज़ूर ने फ़रमाया मैं इन बातों के लिये नहीं भेजा गया हूँ. जो पहुँचाने के लिये मैं भेजा गया, वह मैंने पहुँचा दिया, अगर तुम मानो तो तुम्हारा नसीब, न मानो तो मैं ख़ुदाई फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा. काफ़िरों ने कहा, फिर आप अपने रब से कहकर एक फ़रिश्ता बुलवा लीजिये जो आपकी तस्दीक़ करे और अपने लिये बाग़ और महल और सोने चाँदी के ख़ज़ाने तलब कीजिये. फ़रमाया कि मैं इसलिये नहीं भेजा गया. मैं बशीर और नज़ीर बना कर भेजा गया हूँ. इस पर कहने लगे तो हम पर आसमान गिरवा दिजिये और उनमेंसे कुछ बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जबतक आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को हमारे सामने न लाएंगे. इसपर हुज़ूर उस मजलिस से उठ कर चले आए और अब्दुल्लाह बिन उमैया आपके साथ उठा और आप से कहने लगा ख़ुदा की क़सम मैं कभी तुमपर ईमान न लाऊंगा जबतक तुम सीढ़ी लाकर आसमान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहाँ से एक किताब और फ़रिश्तों की एक जमाअत लेकर न आओ. और ख़ुदा की क़सम अगर यह भी करो तो मैं समझता हूँ कि मैं फिर भी न मानूंगा. रसूले करीम ने जब देखा कि ये लोग इस क़द्र ज़िद और दुश्मनी में हैं और सच्चाई से उनकी कटुता हद से गुज़र गई है तो आपको उनकी हालत पर दुख हुआ. इसपर यह आयत उतरी.

(९) जो हमारे सामने तुम्हारी सच्चाई की गवाही दें.

(१०) मेरा काम अल्लाह का संदेश पहुंचा देना है, वह मैं ने पहुंचा दिया. जिस क़द्र चमत्कार और निशानियाँ यक़ीन और इत्मीनान के लिये दरकार हैं उनसे बहुत ज़्यादा मेरा परवर्दिगार ज़ाहिर फ़रमा चुका. हुज्जत ख़त्म हो गई. अब यह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और अल्लाह की आयतों से मुंह फेरने का क्या परिणाम होता है.

सूरए बनी इस्राईल - ग्यारहवाँ रूकू

(१) रसूलों को बशर ही जानते रहे और उनके नबी होने और अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए कमालों को स्वीकार नहीं किया. यही उनके कुफ़्र की अस्ल थी और इसीलिये वो कहा करते थे कि कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया. इसपर अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है कि ऐ हबीब उन से -----

(२) वही उसमें बसते.

(३) क्योंकि वह उनकी जिन्स से होता लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसते हैं तो उनका फ़रिश्तों में से रसूल तलब करना अत्यन्त बेजा है.

(४) मेरी सच्चाई और नबुव्वत के कर्त्तव्यों की अदायगी और तुम्हारे झुटलाने और दुश्मनी पर.

(५) और तौफ़ीक़ न दे.

(६) जो उन्हें हिदायत करें.

(७) घसिटता हुआ.

(८) जैसे वो दुनिया में सच्चाई के देखने, बोलने और सुनने से अंधे, गूंगे, बहरे बने रहे, ऐसे ही उठाए जाएंगे.

مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ فَاَبَی الظّٰلِمُوْنَ
اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّیْۤ
اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْیَةَ الْاِنْفَاقِ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿۱۰۰﴾
وَلَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسٰی تِسْعَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ
اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰمُوْسٰی
مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَاۤ اَنْزَلَ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ
مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَ
مَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ
اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ﴿۱۰۴﴾
وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا
وَّنَذِیْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَی النَّاسِ عَلٰی
مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ

बनाए[९] उन लोगों की मिस्ल (समान) बना सकता है[१०] और उसने उनके लिये[११] एक मीआद (अवधि) ठहरा रखी है जिसमें कुछ शुबह नहीं, तो ज़ालिम नहीं मानते वे नाशुक्री किये[१२] ﴾९९﴿ तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते[१३] तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च न हो जाएं और आदमी बड़ा कंजूस है ﴾१००﴿

बारहवाँ रूकू

और बेशक हमने मूसा को नौ रौशन निशानियां दीं[१] तो बनी इस्राईल से पूछो जब वह[२] उनके पास आया तो उससे फ़िरऔन ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल में तो तुमपर जादू हुआ[३] ﴾१०१﴿ कहा यक़ीनन तू ख़ूब जानता है[४] कि उन्हें न उतारा मगर आसमानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आँखें खोलने वालियां[५] और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है[६] ﴾१०२﴿ तो उसने चाहा कि उनको[७] ज़मीन से निकाल दे, तो हमने उसे और उसके साथियों को सबको डुबा दिया[८] ﴾१०३﴿ और इसके बाद हमने बनी इस्राईल से फ़रमाया इस ज़मीन में बसो[९] फिर जब आख़िरत का वादा आएगा[१०] हम तुम सबको घाल मेल ले आएंगे[११] ﴾१०४﴿ और हमने क़ुरआन को हक़ (सत्य) ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा[१२] और हमने तुम्हें न भेजा मगर ख़ुशी और डर सुनाता ﴾१०५﴿ और क़ुरआन हमने अलग अलग करके[१३] उतारा कि तुम इसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो[१४] और हमने इसे बतदरीज रह रह कर उतारा[१५] ﴾१०६﴿ तुम फ़रमाओ कि

(९) ऐसे बड़े और विस्तार वाले, वह...
(१०) यह उसकी क़ुदरत से कुछ अजीब नहीं.
(११) अज़ाब की, या मौत और फिर से उठाए जाने की.
(१२) ख़ुली दलील और साफ़ हुज्जत क़ायम होने के बावुजूद.
(१३) जिनकी कुछ इन्तिहा नहीं.

सूरए बनी इस्राईल - बारहवाँ रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, वो नौ निशानियाँ ये हैं : असा (लाठी), यदे बैज़ा (चमकती रौशन हथैली), वह उक़दा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बाने मुबारक में था, फिर अल्लाह तआला ने उसको हल फ़रमाया, दरिया का फटना और उसमें रस्ते बनाना, तूफ़ान, टिड्डी, घुन, मैंढक, ख़ून. इन में से आख़िरी छ का विस्तृत बयान नवें पारे के छटे रूकू में गुज़र चुका.
(२) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम.
(३) यानी मआज़ल्लाह जादू के असर से तुम्हारी अक़्ल जगह पर न रही. या 'मसहूर' जादूगर के अर्थ में है और मतलब यह है कि ये चमत्कार जो आप दिखाते हैं, ये जादू के करिश्मे हैं . इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने --
(४) ऐ दुश्मन फ़िरऔन.
(५) कि इन आयतों से मेरी सच्चाई और मेरा जादूगर न होना और इन आयतों का ख़ुदा की तरफ़ से होना ज़ाहिर है.
(६) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ से फ़िरऔन के उस क़ौल का जवाब है कि उसने आपको मसहूर कहा था मगर उसका क़ौल झूटा था जिसे वह ख़ुद भी जानता था, मगर उसकी कटुता ने उससे कहलाया और आपका इरशाद था सच्चा और सही. चुनांचे वैसा ही वाक़े हुआ.

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِۦٓ إِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾ وَّيَقُولُونَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ
إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ
يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ﴿۱۰۹﴾ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ أَوِ
ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ
وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ
وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿۱۱۱﴾

آیاتها ۱۱۰ (۱۸) سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ (۶۹) رکوعاتها ۱۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ
يَجْعَلْ لَّهُ عِوَجًا ﴿۱﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ

منزل ۴

तुम लोग उसपर ईमान लाओ या न लाओ[१६] बेशक वो जिन्हें इसके उतरने से पहले इल्म मिला[१७] जब उनपर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं﴾१०७﴿ और कहते हैं, पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वादा पूरा होना था[१८]﴾१०८﴿ और ठोड़ी के बल गिरते हैं[१९] रोते हुए और यह क़ुरआन उनके दिल का झुकना बढ़ाता है[२०]﴾१०९﴿ तुम फ़रमाओ अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जो कहकर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं[२१] और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो[२२]﴾११०﴿ और यूं कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया[२३] और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं[२४] और कमज़ोरी से कोई उसका हिमायती नहीं[२५] और उसके बड़ाई बोलने को तकबीर कहो[२६]﴾१११﴿

१८- सूरए कहफ़

सूरए कहफ़ मक्का में उतरी, इसमें ११० आयतें,और १२ रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने अपने बन्दे[२] पर किताब उतारी[३] और उसमें कोई कजी न रखी[४]﴾१﴿ अदल(इन्साफ़) वाली किताब कि[५] अल्लाह के सख़्त अज़ाब से डराए और
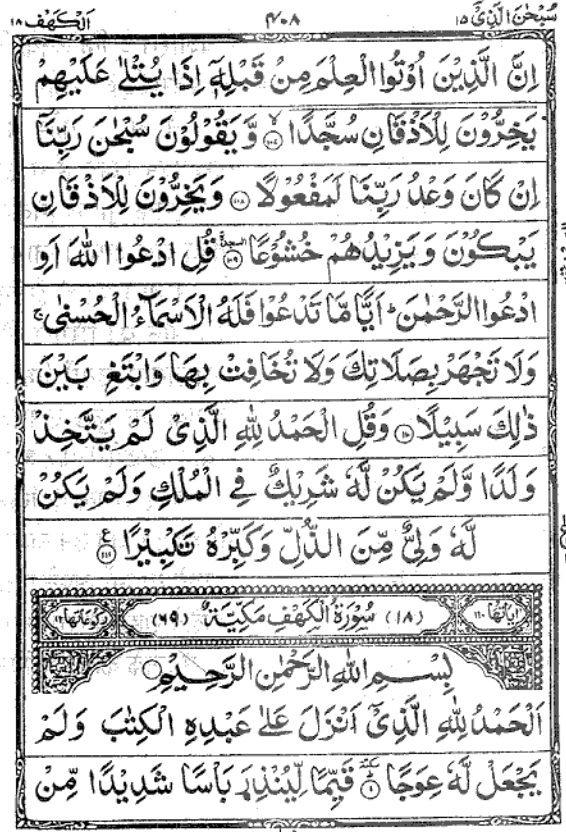
(७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को और उनकी क़ौम को, मिस्र की.
(८) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को और उनकी क़ौम को हमने सलामती अता फ़रमाई.
(९) यानी मिस्र और शाम की ज़मीन में. (ख़ाज़िन व क़ुरतबी)
(१०) यानी क़यामत.
(११) क़यामत के मैदान में, फिर नेकों और बुरों को एक दूसरे से अलग कर देंगे.
(१२) शैतानों की मिलौनी से मेहफ़ूज़ रहा और किसी फेर बदल ने उसमें राह न पाई. तिबियान में है कि हक़ से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ाते मुबारक है. आयत का यह वाक्य हर एक बीमारी के लिये आज़माया हुआ इलाज है. बीमारी वाली जगह पर हाथ रखकर इसे पढ़कर फूंक दिया जाए तो अल्लाह के हुक्म से बीमारी दूर हो जाती है. मुहम्मद बिन समाक बीमार हुए तो उनके अनुयायी उनका क़ारूरा (पेशाब) लेकर एक ईसाई चिकित्सक के पास इलाज के लिये गए. राह में एक साहब मिले, बहुत सुन्दर और अच्छे लिबास में, उनके जिस्मे मुबारक से निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बू आ रही थी. उन्होंने फ़रमाया, कहाँ जाते हो. उन लोगों ने कहा इब्ने समाक का क़ारूरा दिखाने के लिये अमुक चिकित्सक के पास जाते हैं. उन्होंने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह, अल्लाह के वली के लिये ख़ुदा के दुश्मन से मदद चाहते हो. क़ारूरा फैंको, वापस जाओ और उनसे कहो कि दर्द की जगह पर हाथ रखकर पढ़ो "बिल्हक़्क़े अन्ज़लनाहो व बिल्हक़्क़े नज़ल" यह फ़रमाकर वह बुज़ुर्ग ग़ायब हो गए. उन लोगों ने वापस होकर इब्ने समाक से वाक़िआ बयान किया. उन्हों ने दर्द की जगह पर हाथ रखकर ये कलिमे पढ़े, फ़ौरन आराम हो गया और इब्ने समाक ने फ़रमाया कि वह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे.
(१३) तेईस साल के अर्से में.
(१४) ताकि उसके मज़ामीन आसानी से सुनने वालों की समझ में बैठ जाएं.
(१५) मसलिहतों और ज़रूरत के अनुसार.
(१६) और अपने लिये आख़िरत की नेअमत इख़्तियार करो या जहन्नम का अज़ाब.
(१७) यानी किताबियों में के ईमानदार लेगा जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले इन्तिज़ार और जुस्तजू में थे. हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के तशरीफ़ लाने के बाद इस्लाम लाए जैसा कि ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल और सलमान

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ
اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّ
يُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ﴿۴﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ
مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ
اَفْوَاهِهِمْ ۚ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ
اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا
عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۭ﴿۸﴾ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ
الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذْ اَوَى
الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا
عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ ثُمَّ

منزل ۴

ईमान वालों को जो नेक काम करें बशारत दे कि उनके लिये अच्छा सवाब है﴾२﴿ जिसमें हमेशा रहेंगे﴾३﴿ और उन[६] को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया﴾४﴿ इस बारे में न वो कुछ इल्म रखते हैं न उनके बाप दादा[७] कितना बड़ा बोल है कि उनके मुंह से निकलता है निरा झूट कह रहे हैं﴾५﴿ तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके पीछे अगर वो इस बात पर[८] ईमान न लाए ग़म से[९]﴾६﴿ बेशक हमने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है[१०] कि उन्हें आज़माएं उनमें किस के काम बेहतर हैं[११]﴾७﴿ और बेशक जो कुछ उसपर है एक दिन हम उसे पटपर मैदान कर छोड़ेंगे[१२]﴾८﴿ क्या तुम्हें मालूम हुआ कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले[१३] हमारी एक अजीब निशानी थे﴾९﴿ जब उन नौजवानों ने[१४] ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे[१५] और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (रास्ता पाने) के सामान कर﴾१०﴿ तो हमने उस ग़ार से उनके कानों पर गिनती के कई बरस थपका[१६]﴾११﴿

फ़ारसी और अबू ज़र इत्यादि. रदियल्लाहो अन्हुम.

(१८) जो उसने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि आख़िरी ज़माने के नबी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजेंगे.

(१९) अपने रब के समक्ष विनम्रता और नर्म दिली से.

(२०) क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है. तिरमिज़ी और नसाई की हदीस में है कि वह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो अल्लाह के डर से रोए.

(२१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि एक रात सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लम्बा सज्दा किया और अपने सज्दे में या अल्लाहो या रहमान फ़रमाते रहे. अबू जहल ने सुना तो कहने लगा कि मुहम्मद हमें तो कई मअबूदों के पूजने से मना करते हैं और अपने आप दो को पुकारते हैं, अल्लाह को और रहमान को. इसके जवाब में यह आयत उतरी और बताया गया अल्लाह और रहमान दो नाम एक ही मअबूदे बरहक़ के हैं चाहे किसी नाम से पुकारो.

(२२) यानी बीच की आवाज़ से पढ़ो जिससे मुक़्तदी आसानी से सुन लें. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मक्कए मुकर्रमा में जब अपने सहाबा की इमामत फ़रमाते तो क़िरअत बलन्द आवाज़ से फ़रमाते. मुश्रिक सुनते तो क़ुरआने पाक को और उसके उतारने वाले को और जिन पर उतरा, सबको गालियाँ देते. इसपर यह आयत उतरी.

(२३) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों का गुमान है.

(२४) जैसा कि मुश्रिक लोग कहते हैं.

(२५) यानी वह कमज़ोर नहीं कि उसको किसी हिमायती या मददगार की ज़रूरत हो.

(२६) हदीस शरीफ़ में है, क़यामत के दिन जन्नत की तरफ़ सबसे पहले वही बुलाए जाएंगे जो हर हाल में अल्लाह की तअरीफ़ करते हैं. एक और हदीस में है कि बेहतरीन दुआ "अल्हम्दु लिल्लाह" है और बेहतरीन ज़िक्र "ला इलाहा इल्लल्लाहो" है. (तिरमिज़ी) मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है: "ला इलाहा इल्लल्लाहो, अल्लाहो अकबर, सुब्हानल्लाहे, अल्हम्दु लिल्लाहे" इस आयत का नाम आयतुल इज़्ज़ है. बनी अब्दुल मुत्तलिब के बच्चे जब बोलना शुरू करते थे तो उनको सब से पहले यही आयत "क़ुलिल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी" सिखाई जाती थी.

१८ - सूरए कहफ़ - पहला रूकू

(१) इस सूरत का नाम कहफ़ है. यह सूरत मक्की है, इसमें एक सौ दस आयतें और एक हज़ार पाँच सौ सतहत्तर कलिमे और छ हज़ार तीन सौ साठ अक्षर और बारह रूकू हैं.

(२) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(३) यानी क़ुरआन शरीफ़, जो उसकी बेहतरीन नेअमत और बन्दों के लिये निजात और भलाई का कारण है.
(४) न लफ़्ज़ी न मअनवी, न उसमें इख़्तिलाफ़, न विषमताएं.
(५) काफ़िरों को.
(६) काफ़िर.
(७) ख़ालिस जिहालत से यह आरोप लगाते हैं और ऐसी झूट बात बकते हैं.
(८) यानी क़ुरआन शरीफ़ पर.
(९) इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप इन बेईमानों के ईमान से मेहरूम रहने पर इस क़द्र रंज और ग़म न कीजिये अपनी प्यारी जान को इस दुख़ से हलाकत में न डालिये.
(१०) वो चाहे जानदार हों या पेड़ पौदे या ख़निज हों या नेहरें.
(११) और कौन परहेज़गारी इख़्तियार करता और वर्जित तथा अवैध बातों से बचता है.
(१२) और आबाद होने के बाद वीरान कर देंगे और पेड़ पौधे वग़ैरह जो चीज़ें सजावट की थीं उनमें से कुछ भी बाक़ी न रहेगा तो दुनिया की अस्थिरता, ना-पायदार ज़ीनत पर मत रीझो.
(१३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिसमें असहाबे कहफ़ हैं. आयत में उन लोगों की निस्बत फ़रमाया कि वो ...
(१४) अपनी काफ़िर क़ौम से अपना ईमान बचाने के लिये.
(१५) और हिदायत और नुसरत और रिज़्क़ और मग़फ़िरत और दुश्मनों से अम्न अता फ़रमा. असहाबे कहफ़ यानी ग़ार वाले लोग कौन हैं ? सही यह है कि सात हज़रात थे अगरचे उनके नामों में किसी क़द्र मतभेद है लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है उनके नाम ये हैं (१) मक्सलमीना (२) यमलीख़ा (३) मर्तूनस (४) बैनूनस (५) सारीनूनस (६) ज़ूनवानस (७) कुशेफ़ीत (८) तुतूनस और उनके कुत्ते का नाम क़ितमीर है. ये नाम लिख़कर दर्वाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मेहफ़ूज़ रहता है. माल में रख़ दिये जाएं तो वह चोरी नहीं जाता, किश्ती या जहाज़ उनकी बरकत से डूबता नहीं, भागा हुआ व्यक्ति उनकी बरकत से वापस आ जाता है. कहीं आग लगी हो और ये नाम कपड़े में लिख़कर डाल दिये जाएं तो वह बुझ जाती है, बच्चे के रोने, मीआदी बुख़ार, सरदर्द, सूख़े की बीमारी, ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जान माल की हिफ़ाज़त, अक़्ल की तीव्रता, क़ैदियों की आज़ादी के लिये ये नाम लिख़कर तअवीज़ की तरह बाज़ू में बांधे जाएं. (जुमल) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद इंजील वालों की हालत ख़राब हो गई, वो बुत परस्ती में गिरफ़्तार हो गए और दूसरों को बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे. उनमें दक़ियानूस बादशाह बड़ा जाबिर था. जो बुत परस्ती पर राज़ी न होता, उसको क़त्ल कर डालता. असहाबे कहफ़ अफ़सूस शहर के शरीफ़ और प्रतिष्ठित लोगों में से थे. दक़ियानूस के ज़ुल्म और अत्याचार से अपना ईमान बचाने के लिये भागे और क़रीब के पहाड़ में एक गुफ़ा यानी ग़ार में शरण ली. वहाँ सो गए. तीन सौ बरस से ज़्यादा अर्से तक उसी हाल में रहे. बादशाह को तलाश से मालूम हुआ कि वो ग़ार के अन्दर हैं तो उसने हुक्म दिया कि ग़ार को एक पथरीली दीवार ख़ींच कर बन्द कर दिया जाय ताकि वो उसमें मर कर रह जाएं और वह उनकी क़ब्र हो जाए. यही उनकी सज़ा है. हुकूमत के जिस अधिकारी को यह काम सुपुर्द किया गया वह नेक आदमी था, उसने उन लोगों के नाम, संख्या, पूरा वाक़िआ रांग की तख़्ती पर ख़ोद कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुनियाद के अन्दर मेहफ़ूज़ कर दिया. यह भी बयान किया गया है कि इसी तरह की एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मेहफ़ूज़ करा दी गई. कुछ समय बाद दक़ियानूस हलाक हुआ. ज़माने गुज़रे, सल्तनतें बदलीं, यहाँ तक कि एक नेक बादशाह गद्दी पर बैठा उसका नाम बेसरूद था. उसने ६८ साल हुकूमत की. फिर मुल्क में फ़िर्क़ा बन्दी और फूट पैदा हुई और कुछ लोग मरने के बाद उठने और क़यामत आने के इन्कारी हो गए. बादशाह एक एकान्त मकान में बन्द हो गया और उसने रो रो कर अल्लाह की बारगाह में दुआ की, या रब कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दे कि दुनिया को मुर्दों के उठने और क़यामत का यक़ीन हासिल हो. उसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह हासिल करने को उसी गुफ़ा को चुना और दीवार गिरा दी. दीवार गिरने के बाद कुछ ऐसी हैबत छाई कि गिराने वाले भाग गए. असहाबे कहफ़ अल्लाह के हुक्म से ताज़ादम होकर उठे, चेहरे ख़िले हुए, तबीअतें ख़ुश, ज़िन्दगी की तरोताज़गी मौजूद. एक ने दूसरे को सलाम किया. नमाज़ के लिये ख़ड़े हो गए. फ़ारिग़ होकर यमलीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ ख़ाने को भी लाइये और यह ख़बर भी लाइये कि दक़ियानूस का हम लोगों के बारे में क्या इरादा है. वो बाज़ार गए और नगरद्वार पर इस्लामी निशानी देख़ी. नए नए लोग पाए. उन्हें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नाम की क़स्में ख़ाते सुना. आश्चर्य हुआ, यह क्या मामला है. कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था. आज इस्लामी निशानियाँ नगरद्वार पर ज़ाहिर हैं, लोग बिना किसी डर के हज़रत ईसा के नाम की क़सम ख़ाते हैं. फिर आप नानबाई की दुकान पर गए. ख़ाना ख़रीदने के लिये उसको दक़ियानूसी सिक्का दिया जिसका चलन सदियों पहले बन्द हो गया था और उसका देख़ने वाला तक कोई बाक़ी न बचा था. बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि इनके हाथ कोई पुराना ख़ज़ाना लग गया है. इन्हें पकड़ कर हाकिम के पास ले गए. वह नेक आदमी था उसने भी इनसे पूछा कि ख़ज़ाना कहाँ है. इन्होंने कहा ख़ज़ाना कहीं नहीं है. यह रुपया हमारा अपना है. हाकिम ने कहा यह बात किसी तरह यक़ीन करने वाली नहीं इसमें जो सन

بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا
اَمَدًا ۟ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ
فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ۟ وَّرَبَطْنَا
عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰـهًا لَّقَدْ قُلْنَآ
اِذًا شَطَطًا ۝ هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَاِذِ
اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ
يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ
اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ ذٰلِكَ مِنْ

फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें(१७) दोनों गिरोहों में कौन उनके ठहरने की मुद्दत ज़्यादा ठीक बताता है﴾१२﴿

दूसरा रुकू

हम उनका ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनाएं, वो कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनको हिदायत बढ़ाई﴾१३﴿ और हमने उनकी ढारस बंधाई जब(१) खड़े होकर बोले कि हमारा रब वह है जो आसमान और ज़मीन का रब है हम उसके सिवा किसी मअबूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हमने ज़रूर हद से गुज़री हुई बात कही﴾१४﴿ यह जो हमारी क़ौम है उसने अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना रखे हैं, क्यों नहीं लाते उनपर कोई रौशन सनद (प्रमाण) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे(२)﴾१५﴿ और जब तुम उनसे और जो कुछ वो अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा﴾१६﴿ और ऐ मेहबूब तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है तो उनके ग़ार से दाईं तरफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उनमें बाईं तरफ़ कतरा जाता है(३) हालांकि वो उस ग़ार के खुले मैदान में

मौजूद है वह तीन सौ बरस से ज़्यादा का है. हम लोग बूढ़े हैं हमने तो कभी यह सिक्का देखा नहीं. आप ने फ़रमाया जो मैं पूछूँ वह ठीक ठीक बताओ तो राज़ हल हो जाएगा. यह बताओ कि दक़ियानूस बादशाह किस हाल और ख़्याल में है. हाकिम ने कहा आज धरती पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं. सैंकड़ों बरस हुए जब इस नाम का एक बेईमान बादशाह गुज़रा है. आपने फ़रमाया कल ही तो हम उसके डर से जान बचाकर भागे हैं. मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर शरण लिये हुए हैं. चलो मैं तुम्हें उनसे मिला दूँ. हाकिम और शहर के बड़े लोग और एक बड़ी भीड़ उनके साथ ग़ार पर पहुंची असहाबे कहफ़ यमलीख़ा के इन्तिज़ार में थे. बहुत से लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुनकर समझे कि यमलीख़ा पकड़े गए और दक़ियानूसी फ़ौज हमारी तलाश में आ रही है. अल्लाह की हम्द और शुक्र बजा लाने लगे. इतने में ये लोग पहुंचे. यमलीख़ा ने सारी कहानी सुनाई. उन हज़रात ने समझ लिया कि हम अल्लाह के हुक्म से इतना लम्बा समय तक सोए और अब इस लिये उठाए गए कि लोगों के लिये मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हों. हाकिम ग़ार के मुंह पर पहुंचा तो उसने तांबे का एक सन्दूक़ देखा. उसको खोला तो तख़्ती बरआमद हुई उसमें उन लोगों के नाम और उनके कुत्ते का नाम लिखा था और यह भी लिखा था कि यह जमाअत अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये दक़ियानूस के डर से इस ग़ार में शरणागत हुई. दक़ियानूस ने ख़बर पाकर एक दीवार से उन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया. हम यह हाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी ग़ार खुले तो लोग हाल पर सूचित हो जाएं. यह तख़्ती पढ़कर सब को आश्चर्य हुआ और लोग अल्लाह की हम्द और सना बजा लाए कि उसने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमादी जिससे मरने के बाद उठने का यक़ीन हासिल होता है. हाकिम ने अपने बादशाह बेदरूस को इस घटना की सूचना दी. वह अमीरों और प्रतिष्ठित लोगों को लेकर हाज़िर हुआ और अल्लाह के शुक्र का सज्दा किया कि अल्लाह तआला ने उसकी दुआ क़ुबूल की. असहाबे कहफ़ बादशाह से गले मिले और फ़रमाया हम तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करते हैं. वस्सलामो अलैका व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू. अल्लाह तेरी और तेरी सल्तनत की हिफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नों और इन्सानों के शर से बचाए. बादशाह खड़ा ही था कि वो हज़रात अपनी ख़्वाबगाहों की तरफ़ वापस होकर फिर सो गये और अल्लाह ने उन्हें वफ़ात दी. बादशाह ने साल के सन्दूक़ में उनके बदनों को मेहफ़ूज़ किया और अल्लाह तआला ने रोब से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की ताक़त नहीं कि वहाँ पहुंच सके. बादशाह ने गुफ़ा के मुंह पर मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक ख़ुशी का दिन निश्चित किया कि हर साल लोग ईद की तरह वहाँ आया करें. (ख़ाज़िन वग़ैरह) इससे मालूम हुआ कि नेक लोगों में उर्स का तरीक़ा बहुत पुराना है.

(१६) यानी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ जगा न सके.

(१७) कि असहाबे कहफ़ के ----

اٰیٰتِ اللّٰہِ ؕ مَنْ یَّہْدِ اللّٰہُ فَہُوَ الْمُہْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ
فَلَنْ تَجِدَ لَہٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ۱۷ ۧ وَتَحْسَبُہُمْ اَیْقَاظًا
وَّہُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُہُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ ذَاتَ
الشِّمَالِ ۖۗ وَکَلْبُہُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْہِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِاطَّلَعْتَ
عَلَیْہِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْہُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْہُمْ رُعْبًا ۱۸ وَ
کَذٰلِکَ بَعَثْنٰہُمْ لِیَتَسَآءَلُوْا بَیْنَہُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ
مِّنْہُمْ کَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ
قَالُوْا رَبُّکُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَکُمْ
بِوَرِقِکُمْ ہٰذِہٖۤ اِلَی الْمَدِیْنَۃِ فَلْیَنْظُرْ اَیُّہَاۤ اَزْکٰی
طَعَامًا فَلْیَاْتِکُمْ بِرِزْقٍ مِّنْہُ وَلْیَتَلَطَّفْ وَلَا
یُشْعِرَنَّ بِکُمْ اَحَدًا ۱۹ اِنَّہُمْ اِنْ یَّظْہَرُوْا عَلَیْکُمْ
یَرْجُمُوْکُمْ اَوْ یُعِیْدُوْکُمْ فِیْ مِلَّتِہِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا
اَبَدًا ۲۰ وَکَذٰلِکَ اَعْثَرْنَا عَلَیْہِمْ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّ وَعْدَ

हैं[४] ये अल्लाह की निशानियों से है, जिसे अल्लाह राह दे तो राह पर है, और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उसका कोई हिमायती राह दिखाने वाला न पाओगे﴿१७﴾

तीसरा रूकू

और तुम उन्हें जागता समझो[१] और वो सोते हैं और हम उनकी दाईं बाईं कर्वट बदलते है[२] और उनका कुत्ता अपनी कलाइयां फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर[३] ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उनसे पीठ फेर कर भागे और उनसे हैबत(डर) में भर जाए[४]﴿१८﴾ और यूंही हमने उनको जगाया[५] कि आपस में एक दूसरे से अहवाल पूछें[६] उनमें एक कहने वाला बोला[७] तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम[८] दूसरे बोले तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे[९] तो अपने में एक को यह चांदी लेकर[१०] शहर में भेजो फिर वह ग़ौर करे कि वहां कौन सा खाना ज़्यादा सुथरा है[११] कि तुम्हारे लिये उसमें से खाना लाए और चाहिये कि नर्मी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिला न दे﴿१९﴾ बेशक अगर वो तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे[१२] या अपने दीन[१३] में फेर लेंगे और ऐसा हुआ तो तुम्हारा कभी भला न होगा﴿२०﴾ और इसी तरह हमने उनकी इत्तिला कर दी[१४] कि लोग जान लें[१५] कि अल्लाह का वादा सच्चा है

सूरए कहफ़ - दूसरा रूकू

(१) दक़ियानूस बादशाह के सामने.
(२) और उसके लिये शरीक और औलाद ठहराए, फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा.
(३) यानी उनपर सारे दिन छाया रहती है और सूर्योदय से सूर्यास्त तक किसी वक़्त भी धूप की गर्मी उन्हें नहीं पहुंचती.
(४) और ताज़ा हवाएं उनको पहुंचती है.

सूरए कहफ़ - तीसरा रूकू

(१) क्योंकि उनकी आँखें खुली है.
(२) साल में एक बार दसवीं मुहर्रम को.
(३) जब वो कर्वट लेते हैं, वह भी कर्वट बदलता है. तफ़सीरे सअलबी में है कि जो कोई इन कलिमात "व कल्बुहुम बासितुन ज़िरा ऐहे बिल वसीद" को लिखकर अपने साथ रखे, कुत्ते के कष्ट से अम्न में रहे.
(४) अल्लाह तआला ने ऐसी हैबत से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता. हज़रत अमीर मुआविया जंगे रूम के वक़्त कहफ़ की तरफ़ गुज़रे तो उन्होंने असहाबे कहफ़ पर दाख़िल होना चाहा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने उन्हें मना किया और यह आयत पढ़ी. फिर एक जमाअत हज़रत अमीर मुआविया के हुक्म से दाख़िल हुई तो अल्लाह तआला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए.
(५) एक लम्बी मुद्दत के बाद.
(६) और अल्लाह तआला की क़ुदरते अज़ीमा को देखकर उनका यक़ीन ज़्यादा हो और वो उसकी नेअमतों का शुक्र अदा करें.
(७) यानी मकसलमीना जो उनमें सबसे बड़े और उनके सरदार हैं.
(८) क्योंकि वो ग़ार में सूर्योदय के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो सूरज डूबने के क़रीब था इससे उन्हें गुमान हुआ कि यह वही दिन है. इससे साबित हुआ कि इज्तिहाद जायज़ और ज़न्ने ग़ालिब की बुनियाद पर क़ौल करना दुरुस्त है.
(९) उन्हें या तो इल्हाम से मालूम हुआ कि लम्बा समय गुज़र चुका या उन्हें कुछ ऐसे प्रमाण मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना. जिससे उन्होंने ख़याल किया कि समय बहुत गुज़र चुका.

اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ۝ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ۝ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۝ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

और क़यामत में कुछ शुबह नहीं, जब वो लोग उनके मामले में आपस में झगड़ने लगे[16] तो बोले उनके ग़ार पर कोई ईमारत बनाओ उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है, वो बोले जो इस काम में ग़ालिब रहे थे[17] क़सम है कि हम तो उनपर मस्जिद बनाएंगे[18] ﴿२१﴾ अब कहेंगे[19] कि वो तीन हैं चौथा उनका कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उनका कुत्ता बे देखे अलाउतका (अटकल पच्चू) बात[20] और कुछ कहेंगे सात हैं[21] और आठवां उनका कुत्ता, तुम फ़रमाओ मेरा रब उनकी गिनती ख़ूब जानता है[22] उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े[23] तो उनके बारे में[24] बहस न करो मगर उतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी[25] और उनके[26] बारे में किसी किताब से कुछ न पूछो ﴿२२﴾

चौथा रूकू

और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल यह करूं या कल कर दूंगा ﴿२३﴾ मगर यह कि अल्लाह चाहे[1] और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए[2] और यूं कह कि क़रीब है मेरा रब मुझे उस[3] से नज़दीकतर रास्ती (सच्चाई) की राह दिखाए[4] ﴿२४﴾ और वो अपने ग़ार में तीन सौ बरस ठहरे नौ ऊपर[5] ﴿२५﴾ तुम फ़रमाओ अल्लाह ख़ूब

(१०) यानी दक़ियानूसी सिक्के के रूपये जो घर से लेकर आए थे और सोते वक़्त अपने सरहाने रख लिये थे. इससे मालूम हुआ कि मुसाफ़िर को ख़र्च साथ में रखना तवक्कुल के तरीक़े के ख़िलाफ़ नहीं है. चाहिये कि अल्लाह पर भरोसा रखे.

(११) और इसमें कोई शुबह हुरमत का नहीं.

(१२) और बुरी तरह क़त्ल करेंगे.

(१३) यानी अत्याचार से काफ़िरों की जमाअत ----

(१४) लोगों को दक़ियानूस के मरने और मुद्दत गुज़र जाने के बाद.

(१५) और बेदरूस की क़ौम में जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मालूम हो जाए.

(१६) यानी उनकी वफ़ात के बाद उनके गिर्द इमारत बनाने में

(१७) यानी बेदरूस बादशाह और उसके साथी.

(१८) जिसमें मुसलमान नमाज़ पढ़ें और उनके क़ुर्ब से बरकत हासिल करें. (मदारिक) इससे मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना ईमान वालों का पुराना तरीक़ा है और क़ुरआन शरीफ़ में इसका ज़िक्र फ़रमाना और इसको मना न करना इस काम के दुरूस्त होने की मज़बूत दलील है. इससे यह भी मालूम हुआ कि बुज़ुर्गों से जुड़े स्थानों में बरकत हासिल होती है इसीलिये अल्लाह वालों के मज़ारात पर लोग बरकत हासिल करने के लिये जाया करते हैं और इसीलिये क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और सवाब वाली है.

(१९) ईसाई, जैसा कि उनमें से सैय्यिद और आक़िब ने कहा.

(२०) जो बेजान कह दी, किसी तरह सही नहीं हो सकती.

(२१) और ये कहने वाले मुसलमान हैं. अल्लाह तआला ने उनके क़ौल को साबित रखा क्योंकि उन्होंने जो कुछ कहा वह नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम से इल्म हासिल करके कहा.

(२२) क्योंकि जहानों की तफ़सील और गुज़री हुई दुनिया और आने वाली दुनिया का इल्म अल्लाह ही को है या जिसको वह अता फ़रमाए.

(२३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं थोड़ों में से हूँ जिसका आयत में इस्तिस्ना फ़रमाया यानी छेक दिया.

(२४) किताब वालों से.

(२५) और क़ुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई . आप इतने पर ही इक्तिफ़ा करें. इस मामले में यहूदियों की जिहालत का इज़हार करने की फ़िक्र न करें.

لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَ
اَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ ۫ وَّ لَا یُشْرِكُ
فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ وَ اتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ
كِتَابِ رَبِّكَ ۚؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَ لَنْ تَجِدَ مِنْ
دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ
یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ
الدُّنْیَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا
وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ فَلْیُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ
اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ
وَ اِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ
بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَ سَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ

الثلثة

منزل ۴

जानता है वो जितना ठहरे[६] उसी के लिये आसमानों और ज़मीनों के सब ग़ैब वह क्या ही देखता और क्या ही सुनता है[७] उसके सिवा उनका[८] कोई वाली (संरक्षक) नहीं और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता ﴾२६﴿ और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब[९] तुम्हें वही (देववाणी) हुई, उसकी बातों का कोई बदलने वाला नहीं[१०] और हरगिज़ तुम उसके सिवा पनाह न पाओगे ﴾२७﴿ और अपनी जान उनसे मानूस रखो जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी रज़ा चाहते हैं[११] और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें, क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे, और उसका कहा न मानो जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया ﴾२८﴿ और फ़रमा दो कि हक़ (सत्य) तुम्हारे रब की तरफ़ से है[१२] तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे[१३] बेशक हमने ज़ालिमों[१४] के लिये वह आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर[१५] पानी के लिये फ़रियाद करें तो उनकी फ़रियाद-रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये हुए धात की तरह है कि उनके मुंह भून देगा क्या ही बुरा पीना है[१६] और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह ﴾२९﴿ बेशक जो ईमान लाए और

(२६) यानी असहाबे कहफ़ के.

सूरए कहफ़ - चौथा रूकू

(१) यानी जब किसी काम का इरादा हो तो यह कहना चाहिये कि इन्शाअल्लाह ऐसा करूंगा. बग़ैर इन्शाअल्लाह के न कहे. मक्का वालों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जब असहाबे कहफ़ का हाल पूछा था तो हुज़ूर ने फ़रमाया कल बताऊंगा और इन्शाअल्लाह नहीं फ़रमाया था. कई रोज़ वही नहीं आई. फिर यह आयत उतरी.

(२) यानी इन्शाअल्लाह कहना याद न रहे तो जब याद आए, कह ले. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, जबतक उस मजलिस में रहे. इस आयत की तफ़सीर में कई क़ौल हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया मानी ये हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे (बुख़ारी व मुस्लिम) कुछ आरिफ़ों ने फ़रमाया मानी ये हैं कि अपने रब को याद कर, जब तू अपने आपको भूल जाए क्योंकि ज़िक्र का कमाल यही है कि ज़ाकिर उसमें फ़ना हो जाए जिसका ज़िक्र करे.

(३) असहाबे कहफ़ के वाक़ए के बयान और उसकी ख़बर देने.

(४) यानी ऐसे चमत्कार अता फ़रमाए जो मेरी नबुव्वत पर इससे भी ज़्यादा ज़ाहिर दलील दें जैसे कि अगले नबियों के हालात का बयान और अज्ञात का इल्म और क़यामत तक पेश आने वाली घटनाओं और वाक़िआत का बयान और चाँद के चिर जाने और जानवरों से अपनी गवाही दिलवाना इत्यादि. (ख़ाज़िन व जुमल)

(५) और अगर वह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो.

(६) उसी का फ़रमाना हक़ है. नजरान के ईसाइयों ने कहा था तीन सौ बरस तो ठीक हैं और नौ की ज़ियादती कैसी है इसका हमें इल्म नहीं. इसपर यह आयत उतरी.

(७) कोई ज़ाहिर और कोई बातिन उससे छुपा नहीं.

(८) आसमान और ज़मीन वालों का.

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(१०) और किसी को उसके फेर बदल की क़ुदरत नहीं.

(११) यानी इख़लास के साथ हर वक़्त अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में लगे रहते हैं. काफ़िरों के सरदारों की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमें ग़रीबों और बुरे हालों के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें सोहबत

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ
عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَّيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ
مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۚ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ
جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ
أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا
نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَّكَانَ لَهُ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ
وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هٰذِهِ
أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

नेक काम किये हम उनके नेग ज़ाया नहीं करते जिनके काम अच्छे हों[१७] ﴿३०﴾ उनके लिये बसने के बाग़ हैं उनके नीचे नदियां बहें वो उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे[१८] और सब्ज़ कपड़े किरेब और क़नादीज़ के पहनेंगे वहाँ तख़्तों पर तकिया लगाए[१९] क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह ﴿३१﴾

पाँचवां रूकू

और उनके सामने दो मर्दों का हाल बयान कर[१] कि उनमें एक को[२] हमने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उनको खजूरों से ढांप लिया और उनके बीच बीच में खेती रखी[३] ﴿३२﴾ दोनों बाग़ अपने फल लाए और उसमें कुछ कमी न दी[४] और दोनों के बीच में हमने नहर बहाई ﴿३३﴾ और वह[५] फल रखता था[६] तो अपने साथी[७] से बोला और वह उससे रद्दो बदल करता था[८] मैं तुझसे माल में ज़्यादा हूँ और आदमियों का ज़्यादा ज़ोर रखता हूँ[९] ﴿३४﴾ अपने बाग़ में गया[१०] और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुआ[११] बोला मुझे गुमान नहीं कि यह कभी फ़ना हो ﴿३५﴾ और मैं गुमान नहीं करता कि क़यामत क़ायम हो और अगर मैं[१२]

से अलग कर दें तो हम इस्लाम ले आएं और हमारे इस्लाम ले आने से बहुत से लोग इस्लाम ले आएंगे. इसपर यह आयत उतरी.
(१२) यानी उसकी तौफ़ीक़ से, और सच और झूट ज़ाहिर हो चुका. मैं तो मुसलमानों को उनकी ग़रीबी के कारण तुम्हारा दिल रखने के लिये अपनी मजलिस से जुदा नहीं करूंगा.
(१३) अपने परिणाम को सोच ले और समझ ले कि ------
(१४) यानी काफ़िरों.
(१५) प्यास की सख़्ती से.
(१६) अल्लाह की पनाह, हज़रत इब्ने अब्बास रसियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया वह गन्दा पानी है ज़ैतून के तेल की तलछट की तरह. तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब वह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की ख़ाल उससे जल कर गिर पड़ेगी. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि वह पिघलाया हुआ रांग और पीतल है.
(१७) बल्कि उन्हें उनकी नेकियों की जज़ा देते हैं.
(१८) हर जन्नती को तीन तीन कंगन पहनाए जाएंगे, सोने और चांदी और मोतियों के. सही हदीस में है कि वुज़ू का पानी जहाँ जहाँ पहुंचता है वो सारे अंग बहिश्ती ज़ेवरों से सजाए जाएंगे.
(१९) बादशाहों की सी शान और ठाट बाट के साथ होंगे.

सूरए कहफ़ - पाँचवां रूकू

(१) कि काफ़िर और ईमान वाले इसमें और ग़ौर करके अपना अपना अंजाम समझें और इन दो मर्दों का हाल यह है.
(२) यानी काफ़िर को.
(३) यानी उन्हें निहायत बेहतरीन तरतीब के साथ मुरत्तब किया.
(४) बहार ख़ूब आई.
(५) बाग़ वाला, उसके अलावा और भी.
(६) यानी बहुत सा माल, सोना चाँदी वग़ैरह, हर क़िस्म की चीज़ें.
(७) ईमानदार.
(८) और इतरा कर और अपने माल पर घमण्ड करके कहने लगा कि --
(९) मेरा कुटुम्ब क़बीला बड़ा है, मुलाज़िम, ख़िदमतगार, नौकर चाकर बहुत हैं.
(१०) और मुसलमान का हाथ पकड़ कर उसको साथ ले गया. वहाँ उसको गर्व से हर तरफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिखाई.

اِلٰى رَبِّیْ لَاَجِدَنَّ خَیْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ
لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ یُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِیْ
خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ
رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّیْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّیْٓ
اَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا
شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ
مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّیْٓ اَنْ یُّؤْتِیَنِ
خَیْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَیُرْسِلَ عَلَیْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِیْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ یُصْبِحَ مَآؤُهَا
غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِیْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِیْطَ بِثَمَرِهٖ
فَاَصْبَحَ یُقَلِّبُ كَفَّیْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِیْهَا وَهِیَ
خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَیَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ لَمْ اُشْرِكْ
بِرَبِّیْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ یَّنْصُرُوْنَهٗ

अपने रब की तरफ़ फिर गया भी तो ज़रूर उस बाग़ से बहतर पलटने की जगह पाऊंगा[१३]﴾३६﴿ उसके साथी[१४] ने उससे उलट फेर करते हुए जवाब दिया क्या तू उसके साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया[१५]﴾३७﴿ लेकिन मैं तो यही कहता हूँ कि वह अल्लाह ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूँ﴾३८﴿ और क्यों न हुआ कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे अल्लाह हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर अल्लाह की मदद का[१६] अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था[१७]﴾३९﴿ तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे[१८] और तेरे बाग़ पर आसमान से बिजलियां उतारे तो वह पटपर मैदान होकर रह जाए[१९]﴾४०﴿ या उसका पानी ज़मीन में धंस जाए[२०] फिर तू उसे कभी तलाश न कर सके[२१]﴾४१﴿ और उसके फल घेर लिये गए[२२] तो अपने हाथ मलता रह गया[२३] उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वह अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ था[२४] और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता﴾४२﴿ और उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह के सामने उसकी मदद

(११) कुफ़्र के साथ, और बाग़ की ज़ीनत और ज़ेबाइश और रौनक़ और बहार देखकर मग़रूर हो गया और..
(१२) जैसा कि तेरा गुमान है, फ़र्ज़ कर.
(१३) क्योंकि दुनिया में भी मैं ने बेहतरीन जगह पाई है.
(१४) मुसलमान.
(१५) अक़्ल और बालिग़पन, क़ुव्वत और ताक़त अता की और तू सब कुछ पाकर काफ़िर हो गया.
(१६) अगर तू बाग़ देखकर माशाअल्लाह कहता और ऐतिराफ़ करता कि यह बाग़ और उसकी सारी उपज और नफ़ा अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसके फ़ज़्ल और करम से हैं और सब कुछ उसके इख़्तियार में है चाहे उसको आबाद रखे चाहे वीरान कर दे. ऐसा कहता तो यह तेरे हक़ में बेहतर होता. तूने ऐसा क्यों नहीं कहा.
(१७) इस वजह से घमण्ड में जकड़ा हुआ था और अपने आप को बड़ा समझता था.
(१८) दुनिया में या आख़िरत में.
(१९) कि उसमें सब्ज़े का नामो निशान बाक़ी न रहे.
(२०) नीचे चला जाय कि किसी तरह निकाला न जा सके.
(२१) चुनांचे ऐसा ही हुआ, अज़ाब आया.
(२२) और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया.
(२३) पशेमानी और हसरत से.
(२४) इस हाल को पहुंच कर उसको मूमिन की नसीहत याद आती है और अब वह समझता है कि यह उसके कुफ़्र और सरकशी का नतीजा है.

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ
الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ
هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ
اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ
وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوْا
عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

करती न वह बदला लेने के क़ाबिल था[२५] ﴿४३﴾ यहाँ खुलता है[२६] कि इख़्तिार सच्चे अल्लाह का है, उसका सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अंजाम सब से भला ﴿४४﴾

छटा रूकू

और उनके सामने[१] दुनिया की ज़िन्दगी की कहावत बयान करो[२] जैसे एक पानी हमने आसमान से उतारा तो उसके कारण ज़मीन का सब्ज़ा घना होकर निकला[३] कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं[४] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू वाला है[५] ﴿४५﴾ माल और बेटे यह जीती दुनिया का सिंगार है[६] और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें[७] उनका सवाब तुम्हारे रब के यहाँ बेहतर और वह उम्मीद में सबसे भली ﴿४६﴾ और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे[८] और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई देखोगे[९] और हम उन्हें उठाएंगे[१०] तो उनमें से किसी को न छोड़ेंगे ﴿४७﴾ और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे पेश होंगे[११] बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हमने तुम्हें पहली बार बनाया था[१२] बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वादे का वक़्त न रखेंगे[१३] ﴿४८﴾ और अआमाल नामा रखा जाएगा[१४] तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसके लिखे से डरते होंगे और[१५] कहेंगे हाय ख़राबी हमारी इस

(२५) कि नष्ट हुई चीज़ को वापस कर सकता.
(२६) और ऐसे हालात में मालूम होता है.

सूरए कहफ़ - छटा रूकू

(१) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(२) कि उसकी हालत ऐसी है.
(३) ज़मीन तरो ताज़ा हुई, फिर क़रीब ही ऐसा हुआ.
(४) और परागन्दा कर दें.
(५) पैदा करने पर भी और नष्ट करने पर भी. इस आयत में दुनिया की ताज़गी, हरे भरे पन और उसके नाश और हलाक होने की सब्ज़े से उपमा दी गई है कि जिस तरह हरियाली खिल कर नष्ट हो जाती है और उसका नाम निशान बाक़ी नहीं रहता, यही हालत दुनिया की क्षण भर ज़िन्दगी की है, उसपर घमण्ड करना या मर मिटना अक़्ल का काम नहीं.
(६) क़ब्र की राह और आख़िरत के लिये तोशा नहीं. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि माल और औलाद दुनिया की खेती हैं और नेक काम आख़िरत की और अल्लाह तआला अपने बहुत से बन्दों को ये सब अता करता है.
(७) बाक़ी रहने वाली अच्छी बातों से नेक कर्म मुराद हैं जिनके फल इन्सान के लिये बाक़ी रहते हैं जैसा कि पाँचों वक़्त की नमाज़ें और अल्लाह का ज़िक्र और स्तुति . हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने "बाक़ी रहने वाली अच्छी बातों" की कसरत का हुक्म फ़रमाया. सहाबा ने अर्ज़ किया कि वो क्या है, फ़रमाया "अल्लाहो अकबर, लाइलाहा इल्लल्लाह, सुबहानल्लाहे वलहम्दु लिल्लाहे वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहे" पढ़ना.
(८) कि अपनी जगह से उखड़ कर बादल की तरह रवाना होंगे.
(९) न उस पर कोई पहाड़ होगा, न इमारत, न दरख़्त.
(१०) क़ब्रों से और हिसाब के मैदान में हाज़िर करेंगे.
(११) हर हर उम्मत की जमाअत की पंक्तियाँ अलग अलग, अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएगा.
(१२) ज़िन्दा, नंगे बदन, नंगे पाँव, माल और दौलत के बिना.
(१३) जो वादा कि हम ने नबियों की ज़बान पर फ़रमाया था. यह उनसे फ़रमाया जाएगा जो लोग मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا ۚ وَ
وَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ
بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ
عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ
فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا
مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ

منزل ٤

नविश्ते (लेखे) को क्या हुआ न इसने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो, और अपना सब किया उन्होंने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता[१६] (४९)

सातवाँ रूकू

और याद करो जब हमने फ़रिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो[१] तो सबने सज्दा किया सिवा इब्लीस के कि जिन्न क़ौम से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया[२] भला क्या उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो[३] और वो तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदला मिला[४] (५०) न मैं ने आसमानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न ख़ुद उनके बनाते वक़्त और न मेरी शान कि गुमराह करने वालों को बाज़ू बनाऊं[५] (५१) और जिस दिन फ़रमाएगा[६] कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे तो उन्हें पुकारेंगे वो उन्हें जवाब न देंगे और हम उनके[७] दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे[८] (५२) और मुजरिम दोज़ख़ को देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे फिरने की कोई जगह न पाएंगे (५३)

आठवाँ रूकू

और बेशक हमने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म

और क़यामत क़ायम होने के इन्कारी थे.

(१४) हर व्यक्ति का कर्म-लेखा उसके हाथ में. मूमिन का दाएं में और काफ़िर का बाएं में.

(१५) उसमें अपनी बुराइयाँ लिखी देखकर.

(१६) न किसी पर बेजुर्म अज़ाब करे, न किसी की नेकियाँ घटाए.

सूरए कहफ़ - सातवाँ रूकू

(१) ताज़ीम और आदर का.

(२) और हुक्म होने के बावुजूद उसने सज्दा न किया तो ऐ बनी आदम !

(३) और उनकी इताअत इख़्तियार करते हो.

(४) कि अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने की जगह शैतान के अनुकरण में जकड़े गए.

(५) मानी ये हैं कि चीज़ों के पैदा करने में तन्हा और अकेला हूँ न कोई मेरा सलाहकार, न कोई सहायक. फिर मेरे सिवा और किसी की इबादत किस तरह दुरूस्त हो सकती है.

(६) अल्लाह तआला काफ़िरों से ----

(७) यानी बुतों और बुत परस्तों के, या हिदायत वालों और गुमराही वालों के.

(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मौबिक़ जहन्नम की एक घाटी का नाम है.

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰی وَیَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِیَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ۚ وَیُجَادِلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰیٰتِیْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِیَ مَا قَدَّمَتْ یَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَی الْهُدٰی فَلَنْ یَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ یُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

की मिस्ल तरह तरह बयान फ़रमाई(१) और आदमी हर चीज़ से बढ़कर झगड़ालू है(२) ﴾५४﴿ और आदमियों को किस चीज़ ने इससे रोका कि ईमान लाते जब हिदायत(३) उनके पास आई और अपने रब से माफ़ी मांगते(४) मगर यह कि उनपर अगलों का दस्तूर आए(५) या उनपर क़िस्म क़िस्म का अज़ाब आए ﴾५५﴿ और हम रसूलों को नहीं भेजते मगर(६) ख़ुशी और(७) डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं वो बातिल के साथ झगड़ते हैं(८) कि उससे हक़ (सत्य) को हटादें और उन्होंने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे(९) ﴾५६﴿ उनकी हंसी बना ली. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वह मुंह फेर ले(१०) और उनके हाथ जो आगे भेज चुके(११) उसे भूल जाए, हमने उनके दिलों पर ग़लाफ़ कर दिये हैं कि क़ुरआन न समझें और उनके कानों में भारीपन(१२) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे(१३) ﴾५७﴿ और तुम्हारा रब बख़्शने वाला रहमत वाला है, अगर वह उन्हें(१४) उनके लिये पकड़ता तो जल्द उनपर अज़ाब भेजता(१५) बल्कि उनके

सूरए कहफ़ - आठवाँ रूकू

(१) ताकि समझें और नसीहत पकड़ें.

(२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहाँ आदमी से मुराद नज़र इब्ने हारिस है और झगड़े से उसका क़ुरआने पाक में झगड़ा करना. कुछ ने कहा उबई बिन ख़लफ़ मुराद है. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि सारे काफ़िर मुराद है. कुछ के नज़दीक आयत आम मानी में है और यही सबसे ज़्यदा सही है.

(३) यानी क़ुरआन शरीफ़ या रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक मुबारक ज़ात.

(४) मानी ये हैं कि उनके लिये उज़्र की जगह नहीं है क्योंकि उन्हें ईमान और इस्तग़फ़ार से कोई नहीं रोक सकता.

(५) यानी वह हलाकत जो मुक़द्दर है, उसके बाद.

(६) ईमानदारों और फ़रमाँबरदारों के लिये सवाब की.

(७) बेईमानों नाफ़रमानों के लिये अज़ाब का.

(८) और रसूलों को अपनी तरह का आदमी कहते हैं.

(९) अज़ाब के.

(१०) और नसीहत पकड़े और उनपर ईमान न लाए.

(११) यानी बुराई और गुनाह और नाफ़रमानी, जो कुछ उसने किया.

(१२) कि हक़ बात नहीं सुनते.

(१३) यह उनके हक़ में है जो अल्लाह के इल्म में ईमान से मेहरूम हैं.

(१४) दुनिया ही में.

(१५) लेकिन उसकी रहमत है कि उसने मोहलत दी और अज़ाब में जल्दी न फ़रमाई.

لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ۞ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى
اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ
مَّوْعِدًا ۞ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى
اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ۞ فَلَمَّا بَلَغَا
مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ
فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۞ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا
غَدَآءَنَا ؗ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۞
قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ
الْحُوْتَ ؗ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ
وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۞ قَالَ ذٰلِكَ
مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۞
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ
عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۞ قَالَ لَهٗ

लिये एक वादे का वक़्त है[१६] जिसके सामने कोई पनाह न पाएंगे﴾५८﴿ और ये बस्तियां हमने तबाह करदीं[१७] जब उन्होंने ज़ुल्म किया[१८] और हमने उनकी बर्बादी का एक वादा कर रखा था﴾५९﴿

नवाँ रूकू

और याद करो जब मूसा[१] ने अपने ख़ादिम से कहा[२] मैं बाज़ न रहूंगा जबतक वहाँ न पहुंचूं जहां दो समन्दर मिले हैं[३] या क़रनों (युगों) चला जाऊं[४]﴾६०﴿ फिर जब वो दोनों उन दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे[५] अपनी मछली भूल गए और उसने समन्दर में अपनी राह ली सुरंग बना ली﴾६१﴿ फिर जब वहां से गुज़र गए[६] मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुबह का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त (परिश्रम) का सामना हुआ[७]﴾६२﴿ बोला, भला देखिये तो जब हमने इस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करूं, और उसने[८] तो समन्दर में अपनी राह ली अचंभा है﴾६३﴿ मूसा ने कहा यही तो हम चाहते थे[९] तू पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते﴾६४﴿ तो हमारे बन्दों में से एक बन्दा पाया[१०] जिसे हमने अपने पास से रहमत दी[११] और उसे

(१६) यानी क़यामत का दिन, दोबारा उठाए जाने और हिसाब का दिन.
(१७) वहाँ के रहने वालों को हलाक कर दिया और वो बस्तियाँ वीरान हो गईं. उन बस्तियों से लूत, आद, समूद वग़ैरह क़ौमों की बस्तियाँ मुराद हैं.
(१८) सच्चाई को न माना और कुफ़्र इख़्तियार किया.

सूरए कहफ़ - नवाँ रूकू

(१) इब्ने इमरान, इज़्ज़त वाले नबी, तौरात और खुले चमत्कार वाले.
(२) जिनका नाम यूशअ इब्ने नून है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत और सोहबत में रहते थे और आप से इल्म हासिल किया करते थे और आपके बाद आपके वलीअहद हैं.
(३) पूर्व की दिशा में फ़ारस सागर, रूम सागर और मजमऊल बहरैन वह स्थान हैं जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात का वादा दिया गया था इसलिये आपने वहाँ पहुंचने का पक्का इरादा किया और फ़रमाया कि मैं अपनी कोशिश जारी रखूंगा जबतक कि वहाँ पहुंचूं .
(४) अगर वह जगह दूर हो, फिर यह हज़रात रोटी और खारी भुनी मछली टोकरी में तोशे के तौर पर लेकर रवाना हुए.
(५) जहाँ एक पत्थर की चट्टान थी और अमृत का चश्मा था तो वहाँ दोनों हज़रात ने आराम किया और सो गए. भुनी हुई मछली टोकरी में ज़िन्दा हो गई और कूद कर दरिया में गिरी और उसपर से पानी का बहाव रूक गया और एक मेहराब सी बन गई. हज़रत यूशअ को जागने के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से उसका ज़िक्र करना याद न रहा चुनांचे इरशाद होता है.
(६) और चलते रहे यहाँ तक कि दूसरे दिन खाने का वक़्त आया तो हज़रत ------
(७) थकान भी है और भूख का ज़ोर भी है और यह बात जबतक मजमऊल बहरैन पहुंचे थे पेश न आई थी, मंज़िले मक़सूद से आगे बढ़कर थकान और भूख मालूम हुई. इस में अल्लाह तआला की हिकमत थी कि मछली याद करें और उसकी तलब में मंज़िले मक़सूद की तरफ़ वापस हों. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के यह फ़रमाने पर ख़ादिम ने मअज़िरत की और -----
(८) यानी मछली ने.
(९) मछली का जाना ही तो हमारे मक़सद हासिल करने की कोशिश है और जिन की तलब में हम चले हैं उनकी मुलाक़ात वहीं होगी.
(१०) जो चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहा था. यह हज़रत ख़िज़्र थे. ख़िज़्र शब्द लुग़त में तीन तरह आया है ख़िज़्र, ख़ज़िर और ख़ज़्र. यह लक़ब है और इस लक़ब की वजह यह है कि जहाँ बैठते हैं या नमाज़ पढ़ते हैं वहाँ अगर घास ख़ुश्क हो तो हरी भरी हो जाती

مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا
عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ
بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ
فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ
ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ
جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا
نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ
نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

अपना इल्मे लदुन्नी अता किया[१२]﴾६५﴿ उससे मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूँ इस शर्त पर कि तुम मुझे सिखादोगे नेक बात जो तुम्हें तअलीम हुई[१३]﴾६६﴿ कहा आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे[१४]﴾६७﴿ और उस बात पर क्योंकर सब्र करेंगे जिसे आपका इल्म नहीं घेरे है[१५]﴾६८﴿ कहा बहुत जल्द अल्लाह चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा﴾६९﴿ कहा तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझसे किसी बात को न पूछना जबतक मैं ख़ुद उसका ज़िक्र न करूं[१६]﴾७०﴿

दसवाँ रूकू

अब दोनों चले यहां तक कि जब किश्ती में सवार हुए[१] उस बन्दे ने उसे चीर डाला[२] मूसा ने कहा क्या तुमने इसे इसलिये चीरा कि इसके सवारों को डुबा दो, बेशक यह तुमने बुरी बात की[३]﴾७१﴿ कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे[४]﴾७२﴿ कहा, मुझ से मेरी भूल पर गिरफ़्त न करो[५] और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल न डालो﴾७३﴿ फिर दोनों चले[६] यहाँ तक कि जब एक लड़का मिला[७] उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा, क्या तुमने एक सुथरी जान[८] बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी, बेशक तुमने बहुत बुरी बात की﴾७४﴿

है. आपका नाम बलिया बिन मल्कान और कुनियत अबुल अब्बास है. एक क़ौल यह है कि आप बनी इस्राईल में से हैं. एक क़ौल यह है कि आप शहज़ादे हैं. आपने दुनिया त्याग कर सन्यास इख़्तियार फ़रमाया.

(११) इस रहमत से या नबुव्वत मुराद है या विलायत या इल्म या लम्बी उम्र . आप वली तो यक़ीनन हैं आपके नबी होने में मतभेद है.

(१२) यानी अज्ञात का इल्म. मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया इल्मे लदुन्नी वह है जो बन्दे को इल्हाम के तौर से हासिल हो. हदीस शरीफ़ में है जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आपने उन्हें सलाम किया. उन्होंने पूछा कि तुम्हारे इलाक़े में सलाम कहाँ ? आपने फ़रमाया मैं मूसा हूँ. उन्होंने कहा कि बनी इस्राईल के मूसा? फ़रमाया कि जी हाँ. फिर ....

(१३) इससे मालूम हुआ कि आदमी को इल्म की तलब में रहना चाहिये चाहे वह कितना ही बड़ा आलिम हो. यह भी मालूम हुआ कि जिससे इल्म सीखे उसके साथ विनम्रता और आदर से पेश आए. (मदारिक) ख़िज्र ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जवाब में ----

(१४) हज़रत ख़िज्र ने यह इसलिये फ़रमाया कि वह जानते थे कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वर्जित और अवैध काम देखेंगे और नबियों से सम्भव ही नहीं कि वो अवैध काम देखकर सब्र कर सकें. फिर हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने इस बेसब्री का उज़्र भी ख़ुद ही बयान फ़रमाया और कहा.

(१५) और ज़ाहिर में वो इन्कारी हैं. हदीस शरीफ़ में है कि हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि एक इल्म अल्लाह तआला ने मुझ को ऐसा अता फ़रमाया जो आप नहीं जानते थे और एक इल्म आपको ऐसा अता फ़रमाया जो मैं नहीं जानता था. मुफ़स्सिरीन और हदीस के जानकार कहते हैं कि जो इल्म हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने अपने लिये ख़ास फ़रमाया वह बातिन और दिल के अन्दर की बात जानने का इल्म है और कमाल वालों के लिये यह बड़प्पन की बात है. चुनांचे बताया गया है कि हज़रते सिद्दीक़ को नमाज़ वग़ैरह नेकियों की बुनियाद पर सहाबा पर फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उनकी फ़ज़ीलत उस चीज़ से है जो उनके सीने में है यानी इल्मे बातिन और छुपी बातों का इल्म, क्योंकि जो काम करेंगे वह हिकमत से होंगे अगरचे देखने में ख़िलाफ़ मालूम हों.

(१६) इससे मालूम हुआ कि शागिर्द और शिष्य के कर्तव्यों में से है कि वह शैख़ और उस्ताद के कामों पर आलोचना न करे और प्रतीक्षा करे कि वह ख़ुद ही उसकी हिकमत ज़ाहिर फ़रमा दें. (मदारिक, अबू सऊद)

सूरए कहफ़ - दसवाँ रूकू

(१) और किश्ती वालों ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को पहचान कर कुछ लिये बिना सवार कर लिया.
(२) और बसूले या कुलहाड़ी से उसका एक तख़्ता या दो तख़्ते उखाड़ डाले, इसके बावुजूद किश्ती में पानी न आया.
(३) हज़रत ख़िज़्र ने.
(४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने.
(५) क्योंकि भूल चूक पर शरीअत की पकड़ नहीं.
(६) यानी किश्ती से उतर कर एक स्थान पर गुज़रे जहाँ लड़के खेल रहे थे.
(७) जो उनमें ख़ूबसूरत था और बालिग़ न हुआ था . कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा जवान था और डाका डालता था.
(८) जिसका कोई गुनाह साबित न था.

पारा पन्द्रह समाप्त

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ
صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍ بَعْدَهَا فَلَا
تُصٰحِبْنِىْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ اسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا
اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ
يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ
اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَبَيْنِكَ سَاُنَبِّئُكَ
بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ
فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ
اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ
غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِيْنَاۤ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَاۤ
اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

सोलहवां पारा- क़ाला अलम

(सूरए कहफ़ - दसवाँ रुकू जारी)

कहा[९] मैं ने आपसे न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे[१०] ﴿٧٥﴾ कहा इसके बाद मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी तरफ़ से तुम्हारा उज्र पूरा हो चुका ﴿٧٦﴾ फिर दोनों चले यहाँ तक कि जब एक गांव वालों के पास आए[११] उन दहक़ानों से खाना मांगा उन्होंने उन्हें दावत देनी क़ुबूल न की[१२] फिर दोनों ने उस गाँव में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है, उस बन्दे ने[१३] उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा तुम चाहते तो इसपर कुछ मज़दूरी ले लेते[१४] ﴿٧٧﴾ कहा यह[१५] मेरी और आपकी जुदाई है . अब मैं आप को इन बातों का फेर बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका[१६] ﴿٧٨﴾ वह जो किश्ती थी वह कुछ मोहताजों की थी[१७] कि दरिया में काम करते थे तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उनके पीछे एक बादशाह था[१८] कि हर साबुत किश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता[१९] ﴿٧٩﴾ और वह जो लड़का था उसके माँ बाप मुसलमान थे तो हमें डर हुआ कि वह उनको सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ादे[२०] ﴿٨٠﴾ तो हमने चाहा कि उन दोनों का रब उससे बहतर[२१] सुथरा और उससे ज़्यादा मेहरबानी में क़रीब अता करे[२२] ﴿٨١﴾

(सूरए कहफ़ - दसवाँ रुकू जारी)

(९) हज़रत ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा --------

(१०) इसके जवाब में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ---

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इस गाँव से मुराद अन्ताकिया है, वहाँ इन हज़रात ने.

(१२) और मेज़बानी पर तैयार न हुए. हज़रत क़तादा से रिवायत है कि वह बस्ती बहुत बदतर है जहाँ मेहमानों की आवभगत न की जाए.

(१३) यानी हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने अपना मुबारक हाथ लगाकर अपनी करामत से.

(१४) क्योंकि यह तो हमारी हाजत का वक़्त है, और बस्ती वालों ने हमारी कुछ आवभगत नहीं की. ऐसी हालत में उनका काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था. इसपर हज़रत ख़िज़्र ने.

(१५) वक़्त या इस बार का इन्कार.

(१६) और उनके अन्दर जो राज़ थे, उनका इज़हार कर दूंगा.

(१७) जो दस भाई थे, उनमें पाँच तो अपंग थे जो कुछ नहीं कर सकते थे, और पांच स्वस्थ थे जो ------

(१८) कि उन्हें वापसी में उसकी तरफ़ गुज़रना होता. उस बादशाह का नाम जलन्दी था. किश्ती वालों को उसका हाल मालूम न था और उसका तरीक़ा यह था.

(१९) और अगर ऐबदार होती, छोड़ देते. इसलिये मैं ने उस किश्ती को ऐबदार कर दिया कि वह उन ग़रीबों के लिये बच रहे.

(२०) और वह उसकी महब्बत में दीन से फिर जाएं और गुमराह हो जाएं, और हज़रत ख़िज़्र का यह अन्देशा इस कारण था कि वह अल्लाह के बताए से उसके अन्दर का हाल जानते थे. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि यह लड़का काफ़िर ही पैदा हुआ था. इमाम सुबकी ने फ़रमाया कि अन्दर का हाल जानकर बच्चे को क़त्ल कर देना हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ ख़ास है. उन्हें इसकी इजाज़त थी. अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे हाल पर सूचित हो तो उसको क़त्ल करना जायज़ नहीं. किताबे अराइस में है कि जब ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि तुमने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो यह उन्हें बुरा सा लगा और उन्होंने लड़के का कन्धा तोड़कर उसका गोश्त चीरा तो उसके अन्दर लिखा हुआ था, काफ़िर है, कभी अल्लाह पर ईमान न लाएगा. (जुमल)

(२१) बच्चा गुनाहों और अपवित्रता से पाक और ----

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ
تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ
اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۚ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ
تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۚ
قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي
الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ
سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ
فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا
الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ
حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ
اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ

रही वह दीवार, वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी[२३] और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना था[२४] और उनका बाप नेक आदमी था,[२५] तो आपके रब ने चाहा कि वो दोनों अपनी जवानी को पहुंचें[२६] और अपना ख़ज़ाना निकालें आपके रब की रहमत से और यह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया,[२७] यह फेर है उन बातों का जिसपर आपसे सब्र न हो सका[२८]﴿८२﴾

ग्यारहवाँ रूकू

और तुम से[१] ज़ुल क़रनैन को पूछते हैं,[२] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें उसका ज़िक्र पढ़कर सुनाता हूँ﴿८३﴾ बेशक हमने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का एक सामान अता फ़रमाया[३]﴿८४﴾ तो वह एक सामान के पीछे चला[४]﴿८५﴾ यहाँ तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक काली कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया[५] और वहाँ[६] एक क़ौम मिली[७] हमने फ़रमाया, ऐ ज़ुल क़रनैन या तो तू उन्हें अज़ाब दे[८] या उनके साथ भलाई इख़्तियार करे[९]﴿८६﴾ अर्ज़ की कि वह जिसने ज़ुल्म किया[१०] उसे तो हम बहुत जल्द सज़ा देंगे[११] फिर अपने रब की तरफ़ फेरा जाएगा[१२] वह उसे बुरी मार देगा﴿८७﴾ और जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उसका बदला भलाई है[१३] और बहुत

(२२) जो माँ बाप के साथ अदब और सदव्यवहार और महब्बत रखता हो. रिवायत है कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक बेटी अता की जो एक नबी के निकाह में आई और उससे नबी पैदा हुए, जिन के हाथ अल्लाह तआला ने एक उम्मत को हिदायत दी. बन्दे को चाहिये कि अल्लाह तआला के लिखे पर राज़ी रहे, इसी में बेहतरी होती है.

(२३) जिनके नाम असरम और सरीम थे.

(२४) तिरमिज़ी की हदीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना चांदी गड़ा हुआ था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया उसमें सोने की एक तख़्ती थी उसपर एक तरफ़ लिखा था उस का हाल अजीब है, जिसे मौत का यक़ीन हो उसको ख़ुशी किस तरह होती है. उसका हाल अजीब है जो तक़दीर का यक़ीन रखे उसको गुस्सा कैसे आता है. उसका हाल अजीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो, वह क्यों लालच में पड़ता है, उसका हाल अजीब है जिसे हिसाब का यक़ीन हो वह कैसे ग़ाफ़िल रहता है. उसका हाल अजीब है जिसको दुनिया के पतन और परिवर्तन का यक़ीन हो वह कैसे संतुष्ट होता है और उसके साथ लिखा था "**ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह**" और दूसरी तरफ़ उस तख़्ती पर लिखा था मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, मैं यकता हूँ मेरा कोई शरीक नहीं, मैं ने अच्छाई और बुराई पैदा की, उसके लिये ख़ुशी जिसे मैं ने अच्छाई के लिये पैदा किया और उसके हाथों पर भलाई जारी की, उसके लिये तबाही जिसको शर के लिये पैदा किया और उसके हाथों पर बुराई जारी की.

(२५) उसका नाम काशेह था और यह व्यक्ति परहेज़गार था. हज़रत मुहम्मद इब्ने मुनकदर ने फ़रमाया अल्लाह तआला बन्दे की नेकी से उसकी औलाद को और उसकी औलाद की औलाद को और उसके कुटुम्ब वालों को और उसके महल्लादारों को अपनी हिफ़ाज़त में रखता है.

(२६) और उनकी अक़्ल कामिल हो जाए और वह तॉक़तवर और मज़बूत हो जाएं.

(२७) बल्कि अल्लाह के हुक्म और इल्हाम से किया.

(२८) कुछ लोग वली को नबी से बढ़ा देख कर गुमराह हो गए और उन्होंने यह ख़्याल किया कि हज़रत मूसा को हज़रत ख़िज़्र से इल्म हासिल करने का हुक्म दिया गया जबकि हज़रत ख़िज़्र वली हैं और हक़ीक़त में वली को नबी से बड़ा मानना खुला कुफ़्र है और हज़रत ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हा जैसा कि कुछ का गुमान है तो यह अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ में आज़माइश है. इसके अलावा यह कि किताब वाले इसे मानते हैं कि यह बनी इस्राईल के पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वाक़िआ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से वली बनता है तो यह नामुमकिन है कि वह नबी से बढ़ जाए (मदारिक). अक्सर उलमा इसपर हैं और सूफ़ियों के बड़े और इरफ़ान वालों की इसपर सहमति है कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं. शैख़ अबू अम्र बिन सलाह ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि हज़रत ख़िज़्र

أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ
الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن
دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن
دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا يَا ذَا
الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ
سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي
بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ
حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انفُخُوا
حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾
فَمَا اسْطَاعُوا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾
قَالَ هَٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ

जल्द हम उसे आसान काम कहेंगे[१४] ﴿८८﴾ फिर एक सामान के पीछे चला[१५] ﴿८९﴾ यहाँ तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी क़ौम पर निकलता पाया जिनके लिये हमने सूरज से कोई आड़ न रखी[१६] ﴿९०﴾ बात यही है और जो कुछ उसके पास था[१७] सब को हमारा इल्म घेरे है[१८] ﴿९१﴾ फिर एक सामान के पीछे चला[१९] ﴿९२﴾ यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा उनसे उधर कुछ ऐसे लोग पाए कि कोई बात समझते मालूम न होते थे[२०] ﴿९३﴾ उन्होंने कहा ऐ ज़ुल क़रनैन बेशक याजूज माजूज[२१] ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिये कुछ माल मुक़र्रर कर दें इसपर कि आप हमें और उनमें एक दीवार बना दें[२२] ﴿९४﴾ कहा वह जिसपर मुझे मेरे रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है [२३] तो मेरी मदद ताक़त से करो [२४] मैं तुम में और उनमें एक मज़बूत आड़ बना दूं[२५] ﴿९५﴾ मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ,[२६] यहाँ तक कि जब वो दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धौंको, यहाँ तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं इसपर गला हुआ तांबा उंडेल दूं ﴿९६﴾ तो याजूज माजूज उसपर न चढ़ सके और न उसमें सूराख़ कर सके ﴿९७﴾ कहा[२७] यह मेरे रब की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वादा आएगा[२८]

बेशतर उलमा के नज़दीक ज़िन्दा हैं. यह भी कहा गया है कि हज़रत ख़िज़्र और इलियास दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल हज के ज़माने में मिलते हैं. यह भी आया है कि हज़रत ख़िज़्र ने अमृत के चश्मे में स्नान फ़रमाया और उसका पानी पिया . सही क्या है इसका इल्म तो अल्लाह ही को है. (ख़ाज़िन)

सूरए कहफ़ - ग्यारहवाँ रूकू

(१) अबू जहल वग़ैरह मक्का के काफ़िर या यहूदी, इम्तिहान के तौर पर -----

(२) ज़ुल क़रनैन का नाम इस्कन्दर है. यह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के ख़ालाज़ाद भाई हैं. इन्होंने इस्कन्दरिया बसाया और उसका नाम अपने नाम पर रखा . हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम उनके वज़ीर और झण्डे के इन्चार्ज थे. दुनिया में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो सारे जगत पर राज करते थे. दो ईमान वाले, हज़रत ज़ुल क़रनैन और हज़रत सुलैमान अला नबिय्यना व अलैहिस्सलाम, और दो काफ़िर, नमरूद और बुख़्ते नस्सर. और बहुत जल्द एक पाँचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिनका नाम हज़रत इमाम मेहदी है, उनकी हुकूमत सारी धरती पर होगी. ज़ुल-क़रनैन के नबी होने में मतभेद है. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, वह न नबी थे, न फ़रिश्ते, अल्लाह से महब्बत करने वाले बन्दे थे. अल्लाह ने उन्हें मेहबूब बनाया.

(३) जिस चीज़ की, ख़ल्क़ यानी सृष्टि को हाजत होती है और जो कुछ बादशाहों को प्रदेश फ़तह करने और दुश्मनों से लड़ने में दरकार होता है, वह सब प्रदान किया.

(४) सबब या साधन वह चीज़ है जो उद्देश तक पहुंचने का ज़रिया हो, चाहे इल्म हो या क़ुदरत, तो ज़ुलक़रनैन ने जिस उद्देश्य का इरादा किया उसी का साधन इख़्तियार किया.

(५) ज़ुल क़रनैन ने किताबों में देखा था कि साम की औलाद में से एक व्यक्ति अमृत के चश्मे का पानी पियेगा और उसको मौत न आएगी. यह देखकर वह उस चश्मे की तलाश में पूर्व और पश्चिम की तरफ़ रवाना हुए और आपके साथ हज़रत ख़िज़्र भी थे. वह तो चश्मे तक पहुंच गए और उन्होंने पी भी लिया मगर ज़ुल क़रनैन के भाग्य में न था उन्होंने न पाया. इस सफ़र में पश्चिम की तरफ़ रवाना हुए तो जहाँ तक आबादी है वो सब मंज़िलें तय कर डालीं और पश्चिम दिशा में वहाँ पहुंचे जहाँ आबादी का नामो निशान बाक़ी न रहा, वहाँ उन्हें सूरज अस्त होते समय ऐसा नज़र आया जैसे कि वह काले चश्मे में डूबता है जैसा कि दरिया में सफ़र करने वाले को पानी में डूबता महसूस होता है.

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ
يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ
جَمْعًا ۝ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ۝
الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۝ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ
يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْٓ اَوْلِيَآءَ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ
لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ
اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا
نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ۝ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ
جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِىْ وَرُسُلِىْ هُزُوًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ

उसे पाश पाश कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है[२९]﴿९८﴾ और उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि उनका एक गिरोह दूसरे पर रेला आवेगा और सूर फूंका जाएगा [३०] तो हम सब को [३१] इकट्ठा कर लाएंगे﴿९९﴾ और हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएंगे[३२]﴿१००﴾ वो जिनकी आंखों पर मेरी याद से पर्दा पड़ा था [३३] और हक़ (सत्य) बात न सुन सकते थे[३४]﴿१०१﴾

बारहवाँ रूकू

तो क्या काफ़िर यह समझते हैं कि मेरे बन्दों को[१] मेरे सिवा हिमायती बना लेंगे,[२] बेशक हमने काफ़िरों की मेहमानी को जहन्नम तैयार कर रखी है﴿१०२﴾ तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बतादें कि सब से बढ़कर नाक़िस (दूषित) कर्म किन के हैं[३]﴿१०३﴾ उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई[४] और वो इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं﴿१०४﴾ ये लोग जिन्हों ने अपने रब की आयतों और उसका मिलना न माना[५] तो उनका किया धरा सब अकारत है तो हम उनके लिए क़यामत के दिन कोई तौल न क़ायम करेंगे[६]﴿१०५﴾ यह उनका बदला है जहन्नम उसपर कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई﴿१०६﴾ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उनकी मेहमानी है[७]

(६) उस चश्मे के पास.
(७) जो शिकार किये हुए जानवरों की खालें पहने थे. इसके सिवा उनके बदन पर और कोई लिबास न था और दरिया के मुर्दा जानवर उनकी ख़ुराक थे, ये लोग काफ़िर थे.
(८) और उनमें जो इस्लाम में दाख़िल न हो, उसको क़त्ल कर दे.
(९) और उन्हें शरीअत के आदेशों की तअलीम दे अगर वो ईमान लाएं.
(१०) यानी कुफ़्र और शिर्क इख़्तियार किया, ईमान न लाया.
(११) क़त्ल करेंगे . यह उसकी दुनियावी सज़ा है.
(१२) क़यामत में.
(१३) यानी जन्नत.
(१४) और उसको ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उसपर आसान हों, दुश्वार न हों . अब ज़ुल क़रनैन की निस्बत इरशाद फ़रमाया जाता है कि वह ----
(१५) पूरब की दिशा में.
(१६) उस स्थान पर जिस के और सूर्य के बीच कोई चीज़ पहाड़ दरख़्त वग़ैरह अड़ी नहीं थी न वहाँ कोई इमारत क़ायम हो सकती थी और वहाँ के लोगों का यह हाल था कि सूर्योदय के वक़्त गुफ़ाओं में घुस जाते थे और ज़वाल के बाद निकल कर अपना काम काज करते थे.
(१७) फ़ौज, लशकर, हथियार, सल्तनत का सामान. और कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया, सल्तनत और प्रशासन व हुकूमत करने की योग्यता.
(१८) मुफ़स्सिरों ने "कज़ालिका" (बात यही है) के मानी में यह भी कहा है कि तात्पर्य यह है कि ज़ुल क़रनैन ने जैसा पश्चिमी क़ौम के साथ सुलूक किया था, ऐसा ही पूरब वालों के साथ भी किया, क्योंकि ये लोग भी उनकी तरह काफ़िर थे. तो जो उनमें से ईमान लाए उनके साथ एहसान किया और जो कुफ़्र पर अड़े रहे, उन पर अज़ाब.
(१९) उत्तर की दिशा में. (ख़ाज़िन)

(२०) क्योंकि उनकी ज़बान अजीब थी, उनके साथ इशारे वग़ैरह की मदद से बड़ी कठिनाई से बात की जा सकती थी.
(२१) यह याफ़िस बिन नूह अलैहिस्सलाम की औलाद से फ़सादी गिरोह हैं, उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है. ज़मीन में फ़साद करते थे. रबीअ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियाँ और सब्ज़े सब खा जाते थे, कुछ न छोड़ते थे और सूखी चीज़ें लादकर ले जाते थे. आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों, वहशी जानवरों, साँपों, बिच्छुओं तक को खा जाते थे. हज़रत ज़ुल-क़रनैन से लोगों ने उनकी शिकायत की कि वो -----
(२२) ताकि वो हम तक न पहुंच सकें और हम उनकी शरारतों और आतंक से सुरक्षित रहें.
(२३) यानी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास बहुत सा माल और क़िस्म क़िस्म का सामान मौजूद है, तुमसे कुछ लेने की हाजत नहीं.
(२४) और जो काम मैं बताऊं, वह पूरा करो.
(२५) उन लोगों ने अर्ज़ किया, फिर हमारे लिये क्या सेवा है, फ़रमाया -----
(२६) और बुनियाद खुदवाई, जब पानी तक पहुंची तो उसमें पत्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे कर उनके बीच लकड़ी और कोयला भर दिया और आग दे दी. इस तरह यह दीवार पहाड़ की ऊंचाई तक बलन्द कर दी गई और दोनों पहाड़ों के बीच कोई जगह न छोड़ी गई . ऊपर से पिघला हुआ तांबा दीवार में पिला दिया गया. यह सब मिलकर एक सख़्त जिस्म बन गया.
(२७) ज़ुल-क़रनैन, कि -----
(२८) और याजूज माजूज के निकलने का वक़्त आ पहुंचेगा, क़यामत के क़रीब ----
(२९) हदीस शरीफ़ में है कि याजूज माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब इसके तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उनमें कोई कहता है अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे. दूसरे दिन जब आते हैं तो वह अल्लाह के हुक्म से दीवार और ज़्यादा मज़बूत हो जाती है. जब उनके निकलने का वक़्त आएगा तो उनमें कहने वाला कहेगा अब चलो, बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे, इन्शाअल्लाह. इन्शाअल्लाह कहने का यह फल होगा कि उस दिन की मेहनत ज़ाया न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार उतनी टूटी मिलेगी जितना पहले रोज़ तोड़ गए थे. अब वह निकल जाएंगे और ज़मीन में फ़साद उठाएंगे. क़त्ल व ख़ून करेंगे और चश्मों का पानी पी जाएंगे. जानवरों, दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आएँगे उनको खा जाएंगे. मक्कए मुकर्रमा, मदीनए तैय्यिबह और बैतुल मक़दिस में दाख़िल न हो सकेंगे. अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उन्हें हलाक करेगा इस तरह कि उनकी गर्दनों में कीड़े पैदा होंगे जो उनकी हालाकत का कारण होंगे. इससे साबित होता है कि याजूज माजूज का निकलना.
(३०) क़यामत क़रीब होने की निशानियों में से है.
(३१) यानी सारी सृष्टि को अज़ाब और सवाब के लिए क़यामत के दिन.
(३२) कि उसको साफ़ देखें.
(३३) और वह अल्लाह की आयतों और क़ुरआन और हिदायत, और क़ुदरत के प्रमाणों और ईमान से अंधे बने रहे और उनमें से किसी चीज़ को वो न देख सके.
(३४) अपने दुर्भाग्य से, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखने के कारण.

सूरए कहफ़ - बारहवाँ रूकू

(१) जैसा कि हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते.
(२) और उससे कुछ नफ़ा पाएंगे, ये गुमान ग़लत है. बल्कि वो बन्दे उनसे बेज़ार हैं और बेशक हम उनके इस शिर्क पर अज़ाब करेंगे.
(३) यानी वो कौन लोग हैं जो अमल करके थके और मेहनत उठाई और यह उम्मीद करते रहे कि उन कर्मों पर पुण्य से नवाज़े जाएंगे मगर इसके बजाय हलाकत और बर्बादी में पड़े. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया वो यहूदी और ईसाई हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि वो पादरी लोग हैं जो दुनिया से अलग थलग रहते थे. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ये ख़ारिजी लोग हैं.
(४) और कर्म बातिल हो गए.
(५) रसूल और क़ुरआन पर ईमान न लाए और मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब और सवाब व अज़ाब के इन्कारी रहे.
(६) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोग ऐसे कर्म लाएंगे जो उनके ख़याल में मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों से बड़े होंगे लेकिन जब वो तौले जाएंगे तो उनमें वज़न कुछ न होगा.

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا
حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ
الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ
مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ
عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ (٤٤) (١٩) آياتها ٩٨ ركوعاتها ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ
الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ
وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ

﴾१०७﴿ वो हमेशा उन ही में रहेंगे उनसे जगह बदलना न चाहेंगे(८)﴾१०८﴿ तुम फ़रमा दो अगर समन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगरचे हम वैसा ही और उसकी मदद को ले आएं(९)﴾१०९﴿ तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूँ,(१०) मुझे वही आती है कि तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है(११)तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे(१२)﴾११०﴿

१९- सूरए मरयम

पहला रूकू

सूरए मरयम मक्का में उतरी, इसमें ९८ आयतें, ६ रूकू हैं.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) काफ़-हा-या-ऐन-सॉद﴾१﴿ यह ज़िक्र है तेरे रब की उस रहमत का जो उसने अपने बन्दे ज़करिया पर की ﴾२﴿ जब उसने अपने रब को आहिस्ता पुकारा(२)﴾३﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई(३) और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी नामुराद न रहा(५)﴾४﴿ और मुझे अपने बाद अपने क़राबत वालों (रिश्तेदारों) का डर है(६) और मेरी औरत बांझ है तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा

(७) हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह से मांगो तो फ़िरदौस मांगो क्योंकि वह जन्नतों में सबके बीच और सबसे बलन्द है और उसपर रहमान का अर्श है और उसी से जन्नत की नेहरें जारी होती हैं. हज़रत कअब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सबसे अअला है, इसमें नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐश करेंगे.

(८) जिस तरह दुनिया में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो, उस से और बलन्द जगह की तलब रखता है. यह बात वहाँ न होगी क्योंकि वो जानते होंगे कि अल्लाह के फ़ज़्ल से उन्हें बहुत ऊंचा मकान और उसमें रहना हासिल है.

(९) यानी अगर अल्लाह तआला के इल्म व हिकमत के कलिमात लिखे जाएं और उनके लिये सारे समन्दरों का पानी रौशनाई बना दिया जाए और सारी सृष्टि लिखे तो वो कलिमात ख़त्म न हों और यह सारा पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए. मतलब यह है कि उसके इल्म और हिकमत का अन्त नहीं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यहूदियों ने कहा ऐ मुहम्मद !(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आपका ख़याल है कि हमें हिकमत दी गई और आपकी किताब में है कि जिसे हिकमत दी गई उसे बहुत सी भलाई दी गई. फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म. इसपर यह आयत उतरी. एक क़ौल यह है कि जब आयत **"वमा ऊतीतुम मिनल इल्मे इल्ला क़लीलन"** उतरी तो यहूदियों ने कहा कि हमें तौरात का इल्म दिया और उसमें हर चीज़ का इल्म है. इसपर यह आयत उतरी. मतलब यह है कि कुल चीज़ का इल्म भी अल्लाह के इल्म के सामने कम है और उतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक बूंद की समन्दर से हो.

(१०) कि मुझ पर आदमी की सी तकलीफ़ें और बीमारियाँ आती है और विशेष सूरत में भी आपका जैसा नहीं कि अल्लाह तआला ने आपको हुस्न और सूरत में सबसे अअला और ऊंचा किया और हक़ीक़त और रूह और बातिन के ऐतिबार से तो सारे नबी आदमियों की विशेषताओं और गुणों से ऊंचे हैं जैसा कि क़ाज़ी अयाज़ की शिफ़ा में है और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने मिश्कात की शरह में फ़रमाया कि नबियों के जिस्म और ज़ाहिरी बातें तो आदमियों की तरह रखी गईं और उनकी आत्मा और बातिन आदमियत से ऊंची और नूरानियत की बलन्दी पर हैं. शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने सूरए वद्दुहा की तफ़सीर में फ़रमाया कि आपकी बशरियत का वुजूद असला न रहे और अनवारे हक़ का ग़लबा आप पर अलद दवाम हासिल हो, हर हाल में आपकी ज़ात और कमालात में आप का कोई भी मिस्ल नहीं. इस आयत में आपको अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिया के बयान का इज़हार विनम्रता के लिये हुक्म फ़रमाया गया. यही फ़रमाया है हज़रत इब्ने अब्बास

وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ
نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ
لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ
الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ
هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ
ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ
فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ
الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا
عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ
يُبْعَثُ حَيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ

ले[७] ﴾५﴿ वह मेरा जानशीन हो और यअक़ूब की औलाद का वारिस हो, और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर[८] ﴾६﴿ ऐ ज़करिया हम तुझे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं एक लड़के की जिनका नाम यहया है इसके पहले हमने इस नाम का कोई न किया ﴾७﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहाँ से होगा मेरी औरत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की हालत को पहुंच गया[९] ﴾८﴿ फ़रमाया ऐसा ही है,[१०] तेरे रब ने फ़रमाया वह मुझे आसान है और मैंने तो इससे पहले तुझे उस वक़्त बनाया जब तू कुछ भी न था[११] ﴾९﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे,[१२] फ़रमाया तेरी निशानी यह है कि तू तीन रात दिन लोगों से कलाम न करे भला चंगा होकर[१३] ﴾१०﴿ तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया[१४] तो उन्हें इशारे से कहा कि सुबह शाम तस्बीह करते रहो[१५] ﴾११﴿ ऐ यहया किताब[१६] मज़बूत थाम और हमने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी[१७] ﴾१२﴿ और अपनी तरफ़ से मेहरबानी[१८] और सुथराई[१९] और कमाल डर वाला था[२०] ﴾१३﴿ और अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था ज़बरदस्त व नाफ़रमान न था[२१] ﴾१४﴿ और सलामती है उसपर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन मुर्दा उठाया जाएगा[२२] ﴾१५﴿

दूसरा रूकू

और किताब में मरयम को याद करो[१] जब अपने घर वालों

रदियल्लाहो अन्हुमा ने. (ख़ाज़िन) किसी को जायज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने जैसा बशर कहे क्योंकि जो कलिमात इज़्ज़त वाले लोग विनम्रता के तौर पर कहते हैं उनका कहना दूसरों के लिये जायज़ नहीं होता. दूसरे यह कि जिसको अल्लाह तआला ने बड़ी बुज़ुर्गी और बलन्द दर्जे अता फ़रमाए हों उसकी इस बुज़ुर्गी और दर्जों का ज़िक्र छोड़ कर ऐसी सामान्य विशेषता या गुण का ज़िक्र करना जो हर व्यक्ति में पाया जाए, उन कमालात के न मानने के बराबर है. तीसरे यह कि क़ुरआन शरीफ़ में जगह जगह काफ़िरों का तरीक़ा बताया गया है कि वो नबियों को अपने जैसा बशर कहते थे और इसी से गुमराही में जकड़े गए. फिर इस आयत के बाद आयत "यूहा इलैया" में हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विशेष इल्म और अल्लाह की बारगाह में उनकी बुज़ुर्गी का बयान है.

(११) उसका कोई शरीक नहीं.

(१२) बड़े शिर्क से भी बचे और रिया यानी दिखावे से भी, जिसको छोटा शिर्क कहते हैं. मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें हिफ़्ज़ करे, अल्लाह तआला उसको दज्जाल के फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रखेगा. यह भी हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ को पढ़े वह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रहेगा.

१९ - सूरए मरयम - पहला रूकू

(१) सूरए मरयम मक्का में उतरी, इसमें छ रूकू, अठानवे आयतें, सात सौ अस्सी कलिमे हैं.

(२) क्योंकि आहिस्तगी, दिखावे से दूर और इख़लास से भरपूर होती है. इसके अलावा यह भी फ़ायदा था कि बुढ़ापे की उम्र में जबकि आपकी उम्र पछहत्तर या अस्सी बरस की थी, लोग बुरा भला कहें. इसलिये भी इस दुआ का छुपाना या आहिस्ता रखना मुनासिब था. एक क़ौल यह भी है कि बुढ़ापे की कमज़ोरी की वजह से हज़रत की आवाज़ भी कमज़ोर हो गई थी. (मदारिक, ख़ाज़िन)

(३) यानी बुढ़ापे की कमज़ोरी इस हद को पहुंच गई कि हड्डी जो बहुत मज़बूत अंग है उसमें कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी अंगों की हालत का क्या बयान हो.

(४) कि सारा सर सफ़ेद हो गया.

(५) हमेशा तूने मेरी दुआ क़ुबूल की.

(६) चचाज़ाद वग़ैरह का कि वो शरीर लोग हैं कहीं मेरे बाद दीन में अड़चन न करें जैसा कि बनी इस्राईल से देखने में आ चुका है.

مِنۡ اَهۡلِهَا مَكَانًا شَرۡقِيًّا ۙ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتۡ مِنۡ دُوۡنِهِمۡ
حِجَابًا ۚ فَاَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهَا رُوۡحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتۡ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِالرَّحۡمٰنِ مِنۡكَ اِنۡ كُنۡتَ
تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوۡلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا
زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتۡ اَنّٰى يَكُوۡنُ لِىۡ غُلٰمٌ وَّلَمۡ يَمۡسَسۡنِىۡ بَشَرٌ وَّلَمۡ
اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجۡعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحۡمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمۡرًا
مَّقۡضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتۡهُ فَانۡتَبَذَتۡ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾
فَاَجَآءَهَا الۡمَخَاضُ اِلٰى جِذۡعِ النَّخۡلَةِ ۚ قَالَتۡ يٰلَيۡتَنِىۡ
مِتُّ قَبۡلَ هٰذَا وَكُنۡتُ نَسۡيًا مَّنۡسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰٮهَا مِنۡ
تَحۡتِهَاۤ اَلَّا تَحۡزَنِىۡ قَدۡ جَعَلَ رَبُّكِ تَحۡتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَ
هُزِّىۡۤ اِلَيۡكِ بِجِذۡعِ النَّخۡلَةِ تُسٰقِطۡ عَلَيۡكِ رُطَبًا
جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِىۡ وَاشۡرَبِىۡ وَقَرِّىۡ عَيۡنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

से पूरब की तरफ़ एक जगह अलग हो गई[२]﴾१६﴿ तो उनसे उधर[३] एक पर्दा कर लिया, तो उसकी तरफ़ हमने अपना रूहानी भेजा[४] वह उसके सामने एक तंदुरूस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुआ﴾१७﴿ बोली मैं तुझसे रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तुझे ख़ुदा का डर है﴾१८﴿ बोला मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ कि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूँ﴾१९﴿ बोली मेरे लड़का कहाँ से होगा मुझे तो किसी आदमी ने हाथ न लगाया न मैं बदकार हूँ﴾२०﴿ कहा यूंही है[५] तेरे रब ने फ़रमाया है कि ये[६] मुझे आसान है, और इस लिये कि हम उसे लोगों के वास्ते निशानी[७] करें और अपनी तरफ़ से एक रहमत[८] और यह काम ठहर चुका है[९]﴾२१﴿ अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिये हुए एक दूर जगह चली गई[१०]﴾२२﴿ फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया[११] बोली हाय किसी तरह मैं इससे पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती﴾२३﴿ तो उसे[१२] उसके तले से पुकारा कि ग़म न खा[१३] बेशक तेरे रब ने नीचे एक नहर बहा दी है[१४]﴾२४﴿ और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझपर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी[१५]﴾२५﴿ तो खा और पी और आँख ठन्डी रख,[१६] फिर अगर तू किसी आदमी को देखे[१७] तो कह देना मैंने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज

(७) और मेरे इल्म का हामिल हो.

(८) कि तू अपने फ़ज़्ल से उसको नबुव्वत अता फ़रमाए . अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया.

(९) इस सवाल का उद्देश यह दरियाफ़्त करना है कि बेटा कैसे दिया जायगा, क्या दोबारा जवानी प्रदान की जाएगी या इसी हाल में बेटा अता किया जायगा.

(१०) तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है.

(११) तो जो शून्य से सब कुछ पैदा करने में सक्षम है उससे बुढ़ापे में औलाद अता फ़रमाना क्या अजब है.

(१२) जिससे मुझे अपनी बीबी के गर्भवती होने की पहचान हो.

(१३) सही सालिम होकर बग़ैर किसी बीमारी के और बग़ैर गूंगा होने के. चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उन दिनों आप लोगों से बात न कर सके. जब अल्लाह का ज़िक्र करना चाहते, ज़बान खुल जाती.

(१४) जो उसकी नमाज़ की जगह थी और लोग मेहराब के पीछे इन्तिज़ार में थे कि आप उनके लिये दर्वाज़ा खोलें तो वो दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें. जब हज़रत ज़करिया बाहर आए तो आपका रंग बदला हुआ था बोल नहीं सकते थे. यह हाल देखकर लोगें ने पूछा क्या हाल है ?

(१५) और आदत के अनुसार फ़ज्र और अस्र की नमाज़ें अदा करते रहो. अब हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आप की बीबी साहिबा गर्भवती हो गईं और हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की पैदायश से दो साल बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया.

(१६) यानी तौरात को.

(१७) जबकि आपकी उम्र शरीफ़ तीन साल की थी उस वक़्त में अल्लाह तआला ने आपको सम्पूर्ण बुद्धि अता फ़रमाई और आपकी तरफ़ वही की. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा का यही क़ौल है और इतनी सी उम्र में समझ बूझ और बुद्धिमत्ता और ज्ञान चमत्कार में से है और जब अल्लाह के करम से यह हासिल हो तो इस हाल में नबुव्वत मिलना भी कुछ अचरज की बात नहीं. इसलिये इस आयत में हुक्म से मुराद नबुव्वत है. यही क़ौल सही है. कुछ मुफ़स्सिरों ने इससे हिकमत यानी तौरात की जानकारी और दीन की सूझ बूझ भी मुराद ली है. (ख़ाज़िन, मदारिक, कबीर). कहा गया है कि उस कमसिनी के ज़माने में बच्चों ने आपको खेल के लिये बुलाया तो आपने फ़रमाया "मा लिल लोअबे ख़ुलिक़ना" यानी हम खेल के लिये पैदा नहीं किये गए.

(१८) अता की और उनके दिल में रिक़्क़त और रहमत रखी कि लोगों पर मेहरबानी करें.
(१९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से यहाँ ताअत और इख़्लास मुराद है.
(२०) और आप अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से बहुत रोया करते थे यहाँ तक कि आपके गालों पर आँसुओं के निशान बन गए थे.
(२१) यानी आप बहुत विनम्र और मिलनसार थे और अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार.
(२२) कि ये तीनों दिन बहुत डर वाले हैं क्योंकि इनमें आदमी वह देखता है जो उसने पहले नहीं देखा इसलिये इन तीनों अवसरों पर बहुत वहशत और घबराहट होती है. अल्लाह तआला ने यहया अलैहिस्सलाम को सम्मानित किया कि उन्हें इन तीनों अवसरों पर अम्न और सलामती दी .

सूरए मरयम - दूसरा रूकू

(१) यानी ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, क़ुरआन शरीफ़ में हज़रत मरयम का वाक़िआ पढ़कर इन लोगों को सुनाइये ताकि इन्हें उनका हाल मालूम हो.
(२) और अपने मकान में या बैतुल मक़दिस की पूर्वी दिशा में लोगों से जुदा होकर इबादत के लिये तन्हाई में बैठें .
(३) यानी अपने और घर वालों के दरमियान.
(४) जिब्रईल अलैहिस्सलाम.
(५) यही अल्लाह की मर्ज़ी है कि तुम्हें बग़ैर मर्द के छुए ही लड़का प्रदान करे.
(६) यानी बग़ैर बाप के बेटा देना.
(७) और अपनी क़ुदरत का प्रमाण.
(८) उनके लिये जो उसके दीन का अनुकरण करें, उसपर ईमान लाएं.
(९) अल्लाह के इल्म में. अब न रद हो सकता है न बदल सकता है. जब हज़रत मरयम को इत्मीनान हो गया और उनकी परेशानी जाती रही तो हज़रत जिब्रील ने उनके गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वह अल्लाह की क़ुदरत से उसी समय गर्भवती हो गईं. उस वक़्त हज़रत मरयम की उम्र तेरह या दस साल की थी.
(१०) अपने घर वालों से और वह जगह बैतुल लहम थी. वहब का क़ौल है कि सबसे पहले जिस शख़्स को हज़रत मरयम के गर्भ का इल्म हुआ वह उनका चचाज़ाद भाई यूसुफ़ बढ़ई है जो बैतुल मक़दिस की मस्जिद का ख़ादिम था और बहुत बड़ा इबादत गुज़ार व्यक्ति था. उसको जब मालूम हुआ कि मरयम गर्भवती हैं तो काफ़ी हैरत हुई. जब चाहता था कि उनपर लांछन लगाए तो उनकी इबादत और तक़वा और हर वक़्त का हाज़िर रहना किसी वक़्त ग़ायब न होना याद करके ख़ामोश हो जाता था. और जब गर्भ का ख़याल करता था तो उनको बुरी समझना मुश्किल मालूम होता था. आख़िर में उसने हज़रत मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है, बहुत चाहता हूँ कि ज़बान पर न लाऊं मगर अब रहा नहीं जाता. आप कहें तो मैं बोल दूँ ताकि मेरे दिल की परेशानी दूर हो जाए. हज़रत मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो. तो उसने कहा कि ऐ मरयम मुझे बताओ कि क्या खेती बीज के बिना और पेड़ बारिश के बिना और बच्चा बाप के बिना हो सकता है. हज़रत मरयम ने कहा कि हाँ, तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने जो सबसे पहले खेती पैदा की वह बीज के बिना पैदा की और पेड़ अपनी क़ुदरत से बारिश के बिना उगाए. क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआला पानी की मदद के बिना दरख़्त पैदा करने की क्षमता नहीं रखता. यूसुफ़ ने कहा मैं यह तो नहीं कहता बेशक मैं मानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है जिसे "होजा" फ़रमाए वह हो जाती है. हज़रत मरयम ने कहा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनकी बीबी को माँ बाप के बिना पैदा किया. हज़रत मरयम की इस बात से यूसुफ़ का शक दूर हो गया और हज़रत मरयम गर्भ के कारण कमज़ोर हो गईं थीं इस लिये वह मस्जिद की ख़िदमत में उनकी सहायता करने लगा. अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम के दिल में डाला कि वह अपनी क़ौम से अलग चली जाएं . इसलिये वह बैतुल-लहम में चली गईं.
(११) जिसका पेड़ जंगल में सूख गया था. तेज़ सर्दी का वक़्त था. आप उस पेड़ की जड़ में आईं ताकि उससे टेक लगाएं और फ़ज़ीहत व लांछन के डर से -----
(१२) जिब्रईल ने घाटी की ढलान से.
(१३) अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों के बुरा भला कहने का.
(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने या हज़रत जिब्रईल ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो मीठे पानी का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का पेड़ हरा भरा हो गया, फल लाया. वो फल पक्कर रसदार हो गए और हज़रत मरयम से कहा गया ----
(१५) जो ज़च्चा के लिये बेहतरीन ग़िज़ा हैं.
(१६) अपने बेटे ईसा से ---
(१७) कि तुझसे बच्चे को पूछता है.
(१८) पहले ज़माने में बोलने का भी रोज़ा था जैसा कि हमारी शरीअत में खाने और पीने का रोज़ा होता है. हमारी शरीअत में चुप

الْبَشَرِ اَحَدًا ۚ فَقُولِيٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۗ قَالُوْا
يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ
اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝ فَاَشَارَتْ
اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝ قَالَ
اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۝ وَّجَعَلَنِيْ
مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۖ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ
مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۫ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا
شَقِيًّا ۝ وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَ
يَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ۝ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ
وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ۝ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ هٰذَا

हरगिज़ किसी आदमी से बात न करूंगी[१८]《२६》 तो उसे गोद में ले अपनी क़ौम के पास आई[१९] बोले ऐ मरयम बेशक तूने बहुत बुरी बात की《२७》 ऐ हारून की बहन[२०] तेरा बाप[२१] बुरा आदमी न था और न तेरी माँ[२२] बदकार《२८》 इसपर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया[२३] वह बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है[२४]《२९》 बच्चे ने फ़रमाया, मैं हूँ अल्लाह का बन्दा[२५] उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया[२६]《३०》 और उसने मुझे मुबारक किया[२७] मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जबतक जियूं《३१》 और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने वाला[२८] और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया《३२》 और वही सलामती मुझ पर[२९] जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूं और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊं[३०]《३३》 यह है ईसा मरयम का बेटा, सच्ची बात जिसमें शक करते हैं[३१]《३४》 अल्लाह को लायक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उसको[३२] जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूंही कि उससे फ़रमाता है हो जा वह फ़ौरन हो जाता है《३५》 और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा[३३] तो उसकी बन्दगी करो यह राह सीधी

रहने का रोज़ा स्थगित हो गया. हज़रत मरयम को ख़ामोशी की नज़्र मानने का इसलिये हुक्म दिया गया ताकि हज़रत ईसा कलाम फ़रमाएं और उनका बोलना मज़बूत प्रमाण हो जिससे लांछन दूर हो जाए. इससे कुछ बातें मालूम हुई . जाहिलों के जवाब में ख़ामोशी बेहतर है. कलाम को अफ़ज़ल शख़्स की तरफ़ तफ़वीज़ करना अच्छा है. हज़रत मरयम ने भी इशारे से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी.

(१९) जब लोगों ने हज़रत मरयम को देखा कि उनकी गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्योंकि वो नेक घराने के लोग थे और.

(२०) और हारून या तो हज़रत मरयम के भाई का नाम था या तो बनी इस्राईल में से निहायत बुज़ुर्ग और नेक शख़्स का नाम था जिनके तक़वा और परहेज़गारी से उपमा देने के लिये उन लोगों ने हज़रत मरयम को हारून की बहन कहा या हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून ही की तरफ़ निस्बत की जबकि उनका ज़माना बहुत दूर था और हज़ार बरस का समय गुज़र चुका था मगर चूंकि यह उनकी नस्ल से थीं इसलिये हारून की बहन कह दिया जैसा कि अरबों का मुहावरा है कि वो तमीमी को या अख़ा तमीम कहते हैं.

(२१) यानी इमरान.

(२२) हन्ना.

(२३) कि जो कुछ कहना है ख़ुद उनसे कहो . इसपर क़ौम के लोगों को गुस्सा आया और ------

(२४) यह बातचीत सुनकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएं हाथ पर टिक कर क़ौम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और दाएं हाथ से इशारा करके कलाम शुरू किया.

(२५) पहले बन्दा होने का इक़रार किया ताकि कोई उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्योंकि आपकी निस्बतयह तोहमत लगाई जाने वाली थी. और यह तोहमत अल्लाह तआला पर लगती थी. इसलिये रसूल के मन्सब का तक़ाज़ा यही था कि वालिदा की बेगुनाही का बयान करने से पहले उस तोहमत को दूर करदें जो अल्लाह तआला की ज़ाते पाक पर लगाई जाएगी और इसी से वह तोहमत भी दूर हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती, क्योंकि अल्लाह तआला इस बलन्द दर्जे के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है यक़ीनन उसकी पैदाइश और उसकी सृष्टि निहायत पाक और ताहिर है.

(२६) किताब से इंजील मुराद है. हसन का क़ौल है कि आप वालिदा के पेट ही में थे कि आपको तौरात का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आपको नबुव्वत अता कर दी गई और इस हालत में आपका कलाम फ़रमाना आपका चमत्कार है. कुछ मुफ़स्सिरों ने आयत के मानी यह भी बयान किये है कि यह नबुव्वत और किताब की ख़बर थी जो बहुत जल्द आप को मिलने

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ

है﴾३६﴿ फिर जमाअतें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं(३४) तो ख़राबी है काफ़िरों के लिये एक बड़े दिन की हाज़िरी से(३५)﴾३७﴿ कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे(३६) मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं(३७)﴾३८﴿ और उन्हें डर सुनाओ पछतावे के दिन का(३८) जब काम हो चुकेगा(३९) और वो ग़फ़लत में हैं(४०) और नहीं मानते﴾३९﴿ बेशक ज़मीन और जो कुछ उस पर है सब के वारिस हम होंगे(४१) और वो हमारी ही तरफ़ फिरेंगे(४२)﴾४०﴿

तीसरा रूकू

और किताब में(१) इब्राहीम को याद करो बेशक वह सच्चा(२) था (नबी)﴾४१﴿ ग़ैब की ख़बरें बताता . जब अपने बाप से बोला(३) ऐ मेरे बाप क्यों ऐसों को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए(४)﴾४२﴿ ऐ मेरे बाप बेशक मेरे पास(५) वह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ(६) मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं(७)﴾४३﴿ ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन(८) बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है﴾४४﴿ ऐ मेरे बाप मैं डरता हूँ कि तुझे रहमान का कोई अज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का दोस्त हो जाए(९)﴾४५﴿

वाली थी.

(२७) यानी लोगों के लिये नफ़ा पहुंचाने वाला और भलाई की तअलीम देने वाला, अल्लाह तआला और उसकी तौहीद की दावत देने वाला.

(२८) बनाया.

(२९) जो हज़रत यहया पर हुई.

(३०) जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह कलाम फ़रमाया तो लोगों को हज़रत मरयम की बेगुनाही और पाकीज़गी का यक़ीन हो गया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इतना फ़रमाकर ख़ामोश हो गए और इसके बाद कलाम न किया जबतक कि उस उम्र को पहुंचे जिसमें बच्चे बोलने लगते हैं. (ख़ाज़िन)

(३१) कि यहूदी तो उन्हें जादूगर और झूठा कहते हैं (मआज़ल्लाह), और ईसाई उन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं. इसके बाद अल्लाह तआला अपनी तन्ज़ीह बयान फ़रमाता है.

(३२) इससे.

(३३) और उसके सिवा कोई रब नहीं.

(३४) और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में ईसाईयों के कई फ़िरक़े हो गए, एक यअक़ूबिया, एक नस्तूरिया, एक मलकानिया. यअक़ूबिया कहता था कि वह अल्लाह है, ज़मीन पर उतर आया था, फिर आसमान पर चढ़ गया. नस्तूरिया का क़ौल है कि वह ख़ुदा का बेटा है, जबतक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया और तीसरा सम्प्रदाय कहता था कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, मख़्लूक़ हैं, नबी ह. यह ईमान वाला समुदाय था. (मदारिक)

(३५) बड़े दिन से क़यामत का दिन मुराद है.

(३६) और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़ा न देगा जब उन्होंने दुनिया में सच्चाई की दलीलों को नहीं देखा और अल्लाह की चेतावनियों को नहीं सुना. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि यह कलाम तहदीद के तौर पर है कि उस रोज़ ऐसी हौलनाक बातें सुनेंगे और देखेंगे जिनसे दिल फट जाएं.

(३७) न हक़ देखें, न हक़ सुनें. बहरे, अन्धे बने हुए हैं. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा और मअबूद ठहराते हैं जबकि उन्होंने खुले शब्दों में अपने बन्दे होने का ऐलान फ़रमाया.

(३८) हदीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर जन्नत की मन्ज़िलों को देखेंगे जिनसे वो मेहरूम किये गए तो उन्हें हसरत और शर्मिन्दगी होगी कि काश वो दुनिया में ईमान ले आए होते.

(३९) और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे, ऐसा सख़्त दिन दरपेश है.

عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ
شَقِيًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ
صِدْقٍ عَلِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ؗ اِنَّهٗ كَانَ
مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ
رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ؗ
اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ
يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ

बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू[१०] बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा और मुझ से लम्बे ज़माने तक बेइलाक़ा होजा[११]﴾४६﴿ कहा बस तुझे सलाम है[१२] क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से माफ़ी मांगूंगा[१३]﴾४७﴿ बेशक वह मुझ पर मेहरबान है और मैं एक किनारे हो जाऊंगा[१४] तुमसे और उन सबसे जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा [१५] क़रीब है कि में अपने रब की बन्दगी से बदबख़्त न होऊं[१६]﴾४८﴿ फिर जब उनसे और अल्लाह के सिवा उनके मअबूदों से किनारा कर गया[१७] हम ने उसे इस्हाक़[१८] और यअक़ूब[१९] अता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया﴾४९﴿ और हमने उन्हें अपनी रहमत अता की[२०] और उनके लिये सच्ची वलन्दे नामवरी रखी[२१]﴾५०﴿

चौथा रूकू

और किताब में मूसा को याद करो बेशक वह चुना हुआ था और रसूल था, ग़ैब की ख़बरें बताने वाला﴾५१﴿ और उसे हमने तूर की दाईं तरफ़ से पुकारा[१] और अपना राज़ कहने को क़रीब किया[२]﴾५२﴿ और अपनी रहमत से उसका भाई हारून अता किया (ग़ैब की ख़बरें बताने वाला) नबी[३]﴾५३﴿ और किताब में इस्माईल को याद करो[४] बेशक वह वादे का सच्चा था[५] और रसूल था, ग़ैब की ख़बरे बताता﴾५४﴿ और अपने घर वालों को[६] नमाज़ और

(४०) और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्र नहीं करते.
(४१) यानी सब फ़ना हो जाएंगे, हम ही बाक़ी रहेंगे.
(४२) हम उन्हें उनके कर्मों का बदला देंगे.

सूरए मरयम - तीसरा रूकू

(१) यानी क़ुरआन में.
(२) यानी सच्चाई में सर्वोत्तम. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि सिद्दीक़ के मानी हैं तस्दीक़ करने में सबसे महान, जो अल्लाह तआला और उसकी वहदानियत और उसके नबियों और रसूलों की और मरने के बाद उठने की तस्दीक़ करे और अल्लाह तआला के आदेश पूरे करे.
(३) यानी बुत परस्त आज़र से.
(४) यानी इबादत मअबूद की हद दर्जा तअज़ीम है, इसका वही मुस्तहिक़ हो सकता है जो गुण वाला और नअमतें अता करने वाला हो न कि बुत जैसी नाकारा मख़्लूक़ . मतलब यह है कि अल्लाह वहदहू लाशरीका लूह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं.
(५) मेरे रब की तरफ़ से मअरिफ़ते इलाही का.
(६) मेरा दीन क़ुबूल कर.
(७) जिस से अल्लाह के क़ुर्ब की मंज़िल तक पहुंच सके.
(८) और उसकी फ़रमाँबरदारी करके कुफ़्र और शिर्क में जकड़ा हुआ न हो.
(९) और लअनत और अज़ाब में उसका साथी हो. इस नसीहत और हिदायत से आज़र ने नफ़ा न उठाया और इसके जवाब में .
(१०) बुतों का विरोध और उनको बुरा कहने और उनके दोष बयान करने से.
(११) ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अम्न में रहे. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
(१२) यह सलाम अलग हो जाने का था.
(१३) कि वह तुझे तौबह और ईमान की तौफ़ीक़ देकर तेरी मग़फ़िरत करे.

مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۚ وَ
مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۚ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَ
اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿٥٨﴾ فَخَلَفَ
مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا
الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۚ
اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا
سَلٰمًا ۚ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ
الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

السجدة

ज़कात का हुक्म देता और अपने रब को पसन्द था[७]﴿५५﴾ और किताब में इद्रीस को याद करो[८] बेशक वह सच्चा था, ग़ैब की ख़बरें देता﴿५६﴾ और हमने उसे बलन्द मकान पर उठा लिया[९]﴿५७﴾ ये हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से,[१०] और उनमें जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था[११] और इब्राहीम[१२] और यअक़ूब की औलाद से[१३] और उनमें से जिन्हें हमने राह दिखाई और चुन लिया,[१४] जब उनपर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं, गिर पड़ते सज्दा करते और रोते[१५]﴿५८﴾ तो उनके बाद उनकी जगह वो नाख़लफ़ आए[१६] जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[१७] तो बहुत जल्द वो दोज़ख़ में ग़ई का जंगल पाएंगे[१८]﴿५९﴾ मगर जिन्हों ने तौबह की और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो ये लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें कुछ नुक़सान न दिया जाएगा[१९]﴿६०﴾ बसने के बाग़ जिनका वादा रहमान ने अपने[२०] बन्दों से ग़ैब में किया,[२१] बेशक उसका वादा आने वाला है﴿६१﴾ वो उसमें कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम,[२२] और उन्हें उसमें उनका रिज़्क़ है सुबह शाम[२३]﴿६२﴾

(१४) बाबुल शहर से शाम की तरफ़ हिजरत करके.
(१५) जिसने मुझे पैदा किया और मुझ पर एहसान फ़रमाए.
(१६) इसमें बताया कि जैसे तुम बुतों की पूजा करके बदनसीब हुए, ख़ुदा के पूजने वाले के लिये यह बात नहीं, उसकी बन्दगी करने वाला सख़्त दिल और मेहरूम नहीं होता.
(१७) पवित्र स्थल की तरफ़ हिजरत करके.
(१८) बेटे.
(१९) बेटे के बेटे यानी पोते. इसमें इशारा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ इतनी लम्बी हुई कि आपने अपने पोते हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम को देखा. इस आयत में यह बताया गया कि अल्लाह के लिये हिजरत करने और अपने घर बार छोड़ने का यह इनाम मिला कि अल्लाह तआला ने बेटे और पोते अता फ़रमाए.
(२०) कि माल और औलाद बहुत से इनायत किये.
(२१) कि हर दीन वाले मुसलमान हों, चाहे यहूदी चाहे ईसाई, सब उनकी तअरीफ़ करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उनकी आल पर दुरूद पढ़ा जाता है.

सूरए मरयम - चौथा रूकू

(१) तूर एक पहाड़ का नाम है जो मिस्त्र और मदयन के बीच है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मदयन से आते हुए तूर की उस दिशा से जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दाईं तरफ़ थी एक दरख़्त से पुकारा गया "या मूसा इन्नी अनल्लाहो रब्बुल आलमीन" यानी ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूँ सारे जगत का पालने वाला.
(२) क़ुर्ब का दर्जा अता फ़रमाया. पर्दे उठा दिये गए यहाँ तक कि आपने सरीरे अक़लाम सुनी और आपकी क़द्रो मन्ज़िलत बलन्द की गई और आपसे अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया.
(३) जबकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि यारब, मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना. अल्लाह तआला ने अपने करम से यह दुआ क़ुबूल फ़रमाई और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को आपकी दुआ से नबी किया और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बड़े थे.
(४) जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बेटे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दादा हैं.
(५) नबी सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस गुण में विशेष शोहरत रखते हैं. एक बार किसी जगह पर आप से कोई व्यक्ति

कह गया कि आप यहीं ठहरीये जबतक मैं वापस आऊं . आप उस जगह उसके इन्तिज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे. आप ने सब्र का वादा किया था. ज़िब्ह के मौक़े पर इस शान से उसको पूरा फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह.
(६) और अपनी क़ौम जुरहम को जिन की तरफ़ आपको भेजा गया था.
(७) अपनी ताअत और सदकर्म और इस्तक़लाल और विशेष गुणों के कारण.
(८) आपका नाम अख़्नूख़ है. आप हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वालिद के दादा हैं. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद आप ही पहले रसूल हैं. आपके वालिद हज़रत शीस अलैहिस्सलाम इब्ने आदम अलैहिस्सलाम हैं. सबसे पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा, वह आप ही हैं. कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की शुरूआत भी आप ही से हुई. आपसे पहले लोग खालें पहनते थे. सब से पहले हथियार बनाने वाले, तराज़ू और पैमाने क़ायम करने वाले और ज्योतिष विद्या और हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं. ये सब काम आप ही से शुरू हुए. अल्लाह तआला ने आप पर तीस सहीफ़े उतारे और आसमानी किताबों के ज़्यादा पढ़ने पढ़ाने के कारण आपका नाम इद्रीस हुआ.
(९) दुनिया में उन्हें ऊंचे उलूम अता किये या ये मानी हैं कि आसमान पर उठा लिया और यही ज़्यादा सही है. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेअराज की रात हज़रत इद्रीस को चौथे आसमान पर देखा. हज़रत कअब अहबार वग़ैरह से रिवायत है कि हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने मौत के फ़रिश्ते से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूँ, कैसा होता है. तुम मेरी रूह निकाल कर दिखाओ. उन्होंने इस हुक्म की तअमील की और रूह निकाल कर उसी वक़्त आप की तरफ़ लौटा दी. आप ज़िन्दा हो गए. फ़रमाया अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि अल्लाह का ख़ौफ़ ज़्यादा हो. चुनांचे यह भी किया गया. जहन्नम देखकर आपने जहन्नम के दारोग़ा मालिक से फ़रमाया कि दर्वाज़ा खोलो मैं इसपर गुज़रना चाहता हूँ चुनांचे ऐसा ही किया गया और आप उस पर से गुज़रे. फिर आप ने मौत के फ़रिश्ते से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ वह आपको जन्नत में ले गए. आप दर्वाज़ा खुलवाकर जन्नत में दाख़िल हुए. थोड़ी देर इन्तिज़ार करके मौत के फ़रिश्ते ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये. फ़रमाया अब मैं यहाँ से कहीं न जाऊंगा. अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "कुल्लो नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत" वह मैं चख ही चुका हूँ. और यह फ़रमाया है "वइम मिनकुम इल्ला वारिदुहा" कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "वमा हुम मिन्हा बिमुख़रिजीन" कि वो जन्नत से न निकाले जाएंगे. अब मुझे जन्नत से चलने को क्यों कहते हो. अल्लाह तआला ने मलकुल मौत को वही फ़रमाई कि इद्रीस ने जो कुछ किया मेरी इजाज़त से किया और वह मेरी इजाज़त से जन्नत में दाख़िल हुए. उन्हें छोड़ दो वह जन्नत ही में रहेंगे. चुनांचे आप वहाँ ज़िन्दा हैं.
(१०) यानी हज़रत इद्रीस और हज़रत नूह.
(११) यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पोते और आपके बेटे साम के बेटे हैं.
(१२) की औलाद से हज़रत इस्माईल व हज़रत इसहाक़ व हज़रत यअक़ूब.
(१३) हज़रत मूसा और हज़रत हारून और हज़रत ज़करिया और हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम.
(१४) शरीअत की व्याख्या और हक़ीक़त खोलने के लिये.
(१५) अल्लाह तआला ने इन आयतों में ख़बर दी कि अम्बिया अल्लाह तअला की आयतों को सुनकर गिड़गिड़ा कर ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे. इससे साबित हुआ कि क़ुरआन शरीफ़ दिल लगाकर सुनना और रोना मुस्तहब है.
(१६) यहूदियों और ईसाइयों वग़ैरह की तरह.
(१७) और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की जगह गुनाहों को इख़्तियार किया.
(१८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया "ग़ई" जहन्नम में एक घाटी है जिसकी गर्मी से जहन्नम की दूसरी वादियाँ भी पनाह मांगती हैं. यह उन लोगों के लिये है जो ज़िना के आदी और उसपर अड़े हों और जो शराब के आदी हों और जो सूद खाने वाले हों और जो माँ बाप की नाफ़रमानी करने वाले हों और जो झूठी गवाही देने वाले हों.
(१९) और उनके कर्मों के बदले में कोई कमी न की जाएगी.
(२०) ईमानदार नेक और तौबह करने वाले.
(२१) यानी इस हाल में कि जन्नत उनसे ग़ायब है उनकी नज़र के सामने नहीं या इस हाल में कि वो जन्नत से ग़ायब हैं उसका मुशाहिदा या अवलोकन नहीं करते.
(२२) फ़रिश्तों का या आपस में एक दूसरे का.
(२३) यानी हमेशा, क्योंकि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं. जन्नत वाले हमेशा नूर ही में रहेंगे. या मुराद यह है कि दुनिया के दिन की मिक़दार में दो बार जन्नती नअेमतें उनके सामने पेश की जाएंगी.

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا
خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ
لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ
ءَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ
أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ
جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى
الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلٰى بِهَا
صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا
مَقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظّٰلِمِينَ
فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ اٰمَنُوا ۙ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ

यह वह बाग़ है जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे जो परहेज़गार है﴾६३﴿ (और जिब्रईल ने मेहबूब से अर्ज़ की)[२४] हम फ़रिशते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे और जो उसके बीच है,[२५] और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं[२६]﴾६४﴿ आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उसकी बन्दगी पर साबित रहो, क्या उसके नाम का दूसरा जानते हो[२७]﴾६५﴿

पाँचवां रूकू

और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अनक़रीब जिलाकर निकाला जाऊंगा[१]﴾६६﴿ और क्या आदमी को याद नहीं कि हमने इससे पहले उसे बनाया और वह कुछ न था,[२]﴾६७﴿ तो तुम्हारे रब की क़सम हम उन्हें[३] और शैतानों सब को घेर लाएंगे[४] और उन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे. घुटनों के बल गिरे﴾६८﴿ फिर हम[५] हर गिरोह से निकालेंगे जो उनमें रहमान पर सबसे ज़्यादा बेबाक होगा[६]﴾६९﴿ फिर हम ख़ूब जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़्यादा लायक़ हैं﴾७०﴿ और तुम में कोई ऐसा नहीं जिसका गुज़र दोज़ख़ पर न हो,[७] तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर यह ज़रूर ठहरी हुई बात है[८]﴾७१﴿ फिर हम डर वालों को बचा लेंगे[९] और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे﴾७२﴿ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं[१०] काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कौन

(२४) बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जिब्रईल से फ़रमाया ऐ जिब्रईल जितना तुम हमारे पास आया करते हो इस से ज़्यादा क्यों नहीं आते. इसपर यह आयत उतरी.

(२५) यानी तमाम मकानों का वही मालिक है. हम एक मकान से दूसरे मकान की तरफ़ नक़्लो हरकत करने में उसके हुक्म और मर्ज़ी के अन्तर्गत हैं. वह हर हरकत और सुकून का जानने वाला और ग़फ़लत और भूल चूक से पाक है.

(२६) जब चाहे हमें आपकी ख़िदमत में भेजे.

(२७) यानी किसी को उसके साथ नाम की शिरकत भी नहीं और उसका एक होना इतना ज़ाहिर है कि मुश्रिकों ने भी अपने किसी मअबूदे बातिल का नाम अल्लाह नहीं रखा.

सूरए मरयम - पाँचवां रूकू

(१) इन्सान से यहाँ मुराद वो काफ़िर हैं जो मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने के इन्कारी थे जैसे कि उबई बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा. उन्हीं लोगों के हक़ में यह आयत उतरी और यही इसके उतरने की परिस्थिति है.

(२) तो जिसने मअदूम को मौजूद फ़रमाया उसकी क़ुदरत से मुर्दे को ज़िन्दा कर देना क्या आश्चर्य.

(३) यानी मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों के साथ.

(४) यानी काफ़िरों को उनके गुमराह करने वाले शैतानों के साथ इस तरह कि हर काफ़िर शैतान के साथ एक ज़ंजीर में जकड़ा होगा.

(५) काफ़िरों के.

(६) यानी दोज़ख़ में दाख़िल होने में, जो सबसे ज़्यादा सरकश और कुफ़्र में सख़्त होगा वह आगे किया जाएगा. कुछ रिवायतों में है कि काफ़िर सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़ंजीरों में जकड़े, तौक़ डाले हुए हाज़िर किये जाएंगे फिर जो कुफ़्र और सरकशी में सख़्त होंगे वो पहले जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे.

(७) नेक हो या बुरा, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उनका गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से आवाज़ उठेगी कि ऐ मूमिन गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट ठण्डी कर दी . हसन और क़तादा से रिवायत है कि दोज़ख़ पर गुज़रने से पुले सिरात पर गुज़रना

مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ
هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ
فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ
اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ
رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ
بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ
اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا
يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّنَرِثُهُ مَا
يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا

से गिरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है[११] ﴿७३﴾ और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपा दीं[१२] (क़ौमें हलाक कर दीं) कि वो उनसे भी सामान और नमूद (दिखावे) में बेहतर थे ﴿७४﴾ तुम फ़रमाओ जो गुमराही में हो तो उसे रहमान ख़ूब ढील दे,[१३] यहां तक कि जब वो देखें वो चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है या तो अज़ाब[१४] या क़यामत[१५] तो अब जान लेंगे कि किस का बुरा दर्जा है और किसकी फ़ौज कमज़ोर[१६] ﴿७५﴾ और जिन्होंने हिदायत पाई[१७] अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा[१८] और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का[१९] तेरे रब के यहां सब से बेहतर सवाब और सबसे भला अंजाम[२०] ﴿७६﴾ तो क्या तुमने उसे देखा जो हमारी आयतों का इनकारी हुआ और कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे[२१] ﴿७७﴾ क्या ग़ैब को झांक आया है[२२] या रहमान के पास कोई क़रार रखा है ﴿७८﴾ हरगिज़ नहीं[२३] अब हम लिख रखेंगे जो वह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अज़ाब देंगे ﴿७९﴾ और जो चीज़ें कह रहा है[२४] उनके हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा[२५] ﴿८०﴾ और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिये[२६] कि वो उन्हें ज़ोर दें[२७] ﴿८१﴾ हरगिज़ नहीं[२८] कोई दम जाता है कि वो[२९] उनकी बन्दगी से इन्कारी होंगे और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएंगे[३०] ﴿८२﴾

छटा रूकू

क्या तुम ने न देखा कि हमने काफ़िरों पर शैतान भेजे[१] कि

मुराद है जो दोज़ख़ पर है.
(८) यानी जहन्नम में दाख़िला अल्लाह के आदेशों में से है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है.
(९) यानी ईमानदारों को .
(१०) नज़र बिन हारिस वग़ैरह के जैसे क़ुरैश के काफ़िर बनाव सिंगार करके, बालों में तेल डाल कर, कंघियाँ करके, उमदा लिबास पहन कर घनण्ड के साथ ग़रीब फ़क़ीर ---
(११) मतलब यह है कि जब आयतें उतारी जाती हैं और दलीलें और निशानियाँ पेश की जाती हैं तो काफ़िर उनमें तो ग़ौर नहीं करते और उनसे फ़ायदा नहीं उठाते, इसकी जगह दौलत और माल और लिबास और मकान पर घमण्ड करते है.
(१२) उम्मतें हलाक कर दीं.
(१३) दुनिया में उसकी उम्र लम्बी करके और उसको गुमराही और बुराई में छोड़कर.
(१४) दुनिया का क़त्ल और गिरफ़्तारी.
(१५) जो तरह तरह की रूस्वाई और अज़ाब पर आधारित है.
(१६) काफ़िरों की शैतानी फ़ौज या मुसलमानों का नूरी लश्कर. इसमें मुश्रिकों के उस क़ौल का रद है जो उन्होंने कहा था कि कौन से गिरोह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है.
(१७) और ईमान लाए.
(१८) इसपर इस्तक़ामत अता फ़रमाकर और अधिक सूझबूझ और तौफ़ीक़ देकर.
(१९) ताअतें और आख़िरत के सारे कर्म और पाँचों वक़्त की नमाज़ और अल्लाह तआला की स्तुति और ज़िक्र और सारे नेक कर्म, ये सब बाक़ी रहने वाली नेक बातें हैं कि मूमिन के काम आती हैं.
(२०) काफ़िरों के कर्मों के विपरीत कि वा निकम्मे, निरर्थक और बातिल है.
(२१) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत का जिहालत के ज़माने में आस बिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था. वह उसके पास तक़ाज़े को गए तो आस ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ अदा न करूंगा जबतक तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) से फिर न जाओ और कुफ़्र इख़्तियार न कर लो. हज़रत ख़ब्बाब ने फ़रमाया ऐसा कभी नहीं हो सकता यहाँ तक कि तू

الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ

وقف لازم

वो उन्हें ख़ूब उछालते हैं(२)﴿८३﴾ तो तुम जल्दी न करो, हम तो उनकी गिनती पूरी करते हैं(३)﴿८४﴾ जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जाएंगे मेहमान बनाकर(४)﴿८५﴾ और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ हांकेंगे प्यासे (५) ﴿८६﴾ लोग शफ़ाअत के मालिक नहीं मगर वही जिन्होंने रहमान के पास क़रार रखा है(६)﴿८७﴾ और काफ़िर बोले(७) रहमान ने औलाद इख़्तियार की﴿८८﴾ बेशक तुम हद की भारी बात लाए,(८)﴿८९﴾ क़रीब है कि आसमान उस से फट पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएं ढे कर(९)﴿९०﴾ उस पर कि उन्होंने रहमान के लिये औलाद बताई﴿९१﴾ और रहमान के लिये लायक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे(१०)﴿९२﴾ आसमानों और ज़मीन में जितने हैं सब उसके हुज़ूर बन्दे होकर हाज़िर होंगे(११)﴿९३﴾ बेशक वह उनका शुमार जानता है और उनको एक एक करके गिन रखा है(१२)﴿९४﴾ और उनमें हर एक क़यामत के रोज़ उसके हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा(१३)﴿९५﴾ बेशक वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, बहुत जल्द उनके लिये रहमान महब्बत कर देगा(१४)﴿९६﴾ तो हमने यह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम इससे डर वालों को ख़ुशख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इससे डर सुनाओ﴿९७﴾ और हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाईं (क़ौमें हलाक कीं) (१५) क्या तुम उनमें

मरे और मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठे. वह कहने लगा क्या मैं मरने के बाद ज़िन्दा होकर उठूंगा. हज़रत ख़ब्बाब ने कहा हाँ. आस ने कहा तो फिर मुझे छोड़िये यहाँ तक कि मैं मर जाऊं और मरने के बाद फिर ज़िन्दा होऊं और मुझे माल व औलाद मिले, जब ही आपका क़र्ज़ अदा करूंगा. इसपर ये आयतें उतरीं.

(२२) और उसने लौहे मेहफ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में उसको माल और औलाद मिलेगी.
(२३) ऐसा नहीं है तो -----
(२४) यानी माल और औलाद उन सब से उसकी मिल्क और उन्हें इस्तेमाल करने का हक़ सब उसके हलाक होने से उठ जाएगा और -
(२५) कि न उसके पास माल होगा न औलाद और उसका ये दावा करना झूटा हो जाएगा.
(२६) यानी मुश्रिकों ने बुतों को मअबूद बनाया और उनको पूजने लगे इस उम्मीद पर ---
(२७) और उनकी मदद करें और उन्हें अज़ाब से बचाएं.
(२८) ऐसा हो ही नहीं सकता.
(२९) बुत, जिन्हें ये पूजते थे.
(३०) उन्हें झुटलाएंगे और उन पर लानत करेंगे . अल्लाह तआला उन्हें ज़बान देगा और वह कहेंगे यारब उन्हें अज़ाब कर.

सूरए मरयम - छटा रूकू

(१) यानी शैतानों को उनपर छोड़ दिया और उन पर क़ब्ज़ा दे दिया.
(२) और गुनाहों पर उभारते हैं.
(३) कर्मों के बदले के लिये या सांसों की फ़ना के लिये या दिनों महीनों और बरसों की उस अवधि के लिये जो उनके अज़ाब के वास्ते निर्धारित है.
(४) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि ईमान वाले परहेज़गार लोग हश्र में अपनी क़ब्रों से सवार करके उठाए जाएंगे और उनकी सवारियों पर सोने की ज़ीनें और पालान होंगे.
(५) ज़िल्लत और अपमान के साथ, उनके कुफ़्र के कारण.
(६) यानी जिन्हें शफ़ाअत की आज्ञा मिल चुकी है, वही शफ़ाअत करेंगे. या ये मानी हैं कि शफ़ाअत सिर्फ़ ईमान वालों की होगी

किसी को देखते हो या उनकी भनक (ज़रा भी आवाज़) सुनते हो[१६] (९८)

२०-सूरए तॉहा

सूरए तॉहा मक्का में उतरी, इसमें १३५ आयतें और ८ रूकू हैं .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

पहला रूकू

तॉहा, (१) ऐ मेहबूब हमने तुमपर यह क़ुरआन इसलिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो[२] (२) हाँ उसको नसीहत जो डर रखता हो[३] (३) उसका उतारा हुआ जिसने ज़मीन और ऊंचे आसमान बनाए (४) वह बड़ी मेहर (कृपा) वाला, उसने अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है (५) उसका है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है[४] (६) और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वह तो भेद को जानता है और उसे जो उससे भी ज़्यादा छुपा है[५] (७) अल्लाह, कि उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम[६] (८) और कुछ तुम्हें मूसा की ख़बर आई [७] (९) जब उसने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है शायद में तुम्हारे लिये उसमें से कोई चिंगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं (१०) फिर जब आग के पास आया[८] निदा (पुकार) फ़रमाई गई कि ऐ मूसा (११) बेशक मैं तेरा रब हूँ तो तू अपने जूते उतार डाल[९] बेशक तू पाक जंगल तुवा में है [१०] (१२) और मैं ने तुझे पसन्द किया[११] अब

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۞ ع

(٢٠) سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ (۴۵) اٰيَاتُهَا ١٣٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ۞ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۞ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۞ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ۞ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ۞ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ۞ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ۞ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۞ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۞ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۞ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى ۞ اِنِّىْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۞ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ

और वही उससे फ़ायदा उठाएंगे. हदीस शरीफ़ में है, जो ईमान लाया और जिसने लाइलाहा इल्लल्लाह कहा उसके लिये अल्लाह के नज़दीक एहद है.

(७) यानी यहूदी, ईसाई और मुश्रिक जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटीयाँ कहते थे कि ---

(८) और अत्यन्त बुरे और ग़लत दर्जे का कलिमा तुमने मुंह से निकाला.

(९) यानी ये कलिमा ऐसी बेअदबी और गुस्ताख़ी का है कि अगर अल्लाह तआला ग़ज़ब फ़रमाए तो उसपर सारे जगत का निज़ाम दरहम बरहम उलट पुलट कर दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरों ने जब यह गुस्ताख़ी की और ऐसा अपमान-जनक कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्न और इंसानों के सिवा आसमान, ज़मीन, पहाड़ वग़ैरह तमाम सृष्टि परेशानी से बेचैन हो गई और हलाकत के क़रीब पहुंच गई. फ़रिश्तों को गुस्सा आया और जहन्नम को जोश आया. फिर अल्लाह तआला ने अपनी पाकी बयान फ़रमाई.

(१०) वह इससे पाक है और उसके लिये औलाद होना मुहाल है, मुमकिन नहीं.

(११) बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जमा हो ही नहीं सकता और औलाद ममलूक नहीं होती, जो ममलूक है हरगिज़ औलाद नहीं.

(१२) सब उसके इल्म में हैं और हर एक की सांसें और सारे अहवाल और तमाम काम उसकी गिनती में हैं. उसपर कुछ छुपा नहीं, सब उसकी तदबीर और तक़दीर के तहत में हैं.

(१३) बग़ैर माल और औलाद और सहायक व मददगार के.

(१४) यानी अपना मेहबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उनकी महब्बत डाल देगा. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को अपना मेहबूब करता है तो जिब्रईल से फ़रमाता है कि अमुक मेरा महबूब है. जिब्रईल उससे महब्बत करने लगते है फिर वह आसमानों में पुकार लगाते हैं कि अल्लाह तआला इस बन्दे को मेहबूब रखता है सब इसको मेहबूब

فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحٰى ⑬ اِنَّنِىْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ ⑭ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ⑮ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ⑯ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ⑰ قَالَ هِىَ عَصَاىَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِىْ وَلِىَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ⑱ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ⑲ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِىَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ⑳ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ٚ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ㉑ وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ㉒ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ㉓ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ㉔ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ ㉕ وَيَسِّرْ لِىْٓ اَمْرِىْ ㉖ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ ㉗ يَفْقَهُوْا قَوْلِىْ ㉘ وَاجْعَلْ لِّىْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِىْ ㉙

कान लगा कर सुन जो तुझे वही(देववाणी) होती है﴾१३﴿ बेशक मैं ही हूँ अल्लाह कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम रख[१२]﴾१४﴿ बेशक क़यामत आने वाली है क़रीब था कि मैं उसे सबसे छुपाऊं[१३] कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए[१४]﴾१५﴿ तो हरगिज़ तुझे[१५] उसके मानने से वह बाज़ न रखे जो उस पर इमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला[१६] फिर तू हलाक हो जाए﴾१६﴿ और यह तेरे दाएं हाथ में क्या है ऐ मूसा[१७]﴾१७﴿ अर्ज़ की यह मेरा असा(लाठी) है,[१८] मैं इस पर तकिया लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूँ और मेरे इसमें और काम हैं[१९]﴾१८﴿ फ़रमाया इसे डाल दे ऐ मूसा﴾१९﴿ तो मूसा ने डाल दिया तो जभी वह दौड़ता हुआ सांप हो गया[२०]﴾२०﴿ फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहले की तरह कर देंगे[२१]﴾२१﴿ और अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला[२२] ख़ूब सफ़ेद निकलेगा बे किसी मर्ज़ के[२३]﴾२२﴿ एक और निशानी[२४] कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं﴾२३﴿ फ़िरऔन के पास जा[२५] उसने सर उठाया[२६]﴾२४﴿

दूसरा रूकू

अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे[१]﴾२५﴿ और मेरे लिये मेरा काम आसान कर﴾२६﴿ और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे[२]﴾२७﴿ कि वह मेरी बात समझें﴾२८﴿ और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे[३]﴾२९﴿ वह कौन मेरा भाई हारून﴾३०﴿ उससे मेरी कमर मज़बूत

(१३) और बन्दों को उसके आने की ख़बर न दूँ और उसके आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में यह हिकमत न होती.

(१४) और उसके ख़ौफ़ से गुनाह छोड़े और नेकियाँ ज़्यादा करे और हर वक़्त तौबह करता रहे.

(१५) ऐ मूसा की उम्मत. सम्बोधन ज़ाहिर में मूसा अलैहिस्सलाम को है और मुराद इससे आपकी उम्मत है. (मदारिक)

(१६) अगर तू उसका कहना माने और क़यामत पर ईमान न लाए तो --

(१७) इस सवाल की हिकमत यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी लाठी को देख लें और यह बात दिल में ख़ूब पक्की हो जाए कि यह लाठी है ताकि जिस वक़्त वह साँप की शक्ल में हो तो आप के मन पर कोई परेशानी न हो. या यह हिकमत है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मानूस किया जाए ताकि गुफ़्तगू या संवाद की हैबत कम हो. (मदारिक वग़ैरह)

(१८) इस लाठी में ऊपर की तरफ़ दो शाख़ें थीं और इसका नाम नबआ था.

(१९) जैसे कि तोशा और पानी उठाने और ख़तरनाक जानवर को दूर भगाने और दुश्मन से लड़ाई में काम लेने वग़ैरह. इन फ़ायदों का ज़िक्र करना अल्लाह की नेअमतों के शुक्र के तौर पर था. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.

(२०) और अल्लाह की क़ुदरत दिखाई गई कि जो लाठी हाथ में रहती थी और इतने काम आती थी अब अचानक वह ऐसा भयानक अजगर बन गई. यह हाल देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ौफ़ हुआ तो अल्लाह तआला ने उनसे.

(२१) यह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा यहाँ तक कि आपने अपना मुबारक हाथ उसके मुंह में डाल दिया और वह आपके हाथ लगते ही पहले की तरह लाठी बन गई. अब इसके बाद एक और चमत्कार अता फ़रमाया जिसकी निस्बत इरशाद होता है.

(२२) यानी दाएं हाथ की हथेली बाएं बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो सूरज की तरह चमकता निगाहों को चका चौंध करता और...

(२३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ से रात और दिन में सूरज की तरह नूर यानी प्रकाश ज़ाहिर होता था और यह चमत्कार आपके बड़े चमत्कारों में से है. जब आप दोबारा अपना हाथ बग़ल के नीचे रखकर बाज़ू से मिलाते तो हाथ पहले की हालत पर वापस आ जाता.

هٰرُوْنَ اَخِی ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿٣١﴾ وَ اَشْرِكْهُ فِیْۤ اَمْرِیْ ﴿٣٢﴾ كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًا ﴿٣٣﴾ وَّ نَذْكُرَكَ كَثِیْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِیْرًا ﴿٣٥﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِیْتَ سُؤْلَكَ یٰمُوْسٰی ﴿٣٦﴾ وَ لَقَدْ مَنَنَّا عَلَیْكَ مَرَّةً اُخْرٰۤی ﴿٣٧﴾ اِذْ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤی اُمِّكَ مَا یُوْحٰۤی ﴿٣٨﴾ اَنِ اقْذِفِیْهِ فِی التَّابُوْتِ فَاقْذِفِیْهِ فِی الْیَمِّ فَلْیُلْقِهِ الْیَمُّ بِالسَّاحِلِ یَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّیْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَ اَلْقَیْتُ عَلَیْكَ مَحَبَّةً مِّنِّیْ ۚ۬ وَ لِتُصْنَعَ عَلٰی عَیْنِیْ ﴿٣٩﴾ اِذْ تَمْشِیْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰی مَنْ یَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤی اُمِّكَ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ ؕ۬ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّیْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَ فَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِیْنَ فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ ۙ۬ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰی قَدَرٍ یّٰمُوْسٰی ﴿٤٠﴾ وَ اصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِیْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَ اَخُوْكَ بِاٰیٰتِیْ وَ لَا تَنِیَا فِیْ ذِكْرِیْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَاۤ

وقف لازم

منزل ٤

कर﴾३१﴿ और उसे मेरे काम में शरीक कर[४]﴾३२﴿ कि हम ब-कसरत तेरी पाकी बोलें﴾३३﴿ और ब-कसरत तेरी याद करें[५]﴾३४﴿ बेशक तू हमें देख रहा है[६]﴾३५﴿ फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग तुझे अता हुई﴾३६﴿ और बेशक हमने[७] तुझ पर एक बार और एहसान फ़रमाया﴾३७﴿ जब हमने तेरी माँ को इल्हाम किया (दिल में डाला) जो इल्हाम करना था[८]﴾३८﴿ कि इस बच्चे को सन्दूक़ में रखकर दरिया में[९] डाल दे तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वह उठाले जो मेरा दुश्मन और उस का दुश्मन[१०] और मैं ने तुमपर अपनी तरफ़ की महब्बत डाली[११] और इसलिये कि तू मेरी निगाह के सामने तैयार हो[१२]﴾३९﴿ तेरी बहन चली[१३] फिर कहा क्या मैं तुम्हें वो लोग बतादूं जो इस बच्चे की परवरिश करें[१४] तो हम तुझें तेरी माँ के पास फेर लाए कि उसकी आँख[१५] ठण्डी हो और ग़म न करे[१६] और तूने एक जान को क़त्ल किया[१७] तो हमने तुझे ग़म से निजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया[१८] तो तू कई बरस मदयन वालों में रहा[१९] फिर तू एक ठहराए हुए वादे पर हाज़िर हुआ ऐ मूसा[२०]﴾४०﴿ और मैं ने तुझे ख़ास अपने लिये बनाया[२१]﴾४१﴿ तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियाँ[२२] लेकर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना﴾४२﴿ दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उसने सर उठाया﴾४३﴿ तो

(२४) आपकी नबुव्वत की सच्चाई की, लाठी के बाद इस निशानी को भी लीजिये.
(२५) रसूल होकर.
(२६) और कुफ़्र में हद से गुज़र गया और ख़ुदाई का दावा करने लगा.

सूरए तॉहा - दूसरा रूकू

(१) और इसे रिसालत का वज़न सहने के लिये फैला दे.
(२) जो छुटपन में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है. इसका वाक़िआ यह था कि बचपन में आप एक दिन फ़िरऔन की गोद में थे. आपने उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसके मुंह पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा इसपर उसे ग़ुस्सा आया और उसने आपके क़त्ल का इरादा किया. आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह यह नादान बच्चा है, इसे क्या समझ. तू चाहे तो आज़मा ले. इस आज़माइश के लिये एक थाल में आग और एक थाल में लाल याक़ूत आपके सामने पेश किये गए. आपने याक़ूत लेने चाहे मगर फ़रिश्ते ने आपका हाथ अंगारे पर रख दिया और वह अंगारा आपके मुंह में दे दिया. इससे ज़बाने मुबारक जल गई और लुकनत यानी थोड़ा तोतला पन पैदा हो गया. इसके लिये आपने यह दुआ की.
(३) जो मेरा सहायक और भरोसे वाला हो.
(४) यानी नबुव्वत के कामों और अल्लाह के संदेश लोगों तक पहुंचाने में.
(५) नमाज़ों में भी और नमाज़ों के बाहर भी.
(६) हमारे हालात का जानने वाला है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इस दरख़्वास्त पर अल्लाह तआला ने.
(७) इससे पहले.
(८) दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रिये से, जबकि उन्हें आपकी पैदाइश के वक़्त फ़िरऔन की तरफ़ से आपको क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुआ.
(९) यानी नील नदी में.
(१०) यानी फ़िरऔन, चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उसमें रूई बिछाई और हज़रत मूसा

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ
يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ
عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ
اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ
اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ
فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ
خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا
سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا
مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ

उससे नर्म बात कहना[२३] इस उम्मीद पर कि वह ध्यान करे या कुछ डरे[२४]﴿४४﴾ दोनों ने अर्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए﴿४५﴾ फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ[२५] सुनता और देखता[२६]﴿४६﴾ तो उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम तेरे रब के भेजे हुए हैं तो यअक़ूब की औलाद को हमारे साथ छोड़ दे[२७] और उन्हें तकलीफ़ न दे,[२८] बेशक हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लाए हैं [२९] और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे[३०]﴿४७﴾ बेशक हमारी तरफ़ वही(देववाणी) हुई है कि अज़ाब उस पर है जो झुटलाए[३१] और मुंह फेरे[३२]﴿४८﴾ बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा﴿४९﴾ कहा हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके लायक़ सूरत दी[३३] फिर राह दिखाई[३४]﴿५०﴾ बोला[३५] अगली संगतों (क़ौमों) का क्या हाल है[३६]﴿५१﴾ कहा उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है[३७] मेरा रब न बहके न भूले﴿५२﴾ वह जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन बिछौना किया और तुम्हारे लिये उसमें चलती राहें रखीं और आसमान से पानी उतारा[३८] तो हम ने उससे तरह तरह के सब्ज़े के जोड़े निकाले[३९]﴿५३﴾ तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ,[४०] बेशक

अलैहिस्सलाम को उसमें रखकर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उसकी दराज़ें रोग़ने क़ीर से बन्द कर दीं. फिर उस सन्दूक़ को नील नदी में बहा दिया. इस नदी से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔन के महल से गुज़रती थी. फ़िरऔन अपनी बीबी आसिया के साथ नेहर के किनारे बैठा हुआ था. नेहर में सन्दूक़ आता देखकर उसने ग़ुलामों और दासियों को उसके निकालने का हुक्म दिया. वह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया. खोला तो उसमें एक नूरानी शक्ल लड़का, जिसकी पेशानी से वजाहत और यश की प्रतिभा झलक रही थी, नज़र आया. देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी महब्बत पैदा हुई कि वह आशिक़ हो गया और अक़्ल व हवास जगह पर न रहे. इसकी निस्बत अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उन्हें मेहबूब बनाया और सृष्टि का मेहबूब कर दिया और जिसको अल्लाह अपनी मेहबूबियत से नवाज़ता है, दिलों में उसकी महब्बत पैदा हो जाती है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया. यही हाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का था, जो आपको देखता था, उसी के दिल में आपकी महब्बत पैदा हो जाती थी. क़तादा ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों में ऐसी कशिश थी जिसे देखकर हर देखने वाले के दिल में महब्बत जोश मारने लगती थी.

(१२) यानी मेरी हिफ़ाज़त और निगहबानी में परवरिश पाए.

(१३) जिसका नाम मरयम था ताकि वह आप के हाल की खोज करे और मालूम करे कि सन्दूक़ कहाँ पहुंचा. आप किसके हाथ लगे जब उसने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔन के पास पहुंचा और वहाँ दूध पिलाने के लिये दाइयां हाज़िर की गईं और आपने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आपकी बहन ने.

(१४) उन लोगों ने इसको मन्ज़ूर किया वह अपनी वालिदा को ले गईं, आपने उनका दूध क़ुबूल फ़रमाया.

(१५) आपके दीदार या दर्शन से.

(१६) यानी जुदाई का ग़म दूर हो . इसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के एक और वाक़ए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है.

(१७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था, वह मर गया. कहा गया है कि उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बारह साल थी इस वाक़ए पर आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुआ.

(१८) मेहनत और मशक़्क़त में डाल कर और उनसे ख़लासी अता फ़रमा कर.

(१९) मदयन एक शहर है मिस्र से आठ मंज़िल फ़ासले पर. यहाँ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम रहते थे. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से मदयन आए और कई बरस तक हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास ठहरे और उनकी सुपुत्री सफ़ूरा के साथ आपका निकाह

हुआ.
(२०) यानी अपनी उम्र के चालीसवें साल और यह वह सिन है कि नबियों की तरफ़ इस सिन में वही की जाती है.
(२१) अपनी वही और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी हुज्जत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ायम रहे और मेरे और मेरी सृष्टि के बीच ख़िताब पहुंचने वाला हो.
(२२) यानी चमत्कार.
(२३) यानी उसको नर्मी से नसीहत फ़रमाना और नर्मी का हुक्म इस लिये था कि उसने बचपन में आपकी ख़िदमत की थी और कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इस नर्मी से मुराद यह है कि आप उससे वादा करें कि अगर वह ईमान क़ुबूल करेगा तो सारी उम्र जवान रहेगा, कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उसकी सल्तनत बाक़ी रहेगी. और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें मरते दम तक बाक़ी रहेंगी और मौत के बाद जन्नत में दाख़िला मिलेगा. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से ये वादे किये तो उसको यह बात बहुत पसन्द आई मगर वह कोई काम हामान के मशवरे के बिना नहीं करता था. हामान मौजूद न था. जब वह आया तो फ़िरऔन ने उसको यह सूचना दी और कहा कि मैं चाहता हूँ कि मूसा की हिदायत पर ईमान क़ुबूल कर लूं. हामान कहेन लगा, मैं तो तुझको अक़्ल वाला और समझदार जानता था. तू रब है, बन्दा बनना चाहता है. तू मअबूद है, आबिद बनने की इच्छा है. फ़िरऔन ने कहा, तूने ठीक कहा. और हज़रत हारुन मिस्र में थे. अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म किया कि वह हज़रत हारुन के पास आएं और हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम को वही की कि हज़रत मूसा से मिलें. चुनांचे वह एक मंज़िल चलकर आपसे मिले और जो वही उन्हें हुई थी उसकी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सूचना दी.
(२४) यानी आपकी तालीम और नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिये ताकि आपके लिये अज्र और उसपर हुज्जत का इल्ज़ाम और उज्र की काट हो जाए और हक़ीक़त में होना तो वही है जो अल्लाह ने लिख दिया है.
(२५) अपनी मदद से.
(२६) उसकी कहनी और करनी को.
(२७) और उन्हें बन्दगी और असीरी से रिहा कर दे.
(२८) मेहनत और मशक़्क़त से सख़्त काम लेकर.
(२९) यानी चमत्कार जो हमारी नबुव्वत की सच्चाई के प्रमाण हैं. फ़िरऔन ने कहा वो क्या हैं तो आपने चमकती हथैली का चमत्कार दिखाया.
(३०) यानी दोनों जगत में उसके लिये सलामती है, वह अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहेगा.
(३१) हमारी नबुव्वत को और उन आदेशों को जो हम लाए.
(३२) हमारी हिदायत से हज़रत मूसा और हज़रत हारुन अलैहिमस्सलाम ने फ़िरऔन को यह संदेश पहुंचा दिया तो वह ----
(३३) हाथ को इसके लायक़ कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पाँव को इसके क़ाबिल कि चल सके, ज़बान को इसके मुनासिब कि बोल सके, आँख को इसके अनुसार कि देख सके, कान को ऐसा कि सुन सके.
(३४) और इसकी पहचान और जानकारी दी कि दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत की सआदत के लिये अल्लाह की दी हुई नअेमतों को किस तरह काम में लाया जाए.
(३५) फ़िरऔन.
(३६) यानी जो उम्मतें गुज़र चुकी है जैसे कि नूह, आद और समूद की क़ौम, जो बुतों को पूजते थे और मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाए जाने के इन्कारी थे, इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने.
(३७) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में उनके सारे हालात लिखे हैं. क़यामत के दिन उन्हें उन कर्मों का बदला दिया जाएगा.
(३८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का कलाम तो यहाँ ख़त्म हो गया अब अल्लाह तआला मक्का वालों को सम्बोधित करके इसका अन्त फ़रमाता है.
(३९) यानी क़िस्म क़िस्म की हरियालीयाँ, विभिन्न रंगतों, सुगंधों, शक्लों के, कुछ आदमियों के लिये, कुछ जानवरों के लिये.

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝ وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ۝ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ۝ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ

इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों को(५४)

तीसरा रूकू

हमने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया[1] और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे[2] और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे[3](५५) और बेशक हमने उसे[4] अपनी सब निशानियां[5] दिखाईं तो उसने झुटलाया और न माना[6](५६) बोला क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें अपने जादू के कारण हमारी ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा[7](५७) तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे[8] तो हम में और अपने में एक वादा ठहरा दो जिससे न हम बदला लें न तुम हमवार जगह हो(५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है[9] और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किये जाएं[10](५९) तो फ़िरऔन फिरा अपने दाँव इकट्ठे किये[11] फिर आया[12](६०) उनसे मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूठ न बाँधो[13] कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और बेशक नामुराद रहा जिसने झूट बांधा[14](६१) तो अपने मामले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए[15] और छुप कर सलाह की(६२) बोले बेशक ये दोनों[16] ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर

(४०) यह बात अबाहत और नअेमत के ज़िक्र के लिये है. यानी हमने ये सब्ज़े निकाले, तुम्हारे लिये इनका खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह यानी जायज़ करके.

सूरए ताँहा - तीसरा रूकू

(१) तुम्हारे बड़े दादा हज़रत आदम को उससे पैदा करके.
(२) तुम्हारी मौत और दफ़्न के वक़्त.
(३) क़यामत के दिन.
(४) यानी फ़िरऔन को.
(५) यानी कुल आयतें जो हज़रत मूसा को अता फ़रमाई थीं.
(६) और उन आयतों को जादू बताया और सच्चाई क़ुबूल करने से इन्कार किया और ----
(७) यानी हमें मिस्र से निकाल कर ख़ुद उस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ.
(८) और जादू में हमारा मुक़ाबला होगा.
(९) इस मेले से फ़िरऔनियों का मेला मुराद है जो उनकी ईद थी और उसमें वो सज धज के जमा होते थे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह दिन आशूरा यानी दसवीं मुहर्रम का था और उस साल ये तारीख़ शनिवार को पड़ी थी. उस दिन को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इसलिये निर्धारित किया कि यह दिन उनकी ऊंची शौकत यानी पराकाष्ठा का दिन था उसको मुक़र्रर करना अपनी भरपूर क़ुव्वत का इज़हार है. इसमें यह भी हिक्मत थी कि सच्चाई के ज़ुहूर और बातिल की रूस्वाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जबकि आस पास के तमाम लोग जमा हों.
(१०) ताकि ख़ूब रौशनी फैल जाय और देखने वाले इत्मीनान से देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए.
(११) बड़ी भारी तादाद में जादूगरों को इकट्ठा किया.
(१२) वादे के दिन उन सब को लेकर.
(१३) किसी को उसका शरीक करके.
(१४) अल्लाह तआला पर.
(१५) यानी जादूगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का यह कलाम सुनकर आपस में अलग अलग हो गए. कुछ कहने लगे कि यह भी हमारे जैसे जादूगर हैं, कुछ ने कहा कि ये बातें जादूगरों की नहीं, वो अल्लाह पर झूट बांधने को मना करते हैं.

الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ
اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ
تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ
بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ
مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ
خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ
الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ
اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾
فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ
وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ
لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ
النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا

से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएं﴿६३﴾ तो अपना दाँव (फ़रेब) पक्का कर लो फिर परा बांध कर आओ, और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब(विजयी) रहा﴿६४﴾ बोले[१७] ऐ मूसा या तो तुम डालो[१८] या हम पहले डालें[१९]﴿६५﴾ मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो,[२०] जभी उनकी रस्सियां और लाठियां उनके जादू के ज़ोर से उनके ख़याल में दौड़ती मालूम हुईं[२१]﴿६६﴾ तो अपने जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया﴿६७﴾ हमने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है﴿६८﴾ और डाल तो दे जो तेरे दाएं हाथ में है[२२] और उनकी बनावटों को निगल जाएगा, वो जो बनाकर लाए हैं वह तो जादूगर का धोखा है, और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे[२३]﴿६९﴾ तो सब जादूगर सज्दे में गिराए गए बोले हम उसपर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है[२४]﴿७०﴾ फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए इसके पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, बेशक वह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुमको जादू सिखाया[२५] तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा[२६] और तुम्हें खजूर के ठुंड पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अज़ाब सख़्त और देरपा है [२७]﴿७१﴾

(१६) यानी हज़रत मूसा और हज़रत हारून.

(१७) जादूगर.

(१८) पहले अपनी लाठी.

(१९) अपने सामान, शुरूआत करना जादूगरों ने अदब के तौर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मुबारक राय पर छोड़ा और उसकी बरकत से आख़िरकार अल्लाह तआला ने उन्हें ईमान की दौलत से नवाज़ा.

(२०) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इसलिये फ़रमाया कि जो कुछ जादू के धोखे हैं पहले वो सब ज़ाहिर कर चुकें, उसके बाद आप चमत्कार दिखाएं और सत्य झूट को मिटाए और चमत्कार जादू को बातिल कर दे. तो देखने वालों को बसीरत और इब्रत हासिल हो. चुनांचे जादूगरों ने रस्सियाँ लाठियाँ वग़ैरह जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी.

(२१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि ज़मीन साँपों से भर गई और मीलों मैदान में साँप ही साँप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस झूटी नज़र बन्दी से मसहूर यानी वशीभूत हो गए हैं. कहीं ऐसा न हो कि कुछ चमत्कार देखने से पहले ही इस के असर में आजाएं और चमत्कार न देखें .

(२२) यानी अपनी लाठी.

(२३) फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी डाली, वह जादूगरों के तमाम अजगरों और साँपों को निगल गई और आदमी उसके डर से घबरा गए. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे अपने मुबारक हाथ में लिया तो पहले की तरह लाठी बन गई. यह देखकर जादूगरों को यक़ीन हुआ कि यह चमत्कार है जिससे जादू मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की नज़रबन्दी इसके सामने नहीं टिक सकती.

(२४) सुब्हानल्लाह ! क्या अजीब हाल था, जिन लोगों ने अभी कुफ़्र के नशे में रस्सियाँ और लाठियाँ डाली थीं, अभी चमत्कार देख कर उन्हों ने शुक्र और सज्दे के लिये सर झुका दिये और गर्दनें डाल दीं. बताया गया है कि इस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और उन्होंने जन्नत में अपनी मंज़िलें देख लीं.

(२५) यानी जादू में वह कामिल उस्ताद और तुम सबसे ऊंचा है (मआज़ल्लाह).

(२६) यानी दाएं हाथ और बाएं पाँव.

(२७) इससे फ़िरऔन मलऊन की मुराद यह थी कि उसका अज़ाब ज़्यादा सख़्त है या सारे जगत के रब का. फ़िरऔन का यह घमण्ड भरा कलिमा सुनकर वो जादूगर ---

لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ
فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا
وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ
اَبْقٰى ۞ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ
جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۞ وَمَنْ يَّاْتِهٖ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ
الْعُلٰى ۞ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۞
وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ
فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ
دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۞ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ
فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۞ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ

बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह (प्राथमिकता) न देंगे उन रौशन दलीलों पर जो हमारे पास आई[२८] हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तो तू कर चुक जो तुझे करना है[२९] तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा[३०] (७२) बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख़्श दे और वह जो तूने हमें मजबूर किया जादू पर[३१] और अल्लाह बेहतर है[३२] और सब से ज़्यादा बाक़ी रहने वाला[३३] (७३) बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम[३४] होकर आए तो ज़रूर उसके लिये जहन्नम है जिस में न मरे[३५] न जिये[३६] (७४) और जो उसके हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों[३७] तो उन्हीं के दर्जे ऊंचे (७५) बसने के बाग़ जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें, और यह सिला है उसका जो पाक हुआ[३८] (७६)

चौथा रूकू

और बेशक हमने मूसा को वही (देववाणी) की[१] कि रातों रात मेरे बन्दों को ले चल[२] और उनके लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे[३] तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न ख़तरा[४] (७७) तो उनके पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर लेकर[५] तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया[६] (७८) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह

---

(२८) चमकती हथेली और हज़रत मूसा की लाठी . कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि उनका तर्क यह था कि अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार को भी जादू कहता है तो बता वो रस्से और लाठियाँ कहाँ गईं. कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि "रौशन दलीलों" से मुराद जन्नत और उसमें अपनी मंज़िलों का देखना है.
(२९) हमें उसकी कुछ पर्वाह नहीं.
(३०) आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुनिया नश्वर और यहाँ की हर चीज़ नष्ट होने वाली है. तू मेहरबान भी हो तो हमेशा की ज़िन्दगी नहीं दे सकता फिर दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी सारी राहतों के पतन का क्या ग़म. विशेष कर उसको जो जानता है कि आख़िरत में दुनिया के कर्मों का बदला मिलेगा.
(३१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि फ़िरऔन ने जब जादूगरों को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा था कि हम हज़रत मूसा को सोता हुआ देखना चाहते हैं. चुनांचे इसकी कोशिश की गई और उन्हें ऐसा अवसर दिया गया. उन्होंने देखा कि हज़रत सो रहे हैं और लाठी पहरा दे रही है. यह देखकर जादूगरों ने फ़िरऔन से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्योंकि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उसका जादू काम नहीं करता मगर फ़िरऔन ने उन्हें जादू करने पर मजबूर कर दिया. इसकी माफ़ी के वो अल्लाह तआला से तालिब और उम्मीदवार हैं.
(३२) फ़रमाँबरदारों को सवाब देने में.
(३३) नाफ़रमानों पर अज़ाब करने के लिहाज़ से.
(३४) यानी फ़िरऔन जैसे काफ़िर.
(३५) कि मरकर ही उससे छूट सके.
(३६) ऐसा जीना जिससे कुछ नफ़ा उठा सके.
(३७) यानी जिनका ईमान पर ख़ात्मा हुआ हो और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में नेक कर्म किये हों, फ़र्ज़ और नफ़्ल अदा किये हों.
(३८) कुफ़्र की नापाकी और गुनाहों की गन्दगी से.

सूरए ताँहा - चौथा रूकू

(१) जबकि फ़िरऔन चमत्कार देखकर राह पर न आया और नसीहत हासिल न की और बनी इस्राईल पर अत्याचार और अधिक करने लगा.
(२) मिस्र से, और जब दरिया के किनारे पहुंचे और फ़िरऔनी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर.

قَوْمَهُ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ
هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ
يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ
اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ
مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ
مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

किया और राह न दिखाई[७] ﴿٧٩﴾ ऐ बनी इस्राईल, बेशक हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन[८] से निजात दी और तुम्हें तूर की दाईं तरफ़ का वादा दिया[९] और तुम पर मन्न और सलवा उतारा[१०] ﴿٨٠﴾ खाओ जो पाक चीज़ें हमने तुम्हें रोज़ी दीं और उसमें ज़ियादती न करो[११] कि तुम पर मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वह गिरा[१२] ﴿٨١﴾ और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूँ उसे जिसने तौबह की[१३] और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा[१४] ﴿٨٢﴾ और तूने अपनी क़ौम से क्यों जल्दी की ऐ मूसा[१५] ﴿٨٣﴾ अर्ज़ की कि वो ये हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी तरफ़ मैं जल्दी करके हाज़िर हुआ कि तू राज़ी हो[१६] ﴿٨٤﴾ फ़रमाया तो हमने तेरे आने के बाद तेरी क़ौम को[१७] बला में डाला और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया[१८] ﴿٨٥﴾ तो मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा[१९] गुस्से में भरा, अफ़सोस करता[२०] कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा न किया था[२१] क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब(प्रकोप) उतरे तो तुमने मेरा

(३) अपनी लाठी मार कर.

(४) नदी में डूबने का, मूसा अलैहिस्सलाम का हुक्म पाकर रात के पहले पहर सत्तर हज़ार बनी इस्राईल को साथ लेकर मिस्र से चल पड़े.

(५) जिन में छ लाख फ़िरऔनी थे.

(६) वो डूब गए और पानी उनके सरों से ऊंचा हो गया.

(७) इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने और एहसान का ज़िक्र किया और फ़रमाया.

(८) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम.

(९) कि हम मूसा अलैहिस्सलाम को वहाँ तौरात अता फ़रमाएंगे जिसपर अमल किया जाए.

(१०) तेह में और फ़रमाया.

(११) नाशुक्री और नेअमत को झुटलाकर और उन नेअमतों को गुनाहों में ख़र्च करके या एक दूसरे पर ज़ुल्म करके.

(१२) जहन्नम में, और हलाक हुआ.

(१३) शिर्क से.

(१४) आख़िर दम तक.

(१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी चुन कर तौरात लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए, फिर रब के कलाम के शौक़ में उनसे आगे बढ़ गए, उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया "वमा अअजलका" (क्यों जल्दी की), तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ----

(१६) यानी तेरी रज़ा और ज़्यादा हो. इस आयत से इज्तिहाद का जायज़ होना साबित हुआ.(मदारिक)

(१७) जिन्हें आपने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साथ छोड़ा है.

(१८) बछड़े की पूजा की दावत देकर. इस आयत में गुमराह करने की निस्बत सामरी की तरफ़ फ़रमाई गई क्योंकि वह उसका कारण हुआ . इससे साबित हुआ कि किसी चीज़ को कारण की तरफ़ निस्बत करना जायज़ है. इसी तरह कह सकते हैं कि माँ बाप ने पाला पोसा, दीनी पेशवाओं ने हिदायत की और वलियों ने हाजत दूर फ़रमाई, बुज़ुर्गों ने बला दूर की. मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि काम ज़ाहिर में नियत और कारण की तरफ़ जोड़ दिये जाते हैं जबकि हक़ीक़त में उनका बनाने वाला अल्लाह तआला है और क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी निस्बतें बहुतात से आई हैं. (ख़ाज़िन)

(१९) चालीस दिन पूरे करके तौरात लेकर.

(२०) उनके हाल पर.

غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَآ
اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا
مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى
السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ
فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۥ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۥ وَّلَا يَمْلِكُ
لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ
قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ
فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ
عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا
مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ
اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ
اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

वादा ख़िलाफ़ किया[२२]﴿८६﴾ बोले हमने आपका वादा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हमसे कुछ बोझ उठवाए गए उस क़ौम के गहने के[२३] तो हमने उन्हें[२४] डाल दिया फिर इसी तरह सामरी ने डाला[२५]﴿८७﴾ तो उसने उनके लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़ गाय की तरह बोलता[२६] तो बोले[२७] यह है तुम्हारा मअबूद और मूसा का मअबूद, तो भूल गए[२८]﴿८८﴾ तो क्या नहीं देखते कि वह[२९] उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उनके किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता[३०]﴿८९﴾

पाँचवां रूकू

और बेशक उन से हारून ने इससे पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूंही है कि तुम उसके कारण फ़ितने में पड़े[१] और बेशक तुम्हारा रब रहमान है तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो﴿९०﴾ बोले हम तो उस पर आसन मारे जम (पूजा के लिये बैठे) रहेंगे[२] जब तक हमारे पास मूसा लौट के आएं[३]﴿९१﴾ मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था﴿९२﴾ कि मेरे पीछे आते[४], तो क्या तुमने मेरा हुक्म न माना﴿९३﴾ कहा ऐ मेरे माँजाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और न मेरे सर के बाल, मुझे यह डर हुआ कि तुम कहोगे तुमने बनी इस्राईल

(२१) कि वह तौरात अता फ़रमाएगा जिसमें हिदायत है, नूर है. हज़ार सूरतें हैं, हर सूरत में हज़ार आयतें हैं.
(२२) और ऐसा ग़लत काम किया कि बछड़े को पूजने लगे. तुम्हारा वादा तो मुझसे यह था कि मेरे हुक्म पर चलोगे और मेरे दीन पर क़ायम रहोगे.
(२३) यानी फ़िरऔनी क़ौम के ज़ेवरों के जो बनी इस्राईल ने उन लोगों से उधार मांग लिये थे.
(२४) सामरी के हुक्म से आग में.
(२५) उन ज़ेवरों को जो उसके पास थे और उस ख़ाक को जो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े के क़दम के नीचे से उसने हासिल की थी.
(२६) ये बछड़ा सामरी ने बनाया और इसमें कुछ छेद इस तरह रखे कि जब उनमें हवा दाख़िल हो तो उससे बछड़े की आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा हो. एक क़ौल यह भी है कि वह हज़रत जिब्रील के घोड़े के क़दम के नीचे की धूल डालने से ज़िन्दा हो कर बछड़े की तरह बोलता था.
(२७) सामरी और उसके अनुयायी .
(२८) यानी मूसा मअबूद को भूल गए और उसको यहाँ छोड़ कर उसकी खोज में तूर पर चले गए. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि "भूल गए" का कर्ता सामरी है और मानी यह हैं कि सामरी ने जो बछड़े को मअबूद बनाया वह अपने रब को भूल गया.
(२९) बछड़ा .
(३०) ख़िताब से भी मजबूर और नफ़ा नुक़सान से भी लाचार, वह किस तरह मअबूद हो सकता है.

सूरए ताहा - पाँचवां रूकू

(१) तो उसे न पूजो.
(२) बछड़े की पूजा पर क़ायम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे.
(३) इसपर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम उनसे अलग हो गए और उनके साथ बारह हज़ार वो लोग जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की थी. जब मूसा अलैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ लाए तो आपने उनके शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के चारों तरफ़ नाचते थे. तब आपने अपने सत्तर साथियों से फ़रमाया यह फ़ित्ने की आवाज़ है. जब क़रीब पहुंचे और हज़रत हारून को देखा तो दीनी ग़ैरत से जो आपकी प्रकृति थी, जोश में आकर उनके सर के बाल दाएं हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और.

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً
مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ
نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ
تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ
وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا
لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ
اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾
كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ
اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ
يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ وَسَآءَ لَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ
الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ

में तफ़रक़ा(फ़ूट) डाल दिया और तुमने मेरी बात का इन्तिज़ार न किया[५]﴿९४﴾ मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामरी[६]﴿९५﴾ बोला मैं ने वह देखा जो लोगों ने न देखा[७] तो एक मुट्ठी भरली फ़रिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया[८] और मेरे जी को यही भला लगा[९]﴿९६﴾ कहा तू चलता बन[१०] कि दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा यह है कि[११] तू कहे छू न जा[१२] और बेशक तेरे लिये एक वादे का वक़्त है[१३] जो तुझसे ख़िलाफ़ न होगा और अपने उस मअबूद को देख जिसके सामने तू दिन भर आसन मारे (पूजा के लिये) रहा[१४]. क़सम है हम ज़रूर इसे जिलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा करके दरिया में बहाएंगे[१५]﴿९७﴾ तुम्हारा मअबूद तो वही अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं, हर चीज़ को उसका इल्म घेरे है﴿९८﴾ हम ऐसा ही तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हमने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अता फ़रमाया[१६]﴿९९﴾ जो उससे मुंह फेरे[१७] तो बेशक वह क़यामत के दिन एक बोझ उठाएगा[१८]﴿१००﴾ वो हमेशा उसमें रहेंगे[१९] और वह क़यामत के दिन उनके हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा,﴿१०१﴾ जिस दिन सूर फूंका जाएगा[२०] और हम उस दिन मुजरिमों को[२१] उठाएंगे नीली आँखें[२२]﴿१०२﴾ आपस में चुपके

(४) और मुझे ख़बर दे देते यानी जब उन्होंने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यों नहीं आ मिले तुम्हारा उनसे जुदा होना भी उनके हक़ में एक ज़ज्र (चेतावनी) होता.

(५) यह सुनकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सामरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए, चुनांचे.

(६) तूने ऐसा क्यों किया, इसकी वजह बता.

(७) यानी मैं ने हज़रत जिब्रील को देखा और उनको पहचान लिया. वह ज़िन्दगी के घोड़े पर सवार थे. मेरे दिल में यह बात आई कि मैं उनके घोड़े के क़दम की धूल ले लूं .

(८) उस बछड़े में जिसे बनाया था.

(९) और यह काम मैं ने अपने ही मन के बहकावे पर किया, कोई दूसरा इसका कारण न था. इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ...

(१०) दूर हो जा.

(११) जब तुझ से कोई मिलना चाहे जो तेरे हाल से वाक़िफ़ न हो तो उस से ----

(१२) यानी सबसे अलग रहना, न तुझ से कोई छुए, न तू किसी से छुए, लोगों से मिलना उसके लिये पूरे तौर पर वर्जित क़रार दिया गया और मुलाक़ात, बात चीत, क्रय विक्रय, लेन देन, हर एक के साथ हराम कर दी गई और अगर संयोग से कोई उससे छू जाता तो वह और छूने वाला दोनों सख़्त बुख़ार में जकड़ जाते. वह जंगल में यही शोर मचाता फिरता कि कोई छू न जाना और वहशियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन अत्यन्त बुरी हालत में गुज़ारता था.

(१३) यानी अज़ाब के वादे का, आख़िरत में इस दुनियावी अज़ाब के बाद तेरे शिर्क और फ़साद फैलाने पर.

(१४) और उसकी इबादत पर क़ायम रहा.

(१५) चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसा किया और जब आप सामरी के उस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इस्राईल को सम्बोधित करके सच्चे दीन का बयान फ़रमाया और इरशाद किया.

(१६) यानी क़ुरआन शरीफ़ कि वह सर्वोत्तम ज़िक्र और जो इसकी तरफ़ ध्यान लगाए उसके लिये इस बुज़ुर्गी वाली किताब में मोक्ष और बरकतें हैं और इस पवित्र ग्रन्थ में पिछली उम्मतों के ऐसे हालात का बयान है जो ग़ौर करने और सबक़ पकड़ने के लायक़ हैं.

(१७) यानी क़ुरआन से और उस पर ईमान न लाए और उसकी हिदायतों से फ़ायदा न उठाए.

(१८) गुनाहों का भारी बोझ.

(१९) यानी उस गुनाह के अज़ाब में.

(२०) लोगों को महशर में हाज़िर करने के लिये . इससे मुराद सूर का दूसरी बार फूंका जाना है.

(२१) यानी काफ़िरों के इस हाल में.

لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ
اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا
قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾
يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ
الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ
لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ
يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ
ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ

चुपके कहते होंगे कि तुम दुनिया में न रहे मगर दस रात[२३] ﴿१०३﴾ हम ख़ूब जानते हैं जो वो[२४] कहेंगे जब कि उनमें सबसे बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे[२५] ﴿१०४﴾

छटा रूकू

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं[१] तुम फ़रमाओ इन्हें मेरा रब रेज़ा रेज़ा करके उड़ा देगा ﴿१०५﴾ तो ज़मीन को पटपर (चटियल मैदान) हमवार करके छोड़ेगा ﴿१०६﴾ कि तू इसमें नीचा ऊंचा कुछ न देखे ﴿१०७﴾ उस दिन पुकारने वाले के पीछे दौड़ेंगे[२] उसमें कजी न होगी[३] और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर[४] पस्त होकर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत आहिस्ता आवाज़[५] ﴿१०८﴾ उस दिन किसी की शफ़ाअत काम न देगी मगर उसकी जिसे रहमान ने[६] इज़्न (आज्ञा) दे दिया है और उसकी बात पसन्द फ़रमाई ﴿१०९﴾ वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे[७] और उनका इल्म उसे नहीं घेर सकता[८] ﴿११०﴾ और सब मुंह झुक जाएंगे उस ज़िन्दा क़ायम रहने वाले के हुज़ूर[९] और बेशक नामुराद रहा जिसने ज़ुल्म का बोझ लिया[१०] ﴿१११﴾ और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो उसे न ज़ियादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़सान का[११] ﴿११२﴾ और यूंही हमने इसे अरबी क़ुरआन उतारा और इस में तरह तरह से अज़ाब के

(२२) और काले मुंह.
(२३) आख़िरत की मुसीबतें और वहाँ की ख़ौफ़नाक मंज़िलें देखकर उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी की अवधि बहुत कम मालूम होगी.
(२४) आपस में एक दूसरे से.
(२५) कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि वो उस दिन की सख़्तियाँ देखकर अपने दुनिया में रहने की अवधि भूल जाएंगे.

सूरए ताहा - छटा रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सक़ीफ़ क़बीले के एक आदमी ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा कि क़यामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा . इसपर ये आयत उतरी.
(२) जो उन्हें क़यामत के दिन हिसाब के मैदान की तरफ़ बुलाएगा और पुकारेगा कि चलो रहमान के समक्ष पेश होने को और यह पुकारने वाले हज़रत इस्राफ़ील होंगे.
(३) और उस बुलाने से कोई मुंह नहीं मोड़ पाएगा.
(४) हैबत और जलाल से.
(५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इसमें सिर्फ़ होंटों की हरकत होगी.
(६) शफ़ाअत करने का.
(७) यानी सारा गुज़रा हुआ और सारा आने वाला और दुनिया और आख़िरत के सारे काम. यानी अल्लाह का इल्म बन्दों की ज़ात और सिफ़ात और समस्त हालात को घेरे हुए है.
(८) यानी सारी सृष्टि का इल्म अल्लाह की ज़ात का इहाता नहीं कर सकता. उसकी ज़ात की जानकारी सृष्टि के इल्म की पहुंच से बाहर है. वह अपने नामों और गुणों और क्षमताओं और हिक्मत की निशानियों से पहचाना जाता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने आयत के ये मानी बयान किये हैं कि ख़ल्क़ के उलूम ख़ालिक़ से सम्बन्धित जानकारी का इहाता नहीं कर सकते.
(९) और हर एक इज्ज़ और नियाज़ की शान के साथ हाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी. अल्लाह तआला के क़हर व हुकूमत का सम्पूर्ण इज़हार होगा.

أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ
وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ
وَحْيُهٗ ز وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى
اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَ
اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾
اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ
لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ
الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ
لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ
وَّرَقِ الْجَنَّةِ ز وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ

वादे दिये[१२] कि कहीं उन्हें डर हो या उनके दिल में कुछ सोच पैदा करे[१३]﴾११३﴿ तो सब से बलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह,[१४] और क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक इस की वही(देववाणी) तुम्हें पूरी न होले[१५] और अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़्यादा दे﴾११४﴿ और बेशक हमने आदम को इससे पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था[१६] तो वह भूल गया और हमने उसका इरादा न पाया﴾११५﴿

सातवाँ रूकू

और जब हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, उसने न माना﴾११६﴿ तो हमने फ़रमाया ऐ आदम बेशक यह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है[१] तो ऐसा न हो कि वो तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे फिर तू मशक़्क़त में पड़े [२]﴾११७﴿ बेशक तेरे लिये जन्नत में यह है कि न तू भूखा हो न नंगा हो ﴾११८﴿ और यह कि तुझे न इसमें प्यास लगे न धूप[३]﴾११९﴿ तो शैतान ने उसे वसवसा दिया बोला ऐ आदम क्या में तुम्हें बतादूं हमेशा जीने का पेड़[४] और वह बादशाही कि पुरानी न पड़े[५]﴾१२०﴿ तो उन दोनों ने उसमें से खा लिया अब उनपर उनकी शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं[६] और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे [७] और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़ज़िश वाक़े हुई﴾१२१﴿ तो जो मतलब चाहा था उसकी राह न पाई[८] फिर उसके रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रहमत से

(१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इसकी तफ़सीर में फ़रमाया जिसने शिर्क किया वह टोटे में रहा. बेशक शिर्क सबसे बुरा जुर्म है और जो इस जुर्म में जकड़ा हुआ हिसाब के मैदान में आए उससे बढ़कर नामुराद कौन है.

(११) इस आयत से मालूम हुआ कि फ़रमाँबरदारी और नेक कर्म सब की क़ुबूलियत ईमान के साथ जुड़ी है कि ईमान हो तो सब नेकियाँ कारआमद हैं और ईमान न हो, सारे अमल बेकार.

(१२) फ़र्ज़ों के छोड़ने और मना की हुई बातों को अपनाने पर.

(१३) जिससे उन्हें नेकियों की रग़बत और बुराइयों से नफ़रत हो और वो नसीहत हासिल करें.

(१४) जो अस्ल मालिक है और तमाम बादशाह उसके मोहताज.

(१५) जब हज़रत जिब्रील क़ुरआन शरीफ़ लेकर उतरते थे तो हुज़ूर सल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि आप मशक़्क़त न उठाएं और सूरए क़यामह में अल्लाह तआला ने ख़ुद ज़िम्मा लेकर आपकी और ज़्यादा तसल्ली फ़रमा दी.

(१६) कि जिस दरख़्त के पास जाने से मना किया गया है उसके पास न जाएं.

सूरए तॉहा - सातवाँ रूकू

(१) इस से मालूम हुआ कि बुज़ुर्गी और प्रतिष्ठा वाले को तस्लीम न करना और उसका आदर करने से मुंह फेरना हसद, ईर्ष्या और दुश्मनी की दलील है. इस आयत में शैतान का हज़रत आदम को सज्दा न करना आपके साथ उसकी दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया.

(२) और अपनी ग़िज़ा, आहार और ख़ुराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेहनत में जकड़ा जाए और चूंकि औरत का नफ़क़ा यानी गुज़ारा भत्ता मर्द के ज़िम्मे है इसलिये उसकी सारी मेहनत की निस्बत सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तरफ़ फ़रमाई गई.

اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ۝ قَالَ اهْبِطَا
مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ۝
وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً
ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ
حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ
اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ۝
وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ
كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ
مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝ ع
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ
اَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

منزل ٤

रूजू फ़रमाई और अपने ख़ास क़ुर्ब (समीपता) की राह दिखाई《१२२》 फ़रमाया तुम दोनों मिलकर जन्नत से उतरो तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ़ से हिदायत आए[९] तो जो मेरी हिदायत का पैरो हुआ वह न बहके[१०] न बदबख़्त हो[११]《१२३》 और जिसने मेरी याद से मुंह फेरा[१२] तो बेशक उसके लिये तंग ज़िन्दगी है,[१३] और हम उसे क़यामत के दिन अंधा उठाएंगे《१२४》 कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तूने क्यों अंधा उठाया मैं तो अंखियारा था[१४]《१२५》 फ़रमाएगा यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं[१५] तूने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा[१६]《१२६》 और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़िरत का अज़ाब सबसे सख़्त तर और सब से देरपा है《१२७》 तो क्या उन्हें इससे राह न मिली कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें (क़ौमें) हलाक कर दीं[१७] कि यह उनके बसने की जगह चलते फिरते हैं[१८] बेशक इसमें निशानियां हैं अक़्ल वालों को[१९]《१२८》

आठवाँ रूकू

और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती[१] तो ज़रूर अज़ाब उन्हें[२] लिपट जाता और अगर न होता एक वादा ठहराया हुआ[३]《१२९》 तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले[४] और उसके डूबने से पहले[५] और

(३) हर तरह का ऐशो राहत जन्नत में मौजूद है. मेहनत और परिश्रम से बिल्कुल अम्न है.
(४) जिसको खा कर खाने वाले को हमेशा की ज़िन्दगी हासिल होती है.
(५) और उसमें पतन न आए.
(६) यानी जन्नती लिबास उनके शरीर से उतर गए.
(७) गुप्तांग छुपाने और बदन ढकने के लिये.
(८) और उस दरख़्त के खाने से हमेशा की ज़िन्दगी न मिली. फिर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तौबह और इस्तिग़फ़ार में लग गए और अल्लाह की बारगाह में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वसीले या माध्यम से दुआ का.
(९) यानी किताब और रसूल.
(१०) यानी दुनिया में.
(११) आख़िरत में, क्योंकि आख़िरत का दुर्भाग्य दुनिया में सच्चाई के रास्ते से बहकने का नतीजा है. जो कोई अल्लाह की किताब और सच्चे रसूल का अनुकरण करे और उनके आदेशानुसार चले, वह दुनिया में बहकने से और आख़िरत में उसके अज़ाब और वबाल से छुटकारा पाएगा.
(१२) और मेरी हिदायत से मुंह फेरा.
(१३) दुनिया में क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में. दुनिया की तंग ज़िन्दगी यह है कि हिदायत का अनुकरण न करने से बुरे कर्म और हराम में पड़े या क़नाअत से मेहरूम होकर लालच में गिरफ़्तार हो जाए और माल मत्ता की बहुतात से भी उसको मन की शान्ति और चैन प्राप्त न हो. हर चीज़ की तलब में आवारा हो और लालच के दुख से कि यह नहीं, वह नहीं, हाल अंधेरा और समय ख़राब रहे. और अल्लाह पर भरोसा करने वाले मूमिन की तरह उसको सुकून और शान्ति हासिल ही न हो जिसको पाक ज़िन्दगी कहते हैं. और क़ब्र की तंग ज़िन्दगी यह है कि हदीस शरीफ़ में आया कि काफ़िर पर निनानवे अजगर उसकी क़ब्र में मुसल्लत किये जाते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया. यह आयत असवद बिन अब्दुल उज़्ज़ा मख़ज़ूमी के बारे में उतरी और क़ब्र की ज़िन्दगी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिस से एक तरफ़ की पसलियाँ दूसरी तरफ़ आ जाती हैं और आख़िरत में तंग ज़िन्दगी जहन्नम के अज़ाब हैं जहाँ ज़क़्क़ूम और खौलता हुआ पानी

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ
وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ
اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ
فِيْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ
بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ
نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا
يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى
الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ
قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا
فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾

रात की घड़ियों में उसकी पाकी बोलो(६) और दिन के किनारों पर(७) इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो(८)﴾१३०﴿ और ऐ सुनने वाले अपनी आँखें न फ़ैला उसकी तरफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरतने के लिये दी है जितनी दुनिया की ताज़गी(९) कि हम उन्हें इसके कारण फ़ितने में डालें(१०) और तेरे रब का रिज़्क़(११) सब से अच्छा और सबसे देरपा है﴾१३१﴿ और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह, कुछ हम तुझसे रोज़ी नहीं मांगते(१२) हम तुझे रोज़ी देंगे(१३) और अंजाम का भला परहेज़गारी के लिये﴾१३२﴿ और काफ़िर बोले ये(१४) अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते(१५) और क्या उन्हें इसका बयान न आया जो अगले सहीफ़ों(धर्मग्रन्थों) में है(१६)﴾१३३﴿ और अगर हम उन्हें किसी अज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो(१७) ज़रूर कहते ऐ रब हमारे तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते इससे पहले कि ज़लील व रूस्वा होते﴾१३४﴿ तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं(१८) तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे(१९) कि कौन हैं सीधी राह वाले और किसने हिदायत पाई﴾१३५﴿

और जहन्नमियों के ख़ून और उनके पीप खाने पीने को दिये जाएंगे और दीन में तंग ज़िन्दगी यह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी हराम कामों में पड़ जाए. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत, अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं तो उसमें कुछ भलाई नहीं और यह तंग ज़िन्दगी है. (तफ़सीरे कबीर, ख़ाज़िन और मदारिक वग़ैरह)

(१४) दुनिया में.
(१५) तो उन पर ईमान न लाया और ---
(१६) जहन्नम की आग में जला करेगा.
(१७) जो रसूलों को नहीं मानती थीं.
(१८) यानी क़ुरैश अपने सफ़रों में उनके इलाक़ों पर गुज़रते हैं और उनकी हलाकत के निशान देखते हैं.
(१९) जो सबक़ पकड़ें और समझें कि नबियों को झुटलाने और उनके विरोध का अंजाम बुरा है

सूरए तॉहा - आठवाँ रूकू

(१) यानी यह कि उम्मते मुहम्मदिया के अज़ाब में विलम्ब किया जाएगा.
(२) दुनिया ही म.
(३) यानी क़यामत के दिन.
(४) इससे फ़ज्र की नमाज़ मुराद है.
(५) इस से ज़ोहर और अस्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के आख़िरी निस्फ़ यानी उत्तरार्ध में सूरज के ज़वाल और ग़ुरूब के बीच स्थित हैं.
(६) यानी मग़रिब और इशा की नमाज़ें पढ़ो.
(७) फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ें. इनको ताकीद के लिये दोहराया गया और कुछ मुफ़स्सिर "डूबने से पहले" से अस्र की नमाज़ और 'दिन के किनारों पर" से ज़ोहर मुराद लेते हैं. उनकी तौजीह यह है कि ज़ोहर की नमाज़ ज़वाल के बाद है और उस वक़्त दिन के पहले आधे हिस्से और दूसरे आधे हिस्से के किनारे मिलते हैं, पहले आधे हिस्से का अंत है और दूसरे आधे की शुरूआत. (मदारिक, ख़ाज़िन)
(८) अल्लाह के फ़ज़्ल और अता और उसके इनआम और इकराम से कि तुम्हें उम्मत के हक़ में शफ़ीअ बनाकर तुम्हारी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उसने फ़रमाया है "व लसौफ़ा युअतीका रब्बुका फ़तरदा" यानी और बेशक क़रीब है

कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे. (सुरए दुहा ९३:५)
(९) यानी यहूदी और ईसाई काफ़िरों वग़ैरह को जो दुनियावी सामान दिया है, मूमिन को चाहिये कि उसको अचरज की नज़र से न देखे. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि नाफ़रमानों की शानो शौकत न देखो लेकिन यह देखो कि गुनाह और बुराई की ज़िल्लत किस तरह उनकी गर्दनों से नमूदार है.
(१०) इस तरह कि जितनी उनपर नेअमत ज़्यादा हो उतनी ही उनकी सरकशी और उनकी ज़िदें बढ़ें और वो आख़िरत की सज़ा के मुस्तहिक़ हों.
(११) यानी जन्नत और उसकी नेअमतें.
(१२) और इसकी ज़िम्मेदारी नहीं डालते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने कुटुम्ब की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो, बल्कि -----
(१३) और उन्हें भी, रोज़ी के ग़म में न पड़, अपने दिल को आख़िरत की फ़िक्र के लिये आज़ाद रख कि जो अल्लाह के काम में होता है अल्लाह उसके काम बनाता है.
(१४) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(१५) जो उनकी नबुव्वत की सच्चाई पर दलील हो जबकि बहुत सी आयतें आ चुकी थीं और चमत्कारों का लगातार ज़ुहूर हो रहा था. फिर काफ़िर उन सबसे अन्धे बने और उन्होंने हुज़ूर की निस्बत यह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यों नहीं लाते. इसके जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाता है.
(१६) यानी क़ुरआन और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ुशख़बरी और आपकी नबुव्वत और तशरीफ़ लाने का ज़िक्र, ये कैसी बड़ी निशानियाँ हैं. इनके होते हुए और किसी निशानी की तलब करने का क्या मौक़ा है.
(१७) क़यामत के दिन.
(१८) हम भी और तुम भी. मुश्रिकों ने कहा था कि हम ज़माने की घटनाओं और इन्क़लाब का इन्तिज़ार करते हैं कि कब मुसलमानों पर आएं और उनकी कहानी का अन्त हो. इसपर यह आयत उतरी और बताया गया कि तुम मुसलमानों की तबाही और बर्बादी की राह देख रहे हो और मुसलमान तुम्हारे पकड़े जाने और तुम पर अज़ाब आने का इन्तिज़ार कर रहे हैं.
(१९) जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़यामत क़ायम होगी.

पारा सोलाह समाप्त

सत्तरहवाँ पारा - इक़्तरबा

२१-सूरए अंबिया

सूरए अंबिया मक्का में उतरी, इसमें ११२ आयतें ,सात रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) लोगों का हिसाब नज़्दीक और वो ग़फ़लत में मुंह फेरे हैं(२)﴾१﴿ जब उनके रब के पास से उन्हें कोई नई नसीहत आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए(३)﴾२﴿ उनके दिल खेल में पड़े हैं(४) और ज़ालिमों ने आपस में छुपवाँ सलाह की(५) कि ये कौन हैं एक तुम ही जैसे आदमी तो हैं(६) क्या जादू के पास जाते हो देख भाल कर﴾३﴿ नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आसमानों और ज़मीन में हर बात को और वही है सुनता जानता(७)﴾४﴿ बल्कि बोले परेशान ख़्वाबें हैं(८) बल्कि उनकी घड़त (घड़ी हुई चीज़) है(९) बल्कि यह शायर हैं(१०) तो हमारे पास कोई निशानी लाएं जैसे अगले भेजे गए थे(११)﴾५﴿ इनसे पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हमने हलाक किया, तो क्या ये ईमान लाएंगे(१२)﴾६﴿ और हमने तुमसे पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम वही (देववाणी) करते(१३) तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो(१४)﴾७﴿

२१ - सूरए अंबिया - पहला रूकू

(१) सूरए अंबिया मक्का में उतरी. इसमें सात रूकू, एक सौ बारह आयतें, एक हज़ार एक सौ छियासी कलिमे और चार हज़ार आठ सौ नब्बे अक्षर हैं.

(२) यानी कर्मों के हिसाब का समय, क़यामत का दिन क़रीब आ गया और लोग अभी तक ग़फ़लत में हैं. यह आयत दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वालों के बारे में उतरी जो मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और क़यामत के दिन को गुज़रे हुए ज़माने के ऐतिबार से क़रीब फ़रमाया गया, क्योंकि जितने दिन गुज़रते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है.

(३) न उससे नसीहत पकड़ें, न सबक़ हासिल करें, न आने वाले वक़्त के लिये कुछ तैयारी करें.

(४) अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं.

(५) और उसके छुपाने में बहुत हद से बढ़े मगर अल्लाह तआला ने उनका राज़ खोल दिया और बयान फ़रमा दिया कि वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में यह कहते हैं.

(६) यह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब यह बात लोगों के दिमाग़ में बिठा दी जाएगी कि वह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान न लाएगा. हुज़ूर के ज़माने के काफ़िरों ने यह बात कही और इस को छुपाया, लेकिन आजकल के कुछ बेबाक यह कलिमा ऐलान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते. काफ़िर यह बात कहते वक़्त जानते थी कि उनकी बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्योंकि लोग रात दिन चमत्कार देखते हैं, वो किस तरह यक़ीन करेंगे कि हुज़ूर हमारी तरह बशर हैं. इसलिये उन्होंने चमत्कारों को जादू बताया और कहा ---

(७) उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती चाहे कितने ही पर्दे और राज़ में रखी गईं हो, उनका राज़ भी उस में ज़ाहिर फ़रमा दिया गया. इसके बाद क़ुरआन शरीफ़ से उन्हें सख़्त परेशानी और हैरानी लाहक़ थी कि इसका किस तरह इन्कार करें. वह ऐसा खुला चमत्कार है जिसने सारे मुल्क के प्रतिष्ठित माहिरों को आश्चर्य चकित और बेबस कर दिया है और वह इसकी दो चार आयतों जैसा कलाम बना कर नहीं ला सके. इस परेशानी में उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ के बारे में विभिन्न बातें कहीं जिन का बयान अगली आयत में है.

(८) उनको नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वही या अल्लाह का कलाम समझ गए हैं. काफ़िरों ने यह कह कर सोचा कि यह बात ठीक नहीं बैठेगी, तो अब उस को छोड़ कर कहने लगे.

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى

और हमने उन्हें[१५] ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खाएं[१६] और न वो दुनिया में हमेशा रहें﴿८﴾ फिर हमने अपना वादा उन्हें सच्चा कर दिखाया[१७] तो उन्हें निजात दी और जिन को चाही[१८] और हद से बढ़ने वालों को[१९] हलाक कर दिया﴿९﴾ बेशक हमने तुम्हारी तरफ़[२०] एक किताब उतारी जिसमें तुम्हारी नामवरी (प्रसिद्धि) है[२१] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[२२]﴿१०﴾

दूसरा रूकू

और कितनी ही बस्तियां हमने तबाह कर दीं कि वो सितम करने वाली थीं[१] और उनके बाद और क़ौम पैदा की﴿११﴾ तो जब उन्होंने [२] हमारा अज़ाब पाया जभी वो उससे भागने लगे[३]﴿१२﴾ न भागो और लौट के जाओ उन आसयाशों की तरफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ़ शायद तुम से पूछना हो[४]﴿१३﴾ बोले हाय ख़राबी हमारी, बेशक हम ज़ालिम थे[५]﴿१४﴾ तो वो यही पुकारते रहे यहाँ तक कि हमने उन्हें कर दिया काटे हुए[६] बुझे हुए﴿१५﴾और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है बेकार न बनाए[७]﴿१६﴾ अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते[८]तो अपने पास से इख़्तियार करते अगर हमें करना होता[९]﴿१७﴾ बल्कि हम हक़ को

(९) यह कह कर ख़याल हुआ कि लोग कहेंगे कि अगर यह कलाम हज़रत का बनाया हुआ है और तुम उन्हें अपने जैसा बशर कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यों नहीं बना सकते. यह सोच कर इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे.

(१०) और यह कलाम शायरी है. इसी तरह की बातें बनाते रहे, किसी एक बात पर क़ायम न रह सके और झूटे लोगों का यही हाल होता है. जब उन्होंने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे.

(११) इसके रद और जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाता है .

(१२) मानी यह है कि उनसे पहले लोगों के पास जो निशानियाँ आईं, तो वो उन पर ईमान न लाए और उन्हें झुटलाने लगे और इस कारण हलाक कर दिये गए . तो क्या यह लोग निशानी देख कर ईमान ले आएंगे जबकि इनकी सरकशी और हटधर्मी उनसे बढ़ी हुई है.

(१३) यह उनके पिछले कलाम का रद है कि नबियों का इन्सान की सूरत में तशरीफ़ लाना नबूव्वत के विरुद्ध नहीं है. हमेशा ऐसा ही होता रहा है.

(१४) क्योंकि न जानने वालों को इससे चारा ही नहीं कि जानने वाले से पूछें और जिहालत की बीमारी का इलाज यही है कि आलिम से सवाल करे और उसके हुक्म पर चले. इस आयत से तक़लीद के वाजिब होने का सुबूत मिलता है. यहाँ उन्हें इल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया है कि उन से पूछो कि अल्लाह के रसूल इन्सान की शक्ल में आए थे कि नहीं. इससे तुम्हारी आशंका और संदेह का अंत हो जाएगा.

(१५) यानी नबियों को.

(१६) तो उनपर खाने पीने का ऐतिराज़ करना और कहना - यह रसूल नहीं है जो हमारी तरह खाता पीता है - केवल भ्रम और बेजा है. सारे नबियों का यही हाल था, वो सब खाते भी थे और पीते भी थे.

(१७) उनके दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें छुटकारा देने का.

(१८) यानी ईमानदारों को, जिन्होंने नबियों की तस्दीक़ की.

(१९) जो नबियों को झुटलाते थे.

(२०) ऐ क़ुरैश वालो ---

(२१) अगर तुम इसपर अमल करो या ये मानी हैं कि वह किताब तुम्हारी ज़बान में है, या यह कि तुम्हारे लिये नसीहत है या यह कि उसमें तुम्हारे दीन और दुनिया के कामों और ज़रूरतों का बयान है.

(२२) कि ईमान लाकर इस इज़्ज़त और बुज़ुर्गी और सौभाग्य को हासिल करो.

الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ ۚ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ ﴿٢٣﴾
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِىَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِىْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِىْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ
اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ

बातिल पर फैंक मारते हैं तो वह उसका भेजा निकाल देता है तो जभी वह मिटकर रह जाता है(१०) और तुम्हारी ख़राबी है(११) उन बातों से जो बनाते हो(१२)﴾१८﴿ और उसी के हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं(१३) और उसके पास वाले(१४) उसकी इबादत से घमण्ड नहीं करते और न थकें﴾१९﴿ रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते(१५)﴾२०﴿ क्या उन्होंने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा बना लिये हैं(१६) कि वो कुछ पैदा करते हैं(१७)﴾२१﴿ अगर आसमान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वो(१८) तबाह हो जाते(१९) तो पाकी है अल्लाह अर्श के मालिक को उन बातों से जो ये बनाते हैं (२०)﴾२२﴿ उससे नहीं पूछा जाता जो वह करे(२१) और इन सबसे सवाल होगा(२२)﴾२३﴿ क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ(२३) अपनी दलील लाओ(२४) ये क़ुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है(२५) और मुझसे अगलों का तज़किरा(वर्णन)(२६) बल्कि उनमें अकसर हक़ को नहीं जानते तो वो मुंह फेरने वाले हैं(२७)﴾२४﴿ और हमने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर यह कि हम उसकी तरफ़ वही (देववाणी) फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं तो मुझी को पूजो﴾२५﴿ और बोले रहमान ने बेटा इख़्तियार किया(२८) पाक है

सूरए अंबिया - दूसरा रूकू

(१) यानी काफ़िर थीं.
(२) यानी उन ज़ालिमों ने.
(३) मुफ़स्सिरों ने ज़िक्र किया है कि यमन प्रदेश में एक बस्ती है जिसका नाम हुसूर है, वहाँ के रहने वाले अरब थे. उन्होंने अपने नबी को झुटलाया और उनको क़त्ल किया तो अल्लाह तआला ने उनपर बुख़्ते नस्सर को मुसल्लत कर दिया. उसने उन्हें क़त्ल किया और गिरफ़्तार किया और उसका यह अमल जारी रहा तो ये लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो फ़रिश्तों ने उनसे व्यंग्य के तौर पर कहा (जो अगली आयत में है)
(४) कि तुम पर क्या गुज़री और तुम्हरी माल-मत्ता क्या हुई तो तुम पुछने वाले को अपने इल्म और मुशाहदे या अवलोकन से जवाब दे सको.
(५) अज़ाब देखने के बाद उन्होंने गुनाह का इक़रार किया और लज्जित हुए, इसलिये यह ऐतिराफ़ उन्हें काम न आया.
(६) खेत की तरह, कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की तरह हो गए.
(७) कि उनसे कोई फ़ायदा न हो बल्कि इसमें हमारी हिकमतें हैं. इसके साथ साथ यह है कि हमारे बन्दे उनसे हमारी क़ुदरत और हिकमत पर इस्तदलाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ और गुणों और कमाल की पहचान हो.
(८) बीबी और बेटे की तरह जैसा कि ईसाई कहते हैं और हमारे लिये बीबी और बेटियाँ बताते हैं अगर यह हमारे हक़ में मुमकिन होता.
(९) क्योंकि बीवी बेटे वाले, बीवी बेटे अपने पास रखते हैं, मगर हम इससे पाक हैं हमारे लिये यह संभव ही नहीं.
(१०) मानी ये है कि हम झूटे लोगों के झूट को सच्चाई के बयान से मिटा देते हैं.
(११) ऐ बदनसीब काफ़िरो !
(१२) अल्लाह की शान में कि उसके लिये बीबी और बच्चा ठहराते हो.
(१३) वह सब का मालिक है और सब उसके ममलूक, तो कोई उसकी औलाद कैसे हो सकता है. ममलूक होना और औलाद होना दो अलग अलग चीज़ें हैं.
(१४) उसके प्यारे जिन्हें उसके करम से उसके दरबार में क़ुर्ब और सम्मान हासिल है.
(१५) हर वक़्त उसकी तस्बीह में रहते . हज़रत कअब अहबार ने फ़रमाया कि फ़रिश्तों के लिये तस्बीह ऐसी है जैसे कि बनी आदम के लिये साँस लेना.

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

वह[२९] बल्कि बन्दे हैं इज़्ज़त वाले[३०]﴿२६﴾ बात में उससे सबक़त(पहल) नहीं करते और वह उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं﴿२७﴾ वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है [३१] और शफ़ाअत नहीं करते मगर उसके लिये जिसे वह पसन्द फ़रमाए[३२] और वो उसके ख़ौफ़ से डर रहे हैं﴿२८﴾ और उनमें जो कोई कहे कि मैं अल्लाह के सिवा मअबूद हूँ[३३] तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे . हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को﴿२९﴾

तीसरा रूकू

क्या काफ़िरों ने यह ख़याल न किया कि आसमान और ज़मीन बन्द थे तो हमने उन्हें खोला[१] और हमने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई[२] तो क्या वो ईमान लाएंगे﴿३०﴾ और ज़मीन में हम ने लंगर डाले[३] कि उन्हें लेकर न कांपे, और हमने उसमें कुशादा(खुली) राहें रखीं कि कहीं वो राह पाएं.[४]﴿३१﴾ और हमने आसमान को छत बनाया निगाह रखी गई[५] और वो[६] उसकी निशानियों से मुंह फेरते हैं[७]﴿३२﴾ और वही है जिसने बनाए रात[८] और दिन[९]

(१६) ज़मीन की सम्पत्ति से, जैसे सोना, चांदी, पत्थर वग़ैरह.
(१७) ऐसा तो नहीं है और न यह हो सकता है कि जो ख़ुद बेजान हों वह किसी को जान दे सकें. तो फिर उसको मअबूद ठहराना और ख़ुदा क़रार देना कितना खुला झूठ है . ख़ुदा वही है जो हर मुमकिन पर क़ादिर हो, जो सक्षम नहीं, वह ख़ुदा कैसे.
(१८) आसमान और ज़मीन.
(१९) क्योंकि अगर ख़ुदा से वो ख़ुदा मुराद लिये जाएं जिनकी ख़ुदाई को बुत परस्त मानते हैं तो जगत में फ़साद का होना लाज़िम है क्योंकि वो पत्थर बेजान हैं, संसार चलाने की ज़रा भी क्षमता नहीं रखते और अगर वो ख़ुदा फ़र्ज़ किये जाएं तो दो हाल से ख़ाली नहीं, या वो दोनों सहमत होंगे या अलग अलग विचार के. अगर किसी एक बात पर सहमत हुए तो लाज़िम आएगा कि एक बात दोनों की क्षमता में हो और दोनों की क़ुदरत से अस्तित्व में आए. यह असंभव है और अगर सहमत न हुए तो एक चीज़ के सम्बन्ध में दोनों के इरादे या एक साथ वाक़े होंगे और एक ही वक़्त में वह मौजूद और मअदूम यानी हाज़िर और ग़ायब दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़े न हों और चीज़ न मौजूद हो न ग़ायब हो, या एक का इरादा पूरा हो और दूसरे का न हो, ये तमाम सूरतें भी संभव नहीं हैं तो साबित हुआ कि फ़साद हर सूरत में लाज़िम है. तौहीद की यह निहायत मज़बूत मिसाल है और इसकी तफ़सील कलाम के इमामों की किताबों में दर्ज हैं. यहाँ संक्षेप में बस इतना ही काफ़ी है. (तफ़सीरे कबीर वग़ैरह)
(२०) कि उसके लिये औलाद और शरीक ठहराते हैं.
(२१) क्योंकि वह हक़ीक़ी मालिक है, जो चाहे करे, जिसे चाहे इज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत दे, जिसे चाहे सौभाग्य दे, जिसे चाहे दुर्भाग्य दे. वह सब का हाकिम है, कोई उसका हाकिम नहीं जो उससे पूछ सके.
(२२) क्योंकि सब उसके बन्दे हैं, ममलूक हैं, सब पर उसकी फ़रमाँबरदारी और अनुकरण लाज़िम है. इससे तौहीद की एक और दलील मिलती है. जब सब उसके ममलूक हैं तो उनमें से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है. इसके बाद समझाने के तौर पर फ़रमाया.
(२३) ऐ हबीब(सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम) उन मुश्रिकीन से, कि तुम अपने इस झूटे दावे पर ---
(२४) और हुज्जत क़ायम करो चाहे अक़्ली हो या नक़्ली. मगर न कोई अक़्ली दलील ला सकते हो जैसा कि बयान किये हुए प्रमाणों से ज़ाहिर हो चुका और न कोई नक़्ली दलील यानी किसी का कहा हुआ पेश कर सकते हो क्योंकि सारी आसमानी किताबों में अल्लाह के एक होने का बयान है और सब में शिर्क को ग़लत क़रार दिया गया है.
(२५) साथ वालों से मुराद आप की उम्मत है. क़ुरआन शरीफ़ में इसका ज़िक्र है कि इसको फ़रमाँबरदारी पर क्या सवाब मिलेगा और गुनाहों पर क्या अज़ाब किया जाएगा.
(२६) यानी पहले नबियों की उम्मतों का और इसका कि दुनिया में उनके साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा.
(२७) और ग़ौर नहीं करते और नहीं सोचते कि ईमान लाना उनके लिए ज़रूरी है.

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ۝ خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝ بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن

और सूरज और चांद हर एक एक घेरे में पैर रहा है[१०]﴿३३﴾ और हमने तुम से पहले किसी आदमी के लिये दुनिया में हमेशगी(निरन्तरता) न बनाई[११] तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो ये हमेशा रहेंगे[१२]﴿३४﴾ हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़माइश(परीक्षा) करते हैं बुराई और भलाई से[१३] जांचने को[१४] और हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौट कर आना है[१५]﴿३५﴾ और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्टा[१६] क्या ये वो हैं जो तुम्हारे ख़ुदाओं को बुरा कहते हैं और वो[१७] रहमान ही की याद से इन्कारी हैं[१८]﴿३६﴾ आदमी जल्दबाज़ बनाया गया . अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो[१९]﴿३७﴾ और कहते हैं कब होगा यह वादा[२०] अगर तुम सच्चे हो﴿३८﴾ किसी तरह जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे अपने मुंहों से आग[२१] और न अपनी पीठों से और न उनकी मदद हो[२२]﴿३९﴾ बल्कि वह उनपर अचानक आ पड़ेगी[२३] तो उन्हें बे हवास कर देगी फिर न वो उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मुहलत दी जाएगी[२४]﴿४०﴾ और बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ

(२८) यह आयत ख़ुज़ाआ के बारे में उतरी, जिन्होंने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ कहा था.
(२९) उसकी ज़ात इससे पाक है कि उसके औलाद हो.
(३०) यानी फ़रिश्ते उसके बुज़ुर्गी वाले बन्दे हैं.
(३१) यानी जो कुछ उन्हों ने किया और जो कुछ वो आयन्दा करेंगे.
(३२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, यानी जो तौहीद का मानने वाला हो.
(३३) यह कहने वाला इब्लीस है जो अपनी इबादत की दावत देता है. फ़रिश्तों में और कोई ऐसा नहीं जो यह कलिमा कहे.

सूरए अंबिया - तीसरा रूकू

(१) बन्द होना या तो यह है कि एक दूसरे से मिला हुआ था उनमें अलहदगी पैदा करके उन्हें ख़ोला, या ये मानी हैं कि आसमान बंद था, इस अर्थ में कि उससे वर्षा नहीं होती थी. ज़मीन बन्द थी, इस अर्थ में कि उस से कुछ पैदा नहीं होता था. तो आसमान का ख़ोलना यह है कि उससे बारिश होने लगी और ज़मीन का ख़ोलना यह है कि उससे हरियाली पैदा होने लगी.
(२) यानी पानी को जान्दारों की ज़िन्दगी का कारण किया. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा, मानी ये हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुआ है और कुछ ने कहा कि इससे नुत्फ़ा या बीज मुराद है.
(३) मज़बूत पहाड़ों के.
(४) अपने सफ़रों में, और जिन जगहों का इरादा करें वहाँ तक पहुंच सकें.
(५) गिरने से.
(६) यानी काफ़िर.
(७) यानी आसमानी जगह, सूरज चांद सितारे और अपने अपने आसमानों में उनकी हरकतों की कैफ़ियत, और अपने निकलने के स्थानों से उनके निकलने और डूबने और उनके अहवाल, जो दुनिया के बनाने वाले के अस्तित्व और उसके एक होने और उसकी भरपूर क़ुदरत और अपार हिकमत के प्रमाण हैं. काफ़िर उन सब से नज़रें फेरते हैं और उन प्रमाणों से लाभ नहीं उठाते.
(८) अंधेरी, कि उसमें आराम करें.
(९) रौशन, कि उसमें रोज़ी रोटी वग़ैरह के काम करें.
(१०) जिस तरह कि तैराक पानी में.
(११) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दुश्मन अपनी गुमराही और दुश्मनी से कहते थे कि हम ज़माने या समय की चालों

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَ
النَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ
مُّعْرِضُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝
بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ
اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ
اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ
وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝
وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ
الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ
كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى

ठठ्ठा किया गया(२५) तो मसख़रगी (ठठ्ठा) करने वालों का ठठ्ठा उन्हीं को ले बैठा(२६)﴾४१﴿

चौथा रूकू

तुम फ़रमाओ रात दिन तुम्हारी निगहबानी कौन करता है रहमान से(१) बल्कि वो अपने रब की याद से मुंह फेरे हैं(२)﴾४२﴿ क्या उनके कुछ ख़ुदा हैं(३) जो उनको हम से बचाते हैं(४) वो अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते(५) और न हमारी तरफ़ से उनकी यारी हो﴾४३﴿ बल्कि हमने उनको(६) और उनके बाप दादा को बर्तावा दिया(७) यहाँ तक कि ज़िन्दगी उनपर दराज़ (लम्बी) हुई(८) तो क्या नहीं देखते कि हम(९) ज़मीन को उसके किनारों से घटाते आ रहे हैं(१०) तो क्या ये ग़ालिब होंगे(११)﴾४४﴿ तुम फ़रमाओ कि मैं तुम को सिर्फ़ वही (देववाणी) से डराता हूँ(१२) और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जाएं(१३)﴾४५﴿ और अगर उन्हें तुम्हारे रब के अज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाय ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे(१४)﴾४६﴿ और हम अदल (न्याय) की तराज़ुएं रखेंगे क़यामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा, और अगर कोई चीज़(१५) राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे, और हम काफ़ी

की प्रतीक्षा कर रहे हैं. बहुत जल्द ऐसा वक़्त आने वाला है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का देहान्त होजएगा. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि रसूल के दुश्मनों के लिये यह कोई ख़ुशी की बात नहीं. हमने दुनिया में किसी आदमी के लिये हमेशा का रहना नहीं रखा.

(१२) और उन्हें मौत के पंजे से छुटकारा मिल जाएगा. जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते हैं. हक़ीक़त यह है कि ----

(१३) यानी राहत और तकलीफ़, स्वास्थ्य और बीमारी, मालदारी और ग़रीबी, नफ़ा और नुक़सान से.

(१४) ताकि ज़ाहिर हो जाए कि सब्र और शुक्र में तुम्हारा क्या दर्जा है.

(१५) हम तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देंगे.

(१६) यह आयत अबू जहल के बारे में उतरी. हुज़ूर तशरीफ़ लिये जाते थे वह आपको देखकर हंसा और कहने लगा कि यह बनी अब्दे मनाफ़ के नबी हैं और आपस में एक दूसरे से कहने लगे.

(१७) काफ़िर.

(१८) कहते हैं कि हम रहमान को जानते ही नहीं. इस जिहालत और गुमराही में जकड़े जाने के बावुजूद आपके साथ ठठ्ठा करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उनका अपना हाल है.

(१९) यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्दी अज़ाब उतरवाइए. इस आयत में फ़रमाया गया कि अब मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊंगा यानी जो वादे अज़ाब के दिये गए हैं उनका वक़्त क़रीब आ गया है. चुनांचे बद्र के दिन वह दृश्य उनकी नज़र के सामने आगया.

(२०) अज़ाब का या क़यामत का, ये उनकी जल्दी करने का बयान है.

(२१) दोज़ख़ की.

(२२) अगर वो यह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ायम न रहते और अज़ाब में जल्दी न करते.

(२३) क़यामत.

(२४) तौबह और मग़फ़िरत की.

(२५) ऐ मेहबूब (सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम).

(२६) और वो अपने मज़ाक़ और हंसी बनाने के वबाल और अज़ाब में गिरफ़्तार हुए. इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आपके साथ ठठ्ठा करने वालों का यही अंजाम होता है.

بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ
الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝
وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۚ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ
عٰلِمِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ
الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ
اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى
ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ
اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ

हैं हिसाब को﴾४७﴿ और बेशक हमने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया[१६] और उजाला[१७] और परहेज़गारों को नसीहत[१८]﴾४८﴿ वो जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़यामत का डर लगा हुआ है﴾४९﴿ और यह है बरकत वाला ज़िक्र कि हमने उतारा[१९] तो क्या तुम उसके इन्कारी हो﴾५०﴿

पाँचवां रूकू

और बेशक हमने इब्राहीम को[१] पहले ही से उसकी नेक राह अता कर दी और हम उससे ख़बरदार थे[२]﴾५१﴿ जब उसने अपने बाप और क़ौम से कहा ये मूरतें क्या हैं.[३] जिनके आगे तुम आसन मारे (पूजा के लिये) हो[४]﴾५२﴿ बोले हमने अपने बाप दादा को उनकी पूजा करते पाया[५]﴾५३﴿ कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो﴾५४﴿ बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो[६]﴾५५﴿ कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो रब है आसमानों और ज़मीन का जिसने उन्हें पैदा किया और मैं इसपर गवाहों में से हूँ﴾५६﴿ और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बाद इसके कि तुम फिर जाओ पीठ देकर[७]﴾५७﴿ तो उन सब को[८] चूरा कर

सूरए अंबिया - चौथा रूकू

(१) यानी उसके अज़ाब से.
(२) जब ऐसा है तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब का क्या डर हो और वो अपनी हिफ़ाज़त करने वालों को क्या पहचानें.
(३) हमारे सिवा उनके ख़याल में.
(४) और हमारे अज़ाब से मेहफ़ूज़ रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वो अपने बुतों के बारे में यह अक़ीदा रखते हैं तो उनका हाल यह है कि.
(५) अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे.
(६) यानी काफ़िरों को.
(७) और दुनिया में उन्हें नेअमत और मोहलत दी.
(८) और वो इस से और घमण्डी हुए और उन्होंने गुमान किया कि वो हमेशा ऐसे ही रहेंगे.
(९) काफ़िरों के रहने की जगह की----
(१०) दिन प्रतिदिन मुसलमानों को उस पर तसल्लुत दे रहे हैं और एक शहर के बाद दूसरा शहर फ़त्ह होता चला आ रहा है, इस्लाम की सीमाएं बढ़ रही हैं और कुफ़्र की धरती घटती चली आती है. और मक्कए मुकर्रमा के आस पास के इलाक़ों पर मुसलमानों का तसल्लुत होता जाता है, क्या मुश्रिक जो अज़ाब तलब करने में जल्दी कर रहे हैं, इसको नहीं देखते और सबक़ नहीं पकड़ते.
(११) जिनके क़ब्ज़े से ज़मीन दम ब दम निकलती जा रही है. या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनके सहाबा जो अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़त्ह पा रहे हैं और उनके क़ब्ज़े दम ब दम बढ़ते जा रहे हैं.
(१२) और अज़ाबे इलाही का उसी की तरफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूँ.
(१३) यानी काफ़िर, हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़ा न उठाने में बेहरे की तरह हैं.
(१४) नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाए.
(१५) कर्मों में से.
(१६) यानी तौरात अता की जो सच झूट में अन्तर करने वाली है.
(१७) यानी रौशनी है, कि उससे मोक्ष की राह मालूम होती है.
(१८) जिससे वो नसीहत हासिल करते हैं और दीन की बातों का इल्म हासिल करते हैं.
(१९) अपने हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर, यानी क़ुरआन शरीफ़, यह बहुत सी भलाई वाला है और ईमान लाने वालों के लिये इसमें बड़ी बरकतें हैं.

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾
قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾
قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا
فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾
قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾
قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْــَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا
يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ
اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْــًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾
اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا

दिया मगर एक को जो उन सबका बड़ा था[९] कि शायद वो उससे कुछ पूछें[१०] ﴾५८﴿ बोले किस ने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया बेशक वह ज़ालिम है ﴾५९﴿ उनमें के कुछ बोले हमने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं[११] ﴾६०﴿ बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ शायद वो गवाही दें[१२] ﴾६१﴿ बोले क्या तुमने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह काम किया, ऐ इब्राहीम[१३] ﴾६२﴿ फ़रमाया बल्कि उनके उस बड़े ने किया होगा[१४] तो उनसे पूछो अगर बोलते हों[१५] ﴾६३﴿ तो अपने जी की तरफ़ पलटे[१६] और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो[१७] ﴾६४﴿ फिर अपने सरों के बल औंधाए गए[१८] कि तुम्हें ख़ूब मालूम है ये बोलते नहीं[१९] ﴾६५﴿ कहा तो क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे[२०] और न नुक़सान पहुंचाए[२१] ﴾६६﴿ तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[२२] ﴾६७﴿ बोले उनको जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है[२३] ﴾६८﴿ हमने फ़रमाया ऐ

सूरए अंबिया - पाँचवाँ रूकू

(१) उनकी शुरु की उम्र में बालिग़ होने के.
(२) कि वह हिदायत और नबुव्वत के पात्र हैं.
(३) यानी बुत जो दरिन्दों, परिन्दों और इन्सानों की सूरत में बने हुए हैं.
(४) और उनकी इबादत में लगे हो.
(५) तो हम भी उनके अनुकरण में वैसा ही करने लगे.
(६) चूंकि उन्हें अपने तरीक़े का गुमराही होना बहुत ही असंभव लगता था और उसका इन्कार करना वो बहुत बड़ी बात जानते थे, इसलिये उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से यह कहा कि क्या आप यह बात सही तौर पर हमें बता रहे है या खेल के तौर पर फ़रमा रहे हैं. इसके जवाब में आपने अल्लाह तआला के रब होने की ताईद करके ज़ाहिर कर दिया कि आप मज़ाक़ के तौर पर क्लाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि सच्चाई का इज़हार फ़रमाते हैं. चुनांन्चे आपने ----
(७) अपने मेलों को. वाक़िआ यह है कि उस क़ौम का सालाना मेला लगता था. जंगल में जाते और शाम तक वहाँ खेलकूद नाच गानों में लगे रहते. वापसी के समय बुतख़ाने आते और बुतों की पूजा करते. इसके बाद अपने मकानों को चले जाते. जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनकी एक जमाअत से बुतों के बारे में तर्क वितर्क किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है आप वहाँ चलें, देखें कि हमारे दीन और तरीक़े में क्या बहार है और कैसा मज़ा आता है. जब वह मेले का दिन आया और आपसे मेले चलने को कहा गया तो आप बहाना बनाकर रूक गए. वो लोग चले गए. जब उनके बाक़ी लोग और कमज़ोर व्यक्ति जो आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे, गुज़रे तो आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहुंगा. इसको कुछ लोगों ने सुना और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बुत ख़ाने की तरफ़ लौटे.
(८) यानी बुतों को तोड़ कर.
(९) छोड़ दिया और बसूला उसके कन्धे पर रख दिया.
(१०) यानी बड़े बुत से कि इन छोटे बुतों का क्या हाल है ये क्यों टूटे और बसूला तेरी गर्दन पर कैसा रखा है और उन्हें इसकी बेबसी ज़ाहिर हो और होश आए कि ऐसे लाचार ख़ुदा नहीं हो सक्ते. या ये मानी हैं कि वो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पूछें और आपको तर्क क़ायम करने का मौक़ा मिले. चूनांचे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुत ख़ाने में पहुंचे और उन्होंने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो --
(११) यह ख़बर नमरूद जब्बार और उसके सरदारों को पहुंची तो ------

وَسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا
فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا
لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا
صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ
اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَلُوْطًا
اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ
كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾
وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ
مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا اِنَّهُمْ كَانُوْا

आग ठण्डी होजा और सलामती इब्राहीम पर[२४]﴿६९﴾ और उन्हों ने उसका बुरा चाहा तो हमने उन्हें सब से बढ़कर ज़ियांकार (घाटे वाला) कर दिया[२५]﴿७०﴾ और हमने उसे और लूत को [२६] निजात बख़्शी [२७] उस ज़मीन की तरफ़[२८] जिसमें हमने दुनिया वालों के लिये बरकत रखी[२९]﴿७१﴾ और हमने उसे इस्हाक़ अता फ़रमाया,[३०] और यअक़ूब पोता और हमने उन सब को अपने ख़ास क़ुर्ब का अधिकारी किया﴿७२﴾ और हमने उन्हें इमाम किया कि [३१] हमारे हुक्म से बुलाते हैं और हमने उन्हें वही (देववाणी) भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की, और वो हमारी बन्दगी करते थे﴿७३﴾ और लूत को हमने हुकूमत और इल्म दिया और उसे उस बस्ती से निजात बख़्शी जो गंन्दे काम करती थी, [३२] बेशक वो बुरे लोग बेहुक्म थ. और हमने उसे[३३]﴿७४﴾ अपनी रहमत में दाख़िल किया, वेशक वह हमारे ख़ास क़ुर्ब (नज़दीकी) के अधिकारियों में है﴿७५﴾

छटा रूकू

और नूह को जब इससे पहले उसने हमें पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे और उसके घर वालों को बड़ी सख़्ती से निजात दी[१]﴿७६﴾ और हमने उन लोगों पर उसको मदद दी जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं, बेशक वो

(१२) कि यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही का काम है या उनसे बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया. मतलब यह था कि शहादत या गवाही क़ायम हो तो वो आपके पीछे पड़ें . चुनांचे हज़रत बुलाए गए और वो लोग.

(१३) आपने इसका तो कुछ जवाब न दिया और तर्क वितर्क की शान से जवाब में एक अनोखी हुज्जत क़ायम की.

(१४) इस ग़ुस्से से कि उसके होते तुम छोटों को पूजते हो. उसके कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही अन्दाज़ा लगाया जा सकता है. मुझ से क्या पूछना, पूछना हो -----

(१५) वो ख़ुद बताएं कि उनके साथ यह किसने किया. मतलब यह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता, जो कुछ कर नहीं सकता, वह ख़ुदा नहीं हो सकता. उसकी ख़ुदाई का अक़ीदा झूटा है, चुनांचे जब आपने यह फ़रमाया.

(१६) और समझे कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हक़ पर हैं.

(१७) जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो. जो अपने कन्धे पर से बसूला न हटा सके, वह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सकेगा और उसके क्या काम आ सकेगा.

(१८) और सच्ची बात कहने के बाद फिर उनकी बदबख़्ती उनके सरों पर सवार हुई और वो कुफ़्र की तरफ़ पलटे और झूटी बहस शुरु करदी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लगे.

(१९) तो हम उनसे कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम, तुम हमें उनसे पूछने का कैसे हुक्म देते हो.

(२०) अगर उसे पूजा.

(२१) अगर उसका पूजना बन्द कर दो.

(२२) कि इतना भी समझ सको कि ये बुत पूजने के क़ाबिल नहीं . जब हुज्जत पूरी हो गई और वो लोग जवाब देने से लाचार हुए तो ...

(२३) नमरूद और उसकी क़ौम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जला डालने पर सहमत हो गई और उन्होंने आपको एक मकान में क़ैद कर दिया और कौसा गाँव में एक ईमारत बनाई और एक महीने तक पूरी कोशिशों से क़िस्म क़िस्म की लकड़ियाँ जमा कीं और एक बड़ी आग जलाई जिसकी तपन से हवा में उड़ने वाले पक्षी जल जाते थे. और एक गोफन खड़ी की और आपको बांधकर उसमें रखकर आग में फैंका. उस वक़्त आपकी ज़बाने मुबारक पर ''हस्बीयल्लाहो व नेअमल वकील''जारी था. जिब्रईले अमीन ने आपसे अर्ज़ किया कि क्या कुछ काम है, आपने फ़रमाया, तुम से नहीं. जिब्रईल ने अर्ज़ किया, तो अपने रब से सवाल कीजिये. फ़रमाया, सवाल करने से उसका मेरे हाल को जानना मेरे लिये काफ़ी है.

(२४) तो आग ने आपके बन्धनों के सिवा और कुछ न जलाया और आग की गर्मी ख़त्म हो गई और रौशनी बाक़ी रही.

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَ
سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ
غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا
سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ؗ وَّسَخَّرْنَا
مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝
وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ
الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنَ
الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ
ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ
نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

बुरे लोग थे तो हमने उन सब को डुबो दिया﴾७७﴿ और दाऊद और सुलैमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते थे जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियां छूटीं[२] और हम उनके हुक्म के वक़्त हाज़िर थे﴾७८﴿ हमने वह मामला सुलैमान को समझा दिया[३] और दोनों को हुकूमत और इल्म अता किया[४] और दाऊद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह करते और परिन्दे[५] और ये हमारे काम थे﴾७९﴿ और हमने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया कि तुम्हें तुम्हारी आंच (ज़ख़्मी होने) से बचाए[६] तो क्या तुम शुक्र करोगे﴾८०﴿ और सुलैमान के लिये तेज़ हवा मुसख़्ख़र कर दी कि उसके हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिसमें हमने बरकत रखी[७] और हम को हर चीज़ मालूम है﴾८१﴿ और शैतानों में से वो जो उसके लिये ग़ोता लगाते[८] और इसके सिवा और काम करते[९] और हम उन्हें रोके हुए थे[१०]﴾८२﴿ और अय्यूब को (याद करो) जब उसने अपने रब को पुकारा[११] कि मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़कर मेहर वाला है﴾८३﴿ तो हमने उसकी दुआ सुन ली तो हमने दूर करदी जो तकलीफ़ उसे थी[१२] और हमने उसे उसके घरवाले और

(२५) कि उनकी मुराद पूरी न हुई और कोशिश विफल हुई और अल्लाह तआला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उनके गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उसकी हलाकत का कारण हुआ.

(२६) जो उनके भतीजे, उनके भाई हारान के बेटे थे, नमरूद और उसकी क़ौम से.

(२७) और इराक़ से.

(२८) रवाना किया.

(२९) इस ज़मीन से शाम प्रदेश मुराद है. उसकी बरकत यह है कि यहाँ काफ़ी नबी हुए और सारे जगत में उनकी दीनी बरकतें पहुंचीं और हरियाली के ऐतिबार से भी यह क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों से श्रेष्ठ है. यहाँ कसरत से नेहरें हैं, पानी पाकीज़ा और ख़ुशगवार है, दरख़्तों और फलों की बहुतात है. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़लस्तीन स्थान पर तशरीफ़ लाए और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम मौतफ़्किह में.

(३०) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से बेटे की दुआ की थी.

(३१) लोगों को हमारे दीन की तरफ़.

(३२) उस बस्ती का नाम सदूम था.

(३३) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को.

सूरए अंबिया - छटा रूकू

(१) यानी तूफ़ान से और शरीर लोगों के झुटलाने से.

(२) उनके साथ कोई चराने वाला न था, वो खेती खा गईं. यह मुक़दमा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ. आपने प्रस्ताव किया कि बकरियाँ खेती वाले को दे दी जाएं, बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़सान के बराबर थी.

(३) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने जब यह मामला पेश हुआ तो आपने फ़रमाया कि दोनों पक्षों के लिये इससे ज़्यादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है. उस वक़्त हज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने यह प्रस्ताव पेश किया कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरह से फ़ायदा उठाए और खेती इस हालत पर पहुंच जाने के बाद खेती वाले को खेती दे दी जाय, बकरी वाले को उसकी बकरियाँ वापस कर दी जाएं . यह प्रस्ताव हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पसन्द फ़रमाया. इस मामले में ये दोनों हुक्म इज्तिहादी थे और उस शरीअत के अनुसार थे. हमारी शरीअत में हुक्म यह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर नुक़सान करें उसका ज़मान लाज़िम नहीं. मुजाहिद का क़ौल है कि हज़रत दाऊद

ضُرٍّ وَّاٰتَیْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ
عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِیْنَ ۝ وَاِسْمٰعِیْلَ وَ
اِدْرِیْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِیْنَ ۝
وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝
وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ
نَّقْدِرَ عَلَیْهِ فَنَادٰى فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ
اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ
نُـْۨجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۝ وَزَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ
رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ۝
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ یَحْیٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ
زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ
یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ ۝

उनके साथ उतने ही और अता किये[13] अपने पास से रहमत फ़रमाकर और बन्दगी वालों के लिये नसीहत[14]﴿٨٤﴾ और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल-किफ़्ल को (याद करो), वो सब सब्र वाले थे [15]﴿٨٥﴾ और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वो हमारे ख़ास क़ुर्ब के हक़दारों में हैं﴿٨٦﴾ और ज़ुन्नून को (याद करो)[16] जब चला ग़ुस्से में भरा[17] तो गुमान किया कि हम उसपर तंगी न करेंगे[18] तो अंधेरियों में पुकारा[19] कोई मअबूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझको, बेशक मुझसे बेजा हुआ [20]﴿٨٧﴾ तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे ग़म से निजात बख़्शी,[21] और ऐसी ही निजात देंगे मुसलमानों को[22]﴿٨٨﴾ और ज़करिया को(याद करो), जब उसने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़[23] और तू सब से बेहतर वारिस [24]﴿٨٩﴾ तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे[25] यहया अता फ़रमाया और उसके लिये उसकी बीबी संवारी[26] बेशक वो[27] भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और डर से, और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं﴿٩٠﴾

अलैहिस्सलाम ने जो फ़ैसला किया था, वह इस मसअले का हुक्म था और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जो तजवीज़ फ़रमाई, यह सुलह की सूरत थी.

(४) इज्तिहाद के कारणों और अहकाम के तरीक़े वग़ैरह का. जिन उलमा को इज्तिहाद की योग्यता हासिल है उन्हें इन बातों में इज्तिहाद का हक़ है जिसमें वो किताब और सुन्नत का हुक्म न पाएं और अगर इज्तिहाद में ख़ता भी हो जाए तो भी उनपर पकड़ नहीं. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तिहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में दुरुस्त हो तो उसके लिये दो सवाब हैं और अगर इज्तिहाद में ग़लती हो जाए तो एक सवाब.

(५) पत्थर और पक्षी आपके साथ आपकी संगत में तस्बीह करते थे.

(६) यानी जंग में दुश्मन के मुक़ाबले में काम आए और वह ज़िरह यानी बक्तर है. सब से पहले ज़िरह बनाने वाले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम हैं.

(७) इस ज़मीन से मुराद शाम है जो आपका निवास था.

(८) नदी की गहराई में दाख़िल होकर, समन्दर की तह से आपके लिये जवाहरात निकाल कर लाते.

(९) अजीब अजीब सनअतें, इमारतें, महल, बर्तन, शीशे की चीज़ें, साबुन वग़ैरह बनाना.

(१०) कि आप के हुक्म से बाहर न हों.

(११) यानी अपने रब से दुआ की. हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की सन्तान में से हैं. अल्लाह तआला ने आपको हर तरह की नेअमतें अता फ़रमाई थीं. हुस्न व सूरत भी, औलाद की बहुतात भी, माल मत्ता भी. अल्लाह तआला ने आपको आज़माइश में डाला और आपके बेटे और औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए. तमाम मवेशी जिन में हज़ारों ऊंट हज़ारों बकरियाँ थीं सब मर गए. सारी खेतियाँ और बाग़ बर्बाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को इन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाया होने की ख़बर दी जाती थी तो आप अल्लाह की तअरीफ़ करते और फ़रमाते मेरा क्या है जिसका था उसने लिया. जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उसका शुक्र अदा नहीं हो सकता. मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूँ. फिर आप बीमार हुए. सारे शरीर में छाले पड़ गए. बदन सब का सब ज़ख़्मों से भर गया. सब लोगों ने छोड़ दिया, बस आपकी बीबी साहिबा आपकी सेवा करती रहीं. यह हालत सालों साल रही. आख़िरकार कोई ऐसा कारण पेश आया कि आप ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की.

(१२) इस तरह कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि ज़मीन पर पाँव मारिये. आपने मारा, एक चश्मा ज़ाहिर हो गया. हुक्म दिया गया इस से स्नान कीजिये. ग़ुस्ल किया तो शरीर के ऊपर की सारी बीमारियाँ दूर हो गईं. फिर आप चालीस क़दम चले, फिर दोबारा ज़मीन पर पाँव मारने का हुक्म हुआ. आपने फिर पाँव मारा उससे भी एक चश्मा ज़ाहिर हुआ जिसका पानी बहुत ठण्डा था. आपने अल्लाह के हुक्म से पिया, इससे अन्दर की सारी बीमारियाँ दूर हो गईं और आप को भरपूर सेहत हासिल हुई.

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۗ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ

और उस औरत को जिसने अपनी पारसाई निगाह रखी[२८] तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकी[२९] और उसे और उसके बेटे को सारे जगत के लिये निशानी बनाया[३०]﴿९१﴾ बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है[३१] और मैं तुम्हारा रब हूँ[३२] तो मेरी इबादत करो﴿९२﴾ और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये[३३] सब को हमारी तरफ़ फिरना है[३४]﴿९३﴾

सातवाँ रूकू

तो जो कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की बेक़दरी नहीं, और हम उसे लिख रहे हैं﴿९४﴾ और हराम है उस बस्ती पर जिसे हमने हलाक किया कि फिर लौट कर आएं[१]﴿९५﴾ यहां तक कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज[२] और वो हर बलन्दी से ढुलकते होंगे﴿९६﴾ और क़रीब आया सच्चा वादा[३] तो जभी आँखें फट कर रह जाएंगी काफ़िरों की[४] हाय हमारी ख़राबी बेशक हम[५] इस से ग़फ़लत में थे बल्कि हम ज़ालिम थे[६]﴿९७﴾ बेशक तुम[७] और जो कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[८] सब जहन्नम के ईंधन हो, तुम्हें उसमें जाना﴿९८﴾ अगर ये[९] ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और

(१३) हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुम और कई मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपकी सारी औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आपको उतनी ही औलाद और इनायत की. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने आपकी बीबी साहिबा को दोबारा जवानी अता की और उनके बहुत से बच्चे हुए.

(१४) कि वो इस वाक़ए से बलाओं पर सब्र करने और उसके महान पुण्य से बाख़बर हों और सब्र करें और सवाब पाएं.

(१५) कि उन्होंने मेहनतों और बलाओं और इबादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया.

(१६) यानी हज़रत यूनुस इब्ने मता को.

(१७) अपनी क़ौम से जिसने उनकी दावत न क़ुबूल की थी और नसीहत न मानी थी और कुफ़्र पर क़ायम रही थी. आपने गुमान किया कि यह हिजरत आपके लिये जायज़ है क्योंकि इसका कारण सिर्फ़ कुफ़्र और काफ़िरों के साथ दुश्मनी और अल्लाह के लिये ग़ज़ब करना है. लेकिन आपने इस हिजरत में अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार न किया.

(१८) तो अल्लाह तआला ने उन्हें मछली के पेट में डाला.

(१९) कई तरह की अंधेरियाँ थीं. नदी की अंधेरी, रात की अंधेरी, मछली के पेट की अंधेरी. इन अंधेरियों में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अपने रब से इस तरह दुआ की कि ----

(२०) कि मैं अपनी क़ौम से तेरी इजाज़त पाने से पहले अलग हुआ. हदीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत का मारा अल्लाह कि बारगाह में इन शब्दों से दुआ करे, तो अल्लाह तआला उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाता है.

(२१) और मछली को हुक्म दिया तो उसने हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को दरिया के किनारे पहुंचा दिया.

(२२) मुसीबतों और तकलीफ़ों से जब वो हम से फ़रियाद करें और दुआ करें.

(२३) यानी बे-औलाद बल्कि वारिस अता फ़रमा.

(२४) सृष्टि की फ़ना के बाद बाक़ी रहने वाला. मतलब यह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तब भी मुझे कुछ ग़म नहीं क्योंकि तू बेहतर वारिस है.

(२५) नेक बेटा.

(२६) जो बांझ थी उसको बच्चा पैदा करने के क़ाबिल बनाया.

(२७) यानी वो नबी जिनका ज़िक्र गुज़रा.

(२८) पूरे तौर पर कि किसी तरह कोई बशर उसकी पारसाई को छू न सका . इससे मुराद हज़रत मरयम हैं.

(२९) और उसके पेट में हज़रत ईसा को पैदा किया.

(३०) अपनी भरपूर क़ुदरत की कि हज़रत ईसा को उसकी कोख से बग़ैर बाप के पैदा किया.

इन सबको हमेशा उस में रहना[९०]﴿९९﴾ वो उसमें रेंकेंगे[९१] और वो उसमें कुछ न सुनेंगे[९२]﴿१००﴾ बेशक वो जिनके लिये हमारा वादा भलाई का हो चुका वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं[९३]﴿१०१﴾ वो उसकी भनक (हल्की सी आवाज़ भी) न सुनेंगे[९४] और वो अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में[९५] हमेशा रहेंगे﴿१०२﴾ उन्हें ग़म में न डालेगी वह सबसे बड़ी घबराहट[९६] और फ़रिश्ते उनकी पेशवाई को आएंगे[९७] कि यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुम से वादा था﴿१०३﴾ जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे जैसे सिजिल फ़रिश्ता[९८] अअमाल नामे को लपेटता है, जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे[९९] यह वादा है हमारे ज़िम्मे हमको इसका ज़रूर करना﴿१०४﴾ और बेशक हमने ज़ुबूर में नसीहत के बाद लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे[२०]﴿१०५﴾ बेशक यह क़ुरआन काफ़ी है इबादत वालों को[२१]﴿१०६﴾ और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जगत के लिये[२२]﴿१०७﴾ तुम फ़रमाओ मुझे तो यही वही (देववाणी) होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक अल्लाह, तो क्या तुम मुसलमान होते हो﴿१०८﴾

وَكُلٌّ فِيهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ
فِيهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا
الْحُسْنٰىٓ ۙ أُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ
حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ
خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ ۖ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾
يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا
بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا
كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ
بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾
إِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا
رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ أَنَّمَآ
إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾

(३१) दीने इस्लाम . यही सारे नबियों का दीन है . इसके सिवा जितने दीन हैं सब झूठे हैं . सब को इस्लाम पर क़ायम रहना लाज़िम है.
(३२) न मेरे सिवा कोई दूसरा रब, न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन.
(३३) यानी दीन में विरोध किया और सम्प्रदायों में बंट गए.
(३४) हम उन्हें उनके कर्मों का बदला देंगे.

सूरए अंबिया - सातवाँ रूकू

(१) दुनिया की तरफ़, कर्मों के प्रायश्चित और हाल को बदलने के लिये, यानी इसलिये कि उनका वापस आना असंभव है. मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हमने हलाक किया उनका शिर्क और कुफ़्र से वापस आना असंभव है यह मानी उस सूरत में है जबकि शब्द "फिर" को अतिरिक्त क़रार दिया जाए और अगर अतिरिक्त न हो तो मानी ये होंगे कि आख़िरत में उनका ज़िन्दगी की तरफ़ न लौटना असंभव है. इसमें दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों का रद है और ऊपर जो "सब को हमारी तरफ़ फिरना है" और "इसकी कोशिश बेक़दरी नहीं" फ़रमाया गया, उसकी ताकीद है. (तफ़सीरे कबीर वग़ैरह)
(२) क़यामत के क़रीब, और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं.
(३) यानी क़यामत.
(४) इस दिन की हौल और दहशत से, और कहेंगे.
(५) दुनिया के अन्दर.
(६) कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुटलाते थे.
(७) ऐ मुश्रिक लोगो !
(८) यानी तुम्हारे देवी देवता.
(९) देवी देवता जैसा कि तुम्हारा गुमान है.
(१०) बुतों को भी और उनके पूजने वालों को भी.
(११) और अज़ाब की तीव्रता से चीख़ेंगे और दहाड़ेंगे.
(१२) जहन्नम के उबाल की सख़्ती से. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जब जहन्नम में वो लोग रह जाएंगे जिन्हें उसमें हमेशा रहना है तो वो आग के ताबूतों में बन्द किये जाएंगे. वह ताबूत और ताबूतों में, फिर वह ताबूत और ताबूतों में. उन ताबूतों

फिर अगर वो मुंह फेरें (२३) तो फ़रमा दो, मैं ने तुम्हें लड़ाई का ऐलान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं(२४) कि पास है या दूर है वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है(२५)(१०९) बेशक अल्लाह जानता है आवाज़ की बात(२६) और जानता है जो तुम छुपाते हो(२७)(११०) और मैं क्या जानूं शायद वह(२८) तुम्हारी जांच हो(२९) और एक वक़्त तक बरतवाना(३०)(१११) नबी ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब हक़ फ़ैसला फ़रमा दे(३१) और हमारे रब रहमान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो(३२)(११२)

२२-सूरए हज

सूरए हज मदीने में उतरी, इसमें ७८ आयतें ,दस रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

ऐ लोगो अपने रब से डरो(२) बेशक क़यामत का ज़लज़ला(३) बड़ी सख़्त चीज़ है(१) जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली(४) अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभिनी(५) अपना गाभ डाल देगी(६) और तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में हैं और वो नशे में न होंगे(७) मगर यह कि अल्लाह की मार कड़ी है(२) और कुछ लोग वो हैं कि

पर आग की मेख़ें जड़ दी जाएंगी तो वो कुछ न सुनेंगे और न कोई उन में किसी को देखेगा.

(१३) इसमें ईमान वालों के लिये बशारत है. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने यह आयत पढ़कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में हूँ और अबू बक्र और उमर और उस्मान और तलहा और ज़ुबैर और सअद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रदियल्लाहो अन्हुम). रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम एक दिन काबए मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए. उस वक़्त क़ुरैश के सरदार हतीम में मौजूद थे और काबा शरीफ़ के चारों तरफ़ तीन सौ साठ बुत थे. नज़र बिन हारिस सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने आया और आपसे कलाम करने लगा. हुज़ूर ने उसको जवाब देकर ख़ामोश कर दिया और यह आयत तिलावत फ़रमाई : "इन्नकुम वमा तअबुदूना मिन दूनिल्लाहे हसबो जहन्नमा" यानी तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं. यह फ़रमाकर हुज़ूर तशरीफ़ ले आए. फिर अब्दुल्लाह बिन ज़बअरी सहमी आया और उसको वलीद बिन मुग़ीरा ने इस गुफ़्तगू की ख़बर दी. कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम, मैं होता तो उनसे तर्क वितर्क करता. इसपर लोगों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुलाया. इब्ने ज़बअरी कहने लगा कि आप ने यह फ़रमाया है कि और जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया, हाँ. कहने लगा, यहूदी तो हज़रत उज़ैर को पूजते हैं, और ईसाई हज़रत ईसा को और बनी मलीह फ़रिश्तों को पूजते हैं. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और बयान फ़रमाया कि हज़रत उज़ैर और मसीह और फ़रिश्ते वो हैं जिनके लिये भलाई का वादा हो चुका और वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि वास्तव में यहूदी और ईसाई वग़ैरह शैतान की पूजा करते हैं . इन जवाबों के बाद उस को दम मारने की हिम्मत न रही और वह ख़ामोश रह गया और दर हक़ीक़त उसका ऐतिराज़ भरपूर दुश्मनी से था क्योंकि जिस आयत पर उसने ऐतिराज़ किया था उसमें "मा तअबुदूना" है और मा अरबी ज़बान में निर्जीव के लिये बोला जाता है. यह जानते हुए उसने अंधा बनकर ऐतिराज़ किया. यह ऐतिराज़ तो ज़बान जानने वालों के लिये खुला हुआ बातिल था. मगर ज़्यादा बयान के लिये इस आयत में व्याख्या फ़रमा दी गई.

(१४) और उसके जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी . वो जन्नत की मंज़िलों में आराम फ़रमा होंगे.

(१५) अल्लाह तआला की नेअमतों और करामतों में.

(१६) यानी सूर का आख़िरी बार फूंका जाना.

(१७) क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारकबाद देते, और यह कहते ...

(१८) जो आदमी के मरते समय कर्म लिखता है उसके ...

(१९) यानी हमने जैसे पहले अदम यानी शून्य से बनाया था वैसे ही फिर शून्य करने के बाद पैदा कर देंगे या ये मानी हैं कि जैसा माँ के पेट से नंगा बिना ख़त्ना किया हुआ पैदा किया था ऐसा ही मरने के बाद उठाएंगे.

فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ
كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَ
يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ
مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ
وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى
اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ
وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ
بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ

अल्लाह के मामले में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं[८] (३) जिस पर लिख दिया गया है कि जो इसकी दोस्ती करेगा तो यह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख़ के अज़ाब की राह बताएगा[९] (४) ऐ लोगो अगर तुम्हें क़यामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो यह ग़ौर करो कि हमने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[१०] फिर पानी की बूंद से[११] फिर ख़ून की फुटक से[१२] फिर गोश्त की बोटी से नक़शा बनी और बे बनी[१३] ताकि हम तुम्हारे लिये निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं[१४] और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें एक निश्चित मीआद तक[१५] फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर[१६] इसलिये कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो[१७] और तुम में कोई पहले मर जाता है और कोई सबसे निकम्मी उम्र तक डाला जाता है[१८] कि जानने के बाद कुछ न जाने[१९] और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई[२०] फिर जब हमने उसपर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई और उभर आई और हर रौनक़दार जोड़ा[२१] उगा लाई[२२] (५) यह इसलिये है कि अल्लाह ही हक़ है[२३] और यह कि वह

(२०) इस ज़मीन से मुराद जन्नत की ज़मीन है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िरों की ज़मीनें मुराद हैं जिनको मुसलमान फ़त्ह करेंगे और एक क़ौल यह है कि शाम की ज़मीन मुराद है.

(२१) कि जो इसका अनुकरण करे और इसके अनुसार कर्म करे, वह जन्नत पाए और मुराद हासिल करे और इबादत वालों से मूमिन मुराद हैं और एक क़ौल यह है कि उम्मते मुहम्मदिया मुराद है जो पाँचों वक़्त नमाज़ें पढ़ते हैं, रमज़ान के रोज़े रखते हैं, हज करते हैं.

(२२) कोई हो, जिन्न हो या इन्सान, ईमानदार हो या काफ़िर. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आम है, ईमान वाले के लिये भी और उसके लिये भी जो ईमान न लाया. मूमिन के लिये तो आप दुनिया और आख़िरत दोनों में रहमत हैं. और जो ईमान न लाया उसके लिये आप दुनिया में रहमत हैं कि आपकी वजह से अज़ाब में विलम्ब हुआ और धंसाने, सूरतें बिगाड़ने और इसी तरह के दूसरे अज़ाब उठा दिये गए. तफ़सीरे रूहुल बयान में बुज़ुर्गों का यह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मानी ये हैं कि हमने आपको नहीं भेजा मगर सबके लिये भरपूर रहमत बनाकर, सारे जगत के लिये रहमत, चाहे आलमे अर्वाह हों या आलमे अजसाम, सबोध हों या अबोध. और जो तमाम जगत के लिये रहमत हो, उसके लिये लाज़िम है कि वह सारे जगत से अफ़ज़ल हो.

(२३) और इस्लाम न लाएं.

(२४) ख़ुदा के बताए बिना, यानी यह बात अक़्ल और अन्दाज़े से जानने की नहीं है. यहाँ दरायत की नफ़ी फ़रमाई गई. दरायत कहते हैं अन्दाज़े और अनुमान से जानने को. इसी लिये अल्लाह तआला के वास्ते शब्द दरायत इस्तेमाल नहीं किया जाता और क़ुरआन शरीफ़ के इतलाक़ात इसपर दलील हैं. जैसा कि फ़रमाया **"मा कुन्ता तदरी मल किताबो वलल ईमानो"** यानी इससे पहले न तुम किताब जानते थे न शरीअत के अहकाम की तफ़सील (सूरए शूरा, आयत ५२). लिहाज़ा यहाँ अल्लाह की तालीम के बिना केवल अपनी अक़्ल और अनुमान से जानने की नफ़ी है न कि मुतलक़ इल्म की. और मुतलक़ इल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जब कि इसी रूकू के शुरू में आ चुका है **"वक़्तरबल वअदुल हक़्क़ो"** यानी क़रीब आया सच्चा वादा (सूरए अंबिया, आयत ९७). तो कैसे कहा जा सकता है कि वादे का क़ुर्ब और दूरी किसी तरह मालूम नहीं. ख़ुलासा यह है कि अपनी अक़्ल और अन्दाज़े से जानने की नफ़ी है, न कि अल्लाह के बताए से जानने की.

(२५) अज़ाब का या क़यामत का.

(२६) जो ऐ काफ़िरो! तुम ऐलान के साथ इस्लाम पर तअने के तौर से कहते हो.

(२७) अपने दिलों में यानी नबी की दुश्मनी और मुसलमानों से हसद जो तुम्हारे दिलों में छुपा हुआ है, अल्लाह उसको भी जानता है, सब का बदला देगा.

(२८) यानी दुनिया में अज़ाब में ताख़ीर या विलम्ब करना.
(२९) जिससे तुम्हारा हाल ज़ाहिर हो जाए.
(३०) यानी मौत के वक़्त तक.
(३१) मेरे और उनके बीच, जो मुझे झुटलाते हैं, इस तरह कि मेरी मदद कर और उनपर अज़ाब नाज़िल फ़रमा. यह दुआ क़ुबूल हुई और बद्र और अहज़ाब और हुनैन वग़ैरह के काफ़िर अज़ाब में गिरफ़्तार हुए.
(३२) शिर्क और कुफ़्र और बे ईमानी की.

२२ - सूरए हज - पहला रूकू

(१) सूरए हज हज़रत इब्ने अब्बास और मुजाहिद के क़ौल के अनुसार मक्का में उतरी. सिवाए छ आयतों के जो "हाज़ाने ख़स्माने" से शुरू होती हैं. इस सूरत में दस रूकू, ७८ आयतें, एक हज़ार दो सौ इक्यानवे कलिमात और पाँच हज़ार पछत्तर अक्षर हैं.
(२) उसके अज़ाब का ख़ौफ़ करो और उसकी फ़रमाँबरदारी में लग जाओ.
(३) जो क़यामत की निशानियों में से है और क़यामत के क़रीब सूरज के पश्चिम से निकलने के नज़दीक वाक़े होगा.
(४) उसकी दहशत से.
(५) यानी गर्भ वाली उस दिन के हौल से.
(६) गर्भ गिर जाएंगे.
(७) बल्कि अल्लाह के अज़ाब के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे.
(८) यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करता था.
(९) शैतान के अनुकरण के नुक़सान बताकर दोबारा उठाए जाने वालों पर हुज्जत क़ायम फ़रमाई जाती है.
(१०) तुम्हारी नस्ल की अस्ल यानी तुम्हारे सबसे बड़े दादा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.
(११) यानी वीर्य की बूंद से उनकी तमाम सन्तान को.
(१२) कि नुत्फ़ा गन्दा ख़ून हो जाता है .
(१३) यानी सूरत वाली और बग़ैर सूरत वाली. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोगों की पैदायश का माद्दा माँ के पेट में चालीस रोज़ तक नुत्फ़ा रहता है फिर इतनी ही मुद्दत में बन्धा हुआ ख़ून हो जाता है, फिर इतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की तरह रहता है. फिर अल्लाह तआला फ़रिश्ता भेजता है जो उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, उसके कर्म, उसके बुरे या अच्छे होने को लिखता है, फिर उसमें रूह फूंकता है. (हदीस) अल्लाह तआला इन्सान की पैदाइश इस तरह फ़रमाता है और उसको एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ मुन्तक़िल करता है, यह इसलिये बयान फ़रमाया गया है.
(१४) और तुम अल्लाह की भरपूर क़ुदरत और हिकमत को जानो और अपनी पैदाइश की शुरूआत के हालात पर नज़र करके समझ लो कि जो सच्ची क़ुदरत वाला बेजान मिट्टी में इतने इन्क़लाब करके जानदार आदमी बना देता है, वह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उसकी क़ुदरत से क्या दूर है.
(१५) यानी पैदायश के वक़्त तक.
(१६) तुम्हें उम्र देते हैं.
(१७) और तुम्हारी अक़्ल और क़ुव्वत कामिल हो.
(१८) और उसको इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अक़्ल और हवास अपनी जगह नहीं रहते और ऐसा हो जाता है.
(१९) और जो जानता हो वह भूल जाए . अकरमह ने कहा कि जो क़ुरआन को हमेशा पढ़ता रहेगा, इस हालत को न पहुंचेगा. इसके बाद अल्लाह तआला मरने के बाद उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है.
(२०) ख़ुश्क और बिना हरियाली का.
(२१) यानी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा.
(२२) ये दलीलें बयान फ़रमाने के बाद निष्कर्ष बयान फ़रमाया जाता है.
(२३) और यह जो कुछ ज़िक्र किया गया, आदमी की पैदायश और सूखी बंजर ज़मीन को हरा भरा कर देना, उसके अस्तित्व और हिकमत की दलीलें हैं, इन से उसका वुजूद भी साबित होता है.
(२४) यह आयत अबू जहल वग़ैरह काफ़िरों की एक जमाअत के बारे में उतरी जो अल्लाह तआला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उसकी तरफ़ ऐसे गुण जोड़ा करते थे जो उसकी शान के लायक़ नहीं. इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बग़ैर जानकारी और बिना प्रमाण और तर्क के नहीं कहनी चाहिये. ख़ासकर शाने इलाही में. और जो बात इल्म वाले के ख़िलाफ़ बेइल्मी से कही जाएगी, वह झूट होगी फिर उसपर यह अन्दाज़ कि ज़ोर दे और घमण्ड के तौर पर.
(२५) और उसके दीन से फेर दे.
(२६) चुनांचे बद्र में वह ज़िल्लत और ख़्वारी के साथ मारा गया.

الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ
اٰتِیَةٌ لَّا رَیْبَ فِیْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ یَبْعَثُ مَنْ فِی
الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ
بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ۝ ثَانِیَ
عِطْفِهٖ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِی الدُّنْیَا
خِزْیٌ وَّنُذِیْقُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِیْقِ ۝
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ یَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِیْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى
حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَیْرُ اِۨطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ
اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِۨنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْیَا
وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ۝ یَدْعُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَضُرُّهٗ وَمَا لَا یَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِیْدُ ۝ یَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ

मुर्दे जिलाएगा और यह कि वह सब कुछ कर सकता है﴿६﴾ और इसलिये कि क़यामत आने वाली उसमें कुछ शक नहीं और यह कि अल्लाह उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं﴿७﴾ और कोई आदमी वह है कि अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इल्म न कोई दलील और न कोई रौशन नविश्ता (लेखा)[२४]﴿८﴾ हक़ से अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह की राह से बहका दे[२५] उसके लिये दुनिया में रूसवाई है[२६] और क़यामत के दिन हम उसे आग का अज़ाब चखाएंगे[२७]﴿९﴾ यह उसका बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा[२८] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता[२९]﴿१०﴾

दूसरा रूकू

और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं,[१] फिर अगर उन्हें कोई भलाई पहुंच गई जब तो चैन से हैं, और जब कोई जांच आकर पड़ी,[२] मुहं के बल पलट गए,[३] दुनिया और आख़िरत दोनों का घाटा,[४] यही है खुला नुक़सान[५]﴿११﴾ अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो उनका बुरा भला कुछ न करे,[६] यही है दूर की गुमराही﴿१२﴾ ऐसे को पूजते हैं जिसके नफ़े से[७] नुक़सान की तवक़्क़ो

(२७) और उससे कहा जाएगा.
(२८) यानी जो तूने दुनिया में किया, कुफ़्र और झुटलाना.
(२९) और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता.

सूरए हज - दूसरा रूकू

(१) उस में इत्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उन्हें पायदारी हासिल नहीं होती. शक शुब्ह संदेह और आशंका में पड़े रहते हैं जिस तरह पहाड़ के किनारे खड़ा हुआ आदमी डगमगाता रहता है. यह आयत अरब देहातियों की एक जमाअत के बारे में उतरी जो आस पास से आकर मदीने में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे. उनकी हालत यह थी कि अगर वो ख़ूब स्वस्थ रहे और उनकी दौलत बढ़ी और उनके बेटा हुआ तब तो कहते थे कि इस्लाम अच्छा दीन है, इसमें आकर हमें फ़ायदा हुआ और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ हुई जैसे कि बीमार पड़ गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जबसे हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़सान ही हुआ और दीन से फिर जाते थे. ये आयत उनके हक़ में उतरी और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में पायदारी ही हासिल नहीं हुई, उनका हाल यह है.
(२) किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई.
(३) मुर्तद होगए और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए.
(४) दुनिया का घाटा तो यह कि जो उनकी उम्मीदें थीं वो पूरी न हुई और दीन से फिरने के कारण उनका क़त्ल जायज़ हुआ और आख़िरत का घाटा हमेशा का अज़ाब.
(५) वो लोग मुर्तद होने के बाद बुत परस्ती करते हैं और...
(६) क्यों कि वह बेजान है.
(७) यानी जिसकी पूजा के ख़याली नफ़े से उसके पूजने के...
(८) यानी दुनिया और आख़िरत के अज़ाब की.
(९) वो बुत.
(१०) फ़रमाँबरदारों पर ईनआम और नाफ़रमानों पर अज़ाब.

(आशा) ज़्यादा है,[८] बेशक[९] क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा साथी ﴾१३﴿ बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिन के नीचे नेहरें बहें, बेशक अल्लाह करता है जो चाहे[१०] ﴾१४﴿ जो यह ख़याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी [११] की मदद न फ़रमाएगा दुनिया [१२] और आख़िरत में [१३] तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आपको फांसी देले फिर देखे कि उसका यह दाँव कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है[१४] ﴾१५﴿ और बात यही है कि हमने यह क़ुरआन उतारा रौशन आयतें और यह कि अल्लाह राह देता है जिसे चाहे ﴾१६﴿ बेशक मुसलमान और यहूदी और सितारा पूजने वाले और ईसाई और आग की पूजा करने वाले और मूर्तिपूजक बेशक अल्लाह उन सब में क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा,[१५] बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है ﴾१७﴿ क्या तुमने न देखा[१६] कि अल्लाह के लिये सज्दा करते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चांद और तारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए[१७] और बहुत आदमी[१८]

مِنْ نَّفْعِهٖ ۚ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِیْرُ ﴿۱۳﴾ اِنَّ
اللّٰهَ یُدْخِلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا
یُرِیْدُ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ یَظُنُّ اَنْ لَّنْ یَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِی
الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْیَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَی السَّمَآءِ
ثُمَّ لْیَقْطَعْ فَلْیَنْظُرْ هَلْ یُذْهِبَنَّ كَیْدُهٗ مَا یَغِیْظُ ﴿۱۵﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ یَهْدِیْ
مَنْ یُّرِیْدُ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِیْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِـِٕیْنَ وَالنَّصٰرٰی وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا ۖۗ
اِنَّ اللّٰهَ یَفْصِلُ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی
كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ﴿۱۷﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ
مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِی الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ

(११) हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(१२) मैं उनके दीन को ग़लबा अता फ़रमा कर.
(१३) उनके दर्जे बलन्द करके.
(१४) यानी अल्लाह तआला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा. जिसे उससे जलन हो, वह अपनी आख़िरी कोशिश ख़त्म भी कर दे और जलन में मर भी जाए तो भी कुछ नहीं कर सकता.
(१५) मूमिन को जन्नत अता फ़रमाएगा और काफ़िरों को, किसी क़िस्म के भी हों, जहन्नम में दाख़िल करेगा.
(१६) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम !
(१७) यकसूई वाला सज्दा, जैसा अल्लाह चाहे.
(१८) यानी मूमिनीन, इसके अलावा सज्दए ताअत और सज्दए इबादत भी.
(१९) यानी काफ़िर.

وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۖ وَ
مَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ
مَا يَشَآءُ ۩ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫
فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ
يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۚ يُصْهَرُ
بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ؕ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ
مِنْ حَدِيْدٍ ۞ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۧ
اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا
مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا
حَرِيْرٌ ۞ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا
اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और बहुत वो हैं जिनपर अज़ाब मुक़र्रर (निश्चित) हो चुका[१९] और जिसे अल्लाह ज़लील करे[२०] उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक अल्लाह जो चाहे करे (१८) ये दो फ़रीक़ (पक्ष) हैं[२१] कि अपने रब में झगड़े,[२२] तो जो काफ़िर हुए उनके लिये आग के कपड़े ब्यौंते (काटे) गए हैं,[२३] और उनके सरों पर खौलता पानी डाला जाएगा[२४] (१९) जिससे गल जाएगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें[२५] (२०) और उनके लिये लोहे के गुर्ज़ (गदा) हैं[२६] (२१) जब घुटन के कारण उसमें से निकलना चाहेंगे[२७] फिर उसी में लौटा दिये जाएंगे, और हुक्म होगा कि चखो आग का अज़ाब (२२)

तीसरा रूकू

बेशक अल्लाह दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बहिश्तों (स्वर्ग) में जिनके नीचे नहरें बहें उसमें पहनाए जाएंगे सोने के कंगन और मोती,[१] और वहां उनकी पोशाक रेशम है[२] (२३) और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई[३] और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई[४] (२४) बेशक वो जिन्हों ने कुफ़्र किया और रोकते हैं अल्लाह की राह[५] और उस अदब (आदर) वाली

(२०) उसकी शक़ावत और बुराई के कारण.
(२१) यानी ईमान वाले और पाँचों क़िस्म के काफ़िर जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया है.
(२२) यानी इस दीन के बारे में और उसकी सिफ़त में.
(२३) यानी आग उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगी.
(२४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, ऐसा तेज़ गर्म कि अगर उसकी एक बूंद दुनिया के पहाड़ों पर डाल दी जाए तो उनको गला डाले.
(२५) हदीस शरीफ़ में है, फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा. (तिरमिज़ी)
(२६) जिनसे उनको मारा जाएगा.
(२७) यानी दोज़ख़ में से, तो गुर्ज़ों से मारकर.

सूरए हज - तीसरा रूकू

(१) ऐसे जिनकी चमक पूर्व से पश्चिम तक रौशन कर डाले. (तिरमिज़ी)
(२) जिसका पहनना दुनिया में मर्दों को हराम है. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने दुनिया में रेशम पहना, आख़िरत में न पहनेगा.
(३) यानी दुनिया में, और पाकीज़ा बात से तौहीद का कलिमा मुराद है. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा, क़ुरआन मुराद है.
(४) यानी अल्लाह का दीन, इस्लाम.
(५) यानी उसके दीन और उसकी इताअत से.
(६) यानी उस में दाख़िल होने से. यह आयत सुफ़ियान बिन हर्ब वग़ैरह के बारे में उतरी जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था. मस्जिदे हराम से या ख़ास काबा मुराद है, जैसा कि इमाम शाफ़ई

मस्जिद से(६) जिसे हमने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया कि उसमें एकसा हक़(अधिकार) है वहां के रहने वाले और परदेसी का और जो उसमें किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे(७)﴾२५﴿

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَ الْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾

चौथा रूकू

और जबकि हमने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया(१) और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर सुथरा रख(२) तवाफ़(परिक्रमा) वालों और एतिकाफ़(मस्जिद में बैठना) वालों और रूकू सज्दे वालों के लिये(३)﴾२६﴿ और लोगों में हज की आम निदा(घोषणा) कर दे(४) वो तेरे पास हाज़िर होंगे प्यादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती है(५)﴾२७﴿ ताकि वो अपना फ़ायदा पाएं(६) और अल्लाह का नाम लें(७) जाने हुए दिनों में(८) इसपर कि उन्हें रोज़ी दी बेज़बान चौपाए(९) तो उनमें से ख़ुद खाओ और मुसीबत के मारे मोहताज(दरिद्र) को खिलाओ(१०)﴾२८﴿ फिर अपना मैल कुचैल उतारें(११) और अपनी मन्नतें पूरी करें(१२) और उस आज़ाद घर का तवाफ़(परिक्रमा) करें(१३)﴾२९﴿ बात यह है और जो अल्लाह की हुरमतों(निषेधों) का आदर करे(१४) तो वह

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْئًا وَّ طَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ

منزل ٤

रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं. उस सूरत में मानी ये होंगे कि वह सारे लोगों का क़िबला है. वहाँ के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं. सब के लिये उस का आदर और पाकी और उसमें हज के संस्कारों की अदायगी एक सी है. और तवाफ़ और नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के बीच कोई अन्तर नहीं. और इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो के नज़दीक यहाँ मस्जिदे हराम से मक्कए मुकर्रमा यानी पूरा हरम मुराद है. इस सूरत में मानी ये होंगे कि हरम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिये एकसा है. उसमें रहने और ठहरने का हर किसी को हक़ है सिवाय इसके कि कोई किसी को निकाले नहीं. इसी लिये इमाम साहिब मक्कए मुकर्रमा की ज़मीन के क्रय विक्रय और किराए को मना फ़रमाते हैं. जैसा कि हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मक्कए मुकर्रमा हरम है इसकी ज़मीनें बेची न जाएं. (तफ़सीरे अहमदी)

(७) "किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे" नाहक़ ज़ियादती से या शिर्क और बुत परस्ती मुराद है. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि हर वर्जित क़ौल और काम मुराद है, यहाँ तक कि ख़ादिम को गाली देना भी. कुछ ने कहा इससे मुराद है हरम में बग़ैर इहराम के दाख़िल होना. या मना की हुई बातों का करना जैसे शिकार मारना और पेड़ काटना. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मुराद यह है कि जो तुझे न क़त्ल करे, तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे, तू उस पर ज़ुल्म करे. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अनीस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी . उन लोगों ने अपनी अपनी वंशावली यानी नसब बयान किये तो अब्दुल्लाह बिन अनीस को ग़ुस्सा आया और उसने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और ख़ुद मुर्तद होकर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ भाग गया. इसपर यह आयत उतरी.

सूरए हज - चौथा रूकू

(१) काबा शरीफ़ की तामीर के वक़्त. पहले यह इमारत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने बनाई थी, तूफ़ाने नूह के वक़्त वह आसमान पर उठा ली गई . अल्लाह तआला ने एक हवा मुक़र्रर की जिसने उसकी जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआला ने एक बादल भेजा जो ख़ास उस स्थान के मुक़ाबिल था जहाँ काबाए मुअज़्ज़मा की इमारत थी . इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को काबे की जगह बताई गई और आपने उस पुरानी बुनियाद पर काबे की इमारत तामीर की और अल्लाह तआला ने आपको वही फ़रमाई.

(२) शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नापाकियों से.

(३) यानी नमाज़ियों के.

(४) चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अबू क़ुबैस पहाड़ पर चढ़कर जगत के लोगों को आवाज़ दी कि बैतुल्लाह का हज

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ
الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝٣٠ حُنَفَآءَ
لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝٣١ ذٰلِكَ ۗ
وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝٣٢
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ
اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٣ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ
الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝٣٤ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ

उसके लिये उसके रब के यहाँ भला है और तुम्हारे लिये हलाल किये गए बेज़बान चौपाए[१५] सिवा उनके जिनको मुमानिअत (मनाही) तुम पर पढ़ी जाती है[१६] तो दूर हो बुतों गन्दगी से[१७] और बचो झूटी बात से﴾३०﴿ एक अल्लाह के होकर कि उसका साझी किसी को न करो और जो अल्लाह का शरीक करे वह मानो गिरा आसमान से कि परिन्दे उसे ले जाते हैं[१८] या हवा उसे किसी दूर जगह फैंकती है[१९]﴾३१﴿ बात यह है और जो अल्लाह के निशानों का आदर करे तो यह दिलों की परहेज़गारी से है[२०]﴾३२﴿ तुम्हारे लिये चौपायों में फ़ायदे हैं[२१] एक निश्चित मीआद तक[२२] फिर उनका पहुँचना है उस आज़ाद घर तक[२३]﴾३३﴿

पाँचवां रूकू

और हर उम्मत के लिये[१] हमने एक क़ुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि अल्लाह का नाम लें उसके दिये हुए बेज़बान चौपायों पर[२] तो तुम्हारा मअबूद एक मअबूद है[३] तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो[४] और ऐ मेहबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ो वालों को﴾३४﴿ कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उनके दिल डरने लगते हैं[५] और जो मुसीबत पड़े उसके सहने वाले और नमाज़ क़ायम रखने वाले और

करो. जिनकी क़िस्मत में हज है उन्हों ने बापों की पीठ और माओं के पेट से जवाब दिया : ''लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक'' हम हाज़िर हैं ऐ हमारे रब, हम हाज़िर हैं. हसन रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि इस आयत में ''अज़्ज़िन'' यानी ''आम पुकार कर दे'' का सम्बोधन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है. चुनांचे आख़िरी हज में एलान फ़रमा दिया और इरशाद किया कि ऐ लोगो, अल्लाह ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया तो हज करो.

(५) और बहुत ज़्यादा सफ़र और घूमने से दुबली हो जाती हैं.

(६) दीनी भी और दुनियावी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं, दूसरी इबादत में नहीं पाए जाते.

(७) ज़िब्ह के समय .

(८) जाने हुए दिनों से ज़िलहज का अशरा यानी दस दिन मुराद हैं जैसा कि हज़रत अली और इब्ने अब्बास व हसन और क़तादा रदियल्लाहो अन्हुम का क़ौल है और यही मज़हब है हमारे इमामे आज़म हज़रत अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो का और साहिबैन के नज़्दीक जाने हुए दिनों से क़ुर्बानी के दिन मुराद हैं. यह क़ौल है हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो का और हर सूरत में यहाँ इन दिनों से ख़ास ईद का दिन मुराद है. (तफ़सीरे अहमदी)

(९) ऊंट, गाय, बकरी और भेड़.

(१०) हर एक क़ुर्बानी से, जिन का इस आयत में बयान है, खाना जायज़ है, बाक़ी क़ुर्बानियों से जायज़ नहीं. (तफ़सीरे अहमदी)

(११) मूंछ कतरवाएं, नाख़ुन तराशें, बग़लों और पेड़ू के बाल साफ़ करें.

(१२) जो उन्होंने मानी हों.

(१३) इससे तवाफ़े ज़ियारत यानी हज का फ़र्ज़ तवाफ़ मुराद है. हज के मसाइल तफ़सील से सूरए बक़रा पारा दो में ज़िक्र हो चुके.

(१४) यानी उसके एहकाम की, चाहे वो हज के संस्कार हों या उनके सिवा और आदेश. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस से हज के संस्कार मुराद लिये हैं और कुछ ने बैते हराम, व मशअरे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुराद लिये हैं.

(१५) कि उन्हें ज़िब्ह करके खाओ.

(१६) क़ुरआन शरीफ़ में, जैसे कि सुरए माइदा की आयत **''हुर्रिमत अलैकुम''** में बयान फ़रमाई गई.

(१७) जिनकी पूजा करना बदतरीन गन्दगी में लिथड़ना है.

(१८) और बोटी बोटी करके खा जाते हैं.

(१९) मुराद यह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बहुत बुरी हलाकत में डालता है. ईमान को बलन्दी में आसमान से मिसाल दी गई है और ईमान छोड़ने वाले को आसमान से गिराने वाले के साथ और उसकी नफ़सानी ख़्वाहिशों को जो उसके विचारों को उलट

وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ
فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ
كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا
هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ
عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ
كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا
وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

हमारे दिये से ख़र्च करते हैं[६] ﴿३५﴾ और क़ुरबानी के डीलदार जानवर ऊंट और गाय हमने तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से किये[७] तुम्हारे लिये उनमें भलाई है.[८] तो उनपर अल्लाह का नाम लो[९] एक पांव बंधे तीन पाँव से खड़े[१०] फिर जब उनकी करवटें गिर जाएं[११] तो उनमें से ख़ुद खाओ[१२] और सब्र से बैठने वाले और भीख मांगने वाले को खिलाओ, हमने यूंही उनको तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एहसान मानो ﴿३६﴾ अल्लाह को हरगिज़ न उनके गोश्त पहुँचते हैं न उनके ख़ून, हाँ तुम्हारी परहेज़गारी उसतक पहुँचती है[१३] यूंही उनको तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम अल्लाह की बड़ाई बोलो इसपर कि तुम को हिदायत फ़रमाई, और ऐ मेहबूब ख़ुश ख़बरी सुनाओ नेकी वालों को[१४] ﴿३७﴾ बेशक अल्लाह बलाएं टालता है मुसलमानों की[१५] बेशक अल्लाह दोस्त नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ नाशुक्रे को[१६] ﴿३८﴾

छटा रूकू

परवानगी (आज्ञा) अता हुई उन्हें जो काफ़िर से लड़ते हैं[१] इस बिना पर कि उनपर ज़ुल्म हुआ[२] और बेशक अल्लाह उनकी मदद करने पर ज़रूर क़ादिर (सक्षम) है ﴿३९﴾ वो जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए[३] सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है[४] और अल्लाह

पुलट करती हैं, बोटी बोटी ले जाने वाले पक्षियों के साथ और शैतानों को जो उसको गुमराही की घाटी में फैंकते हैं, हवा के साथ उपमा दी गई है और इस नफ़ीस मिसाल से शिर्क का बुरा परिणाम समझाया गया.

(२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह के निशानों से मुराद क़ुरबानी के जानवर हैं और उनका आदर यह है कि मोटे ताज़े ख़ूबसूरत और क़ीमती लिये जाएं.

(२१) ज़रूरत के वक़्त उनपर सवार होने और उनका दूध पीने के.

(२२) यानी उनके ज़िब्ह के वक़्त तक.

(२३) यानी हरम शरीफ़ तक जहाँ वो ज़िब्ह किये जाएं.

सूरए हज - पाँचवां रूकू

(१) पिछली ईमानदार उम्मतों में से.

(२) उनके ज़िब्ह के वक़्त.

(३) तो ज़िब्ह के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो. इस आयत में दलील है इसपर कि ख़ुदा के नाम का ज़िक्र करना ज़िब्ह के लिये शर्त है. अल्लाह तआला ने हर उम्मत के लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उसके लिये तक़र्रुब के तरीक़े पर क़ुरबानी करें और तमाम क़ुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाए.

(४) और सच्चे दिल से उसकी आज्ञा का पालन करो.

(५) उसके हैबत और जलाल से.

(६) यानी सदक़ा देते हैं.

(७) यानी उसके दीन के ऐलाम से.

(८) दुनिया में नफ़ा और आख़िरत में अज्र और सवाब.

(९) उनके ज़िब्ह के वक़्त जिस हाल में कि वो हों.

(१०) ऊंट के ज़िब्ह का यही मस्नून तरीक़ा है.

(११) यानी ज़िब्ह के बाद उनके पहलू ज़मीन पर गिरें और उनकी हरकत ठहर जाए.

(१२) अगर तुम चाहो.

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّ
مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ۝۴۰ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ
الْاُمُوْرِ ۝۴۱ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝۴۲ وَ قَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝۴۳ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ
مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝۴۴ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

अगर आदमियों में एक को दूसरे से दफ़ा न फ़रमाता[५] तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें(आश्रम)[६] और गिरजा .[७] और कलीसे[८] और मस्जिदें[९] जिनमें अल्लाह का बहुत नाम लिया जाता है, और बेशक अल्लाह ज़रूर मदद फ़रमाएगा उसकी जो उसके दीन की मदद करेगा, बेशक ज़रूर अल्लाह क़ुदरत वाला ग़ालिब है(४०) वो लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें[१०] तो नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें[११] और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अंजाम(४१) और अगर ये तुम्हें झुटलाते हैं[१२] तो बेशक उन से पहले झुटला चुकी है नूह की क़ौम और आद[१३] और समूद[१४](४२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम(४३) और मदयन वाले[१५] और मूसा को झुटलाया गया[१६] तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी[१७] फिर उन्हें पकड़ा(१८) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब[१९](४४) और कितनी ही बस्तियां हमने खपा दीं (हलाक कर दीं)[२०] कि वो सितमगार थीं[२१] तो अब वो अपनी छतों पर ढै पड़ी हैं और कितने कुंवें बेकार पड़े[२२]

(१३) यानी क़ुरबानी करने वाले सिर्फ़ नियत की सच्चाई और तक़वा की शर्तों की रिआयत से अल्लाह तआला को राज़ी कर सकते हैं. जिहालत के ज़माने के काफ़िर अपनी क़ुरबानीयों के ख़ून से काबे की दीवारों को गन्दा करते थे और इसको तक़र्रुब का साधन मानते थे. इसपर यह आयत उतरी.
(१४) सवाब की.
(१५) और उनकी मदद फ़रमाता है.
(१६) यानी काफ़िरों को, जो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ियानत और ख़ुदा की नेअमतों की नाशुक्री करते हैं.

सूरए हज - छटा रूकू

(१) जिहाद की .
(२) मक्के के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथियों को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से सख़्त यातनाएं देते थे और कष्ट पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है, किसी का हाथ टूटा है, किसी का पाँव बंधा हुआ है. रोज़ाना इस क़िस्म की शिकायतें हुज़ूर की बारगाह में पहुंचती थीं और सहाबए किराम काफ़िरों के अत्याचारों और यातनाओं की हुज़ूर के दरबार में फ़रियाद करते थे . हुज़ूर यह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो, मुझे अभी जिहाद का हुक्म नहीं दिया गया. जब हुज़ूर ने मदीनए तैय्यिबह को हिजरत फ़रमाई तब यह आयत उतरी और यह वह पहली आयत है जिसमें काफ़िरों के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है.
(३) और बेवतन किये गए.
(४) और यह सच्चा कलाम है और सच्चाई पर घरों से निकालना और बेवतन करना बिल्कुल नाहक़.
(५) जिहाद की इजाज़त दे कर और सीमाएं निर्धारित फ़रमाकर, तो नतीजा यह होता कि मुश्रिकों का ग़लबा हो जाता और कोई दीनो मिल्लत वाला उनके ज़ालिम हाथों से न बचता.
(६) पादरियों की.
(७) ईसाइयों के.
(८) यहूदियों के.
(९) मुसलमानों की.
(१०) और उनके दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी मदद फ़रमाएं.

عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ
يَّعْقِلُوْنَ بِهَا اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا
تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ
فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَ
لَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۗ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ
رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

और कितने महल गच किये हुए[२३]﴿४५﴾ तो क्या ज़मीन में न चले[२४] कि उनके दिल हों जिन से समझें[२५] या कान हों जिन से सुनें[२६] तो यह कि आँखें अन्धी नहीं होतीं[२७] बल्कि वो दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं[२८]﴿४६﴾ और ये तुम से अज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं[२९] और अल्लाह हरगिज़ अपना वादा झूटा न करेगा[३०] और बेशक तुम्हारे रब के यहाँ[३१] एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिनती में हज़ार बरस[३२]﴿४७﴾ और कितनी बस्तियाँ कि हमने उनको ढील दी इस हाल पर कि वो सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा[३३] और मेरी ही तरफ़ पलट कर आता है[३४]﴿४८﴾

सातवाँ रूकू

तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो मैं तो यही तुम्हारे लिये खुला डर सुनाने वाला हूँ﴿४९﴾ तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी[१]﴿५०﴾ और वो जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादों से[२] वो जहन्नमी हैं﴿५१﴾ और हमने तुमसे पहले जितने रसूल या नबी भेजे[३] सब पर कभी यह घटना घटी कि जब उन्होंने पढ़ा तो शैतान ने उनके पढ़ने में लोगों पर

(११) इसमें ख़बर दी गई है कि आयन्दा मुहाजिरों को ज़मीन में क़ब्ज़ा अता फ़रमाने के बाद उनकी सीरतें ऐसी पवित्र रहेंगी और वो दीन के मामलों में सच्चे दिल से लगे रहेंगे. इसमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन के न्याय और उनके तक़वा और परहेज़गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह तआला ने शौकत, प्रतिष्ठा और हुकूमत अता फ़रमाई और न्याय करने वाली सीरत अता की.
(१२) ऐ हबीबे अकरम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम !
(१३) हज़रत हूद की क़ौम.
(१४) हज़रत सालेह की क़ौम.
(१५) यानी हज़रत शुऐब की क़ौम.
(१६) यहाँ मूसा की क़ौम न फ़रमाया, क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल ने आपको झुटलाया न था बल्कि फ़िरऔन की क़ौम क़िब्तियों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाया था. इन क़ौमों का बयान और हर एक के अपने रसूलों को झुटलाने का बयान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली के लिये है कि काफ़िरों का यह पुराना तरीक़ा है. पिछले नबियों के साथ भी यही तरीक़ा रहा है.
(१७) और उनके अज़ाब में विलम्ब किया और उन्हें मोहलत दी.
(१८) और उनके कुफ़्र और सरकशी की सज़ा दी.
(१९) आप को झुटलाने वालों को चाहिये कि अपना परिणाम सोचें और सबक़ पकड़ें.
(२०) और वहाँ के रहने वालों को हलाक कर दिया.
(२१) यानी वहाँ के रहने वाले काफ़िर थे.
(२२) कि उनसे कोई पानी भरने वाला नहीं.
(२३) वीरान पड़े हैं.
(२४) काफ़िर कि इन हालात का अवलोकन करें, देखें.
(२५) कि नबियों को झुटलाने का क्या परिणाम हुआ और सबक़ पकड़ें.
(२६) पिछली उम्मतों के हालात और उनका हलाक होना और उनकी बस्तियों की वीरानी कि उससे नसीहत मिले.
(२७) यानी काफ़िरों की ज़ाहिरी हिस यानी दृष्टि बातिल नहीं हुई है वो इन आँखों से देखने की चीज़ें देखते हैं.
(२८) और दिलों ही का अन्धा होना बहुत बुरा है. इसी लिये आदमी दीन की राह पाने से मेहरूम रहता है.
(२९) यानी मक्के के काफ़िरों जैसे नज़र बिन हारिस वग़ैरह. और यह जल्दी करना उनका हंसी बनाने के तौर से था.
(३०) और ज़रूर वादे के मुताबिक़ आज़ाब उतरेगा. चुनांचे यह वादा बद्र में पूरा हुआ.

قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى
الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۙ﴿۵۲﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً
لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ
وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۙ﴿۵۳﴾ وَّلِيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ

कुछ अपनी तरफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है अल्लाह उस शैतान के डाले हुए को फिर अल्लाह अपनी आयतें पक्की कर देता है(४) और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴾५२﴿ ताकि शैतान के डाले हुए को फ़ित्ना करदे(५) उनके लिये जिनके दिलों में बीमारी है(६) और जिनके दिल सख़्त हैं(७) और बेशक सितमगार हैं(८) धुर के झगड़ालू हैं﴾५३﴿ और इसलिये कि जान लें वो जिनको इल्म मिला है(९) कि वह(१०) तुम्हारे रब के पास से हक़(सत्य) है तो उस पर ईमान लाएं तो झुक जाएं उस के लिये उनके दिल, और बेशक अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह चलाने वाला है﴾५४﴿ और काफ़िर उससे(११) हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उनपर क़यामत आ जाए अचानक(१२) या उनपर ऐसे दिन का अज़ाब आए जिस का फल उनके लिये कुछ अच्छा न हो(१३)﴾५५﴿ बादशाही उस दिन(१४) अल्लाह ही की है वह उनमें फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और(१५) अच्छे काम किये वो चैन के बाग़ों में हैं﴾५६﴿ और जिन्होंने

(३१) आख़िरत में अज़ाब का.
(३२) तो ये कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अज़ाब की जल्दी करते हैं.
(३३) और दुनिया में उन पर अज़ाब उतारा.
(३४) आख़िरत में.

सूरए हज - सातवाँ रूकू

(१) जो कभी टूटे नहीं, वह जन्नत है.
(२) कि कभी इन आयतों को जादू कहते हैं, कभी कविता, कभी पिछलों के क़िस्से और वो यह ख़याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उनका यह छल चल जाएगा.
(३) नबी और रसूल में फ़र्क़ है . नबी आम है और रसूल ख़ास. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि रसूल शरीअत की व्याख्या करने वाले होते हैं और नबी उसके सरक्षंक और निगहबान. जब सूरए नज्म उतरी तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिदे हराम में उसकी तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता अहिस्ता आयतों के बीच रूक रूक कर जिससे सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले. जब आपने आयत "व मनातस सालिसतल उख़रा" पढ़कर दस्तूर के मुताबिक़ वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैतान ने मुश्रिकों के कान में इस से मिलाकर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिन से बुतों की तारीफ़ निकलती थी. जिब्रईले अमीन ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह हाल अर्ज़ किया. इससे हुज़ूर को दुख हुआ. अल्लाह तआला ने आप की तसल्ली के लिये यह आयत उतारी.
(४) जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और उन्हें शैतानी कलिमों की मिलावट से मेहफ़ूज़ फ़रमाता है.
(५) और मुसीबत और आज़माइश बना दे.
(६) शक और दोहरी प्रवृत्ति की.
(७) हक़ को क़ुबूल नहीं करते और ये मुश्रिक हैं.
(८) यानी मुश्रिक और दोहरी प्रवृत्ति वाले लोग.
(९) अल्लाह के दीन का और उसकी आयतों का.
(१०) यानी क़ुरआन शरीफ़.
(११) यानी क़ुरआन से या दीने इस्लाम से.

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۖ فَتُصْبِحُ

منزل ٤

कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है (५७)

आठवाँ रूकू

और वो जिन्होंने अल्लाह की राह में अपने घर बार छोड़े[१] फिर मारे गए या मर गए तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा[२] और बेशक अल्लाह की रोज़ी सबसे बेहतर है (५८) ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वो पसंद करेंगे[३] और बेशक अल्लाह इल्म और हिल्म वाला है (५९) बात यह है, और जो बदला ले[४] जैसी तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उसपर ज़ियादती की जाए[५] तो बेशक अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएगा[६] बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है[७] (६०) यह इसलिये कि अल्लाह तआला रात को डालता है दिन के हिस्से में[८] और दिन को लाता है रात के हिस्से में और इसलिये कि अल्लाह सुनता देखता है (६१) यह इसलिये[९] कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे पूजते हैं[१०] वही बातिल (झूट) है और इसलिये कि अल्लाह ही बलन्दी बड़ाई वाला है (६२) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा तो सुबह को ज़मीन[११] हरियाली हो गई, बेशक अल्लाह पाक ख़बरदार

(१२) या मौत, कि वह भी छोटी क़यामत है.

(१३) इससे बद्र का दिन मुराद है. जिसमें काफ़िरों के लिये कुछ आसानी और राहत न थी और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि इस रोज़ से क़यामत मुराद है.

(१४) यानी क़यामत के दिन.

(१५) उन्होंने.

सूरए हज - आठवाँ रूकू

(१) और उसकी रज़ा के लिये अज़ीज़ों (प्रियजनों) और रिश्तेदारों को छोड़कर वतन से निकले और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए तैय्यिबह की तरफ़ हिजरत की.

(२) यानी जन्नत का रिज़्क़, जो कभी बन्द या ख़त्म न हो.

(३) वहाँ उनकी हर मुराद पूरी होगी और कोई नागवारी पेश न आएगी. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपके कुछ सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हमारे जो साथी शहीद हो गए, हम जानते हैं कि अल्लाह की बारगाह में उनके बड़े दर्जे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे, लेकिन अगर हम आपके साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिये क्या है. इसपर ये आयतें उतरीं.

(४) कोई मूमिन ज़ुल्म का, मुश्रिक से.

(५) ज़ालिम की तरफ़ से उसे बेवतन करके.

(६) यह आयत मुश्रिकों के बारे में उतरी जिन्होंने मुहर्रम महीने की आख़िरी तारीख़ों में मुसलमानों पर हमला किया और मुसलमानों ने मुबारक महीने की पवित्रता के ख़्याल से लड़ना न चाहा, मगर मुश्रिक न माने और उन्होंने जंग शुरू कर दी. मुसलमान उनके मुक़ाबले में डटे रहे. अल्लाह तआला ने उनकी मदद फ़रमाई.

(७) यानी मज़लूम और पीड़ित की मदद फ़रमाना इसलिये है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर और सक्षम है और उसकी क़ुदरत और क्षमता की निशानियाँ ज़ाहिर हैं.

(८) यानी कभी दिन को बढ़ाता, रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है, इसके सिवा कोई उसपर क़ुदरत नहीं रखता. जो ऐसा क़ुदरत वाला है, वह जिसकी चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे.

(९) यानी, और यह मदद इस लिये भी है.

(१०) यानी बुत.

الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ لَهٗ مَا
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ
وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ
هُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ؗ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ
وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي

है《६३》 उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है《६४》

नवाँ रूकू

क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है[१] और किश्ती कि दरिया में उसके हुक्म से चलती है[२] और वह रोके हुए है आसमान को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उसके हुक्म से, बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर वाला मेहरबान है[३]《६५》 और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दा किया[४] फिर तुम्हें मारेगा[५] फिर तुम्हें जिलाएगा[६] बेशक आदमी बड़ा नाशुक्रा है[७]《६६》 हर उम्मत के[८] लिये हमने इबादत के क़ायदे बना दिये कि वह उनपर चले[९] तो हरगिज़ वो तुम से इस मामले में झगड़ा न करें[१०] और अपने रब की तरफ़ बुलाओ[११] बेशक तुम सीधी राह पर हो《६७》 और अगर वो[१२] तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है तुम्हारे कौतुक《६८》 अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़यामत के दिन जिस बात में विरोध कर रहे हो[१३]《६९》 क्या तूने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन

(११) सब्ज़ से.

सूरए हज - नवाँ रूकू

(१) जानवर वग़ैरह, जिन पर तुम सवार होते हो और जिनसे तुम काम लेते हो.
(२) तुम्हारे लिये उसके चलाने के वास्ते हवा और पानी को आधीन किया.
(३) कि उसने उनके लिये लाभ के दरवाज़े खोले और तरह तरह के नुक़सान से उनको मेहफ़ूज़ किया.
(४) बेजान नुत्फ़े से पैदा फ़रमा कर.
(५) तुम्हारी उम्रें पूरी होने पर.
(६) दोबारा उठाए जाने के दिन सवाब और अज़ाब के लिये.
(७) कि इतनी नेअमतों के बावुजूद उसकी इबादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़लूक़ की पूजा करता है.
(८) दीन वालों और क़ौमों में से.
(९) और आमिल हो.
(१०) यानी दीन के काम या ज़बीहे के मामले में. यह आयत बदील इब्ने वरक़ा और बशर बिन सुफ़ियान और यज़ीद इब्ने ख़नीस के बारे में उतरी. उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा से कहा था क्या कारण है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिसको अल्लाह मारता है उसको नहीं खाते. इसपर यह आयत उतरी.
(११) और लोगों को उस पर ईमान लाने और उसका दीन क़ुबूल करने और उसकी ईबादत में लगने की दावत दो.
(१२) तुम्हारे देने के बावुजूद.
(१३) और तुम पर सच्चाई ज़ाहिर हो जाएगी.

السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِیْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ
ذٰلِكَ عَلَی اللّٰهِ یَسِیْرٌ ۝ وَ یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَیْسَ لَهُمْ
بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ نَّصِیْرٍ ۝ وَاِذَا تُتْلٰی
عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِیْ وُجُوْهِ الَّذِیْنَ
كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ یَكَادُوْنَ یَسْطُوْنَ بِالَّذِیْنَ
یَتْلُوْنَ عَلَیْهِمْ اٰیٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ
مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ۝ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ لَنْ یَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَ
اِنْ یَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَیْـًٔا لَّا یَسْتَنْقِذُوْهُ
مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝ مَا قَدَرُوا

منزل ٤

में है, बेशक यह सब एक किताब में है[१४] बेशक यह[१५] अल्लाह पर आसान है[१६] ﴿७०﴾ और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं[१७] जिन की कोई सनद उसने न उतारी और ऐसों को पूजते हैं[१८] और सितमगारों का[१९] कोई मददगार नहीं[२०] ﴿७१﴾ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाएं[२१] तो तुम उनके चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखोगे जिन्होंने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उनको जो हमारी आयतें उनपर पढ़ते हैं, तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे इस हाल से भी[२२] बदतर है, वह आग है, अल्लाह ने उसका वादा दिया है काफ़िरों को और क्या ही बुरी पलटने की जगह ﴿७२﴾

दसवाँ रूकू

ऐ लोगो एक कहावत फ़रमाई जाती है इसे कान लगाकर सुनो[१] वो जिन्हें अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[२] एक मक्खी न बना सकेंगे अगरचे सब उस पर इकट्ठे हो जाएं[३] और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन कर ले जाए[४] तो उससे छुड़ा न सकें[५] कितना कमज़ोर चाहने वाला और वह जिसको चाहा[६] ﴿७३﴾ अल्लाह की क़दर न जानी जैसी

(१४) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में.
(१५) यानी उन सब की जानकारी या सारी घटनाओं का लौहे मेहफ़ूज़ में दर्ज फ़रमाना.
(१६) इसके बाद काफ़िरों की जिहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वो ऐसों की इबादत करते हैं जो पूजे जाने के क़ाबिल नहीं.
(१७) यानी बुतों को.
(१८) यानी उनके पास अपने इस काम की न कोई अक़्ली दलील है न नक़्ली. केवल जिहालत और नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक़ नहीं उनको पूजते हैं. यह सख़्त ज़ुल्म है.
(१९) यानी मुश्रिकों का.
(२०) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.
(२१) और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया जाए जिसमें अहकाम का बयान और हलाल व हराम की तफ़सील है.
(२२) यानी तुम्हारे इस गुस्से और नागवारी से भी जो क़ुरआन शरीफ़ सुनकर तुममें पैदा होती है.

सूरए हज - दसवाँ रूकू

(१) और इसमें ख़ूब ग़ौर करो. वह कहावत यह है कि तुम्हारे बुत.
(२) उनकी बेबसी और बेक़ुदरती का यह हाल है कि वह निहायत छोटी सी चीज़.
(३) तो अक़्ल वाले को कब जचता है कि ऐसे को मअबूद ठहराए. ऐसे को पूजना और मअबूद क़रार देना कितनी पर्ले दर्जे की जिहालत है.
(४) वह शहद और केसर वग़ैरह, जो मुश्रिक बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं, जिसपर मक्खियां भिनकती हैं.
(५) ऐसे को ख़ुदा बनाना और मअबूद ठहराना कितना अजीब और समझदारी से दूर है.
(६) चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है, या चाहने वाले से मक्खी मुराद है. जो बुत पर से शहद और केसर

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَللّٰهُ
يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا
رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۩ ۝ وَجَاهِدُوْا
فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ
عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ
اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ
وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ
وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖۚ فَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ
مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

السجدة عند الامام الشافعي رحمه الله تعالى ١٣

منزل ٤

चाहिये थी[७] बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है (७४) अल्लाह चुन लेता है फ़रिश्तों में से रसूल[८] और आदमियों में से[९] बेशक अल्लाह सुनता देखता है (७५) जानता है जो उनके आगे है, जो उनके पीछे है[१०] और सब कामों की रुजू अल्लाह की तरफ़ है (७६) ऐ ईमान वालो रुकू और सज्दा करो[११] और अपने रब की बन्दगी करो[१२] और भले काम करो[१३] इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो (७७) और अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का[१४] उसने तुम्हें पसन्द किया[१५] और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी[१६] तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन[१७] अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस क़ुरआन में ताकि रसूल तुम्हारा निगहबान व गवाह हो[१८] और तुम ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो,[१९] वह तुम्हारा मौला है, तो क्या ही अच्छा मौला और क्या ही अच्छा मददगार (७८)

की इच्छुक है. और मतलूब यानी चाहा हुआ से बुत. और कुछ ने कहा कि तालिब से बुत मुराद है और मतलूब से मक्खी.

(७) और उसकी महानता न पहचानी जिन्हों ने ऐसों को ख़ुदा का शरीक किया जो मक्खी से भी कमज़ोर हैं. मअबूद वही है जो क़ुदरत सम्पूर्ण रखे.

(८) जैसे जिब्रईल, मीकाईल वग़ैरह.

(९) जैसे हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और सैयदे आलम सलवातुल्लाहे अलैहिम अजमईन. यह आयत उन काफ़िरों के रद में उतरी जिन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर रसूल कैसे हो सकता है. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह मालिक है, जिसे चाहे अपना रसूल बनाए. वह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और फ़रिश्तों में से भी, जिन्हें चाहे.

(१०) यानी दुनिया के कामों को भी और आख़िरत के कामों को भी या उन गुज़रे हुए कर्मों को भी और आगे आने वाले हालात को भी.

(११) अपनी नमाज़ों में, इस्लाम के शुरू के दौर में नमाज़, बग़ैर रुकू और सज्दे की थी. फिर नमाज़ में रुकू और सज्दे का हुक्म फ़रमाया गया.

(१२) यानी रुकू और सज्दे ख़ास अल्लाह तआला के लिये हों और इबादत सच्चे दिल से करो.

(१३) दूसरों के काम आना, सदव्यवहार इत्यादि नेकियाँ.

(१४) यानी सच्ची नियत के साथ दीन के फैलाने के लिये.

(१५) अपने दीन और इबादत के लिये.

(१६) बल्कि ज़रूरत के अवसरों पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी से हानि होने की हालत में ग़ुस्ल और वुज़ू की जगत तयम्मुम, तो तुम दीन का अनुकरण करो.

(१७) जो दीने मुहम्मदी में दाख़िल है.

(१८) रोज़े क़यामत कि तुम्हारे पास ख़ुदा का पयाम पहुंचा दिया.

(१९) कि उन्हें उन रसूलों ने अल्लाह तआला के आदेश पहुंचा दिये. अल्लाह तआला ने तुम्हें यह इज़्ज़त और बुज़ुर्गी अता फ़रमाई.

(२०) उस पर सदा क़ायम रहो.

(२१) और उसके दीन पर क़ायम रहो.

पारा सतराह समाप्त

अट्ठारहवाँ पारा - क़द अफ़लहा

२३- सूरए मूमिनून

सूरए मूमिनून मक्का में उतरी, इसमें ११८ आयतें, ६ रूकू हैं.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पहला रूकू

बेशक मुराद को पहुंचे﴾१﴿ ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं(२)﴾२﴿ और वो जो किसी बेहूदा बात की तरफ़ मुंह नहीं करते(३)﴾३﴿ और वो कि ज़कात देने का काम करते हैं(४)﴾४﴿ और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं﴾५﴿ मगर अपनी बीबियों या शरई दासियों पर, जो उनके हाथ की मिल्क हैं कि उनपर कोई मलामत नहीं(५)﴾६﴿ तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे, वही हद से बढ़ने वाले हैं(६)﴾७﴿ औरे वो जो अपनी अमानतों और अपने एहद की रिआयत(लिहाज़) करते हैं(७)﴾८﴿ और वो जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं(८)﴾९﴿ यही लोग वारिस हैं﴾१०﴿ कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे, वो उसमें हमेशा रहेंगे﴾११﴿ और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया(९)﴾१२﴿ फिर उसे(१०) पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में(११)﴾१३﴿ फिर हमने उस पानी की बूंद को ख़ून की फुटक किया, फिर ख़ून की फुटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियाँ, फिर उन

२३ - सूरए मूमिनून - पहला रूकू

(१) सूरए मूमिनून मक्का में उतरी. इसमें ६ रूकू, एक सौ अट्ठारह आयतें, एक हज़ार आठ सौ चालीस कलिमे और चार हज़ार आठ सौ दो अक्षर हैं.

(२) उनके दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उनके अंग साकिन होते हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि नमाज़ में एकाग्रता यह है कि उसमें दिल लगा हो और दुनिया से ध्यान हटा हुआ हो और नज़र सज्दे की जगह से बाहर न जाए और आँखों के कोनों से किसी तरफ़ न देखे और कोई बेज़रूरत काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए, इस तरह कि उसके दोनों किनारे लटकते हों और आपस में मिले न हों और उंगलियाँ न चटख़ाए और इस क़िस्म की हरकतों से दूर रहे. कुछ ने फ़रमाया कि एकाग्रता यह है कि आसमान की तरफ़ नज़र न उठाए.

(३) हर बुराई और बुरी बात से दूर रहते हैं.

(४) यानी उसके पाबन्द हैं और हमेशा उसकी अदायगी करते हैं.

(५) अपनी बीबीयों और दासियों के साथ जाइज़ तरीक़े पर क़ुर्बत करने में.

(६) कि हलाल से हराम की तरफ़ बढ़ते हैं. इससे मालूम हुआ कि हाथ से शहवत निकालना या हस्तमैथुन करना हराम है. सईद बिन जुबैर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने एक उम्मत को अज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल करते थे.

(७) चाहे वो अमानतें अल्लाह की हों या लोगों की. और इसी तरह एहद ख़ुदा के साथ हों या बन्दों के साथ, सब को पूरा करना लाज़िम है.

(८) और उन्हें उनके वक़्तों में उनकी शर्तों और संस्कारों के साथ अदा करते हैं और फ़रायज़, वाजिबात, सुन्नत और नफ़्ल सबकी निगहबानी करते हैं.

(९) मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहाँ हज़रत आदम हैं.

(१०) यानी उसकी नस्ल को.

(११) यानी गर्भाशय में.

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ
لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ
الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ
وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ
لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ
شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ
لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا
فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ
اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

وقف لازم ع

हड्डियों पर गोश्त पहनाया, फिर उसे और सूरत में उठान दी[१२] तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, सब से बेहतर बनाने वाला (१४) फिर उसके बाद तुम ज़रूर[१३] मरने वाले हो (१५) फिर तुम सब क़यामत के दिन[१४] उठाए जाओगे (१६) और बेशक हमने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं[१५] और हम ख़ल्क़ से ग़ाफ़िल नहीं[१६] (१७) और हमने आसमान से पानी उतारा[१७] एक अंदाज़े पर[१८] फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उसके ले जाने पर क़ादिर (सक्षम) हैं[१९] (१८) तो उस से हमने तुम्हारे बाग़ पैदा किये खजूरों और अंगूरों के तुम्हारे लिये उनमें बहुत से मेवे हैं[२०] और उनमें से खाते हो[२१] (१९) और वह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है[२२] लेकर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन[२३] (२०) और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में समझने का मक़ाम है, हम तुम्हें पिलाते हैं उसमें से जो उनके पेट में है[२४] और तुम्हारे लिये उनमें बहुत फ़ायदे हैं[२५] और उन से तुम्हारी ख़ुराक है[२६] (२१) और उनपर[२७] और किश्ती पर[२८] सवार किये जाते हो (२२)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पुजो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं, तो क्या तुम्हें डर नहीं[१] (२३) उसकी क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले[२] यह तो

(१२) यानी उसमें रूह डाली, उस बेजान को जानदार किया, बोलने, सुनने और देखने की शक्ति अता की.
(१३) अपनी उम्रें पूरी होने पर.
(१४) हिसाब और बदले के लिये.
(१५) इनसे मुराद सात आसमान हैं जो फ़रिश्तों के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं.
(१६) सब की कहनी, करनी और अन्तःकरण को जानते हैं. कोई चीज़ हम से छुपी नहीं.
(१७) यानी पानी बरसाया.
(१८) जितना हमारे इल्म और हिकमत में सृष्टि की हाजतों के लिये चाहिये.
(१९) जैसा अपनी क़ुदरत से उतारा, ऐसा ही इसपर भी क़ुदरत रखते हैं कि उसको मिटा दें. तो बन्दों को चाहिये कि इस नेअमत की शुक्रगुज़ारी से हिफ़ाज़त करें.
(२०) तरह तरह के.
(२१) जाड़े और गर्मी वग़ैरह मौसमों में, और ऐश करते हो.
(२२) इस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है.
(२३) यह उस में अजीब गुण है कि वह तेल भी है कि तेल के फ़ायदे उससे हासिल किये जाते हैं, जलाया भी जाता है, दवा के तरीक़े पर भी काम में लाया जाता है और सालन का काम भी देता है कि अकेले उससे रोटी खाई जा सकती है.
(२४) यानी दूध ख़ुशगवार, जो अच्छा आहार होता है.
(२५) कि उनके बाल, खाल, ऊन वग़ैरह से काम लेते हो.
(२६) कि उन्हें ज़िब्ह करके खा लेते हो.
(२७) ख़ुश्की में.
(२८) दरियाओं में.

सूरए मूमिनून - दूसरा रूकू

(१) उसके अज़ाब का, जो उसके सिवा औरों को पूजते हो.

لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ
أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مَّا
سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ
بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي
بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ
بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ
فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ
عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ
إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ
عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ
خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا

नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने[३] और अल्लाह चाहता[४] तो फ़रिश्ते उतारता, हमने तो यह अगले बाप दादाओं में न सुना[५]﴾२४﴿ वह तो नहीं मगर एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने तक उसका इन्तिज़ार किये रहो[६]﴾२५﴿ नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा[७] इसपर कि उन्होंने मुझे झुटलाया﴾२६﴿ तो हमने उसे वही (देववाणी) भेजी कि हमारी निगाह के सामने[८] और हमारे हुक्म से किश्ती बना फिर जब हमारा हुक्म आए[९] और तनूर उबले[१०] तो उसमें बिठा ले[११] हर जोड़े में से दो[१२] और अपने घर वाले[१३] मगर इनमें से वो जिनपर बात पहले पड़ चुकी[१४] और इन ज़ालिमों के मामले में मुझ से बात न करना[१५] ये ज़रूर डूबोए जाएंगे﴾२७﴿ फिर जब ठीक बैठ ले किश्ती पर तू और तेरे साथ वाले तो कह सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने हमें उन ज़ालिमों से निजात दी﴾२८﴿ और अर्ज़ कर[१६] कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है﴾२९﴿ बेशक इसमें[१७] ज़रूर निशानियां हैं[१८] और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे[१९]﴾३०﴿ फिर उनके[२०]

(२) अपनी क़ौम के लोगों से, कि.
(३) और तुम्हें अपना ताबए बनाए.
(४) कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानिअत फ़रमाए.
(५) कि बशर भी रसूल होता है, यह उनकी अत्यन्त मूर्खता थी कि बशर का रसूल होना तो न मना, पत्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्होंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की निस्बत यह भी कहा.
(६) यहाँ तक कि उसका जुनून दूर हो, ऐसा हुआ तो ख़ैर, वरना उसको क़त्ल कर डालना. जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उनके हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो हज़रत..
(७) और उस क़ौम को हलाक कर.
(८) यानी हमारी हिमायत और हिफ़ाज़त में.
(९) उनकी हलाकत का, और अज़ाब के निशान नमूदार हों.
(१०) और उससे पानी निकालते, तो यह अलामत है अज़ाब के शुरू होने की.
(११) यानी किश्ती में पशु पक्षियों के.
(१२) नर और मादा.
(१३) यानी अपनी ईमानदार बीबी और ईमानदार औलाद या सारे ईमान रखने वाले.
(१४) और अल्लाह तआला के लिखे हुए में उनका अज़ाब और हलाकत निश्चित हो चुकी. वह आपका एक बेटा था कनआन नाम का और एक औरत कि ये दोनों काफ़िर थे. आपने अपने तीन बेटों साम, हाम, याफ़स और उनकी बीबियों को और दूसरे ईमान वालों को सवार किया. कुल लोग जो किश्ती में थे, उनकी तादाद अठहत्तर थी, आधे मर्द और आधी औरतें.
(१५) और उनके लिये निजात तलब न करना, दुआ न फ़रमाना.
(१६) किश्ती से उतरते वक़्त या उसमें सवार होते वक़्त.
(१७) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वाक़ए में और उसमें जो सच्चाई के दुश्मनों के साथ किया गया.
(१८) और इब्रतें और नसीहतें और अल्लाह की क़ुदरत के प्रणाम हैं.
(१९) उस क़ौम के, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को उसमें भेज कर और उनको हिदायत और नसीहत का ज़िम्मेदार बनाकर ताकि ज़ाहिर हो जाए कि अज़ाब उतरने से पहले कौन नसीहत क़ुबूल करता और फ़रमाँबरदारी की पुष्टि करता है और कौन नाफ़रमान झुटलाने और विरोध पर अड़ा रहता है.

لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِيْنَ ﴿٣١﴾
فَأَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ
قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَأْكُلُ
مِمَّا تَأْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ
أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ أَيَعِدُكُمْ
أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا أَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا
رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ
لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

बाद हमने और संगत (क़ौम) पैदा की[२१] ﴿३१﴾ तो उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा[२२] कि अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[२३] ﴿३२﴾

तीसरा रूकू

और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़िरी[१] को झुटलाया और हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में चैन दिया[२] कि यह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है[३] ﴿३३﴾ और अगर तुम किसी अपने जैसे आदमी की इताअत (आज्ञा पालन) करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो ﴿३४﴾ क्या तुम्हें यह वादा देता है कि तुम जब मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे उसके बाद फिर[४] निकाले जाओगे ﴿३५﴾ कितनी दूर है, कितनी दूर है, जो तुम्हें वादा दिया जाता है[५] ﴿३६﴾ वो तो नहीं मगर हमारी दुनिया की ज़िन्दगी[६] कि हम मरते जीते है[७] और हमें उठना नहीं[८] ﴿३७﴾ वह तो नहीं मगर एक मर्द जिसने अल्लाह पर झूट बांधा[९] और हम उसे मानने के नहीं[१०] ﴿३८﴾ अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इसपर कि उन्होंने मुझे झुटलाया ﴿३९﴾ अल्लाह ने फ़रमाया कि कुछ देर जाती है कि ये सुब्ह करेंगे पछताते हुए[११] ﴿४०﴾ तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने [१२] तो हमने उन्हें घास कूड़ा कर दिया[१३] तो दूर हों[१४] ज़ालिम लोग ﴿४१﴾ फिर

(२०) यानी नूह की क़ौम के अज़ाब और हलाकत के.
(२१) यानी आद और क़ौमे हूद.
(२२) यानी हूद अलैहिस्सलाम, और उनकी मअरिफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया.
(२३) उसके अज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ.

सूरए मूमिनून - तीसरा रूकू

(१) और वहाँ के सवाब और अज़ाब वग़ैरह.
(२) यानी कुछ काफ़िर जिन्हें अल्लाह तआला ने राहत, ऐश और दुनिया की नेअमत अता फ़रमाई थी, अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे.
(३) यानी ये अगर नबी होते तो फ़रिश्तों की तरह खाने पीने से पाक होते . इन अन्दर के अन्धों ने नबुव्वत के कमालों को न देखा, और खाने पीने के गुण देखकर नबी को अपनी तरह बशर कहने लगे . यह बुनियाद उनकी गुमराही की हुई. चुनांचे इसी से उन्होंने यह नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे.
(४) क़ब्रों से ज़िन्दा.
(५) यानी उन्होंने मरने के बाद ज़िन्दा होने को बहुत दूर जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी झूटे ख़याल के आधार पर कहने लगे.
(६) इससे उनका मतलब यह था कि इस दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं, सिर्फ़ इतना ही है.
(७) कि हम में से कोई मरता है, कोई पैदा होता है.
(८) मरने के बाद, और अपने रसूल अलैहिस्सलाम की निस्बत उन्होंने यह कहा.
(९) कि अपने आपको उसका नबी बताया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी.
(१०) पैग़म्बर अलैहिस्सलाम जब उनके ईमान से मायूस हुए और उन्होंने देखा कि क़ौम अत्यन्त सरकशी पर है तो उनके लिये बद

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ
بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۴۲﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا
وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا
جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۴﴾ ثُمَّ
اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿۴۵﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا
عَالِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا
عٰبِدُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿۴۸﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ
جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ
ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿۵۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ
الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۵۱﴾

उनके बाद हमने और संगतें (क़ौमें) पैदा कीं(१५) ﴾४२﴿ कोई उम्मत अपनी मीआद से न पहले जाए न पीछे रहे(१६) ﴾४३﴿ फिर हमने अपने रसूल भेजे एक पीछे दूसरा, जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसे झुटलाया(१७) तो हमने अगलों से पिछले मिला दिये(१८) और उन्हें कहानियां कर डाला(१९) तो दूर हों वो लोग कि ईमान नहीं लाते ﴾४४﴿ फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतों और रौशन सनद (प्रमाण)(२०) के साथ भेजा ﴾४५﴿ फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ तो उन्होंने घमण्ड किया(२१) और वो लोग ग़ल्बा पाए हुए थे(२२) ﴾४६﴿ तो बोले क्या हम ईमान ले आएं अपने जैसे दो आदमियों पर(२३) और उनकी क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है(२४) ﴾४७﴿ तो उन्होंने उन दोनों को झुटलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए(२५) ﴾४८﴿ और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई(२६) कि उनको(२७) हिदायत हो ﴾४९﴿ और हमने मरयम और उसके बेटे को(२८) निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बलन्द ज़मीन(२९) जहाँ बसने का मक़ाम(३०) और निगाह के सामने बहता पानी ﴾५०﴿

चौथा रूकू

ऐ पैग़म्बरो, पाकीज़ा चीज़ें खाओ(१) और अच्छे काम करो, मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ(२) ﴾५१﴿
और बेशक यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है(३) और मैं

दुआ की और अल्लाह की बारगाह में ...
(११) अपने कुफ़्र और झुटलाने पर, जबकि अल्लाह का अज़ाब देखेंगे.
(१२) यानी वो अज़ाब और हलाकत में डाले गए.
(१३) यानी वो हलाक होकर घास कूड़े की तरह हो गए.
(१४) यानी ख़ुदा की रहमत से दूर हों नबियों को झुटलाने वाले.
(१५) जैसे क़ौमे सालेह और क़ौमे लूत और क़ौमे शुऐब वग़ैरह.
(१६) जिसके लिये हलाकत का जो समय निर्धारित है वह ठीक उसी वक़्त हलाक होगा, उसमें कुछ आगे पीछे नहीं हो सकता.
(१७) और उसकी हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाए.
(१८) और बाद वालों को पहलों की तरह हलाक कर दिया.
(१९) कि बाद वाले अफ़साने की तरह उनका हाल बयान किया करें और उनके अज़ाब और हलाकत का बयान इब्रत का कारण हो.
(२०) जैसे लाठी और चमकती हथैली वग़ैरह चमत्कार.
(२१) और अपने घमण्ड के कारण ईमान न लाए.
(२२) बनी इस्राईल पर अपने अत्याचार से, जब हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहुमस्सलाम ने उन्हें ईमान की दावत दी.
(२३) यानी हज़रत मूसा और हज़रत हारून पर.
(२४) यानी बनी इस्राईल हमारे हुक्म के तहत हैं, तो यह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान लाकर उनके फ़रमाँबरदार बन जाएं.
(२५) और डुबो दिये गए.
(२६) यानी तौरात शरीफ़, फ़िरऔन और उसकी क़ौम की हलाकत के बाद.
(२७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल को.
(२८) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के पैदा फ़रमाकर अपनी क़ुदरत की -----
(२९) इस से मुराद या बैतुल मक़दिस है या दमिश्क़ या फ़लस्तीन, कई क़ौल हैं.
(३०) यानी हमवार, समतल, लम्बी चौड़ी, फलों वाली ज़मीन, जिसमें रहने वाले राहत के साथ हंसी ख़ुशी बसर करते हैं.

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾
فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ
اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي
الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ
رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ
اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾
اُولٰۗىِٕكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَا
نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ
هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾
حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْــَٔـرُوْنَ ﴿٦٤﴾

तुम्हारा रब हूँ तो मुझसे डरो﴿५२﴾ तो उनकी उम्मतों ने अपना काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया[४] हर गिरोह जो उसके पास है उस पर ख़ुश है[५]﴿५३﴾ तो तुम उनको छोड़ दो उनके नशे में[६] एक वक़्त तक[७]﴿५४﴾ क्या ये ख़याल कर रहे हैं कि वो जो हम उनकी मदद कर रहे हैं माल और बेटों से[८]﴿५५﴾ ये जल्द जल्द उनको भलाइयां देते है[९] बल्कि उन्हें ख़बर नहीं[१०]﴿५६﴾ बेशक वो जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं[११]﴿५७﴾ और वो जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं[१२]﴿५८﴾ और वो जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते﴿५९﴾ और वो जो देते हैं जो कुछ दें[१३] और उनके दिल डर रहे हैं यूं कि उनको अपने रब की तरफ़ फिरना है[१४]﴿६०﴾ ये लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही सब से पहले उन्हें पहुंचे[१५]﴿६१﴾ और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उसकी ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है कि हक़(सच) बोलती है[१६] और उनपर ज़ुल्म न होगा[१७]﴿६२﴾ बल्कि उनके दिल उससे[१८] ग़फ़लत में हैं और उनके काम उन कामों से जुदा हैं[१९] जिन्हें वो कर रहे हैं﴿६३﴾ यहाँ तक कि जब हमने उनके अमीरों को अज़ाब में पकड़ा[२०] तो जभी वो फ़रियाद करने लगे[२१]﴿६४﴾

सूरए मूमिनून - चौथा रूकू

(१) यहाँ पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उनके ज़माने में यह पुकार की गई, या रसूलों से मुराद ख़ास सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं, या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम. कई क़ौल हैं.

(२) उनका बदला अता फ़रमाऊंगा.

(३) यानी इस्लाम.

(४) और अलग अलग सम्प्रदाय हो गए, यहूदी, ईसाई, मजूसी वग़ैरह.

(५) और अपने ही आपको सच्चाई पर जानता है और दूसरों को बातिल पर समझता है. इस तरह उनके बीच दीन का इख़्तिलाफ़ है. अब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सम्बोधन होता है.

(६) यानी उनके कुफ़्र और गुमराही और उनकी जिहालत और ग़फ़लत में.

(७) यानी उनकी मौत के वक़्त तक.

(८) दुनिया में.

(९) और हमारी ये नेअमतें उनके कर्मों का बदला हैं, या हमारे राज़ी होने के प्रमाण हैं, ऐसा ख़याल करना ग़लत है, वास्तविकता यह नहीं है.

(१०) कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं.

(११) उन्हें उसके अज़ाब का डर है. हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मूमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बुराई करता है और निडर रहता है.

(१२) और उसकी किताबों को मानते हैं.

(१३) ज़कात और सदक़ात, या ये मानी हैं कि नेक कर्म करते हैं.

(१४) तिरमिज़ी की हदीस में है कि हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछा कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं. फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ की आँखों के नूर, ऐसा नहीं. यह उन लोगों का विवरण है जो रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं ये कर्म ठुकरा न दिये जाएं.

(१५) यानी नेकियों को, मानी ये हैं कि वो नेकियों में और उम्मतों पर पहल करते हैं.

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُم مِّنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ
اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾
مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا
الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾
اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ
لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا
فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ڰ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ
لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ
رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

ع

आज फ़रियाद न करो, हमारी तरफ़ से तुम्हारी मदद न होगी﴾६५﴿ बेशक मेरी आयतें[२२] तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल उलटे पलटते थे[२३]﴾६६﴿ हरम की ख़िदमत पर बड़ाई मारते हो[२४] रात को वहाँ बेहूदा कहानियाँ बकते[२५]﴾६७﴿ हक़ को छोड़े हुए[२६] क्या उन्होंने बात को सोचा नहीं[२७] या उनके पास वह आया जो उनके बाप दादा के पास न आया था[२८]﴾६८﴿ या उन्होंने अपने रसूल को न पहचाना[२९] तो वो उसे बेगाना(पराया) समझ रहे हैं[३०]﴾६९﴿ या कहते हैं उसे सौदा(जुनून) है[३१] बल्कि वो तो उनके पास हक़(सत्य) लाए[३२] और उनमें अक्सर को हक़ बुरा लगता है[३३]﴾७०﴿ और अगर हक़[३४] उनकी ख़्वाहिशों का पालन करता[३५] तो ज़रूर आसमान और ज़मीन और जो कोई उनमें हैं सब तबाह हो जाते[३६] बल्कि हम उनके पास वह चीज़ लाए[३७] जिस में उनकी नामवरी थी तो वो अपनी इज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं﴾७१﴿ क्या तुम उनसे कुछ उजरत मांगते हो[३८] तो तुम्हारे रब का अज्र(बदला) सब से भला और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला[३९]﴾७२﴿ और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो[४०]﴾७३﴿ और बेशक जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से[४१] कतराए हुए हैं﴾७४﴿ और अगर हम उनपर रहम करें और जो मुसीबत[४२] उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भटपना

(१६) उसमें हर व्यक्ति के कर्मों का लेखा है और वह लोहे मेहफ़ूज़ है.
(१७) न किसी की नेकी घटाई जाएगी न बदी बढ़ाई जाएगी . इसके बाद काफ़िरों का ज़िक्र किया जाता है.
(१८) यानी क़ुरआन शरीफ़ से.
(१९) जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए.
(२०) और वह दिन प्रतिदिन क़त्ल किये गए और एक क़ौल यह है कि इस अज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भुखमरी की वह मुसीबत है जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से उनपर डाली गई थी और उस अकाल से उनकी हालत यहाँ तक पहुंच गई थी कि वो कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे.
(२१) अब उनका जवाब यह है कि -----
(२२) यानी क़ुरआन शरीफ़ की आयतें.
(२३) और इन आयतों को न मानते थे और उनपर ईमान न लाते थे.
(२४) और यह कहते हुए कि हम हरम वाले हैं और अल्लाह के घर के पड़ोसी हैं, हम पर कोई ग़ालिब न होगा, हमें किसी का डर नहीं.
(२५) काबे के चारों तरफ़ जमा होकर, और उन कहानियों में अक्सर क़ुरआन शरीफ़ की बुराई और उसको जादू और शायरी कहना और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में बेजा बातें कहना होता था.
(२६) यानी नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आप पर ईमान लाने को और क़ुरआन को.
(२७) यानी क़ुरआन शरीफ़ में ग़ौर नहीं किया और इसके चमत्कार पर नज़र नहीं डाली जिससे उन्हें मालूम होता कि यह रब का कलाम है, इसकी तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इसमें कहा गया है वह सब सच है और मानने की चीज़ है. और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्चाई होने पर इसमें खुले प्रमाण हैं.
(२८) यानी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले ज़माने में हुई ही न हो और वो यह कह सकें कि हमें ख़बर ही न थी कि ख़ुदा की तरफ़ से रसूल आया भी करते हैं . पहले कभी कोई रसूल आया होता और हमने उसका ज़िक्र सुना होता तो हम क्यों इस रसूल(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)को न मानते, यह बहाना करने का मौक़ा भी नहीं, क्योंकि पहली उम्मतों में रसूल आचुके हैं और ख़ुदा की किताबें उतर चुकी हैं.
(२९) और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के कुल हालात को न देखा और आप के ऊंचे ख़ानदान, सच्चाई और अमानतदारी और असाधारण

يَعْمَهُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا
عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝ وَهُوَ
الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَ
اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ
اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝ قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا
هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ
لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ
لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا

منزل ٤

(एहसान-फ़रामोशी) करें अपनी सरकशी में बहकते हुए[४३] ﴾७५﴿ और बेशक हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा[४४] तो न वो अपने रब के हुज़ूर में झुके न गिड़गिड़ाते हैं[४५] ﴾७६﴿ यहाँ तक कि जब हमने उनपर खोला किसी सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा[४६] तो वो अब उसमें नाउम्मीद पड़े हैं ﴾७७﴿

पाँचवां रूकू

और वही है जिसने बनाए तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल[१] तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो[२] ﴾७८﴿ और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठना है[३] ﴾७९﴿ और वही जिलाए और मारे और उसी के लिये हैं रात और दिन की तबदीलियाँ[४] तो क्या तुम्हें समझ नहीं[५] ﴾८०﴿ बल्कि उन्होंने वही कही जो अगले[६] कहते थे ﴾८१﴿ बोले क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे ﴾८२﴿ बेशक यह वादा हम को और हम से पहले हमारे बाप दादा को दिया गया यह तो नहीं मगर वही अगली दास्तानें[७] ﴾८३﴿ तुम फ़रमाओ किसका माल है ज़मीन और जो कुछ इसमें है अगर तुम जानते हो[८] ﴾८४﴿ अब कहेंगे कि अल्लाह का[९] तुम फ़रमाओ फिर क्यों नहीं सोचते[१०] ﴾८५﴿ तुम फ़रमाओ कौन है मालिक आसमानों का और मालिक बड़े अर्श का ﴾८६﴿ अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है

सूझ बूझ, सदचरित्र, सदव्यवहार और विनम्रता और मेहरबानी वग़ैरह पाकीज़ा विशेषताओं और गुणों और बिना किसी से सीखे आपके इल्म में कामिल और तमाम सृष्टि से ज़्यादा जानकार और सर्वोत्तम होने को न जाना, क्या ऐसा है?

(३०) हक़ीक़त में यह बात तो नहीं बल्कि वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आपके गुणों और चमत्कारों को ख़ूब जानते हैं और आपकी बुज़ुर्गी वाली विशेषताएं ज़माने भर में मशहूर हैं.

(३१) यह भी सरासर ग़लत है, क्योंकि वो जानते हैं कि आप जैसा सूझ बूझ वाला और सम्पूर्ण बुद्धि का मालिक व्यक्ति उनके देखने में नहीं आया.

(३२) यानी क़ुरआन शरीफ़, जो अल्लाह की तौहीद और दीन के अहकाम पर आधारित है.

(३३) क्योंकि इसमें नफ़्सानी ख़्वाहिशों का विरोध है इसलिये वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनकी विशेषताओं और कमालात को जानने के बावुजूद सच्चाई का विरोध करते हैं. अक्सर की क़ैद से साबित होता है कि यह हाल उनमें बहुत से लोगों का है चुनांचे उनमें कुछ ऐसे भी थे जो आपको सच्चाई पर जानते थे और सच्चाई उन्हें बुरी भी नहीं लगती थी लेकिन वो अपनी क़ौम की तरफ़दारी या उनके तअनों के डर से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब.

(३४) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(३५) इस तरह कि इस में वो विषय बयान होते है जिनकी काफ़िर ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटीयाँ और बेटा होना, वग़ैरह कुफ़्र की बातें.

(३६) और सारे जगत का निज़ाम बिगड़ जाता, उलट पुलट हो जाता.

(३७) यानी क़ुरआने पाक.

(३८) उन्हें हिदायत करने और सच्ची राह बताने पर, ऐसा तो नहीं और वो क्या हैं और आपको क्या दे सकते हैं, तुम अगर अज्र चाहो.

(३९) और उसका फ़ज़्ल आप पर बहुत बड़ा और जो नेअमतें उसने आपको अता फ़रमाई वो बहुतात से और उत्तम, तो आपको उनकी क्या चिन्ता. फिर जब वो आपके गुणों और चमत्कारों से वाक़िफ़ भी हैं, क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार भी उनकी निगाहों के सामने है और आप उनसे हिदायत और नसीहत का कोई बदला भी तलब नहीं करते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या मजबूरी रही.

(४०) तो उनपर लाज़िम है कि आपकी दावत क़ुबूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों.

(४१) यानी सच्चे दीन से.

تَتَّقُونَ ۝ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ
قُلْ فَأَنّٰى تُسْحَرُونَ ۝ بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ
لَكٰذِبُونَ ۝ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهُ
مِنْ إِلٰهٍ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ قُلْ رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي
مَا يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ۝
وَإِنَّا عَلٰى أَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُونَ ۝ اِدْفَعْ بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَ
قُلْ رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِينِ ۝ وَأَعُوذُ
بِكَ رَبِّ أَنْ يَّحْضُرُونِ ۝ حَتّٰى إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ

منزل ٤

तुम फ़रमओ फिर क्यों नहीं डरते[११] ﴾८७﴿ तुम फ़रमाओ किस के हाथ है हर चीज़ का क़ाबू[१२] और वह पनाह देता है और उसके ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें इल्म हो[१३] ﴾८८﴿ अब कहेंगे यह अल्लाह ही की शान है, तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के धोखे में पड़े हो[१४] ﴾८९﴿ बल्कि हम उनके पास सच्चाई लाए[१५] और वो बेशक झूटे हैं[१६] ﴾९०﴿ अल्लाह ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया[१७] और न उसके साथ कोई दूसरा ख़ुदा[१८] यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़लूक़ ले जाता[१९] और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअल्ली (महानता) चाहता[२०] पाकी है अल्लाह को इन बातों से जो ये बनाते है[२१] ﴾९१﴿ जानने वाला हर छुपे और ज़ाहिर का तो उसे बलन्दी है उनके शिर्क से ﴾९२﴿

छटा रूकू

तुम अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए[१] जो उन्हें वादा दिया जाता है ﴾९३﴿ तो ऐ मेरे रब मुझे इन ज़ालिमों के साथ न करना[२] ﴾९४﴿ और बेशक हम क़ादिर (सक्षम) हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वादा दे रहे हैं[३] ﴾९५﴿ सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़ा करो[४] हम ख़ूब जानते हैं जो बातें ये बनाते हैं[५] ﴾९६﴿ और तुम अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शैतानों के वसवसों से[६] ﴾९७﴿ और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि वो मेरे पास आएं ﴾९८﴿ यहां तक कि जब उनमें किसी को मौत आए[७] तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये[८] ﴾९९﴿ शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उसमें जो छोड़ आया हूँ[९]

(४२) सात साल के दुष्काल की.

(४३) यानी अपने कुफ़्र और दुश्मनी और सरकशी की तरफ़ लौट जाएंगे और यह चापलूसी जाती रहेगी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ईमान वालों की दुश्मनी और घमण्ड जो उनका पहला तरीक़ा था वही अपना लेंगे. जब क़ुरैश सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से सात साल के दुष्काल में जकड़े गए और हालत बहुत ख़राब हो गई तो अबू सुफ़ियान उनकी तरफ़ से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़याल में सारे जगत के लिये रहमत बना कर नहीं भेजे गए. आपने फ़रमाया, बेशक. तो अबू सुफ़ियान ने कहा कि बड़ों को तो आपने बद्र में क़त्ल कर डाला, औलाद जो रही वह आपकी बद दुआ से इस हालत को पहुंची कि दुष्काल की मुसीबत में गिरफ़्तार हुई, भुखमरी से तंग आगई, लोग भूख की बेताबी से हड्डियाँ चाब गए, मुर्दार तक खा गए हैं. मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूँ और कराबत की, आप अल्लाह से दुआ कीजिये कि हम से दुष्काल दूर फ़रमाए. हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई और उन्होंने इस बला से छुटकारा पाया. इस घटना के बारे में ये आयतें उतरीं.

(४४) दुष्काल के या क़त्ल के.

(४५) बल्कि अपनी हटधर्मी और सरकशी पर हैं .

(४६) इस अज़ाब से या दुष्काल मुराद है जैसा कि ऊपर की रिवायत में आया या बद्र के दिन का क़त्ल. यह इस क़ौल की बुनियाद पर है कि दुष्काल बद्र से पहले हुआ. और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि इस सख़्त अज़ाब से मौत मुराद है. कुछ ने कहा कि क़यामत.

सूरए मूमिनून - पाँचवां रूकू

(१) ताकि सुनो और देखो और समझो और दीन और दुनिया का मुनाफ़ा हासिल करो.

(२) कि तुम ने उन नेअमतों की क़द्र न जानी और उनसे फ़ायदा न उठाया और कानों, आँखों और दिलों से अल्लाह की आयतों के सुनने, देखने, समझने और अल्लाह को जानने और उसका हक़ पहचान कर शुक्रगुज़ार बनने का नफ़ा न उठाया.

(३) क़यामत के दिन.
(४) उनमें से हर एक का दूसरे के बाद आना और अंधेरे और उजाले और कमी बेशी में हर एक का दूसरे से विभिन्न होना ये सब क़ुदरत के निशान हैं.
(५) कि उनसे नसीहत पकड़ो और उनमें ख़ुदा की क़ुदरत देख कर मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को स्वीकार करो और ईमान लाओ.
(६) यानी उनसे पहले काफ़िर.
(७) जिनकी कुछ भी हक़ीक़त नहीं. काफ़िरों के इस कथन का रद फ़रमाने और उनपर हुज्जत क़ायम फ़रमाने के लिये अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फ़रमाया.
(८) उसके ख़ालिक़ और मालिक को तो बताओ.
(९) क्योंकि इसके सिवा कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिक अल्लाह तआला की ख़ालिक़ीयत को मानते भी हैं. जब वो यह जवाब दें.
(१०) कि जिसने ज़मीन को और उसकी सृष्टि को शुरू में पैदा फ़रमाया, वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.
(११) उसके अलावा दूसरे को पूजने और शिर्क करने से और उसके मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से.
(१२) और हर चीज़ पर हक़ीक़ी क़ुदरत और इख़्तियार किस का है.
(१३) तो जवाब दो.
(१४) यानी किस शैतानी धोखे में हो कि तौहीद और फ़रमाँबरदारी को छोड़कर सच्चाई को झूट समझ रहे हो. जब तुम मानते हो कि हक़ीक़ी क़ुदरत उसी की है और उसके ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता, तो दूसरे की इबादत बिल्कुल बेकार है.
(१५) कि अल्लाह के न औलाद हो सकती है, न उसका शरीक. ये दोनों बातें मुहाल है.
(१६) जो उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.
(१७) वह इस से पाक है, क्योंकि आकार और जिन्स से पाक है और औलाद वही हो सकती है जो एक जिन्स हो.
(१८) जो ख़ुदा होने में शरीक हो.
(१९) और उसको दूसरे के क़ब्ज़े में न छोड़ता.
(२०) और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्योंकि टक्कर की हुकूमतों में यही होता है. इससे मालूम हुआ कि दो ख़ुदा होना बातिल है, ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसके तहत और क़ब्ज़े में है.
(२१) कि उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.

सूरए मूमिनून - छटा रूकू

(१) वह अज़ाब.
(२) और उनका क़रीन और साथी न बनाना. यह दुआ तवाज़ो और बन्दगी के इज़हार के तरीक़े पर है, जब कि मालूम है कि अल्लाह तआला आपको उनका साथी न करेगा. इसी तरह मअसूम नबी इस्तिग़फ़ार किया करते हैं. जबकि उन्हें मोक्ष और अल्लाह की मेहरबानी का यक़ीनी इल्म होता है. यह सब विनम्रता और बन्दगी का इज़्हार है.
(३) यह जवाब है उन काफ़िरों का जो अज़ाब का इन्कार करते और उसकी हंसी उड़ाते थे. उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआला इस वादे के पूरा करने में सक्षम है. फिर इन्कार की वजह और हंसी बनाने का कारण क्या? और अज़ाब में जो विलम्ब हो रहा है उसमें अल्लाह की हिकमतें हैं कि उनमें से जो ईमान वाले हैं वो ईमान ले आएं और जिनकी नसलें ईमान लाने वाली हैं, उन से वो नस्लें पैदा हो लें.
(४) इस वाक्य के मानी बहुत फैले हुए हैं. इसके ये मानी भी हैं कि तौहीद जो आला बेहतरी है उससे शिर्क की बुराई को दफ़ा फ़रमाए, और यह भी कि फ़रमाँबरदारी और परहेज़गारी को रिवाज देकर गुनाह और बुराई दफ़ा कीजिये, और यह भी कि अपने सदव्यवहार से ख़ताकारों पर इस तरह मेहरबानी और रहमत फ़रमाए जिससे दीन में सुस्ती न हो.
(५) अल्लाह और उसके रसूल की शान में, तो हम उसका बदला देंगे.
(६) जिनसे वो लोगों को धोखा देकर बुराई और पापों में जकड़ते हैं.
(७) यानी काफ़िर मौत के वक़्त तक तो अपने कुफ़्र और सरकशी और ख़ुदा और रसूल के झुटलाने और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर अड़ा रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उसको जहन्नम में उसका जो स्थान है दिखाया जाता है और जन्नत का वह स्थान भी दिखाया जाता है जो ईमान लाने की सूरत में उसे मिल सकता था.
(८) दुनिया की तरफ़.
(९) और नेक कर्म करके अपने गुनाहों का प्रायश्चित करूं . इसपर उसको फ़रमाया जाएगा.
(१०) हसरत और शर्मिन्दगी से, यह होने वाली नहीं और इसका कुछ फ़ायदा नहीं.

كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ
بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (١٠٠) فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ
فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ (١٠١) فَمَنْ
ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (١٠٢) وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ (١٠٣) تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ (١٠٤) اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ (١٠٥) قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ
عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ (١٠٦) رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا
مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ (١٠٧) قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا
وَلَا تُكَلِّمُوْنِ (١٠٨) اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
الرّٰحِمِيْنَ (١٠٩) فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ

منزل ٤

हिश्त! यह तो एक बात है जो वह अपने मुंह से कहता है[१०] और उनके आगे एक आड़ है[११] उस दिन तक जिसमें उठाए जाएंगे﴾१००﴿ तो जब सूर फूंका जाएगा[१२] तो न उनमें रिश्ते रहेंगे[१३] और न एक दूसरे की बात पूछे[१४]﴾१०१﴿ तो जिनकी तौलें[१५] भारी हो लीं वही मुराद को पहुंचे﴾१०२﴿ और जिनकी तौलें हलकी पड़ीं[१६] वही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे﴾१०३﴿ उनके मुंह पर आग लपट मारेगी और वो उसमें मुंह चिड़ाए होंगे[१७]﴾१०४﴿ क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं[१८] तो तुम उन्हें झुटलाते थे﴾१०५﴿ कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे﴾१०६﴿ ऐ हमारे रब हमको दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं[१९]﴾१०७﴿ रब फ़रमाएगा दुत्कारे पड़े रहो इसमें और मुझसे बात न करो[२०]﴾१०८﴿ बेशक मेरे बन्दों का एक गिरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है﴾१०९﴿ तो तुमने उन्हें ठट्ठा बना

(११) जो उन्हें दुनिया की तरफ़ वापस होने से रोकती है और वह मौत है. (ख़ाज़िन) कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि बरज़ख़ मौत के वक़्त से ज़िन्दा उठाए जाने तक की मुद्दत को कहते हैं.

(१२) पहली बार, जिसे नफ़ख़ए ऊला (सूर का पहली बार फूँका जाना) कहते हैं, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है.

(१३) जिन पर दुनिया में गर्व किया करते थे और आपस के ख़ून और ख़ानदान के तअल्लुक़ात टूट जाएंगे और रिश्ते की महब्बतें बाक़ी न रहेंगी और यह हाल होगा कि आदमी अपने भाई और माँ बाप और बीबी और बेटों से भागेगा.

(१४) जैसे कि दुनिया में पूछते थे, क्योंकि हर एक अपने ही हाल में जकड़ा होगा. फिर दूसरी बार सूर फूँका जाएगा और हिसाब के बाद लोग एक दूसरे का हाल पूछेंगे.

(१५) नेक कर्म और अच्छी बातों से.

(१६) नेकियाँ न होने के कारण, और वो काफ़िर हैं.

(१७) तिरमिज़ी की हदीस है कि आग उनको भून डालेगी और ऊपर का होंट सुकड़ कर आधे सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा, दांत ख़ुले रह जाएंगे और उनसे फ़रमाया जाएगा.

(१८) दुनिया में.

(१९) तिरमिज़ी की हदीस है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे. इसके बाद वह कहेगा कि तुम जहन्नम में ही पड़े रहोगे. फिर वो रब को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ हमारे रब हमें दोज़ख़ से निकाल, और यह पुकार उनकी दुनिया से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी. इसके बाद उन्हें यह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है. (ख़ाज़िन) और दुनिया की उम्र कितनी है इसमें कई क़ौल है. कुछ ने कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस है, कुछ ने कहा, बारह हज़ार बरस, कुछ ने कहा, तीन लाख साठ बरस. अस्ल मुद्दत अल्लाह तआला को ही मालूम है. (तज़किरह क़ुर्तबी)

(२०) अब उनकी उम्मीदें टूट जाएंगी और यह जहन्नम वालों का अन्तिम कलाम होगा, फिर इसके बाद उन्हें कलाम करना नसीब न होगा, रोते, चीख़ते, डकराते, भौंकते रहेंगे.

(२१) ये आयतें क़ुरैश के काफ़िरों के बारे में उतरीं जो हज़रत बिलाल और हज़रत अम्मार और हज़रत सुहैब और हज़रत ख़ब्बाब वग़ैरह रदियल्लाहो अन्हुम, ग़रीब सहाबा से ठटोल करते थे.

(२२) यानी उनके साथ ठटोल करने में इतने लीन हुए कि -----

(२३) अल्लाह तआला ने काफ़िरों से.

(२४) यानी दुनिया में, और क़ब्र में.

(२५) यह जवाब इस वजह से देंगे कि उस दिन की दहशत और अज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुनिया में रहने की अवधि याद न

ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

اٰيَاتُهَا ٦٤ (٢٤) سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٢) رُكُوْعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ

लिया[२१] यहाँ तक कि उन्हें बनाने के शग़ल(काम) में[२२] मेरी याद भूल गए और तुम उनसे हंसा करते﴾११०﴿ बेशक आज मैं ने उनके सब्र का उन्हें यह बदला दिया कि वही कामयाब हैं﴾१११﴿ फ़रमाया[२३] तुम ज़मीन में कितना ठहरे[२४] बरसों की गिनती से﴾११२﴿ बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा[२५] तो गिनती वालों से दर्याफ़्त फ़रमा[२६]﴾११३﴿ फ़रमाया तुम न ठहरे मगर थोड़ा[२७] अगर तुम्हें इल्म होता﴾११४﴿ तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फ़िरना नहीं[२८]﴾११५﴿ तो बहुत बलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह, कोई मअबूद नहीं सिवा उसके, इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक﴾११६﴿ और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिस की उसके पास कोई सनद(प्रमाण) नहीं[२९] तो उसका हिसाब उसके रब के यहाँ है बेशक काफ़िरों का छुटकारा नहीं﴾११७﴿ और तुम अर्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे[३०] और रहम फ़रमा और तू सबसे बरतर रहम करने वाला﴾११८﴿

२४-सूरए नूर

सूरए नूर मदीना में उतरी, इसमें ६४ आयतें, ९ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा, इसीलिये कहेंगे.

(२६) यानी उन फ़रिश्तों से, जिन को तूने बन्दों की उम्रें और उनके कर्म लिखने पर नियुक्त किया. इसपर अल्लाह तआला ने.

(२७) आख़िरत की अपेक्षा.

(२८) और आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं बल्कि तुम्हें इबादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी तरफ़ लौट कर आओ तो तुम्हारे कर्मों का बदला दें.

(२९) यानी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा मात्र बातिल और प्रमाण रहित है.

(३०) ईमान वालों को.

२४ - सूरए नूर - पहला रूकू

(१) सूरए नूर मदीने में उतरी, इसमें नौ रूकू, चौंसट आयतें हैं.

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ
وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ
فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلزَّانِيْ
لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ
اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ
شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ
شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ
شُهَدَآءُ اِلَّاۤ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ
بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

यह एक सूरत है कि हमने उतारी और हमने इसके एहकाम फ़र्ज़ किये[२] और हमनें इसमें रौशन आयतें नाज़िल फ़रमाई कि तुम ध्यान करो﴿१﴾ जो औरत बदकार हो और जो मर्द तो उनमें हर एक को सौ कोड़े लगाओ[३] और तुम्हें उनपर तरस न आए अल्लाह के दीन में[४] अगर तुम ईमान लाते हो अल्लाह और पिछले दिन पर, और चाहिये कि उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह हाज़िर हो[५]﴿२﴾ बदकार मर्द निकाह न करे मगर बदकार औरत या शिर्क वाली से और बदकार औरत से निकाह न करे मगर बदकार मर्द या मुश्रिक[६] और यह काम[७] ईमान वालों पर हराम है[८]﴿३﴾ और जो पारसा औरतों को ऐब(लांछन) लगाएं, फिर चार गवाह मुआयना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो[९] और वही फ़ासिक़ हैं﴿४﴾ मगर जो इसके बाद तौबह कर लें और संवर जाएं[१०] तो बेशक अल्लाह बख़्शन वाला मेहरबान है﴿५﴾ और वो जो अपनी औरतों को ऐब लगाएं[११] और उनके पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की गवाही यह है कि चार बार गवाही दे अल्लाह के नाम से कि वह सच्चा है[१२]﴿६﴾ और पाँचवें यह कि अल्लाह की

(२) और उनपर अमल करना बन्दों पर अनिवार्य किया.

(३) यह सम्बोधन शासकों को है कि जिस मर्द या औरत से ज़िना सरज़द हो उसकी सज़ा यह है कि उसके सौ कोड़े लगाओ. शादी शुदा आदमी अगर ज़िना करे तो उसे रजम यानी संगसार किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आदेश पर माइज़ रदियल्लाहो अन्हो को संगसार किया गया. अगर ज़िना करने वाला आज़ाद न हो, या मुसलमान न हो, या आक़िल बालिग़ न हो, या उसने कभी अपनी बीबी के साथ संभोग न किया हो, या जिसके साथ किया हो उसके साथ ग़लत तरीक़े से निकाह हुआ हो, तो इन सब के लिये कोड़े लगाने का हुक्म है. मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाए और उसके सारे कपड़े उतार दिये जाएं, सिवाय तहबंद के और उसके सारे शरीर पर कोड़े लगाए जाएं, सर और चेहरा और लिंग की जगह छोड़ कर. कोड़े इस तरह लगाए जाएं कि उनकी मार गोश्त तक न पहुंचे और कोड़ा औसत दर्जे का हो. औरत को कोड़े लगाने के समय खड़ा न किया जाए, न उसके कपड़े उतारे जाएं. अलबत्ता अगर पोस्तीन या रूईदार कपड़े पहने हो तो उतार दिये जाएं. यह हुक्म आज़ाद मर्द और औरत के लिये है. दासी और ग़ुलाम की सज़ा इसकी आधी यानी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरए निसा में बयान हो चुका. ज़िना का सुबूत या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार बार इक़रार कर लेने से. फिर भी इमाम या क़ाज़ी बार बार दर्याफ़्त करेगा और पूछेगा कि ज़िना से क्या मुराद है, कहाँ किया, किससे किया, कब किया. अगर इन सबको बयान कर दिया तो ज़िना साबित होगा, वरना नहीं. और गवाहों को साफ़ साफ़ अपना देखना बयान करना होगा, इसके बिना सुबूत न होगा. लिवातत याने लौंडेबाज़ी ज़िना में दाख़िल नहीं है इसलिये इस काम से हद वाजिब नहीं होती लेकिन गुनाह वाजिब होता है और इस गुनाह में सहाबा के चन्द क़ौल आए हैं : आग में जला देना, डुबो देना, ऊंचाई से गिराना और ऊपर से पत्थर बरसाना. बुरा काम करने वाले और जिसके साथ किया जाए, दोनों के लिये एक ही हुक्म है. (तफ़सीरे अहमदी)

(४) यानी सज़ाओं को पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत और डटे रहो.

(५) ताकि सबक़ हासिल हो.

(६) क्योंकि बुरे की रुचि बुरे ही की तरफ़ होती है. नेकों को बुरे की तरफ़ रुचि नहीं होती. मुहाजिरों में कुछ बिल्कुल ग़रीब थे, न उनके पास कुछ माल था, न उनका कोई अज़ीज़ क़रीब था, और बदकार मुश्रिक औरतें दौलतमन्द और मालदार थीं . यह देखकर किसी मुहाजिर को ख़याल आया कि अगर उनसे निकाह कर लिया जाए तो उनकी दौलत काम में आएगी . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उन्हों ने इसकी इजाज़त चाही इसपर यह आयत उतरी और उन्हें इससे रोक दिया गया.

(७) यानी बदकारों से निकाह करना.

(८) शुरू इस्लाम में ज़िना करने वाली औरत से निकाह हराम था. बाद में आयत *''वनकिहुल अयामा मिन्कुम''* से यह हुक्म मन्सूख़

اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا
الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٨ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ
كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ
رَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ ع اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ
بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ بَلْ هُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ
وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١
لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ
خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝١٢ لَوْلَا جَآءُوْ
عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ
فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٣ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ

लअनत हो उसपर अगर झूटा हो(७) और औरत से यूं सज़ा टल जाएगी कि वह अल्लाह का नाम लेकर चार बार गवाही दे कि मर्द झूटा है[१३](८) और पाँचवीं यूं कि औरत पर ग़ज़ब अल्लाह का अगर मर्द सच्चा हो[१४](९) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तौबह क़ुबूल फ़रमाता, हिकमत वाला है(१०)

दूसरा रूकू

तो तुम्हारा पर्दा खोल देता बेशक वह कि यह बड़ा बोहतान (आरोप) लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअत है[1] उसे अपने लिये बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये बेहतर है[2] उनमें हर शख़्स के लिये वह गुनाह है जो उसने कमाया[3] और उनमें वह जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया[4] उसके लिये बड़ा अज़ाब है[5](११) क्यों न हुआ जब तुमने उसे सुनाया कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता[6] और कहते यह खुला बोहतान है[7](१२) उस पर चार गवाह क्यों न लाए तो जब गवाह न लाए तो वही अल्लाह के नज़दीक झूटे हैं(१३) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत

यानी स्थगित हो गया.

(९) इस आयत से कुछ बातें साबित हुईं (१) जो व्यक्ति किसी नेक मर्द या औरत पर ज़िना का आरोप लगाए, उसपर चार आँखों देखे गवाह पेश न कर सके तो उसपर हद वाजिब हो जाती है यानी अस्सी कोड़े. आयत में शब्द "मोहसिनात" यानी पारसा नेक औरतों विशेष घटना के कारण आया या इसलिये कि औरतों को आरोप लगाना आम हो गया है. (२) और ऐसे लोग जो ज़िना के आरोप में सज़ा पाएं और उनपर हद जारी हो चुकी हो, गवाही देने के योग्य नहीं रह जाते, कभी उनकी गवाही क़ुबूल नहीं की जाती. पारसा से मुराद वो हैं जो मुसलमान होशमन्द यानी आक़िल बालिग़, आज़ाद और ज़िना से पाक हों. (३) ज़िना की शहादत के लिये कम से कम चार गवाह होने चाहियें. (४) जिसपर आरोप लगाया गया है अगर वह दावा न करे तो क़ाज़ी पर हद क़ायम करना लाज़िम नहीं. (५) दावा करने का हक़ उसी को है जिसपर आरोप लगाया गया हो, अगर वह ज़िन्दा हो और अगर वह मर गया हो तो उसके बेटे पोते को भी है. (६) ग़ुलाम अपने मालिक पर और बेटा अपने बाप पर क़ज़्फ़ यानी अपनी माँ पर ज़िना का आरोप लगाने का दावा नहीं कर सकता. (७) क़ज़्फ़ के अलफ़ाज़ ये हैं कि वह खुल्लमखुल्ला किसी को ज़ानी कहे या यह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उसके बाप का नाम लेकर कहे कि तू उसका बेटा नहीं है या उसको ज़िना करने वाली औरत का बेटा कहकर पुकारे और हो उसकी माँ पारसा और नेक बीबी, तो ऐसा व्यक्ति क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत यानी आरोप की हद आएगी. (८) अगर ग़ैर मोहसिन को ज़िना का आरोप लगाया, जैसे किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे व्यक्ति को जिसका कभी ज़िना करना साबित हो तो उस पर क़ज़्फ़ की हद क़ायम न होगी बल्कि उसपर तअज़ीर (सज़ा) वाजिब होगी और यह तअज़ीर (सज़ा) शरई हाकिम के हुक्म के मुताबिक़ तीन से उन्तालीस तक कोड़े लगाना है. इसी तरह अगर किसी शख़्स ने ज़िना के सिवा और किसी बुरे काम की तोहमत लगाई और पारसा और नेक मुसलमान को ऐ फ़ासिक़, ऐ काफ़िर, ऐ ख़बीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुख़न्नस, ऐ बेईमान, ऐ लौंडेबाज़, ऐ ज़िन्दीक़, ऐ दय्यूस, ऐ शराबी, ऐ सूदख़ोर, ऐ बदकार औरत के बच्चे, ऐ हरामज़ादे, इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहे तो भी उसपर तअज़ीर वाजिब होगी. (९) इमाम यानी शरई हाकिम को और उस शख़्स को, जिसे तोहमत लगाई गई हो, सुबूत से पहले माफ़ करने का हक़ है. (१०) अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि ग़ुलाम हो तो उसके चालीस कोड़े लगाए जाएंगे. (११) तोहमत लगाने के जुर्म में जिसको हद लगाई हो उसकी गवाही किसी मामले में भरोसे की नहीं चाहे वह तौबह करे. लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबह करने और उसके आदिल होने की सूरत में उसका क़ौल क़ुबूल कर लिया जाएगा क्योंकि यह वास्तव में शहादत नहीं है इसीलिये इसमें शहादत शब्द और शहादत का निसाब भी शर्त नहीं.

(१०) अपने अहवाल को दुरूस्त कर लें.

(११) ज़िना का.

(१२) औरत पर ज़िना का आरोप लगाने में.
(१३) उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में.
(१४) उसको लिआन कहते हैं. जब मर्द अपनी बीवी पर ज़िना का आरोप लगाए और अगर मर्द व औरत दोनों शहादत यानी गवाही के योग्य हों और औरत उसपर दावा करे तो मर्द पर लिआन वाजिब हो जाता है. अगर वह लिआन से इनकार करदे तो उसको उस वक़्त तक क़ैद रखा जाएगा जब तक वह लिआन करे या अपने झूट का इक़रारी हो. अगर झूट का इक़रार करे तो उसको हदे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी जिसका बयान ऊपर हो चुका है. और अगर लिआन करना चाहे तो उसको चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहना होगा कि वह उस औरत पर ज़िना का आरोप लगाने में सच्चा है और पांचवीं बार यह कहना होगा कि अल्लाह की लअनत मुझपर अगर मैं यह आरोप लगाने में झूटा हूँ. इतना करने के बाद मर्द पर से क़ज़्फ़ की हद साक़ित हो जाएगी और औरत पर लिआन वाजिब होगा. इनकार करेगी तो क़ैद की जाएगी यहाँ तक कि लिआन मन्ज़ूर करे या शौहर के इल्ज़ाम लगाने की पुष्टि करे. अगर पुष्टि की तो औरत पर ज़िना की हद लगाई जाएगी और अगर लिआन करना चाहे तो उसको चार बार अल्लाह की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द उसपर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं बार यह कहना होगा कि अगर मर्द उस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो . इतना कहने के बाद औरत से ज़िना की हद उठ जाएगी और लिआन के बाद क़ाज़ी के तफ़रीक़ करने से अलाहदगी वाक़े होगी और यह अलाहदगी तलाक़े बाइन होगी. और अगर मर्द पहले शहादत से न हो जैसे कि ग़ुलाम हो या काफ़िर हो या उसपर क़ज़्फ़ की हद लग चुकी हो तो लिआन न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर क़ज़्फ़ की हद लगाई जाएगी. और अगर मर्द पहले शहादत में से हो और औरत में यह योग्यता न हो इस तरह कि वह बाँदी हो या काफ़िर या उस पर क़ज़्फ़ की हद लग चुकी हो या बच्ची हो या पागल हो या ज़िना करने वाली हो, उस सूरत में मर्द पर न हद होगी न लिआन. यह आयत एक सहाबी के हक़ में उतरी जिन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औरत को ज़िना में जकड़ा देखे तो क्या करे. न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुर्सत है और न बग़ैर गवाही के वह यह बात कह सकता है क्योंकि उसे क़ज़्फ़ की हद का अन्देशा है. इसपर यह आयत उतरी, और लिआन का हुक्म दिया गया.

सूरए नूर - दूसरा रूकू

(१) बड़े बोहतान से मुराद हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा पर तोहमत लगाना है. सन पांच हिजरी में ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला मदीने के क़रीब एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मूमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं. वहाँ आपका हार टूट गया, उसकी तलाश में लग गईं. उधर क़ाफ़िला चल पड़ा और आपकी मेहमिल शरीफ़ (डोली) ऊंट पर कस दी गई और लोगों को यही ख़याल रहा कि उम्मुल-मूमिनीन इसी में हैं. क़ाफ़िला चल दिया. आप आकर क़ाफ़िले की जगह बैठ गईं इस ख़याल से कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा. क़ाफ़िले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिये एक आदमी रहा करता था. उस मौक़े पर हज़रत सफ़वान इस काम पर थे. जब वह आए और उन्होंने आपको देखा तो ऊंची आवाज़ से *इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन* पुकारा. आपने कपड़े से पर्दा कर लिया. उन्होंने अपनी ऊंटनी बिठाई, आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुंचीं. मुनाफ़िक़ों ने अपने दिल की कालिख से ग़लत अफ़वाहें फैलाईं और आपकी शान में बुरा भला कहना शुरू किया. कुछ मुसलमान भी उनके बहकावे में आ गए और उनकी ज़बान से भी अपशब्द निकले. उम्मुल मूमिनिन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं. इस ज़माने में उन्हें ख़बर न हुई कि मुनाफ़िक़ उनकी निस्बत क्या बक रहे हैं. एक दिन उम्मे मिस्तह से उन्हें यह ख़बर मालूम हुई और इससे आपकी बीमारी और बढ़ गई. इस दुख में इस तरह रोईं कि आपके आँसू न थमते थे और न एक पल के लिये नींद आती थी. इस हालत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर वही आई और हज़रत उम्मुल मूमिनीन की पाकी में ये आयतें उतरीं और आपकी इज़्ज़त और दर्जा अल्लाह तआला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआन शरीफ़ की बहुत सी आयतों में आपकी बुज़ुर्गी और पाकी बयान फ़रमाई गई. इस दौरान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मिम्बर पर से क़सम के साथ फ़रमा दिया था कि मुझे अपनी बीबी की पाकी और ख़ूबी यक़ीन से मालूम है. तो जिस शख़्स ने उनके बारे में बुरा कहा है उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअज़िरत पेश कर सकता है. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ यक़ीनन झूठे हैं, उम्मुल मूमिनीन यक़ीनन पाक हैं. अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पाक शरीर को मक्खी के बैठने से मेहफ़ूज़ रखा कि वह गन्दगी पर बैठती है. कैसे हो सकता है कि आपको बुरी औरत की सोहबत से मेहफ़ूज़ न रखे. हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने भी इसी तरह हज़रत सिद्दीक़ा की पाकी और तहारत बयान की और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपका साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि उस साए पर किसी का क़दम न पड़े तो जो रब आपके साए को मेहफ़ूज़ रखता है, किस तरह मुमकिन है कि वह आपकी बीबी को मेहफ़ूज़ न फ़रमाए. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि एक जुएं का ख़ून लगने से रब ने आपको जूते उतार देने का हुक्म दिया, जो रब आपके जूतों की इतनी सी नापाकी गवारा न फ़रमाए, मुमकिन नहीं कि वह आपकी बीबी की नापाकी गवारा करे. इस तरह बहुत से सहाबा और बहुत सी सहाबियात ने क़स्में खाईं. आयत उतरने से पहले ही उम्मुल मूमिनीन की तरफ़ से दिल संतुष्ट थे. आयत उतरने के बाद उनकी इज़्ज़त और बुज़ुर्गी और बढ़ गई. तो बुरा कहने वालों की बुराई अल्लाह और उसके रसूल और सहाबा के नज़्दीक बातिल है और बुरा कहने वालों के लिये सख़्त मुसीबत है.
(२) कि अल्लाह तआला तुम्हें उस पर जज़ा देगा और हज़रत उम्मुल मूमिनीन की शान और उनकी पाकीज़गी ज़ाहिर फ़रमाएगा.

اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَ
تَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ
هَيِّنًا ۖ وَّ هُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ
قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا
بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ
فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ

منزل ٤

तुम पर दुनिया और आख़िरत में न होती[८] तो जिस चर्चे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अज़ाब पहुंचता(१४) जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुनकर लाते थे और अपने मुंह से वह निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म नहीं और उसे सहल समझते थे[९] और वह अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात है[१०](१५) और क्यों न हुआ जब तुमने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहें[११] इलाही पाकी है तुझे[१२] यह बड़ा बोहतान है(१६) अल्लाह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि अब कभी ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो(१७) और अल्लाह तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है(१८) वो लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चर्चा फैले उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है दुनिया[१३] और आख़िरत में[१४] और अल्लाह जानता है[१५] और तुम नहीं जानते(१९) और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान रहमत वाला है तो तुम इसका मज़ा चखते[१६](२०)

तीसरा रूकू

ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शैतान के क़दमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा[१] और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न

चुनांचे इस सिलसिले में उसने अठ्ठारह आयतें उतारीं.

(३) यानी उसके कर्मों के हिसाब से, कि किसी ने तूफ़ान उठाया, किसी ने आरोप लगाने वाले की ज़बानी हिमायत की, कोई हंस दिया, किसी ने ख़ामोशी के साथ सुन लिया . जिसने जो किया, उसका बदला पाएगा.

(४) कि अपने दिल से यह तूफ़ान घढ़ा और इसको मशहूर करता फिरा और वह अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़िक़ है.

(५) आख़िरत में. रिवायत है कि उन बोहतान लगाने वालों पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से हद क़ायम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए.

(६) क्योंकि मुसलमान को यह हुक्म है कि मुसलमान के साथ नेक गुमान करे और बुरा ख़याल करना मना है. कुछ गुमराह बेबाक यह कह गुज़रते हैं कि सैयदे आलम को मआज़ल्लाह इस मामले में बदगुमानी पैदा हो गई थी. ऐसे लोग आरोपी और झूटे हैं और रसूल की शान में ऐसी बात कहते हैं जो ईमान वालों के हक़ में भी लायक़ नहीं. अल्लाह तआला मूमिनीन से फ़रमाता है कि तुमने नेक गुमान क्यों न किया. तो कैसे संभव था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बदगुमानी करते और हुज़ूर की निस्बत बदगुमानी का शब्द कहना दिल का कालापन है, ख़ास कर ऐसी हालत में जबकि बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हुज़ूर ने क़सम के साथ फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि मेरे घर वाले पाक हैं, जैसा कि ऊपर बयान हो चुका. इस से मालूम हुआ कि मुसलमान पर बदगुमानी करना जायज़ नहीं और जब किसी नेक शख़्स पर आरोप लगाया जाय तो बिना सुबूत दूसरे मुसलमान को उसकी हिमायत और पुष्टि करना ठीक नहीं.

(७) बिल्कुल झूट है, बे हक़ीक़त है.

(८) और तुम पर मेहरबानी मन्ज़ूर न होती, जिसमें से तौबह के लिये मोहलत देना भी है, और आख़िरत में माफ़ फ़रमाना भी.

(९) और ख़याल करते थे कि उसमें बड़ा गुनाह नहीं.

(१०) महा पाप है.

(११) यह हमारे लिये ठीक नहीं क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता.

(१२) उससे कि तेरे नबी की बीबी को बुराई और नापाकी पहुंचे. यह संभव ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके, अगरचे उसका कुफ़्र में जकड़ा जाना संभव है क्योंकि नबी काफ़िरों की तरफ़ भेजे जाते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ काफ़िरों के नज़दीक भी नफ़रत के क़ाबिल हो उससे वो पाक हों और ज़ाहिर है कि औरत की बदकारी उनके नज़दीक नफ़रत के क़ाबिल है.

أَحَدٍ أَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝ وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ
يُّؤْتُوْٓا أُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۗ أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ
وَأَيْدِيْهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ يَوْمَئِذٍ
يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ أَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ
لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
أُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۖ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ

हो सकता[२] हाँ अल्लाह सुथरा कर देता है जिसे चाहे[३] और अल्लाह सुनता जानता है(२१) और क़सम न खाएं वो जो तुम में फ़ज़ीलत(बुज़ुर्गी) वाले[४] और गुंजायश(सामर्थ्य) वाले हैं[५] क़राबत वालों(रिश्तेदारों) और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि माफ़ करें और दरगुज़रें, क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़्शिश करे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[६](२२) बेशक वो जो ऐब(दोष) लगाते हैं अनजान[७] पारसा ईमान वालियों को[८] उनपर लअनत है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिये बड़ा अज़ाब है[९](२३) जिस दिन[१०] उनपर गवाही देंगी उनकी ज़बानें[११] और उनके हाथ और उनके पांव जो कुछ करते थे(२४) उस दिन अल्लाह उन्हें उनकी सच्ची सज़ा पूरी देगा[१२] और जान लेंगे कि अल्लाह ही खुला हुआ सत्य है[१३](२५) गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये,[१४] और सुथरियां सुथरों के लिये और सुथरे सुथरियों के लिये, वो[१५] पाक हैं उन बातों से जो यह[१६] कह रहे हैं, उनके लिये बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है[१७](२६)

चौथा रुकू

ऐ इमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ

(१३) यानी इस दुनिया में, और वह हद क़ायम करना है. चुनांचे इब्ने ऊबई और हस्सान और मिस्तह के हद लगाई गई. (मदारिक)
(१४) दोज़ख़, अगर बिना तौबह के मर जाएं.
(१५) दिलों के राज़ और बातिन के हालात.
(१६) और अल्लाह का अज़ाब तुम्हें मोहलत न देता.

सूरए नूर - तीसरा रुकू

(१) उसके वसवसों में न पड़ो और आरोप लगाने वालों की बातों पर कान न लगाओ.
(२) और अल्लाह तआला उसको तौबह और अच्छे कामों की तौफ़ीक़ न देता और मग़फ़िरत और माफ़ी न फ़रमाता.
(३) तौबह क़ुबूल फ़रमाकर.
(४) और इज़्ज़त वाले हैं दीन में.
(५) माल और दौलत में. यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. आपने क़सम खाई थी कि मिस्तह के साथ सुलूक न करेंगे और वह आपकी ख़ाला के बेटे थे. ग़रीब थे, मुहाजिर, बद्र वाले थे, आप ही उनका ख़र्चा उठाते थे. मगर चूंकि उम्मुल मूमिनीन पर आरोप लगाने वालों के साथ उन्हों ने हिमायत दिखाई थी इसलिये आपने यह क़सम खाई थी. इसपर यह आयत उतरी.
(६) जब यह आयत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पढ़ी तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने कहा, बेशक मेरी आरज़ू है कि अल्लाह मेरी मग़फ़िरत करे और मैं मिस्तह के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी बन्द न करूंगा. चुनांन्चे आपने उसको जारी फ़रमा दिया. इस आयत से मालूम हुआ कि जो व्यक्ति किसी काम पर क़सम खाए फिर मालूम हो कि उसका करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे. सही हदीस में यही आया है. इस आयत से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो की फ़ज़ीलत साबित हुई. इस से आपकी शान और बलन्द दर्जा ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआला ने आप को बुज़ुर्गी वाला फ़रमाया और ...
(७) औरतों को जो बदकारी और बुराई को जानती भी नहीं और बुरा ख़याल उनके दिल में भी नहीं गुज़रता और ...
(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीबियों के औसाफ़ और गुण हैं. एक क़ौल यह भी है कि इससे सारी नेक और ईमानदार औरतें मुराद हैं. उनके ऐब लगाने वालों पर अल्लाह

بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَاۤ
اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ
لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا
بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا
مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى
لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ
يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

जब तक इजाज़त न ले लो[१] और उनके साकिनों पर सलाम न कर लो,[२] यह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम ध्यान करो ﴿२७﴾ फिर अगर उनमें किसी को न पाओ[३] जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उनमें न जाओ[४] और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो[५] यह तुम्हारे लिये बहुत सुथरा है, अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है ﴿२८﴾ इसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत (निवास) के नहीं[६] और उनके बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो ﴿२९﴾ मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें[७] और अपनी शर्म गाहों की हिफ़ाज़त करें,[८] यह उनके लिये बहुत सुथरा है, बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है ﴿३०﴾ और मुसलमान औरतों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें[९] और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं[१०] मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर है और दोपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप[११] या शौहरों के बाप[१२] या अपने बेटे[१३] या शौहरों के बेटे[१४] या अपने भाई या अपने

तआला लअनत फ़रमाता है.

(९) यह अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़िक़ के बारे में हैं (ख़ाज़िन).

(१०) यानी क़यामत के दिन.

(११) ज़बानों का गवाही देना, तो उनके मुंहों पर मोहरें लगाए जाने से पहले होगा और उसके बाद मुंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी, जिससे ज़बानें बन्द हो जाएंगी और अंग बोलने लगेंगे और दुनिया में जो कर्म किये थे उनकी ख़बर देंगे जैसे कि आगे इरशाद है.

(१२) जिसके वो मुस्तहिक़ हैं.

(१३) यानी मौजूद, ज़ाहिर है उसी की क़ुदरत से हर चीज़ का वुजूद है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि मानी ये हैं कि काफ़िर दुनिया में अल्लाह तआला के वादों में शक करते थे. अल्लाह तआला आख़िरत में उन्हें उनके कर्मों का बदला देकर उन वादों का सच्चा होना ज़ाहिर फ़रमा देगा. क़ुरआन शरीफ़ में किसी गुनाह पर ऐसा क्रोध और तकरार और ताकीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई. इससे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुज़ुर्गी और दर्जे की बलन्दी ज़ाहिर होती है.

(१४) यानी बुरे के लिये बुरा लायक़ है. बुरी औरत बुरे मर्द के लिये और बुरे मर्द बुरी औरत के लिये. और बुरा आदमी बुरी बातों पर अड़ा होता है और बुरी बातें बुरे आदमी की आदत होती हैं.

(१५) यानी पाक मर्द और औरतें, जिन में से हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा और सफ़वान हैं.

(१६) आरोप लगाने वाले बुरे लोग.

(१७) यानी सुथरों और सुथरियों के लिये जन्नत में. इस आयत से हज़रत आयशा सिद्दिक़ा की भरपूर इज़्ज़त और बुज़ुर्गी साबित हुई कि वह पाक और साफ़ पैदा की गई हैं. क़ुरआन शरीफ़ में उनकी पाकी का बयान फ़रमाया गया है. उन्हें मग़फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वादा दिया गया. हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा को अल्लाह तआला ने बहुत से गुण अता फ़रमाए जो आपके लिये गर्व के क़ाबिल हैं. उनमें से कुछ ये हैं कि जिब्रील अलैहिस्सलाम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में एक हरीर पर आपकी तस्वीर लाए और अर्ज़ किया कि यह आपकी बीबी हैं. और यह कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपके सिवा किसी कुँवारी से निकाह न फ़रमाया. और यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात आपकी गोद में और आपकी नौबत के दिन हुई और आप ही का मुबारक हुजरा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आरामगाह और आपका पाक रौज़ा हुआ. और यह कि कभी कभी हुज़ूर पर ऐसी हालत में वही उतरी कि हज़रत सिद्दीक़ा आपके साथ लिहाफ़ में होतीं. और यह कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के प्यारे ख़लीफ़ा की बेटी

हैं . और यह कि आप पाक पैदा की गईं और आपसे मग़फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वादा फ़रमाया गया.

सूरए नूर - चौथा रूकू

(१) इस आयत से साबित हुआ कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का तरीक़ा यह भी है कि ऊंची आवाज़ से सुब्हानल्लाह या अलहम्दुलिल्लाह या अल्लाहो अकबर कहे या खकारे, जिससे मकान वालों को मालूम हो कि कोई आना चाहता है या यह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है. ग़ैर के घर से वह घर मुराद है जिसमें ग़ैर रहता हो चाहे उसका मालिक हो या न हो.

(२) ग़ैर के घर जाने वाले की अगर मकान वाले से पहले ही भेंट हो जाए तो पहले सलाम करे फिर इजाज़त चाहे, इस तरह कहे अस्सलामो अलैकुम, क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है. हदीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर पहल दो. हज़रत अब्दुल्लाह की क़िरअत भी इसी पर दलालत करती है. उनकी क़िरअत यूं है *"हत्ता तुसल्लिमू अला अहलिहा वतस्ताज़िनू"*. और यह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे. (मदारिक, कश्शाफ़, अहमदी) अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बेपर्दगी का अन्देशा हो तो दाएं या बाएं खड़े होकर इजाज़त तलब करे. हदीस शरीफ़ में है, अगर घर में माँ हो जब भी इजाज़त तलब करे. (मुअत्ता इमामे मालिक)

(३) यानी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो.

(४) क्योंकि ग़ैर की मिल्क में तसर्रूफ़ करने के लिये उसकी रज़ा ज़रूरी है.

(५) और इजाज़त तलब करने में ज़्यादा ज़ोर न दो. किसी का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और ज़ोर से चीख़ना, उलमा और बुज़ुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना, उनको ज़ोर से पुकारना मकरूह और अदब के ख़िलाफ़ है.

(६) जैसे सराय और मुसाफ़िर ख़ाना वग़ैरह, कि उसमें जाने के लिये इजाज़त हासिल करने की हाजत नहीं. यह आयत उन सहाबा के जवाब में उतरी जिन्हों ने इजाज़त की आयत उतरने के बाद पूछा था कि मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तैय्यिबह के बीच और शाम के रस्ते में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उनमें दाख़िल होने के लिये भी इजाज़त लेना ज़रूरी है.

(७) और जिस चीज़ का देखना जायज़ नहीं उस पर नज़र न डालें. मर्द का बदन नाफ़ के नीचे से घुटने के नीचे तक औरत है. उसका देखना जायज़ नहीं. और औरतों में से अपनी मेहरमों और ग़ैर की दासी का भी यही हुक्म है मगर इतना और है कि उनके पेट और पीठ का देखना भी जायज़ नहीं. आज़ाद अजनबी औरत के सारे शरीर का देखना मना है. मगर ज़रूरत के वक़्त क़ाज़ी और गवाह को और उस औरत से निकाह की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जायज़ है. अगर किसी औरत के ज़रिये से हाल मालूम कर सकता हो तो न देखे और तबीब को पीड़ित अंग का उतना देखना जायज़ है जितनी ज़रूरत हो. अमर्द लड़के की तरफ़ भी वासना से देखना हराम है. (मदारिक व अहमदी)

(८) और ज़िना व हराम से बचें . या ये मानी हैं कि अपनी शर्मगाहों को छुपाएं और पर्दे का प्रबन्ध रखें.

(९) और ग़ैर मर्दों को न देखें. हदीस शरीफ़ में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीबीयों से कुछ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में थीं, उसी वक़्त इब्ने उम्मे मक्तूम आए. हुज़ूर ने बीबियों को पर्दे का हुक्म दिया. उन्होंने अर्ज़ किया कि वह तो नाबीना हैं. फ़रमाया तुम तो नाबीना नहीं हो. (तिरमिज़ी, अबू दाऊद) इस हदीस से मालूम हुआ कि औरतों को भी नामेहरम का देखना और उसके सामने होना जायज़ नहीं.

(१०) ज़ाहिर यह है कि यह हुक्म नमाज़ का है न नज़र का, क्योंकि आज़ाद औरत का तमाम शरीर औरत है. शौहर और मेहरम के सिवा और किसी के लिये उसके किसी हिस्ससे का देखना बे ज़रूरत जायज़ नहीं और इलाज वग़ैरह की ज़रूरत से जायज़ है. (तफ़सीरे अहमदी)

(११) और उन्हीं के हुक्म में दादा, परदादा वग़ैरह तमाम उसूल.

(१२) कि वो भी मेहरम हो जाते हैं.

(१३) और उन्हीं के हुक्म में है उनकी औलाद.

(१४) कि वो भी मेहरम हो गए.

(१५) और उन्हीं के हुक्म में हैं चचा, मामूँ वग़ैरह तमाम मेहरम. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अबू उबैदा बिन जर्राह को लिखा था कि काफ़िर एहले किताब की औरतों को मुसलमान औरतों के साथ हम्माम में दाख़िल होने से मना करें. इससे मालूम हुआ कि मुसलमान औरत को काफ़िर औरत के सामने अपना बदन खोलना जायज़ नहीं. औरत अपने ग़ुलाम से भी अजनबी की तरह पर्दा

أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ
بَنِىٓ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِىٓ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِى الْإِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ
النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن
زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ
مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ
اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن
فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم
مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِىٓ آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ

भतीजे या अपने भानजे(१५) या अपने दीन की औरतें या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों(१६) या नौकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों(१७) या वो बच्चे जिन्हें औरतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं(१८) और ज़मीन पर पाँव ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उनका छुपा हुआ सिंगार(१९) और अल्लाह की तरफ़ तौबह करो ऐ मुसलमानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम भलाई पाओ(३१) और निकाह करदो अपनों में उनका जो बेनिकाह हों(२०) और अपने लायक़ बन्दों और कनीज़ों का, अगर वो फ़क़ीर हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल(कृपा) के कारण(२१) और अल्लाह वुसअत(कुशादगी) वाला इल्म वाला है(३२) और चाहिये कि बचे रहें(२२)वो जो निकाह का मक़दूर(क्षमता)नहीं रखते(२३) यहां तक कि अल्लाह मक़दूर वाला करदे अपनी कृपा से(२४)और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी ग़ुलामों में से जो यह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो(२५) अगर उनमें कुछ भलाई जानो(२६) और इसपर उनकी मदद करो अल्लाह के माल से जो तुम को दिया(२७) और मजबूर न करो अपनी

करे . (मदारिक वग़ैरह)

(१६) उनपर अपना सिंगार ज़ाहिर करना मना नहीं और ग़ुलाम उनके हुक्म में नहीं. उसको अपनी मालिका की ज़ीनत की चीज़ें देखना जायज़ नहीं.

(१७) जैसे कि ऐसे बूढ़े हों जिन्हें बिल्कुल भी शहवत बाक़ी न रही हो, और हों नेक. हनफ़ी इमामों के नज़्दीक ख़स्सी और हिजड़े वग़ैरह हुरमते नज़र में अजनबी का हुक्म रखते हैं. इस तरह बुरा काम करने वाले मुख़न्नस से भी पर्दा किया जाए जैसा कि मुस्लिम की हदीस से साबित है.

(१८) वो अभी नादान और नाबालिग़ हैं.

(१९) यानी औरतें घर के अन्दर चलने में भी पाँव इस क़द्र आहिस्ता रखें कि उनके ज़ेवर की झनकार न सुनी जाए. इसीलिये चाहिये कि औरतें बाजेदार झांझन न पहनें. हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला उस क़ौम की दुआ क़ुबूल नहीं फ़रमाता जिन की औरतें झांझन पहनती हों. इससे समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ दुआ के क़ुबूल न होने का कारण है तो ख़ास औरत की आवाज़ और उसकी बेपर्दगी कैसी अल्लाह के अज़ाब का कारण होगी . पर्दे की तरफ़ से बेपर्वाही तबाही का कारण है. (तफ़सीरे अहमदी)

(२०) चाहे मर्द या औरत, कुँवारे या ग़ैर कुँवारे.

(२१) इस ग़िना से मुराद या क़नाअत है कि वह बेहतरीन ग़िना है, जो क़नाअत करने वाले को कुफ़्र से दूर कर देता है, या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिये काफ़ी हो जाए जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है, या मियाँ और बीवी के दो रिज़्क़ों का जमा हो जाना या निकाह की बरकत से फ़राख़ी जैसा कि अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है.

(२२) हरामकारी से.

(२३) जिन्हें मेहर और नफ़क़ा उपलब्ध नहीं.

(२४) और मेहर व नफ़क़ा अदा करने के क़ाबिल हो जाएं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जो निकाह की क़ुदरत रखे वह निकाह करे कि निकाह पारसाई और पाकबाज़ी में मददगार है और जिसे निकाह की क़ुदरत न हो वह रोज़े रखे कि यह शहवतों को तोड़ने वाले हैं.

(२५) कि वह इस क़द्र माल अदा करके आज़ाद हो जाएं और इस तरह की आज़ादी को किताबत कहते हैं. और आयत में इसका अम्र इस्तहबाब के लिये है और यह इस्तहबाब इस शर्त के साथ मशरूत है जो इसके बाद ही आयत में आया है. हुवैतब बिन अब्दुल उज़्ज़ा के ग़ुलाम सबीह ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की. मौला ने इन्कार किया. इसपर यह आयत उतरी तो हुवैतब ने उसको सौ दीनार पर मुकातिब कर दिया और उनमें से बीस उसको बख़्श दिये, बाक़ी उसने अदा कर दिये.

(२६) भलाई से मुराद अमानत और ईमानदारी और कमाई पर क़ुदरत रखना है कि वह हलाल रोज़ी से माल हासिल करके आज़ाद

عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ
وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ
نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ
اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ
زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ
فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۝
رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ

कनीज़ों को बदकारी पर जब कि वो बचना चाहें ताकि तुम दुनयावी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो[२८] और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक अल्लाह बाद इसके कि वह मजबूरी ही की हालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है[२९] ﴾३३﴿ और बेशक हमने उतारीं तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें[३०] और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिये नसीहत ﴾३४﴿

पाँचवां रूकू

अल्लाह नूर है[१] आसमानों और ज़मीन का, उसके नूर की[२] मिसाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि उसमें चिराग़ है, वह चिराग़ एक फ़ानूस में है, वह फ़ानूस मानो एक सितारा है मोती सा चमकता रौशन होता है बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से[३] जो न पूरब का न पश्चिम का[४] क़रीब है कि उसका तेल[५] भड़क उठे अगरचे उसे आग न छुए, नूर पर नूर है[६] अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है, और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिये, और अल्लाह सब कुछ जानता है ﴾३५﴿ उन घरों में जिन्हें बलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है[७] और उनमें उसका नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह करते हैं उनमें सुब्ह और शाम[८] ﴾३६﴿ वो मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीद फ़रोख़्त अल्लाह की याद[९] और नमाज़

हो सके और मौला को माल देकर आज़ादी हासिल करने के लिये भीख न माँगता फिरे. इसीलिये हज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहो अन्हो ने अपने ग़ुलाम को आज़ाद करने से इन्कार कर दिया जो सिवाय भीख के रोज़ी का कोई साधन नहीं रखता था.

(२७) मुसलमानों को इरशाद है कि वो मुकातिब ग़ुलामों को ज़कात वग़ैरह दे कर मदद करें जिससे वो आज़ादी का बदल देकर अपनी गर्दन छुड़ा सकें.

(२८) यानी माल के लालच में अंधे होकर दासियों को बदकारी पर मजबूर न करें. यह आयत अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जो माल हासिल करने के लिये अपनी दासियों को बदकारी पर मजबूर करता था. उन दासियों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से उसकी शिकायत की. इसपर यह आयत उतरी.

(२९) और गुनाह का वबाल मजबूर करने वाले पर.

(३०) जिन्हों ने हलाल और हराम, हुदूद, अहकाम, सबको साफ़ स्पष्ट कर दिया.

सूरए नूर - पाँचवां रूकू

(१) नूर अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि अल्लाह आसमान और ज़मीन का हिदायत करने वाला है. तो आसमानों और ज़मीन वाले उसके नूर से सच्चाई की राह पाते हैं और उसकी हिदायत से गुमराही की हैरत से छुटकारा पाते हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया, मानी ये हैं कि अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन का मुनव्वर करने वाला है. उसने आसमानों को फ़रिश्तों से और ज़मीन को नबियों से मुनव्वर किया.

(२) अल्लाह के नूर से मूमिन के दिल की वह नूरानियत मुराद है जिससे वह हिदायत पाता है और राह हासिल करता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़सीर यह है कि इस नूर से मुराद सैयदे कायनात अफ़दलुल मौजूदात हज़रत रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं.

(३) यह दरख़्त बहुत बरकतों वाला है क्योंकि इसका तेल जिसे ज़ैत कहते हैं निहायत साफ़ और पाकीज़ा रौशनी देता है. सर में भी लगाया जाता है, सालन की जगह रोटी से भी खाया जाता है. दुनिया के और किसी तेल में यह ख़ूबी नहीं है. और ज़ैतून दरख़्त के पत्ते नहीं गिरते. (ख़ाज़िन)

(४) बल्कि बीच का है कि न उसे गर्मी से हानि पहुंचे न सर्दी से और वह निहायत फ़ायदा पहुंचाने वाला है और उसके फल बहुत ऐतिदाल में हैं.

إِقَامِ الصَّلٰوةِ وَإِيتَاءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ
فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ مَا
عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَن
يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ
كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتّٰى إِذَا جَاءَهُ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللّٰهَ عِندَهُ فَوَفّٰاهُ حِسَابَهُ ۗ
وَاللّٰهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ أَوْ كَظُلُمٰتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ
يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ
ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۚ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ
يَكَدْ يَرَاهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ
مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَافَّاتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَ
تَسْبِيحَهُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

क़ायम रखने[१०] और ज़कात देने से[११] डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जाएंगे दिल और आँखें[१२] (३७) ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उनके सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल(कृपा) से उन्हें इनाम ज़्यादा दे, और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बेगिन्ती (३८) और जो काफ़िर हुए उनके काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे, यहां तक जब उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया[१३] और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उसने उसका हिसाब पूरा भर दिया, और अल्लाह जल्द हिसाब कर लेता है[१४] (३९) या जैसे अंधेरियां किसी कुंडे के (गहराई वाले) दरिया में[१५] उसके ऊपर मौज, मौज के ऊपर और मौज, उसके ऊपर बादल, अंधेरे हैं एक पर एक[१६] जब अपना हाथ निकाले तो सुझाई देता मालूम न हो,[१७] और जिसे अल्लाह नूर न दे उसके लिये कहीं नूर नहीं[१८] (४०)

छटा रूकू

क्या तुमने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे[१] पर फैलाए, सबने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह, और अल्लाह उनके कामों को जानता है (४१) और अल्लाह ही

(५) अपनी सफ़ाई और लताफ़त के कारण ख़ुद.

(६) इस उपमा के मानी में इल्म वालों के कई क़ौल हैं : एक यह कि नूर से मुराद हिदायत हैं, और मानी ये हैं कि अल्लाह तआला की हिदायत बहुत ज़्यादा ज़ाहिर है कि आलमे मेहसूसात में इसकी तस्बीह ऐसे रौशनदान से हो सकती है जिसमें साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़ानूस हो, उस फ़ानूस में ऐसा चिराग़ हो जो बहुत ही बेहतर और साफ़ ज़ैतून से रौशन हो कि उसकी रौशनी निहायत आला और साफ़ हो. एक क़ौल यह है कि यह मिसाल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की है. हज़रत इब्ने अब्बास रसियल्लाहो अन्हुमा ने कअब अहबार से फ़रमाया कि इस आयत के मानी बयान करो. उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिसाल बयान फ़रमाई. रौशनदान (ताक़) तो हुज़ूर का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस आपका मुबारक दिल है और चिराग़ नबुव्वत, कि नबुव्वत के दरख़्त से रौशन है और इस नूरे मुहम्मदी की रौशनी इस दर्जा भरपूर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमाएं जब भी ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाए. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि रौशनदान तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सीना मुबारक है और फ़ानूस आपका नूरानी दिल और चिराग़ वह नूर जो अल्लाह तआला ने उसमें रखा है, कि पूर्वी है न पश्चिमी, न यहूदी, न ईसाई. एक शजरे मुबारक से रौशन है. वह शजर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं. नूरे क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी, नूर पर नूर है. मुहम्मद बिन कअब क़र्ज़ी ने कहा कि रौशनदान और फ़ानूस तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हैं और चिराग़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और शजरे मुबारक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कि अक्सर नबी आपकी नस्ल से हैं और शर्क़ी व ग़र्बी न होने के ये मानी हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम न यहूदी थे न ईसाई क्योंकि यहूदी मग़रिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और ईसाई पूर्व की तरफ़. क़रीब है कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गुण, कमाले वही उतरने से पहले ही सृष्टि पर ज़ाहिर हो जाएं. नूर पर नूर यह कि नबी हैं नस्ले नबी से. नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर. इसके अलावा और भी बहुत क़ौल हैं. (ख़ाज़िन)

(७) और उनकी तअज़ीम और पाकी की. मुराद इन घरों से मस्जिदें हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में.

(८) तस्बीह से मुराद नमाज़ें हैं. सुब्ह की तस्बीह से फ़ज्र और शाम से ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा मुराद हैं.

(९) और उसके दिल तथा ज़बान से ज़िक्र करने और नमाज़ के वक़्तों पर मस्जिदों की हाज़िरी से.

(१०) और उन्हें वक़्त पर अदा करने से. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो बाज़ार में थे. मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई. आपने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द करके मस्जिद में दाख़िल हो गए. तो फ़रमाया कि आयत *रिजालुन ला तुल्हीहिम* यानी वो मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा... ऐसे ही लोगों के हक़ में है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ
اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ
رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ
يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ۝ وَاللّٰهُ
خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى
بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۗ وَاللّٰهُ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ

منزل ۴

के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की, और अल्लाह ही की तरफ़ फिर जाना﴾४२﴿ क्या तूने न देखा कि अल्लाह नर्म नर्म चलाता है बादल को[२] फिर उन्हें आपस में मिलाता है[३] फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकालता है, और उतारता है आसमान से उसमें जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उन में से कुछ ओले[४] फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे[५] और फेर देता है उन्हें जिससे चाहे[६] क़रीब है कि उसकी बिजली की चमक आँख ले जाए[७]﴾४३﴿ अल्लाह बदली करता है रात और दिन की,[८] बेशक इसमें समझने का मक़ाम है निगाह वालों को﴾४४﴿ और अल्लाह ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया,[९] तो उन में कोई अपने पेट पर चलता है,[१०] और उनमें कोई दो पाँव पर चलता है[११] और उनमें कोई चार पांव पर चलता है[१२] अल्लाह बनाता है जो चाहे, बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है﴾४५﴿ बेशक हमने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें[१३] और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाए[१४]﴾४६﴿ और कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह और रसूल पर और हुक्म माना फिर कुछ उनमें के उसके बाद फिर जाते हैं,[१५] और वो मुसलमान नहीं[१६]﴾४७﴿ और जब बुलाए जाएं अल्लाह और उसके

---

(११) उसके वक़्त पर.
(१२) दिलों का उलट जाना यह है कि डर की सख़्ती और बेचैनी से उलट कर गले तक चढ़ जाएंगे न बाहर निकलें न नीचे उतरें. और आँखें ऊपर चढ़ जाएंगी . या मानी ये हैं कि काफ़िरों के दिल कुफ़्र और शिर्क से ईमान और यक़ीन की तरफ़ पलट जाएंगे और आँखों से पर्दे उठ जाएंगे. यह तो उस दिन का बयान है. आयत में यह इरशाद फ़रमाया गया कि वो फ़रमाँबरदार बन्दे जो ज़िक्र और इताअत में निहायत मुस्तइद रहते हैं और इबादत की अदायगी में सरगर्म रहते हैं. इस हुस्ने अमल के बावुजूद उस रोज़ से डरे रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा न हो सका.
(१३) यानी पानी समझ कर उसकी तलाश में चला. जब वहाँ पहुंचा तो पानी का नामो निशान न था. ऐसे ही काफ़िर अपने ख़याल में नेकियाँ करता है और समझता है कि अल्लाह तआला से उसका सवाब पाएगा. जब क़यामत की मंज़िलों में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि बड़े अज़ाब में जकड़ा जाएगा और उस वक़्त उसकी हसरत और उसका ग़म प्यास से कहीं ज़्यादा होगा.
(१४) काफ़िरों के कर्मों की मिसाल ऐसी है.
(१५) समन्दरों की गहराई में .
(१६) एक अंधेरा, दरिया की गहराई का, उसपर एक और अंधेरा, मौजों के ज़ोर का, उसपर और अंधेरा, बादलों की घिरी हुई घटा का. इन अंधेरियों की सख़्ती का यह आलम कि जो इस में हो वह...
(१७) जबकि अपना हाथ बहुत क़रीब अपने जिस्म का अंग है, जब वह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी. ऐसा ही हाल है काफ़िर का कि वह ग़लत अक़ीदों और झूटी करनी व कहनी के अंधेरों में गिरफ़्तार है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि दरिया के कुण्डे और उसकी गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जिहालत और शक और हैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मोहर को जो उनके दिलों पर है, उपमा दी गई है.
(१८) रास्ता वही पाता है जिसे वह राह दे.

सूरए नूर - छटा रूकू

(१) जो आसमान और ज़मीन के बीच में हैं.
(२) जिस प्रदेश और जिन शहरों की तरफ़ चाहे.
(३) और उनके अलग अलग टुकड़ों को एक जगह कर देता है.

مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٧ وَ
اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٤٨ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ
يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۝٤٩ ۚ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ
ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۚ
بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٥٠ ع اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ
يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥١
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝٥٢ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ
لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۚ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ
مَّعْرُوْفَةٌ ۚ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٥٣ قُلْ
اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

منزل ٤

रसूल की तरफ़ कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उनका एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है(४८) और अगर उनकी डिगरी हो (उनके हक़ में फ़ैसला हो) तो उसकी तरफ़ आएं मानते हुए[१७](४९) क्या उनके दिलों में बीमारी है[१८] या शक रखते हैं[१९] या ये डरते हैं कि अल्लाह और रसूल उनपर ज़ुल्म करेंगे,[२०] बल्कि वो ख़ुद ही ज़ालिम हैं(५०)

सातवाँ रूकू

मुसलमानों की बात तो यही है[१] जब अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं कि रसूल उनमें फ़ैसला फ़रमाए कि अर्ज़ करें हमने सुना और हुक्म माना और यही लोग मुराद को पहुंचे(५१) और जो हुक्म माने अल्लाह और उसके रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं(५२) और उन्होंने[२] अल्लाह की क़सम खाई अपने हलफ़ में हद की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे तो वो ज़रूर जिहाद को निकलेंगे, तुम फ़रमाओ क़समें न खाओ[३] शरीअत के मुताबिक़(अनुसार) हुक्म बरदारी चाहिये, अल्लाह जानता है जो तुम करते हो[४](५३) तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का[५] फिर अगर तुम मुंह फेरो[६] तो रसूल के ज़िम्मे वही है जो उसपर लाज़िम किया गया[७] और तुम पर वह है जिसका बोझ तुम पर रखा गया[८] और अगर रसूल की

(४) इसके मानी या तो ये हैं कि जिस तरह ज़मीन में पत्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आसमान में बर्फ़ के पहाड़ अल्लाह ने पैदा किये हैं और यह उसकी क़ुदरत से परे नहीं. उन पहाड़ों से ओले बरसाता है, या ये मानी हैं कि आसमान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है यानी काफ़ी ओले बरसाता है. (मदारिक वग़ैरह)
(५) और जिसके जान माल को चाहता है, उनसे हलाक और तबाह करता है.
(६) उसके जान माल को मेहफ़ूज़ रखता है.
(७) और रौशनी की तेज़ी से आँखों को बेकार कर दे.
(८) कि रात के बाद दिन लाता है और दिन के बाद रात.
(९) यानी जानवरों की सारी जिन्सों को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी इनकी अस्ल है और ये सब अस्ल में एक होने के बावुजूद आपस में कितने अलग अलग हैं. ये सृष्टिकर्ता के इल्म और हिकमत और उसकी भरपूर क़ुदरत की रौशन दलील है.
(१०) जैसे कि साँप और मछली और बहुत से कीड़े.
(११) जैसे कि आदमी और पक्षी.
(१२) जानवरों और दरिन्दों के जैसे.
(१३) यानी क़ुरआन शरीफ़ जिसमें हिदायत और अहकाम और हलाल हराम का खुला बयान है.
(१४) और सीधी राह जिसपर चलने से अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की नेअमतें उपलब्ध हों, इस्लाम है. आयतों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद यह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िर्क़ों में बंट गए एक वो जिन्होंने ज़ाहिर में सच्चाई की तस्दीक़ की और अन्दर से झुटलाते रहे, वो मुनाफ़िक़ हैं. दूसरे वो जिन्होंने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बातिन में भी मानते रहे, ये सच्चे दिल के लोग हैं, तीसरे वो जिन्होंने ज़ाहिर में भी झुटलाया और बातिन में भी, वो काफ़िर हैं. उनका ज़िक्र क्रमानुसार फ़रमाया जाता है.
(१५) और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते.
(१६) मुनाफ़िक़ हैं, क्योंकि उनके दिल उनकी ज़बानों का साथ नहीं देते.
(१७) काफ़िर और दोहरी प्रवृत्ति वाले बार बार तजुर्बा कर चुके थे और उन्हें पूरा यक़ीन था कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़ैसला सरासर सच्चा और न्यायपूर्वक होता है इसलिये उनमें जो सच्चा होता वह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर उसका फ़ैसला फ़रमाएं और जो नाहक़ पर होता वह जानता था कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्ची अदालत से वह अपनी नाजायज़ मुराद नहीं पा सकता इसलिये वह हुज़ूर के फ़ैसले से डरता और घबराता था. बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ था. एक

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ
تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ
وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا
يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ
وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ
الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ
ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

फ़रमाँबरदारी करोगे राह पाओगे और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[९]﴾५४﴿ अल्लाह ने वादा दिया उनको जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये[१०] कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा[११] जैसी उनसे पहलों को दी,[१२] और ज़रूर उनके लिये जमा देगा उनका वह दिन जो उनके लिये पसन्द फ़रमाया है[१३] ज़रूर उनके अगले ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा,[१४] मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो इसके बाद नाशुक्री करे तो वही लोग बेहुक्म हैं﴾५५﴿ और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो﴾५६﴿ हरगिज़ काफ़िरों का ख़याल न करना कि वो कहीं हमारे क़ाबू से निकल जाएं ज़मीन में और उनका ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अंजाम﴾५७﴿

आठवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो चाहिये कि तुम से इज़्न(आज्ञा) लें तुम्हारे हाथ के माल ग़ुलाम[१] और वो जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे[२] तीन वक़्त[३] सुब्ह की नमाज़ से पहले[४] और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो दोपहर को[५] और इशा नमाज़ के बाद[६] ये तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं,[७]

ज़मीन के मामले में उसका एक यहूदी से झगड़ा था. यहूदी जानता था कि इस मामले में वह सच्चा है और उसको यक़ीन था कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सच्चा फ़ैसला फ़रमाते हैं इसलिये उसने ख़्वाहिश की कि यह मुक़दमा हुज़ूर से फ़ैसल कराया जाए. लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वह बातिल पर है और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न्याय और इन्साफ़ में किसी की रिआयत नहीं करते इसलिये वह हुज़ूर के फ़ैसले पर तो राज़ी न हुआ, कअब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर अड़ गया और हुज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वह हम पर ज़ुल्म करेंगे. इसपर यह आयत उतरी.

(१८) कुफ़्र या दोहरी प्रवृत्ति की.

(१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत में.

(२०) ऐसा तो है नहीं क्योंकि वो ख़ूब जानते हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़ैसला सच्चाई का उल्लंघन कर ही नहीं सकता और कोई बेईमान आपकी अदालत से पराया हक़ मारने में सफल नहीं हो सकता . इसी वजह से वो आपके फ़ैसले से परहेज़ करते हैं.

सूरए नूर - सातवाँ रूकू

(१) और उनको यह अदब का तरीक़ा लाज़िम है कि..

(२) यानी मुनाफ़िक़ों ने. (मदारिक)

(३) कि झूटी क़सम गुनाह है.

(४) ज़बानी इताअत और अमली विरोध, उससे कुछ छुपा नहीं.

(५) सच्चे दिल और सच्ची नियत से.

(६) रसूल अलैहिस्सलातो वस्सलाम की फ़रमाँबरदारी से, तो इसमें उनका कुछ नुक़सान नहीं.

(७) यानी दीन की तबलीग़ और अल्लाह के आदेशों का पहुंचा देना, इसको रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अच्छी तरह अदा कर दिया और वह अपने फ़र्ज़ से सुबुकदोश हो चुके.

(८) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इताअत और फ़रमाँबरदारी.

(९) यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बहुत खुले तौर पर पहुंचा दिया.

(१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वही उतरने से तेरह साल तक मक्कए मुकर्रमा में सहाबा के साथ क़याम किया

और काफ़िरों की यातनाओं पर जो दिन रात होती रहती थीं, सब्र किया फिर अल्लाह के हुक्म से मदीनए तैय्यिबह को हिजरत फ़रमाई और अन्सार के घरों को अपने रहने से इज़्ज़त बख़्शी मगर क़ुरैश इसपर भी बाज़ न आए. रोज़मर्रा उनकी तरफ़ से जंग के ऐलान होते और तरह तरह की धमकियाँ दी जातीं . सहाबए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर वक़्त ख़तरे में रहते और हथियार साथ रखते. एक दिन एक सहाबी ने फ़रमाया, कभी ऐसा ज़माना आएगा कि हमें अम्न मयस्सर हो और हथियारों के बोझ से निजात मिले. इसपर यह आयत उतरी.

(११) और काफ़िरों के बजाय तुम्हारा शासन स्थापित होगा. हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर रात दिन गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा.

(१२) हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान वग़ैरह अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम को, और जैसी कि मिस्र और शाम के जब्बारीन को हलाक करके बनी इस्राईल को ख़िलाफ़त दी और इन मुल्कों पर उनको मुसल्लत किया.

(१३) यानी दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब फ़रमाएगा.

(१४) चुनांचे यह वादा पूरा हुआ. अरब की धरती से काफ़िर मिटा दिये गए. मुसलमानों का क़ब्ज़ा हुआ. पूर्व और पश्चिम के प्रदेश अल्लाह तआला ने उनके लिये फ़त्ह फ़रमाए. इन मुल्कों के इलाक़े और ख़ज़ाने उनके क़ब्ज़े में आए, दुनिया पर उनका रोब छा गया. इस आयत में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो और आपके बाद होने वाले बड़े ख़लीफ़ाओं की ख़िलाफ़त की दलील है क्योंकि उनके ज़माने में बड़ी फ़ुतूहात हुईं और किसरा वग़ैरह बादशाहों के ख़ज़ाने मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए और अम्न, इज़्ज़त और दीन का ग़लबा हासिल हुआ. तिरमिज़ी और अबू दाऊद की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल है फिर मुल्क होगा. इसकी तफ़सील यह है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह, हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त दस साल छ माह, हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त बारह साल और हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त चार साल नौ माह और हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त छ माह हुई. (ख़ाज़िन)

सूरए नूर - आठवाँ रूकू

(१) और दासियाँ . हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा कहते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक अन्सारी ग़ुलाम मदलज बिन अम्र को दोपहर के वक़्त हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को बुलाने के लिये भेजा. वह ग़ुलाम वैसे ही हज़रत उमर के मकान में चला गया, जबकि हज़रत उमर बेतकल्लुफ़ अपनी दौलतसरा में तशरीफ़ रखते थे. ग़ुलाम के अचानक चले आने से आपके दिल में ख़याल आया कि काश ग़ुलामों को इजाज़त लेकर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता. इसपर यह आयत उतरी.

(२) बल्कि अभी बालिग़ होने की उम्र के क़रीब हैं. बालिग़ होने की उम्र इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाहो अन्हो के नज़्दीक लड़के के लिये अठ्ठारह साल और लड़की के लिये सत्तरह साल और आम उलमा के नज़्दीक लड़के और लड़की दोनों के लिये पन्द्रह साल है. (अहमदी)

(३) यानी इन तीनों वक़्तों में इजाज़त हासिल करें जिनका बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है.

(४) कि वह वक़्त है ख़्वाबगाहों से उठने और शबख़्वाबी का लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का.

(५) क़ैलूला करने के लिये, और तहबन्द बाँध लेते हो.

(६) कि वह वक़्त है बेदारी का लिबास उतार कर सोने का लिबास पहनने का.

(७) कि इन वक़्तों में एकान्त और तन्हाई होती है, बदन छुपाने का बहुत एहतिमाम नहीं होता. हो सकता है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाए, जिसके ज़ाहिर होने से शर्म आती है. लिहाज़ा इन वक़्तों में ग़ुलाम और बच्चे भी इजाज़त के बिना दाख़िल न हों और उनके अलावा जवान लोग सारे वक़्तों में इजाज़त हासिल करें, किसी वक़्त भी बिना इजाज़त दाख़िल न हों.(ख़ाज़िन वग़ैरह)

ثِيَابَكُم مِّنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ
عَوْرَاتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ
طَوَّافُونَ عَلَيْكُم بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾
وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا
كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ
مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ
جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ
وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾
لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن
تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

इन तीन के बाद कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उनपर[८], आना जाना रखते हैं तुम्हारे यहाँ एक दूसरे के पास,[९] अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये आयतें, और अल्लाह इल्म व हिक्मत वाला है﴾५८﴿ और जब तुम में लड़के[१०] जवानी को पहुंच जाएं तो वो भी इज़्न मांगें[११] जैसे उनके अगलों[१२] ने इज़्न मांगा, अल्लाह यूंही बयान करता है तुम से अपनी आयतें, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴾५९﴿ और बूढ़ी घर में बैठने वाली औरतें[१३] जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उनपर कुछ गुनाह नहीं कि अपने ऊपर के कपड़े रखें जब कि सिंगार न चमकाएं[१४] और उससे भी बचना[१५] उनके लिये और बेहतर है, और अल्लाह सुनता जानता है﴾६०﴿ न अंधे पर तंगी[१६] और न लगंड़े पर मुज़ायक़ा(हरज) और न बीमार पर रोक और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी औलाद के घर[१७] या अपने बाप के घर या अपनी माँ के घर या अपने भाइयों के यहाँ या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहाँ या

(८) यानी इन तीन वक़्तों के सिवा बाक़ी वक़्तों में ग़ुलाम और बच्चे बिना इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्योंकि वो...

(९) काम और ख़िदमत के लिये तो उन पर हर वक़्त इजाज़त मांगना अनिवार्य होना हरज का कारण होगा और शरीअत में हरज का काम मना है. (मदारिक)

(१०) यानी आज़ाद.

(११) सारे वक़्तों में.

(१२) उनसे बड़े मर्दों.

(१३) जिनकी उम्र ज़्यादा हो चुकी और औलाद होने की उम्र न रही और बुढ़ापे के कारण.

(१४) और बाल, सीना, पिंडली वग़ैरह न खोलें.

(१५) ऊपर के कपड़ों को पहने रहना.

(१६) सईद बिन मुसैयब रदियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि सहाबा नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियाँ नाबीना और बीमारों और अपाहिजों को दे जाते जो इन मजबूरियों के कारण जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि उनके मकानों से खाने की चीज़ें लेकर खाएं. मगर वो लोग इसको गवारा न करते, इस ख़याल से कि शायद यह उनको दिल से पसन्द न हो. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें इसकी इजाज़त दी गई. और एक क़ौल यह है कि अंधे अपंग और बीमार लोग तन्दुरूस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो. इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई. एक क़ौल यह है कि जब अंधे नाबीना अपंग किसी मुसलमान के पास जाते और उसके पास उनके खिलाने के लिये कुछ न होता तो वो उन्हें किसी रिश्तेदार के यहाँ खिलाने के लिये ले जाता. यह बात उन लोगों को गवारा न होती. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि इसमें कोई हरज नहीं है.

(१७) कि औलाद का घर अपना ही घर है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, तू और तेरा माल तेरे बाप का है. इसी तरह शौहर के लिये बीवी का और बीवी के लिये शौहर का घर भी अपना ही घर है.

اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ
اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ
اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا
جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا
عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ
يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا
اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

अपनी फुफियों के घर या अपने मामुओं के यहाँ या अपनी ख़ालाओं के घर या जहाँ की कुंजियां तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं,[१८] या अपने दोस्त के यहाँ[१९] तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिलकर खाओ या अलग अलग[२०] फिर जब किसी घर में जाओ तो अपनों को सलाम करो[२१] मिलते वक़्त की अच्छी दुआ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीज़ा, अल्लाह यूंही बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो (६१)

नवाँ रूकू

ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिसके लिये जमा किये गए हों,[१] तो न जाएं जब तक उनसे इजाज़त न ले लें वो जो तुम से इजाज़त मांगते हैं वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं[२] फिर जब वो तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिये तो उनमें जिसे तुम चाहो इजाज़त दे दो और उनके लिये अल्लाह से माफ़ी मांगो,[३] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (६२)

(१८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे मुराद आदमी का वकील और उसका कार्यवाहक है.

(१९) मानी ये हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जायज़ है चाहे वो मौजूद हों या न हों, जबकि मालूम हो कि वो इससे राज़ी हैं. बुज़ुर्गों का तो यह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उसकी अनुपस्थिति या ग़ैर हाज़िरी में पहुंचता तो उसकी दासी से उसका कीसा (बटुआ) तलब करता और जो चाहता उसमें से ले लेता. जब वह दोस्त घर आता और दासी उसको ख़बर देती तो इस ख़ुशी में वह बांदी को आज़ाद कर देता. मगर इस ज़माने में यह फ़ैयाज़ी कहाँ, इसलिये बे इजाज़त खाना नहीं चाहिये. (मदारिक, जलालैन)

(२०) क़बीला बनी लैस बिन अम्र के लोग अकेले, बिना मेहमान के, खाना न खाते थे. कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुबह से शाम तक खाना लिये बैठे रहते. उनके हक़ में यह आयत उतरी.

(२१) जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने घर वालों को सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों, बशर्ते कि उनके दीन में ख़राबी न हो (ख़ाज़िन). अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो, जहाँ कोई न हो तो कहे : *"अस्सलामो अलन नबीये व रहमतुल्लाहे तआला व बरकातुहू , अस्सलामो अलैना वअला इबादिल्लाहिस सॉलिहीन . अस्सलामो अला अहलिल बैते व रहमतुल्लाहे तआला व बरकातुहू"*. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मकान से यहाँ मस्जिदें मुराद हैं . नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे : *अस्सलामो अला रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम* .(शिफ़ा शरीफ़). मुल्ला अली क़ारी ने शरहे शिफ़ा में लिखा कि ख़ाली मकान में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर सलाम अर्ज़ करने की वजह यह है कि एहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़्दस जलवा फ़रमा होती है.

सूरए नूर - नवाँ रूकू

(१) जैसे कि जिहाद और जंग की तदबीर और शुक्रवार व ईदैन और हर मशवरा और हर इज्तिमा, जो अल्लाह के लिये हो.

(२) उनका इजाज़त चाहना फ़रमाँबरदारी का निशान और ईमान सही और दुरूस्त होने की दलील है.

(३) इससे मालूम हुआ कि बेहतर यही है कि हाज़िर रहें और इजाज़त तलब न करें. इमामों और दीनी पेशवाओं की मजलिस से भी बिना इजाज़त न जाना चाहिये. (मदारिक)

रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है,(४) बेशक अल्लाह जानता है जो तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ लेकर,(५) तो डरें वो जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फ़ित्ना पहुंचे(६) या उनपर दर्दनाक अज़ाब पड़े(७)﴿६३﴾ सुन लो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, बेशक वह जानता है जिस हाल पर तुम हो,(८) और उस दिन को जिसमें उसकी तरफ़ फेरे जाएंगे(९) तो वह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्होंने किया, और अल्लाह सब कुछ जानता है(१०)﴿६४﴾

२५- सूरए फ़ुरक़ान

सूरए फ़ुरक़ान मक्का में उतरी, इसमें ७७ आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
बड़ी बरकत वाला है वह जिसने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर(२) जो सारे जगत को डर सुनाने वाला हो(३)﴿१﴾ वह जिसके लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत और उसने न इख़्तियार फ़रमाया बच्चा(४) और उसकी सल्तनत में कोई साझी नहीं(५) उसने हर चीज़ पैदा करके ठीक अन्दाज़े पर रखी﴿२﴾

(४) क्योंकि जिसको रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पुकारें, उस पर जवाब देना और हुक्म बजा लाना वाजिब हो जाता है और अदब से हाज़िर होना लाज़िम आता है और क़रीब हाज़िर होने के लिये इजाज़त तलब करे और इजाज़त ही से वापस हो और एक मानी मुफ़स्सिरों ने ये भी बयान किये हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आवाज़ दे या पुकारे तो अदब और सम्मान के साथ, आपके पाक अल्क़ाब से, नर्म आवाज़ के साथ, विनम्रता और आजिज़ी से, "*या नबियल्लाह, या रसूलल्लाह, या हबीबल्लाह* कह कर.

(५) मुनाफ़िक़ लोगों पर शुक्रवार के दिन मस्जिद में ठहर कर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख़ुत्बे का सुनना भारी गुज़रता था तो वो चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सहाबा की आड़ लेकर सरकते सरकते मस्जिद से निकल जाते थे. इसपर यह आयत उतरी.

(६) दुनिया में तकलीफ़ या क़त्ल या ज़लज़ले या अन्य भयानक दुर्घटनाओं या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत होना या दिल का सख़्त होकर अल्लाह की मअरिफ़त और उसकी पहचान से मेहरूम रहना.

(७) आख़िरत में.

(८) ईमान पर, या निफ़ाक़ यानी दोहरी प्रवृत्ति पर.

(९) जज़ा के लिये, और वह दिन क़यामत का दिन है.

(१०) उससे कुछ छुपा नहीं.

२५ - सूरए फ़ुरक़ान - पहला रूकू

(१) सूरए फ़ुरक़ान मक्के में उतरी. इसमें ६ रूकू, ७७ आयतें, ८९२ कलिमे और ३७०३ अक्षर हैं.

(२) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.

(३) इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत के सार्वजनिक होने का बयान है कि आप सारी सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए, जिन्न हों या इन्सान, फ़रिश्ते हों या दूसरी मख़लूक़, सब आपके उम्मती हैं क्योंकि आलम मासिवल्लाह को कहते हैं और उसमें ये सब दाख़िल हैं. फ़रिश्तों को इससे अलग करना, जैसा कि जलालैन में शैख़ महल्ली से और कबीर में इमाम राज़ी से और शअबलि ईमान में बेहक़ी से सादिर हुआ, बे-दलील है. और इजमाअ का दावा साबित नहीं. चुनांचे इमाम सुबकी और बाज़री और इब्ने हज़्म और सियूती ने इसका तअक्क़ुब किया और ख़ुद इमाम राज़ी को तसलीम है कि आलम अल्लाह को छोड़कर सब को कहते हैं. तो वह सारी सृष्टि को शामिल है, फ़रिश्तों को इससे अलग करने पर कोई दलील नहीं. इसके अलावा मुस्लिम शरीफ़

واتخذوا من دونه الهة لا يخلقون شيئا
وهم يخلقون ولا يملكون لانفسهم ضرا
ولا نفعا ولا يملكون موتا ولا حيوة ولا
نشورا ۝٣ وقال الذين كفروا ان هذا الا
افك افترىه واعانه عليه قوم اخرون ۚ
فقد جاءو ظلما وزورا ۝٤ وقالوا اساطير
الاولين اكتتبها فهي تملى عليه بكرة
واصيلا ۝٥ قل انزله الذي يعلم السر
في السموت والارض ۗ انه كان غفورا
رحيما ۝٦ وقالوا مال هذا الرسول ياكل
الطعام ويمشي في الاسواق ۗ لولا انزل
اليه ملك فيكون معه نذيرا ۝٧ او يلقى
اليه كنز او تكون له جنة ياكل منها ۗ

और लोगों ने उसके सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये(६) कि वो कुछ नहीं बनाते और ख़ुद पैदा किये गए हैं और ख़ुद अपनी जानों के भले बुरे के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का न उठने का﴿३﴾ और काफ़िर बोले(७) यह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्होंने बना लिया है(८) और इसपर और लोगों ने(९) उन्हें मदद दी है, बेशक वो(१०) ज़ुल्म और झूट पर आए﴿४﴾ और बोले(११) अगलों की कहानियां हैं जो उन्होंने(१२) लिख ली हैं तो वो उनपर सुब्ह शाम पढ़ी जाती हैं﴿५﴾ तुम फ़रमाओ इसे तो उसने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है(१३) बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है(१४)﴿६﴾ और बोले(१५) इस रसूल को क्या हुआ खाना खाता है और बाज़ार में चलता है,(१६) क्यों न उतारा गया उनके साथ कोई फ़रिश्ता कि उनके साथ डर सुनाता(१७)﴿७﴾ या ग़ैब से उन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या उनका कोई बाग़ होता जिसमें से

की हदीस में है - उर्सिल्तु इलल ख़ल्क़े काफ़्फ़तन, यानी मैं सारी सृष्टि की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया. अल्लामा अली क़ारी ने मिर्क़ात में इसकी शरह में फ़रमाया, यानी तमाम मौजूदात की तरफ़, जिन्न हों या इन्सान, फ़रिश्ते हों या जानवर या पेड़ पौदे या पत्थर. इस मसअले की पूरी व्याख्या तफ़सील के साथ इमाम क़ुस्तलानी की मवाहिबुल लदुनियह में है.

(४) इसमें यहूद और ईसाइयों का रद है जो हज़रत उज़ैर और मसीह अलैहुमस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते हैं.
(५) इसमें बुत परस्तों का रद है जो बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं.
(६) यानी बुत परस्तों ने बुतों को ख़ुदा ठहराया जो ऐसे आजिज़ और बेक़ुदरत हैं.
(७) यानी नज़र बिन हारिस और उसके साथी क़ुरआन की निस्बत, कि..
(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
(९) और लोगों से नज़र बिन हारिस की मुराद यहूदी थे और अदास व यसार वग़ैरह एहले किताब.
(१०) नज़र बिन हारिस वग़ैरह मुश्रिक, जो यह बेहूदा बात कहने वाले थे.
(११) वही मुश्रिक लोग क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत, कि यह रुस्तम और स्फ़न्दयार वग़ैरह के क़िस्सों की तरह.
(१२) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
(१३) यानी क़ुरआन शरीफ़ अज़ात यानी ग़ैब के उलूम पर आधारित है. यह साफ़ दलील है इसकी कि वह अल्लाह की तरफ़ से है जो सारे ग़ैब जानता है.
(१४) इसीलिये काफ़िरों को मोहलत देता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता.
(१५) क़ुरैश के काफ़िर.
(१६) इससे उनकी मुराद यह थी कि आप नबी होते तो न खाते न बाज़ारों में चलते और यह भी न होता तो...
(१७) और उनकी तस्दीक़ करता और उनकी नबुव्वत की गवाही देता.
(१८) मालदारों की तरह.

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٨﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩﴾ تَبٰرَكَ الَّذِیْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۟ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ﴿١٢﴾ وَاِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّ مَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

खाते,[१८] और ज़ालिम बोले[१९] तुम तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिसपर जादू हुआ[२०]﴾८﴿ ऐ मेहबूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं, तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते﴾९﴿

दूसरा रूकू

बड़ी बरकत वाला है वह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये बहुत बेहतर उससे कर दे[१] जन्नतें जिनके नीचे नेहरें बहें और करेगा तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे महल﴾१०﴿ बल्कि ये तो क़यामत को झुटलाते हैं, और जो क़यामत को झुटलाए हमने उसके लिये तैयार कर रखी है भड़कती हुई आग﴾११﴿ जब वह उन्हें दूर जगह से दीखेगी[२] तो सुनेंगे उसका जोश मारना और चिंघाड़ना﴾१२﴿ और जब उसकी किसी तंग जगह में डाले जाएंगे[३] ज़ंजीरों में जकड़े हुए[४] तो वहां मौत मांगेंगे[५]﴾१३﴿ फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो[६]﴾१४﴿ तुम फ़रमाओ क्या यह[७] भला या वो हमेशगी के बाग़ जिसका वादा डर वालों को है, वह उनका सिला और अंजाम है﴾१५﴿ उनके लिये वहाँ

(१९) मुसलमानों से.
(२०) और मआज़ल्लाह, उसकी अक़्ल जगह पर न रही. ऐसी तरह तरह की बेहूदा बातें उन्हों ने बकीं.

सूरए फ़ुरक़ान - दूसरा रुकू

(१) यानी शीघ्र आपको उस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अता फ़रमादे जो ये काफ़िर कहते हैं.
(२) एक बरस की राह से या सौ बरस की राह से. दोनों क़ौल हैं. और आग का देखना कुछ दूर नहीं. अल्लाह तआला चाहे तो उसको ज़िन्दिगी, बुद्धि और देखने की शक्ति अता फ़रमा दे. और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि मुराद जहन्नम के फ़रिश्तों का देखना है.
(३) जो निहायत कर्ब और बेचैनी पैदा करने वाली हो.
(४) इस तरह कि उनके हाथ गर्दनों से मिलाकर बांध दिये गए हों या इस तरह कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैतान के साथ ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ हो.
(५) और हाय ऐ मौत आजा, हाय ऐ मौत आजा, का शोर मचाएंगे. हदीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आग का लिबास पहनाया जाएगा वह इब्लीस है और उसकी ज़ुर्रियत उसके पीछे होगी और ये सब मौत मौत पुकारते होंगे. उनसे...
(६) क्योंकि तुम तरह तरह के अज़ाबों में जकड़े जाओगे.
(७) अज़ाब और जहन्नम की भयानकता, जिसका ज़िक्र किया गया.

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُوْلًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِىْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِىْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًا ۢبُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

मनमानी मुरादें हैं जिनमें हमेशा रहेंगे, तुम्हारे रब के ज़िम्मे वादा है मांगा हुआ[८] ﴿१६﴾ और जिस दिन इकट्ठा करेगा उन्हें [९]और जिनको अल्लाह के सिवा पूजते हैं[१०] फिर उन मअबूदों से फ़रमाएगा क्या तुमने गुमराह कर दिये ये मेरे बन्दे या ये ख़ुद ही राह भूले[११] ﴿१७﴾ वो अर्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को[१२] हमें सज़ावार(मुनासिब) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएं[१३] लेकिन तूने उन्हें और उनके बाप दादाओं को बरतने दिया[१४] यहाँ तक कि वो तेरी याद भूल गए, और ये लोग थे ही हलाक होने वाले[१५] ﴿१८﴾ तो अब मअबूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको, और तुम में जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे ﴿१९﴾ और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते[१६] और हमने तुममें एक को दूसरे की जांच किया है[१७] और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे[१८] और ऐ मेहबूब तुम्हारा रब देखता है[१९] ﴿२०﴾

(८) यानी मांगने के लायक़ या वह जो ईमान वालों ने दुनिया में यह अर्ज़ करके मांगा - रब्बना आतिना फ़िद दुनिया हसनतौं व फ़िल आख़िरते हसनतौं, या यह अर्ज़ करके -रब्बना व आतिना मा वअत्तना अला रुसुलिका.

(९) यानी मुश्रिकों को.

(१०) यानी उनके बातिल मअबूदों को, चाहे वो जानदार हों या ग़ैर जानदार. कल्बी ने कहा कि इन माबूदों से बुत मुराद हैं. उन्हें अल्लाह तआला बोलने की शक्ति देगा.

(११) अल्लाह तआला हक़ीक़ते हाल का जानने वाला है उससे कुछ छुपा नहीं. यह सवाल मुश्रिकों को ज़लील करने के लिये है कि उनके मअबूद उन्हें झुटलाएं तो उनकी हसरत और ज़िल्लत और ज़्यादा हो.

(१२) इससे कि कोई तेरा शरीक हो.

(१३) तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के माबूद बनाने का हुक्म दे सकते थे. हम तेरे बन्दे हैं.

(१४) और उन्हें माल, औलाद और लम्बी उम्र और सेहत व सलामती इनायत की.

(१५) शक़ी . इसके बाद काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा.

(१६) यह काफ़िरों के उस तअने का जवाब है जो उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर किया था कि वह बाज़ारों में चलते हैं, खाना खाते हैं. यहाँ बताया गया कि यह सारे काम नबुव्वत के विपरीत नहीं हैं बल्कि ये सारे नबियों की आदतें रही हैं. लिहाज़ा यह तअना केवल जिहालत और दुश्मनी है.

(१७) शरीफ़ जब इस्लाम लाने का इरादा करते थे तो ग़रीबों को देख कर यह ख़याल करते कि ये हम से पहले इस्लाम ला चुके, इनको हमपर एक फ़ज़ीलत रहेगी. इस ख़याल से वो इस्लाम से दूर रहते और शरीफ़ों के लिये ग़रीब लोग आज़माइश बन जाते. एक क़ौल यह है कि यह आयत अबू जहल और वलीद बिन अक़बा और आस बिन वाइल सहमी और नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी. उन लोगों ने हज़रत अबू ज़र और इब्ने मसऊद और अम्मार बिन यासिर और बिलाल व सुहैब व आमिर बिन फ़हीरा को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो घमण्ड से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएं तो उन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और उनमें फ़र्क़ ही क्या रह जाएगा. एक क़ौल यह है कि यह आयत मुसलमान फ़क़ीरों की आज़माइश में उतरी जिनकी क़ुरैश के काफ़िर हंसी बनाते थे और कहते थे कि ये लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का अनुकरण करने वाले लोग हैं जो हमारे ग़ुलाम और नीच हैं. अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उन ईमान वालों से फ़रमाया.(ख़ाज़िन)

(१८) इस ग़रीबी और सख़्ती पर, और काफ़िरों की इस बदगोई पर.

(१९) उसको जो सब्र करे और उसको जो बेसब्री करे.

पारा अठ्ठाराह समाप्त

उन्नीसवाँ पारा - व क़ालल्लज़ीना

सूरए फ़ुरक़ान (जारी)

तीसरा रूकू

और बोले वो जो(१) हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे(२) या हम अपने रब को देखते(३) बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी(नाफ़रमानी) पर आए(४)(२१) जिस दिन फ़रिश्तों को देखेंगे(५) वह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा(६) और कहेंगे, इलाही हम में उनमें कोई आड़ करदे रुकी हुई(७)(२२) और जो कुछ उन्होंने काम किये थे(८), हमने क़स्द(इरादा) फ़रमाकर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार(धूल) के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रौज़न(छेद) की धूप में नज़र आते हैं(९)(२३) जन्नत वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना(१०) और हिसाब के दोपहर के बाद अच्छी आराम की जगह(२४) और जिस दिन फट जाएगा आसमान बादलों से और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे पूरी तरह(११)(२५) उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है, और वह दिन काफ़िरों पर सख़्त है(१२)(२६) और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा(१३) कि हाय किसी तरह से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती(१४)(२७) वाए ख़राबी मेरी, हाय किसी तरह मैं ने फ़लाने(अमुक) को दोस्त न बनाया होता(२८) बेशक उसने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से,(१५) और शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है(१६)(२९) और रसूल ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन

सूरए फ़ुरक़ान - तीसरा रूकू

(१) काफ़िर हैं . हश्र और मरने के बाद दोबारा उठाए जाने को नहीं मानते इसी लिये ...

(२) हमारे लिये रसूल बनाकर या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और रिसालत के गवाह बनाकर.

(३) वह ख़ुद हमें ख़बर दे देता कि सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं.

(४) और उनका घमण्ड चरम सीमा को पहुंच गया और सरकशी हद से गुज़र गई कि चमत्कारों का अवलोकन करने के बाद, फ़रिश्तों के अपने ऊपर उतरने और अल्लाह तआला को देखने का सवाल किया.

(५) यानी मौत के दिन या क़यामत के दिन.

(६) क़यामत के दिन फ़रिश्ते ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुनाएंगे और काफ़िरों से कहेंगे कि तुम्हारे लिये कोई ख़ुशख़बरी नहीं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते कहेंगे कि मूमिन के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना हलाल नहीं. इस लिये वह दिन काफ़िरों के वास्ते बहुत निराशा और दुख का होगा.

(७) इस कलिमे से वो फ़रिश्तों से पनाह चाहेंगे.

(८) कुफ़्र की हालत में, जैसे रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, मेहमानदारी और अनाथों का ख़याल रखना वग़ैरह.

(९) न हाथ से छुए जाएं न उनका साया हो. मुराद यह है कि वो कर्म बातिल कर दिये गए. उनका कुछ फल और कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि कर्मों की क़ुबूलियत के लिये ईमान शर्त है और वह उनके पास न था. इसके बाद जन्नत वालों की बुज़ुर्गी बयान होती है.

(१०) और उनका स्थान उन घमण्डी मुश्रिकों से बलन्द और बेहतर.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया, दुनिया का आसमान फटेगा और वहाँ के रहने वाले फ़रिश्ते उतरेंगे और वो सारे ज़मीन वालों से अधिक हैं, जिन्न और इन्सान सबसे. फिर दूसरा आसमान फटेगा, वहाँ के रहने वाले उतरेंगे, वो दुनिया के आसमान के रहने वालों और जिन्न और इन्सान सब से ज़्यादा हैं. इसी तरह आसमान फटते जाएंगे और हर आसमान वालों की संख्या

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ
عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً
وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ
تَرْتِيْلًا ۝ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ
تَفْسِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى
جَهَنَّمَ ۙ اُولٰۗىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ
وَزِيْرًا ۝ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا
الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ
الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया(१७)﴾३०﴿ और इसी तरह हमने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे मुजरिम लोग,(१८) और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को﴾३१﴿ और काफ़िर बोले, क़ुरआन उनपर एक साथ क्यों न उतार दिया(१९) हमने यूंही धीरे धीरे इसे उतारा है कि इससे तुम्हारा दिल मज़बूत करें(२०) और हमने इसे ठहर ठहर कर पढ़ा(२१)﴾३२﴿ और वो कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे(२२) मगर हम हक़ (सत्य) और इससे बेहतर बयान ले आएंगे﴾३३﴿ वो जो जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल, उनका ठिकाना सबसे बुरा(२३) और वो सबसे गुमराह﴾३४﴿

चौथा रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई और उसके भाई हारून को वज़ीर किया﴾३५﴿ तो हमने फ़रमाया, तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिसने हमारी आयतें झुटलाईं(१) फिर हमने उन्हें तबाह करके हलाक कर दिया﴾३६﴿ और नूह की क़ौम को(२) जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया(३), हमने उनको डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया,(४) और हमने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है﴾३७﴿ और आद और समूद(५) और कुंवें वालों को(६) और उनके बीच में बहुत सी संगतें (क़ौमें)(७)﴾३८﴿ और हमने सब से मिसालें बयान फ़रमाईं(८) और सबको

अपने मातहतों से ज़्यादा है. यहाँ तक कि सातवाँ आसमान फटेगा. फिर करूबी फ़रिश्ते उतरेंगे, फिर अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते और यह क़यामत का दिन होगा.

(१२) और अल्लाह के फ़ज़्ल से मुसलमानों पर आसान. हदीस शरीफ़ में है कि क़यामत का दिन मुसलमानों पर आसान किया जाएगा यहाँ तक कि वो उनके लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हल्का होगा जो दुनिया में पढ़ी थी.

(१३) निराशा और शर्मिन्दगी से. यह हाल अगरचे काफ़िरों के लिये आया है मगर अक़बह बिन अबी मुईत से इसका ख़ास सम्बन्ध है. अक़बह उबई बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्त था. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाने से उसने लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही दी और उसके बाद उबई बिन ख़लफ़ के ज़ोर डालने से फिर मुर्तद होगया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसको मक़तूल होने की ख़बर दी. चुनाँन्चे बद्र में मारा गया. यह आयत उसके बारे में उतरी कि क़यामत के दिन उसको इन्तिहा दर्जे की हसरत और निदामत होगी . इस हसरत में वह अपने हाथ चाब चाब लेगा.

(१४) जन्नत और निजात की और उनका अनुकरण किया होता और उनकी हिदायत क़ुबूल की होती.

(१५) यानी क़ुरआन और ईमान से.

(१६) और बला और अज़ाब उतरने के वक़्त उससे अलाहिदगी करता है. हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो से अबू दाऊद और तिरमिज़ी में एक हदीस आई है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हमनशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़गार को. बेदीन और बदमज़हब की दोस्ती और उसके साथ मिलना जुलना और महब्बत और सत्कार मना है.

(१७) किसी ने उसको जादू कहा, किसी ने शेअर, और वो लोग ईमान लाने से मेहरूम रहे. इसपर अल्लाह तआला ने हुज़ूर को तसल्ली दी. और आपसे मदद का वादा फ़रमाया जैसा कि आगे इरशाद होता है.

(१८) यानी नबियों के साथ बदनसीबों का यही सुलूक रहा है.

(१९) जैसे कि तौरात व इन्जील व ज़ुबूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी. काफ़िरों की यह आलोचना बिल्कुल फ़ुज़ूल और निरर्थक है क्योंकि क़ुरआने मजीद का चमत्कारी होना हर हाल में एक सा है चाहे एक बार उतरे या थोड़ा थोड़ा करके, बल्कि थोड़ा थोड़ा उतारने में इसके चमत्कारी होने का और भी भरपूर प्रमाण है कि जब एक आयत उतरी और सृष्टि का उसके जैसा कलाम बनाने से आजिज़ होना ज़ाहिर हुआ,

الْاَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ
الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ
كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ
اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝ اِنْ كَادَ
لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ
يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝
اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ
وَكِيْلًا ۝ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ
اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ اَلَمْ تَرَ
اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ
ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا
قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا
وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ

منزل ٤

तबाह करके मिटा दिया﴾३९﴿ और ज़रूर ये[९] हो आए हैं उस बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था,[१०] तो क्या ये उसे देखते न थे,[११] बल्कि उन्हें जी उठने की उम्मीद थी ही नहीं[१२]﴾४०﴿ और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठट्ठा,[१३] क्या ये हैं जिन को अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा﴾४१﴿ क़रीब था कि ये हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें अगर हम उनपर सब्र न करते[१४] और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अज़ाब देखेंगे[१५] कि कौन गुमराह था[१६]﴾४२﴿ क्या तुमने उसे देखा जिसने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया,[१७] तो क्या तुम उसकी निगहबानी का ज़िम्मा लोगे[१८]﴾४३﴿ या यह समझते हो कि उनमें बहुत कुछ सुनते या समझते हैं,[१९] वो तो नहीं मगर जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी बदतर गुमराह[२०]﴾४४﴿

पाँचवां रूकू

ऐ मेहबूब क्या तुमने अपने रब को न देखा[१] कि कैसा फैलाया साया[२] और अगर चाहता तो उसे ठहराया हुआ कर देता[३] फिर हमने सूरज को उसपर दलील किया﴾४५﴿ फिर हमने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेटा[४]﴾४६﴿ और वही है जिसने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम, और दिन बनाया उठने के लिये[५]﴾४७﴿

फिर दूसरी उतरी. इसी तरह इसका चमत्कार ज़ाहिर हुआ. इस तरह बराबर आयत-आयत होकर क़ुरआने पाक उतरता रहा और हर दम उसकी बेमिसाली और लोगों की आजिज़ी और लाचारी ज़ाहिर होती रही. ग़रज़ काफ़िरों का ऐतिराज़ केवल बेकार और व्यर्थ है. आयत में अल्लाह तआला थोड़ा थोड़ा करके उतारने की हिक्मत ज़ाहिर फ़रमाता है.

(२०) और संदेश का सिलसिला जारी रहने से आपके दिल को तस्कीन होती रहे और काफ़िरों को हर हर अवसरों पर जवाब मिलते रहें. इसके अलावा यह भी फ़ायदा है कि इसे याद करना सहल और आसान हो.

(२१) जिब्रईल की ज़बान से थोड़ा थोड़ा बीस या तेईस साल की मुद्दत में. या ये मानी हैं कि हम ने आयत के बाद आयत थोड़ा थोड़ा करके उतारा. कुछ ने कहा कि अल्लाह तआला ने हमें क़िरअत में ठहर ठहर कर इत्मीनान से पढ़ने और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी तरह अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद हुआ *व रत्तिलिल क़ुरआना तर्तीला* (और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो - सूरए मुज़्ज़म्मिल, आयत ४)

(२२) यानी मुश्रिक आपके दीन के ख़िलाफ़ या आपकी नबुव्वत में आलोचना करने वाला कोई सवाल पेश न कर सकेंगे.

(२३) हदीस शरीफ़ में है कि आदमी क़यामत के दिन तीन तरीक़े पर उठाए जाएंगे. एक गिरोह सवारियों पर, एक समूह पैदल और एक जमाअत मुंह के बल घिसटती हुई . अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह, वो मुंह के बल कैसे चलेंगे. फ़रमाया जिसने पाँव पर चलाया है वही मुंह के बल चलाएगा.

सूरए फ़ुरक़ान - चौथा रूकू

(१) यानी फ़िरऔनी क़ौम की तरफ़. चुनांन्चे वह दोनों हज़रात उनकी तरफ़ गए और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और अपनी रिसालत का प्रचार किया, लेकिन उन बदबख़्तों ने उन हज़रात को झुटलाया.

(२) .....भी हलाक कर दिया.

(३) यानी हज़रत नूह और हज़रत इद्रीस को और हज़रत शीस को. या यह बात है कि एक रसूल को झुटलाना सारे रसूलों को झुटलाना है. तो जब उन्होंने हज़रत नूह को झुटलाया तो सब रसूलों को झुटलाया.

(४) कि बाद वालों के लिये इब्रत हों.

(५) और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम आद, और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम समूद, इन दोनों क़ौमों को भी हलाक किया.

(६) यह हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम थी जो बुतों को पूजती थी. अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ हज़रत शुऐब

अलैहिस्सलाम को भेजा. आपने उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाया. उन्होंने सरकशी की, हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को झुटलाया और आपको कष्ट दिये. उन लोगों के मकान कुंए के गिर्द थे. अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया और यह सारी क़ौम अपने मकानों समेत उस कुंएं के साथ ज़मीन में धंस गई. इसके अलावा और अक़वाल भी हैं.

(७) यानी आद और समूद क़ौम और कुंए वालों के बीच में बहुत सी उम्मतें हैं जिनको नबियों को झुटलाने के कारण अल्लाह तआला ने हलाक किया.

(८) और हुज्जतें क़ायम कीं और उनमें से किसी को बिना हुज्जत पूरी किये हलाक न किय.

(९) यानी मक्के के काफ़िर अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार.

(१०) इस बस्ती से मुराद समूद है जो लूत क़ौम की पांच बस्तियों में सबसे बड़ी बस्ती थी. इन बस्तियों में एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो उस बुरे काम से दूर थे जिसमें बाक़ी चार बस्तियों के लोग जकड़े हुए थे. इसीलिये उन्होंने निजात पाई और वो चार बस्तियाँ अपने बुरे कर्म के कारण आसमान से पत्थर बरसाकर हलाक करदी गईं.

(११) कि इब्रत पकड़ते और ईमान लाते.

(१२) यानी मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने के क़ायल न थे कि उन्हें आख़िरत के अज़ाब सवाब की चिन्ता होती.

(१३) और कहते हैं.

(१४) इससे मालूम हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दावत और आपके चमत्कारों ने काफ़िरों पर इतना असर किया था और सच्चे दीन को इस क़द्र साफ़ और स्पष्ट कर दिया था कि स्वयं काफ़िरों को यह इक़रार है कि अगर वो अपनी हठ पर न जमे रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और इस्लाम ले आएं यानी इस्लाम की सच्चाई उनपर ख़ूब खुल चुकी थी और शक शुबह मिटा दिया गया था, लेकिन वो अपनी हठ और ज़िद के कारण मेहरूम रहे.

(१५) आख़िरत में.

(१६) यह उसका जवाब है कि काफ़िरों ने कहा था क़रीब है कि ये हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें. यहाँ बताया गया है कि बहके हुए तुम ख़ुद हो और आख़िरत में ये तुम को ख़ुद मालूम हो जाएगा और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ बहकाने की निस्बत केवल बेजा और निरर्थक है.

(१७) और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश को पूजने लगा, उसी का फ़रमाँबरदार हो गया, वह हिदायत किस तरह क़ुबूल करेगा. रिवायत है कि जिहालत के ज़माने के लोग एक पत्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पत्थर उससे अच्छा नज़र आता, तो पहले को फैंक देते और दूसरे को पूजने लगते.

(१८) कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो.

(१९) यानी वो अपनी भरपूर दुश्मनी से न आपकी बात सुनते हैं न प्रमाणों और तर्क को समझते हैं. बेहरे और नासमझ बने हुए हैं.

(२०) क्योंकि चौपाए भी अपने रब की तस्बीह करते हैं. और जो उन्हें खाने को दे, उसके फ़रमाँबरदार रहते हैं और एहसान करने वाले को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वाले से घबराते हैं. नफ़ा देने वाले की तलब करते हैं, घाटा देने वाले से बचते हैं. चरागाहों की राहें जानते हैं. ये काफ़िर उनसे भी बुरे हैं कि न रब की इताअत करते हैं, न उसके एहसान को पहचानते हैं, न शैतान जैसे दुश्मन की घातों को समझते हैं, न सवाब जैसी बड़े नफ़े वाली चीज़ के तालिब हैं, न अज़ाब जैसी सख़्त ख़तरनाक हलाकत से बचते हैं.

सूरए फ़ुरक़ान - पाँचवां रूकू

(१) कि उसकी सनअत(सृजन-शक्ति) और क़ुदरत कितनी अजीब है.

(२) सुब्हे सादिक़ के निकलने के बाद से सूर्योदय तक, कि उस वक़्त सारी धरती पर साया ही साया होता है, न धूप है न अन्धेरा.

(३) कि सूरज के निकलने से भी न मिटता.

(४) कि उदय होने के बाद सूरज जितना ऊपर होता गया, साया सिमटता गया.

(५) कि उसमें रोज़ी तलाश करो और कामों में जुट जाओ. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से फ़रमाया, जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बाद फिर उठोगे.

(६) यहाँ रहमत से मुराद बारिश है.

ارسل الريح بشرا بين يدي رحمته ۚ وانزلنا من
السماء ماء طهورا ﴿٤٨﴾ لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه
مما خلقنا انعاما واناسي كثيرا ﴿٤٩﴾ ولقد صرفنه
بينهم ليذكروا ۖ فابى اكثر الناس الا كفورا ﴿٥٠﴾ ولو
شئنا لبعثنا في كل قرية نذيرا ﴿٥١﴾ فلا تطع الكفرين
وجاهدهم به جهادا كبيرا ﴿٥٢﴾ وهو الذي مرج البحرين
هذا عذب فرات وهذا ملح اجاج ۚ وجعل بينهما
برزخا وحجرا محجورا ﴿٥٣﴾ وهو الذي خلق من الماء
بشرا فجعله نسبا وصهرا ۗ وكان ربك قديرا ﴿٥٤﴾ و
يعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم ۗ وكان
الكافر على ربه ظهيرا ﴿٥٥﴾ وما ارسلنك الا مبشرا و
نذيرا ﴿٥٦﴾ قل ما اسئلكم عليه من اجر الا من شاء
ان يتخذ الى ربه سبيلا ﴿٥٧﴾ وتوكل على الحي الذي

और वही है जिसने हवाएं भेजीं अपनी रहमत के आगे, ख़ुशख़बरी सुनाती हुई,[६] और हमने आसमान से पानी उतारा पाक करने वाला ﴾४८﴿ ताकि हम उससे ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शहर को[७] और उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को ﴾४९﴿ और बेशक हमने उनमें पानी के फेरे रखे[८] कि वो ध्यान करें,[९] तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुक्री करना ﴾५०﴿ और हम चाहते तो हर बस्ती में एक डर सुनाने वाला भेजते[१०] ﴾५१﴿ तो काफ़िरों का कहा न मान और इस क़ुरआन से उनपर जिहाद कर, बड़ा जिहाद ﴾५२﴿ और वही है जिसने मिले हुए बहाए दो समन्दर, यह मीठा है बहुत मीठा और यह खारी है बहुत तल्ख़, और इन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़[११] ﴾५३﴿ और वही है जिसने पानी से[१२] बनाया आदमी, फिर उसके रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की[१३] और तुम्हारा रब क़ुदरत वाला है[१४] ﴾५४﴿ और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं[१५] जो उनका भला बुरा कुछ न करें, और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है[१६] ﴾५५﴿ और हमने तुम्हें न भेजा मगर[१७] ख़ुशी और[१८] डर सुनाता ﴾५६﴿ तुम फ़रमाओ मैं इस[१९] पर तुम से कुछ उजरत (वेतन) नहीं मांगता मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले[२०] ﴾५७﴿ और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा[२१] और उसे सराहते हुए

(७) जहाँ की ज़मीन ख़ुश्की से बेजान हो गई.

(८) कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज़्यादा हो कभी कहीं अलग तौर से, अल्लाह की हिकमत के अनुसार. एक हदीस में है कि आसमान से रात दिन की तमाम घड़ियों में बारिश होती रहती है. अल्लाह तआला उसे जिस प्रदेश की तरफ़ चाहता है फेरता है और जिस धरती को चाहता है सैराब करता है.

(९) और अल्लाह तआला की क़ुदरत और नेअमत में ग़ौर करें .

(१०) और आप पर से डराने का बोझ कम कर देते लेकिन हमने सारी बस्तियों को डराने का बोझ आप ही पर रख़ा ताकि आप सारे जगत के रसूल होकर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों और बुज़ुर्गियों के संगम हों और नबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आप के बाद फिर कोई नबी न हो.

(११) कि न मीठा खारी हो, न खारी मीठा, न कोई किसी के स्वाद को बदल सके जैसे कि दजलह, दरियाए शोर में मीलों तक चला जाता है और उसके पानी के स्वाद में कोई परिवर्तन नहीं आता. यह अल्लाह की अजीब शान है.

(१२) यानी नुत्फ़े से.

(१३) कि नस्ल चले.

(१४) कि उसने एक नुत्फ़े से दो क़िस्म के इन्सान पैदा किए, नर और मादा. फिर भी काफ़िरों का यह हाल है कि उसपर ईमान नहीं लाते.

(१५) यानी बुतों को.

(१६) क्योंकि बुत परस्ती करना शैतान को मदद देना है.

(१७) ईमान और फ़रमाँबरदारी पर जन्नत की.

(१८) कुफ़्र और गुमराही पर जहन्नम के अज़ाब का.

(१९) तबलीग़ और हिदायत.

(२०) और उसका क़ुर्ब और उसकी रज़ा हासिल करे. मुराद यह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और उनका अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में जुट जाना ही मेरा बदला है क्योंकि अल्लाह तआला मुझे उसपर जज़ा अता फ़रमाएगा, इसलिये कि उम्मत के नेक लोगों के ईमान और उनकी नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उनके नबियों को भी, जिनकी हिदायत से वो इस दर्जे पर पहुंचे.

(२१) उसी पर भरोसा करना चाहिये क्योंकि मरने वाले पर भरोसा करना समझ वाले की शान नहीं है.

لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۚ ۛ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۛ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ ۗ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۖ ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا

उसकी पाकी बोलो,[२२] और वही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार[२३] ﴾५८﴿ जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है छ दिन में बनाए[२४] फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उसकी शान के लायक़ है[२५] वह बड़ी मेहर वाला, तो किसी जानने वाले से उसकी तअरीफ़ पूछ[२६] ﴾५९﴿ और जब उनसे कहा जाए[२७] रहमान को सज्दा करो कहते हैं रहमान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो[२८] और इस हुक्म ने उन्हें और बिदकना बढ़ाया[२९] ﴾६०﴿

छटा रूकू

बड़ी बरकत वाला है जिसने आसमान में बुर्ज बनाए[१] उनमें चिराग़ रखा[२] और चमकता चाँद ﴾६१﴿ और वही है जिसने रात और दिन की बदली रखी[३] उसके लिये जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे ﴾६२﴿ और रहमान के वो बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं[४] और जब जाहिल उनसे बात करते हैं[५] तो कहते हैं बस सलाम[६] ﴾६३﴿ और वो जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़याम में[७] ﴾६४﴿ और वो जो अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमसे फेर दे जहन्नम का अज़ाब, बेशक उसका अज़ाब गले का गिल (फन्दा) है[८] ﴾६५﴿ बेशक वह बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है ﴾६६﴿ और वो कि जब ख़र्च करते हैं, न हद से बढ़ें और न तंगी करें[९] और इन दोनों के बीच

(२२) उसकी तस्बीह और तारीफ़ करो, उसकी फ़रमाँबरदारी करो और शुक्र अदा करो.

(२३) न उससे किसी का गुनाह छुपे, न कोई उसकी पकड़ से अपने को बचा सके.

(२४) यानी उतनी मात्रा में, क्योंकि रात और दिन और सूरज तो थे ही नहीं और उतनी मात्रा में पैदा करना अपनी मख़लूक़ को आहिस्तगी और इत्मीनान सिखाने के लिये है, वरना वो एक पल में सब कुछ पैदा करने की क़ुदरत रखता है.

(२५) बुज़ुर्गों का मज़हब यह है कि इस्तिवा और इस जैसे जो भी शब्द आए हैं हम उन पर ईमान रखते हैं और उनकी कैफ़ियत के पीछे नहीं पड़ते, उसको अल्लाह ही जाने. कुछ मुफ़स्सिरों ने इस्तिवा को बलन्दी और बरतरी के मानी में लिया है और यही बेहतर है.

(२६) इसमें इन्सान को सम्बोधन है कि हज़रत रहमान की विशेषताएं और सिफ़ात पहचानने वाले शख़्स से पूछे ...

(२७) यानी जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुश्रिकों से फ़रमाएं कि...

(२८) इससे उनका मक़सद यह है कि रहमान को जानते नहीं और यह बातिल है जो उन्होंने दुश्मनी के तहत कहा क्योंकि अरबी ज़बान जानने वाला ख़ूब जानता है कि रहमान का अर्थ बहुत रहमत वाला है और यह अल्लाह तआला ही की विशेषता है.

(२९) यानी सज्दे का हुक्म उनके लिये और ज़्यादा ईमान से दूरी का कारण हुआ.

सूरए फ़ुरक़ान - छटा रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बुर्ज से सात ग्रहों की मंज़िलें मुराद हैं जिनकी तादाद बारह है - (१) हमल (मेष), (२) सौर (वृषभ), (३) जौज़ा (मिथुन),(४) सरतान(कर्क), (५) असद (सिंह), (६) सुंबुला (कन्या), (७) मीज़ान (तुला),(८) अक़रब (वृश्चिक),(९) क़ौस (धनु), (१०) जदी (मकर),(११) दलव (कुम्भ) ,(१२) हूत (मीन).

(२) चिराग़ से यहाँ सूरज मुराद है.

(३) कि उनमें एक के बाद दूसरा आता है और उसका क़ायम मुक़ाम होता है कि जिसका अमल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे. ऐसा ही फ़रमाया हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने. और रात दिन का एक दूसरे के बाद आना और क़ायम मुक़ाम होना अल्लाह तआला की क़ुदरत और हिकमत का प्रमाण है.

(४) इत्मीनान और विक़ार के साथ, विनम्रता की शान से, कि घमण्डी तरीक़े से जूते खटखटाते, पाँव ज़ोर से मारते, इतराते, कि

وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ لَا
يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ
اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ
فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ
اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا
بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ
اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ
بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ خٰلِدِيْنَ

एतिदाल(संतुलन) पर रहें[१०]﴿६७﴾ और वो जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअबूद को नहीं पूजते[११] और उस जान को जिसकी अल्लाह ने हुरमत(इज़्ज़त) रखी[१२] नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते,[१३] और जो यह काम करे वह सज़ा पाएगा, बढ़ाया जाएगा उसपर अज़ाब क़यामत के दिन[१४] और हमेशा उसमें ज़िल्लत से रहेगा﴿६९﴾ मगर जो तौबह करे[१५] और ईमान लाए[१६] और अच्छा काम करे[१७] तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों में बदल देगा,[१८] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴿७०﴾ और जो तौबह करे और अच्छा काम करे तो वह अल्लाह की तरफ़ रूजू लाया जैसी चाहिये थी﴿७१﴾ और जो झूठी गवाही नहीं देते[१९] और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं[२०]﴿७२﴾ और वो कि जब उन्हें उनके रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उन पर[२१] बहरे अंधे होकर नहीं गिरते[२२]﴿७३﴾ और वो जो अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठण्डक[२३] और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना[२४]﴿७४﴾ उनको जन्नत का सब से ऊँचा बालाख़ाना इनाम मिलेगा बदला उनके सब्र का और वहां मुजरे और सलाम के साथ उनकी पेशवाई होगी[२५]﴿७५﴾ हमेशा उसमें रहेंगे. क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की

यह घमण्डियों का तरीक़ा है और शरीअत ने इसे मना फ़रमाया है.

(५) और कोई नागवार कलिमा या बेहूदा या अदब और तहज़ीब के ख़िलाफ़ बात कहते हैं.

(६) यह सलाम मुतारिकत का है यानी जाहिलों के साथ बहस या लड़ाई झगड़ा करने से परहेज़ करते हैं या ये मानी हैं कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरूस्त हो और उसमें कष्ट और गुनाह से मेहफ़ूज़ रहें. हसन बसरी ने फ़रमाया कि यह तो उन बन्दों के दिन का हाल है और उनकी रात का बयान आगे आता है. मुराद यह है कि उनकी मजलिसी ज़िन्दगी और लोगों के साथ व्यवहार ऐसा पाकीज़ा है. और उनकी एकान्त की ज़िन्दगी और सच्चाई के साथ सम्बन्ध यह है जो आगे बयान किया जाता है.

(७) यानी नमाज़ और इबादत में रात भर जागते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं और अल्लाह तआला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी रात भर जागने का सवाब अता फ़रमाता है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जिस किसी ने इशा के बाद दो रकअत या ज़्यादा नफ़्ल पढ़े वह रात भर जागने वालों में दाख़िल है. मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से अदा की उसने आधी रात के क़याम का सवाब पाया और जिसने फ़ज्र भी जमाअत के साथ अदा की वह सारी रात इबादत करने वाले की तरह है.

(८) यानी लाज़िम, जुदा न होने वाला. इस आयत में उन बन्दों की शब-बेदारी और इबादत का ज़िक्र फ़रमाने के बाद उनकी उस दुआ का बयान किया. इससे यह ज़ाहिर करना मक़सूद है कि वो इतनी ज़्यादा इबादत करने के बावुजूद अल्लाह तआला का ख़ौफ़ खाते हैं और उसके समक्ष गिड़गिड़ाते हैं.

(९) इसराफ़ गुनाहों में ख़र्च करने को कहते हैं. एक बुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं, दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा नेकी में इसराफ़ ही नहीं. और तंगी करना यह है कि अल्लाह तआला के निर्धारित अधिकारों को अदा करने में कमी करे. यही हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया. हदीस शरीफ़ में है, सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने किसी हक़ को मना किया उसने तंगी की और जिसने नाहक़ में ख़र्च किया उसने इसराफ़ किया. यहाँ उन बन्दों के ख़र्च करने का हाल बयान फ़रमाया जा रहा है कि वो इसराफ़ और तंगी के दोनों बुरे तरीक़ों से बचते हैं.

(१०) अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहो अन्हो से अपनी बेटी ब्याहते वक़्त ख़र्च का हाल पूछा तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेकी दो बुराइयों के बीच है. इससे मुराद यह थी कि ख़र्च में बीच का तरीक़ा इख़्तियार करना नेकी है और वह इसराफ़ यानी हद से अधिक ख़र्च करने और तंगी के बीच है जो दोनों बुराइयाँ हैं. इससे अब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वह इस आयत के मज़मून की तरफ़ इशारा कर रहे हैं. मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि इस आयत में जिन

فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي
لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۝

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ مَكِّيَّةٌ (٢٦) (٤٧)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طسم ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ
نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ نَشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ
مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۝
وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ
مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا
كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ

منزل ٥

जगह﴿७६﴾ तुम फ़रमाओ[२६] तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं मेरे रब के यहाँ अगर तुम उसे न पूजो तो तुमने झुटलाया[२७] तो अब होगा वह अज़ाब कि लिपट रहेगा[२८]﴿७७﴾

२६- सूरए शुअरा

सूरए शुअरा मक्का में उतरी, इसमें २२७ आयतें, ११ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
तॉ-सीन-मीम﴿१﴾ ये आयतें हैं रौशन किताब की[२]﴿२﴾ कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उनके ग़म में कि वो ईमान नहीं लाए[३]﴿३﴾ अगर हम चाहें तो आसमान से उनपर कोई निशानी उतारें कि उनके ऊंचे ऊंचे उसके हुज़ूर झुके रह जाएं[४]﴿४﴾ और नहीं आती उनके पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत मगर उससे मुंह फेर लेते हैं[५]﴿५﴾ तो बेशक उन्होंने झुटलाया तो अब आया चाहती हैं ख़बरें उनके ठट्ठे की[६]﴿६﴾ क्या उन्होंने ज़मीन को न देखा हमने उसमें कितने इज़्ज़त वाले जोड़े उगाए[७]﴿७﴾ बेशक उसमें ज़रूर निशानी है[८] और उनके अक्सर ईमान लाने वाले नहीं﴿८﴾ और बेशक तुम्हारा रब ज़रूर वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है[९]﴿९﴾

दूसरा रूकू

और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के पास जा﴿१०﴾ जो फ़िरऔन की क़ौम है[१]

हज़रात का ज़िक्र है वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बड़े सहाबा हैं जो न स्वाद के लिये खाते हैं, न ख़ूबसूरती और ज़ीनत(श्रंगार) के लिये पहनते हैं. भूख रोकना, तन ढाँपना, सर्दी गर्मी की तकलीफ़ से बचना, इतना ही उनका मक़सद है.
(११) शिर्क से बरी और बेज़ार हैं.
(१२) और उसका ख़ून मुबाह न किया जैसे कि मूमिन और एहद वाले उसको ...
(१३) नेकों से . इन बड़े गुनाहों की नफ़ी फ़रमाने में काफ़िरों पर तअरीज़ है जो इन बुराइयों में जकड़े हुए थे.
(१४) यानी वह शिर्क के अज़ाब में भी गिरफ़्तार होगा और इन गुनाहों का अज़ाब उसपर और ज़्यादा किया जाएगा.
(१५) शिर्क और बड़े गुनाहों से.
(१६) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
(१७) यानी तौबह के बाद नेकी अपनाए.
(१८) यानी बुराई करने के बाद नेकी की तौफ़ीक़ देकर या ये मानी कि बुराईयों को तौबह से मिटा देगा और उनकी जगह ईमान और फ़रमाँबरदारी वग़ैरह नेकियाँ क़ायम फ़रमाएगा. (मदारिक) मुस्लिम की हदीस में है कि क़यामत के दिन एक व्यक्ति हाज़िर किया जाएगा. फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म से उसके छोटे गुनाह एक एक करके उसको याद दिलाते जाएंगे. वह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरता होगा. इसके बाद कहा जाएगा कि हर एक बुराई के बदले तुझे नेकी दी गई. यह बयान फ़रमाते हुए सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला की बन्दानवाज़ी और उसकी करम की शान पर ख़ुशी हुई और नूरानी चेहरे पर सुरूर से तबस्सुम के निशान ज़ाहिर हुए.
(१९) और झूटों की मजलिस से अलग रहते हैं और उनके साथ मुख़ालिफ़त नहीं करते.
(२०) और अपने आप को लहव (व्यर्थ कर्म) और बातिल से प्रभावित नहीं होने देते. ऐसी मजलिसों से परहेज़ करते हैं.
(२१) अनजाने तरीक़े से. अज्ञानता के अन्दाज़ में.
(२२) कि न सोचें न समझें बल्कि होश के कानों से सुनते हैं और देखने वाली आँख से देखते हैं और नसीहत से फ़ायदा उठाते

الظّٰلِمِيْنَ ۙ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ؕ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا
يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝ وَلَهُمْ عَلَيَّ
ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۚ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا
بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ۝ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ
اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ؕ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ
فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ
فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا
مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ
لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَتِلْكَ
نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ؕ قَالَ
فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

क्या वो न डरेंगे[२] ﴿११﴾ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूँ कि वो मुझे झुटलाएंगे ﴿१२﴾ और मेरा सीना तंगी करता है[३] और मेरी ज़बान नहीं चलती[४] तो तू हारून को भी रसूल कर[५] ﴿१३﴾ और उनका मुझपर एक इल्ज़ाम है[६] तो मैं डरता हूँ कहीं मुझे[७] क़त्ल करदें ﴿१४﴾ फ़रमाया यूँ नहीं[८] तुम दोनों मेरी आयतें लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं[९] ﴿१५﴾ तो फ़िरऔन के पास जाओ फिर उससे कहो हम दोनों उसके रसूल हैं जो रब है सारे जगत का ﴿१६﴾ कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को छोड़ दे[१०] ﴿१७﴾ बोला क्या हमने तुम्हें अपने यहाँ बचपन में न पाला और तुमने हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई बरस गुज़ारे[११] ﴿१८﴾ और तुमने किया अपना वह काम जो तुमने किया[१२] और तुम नाशुक्रे थे[१३] ﴿१९﴾ मूसा ने फ़रमाया, मैंने वह काम किया जबकि मुझे राह की ख़बर न थी[१४] ﴿२०﴾ तो मैं तुम्हारे यहां से निकल गया जब कि तुम से डरा[१५] तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अता फ़रमाया[१६] और मुझे पैग़म्बरों से किया ﴿२१﴾ और यह कोई नेअमत है जिसका तू मुझ पर एहसान जताता है कि तूने गुलाम बनाकर रखे बनी इस्राईल[१७] ﴿२२﴾ फ़िरऔन बोला और सारे जगत का रब क्या है[१८] ﴿२३﴾ मूसा ने फ़रमाया रब आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच में है अगर तुम्हें यक़ीन हो[१९] ﴿२४﴾ अपने

हैं. और इन आयतों पर फ़रमाँबरदारी के साथ अमल करते हैं.

(२३) यानी फ़रहत और सुरूर. मुराद यह है कि हमें बीबियाँ और नेक औलाद, परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाली, अता फ़रमा कि उनके अच्छे कर्म, अल्लाह व रसूल के अहकाम का पालन देखकर हमारी आँखें ठण्डी और दिल ख़ुश हों.

(२४) यानी हमें ऐसा परहेज़गार और ऐसा इबादत वाला और ख़ुदापरस्त बना कि हम परहेज़गारों की पेशवाई के क़ाबिल हों और वो दीन के कामों में हमारा अनुकरण करें. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इसमें दलील है कि आदमी को दीनी पेशवाई और सरदारी की रग़बत और तलब चाहिये. इन आयतों में अल्लाह तआला ने अपने नेक बन्दों के गुण बयान फ़रमाए. इसके बाद उनकी जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है.

(२५) फ़रिश्ते अदब के साथ उनका सत्कार करेंगे या अल्लाह तआला उनकी तरफ़ सलाम भेजेगा.

(२६) ऐ नबियों के सरदार, मक्के वालों से कि ....

(२७) मेरे रसूल और मेरी किताब को ...

(२८) यानी हमेशा का अज़ाब और लाज़मी हलाकत.

२६ - सूरए शुअरा - पहला रूकू

(१) सूरए शुअरा मक्के में उतरी, सिवाय आख़िर की चार आयतों के जो *"वश्शुअराओ यत्तबिउहुम"* से शुरू होती है. इस सूरत में ग्यारह रूकू, दो सौ सत्ताईस आयतें, एक हज़ार दो सौ उनासी कलिमे और पाँच हज़ार पाँच सौ चालीस अक्षर हैं.

(२) यानी क़ुरआने पाक की, जिसका चमत्कार ज़ाहिर है और जो सच्चाई को बातिल से अलग करने वाला है . इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मेहरबानी और करम के अन्दाज़ में सम्बोधन होता है.

(३) जब मक्का वाले ईमान न लाए और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया तो हुज़ूर पर उनकी मेहरूमी बहुत भारी गुज़री. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी कि आप इस क़दर ग़म न करें.

(४) और कोई गुमराही और नाफ़रमानी के साथ गर्दन न उठा सके.

(५) यानी दम-ब-दम उनका कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो नसीहत, ज़िक्र और जो वही उतरती है वो उसका इन्कार करते चले जाते हैं.

(६) यह चेतावनी है और इसमें डराना है कि बद्र के दिन या क़यामत के रोज़ जब उन्हें अज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि क़ुरआन और रसूल के झुटलाने का यह परिणाम है.

(७) यानी तरह तरह के बेहतरीन और नफ़ा देने वाले पेड़ पौधे पैदा किये. शअबी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावर है. जो जन्नती है वह इज़्ज़त वाला और करीम, और जो जहन्नमी है वो बदबख़्त और मलामत पाया हुआ है.
(८) अल्लाह ताअला की भरपूर क़ुदरत पर.
(९) काफ़िरों से बदला लेता और ईमान वालों पर मेहरबानी फ़रमाता है.

सूरए शुअरा - दूसरा रूकू

(१) जिन्होंने कुफ़्र और गुमराही से अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाकर और उन्हें तरह तरह की यातनाएं देकर उन पर अत्याचार किया. उस क़ौम का नाम क़िब्त है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया था कि उन्हें उनकी बदकिरदारी पर अल्लाह के अज़ाब से डराएं.
(२) अल्लाह से और अपनी जानों को अल्लाह तआला पर ईमान लाकर और उसकी फ़रमाँबरदारी करके उसके अज़ाब से न बचाएंगे. इसपर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में..
(३) उनके झुटलाने से.
(४) यानी बात चीत करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है. उस तकलीफ़ की वजह से जो बचपन में मुंह में आग का अंगारा रख लेने की वजह से ज़बान में हो गई है.
(५) ताकि वह रिसालत के प्रचार में मेरी मदद करें. जिस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को शाम में नबुव्वत दी गई उस वक़्त हज़रत हारून अलैहिस्सलाम मिस्र में थे.
(६) कि मैंने क़िब्ती को मारा था.
(७) उसके बदले में.
(८) तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की प्रार्थना मन्ज़ूर फ़रमा कर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया.
(९) जो तुम कहो और जो तुम्हें दिया जाए.
(१०) ताकि हम उन्हें शाम की धरती पर ले जाएं. फ़िरऔन ने चारसौ बरस तक बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाए रखा था. उस वक़्त बनी इस्राईल की तादाद छ लाख तीस हज़ार थी. अल्लाह तआला का यह हुक्म पाकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र की तरफ़ रवाना हुए. आप पशमीने का जुब्बा पहने हुए थे. मुबारक हाथ में लाठी थी जिसके सिरे पर ज़ंबील लटकी हुई थी जिसमें सफ़र का तोशा था. इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए. हज़रत हारून अलैहिस्सलाम वहीं थे. आपने उन्हें ख़बर दी कि अल्लाह तआला ने मुझे रसूल बनाकर फ़िरऔन की तरफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फ़िरऔन को ख़ुदा की तरफ़ दावत दो. यह सुनकर आपकी वालिदा साहिबा घबराईं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहने लगीं कि फ़िरऔन तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है. जब तुम उसके पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा. लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उनके यह फ़रमाने से न रूके और हज़रत हारून को साथ लेकर रात के वक़्त फ़िरऔन के दरवाज़े पर पहुंचे. दरवाज़ा खटखटाया, पूछा आप कौन हैं ? हज़रत ने फ़रमाया मैं हूँ मूसा, सारे जगत के रब का रसूल. फ़िरऔन को ख़बर दी गई. सुबह के वक़्त आप बुलाए गए. आप ने पहुंचकर अल्लाह तआला की रिसालत अदा की और फ़िरऔन के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मुक़र्रर किये गए थे, वह पहुंचाया. फ़िरऔन ने आपको पहचाना.
(११) मुफ़स्सिरों ने कहा तीस बरस. उस ज़माने में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के लिबास पहनते थे और उसकी सवारियों में सवार होते थे और उसके बेटे मशहूर थे.
(१२) क़िब्ती को क़त्ल किया.
(१३) कि तुमने हमारी नेअमत का शुक्रिया अदा न किया और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया.
(१४) मैं न जानता था कि घूंसा मारने से वह शख़्स मर जाएगा. मेरा मारना अदब सिखाने के लिये था न कि क़त्ल के लिये.
(१५) कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और मदयन शहर को चला गया.
(१६) मदयन से वापसी के वक़्त. हुक्म से यहाँ या नबुव्वत मुराद है या इल्म.
(१७) यानी इसमें तेरा क्या एहसान है कि तू ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया, क्योंकि मेरे तुझ तक पहुंचने का कारण तो यही हुआ कि तूने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बनाया, उनकी औलाद को क़त्ल किया. यह तेरा ज़ुल्म इसका कारण हुआ कि मेरे माँ बाप मुझे पाल पोस न सके और मुझे दरिया में डालने पर मजबूर हुए. तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालदैन के पास रहता. इसलिये यह बात क्या इस क़ाबिल है कि इसका एहसान जताया जाए. फ़िरऔन मूसा अलैहिस्सलाम की इस तक़रीर से लाजवाब होगया और उसने अपने बोलने का ढंग बदला और यह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरू की.
(१८) जिसका तुम अपने आपको रसूल बताते हो.
(१९) यानी अगर तुम चीज़ों को प्रमाण से जानने की योग्यता रखते हो तो उन चीज़ों की पैदायश उसके अस्तित्व यानी होने का खुला प्रमाण है. ईक़ान यानी यक़ीन उस इल्म को कहते हैं जो तर्क से या प्रमाण से हासिल हो. इसीलिये अल्लाह तआला की शान

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ قَالَ لِمَنْ
حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ
لَمَجْنُوْنٌ ۝ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ
مُّبِيْنٍ ۝ قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَّنَزَعَ يَدَهٗ
فَاِذَا هِىَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ
فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝
فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ وَّقِيْلَ

आस पास वालों से बोला क्या तुम ग़ौर से सुनते नहीं[२०] ﴿२५﴾ मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का[२१] ﴿२६﴾ बोला तुम्हारे ये रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अक़्ल नहीं रखते[२२] ﴿२७﴾ मूसा ने फ़रमाया रब पूरब और पश्चिम का और जो कुछ उन के बीच है[२३] अगर तुम्हें अक़्ल हो[२४] ﴿२८﴾ बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा[२५] ﴿२९﴾ फ़रमाया क्या अगरचे मैं तेरे पास रौशन चीज़ लाऊं[२६] ﴿३०﴾ कहा तो लाओ अगर सच्चे हो ﴿३१﴾ तो मूसा ने अपना असा डाल दिया जभी वह साफ़ खुला अजगर हो गया[२७] ﴿३२﴾ और अपना हाथ[२८] निकाला तो जभी वह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा[२९] ﴿३३﴾

तीसरा रूकू

बोला अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक ये जानकार जादूगर हैं ﴿३४﴾ चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने जादू के ज़ोर से, तब तुम्हारी क्या सलाह है[१] ﴿३५﴾ वो बोले इन्हें और इनके भाई को ठहराए रहो और शहरों में जमा करने वाले भेजो ﴿३६﴾ कि वो तेरे पास ले आएं हर बड़े जानकार जादूगर को[२] ﴿३७﴾ तो जमा किये गए जादूगर एक मुक़र्रर दिन के वादे पर[३] ﴿३८﴾ और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा हो गए[४] ﴿३९﴾ शायद हम उन जादूगरों ही की पैरवी करें अगर ये ग़ालिब आएं[५] ﴿४०﴾ फिर जब

में "मूक़िन" यक़ीन वाला नहीं कहा जाता.

(२०) उस वक़्त उसके चारों तरफ़ उसकी क़ौम के प्रतिष्ठित लोगों में से पाँच सौ व्यक्ति ज़ेवरों से सजे, सोने की कुर्सीयों पर बैठे थे. उन से फ़िरऔन का यह कहना क्या तुम ग़ौर से नहीं सुनते, इस अर्थ में था कि वो आसमान और ज़मीन को क़दीम समझते थे और उनके नष्ट किये जाने के इन्कारी थे. मतलब यह था कि जब ये चीज़ें क़दीम यानी अपने आप वुजूद में आईं तो इन के लिये रब की क्या ज़रूरत. अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन चीज़ों से इस्तदलाल पेश करना चाहा जिनकी पैदाइश और जिनकी फ़ना देखने में आचुकी है.

(२१) यानी अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तदलाल नहीं कर सकते तो ख़ुद तुम्हारे नुफ़ूस से इस्तदलाल पेश किया जाता है. अपने आपको जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वो नष्ट हो गए. तो अपनी पैदायश से और उनके नष्ट हो जाने से पैदा करने और मिटा देने वाले के अस्तित्व का सुबूत मिलता है.

(२२) फ़िरऔन ने यह इसलिये कहा कि वह अपने सिवा किसी मअबूद के अस्तित्व का मानने वाला न था और जो उसके मअबूद होने का अक़ीदा न रखे उसको समझ से वंचित कहता था. हक़ीक़त में इस तरह की गुफ़्तगू मजबूरी और लाचारी के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है. लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हिदायत का फ़र्ज़ पूरी तरह निभाया और उसकी इस सारी निरर्थक बातचीत के बावुजूद फिर अतिरिक्त बयान की तरफ़ मुतवज्जह हुए.

(२३) क्योंकि पूर्व से सूर्य का उदय करना और पश्चिम में डूब जाना और साल की फ़सलों में एक निर्धारित हिसाब पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरह के प्रबन्ध, यह सब उसके वुजूद यानी अस्तित्व और क्षमता यानी क़ुदरत के प्रमाण हैं.

(२४) अब फ़िरऔन आश्चर्य चकित हो गया और अल्लाह की क़ुदरत के चिन्हों के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उससे न बन पड़ा.

(२५) फ़िरऔन की क़ैद क़त्ल से बदतर थी. उसका जेल ख़ाना तंग, अंधेरा, गहरा गढ़ा था . उसमें अकेला डाल देता था, न वहाँ कोई आवाज़ सुनाई देती थी, न कुछ नज़र आता था.

(२६) जो मेरी रिसालत का प्रणाम हो. मुराद इससे चमत्कार है. इसपर फ़िरऔन ने.

(२७) लाठी अजगर बन कर आसमान की तरफ़ एक मील के बराबर उड़ी फिर उतर कर फ़िरऔन की तरफ़ आई और कहने लगी,

لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ
اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا
لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾
قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى
اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ
وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى
مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِيَ
السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ
اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ؗ
اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

منزل ٥

जादूगर आए फ़िरऔन से बोले क्या हमें कुछ मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए﴾४१﴿ बोला हाँ और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब (नज़दीकी) हो जाओगे(६)﴾४२﴿ मूसा ने उनसे फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है(७)﴾४३﴿ तो उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है(८)﴾४४﴿ तो मूसा ने अपना असा डाला जभी वह उनकी बनावटों को निगलने लगा(९)﴾४५﴿ अब सज्दे में गिरे﴾४६﴿ जादूगर बोले हम ईमान लाए उसपर जो सारे जगत का रब है﴾४७﴿ जो मूसा और हारून का रब है﴾४८﴿ फ़िरऔन बोला क्या तुम उसपर ईमान लाए पहले इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया,(१०) तो अब जानना चाहते हो(११)﴾४९﴿ मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूंगा और तुम सब को सूली दूंगा (१२) वो बोले कुछ नुक़सान नहीं (१३) हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं(१४)﴾५०﴿ हमें तमअ (लालच)

ऐ मूसा हुक्म दीजिये. फ़िरऔन ने घबराकर कहा उसकी क़सम जिसने तुम्हें रसूल बनाया, इसे पकड़ो. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे हाथ में लिया तो पहले की तरह लाठी हो गई. फ़िरऔन कहने लगा, इसके सिवा और भी कोई चमत्कार है. आपने फ़रमाया हाँ . और उसको चमकती हथेली दिखाई.

(२८) गिरेबान में डालकर.

(२९) उससे सूरज की सी किरन ज़ाहिर हुई.

सूरए शुअरा - तीसरा रूकू

(१) क्योंकि उस ज़माने में जादू का बहुत रिवाज था इसलिये फ़िरऔन ने ख़याल किया यह बात चल जाएगी और उसकी क़ौम के लोग इस धोखे में आकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से नफ़रत करने लगेंगे और उनकी बात क़ुबूल न करेंगे.

(२) जो जादू के इल्म में उनके कहने के मुताबिक़ मूसा अलैहिस्सलाम से बढ़ कर हो और वो लोग अपने जादू से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कारों का मुक़ाबला करें ताकि हज़रत मूसा के लिये हुज्जत बाक़ी न रहे और फ़िरऔन के लोगों को यह कहने का मौक़ा मिल जाए कि यह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नबुव्वत की दलील नहीं.

(३) वह दिन फ़िरऔन की क़ौम की ईद का था और इस मुक़ाबले के लिये चाश्त का समय निर्धारित किया गया था.

(४) ताकि देखो कि दोनों पक्ष क्या करते हैं और उनमें कौन जीतता है.

(५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर. इससे उनका तात्पर्य जादूगरों का अनुकरण करना न था बल्कि ग़रज़ यह थी कि इस बहाने लोगों को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अनुकरण से रोकें.

(६) तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें विशेष उपाधियाँ दी जाएंगी, सब से पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, सबसे बाद तक दरबार में रहोगे. इसके बाद जादूगरों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि क्या हज़रत अपनी लाठी पहले डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना जादूई सामान डालें.

(७) ताकि तुम उसका अंजाम देख लो.

(८) उन्हें अपनी जीत का इत्मीनान था क्योंकि जादू के कामों में जो इन्तिहा के काम थे ये उनको काम में लाए थे और पूरा यक़ीन रखते थे कि अब कोई जादू इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता.

(९) जो उन्होंने जादू के ज़रिये बनाई थीं यानी उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ जो जादू से अजगर बनकर दौड़ते नज़र आ रहे थे. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी अजगर बनकर उन सब को निगल गई फिर उसको हज़रत मूसा ने अपने मुबारक हाथ में लिया

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾
فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ
لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَ
اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَ
اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾
فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾
قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى
مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ
فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ
اَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे इसपर कि हम सबसे पहले ईमान लाए[१५] ﴿५१﴾

चौथा रूकू

और हमने मूसा को वही भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को[१] ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है[२] ﴿५२﴾ अब फ़िरऔन ने शहरों में जमा करने वाले भेजे[३] ﴿५३﴾ कि ये लोग एक थोड़ी जमाअत हैं ﴿५४﴾ और बेशक वो हम सब का दिल जलाते हैं[४] ﴿५५﴾ और बेशक हम सब चौकन्ने हैं[५] ﴿५६﴾ तो हमने उन्हें[६] बाहर निकाला बाग़ों और चश्मों ﴿५७﴾ और ख़ज़ानों और उमदा मकानों से ﴿५८﴾ हमने ऐसा ही किया और उनका वारिस कर दिया बनी इस्राईल को[७] ﴿५९﴾ तो फ़िरऔनियों ने उनका पीछा किया दिन निकले ﴿६०﴾ फिर जब आमना सामना हुआ दोनों गिरोहों का[८] मूसा वालों ने कहा हमको उन्होंने आ लिया[९] ﴿६१﴾ मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं,[१०] बेशक मेरा रब मेरे साथ है वह मुझे अब राह देता है ﴿६२﴾ तो हमने मूसा को वही(देववाणी) फ़रमाई कि दरिया पर अपना असा मार[११] तो जभी दरिया फट गया[१२] तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़[१३] ﴿६३﴾ और वहाँ क़रीब लाए हम दूसरों को[१४] ﴿६४﴾ और हमने बचा लिया मूसा और उसके सब

तो वह पहले की तरह हो गई. जब जादूगरों ने यह देखा तो उन्हें यक़ीन हो गया कि यह जादूगर नहीं है.

(१०) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तुम्हारे उस्ताद हैं इसीलिये वह तुम से बढ़ गए.

(११) कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए.

(१२) इससे उद्देश यह था कि आम लोग डर जाएं और जादूगरों को देखकर लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न ले आएं.

(१३) चाहे दुनिया में कुछ भी पेश आए क्योंकि.

(१४) ईमान के साथ और हमें अल्लाह तआला से रहमत की उम्मीद है.

(१५) फ़िरऔन की जनता में से या उस भीड़ में से. उस वाक़ए के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कई साल वहाँ क़याम फ़रमाया और उन लोगों को हक़ की दावत देते रहे लेकिन उनकी सरकशी बढ़ती गई.

सूरए शुअरा - चौथा रूकू

(१) यानी बनी इस्राईल को मिस्र से.

(२) फ़िरऔन और उसके लश्कर पीछा करेंगे. और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे. हम तुम्हें निजात देंगे और उन्हें डुबा देंगे.

(३) लश्करों को जमा करने के लिये. जब लश्कर जमा होगए तो उनकी कसरत के मुक़ाबिल बनी इस्राईल की संख्या थोड़ी मालूम होने लगी. चुनांन्चे फ़िरऔन ने बनी इस्राईल की निस्बत कहा.

(४) हमारी मुख़ालिफ़त करके और हमारी इजाज़त के बिना हमारी सरज़मीन से निकल कर.

(५) हथियार बाँधे तैयार हैं.

(६) यानी फ़िरऔनियों को.

(७) फ़िरऔन और उसकी क़ौम के ग़र्क़ यानी डूबने के बाद.

(८) और उनमें से हर एक ने दूसरे को देखा.

(९) अब वो हम पर क़ाबू पा लेंगे. न हम उनके मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं, न भागने की जगह है क्योंकि आगे दरिया है.

(१०) अल्लाह के वादे पर पूरा पूरा भरोसा है.

(११) चुनांन्चे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया पर लाठी मारी.

(१२) और उसके बारह हिस्से नमूदार हुए.

مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَاتْلُ
عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝
قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ۝ قَالَ هَلْ
يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝
قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ قَالَ
أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ
الْأَقْدَمُونَ ۝ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝
الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَ
يَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝ وَالَّذِي
يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۝ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي
خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي
بِالصَّالِحِينَ ۝ وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي
الْآخِرِينَ ۝ وَاجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۝

साथ वालों को[१५] ﴾६५﴿ फिर दूसरों को डुबो दिया[१६] ﴾६६﴿ बेशक इसमें ज़रूर निशानी है,[१७] और उनमें अक्सर मुसलमान न थे[१८] ﴾६७﴿ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला[१९] मेहरबान है[२०] ﴾६८﴿

पाँचवां रूकू

और उनपर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की[१] ﴾६९﴿ जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो[२] ﴾७०﴿ बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उनके सामने आसन मारे रहते हैं ﴾७१﴿ फ़रमाया क्या वो तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारो ﴾७२﴿ या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं[३] ﴾७३﴿ बोले बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते पाया ﴾७४﴿ फ़रमाया तो क्या तुम देखते हो ये जिन्हें पूज रहे हो ﴾७५﴿ तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा[४] ﴾७६﴿ बेशक वो सब मेरे दुश्मन हैं[५] मगर पर्वरदिगारे आलम[६] ﴾७७﴿ वो जिसने मुझे पैदा किया[७] तो वह मुझे राह देगा[८] ﴾७८﴿ और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है[९] ﴾७९﴿ और जब मैं बीमार हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है[१०] ﴾८०﴿ और वह मुझे वफ़ात (मृत्यु) देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा[११] ﴾८१﴿ और वह जिसकी मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़यामत के दिन बख़्शेगा[१२] ﴾८२﴿ ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अता कर[१३] और मुझे उनसे मिला दे जो तेरे ख़ास क़ुर्ब (समीपता) के अधिकारी हैं[१४] ﴾८३﴿ और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में[१५] ﴾८४﴿ और मुझे उनमें कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं[१६] ﴾८५﴿

(१३) और उनके बीच ख़ुश्क राहें.
(१४) यानी फ़िरऔन और फ़िरऔनियों को, यहाँ तक कि वो बनी इस्राईल के रास्तों पर चल पड़े जो उनके लिये दरिया में अल्लाह की क़ुदरत से पैदा हुए थे.
(१५) दरिया से सलामत निकाल कर.
(१६) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम को इस तरह कि जब बनी इस्राईल कुल के कुल दरिया से पार होगए और सारे फ़िरऔनी दरिया के अन्दर आगए तो दरिया अल्लाह के हुक्म से मिल गया और पहले की तरह हो गया और फ़िरऔन अपनी क़ौम सहित डूब गया.
(१७) अल्लाह की क़ुदरत पर और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चमत्कार.
(१८) यानी मिस्र निवासियों में सिर्फ़ फ़िरऔन की बीबी आसिया और हिज़क़ील, जिनको फ़िरऔन की मूमिन औलाद कहते हैं, वो अपना ईमान छुपाए रहते थे और फ़िरऔन के चचाज़ाद थे और मरयम जिसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र का निशान बताया था, जब कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके ताबूत को दरिया से निकाला.
(१९) कि उसने काफ़िरों को ग़र्क़ करके बदला लिया.
(२०) ईमान वालों पर जिन्हें ग़र्क़ होने से बचाया.

सूरए शुअरा - पाँचवां रूकू

(१) यानी मुश्रिकों पर.
(२) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जानते थे कि वह लोग बुत परस्त हैं इसके बावुजूद आपका सवाल फ़रमाना इसलिये था ताकि उन्हें दिखा दें कि जिन चीज़ों को वो लोग पूजते हैं वो किसी तरह उसके मुस्तहिक़ नहीं.
(३) जब यह कुछ नहीं तो उन्हें तुमने मअबूद कैसे ठहराया.
(४) कि ये न इल्म रखते हैं न क़ुदरत, न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़ा या नुक़सान पहुंचा सकते हैं.

وَاغْفِرْ لِأَبِيٓ إِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ
يُبْعَثُوْنَ ۝ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۝ إِلَّا
مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۝ وَقِيْلَ لَهُمْ
أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ
أَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۝ وَجُنُوْدُ
إِبْلِيْسَ أَجْمَعُوْنَ ۝ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۝
تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ إِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمَآ أَضَلَّنَآ إِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَمَا لَنَا
مِنْ شَافِعِيْنَ ۝ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ۝ فَلَوْ أَنَّ لَنَا
كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَأٰيَةً ۚ
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ۝ إِذْ قَالَ

और मेरे बाप को बख़्श दे[१७] बेशक वह गुमराह है﴾८६﴿ और मुझे रूस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे[१८]﴾८७﴿ जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे﴾८८﴿ मगर वह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर[१९]﴾८९﴿ और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के लिये[२०]﴾९०﴿ और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिये﴾९१﴿ और उन से कहा जाएगा[२१] कहां हैं वो जिन को तुम पूजते थे﴾९२﴿ अल्लाह के सिवा, क्या वो तुम्हारी मदद करेंगे[२२] या बदला लेंगे﴾९३﴿ तो औंधा दिये गए जहन्नम में वह और सब गुमराह[२३]﴾९४﴿ और इब्लीस के लश्कर सारे[२४]﴾९५﴿ कहेंगे और वो उसमें आपस में झगड़ते होंगे﴾९६﴿ ख़ुदा की क़सम बेशक हम खुली गुमराही में थे﴾९७﴿ जब कि तुम्हें सारे जगत के रब के बराबर ठहराते थे﴾९८﴿ और हमें न बहकाया मगर मुजरिमों ने[२५]﴾९९﴿ तो अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं[२६]﴾१००﴿ और न कोई ग़मख़्वार दोस्त[२७]﴾१०१﴿ तो किसी तरह हमें फिर जाना होता[२८] कि हम मुसलमान हो जाते﴾१०२﴿ बेशक इसमें निशानी है, और उनमें बहुत ईमान वाले न थे﴾१०३﴿ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴾१०४﴿

छटा रूकू

नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया[१]﴾१०५﴿ जबकि

(५) मैं उनका पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता.

(६) मेरा रब है, मेरे काम बनाने वाला है. मैं उसकी इबादत करता हूँ, वही इबादत के लायक़ है उसके गुण ये हैं.

(७) कुछ नहीं से सब कुछ फ़रमाया और अपनी इताअत के लिये बनाया.

(८) दोस्ती के आदाब की, जैसी कि पहले हिदायत फ़रमा चुका है दीन और दुनिया की नेक बातों की.

(९) और मेरा रोज़ी देने वाला है.

(१०) मेरी बीमारियों को दूर करता है. इब्ने अता ने कहा, मानी ये हैं कि जब मैं ख़ल्क़ की दीद से बीमार होता हूँ तो सच्चाई के अवलोकन से मुझे शिफ़ा यानी अच्छाई अता फ़रमाता है.

(११) मौत और ज़िन्दगी उसकी क़ुदरत के अन्तर्गत है.

(१२) नबी मअसूम हैं. गुनाह उनसे होते ही नहीं. उनका इस्तिग़फ़ार यानी माफ़ी माँगना अपने रब के समक्ष विनम्रता है. और उम्मत के लिये माफ़ी माँगने की तालीम है. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह के इन गुणों को बयान करना अपनी क़ौम पर हुज्जत क़ायम करना है कि मअबूद वही हो सकता है जिसके ये गुण हैं.

(१३) हुक्म से या इल्म मुराद है या हिकमत या नबुव्वत.

(१४) यानी नबी अलैहिमुस्सलाम. और आपकी यह दुआ क़ुबूल हुई. चुनांन्चे अल्लाह तआला फ़रमाता है *"व इन्नहू फ़िल आख़िरते लमिनस सॉलिहीन"*.

(१५) यानी उन उम्मतों में जो मेरे बाद आएं. चुनांन्चे अल्लाह तआला ने उनको यह अता फ़रमाया कि तमाम दीनों वाले उनसे महब्बत रखते हैं और उनकी तारीफ़ करते हैं.

(१६) जिन्हें तू जन्नत अता फ़रमाएगा.

(१७) तौबह और ईमान अता फ़रमाकर, और यह दुआ आपने इस लिये फ़रमाई कि जुदाई के वक़्त आपके वालिद ने आपसे ईमान लाने का वादा किया था. जब ज़ाहिर हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है, उसका वादा झूट था, तो आप उससे बेज़ार हो गए, जैसा कि सूरए बराअत में है *"माकानस-तिग़फ़ारो इब्राहीमा लिअबीहे इल्ला अन मौइदतिन वअदहा इय्याहो फ़लम्मा तबय्यना लहू अन्नहू अदुब्बुन लिल्लाहे तबर्रआ मिन्हो"*. यानी और इब्राहीम का अपने बाप की बख़्शिश चाहना वह तो न था मगर एक वादे के सबब जो उससे कर चुका था, फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है, उससे तिनका तोड़ दिया, बेशक इब्राहीम ज़रूर

لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾
اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا
لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾
قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ
فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ
الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ

النصف   ع ٦

उनसे उनके हम क़ौम नूह ने कहा क्या तुम डरते नहीं[२]﴿१०६﴾ बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का भेजा हुआ अमीन हूँ[३]﴿१०७﴾ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो[४]﴿१०८﴾ और मैं उस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है﴿१०९﴾ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴿११०﴾ बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएं और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं[५]﴿१११﴾ फ़रमाया मुझे क्या ख़बर उनके काम क्या हैं[६]﴿११२﴾ उनका हिसाब तो मेरे रब ही पर है[७] अगर तुम्हें हिस(ज्ञान) हो[८]﴿११३﴾ और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं[९]﴿११४﴾ मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला[१०]﴿११५﴾ बोले ऐ नूह अगर तुम बाज़ न आए[११] तो ज़रूर संगसार (पथराव) किये जाओगे[१२]﴿११६﴾ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने मुझे झुटलाया[१३]﴿११७﴾ तो मुझ में और उनमें पूरा फ़ैसला करदे और मुझे मेरे साथ वाले मुसलमानों को निजात दे[१४]﴿११८﴾ तो हमने बचा लिया उसे और उसके साथ वालों को भरी हुई किश्ती में[१५]﴿११९﴾ फिर उसके बाद[१६] हमने बाक़ियों को डुबो दिया﴿१२०﴾ बेशक इसमें ज़रूर निशानी है, और उनमें अकसर मुसलमान न थे﴿१२१﴾ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴿१२२﴾

बहुत आहें करने वाला मुतहम्मिल है. (सूरए तौबह, आयत ११४).

(१८) यानी क़यामत के दिन.

(१९) जो शिर्क, कुफ़्र और दोहरी प्रवृत्ति से पाक हो उसको उसका माल भी नफ़ा देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह हो, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है, उसके अमल मुनक़ते हो जाते हैं सिवाय तीन के. एक सदक़ए जारिया, दूसरा वह माल जिससे लोग नफ़ा उठाएं, तीसरी नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे.

(२०) कि उसको देखेंगे.

(२१) मलामत और फटकार के तौर पर, उनके कुफ़्र व शिर्क पर.

(२२) अल्लाह के अज़ाब से बचाकर.

(२३) यानी बुत और उनके पुजारी सब औंधे करके जहन्नम में डाल दिये जाएंगे.

(२४) यानी उसका अनुकरण करने वाले जिन्न हों या इन्सान. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि इब्लीस के लश्करों से उसकी सन्तान मुराद है.

(२५) जिन्होंने बुत परस्ती की दावत दी या वो पहले लोग जिनका हमने अनुकरण किया या इब्लीस और उसकी सन्तान ने.

(२६) जैसे कि ईमान वालों के लिये अम्बिया और औलिया और फ़रिश्ते और मूमिनीन शफ़ाअत करने वाले हैं.

(२७) जो काम आए, यह बात काफ़िर उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और फ़रिश्ते और नेक बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअत कर रहे हैं और उनकी दोस्ती काम आ रही है. हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा, मेरे उस दोस्त का क्या हाल है और वह दोस्त गुनाहों की वजह से जहन्नम में होगा. अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि इसके दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जाएंगे वो ये कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं है और न कोई दुख बाँटने वाला दोस्त. हसन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्योंकि वो क़यामत के दिन शफ़ाअत करेंगे.

(२८) दुनिया में.

सूरए शुअरा - छटा रूकू

(१) यानी नूह अलैहिस्सलाम का झुटलाना सारे पैग़म्बरों को झुटलाना है क्योंकि दीन सारे रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों को तमाम नबियों पर ईमान लाने की दावत देते हैं.

(२) अल्लाह तआला से, कि कुफ़्र और गुनाह का त्याग करो.

عَادُ ۨ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا
تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۙ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ
أَطِيعُونِ ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً
تَعْبَثُونَ ۙ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ۚ
وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ
أَطِيعُونِ ۚ وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ۚ
أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ۙ وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۚ إِنِّي
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ قَالُوا سَوَاءٌ
عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ۙ إِنْ هَٰذَا
إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۚ فَكَذَّبُوهُ
فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۙ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ كَذَّبَتْ

منزل ٥

सातवाँ रूकू

आद ने रसूलों को झुटलाया(१)﴾१२३﴿ जबकि उनसे उनके हक़ क़ौम हूद ने फ़रमाया कि क्या तुम डरते नहीं﴾१२४﴿ बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत दार रसूल हूँ﴾१२५﴿ तो अल्लाह से डरो(२) और मेरा हुक्म मानो﴾१२६﴿ और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब﴾१२७﴿ कया हर बलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को(३)﴾१२८﴿ और मज़बूत महल चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे(४)﴾१२९﴿ और जब किसी पर गिरफ़्त करते हो तो बड़ी बेदर्दी से गिरफ़्त करते हो(५)﴾१३०﴿ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴾१३१﴿ और उससे डरो जिसने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मालूम हैं(६)﴾१३२﴿ तुम्हारी मदद की चौपायों और बेटों﴾१३३﴿ और बाग़ों और चश्मों(झरनों) से﴾१३४﴿ बेशक मुझे तुम पर डर है एक बड़े दिन के अज़ाब का(७)﴾१३५﴿ बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में न हो(८)﴾१३६﴿ यह तो नहीं मगर वही अगलों की रीति(९)﴾१३७﴿ और हमें अज़ाब होना नहीं(१०)﴾१३८﴿ तो उन्होंने उसे झुटलाया(११) तो हमने उन्हें हलाक किया(१२) बेशक इसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे﴾१३९﴿ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴾१४०﴿

(३) उसकी वही और रिसालत की तबलीग़ पर, और आपकी अमानत आपकी क़ौम मानती थी जैसे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अमीन और ईमानदार होने पर सारा अरब सहमत था.

(४) जो मैं तौहीद और ईमान और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी के बारे में देता हूं.

(५) यह बात उन्होंने घमण्ड से कही. ग़रीबों के पास बैठना उन्हें गवारा न था. इसमें वो अपना अपमान समझते थे. इसलिये ईमान जैसी नेअमत से मेहरूम रहे. कमीने से उनकी मुराद ग़रीब और व्यवसायी लोग थे और उनको ज़लील, तुच्छ और कमीना कहना, यह काफ़िरों का घमण्ड था वरना वास्तव में व्यवसाय और पेशा हैसियत दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता. ग़िना अस्ल में दीनी अमीरी है और नसब तक़्वा का नसब. मूमिन को ज़लील कहना जाइज़ नहीं, चाहे वह कितना ही मोहताज और नादार हो या वह किसी नसब का हो. (मदारिक)

(६) वे क्या पेशा करते हैं, मुझे इससे क्या मतलब . मैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत देता हूँ.

(७) वही उन्हें जज़ा देगा.

(८) तो न तुम उन्हें ऐब लगाओ, न पेशों के कारण उनसे मुंह फेरो. फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएं और आपकी बात मानें . इसके जवाब में फ़रमाया.

(९) यह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी इच्छाओं को पूरा करूं और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसलमानों को अपने पास से निकाल दूं.

(१०) खुले प्रमाण के साथ, जिस से सच्चाई और बातिल में फ़र्क़ हो जाए तो जो ईमान लाए वही मेरे क़रीब है और जो ईमान न लाए, वही दूर.

(११) दावत और डराने से.

(१२) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में.

(१३) तेरी वही और रिसालत में. मुराद आपकी यह थी कि मैं जो उन के हक़ में बददुआ करता हूँ उसका कारण यह नहीं है कि उन्होंने मुझे संगसार करने की धमकी दी. न यह कि उन्होंने मेरे मानने वालों को ज़लील समझा . बल्कि मेरी दुआ का कारण यह है कि उन्हों ने तेरे कलाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को क़ुबूल करने से इन्कार किया.

(१४) उन लोगों की शामते आमाल से.

(१५) जो आदमियों, पक्षियों और जानवरों से भरी हुई थी.

आठवाँ रूकू

समूद ने रसूलों को झुटलाया﴾१४१﴿ जब कि उनसे उनके हमक़ौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं﴾१४२﴿ बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ﴾१४३﴿ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴾१४४﴿ और मैं तुमसे कुछ इसपर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है﴾१४५﴿ क्या तुम यहाँ की[1] नेअमतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे[2]﴾१४६﴿ बाग़ों और झरनों﴾१४७﴿ और खेतों और खजूरों में जिनका शगूफ़ा (कली) नर्म नाज़ुक﴾१४८﴿ और पहाड़ों में से घर तराशते हो उस्तादी से[3]﴾१४९﴿ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴾१५०﴿ और हद से बढ़ने वालों के कहने पर न चलो[4]﴾१५१﴿ वो जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[5] और बनाव नहीं करते[6]﴾१५२﴿ बोले तुम पर तो जादू हुआ है[7]﴾१५३﴿ तुम तो हमीं जैसे आदमी हो, तो कोई निशानी लाओ[8] अगर सच्चे हो[9]﴾१५४﴿ फ़रमाया ये ऊंटनी है एक दिन इस के पीने की बारी[10] और एक निश्चित दिन तुम्हारी बारी﴾१५५﴿और इसे बुराई के साथ न छुओ[11] कि तुम्हें बड़े दिन का अज़ाब आ लेगा[12]﴾१५६﴿ इस पर उन्होंने उसकी कूंचें काट दीं[13] फिर सुब्ह को पछताते रह गए[14]﴾१५७﴿ तो उन्हें अज़ाब ने आ लिया,[15] बेशक

ثمود المرسلين ﴿١٤١﴾ اذ قال لهم اخوهم صلح الا تتقون ﴿١٤٢﴾ اني لكم رسول امين ﴿١٤٣﴾ فاتقوا الله و اطيعون ﴿١٤٤﴾ وما اسئلكم عليه من اجر ان اجري الا على رب العلمين ﴿١٤٥﴾ اتتركون في ما هھنا امنين ﴿١٤٦﴾ في جنت وعيون ﴿١٤٧﴾ وزروع و نخل طلعها هضيم ﴿١٤٨﴾ وتنحتون من الجبال بيوتا فرهين ﴿١٤٩﴾ فاتقوا الله واطيعون ﴿١٥٠﴾ ولا تطيعوا امر المسرفين ﴿١٥١﴾ الذين يفسدون في الارض ولا يصلحون ﴿١٥٢﴾ قالوا انما انت من المسحرين ﴿١٥٣﴾ ما انت الا بشر مثلنا فات باية ان كنت من الصدقين ﴿١٥٤﴾ قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم ﴿١٥٥﴾ ولا تمسوها بسوء فياخذكم عذاب يوم عظيم ﴿١٥٦﴾ فعقروها فاصبحوا ندمين ﴿١٥٧﴾ فاخذهم العذاب ؕ

(१६) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके साथियों को निजात देने के बाद.

सूरए शुअरा - सातवाँ रूकू

(१) आद एक क़बीला है और अस्ल में यह एक शख़्स का नाम है जिसकी सन्तान से यह क़बीला है.
(२) और मेरी तकज़ीब न करो यानी मूझे न झुटलाओ.
(३) कि उस पर चढ़कर गुज़रने वालों से ठठ्ठा करो और यह उस क़ौम की आदत थी. उन्होंने रास्ते पर ऊंची बुनियादें बना ली थीं वहाँ बैठकर राहगीरों को परेशान करते और खेल करते.
(४) और कभी न मरोगे.
(५) तलवार से क़त्ल करके, कोड़े मारकर, बहुत बेरहमी से.
(६) यानी वो नेअमतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उनका बयान फ़रमाया जाता है.
(७) अगर तुम मेरी नाफ़रमानी करो. इसका जवाब उनकी तरफ़ से यह हुआ कि ...
(८) हम किसी तरह तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दावत क़ुबूल न करेंगे.
(९) यानी जिन चीज़ों का आपने ख़ौफ़ दिलाया. यह पहलों का दस्तूर है, वो भी ऐसी ही बातें कहा करते थे. इससे उनकी मुराद यह थी कि हम उन बातों का ऐतिबार नहीं करते, उन्हें झूट जानते हैं. या आयत के मानी ये हैं कि मौत और ज़िन्दगी और ईमारतें बनाना पहलों का तरीक़ा है.
(१०) दुनिया में न मरने के बाद उठना न आख़िरत में हिसाब.
(११) यानी हूद अलैहिस्सलाम को.
(१२) हवा के अज़ाब से.

सूरए शुअरा - आठवाँ रूकू

(१) यानी दुनिया की.
(२) कि ये नेअमतें कभी ज़ायल न हों और कभी अज़ाब न आए, कभी मौत न आए. आगे उन नेअमतों का बयान है.

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُم مِّنْ أَزْوَاجِكُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُم مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ

منزل ٥

इसमें ज़रूर निशानी है, और उनमें बहुत मुसलमान न थे﴾१५८﴿ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴾१५९﴿

नवाँ रूकू

लूत की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया﴾१६०﴿ जब कि उनसे उनके हमक़ौम लूत ने फ़रमाया क्या तुम नहीं डरते﴾१६१﴿ बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ﴾१६२﴿ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴾१६३﴿ और मैं इसपर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है﴾१६४﴿ क्या मख़लूक़ में मर्दों से बुरा काम करते हो[१]﴾१६५﴿ और छोड़ते हो वह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने जोरूएं बनाईं बल्कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो[२]﴾१६६﴿ बोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आए[३] तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे[४]﴾१६७﴿ फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूँ[५]﴾१६८﴿ ऐ मेरे रब मुझे और मेरे घर वालों को इनके काम से बचा[६]﴾१६९﴿ तो हमने उसे और उसके सब घर वालों को निजात बख़्शी[७]﴾१७०﴿ मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गई[८]﴾१७१﴿ फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया﴾१७२﴿ और हमने उनपर एक बरसाव बरसाया[९] तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए गयों का﴾१७३﴿ बेशक इसमें ज़रूर निशानी है और उनमें बहुत मुसलमान न थे﴾१७४﴿

(३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि "उस्तादी से" का मतलब घमण्ड है. मानी ये हुए कि कारीगरी पर घमण्ड करते, इतराते.

(४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हद से बढ़ने वालों से मुराद मुश्रिक लोग हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा - वो नौ व्यक्ति हैं जिन्होंने ऊंटनी को क़त्ल किया.

(५) कुफ़्र और ज़ुल्म और गुनाहों के साथ.

(६) ईमान लाकर और न्याय स्थापित करके और अल्लाह के फ़रमाँबरदार होकर . मानी ये हैं कि उनका फ़साद ठोस है जिसमें किसी तरह की नेकी का शायबा भी नहीं और कुछ फ़साद करने वाले ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं, कुछ नेकी भी उनमें होती है. मगर ये ऐसे नहीं हैं.

(७) यानी बार बार बहुतात से जादू हुआ है. जिसकी वजह से अक़्ल ठिकाने पर नहीं रही. (मआज़ल्लाह)

(८) अपनी सच्चाई की.

(९) रिसालत के दावे में.

(१०) इसमें उससे मज़ाहिमत मत करो. यह एक ऊंटनी थी जो उनके चमत्कार तलब करने पर उनकी ख़्वाहिश के अनुसार हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की दुआ से पत्थर से निकली थी. उसका सीना साठ गज़ का था. जब उसके पीने का दिन होता तो वह वहाँ का सारा पानी पी जाती और जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती. (मदारिक)

(११) न उसको मारो और न उसकी कूंचें काटो.

(१२ अज़ाब उतरने की वजह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि वह अज़ाब इस क़दर बड़ा और सख़्त था कि जिस दिन उतरा उसको उसकी वजह से बड़ा फ़रमाया गया.

(१३) कूंचें काटने वाले व्यक्ति का नाम क़िदार था और वो लोग उसके करतूत से राज़ी थे इसलिये कूंचें काटने की निस्बत उन स. की तरफ़ की गई.

(१४) कूंचें काटने पर अज़ाब उतरने के डर से न कि गुनाहों पर तौबह करने हेतु शर्मिन्दा हुए हों, या यह बात कि अज़ाब के निशान देखकर शर्मिन्दा हुए. ऐसे वक़्त की शर्मिन्दगी लाभदायक नहीं.

और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴿१७५﴾

दसवाँ रूकू

बन वालों ने रसूलों को झुटलाया[१]﴿१७६﴾ जब उनसे शुएब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं﴿१७७﴾ बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ﴿१७८﴾ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴿१७९﴾ और मैं इस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जगत का रब है[२]﴿१८०﴾ नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो[३]﴿१८१﴾ और सीधी तराज़ू से तोलो﴿१८२﴾ और लोगों की चीज़ें कम करके न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो[४]﴿१८३﴾ और उससे डरो जिसने तुम को पैदा किया और अगली मख़लूक़ को﴿१८४﴾ बोले तुम पर जादू हुआ है﴿१८५﴾ तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी[५] और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं﴿१८६﴾ तो हमपर आसमान का कोई टुकड़ा गिरादो अगर तुम सच्चे हो[६]﴿१८७﴾ फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतुक हैं[७]﴿१८८﴾ तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अज़ाब ने आ लिया, बेशक वह बड़े दिन का अज़ाब था[८]﴿१८९﴾

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾
وَمَا اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾
وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَ
اتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْٓا
اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا
وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا
مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْٓ
اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ
يَوْمِ الظُّلَّةِ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ

(१५) जिसकी उन्हें ख़बर दी गई थी, तो हलाक हो गए.

सूरए शुअरा - नवाँ रूकू

(१) इसके ये मानी भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक़ में ऐसे नीच कर्म के लिये तुम्हीं रह गए हो. जगत के और लोग भी तो हैं, उन्हें देखकर तुम्हें शर्माना चाहिये. ये मानी भी हो सकते हैं कि बहुत सी औरतें होते हुए भी इस बुरे काम को करना बहुत बड़ी बुराई है.
(२) कि हलाल पवित्र को छोड़कर हराम और बुरे में पड़ते हो.
(३) नसीहत करने और इस काम को बुरा कहने से.
(४) शहर से और तुम्हें यहाँ न रहने दिया जाएगा.
(५) और मुझे उससे बड़ी दुश्मनी है. फिर आपने अल्लाह की बारगाह में दुआ की.
(६) उसकी शामते आमाल से मेहफ़ूज़ रख.
(७) यानी आपकी बेटियों को और उन सारे लोगों को जो आप पर ईमान लाए थे.
(८) जो आपकी बीबी थी और वह अपनी क़ौम के इस काम पर राज़ी थी और जो गुनाह पर राज़ी हो, वह गुनाहगार के हुक्म में होता है. इसीलिये वह बुढ़िया अज़ाब में गिरफ़्तार हुई और उसने निजात न पाई.
(९) पत्थरों का या गन्धक और आग का.

सूरए शुअरा - दसवाँ रूकू

(१) यह वन मदयन के क़रीब था इसमें बहुत से दरख़्त और झाड़ियाँ थीं. अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को उनकी तरफ़ भेजा था जैसा कि मदयन वालों की तरफ़ भेजा था और ये लोग हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम के न थे.
(२) उन सारे नबियों की दावत का यही विषय रहा क्योंकि वो सब हज़रात अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और उसकी फ़रमाँबरदारी और इबादत की सच्चे दिल से अदायगी का हुक्म देते और रिसालत की तबलीग़ पर कोई उजरत नहीं लेते थे लिहाज़ा सब ने यही फ़रमाया.
(३) लोगों के अधिकार कम न करो नाप और तौल में.
(४) रहज़नी और लूट मार करके और खेतियाँ तबाह करके, यही उन लोगों की आदतें थीं. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन से मना फ़रमाया.

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝ عَلٰى
قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ
مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰۗؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝ وَلَوْ
نَزَّلْنٰهُ عَلٰي بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝
فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝ اَفَبِعَذَابِنَا
يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝ ثُمَّ
جَاۗءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

बेशक इसमें ज़रूर निशानी है, और उनमें बहुत मुसलमान न थे﴾१९०﴿ और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴾१९१﴿

ग्यारहवाँ रूकू

और बेशक ये क़ुरआन सारे जगत के रब का उतारा हुआ है﴾१९२﴿ इसे रूहुल अमीन (जिब्रील) लेकर उतरा[१]﴾१९३﴿ तुम्हारे दिल पर[२] कि तुम डर सुनाओ﴾१९४﴿ रौशन अरबी ज़बान में﴾१९५﴿ और बेशक इसका चर्चा अगली किताबों में है[३]﴾१९६﴿ और क्या यह उनके लिये निशानी न थी[४] कि उस नबी को जानते हैं बनी इस्राईल के आलिम[५]﴾१९७﴿ और अगर हम इसे किसी ग़ैर अरबी व्यक्ति पर उतारते﴾१९८﴿ कि वह उन्हें पढ़कर सुनाता जब भी उसपर ईमान न लाते[६]﴾१९९﴿ हमने यूंही झुटलाना पैरा दिया है मुजरिमों के दिलों में[७]﴾२००﴿ वो इसपर ईमान न लाएंगे यहाँ तक कि देखें दर्दनाक अज़ाब﴾२०१﴿ तो वह अचानक उनपर आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी﴾२०२﴿ तो कहेंगे क्या हमें कुछ मुहलत मिलेगी[८]﴾२०३﴿ तो क्या हमारे अज़ाब की जल्दी करते हैं﴾२०४﴿ भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें[९]﴾२०५﴿ फिर आए उन पर जिसका वो वादा दिये जाते हैं[१०]﴾२०६﴿ तो क्या काम आएगा उनके

(५) नबुव्वत का इन्कार करने वाले, नबियों के बारे में आम तौर पर यही कहा करते थे जैसा कि आजकल के कुछ बुरे अक़ीदे वाले कहते हैं.

(६) नबुव्वत के दावे में.

(७) और जिस अज़ाब के तुम मुस्तहिक़ हो वह जो अज़ाब चाहेगा तुम पर उतारेगा.

(८) जो कि इस तरह हुआ कि उन्हें शदीद गर्मी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गर्मी के अज़ाब में गिरफ़्तार रहे. तहख़ानों में जाते, वहाँ और ज़्यादा गर्मी पाते. इसके बाद एक बादल आया, सब उसके नीचे जमा हो गए . उससे आग बरसी और सब जल गए. इस घटना का बयान सूरए अअराफ़ में और सूरए हूद में गुज़र चुका है.

सूरए शुअरा - ग्यारहवाँ रूकू

(१) रूहुल अमीन से हज़रत जिब्रील मुराद हैं जो वही के अमीन हैं.

(२) ताकि आप उसे मेहफ़ूज़ रखें और समझें और न भूलें. दिल का ख़ास करना इसलिये है कि वास्तव में उसी से सम्बोधन है और तमीज़ व अक़्ल और इख़्तियार का मक़ाम भी वही है. सारे अंग उसके मातहत हैं. हदीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरूस्त होने से तमाम बदन दुरूस्त हो जाता है और उसके ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब और राहत और ख़ुशी दुख और ग़म का मक़ाम दिल ही है. जब दिल को ख़ुशी होती है, सारे अंगों पर उसका असर पड़ता है. तो वह सरदार की तरह है. वही केन्द्र है अक़्ल का. तो अमीरे मुतलक़ हुआ और तकलीफ़ जो अक़्ल और समझ के साथ जुड़ी हुई है उसी की तरफ़ लौटी.

(३) 'इन्नहू' की ज़मीर का मरजअ अगर क़ुरआन हो तो उसके मानी ये होंगे कि उसका ज़िक्र सारी आसमानी किताबों में है और अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ ज़मीर राजेअ हो तो मानी ये होंगे कि अगली किताबों में आपकी तारीफ़ और विशेषता का बयान है.

(४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और रिसालत के सच्चे होने पर.

(५) अपनी किताबों से और लोगों को ख़बरें देते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मक्का वालों ने मदीने के यहूदियों के पास अपने भरोसे वाले आदमियों को यह पूछने के लिये भेजा कि क्या आख़िरी ज़माने के नबी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत उनकी किताबों में कोई ख़बर है. इसका जवाब यहूदी उलमा ने यह दिया कि यही उनका ज़माना है और उनकी नअत और सिफ़त तौरात में मौजूद है. यहूदी उलमा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और इब्ने यामीन और

يُمَتَّعُونَ ۞ وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ۞ ذِكْرَىٰ ۛ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ۞ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ۞ وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۞ إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ۞ فَلَا تَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلْمُعَذَّبِينَ ۞ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ ۞ وَٱخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ ٱتَّبَعَكَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۞ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۞ وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ۞ ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ۞ وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ ۞ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ۞ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَٰطِينُ ۞ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۞ يُلْقُونَ ٱلسَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَٰذِبُونَ ۞ وَٱلشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ ٱلْغَاوُۥنَ ۞ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِى كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ۞ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۞

منزل ٥

वह जो बरतते थे[११]﴾२०७﴿ और हमने कोई बस्ती हलाक न की जिसे डर सुनाने वाले न हों﴾२०८﴿ नसीहत के लिये और हम ज़ुल्म नहीं करते[१२]﴾२०९﴿ और इस क़ुरआन को लेकर शैतान न उतरे[१३]﴾२१०﴿ और वो इस क़ाबिल नहीं[१४] और न वो ऐसा कर सकते हैं[१५]﴾२११﴿ वो तो सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं[१६]﴾२१२﴿ तो तू अल्लाह के सिवा दूसरा ख़ुदा न पूज कि तुझ पर अज़ाब होगा﴾२१३﴿ और ऐ मेहबूब, अपने क़रीबतर रिश्तेदारों को डराओ[१७]﴾२१४﴿ और अपनी रहमत का बाज़ू बिछाओ[१८] अपने मानने वाले मुसलमानों के लिये[१९]﴾२१५﴿ तो अगर वो तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे काम से बेइलाक़ा हूँ﴾२१६﴿ और उसपर भरोसा करो जो इज़्ज़त वाला मेहरबान है[२०]﴾२१७﴿ जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो[२१]﴾२१८﴿ और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को[२२]﴾२१९﴿ बेशक वही सुनता जानता है[२३]﴾२२०﴿ क्या मैं तुम्हें बतादूँ कि किसपर उतरते हैं शैतान﴾२२१﴿ शैतान उतरते हैं बड़े बोहतान वाले गुनहगार पर[२४]﴾२२२﴿ शैतान अपनी सुनी हुई[२५] उनपर डालते हैं और उनमें अक्सर झूटे हैं[२६]﴾२२३﴿ और शायरों की पैरवी गुमराह करते हैं[२७]﴾२२४﴿ क्या तुमने न देखा कि वो हर नाले में सरगर्दां(परेशान) फिरते हैं[२८]﴾२२५﴿और वो कहते हैं जो नहीं करते[२९]﴾२२६﴿

सअलबा और असद और उसैद, ये हज़रात, जिन्हों ने तौरात में हुज़ूर की विशेषताएं और गुण पढ़े थे, हुज़ूर पर ईमान लाए.

(६) मानी ये है कि हम ने यह क़ुरआन शरीफ़ एक फ़सीह बलीग़ अरबी नबी पर उतारा जिसकी फ़साहत अरब वालों को तसलीम है और वो जानते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ एक चमत्कार है और उस जैसी एक सूरत बनाने से भी सारी दुनिया लाचार है. इसके अलावा किताबी उलमा की सहमति है कि इसके उतरने से पहले इसके उतरने की ख़ुशख़बरी और उस नबी की सिफ़त उनकी किताबों में उन्हें मिल चुकी है. इससे क़तई तौर पर साबित होता है कि ये नबी अल्लाह के भेजे हुए हैं और यह किताब उसकी नाज़िल फ़रमाई हुई है. और काफ़िर जो तरह तरह की बेहूदा बातें इस किताब के बारे में कहते हैं, सब झूठ हैं. ख़ुद काफ़िर हैरत में हैं कि इसके ख़िलाफ़ क्या बात कहें. इसलिये कभी इसको पहलों के क़िस्से कहते हैं, कभी शेअर, कभी जादू और कभी यह कि मआज़ल्लाह इस को ख़ुद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बना लिया है, और अल्लाह तआला की तरफ़ इसकी ग़लत निस्बत कर दी है. इस तरह के बेहूदा ऐतिराज़ दुश्मन हर हाल में कर सकता है, यहाँ तक कि अगर बिलफ़र्ज़ यह क़ुरआन किसी ग़ैर अरबी व्यक्ति पर उतारा जाता, जो अरबी की महारत न रखता और इसके बावुजूद वह ऐसा चमत्कारी क़ुरआन पढ़कर सुनाता, जब भी ये लोग इसी तरह कुफ़्र करते जिस तरह इन्हों ने अब कुफ़्र और इन्कार किया क्योंकि इन के कुफ़्र और इन्कार का कारण दुश्मनी है.

(७) यानी उन काफ़िरों के, जिनका कुफ़्र इख़्तियार करना और उस पर अड़े रहना हमारे इल्म में है तो उनके लिये हिदायत का कोई भी तरीक़ा इख़्तियार किया जाए, किसी हाल में वो कुफ़्र से पलटने वाले नहीं.

(८) ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक़ करें लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने क़ाफ़िरों को इस अज़ाब की ख़बर दी तो हंसी के अन्दाज़ में कहने लगे कि यह अज़ाब कब आएगा. इसपर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है.

(९) और फ़ौरन हलाक न कर दें.

(१०) यानी अल्लाह का अज़ाब.

(११) यानी दुनिया की ज़िन्दगानी और उसका ऐश, चाहे लम्बा भी हो लेकिन न वह अज़ाब को दफ़ा कर सकेगा न उसकी सख़्ती कम कर सकेगा.

(१२) पहले हुज्जत क़ायम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं, उसके बाद भी जो लोग राह पर नहीं आते और सच्चाई को क़ुबूल नहीं करते, उन पर अज़ाब करते हैं.

(१३) इसमें काफ़िरों का रद है जो कहते थे कि जिस तरह शैतान तांत्रिकों के पास आसमानी ख़बरें लाते हैं उसी तरह मआज़ल्लाह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास क़ुरआन लाते हैं . इस आयत ने उनके इस ख़याल को बातिल कर दिया कि यह ग़लत है.
(१४) कि क़ुरआन लाएं.
(१५) क्योंकि यह उनकी ताक़त से बाहर है.
(१६) यानी नबियों की तरफ़ जो वही होती है उसको अल्लाह तआला ने मेहफ़ूज़ कर दिया. जब तक कि फ़रिश्ता उसको रसूल की बारगाह में पहुंचाए, उससे पहले शैतान उसको नहीं सुन सक्ते . इसके बाद अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है.
(१७) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़रीब के रिश्ते दार बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें ऐलान के साथ डराया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि सही हदीसों में आया है.
(१८) यानी मेहरबानी और करम फ़रमाओ.
(१९) जो सच्चे दिल से आप पर ईमान लाएं, चाहे वो आप से रिश्तेदारी रखते हों या न रखते हों.
(२०) यानी अल्लाह तआला, तुम अपने सारे काम उसके हवाले कर दो.
(२१) नमाज़ के लिये या दुआ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहाँ तुम हो.
(२२) जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले साथियों के हालात जानने के लिये रात को दौरा करते हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा मानी ये हैं कि जब तुम इमाम होकर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम, रुकू, सज्दों और क़ुऊद में गुज़रते हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा मानी ये कि वह आप की आँखों की हरकत को देखता है नमाज़ों में, क्योंकि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आगे पीछे एकसा देखते थे. और हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो की हदीस में है, ख़ुदा की क़सम मुझ पर तुम्हारी एकाग्रता और रुकूअ छुपा हुआ नहीं है, मैं तुम्हें अपनी पीठ पीछे देखता हूँ . कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इस आयत में सज्दा करने वालों से ईमान वाले मुराद हैं और मानी ये हैं कि हज़रत आदम और हव्वा के ज़माने से लेकर हज़रत अब्दुल्लाह और बीबी आमिना ख़ातून तक, ईमान वालों की पीठ और कोख में आप के दौरे को मुलाहिज़ा फ़रमाता है . इससे साबित हुआ कि आपके सारे पूर्वज हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक सब के सब ईमान वाले हैं. (मदारिक व जुमल वग़ैरह)
(२३) तुम्हारी कहनी व करनी और तुम्हारी नियत को . इसके बाद अल्लाह तआला उन मुश्रिकों के जवाब में, जो कहते थे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) पर शैतान उतरते हैं, यह इरशाद फ़रमाता है.
(२४) मुसैलिमा वग़ैरह तांत्रिक जैसे.
(२५) जो उन्होंने फ़रिश्तों से सुनी होती है.
(२६) क्योंकि वो फ़रिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं. हदीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सौ झूट उसके साथ मिलाते हैं और यह भी उस वक़्त तक था जब कि वह आसमान पर पहुंचने से रोके न गए थे.
(२७) उनके शेअरों में, कि उनको पढ़ते हैं. रिवाज देते हैं जबकि वो शेअर झूट और बातिल होते हैं. यह आयत काफ़िर शायरों के बारे में उतरी जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुराई में कविता करते थे और कहते थे कि जैसा मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं. और उनकी क़ौम के गुमराह लोग उनसे इन कविताओं को नक़्ल करते थे. आयत में उन लोगों की मज़म्मत या भर्त्सना फ़रमाई गई.
(२८) और हर तरह की झूटी बातें बनाते हैं और हर बातिल में बढ़ा चढ़ा कर बोलते हैं, झूटी तारीफ़ करते हैं, झूटी बुराई करते हैं.
(२९) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो यह उसके लिये इससे बहतर है कि कविता से पुर हो. मुसलमान कवि जो इस तरीक़े से परहेज़ करते हैं, इस हुक्म से अलग रखे गए.
(३०) इसमें इस्लाम के शायरों को अलग रखा गया. वो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्रशंसा लिखते हैं, अल्लाह तआला की हम्द लिखते हैं, इस्लाम की तारीफ़ लिखते हैं, नसीहत की अच्छी बातें लिखते है, उसपर इनाम और सवाब पाते हैं. बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में हज़रत हस्सान के लिये मिम्बर बिछवाया जाता था, वह उस पर खड़े होकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे

مगर वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये(३०) और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की याद की(३१) और बदला लिया(३२) बाद उसके कि उनपर ज़ुल्म हुआ(३३) और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम(३४) कि किस करवट पर पलटा खाएंगे(३५) ﴿२२७﴾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ
كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ۝

२७ - सूरए नम्ल

सूरए नम्ल मक्का में उतरी, इसमें ९३ आयतें, ७ रूकू हैं

(آياتها ٩٣) (٢٧) سُورَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ (٤٨) (ركوعاتها ٧)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१)

ये आयतें हैं क़ुरआन और रौशन किताब की(२) ﴿१﴾ हिदायत और ख़ुशख़बरी ईमान वालों को ﴿२﴾ जो नमाज़ क़ायम रखते हैं(३) और ज़कात देते हैं(४) और वो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं ﴿३﴾ वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हमने उनके कौतुक उनकी निगाह में भले कर दिखाए हैं(५) ﴿४﴾ तो वो भटक रहे हैं. ये वो हैं जिनके लिये बड़ा अज़ाब है(६) और यही आख़िरत में सबसे बढ़कर नुक़सान में(७) ﴿५﴾ और बेशक तुम क़ुरआन सिखाए जाते हो हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से(८) ﴿६﴾ जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा(९) मुझे एक आग नज़र पड़ी है, बहुत जल्द मैं तुम्हारे पास उसकी कोई ख़बर लाता हूँ या

طسٓ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ۝
هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ۝ وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ
مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ
إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُمْ

वसल्लम के कारनामे और तारीफ़ें पढ़ते थे और काफ़िरों की आलोचनाओं का जवाब देते थे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके हक़ में दुआ फ़रमाते जाते थे. बुख़ारी की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कुछ शेअर हिकमत होते हैं. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक मजलिस में अक्सर कविता पाठ होता था जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समरह से रिवायत है. हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि शेअर कलाम है, कुछ अच्छा होता है कुछ बुरा, अच्छे को लो, बुरे को छोड़ दो. शअबी ने कहा कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ शेअर कहते थे . हज़रत अली उन सब से ज़्यादा शेअर फ़रमाने वाले थे. रदियल्लाहो अन्हुम अजमईन.

(३१) और कविता उनके लिये अल्लाह की याद से ग़फ़लत का कारण न हो सकी. बल्कि उन लोगों ने जब शेअर कहा भी तो अल्लाह तआला की प्रशंसा और उसकी तौहीद और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तारीफ़ और सहाबा और उम्मत के नेक लोगों की तारीफ़ और हिकमत, बोध, नसीहत, उपदेश और अदब में.

(३२) काफ़िरों से उनकी आलोचना का.

(३३) काफ़िरों की तरफ़ से, कि उन्होंने मुसलमानों की और उनके पेशवाओं की बुराई की. उन हज़रात ने उसको दफ़ा किया और उसके जवाब दिये. ये बुरे नहीं हैं बल्कि सवाब के मुस्तहिक़ हैं. हदीस शरीफ़ में है कि मूमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, यह उन हज़रात का जिहाद है.

(३४) यानी मुश्रिक लोग जिन्हों ने सृष्टि में सबसे अफ़ज़ल हस्ती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बुराई की.

(३५) मौत के बाद. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ़, और वह बुरा ही ठिकाना है.

२७ - सूरए नम्ल - पहला रूकू

(१) सूरए नम्ल मक्के में उतरी, इसमें सात रूकू, तिरानवे आयतें, एक हज़ार तीन सौ सत्रह कलिमे और चार हज़ार सात सौ निनानवे अक्षर हैं.

(२) जो सच और झूट में फ़र्क़ करती है और जिसमें इल्म और हिकमत के ख़ज़ाने रखे गए हैं.

(३) और उसपर हमेशगी करते हैं और उसकी शर्तों और संस्कार और तमाम अधिकारों की हिफ़ाज़त करते हैं.

(४) ख़ुश दिली से.

(५) कि वो अपनी बुराइयों को शवहात यानी वासनाओं के कारण से भलाई जानते हैं.

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۞ فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۞ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۞ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۞ وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۞ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

उसमें से कोई चमकती चिंगारी लाऊंगा ताकि तुम तापो[१०] ﴿७﴾ फिर जब आग के पास आया, निदा(पुकार) की गई कि बरकत दिया गया वह जो इस आग की जलवा-गाह(दर्शन स्थल) में है यानी मूसा और जो उसके आस पास हैं यानी फ़रिश्ते[११] और पाकी है अल्लाह को जो रब है सारे जगत का ﴿८﴾ ऐ मूसा बात यह है कि मैं ही हूँ अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत वाला ﴿९﴾ और अपना असा डाल दे[१२] फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ मानो साँप है पीठ फेर कर चला और मुड़कर न देखा, हमने फ़रमाया ऐ मूसा डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को डर नहीं होता[१३] ﴿१०﴾ हाँ जो कोई ज़ियादती करे[१४] फिर बुराई के बाद भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूँ[१५] ﴿११﴾ और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब[१६] नौ निशानियों में[१७] फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़, बेशक वो बेहुक्म लोग हैं ﴿१२﴾ फिर जब हमारी निशानियाँ आंखें खोलती उनके पास आईं[१८] बोले यह तो खुला जादू है ﴿१३﴾ और उनके इन्कारी हुए और उनके दिलों में उनका यक़ीन था[१९] ज़ुल्म और घमण्ड से, तो देखो कैसा अंजाम हुआ फ़सादियों का[२०] ﴿१४﴾

दूसरा रुकू

और बेशक हमने दाऊद और सुलैमान को बड़ा इल्म अता

(६) दुनिया में क़त्ल और गिरफ़्तारी.

(७) उनका परिणाम हमेशा का अज़ाब है. इसके बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सम्बोधन होता है.

(८) इसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का एक वाक़िआ बयान किया जाता है जो इल्म की गहरी बातों और हिकमत की बारीकियों पर आधारित है.

(९) मदयन से मिस्र को सफ़र करते हुए अंधेरी रात में, जबकि बर्फ़ पड़ने से भारी सर्दी पड़ रही थी और रास्ता खो गया था और बीबी साहिबा को ज़चगी का दर्द शुरु हो गया था.

(१०) और सर्दी की तकलीफ़ से अम्न पाओ.

(११) यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत है, अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत के साथ.

(१२) चुनांचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपनी लाठी डाल दी और वह साँप हो गई.

(१३) न साँप का, न किसी चीज़ का, यानी जब मैं उन्हें अम्न दूं तो फिर क्या अन्देशा.

(१४) उसको डर होगा और वह भी जब तौबह करे.

(१५) तौबह क़ुबूल करता हूँ और बख़्श देता हूँ . इसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दूसरी निशानी दिखाई गई, फ़रमाया गया.

(१६) यह निशानी है उन ...

(१७) जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो.

(१८) यानी उन्हें चमत्कार दिखाए गए.

(१९) और वो जानते थे कि बेशक ये निशानियाँ अल्लाह की तरफ़ से हैं लेकिन इसके बावुजूद अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे.

(२०) कि डुबो कर हलाक किये गए.

सूरए नम्ल - दूसरा रुकू

(१) यानी क़ज़ा का इल्म और राजनीति. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को पहाड़ों और पक्षियों की तस्बीह का इल्म दिया और हज़रत सुलैमान को चौपायों और पक्षियों की बोलियों का. (ख़ाज़िन)

وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا
عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَ وَرِثَ
سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ
الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ
الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ
الْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا
عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ
ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ
وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَ
تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

फ़रमाया[१] और दोनों ने कहा सब ख़ूबियां अल्लाह को जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बुज़ुर्गी बख़्शी[२] ﴾१५﴿ और सुलैमान दाऊद का जानशीन हुआ[३] और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हमको अता हुआ[४] बेशक यही ज़ाहिर फ़ज़्ल है[५] ﴾१६﴿ और जमा किये गए सुलैमान के लिये उसके लश्कर, जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से, तो वो रोके जाते थे[६] ﴾१७﴿ यहां तक कि जब च्यूंटियों के नाले पर आए[७] एक च्यूंटी बोली[८] ऐ च्यूंटियो, अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डालें सुलैमान और उनके लश्कर बेख़बरी में[९] ﴾१८﴿ तो उसकी बात से मुस्कुरा कर हंसा[१०] और अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़(सामर्थ्य) दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एहसान का जो तूने[११] मुझपर और मेरे माँ बाप पर किये और यह कि मैं वह भला काम कर सकूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे ख़ास क़ुर्ब के हक़दार हैं[१२] ﴾१९﴿ और परिन्दों का जायज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुआ कि

(२) नबुव्वत और हुकूमत अता फ़रमा कर और जिन्न व इन्सान और शैतानों को उनके आधीन करके.
(३) नबुव्वत और इल्म और मुल्क में.
(४) यानी दुनिया और आख़िरत की नेअमतें बहुतात से हमको अता की गईं.
(५) रिवायत है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पूर्व और पश्चिम की धरती की हुकूमत अता की. चालीस साल आप उसके मालिक रहे फिर सारी दुनिया की हुकूमत दी गई. जिन्न, इन्सान, शैतान, पक्षी, चौपाए, जानवर, सब पर आपकी हुकूमत थी और हर एक चीज़ की ज़बान आप को अता फ़रमाई और अजीब अनोखी सनअतें आप के ज़माने में काम में लाई गईं.
(६) आगे बढ़ने से ताकि सब इकट्ठे हो जाएं, फिर चलाए जाते थे.
(७) यानी ताइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहाँ चूंटियाँ बहुत थीं.
(८) जो चूंटीयों की रानी थी, वह लंगड़ी थी. जब हज़रत क़तादह रदियल्लाहो अन्हो कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहाँ के लोग आपके आशिक़ हो गए तो आपने लोगों से कहा जो चाहो पूछो. हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा उस वक़्त नौ जवान थे, आपने पूछा कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की चूंटी मादा थी या नर. हज़रत क़तादह ख़ामोश हो गए तो इमाम साहिब ने फ़रमाया कि वह मादा थी . आपसे पूछा गया कि यह आप को किस तरह मालूम हुआ . आपने फ़रमाया क़ुरआन शरीफ़ में इरशाद हुआ *"क़ालत नम्लतुन"* अगर नर होती तो *"क़ाला नम्लतुन"* आता. (सुब्हानल्लाह, इससे हज़रत इमाम की शाने इल्म मालूम होती है) ग़रज़ जब उस चूंटी की रानी ने हज़रत सुलैमान के लश्कर को देखा तो कहने लगी.
(९) यह उसने इसलिये कहा कि वह जानती थी कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम नबी हैं, इन्साफ़ वाले हैं, अत्याचार और ज़ियादती आपकी शान नहीं है. इसलिये अगर आप के लश्कर से चूंटियाँ कुचल जाएंगी तो बेख़बरी ही में कुचल जाएंगी कि वो गुज़रते हों और इस तरफ़ तवज्जोह न करें. चूंटी की यह बात हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आपके मुबारक कानों तक पहुंचाती थी. जब आप चूंटियों की घाटी पर पहुंचे तो आपने अपने लश्करों को ठहरने का हुक्म दिया यहाँ तक कि चूंटियाँ अपने घरों में दाख़िल हो गईं. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का सफ़र अगरचे हवा पर था मगर दूर नहीं कि ये मक़ाम आपके उतरने की जगह हो.
(१०) नबियों का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि हदीसों में आया है. वो हज़रात क़हक़हा मार कर नहीं हंसते थे.
(११) नबुव्वत और हुकूमत और इल्म अता फ़रमाकर.
(१२) नबी और औलिया हज़रात.

مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ
اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ
فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ
يَّقِيْنٍ ۝ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَ اُوْتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا
يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝
اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ قَالَ سَنَنْظُرُ
اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ
هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا
يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ

मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह वाक़ई हाज़िर नहीं (२०) ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूंगा[13] या ज़िब्ह करूंगा या कोई रौशन सनद (प्रमाण) मेरे पास लाए[14] (२१) तो हुदहुद कुछ ज़्यादा देर न ठहरा और आकर[15] अर्ज़ की कि मैं वह बात देख आया हूँ जो हुज़ूर ने न देखी और मैं सबा शहर से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ (२२) मैं ने एक औरत देखी[16] कि उनपर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है[17] और उसका बड़ा तख़्त है[18] (२३) मैं ने उसे और उसकी क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़कर सूरज को सज्दा करते हैं[19] और शैतान ने उनके कर्म उनकी निगाह में संवार कर उनको सीधी राह से रोक दिया[20] तो वो राह नहीं पाते (२४) क्यों नहीं सज्दा करते अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[21] और जानता है जो कुछ तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो[22] (२५) अल्लाह है कि उसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं, वह बड़े अर्श का मालिक है (२६) सुलैमान ने फ़रमाया, अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूटों में है[23] (२७) मेरा यह फ़रमान ले जाकर उनपर डाल फिर उनसे अलग हट कर देख कि वो क्या जवाब देते हैं[24] (२८) वह औरत बोली, ऐ सरदारो बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त

(१३) उसके पर उखाड़कर, या उसको उसके प्यारों से अलग करके या उसको उसके क़रीब वालों का ख़ादिम बनाकर या उसको ग़ैर जानवरों के साथ क़ैद करके और हुदहुद को मसलिहत के अनुसार अज़ाब करना आपके लिये हलाल था और जब पक्षी आप के आधीन किये गए थे तो उनको अदब और सियासत सिखाना इसकी ज़रूरत है.

(१४) जिससे उसकी मअज़ूरी और लाचारी ज़ाहिर हो.

(१५) बहुत विनम्रता और इन्किसारी और अदब के साथ माफ़ी चाह कर.

(१६) जिसका नाम बिल्क़ीस है.

(१७) जो बादशाहों की शान के लायक़ होता है.

(१८) जिसकी लम्बाई अस्सी गज़, चौड़ाई चालीस गज़, सोने चाँदी का, जवाहिरात से सजा हुआ.

(१९) क्योंकि वो लोग सूरज परस्त मजूसी थे.

(२०) सीधी राह से मुराद सच्चाई का तरीक़ा और दीने इस्लाम है.

(२१) आसमान की छुपी चीज़ों से मेंह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से पेड़ पौदे मुराद हैं.

(२२) इसमें सूरज के पुजारियों बल्कि सारे बातिल परस्तों का रद है जो अल्लाह तआला के सिवा किसी को भी पूजें. मक़सूद यह है कि इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वही है जो आसमान और ज़मीन की सृष्टि पर क़ुदरत रखता हो और सारी जानकारी का मालिक हो, जो ऐसा नहीं, वह किसी तरह इबादत का मुस्तहिक़ नहीं.

(२३) फिर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने एक ख़त लिखा जिसका मज़मून यह था कि "अल्लाह के बन्दे, दाऊद के बेटे सुलैमान की तरफ़ से शहरे सबा की रानी बिल्क़ीस के लिये ... अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ... उसपर सलाम जो हिदायत क़ुबूल करे, उसके बाद मुद्दआ यह कि तुम मुझ पर बलन्दी न चाहो और मेरे हुज़ूर फ़रमाँबरदार होकर हाज़िर हो. उसपर आपने अपनी मोहर लगाई और हुदहुद से फ़रमाया.

(२४) चुनांन्चे हुदहुद वह मुबारक ख़त लेकर बिल्क़ीस के पास पहुंचा. उस वक़्त बिल्क़ीस के चारों तरफ़ उसके वज़ीरों और सलाहकारों की भीड़ थी. हुदहुद ने वह ख़त बिल्क़ीस की गोद में डाल दिया और वह उसको देखकर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उसपर मोहर देख कर.

(२५) उसने उस ख़त को इज़्ज़त वाला या तो इसलिये कहा कि उसपर मोहर लगी हुई थी. उसने जाना कि किताब का भेजने वाला बड़ी बुज़ुर्गी वाला बादशाह है. या इसलिये कि उस ख़त की शुरूआत अल्लाह तआला के नामे पाक से थी फिर उसने बताया कि वह ख़त किस की तरफ़ से आया है. चुनांन्चे कहा.

كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ
يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً
اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا
بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾
قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ
جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ
بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ
بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ
بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً
وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ

منزل ٥

वाला ख़त डाला गया[२५] ﴿२९﴾ बेशक वह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वह अल्लाह के नाम से है जो बहुत मेहरबान रहम वाला ﴿३०﴾ यह कि मुझ पर बलन्दी न चाहो[२६] और गर्दन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो[२७] ﴿३१﴾

तीसरा रूकू

बोली, ऐ सरदारो मेरे इस मामले में मुझे राय दो, मैं किसी मामले में कोई क़तई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास हाज़िर न हो ﴿३२﴾ वो बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं[१] और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है[२] ﴿३३﴾ बोली बेशक बादशाह जब किसी बस्ती में[३] दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उसके इज़्ज़त वालों को[४] ज़लील और ऐसा ही करते हैं[५] ﴿३४﴾ और मैं उनकी तरफ़ एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब लेकर पलटे[६] ﴿३५﴾ फिर जब वह[७] सुलैमान के पास आया फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो, तो जो मुझे अल्लाह ने दिया[८] वह बेहतर है उससे जो तुम्हें दिया[९] बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते हो[१०] ﴿३६﴾ पलट जा उनकी तरफ़ तो ज़रूर हम उनपर वो लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उनको इस शहर से ज़लील करके निकाल देंगे यूं कि वो पस्त होंगे[११] ﴿३७﴾ सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वह उसका तख़्त

(२६) यानी मेरे हुक्म को पूरा करो और घमण्ड न करो जैसा कि कुछ बादशाह किया करते हैं.

(२७) फ़रमाँबरदारी की शान से, ख़त का यह मज़मून सुनाकर बिल्क़ीस अपने सलाहकारों वज़ीरों की तरफ़ मुतवज्जह हुइ.

सूरए नम्ल - तीसरा रूकू

(१) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग उसके लिये तैयार हैं, बहादुर और साहसी हैं, क़ुव्वत और शक्ति के मालिक हैं. बहुत से लश्कर रखते हैं. जंगों का अनुभव भी है.

(२) ऐ रानी, हम तेरी फ़रमाँबरदारी करेंगे. तेरे हुक्म के मुन्तज़िर हैं. इस जवाब में उन्होंने यह इशारा किया कि उनकी राय जंग की है या उनका इरादा यह हो कि हम जंगी लोग हैं. राय और मशवरा हमारा काम नहीं है, तू ख़ुद अक़्ल और तदबीर वाली है. हम हर हाल में तेरी आज्ञा का पालन करेंगे. जब बिल्क़ीस ने देखा कि ये लोग जंग की तरफ़ झुके हैं तो उसने उन्हें उनकी राय की ख़ता पर आगाह किया और जंग के नतीजे सामने किये.

(३) अपने ज़ोर और क़ुव्वत से.

(४) क़त्ल और क़ैद और अपमान के साथ.

(५) यही बादशाहों का तरीक़ा है. बादशाहों की आदत का, जो उसको इल्म था उसकी बुनियाद पर उसने यह कहा और मुराद उसकी यह थी कि जंग उचित नहीं है. उसमें मुल्क और मुल्क के निवासियों की तबाही व बरबादी का ख़तरा है. उसके बाद उसने अपनी राय का इज़हार किया और कहा.

(६) इससे मालूम हो जाएगा कि वह बादशाह हैं तो हदिया क़ुबूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो भेंट स्वीकार न करेंगे और सिवा उसके हम उनके दीन का अनुकरण करें, वह और किसी बात से राज़ी न होंगे. तो उसने पांच सौ गुलाम और पाँच सौ दासियाँ बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ सजा कर सोने चांदी की ज़ीनों पर सवार करके भेजे और पाँच सौ ईंटें सोने की और जवाहिर व ताज और मुश्क व अंबर वग़ैरह वग़ैरह, एक ख़त के साथ अपने ऐलची के हमराह रवाना किये. हुदहुद यह देखकर चल दिया और उसने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास सारी ख़बर पहुंचाई. आपने हुक्म दिया कि सोने चाँदी की ईंटें बनाकर सत्ताईस मील क्षेत्रफल के मैदान में बिछा दी जाएं और उसके चारों तरफ़ सोने चाँदी की ऊंची दीवार बना दी जाए और समन्दर व ख़ुश्की के सुन्दर जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं हाज़िर किये जाएं.

يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَن يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ
عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ
مِن مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ
الَّذِي عِندَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ
أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِندَهُ
قَالَ هَٰذَا مِن فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي أَأَشْكُرُ أَمْ
أَكْفُرُ ۖ وَمَن شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن كَفَرَ
فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنظُرْ
أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا
جَاءَتْ قِيلَ أَهَٰكَذَا عَرْشُكِ ۖ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۚ وَ
أُوتِينَا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا
مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ
كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ

मेरे पास ले आए पहले इसके कि वह मेरे हुज़ूर मुतीअ(फ़रमांबरदार) होकर हाज़िर हो(१२)﴾३८﴿ एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि मैं वह तख़्त हुज़ूर में हाज़िर करदूंगा इसके पहले कि हुज़ूर इजलास बरख़ास्त करें(१३) और मैं बेशक उसपर क़ुव्वत वाला अमानतदार हूँ(१४)﴾३९﴿ उसने अर्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था(१५) कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले(१६) फिर जब सुलैमान ने तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा यह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री, और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है(१७) और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे पर्वाह है सब ख़ूबियों वाला﴾४०﴿ सुलैमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उसके सामने बनावट बदल कर बेगाना करदो कि हम देखें कि वह राह पाती है या उनमें होती है जो नावाक़िफ़ रहे﴾४१﴿ फिर जब वह आई उससे कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है, बोली गोया यह वही है,(१८) और हमको इस वाक़ए(घटना) से पहले ख़बर मिल चुकी(१९) और हम फ़रमांबरदार हुए(२०)﴾४२﴿ और उसे रोका(२१) उस चीज़ ने जिसे वह अल्लाह के सिवा पूजती थी, बेशक वह काफ़िर लोगों में से थी﴾४३﴿ उससे कहा गया सेहन(आंगन) में आ(२२) फिर जब उसने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी

(७) यानी बिल्क़ीस का पयामी, अपनी जमाअत समेत हदिया लेकर.
(८) यानी दीन और नबुव्वत और हिकमत व मुल्क.
(९) दुनिया का माल अस्बाब.
(१०) यानी तुम घमण्डी हो. दुनिया पर घमण्ड करते हो. और एक दूसरे के हदिये पर ख़ुश होते हो. मुझे न दुनिया से ख़ुशी होती है न उसकी हाजत. अल्लाह तआला ने मुझे इतना बहुत कुछ अता फ़रमाया है कि औरों को न दिया. दीन और नबुव्वत से मुझको बुज़ुर्गी दी. उसके बाद सुलैमान अलैहिस्सलाम ने वफ़्द के सरदार मुदिर इब्ने अम्र से फ़रमाया कि ये हदिये लेकर ...
(११) यानी अगर वह मेरे पास मुसलमान होकर हाज़िर न हुए तो यह अंजाम होगा. जब क़ासिद हदिये लेकर बिल्क़ीस के पास वापस गए और तमाम हालात सुनाए तो उसने कहा, बेशक वह नबी हैं और हमें उनसे मुक़ाबले की ताक़त नहीं . उसने अपना तख़्त अपने सात महलों में से सबसे पिछले महल में मेहफ़ूज़ करके तमाम दरवाज़ों पर ताले डाल दिये और उनपर पहरेदार मुक़र्रर कर दिये और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होने का इन्तिज़ाम किया ताकि देखे कि आप उसको क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वह एक भारी लश्कर लेकर आपकी तरफ़ रवाना हुई जिसमें बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी. जब इतने क़रीब पहुंच गई कि हज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग (लगभग तीन मील) का फ़ासला रह गया.
(१२) इससे आपका मक़सद यह था कि उसका तख़्त हाज़िर करके उसको अल्लाह तआला की क़ुदरत और अपनी नबुव्वत पर दलालत करने वाला चमत्कार दिखाएं. कुछ ने कहा है कि आपने चाहा कि उसके आने से पहले उसकी बनावट बदल दें और उससे उसकी अक़्ल का इम्तिहान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं.
(१३) और आपका इजलास सुबह से दोपहर तक होता था.
(१४) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मैं उससे जल्द चाहता हूँ.
(१५) यानी आपके वज़ीर आसिफ़ बिन बर्ख़िया, जो अल्लाह तआला का इस्मे आज़म जानते थे.
(१६) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, लाओ हाज़िर करो. आसिफ़ ने अर्ज़ किया, आप नबी इब्ने नबी है और जो रूत्बा अल्लाह की बारगाह में आपको हासिल है, यहाँ किस को मयस्सर है. आप दुआ करें तो वह आपके पास ही होगा. आपने फ़रमाया, तुम सच कहते हो और दुआ की. उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे चलकर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की कुर्सी के क़रीब नमूदार हुआ.
(१७) कि इस शुक्र का नफ़ा ख़ुद उस शुक्रगुज़ार की तरफ़ पलटता है.
(१८) इस जवाब से उसकी अक़्लमन्दी का कमाल मालूम हुआ. अब उससे कहा गया कि यह तेरा ही सिंहासन है, दरवाज़ा बन्द

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ
نَفْسِیْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾
قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾
قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِی
الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ وَلَا
يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَ
اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

और अपनी साक़ें(पिंडलियां) खोलीं(२३) सुलैमान ने फ़रमाया यह तो एक चिकना सेहन है शीशों जड़ा(२४) औरत ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया(२५) और अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गर्दन रखती हूँ जो रब सारे जगत का(२६)﴾४४﴿

चौथा रूकू

और बेशक हमने समूद की तरफ़ उनके हमक़ौम सालेह को भेजा कि अल्लाह को पूजो(१) तो जभी वो दो गिरोह होगए(२) झगड़ा करते(३)﴾४५﴿ सालेह ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम क्यों बुराई की जल्दी करते हो(४) भलाई से पहले(५) अल्लाह से बख़्शिश क्यों नहीं मांगते(६) शायद तुम पर रहम हो(७)﴾४६﴿ बोले हमने बुरा शगुन लिया तुमसे और तुम्हारे साथियों से(८) फ़रमाया तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास है(९) बल्कि तुम लोग फ़ित्ने में पड़े हो(१०)﴾४७﴿ और शहर में नौ व्यक्ति थे(११) कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते﴾४८﴿ आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले हम ज़रूर रात को छापा मारेंगे सालेह और उसके घरवालों पर(१२) फिर उसके वारिस से(१३) कहेंगे इस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम हाज़िर न थे बेशक हम सच्चे हैं﴾४९﴿ और उन्होंने अपना सा मक्र किया और हमने अपनी ख़ुफ़िया (छुपवां) तदबीर फ़रमाई(१४) और वो ग़ाफ़िल रहे﴾५०﴿ तो देखो कैसा अंजाम

करने, ताला लगाने, पहरेदार बिठाने का क्या फ़ायदा हुआ ? इसपर उसने कहा.

(१९) अल्लाह तआला की क़ुदरत और आपकी नबुव्वत की सच्चाई की, हुदहुद के वाक़ए से और वफ़्द के सरदार से.

(२०) हमने आपकी फ़रमाँबरदारी और आपकी इताअत इख़्तियार की.

(२१) अल्लाह की इबादत और तौहीद से, या इस्लाम की तरफ़ बढ़ने से.

(२२) वह सहन शफ़्फ़ाफ़ आबगीने का था. उसके नीचे पानी जारी था. उसमें मछलियाँ थीं और उसके बीच में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का तख़्त था जिसपर आप बैठे थे.

(२३) ताकि पानी में चलकर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो.

(२४) यह पानी नहीं है, यह सुनकर बिल्क़ीस ने अपनी पिंडलियाँ छुपा लीं और इससे उसको बड़ा अचरज हुआ और उसने यक़ीन किया कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का मुल्क और हुकूमत अल्लाह की तरफ़ से है . इन चमत्कारों से उसने अल्लाह तआला की तौहीद और आपकी नबुव्वत पर इस्तिदलाल किया. अब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उसको इस्लाम की तरफ़ बुलाया.

(२५) कि तेरे ग़ैर को पूजा, सूरज की उपासना की.

(२६) चुनांचे उसने सच्चे दिल से तौहीद और इस्लाम को क़ुबूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआला की इबादत इख़्तियार की.

सूरए नम्ल - चौथा रूकू

(१) और किसी को उसका शरीक न करो.

(२) एक ईमानदार और एक काफ़िर.

(३) हर पक्ष अपने ही को सच्चाई पर कहता और दोनों आपस में झगड़ते. काफ़िर गिरोह ने कहा, ऐ सालेह, जिस अज़ाब का तुम वादा देते हो उसको लाओ अगर रसूलों में से हो.

(४) यानी बला और अज़ाब का.

(५) भलाई से मुराद आफ़ियत और रहमत है.

(६) अज़ाब उतरने से पहले, कुफ़्र से तौबह कर के, ईमान लाकर.

(७) और दुनिया में अज़ाब न किया जाए.

مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ
مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَ
اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ
اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

हुआ उनके मक्र का हमने हलाक कर दिया उन्हें[१५] और उनकी सारी क़ौम को[१६] (५१) तो ये हैं इनके घर ढे पड़े, बदला इनके ज़ुल्म का, बेशक इसमें निशानी है जानने वालों के लिये (५२) और हमने उनको बचा लिया जो ईमान लाए[१७] और डरते थे[१८] (५३) और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा क्या बेहयाई पर आते हो[१९] और तुम सूझ रहे हो[२०] (५४) क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो औरतें छोड़कर[२१] बल्कि तुम जाहिल लोग हो[२२] (५५) तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न था मगर यह कि बोले लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग तो सुथरापन चाहते हैं[२३] (५६) तो हमने उसे और उसके घर वालों को निजात दी मगर उसकी औरत को हमने ठहरा दिया था कि वह रह जाने वालों में है[२४] (५७) और हमने उनपर एक बरसाव बरसाया[२५] तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुओं का (५८)

पाँचवां रूकू

तुम कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को[१] और सलाम उसके चुने हुए बन्दों पर[२] क्या अल्लाह बेहतर[३] या उनके बनाए हुए शरीक[४] (५९)

(८) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम जब भेजे गए और क़ौम ने झुटलाया उसके कारण बारिश रूक गई. अकाल हो गया, लोग भूखों मरने लगे, उसको उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की तशरीफ़ आवरी की तरफ़ निस्बत किया और आपकी आमद को बदशगुनी समझा.

(९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि बदशगुनी जो तुम्हारे पास आई, यह तुम्हारे कुफ़्र के कारण अल्लाह तआला की तरफ़ से आई.

(१०) आज़माइश में डाले गए या अपने दीन के कारण अज़ाब में जकड़े हुए हो.

(११) यानी समूद के शहर में जिसका नाम हजर है. उनके शरीफ़ज़ादों में से नौ व्यक्ति थे जिनका सरदार क़ुदार बिन सालिफ़ था. यही लोग हैं जिन्होंने ऊंटनी की कूंचें काटने की कोशिश की थी.

(१२) यानी रात के वक़्त उनको और उनकी औलाद को और उनके अनुयाइयों को जो उनपर ईमान लाए, क़त्ल कर देंगे.

(१३) जिसको उनके ख़ून का बदला तलब करने का हक़ होगा.

(१४) यानी उनके छलकपट का बदला यह दिया कि उनके अज़ाब में जल्दी फ़रमाई.

(१५) यानी उन नौ व्यक्तियों को. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस रात हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के मकान की हिफ़ाज़त के लिये फ़रिश्ते भेजे तो वो नौ व्यक्ति हथियार बांध कर तलवारें खींच कर हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आए. फ़रिश्तों ने उनके पत्थर मारे. वो पत्थर लगते थे और मारने वाले नज़र नहीं आते थे. इस तरह उन नौ को हलाक किया.

(१६) भयानक आवाज़ से.

(१७) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर.

(१८) उनकी नाफ़रमानी से. उन लोगों की तादाद चार हज़ार थी.

(१९) इस बेहयाई से मुराद उनकी बदकारी है.

(२०) यानी इस काम की बुराई जानते हो या ये मानी हैं कि एक दूसरे के सामने बेपर्दा खुल्लम खुल्ला बुरा काम करते हो या ये कि तुम अपने से पहले नाफ़रमानी करने वालों की तबाही और उनके अज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बुरे काम में लगे हो.

(२१) इसके बावुजूद कि मर्दों के लिये औरतें बनाई गई हैं. मर्दों के लिये मर्द और औरतों के लिये औरतें नहीं बनाई गईं. इसलिये यह काम अल्लाह तआला की हिकमत का विरोध है.

(२२) जो ऐसा काम करते हो.
(२३) और इस गन्दे काम को मना करते हैं.
(२४) अज़ाब में.
(२५) पत्थरों का.

सूरए नम्ल - पाँचवां रूकू

(१) यह सम्बोधन है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर अल्लाह तआला की हम्द बजा लाएं.

(२) यानी अम्बिया व मुरसलीन पर. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा मुराद हैं.

(३) ख़ुदा परस्तों के लिये, जो ख़ास उसकी इबादत करें और उस पर ईमान लाएं और वह उन्हें अज़ाब और हलाकत से बचाए

(४) यानी बुत, जो अपने पुजारियों के कुछ काम न आ सकें. तो जब उनमें कोई भलाई नहीं, वो कोई नफ़ा नहीं पहुंचा सकते तो उनको पूजना और मअबूद मानना बिल्कुल बेजा है. और इसके बाद कुछ क़िस्में बयान की जाती हैं जो अल्लाह तआला के एक होने और उसकी सम्पूर्ण क़ुदरत को प्रमाणित करती हैं.

पारा उन्नीस समाप्त

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ
السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ
لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
يَّعْدِلُوْنَ ۝٦٠ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ
أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦١ أَمَّنْ
يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ
خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٢
أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ
يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۗ ءَإِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ۚ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٣ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۗ ءَإِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۚ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦٤

منزل ٥

बीसवाँ पारा- अम्मन ख़लक़
(सूरए नम्ल - पाँचवां रुकू जारी)

या वह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए[५] और तुम्हारे लिये आसमान से पानी उतारा, तो हमने उससे बाग़ उगाए रौनक़ वाले, तुम्हारी ताक़त न थी कि उनके पेड़ उगाते[६] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है[७] बल्कि वो लोग राह से कतराते हैं[८] (६०) या वह जिसने ज़मीन बसने को बनाई और उसके बीच में नेहरें निकालीं और उसके लिये लंगर बनाए[९] और दोनों समन्दरों में आड़ रखी[१०] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बल्कि उनमें अक्सर जाहिल हैं[११] (६१) या वह जो लाचार की सुनता है[१२] जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन का वारिस करता है[१३] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है, बहुत ही कम ध्यान करते हो (६२) या वह जो तुम्हें राह दिखाता है[१४] अंधेरियों में ख़ुश्की और तरी की[१५] और वह कि हवाएं भेजता है अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी सुनाती[१६] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है, बरतर है अल्लाह उनके शिर्क से (६३) या वह जो ख़ल्क़(सृष्टि) की शुरूआत फ़रमाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा[१७] और वह जो तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है,[१८] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है, तुम फ़रमाओ कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो[१९] (६४)

सूरए नम्ल - पाँचवां रुकू जारी

(५) अज़ीम-तरीन चीज़ें, जो देखने में आती हैं और अल्लाह तआला की महानता, क्षमता और भरपूर क़ुदरत की दलील हैं, उनका बयान फ़रमाया. मानी ये हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वह जिसने आसमान और ज़मीन जैसी अज़ीम और अजीब मख़्लूक़ बनाई.

(६) यह तुम्हारी क़ुदरत में न था.

(७) क्या क़ुदरत के ये प्रमाण देखकर ऐसा कहा जा सकता है. हरगिज़ नहीं. वह वाहिद है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.

(८) जो उसके लिये शरीक ठहराते हैं.

(९) भारी पहाड़, जो उसे हरकत से रोकते हैं.

(१०) कि खारी मीठे मिलने न पाएं.

(११) जो अपने रब की तौहीद और उसकी क़ुदरत और शक्ति को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते.

(१२) और हाजत दूर फ़रमाता है.

(१३) कि तुम उसमें रहो और एक ज़माने के बाद दूसरे ज़माने में उसका इस्तेमाल करो.

(१४) तुम्हारे उद्देश्य और मक़सदों की.

(१५) सितारों से और चिन्हों या निशानियों से.

(१६) रहमत से मुराद यहाँ बारिश है.

(१७) उसकी मौत के बाद. अगरचे मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने को काफ़िर नहीं मानते थे लेकिन जब कि इसपर तर्क और प्रमाण क़ायम हैं तो उनका इक़रार न करना कुछ लिहाज़ के क़ाबिल नहीं बल्कि जब वो शुरु की पैदाइश के क़ाइल हैं तो उन्हें दोबारा पैदाइश या दोहराए जाने को मानना पड़ेगा क्योंकि शुरूआत दोहराए जाने पर भारी प्रमाण रखती है . तो अब उनके लिये इन्कार के किसी बहाने की कोई जगह बाक़ी न रही.

(१८) आसमान से बारिश और ज़मीन से हरियाली.

(१९) अपने इस दावे में कि अल्लाह तआला के सिवा और भी मअबूद हैं. तो बताओ जो जो गुण और कमालात ऊपर बयान किये गए वो किस में हैं. और जब अल्लाह के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मअबूद ठहराते हो. यहाँ "हातू

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا
اللّٰهُ ۭ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ ۣ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۣ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۗؤُنَآ اَىِٕنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا
الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ
لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَاۗىِٕبَةٍ
فِي السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنَّ هٰذَا

तुम फ़रमाओ ग़ैब नहीं जानते जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं मगर अल्लाह[२०] और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे《६५》 क्या उनके इल्म का सिलसिला आख़िरत के जानने तक पहुंच गया[२१] कोई नहीं वो उसकी तरफ़ से शक में हैं[२२] बल्कि वो उससे अंधे हैं《६६》

छटा रूकू

और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर निकाले जाएंगे[१]《६७》 बेशक उसका वादा दिया गया हमको और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं को यह तो नहीं मगर अगलों की कहानियाँ[२]《६८》 तुम फ़रमाओ ज़मीन में चलकर देखो कैसा हुआ अंजाम मुजरिमों का[३]《६९》 और तुम उनपर ग़म न खाओ[४] और उनके मक्र(कपट) से दिल तंग न हो[५]《७०》 और कहते हैं कब आएगा यह वादा[६] अगर तुम सच्चे हो《७१》 तुम फ़रमाओ क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो कुछ वो चीज़ जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो[७]《७२》 और बेशक तेरा रब फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर[८] लेकिन अक्सर आदमी हक़(सत्य) नहीं मानते[९]《७३》 और बेशक तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपी है और जो वो ज़ाहिर करते हैं[१०]《७४》 और जितने ग़ैब हैं आसमानों और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं[११]《७५》

बुरहानकुम' यानी अपनी दलील लाओ फ़रमाकर उनकी लाचारी और बातिल होने का इज़हार मन्ज़ूर है.

(२०) वही जानने वाला है ग़ैब यानी अज्ञात का. उसको इख़्तियार है जिसे चाहे बताए. चुनांन्चे अपने प्यारे नबियों को बताता है जैसा कि सूरए आले इमरान में है *''वमा कानल्लाहो लियुत लिअकुम अलल ग़ैबे वलाकिन्नल्लाहा यजतबी मिर रुसुलिही मैंय यशाओ''* यानी अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इल्म दे. हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे. और बहुत सी आयतों में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उलूम अता फ़रमाने का बयान फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इससे अगले रूकू में आया है : *''वमा मिन ग़ाइबतिन फ़िस्समाए वल अर्दे इल्ला फ़ी किताबिम मुबीन''* यानी जितने ग़ैब हैं आसमान और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं. यह आयत मुश्रिकों के बारे में उतरी जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़यामत के आने का वक़्त पूछा था.

(२१) और उन्हें क़यामत होने का इल्म और यक़ीन हासिल हो गया, जो वो उसका वक़्त पूछते हैं.

(२२) उन्हें अब तक क़यामत के आने का यक़ीन नहीं है.

सूरए नम्ल - छटा रूकू

(१) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा.

(२) यानी (मआज़ल्लाह) झूठी बातें.

(३) कि वो इन्कार के कारण अज़ाब से हलाक किये गए.

(४) उनके मुंह फेरने और झुटलाने और इस्लाम से मेहरूम रहने के कारण.

(५) क्योंकि अल्लाह आपका हाफ़िज़ और मददगार है.

(६) यानी यह अज़ाब का वादा कब पूरा होगा.

(७) यानी अल्लाह का अज़ाब, चुनांन्चे वह अज़ाब बद्र के दिन उनपर आ ही गया और बाक़ी को मौत के बाद पाएंगे.

(८) इसीलिये अज़ाब में देरी करता है.

(९) और शुक्रगुज़ारी नहीं करते और अपनी जिहालत से अज़ाब की जल्दी करते हैं.

(१०) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखना और आपके विरोध में छलकपट करना सब कुछ अल्लाह

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ

बेशक यह क़ुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी इस्राईल से अक्सर वो बातें जिसमें वो इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते हैं[१२] ﴿७६﴾ और बेशक वह हिदायत और रहमत है मुसलमानों के लिये ﴿७७﴾ बेशक तुम्हारा रब उनके आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वही है इज़्ज़त वाला इल्म वाला ﴿७८﴾ तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम रौशन हक़ पर हो ﴿७९﴾ बेशक तुम्हारे सुनाए नहीं सुनते मुर्दे[१३] और न तुम्हारे सुनाए बेहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर[१४] ﴿८०﴾ और अंधों को[१५] गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं[१६] और वो मुसलमान हैं ﴿८१﴾ और जब बात उनपर आ पड़ेगी[१७] हम ज़मीन से उनके लिये एक चौपाया निकालेंगे[१८] जो लोगों से कलाम करेगा[१९] इसलिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे[२०] ﴿८२﴾

सातवाँ रूकू

और जिस दिन उठाएंगे हम हर गिरोह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है[१] तो उनके अगले रोके जाएंगे कि पिछले उनसे आ मिलें ﴿८३﴾ यहां तक कि जब सब हाज़िर होंगे[२] फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाईं हालांकि तुम्हारा इल्म उनतक न पहुंचा था[३] या क्या काम करते थे[४] ﴿८४﴾ और बात पड़ चुकी उनपर[५] उनके ज़ुल्म के कारण तो वो अब कुछ नहीं बोलते[६] ﴿८५﴾

को मालूम है, वह उसकी सज़ा देगा.

(११) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में दर्ज हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल से जिन्हें उनका देखना मयस्सर है उनके लिये ज़ाहिर हैं.

(१२) दीनी कामों में किताब वालों ने आपस में मतभेद किया, उनके बहुत से सम्प्रदाय हो गए और आपस में बुरा भला कहने लगे तो क़ुरआने करीम ने उसका बयान फ़रमाया. ऐसा बयान किया कि अगर वो इन्साफ़ करें और उसको क़ुबूल करें और इस्लाम लाएं तो उनमें यह आपसी मतभेद बाक़ी न रहे.

(१३) मुर्दों से मुराद यहाँ काफ़िर लोग हैं जिनके दिल मुर्दा हैं. चुनांन्चे इसी आयत में उनके मुक़ाबले में ईमान वालों का बयान फ़रमाया "तुम्हारे सुनाए तो वही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं". जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर बहस करते हैं उनका तर्क ग़लत है. चूंकि यह मुर्दा काफ़िर को कहा गया है और उन से भी बिल्कुल ही हर कलाम के सुनने का इन्कार मुराद नहीं है बल्कि नसीहत और उपदेश और हिदायत की बातें क़ुबूल करने वाले कानों से सुनने की नफ़ी है और मुराद यह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से फ़ायदा नहीं उठाते. इस आयत के मानी ये बताना कि मुर्दे नहीं सुनते, बिल्कुल ग़लत है. सही हदीसों से मुर्दों का सुनना साबित है.

(१४) मानी ये हैं कि काफ़िर मुंह फेरने और न मानने की वजह से मुर्दे और बहरे जैसे हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और सच्चाई की तरफ़ बुलाना किसी तरह लाभदायक नहीं होता.

(१५) जिनकी नज़र या दृष्टि जाती रही और दिल अन्धे हो गए.

(१६) जिनके पास समझने वाले दिल हैं और जो अल्लाह के इल्म में ईमान की सआदत से लाभान्वित होने वाले हैं. (बैज़ावी व कबीर व अबूसऊद व मदारिक)

(१७) यानी उनपर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और अज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी इस तरह कि लोग अच्छाई पर अमल और बुराई से दूर रहना छोड़ देंगे और उनकी दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी यानी क़यामत क़रीब हो जाएगी और उसकी निशानियाँ ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबह का कोई फ़ायदा न होगा.

(१८) इस चौपाए को दाब्बतुल-अर्ज़ कहते हैं. यह अजीब शक्ल का जानवर होगा जो सफ़ा पहाड़ से निकल कर सारे शहरों में बहुत जल्द फिरेगा. फ़साहत के साथ कलाम करेगा. हर व्यक्ति के माथे पर एक निशान लगाएगा. ईमान वालों की पेशानी पर हज़रत मूसा

لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ
وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا
جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ
كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ
فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾
وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ
تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ؗ
وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ
فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ
اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۹۲﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ

क्या उन्होंने न देखा कि हमने रात बनाई कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया सुझाने वाला, बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं[७]﴾८६﴿ और जिस दिन फूंका जाएगा सूर[८] तो घबराए जाएंगे जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं[९] मगर जिसे ख़ुदा चाहे[१०] और सब उसके हुज़ूर हाज़िर हुए आजिज़ी (गिड़गिड़ाते) करते[११]﴾८७﴿ और तू देखेगा पहाड़ों को, ख़याल करेगा कि वो जमे हुए हैं और वो चलते होंगे बादल की चाल[१२] यह काम है अल्लाह का जिसने हिकमत से बनाई हर चीज़, बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की﴾८८﴿ जो नेकी लाए[१३] उसके लिये इससे बेहतर सिला है[१४] और उनको उस दिन की घबराहट से अमान है[१५]﴾८९﴿ और जो बदी लाए[१६] तो उनके मुंह औंधाए गए आग में[१७] तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का जो करते थे[१८]﴾९०﴿ मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि पूजूं इस शहर के रब को[१९] जिसने इसे हुर्मत वाला किया है[२०] और सब कुछ उसी का है, और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमांबरदारों में हूँ﴾९१﴿ और यह कि क़ुरआन की तिलावत (पाठ) करूं[२१] तो जिसने राह पाई उसने अपने भले को राह पाई[२२] और जो बहके[२३] तो फ़रमा दो कि मैं तो यही डर सुनाने वाला हूँ[२४]﴾९२﴿ और फ़रमाओ कि

की लाठी से नूरानी लकीर खींचेगा. काफ़िर की पेशानी पर हज़रत सुलैमान की अंगूठी से काली मोहर लगाएगा.

(१९) साफ़ सुथरी ज़बान में. और कहेगा यह मूमिन है, यह काफ़िर है.

(२०) यानी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे जिसमें मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब व अज़ाब और दाब्बतुल-अर्ज़ के निकलने का बयान है. इसके बाद की आयत में क़यामत का बयान फ़रमाया जाता है.

सूरए नम्ल - सातवाँ रूकू

(१) जो कि हमने अपने नबियों पर उतारीं . फ़ौज से मुराद बड़ी जमाअत है.

(२) क़यामत के रोज़ हिसाब के मैदान में.

(३) और तुमने उनकी पहचान हासिल न की थी. बग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर दिया.

(४) जब तुमने उन आयतों को भी नहीं सोचा. तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे.

(५) अज़ाब साबित हो चुका.

(६) कि उनके लिये कोई हुज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है. एक क़ौल यह भी है कि अज़ाब उन पर इस तरह छा जाएगा कि वो बोल न सकेंगे.

(७) और आयत में मरने के बाद उठने पर दलील है इसलिये कि जो दिन की रौशनी को रात के अंधेरे से और रात के अन्धेरे को दिन के उजाले से बदलने पर क़ादिर है वह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है. इसके अलावा रात और दिन की तबदीली से यह भी मालूम होता है कि उसमें उनकी दुनियवी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है. तो यह बेकार नहीं किया गया बल्कि इस ज़िन्दगानी के कर्मों पर अज़ाब और सवाब का दिया जाना हिकमत पर आधारित है और जब दुनिया कर्मभूमि है तो ज़रूरी है कि एक आख़िरत भी हो, वहाँ की ज़िन्दगानी में यहाँ के कर्मों का बदला मिले.

(८) और उसके फूंकने वाले इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम होंगे.

(९) ऐसा घबराना जो मौत का कारण होगा.

(१०) और जिसके दिल को अल्लाह तआला सुकून अता फ़रमाए. हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि ये शहीद लोग हैं जो अपनी तलवारें गलों में डाले अर्श के चारों तरफ़ हाज़िर होंगे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया वो शहीद

सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं, बहुत जल्द वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा तो उन्हें पहचान लोगे(२५) और ऐ मेहबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे कर्मों से﴾९३﴿

२८- सूरए क़सस

सूरए क़सस मक्का में उतरी, इसमें ८८ आयतें, ९ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) तॉ-सीन-मीम﴾१﴿ ये आयतें हैं रोशन किताब की(२)﴾२﴿ हम तुम पर पढ़ें मूसा और फ़िरऔन की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं﴾३﴿ बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में ग़ल्बा पाया था(३) और उसके लोगों को अपना ताबे(फ़रमांबरदार) बनाया उनमें एक गिरोह को(४) कमज़ोर देखता उनके बेटों को ज़िब्ह करता और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखता(५) बेशक वह फ़सादी था﴾४﴿ और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों पर एहसान फ़रमाएं और उनको पेशवा बनाएं(६) और उनके मुल्क व माल का उन्हीं को वारिस बनाएं(७)﴾५﴿ और उन्हें(८) ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को वही दिखा दें जिसका उन्हें उनकी तरफ़ से ख़तरा है(९)﴾६﴿ और हमने मूसा की माँ को इल्हाम फ़रमाया(१०) कि इसे दूध पिला(११) फिर जब तुझे इस से अन्देशा(डर) हो(१२) तो इसे दरिया में

हैं इसलिये कि वो अपने रब के नज़दीक ज़िन्दा हैं. घबराना उनको न पहुंचेगा. एक क़ौल यह है कि सूर फूंके जाने के बाद हज़रत जिब्राईल व मीकाईल व इस्राफ़ील और इज़्राईल ही बाक़ी रहेंगे.

(११) यानी क़यामत के रोज़ सब लोग मरने के बाद ज़िन्दा किये जाएंगे और हिसाब के मैदान में अल्लाह तआला के सामने आजिज़ी करते हाज़िर होंगे. भूत काल से ताबीर फ़रमाना यक़ीनी तौर पर होने के लिये है.

(१२) मानी ये है कि सूर फूंके जाने के समय पहाड़ देखने में तो अपनी जगह स्थिर मालूम होंगे और हक़ीक़त में वो बादलों की तरह बहुत तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वग़ैरह बड़े जिस्म चलते हैं, हरकत करते मालूम नहीं होते. यहाँ तक कि वो पहाड़ ज़मीन पर गिरकर उसके बराबर हो जाएंगे. फिर कण कण होकर बिखर जाएंगे.

(१३) नेकी से मुराद तौहीद के कलिमे की गवाही है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि अमल की सच्चाई और कुछ ने कहा कि हर फ़रमाँबरदारी जो अल्लाह तआला के लिये की हो.

(१४) जन्नत और सवाब.

(१५) जो अल्लाह के डर से होगी. पहली घबड़ाहट जिसका ऊपर की आयत में बयान हुआ है, वह इसके अलावा है.

(१६) यानी शिर्क.

(१७) यानी वो औंधे मुंह आग में डाले जाएंगे और जहन्नम के ख़ाज़िन उनसे कहेंगे.

(१८) यानी शिर्क और गुमराही और अल्लाह तआला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप कह दीजिये कि.

(१९) यानी मक्कए मुकर्रमा के, और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं. मक्कए मुकर्रमा का ज़िक्र इसलिये है कि वह नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वतन और वही उतरने की जगह है.

(२०) कि वहाँ न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए, न कोई शिकार मारा जाए, न वहाँ की घास काटी जाए.

(२१) अल्लाह की मख़्लूक़ को ईमान की तरफ़ बुलाने के लिये.

(२२) उसका नफ़ा और सवाब वह पाएगा.

(२३) और अल्लाह के रसूल की फ़रमाँबरदारी न करे और ईमान न लाए.

(२४) मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था, वह मैंने पूरा किया.

رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ
اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ
هَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝ وَقَالَتِ امْرَاَتُ
فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ
يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاَصْبَحَ
فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ
اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ
قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ
وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ
عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى

डाल दे और न डर(१३) और न ग़म कर(१४) बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे(१५)﴾७﴿ तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के घर वालों ने(१६) कि वह उनका दुश्मन और उनपर ग़म हो(१७) बेशक फ़िरऔन और हामान(१८) और उनके लश्कर ख़ताकार थे(१९)﴾८﴿ और फ़िरऔन की बीबी ने कहा(२०) यह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठण्डक है, इसे क़त्ल न करो शायद यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेटा बना लें(२१) और वो बेख़बर थे(२२)﴾९﴿ और सुब्ह को मूसा की माँ का दिल बेसब्र हो गया(२३) ज़रूर क़रीब था कि वह उसका हाल खोल देती(२४) अगर हम ढारस न बंधाते उसके दिल पर कि उसे हमारे वादे पर यक़ीन रहे(२५)﴾१०﴿ और उसकी माँ ने उसकी बहन से कहा(२६) उसके पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उनको ख़बर न थी(२७)﴾११﴿ और हमने पहले ही सब दाइयां उसपर हराम कर दी थीं(२८) तो बोली क्या मैं तुम्हें बतादूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वो इसके ख़ैरख़्वाह (शुभचिंतक) हैं(२९)﴾१२﴿ तो हमने उसे उसकी माँ की तरफ़ फेरा कि माँ की आँख ठण्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते(३०)﴾१३﴿

दूसरा रूकू

और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर

(२५) इन निशानियों से मुराद चाँद का दो टुकड़ों में बंट जाना वग़ैरह चमत्कार हैं और वो मुसीबतें जो दुनिया में आईं जैसे कि बद्र में काफ़िरों का क़त्ल होना, फ़रिश्तों का उन्हें मारना.

२८ - सूरए क़सस - पहला रूकू

(१) सूरए क़सस मक्के में उतरी सिवाय चार आयतों के जो "अल्लज़ीना आतैनाहुमुल किताब" से शुरू होकर "ला नब्तग़िल जाहिलीन" पर ख़त्म होती हैं. इस सूरत में एक आयत "इन्नल लज़ी फ़रदा" ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तैय्यिबह के बीच उतरी. इस सूरत में नौ रूकू, अठासी आयतें, चार सौ इकतालीस कलिमे और पांच हज़ार आठ सौ अक्षर हैं.

(२) जो सत्य को असत्य से अलग करती है.

(३) यानी मिस्र प्रदेश में उसका क़ब्ज़ा था और वह अत्याचार और घमण्ड में चरम सीमा को पहुंच गया था. यहाँ तक कि उसने अपना बन्दा होना भी भुला दिया था.

(४) यानी बनी इस्राईल को.

(५) यानी लड़कियों को ख़िदमतगारी के लिये ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़िब्ह करने का कारण यह था कि तांत्रिकों ने उससे कह दिया था कि बनी इस्राईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के पतन का कारण होगा. इसलिये वह ऐसा करता था और यह उसकी अत्यन्त मूर्खता थी क्योंकि वह अगर अपने ख़याल में तांत्रिकों को सच्चा समझता था तो यह बात होनी ही थी. लड़कों को क़त्ल कर देने से क्या फ़ायदा था और अगर वह सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी बेकार बात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या मानी रखता था.

(६) कि वो लोगों को नेकी की राह बताएं और लोग नेकी में उनका अनुकरण करें.

(७) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम की माल मत्ता इन कमज़ोर बनी इस्राईल को दे दें.

(८) मिस्र और शाम की.

(९) कि बनी इस्राईल के एक बेटे के हाथ से उसके मुल्क का पतन और उनकी हलाकत हो.

(१०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा का नाम यूहानिज़ है. आप लावी बिन यअक़ूब की नस्ल से हैं. अल्लाह तआला ने

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَ
دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۖ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ
عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ
عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ
اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ فَلَنْ
اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ
خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ
يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾
فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ
قَالَ يٰمُوْسٰۤى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

आया[1] हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया,[2] और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को﴾१४﴿ और उस शहर में दाख़िल हुआ[3] जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़्वाब में बेख़बर थे[4] तो उसमें दो मर्द लड़ते पाए, एक मूसा के गिरोह से था[5] और दूसरा उसके दुश्मनों से[6] तो वह जो उसके गिरोह से था[7] उसने मूसा से मदद मांगी उस पर जो उसके दुश्मनों से था, तो मूसा ने उसके घूंसा मारा[8] तो उसका काम कर दिया[9] कहा यह काम शैतान की तरफ़ से हुआ[10] बेशक वह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला﴾१५﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैंने अपनी जान पर ज़ियादती की[11] तो मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया, बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है﴾१६﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब, जैसा तूने मुझपर एहसान किया तो अब[12] हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न हूंगा﴾१७﴿ तो सुब्ह की उस शहर में डरते हुए इन्तिज़ार में कि क्या होता है[13] जभी देखा कि वह जिसने कल उनसे मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है[14] मूसा ने उससे फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है[15]﴾१८﴿ तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरफ़्त करे जो उन दोनों का दुश्मन है[16] वह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुमने कल एक व्यक्ति को

उनको ख़्वाब में या फ़रिश्ते के ज़रीये या उनके दिल में डाल कर इलहाम फ़रमाया.

(११) चुनांन्चे वह कुछ दिन आपको दूध पिलाती रहीं. इस अर्से में न आप रोते थे न उनकी गोद में कोई हरकत करते थे, न आप की बहन के सिवा और किसी को आपकी विलादत की सूचना थी.

(१२) यानी पड़ोसी जान गए हैं, वो चुग़लख़ोरी करेंगे और फ़िरऔन इस मुबारक बेटे के क़त्ल के पीछे पड़ जाएगा.

(१३) यानी मिस्र की नील नदी में बिना डर के डाल दे और उसके डूबने और हलाक होने का अन्देशा न कर.

(१४) उसकी जुदाई का.

(१५) तो उन्हों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तीन माह दूध पिलाया और जब आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुआ तो एक सन्दूक़ में रखकर (जो ख़ास तौर पर इस मक़सद के लिये बनाया गया था) रात के वक़्त नील नदी में बहा दिया.

(१६) उस रात की सुब्ह को, और उस सन्दूक़ को फ़िरऔन के सामने रखा और वह खोला गया और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम निकले जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे.

(१७) आख़िरकार.

(१८) जो उसका वज़ीर था.

(१९) यानी नाफ़रमान, तो अल्लाह तआला ने उन्हें यह सज़ा दी कि उनके हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई.

(२०) जबकि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के लोगों के उकसाने से मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का इरादा किया.

(२१) क्योंकि यह इसी क़ाबिल है. फ़िरऔन की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं. नबियों की नस्ल से थीं. ग़रीबों और दरिद्रों पर मेहरबानी करती थीं. उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि यह बच्चा साल भर से ज़्यादा उम्र का मालूम होता है और तूने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है. इसके अलावा मालूम नहीं यह बच्चा नदी में किस प्रदेश से आया. तुझे जिस बच्चे का डर है वह इसी मुल्क के बनी इस्राईल का बताया गया है. आसिया की यह बात उन लोगों ने मान ली.

(२२) उससे जो परिणाम होने वाला था.

(२३) जब उन्होंने सुना कि उनके सुपुत्र फ़िरऔन के हाथों में पहुंच गए.

(२४) और ममता के जोश में हाय बेटे हाय बेटे पुकारती थीं.

(२५) जो वादा हम कर चुके हैं कि तेरे इस बेटे को तेरी तरफ़ फेर लाएंगे.

(२६) जिनका नाम मरयम था, कि हाल मालूम करने के लिये.

(२७) कि यह उस बच्चे की बहन है और उसकी निगरानी करती है.

(२८) चुनांन्चे जितनी दाइयाँ हाज़िर की गईं उनमें से किसी की छाती आपने मुंह में न ली. इससे उन लोगों को बहुत चिन्ता हुई कि कहीं से कोई ऐसी दाई मिले जिसका दूध आप पी लें. दाइयों के साथ आपकी बहन भी यह हाल देखने चली गईं थीं. अब उन्होंने मौक़ा पाया.
(२९) चुनांन्चे वह उनकी ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन की गोद में थे और दूध के लिये रोते थे. फ़िरऔन आपको शफ़क़त के साथ बहलाता था. जब आपकी वालिदा आईं और आपने उनकी ख़ुश्बू पाई तो आपको क़रार आया और आपने उनका दूध मुंह में लिया. फ़िरऔन ने कहा तू इस बच्चे की कौन है कि उसने तेरे सिवा किसी के दूध को मूंह भी न लगाया. उन्होंने कहा मैं एक औरत हूँ, पाक साफ़ रहती हूँ, मेरा दूध ख़ुशगवार है, जिस्म ख़ुश्बूदार है ,इसलिये जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है वो और औरतों का दूध नहीं लेते हैं. मेरा दूध पी लेते हैं. फ़िरऔन ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर करके बेटे को अपने घर ले जाने की आज्ञा दी. चुनांन्चे आप अपने मकान पर ले आईं और अल्लाह तआला का वादा पूरा हुआ. उस वक़्त उन्हें पूरा इत्मीनान हो गया कि ये बेटा ज़रूर नबी होगा. अल्लाह तआला उस वादे का ज़िक्र फ़रमाता है.
(३०) और शक में रहते हैं. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फ़िरऔन उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा. दूध छूटने के बाद आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन के पास ले आईं और आप वहाँ पलते रहे.

सूरए क़सस - दूसरा रूकू

(१) उम्र शरीफ़ तीस साल से ज़्यादा हो गई.
(२) यानी दीन और दुनिया की मसलिहतों का इल्म.
(३) वह शहर या तो मनफ़ था जो मिस्र की सीमाओं में है. अस्ल उसकी माफ़ह है . क़िब्ती ज़बान में इस लफ़्ज़ के मानी हैं तीस. यह पहला शहर है जो तूफ़ाने नूह के बाद आबाद हुआ. इस प्रदेश में हाम के बेटे मिस्र ने निवास किया. ये निवास करने वाले कुल तीस थे इसलिये इसका नाम माफ़ह हुआ. फिर इसकी अरबी मनफ़ हुई. या वह हाबीन था जो मिस्र से दो फ़रसंग (छ मील) की दूरी पर था. एक क़ौल यह भी है कि वह शहर ऐने शम्स था. (जुमल व ख़ाज़िन)
(४) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के छुपवाँ तौर पर दाख़िल होने का कारण यह था कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जवान हुए तो आपने हक़ का बयान और फ़िरऔन और उसके लोगों की गुमराही का रद शुरू किया. बनी इस्राईल के लोग आपकी बात सुनते और आपका अनुकरण करते. आप फ़िरऔनियों के दीन का विरोध फ़रमाते. होते होते इसका चर्चा हुआ और फ़िरऔनी जुस्तजू में हुए. इसलिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते, ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहाँ के लोग ग़फ़लत में हों . हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि वह दिन ईद का था, लोग अपने खेल तमाशे में लगे हुए थे. (मदारिक व ख़ाज़िन)
(५) बनी इस्राईल में से.
(६) यानी क़िब्ती क़ौमे फ़िरऔन से. यह इस्राईली पर ज़बरदस्ती कर रहा था ताकि उसपर लकड़ी का बोझ लाद कर फ़िरऔन की रसोई में ले जाए.
(७) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के.
(८) पहले आपने क़िब्ती से कहा कि इस्राईली पर ज़ुल्म न करो, उसे छोड़ दो. लेकिन वह न माना और बुरा भला कहने लगा तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसको उस ज़ुल्म से रोकने के लिये घूंसा मारा.
(९) यानी वह मर गया और आपने उसको रेत में दफ़्न कर दिया. आपका इरादा क़त्ल करने का न था.
(१०) यानी उस क़िब्ती का इस्राईली पर ज़ुल्म करना, जो उसकी हलाकत का कारण हुआ. (ख़ाज़िन)
(११) यह कलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का विनम्रता के तौर पर है क्योंकि आप से कोई गुनाह सर्ज़द नहीं हुआ और नबी मअसूम हैं उन से गुनाह नहीं होते . क़िब्ती का मारना ज़ुल्म को दबाने और मज़लूम की मदद करने के लिये था. यह किसी क़ौम में भी गुनाह नहीं. फिर भी अपनी तरफ़ गुनाह की निस्बत करना और माफ़ी चाहना, ये अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों का दस्तूर ही है.
(१२) यह करम भी कर कि मुझे फ़िरऔन की सोहबत और उसके यहाँ रहने से भी बचा कि उसी वर्ग में गिना जाना, यह भी एक तरह का मददगार होना है.
(१३) कि ख़ुदा जाने उस क़िब्ती के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उसकी क़ौम के लोग क्या करें.
(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि फ़िरऔन की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔन को सूचना दी कि किसी बनी इस्राईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है . इसपर फ़िरऔन ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो. फ़िरऔनी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सुबूत नहीं मिलता था. दूसरे दिन जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वह बनी इस्राईल जिसने एक दिन पहले उनसे मदद चाही थी, आज फिर एक फ़िरऔनी से लड़ रहा है और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को देखकर उनसे फ़रियाद करने लगा तब हज़रत ...
(१५) मुराद यह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है अपने आप को भी मुसीबत और परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी. क्यों ऐसे अवसरों से नहीं बचता और क्यों एहतियात नहीं करता. फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रहम आया और आपने

بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ

منزل ٥

क़त्ल कर दिया तुम यही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्तगीर बनो और इस्लाह (सुधार) करना नहीं चाहते[१७] ﴿१९﴾ और शहर के परले किनारे से एक व्यक्ति[१८] दौड़ता आया कहा ऐ मूसा बेशक दरबार वाले[१९] आपके क़त्ल का मशवरा कर रहे हैं तो निकल जाइये[२०] मैं आपका भला चाहने वाला हूँ[२१] ﴿२०﴾ तो उस शहर से निकला डरता हुआ इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है, अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे सितमगारों से बचा ले[२२] ﴿२१﴾

तीसरा रूकू

और जब मदयन की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ[१] कहा क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए[२] ﴿२२﴾ और जब मदयन के पानी पर आया[३] वहाँ लोगों के एक गिरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उनसे उस तरफ़[४] दो औरतें देखीं कि अपने जानवरों को रोक रही हैं[५] मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है[६] वो बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिलाकर फेर न ले जाएं[७] और हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं[८] ﴿२३﴾ तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिलाया फिर साए की तरफ़ फिरा[९] अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोहताज हूँ[१०] ﴿२४﴾ तो उन दोनों में से एक उसके पास आई शर्म से चलती हुई[११] बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उसकी जो तुम ने हमारे

चाहा कि उसको फ़िरऔनी के ज़ुल्म के पंजे से रिहाई दिलाएं.

(१६) यानी फ़िरऔनी पर, तो इस्राईली ग़लती से यह समझा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मुझ से ख़फ़ा हैं, मुझे पकड़ना चाहते हैं. यह समझकर.

(१७) फ़िरऔनी ने यह बात सुनी और जाकर फ़िरऔन को सूचना दी कि कल के फ़िरऔनी मक़्तूल के क़ातिल हज़रत मूसा हैं. फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग हज़रत मूसा को ढूंढने निकले.

(१८) जिसको मूमिने आले फ़िरऔन कहते हैं, यह ख़बर सुनकर क़रीब की राह से ----

(१९) फ़िरऔन के.

(२०) शहर से.

(२१) यह बात शुभेच्छा और मसलिहत अन्देशी से कहता हूँ.

(२२) यानी फ़िरऔन और क़ौम से.

सूरए क़सस - तीसरा रूकू

(१) मदयन वह स्थान है जहाँ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ रखते थे. उसको मदयन इब्ने इब्राहीम कहते हैं. मिस्र से यहाँ तक आठ रोज़ की दूरी थी. यह शहर फ़िरऔन की सल्तनत की सीमाओं से बाहर था. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसका रस्ता भी न देखा था, न कोई सवारी साथ थी, न तोशा, न कोई हमराही. राह में दरख़्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्ज़े के सिवा खाने की और कोई चीज़ न मिलती थी.

(२) चुनांचे अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता भेजा जो आपको मदयन तक ले गया.

(३) यानी कुंवें पर, जिस से वहाँ के लोग पानी लेते और अपने जानवारों को पिलाते थे. यह कुँवां शहर के किनारे था.

(४) यानी मर्दों से अलग.

(५) इस प्रतीक्षा में कि लोग फ़ारिग़ हों और कुंवाँ ख़ाली हो, क्योंकि कुँवें को मज़बूत और ज़ोर-आवर लोगों ने घेर रखा था. उनकी भीड़ में औरतों से संभव न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकतीं.

اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ
الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾
قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ
اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ
فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ
اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾
قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾
فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ
مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

जानवरों को पानी पिलाया है[१२] जब मूसा उसके पास आया और उसे बातें कह सुनाई[१३] उसने कहा डरिये नहीं आप बच गए ज़ालिमों से[१४] ﴾२५﴿ उनमें की एक बोली[१५] ऐ मेरे बाप इन को नौकर रख लो[१६] बेशक बेहतर नौकर वह जो ताक़तवर अमानतदार हो[१७] ﴾२६﴿ कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों बेटियों में से एक तुम्हें ब्याह दूं[१८] इस मेहर पर कि तुम आठ बरस मेरी चाकरी करो[१९] फिर अगर पूरे दस बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है[२०] और मैं तुम्हें मशक़्क़त (मेहनत) में डालना नहीं चाहता[२१] क़रीब है इन्शाअल्लाह तुम मुझे नेकों में पाओगे[२२] ﴾२७﴿ मूसा ने कहा यह मेरे और आपके बीच इक़रार हो चुका मैं इन दोनों में जो मीआद पूरी कर दूं[२३] तो मुझ पर कोई मुतालिबा (मांग) नहीं, और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है[२४] ﴾२८﴿

चौथा रूकू

फिर जब मूसा ने अपनी मीआद पूरी कर दी[१] और अपनी बीबी को लेकर चला[२] तूर की तरफ़ से एक आग देखी[३] अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की तरफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहाँ से कुछ ख़बर लाऊं[४] या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊं कि तुम तापो ﴾२९﴿ फिर जब आग के पास हाज़िर हुआ पुकार की

(६) यानी अपने जानवरों को पानी क्यों नहीं पिलातीं.

(७) क्योंकि न हम मर्दों की भीड़ में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं. जब ये लोग अपने जानवरों को पानी पिलाकर वापस हो जाते हैं तो हौज़ में जो पानी बच रहता है वह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं.

(८) कमज़ोर हैं, ख़ुद यह काम नहीं कर सकते, इसलिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई. जब मूसा अलैहिस्सलाम ने उनकी बातें सुनीं तो दिल भर आया और रहम आया और वहीं दूसरा कुंवाँ जो उसके क़रीब था और एक बहुत भारी पत्थर उसपर ढका हुआ था जिसको बहुत से आदमी मिल कर न हटा सकते थे, आपने अकेले उसे हटा दिया.

(९) धूप और गर्मी की सख़्ती थी और आपने कई रोज़ से खाना नहीं खाया था, भूख का ग़ल्बा था इसलिये आराम हासिल करने की ग़रज़ से एक दरख़्त के साए में बैठ गए और अल्लाह की बारगाह में.

(१०) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को खाना देखे पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था. इस बीच में एक निवाला न खाया था. आपका पेट पीठ से मिल गया था. इस हालत में अपने रब से ग़िज़ा तलब की और इसके बावुजूद कि अल्लाह की बारगाह में अत्यंत क़ुर्ब और बुज़ुर्गी रखते हैं, इस विनम्रता के साथ रोटी का एक टुकड़ा तलब किया. जब वो लड़कियाँ उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उनके वालिद ने फ़रमाया कि आज इतनी जल्दी वापस आने का कारण क्या हुआ ? अर्ज़ किया कि हमने एक नेक मर्द पाया उसने हम पर रहम किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया. इसपर उनके वालिद ने एक बेटी से फ़रमाया कि जाओ और उस नेक आदमी को मेरे पास बुला लाओ.

(११) चेहरा आस्तीन से ढके, जिस्म छुपाए. यह बड़ी बेटी थीं, इनका नाम सफ़ूरा है और एक क़ौल यह भी है कि वह छोटी बेटी थीं.

(१२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उजरत लेने पर तो राज़ी न हुए लेकिन हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की ज़ियारत और उनकी मुलाक़ात के इरादे से चले और उन ख़ातून से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रास्ता बताती जाइये. यह आपने पर्दे के एहतिमाम के लिये फ़रमाया और इस तरह तशरीफ़ लाए. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे तो खाना हाज़िर था. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, बैठिये खाना खाइये . हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने मंज़ूर न किया और अऊज़ो बिल्लाह फ़रमाया. हज़रत शुऐब ने फ़रमाया क्या कारण, खाने में क्या उज़्र है, क्या आप को भूख नहीं है. फ़रमाया कि मुझे डर है कि यह खाना मेरे उस काम का बदला न हो जो मैंने आपके जानवरों को पानी पिलाकर अंजाम दिया है . क्योंकि हम वो लोग हैं कि अच्छे काम पर उजरत क़ुबूल नहीं करते. हज़रत शुऐब ने फ़रमाया, जवान, ऐसा नहीं है. यह खाना आपको काम के बदले में नहीं बल्कि मेरी और मेरे बाप दादा की आदत है कि हम मेहमान की ख़ातिर करते हैं, खाना खिलाते हैं, तो आप बैठे और आपने खाना खाया.

(१३) और सारी घटनाएं और हालात जो फ़िरऔन के साथ गुज़रे थे, अपनी पैदायश से लेकर क़िब्ती के क़त्ल और फ़िरऔनियों के आपके जान के पीछे पड़ने तक के, सब हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से बयान कर दिये.

(१४) यानी फ़िरऔन की हुकूमत और सल्तनत नहीं. इस से साबित हुआ कि एक शख़्स की ख़बर पर अमल करना जायज़ है चाहे वह ग़ुलाम हो या औरत हो. और यह भी साबित हुआ कि अजनबी औरत के साथ एहतियात से चलना जायज़ है.

(१५) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बुलाने के लिये भेजी गई थी, बड़ी या छोटी.

(१६) कि यह हमारी बकरियाँ चराया करें, यह काम हमें न करना पड़े.

(१७) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने बेटी से पुछा कि तुम्हें उन की क़ुव्वत और अमानत का क्या इल्म. उन्होंने अर्ज़ किया कि क़ुव्वत तो इस से ज़ाहिर है कि उन्होंने अकेले कुँवे पर से वह पत्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इससे ज़ाहिर है कि उन्हों ने हमें देखकर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो, ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा ज़ाहिर हो. यह सुनकर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.

(१८) यह निकाह का वादा था. अक़्द के अल्फ़ाज़ न थे क्योंकि अक़्द के लिये माज़ी यानी भूतकाल का सीग़ा ज़रूरी है और ऐसे ही मन्कूहा का निर्धारण भी ज़रूरी है.

(१९) आज़ाद मर्द का आज़ाद औरत से निकाह किसी दूसरे आज़ाद शख़्स की ख़िदमत करने या बकरीयाँ चराने को मेहर क़रार देकर जायज़ है. अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्दत तक औरत की ख़िदमत करने को या क़ुरआन की तालीम को मेहर क़रार देकर निकाह किया तो निकाह जायज़ है . और ये चीज़ें मेहर न हो सकेंगी बल्कि उस सूरत में मेहरे मिस्ल लाज़िम होगा. (हिदायह व अहमदी)

(२०) यानी यह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुमपर वाजिब न होगा.

(२१) कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूं.

(२२) तो मेरी तरफ़ से अच्छा मामला और एहद की पूर्ति ही होगी. और **'इन्शाअल्लाह तआला'** आपने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया.

(२३) चाहे दस साल की या आठ साल की.

(२४) फिर जब आपका अक़्द हो चुका तो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी बेटी को हुक्म दिया कि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को एक लाठी दें जिस से वह बकरियों की निगहबानी करें और ख़तरनाक जानवरों को भगाए. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास नबियों की कई लाठियाँ थीं. साहिबज़ादे साहिब का हाथ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की लाठी पर पड़ा जो आप जन्नत से लाए थे और नबी उसके वारिस होते चले आए थे और वह हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को पहुंची थी. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने यह लाठी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी.

सूरए क़सस - चौथा रूकू

(१) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम. इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि आपने बड़ी मीआद यानी पूरे दस साल पूरे किये फिर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से मिस्र की तरफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही. आपने इजाज़त दी.

(२) उनके वालिद की इजाज़त से मिस्र की तरफ़.

(३) जबकि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सर्दी सख़्त पड़ रही थी, रास्ता खो गया था, उस वक़्त आप ने आग देख कर.

(४) राह की, कि किस तरफ़ है.

(५) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सीधे हाथ की तरफ़ था.

(६) वह दरख़्त उन्नाब(अंगूर) का था या उसज का (उसज एक काँटेदार दरख़्त है जो जंगल में होता है).

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَ
اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى
مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ
اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ
الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ
مَلَا۟ئِهٖ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ
قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝ وَاَخِيْ
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً
يُّصَدِّقُنِيْۤ ۟ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا
يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۛ بِاٰيٰتِنَا ۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا

गई मैदान के दाएं किनारे से(५) बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से(६) कि ऐ मूसा बेशक मैं ही हूँ अल्लाह, रब सारे जगत का(७)(३०) और यह कि डाल दे अपना असा(८) फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुआ मानो सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा(९) ऐ मूसा सामने आओ और डर नहीं, बेशक तुझे आमान है(१०)(३१) अपना हाथ(११) गिरेबान(कुर्ते के गले) में डाल, निकलेगा सफ़ेद चमकता हुआ बेऐब(१२) और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले डर दूर करने को(१३) तो ये दो हुज्जतें हैं तेरे रब की(१४) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़, बेशक वो बेहुक्म लोग हैं(३२) अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने उनमें एक जान मार डाली है(१५) तो डरता हूँ कि मुझे क़त्ल कर दें(३३) और मेरा भाई हारून उसकी ज़बान मुझसे ज़्यादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे डर है कि वो(१६) मुझे झुटलाएंगे(३४) फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से क़ुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़ल्बा अता फ़रमाएंगे तो वो तुम दोनों का कुछ नुक़सान न कर सकेंगे हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों और जो

(७) जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हरे भरे दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि अल्लाह तआला के सिवा किसी की यह क़ुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का कहने वाला अल्लाह तआला ही है. यह भी नक़्ल किया गया है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह कलाम सिर्फ़ कानों ही से नहीं बल्कि अपने मुबारक जिस्म के हर अंग से सुना.

(८) चुनांन्चे आपने अपनी लाठी डाल दी और वह साँप बन गई.

(९) तब पुकारा गया.

(१०) कोई ख़तरा नहीं.

(११) अपनी क़मीज़ के.

(१२) सूर्य किरण की तरह. तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपना मुबारक हाथ गले में डाल कर निकाला तो उसमें ऐसी तेज़ रौशनी थी जिससे आँखें झपकें.

(१३) ताकि हाथ अपनी असली हालत पर आए और डर दूर हो जाए. इब्ने अब्बास रदीयल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सीने पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो डर साँप देखने के वक़्त पैदा हो गया था, दूर हो जाए और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद जो डरा हुआ अपना हाथ सीने पर रखेगा उसका डर दूर हो जाएगा.

(१४) यानी लाठी और चमकता हुआ हाथ तुम्हारी रिसालत की निशानियाँ हैं.

(१५) यानी क़िब्ती मेरे हाथ से मारा गया है.

(१६) यानी फ़िरऔन और उसकी क़ौम.

(१७) फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर.

(१८) उन बदनसीबों ने चमत्कारों का इन्कार कर दिया और उनको जादू बताया. मतलब यह कि जिस तरह सारे क़िस्म के जादू झूटे

الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ﴿۳۸﴾ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۹﴾
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ
اِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ

منزل ۵

तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब (विजयी) आओगे[१७] ﴾३५﴿ फिर जब मूसा उनके पास हमारी रौशन निशानियां लाया बोले यह तो नहीं मगर बनावट का जादू[१८] और हमने अपने अगले बाप दादाओं में ऐसा न सुना[१९] ﴾३६﴿ और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उसके पास से हिदायत लाया[२०] और जिसके लिये आख़िरत का घर होगा[२१] बेशक ज़ालिम मुराद को नहीं पहुंचते[२२] ﴾३७﴿ और फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियो, मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता, तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पकाकर[२३] एक महल बना[२४] कि शायद मैं मूसा के ख़ुदा को झांक आऊं[२५] और बेशक मेरे गुमान में तो वह[२६] झूटा है[२७] ﴾३८﴿ और उसने और उसके लशकरियों ने ज़मीन में बेजा बड़ाई चाही[२८] और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं ﴾३९﴿ तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में फैंक दिया[२९] तो देखो कैसा अंजाम हुआ सितमगारों का ﴾४०﴿ और उन्हें हमने[३०] दोज़ख़ियों का पेशवा बनाया कि आग की तरफ़ बुलाते हैं[३१] और क़यामत के दिन उनकी मदद न होगी ﴾४१﴿ और इस

होते हैं उसी तरह मआज़ल्लाह यह भी है.

(१९) यानी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया, या ये मानी हैं कि जो दावत आप हमें देते हैं वह ऐसी नई है कि हमारे बाप दादा में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी.

(२०) यानी जो हक़ पर है और जिसको अल्लाह तआला ने नबुव्वत से नवाज़ा.

(२१) और वह वहाँ की नेअमतों और रहमतों के साथ नवाज़ा जाएगा.

(२२) यानी काफ़िरों को आख़िरत की भलाई उपलब्ध नहीं.

(२३) ईंट तैयार कर. कहते हैं कि यही दुनिया में सबसे पहले ईंटें बनाने वाला है. यह व्यवसाय इससे पहले न था.

(२४) बहुत ऊंची.

(२५) चुनांन्चे हामान ने हज़ारों कारीगरों और मज़दूरों को जमा किया, ईंटें बनवाईं और इमारती सामान जमा किया और इतनी ऊंची इमारत बनवाई कि दुनिया में उसके बराबर कोई इमारत ऊंची न थी. फ़िरऔन ने यह ख़्याल किया कि (मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला के लिये भी मकान है और वह जिस्म है कि उसतक पहुंचना उसके लिये सम्भव होगा.

(२६) यानी मूसा अलैहिस्सलाम.

(२७) अपने इस दावे में कि उसका एक मअबूद है जिसने उसे अपना रसूल बनाकर हमारी तरफ़ भेजा है.

(२८) और सच्चाई को न माना और असत्य पर रहे.

(२९) और सब डूब गए.

(३०) दुनिया में.

(३१) यानी कुफ़्र और गुनाहों की दावत देते हैं जिस से जहन्नम के अज़ाब के मुस्तहिक़ हों और जो उनकी इताअत करे वो भी जहन्नमी हो जाए.

(३२) यानी रुस्वाई और रहमत से दूरी.

فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ
الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ
مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولٰى بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلٰى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا
عَلَيْهِمْ آيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ
بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ
لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَنْ تُصِيبَهُمْ مُّصِيبَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيٰتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

दुनिया में हमने उनके पीछे लअनत लगाई(३२) और क़यामत के दिन उनका बुरा है(४२)

पाँचवां रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई(१) बाद इसके कि अगली संगतें (क़ौमें) (२) हलाक फ़रमा दीं जिसमें लोगों के दिल की आँखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रहमत ताकि वो नसीहत मानें(४३) और तुम(३) तूर की जानिब मग़रिब में न थे(४) जब कि हमने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा(५) और उस वक़्त तुम हाज़िर न थे(४४) मगर हुआ यह कि हमने संगतें (क़ौमें) पैदा कीं(६) कि उनपर लम्बा ज़माना गुज़रा(७) और न तुम मदयन वालों में मुक़ीम(ठहरे हुए) थे उनपर हमारी आयतें पढ़ते हुए हाँ हम रसूल बनाने वाले हुए(८)(४५) और न तुम तूर के किनारे थे जब हमने निदा फ़रमाई(९) हाँ तुम्हारे रब की मेहर है(कि तुम्हें ग़ैब के इल्म दिये)(१०) कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिसके पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया(११) यह उम्मीद करते हुए कि उनको नसीहत हो(४६) और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत(१२) उसके कारण जो उनके हाथों ने आगे भेजा(१३) तो कहते ऐ हमारे रब तूने क्यों न भेजा हमारी तरफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाते(१४)(४७)

सूरए क़सस - पाँचवां रूकू

(१) यानी तौरात .
(२) नूह, आद और समूद वग़ैरह क़ौमों की तरह.
(३) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(४) वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मीक़ात था.
(५) और उनसे कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़र्रब किया.
(६) यानी बहुत सी उम्मतें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद.
(७) तो वो अल्लाह का एहद भूल गए और उन्होंने उसकी फ़रमाँबरदारी छोड़ दी. इसकी हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम से सैयदे आलम हबीबे मुकर्रम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हक़ में और आप पर ईमान लाने के सम्बन्ध में एहद लिये थे. जब लम्बा ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बाद उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वो लोग उन एहदों को भूल गए और उसकी वफ़ा छोड़ दी.
(८) तो हम ने आप को इल्म दिया और पहलों के हालात से सूचित किया.
(९) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात अता फ़रमाने के वक़्त.
(१०) जिन से तुम उनके हालात बयान फ़रमाते हो. आप का इन बातों की ख़बर देना आपकी नबुव्वत की ज़ाहिर दलील है.
(११) इस क़ौम से मुराद मक्के वाले हैं जो उस ज़माने में थे जो हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बीच पाँच सौ बरस की मुद्दत का है.
(१२) अज़ाब और सज़ा.
(१३) यानी जो कुफ़्र और गुनाह उन्होंने किया.
(१४) मानी आयत के ये हैं कि रसूलों का भेजना ही हुज्जत के लिये है कि उन्हें यह बहाना बनाने की गुन्जाइश न रहे कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए इसलिये गुमराह हो गए. अगर रसूल आते तो हम ज़रूर फ़रमाँबरदार होते और ईमान लाते.
(१५) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ
مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ
اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ لَّمْ
يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ
اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۰﴾ ع وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾ ؕ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذَا يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا
مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿۵۳﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ
بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا

النصف

फिर जब उनके पास हक़ आया[१५] हमारी तरफ़ से, बोले[१६] उन्हें क्यों न दिया गया जो मूसा को दिया गया[१७] क्या उसके इन्कारी न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया[१८] बोले दो जादू हैं एक दूसरे की पुश्ता (सहायता) पर और बोले हम उन दोनों के इन्कारी हैं[१९] ﴿४८﴾ तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़्यादा हिदायत की हो[२०] मैं उसकी पैरवी (अनुकरण) करुंगा अगर तुम सच्चे हो[२१] ﴿४९﴾ फिर अगर वो तुम्हारा फ़रमाना क़ुबूल न करें[२२] तो जान लो कि[२३] बस वो अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हैं, और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी (अनुकरण) करे अल्लाह की हिदायत से जुदा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को ﴿५०﴾

छटा रूकू

और बेशक हमने उनके लिये बात मुसलसल उतारी[१] कि वो ध्यान करें ﴿५१﴾ जिनको हमने इससे पहले[२] किताब दी वो इसपर ईमान लाते हैं ﴿५२﴾ और जब उनपर ये आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इसपर ईमान लाए बेशक यही सत्य है हमारे रब के पास से हम इससे पहले ही गर्दन रख चुके थे[३] ﴿५३﴾ उनको उनका बदला दोबाला दिया जाएगा[४] बदला उनके सब्र का[५] और वो भलाई से बुराई को टालते

(१६) मक्का के काफ़िर.

(१७) यानी उन्हें क़ुरआने करीम एक साथ क्यों नहीं दिया गया जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पूरी तौरात एक ही बार में अता की गई थी. या ये मानी हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को लाठी और चमकती हथैली जैसे चमत्कार क्यों न दिये गए. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(१८) यहूदियों ने क़ुरैश को सन्देश भेजा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार तलब करें. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि जिन यहूदियों ने यह सवाल किया है क्या वो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के और जो उन्हें अल्लाह की तरफ़ से दिया गया है उसके इन्कारी न हुए.

(१९) यानी तौरात के भी और क़ुरआन के भी. इन दोनों को उन्होंने जादू कहा और एक क़िरअत में ''साहिरान'' है. उस सूरत में मानी ये होंगे कि दोनों जादूगर हैं यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम. मक्का के मुश्रिकों ने मदीना के यहूदियों के सरदारों के पास एलची भेजकर पूछा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में पिछली किताबों में कोई ख़बर है. उन्होंने जवाब दिया कि हाँ हुज़ूर की तारीफ़ और गुणगान उनकी किताब तौरात में मौजूद है. जब यह ख़बर क़ुरैश को पहुंची तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत कहने लगे कि वो दोनों जादूगर हैं. उन में एक दूसरे का सहायक और मददगार है. इसपर अल्लाह तआला ने फ़रमाया.

(२०) यानी तौरात और क़ुरआन से.

(२१) अपने इस क़ौल में कि ये दोनों जादूगर हैं. इसमें चेतावनी है कि वो इसकी जैसी किताब लाने से मजबूर हैं चुनांन्चे आगे इरशाद फ़रमाया जाता है.

(२२) और ऐसी किताब न ला सकें.

(२३) उनके पास कोई तर्क, कोई हुज्जत नहीं है.

सूरए क़सस - छटा रूकू

(१) यानी क़ुरआन शरीफ़ उनके पास धीरे-धीरे लगातार आया, वादे और डर, और क़िस्से और नसीहतें और उपदेश ताकि समझें और ईमान लाएं.

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا
عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ
اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ج وَهُوَ
اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ط اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا
يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ
مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ط وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِىْٓ
اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ج وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى
الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ

हैं(६) और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं(७)(५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं उससे तग़ाफ़ुल करते(मुंह फेरते) हैं(८) और कहते हैं हमारे लिये हमारे कर्म और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म, बस तुम पर सलाम(९) हम जाहिलों के ग़र्ज़ी (चाहने वाले) नहीं(१०)(५५) बेशक यह नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ़ से चाहो हिदायत करदो, हाँ अल्लाह हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और वह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को(११)(५६) और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत का अनुकरण करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक ले जाएंगे(१२)क्या हमने उन्हें जगह न दी अमान वाली, हरम में(१३) जिस की तरफ़ हर चीज़ के फल लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उनमें बहुतों को इल्म नहीं(१४)(५७) और कितने शहर हमने हलाक कर दिये जो अपने ऐश(विलास) पर इतरा गए थे,(१५) तो ये हैं उनके मकान(१६) कि उनके बाद इन में सुकूनत न हुई मगर कम(१७) और हमीं वारिस हैं(१८)(५८) और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक उनके अस्ल मरजेअ(केन्द्र) में रसूल न भेजे(१९) जो उनपर हमारी आयतें पढ़े(२०) और हम शहरों को हलाक नहीं करते मगर जब उनके (साकिन) निवासी सितमगार(अत्याचारी) हों(२१)(५९) और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वह दुनियावी ज़िन्दगी का

(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ से, या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले. यह आयत किताब वालों के मूमिन लोगों हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके सहाबा के हक़ में उतरी और एक क़ौल यह है कि यह उन इंजील वालों के हक़ में उतरी जो हबशा से आकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए. ये चालीस लोग थे जो जअफ़र बिन अबी तालिब के साथ आए थे. जब उन्होंने मुसलमानों की हाजत और रोज़ी की तंगी देखी तो बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जाकर अपने माल ले आएं और उनसे मुसलमानों की ख़िदमत करें. हुज़ूर ने इजाज़त दे दी और वो जाकर अपने माल ले आए और उनसे मुसलमानों की ख़िदमत की. उनके हक़ में यह आयतें "मिम्मा रज़क़नाहुम युनफ़िक़ून" तक उतरीं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये आयतें अस्सी एहले किताब के हक़ में उतरीं जिन में चालीस नजरान के और बत्तीस हबशा के और आठ शाम के थे.

(३) यानी क़ुरआन उतरने से पहले ही हम अल्लाह के हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान रखते थे कि वो सच्चे नबी हैं क्योंकि तौरात और इंजील में उनका ज़िक्र है.

(४) क्योंकि वह पहली किताब पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी.

(५) कि उन्होंने अपने दीन पर सब्र किया और मुश्रिकों की तकलीफ़ पर भी. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अज्र मिलेंगे. एक एहले किताब का वह व्यक्ति जो अपने नबी पर भी ईमान लाया और मुझ पर भी. दूसरा वह ग़ुलाम जिसने अल्लाह का हक़ भी अदा किया और अपने मालिक का भी, तीसरा वह जिसके पास दासी थी जिससे क़ुर्बत करता था फिर उसको अच्छी तरह अदब सिखाया, अच्छी तालीम दी और आज़ाद करके उससे निकाह किया, उसके लिये भी दो अज्र हैं.

(६) ताअत से गुनाह को और इल्म से यातना या तकलीफ़ को. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि तौहीद की शहादत यानी अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह से शिर्क को.

(७) ताअत में यानी सदक़ा करते हैं .

(८) मुश्रिक लोग मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उनका दीन छोड़ने और इस्लाम क़ुबूल करने पर गालियाँ देते और बुरा कहते. ये लोग उनकी बेहूदा बातें सुनकर टाल जाते .

(९) यानी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियाँ नहीं देंगे. यह आयत जिहाद की आयत द्वारा स्थगित कर दी गई.

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ
وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦١
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تَزْعُمُوْنَ ۝٦٢ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ
اِلَيْكَ ۫ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝٦٣ وَقِيْلَ ادْعُوْا
شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ
لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ۝٦٤ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ
مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦٥ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ
يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٦٦ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَ
اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝٦٧

منزل ٥

बर्तावा और उसका सिंगार है[२२] और जो अल्लाह के पास है[२३] वह बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला[२४] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[२५]﴾६०﴿

सातवाँ रूकू

तो कहा वह जिसे हमने अच्छा वादा दिया[१] तो वह उससे मिलेगा उस जैसा है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी का बर्ताव बरतने दिया फिर वह क़यामत के दिन गिरफ़्तार करके हाज़िर लाया जाएगा[२]﴾६१﴿ और जिस दिन उन्हें पुकारेगा[३] तो फ़रमाएगा कहाँ है मेरे वो शरीक जिन्हें तुम[४] गुमान करते थे﴾६२﴿ कहेंगे कि वो जिनपर बात साबित हो चुकी[५] ऐ हमारे रब ये हैं वो जिन्हें हमने गुमराह किया हमने इन्हें गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे[६] हम इन से बेज़ार होकर तेरी तरफ़ रूज लाते (पलटते) हैं वो हम को न पूजते थे[७]﴾६३﴿ और उनसे फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो[८] तो वो पुकारेंगे तो वो उनकी न सुनेंगे और देखेंगे अज़ाब, क्या अच्छा होता अगर वो राह पाते[९]﴾६४﴿ और जिस दिन उन्हें पुकारेगा वो फ़रमाएगा[१०] तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया[११]﴾६५﴿ तो उस दिन उनपर ख़बरें अंधी हो जाएंगी[१२] कि वो कुछ पूछ गछ न करेंगे[१३]﴾६६﴿ तो वह जिसने तौबह की[१४] और ईमान लाया[१५] और अच्छा काम किया क़रीब है कि वह राह पा जाए﴾६७﴿

(१०) उनके साथ मेल जोल उठना बैठना नहीं चाहते. हमें जिहालत की हरकतें गवारा नहीं.

(११) जिनके लिये उसने हिदायत लिख दी जो दलीलों से सबक़ लेने और सच बात मानने वाले हैं. मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह आयत अबू तालिब के हक़ में उतरी . नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे उनकी मौत के वक़्त फ़रमाया ऐ चचा कहो लाइलाहा इल्लल्लाह. मैं तुम्हारे लिये क़यामत के दिन गवाह रहूंगा . उन्होंने कहा कि अगर मुझे क़ुरैश के शर्म दिलाने का डर न होता तो मैं ज़रूर ईमान लाकर तुम्हारी आँखें ठण्डी करता . इसके बाद उन्होंने यह शेअर पढ़े-

व लक़द अलिम्तो बिअन्ना दीना मुहम्मदिन
मिन ख़ैरे अदियानिल बरिय्यते दीना
लौलल मलामतो औ हिज़ारो मुसब्बतिन
ल-वजद-तनी समुहम बिज़ाका मुबीना.

यानी मैं यक़ीन से जानता हूँ कि मुहम्मद का दीन सारे जगत के दीनों से बेहतर है. अगर मलामत और बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को क़ुबूल करता. इसके बाद अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया. इसपर यह आयत उतरी.

(१२) यानी अरब प्रदेश से एक दम निकाल देंगे. यह आयत हारिस बिन उस्मान बिन नौफ़ल बिन अब्दे मनाफ़ के हक़ में उतरी. उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हम यह तो यक़ीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वह सत्य है लेकिन अगर हम आपका अनुकरण करें तो हमें डर है कि अरब के लोग हमें शहर निकाला दे देंगे और हमारे वतन में न रहने देंगे. इस आयत में इसका जवाब दिया गया.

(१३) जहाँ के रहने वाले मार काट से अम्न में हैं और जहाँ जानवरों और हरियाली तक को अम्न है.

(१४) और वो अपनी जिहालत से नहीं जानते कि यह रोज़ी अल्लाह तआला की तरफ़ से है और अगर समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ और अम्न भी उसी की तरफ़ से है और ईमान लाने में शहर निकाले का ख़ौफ़ न करते.

(१५) और उन्हों ने सरकशी इख़्तियार की थी कि अल्लाह तआला की दी गई रोज़ी खाते हैं और पूजते हैं बुतों को. मक्का वालों को ऐसी क़ौम के बुरे परिणाम से डर दिलाया जाता है, जिन का हाल उनकी तरह था कि अल्लाह तआला की नेअमतें पाते और शुक्र न करते. इन नेअमतों पर इतराते, वो हलाक कर दिये गए.

(१६) जिनके निशान बाक़ी हैं और अरब के लोग अपनी यात्राओं में उन्हें देखते हैं.

(१७) कि कोई मुसाफ़िर या राहगीर उनमें थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं.

और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और पसन्द फ़रमाता है(१६) उनका(१७) कुछ इख़्तियार नहीं, पाकी और बरतरी है अल्लाह को उनके शिर्क से﴾६८﴿ और तुम्हारा रब जानता है जो उनके सीनों में छुपा है(१८) और जो ज़ाहिर करते हैं(१९)﴾६९﴿ और वही है अल्लाह कि कोई ख़ुदा नहीं उसके सिवा, उसी की तारीफ़ है दुनिया(२०) और आख़िरत में और उसी का हुक्म है(२१) और उसी की तरफ़ फिर जाओगे﴾७०﴿ तुम फ़रमाओ(२२) भला देखो तो अगर अल्लाह हमेशा तुमपर क़यामत तक रात रखे(२३) तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रौशनी ला दे(२४) तो क्या तुम सुनते नहीं(२५)﴾७१﴿ तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर अल्लाह क़यामत तक हमेशा दिन रखे(२६) तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रात लादे जिसमें आराम करो(२७) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं(२८)﴾७२﴿ और उसने अपनी कृपा से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उसकी मेहरबानी ढूंढो (२९) और इसलिये कि तुम सत्य मानो(३०)﴾७३﴿ और जिस दिन उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा कि कहाँ है मेरे वो शरीक जो तुम बकते थे﴾७४﴿ और हर

(१८) उन मकानों के, यानी वहाँ के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उनके बाद उनका कोई उत्तराधिकारी बाक़ी न रहा. अब अल्लाह के सिवा उन मकानों का कोई वारिस नहीं. ख़ल्क़ (सृष्टि) की फ़ना के बाद वही सब का वारिस है.
(१९) यानी केन्द्रीय स्थान में. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि उम्मुल क़ुरा से मुराद मक्कए मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ातिमुन नबीय्यीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(२०) और उन्हें तबलीग़ करे और ख़बर दे कि अगर वो ईमान न लाएं तो उनपर अज़ाब किया जाएगा ताकि उनपर हुज्जत लाज़िम हो और उनके लिये बहाने की कोई गुंजाइश बाक़ी न रहे.
(२१) रसूल को झुटलाते हों, अपने कुफ़्र पर अड़े हों और इस कारण अज़ाब के मुस्तहिक़ हों.
(२२) जिसकी बक़ा बहुत थोड़ी और जिसका अंजाम फ़ना.
(२३) यानी आख़िरत के फ़ायदे.
(२४) तमाम बुराइयों से ख़ाली, कभी न टूटने वाला.
(२५) कि इतना समझ सको कि बाक़ी, फ़ानी से बेहतर है. इसीलिये कहा गया है कि जो शख़्स आख़िरत को दुनिया पर प्राथमिकता न दे, वह नासमझ है.

सूरए क़सस - सातवाँ रूकू

(१) जन्नत का सवाब.
(२) ये दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते. इन में पहला, जिसे अच्छा वादा दिया गया, मूमिन है और दूसरा काफ़िर.
(३) अल्लाह तआला, धिक्कार के तौर पर.
(४) दुनिया में मेरा शरीक.
(५) यानी अज़ाब वाजिब हो चुका और वो लोग गुमराहों के सरदार और कुफ़्र के अगुवा हैं.
(६) यानी वो लोग हमारे बहकाने से, अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए. हमारी उनकी गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं. हमने उन्हें मजबूर न किया था.
(७) बल्कि वो अपनी ख़्वाहिशों के पुजारी और अपनी वासनाओं के आधीन थे.
(८) यानी काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो, वो तुम्हें अज़ाब से बचाएं.
(९) दुनिया में, ताकि आख़िरत में अज़ाब न देखते.

كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ قَارُوْنَ
كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ
مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ
اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ۝ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ
الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا
وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ
فِى الْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ
اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ۭ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ
اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ
اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ۭ وَلَا يُسْئَلُ

गिरोह में से हम एक गवाह निकाल कर[३१] फ़रमाएंगे अपनी दलील लाओ[३२] तो जान लेंगे[३३] कि हक़ अल्लाह का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे[३४] (७५)

आठवाँ रूकू

बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था[१] फिर उसने उनपर ज़ियादती की और हमने उसको इतने ख़ज़ाने दिये जिनकी कुंजियाँ एक ज़ोरावर जमाअत पर भारी थीं जब उससे उसकी क़ौम[२] ने कहा इतरा नहीं[३] बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता (७६) और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उससे आख़िरत का घर तलब कर[४] और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल[५] और एहसान कर[६] जैसा अल्लाह ने तुझपर ऐहसान किया और[७] ज़मीन में फ़साद न चाह, बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता (७७) बोला यह[८] तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है[९] और क्या उसे यह नहीं मालूम कि अल्लाह ने इससे पहले वो संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं जिनकी शक्तियाँ उससे सख़्त थीं और जमा उससे ज़्यादा[१०] और मुजरिमों से उनके गुनाहों की पूछ नहीं[११] (७८) तो अपनी

(१०) यानी काफ़िरों से पूछेगा.
(११) जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए थे और सत्य की तरफ़ बुलाते थे.
(१२) और कोई बहाना और तर्क उन्हें नज़र न आएगा.
(१३) और अत्यन्त दहशत से साकित रह जाएंगे या कोई किसी से इसलिये न पूछेगा कि जवाब से लाचार होने में सब के सब बराबर हैं, फ़रमाँबरदार हों या फ़रमान वाले, काफ़िर हों या काफ़िर बनाने वाले.
(१४) शिर्क से .
(१५) अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की तरफ़ से आया.
(१६) यह आयत मुश्रिकों के जवाब में उतरी जिन्होंने कहा था कि अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुव्वत के लिये क्यों बुज़ुर्गी दी. यह क़ुरआन मक्का और ताइफ़ के किसी बड़े व्यक्ति पर क्यों न उतरा. इस कलाम का क़ायल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वह अपने आप को और अर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी को मुराद लेता था. और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है. अल्लाह तआला की मर्ज़ी है, अपनी हिकमत वही जानता है. उन्हें उसकी मर्ज़ी में दख़्ल की क्या मजाल.
(१७) यानी मुश्रिकों का.
(१८) यानी कुफ़्र और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी, जिसको ये लोग छुपाते हैं.
(१९) अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़े जैसे कि नबुव्वत में तअने देना और क़ुरआने पाक को झुटलाना.
(२०) कि उसके औलिया दुनिया में भी उसकी हम्द करते हैं और आख़िरत में भी उसकी हम्द से लज़्ज़त उठाते हैं.
(२१) उसी की मर्ज़ी हर चीज़ में लागू और जारी है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अपने फ़रमाँबरदारों के लिये मग़फ़िरत का और नाफ़रमानों के लिये शफ़ाअत का हुक्म फ़रमाता है.
(२२) ऐ हबीब सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्का वालों से.
(२३) और दिन निकाले ही नहीं.
(२४) जिसमें तुम अपनी रोज़ी के काम कर सको.
(२५) होश के कानों से, कि शिर्क से बाज़ आओ.
(२६) रात होने ही न दे.
(२७) और दिन में जो काम और मेहनत की थी उसकी थकन दूर करो.

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ
فِيْ زِيْنَتِهٖ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ
عَظِيْمٍ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا
يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝
وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ
وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ
عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَا ۭ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ تِلْكَ الدَّارُ
الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي

ع

क़ौम पर निकला अपनी सजावट में[१२] बोले वो जो दुनिया की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उसका बड़ा नसीब है﴾७९﴿ और बोले वो जिन्हें इल्म दिया गया[१३] ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उसके लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे[१४] और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं[१५]﴾८०﴿ तो हमने उसे[१६] और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उसके पास कोई जमाअत न थी कि अल्लाह से बचाने में उसकी मदद करती[१७] और न वह बदला ले सका[१८]﴾८१﴿ और कल जिसने उसके मर्तबे (उपाधि) की आरज़ू की थी, सुब्ह[१९] कहने लगे अजब बात है अल्लाह रिज़्क़ (रोज़ी) फैलाता है अपने बन्दों में जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[२०] अगर अल्लाह हमपर एहसान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता, ऐ अजब काफ़िरों का भला नहीं﴾८२﴿

नवाँ रूकू

यह आख़िरत का घर[१] हम उनके लिये करते हैं जो ज़मीन में घमण्ड नहीं चाहते और न फ़साद, और आक़िबत परहेज़गारों ही की[२] है﴾८३﴿ जो नेकी लाए उसके लिये उससे बेहतर

(२८) कि तुम कितनी बड़ी ग़लती में हो जो उसके साथ और को शरीक करते हो.
(२९) रोज़ी हासिल करने की कोशिश करो.
(३०) और उसकी नेअमतों का शुक्र बजा लाओ.
(३१) यहाँ गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्हों ने उन्हें रब के संदेश पहुंचाए और नसीहतें कीं.
(३२) यानी शिर्क और रसूलों का विरोध तुम्हारा तरीक़ा था, इसपर क्या दलील है, पेश करो.
(३३) रब होने और मअबूद होने का ...
(३४) दुनिया में कि अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराते थे.

सूरए क़सस - आठवाँ रूकू

(१) क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चचा युसहर का बेटा था. बहुत सुन्दर आदमी था, इसलिये लोग उसे मुनव्वर कहते थे, और बनी इस्राईल में तौरात का सबसे बेहतर पढ़ने वाला था. नादारी के समय में बहुत विनम्र और अच्छे व्यवहार का आदमी था. दौलत हाथ आते ही उसका हाल बदल गया और सामरी की तरह मुनाफ़िक़ हो गया . कहा गया है कि फ़िरऔन ने उसको बनी इस्राईल पर हाकिम बना दिया था.
(२) यानी बनी इस्राईल के ईमानदार लोग.
(३) माल की बहुतात पर.
(४) अल्लाह की नेअमतों का शुक्र करके और माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करके.
(५) यानी दुनिया और आख़िरत के लिये अमल कर कि अज़ाब से निजात पाए. इसलिये कि दुनिया में इन्सान का हक़ीक़ी हिस्सा यह है कि आख़िरत के लिये अमल करे, सदक़ा देकर, रिश्तेदारों के काम आकर और अच्छे कर्मों के साथ. इसकी तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अपनी सेहत, दौलत और जवानी और क़ुव्वत को न भूल इससे कि उनके साथ आख़िरत तलब करे. हदीस में है कि पांच चीज़ों को पाँच से पहले ग़नीमत जानो. जवानी को बुढ़ापे से पहले, स्वास्थय को बीमारी से पहले, दौलत को दरिद्रता से पहले, फ़राग़त को शग्ल से पहले और ज़िन्दगी को मौत से पहले.
(६) अल्लाह के बन्दों के साथ.
(७) गुनाह करके और ज़ुल्म व बग़ावत करके.
(८) यानी क़ारून ने कहा कि यह माल .

(९) इस इल्म से मुराद या तौरात का इल्म है या कीमिया का इल्म जो उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हासिल किया था और उसके ज़रिये से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था, या तिजारत का इल्म या खेती बाड़ी का इल्म या दूसरे व्यवसायों का इल्म. सहल ने फ़रमाया जिसने अहंकार किया, उसने भलाई न पाई.

(१०) यानी शक्ति और माल में उससे ज़्यादा थे और बड़ी जमाअतें रखते थे. उन्हें अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया. फिर यह क्यों क़ुव्वत और माल की कसरत पर घमण्ड करता है. वह जानता है कि ऐसे लोगों का अंत हलाकत है.

(११) उनसे पूछने की हाजत नहीं क्योंकि अल्लाह तआला उनका हाल जानने वाला है. इसलिये उन्हें जानकारी देने के लिये सवाल न होगा बल्कि उनके धिक्कार और फटकार के लिये होगा.

(१२) बहुत से सवार साथ लिये, ज़ेवरों से सज, लिबास पहने, सुसज्जित घोड़ों पर सवार.

(१३) यानी बनी इस्राईल के विद्वान.

(१४) उस दौलत से जो क़ारून को दुनिया में मिली.

(१५) यानी नेक कर्म सब्र करने वालों का ही हिस्सा हैं और इसका सवाब वही पाते हैं.

(१६) यानी क़ारून को.

(१७) क़ारून और उसके घर के धंसाने की घटना उलमा ने यह लिखी है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल को दरिया के पार ले जाने के बाद मज़्बह की रियासत हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को सौंपी. बनी इस्राईल अपनी क़ुरबानियाँ उनके पास लाते और वह मज़्बह में रखते. आसमान से आग उतर कर उनको खा लेती थी. क़ारून को हज़रत हारून की इस उपाधि पर हसद हुआ. उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सला से कहा कि रिसालत तो आपकी हुई और क़ुरबानी की सरदारी हारून की. मैं कुछ भी न रहा. जब कि मैं तौरात का बहुत बड़ा पढ़ने वाला हूँ. मैं इसपर सब्र नहीं कर सकता. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह उपाधि हारून को मैंने नहीं दी, अल्लाह ने दी है. क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम, मैं आपकी तस्दीक़ न करूंगा जब तक इसका सुबूत आप मुझे न दिखा दें. हज़रत मूसा अलैहिस्सला ने बनी इस्राईल के रईसों को जमा करके फ़रमाया कि अपनी लाठियाँ ले आओ. उन्हें सब को अपने क़ुब्बे में जमा किया. रात भर बनी इस्राईल उन लाठियों का पहरा देते रहे. सुबह को हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की लाठी में कौंपलें फूटीं और पत्ते निकल आए. हज़रत मूसा अलैहिस्सला ने फ़रमाया, ऐ क़ारून तूने देखा. क़ारून बोला यह आप के जादू से कुछ अजीब नहीं . हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उसका बहुत ख़याल रखते थे और वह आपको हर समय तकलीफ़ देता था और उसकी सरकशी और घमण्ड और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ दुश्मनी रोज़ बरोज़ बढ़ रही थी. उसने एक मकान बनाया जिसका दरवाज़ा सोने का था और उसकी दीवारों पर सोने के तख़्ते लगाए. बनी इस्राईल सुब्ह शाम उसके पास आते, खाना खाते, बातें बनाते, उसे हंसाते. जब ज़कात का हुक्म उतरा तो क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया. उसने आप से तय किया कि दिरहम और दीनार और मवेशी वग़ैरह में से हज़ारवाँ हिस्सा ज़कात देगा. लेकिन घर जाकर हिसाब किया तो उसके माल में से इतना भी बहुत ज़्यादा होता था. उसके नफ़्स ने इतनी भी हिम्मत न की और उसने बनी इस्राईल को जमा करके कहा कि तुम ने मूसा की हर बात में फ़रमाँबरदारी की अब वह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं. क्या कहते हो. उन्होंने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये. कहने लगा कि अमुक बदचलन औरत के पास जाओ और उससे एक शुल्क निर्धारित करो कि वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर लांछन लगाए. ऐसा हुआ तो बनी इस्राईल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को छोड़ देंगे. चुनांचे क़ारून ने उस औरत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपया और बहुत से वादे करके यह लांछन लगाने पर तय किया और दूसरे रोज़ बनी इस्राईल को जमा करके हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा कि बनी इस्राईल आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें उपदेश और नसीहत फ़रमाएं. हज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इस्राईल में खड़े होकर आपने फ़रमाया कि ऐ बनी इस्राईल जो चोरी करेगा उसके हाथ काटे जाएंगे, जो लांछन लगाएगा उसको अस्सी कोड़े मारे जाएंगे. और जो ज़िना करेगा उसके अगर बीबी नहीं है तो सौ कोड़े मारे जाएंगे और अगर बीबी है तो संगसार किया जाएगा यहाँ तक कि मर जाए. क़ारून कहने लगा कि यह हुक्म सब के लिये है, चाहे आप ही हों. फ़रमाया, चाहे मैं ही क्यों न हूँ. कहने लगा बनी इस्राईल का ख़याल है कि आपने अमुक बदकार औरत के साथ बुरा काम किया है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, उसे बुलाओ. वह आई. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, उसकी क़सम जिसने बनी इस्राईल के लिये दरिया फाड़ा और उसमें रस्ते बनाए और तौरात उतारी, सच कह दे. वह औरत डर गई और अल्लाह के रसूल पर लांछन लगाकर उन्हें तकलीफ़ देने की उसमें हिम्मत न हुई. और उसने अपने दिल में कहा कि इससे तौबह करना बेहतर है. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह की क़सम यह झूट है और उसने आप पर लांछन लगाने के बदले में मेरे लिये बहुत सा माल रखा है. हज़रत मूसा अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सज्दे में गिरे और अर्ज़ करने लगे या रब अगर मैं तेरा रसूल हूँ तो मेरी वजह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा. अल्लाह तआला ने आप को वही फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आपकी फ़रमाँबरदारी का हुक्म दिया है आप उसको जो चाहें हुक्म दें. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से फ़रमाया, ऐ बनी इस्राईल अल्लाह तआला ने मुझे क़ारून की तरफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔन की तरफ़ भेजा था. जो क़ारून का साथी हो उसके साथ उसकी जगह ठहरा रहे, जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए. सब लोग क़ारून से अलग हो गए, सिवा दो व्यक्तियों के कोई उसके साथ न रहा. फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को हुक्म दिया कि उन्हें पकड़ ले तो वो घुटनों तक धंस गए. फिर आपने यही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, फिर आपने यही फ़रमाया, यहाँ तक कि वो लोग गर्दनों तक धंस गए. अब वो बहुत रोते गिड़गिड़ाते

الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

منزل ٥

है[३] और जो बदी लाए बदकाम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था (८४) बेशक जिसने तुमपर क़ुरआन फ़र्ज़ किया[४] वह तुम्हें फेर ले जाएगा जहाँ फिरना चाहते हो[५] तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है[६] (८५) और तुम उम्मीद न रखते थे कि किताब तुमपर भेजी जाएगी[७] हाँ तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की पुश्ती (सहायता) न करना[८] (८६) और हरगिज़ वो तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बाद इसके कि वो तुम्हारी तरफ़ उतारी गईं[९] और अपने रब की तरफ़ बुलाओ[१०] और हरगिज़ शिर्क वालों में से न होना[११] (८७) और अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं, हर चीज़ फ़ानी है सिवा उसकी ज़ात के, उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ फिर जाओगे[१२] (८८)

थे और क़ारून आपको अल्लाह की क़सम देता था और रिश्तेदारी का वास्ता देता था मगर आपने कोई तवज्जह न दी यहाँ तक कि वो बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई. क़तादह ने कहा कि वो क़यामत तक धंसते ही चले जाएंगे. बनी इस्राईल ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून के मकान और उसके ख़ज़ानों और माल की वजह से उसके लिये बद दुआ की. यह सुनकर आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो उसका मकान और उसके ख़ज़ाने और माल सब ज़मीन में धंस गए.

(१८) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.

(१९) अपनी उस आरज़ू पर शर्मिन्दा होकर.

(२०) जिसके लिये चाहे.

सूरए क़सस - नवाँ रूकू

(१) यानी जन्नत.

(२) मेहमूद.

(३) दस गुना सवाब.

(४) यानी उसके पढ़ने और तब्लीग़ और आदेशों पर अमल लाज़िम किया.

(५) यानी मक्कए मुकर्रमा में. मुराद यह है कि अल्लाह तआला आपको मक्का की फ़त्ह के दिन मक्कए मुकर्रमा में बड़ी शान और सम्मान और अधिकार के साथ दाख़िल करेगा. वहाँ के रहने वाले सब आप के आधीन होंगे. शिर्क और उसके हामी ज़लील और रूसवा होंगे. यह आयत जहफ़ह में उतरी जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीने की तरफ़ हिजरत करते हुए वहाँ पहुंचे और आपको अपने और अपने पूर्वजों के जन्मस्थान मक्कए मुकर्रमा का शौक़ हुआ तो जिब्रईले अमीन आए और उन्होंने अर्ज़ किया कि क्या हुज़ूर को अपने शहर मक्कए मुकर्रमा का शौक़ है. फ़रमाया हाँ. उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है और यह आयत पढ़ी. 'मआद' यानी जहाँ फिरना चाहते हो, की तफ़सीर मौत और क़यामत और जन्नत से भी की गई है.

(६) यानी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये उसका अज्र और सवाब है. और मुश्रिक लोग गुमराही में हैं और सख़्त अज़ाब के मुस्तहिक़. यह आयत मक्का के काफ़िरों के जवाब में उतरी जिन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत कहा था ***"इन्नका लफ़ी दलालिम मुबीन"*** यानी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं. (मआज़ल्लाह).

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह सम्बोधन ज़ाहिर में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है और मुराद इससे ईमान वाले हैं.

(٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ (٨٥) اٰيَاتُهَا ٦٩ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۝١ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝٢ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٤ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٥ وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ

منزل ۵

२९- सूरए अन्कबूत

सूरए अन्कबूत मक्का में उतरी, इसमें ६९ आयतें, ७ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]
अलिफ़, लाम, मीम﴾१﴿ क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें, हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी[2]﴾२﴿ और बेशक हमने उनसे अगलों को जांचा[3] तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और ज़रूर झूठों को देखेगा[4]﴾३﴿ या ये समझे हुए हैं वो जो बुरे काम करते हैं [5] कि हम से कहीं निकल जाएंगे[6] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं﴾४﴿ जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो[7] तो बेशक अल्लाह की मीआद ज़रूर आने वाली है[8] और वही सुनता जानता है[9]﴾५﴿ और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे[10] तो अपने ही भले को कोशिश करता है[11] बेशक अल्लाह बेपरवाह है सारे जगत से[12]﴾६﴿ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये हम ज़रूर उनकी बुराइयाँ उतार देंगे[13] और ज़रूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उनके सब कामों में अच्छा था[14]﴾७﴿ और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ

(८) उनके सहायक और मददगार न होना.
(९) यानी काफ़िरों की बहकाने वाली बातों में न आना और उन्हें ठुकरा देना.
(१०) ख़ल्क़ को अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी इबादत की दावत दो.
(११) उनकी सहायता और तरफ़दारी न करना.
(१२) आख़िरत में, और वही कर्मों की जज़ा देगा.

२९ - सूरए अन्कबूत - पहला रूकू

(१) सूरए अन्कबूत मक्के में उतरी. इस में सात रूकू, उनहत्तर आयतें, नौ सौ अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सौ पैंसठ अक्षर हैं.
(२) तकलीफ़ों की सख़्ती और क़िस्म क़िस्म की तकलीफ़ें और फ़रमाँबरदारी के ज़ौक़ और ख़्वाहिशात के त्याग और जान और माल के बदल से उन के ईमान की हक़ीक़त ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मुख़लिस मूमिन और मुनाफ़िक़ में इमतियाज़ ज़ाहिर हो जाए. ये आयत उन हज़रात के हक़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्होंने इस्लाम का इक़रार किया तो असहाबे रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने उन्हें लिखा कि सिर्फ़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो. उन साहिबों ने हिजरत की और मदीने का इरादा करके रवाना हुए. मुश्रिकीन ने उनका पीछा किया और उन से जंग की. कुछ हज़रात उनमें से शहीद हो गए, कुछ बच गए. उनके हक़ में ये दो आयतें नाज़िल हुईं. और हज़रत इब्ने अब्बास (रदियल्लाहो तआला अन्हुमा) ने फ़रमाया कि उन लोगों से मुराद सलमा बिन हिशाम और अय्याश बिन अबी रबीआ और वलीद बिन वलीद और अम्मार बिन यासिर वग़ैरह हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए. और एक क़ौल यह है कि यह आयत हज़रत अम्मार के हक़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा-परस्ती की वजह से सताए जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त तकलीफ़ें देते थे. एक क़ौल यह है कि ये आयतें हज़रत उमर (रदियल्लाहो तआला अन्हो) के ग़ुलाम हज़रत महजेअ बिन अब्दुल्लाह के हक़ में नाज़िल हुईं जो बद्र में सबसे पहले शहीद होने वाले हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन के बारे में फ़रमाया कि महजेअ शहीदों के सरदार हैं और इस उम्मत में जन्नत के दरवाज़े की तरफ़ पहले वो पुकारे जाएंगे. उनके माता पिता और उनकी पत्नी को उनका बहुत दुःख हुआ तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की फिर उनकी तसल्ली फ़रमाई.
(३) तरह तरह की परीक्षाओं में डाला. उनमें से कुछ वो हैं जो आरे से चीड़ डाले गए. कुछ लोहे की कंघियों से पुरज़े-पुरज़े किये गए. और सच्चाई और वफ़ादारी की जगह मज़बूत और क़ाइम रहे.

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۭ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ
اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ
اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ
مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ
اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْـَٔـلُنَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا
اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا

बाप के साथ भलाई की(१५) और अगर वो तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे इल्म नहीं तो तू उनका कहा न मान(१६) मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें जो तुम करते थे(१७)(८) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, ज़रूर हम उन्हें नेकों में शामिल करेंगे(१८)(९) और कुछ आदमी कहते हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हें कोई तकलीफ़ दी जाती है(१९) तो लोगों के फ़ित्ने को अल्लाह के अज़ाब के बराबर समझते हैं(२०) और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए(२१) तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे(२२) क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जगत भर के दिलों में है(२३)(१०) और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को(२४) और ज़रूर ज़ाहिर करदेगा मुनाफ़िक़ों (दोग़लों) को(२५)(११) और काफ़िर मुसलमानों से बोले, हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे,(२६) हालांकि वो उनके गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे, बेशक वो झूटे हैं(१२) और बेशक ज़रूर अपने(२७) बोझ उठाएंगे, अपने बोझों के साथ और बोझ(२८) और ज़रूर क़यामत के दिन पूछे जाएंगे जो कुछ बोहतान उठाते थे(२९)(१३)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो

(४) हर एक का हाल ज़ाहिर फ़रमा देगा.
(५) शिर्क और गुनाहों में फँसे हुए हैं.
(६) और हम उनसे बदला न लेंगे.
(७) उठाने और हिसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे.
(८) उसने सवाब और अज़ाब का जो वादा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है . चाहिये कि उसके लिये तैयार रहे. और नेक कार्य में जल्दी करे.
(९) बंदों की बात चीत और कर्मों को.
(१०) चाहे दीन के दुश्मनों से लड़ाई करके या नफ़्स और शैतान की मुख़ालिफ़त करके और अल्लाह के हुक्म की फ़रमाँबरदारी पर साबिर और क़ाईम रह कर.
(११) इस का फ़ायदा और पुण्य पाएगा.
(१२) इन्सान और जिन्नात और फ़रिश्ते और उनके कर्मों और ईबादतों से उसका हुक्म और मना फ़रमाना बंदों पर रहमत और करम के लिये है.
(१३) नेकियों की वजह से.
(१४) यानी अच्छे कर्म पर.
(१५) एहसान और अच्छे बर्ताव की यह आयत और सूरए लुक़मान और सूरए अहक़ाफ़ की आयतें सअद बिन अबी वक़्क़ास रदियल्लाहो तआला अन्हो के हक़ में और इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ सअद बिन मालिक ज़ोहरी के हक़ में नाज़िल हुईं. उनकी माँ हमन्ना बिन्ते अबी सुफ़यान बिन उमैया बिन अब्दे शम्स थीं. हज़रत सअद अगलों और पहलों में से थे. और अपनी माँ के साथ अच्छा बर्ताव करते थे. जब आप इस्लाम लाए तो आप की माँ ने कहा कि तूने ये क्या नया काम किया? ख़ुदा की क़सम ! अगर तू इससे बाज़ न आया तो मैं खाऊँ न पियूँ. यहाँ तक कि मर जाऊँ और तेरी हमेशा के लिये बदनामी हो. और माँ का हत्यारा कहा जाए. फिर उस बुढ़िया ने भूख हड़ताल कर दी. और पूरे एक दिन-रात न खाया न पिया और न ही साए में बैठी. इससे कमज़ोर हो गई. फिर एक रात-दिन और इसी तरह रही. तब हज़रत सअद उसके पास आए और आप ने उससे फ़रमाया कि ऐ माँ, अगर तेरी सौ जानें हों और एक-एक करके सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं. तू चाहे खा, चाहे मत खा. जब वो हज़रत सअद की तरफ़ से निराश हो गई कि ये अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो खाने पीने लगी. इसपर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि माता-पिता के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए. और अगर वो कुफ़्र का हुक्म दें, तो

فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۞ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ
اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۞ وَاِبْرٰهِيْمَ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ
الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۞
وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۞ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ
يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۞ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۞ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ

منزل ٥

वह उनमें पचास साल कम हज़ार बरस रहा[१] तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वो ज़ालिम थे[२]﴿१४﴾ तो हमने उसे[३] और किश्ती वालों को[४] बचा लिया और उस किश्ती को सारे जगत के लिये निशानी किया[५]﴿१५﴾ और इब्राहीम को[६] जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उससे डरो उसमें तुम्हारा भला है अगर तुम जानते﴿१६﴾ तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो[७] बेशक वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुन्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह के पास रिज़्क़ ढूंढो[८] और उसकी बन्दगी करो और उसका एहसान मानो, तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है[९]﴿१७﴾ और अगर तुम झुटलाओ[१०] तो तुमसे पहले कितने ही गिरोह झुटला चुके हैं[११] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना﴿१८﴾ और क्या उन्होंने न देखा अल्लाह किस तरह सृष्टि की शुरूआत फ़रमाता है[१२] फिर उसे दोबारा बनाएगा[१३] बेशक यह अल्लाह को आसान है[१४]﴿१९﴾ तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र करके देखो[१५] अल्लाह कैसे पहले बनाता है[१६] फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है[१७] बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है﴿२०﴾

न माना जाए.

(१६) क्योंकि जो चीज़ मालूम न हो, उसको किसी के कहे से मान लेना तक़लीद है. इस का मतलब ये हुआ कि असलियत में मेरा कोई शरीक नहीं है, तो ज्ञान और तहक़ीक़ से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता. ये नामुमकिन है. रहा तक़लीद के तौर पर बग़ैर इल्म के मेरे लिये शरीक मना लेना, ये बहुत ही बुरा है. इसमें माता-पिता की हरगिज़ बात न मान. ऐसी फ़रमाँबरदारी किसी मख़लूक़ की जाईज़ नहीं जिस में ख़ुदा की नाफ़रमानी हो.

(१७) तुम्हारे किरदार का फल देकर.

(१८) कि उन के साथ हश्र फ़रमाएंगे और सालेहीन से मुराद अंबिया और औलिया हैं.

(१९) यानी दीन की वजह से कोई तकलीफ़ पहुंचती है जैसे कि काफ़िरों का तकलीफ़ पहुंचाना.

(२०) और जैसा अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए या ऐसा ख़ल्क़ के द्वारा पहुंचाए जाने वाली तकलीफ़ से डरते हैं. यहाँ तक कि ईमान छोड़ देते हैं और कुफ़्र को स्वीकार लेते हैं. ये हाल मुनाफ़िक़ों का है.

(२१) मिसाल के तौर पर मुसलमानों की जीत हो और उन्हें दौलत मिले.

(२२) ईमान और इस्लाम में और तुम्हारी तरह दीन पर डटे हुए थे. तो हमें इस में शरीक करो.

(२३) कुफ़्र या ईमान.

(२४) जो सच्चाई और भलाई के साथ ईमान लाए और बला और मुसीबत में अपने ईमान और इस्लाम पर साबित और क़ाइम रहे.

(२५) और दोनों गिरोहों को नतीजा देगा.

(२६) मक्के के काफ़िरों ने क़ुरैश के मूमिनों से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन स्वीकार करो. तुम को अल्लाह की तरफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उसके हम ज़िम्मेदार हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गर्दन पर, यानी अगर हमारे तरीक़े पर रहने से अल्लाह तआला ने तुम को पकड़ा और अज़ाब किया तो तुम्हारा अज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे. अल्लाह तआला ने उन्हें झूठा क़रार दिया.

(२७) कुफ़्र और गुनाहों के.

(२८) उनके गुनाहों के, जिन्हें उन्होंने गुमराह किया और सही रास्ते से रोका. हदीस शरीफ़ में है जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीक़ा निकाला उसपर उस बुरा तरीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़यामत तक जो लोग उस पर अमल करें उनके गुनाह भी. बग़ैर इसके कि उनपर से उन के गुनाह के बोझ में कुछ भी कमी हो. (मुस्लिम शरीफ़)

(२९) अल्लाह तआला उनके कर्मों और ग़लत इल्ज़ामों सब का जानने वाला है लेकिन यह सवाल धिक्कार के लिये है.

सूरए अन्कबूत - दूसरा रूकू

(१) इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौहीद और ईमान की दावत जारी रखी और उनकी तकलीफ़ों पर सब्र किया . इसपर भी वह क़ौम बाज़ न आई, झुटलाती रही.

(२) तूफ़ान में डूब गए . इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले नबियों के साथ उनकी क़ौमों ने काफ़ी सख़्तियाँ की हैं. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पचास कम हज़ार बरस दावत फ़रमाते रहे और इस लम्बे समय में उनकी क़ौम के बहुत थोड़े लोग ईमान लाए, तो आप कुछ ग़म न करें क्योंकि अल्लाह के करम से आपकी थोड़े समय की दावत से बेशुमार लोग ईमान से बुज़ुर्गी हासिल कर चुके हैं.

(३) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को.

(४) जो आप के साथ थे उनकी संख्या ७८ (अठहत्तर) थी आधे मर्द और आधी औरतें. इनमें हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम और हाम और याफ़िस और उनकी बीबियाँ भी शामिल हैं.

(५) कहा गया है कि वह किश्ती जूदी पहाड़ पर लम्बे समय तक बाक़ी रही.

(६) याद करो.

(७) कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो.

(८) वही रिज़्क़ देने वाला है.

(९) आख़िरत में.

(१०) और मुझे न मानो तो इस में मेरा कोई नुक़सान नहीं. मैंने राह दिखा दी, चमत्कार पेश कर दिये. मेरा कर्तव्य पूरा हो गया इसपर भी अगर तुम न मानो.

(११) अपने नबियों को जैसे कि आद, नूह और समूद की क़ौमें . उनके झुटलाने का अन्जाम यही हुआ कि अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया.

(१२) कि पहले उन्हें नुत्फ़ा बनाता है फिर बंधे हुए ख़ून की सूरत देता है, फिर गोश्त का टुकड़ा बनाता है. इस तरह एक के बाद एक चरणों में उनकी बनावट पूरी करता है.

(१३) आख़िरत में मरने के बाद उठाए जाने के वक़्त.

(१४) यानी पहली बार पैदा करना और मरने के बाद फिर दोबारा बनाना.

(१५) पिछली क़ौमों के शहरों और निशानों को कि ...

(१६) मख़्लूक़ को, कि फिर उसे मौत देता है.

(१७) यानी जब यह यक़ीन से जान लिया कि पहली बार अल्लाह तआला ही ने पैदा किया तो मालूम हो गया कि इस ख़ालिक़ यानी पैदा करने वाले का सृष्टि को मौत के बाद दोबारा पैदा करना कुछ भी मजबूरी की बात नहीं है.

وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ وَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ
النَّارِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ
اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ
بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ
النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ
وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا

अज़ाब देता है जिसे चाहे[१८] और रहम फ़रमाता है जिस पर चाहे[१९] और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है﴿२१﴾ और न तुम ज़मीन में[२०] क़ाबू से निकल सको और न आसमान में[२१] और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला और न मददगार﴿२२﴾

तीसरा रूकू

और वो जिन्होंने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना[१] वो हैं जिन्हें मेरी रहमत की आस नहीं और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[२]﴿२३﴾ तो उसकी क़ौम को कुछ जवाब बन न आया मगर ये बोले उन्हें क़त्ल करदो या जला दो[३] तो अल्लाह ने उसे[४] आग से बचा लिया[५] बेशक उसमें ज़रूर निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये[६]﴿२४﴾ और इब्राहीम ने[७] फ़रमाया तुम ने तो अल्लाह के सिवा ये बुत बना लिये हैं जिनमें तुम्हारी दोस्ती यही दुनिया की ज़िन्दगी तक है[८] फिर क़यामत के दिन तुम में एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर लानत डालेगा[९] और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है[१०] और तुम्हारा कोई मददगार नहीं[११]﴿२५﴾ तो लूत उस पर ईमान लाया[१२] और इब्राहीम ने कहा मैं[१३] अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ[१४] बेशक वही इज़्ज़त व हिकमत(बोध) वाला है﴿२६﴾ और हमने उसे[१५] इस्हाक़ और यअक़ूब अता

(१८) अपने न्याय से.
(१९) अपने करम और मेहरबानी से.
(२०) अपने रब के.
(२१) उससे बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं. या ये मानी हैं कि न ज़मीन वाले उसके हुक्म और मर्ज़ी से कहीं भाग सकते हैं, न आसमान वाले.

सूरए अन्कबूत - तीसरा रूकू

(१) यानी क़ुरआन शरीफ़ और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर ईमान न लाए.
(२) इस नसीहत के बाद फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वाक़ए का बयान फ़रमाया जाता है कि जब आपने अपनी क़ौम को ईमान की दावत दी और तर्क क़ायम किये और नसीहतें फ़रमाईं.
(३) यह उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने अयुयाइयों से. बहरहाल कुछ कहने वाले थे, कुछ उस पर राज़ी होने वाले थे, सब सहमत. इसलिये वो सब क़ायल लोगों के हुक्म में हैं.
(४) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को, जबकि उनकी क़ौम ने आग में डाला.
(५) उस आग को ठण्डा करके और हज़रत इब्राहीम के लिये सलामती बनाकर.
(६) अजीब अजीब निशानियाँ. आग का इस बहुतात के बावुजूद असर न करना और ठण्डा हो जाना और उसकी जगह गुलशन पैदा हो जाना और यह सब पल भर से भी कम में होना.
(७) अपनी क़ौम से.
(८) फिर टूट जाएगी और आख़िरत में कुछ काम न आएगी.
(९) बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर लअनत करेंगे.
(१०) बुतों का भी और पुजारियों का भी . उनमें सरदारों का भी और उनके फ़रमाँबरदारों का भी.
(११) जो तुम्हें अज़ाब से बचाए. और जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग से सलामत निकले और उसने आपको कोई हानि न पहुंचाई.
(१२) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने यह चमत्कार देखकर आपकी रिसालत की तस्दीक़ की. आप हज़रत इब्राहीम

فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي
الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٧ وَ
لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٨ اَئِنَّكُمْ
لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ
فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۭ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝٢٩ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝٣٠ وَلَمَّا جَاۗءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ
اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝٣١ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ۭ
قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٢ وَلَمَّآ اَنْ

منزل ٥

फ़रमाए और हमने उसकी औलाद में नबुव्वत[१६] और किताब रखी[१७] और हमने दुनिया में उसका सवाब उसे अता फ़रमाया[१८] और बेशक आख़िरत में वह हमारे ख़ास समीपता के हक़दारों में है[१९] ﴾२७﴿ और लूत को निजात दी जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया भर में किसी ने न किया[२०] ﴾२८﴿ क्या तुम मर्दों से बुरा काम करते हो और राह मारते हो[२१] और अपनी मजलिस (बैठक) में बुरी बात करते हो[२२] तो उसकी क़ौम का कुछ जवाब न हुआ मगर यह कि बोले हम पर अल्लाह का अज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो[२३] ﴾२९﴿ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर[२४] इन फ़सादी लोगों पर[२५] ﴾३०﴿

चौथा रूकू

और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए[१] बोले हम ज़रूर इस शहर वालों को हलाक करेंगे[२] बेशक इसके बसने वाले सितमगार हैं ﴾३१﴿ कहा[३] इसमें तो लूत है[४] फ़रिश्ते बोले हमें ख़ूब मालूम है जो कुछ इसमें है, ज़रूर हम उसे[५] और उसके घर वालों को निजात देंगे मगर उसकी औरत को, कि वह रह जाने वालों में है[६] ﴾३२﴿

अलैहिस्सलाम के सबसे पहले तस्दीक़ करने वाले हैं. ईमान से रिसालत की तस्दीक़ ही मुराद है क्योंकि असल तौहीद का अक़ीदा तो उन्हें हमेशा से हासिल है इसलिये कि नबी हमेशा ही ईमान वाले होते हैं और कुफ़्र का उनके साथ किसी हाल में तसव्वुर नहीं किया जा सकता.

(१३) अपनी क़ौम को छोड़ कर.

(१४) जहाँ उसका हुक्म हो. चुनांन्चे आपने ईराक़ प्रदेश से शाम की तरफ़ हिजरत की. इस हिजरत में आपके साथ आपकी बीबी सारा और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम थे.

(१५) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद.

(१६) कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद जितने नबी हुए सब आपकी नस्ल से हुए.

(१७) किताब से तौरात, इन्जील, ज़ुबूर और क़ुरआन शरीफ़ मुराद हैं.

(१८) कि पाक सन्तान अता फ़रमाई. पैग़म्बरी उनकी नस्ल में रखी, किताबें उन पैग़म्बरों को अता कीं जो उनकी औलाद में हैं और उनको सृष्टि में सबका प्यारा और चहीता किया कि सारी क़ौमें और दीन वाले उनसे महब्बत रखते हैं और उनकी तरफ़ अपनी निस्बत पर गर्व करते हैं और उनके लिये संसार के अन्त तक दुरूद मुक़र्रर कर दिया . यह तो वह है जो दुनिया में अता फ़रमाया.

(१९) जिनके लिये बड़े ऊंचे दर्जे हैं.

(२०) इस बेहयाई की व्याख्या इससे अगली आयत में बयान होती है.

(२१) राहगीरों को क़त्ल करके, उनके माल लूट कर, और यह भी कहा गया है कि वो लोग मुसाफ़िरों के साथ बुरा काम करते थे यहाँ तक कि लोगों ने उस तरफ़ से गुज़रना भी बन्द कर दिया था.

(२२) जो समझदारी के ऐतिबार से बुरा और मना है जैसे गाली देना, बुरी बातें कहना, ताली और सीटी बजाना, एक दूसरे के कंकरियाँ मारना, रास्ता चलने वालों पर पत्थर वग़ैरह फैंकना, शराब पीना, हंसी उड़ाना, गन्दी बातें करना, एक दूसरे पर थूकना वग़ैरह नीच कर्म जिनकी क़ौमे लूत आदी थी. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने इसपर उनको मलामत की.

(२३) इस बात में कि ये बुरे काम हैं और ऐसा करने वाले पर अज़ाब उतरेगा. यह उन्होंने हंसी के अन्दाज़ में कहा. जब हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को उस क़ौम के सीधी राह पर आने की कुछ उम्मीद न रही तो आपने अल्लाह की बारगाह में ----

(२४) अज़ाब उतारने के बारे में मेरी बात पूरी करके.

(२५) अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई.

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِىٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ
قَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَ أَهْلَكَ
إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰٓى
أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُونَ ۝ وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا
فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا
تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ
الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ وَعَادًا وَّثَمُودَا۟
وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ أَعْمٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَ
كَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝ وَقٰرُونَ وَفِرْعَوْنَ وَ
هٰمٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास(७) आए उनका आना उसे नागवार हुआ और उनके कारण दिल तंग हुआ(८) और उन्होंने कहा न डरिये(९) और न ग़म कीजिये(१०) बेशक हम आप को और आप के घर वालों को निजात देंगे मगर आप की औरत, वह रह जाने वालों में है(३३) बेशक हम उस शहर वालों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं बदला उनकी नाफ़रमानियों का(३४) बेशक हमने उससे रौशन निशानी बाक़ी रखी अक़्ल वालों के लिये(११)(३५) मदयन की तरफ़, उनके हम क़ौम शुऐब को भेजा तो उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की उम्मीद रखो(१२) और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो(३६) तो उन्होंने उसे झुटलाया तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए(१३)(३७) और आद और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें(१४) उनकी बस्तियां मालूम हो चुकी हैं(१५) और शैतान ने उनके कौतुक(१६) उनकी निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह से रोका और उन्हें सूझता था(१७)(३८) और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को(१८) और बेशक उनके पास मूसा

सूरए अन्कबूत - चौथा रूकू

(१) उनके बेटे और पोते हज़रत इस्हाक़ और हज़रत यअक़ूब अलैहिमस्सलाम का.
(२) उस शहर का नाम सदूम था.
(३) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने.
(४) और लूत अलैहिस्सलाम तो अल्लाह के नबी और बुज़ुर्गी वाले बन्दे हैं.
(५) यानी लूत अलैहिस्सलाम को.
(६) अज़ाब में.
(७) ख़ूबसूरत मेहमानों की शक्ल में.
(८) क़ौम के कर्म और हरकतों और उनकी नालायक़ी का ख़याल करके, उस वक़्त फ़रिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वो अल्लाह के भेजे हुए हैं.
(९) क़ौम से.
(१०) हमारा, कि क़ौम के लोग हमारे साथ कोई बेअदबी और गुस्ताख़ी करें. हम फ़रिश्ते हैं. हम लोगों को हलाक करेंगे और ...
(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह रौशन निशानी क़ौमे लूत के वीरान मकान हैं.
(१२) यानी क़यामत के दिन की, ऐसे काम करके जो आख़िरत के सवाब का कारण हों.
(१३) मुर्दे बेजान.
(१४) ऐ मक्का वालो.
(१५) हजर और यमन में जब तुम अपनी यात्राओं में वहाँ से गुज़रते हो.
(१६) कुफ़्र और गुनाह.
(१७) समझ वाले थे. सत्य और असत्य में फ़र्क़ कर सकते थे लेकिन उन्होंने अक़्ल और न्याय से काम न लिया.
(१८) अल्लाह तआला ने हलाक फ़रमाया.

فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾
فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۚ
وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ
اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
بِالْحَقِّ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

منزل٥

रौशन निशानियां लेकर आया तो उन्होंने ज़मीन में घमण्ड किया और वो हमसे निकल कर जाने वाले न थे[१९] ﴿३९﴾ तो उनमें हर एक को हमने उसके गुनाह पर पकड़ा, तो उनमें किसी पर हमने पथराव भेजा[२०] और उनमें किसी को चिंघाड़ ने आ लिया[२१] और उनमें किसी को ज़मीन में धंसा दिया[२२] और उनमें किसी को डुबो दिया[२३] और अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करे[२४] हाँ वो ख़ुद ही[२५] अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे ﴿४०﴾ उनकी मिसाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं[२६] मकड़ी की तरह है, उसने जाले का घर बनाया[२७] और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर[२८] क्या अच्छा होता अगर जानते[२९] ﴿४१﴾ अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उसके सिवा पूजा करते हैं[३०] और वही इज़्ज़त और बोध वाला है[३१] ﴿४२﴾ और ये मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं, और उन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले[३२] ﴿४३﴾ अल्लाह ने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए, बेशक उसमें निशानी है[३३] मुसलमानों के लिए ﴿४४﴾

पारा बीस समाप्त

(१९) कि हमारे अज़ाब से बच सकते.
(२०) और वह क़ौमे लूत थी जिनको छोटे छोटे पत्थरों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उनपर लगते थे.
(२१) यानी क़ौमे समूद कि भयानक आवाज़ के अज़ाब से हलाक की गई.
(२२) यानी क़ारून और उसके साथियों को.
(२३) जैसे क़ौमे नूह को और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को.
(२४) वह किसी को बिना गुनाह के अज़ाब में नहीं जकड़ता.
(२५) नाफ़रमानियाँ करके और कुफ़्र और सरकशी इख़्तियार करके.
(२६) यानी बुतों को मअबूद ठहराया है, उनके साथ उम्मीदें जोड़ रखी हैं और हक़ीक़त में उनकी लाचारी और बेइख़्तियारी की मिसाल यह है कि जो आगे ज़िक्र फ़रमाई जाती है.
(२७) अपने रहने के लिये, न उससे गर्मी दूर हो न सर्दी. न धूल मिट्टी और बारिश, किसी चीज़ से हिफ़ाज़त. ऐसे ही बुत्त हैं कि अपने पुजारियों को न दुनिया में नफ़ा पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई नुक़सान पहुंचा सकें.
(२८) ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का है. हज़रत अली मुरतज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है आपने फ़रमाया अपने घरों से मकड़ी के जाले दूर करो, ये दरिद्रता का कारण होते हैं.
(२९) कि उनका दीन किस क़द्र निकम्मा है.
(३०) कि वह कुछ हक़ीक़त नहीं रखती.
(३१) तो समझदार को कब उचित है कि इज़्ज़त व हिकमत वाले क़ादिर और मुख़्तार की इबादत छोड़ कर बेइल्म बे इख़्तियार पत्थरों की पूजा करे.
(३२) यानी उनके हुस्न और गुण और उनके नफ़े और फ़ायदे और उनकी हिकमत को इल्म वाले समझते हैं जैसा कि इस मिसाल ने मुश्रिक और ख़ुदा परस्त का हाल ख़ूब अच्छी तरह ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ खोल दिया. क़ुरैश के काफ़िरों ने व्यंग्य के तौर पर कहा था कि अल्लाह तआला मक्खी और मकड़ी की उपमाएं देता है. और इसपर उन्होंने हंसी बनाई थी. इस आयत में उनका रद कर दिया गया कि जो जाहिल हैं, उदाहरण और उपमा की हिकमत को नहीं जानते. मिसाल का उद्देश्य समझाना होता है और जैसी चीज़ हो उसकी शान ज़ाहिर करने के लिये वैसी ही मिसाल पेश करना हिकमत का तक़ाज़ा है तो बातिल और कमज़ोर दीन के झूट के इज़हार के लिये यह मिसाल बहुत ही नफ़ा देने वाली है. जिन्हें अल्लाह तआला ने अक़्ल और इल्म अता फ़रमाया वो समझते हैं.
(३३) उसकी क़ुदरत और हिकमत और उसकी तौहीद और एक होने पर दलील क़ायम करने वाली.

इक्कीसवां पारा - उत्लु-मा-ऊहिया
(सूरए अन्कबूत जारी)
पाँचवां रूकू

ऐ मेहबूब, पढ़ो जो किताब तुम्हारी तरफ़ वही की गई[1] और नमाज़ क़ायम फ़रमाओ, बेशक नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से[2] और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा[3] और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो(४५) और ऐ मुसलमानो किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर तरीक़े पर[4] मगर वो जिन्हों ने उनमें से ज़ुल्म किया[5] और कहो[6] हम ईमान लाए उसपर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मअबूद है और हम उसके समक्ष गर्दन रखे हैं[7](४६) और ऐ मेहबूब यूंही तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी[8] तो वो जिन्हें हमने किताब अता फ़रमाई[9] उसपर ईमान लाते हैं, और कुछ उनमें से हैं[10] जो उसपर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इनकारी नहीं होते मगर काफ़िर[11](४७) और इस[12] से पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता[13] तो बातिल(असत्य) वाले ज़रूर शक लाते[14](४८) बल्कि वो रौशन आयतें हैं उनके सीनों में जिनको इल्म दिया गया[15] और हमारी आयतों का इनकार नहीं करते मगर ज़ालिम[16](४९) और बोले[17] क्यों न उतरीं कुछ निशानियाँ उनपर उनके रब की तरफ़ से[18] तुम फ़रमाओ निशानियाँ

सूरए अन्कबूत - पाँचवां रूकू

(१) यानी क़ुरआन शरीफ़ कि उसकी तिलावत भी इबादत है और उसमें लोगों के लिये अच्छी बातें और नसीहतें भी और आदेश और अदब और अच्छे व्यवहार की तालीम भी.

(२) यानी शरीअत की मना की हुई बातों से. लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और उसे अच्छी तरह अदा करता है, नतीजा यह होता है कि एक न एक दिन वह उन बुराईयों को त्याग देता है जिनमें जकड़ा हुआ था. हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि एक अनसारी जवान सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से बड़े गुनाह किया करता था. हुज़ूर से उसकी शिकायत की गई. फ़रमाया, उसकी नमाज़ किसी दिन उसे उन बातों से रोक देगी. चुनांन्चे बहुत ही क़रीब के ज़माने में उसने तौबह की और उसका हाल बेहतर हो गया. हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जिस की नमाज़ उसको बेहयाई और अवैध बातों से न रोके, वह नमाज़ ही नहीं.

(३) कि वह सबसे बढ़कर फ़रमाँबरदारी है. तिरमिज़ी की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें न बताऊं वह अमल जो तुम्हारे कर्मों में बेहतर और रब के नज़्दीक सबसे पाकीज़ा, सबसे ऊंचे दर्जे का और तुम्हारे लिये सोना चांदी देने से बेहतर और जिहाद में लड़ने और मारे जाने से बेहतर है. सहाबा ने अर्ज़ किया, बेशक या रसूलल्लाह. फ़रमाया, वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है. तिरमिज़ी ही की एक दूसरी हदीस में है कि सहाबा ने हुज़ूर से दरियाफ़्त किया था कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के नज़्दीक किन बन्दों का दर्जा ऊंचा है. फ़रमाया, बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वालों का. सहाबा ने अर्ज़ किया, और ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला. फ़रमाया, अगर वह अपनी तलवार से काफ़िरों और मुश्रिकों को यहाँ तक मारे कि तलवार टूट जाए और वह ख़ून में रंग जाए जब भी ज़िक्र करने वालों का दर्जा ही उससे बलन्द है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत की तफ़सीर यह फ़रमाई है कि अल्लाह तआला का अपने बन्दों को याद करना बहुत बड़ा है और एक क़ौल इसकी तफ़सीर में यह है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र बड़ा है बेहयाई और बुरी बातों से रोकने और मना करने में.

(४) अल्लाह तआला की तरफ़, उसकी आयतों से दावत देकर और हुज्जतों पर आगाही करके.

तो अल्लाह ही के पास हैं[११] और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ[२०] (५०) और क्या यह उन्हें बस नहीं कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उनपर पढ़ी जाती है[२१] बेशक इसमें रहमत और नसीहत है ईमान वालों के लिये (५१)

छटा रूकू

तुम फ़रमाओ, अल्लाह बस है मेरे और तुम्हारे बीच गवाह[१] जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वो जो बातिल (असत्य) पर यक़ीन लाए और अल्लाह के इन्कारी हुए वही घाटे में हैं (५२) और तुमसे अज़ाब की जल्दी करते हैं[२] और अगर एक ठहराई मुद्दत न होती[३] तो ज़रूर उनपर अज़ाब आ जाता[४] और ज़रूर उनपर अचानक आएगा जब वो बेख़बर होंगे (५३) तुम से अज़ाब की जल्दी मचाते हैं, और बेशक जहन्नम घेरे हुए काफ़िरों को[५] (५४) जिस दिन उन्हें ढाँपेगा अज़ाब उनके ऊपर और उनके पाँव के नीचे से और फ़रमाएगा चखो अपने किये का मज़ा[६] (५५) ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन फैली हुई है तो मेरी ही बन्दगी करो[७] (५६) हर जान को मौत का मज़ा चखना है[८] फिर हमारी ही तरफ़ फिरोगे[९] (५७) और

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۵۰ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ
اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۵۱ ع قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝۵۲ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَاۤ
اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۵۳ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝۵۴ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۵۵ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ
اَرْضِىْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّاىَ فَاعْبُدُوْنِ ۝۵۶ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۟ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝۵۷ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(५) ज़ियादती में हद से गुज़र गए, दुश्मनी इख़्तियार की, नसीहत न मानी, नर्मी से नफ़ा न उठाया, उनके साथ सख़्ती करो और एक क़ौल यह है कि मानी ये हैं कि जिन लोगों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तकलीफ़ दी या जिन्होंने अल्लाह तआला के लिये बेटा और शरीक बताया, उनके साथ सख़्ती करो. या ये मानी हैं ज़िम्मी जिज़िया अदा करने वालों के साथ अच्छे तरीक़े से व्यवहार करो. मगर जिन्हों ने ज़ुल्म किया और ज़िम्मे से निकल गए और जिज़िया को मना किया उनसे व्यवहार तलवार के साथ है. इस आयत से काफ़िरों के साथ दीनी कामों में मुनाज़िरा करने का जवाज़ यानी वैधता साबित होती है और ऐसे ही इल्मे कलाम यानी तर्क-वितर्क की विद्या सीखने का जवाज़ भी.

(६) किताब वालों से, जब वो तुम से अपनी किताबों का कोई मज़मून बयान करें.

(७) हदीस शरीफ़ में है कि जब एहले किताब तुम से कोई मज़मून बयान करें तो तुम न उनकी तस्दीक़ करो, न उन्हें झुटलाओ, यह कह दो कि हम अल्लाह तआला और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए. तो अगर वह मज़मून उन्होंने ग़लत बयान किया है तो तुम उसकी तस्दीक़ के गुनाह से बचे रहोगे और अगर वह मज़मून सही था तो तुम उसे झुटलाने से मेहफ़ूज़ रहोगे.

(८) क़ुरआने पाक, जैसे उनकी तरफ़ तौरात वग़ैरह उतारी थीं.

(९) यानी जिन्हें तौरात दी जैसे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी. यह सूरत मक्के में उतरी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथी मदीने में ईमान लाए . अल्लाह तआला ने इससे पहले उनकी ख़बर दी. यह ग़ैबी ख़बरों में से है. (जुमल)

(१०) यानी मक्का वालों में से.

(११) जो कुफ़्र में बहुत सख़्त हैं. जहूद उस इन्कार को कहते हैं जो सब कुछ जान लेने के बाद हो, यानी जान बूझ कर मुकरना और वाक़िआ भी यही था कि यहूदी ख़ूब पहचानते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे नबी हैं और क़ुरआन सच्चा है. यह सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने दुश्मनी में इन्कार किया

(१२) क़ुरआन के उतरने.

(१३) यानी आप लिखते पढ़ते होते.

(१४) यानी एहले किताब कहते कि हमारी किताबों में आख़िरी ज़माने के नबी की विशेषता यह लिखी है कि वो उम्मी होंगे, न लिखेंगे, न पढ़ेंगे, मगर उन्हें इस शक का मौक़ा ही न मिला.

(१५) ज़मीर 'हुवा' यानी वह क़ुरआन के लिये है. उस सूरत में मानी ये हैं कि क़ुरआने करीम वो रौशन आयतें हैं जो उलमा और

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِیْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۵۸﴾
الَّذِیْنَ صَبَرُوْا وَ عَلٰی رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ كَاَیِّنْ
مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖۗ اَللّٰهُ یَرْزُقُهَا وَ اِیَّاكُمْ ۖ
وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۶۰﴾ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ لَیَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰی یُؤْفَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ یَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ
عَلِیْمٌ ﴿۶۲﴾ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَ مَا
هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ
الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾

منزل ۵

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाख़ानों (अटारियों) पर जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उनमें रहेंगे, क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का[१०] ﴿५८﴾ वो जिन्होंने सब्र किया[११] और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं[१२] ﴿५९﴾ और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते[१३] अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें[१४] और वही सुनता जानता है[१५] ﴿६०﴾ और अगर तुम उनसे पूछो[१६] किसने बनाए आसमान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चांद तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने, तो कहाँ औंधे जाते हैं[१७] ﴿६१﴾ अल्लाह कुशादा करता है रोज़ी अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिये चाहे बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है ﴿६२﴾ और जो तुम उनसे पूछो किसने उतारा आसमान से पानी तो उसके कारण ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरें पीछे, ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने[१८] तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियाँ अल्लाह को, बल्कि उनमें अक्सर बेअक़्ल हैं[१९] ﴿६३﴾

सातवाँ रूकू

और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद[१] और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है[२] क्या अच्छा था अगर जानते[३] ﴿६४﴾

हाफ़िज़ों के सीनों में मेहफ़ूज़ हैं. रौशन आयत होने के ये मानी कि वह खुले चमत्कार वाली हैं और ये दोनों बातें क़ुरआन शरीफ़ के साथ ख़ास हैं, और कोई ऐसी किताब नहीं जो चमत्कार हो और न ऐसी कि हर ज़माने में सीनों में मेहफ़ूज़ रही हो. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने ''हुवा'' की ज़मीर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जोड़ कर आयत के ये मानी बयान किये कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन रौशन आयतों के साहिब हैं जो उन लोगों के सीनों में मेहफ़ूज़ हैं जिन्हें एहले किताब में से इल्म दिया गया क्योंकि वो अपनी किताबों में आपकी नअत और सिफ़ात पाते हैं. (ख़ाज़िन)

(१६) यानी दुश्मनी रखने वाले यहूदी कि चमत्कारों के ज़ाहिर होने के बाद जान बूझकर दुश्मनी से इन्कारी होते हैं.

(१७) मक्के के काफ़िर.

(१८) जैसे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिये आसमान से ख़ाना उतरना .

(१९) हिकमत के अनुसार जो चाहता है उतारता है .

(२०) नाफ़रमानी करने वालों को अज़ाब का, और इसी का मुझे हुक्म दिया गया है. इसके बाद अल्लाह तआला मक्का के काफ़िरों के इस क़ौल का जवाब इरशाद फ़रमाता है.

(२१) मानी ये हैं कि क़ुरआने करीम एक चमत्कार है. पहले नबियों के चमत्कार से ज़्यादा भरपूर और सम्पूर्ण, और निशानियों से सच्चाई चाहने वालों को बेनियाज़ करने वाला क्योंकि जब तक ज़माना है, क़ुरआन शरीफ़ बाक़ी रहेगा और दूसरे चमत्कारों की तरह ख़त्म न होगा.

सूरए अन्कबूत - छटा रूकू

(१) मेरी रिसालत की सच्चाई और तुम्हारे झुटलाने का, चमत्कारों से मेरी ताईद फ़रमाकर .

(२) यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी जिसने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हमारे ऊपर आसमान से पत्थरों की बारिश कराइये.

(३) जो अल्लाह तआला ने निर्धारित की है और उस मुद्दत तक अज़ाब में विलम्ब फ़रमाना अल्लाह तआला की मर्ज़ी की बात है.

(४) और विलम्ब न होता.

(५) उस से उनमें का कोई भी न बचेगा.
(६) यानी अपने कर्मों की जज़ा.
(७) जिस धरती पर आसानी से इबादत कर सको. मानी ये हैं कि जब मूमिन को किसी प्रदेश में अपने दीन पर क़ायम रहना और इबादत करना दुशवार हो तो चाहिये कि वह ऐसे प्रदेश की तरफ़ हिजरत कर जाए जहाँ आसानी से इबादत कर सके, और दीन के कामों में कठिनाइयाँ पेश न आएं. यह आयत ग़रीब और कमज़ोर मुसलमानों के हक़ में उतरी . जिन्हें मक्का में रहकर ख़तरे और तकलीफ़ें थीं और अत्यन्त परेशानी में थे. उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो लाज़िम है, यहाँ रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ, वह लम्बा चौड़ा प्रदेश है और वहाँ अम्न है.
(८) और इस नश्वर संसार को छोड़ना ही है.
(९) सवाब और अज़ाब और कर्मों की जज़ा के लिये, तो ज़रूरी है कि हमारे दीन पर क़ायम रहो और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत करो.
(१०) जो अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी करे.
(११) सख़्तियों पर और किसी सख़्ती में अपने दीन को न छोड़ा. मुश्रिकों की तकलीफ़ सहन की हिजरत इख़्तियार करके दीन के लिये अपना वतन छोड़ना गवारा किया.
(१२) सारे कामों में .
(१३) मक्कए मुकर्रमा में मूमिनों को मुश्रिक लोगा रात दिन तरह तरह की यातनाएं देते रहते थे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे मदीनए तैय्यिबह की तरफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उनमें से कुछ ने कहा कि हम मदीना शरीफ़ कैसे चले जाएं, न वहाँ हमारा घर, न माल, कौन हमें खिलाएगा, कौन पिलाएगा. इसपर यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि बहुत से जानदार ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते, इसकी उन्हें क़ुव्वत नहीं और न वो अगले दिन के लिये कोई ज़ख़ीरा जमा रखते हैं जैसे कि पशु हैं, पक्षी हैं.
(१४) तो जहाँ होंगे, वहीं रोज़ी देगा. तो यह क्या पूछना कि हमें कौन खिलाएगा, कौन पिलाएगा . सारी सृष्टि को रिज़्क़ देने वाला अल्लाह है, कमज़ोर और ताक़तवर, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वही रोज़ी देता है.
(१५) तुम्हारे कथनों और तुम्हारे दिल की बातों को. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम अल्लाह तआला पर भरोसा करो जैसा चाहिये तो वह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी पक्षियों को देता है कि सुब्ह भूखे ख़ाली पेट उठते हैं, शाम को पेट भरे वापस होते हैं. (तिरमिज़ी).
(१६) यानी मक्के के काफ़िरों से.
(१७) और इस इक़रार के बावुजूद किस तरह अल्लाह तआला की तौहीद से इन्कार करते हैं.
(१८) इसके इक़रारी हैं.
(१९) कि इस इक़रार के बावुजूद तौहीद के इन्कारी हैं.

सूरए अन्कबूत - सातवाँ रूकू

(१) कि जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं, खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़कर चल देते हैं. यही हाल दुनिया का है. बहुत जल्दी इसका पतन होता है और मौत यहाँ से ऐसा ही अलग कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे अलग हो जाते हैं.
(२) कि वह ज़िन्दगी पायदार है, हमेशा की है. उसमें मौत नहीं. ज़िन्दगी कहलाने के लायक़ वही है.
(३) दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़त, तो नश्वर संसार को आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी पर प्राथमिकता न देते.

فَاِذَا رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ۚۙ وَ لِیَتَمَتَّعُوْا ٙ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ یُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ یَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۶۸﴾ وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۶۹﴾

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ (۳۰) (۸۴) اٰیَاتُهَا ۶۰ رُكُوْعَاتُهَا ۶

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الٓمّٓ ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِیْۤ اَدْنَى الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَیَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِیْ بِضْعِ سِنِیْنَ ؕ۬ لِلّٰهِ

फिर जब किश्ती में सवार होते हैं[४] अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक़ीदा (विश्वास) लाकर[५] फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है[६] जभी वो शिर्क करने लगते हैं[७] ﴿६५﴾ कि नाशुक्री करें हमारी दी हुई नेअमत की[८] और बरतें[९] तो अब जानना चाहते हैं[१०] ﴿६६﴾ और क्या उन्होंने[११] यह न देखा कि हमने[१२] हुर्मत (इज़्ज़त) वाली ज़मीन पनाह बनाई[१३] और उनके आस पास वाले लोग उचक लिये जाते हैं[१४] तो क्या बातिल (असत्य) पर यक़ीन लाते हैं[१५] और अल्लाह की दी हुई नेअमत से[१६] नाशुक्री करते हैं ﴿६७﴾ और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[१७] या हक़ (सत्य) को झुटलाए[१८] जब वह उसके पास आए, क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं[१९] ﴿६८﴾ और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे[२०] और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है[२१] ﴿६९﴾

३०- सूरए रूम

सूरए रूम मक्का में उतरी, इसमें ६० आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] अलिफ़ लाम मीम[२] ﴿१﴾ रूमी पराजित हुए ﴿२﴾ पास की ज़मीन में[३] और अपनी पराजय के बाद बहुत जल्द विजयी होंगे[४] ﴿३﴾ चन्द बरस में[५] हुक्म अल्लाह ही का है

(४) और डूबने का डर होता है तो अपने शिर्क और दुश्मनी के बावुजूद बुतों को नहीं पुकारते, बल्कि ...
(५) कि इस मुसीबत से निजात वही देगा.
(६) और डूबने का डर और परेशानी जाती रहती है, इत्मीनान हासिल होता है.
(७) जिहालत के ज़माने के लोग समन्दरी सफ़र करते वक़्त बुतों को साथ ले जाते थे. जब हवा मुख़ालिफ़ चलती और किश्ती ख़तरे में आती तो बुतों को पानी में फैंक देते और या रब, या रब, पुकारने लगते और अम्न पाने के बाद फिर उसी शिर्क की तरफ़ लौट जाते.
(८) यानी इस मुसीबत से निजात की.
(९) और इससे फ़ायदा उठाएं, मूमिन और नेक बन्दों के विपरीत कि वो अल्लाह तआला की नेअमतों के सच्चे दिल के साथ आभारी रहते हैं और जब ऐसी सूरत पेश आती है और अल्लाह तआला उससे रिहाई देता है तो उसकी फ़रमाँबरदारी में और ज़्यादा लीन हो जाते हैं. मगर काफ़िरों का हाल इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है.
(१०) नतीजा अपने चरित्र अपने व्यवहार का.
(११) यानी मक्के वालों ने.
(१२) उनके शहर मक्कए मुकर्रमा की.
(१३) उनके लिये जो उसमें हों.
(१४) क़त्ल किये जाते हैं, गिरफ़्तार किये जाते हैं.
(१५) यानी बुतों पर.
(१६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से और इस्लाम से कुफ़्र करके.
(१७) उसके लिये शरीक ठहराए.
(१८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और क़ुरआन को न माने.
(१९) बेशक सारे काफ़िरों का टिकाना जहन्नम ही है.
(२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मानी ये हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे. हज़रत जुनैद ने फ़रमाया जो तौबह में कोशिश करेंगे, उन्हें सच्चाई की राह देंगे. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया

الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۙ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ
اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ

आगे और पीछे(६) और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे﴾४﴿ अल्लाह की मदद से(७) मदद करता है जिसकी चाहे, और वही है इज़्ज़त वाला मेहरबान﴾५﴿ अल्लाह का वादा(८) अल्लाह अपना वादा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत लोग नहीं जानते(९)﴾६﴿ जानते हैं आँखों के सामने की दुनियावी (संसारिक) ज़िन्दगी(१०) और वो आख़िरत से पूरे बेख़बर हैं﴾७﴿ क्या उन्होंने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने पैदा न किये आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है मगर सच्चा(११) और एक निश्चित मीआद से,(१२) और बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं(१३)﴾८﴿ और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कि उनसे अगलों का अंजाम कैसा हुआ(१४) वो उनसे ज़्यादा ज़ोरआवर (शक्तिशाली) थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन(१५) की आबादी से ज़्यादा और उनके रसूल उनके पास रौशन निशानियां लाए(१६) तो अल्लाह की शान न थी कि उनपर ज़ुल्म करता(१७) हाँ वो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे(१८)﴾९﴿ फिर

जो इल्म की तलब में कोशिश करेंगे, उन्हें हम अमल की राह देंगे. हज़रत सअद बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, जो सुन्नत क़ायम करने में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे.

(२१) उनकी मदद और नुसरत फ़रमाता है.

३० - सूरए रूम - पहला रूकू

(१) सूरए रूम मक्के में उतरी. इसमें छ रूकू, साठ आयतें, आठ सौ उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पाँच सौ चौंतीस अक्षर हैं.

(२) फ़ारस और रूम के बीच लड़ाइ थी और चूंकि फ़ारस वाले आग के पुजारी मजूसी थे इसलिये अरब के मुश्रिक उनका ग़लबा पसन्द करते थे. रूम के लोग किताब वाले थे इस लिये मुसलमानों को उनका ग़लबा अच्छा मालूम होता था. फ़ारस के बादशाह ख़ुसरौ पर्वेज़ ने रूम वालों पर लश्कर भेजा और रूम के क़ैसर ने भी लश्कर भेजा. ये लश्कर शाम प्रदेश के क़रीब आमने सामने हुए. फ़ारस वाले ग़ालिब हुए. मुसलमानों को यह ख़बर अच्छी न लगी. मक्का के काफ़िर इससे ख़ुश होकर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी किताब वाले और ईसाई भी किताब वाले. और हम भी बेपढ़े लिखे और फ़ारस वाले भी बेपढ़े लिखे. हमारे भाई फ़ारस वाले तुम्हारे भाई रूमियों पर ग़ालिब हुए. हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर विजयी होंगे. इसपर यह आयतें उतरीं और उनमें ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आजाएंगे. ये आयतें सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने मक्के के काफ़िरों में जाकर ऐलान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम रूमी फ़ारस वालों पर ज़रूर ग़लबा पाएंगे. ऐ मक्का वालो तुम इस वक़्त के जंग के नतीजे से ख़ुश मत हो . हमें हमारे नबी मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़बर दी है. उबई बिन ख़लफ़ काफ़िर आपके सामने खड़ा हो गया और आपके उसके बीच सौ सौ ऊंट की शर्त हो गई. अगर नौ साल में फ़ारस वाले ग़ालिब आजाएं तो सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो उबई को सौ ऊंट देंगे और अगर रूमी विजयी हों तो उबई आपको सौ ऊंट देगा. उस वक़्त तक जुए की हुर्मत नहीं उतरी थी. हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहे अलैहिमा के नज़दीक हर्बी काफ़िरों के साथ इस तरह के मामलात जायज़ हैं और यही वाक़िआ उनकी दलील है. सात साल के बाद इस ख़बर की सच्चाई ज़ाहिर हुई और हुदैबियह की लड़ाई में या बद्र के दिन रूम वाले फ़ारस वालों पर ग़ालिब आए. रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इराक़ में रूमियह नामी एक शहर की नींव रखी. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने शर्त के ऊंट उबई की औलाद से वुसूल किये क्योंकि इस बीच वह मर चुका था. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि शर्त के माल को सदक़ा कर दें. यह ग़ैबी ख़बर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत की सच्चाई और क़ुरआने अज़ीम के कलामे इलाही होने

الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰۤى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
كَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٢ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا
وَكَانُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٣ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝١٤ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝١٥ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝١٦ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ
حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝١٧ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝١٨ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١٩ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

जिन्होंने हद भर की बुराई की उनका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह की आयतें झुटलाने लगे और उनके साथ ठट्ठा करते﴾१०﴿

दूसरा रूकू

अल्लाह पहले बनाता है फिर दोबारा बनाएगा[१] फिर उसकी तरफ़ फिरोगे[२]﴾११﴿ और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी मुजरिमों की आस टूट जाएगी[३]﴾१२﴿ और उनके शरीक[४] उनके सिफ़ारिशी न होंगे और वो अपने शरीकों से इनकारी हो जाएंगे﴾१३﴿ और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे[५]﴾१४﴿ तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की कियारी में उनकी ख़ातिरदारी होगी[६]﴾१५﴿ और वो जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया[७] वो अज़ाब में ला धरे (डाल दिये) जाएंगे[८]﴾१६﴿ तो अल्लाह की पाकी बोलो[९] जब शाम करो[१०] और जब सुब्ह हो[११]﴾१७﴿ और उसी की तारीफ़ है आसमानों और ज़मीन में[१२] और कुछ दिन रहे[१३] और जब तुम्हें दोपहर हो[१४]﴾१८﴿ वह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से [१५] और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से[१६] और ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे[१७] और यूंही तुम निकाले जाओगे[१८]﴾१९﴿

की रौशन दलील है. (ख़ाज़िन व मदारिक)

(३) यानी शाम की उस धरती में जो फ़ारस के समीपतर है.

(४) फ़ारस वालों पर.

(५) जिन की हद नौ बरस है.

(६) यानी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उसके बाद भी. मुराद यह है कि पहले फ़ारस वालों का विजयी होना और दोबारा रूम वालों का, यह सब अल्लाह के हुक्म और इरादे और उसेक लिखे से है.

(७) कि उसने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर विजय दी और उसी दिन बद्र में मुसलमानों को मुश्रिकों पर. और मुसलमानों की सच्चाई और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआन शरीफ़ की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई.

(८) जो उसने फ़रमाया था कि रूमी चन्द साल में फिर ग़ालिब होंगे.

(९) यानी बेइल्म हैं .

(१०) व्यापार, खेती बाड़ी, निर्माण वग़ैरह दुनियावी धन्धे . इसमें इशारा है कि दुनिया की भी हक़ीक़त नहीं जानते, उसका भी ज़ाहिर ही जानते हैं.

(११) यानी आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है, अल्लाह तआला ने उनको बिना कारण और यूंही नहीं बनाया, उनकी पैदाइश में बेशुमार हिकमतें हैं.

(१२) यानी हमेशा के लिये नहीं बनाया, बल्कि एक मुद्दत निर्धारित कर दी है. जब वह मुद्दत पूरी हो जाएगी तो ये फ़ना हो जाएंगे और वह मुद्दत क़यामत क़ायम होने का वक़्त है.

(१३) यानी मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर ईमान नहीं लाते.

(१४) कि रसूलों को झुटलाने के कारण हलाक किये गए, उनके उजड़े हुए शहर और उनकी बर्बादी के निशान देखने वालों के लिये इब्रत हासिल करने की चीज़ हैं.

(१५) मक्का वाले.

(१६) तो वो उनपर ईमान न लाए. फिर अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक किया.

(१७) उनके अधिकार कम करके और उन्हें बिना जुर्म के हलाक करके.

(१८) रसूलों को झुटलाकर अपने आप को अज़ाब का मुस्तहिक़ बनाकर.

तीसरा रूकू

और उसकी निशानियों से है यह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[१] फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए﴾२०﴿ और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत और रहमत रखी[२] बेशक उसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों के लिये﴾२१﴿ और उसकी निशानियों से है आसमानों और ज़मीन की पैदायश और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का अन्तर[३] बेशक इसमें निशानियाँ हैं जानने वालों के लिये﴾२२﴿ और उसकी निशानियों में हैं रात और दिन में तुम्हारा सोना[४] और उसका फ़ज़्ल तलाश करना[५] बेशक इसमें निशानियाँ है सुनने वालों के लिये[६]﴾२३﴿ और उसकी निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती[७] और उम्मीद दिलाती[८] और आसमान से पानी उतारता है तो उससे ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे, बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिये[९]﴾२४﴿ और उसकी निशानियों से है कि उसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं[१०] फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा(पुकार) फ़रमाएगा[११] जभी तुम निकल पड़ोगे[१२]﴾२५﴿ और उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं, सब

اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا
لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ
الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ
الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي

सूरए रूम - दूसरा रूकू

(१) यानी मौत के बाद ज़िन्दा करके.

(२) तो कर्मों की जज़ा देगा.

(३) और किसी नफ़ा और भलाई की उम्मीद बाक़ी न रहेगी. कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि उनका कलाम टूट जाएगा और वो चुप रह जाएंगे क्योंकि उनके पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज्जत न होगी. कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि वो रूस्वा होंगे.

(४) यानी बुत, जिन्हें वो पूजते थे.

(५) मूमिन और काफ़िर फिर भी जमा न होंगे.

(६) यानी जन्नत में उनका सत्कार किया जाएगा जिससे वो ख़ुश होंगे. यह ख़ातिरदारी जन्नती नेअमतों के साथ होगी. एक क़ौल यह भी है कि इससे मुराद समाअ है कि उन्हें ख़ुशियों भरे गीत सुनाए जाएंगे जो अल्लाह तआला की तस्बीह पर आधारित होंगे.

(७) मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब किताब के इन्कारी हुए.

(८) न उस अज़ाब में कटौती हो न उस से कभी निकलें.

(९) पाकी बोलने से या तो अल्लाह तआला की तस्बीह और स्तुति मुराद है, और इसकी हदीसों में बहुत फ़ज़ीलतें आई ह. या इससे नमाज़ मुराद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से पूछा गया कि क्या पाँचों वक़्तों की नमाज़ों का बयान क़ुरआन शरीफ़ में है. फ़रमाया हाँ. और ये आयतें पढ़ीं और फ़रमाया कि इन में पाँचों नमाज़ें और उनके औक़ात बयान किये गए हैं.

(१०) इसमें मग़रिब और इशा की नमाज़ें आ गईं.

(११) यह फ़ज्र की नमाज़ हुई.

(१२) यानी आसमान और ज़मीन वालों पर उसकी हम्द लाज़िम है.

(१३) यानी तस्बीह करो कुछ दिन रहे. यह नमाज़े अस्र हुई.

(१४) यह ज़ोहर की नमाज़ हुई. नमाज़ के लिये ये पाँच वक़्त निर्धारित फ़रमाए गए, इसलिये कि सबसे बेहतर काम वह है जो हमेशा होता है. और इन्सान यह क़ुदरत नहीं रखता कि अपने सारे औक़ात सारा समय नमाज़ में ख़र्च करे क्योंकि उसके साथ खाने पीने वग़ैरह की ज़रूरतें हैं तो अल्लाह तआला ने बन्दे पर इबादत में कटौती फ़रमाई और दिन के शुरू, मध्य और अंत में और रात के शुरू और अन्त में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि उस समय में नमाज़ में लगे रहना हमेशा की इबादत के हुक्म में हो. (मदारिक व ख़ाज़िन)

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ
مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ
فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ
كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلِ اتَّبَعَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ
اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ
عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ
وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾

منزل ٥

उसके हुक्म के नीचे हैं(२६) और वही है कि पहले बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा[१३] और यह तुम्हारी समझ में उसपर ज़्यादा आसान होना चाहिये[१४] और उसी के लिये है सबसे बरतर शान आसमानों और ज़मीन में[१५] और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है(२७)

चौथा रूकू

तुम्हारे लिये[१] एक कहावत बयान फ़रमाता है ख़ुद तुम्हारे अपने हाल से[२] क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल ग़ुलामों में से कुछ शरीक हैं[३] उसमें जो हमने तुम्हें रोज़ी दी[४] तो तुम सब उसमें बराबर हो[५] तुम उनसे डरो[६] जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो[७] हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अक़्ल वालों के लिये(२८) बल्कि ज़ालिम[८] अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हो लिये बेजाने[९] तो उसे कौन हिदायत करे जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया[१०] और उनका कोई मददगार नहीं[११](२९) तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इताअत(फ़रमाँबरदारी) के लिये एक अकेले उसी के होकर[१२] अल्लाह की डाली हुई बिना(नींव) जिस पर लोगों को पैदा किया[१३] अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना[१४] यही सीधा दीन है, मगर बहुत लोग नहीं जानते[१५](३०) उसकी तरफ़ रूजू(तवज्जह) लाते हुए[१६] और उससे डरो और नमाज़ क़ायम रखो और मुश्रिकों से न हो(३१)

(१५) जैसे कि पक्षी को अन्डे से, और इन्सान को नुत्फ़े से, और मूमिन को काफ़िर से.
(१६) जैसे कि अन्डे को पक्षी से, नुत्फ़े को इन्सान से, काफ़िर को मूमिन से.
(१७) यानी सूख जाने के बाद मेंह बरसाकर सब्ज़ा उगा कर.
(१८) क़ब्रों से उठाए जाने और हिसाब के लिये.

सूरए रूम - तीसरा रूकू

(१) तुम्हारे जद्दे आला और तुम्हारी अस्ल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.
(२) कि बग़ैर किसी पहली पहचान और बग़ैर किसी रिश्तेदारी के एक को दूसरे के साथ महब्बत और हमदर्दी है.
(३) ज़बानों की भिन्नता तो यह है कि कोई अरबी बोलता है, कोई अजमी, कोई और कुछ. और रंगतों की भिन्नता यह है कि कोई गोरा है कोई काला और कोई गेंहू रंग का . और यह भिन्नता बड़ी अजीब है क्योंकि सब एक अस्ल से हैं और सब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं.
(४) जिससे थकन दूर होती है और राहत हासिल होती है.
(५) फ़ज़्ल तलाश करने से रोज़ी की खोज मुराद है.
(६) जो होश के कानों से सुने.
(७) गिरने और नुक़सान पहुंचने से.
(८) बारिश की.
(९) जो सोचें और अल्लाह की क़ुदरत पर ग़ौर करें.
(१०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वो दोनों बिना किसी सहारे के क़ायम हैं.
(११) यानी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा. इस तरह कि हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम क़ब्र वालों के उठने के लिये सूर फूंकेंगे तो अगलों और पिछलों में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे . चुनांन्चे इसके बाद ही इरशाद फ़रमाता है.
(१२) यानी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर.

(१३) हलाक होने के बाद.
(१४) क्योंकि इन्सानों का अनुभव और उनकी राय यही बताती है कि किसी चीज़ को दुबारा पैदा करना उसके पहली बार पैदा करने से आसान होता है. और अल्लाह तआला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं है.
(१५) कि उस जैसा कोई नहीं. वह सच्चा मअबूद है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.

सूरए रूम - चौथा रूकू

(१) ऐ मुश्रिको !
(२) वह कहावत यह है.
(३) यानी क्या तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारे साझी हैं.
(४) माल-मत्ता वग़ैरह.
(५) यानी मालिक और सेवक को उस माल-मत्ता में बराबर का अधिकार हो ऐसा कि ...
(६) अपने माल-मत्ता म, बग़ैर उन ग़ुलामों की इजाज़त के ख़र्च करने से.
(७) मक़सद यह है कि तुम किसी तरह अपने ग़ुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो कितना ज़ुल्म है कि अल्लाह तआला के ग़ुलामों को उसका शरीक क़रार दो . ऐ मुश्रिको ! तुम अल्लाह तआला के सिवा जिन्हें अपना मअबूद ठहराते हो वो उसके बन्दे और ममलूक हैं.
(८) जिन्हों ने शिर्क करके अपनी जानों पर बड़ा भारी ज़ुल्म किया है.
(९) जिहालत से.
(१०) यानी कोई उसका हिदायत करने वाला नहीं.
(११) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.
(१२) यानी सच्चे दिल से अल्लाह के दीन पर दृढ़ता के साथ क़ायम रहो.
(१३) फ़ितरत से मुराद दीने इस्लाम है. मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने सृष्टि को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हर बच्चा फ़ितरत पर पैदा किया जाता है यानी उस एहद पर जो "लस्तो बिरब्बिकुम" यानी क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ फ़रमाकर लिया गया है. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी,ईसाई या मजूसी बना लेते हैं. इस आयत में हुक्म दिया गया कि अल्लाह के दीन पर क़ायम रहो जिसपर अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया है.
(१४) यानी अल्लाह के दीन पर क़ायम रहना.
(१५) उसकी हक़ीक़त को, तो इस दीन पर क़ायम रहो.
(१६) यानी अल्लाह तआला की तरफ़ तौबह और फ़रमाँबरदारी के साथ.
(१७) मअबूद के बारे में मतभेद करके.

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا
رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً
إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا
آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ أَنْزَلْنَا
عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝
وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ فَآتِ
ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ
خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ رِبًا لِيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ

उनमें से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया[१७] और हो गए गिरोह गिरोह, हर गिरोह जो उसके पास है उसी पर ख़ुश है[१८]﴿३२﴾ और जब लोगों को तकलीफ़ पहुंचती है[१९] तो अपने रब को पुकारते हैं उसकी तरफ़ रूजू लाते हुए फिर जब वह उन्हें अपने पास से रेहमत का मज़ा देता है[२०] जभी उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है﴿३३﴾ कि हमारे दिये की नाशुक्री करें तो वरत लो[२१] अब क़रीब जानना चाहते हो[२२]﴿३४﴾ या हमने उनपर कोई सनद उतारी[२३] कि वह उन्हें हमारे शरीक बता रही है[२४]﴿३५﴾ और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा देते हैं[२५] उसपर ख़ुश हो जाते हैं[२६] और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे[२७] बदला उसका जो उनके हाथों ने भेजा[२८] जभी वो नाऊम्मीद हो जाते हैं[२९]﴿३६﴾ और क्या उन्होंने न देखा कि अल्लाह रिज़्क़ वसीअ फ़रमाता है जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे, बेशक इसमें निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये﴿३७﴾ तो रिश्तेदार को उसका हक़ दो[३०] और मिस्कीन(दरिद्र) और मुसाफ़िर को[३१] यह बेहतर है उनके लिये जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं[३२] और उन्हीं का काम बना﴿३८﴾ और तुम जो चीज़ ज़्यादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें

(१८) और अपने बातिल को सच्चाई गुमान करता है.
(१९) बीमारी की या दुष्काल की या इसके सिवा और कोई.
(२०) उस तकलीफ़ से छुटकारा दिलाता है और राहत अता फ़रमाता है.
(२१) दुनयावी नेअमतों को थोड़े दिन.
(२२) कि आख़िरत में तुम्हारा क्या हाल होता है और इस दुनिया के चाहने का नतीजा क्या निकलने वाला है.
(२३) कोई हुज्जत या कोई किताब.
(२४) और शिर्क करने का हुक्म देती है. ऐसा नहीं है. न कोई हुज्जत है न कोई सनद (प्रमाण).
(२५) यानी तन्दुरूस्ती और रिज़्क़ की ज़ियादती का.
(२६) और इतराते हैं.
(२७) दुष्काल या डर या और कोई बला.
(२८) यानी गुमराहियों और उनके गुनाहों का.
(२९) अल्लाह तआला की रहमत से और यह बात मूमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्योंकि मूमिन का हाल यह है कि जब उसे नेअमत मिलती है तो शुक्र-गुज़ारी करता है और जब सख़्ती होती है तो अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहता है.
(३०) उसके साथ सुलूक और एहसान करो.
(३१) उनके हक़ दो, सदक़ा देकर और मेहमान नवाज़ी करके. इस आयत से महारिम के नफ़क़े का वुजूब साबित होता है. (मदारिक)
(३२) और अल्लाह तआला से सवाब के तालिब हैं.

तो वह अल्लाह के यहाँ न बढ़ेगी(३३) और जो तुम ख़ैरात दो अल्लाह की रज़ा चाहते हुए(३४) तो उन्हीं के दूने हैं(३५)﴿३९﴾ अल्लाह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा(३६) क्या तुम्हारे शरीकों में(३७) भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे(३८) पाकी और बरतरी है उसे उनके शिर्क से﴿४०﴾

पाँचवां रूकू

चमकी ख़राबी ख़ुश्की और तरी में(१) उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई ताकि उन्हें कुछ कौतुकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वो बाज़ आएं(२)﴿४१﴾ तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा अंजाम हुआ अगलों का, उनमें बहुत मुश्रिक थे(३)﴿४२﴾ तो अपना मुंह सीधा कर इबादत के लिये(४) पहले इसके कि वह दिन आए जिसे अल्लाह की तरफ़ से टलना नहीं(५) उस दिन अलग फट जाएंगे(६)﴿४३﴾ जो कुफ़्र करे उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो अच्छा काम करें वो अपने ही लिये तैयारी कर रहे हैं(७) ﴿४४﴾ ताकि सिला दे(८) उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अपने फ़ज़्ल से, बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता﴿४५﴾ और उसकी निशानियों से है कि

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ
تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ
الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ
هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ
شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ
بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ
مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ
كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

(३३) लोगों का तरीक़ा था कि वो दोस्त अहबाब और पहचान वालों को या और किसी शख़्स को इस नियत से हदिया देते थे कि वह उन्हें उससे ज़्यादा देगा. यह जायज़ तो है लेकिन इसपर सवाब न मिलेगा और इसमें बरकत न होगी क्योंकि यह अमल केवल अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिये नहीं हुआ.

(३४) न उससे बदला लेना उद्देश्य हो न ज़ाहिरी दिखावा.

(३५) उनका अज्र और सवाब ज़्यादा होगा. एक नेकी का दस गुना ज़्यादा दिया जाएगा.

(३६) पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना ये सब काम अल्लाह ही के हैं.

(३७) यानी बुतों में जिन्हें तुम अल्लाह तआला का शरीक ठहराते हो उन में ...

(३८) उसके जवाब से . मुश्रिक आजिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मजाल न हुई, तो फ़रमाता है.

सूरए रूम - पाँचवां रूकू

(१) शिर्क और गुमराही के कारण दुष्काल, और कम वर्षा और पैदावार में कमी और खेतियों की ख़राबी और व्यापार में घाटा और आग लगने की घटनाओं में वृध्दि, और आदमियों और जानवरों में मौत और डूबना और हर चीज़ में से बरकत का उठ जाना.

(२) कुफ़्र और गुनाहों से, और तौबह करें.

(३) अपने शिर्क के कारण हलाक किये गए. उनकी मंज़िलें और मकान वीरान पड़े हैं उन्हें देखकर सबक़ पकड़ो.

(४) यानी दीने इस्लाम पर मज़बूती के साथ क़ायम रहो.

(५) यानी क़यामत के दिन.

(६) यानी हिसाब के बाद अलग अलग हो जाएंगे. जन्नती जन्नत की तरफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़.

(७) कि जन्नत के दर्जों में राहत और आराम पाएं.

(८) और सवाब अता फ़रमाए अल्लाह तआला.

إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝ وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَن يُرْسِلَ
ٱلرِّيَاحَ مُبَشِّرَٰتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَلِتَجْرِىَ
ٱلْفُلْكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَٱنتَقَمْنَا مِنَ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ ۖ
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ ٱللَّهُ ٱلَّذِى
يُرْسِلُ ٱلرِّيَٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُۥ فِى ٱلسَّمَآءِ كَيْفَ
يَشَآءُ وَيَجْعَلُهُۥ كِسَفًا فَتَرَى ٱلْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ
خِلَٰلِهِۦ ۖ فَإِذَآ أَصَابَ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦٓ
إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلِ
أَن يُنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قَبْلِهِۦ لَمُبْلِسِينَ ۝ فَٱنظُرْ
إِلَىٰٓ ءَاثَٰرِ رَحْمَتِ ٱللَّهِ كَيْفَ يُحْىِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَآ ۚ
إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝

हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी सुनाती[९] और इसलिये कि तुम्हें अपनी रहमत का ज़ायक़ा दे और इसलिये कि किश्ती[१०] उसके हुक्म से चले और इस लिये कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो[११] और इसलिये कि तुम हक़ मानो[१२]﴿४६﴾ और बेशक हमने पहले कितने रसूल उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे तो वो उनके पास खुली निशानियाँ लाए[१३] फिर हमने मुजरिमों से बदला लिया[१४] और हमारे करम के ज़िम्मे पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना[१५]﴿४७﴾ अल्लाह है कि भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आसमान में जैसा चाहे[१६] और उसे पारा पारा करता है[१७] तो तू देखे कि उसके बीच में से मेंह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है[१८] अपने बन्दों में जिसकी तरफ़ चाहे जभी वो ख़ुशियाँ मनाते हैं﴿४८﴾ अगरचे उसके उतारने से पहले आस तोड़े हुए थे﴿४९﴾ तो अल्लाह की रहमत के असर देखो[१९] किस तरह ज़मीन को जिलाता है उसके मरे पीछे[२०] बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वह सब कुछ कर सकता है﴿५०﴾

---

(९) बारिश और पैदावार की बुहतात का.
(१०) दरिया में उन हवाओं से.
(११) यानी समुद्री तिजारतों से रोज़ी हासिल करो.
(१२) इन नेअमतों का और अल्लाह की तौहीद क़ुबूल करो.
(१३) जो उन रसूलों की रिसालत के सच्चे होने पर खुले प्रमाण थे. तो उस कौम में से कुछ ईमान लाए, कुछ ने कुफ़्र किया.
(१४) कि दुनिया में उन्हें अज़ाब करके हलाक कर दिया.
(१५) यानी उन्हें निजात देना और काफ़िरों को हलाक करना. इसमें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आख़िरत की कामयाबी और दुश्मनों पर जीत की ख़ुशख़बरी दी गई है. तिरमिज़ी की हदीस में है जो मुसलमान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआला उसे रोज़े क़यामत जहन्नम की आग से बचाएगा. यह फ़रमाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह आयत पढ़ी *"काना हक़्क़न अलैना नसरूल मूमिनीन"* और हमारे करम के ज़िम्मे पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना.
(१६) थोड़ा या बहुत.
(१७) यानी कभी तो अल्लाह तआला घटा टोप बादल भेज देता है जिससे आसमान घिरा हुआ मालूम होता है और कभी अलग अलग टुकड़े.
(१८) यानी मेंह को.
(१९) यानी बारिश के असर जो उसपर होते हैं कि बारिश ज़मीन की प्यास बुझाती है, उससे सब्ज़ा हरियाली निकालती है, हरियाली से फ्ल पैदा होते हैं, फ्लों में ग़िज़ाइयत होती है और उससे जानदारों के शरीर को मदद पहुंचती है. और यह देखो कि अल्लाह तआला ये हरियाली और फ्ल पैदा करके ...
(२०) और सूखे मैदान को हरा भरा कर देता है, जिसकी यह क़ुदरत है ...

وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ
يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ
عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا
فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ
ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ
بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ
الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ
الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا
يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ
لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ؗ فَهٰذَا يَوْمُ
الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ
لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

और अगर हम कोई हवा भेजें(२१) जिससे वो खेती को ज़र्द देखें(२२) तो ज़रूर इसके बाद नाशुक्री करने लगें(२३)﴿५१﴾ इसलिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते(२४) और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वो पीठ देकर फिरें(२५)﴿५२﴾ और न तुम अंधों को(२६) उनकी गुमराही से राह पर लाओ, तो तुम उसी को सुनाते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वो गर्दन रखे हुए हैं﴿५३﴾

छटा रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हें शुरू में कमज़ोर बनाया(१) फिर तुम्हें नातवानी से ताक़त बख़्शी(२) फिर क़ुव्वत के बाद(३) कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, बनाता है जो चाहे(४) और वही इल्म व क़ुदरत वाला है﴿५४﴾ और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी(५) वो ऐसे ही औंधे जाते थे(६)﴿५५﴾ और बोले वो जिन को इल्म और ईमान मिला(७) बेशक तुम रहे अल्लाह के लिखे हुए में(८) उठने के दिन तक, तो यह है वह दिन उठने का(९) लेकिन तुम न जानते थे(१०)﴿५६﴾ तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उनकी मअज़िरत और न उनसे कोई राज़ी करना मांगें(११)﴿५७﴾

(२१) ऐसी जो खेती और हरियाली के लिये हानिकारक हो.
(२२) बाद इसके कि वह हरी भरी तरो ताज़ा थी.
(२३) यानी खेती ज़र्द होने के बाद नाशुक्री करने लगें और पहली नेअमत से भी मुकर जाएं. मानी ये हैं कि इन लोगों की हालत यह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है, रिज़्क़ मिलता है, ख़ुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है, खेती ख़राब होती है तो पहली नेअमतों से भी मुकर जाते हैं. चाहिये तो यह था कि अल्लाह तआला पर भरोसा करते और जब नेअमत पहुंचती, शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ व इस्तिग़फ़ार में लग जाते. इसके बाद अल्लाह तआला अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि आप इन लोगों की मेहरूमी और इनके ईमान न लाने पर रंज न करें.
(२४) यानी जिनके दिल मर चुके और उनसे किसी तरह सच्चाई क़ुबूल करने की आशा नहीं रही.
(२५) यानी हक़ के सुनने से बहरे हों और बेहरे भी ऐसे कि पीठ देकर फिर गए. उनसे किसी तरह समझने की उम्मीद नहीं.
(२६) यहाँ अन्धों से भी दिल के अंधे मुराद हैं. इस आयत से कुछ लोगों ने मुर्दों के न सुनने को साबित किया है मगर यह तर्क सही नहीं है क्योंकि यहाँ मुर्दों से मुराद काफ़िर हैं जो दुनियावी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर नसीहत से फ़ायदा नहीं उठाते इसलिये उन्हें मुर्दों से मिसाल दी गई है जो कर्मभूमि से गुज़र गए और वो नसीहत से लाभ नहीं उठा सकते. इसलिये आयत से मुर्दों के न सुनने पर सनद लाना दुरूस्त नहीं है और बहुत सी हदीसों में मुर्दों का सुनना और अपनी क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है.

सूरए रूम - छटा रूकू

(१) इसमें इन्सान के हालात की तरफ़ इशारा है कि पहले वह माँ के पेट में गोश्त का टुकड़ा था फिर बच्चा होकर पैदा हुआ, दूध पीकर बड़ा हुआ. ये हालात बहुत कमज़ोरी के हैं.
(२) यानी बचपन की कमज़ोरी के बाद जवानी की क़ुव्वत अता फ़रमाई.
(३) यानी जवानी की क़ुव्वत के बाद.
(४) कमज़ोरी और क़ुव्वत और जवानी और बुढ़ापा, ये सब अल्लाह के पैदा किये से हैं.
(५) यानी आख़िरत को देखकर उसको दुनिया या क़ब्र में रहने की मुद्दत बहुत थोड़ी मालूम होती होगी इसलिये वो उस मुद्दत को एक पल से तअबीर करेंगे.
(६) यानी ऐसे ही दुनिया में ग़लत और बातिल बातों पर जमते और सच्चाई से फिरते थे और दोबारा उठाए जाने का इन्कार करते

और बेशक हमने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई(१२) और अगर तुम उनके पास कोई निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर असत्य पर(५८) यूंही मोहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर(१३)(५९) तो सब्र करो(१४) बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है(१५) और तुम्हें सुबुक (नीचा दिखाना) न करदें वो जो यक़ीन नहीं रखते(१६)(६०)

३१- सूरए लुक़मान

सूरए लुक़मान मक्का में उतरी, इसमें ३४ आयतें, ४ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
अलिफ़ लाम मीम(१) यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं(२) हिदायत और रहमत हैं नेकों के लिये(३) वो जो नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और आख़िरत पर यक़ीन लाएं(४) वही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना(५) और कुछ लोग खेल की बातें ख़रीदते हैं(२) कि अल्लाह की राह से बहका दें बे समझे(३)

थे जैसे कि अब क़ब्र या दुनिया में ठहरने की मुद्दत को क़सम खाकर एक घड़ी बता रहे हैं. उनकी इस क़सम से अल्लाह तआला उन्हें सारे मेहशर वालों के सामने रूस्वा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसी आम भीड़ में क़सम खाकर ऐसा खुला झूट बोल रहे हैं.

(७) यानी नबी और फ़रिश्ते और ईमान वाले उनका रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो.

(८) यानी जो अल्लाह तआला ने अपने इल्म में लौहे मेहफ़ूज़ में लिखा उसीके अनुसार तुम क़ब्रों में रहे.

(९) जिसके तुम दुनिया में इन्कारी थे.

(१०) दुनिया में, कि वह हक़ है, ज़रूर वाक़े होगा. अब तुमने जाना कि वह दिन आगया और उसका आना हक़ था तो इस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़ा न देगा जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(११) यानी उससे यह कहा जाए कि तौबह करके अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुनिया में उनसे तौबह तलब की जाती थी.

(१२) ताकि उन्हें तम्बीह हो और डराना अपनी चरम-सीमा को पहुंचे. लेकिन उन्होंने अपने दिल की कालिख़ और सख़्त दिली के कारण कुछ भी फ़ायदा न उठाया बल्कि जब कोई क़ुरआनी आयत आई, उसको झुटलाया और उसका इन्कार किया.

(१३) जिन्हें जानता है कि वो गुमराही इख़्तियार करेंगे और हक़ वालों को बातिल पर बताएंगे.

(१४) उनकी यातनाओं और दुश्मनी पर.

(१५) आपकी मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को सारे दीनों पर ग़ालिब करने का.

(१६) यानी ये लोग जिन्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है और उठाए जाने और हिसाब के इन्कारी हैं और उनकी नालायक़ हरकतें आपके लिये ग़ुस्से और दुख का कारण न हों और ऐसा न हो कि आप उनके हक़ में अज़ाब की दुआ करने में जल्दी फ़रमाएं.

३१ - सूरए लुक़मान - पहला रूकू

(१) सूरए लुक़मान मक्के में उतरी, सिवाए दो आयतों के जो "वलौ अन्ना मा फ़िल अर्दे" से शुरू होती हैं. इस सूरत में चार रूकू, चौंतीस आयतें, पाँच सौ अड़तालीस कलिमे और दो हज़ार एक सौ दस अक्षर हैं.

(२) लहव यानी खेल हर उस बातिल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़लत में डाले, कहानियाँ अफ़साने इसी में दाख़िल हैं. यह आयत नज़र बिन हारिस बिन कल्दह के हक़ में उतरी जो व्यापार के सिलसिले में दूसरे मुल्कों में सफ़र किया करता था, उसने अजमियों की किताबें ख़रीदीं जिनमें क़िस्से कहानियाँ थीं. वह क़ुरैश को सुनाता और कहता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) तुम्हें आद और समूद के क़िस्से सुनाते हैं और मैं रूस्तम और इस्फ़न्दयार और फ़ारस के बादशाहों की कहानियाँ सुनाता हूँ. कुछ लोग उन कहानियों में लीन

وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٨ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝١٠ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝١١ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝١٢ وَاِذْ

منزل ٥

और उसे हंसी बनालें, उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब है﴿६﴾ और जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो घमण्ड करता हुआ फिरे[४] जैसे उन्हें सुना ही नहीं जैसे उसके कानों में टैंट (रुई का फाया)है[५] तो उसे दर्दनाक अज़ाब का मुज़दा(ख़ुशख़बरी) दो﴿७﴾ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये चैन के बाग़ हैं,﴿८﴾ हमेशा उनमें रहेंगे, अल्लाह का वादा है सच्चा, और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है﴿९﴾ उसने आसमान बनाए बे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएं[६] और ज़मीन में डाले लंगर[७] कि तुम्हें लेकर न कांपें और उसमें हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हमने आसमान से पानी उतारा[८] तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया[९]﴿१०﴾ यह तो अल्लाह का बनाया हुआ है[१०] मुझे वह दिखाओ[११] जो इसके सिवा औरों ने बनाया[१२] बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं﴿११﴾

दूसरा रूकू

और बेशक हमने लुक़मान को हिकमत(बोध) अता फ़रमाई[१] कि अल्लाह का शुक्र कर[२] और जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है[३] और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह है सब ख़ूबियों सराहा﴿१२﴾ और याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे से कहा और वह नसीहत करता

हो गए और क़ुरआने पाक सुनने से रह गए. इसपर यह आयत उतरी.

(३) यानी जिहालत के तौर पर लोगों को क़ुरआने पाक सुनने और इस्लाम में दाख़िल होने से रोकें और अल्लाह की आयतों के साथ ठट्ठा करें.

(४) और उनकी तरफ़ तवज्जोह न करे.

(५) और वह बेहरा है.

(६) यानी कोई सुतून नहीं है, तुम्हारी नज़र ख़ुद इसकी गवाह है.

(७) ऊंचे पहाड़ों के.

(८) अपने फ़ज़्ल से बारिश की.

(९) उमदा क़िस्मों की वनस्पति, पेड़ पौधे पैदा किये.

(१०) जो तुम देख रहे हो.

(११) ऐ मुश्रिको !

(१२) यानी बुतों ने, जिन्हें तुम इबादत के लायक़ क़रार देते हो.

सूरए लुक़मान - दूसरा रूकू

(१) मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि लुक़मान का नसब यह है लुक़मान बिन बाऊर बिन नाहूर बिन तारिख़. वहब का क़ौल है कि हज़रत लुक़मान हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के भान्जे थे. मक़ातिल ने कहा कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की ख़ाला के बेटे थे. वाक़िदी ने कहा बनी इस्राईल में क़ाज़ी थे. और यह भी कहा गया है कि आप हज़ार साल ज़िन्दा रहे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया और उनसे इल्म हासिल किया और उनके ज़माने में फ़तवा देना छोड़ दिया, अगरचे पहले से फ़तवा देते थे. आपकी नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है. अक्सर उलमा इसी तरफ़ हैं कि आप हकीम थे, नबी न थे. हिकमत अक़्ल और समझ को कहते हैं और कहा गया है कि हिकमत वह इल्म है जिसके मुताबिक़ अमल किया जाए. कुछ ने कहा कि हिकमत मअरिफ़त और कामों के सम्बन्ध में भरपूर समझदारी को कहते हैं और यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला इसको जिसके दिल में रखता है, उसके दिल को रौशन कर देती है.

(२) इस नेअमत पर कि अल्लाह तआला ने हिकमत अता की.

قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ
بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ
فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝
وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ
بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ز
وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ
فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ
بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ
اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَلَا تُصَعِّرْ

था[४] ऐ मेरे बेटे, अल्लाह का किसी को शरीक न करना, बेशक शिर्क बड़ा ज़ुल्म है[५] ﴾१३﴿ और हमने आदमी को उसके माँ बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई[६] उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई[७] और उसका दूध छूटना दो बरस में है यह कि हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का[८] आख़िर मुझी तक आना है ﴾१४﴿ और अगर वो दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिसका तुझे इल्म नहीं[९] तो उनका कहना न मान[१०] और दुनिया में अच्छी तरह उनका साथ दे[११] और उसकी राह चल जो मेरी तरफ़ रूजू (तवज्जुह) लाया[१२] फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बतादूंगा जो तुम करते थे[१३] ﴾१५﴿ ऐ मेरे बेटे बुराई अगर राई के दाने बराबर हो फिर वह पत्थर की चट्टान में या आसमानों में या ज़मीन में कहीं हो[१४] अल्लाह उसे ले आएगा[१५] बेशक अल्लाह हर बारीकी (सूक्ष्मता) का जानने वाला ख़बरदार है[१६] ﴾१६﴿ ऐ मेरे बेटे नमाज़ क़ायम रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर और जो उफ़ताद तुझ पर पड़े[१७] उस पर सब्र कर, बेशक ये हिम्मत के काम हैं[१८] ﴾१७﴿

(३) क्योंकि शुक्र से नेअमत ज़्यादा होती है और सवाब मिलता है .

(४) हज़रत लुक़्मान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम के उन सुपुत्र का नाम अनअम या अश्कम था . इन्सान का आला मरतबा यह है कि वह ख़ुद कामिल हो और दूसरे की तकमील करे. तो हज़रत लुक़्मान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम का कामिल होना तो "आतैनल लुक़्मानल हिकमता" में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तकमील करना "व हुवा यअिज़ुहू" (और वह नसीहत करता था) से ज़ाहिर फ़रमाया. और नसीहत बेटे को की, इससे मालूम हुआ कि नसीहत में घर वालों और क़रीबतर लोगों को पहले रखना चाहिये और नसीहत की शुरूआत शिर्क से मना करके की गई इससे मालूम हुआ कि यह अत्यन्त अहम है.

(५) क्योंकि इसमें इबादत के लायक़ जो न हो उसको इबादत के योग्य जो है उसके बराबर क़रार देना है और इबादत को उसके अर्थ के ख़िलाफ़ रखना, ये दोनों बातें बड़ा भारी ज़ुल्म हैं.

(६) कि उनका फ़रमाँबरदार रहे और उनके साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इरशाद है)

(७) यानी उसकी कमज़ोरी दम ब दम तरक़्क़ी पर होती है, जितना गर्भ बढ़ता जाता है, बोझ ज़्यादा होता है और कमज़ोरी बढ़ती है. औरत को गर्भवती होने के बाद कमज़ोरी और दर्द और मशक़्क़तें पहुंचती रहती हैं. गर्भ ख़ुद कमज़ोर करने वाला है. ज़चगी का दर्द कमज़ोरी पर कमज़ोरी है. और बच्चा होना इसपर और अधिक सख़्ती है . दूध पिलाना इन सब पर और ज़्यादा है.

(८) यह वह ताकीद है जिसका ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था. सुफ़ियान बिन ऐनिय्या ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि जिसने पाँचों वक़्त की नमाज़ें अदा कीं वह अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाया और जिसने पाँचों वक़्त की नमाज़ों के बाद माँ बाप के लिये दुआएं कीं उसने माँ बाप की शुक्रगुज़ारी की.

(९) यानी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्योंकि मेरा शरीक असंभव है, हो ही नहीं सकता, अब जो कोई भी कहेगा तो बेइल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा. ऐसा अगर माँ बाप भी कहें.

(१०) नख़ई ने कहा कि माँ बाप की फ़रमाँबरदारी वाजिब है लेकिन अगर वो शिर्क का हुक्म करें तो उनकी फ़रमाँबरदारी न कर क्योंकि ख़ालिक़ की नाफ़रमानी करने में किसी मख़लूक़ की फ़रमाँबरदारी रवा नहीं.

(११) हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक और ऐहसान और तहम्मुल के साथ.

(१२) यानी नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा की राह, इसी को सुन्नत व जमाअत का मज़हब कहते हैं.

(१३) तुम्हारे कर्मों की जज़ा देकर. **'व वस्सैनल इन्साना'** (यानी और हमने आदमी को उसके माँ बाप में ताकीद फ़रमाई) से यहां तक जो मज़मून है यह हज़रत लुक़्मान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम का नहीं है बल्कि उन्होंने अपने सुपुत्र को अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र करने का हुक्म दिया था और शिर्क से मना किया था तो अल्लाह तआला ने माँ बाप की फरमाँबरदारी और

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ وَاقْصِدْ
فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ
الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى
وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ
السَّعِيْرِ ۝ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى
اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ

और किसी से बात करने में(१९) अपना रूख़सारा कज (टेढ़ा) न कर(२०) और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक अल्लाह को नहीं भाता कोई इतारता फ़ख्र करता ﴿१८﴾ और बीच की चाल चल(२१) और अपनी आवाज़ कुछ पस्त (नीची) कर(२२) बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़ गधे की(२३) ﴿१९﴾

तीसरा रूकू

क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है(१) और तुम्हें भरपूर दीं अपनी नेअमतें ज़ाहिर और छुपी(२) और कुछ आदमी अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं यूं कि न इल्म न अक़्ल और न कोई रौशन किताब(३) ﴿२०﴾ और जब उनसे कहा जाए उसकी पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उसकी पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप दादा को पाया(४) क्या अगरचे शैतान उनको दौज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो(५) ﴿२१﴾ तो जो अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुकादे(६) और हो नेकी करने वाला तो बेशक उसने मज़बूत गांठ थामी और अल्लाह ही की तरफ़ है सब कामों की इन्तिहा ﴿२२﴾ और जो कुफ़्र करे तो तुम(७) उसके कुफ़्र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही तरफ़

उसका महत्व इरशाद फ़रमाया. इसके बाद फिर लुक़मान अलैहिस्सलाम का क़ौल बयान किया जाता है कि उन्होंने अपने बेटे से फ़रमाया.

(१४) कैसी ही पोशीदा जगह हो, अल्लाह तआला से नहीं छुप सकती.

(१५) क़यामत के दिन, और उसका हिसाब फ़रमाएगा.

(१६) यानी हर छोटा बड़ा उसके इल्म के घेरे में है.

(१७) अच्छाई का हुक्म देने और बुराई से मना करने से.

(१८) उनका करना लाज़िम है. इस आयत से मालूम हुआ कि नमाज़ और नेकी के हुक्म और बुराई की मनाही और तकलीफ़ पर सब्र ऐसी ताअतें है जिनका तमाम उम्मतों में हुक्म था.

(१९) घमण्ड के तौर पर.

(२०) यानी जब आदमी बात करें तो उन्हें तुच्छ जान कर उनकी तरफ़ से मुंह फेरना, जैसा घमण्डियों का तरीक़ा है, इख़्तियार न करना. मालदार और फ़क़ीर के साथ विनम्रता से पेश आना.

(२१) न बहुत तेज़, न बहुत सुस्त, कि ये दोनों बुरी हैं. एक में घमण्ड है, और एक में छिछोरापन . हदीस शरीफ़ में है कि बहुत तेज़ चलना मूमिन का विक़ार खोता है.

(२२) यानी शोर ग़ुल और चीख़ने से परहेज़ करे.

(२३) मतलब यह है कि शोर मचाना और आवाज़ ऊंची करना मकरूह और ना-पसन्दीदा है और इसमें कुछ बड़ाई नहीं है. गधे की आवाज़ ऊंची होने के बावुजूद कानों को बुरी लगने वाली और डरावनी है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को नापसन्द रखते थे.

सूरए लुक़मान - तीसरा रूकू

(१) आसमानों में, सूरज चांद तारों की तरह, जिनसे नफ़ा उठाते हो. और ज़मीनों में दरिया, नेहरें, खानें, पहाड़, दरख़्त, फल, चौपाए, वग़ैरह जिन से तुम फ़ायदे हासिल करते हो.

(२) ज़ाहिरी नेअमतों से शरीर के अंगों की दुरूस्ती और हुस्न व शक्ल सूरत मुराद हैं और बातिनी नेअमतों से इल्मे मआरिफ़त वग़ैरह. हज़रत

كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ
اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَلَوْ اَنَّ مَا
فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ
بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا
كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ
اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؗ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

फिरना है हम उन्हें बतादेंगे जो करते थे(८) बेशक अल्लाह दिलों की बात जानता है(२३) हम उन्हें कुछ बरतने देंगे(९) फिर उन्हें बेबस करके सख़्त अज़ाब की तरफ़ लेजाएंगे(१०)(२४) और अगर तुम उनसे पूछो किसने बनाए आसमान और ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने, तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां अल्लाह को(११) बेशक उनमें अक्सर जानते नहीं(२५) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है(१२) बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा(२६) और अगर ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़ल्में हो जाएं और समन्दर उसकी सियाही हो उसके पीछे सात समन्दर और(१३) तो अल्लाह की बातें ख़त्म न होंगी(१४) बेशक अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला है(२७) तुम सब का पैदा करना और क़यामत में उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का(१५) बेशक अल्लाह सुनता देखता है(२८) ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में(१६) और उसने सूरज और चांद काम में लगाए(१७) हर एक, एक मुक़र्रर (निश्चित) मीआद तक चलता है(१८) और यह कि अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है(२९) यह इसलिये कि अल्लाह ही हक़ है(१९)

इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि नेअमते ज़ाहिर तो इस्लाम और क़ुरआन है और नेअमते बातिन यह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये. तुम्हारा हाल न खोला . सज़ा में जल्दी न फ़रमाई. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नेअमत बदन का दुरूस्त होना और अच्छी शक्ल सूरत है और बातिनी नेअमत दिल का अक़ीदा. एक क़ौल यह भी है कि ज़ाहिरी नेअमत रिज़्क़ है और बातिनी नेअमत अच्छा अख़्लाक़. एक क़ौल यह है कि ज़ाहिरी नेअमत इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर विजयी होना है और बातिनी नेअमत फ़रिश्तों का मदद के लिये आना. एक क़ौल यह है कि ज़ाहिरी नेअमत रसूल का अनुकरण है और बातिनी नेअमत उनकी महब्बत. अल्लाह तआला हम सब को अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की महब्बत दे और उनका अनुकरण करने की तौफ़ीक़.

(३) तो जो कहेंगे, जिहालत और नादानी होगी और अल्लाह की शान में इस तरह की जुरअत और मुंह खोलना अत्यन्त बेजा और गुमराही है. यह आयत नज़्र बिन हारिस और उबई बिन ख़लफ़ वग़ैरह काफ़िरों के बारे में उतरी जो बेइल्म और जाहिल होने के बावुजूद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात के बारे में झगड़े किया करते थे.

(४) यानी अपने बाप दादा के तरीक़े पर ही रहेंगे . इसपर अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(५) जब भी वो अपने बाप दादा ही की पैरवी किये जाएंगे.

(६) दीन ख़ालिस उसके लिये क़ुबूल करे, उसकी इबादत में लगे, अपने काम उस पर छोड़ दे, उसी पर भरोसा रखे.

(७) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(८) यानी हम उन्हें उनके कर्मों की सज़ा देंगे.

(९) यानी थोड़ी मोहलत देंगे कि वो दुनिया के मज़े उठाएं.

(१०) आख़िरत में और वह दोज़ख़ का अज़ाब है जिससे वो रिहाई न पाएंगे.

(११) यह उनके इक़रार पर उन्हें इल्ज़ाम देना है कि जिसने आसमान ज़मीन पैदा किये वह *अल्लाह वहदहू ला शरीका लहू* है तो वाजिब हुआ कि उसकी हम्द की जाए, उसका शुक्र किया जाए और उसके सिवा किसी और की इबादत न की जाए.

(१२) सब उसके ममलूक मख़्लूक़ और बन्दे हैं तो उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं.

(१३) और सारी ख़ल्क़ अल्लाह तआला के कलिमात को लिखे और वो तमाम क़लम और उन तमाम समन्दरों की स्याही ख़त्म हो जाए.

(१४) क्योंकि अल्लाह तआला का इल्म असीम है. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हिजरत करके मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो यहूदियों के उलमा और पादरियों ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा कि हम ने सुना है कि आप फ़रमाते हैं *"वमा ऊतीतुम मिनल इल्मे इल्ला क़लीलन"* (यानी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया) तो उससे आपकी मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ
اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٣٠ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ
تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٣١ وَاِذَا
غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ڬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ
وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝٣٢ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ
وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ
وَّالِدِهٖ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٣٣
اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّا

और उसके सिवा जिनको पूजते हैं सब बातिल (असत्य) हैं[२०] और इसलिये कि अल्लाह ही बलन्द बड़ाई वाला है (३०)

चौथा रूकू

क्या तूने न देखा कि किश्ती दरिया में चल्ती है अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) से[१] ताकि वह तुम्हें अपनी[२] निशानियाँ दिखाए, बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर बड़े सब्र करने वाले शुक्रगुज़ार को[३] (३१) और जब उनपर[४] आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की तरह तो अल्लाह को पुकारते हैं निरे उसपर अक़ीदा रखते हुए[५] फिर जब उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो उनमें कोई ऐतिदाल (मध्यमार्ग) पर रहता है[६] और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा नाशुक्रा (३२) ऐ लोगो[७] अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिसमें कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा, और न कोई कामी (कारोबारी) बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़ा दे[८] बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है[९] तो हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी[१०] और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के इल्म पर धोखा न दे वह बड़ा फ़रेबी (धूर्त)[११] (३३) बेशक अल्लाह के पास है क़यामत का इल्म[१२] और उतारता है मेंह, और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है, और कोई जान नहीं जानती कि कल

अपनी क़ौम. फ़रमाया, सब मुराद हैं. उन्होंने कहा, क्या आपकी किताब में यह नहीं है कि हमें तौरात दी गई है, उसमें हर चीज़ का इल्म है. हुज़ुर ने फ़रमाया कि हर चीज़ का इल्म भी अल्लाह के इल्म के सामने थोड़ा है और तुम्हें तो अल्लाह तआला ने इतना इल्म दिया है कि उसपर अमल करो तो नफ़ा पाओ. उन्होंने कहा, आप कैसे यह ख़याल फ़रमाते हैं. आपका क़ौल तो यह है कि जिसे हिकमत दी गई उसे बहुत भलाई दी गई. तो थोड़ा इल्म और बहुत सी भलाई कैसे जमा हो. इसपर यह आयत उतरी. इस सूरत में यह आयत मदनी होगी. एक क़ौल यह भी है कि यहूदियों ने क़ुरैश से कहा था कि मक्के में जाकर रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस तरह का कलाम करें. एक क़ौल यह है कि मुश्रिकों ने यह कहा था कि क़ुरआन और जो कुछ मुहम्मद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) लाते हैं, यह बहुत जल्द तमाम हो जाएगा, फिर क़िस्सा ख़त्म. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी.

(१५) अल्लाह पर कुछ दुशवार नहीं . उसकी क़ुदरत यह है कि एक कुन से सब को पैदा कर दे.
(१६) यानी एक को घटा कर, दूसरे को बढ़ाकर और जो वक़्त एक में से घटाता है, दूसरे में बढ़ा देता है.
(१७) बन्दों के नफ़े के लिये.
(१८) यानी क़यामत के दिन तक या अपने अपने निर्धारित समय तक. सूरज आख़िर साल तक और चांद आख़िर माह तक.
(१९) वही इन चीज़ों पर क़ादिर है, तो वही इबादत के लायक़ है.
(२०) फ़ना होने वाले . इन में से कोई इबादत के लायक़ नहीं हो सकता.

सूरए लुक़मान - चौथा रूकू

(१) उसकी रहमत और उसके एहसान से.
(२) क़ुदरत के चमत्कारों की.
(३) जो बलाओं पर सब्र करे और अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्रगुज़ार हो. सब्र और शुक्र ये दोनों गुण ईमान वाले के हैं.
(४) यानी काफ़िरों पर.
(५) और उसके समक्ष गिड़गिड़ाते हैं और रोते हैं और उसी से दुआ और इल्तिजा . उस वक़्त सब को भूल जाते हैं.
(६) अपने ईमान और सच्चाई पर क़ायम रहता, कुफ़्र की तरफ़ नहीं लौटता. कहा गया है कि यह आयत अकरमह बिन अबू जहल के बारे में उतरी. जिस साल मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह हुई तो वह समन्दर की तरफ़ भाग गए. वहाँ मुख़ालिफ़ हवा ने घेरा और ख़तरे

क्या कमाएगी, और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में मरेगी, बेशक अल्लाह जानने वाला बताने वाला है(१३)﴾३४﴿

३२- सूरए सजदा

सूरए सज्दा मक्का में उतरी, इसमें तीस आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) अलिम लाम मीम﴾१﴿ किताब का उतारना(२) बेशक परवर्दिगारे आलम की तरफ़ से है﴾२﴿ क्या कहते हैं(३) उनकी बनाई हुई है(४) बल्कि वही हक़(सच) है तुम्हारे रब की तरफ़ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास तुमसे पहले कोई डर सुनाने वाला न आया(५) इस उम्मीद पर कि वो राह पाएं﴾३﴿ अल्लाह है जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है छ दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया(६) उससे छूट कर तुम्हारा कोई हिमायती और न सिफ़ारशी(७) तो क्या तुम ध्यान नहीं करते﴾४﴿ काम की तदबीर(युक्ति) फ़रमाता है आसमान से ज़मीन तक(८) फिर उसी की तरफ़ रूजू करेगा(९) उस दिन कि जिसकी मिक़दार हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में(१०)﴾५﴿

में पड़ गए, तो अकरमह ने कहा अगर अल्लाह तआला हमें इस ख़तरे से छुटकारा दे तो मैं ज़रूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हाथ में हाथ दे दूंगा यानी इताअत करूंगा. अल्लाह तआला ने करम किया. हवा ठहर गई और अकरमह मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ आगए और इस्लाम लाए और बड़ी सच्चाई के साथ इस्लाम लाए. कुछ उनमें ऐसे थे जिन्होंने एहद पूरा न किया . उनकी निस्बत अगले जुमले में इरशाद होता है.

(७) यानी ऐ मक्का वालो.

(८) क़यामत के दिन हर इन्सान ***नफ़्सी नफ़्सी*** कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा, न काफ़िरों की मुसलमान औलाद उन्हें फ़ायदा पहुंचा सकेगी, न मुसलमान माँ बाप काफ़िर औलाद को.

(९) ऐसा दिन ज़रूर आना और दोबारा उठाए जाने और हिसाब और जज़ा का वादा ज़रूर पूरा होना है.

(१०) जिसकी तमाम नेअमतें और लज़्ज़तें मिटने वाली कि उन पर आशिक़ होकर ईमान की नेअमत से मेहरूम रह जाओ.

(११) यानी शैतान दूर दराज़ की उम्मीदों में डालकर गुनाहों में न जकड़ दे.

(१२) यह आयत हारिस बिन अम्र के बारे में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़यामत का वक़्त पूछा था और यह कहा था कि मैंने खेती बोई है ख़बर दीजिये मेंह कब आएगा और मेरी औरत गर्भ से है, मुझे बताइये कि उसके पेट में क्या है, लड़का या लड़की. यह तो मुझे मालूम है कि कल मैं ने क्या किया, यह मुझे बताइये कि आयन्दा कल को क्या करूंगा. मैं यह भी जानता हूँ कि मैं कहाँ पैदा हुआ मुझे यह बताइये कि कहाँ मरूंगा. इसके जवाब में यह आयत उतरी.

(१३) जिसको चाहे अपने औलिया और अपने प्यारों में से, उन्हें ख़बरदार करदे. इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इल्म की विशेषता अल्लाह तआला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इरशाद हुआ *"आलिमुल ग़ैबे फ़ला युज़हिरो अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर तदा मिर रसूलिन"*. (यानी ग़ैब का जानने वाला, तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता, सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के - सूरए जिन्न, आयत २६-२७) ग़रज़ यह कि बग़ैर अल्लाह तआला के बताए इन चीज़ों का इल्म किसी को नहीं और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर ख़ुद उसने सूरए जिन्न में दी है. ख़ुलासा यह कि इल्मे ग़ैब अल्लाह तआला के साथ ख़ास है और नबियों वलियों को ग़ैब का इल्म अल्लाह तआला की तालीम से चमत्कार के तौर पर अता होता है . यह उस विशेषता के विरुद्ध नहीं है जो अल्लाह के इल्म के साथ है. बहुत सी आयतें और हदीसें इस को साबित करती हैं. बारिश का वक़्त और गर्भ में क्या है और कल को क्या करे और कहाँ मरेगा. इन बातों की ख़बरें बहुतात से औलिया और नबियों ने दी हैं और क़ुरआन और हदीस से साबित हैं. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के पैदा होने की और हज़रत मरयम को हज़रत ईसा

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦ الَّذِيْٓ
اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ
مِنْ طِيْنٍ ۝٧ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ
مَّهِيْنٍ ۝٨ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ
لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠ قُلْ
يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ
نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝١٢ وَلَوْ
شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

ع

यह[११] है हर छुपी और ज़ाहिर बात का जानने वाला, इज़्ज़त व रहमत वाला﴾६﴿ वह जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई[१२] और इन्सान की पैदाइश की शुरूआत मिट्टी से फ़रमाई[१३]﴾७﴿ फिर उसकी नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से[१४]﴾८﴿ फिर उसे ठीक किया और उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकी[१५] और तुम्हें कान और आँखें और दिल अता फ़रमाए[१६] क्या ही थोड़ा हक़ मानते हो﴾९﴿ और बोले[१७] कया जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे[१८] कया फिर नए बनेंगे? बल्कि वो अपने रब के समक्ष हाज़िरी से इन्कारी हैं[१९]﴾१०﴿ तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात(मौत) देता है मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है[२०] फिर अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे[२१]﴾११﴿

दूसरा रूकू

और कहीं तुम देखो जब मुजरिम[१] अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे[२] ऐ हमारे रब अब हमने देखा[३] और सुना[४] हमें फिर भेज कि नेक काम करें हमको यक़ीन आगया[५]﴾१२﴿ और अगर हम चाहते हर जान को उसकी हिदायत फ़रमाते[६] मगर मेरी बात क़रार पाचुकी कि ज़रूर जहन्नम को भरदूंगा उन जिन्नों और आदमियों सब

अलैहिस्सलाम के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़रिश्तों को भी पहले से मालूम था कि इन गर्भों में क्या है और उन हज़रात को भी जिन्हें फ़रिश्तों ने सूचनाएं दी थीं और उन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मानी बिल्कुल यही हैं कि बग़ैर अल्लाह तआला के बताए कोई नहीं जानता. इसके मानी यह लेना कि अल्लाह तआला के बताए से भी कोई नहीं जानता केवल बातिल और सैंकड़ों आयतों और हदीसों के ख़िलाफ़ है (ख़ाज़िन, बैज़ावी, अहमदी, रूहुल बयान वग़ैरह).

३२ - सूरए सज्दा - पहला रूकू

(१) सूरए सज्दा मक्के में उतरी सिवाय तीन आयतों के जो *"अफ़मन काना मूमिनन"* से शुरू होती हैं. इस सूरत में तीस आयतें, तीन रूकू, तीन सौ अस्सी कलिमे और एक हज़ार पाँच सौ अठ्ठारह अक्षर हैं.

(२) यानी क़ुरआने करीम का चमत्कार करके, इस तरह कि इस जैसी एक सूरत या छोटी सी इबारत बनाने से तमाम ज़बान वाले और सारे विद्वान आजिज़ हो गए.

(३) मुश्रिक लोग कि यह पवित्र ग्रन्थ.

(४) यानी नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की.

(५) ऐसे लोगों से मुराद उस ज़माने के लोग हैं जो ज़माना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने तक था कि इस ज़माने में अल्लाह तआला की तरफ़ से काई रसूल नहीं आया.

(६) जैसा इस्तिवा कि उसकी शान के लायक़ है.

(७) यानी ऐ काफ़िरों के समूह, जब तुम अल्लाह तआला की रज़ा की राह इख़्तियार न करो और ईमान न लाओ तो न तुम्हें कोई मददगार मिलेगा जो तुम्हारी मदद कर सके, न कोई सिफ़ारशी जो तुम्हारी सिफ़ारिश करे.

(८) यानी दुनिया के क़यामत तक होने वाले कामों की, अपने हुक्म और मर्ज़ी और अपने इरादे और हिसाब से.

(९) अम्र और तदबीर दुनिया की फ़ना के बाद.

(१०) यानी दुनिया के दिनों के हिसाब से और वह दिन क़यामत का दिन है . क़यामत के दिन की लम्बाई कुछ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस के बराबर होगी और कुछ के लिये पचास हज़ार बरस के बराबर, जैसे कि सूरए मआरिज में है *"तअरूजुल मलाइकतु वर्रूहो इलैहे फ़ी यौमिन काना मिक़दारूहू ख़मसीना अल्फ़ा सनतिन"* (फ़रिश्ते और जिब्रील उसकी बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं वह अज़ाब उस दिन होगा जिसकी मिक़दार पचास हज़ार बरस है - सूरए मआरिज, आयत ४). और मूमिन के लिये यह दिन एक

اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوۡقُوۡا بِمَا نَسِيۡتُمۡ لِقَآءَ يَوۡمِكُمۡ هٰذَا ۚ
اِنَّا نَسِيۡنٰكُمۡ وَذُوۡقُوۡا عَذَابَ الۡخُلۡدِ بِمَا كُنۡتُمۡ
تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا يُؤۡمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيۡنَ اِذَا ذُكِّرُوۡا
بِهَا خَرُّوۡا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوۡا بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَهُمۡ لَا
يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ﴿۱۵﴾ تَتَجَافٰى جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ
يَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ خَوۡفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿۱۶﴾
فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّاۤ اُخۡفِىَ لَهُمۡ مِّنۡ قُرَّةِ اَعۡيُنٍ ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنۡ كَانَ مُؤۡمِنًا
كَمَنۡ كَانَ فَاسِقًا ؔؕ لَا يَسۡتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمۡ جَنّٰتُ الۡمَاۡوٰى نُزُلًاۢ بِمَا
كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ فَسَقُوۡا فَمَاۡوٰٮهُمُ
النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوۡۤا اَنۡ يَّخۡرُجُوۡا مِنۡهَاۤ اُعِيۡدُوۡا فِيۡهَا
وَقِيۡلَ لَهُمۡ ذُوۡقُوۡا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ

से[७] ﴾१३﴿ अब चखो बदला उसका कि तुम अपने इस दिन की हाज़िरी भूले थे[८] हमने तुम्हें छोड़ दिया[९] अब हमेशा का अज़ाब चखो अपने किये का बदला ﴾१४﴿ हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं कि जब वो उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं[१०] और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलते हैं और घमण्ड नहीं करते ﴾१५﴿ उनकी करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से[११] और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते[१२] और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं ﴾१६﴿ तो किसी जी को नहीं मालूम जो आँख की ठण्डक उनके लिये छुपा रखी है[१३] सिला उनके कामों का[१४] ﴾१७﴿ तो क्या जो ईमान वाला है वो उस जैसा हो जाएगा जो बेहुक्म है[१५] ये बराबर नहीं ﴾१८﴿ जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बसने के बाग़ हैं, उनके कामों के सिले में मेहमानदारी[१६] ﴾१९﴿ रहे वो जो बेहुक्म हैं[१७] उनका ठिकाना आग है, जब कभी उसमें से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उनसे फ़रमाया जाएगा चखो उस आग का अज़ाब जिसे तुम

फ़र्ज़ नमाज़ के वक़्त से भी हलका होगा जो दुनिया में पढ़ता था जैसे कि हदीस शरीफ़ में आया.

(११) तदबीर करने वाला ख़ालिक़ जल्ल-जलालुहू.

(१२) अपनी हिकमत के तक़ाज़े के हिसाब से बनाई. हर जानदार को वह सूरत दी जो उसके लिये बेहतर है और उसको ऐसे अंग अता फ़रमाए जो उसकी रोज़ी के लिये मुनासिब हों.

(१३) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे बनाकर.

(१४) यानी नुत्फ़े से.

(१५) और उसको बेहिस बेजान होने के बाद हिस वाला और जानदार किया.

(१६) ताकि तुम सुनो और देखो और समझो.

(१७) दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वाले.

(१८) और मिट्टी हो जाएंगे और हमारे अंग मिट्टी से छिके न रहेंगे.

(१९) यानी मौत के बाद उठने और ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करके वो इस इन्तिहा तक पहुंचे हैं कि आक़िबत के तमाम उमूर के इन्कारी हैं यहाँ तक कि अल्लाह के समक्ष हाज़िर होने के भी.

(२०) उस फ़रिश्ते का नाम इज़्राईल है, अलैहिस्सलाम . और वह अल्लाह की तरफ़ से रूहें निकालने पर मुक़र्रर हैं. अपने काम में कुछ ग़फ़लत नहीं करते, जिस का वक़्त आ जाता है, उसकी रूह निकाल लेते हैं. रिवायत है कि मौत के फ़रिश्ते के लिये दुनिया हथैली की तरह कर दी गई है. तो वह पूर्व और पश्चिम की मख़्लूक़ की रूहें बिना मशक़्क़त उठा लेते हैं और रहमत व अज़ाब के बहुत से फ़रिश्ते उनके मातहत हैं.

(२१) और हिसाब व जज़ा के लिये ज़िन्दा करके उठाए जाओगे.

सूरए सज्दा - दूसरा रूकू

(१) यानी काफ़िर और मुश्रिक लोग.

(२) अपने कर्मों और व्यवहार से शर्मिन्दा और लज्जित होकर, और अर्ज़ करते होंगे.

(३) मरने के बाद उठने को, और तेरे वादे की सच्चाई को, जिनके हम दुनिया में इन्कारी थे.

(४) तुझ से तेरे रसूलों की सच्चाई को, तो अब दुनिया में.

تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى
دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ
اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى
الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ
هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۳﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً
يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ
اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ
مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

منزل ۵

झुटलाते थे《२०》 और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे कुछ नज़दीक का अज़ाब[१८] उस बड़े अज़ाब से पहले[१९] जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे《२१》 और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जिसे उसके रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उसने उनसे मुंह फेर लिया[२०] बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं《२२》

तीसरा रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब[१] अता फ़रमाई तो तुम उसके मिलने में शक न करो[२] और हमने उसे[३] बनी इस्राईल के लिये हिदायत किया《२३》 और हमने उनमें से[४] कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म से बताते[५] जब कि उन्हों ने सब्र किया[६] और वो हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे《२४》 बेशक तुम्हारा रब उनमें फ़ैसला कर देगा[७] क़यामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे[८]《२५》 और क्या उन्हें[९] इस पर हिदायत न हुई कि हमने उनसे पहले कितनी संगतें (क़ौमें) [१०] हलाक कर दीं कि आज ये उनके घरों में चल फिर रहे हैं[११] बेशक इसमें ज़रूर निशानियाँ हैं, तो क्या सुनते नहीं[१२]《२६》 और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़[१३] फिर उससे खेती निकालते हैं कि उसमें से उनके चौपाए और वो ख़ुद खाते

(५) और अब हम ईमान ले आए, लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा.
(६) और उसपर ऐसी मेहरबानी करते कि अगर वह उसको इख़्तियार करता तो राह पा जाता. लेकिन हमने ऐसा न किया क्योंकि हम काफ़िरों को जानते थे कि वो कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे.
(७) जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया, और जब वो जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उनसे कहेंगे.
(८) और दुनिया में ईमान लाए थे.
(९) अज़ाब में, अब तुम्हारी तरफ़ इल्तिफ़ात न होगा.
(१०) विनम्रता और आजिज़ी से और इस्लाम की नेअमत पर शुक्रगुज़ारी के लिये.
(११) यानी मीठी नींदों के बिस्तरों से उठते हैं और अपनी राहत और आराम को छोड़ते हैं.
(१२) यानी उसके अज़ाब से डरते हैं और उसकी रहमत की उम्मीद करते हैं. यह तहज्जुद अदा करने वालों की हालत का बयान है. हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत हम अन्सारियों के हक़ में उतरी कि हम मग़रिब पढ़कर अपने घरों को वापस न आते थे जब तक कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ इशा न पढ़ लेते.
(१३) जिससे वो राहतें पाएंगे और उनकी आँखें ठण्डी होंगी.
(१४) यानी उन ताअतों का, जो उन्होंने दुनिया में अदा कीं.
(१५) यानी काफ़िर है. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से वलीद बिन अक़बह बिन अबी मुईत किसी बात में झगड़ रहा था. बात चीत के दौरान कहने लगा, ख़ामोश हो जाओ, तुम लड़के हो मैं बूढ़ा हूँ. मैं बहुत लम्बी ज़बान वाला हूँ. मेरे भाले की नौक तुमसे तेज़ है. मैं तुम से ज़्यादा बहादुर हूँ. मैं बड़ा जत्थेदार हूँ. हज़रत अली ने फ़रमाया चुप, तू फ़ासिक़ है. मुराद यह थी कि जिन बातों पर तू गर्व करता है, इन्सान के लिये उनमें से कोई भी प्रशंसनीय नहीं. इन्सान की महानता और इज़्ज़त ईमान और तक़वा में है. जिसे यह दौलत नसीब नहीं वह हद दर्जे का नीच है. काफ़िर मूमिन के बराबर नहीं हो सकता. अल्लाह तआला ने हज़रत अली की तस्दीक़ में यह आयत उतारी.
(१६) यानी ईमान वाले नेक बन्दों की जन्नते-मावा में अत्यन्त सम्मान व सत्कार के साथ मेहमानदारी की जाएगी.
(१७) नाफ़रमान काफ़िर हैं.
(१८) दुनिया ही में क़त्ल और गिरफ़्तारी और दुष्काल और बीमारियों वग़ैरह में जकड़ के. चुनांन्चे ऐसा ही पेश आया कि हुज़ूर की हिजरत से पहले क़ुरैश बीमारियों और मुसीबतों में गिरफ़्तार हुए और हिजरत के बाद बद्र में मारे गए, गिरफ़्तार हुए और सात साल दुष्काल की ऐसी सख़्त मुसीबत में जकड़े रहे कि हड्डियाँ और मुर्दार कुत्ते तक खा गए.

हैं(१४) तो क्या उन्हें सूझता नहीं(१५)﴿२७﴾ और कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो(१६)﴿२८﴾ तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन(१७) काफ़िरों को उनका ईमान लाना नफ़ा न देगा और न उन्हें मोहलत मिले(१८)﴿२९﴾ तो उनसे मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो(१९) बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है(२०)﴿३०﴾

३३- सूरए अहज़ाब

सूरए अहज़ाब मदीने में उतरी, इसमें ७३ आयतें और नौ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी)(२) अल्लाह का यूंही ख़ौफ़ रखना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों (दोग़लों) की न सुनना(३) बेशक अल्लाह इल्म व हिकमत (बोध) वाला है﴿१﴾ और उसकी पैरवी (अनुकरण) रखना जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हें वही (देववाणी) होती है, ऐ लोगो अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है﴿२﴾ और ऐ मेहबूब तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस है काम बनाने वाला﴿३﴾ अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे(४) और तुम्हारी उन औरतों को जिन्हें तुम माँ के बराबर कह दो तुम्हारी माँ न बनाया(५) और न तुम्हारे लेपालकों को तुम्हारा बेटा बनाया(६)

(१९) यानी आख़िरत के अज़ाब से.
(२०) और आयतों में ग़ौर न किया और उनकी व्याख्याओं और इरशाद से फ़ायदा न उठाया और ईमान से लाभान्वित न हुआ.

सूरए सज्दा - तीसरा रूकू

(१) यानी तौरात.
(२) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को किताब के मिलने में या ये मानी हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मिलने और उनसे मुलाक़ात होने में शक न करो. चुनांन्चे मेअराज की रात हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, जैसा कि हदीसों में आया है.
(३) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को, या तौरात को.
(४) यानी बनी इस्राईल में से.
(५) लोगों को ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी और उसकी ताअत और अल्लाह तआला के दीन और उसकी शरीअत का अनुकरण, तौरात के आदेशों की पूर्ति. ये इमाम बनी इस्राईल के नबी थे, या नबियों के अनुयायी.
(६) अपने दीन पर और दुश्मनों की तरफ़ से पहुंचने वाली मुसीबतों पर. इससे मालूम हुआ कि सब्र का फल इमामत और पेशवाई है.
(७) यानी नबियों में और उनकी उम्मतों में या मूमिनीन व मुश्रिकीन में.
(८) दीनी बातों में से, और हक़ व बातिल वालों को अलग अलग कर देगा.
(९) यानी मक्का वालों को.
(१०) कितनी उम्मतें आद व समूद व क़ौम लूत की तरह.
(११) यानी जब मक्का वाले व्यापार के लिये शाम के सफ़र करते हैं तो उन लोगों की मन्ज़िलों और शहरों में गुज़रते हैं और उनकी हलाकत के निशान देखते हैं.
(१२) जो इब्रत हासिल करें और नसीहत मानें.
(१३) जिसमें सब्ज़े का नामो निशान नहीं.

(१४) चौपाए भूसा और वो ख़ुद ग़ल्ला.
(१५) कि वो ये देखकर अल्लाह तआला की भरपूर क़ुदरत पर इस्तिदलाल करें और समझें कि जो क़ादिर बरहक़ ख़ुश्क ज़मीन से खेती निकालने पर क़ादिर है, मुर्दों का ज़िन्दा करना उसकी क़ुदरत से क्या मुश्किल.
(१६) मुसलमान कहा करते थे कि अल्लाह तआला हमारे और मुश्रिकों के बीच फ़ैसला फ़रमाएगा और फ़रमाँबरदार और नाफ़रमान को उनके कर्मों के अनुसार बदला देगा. इससे उनकी मुराद यह थी कि हम पर रहमत और करम करेगा और काफ़िरों व मुश्रिकों को अज़ाब में जकड़ेगा. इसपर काफ़िर हंसी के तौर पर कहते थे कि यह फ़ैसला कब होगा, इसका वक़्त कब आएगा . अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फ़रमाता है.
(१७) जब अल्लाह का अज़ाब उतरेगा.
(१८) तौबह और माफ़ी की. फ़ैसले के दिन से या क़यामत का दिन मुराद है या मक्के की विजय का दिन या बद्र का दिन. अगर क़यामत का दिन मुराद हो तो ईमान का नफ़ा न देना ज़ाहिर है क्योंकि ईमान वही मक़बूल है जो दुनिया में हो और दुनिया से निकलने के बाद न ईमान मक़बूल होगा न ईमान लाने के लिये दुनिया में वापस आना मिलेगा. और अगर फ़ैसले के दिन से बद्र का दिन या मक्के की विजय का दिन मुराद हो तो मानी ये होंगे कि जब अज़ाब आजाए और वो लोग क़त्ल होने लगें तो क़त्ल की हालत में उनका ईमान लाना क़ुबूल न किया जाएगा और न अज़ाब में विलम्ब करके उन्हें मोहलत दी जायगी. चुनांन्चे जब मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह हुआ तो क़ौमे बनी कनानह भागी. हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्होंने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया, कोई उम्मीद जान बचने की नहीं है तो उन्होंने इस्लाम का इज़हार किया. हज़रत ख़ालिद ने क़ुबूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया. (जुमल)
(१९) उनपर अज़ाब उतरने का.
(२०) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शुक्रवार के दिन फ़ज्र की नमाज़ में यह सूरत यानी सूरए सज्दा और सूरए दहर पढ़ते थे. तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब तक हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम यह सूरत और सूरए तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क न पढ़ लेते, सोने को न जाते. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि सूरए सज्दा क़ब्र के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रखती है. (ख़ाज़िन व मदारिक वग़ैरह)

३३ - सूरए अहज़ाब - पहला रूकू

(१) सूरए अहज़ाब मदीने में उतरी. इसमें नौ रूकू, तिहत्तर आयतें, एक हज़ार दो सौ अस्सी कलिमे और पाँच हज़ार सात सौ नब्बे अक्षर हैं.
(२) यानी हमारी तरफ़ से ख़बरें देने वाले, हमारे राज़ों के रखने वाले, हमारा कलाम हमारे प्यारे बन्दों तक पहुंचाने वाले. अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को **या अय्युहन्नबीय्यो** के साथ सम्बोधित किया जिसके मानी ये हैं जो बयान किये गए. नामे पाक के साथ **या मुहम्मद** ज़िक्र फ़रमाकर सम्बोधित नहीं किया जैसा कि दूसरे नबियों को सम्बोधित फ़रमाता है. इससे उद्देश्य आपकी इज़्ज़त, आपका सत्कार और सम्मान है और आपकी बुज़ुर्गी का ज़ाहिर करना है. (मदारिक)
(३) अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और अकरमह बिन अबी जहल और अबुल अअवर सलमी जंगे उहद के बाद मदीनए तैय्यिबह आए और मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के यहाँ ठहरे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बात चीत के लिये, अमान हासिल करके, उन्होंने यह कहा कि आप लात, उज़्ज़ा, मनात वग़ैरह हमारे बुतों को जिन्हें मुश्रिकीन अपना मअबूद समझते हैं, कुछ न कहा कीजिये और यह फ़रमा दीजिये कि उनकी शफ़ाअत उनके पुजारियों के लिये है और हम लोग आप को और आप के रब को कुछ न कहेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनकी यह बात बहुत नागवार हुई और मुसलमानों ने उनके क़त्ल का इरादा किया. हुज़ूर ने क़त्ल की इजाज़त न दी और फ़रमाया कि मैं उन्हें अमान दे चुका हूँ इसलिये क़त्ल न करो. मदीना शरीफ़ से निकाल दो. चुनांन्चे हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने निकाल दिया इसपर यह आयत उतरी. इसमें सम्बोधन तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ है और मक़सूद है आपकी उम्मत से फ़रमाना कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अमान दी तो तुम उसके पाबन्द रहो और एहद तोड़ने का इरादा न करो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की शरीअत विरोधी बात न मानो.

بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَقُوْلُ الْحَقَّ وَ هُوَ یَهْدِی السَّبِیْلَ ۝
اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآىٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ
لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِی الدِّیْنِ وَ مَوَالِیْكُمْ ؕ
وَ لَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ فِیْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَ لٰكِنْ
مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِیْمًا ۝ اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُهٰجِرِیْنَ
اِلَّاۤ اَنْ تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِیٰٓىٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ
فِی الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِیّٖنَ
مِیْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى
وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّیْثَاقًا غَلِیْظًا ۝
لِّیَسْــٴَـلَ الصّٰدِقِیْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِیْنَ

यह तुम्हारे अपने मुंह का कहना है(७) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है और वही राह दिखाता है(८)(४) उन्हें उनके बाप ही का कहकर पुकारो(९) यह अल्लाह के नज़्दीक ज़्यादा ठीक है फिर अगर तुम्हें उनके बाप मालूम न हों(१०) तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और बशरियत(आदमी होना) में तुम्हारे चचाज़ाद(११) और तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं जो अनजाने में तुमसे हो गुज़रा(१२) हाँ वह गुनाह है जो दिल के इरादे से करो(१३) और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(५) यह नबी मुसलमानों का उनकी जान से ज़्यादा मालिक है(१४) और उसकी बीबियाँ उनकी माएं हैं(१५) और रिश्ते वाले अल्लाह की किताब में एक दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं(१६) बनिस्बत और मुसलमानों और मुहाजिरों के(१७) मगर यह कि तुम अपने दोस्तों पर कोई एहसान करो(१८) यह किताब में लिखा है(१९)(६) और ऐ मेहबूब याद करो जब हमने नबियों से एहद लिया(२०) और तुम से(२१) और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा मरयम के बेटे से और हमने उनसे गाढ़ा एहद लिया(७) ताकि सच्चों से(२२) उनके सच का सवाल करे(२३) और उसने काफ़िरों के लिये दर्दनाक

(४) कि एक में अल्लाह का ख़ौफ़ हो, दूसरे में किसी और का. जब एक ही दिल है तो अल्लाह ही से डरे. अबू मुअम्मर हमीद फ़ेहरी की याददाश्त अच्छी थी जो सुनता था, याद कर लेता था. क़ुरैश ने कहा कि उसके दो दिल हैं जभी तो उसकी स्मरण शक्ति इतनी तेज़ है. वह ख़ुद भी कहता था कि उसके दो दिल हैं और हर एक में हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ज़्यादा समझ है. जब बद्र में मुश्रिक भागे तो अबू मुअम्मर इस तरह से भागा कि एक जूती हाथ में एक पाँव में. अबू सुफ़ियान से मुलाक़ात हुई तो अबू सुफ़ियान ने पूछा क्या हाल है, कहा लोग भाग गए, तो अबू सुफ़ियान ने पूछा एक जूती हाथ में एक पाँव में क्यों है, कहा इसकी मुझे ख़बर ही नहीं मैं तो यही समझ रहा हूँ कि दोनों जूतियाँ पाँव में हैं. उस वक़्त क़ुरैश को मालूम हुआ कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिये हुए था, भूल न जाता. और एक क़ौल यह भी है कि मुनाफ़िक़ीन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये दो दिल बताते थे और कहते थे कि उनका एक दिल हमारे साथ है और एक अपने सहाबा के साथ है. साथ ही जिहालत के ज़माने में जब कोई अपनी औरत से ज़िहार करता था तो वो लोग इस ज़िहार को तलाक़ कहते और उस औरत को उसकी माँ क़रार देते थे और जब कोई शख़्स किसी को बेटा कह देता तो उसको हक़ीक़ी बेटा क़रार देकर मीरास में हिस्सेदार ठहराते और उसकी बीवी के बेटा कहने वाले के लिये सगे बेटे की बीवी की तरह हराम जानते. इस सब के रद में यह आयत उतरी.

(५) यानी ज़िहार से औरत माँ की तरह हराम नहीं हो जाती. ज़िहार यानी मन्कूहा को ऐसी औरत से मिसाल देना जो हमेशा के लिये हराम हो और यह मिसाल ऐसे अंग में हो जिसे देखना और छूना जायज़ नहीं है. जैसे किसी ने अपनी बीबी से यह कहा कि तू मुझपर मेरी माँ की पीठ या पेट की तरह है तो वह ज़िहार वाला हो गया. ज़िहार से निकाह बातिल नहीं होता लेकिन कफ़्फ़ारा अदा करना लाज़िम हो जाता है. और कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले औरत से अलग रहना और उससे सोहबत न करना लाज़िम है. ज़िहार का कफ़्फ़ारा एक ग़ुलाम का आज़ाद करना और यह मयस्सर न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े और यह भी न हो सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है. कफ़्फ़ारा अदा करने के बाद औरत से क़ुर्बत और सोहबत हलाल हो जाती है. (हिदायह) .

(६) चाहे उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों.

(७) यानी बीबी को माँ के मिस्ल कहना और ले पालक को बेटा कहना बेहक़ीक़त बात है. न बीबी माँ हो सकती है न दूसरे का बेटा अपना बेटा. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश से निकाह किया तो यहूदी और मुनाफ़िक़ों ने तअने देने शुरू किये और कहा कि मुहम्मद ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली क्योंकि पहले हज़रत ज़ैनब ज़ैद के निकाह में थीं और हज़रत ज़ैद उम्मुल मुमिनीन हज़रत ख़दीजा रदियल्लाहो अन्हा के ज़रख़रीद थे. उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया. हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वह अपने बाप के पास न गए हुज़ूर की ही ख़िदमत में रहे. हुज़ूर उनपर शफ़क़्क़तो करम फ़रमाते थे इसलिये लोग उन्हें हुज़ूर का बेटा कहने लगे. इससे वह हक़ीक़त में हुज़ूर के

عَذَابًا اَلِیْمًا ۝۸ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَیْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا
وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرًا ۝۹
اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَ اِذْ
زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝۱۰ هُنَالِكَ ابْتُلِیَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا
زِلْزَالًا شَدِیْدًا ۝۱۱ وَ اِذْ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِیْنَ
فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ
اِلَّا غُرُوْرًا ۝۱۲ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ یٰۤاَهْلَ
یَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ یَسْتَاْذِنُ فَرِیْقٌ
مِّنْهُمُ النَّبِیَّ یَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُیُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَ مَا هِیَ
بِعَوْرَةٍ ۛۚ اِنْ یُّرِیْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ۝۱۳ وَ لَوْ دُخِلَتْ
عَلَیْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا

अज़ाब तैयार कर रखा है(८)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह का एहसान अपने ऊपर याद करो[१] जब तुम पर कुछ लश्कर आए[२] तो हमने उनपर आंधी और वो लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए[३] और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है[४](९) जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से[५] और जब कि ठिठक कर रह गईं निगाहें[६] और दिल गलों के पास आगए[७] और तुम अल्लाह पर तरह तरह के गुमान करने लगे (उम्मीद और यास के)[८](१०) वह जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई[९] और ख़ूब सख़्ती से झंझोड़े गए(११) और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और जिनके दिलों में रोग था[१०] हमें अल्लाह व रसूल ने वादा न दिया था मगर फ़रेब का[११](१२) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा[१२] ऐ मदीना वालो[१३] यहाँ तुम्हारे ठहरने की जगह नहीं[१४] तुम घरों को वापस चलो, और उनमें से एक गिरोह[१५] नबी से इज़्न (आज्ञा) मांगता था यह कहकर कि हमारे घर बेहिफ़ाज़त हैं और वो बेहिफ़ाज़त न थे, वो तो न चाहते थे मगर भागना(१३) और अगर उनपर फ़ौजें मदीने के अतराफ़ से आतीं फिर उनसे कुफ़्र चाहतीं तो ज़रूर

बेटे न होगए और यहूदी व मुनाफ़िक़ों का तअना ग़लत और बेजा हुआ. अल्लाह तआला ने यहाँ उन तअना देने वालों को झूटा क़रार दिया.

(८) हक़ की . लिहाज़ा लेपालकों को उनके पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि -----

(९) जिनसे वो पैदा हुए.

(१०) और इस वजह से तुम उन्हें उनके बापों की तरफ़ निस्बत न कर सको.

(११) तो तुम उन्हें भाई कहो और जिसके लेपालक हैं उसका बेटा न कहो.

(१२) मना किये जाने से पहले. या ये मानी हैं कि अगर तुमने लेपालकों को ग़लती से अन्जाने में उनके पालने वालों का बेटा कह दिया या किसी ग़ैर की औलाद को केवल ज़बान की सबक़त से बटा कहा तो इन सूरतों में गुनाह नहीं.

(१३) मना किये जाने के बाद.

(१४) दुनिया और दीन के तमाम मामलों में. और नबी का हुक्म उनपर लागू और नबी की फ़रमाँबरदारी ज़रूरी. और नबी के हुक्म के मुक़ाबले में नफ़्स की ख़्वाहिश का त्याग अनिवार्य. या ये मानी हैं कि नबी ईमान वालों पर उनकी जानों से ज़्यादा मेहरबानी, रहमत और करम फ़रमाते हैं और सबसे ज़्यादा नफ़ा देने वाले हैं. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हर मूमिन के लिये दुनिया और आख़िरत में सबसे ज़्यादा औला हूँ अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो ''अन नबिय्यो औला बिल मूमिनीन''. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो की क़िरअत में ''मिन अन्फ़ुसिहिम'' के बाद ''व हुवा अबुल लहुम'' भी है. मुजाहिद ने कहा कि सारे नबी अपनी उम्मत के बाप होते हैं और इसी रिश्ते से मुसलमान आपस में भाई कहलाते हैं कि वो अपने नबी की दीनी औलाद हैं.

(१५) तअज़ीम व हुर्मत में और निकाह के हमेशा के लिये हराम होने में और इसके अलावा दूसरे अहकाम में जैसे कि विरासत और पर्दा वग़ैरह. उनका वही हुक्म है जो अजनबी औरतों का और उनकी बेटियों को मूमिनीन की बहनें और उनके भाईयों और बहनों को मूमिनों के मामूँ और ख़ाला न कहा जाएगा.

(१६) विरासत में.

(१७) इससे मालूम हुआ कि उलुल अरहाम यानी रिश्ते वाले एक दूसरे के वारिस होते हैं. कोई अजनबी दीनी बिरादरी के ज़रिये से वारिस नहीं होता.

(१८) इस तरह कि जिसको चाहो कुछ वसीयत करो तो वसीयत तिहाई माल के बराबर विरासत पर मुक़द्दम की जाएगी. ख़ुलासा यह है कि पहले माल सगे वारिसों को दिया जाएगा फिर क़रीब के रिश्तेदारों को फिर दूर के रिश्तेदारों को.

وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا
اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسْئُولًا ۝ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ
الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ
الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ
وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ
فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى
الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ

उनका मांगा दे बैठते(१६) और उसमें देर न करते मगर थोड़ी(१४) और बेशक इससे पहले वो अल्लाह से एहद कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह का एहद पूछा जाएगा(१७)(१५) तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें भागना नफ़ा न देगा अगर मौत या क़त्ल से भागो(१८) और जब भी दुनिया न बरतने दिये जाओगे मगर थोड़ी(१९)(१६) तुम फ़रमाओ वह कौन है जो अल्लाह का हुक्म तुम पर से टाल दे और अगर वह तुम्हारा बुरा चाहे(२०) या तुम पर मेहरबानी (रहम) फ़रमाना चाहे(२१) और वो अल्लाह सिवा कोई हामी न पाएंगे न मददगार(१७) बेशक अल्लाह जानता है तुम्हारे उन को जो औरों को जिहाद से रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं हमारी तरफ़ चले आओ(२२) और लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़े(२३)(१८) तुम्हारी मदद में गई (कमी) करते हैं, फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें देखोगे तुम्हारी तरफ़ यूं नज़र करते हैं कि उनकी आँखें घूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो, फिर जब डर का वक़्त निकल जाए(२४) तुम्हें तअने देने लगें तेज़ ज़बानों से माले-ग़नीमत के लालच में(२५) ये लोग ईमान लाए ही नहीं (२६) तो अल्लाह ने उनके अमल(कर्म) अकारत कर दिये(२७) और

(१९) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में.
(२०) रिसालत की तब्लीग़ और दीने हक़ की दावत देने का.
(२१) ख़ुसूसियत के साथ . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र दूसरे नबियों पर मुक़द्दम करना उन सब पर आपकी फ़ज़ीलत के इज़हार के लिये है.
(२२) यानी नबियों से या उनकी तस्दीक़ करने वालों से.
(२३) यानी जो उन्हों ने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तब्लीग़ की वह दरियाफ़्त फ़रमाए या ईमान वालों से उनकी तस्दीक़ का सवाल करे या ये मानी हैं कि नबियों को जो उनकी उम्मतों ने जवाब दिये वो पूछे और इस सवाल से मक़सूद काफ़िरों को ज़लील करना और नीचा दिखाना है.

सूरए अहज़ाब - दूसरा रूकू

(१) जो उसने जंगे अहज़ाब के दिन फ़रमाया जिसको ग़ज़वए ख़न्दक़ कहते है जो उहद की जगं से एक साल बाद था जबकि मुसलमानों का नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मदीनए तैय्यिबह में घिराव कर लिया गया था.
(२) क़ुरैश और ग़तफ़ान और क़ुरैज़ा और नुज़ैर के यहूदियों के.
(३) यानी फ़रिश्तों के लश्कर

ग़ज़वए अहज़ाब का संक्षिप्त विवरण : ये ग़ज़वा शव्वाल चार या पाचँ हिजरी में पेश आया जब बनी नुज़ैर के यहूदियों को जिला-वतन किया गया तो उनके बड़े मक्कए मुकर्रमा में क़ुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वादा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहाँ तक कि मुसलमान नेस्तोनाबूद हो जाएं. अबू सुफ़ियान ने इस तहरीक की बड़ी क़द्र की और कहा कि हमें दुनिया में वह प्यारा है जो मुहम्मद की दुश्मनी में हमारा साथ दे. फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम हक़ पर हैं या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम). यहूद ने कहा तुम्हीं हक़ पर हो. इसपर क़ुरैश बहुत ख़ुश हुए. इसी पर आयत उतरी "अलम तरा इलल लज़ीना ऊतू नसीबम मिनल किताबे यूमिनूना बिल जिब्ते वत तागूते" यानी क्या तुमने वो न देखे जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला, ईमान लाते हैं बुत और शैतान पर - सूरए निसा, आयत ५१). फिर यहूदी ग़तफ़ान और क़ैस और ग़ीलान क़बीलों में गए और वहाँ भी यही तहरीक की. वो सब उनके सहमत हो गए. इस तरह उन्हों ने जगह ज़गह दौरे किये और अरब के क़बीले क़बीले को मुसलमानों के ख़िलाफ़ तैयार कर लिया.

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ
يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ
بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۖ وَلَوْ
كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ
فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ
الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ
الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ
صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا
وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا
عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ
الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ
اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

منزل٥

यह अल्लाह को आसान है﴾१९﴿ वो समझ रहे हैं कि काफ़िरों के लश्कर अभी न गए[२८] और अगर लश्कर दोबारा आएं तो उनकी[२९] ख़्वाहिश होगी कि किसी तरह गाँव में निकल कर[३०] तुम्हारी ख़बरें पूछते[३१] और अगर वो तुम में रहते जब भी न लड़ते मगर थोड़े[३२]﴾२०﴿

तीसरा रूकू

बेशक तुम्हें अल्लाह के रसूल की पैरवी बेहतर है[१] उसके लिये कि अल्लाह और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और अल्लाह को बहुत याद करे[२]﴾२१﴿ और जब मुसलमानों ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले यह है वह जो हमें वादा दिया था अल्लाह और उसके रसूल ने[३] और सच फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल ने[४] और उससे उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और अल्लाह की रज़ा पर राज़ी होना﴾२२﴿ मुसलमानों में कुछ वो मर्द हैं जिन्होंने सच्चा कर दिया जो एहद अल्लाह से किया था[५] तो उनमें कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका[६] और कोई राह देख रहा है[७] और वो ज़रा न बदले[८]﴾२३﴿ ताकि अल्लाह सच्चों को उनके सच का सिला दे और मुनाफ़िक़ों को अज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौबह दे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाल मेहरबान है﴾२४﴿

जब सब लोग तैयार हो गए तो ख़ुज़ाआ क़बीले के कुछ लोगों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को काफ़िरों की इन ज़बरदस्त तैयारियों की सूचना दी. यह सूचना पाते ही हुज़ूर ने हज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहो अन्हो की सलाह से ख़न्दक़ खुदवानी शुरु कर दी. इस ख़न्दक़ में मुसलमानों के साथ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुद भी काम किया. मुसलमानों ने ख़न्दक़ की खुदाई का काम पूरा ही किया था कि मुश्रिकीन बारह हज़ार का भारी लश्कर लेकर उनपर टूट पड़े और मदीनए तैय्यिबह का घिराव कर लिया. ख़न्दक़ मुसलमानों के और उनके बीच हाइल थी. उसको देखकर आश्चर्य में पड़ गए और कहने लगे कि यह ऐसी तदबीर है जिससे अरब लोग अब तक परिचित न थे. अब उन्होंने मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरु किये और इस घिराव को पन्द्रह दिन या चौबीस दिन गुज़रे. मुसलमानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुआ और वो बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआला ने मदद फ़रमाई और तेज़ हवा भेजी, बहुत सर्द और अन्धेरी रात में हवा ने दुश्मनों के ख़ैमे गिरा दिये, तनाबें तोड़ दीं, खूंटे उखाड़ दिये, हाँडियाँ उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते भेज दिये जिन्होंने काफ़िरों को लरज़ा दिया और उनके दिलों में दहशत डाल दी. मगर इस जंग में फ़रिश्तों ने मार काट नहीं की . फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिये भेजा. मौसम अत्यन्त ठण्डा था. यह हथियार लगाकर रवाना हुए. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चलते वक़्त उनके चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिससे उनपर सर्दी असर न कर सकी और यह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए. वहाँ हवा तेज़ चल रही थी. काफ़िरों के लश्कर के सरदार अबू सुफ़ियान हवा की यह दशा देखकर उठे और उन्होंने क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना. हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले. यह ऐलान होने के बाद हर शख़्स ने अपने बरारब वाले को टटोलना शुरु किया . हज़रत हुज़ैफ़ा ने समझदारी से अपने दाईं तरफ़ वाले व्यक्ति का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है उसने कहा मैं फ़्लाँ बिन फ़्लाँ हूँ. इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ गिरोहे क़ुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो. घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके बनी क़ुरैज़ा अपने एहद से फिर गए और हमें उनकी तरफ़ से चिन्ता जनक ख़बरें पहुंची हैं. हवा ने जो हाल किया है वह तुम देख ही रहे हो. बस अब यहाँ से कूच कर दो. मैं कूच करता हूँ. यह कहकर अबू सुफ़ियान अपनी ऊंटनी पर सवार हो गए और लश्कर में कूच कूच का शोर मच गया. हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी. मगर यह हवा इस लश्कर से बाहर न थी. अब यह लश्कर भाग निकला और सामान को लाद कर ले जाना उसको बोझ हो गया. इसलिये बहुत सा सामान छोड़ गया. (जुमल)

(४) यानी तुम्हारा ख़न्दक़ खोदना और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी में साबित क़दम रहना.

(५) यानी घाटी की ऊपरी ओर पूर्व से असद और ग़तफ़ान क़बीलों के लोग मालिक बिन औफ़ नसरी और ऐनिया बिन हिस्न फ़राज़ी की सरदारी में एक हज़ार का समूह लेकर और उनके साथ तलीहा बिन ख़ुवैलिद असदी बनी असद का समूह लेकर और हयई बिन अख़्तब बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों का समूह लेकर और घाटी की निचली ओर पश्चिम से क़ुरैश और कनानह अबू सुफ़ियान

बिन हर्ब के नेतृत्व में.
(६) और रोअब और हैबत की सख़्ती से हैरत में आ गईं.
(७) ख़ौफ़ और बेचैनी चरम सीमा को पहुंच गई.
(८) मुनाफ़िक़ तो यह गुमान करने लगे कि मुसलमानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा. काफ़िरों की इतनी बड़ी भीड़ सब को नष्ट कर डालेगी और मुसलमानों को अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद आने और अपने विजयी होने की उम्मीद थी.
(९) और उनके सब्र और निष्ठा का परीक्षण किया गया.
(१०) यानी अक़ीदे की कमज़ोरी.
(११) ये बात मअतब बिन क़ुशैर ने काफ़िरों के लश्कर को देखकर कही थी कि मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) तो हमें फ़ारस और रूम की विजय का वादा देते हैं और हाल यह है कि हम में से किसी की मजाल भी नहीं कि अपने डेरे से बाहर निकल सके, तो यह वादा निरा धोखा है.
(१२) यानी मुनाफ़िक़ों के एक गिरोह ने.
(१३) यह क़ौल मुनाफ़िक़ों का है. उन्होंने मदीनए तैय्यिबह को यसरब कहा. मुसलमानों को यसरब नहीं कहना चाहिये. हदीस शरीफ़ में मदीनए तैय्यिबह को यसरब कहने से मना फ़रमाया गया है . हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नागवार था कि मदीनए पाक को यसरब कहा जाए क्योंकि यसरब के मानी अच्छे नहीं है.
(१४) यानी रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लश्कर में.
(१५) यानी बनी हारिस और बनी सलमा.
(१६) यानी इस्लाम से फिर जाते.
(१७) यानी आख़िरत में अल्लाह तआला उसको दरियाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यों पूरा नहीं किया गया.
(१८) क्योंकि जो लिखा है वह ज़रूर होकर रहेगा .
(१९) यानी अगर वक़्त नहीं आया है तो भी भागकर थोड़े ही दिन, जितनी उम्र बाक़ी है उतने ही दुनिया को बरतोगे और यह एक थोड़ी सी मुद्दत है.
(२०) यानी उसको तुम्हारा क़त्ल और हलाकत मन्ज़ूर हो तो उसको कोई दफ़ा नहीं कर सकता.
(२१) अम्न और आफ़ियत अता फ़रमाकर.
(२२) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को छोड़ दो, उनके साथ जिहाद में न रहो. इसमें जान का ख़तरा है. यह आयत मुनाफ़िक़ों के हक़ में उतरी. उनके पास यहूदियों ने संदेश भेजा था कि तुम क्यों अपनी जानें अबू सुफ़ियान के हाथों से हलाक कराना चाहते हो. उसके लश्करी इस बार अगर तुम्हें पाएंगे तो तुम में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे. हमें तुम्हारा अन्देशा है. तुम हमारे भाई और पड़ौसी हो. हमारे पास आजाओ. यह ख़बर पाकर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उसके साथी ईमान वालों को अबू सुफ़ियान और उसके साथियों से डरा कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साथ देने से रोकने लगे और इसमें उन्होंने बहुत कोशिस की लेकिन जिस क़द्र उन्होंने कोशिश की, ईमान वालों की दृढ़ता और इरादा और बढ़ता गया.
(२३) रियाकारी और दिखावट के लिये.
(२४) और अम्न और माल हासिल हो.
(२५) और ये कहें हमें ज़्यादा हिस्सा दो. हमारी ही वजह से तुम विजयी हुए हो.
(२६) हक़ीक़त में अगरचे उन्होंने ज़बान से ईमान का इज़हार किया.
(२७) यानी चूंकि वास्तव में वो ईमान वाले न थे इसलिये उनके सारे ज़ाहिरी कर्म जिहाद वग़ैरह सब बातिल कर दिये.
(२८) यानी मुनाफ़िक़ लोग अपनी कायरता और नामर्दी से अभी तक यह समझ रहे हैं कि क़ुरैश के काफ़िर और ग़तफ़ान और यहूदी वग़ैरह अभी तक मैदान छोड़कर भागे नहीं हैं अगरचे हक़ीक़ते हाल यह है कि वो फ़रार हो चुके.
(२९) यानी मुनाफ़िक़ों की अपनी नामर्दी के कारण यही आरज़ू और --
(३०) मदीनए तैय्यिबह के आने जाने वालों से.
(३१) कि मुसलमानों का क्या अंजाम हुआ. काफ़िरों के मुक़ाबले में उनकी क्या हालत रही.
(३२) रियाकारी और उज़्र रखने के लिये, ताकि यह कहने का मौक़ा मिल जाए कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे.

सूरए अहज़ाब - तीसरा रूकू

(१) उनका अच्छी तरह अनुकरण करो और अल्लाह के दीन की मदद करो और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साथ न छोड़ो और मुसीबतों पर सब्र करो और रसूले करीम सल्लल्लाह अलैहे वसल्लम की सुन्नतों पर चलो. यह बेहतर है.
(२) हर अवसर पर उसका ज़िक्र करे, ख़ुशी में भी, ग़म में भी. तंगी में भी, ख़ुशहाली में भी.
(३) कि तुम्हें सख़्ती और बला पहुंचेगी और तुम परीक्षा में डाले जाओगो और पहलों की तरह तुम पर सख़्तियाँ आएंगी और लश्कर जमा हो हो कर तुम पर टूटेंगे और अन्त में तुम विजयी होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : **"अम हसिबतुम अन तदख़ुलुल जन्नता व लम्मा यातिकुम मसलुल लज़ीना ख़लौ मिन क़बलिकुम "** यानी क्या इस

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَــــُٔوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

منزل ۵

और अल्लाह ने काफ़िरों को[९] उनके दिलों की जलन के साथ पलटाया कि कुछ भला न पाया[१०] और अल्लाह ने मुसलमानों को लड़ाई की किफ़ायत फ़रमादी[११] और अल्लाह ज़बरदस्त इज़्ज़त वाला है(२५) और जिन किताब वालों ने उनकी मदद की थी[१२] उन्हें उनके क़िलों से उतारा[१३] और उनके दिलों में रोब डाला उनमें एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो[१४] और एक गिरोह को क़ैद[१५](२६) और हमने तुम्हारे हाथ लगाए उनकी ज़मीन और उनके मकान और उनके माल[१६] और वह ज़मीन जिसपर तुमने अभी क़दम नहीं रखा है[१७] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है(२७)

चौथा रूकू

ऐ ग़ैब बताने वाले(नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दो अगर तुन दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी आरायश चाहती हो[१] तो आओ मैं तुम्हें माल दूँ[२] और अच्छी तरह छोड़ दूं[३](२८) और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिये बड़ा अज्र तैयार कर रखा है(२९) ऐ नबी की बीबियो जो तुममें खुली शर्म के ख़िलाफ़ कोई जुरअत करे[४] उसपर औरों से दूना अज़ाब होगा[५] और यह अल्लाह को आसान है(३०)

गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रुदाद न आई - (सूरए बक़रह, आयत २१४).और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा से फ़रमाया कि पिछली नौ या दस रातों में लश्कर तुम्हारी तरफ़ आने वाले हैं. जब उन्हों ने देखा कि उस मीआद पर लश्कर आगए तो कहा यह है वह जो हमें अल्लाह और उसके रसूल ने वादा दिया था.

(४) यानी जो उसके वादे हैं, सब सच्चे हैं, सब यक़ीनन वाक़े होंगे. हमारी मदद भी होगी , हमें विजय भी दी जाएगी और मक्कए मुकर्रमा और रुम और फ़ारस भी फ़त्ह होंगे.

(५) हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत तलहा और हज़रत सईद बिन जैद और हज़रत हमज़ा और हज़रत मुसअब वग़ैरह रदियल्लाहो अन्हुम ने नज़्र मानी थी कि वो जब रसूले करीम सल्लल्लाहोअलैहे वसल्लम के साथ जिहाद का मौक़ा पाएंगे तो डटे रहेंगे यहाँ तक कि शहीद हो जाएं. उनकी निस्बत इस आयत में इरशाद हुआ कि उन्होंने अपना वादा सच्चा कर दिखाया.

(६) जिहाद पर डटा रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया जैसे कि हज़रत हमज़ा और हज़रत मुसअब रदियल्लाहो अन्हुमा.

(७) और शहादत का इन्तिज़ार कर रहा है जैसे कि हज़रत उस्मान और हज़रत तलहा रदियल्लाहो अन्हुमा.

(८) अपने एहद पर वैसे ही डटे रहे. शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तिज़ार करने वाले भी. उन मुनाफ़िक़ों और दिल के बीमार लोगों पर धिक्कार है जो अपने एहद पर क़ायम न रहे.

(९) यानी क़ुरैश और ग़तफ़ान के लश्करों का, जिनका ऊपर ज़िक्र हो चुका है.

(१०) नाकाम और नामुराद वापस हुए.

(११) कि दुश्मन फ़रिश्तों की तकबीरों और हवा की तीव्रता से भाग निकले.

(१२) यानी बनी कुरैज़ा ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुक़ाबले में कुरैश और ग़तफ़ान वग़ैरह की मदद की थी.

(१३) इसमें ग़ज़वए बनी कुरैज़ा का बयान है.

ग़ज़वए बनी कुरैज़ा : यह ज़ी-क़अदह सन चार या सन पाँच हिजरी के आख़िर में हुआ, जब ग़ज़वए ख़न्दक़ में रात को विरोधियों के लश्कर भाग गए जिसका ऊपर की आयतों में बयान हुआ है, उस रात की सुबह को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और सहाबा मदीनए तैय्यिबह में तशरीफ़ लाए और हथियार उतार दिये. उस रोज़ ज़ोहर के वक़्त हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सरे मुबारक धोया जारहा था, जिब्रईले अमीन हाज़िर हुए और उनहोंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये. फ़रिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं. अल्लाह तआला आपको बनी क़ुरैज़ा की तरफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है. हुज़ूर ने हुक्म

फ़रमाया कि पुकार लगा दी जाए बनी क़ुरैज़ा में जाकर. हुज़ूर यह फ़रमा कर रवाना हो गए. और मुसलमान चलने शुरु हुए और एक के बाद दूसरे हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचते रहे यहाँ तक कि कुछ लोग ईशा नमाज़ के बाद पहुंचे लेकिन उन्होंने उस वक़्त तक अस्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्योंकि हुज़ूर ने बनी क़ुरैज़ा में पहुंच कर अस्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म फ़रमाया था इसलिये उस रोज़ उन्होंने अस्र की नमाज़ ईशा बाद पढ़ी और इसपर न अल्लाह तआला ने उनकी पकड़ फ़रमाई न रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने. इस्लामी लश्कर ने पच्चीस दिनों तक बनी क़ुरैज़ा का घिराव रखा. इससे वो तंग हो गए और अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोअब डाला. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम मेरे हुक्म पर क़िलों से उतरोगे? उन्होंने इन्कार किया तो फ़रमाया क्या क़बीला औस के सरदार सअद बिन मआज़ के हुक्म पर उतरोगे ? इसपर वह राज़ी हुए और सअद बिन मआज़ को उनके बारे में हुक्म देने पर मामूर किया. हज़रत सअद ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जाएं, औरतें और बच्चे क़ैद किये जाएं. फिर मदीने के बाज़ार में ख़न्दक़ खोदी गई और वहाँ लाकर उन सब की गर्दन मार दी गई. उन लोगों में बनी नुज़ैर क़बीले का मुखिया कअब बिन असद भी था और ये लोग छ सौ या सात सौ जवान थे जो गर्दनें काटकर ख़न्दक़ में डाल दिये गए. (मदारिक व जुमल)

(१४) यानी मुक़ातिलीन को.

(१५) औरतों और बच्चों को.

(१६) नक़्द और सामान और मवेशी, सब मुसलमानों के क़ब्ज़े में आई.

(१७) इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो क़ुरैज़ा की जीत के बाद मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया या वह हर ज़मीन मुराद है जो क़यामत तक फ़त्ह होकर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आने वाली है.

सूरए अहज़ाब - चौथा रूकू

(१) यानी अगर तुम्हें बहुत सारा माल और ऐश के साधन दरकार हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पाक बीबियों ने आपसे दुनियवी सामान तलब किये और गुज़ारे के ख़र्च को बढ़ाने की दरख़्वास्त की. यहाँ तो पाकीज़गी अपनी चरम सीमा पर थी और दुनिया का सामान जमा करना गवारा ही न था इस लिये यह तलब सरकार के दिल पर बोझ हुई. और तब यह आयत उतरी और हुज़ूर की मुक़द्दस बीबियों को समझाया गया. उस वक़्त हुज़ूर की नौ बीबियाँ थीं. पाँच क़ुरैश से, हज़रत आयशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो, हज़रत हफ़सा बिन्ते उमरे फ़ारूक़, उम्मे हबीबह बिन्ते अबू सुफ़ियान, उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमैया, सौदह बिन्ते ज़मअह और चार बीबियाँ ग़ैर क़ुरैश, ज़ैनब बिन्ते जहश असदियह, मेमूनह बिन्ते हारिस हिलालियह, सफ़ियह बिन्ते हयई बिन अख़्तब ख़ैबरियह, जवैरियह बिन्ते हारिस मुस्तलिक़ियह (सबसे अल्लाह तआला राज़ी). सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सबसे पहले हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा को यह आयत सुनाकर इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि जल्दी न करो अपने माँ बाप से सलाह करके जो राय हो उस पर अमल करो. उन्होंने अर्ज़ किया, हुज़ूर के मामले में सलाह कैसी. मैं अल्लाह को और उसके रसूल को और आख़िरत को चाहती हूँ, और बाक़ी बीबियों ने भी यही जवाब दिया. जिस औरत को इख़्तियार दिया जाए वह अगर अपने शौहर को इख़्तियार करे तो तलाक़ वाक़े नहीं होती और अगर अपने नफ़्स को इख़्तियार करे तो हमारे नज़दीक तलाक़े बाइन वाक़े हो जाती है.

(२) जिस औरत के साथ निकाह के बाद सोहबत हुई हो उसको तलाक़ दी जाए तो कुछ सामान देना मुस्तहब है और वह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है. यहाँ माल से वही मुराद है. जिस औरत का मेहर निर्धारित न किया गया हो उसको सोहबत से पहले तलाक़ दी तो यह जोड़ा देना वाजिब है.

(३) बग़ैर किसी नुक़सान के.

(४) जैसे कि शौहर की फ़रमाँबरदारी में कमी करना और उसके साथ दुर्व्यवहार करना, क्योंकि बदकारी से अल्लाह तआला नबियों की बीबियों को पाक रखता है.

(५) क्योंकि जिस शख़्स की फ़ज़ीलत ज़्यादा होती है उससे अगर क़ुसूर वाक़े हो तो वह क़ुसूर भी दूसरों के क़ुसूर से ज़्यादा सख़्त क़रार दिया जाता है. इसीलिये आलिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़्यादा बुरा होता है और इसी लिये आज़ादों की सज़ा शरीअत में गुलामों से ज़्यादा मुक़र्रर है. और नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बीबियाँ सारे जगत की औरतों से ज़्यादा बुज़ुर्गी रखती हैं इसलिये उनकी थोड़ी सी बात सख़्त पकड़ के क़ाबिल है. "फ़ाहिशा" यानी हया के ख़िलाफ़ खुली जुरअत का शब्द जब मअरिफ़ह होकर आए तो उससे ज़िना और लिवातत मुराद होती है और अगर नकरह ग़ैर मौसूफ़ह होकर लाया जाए तो उससे सारे गुनाह मुराद होते हैं और जब मौसूफ़ होकर आए तो उससे शौहर की नाफ़रमानी और उससे लड़ना झगड़ना मुराद होता है. इस आयत में नकरह मौसूफ़ह है इसीलिये इससे शौहर की इताअत में कमी और उससे दुर्व्यवहार मुराद है जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से नक़्ल किया गया है. (जुमल वग़ैरह)

पारा इक्कीस समाप्त

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا
نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾
يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ
فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ
مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ
وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اِنَّمَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَ
الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَ

منزل ٥

बाईसवाँ पारा - व मैंय-यक़नुत

(सूरए अहज़ाब जारी)

और[६] जो तुम में फ़रमाँबरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना सवाब देंगे[७] और हमने उसके लिये इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है[८] (३१) ऐ नबी की बीबियो तुम और औरतों की तरह नहीं हो[९] अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नर्मी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे[१०] हाँ अच्छी बात कहो[११] (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो और बेपर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी[१२] और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो, अल्लाह तो यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे[१३] (३३) और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें और हिकमत[१४] बेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है (३४)

पाँचवां रूकू

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें[१] ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमाँबरदार और फ़रमांबरदारें और सच्चे और सच्चियां[२] और सब्र वाले और सब्र वालियाँ और आजिज़ी करने वाले और आजिज़ी करने वालियां और

(६) ऐ नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बीबियो.

(७) यानी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना, क्योंकि सारे जगत की औरतों में तुम्हें अधिक सम्मान और बुज़ुर्गी हासिल है और तुम्हारे अमल में भी दो क़िस्में हैं एक इताअत की अदा, दूसरे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को राज़ी रखने की कोशिश और क़नाअत और अच्छे व्यवहार के साथ हुज़ूर को ख़ुश करना.

(८) जन्नत में.

(९) तुम्हारा दर्जा सबसे ज़्यादा है और तुम्हारा इनाम सबसे बढ़कर. जगत की औरतों में कोई तुम्हारे बराबर की नहीं.

(१०) इसमें अदब की तालीम है कि अगर ज़रूरत के हिसाब से किसी ग़ैर मर्द से पर्दे के पीछे से बात करनी पड़े तो कोशिश करो कि लहजे में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच न हो. बात बहुत ही सादगी से की जाए. इज़्ज़त वाली महिलाओं के लिये यही शान की बात है.

(११) दीन और इस्लाम की और नेकी की तालीम और नसीहत व उपदेश की, अगर ज़रूरत पेश आए, मगर बेलोच लहजे से.

(१२) अगली जिहालत से मुराद इस्लाम से पहले का ज़माना है. उस ज़माने में औरतें इतराती हुई निकलती थीं, अपनी सजधज और श्रंगार का इज़्हार करती थीं कि अजनबी मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिनसे बदन के अंग अच्छी तरह न छुपें और पिछली जिहालत से आख़िरी ज़माना मुराद है जिसमें लोगों के कर्म पहलों की तरह हो जाएंगे.

(१३) यानी गुनाहों की गन्दगी से तुम प्रदूषित न हो. इस आयत से एहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है. और एहले बैत में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीबियाँ और हज़रत ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़हरा और अली मुर्तज़ा और हसनैने करीमैन (यानी सैयदना इमाम हसन और सैयदना इमाम हुसैन) रदियल्लाहो अन्हुम सब दाख़िल हैं. आयतों और हदीसों को जमा करने से यही नतीजा निकलता है और यही हज़रत इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी रहमतुल्लाह अलैह से नक़्ल किया गया है. इन आयतों में एहले बैते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नसीहत फ़रमाई गई है ताकि वो गुनाहों से बचें और तक़वा और परहेज़गारी के पाबन्द रहें. गुनाहों को नापाकी से और परहेज़गारी को पाकी से उपमा दी गई क्योंकि गुनाह करने वाला उनसे ऐसा ही सना होता है जैसा शरीर गन्दगी से. इस अन्दाज़े कलाम से मक़सद यह है कि समझ वालों को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़वा व परहेज़गारी की तरग़ीब दी जाए.

الْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَ
الْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا
وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٣٥﴾
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ
أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا ﴿٣٦﴾ وَإِذْ
تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ
مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ
فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى
النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ

منزل ٥

ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सबके लिये अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है (३५) और न किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औरत को पहुंचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मामले का कुछ इख़्तियार रहे[३] और जो हुक्म न माने अल्लाह और उसके रसूल का वह बेशक खुली गुमराही बहका (३६) और ऐ मेहबूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उससे जिसे अल्लाह ने नेअमत दी[४] और तुमने उसे नेअमत दी[५] कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे[६] और अल्लाह से डर[७] और तुम अपने दिल में रखते थे वह जिसे अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था[८] और तुम्हें लोगों के तअने का अन्देशा (डर) था[९] और अल्लाह ज़्यादा सज़ावार है कि उसका ख़ौफ़ रखो[१०] फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उससे निकल गई[११] तो हमने वह तुम्हारे निकाह में दे दी[१२] कि मुसलमानों पर कुछ हर्ज न रहे उनके लेपालकों की बीबियों में जब उनसे उनका काम ख़त्म हो जाए[१३] और अल्लाह का हुक्म होकर रहना (३७) नबी पर कोई हर्ज नहीं उस बात में जो अल्लाह ने उसके लिये मुक़र्रर फ़रमाई[१४] अल्लाह का

(१४) यानी सुन्नत.

सूरए अहज़ाब - पाँचवां रूकू

(१) असमा बिन्ते अमीस जब अपने शौहर जअफ़र बिन अबी तालिब के साथ हबशा से वापिस आईं तो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीबियों से मिलकर उन्हों ने पूछा कि क्या औरतों के बारे में भी कोई आयत उतरती है. उन्होंने फ़रमाया नहीं. तो अस्मा ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर औरतें बड़े टोटे में हैं. फ़रमाया, क्यों . अर्ज़ किया उनका ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है. इसपर यह आयत उतरी और उनके साथ उनकी तारीफ़ फ़रमाई गई और दर्जों में से पहला दर्जा इस्लाम है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमाँबरदारी है. दूसरा ईमान कि वह सही अक़ीदे और ज़ाहिर बातिन का एक सा सच्चा होना है. तीसरा दर्जा ताअत है.

(२) इसमें चौथे दर्जे का बयान है कि वह नियत की सच्चाई और कहने व करने की सत्यता है. इसके बाद पाँचवें दर्जे सब्र का बयान है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करना और जिन बातों से मना किया गया है उनसे दूर रहना, चाहे नफ़्स को कितना ही बुरा लगे. जो काम भी हो अल्लाह की रज़ा के लिये इख़्तियार किया जाए . इसके बाद ख़ुशूअ यानी सच्ची लगन का बयान है जो इबादतों और ताअतों में दिलों और पूरे शरीर के साथ एकाग्रता का नाम है. इसके बाद सातवें दर्जे सदक़े का बयान है जो अल्लाह तआला के अता किये हुए माल में से उसकी राह में फ़र्ज़ या नफ़्ल की सूरत में देना है. फिर आठवें दर्जे रोज़े का बयान है. यह भी फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों को शामिल है. कहा गया है कि जिसने हर हफ़्ते एक दिरहम सदक़ा किया, वह 'मुसद्दिक़ीन' (यानी सदक़ा देने वालों) में और जिसने हर माह अय्यामे बैज़ के तीन रोज़े रखे, वह 'साइमीन' (यानी रोज़ा रखने वालों) में शुमार किया जाता है. इसके बाद नवें दर्जे इफ़्फ़त यानी पाकीज़गी का बयान है और वह यह है कि अपनी पारसाई को मेहफ़ूज़ रखे और जो हलाल नहीं है, उससे बचे . सब से आख़िर में दसवें दर्जे ज़िक्र की कसरत का बयान है. ज़िक्र में तस्बीह, तहमीद, तहलील, तकबीर, क़ुरआन का पाठ, दीन का इल्म पढ़ना, नमाज़, नसीहत, उपदेश, मीलाद शरीफ़, नअत शरीफ़ पढ़ना, सब दाख़िल हैं. कहा गया है कि बन्दा ज़िक्र करने वालों में तब गिना जाता है जब कि वह खड़े बैठे लेटे हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करे.

(३) यह आयत ज़ैनब बिन्ते जहश असदियह और उनके भाई अब्दुल्लाह बिन जहश और उनकी वालिदा उमैमह बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब के हक़ में उतरी. उमैमह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फुफी थीं. वाक़िआ यह था कि ज़ैद बिन हारिसा जिनको रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आज़ाद किया था और वह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे, हुज़ूर ने ज़ैनब के लिये उनका पयाम

दिया. उसको ज़ैनब और उनके भाई ने मन्ज़ूर नहीं किया. इसपर यह आयत उतरी . और हज़रत ज़ैनब और उनके भाई इस हुक्म को सुनकर राज़ी हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैद का निकाह उनके साथ कर दिया और हुज़ूर ने उनका मेहर दस दीनार, साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद (एक नाप है) खाना, तीस साअ खजूरें दीं. इस से मालूम हुआ कि आदमी को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी हर सूरत में वाजिब है और नबी अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में कोई अपने नफ़्स का ख़ुद मुख़्तार नहीं. इस आयत से यह भी साबित हुआ कि अम्र वुजूब यानी आनिवार्यता के लिये होता है. कुछ तफ़सीरों में हज़रत ज़ैद को ग़ुलाम कहा गया है मगर यह भूल से ख़ाली नहीं क्योंकि वह आज़ाद थे.

(४) इस्लाम की, जो बड़ी महान नेअमत है.

(५) आज़ाद फ़रमा कर. इस से मुराद हज़रत ज़ैद बिन हारिसह हैं कि हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद किया और उनका पालन पोषण किया.

(६) जब हज़रत ज़ैद का निकाह हज़रत ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से वही आई कि ज़ैनब आपकी बीबियों में दाख़िल होंगी, अल्लाह तआला को यही मंज़ूर है. इसकी सूरत यह हुई कि हज़रत ज़ैद और ज़ैनब के बीच जमी नहीं और हज़रत ज़ैद ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हज़रत ज़ैनब की तेज़ ज़बानी और कड़वे बोलों और नाफ़रमानी और अपने आपको बड़ा समझने की शिकायत की. ऐसा बार बार इत्तिफ़ाक़ हुआ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत ज़ैद को समझा देते. इसपर ये आयत उतरी.

(७) ज़ैनब पर घमण्ड और शौहर को तकलीफ़ पहुंचाने के इल्ज़ाम लगाने में.

(८) यानी आप यह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निबाह नहीं हो सकेगा और तलाक़ ज़रूर वाक़े होगा. और अल्लाह तआला उन्हें अज़वाजे मुतह्हिरात में दाख़िल करेगा और अल्लाह तआला को इसका ज़ाहिर करना मंज़ूर था.

(९) यानी जब हज़रत ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक़ दे दी तो आप को लोगों के तअनों का अन्देशा हुआ कि अल्लाह तआला का हुक्म तो है हज़रत ज़ैनब के साथ निकाह करने का और ऐसा करने से लोग तअना देंगे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐसी औरत से निकाह कर लिया जो उनके मुहं बोले बेटे के निकाह में रही थी. इससे मालूम हुआ कि नेक काम में बेजा तअना करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिये.

(१०) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सब से ज़्यादा अल्लाह का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़्यादा तक़वा वाले हैं, जैसा कि हदीस शरीफ़ में है.

(११) और हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दी और इद्दत गुज़र गई.

(१२) हज़रत ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बाद उनके पास हज़रत ज़ैद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पयाम लेकर गए और उन्हों ने सर झुका कर भरपूर शर्म और अदब से उन्हें यह पयाम पहुंचाया. उन्हों ने कहा कि इस मामले में मैं अपनी राय को कुछ दख़्ल नहीं देती, जो मेरे रब को मंज़ूर हो, उसपर राज़ी हूँ. यह कहकर वह अल्लाह की बारगाह में मुतवज्जेह हुई और उन्हों ने नमाज़ शुरू कर दी और यह आयत नाज़िल हुई. हज़रत ज़ैनब को इस निकाह से बहुत ख़ुशी और फ़ख़्र हुआ. सैयदे आलम ने इस शादी का वलीमा बड़ी शान से किया.

(१३) ताकि यह मालूम हो जाए कि लेपालक की बीबी से निकाह जायज़ है.

(१४) यानी अल्लाह तआला ने जो उनके लिये जायज़ किया और निकाह के बारे में जो वुसअत उन्हें अता फ़रमाई उसपर इक़दाम करने में कुछ हर्ज नहीं.

فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا
مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَ
يَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
حَسِيبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ
رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا
كَثِيرًا ﴿٤١﴾ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِي
يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ
يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾ يَا أَيُّهَا
النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾ وَ
دَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا

दस्तूर (तरीक़ा) चला आ रहा है उनमें जो पहले गुज़र चुके[१५] और अल्लाह का काम मुक़र्रर तक़दीर है (३८) वो जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उससे डरते और अल्लाह के सिवा किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस है हिसाब लेने वाला[१६] (३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं[१७] हाँ अल्लाह के रसूल हैं[१८] और सब नबियों के पिछले[१९] और अल्लाह सब कुछ जानता है (४०)

छटा रुकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो (४१) और सुबह शाम उसकी पाकी बोलो[१] (४२) वही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वह और उसके फ़रिश्ते[२] कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की तरफ़ निकाले[३] और वह मुसलमानों पर मेहरबान है (४३) उनके लिये मिलते वक़्त की दुआ सलाम है[४] और उनके लिये इज़्ज़त का सवाब तैयार कर रखा है (४४) ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर नाज़िर[५] और ख़ुशख़बरी देता और डर सुनाता[६] (४५) और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाता[७] और चमका देने वाला आफ़ताब[८] (४६) और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दो कि उनके लिये अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) है (४७)

(१५) यानी नबीयों को निकाह के सिलसिले में वुसअतें दी गईं कि दूसरों से ज़्यादा औरतें उनके लिये हलाल फ़रमाई गईं जैसा कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की सौ बीबियाँ और हज़रत सुलैमान की तीस बीबियाँ थीं. यह उनके ख़ास अहकाम हैं उनके अलावा दूसरे को जायज़ नहीं. न कोई इसपर ऐतिराज़ कर सकता है. अल्लाह तआला अपने बन्दों में जिसके लिये जो हुक्म फ़रमाए उसपर किसी को ऐतिराज़ की क्या मजाल. इसमें यहूदियों का रद है जिन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर चार से ज़्यादा निकाह करने पर तअना दिया था. इसमें उन्हें बताया गया कि यह हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये ख़ास है जैसा कि पहले नबीयों के लिये कई बीबियाँ रखने के ख़ास आदेश थे.

(१६) तो उसी से डरना चाहिये.

(१७) तो हज़रत ज़ैद के भी आप हक़ीक़म में बाप नहीं कि उनकी मन्कूहा आपके लिये हलाल न हुई. क़ासिम, तैयबो ताहिर और हज़रत इब्राहीम हुज़ूर के बेटे थे, मगर इस उम्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाए. उन्होंने बचपन में वफ़ात पाई.

(१८) और सब रसूल नसीहत करने वाले, शफ़क़त रखने वाले और इज़्ज़त किये जाने के क़ाबिल और उनकी फ़रमाँबरदारी अनिवार्य होने के कारण अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं बल्कि उनके अधिकार सगे बाप के हुक़ूक़ से बहुत ज़्यादा हैं लेकिन इससे उम्मत हक़ीक़ी औलाद नहीं हो जाती और हक़ीक़ी औलाद के तमाम अहकाम विरासत वग़ैरह उसके लिये साबित नहीं होते.

(१९) यानी आख़िरी नबी कि नबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई. आपकी नबुव्वत के बाद किसी को नबुव्वत नहीं मिल सकती यहाँ तक कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उतरेंगे तो अगरचे पहले नबुव्वत पा चुके हैं मगर उतरने के बाद शरीअते मुहम्मदिया पर चलेंगे और इसी शरीअत पर हुक्म करेंगे और आप ही के क़िबले यानी काबए मुअज़्ज़मह की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे. हुज़ूर का आख़िरी नबी होना क़तई है, कुरआनी आयतें भी साबित करती हैं और बहुत सी सही हदीसें भी. इन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी ह. आपके बाद किसी और को नबुव्वत मिलना संभव जाने, वह ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार करने वाला काफ़िर और इस्लाम से बाहर है.

सूरए अहज़ाब - छटा रुकू

(१) क्योंकि सुब्ह और शाम के औक़ात रात दिन के फ़रिश्तों के जमा होने के वक़्त हैं और यह भी कहा गया है कि रात दिन का ज़िक्र करने से ज़िक्र की हमेशगी की तरफ़ इशारा किया गया है.

(२) हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जब आयत "इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन नबी" उतरी तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, जब आपको अलाह तआला कोई फ़ज़्ल और बुज़ुर्गी अता फ़रमाता है तो हम नियाज़मन्दों को भी आपके तुफ़ैल में नवाज़ता है. इसपर अल्लाह

تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ؗ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ

منزل ٥

और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की ख़ुशी न करो और उनकी ईज़ा पर दरगुज़र(क्षमा) फ़रमाओ(९) और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस है कारसाज़(काम बनाने वाला)(४८) ऐ ईमान वालो जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं जिसे गिनो(१०) तो उन्हें कुछ फ़ायदा दो(११) और अच्छी तरह से छोड़ दो(१२)(४९) ऐ ग़ैब बताने वाले(नबी) हमने तुम्हारे लिये हलाल फ़रमाई तुम्हारी वो बीबियाँ जिन को तुम मेहर दो(१३) और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें(दासियाँ) जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत (युद्ध के बाद का माल) में दीं(१४) और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और फुफियों की बेटियाँ और मामूं की बेटियाँ और ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की(१५) और ईमान वाली औरत अगर वह अपनी जान नबी की नज़्र(भेंट) करे अगर नबी उसे निकाह में लाना चाहे(१६) यह ख़ास तुम्हारे लिये है उम्मत के लिये नहीं(१७) हमें मालूम है जो हमने मुसलमानों पर मुक़र्रर(निर्धारित) किया है उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल कनीज़ों में(१८) यह ख़ुसूसियत तुम्हारी(१९) इसलिये कि तुम पर कोई तंगी न हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान(५०) पीछे हटाओ उनमें से जिसे चाहो(२०) और अपने पास जगह दो

तआला ने यह आयत उतारी.

(३) यानी कुफ़्र और गुमराही और ख़ुदा को न पहचानने की अंधेरियों से सच्चाई, हिदायत और अल्लाह की पहचान की रौशनी की तरफ़ हिदायत फ़रमाए.

(४) मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का. रिवायत है कि हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम किसी ईमान वाले की रूह उसको सलाम किये बग़ैर नहीं निकालते. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जब मलकुल मौत मूमिन की रूह निकालने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम कहता है और यह भी आया है कि मूमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो फ़रिश्ते सलामती की बशारत के तौर पर उन्हें सलाम करेंगे. (जुमल व ख़ाज़िन)

(५) शाहिद का अनुवाद हाज़िर नाज़िर बहुत बेहतरीन अनुवाद है. मुफ़्रर्दाते राग़िब में है '' अश शुहूदो वश शहादतुल हुज़ूरो मअल मुशाहदते इम्मा बिल बसरे औ बिल बसीरते '' यानी शुहूद और शहादत के मानी हैं हाज़िर होना साथ नाज़िर होने के. बसर के साथ हो या बसीरत के साथ. और गवाह को भी इसीलिये शाहिद कहते हैं कि वह अवलोकन या मुशाहिदे के साथ जो इल्म रखता है, उसको बयान करता है. सैयदे आल्लम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि, सारे जगत के लिये भेजे गए हैं. आपकी रिसालत सार्वजनिक है जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुआ तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क़यामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और उनके अअमाल, अफ़आल और अहवाल, तस्दीक़, तकज़ीब (झुटलाना) हिदायत, गुमराही सब का अवलोकन फ़रमाते हैं. (अबू सऊद व जुमल)

(६) यानी ईमानदारों को जन्नत की ख़ुशख़बरी और काफ़िरों को जहन्नम के अज़ाब का डर सुनाता.

(७) यानी सृष्टि को अल्लाह की ताक़त की तरफ़ बुलाता.

(८) सिराज का अनुवाद आफ़ताब या सूरज क़ुरआने करीम के बिलकुल मुताबिक है कि उसमें आफ़ताब को सिराज फ़रमाया गया है जैसा कि सूरए नूह में '' वजअलश शम्सा सिराजन'' और आख़िर पारे की पहली सूरत में है ''वजअलना सिराजौं वहहाजन'' और दर हक़ीक़त हज़ारों सूरजों से ज़्यादा रौशनी आपकी नबुव्वत के नूर ने पहुंचाई और कुफ़्र व शिर्क के सख़्त अंधेरों को अपने नूरे हक़ीक़त से उजाला कर दिया और सृष्टि के लिये मअरिफ़त और अल्लाह की वहदानियत तक पहुंचने की राहें रौशन और साफ़ कर दीं और गुमराही की तारीक घाटी में राह खोजने वालों को अपनी हिदायत के नूर से रास्ता दिखाया और अपनी नबुव्वत के नूर से इन्सानों के अन्दर और बाहर और दिल तथा आत्मा को उजला किया. हक़ीक़त में आपका वुजूदे मुबारक ऐसा चमकने वाला सूरज है जिसने हज़ारों सूरज बना दिये इसीलिये उसकी विशेषता में 'मुनीर' यानी चमका देने वाला इरशाद फ़रमाया गया.

(९) जब तक कि इस बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई हुक्म दिया जाए.

(१०) इस आयत से मालूम हुआ कि अगर औरत को क़ुर्बत या सोहबत से पहले तलाक़ दी तो उसपर इद्दत वाजिब नहीं. ख़िलवते

تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ
بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ
بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ
حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ
النَّبِىِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ
اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ
فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِى النَّبِىَّ فَيَسْتَحْىٖ مِنْكُمْ ز وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْىٖ مِنَ
الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ
حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ

منزل ٥

जिसे चाहो, और जिसे तुम ने किनारे कर दिया था उसे तुम्हारा जी चाहे तो उसमें भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं[२१] यह अम्र(बात) इस से नज़्दीक तर है कि उनकी आँखें ठण्डी हों और ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अता फ़रमाओ उस पर वो सब की सब राज़ी रहें[२२] और अल्लाह जानता है जो तुम सब के दिलों में है, और अल्लाह इल्म व हिल्म वाला है﴾५१﴿ उनके बाद[२३] और औरतें तुम्हें हलाल नहीं[२४] और न यह कि उनके इवज़ और बीबियाँ बदलो[२५] अगरचे तुम्हें उनका हुस्न(सौंदर्य) भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल[२६] और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है﴾५२﴿

सातवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो नबी के घरों में[१] न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ[२] मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूं कि ख़ुद उसके पकने की राह तको[३] हाँ जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो अलग अलग हो जाओ न यह कि बैठे बातों में दिल बहलाओ[४] बेशक इसमें नबी को तकलीफ़ होती थी तो वह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे[५] और अल्लाह हक़(सत्य) फ़रमाने में नहीं शरमाता, और जब तुम उनसे[६] बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो इस में ज़्यादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उनके दिलों

सहीहा यानी औरत के साथ बिल्कुल एकान्त सोहबत के हुक्म में है, तो अगर ख़िलवते सहीहा के बाद तलाक़ दी तो इद्दत वाजिब होगी अगरचे अस्ल सोहबत यानी मुबाशिरत (संभोग) न हुई हो. यह हुक्म ईमानदार औरत और किताबी औरत दोनों को लागू है. लेकिन आयत में मूमिन औरतों का ज़िक्र फ़रमाना इस तरफ़ इशारा है कि निकाह करना ईमान वाली औरत से ही बेहतर है.

(११) यानी अगर उनका मेहर मुक़र्रर हो चुका था तो एकान्त से पहले तलाक़ देने से शौहर पर आधा मेहर वाजिब होगा और अगर मेहर मुक़र्रर नहीं हुआ था तो एक जोड़ा देना वाजिब है जिसमें तीन कपड़े होते है.

(१२) अच्छी तरह छोड़ना यह है कि उनके हुक़ूक़ अदा कर दिये जाएं और उनको कोई तकलीफ़ न दी जाए और उन्हें रोका न जाए क्योंकि उनपर इद्दत नहीं है.

(१३) मेहर की अदायगी में जल्दी और अक़्द में इसका निर्धारित किया जाना अफ़ज़ल है . शर्ते हुल्लत नहीं क्योंकि मेहर को जल्दी देना या उसको मुक़र्रर करना बेहतर है, वाजिब नहीं. (तफ़सीरे अहमदी)

(१४) जैसे हज़रत सफ़िया और हज़रत जवैरिया, जिन को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आज़ाद फ़रमाया और उनसे निकाह किया. ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलात के लिये है क्योंकि ममलूकात बमिल्के यमीन चाहे ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या विरासत या वसीयत से, वो सब हलाल हैं.

(१५) साथ हिजरत करने की क़ैद भी अफ़ज़ल का बयान है क्योंकि बग़ैर साथ हिजरत करने के भी उनमें से हर एक हलाल है और यह भी हो सकता है कि ख़ास हुज़ूर के हक़ में उन औरतों की हुल्लत यानी हलाल होना इस क़ैद के साथ हो कि उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब की रिवायत इस तरफ़ इशारा करती है

(१६) मानी ये हैं कि हम ने आपके लिये उस मूमिन औरत को हलाल किया जो बग़ैर मेहर और निकाह की शर्तों के बिना अपनी जान आपको हिबा करे बशर्ते कि आप उसे निकाह में लाने का इरादा फ़रमाएं . हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इसमें आयन्दा के हुक्म का बयान है क्योंकि आयत उतरने के वक़्त हुज़ूर की बीबियों में से कोई ऐसी न थीं जो हिबा के ज़रिये से सरकार की बीबी बनी हों और जिन ईमान वाली बीबियों ने अपनी जानें हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नज़्र कर दीं वो मैमूना बिन्ते हारिस और ख़ौलह बिन्ते हकीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं. (तफ़सीरे अहमदी)

(१७) यह बिन मेहर का निकाह ख़ास आपके लिये जायज़ है उम्मत के लिये नहीं. उम्मत पर बहर हाल मेहर वाजिब है चाहे वो मेहर निर्धारित न करें या जान बूझ कर मेहर की नफ़ी करें. निकाह हिबा शब्द के साथ जायज़ है.

(१८) यानी बीबियों के हक़ में जो कुछ मुक़र्रर फ़रमाया है चाहे मेहर और गवाह और बारी का वाजिब होना और चार आज़ाद औरतों तक को निकाह में लाना. इससे मालूम हुआ कि शरअई तौर से मेहर की मात्रा अल्लाह तआला के नज़्दीक मुक़र्रर है और

वह दस दिरहम हैं जिससे कम करना मना है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है.
(१९) जो ऊपर बयान की हुई औरतें आपके लिये मात्र हिबा से बग़ैर मेहर के हलाल की गईं.
(२०) यानी आपको इख़्तियार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुक़र्रर करें या न करें. लेकिन इस इख़्तियार के बावुजूद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम बीबियों के साथ न्याय फ़रमाते और उनकी बारियाँ बराबर रखते सिवाय हज़रत सौदह रदियल्लाहो अन्हा के जिन्हों ने अपनी बारी का दिन हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा को दे दिया था और हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया था कि मेरे लिये यही काफ़ी है कि मेरा हश्र आपकी बीबियों में हो. हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि यह आयत उन औरतों के हक़ में उतरी जिन्हों ने अपनी जानें हुज़ूर की नज़्र कर दीं और हुज़ूर को इख़्तियार दिया गया कि उनमें से जिसे चाहें क़ुबूल करें, उसके साथ करम फ़रमाएं और जिसे चाहे इन्कार फ़रमाएं.
(२१) यानी बीबियों में से आप ने जिसको मअज़ूल या अलग थलग कर दिया हो, आप जब चाहें उसकी तरफ़ तवज्जह फ़रमाएं और उसे नवाज़ें, इसका आप को इख़्तियार दिया गया है.
(२२) क्योंकि जब वो यह जानेंगी कि यह तफ़्वीज़ और यह इख़्तियार आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हुआ है तो उनके दिल संतुष्ट हो जाएंगे.
(२३) यानी इन नौ बीबियों के बाद जो आपके निकाह में हैं जिन्हें आपने इख़्तियार दिया तो उन्हों ने अल्लाह तआला और रसूल को इख़्तियार किया.
(२४) क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये बीबियों की गिन्ती नौ है जैसे उम्मत के लिये चार.
(२५) यानी उन्हें तलाक़ देकर उनकी जगह दूसरी औरतों से निकाह कर लो. ऐसा भी न करो यह एहतिराम उन बीबियों का इसलिये है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें इख़्तियार दिया था तो उन्होंने अल्लाह और रसूल को इख़्तियार किया और दुनिया की आसाइश को ठुकरा दिया चुनांन्चे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हीं पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और आख़िर तक यही बीबियाँ हुज़ूर की ख़िदमत में रहीं. हज़रत आयशा और उम्मे सलमा रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि आख़िर में हुज़ूर के लिये हलाल कर दिया गया था कि जितनी औरतों से चाहे निकाह फ़रमाएं. इस सूरत में यह आयत मन्सूख़ यानी स्थगित है और इसे मन्सूख़ करने वाली आयत "इन्ना अहलल्ना लका अज़वाजका" है यानी हमने तुम्हारे लिये हलाल फ़रमाईं तुम्हारी वो बीबियाँ जिनको तुम मेहर दो...(सूरए अहज़ाब, आयत ५०)
(२६) कि वह तुम्हारे लिये हलाल है और इसके बाद हज़रत मारियह क़िब्तिया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मिल्क में आईं और उनसे हुज़ूर के बेटे हज़रत इब्राहीम पैदा हुए जिन्होंने छोटी उम्र में वफ़ात पाई.

सूरए अहज़ाब - सातवाँ रूकू

(१) इस आयत से मालूम हुआ कि घर मर्द का होता है और इसी लिये उससे इजाज़त हासिल करना मुनासिब है. शौहर के घर को औरत का घर भी कहा है. इस लिहाज़ से कि वह उसमें सुकूनत का हक़ रखती है. इसी वजह से आयत "वज़कुरना मा युतला फ़ी बुयूतिकुन्ना" (और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं अल्लाह की आयतें और हिकमत - सूरए अहज़ाब, आयत ३४) में घरों की निस्बत औरतों की तरफ़ की गई है. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मकानात, जिनमें आपकी पाक बीबियों की सुकूनत थी और हुज़ूर की वफ़ात के बाद भी वो अपनी ज़िन्दगी तक उन्हीं में रहीं, वो हुज़ूर की मिल्क थे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बीबियों को हिबा नहीं फ़रमाए थे बल्कि रहने की इजाज़त दी थी इसलिये बीबियों की वफ़ात के बाद भी उनके वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक़्फ़ है और जिसका नफ़ा सारे मुसलमानों के लिये आम है.
(२) इससे मालूम हुआ कि औरतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बेइजाज़त दाख़िल होना जायज़ नहीं. आयत अगरचे ख़ास हुज़ूर की बीबियों के हक़ में आई है लेकिन हुक्म इसका सारी मुसलमान औरतों के लिये आम है. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब से निकाह किया और वलीमे की आम दावत फ़रमाई तो जमाअतें की जमाअतें आती थीं और खाने से फ़ारिग़ होकर चली जाती थीं आख़िर में तीन साहब ऐसे थे जो खाने से फ़ारिग़ होकर बैठे रह गए और उन्होंने बात चीत का लम्बा सिलसिला शुरू कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे. मकान तंग था इस से घर वालों को तकलीफ़ हुई और हर्ज हुआ कि वो उनकी वजह से अपना काम काज न कर सके. रसूले करीम उठे और बीबियों के हुजरों में तशरीफ़ ले गए. और दौरा फ़रमाकर तशरीफ़ लाए. उस वक़्त तक ये लोग अपनी बातों में लगे हुए थे. हुज़ूर फिर वापिस हो गए. यह देखकर वो लोग रवाना हुए तब हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दौलत-सरा में दाख़िल हुए और दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया. इसपर यह आयत उतरी. इस से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भरपूर हया और करम की शान और सदव्यवहार मालूम होता है कि ज़रूरत के बावुजूद सहाबा से यह न फ़रमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया वह अच्छा अदब और सदव्यवहार सिखाने वाला है.
(३) इस से मालूम हुआ कि बग़ैर दावत किसी के यहाँ खाने न जाए.
(४) कि यह घर वालों की तकलीफ़ और उनके हर्ज का कारण है.
(५) और उनसे चले जाने के लिये नहीं फ़रमाते थे.

لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ
مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝
اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمًا ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآىِٕهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآىِٕهِنَّ
وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ
اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآىِٕهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ
وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا
فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

की[७] और तुम्हें नहीं पहुंचता कि रसूलुल्लाह को ईज़ा दो[८] और न यह कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो[९] बेशक यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी सख़्त बात है[१०] ﴾५३﴿ अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है ﴾५४﴿ उनपर मुज़ायक़ा (हर्ज) नहीं[११] उनके बाप और बेटों और भाइयों और भतीजों और भान्जों[१२] और अपने दीन की औरतों[१३] और अपनी कनीज़ों में[१४] और अल्लाह से डरती रहो, बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है ﴾५५﴿ बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वालो उनपर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो[१५] ﴾५६﴿ बेशक जो तकलीफ़ देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उनपर अल्लाह की लअनत है दुनिया और आख़िरत में[१६] और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है[१७] ﴾५७﴿ और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया[१८] ﴾५८﴿

आठवाँ रूकू

ऐ नबी अपनी बीबियों और बेटियों और मुसलमानों की

(६) यानी अपनी पाक बीबियों से.
(७) कि वसवसों और ख़तरों से अम्न रहता है.
(८) और कोई काम ऐसा करो जो नबीये करीमसल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मिज़ाज को नगवार हो.
(९) क्योंकि जिस औरत से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अक़्द फ़रमाया वह हुज़ूर के सिवा हर शख़्स पर हमेशा के लिये हराम हो गई. इसी तरह वो कनीज़ें जो सरकार की ख़िदमत में रहीं और क़ुर्बत से नवाज़ी गईं वो भी इसी तरह सबके लिये हराम हैं.
(१०) इसमें ऐलान है कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत बड़ी अज़मत अता फ़रमाई और आपकी हुर्मत हर हाल में वाजिब की.
(११) यानी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इसमें कि वो उन लोगों से पर्दा न करें जिन का आयत में आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है. जब पर्दे का हुक्म उतरा तो औरतों के बाप बेटों और क़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दे के बाहर से बात किया करें. इसपर यह आयत उतरी.
(१२) यानी उन रिश्तेदारों के सामने आने और उनसे बात करने में कोई हर्ज नहीं.
(१३) यानी मुसलमान बीबियों के सामने आना जायज़ है और काफ़िर औरतों से पर्दा करना और अपने जिस्म को छुपाना लाज़िम है सिवाय जिस्म के उन हिस्सों के जो घर के काम काज के लिये खोलने ज़रूरी होते हैं. (जुमल)
(१४) यहाँ चचा और मामूँ का साफ़ साफ़ ज़िक्र नहीं किया गया क्योंकि वो माँ बाप के हुक्म में हैं.
(१५) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजना वाजिब है. हर एक मजलिस में आपका ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक बार और इस से ज़्यादा मुस्तहब है. यही भरोसे का क़ौल है और इसी पर सहमति है. और नमाज़ की आख़िरी बैठक में तशहहुद यानी अत्तहियात के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है. आपके ताबे करके आप के आल और असहाब और दूसरे मूमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है. यानी दुरूद शरीफ़ में आपके मुबारक नाम के साथ उनको शामिल किया जासकता है और मुस्तक़िल तौर पर हुज़ूर के सिवा उनमें से किसी पर दुरूद भेजना मकरुह है. दुरूद शरीफ़ में आल व असहाब का ज़िक्र मुतवारिस है. और यह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिना मक़बूल नहीं. दुरूद शरीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सम्मान है. उलमा ने **अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद** के मानी ये बयान किये हैं कि या रब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बड़ाई अता फ़रमा, दुनिया में उनका दीन बलन्द कर और उनकी दावत ग़ालिब फ़रमाकर और उनकी शरीअत को बक़ा इनायत करके और आख़िरत में उनकी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाकर और उनका सवाब ज़्यादा करके और अगलों पिछलों पर उनकी बुज़ुर्गी का इज़्हार फ़रमाकर और अंबिया व मुर्सलीन और फ़रिश्तों और सारी सृष्टि पर उनकी

لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ
مِن جَلَابِيبِهِنَّ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾ لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَ
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ
لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾
مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾ يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ
قَرِيبًا ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ
تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ
وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا

औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें[१] यह इससे नज़्दीक तर है कि उनकी पहचान हो[२] तो सताई न जाएं[३] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(५९) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ (दोग़ले)[४] और जिनके दिलों में रोग है[५] और मदीने में झूट उड़ाने वाले[६] तो ज़रूर हम तुम्हें उनपर शह देंगे[७] फिर वो मदीने में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन[८] (६०) फटकारे हुए जहाँ कहीं मिलें पकड़े जाएं और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं (६१) अल्लाह का दस्तूर (तरीक़ा) चला आता है उन लोगों में जो पहले गुज़र गए[९] और तुम अल्लाह का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे (६२) लोग तुम से क़यामत को पूछते हैं[१०] तुम फ़रमाओ उसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और तुम क्या जानो शायद क़यामत पास ही हो[११] (६३) बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लअनत फ़रमाई और उनके लिये भड़कती आग तैयार कर रखी है (६४) उसमें हमेशा रहेंगे, उसमें से कोई हिमायती पाएंगे न मददगार[१२] (६५) जिस दिन उनके मुंह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाय किसी तरह हमने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता[१३] (६६) और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों

शान बलन्द करके . दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और महानताएं हैं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब दुरुद भेजने वाला मुझ पर दुरुद भेजता है तो फ़रिश्ते उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ करते हैं. मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है अल्लाह तआला उसपर दस बार भेजता है. तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है बख़ील है वह जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वह दुरुद न भेजे.

(१६) वो तकलीफ़ देने वाले काफ़िर हैं जो अल्लाह की शान में ऐसी बातें कहते हैं जिनसे वो पाक है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं. उनपर दोनों जगत में लअनत.

(१७) आख़िरत में.

(१८) यह आयत उन मुनाफ़िक़ों के हक़ में उतरी जो हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को कष्ट देते थे और उनको बुरा भला कहते थे. हज़रत फ़ुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुअर को भी नाहक़ कष्ट देना हलाल नहीं तो ईमान वाले मर्दों औरतों को तकलीफ़ देना किस क़द्र बदतरीन जुर्म है.

सूरए अहज़ाब - आठवाँ रूकू

(१) और सर और चेहरे को छुपाएं, जब किसी आवश्यकता के लिये उनको निकलना हो.

(२) कि ये आज़ाद औरतें हैं.

(३) और मुनाफ़िक़ लोग उनके पीछे न पड़ें. मुनाफ़िक़ों की यह आदत थी कि वो दासियों को छेड़ा करते थे इसलिये आज़ाद औरतों को हुक्म दिया कि वो चादर से बदन ढाँप कर सर और चेहरे को छुपाकर दासियों से अपनी हालत अलग बना लें.

(४) अपनी दोहरी प्रवृत्ति से.

(५) और जो बुरे ख़याल रखते हैं यानी बुरा काम करते हैं वो अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए --

(६) जो इस्लामी लश्करों के बारे में झूटी ख़बरें उड़ाया करते थे और यह मशहूर किया करते थे कि मुसलमानों को पराजय हो गई, या वो क़त्ल कर डाले गए, या दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है. और इससे उनका उद्देश मुसलमानों का दिल तोड़ना और उनको परेशानी में डालना होता था . उन लोगों के बारे में इरशाद फ़रमाया जाता है कि अगर वो इन हरकतों से बाज़ न आए.

(७) और तुम्हें उनपर क़ब्ज़ा दे देंगे.

(८) फिर मदीनए तैय्यिबह उनसे ख़ाली करा लिया जाएगा और वहाँ से निकाल दिये जाएंगे.

وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

منزل ٥

और अपने बड़ों के कहने पर चले(१४) तो उन्होंने हमें राह से बहका दिया (६७) ऐ रब हमारे उन्हें आग का दूना अज़ाब दे(१५) और उनपर बड़ी लअनत कर (६८)

नवाँ रूकू

ऐ ईमान वालो(१) उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया(२) तो अल्लाह ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्होंने कही(३) और मूसा अल्लाह के यहाँ आबरू वाला है(४) (६९) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो(५) (७०) तुम्हारे अअमाल(कर्म) तुम्हारे लिये संवार देगा(६) और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पाई (७१) बेशक हमने अमानत पेश फ़रमाई(७) आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गए(८) और आदमी ने उठा ली, बेशक वह अपनी जान को मशक़्क़त(परिश्रम) में डालने वाला बड़ा नादान है (७२) ताकि अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़(दोग़ले) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को(९) और अल्लाह तौबह क़ुबूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (७३)

(९) यानी पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ लोग, जो ऐसी हरकतें करते थे, उनके लिये भी अल्लाह का तरीक़ा यही रहा कि जहाँ पाए जाएं, मार डाले जाएं.

(१०) कि कब क़यामत होगी. मुश्रिक लोग हंसी उड़ाने के अन्दाज़ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़यामत का वक़्त पूछा करते थे गोया कि उन्हें बहुत जल्दी है और यहूदी इसको आज़माइश के तौर पर पूछते थे क्योंकि तौरात में इसका इल्म छुपाकर रखा गया था तो अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म फ़रमाया.

(११) इसमें जल्दी करने वालों को चेतावनी और यहूदियों को चुप कराना और उनकी ज़बान बन्द करना है.

(१२) जो उन्हें अज़ाब से बचा सके.

(१३) दुनिया में, तो हम आज इस अज़ाब में न जकड़े गए होते.

(१४) यानी क़ौम के सरदारों में और बड़ी उम्र के लोगों और अपनी जमाअत के आलिमों के, उन्होंने हमें कुफ़्र की तलक़ीन की.

(१५) क्योंकि वो ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्होंने दूसरों को भी गुमराह किया.

सूरए अहज़ाब - नवाँ रूकू

(१) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अदब और आदर करो और कोई ऐसा काम न करना जो उनके दुख का कारण हो, और ---

(२) यानी उन बनी इस्राईल की तरह न होना जो नंगे नहाते थे. और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तअना करते थे कि हज़रत कि हज़रत हमारे साथ क्यों नहीं नहाते. उन्हें सफ़ेद दाग़ वग़ैरह की कोई बीमारी जान पड़ती है.

(३) इस तरह कि जब एक दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नहाने के लिये एक एकान्त की जगह में पत्थर पर कपड़े उतार कर रखे और नहाना शुरु किया, तो पत्थर आपके कपड़े ले भागा . आप कपड़े लेने के लिये उसकी तरफ़ बढ़े तो बनी इस्राईल ने देख लिया कि बदने मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐब नहीं है.

(४) शान वाले, बुज़ुर्गी वाले और दुआ की क़ुबूलियत वाले.

(५) यानी सच्ची और दुरुस्त, हक़ और इन्साफ़ की, और अपनी ज़बान और बोल की हिफ़ाज़त रखो. यह भलाइयों की जड़ है. ऐसा करोगे तो अल्लाह तआला तुम पर करम फ़रमाएगा, और ----

(६) तुम्हें नेकियों की रुचि देगा और तुम्हारी फ़रमाँबरदारीयाँ क़ुबूल फ़रमाएगा.

ایاتها ٥٤ (٣٤) سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ (٥٨) ركوعاتها ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ
فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا
يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ
عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ
وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ
اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝
وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

منزل ٥

३४- सूरए सबा

सूरए सबा मक्का में उतरी, इसमें ५४ आयतें और ६ रूकू हैं. अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पहला रूकू

सब ख़ूबियाँ अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में(२) और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है(३) और वही है हिकमत(बोध) वाला ख़बरदार﴾१﴿ जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है(४) और जो ज़मीन से निकलता है(५) और जो आसमान से उतरता है(६) और जो उसमें चढ़ता है(७) और वही है मेहरबान बख़्शने वाला﴾२﴿ और काफ़िर बोले हम पर क़यामत न आएगी(८) तुम फ़रमाओ क्यों नहीं मेरे रब की क़सम बेशक ज़रूर तुमपर आएगी ग़ैब जानने वाला(९) उससे ग़ायब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आसमानों में और न ज़मीन में और न उससे छोटी और न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली किताब में है(१०)﴾३﴿ ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, ये हैं जिनके लिये बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी(११)﴾४﴿ और जिन्होंने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की(१२) उनके लिये सख़्त अज़ाब दर्दनाक में से अज़ाब है﴾५﴿ और जिन्हें इल्म मिला(१३) वो जानते हैं कि जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा(१४)

---

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद फ़रमाँबरदारी और कर्तव्य निष्ठा है. जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर पेश किया, उन्हें आसमानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश किया था कि अगर वो उन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जाएंगे, नहीं अदा करेंगे तो अज़ाब किये जाएंगे. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ानए काबा का हज, सच बोलना, नाप तौल में और लोगों के साथ व्यवहार में इन्साफ़ करना है. कुछ ने कहा कि अमानत से मुराद वो तमाम चीज़ें हैं जिनका हुक्म दिया गया है और जिनसे मना फ़रमाया गया है. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने फ़रमाया कि तमाम अंग, कान, हाथ और पाँव वग़ैरह सब अमानत हैं. उसका ईमान ही क्या जो अमानतदार न हो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों के हुक़ूक़ और एहदों को पूरा करना है. तो हर ईमान वाले पर फ़र्ज़ है कि न किसी मूमिन की ख़यानत करे न काफ़िर से किया गया एहद तोड़े, न कम न ज़्यादा. अल्लाह तआला ने यह अमानत आसमानों ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश फ़रमाई फिर उनसे फ़रमाया क्या तुम इन अमानतों को उनकी ज़िम्मेदारियों के साथ उठाओगे. उन्होंने अर्ज़ किया ज़िम्मेदारी क्या है. फ़रमाया यह कि अगर तुम उन्हें अच्छी तरह अदा करो तो तुम्हें इनाम दिया जाएगा. उन्होंने अर्ज़ किया नहीं ऐ रब, हम तेरे हुक्म के मुतीअ हैं न सवाब चाहें न अज़ाब और उनका यह अर्ज़ करना ख़ौफ़ और दहशत की वजह से था. और अमानत पेश करके उन्हें इख़्तियार दिया गया था कि अपने में क़ुव्वत और हिम्मत पाएं तो उठाएं वरना मजबूरी ज़ाहिर कर दें, उसका उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वो इन्कार न करते.

(८) कि अगर अदा न कर सके तो अज़ाब किये जाएंगे. तो अल्लाह तआला ने वह अमानत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैं ने आसमानों ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वो न उठा सके तो क्या तू इसको ज़िम्मेदारी के साथ उठा सकेगा. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इक़रार किया.

(९) कहा गया है कि मानी ये हैं कि हमने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िक़ों की दोहरी प्रवृत्ति, मुश्रिकों का शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब फ़रमाए और ईमान वाले, जो अमानत के अदा करने वाले हैं उनके ईमान का इज़हार हो और अल्लाह तआला उनकी तौबह क़ुबूल फ़रमाए और उनपर रहमत और मग़फ़िरत करे, अगरचे उनसे कुछ ताअतों में कुछ कमी भी हुई हो. (ख़ाज़िन)

مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ
خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ
الْبَعِيْدِ ۝ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ
اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا
فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ
الْحَدِيْدَ ۝ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا
صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ
غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ

वही हक़ (सत्य) है और इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे की राह बताता है (६) और काफ़िर बोले[१५] क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें[१६] जो तुम्हें ख़बर दे कि जब तुम पुर्ज़ा होकर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा (कण कण) हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है (७) क्या अल्लाह पर उसने झूट बांधा या उसे सौदा (पागलपन) है[१७] बल्कि वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[१८] अज़ाब और दूर की गुमराही में हैं (८) तो क्या उन्होंने न देखा जो उनके आगे और पीछे है आसमान और ज़मीन[१९] हम चाहें तो उन्हें[२०] ज़मीन में धंसा दें या उनपर आसमान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उसमें[२१] निशानी है हर रूजू लाने वाले बन्दे के लिये[२२] (९)

दूसरा रूकू

और बेशक हमने दाऊद को अपना बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) दिया[१] ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की तरफ़ रूजू करो और ऐ परिन्दो[२] और हमने उसके लिये लोहा नर्म किया[३] (१०) कि वसीअ (बड़ी) ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिहाज़ रख[४] और तुम सब नेकी करो, बेशक मैं तुम्हारे काम देख रहा हूँ (११) और सुलैमान के बस में हवा कर दी उसकी सुब्ह की मंज़िल एक महीने की राह और शाम की मंज़िल एक महीमे की राह[५] और हमने उसके लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया[६] और जिन्नों में से वो जो उसके

३४ - सूरए सबा - पहला रूकू

(१) सूरए सबा मक्के में उतरी सिवाय आयत "व यरल्लज़ीना ऊतुल इल्मो" (आयत - ६). इस में छ रूकू चौवन आयतें, आठ सौ तैंतीस कलिमे और एक हज़ार पाँच सौ बारह अक्षर हैं.

(२) यानी हर चीज़ का मालिक, ख़ालिक़ और हाकिम अल्लाह तआला है और हर नेअमत उसी की तरफ़ है तो वही तारीफ़, प्रशंसा और स्तुति के लायक़ है.

(३) यानी जैसा दुनिया में प्रशंसा का मुस्तहिक़ अल्लाह तआला है वैसा ही आख़िरत में भी हम्द का मुस्तहिक़ वही है क्योंकि दोनों जगत उसी की नेअमतों से भरे हुए हैं. दुनिया में तो बन्दों पर उसकी प्रशंसा और स्तुति वाजिब है क्योंकि यह दारूल तकलीफ़ है. और आख़िरत में जन्नत वाले नेअमतें की ख़ुशी और राहतों की प्रसन्नता में उसकी प्रशंसा करेंगे.

(४) यानी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने.

(५) जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और खानें और हश्र के वक़्त मुर्दे.

(६) जैसे कि बारिश, बर्फ़, औले और तरह तरह की बरकतें और फ़रिश्ते.

(७) जैसे कि फ़रिश्ते, दुआएं और बन्दों के कर्म.

(८) यानी उन्होंने क़यामत के आने का इन्कार किया.

(९) यानी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उससे कोई चीज़ छुपी नहीं, तो क़यामत का आना और उसके क़ायम होने का वक़्त भी उसके इल्म में है.

(१०) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में.

(११) जन्नत में.

(१२) और उनमें तअने करके और उनको शायरी और जादू वग़ैरह बता कर लोगों को उनसे रोकना चाहा. (इसका आधिक बयान इसी सूरत के आख़िरी रूकू पाँच में आएगा).

(१३) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा या किताब वालों के ईमान वाले, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों.

(१४) यानी क़ुरआने मजीद.

وَمَن يَقْنُتْ ٢٢ — ٥٩٧ — سَبَا ٣٤

الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ
وَمَن يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾
يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِن مَّحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَّاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ
وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ
الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ
مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ
الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ
لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ عَن يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۖ
كُلُوا مِن رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَ
رَبٌّ غَفُورٌ ﴿١٥﴾ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنَاهُم بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَ
أَثْلٍ وَشَيْءٍ مِّن سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٦﴾ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُم بِمَا كَفَرُوا ۖ

منزل ٥

आगे काम करते उसके रब के हुक्म से[७] और उनमें जो हमारे हुक्म से फिरे[८] हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे﴿१२﴾ उसके लिये बनाते जो वह चाहता ऊंचे ऊंचे महल[९] और तस्वीरें[१०] और बड़े हौज़ों के बराबर लगन[११] और लंगरदार देगें[१२] ऐ दाऊद वालो शुक्र करो[१३] और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले﴿१३﴾ फिर जब हमने उसपर मौत का हुक्म भेजा[१४] जिन्नों को उसकी मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उसका असा खाती थी, फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हक़ीक़त खुल गई[१५] अगर ग़ैब जानते होते[१६] तो इस ख़्वारी के अज़ाब में न होते[१७]﴿१४﴾ बेशक सबा[१८] के लिये उनकी आबादी में[१९] निशानी थी[२०] दो बाग़ दाएं और बाएं[२१] अपने रब का रिज़्क़ खाओ[२२] और उसका शुक्र अदा करो[२३] पाकीज़ा शहर और[२४] बख़्शने वाला रब[२५]﴿१५﴾ तो उन्हों ने मुंह फेरा[२६] तो हमने उनपर ज़ोर का अहला(सैलाब) भेजा[२७] और उनके बाग़ों के एवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बकटा मेवा[२८] और झाऊ और थोड़ी सी बेरियां[२९]﴿१६﴾ हमने उन्हें यह बदला दिया उनकी नाशुक्री[३०] की सज़ा,

(१५) यानी काफ़िरों ने आपस में आश्चर्य चकित होकर कहा.
(१६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम .
(१७) जो वो ऐसी अजीबो ग़रीब बातें कहते हैं. अल्लाह तआला ने काफ़िरों के इस क़ौल का रद फ़रमाया कि ये दोनों बातें नहीं, हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इन दोनों से पाक हैं.
(१८) यानी काफ़िर, मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब का इन्कार करने वाले.
(१९) यानी क्या वो अन्धे हैं कि उन्हों ने आसमान व ज़मीन की तरफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मालूम होता कि वो हर तरफ़ से घेरे में हैं और ज़मीन व आसमान के दायरे या घेरे से बाहर नहीं जा सकते और अल्लाह की सल्तनत से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं. उन्हों ने आयतों और रसूल को झुटलाया और इन्कार के भयानक जुर्म को करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इस हालत का ख़याल करके न डरे.
(२०) उनका झुटलाना और इन्कार की सज़ाएं क़ारून की तरह.
(२१) नज़र और फ़िक्र, दृष्टि और सोच.
(२२) जो प्रमाण है कि अल्लाह तआला मरने के बाद दोबारा उठाने और इसका इन्कार करने वाले के अज़ाब पर और हर चीज़ पर क़ादिर है.

सूरए सबा - दूसरा रूकू

(१) यानी नबुव्वत और किताब, और कहा गया है कि मुल्क और एक क़ौल यह है कि सौंदर्य वग़ैरह तमाम चीज़ें जो आपको विशेषता के साथ अता फ़रमाई गईं, और अल्लाह तआला ने पहाड़ों और पक्षियों को हुक्म दिया.
(२) जब वो तस्बीह करें, उनके साथ तस्बीह करो. चुनांन्चे जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम तस्बीह करते तो पहाड़ों से भी तस्बीह सुनी जाती थी और पक्षी झुक आते, यह आपका चमत्कार था.
(३) कि आपके मुबारक हाथ में आकर मोम या गूंधे हुए आटे की तरह नर्म हो जाता और आप उससे जो चाहते बग़ैर आग और बिना ठौंके पीटे बनालेते . इसका कारण यह बयान किया गया है कि जब आप बनी इस्राईल के बादशाह हुए तो आपका तरीक़ा यह था कि आप लोगों के हालात की खोज में इस तरह निकलते कि वो आपको पहचानें नहीं और जब कोई मिलता और आपको न पहचानता तो उससे आप पूछते कि दाऊद कैसा व्यक्ति है. सब लोग तारीफ़ करते . अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता इन्सान की सूरत भेजा. हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी आदत के अनुसार उससे भी यही सवाल किया तो फ़रिश्ते ने कहा कि दाऊद हैं तो बहुत

अच्छे, काश उनमें एक ख़सलत न होती. इसपर आप चौकन्ने हुए और फ़रमाया ऐ ख़ुदा के बन्दे कौन सी ख़सलत ? उसने कहा कि वह अपना और अपने घर वालों का ख़र्च बैतुलमाल यानी सरकारी ख़ज़ाने से लेते हैं. यह सुनकर आपके ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़्यादा बेहतर होता. इसलिये आपने अल्लाह की बारगाह में दुआ की कि उनके लिये कोई ऐसा साधन कर दे जिससे आप अपने घर वालों का गुज़ारा करें और शाही ख़ज़ाने से आपको बेनियाज़ी हो जाए. आपकी यह दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआला ने आपके लिये लौहे को नर्म कर दिया और आपको ज़िरह बनाने का इल्म दिया. सबसे पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं. आप रोज़ एक ज़िरह बनाते थे. वह चार हज़ार को बिकती थी. उसमें से अपने और घर वालों पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़क़ीरों और दरिद्रों पर भी सदक़ा करते. इसका बयान आयत में है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने दाऊद के लिये लोहा नर्म करके उनसे फ़रमाया.

(४) कि उसके छल्ले एक से और मध्यम हों, न बहुत तंग न बहुत चौड़े.

(५) चुनांन्चे आप सुब्ह को दमिश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को खाने के बाद का आराम उस्तख़ुर में फ़रमाते जो फ़ारस प्रदेश में है और दमिश्क़ से एक महीने की राह पर और शाम को उस्तख़ुर से रवाना होते तो रात को काबुल में आराम फ़रमाते. यह भी तेज़ सवार के लिये एक माह का रस्ता है.

(६) जो तीन रोज़ यमन प्रदेश में पानी की तरह जारी रहा और एक क़ौल यह है कि हर माह में तीन रोज़ जारी रहता और एक क़ौल यह है कि अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये लौहे को नर्म किया था.

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिये जिन्नों को मुतीअ किया.

(८) और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की फ़रमाँबरदारी न करे.

(९) और आलीशान इमारतें और मस्जिदें, और उन्हीं में से बैतुल मक़दिस भी है.

(१०) दरिन्दों और पक्षियों वग़ैरह की तांबे और बिल्लौर और पत्थर वग़ैरह से, और उस शरीअत में तस्वीरें बनाना हराम न था.

(११) इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार हज़ार आदमी खाते.

(१२) जो अपने पायों पर क़ायम थीं और बहुत बड़ी थीं, यहाँ तक कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं. सीढ़ियाँ लगाकर उनपर चढ़ते थे. ये यमन में थीं. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने फ़रमाया कि...

(१३) अल्लाह तआला का उन नेअमतों पर जो उसने तुम्हें अता फ़रमाईं, उसकी फ़रमाँबरदारी करके.

(१४) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में दुआ की थी कि उनकी वफ़ात का हाल जिन्नों पर ज़ाहिर न हो ताकि इन्सानों को मालूम हो जाए कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते. फिर आप मेहराब में दाख़िल हुए और आदत के अनुसार नमाज़ के लिये अपनी लाठी पर टेक लगाकर खड़े हो गए. जिन्नात हस्बे दस्तूर अपने कामों में लगे रहे और समझते रहे कि हज़रत ज़िन्दा हैं. और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का लम्बे अर्से तक उसी हालत पर रहना उनके लिये कुछ आश्चर्य का कारण न हुआ क्योंकि वो अक्सर देखते थे कि आप एक माह दो माह और इससे ज़्यादा समय तक इबादत में मशग़ूल रहते हैं और आपकी नमाज़ लम्बी होती है यहाँ तक कि आपकी वफ़ात का पता न चला और अपनी ख़िदमतों में लगे रहे यहाँ तक कि अल्लाह के हुक्म से दीमक ने आपकी लाठी खा ली और आपका मुबारक जिस्म, जो लाठी के सहारे से क़ायम था, ज़मीन पर आ रहा. उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात की जानकारी हुई.

(१५) कि वो ग़ैब नहीं जानते.

(१६) तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात से सूचित होते.

(१७) और एक साल तक इमारत के कामों में कठिन परिश्रम न करते रहते. रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बैतुल मक़दिस की नींव उस स्थान पर रखी थी जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ख़ैमा लगाया गया था. इस इमारत के पूरा होने से पहले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आपने अपने सुपुत्र हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को इसके पूरा करने की वसीयत फ़रमाई. चुनांन्चे आपने शैतानों को इसके पूरा करने का हुक्म दिया. जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो आपने दुआ की कि आपकी वफ़ात शैतानों पर ज़ाहिर न हो ताकि वो इमारत के पूरा होने तक काम में लगे रहें और उन्हें जो इल्मे ग़ैब का दावा है वह झूठा हो जाए. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई. तेरह साल की उम्र में आप तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ हुए, चालीस साल राज किया.

(१८) सबा अरब का एक क़बीला है जो अपने दादा के नाम से मशहूर है और वह दादा सबा बिन यशजब बिन यअरब बिन क़हतान हैं.

(१९) जो यमन की सीमाओं में स्थित थी.

(२०) अल्लाह तआला की वहदानियत और क़ुदरत पर दलील लाने वाली और वह निशानी क्या थी इसका आगे बयान होता है.

(२१) यानी उनकी घाटी के दाएं और बाएं दूर तक चले गए और उनसे कहा गया था.

(२२) बाग़ इतने अधिक फलदार थे कि जब कोई व्यक्ति सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बग़ैर हाथ लगाए तरह तरह के मेवों से उसका टोकरा भर जाता.

(२३) यानी इस नेअमत पर उसकी ताअत बजा लाओ.

وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ
الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا
السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾ فَقَالُوْا
رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ
اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَمَا كَانَ
لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ
مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۲۱﴾ ع
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿۲۲﴾ وَلَا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓي اِذَا فُزِّعَ عَنْ

और हम किसे सज़ा देते हैं उसी को जो नाशुक्रा है (१७) और हमने किये थे उनमें[३१] और उन शहरों में जिन में हमने बरकत रखी[३२] सरे राह कितने शहर[३३] और उन्हें मंज़िल के अन्दाज़े पर रखा[३४] उनमें चलो रातों और दिनों अम्न व अमान से[३५] (१८) तो बोले ऐ हमारे रब हमारे सफ़र में दूरी डाल[३६] और उन्होंने ख़ुद अपना ही नुक़सान किया तो हमने उन्हें कहानियां कर दिया[३७] और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया[३८] बेशक उसमें ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये[३९] (१९) और बेशक इबलीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया[४०] तो वो उसके पीछे हो लिये मगर एक गिरोह कि मुसलमान था[४१] (२०) और शैतान का उनपर[४२] कुछ क़ाबू न था मगर इसलिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन इससे शक में है, और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है (२१)

तीसरा रूकू

तुम फ़रमाओ[१] पुकारो उन्हें जिन्हें अल्लाह के सिवा[२] समझे बैठे हो[३] और वो ज़र्रा भर के मालिक नहीं आसमानों में और न ज़मीन में और न उनका इन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उनमें से कोई मददगार (२२) और

---

(२४) अच्छी जलवायु, साफ़ सुथरी ज़मीन, न उसमें मच्छर, न मक्खी, न खटमल, न साँप, न बिच्छू . हवा की पाकीज़गी ऐसी कि अगर कहीं और का कोई व्यक्ति इस शहर में गुज़र जाए और उसके कपड़ों में जुएं हों तो सब मर जाएं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सबा शहर सनआ से तीन फ़रसंग के फ़ासले पर था.

(२५) यानी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और ताअत बजा लाओ तो वह बख़्शिश फ़रमाने वाला है.

(२६) उसकी शुक्रगुज़ारी से और नबियों को झुटलाया . वहब का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ तेरह नबी भेजे जिन्होंने उनको सच्चाई की तरफ़ बुलाया और अल्लाह तआला की नेअमतें याद दिलाईं और उसके अज़ाब से डराया मगर वो ईमान न लाए और उन्होंने नबियों को झुटलाया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर ख़ुदा की कोई भी नेअमत हो. तुम अपने रब से कह दो कि उस से हो सके तो वो इन नेअमतों को रोक ले.

(२७) बड़ी बाढ़ जिससे उनके बाग़, अमवाल, सब डूब गए और उनके मकान रेत में दफ़्न हो गए और इस तरह तबाह हुए कि उनकी तबाही अरब के लिये कहावत बन गई.

(२८) अत्यन्त बुरे मज़े का.

(२९) जैसी वीरानों में जम आती हैं. इस तरह की झाड़ियों और भयानक जंगल को जो उनके सुन्दर बाग़ों की जगह पैदा हो गया था. उपमा के तौर पर बाग़ फ़रमाया.

(३०) और उनके कुफ़्र.

(३१) यानी सबा शहर में.

(३२) कि वहाँ के रहने वालों को बहुत सी नेअमतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये. उन से मुराद शाम के शहर हैं.

(३३) क़रीब क़रीब, सबा से शाम तक के सफ़र करने वालों को उस राह में तोशे और पानी साथ लेजाने की ज़रूरत न होती.

(३४) कि चलने वाला एक जगह से सुबह चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाए जहाँ ज़रूरत के सारे सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाए. यमन से शाम तक का सारा सफ़र इसी आसायश के साथ तय हो सके और हमने उनसे कहा कि ----

(३५) न रातों में कोई खटका, न दिनों में कोई तकलीफ़. न दुश्मन का अन्देशा, न भूख प्यास का ग़म. मालदारों में हसद पैदा हुआ कि हमारे और ग़रीबों के बीच कोई फ़र्क़ ही न रहा. क़रीब क़रीब की मंज़िलें हैं, लोग धीमे धीमे हवा ख़ोरी करते चले आते है. थोड़ी देर के बाद दूसरी आबादी आ जाती है. वहाँ आराम करते हैं. न सफ़र में थकन है, न कोफ़्त, अगर मंज़िलें दूर होतीं, सफ़र की मुद्दत लम्बी होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता, तो हम तोशा साथ लेते, पानी का प्रबन्ध करते,

قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ
اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾
قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ
الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ
بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً
لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾
قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا
تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ
مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ

उसके पास शफ़ाअत काम नहीं देती मगर जिसके लिये वह इज़्न (आज्ञा) फ़रमाए, यहाँ तक कि जब इज़्न देकर उनके दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है एक दूसरे से[४] कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई, वो कहते हैं जो फ़रमाया हक़ (सच्च) फ़रमाया[५] (२३) और वही है बलन्द बड़ाई वाला. तुम फ़रमाओ कौन जो तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों और ज़मीन से[६] तुम ख़ुद ही फ़रमाओ अल्लाह[७] और बेशक हम या तुम[८] या तो ज़रूर हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में[९] (२४) तुम फ़रमाओ हमने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उसकी तुमसे पूछ नहीं न तुम्हारे कौतुकों का हमसे सवाल[१०] (२५) तो फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जमा करेगा[११] फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा देगा[१२] और वही है बड़ा न्याव चुकाने वाला सब कुछ जानता (२६) तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वो शरीक जो तुमने उससे मिलाए हैं[१३] हिश्त, बल्कि वही है अल्लाह इज़्ज़त वाला हिकमत (बोध) वाला (२७) और ऐ मेहबूब हमने तुमको न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है[१४] ख़ुशख़बरी देता[१५] और डर सुनाता[१६] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते[१७] (२८) और कहते हैं ये वादा कब आएगा[१८] अगर तुम सच्चे हो (२९) तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वादा जिससे तुम न एक घड़ी पीछे हट सको और न आगे बढ़ सको[१९] (३०)

चौथा रूकू

और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस क़ुरआन पर और उन किताबों पर जो इससे आगे थीं[१] और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास खड़े किये जाएंगे, जो उनमें एक दूसरे पर बात डालेगा वो जो दबे

सवारियाँ और सेवक साथ रखते, सफ़र का मज़ा आता और अमीर ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता. यह ख़्याल करके उन्होंने कहा.

(३६) यानी हमारे और शाम के बीच जंगल और बयाबान कर दे कि बग़ैर तोशे और सवारी के सफ़र न हो सके.

(३७) बाद वालों के लिये कि उन के हालात से इब्रत हासिल करें.

(३८) क़बीला क़बीला बिखर गया, वो बस्तियाँ डूब गईं और लोग बेघर होकर अलग अलग शहरों में पहुंचे. ग़स्सान शाम में और अज़्द अम्मान में और ख़ुज़ाअह तिहामा में और आले ख़ुज़ैमह इराक़ में और औस ख़ज़रिज का दादा अम्र बिन आमिर मदीने में.

(३९) और सब्र और शुक्र मूमिन की सिफ़त है कि जब वह बला में गिरफ़्तार होता है, सब्र करता है और जब नेअमत पाता है, शुक्र बजा लाता है.

(४०) यानी इब्लीस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वह शहवत, लालच और ग़ज़ब के ज़रीये गुमराह कर देगा. यह गुमान उसने सबा प्रदेश वालों पर बल्कि सारे काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वो उसके मानने वाले हो गए और उसकी फ़रमाँबरदारी करने लगे. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि शैतान ने ना किसी पर तलवार खींची ना किसी पर कोड़े मारे, झूटे वादों और बातिल आशाओं से झूट वालों को गुमराह कर दिया.

(४१) उन्होंने उसका अनुकरण न किया.

(४२) जिनके हक़ में उसका गुमान पूरा हुआ.

सूरए सबा - तीसरा रूकू

(१) ऐ मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम ! मक्कए मुकर्रमा के काफ़िरों से.

(२) अपना मअबूद.
(३) कि वो तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि नफ़ा और नुक़्सान में.
(४) ख़ुशख़बरी के तौर पर.
(५) यानी शफ़ाअत करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअत की इजाज़त दी.
(६) यानी आसमान से मेंह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगाकर.
(७) क्योंकि इस सवाल का इसके सिवा और कोई जवाब ही नहीं.
(८) यानी दोनों पक्षों में से हर एक के लिये इन दोनों हालों में से एक हाल ज़रूरी है.
(९) और यह ज़ाहिर है कि जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह तआला को रोज़ी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक कण भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर की आयतों में बयान हो चुका), वो यक़ीनन ख़ुली गुमराही में है.
(१०) बल्कि हर शख़्स से उसके अमल का सवाल होगा और हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा.
(११) क़यामत के दिन.
(१२) तो सच्चाई वालों को जन्नत में और बातिल वालों को जहन्नम में दाख़िल करेगा.
(१३) यानी जिन बुतों को तुमने इबादत में शरीक किया है, मुझे दिखाओ तो किस क़ाबिल हैं. क्या वो कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जब यह कुछ नहीं तो उनको ख़ुदा का शरीक बताना और उनकी इबादत करना कैसी भारी ख़ता है, उससे बाज़ आओ.
(१४) इस आयत से मालूम हुआ कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत सार्वजनिक है, सारे इन्सान उसके घेरे में हैं, गोरे हों या काले, अरबी हों या अजमी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वो सब आपके उम्मती. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं मुझे पाँच चीज़ें ऐसी अता फ़रमाई गई जो मुझसे पहले किसी नबी को न दी गईं - एक माह की दूरी के रोअब से मेरी मदद की गई, तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहाँ मेरे उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिये हलाल न थीं और मुझे शफ़ाअत का दर्जा अता किया गया. दूसरे नबी ख़ास अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते थे और मैं तमाम इन्सानों की तरफ़ भेजा गया. हदीस में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विशेष फ़ज़ीलतों का बयान है जिनमें से एक आपकी सार्वजनिक रिसालत है जो तमाम जिन्न और इन्सानों को शामिल है. ख़ुलासा यह कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम सृष्टि के रसूल हैं और यह दर्जा ख़ास आपका है जो क़ुरआने करीम की आयतों और बहुत सी हदीसों से साबित है. सूरए फ़ुरक़ान के शुरू में भी इसका बयान गुज़र चुका है. (ख़ाज़िन)
(१५) ईमान वालों को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल की.
(१६) काफ़िरों को उसके इन्साफ़ का.
(१७) और अपनी जिहालत की वजह से आपकी मुख़ालिफ़त करते हैं.
(१८) यानी क़यामत का वादा.
(१९) यानी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर संभव नहीं और अगर जल्दी चाहो तो पहल मुमकिन नहीं, हर हाल में इस वादे का अपने वक़्त पर पूरा होना.

सूरए सबा - चौथा रूकू

(१) तौरात और इंजील वग़ैरह.

الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣١ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى
بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ وَ
اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۭ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ
فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝٣٣ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝٣٤ وَقَالُوْا نَحْنُ
اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝٣٥ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ
يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦ ۧ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ

منزل ٥

थे[२] उनसे कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे[३] अगर तुम न होते[४] तो हम ज़रूर ईमान ले आते﴿३१﴾ वो जो ऊंचे खिंचते थे उनसे कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से बाद इसके कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम थे﴿३२﴾ और कहेंगे वो जो दबे हुए थे उनसे जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाँव था[५] जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि अल्लाह का इन्कार करें और उसके बराबर वाले ठहराएं, और दिल ही दिल में पछताने लगे[६] जब अज़ाब देखा[७] और हमने तौक़ डाले उनकी गर्दनों में जो इन्कारी थे[८] वो क्या बदला पाएंगे मगर वही जो कुछ करते थे[९]﴿३३﴾ और हमने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदों ने यही कहा कि तुम जो लेकर भेजे गए हम उसके इन्कारी हैं[१०]﴿३४﴾ और बोले हम माल और औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अज़ाब होना नहीं[११]﴿३५﴾ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ करता है जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[१२] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते﴿३६﴾

पाँचवां रूकू

और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद इस क़ाबिल नहीं कि

(२) यानी ताबे और अनुयायी थे.
(३) यानी अपने सरदारों से.
(४) और हमें ईमान लाने से न रोकते.
(५) यानी तुम रात दिन हमारे लिये छलकपट करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे.
(६) दोनों पक्ष, ताबे भी और मतबूअ भी और उनके बहकाने वाले भी ईमान न लाने पर.
(७) जहन्नम का.
(८) चाहे बहकाने वाले हों या उनके कहने में आने वाले, तमाम काफ़िरों की यही सज़ा है.
(९) दुनिया में कुफ़्र और गुमराही.
(१०) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप उन काफ़िरों के झुटलाने और इन्कार से दुखी न हों. काफ़िरों का नबियों के साथ यही तरीक़ा रहा है और मालदार लोग इसी तरह अपने माल व औलाद के घमण्ड में नबियों को झुटलाते रहे हैं. दो व्यक्ति तिजारत में शरीक थे. उनमें से एक शाम प्रदेश को गया और एक मक्कए मुकर्रमा में रहा, जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और उसने शाम प्रदेश में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त लिखा और उससे हुज़ूर का पूरा हाल पूछा. उस शरीक ने जवाब लिखा कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी नबुव्वत का ऐलान तो किया है लेकिन सिवाय छोटे दर्जे के हक़ीर और ग़रीब लोगों के और किसी ने उनका अनुकरण नहीं किया. जब यह ख़त उसके पास पहुंचा तो वह अपने तिजारती काम छोड़कर मक्कए मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का पता बताओ और मालूम करके हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप दुनिया को क्या दावत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं. फ़रमाया बुत परस्ती छोड़कर एक अल्लाह तआला की इबादत करना और आपने इस्लाम के आदेश बताए, ये बातें उसके दिल में असर कर गईं और वह शख़्स पिछली किताबों का आलिम था कहने लगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप बेशक अल्लाह तआला के रसूल हैं. हुज़ूर ने फ़रमाया तुम ने यह कैसे जाना उसने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया, पहले छोटे दर्जे के ग़रीब लोग ही उसके ताबे हुए यह अल्लाह की सुन्नत हमेशा ही जारी रही. इसपर यह आयत उतरी.
(११) यानी जब दुनिया में हम ख़ुशहाल हैं तो हमारे अअमाल और अफ़आल अल्लाह तआला को पसन्द होंगे और ऐसा हुआ तो आख़िरत में अज़ाब नहीं होगा. अल्लाह तआला ने उनके इस बातिल ख़याल का रद फ़रमाया कि आख़िरत के सवाब को दुनिया की मईशत पर क़यास करना ग़लत है.
(१२) आज़माइश और परीक्षा के तौर पर, तो दुनिया में रोज़ी की कुशायश अल्लाह की रज़ा की दलील नहीं और ऐसे ही उसकी

تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰىٓ اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا

منزل ٥

तुम्हें हमारे क़रीब तक पहुंचाएं मगर वो जो ईमान लाए और नेकी की[१] उनके लिये दूनादूं सिला[२] उनके अमल(कर्म) का बदला और वो बालाख़ानों(अट्टालिकाओं) में अम्न व अमान से हैं[३] ﴿३७﴾ और वो जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं[४] वो अज़ाब में ला धरे जाएंगे[५] ﴿३८﴾ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ(विस्तृत) फ़रमाता है अपने बन्दों में जिसके लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिसके लिये चाहे[६] और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वह उसके बदले और देगा[७] और वह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला[८] ﴿३९﴾ और जिस दिन उन सब को उठाएगा[९] फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा क्या ये तुम्हें पूजते थे[१०] ﴿४०﴾ वो अर्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वो[११] बल्कि वो जिन्नों को पूजते थे[१२] उनमें अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे[१३] ﴿४१﴾ तो आज तुम में एक दूसरे के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा[१४] और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से, उस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुटलाते थे[१५] ﴿४२﴾ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें[१६] पढ़ी जाएं तो कहते हैं[१७] ये तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा के मअबूदों से[१८] और कहते हैं[१९] ये तो नहीं बोहतान जोड़ा

तंगी अल्लाह तआला की नाराज़ी की दलील नहीं. कभी गुनाहगार पर वुसअत करता है, कभी फ़रमाँबरदार पर तंगी, यह उसकी हिकमत है. आख़िरत के सवाब को इसपर क़ियास करना ग़लत और बेजा है.

सूरए सबा - पाँचवां रूकू

(१) यानी माल किसी के लिये क़ुर्ब का कारण नहीं सिवाय नेक मूमिन के, जो उसको ख़ुदा की राह में ख़र्च करे. और औलाद के लिये क़ुर्ब का कारण नहीं, सिवाय उस मूमिन के जो उन्हें नेक इल्म सिखाए, दीन की तालीम दे, और नेक और तक़वा वाला बनाए.

(२) एक नेकी के बदले दस से लेकर सात सौ गुना तक और इससे भी ज़्यादा, जितना ख़ुदा चाहे.

(३) यानी जन्नत की ऊंची मंज़िलों में.

(४) यानी क़ुरआने करीम पर आलोचना करते हैं और यह गुमान करते हैं कि अपनी इन ग़लत हरकतों से वो लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे. और उनका यह छलकपट इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वो हमारे अज़ाब से बच रहेंगे क्योंकि उनका अक़ीदा यह है कि मरने के बाद उठना ही नहीं है तो अज़ाब सवाब कैसा.

(५) और उनकी मक्कारियाँ उनके कुछ काम न आएंगी.

(६) अपनी हिकमत के अनुसार.

(७) दुनिया में या आख़िरत में. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा. दूसरी हदीस में है सदक़े से माल कम नहीं होता, माफ़ करने से इज़्ज़त बढ़ती है, विनम्रता से दर्जे बलन्द होते हैं.

(८) क्योंकि उसके सिवा जो कोई किसी को देता है चाहे बादशाह लश्कर को, या आक़ा ग़ुलाम को, या घर वाला अपने बीवी बच्चों को, वह अल्लाह तआला की पैदा की हुई और उसकी अता की हुई रोज़ी में से देता है. रिज़्क़ और उससे नफ़ा उठाने के साधनों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं. वही सच्चा रिज़्क़ देने वाला है.

(९) यानी उन मुश्रिकों को.

(१०) दुनिया में.

(११) यानी हमारी उनसे कोई दोस्ती नहीं तो हम किस तरह उनके पूजने से राज़ी हो सकते थे. हम उससे बरी हैं.

(१२) यानी शैतानों को कि उनकी इताअत के लिये ग़ैर ख़ुदा को पूजते हैं.

(१३) यानी शैतानों पर.

(१४) और वो झूटे मअबूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़ा नुक़सान न पहुंचा सकेंगे.

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ
لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ
نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ اِنَّمَآ
اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ
فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾
قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ
ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا
يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا

हुआ, और काफ़िरों ने हक़ को कहा[२०] जब उनके पास आया यह तो नहीं मगर खुला जादू ﴾४३﴿ और हमने उन्हें कुछ किताबें न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया[२१] ﴾४४﴿ और उनसे अगलों ने[२२] झुटलाया और ये उसके दसवें को भी न पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था[२३] फिर उन्होंने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा इन्कार करना[२४] ﴾४५﴿

छटा रूकू

तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूँ[१] कि अल्लाह के लिये खड़े रहो[२] दो दो[३] और अकेले अकेले[४] फिर सोचो[५] कि तुम्हारे इन साहब में जिन्नों की कोई बात नहीं, वही तो नहीं मगर तुम्हें डर सुनाने वाले[६] एक सख़्त अज़ाब के आगे[७] ﴾४६﴿ तुम फ़रमाओ मैं ने तुमसे इस पर कुछ अज्र मांगा हो तो वह तुम्हीं को[८] मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है, और वह हर चीज़ पर गवाह है ﴾४७﴿ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब हक़(सत्य) का इल्क़ा फ़रमाता है[९] बहुत जानने वाला सब ग़ैबों(अज्ञात) का ﴾४८﴿ तुम फ़रमाओ हक़(सत्य) आया[१०] और बातिल(असत्य) न पहल करे और न फिर कर आए[११] ﴾४९﴿ तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका[१२] और अगर मैं ने राह पाई तो उसके कारण जो मेरा रब मेरी तरफ़ वही(देववाणी) फ़रमाता है[१३] बेशक वह सुनने वाला नज़्दीक है[१४] ﴾५०﴿

(१५) दुनिया में.
(१६) यानी क़ुरआन की आयतें, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बान से.
(१७) हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत.
(१८) यानी बुतों से.
(१९) क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत.
(२०) यानी क़ुरआन शरीफ़ को.
(२१) यानी आप से पहले अरब के मुश्रिकों के पास न कोई किताब आई न रसूल जिसकी तरफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो ये जिस ख़याल पर हैं उनके पास उसकी कोई सनद नहीं वह उनके नफ़्स का धोखा है.
(२२) यानी पहली उम्मतों ने क़ुरैश की तरह रसूलों को झुटलाया और उनको.
(२३) यानी जो क़ुव्वत और माल औलाद की बहुतात और लम्बी उम्र पहलों को दी गई थी, क़ुरैश के मुश्रिकों के पास तो उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं. उनके पहले तो उनसे ताक़त और क़ुव्वत, माल दौलत में दस गुना से ज़्यादा थे.
(२४) यानी उनको नापसन्द रखना और अज़ाब देना और हलाक फ़रमाना यानी पहले झुटलाने वालों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अज़ाब से उन्हें हलाक किया और उनकी ताक़त व क़ुव्वत और माल दौलत कोई भी चीज़ उनके काम न आई . इन लोगों की क्या हक़ीक़त है, इन्हें डरना चाहिये.

सूरए सबा - छटा रूकू

(१) अगर तुमने उस पर अमल किया तो तुम पर सच्चाई खुल जाएगी और तुम वसवसों, शुबह और गुमराही की मुसीबत से निजात पाओगे. वह नसीहत ये है ---
(२) केवल सत्य की तलब की नियत से, अपने आपको तरफ़दारी और तअस्सुब से ख़ाली करके.
(३) ताकि आपस में सलाह कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें.
(४) ताकि भीड़ से तबीअत न घबराए और तअस्सुब और तरफ़दारी और मुक़ाबला और लिहाज़ वग़ैरह से तबीअतें पाक रहें और

فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

(٣٥) سُورَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ (٤٣) — اٰياتها ٤٥ — ركوعاتها ٥

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ مَّا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِن بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ

منزل ٥

और किसी तरह तू देखे(१५) जब वो घबराहट में डाले जाएंगे फिर बचकर न निकल सकेंगे(१६) और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे(१७) ﴿५१﴾ और कहेंगे हम उसपर ईमान लाए(१८) और अब वो उसे कैसे पाएं इतनी दूर जगह से(१९) ﴿५२﴾ कि पहले(२०) तो उससे कुफ़्र कर चुके थे, और बे देखे फैंक मारते हैं(२१) दूर मकान से(२२) ﴿५३﴾ और रोक कर दी गई उनमें और उसमें और उसमें जिसे चाहते हैं(२३) जैसे उनके पहले गिरोहों से किया गया था(२४) बेशक वो धोका डालने वाले शक में थे(२५) ﴿५४﴾

३५- सूरए फ़ातिर

सूरए फ़ातिर मक्का में उतरी, इसमें ४५ आयतें ५ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़रिश्तों को रसूल करने वाला(२) जिनके दो दो तीन तीन चार चार पर हैं, बढ़ाता है आफ़रीनश में जो चाहे(३) बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सक्षम) है ﴿१﴾ अल्लाह जो रहमत लोगों के लिये खोले(४) उसका कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ रोक ले तो उसकी रोक के बाद उसका कोई छोड़ने वाला नहीं, और वही इज़्ज़त हिकमत वाला है ﴿२﴾ ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह का एहसान याद

अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़ा मिले.

(५) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत ग़ौर करो कि क्या जैसा कि काफ़िर आपकी तरफ़ जुनून की निस्बत करते हैं उसमें सच्चाई का कुछ भाग भी है . तुम्हारे अपने अनुभव में क़ुरैश में या मानव जाति में कोई व्यक्ति भी इस दर्जे का अक़्ल वाला नज़र आया है, क्या ऐसा ज़हीन, ऐसा सही राय वाला देखा है, ऐसा सच्चा, ऐसा पाक अन्तःकरण वाला कोई और पाया है. जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इन गुणों में यकता हैं तो तुम यक़ीन जानो.

(६) अल्लाह तआला के नबी.

(७) और वह आख़िरत का अज़ाब है.

(८) यानी मैं नसीहत और हिदायत और रिसालत की तबलीग़ पर तुम से कोई उजरत नहीं तलब करता.

(९) अपने नबियों की तरफ़.

(१०) यानी क़ुरआन और इस्लाम.

(११) यानी शिर्क और कुफ़्र मिट गया. उसकी शुरूआत रही न उसका पलट कर आना. मुराद यह है कि वह हलाक हो गया.

(१२) मक्के के काफ़िर हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहते थे कि आप गुमराह हो गए. अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया कि आप उनसे फ़रमा दें कि अगर यह मान लिया जाए कि मैं बहका तो इसका वबाल मेरे नफ़्स पर है.

(१३) हिकमत और बयान की क्योंकि राह पाना उसकी तौफ़ीक़ और हिदायत पर ह. नबी सब मअसूम होते हैं, गुनाह उनसे हो ही नहीं सकता और हुज़ूर तो नबियों के सरदार हैं, सृष्टि को नेकियों की राहें आपके अनुकरण से मिलती हैं. बुज़ुर्गी और ऊंचे दर्जे के बावुजूद आपको हुक्म दिया गया कि गुमराही की निस्बत सिर्फ़ मान लेने की हद तक अपने नफ़्स की तरफ़ फ़रमाएं ताकि ख़ल्क़ को मालूम हो कि गुमराही का मन्शा इन्सान का नफ़्स है जब उसको उसपर छोड़ दिया जाता है, उससे गुमराही पैदा होती है और हिदायत अल्लाह तआला की रेहमत और मेहरबानी और उसी के दिये से हासिल होती है, नफ़्स उसका मन्शा नहीं.

(१४) हर राह पाए हुए और गुमराह को जानता है और उनके कर्मों और चरित्र से बाख़बर है. कोई कितना ही छुपाए किसी का हाल उससे छुप नहीं सकता. अरब के एक बड़े मशहूर शायर इस्लाम लाए तो काफ़िरों ने उनसे कहा कि तुम अपने दीन से फिर गए

خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ
كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا ٝ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ
فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ
فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

ع

करो[५] क्या अल्लाह के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ (सृष्टा) है कि आसमान और ज़मीन से[६] तुम्हें रोज़ी दे उसके सिवा कोई मअबूद नहीं तो तुम कहाँ औंधे जाते हो[७] (३) और अगर ये तुम्हें झुटलाएं[८] तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए[९] और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं[१०] (४) ऐ लोगो बेशक अल्लाह का वादा सच है[११] तो हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दगी[१२] और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह बड़ा फ़रेबी[१३] (५) बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो[१४] वह तो अपने गिरोह को[१५] इसीलिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हो[१६] (६) काफ़िरों के लिये[१७] सख़्त अज़ाब है, और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[१८] उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है (७)

दूसरा रूकू

तो क्या वह जिसकी निगाह में उसका बुरा काम आरास्ता किया गया कि उसने उसे बला समझा, हिदायत वाले की तरह हो जाएगा[१] इसलिये अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे, तो तुम्हारी जान उनपर हसरतों में न जाए[२] अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वो करते हैं (८) और अल्लाह है जिसने भेजीं हवाएं कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ रवाँ करते हैं[३] तो उसके कारण हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते

और इतने बड़े शायर और ज़बान वाले होकर मुहम्मद पर ईमान लाए. उन्होंने कहा हाँ, वह मुझ पर ग़ालिब आ गए. क़ुरआने करीम की तीन आयतें मैंने सुनीं और चाहा कि उनके क़ाफ़िये पर तीन शेअर कहूँ . बहुत मेहनत की, जान लड़ाई, अपनी सारी शक्ति लगा दी मगर यह संभव न हो सका. तब मुझे यक़ीन हो गया कि यह इन्सान का कलाम नहीं. वो आयतें इसी सूरत की ४८वीं, ४९वीं और ५०वीं आयतें हैं. (रूहुल बयान)

(१५) काफ़िरों को, मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन.

(१६) और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे.

(१७) जहाँ भी होंगे क्योंकि कहीं भी हों, अल्लाह तआला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते. उस वक़्त हक़ की पहचान के लिये बेचैन होंगे.

(१८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.

(१९) यानी अब मुकल्लफ़ होने के महल से दूर होकर तौबह और ईमान कैसे पा सकेंगे.

(२०) यानी अज़ाब देखने से पहले.

(२१) यानी बे जाने कह गुज़रते हैं जैसा कि उन्हों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में कहा था कि वह शायर हैं, जादूगर हैं, तांत्रिक हैं और उन्होंने कभी हुज़ूर से शेअर, व जादू व तंत्र विधा का होना न देखा था.

(२२) यानी सच्चाई से दूर कि उन के उन तअनों को सच्चाई से ज़रा भी नज़्दीकी नहीं.

(२३) यानी तौबह और ईमान में.

(२४) कि उनकी तौबह और ईमान यास के वक़्त क़ुबूल न फ़रमाई गई.

(२५) ईमानियात के मुतअल्लिक़.

३५ - सूरए फ़ातिर - पहला रूकू

(१) सूरए फ़ातिर मक्के में उतरी . इसमें पाँच रूकू, पैंतालीस आयतें, नौ सौ सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सौ अक्षर हैं.

(२) अपने नबियों की तरफ़.

(३) फ़रिश्तों में और उनके सिवा और मख़्लूक़ में.

(४) जैसे बारिश, रिज़्क़ और सेहत वग़ैरह.

हैं उसके मरे पीछे[४] यूंही हश्र में उठना है[५]﴿९﴾ जिसे इज़्ज़त की चाह हो तो इज़्ज़त तो सब अल्लाह के हाथ है[६] उसी की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम[७] और जो नेक काम है वह उसे बलन्द करता है[८] और वो जो बुरे दाँव करते हैं उनके लिये सख़्त अज़ाब है[९] और उन्हीं का मक्र(कपट) बरबाद होगा[१०]﴿१०﴾ और अल्लाह ने तुम्हें बनाया[११] मिट्टी से फिर[१२] पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया जोड़े जोड़े[१३] और किसी मादा के पेट नहीं रहता और न वह जनती है मगर उसके इल्म, और जिस बड़ी उम्र वाले को उम्र दी जाए या जिस किसी की उम्र कम रखी जाए यह सब एक किताब में है[१४] बेशक यह अल्लाह को आसान है[१५]﴿११﴾ और दोनों समन्दर एक से नहीं[१६] यह मीठा है, ख़ूब मीठा पानी ख़ुशगवार और यह खारी है, तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त[१७] और निकालते हो पहनने का एक गहना[१८] और तू किश्तियों को उसमें देखे कि पानी चीरती हैं[१९] ताकि तुम उसका फ़ज़्ल(कृपा) तलाश करो[२०] और किसी तरह हक़ मानो[२१]﴿१२﴾ रात लाता है दिन के हिस्से में[२२] और दिन लाता है रात के

(५) कि उसने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आसमान को बग़ैर किसी सुतून के क़ायम किया, अपनी राह बताने और हक़ की दावत देने के लिये रसूलों को भेजा रिज़्क़ के दरवाज़े खोले.

(६) मेंह बरसाकर और तरह तरह की वनस्पति पैदा करके.

(७) और यह जानते हुए कि वही ख़ालिक़ और रिज़्क़ देने वाला है. ईमान और तौहीद से क्यों फिरते हो. इसके बाद नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली के लिये फ़रमाया जाता है.

(८) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम और तुम्हारी नबुव्वत और रिसालत को मानें और तौहीद और दोबारा उठाए जाने और हिसाब और हिसाब और अज़ाब का इन्कार करें.

(९) उन्होंने सब्र किया, आप भी सब्र फ़रमाइये. काफ़िरों का नबियों के साथ पहले से यह दस्तूर चला आता है.

(१०) वह झुटलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों की मदद फ़रमाएगा.

(११) क़यामत ज़रूर आनी है, मरने के बाद ज़रूर उठाना है, कर्मों का हिसाब यक़ीनन होगा. हर एक को उसके किये की जज़ा बेशक मिलेगी.

(१२) कि उसकी लज़्ज़तों में मश्ग़ूल होकर आख़िरत को भूल जाओ.

(१३) यानी शैतान तुम्हारे दिलों में यह वसवसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठालो. अल्लाह तआला हिल्म फ़रमाने वाला है वह दर गुज़र करेगा. अल्लाह तआला बेशक हिल्म वाला है लेकिन शैतान की फ़रेबकारी यह है कि बन्दों को इस तरह तौबह और नेक अमल से रोकता है और गुनाह और गुमराही पर उकसाता है, उसके धोखे से होशियार रहो .

(१४) और उसकी इताअत न करो और अलाह तआला की फ़रमाँबरदारी में मशग़ूल रहो.

(१५) यानी अपने अनुयाइयों को, कुफ़्र की तरफ़.

(१६) अब शैतान के अनुयाइयों और उसके विरोधियों का हाल तफ़सील के साथ बयान फ़रमाया जाता है.

(१७) जो शैतान के गिरोह में से हैं.

(१८) और शैतान के धोखे में न आए और उसकी राह न चले.

सूरए फ़ातिर - दूसरा रूकू

(१) हरगिज़ नहीं, बुरे काम को अच्छा समझने वाला राह पाए हुए की तरह क्या हो सकता है. वह बदकार कई दर्जे बेहतर है जो अपने ख़राब अमल को बुरा जानता हो, सच को सच और बातिल को बातिल समझता हो. यह आयत अबू जहल वग़ैरह मक्के के

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۞ اِنْ تَدْعُوْهُمْ
لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۗ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۗ وَلَا يُنَبِّئُكَ
مِثْلُ خَبِيْرٍ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۞ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ
يَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۞ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۞
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ
اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۗ
اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ۗ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۗ وَاِلَى
اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۞ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۞

हिस्से में(२३) और उसने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक निश्चित मीआद तक चलता है(२४) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है, और उसके सिवा जिन्हें तुम पूजते हो(२५) खुर्मा के दाने के छिलके तक के मालिक नहीं﴾१३﴿ तुम उन्हें पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार न सुनें(२६) और फ़र्ज़ करो सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत रवा(पूरी) न कर सकें(२७) और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क से इन्कारी होंगे(२८) और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की तरह(२९)﴾१४﴿

तीसरा रूकू

ऐ लोगो तुम सब अल्लाह के मोहताज(१) और अल्लाह ही बेनियाज़(बेपर्वाह) है सब ख़ूबियों सराहा﴾१५﴿ वह चाहे तो तुम्हें ले जाए(२) और नई मख़लूक़ ले आए(३)﴾१६﴿ और यह अल्लाह पर कुछ दुशवार(कठिन) नहीं﴾१७﴿ और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी(४) और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उसके बोझ में से कोई कुछ न उठाएगा अगरचे क़रीबी रिश्तेदार हो(५) ऐ मेहबूब तुम्हारा डर सुनाना उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो सुथरा हुआ(६) तो अपने ही भले को सुथरा हुआ(७) और अल्लाह ही की तरफ़ फिरना है﴾१८﴿ और बराबर नहीं अंधा और अंखियारा(८)﴾१९﴿

मुश्रिकों के बारे में नाज़िल हुई जो अपने कुफ़्र और शिर्क जैसे बुरे कर्मों को शैतान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे. और एक क़ौल यह भी है कि यह आयत बिदअत और हवा वालों के बारे में उतरी जिनमें राफ़ज़ी और ख़ारिजी वग़ैरह दाख़िल हैं जो अपनी बदमज़हबियों को अच्छा जानते हैं और उन्हीं के ज़ुमरे में दाख़िल हैं तमाम बदमज़हब, चाहे वहाबी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद या मिर्ज़ाई या चकड़ालवी. और बड़े गुनाह वाले, जो अपने गुनाहों को बुरा जानते हैं और हलाल नहीं समझते, इसमें दाख़िल नहीं.

(२) कि अफ़सोस वो ईमान न लाए और सच्चाई को क़ुबूल करने से मेहरूम रहे. मुराद यह है कि आप उन के कुफ़्र और हलाकत का ग़म न फ़रमाएं.

(३) जिसमें सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहाँ की ज़मीन बेजान हो गई है.

(४) और उसको हरा भरा कर देते हैं. इससे हमारी क़ुदरत ज़ाहिर है.

(५) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला मुर्दे किस तरह ज़िन्दा फ़रमाएगा. ख़ल्क़ में उसकी कोई निशानी हो तो इरशाद फ़रमाइये. फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुआ है जो दुष्काल से बेजान होगया हो और वहाँ हरियाली का नामो निशान न रहा हो, फिर कभी उसी जंगल में गुज़र हुआ हो और उसको हरा भरा लहलहाता पाया हो. उन सहाबी ने अर्ज़ किया, बेशक ऐसा देखा है. हुज़ूर ने फ़रमाया ऐसे ही अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और ख़ल्क़ में यह उसकी निशानी है.

(६) दुनिया और आख़िरत में वही इज़्ज़त का मालिक है, जिसे चाहे इज़्ज़त दे. तो जो इज़्ज़त का तलबगार हो वह अल्लाह तआला से इज़्ज़त तलब करे क्योंकि हर चीज़ उसके मालिक ही से तलब की जाती है. हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे दारैन की इज़्ज़त की इच्छा हो, चाहिये कि वह इज़्ज़त वाले रब की इताअत करे और इज़्ज़त की तलब का साधन ईमान और अच्छे कर्म हैं.

(७) यानी उसके क़ुबूल और रज़ा के मक़ाम तक पहुंचता है. और पाकीज़ा कलाम से मुराद कलिमए तौहीद व तस्बीह और तहमीद व तकबीर वग़ैरह हैं जैसा कि हाकिम और बेहिक़ी ने रिवायत किया और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने कलिमए तैय्यिबह की तफ़सीर ज़िक्र से फ़रमाई और कुछ मुफ़स्सिरों ने क़ुरआन और दुआ भी मुराद ली है.

(८) नेक काम से मुराद वो अमल और इबादत है जो सच्चे दिल से हो और मानी ये हैं कि कलिमए तैय्यिबह अमल को बलन्द करता है क्योंकि अमल तौहीद और ईमान के बिना मक़बूल नहीं, या ये मानी हैं कि नेक अमल को अल्लाह तआला मक़बूलियत अता फ़रमाता है या ये मानी हैं कि अमल नेक अमल करने वाले का दर्जा बलन्द करते हैं तो जो इज़्ज़त चाहे उसको लाज़िम है कि

नेक काम करे.
(९) मुराद इन कपट करने वालों से वो क़ुरैश हैं जिन्होंने दारून-नदवा में जमा होकर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत क़ैद करने और क़त्ल करने और जिला वतन करने के मशवरे किये थे जिसका तफ़सीली बयान सूरए अनफ़ाल में हो चुका है.
(१०) और वो अपने दाँव और धोखे में कामयाब न होंगे. चुनांन्चे ऐसा ही हुआ. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके शर और आतंक से मेहफ़ूज़ रहे और उन्होंने अपनी मक्कारियों की सज़ाएं पाईं कि बद्र में क़ैद भी हुए, क़त्ल भी किये गए और मक्कए मुकर्रमा से निकाले भी गए.
(११) यानी तुम्हारी अस्ल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को.
(१२) उनकी नस्ल को.
(१३) मर्द और औरत.
(१४) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में. हज़रत क़तादह से रिवायत है कि जिसकी उम्र साठ साल पहुंचे और कम उम्र वाला वह जो उससे पहले मर जाए.
(१५) यानी अमल और मौत का लिखना.
(१६) बल्कि दोनों में फ़र्क़ है.
(१७) यानी मछली.
(१८) गौहर यानी मोती और मर्जान यानी मूंगा.
(१९) दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं.
(२०) तिजारत में नफ़ा हासिल करके.
(२१) और अल्लाह तआला की नेअमतों की शुक्रगुज़ारी करो.
(२२) तो दिन बढ़ जाता है.
(२३) तो रात बढ़ जाती है यहाँ तक कि बढ़ने वाली दिन या रात की मिक़दार पन्द्रह घण्टे तक पहुंचती है और घटने वाला नौ घण्टे का रह जाता है.
(२४) यानी क़यामत के दिन तक, कि जब क़यामत आ जाएगी तो उनका चलना बन्द हो जाएगा और यह निज़ाम बाक़ी न रहेगा.
(२५) यानी बुत.
(२६) क्योंकि पत्थर बेजान हैं.
(२७) क्योंकि कुछ भी क़ुदरत और इख़्तियार नहीं रखते.
(२८) और बेज़ारी का इज़हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें पूजते थे.
(२९) यानी दोनों जगत के हालात और बुत परस्ती के परिणाम की जैसी ख़बर अल्लाह तआला देता है और कोई नहीं दे सकता.

सूरए फ़ातिर - तीसरा रूकू

(१) यानी उसके फ़ज़्ल व एहसान के हाजतमन्द हो और तमाम ख़ल्क़ उसकी मोहताज है. हज़रत ज़ुन-नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क़ हर दम हर क्षण अल्लाह तआला की मोहताज है और क्यों न होगी उनकी हस्ती और उनकी बक़ा सब उसके करम से है.
(२) यानी तुम्हें मअदूम करदे क्योंकि वह बेनियाज़ और अपनी ज़ात में ग़नी है.
(३) बजाय तुम्हारे जो फ़रमाँबरदार हो.
(४) मानी ये हैं कि क़यामत के दिन हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बोझ होगा जो उसने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के बदले न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उनके गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए उनकी तमाम गुमराहियों का बोझ उन गुमराहों पर भी होगा और उनके गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि कलामे मजीद में इरशाद हुआ "वला यहमिलुन्ना अस्क़ालहुम व अस्क़ालम मआ अस्क़ालिहिम" यानी और बेशक ज़रुर अपने बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ - (सूरए अन्कबूत, आयत १३). और वास्तव में यह उनकी अपनी कमाई है, दूसरे की नहीं.
(५) बाप या माँ, बेटा, भाई, कोई किसी का बोझ न उठाएगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया माँ बाप, बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठा ले. वह कहेगा मेरे बस में नहीं, मेरा अपना बोझ क्या कम है.
(६) यानी बदियों से बचा और नेक अमल किये.
(७) इस नेकी का नफ़ा वही पाएगा.
(८) यानी जाहिल और आलिम या काफ़िर और मूमिन.

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾
وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ
اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ
مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا
اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ
اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ
وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ

और न अंधेरियां[९] और उजाला[१०]﴾२०﴿ और न साया[११] और न तेज़ धूप[१२]﴾२१﴿ और बराबर नहीं ज़िन्दे और मुर्दे[१३] बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे[१४] और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों में पड़े हैं[१५]﴾२२﴿ तुम तो यही डर सुनाने वाले हो[१६]﴾२३﴿ ऐ महेबुब बेशक हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा ख़ुशख़बरी देता[१७] और डर सुनाता[१८] और जो कोई गिरोह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका[१९]﴾२४﴿ और अगर ये[२०] तुम्हें झुटलाएं तो इनसे अगले भी झुटला चुके हैं[२१] उनके पास उनके रसूल आए रौशन दलीलें[२२] और सहीफ़े(धर्मग्रन्थ) और चमकती किताब[२३] लेकर﴾२५﴿ फिर मैंने काफ़िरों को पकड़ा[२४] तो कैसा हुआ मेरा इन्कार[२५]﴾२६﴿

चौथा रूकू

क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा[१] तो हमने उससे फल निकाले रंग बिरंगे[२] और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग के और कुछ काले भुजंग﴾२७﴿ और आदमियों और जानवरों और चौपायों के रंग यूंही तरह तरह के हैं[३] अल्लाह से उसके बन्दों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं[४] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला इज़्ज़त वाला है﴾२८﴿

---

(९) यानी कुफ़्र.
(१०) यानी ईमान.
(११) यानी हक़ या जन्नत.
(१२) यानी बातिल या दोज़ख़.
(१३) यानी मूमिनीन और कुफ़्फ़ार या उलमा और जाहिल लोग.
(१४) यानी जिसकी हिदायत मन्ज़ूर हो उसको क़ुबूल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है.
(१५) यानी काफ़िरों को, इस आयत में काफ़िरों को मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस तरह मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़ा नहीं उठा सकते और नसीहत हासिल नहीं करते, बदअंजाम काफ़िरों का भी यही हाल है कि वह हिदायत और नसीहत से नफ़ा नहीं उठाते. इस आयत से मुर्दों के सुनने पर इस्तिदलाल करना सही नहीं है क्योंकि आयत में क़ब्र वालों से मुराद काफ़िर हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वह सुनना है जिस पर राह पाने का नफ़ा मिले. रहा मुर्दों का सुनना, वह कई हदीसों से साबित है. इस मसअले का बयान बीसवें पारे के दूसरे रूकू में गुज़र चुका.
(१६) तो अगर सुनने वाला आपके डराने पर कान रखे और मानने की नियत से सुने तो नफ़ा पाए और अगर इन्कार पर डटे रहने वालों में से हो और आपकी नसीहत न माने तो आपका कुछ हर्ज नहीं, वही मेहरूम है.
(१७) ईमानदारों को, जन्नत की.
(१८) काफ़िरों को, अज़ाब का.
(१९) चाहे वह नबी हो या दीन का आलिम जो नबी की तरफ़ से ख़ुदा के बन्दों को अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाए.
(२०) मक्के के काफ़िर.
(२१) अपने रसूलों को, काफ़िरों का पहले से नबियों के साथ यही बर्ताव रहा है.
(२२) यानी नबुव्वत पर दलालत करने वाले चमत्कार.
(२३) तौरात व इन्जील व ज़ुबूर.
(२४) तरह तरह के अज़ाबों से उनके झुटलाने के कारण.
(२५) मेरा अज़ाब देना.

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْۤ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْۤ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا

बेशक वो जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं छुपवां और ज़ाहिर वो ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं(५)﴿२९﴾ जिसमें हरगिज़ टोटा नहीं ताकि उनके सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा अता करे बेशक वह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है﴿३०﴾ और वह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी(६) वही हक़(सत्य) है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती हुई, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार देखने वाला है(७)﴿३१﴾ फिर हमने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को(८) तो उनमें कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है, और उनमें कोई बीच की चाल पर है, और उनमें कोई वह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सबक़त ले गया(९) यही बड़ा फ़ज़्ल है﴿३२﴾ बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वो(१०) उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहाँ उनकी पोशाक रेशमी है﴿३३﴾ और कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने हमारा ग़म दूर किया(११) बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है(१२)﴿३४﴾ वह जिसने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से, हमें उसमें कोई तकलीफ़ न पहुंचे और न हमें उसमें कोई तकान लाहिक़

सूरए फ़ातिर - चौथा रूकू

(१) बारिश उतारी.

(२) सब्ज़, सुर्ख़, ज़र्द वग़ैरह, तरह तरह के अनार, सेब, इन्जीर, अंगूर वग़ैरह, बे शुमार.

(३) जैसे फलों और पहाड़ों में, यहाँ अल्लाह तआला ने अपनी आयतें और अपनी क़ुदरत की निशानियाँ और ख़ालिक़ीयत (सृजन-शक्ति) के निशान जिन से उसकी ज़ात व सिफ़ात पर इस्तिदलाल किया जाए, ज़िक्र कीं इसके बाद फ़रमाया.

(४) और उसकी सिफ़ात को जानते और उसकी अज़मत को पहचानते हैं, जितना इल्म ज़्यादा, उतना ख़ौफ़ ज़्यादा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद यह है कि मख़लूक़ में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ उसको है जो अल्लाह तआला के जबरूत और उसकी इज़्ज़त व शान से बाख़बर है. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया क़सम अल्लाह तआला की कि मैं अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ और सब से ज़्यादा उसका ख़ौफ़ रखने वाला हूँ.

(५) यानी सवाब के.

(६) यानी क़ुरआने मजीद.

(७) और उनके ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला.

(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को यह किताब अता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर बुज़ुर्गी दी और नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ग़ुलामी और नियाज़मन्दी की करामत और शराफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया. इस उम्मत के लोग मुख़्तलिफ़ दर्जे रखते हैं.

(९) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सबक़त ले जाने वाला सच्चा मूमिन है और बीच का रस्ता चलने वाला वह जिसके कर्म रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहाँ वह है जो अल्लाह की नेअमत का इन्कारी तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाए. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारा पिछला तो पिछला ही है और मध्यमार्गी निजात पाया हुआ और ज़ालिम मग़फ़ूर. एक और हदीस में है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया नेकियों में सबक़त लेजाने वाला जन्नत में बेहिसाब दाख़िल होगा और बीच की राह चलने वाले से हिसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम हिसाब के मक़ाम में रोका जाएगा उसको परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा. उम्मुल मूमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि साबिक़, एहदे रिसालत के वो मुख़लिस लोग हैं जिनके लिये रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जन्नत की बशारत दी और बीच के रस्ते चलने वाले वो सहाबा हैं जो आपके तरीक़े पर चलते रहे और ज़ालिम हम तुम जैसे लोग हैं. यह हद

يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ
عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ
فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا
نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَ
جَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾
اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي
الْاَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ
الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

منزل ٥

हो﴾३५﴿ और जिन्हों ने कुफ़्र किया उनके लिये जहन्नम की आग है न उनकी क़ज़ा(मौत) आए कि मर जाएं[१३] और न उनपर उसका[१४] अज़ाब कुछ हल्का किया जाए, हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्रे को﴾३६﴿ और वो उसमें चिल्लाते होंगे[१५] ऐ हमारे रब, हमें निकाल[१६] कि हम अच्छा काम करें उसकेख़िलाफ़ जो पहले करते थे[१७] और क्या हम ने तुम्हें वह उम्र न दी थी जिसमें समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला[१८] तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था[१९] तो अब चखो[२०] कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं﴾३७﴿

पाँचवां रुकू

बेशक अल्लाह जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की हर छुपी बात का, बेशक वह दिलों की बात जानता है﴾३८﴿ वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में अगलों का जानशीन किया[१] तो जो कुफ़्र करे[२] उसका कुफ़्र उसी पर पड़े[३] और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके रब के यहां नहीं बढ़ाएगा मगर बेज़ारी[४] और काफ़िरों को उनका कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़सान[५]﴾३९﴿ तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वो शरीक[६] जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो, मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आसमानों में कुछ उनका साझा है[७] या हमने उन्हें कोई किताब दी है कि

दर्जे की विनम्रता थी हज़रत उम्मुल मूमिनीन रदियल्लाहो अन्हा की कि अपने आपको इस तीसरे तबक़े (वर्ग) में शुमार फ़रमाया. इस बुज़ुर्गी और बलन्दी के बावुजूद जो अल्लाह तआला ने आपको अता फ़रमाई थी और भी इसकी तफ़सीर में बहुत क़ौल हैं जो तफ़सीरों में तफ़सील से आए हैं.

(१०) तीनों गिरोह.

(११) इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या ताअतों के ग़ैर मक़बूल होने का या क़यामत के हौल का. ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वो उसपर अल्लाह की हम्द करेंगे.

(१२) कि गुनाहों को बख़्शता है और ताअतें क़ुबूल फ़रमाता है.

(१३) और मर कर अज़ाब से छूट सकें.

(१४) यानी जहन्नम का.

(१५) यानी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि ---

(१६) यानी दोज़ख़ से निकाल और दुनिया में भेज.

(१७) यानी हम बजाय कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाय गुमराही और नाफ़रमानी के तेरी इताअत और फ़रमाँबरदारी करें, इसपर उन्हें जवाब दिया जाएगा.

(१९) तुमने उस रसूले मोहतरम की दावत क़ुबूल न की और उनकी इताअत व फ़रमाँबरदारी बजा न लाए.

(२०) अज़ाब का मज़ा.

सूरए फ़ातिर - पाँचवां रूकू

(१) और उनके इमलाक और क़ब्ज़े वाली चीज़ों का मालिक और मुतसर्रिफ़ बनाया और उनके मुनाफ़े तुम्हारे लिये मुबाह किये ताकि तुम ईमान और इताअत इख़्तियार करके शुक्रगुज़ारी करो.

(२) और उन नेअमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा न किया.

(३) यानी अपने कुफ़्र का वबाल उसी को बर्दाश्त करना पड़ेगा.

(४) यानी अल्लाह का ग़ज़ब.

(५) आख़िरत में.

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ
اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ
بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى
الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝
اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ
السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ
تَحْوِيْلًا ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا
فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

वो उसकी रौशन दलीलों पर हैं[८] बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वादा नहीं देते मगर धोखे का[९]﴾४०﴿ बेशक अल्लाह रोके हुए है आसमानों और ज़मीन को कि जुंबिश(हरकत) न करें[१०] और अगर वो हट जाएं तो उन्हें कौन रोके अल्लाह के सिवा, बेशक वह हिल्म वाला बख़्शने वाला है﴾४१﴿ और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उनके पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वो ज़रूर किसी न किसी गिरोह से ज़्यादा राह पर होंगे[११] फिर जब उनके पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[१२] तो उसने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना[१३]﴾४२﴿ अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दाँव[१४] और बुरा दाँव अपने चलने वाले पर ही पड़ता है[१५] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर(तरीक़ा) हुआ[१६] तो तुम हरगिज़ अल्लाह के दस्तूर को बदलता न पाओगे, और हरगिज़ अल्लाह के क़ानून को टलता न पाओगे﴾४३﴿ और क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा अंजाम हुआ[१७] और वो उनसे ज़ोर में सख़्त थे[१८] और अल्लाह वह नहीं जिसके क़ाबू से निकल सके कोई चीज़ आसमानों और ज़मीन में बेशक वह इल्म व क़ुदरत वाला है﴾४४﴿

(६) यानी बुत.
(७) कि आसमान के बनाने में उन्हें कुछ दख़्ल हो, किस कारण उन्हें इबादत का मुस्तहिक़ क़रार देते हो.
(८) इनमें से कोई भी बात नहीं.
(९) कि उनमें जो बहकाने वाले हैं वो अपने अनुयाइयों को धोखा देते हैं और बुतों की तरफ़ से उन्हें बातिल उम्मीदें दिलाते हैं.
(१०) वरना आसमान और ज़मीन के बीच शिर्क जैसा गुनाह हो तो आसमान और ज़मीन कैसे क़ायम रहें.
(११) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले क़ुरैश ने यहूदियों और ईसाइयों के अपने रसूलों को मानने और उनको झुटलाने की निस्बत कहा था कि अल्लाह तआला उनपर लअनत करे कि उनके पास अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल आए और उन्हों ने उन्हें झुटलाया और न माना. ख़ुदा की क़सम अगर हमारे पास कोई रसूल आए तो हम उनसे ज़्यादा राह पर रहेंगे और उस रसूल को मानने में उनके बेहतर गिरोह पर सबक़त ले जाएंगे.
(१२) यानी नबियों के सरदार हबीबे ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रौनक़ अफ़रोज़ी और जलवा आराई हुई.
(१३) हक़ व हिदायत से और.
(१४) बुरे दाव से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ छलकपट करना.
(१५) यानी मक्कार पर, चुनांन्चे फ़रेबकारी करने वाले बद्र में मारे गए.
(१६) कि उन्होंने तकज़ीब की और उनपर अज़ाब उतरे.
(१७) यानी क्या उन्होंने शाम और इराक़ और यमन के सफ़रों में नबियों को झुटलाने वालों की हलाकत और बर्बादी और उनके अज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उनसे इब्रत हासिल करते.
(१८) यानी वो तबाह हुई क़ौमें इन मक्का वालों से ज़्यादा शक्तिशाली थीं इसके बावुजूद इतना भी न हो सका कि वो अज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं.

اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ
دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ٤٥

(٣٦) سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ (٤١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ ١ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ٢ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ٣ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ٤ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ٥ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ٦ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى
اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ٧ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا
فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ٨ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ
لَا يُبْصِرُوْنَ ٩ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ١٠ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ

منزل ٥

और अगर अल्लाह लोगों को उनके किये पर पकड़ता[१९] तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर (निश्चित) मीआद[२०] तक उन्हें ढील देता है फिर जब उनका वादा आएगा तो बेशक अल्लाह के सब बन्दे उसकी निगाह में हैं[२१] (४५)

३६- सूरए यासीन

सूरए यासीन मक्का में उतरी, इसमें ८३ आयतें और पांच रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] यासीन (१) हिकमत वाले क़ुरआन की क़सम (२) बेशक तुम[२] (३) सीधी राह पर भेजे गए हो[३] (४) इज़्ज़त वाले मेहरबान का उतारा हुआ (५) ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ जिसके बाप दादा न डराए गए[४] (६) तो वो बेख़बर हैं. बेशक उनमें अक्सर पर बात साबित हो चुकी है[५] तो वो ईमान न लाएंगे[६] (७) हमने उनकी गर्दनों में तौक़ कर दिये हैं कि वो ठोड़ियों तक रहें तो ये ऊपर को मुंह उठाए रह गए[७] (८) और हमने उनके आगे दीवार बनादी और उनके पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता[८] (९) और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न डराओ वो ईमान लाने के नहीं (१०) तुम तो उसी को डर सुनाते हो[९] जो नसीहत पर चले और
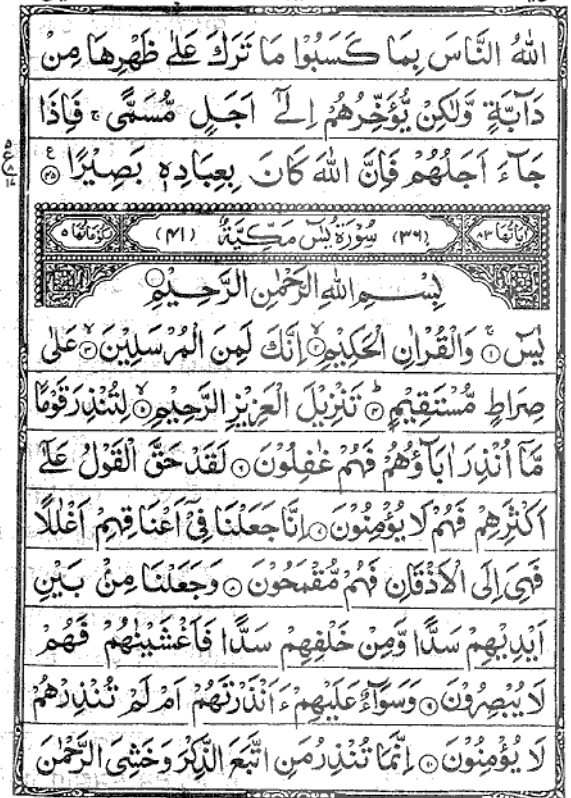
(१९) यानी उनके गुनाहों पर.
(२०) यानी क़यामत के दिन.
(२१) उन्हें उनके कर्मों की जज़ा देगा. जो अज़ाब के हक़दार हैं उन्हें अज़ाब फ़रमाएगा और जो करम के लायक़ हैं उनपर रहमो करम करेगा.

३६ - सूरए यासीन - पहला रूकू

(१) सूरए यासीन मक्के में उतरी. इसमें पाँच रूकू, तिरासी आयतें, सात सौ उनतीस कलिमे और तीन हज़ार अक्षर हैं. तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये दिल है और क़ुरआन का दिल यासीन है और जिसने यासीन पढ़ी, अल्लाह तआला उसके लिये दस बार क़ुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है. यह हदीस ग़रीब है और इसकी असनाद में एक रावी मजहूल है. अबू दाऊद की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया अपने मरने वालों पर यासीन पढ़ो. इसी लिये मौत के वक़्त सकरात की हालत में मरने वाले के पास यासीन पढ़ी जाती है.

(२) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(३) जो मंज़िले मक़सूद को पहुंचाने वाली है यह राह तौहीद और हिदायत की राह है, तमाम नबी इसी राह पर रहे हैं. इस आयत में काफ़िरों का रद है जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहते थे **"लस्ता मुरसलन"** तुम रसूल नहीं हो. इसके बाद क़ुरआने करीम की निस्बत इरशाद फ़रमाया.

(४) यानी उनके पास कोई नबी न पहुंचे और क़ुरैश की क़ौम का यही हाल है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले उनमें कोई रसूल नहीं आया.

(५) यानी अल्लाह के हुक्म और उसका लिखा उनके अज़ाब पर जारी हो चुका है और अल्लाह तआला का इरशाद "लअमलअन्ना जहन्नमा मिनल जिन्नते वन्नासे अजमईन" यानी बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा जिन्नों और आदमियों को मिलाकर. (सूरए हूद, आयत ११९) उन के हक़ में साबित हो चुका है और अज़ाब का उनके लिये निश्चित हो जाना इस कारण से है कि वो कुफ़्र और इनकार पर अपने इख़्तियार से अड़े रहने वाले हैं.

(६) इसके बाद उनके कुफ़्र में पक्के होने की एक तमसील (उपमा) इरशाद फ़रमाई.

بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ
الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ
فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ
اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾
قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ
شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ
اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾
قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ
لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ
اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ
اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾
اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

रहमान से बेदेखे डरे, तो उसे बख़्शिश और इज़्ज़त के सवाब की बशारत दो(१०)﴿११﴾ बेशक हम मुर्दों को जिलाएंगे और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा(११) और जो निशानियाँ पीछे छोड़ गए(१२) और हर चीज़ हमने गिन रखी है एक बताने वाली किताब में(१३)﴿१२﴾

दूसरा रूकू

और उनसे निशानयाँ बयान करो उस शहर वालों की(१) जब उनके पास भेजे हुए (रसूल)आए(२)﴿१३﴾ जब हमने उनकी तरफ़ दो भेजे(३) फिर उन्होंने उनको झुटलाया तो हमने तीसरे से ज़ोर दिया(४) अब उन सबने कहा(५) कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं﴿१४﴾ बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो﴿१५﴾ वो बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं﴿१६﴾ और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना(६)﴿१७﴾ बोले हम तुम्हें मनहूस समझते हैं(७) बेशक तुम अगर बाज़ न आए(८) तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे और बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी﴿१८﴾ उन्होंने फ़रमाया तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ है(९) क्या इस पर बिदकते हो कि तुम समझाए गए(१०) बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो(११)﴿१९﴾ और शहर के पर्ले किनारे से एक मर्द दौड़ता आया(१२) बोला ऐ मेरी क़ौम भेजे हुओं की पैरवी करो﴿२०﴾ ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग नहीं मांगते और वो राह पर हैं(१३)﴿२१﴾

(७) यह तमसील है उनके कुफ़्र में ऐसे पुख़्ता होने की कि डराने और चेतावनी वाली आयतों और नसीहत और हिदायत के अहकामात किसी से वो नफ़ा नहीं उठा सकते जैसे कि वो व्यक्ति जिन की गर्दनों में "ग़िल" की क़िस्म का तौक़ पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और उसकी वजह से वो सर नहीं झुका सकते. यही हाल उनका है कि किसी तरह उनको हक़ की तरफ़ रूचि नहीं होती और उसके हुज़ूर सर नहीं झुकाते. और कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि यह उनके हाल की हक़ीक़त है. जहन्नम में उन्हें इसी तरह का अज़ाब किया जाएगा जैसा कि दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया : "इज़िल अग़लालो फ़ी अअनाक़िहम" जब उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरें, घसीटे जाएंगे (सूरए अल-मूमिन, आयत ७१). यह आयत अबू जहल और उसके दो मख़्ज़ूमी दोस्तों के हक़ में उतरी. अबू जहल ने क़सम खाई थी कि अगर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पत्थर से सर कुचल डालेगा. जब उसने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वह इसी ग़लत इरादे से एक भारी पत्थर लाया. जब उस पत्थर को उठाया तो उसके हाथ गर्दन में चिपके रह गए और पत्थर हाथ को लिपट गया. यह हाल देखकर अपने दोस्तों की तरफ़ वापस हुआ और उनसे वाक़िआ बयान किया तो उसके दोस्त वलीद बिन मुग़ीरह ने कहा कि यह काम मैं करूंगा और मैं उनका सर कुचल कर ही आऊंगा. चुनांन्वे पत्थर ले आया. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब यह क़रीब पहुंचा. अल्लाह तआला ने उसकी बीनाई यानी दृष्टि छीन ली. हुज़ूर की आवाज़ सुनता था, आँखों से देख नहीं सकता था. यह भी परेशान होकर अपने यारों की तरफ़ लौटा, वो भी नज़र न आए. उन्होंने ही उसे पुकारा और उससे कहा तूने क्या किया. कहने लगा मैं ने उनकी आवाज़ तो सुनी मगर वह मुझे नज़र ही न आए. अब अबू जहल के तीसरे दोस्त ने दावा किया कि वह इस काम को अंजाम देगा और बड़े दावे के साथ वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ चला था, पर उलटे पाँव ऐसा बदहवास होकर भागा कि औंधे मुंह गिर गया. उसके दोस्तों ने हाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा दिल बहुत सख़्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के बीच आ गया. लात और उज़्ज़ा की क़सम, अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो मुझे खा ही जाता. इसपर यह आयत उतरी. (ख़ाज़िन व जुमल)

(८) यह भी तमसील है कि जैसे किसी शख़्स के लिये दोनों तरफ़ दीवारें हों और हर तरफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वह किसी मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंच सकता. यही हाल इन काफ़िरों का है कि उन पर हर तरफ़ से ईमान की राह बन्द है. सामने उनके सांसारिक घमण्ड की दीवारें हैं और उनके पीछे आख़िरत को झुटलाने की, और वो अज्ञानता के क़ैदख़ाने में क़ैद हैं, दलीलों

पर नज़र करना उन्हें मयस्सर नहीं.
(९) यानी आपके डर सुनाने से वहीं लाभ उठाता है.
(१०) यानी जन्नत की.
(११) यानी दुनिया की ज़िन्दगी में जो नेकी या बदी की, ताकि उसपर बदला दिया जाए.
(१२) यानी और हम उनकी वो निशानियाँ वो तरीक़े भी लिखते हैं जो वो अपने बाद छोड़ गए चाहे वो तरीक़े नेक हों या बुरे. जो नेक तरीक़े उम्मती निकालते हैं उनको बिदअते हसना कहते हैं और उस तरीक़े को निकालने वालों और अमल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है. और जो बुरे तरीक़े निकालते हैं उनको बिदअते सैयिअह कहते हैं. इस तरीक़े के निकालने वाले और अमल करने वाले दोनों गुनहगार होते हैं. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक तरीक़ा निकाला उसको तरीक़ा निकालने का भी सवाब मिलेगा और उसपर अमल करने वालों का भी सवाब, बग़ैर इसके कि अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए. और जिसने इस्लाम में बुरा तरीक़ा निकाला तो उस पर वह तरीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस तरीक़े पर अमल करने वालों के भी गुनाह बग़ैर इसके कि उन अमल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए. इससे मालूम हुआ कि सैंकड़ों भलाई के काम जैसे फ़ातिहा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवाँ व उर्स व तोशा व ख़त्म व ज़िक्र की मेहफ़िलें, मीलाद व शहादत की मजलिसें जिनको बदमज़हब लोग बिदअत कहकर मना करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं, ये सब दुरूस्त और अज्र और सवाब के कारण हैं और इनको बिदअते सैयिअह बताना ग़लत और बातिल है. ये ताआत और नेक अमल जो ज़िक्र व तिलावत और सदक़ा व ख़ैरात पर आधारित हैं बिदअते सैयिअह नहीं. बिदअते सैयिअह वो बुरे तरीक़े हैं जिन से दीन को नुक़सान पहुंचता है और जो सुन्नत के विरूद्ध हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि जो क़ौम बिदअत निकालती है उससे एक सुन्नत उठ जाती है. तो बिदअत सैयिअह वही है जिससे सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़्ज़ व ख़ारिजियत और वहाबियत, ये सब इन्तिहा दर्जे की ख़राब बिदअतें हैं. राफ़ज़ियत और ख़ारिजियत जो सहाबा और अहले बैते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी पर आधारित हैं, उनसे सहाबा और एहले बैत के साथ महब्बत और नियाज़मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिसके शरीअत में ताकीदी हुक्म हैं. वहाबियत की जड़ अल्लाह के मक़बूल बन्दों, नबियों वलियों की शान में बेअदबी और गुस्ताख़ी और तमाम मुसलमानों को मुश्रिक ठहराना है. इससे बुज़ुर्गाने दीन की हुर्मत और इज़्ज़त और आदर सत्कार और मुसलमानों के साथ भाई चारे और महब्बत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिनकी बहुत सख़्त ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं. और इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वो क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की तरफ़ चलने में रखता है और इस मानी पर आयत के उतरने की परिस्थिति यह बयान की गई है कि बनी सलमा मदीनए तैय्यिबह के किनारे पर रहते थे. उन्होंने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के क़रीब आ बसें. इसपर यह आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं, तुम मकान न बदलो, यानी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़्यादा पड़ेंगे और अज्र व सवाब ज़्यादा होगा.
(१३) यानी लौहे मेहफ़ूज़ में.

सूरए यासीन - दूसरा रूकू

(१) इस शहर से मुराद अन्ताकियह है. यह एक बड़ा शहर है इसमें चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं एक पथरीली शहर पनाह यानी नगर सीमा है. बारह मील के घेरे में बसता है.
(२) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के वाक़ए का संक्षिप्त बयान यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने दो हवारियों सादिक़ और सुदूक़ को अन्ताकियह भेजा ताकि वहाँ के लोगों को जो बुत परस्त थे सच्चे दीन की तरफ़ बुलाएं. जब ये दोनों शहर के क़रीब पहुंचे तो उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा कि बकरियाँ चरा रहा है. उसका नाम हबीब नज्जार था. उसने उनका हाल पूछा. उन दोनों ने कहा कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के भेजे हुए हैं तुम्हें सच्चे दीन की तरफ़ बुलाने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो. हबीब नज्जार ने निशानी पूछी. उन्होंने कहा कि निशानी यह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं. अंधों को आँख वाला करते हैं, सफ़ेद दाग़ वालों का रोग दूर करते हैं. हबीब नज्जार का बटा दो साल से बीमार था उन्होंने उस पर हाथ फेरा वह स्वस्थ हो गया. हबीब ईमान ले आए और इस घटना की ख़बर मशहूर हो गई यहाँ तक कि बहुत सारे लोगों ने उनके हाथों अपनी बीमारियों से सेहत पाई. यह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा कि क्या हमारे मअबूदों के सिवा और कोई मअबूद भी है. उन दोनों ने कहा हाँ वही जिसने तुझे और तेरे मअबूदों को पैदा किया. फिर लोग उनके पीछे पड़ गए और उन्हें मारा. दोनों क़ैद कर लिये गए. फिर हज़रत ईसा ने शमऊन को भेजा. वह अजनबी बन कर शहर में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबों और क़रीब के लोगों से मेल जोल पैदा करके बादशाह तक पहुंचे और उसपर अपना असर पैदा कर लिया. जब देखा कि बादशाह उनसे ख़ूब मानूस हो चुका है तो एक दिन बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो क़ैद किये गए हैं क्या उनकी बात सुनी गई थी कि वो क्या कहते थे. बादशाह ने कहा कि नहीं. जब उन्होंने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे ग़ुस्सा आ गया. शमऊन ने कहा अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उनके पास क्या है. चुनांन्चे वो दोनों बुलाए गए. शमऊन ने उनसे पूछा तुम्हें किस ने भेजा है. उन्हों ने कहा उस अल्लाह ने जिसने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिसका कोई शरीक नहीं.

शमऊन ने कहा कि उसकी संक्षेप में विशेषताएं बयान करो. उन्होंने कहा वह जो चाहता है करता है जो चाहता है हुक्म देता है. शमऊन ने कहा तुम्हारी निशानी क्या है. उन्होंने कहा जो बादशाह चाहे. तो बादशाह ने एक अंधे लड़के को बुलाया उन्होंने दुआ की वह फ़ौरन आँख वाला हो गया. शमऊन ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब यह है कि तू अपने मअबूदों से कह कि वो भी ऐसा ही करके दिखाएं ताकि तेरी और उनकी इज़्ज़त ज़ाहिर हो. बादशाह ने शमऊन से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है. हमारा मअबूद ने देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके न बना सके. फिर बादशाह ने उन दोनों हवारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मअबूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की ताक़त हो तो हम उसपर ईमान ले आएं. उन्होंने कहा हमारा मअबूद हर चीज़ पर क़ादिर है. बादशाह ने एक किसान के लड़के को मंगाया जिसे मरे हुए सात दिन हो चुके थे और जिस्म ख़राब होगया था, बदबू फैल रही थी. उनकी दुआ से अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा मैं मुश्रिक मरा था मुझे जहन्नम की सात घाटियों में दाख़िल किया गया. मैं तुम्हें आगाह करता हूँ कि जिस दीन पर तुम हो वह बहुत हानिकारक है. ईमान ले आओ और कहने लगा कि आसमान के दर्वाज़े खुले और एक सुन्दर जवान मुझे नज़र आया जो उन तीनों व्यक्तियों की सिफ़ारिश करता है बादशाह ने कहा कौन तीन. उसने कहा एक शमऊन और दो ये. बादशाह को आश्चर्य हुआ. जब शमऊन ने देखा कि उसकी बात बादशाह पर असर कर गई तो उसने बादशाह को नसीहत की वह ईमान ले आया और उसकी क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अल्लाह के अज़ाब से हलाक किये गए.

(३) यानी दो हवारी. वहब ने कहा उनके नाम यूहन्ना और बोलस थे और कअब का क़ौल है कि सादिक़ व सदूक़.

(४) यानी शमऊन से तक़वियत और ताईद पहुंचाई.

(५) यानी तीनों फ़रिस्तादों यानी एलचियों ने.

(६) खुली दलीलों के साथ और वह अन्धों और बीमारों को अच्छा करता और मुर्दों को ज़िन्दा करता है.

(७) जब से तुम आए बारिश ही नहीं हुई.

(८) अपने दीन की तबलीग़ से.

(९) यानी तुम्हारा कुफ़्र.

(१०) और तुम्हें इस्लाम की दावत दी गई.

(११) गुमराही और सरकशी में और यही बड़ी नहूसत है.

(१२) यानी हबीब नज्ज़ार जो पहाड़ के ग़ार में इबादत में मसरूफ़ था जब उसने सुना कि क़ौम ने इन एलचियों को झुटलाया.

(१३) हबीब नज्जार की यह बात सुनकर क़ौम ने कहा कि क्या तू उनके दीन पर है और तू उनके मअबूद पर ईमान लाया, इसके जवाब में हबीब नज्जार ने कहा.

पारा बाईस समाप्त

तेईसवाँ पारा- वमालिया
(सूरए यासीन जारी)

और मुझे क्या है कि उसकी बन्दगी न करूं जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है[१४]《२२》 क्या अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहराऊं?[१५] कि अगर रहमान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न वो मुझे बचा सकें《२३》 बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूँ[१६]《२४》 मुक़र्रर में तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो[१७]《२५》 उससे फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो[१८] कहा किसी तरह मेरी क़ौम जानती《२६》 जैसी मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत की और मुझे इज़्ज़त वालों में किया[१९]《२७》 और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई लश्कर न उतारा[२०] और न हमें वहाँ कोई लश्कर उतारना था《२८》 वह तो बस एक ही चीख़ थी जभी वो बुझ कर रह गए[२१]《२९》 और कहा गया कि हाय अफ़सोस उन बन्दों पर[२२] जब उनके पास कोई रसूल आता है तो उससे ठट्टा ही करते हैं《३०》 क्या उन्होंने न देखा[२३] हमने उनसे पहले कितनी संगतें हलाक फ़रमाईं कि वो अब उनकी तरफ़ पलटने वाले नहीं[२४]《३१》 और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर लाए जाएंगे[२५]《३२》

तीसरा रूकू

और उनके लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है[१] हमने उसे ज़िन्दा किया[२] और फिर उससे अनाज निकाला तो उसमें

(१४) यानी इब्तिदाए हस्ती से जिसकी हम पर नेअमतें हैं और आख़िरे कार भी उसी की तरफ़ पलटना है. उस हक़ीक़ी मालिक की इबादत न करना क्या मानी और उसकी निस्बत ऐतिराज़ कैसा. हर व्यक्ति अपने वुजूद पर नज़र करके उसके हक़्क़े नेअमत और एहसान को पहचान सकता है.

(१५) यानी क्या बुतों को मअबूद बनाऊं.

(१६) जब हबीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीहत भरा कलाम किया तो वो लागे उनपर अचानक टूट पड़े और उनपर पथराव शुरू कर दिया और पाँव से कुचला यहाँ तक कि क़त्ल कर डाला. उनकी क़ब्र अन्ताकियह में है जब क़ौम ने उनपर हमला शुरू किया तो उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एलचियों से बहुत जल्दी करके यह कहा.

(१७) यानी मेरे ईमान के गवाह रहो जब वो क़त्ल हो चुके तो इकराम (आदर) के तौर पर -----

(१८) जब वो जन्नत में दाख़िल हुए और वहाँ की नेअमतें देखीं.

(१९) हबीब नज्जार ने यह तमन्ना की कि उनकी क़ौम को मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला ने हबीब नज्जार की मग़फ़िरत की और मेहरबानी फ़रमाई ताकि क़ौम को रसूलों ले दीन की तरफ़ रग़बत हो. जब हबीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह तआला का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुआ और उनकी सज़ा में देर फ़रमाई गई. हज़रत जिब्रईल को हुक्म हुआ और उनकी एक ही हौलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए चुनांन्चे इरशाद फ़रमाया जाता है.

(२०) इस क़ौम की हलाकत के लिये.

(२१) फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है.

(२२) उन पर और उनकी तरह और सब पर जो रसूलों को झुटलाकर हलाक हुए.

(२३) यानी मक्का वालों ने जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं कि --

(२४) यानी दुनिया की तरफ़ लौटने वाले नहीं. क्या ये लोग उनके हाल से इब्रत हासिल नहीं करते.

(२५) यानी सारी उम्मतें क़यामत के दिन हमारे हुज़ूर हिसाब के लिये मैदान में हाज़िर की जाएंगी.

يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَّ اَعْنَابٍ
وَّ فَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهٖ
وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيهِمْ ۚ اَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِىْ
خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ
فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ
ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ
حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ لَهَا
اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَ كُلٌّ
فِىْ فَلَكٍ يَّسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ
فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا
يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَ لَا
هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِينٍ ﴿٤٤﴾

से खाते हैं﴿३३﴾ और हमने उसमें[३] बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हमने उसमें कुछ चश्मे बहाए﴿३४﴾ कि उसके फलों में से खाएं और ये उनके हाथ के बनाए नहीं तो क्या हक़ न मानेंगे[४]﴿३५﴾ पाकी है उसे जिसने सब जोड़े बनाए[५] उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है[६] और ख़ुद उनसे[७] और उन चीज़ों से जिनकी उन्हें ख़बर नहीं[८]﴿३६﴾ और उनके लिये एक निशानी[९] रात है हम उसपर से दिन खींच लेते हैं[१०] जभी वो अंधेरों में हैं﴿३७﴾ और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये[११] यह हुक्म है ज़बरदस्त इल्म वाले का[१२]﴿३८﴾ और चांद के लिये हमने मंज़िलें मुक़र्रर कीं[१३] यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाली (टहनी)[१४]﴿३९﴾ सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले[१५] और न रात दिन पर सबक़त ले जाए[१६] और हर एक एक घेरे में पैर रहा है﴿४०﴾ और उनके लिये एक निशानी यह है कि उन्हें उनके बुज़ुर्गों की पीठ में हमने भरी किश्ती में सवार किया[१७]﴿४१﴾और उनके लिये वैसी ही किश्तियां बना दीं जिनपर सवार होते हैं﴿४२﴾ और हम चाहें तो उन्हें डुबो दें[१८] तो न कोई उनकी फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वो बचाए जाएं﴿४३﴾ मगर हमारी तरफ़ की रहमत और एक वक़्त तक बरतने देना[१९]﴿४४﴾

सूरए यासीन - तीसरा रूकू

(१) जो इसको साबित करती है कि अल्लाह तआला मुर्दे को ज़िन्दा फ़रमाएगा.

(२) पानी बरसा कर.

(३) यानी ज़मीन में.

(४) और अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र अदा न करेंगे.

(५) यानी तरह तरह, क़िस्म क़िस्म.

(६) ग़ल्ले फल वग़ैरह.

(७) औलाद, नर और मादा.

(८) ख़ुश्की और तरी की अजीबो ग़रीब मख़लूक़ात में से, जिसकी इन्सानों को ख़बर भी नहीं है.

(९) हमारी ज़बरदस्त क़ुदरत को प्रमाणित करने वाली.

(१०) तो बिल्कुल अंधेरी रह जाती है जिस तरह काले भुजंगे हबशी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वह काला ही रह जाता है. इस से मालूम हुआ कि आसमान और ज़मीन के बीच की फ़ज़ा अस्ल में तारीक है. सूरज की रौशनी उसके लिये एक सफ़ेद लिबास की तरह है. जब सूरज डूब जाता है तो यह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल हालत में तारीक रह जाती है.

(११) यानी जहाँ तक उसकी सैर की हद मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वह क़यामत का दिन है. उस वक़्त तक वह चलता ही रहेगा या ये मानी हैं कि वह अपनी मंज़िलों में चलता है और जब सबसे दूर वाले पश्चिम में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्योंकि यही उसका ठिकाना है.

(१२) और यह निशानी है जो उसकी भरपूर क़ुव्वत और हिकमत को प्रमाणित करती है.

(१३) चांद की २८ मंज़िलें हैं, हर रात एक मंज़िल में होता है और पूरी मंज़िल तय कर लेता है, न कम चले न ज़्यादा. निकलने की तारीख़ से अट्ठाईसवीं तारीख़ तक सारी मंज़िलें तय कर लेता है. और अगर महीना तीस दिन का हो तो दो रात और उन्तीस का हो तो एक रात छुपता है और जब अपनी अन्तिम मंज़िलों में पहुंचता है तो बारीक और कमान की तरह बाँका और पीला हो जाता है.

(१४) जो सूख कर पतली और बाँकी और पीली हो गई हो.

(१५) यानी रात में, जो उसकी शौकत के ज़हूर का वक़्त है, उसके साथ जमा होकर, उसके नूर को मग़लूब करके, क्योंकि सूरज और चांद में से हर एक की शौकत के ज़हूर के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है. सूरज के लिये दिन, और चाँद के लिये रात.

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ
أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا
أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً
وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا
هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا
يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾ إِن كَانَتْ إِلَّا
صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

منزل٥

और जब उनसे फ़रमाया जाता है डरो तुम उससे जो तुम्हारे सामने है[२०] और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है[२१] इस उम्मीद पर कि तुम पर मेहर (दया) हो तो मुंह फेर लेते हैं ﴿४५﴾ और जब कभी उनके रब की निशानियों से कोई निशानी उनके पास आती है तो उससे मुंह ही फेर लेते हैं[२२] ﴿४६﴾ और जब उनसे फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उसकी राह में ख़र्च करो तो काफ़िर मुसलमानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं, जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता[२३] तुम तो नहीं मगर खुली गुमराही में ﴿४७﴾ और कहते हैं कब आएगा ये वादा[२४] अगर तुम सच्चे हो[२५] ﴿४८﴾ राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[२६] कि उन्हें आ लेगी जब वो दुनिया के झगड़े में फंसे होंगे[२७] ﴿४९﴾ तो न वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं[२८] ﴿५०﴾

चौथा रूकू

और फूंका जाएगा सूर[१] जभी वो क़ब्रों से[२] अपने रब की तरफ़ दौड़ते चलेंगे ﴿५१﴾ कहेंगे हाय हमारी ख़राबी, किसने हमें सोते से जगा दिया[३] यह है वह जिसका रहमान ने वादा दिया था और रसूलों ने हक़ फ़रमाया[४] ﴿५२﴾ वह तो न होगी मगर एक चिंघाड़[५] जभी वो सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे[६] ﴿५३﴾

(१६) कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए, ऐसा भी नहीं, बल्कि रात और दिन दोनों निर्धारित हिसाब के साथ आते जाते हैं. कोई उनमें से अपने वक़्त से पहले नहीं आता और सूरज चाँद में से कोई दूसरे की शौकत की सीमा में दाख़िल नहीं होता न आफ़ताब रात में चमके, न चाँद दिन में.

(१७) जो सामान अस्बाब वग़ैरह से भरी हुई थी, मुराद इससे किश्तीये नूह है जिसमें उनके पहले पूर्वज सवार किये गए थे और ये और इनकी सन्तानें उनकी पीठ में थीं.

(१८) किश्तियों के बावुजूद.

(१९) जो उनकी ज़िन्दगी के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है.

(२०) यानी अज़ाबे दुनिया.

(२१) यानी आख़िरत का अज़ाब.

(२२) यानी उनका दस्तूर और काम का तरीक़ा ही यह है कि वो हर आयत और नसीहत से मुंह फेर लिया करते हैं.

(२३) यह आयत क़ुरैश के काफ़िरों के हक़ में उतरी जिनसे मुसलमानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वह हिस्सा मिस्कीनों पर ख़र्च करो जो तुमने अपनी सोच में अल्लाह तआला के लिये निकाला है. इसपर उन्होंने कहा कि क्या हम उन्हें खिलाएं जिन्हें अल्लाह खिलाना चाहता तो खिला देता. मतलब यह था कि ख़ुदा ही को दरिद्रों का मोहताज रखना मंज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होगा. यह बात उन्होंने कंजूसी से, हंसी मज़ाक़ के तौर पर कही थी पर बिलकुल ग़लत थी क्योंकि दुनिया परीक्षा की जगह है. फ़क़ीरी और अमीरी दोनों आज़मायशें हैं. फ़क़ीर की परीक्षा सब्र से और मालदार की अल्लाह की राह में ख़र्च करने से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि मक्कए मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उनसे कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदक़ा दो तो कहते थे कि हरगिज़ नहीं . यह कैसे हो सकता है कि जिसको अल्लाह तआला मोहताज करे, हम खिलाएं.

(२४) दोबारा ज़िन्दा होने और क़यामत का.

(२५) अपने दावे में. उनका यह ख़िताब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा से था. अल्लाह तआला उनके हक़ में फ़रमाता है.

(२६) यानी सूर के पहले फूंके जाने की, जो हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम फूंकेंगे.

(२७) ख़रीदो फ़रोख़्त में और खाने पीने में, और बाज़ारों और मजलिसों में, दुनिया के कामों में, कि अचानक क़यामत हो जाएगी.

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِیْ
شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِیْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝ لَهُمْ فِیْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ
مَّا يَدَّعُوْنَ ۝ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ ۝ وَامْتَازُوا
الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ
يٰبَنِیْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِیْنٌ ۝ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِیْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ۝
وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِیْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا
تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝
اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ
عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى

وقف غفران ١٢

منزل ٥

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का (५४) बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं[७] (५५) वो और उनकी बीबियाँ सायों में हैं तख़्तों पर तकिया लगाए (५६) उनके लिये उसमें मेवा है और उनके लिये है उसमें जो मांगें (५७) उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ[८] (५८) और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो[९] (५९) ऐ आदम की औलाद क्या मैं ने तुम से एहद न लिया था[१०] कि शैतान को न पूजना[११] बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (६०) और मेरी बन्दगी करना[१२] यह सीधी राह है (६१) और बेशक उसने तुम में से बहुत सी ख़लक़त को बहका दिया, तो क्या तुम्हें अक़्ल न थी[१३] (६२) यह है वह जहन्नम जिसका तुम से वादा था (६३) आज उसी में जाओ बदला अपने कुफ़्र का (६४) आज हम उनके मुंहों पर मोहर कर देंगे[१४] और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पाँव उनके किये की गवाही देंगे[१५] (६५) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखें मिटा देते[१६] फिर लपक

हदीस शरीफ़ में है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़रीदार और विक्रेता के बीच कपड़ा फैला होगा, न सौदा पूरा होने पाएगा, न कपड़ा लपेटा जाएगा कि क़यामत हो जाएगी. यानी लोग अपने अपने कामों में लगे होंगे और वो काम वैसे ही अधूरे रह जाएंगे, न उन्हें ख़ुद पूरा कर सकेंगे, न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वो वापस न आ सकेंगे, चुनांन्चे इरशाद होता है.

(२८) वहीं मर जाएंगे और क़यामत फ़ुर्सत और मोहलत न देगी.

सूरए यासीन - चौथा रूकू

(१) दूसरी बार. यह सूर का दूसरी बार फूंका जाना है जो मुर्दों को उठाने के लिये होगा और इन दोनों फूंकों के बीच चालीस साल का फ़ासला होगा.

(२) ज़िन्दा होकर.

(३) यह कहना काफ़िरों का होगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वो यह बात इस लिये कहेंगे कि अल्लाह तआला दोनों फूंकों के बीच उनसे अज़ाब उठादेगा और इतना ज़माना वो सोते रहेंगे और सूर के दूसरी बार फूंके जाने के बाद उठाए जाएंगे और क़यामत की सख़्तियाँ देखेंगे तो इस तरह चीख़ उठेंगे और यह भी कहा गया है कि जब काफ़िर जहन्नम और उसका अज़ाब देखेंगे तो उसके मुक़ाबले में क़ब्र का अज़ाब उन्हें आसान मालूम होगा इसलिये वो अफ़सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे.

(४) और उस वक़्त का इक़रार उन्हें कुछ नफ़ा न देगा.

(५) यानी सूर के आख़िरी बार फूंके जाने की एक हौलनाक आवाज़ होगी.

(६) हिसाब के लिये, फिर उसे कहा जाएगा.

(७) तरह तरह की नेअमतें और क़िस्म क़िस्म के आनन्द और अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़ियाफ़तें, जन्नती नेहरों के किनारे जन्नत के वृक्षों की दिलनवाज़ फ़ज़ाएं, ख़ुशी भरा संगीत, जन्नत की सुन्दरियों का क़ुर्ब और क़िस्म क़िस्म की नेअमतों के मज़े, ये उनके शग़ल होंगे.

(८) यानी अल्लाह तआला उनपर सलाम फ़रमाएगा चाहे सीधे सीधे या किसी ज़रिये से और यह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है. फ़रिश्ते जन्नत वालों के पास हर दरवाज़े से आकर कहेंगे तुमपर तुम्हारे रहमत वाले रब का सलाम.

(९) जिस वक़्त मूमिन जन्नत की तरफ़ रवाना किये जाएंगे, उस वक़्त काफ़िरों से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ. मूमिनों से अलाहदा हो जाओ और एक क़ौल यह भी है कि यह हुक्म काफ़िरों को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने ठिकाने पर

اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ
نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا
مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى
الْخَلْقِ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ
لَهٗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ
مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ
يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا
فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ
وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ط
اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ
لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّا
نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ

कर रस्ते की तरफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता[१७] ﴿६६﴾ और अगर हम चाहते तो उनके घर बैठे उनकी सूरतें बदल देते[१८] न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते[१९] ﴿६७﴾

पाँचवां रूकू

और जिसे हम बड़ी उम्र का करें उसे पैदाइश से उलटा फेरें[१], तो क्या समझते नहीं[२] ﴿६८﴾ और हमने उनको शेअर (कविता) कहना न सिखाया[३] और न वह उनकी शान के लायक़ है, वह तो नहीं मगर नसीहत और रौशन क़ुरआन[४] ﴿६९﴾ कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो[५] और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए[६] ﴿७०﴾ और क्या उन्होंने न देखा कि हम ने अपने हाथ के बनाए हुए चौपाए उनके लिये पैदा किये तो ये उनके मालिक हैं ﴿७१﴾ और उन्हें उनके लिये नर्म कर दिया[७] तो किसी पर सवार होते हैं और किसी को खाते हैं ﴿७२﴾ और उनके लिये उनमें कई तरह के नफ़े[८] और पीने की चीज़ें हैं[९] तो क्या शुक्र न करेंगे[१०] ﴿७३﴾ और उन्होंने अल्लाह के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[११] कि शायद उनकी मदद हो[१२] ﴿७४﴾ वो उनकी मदद नहीं कर सकते[१३] और वो उनके लश्कर सब गिरफ़्तार हाज़िर आएंगे[१४] ﴿७५﴾ तो तुम उनकी बात का ग़म न करो[१५] बेशक हम जानते हैं जो वो छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं[१६] ﴿७६﴾ और क्या आदमी ने न देखा कि हमने उसे

जाएं.
(१०) अपने नबियों की मअरिफ़त.
(११) उसकी फ़रमाँबरदारी न करना.
(१२) और किसी को इबादत में मेरा शरीक न करना.
(१३) कि तुम उसकी दुश्मनी और गुमराह गरी को समझते और जब वो जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उनसे कहा जाएगा.
(१४) कि वो बोल न सकेंगे और यह कृपा करना उनके यह कहने के कारण होगा कि हम मुश्रिक न थे, न हमने रसूलों को झुटलाया.
(१५) उनके अंग बोल उठेंगे और जो कुछ उनसे सादिर हुआ है, सब बयान कर देंगे.
(१६) कि निशान भी बाक़ी न रहता. इस तरह का अंधा कर देते.
(१७) लेकिन हमने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्लो करम से देखने की नेअमत उनके पास बाक़ी रखी तो अब उनपर हक़ यह कि वो शुक्रगुज़ारी करें, कुफ़्र न करें.
(१८) और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते.
(१९) और उनके जुर्म इसी के क़ाबिल थे लेकिन हमने अपनी रहमत और करम और हिकमत के अनुसार अज़ाब में जलदी न की और उनके लिये मोहलत रखी.

सूरए यासीन - पाँचवां रूकू

(१) कि वो बचपन की सी कमज़ोरी की तरफ़ वापस आने लगे और दम बदम उसकी ताक़तें, क़ुव्वतें और जिस्म और अक़्लें घटने लगीं.
(२) कि जो हालतों के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन की कमज़ोरी और शरीर के छोटे अंगों और नादानी के बाद शबाब की क़ुव्वतें और शक्ति और मज़बूत बदन और समझ अता फ़रमाता है और फिर बड़ी उम्र और आख़िरी उम्र में उसी मज़बूत बदन वाले जवान को दुबला और कमज़ोर कर देता है, अब न वह बदन बाक़ी है, न क़ुव्वत, उठने बैठने में मजबूरियाँ दरपेश हैं, अक़्ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अज़ीज़ रिश्ते दार को पहचान नहीं सकता. जिस परवर्दिगार ने यह तबदीली की वह क़ादिर है कि आँखें देने के बाद उन्हें मिटादे और अच्छी सूरतें अता फ़रमाने के बाद उन्हें बिगाड़ दे और मौत देने के बाद फिर ज़िन्दा कर दे.
(३) मानी ये हैं कि हम ने आपको शेअर कहने की महारत न दी, या यह कि क़ुरआन शायरी की तालीम नहीं है और शेअर से

الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

(٣٧) سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ (٥٦) — اٰيَاتُهَا ١٨٢ — رُكُوْعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

منزل ٦

पानी की बूंद से बनाया जभी वह खुला झगड़ालू है[१७]﴿७७﴾ और हमारे लिये कहावत कहता है[१८] और अपनी पैदाइश भूल गया[१९] बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वो बिल्कुल गल गईं﴿७८﴾ तुम फ़रमाओ उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन्हें बनाया, और उसे हर पैदाइश की जानकारी है[२०]﴿७९﴾ जिसने तुम्हारे लिये हरे पेड़ म आग पैदा की जभी तुम उससे सुलगाते हो[२१]﴿८०﴾ और क्या वह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए उन जैसे और नहीं बना सकता[२२] क्यों नहीं[२३] और वही है बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानता﴿८१﴾ उसका काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे[२४] तो उससे फ़रमाए हो जा, वह फ़ौरन हो जाती है[२५]﴿८२﴾ तो पाकी है उसे जिसके हाथ हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे[२६]﴿८३﴾

३७- सूरए साफ़्फ़ात

सूरए साफ़्फ़ात मक्का में उतरी, इसमें १८२ आयतें, पाँच रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
क़सम उनकी कि बाक़ायदा सफ़(क़तार) बांधें[२]﴿१﴾ फिर उनकी कि झिड़क कर चलाएं[३]﴿२﴾ फिर उन जमाअतों की कि क़ुरआन पढ़ें﴿३﴾ बेशक तुम्हारा मअबूद ज़रूर एक है﴿४﴾ मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ

झूटे का कलाम मुराद है, चाहे मौज़ूं हो या ग़ैर मौज़ूं. इस आयत में इरशाद है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से अव्वल आख़िर का इल्म तालीम फ़रमाया गया जिनसे हक़ीक़तें खुलती हैं और आप की मालूमात वाक़ई और हक़ीक़ी हैं. शेअर का झूट नहीं, जो हक़ीक़त में जिहालत है, वह आपकी शान के लायक़ नहीं और आपका दामने अक़दस इससे पाक है. इसमें मौज़ूं कलाम के अर्थ वाले शेअर के जानने और उसके सही या ख़राब को पहचानने का इन्कार नहीं. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इल्म में तअने देने वालों के लिये यह आयत किसी तरह सनद नहीं हो सकती. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को सारे जगत के उलूम अता फ़रमाए, इसके इन्कार में इस आयत को पेश करना मात्र ग़लत है. क़ुरैश के काफ़िरों ने कहा था कि मुहम्मद शायर हैं और जो वो फ़रमाते हैं, यानी क़ुरआन शरीफ़, वह शेअर है. इससे उनकी मुराद यह थी कि मआज़अल्लाह यह कलाम झूटा है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में उनका कहना नक़्ल फ़रमाया गया है "बलिफ़्तराहो बल हुवा शाइरुन" यानी बल्कि उनकी मनघड़त है बल्कि ये शायर हैं. (सूरए अंबिया, आयत ५), उसी का इसमें रद फ़रमाया गया कि हमने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ऐसी बातिल-गोई की महारत ही नहीं दी और यह किताब शेअरों यानी झूटों पर आधारित नहीं. क़ुरैश के काफ़िर ज़बान से ऐसे बदज़ौक़ और नज़्मे उरूज़ी से ऐसे अन्जान न थे कि नस्र यानी गद्य को नज़्म यानी पद्य कह देते और कलामे पाक को शेअरे उरूज़ी बता बैठते और कलाम का मात्र उरूज़ के वज़न पर होना ऐसा भी न था कि उसपर ऐतिराज़ किया जा सके. इससे साबित हो गया कि उन बेदीनों की मुराद शेअर से झूटे कलाम की थी (मदारिक, जुमल व रूहुल बयान) और हज़रत शैख़े अकबर ने इस आयत के मानी में फ़रमाया है कि मानी ये हैं कि हमने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुअम्मे और इजमाल के साथ यानी घुमा फिराकर ख़िताब नहीं फ़रमाया जिसमें मानी या मतलब के छुपे रहने का संदेह हो बल्कि साफ़ और खुला कलाम फ़रमाया है जिससे सारे पर्दे उठ जाएं और उलूम रौशन हो जाएं.

(४) साफ़ खुला हक़ व हिदायत, कहाँ वह पाक आसमानी किताब, सारे उलूम की जामेअ, और कहाँ शेअर जैसा झूटा कलाम. (अल किबरियते अहमर लेखक शैख़े अकबर)

(५) दिले ज़िन्दा रखता हो, कलाम और ख़िताब को समझे और यह शान ईमान वाले की है.

(६) यानी अज़ाब की हुज्जत क़ायम हो जाए.

(७) यानी मुसख़्ख़र और हुक्म के अन्तर्गत कर दिया.

(८) और फ़ायदे हैं कि उनकी ख़ालों, बालों और ऊन वग़ैरह काम में लाते हैं.
(९) दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें, दही मट्ठा वग़ैरह.
(१०) अल्लाह तआला की इन नेअमतों का.
(११) यानी बुतों को पुजने लगे.
(१२) और मुसीबत के वक़्त काम आएं और अज़ाब से बचाएं, और ऐसा संभव नहीं.
(१३) क्योंकि पत्थर बेजान और बेक़ुदरत और बेशऊर है.
(१४) यानी काफ़िरों के साथ उनके बुत भी गिरफ़्तार करके हाज़िर किये जाएंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे, बुत भी और उनके पुजारी भी.
(१५) यह ख़िताब है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को. अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली फ़रमाता है कि काफ़िरों के झुटलाने और इन्कार से और उनकी यातनाओं और अत्याचारों से आप दुखी न हों.
(१६) हम उन्हें उनके किरदार की जज़ा देंगे.
(१७) यह आयत आस बिन वाईल या अबू जहल और मशहूर यह है कि उबई बिन ख़लफ़ जमही के बारे में उतरी जो मरने के बाद उठने के इन्कार में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहस और तकरार करने आया था. उसके हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उसको तोड़ता जाता था और हुज़ूर से कहता जाता था कि क्या आपका ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और टुकड़े टुकड़े हो जाने के बाद भी अल्लाह ज़िन्दा कर देगा. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ और तुझे भी मरने के बाद उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा. इसपर यह आयत उतरी और उसकी जिहालत का इज़हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बाद अल्लाह तआला की क़ुदरत से ज़िन्दगी क़ुबूल करना अपनी नादानी से असंभव समझता है कितना मूर्ख है. अपने आपको नहीं देखता कि शुरू में एक गन्दा नुत्फ़ा था, गली हुई हड्डी से भी तुच्छ. अल्लाह तआला की भरपूर क़ुदरत ने उसमें जान डाल दी, इन्सान बनाया तो ऐसा घमण्डी इन्सान हुआ कि उसकी क़ुदरत ही का इन्कारी होकर झगड़ने आगया . इतना नहीं देखता कि जो सच्ची क़ुदरत वाला पानी की बूंद को मज़बूत इन्सान बना देता है, उसकी क़ुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या दूर है, और इसको असंभव समझना कितनी खुली हुई जिहालत है.
(१८) यानी गली हुई हड्डी को हाथ से मलकर मसल बनाता है कि यह तो ऐसी बिखर गई, कैसे ज़िन्दा होगी.
(१९) कि वीर्य की बूंद से पैदा किया गया है.
(२०) पहली का भी और मौत के बाद वाली का भी.
(२१) अरब में दो दरख़्त होते हैं जो वहाँ के जंगलों में बहुत पाए जाते हैं. एक का नाम मर्ख़ है, दूसरे का अफ़ार. उनकी ख़ासियत यह है कि जब उनकी हरी टहनियाँ काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उनसे आग निकलती है. जब कि वह इतनी गीली होती हैं कि उनसे पानी टपकता होता है . इसमें क़ुदरत की कैसी अनोखी निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद. हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए. जिस क़ादिरे मुतलक़ की यह हिकमत है वह अगर एक बदन पर मौत के बाद ज़िन्दगी लाए तो उसकी क़ुदरत से क्या अजीब और उसको नामुमकिन कहना आसारे क़ुदरत देखकर जिहालत और दुश्मनी से इन्कार करना है.
(२२) या उन्हीं को मौत के बाद ज़िन्दा नहीं कर सकता.
(२३) बेशक वह इसपर क़ादिर है.
(२४) कि पैदा करे.
(२५) यानी मख़लूक़ात का वुजूद उसके हुक्म के ताबे है.
(२६) आख़िरत में.

३७ - सूरए साफ़्फ़ात- पहला रूकू

(१) सूरए वस्साफ़्फ़ात मक्के में उतरी. इसमें पांच रूकू, एक सौ बयासी आयतें, आठ सौ साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सौ छब्बीस अक्षर हैं.
(२) इस आयत में अल्लाह तआला ने क़सम याद फ़रमाई कुछ गिरोहों की. या तो मुराद इससे फ़रिश्तों के समूह हैं जो नमाज़ियों की तरह क़तार बांधे उसके हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं, या उलमाए दीन के समूह जो तहज्जुद और सारी नमाज़ों में सफ़ें बांधकर इबादत में मसरूफ़ रहते हैं, या ग़ाज़ियों के समूह जो अल्लाह की राह में सफ़ें बांधघ कर हक़ के दुश्मनों के मुक़ाबिल होते हैं. (मदारिक)
(३) पहली तक़दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद फ़रिश्ते हैं जो बादल पर मुक़र्रर हैं और उसको हुक्म देकर चलाते हैं और दूसरी तक़दीर पर वो उलमा जो नसीहत और उपदेश से लोगों को झिड़क कर दीन की राह पर चलाते हैं, तीसरी सूरत में वो ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं.

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا
بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝
لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ
جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ
خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ
اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ
لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا
يَذْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ
هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا
ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ
دَاخِرُوْنَ ۝ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝
وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उनके बीच है और मालिक मशरिक़ों(पूर्वो) का[४] ﴿५﴾ बेशक हमने नीचे के आसमान को[५] तारों के सिंगार से सजाया ﴿६﴾ और निगाह रखने को हर शैतान सरकश से[६] ﴿७﴾ आलमे बाला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते[७] और उनपर हर तरफ़ से मार फैंक होती है[८] ﴿८﴾ उन्हें भगाने को और उनके लिये[९] हमेशा का अज़ाब ﴿९﴾ मगर जो एक आध बार उचक ले चला[१०] तो रौशन अंगारा उसके पीछे लगा[११] ﴿१०﴾ तो उनसे पूछो[१२] क्या उनकी पैदाइश ज़्यादा मज़बूत है या हमारी और मख़लूक़ आसमानों और फ़रिश्तों वग़ैरह की[१३] बेशक हमने उनको चिपकती मिट्टी से बनाया[१४] ﴿११﴾ बल्कि तुम्हें अचंभा आया[१५] और वो हंसी करते हैं[१६] ﴿१२﴾ और समझाए नहीं समझते ﴿१३﴾ और जब कोई निशानी देखते हैं[१७] ठठ्ठा करते हैं ﴿१४﴾ और कहते हैं ये तो नहीं मगर खुला जादू ﴿१५﴾ क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे क्या ज़रूर उठाए जाएंगे ﴿१६﴾ और क्या हमारे अगले बाप दादा भी[१८] ﴿१७﴾ तुम फ़रमाओ हाँ यूं कि ज़लील होके ﴿१८﴾ तो वह[१९] एक ही झिड़क है[२०] जभी वो[२१] देखने लगेंगे ﴿१९﴾ और कहेंगे हाय हमारी ख़राबी, उनसे कहा जाएगा यह इन्साफ़ का दिन है[२२] ﴿२०﴾ यह है वह फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे[२३] ﴿२१﴾

दूसरा रूकू

हांको ज़ालिमों और उनके जोड़ों को[१] और जो कुछ वो

(४) यानी आसमान व ज़मीन और उनके बीच की सृष्टि और तमाम सीमाएं और दिशाएं सब का मालिक वही है तो कोई दूसरा किस तरह इबादत के लाइक़ हो सकता है लिहाज़ा वह शरीक से पाक है.
(५) जो ज़मीन के मुक़ाबले आसमानों से क़रीब तर है.
(६) यानी हमने आसमान को हर एक नाफ़रमान शैतान से मेहफ़ूज़ रखा कि जब शैतान आसमानों पर जाने का इरादा करें तो फ़रिश्ते शिहाब मारकर उनको दफ़ा करें. लिहाज़ा शैतान आसमानों पर नहीं जा सकते और -----
(७) और आसमानों के फ़रिश्तों की बात नहीं सुन सकते.
(८) अंगारों की, जब वो इस नियत से आसमान की तरफ़ जाएं.
(९) आख़िरत में.
(१०) यानी अगर कोई शैतान फ़रिश्तों का कोई कलिमा कभी ले भागा.
(११) कि उसे जलाए और तकलीफ़ पहुंचाए.
(१२) यानी मक्के के काफ़िरों से.
(१३) तो जिस क़ादिरे बरहक़ को आसमान और ज़मीन जैसी अज़ीम मख़लूक़ का पैदा कर देना कुछ भी मुश्किल और दुशवार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उसपर क्या मुश्किल हो सकता है.
(१४) यह उनकी कमज़ोरी की एक और शहादत है कि उनकी पैदाइश का अस्ल माद्दा मिट्टी है जो कोई शिद्दत और क़ुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और दलील क़ायम फ़रमाई गई है कि चिपकती मिट्टी उनकी उत्पत्ति का तत्व है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और इन्तिहा यह है कि मिट्टी हो जाने के बाद उस मिट्टी से दोबारा पैदायश को वह क्यों असंभव जानते हैं. माद्दा यानी तत्व मौजूद, बनाने वाला मौजूद, फिर दोबारा पैदाइश कैसे असंभव हो सकती है.
(१५) उनके झुटलाने से कि ऐसी खुली दलीलों, आयतों और निशानियों के बावुजूद वो किस तरह झुटलाते हैं.
(१६) आप से और आपके तअज्जुब से या मरने के बाद उठने से.
(१७) जैसे कि चाँद के दो टुकड़े होने वग़ैरह.
(१८) जो हम से ज़माने में आगे हैं. काफ़िरों के नज़्दीक उनके बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना ख़ुद उनके ज़िन्दा किये जाने से ज़्यादा

وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾ مِن دُونِ اللَّهِ
فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم
مَّسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ
مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾
قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾ قَالُوا بَل
لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن
سُلْطَانٍ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ
رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾ فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾
فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا كَذَٰلِكَ
نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا
لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾
إِنَّكُمْ لَذَائِقُو الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ

منزل ٦

पूजते थे﴾२२﴿ अल्लाह के सिवा, उन सबको हांको दोज़ख़ की राह की तरफ़﴾२३﴿ और उन्हें ठहराओ[२] उनसे पूछना है[३]﴾२४﴿ तुम्हें क्या हुआ एक दूसरे की मदद क्यों नहीं करते[४]﴾२५﴿ बल्कि वो आज गर्दन डाले हैं[५]﴾२६﴿ और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले[६]﴾२७﴿ तुम हमारी दाईं तरफ़ से बहकाने आते थे[७]﴾२८﴿ जवाब देंगे तुम ख़ुद ही ईमान न रखते थे[८]﴾२९﴿ और हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था[९] बल्कि तुम सरकश लोग थे﴾३०﴿ तो साबित हो गई हम पर हमारे रब की बात[१०] हमें ज़रूर चखना है[११] ﴾३१﴿ तो हमने तुम्हें गुमराह किया कि हम ख़ुद गुमराह थे﴾३२﴿ तो उस दिन[१२] वो सबके सब अज़ाब में शरीक हैं[१३]﴾३३﴿ मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं﴾३४﴿ बेशक जब उनसे कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंची खींचते (घमन्ड करते) थे[१४]﴾३५﴿ और कहते थे क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाने शायर के कहने से[१५]﴾३६﴿ बल्कि वो तो हक़(सत्य) लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई[१६]﴾३७﴿ बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है﴾३८﴿ तो तुम्हें बदला न

असंभव था इसलिये उन्होंने यह कहा . अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है.

(१९) यानी दुबारा ज़िन्दा किया जाना.

(२०) एक ही हौलनाक आवाज़ है सूर के दो बारा फूंके जाने की.

(२१) ज़िन्दा होकर अपने कर्म और पेश आने वाले हालात.

(२२) यानी फ़रिश्ते यह कहेंगे कि यह इन्साफ़ का दिन है, यह हिसाब और बदले का दिन है.

(२३) दुनिया में, और फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा.

सूरए साफ़्फ़ात- दूसरा रूकू

(१) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर है और उनके जोड़ों से मुराद उनके शैतान जो दुनिया में उनके साथी और क़रीब रहते थे. हर एक काफ़िर अपने शैतान के साथ एक ही ज़ंजीर में जकड़ दिया जायगा. और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अशबाह और इमसाल हैं यानी हर काफ़िर अपने ही क़िस्म के साथ काफ़िरों के साथ हाँका जाएगा, बुतों को पूजने वाले मुर्ति-पूजकों के साथ, और आग के पुजारी आग के पुजारियों के साथ, इसी तरह दूसरे.

(२) सिरात के पास.

(३) हदीस शरीफ़ में है कि क़यामत के दिन बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उससे न पूछ ली जाएं. एक उसकी उम्र कि किस काम में गुज़री, दूसरे उसका इल्म कि उसपर क्या अमल किया, तीसरे उसका माल कि कहाँ से कमाया कहाँ ख़र्च किया, चौथा उसका जिस्म कि उसको किस काम में लाया.

(४) यह उनसे जहन्नम के ख़ाज़िन फटकार के तौर पर कहेंगे कि दुनिया में तो एक दूसरे की सहायता पर बहुत घमण्ड रखते थे आज देखो कैसे मजबूर हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता.

(५) मजबूर और ज़लील होकर.

(६) अपने सरदारों से जो दुनिया में बहकाते थे.

(७) यानी क़ुव्वत के ज़ोर से हमें गुमराही पर आमादा करते थे, इसपर काफ़िरों के सरदार कहेंगे और--

(८) पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से अपनी मर्ज़ी से मुंह फेरते थे.

(९) कि हम तुम्हें अपने अनुकरण पर मजबूर करते.

(१०) जो उसने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा, लिहाज़ा----

إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾
أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾
فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ
عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾
لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ
قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾ قَالَ
قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾ يَقُولُ أَإِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾
فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللَّهِ إِن
كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ
الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا مَوْتَتَنَا

मिलेगा मगर अपने किये का[१७] ﴿३९﴾ मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं[१८] ﴿४०﴾ उनके लिये वह रोज़ी है जो हमारे इल्म में है ﴿४१﴾ मेवे[१९] और उनकी इज़्ज़त होगी ﴿४२﴾ चैन के बाग़ों में ﴿४३﴾ तख़्तों पर होंगे आमने सामने[२०] ﴿४४﴾ उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का[२१] ﴿४५﴾ सफ़ेद रंग[२२] पीने वालों के लिये लज़्ज़त[२३] ﴿४६﴾ न उसमें ख़ुमार है[२४] और न उससे उनका सर फिरे[२५] ﴿४७﴾ और उनके पास हैं जो शौहरों के सिवा दूसरी तरफ़ आँख उठा कर न देखेंगी[२६] ﴿४८﴾ बड़ी आँखों वालियाँ, मानो वो अन्डे हैं छुपे रखे हुए[२७] ﴿४९﴾ तो उनमें[२८] एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया पूछते हुए[२९] ﴿५०﴾ उनमें से कहने वाला बोला मेरा एक हमनशीन था[३०] ﴿५१﴾ मुझ से कहा करता क्या तुम इसे सच मानते हो[३१] ﴿५२﴾ क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें जज़ा सज़ा दी जाएगी[३२] ﴿५३﴾ कहा क्या तुम झांक कर देखोगे[३३] ﴿५४﴾ फिर झांका तो उसे बीच भड़कती आग में देखा[३४] ﴿५५﴾ कहा ख़ुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे[३५] ﴿५६﴾ और मेरा रब फ़ज़्ल (कृपा) न करे[३६] तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता[३७] ﴿५७﴾ तो क्या हमें मरना नहीं ﴿५८﴾ मगर हमारी पहली मौत[३८]

(११) उसका अज़ाब, गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी.
(१२) यानी क़यामत के दिन.
(१३) गुमराह भी और उनके गुमराह करने वाले सरदार भी, क्योंकि ये सब दुनिया में गुमराही में शरीक थे.
(१४) और तौहीद क़ुबूल न करते थे, शिर्क से न रुकते थे.
(१५) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाने से.
(१६) दीन व तौहीद में, और शिर्क के इन्कार में.
(१७) उस शिर्क और झुटलाने का, जो दुनिया में कर आए हो.
(१८) ईमान और ख़ुलूस वाले.
(१९) और बढ़िया और मज़ेदार नेअमतें, स्वादिष्ट, सुगंधित और सुन्दर.
(२०) एक दूसरे से मानूस और ख़ुश.
(२१) जिसकी पाकीज़ा नेहरें निगाहों के सामने जारी होंगी.
(२२) दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद.
(२३) दुनिया की शराब के विपरीत जो बदबूदार और बुरे मज़े की होती है और पीने वाला उसको पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है.
(२४) जिससे अक़्ल में ख़लल आए.
(२५) दुनिया की शराब के विपरीत जिसमें बहुत सी ख़राबियां और ऐब हैं. उससे पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पेशाब में भी तकलीफ़ होती है, तबिअत में उल्टी जैसी मेहसूस होती है, सर चकराता है, अक़्ल ठिकाने नहीं रहती.
(२६) कि उसके नज़्दीक उसका शौहर ही सबसे सुन्दर और प्यारा है.
(२७) धूल मिट्टी से पाक साफ़ और दिलकश रंग.
(२८) यानी एहले जन्नत में स.
(२९) कि दुनिया में क्या हालात और वाक़िआत पेश आए.
(३०) दुनिया में जो मरने के बाद उठने का इन्कारी था और उसकी निस्बत व्यंग्य के तरीक़े पर.
(३१) यानी मरने के बाद उठने को.
(३२) और हम से हिसाब लिया जाएगा. यह बयान करके उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से.

الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ
خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً
لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْۤ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾
طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ
لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى
الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ
عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ
الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ ع ٢ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾
وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلْنَا

और हम पर अज़ाब न होगा(३९)﴿५९﴾ बेशक यही बड़ी कामयाबी है﴿६०﴾ ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये﴿६१﴾ तो यह मेहमानी भली(४०) या थूहड़ का पेड़?(४१)﴿६२﴾ बेशक हमने उसे ज़ालिमों की जांच किया है(४२)﴿६३﴾ बेशक वह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है(४३)﴿६४﴾ उसका शगूफ़ा जैसे देवों के सर(४४)﴿६५﴾ फिर बेशक वो उसमें से खाएंगे(४५) फिर उससे पेट भरेंगे﴿६६﴾ फिर बेशक उनके लिये उसपर खौलते पानी की मिलौनी (मिलावट) है(४६)﴿६७﴾ फिर उनकी बाज़गश्त (पलटना) ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है(४७)﴿६८﴾ बेशक उन्होंने अपने बाप दादा गुमराह पाए﴿६९﴾ तो वो उन्हीं के क़दमों के निशान पर दौड़े जाते हैं(४८)﴿७०﴾ और बेशक उनसे पहले बहुत से अगले गुमराह हुए(४९)﴿७१﴾ और बेशक हमने उनमें डर सुनाने वाले भेजे(५०)﴿७२﴾ तो देखो डराए गयों का कैसा अंजाम हुआ(५१)﴿७३﴾ मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे (५२)﴿७४﴾

तीसरा रूकू

और बेशक हमें नूह ने पुकारा(१) तो हम क्या ही अच्छे क़ुबूल फ़रमाने वाले(२)﴿७५﴾ और हमने उसे और उसके घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से निजात दी﴿७६﴾ और हमने

(३३) कि मेरे उस हमनशीन का जहन्नम में क्या हाल है.
(३४) कि अज़ाब के अन्दर गिरफ़्तार है, तो उस जन्नती ने उस से.
(३५) सीधी राह से बहका कर.
(३६) और अपनी रहमत और करम से मुझे तेरे बहकावे से मेहफ़ूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ न देता.
(३७) तेरे साथ जहन्नम में, और जब मौत ज़िब्ह कर दी जाएगी तो जन्नत वाले फ़रिश्तों से कहेंगे.
(३८) वही जो दुनिया में हो चुकी.
(३९) फ़रिश्ते कहेंगे नहीं, और जन्नत वालों का यह पूछना अल्लाह तआला की रहमत के साथ लज़्ज़त उठाना और हमेशा की ज़िन्दगी की नेअमत और अज़ाब से मेहफ़ूज़ होने के ऐहसान पर उसकी नेअमत का ज़िक्र करने के लिये है. और ज़िक्र से उन्हें सुरूर हासिल होगा.
(४०) यानी जन्नती नेअमतें और लज़्ज़तें और वहाँ के नफ़ीस और लतीफ़ खाने पीने और हमेशा के ऐश और बेहद राहत और सुरूर.
(४१) निहायत कड़वा, अत्यन्त बदबूदार हद दर्जा का बदमज़ा सख़्त नागवार जिससे जहन्नमियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को उसके खाने पर मजबूर किया जाएगा.
(४२) कि दुनिया में काफ़िर उसका इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा.
(४३) और उसकी शाख़ें जहन्नम के गढ़ों में पहुंचती हैं.
(४४) यानी बदसूरत और बुरा दिखने वाला.
(४५) सख़्त भूख से मजबूर होकर.
(४६) यानी जहन्नमी थूहड़ से उनके पेट भरेंगे. वह जलता होगा, पेटों को जलाएगा, उसकी जलन से प्यास का ग़लबा होगा और मुद्दत तक वो प्यास की तकलीफ़ में रखे जाएंगे फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस गर्मी और जलन, उस थूहड़ की गर्मी और जलन से मिलकर और तकलीफ़ और बेचैनी बढ़ाएगी.
(४७) क्योंकि ज़क्क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उनको अपने गढ़ों से दूसरे गढ़ों में ले जाया जाएगा. इसके बाद फिर अपने गढ़ों की तरफ़ लौटाए जाएंगे. इसके बाद उनके अज़ाब का मुस्तहिक़ होने की इल्लत इरशाद फ़रमाई जाती है.
(४८) और गुमराही में उनका अनुकरण करते हैं और सच्चाई के खुले सुबूतों से आँखें बन्द कर लेते हैं.
(४९) इसी वजह से कि उन्हों ने अपने बाप दादा की ग़लत राह न छोड़ी और हुज्जत और दलील से फ़ायदा न उठाया.
(५०) यानी नबी जिन्होंने उनको गुमराही और बदअमली के बुरे अंजाम का ख़ौफ़ दिलाया.

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۷۸﴾
سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۹﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۰﴾
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۱﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ﴿۸۲﴾ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿۸۳﴾ اِذْ جَآءَ
رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۴﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا
تَعْبُدُوْنَ ﴿۸۵﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿۸۶﴾
فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿۸۸﴾
فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿۸۹﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿۹۰﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى
اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۹۱﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿۹۲﴾
فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿۹۳﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿۹۴﴾
قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا
تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿۹۷﴾
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿۹۸﴾ وَقَالَ اِنِّيْ

وقف لازم

उसी की औलाद बाक़ी रखी[३]﴿७७﴾ और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी[४]﴿७८﴾ नूह पर सलाम हो जगत वालों में[५]﴿७९﴾ बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को﴿८०﴾ बेशक वह हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में है﴿८१﴾ फिर हमने दूसरों को डुबो दिया[६]﴿८२﴾ और बेशक उसी के गिरोह से इब्राहीम है[७]﴿८३﴾ जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुआ ग़ैर से सलामत दिल लेकर[८]﴿८४﴾ जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया[९] तुम क्या पूजते हो﴿८५﴾ क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा और ख़ुदा चाहते हो﴿८६﴾ तो तुम्हारा क्या गुमान है सारे जगत के रब पर[१०]﴿८७﴾ फिर उसने एक निगाह सितारों को देखा[११]﴿८८﴾ फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूँ[१२]﴿८९﴾ तो वो उस पर पीठ देकर फिर गए[१३]﴿९०﴾ फिर उनके ख़ुदाओं की तरफ़ छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते[१४]﴿९१﴾ तुम्हें क्या हुआ कि नहीं बोलते[१५]﴿९२﴾ तो लोगों की नज़र बचाकर उन्हें दाएं हाथ से मारने लगा[१६]﴿९३﴾ तो काफ़िर उसकी तरफ़ जल्दी करते आए[१७]﴿९४﴾ फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों को पूजते हो﴿९५﴾ और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे अआमाल(कर्मों) को[१८]﴿९६﴾ बोले इसके लिये एक ईमारत चुनो[१९] फिर इसे भड़कती आग में डाल दो﴿९७﴾ तो उन्होंने उसपर दाँव चलना चाहा हमने उन्हें नीचा दिखाया[२०]﴿९८﴾

(५१) कि वो अज़ाब से हलाक किये गए.
(५२) ईमानदार जिन्हों ने अपने इख़लास के कारण निजात पाई.

सूरए साफ़्फ़ात- तीसरा रूकू

(१) और हम से अपनी क़ौम के अज़ाब और हलाकत की दरख़्वास्त की.
(२) कि हम ने उनकी दुआ क़ुबूल की और उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की और उनसे पूरा बदला लिया कि उन्हें डुबो कर हलाक कर दिया.
(३) तो अब दुनिया में जितने इन्सान हैं सब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की नस्ल से हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के किश्ती से उतरने के बाद उनके साथियों में जिस क़दर मर्द और औरत थे सभी मर गए सिवा आपकी औलाद और उनकी औरतों के. उन्हीं से दुनिया की नस्लें चलीं. अरब और फ़ारस और रूम आपके बेटे साम की औलाद से हैं और सूदान के लोग आपके बेटे हाम की नस्ल से और तुर्क और याजूज माजूज वग़ैरह आपके साहिबज़ादे याफ़िस की औलाद से.
(४) यानी उनके बाद वाले नबी और उनकी उम्मतों में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ज़िक्रे जमील बाक़ी रखा.
(५) यानी फ़रिश्ते और जिन्न और इन्सान सब उनपर क़यामत तक सलाम भेजा करें.
(६) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के काफ़िरों को.
(७) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के दीनो मिल्लत और उन्हीं के तरीक़े और सुन्नत पर हैं. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बीच दो हज़ार छ सौ चालीस साल का अन्तर है और दोनों हज़रात के बीच जो समय गुज़रा उसमें सिर्फ़ दो नबी हुए, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम.
(८) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहीस्सलाम ने अपने दिल को अल्लाह तआला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया.
(९) फटकार के तौर पर.

ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصّٰلِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّي أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّي
أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ۚ قَالَ يٰأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ
سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا
أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ أَنْ يٰإِبْرٰهِيمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾
إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ
عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰى
إِبْرٰهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهُ مِنْ
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِإِسْحٰقَ نَبِيًّا مِنَ
الصّٰلِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰى إِسْحٰقَ ۚ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا ع

منزل ٦

और कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ[२१] अब वह मुझे राह देगा[२२]﴾९९﴿ इलाही मुझे लायक़ औलाद दे﴾१००﴿ तो हमने उसे ख़ुशख़बरी सुनाई एक अक़्लमन्द लड़के की﴾१०१﴿ फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैंने ख़्वाब देखा मैं तुझे ज़िब्ह करता हूँ[२३] अब तू देख तेरी क्या राय है[२४] कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आपको हुक्म होता है, ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे﴾१०२﴿ तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया, उस वक़्त का हाल न पूछ[२५]﴾१०३﴿ और हमने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम﴾१०४﴿ बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया[२६] हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को﴾१०५﴿ बेशक यह रौशन जांच थी﴾१०६﴿ और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदिये (बदले) में देकर उसे बचा लिया[२७]﴾१०७﴿ और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी﴾१०८﴿ सलाम हो इब्राहीम पर[२८]﴾१०९﴿ हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को﴾११०﴿ बेशक वो हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में हैं﴾१११﴿ और हमने उसे ख़ुशख़बरी दी इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला नबी हमारे ख़ास क़ुर्ब (समीपता) के सज़ावारों में[२९]﴾११२﴿ और हमने बरकत उतारी उसपर और इस्हाक़ पर[३०] और उनकी औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला[३१] और कोई अपनी जान पर खुला ज़ुल्म करने वाला[३२]﴾११३﴿

चौथा रूकू

और बेशक हमने मूसा और हारून पर एहसान

(१०) कि जब तुम उसके सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वह तुम्हें बेअज़ाब छोड़ देगा जबकि तुम जानते हो कि वही नेअमतें देने वाला सही मानी में इबादत का मुस्तहिक़ है. क़ौम ने कहा कि कल को हमारी ईद है, जंगल में मेला लगेगा. हम बढ़िया खाने पकाकर बुतों के पास रख जाएंगे और मेले से वापस होकर तबर्रुक के तौर पर उनको खाएंगे आप भी हमारे साथ चलें और भीड़ और मेले की रौनक देखें. वहाँ से वापस आकर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उनका बनाव सिंघार देखें. यह तमाशा देखने के बाद हम समझते हैं कि बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे.

(११) जैसे कि सितारा शनास, नुजूम के माहिर सितारों के योग और प्रभाव को देखा करते हैं.

(१२) क़ौम ज्योतिष को बहुत मानती थी, वह समझी कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारों से अपने बीमार होने का हाल मालूम कर लिया, अब यह किसी छूत की बीमारी में मुब्तिला होने वाले हैं और छूत की बीमारी से वो लोग बहुत डरते थे. सितारों का इल्म सच्चा है और सीखने में मशग़ूल होना स्थगित हो चुका. शरीअत के अनुसार कोई बीमारी छूत की नहीं होती, यानी एक व्यक्ति की बीमारी उड़कर वैसी ही दूसरे में नहीं पहुंचती. तत्वों की ख़राबी और हवा वग़ैरह की हस्तियों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक तरह की बीमारी हो सकती है लेकिन बीमारी के कारण हर एक में अलग अलग हैं किसी की बीमारी किसी दूसरे में नहीं पहुंचती.

(१३) अपनी ईद की तरफ़ और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को छोड़ गए, आप बुतख़ाने में आए.

(१४) यानी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है, बुतों ने इसका कोई जवाब न दिया और वो जवाब ही क्या देते, तो आपने फ़रमाया.

(१५) इसपर भी बुतों की तरफ़ से कुछ जवाब न हुआ वो बेजान पत्थर थे जवाब क्या देते.

(१६) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को मार मार कर टुकड़े टुकड़े कर दिया, जब काफ़िरों को इसकी ख़बर पहुंची.

(१७) और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो.

(१८) तो पूजने का मुस्तहिक़ वह है न बुत. इसपर वो हैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया.

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ وَ
اٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ۝ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى
مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اَتَدْعُوْنَ
بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ۝ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ
رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝
سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عَجُوْزًا

फ़रमाया[१] ﴾११४﴿ और उन्हें और उनकी क़ौम[२] को बड़ी सख़्ती से निजात बख़्शी[३] ﴾११५﴿ और उनकी हमने मदद फ़रमाई[४] तो वही ग़ालिब हुए[५] ﴾११६﴿ और हमने उन दोनों को रौशन किताब अता फ़रमाई[६] ﴾११७﴿ और उनको सीधी राह दिखाई ﴾११८﴿ और पिछलों में उनकी तारीफ़ बाक़ी रखी ﴾११९﴿ सलाम हो मूसा और हारून पर ﴾१२०﴿ बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को ﴾१२१﴿ बेशक वो दोनों हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में हैं ﴾१२२﴿ और बेशक इलियास पैग़म्बरों से है[७] ﴾१२३﴿ जब उसने अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं[८] ﴾१२४﴿ क्या बअल को पूजते हो[९] और छोड़ते हो सबसे अच्छा पैदा करने वाले ﴾१२५﴿ अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का[१०] ﴾१२६﴿ फिर उन्होंने उसे झुटलाया तो वो ज़रूर पकड़े आएंगे[११] ﴾१२७﴿ मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे[१२] ﴾१२८﴿ और हमने पिछलों में उसकी सना (प्रशंसा) बाक़ी रखी ﴾१२९﴿ सलाम हो इलियास पर ﴾१३०﴿ बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को ﴾१३१﴿ बेशक वह हमारे उत्तम दर्जे के ईमान के पूरे बन्दों में है ﴾१३२﴿ और बेशक लूत पैग़म्बरों में है ﴾१३३﴿ जब कि हमने उसे और उसके सब घर वालों को निजात बख़्शी ﴾१३४﴿

(१९) पत्थर की तीस गज़ लम्बी, बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी फिर उसको लकड़ियों से भर दो और उनमें आग लगा दो यहाँ तक कि आग ज़ोर पकड़े.
(२०) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इस आग में सलामत रखकर, चुनांन्चे आग से आप सलामत बरामद हुए.
(२१) इस दारूल कुफ़्र से हिजरत करके जहाँ जाने का मेरा रब हुक्म दे.
(२२) चुनांन्चे अल्लाह के हुक्म से आप शाम प्रदेश में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आपने अपने रब से दुआ की.
(२३) यानी तेरे ज़िब्ह का इन्तिज़ाम कर रहा हूँ और नबीयों का ख़्वाब सच्चा होता है और उनके काम अल्लाह के हुक्म से हुआ करते हैं.
(२४) यह आपने इसलिये कहा था कि बेटे को ज़िब्ह से वहशत न हो और अल्लाह के हुक्म की इताअत के लिये वह दिल से तैयार हों चुनांन्चे इस सुपुत्र ने अल्लाह की रज़ा पर फ़िदा होने का भरपूर शौक़ से इज़हार किया.
(२५) ये वाक़िआ मिना में वाक़े हुआ और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे के गले पर छुरी चलाई. अल्लाह की क़ुदरत कि छुरी ने कुछ भी काम न किया.
(२६) इताअत व फ़रमाँबरदारी चरम सीमा पर पहुंचा दी. बेटे को ज़िब्ह के लिये बिना हिचकिचाए पेश कर दिया. बस अब इतना काफ़ी है.
(२७) इसमें इख़्तिलाफ़ है कि यह बेटे हज़रत इस्माईल हैं या हज़रत इस्हाक़. लेकिन प्रमाणों की शक्ति यही बताती है कि ज़िब्ह होने वाले हज़रत इस्माईल ही हैं और फ़िदिये में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिसको हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़िब्ह फ़रमाया.
(२८) हमारी तरफ़ से.
(२९) ज़िब्ह के वाक़ए के बाद हज़रत इस्हाक़ की ख़ुशख़बरी इस की दलील है कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ही ज़बीह हैं.
(३०) हर तरह की बरकत, दीनी भी और दुनियावी भी और ज़ाहिरी बरकत यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में बहुतात की और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की नस्ल से बहुत से नबी किये . हज़रत यअक़ूब से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक.
(३१) यानी ईमान वाला.
(३२) यानी काफ़िर. इससे मालूम हुआ कि किसी बाप के बहुत सी फ़ज़ीलतों के मालिक होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं. यह अल्लाह तआला की शानें हैं, कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक. न औलाद का बद होना बापों के लिये ऐब हो, न बापों की बदी औलाद के लिये.

सूरए साफ़्फ़ात- चौथा रूकू

(१) कि उन्हें नबुव्वत और रिसालत अता फ़रमाई.

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ
عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَاِنَّ
يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ
وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ
فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾ وَ
اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا
فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ
وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾
وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ
عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾

منزل ٦

मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई[१३] ﴿१३५﴾ फिर दूसरों को हमने हलाक फ़रमा दिया[१४] ﴿१३६﴾ और बेशक तुम[१५] उन पर गुज़रते हो सुब्ह को ﴿१३७﴾ और रात में[१६] तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं[१७] ﴿१३८﴾

पाँचवां रूकू

और बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है ﴿१३९﴾ जब कि भरी किश्ती की तरफ़ निकल गया[१] ﴿१४०﴾ तो क़ुरआ डाला तो ढकेले हुओं में हुआ ﴿१४१﴾ फिर उसे मछली ने निगल लिया और वह अपने आप को मलामत करता था[२] ﴿१४२﴾ तो अगर वह तस्बीह करने वाला न होता[३] ﴿१४३﴾ ज़रूर उसके पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे[४] ﴿१४४﴾ फिर हमने उसे[५] मैदान पर डाल दिया और वह बीमार था[६] ﴿१४५﴾ और हमने उसपर[७] कदू का पेड़ उगाया[८] ﴿१४६﴾ और हमने उसे[९] लाख आदमियों की तरफ़ भेजा बल्कि ज़्यादा ﴿१४७﴾ तो वो ईमान ले आए[१०] तो हमने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया[११] ﴿१४८﴾ तो उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिये बेटियां हैं[१२] और उनके बेटे[१३] ﴿१४९﴾ या हमने मलायका (फ़रिश्तों) को औरतें पैदा किया और वो हाज़िर थे[१४] ﴿१५०﴾ सुनते हो बेशक वो अपने बोहतान से कहते हैं ﴿१५१﴾ कि अल्लाह की औलाद है और बेशक वो ज़रूर झूटे हैं ﴿१५२﴾ क्या उसने बेटियाँ पसन्द कीं बेटे छोड़ कर ﴿१५३﴾ तुम्हें क्या है कैसा हुक्म लगाते हो[१५] ﴿१५४﴾ तो क्या ध्यान नहीं करते[१६] ﴿१५५﴾

(२) यानी बनी इस्राईल.
(३) कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम के अत्याचारों से रिहाई दी.
(४) क़िब्तियों के मुक़ाबले में.
(५) फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर.
(६) जिसका बयान विस्तृत और साफ़ और वो हुदूद और अहकाम वग़ैरा की सम्पूर्ण किताब. इस किताब से मुराद तौरात शरीफ़ है.
(७) जो बअलबक और उसके आस पास के लोगों की तरफ़ भेजे गए.
(८) यानी क्या तुम्हें अल्लाह तआला का ख़ौफ़ नहीं.
(९) बअल उनके बुत का नाम था जो सोने का था. उसकी लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे. वो उसका बहुत सम्मान करते थे. जिस जगह वह था उसका नाम बक था इसलिये बअलबक बना. यह शाम प्रदेश में है.
(१०) उसकी इबादत छोड़ते हो.
(११) जहन्नम में.
(१२) यानी उस क़ौम में से अल्लाह तआला के बुज़ुर्ग बन्दे जो हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए उन्होंने अज़ाब से निजात पाई.
(१३) अज़ाब के अन्दर.
(१४) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के काफ़िरों को.
(१५) ऐ मक्के वालो.
(१६) यानी अपने सफ़रों में रात दिन तुम उनके खण्डहरों और मंज़िलों पर गुज़रते हो.
(१७) कि उनसे नसीहत पकड़ो.

सूरए साफ़्फ़ात- पाँचवां रूकू

(१) हज़रत इब्ने अब्बास और वहब का क़ौल है कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से अज़ाब का वादा किया था उसमें

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ﴿١٦٢﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوا بِهِ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ

या तुम्हारे लिये कोई खुली सनद है﴿१५६﴾ तो अपनी किताब लाओ[१७] अगर तुम सच्चे हो﴿१५७﴾ और उसमें और जिन्नों में रिश्ता ठहराया[१८] और बेशक जिन्नों को मालूम है कि वो[१९] ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे[२०]﴿१५८﴾ पाकी है अल्लाह को उन बातों से कि ये बताते हैं﴿१५९﴾ मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे[२१]﴿१६०﴾ तो तुम और जो कुछ अल्लाह के सिवा पूजते हो[२२]﴿१६१﴾ तुम उसके ख़िलाफ़ किसी को बहकाने वाले नहीं[२३]﴿१६२﴾ मगर उसे जो भड़कती आग में जाने वाला है[२४]﴿१६३﴾ और फ़रिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक जाना हुआ मक़ाम है[२५]﴿१६४﴾ और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर (प्रतीक्षा में) हैं﴿१६५﴾ और बेशक हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं﴿१६६﴾ और बेशक वो कहते थे[२६]﴿१६७﴾ अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत होती[२७]﴿१६८﴾ तो ज़रूर हम अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते[२८]﴿१६९﴾ तो उसके इन्कारी हुए तो बहुत जल्द जान लेंगे[२९]﴿१७०﴾ और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये﴿१७१﴾ कि बेशक उन्हीं की मदद होगी﴿१७२﴾ और बेशक हमारा ही लश्कर[३०] ग़ालिब आएगा﴿१७३﴾ तो एक वक़्त तुम उनसे मुंह फेर लो[३१]﴿१७४﴾ और उन्हें देखते रहो कि बहुत जल्द वो देखेंगे[३२]﴿१७५﴾ तो क्या हमारे अज़ाब की जल्दी करते हैं﴿१७६﴾ फिर जब उतरेगा उनके आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुब्ह होगी﴿१७७﴾ और एक वक़्त तक उनसे मुंह फेर लो﴿१७८﴾ और

विलम्ब हुआ तो आप उनसे छुपकर निकल गए और आपने समुद्री सफ़र का इरादा किया. किश्ती पर सवार हुए. दरिया के बीच किश्ती ठहर गई और उसके ठहरने का कोई ज़ाहिरी कारण मौजूद न था. मल्लाहों ने कहा, इस किश्ती में अपने मालिक से भागा हुआ कोई गुलाम है. लाटरी डालने से ज़ाहिर हो जाएगा. पर्चा डाला गया तो आप ही के नाम निकला. तो आपने फ़रमाया कि मैं ही वह ग़ुलाम हूँ और आप पानी में डाल दिये गए क्योंकि दस्तूर यही था कि जब तक भागा हुआ ग़ुलाम दरिया में न डुबा दिया जाए उस वक़्त तक किश्ती चलती न थी.

(२) कि क्यों निकलने में जल्दी की और क़ौम से अलग होने में अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार न किया.

(३) यानी अल्लाह के ज़िक्र की कसरत करने वाला और मछली के पेट में "ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तो मिनज़ ज़ालिमीन" पढ़ने वाला.

(४) यानी क़यामत के रोज़ तक.

(५) मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बाद.

(६) यानी मछली के पेट में रहने के कारण आप ऐसे कमज़ोर, दुबले और नाज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है. जिस्म की खाल नर्म हो गई थी, बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था.

(७) साया करने और मक्खियों से मेहफ़ूज़ रखने के लिये.

(८) कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है मगर यह आपका चमत्कार था कि कद्दू का यह दरख़्त लम्बे दरख़्तों की तरह शाख़ रखता था और उसके बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और अल्लाह के हुक्म से रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के दहने मुबारक में देकर आपको सुबह शाम दूध पिला जाती यहाँ तक कि जिस्म की खाल मज़बूत हुई और अपने मौक़े से बाल जमे और जिस्म में ताक़त आई.

(९) पहले की तरह मौसिल प्रदेश में नैनवा क़ौम के.

(१०) अज़ाब के निशान देखकर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रूकू में गुज़र चुका है और इस वाक़ए का बयान सुरए अम्बिया के छटे रूकू में भी आ चुका है.)

(११) यानी उनकी आख़िर उम्र तक उन्हें आसायश के साथ रखा इस वाक़ए के बयान फ़रमाने के बाद अल्लाह तआला अपने हबीबे

इन्तिज़ार करो कि वो बहुत जल्द देखेंगे(१७९) पाकी है तुम्हारे रब को इज़्ज़त वाले रब को उनकी बातों से[३३](१८०) और सलाम है पैग़म्बरों पर[३४](१८१) और सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो सारे जगत का रब है(१८२)

३८- सूरए सॉद

सूरए सॉद मक्का में उतरी, इसमें ८८ आयतें, पांच रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] इस नामवर क़ुरआन की क़सम[२](१) बल्कि काफ़िर तकब्बुर(घमण्ड) और ख़िलाफ़(दुश्मनी) में हैं[३](२) हमने उनसे पहले कितनी संगतें खपाईं[४] तो अब वो पुकारें[५] और छूटने का वक़्त न था[६](३) और उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[७] और काफ़िर बोले यह जादूगर है बड़ा झूटा(४) क्या उसने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया[८] बेशक यह अजीब बात है(५) और उनमें के सरदार चले[९] कि उसके पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो बेशक इसमें उसका कोई मतलब है(६) यह तो हमने सबसे पिछले दीन नसरानियत(ईसाइयत) में भी न सुनी[१०] यह तो निरी नई गढ़त है(७) क्या उनपर क़ुरआन उतारा गया हम सब में से[११] बल्कि वो शक में हैं मेरी किताब से[१२] बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है[१३](८) क्या वो तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ानची हैं[१४] वह

अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाता है कि आप मक्के के काफ़िरों से दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने की वजह पूछिये, चुनांन्चे इरशाद फ़रमाता है.

(१२) जैसा कि जुहैना और बनी सलमा वग़ैरह काफ़िरों का अक़ीदा है कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं.

(१३) यानी अपने लिये तो बेटियाँ गवारा नहीं करते, बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को ख़ुदा की तरफ़ निस्बत करते हैं.

(१४) देख रहे थे, क्यों ऐसी बेहूदा बात कहते हैं.

(१५) फ़ासिद और बातिल.

(१६) और इतना नहीं समझते कि अल्लाह तआला औलाद से पाक और बेनियाज़ है.

(१७) जिसमें यह सनद हो.

(१८) जैसा कि कुछ मुश्रिकों ने कहा था कि अल्लाह ने जिन्नों में शादी की उससे फ़रिश्ते पैदा हुए (मआज़ल्लाह) कैसे बड़े भारी कुफ़्र करने वाले हुए.

(१९) यानी इस बेहूदा बात के कहने वाले.

(२०) जहन्नम में अज़ाब के लिये.

(२१) ईमानदार, अल्लाह तआला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से, जो ये नाबकार काफ़िर कहते हैं.

(२२) यानी तुम्हारे बुत सबके सब वो और.

(२३) गुमराह नहीं कर सकते.

(२४) जिसकी क़िस्मत ही में यह है कि वह अपने बुरे चरित्र से जहन्नम का मुस्तहिक़ हो.

(२५) जिसमें अपने रब की इबादत करता है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि आसमानों में बालिश्त भर भी जगह ऐसी नहीं है जिसमें कोई फ़रिश्ता नमाज़ नहीं पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो.

(२६) यानी मक्कए मुकर्रमा के काफ़िर और मुश्रिक सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले कहा करते थे कि ---

مِنْ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا
يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ
الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ
مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ
وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢ وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ
لْـَٔــيْكَةِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ
الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا صَيْحَةً
وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا
قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦ اِصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ
وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝١٧ اِنَّا سَخَّرْنَا
الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ۝١٨ وَالطَّيْرَ
مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝١٩ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

منزل ٦

इज़्ज़त वाला बहुत अता फ़रमाने वाला है(१५) ﴾९﴿ क्या उनके लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है, तो रस्सियाँ लटकाकर चढ़ न जाएं(१६) ﴾१०﴿ यह एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो वहीं भगा दिया जाएगा(१७) ﴾११﴿ उनसे पहले झुटला चुके हैं नूह की क़ौम और आद और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔन(१८) ﴾१२﴿ और समूद और लूत की क़ौम और बन वाले(१९) ये हैं वो गिरोह(२०) ﴾१३﴿ उनमें कोई ऐसा नहीं जिसने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अज़ाब लाज़िम हुआ(२१) ﴾१४﴿

दूसरा रूकू

और ये राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की(१) जिसे कोई फेर नहीं सकता ﴾१५﴿ और बोले ऐ हमारे रब हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे हिसाब के दिन से पहले(२) ﴾१६﴿ तुम उनकी बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद नेअमतों वाले को याद करो(३) बेशक वह बड़ा रूजू करने वाला है(४) ﴾१७﴿ बेशक हमने उसके साथ पहाड़ मुसख़्ख़र (वशीभूत) फ़रमा दिये कि तस्बीह करते(५) शाम को और सूरज चमकते ﴾१८﴿ और परिंदे जमा किए हुए सब उसके फ़रमाँबरदार थे(६) ﴾१९﴿ और हमने उसकी सल्तनत को मज़बूत किया(७)

---

(२७) कोई किताब मिलती.
(२८) उसकी इताअत करते और इख़्लास के साथ इबादत बजा लाते फिर जब तमाम किताबों से अफ़ज़ल और बुज़ुर्गी वाली चमत्कारिक किताब उन्हें मिली यानी क़ुरआने मजीद उतरा.
(२९) अपने कुफ़्र का अंजाम.
(३०) यानी ईमान वाले.
(३१) जब तक कि तुम्हें उनके साथ क़िताल यानी जंग करने का हुक्म दिया जाए.
(३२) तरह तरह के अज़ाब दुनिया और आख़िरत में. जब यह आयत नाज़िल हुई तो काफ़िरों ने मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में कहा कि यह अज़ाब कब नाज़िल होगा. इसके जवाब में अगली आयत उतरी.
(३३) जो काफ़िर उसकी शान में कहते हैं और उसके लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं.
(३४) जिन्होंने अल्लाह तआला की तरफ़ से तौहीद और शरीअत के अहकाम पहुंचाए. इन्सानी दर्जों में सब से ऊंचा दर्जा यह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तकमील करे. यह नबियों की शान है, तो हर एक पर उन हज़रात का अनुकरण और उन्हें मानना लाज़िम है.

३८ - सूरए सॉद - पहला रूकू

(१) सूरए सॉद का नाम सूरए दाऊद भी है. यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें पांच रूकू, अठासी आयतें और सात सौ बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सढ़सठ अक्षर हैं.
(२) जो बुज़ुर्गी वाला है कि ये चमत्कारी कलाम है.
(३) और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दुश्मनी रखते हैं इसलिये सच्चाई को नहीं मानते.
(४) यानी आपकी क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं, इसी घमण्ड और नबियों के विरोध के कारण.
(५) यानी अज़ाब उतरने के वक़्त उन्होंने फ़रियाद की.
(६) कि छुटकारा पा सकते. उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी . मक्के के काफ़िरों ने उनके हाल से इब्रत हासिल न की.
(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(८) जब हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो इस्लाम लाए तो मुसलमानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को बहुत रंज हुआ. वलीद बिन

मुग़ीरह ने क़ुरैश के पच्चीस प्रतिष्ठित आदमियों को जमा किया और उन्हें अबू तालिब के पास लाया और उनसे कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुज़ुर्ग हो. हम तुम्हारे पास इसलिये आए हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के बीच फ़ैसला करदो. उनकी जमाअत के छोटे दर्जे के लोगों ने जो आतंक मचा रखा है वह तुम जानते हो. अबू तालिब ने हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुला कर अर्ज़ किया कि ये आपकी क़ौम के लोग हैं और आप से सुलह चाहते हैं आप उनकी तरफ़ से ज़रा सा भी मुंह न फेरिये. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ये मुझसे क्या चाहते हैं. उन्होंने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मअबूदों का ज़िक्र छोड़ दीजिये. हम आपको और आपके मअबूद की बदगोई के पीछे न पड़ेंगे. हुज़ूर अलैहिस्सलातो वसल्लाम ने फ़रमाया क्या तुम एक कलिमा क़ुबूल कर सकते हो जिस से अरब और अजम के मालिक और शासक हो जाओ. अबू जहल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे क़ुबूल कर सकते हैं . सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कहो ला इलाहा इल्लल्लाह. इसपर वो लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या उन्होंने बहुत से ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया इतनी बहुत सी मख़्लूक़ के लिये एक ख़ुदा कैसे काफ़ी हो सकता है.

(९) अबू तालिब की मजलिस से आपस में यह कहते.

(१०) नसरानी भी तीन ख़ुदाओं के क़ाइल थे, ये तो एक ही ख़ुदा बताते हैं.

(११) मक्का वालों के सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मन्सबे नबुव्वत पर हसद आया और उन्होंने यह कहा कि हम में इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाले आदमी मौजूद थे उनमें से किसी पर क़ुरआन न उतरा, ख़ास हज़रत सैयदुल अम्बिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतरा.

(१२) कि उसके लाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं.

(१३) अगर मेरा अज़ाब चख़ लेते तो यह शक, झुटलाने की प्रवृत्ति और हसद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक़ लाभदायक न होती.

(१४) और क्या नबुव्वत की कुंजियाँ उनके हाथ में हैं जिसे चाहें दें. अपने आपको क्या समझते हैं. अल्लाह तआला और उसकी मालिकियत को नहीं जानते.

(१५) हिकमत के तक़ाज़े के अनुसार जिसे जो चाहे अता फ़रमाए. उसने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुव्वत अता फ़रमाई तो किसी को उसमें दख़्ल देने और क्यों कैसे करने की क्या मजाल.

(१६) और ऐसा इख़्तियार हो तो जिसे चाहें वही के साथ ख़ास करें और संसार की तदबीरें अपने हाथ में लें और जब यह कुछ नहीं तो अल्लाह की हिकमतों और उसके कामों में दख़्ल क्यों देते हैं. उन्हें इसका क्या हक़ है. काफ़िरों को यह जवाब देने के बाद अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से नुसरत और मदद का वादा फ़रमाया है.

(१७) यानी इन क़ुरैश की जमाअत उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले नबियों के विरुद्ध गिरोह बांधकर आया करते थे और यातनाएं देते थे. उस कारण हलाक कर दिये गए. अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़बर दी कि यही हाल इनका है इन्हें भी हार होगी. चुनांन्चे बद्र में ऐसा ही हुआ. इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली के लिये पिछले नबियों और उनकी क़ौम का ज़िक्र फ़रमाया.

(१८) जो किसी पर गुस्सा करता था तो उसे लिटाकर उसके चारों हाथ पाँव खींच कर चारों तरफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उसको पिटवाता था और उस पर तरह तरह की सख़्तियाँ करता था..

(१९) जो शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम से थे.

(२०) जो नबियों के विरुद्ध जत्थे बांधकर आए. मक्के के मुश्रिक उन्हीं समूहों में से हैं.

(२१) यानी उन गुज़री उम्मतों ने जब नबियों को झुटलाया तो उनपर अज़ाब लाज़िम हो गया. तो उन कमज़ोरों का क्या हाल होगा जब उनपर अज़ाब उतरेगा.

सूरए सॉद - दूसरा रुकू

(१) यानी क़यामत के पहले सूर के फूंके जाने की, जो उनके अज़ाब की मीआद है.

(२) यह नज़र बिन हारिस ने हंसी के तौर पर कहा था, इसपर अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि ----

(३) जिन को इबादत की बहुत क़ुव्वत दी गई थी. आप का तरीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते, एक दिन इफ़्तार करते और रात के पहले आधे हिस्से में इबादत करते उसके बाद रात की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छटा इबादत में गुज़ारते.

(४) अपने रब की तरफ़.

(५) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तस्बीह के साथ.

(६) इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिये पहाड़ों को ऐसा मुसख़्ख़र यानी वशीभूत किया था कि जहाँ आप चाहते साथ ले जाते. (मदारिक)

(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम तस्बीह करते तो पहाड़ भी आपके

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾ وَهَلْ أَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ إِذْ
تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا
لَا تَخَفْ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾ إِنَّ هٰذَآ
أَخِيْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ
فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ
بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ
لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ط وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ
وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ﴿۲۴﴾ السجدة فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ط وَإِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ
خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ

منزل ۶

और उसे हिकमत(बोध)[१०] और क़ौले फ़ैसल दिया[११] ﴿२०﴾ और क्या तुम्हें[१२] उस दावे वालों की भी ख़बर आई, जब वो दीवार कूद कर दाऊद की मस्जिद में आए[१३] ﴿२१﴾ जब वो दाऊद पर दाख़िल हुए तो वह उनसे घबरा गया उन्होंने अर्ज़ की डरिये नहीं हम दो फ़रीक़(पक्ष) हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है[१४] तो हममें सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और हक़ के ख़िलाफ़ न कीजिये[१५] और हमें सीधी राह बताइये ﴿२२﴾ बेशक यह मेरा भाई है[१६] इसके पास निन्यानवे दुंबियां है और मेरे पास एक दुंबी, अब यह कहता है वह भी मुझे हवाले करदे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है ﴿२३﴾ दाऊद ने फ़रमाया बेशक यह तुझ पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुंबी अपनी दुंबियों में मिलाने को मांगता है, और बेशक अक्सर साझे वाले एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वो बहुत थोड़े हैं[१७] अब दाऊद समझा कि हमने यह उसकी ज़ांच की थी[१८] तो अपने रब से माफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा[१९] और रूजू लाया ﴿२४﴾ तो हमने उसे यह माफ़ फ़रमाया, और बेशक उसके लिये हमारी बारगाह में ज़रूर नज़्दीकी और अच्छा ठिकाना है ﴿२५﴾ ऐ दाऊद बेशक हमने तुझे ज़मीन में नायब किया[२०] तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वो

साथ तस्बीह करते और पक्षी आपके पास जमा होकर तस्बीह करते.

(८) पहाड़ भी और पक्षी भी.

(९) फ़ौज और लश्कर की कसरत अता फ़रमाकर. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि धरती के बादशाहों में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की बड़ी मज़बूत और ताक़तवर सल्तनत थी, छत्तीस हज़ार मर्द आप की मेहराब के पहरे पर मुक़र्रर थे.

(१०) यानी नबुव्वत . कुछ मुफ़स्सिरों ने हिकमत की तफ़सीर इन्साफ़ की है, कुछ ने अल्लाह की किताब का इल्म, कुछ ने फ़िक़्ह, कुछ ने सुन्नत.(जुमल)

(११) क़ौले फ़ैसल से इल्मे क़ज़ा मुराद है जो सच और झूठ, सत्य और असत्य में फ़र्क़ और तमीज़ कर दे.

(१२) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(१३) ये आने वाले, मशहूर क़ौल के अनुसार, फ़रिश्ते थे, जो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आज़मायश के लिये आए थे.

(१४) उनका यह क़ौल एक मसअले की फ़र्ज़ी शक्ल पेश करके जवाब हासिल करना था और किसी मसअले के बारे में हुक्म मालूम करने के लिये फ़र्ज़ी सूरतें मुक़र्रर कर ली जाती हैं और निर्धारित व्यक्तियों की तरफ़ उनकी निस्बत कर दी जाती है. ताकि मसअले का बयान बहुत साफ़ तरीक़े पर हो और इबहाम बाक़ी न रहे. यहाँ जो मसअले की सूरत इन फ़रिश्तों ने पेश की इस से मक़सूद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को तवज्जह दिलाना था इस बात की तरफ़, जो उन्हें पेश आई थी और वह यह थी कि आपकी ९९ बीबियाँ थीं. इसके बाद आपने एक और औरत को पयाम दे दिया जिसको एक मुसलमान पहले से पयाम दे चुका था लेकिन आपका संदेश पहुंचने के बाद औरत के अज़ीज़ रिश्तेदार दूसरे की तरफ़ इल्तिफ़ात करने वाले कब थे. आपके लिये राज़ी हो गए और आपसे निकाह हो गया. एक क़ौल यह भी है कि उस मुसलमान के साथ निकाह हो चुका था, आपने उस मुसलमान से अपनी रग़बत का इज़हार किया और चाहा कि वह अपनी औरत को तलाक़ दे दे. वह आपके लिहाज़ से मना न कर सका और उसने तलाक़ दे दी. आपका निकाह हो गया. और उस ज़माने में ऐसा मामूल था कि अगर किसी व्यक्ति को किसी औरत की तरफ़ रग़बत होती तो उसके शौहर से इस्तिदआ करके तलाक़ दिलवा लेता और इद्दत के बाद निकाह कर लेता. यह बात न तो शरअई तौर पर नाजायज़ है न उस ज़माने की रस्म और आदत के ख़िलाफ़, लेकिन नबियों की शान बहुत ऊंची होती है इसलिये यह आपके ऊंचे मन्सब के लायक़ न था तो अल्लाह की मर्ज़ी यह हुई कि आपको इसपर आगाह किया जाए और उसका सबब यह पैदा किया कि फ़रिश्ते मुद्दई और मुद्दआ अलैह की शक्ल में आपके सामने पेश हुए. इस से मालूम हुआ कि अगर बुज़ुर्गों से कोई लग़ज़िश सादिर हो और कोई बात शान के ख़िलाफ़

عن سبيل الله لهم عذاب شديد بما نسوا يوم
الحساب ۝٢٦ وما خلقنا السماء والارض وما بينهما
باطلا ذلك ظن الذين كفروا فويل للذين كفروا
من النار ۝٢٧ ام نجعل الذين امنوا وعملوا الصلحت
كالمفسدين في الارض ام نجعل المتقين كالفجار ۝٢٨
كتب انزلنه اليك مبرك ليدبروا ايته وليتذكر اولوا
الالباب ۝٢٩ ووهبنا لداود سليمن نعم العبد انه
اواب ۝٣٠ اذ عرض عليه بالعشي الصفنت الجياد ۝٣١
فقال اني احببت حب الخير عن ذكر ربي حتى
توارت بالحجاب ۝٣٢ ردوها علي فطفق مسحا بالسوق
والاعناق ۝٣٣ ولقد فتنا سليمن والقينا على كرسيه
جسدا ثم اناب ۝٣٤ قال رب اغفر لي وهب لي ملكا لا
ينبغي لاحد من بعدي انك انت الوهاب ۝٣٥ فسخرنا

منزل ٦

जो अल्लाह की राह से बहकाते हैं उन के लिये सख़्त अज़ाब है इस पर कि वो हिसाब के दिन को भूल बैठे[२१]﴿२६﴾

तीसरा रूकू

और हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है बेकार न बनाए, यह क़ाफ़िरों का गुमान है[१] तो काफ़िरों की ख़राबी है आग से﴿२७﴾ क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन जैसा करदें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़गारों को शरीर बेहुक्मों के बराबर ठहराएं[२]﴿२८﴾ यह एक किताब है कि हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी[३] बरकत वाली ताकि इसकी आयतों को सोचें और अक़्लमन्द नसीहत मानें﴿२९﴾ और हमने दाऊद को[४] सुलैमान अता फ़रमाया, क्या अच्छा बन्दा, बेशक वह बहुत रूजू लाने वाला[५]﴿३०﴾ जब कि उसपर पेश किये गए तीसरे पहर को[६] कि रोकिये तो तीन पाँव पर खड़े हों चौथे सुम का किनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जाएं[७]﴿३१﴾ तो सुलैमान ने कहा मुझे उन घोड़ों की महब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये[८] फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहाँ तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए[९]﴿३२﴾ फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो उनकी पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा[१०]﴿३३﴾ और बेशक हमने सुलैमान को जांचा[११] और उसके तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया[१२]﴿३४﴾ फिर रूजू लाया [१३] अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता कर कि मेरे बाद किसी को लायक़ न हो[१४] बेशक तू ही है बड़ी दैन वाला﴿३५﴾ तो हमने हवा

वाक़े हो जाए तो अदब यह है कि आलोचनात्मक ज़बान न खोली जाए बल्कि इस वाक़ए जैसा एक वाकए की कल्पना करके उसकी निस्बत जानकारी हासिल करने के लिये सवाल किया जाए और उनके आदर और सम्मान का भी ख़याल रखा जाए और यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह तआला मालिको मौला अपने नबियों की ऐसी इज़्ज़त फ़रमाता है कि उनको किसी बात पर आगाह करने के लिये फ़रिश्तों को इस तरीक़े पर अदब के साथ हाज़िर होने का हुक्म देता है.

(१५) जिसकी ग़लती हो, बेझिझक फ़रमा दीजिये.

(१६) यानी दीनी भाई.

(१७) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की यह बात सुनकर फ़रिश्तों में से एक ने दूसरे की तरफ़ देखा और मुस्कुरा के वो आसमान की तरफ़ रवाना हो गए.

(१८) और दुम्बी एक किनाया था जिस से मुराद औरत थी क्योंकि निनानवे औरतें आपके पास होते हुए एक और औरत की आपने ख़्वाहिश की थी इसलिये दुम्बी के पैराए में सवाल किया गया जब आप ने यह समझा.

(१९) इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रूकू करना तिलावत के सज्दे के क़ायम मुक़ाम हो जाता है जब कि नियत की जाए.

(२०) ख़ल्क़ की तदबीर पर आपको मामूर किया और आपका हुक्म उनमें नाफ़िज़ फ़रमाया.

(२१) और इस वजह से ईमान से मेहरूम रहे. अगर उन्हें हिसाब के दिन का यक़ीन होता तो दुनिया ही में ईमान ले आते.

सूरए सॉद - तीसरा रूकू

(१) अगरचे वो साफ़ साफ़ यह न कहें कि आसमान और ज़मीन और तमाम दुनिया बेकार पैदा की गई लेकिन जब कि दोबारा उठाए जाने और जज़ा के इन्कारी हैं तो नतीजा यही है कि जगत की सृष्टि को बेकार और बे फ़ायदा मानें.

उसके बस में कर दी कि उसके हुक्म से नर्म नर्म चलती[१५] जहाँ वह चाहता﴾३६﴿ और देव बस में कर दिये हर मेमार[१६] और ग़ौताख़ोर[१७]﴾३७﴿ और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुए[१८]﴾३८﴿ यह हमारी अता है अब तू चाहे तो एहसान कर[१९] या रोक रख[२०] तुझ पर कुछ हिसाब नहीं﴾३९﴿ और बेशक उसके लिये हमारी बारगाह में ज़रूर नज़्दीकी और अच्छा ठिकाना है﴾४०﴿

चौथा रूकू

और याद करो हमारे बन्दे अय्यूब को जब उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ़ और ईज़ा लगा दी[१]﴾४१﴿ हमने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाँव मार[२] यह है ठण्डा चश्मा नहाने और पीने को[३]﴾४२﴿ और हमने उसे उसके घर वाले और उनके बराबर और अता फ़रमा दिये अपनी रहमत करने[४] और अक़्लमन्दों की नसीहत को﴾४३﴿ और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू लेकर उससे मार दे[५] और क़सम न तोड़, बेशक हमने उसे साबिर पाया, क्या अच्छा बन्दा[६] बेशक वह बहुत रूजू लाने वाला है﴾४४﴿ और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और यअक़ूब क़ुदरत और इल्म वालों को[७]﴾४५﴿ बेशक हमने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ (विशेषता) बख़्शा कि वह उस घर की याद है[८]﴾४६﴿ और बेशक वो हमारे नज़्दीक चुने हुए पसन्दीदा हैं﴾४७﴿ और याद करो इस्माईल और यसआ और ज़ुलकिफ़्ल को[९] और सब अच्छे हैं﴾४८﴿

وَمَالِيَ ٢٣ — ٦٣٢ — صٓ ٣٨

لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ
كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾
هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ
لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ م
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾
اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى
لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ
وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ
اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي
الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

منزل ٦

(२) यह बात बिल्कुल हिकमत के ख़िलाफ़. और जो व्यक्ति जज़ा का क़ायल नहीं वह फ़सादी और इस्लाह करने वाले और बदकार और परहेज़गार को बरबार क़रार देगा और उन में फ़र्क़ न करेगा . काफ़िर इस जिहालत में गिरफ़्तार हैं. क़ुरैश के काफ़िरों ने मुसलमानों से कहा था कि आख़िरत में जो नेअमतें तुम्हें मिलेंगी वही हमें भी मिलेंगी. इसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि अच्छे बुरे, मूमिन और काफ़िर को बराबर कर देना हिकमत का तक़ाज़ा नहीं, काफ़िरों का ख़याल ग़लत है.

(३) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(४) लायक़ बेटा.

(५) अल्लाह तआला की तरफ़ और सारे वक़्त तस्बीह और ज़िक्र में मशग़ूल रहने वाला.

(६) ज़ोहर के बाद ऐसे घोड़े.

(७) ये हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिये हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में ज़ोहर के बाद पेश किये गए.

(८) यानी मैं उनसे अल्लाह की रज़ा और दीन की क़ुव्वत और ताईद के लिये महब्बत करता हूँ, मेरी महब्बत उनके साथ दुनिया की ग़रज़ से नहीं है. (तफ़सीरे कबीर)

(९) यानी नज़र से ग़ायब हो गए.

(१०) और इस हाथ फ़ेरने के कुछ कारण थे, एक तो घोड़ों की इज़्ज़त और बुज़ुर्गी का इज़्हार कि वो दुश्मन के मुक़ाबले में बेहतरीन मददगार हैं, दूसरे सल्तनत के कामों की ख़ुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम काम करने वाले मुस्तइद रहें, तीसरे यह कि आप घोड़ों के अहवाल और उनके रोगों और दोषों के ऊंचे माहिर थे. उनपर हाथ फैर कर उनकी हालत का इम्तिहान फ़रमाते थे. कुछ मुफ़स्सिरों ने इन आयतों की तफ़सीर में बहुत से ऐसे वैसे क़ौल लिख दिये जिन की सच्चाई पर कोई प्रमाण नहीं और वो केवल हिकायतें हैं जो मज़बूत प्रमाणों के सामने किसी तरह क़ुबूल करने के योग्य नहीं और यह तफ़सीर जो ज़िक्र की गई, यह इबारत क़ुरआन से बिल्कुल मुताबिक़ है. (तफ़सीरे कबीर)

(११) बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहो अन्हो की हदीस है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नव्वे बीबियों पर दौरा करूंगा. हर एक हामिला

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۙ﴿۴۹﴾ جَنّٰتِ
عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۚ﴿۵۰﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ
فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿۵۱﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿۵۲﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۵۳﴾ اِنَّ
هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۚ﴿۵۴﴾ هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ
لَشَرَّ مَاٰبٍ ۙ﴿۵۵﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۵۶﴾ هٰذَا ۙ
فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ۙ﴿۵۷﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ؕ﴿۵۸﴾
هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا
النَّارِ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ
لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا
فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿۶۱﴾ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى
رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا
اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

यह नसीहत है, और बेशक(१०) परहेज़गारों का ठिकाना भला﴾४९﴿ बसने के बाग़ उनके लिये सब दरवाज़े खुले हुए﴾५०﴿ उनमें तकिया लगाए(११) उनमें बहुत से मेवे और शराब मांगते हैं﴾५१﴿ और उनके पास वो बीबियाँ हैं कि अपने शौहर के सिवा और की तरफ़ आंख नहीं उठातीं एक उम्र की(१२)﴾५२﴿ यह है जिसका वादा दिया जाता है हिसाब के दिन﴾५३﴿ बेशक यह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म न होगा(१३)﴾५४﴿ उनको तो यह है(१४) और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना﴾५५﴿ जहन्नम कि उसमें जाएंगे तो क्या ही बुरा बिछौना(१५)﴾५६﴿ उनको यह है तो इसे चखें खौलता पानी और पीप(१६)﴾५७﴿ और इसी शक्ल के और जोड़े(१७)﴾५८﴿ उनसे कहा जाएगा यह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी(१८)﴾५९﴿ वो कहेंगे उनको खुली जगह न मिलियो, आग में तो उनको जाना ही है. वहाँ भी तंग जगह रहें, तावे (फ़रमांबरदार) बोले बल्कि तुम्हीं खुली जगह न मिलियो, यह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए(१९) तो क्या ही बुरा ठिकाना(२०)﴾६०﴿ वो बोले ऐ हमारे रब जो यह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना अज़ाब बढ़ा﴾६१﴿ और(२१) बोले हमें क्या हुआ हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे(२२)﴾६२﴿ क्या हमने उन्हें हंसी बना लिया(२३) या आँखें उनकी तरफ़ फिर गईं(२४)﴾६३﴿ बेशक यह ज़रूर हक़ है दोज़ख़ियों का

होगी और हर एक से ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला सवार पैदा होगा. मगर यह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से इन्शाअल्लाह न फ़रमाया (शायद हज़रत किसी ऐसे शग़ल में थे कि इसका ख़याल न रहा) तो कोई भी औरत गर्भवती न हुई सिवाए एक के और उसके भी अधूरा बच्चा पैदा हुआ. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इन्शाअल्लाह फ़रमाया होता तो उन सब औरतों के लड़के ही पैदा होते और वो ख़ुदा की राह में जिहाद करते. (बुख़ारी पारा तेरह, किताबुल अम्बिया)

(१२) यानी अधूरा बच्चा.

(१३) अल्लाह तआला की तरफ़ इस्तिग़फ़ार करके इन्शाअल्लाह कहने की भूल पर और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की बारगाह में.

(१४) इससे यह मक़सूद था कि ऐसा मुल्क आपके के लिये चमत्कार हो.

(१५) फ़रमाँबरदारी के तरीक़े से.

(१६) जो आपके हुक्म और मर्ज़ी के अनुसार अजीब इमारतें तामीर करता.

(१७) जो आपके लिये समन्दर के मोती निकालता. दुनिया में सब से पहले समन्दर से मोती निकालने वाले आप ही हैं.

(१८) सरकश शैतान भी आपके बस में कर दिये गए जिनको आप फ़साद से रोकने के लिये बेड़ियों और ज़ंजीरों में जकड़वा कर क़ैद करते थे.

(१९) जिस पर चाहे.

(२०) जिस किसी से चाहे यानी आप को देने और न देने का इख़्तियार दिया गया जैसी मर्ज़ी हो करें.

सूरए सॉद - चौथा रूकू

(१) जिस्म और माल में, इस से आप की बीमारी और उसकी सख़्तियाँ मुराद हैं. इस वाक़ए का तफ़सीली बयान सूरए अम्बिया के छटे रूकू में गुज़र चुका है.

(२) चुनांचे आपने ज़मीन में पावँ मारा और उससे मीठे पानी का एक चश्मा ज़ाहिर हुआ और आप से कहा गया.

اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا
اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ
عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى
اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ
طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا
لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ
مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ
اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ
نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ
رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾

منزل ٦

आपसी झगड़ा﴾६४﴿

पाँचवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ[१] मैं डर सुनाने वाला हूँ[२] और मअबूद कोई नहीं मगर एक अल्लाह सब पर ग़ालिब (सर्वोपरि)﴾६५﴿ मालिक आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है, इज़्ज़त वाला बड़ा बख़्शने वाला﴾६६﴿ तुम फ़रमाओ वह[३] बड़ी ख़बर है﴾६७﴿ तुम उससे ग़फ़लत में हो[४]﴾६८﴿ मुझे आलमे बाला की क्या ख़बर थी जब वो झगड़ते थे[५]﴾६९﴿ मुझे तो यही वही होती है कि मैं नहीं मगर रौशन डर सुनाने वाला[६] जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा[७]﴾७०﴿ फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं[८] और उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकूं[९] तो तुम उसके लिये सज्दे में गिरना﴾७१﴿ तो सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने कि कोई बाक़ी न रहा﴾७२﴿ मगर इब्लीस ने[१०] उसने घमण्ड किया और वह था ही काफ़िरों में[११]﴾७३﴿ फ़रमाया ऐ इबलीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने हाथों से बनाया क्या तुझे घमण्ड आ गया या तू था ही घमण्डियों में[१२]﴾७४﴿ बोला मैं उससे बेहतर हूँ[१३] तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से पैदा किया﴾७५﴿ फ़रमाया तो जन्नत से निकल जा कि तू रांदा गया[१४]﴾७६﴿ और बेशक तुझ पर मेरी लअनत है क़यामत तक[१५]﴾७७﴿ बोला ऐ मेरे रब ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि उठाए जाएं[१६]﴾७८﴿

(३) चुनांन्चे आप ने उससे पिया और ग़ुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी और बातिनी बीमारियाँ और तकलीफ़ें दूर हो गईं.

(४) चुनांन्चे रिवायत है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी अल्लाह तआला ने उसको ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़्ल और रहमत से उतने ही और अता फ़रमाए.

(५) अपनी बीबी को जिसको सौ ज़रबें मारने की क़सम खाई थी, देर से हाज़िर होने के कारण.

(६) यानी अय्यूब अलैहिस्सलाम.

(७) जिन्हें अल्लाह तआला ने इल्म और अमल की हिकमत अता फ़रमाई और अपनी पहचान और फ़रमाँबरदारी पर दृढ़ता अता की.

(८) यानी आख़िरत की कि वह लोगों को उसी की चाह दिलाते हैं और बहुतात से उसका ज़िक्र करते हैं . दुनिया की महब्बत ने उनके दिलों में जगह नहीं पाई.

(९) यानी उनके फ़ज़ाइल और उनके सब्र को, ताकि उनकी पाक ख़सलतों से लोग नेकियों का ज़ौक़ व शौक़ हासिल करें और ज़ुलकिफ़्ल की नबुव्वत में मतभेद है.

(१०) आख़िरत में.

(११) सजे हुए तख़्तों पर.

(१२) यानी सब उम्र में बराबर, ऐसे ही हुस्न व जवानी में आपस में महब्बत रखने वाले, न एक को दूसरे से बुग़्ज़, न रश्क, न हसद.

(१३) हमेशा बाक़ी रहेगा. वहाँ जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी. दुनिया की चीज़ों की तरह फ़ना और नेस्त नाबूद न होगी.

(१४) यानी ईमान वालों को.

(१५) भड़कने वाली आग कि वही फ़र्श होगी .

(१६) जो जहन्नमियों के जिस्मों और उनके सड़े हुए ज़ख़्मों और नापाकी की जगहों से बहेगी जलती बदबूदार.

(१७) तरह तरह के अज़ाब.

(१८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनके पीछे पीछे

फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है﴾७९﴿ उस जाने हुए वक़्त के दिन तक[17]﴾८०﴿ बोला तेरी इज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा﴾८१﴿ मगर जो उनमें तेरे चुने हुए बन्दे हैं﴾८२﴿ फ़रमाया तो सच यह है और मैं सच ही फ़रमाता हूँ﴾८३﴿ बेशक मैं ज़रूर जहन्नम भर दूंगा तुझसे[18] और उनमें से[19] जितने तेरी पैरवी करेंगे. सब से﴾८४﴿ तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं﴾८५﴿ वह तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत के लिये﴾८६﴿ और ज़रूर एक वक़्त के बाद तुम इसकी ख़बर जानोगे[20]﴾८७﴿

३९- सूरए ज़ुमर

सूरए ज़ुमर मक्का में उतरी, इसमें ७५ आयतें, आठ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]

किताब[2] उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत(बोध) वाले की तरफ़ से﴾१﴿ बेशक हमने तुम्हारी तरफ़[3] यह किताब हक़(सत्य) के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उसके बन्दे होकर﴾२﴿ हाँ ख़ालिस अल्लाह ही की बन्दगी है[4] और वो जिन्होंने उसके सिवा और वाली(सरपरस्त) बना लिये[5] कहते हैं हम तो उन्हें[6] सिर्फ़ इतनी बात के लिये पूजते हैं कि ये हमें अल्लाह के पास नज़्दीक कर दें, अल्लाह

उनके मानने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे ये तुम्हारे अनुयाइयों की फ़ौज है जो तुम्हारी तरह तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है.

(१९) कि तुम ने पहले कुफ़्र इख़्तियार किया और हमें उस राह पर चलाया.

(२०) यानी जहन्नम अत्यन्त बुरा ठिकाना है.

(२१) काफ़िरों के बड़े और सरदार.

(२२) यानी ग़रीब मुसलमानों को और उन्हें वो अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के कारण शरीर कहते थे और ग़रीब होने के कारण तुच्छ समझते थे. जब काफ़िर जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वो हमें नज़र क्यों नहीं आते.

(२३) और वास्तव में वो ऐसे न थे. दोज़ख़ में आए ही नहीं. हमारा उनके साथ ठठ्ठा करना और उनकी हंसी बनाना बातिल था.

(२४) इसलिये वो हमें नज़र न आए या ये मानी हैं कि उनकी तरफ़ से आँखें फिर गईं और दुनिया में हम उनके रूत्बे और बुज़ुर्गी को न देख सके.

सूरए सॉद - पाँचवां रूकू

(१) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्के के काफ़िरों से.

(२) तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाता हूँ.

(३) यानी क़ुरआन या क़यामत या मेरा डराने वाला रसूल होना या अल्लाह तआला का वहदहू ला शरीक लहू होना.

(४) कि मुझ पर ईमान नहीं लाते और क़ुरआन शरीफ़ और मेरे दीन को नहीं मानते.

(५) यानी फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाब में, यह हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सच्चे नबी होने की एक दलील है. मुद्दआ यह है कि आलमे बाला में फ़रिश्तों का हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाब में सवाल जवाब करना मूझे क्या मालूम होता, अगर में नबी न होता. उसकी ख़बर देना नबुव्वत और मेरे पास वही आने की दलील है.

(६) दारिमी और तिरमिज़ी की हदीसों में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन हालात में अपने इज़्ज़त और जलाल वाले रब के दीदार से मूशर्रफ़ हुआ. (हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में यह वाक़िआ ख़्वाब का है) हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद, आलमे बाला

زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ اَرَادَ
اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۙ
سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَي النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ
النَّهَارَ عَلَي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ
يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ
مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ
لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۭ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ
اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۭ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى
تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۣ
وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۭ

उनमें फ़ैसला कर देगा उस बात का जिसमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं(७) बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूठा बड़ा नाशुक्रा हो(८) (३) अल्लाह अपने लिये बच्चा बनाता तो अपनी मख़लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता(९) पाकी है उसे(१०) वही है एक अल्लाह(११) सब पर ग़ालिब (४) उसने आसमान और ज़मीन हक़ बनाए रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है(१२) और उसने सूरज और चांद को काम में लगाया हर एक एक ठहराई मीआद के लिये चलता है(१३) सुनता है वही इज़्ज़त वाला बख़्शने वाला है (५) उसने तुम्हें एक जान से बनाया(१४) फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया(१५) और तुम्हारे लिये चौपायों में से(१६) आठ जोड़े उतारे(१७) तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और तरह(१८) तीन अंधेरियों में(१९) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है, उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं फिर कहां फिरे जाते हो(२०) (६) अगर तुम नाशुक्री करो तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ है तुम से(२१) और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं, और अगर शुक्र करो तो इसे तुम्हारे लिए पसंद

के फ़रिश्ते किस बहस में हैं . मैंने अर्ज़ किया यारब तू ही दाना है. हुज़ूर ने फ़रमाया फिर रब्बुल इज़्ज़त ने अपना दस्ते रहमतो करम मेरे दोनों शानों के बीच रखा और मैं ने उसके फ़ैज़ का असर अपने दिल में पाया तो आसमान व ज़मीन की सारी चीज़ें मेरे इल्म में आगई. फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया या मुहम्मद, क्या तुम जानते कि आलमे बाला के फ़रिश्तें किस चीज़ में बहस कर रहे हैं. मैं ने अर्ज़ किया, हाँ ऐ रब मैं जानता हूँ वह कफ़्फ़ारों में बहस कर रहे हैं और कफ़्फ़ारे ये हैं नमाज़ों के बाद मस्जिद में ठहरना और पैदल जमाअतों के लिये जाना और जिस वक़्त सर्दी वग़ैरह के कारण पानी का इस्तेमाल नागवार हो उस वक़्त अच्छी तरह वुज़ू करना, जिसने यह किया उसकी ज़िन्दगी भी बेहतर, मौत भी बेहतर. और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था. और फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! नमाज़ के बाद यह दुआ किया करो "अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका फ़िअलल ख़ैराते व तर्कल मुन्कराते व हुब्बल मसाकीने व इज़ा अरदता बि इबादिका फ़ित-नतन फ़क़बिदनी इलैका ग़ैरा मफ़्तूनिन". कुछ रिवायतों में यह है कि हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मुझे हर चीज़ रौशन हो गई और मैंने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ पूरब और पच्छिम में है सब मैं ने जान लिया. इमाम अल्लामा अलाऊद्दीन अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम बग़दादी जो ख़ाज़िन के नाम से जाने जाते हैं, अपनी तफ़सीर में इसके मानी ये बयान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सीनए मुबारक खोल दिया और क़ल्बे शरीफ़ मुनव्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सब की पहचान आप को अता कर दी यहाँ तक कि आपने नेअमत और मअरिफ़त की सर्दी अपने क़ल्बे मुबारक में पाई और जब क़ल्बे शरीफ़ मुनव्वर हो गया और सीनए पाक खुल गया तो जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीनों में है अल्लाह तआला के दिये से जान लिया.

(७) यानी आदम को पैदा करूंगा.

(८) यानी उसकी पैदायश तमाम कर दूँ.

(९) और उसको ज़िन्दगी अता कर दूँ.

(१०) सज्दा न किया.

(११) यानी अल्लाह के इल्म में.

(१२) यानी उस क़ौम में से जिनका शेवा ही घमण्ड है.

(१३) इससे उसकी मुराद यह थी कि अगर आदम आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं उन्हें सज्दा न करता, तो फिर उनसे बेहतर होकर उन्हें कैसे सिजदा करूं.

(१४) अपनी सरकशी और नाफ़रमानी और घमण्ड के कारण, फिर अल्लाह तआला ने उसकी सूरत बदल दी. वह पहले हसीन था, बदशक्ल काला मुंह कर दिया गया और उसकी नूरानियत सल्ब कर ली गई.

(१५) और क़यामत के बाद लानत भी और तरह तरह के अज़ाब भी.

(१६) आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सन्तान अपने फ़ना होने के बाद जज़ा के लिये, और इससे उसकी मुराद यह थी कि वह इन्सानों को गुमराह करने के लिये छूट पाए और उनसे अपना बुग्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्योंकि उठने के बाद फिर मौत नहीं.
(१७) यानी सूर के पहले फूंके जाने तक जिसको ख़ल्क़ की फ़ना के लिये निर्धारित फ़रमाया गया.
(१९) यानी इन्सानों में से.
(२०) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मौत के बाद, और एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन.

३९ - सूरए ज़ुमर - पहला रूकू

(१) सूरए ज़ुमर मक्के में उतरी सिवा आयत "क़ुल या इबादियल लज़ीना असरफ़ू" और आयत "अल्लाहो नज़्ज़ला अहसनल हदीसे" के. इस सूरत में आठ रूकू, पछहत्तर आयतें, एक हज़ार एक सौ बहत्तर कलिमे और चार हज़ार नौ सौ आठ अक्षर है.
(२) किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है.
(३) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(४) उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं.
(५) मअबूद ठहरा लिये. मुराद इससे बुत-परस्त हैं.
(६) यानी बुतों को.
(७) ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर.
(८) झूटा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआला से नज़्दीक करने वाला बताए और ख़ुदा के लिये औलाद ठहराए और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजे.
(९) यानी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआला के लिये औलाद मुमकिन होती तो वह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि यह प्रस्ताव काफ़िरों पर छोड़ता कि वो जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद क़रार दें.
(१०) औलाद से और हर उस चीज़ से जो उसकी शाने अक़दस के लायक़ नहीं.
(११) न उसका कोई शरीक न उसकी कोई औलाद.
(१२) यानी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्से को छुपाता है और कभी दिन की रौशनी से रात के हिस्से को. मुराद यह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात घटा कर दिन को ज़्यादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटते घटते दस घण्टे का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घण्टे का हो जाता है.
(१३) यानी क़यामत तक वह अपने निर्धारित निज़ाम पर चलते रहेंगे.
(१४) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से.
(१५) यानी हज़रत हव्वा को.
(१६) यानी ऊंट, गाय, बकरी, भेड़ से.
(१७) यानी पैदा किये जोड़ों से, मुराद नर और मादा हैं.
(१८) यानी नुत्फ़ा, फिर बँधा हुआ ख़ून, फिर गोश्त का टुकड़ा.
(१९) एक अंधेरी पेट की, दसूरी गर्भ की, तीसरी बच्चे दानी की.
(२०) और सच्चाई के रास्ते से दूर होते हो कि उसकी इबादत छोड़ कर ग़ैर की इबादत करते हो.
(२१) यानी तुम्हारी ताअत व इबादत से और तुम ही उसके मोहताज हो, ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़ा है, और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही नुक़सान है.

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ
دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ
نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ
اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ
اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا
رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ
وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ ع
قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۗ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَاَرْضُ اللّٰهِ
وَاسِعَةٌ ۗ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

منزل ٦

फ़रमाता है[२२] और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी[२३] फिर तुम्हें अपने रब ही की तरफ़ फिरना है[२४] तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे[२५] बेशक वह दिलों की बात जानता है﴾७﴿ और जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है[२६] अपने रब को पुकारता है उसी तरफ़ झुका हुआ[२७] फिर जब अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई नअेमत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था[२८] और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराने लगता है[२९] ताकि उसकी राह से बहका दे, तुम फ़रमाओ[३०] थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले[३१] बेशक तू दोज़ख़ियों में है﴾८﴿ क्या वह जिसे फ़रमांबरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद और क़याम में[३२] आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए[३३] क्या वह नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान, नसीहत तो वही मानते हैं जो अक़्ल वाले हैं﴾९﴿

दूसरा रूकू

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्होंने भलाई की[१] उनके लिये दुनिया में भलाई है[२] और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है[३] साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बेगिनती[४]﴾१०﴿

(२२) कि वह तुम्हारी कामयाबी का कारण है. उसपर तुम्हें सवाब देगा और जन्नत अता फ़रमायएगा.
(२३) यानी कोई व्यक्ति दूसरे के गुनाह में न पकड़ा जाएगा.
(२४) आख़िरत में.
(२५) दुनिया में और उसकी तुम्हें जज़ा देगा.
(२६) यहाँ आदमी से निरा काफ़िर या ख़ास अबू जहल या उतबा बिन रबीआ मुराद है.
(२७) उसी से फ़रियाद करता है.
(२८) यानी उस सख़्ती और तकलीफ़ को भुला देता है जिसके लिये अल्लाह से फ़रियाद की थी.
(२९) यानी हाजत की पूर्ति के बाद फिर बुत परस्ती में पड़ जाता है.
(३०) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उस काफ़िर से.
(३१) और दुनिया की ज़िन्दगी के दिन पूरे कर ले.
(३२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह आयत हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हुमा की शान में नाज़िल हुई और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह आयत हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल यह है कि हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अम्मार और हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हुम के हक़ में उतरी. इस आयत से साबित हुआ कि रात के नफ़्ल और इबादत दिन के नफ़्लों से बढ़कर हैं. इसकी वजह तो यह है कि रात का अमल पोशीदा होता है इसलिये वह रिया से बहुत दूर होता है. दूसरे यह कि दुनिया के कारोबार बन्द होते हैं इसलिये दिल दिन की अपेक्षा बहुत फ़ारिग़ होता है और अल्लाह की तरफ़ तवज्जह और एकाग्रता दिन से ज़्यादा रात में मयस्सर आती है. तीसरे, रात चूंकि राहत और नींद का समय होता है इसलिये उसमें जागना नफ़्स को कठिन परिश्रम में डालता है तो सवाब भी उसका ज़्यादा होगा.
(३३) इस से साबित हुआ कि ईमान वाले के लिये लाज़िम है कि वह डर और उम्मीद के बीच हो. अपने कर्मों की कमी पर नज़र करके अज़ाब से डरता रहे और अल्लाह तआला की रहमत का उम्मीदवार रहे. दुनिया में बिलकुल निडर होना या अल्लाह तआला की रहमत से बिलकुल मायूस होना, ये दोनों क़ुरआने पाक में काफ़िरों की हालतें बताई गई हैं. अल्लाह तआला फ़रमाता है **"फ़ला यअमनो मकरल्लाहे इल्लल क़ौमुल ख़ासिरून"** यानी तो अल्लाह की छुपी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले (सूरए अअराफ़, आयत ९९), और इरशाद है **"ला यएसो मिन रौहिल्लाहे इल्लल क़ौमुल काफ़िरून"** यानी बेशक अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद नहीं

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَ اَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾

منزل ۶

तुम फ़रमाओ[५] मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूं निरा उसका बन्दा होकर﴿११﴾ और मुझे हुक्म है कि मैं सबसे पहले गर्दन रखूं[६]﴿१२﴾ तुम फ़रमाओ फ़र्ज़ करो अगर मुझसे नाफ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है[७]﴿१३﴾ तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ निरा उसका बन्दा होकर﴿१४﴾ तो तुम उसके सिवा जिसे चाहो पूजो[८] तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने घर वाले क़यामत के दिन हार बैठे[९] हां हां यही खुली हार है﴿१५﴾ उन के ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़[१०] इससे अल्लाह डराता है अपने बन्दों को[११] ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो[१२]﴿१६﴾ और वो जो बुतों की पूजा से बचे और अल्लाह की तरफ़ रूजू हुए उन्हीं के लिये ख़ुशख़बरी है तो ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को﴿१७﴾ जो कान लगाकर बात सुनें फिर उसके बेहतर पर चलें[१३] ये हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और ये हैं जिनको अक़्ल है[१४]﴿१८﴾

होते मगर काफ़िर लोग. (सूरए यूसुफ़, आयत ८७)

सूरए ज़ुमर - दूसरा रूकू

(१) फ़रमाँबरदारी की और अच्छे कर्म किये.

(२) यानी सेहत और आफ़ियत.

(३) इसमें हिजरत की तरग़ीब है कि जिस शहर में गुनाहों की ज़ियादती हो और वहाँ के रहने वाले आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ायम रहना दुशवार हो जाए, चाहिये कि उस जगह को छोड़ दे और वहाँ से हिजरत कर जाए. यह आयत हबशा के मुहाजिरों के हक़ में उतरी और यह भी कहा गया है कि हज़रत जअफ़र बिन अबी तालिब और उनके साथियों के हक़ में उतरी जिन्हों ने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिजरत की और अपने दीन पर क़ायम रहे, उसको छोड़ना गवारा न किया.

(४) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़न किया जाएगा, सिवाय सब्र करने वालों के कि उन्हें बेअन्दाज़ा और बेहिसाब दिया जाएगा और यह भी रिवायत है कि मुसीबत और बला वाले लोग हाज़िर किये जाएंगे, न उन के लिये मीज़ान क़ायम की जाए, न उनके लिये दफ़्तर खोले जाएं. उन पर अज्र और सवाब की बेहिसाब बारिश होगी, यहाँ तक कि दुनिया में आफ़ियत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देखकर आरज़ू करेंगे कि काश वो मुसीबत वालों में से होते और उनके जिस्म क़ैंचियों से काटे गए होते कि आज यह सब्र का फल पाते.

(५) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(६) और फ़रमाँबरदार और ख़ुलूस वालों में मुक़द्दम और साबिक़ यानी आगे और पीछे हों. अल्लाह तआला ने पहले इख़्लास का हुक्म दिया जो दिल का अमल है फिर फ़रमाँबरदारी यानी अंगों के कामों का. चूंकि शरीअत के अहकाम रसूल से हासिल होते हैं वही उनके पहुंचाने वाले हैं तो वो उनके शुरू करने में सब से मुक़द्दम और अव्वल हुए. अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह हुक्म देकर तम्बीह की कि दूसरों पर इसकी पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरग़ीब के लिये नबी अलैहिस्सलाम को यह हुक्म दिया गया.

(७) क़ुरैश के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात और उज़्ज़ा की पूजा करते हैं उनके रद में यह आयत उतरी.

(८) हिदायत और तम्बीह के तरीक़े पर फ़रमाया.

(९) यानी गुमराही इख़्तियार करके हमेशा के लिये जहन्नम के मुस्तहिक़ होगए और जन्नत की नेअमतों से मेहरूम हो गए जो ईमान

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۚ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ
مَنْ فِي النَّارِ ۝١٩ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ
وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝٢٠ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ
يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي
الْأَلْبَابِ ۝٢١ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ
مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝٢٢ اللَّهُ
نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُتَشَابِهًا مَثَانِيَ تَقْشَعِرُّ
مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ
وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ

منزل ٦

तो क्या वह जिसपर अज़ाब की बात साबित हो चुकी निजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत देकर आग के मुस्तहिक़ को बचा लोगे[१५] (१९) लेकिन वह जो अपने रब से डरे[१६] उनके लिये बालाख़ाने हैं उनपर बालाख़ाने बने[१७] उनके नीचे नेहरें बहें, अल्लाह का वादा, अल्लाह वादा ख़िलाफ़ नहीं करता (२०) क्या तूने न देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे ज़मीन में चश्मे बनाए फिर उससे खेती निकालता है कई रंगत की[१८] फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वह[१९] पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है. बेशक इसमें ध्यान की बात है अक़्लमन्दों को[२०] (२१)

तीसरा रूकू

तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया[१] तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है[२] उस जैसा हो जाएगा जो संगदिल है तो ख़राबी है उनकी जिनके दिल ख़ुदा की याद की तरफ़ से सख़्त हो गए हैं[३] वो खुली गुमराही में हैं (२२) अल्लाह ने उतारी सबसे अच्छी किताब[४] कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है[५] दोहरे बयान वाली[६] इससे बाल खड़े होते हैं उनके बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उनकी खालें और दिल नर्म पड़ते हैं ख़ुदा की याद की तरफ़ रग़बत में[७] यह अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए इससे जिसे चाहे, और जिसे अल्लाह

लाने पर उन्हें मिलतीं.
(१०) यानी हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है.
(११) कि ईमान लाएं और मना की हुई बातों से बचें.
(१२) वह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का कारण हो.
(१३) जिसमें उनकी भलाई हो.
(१४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ईमान लाए तो आपके पास हज़रत उस्मान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और तलहा और ज़ुबैर और सअद बिन अबी वक़्क़ास और सईद बिन ज़ैद आए और उनसे पूछा. उन्होंने अपने ईमान की ख़बर दी ये हज़रत भी सुनकर ईमान ले आए. इन के हक़ में यह आयत उतरी ''फ़बश्शिर इबादिल्लज़ीना'' ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को जो कान लगाकर बात सुनें ...
(१५) जो अज़ली बदबख़्त और अल्लाह के इल्म में जहन्नमी है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे अबू लहब और उसके लड़के हैं .
(१६) और उन्होंने अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी की.
(१७) यानी जन्नत की ऊंची मंज़िलें जिनके ऊपर और बलन्द मंज़िलें हैं.
(१८) पीली हरी सुर्ख़ सफेद, क़िस्म क़िस्म की, गेहूँ जौ और तरह तरह के ग़ल्ले.
(१९) हरी भरी होने के बाद.
(२०) जो उससे अल्लाह तआला की वहदानियत और क़ुदरत पर दलीलें कायम करते हैं.

सूरए ज़ुमर - तीसरा रूकू

(१) और उसको हक़ क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई.
(२) यानी यक़ीन और हिदायत पर. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सीने का खुलना किस तरह होता है फ़रमाया कि जब नूर दिल में दाख़िल होता है तो वह खुलता है और उसमें फैलावा होता है. सहाबा ने अर्ज़ किया इसकी निशानी क्या है. फ़रमाया, जन्नतों की दुनिया की तरफ़ मुतवज्जह होना और

مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝
أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ
وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ كَذَّبَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُونَ ۝ فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ
ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي
عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا
فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۖ
هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ۝ ثُمَّ
إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝

منزل

गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं﴾२३﴿ तो क्या वह जो क़यामत के दिन बुरे अज़ाब की ढाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा[८] निजात वाले की तरह हो जाएगा[९] और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो[१०]﴾२४﴿ उनसे अगलों ने झुटलाया[११] तो उन्हें अज़ाब आया जहाँ से उन्हें ख़बर न थी[१२]﴾२५﴿ और अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई का मज़ा चखाया[१३] और बेशक आख़िरत का अज़ाब सबसे बड़ा, क्या अच्छा था अगर वो जानते[१४]﴾२६﴿ और बेशक हमने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी तरह उन्हें ध्यान हो[१५]﴾२७﴿ अरबी ज़बान का क़ुरआन[१६] जिसमें असलन कजी नहीं[१७] कि कहीं वो डरें[१८]﴾२८﴿ अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है[१९] एक ग़ुलाम में कई बदख़ू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का, क्या उन दोनों का हाल एक सा है[२०] सब ख़ूबियाँ अल्लाह को[२१] बल्कि उनके अक्सर नहीं जानते[२२]﴾२९﴿ बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उनको भी मरना है[२३]﴾३०﴿ फिर तुम क़यामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे[२४]﴾३१﴿

दुनिया से दूर रहना और मौत के लिये उसके आने से पहले तैयार होना.

(३) नफ़्स जब ख़बीस होता है तो सच्चाई क़ुबूल करने से उस को बहुत दूरी होजाती है और अल्लाह का ज़िक्र सुनने से उसकी सख़्ती और दिल की कटुता बढ़ती है जैसे कि सूरज की गर्मी से मोम नर्म हो जाता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही अल्लाह के ज़िक्र से ईमान वालों के दिल नर्म होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है. इस आयत से उन लोगों को इब्रत पकड़नी चाहिये जिन्हों ने अल्लाह के ज़िक्र को रोकना अपना तरीक़ा बना लिया है. वो सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मना करते हैं. नमाज़ों के बाद अल्लाह का ज़िक्र करने वालों को भी रोकते हैं और मना करते हैं. ईसाले सवाब के लिये क़ुरआन शरीफ़ और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिदअती बताते हैं और उन ज़िक्र की मेहफ़िलों से बहुत घबराते हैं. अल्लाह तआला हिदायत दे.

(४) क़ुरआन शरीफ़, जो इबारत में ऐसा फ़सीह बलीग़ कि कोई कलाम उससे कुछ निस्बत ही नहीं रख सकता. मज़मून बहुत मन भावन जब कि न कविता है न शेअर. निराले ही अन्दाज़ पर आधारित है और मानी में ऐसा ऊंचे दर्जे का कि तमाम उलूम का जमा करने वाला और अल्लाह की पहचान जैसी महान नेअमत की तरफ़ ले जाने वाला.

(५) हुस्नो ख़ूबी में.

(६) कि उसमें ख़ुशख़बरी के साथ चेतावनी, और हुक्म के साथ मनाही, और सूचनाओं के साथ आदेश मौजूद हैं.

(७) हज़रत क़तादह रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि ये अल्लाह के वलियों की विशेषता है कि अल्लाह के ज़िक्र से उनके बाल खड़े होते हैं, शरीर काँपते हैं और दिल चैन पाते हैं.

(८) वह काफ़िर है जिसके हाथ गर्दन के साथ मिलाकर बाँध दिये जाएंगे और उसकी गर्दन में गन्धक का एक जलता हुआ पहाड़ पड़ा होगा जो उसके चेहरे को भूने डालता होगा . इस हाल से औंधा करके जहन्नम की आग में गिराया जाएगा.

(९) यानी उस मूमिन की तरह जो अज़ाब से अम्न और हिफ़ाज़त में हो.

(१०) यानी दुनिया में जो कुफ़्र और सरकशी इख़्तियार की थी अब उसका वबाल और अज़ाब बर्दाश्त करो.

(११) यानी मक्के के काफ़िरों से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुटलाया.

(१२) अज़ाब आने का ख़तरा भी न था, ग़फ़लत में पड़े हुए थे.

(१३) किसी क़ौम की सूरतें बिगाड़ीं, किसी को ज़मीन में धंसाया.

(१४) और ईमान लेआते, झुटलाते नहीं.

(१५) और वो नसीहत क़ुबूल करें.

(१६) ऐसा फ़सीह जिसने फ़सीह और बलीग़ लोगों को लाचार कर दिया.

(१७) यानी दोष और इख़्तिलाफ़ से पाक.

(१८) और कुफ़्र और झुटलाने से बाज़ आएं.
(१९) मुश्रिक और एक ख़ुदा को मानने वाले की.
(२०) यानी एक जमाअत का ग़ुलाम काफ़ी परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी तरफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है वह हैरान है कि किस का हुक्म माने और किस तरह आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस ग़ुलाम को जब कोई हाजत पेश हो तो किस आक़ा से कहे. उस ग़ुलाम के विपरीत जिसका एक ही स्वामी हो, वह उसकी ख़िदमत करके उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई हाजत पेश आए तो उसी से अर्ज़ कर सकता है उसको कोई परेशानी पेश नहीं आती. यह हाल मूमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है उसी की इबादत करता है और मुश्रिक जमाअत के ग़ुलाम की तरह है कि उसने बहुत से मअबूद क़रार दे दिये हैं.
(२१) जो अकेला है उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.
(२२) कि उसके सिवा कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं.
(२३) इसमें काफ़िरों का रद है जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले होकर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना मूर्खता है. काफ़िर तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और नबियों की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ज़िन्दगी अता फ़रमाई जाती है इसपर बहुत सी शरई दलीलें क़ायम हैं.
(२४) नबी उम्मत पर तर्क क़ायम करेंगे कि उन्होंने रिसालत की तबलीग़ की और दीन की दावत देने में अनथक कोशिश की और काफ़िर बेकार के बहाने पेश करेंगे. यह भी कहा गया है कि यह आम तरह का झगड़ना है कि लोग सांसारिक अधिकारों के लिये झगड़ेंगे और हर एक अपना हक़ तलब करेगा.

पारा तेईस समाप्त

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ
جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِىْ
جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ۝
لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ
وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ۝ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ
اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ
ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِىْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ
قُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ

منزل ٦

चौबीसवां पारा - फ़मन अज़्लमो
(सूरए ज़ुमर जारी)
चौथा रूकू

तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[१] और हक़(सत्य) को झुटलाए[२] जब उसके पास आए, क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं﴾३२﴿ और वो जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए[३] और वो जिन्होंने उनकी तस्दीक़(पुष्टि) की[४] यही डर वाले हैं﴾३३﴿ उनके लिये है जो वो चाहें अपने रब के पास, नेकों का यही सिला है﴾३४﴿ ताकि अल्लाह उनसे उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्होंने किया और उन्हें उनके सवाब का सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर[५] जो वो करते थे ﴾३५﴿ क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नहीं[६], और तुम्हें डराते हैं उसके सिवा औरों से[७] और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसकी कोई हिदायत करने वाला नहीं﴾३६﴿ और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं, क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने वाला नहीं?[८]﴾३७﴿ और अगर तुम उनसे पूछो आसमान और ज़मीन किसने बनाए? तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने[९], तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[१०] अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे[११] तो क्या वो उसकी भेजी तकलीफ़ टाल देंगे या वह मुझ पर मेहर (रहम) फ़रमाना चाहे तो क्या वो उसकी मेहर को रोक रखेंगे[१२] तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है[१३], भरोसे वाले उसपर भरोसा करें﴾३८﴿ तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम अपनी जगह

सूरए ज़ुमर - चौथा रूकू

(१) और उसके लिये शरीक और औलाद क़रार दे.

(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ को या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत को.

(३) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, जो तौहीदे इलाही लाए.

(४) यानी हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहो अन्हो या सारे मूमिन लोग.

(५) यानी उन की बुराईयों पर पकड़ न करे और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए.

(६) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये, और एक क़िरअत में "इबादहू" भी आया है. उस सूरत में नबी अलैहमुस्सलाम मुराद हैं, जिन के साथ उनकी क़ौम ने ईज़ा रसानी के इरादे किये. अल्लाह तआला ने उन्हें दुश्मनों की शरारत से मेहफ़ूज़ रखा और उनकी मदद फ़रमाई.

(७) यानी बुतों से. वाक़िआ यह था कि अरब के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को डराना चाहा और आपसे कहा कि आप हमारे मअबूदों यानी बुतों की बुराइयाँ बयान करने से बाज़ आइये वरना वो आप को नुक़सान पहुंचाएंगे, हलाक कर देंगे, या अक़्ल को ख़राब कर देंगे.

(८) बेशक वह अपने दुश्मनों से बदला लेता है.

(९) यानी ये मुश्रिक लोग हिक्मत, क़ुदरत और इल्म वाले ख़ुदा की हस्ती को तो मानते हैं और यह बात तमाम ख़ल्क़ के नज़्दीक मुसल्लम है और ख़ल्क़ की फ़ितरत इसकी गवाह है और जो व्यक्ति आसमान और ज़मीन के चमत्कारों में नज़र करे उसको यक़ीनी तौर पर मालूम हो जाता है कि ये मौजूदात एक क़ादिर हकीम की बनाई हुई हैं. अल्लाह तआला अपने नबी अलैहिस्सलाम को हुक्म देता है कि आप इन मुश्रिकों पर हुज्जत क़ायम कीजिये चुनांचे फ़रमाता है.

اعملوا على مكانتكم اني عامل فسوف تعلمون ﴿٣٩﴾ من
يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ﴿٤٠﴾ انا
انزلنا عليك الكتب للناس بالحق فمن اهتدى
فلنفسه ومن ضل فانما يضل عليها وما انت
عليهم بوكيل ﴿٤١﴾ الله يتوفى الانفس حين موتها و
التي لم تمت في منامها فيمسك التي قضى عليها
الموت ويرسل الاخرى الى اجل مسمى ان في ذلك
لايت لقوم يتفكرون ﴿٤٢﴾ ام اتخذوا من دون الله
شفعاء قل اولو كانوا لا يملكون شيئا ولا يعقلون ﴿٤٣﴾
قل لله الشفاعة جميعا له ملك السموت والارض
ثم اليه ترجعون ﴿٤٤﴾ واذا ذكر الله وحده اشمازت
قلوب الذين لا يؤمنون بالاخرة واذا ذكر الذين
من دونه اذا هم يستبشرون ﴿٤٥﴾ قل اللهم فاطر السموت

काम किये जाओ(१४) मैं अपना काम करता हूँ(१५) तो आगे जान जाओगे﴾३९﴿ किस पर आता है वह अज़ाब कि उसे रूस्वा करेगा(१६) और किस पर उतरता है अज़ाब कि रह पड़ेगा(१७)﴾४०﴿ बेशक हमने तुम पर यह किताब लोगों की हिदायत को, हक़ के साथ उतारी(१८) तो जिसने राह पाई तो अपने भले को(१९), और जो बहका वह अपने ही बुरे को बहका(२०) और तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार नहीं (२१)﴾४१﴿

पाँचवां रूकू

अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उनकी मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उनके सोते में. फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है(१) और दूसरी(२) एक निश्चित मीआद तक छोड़ देता है(३) बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं सोचने वालों के लिये(४)﴾४२﴿ क्या उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं(५) तुम फ़रमाओ क्या अगरचे वो किसी चीज़ के मालिक न हों(६) और न अक़्ल रखें﴾४३﴿ तुम फ़रमाओ शफ़ाअत तो सब अल्लाह के हाथ में है(७) उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ पलटना है(८)﴾४४﴿ और जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उनके जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते(९), और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र होता है(१०) जभी वो ख़ुशियाँ मनाते हैं﴾४५﴿ तुम अर्ज़ करो ऐ अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, निहाँ(छुपे हुए) और अयाँ(ज़ाहिर) के

(१०) यानी बुतों को, यह भी तो देखो कि वो कुछ भी क़ुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं.
(११) किसी तरह की बीमारी की या दुष्काल की या नादारी की या और कोई.
(१२) जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुश्रिकों से यह सवाल फ़रमाया तो वो लाजवाब हुए और साकित रह गए अब हुज्जत तमाम हो गई और उनकी इस ख़मोशी वाली सहमति से साबित हो गया कि बुत मात्र बेक़ुदरत हैं, न कोई नफ़ा पहुंचा सकते हैं, न कुछ हानि. उनको पूजना निरी जिहालत है. इसलिये अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फ़रमाया.
(१३) मेरा उसी पर भरोसा है और जिसका अल्लाह तआला हो वह किसी से भी नहीं डरता. तुम जो मुझे बुत जैसी बेक़ुदरत व बेइख़्तियार चीज़ों से डराते हो, यह तुम्हारी बहुत ही मूर्खता और जिहालत है.
(१४) और जो जो छलकपट और बहाने तुम से हो सकें, मेरी दुश्मनी में, सब ही कर गुज़रो.
(१५) जिसपर मामूर हूँ, यानी दीन का क़ायम करना और अल्लाह तआला मेरा मददगार है और उसी पर मेरा भरोसा है.
(१६) चुनांन्चे बद्र के दिन वो रूस्वाई के अज़ाब में जकड़े गए.
(१७) यानी हमेशा होगा और वह जहन्नम का अज़ाब है.
(१८) ताकि उससे हिदायत हासिल करें.
(१९) कि इस राह पाने का नफ़ा वही पाएगा.
(२०) उसकी गुमराही का ज़रर और वबाल उसी पर पड़ेगा.
(२१) तुम से उनके गुनाहों की पकड़ न की जाएगी.

सूरए ज़ुमर - पाँचवां रूकू

(१) यानी उस जान को उसके जिस्म की तरफ़ वापस नहीं करता.
(२) जिसकी मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई, उसको ---
(३) यानी उसकी मौत के वक़्त तक.

وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا
بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا
كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ
الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ؗ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ
اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ
وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ
وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

منزل ٦

जानने वाले, तू अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ रखते थे[११] ﴾४६﴿ और अगर ज़ालिमों के लिये होता जो कुछ ज़मीन में है सब और उसके साथ उस जैसा[१२] तो ये सब छुड़ाई (छुड़ाने) में देते क़यामत के रोज़ के बड़े अज़ाब से[१३] और उन्हें अल्लाह की तरफ़ से वह बात ज़ाहिर हुई जो उनके ख़याल में न थी[१४] ﴾४७﴿ और उनपर अपनी कमाई हुई बुराइयां खुल गईं[१५] और उनपर आ पड़ा वह जिसकी हंसी बनाते थे[१६] ﴾४८﴿ फिर जब आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई नेअमत अता फ़रमाएं, कहता है यह तो मुझे एक इल्म की बदौलत मिली है[१७], बल्कि वह तो आज़माइश है[१८] मगर उनमें बहुतों को इल्म नहीं[१९] ﴾४९﴿ उनसे अगले भी ऐसे ही कह चुके[२०] तो उनका कमाया उनके कुछ काम न आया ﴾५०﴿ तो उनपर पड़ गईं उनकी कमाइयों की बुराइयां[२१] और वो जो उनमें ज़ालिम हैं, बहुत जल्द उनपर पड़ेंगी उनकी कमाइयों की बुराइयां और वो क़ाबू से नहीं निकल सकते[२२] ﴾५१﴿ क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिसके लिये चाहे और तंग फ़रमाता है, बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये ﴾५२﴿

(४) जो सोचें और समझें कि जो इसपर क़ादिर है वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.
(५) यानी बुत, जिनके बारे में वो कहते थे कि ये अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ या सिफ़ारिशी हैं.
(६) न शफ़ाअत के न और किसी चीज़ के.
(७) जो इसका माज़ून हो वही शफ़ाअत कर सकता है और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअत का इज़्न देता है. बुतों को उसने शफ़ीअ (सिफ़ारिशी) नहीं बनाया और इबादत तो ख़ुदा के सिवा किसी की भी जायज़ नहीं, शफ़ीअ हो या न हो.
(८) आख़िरत में.
(९) और वो बहुत तंग दिल और परेशान होते हैं और नागवारी का असर उनके चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है.
(१०) यानी बुतों का.
(११) यानी दीन के काम में . इब्ने मुसैयब से नक़्ल है कि यह आयत पढ़कर जो दुआ मांगी जाए, क़ुबूल होती है.
(१२) यानी अगर फ़र्ज़ किया जाए कि काफ़िर सारी दुनिया के माल और ज़ख़ीरों के मालिक होते और इतना ही और भी उनके क़ब्ज़े में होता.
(१३) कि किसी तरह ये माल देकर उन्हें इस भारी अज़ाब से छुटकारा मिल जाए.
(१४) यानी ऐसे ऐसे सख़्त अज़ाब जिनका उन्हें ख़याल भी न था. इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि वो गुमान करते होंगे कि उनके पास नेकियां हैं और जब कर्मों का लेखा खुलेगा तो बुराईयाँ और गुनाह ज़ाहिर होंगे.
(१५) जो उन्हों ने दुनिया में की थीं. अल्लाह तआला के साथ शरीक करना और उसके दोस्तों पर ज़ुल्म करना वग़ैरह.
(१६) यानी नबीये करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ख़बर देने पर वो जिस अज़ाब की हंसी बनाया करते थे, वह उतर गया और उसमें घिर गए.
(१७) यानी मैं मआश यानी रोज़ी का जो इल्म रखता हूँ उसके ज़रिये से मैं ने यह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था.
(१८) यानी यह नेअमत अल्लाह तआला की तरफ़ से परीक्षा और आज़माइश है कि बन्दा उसपर शुक्र करता है या नाशुक्री.
(१९) कि यह नेअमत और अता इस्तिदराज और इम्तिहान है.
(२०) यानी यह बात क़ारून ने भी कही थी कि यह दौलत मुझे अपने इल्म की बदौलत मिली और उसकी क़ौम उसकी इस बकवास पर राज़ी रही थी तो वह भी मानने वालों में गिनी गई.
(२१) यानी जो कुकर्म उन्हों ने किये थे, उनकी सज़ाएं.
(२२) चुनांन्चे वो सात वर्ष दुष्काल की मुसीबत में गिरफ़्तार रखे गए.

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ
رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ
يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ
السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ
كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ
فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

छटा रूकू

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वो बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की[१] अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है[२], बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है﴾५३﴿ और अपने रब की तरफ़ रूजू लाओ[३] और उसके हुज़ूर गर्दन रखो[४] इसके पहले कि तुम पर अज़ाब आए फिर तुम्हारी मदद न हो﴾५४﴿ और उसकी पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़ उतारी गई[५] इसके पहले कि अज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो[६]﴾५५﴿ कि कहीं कोई जान यह न कहे कि हाय अफ़सोस उन तक़सीरों (ग़लतियों) पर जो मैंने अल्लाह के बारे में कीं[७] और बेशक मैं हंसी बनाया करता था[८]﴾५६﴿ या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता﴾५७﴿ या कहे जब अज़ाब देखे किसी तरह मुझे वापसी मिले[९] कि मैं नेकियां करूं[१०]﴾५८﴿ हाँ क्यों नहीं, बेशक तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तूने उन्हें झुटलाया और घमण्ड किया और तू काफ़िर था[११]﴾५९﴿ और क़यामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्होंने अल्लाह पर झूट बांधा[१२] कि उनके मुंह काले हैं क्या घमण्डी का ठिकाना जहन्नम में नहीं[१३]﴾६०﴿ और अल्लाह बचाएगा परहेज़गारों को उनकी निजात की जगह[१४],

सूरए ज़ुमर - छटा रूकू

(१) गुनाहों और गुमराहियों में गिरफ़्तार होकर.

(२) उसके, जो कुफ़्र से बाज़ आए. मक्के के मुश्रिकों में से कुछ आदमी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने हुज़ूर से अर्ज़ की कि आप का दीन तो बेशक सच्चा है लेकिन हमने बड़े गुनाह किये हैं. बहुत सी गुमराहियों में गिरफ़्तार रहे हैं, क्या किसी तरह हमारे वो गुनाह माफ़ हो सकते हैं. इसपर यह आयत उतरी.

(३) तौबह करके.

(४) और सच्चे दिल के साथ फ़रमाँबरदारी करो.

(५) वह अल्लाह की किताब क़ुरआने मजीद है.

(६) तुम भूल में पड़े रहो इसलिये चाहिये कि पहले से होशियार रहो.

(७) कि उसकी इताअत बजा न लाया और उसके हक़ को न पहचाना और उसकी रज़ा हासिल करने की फ़िक्र न की.

(८) अल्लाह तआला के दीन की और उसकी किताब की.

(९) और दोबारा दुनिया में जाने का मौक़ा दिया जाए.

(१०) इन बातिल बहानों का जवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से वह है जो अगली आयत में इरशाद होता है.

(११) यानी तेरे पास क़ुरआने पाक पहुंचा और सच झूट की राहें साफ़ स्पष्ट कर दीं गईं और तुझे हक़ और हिदायत इख़्तियार करने की क़ुदरत दी गई इसके बावुजूद तूने हक़ को छोड़ा और उसको क़ुबूल करने से मुहं मोड़ा, गुमराही अपनाई, जो हुक्म दिया गया उसकी ज़िद और विरोध किया, तो अब तेरा यह कहना ग़लत है कि अगर अल्लाह तआला मुझे राह दिखाता तो में डर वालों में होता. और तेरे तमाम बहाने झूटे हैं.

(१२) और अल्लाह की शान में ऐसी बात कही जो उसके लायक़ नहीं है. उसके लिये शरीक बनाए, औलाद बताई, उसकी विशेषताओं का इन्कार किया. उसका नतीजा यह है.

(१३) जो घमण्ड के कारण ईमान न लाए.

(१४) उन्हें जन्नत अता फ़रमाएगा.

اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا
الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ
حَقَّ قَدْرِهٖ ۖۗ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ
السَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي
الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ
قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

منزل ٦

न उन्हें अज़ाब छुए और न उन्हें ग़म हो (६१) अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह हर चीज़ का मुख़्तार है (६२) उसी के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ,[१५] और जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वही नुक़सान में हैं (६३)

सातवाँ रूकू

तुम फ़रमाओ[१] तो क्या अल्लाह के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो[२] (६४) और बेशक **वही** की गई तुम्हारी तरफ़ और तुम से अगलों की तरफ़, कि ऐ सुनने वाले अगर तूने अल्लाह का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू हार में रहेगा (६५) बल्कि अल्लाह ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो[३] (६६) और उन्होंने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसका हक़ था[४], और वह क़यामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उसकी क़ुदरत से सब आसमान लपेट दिये जाएंगे[५], और अल्लाह उनके शिर्क से पाक और बरतर है (६७) और सूर फूंका जाएगा तो बेहोश हो जाएंगे[६] जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे अल्लाह चाहे[७], फिर वह दोबारा फूंका जाएगा[८] जभी वो देखते हुए खड़े हो जाएंगे[९] (६८) और ज़मीन जगमगा उठेगी[१०] अपने रब के नूर से[११] और रखी जाएगी किताब[१२] और लाए जाएंगे अंबिया, और ये नबी और उसकी उम्मत के उनपर गवाह होंगे[१३] और लोगों में

(१५) यानी रहमत, बारिश और रिज़्क़ के ख़ज़ानों की कुंजियाँ उसी के पास हैं. वही उनका मालिक है. यह भी कहा गया है कि हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस आयत की तफ़सील पूछी तो फ़रमाया कि आसमान और ज़मीन की कुंजियाँ ये हैं " **ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर व सुब्हानल्लाहे व बिहम्दिही व अस्तग़फ़िरुल्लाहा वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि वहुवल अव्वलो वल-आख़िरो वज़्ज़ाहिरो वल-बातिनो बियदिहिल ख़ैरो युहयी व युमीतो वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर** " (सूरए हदीद आयत २) मुराद यह है कि इन कलिमात में अल्लाह तआला की तौहीद और तारीफ़ है यह आसमान और ज़मीन की भलाइयों की कुंजियाँ हैं. जिस मूमिन ने ये कलिमे पढ़े, दोनों जहान की बेहतरी पाएगा.

सूरए ज़ुमर - सातवाँ रूकू

(१) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इन क़ुरैश के काफ़िरों से, जो आपको अपने दीन यानी बुत परस्ती की तरफ़ बुलाते हैं.

(२) जाहिल इस वास्ते फ़रमाया कि उन्हें इतना भी नहीं मालूम कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं जब कि इसपर क़तई दलीलें क़ायम हैं.

(३) जो नेअमतें अल्लाह तआला ने तुझको अता फ़रमाईं उसकी ताअत बजा लाकर उनकी शुक्रगुज़ारी कर.

(४) जभी तो शिर्क में गिरफ़्तार हुए अगर अल्लाह की महानता से परिचित होते और उसकी हक़ीक़त पहचानते तो ऐसा क्यों करते. इसके बाद अल्लाह तआला की महानता और वैभव का बयान है.

(५) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेट कर अपने दस्ते क़ुदरत में लेगा फिर फ़रमाएगा मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं जब्बार, कहाँ हैं घमण्ड वाले, मुल्क और हुकूमत के दावेदार. फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते क़ुदरत में लेगा और यही फ़रमाएगा. फिर फ़रमाएगा मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह.

(६) यह पहले सूर फूंके जाने का बयान है. इसका यह असर होगा कि फ़रिश्ते और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वो उससे मर जाएंगे और जिन पर मौत आ चुकी, फिर अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दगी दी, वो अपनी

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ
جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ
آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا
بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ
مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى
الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا
الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ
الْعَامِلِينَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ

सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उनपर ज़ुल्म न होगा﴾६९﴿ और हर जान को उसका किया भरपूर दिया जाएगा और उसे ख़ूब मालूम है जो वो करते थे[१४]﴾७०﴿

आठवाँ रूकू

और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ हांके जाएंगे[१] गिरोह गिरोह[२], यहाँ तक कि जब वहाँ पहुंचेंगे उसके दरवाज़े खोले जाएंगे[३] और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से वो रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते थे, कहेंगे क्यों नहीं[४] मगर अज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा[५]﴾७१﴿ फ़रमाया जाएगा जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का﴾७२﴿ और जो अपने रब से डरते थे उनकी सवारियाँ[६] गिरोह गिरोह जन्नत की तरफ़ चलाई जाएंगी यहाँ तक कि जब वहाँ पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले हुए होंगे[७] और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने﴾७३﴿ और वो कहेंगे सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जिसने अपना वादा हमसे सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहाँ चाहें, तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों (अच्छे काम करने वालों) का[८]﴾७४﴿ और तुम फ़रिश्तों को देखोगे अर्श के आस पास हलक़ा किये (घेरा डाले) अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया

क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, जैसे कि नबी और शहीद, उनपर इस सूर के फूंके जाने से बेहोशी की सी हालत छाएगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं, उन्हें इस सूर के फूंके जाने का शऊर भी न होगा. (जुमल वग़ैरह)

(७) इस इस्तसना(छूट) में कौन कौन दाख़िल हैं इसमें मुफ़स्सिरों के बहुत से क़ौल हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि सूर फूंके जाने पर सारे आसमान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रईल व मीकाईल व इस्राफ़ील और इज़्राईल के. फिर अल्लाह तआला दोनों सूर के फूँके जाने के बीच, जो चालीस साल की मुद्दत है, उसमें इन फ़रिश्तों को भी मौत देगा. दूसरा क़ौल यह है कि मुस्तसना (छूट पाए हुए) शहीद हैं जिनके लिये क़ुरआने मजीद में बल अहयाउन आया है. हदीस शरीफ़ में भी है कि वो शहीद हैं जो तलवारें लगाए अर्श के चारों तरफ़ हाज़िर होंगे. तीसरा क़ौल हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि मुस्तसना हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हैं चूंकि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इसलीये इस सूर के फूंके जाने से बेहोश नहीं होंगे बल्कि आप पूरी तरह होश में रहेंगे. चौथा क़ौल यह है कि मुस्तसना रिज़वान और हूरें और वो फ़रिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वो, और जहन्नम के साँप बिच्छू हैं. (तफ़सीरे कबीर व जुमल वग़ैरह)

(८) यह सूर का दूसरी बार फूंका जाना है जिससे मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे.

(९) अपनी क़ब्रों से, और देखते हुए खड़े होने से या तो यह मुराद है कि वो हैरत में आकर आश्चर्यचकित की तरह हर तरफ़ निगाह उठा उठा कर देखेंगे या ये मानी हैं कि वो ये देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मामला पेश आएगा और मूमिनों की क़ब्रों पर अल्लाह तआला की रहमत से सवारियाँ हाज़िर की जाएंगी जैसा कि अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है : यौमा नहशुरुल मुत्तक़ीना इलर रहमाने वफ़दन'' यानी जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान की तरफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर. (सूरए मरयम, आयत ८५)

(१०) बहुत तेज़ रौशनी से, यहाँ तक कि सुर्ख़ी की झलक नमूदार होगी. यह ज़मीन दुनिया की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो अल्लाह तआला क़यामत के दिन की मेहफ़िल के लिये पैदा फ़रमाएगा.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ये चाँद सूरज का नूर न होगा बल्कि यह और ही नूर होगा जिसको अल्लाह तआला पैदा फ़रमाएगा. उससे ज़मीन रौशन हो जाएगी. (जुमल)

(१२) यानी कर्मों की किताब हिसाब के लिये. इससे मुराद या तो लौहे मेहफ़ूज़ है जिसमें दुनिया की सारी घटनाएं क़यामत तक साफ़ साफ़ विस्तार से दर्ज हैं या हर शख़्स का कर्म-लेखा जो उसके हाथ में होगा.

जाएगा[९] और कहा जाएगा कि सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जगत का रब[१०] (७५)

४०- सूरए मूमिन

सूरए मूमिन मक्का में उतरी, इसमें ८५ आयतें, नौ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
हा मीम (१) यह किताब उतारना है अल्लाह की तरफ़ से जो इज़्ज़त वाला इल्म वाला (२) गुनाह बख़्शने वाला और तौबह क़ुबूल करने वाला[२] सख़्त अज़ाब करने वाला[३] बड़े इनाम वाला[४] उसके सिवा कोई मअबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिरना है[५] (३) अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर[६] तो ऐ सुनने वाले तुझे धोखा न दे उनका शहरों में अहले गहले (इतराते) फिरना[७] (४) उनसे पहले नूह की क़ौम और उनके बाद के गिरोहों[८] ने झुटलाया और हर उम्मत ने यह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें[९] और बातिल (असत्य) के साथ झगड़े कि उससे हक़ को टाल दें[१०] तो मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब[११] (५) और यूंही तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वो दोज़ख़ी हैं (६) वो जो अर्श उठाते हैं[१२] और जो उसके गिर्द हैं[१३] अपने रब की तअरीफ़ के साथ उसकी पाकी बोलते[१४] और उसपर ईमान लाते[१५] और मुसलमानों की मग़फ़िरत

---

(१३) जो रसूलों की तबलीग़ की गवाही देगें.
(१४) उससे कुछ छुपा नहीं, न उसको गवाह और लिखने वाले की ज़रूरत. यह सब हुज्जत तमाम करने के लिये होंगे. (जुमल)

सूरए ज़ुमर - आठवाँ रूकू

(१) सख़्ती के साथ क़ैदियों की तरह.
(२) हर हर जमाअत और उम्मत अलग अलग.
(३) यानी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जाएंगे जो पहले से बन्दे थे.
(४) बेशक नबी तशरीफ़ भी लाए और उन्होंने अल्लाह तआला के एहकामात भी सुनाए और इस दिन से भी डराया.
(५) कि हम पर हमारी बदनसीबी ग़ालिब हूई और हमने गुमराही इख़्तियार की और अल्लाह के इरशाद के मुताबिक़ जहन्नम में भरे गए.
(६) इज़्ज़त और एहतिराम और लुत्फ़ और करम के साथ.
(७) उनकी इज़्ज़त और सत्कार के लिये, और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं, हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि जन्नत के दरवाज़े के क़रीब एक दरख़्त है उसके नीचे से दो चश्मे निकलते हैं. मूमिन वहाँ पहुंच कर एक चश्मे में ग़ुस्ल करेगा उससे उसका बदन पाक साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मे का पानी पियेगा इससे उसका बातिन पाकीज़ा हो ज, फिर फ़रिश्ते जन्नत के दरवाज़े पर स्वागत करेंगे.
(८) यानी अल्लाह तआला और रसूल का कहा मानने वालों का.
(९) कि मूमिन को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल किया जाएगा.
(१०) जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होकर शुक्र की अदायगी के लिये अल्लाह की स्तुति और हम्द अर्ज़ करेंगे.

४० - सूरए मूमिन - पहला रूकू

(१) सूरए मूमिन का नाम सूरए ग़ाफ़िर भी है. यह सूरत मक्के में उतरी सिवाय दो आयतों के जो "अल्लज़ीना युजादिलूना फ़ी आयातिल्लाहे" से शुरू होती हैं. इस सूरत में नौ रूकू, पचासी आयतें, एक हज़ार एक सौ निनानवे कलिमे और चार हज़ार नौ सौ

اَلْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۚ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۚ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۚ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝ هُوَ

माँगते हैं[१६] ऐ रब हमारे तेरी रहमत व इल्म में हर चीज़ की समाई है[१७] तो उन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबह की और तेरी राह पर चले[१८] और उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले﴾७﴿ ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तू ने उनसे वादा फ़रमाया है और उनको जो नेक हों उनके बाप दादा और बीबियों और औलाद में[१९] बेशक तूही इज़्ज़त व हिकमत वाला है﴾८﴿ और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तूने उसपर रहम फ़रमाया, और यही बड़ी कामयाबी है﴾९﴿

दूसरा रूकू

बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उनको निदा की जाएगी[१] कि ज़रूर तुमसे अल्लाह की बेज़ारी इससे बहुत ज़्यादा है जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जबकि तुम[२] ईमान की तरफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते﴾१०﴿ कहेंगे ऐ हमारे रब तूने हमें दोबारा मुर्दा किया और दोबारा ज़िन्दा किया[३] अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए (अड़ गए) तो आग से निकलने की भी कोई राह है[४]﴾११﴿ यह उस पर हुआ कि जब एक अल्लाह पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते[५] और उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते[६] तो हुक्म अल्लाह के लिये है जो सब से बलन्द बड़ा﴾१२﴿ वही है कि तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है[७] और तुम्हारे लिये आसमान से रोज़ी उतारता है[८], और नसीहत नहीं मानता[९] मगर जो रूजू लाए[१०]﴾१३﴿ तो अल्लाह की बन्दगी करो

साठ अक्षर हैं.

(२) ईमानदारों की.

(३) काफ़िरों पर.

(४) आरिफ़ों यानी अल्लाह को पहचानने वालों पर.

(५) बन्दों का, आख़िरत में.

(६) यानी क़ुरआने पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मूमिन का काम नहीं. अबू दाऊद की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन में झगड़ा करना कुफ़्र है. झगड़े और जिदाल से मुराद अल्लाह की आयतों में तअने करना और तकज़ीब (झुटलाने) और इन्कार के साथ पेश आना है. और मुश्किलों को सुलझाने और गहराई का पता चलाने के लिये इल्म और उसूल की बहसें झगड़ा नहीं बल्कि महानताअतों में से हैं. काफ़िरों का झगड़ा करना आयतों में यह था कि वो कभी क़ुरआन शरीफ़ को जादू कहते, कभी काव्य, कभी तांत्रिक विद्या, कभी क़िस्से कहानियाँ.

(७) यानी काफ़िरों का सेहत व सलामती के साथ मुल्क मुल्क तिजारतें करते फिरना और नफ़ा पाना तुम्हारे लिये चिंता का विषय न हो कि यह कुफ़्र जैसा महान जुर्म करने के बाद भी अज़ाब से अम्न में रहे, क्योंकि उनका अन्त ख़्वारी और अज़ाब है. पहली उम्मतों में भी ऐसे हालात गुज़र चुके हैं.

(८) आद व समूद व क़ौमे लूत वग़ैरह.

(९) और उन्हें क़त्ल और हलाक कर दें.

(१०) जिसको नबी लाए हैं.

(११) क्या उनमें का कोई उससे बच सका.

(१२) यानी अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते जो क़ुर्ब वालों और फ़रिश्तों में बुज़ुर्गी व इज़्ज़त वाले हैं.

(१३) यानी जो फ़रिश्ते कि अर्श की परिक्रमा करने वाले हैं, उन्हें करूबी कहते हैं और ये फ़रिश्तों में सरदारी पाए हुए हैं.

الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ
وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ
ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ
لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ
لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا
كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝
وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ
كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ
يُّطَاعُ ۝ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ۝
وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝

منزل ٦

निरे उसके बन्दे होकर[११] पड़े बुरा मानें काफ़िर﴿१४﴾ बलन्द दर्जे देने वाला[१२] अर्श का मालिक, ईमान की जान वही डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे[१३] कि वह मिलने के दिन से डराए[१४]﴿१५﴾ जिस दिन वो बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएंगे[१५] अल्लाह पर उनका कुछ हाल छुपा न होगा[१६] आज किस की बादशाही है[१७] एक अल्लाह सब पर ग़ालिब की[१८]﴿१६﴾ आज हर जान अपने किये का बदला पाएगी[१९] आज किसी पर ज़ियादती नहीं, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है﴿१७﴾ और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से[२०] जब दिल गलों के पास आ जाएंगे[२१] ग़म में भरे, और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए[२२]﴿१८﴾ अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह[२३] और जो कुछ सीनों में छुपा है[२४]﴿१९﴾ और अल्लाह सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उसके सिवा जिनको[२५] पूजते हैं वो कुछ फ़ैसला नहीं करते[२६], बेशक अल्लाह ही सुनता और देखता है[२७]﴿२०﴾

(१४) और सुब्हानल्लाहे व बिहम्दिही कहते.
(१५) और उसके एक होने की पुष्टि करते. शहर बिन होशब ने कहा कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते आठ हैं उनमें से चार की तस्बीह यह है : ''सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका लकल हम्दो अला हिल्मिका बअदा इल्मिका'' और चार की यह : ''सुब्हानकल्लाहुम्मा व बिहम्दिका लकल हम्दो अला अफ़विका बअदा क़ुदरतिका''.
(१६) और अल्लाह की बारगाह में इस तरह अर्ज़ करते हैं.
(१७) यानी तेरी रेहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को वसीअ है. दुआ से पहले प्रशंसा के शब्द कहने से मालूम हुआ कि दुआ के संस्कारों में से यह है कि पहले अल्लाह तआला की स्तुति और तारीफ़ की जाए फिर अपनी मुराद अर्ज़ की जाए.
(१८) यानी दीने इस्लाम पर.
(१९) उन्हें भी दाख़िल कर.

सूरए मूमिन - दूसरा रूकू

(१) क़यामत के दिन जबकि वो जहन्नम में दाख़िल होंगे और उनकी बदियाँ उनपर पेश की जाएंगी और वो अज़ाब देखेंगे तो फ़रिश्ते उनसे कहेंगे.
(२) दुनिया में.
(३) क्योंकि पहले बेजान नुत्फ़ा थे, इस मौत के बाद उन्हें जान देकर ज़िन्दा किया, फिर उम्र पूरी होने पर मौत दी, दोबारा उठाने के लिये ज़िंदा किया.
(४) उसका जवाब यह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने का कोई रास्ता नहीं और तुम जिस हाल में हो, जिस अज़ाब में गिरफ़्तार हो, और उससे रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते.
(५) यानी इस अज़ाब और इसकी हमेशगी का कारण तुम्हारा यह कर्म है कि जब अल्लाह की तौहीद का ऐलान होता और लाइलाहा इल्लल्लाहो कहा जाता तो तुम उसका इन्कार करते और कुफ़्र इख़्तियार करते.
(६) और इस शिर्क की तस्दीक़ करते.
(७) यानी अपनी मसनूआत के चमत्कार जो उसकी भरपूर क़ुदरत के प्रमाण हैं जैसे हवा और बादल और बिजली वग़ैरह.
(८) मेंह बरसा कर.
(९) और उन निशानियों से नसीहत हासिल नहीं करता.

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَ
آثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَمَا كَانَ
لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَ
سُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا
سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا
اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن
يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾
وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

तीसरा रूकू

तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अंजाम हुआ उनसे अगलों का(१), उनकी क़ुव्वत और ज़मीन में जो निशानियाँ छोड़ गए(२) उनसे ज़्यादा तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह से उनका कोई बचाने वाला न हुआ(३)﴿२१﴾ यह इसलिये कि उनके पास उनके रसूल रौशन निशानियां लेकर आए(४) फिर वो कुफ़्र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त सख़्त अज़ाब वाला है﴿२२﴾ और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों और रौशन सनद के साथ भेजा﴿२३﴾ फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो वो बोले जादूगर है बड़ा झूटा(५)﴿२४﴾ फिर जब वह उनपर हमारे पास से हक़(सच्चाई) लाया(६) बोले जो इस पर ईमान लाए उनके बेटे क़त्ल करो और औरतें ज़िन्दा रखो(७) और काफ़िरों का दाव नहीं मगर भटकता फिरता(८)﴿२५﴾ और फ़िरऔन बोला(९) मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूं(१०) और वह अपने रब को पुकारे(११) मैं डरता हूँ कहीं वह तुम्हारा दीन बदल दे(१२) या ज़मीन में फ़साद चमकाए(१३)﴿२६﴾ और मूसा ने(१४) कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ हर मुतकब्बिर(घमण्डी) से कि हिसाब के दिन पर

(१०) सारे कामों में अल्लाह तआला की तरफ़ और शिर्क से तौबह करे.
(११) शिर्क से अलग होकर.
(१२) नबियों, वलियों और उलमा को, जन्नत में.
(१३) यानी अपने बन्दों में से जिसे चाहता है नबुव्वत की उपाधि अता करता है और जिसको नबी बनाता है उसका काम होता है.
(१४) यानी सृष्टि को क़यामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन आसमान और ज़मीन वाले और अगले पिछले मिलेंगे और आत्माएं शरीरों से और हर कर्म करने वाला अपने कर्म से मिलेगा.
(१५) क़ब्रों से निकल कर और कोई ईमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पाएंगे.
(१६) न कहनी न करनी, न दूसरे हालात और अल्लाह तआला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन यह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिये कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिसके ज़रिये से वो अपने ख़याल में भी अपने हाल को छुपा सकें, और सृष्टि के नाश के बाद अल्लाह तआला फ़रमाएगा.
(१७) अब कोई न होगा कि जवाब दे. ख़ुद ही जवाब में फ़रमाएगा कि अल्लाह वाहिद व क़हहार की. और एक क़ौल यह है कि क़यामत के दिन जब सारे अगले पिछले हाज़िर होंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा, आज किसकी बादशाही है ? सारी सृष्टि जवाब देगी ''लिल्लाहिल वाहिदिल क़हहार'' अल्लाह वाहिद व क़हहार की जैसा कि आगे इरशाद होता है.
(१८) मूमिन तो यह जवाब बहुत मज़े के साथ अर्ज़ करेंगे क्योंकि वो दुनिया में यही अक़ीदा रखते थे. यही कहते थे और इसी की बदौलत उन्हें दर्जे मिले और काफ़िर ज़िल्लत और शर्मिन्दगी के साथ इसका इक़रार करेंगे और दुनिया में अपने इन्कारी रहने पर लज्जित होंगे.
(१९) नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का.
(२०) इससे क़यामत का दिन मुराद है.
(२१) ख़ौफ़ की सख़्ती से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें.
(२२) यानी काफ़िर शफ़ाअत से मेहरूम होंगे.
(२३) यानी निगाहों की ख़यानत और चोरी, ना-मेहरम को देखना और मना की हुई चीज़ों पर नज़र डालना.
(२४) यानी दिलों के राज़, सब चीज़ें अल्लाह तआला के इल्म में हैं.
(२५) यानी जिन बुतों को ये मुश्रिक लोग .
(२६) क्योंकि न वो इल्म रखते हैं न क़ुदरत, तो उनकी इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही खुला हुआ असत्य है.

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ ع
مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن
يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ
وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا
يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ اللَّهِ
إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا
أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَأْبِ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا
اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ

यक़ीन नहीं लाता[१५] ﴾२७﴿

चौथा रूकू

और बोला फ़िरऔन वालों में से एक मर्द मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इसपर मारे डालते हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है और बेशक वह रौशन निशानियाँ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से लाए[१] और अगर फ़र्ज़ करो वो ग़लत कहते हैं तो उनकी ग़लत गोई का वबाल उनपर, और अगर वो सच्चे हैं, तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वह जिसका तुम्हें वादा देते हैं [२] बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो[३] ﴾२८﴿ ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा रखते हो, [४] तो अल्लाह के अज़ाब से हमें कौन बचा लेगा अगर हम पर आए, फ़िरऔन बोला मैं तो तुम्हें वही समझाता हूँ जो मेरी सूझ है [५] और मैं तो तुम्हें वही बताता हूँ जो भलाई की राह है ﴾२९﴿ और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मुझे तुमपर [६] अगले गिरोहों के दिन का सा डर है[७] ﴾३०﴿ जैसा दस्तूर गुज़रा नूह की क़ौम और आद और समूद और उनके बाद औरों का, [८] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं चाहता[९] ﴾३१﴿ और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूँ जिस दिन पुकार मचेगी[१०] ﴾३२﴿ जिस दिन पीठ देकर भागोगे, [११] अल्लाह से [१२] तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं, और जिसे

(२७) अपनी मख़लूक़ की कहनी व करनी और सारे हालात को.

सूरए मूमिन - तीसरा रूकू

(१) जिन्हों ने रसूलों को झुटलाया था.

(२) क़िले और महल, नेहरें और हौज़, और बड़ी बड़ी इमारतें.

(३) कि अल्लाह के अज़ाब से बचा सक्ता. समझदार का काम है कि दूसरे के हाल से इब्रत हासिल करे. इस एहद के काफ़िर यह हाल देखकर क्यों इब्रत हासिल नहीं करते, क्यों नहीं सोचते कि पिछली क़ौमें उनसे ज़्यादा मज़बूत और स्वस्थ, मालदार और अधिकार वाली होने के बावुजूद, इस इब्रत से भरपूर तरीक़े पर तबाह कर दी गईं. यह क्यों हुआ.

(४) चमत्कार दिखाते.

(५) और उन्होंने हमारी निशानियों और प्रमाणों को जादू बताया.

(६) यानी नबी होकर अल्लाह का संदेश लाए तो फ़िरऔन और उसकी क़ौम.

(७) ताकि लोग हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अनुकरण से बाज़ आएं.

(८) कुछ भी तो कारआमद नहीं, बिल्कुल निकम्मा और बेकार. पहले भी फ़िरऔनियों ने फ़िरऔन के हुक्म से हज़ारों क़त्ल किये मगर अल्लाह की मर्ज़ी होकर रही और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रब ने फ़िरऔन के घर बार में पाला, उससे ख़िदमतें कराईं. जैसा वह दाव फ़िरऔनियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिये फ़िर दोबारा क़त्ल शुरू करना बेकार है. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दीन का प्रचलन अल्लाह तआला को मंज़ूर है, उसे कौन रोक सक्ता है.

(९) अपने गिरोह से.

(१०) फ़िरऔन जब कभी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल का इरादा करता तो उसकी क़ौम के लोग उसे इस से मना करते और कहते कि यह वह व्यक्ति नहीं है जिसका तुझे अन्देशा है. यह तो एक मामूली जादूगर है इसपर तो हम अपने जादू से ग़ालिब आ जाएंगे और अगर इसको क़त्ल कर दिया तो आम लोग शुबह में पड़ जाएंगे कि वह व्यक्ति सच्चा था, हक़ पर था, तू दलील से उसका मुक़ाबला करने में आजिज़ हुआ, जवाब न दे सका, तो तूने उसे क़त्ल कर दिया. लेकिन हक़ीक़त में फ़िरऔन का यह कहना कि मुझे

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾
وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ
فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۖ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ ۙ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ
اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَ
عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ
مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ
صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ ۙ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا
كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ۧ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ
يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ ۚ يٰقَوْمِ اِنَّمَا

منزل ٦

अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह दिखाने वाला नहीं(३३) और बेशक इससे पहले (१३) तुम्हारे पास यूसुफ़ रौशन निशानियां लेकर आए तो तुम उनके लाए हुए से शक ही में रहे, यहां तक कि जब उन्होंने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह कोई रसूल न भेजेगा(१४), अल्लाह यूं ही गुमराह करता है उसे जो हद से बढ़ने वाला शक लाने वाला है(१५)(३४) वो जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं(१६) बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो, किस क़द्र सख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक, अल्लाह यूंही मुहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे दिल पर(१७)(३५) और फ़िरऔन बोला(१८) ऐ हामान मेरे लिये ऊंचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊं रास्तों तक(३६) काहे के रास्ते आसमानों के तो मूसा के ख़ुदा को झाँक कर देखूं और बेशक मेरे गुमान में तो वह झूटा है(१९) और यूंही फ़िरऔन की निगाह में उसका बुरा काम(२०) भला कर दिखाया गया(२१) और वह रास्ते से रोका गया, और फ़िरऔन का दाँव(२२) हलाक होने ही को था(३७)

पाँचवां रूकू

और वह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊं(३८) ऐ मेरी क़ौम यह दुनिया का जीना तो कुछ बरतना ही है(१) और बेशक वह पिछला

छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूं, ख़ालिस धमकी ही थी. उसको ख़ुद आपके सच्चे नबी होने का यक़ीन था और वह जानता था कि जो चमत्कार आप लाए हैं वह अल्लाह की आयतें हैं, जादू नहीं. लेकिन यह समझता था कि अगर आप के क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उसको हलाक करने में जल्दी फ़रमाएंगे, इससे यह बेहतर है कि बहस बढ़ाने में ज़्यादा वक़्त गुज़ार दिया जाए. अगर फ़िरऔन अपने दिल में आप को सच्चा नबी न समझता और यह न जानता कि अल्लाह की ताईदें जो आपके साथ हैं, उनका मुक़ाबला नामुमकिन है, तो आपके क़त्ल में हरगिज़ देरी न करता क्योंकि वह बड़ा ख़ूंख़्वार, सफ़्फ़ाक, ज़ालिम, बेदर्द था, छोटी सी बात में हज़ारहा ख़ून कर डालता था.

(११) जिसका अपने आप को रसूल बताता है ताकि उसका रब उसको हमसे बचाए. फ़िरऔन का यह क़ौल इसपर गवाह है कि उसके दिल में आपका और आपकी दुआओं का ख़ौफ़ था. वह अपने दिल में आप से डरता था. दिखावे की इज़्ज़त बनी रखने के लिये यह ज़ाहिर करता था कि वह क़ौम के मना करने के कारण हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल नहीं करता.

(१२) और तुम से फ़िरऔन परस्ती और बुत परस्ती छुड़ा दे.

(१३) जिदाल और क़िताल करके.

(१४) फ़िरऔन की धमकियाँ सुनकर.

(१५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन की सख़्तियों के जवाब में अपनी तरफ़ से कोई कलिमा अतिश्योक्ति या बड़ाई का न फ़रमाया बल्कि अल्लाह तआला से पनाह चाही और उसपर भरोसा किया. यही ख़ुदा की पहचान वालों का तरीक़ा है और इसी लिये अल्लाह तआला ने आपको हर एक बला से महफ़ूज़ रखा. इन मुबारक जुमलों में कैसी बढ़िया हिदायतें हैं. यह फ़रमाना कि तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूँ और इसमें हिदायत है कि रब एक ही है. यह भी हिदायत है कि जो उसकी पनाह में आए उस पर भरोसा करे तो वह उसकी मदद फ़रमाए, कोई उसको हानि नहीं पहुंचा सकता. यह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करना बन्दगी की शान है और तुम्हारे रब फ़रमाने में यह भी हिदायत है कि अगर तुम उसपर भरोसा करो तो तुम्हें भी सआदत नसीब हो.

सूरए मूमिन - चौथा रूकू

(१) जिनसे उनकी सच्चाई ज़ाहिर हो गई यानी नबुव्वत साबित हो गई.

(२) मतलब यह है कि दो हाल से ख़ाली नहीं या ये सच्चे होंगे या झूटे. अगर झूटे हों तो ऐसे मामले में झूट बोलकर उसके वबाल

से बच नहीं सकते, हलाक हो जाएंगे . और अगर सच्चे हैं तो जिस अज़ाब का तुम्हें वादा देते हैं उसमें से बिल-फ़ेअल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा. कुछ पहुंचना इसलिये कहा कि आपका अज़ाब का वादा दुनिया और आख़िरत दोनों को आम था उसमें से बिलफ़ेअल दुनिया का अज़ाब ही पेश आना था.

(३) कि ख़ुदा पर झूठ बांधे.

(४) यानी मिस्र में तो ऐसा काम न करो कि अल्लाह का अज़ाब आए . अगर अल्लाह का अज़ाब आया.

(५) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर देना.

(६) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाने और उनके पीछे पड़ने से.

(७) जिन्होंने रसूलों को झुटलाया.

(८) कि नबियों को झुटलाते रहे और हर एक को अल्लाह के अज़ाब ने हलाक किया.

(९) बग़ैर गुनाह के उनपर अज़ाब नहीं फ़रमाता और बिना हुज्जत क़ायम किये उनको हलाक नहीं करता.

(१०) वह क़यामत का दिन होगा. क़यामत के दिन को यौमुत-तनाद यानी पुकार का दिन इसलिये कहा जाता है कि इस रोज़ तरह तरह की पुकारें मची होंगी, हर व्यक्ति अपने सरदार के साथ और हर जमाअत अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी. जन्नती दोज़ख़ियों को और दोज़ख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे. सआदत और शक़ावत की निदाएं की जाएंगी कि अमुक ख़ुशनसीब हुआ अब कभी बदनसीब न होगा और अमुक व्यक्ति बदनसीब हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस वक़्त मौत ज़िब्ह की जाएगी उस वक़्त निदा की जाएगी कि ऐ जन्नत वालो अब हमेशगी है, मौत नहीं और ऐ जहन्नम वालो ,अब हमेशगी है, मौत नहीं.

(११) हिसाब के मैदान से दोज़ख़ की तरफ़.

(१२) यानी उसके अज़ाब से.

(१३) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से पहले.

(१४) यह बेदलील बात तुम ने यानी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद गढ़ी ताकि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बाद आने वाले नबियों को झुटलाओ और उनका इन्कार करो तो तुम कुफ़्र पर क़ायम रहे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की नबुव्वत में शक करते रहे और बाद वालों की नबुव्वत के इन्कार के लिये तुम ने यह योजना बना ली कि अब अल्लाह तआला कोई रसूल ही न भेजेगा.

(१५) उन चीज़ों में जिन पर रौशन दलीलें गवाह हैं.

(१६) उन्हें झुटला कर.

(१७) कि उसमें हिदायत क़ुबूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता.

(१८) जिहालत और धोखे के तौर पर अपने वज़ीर से.

(१९) यानी मूसा मेरे सिवा और ख़ुदा बताने में और यह बात फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को धोखा देने के लिये कही क्यों कि वह जानता था कि सच्चा मअबूद सिर्फ़ अल्लाह तआला है और फ़िरऔन अपने आप को धोखा धड़ी के लिये ख़ुदा कहलवाता है. (इस घटना का बयाम सूरए क़सस में गुज़रा).

(२०) यानी अल्लाह तआला के साथ शरीक करना और उसके रसूल को झुटलाना.

(२१) यानी शैतानों ने वसवसे डाल कर उसकी बुराइयाँ उसकी नज़र में भली कर दिखाईं.

(२२) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निशानियों को झूठा ठहराने के लिये उसने इख़्तियार किया.

सूरए मूमिन - पाँचवाँ रूकू

(१) यानी थोड़ी मुद्दत के लिये नापायदार नफ़ा है जो बाक़ी रहने वाला नहीं है.

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّ اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ
تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ
اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى
الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ
لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ
مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝
فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۗ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا
مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝

النصف

منزل ٦

हमेशा रहने का घर है[२]﴿३९﴾ जो बुरा काम करे तो उसे बदल न मिलेगा मगर उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द चाहे औरत और हो मुसलमान[३] तो वो जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहाँ बेगिनती रिज़्क़ पाएंगे[४]﴿४०﴾ और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुआ मैं तुम्हें बुलाता हूँ निजात की तरफ़[५] और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख़ की तरफ़[६] ﴿४१﴾ मुझे उस तरफ़ बुलाते हो कि अल्लाह का इन्कार करूं और ऐसे को उसका शरीक करूं जो मेरे इल्म में नहीं, और मैं तुम्हें उस इज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूँ﴿४२﴾ आप ही साबित हुआ कि जिसकी तरफ़ मुझे बुलाते हो[७] उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुनिया में न आख़िरत में[८] और यह हमारा फिरना अल्लाह की तरफ़ है[९] और यह कि हद से गुज़रने वाले[१०] ही दोज़ख़ी हैं﴿४३﴾ तो जल्द वह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूँ उसे याद करोगे[११] और मैं अपने काम अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह बन्दों को देखता है[१२]﴿४४﴾ तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उनके मक्र(कपट) की बुराईयों से[१३] और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा[१४]﴿४५﴾

(२) मुराद यह है कि दुनिया नष्ट हो जाने वाली है और आख़िरत बाक़ी रहने वाली, सदा ज़िन्दा रहने वाली और सदा ज़िन्दा रहना ही बेहतर. इसके बाद अच्छे और बुरे कर्मों और उनके परिणामों का बयान किया.
(३) क्योंकि कर्मों की मक़बूलियत ईमान पर आधारित है.
(४) यह अल्लाह तआला की भारी मेहरबानी है.
(५) जन्नत की तरफ़, ईमान और फ़रमाँबरदारी की सीख देकर.
(६) कुफ़्र और शिर्क की दावत देकर.
(७) यानी बुत की तरफ़.
(८) क्योंकि वह बेजान पत्थर है.
(९) वही हमें जज़ा देगा.
(१०) यानी काफ़िर.
(११) यानी अज़ाब उतरने के वक़्त तुम मेरी नसीहतें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न आएगा. यह सुनकर उन लोगों ने उस मूमिन को धमकाया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालिफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरे पेश आएंगे. इसके जवाब में उसने कहा.
(१२) और उनके कर्मों और हालतों को जानता है. फिर वह मूमिन उन में से निकल कर पहाड़ की तरफ़ चला गया और वहाँ नमाज़ में मशग़ूल हो गया. फ़िरऔन ने हज़ार आदमी उसे ढूंढने को भेजे. अल्लाह तआला ने ख़तरनाक जानवर उसकी हिफ़ाज़त पर लगा दिये. जो फ़िरऔनी उसकी तरफ़ आया, जानवरों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उसने फ़िरऔन से हाल बयान किया, फ़िरऔन ने उसे सूली दे दी ताकि यह हाल मशहूर न हो.
(१३) और उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ होकर निजात पाई अगरचे वह फ़िरऔन की क़ौम का था.
(१४) दुनिया में यह अज़ाब कि वह फ़िरऔन के साथ ग़र्क़ हो गए और आख़िरत में दोज़ख़.

आग जिसपर सुब्ह शाम पेश किये जाते हैं[१५] और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, हुक्म होगा, फ़िरऔन वालों को सख़्त तर अज़ाब में दाख़िल करो﴾४६﴿ और[१६] जब वो आग में आपस में झगड़ेंगे तो कमज़ोर उनसे कहेंगे जो बड़े बनते थे हम तुम्हारे ताबे (अधीन) थे[१७] तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा घटा लोगे﴾४७﴿ वो तकब्बुर (घमण्ड) वाले बोले[१८] हम सब आग में हैं[१९] बेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका[२०]﴾४८﴿ और जो आग में हैं उसके दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ करो हम पर अज़ाब का एक दिन हल्का कर दे[२१]﴾४९﴿ उन्होंने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल रौशन निशानियाँ न लाते थे[२२] बोले क्यों नहीं[२३] बोले तो तुम्हीं दुआ करो[२४] और काफ़िरों की दुआ नहीं मगर भटकते फिरने को﴾५०﴿

छटा रूकू

बेशक ज़रूर हम अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की[१] दुनिया की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे[२]﴾५१﴿ जिस दिन ज़ालिमों को उनके बहाने कुछ काम न देंगे[३] और उनके लिये लअनत है और उनके लिये

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ
السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝ وَ
اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ
عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا
كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ
عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ
رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا
دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوْۤءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى

منزل ٦

(१५) उसमें जलाए जाते हैं. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया फ़िरऔनियों की रूहें काले पक्षियों के शरीर में हर दिन दो बार सुब्ह शाम आग पर पेश की जाती हैं. और उनसे कहा जाता है कि यह आग तुम्हारा ठिकाना है और क़यामत तक उनके साथ यही मअमूल रहेगा. इस आयत से क़ब्र के अज़ाब के सुबूत पर इस्तदलाल किया जाता है. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हर मरने वाले पर उसका मक़ाम सुब्ह शाम पेश किया जाता है, जन्नती पर जन्नत का और जहन्नमी पर जहन्नम का और उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है, जब तक कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे इसकी तरफ़ उठाए.

(१६) ज़िक्र फ़रमाइये ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर काफ़िरों के आपस में झगड़ने का हाल कि ---

(१७) दुनिया में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने.

(१८) यानी काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे.

(१९) हर एक अपनी मुसीबत में गिरफ़्तार, हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता.

(२०) ईमानदारों को उसने जन्नत में दाख़िल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में. जो होना था हो चुका.

(२१) यानी दुनिया के एक दिन के बराबर हमारे अज़ाब में कमी रहे.

(२२) क्या उन्होंने खुले चमत्कार पेश न किये थे यानी अब तुम्हारे लिये बहानों की कोई जगह बाक़ी न रही.

(२३) यानी काफ़िर नबियों के आने और अपने कुफ़्र का इक़रार करेंगे.

(२४) हम काफ़िर के हक़ में दुआ न करेंगे और तुम्हारा दुआ करना भी बेकार है.

सूरए मूमिन - छटा रूकू

(१) उनको ग़लबा अता फ़रमाकर और मज़बूत तर्क देकर और उनके दुश्मनों से बदला लेकर.

(२) वह क़यामत का दिन है कि फ़रिश्ते रसूलों की तबलीग़ और काफ़िरों के झुटलाने की गवाही देंगे.

(३) और काफ़िरों का कोई बहाना क़ुबूल न किया जाएगा.

وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۙ هُدًى وَّ
ذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَ
الْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ
سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ
بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝
لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا
الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ
لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝ ع

बुरा घर[४] ﴾५२﴿ और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अता फ़रमाई[५] और बनी इस्राईल को किताब का वारिस किया[६] ﴾५३﴿ अक़्लमन्दों की हिदायत और नसीहत को ﴾५४﴿ तो ऐ महबूब तुम सब्र करो[७] बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है[८] और अपनों के गुनाहों की माफ़ी चाहो[९] और अपने रब की तारीफ़ करते हुए सुब्ह और शाम उसकी पाकी बोलो[१०] ﴾५५﴿ वो जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो[११] उनके दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हविस[१२] जिसे न पहुंचेंगे[१३] तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो[१४] बेशक वही सुनता देखता है ﴾५६﴿ बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदायश आदमियों की पैदायश से बहुत बड़ी[१५] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते[१६] ﴾५७﴿ और अंधा और अंखियारा बराबर नहीं[१७] और न वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और बदकार[१८] कितना कम ध्यान करते हो ﴾५८﴿ बेशक क़यामत ज़रूर आने वाली है इसमें कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते[१९] ﴾५९﴿ और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़ुबूल करूंगा[२०] बेशक वो जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (घमन्ड करते) हैं बहुत जल्द जहन्नम में

(४) यानी जहन्नम.
(५) यानी तौरात और चमत्कार.
(६) यानी तौरात का या उन नबियों पर उतरी तमाम किताबों का.
(७) अपनी क़ौम की तकलीफ़ पर.
(८) वह आपकी मदद फ़रमाएगा, आपके दीन को ग़ालिब करेगा, आपके दुश्मनों को हलाक करेगा. कलबी ने कहा कि सब्र की आयत जंग की आयत से मन्सूख़ हो गई.
(९) यानी अपनी उम्मत के. (मदारिक)
(१०) यानी अल्लाह तआला की इबादत पर हमेशगी रखो और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे पाँचों नमाज़ें मुराद हैं.
(११) इन झगड़ा करने वालों से क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं.
(१२) और उनका यही घमण्ड उनके झुटलाने और इन्कार और कुफ़्र के अपनाने का कारण हुआ कि उन्होंने यह गवारा न किया कि कोई उनसे ऊंचा हो. इसलिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दुश्मनी की, इस झूठे ख़याल से कि अगर आपको नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हविस रखते हैं बड़े बनने की.
(१३) और बड़ाई मयस्सर न आएगी बल्कि हुज़ूर की मुख़ालिफ़त और इन्कार उनके हक़ में ज़िल्लत और रूस्वाई का कारण होगा.
(१४) हासिदों के छलकपट से.
(१५) यह आयत दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वालों के रद में उतरी. उनपर हुज्जत क़ायम की गई कि जब तुम आसमान और ज़मीन की पैदाइश पर उनकी इस विशालता और बड़ाई के बावुजूद अल्लाह तआला को क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा करदेना उसकी क़ुदरत से क्यों दूर समझते हो.
(१६) बहुत लोगों से मुराद यहाँ काफ़िर हैं और उनके दोबारा उठाए जाने के इन्कार का सबब उनकी अज्ञानता है कि वो आसमान और ज़मीन की पैदायश पर क़ादिर होने से दोबारा उठाए जाने पर इस्तिदलाल नहीं करते तो वो अन्धे की तरह हैं और जो मख़लूक़ात के वुजूद से ख़ालिक़ की क़ुदरत पर इस्तिदलाल करते हैं वह आँख वाले की तरह हैं.
(१७) यानी जाहिल और आलिम एक से नहीं.
(१८) यानी नेक ईमान वाला और बुरे काम करने वाला, ये दोनों भी बराबर नहीं.
(१९) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते.
(२०) अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआएं अपनी रहमत से क़ुबूल फ़रमाता है और उनके क़ुबूल के लिये कुछ शर्तें हैं एक

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَی النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؗ فَاَنّٰی تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ ؗ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ

وقف لازم

منزل ٦

जाएंगे ज़लील होकर ﴾६०﴿

सातवाँ रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उसमें आराम पाओ और दिन बनाया आँखें खोलता[१] बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल (कृपा) वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र नहीं करते ﴾६१﴿ वह है अल्लाह तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला, उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां औंधे जाते हो[२] ﴾६२﴿ यूंही औंधे होते हैं[३] वो जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं[४] ﴾६३﴿ अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन ठहराव बनाई[५] और आसमान छत[६] और तुम्हारी तस्वीर की, तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं[७] और तुम्हें सुथरी चीज़ें[८] रोज़ी दीं, यह है अल्लाह तुम्हारा रब, तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जगत का ﴾६४﴿ वही ज़िन्दा है[९] उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो निरे उसी के बन्दे होकर, सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जगत का रब ﴾६५﴿ तुम फ़रमाओ मैं मना किया गया हूँ कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[१०] जब कि मेरे पास रौशन दलीलें[११] मेरे रब की तरफ़ से आईं और मुझे हुक्म हुआ है कि जगत के रब के हुज़ूर (समक्ष) गर्दन रखूं ﴾६६﴿ वही है जिसने तुम्हें[१२] मिट्टी से बनाया फिर[१३] पानी की बूंद

इख़्लास दुआ में, दूसरे यह कि दिल ग़ैर की तरफ़ न लगे, तीसरे यह कि वह दुआ किसी ग़लत मक़सद के लिये न हो. चौथे यह कि अल्लाह तआला की रहमत पर यक़ीन रखता हो, पाँचवें यह कि शिकायत न करे कि मैंने दुआ माँगी, क़ुबूल न हुई. जब इन शर्तों से दुआ की जाती है, क़ुबूल होती है. हदीस शरीफ़ में है कि दुआ करने वाले की दुआ क़ुबूल होती है. या तो उससे उसकी मुराद दुनिया ही में उसको जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उसके लिये जमा होती है या उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है. इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि दुआ से मुराद इबादत है और क़ुरआन करीम में दुआ इबादत के अर्थ में बहुत जगह आई है. हदीस शरीफ़ में है **"अद-दुआओ हुवल इबादतो"** (अबू दाऊद, तिरमिज़ी) इस सूरत में आयत के मानी ये होंगे कि तुम मेरी इबादत करो मैं तुम्हें सवाब दूंगा.

सूरए मूमिन - सातवाँ रूकू

(१) कि उसमें अपना काम इत्मीनान के साथ करो.
(२) कि उसको छोड़कर बुतों को पूजते हो और उसपर ईमान नहीं लाते जबकि दलीलें कायम हैं.
(३) और हक़ से फिरते हैं, दलीलें क़ायम होने के बावुजूद.
(४) और उनमें सच्चाई जानने के लिये नज़र और ग़ौर नहीं करते.
(५) कि वह तुम्हारी क़रारगाह हो, ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी.
(६) कि उसको क़ुब्बे की तरह बलन्द फ़रमाया.
(७) कि तुम्हें अच्छे डील डौल, नूरानी चेहरे और सुडौल किया, जानवरों की तरह न बनाया कि औंधे चलते.
(८) नफ़ीस खाने पीने की चीज़ें.
(९) कि उसकी फ़ना मुहाल है, असंभव है.
(१०) शरीर काफ़िरों ने जिहालत और गुमराही के तौर पर अपने झूठे दीन की तरफ़ हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दावत दी थी और आपसे बुत परस्ती की दरख़्वास्त की थी . इसपर यह आयत उतरी.
(११) अक़्ल व वही की तौहीद पर दलालत करने वाली.
(१२) यानी तुम्हारे अस्ल और तुम्हारे पितामह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को.
(१३) हज़रत आदम के बाद उनकी नस्ल को.

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ
ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ
فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ڕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾
فِي الْحَمِيْمِ ڏ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ
لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ
قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـــًٔا ۭ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

منزل ٦

से[१४] फिर ख़ून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी को पहुंचो[१५] फिर इसलिये कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है[१६] और इसलिये कि तुम एक मुक़र्रर वादे तक पहुंचो[१७] और इसलिए कि समझो[१८] ﴿६७﴾ वही है कि जिलाता है और मारता है, फिर जब कोई हुक्म फ़रमाता है तो उससे यही कहता है कि होजा जभी वह हो जाता है[१९] ﴿६८﴾

आठवाँ रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं[१] कहाँ फेरे जाते हैं[२] ﴿६९﴾ वो जिन्होंने झुटलाई किताब[३] और जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजा[४] वो बहुत जल्द जान जाएंगे[५] ﴿७०﴾ जब उनकी गर्दनों में तौक़ होंगें और ज़ंजीरें[६] घसीटे जाएंगे ﴿७१﴾ खौलते पानी में, फिर आग में दहकाए जाएंगे[७] ﴿७२﴾ फिर उनसे फ़रमाया जाएगा कि कहाँ गए वो जो तुम शरीक बनाते थे[८] ﴿७३﴾ अल्लाह के मुक़ाबिल, कहेंगे वो तो हम से गुम गए[९] बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे[१०] अल्लाह यूंही गुमराह करता है काफ़िरों को ﴿७४﴾ यह[११] उसका बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर ख़ुश होते थे[१२] और उसका

(१४) यानी मनी के क़तरे से.
(१५) और क़ुव्वत सम्पूर्ण हो.
(१६) यानी बुढ़ापे या जवानी के पहुंचने से पहले, यह इसलिये किया कि तुम ज़िन्दगानी करो.
(१७) ज़िन्दगी के सीमित समय तक.
(१८) तौहीद की दलीलों को, और ईमान लाओ.
(१९) यानी चीज़ों का वुजूद उसके इरादे के आधीन है कि उसने इरादा फ़रमाया और चीज़ मौजूद हुई. न कोई कुलफ़त है न मशक़्क़त है न किसी सामान की हाजत, यह उसकी भरपूर क़ुदरत का बयान है.

सूरए मूमिन - आठवाँ रूकू

(१) यानी क़ुरआने पाक में.
(२) ईमान और सच्चे दीन से.
(३) यानी काफ़िर जिन्होंने क़ुरआन शरीफ़ को झुटलाया.
(४) उसको भी झुटलाया और उसके रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी. इससे मुराद या तो वो किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वो सच्चे अक़ीदे जो तमाम नबियों ने पहुंचाए जैसे अल्लाह की वहदानियत और मरने के बाद उठाए जाने का अक़ीदा.
(५) अपने झुटलाने का परिणाम.
(६) और इन ज़ंजीरों से.
(७) और वह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उनके अन्दर भी भरी होगी. (अल्लाह तआला की पनाह)
(८) यानी वो बुत क्या हुए जिनकी तुम पूजा करते थे.
(९) कहीं नज़र ही नहीं आते.
(१०) बुतों की पूजा का इन्कार कर जाएंगे. फिर बुत हाज़िर किये जाएंगे और काफ़िरों से फ़रमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे ये मअबूद सब जहन्नम का ईंधन हो. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि जहन्नमियों का यह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इसके यह मानी हैं कि अब हमें ज़ाहिर होगया कि जिन्हें हम पूजते थे वो कुछ न थे कि कोई नफ़ा या नुक़सान पहुंचा सकते.
(११) यानी यह अज़ाब जिसमें तुम गिरफ़्तार हो.
(१२) यानी शिर्क और बुत परस्ती और दोबारा उठाए जाने के इन्कार पर.

تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

منزل ٦

बदला है जो तुम इतराते थे﴾७५﴿ जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने, तो क्या ही बुरा ठिकाना घमण्डियों का[13]﴾७६﴿ तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वादा[14] सच्चा है, तो अगर हम तुम्हें दिखा दें[15] कुछ वह चीज़ जिसका उन्हें वादा दिया जाता है[16] या तुम्हें पहले ही वफ़ात(मृत्यु) दें बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना[17]﴾७७﴿ और बेशक हमने तुमसे पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिन में किसी का अहवाल तुमसे बयान फ़रमाया[18] और किसी का अहवाल न बयान फ़रमाया[19], और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए ख़ुदा के हुक्म के बिना, फिर जब अल्लाह का हुक्म आएगा[20] सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[21] और बातिल(असत्य) वालों का वहाँ ख़सारा﴾७८﴿

नवाँ रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये चौपाए बनाए कि किसी पर सवार हो और किसी का गोश्त खाओ﴾७९﴿ और तुम्हारे लिये उनमें कितने ही फ़ायदे हैं[1] और इसलिये कि तुम उनकी पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो[2] और उनपर[3] और किश्तियों पर[4] सवार होते हो﴾८०﴿ और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है[5] तो अल्लाह की कौन सी निशानी का इन्कार करोगे[6]﴾८१﴿ तो क्या उन्होंने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का कैसा

(१३) जिन्होंने घमण्ड किया और हक़ को क़ुबूल न किया.
(१४) काफ़िरों पर अज़ाब फ़रमाने का.
(१५) तुम्हारी वफ़ात से पहले.
(१६) अज़ाब की क़िस्मों से, जैसे बद्र में मारे जाने के, जैसा कि यह वाक़े हुआ.
(१७) और सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार होना.
(१८) इस क़ुरआन में तफ़सील के साथ.
(१९) क़ुरआन शरीफ़ में तफ़सील से और ख़ुला खुला (मिरक़ात) और उन तमाम नबियों को अल्लाह तआला ने निशानी और चमत्कार अता फ़रमाए और उनकी क़ौमों ने उनसे जंग की और उन्हें झुटलाया इसपर उन हज़रात ने सब्र किया. इस बयान से तात्पर्य नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली है कि जिस तरह के वाक़िआत क़ौम की तरफ़ से आपको पेश आ रहे हैं जैसी तकलीफ़ें पहुंच रही हैं, पहले नबियों के साथ भी यही हालात गुज़र चुके हैं. उन्होंने सब्र किया, आप भी सब्र फ़रमाएं.
(२०) काफ़िरों पर अज़ाब उतारने के बारे में.
(२१) रसूलों के, और उनके झुटलाने वालों के बीच.

सूरए मूमिन - नवाँ रूकू

(१) कि उनके दूध और ऊन वग़ैरह काम में लाते हो और उनकी नस्ल से नफ़ा उठाते हो.
(२) यानी अपने सफ़रों में अपने वज़नी सामान उनकी पीठों पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हो.
(३) ख़ुश्की के सफ़रों में.
(४) दरियाई सफ़रों में.
(५) जो उसकी क़ुदरत और वहदानियत पर दलालत करती हैं.
(६) यानी वो निशानियाँ ऐसी ज़ाहिर व खुली हैं कि उनके इन्कार की कोई सूरत ही नहीं.

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ
مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَ
حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨٣ فَلَمَّا رَاَوْا
بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ
مُشْرِكِيْنَ ۝٨٤ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا
بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ
وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٥

(٤١) سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (٦١) آيَاتُهَا ٥٤ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ كِتٰبٌ
فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣

منزل ٦

अंजाम हुआ, वो उनसे बहुत थे(७) और उनकी क़ुव्वत(८) और ज़मीन में निशानियां उनसे ज़्यादा(९) तो उनके क्या काम आया जो उन्हों ने कमाया(१०)﴾८२﴿ तो जब उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाए तो वो उसी पर ख़ुश रहे जो उनके पास दुनिया का इल्म था(११) और उन्हीं पर उलट पड़ा जिसकी हंसी बनाते थे(१२) फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उसके शरीक करते थे उनसे इन्कारी हुए(१३)﴾८३﴿ तो उनके ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर जो उसके बन्दों में गुज़र चुका(१४) और वहाँ काफ़िर घाटे में रहे(१५)﴾८४﴿

४१- सूरए हामीम सज्दा

सूरए हामीम सज्दा मक्का में उतरी, इसमें ५४ आयतें, ६ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) हा-मीम.﴾१﴿ यह उतारा है बड़े रहम वाले मेहरबान का﴾२﴿ एक किताब है जिसकी आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं(२) अरबी क़ुरआन अक़्ल वालों के लिये﴾३﴿

(७) उनकी संख्या अधिक थी.
(८) और जिस्मानी ताक़त भी उनसे अधिक थी.
(९) यानी उनके महल और इमारतें वग़ैरह.
(१०) मानी ये हैं कि अगर ये लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मालूम हो जाता कि इन्कार और ज़िद करने वालों का क्या परिणाम हुआ और वो किस तरह हलाक और बर्बाद हुए और उनकी तादाद उनके ज़ोर और उनके माल कुछ भी उनके काम न आ सके.
(११) और उन्होंने नबियों के इल्म की तरफ़ तवज्जह न की. उसे हासिल करने और उससे नफ़ा उठाने पर ध्यान न दिया बल्कि उसको तुच्छ जाना और उसकी हंसी बनाई और अपने दुनियावी इल्म को जो हक़ीक़त में जिहालत है, पसन्द करते रहे.
(१२) यानी अल्लाह तआला का अज़ाब.
(१३) यानी जिन बुतों को उसके सिवा पूजते थे उनसे बेज़ार हुए.
(१४) यह है कि अज़ाब उतरने के वक़्त ईमान लाना नफ़ा नहीं देता उस वक़्त ईमान क़ुबूल नहीं किया जाता और यह भी अल्लाह तआला की सुन्नत है कि रसूलों के झुटलाने वालों पर अज़ाब उतरता है.
(१५) यानी उनका घाटा और टोटा अच्छी तरह ज़ाहिर हो गया.

४१ - सूरए हामीम सज्दा - पहला रूकू

(१) इस सूरत का नाम सूरए फ़ुस्सेलत भी है और सूरए सज्दा और सूरए मसाबीह भी है. यह सूरत मक्के में उतरी. इसमें छ रूकू, चव्वन आयतें, सात सौ छियानवे कलिमे और तीन हज़ार तीन सौ पचास अक्षर हैं.
(२) अहकाम, मिसालें, कहावतें, नसीहतें, वादे, ख़ुशख़बरियाँ, चेतावनी वग़ैरह के बयान में.
(३) अल्लाह तआला के दोस्तों को सवाब की.

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝

منزل ٦

ख़ुशख़बरी देता[३] और डर सुनाता[४] तो उनमें अक्सर ने मुंह फेरा तो वो सुनते ही नहीं[५]《४》 और बोले[६] हमारे दिल ग़लाफ़ में हैं उस बात से जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो[७] और हमारे कानों में टैंट (रुई) है[८] और हमारे और तुम्हारे बीच रोक है[९] तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं[१०]《५》 तुम फ़रमाओ[११] आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूँ[१२] मुझे वही होती है कि तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है तो उसके हुज़ूर सीधे रहो[१३] और उससे माफ़ी मांगो[१४] और ख़राबी है शिर्क वालों को《६》 वो जो ज़कात नहीं देते[१५] और वो आख़िरत के मुन्किर हैं[१६]《७》 बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बे इन्तिहा सवाब है[१७]《८》

दूसरा रूकू

तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उसका इन्कार रखते हो जिसने दो दिन में ज़मीन बनाई[१] और उसके हमसर ठहराते हो[२] वह है सारे जगत का रब[३]《९》 और उसमें[४] उसके ऊपर से लंगर डाले[५] और उसमें बरकत रखी[६] और उसमें उसके बसने वालों की रोज़ियाँ मुक़र्रर कीं यह सब मिलाकर चार दिन में[७], ठीक जवाब पूछने वालों को《१०》

(४) अल्लाह तआला के दुश्मनों को अज़ाब का.
(५) तवज्जह से क़ुबूल का सुनना.
(६) मुश्रिक लोग, हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से.
(७) हम उसको समझ ही नहीं सकते, यानी तौहीद और ईमान को.
(८) हम बेहरे हैं आपकी बात हमारे सुनने में नहीं आती. इससे उनकी मुराद यह थी कि आप हमसे ईमान और तौहीद क़ुबूल करने की आशा न रखिये. हम किसी तरह मानने वाले नहीं और न मानने में हम उस व्यक्ति की तरह हैं जो न समझता हो, न सुनता हो.
(९) यानी दीनी मुख़ालिफ़त, तो हम आपकी बात मानने वाले नहीं.
(१०) यानी तुम अपने दीन पर रहो, हम अपने दीन पर क़ायम हैं, या ये मानी हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वह करो. हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे.
(११) ऐ मख़लूक़ में सबसे बुज़ुर्गी वाले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैको वसल्लम, विनम्रता के तौर पर उन लोगों को राह दिखाने और हिदायत के लिये कि ---
(१२) ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूँ मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे बीच में ज़ाहिर तौर पर कोई जिन्सी इख़्तिलाफ़ भी नहीं है तो तुम्हारा यह कहना कैसे सही हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुंचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे बीच कोई रोक हो बजाय मेरे कोई ग़ैर जिन्स फ़रिश्ता या जिन्न आता तो तुम कह सकते थे कि न वो हमारे देखने में आएं न उनकी बात सुनने में आए न हम उनके कलाम को समझ सकें हमारे उनके बीच तो जिन्स का अलग होना ही बड़ी रोक है. लेकिन यहाँ तो ऐसा नहीं है क्योंकि मैं इन्सान की सूरत में जलवानुमा हुआ तो तुम्हें मुझसे मानूस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और उससे फ़ायदा उठाने की बहुत कोशिश करनी चाहिये क्योंकि मेरा दर्जा बहुत बलन्द है, मेरा कलाम बहुत ऊंचा है इसलिये कि मैं वही कहता हूँ जो मुझे वही होती है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ज़ाहिरी तौर से "आदमी होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूँ" फ़रमाना हिदायत और राह दिखाने की हिकमत से है और विनम्रता के तरीक़े से है और जो विनम्रता के लिये कलिमात कहे जाएं वो विनम्रता करने वाले के बलन्द दर्जे की दलील होते हैं छोटों का इन कलिमात को उसकी शान में कहना या उससे बराबरी ढूंढना अदब छोड़ना और गुस्ताख़ी होती है. तो किसी उम्मती को जायज़ नहीं कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जैसा होने का दावा करे. यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि आपकी बशरिय्यत भी सबसे अअला है. हमारी बशरिय्यत को उससे कुछ निस्बत नहीं.
(१३) उस पर ईमान लाओ उसकी फ़रमाँबरदारी करो और उसकी राह से न फिरो.
(१४) अपने अक़ीदे और अमल की ख़राबी की.
(१५) यह ज़कात के इन्कार से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मालूम हो कि ज़कात को मना करना ऐसा बुरा है कि

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۱۲﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا

फिर आसमान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वह धुंआ था[८] तो उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो ख़ुशी से चाहे नाख़ुशी से, दोनों ने अर्ज़ की कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए﴾११﴿ तो उन्होंने पूरे सात आसमान कर दिया दो दिन में[९] और हर आसमान में उसी के काम के अहकाम भेजे[१०] और हमने नीचे के आसमान को[११] चिराग़ों से आरास्ता किया[१२] और निगहबानी के लिये[१३], यह उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले का ठहराया हुआ है﴾१२﴿ फिर अगर वो मुंह फेरें[१४] तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक कड़क से जैसी कड़क आद और समूद पर आई थी[१५]﴾१३﴿ जब रसूल उनके आगे पीछे फिरते थे[१६] कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो, बोले[१७] हमारा रब चाहता तो फ़रिश्ते उतारता[१८] तो जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[१९]﴾१४﴿ तो वो जो आद थे उन्होंने ज़मीन में नाहक़ घमण्ड किया[२०] और बोले हम से ज़्यादा किस का ज़ोर और क्या उन्होंने न जाना कि अल्लाह जिसने उन्हें बनाया उनसे ज़्यादा क़वी (शक्तिशाली) है, और हमारी

क़ुरआने पाक में मुश्रिकों की विशेषताओं में ज़िक्र किया गया और इसकी वजह यह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है. माल का ख़ुदा की राह में ख़र्च कर डालना उसके पक्के इरादे, दृढ़ता और सच्चाई और नियत की नेकी की मज़बूत दलील है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़कात से मुराद है तौहीद को मानना और लाइलाहा इल्लल्लाहो कहना. इस सूरत में मानी ये होंगे कि जो तौहीद का इक़रार करके अपने नफ़्सों को शिर्क से बाज़ नहीं रखते, और क़तादह ने इसके मानी ये लिये हैं कि जो लोग ज़कात को वाजिब नहीं जानते, इसके अलावा और भी क़ौल हैं.

(१६) कि मरने के बाद उठने और जज़ा के मिलने के क़ायल नहीं.

(१७) जो ख़त्म न होगा. यह भी कहा गया है कि आयत बीमारों अपाहिजों और बूढ़ों के हक़ में उतरी जो अमल और फ़रमाँबरदारी के क़ाबिल न रहें. उन्हें वही मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अमल करते थे. बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि जब बन्दा कोई अमल करता है और किसी बीमारी या सफ़र के कारण वो काम करने वाला उस अमल से मजबूर हो जाता है तो स्वास्थ्य और इक़ामत की हालत में जो करता था वैसा ही उसके लिये लिखा जाता है.

सूरए हामीम सज्दा - दूसरा रूकू

(१) उसकी ऐसी भरपूर क़ुदरत है, और चाहता तो एक पल से भी कम में बना देता.

(२) यानी शरीक.

(३) और वही इबादत का मुस्तहिक़ है उसके सिवा कोई पूजे जाने के लायक़ नहीं . सब उसकी ममलूक और मख़्लूक़ हैं. इसके बाद फिर उसकी क़ुदरत का बयान फ़रमाया जाता है .

(४) यानी ज़मीन में.

(५) पहाड़ों के.

(६) नदी और नेहरें और दरख़्त और फल और तरह तरह के जानदार वग़ैरह पैदा करके.

(७) यानी दो दिन ज़मीन की पैदायश और दो दिन में ये सब.

(८) यानी बुख़ार(भाप) बलन्द होने वाला.

(९) ये कुल छ दिन हुए, इनमें सबसे पिछला जुमुआ (शुक्रवार) है.

(१०) वहाँ के रहने वालों को ताअतों और इबादातों और, यह करो वह न करो, के आदेशों के.

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَاۗءُ
اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا مَا
جَاۗءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
عَلَيْنَا ۭ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا

आयतों का इन्कार करते थे﴾१५﴿ तो हमने उनपर एक आंधी भेजी सख़्त गरज की[२१] उनकी शामत के दिनों में कि हम उन्हें रूस्वाई का अज़ाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अज़ाब में सबसे बड़ी रूस्वाई है और उनकी मदद न होगी﴾१६﴿ और रहे समूद उन्हें हमने राह दिखाई[२२] तो उन्होंने सूझने पर अंधे होने को पसन्द किया[२३] तो उन्हें ज़िल्लत के अज़ाब की कड़क ने आ लिया[२४] सज़ा उनके किये की[२५]﴾१७﴿ और हमने[२६] उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए[२७] और डरते थे[२८]﴾१८﴿

तीसरा रूकू

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन[१] आग की तरफ़ हांके जाएंगे तो उनके अगलों को रोकेंगे﴾१९﴿ यहां तक कि पिछले आ मिलें[२] यहां तक कि जब वहाँ पहुंचेंगे उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े सब उनपर उनके किये की गवाही देंगे[३]﴾२०﴿ और वो अपनी खालों से कहेंगे तुमने हम पर क्यों गवाही दी, वो कहेंगी हमें अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को गोयाई (बोलने की ताक़त) बख़्शी और उसने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की तरफ़ तुम्हें फिरना है﴾२१﴿ और तुम[४] उससे कहाँ छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें

(११) जो ज़मीन से क़रीब है.
(१२) यानी रौशन सितारों से.
(१३) चुराने वाले शैतानों से.
(१४) यानी अगर ये मुश्रिक लोग इस बयान के बाद भी ईमान लाने से मुंह फेरें.
(१५) यानी हलाकत वाले अज़ाब से, जैसा उन पर आया था.
(१६) यानी आद व समूद क़ौमों के रसूल हर तरफ़ से आते थे और उनकी हिदायत की हर तदबीर अमल में लाते थे और उन्हें हर तरह नसीहत करते थे.
(१७) उनकी क़ौम के काफ़िर उनके जवाब में कि ---
(१८) तुम्हारे बजाय, तुम तो हमारी तरह आदमी हो .
(१९) यह ख़िताब उनका हज़रत हूद और हज़रत सालेह और सारे नबियों से था जिन्होंने ईमान की दावत दी. इमाम बग़वी ने सअलबी की सनद से हज़रत जाबिर से रिवायत की कि क़ुरैश की जमाअत ने, जिसमें अबू जहल वग़ैरह सरदार भी थे, यह प्रस्ताव रखा कि कोई ऐसा व्यक्ति, जो शायरी और तंत्र विद्या में माहिर हो, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कलाम करने के लिये भेजा जाए. चुनान्चे उतबा बिन रबीआ का चुनाव हुआ. उतबा ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आकर कहा कि आप बेहतर हैं या हाशिम, आप बेहतर हैं या अब्दुल मुत्तलिब, आप बेहतर हैं या अब्दुल्लाह, आप क्यों हमारे मअबूदों को बुरा कहते हैं, क्यों हमारे बाप दादा को गुमराह बताते हैं. हुकूमत का शौक़ हो तो हम आपको बादशाह मान लें, आपके परचम उड़ाएं, औरतों का शौक़ हो तो क़ुरैश की जिन लड़कियों में से आप पसन्द करें हम दस आपके अक़्द में दें, माल की ख़्वाहिश हो तो इतना जमा कर दें जो आपकी नस्लों से भी बच रहे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ये तमाम बातें ख़ामोशी से सुनते रहे. जब उतबा अपनी तक़रीर करके चुप हुआ तो हुज़ूरे अनवर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने यही सूरत हामीम सज्दा पढ़ी जब आप आयत "फ़ इन अअरदू फ़क़ुल अन्ज़रतुकुम साइक़तन मिस्ला साइक़ते आदिंव व समूदा" पर पहुंचे तो उतबा ने जल्दी से अपना हाथ हुज़ूर के दहने मुबारक पर रख दिया और आपको रिश्ते और क़राबत के वास्ते से क़सम दिलाई और डर कर अपने घर भाग गया. जब क़ुरैश उसके मकान पर पहुंचे तो उसने तमाम हाल बयान करके कहा कि ख़ुदा की क़सम मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) जो कहते हैं न वह शेअर है न जादू है न तांत्रिक विद्या है. मैं इन चीज़ों को ख़ूब जानता हूँ मैं ने उनका कलाम सुना जब उन्होंने आयत "फ़इन अअरदू" पढ़ी तो मैं ने उनके मुंह पर हाथ रख दिया और उन्हें क़सम दी कि बस करें और तुम जानते ही हो कि वो जो कुछ फ़रमाते हैं वही हो जाता है उनकी बात कभी झूटी नहीं होती. मुझे अन्देशा हो गया कि कहीं तुम पर अज़ाब न उतरने लगे.

أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِن ظَنَنتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا
يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي
ظَنَنتُم بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾
فَإِن يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِن يَسْتَعْتِبُوا
فَمَا هُم مِّنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ
فَزَيَّنُوا لَهُم مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم
مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ
وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۖ
لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا

منزل ٦

और तुम्हारी खालें[५] लेकिन तुम तो यहे समझे बैठे थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता[६]﴿२२﴾ और यह है तुम्हारा वह गुमान जो तुमने अपने रब के साथ किया और उसने तुम्हें हलाक कर दिया[७] तो अब रह गए हारे हुओं में﴿२३﴾ फिर अगर वो सब्र करें[८] तो आग उनका ठिकाना है[९] और अगर वो मनाना चाहें तो कोई उनका मनाना न माने[१०]﴿२४﴾ और हमने उनपर कुछ साथी तैनात किये[११] उन्होंने उन्हें भला कर दिखाया जो उनके आगे है[१२] और जो उनके पीछे[१३] और उनपर बात पूरी हुई[१४] उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुज़र चुके जिन्न और आदमियों के, बेशक वो ज़ियांकार (पापी) थे﴿२५﴾

चौथा रूकू

और काफ़िर बोले[१] यह क़ुरआन न सुनो और इसमें बेहूदा ग़ुल करो[२] शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ[३]﴿२६﴾ तो बेशक ज़रूर हम काफ़िरों को सख़्त अज़ाब चखाएंगे और बेशक हम उनके बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे[४]﴿२७﴾ यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग, इसमें उन्हें हमेशा रहना है, सज़ा उसकी कि हमारी आयतों का इन्कार

(२०) क़ौमे आद के लोग बड़े मज़बूत और शहज़ोर थे जब हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराया तो उन्हों ने कहा कि हम अपनी ताक़त से अज़ाब को हटा सकते हैं.
(२१) निहायत ठण्डी बग़ैर बारिश के.
(२२) और नेकी और बदी के तरीक़े उनपर ज़ाहिर फ़रमाए.
(२३) और ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र इख़्तियार किया.
(२४) और हौलनाक आवाज़ के अज़ाब से हलाक किये गए.
(२५) यानी उनके शिर्क और नबी को झुटलाने और गुनाहों की.
(२६) साइक़ा यानी कड़क के उस ज़िल्लत वाले अज़ाब से.
(२७) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर.
(२८) शिर्क और बुरे कर्मों से.

सूरए हामीम सज्दा - तीसरा रूकू

(१) यानी काफ़िर अगले और पिछले.
(२) फिर सबको दोज़ख़ में हाँक दिया जाएगा.
(३) शरीर के अंग अल्लाह के हुक्म से बोल उठेंगे और जो जो कर्म किये थे बता देंगे.
(४) गुनाह करते वक़्त.
(५) तुम्हें तो इसका गुमान भी न था बल्कि तुम तो मरने के बाद उठाए जाने और जज़ा के सिरे से ही क़ायल न थे.
(६) जो तुम छुपा कर करते हो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि काफ़िर यह कहते थे कि अल्लाह तआला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उसको नहीं जानता.
(७) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया मानी ये हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया.
(८) अज़ाब पर.
(९) यह सब्र भी कारआमद नहीं.
(१०) यानी हक़ तआला उनसे राज़ी न हो चाहे कितनी ही मिन्नत करें किसी तरह अज़ाब से रिहाई नहीं.
(११) शैतानों में से.

يَجْحَدُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا
الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ
أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ
الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ
الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي
أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ
رَحِيمٍ ۝ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَ
عَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِي
الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ
حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا

करते थे《२८》 और काफ़िर बोले[५] ऐ हमारे रब हमें दिखा वो दोनों जिन्न और आदमी जिन्होंने हमें गुमराह किया[६] कि हम उन्हें अपने पाँव तले डालें[७] कि वो हर नीचे से नीचे रहें[८]《२९》 बेशक वो जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उसपर क़ायम रहे[९] उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं[१०] कि न डरो[११] और न ग़म करो[१२] और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिस का तुम्हें वादा दिया जाता था[१३]《३०》 हम तुम्हारे दोस्त हैं दुनिया की ज़िन्दगी में[१४] और आख़िरत में[१५] और तुम्हारे लिये है उसमें[१६] जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये उसमें जो मांगो《३१》 मेहमानी बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से《३२》

पाँचवां रूकू

और उससे ज़्यादा किसकी बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए[१] और नेकी करे[२] और कहे मैं मुसलमान हूँ[३]《३३》 और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले, बुराई को भलाई से टाल[४] जभी वह कि तुझ में और उसमें दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त[५]《३४》 और यह दौलत[६] नहीं मिलती मगर साबिरों को, और इसे नहीं पाता मगर बड़े

(१२) यानी दुनिया की ज़ेबो ज़ीनत और नफ़्स की ख़्वाहिशों का अनुकरण.
(१३) यानी आख़िरत की बात यह वसवसा डालकर कि न मरने के बाद उठना है न हिसाब न अज़ाब, चैन ही चैन है.
(१४) अज़ाब की.

सूरए हामीम सज्दा - चौथा रूकू

(१) यानी क़ुरैश के मुश्रिक लोग.
(२) और शोर मचाओ. काफ़िर एक दूसरे से कहते थे कि जब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें तो ज़ोर ज़ोर से शोर करो, ख़ूब चिल्लाओ, ऊंची ऊंची आवाज़ें निकाल कर चीख़ो, बेमानी कलिमात से शोर करो. तालियाँ और सीटियाँ बजाओ ताकि कोई क़ुरआन न सुनने पाए और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) परेशान हों.
(३) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पढ़ना बन्द कर दें.
(४) यानी कुफ़्र का बदला सख़्त अज़ाब.
(५) जहन्नम में.
(६) यानी हमें वो दोनों शैतान दिखा, जिन्नी भी और इन्सी भी. शैतान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों में से, एक इन्सानों में से जैसा कि क़ुरआने पाक में है, **''शयातीनल इन्से वल जिन्ने''** (सूरए अनआम, आयत ११२) जहन्नम में काफ़िर इन दोनों को देखने की ख़्वाहिश करेंगे.
(७) आग में.
(८) पाताल में, हम से ज़्यादा सख़्त अज़ाब में.
(९) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो से पूछा गया इस्तिक़ामत क्या है, फ़रमाया यह कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करें. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस्तिक़ामत यह है कि अल्लाह ने जिन बातों की इजाज़त दी है और जिन बातों से रोका है उसपर क़ायम रहे. हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया इस्तिक़ामत यह है कि अमल में इख़्लास करे. हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस्तिक़ामत यह है कि फ़रायज़ अदा करे. और इस्तिक़ामत के मानी में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला के हुक्म को बजा लाए और गुमराही से बचे.
(१०) मौत के वक़्त या वो जब क़ब्रों से उठेंगे और यह भी कहा गया है कि मूमिन को तीन बार बशारत दी जाती है एक मौत के वक़्त, दूसरे क़ब्र में तीसरे क़ब्रों से उठने के वक़्त.

يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا
لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝
فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ
لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ
اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاۗءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ
الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۭ اَفَمَنْ
يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ
اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ اِنَّ

नसीब वाला﴾३५﴿ और अगर तुझे शैतान का कोई कौंचा (तकलीफ़) पहुंचे[७] तो अल्लाह की पनाह मांग[८] बेशक वही सुनता जानता है﴾३६﴿ और उसकी निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चांद[९] सज्दा न करो सूरज को और न चांद को[१०] और अल्लाह को सज्दा करो जिसने उन्हें पैदा किया[११] अगर तुम उसके बन्दे हो﴾३७﴿ तो अगर ये घमण्ड करें[१२] तो वो जो तुम्हारे रब के पास हैं[१३] रात दिन उसकी पाकी बोलते हैं और उकताते नहीं﴾३८﴿ और उसकी निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे बेक़द्र पड़ी[१४] फिर जब हमने उसपर पानी उतारा[१५] तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली, बेशक जिसने उसे जिलाया ज़रूर मुर्दे जिलाएगा, बेशक वह सब कुछ कर सकता है﴾३९﴿ बेशक वो जो हमारी आयतों में टेढ़े चलते हैं[१६] हम से छुपे नहीं,[१७] तो क्या आग में डाला जाएगा[१८] वह भला या जो क़यामत में अमान से आएगा[१९] जो जी में आए करो बेशक वह तुम्हारे काम देख रहा है﴾४०﴿

(११) मौत से, और आख़िरत में पेश आने वाले हालात से.
(१२) घर वालों और औलाद के छूटने का या गुनाहों का.
(१३) और फ़रिश्ते कहेंगे.
(१४) तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे.
(१५) तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे.
(१६) यानी जन्नत में वह करामात और नेअमत और लज़्ज़त.

सूरए हामीम सज्दा - पाँचवां रूकू

(१) उसकी तौहीद और इबादत की तरफ़. कहा गया है कि इस दावत देने वाले से मुराद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं और यह भी कहा गया है कि वह मूमिन मुराद है जिसने नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दावत को क़ुबूल किया और दूसरों को नेकी की दावत दी.
(२) हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया, मेरे नज़्दीक यह आयत मुअज़्ज़िनों के हक़ में उतरी और एक क़ौल यह भी है कि जो कोई किसी तरीक़े पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ दावत दे, वह इसमें दाख़िल है. अल्लाह तआला की तरफ़ दावत के कई दर्जे हैं. अव्वल नबियों की दावत, चमत्कारों और हुज्जतों और दलीलों और तलवार के साथ. यह दर्जा नबियों के साथ ख़ास है. दूसरी दावत उलमा की, फ़क़त हुज्जतों और प्रमाणों के साथ. और उलमा कई तरह के हैं एक आलिम बिल्लाह, दूसरे आलिम बिसिफ़ातिल्लाह, तीसरे आलिम बिअहकामिल्लाह. तीसरा दर्जा मूजाहिदीन की दावत का है, यह काफ़िरों को तलवार के साथ होती है. यहाँ तक कि वो दीन में दाख़िल हों और ताअत क़ुबूल कर लें. चौथा दर्जा मुअज़्ज़िनों की दावत नमाज़ के लिये. नेक कर्मों की दो क़िस्म है एक वह जो दिल से हो, वह मअरिफ़ते इलाही है. दूसरे जो शरीर से हो, वो तमाम ताअतें हैं.
(३) और यह फ़क़त क़ौल न हो बल्कि इस्लाम को दिल से मान कर कहे कि सच्चा कहना यही है.
(४) मिसाल के तौर पर ग़ुस्से को सब्र से और जिहालत को हिल्म से और दुर्व्यवहार को माफ़ी से, कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू माफ़ कर.
(५) यानी इस ख़सलत का नतीजा यह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह महब्बत करने लगेंगे. कहा गया है कि यह आयत अबू सुफ़ियान के हक़ में उतरी कि उनकी दुश्मनी की सख़्ती के बावुजूद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके साथ नेक व्यवहार किया. उनकी साहिबज़ादी को अपने निकाह में लिया. इसका नतीजा यह हुआ कि वह महब्बत में सच्चे और जाँ निसार हो गए.

الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّهُ لَكِتٰبٌ
عَزِيزٌ ۝ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا
مِنْ خَلْفِهِ ۚ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ مَا
يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ
قُرْاٰنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهُ ۚ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَعَرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ اٰمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۚ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ
عَمًى ۚ أُولٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ
وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝

बेशक जो ज़िक्र से मुन्किर हुए[२०] जब वह उनके पास आया उनकी ख़राबी का कुछ हाल न पूछ और बेशक यह इज़्ज़त वाली किताब है[२१] ﴾४१﴿ बातिल को उसकी तरफ़ राह नहीं न उसके आगे से न उसके पीछे से[२२] उतारा हुआ है हिकमत(बोध) वाले सब ख़ूबियों सराहे का ﴾४२﴿ तुम से न फ़रमाया जाएगा[२३] मगर वही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया, कि बेशक तुम्हारा रब बख़्शिश वाला[२४] और दर्दनाक अज़ाब वाला है[२५] ﴾४३﴿ और अगर हम इसे अजमी ज़बान का क़ुरआन करते[२६] तो ज़रूर कहते कि इसकी आयतें क्यों न खोली गईं[२७] क्या किताब अजमी और नबी अरबी[२८] तुम फ़रमाओ वह[२९] ईमान वालों के लिये हिदायत और शिफ़ा है[३०] और वो जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में टैंट (रुई) है[३१] और वह उनपर अन्धापन है[३२] मानो वो दूर जगह से पुकारे जाते हैं[३३] ﴾४४﴿

छटा रूकू

और बेशक हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई[१] तो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया[२] और अगर एक बात तुम्हारे रब की तरफ़ से गुज़र न चुकी होती[३] तो जभी उनका फ़ैसला हो जाता[४] और बेशक वो[५] ज़रूर उसकी तरफ़ से एक धोखा डालने वाले शक में हैं ﴾४५﴿ जो नेकी करे वह अपने भले को और जो बुराई करे तो अपने बुरे को, और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता ﴾४६﴿

(६) यानी बदियों को नेकियों से दफ़ा करने की ख़सलत.
(७) यानी शैतान तुझ को बुराइयों पर उभारे और इस नेक ख़सलत से और इसके अलावा और नेकियों से फेर दे.
(८) उसके शर से और अपनी नेकियों पर क़ायम रह, शैतान की राह न इख़्तियार कर, अल्लाह तआला तेरी मदद फ़रमाएगा.
(९) जो उसकी क़ुदरत और हिकमत और उसके रब होने और एक होने को प्रमाणित करते हैं.
(१०) क्योंकि वो मख़लूक़ हैं और ख़ालिक़ के हुक्म के तहत हैं और जो ऐसा हो वह इबादत का मुस्तहिक़ नहीं हो सकता.
(११) वही सज्दा और इबादत का मुस्तहिक़ है.
(१२) सिर्फ़ अल्लाह को सज्दा करने से.
(१३) फ़रिश्ते वो.
(१४) सूखी कि उसमें सब्ज़े का नामो निशान नहीं.
(१५) बारिश उतारी.
(१६) और आयतों की व्याख्या में सेहत व इस्तिक़ामत से मुंह फेरते हैं.
(१७) हम उन्हें इसकी सज़ा देंगे.
(१८) यानी काफ़िर, अल्लाह को न मानने वाले.
(१९) सच्चे अक़ीदे और ईमान वाला, बेशक वही बेहतर है.
(२०) यानी क़ुरआने करीम से और उन्हों ने उसमें बुराइयाँ निकालीं.
(२१) बेमिसाल और अद्वितीय, जिसकी एक सूरत की तरह बनाने से सारी सृष्टि लाचार है.
(२२) यानी किसी तरह और किसी तरीक़े से भी बातिल उस तक राह नहीं पा सकता. वह परिवर्तन और कमी बेशी से मेहफ़ूज़ है. शैतान उसमें बढ़ाने घटाने की क़ुदरत नहीं रखता.
(२३) अल्लाह तआला की तरफ़ से.
(२४) अपने नबियों के लिये और उन पर ईमान लाने वालों के लिये.
(२५) नबियों के दुश्मनों और झुटलाने वालों के लिये.
(२६) जैसा कि ये काफ़िर ऐतिराज़ के तौर पर कहते हैं कि यह क़ुरआन अजमी ज़बान में क्यों न उतरा.

(२७) और अरबी ज़बान में बयान न की गई कि हम समझ सकते.
(२८) यानी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यों उतरी. हासिल यह है कि क़ुरआने पाक अजमी ज़बान में होता तो ऐतिराज करते, अरबी में आया तो ऐतिराज़ करने लगे. बात यह है कि बुरी ख़सलत वाले के लिये हज़ार बहाने. ऐसे ऐतिराज़ सच्चाई की तलब करने वाले की शान के लायक़ नहीं.
(२९) क़ुरआन शरीफ़.
(३०) कि हक़ की राह बताता है, गुमराही से बचाता है, जिहालत और शक वग़ैरह दिल की बीमारियों से शिफ़ा देता है और शारीरिक रोगों के लिये भी इसका पढ़कर दम करना बीमारी के लिये असर कारक है.
(३१) कि वो क़ुरआने पाक सुनने की नेअमत से मेहरूम हैं.
(३२) कि शक और शुबह की अंधेरियों में जकड़े हुए हैं.
(३३) यानी वो अपने इन्कार से इस हालत को पहुंच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाए तो वह पुकारने वाले की बात न सुने, न समझे.

सूरए हामीम सज्दा - छटा रूकू

(१) यानी पवित्र तौरात.
(२) कुछ ने उसको माना और कुछ ने न माना. कुछ ने इसकी तस्दीक़ की और कुछ ने इसे झुटलाया.
(३) यानी हिसाब और जज़ा को क़यामत तक विलम्बित न फ़रमा दिया होता.
(४) और दुनिया ही में उन्हें उसकी सज़ा दे दी जाती.
(५) यानी अल्लाह की किताब को झुटलाने वाले.

पारा चौबीस समाप्त

पच्चीसवां पारा - इलैहि युरद्दु

सूरए हामीम सज्दा

(छटा रूकू जारी)

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ
مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا
بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا
آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن
مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ
وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ
رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا
لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ
رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾
وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ

क़यामत के इल्म का उसी पर हवाला है[६] और कोई फल अपने ग़लाफ़ से नहीं निकलता और न किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उसके इल्म से[७] और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा[८] कहाँ हैं मेरे शरीक[९] कहेंगे हम तुझसे कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं[१०] ﴾४७﴿ और गुम गया उनसे जिसे पहले पूजते थे[११] और समझ लिये कि उन्हें कहीं[१२] भागने की जगह नहीं ﴾४८﴿ आदमी भलाई मांगने से नहीं उकताता[१३] और कोई बुराई पहुंचे[१४] तो नाउम्मीद आस टूटा[१५] ﴾४९﴿ और अगर हम उसे कुछ अपनी रहमत का मज़ा दें[१६] उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंची थी तो कहेगा यह तो मेरी है[१७] और मेरे गुमान में क़यामत क़ायम न होगी और अगर[१८] मैं रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिए उसके पास भी ख़ूबी ही है[१९] तो ज़रूर हम बतादेंगे काफ़िरों को जो उन्हों ने किया[२०] और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखाएंगे[२१] ﴾५०﴿ और जब हम आदमी पर एहसान करते हैं तो मुंह फेर लेता है[२२] और अपनी तरफ़ दूर हट जाता है[२३] और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है[२४] तो चौड़ी दुआ वाला है[२५] ﴾५१﴿ तुम फ़रमाओ[२६]

सूरए हामीम सज्दा - छटा रूकू जारी

(६) तो जिससे क़यामत का वक़्त पूछा जाए उसको लाज़िम है कि कहे, अल्लाह तआला जानने वाला है.

(७) यानी अल्लाह तआला फल के ग़लाफ़ से निकलने से पहले उसकी हालतों को जानता है, और मादा के गर्भ को और उसकी घड़ियों को और पैदायश के वक़्त को और उसके बुरे और अच्छे और नर व मादा होने सब को जानता है. इसका इल्म भी उसी की तरफ़ हवाले करना चाहिये. अगर यह ऐतिराज़ किया जाए कि अल्लाह के वली और छुपी बातें जानने वाले लोग अक्सर इन बातों की ख़बर देते हैं और वह दुरूस्त साबित होती हैं बल्कि कभी ज्योतिषी और तांत्रिक भी ख़बर देते हैं. इसका जवाब यह है कि ज्योतिषियों और तांत्रिकों की बातें मात्र अटकल होती हैं जो बहुधा ग़लत हो जाती हैं, वह इल्म ही नहीं, बेहक़ीक़त बातें हैं. और अल्लाह के वलियों की ख़बरें बेशक सही होती हैं और वो इल्म से फ़रमाते हैं और यह इल्म उनका ज़ाती नहीं, अल्लाह तआला का अता फ़रमाया हुआ है तो हक़ीक़त में यह उसी का इल्म हुआ, ग़ैर का नहीं. (ख़ाज़िन)

(८) यानी अल्लाह तआला मुश्रिकों से फ़रमाएगा कि ---

(९) जो तुमने दुनिया में घड़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे. इसके जवाब में मुश्रिक लोग ---

(१०) जो आज यह झूठी गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है यानी हम सब ईमान वाले एक ख़ुदा में यक़ीन रखने वाले हैं. ये मुश्रिक लोग अज़ाब देखकर कहेंगे और अपने बुतों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे.

(११) दुनिया में, यानी बुत.

(१२) अल्लाह के अज़ाब से बचने, और.

(१३) हमेशा अल्लाह तआला से माल और ख़ुशहाली और तंदुरूस्ती मांगता रहता है.

(१४) यानी कोई सख़्ती और बला और रोज़ी की तंगी.

(१५) अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और रहमत से निराश हो जाता है. यह और इसके बाद जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वह काफ़िर का हाल है. मूमिन अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होते.

(१६) सेहत व सलामती और माल दौलत अता फ़रमाकर.

(१७) ख़ालिस मेरा हक़ है, मैं अपने अमल से इसका मुस्तहिक़ हूँ.

(१८) बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसलमान कहते हैं.

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۝ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ۝

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ (٤٢)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ

भला बताओ अगर यह क़ुरआन अल्लाह के पास से है[२७] फिर तुम इसके मुन्किर हुए तो उससे बढ़कर गुमराह कौन जो दूर की ज़िद में है[२८] ﴾५२﴿ अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुनिया भर में[२९] और ख़ुद उनके आपे में[३०] यहाँ तक कि उनपर खुल जाए कि बेशक वह हक़ है[३१] क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं ﴾५३﴿ सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है[३२] सुनो वह हर चीज़ को घेरे है[३३] ﴾५४﴿

४२ - सूरए शूरा

सूरए शूरा मक्का में उतरी, इसमें ५३ आयतें, ५ रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] हा-मीम ﴾१﴿ ऐन सीन क़ाफ़ ﴾२﴿ यूंही वही फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़[२] और तुमसे अगलों की तरफ़[३] अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला ﴾३﴿ उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही बलन्दी व अज़मत वाला है ﴾४﴿ क़रीब होता है कि आसमान अपने ऊपर से शक़ हो जाएं[४] और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़

(१९) यानी वहां भी मेरे लिए दुनिया की तरह ऐश और राहत , इज़्ज़त और बुज़ुर्गी है.

(२०) यानी उनके कुकर्म और उनके दुष्कर्मों के परिणाम, और जिस अज़ाब के वो मुस्तहिक़ हैं, उससे उन्हें आगाह कर देंगे.

(२१) यानी अतयन्त सख़्त.

(२२) और इस एहसान का शुक्र बजा नहीं लाता और इस नेअमत पर इतराता है और नेअमत देने वाले परवर्दिगार को भूल जाता है.

(२३) अल्लाहा की याद से घमण्ड करता है.

(२४) किसी क़िस्म की परेशानी, बीमारी या नादारी वग़ैरह पेश आती है.

(२५) ख़ूब दुआएं करता है, रोता है, गिड़गिड़ता है, और लगातार दुआएं मांगे जाता है.

(२६) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्के के काफ़िरों से.

(२७) जैसा कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं और साफ़ ख़ुली दलीलें साबित करती हैं.

(२८) सच्चाई का विरोध करता है.

(२९) आसमान व ज़मीन के घेरों में. सूरज चांद सितारे पेड़ पौधे जानवर, ये सब उसकी क़ुदरत और हिकमत को प्रमाणित करने वाले हैं. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इन आयतों से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियाँ हैं जिनसे नबियों को झुटलाने वालों का हाल मालूम होता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इन निशानियों से पूर्व और पश्चिम की वो विजयें मुराद हैं जो अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनके साथियों को बहुत जल्द अता फ़रमाने वाला है.

(३०) उनकी हस्तियों में लाखों अनोखी बारीकियाँ और अनगिन्त चमत्कार हैं. या ये मानी हैं कि बद्र में काफ़िर मग़लूब व मक़हूर करके ख़ुद उनके अपने हालात में अपनी निशानियों का अवलोकन करा दिया. या ये मानी हैं कि मक्का फ़त्ह फ़रमाकर उनमें अपनी निशानियाँ ज़ाहिर कर देंगे.

(३१) यानी इस्लाम और क़ुरआन की सच्चाई उन पर ज़ाहिर हो जाए.

(३२) क्योंकि वो दोबारा उठाए जाने और क़यामत को नहीं मानते.

(३३) कोई चीज़ उसके इल्म के घेरे से बाहर नहीं और उसकी मालूमात असीम है.

४२ - सूरए शूरा - पहला रूकू

(१) सूरए शूरा जमहूर के नज़्दीक मक्की सूरत है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के एक क़ौल में इसकी चार आयतें मदीनए तैय्यिबह में उतरीं जिनमें पहली "क़ुल ला असअलुकुम अलैहे अजरन" है. इस सूरत में पाँच रूकू, त्रिपन आयतें, आठ सौ

وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَ مَآ اَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا
وَ تُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ
وَ فَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ
وَ الظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ
وَ هُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
وَ مَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝

منزل ۶

के साथ उसकी पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये माफ़ी मांगते हैं,[५] सुन लो बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है﴿५﴾ और जिन्होंने अल्लाह के सिवा और वाली बना रखे हैं[६] वो अल्लाह की निगाह में हैं[७] और तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं[८]﴿६﴾ और यूंही हमने तुम्हारी तरफ़ अरबी क़ुरआन वही भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उसके गिर्द हैं[९]और तुम डराओ इकट्ठे होने के दिन से जिसमें कुछ शक नहीं[१०] एक गिरोह जन्नत में है और एक गिरोह दोज़ख़ में﴿७﴾ और अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में लेता है जिसे चाहे[११] और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार[१२]﴿८﴾ क्या अल्लाह के सिवा और वाली ठहरा लिये हैं[१३] तो अल्लाह ही वाली है और वह मुर्दे जिलाएगा और वह सब कुछ कर सकता है[१४]﴿९﴾

दूसरा रूकू

तुम जिस बात में[१] इख़्तिलाफ़ करो तो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है[२] यह है अल्लाह मेरा रब मैं ने उसपर भरोसा किया और मैं उसकी तरफ़ रूजू लाता हूँ[३]﴿१०﴾

कलिमे और तीन हज़ार पाँच सौ अठासी अक्षर हैं.

(२) ग़ैबी ख़बरें. (ख़ाज़िन)

(३) नबियों से वही फ़रमा चुका.

(४) अल्लाह तआला की महानता और उसकी ऊंची शान से.

(५) यानी ईमानदारों के लिये, क्योंकि काफ़िर इस लायक़ नहीं हैं कि फ़रिश्ते उनके लिये माफ़ी चाहें. यह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये यह दुआ करें कि उन्हें ईमान देकर उनकी मग़फ़िरत फ़रमा.

(६) यानी बुत, जिनको वो पूजते और मअबूद समझते हैं.

(७) उनकी कहनी और करनी उसके सामने हैं और वह उन्हें बदला देगा.

(८) तुम से उनके कर्मों की पकड़ नहीं की जाएगी.

(९) यानी सारे जगत के लोग उन सब को.

(१०) यानी क़यामत के दिन से डराओ जिसमें अल्लाह तआला अगले पिछलों और आसमान व ज़मीन वालों सब को जमा फ़रमाएगा और इस इकट्ठा होने के बाद फिर सब बिखर जाएंगे.

(११) उसको इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है.

(१२) यानी काफ़िरों को कोई अज़ाब से बचाने वाला नहीं.

(१३) यानी काफ़िरों ने अल्लाह तआला को छोड़ कर बुतों को अपना वाली बना लिया है, यह ग़लत है.

(१४) तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है.

सूरए शूरा - दूसरा रूकू

(१) दीन की बातों में से, काफ़िरों के साथ.

(२) क़यामत के रोज़ तुम्हारे बीच फ़ैसला फ़रमाएगा, तुम उनसे कहो

(३) हर बात हर काम में.

(४) यानी तुम्हारी जिन्स में से.

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ
يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ
نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ
اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ
وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا
تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۭ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ
وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ

आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला, तुम्हारे लिये तुम्हीं में से[४] जोड़े बनाए और नर मादा चौपाए, इससे[५] तुम्हारी नस्ल फैलाता है, उस जैसा कोई नहीं और वही सुनता देखता है﴿११﴾ उसी के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की कुंजियां[६] रोज़ी वसीअ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है[७] बेशक वह सब कुछ जानता है﴿१२﴾ तुम्हारे लिये दीन की वह राह डाली जिसका हुक्म उसने नूह को दिया[८] और जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही की[९] और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया[१०] कि दीन ठीक रखो[११] और उसमें फूट न डालो[१२] मुश्रिकों पर बहुत ही भारी है वह[१३] जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो, और अल्लाह अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे[१४] और अपनी तरफ़ राह देता है उसे जो रूजू लाए[१५]﴿१३﴾ और उन्होंने फूट न डाली मगर बाद इसके कि उन्हें इल्म आ चुका था[१६] आपस के हसद से[१७] और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती[१८] एक निश्चित मीआद तक[१९] तो कब का उनमें फैसला कर दिया

(५) यानी इस जोड़ी से. (ख़ाज़िन)
(६) मुराद यह है कि आसमान ज़मीन के सारे ख़ज़ानों की कुंजियाँ चाहे मेंह के ख़ज़ाने हों या रिज़्क़ के.
(७) जिसके लिये चाहे, वह मालिक है . रिज़्क़ की कुंजियाँ उसके दस्ते क़ुदरत में हैं.
(८) नूह अलैहिस्सलाम शरीअत वाले नबियों में सबसे पहले नबी हैं.
(९) ऐ नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(१०) मानी ये हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से आप तक ऐ सैयदे अम्बिया जितने नबी हुए सबके लिये हमने दीन की एक ही राह निर्धारित की है जिसमें वो सब सहमत हैं. वह राह यह है.
(११) दीन से मुराद इस्लाम है. मानी ये हैं कि अल्लाह तौहीद और उसकी फ़रमाँबरदारी और उसपर उसके रसूलों पर और उसकी किताबों पर और बदले के दिन पर और बाक़ी दीन की तमाम ज़रूरतों पर ईमान लाना वाजिब करे, कि ये बातें सारे नबियों की उम्मतों के लिये एक सी ज़रूरी हैं.
(१२) हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जमाअत रहमत और फ़ुर्क़त अज़ाब है. ख़ुलासा यह है कि दीन के उसूलों में तमाम मुसलमान चाहे वो किसी एहद या किसी उम्मत के हों, एक बराबर हैं उनमें कोई मतभेद या विरोध नहीं, अलबत्ता आदेशों में उम्मतें अपने हालों और विशेषताओं के ऐतिबार से अलग अलग हैं. चुनांन्चे अल्लाह तआला ने फ़रमाया "लिकुल्लिन जअलना मिनकुम शिरअतौं व मिन्हाजन" यानी हमने सबके लिये एक एक शरीअत और रास्ता रखा. (सूरए माइदह, आयत ४८)
(१३) यानी बुतों को छोड़ना और तौहीद इख़्तियार करना.
(१४) अपने बन्दों में से उसी को तौफ़ीक़ देता है.
(१५) और उसकी इताअत क़ुबूल करे.
(१६) यानी एहले किताब ने अपने नबियों के बाद जो दीन में इख़्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौहीद इख़्तियार की, कोई काफ़िर हो गया. वो इससे पहले जान चुके थे कि इस तरह इख़्तिलाफ़ करना और सम्प्रदायों में बट जाना गुमराही है, फिर भी उन्होंने यह सब कुछ किया.
(१७) और रियासत और नाहक़ की हुकूमत के शौक़ में.
(१८) अज़ाब में देरी फ़रमाने की.
(१९) यानी क़यामत के दिन तक.
(२०) काफ़िरों पर, दुनिया में अज़ाब उतार कर.

بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ
وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ
اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ
لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ
فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
وَالْمِيْزَانَ ۭ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
قَرِيْبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا

منزل ٦

होता[२०] और बेशक वो जो उनके बाद किताब के वारिस हुए[२१] वो उससे एक धोखा डालने वाले शक में हैं[२२]﴿१४﴾ तो उसी लिये बुलाओ[२३] और डटे रहो[२४] जैसा तुम्हें हुक्म हुआ है, और उनकी ख़्वाहिशों पर न चलो, और कहो कि मैं ईमान लाया उसपर जो कोई किताब अल्लाह ने उतारी[२५] और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं[२६] अल्लाह हमारा और तुम्हारा सब का रब है[२७] हमारे लिये हमारा अमल और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया[२८] कोई हुज्जत नहीं हममें और तुममें[२९] अल्लाह हम सब को जमा करेगा[३०] और उसी की तरफ़ फिरना है﴿१५﴾ और वो जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बाद इसके कि मुसलमान उसकी दावत क़ुबूल कर चुके हैं[३१] उनकी दलील मेहज़ बेसबात है उनके रब के पास और उनपर ग़ज़ब है[३२] और उनके लिये सख़्त अज़ाब है[३३]﴿१६﴾ अल्लाह है जिसने हक़ के साथ किताब उतारी[३४] और इन्साफ़ की तराज़ू[३५] और तुम क्या जानो शायद क़यामत क़रीब ही हो[३६]﴿१७﴾ इसकी जल्दी मचाते रहे हैं वो जो उस पर ईमान नहीं रखते[३७] और जिन्हें उसपर ईमान है वो उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वह हक़ है, सुनते हो बेशक जो क़यामत में शक

(२१) यानी यहूदी और ईसाई.
(२२) यानी अपनी किताब पर मज़बूत ईमान नहीं रखते. या ये मानी हैं कि वो क़ुरआन की तरफ़ से या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ से शक में पड़े हैं.
(२३) यानी उन काफ़िरों के इस इख़्तिलाफ़ और बिखर जाने की वजह से उन्हें तौहीद और मिल्लते हनीफ़िया पर सहमत होने की दावत दो.
(२४) दीन पर और दीन की दावत देने पर.
(२५) यानी अल्लाह तआला की तमाम किताबों पर क्योंकि विरोधी कुछ पर इमान लाते थे और कुछ से इन्कार करते थे.
(२६) सारी चीज़ों में, और सारे हालात में, और हर फ़ैसले में.
(२७) और हम सब उसके बन्दे.
(२८) हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा.
(२९) क्योंकि सच्चाई ज़ाहिर हो चुकी.
(३०) क़यामत के दिन.
(३१) मुराद उन झगड़ने वालों से यहूदी हैं. वो चाहते थे कि मुसलमानों को फिर कुफ़्र की तरफ़ लौटाएं. इसलिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना, हमारी किताब पुरानी, नबी पहले. हम तुमसे बेहतर हैं.
(३२) उनके कुफ़्र के कारण.
(३३) आख़िरत में.
(३४) यानी क़ुरआने पाक, जो तरह तरह की दलीलों और आदेशों पर आधारित है.
(३५) यानी उसने अपनी उतारी हुई किताबों में न्याय का निर्देश दिया है. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा है कि मीज़ान से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पवित्र ज़ात है.
(३६) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने क़यामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुश्रिकों ने झुटलाने के अन्दाज़ में कहा कि क़यामत कब होगी. इसके जवाब में यह आयत उतरी.
(३७) और ये गुमान करते हैं कि क़यामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये हंसी उड़ाने के लिये जल्दी मचाते हैं.
(३८) बेशुमर एहसान करता है, नेकियों पर भी और बदियों पर भी, यहाँ तक कि बन्दे गुनाहों में मशग़ूल रहते हैं और वह उन्हें भूख

الْحَقِّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ
لَفِىْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ۞ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ۞ مَنْ كَانَ
يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ
كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى
الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۞ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا
لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا
كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۞ ذٰلِكَ الَّذِىْ
يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं(१८) अल्लाह अपने बन्दों पर लुत्फ़(कृपा) फ़रमाता है(३८) जिसे चाहे रोज़ी देता है(३९) और वही क़ुव्वत व इज़्ज़त वाला है(१९)

तीसरा रूकू

जो आख़िरत की खेती चाहे(१) हम उसके लिये उसकी खेती बढ़ाएं(२) और जो दुनिया की खेती चाहे(३) हम उसे उसमें से कुछ देंगे(४) और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं(५)(२०) या उनके लिये कुछ शरीक हैं(६) जिन्हों ने उनके लिये(७) वह दीन निकाल दिया है(८) कि अल्लाह ने उसकी इजाज़त न दी(९) और अगर एक फ़ैसले का वादा न होता(१०) तो यहीं उनमें फ़ैसला कर दिया जाता(११) और बेशक ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अज़ाब है(१२)(२१) तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे(१३) और वो उनपर पड़ कर रहेंगी(१४) और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वो जन्नत की फुलवारियों में हैं, उनके लिये उनके रब के पास है जो चाहें यही बड़ा फ़ज़्ल है(२२) यह है वह जिसकी ख़ुशख़बरी देता है अल्लाह अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये, तुम फ़रमाओ मैं इस (१५)

से हलाक नहीं करता.

(३९) और ऐश की फ़राख़ी अता फ़रमाता है, मूमिन को भी और काफ़िर को भी, अपनी हिकमत के तक़ाज़े के मुताबिक़. हदीस शरीफ़ में है अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे कुछ मूमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवनगरी उनकी क़ुव्वत और ईमान का कारण है, अगर मैं उन्हें फ़क़ीर मोहताज कर दूं तो उनके अक़ीदे फ़ासिद हो जाएं और कुछ बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोहताजी उनके ईमान की क़ुव्वत का करण है, अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दूं तो उनके अक़ीदे ख़राब हो जाएं.

सूरए शूरा - तीसरा रूकू

(१) यानी जिसको अपने कर्मों से आख़िरत का नफ़ा चाहिये.

(२) उसको नेकियों की तौफ़ीक़ देकर और उनके लिये ख़ैरात और ताअतों की राहें सरल करके और उसकी नेकियों का सवाब बढ़ाकर.

(३) यानी जिसका अमल केवल दुनिया हासिल करने के लिये हो और वह आख़िरत पर ईमान न रखता हो .(मदारिक)

(४) यानी दुनिया में जितना उसके लिये मुक़द्दर किया है.

(५) क्योंकि उसने आख़िरत के लिये अमल किया ही नहीं.

(६) मानी ये हैं कि क्या मक्के के काफ़िर उस दिन को क़ुबूल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिये मुक़र्रर फ़रमाया या उनके कुछ ऐसे साथी हैं शैतान वग़ैरह.

(७) कुफ़्री दीनों में से.

(८) जो शिर्क और दोबारा उठाए जाने के इन्कार पर आधारित है.

(९) यानी वह अल्लाह के दीन के ख़िलाफ़ है.

(१०) और जज़ा के लिये क़यामत का दिन निश्चित न फ़रमा दिया गया होता.

(११) और दुनिया ही में झुटलाने वालों को अज़ाब में जकड़ दिया जाता.

(१२) आख़िरत में, और ज़ालिमों से मुराद यहाँ काफ़िर हैं.

(१३) यानी कुफ़्र और बुरे कर्मों से जो उन्होंने दुनिया में कमाए थे, इस अन्देशे से कि अब उनकी सज़ा मिलने वाली है.

(१४) ज़रूर उनसे किसी तरह बच नहीं सकते. डरें या न डरें.

(१५) रिसालत की तबलीग़ और हिदायत व उपदेश.

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ
وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ
الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ
لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ
اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ
الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[१६] मगर क़राबत की महब्बत,[१७] और जो नेक काम करे[१८] हम उसके लिये उसमें और ख़ूबी बढ़ाएं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है(२३) या[१९] ये कहते हैं कि उन्होंने अल्लाह पर झूट बांध लिया[२०] और अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत व हिफ़ाज़त की मोहर फ़रमा दे[२१] और मिटाता है बातिल को[२२] और हक़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से[२३] बेशक वह दिलों की बातें जानता है(२४) और वही है जो अपने बन्दों की तौबह क़ुबूल फ़रमाता है और गुनाहों से दरगुज़र(क्षमा) फ़रमाता है[२४] और जानता है जो कुछ तुम करते हो(२५) और दुआ क़ुबूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और इनआम देता है[२५] और काफ़िरों के लिये सख़्त अज़ाब है(२६) और अगर अल्लाह अपने सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते[२६] लेकिन वह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे, बेशक वह अपने बन्दों से ख़बरदार है[२७](२७) उन्हें देखता है और वही है कि मेंह उतारता है उनके नाउम्मीद होने पर और अपनी रहमत फैलाता है[२८] और वही काम बनाने वाला सब ख़ूबियों सराहा(२८) और उसकी निशानियों

(१६) और सारे नबियों का यही तरीक़ा है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ फ़रमा हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़िम्मे ख़र्चे बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्हों ने आपस में सलाह की और हुज़ूर के अधिकार और एहसान याद करके हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जमा किया और उसको लेकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से निजात पाई. हम देखते हैं कि हुज़ूर के ख़र्चे बहुत ज़्यादा हैं इसलिये हम ये माल सरकार की ख़िदमत में भेंट के लिये लाए हैं, क़ुबूल फ़रमाकर हमारी इज़्ज़त बढ़ाई जाए. इसपर यह आयत उतरी और हुज़ूर ने वो माल वापस फ़रमा दिये.

(१७) तुम पर लाज़िम है, क्योंकि मुसलमानों के बीच भाईचारा, प्रेम वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया "अल मूमिनूना वलमूमिनातो बअदुहुम औलियाओ बअदिन" यानी और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं. (सूरए तौबह, आयत ७१) और हदीस शरीफ़ में है कि मुसलमान एक इमारत की तरह हैं जिसका हर एक हिस्सा दूसरे हिस्से को क़ुव्वत और मदद पहुंचाता है. जब मुसलमानों में आपस में एक दूसरे के साथ महब्बत वाजिब हुई तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ किस क़द्र महब्बत फ़र्ज़ होगी. मानी ये हैं कि मैं हिदायत और उपदेश पर कुछ वेतन नहीं चाहता लेकिन रिश्तेदारी के हक़ तो तुम पर वाजिब हैं, उनका लिहाज़ करो और मेरे रिश्तेदार तुम्हारे भी रिश्तेदार हैं, उन्हें तकलीफ़ न दो. हज़रत सईद बिन जुबैर से रिवायत है कि रिश्तेदारों से मुराद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आले पाक है. (बुख़ारी) रिश्तेदारों से कौन कौन मुराद हैं इसमें कई क़ौल हैं. एक तो यह कि मुराद इससे हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व हज़रत इमामे हसन और हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहो अन्हुम हैं. एक क़ौल यह है कि आले अली, और आले अक़ील व आले जअफ़र व आले अब्बास मुराद हैं. और एक क़ौल यह है कि हुज़ूर के वो रिश्तेदार मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है और वो बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं. हुज़ूर की पाक पवित्र बीबियाँ हुज़ूर के एहले बैत में दाख़िल हैं. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की महब्बत और हुज़ूर के रिश्तेदारों की महब्बत दीन के फ़र्ज़ों में से है. (जुमल व ख़ाज़िन वग़ैरह)

(१८) यहाँ नेक काम से मुराद या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आले पाक से महब्बत है, या तमाम नेक काम.

(१९) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत, मक्के के काफ़िर.

(२०) नबुव्वत का दावा करके, या क़ुरआने करीम को अल्लाह की किताब बताकर.

(२१) कि आपको उनके बुरा भला कहने से तकलीफ़ न हो.

(२२) जो काफ़िर कहते हैं.

الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى
جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ
مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٣١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ
فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ
كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ؕ مَا
لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ

से है आसमानों और ज़मीन की पैदायश और जो चलने वाले उनमें फैलाए, और वह उनके इकट्ठा करने पर[२९] जब चाहे क़ादिर है﴾२९﴿

चौथा रूकू

और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह इसके कारण से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया[१] और बहुत कुछ तो माफ़ फ़रमा देता है﴾३०﴿ और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते[२] और न अल्लाह के मुक़ाबले तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार[३]﴾३१﴿ और उसकी निशानियों से हैं[४] दरिया में चलने वालियां जैसे पहाड़ियां﴾३२﴿ वह चाहे तो हवा थमा दे[५] कि उसकी पीठ पर[६] ठहरी रह जाएं[७] बेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र करने शुक्र करने वाले को[८]﴾३३﴿ या उन्हें तबाह कर दे[९] लोगों के गुनाहों के कारण[१०] और बहुत कुछ माफ़ फ़रमा दे[११]﴾३४﴿ और जान जाएं वो जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें[१२] कहीं भागने की जगह नहीं﴾३५﴿ तुम्हें जो कुछ मिला है[१३] वह जीती दुनिया में बरतने का है[१४] और वह जो अल्लाह के पास है[१५] बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला उनके लिये जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं[१६]﴾३६﴿ और वो जो बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं और जब ग़ुस्सा आए माफ़ कर देते हैं﴾३७﴿ और

(२३) जो अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतारीं, चुनान्चे ऐसा ही किया कि उनके बातिल को मिटाया और इस्लाम के कलिमे को ग़ालिब किया.

(२४) तौबह हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबह की हक़ीक़त यह है कि आदमी बुराई और गुनाह से बाज़ आए और जो गुनाह उससे हो उस पर शर्मिन्दा हो और हमेशा गुनाह से दूर रहने का पक्का निश्चय करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे का हक़ मारा गया था तो उसकी बहाली की कोशिश करे.

(२५) यानी जितना दुआ मांगने वाले ने तलब किया था उससे ज़्यादा अता फ़रमाता है.

(२६) घमण्ड में गिरफ़्तार है.

(२७) जिसके लिये जितना उसकी हिक्मत का तक़ाज़ा है, उसको उतना अता फ़रमाता है.

(२८) और मेंह (वर्षा) से नफ़ा देता है. और क़हत को दफ़ा फ़रमाता है.

(२९) हश्र के लिये.

सूरए शूरा - चौथा रूकू

(१) यह ख़िताब आक़िल बालिग़ मूमिनों से है जिनसे गुनाह सरज़द होते हैं. मुराद यह है कि दुनिया में जो तकलीफ़ें और मुसीबतें ईमान वालों को पहुंचती हैं, अक्सर उनका कारण उनके गुनाह होते हैं. उन तकलीफ़ों को अल्लाह तआला उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी ईमान वाले की तकलीफ़ उसके दर्जों की बलन्दी के लिये होती है. जैसा कि बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में आया है. नबी जो गुनाहों से पाक होते हैं और छोटे बच्चे जो नासमझ होते हैं इस आयत के घेरे में नहीं आते. कुछ गुमराह फ़िर्क़े जो आवागवन को मानते हैं इस आयत से साबित करने की कोशिश करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तकलीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वह उनके गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उनसे कोई गुनाह हुआ नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हो जिसमें गुनाह हुए हों. यह बात बातिल है क्योंकि यह कलाम बच्चों से कहा ही नहीं गया है. जैसा आम तौर पर सारा संबोधन आक़िल बालिग़ से होता है. इसलिये आवागवन वालों की दलील झूठी हुई.

(२) जो मुसीबतें तुम्हारे लिये लिखी जा चुकी हैं उनसे कहीं भाग नहीं सकते, बच नहीं सकते.

(३) कि उसकी मर्ज़ी के विरुद्ध तुम्हें मुसीबत और तकलीफ़ से बचा सके.

(४) बड़ी बड़ी किश्तियाँ.

كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ
شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْىُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ
سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى
اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ
ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ؕ اِنَّمَا السَّبِيْلُ
عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ
وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ
لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ
سَبِيْلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ

वो जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना[१७] और नमाज़ क़ायम रखी[१८] और उनका काम उनके आपस की सलाह से है[१९] और हमरे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं﴾३८﴿ और वो कि जब उन्हें बग़ावत पहुंचे बदला लेते हैं[२०]﴾३९﴿ और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है[२१] तो जिसने माफ़ किया और काम संबारा तो उसका अज्र अल्लाह पर है, बेशक वह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को[२२]﴾४०﴿ और बेशक जिसने अपनी मज़लूमी पर बदला लिया उनपर कुछ मुआख़िज़े की राह नहीं﴾४१﴿ मुआख़िज़ा तो उन्हीं पर है जो[२३] लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं[२४] उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है﴾४२﴿ और बेशक जिसने सब्र किया[२५] और बख़्श दिया तो यह ज़रूर हिम्मत के काम हैं﴾४३﴿

पाँचवां रूकू

और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसका कोई दोस्त नहीं अल्लाह के मुक़ाबिल[१] और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अज़ाब देखेंगे[२] कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है[३]﴾४४﴿ और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं[४] और ईमान वाले कहेंगे बेशक हार में वो हैं जो अपनी जानें और

(५) जो किश्तियों को चलाती है.
(६) यानी दरिया के ऊपर.
(७) चलने न पाएं.
(८) सब्र और शुक्र वालों से मुराद सच्चा ईमान वाला है जो सख़्ती और तकलीफ़ में सब्र करता है और राहत व ख़ुशहाली में शुक्र.
(९) यानी किश्तियों को डुबा दे.
(१०) जो उसमें सवार हैं.
(११) गुनाहों में से कि उनपर अज़ाब न करे.
(१२) हमारे अज़ाब से.
(१३) दुनियावी माल असबाब.
(१४) सिर्फ़ कुछ रोज़, उसको हमेशगी नहीं.
(१५) यानी सवाब देने वाला.
(१६) यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी जब आपने कुल माल सदक़ा कर दिया और उसपर अरब के लोगों ने आपको बुरा भला कहा.
(१७) यह आयत अन्सार के हक़ में उतरी जिन्हों ने अपने रब की दावत क़ुबूल करके ईमान और फ़रमाँबरदारी को अपनाया.
(१८) उसपर डटे रहे.
(१९) वो जल्दी और अहंकार में फ़ैसले नहीं करते. हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, जो क़ौम मशवरा करती है वह सही राह पर पहुंचती है.
(२०) यानी जब उनपर कोई ज़ुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में हद से आगे नहीं बढ़ते. इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि मूमिन दो तरह के हैं, एक जो ज़ुल्म को माफ़ करते हैं. पहली आयत में उनका ज़िक्र फ़रमाया गया. दूसरे वो जो ज़ालिम से बदला लेते हैं. उनका इस आयत में ज़िक्र है. अता ने कहा कि ये वो मूमिनीन हैं जिन्हें काफ़िरों ने मक्कए मुकर्रमा से निकाला और उनपर ज़ुल्म किया. फिर अल्लाह तआला ने उन्हें उस सरज़मीन पर क़ब्ज़ा दिया और उन्हों ने ज़ालिमों से बदला लिया.
(२१) मानी ये हैं कि बदला बराबर का होना चाहिये उसमें ज़ियादती या अन्याय न हो. और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि देखने में एक सा होने के कारण कहा जाता है और जिसको वह बदला दिया जाए उसे बुरा मालूम होता है. और बदले को बुराई के साथ ताबीर करने में यह भी इशारा है कि अगरचे बदला लेना जायज़ है लेकिन माफ़ कर देना उससे बेहतर है.

اَلذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ
مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ
اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ
اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

منزل ٦

अपने घर वाले हार बैठे क़यामत के दिन(५) सुनते हो बेशक ज़ालिम(६) हमेशा के अज़ाब में हैं(४५) और उनके कोई दोस्त न हुए कि अल्लाह के मुक़ाबिल उनकी मदद करते(७) और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसके लिये कहीं रास्ता नहीं(८)(४६) अपने रब का हुक्म मानो(९) उस दिन के आने से पहले जो अल्लाह की तरफ़ से टलने वाला नहीं(१०) उस दिन तुम्हें कोई पनाह न होगी और न तुम्हें इन्कार करते बने(११)(४७) तो अगर वो मुंह फेरें(१२) तो हमने तुम्हें उनपर निगहबान बनाकर नहीं भेजा(१३) तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना(१४) और जब हम आदमी को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा देते हैं उसपर ख़ुश हो जाता है, और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे(१५) बदला उसका जो उनके हाथों ने आगे भेजा(१७) तो इन्सान बड़ा नाशुक्रा है(१८)(४८) अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत(१९) पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अता करे(२०) और जिसे चाहे बेटे दे(२१)(४९) या दोनों मिला दे बेटे

(२२) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वो मुराद हैं जो ज़ुल्म की शुरूआत करें.
(२३) शुरु में.
(२४) घमण्ड और गुनाहों का शिकार होकर.
(२५) ज़ुल्म और तक्लीफ़ पर, और बदला न लिया.

सूरए शूरा - पाँचवां रूकू

(१) कि उसे अज़ाब से बचा सके.
(२) क़यामत के दिन.
(३) यानी दुनिया में, ताकि वहाँ जाकर ईमान ले आएं.
(४) यानी ज़िल्लत और ख़ौफ़ के कारण आग को ऐसी तेज़ नज़रों से देखेंगे जैसे कोई क़त्ल होने वाला अपने क़त्ल के वक़्त जल्लाद की तलवार तेज़ निगाह से देखता है.
(५) जानों का हारना तो यह है कि वो कुफ़्र इख़्तियार करके जहन्नम के हमेशगी के अज़ाब में गिरफ़्तार हुए और घर वालों का हारना यह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूरें उनके लिये रखी गई थीं, उनसे मेहरूम हो गए.
(६) यानी काफ़िर.
(७) और उनके अज़ाब से बचा सकते.
(८) ख़ैर का, न वो दुनिया में हक़ तक पहुंच सके, न आख़िरत में जन्नत तक.
(९) और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी करके तौहीद और अल्लाह की इबादत इख़्तियार करे.
(१०) इससे मुराद या मौत का दिन है, या क़यामत का.
(११) अपने गुनाहों का, यानी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं. न अज़ाब से बच सकते हो न अपने बुरे कर्मों का इन्कार कर सकते हो जो तुम्हारे आमाल नामों में दर्ज हैं.
(१२) ईमान लाने और फ़रमाँबरदारी करने से.
(१३) कि तुम पर उनके कर्मों की हिफ़ाज़त अनिवार्य हो.
(१४) और वह तुमने अदा कर दिया.
(१५) चाहे वह दौलत और जायदाद हो या सेहत व आफ़ियत या अम्न व सलामती या शान व शौकत.
(१६) या और कोई मूसीबत और बला जैसे दुष्काल, बीमारी, ग़रीबी वग़ैरह सामने आए.

وَيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ۝

(٤٣) سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ (٦٣)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا

منزل ٦

और बेटियाँ, और जिसे चाहे बांझ कर दे[२२] बेशक वह इल्म व क़ुदरत वाला है(५०) और किसी आदमी को नहीं पहुंचता कि अल्लाह उससे कलाम फ़रमाए मगर वही के तौर पर[२३] या यूं कि वह बशर महानता के पर्दे के उधर हो[२४] या कोई फ़रिश्ता भेजे कि वह उसके हुक्म से वही करे जो वह चाहे[२५] बेशक वह बलन्दी व हिकमत(बोध) वाला है(५१) और यूंही हमने तुम्हें वही भेजी[२६] एक जाँफ़ज़ा चीज़[२७] अपने हुक्म से, इस से पहले न तुम किताब जानते थे न शरीअत के आदेशों की तफ़सील हाँ हमने उसे[२८] नूर किया जिससे हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं, और बेशक तुम ज़रूर सीधी राह बताते हो[२९](५२) अल्लाह की राह[३०] कि उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में, सुनते हो सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं(५३)

४३ - सूरए ज़ुख़रूफ़

सूरए ज़ुख़रूफ़ मक्का में उतरी, इसमें ८९ आयतें, सात रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

हा-मीम(१) रौशन किताब की क़सम[२](२) हमने इसे अरबी क़ुरआन उतारा कि तुम समझो[३](३) और बेशक

(१७) यानी उनकी नाफ़रमानियों और गुमराहियों के कारण.
(१८) नेअमतों को भूल जाता है.
(१९) जैसे चाहता है, उपयोग में लाता है, कोई दख़्ल देने और ऐतिराज़ करने की मजाल नहीं रखता.
(२०) बेटा न दे.
(२१) बेटी न दे.
(२२) कि उसके औलाद ही न हो. वह मालिक है अपनी नेअमत को जिस तरह चाहे तक़सीम करे, जिसे जो चाहे दे. नबियों में भी ये सूरतें पाई जाती हैं. हज़रत लूत और हज़रत शूऐब अलैहिमस्सलाम के सिर्फ़ बेटियाँ थीं, कोई बेटा न था और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सिर्फ़ बेटे थे, कोई बेटी हुई ही नहीं. और नबियों के सरदार अल्लाह के हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने चार बेटे अता फ़रमाए और चार बेटियाँ. और हज़रत यहया और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम के कोई औलाद ही नहीं.
(२३) यानी बेवास्ता उसके दिल में इल्क़ा फ़रमाकर और इल्हाम करके, जागते में या सपने में. इसमें वही की प्राप्ति कानों के माध्यम यानी सुनने के बग़ैर है और आयत में इल्ला वहयन से यही मुराद है. इसमें यह क़ैद नहीं कि इस हाल में सुनने वाला बोलने वाले को देखता हो या न देखता हो. मुजाहिद ने नक़्ल किया कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के सीने में ज़बूर की वही फ़रमाई और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटे के ज़िब्ह की ख़्वाब में वही फ़रमाई. और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मेअराज में इसी तरह की वही फ़रमाई. जिसका "फ़ औहा इला अब्दिही मा औहा" में बयान है. यह सब इसी क़िस्म में दाख़िल हैं. नबियों के ख़्वाब सच्चे होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि अम्बिया के ख़्वाब वही हैं. (तफ़सीर अबू सऊद व कबीर व मदारिक व ज़रक़ानी अलल मवाहिब वग़ैरह)
(२४) यानी रसूल पर्दे के पीछे से उसका कलाम सुने. वही के इस तरीक़े में भी कोई वास्ता नहीं मगर सुनने वाले को इस हाल में बोलने वाले का दर्शन नहीं होता. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इसी तरह के कलाम से बुज़ुर्गी दिये गए. यहूदियों ने हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआला से कलाम करते वक़्त उसको क्यों नहीं देखते जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम देखते थे. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जवाब दिया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम नहीं देखते थे और अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी. अल्लाह तआला इससे पाक है कि उसके लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानियात के लिये होता है. इस पर्दे से मुराद सुनने वाले का दुनिया में दर्शन से मेहजूब होना है.
(२५) वही के इस तरीक़े में रसूल की तरफ़ फ़रिश्ते की वसातत है.

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ
لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۚ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ
فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى
مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ الَّذِيْ
جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا
لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۚ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝
وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ
الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۙ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ
ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ

वह अस्ल किताब में[४] हमारे पास ज़रूर बलन्दी व हिकमत (बोध) वाला है(४) तो क्या हम तुम से ज़िक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो[५](५) और हमने कितने ही ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे(६) और उनके पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उसकी हंसी ही बनाया किये[६](७) तो हमने वो हलाक कर दिये जो उनसे भी पकड़ में सख़्त थे और अगलों का हाल गुज़र चुका है[७](८) और अगर तुम उनसे पूछो[८] कि आसमान और ज़मीन किसने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले ने[९](९) वह जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिये उसमें रास्ते किये कि तुम राह पाओ[१०](१०) और वह जिसने आसमान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से,[११] तो हमने उस से एक मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया, यूं ही तुम निकाले जाओगे[१२](११) और जिसने सब जोड़े बनाए[१३] और तुम्हारे लिये किश्तियाँ और चौपायों से सवारियाँ बनाईं(१२) कि तुम उनकी पीठों पर ठीक बैठो[१४] फिर अपने रब की नेअमत याद करो जब उसपर ठीक बैठ लो और यूं कहो पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे

(२६) ऐ बनियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(२७) यानी क़ुरआने पाक, जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है.
(२८) यानी दीने इस्लाम.
(३०) जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाई.

४३ - सूरए ज़ुख़रूफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए ज़ुख़रूफ़ मक्के में उतरी. इस में सात रूकू, नवासी आयतें, और तीन हज़ार चार सौ अक्षर हैं.
(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ की, जिसमें हिदायत और गुमराही की राहें अलग अलग और साफ़ कर दीं और उम्मत की सारी शरई ज़रूरतों का बयान फ़रमा दिया.
(३) उसके मानी और आदेशों को.
(४) अस्ल किताब से मुराद लौहे मेहफ़ूज़ है. क़ुरआने करीम इसमें दर्ज है.
(५) यानी तुम्हारे कुफ़्र में हद से बढ़ने की वजह से क्या हम तुम्हें बेकार छोड़ दें और तुम्हारी तरफ़ से क़ुरआन की वही का रूख़ फेर दें और तुम्हें न कोई हुक्म दें और न किसी बात से रोकें. मानी ये है कि हम ऐसा न करेंगे. हज़रत क़तादह ने कहा कि ख़ुदा की क़सम अगर यह क़ुरआने पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जबकि इस उम्मत के पहले लोगों ने इस से मुंह फेरा था तो वो सब हलाक होजाते लेकिन उसने अपनी रहमत और करम से इस क़ुरआन का उतारना जारी रखा.
(६) जैसा कि आपकी क़ौम के लोग करते हैं. काफ़िरों का पहले से यह मामूल चला आया है.
(७) और हर तरह का ज़ोर व क़ुव्वत रखते थे. आपकी उम्मत के लोग जो पहले के काफ़िरों की चालें चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं उनका भी वही अंजाम न हो जो उनका हुआ कि ज़िल्लत और रूस्वाई की मुसीबतों से हलाक किये गए.
(८) यानी मुश्रिक लोगों से.
(९) यानी इक़रार करेंगे कि आसमान व ज़मीन को अल्लाह तआला ने बनाया और यह भी मानेंगे कि वह इज़्ज़त और इल्म वाला है. इस इक़रार के बावुजूद दाबारा उठाए जाने का इन्कार कैसी इन्तिहा दर्जे की जिहालत है. इस के बाद अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत के इज़हार के लिये अपनी सृजन-शक्ति का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औसाफ़ और शान का इज़हार करता है.
(१०) सफ़रों में अपनी मंज़िलों और उद्देश्यों की तरफ़.
(११) तुम्हारी हाजतों की क़द्र, न इतना कम कि उससे तुम्हारी हाजतें पूरी न हों न इतना ज़्यादा कि क़ौमे नूह की तरह तुम्हें हलाक

تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ
مُقْرِنِيْنَ ۙ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ
مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ع
اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي
الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا
الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ۭ اَشَهِدُوْا
خَلْقَهُمْ ۭ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا
لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ۭ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ
اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ
فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَآ

बस में कर दिया और यह हमारे बूते की न थी《१३》 और बेशक हमें अपने रब की तरफ़ पलटना है[१५]《१४》 और उसके लिये उसके बन्दों में से टुकड़ा ठहराया,[१६] बेशक आदमी [१७] खुला नाशुक्रा है[१८]《१५》

दुसरा रूकू

क्या उसने अपने लिये अपनी मख़लूक़(सृष्टि) में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया[१]《१६》 और जब उनमें किसी को ख़ुशख़बरी दी जाए उस चीज़ की[२] जिसका वस्फ़ रहमान के लिये बता चुका है[३] तो दिन भर उसका मुंह काला रहे और ग़म खाया करे[४]《१७》 और क्या[५] वह जो गहने (ज़ेवर) में पर्वान चढ़े[६] और बहस में साफ़ बात न करे[७]《१८》 और उन्होंने फ़रिश्तों को कि रहमान के बन्दे हैं औरतें ठहराया[८] क्या उनके बनाते वक़्त ये हाज़िर थे[९] अब लिखली जाएगी उनकी गवाही[१०] और उन से जवाब तलब होगा[११]《१९》 और बोले अगर रहमान चाहता हम इन्हें न पूजते, [१२] उन्हें इसकी हक़ीक़त कुछ मालूम नहीं [१३] यूंही अटकलें दौड़ाते हैं[१४]《२०》 या इससे पहले हमने उन्हें कोई किताब दी है जिसे वो थामे हुए हैं[१५]《२१》 बल्कि बोले हमने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर पर चल रहे हैं[१६]《२२》 और ऐसे ही हमने तुम से पहले जब किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहाँ के आसूदों ने यही कहा कि हमने

कर दे.

(१२) अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा करके.

(१३) यानी सारी अस्नाफ़ और क़िस्में. कहा गया है कि अल्लाह तआला तन्हा है, ज़िद और बराबरी और ज़ौजियत से पाक है उसके सिवा ख़ल्क़ में जो है, जोड़े से है.

(१४) ख़ुश्की और तरी के सफ़र में.

(१५) अन्त में, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब सफ़र में तशरीफ़ लेजाते तो अपनी ऊंटनी पर सवार होते वक़्त पहले **अल्हम्दु लिल्लाह** पढ़ते फिर **सुब्हानल्लाह** और **अल्लाहो** अकबर. ये सब तीन तीन बार फिर यह आयत पढ़ते **"सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रा लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनीन, व इन्ना इला रब्बिना ल मुन्क़लिबून"** याना पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे बस में कर दिया और यह हमारे बूते न थी और बेशक हमें अपने रबकी तरफ़ पलटना है. (सूरए ज़ुख़रुफ़, आयत १३) और इसके बाद और दुआएं पढ़ते और जब हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम किश्ती में सवार होते तो फ़रमाते **"बिस्मिल्लाहे मजरीहा व मुरसाहा इन्ना रब्बी ल ग़फ़ूरूर रहीम"** यानी अल्लाह के नाम पर उसका चलना और उसका ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है. (सूरए हूद, आयत ४१)

(१६) यानी काफ़िरों ने इस इक़रार के बावुजूद कि अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है यह सितम किया कि फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ बताया और औलाद साहिबे औलाद का हिस्सा होती है. ज़ालिमों ने अल्लाह तआला के लिये हिस्सा क़रार दिया कैसा भारी जुर्म है.

(१७) जो ऐसी बातों को मानता है.

(१८) उसका कुफ़्र ज़ाहिर है.

सूरए ज़ुख़रूफ़ - दूसरा रूकू

(१) अदना अपने लिये और आला तुम्हारे लिये, कैसे जाहिल हो, क्या बकते हो.

(२) यानी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है.

أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ
مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ
آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ۝ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا
وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ
كَافِرُونَ ۝ فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ
وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۝ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي
فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي
عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَ
آبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا
جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝
وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ
الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ۝ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ

अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया और हम उनकी लकीर के पीछे हैं[१७]﴿२३﴾ नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वह[१८] लाऊं जो सीधी राह हो उससे[१९] जिसपर तुम्हारे बाप दादा थे, बोले जो कुछ तुम लेकर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[२०]﴿२४﴾ तो हमने उनसे बदला लिया[२१] तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ﴿२५﴾

तीसरा रूकू

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूँ तुम्हारे मअबूदों से﴿२६﴾ सिवा उसके जिसने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वह बहुत जल्द मुझे राह देगा﴿२७﴾ और उसे[१] अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा[२] कि कहीं वो बाज़ आएं[३]﴿२८﴾ बल्कि मैं ने उन्हें[४] और उनके बाप दादा को दुनिया के फ़ायदे दिये[५] यहाँ तक कि उनके पास हक़[६] और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया[७]﴿२९﴾ और जब उनके पास हक़ (सत्य) आया बोले यह जादू है और हम इसके इन्कारी हैं﴿३०﴾ और बोले क्यों न उतारा गया ये क़ुरआन इन दो शहरों[८] के किसी बड़े आदमी पर[९]﴿३१﴾ क्या तुम्हारे रब की रहमत वो बाँटते हैं,[१०] हमने उनमें उनकी ज़िन्दगी का सामान दुनिया

(३) कि मआज़ल्लाह वह बेटी वाला है.
(४) और बेटी का होना इस क़द्र नागवार समझे, इसके बावुजूद अल्लाह तआला के लिये बेटियाँ बताए.
(५) काफ़िर हज़रते रहमान के लिये औलाद की क़िस्मों में से तजवीज़ करते हैं.
(६) यानी ज़ेवरों की सजधज में नाज़ और नज़ाकत के साथ पले बढ़े. इससे मालूम हुआ कि ज़ेवर से श्रृंगार नुक़सान की दलील है तो मर्दों को इस से परहेज़ करना चाहिये. परहेज़गारी से अपनी ज़ीनत करें. अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़हार फ़रमाया जाता है.
(७) यानी अपनी हालत की कमज़ोरी और अक़्ल की कमी की वजह से. हज़रत क़तादह रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि औरत जब बात चीत करती है और अपनी ताईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह अपने ही ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है.
(८) हासिल यह है कि फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताने में बेदीनों ने तीन कुफ़्र किये, एक तो अल्लाह तआला की तरफ़ औलाद की निस्बत, दूसरे उस ज़लील चीज़ को उसकी तरफ़ जोड़ना जिस को वो ख़ुद बहुत ही तुच्छ समझते हैं और अपने लिये गवारा नहीं करते, तीसरे फ़रिश्तों की तौहीन, उन्हें बेटियाँ बताना (मदारिक) अब उसका रद फ़रमाया जाता है.
(९) फ़रिश्तों का नर या मादा होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अक़्ली दलील क़ायम हो सके और उनके पास ख़बर आई नहीं तो जो काफ़िर उनको मादा क़रार देते हैं उनकी जानकारी का ज़रिया क्या है, क्या उनकी पैदायश के वक़्त मौजूद थे और उन्होंने अवलोकन कर लिया है. जब यह भी नहीं तो केवल जिहालत वाली गुमराही की बात है.
(१०) यानी काफ़िरों का फ़रिश्तों के मादा होने पर गवाही देना लिखा जाएगा.
(११) आख़िरत में और उसपर सज़ा दी जाएगी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने काफ़िरों से पूछा कि तुम फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ किस तरह कहते हो. तुम्हारी जानकारी का स्रोत क्या है. उन्हों ने कहा हमने अपने बाप दादा से सुना है और हम गवाही देते हैं वो सच्चे थे. इस गवाही को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और उस पर जवाब तलब होगा.
(१२) यानी फ़रिश्तों को. मतलब यह था कि अगर फ़रिश्तों की पूजा करने से अल्लाह तआला राज़ी न होता तो हम पर अज़ाब उतारता और जब अज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वह यही चाहता है. यह उन्होंने ऐसी ग़लत बात कही जिससे लाज़िम आए कि सारे जुर्म जो दुनिया में होते हैं उनसे ख़ुदा राज़ी है. अल्लाह तआला उन्हें झुटलाता है.
(१३) वो अल्लाह की रज़ा के जानने वाले ही नहीं.
(१४) झूट बकते हैं.

نَحۡنُ قَسَمۡنَا بَيۡنَهُمۡ مَّعِيۡشَتَهُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ
رَفَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ فَوۡقَ بَعۡضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعۡضُهُمۡ
بَعۡضًا سُخۡرِيًّا ؕ وَرَحۡمَتُ رَبِّكَ خَيۡرٌ مِّمَّا يَجۡمَعُوۡنَ ۝٣٢ وَلَوۡلَاۤ
اَنۡ يَّكُوۡنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلۡنَا لِمَنۡ يَّكۡفُرُ
بِالرَّحۡمٰنِ لِبُيُوۡتِهِمۡ سُقُفًا مِّنۡ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيۡهَا
يَظۡهَرُوۡنَ ۝٣٣ وَلِبُيُوۡتِهِمۡ اَبۡوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيۡهَا
يَتَّكِـُٔوۡنَ ۝٣٤ وَزُخۡرُفًا ؕ وَاِنۡ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَالۡاٰخِرَةُ عِنۡدَ رَبِّكَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ۝٣٥ وَمَنۡ
يَّعۡشُ عَنۡ ذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ نُقَيِّضۡ لَهٗ شَيۡطٰنًا فَهُوَ لَهٗ
قَرِيۡنٌ ۝٣٦ وَاِنَّهُمۡ لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ وَيَحۡسَبُوۡنَ
اَنَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ۝٣٧ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيۡتَ بَيۡنِىۡ
وَبَيۡنَكَ بُعۡدَ الۡمَشۡرِقَيۡنِ فَبِئۡسَ الۡقَرِيۡنُ ۝٣٨ وَلَنۡ
يَّنۡفَعَكُمُ الۡيَوۡمَ اِذۡ ظَّلَمۡتُمۡ اَنَّكُمۡ فِى الۡعَذَابِ

منزل٦

की ज़िन्दगी में बाँटा[११] और उनमें एक दूसरे पर दर्जों बलन्दी दी[१२] कि उनमें एक दूसरे की हंसी बनाए,[१३] और तुम्हारे रब की रहमत[१४] उनकी जमा जथा से बेहतर[१५] (३२) और अगर यह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाएं[१६] तो हम ज़रूर रहमान का इन्कार करने वालों के लिये चांदी की छतें और सीढ़ियाँ बनाते जिनपर चढ़ते (३३) और उनके घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त जिन पर तकिया लगाते (३४) और तरह तरह की आरायश,[१७] और यह जो कुछ है जीती दुनिया ही का सामान है, और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़गारों के लिये है[१८] (३५)

चौथा रूकू

और जिसे रतौंद आए रहमान के ज़िक्र से[१] हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे (३६) और बेशक वो शयातीन उनको[२] राह से रोकते हैं और[३] समझते यह हैं कि वो राह पर हैं (३७) यहाँ तक कि जब[४] काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैतान से कहेगा हाय किसी तरह मुझ में तुझ में पूरब पश्चिम का फ़ासला होता तू क्या ही बुरा साथी है (३८) और हरगिज़ तुम्हारा उस[५] से भला न होगा आज जब कि[६] तुम ने ज़ुल्म किया कि तुम सब अज़ाब में शरीक हो

(१५) और उसमें ग़ैर ख़ुदा की पूजा की इजाज़त है ऐसा नहीं यह बातिल हैं और इसके सिवा भी उनके पास कोई हुज्जत नहीं है.
(१६) आँखें मीच कर, बे सोचे समझे उनका अनुकरण करते हैं. वो मख़्लूक़ परस्ती किया करते थे. मतलब यह है कि उसकी कोई दलील इसके अलावा नहीं है कि यह काम वो अपने बाप दादा के अनुकरण में करते हैं. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनसे पहले भी ऐसा ही कहा करते थे.
(१७) इससे मालूम हुआ कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना काफ़िरों की पुरानी बीमारी है. और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी का अनुकरण या पैरवी करने के लिये यह देख लेना ज़रूरी है कि वह सीधी राह पर हो, चुनांन्चे --
(१८) सच्चा दीन.
(१९) यानी उस दीन से.
(२०) अगरचे तुम्हारा दीन सच्चा और अच्छा हो मगर हम अपने बाप दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहे वह कैसा ही हो. इसपर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है.
(२१) यानी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुटलाने वालों से.

सूरए ज़ुख़रूफ़ - तीसरा रूकू

(१) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने उस तौहीदी कलिमे को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूँ तुम्हारे मअबूदों से सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया.
(२) तो आपकी औलाद में एक अल्लाह को मानने वाले तौहीद के दावेदार हमेशा रहेंगे.
(३) शिर्क से और ये सच्चा दीन क़ुबूल करें. यहाँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाने में चेतावनी है कि ऐ मक्का वालो अगर तुम्हें अपने बाप दादा का अनुकरण करना ही है तो तुम्हारे बाप दादा में जो सब से बेहतर हैं हज़र इब्राहीम अलैहिस्ससलाम, उनका अनुकरण करो और शिर्क छोड़ दो और यह भी देखो कि उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम को सीधी राह पर नहीं पाया तो उनसे बेज़ारी का ऐलान फ़रमा दिया. इससे मालूम हुआ कि जो बाप दादा सीधी राह पर हों, सच्चा दीन रखते हों, उनका अनुकरण किया जाए और जो बातिल पर हों, गुमराही में हों उनके तरीक़े से बेज़ारी का इज़हार किया जाए.
(४) यानी मक्का के काफ़िरों को.
(५) लम्बी उम्रें अता फ़रमाईं और उनके कुफ़्र के कारण उनपर अज़ाब उतारने में जल्दी न की.
(६) यानी क़ुरआन शरीफ़.

مشركون ﴿٣٩﴾ افانت تسمع الصم او تهدي العمي
ومن كان في ضلل مبين ﴿٤٠﴾ فاما نذهبن بك
فانا منهم منتقمون ﴿٤١﴾ او نرينك الذي وعدنهم
فانا عليهم مقتدرون ﴿٤٢﴾ فاستمسك بالذي اوحي
اليك انك على صراط مستقيم ﴿٤٣﴾ وانه لذكر لك
ولقومك وسوف تسئلون ﴿٤٤﴾ وسئل من ارسلنا
من قبلك من رسلنا اجعلنا من دون الرحمن
الهة يعبدون ﴿٤٥﴾ ولقد ارسلنا موسى بايتنا الى
فرعون وملايه فقال اني رسول رب العلمين ﴿٤٦﴾
فلما جاءهم بايتنا اذا هم منها يضحكون ﴿٤٧﴾ وما نريهم
من اية الا هي اكبر من اختها واخذنهم بالعذاب
لعلهم يرجعون ﴿٤٨﴾ وقالوا يايه السحر ادع لنا ربك
بما عهد عندك اننا لمهتدون ﴿٤٩﴾ فلما كشفنا

﴿३९﴾ तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे[७] या अंधों को राह दिखाओगे[८] और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं[९] ﴿४०﴾ तो अगर हम तुम्हें ले जाएं[१०] तो उनसे हम ज़रूर बदला लेंगे[११] ﴿४१﴾ या तुम्हें दिखा दें[१२] जिसका उन्हें हमने वादा दिया है तो हम उनपर बड़ी क़ुदरत वाले हैं ﴿४२﴾ तो मज़बूत थामे रहो उसे जो तुम्हारी तरफ़ वही की गई[१३] बेशक तुम सीधी राह पर हो ﴿४३﴾ और बेशक वह[१४] शरफ़ (बुज़ुर्गी) है तुम्हारे लिये[१५] और तुम्हारी क़ौम के लिये[१६] और बहुत जल्द तुम से पूछा जाएगा[१७] ﴿४४﴾ और उनसे पूछो जो हमने तुमसे पहले रसूल भेजे क्या हमने रहमान के सिवा कुछ और ख़ुदा ठहराए जिनको पूजा हो[१८] ﴿४५﴾

पाँचवां रूकू

और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो उसने फ़रमाया बेशक मैं उसका रसूल हूँ जो सारे जगत का मालिक है ﴿४६﴾ फिर जब वह उनके पास हमारी निशानियाँ लाया[१] जभी वो उन पर हंसने लगे[२] ﴿४७﴾ और हम उन्हें जो निशानी दिखाते वह पहले से बड़ी होती[३] और हमने उन्हें मुसीबत में गिरफ़्तार किया कि वो बाज़ आएं[४] ﴿४८﴾ और बोले[५] कि ऐ जादूगर[६] हमारे लिये अपने रब से दुआ कर उस एहद के कारण जो उसका तेरे पास है[७] बेशक हम हिदायत पर आएंगे[८] ﴿४९﴾ फिर जब हमने उन से वह मुसीबत टाल दी जभी वो एहद तोड़ गए[९] ﴿५०﴾ और

(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबसे ज़्यादा रौशन आयतों और चमत्कारों के साथ तशरीफ़ लाए और अपनी शरीअत के अहकाम खुले तौर पर बयान फ़रमा दिये और हमारे इस इनाम का हक़ यह था कि उस रसूले मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बात मानते लेकिन उन्होंने ऐसा न किया.

(८) मक्कए मुकर्रमा और ताइफ़.

(९) जो मालदार जत्थेदार हो, जैसे कि मक्कए मुकर्रमा में वलीद बिन मुग़ीरह और ताइफ़ में अर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी. अल्लाह तआला उनकी इस बात का रद फ़रमाता है .

(१०) यानी क्या नबुव्वत की कुंजियाँ उनके हाथ में हैं कि जिसको चाहे दे दें. कितनी जिहालत वाली बात कहते हैं.

(११) तो किसी को मालदार किया, किसी को फ़क़ीर, किसी को ताक़तवर किया, किसी को कमज़ोर. मख़लूक़ में कोई हमारे हुक्म को बदलने और हमारे लिखे से बाहर निकलने की ताक़त नहीं रखता. तो जब दुनिया जैसी साधारण चीज़ में किसी को ऐतिराज़ की ताक़त नहीं तो नबुव्वत जैसी ऊंची उपाधि में किसी को दम मारने का क्या मौक़ा है? हम जिसे चाहते हैं ग़नी करते हैं, जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं. जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं जिसे चाहते हैं उम्मती बनाते हैं. अमीर क्या कोई अपनी योग्यता से हो जाता है? हमारी अता है जिसे जो चाहे करें.

(१२) क़ुव्वत व दौलत वग़ैरह दुनियावी नेअमत में.

(१३) यानी मालदार फ़क़ीर की हंसी करे, यह क़ुरतबी की तफ़सीर के मुताबिक है और दूसरे मुफ़स्सिरों ने हंसी बनाने के मानी में नहीं लिया है बल्कि अअमाल व अशग़ाल के मुसख़्ख़र बनाने के मानी में लिया है. उस सूरत में मानी ये होंगे कि हमने दौलत और माल में लोगों को अलग किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रिये ख़िदमत लें और दुनिया का निज़ाम मज़बूत हो. ग़रीब को रोज़ी का साधन हाथ आए और मालदार को काम करने वाले उपलब्ध हों. तो इसपर कौन ऐतिराज़ कर सकता है कि इस आदमी को क्यों मालदार किया और उसको फ़क़ीर. और जब दुनिया के कामों में कोई व्यक्ति दम नहीं मार सकता तो नबुव्वत जैसे ऊंचे रूत्बे में किसी को ज़बान खोलने की क्या ताक़त और ऐतिराज़ का क्या हक़. उसकी मर्ज़ी जिसको चाहे सरफ़राज़ फ़रमाए.

(१४) यानी जन्नत.

(१५) यानी उस माल से बेहतर है जिसको दुनिया में काफ़िर जमा कर के रखते हैं.
(१६) यानी अगर इसका लिहाज़ न होता कि काफ़िरों को ख़ुशहाली में देखकर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे.
(१७) क्योंकि दुनिया और उसके सामान की हमारे नज़्दीक कुछ क़ीमत नहीं. वह पतनशील है, जल्दी ख़त्म हो जाने वाला है.
(१८) जिन्हें दुनिया की चाहत नहीं. तिरमिज़ी की हदीस में है कि अगर अल्लाह तआला के नज़्दीक दुनिया मच्छर के पर के बराबर भी क़ीमत रखती तो काफ़िर को उससे एक घूंट पानी न देता. दूसरी हदीस में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नियाज़मन्दों की एक जमाअत के साथ तशरीफ़ ले जाते थे. रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी फ़रमाया देखते हो इसके मालिकों ने इसे बहुत बेक़दरी से फ़ैंक दिया. दुनिया की अल्लाह तआला के नज़्दीक इतनी भी क़दर नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस मरी बकरी की हो. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे पर मेहरबानी फ़रमाता है तो उसे दुनिया से ऐसा बचाता है जैसा तुम अपने बीमार को पानी से बचाओ . हदीस में है दुनिया मूमिन के लिये क़ैद ख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है.

सूरए ज़ुख़रूफ़ - चौथा रूकू

(१) यानी क़ुरआने पाक से अन्धा बन जाए कि उसकी हिदायतों को न देखे और उनसे फ़ायदा न उठाए.
(२) यानी अन्धा बनने वालों को.
(३) वो अन्धा बनने वाले गुमराह होने के बावुजूद.
(४) क़यामत के दिन.
(५) हसरत और शर्मिन्दगी.
(६) ज़ाहिर और साबित हो गया कि दुनिया में शिर्क करके.
(७) जो क़ुबूल करने वाले कान नहीं रखते.
(८) जो सच्चे देखने वाली आँख से मेहरूम हैं.
(९) जिनके नसीब में ईमान नहीं.
(१०) यानी उन्हें अज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें.
(११) आपके बाद.
(१२) तुम्हारी ज़िन्दगी में उनपर अपना वह अज़ाब.
(१३) हमारी किताब क़ुरआने मजीद.
(१४) क़ुरआन शरीफ़.
(१५) कि अल्लाह तआला ने तुम्हें नबुव्वत व हिकमत अता की.
(१६) यानी उम्मत के लिये, कि उन्हें उससे हिदायत फ़रमाई.
(१७) क़यामत के दिन कि तुम ने क़ुरआन का क्या हक़ अदा किया, उसकी क्या ताज़ीम की. उस नेअमत का क्या शुक्र बजा लाए.
(१८) रसूलों से सवाल करने के मानी ये हैं कि उनके दीनों और मिल्लतों को तलाश करो, क्या कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती रवा रखी गई है. और अकसर मुफ़स्सिरों ने इसके मानी ये बयान किये हैं कि किताब वालों के मूमिनों से पूछो कि क्या कभी किसी नबी ने अल्लाह के अलावा किसी ग़ैर की इबादत की इजाज़त दी, ताकि मुश्रिकों पर साबित हो जाए कि मख़्लूक़ परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई. यह भी एक रिवायत है कि मेअराज की रात में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सारे नबियों की बैतुल मक़दिस में इमामत फ़रमाई. जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, जिब्रीले अमीन ने अर्ज़ किया कि ऐ सरवरे अकरम, अपने से पहले नबियों से पूछ लिजिये कि क्या अल्लाह तआला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इजाज़त दी. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि इस सवाल की कुछ हाजत नहीं, यानी इसमें कोई शक ही नहीं कि तमाम नबी तौहीद की दावत देते आए, सब ने मख़्लूक़ परस्ती से मना फ़रमाया है.

सूरए ज़ुख़रूफ़ - पाँचवां रूकू

(१) जो मूसा अलैहिस्सलाम की रिसालत को प्रमाणित करती थीं.
(२) और उनको जादू बताने लगे.
(३) यानी हर एक निशानी अपनी विशेषता में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी. मुराद यह है कि एक से एक उत्तम थी.
(४) कुफ़्र से ईमान की तरफ़ और यह अज़ाब दुष्काल और तूफ़ान और टिड्डी वग़ैरह से किये गए. ये सब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की निशानियाँ थीं जो उनके नबी होने की दलील थीं और उनमें एक से एक उत्तम थी.
(५) अज़ाब देखकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से.
(६) ये कलिमा उनकी बोली और मुहावरे में बहुत आदर और सम्मान का था. वो आलिम व माहिर और हाज़िक़े कामिल को जादूगर कहा करते थे और इसका कारण यह था कि उनकी नज़र में जादू की बहुत अज़मत थी और वो इसको प्रशंसा की बात समझते

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ
فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَ هٰذِهِ
الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ اَمْ اَنَا
خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝
فَلَوْلَاۤ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ
الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۭ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا
لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ
مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝ وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا
ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝
اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْۤ
اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي

منزل ٦

फ़िरऔन अपनी क़ौम में[१०] पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिये मिस्र की सल्तनत नहीं और ये नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं[११] तो क्या तुम देखते नहीं[१२]《५१》 या मैं बेहतर हूँ[१३] उससे कि ज़लील है[१४] और बात साफ़ करता मालूम नहीं होता[१५]《५२》 तो उस पर क्यों न डाले गए सोने के कंगन[१६] या उसके साथ फ़रिश्ते आते कि उसके पास रहते[१७]《५३》 फिर उसने अपनी क़ौम को कम अक़्ल कर लिया[१८] तो वो उसके कहने पर चले[१९] बेशक वो बेहुक्म लोग थे《५४》 फिर जब उन्होंने वह किया जिसपर हमारा ग़ज़ब(प्रकोप) उनपर आया हमने उनसे बदला लिया तो हमने उन सबको डुबो दिया《५५》 उन्हें हमने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिये[२०]《५६》

छटा रूकू

और जब मरयम के बेटे की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम उससे हंसने लगते हैं[१]《५७》 और कहते हैं क्या हमारे मअबूद बेहतर हैं या वो[२] उन्होंने तुम से यह न कही मगर नाहक़ झगड़े को[३] बल्कि वो हैं झगड़ालू लोग[४]《५८》 वह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हमने एहसान फ़रमाया[५] और उसे हमने बनी इस्राईल के लिये अजीब नमूना बनाया[६]《५९》 और अगर हम चाहते तो[७] ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़रिश्ते बसाते[८]《६०》 और बेशक ईसा क़यामत

थे. इसलिये उन्हों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इल्तिजा के समय इस कलिमे से पुकारा, कहा.

(७) वह एहद या तो यह है कि आपकी दुआ क़ुबूल है या नबुव्वत या ईमान लाने वालों और हिदायत क़ुबूल करने वालों पर से अज़ाब उठा लेना.

(८) ईमान लाएंगे . चुनांन्चे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की और उनपर से अज़ाब उठा लिया गया.

(९) ईमान न लाए, कुफ़्र पर अड़े रहे.

(१०) बहुत गर्व से.

(११) ये नील नदी से निकली हुई बड़ी बड़ी नेहरें थीं जो फ़िरऔन के महल के नीचे जारी थीं.

(१२) मेरी महानता और क़ुव्वत और शानो शौकत. अल्लाह तआला की अजीब शान है. ख़लीफ़ा रशीद ने जब यह आयत पढ़ी और मिस्र की हुकूमत पर फ़िरऔन का घमण्ड देखा तो कहा कि मैं वह मिस्र अपने मामूली ग़ुलाम को दे दूंगा. चुनांन्चे उन्होंने मिस्र ख़सीब को दे दिया जो उनका ग़ुलाम था और वुज़ू कराने की ख़िदमत पर था.

(१३) यानी क्या तुम्हारे नज़्दीक साबित हो गया और तुमने समझ लिया कि मैं बेहतर हूँ.

(१४) यह उस बेईमान घमण्डी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शान में कहा.

(१५) ज़बान में गिरह होने की वजह से जो बचपन में आग मुहं में रखने के कारण पड़ गई थी और यह उस मलऊन ने झूट कहा क्योंकि आपकी दुआ से अल्लाह तआला ने ज़बान की वह गिरह ज़ायल कर दी थी लेकिन फ़िरऔनी पहले ही ख़याल मे थे. आगे फिर उसी फ़िरऔन का कलाम ज़िक्र फ़रमाया जाता है.

(१६) यानी अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सच्चे हैं और अल्लाह तआला ने उनको सरदार बनाया है तो उन्हें सोने का कंगन क्यों नहीं पहनाया. यह बात उसने अपने ज़माने के दस्तूर के अनुसार कही कि उस ज़माने में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उसे सोने के कंगन और सोने का तौक़ पहनाया जाता था.

(१७) और उसकी सच्चाई की गवाही देते.

(१८) उन जाहिलों की अक़्ल भ्रष्ट कर दी और उन्हें बहला फुसला लिया.

(१९) और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाने लगे.

(२०) कि बाद वाले उनके हाल से नसीहत और इब्रत हासिल करें.

الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ
بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ
الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ
بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝
إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۝ هَلْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ۝ الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝ يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ
تَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝ يُطَافُ

की ख़बर है[९] तो हरगिज़ क़यामत में शक न करना और मेरे पैरो(अनुयायी) होना[१०] यह सीधी राह है﴾६१﴿ और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे[११] बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है﴾६२﴿ और जब ईसा रौशन निशानियाँ[१२] लाया उसने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिक्मत(बोध) लेकर आया[१३] और इस लिये मैं तुम से बयान कर दूं कुछ वो बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो[१४] तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो﴾६३﴿ बेशक अल्लाह मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो, यह सीधी राह है[१५]﴾६४﴿ फिर वो गिरोह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए[१६] तो ज़ालिमों की ख़राबी है[१७] एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से[१८]﴾६५﴿ काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़यामत के कि उनपर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो﴾६६﴿ गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार[१९]﴾६७﴿

सातवाँ रूकू

उनसे फ़रमाया जाएगा ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो﴾६८﴿ वो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और मुसलमान थे﴾६९﴿ दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियाँ और तुम्हारी ख़ातिरें होतीं[१]﴾७०﴿ उन पर दौरा होगा सोने के प्यालों और जामों का और उसमें जो

सूरए ज़ुख़रूफ़ - छटा रूकू

(१) जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने क़ुरैश के सामने यह आयत **"वमा तअबुदूना मिन दूनिल्लाहे हसबो जहन्नमा"** पढ़ी जिसके मानी ये हैं कि ऐ मुश्रिको, तुम और जो चीज़ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है, यह सुनकर मुश्रिकों को बहुत ग़ुस्सा आया और इब्ने ज़ुबअरी कहने लगा या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) क्या यह ख़ास हमारे और हमारे मअबूदों ही के लिये है या हर उम्मत और गिरोह के लिये ? सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे और तुम्हारे मअबूदों के लिये भी है और सब उम्मतों के लिये भी. इसपर उसने कहा कि आपके नज़्दीक ईसा बिन मरयम नबी हैं और आप उनकी और उनकी वालिदा की तारीफ़ करते हैं और आपको मालूम है कि ईसाई इन दोनों को पूजते हैं और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते भी पूजे जाते हैं यानी यहूदी वग़ैरह उनको पूजते हैं तो अगर ये हज़रात (मआज़अल्लाह) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मअबूद भी उनके साथ हों और यह कह कर काफ़िर ख़ूब हंसे. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी **"इन्नल लज़ीना सबक़त लहुम मिन्नल हुस्ना उलाइका अन्हा मुब्अदून"** यानी बेशक वो जिनके लिये हमारा वादा भलाई का हो चुका वो जहन्नम से दूर रखे गए हैं. (सूरए अंबिया, आयत १०१) और यह आयत उतरी **"व लम्मा दुरिबबनो मरयमा मसलन इज़ा क़ौमुका मिन्हो यसिद्दून"** यानी जब इबमने मरयम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम (के लोग) उससे हंसने लगते हैं. (सूरए ज़ुख़रूफ़, आयत ५७) जिसका मतलब यह है कि जब इब्ने ज़ुबअरी ने अपने मअबूदों के लिये हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल बयान की और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से झगड़े कि ईसाई उन्हें पूजते हैं तो क़ुरैश उसकी इस बात पर हंसने लगे.

(२) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम. मतलब यह था कि आपके नज़्दीक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बेहतर हैं तो अगर (मआज़ल्लाह) वह जहन्नम में हुए तो हमारे मअबूद यानी बुत भी हुआ करें कुछ पर्वाह नहीं. इसपर अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(३) यह जानते हुए भी कि वो जो कुछ कह रहे हैं बातिल है और आयत **"इन्नकुम वमा तअबुदूना मिन** दूनिल्लाहे" में सिर्फ़ बुत मुराद हैं हज़रत ईसा व हज़रत उज़ैर और फ़रिश्ते कोई मुराद नहीं लिये जा सकते. इब्ने ज़ुबअरी अरब था ज़बान का जानने वाला था यह उसको ख़ूब मालूम था कि "मा-तअबुदना" में जे "मा" है उसके मानी चीज़ के हैं इससे बेजान बेअक़्ल मुराद होते हैं लेकिन इसके बावुजूद उसका अरब की ज़बान के उसूल से जाहिल बनकर हज़रत ईसा और हज़रत उज़ैर और फ़रिश्तों को उसमें दाख़िल करना कट हुज्जती और अज्ञानता है.

(४) बातिल के दरपै होने वाले. अब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निस्बत इरशाद फ़रमाया जाता है.

(५) नबुव्वत अता फ़रमा कर.

(६) अपनी क़ुदरत का कि बिना बाप के पैदा किया.

(७) ऐ मक्का वालो हम तुम्हें हलाक कर देते और ---

عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّأَكْوَابٍ ۚ وَفِيهَا
مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾
إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾ لَا
يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ
وَلَٰكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ
عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ مَّاكِثُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ
بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ أَبْرَمُوا
أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾ قُلْ إِنْ
كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾ سُبْحَانَ
رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

जी चाहे और जिससे आँख को लज़्ज़त पहुंचे[२] और तुम उसमें हमेशा रहोगे﴾७१﴿ और यह है वह जन्नत जिसके तुम वारिस किये गए अपने कर्मों से﴾७२﴿ तुम्हारे लिये इसमें बहुत मेवे हैं कि उनमें से खाओ[३]﴾७३﴿ बेशक मुजरिम[४] जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं﴾७४﴿ वह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वो उसमें बेआस रहेंगे[५]﴾७५﴿ और हमने उनपर कुछ ज़ुल्म न किया हाँ वो ख़ुद ही ज़ालिम थे[६]﴾७६﴿ और वो पुकारेंगे[७] ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके[८] वह फ़रमाएगा[९] तुम्हें तो ठहरना है[१०]﴾७७﴿ बेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए[११] मगर तुम में अक्सर को हक़ नागवार है﴾७८﴿ क्या उन्होंने[१२] अपने ख़याल में कोई काम पक्का कर लिया है[१३]﴾७९﴿ तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं[१४] क्या इस घमण्ड में हैं कि हम उनकी आहिस्ता बात और उनकी मशविरत (सलाह) नहीं सुनते, हाँ क्यों नहीं[१५] और हमारे फ़रिश्ते उनके पास लिख रहे हैं﴾८०﴿ तुम फ़रमाओ फ़र्ज़ करो रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता[१६]﴾८१﴿ पाकी है आसमानों और ज़मीन के रब को अर्श के रब को उन बातों से जो ये बनाते हैं[१७]﴾८२﴿
तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें[१८] यहाँ

(८) जो हमारी इबादत और फ़रमाँबरदारी करते.
(९) यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना क़यामत की निशानियों में से है.
(१०) यानी मेरी हिदायत व शरीअत का पालन करना.
(११) शरीअत के पालन या क़यामत के यक़ीन या दीने इलाही पर क़ायम रहने से.
(१२) यानी चमत्कार.
(१३) यानी नबुव्वत और इन्जील के आदेश.
(१४) तौरात के आदेशों में से.
(१५) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कलामे मुबारक पूरा हो चुका. आगे ईसाईयों के शिर्कों का बयान किया जाता है.
(१६) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उनमें से किसी ने कहा कि ईसा ख़ुदा थे किसी ने कहा कि ख़ुदा के बेटे, किसी ने कहा तीन में के तीसरे. ग़रज़ ईसाई फ़िर्क़ों में बट गए यअक़ूबी, नस्तूरी, मलकानी, शमऊनी.
(१७) जिन्हों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में कुफ़्र की बातें कहीं.
(१८) यानी क़यामत के दिन के.
(१९) यानी दीनी दोस्ती और वह महब्बत जो अल्लाह तआला के लिये है, बाक़ी रहेगी. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से इस आयत की तफ़सीर में रिवायत है आपने फ़रमाया दो दोस्त मूमिन और दो दोस्त काफ़िर, मूमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करता है यारब फ़्लाँ मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमाँबरदारी का और नेकी करने का हुक्म देता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर हाज़िर होना है. यारब उसको मेरे बाद गुमराह न कर और उसको हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और उसका सम्मान कर जैसा मेरा सम्मान फ़रमाया. जब उसका मूमिन दोस्त मर जाता है तो अल्लाह तआला दोनों को जमा करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो हर एक कहता है कि यह अच्छा भाई है अच्छा दोस्त है अच्छा साथी है. और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ करता है यारब फ़्लाँ मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमाँबरदारी से मना करता था और बुराई का हुक्म देता था नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे समक्ष हाज़िर नहीं होना है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की तारीफ़ करे तो उनमें से एक दूसरे को कहता है बुरा भाई बुरा दोस्त बुरा साथी.

सूरए ज़ुख़रूफ़ - सातवाँ रूकू

(१) यानी जन्नत में तुम्हारा सम्मान, नेअमतें दी जाएंगी, ऐसे ख़ुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़ुशी के आसार नमूदार होंगे.

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَآءِ إِلٰهٌ وَّفِي الْأَرْضِ إِلٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾ وَقِيلِهِ يٰرَبِّ إِنَّ هٰؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

(٤٤) سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ (٦٤) آياتها ٥٩ ركوعاتها ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِي لَيْلَةٍ

منزل ٦

तक कि अपने उस दिन को पाएं जिसका उनसे वादा है[१९]﴿८३﴾ और वही आसमान वालों का ख़ुदा[२०] और ज़मीन वालों का ख़ुदा, और वही हिकमत (बोध) व इल्म वाला है﴿८४﴾ और बड़ी बरकत वाला है वह कि उसी के लिये है सल्तनत आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है और उसी के पास है क़यामत का इल्म, और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना﴿८५﴾ और जिन को ये अल्लाह के सिवा पूजते हैं शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते हाँ शफ़ाअत का इख़्तियार उन्हें है जो हक़ की गवाही दें[२१] और इल्म रखें[२२]﴿८६﴾ और अगर तुम उनसे पूछो[२३] कि उन्हें किसने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने[२४] तो कहाँ औंधे जाते हैं[२५]﴿८७﴾ मुझे रसूल[२६] के इस कहने की क़सम[२७] कि ऐ मेरे रब ये लोग ईमान नहीं लाते﴿८८﴾ तो इन से दरगुज़र करो (छोड़ दो) और फ़रमाओ बस सलाम है,[२९] कि आगे जान जाएंगे[३०]﴿८९﴾

४४- सूरए दुख़ान

सूरए दुख़ान मक्का में उतरी, इसमें ५९ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

हा-मीम﴿१﴾ क़सम इस रौशन किताब की[२]﴿२﴾ बेशक हमने इसे बरकत वाली रात में उतारा[३] बेशक हम डर

(२) तरह तरह की नेअमतें.

(३) जन्नती दरख़्त फलदार सदा बहार हैं उनकी ताज़गी और ज़ीनत में फ़र्क़ नहीं आता . हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उनसे एक फल लेगा तो दरख़्त में उसकी जगह दो फल निकल आएंगे.

(४) यानी काफ़िर.

(५) रहमत की उम्मीद भी न होगी.

(६) कि सरकशी और नाफ़रमानी करके इस हाल को पहुंचे.

(७) जहन्नम के दारोग़ा को कह.

(८) यानी मौत दे दे. मालिक से प्रर्थना करेंगे कि वह अल्लाह तबारक व तआला से उनकी मौत की दुआ करे.

(९) हज़ार बरस बाद.

(१०) अज़ाब में हमेशा, कभी उससे रिहाई न पाओगे, न मौत से और न और किसी प्रकार. इसके बाद अल्लाह तआला मक्का वालों से ख़िताब फ़रमाता है.

(११) अपने रसूलों द्वारा.

(१२) यानी मक्के के काफ़िरों ने.

(१३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ छल करने और धोखे से तकलीफ़ पहुंचाने का और वास्तव में ऐसा ही था कि क़ुरैश दारून-नदवा में जमा होकर हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तकलीफ़ें देने के तरीक़े सोचते थे.

(१४) उनके इस छलकपट का बदला जिसका अन्त उनकी हलाकत है.

(१५) हम ज़रूर सुनते हैं और छुपी खुली हर बात जानते हैं. हम से कुछ भी नहीं छुप सकता.

(१६) लेकिन उसके बच्चा नहीं है और उसके लिये औलाद असंभव है, किसी सूरत मुमकिन नहीं. नज़र बिन हारिस ने कहा था कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बैटियाँ हैं . इसपर यह आयत उतरी तो नज़र कहने लगा देखते हो क़ुरआन में मेरी तस्दीक़ आगई. वलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि यह फ़रमाया गया है कि रहमान के बेटा नहीं है और मैं मक्का वालों में से पहला व्यक्ति हूँ जो अल्लाह के एक होने में यक़ीन रखता हूँ और उसके औलाद होने का इन्कार करता हूँ. इसके बाद अल्लाह तआला की तन्ज़ीह का बयान है.

(१७) और उसके लिये औलाद क़रार देते हैं.

(१८) यानी जिस बेहूदगी और बातिल में हैं उसी में पड़े रहें.

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝۳ فِيْهَا يُفْرَقُ
كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝۴ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۝۵ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝۶ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ
اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝۷ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۸ بَلْ هُمْ
فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝۹ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ
بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۰ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝۱۱ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝۱۲
اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۳
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝۱۴ اِنَّا
كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝۱۵
يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝۱۶

منزل ۶

सुनाने वाले हैं(४)(३) इस में बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम(५)(४) हमारे पास के हुक्म से बेशक हम भेजने वाले हैं(६)(५) तुम्हारे रब की तरफ़ से रहमत, बेशक वही सुनता जानता है(६) वह जो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है अगर तुम्हें यक़ीन हो(७)(७) उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं वह जिलाए और मारे, तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब(८) बल्कि वो शक में पड़े खेल रहे हैं(८)(९) तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो (प्रतीक्षा करो) जब आसमान एक ज़ाहिर धुआँ लाएगा(१०) कि लोगों को ढांप लेगा(९) यह है दर्दनाक अज़ाब(११) उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अज़ाब खोल दे हम ईमान लाते हैं(१०)(१२) कहां से हो उन्हें नसीहत मानना(११) हालांकि उनके पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका(१२)(१३) फिर उससे मुंह फेर लिये और बोले सिखाया हुआ दीवाना है(१३)(१४) हम कुछ दिनों को अज़ाब खोले देते हैं तुम फिर वही करोगे(१४)(१५) जिस दिन हम सबसे बड़ी पकड़ पकड़ेंगे(१५) बेशक हम बदला लेने

(१९) जिसमें अज़ाब किये जाएंगे, और वह क़यामत का दिन है.
(२०) यानी वही मअबूद है आसमान और ज़मीन में. उसी की इबादत की जाती है उसके सिवा कोई पूजनीय नहीं.
(२१) यानी अल्लाह के एक होने की.
(२२) इसका कि अल्लाह उनका रब है. ऐसे मक़बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे.
(२३) यानी मुश्रिकों से.
(२४) और अल्लाह तआला के जगत का पैदा करने वाला होने का इक़रार करेंगे.
(२५) और इस इक़रार के बावजुद उसकी तौहीद से फिरते हैं.
(२६) सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(२७) अल्लाह तआला का हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ौले मुबारक की क़सम याद फ़रमाना हुज़ूर के सम्मान और हुज़ूर की दुआ और इल्तिजा के सम्मान का इज़हार है.
(२८) और उन्हें छोड़ दो.
(२९) यह सलाम बेज़ारी का है इसके मानी ये हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अम्न में रहना चाहते हैं.
(३०) अपना अन्त या अंजाम.

४४ - सूरए दुख़ान - पहला रूकू

(१) सूरए दुख़ान मक्की है. इसमें तीन रूकू, सत्तावन या उनसठ आयतें है, तीन सौ छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सौ इकत्तीस अक्षर है.
(२) यानी क़ुरआने पाक की जो हलाल और हराम वग़ैरह निर्देशों का बयान फ़रमाने वाला है.
(३) इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत. इस रात में क़ुरआने पाक पूरे का पूरा लौहे मेहफ़ूज़ से दुनिया के आसमान की तरफ़ उतारा गया फिर वहाँ से जिब्रीले अमीन तेईस साल के अर्से में थोड़ा थोड़ा लेकर उतरे. इस रात को मुबारक रात इसलिये फ़रमाया गया कि इसमें क़ुरआने पाक उतरा और हमेशा इस रात में भलाई और बरकत उतरती है. दुआएं क़ुबूल की जाती हैं.
(४) अपने अज़ाब का.
(५) साल भर के रिज़्क़ और मौत और अहकाम.
(६) अपने रसूल ख़ातमुल अंबिया मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनसे पहले नबियों को.
(७) कि वह आसमान और ज़मीन का रब है तो यक़ीन करो कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके रसूल हैं.

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝١٧ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٨ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٩ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝٢٠ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝٢١ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝٢٢ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٢٣ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٤ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٢٥ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٢٦ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝٢٧ كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝٢٨ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝٢٩ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ

वाले हैं﴿१६﴾ और बेशक हमने उनसे पहले फ़िरऔन की क़ौम को जांचा और उनके पास एक इज़्ज़त वाला रसूल तशरीफ़ लाया[१६]﴿१७﴾ कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सुपुर्द कर दो[१७] बेशक में तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूँ﴿१८﴾ और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास एक रौशन सनद लाता हूँ[१८]﴿१९﴾ और मैं पनाह लेता हूँ अपने रब और तुम्हारे रब की इससे कि तुम मुझे संगसार करो[१९]﴿२०﴾ और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से किनारे हो जाओ[२०]﴿२१﴾ तो उसने अपने रब से दुआ की कि ये मुजरिम लोग हैं﴿२२﴾ हमने हुक्म फ़रमाया कि मेरे बन्दों[२१] को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा[२२]﴿२३﴾ और दरिया को यूंही जगह जगह से खुला छोड़ दे[२३] बेशक वह लश्कर डुबोया जाएगा[२४]﴿२४﴾ कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे﴿२५﴾ और खेत और ऊमदा मकानात[२५]﴿२६﴾ और नेअमतें जिनमें फ़ारिग़ुलबाल थे[२६]﴿२७﴾ हमने यूंही किया और उनका वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया[२७]﴿२८﴾ तो उनपर आसमान और ज़मीन न रोए[२८] और उन्हें मुहलत न दी गई[२९]﴿२९﴾

(८) उनका इक़रार इल्म और यक़ीन से नहीं बल्कि उनकी बात में हंसी और ठट्ठा शामिल है और वो आपके साथ खिल्ली करते हैं . तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन पर दुआ की कि या रब उन्हें ऐसे सात साल के दुष्काल में गिरफ़्तार कर जैसे सात साल का दुष्काल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में भेजा था. यह दुआ क़ुबूल हुई और हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद फ़रमाया गया.

(९) चुनांन्चे क़ुरैश पर दुष्काल आया और यहाँ तक उसकी तेज़ी हुई कि लोग मुर्दार खा गए और भूख से इस हाल को पहुंच गए कि जब ऊपर को नज़र उठाते आसमान की तरफ़ देखते तो उनको धुआँ ही धुआँ मालूम होता यानी कमज़ोरी से निगाहों में ख़ीरगी आगई थी. और दुष्काल से ज़मीन सूख गई, धूल उड़ने लगी, मिट्टी धूल ने हवा को प्रदूषित कर दिया . इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि धुंएं से मुराद वह धुआँ है जो क़यामत की निशानीयों में से है और क़यामत के क़रीब ज़ाहिर होगा. पूर्व और पश्चिम उससे भर जाएंगे, चालीस दिन रात रहेगा. मूमिन की हालत तो उससे ऐसी हो जाएगी जैसे ज़ुकाम हो जाए और काफ़िर मदहोश हो जाएंगे. उनके नथनों और कानों और छेदों से धुआँ निकलेगा.

(१०) और तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ करते हैं.

(११) यानी इस हालत में वो कैसे नसीहत मानेंगे.

(१२) और खुले चमत्कारों और साफ़ ज़ाहिर निशानियों को पेश फ़रमा चुका.

(१३) जिसको वही की ग़शी तारी होने के वक़्त जिन्नात ये कलिमे तलक़ीन कर जाते हैं. (मआज़ल्लाह)

(१४) जिस कुफ़्र में थे उसी की तरफ़ लौटोगे. चुनांन्चे ऐसा ही हुआ. अब फ़रमाया जाता है कि उस दिन को याद करो.

(१५) उस दिन से मुराद क़यामत का दिन है या बद्र का दिन.

(१६) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम.

(१७) यानी बनी इस्राईल को मेरे हवाले कर दो और उनपर जो सख़्तियाँ करते हो, उससे रिहाई दो.

(१८) अपनी नबुव्वत और रिसालत की सच्चाई की. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया तो फ़िरऔनियों ने आपको क़त्ल की धमकी दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार करेंगे. तो आपने फ़रमाया.

(१९) यानी मेरा भरोसा और ऐतिमाद उस पर है. मुझे तुम्हारी धमकी की कुछ पर्वाह नहीं. अल्लाह तआला मेरा रक्षक है.

(२०) मेरी तक्लीफ़ के दरपै न हो. उन्होंने इसको भी न माना.

(२१) यानी बनी इस्राईल.

(२२) यानी फ़िरऔन अपने लश्करों समेत तुम्हारे पीछे होगा. चुनांन्चे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम रवाना हुए और दरिया पर पहुंचकर आपने लाठी

الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۝٣٠ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ
عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٣١ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى
عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٢ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا
فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ۝٣٣ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۝٣٤
اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ۝٣٥
فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٦
اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
اَهْلَكْنٰهُمْ ۡ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٣٧ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝٣٨
مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٤٠
يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝٤١ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ

दूसरा रूकू

और बेशक हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात बख़्शी[१] ﴾३०﴿ फ़िरऔन से बेशक वह मुतकब्बिर (घमण्डी) हद से बढ़ने वालों में से था ﴾३१﴿ और बेशक हमने उन्हें[२] जानकर चुन लिया उस ज़माने वालों से ﴾३२﴿ और हमने उन्हें वो निशानियाँ अता फ़रमाई जिन में खुला इनाम था[३] ﴾३३﴿ बेशक ये[४] कहते हैं ﴾३४﴿ वह तो नहीं मगर हमारा एक बार का मरना[५] और हम उठाए न जाएंगे[६] ﴾३५﴿ तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो[७] ﴾३६﴿ क्या वो बेहतर हैं[८] या तुब्बा की क़ौम[९] और जो उनसे पहले थे[१०] हमने उन्हें हलाक कर दिया[११] बेशक वो मुजरिम लोग थे[१२] ﴾३७﴿ और हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है खेल के तौर पर[१३] ﴾३८﴿ हमने उन्हें न बनाया मगर हक़ (सत्य) के साथ[१४] लेकिन उनमें अक्सर जानते नहीं[१५] ﴾३९﴿ बेशक फ़ैसले का दिन[१६] उन सबकी मीआद है ﴾४०﴿ जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा[१७] और न उनकी मदद होगी[१८] ﴾४१﴿ मगर जिसपर

मारी. उसमें बारह रास्ते सूखे पैदा हो गए. आप बनी इस्राईल के साथ दरिया में से गुज़र गए. पीछे फ़िरऔन और उसका लश्कर आ रहा था. आपने चाहा कि फिर असा मारकर दरिया को मिला दें ताकि फ़िरऔन उसमें से न गुज़र सके. तो आपको हुक्म हुआ.

(२३) ताकि फ़िरऔनी इन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जाएं.

(२४) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इत्मीनान हो गया और फ़िरऔन और उसके लश्कर दरिया में डूब गए और उनकी सारी माल मत्ता और सामान यहीं रह गया.

(२५) सजे सजाए.

(२६) ऐश करते इतराते.

(२७) यानी बनी इस्राईल को जो न उनके हम मज़हब थे न रिश्तेदार न दोस्त.

(२८) क्योंकि वो ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उसपर आसमान और ज़मीन चालीस रोज़ तक रोते हैं जैसा कि तिरमिज़ी की हदीस में है. मुजाहिद से कहा गया कि क्या मूमिन की मौत पर आसमान व ज़मीन रोते हैं. फ़रमाया ज़मीन क्यों न रोए उस बन्दे पर जो ज़मीन को अपने रूकू और सज्दों से आबाद रखता था और आसमान क्यों न रोए उस बन्दे पर जिसकी तस्बीह और तकबीर आसमान में पहुंचती थी. हसन का क़ौल है कि मूमिन की मौत पर आसमान वाले और ज़मीन वाले रोते हैं.

(२९) तौबह वग़ैरह के लिये अज़ाब में गिरफ़्तार करने के बाद.

सूरए दुख़ान - दूसरा रूकू

(१) यानी ग़ुलामी और सख़्त ख़िदमतों और मेहनतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था.

(२) यानी बनी इस्राईल को.

(३) कि उनके लिये दरिया में ख़ुश्क रस्ते बनाए, बादल को सायबान किया, मन्न और सलवा उतारा, इसके अलावा और नेअमतें दीं.

(४) मक्के के काफ़िर.

(५) यानी इस ज़िन्दगानी के बाद सिवाय एक मौत के हमारे लिये और कोई हाल बाक़ी नहीं . इससे उनका तात्पर्य मौत के बाद ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करना था जिसको अगले जुमले में साफ़ कर दिया. (कबीर)

(६) मौत के बाद ज़िन्दा करके.

(७) इस बात में कि हम मरने के बाद ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे. मक्के के काफ़िरों ने यह सवाल किया था कि क़ुसई बिन क्लाब को ज़िन्दा कर दो. अगर मौत के बाद किसी का ज़िन्दा होना संभव हो और यह उनकी जाहिलाना बात थी क्योंकि जिस काम के लिये समय निर्धारित हो उसका उस समय से पहले वुजूद में न आना उसके असंभव होने का प्रमाण नहीं है और न उसका इन्कार सही

अल्लाह रहम करे(१९) बेशक वही इज़्ज़त वाला मेहरबान है﴾४२﴿

तीसरा रूकू

बेशक थूहड़ का पेड़(१)﴾४३﴿ गुनहगारों की ख़ुराक है(२)﴾४४﴿ गले हुए तांबे की तरह पेटों में जोश मारता है﴾४५﴿ जैसा खोलता पानी जोश मारे(३)﴾४६﴿ उसे पकड़ो(४) ठीक भड़कती आग की तरफ़ ज़ोर से घसटते ले जाओ﴾४७﴿ फिर उसके सर के ऊपर खौलते पानी का अज़ाब डालो(५)﴾४८﴿ चख(६) हाँ हाँ तू ही बड़ा इज़्ज़त वाला करम वाला है(७)﴾४९﴿ बेशक यह है वह(८) जिसमें तुम शुब्ह करते थे(९)﴾५०﴿ बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं(१०)﴾५१﴿ बाग़ों और चश्मों में﴾५२﴿ पहनेंगे क्रेब और क़नादीज़(११) आमने सामने(१२)﴾५३﴿ यूंही है और हमने उन्हें ब्याह दिया निहायत सियाह और रौशन बड़ी आँखों वालियों से﴾५४﴿ उसमें हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे(१३) अम्न व अमान से(१४)﴾५५﴿ उसमें पहली मौत के सिवा(१५) फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अज़ाब से बचा लिया(१६)﴾५६﴿ तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से, यही बड़ी कामयाबी है﴾५७﴿ तो

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۝ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۝ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ۝ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۝ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ

होता है. अगर कोई व्यक्ति किसी नए जमे हुए दरख़्त या पौधे को कहे कि इसमें से अभी फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस पेड़ से फल निकलता है तो उसको जाहिल क़रार दिया जाएगा और उसका इन्कार मात्र मूर्खता या हठधर्मी होगी.

(८) यानी मक्के के काफ़िर ज़ोर और क़ुव्वत में.

(९) तुब्बा हमीयरी, यमन के बादशाह ईमान वाले थे और उनकी क़ौम काफ़िर थी जो बहुत शक्तिशाली और बहुसंख्यक थी.

(१०) काफ़िर उम्मतों में से.

(११) उनके कुफ़्र के कारण.

(१२) काफ़िर मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का इन्कारी.

(१३) अगर मरने के बाद उठना और हिसाब व सवाब न हो तो सृष्टि की पैदाइश मात्र फ़ना के लिये होगी और यह व्यर्थ है. तो इस दलील से साबित हुआ कि इस दुनियावी ज़िन्दगी के बाद आख़िरत की ज़िन्दगी ज़रूरी है जिसमें हिसाब और जज़ा हो.

(१४) कि फ़रमाँबरदारी पर सवाब दें और गुनाहों पर अज़ाब करें.

(१५) कि पैदा करने की हिकमत यह है और हिकमत वाले का काम बेवजह नहीं होता.

(१६) यानी क़यामत का दिन जिसमें अल्लाह तआला अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा.

(१७) और रिश्तेदारी और महब्बत नफ़ा न देगी.

(१८) यानी काफ़िरों की.

(१९) यानी सिवाय मूमिनीन के कि वो अल्लाह तआला की इजाज़त से एक दूसरे की शफ़ाअत करेंगे. (जुमल)

सूरए दुख़ान - तीसरा रूकू

(१) थूहड़ कि ख़बीस अत्यन्त कड़वा पेड़ है जो जहन्नम वालों की ख़ुराक होगा. हदीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़तरा उस थूहड़ का दुनिया में टपका दिया जाए तो दुनिया वालों की ज़िन्दगी ख़राब हो जाए.

(२) अबू जहल का, और उसके साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं.

(३) जहन्नम के फ़रिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि ---

(४) यानी गुनहगार को.

(५) और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि ---

(६) इस अज़ाब को.

(७) फ़रिश्ते यह कलिमा अपमान के लिये कहेंगे क्योंकि अबू जहल कहा करता था कि बतहा में मैं बड़े सम्मान वाला बुज़ुर्गी वाला

लَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

(٤٥) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٥) — اٰيَاتُهَا ٣٧ — رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

منزل ٦

हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में[१७] आसान किया कि वो समझें[१८] ﴿५८﴾ तो तुम इन्तिज़ार करो[१९] वो भी किसी इन्तिज़ार में हैं[२०] ﴿५९﴾

४५ - सूरए जासियह

सूरए जासियह मक्का में उतरी, इसमें ३७ आयतें, चार रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

हा-मीम.﴿१﴾ किताब का उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाले की तरफ़ से﴿२﴾ बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिये[२]﴿३﴾ और तुम्हारी पैदाइश में[३] और जो जो जानवर वह फैलाता है उनमें निशानियां हैं यक़ीन वालों के लिये﴿४﴾ और रात और दिन की तब्दीलियों में[४] और इसमें कि अल्लाह ने आसमान से रोज़ी का साधन मेंह उतारा तो उससे ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की गर्दिश में[५] निशानियाँ हैं अक़्लमन्दों के लिये﴿५﴾ ये अल्लाह की आयतें हैं कि हम तुम पर हक़ के साथ पढ़ते हैं, फिर अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे﴿६﴾ ख़राबी है हर बड़े बोहतानहाए गुनहगार के लिये[६]﴿७﴾ अल्लाह की आयतों को सुनता है कि उसपर पढ़ी जाती हैं फिर हठ पर जमता है[७] घमण्ड करता[८] मानो उन्हें सुना

हूँ. उसको अज़ाब के वक़्त यह तअना दिया जाएगा और काफ़िरों से यह भी कहा जाएगा कि ---

(८) अज़ाब, जो तुम देखते हो.

(९) और उस पर ईमान नहीं लाते थे. इसके बाद परहेज़गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है.

(१०) जहाँ कोई ख़ौफ़ नहीं.

(११) यानी रेशम के बारीक और मोटे लिबास.

(१२) कि किसी की पीठ किसी की तरफ़ न हो.

(१३) यानी जन्नत में अपने जन्नती सेवकों को मेवे हाज़िर करने का हुक्म देंगे.

(१४) कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा. न मेवे की कमी का, न ख़त्म हो जाने का, न नुक़सान पहुंचाने का न और कोई.

(१५) जो दुनिया में हो चुकी.

(१६) उससे निजात अता फ़रमाई.

(१७) यानी अरबी में.

(१८) और नसीहत क़ुबूल करें और ईमान लाए, लेकिन लाएंगे नहीं.

(१९) उनकी हलाकत और अज़ाब का.

(२०) तुम्हारी मौत के (कहते हैं कि यह आयत आयते सैफ़ से मन्सूख़ हो गई)

४५ - सूरए जासियह - पहला रूकू

(१) यह सूरए जासियह है. इसका नाम सूरए शरीअह भी है. यह सूरत मक्के में उतरी, सिवाय आयत "कुल लिल-लज़ीना आमनू यग़फ़िरू" के. इस सूरत में चार रूकू सैंतीस आयतें, चार सौ अठासी कलिमे और दो हज़ार एक सौ इक्यानवे अक्षर हैं.

(२) अल्लाह तआला की क़ुदरत और उसके एक होने पर दलालत करने वाली.

(३) यानी तुम्हारी पैदायश में भी उसकी क़ुदरत और हिकमत की निशानियाँ हैं कि नुत्फ़े को ख़ून बनाता है, ख़ून को बांधता है बंधे ख़ून को गोश्त का टुकड़ा, यहाँ तक कि पूरा इन्सान बना देता है.

(४) कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है.

(५) कि कभी गर्म चलती है कभी ठण्डी, कभी दक्षिणी, कभी उत्तरी, कभी पुरवैया कभी पछारिया.

كَأَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝
وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مِّن وَرَائِهِمْ
جَهَنَّمُ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا
مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝ اللَّهُ
الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا
لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

ही नहीं, तो उसे ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की﴿८﴾ और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिला (सूचना) पाए उसकी हंसी बनाता है. उनके लिये ख़्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब ﴿९﴾ उनके पीछे जहन्नम है[९] और उन्हें कुछ काम न देगा उनका कमाया हुआ[१०] और न वो जो अल्लाह के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे[११] और उनके लिये बड़ा अज़ाब है﴿१०﴾ यह[१२] राह दिखाना है और जिन्होंने अपने रब की आयतों को न माना उनके लिये दर्दनाक अज़ाब में से सख़्त तर अज़ाब है﴿११﴾

दूसरा रूकू

अल्लाह है जिसने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उसमें उसके हुक्म से किश्तियां चलें और इसलिये कि उसका फ़ज़्ल तलाश करो[१] और इसलिये कि हक़ (सत्य) मानो[२]﴿१२﴾ और तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आसमानों में है[३] और जो कुछ ज़मीन में[४] अपने हुक्म से, बेशक इसमें निशानियां हैं सोचने वालों के लिये﴿१३﴾ ईमान वालों से फ़रमाओ दरगुज़र करें उनसे जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते[५] ताकि अल्लाह एक क़ौम से उसकी कमाई का बदला दे[६]﴿१४﴾ जो भला काम करे तो अपने

(६) यानी नज़र बिन हारिस के लिये. कहा गया है कि यह आयत नज़र बिन हारिस के बारे में उतरी जो अजम के क़िस्से कहानियाँ सुनाकर लोगों को क़ुरआने पाक सुनने से रोकता था और यह आयत हर ऐसे व्यक्ति के लिये आम है जो दीन को हानि पहुंचाए और ईमान लाने और क़ुरआन सुनने से घमण्ड करे.
(७) यानी अपने कुफ़्र पर.
(८) ईमान लाने से.
(९) यानी मौत के बाद उनका अंजामेकार दोज़ख़ है.
(१०) माल जिस पर वो बहुत इतराते हैं.
(११) यानी बुत, जिन को पूजा करते थे.
(१२) क़ुरआन शरीफ़.

सूरए जासियह - दूसरा रूकू

(१) समुद्री यात्राओं से और तिजारतों से और ग़ोता लगाने और मोती वग़ैरह निकालने से.
(२) उस के नेअमत व करम और कृपा तथा एहसान का.
(३) सूरज चांद सितारे वग़ैरह.
(४) चौपाए दरख़्त नेहरें वग़ैरह.
(५) जो दिन कि उसने ईमान वालों के लिये निर्धारित किये. या अल्लाह तआला के दिनों से वो वाक़ए मुराद हैं जिनमें वह अपने दुश्मनों को गिरफ़्तार करता है. बहरहाल उन उम्मीद न रखने वालों से मुराद काफ़िर हैं और मानी ये हैं कि काफ़िरों से जो तकलीफ़ पहुंचे और उनकी बातें जो तकलीफ़ पहुंचाएं, मुसलमान उन से दरगुज़र करें, झगड़ा न करें. (कहा गया है कि यह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ कर दी गई) इस आयत के उतरने की परिस्थितियों के बारे में कई कथन हैं. एक यह कि ग़ज़वए बनी मुस्तलक़ में मुसलमान बीरे मरीसीअ पर उतरे. यह एक कुँवां था. अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ने अपने ग़ुलाम को पानी के लिये भेजा. वह देर में आया तो उससे कारण पूछा. उसने कहा कि हज़रत उमर कुँए के किनारे पर बैठे हुए थे, जब तक नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की और हज़रत अबूबक्र की मश्कें न भर गईं, उस वक़्त तक उन्होंने किसी को पानी न भरने दिया. यह सुनकर उस बदबख़्त ने उन हज़रात की शान में गुस्ताख़ी के कलिमे कहे . हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को इसकी ख़बर हुई तो आप तलवार लेकर तैयार हुए. इसपर यह आयत उतरी. इस सूरत में यह आयत मदनी होगी. मक़ातिल का क़ौल है कि क़बीलए बनी ग़िफ़ार के एक व्यक्ति ने मक्कए मुकर्रमा में हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को गाली दी तो आपने उसको पकड़ने का इरादा किया इसपर यह आयत उतरी.

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ
مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ اِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ
فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾
اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

लिये और बुरा करे तो अपने बुरे को[७] फिर अपने रब की तरफ़ फेरे जाओगे[८] ﴿१५﴾ और बेशक हमने बनी इस्राईल को किताब[९] और हुकूमत और नबुव्वत अता फ़रमाई[१०] और हमने उन्हें सुथरी रोज़ियाँ दीं[११] और उन्हें उनके ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत (बुज़ुर्गी) बख़्शी ﴿१६﴾ और हमने उन्हें इस काम की[१२] रौशन दलीलें दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया[१३] मगर बाद उसके कि इल्म उनके पास आ चुका[१४] आपस के हसद से[१५] बेशक तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनमें फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं ﴿१७﴾ फिर हमने उस काम के[१६] ऊमदा रास्ते पर तुम्हें किया[१७] तो उसी राह चलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो[१८] ﴿१८﴾ बेशक वो अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे, और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं[१९] और डर वालों का दोस्त अल्लाह[२०] ﴿१९﴾ यह लोगों की आँखें खोलना है[२१] और ईमान वालों के लिये हिदायत व रहमत ﴿२०﴾ क्या जिन्होंने बुराईयों का इर्तिकाब

और एक क़ौल यह है कि जब आयत **''मन ज़ल-लज़ी युक़रिदुल्लाहा क़र्दन हसना''** यानी है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना दे . (सूरए बक़रह, आयत २४५) उतरी तो फ़िनहास यहूदी ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का रब मोहताज हो गया (मआज़ल्लाह), इस को सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने तलवार खींची और उसकी तलाश में निकले. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आदमी भेज कर उन्हें वापस बुला लिया.

(६) यानी उनके कर्मों का.
(७) नेकी और बदी का सवाब और अज़ाब उसके करने वाले पर है.
(८) वह नेकों और बदों को उनके कर्मों का बदला देगा.
(९) यानी तौरात.
(१०) उनमें अधिकांश नबी पैदा करके.
(११) हलाल कुशायश के साथ, फ़िरऔन और उसकी क़ौम के माल और इलाक़ों का मालिक करके और मन्न व सलवा उतार कर.
(१२) यानी दीन के काम और हलाल व हराम के बयान और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरिफ़ लाने की.
(१३) हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नबी बनाए जाने में.
(१४) और इल्म मतभेद मिटने का कारण होता है. यहाँ उन लोगों के लिये मतभेद का कारण हुआ. इसकी वजह यह है कि इल्म उनका लक्ष्य न था बल्कि उनका लक्ष्य जाहो रियासत की तलब थी, इसी लिये उन्होंने विरोध किया.
(१५) कि उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जलवा-अफ़रोज़ी के बाद अपनी शानो शौकत और हुकूमत के अन्देशे से आपके साथ हसद और दुशमनी की और काफ़िर हो गए.
(१६) यानी दीन के.
(१७) ऐ हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(१८) यानी क़ुरैश के सरदारों की जो अपने दीन की तरफ़ बुलाते हैं.
(१९) सिर्फ़ दुनिया में, और आख़िरत में उनका कोई दोस्त नहीं.
(२०) दुनिया में भी और आख़िरत में भी. डर वालों से मुराद ईमान वाले हैं और आगे क़ुरआने पाक के बारे में इरशाद होता है.
(२१) कि इससे उन्हें दीन की बातों में नज़र हासिल होती है.
(२२) कुफ़्र और गुमराही का.
(२३) यानी ईमान वालों और क़ाफ़िरों की ज़िन्दगी बराबर हो जाए ऐसा हरगिज़ न होगा क्योंकि ईमानदार ज़िन्दगी में ताअत पर क़ायम रहे और काफ़िर बुराईयों में डूबे रहे तो उन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई .ऐसे ही मौत भी एक सी नहीं कि ईमान वाले की

وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ
اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ
وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَ خَلَقَ اللّٰهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتَ
مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَ قَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ
وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

किया[२२] यह समझते हैं कि हम उन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इनकी उनकी ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए[२३] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं[२४]﴾२१﴿

तीसरा रूकू

और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ (सत्य) के साथ बनाया[१] और इसलिये कि हर जान अपने किये का बदला पाए[२] और उनपर ज़ुल्म न होगा﴾२२﴿ भला देखो तो वह जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहरा लिया[३] और अल्लाह ने उसे इल्म होने के बावजूद गुमराह किया[४] और उसके कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की आँखों पर पर्दा डाला[५] तो अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाए, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते﴾२३﴿ और बोले[६] वो तो नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी[७] मरते हैं और जीते हैं[८] और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना[९] और उन्हें इसका इल्म नहीं[१०] वो तो निरे गुमान दौड़ाते हैं[११]﴾२४﴿ और जब उनपर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाएं[१२] तो बस उनकी हुज्जत यह होती है कि कहते

मौत ख़ुशख़बरी व रहमत और बुज़ुर्गी पर होती है और काफ़िर की रहमत से निराशा और शर्मिन्दगी पर. मक्के के मुश्रिकों की एक जमाअत ने मुसलमानों से कहा था कि अगर तुम्हारी बात सत्य हो और मरने के बाद उठना हो तो भी हमही अफ़ज़ल रहेंगे जैसा कि दुनिया में हम तुमसे बेहतर रहे. उनके रद में यह आयत उतरी.

(२४) मुख़ालिफ़ सरकश, मुख़लिस फ़रमाँबरदार के बराबर कैसे हो सकता है. ईमान वाले जन्नत के ऊंचे दर्जों में इज़्ज़त बुज़ुर्गी और राहतें पाएंगे और काफ़िर जहन्नम के निचले दर्जों में ज़िल्लत और रूस्वाई के साथ सख़्त तरीन अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे.

सूरए जासियह - तीसरा रूकू

(१) कि उसकी क़ुदरत और वबदानियत की दलील हो.

(२) नेक नेकी का और बद बदी का. इस आयत से मालूम हुआ कि इस सृष्टि की उत्पत्ति से इन्साफ़ और रहमत का इज़्हार करना मक़सूद है और यह पूरी तरह क़यामत में ही हो सकता है कि सच्चाई वालों और बुराई वालों में पूरा पूरा फ़र्क़ हो. मूमिने मुख़लिस जन्नत के दर्जों में हों और नाफ़रमान काफ़िर जहन्नम के गढ़ों में.

(३) और अपनी इच्छा का गुलाम हो गया जिसे नफ़्स ने चाहा पूजने लगा. मुश्रिकों का यही हाल था कि वो पत्थर और सोने चांदी वग़ैरह को पूजते थे. जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मालूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फैंक देते और दूसरी को पूजने लगते.

(४) कि उस गुमराह ने हक़ को जान पहचान कर बेराही अपनाई. मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआला ने उसके अन्त और उसके बदनसीब और शक़ी होने को जानते हुए उसे गुमराह किया यानी अल्लाह तआला पहले से जानता था कि यह अपनी मर्ज़ी से सच्चाई की राह से फिरेगा और ग़लत राह अपनाएगा.

(५) तो उसने हिदायत और उपदेश को न सुना और न समझा और सच्चाई की राह को न देखा.

(६) मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वाले.

(७) यानी इस ज़िन्दगी के अलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं.

(८) यानी कुछ मरते हैं और कुछ पैदा होते हैं.

(९) यानी रात दिन का चक्र. वो इसी को प्रभावी मानते थे और मौत के फ़रिश्ते का और अल्लाह के हुक्म से रूह निकाले जाने का इन्कार करते थे और हर एक घटना को दुनिया और ज़माने के साथ निस्बत देते थे. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(१०) यानी वो यह बात बेइल्मी से कहते हैं.

(११) वास्तविकता से दूर. घटनाओं को ज़माने की तरफ़ मन्सूब करना और दुर्घटना होने पर ज़माने को बुरा कहना मना है. हदीसों

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتُوا
بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ
يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾
وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ
إِلَىٰ كِتَابِهَا ۚ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾
هَٰذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا
كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ
رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ

हैं हमारे बाप दादा को ले आओ[१३] तुम अगर सच्चे हो[१४]﴾२५﴿ तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें जिलाता है[१५] फिर तुमको मारेगा[१६] फिर तुम सब को इकट्ठा करेगा[१७] क़यामत के दिन जिसमें कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते[१८]﴾२६﴿

चौथा रूकू

और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़यामत होगी बातिल वालों की उस दिन हार है[१]﴾२७﴿ और तुम हर गिरोह[२] को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए, हर गिरोह अपने आमाल-नामे की तरफ़ बुलाया जाएगा[३] आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा﴾२८﴿ हमारा यह नविश्ता तुम पर हक़(सत्य) बोलता है हम लिखते रहे थे[४] जो तुमने किया﴾२९﴿ तो वो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उन्हें अपनी रहमत में लेगा[५] यही खुली कामयाबी है﴾३०﴿ और जो काफ़िर हुए उनसे फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम घमण्ड करते थे[६]

में इसकी मनाही आई है.
(१२) यानी क़ुरआने पाक की वो आयतें जिनमें अल्लाह तआला के मौत के बाद उठाने पर क़ादिर होने की दलीलें बयान की गई हैं. जब काफ़िर उनके जवाब से लाचार हो जाते हैं.
(१३) ज़िन्दा करके.
(१४) इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे.
(१५) दुनिया में, इसके बाद कि तुम बेजान नुत्फ़ा थे.
(१६) तुम्हारी उम्रें पूरी होने के वक़्त.
(१७) ज़िन्दा करके, तो जो रब ऐसी क़ुदरत वाला है वह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी यक़ीनन क़ादिर है वह सब को ज़िन्दा करेगा.
(१८) इसको कि अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उनका न जानना दलीलों की तरफ़ ग़ौर न करने के कारण है.

सूरए जासियह - चौथा रूकू

(१) यानी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा.
(२) यानी हर दीन वाले.
(३) और फ़रमाया जाएगा.
(४) यानी हमने फ़रिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने का हुक्म दिया था.
(५) जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा.
(६) और उनपर ईमान न लाते थे.

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾
وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ
اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ
كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ
فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾

और तुम मुजरिम लोग थे﴾३१﴿ और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वादा[७] सच्चा है और क़यामत में शक नहीं[८] तुम कहते हम नहीं जानते क़यामत क्या चीज़ है हमें तो यूंही कुछ गुमान सा होता है और हमें[९] यक़ीन नहीं﴾३२﴿ और उनपर खुल गईं[१०] उनके कामों की बुराइयाँ[११] और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे﴾३३﴿ और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे[१२] जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को भूले हुए थे[१३] और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं[१४]﴾३४﴿ यह इसलिये कि तुमने अल्लाह की आयतों का ठट्टा बनाया और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखा दिया[१५] तो आज न वो आग से निकाले जाएं और न उनसे कोई मनाना चाहे[१६]﴾३५﴿ तो अल्लाह ही के लिये सब ख़ूबियां हैं आसमानों का रब और ज़मीन का रब और सारे जगत का रब﴾३६﴿ और उसी के लिये बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में और वही इज़्ज़त व हिकमत (बोध) वाला है﴾३७﴿

---

(७) मुर्दों को ज़िन्दा करने का.
(८) वह ज़रूर आएगी, तो ---
(९) क़यामत के आने का.
(१०) यानी काफ़िरों पर आख़िरत में.
(११) जो उन्हों ने दुनिया में किये थे, और उनकी सज़ाएं.
(१२) दोज़ख़ के अज़ाब में.
(१३) कि ईमान और फ़रमाँदारी छोड़ बैठे.
(१४) जो तुम्हें उस अज़ाब से बचा सके.
(१५) कि तुम उसके दीवाने हो गए और तुमने मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब का इन्कार कर दिया.
(१६) यानी अब उनसे यह भी नहीं चाहिये कि वो तौबह करके और ईमान व फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करके अपने रब को राज़ी करें क्योंकि उस दिन कोई बहाना क़ुबूल नहीं.

पारा पच्चीस समाप्त

छब्बीसवां पारा - हा-मीम

४६ - सूरए अहक़ाफ़

सूरए अहक़ाफ़ मक्का में उतरी, इसमें ३५ आयतें, चार रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

हा-मीम﴿१﴾ यह किताब[२] उतारना है अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत(बोध) वाले की तरफ़ से﴿२﴾ हमने न बनाए आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच है मगर हक़ के साथ[३] और एक मुक़र्रर(निश्चित) मीआद पर[४] और काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए[५] मुंह फेरे हैं[६]﴿३﴾ तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वो जो तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[७] मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा ज़र्रा(कण) बनाया या आसमान में उनका कोई हिस्सा है, मेरे पास लाओ इससे पहली कोई किताब[८] या कुछ बचा खुचा इल्म[९] अगर तुम सच्चे हो[१०]﴿४﴾ और उससे बढ़कर कौन गुमराह जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजे[११] जो क़यामत तक उसकी न सुनें और उन्हें उनकी पूजा की ख़बर तक नहीं[१२]﴿५﴾ और जब लोगों का हश्र होगा वो उनके दुश्मन होंगे[१३] और उनसे इन्कारी हो जाएंगे[१४]﴿६﴾ और जब उनपर[१५] पढ़ी जाएं
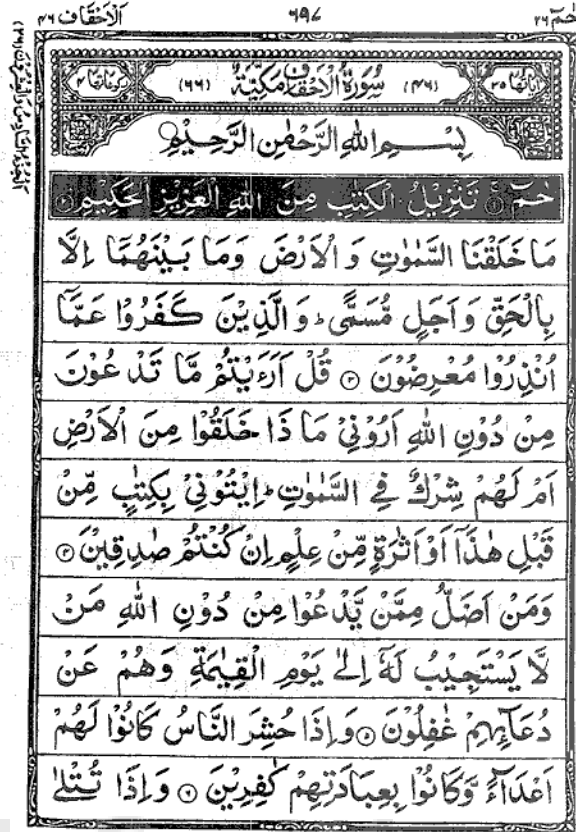
छब्बीसवाँ पारा- हा-मीम

४६ - सूरए अहक़ाफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए अहक़ाफ़ मक्का में उतरी मगर कुछ के नज़्दीक इसकी कुछ आयतें मदनी हैं जैसे कि आयत "क़ुल अरएतुम" और "फ़स्बिर कमा सबरा" और तीन आयतें "ववस्सैनल इन्साना बिवालिदैहे". इस सूरत में चार रूकू, पैंतीस आयतें, छ सौ चवालीस कलिमे और दो हज़ार पाँच सौ पचानवे अक्षर हैं.

(२) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(३) कि हमारी क़ुदरत और एक होने को प्रमाणित करें.

(४) वह निश्चित अवधि क़यामत का दिन है जिस के आ जाने पर आसमान और ज़मीन नष्ट हो जाएंगे.

(५) इस चीज़ से मुराद या अज़ाब है या क़यामत के दिन की घबराहट या क़ुरआने पाक जो मरने के बाद उठाए जाने और हिसाब का डर दिलाता है.

(६) कि उस पर ईमान नहीं लाते.

(७) यानी बुत, जिन्हें मअबूद ठहराते हो.

(८) जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन से पहले उतारी हो. मुराद यह है कि वह किताब यानी क़ुरआने मजीद तौहीद की सच्चाई और शिर्क के बातिल होने का बयान करती है और जो किताब भी इससे पहले अल्लाह तआला की तरफ़ से आई उसमें यही बयान है. तुम अल्लाह तआला की किताबों में से कोई एक किताब तो ऐसी ले आओ जिसमें तुम्हारे दीन (बुत-परस्ती) की गवाही हो.

(९) पहलों का.

(१०) अपने इस दावे में कि ख़ुदा का कोई शरीक है जिसकी इबादत का उसने तुम्हें हुक्म दिया है.

(११) यानी बुतों को.

(१२) क्योंकि वो पत्थर और बेजान है.

(१३) यानी बुत, अपने पुजारियों के.

(१४) और कहेंगे कि हमने उन्हें अपनी इबादत की दावत नहीं दी. अस्ल में ये अपनी ख़्वाहिशों के पुजारी थे.

(१५) यानी मक्के वालों पर.

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ

हमारी रौशन आयतें तो काफ़िर अपने पास आए हुए हक़ को[१६] कहते हैं यह खुला जादू है[१७] ﴿७﴾ क्या कहते हैं उन्होंने उसे जी से बनाया[१८] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने उसे जी से बना लिया होगा तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख़्तियार नहीं रखते[१९] वह ख़ूब जानता है जिन बातों में तुम मशग़ूल हो[२०] और वह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे बीच गवाह और वही बख़्शने वाला मेहरबान है[२१] ﴿८﴾ तुम फ़रमाओ मैं कोई अनोखा रसूल नहीं[२२] और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या[२३] मैं तो उसी का ताबेअ हूँ जो मुझे **वही** होती है[२४] और मैं नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला ﴿९﴾ तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर वह क़ुरआन अल्लाह के पास से हो और तुम ने उसका इन्कार किया और बनी इस्राईल का एक गवाह[२५] उसपर गवाही दे चुका[२६] तो वह ईमान लाया और तुमने घमण्ड किया[२७] बेशक अल्लाह राह नहीं देता ज़ालिमों को ﴿१०﴾

दूसरा रूकू

और काफ़िरों ने मुसलमानों को कहा आग उसमें[१] कुछ भलाई होती तो ये[२] हमसे आगे उसतक न पहुंच जाते[३] और जब उन्हें उसकी हिदायत न हुई तो अब[४] कहेंगे कि

(१६) यानी क़ुरआन शरीफ़ को बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये और अच्छी तरह सुने.
(१७) कि इसके जादू होने में शुबह नहीं और इससे भी बुरी बात कहते हैं जिसका आगे बयान है.
(१८) यानी सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
(१९) यानी अगर फ़र्ज़ करो मैं दिल से बनाता और उसको अल्लाह तआला का कलाम बताता तो वह अल्लाह तआला पर लांछन होता और अल्लाह तआला ऐसे लांछन लगाने वाले को जल्द मुसीबत और अज़ाब में गिरफ़्तार करता है. तुम्हें तो यह क़ुदरत नहीं कि तुम उसके अज़ाब से बचा सको या उसके अज़ाब को दूर कर सको तो किस तरह हो सकता है कि मैं तुम्हारी वजह से अल्लाह तआला पर झूट बोलता.
(२०) और जो कुछ क़ुरआने पाक की निस्बत कहते हो.
(२१) यानी अगर तुम कुफ़्र से तौबह करके ईमान लाओ तो अल्लाह तआला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाएगा. और तुम पर रहमत करेगा.
(२२) मुझसे पहले भी रसूल आ चुके हैं तो तुम क्यों नबुव्वत का इन्कार करते हो.
(२३) इसके मानी में मुफ़स्सिरों के कुछ क़ौल हैं एक तो यह कि क़यामत में जो मेरे और तुम्हारे साथ किया जाएगा वह मुझे मालूम नहीं. यह मानी हों तो यह आयत मन्सूख़ है. रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो मुश्रिक ख़ुश हुए और कहने लगे लात और उज़्ज़ा की क़सम, अल्लाह के नज़्दीक हमारा और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का एक सा हाल है. उन्हें हमपर कुछ फ़ज़ीलत नहीं. अगर यह क़ुरआन उनका अपना बनाया हुआ न होता तो उनका भेजने वाला उन्हें ज़रूर ख़बर देता कि उनके साथ क्या करेगा. तो अल्लाह तआला ने आयत **"लियग़फ़िरा तकल्लाहो मा तक़द्दमा मिन ज़ंबिका वमा तअख़्ख़रा"** यानी ताकि अल्लाह तुम्हारे कारण से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के और अपनी नेअमतें तुमपर पूरी करदे. (सूरए फ़त्ह, आयत २) नाज़िल फ़रमाई. सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हुज़ूर को मुबारक हो आपको मालूम हो गया कि आप के साथ क्या किया जाएगा. यह इन्तिज़ार है कि हमारे साथ क्या करेगा. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी **"लियुदख़िलल मूमिनीना वल मूमिनाते जन्नातिन तजरी मिन तहतिहल अन्हारो"** यानी ताकि ईमान वाले मर्दो और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें. (सूरए फ़त्ह, आयत ५) और यह आयत उतरी **"बश्शिरिल मूमिनीना बिअन्ना लहुम मिनल्लाहे फ़दलन कबीरा"** यानी और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दो कि उनके लिये अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है. (सूरए अहज़ाब, आयत ४७) तो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया कि हुज़ूर के साथ क्या करेगा और मूमिनीन के साथ क्या. दूसरा क़ौल आयत

هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى
اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا
عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ
وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ۭ حَمَلَتْهُ
اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۭ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ
ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ
سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰي وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

यह पुराना बोहतान है﴾११﴿ और इससे पहले मूसा की किताब[५] है पेशवा और मेहरबानी, और यह किताब है तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती[६] अरबी ज़बान में कि ज़ालिमों को डर सुनाए, और नेकों को बशारत﴾१२﴿ बेशक वो जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर साबित क़दम रहे(डटे रहे)[७] न उनपर ख़ौफ़[८] न उनको ग़म[९]﴾१३﴿ वो जन्नत वाले हैं हमेशा उसमें रहेंगे, उनके कर्मों का इनाम﴾१४﴿ और हमने आदमी को हुक्म किया कि अपने माँ बाप से भलाई करे, उसकी माँ ने उसे पटे में रखा तकलीफ़ से और जनी उसको तकलीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में है[१०] यहाँ तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा[११] और चालीस बरस का हुआ[१२] अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर की[१३] और मैं वह काम करूं जो तुझे पसन्द आए[१४] और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह रख[१५] मैं तेरी तरफ़ रूजू लाया[१६] और मैं मुसलमान हूँ[१७]﴾१५﴿ ये हैं वो जिनकी नेकियाँ हम

की तफ़सीर में यह है कि आख़िर का हाल तो हुज़ूर को अपना भी मालूम है और मूमिनीन का भी और झुटलाने वालों का भी. मानी ये हैं कि दुनिया में क्या किया जाएगा, यह नहीं मालूम. अगर ये मानी लिये जाएं तो भी यह आयत मन्सूख़ है. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को यह भी बता दिया **"लियुज़हिरहू अलद दीने कुल्लिही"** कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे. (सूरए तौबह, आयत ३३) और **"माकानल्लाहो लियुअज़्ज़िबहुम व अन्ता फ़ीहिम"** यानी जबतक ऐ मेहबूब, तुम उनमें तशरीफ़ फ़रमा हो और अल्लाह उन्हें अज़ाब करने वाला नहीं. (सूरए अनफ़ाल, आयत ३३) बहर हाल अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुज़ूर के साथ और हुज़ूर की उम्मत के साथ पेश आने वाले उमूर पर मुत्तला फ़रमा दिया चाहे वो दुनिया के हों या आख़िरत के और अगर "दरायत" अक़्ल से जानने के अर्थ में लिया जाए तो मज़मून और भी ज़्यादा साफ़ है और आयत का इसके बाद वाला वाक्य इसकी पुष्टि करता है. अल्लामा नीशापुरी ने इस आयत के अन्तर्गत फ़रमाया कि इसमें नफ़ी अपनी ज़ात से जानने की है, वही के ज़रिये जानने का इन्कार नहीं है.

(२४) यानी मैं जो कुछ जानता हूँ अल्लाह तआला की तालीम से जानता हूँ.

(२५) वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए और आपकी नबुव्वत की सच्चाई की गवाही दी.

(२६) कि वह क़ुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से है.

(२७) और ईमान से मेहरूम रहे तो इसका नतीजा क्या होता है.

सूरए अहक़ाफ़ - दूसरा रूकू

(१) यानी दीने मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में.

(२) ग़रीब लोग.

(३) यह आयत मक्के के मुश्रिकों के बारे में उतरी जो कहते थे कि अगर दीने मुहम्मदी सच्चा होता तो फ़लाँ और फ़लाँ उसको हम से पहले कैसे क़ुबूल कर लेते.

(४) दुश्मनी से, क़ुरआन शरीफ़ की निस्बत.

(५) तौरात.

(६) पहली किताबों की.

(७) अल्लाह तआला की तौहीद और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीअत पर आख़िरी दम तक.

(८) क़यामत में.

نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ
فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا
يُوْعَدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ
اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ
وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
خٰسِرِيْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ
اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ
حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي

क़ुबूल फ़रमाएंगे[१८] और उनकी तक़सीरों से दरगुज़र फ़रमाएंगे जन्नत वालों में, सच्चा वादा जो उन्हें दिया जाता था[१९]﴿१६﴾ और वह जिसने अपने माँ बाप से कहा[२०] उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे यह वादा देते हो कि फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा हालांकि मुझसे पहले संगतें गुज़र चुकीं[२१] और वो दोनों[२२] अल्लाह से फ़रियाद करते हैं तेरी ख़राबी हो ईमान ला बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है[२३] तो कहता है ये तो नहीं मगर अगलों की कहानियां﴿१७﴾ ये वो हैं जिन पर बात साबित हो चुकी[२४] उन गिरोहों में जो उन से पहले गुज़रे जिन्न और आदमी, बेशक वो ज़ियाँकार थे﴿१८﴾ और हर एक के लिये कर्म के अपने अपने[२५] दर्जे हैं[२६] और ताकि अल्लाह उनके काम उन्हें पूरे भर दे[२७] और उनपर ज़ुल्म न होगा﴿१९﴾ और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उनसे फ़रमाया जाएगा, तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुनिया ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके[२८] तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा उसकी कि तुम ज़मीन में नाहक़

(९) मौत के वक़्त.

(१०) इस आयत से साबित होता है कि गर्भ की कम से कम मुद्दत छ माह है क्योंकि जब दूध छुड़ाने की मुद्दत दो साल हुई जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''हौलैने कामिलैन'' तो गर्भ के लिये छ माह बाक़ी रहे. यही क़ौल है इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहे अलैहिमा का और हज़रत इमाम साहिब रदियल्लाहो अन्हो के नज़्दीक इस आयत से रिज़ाअत की मुद्दत ढाई साल साबित होती है. मसअले की तफ़सील दलीलों के साथ उसूल की किताबों में मिलती है.

(११) और अक़्ल और क़ुव्वत मुस्तहकम हुई और यह बात तीस से चालीस साल तक की उम्र में हासिल होती है.

(१२) यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी. आपकी उम्र सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दो साल कम थी. जब हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो की उम्र अठठारह साल की हुई तो आपने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सोहबत इख़्तियार की. उस वक़्त हुज़ूर की उम्र शरीफ़ बीस साल की थी. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हमराही में तिजारत की ग़रज़ से शाम का सफ़र किया. एक मंज़िल पर ठहरे वहाँ एक बेरी का दरख़्त था. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके साए में तशरीफ़ फ़रमा हुए. क़रीब ही एक पादरी रहता था. हज़रत सिद्दीक़ रदीयल्लाहो अन्हो उसके पास चले गए. उसने आपसे कहा यह कौन साहिब हैं जो इस बेरी के साए में जलवा फ़रमा हैं. हज़रत सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि यह मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह हैं, अब्दुल मुत्तलिब के पोते. राहिब ने कहा ख़ुदा की क़सम ये नबी हैं इस बेरी के साए में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद से आज तक इनके सिवा कोई नहीं बैठा. यही आख़िरी ज़माने के नबी हैं. राहिब की यह बात हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के दिल में उतर गई और नबुव्वत का यक़ीन आपके दिल में जम गया. और आपने सरकार की सोहबत शरीफ़ की मुलाज़िमत इख़्तियार करली. सफ़र व हज़र में आपसे जुदा न होते. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और अल्लाह तआला ने हुज़ूर को अपनी नबुव्वत और रिसालत का ताज पहनाया तो हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो आप पर ईमान ले आए. उस वक़्त आप की उम्र अड़तीस बरस की थी. जब आप चालीस साल के हुए तो आपने अल्लाह तआला से यह दुआ की.

(१३) कि हम सबको हिदायत फ़रमाई और इस्लाम से मुशर्रफ़ किय. हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के वालिद का नाम अबू क़हाफ़ा और वालिदा का नाम उम्मुल ख़ैर था.

(१४) आपकी यह दुआ भी क़ुबूल हुई और अल्लाह तआला ने आपको अच्छे कर्मों की वह दौलत अता फ़रमाई कि सारी उम्मत के कर्म आपके एक कर्म के बराबर नहीं हो सकते . आपकी नेकियों में से एक यह है कि नौ मूमिन जो ईमान की वजह से सख़्त यातनाओं और तकलीफ़ों में जकड़े हुए थे, उनको आपने आज़ाद कराया. उन्हीं में से हज़रत बिलाल रदियल्लाहो अन्हो भी हैं. और आप ने यह दुआ की.

(१५) यह दुआ भी क़ुबूल हुई. अल्लाह तआला ने आपकी औलाद में नेकी रख्री. आपकी तमाम औलाद मूमिन है और उनमें हज़रत

الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ۝ وَاذْكُرْ
أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ
النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا
إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ
اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَٰكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ
قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ
رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ
رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنَّاهُمْ فِيمَا إِنْ
مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَ

घमण्ड करते थे और सज़ा उसकी कि हुक्मअदूली (नाफ़रमानी) करते थे[२१] ﴿२०﴾

तीसरा रूकू

और याद करो आद के हमक़ौम[१] को जब उसने उनको अहक़ाफ़ की सरज़मीन (धरती) में डराया[२] और बेशक इससे पहले डर सुनाने वाले गुज़र चुके और उसके बाद आए कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का भय है ﴿२१﴾ बोले क्या तुम इसलिये आए कि हमें हमारे मअबूदों से फेर दो तो हमपर लाओ[३] जिसका हमें वादा देते हो अगर तुम सच्चे हो[४] ﴿२२﴾ उसने फ़रमाया[५] इसकी ख़बर तो अल्लाह ही के पास है[६] मैं तो तुम्हें अपने रब के पयाम (संदेश) पहुंचाता हूँ हाँ मेरी दानिस्त (जानकारी) में तुम निरे जाहिल लोग हो[७] ﴿२३﴾ फिर जब उन्होंने अज़ाब को देखा बादल की तरह आसमान के किनारे में फैला हुआ उनकी वादियों की तरफ़ आता[८] बोले यह बादल है कि हम पर बरसेगा[९] बल्कि यह तो वह है जिसकी तुम जल्दी मचाते थे, एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब ﴿२४﴾ हर चीज़ को तबाह कर डालती है अपने रब के हुक्म से[१०] तो सुब्ह रह गए कि नज़र न आते थे मगर उनके सूने मकान हम ऐसी ही सज़ा देते हैं मुजरिमों को ﴿२५﴾ और बेशक हमने उन्हें वो मक़दूर (साधन) दिये थे जो तुम को न दिये[११] और उनके लिये कान और आँख

उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा का दर्जा किस क़द्र बलन्द है कि तमाम औरतों पर अल्लाह ने उन्हें बुज़ुर्गी अता की है. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के वालिदेन भी मुसलमान और आपके बेटे मुहम्मद और अब्दुल्लाह और अब्दुल रहमान और आपकी बेटियाँ हज़रत आयशा और हज़रत असमा और आपके पोते मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान, ये सब मूमिन और सब सहाबियत की बुज़ुर्गी रखने वाले हैं. आपके सिवा कोई ऐसा नहीं है जिसको यह फ़ज़ीलत हासिल हो कि उसके वालिदैन भी सहाबी हों, ख़ुद भी सहाबी, औलाद भी सहाबी, पोते भी सहाबी, चार पुश्तें सहाबियत का शरफ़ रखने वाली.

(१६) हर उस काम में जिसमें तेरी रज़ा हो.

(१७) दिल से भी और ज़बान से भी.

(१८) उन पर सवाब देंगे.

(१९) दुनिया में नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बाने मुबारक से.

(२०) इससे मुराद कोई ख़ास व्यक्ति नहीं है बल्कि काफ़िर जो मरने के बाद उठाए जाने का इन्कारी हो और माँ बाप का नाफ़रमान और उसके माँ बाप उसको सच्चे दीन की तरफ़ बुलाते हों और वह इन्कार करता हो.

(२१) उनमें से कोई मरकर ज़िन्दा न हुआ.

(२२) माँ बाप.

(२३) मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाने का.

(२४) अज़ाब की.

(२५) मूमिन हो या काफ़िर.

(२६) यानी अल्लाह तआला के नज़दीक मन्ज़िलों और दर्जों में. क़यामत के दिन जन्नत के दर्जे बलन्द होते चले जाते हैं और जहन्नम के दर्जे पस्त होते जाते हैं तो जिनके कर्म अच्छे हों वो जन्नत के ऊंचे दर्जे में होंगे और जो कुफ़्र और गुमराही में चरम सीमा को पहुंच गए हों वो जहन्नम के सब से नीचे दर्जे में होंगे.

(२७) यानी मूमिन और काफ़िरों को फ़रमाँबरदारी और नाफ़रमानी की पूरी जज़ा दे.

(२८) यानी लज़्ज़त और ऐश जो तुम्हें पाना था, वह सब दुनिया में तुमने ख़त्म कर दिया. अब तुम्हारे लिये आख़िरत में कुछ भी बाक़ी न रहा और कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि "तैय्यिबात" से शरीर के अंग और जवानी मुराद है और मानी ये हैं कि तुम ने

اَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا یَجْحَدُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۝ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ۝ وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ۝ قَالُوْا یٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ یَهْدِیْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝ یٰقَوْمَنَآ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ یَغْفِرْ لَكُمْ

और दिल बनाए[१२] तो उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आए जब कि वो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अज़ाब ने जिसकी हंसी बनाते थे﴿२६﴾

चौथा रूकू

और बेशक हमने हलाक कर दीं[१] तुम्हारे आस पास की बस्तियां[२] और तरह तरह की निशानियां लाए कि वो बाज़ आएं[३]﴿२७﴾ तो क्यों न मदद की उनकी[४] जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा क़ुर्ब(समीपता) हासिल करने को ख़ुदा ठहरा रखा था[५] बल्कि वो उनसे गुम गए[६] और यह उनका बोहतान और इफ़तिरा है[७]﴿२८﴾ और जब कि हमने तुम्हारी तरफ़ कितने जिन्न फेरे[८] कान लगाकर क़ुरआन सुनते फिर जब वहाँ हाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो[९] फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते पलटे[१०]﴿२९﴾ बोले ऐ हमारी क़ौम, हमने एक किताब सुनी[११]कि मूसा के बाद उतारी गई[१२] अगली किताबों की तस्दीक़(पुष्टि) फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती﴿३०﴾ ऐ हमारी क़ौम अल्लाह के मनादी(उदघोषक)[१३]

अपनी जवानी और अपनी क़ुव्वतों को दुनिया के अन्दर कुफ़्र और गुनाहों में ख़र्च कर दिया.

(२९) इस आयत में अल्लाह तआला ने दुनियावी लज़्ज़तें इख़्तियार करने पर काफ़िरों को मलामत फ़रमाई तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के सहाबा ने दुनिया की लज़्ज़तों से किनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात तक हुज़ूर के घर वालों ने कभी जौ की रोटी भी दो दिन बराबर न खाई. यह भी हदीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था, सरकार के मकान में आग न जलती थी. कुछ खजूरें और पानी पर गुज़ारा कर लिया जाता था. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है आप फ़रमाते थे कि मैं चाहता तो तुमसे अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐश और राहत अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूँ.

सूरए अहक़ाफ़ - तीसरा रूकू

(१) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम.

(२) शिर्क से. अहक़ाफ़ एक रेगिस्तानी घाटी है जहाँ क़ौमे आद के लोग रहते थे.

(३) वह अज़ाब.

(४) इस बात में कि अज़ाब आने वाला है.

(५) यानी हूद अलैहिस्सलाम ने.

(६) कि अज़ाब कब आएगा.

(७) जो अज़ाब में जल्दी करते हो और अज़ाब को जानते नहीं हो कि क्या चीज़ है.

(८) और लम्बी मुद्दत से उनकी सरज़मीन में बारिश न हुई थी. इस काले बादल को देखकर ख़ुश हुए.

(९) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया.

(१०) चुनांन्चे उस आंधी के अज़ाब ने उनके मर्दों औरतों छोटों बड़ों को हलाक कर दिया और उनके माल आसमान और ज़मीन के बीच उड़ते फिरते थे. चीज़ें टुकड़े टुकड़े हो गईं. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने अपने और अपने ऊपर ईमान लाने वालों के चारों तरफ़ एक लकीर खींच दी थी. हवा जब उस लकीर के अन्दर आती तो अत्यन्त नर्म पाकीज़ा और राहत देने वाली ठण्डी होती और वही हवा क़ौम पर अत्यन्त सख़्त हलाक करने की होती. और यह हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का एक महान चमत्कार था.

(११) ऐ मक्के वालो, वो क़ुव्वत और माल और लम्बी उम्र में तुम से ज़्यादा थे.

(१२) ताकि दीन के काम में लाएं . मगर उन्होंने सिवाय दुनिया की तलब के ख़ुदा की दी हुई उन नेअमतों से दीन का काम ही

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَ
لَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ
يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ
هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ كَمَا
صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ
لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ
يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ
اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

ع

की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे[१४] और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले﴿३१﴾ और जो अल्लाह के मनादी की बात न माने वह ज़मीन में क़ाबू से निकल कर जाने वाला नहीं[१५] और अल्लाह के सामने उसका कोई मददगार नहीं[१६] वो[१७] खुली गुमराही में हैं﴿३२﴾ क्या उन्होंने[१८] न जाना कि वह अल्लाह जिसने आसमान और ज़मीन बनाए और उनके बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए, क्यों नहीं, बेशक वह सब कुछ कर सकता है﴿३३﴾ और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे, उनसे फ़रमाया जाएगा, क्या यह हक़ (सत्य) नहीं, कहेंगे, क्यों नहीं हमारे रब की क़सम, फ़रमाया जाएगा, तो अज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का[१९]﴿३४﴾ तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया[२०] और उनके लिये जल्दी न करो[२१] गोया वो जिस दिन देखेंगे[२२] जो उन्हें वादा दिया जाता है[२३] दुनिया में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर, यह पहुंचाना है[२४] तो कौन हलाक किये जाएंगे, मगर बेहुक्म लोग[२५]﴿३५﴾

नहीं लिया.

सूरए अहक़ाफ़ - चौथा रूकू

(१) ऐ क़ुरैश.
(२) समूद व आद व क़ौमे लूत की तरह.
(३) कुफ़्र और सरकशी से, लेकिन वो बाज़ न आए तो हमने उन्हें उनके कुफ़्र के कारण हलाक कर दिया.
(४) उन काफ़िरों की, उन बुतों ने.
(५) और जिनकी निस्बत यह कहा करते थे कि इन बुतों को पूजने से अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होता है.
(६) और अज़ाब उतरने के समय काम न आए.
(७) कि वो बुतों को मअबूद कहते हैं और बुत परस्ती को अल्लाह के नज़्दीक होने का ज़रिया ठहराते हैं.
(८) यानी ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, उस वक़्त को याद कीजिये जब हमने आपकी तरफ़ जिन्नों की एक जमाअत भेजी. इस जमाअत की संख्या में मतभेद है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि सात जिन्न थे जिन्हें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनकी क़ौम की तरफ़ संदेश ले जाने वाला बनाया. कुछ रिवायतों में आया है कि नौ थे. तहक़ीक़ करने वाले उलमा इसपर सहमत हैं कि जिन्न सब के सब मुकल्लिफ़ हैं यानी आक़िल व बालिग़. अब उन जिन्नों का हाल बयान होता है कि आप बत्ने नख़लह में, मक्कए मुकर्रमा और ताइफ़ के बीच, मक्कए मुकर्रमा को आते हुए अपने सहाबा के साथ फ़ज्र की नामाज़ पढ़ रहे थे उस वक़्त जिन्न.
(९) ताकि अच्छी तरह हज़रत की क़िरअत सुन लें.
(१०) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाकर हुज़ूर के हुक्म से अपनी क़ौम की तरफ़ ईमान की दावत देने गए और उन्हें ईमान न लाने और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विरोध से डराया.
(११) यानी क़ुरआन शरीफ़.
(१२) अता ने कहा चूंकि वो जिन्न दीने यहूदियत पर थे इसलिये उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की किताब का नाम न लिया. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की किताब का नाम न लेने का कारण यह है कि उसमें सिर्फ़ नसीहतें हैं, अहकाम बहुत ही कम हैं.
(१३) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

४७- सूरए मुहम्मद

सूरए मुहम्मद मदीने में उतरी, इसमें ३८ आयतें, चार रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका(२) अल्लाह ने उनके कर्म बर्बाद किये(३)﴿१﴾ और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उसपर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया(४) और वही उनके रब के पास से हक़ है अल्लाह ने उनकी बुराइयाँ उतार दीं और उनकी हालतें संवार दीं(५)﴿२﴾ यह इसलिये कि काफ़िर बातिल (असत्य) के पैरो (अनुयायी) हुए और ईमान वालों ने हक़ (सत्य) की पैरवी (अनुकरण) की जो उनके रब की तरफ़ से है(६) अल्लाह लोगों से उनके अहवाल यूंही बयान फ़रमाता है(७)﴿३﴾ तो जब काफ़िरों से तुम्हारा सामना हो(८) तो गर्दनें मारना है(९) यहाँ तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो (१०) तो मज़बूत बांधो, फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दो चाहे फ़िदिया ले लो(११) यहाँ तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे(१२) बात यह है, और अल्लाह चाहता तो आप ही उनसे बदला ले लेता(१३) मगर इसलिये(१४) कि तुम में एक को दूसरे से जांचे(१५) और जो अल्लाह की राह में मारे गए

(१४) जो इस्लाम से पहले हुए और जिनमें बन्दों का हक़ नहीं.
(१५) अल्लाह तआला से कहीं भाग नहीं सकता और उसके अज़ाब से बच नहीं सकता.
(१६) जो उसे अज़ाब से बचा सके.
(१७) जो अल्लाह तआला के मुनादी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बात न माने.
(१८) यानी मरने के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों ने.
(१९) जिसके तुम दुनिया में मुरतकिब हुए थे. इसके बाद अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ख़िताब फ़रमाता है.
(२०) अपनी क़ौम की तकलीफ़ पर.
(२१) अज़ाब तलब करने में क्योंकि अज़ाब उनपर ज़रूर उतरने वाला है.
(२२) आख़िरत के अज़ाब को.
(२३) तो उसकी दराज़ी और हमेशगी के सामने दुनिया में ठहरने की मुद्दत को बहुत कम समझेंगे और ख़याल करेंगे कि ..
(२४) यानी यह क़ुरआन और वह हिदायत और निशानियाँ जो इसमें हैं यह अल्लाह तआला की तरफ़ से तबलीग़ है.
(२५) जो ईमान और फ़रमाँबरदारी से बाहर हैं.

४७ - सूरए मुहम्मद - पहला रूकू

(१) सूरए मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) मदनी है. इसमें चार रुकू, अड़तीस आयतें, पाँच सौ अट्ठावन कलिमे और दो हज़ार चार सौ पछत्तर अक्षर है.
(२) यानी जो लोग ख़ुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्होंने इस्लाम से रोका.
(३) जो कुछ भी उन्होंने किए हों, भूखों को ख़िलाया हो या क़ैदियों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदे हराम यानी ख़ानए काबा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो, सब बर्बाद हुई. आख़िरत में उसका कुछ सवाब नहीं. ज़ुहाक का क़ौल है कि मुराद यह है कि काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये जो मक्र सोचे थे और बहाने बनाए थे अल्लाह तआला ने उनके वो तमाम काम बातिल कर दिये.
(४) यानी क़ुरआने पाक.

يُضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ ع اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِىْۤ اَخْرَجَتْكَ ۚ

अल्लाह हरगिज़ उनके अमल ज़ाया न फ़रमाएगा[१६] ﴾४﴿ जल्द उन्हें राह देगा[१७] और उनका काम बना देगा ﴾५﴿ और उन्हें जन्नत में लेजाएगा उन्हें उसकी पहचान करा दी है[१८] ﴾६﴿ ऐ ईमान वालो अगर तुम ख़ुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा[१९] और तुम्हारे क़दम जमा देगा[२०] ﴾७﴿ और जिन्होंने कुफ़्र किया तो उनपर तबाही पड़े और अल्लाह उनके अअमाल(कर्म) बर्बाद करे ﴾८﴿ यह इसलिये कि उन्हें नागवार हुआ जो अल्लाह ने उतारा[२१] तो अल्लाह ने उनका किया धरा अकारत किया ﴾९﴿ तो क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उनसे अगलों का[२२] कैसा अंजाम हुआ, अल्लाह ने उनपर तबाही डाली[२३] और उन काफ़िरों के लिये भी वैसी कितनी ही हैं[२४] ﴾१०﴿ यह[२५] इसलिये कि मुसलमानों का मौला अल्लाह है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं ﴾११﴿

दूसरा रूकू

बेशक अल्लाह दाख़िल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ों में जिनके नीचे नेहरें बहें, और काफ़िर बरतते हैं और खाते हैं[१] जैसे चौपाए खाएं[२] और आग में उनका ठिकाना है ﴾१२﴿ और कितने ही शहर कि इस शहर से[३] क़ुव्वत में ज़्यादा थे जिसने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया, हमने उन्हें हलाक फ़रमाया तो उनका कोई

(५) दीन के कामों में तौफ़ीक़ अता फ़रमाकर और दुनिया में उनके दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी मदद फ़रमाकर. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि उनकी ज़िन्दगी के दिनों में उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाकर कि उनसे कोई गुनाह न हो.
(६) यानी क़ुरआन शरीफ़.
(७) यानी पक्षों के कि काफ़िरों के कर्म अकारत और ईमान वालों की ग़ल्तियाँ भी माफ़.
(८) यानी जंग हो.
(९) यानी उनको क़त्ल करो.
(१०) यानी बहुतात से क़त्ल कर चुको और बाक़ी को क़ैद करने का मौक़ा आ जाए.
(११) दोनों बातों का इख़्तियार है. मुश्रिकों के क़ैदियों का हुक्म हमारे नज़्दीक यह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या ग़ुलाम बना लिया जाए और एहसान से छोड़ना और फ़िदिया लेना जो इस आयत में बयान किया गया है वह सूरए बराअत की आयत "उक़्तलुल मुश्रिकीन" से मन्सूख़ हो गया.
(१२) यानी जंग ख़त्म हो जाए इस तरह कि मुश्रिक इताअत क़ुबूल कर लें और इस्लाम लाएं.
(१३) बग़ैर क़िताल के उन्हें ज़मीन में धंसा कर या उन पर पत्थर बरसाकर या और किसी तरह.
(१४) तुम्हें क़िताल का हुक्म दिया.
(१५) क़िताल में ताकि मुसलमान मक़्तूल सवाब पाएं और काफ़िर अज़ाब.
(१६) उनके कर्मों का सवाब पूरा पूरा देगा.
(१७) ऊंचे दर्जों की तरफ़.
(१८) वो जन्नत की मंज़िलों में अजनबी और अनजान की तरह न पहुंचेगें जो किसी जगह जाता है तो उसको हर चीज़ पूछने की हाजत होती है. बल्कि वो जाने पहचाने अन्दाज़ में दाख़िल होंगे अपनी मंज़िलों और ठिकानों को पहचानते होंगे अपनी बीवी और ख़ादिमों को जानते होंगे. हर चीज़ का मौक़ा उनकी जानकारी में होगा जैसे कि वो हमेशा से यहीं के रहने वाले हों.
(१९) तुम्हारे दुश्मन के मुक़ाबिल.
(२०) जंग में और हुज्जते इस्लाम पर और पुले सिरात पर.
(२१) यानी क़ुरआने पाक. इसलिये कि उसमें शहवात और लज़्ज़तों को छोड़ने और फ़रमाँबरदारी और इबादतों में मेहनत उठाने के आदेश हैं जो नफ़्स पर भारी गुज़रते हैं.

اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ
مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ
وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ
عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ
سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا
لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۫ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾
وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾
فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

मददगार नहीं[४]﴾१३﴿ तो क्या जो अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हो[५] उस[६] जैसा होगा जिसके बुरे अमल (कर्म) उसे भले दिखाए गए और वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चले[७]﴾१४﴿ अहवाल उस जन्नत का जिसका वादा परहेज़गारों से है, उसमें ऐसी पानी की नेहरें हैं जो कभी न बिगड़ें[८] और ऐसे दूध की नेहरें हैं जिसका मज़ा न बदला[९] और ऐसी शराब की नेहरें हैं जिसके पीने में लज़्ज़त है[१०] और ऐसी शहद की नेहरें हैं साफ़ किया गया[११] और उनके लिये उसमें हर क़िस्म के फ़ल हैं और अपने रब की मग़फ़िरत[१२] क्या ऐसे चैन वाले उनके बराबर हो जाएंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खोलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे﴾१५﴿ और उन[१३] में से कुछ तुम्हारे इरशाद (प्रवचन) सुनते हैं[१४] यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं[१५] इल्म वालों से कहते हैं[१६] अभी उन्होंने क्या फ़रमाया[१७] ये हैं वो जिनके दिलों पर अल्लाह ने मोहर कर दी[१८] और अपनी ख़्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) हुए[१९]﴾१६﴿ और जिन्होंने राह पाई[२०] अल्लाह ने उनकी हिदायत[२१] और ज़्यादा फ़रमाई और उनकी परहेज़गारी उन्हें अता फ़रमाई[२२]﴾१७﴿ तो काहे के इन्तिज़ार में हैं[२३] मगर क़यामत के कि उनपर अचानक आ जाए, कि उसकी अलामतें (चिन्ह) तो आही चुकी हैं[२४] फिर जब वह आ जाएगी तो कहाँ वो और कहाँ उनका समझना﴾१८﴿ तो जान लो कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं

(२२) यानी पिछली उम्मतों का.
(२३) कि उन्हें और उनकी औलाद और उनके माल को सब को हलाक कर दिया.
(२४) यानी अगर ये काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान न लाएं तो उनके लिये पहले जैसी बहुत सी तबाहियाँ हैं.
(२५) यानी मुसलमानों का विजयी होना और काफ़िरों का पराजित और ज़लील होना.

सूरए मुहम्मद - दूसरा रूकू

(१) दुनिया में थोड़े दिन ग़फ़लत के साथ, अपने अंजाम को भुलाए हुए.
(२) और उन्हें तमीज़ न हो कि इस खाने के बाद वो ज़िब्ह किये जाएंगे. यही हाल काफ़िरों का है जो ग़फ़लत के साथ दुनिया हासिल करने में लगे हुए हैं और आने वाली मुसीबतों का ख़याल भी नहीं करते.
(३) यानी मक्के वालों से.
(४) जो अज़ाब और हलाकत से बचा सके. जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्के से हिजरत की और ग़ार की तरफ़ तशरीफ़ ले चले तो मक्के की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया अल्लाह तआला के शहरों में तू अल्लाह तआला को बहुत प्यारा है और अल्लाह तआला के शहरों में तू मुझे बहुत प्यारा है अगर मुश्रिक मुझे न निकालते तो मैं तुझसे न निकलता. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी.
(५) और वो ईमान वाले हैं कि वो क़ुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कारों की खुली निशानियों पर भरपूर यक़ीन रखते हैं.
(६) उस काफ़िर मुश्रिक.
(७) और उन्हों ने कुफ़्र और बुतपरस्ती इख़्तियार की, हरगिज़ वो मूमिन और ये काफ़िर एक से नहीं हो सकते और इन दोनों में कुछ भी निस्बत नहीं.
(८) यानी ऐसा लतीफ़ कि न सड़े न उसकी बू बदले न उसके मज़े में फ़र्क़ आए.

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ
ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا
نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ
وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۗ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۟
فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۟ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا
يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝ اِنَّ

और ए मेहबूब अपने ख़ासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो[२५] और अल्लाह जानता है दिन को तुम्हारा फिरना[२६] और रात को तुम्हारा आराम लेना[२७] ﴾१९﴿

तीसरा रूकू

और मुसलमान कहते हैं कोई सूरत क्यों न उतारी गई[१] फिर जब कोई पुख़्ता सूरत उतारी गई[२] और उसमें जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे उन्हें जिन के दिलों में बीमारी है[३] कि तुम्हारी तरफ़[४] उसका देखना देखते हैं जिसपर मुर्दनी छाई हो तो उनके हक़ में बेहतर यह था कि फ़रमाँबरदारी करते[५] ﴾२०﴿ और अच्छी बात कहते फिर जब नातिक़ हुक्म हो चुका[६] तो अगर अल्लाह से सच्चे रहते[७] तो उनका भला था ﴾२१﴿ तो क्या तुम्हारे ये लक्षण नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फ़ैलाओ[८] और अपने रिश्ते काट दो ﴾२२﴿ ये हैं वो[९] लोग जिन पर अल्लाह ने लअनत की और उन्हें हक़(सत्य) से बेहरा कर दिया और उनकी आँखें फोड़ दीं[१०] ﴾२३﴿ तो क्या वो क़ुरआन को सोचते नहीं[११] या कुछ दिलों पर उनके क़ुफ़्ल(ताले) लगे हैं[१२] ﴾२४﴿ बेशक

(९) दुनिया के दूध के विपरीत कि ख़राब हो जाते हैं.
(१०) ख़ालिस लज़्ज़त ही लज़्ज़त. न दुनिया की शराबों की तरह उसका मज़ा ख़राब, न उसमें मैल कुचैल, न ख़राब चीज़ों की मिलावट. न वो सड़कर बनी, न उसके पीने से अक़्ल घटे, न सर चकराए, न ख़ुमार आए, न दर्दे सर पैदा हो. ये सब आफ़तें दुनिया ही की शराब में हैं, वहाँ की शराब इन सारे दोषों से पाक, अत्यन्त मज़ेदार, फ़रहत देने वाली और अच्छी लगने वाली.
(११) पैदाइश में यानी साफ़ ही पैदा किया गया. दुनिया के शहद की तरह नहीं जो मक्खी के पेट से निकलता है और उसमें मोम वग़ैरह की मिलावट होती है.
(१२) कि वह रब उनपर एहसान फ़रमाता है और उनसे राज़ी है और उनपर से सारे तकलीफ़ी अहकाम उठा लिये गए हैं. जो चाहें खाएं जितना चाहें खाएं, न हिसाब न सज़ा.
(१३) काफ़िर लोग.
(१४) ख़ुत्बे वग़ैरह में अत्यन्त बेइल्तिफ़ाती के साथ.
(१५) ये मुनाफ़िक़ लोग तो.
(१६) यानी आलिम सहाबा जैसे इब्ने मसऊद और इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा, से मज़ाक़ के तौर पर.
(१७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने, अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ों के हक़ में फ़रमाता है.
(१८) यानी जब उन्होंने सत्य का अनुकरण छोड़ दिया तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों को मुर्दा कर दिया.
(१९) और उन्होंने दोहरी प्रवृत्ति इख़्तियार कर ली.
(२०) यानी वो ईमान वाले जिन्होंने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कलाम ग़ौर से सुना और उससे नफ़ा उठाया.
(२१) यानी दृष्टि या बसीरत और दिल की बात जानने का इल्म.
(२२) यानी परहेज़गारी की तौफ़ीक़ दी और उसपर मदद फ़रमाई या ये मानी हैं कि उन्हें परहेज़गारी की जज़ा दी और उसका सवाब अता फ़रमाया.
(२३) काफ़िर और मुनाफ़िक़ लोग.
(२४) जिनमें से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का तशरीफ़ लाना और चाँद का दो टुकड़े होना है.
(२५) यह इस उम्मत पर अल्लाह तआला की मेहरबानी है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि उनके लिये मग़फ़िरत तलब फ़रमाएं और आप ऐसे सिफ़ारिशी हैं कि आपकी सिफ़ारिश अल्लाह तआला के यहाँ मक़बूल है. इसके बाद ईमान वालों और बेईमानों सबसे आम सम्बोधन है.

الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۭ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ ع اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاۗءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَاۗقُّوا

منزل ٦

वो जो अपने पीछे पलट गए[13] बाद इसके कि हिदायत उनपर खुल चुकी थी[14] शैतान ने उन्हें धोखा दिया[15] और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई[16] ﴿२५﴾ यह इसलिये कि उन्होंने[17] कहा उन लोगों से[18] जिन्हें अल्लाह का उतारा हुआ[19] नागवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे[20] और अल्लाह उनकी छुपी हुई जानता है ﴿२६﴾ तो कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़ करेंगे उनके मुंह और उनकी पीठें मारते हुए[21] ﴿२७﴾ यह इसलिये कि वो ऐसी बात के ताबेअ हुए जिसमें अल्लाह की नाराज़ी है[22] और उसकी ख़ुशी[23] उन्हें गवारा न हुई तो उसने उनके कर्म अकारत कर दिये ﴿२८﴾

चौथा रूकू

क्या जिनके दिलों में बीमारी है[1] इस घमण्ड में हैं कि अल्लाह उनके छुपे बैर ज़ाहिर न फ़रमाएगा[2] ﴿२९﴾ और अगर हम चाहें तो तुम्हें उनको दिखा दें कि तुम उनकी सूरत से पहचान लो[3] और ज़रूर तुम उन्हें बात के उसलूब (अन्दाज़) में पहचान लोगे[4] और अल्लाह तुम्हारे कर्म जानता है[5] ﴿३०﴾ और ज़रूर हम तुम्हें जांचेंगे[6] यहाँ तक कि देख लें[7] तुम्हारे जिहाद करने वालों और साबिरों को और तुम्हारी ख़बरें आज़मा लें[8] ﴿३१﴾ बेशक वो जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से[9] रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध)

(२६) अपने मश्ग़लों में और रोज़ी के कामों में.
(२७) यानी वो तुम्हारे तमाम हालात का जानने वाला है, उससे कुछ छुपा हुआ नहीं है.

सूरए मुहम्मद - तीसरा रूकू

(१) ईमान वालों को अल्लाह तआला की राह में जिहाद का बहुत ही शौक़ था वो कहते थे कि ऐसी सूरत क्यों नहीं उतरती जिसमें जिहाद का हुक्म हो ताकि हम जिहाद करें. इसपर यह आयत उतरी.
(२) जिसमें साफ़ खुला खुला बयान हो और उसका कोई हुक्म मन्सूख़ होने वाला न हो.
(३) यानी मुनाफ़िक़ों को.
(४) परेशान होकर.
(५) अल्लाह तआला और रसूल की.
(६) और जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया.
(७) ईमान और फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहकर.
(८) रिशवतें लो, ज़ुल्म करो, आपस में लड़ो, एक दूसरे को क़त्ल करो.
(९) फ़साद करने वाले.
(१०) कि सच्चाई की राह नहीं देखते.
(११) जो सत्य को पहचानें.
(१२) कुफ़्र के, कि सच्चाई की बात उनमें पहुंचने ही नहीं पाती.
(१३) दोहरी प्रवृति से.
(१४) और हिदायत का रास्ता साफ़ हो चुका था. क़तादा ने कहा कि यह एहले किताब के काफ़िरों का हाल है जिन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पहचाना और आपकी तारीफ़ अपनी किताबों में देखी फिर पहचानने और जानने के बावुजूद कुफ़्र इख़्तियार किया. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और ज़ुहाक और सदी का क़ौल है कि इससे मुनाफ़िक़ मुराद हैं जो ईमान लाकर कुफ़्र की तरफ़ फिर गए.
(१५) और बुराइयों को उनकी नज़र में ऐसा सजाया कि उन्हें अच्छा समझे.

الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا
تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ
الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَ
تَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾
اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾
هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَاۤءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا
يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ

की बाद इसके कि हिदायत उनपर ज़ाहिर हो चुकी थी वो हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुक़सान न पहुंचाएंगे, और बहुत जल्द अल्लाह उनका किया धरा अकारत कर देगा[१०]﴿३२﴾ ऐ ईमान वालो अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो[११] और अपने कर्म बातिल न करो[१२]﴿३३﴾ बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका फिर काफ़िर ही मर गए तो अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा[१३]﴿३४﴾ तो तुम सुस्ती न करो[१४] और आप सुलह की तरफ़ न बुलाओ[१५] और तुम ही ग़ालिब आओगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ तुम्हारे कर्मों में तुम्हें नुक़सान न देगा[१६]﴿३५﴾ दुनिया की ज़िन्दगी तो यही खेल कूद है[१७] और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो वह तुम को तुम्हारे सवाब अता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल न मांगेगा[१८]﴿३६﴾ अगर उन्हें[१९] तुम से तलब करे और ज़्यादा तलब करे तुम बुख़्ल (कंजूसी) करोगे और वह बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा﴿३७﴾ हाँ हाँ यह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो[२०] तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे[२१] वह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बेनियाज़ है[२२] और तुम सब मोहताज[२३] और अगर तुम मुंह फेरो[२४] तो वह तुम्हारे

(१६) कि अभी बहुत उम्र पड़ी है. ख़ूब दुनिया के मज़े उठालो और उनपर शैतान का फ़रेब चल गया.
(१७) यानी एहले किताब या मुनाफ़िक़ों ने छुपवाँ तौर पर.
(१८) यानी मुश्रिकों स.
(१९) क़ुरआन और दीन के अहकाम.
(२०) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी और हुज़ूर के ख़िलाफ़ उनके दुश्मनों की मदद करने में और लोगों को जिहाद से रोकने में.
(२१) लोहे के गदाओं से.
(२२) और वह बात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद को जाने से रोकना और काफ़िरों की मदद करना है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वह बात तौरात के उन मज़ामीन का छुपाना है जिनमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नअत शरीफ़ है.
(२३) ईमान फ़रमाँबरदारी और मुसलमानों की मदद और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जिहाद में हाज़िर होना.

सूरए मुहम्मद - चौथा रूकू

(१) दोहरी प्रवृत्ति की.
(२) यानी उनकी वो दुश्मनियाँ जो वो ईमान वालों के साथ रखते हैं.
(३) हदीस शरीफ़ में हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कोई मुनाफ़िक़ छुपा न रहा. आप सब को उनकी सूरतों से पहचानते थे.
(४) और वो अपने ज़मीर का हाल उनसे न छुपा सकेंगे. चुनांन्चे इसके बाद जो मुनाफ़िक़ लब हिलाता था हुज़ूर उसके दोग़लेपन को उसकी बात से और उसके बोलों से पहचान लेते थे. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को बहुत से इल्म अता फ़रमाए उनमें से सूरत पहचानना भी है. और बात से पहचानना भी.
(५) यानी अपने बन्दों के सारे कर्म . हर एक को उसके लायक़ जज़ा देगा.
(६) आज़माइश में डालेंगे.
(७) यानी ज़ाहिर फ़रमा दें.

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝

(٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ (١١١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۝ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا

सिवा और लोग बदल लेगा फिर वो तुम जैसे न होंगे[२५] (३८)

४८ - सूरए फ़त्ह

सूरए फ़त्ह मदीने में उतरी, इसमें २९ आयतें, चार रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

बेशक हमने तुम्हारे लिये रौशन फ़त्ह फ़रमा दी[२] (१) ताकि अल्लाह तुम्हारे कारण से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के[३] और अपनी नेअमतें तुम पर पूरी कर दे[४] और तुम्हें सीधी राह दिखा दे[५] (२) और अल्लाह तुम्हारी ज़बरदस्त मदद फ़रमाए[६] (३) वही है जिसने ईमान वालों के दिलों में इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े[७] और अल्लाह ही की मिल्क (स्वामित्व में) हैं तमाम लश्कर आसमानों और ज़मीन के[८] और अल्लाह इल्म व हिकमत (बोध) वाला है[९] (४) ताकि ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेहरें बहें हमेशा उनमें रहें और उनकी बुराइयाँ उनसे उतार दे, और यह अल्लाह के यहाँ बड़ी कामयाबी

(८) ताकि ज़ाहिर हो जाए कि फ़रमाँबरदारी और दिल की सच्चाई के दावे में तुम में से कौन अच्छा है.

(९) उसके बन्दों को.

(१०) और वो सदक़े वग़ैरह किसी चीज़ का सवाब न पाएंगे क्योंकि जो काम अल्लाह तआला के लिये न हो, उसका सवाब ही क्या. जंगे बद्र के लिये जब क़ुरैश निकले तो वह साल दुष्काल का था. लश्कर का खाना क़ुरैश के अमीरों ने बारी बारी अपने ज़िम्मे ले लिया था. मक्कए मुकर्रमा से निकल कर सबसे पहला खाना अबू जहल की तरफ़ से था जिसके लिये उसने दस ऊँट ज़िब्ह किये थे. फिर सफ़वान ने मक़ामे उस्फ़ान में नौ ऊंट, फिर सहल ने मक़ामे क़दीद में दस, यहाँ से वो लोग समन्दर की तरफ़ फिर गए और रस्ता गुम हो गया. एक दिन ठहरे. वहाँ शैबा की तरफ़ से खाना हुआ, नौ ऊंट ज़िब्ह हुए. फिर मक़ामे अबवा में पहुंचे वहाँ मुक़ैयस जहमी ने नौ ऊंट ज़िब्ह किये. हज़रत अब्बास की तरफ़ से भी दावत हुई. उस वक़्त तक आप इस्लाम नहीं लाए थे. आपकी तरफ़ से दस ऊंट ज़िब्ह किये गए फिर हारिस की तरफ़ से नौ और अबुल बख़्तरी की तरफ़ से बद्र के चश्मे पर दस ऊंट. इस खाना देने वालों के बारे में यह आयत उतरी.

(११) यानी ईमान और फ़रमाँबरदारी पर क़ायम रहो.

(१२) दिखावे या दोग़लेपन से. कुछ लोगों का ख़याल था कि जैसे शिर्क की वजह से सारी नेकियाँ नष्ट हो जाती हैं उसी तरह ईमान की बरकत से कोई गुनाह नुक़सान नहीं पहुंचाता. उनके बारे में यह आयत उतरी और बताया गया कि मूमिन के लिये अल्लाह और रसूल की फ़रमाँबरदारी ज़रूरी है, गुनाहों से बचना अनिवार्य है. इस आयत में कर्मों के बातिल करने की मुमानिअत फ़रमाई गई तो आदमी जो अमल शुरू से करे, चाहे वह नफ़्ल ही हो, नमाज़ या रोज़ा या कोई और, लाज़िम है कि उसको बातिल न करे.

(१३) यह आयत क़लीब वालों के बारे में उतरी. क़लीब बद्र में एक कुँवा है जिसमें मरने वाले काफ़िर डाले गए थे. अबू जहल और उसके साथी और आयत का हुक्म हर काफ़िर के लिये आम है. जो कुफ़्र पर मरा हो अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत न फ़रमाएगा . इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा को सम्बोधित किया जा रहा है और हुक्म में तमाम मुसलमान शामिल हैं.

(१४) यानी दुश्मन के मुक़ाबले में कमज़ोरी न दिखाओ.

(१५) काफ़िरों को. क़ुरतबी में है कि इस आयत के हुक्म में उलमा का मतभेद है. कुछ ने कहा है कि यह आयत "व इन जनहू" की नासिख़ है क्योंकि अल्लाह ने मुसलमानों को सुलह की तरफ़ झुकने को मना फ़रमाया है जबकि सुलह की हाजत न हो और कुछ उलमा ने कहा कि यह आयत मन्सूख़ है और आयत "व इन जनहू" इसकी नासिख़ और एक क़ौल यह है कि यह आयत मोहकम है और दोनों आयतें दो अलग अलग वक़्तों और अलग अलग हालतों में उतरीं और एक क़ौल यह है कि आयत "व इन जनहू" का हुक्म एक निश्चित क़ौम के साथ ख़ास है और यह आयत आम है कि काफ़िरों के साथ समझौता जायज़ नहीं मगर ज़रूरत के लिहाज़ से जबकि मुसलमान कमज़ोर हों और मुक़ाबला न कर सकें.

عَظِيمًا ۝ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۚ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۚ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا

منزل ٧

है(५) और अज़ाब दे मुनाफ़िक़ (दोगले) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को जो अल्लाह पर गुमान रखते हैं[१०] उन्हीं पर है बड़ी गर्दिश (मुसीबत)[११] और अल्लाह ने उनपर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें लअनत की और उनके लिये जहन्नम तैयार फ़रमाया, और वह क्या ही बुरा अंजाम(६) और अल्लाह ही की मिल्क में आसमानों और ज़मीन के सब लश्कर, और अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत (बोध) वाला है(७) बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर (सर्व दृष्टा)[१२] और ख़ुशी और डर सुनाता[१३](८) ताकि ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की तअज़ीम व तौक़ीर (आदर व सत्कार) करो, और सुबह शाम अल्लाह की पाकी (प्रशंसा) बोलो[१४](९) वो जो तुम्हारी बैअत करते (अपना हाथ तुम्हारे हाथ में देते) हैं[१५] वो तो अल्लाह ही से बैअत करते हैं[१६] उनके हाथों पर[१७] अल्लाह का हाथ है, तो जिसने एहद तोड़ा उसने अपने बड़े एहद को तोड़ा,[१८] और जिसने पूरा किया वह एहद जो उसने अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा[१९](१०)

दूसरा रुकू

अब तुम से कहेंगे जो गंवार पीछे रह गए थे[१] कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मशग़ूल रखा[२] अब हुज़ूर हमारी मग़फ़िरत चाहें[३] अपनी ज़बानों से वो

(१६) तुम्हें कर्मों का पूरा पूरा इनाम अता फ़रमाएगा.
(१७) अत्यन्त जल्द गुज़रने वाली और इसमें लग जाना कुछ भी नफ़ा देने वाला नहीं है.
(१८) हाँ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म देगा, ताकि तुम्हें इसका सवाब मिले.
(१९) यानी अमवाल को.
(२०) जहाँ ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है.
(२१) सदक़ा देने और फ़र्ज़ अदा करने में.
(२२) तुम्हारे सदक़ात और ताअत से.
(२३) उसके फ़ज़्ल और रहमत के.
(२४) उसकी और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी से.
(२५) बल्कि अत्यन्त मुतीअ और फ़रमाँबरदार होंगे.

४८ - सूरए फ़त्ह - पहला रुकू

(१) सूरए फ़त्ह मदनी सूरत है इसमें चार रुकू, उन्तीस आयतें, पाँच सौ अड़सठ कलिमे और दो हज़ार पाँच सौ उन्सठ अक्षर हैं.
(२) इन्ना फतहना हुदैबिय्यह से वापस होते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर नाज़िल हुई. हुज़ूर को इसके नाज़िल होने से बहुत ख़ुशी हुई और सहाबा ने हुज़ूर को मुबारकबादें दीं. (बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी) हुदैबिय्यह एक कुंआ है मक्कए मुकर्रमा के नज़्दीक. संक्षिप्त विवरण यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर अपने सहाबा के हमराह अम्न के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए. कोई सर मुँडाए, कोई बाल छोटे कराए हुए, काबए मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए और काबे की कुंजी ली, तवाफ़ फ़रमाया, उमरा किया. सहाबा को इस ख़्वाब की ख़बर दी. सब ख़ुश हुए. फिर हुज़ूर ने उमरे का इरादा किया और एक हज़ार चार सौ सहाबा के साथ पहली ज़िलक़अदा सन छ हिजरी को रवाना हुए. ज़ुल हलीफ़ा में पहुंचकर वहाँ मस्जिद में दो रकअतें पढ़कर उमरे का एहराम बाँधा और हुज़ूर के साथ अक्सर सहाबा ने भी. कुछ सहाबा ने जोहफ़ा से एहराम बाँधा. राह में पानी ख़त्म हो गया. सहाबा ने अर्ज़ किया कि पानी लश्कर में बिल्कुल नहीं है सिवाय हुज़ूर के आफ़ताबे यानी लोटे के कि उसमें थोड़ा पानी बाक़ी है. हुज़ूर ने अफ़्ताबे में दस्ते मुबारक डाला तो नूरानी उंगलियों से चश्मे फूट निकले. तमाम लश्कर ने पिया, वुज़ू किया.

وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ بُوْرًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا

منزل ۷

बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं[४] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वह तुम्हारा बुरा चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है﴾११﴿ बल्कि तुम तो ये समझे हुए थे कि रसूल और मुसलमान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे[५] और उसी को अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुमने बुरा गुमान किया[६] और तुम हलाक होने वाले लोग थे[७]﴾१२﴿ और जो ईमान न लाए अल्लाह और उसके रसूल पर[८] तो बेशक हमने काफ़िरों के लिये भड़कती आग तैयार कर रखी है﴾१३﴿ और अल्लाह ही के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे[९] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾१४﴿ अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले[१०] जब तुम ग़नीमतें लेने चलो[११] तो हमें भी अपने पीछे आने दो[१२] वो चाहते हैं अल्लाह का कलाम बदल दें[१३] तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूँही फ़रमा दिया है[१४] तो अब कहेंगे बल्कि तुम हमसे

जब उस्फ़ान मक़ाम पर पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बड़ी तैयारी से जंग के लिये उतावले हैं. जब हुदैबिय्यह पहुंचे तो उसका पानी ख़त्म हो गया. एक बूंद न रहा. गर्मी बहुत सख़्त थी. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुंएं में कुल्ली फ़रमाई, उसकी बरकत से कुंआ पानी से भर गया, सब ने पिया, ऊंटों को पिलाया. यहाँ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की तरफ़ से हाल मालूम करने के लिये कई व्यक्ति भेजे गए. सबने जाकर यही बयान किया कि हुज़ूर उमरे के लिये आए हैं. जंग का इरादा नहीं है. लेकिन उन्हें यक़ीन न आया. आख़िरकार उन्होंने उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी को जो ताइफ़ के बड़े सरदार और अरब के बहुत मालदार आदमी थे, हालात की जांच के लिये भेजा. उन्होंने आकर देखा कि हुज़ूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सहाबा तबर्रुक के लिये वह धोवन हासिल करने को टूट पड़ते हैं. अगर हुज़ूर कभी थूकते हैं तो लोग उसे हासिल करने की कोशिश करते हैं और जिसको वह मिल जाता है वह अपने चेहरे और बदन पर बरकत के लिये मलता है. कोई बाल हुज़ूर का गिरने नहीं पाता. सहाबा उसको बहुत अदब के साथ लेते और जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं. जब हुज़ूर कलाम फ़रमाते हैं तो सब साकित हो जाते हैं. हुज़ूर के अदब और सम्मान के कारण कोई व्यक्ति नज़र ऊपर को नहीं उठाता. उर्वा ने क़ुरैश से जाकर यह सारा हाल बयान किया और कहा कि मैं फ़ारस, रोम और मिस्र के दरबारों में गया हूँ मैं ने किसी बादशाह की यह महानता नहीं देखी जो मुहम्मद की उन के सहाबा में है. मुझे डर है कि तुम उनके मुक़ाबले में सफल न हो सकोगे. क़ुरैश ने कहा ऐसी बात मत कहो. हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे. वो अगले साल आएं. उर्वा ने कहा मुझे डर है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे. यह कहकर वह अपने साथियों समेत ताइफ़ चले गए और इस घटना के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें इस्लाम से नवाज़ा. यहीं हुज़ूर ने अपने सहाबा से बैअत ली, इसको बैअते रिज़वान कहते हैं. बैअत की ख़बर से काफ़िर बहुत भयभीत हुए और उनके सलाहकारों ने यही मुनासिब समझा कि सुलह कर लें. चुनांन्चे सुलहनामा लिखा गया और अगले साल हुज़ूर का तशरीफ़ लाना क़रार पाया और यह सुलह मुसलमानों के हित में बड़ी लाभदायक साबित हुई बल्कि नतीजों के अनुसार विजयी सिद्ध हुई. इसी लिये अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़त्ह से सुलह हुदैबिय्यह मुराद लेते हैं और कुछ इस्लाम की सारी फ़ुतूहात, जो आगे आने वाली थीं और भूतकाल की क्रिया से उनका ज़िक्र उनके निश्चित होने की वजह से है. (ख़ाज़िन और रूहुल बयान)

(३) और तुम्हारी बदौलत उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमाए. (ख़ाज़िन और रूहुल बयान)

(४) दुनियावी भी और आख़िरत का भी.

(५) रिसालत की तबलीग़ और रियासत के कामों की मज़बूती में. (बैज़ावी)

(६) दुश्मनों पर भरपूर ग़लबा अता करे.

(७) और भरपूर अक़ीदे के बावुजूद नफ़्स का इत्मीनान हासिल हो.

(८) वह क़ादिर है जिससे चाहे अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदद फ़रमाए. आसमान ज़मीन के लश्करों से या तो

आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते मुराद हैं या आसमानों के फ़रिश्ते और ज़मीन के जानदार.
(९) उसने ईमान वालों के दिलों को तसल्ली और विजय का वादा फ़रमाया.
(१०) कि वह अपने रसूल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनपर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा.
(११) अज़ाब और हलाकत का.
(१२) अपनी उम्मत के कर्मों और हालात का, ताकि क़यामत के दिन उनकी गवाही दो.
(१३) यानी सच्चे ईमान वालों को जन्नत की ख़ुशी और नाफ़रमानों को दोज़ख़ के अज़ाब का डर सुनाता.
(१४) सुब्ह की तस्बीह में नमाज़े फ़ज्र और शाम की तस्बीह में बाक़ी चारों नमाज़ें दाख़िल हैं.
(१५) इस बैअत से मुराद बैअते रिज़वान है जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबिय्यह में ली थी.
(१६) क्योंकि रसूल से बैअत करना अल्लाह तआला ही से बैअत करना है जैसे कि रसूल की इताअत अल्लाह तआला की इताअत है.
(१७) जिनसे उन्हों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बैअत का सम्मान प्राप्त किया.
(१८) इस एहद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा.
(१९) यानी हुदैबिय्यह से तुम्हारी वापसी के वक़्त.

सूरए फ़त्ह - दूसरा रूकू

(१) क़बीलए ग़िफ़ार और मुज़ैय्यिनह व जुहैनह व अशजअ व असलम के, जब कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबिय्यह के साल उमरा की नियत से मक्कए मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो मदीने के आस पास के गाँवों वाले और सहराओं में रहने वाले क़ुरैश के डर से आपके साथ जाने से रूके जबकि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उमरे का एहराम बाँधा था और क़ुर्बानी के जानवर साथ थे और इससे साफ़ ज़ाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से लोगों पर जाना बोझ हुआ और वो काम का बहाना करके रह गए और उनका गुमान यह था कि क़ुरैश बहुत ताक़तवर हैं. मुसलमान उनसे बच कर न आएंगे सब वहीं हलाक हो जाएंगे. अब जबकि अल्लाह की मदद से मामला उनके गुमान के बिल्कुल विपरीत हुआ तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़सोस होगा और मअज़िरत करेंगे.
(२) क्योंकि औरतें और बच्चे अकेले थे और उनका कोई ख़बरगीरी करने वाला न था इसलिये हम बेबस हो गए.
(३) अल्लाह उनको झुटलाता है.
(४) यानी वो बहाना बनाने और माफ़ी मांगने में झूटे हैं.
(५) दुश्मन उन सबका वहीं ख़ात्मा कर देंगे.
(६) कुफ़्र और फ़साद के ग़लबे का और अल्लाह के वादे के पूरा न होने का.
(७) अल्लाह के अज़ाब के हक़दार.
(८) इस आयत में चुनौती है कि जो अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान न लाए, उनमें से किसी एक का भी इन्कारी हो, वह काफ़िर है.
(९) यह सब उसकी मर्ज़ी और हिक्मत पर है.
(१०) जो हुदैबिय्यह की हाज़िरी से लाचार रहे, ऐ ईमान वालो .
(११) ख़ैबर की. इसका वाक़िआ यह था कि जब मुसलमान सुलह हुदैबिय्यह से फ़ारिग़ होकर वापस हुए तो अल्लाह तआला ने उनसे ख़ैबर की विजय का वादा फ़रमाया और वहाँ की ग़नीमतें हुदैबिय्यह में हाज़िर होने वालों के लिये मख़सूस करदीं गईं. जब मुसलमानों के ख़ैबर की तरफ़ रवाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्होंने ग़नीमत के लालच में कहा.
(१२) यानी हम भी ख़ैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शरीक हों अल्लाह तआला फ़रमाता है.
(१३) यानी अल्लाह तआला का वादा जो हुदैबिय्यह वालों के लिये फ़रमाया था कि ख़ैबर की ग़नीमत ख़ास उनके लिये है.
(१४) यानी हमारे मदीना आने से पहले.

كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ
تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝
قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى
قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ
فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ
تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا
اَلِيْمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝
لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ
تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ
السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝ وَّمَغَانِمَ

जलते हो[१५] बल्कि वो बात न समझते थे[१६] मगर थोड़ी[१७]﴿१५﴾ उन पीछे रह गए हुए गंवारों से फ़रमाओ[१८] बहुत जल्द तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे[१९] कि उनसे लड़ो या वो मुसलमान हो जाएं, फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा[२०] और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए[२१] तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा﴿१६﴾ अंधे पर तंगी नहीं[२२] और न लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर मुआख़िज़ा[२३] और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें, और जो फिर जाएगा[२४] उसे दर्दनाक अज़ाब फ़रमाएगा﴿१७﴾

तीसरा रूकू

बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वो उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत करते थे[१] तो अल्लाह ने जाना जो उनके दिलों में है[२] तो उनपर इत्मीनान उतारा और उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह का इनाम दिया[३]﴿१८﴾ और बहुत

(१५) और यह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ ग़नीमतें पाएं. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(१६) दीन की.

(१७) यानी मात्र दुनिया की. यहाँ तक कि उनका ज़बानी इक़रार भी दुनिया ही की ग़रज़ से था और आख़िरत की बातों को बिल्कुल नहीं समझते थे. (जुमल)

(१८) जो विभिन्न क़बीलों के लोग हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके तौबह करने की आस की जाती है. कुछ ऐसे भी हैं जो दोहरी प्रवृत्ति या दोग़लेपन में बहुत पुख़्ता और सख़्त हैं . उन्हें आज़माइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि तौबह करने वालों और न करने वालों में फ़र्क़ हो जाए इसलिये हुक्म हुआ कि उनसे फ़रमा दीजिये.

(१९) इस क़ौम से बनी हनीफ़ा यमामह के रहने वाले जो मुसैलिमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वो मुराद हैं जिनसे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने जंग फ़रमाई और यह भी कहा गया है कि उनसे मुराद फ़ारस और रोम के लोग हैं जिनसे जंग के लिये हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने दावत दी.

(२०) यह आयत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहो अन्हुमा की ख़िलाफ़त की सच्चाई की दलील है कि उन हज़रात की इताअत पर जन्नत का और उनकी मुख़ालिफ़त पर जहन्नम का वादा किया गया.

(२१) हुदैबिय्यह के मौक़े पर.

(२२) जिहाद से रह जाने में. जब ऊपर की आयत उतरी तो जो लोग अपंग और मजबूर थे उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, हमारा क्या हाल होगा. इसपर यह आयत उतरी.

(२३) कि ये उज़्र ज़ाहिर हैं और जिहाद में हाज़िर न होना उन लोगों के लिये जायज़ है क्योंकि न ये लोग दुश्मन पर हमला करने की ताक़त रखते हैं न उनके हमले से बचने और भागने की. उन्हीं के हुक्म में दाख़िल है वो बूढ़े दुर्बल जिन्हें उठने बैठने की ताक़त नहीं या जिन्हें दमा और खाँसी है या जिनकी तिल्ली बहुत बढ़ गई है और उन्हें चलना फिरना कठिन है. ज़ाहिर है कि ये मजबूरियाँ जिहाद से रोकने वाली हैं. उनके अलावा और भी मजबूरियाँ हैं जैसे बहुत ज़्यादा मोहताजी और सफ़र की ज़रूरी हाजतों पर क़ुदरत न रखना या ऐसे ज़रूरी काम जो सफ़र से रोकते हों जैसे किसी ऐसे बीमार की ख़िदमत जिसकी देखभाल उस पर वाजिब है और उसके सिवा कोई करने वाला नहीं.

(२४) ताअत से मुंह फेरेगा और कोई कुफ़्र और दोग़लेपन पर रहेगा.

सूरए फ़त्ह - तीसरा रूकू

(१) हुदैबिय्यह में चूंकि उन बैअत करने वालों को अल्लाह की रज़ा की ख़ुशख़बरी दी गई इसलिये उस बैअत को बैअते रिज़वान

كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

सी ग़नीमतें[४] जिन को लें, और अल्लाह इज़्ज़त व हिकमत वाला है﴿१९﴾ और अल्लाह ने तुम से वादा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे[५] तो तुम्हें यह जल्द अता फ़रमा दी और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये[६] और इसलिये कि ईमान वालों के लिये निशानी हो[७] और तुम्हें सीधी राह दिखा दे[८]﴿२०﴾ और एक और[९] जो तुम्हारे बल की न थी[१०] वह अल्लाह के क़ब्ज़े में है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है﴿२१﴾ और अगर काफ़िर तुम से लड़ें[११] तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे[१२] फिर कोई हिमायती न पाएंगे न मददगार﴿२२﴾ अल्लाह का दस्तूर है कि पहले से चला आता है[१३] और हरगिज़ तुम अल्लाह का दस्तूर बदलता न पाओगे﴿२३﴾ और वही है जिसने उनके हाथ[१४] तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये मक्का की घाटी में[१५] बाद इसके कि तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया था और अल्लाह तुम्हारे काम देखता है[१६]﴿२४﴾ वो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से[१७] रोका और क़ुरबानी के जानवर रूके पड़े अपनी

कहते हैं. इस बैअत का ज़ाहिरी करण यह हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबिय्यह से हज़रत उसमाने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो को क़ुरैश के सरदारों के पास मक्कए मुकर्रमा भेजा कि उन्हें ख़बर दें कि हम बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरे की नियत से आए हैं हमारा इरादा जंग का नहीं है. और यह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसलमान वहाँ हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि मक्कए मुकर्रमा बहुत जल्द फ़त्ह होगा और अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा. क़ुरैश इस बात पर सहमत रहे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस साल न आएं और हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो से कहा कि अगर आप काबे का तवाफ़ करना चाहें तो करलें. हज़रत उस्माने ग़नी ने फ़रमाया कि ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बिना तवाफ़ करूं. यहाँ मुसलमानों ने कहा कि उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो बड़े ख़ुशनसीब हैं जो काबए मुअज़्ज़मा पहुंचे और तवाफ़ से मुशर्रफ़ हुए. हुज़ूर ने फ़रमाया मैं जानता हूँ कि वो हमारे बग़ैर तवाफ़ न करेंगे. हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने मक्के के कमज़ोर मुसलमानों को आदेशनुसार फ़त्ह की ख़ुशख़बरी भी पहुंचाई फिर क़ुरैश ने हज़रत उस्माने ग़नी को रोक लिया. यहाँ यह ख़बर मशहूर हो गई कि उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो शहीद कर दिये गए. इसपर मुसलमानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबा से काफ़िरों के मुक़ाबले में जिहाद में डटे रहने पर बैअत ली. यह बैअत एक बड़े काँटेदार दरख़्त के नीचे हुई जिसको अरब में समुरह कहते हैं. हुज़ूर ने अपना बायां दस्ते मुबारक दाएं दस्ते अक़दस में लिया और फ़रमया कि यह उस्मान (रदियल्लाहो अन्हो) की बैअत है और फ़रमाया यारब उस्मान तेरे और तेरे रसूल के काम में हैं. इस घटना से मालूम होता है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबुव्वत के नूर से मालूम था कि हज़रत उस्मान रदियल्लाहो अन्हो शहीद नहीं हुए जभी तो उनकी बैअत ली. मुश्रिकों में इस बैअत का हाल सुनकर डर छा गया और उन्होंने हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो को भेज दिया. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअत ली थी उनमें से कोई भी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा. (मुस्लिम शरीफ़) और जिस दरख़्त के नीचे बैअत की गई थी अल्लाह तआला ने उसको आँखों से पोशीदा कर दिया सहाबा ने बहुत तलाश किया किसी को उसका पता न चला.

(२) सच्चाई, सच्ची महब्बत और वफ़ादारी.

(३) यानी ख़ैबर की विजय का जो हुदैबिय्यह से वापस होकर छ माह बाद हासिल हुई.

(४) ख़ैबर की और ख़ैबर वालों के माल कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तक़सीम फ़रमाए.

(५) और तुम्हारी विजय होती रहेगी.

(६) कि वो डर कर तुम्हारे बाल बच्चों को हानि न पहुंचा सके. इसका वाक़िआ यह था कि जब मुसलमान ख़ैबर की जंग के लिये रवाना हुए तो ख़ैबर वासियों के हलीफ़ बनी असद और ग़ितफ़ान ने चाहा कि मदीनए तैय्यिबह पर हमला करके मुसलमानों के बाल बच्चों को लूट लें. अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाला और उनके हाथ रोक दिये.

معكوفا ان يبلغ محله ولولا رجال مؤمنون
ونساء مؤمنت لم تعلموهم ان تطؤوهم
فتصيبكم منهم معرة بغير علم ليدخل
الله في رحمته من يشاء لو تزيلوا لعذبنا
الذين كفروا منهم عذابا اليما ﴿٢٥﴾ اذ جعل
الذين كفروا في قلوبهم الحمية حمية
الجاهلية فانزل الله سكينته على رسوله
وعلى المؤمنين والزمهم كلمة التقوى وكانوا
احق بها واهلها وكان الله بكل شيء عليما ﴿٢٦﴾
لقد صدق الله رسوله الرءيا بالحق لتدخلن
المسجد الحرام ان شاء الله امنين محلقين
رءوسكم ومقصرين لا تخافون فعلم ما لم
تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا ﴿٢٧﴾

منزل ٦

जगह पहुंचने से(१८) और अगर यह न होता कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें(१९) जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं(२०) कहीं तुम उन्हें रौंदे डालो(२१) तो तुम्हें उनकी तरफ़ से अनजानी में कोई मकरूह पहुंचे तो हम तुम्हें उनके क़िताल की इजाज़त देते उनका यह बचाव इसलिये है कि अल्लाह अपनी रहमत में दाख़िल करे जिसे चाहे, अगर वो जुदा हो जाते(२२) तो हम ज़रूर उनमें के काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब देते(२३)﴿२५﴾ जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में आड़ रखी है वही अज्ञानता के ज़माने की आड़(२४) तो अल्लाह ने अपना इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा(२५) और परहेज़गारी का कलिमा उनपर अनिवार्य फ़रमाया(२६) और वो उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके योग्य थे(२७) और अल्लाह सब कुछ जानता है(२८)﴿२६﴾

चौथा रूकू

बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब(१) बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अम्नो अमान से अपने सरों के(२) बाल मुंडाते या(३) तरशवाते बेख़ौफ़, तो उसने जाना जो तुम्हें मालूम नहीं(४) तो उससे पहले(५) एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह रखी(६)﴿२७﴾

(७) यह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना.
(८) अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने और काम उस पर छोड़ देने की जिससे बसीरत और यक़ीन ज़्यादा हो.
(९) फ़त्ह.
(१०) मुराद इससे फ़ारस और रूम की ग़नीमतें हैं या ख़ैबर की जिसका अल्लाह तआला ने पहले से वादा फ़रमाया था और मुसलमानों को कामयाबी की उम्मीद थी. अल्लाह तआला ने उन्हें विजय दिलाई. और एक क़ौल यह है कि वह फ़त्हे मक्का है. और एक यह क़ौल है कि वह हर फ़त्ह है जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को अता फ़रमाई.
(११) यानी मक्के वालों या ख़ैबर वासियों के सहयोगी असद, ग़ितफ़ान.
(१२) पराजित होंगे और उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी.
(१३) कि वह ईमान वालों की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों को ज़लील करता है.
(१४) यानी काफ़िरों के.
(१५) मक्का की विजय का दिन. एक क़ौल यह है कि बत्ने मक्का से हुदैबिय्यह मुराद है और इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में हज़रत अनस रदियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि मक्के वालों में से अस्सी हथियार बन्द जवान जबले तनईम से मुसलमानों पर हमला करने के इरादे से उतरे. मुसलमानों ने उन्हें गिरफ़्तार करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया. हुज़ूर ने माफ़ फ़रमा दिया और उन्हें जाने दिया.
(१६) मक्के के काफ़िर.
(१७) वहाँ पहुंचने से और उसका तवाफ़ करने से.
(१८) यानी ज़िब्ह के मक़ाम से जो हरम में है.
(१९) मक्कए मुकर्रमा में हैं.
(२०) तुम उन्हें पहचाने नहीं.
(२१) काफ़िरों से जंग करने में.
(२२) यानी मुसलमान काफ़िरों से मुम्ताज़ हो जाते.
(२३) तुम्हारे हाथ से क़त्ल कराके और तुम्हारी क़ैद में लाके.
(२४) कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के सहाबा को काबए मुअज़्ज़मा से रोका.
(२५) कि उन्होंने अगले साल आने पर सुलह की, अगर वो भी क़ुरैश के काफ़िरों की तरह ज़िद करते तो ज़रूर जंग हो जाती.

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[७] और अल्लाह काफ़ी है गवाह[८] ﴿२८﴾ मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले[९] काफ़िरों पर सख़्त हैं[१०] और आपस में नर्म दिल[११] उन्हें देखेगा रूकू करते सज्दे में गिरते[१२] अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ा चाहते, उनकी निशानी उनके चेहरों में है सज्दों के निशान से[१३] यह उनकी सिफ़त (विशेषता) तौरात में है और उनकी सिफ़त इंजील में है[१४] जैसे एक खेती उसने अपना पट्ठा निकाला फिर उसे ताक़त दी फिर दबीज़ (मोटी) हुई फिर अपनी पिंडली पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है[१५] ताकि उनसे काफ़िरों के दिल जलें, अल्लाह ने वादा किया उनसे जो उनमें ईमान और अच्छे कामों वाले हैं[१६] बख़्शिश और बड़े सवाब का ﴿२९﴾

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۖ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛ۟ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

(٤٩) سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٦) ‏ اٰيَاتُهَا ١٨ ‏ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ

४९ - सूरए हुजुरात

सूरए हुजुरात मदीने में उतरी, इसमें १८ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो[२]

(२६) कलिमए तक़वा यानी परहेज़गारी के कलिमे से मुराद "ला इलाहा इल्लल्लाहे मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" है.
(२७) क्योंकि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने दीन और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सोहबत से नवाज़ा.
(२८) काफ़िरों का हाल भी जानता है, मुसलमानों का भी, कोई चीज़ उससे छुपी नहीं है.

सूरए फ़त्ह - चौथा रूकू

(१) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुदैबिय्यह का इरादा फ़रमाने से पहले मदीनए तैय्यिबह में ख़्वाब देखा था कि आप सहाबा के साथ मक्कए मुअज़्ज़मा में दाख़िल हुए और सहाबा ने सर के बाल मुंडाए, कुछ ने छोटे करवाए. यह ख़्वाब आपने अपने सहाबा से बयान किया तो उन्हें ख़ुशी हुई और उन्होंने ख़याल किया कि इसी साल वो मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होंगे. जब मुसलमान हुदैबिय्यह से सुलह के बाद वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला न हुआ तो मुनाफ़िक़ों ने मज़ाक़ किया, तअने दिये और कहा कि वह ख़्वाब क्या हुआ. इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उस ख़्वाब के मज़मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा. चुनांन्चे अगले साल ऐसा ही हुआ और मुसलमान अगले साल बड़ी शान व शौकत के साथ मक्कए मुकर्रमा में विजेता के रूप में दाख़िल हुए.
(२) सारे.
(३) थोड़े से.
(४) यानी यह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिये यह देरी बेहतर थी कि इसके कारण वहाँ के कमज़ोर मुसलमान पामाल होने से बच गए.
(५) यानी हरम में दाख़िले से पहले.
(६) ख़ैबर की विजय, कि वादा की गई विजय के हासिल होने तक मुसलमानों के दिल इस से राहत पाएं. उसके बाद जब अगला साल आया तो अल्लाह तआला ने हुज़ूर के ख़्वाब का जलवा दिखाया और घटनाएं उसी के अनुसार घटीं. चुनांन्चे इरशाद फ़रमाता है.
(७) चाहे वो मुश्रिकों के दीन हों या एहले किताब के. चुनांन्चे अल्लाह तआला ने यह नेअमत अता फ़रमाई और इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब फ़रमा दिया.
(८) अपने हबीब मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की.
(९) यानी उनके साथी.
(१०) जैसा कि शेर शिकार पर, और सहाबा की सख़्ती काफ़िरों के साथ इस क़द्र थी कि वो लिहाज़ रखते थे कि उनका बदन किसी

وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ① يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ② اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ⑥ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ

منزل ٦

और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनता जानता है﴿१﴾ ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से[३] और उनके हुज़ूर (समक्ष) बात चिल्लाकर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे कर्म अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो[४]﴿२﴾ बेशक वो जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास[५] वो हैं जिनका दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है, उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है﴿३﴾ बेशक वो जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें अक्सर बे अक़्ल हैं[६]﴿४﴾ और अगर वो सब्र करते यहाँ तक कि तुम आप उनके पास तशरीफ़ लाते[७] तो यह उनके लिये बेहतर था, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[८]﴿५﴾ ऐ ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो[९] कि कहीं किसी क़ौम को बेजा ईज़ा (कष्ट) न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ﴿६﴾ और जान लो कि तुम में

काफ़िर के बदन से न छू जाए और उनके कपड़े पर किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए. (मदारिक)

(११) एक दूसरे पर मेहरबानी करने वाले कि जैसे बाप बेटे में हो और यह महब्बत इस हद तक पहुंच गई कि जब एक मूमिन दूसरे को देखे तो महब्बत के जोश से हाथ मिलाए और गले से लगाए.

(१२) बहुतात से नमाज़ें पढ़ते, नमाज़ों पर हमेशगी करते.

(१३) और यह अलामत वह नूर है जो क़यामत के दिन उनके चेहरों पर चमकता होगा उससे पहचाने जाएंगे कि उन्होंने दुनिया में अल्लाह तआला के लिये बहुत सज्दे किये हैं और यह भी कहा गया है कि उनके चेहरों में सज्दे की जगह चौदहवीं के चाँद की तरह चमकती होगी. अता का क़ौल है कि रात की लम्बी नमाज़ों से उनके चेहरों पर नूर नुमायाँ होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जो रात को नमाज़ की बहुतात रखता है सुब्ह को उसका चेहरा ख़ूबसूरत हो जाता है और यह भी कहा गया है कि मिट्टी का निशान भी सज्दे की अलामत है.

(१४) यह बयान किया गया है कि.

(१५) यह उदाहरण इस्लाम की शुरूआत और उसकी तरक़्क़ी की बयान की गई कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अकेले उठे फिर अल्लाह तआला ने आप को आपके सच्चे महब्बत रखने वाले साथियों से क़ुव्वत अता फ़रमाई. क़तादह ने कहा कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की मिसाल इन्जील में यह लिखी है कि एक क़ौम खेती की तरह पैदा होगी और वो नेकियों का हुक्म करेंगे, बुराईयों से रोकेंगे. कहा गया है कि खेती हुज़ूर हैं और उसकी शाख़ें सहाबा और ईमान वाले.

(१६) सहाबा सबके सब ईमान वाले और नेक कर्मों वाले हैं इसलिये यह वादा सभी से है.

४९ - सूरए हुजुरात - पहला रूकू

(१) सूरए हुजुरात मदनी है, इसमें दो रूकू, अठारह आयतें, तीन सौ तैंतालीस कलिमे और एक हज़ार चार सौ छिहत्तर अक्षर हैं.

(२) यानी तुम्हें लाज़िम है कि कभी तुम से तक़्दीम वाक़े न हो, न क़ौल में न फ़ेअल, यानी न कहनी में न करनी में कि पहल करना रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अदब और सम्मान के ख़िलाफ़ है. उनकी बारगाह में नियाज़मन्दी और आदाब लाज़िम हैं. कुछ लोगों ने बक़्र ईद के दिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पहले क़ुर्बानी कर ली तो उनको हुक्म दिया गया कि दोबारा क़ुर्बानी करें और हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि कुछ लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरू कर देते थे उनके बारे में यह आयत उतरी और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से आगे मत जाओ.

(३) यानी जब हुज़ूर में कुछ अर्ज़ करो तो आहिस्ता धीमी आवाज़ में अर्ज़ करो यही दरबारे रिसालत का अदब और एहतिराम है.

(४) इस आयत में हुज़ूर की बुज़ुर्गी और उनका सम्मान बताया गया और हुक्म दिया गया कि पुकारने में अदब का पूरा ध्यान रखें

اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ
نِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ
بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ
تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا

अल्लाह के रसूल हैं(१०) बहुत मामलों में अगर यह तुम्हारी ख़ुशी करें(११) तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म अदूली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी, ऐसे ही लोग राह पर हैं(१२)﴿७﴾ अल्लाह का फ़ज़्ल और एहसान, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴿८﴾ और अगर मुसलमानों के दो दल आपस में लड़ें तो उनमें सुलह कराओ(१३) फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे(१४) तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उनमें इस्लाह कर दो और इन्साफ़ करो, बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को प्यारे हैं﴿९﴾ मुसलमान मुसलमान भाई हैं(१५) तो अपने दो भाइयों में सुलह करो(१६) और अल्लाह से डरो कि तुम पर रहमत हो(१७)﴿१०﴾

दूसरा रुकू

ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों पर हंसें(१) अजब नहीं कि वो उन हंसने वालों से बेहतर हों(२) और न औरतें औरतों से दूर

जैसे आपस में एक दूसरे को नाम लेकर पुकारते हैं उस तरह न पुकारें बल्कि अदब और सम्मान के शब्दों के साथ अर्ज़ करो जो अर्ज़ करना हो, कि अदब छोड़ देने से नेकियों के बर्बाद होने का डर है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि यह आयत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास के बारे में उतरी. वो ऊंचा सुनते थे और आवाज़ उनकी ऊंची थी. बात करने में आवाज़ बलन्द हो जाया करती थी. जब यह आयत उतरी तो हज़रत साबित अपने घर बैठ रहे और कहने लगे मैं दोज़ख़ी हूँ. हुज़ूर ने हज़रत सअद से उनका हाल दर्याफ़्त किया. उन्होंने अर्ज़ किया कि वह मेरे पड़ौसी हैं और मेरी जानकारी में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई. फिर आकर हज़रत साबित से इसका ज़िक्र किया. साबित ने कहा यह आयत उतरी है और तुम जानते हो कि मैं तुम सबसे ज़्यादा ऊंची आवाज़ वाला हूँ तो मैं जहन्नमी हो गया. हज़रत सअद ने यह हाल ख़िदमते अक़्दस में अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह जन्नत वालों में से हैं.

(५) अदब और सम्मान के तौर पर. आयत "या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तरफ़ऊ असवातकुम" के उतरने के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और उमरे फ़ारूक़ रदियल्लाहो अन्हुमा और कुछ और सहाबा ने बहुत एहतियात लाज़िम करली और ख़िदमते अक़्दस में बहुत ही धीमी आवाज़ से बात करते. उन हज़रात के हक़ में यह आयत उतरी.

(६) यह आयत बनी तमीम के वफ़्द के हक़ में उतरी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में दोपहर को पहुंचे जब कि हुज़ूर आराम कर रहे थे. इन लोगों ने हुजरे के बाहर से हुज़ूर को पुकारना शुरू किया. हुज़ूर तशरीफ़ ले आए. उन लोगों के हक़ में यह आयत उतरी और हुज़ूर की शान की बुज़ुर्गी का बयान फ़रमाया गया कि हुज़ूर की बारगाह में इस तरह पुकारना जिहालत और बेअक़्ली है और उनको अदब की तलक़ीन की गई.

(७) उस वक़्त वो अर्ज़ करते जो उन्हें अर्ज़ करना था. यह अदब उन पर लाज़िम था, इसको बजा लाते.

(८) इन में से उनके लिये जो तौबह करें.

(९) कि सही है या ग़लत. यह आयत वलीद बिन अक़्बह के हक़ में उतरी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको बनी मुस्तलक़ से सदक़ात वुसूल करने भेजा था और जिहालत के ज़माने में इनके और उनके दर्मियान दुश्मनी थी. जब वलीद उनके इलाक़े के क़रीब पहुंचे और उन्हें ख़बर हुई तो इस ख़याल से कि वो रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के भेजे हुए हैं, बहुत से लोग अदब से उनके स्वागत के लिये आए. वलीद ने गुमान किया कि ये पुरानी दुश्मनी से मुझे क़त्ल करने आ रहे हैं. यह ख़याल करके वलीद वापस हो गए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ कर दिया कि हुज़ूर उन लोगों ने सदक़ा देने को मना कर दिया और मेरे क़त्ल का इरादा किया. हुज़ूर ने ख़ालिद बिन वलीद को तहक़ीक़ के लिये भेजा . हज़रत ख़ालिद ने देखा कि वो लोग अज़ानें कहते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं और उन लोगों ने सदक़ात पेश कर दिये. हज़रत ख़ालिद ये सदक़ात ख़िदमते अक़्दस में लेकर हाज़िर हुए और हाल अर्ज़ किया. इसपर यह आयत उतरी. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि यह आयत आम है, इस बयान में

نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

منزل ٧

नहीं कि वो उन हंसने वालियों से बेहतर हों[३] और आपस में तअना न करो[४] और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो[५] क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना[६] और जो तौबह न करें तो वही ज़ालिम हैं﴿११﴾ ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो[७] बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है[८] और ऐब(दोष)न ढूंढ़ो[९] और एक दूसरे की ग़ीबत न करो[१०] क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो यह तुम्हें गवारा न होगा[११] और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबह क़ुबूल करने वाला मेहरबान है﴿१२﴾ ऐ लोगो हमने तुम्हें एक मर्द[१२] और एक औरत[१३] से पैदा किया[१४] और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो[१५] बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा ईज़्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है[१६] बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है﴿१३﴾ गंवार बोले हम ईमान लाए[१७] तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए[१८] हाँ यूं कहो कि हम मुतीअ हुए[१९] और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में कहाँ दाख़िल हुआ[२०] और

उतरी है कि फ़ासिक़ के क़ौल पर भरोसा न किया जाए. इस आयत से साबित हुआ कि एक व्यक्ति अगर आदिल हो तो उसकी ख़बर भरोसे के लायक़ है.

(१०) अगर तुम झूट बोलोगे तो अल्लाह तआला के ख़बरदार करने से वह तुम्हारा राज़ खोल कर तुम्हें रूसवा कर देंगे.

(११) और तुम्हारी राय के मुताबिक़ हुक्म दे दें.

(१२) कि सच्चाई के रास्ते पर क़ायम रहे.

(१३) नबीय करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दराज़ गोश (गधे) पर सवार तशरीफ़ ले जाते थे. अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुआ. वहाँ थोड़ी देर ठहरे. उस जगह गधे ने पेशाब किया तो इब्ने उबई ने नाक बन्द कर ली. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हुज़ूर के दराज़गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है. हुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए. उन दोनों में बात बढ़ गई और उन दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई की नौबत आई तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए और उनमें सुलह करा दी. इस मामले में यह आयत उतरी.

(१४) ज़ुल्म करे और सुलह से इन्कारी हो जाए. बाग़ी दल का यही हुक्म है कि उससे जंग की जाए यहाँ तक कि वह लड़ाई से बाज़ आए.

(१५) कि आपस में दीनी सम्बन्ध और इस्लामी महब्बत के साथ जुड़े हुए हैं. यह रिश्ता सारे दुनियवी रिश्तों से ज़्यादा मज़बूत है.

(१६) जब कभी उनमें मतभेद वाक़े हो.

(१७) क्योंकि अल्लाह तआला से डरना और परहेज़गारी इख़्तियार करना ईमान वालों की आपसी महब्बत और दोस्ती का कारण है और जो अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला की रहमत उसपर होती है.

सूरए हुजुरात - दूसरा रूकू

(१) यह आयत कई घटनाओं में उतरी. पहली घटना यह है कि साबित बिन क़ैस शम्मास ऊंचा सुनते थे. जब वह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होते तो सहाबा उन्हें आगे बिठाते और उनके लिये जगह ख़ाली कर देते ताकि वह हुज़ूर के क़रीब हाज़िर रहकर कलामे मुबारक सुन सकें. एक रोज़ उन्हें हाज़िरी में देर हो गई और मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई, उस वक़्त साबित आए और क़ायदा यह था कि जो व्यक्ति ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहाँ होता खड़ा रहता. साबित आए तो वह रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़रीब बैठने के लिये लोगों को हटाते हुए यह कहते चले कि जगह दो, जगह दो. यहाँ तक कि वह हुज़ूर के क़रीब पहुंच गए और उनके और हुज़ूर के बीच में सिर्फ़ एक व्यक्ति रह गया. उन्होंने उससे भी कहा कि जगह दो . उसने कहा कि तुम्हें जगह मिल गई, बैठ जाओ. साबित ग़ुस्से में आकर उससे पीछे बैठ गए और जब

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝

अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे(२१) तो तुम्हारे किसी कर्म का तुम्हें नुक़सान न देगा(२२) बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴿१४﴾ ईमान वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया(२३) और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही सच्चे हैं(२४)﴿१५﴾ तुम फ़रमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है,(२५) और अल्लाह सब कुछ जानता है(२६)﴿१६﴾ ऐ मेहबूब वो तुम पर एहसान जताते हैं कि मुसलमान हो गए, तुम फ़रमाओ अपने इस्लाम का एहसान मुझे पर न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो(२७)﴿१७﴾ बेशक अल्लाह जानता है आसमानों और ज़मीन के सब ग़ैब, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है(२८)﴿१८﴾

दिन ख़ूब रौशन हुआ तो साबित ने उसका बदन दबा कर कहा कि कौन? उसने कहा मैं फ़लाँ व्यक्ति हूँ. साबित ने उसकी माँ का नाम लेकर कहा कि फ़लानी का लड़का. इसपर उस आदमी ने शर्म से सर झुका लिया. उस ज़माने में ऐसा कलिमा शर्म दिलाने के लिये बोला जाता था. इसपर यह आयत उतरी. दूसरा वाक़िआ ज़ुहाक ने बयान किया कि यह आयत बनी तमीम के हक़ में उतरी जो हज़रत अम्मार व ख़बाब व बिलाल व सुहैब व सलमान व सालिम वग़ैरह ग़रीब सहाबा की ग़रीबी देखकर उनका मज़ाक़ उड़ाते थे. उनके हक़ में यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें यानी मालदार ग़रीबों की हंसी न बनाएं, न ऊंचे ख़ानदान वाले नीचे ख़ानदान वालों की, और न तन्दुरूस्त अपाहिज की, न आँख वाले उसकी जिसकी आँख में दोष हो.

(२) सच्चाई और इख़्लास में.

(३) यह आयत उम्मुल मूमिनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हैय रदियल्लाहो अन्हा के हक़ में उतरी. उन्हें मालूम हुआ था कि उम्मुल मूमिनीन हज़रत हफ़सा ने उन्हें यहूदी की बेटी कहा. इसपर उन्हें दुख हुआ और रोईं और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से शिकायत की तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम नबीज़ादी और नबी की बीबी हो तुम पर वह क्या फ़ख़्र रखती हैं और हज़रत हफ़सा से फ़रमाया, ऐ हफ़सा ख़ुदा से डरो. (तिरमिज़ी)

(४) एक दूसरे पर ऐब न लगाओ. अगर एक मूमिन ने दूसरे मूमिन पर ऐब लगाया तो गोया अपने ही आपको ऐब लगाया.

(५) जो उन्हें नागवार मालूम हों. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबह कर ली हो, उसको तौबह के बाद उस बुराई से शर्म दिलाना भी इस मनाही में दाख़िल है. कुछ उलमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुअर कहना भी इसी में दाख़िल है. कुछ उलमा ने फ़रमाया कि इससे वो अलक़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उसको नागवार हो, लेकिन तारीफ़ के अलक़ाब जो सच्चे हों मना नहीं जैसे कि हज़रत अबू बक्र का लक़ब अतीक़ और हज़रत उमर का फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान का ज़ुन-नूरैन और हज़रत अली का अबू तुराब और हज़रत ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह, रदियल्लाहो अन्हुम. और जो अलक़ाब पहचान की तरह हो गए और व्यक्ति विशेष को नागवार नहीं वो अलक़ाब भी मना नहीं जैसे कि अअमश, अअरज.

(६) तो ऐ मुसलमानो किसी मुसलमान की हंसी बनाकर या उसको ऐब लगाकर या उसका नाम बिगाड़ कर अपने आपको फ़ासिक़ न कहलाओ.

(७) क्योंकि हर गुमान सही नहीं होता.

(८) नेक मूमिन के साथ बुरा गुमान मना है इसी तरह उसका कोई कलाम सुनकर ग़लत अर्थ निकालना जबकि उसके दूसरे सही मानी मौजूद हों और मुसलमान का हाल उनके अनुसार हो, यह भी बुरे गुमान में दाख़िल है. सुफ़ियान सौरी रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया गुमान दो तरह का होता है एक वह कि दिलों में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए. यह अगर मुसलमान पर बुराई

के साथ है तो गुनाह है. दूसरा यह कि दिल में आए और ज़बान से न कहा जाए, यह अगरचे गुनाह नहीं मगर इससे भी दिल ख़ाली करना ज़रूरी है. गुमान की कई क़िस्में हैं एक वाजिब है, वह अल्लाह के साथ अच्छा गुमान रखना. एक ममनूअ और हराम, वह अल्लाह तआला के साथ बुरा गुमान करना और मूमिन के साथ बुरा गुमान करना. एक जायज़, वह खुले फ़ासिक़ के साथ ऐसा गुमान करना जैसे काम वह करता हो.

(९) यानी मुसलमानों के दोष तलाश न करो और उनके छुपे हाल की जुस्तजू में न रहो, जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया. हदीस शरीफ़ में है गुमान से बचो, गुमान बड़ी झूटी बात है, और मुसलमानों के दोष मत तलाश करो. उनके साथ जहल, हसद, बुग़्ज़ और बेमुरव्वती न करो. ऐ अल्लाह तआला के बन्दो, भाई बने रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया. मुसलमान मुसलमान का भाई है, उसपर ज़ुल्म न करे, उसको रूस्वा न करे, उसकी तहक़ीर न करे. तक़्वा यहाँ है, तक़्वा यहाँ है, तक़्वा यहाँ है. (और "यहाँ" के शब्द से अपने सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाया) आदमी के लिये यह बुराई बहुत है कि अपने मुसलमान भाई को गिरी हुई नज़रों से देखे. हर मुसलमान मुसलमान पर हराम है. उसका ख़ून भी, उसकी आबरू भी, उसका माल भी. अल्लाह तआला तुम्हारी जिस्मों और सूरतों और कर्मों पर नज़र नहीं फ़रमाता, लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है. (बुख़ारी व मुस्लिम) हदीस में है जो बन्दा दुनिया में दूसरे की पर्दा पोशी करता है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी पर्दा पोशी फ़रमाएगा.

(१०) हदीस शरीफ़ में है कि ग़ीबत यह है कि मुसलमान भाई के पीठ पीछे ऐसी बात कही जाए जो उसे नागवार गुज़रे अगर यह बात सच्ची है तो ग़ीबत है, वरना बोहतान.

(११) तो मुसलमान भाई की ग़ीबत भी गवारा नहीं होनी चाहिये. क्योंकि उसको पीठ पीछे बुरा कहना उसके मरने के बाद उसका गोश्त खाने के बराबर है. क्योंकि जिस तरह किसी का गोश्त काटने से उसको तकलीफ़ होती है उसी तरह उसको बदगोई से दिली तकलीफ़ होती है. और वास्तव में आबरू गोश्त से ज़्यादा प्यारी है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब जिहाद के लिये रवाना होते और सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदारों के साथ एक ग़रीब मुसलमान को कर देते कि वह ग़रीब उनकी ख़िदमत करे, वो उसे खिलाएं पिलाएं. हर एक का काम चले. इसी तरह हज़रत सलमान रदियल्लाहो अन्हो दो आदमियों के साथ किये गए. एक रोज़ वह सो गए और खाना तैयार न कर सके तो उन दोनों ने उन्हें खाना तलब करने के लिये रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में भेजा. हुज़ूर की रसोई के ख़ादिम हज़रत उसामह रदियल्लाहो अन्हो थे. उनके पास कुछ रहा न था. उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं है. हज़रत सलमान ने आकर यही कह दिया तो उन दोनों साथियों ने कहा कि उसामह ने कंजूसी की. जब वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, फ़रमाया मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूँ. उन्होंने अर्ज़ किया हम ने गोश्त खाया ही नहीं. फ़रमाया तुमने ग़ीबत की और जो मुसलमान की ग़ीबत करे उसने मुसलमान का गोश्त खाया. ग़ीबत के बारे में सब एकमत हैं कि यह बड़े गुनाहों में से है. ग़ीबत करने वाले पर तौबह लाज़िम है. एक हदीस में यह है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की है उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ करे. कहा गया है खुले फ़ासिक़ के दोषों का बयान करो कि लोग उससे बचें. हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि तीन व्यक्तियों की बुराई या उनके दोष बयान करना ग़ीबत नहीं, एक साहिबे हवा (बदमज़हब), दूसरा खुला फ़ासिक़, तीसरा ज़ालिम बादशाह.

(१२) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम.

(१३) हज़रत हव्वा.

(१४) नसब के इस इन्तिहाई दर्जे पर जाकर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में घमण्ड करने की कोई वजह नहीं. सब बराबर हो. एक जद्दे अअला की औलाद.

(१५) और एक दूसरे का नसब जाने और कोई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की तरफ़ अपनी निस्बत न करे, न यह कि नसब पर घमण्ड करे और दूसरों की तहक़ीर करे. इसके बाद उस चीज़ का बयान फ़रमाया जाता है जो इन्सान के लिये शराफ़त और फ़ज़ीलत का कारण और जिससे उसको अल्लाह की बारगाह में इज़्ज़त हासिल होती है.

(१६) इससे मालूम हुआ कि इज़्ज़त और फ़ज़ीलत का आधार परहेज़गारी पर है न कि नसब पर. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीने के बाज़ार में एक हब्शी ग़ुलाम देखा जो यह कह रहा था कि जो मुझे ख़रीदे उससे मेरी यह शर्त है कि मुझे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पीछे पाँचों नमाज़ें अदा करने से मना न करे. उस ग़ुलाम को एक शख़्स ने ख़रीद लिया फिर वह ग़ुलाम बीमार हो गया तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसकी अयादत के लिये तशरीफ़ लाए फिर उसकी वफ़ात हो गई और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके दफ़्न में तशरीफ़ लाए. इसपर लोगों ने कुछ कहा. तब यह आयत उतरी.

(१७) यह आयत बनी असद बिन ख़ुज़ैमह की एक जमाअत के हक़ में नाज़िल हुई जो दुष्काल के ज़माने में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हों ने इस्लाम का इज़हार किया और हक़ीक़त में वो ईमान न रखते थे. उन लोगों ने मदीने के रस्ते में गन्दगियाँ कीं और वहाँ के भाव मेंहगे कर दिये. सुब्ह शाम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में आकर अपने इस्लाम लाने का एहसान जताते और कहते हमें कुछ दीजिये. उनके बारे में यह आयत उतरी.

(१८) दिल की सच्चाई से.

(१९) ज़ाहिर में.

(२०) केवल ज़बानी इक़रार, जिसके साथ दिल की तस्दीक़ न हो, भरोसे के क़ाबिल नहीं. इससे आदमी मूमिन नहीं होता. इताअत

५० - सूरए क़ाफ़

सूरए क़ाफ़ मक्के में उतरी, इसमें ४५ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) क़ाफ़ ﴾१﴿. इज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम(२)﴾२﴿ बल्कि उन्हें इसका अचंभा हुआ कि उनके पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया(३) तो काफ़िर बोले यह तो अजीब बात है﴾३﴿ क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएंगे फिर जियेंगे यह पलटना दूर है (४) हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उनमें से घटाती है(५) और हमारे पास एक याद रखने वाली किताब है(६)﴾४﴿ बल्कि उन्होंने हक़(सत्य) को झुटलाया(७) जब वह उनके पास आया तो वह एक मुज़तरिब बेसबात बात में हैं(८)﴾५﴿ तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को न देखा(९) हमने उसे कैसा बनाया(१०) और संवारा(११) और उसमें कहीं रख़ना नहीं(१२)﴾६﴿ और ज़मीन को हम ने फैलाया(१३) और उसमें लंगर डाले(१४) और उसमें हर रौनक़ वाला जोड़ा उगाया﴾७﴿ सूझ और समझ(१५) हर रूजू वाले बन्दे के लिये(१६)﴾८﴿ और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा(१७) तो उससे बाग़
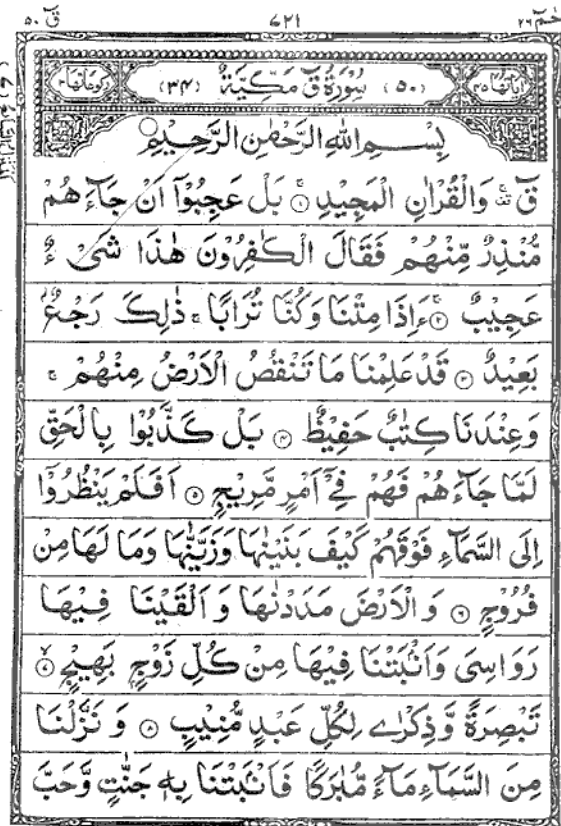
और फ़रमाँबरदारी इस्लाम के लुग़वी मानी हैं, और शरई मानी में इस्लाम और ईमान एक हैं, कोई फ़र्क़ नहीं.

(२१) ज़ाहिर में और बातिन में, दिल की गहराई और सच्चाई से निफ़ाक़ अर्थात दोहरी प्रवृत्ति को छोड़ कर.

(२२) तुम्हारी नेकियों का सवाब कम न करेगा.

(२३) अपने दीन और ईमान में.

(२४) ईमान के दावे में. जब ये दोनों आयतें उतरीं तो अरब लोग सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने क़समें ख़ाईं कि हम सच्चे मूमिन हैं. इसपर अगली आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब फ़रमाया गया.

(२५) उससे कुछ छुपा हुआ नहीं.

(२६) मूमिन का ईमान भी और मुनाफ़िक़ का दोग़लापन भी. तुम्हारे बताने और ख़बर देने की हाजत नहीं.

(२७) अपने दावे में.

(२८) उससे तुम्हारा कोई हाल छुपा नहीं, न ज़ाहिर न बातिन.

५० - सूरए क़ाफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए क़ाफ़ मक्के में उतरी. इसमें तीन रूकू, पैंतालीस आयतें, तीन सौ सत्तावन कलिमे और एक हज़ार चार सौ चौरानवे अक्षर हैं.

(२) हम जानते हैं कि मक्के के काफ़िर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान नहीं लाए.

(३) जिसकी अदालत और अमानत और सच्चाई और रास्तबाज़ी को वो ख़ूब जानते हैं और यह भी उनके दिमाग़ में बैठा हुआ है कि ऐसी विशेषताओं वाला व्यक्ति सच्ची नसीहत करने वाला होता है. इसके बावुजूद उनका सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और हुज़ूर के अन्दाज़ से तअज्जुब और इन्कार करना आश्चर्यजनक है.

(४) उनकी इस बात के रद और जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(५) यानी उनके जिस्म के जो हिस्से गोश्त ख़ून हड्डियाँ वग़ैरह ज़मीन खा जाती है उनमें से कोई चीज़ हमसे छुपी नहीं, तो हम उनको वैसा ही ज़िन्दा करने पर क़ादिर हैं जैसे कि वो पहले थे.

(६) जिसमें उनके नाम, गिन्ती और जो कुछ उनमें से ज़मीन ने खाया सब साबित और लिखा हुआ और मेहफ़ूज़ है.

(७) बग़ैर सोचे समझे, और हक़ से या मुराद नबुव्वत है जिसके साथ खुले चमत्कार हैं या क़ुरआने मजीद.

(८) तो कभी नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को शायर, कभी जादूगर, कभी तांत्रिक और इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ को शेअर,

الْحَصِيْدِ ۙ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۙ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

منزل ٧

उगाए और अनाज कि काटा जाता है[१८]﴾९﴿ और खजूर के लम्बे दरख़्त जिन का पक्का गाभा﴾१०﴿ बन्दों की रोज़ी के लिये और हमने उस[१९] से मुर्दा शहर जिलाया[२०] यूंही क़ब्रों से तुम्हारा निकलना है[२१]﴾११﴿ उनसे पहले झुटलाया[२२] नूह की क़ौम और रस वालों[२३] और समूद﴾१२﴿ और आद और फ़िरऔन और लूत के हमक़ौमों﴾१३﴿ और बन वालों और तुब्बा की क़ौम ने[२४] उनमें हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अज़ाब का वादा साबित हो गया[२५]﴾१४﴿ तो क्या हम पहली बार बनाकर थक गए[२६] बल्कि वो नए बनने से[२७] शुबह में हैं﴾१५﴿

दूसरा रूकू

और बेशक हमने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो वसवसा उसका नफ़्स डालता है[१] और हम दिल की रग से भी उससे ज़्यादा नज़्दीक हैं[२]﴾१६﴿ जब उससे लेते हैं दो लेने वाले[३] एक दाएं बैठा और एक बाएं[४]﴾१७﴿ कोई बात वह ज़बान से नहीं निकालता कि उसके पास एक मुहाफ़िज़ तैयार न बैठा हो[५]﴾१८﴿ और आई मौत की सख़्ती[६] हक़ के साथ[७] यह है जिससे तू भागता था﴾१९﴿ और सूर फूंका गया[८] यह है अज़ाब के वादे का दिन[९]﴾२०﴿ और हर जान यूं हाज़िर हुई कि उसके साथ एक हांकने

जादू और तंत्रविद्या कहते हैं. किसी एक बात पर क़रार नहीं.

(९) देखने वाली आँख और मानने वाली नज़र से कि उसकी आफ़रीनश (उत्पत्ति या पैदाइश) में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायाँ हैं.

(१०) बग़ैर सुतून के बलन्द किया.

(११) सितारे किये रौशन ग्रहों से.

(१२) कोई दोष और क़ुसूर नहीं.

(१३) पानी तक.

(१४) पहाड़ों के कि क़ायम रहे.

(१५) कि उससे बीनाई और नसीहत हासिल हो.

(१६) जो अल्लाह तआला की बनाई हुई चीज़ों में नज़र करके उसकी तरफ़ रुजू हो.

(१७) यानी बारिश जिससे हर चीज़ की ज़िन्दगी और बहुत ख़ैरो बरकत है.

(१८) तरह तरह का गेहूँ जौ चना वग़ैरह.

(१९) बारिश के पानी.

(२०) जिसकी वनस्पति सूख चुकी थी फिर उसको हरा भरा कर दिया.

(२१) तो अल्लाह तआला की क़ुदरत के आसार देख कर मरने के बाद फिर ज़िन्दा होने का क्यों इन्कार करते हो.

(२२) रसूलों को.

(२३) रस्स एक कुँवा है जहाँ ये लोग अपने मवेशी के साथ ठहरे हुए थे और बुतों को पूजते थे. यह कुँआ ज़मीन में धँस गया और उसके क़रीब की ज़मीन भी . ये लोग और उनके अमवाल उसके साथ धँस गए.

(२४) उन सब के तज़किरे सूरए फ़ुरक़ान व हिजर और दुख़ान में गुज़र चुके.

(२५) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसल्ली और क़ुरैश को चेतावनी है. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया गया है कि आप क़ुरैश के कुफ़्र से तंग दिल न हों, हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाते और उनके दुश्मनों पर अज़ाब करते रहे हैं. इसके बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों का जवाब इरशाद होता है.

(२६) जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो. इसमें दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करने वालों की जिहालत का इज़हार है कि इस इक़रार के बावुजूद कि सृष्टि अल्लाह तआला ने पैदा की, उसके दोबारा पैदा करने को असम्भव समझते हैं.

(२७) यानी मौत के बाद पैदा किये जाने से.

وَّشَهِيۡدٌ ۝ لَقَدۡ كُنۡتَ فِىۡ غَفۡلَةٍ مِّنۡ هٰذَا فَكَشَفۡنَا
عَنۡكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الۡيَوۡمَ حَدِيۡدٌ ۝ وَقَالَ
قَرِيۡنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيۡدٌ ۝ اَلۡقِيَا فِىۡ جَهَنَّمَ
كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيۡدٍ ۝ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ مُّرِيۡبِ ۝
اۨلَّذِىۡ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلۡقِيٰهُ فِى الۡعَذَابِ
الشَّدِيۡدِ ۝ قَالَ قَرِيۡنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطۡغَيۡتُهٗ وَلٰـكِنۡ
كَانَ فِىۡ ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ۝ قَالَ لَا تَخۡتَصِمُوۡا لَدَىَّ
وَقَدۡ قَدَّمۡتُ اِلَيۡكُمۡ بِالۡوَعِيۡدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الۡقَوۡلُ
لَدَىَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ۝ يَوۡمَ نَقُوۡلُ لِجَهَنَّمَ
هَلِ امۡتَلَـئْتِ وَتَقُوۡلُ هَلۡ مِنۡ مَّزِيۡدٍ ۝ وَاُزۡلِفَتِ
الۡجَـنَّةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ غَيۡرَ بَعِيۡدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوۡعَدُوۡنَ
لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيۡظٍ ۝ مَنۡ خَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ
وَجَآءَ بِقَلۡبٍ مُّنِيۡبِ ۝ اۨدۡخُلُوۡهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوۡمُ

वाला[१०] और एक गवाह[११]﴾२१﴿ बेशक तू इस से ग़फ़लत में था[१२] तो हमने तुझ पर से पर्दा उठाया[१३] तो आज तेरी निगाह तेज़ है[१४]﴾२२﴿ और उसका हमनशीं फ़रिश्ता[१५] बोला यह है[१६] जो मेरे पास हाज़िर है﴾२३﴿ हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुक्रे हटधर्म को﴾२४﴿ जो भलाई से बहुत रोकने वाला हद से बढ़ने वाला शक करनेवाला[१७]﴾२५﴿ जिसने अल्लाह के साथ कोई और मअबूद ठहराया तुम दोनों उसे सख़्त अज़ाब में डालो﴾२६﴿ उसके साथी शैतान ने कहा[१८] हमारे रब मैं ने इसे सरकश न किया[१९] हाँ यह आप ही दूर की गुमराही में था[२०]﴾२७﴿ फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो[२१] मैं तुम्हें पहले ही अज़ाब का डर सुना चुका था[२२]﴾२८﴿ मेरे यहाँ बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं﴾२९﴿

तीसरा रूकू

जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई[१] वह अर्ज़ करेगी कुछ और ज़्यादा है[२]﴾३०﴿ और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के कि उनसे दूर न होगी[३]﴾३१﴿ यह है वह जिस का तुम वादा दिये जाते हो[४] हर रूजू लाने वाले निगहदाश्त वाले के लिये[५]﴾३२﴿ जो रहमान से बेदेखे डरता है और जो रूजू करता हुआ दिल लाया[६]﴾३३﴿ उनसे फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ[७]

सूरए क़ाफ़ - दूसरा रूकू

(१) हमसे उसके भेद और अन्दर की बातें छुपी नहीं.

(२) यह भरपूर इल्म का बयान है कि हम बन्दे के हाल को ख़ुद उससे ज़्यादा जानने वाले हैं. वरीद वह रग है जिसमें ख़ून जारी होकर बदन के हर हर अंग में पहुंचता है. यह रग गर्दन में है. मानी ये हैं कि इन्सान के अंग एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर अल्लाह तआला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं.

(३) फ़रिश्ते, और वो इन्सान का हर काम और उसकी हर बात लिखने पर मुक़र्रर हैं.

(४) दाईं तरफ़ वाला नेकियाँ लिखता है और बाईं तरफ़ वाला गुनाह. इसमें इज़हार है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों के लिखने से भी ग़नी है, वह छुपी से छुपी बात का जानने वाला है . दिल के अन्दर की बात तक उससे छुपी नहीं है. फरिश्तों का लिखना तो अल्लाह तआला की हिकमत का एक हिस्सा है कि क़यामत के दिन हर व्यक्ति का कर्म लेखा या नामए अअमाल उसके हाथ में दे दिया जाएगा.

(५) चाहे वह कहीं हो सिवाए पेशाब पाख़ाना या हमबिस्तरी करते समय के. उस वक़्त ये फ़रिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं. इन दोनों हालतों में आदमी को बात करना जायज़ नहीं ताकि उसके लिखने के लिये फ़रिश्तों को उस हालत में उससे क़रीब होने की तकलीफ़ न हो. ये फ़रिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं बीमारी का कराहना तक. और यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वही चीज़ें लिखते हैं जिन में अज्र व सवाब या गिरफ़्त और अज़ाब हो. इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दाईं तरफ़ वाला फ़रिश्ता दस लिखता है, और जब बदी करता है तो दाईं तरफ़ वाला फ़रिश्ता बाईं तरफ़ वाले फ़रिश्ते से कहता है कि अभी रूका रह कि शायद यह व्यक्ति इस्तिग़फ़ार करले. मौत के बाद उठाए जाने का इन्कार करने वालों का रद फ़रमाने और अपनी क़ुदरत व इल्म से उन पर हुज्जतें क़ायम करने के बाद उन्हें बताया जाता है कि वो जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वह जल्द ही उनकी मौत और क़यामत के वक़्त पेश आने वाली है और भूतकाल से उनकी आमद की ताबीर फ़रमाकर उसके क़ुर्ब का इज़हार किया जाता है चुनांन्चे इरशाद होता है.

(६) जो अक़्ल और हवास को बिगाड़ देती है.

(७) हक़ से मुराद या मौत की हक़ीक़त है या आख़िरत का वुजूद जिसको इन्सान ख़ुद मुआयना करता है या आख़िरी अंजाम, सआदत और शक़ावत . सकरात यानी जान निकलते वक़्त मरने वाले से कहा जाता है कि मौत --

الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ
بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى
السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا
مِنْ لُّغُوْبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝ وَاسْتَمِعْ
يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ
الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝ اِنَّا نَحْنُ
نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝

यह हमेशगी का दिन है[८] ﴿३४﴾ उनके लिये है इसमें जो चाहें और हमारे पास इससे भी ज़्यादा है[९] ﴿३५﴾ और उनसे पहले[१०] हमने कितनी संगतें हलाक फ़रमा दीं कि गिरफ़्त में उनसे सख़्त थीं[११] तो शहरों में काविशें कीं[१२] है कहीं भागने की जगह[१३] ﴿३६﴾ बेशक इसमें नसीहत है उसके लिये जो दिल रखता हो[१४] या कान लगाए[१५] और मुतवज्जह हो ﴿३७﴾ और बेशक हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिन में बनाया, और तकान हमारे पास न आई[१६] ﴿३८﴾ तो उनकी बातों पर सब्र करो और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और डूबने से पहले[१७] ﴿३९﴾ और कुछ रात गए उसकी तस्बीह करो[१८] और नमाज़ों के बाद[१९] ﴿४०﴾ और कान लगाकर सुनो जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा[२०] एक पास जगह से[२१] ﴿४१﴾ जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे[२२] हक़ के साथ, यह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का ﴿४२﴾ बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी तरफ़ फिरना है[२३] ﴿४३﴾ जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे[२४] यह हश्र है हम को आसान ﴿४४﴾

(८) दोबारा उठाने के लिये.
(९) जिसका अल्लाह तआला ने काफ़िरों से वादा फ़रमाया था.
(१०) फ़रिश्ता जो उसे मेहशर की तरफ़ हाँके.
(११) जो उसके कर्मों की गवाही दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हाँकने वाला फ़रिश्ता होगा और गवाह ख़ुद उसका अपना नफ़्स. ज़ुहाक का क़ौल है कि हाँकने वाला फ़रिश्ता है और गवाह अपने बदन के हिस्से हाथ पाँव वग़ैर. हज़रत उस्माने ग़नी रदियल्लाहो अन्हो ने मिम्बर से फ़रमाया कि हाँकने वाला भी फ़रिश्ता है और गवाह भी फ़रिश्ता (जुमल). फिर काफ़िर से कहा जाएगा.
(१२) दुनिया में.
(१३) जो तेरे दिल और कानों और आँखों पर पड़ा था.
(१४) कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिनका दुनिया में इन्कार करता था.
(१५) जो उसके कर्म लिखने वाला और उसपर गवाही देने वाला है.(मदारिक और ख़ाज़िन)
(१६) उसके कर्मों का लेखा. (मदारिक)
(१७) दीन में.
(१८) जो दुनिया में उसपर मुसल्लत था.
(१९) यह शैतान की तरफ़ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्नम में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैतान ने बहकाया. उसपर शैतान कहेगा कि मैं ने इसे गुमराह न किया.
(२०) मैं ने उसे गुमराही की तरफ़ बुलाया उसने क़ुबूल कर लिया. इसपर अल्लाह तआला का इरशाद होगा अल्लाह तआला..
(२१) कि हिसाब और जज़ा के मैदान में झगड़ा करने का कोई फ़ायदा नहीं.
(२२) अपनी किताबों में, अपने रसूलों की ज़बानों पर, मैं ने तुम्हारे लिये कोई हुज्जत बाक़ी न छोड़ी.

सूरए क़ाफ़ - तीसरा रूकू

(१) अल्लाह तआला ने जहन्नम से वादा फ़रमाया है कि उसे जिन्नों और इन्सानों से भरेगा. इस वादे की तहक़ीक़ के लिये जहन्नम से यह सवाल किया जाएगा.
(२) इसके मानी ये भी हो सकते हैं कि अब मुझ में गुन्जाइश बाक़ी नहीं, मैं भरचुकी. और ये भी हो सकते हैं कि अभी और गुन्जाइश है.

(३) अर्श के दाईं तरफ़, जहाँ से मेहशर वाले उसे देखेंगे और उनसे कहा जाएगा.
(४) रसूलों के माध्यम से दुनिया में.
(५) रुजू लाने वाले से वह मुराद है जो गुनाहों को छोड़कर फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करे. सईद बिन मुसैयब ने फ़रमाया अव्वाब यानी रुजू लाने वाला वह है जो गुनाह करे फिर तौबह करे, फिर गुनाह करे फिर तौबह करे. और निगहदाश्त करने वाला वह है जो अल्लाह के हुक्म का लिहाज़ रखे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया जो अपने आपको गुनाहों से मेहफ़ूज़ रखे और उनसे इस्तिग़फ़ार करे और यह भी कहा गया है कि जो अल्लाह तआला की अमानतों और उसके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करे और यह भी बयान किया गया है कि जो ताअतों का पाबन्द हो, ख़ुदा और रसूल के हुक्म बजा लाए और अपने नफ़्स की निगहबानी करे यानी एक दम भी यादे-इलाही से ग़ाफ़िल न हो. पासे-अन्फ़ास करे यानी अपनी एक एक सांस का हिसाब रखे.
(६) यानी इख़्लास वाला, फ़रमाँबरदार और अक़ीदे का सच्चा दिल.
(७) बेख़ौफ़ो ख़तर, अम्न व इत्मीनान के साथ, न तुम्हें अज़ाब हो न तुम्हारी नेअमतें ख़त्म या कम हों.
(८) अब न फ़ना है न मौत.
(९) जो वो तलब करें और वह अल्लाह का दीदार और उसकी तजल्ली है जिससे हर शुक्रवार को बुज़ुर्गी के साथ नवाज़े जाएंगे.
(१०) यानी आपके ज़माने के काफ़िरों से पहले.
(११) यानी वो उम्मतें उनसे ताक़तवर और मज़बूत थीं.
(१२) और जुस्तजू में जगह जगह फिरा किये.
(१३) मौत और अल्लाह के हुक्म से मगर कोई ऐसी जगह न पाई.
(१४) जानने वाला दिल. शिबली रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि क़ुरआनी नसीहतों से फ़ैज़े हासिल करने के लिये हाज़िर दिल चाहिये जिसमें पलक झपकने तक की ग़फ़लत न आए.
(१५) क़ुरआन और नसीहत पर.
(१६) मुफ़स्सिरों ने कहा कि यह आयत यहूदियों के रद में नाज़िल हुई जो यह कहते थे कि अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन और उनके दर्मियान की कायनात को छ रोज़ में बनाया जिनमें से पहला यकशम्बा है और पिछला शुक्रवार, फिर वह (मआज़ल्लाह) थक गया और सनीचर को उसने अर्श पर लेट कर आराम किया. इस आयत में इसका रद है कि अल्लाह तआला इससे पाक है कि वह थके. वह क़ादिर है कि एक आन में सारी सृष्टि बना दे. हर चीज़ को अपनी हिकमत के हिसाब से हस्ती अता फ़रमाता है. शाने इलाही में यहूदियों का यह कलिमा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत बुरा लगा और गुस्से से आपके चेहरे पर लाली छागई तो अल्लाह तआला ने आपकी तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब फ़रमाया.
(१७) यानी फ़ज्र व ज़ोहर व अस्र के वक़्त.
(१८) यानी मग़रिब व इशा व तहज्जुद के वक़्त.
(१९) हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तमाम नमाज़ों के बाद तस्बीह करने का हुक्म फ़रमाया. (बुख़ारी) हदीस में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह, ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह और तैंतीस बार अल्लाहो अकबर और एक बार ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदू ला शरीका लहू लहुल मुल्को व लहुल हम्दो व हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर पढ़े उसके गुनाह बख़्शे जाएं चाहे समन्दर के झागों के बराबर हों यानी बहुत ही ज़्यादा हों. (मुस्लिम शरीफ़)
(२०) यानी हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम.
(२१) यानी बैतुल मक़दिस के गुम्बद से जो आस्मान की तरफ़ ज़मीन का सबसे क़रीब मक़ाम है. हज़रत इस्राफ़ील की निदा यह होगी ऐ गली हुई हड्डियो, बिखरे हुए जोड़ो, कण कण हुए गोश्तो, बिखरे हुए बालो ! अल्लाह तआला तुम्हें फ़ैसले के लिये जमा होने का हुक्म देता है.
(२२) सब लोग, मुराद इससे सूर का दूसरी बार फूंका जाना है.
(२३) आख़िरत में.
(२४) मुर्दे मेहशर की तरफ़.

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (٦٧) (٥١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ

منزل ٧

हम ख़ूब जान रहे हैं जो वो कह रहे हैं[२५] और कुछ तुम उनपर जब्र करने वाले नहीं[२६] तो क़ुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे﴿४५﴾

५१ - सूरए ज़ारियात

सूरए ज़ारियात मक्के में उतरी, इसमें ६० आयतें, तीन रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] क़सम उनकी जो बिखेर कर उड़ाने वालियाँ[२]﴿१﴾ फिर बोझ उठाने वालियाँ[३]﴿२﴾ फिर नर्म चलने वालियां[४] ﴿३﴾ फिर हुक्म से बाँटने वालियां[५]﴿४﴾ बेशक जिस बात का तुम्हें वादा दिया जाता है[६] ज़रूर सच है﴿५﴾ और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होना[७]﴿६﴾ आरायश वाले आसमान की क़सम[८]﴿७﴾ तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो[९]﴿८﴾ इस क़ुरआन से वही औंधा किया जाता है जिसकी क़िस्मत ही में औंधाया जाना हो[१०]﴿९﴾ मारे जाएं दिल से तराशने वाले﴿१०﴾ जो नशे में भूले हुए हैं[११]﴿११﴾ पूछते हैं[१२] इन्साफ़ का दिन कब होगा[१३]﴿१२﴾ उस दिन होगा जिस दिन वो आग पर तपाए जाएंगे[१४]﴿१३﴾ और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना यह है वह जिसकी तुम्हें जल्दी थी[१५]﴿१४﴾ बेशक परहेज़गार बाग़ों और चश्मों में हैं[१६]﴿१५﴾ अपने रब की अताएं लेते हुए, बेशक वो उससे पहले[१७] नेकी करने वाले

(२५) यानी क़ुरैश के काफ़िर.
(२६) कि उन्हें ज़बरदस्ती इस्लाम में दाख़िल करो . आपका काम दावत देना और समझा देना है.

५१ - सूरए ज़ारियात - पहला रूकू

(१) सूरए ज़ारियात मक्की है इसमें तीन रूकू, साठ आयतें, तीनसौ साठ कलिमे और एक हज़ार दो सौ उन्तालीस अक्षर हैं.
(२) यानी वो हवाएं जो ख़ाक वग़ैरह को उड़ाती हैं.
(३) यानी वो घटाएं और बदलियाँ जो बारिश का पानी उठाती हैं.
(४) वो किश्तियाँ जो पानी में आसानी से चलती है.
(५) यानी फ़रिश्तों की वो जमाअतें जो अल्लाह के हुक्म से बारिश और रिज़्क़ वग़ैरह की तक़सीम करती हैं और जिनको अल्लाह तआला ने संसार का बन्दोबस्त करने पर लगाया है और इस दुनिया के निज़ाम को चलाने और उसमें रद्दोबदल का इख़्तियार अता फ़रमाया है. कुछ मुफ़स्सिरों का क़ौल है कि ये तमाम विशेषताएं हवाओं की हैं कि वो धूल भी उड़ाती हैं, बादलों को भी उठाए फिरती हैं, फिर उन्हें लेकर बसहूलत चलती हैं, फिर अल्लाह तआला के शहरों में उसके हुक्म से बारिश तक़सीम करती हैं . क़सम का उद्देश्य उस चीज़ की महानता बयान करना है जिसके साथ क़सम याद फ़रमाई गई क्योंकि ये चीज़ें अल्लाह की बेपनाह क़ुदरत पर दलील लाने वाली हैं . समझ वालों को मौक़ा दिया जाता है कि वो इनमें नज़र करके मरने के बाद उठाए जाने और कर्मों का बदला दिये जाने को प्रमाणित करें कि जो क़ुदरत वाला रब ऐसी अनोखी बातों पर क़ुदरत रखता है वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को नष्ट करने के बाद दोबारा अस्तित्व में लाने पर बेशक क़ादिर है.
(६) यानी दोबारा ज़िन्दगी दिये जाने और कर्मों का बदला दिये जाने.
(७) और हिसाब के बाद नेकी बदी का बदला ज़रूर मिलता.
(८) जिसको सितारों से सजाया है कि मक्के वाले नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में और क़ुरआन पाक के बारे में.
(९) कभी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को जादूगर कहते हो, कभी शायर, कभी तांत्रिक, कभी पागल (मआज़ल्लाह) इसी तरह क़ुरआन पाक को भी कभी जादू बताते हो कभी शायरी, कभी तंत्र विद्या कभी अगलों की कहानियाँ.

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۝ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ
مَا يَهْجَعُوْنَ ۝ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَفِيْۤ
اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ
لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝ وَفِيْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝ وَفِي
السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝ هَلْ
اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝ اِذْ دَخَلُوْا
عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝
فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝ فَقَرَّبَهٗۤ اِلَيْهِمْ
قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا
تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ
صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝ قَالُوْا
كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝

منزل ٧

थे﴾१६﴿ वो रात में कम सोया करते थे(१८)﴾१७﴿ और पिछली रात इस्तिग़फ़ार (गुनाहों से माफ़ी मांगा) करते(१९)﴾१८﴿ और उनके मालों में हक़ था मंगता और बेनसीब का(२०)﴾१९﴿ और ज़मीन में निशानियां हैं यक़ीन वालों को(२१)﴾२०﴿ और ख़ुद तुम में(२२) तो क्या तुम्हें सूझता नहीं﴾२१﴿ और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है(२३) और जो तुम्हें वादा दिया जाता है(२४)﴾२२﴿ तो आसमान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक यह क़ुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो﴾२३﴿

दूसरा रूकू

ऐ मेहबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के इज़्ज़त वाले मेहमानों की ख़बर आई(१)﴾२४﴿ जब वो उसके पास आकर बोले सलाम, कहा सलाम, नाशनासा लोग हैं(२)﴾२५﴿ फिर अपने घर गया तो एक मोटा ताज़ा बछड़ा ले आया(३)﴾२६﴿ फिर उसे उनके पास रखा(४) कहा क्या तुम खाते नहीं﴾२७﴿ तो अपने जी में उनसे डरने लगा(५) वो बोले डरिये नहीं(६) और उसे एक इल्म वाले लड़के की ख़ुशख़बरी दी﴾२८﴿ इस पर उसकी बीबी(७) चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ(८)﴾२९﴿ उन्होंने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है, और वही हकीम दाना (जानने वाला) है﴾३०﴿

(१०) और जो हमेशा का मेहरूम है, इस सआदत से मेहरूम रहता है और बहकाने वालों के बहकावे में आ जाता है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने के काफ़िर जब किसी को देखते कि ईमान लाने का इरादा करता है तो उससे नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निस्बत कहते कि उनके पास क्यों जाता है, वह तो शायर हैं, जादूगर हैं, तांत्रिक हैं, झूटे हैं (मआज़ल्लाह) और इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ को शायरी, जादू और झूट बताते (मआज़ल्लाह).
(११) यानी जिहालत के नशे में आख़िरत को भूले हुए हैं.
(१२) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर.
(१३) उनके जवाब में फ़रमाया जाता है.
(१४) और उन्हें अज़ाब दिया जाएगा.
(१५) और दुनिया में मज़ाक़ के तौर पर कहा करते थे कि वह अज़ाब जल्दी लाओ जिसका वादा देते हो.
(१६) यानी अपने रब की नेअमत में हैं बाग़ों के अन्दर जिनमें लतीफ़ चश्मे जारी हैं.
(१७) दुनिया में.
(१८) और ज़्यादा हिस्सा रात का नमाज़ में गुज़ारते.
(१९) यानी रात तहज्जुद और जागने में गुज़ारते हैं और बहुत थोड़ी देर सोते और रात का पिछला हिस्सा इस्तिग़फ़ार में गुज़ारते हैं और इतने सो जाने को भी गुनाह समझते हैं.
(२०) मंगता तो वह जो अपनी हाजत के लिये लोगों से सवाल करे और मेहरूम वह कि हाजतमन्द हो और शर्म से सवाल भी न करे.
(२१) जो अल्लाह तआला के एक होने और उसकी क़ुदरत और हिकमत को प्रमाणित करती हैं.
(२२) तुम्हारी पैदाइश में और तुम्हारे परिवर्तन में और तुम्हारे ज़ाहिर और बातिन में अल्लाह तआला की क़ुदरत के ऐसे बेशुमार अजूबे और चमत्कार हैं जिससे बन्दे को उसके रब होने की शान मालूम होती है.
(२३) कि उसी तरफ़ से बारिश करके ज़मीन को पैदावार से मालामाल किया जाता है.
(२४) आख़िरत के सवाब और अज़ाब का, वह सब आसमान में लिखा हुआ है.

सूरए ज़ारियात - दूसरा रूकू

(१) जो दस या बारह फ़रिश्ते थे.

(२) यह बात आपने अपने दिल में फ़रमाई.
(३) नफ़ीस भुना हुआ.
(४) कि खाएं और ये मेज़बान के आदाब में से है कि मेहमान के सामने खाना पेश करे. जब उन फ़रिश्तों ने खाया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ---
(५) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि आपके दिल में बात आई कि ये फ़रिश्ते हैं और अज़ाब के लिये भेजे गए हैं.
(६) हम अल्लाह तआला के भेजे हुए हैं.
(७) यानी हज़रत सारा.
(८) जिसके कभी बच्चा नहीं हुआ नव्वे या निनानवे साल की उम्र हो चुकी. मतलब यह था कि ऐसी उम्र और ऐसी हालत में बच्चा होना अत्यन्त आश्चर्य की बात है.

पारा छब्बीस समाप्त

सत्ताईसवां पारा- क़ाला फ़माख़त्बुकुम
(सूरए ज़ारियात जारी)

इब्राहीम ने फ़रमाया, तो ऐ फ़रिश्तो तुम किस काम से आए[९]﴾३१﴿ बोले हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं[१०]﴾३२﴿ कि उनपर गारे के बनाए हुए पत्थर छोड़ें﴾३३﴿ जो तुम्हारे रब के पास हद से बढ़ने वालों के लिये निशान किये रखे हैं[११]﴾३४﴿ तो हमने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिये﴾३५﴿ तो हमने वहाँ एक ही घर मुसलमान पाया[१२]﴾३६﴿ और हमने उसमें[१३] निशानी बाक़ी रखी उनके लिये जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं[१४]﴾३७﴿ और मूसा में[१५] जब हमने उसे रौशन सनद लेकर फ़िरऔन के पास भेजा[१६]﴾३८﴿ तो अपने लश्कर समेत फिर गया[१७] और बोला जादूगर है या दीवाना﴾३९﴿ तो हमने उसे और उसके लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस हाल में कि वह अपने आपको मलामत कर रहा था[१८]﴾४०﴿ और आद में[१९] जब हमने उनपर ख़ुश्क आंधी भेजी[२०]﴾४१﴿ जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की तरह कर छोड़ती[२१]﴾४२﴿ और समूद में[२२] जब उनसे फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो[२३]﴾४३﴿ तो उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की[२४] तो उनकी आंखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया[२५]﴾४४﴿

(९) यानी सिवाय इस ख़ुशख़बरी के तुम्हारा और क्या काम है.
(१०) यानं क़ौमे लूत की तरफ़.
(११) उन पत्थरों पर निशान थे जिनसे मालूम होता था कि ये दुनिया के पत्थरों में से नहीं हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि हर एक पत्थर पर उसका नाम लिखा था जो उससे हलाक किया जाने वाला था.
(१२) यानी एक ही घर के लोग और वो हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और आपकी दोनों बेटियाँ हैं.
(१३) यानी क़ौमे लूत के उस शहर में काफ़िरों को हलाक करने के बाद.
(१४) ताकि वो इबरत हासिल करें और उनके जैसे कामों से बाज़ रहें और वह निशानी उनके उजड़े हुए शहर थे या वो पत्थर जिनसे वो हलाक किये गए या वह काला बदबूदार पानी जो उस धरती से निकला था.
(१५) यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वाक़ए में भी निशानी रखी.
(१६) रौशन सनद से मुराद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार हैं जो आपने फ़िरऔन और उसके लोगों पर पेश फ़रमाए.
(१७) यानी फ़िरऔन ने अपनी जमाअत के साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से इन्कार किया.
(१८) कि क्यों वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान न लाया और क्यों उन्हें बुरा भला कहा.
(१९) यानी क़ौमे आद के हलाक करने में इबरत वाली निशानियाँ हैं.
(२०) जिसमें कुछ भी ख़ैरो बरकत न थी. यह हलाक करने वाली हवा थी.
(२१) चाहे वो आदमी हों या जानवर या और अमवाल, जिस चीज़ को छू गई उसको हलाक करके ऐसा कर दिया मानों वह मुद्दतों की नष्ट की हुई है.
(२२) यानी क़ौमे समूद की हलाकत में भी निशानियाँ हैं.
(२३) यानी मौत के वक़्त तक दुनिया में जी लो तो यही ज़माना तुम्हारी मोहलत का है.
(२४) और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाया और ऊंटनी की कूंचें कांटीं.
(२५) और भयानक आवाज़ के अज़ाब से हलाक कर दिये गए.

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾
وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾ ع
وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ
فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ
خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى
اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ
اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ
مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ
اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى
تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا
لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ
يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

منزل ٧

तो वो न खड़े हो सके[२६] और न वो बदला ले सकते थे﴾४५﴿ और उनसे पहले नूह की क़ौम को हलाक फ़रमाया, बेशक वो फ़ासिक़ लोग थे﴾४६﴿

तीसरा रूकू

और आसमान को हमने हाथों से बनाया[१] और बेशक हम वुसअत देने वाले हैं[२]﴾४७﴿ और ज़मीन को हमने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले﴾४८﴿ और हमने हर चीज़ के दो जोड़े बनाए[३] कि तुम ध्यान करो[४]﴾४९﴿ तो अल्लाह की तरफ़ भागो[५] बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिये साफ़ डर सुनाने वाला हूँ﴾५०﴿ और अल्लाह के साथ और मअबूद न ठहराओ, बेशक मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिये खुला डर सुनाने वाला हूँ﴾५१﴿ यूंही[६] जब उनसे अगलों के पास कोई रसूल तशरीफ़ लाया तो यही बोले कि जादूगर है या दीवाना﴾५२﴿ क्या आपस में एक दूसरे को यह बात कह मरे हैं, बल्कि वो सरकश लोग हैं[७]﴾५३﴿ तो ऐ मेहबूब, तुम उनसे मुंह फेर लो तो तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं[८]﴾५४﴿ और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ायदा देता है﴾५५﴿ और मैंने जिन्न और आदमी इतने ही के लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें[९]﴾५६﴿ मैं उनसे कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता[१०] और न यह चाहता हूँ कि वो मुझे खाना दें[११]﴾५७﴿ बेशक अल्लाह ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला क़ुव्वत वाला क़ुदरत वाला है[१२]﴾५८﴿

(२६) अज़ाब उतरते समय न भाग सके.

सूरए ज़ारियात - तीसरा रूकू

(१) अपने दस्ते क़ुदरत से.

(२) उसको इतनी कि ज़मीन अपनी फ़ज़ा के साथ उसके अन्दर इस तरह आजाए जैसे कि एक चौड़े मैदान में गैंद पड़ी हो या ये मानी हैं कि हम अपनी सृष्टि पर रिज़्क़ फैलाने वाले हैं.

(३) आसमान और ज़मीन और सूरज और चाँद और रात और दिन और ख़ुश्की और तरी और गर्मी व सर्दी और जिन्न व इन्स और रौशनी और अंधेरा और ईमान व कुफ़्र और सआदत व शक़ावत और हक़ व बातिल और नर व मादा की तरह.

(४) और समझो कि उन तमाम जोड़ों को पैदा करने वाली एक ही हस्ती है, न उसका नज़ीर है, न शरीक, न ज़िद न बराबर. वही इबादत के लायक़ है.

(५) उसके मासिवा को छोड़ कर उसकी इबादत इख़्तियार करो.

(६) जैसे कि उन काफ़िरों ने आपको झुटलाया और आपको जादूगर और दीवाना कहा, ऐसे ही.

(७) यानी पहले काफ़िरों ने अपने पिछलों को यह वसीयत तो नहीं की कि तुम नबियों को झुटलाना और उनकी शान में इस तरह की बातें बनाना लेकिन चूंकि सरकशी और बग़ावत की इल्लत दोनों में है इसलिये गुमराही में एक दूसरे के मुवाफ़िक़ रहे.

(८) क्योंकि आप रिसालत की तबलीग़ फ़रमा चुके और दावत व हिदायत में काफ़ी मेहनत कर चुके और आपने अपनी कोशिश में कोई कसर उठा न रखी . जब यह आयत उतरी तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़मगीन हुए और आपके सहाबा को रंज हुआ कि जब रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुंह फेरने का हुक्म हो गया तो अब वही क्यों आएगी और जब नबी ने उम्मत को तबलीग़ पूरे तौर पर फ़रमादी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उनसे मुंह फेरने का हुक्म मिल गया तो वक़्त आगया कि उनपर अज़ाब उतरे. इसपर वह आयत उतरी जो इस आयत के बाद है और उसमें तस्कीन दी गई कि वही का सिलसिला टूटा नहीं है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नसीहत सआदतमन्दों के लिये जारी रहेगी चुनांन्चे इरशाद हुआ.

(९) और मेरी मअरिफ़त यानी पहचान हो.

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

(٥٢) سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ (٧٦)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ۝ وَكِتَٰبٍ مَّسْطُورٍ ۝ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ۝ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَٰقِعٌ ۝ مَّا لَهُ مِن دَافِعٍ ۝ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

तो बेशक उन ज़ालिमों के लिये(१३) अज़ाब की एक बारी है(१४) जैसे उनके साथ वालों के लिये एक बारी थी(१५) तो मुझसे जल्दी न करें(१६)(५९) तो काफ़िरों की ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका वादा दिये जाते हैं(१७)(६०)

५२ - सूरए तूर

सूरए तूर मक्के में उतरी, इसमें ४९ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१)

तूर की क़सम(२)(१) और उस नविश्ते (लिखे) की(३)(२) जो खुले दफ़्तर में लिखा है(३) और बेते मअमूर(४)(४) और बलन्द छत(५)(५) और सुलगाए हुए समन्दर की(६)(६) बेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर होना है(७)(७) उसे कोई टालने वाला नहीं(८) जिस दिन आसमान हिलना सा हिलना हिलेंगे(८)(९) और पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे(९)(१०) तो उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है(१०)(११) वो जो मशग़ले में(११) खेल रहे हैं(१२) जिस दिन जहन्नम की तरफ़ धक्का देकर धकेले जाएंगे(१२)(१३) यह है वह आग जिसे तुम झुटलाते थे(१३)(१४) तो क्या यह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं(१४)(१५)

(१०) कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी ख़ुद पैदा करें क्योंकि रिज़्क़ देने वाला मैं हूँ और सब की रोज़ी का मैं ही पूरा करने वाला हूँ.
(११) मेरी सृष्टि के लिये.
(१२) सबको वही देता, वही पालता है.
(१३) जिन्होंने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया.
(१४) हिस्सा है नसीब है.
(१५) यानी पिछली उम्मतों के काफ़िरों के लिये जो नबियों को झुटलाने में इनके साथी थे. उनका अज़ाब और हलाकत में हिस्सा था.
(१६) अज़ाब नाज़िल करने की.
(१७) और वह क़यामत का दिन है.

५२ - सूरए तूर - पहला रूकू

(१) सूरए तूर मक्की है इस में दो रूकू, उनचास आयतें, तीन सौ बारह कलिमे और एक हज़ार पाँच सौ अक्षर हैं.
(२) यानी उस पहाड़ की क़सम जिस पर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया.
(३) इस नविश्ते से मुराद या तौरात है या क़ुरआन या लौहे मैहफ़ूज़ या कर्मलेखा लिखने वाले फ़रिश्तों के दफ़्तर.
(४) बैतुल मअमूर सातवें आसमान में अर्श के सामने काबा शरीफ़ के बिल्कुल ऊपर है. यह आसमान वालों का क़िबला है हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इसमें तवाफ़ और नमाज़ के लिये दाख़िल होते हैं फिर भी उन्हें लौटने का मौक़ा नहीं मिलता. हर रोज़ नए सत्तर हज़ार हाज़िर होते हैं. मेअराज की हदीस में साबित हुआ कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सातवें आसमान में बैतुल मअमूर को देखा.
(५) इससे मुराद आसमान है जो ज़मीन के लिये छत की तरह है या अर्श जो जन्नत की छत है. (क़ुरतबी)
(६) रिवायत है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन तमाम समन्दरों को आग करदेगा जिससे जहन्नम की आग में और भी ज़ियादती हो जाएगी. (ख़ाज़िन)
(७) जिसका काफ़िरों को वादा दिया गया है.
(८) चक्की की तरह घूमेंगे और इस तरह हरकत में आएंगे कि उनके हिस्से अलग अलग बिखर जाएंगे.
(९) जैसे कि धूल हवा में उड़ती है. यह दिन क़यामत का दिन होगा.

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَعِيْمٍ ۞ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۞ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۞ وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۞ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ۞ وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ۞ وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۞ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ۞ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا

इस में जाओ अब चाहे सब्र करो या न करो, सब तुम पर एक सा है[१५] तुम्हें उसीका बदला जो तुम करते थे[१६] ﴾१६﴿ बेशक परहेज़गार बाग़ों और चैन में हैं ﴾१७﴿ अपने रब की देन पर शाद शाद ख़ुश ख़ुश[१७] और उन्हें उनके रब ने आग के अज़ाब से बचा लिया[१८] ﴾१८﴿ खाओ और पियो ख़ुशगवारी से सिला (इनआम) अपने कर्मों का[१९] ﴾१९﴿ तख़्तों पर तकिया लगाए जो क़तार लगाकर बिछे हैं और हमने उन्हें ब्याह दिया बड़ी आँखों वाली हूरों से ﴾२०﴿ और जो ईमान लाए और उनकी औलाद ने ईमान के साथ उनकी पैरवी की, हमने उनकी औलाद उनसे मिला दी[२०] और उनके कर्म में उन्हें कुछ कमी न दी[२१] सब आदमी अपने किये में गिरफ़्तार हैं[२२] ﴾२१﴿ और हमने उनकी मदद फ़रमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें[२३] ﴾२२﴿ एक दूसरे से लेते हैं वह जाम जिसमें न बेहूदगी और न गुनहगारी[२४] ﴾२३﴿ और उनके ख़िदमतगार (सेवक) लड़के उनके गिर्द फिरेंगे[२५] मानो वो मोती हैं छुपा कर रखे गए[२६] ﴾२४﴿ और उनमें एक ने दूसरे की तरफ़ मुंह किया पूछते हुए[२७] ﴾२५﴿ बोले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे[२८] ﴾२६﴿ तो अल्लाह ने हमपर एहसान किया[२९] और

(१०) जो रसूलों को झुटलाते थे.
(११) कुफ़्र और बातिल के.
(१२) और जहन्नम के ख़ाज़िन काफ़िरों के हाथ गर्दनों और पाँव पेशानियों से मिलाकर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल जहन्नम में धकेल देंगे और उनसे कहा जाएगा ---
(१३) दुनिया में.
(१४) यह उनसे इसलिये कहा जाएगा कि वो दुनिया में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ जादू की निस्बत करते थे और कहते थे कि हमारी नज़र बन्दी कर दी है.
(१५) न कहीं भाग सकते हो, न अज़ाब से बच सकते हो, और यह अज़ाब.
(१६) दुनिया में कुफ़्र और झुटलाना.
(१७) उसकी अता व नेअमते ख़ैरो करामत पर.
(१८) और उनसे कहा जाएगा.
(१९) जो तुमने दुनिया में किये कि ईमान लाए और ख़ुदा और रसूल की इताअत इख़्तियार की.
(२०) जन्नत में अगरचे बाप दादा के दर्जे बलन्द हों तो भी उनकी ख़ुशी के लिये उनकी औलाद उनके साथ मिला दी जाएगी और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से उस औलाद को भी वह दर्जा अता फ़रमाएगा.
(२१) उन्हें उनके कर्मों का पूरा सवाब दिया और औलाद के दर्जे अपने फ़ज़्लो करम से बलन्द किये.
(२२) यानी हर काफ़िर अपने कुफ़्री अमल में दोज़ख़ के अन्दर गिरफ़्तार है. (ख़ाज़िन)
(२३) यानी जन्नत वालों को हमने अपने एहसान से दमबदम ज़्यादा नेअमतें अता फ़रमाईं.
(२४) जैसा कि दुनिया की शराब में क़िस्म क़िस्म की बुराइयाँ थीं क्योंकि जन्नत की शराब पीने से न अक़्ल भ्रष्ट होती है न ख़सलतें ख़राब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बकता है न गुनहगार होता है.
(२५) ख़िदमत के लिये और उनके हुस्नो सफ़ा और पाकीज़गी का यह हाल है.
(२६) जिन्हें कोई हाथ ही न लगा. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि किसी जन्नती के पास ख़िदमत में दौड़ने वले ग़ुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर ग़ुलाम अलग अलग ख़िदमत पर मुक़र्रर होगा.
(२७) यानी जन्नती जन्नत में एक दूसरे से पूछेंगे कि दुनिया में किस हाल में थे और क्या अमल करते थे. और यह पूछना अल्लाह की नेअमत के ऐतिराफ़ के लिये होगा.
(२८) अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से और इस डर से कि नफ़्स और शैतान ईमान की ख़राबी का कारण न हों और नेकियों के रोके

وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ
رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ
نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ
مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ
بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ
بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا
صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾
اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾
اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾
اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ

हमें लू के अज़ाब से बचा लिया[३०]﴾२७﴿ बेशक हमने अपनी पहली ज़िन्दगी में[३१] उसकी इबादत की थी, बेशक वही एहसान फ़रमाने वाला मेहरबान है﴾२८﴿

दूसरा रूकू

तो ऐ मेहबूब तुम नसीहत फ़रमाओ[१] कि तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हो न मजनून﴾२९﴿ या कहते हैं[२] ये शायर हैं हमें इन पर ज़माने के हादसों का इन्तिज़ार है[३]﴾३०﴿ तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किये जाओ[४] मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूँ[५]﴾३१﴿ क्या उनकी अक़्लें उन्हें यही बताती हैं[६] या वो सरकश लोग हैं[७]﴾३२﴿ या कहते हैं उन्होंने[८] यह क़ुरआन बना लिया बल्कि वो ईमान नहीं रखते[९]﴾३३﴿ तो उस जैसी एक बात तो ले आएं[१०] अगर सच्चे हैं﴾३४﴿ क्या वो किसी अस्ल से न बनाए गए[११] या वही बनाने वाले हैं[१२]﴾३५﴿ या आसमान और ज़मीन उन्हीं ने पैदा किये[१३] बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं[१४]﴾३६﴿ या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं[१५] या वो करोड़े (बड़े हाकिम) हैं[१६]﴾३७﴿ या उनके पास कोई ज़ीना है[१७] जिसमें चढ़कर सुन लेते हैं[१८] तो उनका सुनने वाला कोई रौशन सन्द लाए﴾३८﴿ क्या उसको बेटियाँ और तुम को बेटे[१९]﴾३९﴿ या तुम उनसे[२०] कुछ उजरत (मज़दूरी) मांगते हो तो वो चिट्टी के बोझ में दबे हैं[२१]﴾४०﴿

जाने और गुनाहों पर पकड़ किये जाने का भी डर था.

(२९) रहमत और मग़फ़िरत फ़रमा कर.

(३०) यानी जहन्नम की आग के अज़ाब से, जो जिस्मों में दाख़िल होने के कारण समूम यानी लू के नाम से मौसूम की गई.

(३१) यानी दुनिया में इख़्लास के साथ सिर्फ़ --

सूरए तूर - दूसरा रूकू

(१) मक्के के काफ़िरों को और उनके तांत्रिक और दीवाना कहने की वजह से आप नसीहत से बाज़ न रहें इसलिये.

(२) ये मक्के के काफ़िर आपकी शान में.

(३) कि जैसे इनसे पहले शायर मर गए और उनके जत्थे टूट गए यही हाल इनका होना है (मआज़ल्लाह) और वो काफ़िर यह भी कहते थे कि इनके वालिद की मौत जवानी में हुई है इन की भी ऐसी ही होगी. अल्लाह तआला अपने हबीब से फ़रमाता है.

(४) मेरी मौत का.

(५) कि तुम पर अल्लाह का अज़ाब आए . चुनांन्चे यह हुआ और वो काफ़िर बद्र में क़त्ल और क़ैद के अज़ाब में गिरफ़्तार किये गए.

(६) जो वो हुज़ूर की शान में कहते हैं शायर, जादूगर, तांत्रिक, ऐसा कहना बिल्कुल अक़्ल के ख़िलाफ़ है और मज़े की बात यह कि पागल भी कहते जाएं और शायर और तांत्रिक भी और फिर अपने अक़्ल वाले होने का दावा.

(७) कि दुश्मनी में अंधे हो रहे हैं और कुफ़्र और सरकशी में हद से गुज़र गए.

(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने दिल से.

(९) और दुश्मनी और नफ़्स की बुराई से ऐसा बुरा भला कहते हैं. अल्लाह तआला उनपर हुज्जत क़ायम फ़रमाता है कि अगर उनके ख़्याल में क़ुरआन जैसा कलाम कोई इन्सान बना सकता है.

(१०) जो हुस्नो ख़ूबी और फ़साहत व बलाग़त में इसकी तरह हो.

(११) यानी क्या वो माँ बाप से पैदा नहीं हुए, पत्थर बेजान, बेअक़्ल हैं जिनपर हुज्जत क़ायम न की जाएगी. ऐसा नहीं. मानी ये हैं कि क्या वो नुत्फ़े से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें ख़ुदा ने नहीं बनाया.

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۝٤١ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۝٤٢ أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝٤٣ وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ۝٤٤ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۝٤٥ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ۝٤٦ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝٤٧ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۝٤٨ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝٤٩

(٥٣) سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ (٢٣)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝١ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝٢

मंज़िल ७

या उनके पास ग़ैब हैं जिससे वो हुक्म लगाते हैं(२२)﴾४१﴿ किसी दाँव के इरादे में हैं(२३) तो काफ़िरों ही पर दाँव पड़ना है(२४)﴾४२﴿ या अल्लाह के सिवा उनका कोई और ख़ुदा है(२५) अल्लाह को पाकी उनके शिर्क से﴾४३﴿ और अगर आसमान से कोई टुकड़ा गिरते देखें तो कहेंगे तह ब तह बादल है(२६)﴾४४﴿ तो तुम उन्हें छोड़ दो यहाँ तक कि वो अपने उस दिन से मिलें जिसमें बेहोश होंगे(२७)﴾४५﴿ जिस दिन उनका दाँव कुछ काम न देगा और न उनकी मदद हो(२८)﴾४६﴿ और बेशक ज़ालिमों के लिये इससे पहले एक अज़ाब है(२९) मगर उनमें अक्सर को ख़बर नहीं(३०)﴾४७﴿ और ऐ मेहबूब, तुम अपने रब के हुक्म पर ठहरे रहो(३१) कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो(३२) और अपने रब की तारीफ़ करते हुए उसकी पाकी बोलो जब तुम खड़े हो(३३)﴾४८﴿ और कुछ रात में उसकी पाकी बोलो और तारों के पीठ देते(३४)﴾४९﴿

५३ - सूरए नज्म

सूरए नज्म मक्के में उतरी, इसमें ६२ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब यह मेराज से उतरे(२)﴾१﴿ तुम्हारे साहब न बहके न बेराह चले(३)﴾२﴿

(१२) कि उन्होंने अपने आपको ख़ुद ही बना लिया हो, यह भी मुहाल है. तो लामुहाला उन्हें इक़रार करना पड़ेगा कि उन्हें अल्लाह तआला ने ही पैदा किया और क्या कारण है कि वो उसकी इबादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं.
(१३) यह भी नहीं और अल्लाह तआला के सिवा आसमान और ज़मीन पैदा करने की कोई क़ुदरत नहीं रखता तो क्यों उसकी इबादत नहीं करते.
(१४) अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी क़ुदरत और ख़ालिक़ होने का. अगर इसका यक़ीन होता तो ज़रूर उसके नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाते.
(१५) नबुव्वत और रिज़्क़ वग़ैरह के कि उन्हें इख़्तियार हो जहाँ चाहे ख़र्च करें और जिसे चाहे दें.
(१६) ख़ुद-मुख़्तार, जो चाहे करें कोई पूछने वाला नहीं.
(१७) आसमान की तरफ़ लगा हुआ.
(१८) और उन्हें मालूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किसकी फ़त्ह होगी. अगर इसका दावा हो.
(१९) यह उनकी मूर्खता का बयान है कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ बेटियों की निस्बत करते हैं. जिनको बुरा जानते हैं.
(२०) दीन की तालीम पर.
(२१) और तावान की ज़ेरबारी के कारण इस्लाम नहीं लाते . यह भी तो नहीं है, फिर इस्लाम लाने में उन्हें क्या उज़्र है.
(२२) कि मरने के बाद न उठेंगे और उठे भी तो अज़ाब न किये जाएंगे, यह बात भी नहीं है.
(२३) दारुन नदवा में जमा होकर अल्लाह तआला के नबी हादिये बरहक़ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तकलीफ़ें देने और उनके क़त्ल के षडयंत्र रचाते हैं.
(२४) उनके छलकपट का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा. चुनांन्चे ऐसा ही हुआ अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनके छलकपट से मेहफ़ूज़ रखा और उन्हें बद्र में हलाक किया.
(२५) जो उन्हें रोज़ी दे और अल्लाह के अज़ाब से बचा सके.
(२६) यह जवाब है काफ़िरों के उस क़ौल का जो कहते थे कि हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा कर अज़ाब कीजिये. अल्लाह तआला उसी के जवाब में फ़रमाता है कि उनका कुफ़्र और दुश्मनी इस हद पर पहुंच गई है कि अगर उनपर ऐसा ही किया जाए कि आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाए और आसमान से उसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़्र से बाज़ न आएं और दुश्मनी से यही

وما ينطق عن الهوى ۝٣ إن هو إلا وحي يوحى ۝٤
علمه شديد القوى ۝٥ ذو مرة فاستوى ۝٦ وهو
بالأفق الأعلى ۝٧ ثم دنا فتدلى ۝٨ فكان قاب
قوسين أو أدنى ۝٩ فأوحى إلى عبده ما أوحى ۝١٠ ما
كذب الفؤاد ما رأى ۝١١ أفتمارونه على ما يرى ۝١٢
ولقد رآه نزلة أخرى ۝١٣ عند سدرة المنتهى ۝١٤
عندها جنة المأوى ۝١٥ إذ يغشى السدرة ما يغشى ۝١٦
ما زاغ البصر وما طغى ۝١٧ لقد رأى من آيات ربه
الكبرى ۝١٨ أفرأيتم اللات والعزى ۝١٩ ومناة الثالثة
الأخرى ۝٢٠ ألكم الذكر وله الأنثى ۝٢١ تلك إذا قسمة
ضيزى ۝٢٢ إن هي إلا أسماء سميتموها أنتم و
آباؤكم ما أنزل الله بها من سلطان إن يتبعون
إلا الظن وما تهوى الأنفس ولقد جاءهم من

और वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते﴾३﴿ वह तो नहीं मगर वही जो उन्हें की जाती है[४]﴾४﴿ उन्हें[५] सिखाया[६] सख़्त क़ुव्वतों वाले﴾५﴿ ताक़तवर ने[७] फिर उस जलवे ने क़स्द फ़रमाया[८]﴾६﴿ और वह आसमाने बरीं के सबसे बलन्द किनारे पर था[९]﴾७﴿ फिर वह जलवा नज़्दीक हुआ[१०] फिर ख़ूब उतर आया[११]﴾८﴿ तो उस जलवे और उस मेहबूब में दो हाथ का फ़ासला रहा बल्कि उस से भी कम[१२]﴾९﴿ अब वही फ़रमाई अपने बन्दे को जो वही फ़रमाई[१३]﴾१०﴿ दिल ने झूट न कहा जो देखा[१४]﴾११﴿ तो क्या तुम उनसे उनके देखे हुए पर झगड़ते हो[१५]﴾१२﴿ और उन्हों ने वह जलवा दो बार देखा[१६]﴾१३﴿ सिदरतुल मुन्तहा के पास[१७]﴾१४﴿ उसके पास जन्नतुल मावा है﴾१५﴿ जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था[१८]﴾१६﴿ आँख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी[१९]﴾१७﴿ बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं[२०]﴾१८﴿ तो क्या तुमने देखा लात और उज़्ज़ा﴾१९﴿ और उस तीसरी मनात को[२१]﴾२०﴿ क्या तुम को बेटा और उसको बेटी[२२]﴾२१﴿ जब तो यह सख़्त भौंडी तक़सीम है[२३]﴾२२﴿ वो तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं [२४] अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी, वो तो निरे गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे हैं[२५] हालांकि वेशक उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत

कहें कि यह तो बादल है इससे हमें पानी मिलेगा.
(२७) इससे मुराद सूर के पहली बार फ़ूंके जाने का दिन है.
(२८) ग़रज़ किसी तरह अज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे.
(२९) उनके कुफ़्र के कारण अज़ाबे आख़िरत से पहले और वह अज़ाब या तो बद्र में क़त्ल होना है या भूख और दुष्काल की सात साल की मुसीबत या क़ब्र का अज़ाब.
(३०) कि वो अज़ाब में मुब्तिला होने वाले हैं.
(३१) और जो मोहलत उन्हें दी गई है उसपर दिल तंग न हो.
(३२) तुम्हें वो कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते.
(३३) नमाज़ के लिये. इससे पहली तकबीर के बाद सना यानी सुब्हानकल्लाहुम्मा पढ़ना मुराद है या ये मानी हैं कि जब सोकर उठो तो अल्लाह तआला की हम्द और तस्बीह किया करो या ये मानी हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त हम्द व तस्बीह बजा लाया करो.
(३४) यानी तारों के छुपने के बाद. मुराद यह है कि उन औक़ात में अल्लाह तआला की तस्बीह और तारीफ़ करो. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि तस्बीह से मुराद नमाज़ है.

५३ - सूरए नज्म - पहला रूकू

(१) सूरए नज्म मक्की है. इसमें तीन रूकू, बासठ आयतें, तीन सौ साठ कलिमे, एक हज़ार चार सौ पाँच अक्षर हैं. यह वह पहली सूरत है जिसका रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया और हरम शरीफ़ में मुश्रिकों के सामने पढ़ी.
(२) नज्म की तफ़सीर में मुफ़स्सिरों के बहुत से क़ौल हैं कुछ ने सुरैया मुराद लिया है अगरचे सुरैया कई तारे हैं लेकिन नज्म का इतलाक़ उनपर अरब की आदत है. कुछ ने नज्म से नजूम की जिन्स मुराद ली है. कुछ ने वो वनस्पति जो तन नहीं रखते, ज़मीन पर फैलते हैं. कुछ ने नज्म से क़ुरआन मुराद लिया है लेकिन सबसे अच्छी तफ़सीर वह है जो इमाम अहमद रज़ा ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक ज़ात.(ख़ाज़िन)
(३) साहब से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं. मानी ये हैं कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कभी सच्चाई के रास्ते और हिदायत से मुंह न फेरा, हमेशा अपने रब की तौहीद और इबादत में रहे. आपके पाक दामन पर कभी किसाबुरे

काम की धूल न आई. और बेराह न चलने से मुराद यह है कि हुज़ूर हमेशा सच्चाई और हिदायत की आला मंज़िल पर फ़ायज़ रहे. बुरे और ग़लत अक़ीदे भी कभी आपके मुबारक वुजूद तक न पहुंच सके.

(४) यह पहले वाक्य की दलील है कि हुज़ूर का बहकना और बेराह चलना संभव ही नहीं क्योंकि आप अपनी इच्छा से कोई बात फ़रमाते ही नहीं, जो फ़रमाते हैं वह अल्लाह की तरफ़ से वही होती है और इसमें हुज़ूर के ऊंचे दर्जे और आपकी पाकीज़गी का बयान है. नफ़्स का सबसे ऊंचा दर्जा यह है कि वह अपनी ख़्वाहिश छोड़ दे. (तफ़सीरे कबीर) और इसमें यह भी इशारा है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात और अफ़आल में फ़ना के उस ऊंचे दर्जे पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी न रहा. अल्लाह की तजल्ली का ऐसा आम फ़ैज़ हुआ कि जो कुछ फ़रमाते हैं वह अल्लाह की तरफ़ से होता है. (रूहुल बयान)

(५) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को.

(६) जो कुछ अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ वही फ़रमाया और इस तालीम से मुराद क़ल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है.

(७) कुछ मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ गए हैं कि सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़तवर से मुराद हज़रत जिब्रईल हैं और सिखाने से मुराद अल्लाह की वही का पहुंचना है. हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि शदीदुल क़ुवा ज़ू मिर्रतिन से मुराद अल्लाह तआला है उसने अपनी ज़ात को इस गुण के साथ बयान फ़रमाया. मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने बेवास्ता तालीम फ़रमाई. (तफ़सीर रुहुल बयान)

(८) आम मुफ़स्सिरों ने फ़स्तवा का कर्ता भी हज़रत जिब्रईल को क़रार दिया है और ये मानी लिये हैं कि हज़रत जिब्रईले अमीन अपनी असली सूरत पर क़ायम हुए और इसका कारण यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें उनकी असली सूरत में देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी तो हज़रत जिब्रईल पूर्व की ओर से हुज़ूर के सामने नमूदार हुए और उनके वुजूद से पूर्व से पश्चिम तक भर गया. यह भी कहा गया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सिवा किसी इन्सान ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत में नहीं देखा. इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्रईल को देखना तो सही है और हदीस से साबित है लेकिन यह हदीस में नहीं है कि इस आयत में हज़रत जिब्रईल को देखना मुराद है बल्कि ज़ाहिरे तफ़सीर में यह है कि मुराद फ़स्तवा से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मकाने आली और ऊंची मंज़िल में इस्तवा फ़रमाना है. (कबीर) तफ़सीरे रुहुल बयान में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आसमानों के ऊपर क़याम फ़रमाया और हज़रत जिब्रईल सिद्रतुल मुन्तहा पर रुक गए, आगे न बढ़ सके. उन्होंने कहा कि अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ा तो अल्लाह के जलाल की तजल्लियाँ मुझे जला डालेंगी. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आगे बढ़ गए और अर्श के फ़ैलाव से भी गुज़र गए और इमाम अहमद रज़ा का अनुवाद इस तरफ़ इशारा करता है कि इस्तवा की अस्नाद अल्लाह तआला की तरफ़ है और यही क़ौल हसन रदियल्लाहो अन्हो का है.

(९) यहाँ भी आम मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ गए हैं कि यह हाल जिब्रईले अमीन का है. लेकिन इमाम राज़ी फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर यह है कि यह हाल सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का है कि आप आसमानों के ऊपर थे जिस तरह कहने वाला कहता है कि मैंने छत पर चाँद देखा. इसके मानी ये नहीं होते कि चाँद छत पर या पहाड़ पर था, बल्कि यही मानी होते हैं कि देखने वाला छत पर या पहाड़ पर था. इसी तरह यहाँ मानी हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आसमानों के ऊपर पहुंचे तो अल्लाह की तजल्ली आपकी तरफ़ मुतवज्जह हुई.

(१०) इसके मानी में भी मुफ़स्सिरों के कई क़ौल हैं. एक क़ौल यह है कि हज़रत जिब्रईल का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़रीब होना मुराद है कि वह अपनी असली सूरत दिखा देने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ुर्ब में हाज़िर हुए. दूसरे मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के क़ुर्ब से मुशर्रफ़ हुए. तीसरे यह कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने क़ुर्ब की नेअमत से नवाज़ा और यही ज़्यादा सही है.

(११) इसमें में चन्द क़ौल हैं एक तो यह कि नज़्दीक होने से हुज़ूर का ऊरूज और वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रुजू, तो हासिले मानी ये हैं कि हक़ तआला के क़ुर्ब में बारयाब हुए फिर मिलन की नेअमतों से फ़ैज़याब होकर ख़ल्क़ की तरफ़ मुतवज्जह हुए. दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत रब्बुल इज़्ज़त अपने लुत्फ़ व रहमत के साथ अपने हबीब से क़रीब हुआ और इस क़ुर्ब में ज़ियादती फ़रमाई. तीसरा क़ौल यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाह तआला की बारगाह में क़ुर्ब पाकर ताअत का सज्दा अदा किया (रुहुल बयान) बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि क़रीब हुआ जब्बार रब्बुल इज़्ज़त. (ख़ाज़िन)

(१२) यह इशारा है ताकीदे क़ुर्ब की तरफ़ कि क़ुर्ब अपने कमाल को पहुंचा और जो नज़्दीकी अदब के दायरे में रहकर सोची जासकती है वह अपनी चरम सीमा को पहुंची.

(१३) अक्सर मुफ़स्सिरों के नज़्दीक इसके मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने अपने ख़ास बन्दे हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को वही फ़रमाई. (जुमल) हज़रत जअफ़रे सादिक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को वही फ़रमाई, जो वही फ़रमाई वह बेवास्ता थी कि अल्लाह तआला और उसके हबीब के बीच कोई वास्ता न था और ये ख़ुदा और रसूल के बीच के रहस्य हैं जिन पर उनके सिवा किसी को सूचना नहीं. बक़्ली ने कहा कि अल्लाह तआला ने इस रहस्य को तमाम सृष्टि से छुपाए रखा और न बयान फ़रमाया कि अपने हबीब को क्या वही फ़रमाई और मुहिब व महबूब के बीच ऐसे राज़ होते हैं जिनको उनके सिवा कोई नहीं जानता. (रुहुल बयान) उलमा ने यह भी बयान किया है कि उस रात में जो आपको वही फ़रमाई गई वह कई क़िस्म के उलूम थे. एक तो शरीअत और अहकाम का इल्म जिस की सब को तबलीग़ की जाती है, दूसरे अल्लाह तआला

की मअरिफ़तें जो ख़ास लोगों को बताई जाती हैं, तीसरे हक़ीक़तें और अन्दर की बातें जो ख़ासुल ख़ास लोगों को बताई जाती हैं. और एक क़िस्म वो राज़ जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के साथ ख़ास हैं कोई उनका बोझ नहीं उठा सकता. (रुहुल बयान)
(१४) आँख़ ने यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ल्बे मुबारक ने उसकी तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा. मानी ये हैं कि आँख से देखा, दिल से पहचाना और इस देखने और पहचानने में शक और वहम ने राह न पाई. अब यह बात कि क्या देखा? कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने रब को देखा और यह देखना किस तरह था? सर की आँखों से या दिल की आँखों से? इस में मुफ़स्सिरों के दोनों क़ौल पाए जाते हैं. हज़रत इब्ने अब्बास का क़ौल है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रब तआला को अपने क़ल्बे मुबारक से दोबार देखा (मुस्लिम) एक जमाअत इस तरफ़ गई कि आपने रब तआला को हक़ीक़त में सर की आँखों से देखा. यह क़ौल हज़रत अनस बिन मालिक और हसन व अकरमह का है और हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम को ख़ुल्लत और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम और सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा. कअब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दोबारा कलाम फ़रमाया और हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाह तआला को दोबार देखा(तिर्मिज़ी) लेकिन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने दीदार का इन्कार किया और आयत को जिब्रईल के दीदार पर महमूल किया और फ़रमाया कि जो कोई कहे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने रब को देखा, उसने झूट कहा और प्रमाण में आयत **"ला तुदरिकुहुल अब्सार"**(आंखें उसे अहाता नहीं करतीं - सूरए अनआम, आयत १०३) तिलावत फ़रमाई. यहाँ चन्द बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं एक यह कि हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा का क़ौल नफ़ी में है और हज़रत इब्ने अब्बास का हाँ में और हाँ वाला क़ौल ही ऊपर होता है क्योंकि ना कहने वाला किसी चीज़ की नफ़ी इसलिये करता है कि उसने सुना नहीं और हाँ करने वाला हाँ इसलिये करता है कि उसने सुना और जाना. तो इल्म हाँ कहने वाले के पास है. इसके अलावा हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा ने यह कलाम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से नक़्ल नहीं किया बल्कि आयत से अपने इस्तम्बात (अनुमान) पर ऐतिमाद फ़रमाया. यह हज़रते सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा की राय और आयत में इदराक यानी इहाता की नफ़ी है, न रुयत की. सही मसअला यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए. मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे मरफ़ूअ से भी यही साबित है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा जो बहरुल उम्मत हैं, वह भी इसी पर हैं. मुस्लिम की हदीस है "रऐतो रब्बी बिऐनी व बिक़ल्बी" मैं ने अपने रब को अपनी आँख और अपने दिल से देखा. हज़रत हसन बसरी रदियल्लाहो अन्हो क़सम खाते थे कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेराज की रात अपने रब को देखा. हज़रत इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की हदीस का क़ायल हूँ. हुज़ूर ने अपने रब को देखा, उसको देखा, उसको देखा. इमाम साहब यह फ़रमाते ही रहे यहाँ तक कि साँस ख़त्म हो गई.
(१५) यह मुश्रिकों को ख़िताब है जो मेराज की रात के वाक़िआत का इन्कार करते और उसमें झगड़ा करते.
(१६) क्योंकि कम कराने की दरख़्वास्तों के लिये चन्द बार आना जाना हुआ. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने रब तआला को अपने क़ल्बे मुबारक से दोबार देखा और उन्हीं से यह भी रिवायत है कि हुज़ूर ने रब तआला को आँख से देखा.
(१७) सिद्रतुल मुन्तहा एक दरख़्त है जिसकी अस्ल जड़ छटे आसमान में है और इसकी शाख़ें सातवें आसमान में फैली हुई हैं और बलन्दी में वह सातवें आसमान से भी गुज़र गया. फ़रिश्ते और शहीदों और नेक लोगों की रुहें उससे आगे नहीं बढ़ सकतीं.
(१८) यानी फ़रिश्ते और अनवार.
(१९) इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भरपूर क़ुव्वत का इज़हार है कि उस मक़ाम में जहाँ अक़्लें हैरत में डूबी हुई हैं, आप साबित क़दम रहे और जिस नूर का दीदार मक़सूद था उससे बेहराअन्दोज़ हुए. दाएं बाएं किसी तरफ़ मुलतफ़ित न हुए, न मक़सूद की दीद से आँख फेरी, न हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरह बेहोश हुए, बल्कि इस मक़ामे अज़ीम में साबित रहे.
(२०) यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शबे मअेराज मुल्क और मलकूत के चमत्कारों को देखा और आप का इल्म तमाम मअलूमाते ग़ैबियह मलकूतियह से भर गया जैसा कि हदीस शरीफ़ इख़्तिसामे मलायकह में वारिद हुआ है और दूसरी हदीसों में आया है. (रुहुल बयान)
(२१) लात व उज़्ज़ा और मनात बुतों के नाम हैं जिन्हें मुश्रिक पूजते थे. इस आयत में इरशाद फ़रमाया कि क्या तुमने उन बुतों को देखा, यानी तहक़ीक़ व इन्साफ़ की नज़र से, अगर इस तरह देखा हो तो तुम्हें मालूम होगया होगा कि यह महज़ बेक़ुदरत बुतों को पूजना और उसका शरीक ठहराना किस क़दर अज़ीम ज़ुल्म और अक़्ल के ख़िलाफ़ बात है. मक्के के मुश्रिक कहा करते थे कि ये बुत और फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं. इसपर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है.
(२२) जो तुम्हारे नज़्दीक ऐसी बुरी चीज़ है कि जब तुम में से किसी को बेटी पैदा होने की ख़बर दी जाती है तो उसका चेहरा बिगड़ जाता है और रंग काला हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है यहाँ तक कि तुम बेटियों को ज़िन्दा दर गोर कर डालते हो; फिर भी अल्लाह तआला की बेटियाँ बताते हो.
(२३) कि जो अपने लिये बुरी समझते हो, वह ख़ुदा के लिये तजवीज़ करते हो.
(२४) यानी उन बुतों का नाम इलाह और मअबूद तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने बिल्कुल बेजा और ग़लत तौर पर रखलिया है, वो न हक़ीक़त में इलाह हैं न मअबूद.

رَبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ ع وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ

आई[२६]﴿२३﴾ क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वह ख़याल बांधे[२७]﴿२४﴾ तो आख़िरत और दुनिया सब का मालिक अल्लाह ही है[२८]﴿२५﴾

दूसरा रूकू

और कितने ही फ़रिश्ते हैं आसमानों में कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर जब कि अल्लाह इजाज़त दे दे जिसके लिये चाहे और पसन्द फ़रमाए[१]﴿२६﴾ बेशक वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते[२] मलायका (फ़रिश्तों) का नाम औरतों का सा रखते हैं[३]﴿२७﴾ और उन्हें इसकी कुछ ख़बर नहीं, वो तो निरे गुमान के पीछे हैं, और बेशक गुमान यक़ीन की जगह कुछ काम नहीं देता[४]﴿२८﴾ तो तुम उससे मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा[५] और उसने न चाही मगर दुनिया की ज़िन्दगी[६]﴿२९﴾ यहाँ तक उनके इल्म की पहुंच है[७] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहका और वह ख़ूब जानता है जिसने राह पाई﴿३०﴾ और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उनके किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत (अत्यन्त) अच्छा (सिला) इनआम अता फ़रमाए﴿३१﴾ वो जो बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं[८] मगर इतना कि गुनाह

(२५) यानी उनका बुतों को पूजना अक़्ल व इल्म व तालीमे इलाही के ख़िलाफ़, केवल अपने नफ़्स के इत्तिबाअ, हटधर्मी और वहम परस्ती की बिना पर है.

(२६) यानी किताबे इलाही और ख़ुदा के रसूल जिन्हों ने सफ़ाई के साथ बार बार यह बताया कि बुत मअबूद नहीं हैं और अल्लाह तआला के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं.

(२७) यानी काफ़िर जो बुतों के साथ झूटी उम्मीदें रखतें हैं कि वो उनके काम आएंगे. ये उम्मीदें बातिल हैं.

(२८) जिसे जो चाहे दे. उसी की इबादत करना और उसी को राज़ी रखना काम आएगा.

सूरए नज्म - दूसरा रूकू

(१) यानी फ़रिश्ते, जबकि वो अल्लाह की बारगाह में इज़्ज़त रखते हैं इसके बाद सिर्फ़ उसके लिए शफ़ाअत करेंगे जिसके लिये अल्लाह तआला की मर्ज़ी हो यानी तौहीद वाले मूमिन के लिये. तो बुतों से शफ़ाअत की उम्मीद रखना अत्यन्त ग़लत है कि न उन्हें हक़ तआला की बारगाह में क़ुर्ब हासिल, न काफ़िर शफ़ाअत के योग्य.

(२) यानी काफ़िर जो दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करते हैं.

(३) कि उन्हें ख़ुदा की बेटियाँ बताते हैं.

(४) सही बात और वास्तविकता इल्म और यक़ीन से मालूम होती है न कि वहम और गुमान से.

(५) यानी क़ुरआन पर ईमान से.

(६) आख़िरत पर ईमान न लाया कि उसका तालिब होता.

(७) यानी वो इस क़द्र कमइल्म और कमअक़्ल हैं कि उन्होंने आख़िरत पर दुनिया को प्राथमिकता दी है या ये मानी हैं कि उनके इल्म की इन्तिहा वहम और गुमान हैं जो उन्हों ने बाँध रखे हैं कि (मआज़ल्लाह) फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं उनकी शफ़ाअत करेंगे और इस बातिल वहम पर भरोसा करके उन्हों ने ईमान और क़ुरआन की पर्वाह न की.

(८) गुनाह वह अमल है जिसका करने वाला अज़ाब का मुस्तहिक़ हो और कुछ जानकारों ने फ़रमाया कि गुनाह वह है जिसका करने वाला सवाब से मेहरुम हो . कुछ का कहना है नाजायज़ काम करने को गुनाह कहते हैं. बहरहाल गुनाह की दो क़िस्में हैं सग़ीरा और कबीरा. कबीरा वो जिसका अज़ाब सख़्त हो और कुछ उलमा ने फ़रमाया कि सग़ीरा वो जिसपर सज़ा न हो. कबीरा वो जिसपर सज़ा हो, और फ़वाहिश वो जिसपर हद हो.

اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝ اَفَرَءَيْتَ
الَّذِيْ تَوَلّٰى ۝ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ۝ اَعِنْدَهٗ
عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ
مُوْسٰى ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ۝ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِّزْرَ اُخْرٰى ۝ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝
وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝
وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝
وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ
الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝ وَاَنَّ عَلَيْهِ
النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝ وَاَنَّهٗ
هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۝ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا ࣙالْاُوْلٰى ۝

के पास गए और रूक गए[९] बेशक तुम्हारे रब की मग़फ़िरत वसीअ है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है[१०] तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेट में हमल (गर्भ) थे, तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ[११] वह ख़ूब जानता है जो परहेज़गार हैं[१२]﴿३२﴾

तीसरा रूकू

तो क्या तुमने देखा जो फिर गया[१]﴿३३﴾ और कुछ थोड़ा सा दिया और रोक रखा[२]﴿३४﴾ क्या उसके पास ग़ैब (अज्ञात) का इल्म है तो वह देख रहा है[३]﴿३५﴾ क्या उसे उसकी ख़बर न आई जो सहीफ़ों(धर्मग्रन्थों) में है मूसा के[४]﴿३६﴾ और इब्राहीम के जो पूरे अहकाम(आदेश) बजा लाया[५]﴿३७﴾ कि कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ नहीं उठाती[६]﴿३८﴾ और यह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश[७]﴿३९﴾ और यह कि उसकी कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी[८]﴿४०﴾ फिर उसका भरपूर बदला दिया जायगा﴿४१﴾ और यह कि बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ इन्तिहा(अन्त) है[९]﴿४२﴾ और यह कि वही है कि जिसने हंसाया और रूलाया[१०]﴿४३﴾ और यह कि वही है जिसने मारा और जिलाया[११]﴿४४﴾ और यह कि उसी ने दो जोड़े बनाए नर और मादा﴿४५﴾ नुत्फ़े से जब डाला जाए[१२]﴿४६﴾ और यह कि उसी के ज़िम्मे है पिछला उठाना[१३] (दोबारा ज़िन्दा करना)﴿४७﴾ और यह कि उसीने ग़िना दी और क़नाअत दी﴿४८﴾ और यह कि वही शिअरा सितारे का रब है[१४]﴿४९﴾ और यह कि उसीने पहली आद को हलाक फ़रमाया[१५]﴿५०﴾

(९) कि इतना तो कबीरा गुनाहों से बचने की बरकत से माफ़ हो जाता है.

(१०) यह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो नेकियाँ करते थे और अपने कामों की तारीफ़ करते थे और कहते थे कि हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे हज --

(११) यानी घमण्ड से अपनी नेकियों की तारीफ़ न करो क्योंकि अल्लाह तआला अपने बन्दों के हालात का ख़ुद जानने वाला है. वह उनकी हस्ती की शुरूआत से आख़िर तक सारे हालात जानता है . इस आयत में बनावटीपन, दिखावे और अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनने को मना किया गया है. लेकिन अगर अल्लाह की नेअमत के ऐतिराफ़ और फ़रमाँबरदारी व इबादत और अल्लाह के शुक्र के लिय नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जायज़ है.

(१२) और उसी का जानना काफ़ी, वही जज़ा देने वाला है. दूसरों पर इज़हार और दिखावे का क्या फ़ायदा.

सूरए नज्म - तीसरा रूकू

(१) इस्लाम से. यह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन में इत्तिबाअ किया था. मुश्रिकों ने उसे शर्म दिलाई और कहा कि तूने बुज़ुर्गों का दीन छोड़ दिया और तू गुमराह हो गया. उसने कहा मैं ने अज़ाबे इलाही के डर से ऐसा किया तो शर्म दिलाने वाले काफ़िर ने उससे कहा कि अगर तू शिर्क की तरफ़ लौट आए और इस क़द्र माल मुझको दे तो तेरा अज़ाब मैं अपने ज़िम्मे लेता हूँ. इसपर वलीद इस्लाम से फिर गया और मुरतद हो गया और फिर से शिर्क में जकड़ गया. और जिस आदमी से माल देना ठहरा था उसने थोड़ा सा दिया और बाक़ी से मुकर गया.

(२) बाक़ी . यह भी कहा गया है कि यह आयत आस बिन वाइल सहमी के लिये उतरी. वह अक्सर कामों में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ताईद और हिमायत किया करता था और यह भी कहा गया है कि यह आयत अबू जहल के बारे में उतरी कि उसने कहा था अल्लाह की क़सम, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हमें बेहतरीन अख़लाक़ का हुक्म फ़रमाते हैं. इस सूरत में

وَثَمُوْدَاْ فَمَآ اَبْقٰى ۙ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ
كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۙ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۙ
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۚ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۚ
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۭ اَفَمِنْ هٰذَا
الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۙ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۙ وَ
اَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩

(٥٤) سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ (٣٧)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً
يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا
اَهْوَاۗءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝ وَلَقَدْ جَاۗءَهُمْ مِّنَ
الْاَنْۢبَاۗءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا

منزل ٧

और समूद को[१६] तो कोई बाक़ी न छोड़ा﴾५१﴿ और उनसे पहले नूह की क़ौम को[१७] बेशक वह उनसे भी ज़ालिम और सरकश (नाफ़रमान) थे[१८]﴾५२﴿ और उसने उलटने वाली बस्ती को नीचे गिराया[१९]﴾५३﴿ तो उसपर छाया जो कुछ छाया[२०]﴾५४﴿ तो ऐ सुनने वाले अपने रब की कौन सी नेअमतों में शक करेगा﴾५५﴿ यह[२१] एक डर सुनाने वाले हैं अगले डराने वालों की तरह[२२]﴾५६﴿ पास आई पास आने वाली[२३]﴾५७﴿ अल्लाह के सिवा उसका कोई खोलने वाला नहीं[२४]﴾५८﴿ तो क्या इस बात से तुम आश्चर्य करते हो[२५]﴾५९﴿ और हंसते हो और रोते नहीं[२६]﴾६०﴿ और तुम खेल में पड़े हो तो अल्लाह के लिये सजदा और उसकी बन्दगी करो[२७]﴾६१﴿

५४ - सूरए क़मर

सूरए क़मर मक्के में उतरी, इसमें ५५ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
पास आई क़यामत और[२] शक़ हो गया (चिर गया) चांद[३]﴾१﴿ और अगर देखें[४] कोई निशानी तो मुंह फेरते[५] और कहते हैं यह तो जादू है चला आता﴾२﴿ और उन्हों ने झुटलाया[६] और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[७] और हर काम क़रार पा चुका है[८]﴾३﴿ और बेशक उनके पास वो ख़बरें आईं[९] जिनमें काफ़ी रोक थी[१०]﴾४﴿ इन्तिहा को पहुंची

मानी ये हैं कि थोड़ा सा इक़रार किया और ज़रूरी सच्चाई से कम अदा किया और बाक़ी से मुंह फेरा यानी ईमान न लाया.

(३) कि दूसरा शख़्स उसके गुनाहों का बोझ उठा लेगा और उसके अज़ाब को अपने ज़िम्मे लेगा.

(४) यानी तौरात में.

(५) यह हज़रत इब्राहीम की विशेषता है कि उन्हें जो कुछ हुक्म दिया गया था वह उन्हों ने पूरी तरह अदा किया. इसमें बेटे का ज़िब्ह भी है और अपना आग में डाला जाना भी. और इसके अलावा और अहकाम भी. इसके बाद अल्लाह तआला उस मज़मून का ज़िक्र फ़रमाता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की किताब और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में बयान फ़रमाया गया था.

(६) और कोई दूसरे के गुनाह पर नहीं पकड़ा जाएगा. इस में उस व्यक्ति के क़ौल का रद है जो वलीद बिन मुग़ीरा के अज़ाब का ज़िम्मेदार बना था और उसके गुनाह अपने ऊपर लेने को कहता था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम के ज़माने से पहले लोग आदमी को दूसरे के गुनाह पर भी पकड़ लेते थे. अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया होता तो उसके क़ातिल की बजाय उसके बेटे या भाई या बीबी या ग़ुलाम को क़त्ल कर देते थे. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना आया तो आपने इससे मना फ़रमाया और अल्लाह तआला का यह आदेश पहुंचाया कि कोई किसी के गुनाह के लिये नहीं पकड़ा जाएगा.

(७) यानी अमल . मुराद यह है कि आदमी अपनी ही नेकियों से फ़ायदा उठाता है. यह मज़मून भी हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम के सहीफ़ों का है और कहा गया है कि उनकी ही उम्मतों के लिये ख़ास था. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया यह हुक्म हमारी शरीअत में आयत **"अलहक़्ना बिहिम ज़ुर्रियतहुम वमा अलतनाहुम मिन अमलिहिम मिन शैइन"** यानी हमने उनकी औलाद उनसे मिला दी और उनके अमल में उन्हें कुछ कमी न दी. (सूरए तूर, आयत २१) से मन्सूख़ हो गया. हदीस शरीफ़ में है कि एक व्यक्ति ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरी माँ की वफ़ात होगई अगर मैं उसकी तरफ़ से सदक़ा दूँ, क्या नफ़ा देगा? फ़रमाया हाँ. और बहुत सी हदीसों से साबित है कि मैयत को सदक़ात व ताआत से जो सवाब पहुंचाया जाता है, पहुंचता है और इसपर उम्मत के उलमा की सहमति है और इसीलिये मुसलमानों में रिवाज है कि वो अपने मरने वालों को सोयम, चहल्लुम, बरसी, उर्स वग़ैरह की फ़ातिहा में ताआत व सदक़ात से सवाब पहुंचाते रहते हैं. यह अमल हदीसों के मुताबिक़ है. इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि यहाँ इन्सान से काफ़िर मुराद हैं और मानी ये हैं कि काफ़िर को

कोई भलाई न मिलेगी. सिवाय उसके जो उसने की हो. दुनिया ही में रिज़्क़ की वुसअत या तन्दुरुस्ती वग़ैरह से उसका बदला दे दिया जाएगा ताकि आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा बाक़ी न रहे. और एक मानी इस आयत के मुफ़स्सिरों ने ये भी बयान किये हैं कि आदमी इन्साफ़ के तहत वही पाएगा जो उसने किया हो और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से जो चाहे अता फ़रमाए. और एक क़ौल मुफ़स्सिरों का यह भी है कि मूमिन के लिये दूसरा मूमिन जो नेकी करता है वह नेकी ख़ुद उसी मूमिन की गिनी जाती है जिसके लिये की गई हो क्योंकि उसका करने वाला नायब और वकील की तरह उसका क़ायम मुक़ाम होता है.

(८) आख़िरत में.

(९) आख़िरत में उसी की तरफ़ रुजू है वही आमाल की जज़ा देगा.

(१०) जिसे चाहा ख़ुश किया जिसे चाहा ग़मगीन किया.

(११) यानी दुनिया में मौत दी और आख़िरत में ज़िन्दगी अता की. या ये मानी कि बाप दादा को मौत दी और उनकी औलाद को ज़िन्दगी बख़्शी. या यह मुराद है कि काफ़िरों को कुफ़्र की मौत से हलाक किया और ईमानदारों को ईमानी ज़िन्दगी बख़्शी.

(१२) रहम में.

(१३) यानी मौत के बाद ज़िन्दा फ़रमाना.

(१४) जो कि गर्मी की सख़्ती में जौज़ा के बाद उदय होता है. एहले जाहिलियत उसकी पूजा करते थे. इस आयत में बताया गया है कि सब का रब अल्लाह है. उस सितारे का रब भी अल्लाह ही है लिहाज़ा उसी की इबादत करो.

(१५) तेज़ झक्कड़ वाली हवा से. आद दो हैं एक तो क़ौमे हूद, उसको पहली आद कहते हैं और उनके बाद वालों को दूसरी आद कि वो उन्हीं के वंशज थे.

(१६) जो सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम थी.

(१७) डुबा कर हलाक किया.

(१८) कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उनमें हज़ार बरस के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा रहे मगर उन्हों ने दावत क़ुबूल न की और उनकी सरकशी कम न हुई.

(१९) मुराद इस से क़ौमे लूत की बस्तियाँ हैं जिन्हे हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से उठाकर औंधा डाल दिया और उथल पुथल कर दिया.

(२०) यानी निशान किये हुए पत्थर बरसाए.

(२१) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(२२) जो अपनी क़ौमों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे.

(२३) यानी क़यामत.

(२४) यानी वही उसको ज़ाहिर फ़रमाएगा, या ये मानी हैं कि उसकी दहशत और सख़्ती को अल्लाह तआला के सिवा कोई दफ़अ नहीं कर सकता और अल्लाह तआला दफ़आ न फ़रमाएगा.

(२५) यानी क़ुरआन शरीफ़ का इन्कार करते हो.

(२६) उसके वादे और चेतावनी सुनकर.

(२७) कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं.

५४ - सूरए क़मर - पहला रूकू

(१) सूरए क़मर मक्की है सिवाय आयत **"सयुहज़मुल जमओ"** के. इस में तीन रूकू, पचपन आयतें और तीन सौ बयालीस कलिमे और एक हज़ार चार सौ तेईस अक्षर हैं.

(२) उसके नज़्दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई है कि नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कार से ...

(३) दो टुकड़े हो कर. शक़्क़ुल क़मर जिसका इस आयत में बयान है नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख़ुले चमत्कारों में से है. मक्के वालों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एक चमत्कार की मांग की थी तो हुज़ूर ने चाँद टुकड़े करके दिखाया. चाँद के दो हिस्से हो गए एक हिस्सा दूसरे से अलग होगया और फ़रमाया कि गवाह रहो. क़ुरैश ने कहा कि मुहम्मद ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है. इसपर उन्हीं की जमाअत के लोगों ने कहा कि अगर यह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चाँद के दो हिस्से नज़र न आए होंगे. अब जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उनकी प्रतीक्षा करो और मुसाफ़िरों से पूछो. अगर दूसरी जगहों पर भी चाँद शक़ होना देखा गया है तो बेशक चमत्कार है. चुनांन्चे सफ़र से आने वालों से पूछा. उन्होंने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चाँद के दो हिस्से हो गए थे. मुश्रिकों को इन्कार की गुन्जाइश न रही और वो जिहालत के तौर पर जादू ही जादू कहते रहे. सही हदीसों में इस महान चमत्कार का बयान है और ख़बर इस दर्जा शोहरत को पहुंच गई है कि इसका इन्कार करना अक़्ल और इन्साफ़ से दुश्मनी और बेदीनी है.

(४) मक्के वाले नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और उनकी सच्चाई पर दलालत करने वाली.

(५) उसकी तस्दीक़ और नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर ईमान लाने से.

تُغْنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى
شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ
الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى
الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ
وَّازْدُجِرَ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝
فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا
الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝
وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ
جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ
يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

منزل ٧

हुई हिकमत, फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले﴾५﴿ तो तुम उनसे मुंह फेर लो[११] जिस दिन बुलाने वाला[१२] एक सख़्त बे-पहचानी बात की तरफ़ बुलाएगा[१३]﴾६﴿ नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया वो टिड्डी हैं फैली हुई[१४]﴾७﴿ बुलाने वाले की तरफ़ लपकते हुए[१५] काफ़िर कहेंगे यह दिन सख़्त है﴾८﴿ उनसे[१६] पहले नूह की क़ौम ने झुटलाया तो हमारे बन्दे[१७] को झूटा बताया और बोले वह मजनून (पागल) है और उसे झिड़का[१८]﴾९﴿ तो उसने अपने रब से दुआ की कि मैं मग़लूब हूँ तू मेरा बदला ले﴾१०﴿ तो हमने आसमान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के बहते पानी से[१९]﴾११﴿ और ज़मीन चश्मे करके बहा दी[२०] तो दोनों पानी[२१] मिल गए उस मिक़दार (मात्रा) पर जो मुक़द्दर थी[२२]﴾१२﴿ और हमने नूह को सवार किया[२३] तख़्तों और कीलों वाली पर﴾१३﴿ कि हमारी निगाह के रूबरू बहती[२४] उसके सिले में[२५] जिसके साथ कुफ़्र किया गया था﴾१४﴿ और हमने उसे[२६] निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला[२७]﴾१५﴿ तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी धमकियाँ﴾१६﴿ और बेशक हमने क़ुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला[२८]﴾१७﴿ आद ने झुटलाया[२९] तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान[३०]﴾१८﴿ बेशक हमने उन पर एक

(६) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और उन चमत्कारों को जो अपनी आँखों से देखे.

(७) उन बातिल बातों के जो शैतान ने उनके दिल में बिठा रखी थीं कि अगर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चमत्कारों की तस्दीक़ की तो उनकी सरदारी सारे जगत में सर्वमान्य हो जाएगी और क़ुरैश की कुछ भी इज़्ज़त और क़द्र बाक़ी न रहेगी.

(८) वह अपने वक़्त पर ही होने वाला है कोई उसको रोकने वाला नहीं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दीन ग़ालिब होकर रहेगा.

(९) पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों को झुटलाने के कारण हलाक किये गए.

(१०) कुफ़्र और झुटलाने से और इन्तिहा दर्जे की नसीहत.

(११) क्योंकि वो नसीहत और डराने से सबक़ सीखने वाले नहीं.

(१२) यानी हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम बैतुल मक़दिस के गुम्बद पर खड़े होकर.

(१३) जिसकी तरह की सख़्ती कभी न देखी होगी और वह क़यामत और हिसाब की दहशत है.

(१४) हर तरफ़ ख़ौफ़ से हैरान, नहीं जानते कहाँ जाएं.

(१५) यानी हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम की आवाज़ की तरफ़.

(१६) यानी क़ुरैश से.

(१७) नूह अलैहिस्सलाम.

(१८) और धमकाया कि अगर तुम अपनी नसीहत और उपदेश और दावत से बाज़ न आए तो तुम्हें हम क़त्ल करदेंगे संगसार कर डालेंगे.

(१९) जो चालीस रोज़ तक न थमा.

(२०) यानी ज़मीन से इतना पानी निकला कि सारी ज़मीन चश्मों की तरह हो गई.

(२१) आसमान से बरसने वाले और ज़मीन से उबलने वाले.

(२२) और लौहे मेहफ़ूज़ में लिखा था कि तूफ़ान इस हद तक पहुंचेगा.

(२३) एक किश्ती.

(२४) हमारी हिफ़ाज़त में.

(२५) यानी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के.

رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝ تَنزِعُ النَّاسَ
كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَ
نُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن
مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝ فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا
وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَؤُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝
سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُوا
النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَنَبِّئْهُمْ
أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا
صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَ
نُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا
كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝

منزل ٧

सख़्त आंधी भेजी[३१] ऐसे दिन में जिसकी नहूसत उनपर हमेशा के लिये रही[३२] (१९) लोगों को यूं दे मारती थी कि मानो वो उखड़ी हुई खजूरों के डुन्ड (सूखे तने) हैं (२०) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान (२१) और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला (२२)

दूसरा रुकू

समूद ने रसूलों को झुटलाया[१] (२३) तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की ताबेदारी करें[२] जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं[३] (२४) क्या हम सब में से उसपर[४] ज़िक्र उतारा गया[५] बल्कि यह सख़्त झूटा इतरौना (शेख़ीबाज़) है[६] (२५) बहुत जल्द कल जान जाएंगे[७] कौन था बड़ा झूटा इतरौना (२६) हम नाक़ा भेजने वाले हैं उनकी जांच को[८] तो ऐ सालेह तू राह देख[९] और सब्र कर[१०] (२७) और उन्हें ख़बर दे दे कि पानी उनमें हिस्सों से है[११] हर हिस्से पर वह हाज़िर हो जिसकी बारी है[१२] (२८) तो उन्होंने अपने साथी को[१३] पुकारा तो उसने[१४] लेकर उसकी कूंचें काट दीं[१५] (२९) फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान[१६] (३०) बेशक हमने उनपर एक चिंघाड़ भेजी[१७] जभी वो हो गए जैसे घेरा बनाने वाले की बची हुई घास सूखी रौंदी हुई[१८] (३१) और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला (३२) लूत की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया (३३)

(२६) यानी उस वाक़ए को कि काफ़िर डुबो कर हलाक कर दिये गए और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को निजात दी गई और कुछ मुफ़स्सिरों के नज़्दीक "तरकनाहा" की ज़मीर किश्ती की तरफ़ पलटती है. क़तादह से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने उस किश्ती को सरज़मीने जज़ीरा में और कुछ के नज़्दीक जूदी पहाड़ पर मुद्दतों बाक़ी रखा, यहाँ तक कि हमारी उम्मत के पहले लोगों ने उसको देखा.

(२७) जो नसीहत माने और इबरत हासिल करे.

(२८) इस आयत में क़ुरआन शरीफ़ की तालीम और तअल्लुम और उसके साथ लगे रहने और उसको कन्ठस्त करने की तर्ग़ीब है और यह भी मालूम होता है कि क़ुरआन याद करने वाले की अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद होती है. और इसका याद करना आसान बनादेने का ही फल है कि बच्चे तक इसको याद करलेते हैं सिवाय इसके कोई मज़हबी किताब ऐसी नहीं है जो याद की जाती हो और सहूलत से याद हो जाती हो.

(२९) अपने नबी हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को, इसपर वह अज़ाब में जकड़े गए.

(३०) जो अज़ाब उतरने से पहले आचुके थे.

(३१) बहुत तेज़ चलने वाली निहायत ठण्डी सख़्त सन्नाटे वाली.

(३२) यहाँ तक कि उनमें कोई न बचा, सब हलाक होगए और वह दिन महीने का पिछला बुध था.

सूरए क़मर - दूसरा रुकू

(१) अपने नबी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का इन्कार करके और उनपर ईमान न लाकर.

(२) यानी हम बहुत से होकर एक आदमी के ताबे हो जाएं. हम ऐसा न करेंगे क्योंकि अगर ऐसा करें.

(३) यह उन्होंने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का कलाम लौटाया. आपने उनसे फ़रमाया था कि अगर तुमने मेरा इत्तिबाअ न किया तो तुम गुमराह और नासमझ हो.

(४) यानी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर.

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَٰهُم
بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى مَن
شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا۟ بِٱلنُّذُرِ ۝
وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟
عَذَابِى وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ
جَآءَ ءَالَ فِرْعَوْنَ ٱلنُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كُلِّهَا
فَأَخَذْنَٰهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ
أُو۟لَٰٓئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَآءَةٌ فِى ٱلزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ ٱلْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ ٱلدُّبُرَ ۝
بَلِ ٱلسَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَٱلسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ۝
إِنَّ ٱلْمُجْرِمِينَ فِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ۝ يَوْمَ يُسْحَبُونَ

बेशक हमने उनपर[१९] पथराव भेजा[२०] सिवाय लूत के घर वालों के[२१] हमने उन्हें पिछले पहर[२२] बचा लिया﴾३४﴿ अपने पास की नेअमत फ़रमा कर, हम यूंही सिला देते हैं उसे जो शुक्र करे[२३]﴾३५﴿ और बेशक उसने[२४] उन्हें हमारी गिरफ़्त से[२५] डराया तो उन्होंने डर के फ़रमानों में शक किया[२६]﴾३६﴿ उन्होंने उसे उसके मेहमानों से फुसलाना चाहा[२७] तो हमने उनकी आँखें मिट दीं(चौपट कर दीं)[२८] फ़रमाया चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान[२९]﴾३७﴿ और बेशक सुबह तड़के उनपर ठहरने वाला अज़ाब आया[३०]﴾३८﴿ तो चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान﴾३९﴿ और बेशक हमने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला﴾४०﴿

तीसरा रूकू

और बेशक फ़िरऔन वालों के पास रसूल आए[१]﴾४१﴿ उन्होंने हमारी सब निशानियाँ झुटलाईं[२] तो हमने उनपर[३] गिरफ़्त की जो एक इज़्ज़त वाले और अज़ीम क़ुदरत वाले की शान थी﴾४२﴿ क्या[४] तुम्हारे काफ़िर उनसे बेहतर हैं[५] या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है[६]﴾४३﴿ या ये कहते हैं[७] कि हम सब मिलकर बदला ले लेंगे[८]﴾४४﴿ अब भगाई जाती है यह जमाअत[९] और पीठें फेर देंगे[१०]﴾४५﴿ बल्कि उनका वादा क़यामत पर है[११] और क़यामत निहायत(अत्यन्त) कड़वी और सख़्त कड़वी[१२]﴾४६﴿ बेशक मुजरिम गुमराह और दीवाने हैं[१३]﴾४७﴿ जिस दिन आग

(५) वही नाज़िल की गई और कोई हम में इस क़ाबिल ही न था.
(६) कि नबुव्वत का दावा करके बड़ा बनना चाहता है. अल्लाह तआला फ़रमाता है.
(७) जब अज़ाब में जकड़े जाएंगे.
(८) यह उस पर फ़रमाया गया कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने आप से कहा था कि आप पत्थर से एक ऊंटनी निकाल दीजिये. आपने उनसे ईमान की शर्त करके यह बात मंज़ूर कर ली थी. चुनांचे अल्लाह तआला ने ऊंटनी भेजने का वादा फ़रमाया और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से इरशाद किया.
(९) कि वो क्या करते हैं और उनके साथ क्या किया जाता है.
(१०) उनकी यातना पर.
(११) एक दिन उनका, एक दिन ऊंटनी का.
(१२) जो दिन ऊंटनी का है उस दिन ऊंटनी हाज़िर हो और जो दिन क़ौम का है उस दिन क़ौम पानी पर हाज़िर हो.
(१३) यानी क़दार बिन सालिफ़ को ऊंटनी को क़त्ल करने के लिये.
(१४) तेज़ तलवार.
(१५) और उसको क़त्ल कर डाला.
(१६) जो अज़ाब उतरने से पहले मेरी तरफ़ से आए थे और अपने वक़्त पर वाक़े हुए.
(१७) यानी फ़रिश्ते की हौलनाक आवाज़.
(१८) यानी जिस तरह चरवाहे जंगल में अपनी बकरियों की हिफ़ाज़त के लिये घास काँटों का घेरा बना लेते हैं उसमें से कुछ घास बच रह जाती है और वह जानवरों के पाँव में रुंध कर कण कण हो जाती है. यह हालत उनकी हो गई.
(१९) इस झुटलाने की सज़ा में.
(२०) यानी उनपर छोटे छोटे संगरेज़े बरसाए.
(२१) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम और उनकी दोनों साहिबज़ादियाँ इस अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहीं.
(२२) यानी सुबह होने से पहले.

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝٤٨ اِنَّا
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝٤٩ وَمَا اَمْرُنَا اِلَّا وَاحِدَةٌ
كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝٥٠ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٥١ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ۝٥٢ وَكُلُّ
صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝٥٣ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ
نَهَرٍ ۝٥٤ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٥٥

اٰيَاتُهَا ٧٨ — (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ (٩٧) — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ ۝١ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝٢ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝٣ عَلَّمَهُ
الْبَيَانَ ۝٤ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥ وَّالنَّجْمُ وَ
الشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧
اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝٨ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا
تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠

में अपने मुंहों पर घसीटे जाएंगे, और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़ की आंच﴾४८﴿ बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाइ[१४]﴾४९﴿ और हमारा काम तो एक बात की बात है जैसे पलक मारना[१५]﴾५०﴿ और बेशक हमने तुम्हारी वज़अ के[१६] हलाक कर दिये तो है कोई ध्यान करने वाला[१७]﴾५१﴿ और उन्होंने जो कुछ किया सब किताबों में है[१८]﴾५२﴿ और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है[१९]﴾५३﴿ बेशक परहेज़गार बाग़ों और नहर में हैं﴾५४﴿ सच की मजलिस में अज़ीम क़ुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर[२०]﴾५५﴿

५५ - सूरए रहमान

सूरए रहमान मदीने में उतरी, इसमें ७८ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

रहमान ने﴾१﴿ अपने मेहबूब को क़ुरआन सिखाया[२]﴾२﴿ इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया﴾३﴿ माकाना व मायकून (जो हुआ और जो होने वाला है) का बयान उन्हें सिखाया[३]﴾४﴿ सूरज और चांद हिसाब से हैं[४]﴾५﴿ और सब्ज़े और पेड़ सज्दे करते हैं[५]﴾६﴿ और आसमानों को अल्लाह ने बलन्द किया[६] और तराज़ू रखी[७]﴾७﴿ कि तराज़ू में बेएतिदाली न करो[८]﴾८﴿ और इन्साफ़ के साथ तौल क़ायम करो और वज़न न घटाओ﴾९﴿ और ज़मीन रखी मख़लूक़ के लिये[९]﴾१०﴿

(२३) अल्लाह तआला की नेअमतों का और शुक्रगुज़ार वह है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनकी फ़रमाँबरदारी करे.
(२४) यानी हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने.
(२५) हमारे अज़ाब से.
(२६) और उनकी तस्दीक़ न की.
(२७) और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा कि आप हमारे और अपने मेहमानों के बीच न पड़ें और उन्हें हमारे हवाले करदें और यह उन्होंने ग़लत नीयत और बुरे इरादे से कहा था और मेहमान फ़रिश्ते थे उन्होंने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम से कहा कि आप उन्हें छोड़ दीजिये, घर में आने दीजिये. जभी वो घर में आए तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने एक दस्तक दी.
(२८) और वो फ़ौरन अन्धे हो गए और आँखें ऐसी नापैद हो गईं कि निशान भी बाक़ी न रहा. चेहरे सपाट हो गए. आश्चर्य चकित मारे मारे फिरते थे दरवाज़ा हाथ न आता था. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने उन्हें दरवाज़े से बाहर किया.
(२९) जो तुम्हें हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने सुनाए थे.
(३०) जो अज़ाब आख़िरत तक बाक़ी रहेगा.

सूरए क़मर - तीसरा रूकू

(१) हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम, तो फ़िरऔनी उनपर ईमान न लाए.
(२) जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दी गई थीं.
(३) अज़ाब के साथ.
(४) ऐ मक्के वालो.
(५) यानी उन क़ौमों से ज़्यादा क़वी और मज़बूत हैं या कुफ़्र और दुश्मनी में कुछ उनसे कमे हैं.
(६) कि तुम्हारे कुफ़्र की पकड़ न होगी और तुम अल्लाह के अज़ाब से अम्न में रहोगे.

(७) मक्के के काफ़िर.
(८) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से.
(९) मक्के के काफ़िरों की.
(१०) और इस तरह भागेंगे कि एक भी क़ायम न रहेगा. बद्र के रोज़ जब अबू जहल ने कहा कि हमसब मिलकर बदला ले लेंगे, तब यह आयत उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िरह पहन कर यह आयत तिलावत फ़रमाई. फिर ऐसा ही हुआ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़त्ह हुई और काफ़िर परास्त हुए.
(११) यानी उस अज़ाब के बाद उन्हें क़यामत के दिन के अज़ाब का वादा है.
(१२) दुनिया के अज़ाब से उसका अज़ाब बहुत ज़्यादा सख़्त है.
(१३) न समझते हैं न राह पाते हैं. (तफ़सीरे कबीर)
(१४) अल्लाह की हिकमत के अनुसार. यह आयत क़दरियों के रद में उतरी जो अल्लाह की क़ुदरत के इन्कारी हैं और दुनिया में जो कुछ होता है उसे सितारों वग़ैरह की तरफ़ मन्सूब करते हैं. हदीसों में उन्हें इस उम्मत का मजूस कहा गया है और उनके पास उठने बैठने और उनके साथ बात चीत करने और वो बीमार हो जाएं तो उनकी पूछ ताछ करने और मर जाएं तो उनके जनाज़े में शरीक होने से मना फ़रमाया गया है और उन्हें दज्जाल का साथी फ़रमाया गया. वो बदतरीन लोग हैं.
(१५) जिस चीज़ के पैदा करने का इरादा हो वह हुक्म के साथ ही हो जाती है.
(१६) काफ़िर पहली उम्मतों के.
(१७) जो इब्रत हासिल करें और नसीहत मानें.
(१८) यानी बन्दों के सारे कर्म आमाल के निगहबान फ़रिश्तों के लेखों में हैं.
(१९) लौहे मेहफ़ूज़ में.
(२०) यानी उसकी बारगाह के प्यारे चहीते हैं.

५५ - सूरए रहमान - पहला रूकू

(१) सूरए रहमान मक्की है इसमें तीन रुकूअ, छिहत्तर या अठहत्तर आयतें, तीन सौ इक्यावन कलिमे और एक हज़ार छ सौ छत्तीस अक्षर हैं.
(२) जब आयत "उस्जुदू लिर्रहमाने" यानी रहमान को सजदा करो (सूरए अलफ़ुरक़ान, आयत ६०) उतरी, मक्के के काफ़िरों ने कहा, रहमान क्या है हम नहीं जानते. इसपर अल्लाह तआला ने अर्रहमान उतारी कि रहमान जिसका तुम इन्कार करते हो वही है जिसने क़ुरआन नाज़िल किया और एक क़ौल है कि मक्के वालों ने जब कहा कि मुहम्मद को कोई बशर सिखाता है तो यह आयत उतरी और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि रहमान ने क़ुरआन अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सिखाया. (ख़ाज़िन)
(३) इन्सान से इस आयत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुराद हैं. और बयान से माकाना वमा यकून का बयान क्योंकि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अगलों पिछलों की ख़बरें देते थे. (ख़ाज़िन)
(४) कि निर्धारित तक़दीर के साथ अपने बुर्जों और मंज़िलों में यात्रा करते हैं और उसमें सृष्टि के लिये फ़ायदे हैं. औक़ात के हिसाब से बरसों और महीनों की गिनती उन्हीं पर है.
(५) अल्लाह के हुक्म के आधीन हैं.
(६) और अपने फ़रिश्तों का ठिकाना और अपने अहकाम का केन्द्र बनाया.
(७) जिससे चीज़ों का वज़न किया जाए और उनकी मात्राएं मालूम हों ताकि लैन दैन में न्याय हो सके.
(८) ताकि किसी का अधिकार न मारा जाए.
(९) जो उसमें रहती बस्ती है ताकि उसमें आराम करें और फ़ायदे उठाएं.
(१०) जिनमें बहुत बरकत है.
(११) गेहूँ जौ वग़ैरह के समान.
(१२) इस सूरत में यह आयत ३१ बार आई है. बारबार नेअमतों का ज़िक्र फ़रमाकर यह इरशाद फ़रमाया गया है कि अपने रब की कौन सी नेअमत को झुटलाओगे. यह हिदायत और सीख का बेहतरीन अन्दाज़ है ताकि सुनने वाले की अन्तरात्मा को तम्बीह हो और उसे अपने जुर्म और नाशुक्री का हाल मालूम हो जाए कि उसने कितनी नेअमतों को झुटलाया है और उसे शर्म आए और वह

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝
وَخَلَقَ الْجَانَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
يَلْتَقِيَانِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ
فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَّيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ
ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ

منزل ٧

उसमें मेवे और ग़लाफ़ वाली खजूरें[१०] ﴾११﴿ और भुस के साथ अनाज[११] और ख़ुश्बू के फूल ﴾१२﴿ तो ऐ जिन्न व इन्स(मानव), तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे[१२] ﴾१३﴿ आदमी को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठीकरी[१३] ﴾१४﴿ और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के लूके (लपट) से[१४] ﴾१५﴿ तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾१६﴿ दोनों पूरब का रब और दोनों पश्चिम का रब[१५] ﴾१७﴿ तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾१८﴿ उसने दो समन्दर बहाए[१६] कि देखने में मालूम हों मिले हुए[१७] ﴾१९﴿ और है उनमें रोक[१८] कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता[१९] ﴾२०﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾२१﴿ उनमें से मोती और मूंगा निकलता है ﴾२२﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾२३﴿ और उसी की हैं वो चलने वालियाँ कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़[२०] ﴾२४﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾२५﴿

दूसरा रुकू

ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है[१] ﴾२६﴿ और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात अज़मत और बुज़ुर्गी वाला[२] ﴾२७﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾२८﴿ उसी के मंगता हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं[३] उसे हर

शुक्र अदा करने और फ़रमाँबरदारी की तरफ़ माइल हो और यह समझ ले कि अल्लाह तआला की अनगिन्त नेअमतें उस पर हैं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत मैंने जिन्नात को सुनाई, वो तुमसे अच्छा जवाब देते थे. जब मैं आयत "तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे" पढ़ता, वो कहते ऐ रब हमारे हम तेरी किसी नेअमत को नहीं झुटलाते, तुझे हम्द है. (तिर्मिज़ी)

(१३) यानी सूखी मिट्टी से जो बजाने से बजे और कोई चीज़ खनखनाती आवाज़ दे. फिर उस मिट्टी को तर किया कि वह गारे की तरह हो गई फिर उसको गलाया कि वह काली कीच तरह हो गई.

(१४) यानी ख़ालिस बग़ैर धुंए वाले शोले से.

(१५) दोनों पूरब और दोनों पच्छिम से मुराद सूरज के उदय होने के दोनों स्थान हैं गर्मी के भी और जाड़े के भी. इसी तरह अस्त होने के भी दोनों स्थान हैं.

(१६) मीठा और ख़ारी.

(१७) न उनके बीच ज़ाहिर में कोई दीवार न कोई रोक.

(१८) अल्लाह तआला की क़ुदरत से.

(१९) हर एक अपनी सीमा पर रहता है और किसी का स्वाद नहीं बदलता.

(२०) जिन चीज़ों से वो किश्तियाँ बनाई गईं वो भी अल्लाह तआला ने पैदा कीं और उनको तर्कीब देने और किश्ती बनाने और सन्नाई करने की अक़्ल भी अल्लाह तआला ने पैदा की और दरियाओं में उन किश्तियों का चलना और तैरना यह सब अल्लाह तआला की क़ुदरत से है.

सूरए रहमान - दूसरा रुकू

(१) हर जानदार वग़ैरह हलाक होने वाला है.

(२) कि वह सृष्टि के नाश के बाद उन्हें ज़िन्दा करेगा और हमेशा की ज़िन्दगी अता करेगा और ईमानदारों पर लुत्फ़ो करम करेगा.

(३) फ़रिश्ते हों या जिन्न या इन्सान या और कोई प्राणी, कोई भी उससे बेनियाज़ नहीं. सब उसकी मेहरबानी के मोहताज हैं और हर सूरत में उसकी बारगाह में सवाली.

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ
أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ
نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ
فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا

दिन एक काम है[४] ﴾२९﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾३०﴿ जल्द सब काम निपटाकर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गिरोह[५] ﴾३१﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾३२﴿ ऐ जिन्न व इन्स के गिरोह, अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ, जहाँ निकल कर जाओगे उसी की सल्तनत है[६] ﴾३३﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾३४﴿ तुम पर[७] छोड़ी जाएगी बेधुंएं की आग की लपट और बेलपट का काला धुंआं[८] तो फिर बदला न ले सकोगे[९] ﴾३५﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾३६﴿ फिर जब आसमान फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा[१०] जैसे सुर्ख़ नरी (बकरे की रंगी हुई खाल) ﴾३७﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾३८﴿ तो उस दिन[११] गुनाहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से[१२] ﴾३९﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴾४०﴿ मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे[१३] तो माथा और पाँव पकड़ कर जहन्नम में डाले जाएंगे[१४] ﴾४१﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे[१५] ﴾४२﴿ यह है वह जहन्नम जिसे मुजरिम झुटलाते हैं ﴾४३﴿ फेरे

(४) यानी वह हर वक़्त अपनी क़ुदरत के निशान ज़ाहिर फ़रमाता है किसी को रोज़ी देता है, किसी को मारता है, किसी को जिलाता है, किसी को इज़्ज़त देता है, किसी को ज़िल्लत, किसी को ग़नी करता है, किसी को मोहताज, किसी के गुनाह बख़्शता है, किसी की तक्लीफ़ दूर करता है. कहा गया है कि यह आयत यहूदियों के रद में उतरी जो कहते थे कि अल्लाह तआला सनीचर के दिन कोई काम नहीं करता. उनके क़ौल का खुला रद फ़रमाया गया. कहते हैं कि एक बादशाह ने अपने वज़ीर से इस आयत के मानी पूछे. उसने एक दिन का समय मांगा और बड़ी चिन्ता और दुख की हालत में अपने मकान पर आया. उसके एक हब्शी ग़ुलाम ने वज़ीर को परेशान देखकर कहा ऐ मेरे मालिक आपको क्या मुसीबत पेश आई. वज़ीर ने बयान किया तो ग़ुलाम ने कहा कि इसके मानी मैं बादशाह को समझा दूंगा. वज़ीर ने उसको बादशाह के सामने पेश किया तो ग़ुलाम ने कहा ऐ बादशाह अल्लाह की शान यह है कि वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में और मुर्दे से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को और बीमार को स्वास्थ्य देता है और स्वस्थ को बीमार करता है. मुसीबत ज़दा को रिहाई देता है और बेग़मों को मुसीबत में जकड़ता है. इज़्ज़त वालों को ज़लील करता है और ज़लीलों को इज़्ज़त देता है, मालदारों को मोहताज करता है, मोहताजों को मालदार, बादशाह ने ग़ुलाम का जवाब पसन्द किया और वज़ीर को हुक्म दिया कि ग़ुलाम को विज़ारत का ख़िलअत पहनाए. ग़ुलाम ने वज़ीर से कहा ऐ आक़ा यह भी अल्लाह की एक शान है.

(५) जिन्न व इन्स के.

(६) तुम उससे कहीं भाग नहीं सकते.

(७) क़यामत के दिन जब तुम क़ब्रों से निकलोगे.

(८) इमाम अहमद रज़ा ने फ़रमाया लपट में धुवाँ हो तो उसके सब हिस्से जलाने वाले न होंगे कि ज़मीन के हिस्से शामिल हैं जिनसे धुआँ बनता है और धुंऐं में लपट हो तो वह पूरा सियाह और अंधेरा न होगा कि लपट की रंगत शामिल है उनपर बेधुंवे की लपट भेजी जाएगी जिसके सब हिस्से जलाने वाले होंगे और बेलपट का धुवाँ जो सख़्त काला अंधेरा और उसी के करम की पनाह...

(९) उस अज़ाब से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे बल्कि यह लपट और धुवाँ तुम्हें मेहशर की तरफ़ ले जाएंगे. पहले से इसकी ख़बर दे देना यह भी अल्लाह तआला का करम है ताकि उसकी नाफ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आपको उस बला से बचा सको.

(१०) कि जगह जगह से शक़ और रंगत का सुर्ख़.

(११) यानी जबकि मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और आसमान फटेगा.

(१२) उस रोज़ फ़रिश्ते मुजरिमों से पूछेंगे नहीं, उनकी सूरतें ही देखकर पहचान लेंगे. और सवाल दूसरे वक़्त होगा जब मैदाने मेहशर

करेंगे इसमें और इन्तिहा के जलते खौलते पानी में[१६] ﴿४४﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿४५﴾

तीसरा रूकू

और जो अपने रब के हुज़ूर (समक्ष) खड़े होने से डरे[१] उसके लिये दो जन्नतें हैं[२] ﴿४६﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿४७﴾ बहुत सी डालों वालियाँ[३] ﴿४८﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿४९﴾ उनमें दो चश्मे बहते हैं[४] ﴿५०﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿५१﴾ उनमें हर मेवा दो दो क़िस्म का ﴿५२﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿५३﴾ और ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए जिनका अस्तर क़नादीज़ का[५] और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो[६] ﴿५४﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿५५﴾ उन बिछौनों पर वो औरतें हैं कि शौहर के सिवा किसी को आँख उठा कर नहीं देखतीं[७] उनसे पहले उन्हें न छुआ किसी आदमी और न जिन्न ने ﴿५६﴾ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे ﴿५७﴾ गोया वो लअल और याक़ूत और मूंगा हैं[८] ﴿५८﴾ तो अपने रब की कौन सी

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ
مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾
ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ
بَطَاۤىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَاۤنٌّ ﴿٥٦﴾
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ
وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾
هَلْ جَزَاۤءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ

में जमा होंगे.

(१३) कि उनके मुंह काले और आँखें नीली होंगी.

(१४) पाँव पीठे के पीछे से लाकर पेशानियों से मिला दिये जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाले जाएंगे और यह भी कहा गया है कि कुछ लोग पेशानीयों से घसीटे जाएंगे, कुछ पाँव से.

(१५) और उनसे कहा जाएगा.

(१६) कि जब जहन्नम की आग से जल भुनकर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें जलता खौलता पानी पिलाया जाएगा और उसके अज़ाब में मुब्तिला किये जाएंगे. ख़ुदा की नाफ़रमानी के इस परिणाम से आगाह करना अल्लाह की नेअमत है.

सूरए रहमान - तीसरा रूकू

(१) यानी जिसे अपने रब के हुज़ूर क़यामत के दिन मेहशर के मैदान में हिसाब के लिये खड़े होने का डर हो और वह गुनाह छोड़ दे और अल्लाह के अहकाम पर अमल करे.

(२) जन्नते अदन और जन्नते नईम और यह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिला और एक वासना त्यागने का इनआम.

(३) और हर डाली में क़िस्म क़िस्म के मेवे.

(४) एक मीठे पानी का और एक पवित्र शराब का या एक तस्नीम दूसरा सलसबील.

(५) यानी संगीन रेशम का जब अस्तर का यह हाल है तो अबरा कैसा होगा, सुब्हानल्लाह !

(६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि दरख़्त इतना क़रीब होगा कि अल्लाह तआला के प्यारे खड़े बैठे उसका मेवा चुन लेंगे.

(७) जन्नती बीबियाँ अपने शौहर से कहेंगी मुझे अपने रब के इज़्ज़तो जलाल की क़सम, जन्नत में मुझे कोई चीज़ तुझ से ज़्यादा अच्छी नहीं मालूम होती, तो उस ख़ुदा की हम्द है जिसने तुझे मेरा शौहर किया और मुझे तेरी बीबी बनाया.

(८) सफ़ाई और ख़ुशरंगी में. हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती हूरों के शरीर की नफ़ासत का यह हाल है कि उनकी पिंडली का गूदा इस तरह नज़र आता है जिस तरह बिल्लौर की सुराही में लाल शराब.

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾
مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ
مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾
فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰی
رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِیٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِی الْجَلٰلِ
وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

नेअमत झुटलाओगे﴾५९﴿ नेकी का बदला क्या है मगर नेकी[९]﴾६०﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾६१﴿ और इनके सिवा दो जन्नतें और हैं[१०]﴾६२﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾६३﴿ निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही है﴾६४﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾६५﴿ उनमें दो चश्मे हैं छलकते हुए﴾६६﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾६७﴿ उनमें मेवे और खजूरें और अनार हैं﴾६८﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾६९﴿ उनमें औरतें हैं आदत की नेक, सूरत की अच्छी﴾७०﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾७१﴿ हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन[११]﴾७२﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओगे﴾७३﴿ उनसे पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने﴾७४﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओग[१२]﴾७५﴿ तकिया लगाए हुए सब्ज़ बिछौनों और मुनक़्क़श ख़ूबसूरत चांदनियों पर﴾७६﴿ तो अपने रब की कौन सी नेअमत झुटलाओग﴾७७﴿ बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अज़मत और बुज़ुर्गी वाला﴾७८﴿

(९) यानी जिसने दुनिया में नेकी की उसकी जज़ा आख़िरत में अल्लाह का एहसान है. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो लाइलाहा इल्लल्लाह का क़ायल हो और शरीअते मुहम्मदिया पर आमिल, उसकी जज़ा जन्नत है.

(१०) हदीस शरीफ़ में है कि दो जन्नतें तो ऐसी हैं जिनके बर्तन और सामान चाँदी के हैं और दो जन्नतें ऐसी हैं जिनके सामान और बर्तन सोने के. और एक क़ौल यह भी है कि पहली दो जन्नतें सोने और चाँदी की और दूसरी याक़ूत और ज़बरजद की.

(११) कि उन ख़ैमों से बाहर नहीं निकलतीं यह उनकी शराफ़त और करामत है. हदीस शरीफ़ में है कि अगर जन्नती औरतों में से किसी एक की झलक ज़मीन की तरफ़ पड़ जाए तो आसमान और ज़मीन के बीच की तमाम फ़ज़ा रौशन हो जाए और ख़ुश्बू से भर जाए और उनके ख़ैमे मोती और ज़बरजद के होंगे.

५६ - सूरए वाक़िआ

सूरए वाक़िआ मक्का में उतरी, इसमें ९६ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1] जब होलेगी वह होने वाली[2]﴿१﴾ उस वक़्त उसके होने में किसी इन्कार की गुन्जायश न होगी﴿२﴾ किसी को पस्त करने वाली[3] किसी को बलन्दी देने वाली[4]﴿३﴾ जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर[5]﴿४﴾ और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा होकर﴿५﴾ तो हो जाएंगे जैसे रौज़न की धूप में ग़ुबार के बारीक ज़र्रे फैले हुए﴿६﴾ और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे﴿७﴾ तो दाएं तरफ़ वाले[6] कैसे दाएं तरफ़ वाले[7]﴿८﴾और बाईं तरफ़ वाले[8] कैसे बाईं तरफ़ वाले[9]﴿९﴾और जो सबक़त ले गए[10] वो तो सबक़त ही ले गए[11]﴿१०ट वही बारगाह के मुक़र्रब हैं﴿११﴾ चैन के बाग़ों म﴿१२﴾ अगलों में से एक गिरोह﴿१३﴾ और पिछलों में से थोड़े[12]﴿१४﴾ जड़ाऊ तख़्तों पर होंगे[13]﴿१५﴾ उनपर तकिया लगाए हुए आमने सामने[14]﴿१६﴾ उनके गिर्द लिये फिरेंगे[15] हमेशा रहने वाले लड़के[16]﴿१७﴾ कूज़े और आफ़ताबे और जाम और आँखों के सामने बहती शराब कि उससे न उन्हें सरदर्द हो﴿१८﴾ न होश में फ़र्क़ आए[17]﴿१९﴾ और मेवे जो पसन्द करें﴿२०﴾ और

(٩٦) سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٦) — اٰيَاتُهَا ٩٦ — رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝٦
وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝٧ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۵
مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۵
مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝١٠
أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٤
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِأَكْوَابٍ
وَّأَبَارِيْقَ ۵ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَّا يُصَدَّعُوْنَ

(१२) और उनके शौहर जन्नत में ऐश करेंगे.

५० - सूरए वाक़िआ - पहला रूकू

(१) सूरए वाक़िआ मक्की है सिवाय आयत "अफ़-बिहाज़ल हदीसे" और आयत "सुल्लतुम मिनल अव्वलीना" के. इस सूरत में तीन रूकू और छियानवे या सत्तानवे या निनानवे आयतें तीन सौ अठहत्तर कलिमे और एक हज़ार सात सौ तीन अक्षर हैं. इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर रात सूरए वाक़िआ को पढ़े वह फ़ाक़े से हमेशा मेहफ़ूज़ रहेगा. (ख़ाज़िन)
(२) यानी जब क़यामत क़ायम हो जो ज़रूर होने वाली है.
(३) जहन्नम में गिरा कर.
(४) जन्नत में दाख़िले के साथ. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि जो लोग दुनिया में ऊंचे थे क़यामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुनिया में पस्ती में थे उनके दर्जे बलन्द करेगी और यह भी कहा गया है कि गुनाहगारों को पस्त करेगी और फ़रमाँबरदारों को बलन्द.
(५) यहाँ तक कि उसकी सारी इमारतें गिर जाएंगी.
(६) यानी जिनके आमालनामे उनके दाएं हाथ में दिये जाएंगे.
(७) यह उनकी शान की ताज़ीम के लिये फ़रमाया. वो बड़ी शान रखते हैं, सईद हैं, जन्नत में दाख़िल होंगे.
(८) जिनके आमालनामे बाएं हाथों में दिये जाएंगे.
(९) यह उनकी ज़िल्लत के लिये फ़रमाया कि वो शक़ी हैं जहन्नम में दाख़िल होंगे.
(१०) नेकियों में.
(११) जन्नत में दाख़िल होने में. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि वो हिजरत में पहल करने वाले हैं कि आख़िरत में जन्नत की तरफ़ पहल करेंगे. एक क़ौल यह है कि वो इस्लाम की तरफ़ पहल करने वाले हैं और एक क़ौल यह है कि वो मुहाजिरीन और अन्सार हैं, जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ें पढ़ीं.
(१२) यानी साबिक़ीन. अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मतें हैं हज़रत आदम

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ١٩ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ٢٠
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٢١ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ٢٢
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ٢٣ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ٢٤ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ٢٥
اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ٢٦ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَا
اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ٢٧ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ٢٨ وَّطَلْحٍ
مَّنْضُوْدٍ ٢٩ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ٣٠ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ٣١ وَّ
فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ٣٢ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ٣٣
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ٣٤ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ٣٥
فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ٣٦ عُرُبًا اَتْرَابًا ٣٧ لِّاَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ٣٨ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ٣٩ وَثُلَّةٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ٤٠ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَا اَصْحٰبُ
الشِّمَالِ ٤١ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ٤٢ وَّظِلٍّ مِّنْ

परिन्दों का गोश्त जो चाहें[१८]﴾२१﴿ और बड़ी आँख वालियाँ हूरें[१९]﴾२२﴿ जैसे छुपे रखे हुए मोती[२०]﴾२३﴿ सिला उनके कर्मों का[२१]﴾२४﴿ उसमें न सुनेंगे न कोई बेकार बात न गुनहगारी[२२]﴾२५﴿ हाँ यह कहना होगा सलाम सलाम[२३]﴾२६﴿ और दाहिनी तरफ़ वाले, कैसे दाहिनी तरफ़ वाले[२४]﴾२७﴿ बेकाँटे की बेरियों में﴾२८﴿ और केले के गुच्छों में[२५]﴾२९﴿ और हमेशा के साए में﴾३०﴿ और हमेशा जारी पानी में﴾३१﴿ और बहुत से मेवों में﴾३२﴿ जो न ख़त्म हों[२६]और न रोके जाएं[२७]﴾३३﴿ और बलन्द बिछौनों में[२८]﴾३४﴿ बेशक हमने उन औरतों को अच्छी उठान उठाया﴾३५﴿ तो उन्हें बनाया कुंवारियाँ﴾३६﴿ अपने शौहर पर प्यारियाँ, उन्हें प्यार दिलातियाँ एक उम्र वालियाँ[२९]﴾३७﴿ दाईं तरफ़ वालों के लिये﴾३८﴿

दूसरा रूकू

अगलों में से एक गिरोह﴾३९﴿ और पिछलों में से एक गिरोह[१]﴾४०﴿ और बाईं तरफ़ वाले[२] कैसे बाईं तरफ़ वाले[३]﴾४१﴿ जलती हवा और खौलते पानी में﴾४२﴿ और जलते धुंएं की छाँव में[४]﴾४३﴿ जो न ठण्डी न इज़्ज़त

अलैहिस्सलाम के ज़माने से हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने तक की, जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरों का क़ौल है. लेकिन यह क़ौल निहायत ज़ईफ़ है. अगरचे मुफ़स्सिरों ने इसके ज़ईफ़ होने के कारण में बहुत सी तौजीहात की हैं. सही बात तफ़सीर में यह है कि अगलों से उम्मते मुहम्मदिया ही के पहले लोग, मुहाजिरीन व अन्सार में से जो साबिक़ीने अव्वलीन हैं वो मुराद हैं और पिछलों से उनके बाद वाले. हदीसों से भी इसकी ताईद होती है. मरफ़ूअ हदीस में है कि अव्वलीन व आख़िरीन यहाँ इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और यह भी रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि दोनों गिरोह मेरी ही उम्मत के हैं. (तफ़सीरे कबीर, बहरूल-उलूम वग़ैरह)

(१३) जिनमें लअल, याक़ूत, मोती वग़ैरह जवाहिरात जड़े होंगे.

(१४) बड़े आराम के साथ, शान व शौकत से एक दूसरे को देखकर ख़ुश होंगे.

(१५) ख़िदमत के आदाब के साथ.

(१६) जो न मरें न बूढ़े हों न उनमें बदलाव आए . यह अल्लाह तआला ने जन्नत वालों की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए.

(१७) दुनिया की शराब के विपरीत कि उसके पीने से होश व हवास बिगड़ जाते हैं.

(१८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया अगर जन्नती को परिन्दों के गोश्त की ख़्वाहिश होगी तो उसकी इच्छानुसार पक्षी उड़ता हुआ सामने आएगा और रकाबी में आकर पेश होगा, उसमें से जितना चाहे खाएगा फिर वह उड़ जाएगा.(ख़ाज़िन)

(१९) उनके लिये होंगे.

(२०) यानी जैसा मोती सीपी में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुआ न धूप और हवा लगी. उसकी सफ़ाई अपनी चरम सीमा पर है. इस तरह वो हूरें अछूती होंगी. यह भी रिवायत है कि हूरों की मुस्कान से जन्नत में नूर चमकेगा और जब वो चलेंगी तो उनके हाथों और पाँव के ज़ेवरों से तक़दीस व तमजीद की आवाज़ें आएंगी और याक़ूती हार उनकी गर्दनों के सौंदर्य से ख़ूब हंसेंगे.

(२१) कि दुनिया में उन्होंने फ़रमाँबरदारी की.

(२२) यानी जन्नत में कोई नागवार और ग़लत बात सुनने में न आएगी.

(२३) जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे. फ़रिश्ते जन्नत वालों को सलाम करेंगे. अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी तरफ़ सलाम आएगा. यह हाल तो साबिक़ीन मुक़र्रबीन का था. इसके बाद जन्नतियों के दूसरे गिरोह असहाबे यमीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है.

(२४) उनकी अनोखी शान है कि अल्लाह के हुज़ूर इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाले हैं.

(२५) जिनके दरख़्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे.

(२६) जब कोई फल तोड़ा जाए, फ़ौरन उसकी जगह वैसे ही दो मौजूद.

يَحْمُوْمٍ ۙ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۚۖ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۚ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ اَوَاٰبَاۗؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۙ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّاۗلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ۭ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۭ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۭ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا

की﴾४४﴿ बेशक वो उससे पहले[५] नेअमतों में थे﴾४५﴿ और उस बड़े गुनाह की[६] हठ रखते थे﴾४६﴿ और कहते थे क्या जब हम मर जाएं और हड्डियाँ मिट्टी हो जाएं तो क्या ज़रूर हम उठाए जाएंगे﴾४७﴿ और क्या हमारे अगले बाप दादा भी﴾४८﴿ तुम फ़रमाओ बेशक सब अगले और पिछले﴾४९﴿ ज़रूर इकट्ठे किये जाएंगे, एक जाने हुए दिन की मीआद पर[७]﴾५०﴿ फिर बेशक तुम ऐ गुमराहो[८] झुटलाने वालो﴾५१﴿ ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे﴾५२﴿ फिर उससे पेट भरोगे﴾५३﴿ फिर उस पर खौलता पानी पियोगे﴾५४﴿ फिर ऐसा पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें[९]﴾५५﴿ यह उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन﴾५६﴿ हमने तुम्हें पैदा किया[१०] तो तुम क्यों नहीं सच मानते[११]﴾५७﴿ तो भला देखो तो वो मनी जो गिराते हो[१२]﴾५८﴿ क्या तुम उसका आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं[१३]﴾५९﴿ हमने तुम में मरना ठहराया[१४] और हम इससे हारे नहीं﴾६०﴿

(२७) जन्नत वाले फ़लों के लेने से.
(२८) जो सजे सजाए ऊंचे ऊंचे तख़्तों पर होंगे और यह भी कहा गया है कि बिछौनों से मुराद औरतें हैं. इस सूरत में मानी ये होंगे कि औरतें फ़ज़्ल और जमाल में बलन्द दर्जा रखती होंगी.
(२९) जवान और उनके शौहर भी जवान और यह जवानी हमेशा क़ायम रहने वाली.

सूरए वाक़िआ - दूसरा रूकू

(१) यह असहाबे यमीन के दो गिरोहों का बयान है कि वो इस उम्मत के पहले पिछले दोनों गिरोहों में से होंगे. पहले गिरोह तो असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं और पिछले उनके बाद वाले. इससे पहले रूकू में साबिक़ीने मुक़र्रबीन की दो जमाअतों का ज़िक्र था और इस आयत में असहाबे यमीन के दो गिरोहों का बयान है.
(२) जिनके आमलनामे बाएं हाथ में दिये जाएंगे.
(३) उनका हाल शक़ावत में अजीब है. उनके अज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वो इस हाल में होंगे.
(४) जो अत्यन्त काला और अंधेरा होगा.
(५) दुनिया के अन्दर.
(६) यानी शिर्क की.
(७) वह क़यामत का दिन है.
(८) सच्चाई की राह से बहकने वालो और हक़ को.
(९) उनपर ऐसी भूक मुसल्लत की जाएगी कि वो बेचैन होकर जहन्नम का जलता थूहड़ खाएंगे फिर जब उससे पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत की जाएगी जिससे बेताब होकर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आँतें काट डालेगा.
(१०) नेस्त से हस्त किया यानी शून्य से अस्तित्व में लाया.
(११) मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को.
(१२) औरतों के गर्भ में.
(१३) कि नुत्फ़े को इन्सानी सूरत देते हैं ज़िन्दगी अता फ़रमाते हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना हमारी क़ुदरत से क्या दूर है.
(१४) अपनी हिकमत और मर्ज़ी के अनुसार उम्रें विभिन्न रखीं. कोई बचपन ही में मरजाता है कोई जवान होकर, कोई अधेड़ उम्र

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝ عَلٰٓى اَنْ
نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝
اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ
نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ۝ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝
ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝
لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝
اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ
شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا
تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ
رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝

कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वह कर दें जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं[१५] ﴿६१﴾ और बेशक तुम जान चुके हो पहली उठान[१६] फिर क्यों नहीं सोचते[१७] ﴿६२﴾ तो भला बताओ तो जो बोते हो ﴿६३﴾ क्या तुम उसकी खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं[१८] ﴿६४﴾ हम चाहें तो[१९] उसे रौंदन (पामाल) कर दें[२०] फिर तुम बातें बनाते रह जाओ[२१] ﴿६५﴾ कि हम पर चटी पड़ी[२२] ﴿६६﴾ बल्कि हम बेनसीब रहे ﴿६७﴾ तो भला बताओ तो वह पानी जो पीते हो ﴿६८﴾ क्या तुमने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले[२३] ﴿६९﴾ हम चाहें तो उसे खारी कर दें[२४] फिर क्यों नहीं शुक्र करते[२५] ﴿७०﴾ तो भला बताओ तो वह आग जो तुम रौशन करते हो[२६] ﴿७१﴾ क्या तुमने उसका पेड़ पैदा किया[२७] या हम हैं पैदा करने वाले ﴿७२﴾ हमने उसे[२८] जहन्नम का यादगार बनाया[२९] और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ायदा[३०] ﴿७३﴾ तो ऐ मेहबूब तुम पाकी बोलो अपने अज़मत वाले रब के नाम की ﴿७४﴾

तीसरा रूकू

तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहाँ तारे डूबते हैं[१] ﴿७५﴾

में, कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है. जो हम मुक़द्दर करते हैं वही होता है.

(१५) यानी मस्ख़ करके बन्दर सूअर वग़ैरह की सूरत बनादीं यह सब हमारी क़ुदरत में है.

(१६) कि हमने तुम्हें शून्य से अस्तित्व में लाया.

(१७) कि जो नेस्त को हस्त कर सकता है वह यक़ीनन मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है.

(१८) इसमें शक नहीं कि बालें बनाना और उसमें दाने पैदा करना अल्लाह तआला ही का काम है और किसी का नहीं.

(१९) जो तुम बोते हो.

(२०) ख़ुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम की न रहे.

(२१) आश्चर्य चकित, शर्मिन्दा और दुखी.

(२२) हमारा माल बेकार ज़ाया हो गया.

(२३) अपनी भरपूर क़ुदरत से.

(२४) कि कोई पी न सके.

(२५) अल्लाह तआला की नेअमत और उसके एहसान और करम का.

(२६) दो गीली लकड़ियों से जिनको ज़न्द व ज़न्दह कहते हैं उनके रगड़ने से आग निकलती है.

(२७) मर्ख़ो ऐफ़ार जिनसे ज़न्द व ज़िन्दा ली जाती है.

(२८) यानी आग को.

(२९) कि देखने वाला उसको देखकर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और अल्लाह तआला से और उसके अज़ाब से डरे.

(३०) कि अपने सफ़रों में उससे नफ़ा उठाते हैं.

सूरए वाक़िआ - तीसरा रूकू

(१) कि वो क़ुदरत के ज़ुहूर और अल्लाह के जलाल के मक़ाम हैं.

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَمَّا إِن كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾ وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾ وَتَصْلِيَةُ

منزل ٧

और तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है﴾७६﴿ बेशक यह इज़्ज़त वाला क़ुरआन है[२]﴾७७﴿ महफ़ूज़ नविश्ते में[३]﴾७८﴿ उसे न छुए मगर बावुज़ू[४]﴾७९﴿ उतारा हुआ है सारे जगत के रब का﴾८०﴿ तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते हो[५]﴾८१﴿ और अपना हिस्सा यह रखते हो कि झुटलाते हो[६]﴾८२﴿ फिर क्यों न हो जब जान गले तक पहुंचे﴾८३﴿ और तुम[७] उस वक़्त देख रहे हो﴾८४﴿ और हम[८] उसके ज़्यादा पास हैं तुमसे मगर तुम्हें निगाह नहीं[९]﴾८५﴿ तो क्यों न हुआ अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं[१०]﴾८६﴿ कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो[११]﴾८७﴿ फिर वह मरने वाला अगर नज़्दीकों में से है[१२]﴾८८﴿ तो राहत है और फूल[१३] और चैन के बाग़[१४]﴾८९﴿ और अगर[१५] दाईं तरफ़ वालों से हो﴾९०﴿ तो ऐ मेहबूब तुम पर सलाम हो दाईं तरफ़ वालों से[१६]﴾९१﴿ और अगर[१७] झुटलाने वाले गुमराहों में से हो[१८]﴾९२﴿ तो उसकी मेहमानी खौलता पानी﴾९३﴿

(२) जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर उतारा गया क्योंकि यह अल्लाह का कलाम और वही है.

(३) जिसमें तबदील और तहरीफ़ यानी रद्दोबदल संभव नहीं.

(४) जिसको गुस्ल की हाजत हो या जिसका वुज़ू न हो या हैज़ वाली औरत या निफ़ास वाली, इनमें से किसी को क़ुरआन शरीफ़ का ग़िलाफ़ वग़ैरह बिना कपड़े के छूना जायज़ नहीं. बे-वुज़ू को याद पर यानी मुंह ज़बानी क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जायज़ है लेकिन बेगुस्ल और हैज़ वाली को यह भी जायज़ नहीं.

(५) और नहीं मानते.

(६) हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया वह बन्दा बड़े टोटे में है जिसका हिस्सा अल्लाह की किताब को झुटलाना हो.

(७) ऐ मैयत वालो.

(८) अपने इल्म और क़ुदरत के साथ.

(९) तुम बसीरत यानी दृष्टि नहीं रखते, तुम नहीं जानते.

(१०) मरने के बाद उठकर.

(११) काफ़िरों से फ़रमाया गया कि अगर तुम्हारे ख़याल के मुताबिक़ तुम्हारे मरने के बाद उठना और कर्मों का हिसाब किया जाना और जज़ा देने वाला मअबूद, यह कुछ भी न हो तो फिर क्या कारण है कि जब तुम्हारे प्यारों की रुह हलक़ तक पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यों नहीं लाते और जब यह तुम्हारे बस में नहीं तो समझ लो कि काम अल्लाह तआला के इख़्तियार में है. उस पर ईमान लाओ. इसके बाद मख़लूक़ के तबक़ों का मौत के वक़्त के हालात और उनके दर्जों का बयान फ़रमाया.

(१२) साबिक़ीन में से जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका तो उसके लिये.

(१३) अबुल आलिया ने कहा कि मुक़र्रबीन से जो कोई दुनिया से जुदा होता है उसके पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है वह उसकी ख़ुश्बू लेता है तब रुह क़ब्ज़ होती है.

(१४) आख़िरत में.

(१५) मरने वाला.

(१६) मानी ये हैं कि ऐ सैयदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, आप उनका इस्लाम क़ुबूल फ़रमाएं और उनके लिये रंजीदा न हों वो अल्लाह तआला के अज़ाब से सलामत और मेहफ़ूज़ रहेंगे और आप उनको उसी हाल में देखेंगे जो आपको पसन्द हो.

(१७) मरने वाला.

(१८) यानी असहाबे शिमाल में से.

جَحِيمٍ ۝ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ (٥٧) (٩٤) اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ لَهٗ

منزل ٧

और भड़कती आग में धंसाना[19] ﴾९४﴿ ये बेशक आला दर्जे की यक़ीनी बात है ﴾९५﴿ तो ऐ मेहबूब तुम अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो[20] ﴾९६﴿

५७- सूरए हदीद

सूरए हदीद मदीने में उतरी, इसमें २९आयतें, चार रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1] अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है[2] और वही इज़्ज़त व हिकमत(बोध) वाला है ﴾१﴿ उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत, जिलाता है[3] और मारता[4] और वह सब कुछ कर सकता है ﴾२﴿ वही अव्वल(आदि)[5] वही आख़िर(अनन्त)[6] वही ज़ाहिर[7] वही बातिन[8] और वही सब कुछ जानता है ﴾३﴿ वही है जिसने आसमान और ज़मीन छ दिन में पैदा किये[9] फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा कि उसकी शान के लायक़ है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है[10] और जो उससे बाहर निकलता है[11] और जो आसमान से उतरता है[12] और जो उसमें चढ़ता है[13] और वह तुम्हारे साथ है[14] तुम कहीं हो, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[15] ﴾४﴿ उसी की है आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह ही की तरफ़ सब कामों की

(१९) जहन्नम की, और मरने वालों के हालात और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए.
(२०) हदीस में है जब यह आयत उतरी "फ़सब्बेह बि-इस्मे रब्बिकल अज़ीम" (सूरए वाक़िआ,आयत ७४) तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने रूकू में दाख़िल करलो और जब "सब्बेहिस्मा रब्बिकल आला" (सूरए आअला, आयत १) उतरी तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाख़िल कर लो. (अबू दाऊद) इस आयत से साबित हुआ कि रूकू और सज्दे की तस्बीह क़ुरआन करीम से ली गई हैं.

५७ - सूरए हदीद - पहला रूकू

(१) सूरए हदीद मक्की है या मदनी, इस में चार रूकू, उन्तीस आयतें, पांच सौ चवालीस कलिमे, दो हज़ार चार सौ छिहत्तर अक्षर हैं.
(२) जानदार हो या बेजान.
(३) मख़लूक़ को पैदा करके या ये मानी हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है.
(४) यानी मौत देता है ज़िन्दों को.
(५) क़दीम, हर चीज़ की पहल से पहले, यानी आदि, बेइब्तिदा, कि वह था और कुछ न था.
(६) हर चीज़ की हलाकत और नाश होने के बाद रहने वाला यानी अनंत, सब फ़ना होजाएंगे और वह हमेशा रहेगा उसके लिये अंत नहीं.
(७) दलीलों और निशानियों से, या ये मानी कि ग़ालिब हर चीज़ पर.
(८) हवास उसे समझने से मजबूर या ये मानी कि हर चीज़ का जानने वाला.
(९) दुनिया के दिनों से कि पहला उनका यकशम्बा और पिछला जुमआ है. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि वह अगर चाहता तो आनन फ़ानन पैदा कर देता लेकिन उसकी हिकमत यही थी कि छ को अस्ल बनाए और उनपर मदार रखे.
(१०) चाहे वह दाना हो या क़तरा या ख़ज़ाना हो या मुर्दा.
(११) चाहे वह नबात हो या धात या और कोई चीज़.
(१२) रहमत व अज़ाब और फ़रिश्ते और बारिश.
(१३) आमाल और दुआएं.
(१४) अपने इल्म और क़ुदरत के साथ आम तौर से, और फ़ज़्ल व रहमत के साथ ख़ास तौर पर.

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
الْاُمُوْرُ ۞ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۞ اٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ
فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
كَبِيْرٌ ۞ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۞ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى
عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۞ وَمَا
لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً

रूजू (५) रात को दिन के हिस्से में लाता है[१६] और दिन को रात के हिस्से में लाता है[१७] और वह दिलों की बात जानता है[१८] (६) अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी राह में कुछ वह ख़र्च करो जिसमें तुम्हें औरों का जानशीन किया[१९] तो जो तुम में ईमान लाए और उसकी राह में ख़र्च किया उनके लिये बड़ा सवाब है (७) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ, हालांकि ये रसूल तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ[२०] और बेशक वह[२१] तुमसे पहले ही एहद ले चुका है[२२] अगर तुम्हें यक़ीन हो (८) वही है कि अपने बन्दे पर[२३] रौशन आयतें उतारता है ताकि तुम्हें अंधेरियों से[२४] उजाले की तरफ़ ले जाए[२५] और बेशक अल्लाह तुम पर ज़रूर मेहरबान रहम वाला (९) और तुम्हें क्या है कि अल्लाह की राह में ख़र्च न करो हालांकि आसमानों और ज़मीन में सब का वारिस अल्लाह ही है[२६] तुम में बराबर नहीं वो जिन्हों ने मक्के की विजय से पहले ख़र्च और जिहाद किया[२७] वो मर्तबे में उनसे बड़े हैं जिन्होंने विजय के बाद ख़र्च और जिहाद किया और उन सबसे[२८] अल्लाह जन्नत का वादा

(१५) तो तुम्हें कर्मों के अनुसार बदला देगा.
(१६) इस तरह कि रात को घटाता है और दिन की मिक़दार बढ़ाता है.
(१७) दिन घटाकर और रात की मिक़दार बढ़ा कर.
(१८) दिल के अक़ीदे और राज़ सबको जानता है.
(१९) जो तुमसे पहले थे और तुम्हारा जानशीन करेगा तुम्हारे बाद वालों को. मानी ये हैं कि जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं सब अल्लाह तआला के हैं उसने तुम्हें नफ़ा उठाने के लिये दे दिये हैं. तुम अस्ल में इन के मालिक नहीं हो बल्कि नायब और वकील की तरह हो. इन्हें ख़ुदा की राह में ख़र्च करो और जिस तरह नायब और वकील को मालिक के हुक्म से ख़र्च करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती, तुम्हें भी कोई हिचकिचाहट न हो.
(२०) और निशानियाँ और हुज्जतें पेश करते हैं और अल्लाह की किताब सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उज्र हो सकता है.
(२१) यानी अल्लाह तआला.
(२२) जब उसने तुम्हें आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त से निकाला था, कि अल्लाह तआला तुम्हारा रब है उसके सिवा कोई मअबूद नहीं.
(२३) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर.
(२४) कुफ़्र और शिर्क की.
(२५) यानी ईमान के नूर की तरफ़.
(२६) तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क रह जाएंगे और तुम्हें ख़र्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करो तो सवाब भी पाओ.
(२७) जबकि मुसलमान कम और कमज़ोर थे, उस वक़्त जिन्होंने ख़र्च किया और जिहाद किया वो मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीने अव्वलीन हैं. उनके हक़ में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुममें से कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दे तो भी उनके एक मुद की बराबर न हो न आधे मुद की. मुद एक पैमाना है जिससे जौ नापे जाते हैं. कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी क्योंकि आप पहले वो शख़्स हैं जिसने ख़ुदा की राह में माल ख़र्च किया और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिमायत की.
(२८) यानी पहले ख़र्च करने वालों से भी और फ़त्ह के बाद ख़र्च करने वालों से भी.

مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا
وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۠
مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ
لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۚ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ
بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۚ يَوْمَ
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا
وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۚ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى
وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

फ़रमा चुका[२९] और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है﴾१०﴿

दूसरा रूकू

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़[१] तो वह उस के लिये दूने करे और उसको इज़्ज़त का सवाब है﴾११﴿ जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को[२] देखोगे कि उनका नूर है[३] उनके आगे और उनके दाएं दौड़ता है[४] उनसे फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़्यादा ख़ुशी की बात वो जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें बहें, तुम उनमें हमेशा रहो यही बड़ी कामयाबी है﴾१२﴿ जिस दिन मुनाफ़िक़(दोग़ले) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो कि हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें, कहा जाएगा अपने पीछे लौटो[५] वहाँ नूर ढूंढो वो लौटेंगे, जभी उनके[६] बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी[७] जिसमें एक दरवाज़ा है[८] उसके अन्दर की तरफ़ रहमत[९] और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब﴾१३﴿ मुनाफ़िक़[१०] मुसलमानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे[११] वो कहेंगे क्यों नहीं मगर तुमने तो अपनी जानें फ़ित्ने में डालीं[१२] और मुसलमानों की बुराई तकते और शक रखते[१३] और झूटे लालच ने तुम्हें धोखा दिया[१४] यहाँ तक कि

(२९) अलबत्ता दर्जों में अन्तर है. फ़त्ह से पहले ख़र्च करने वालों का दर्जा ऊंचा है.

सूरए हदीद - दूसरा रूकू

(१) यानी ख़ुशदिली के साथ ख़ुदा की राह में ख़र्च करे. इस ख़र्च करने को इस मुनासिबत से फ़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इसपर जन्नत का वादा फ़रमाया गया है.
(२) पुले सिरात पर.
(३) यानी उनके ईमान और ताअत का नूर.
(४) और जन्नत की तरफ़ उनका मार्गदर्शन करता है.
(५) जहाँ से आए थे यानी हश्र के मैदान की तरफ़ जहाँ हमें नूर दिया गया वहाँ नूर तलब करो या ये मानी हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सक्ते, नूर की तलब के लिये पीछे लौट जाओ फिर वो नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पाएंगे तो दोबारा मूमिनीन की तरफ़ फिरेंगे.
(६) यानी मूमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के.
(७) कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि वही अअराफ़ है.
(८) उससे जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे.
(९) यानी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्नत.
(१०) उस दीवार के पीछे से.
(११) दुनिया में नमाज़ें पढ़ते, रोज़ा रखते.
(१२) दोग़लेपन और कुफ़्र को अपना कर.
(१३) इस्लाम में.
(१४) और तुम बातिल उम्मीदों में रहे कि मुसलमानों पर हादसे आएंगे, वो तबाह हो जाएंगे.

وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ
مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ
وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَآءُ

अल्लाह का हुक्म आ गया[१५] और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर उस बड़े फ़रेबी ने घमण्डी रखा[१६] ﴿१४﴾ तो आज न तुमसे कोई फ़िदिया लिया जाए[१७] और न खुले काफ़िरों से, तुम्हारा ठिकाना आग है, वह तुम्हारी रफ़ीक़ है, और क्या ही बुरा अंजाम ﴿१५﴾ क्या ईमान वालों को अभी वह वक़्त न आया कि उनके दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस हक़ के लिये जो उतरा[१८] और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई[१९] फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई[२०] तो उनके दिल सख़्त हो गए[२१] और उनमें बहुत फ़ासिक़ हैं[२२] ﴿१६﴾ जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा करता है उसके मरे पीछे,[२३] बेशक हमने तुम्हारे लिये निशानियाँ बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो ﴿१७﴾ बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वो जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया[२४] उनके दूने हैं और उनके लिये इज़्ज़त का सवाब है[२५] ﴿१८﴾ और वो जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाएं वही हैं पूरे सच्चे और औरों पर[२६] गवाह अपने रब के यहाँ, उनके लिये

(१५) यानी मौत.

(१६) यानी शैतान ने धोखा दिया कि अल्लाह तआला बड़ा हिल्म वाला है तुम पर अज़ाब न करेगा और न मरने के बाद उठना न हिसाब. तुम उसके इस फ़रेब में आ गए.

(१७) जिसको देकर तुम अपनी जानें अज़ाब से छुड़ा सको. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया मानी ये हैं कि आज न तुम से ईमान क़ुबूल किया जाए, न तौबह.

(१८) हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लहो अन्हा से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दौलतसरा से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं फ़रमाया तुम हंसते हो, अभी तक तुम्हारे रब की तरफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर यह आयत उतरी. उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, इस हंसी का कफ़्फ़ारा क्या है? फ़रमाया इतना ही रोना. और उतरने वाले हक़ से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है.

(१९) यानी यहूदी और ईसाइयों के तरीक़े इख़्तियार न करें.

(२०) यानी वह ज़माना जो उनके और उन नबियों के बीच था.

(२१) और अल्लाह की याद के लिये नर्म न हुए दुनिया की तरफ़ माइल होगए और नसीहतों उपदेशों से मुंह फेरा.

(२२) दीन से निकल जाने वाले.

(२३) मेंह बरसाकर सब्ज़ा उगा कर. बाद इसके कि ख़ुश्क हो गई थी. ऐसे ही दिलों को सख़्त हो जाने के बाद नर्म करता है और उन्हें इल्म व हिकमत से ज़िन्दगी अता फ़रमाता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह मिसाल है ज़िक्र के दिलों में असर करने की जिस तरह बारिश से ज़मीन को ज़िन्दगी हासिल होती है ऐसे ही अल्लाह के ज़िक्र से दिल ज़िन्दा होते हैं.

(२४) यानी ख़ुशदिली और नेक नियत के साथ मुस्तहिक़्क़ों को सदक़ा दिया और ख़ुदा की राह में ख़र्च किया.

(२५) और वह जन्नत है.

(२६) गुज़री हुई उम्मतों में से.

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ
وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِى
الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ
نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ
حُطَامًا ؕ وَ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ
اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ
رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَاۤ اَصَابَ مِنْ

उनका सवाब(२७) और उनका नूर है(२८) और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाई वो दोज़ख़ी हैं﴿१९﴾

तीसरा रूकू

जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद(१) और आराइश और तुम्हारो आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना(२) उस मेंह की तरह जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा(३) कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया(४) और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है(५) और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा(६) और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोखे का माल(७)﴿२०﴾ बढ़कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उसी जन्नत की तरफ़(८) जिसकी चौड़ाई जैसे आसमान और ज़मीन का फैलाव(९) तैयार हुई है उनके लिये जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाए, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है﴿२१﴾ नहीं पहुंचती कोई मुसीबत ज़मीन में(१०) और

(२७) जिसका वादा किया गया.
(२८) जो हश्र में उनके साथ होगा.

सूरए हदीद - तीसरा रूकू

(१) जिस में वक़्त नष्ट करने के सिवा कुछ हासिल नहीं.
(२) और उन चीज़ों में मशग़ूल रहना और उनसे दिल लगाना दुनिया है, लेकिन ताअतें और इबादतें और जो चीज़ें कि ताअत पर सहायक हों और वो आख़िरत के कामों में से हैं. अब इस दुनिया की ज़िन्दगानी की एक मिसाल इरशाद फ़रमाई जाती है.
(३) उसकी सब्ज़ी जाती रही, पीला पड़ गया, किसी आसमानी आफ़त या ज़मीनी मुसीबत से.
(४) कण कण, यही हाल दुनिया की ज़िन्दगी का है जिसपर दुनिया का तालिब बहुत ख़ुश होता है और उसके साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है. वह निहायत जल्द गुज़र जाती है.
(५) उसके लिये जो दुनिया का तालिब हो और ज़िन्दगी लहव व लईब में गुज़ारे और वह आख़िरत की परवाह न करे ऐसा हाल काफ़िर का होता है.
(६) जिसने दुनिया को आख़िरत पर प्राथमिकता न दी.
(७) यह उसके लिये है जो दुनिया ही का होजाए और उस पर भरोसा करले और आख़िरत की फ़िक्र न करे और जो शख़्स दुनिया में आख़िरत का तालिब हो और दुनियवी सामान से भी आख़िरत ही के लिये इलाक़ा रखे तो उसके लिये दुनिया की कामयाबी आख़िरत का ज़रिया है. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रज़ियल्लहो अन्हो ने फ़रमाया कि ऐ मुरीदों के गिरोह, दुनिया तलब न करो और अगर तलब करो तो उससे महब्बत न करो. तोशा यहाँ से लो, आरामगाह और है.
(८) अल्लाह की रज़ा के तालिब बनो, उसकी फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करो और उसकी इताअत बजा लाकर जन्नत की तरफ़ बढ़ो.
(९) यानी जन्नत की चौड़ाई ऐसी है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनों के वरक़ बनाकर आपस में मिला दिये जाएं जितने वो हों उतनी जन्नत की चौड़ाई, फिर लम्बाई की क्या इन्तिहा.
(१०) दुष्काल की, कम वर्षा की, पैदावार न होने की, फलों की कमी की, खेतियों के तबाह होने की.

مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنفُسِكُمْ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَن نَّبْرَأَهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا
فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ
وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ
فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ أَرْسَلْنَا
رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا
الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَ
إِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ

न तुम्हारी जानों में[११] मगर वह एक किताब में है[१२] पहले इसके कि हम उसे पैदा करें[१३] बेशक यह[१४] अल्लाह को आसान है﴾२२﴿ इसलिये कि ग़म न खाओ उस[१५] पर जो हाथ से जाए और ख़ुश न हो[१६] उसपर जो तुम को दिया[१७] और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरौना बड़ाई मारने वाला﴾२३﴿ वो जो आप बुख़्ल (कंजूसी) करें[१८] और औरों से बुख़्ल को कहें[१९] और जो मुंह फेरे[२०] तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा﴾२४﴿ बेशक हमने अपने रसूलों को दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब[२१] और इन्साफ़ की तराज़ू उतारी[२२] कि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों[२३] और हमने लोहा उतारा[२४] उसमें सख़्त आंच नुक़सान[२५] और लोगों के फ़ायदे[२६] और इसलिये कि अल्लाह देखे उसको जो बे देखे उसकी[२७] और उसके रसूलों की मदद करता है, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला ग़ालिब है[२८]﴾२५﴿

चौथा रूकू

और बेशक हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी औलाद में नबुव्वत और किताब रखी[१] तो उनमें[२] कोई

(११) बीमारियों की और औलाद के दुख़ों की.
(१२) लौहे मेहफ़ूज़ में.
(१३) यानी ज़मीन को या जानों को या मुसीबत को.
(१४) यानी इन बातों का कसरत के बावुजूद लौह में दर्ज फ़रमाना.
(१५) दुनिया की माल मत्ता.
(१६) यानी न इतराओ.
(१७) दुनिया की माल मत्ता, और यह समझ लो कि जो अल्लाह तआला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होता है, न ग़म करने से कोई गई हुई चीज़ वापस मिल सकती है न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लायक़ है तो चाहिये कि ख़ुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इख़्तियार करो. ग़म से मुराद यहाँ इन्सान की वह हालत है जिसमें सब्र और अल्लाह की मर्ज़ी से राज़ी रहना और सवाब की उम्मीद बाक़ी न रहे और ख़ुशी से वह इतराना मुराद है जिसमें मस्त होकर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए और वह ग़म और रंज जिसमें बन्दा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो और उसकी रज़ा पर राज़ी हो. ऐसे ही वह ख़ुशी जिस पर अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार हो, मना नहीं है. हज़रत इमाम जअफ़रे सादिक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया ऐ आदम के बेटे, किसी चीज़ के न होने पर ग़म क्यों करता है यह उसको तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यों इतराता है मौत उसको तेरे हाथ में न छोड़ेगी.
(१८) और अल्लाह की राह और भलाई के कामों में ख़र्च न करें और माली हुक़ूक़ की अदायगी से क़ासिर (असमर्थ) रहें.
(१९) इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरों का एक क़ौल यह भी है कि यह यहूदियों के हाल का बयान है और कंजूसी से मुराद उनका सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के उन गुणों को छुपाना है जो पिछली किताबों में दर्ज थे.
(२०) ईमान से या माल ख़र्च करने से या ख़ुदा और रसूल की फ़रमाँबरदारी से.
(२१) अहकाम और क़ानून की बयान करने वाली.
(२२) तराज़ू से मुराद इन्साफ़ है. मानी ये हैं कि हम ने इन्साफ़ का हुक्म दिया और एक क़ौल यह है कि तराज़ू से वज़न का आला ही मुराद है कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास तराज़ू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इससे वज़न करें.
(२३) और कोई किसी का हक़ न मारे.
(२४) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि उतारना यहाँ पैदा करने के मानी में हैं. मुराद यह है कि हमने लोहा पैदा किया और लोगों के लिये ख़ानों से निकाला और उन्हें उसकी सनअत का इल्म दिया और यह भी रिवायत है अल्लाह तआला ने चार बरकत वाली

فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ثُمَّ
قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى
ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ
قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ
ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ
مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

राह पर आया, और उनमें बहुतेरे फ़ासिक़ हैं(२६) फिर हमने उनके पीछे[३] उसी राह पर अपने रसूल भेजे और उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इन्जील अता फ़रमाई और उसके अनुयाइयों के दिल में नर्मी और रहमत रखी[४] और राहिब बनना[५] तो यह बात उन्होंने दीन में अपनी तरफ़ से निकाली हमने उनपर मुक़र्रर न की थी हाँ यह बिदअत उन्होंने अल्लाह की रज़ा चाहने को पैदा की फिर उसे न निबाहा, जैसा उसके निबाहने का हक़ था[६] तो उनके ईमान वालों को[७] हमने उनका सवाब अता किया, और उनमें से बहुतेरे[८] फ़ासिक़ हैं(२७) ऐ ईमान वालो[९] अल्लाह से डरो और उसके रसूल[१०] पर ईमान लाओ वह अपनी रहमत के दो हिस्से तुम्हें अता फ़रमाएगा[११] और तुम्हारे लिये नूर कर देगा[१२] जिसमें चलो और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है(२८) यह इसलिये कि किताब वाले काफ़िर जान जाएं कि अल्लाह के फ़ज़्ल पर उनका कुछ क़ाबू नहीं[१३] और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है देता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है(२९)

चीज़ें आसमान से ज़मीन की तरफ़ उतारीं, लोहा, आग, पानी और नमक.

(२५) और निहायत क़ुव्वत कि उससे जंग के हथियार बनाए जाते हैं.

(२६) कि सनअतों और हिरफ़तों में वह बहुत काम आता है. ख़ुलासा यह कि हमने रसूलों को भेजा और उनके साथ इन चीज़ों को उतारा ताकि लोग सच्चाई और इन्साफ़ का मामला करें.

(२७) यानी उसके दीन की.

(२८) उसको किसी की मदद दरकार नहीं. दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया है उन्हीं के नफ़े के लिये है.

सूरए हदीद - चौथा रूकू

(१) यानी तौरात व इंजील और ज़ुबूर और क़ुरआन.

(२) यानी उनकी सन्तान में जिनमें नबी और किताबें भेजीं.

(३) यानी हज़रत नूह और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने तक एक के बाद दूसरा.

(४) कि वो आपस में एक दूसरे के साथ महब्बत और शफ़क़त रखते.

(५) पहाड़ों और ग़ारों और अकेले मकानों में एकान्त में बैठना और दुनिया वालों से रिश्ते तोड़ लेना और इबादतों में अपने ऊपर अतिरिक्त मेहनतें बढ़ा लेना, सन्यासी हो जाना, निकाह न करना, खुरदुरे कपड़े पहनना, साधारण ग़िज़ा निहायत कम मात्रा में खाना.

(६) बल्कि उसको ज़ाया कर दिया और त्रिमूर्ति और इल्हाद में गिरफ़्तार हुए और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन से मुंह फेर कर अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उनमें से मसीही दीन पर क़ायम और साबित भी रहे और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक ज़माने को पाया तो हुज़ूर पर ईमान भी लाए. इस आयत से मालूम हुआ कि बिदअत यानी दीन में किसी नई बात का निकालना, अगर वह बात नेक हो और उससे अल्लाह की रज़ा मक़सूद हो, तो बेहतर है, उसपर सवाब मिलता है और उसको जारी रखना चाहिये. ऐसी बिदअत को बिदअते हसना कहते हैं अलबत्ता दीन में बुरी बात निकालना बिदअते सैइया कहलाता है और वह ममनूअ और नाजायज़ है. और बिदअते सैइया हदीस शरीफ़ में वह बताई गई है जो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो उसके निकालने से कोई सुन्नत उठ जाए . इससे हज़ारों मसअलों का फ़ैसला हो जाता है. जिनमें आजकल लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़्सानी से ऐसे भले कामों को बिदअत बताकर मना करते हैं जिनसे दीन की तक़वियत और ताईद होती है और मुसलमानों को आख़िरत के फ़ायदे पहुंचते हैं और वो ताअतों और इबादतों में ज़ौक़ और शौक़ से मश्ग़ूल रहते हैं. ऐसे कामों को बिदअत बताना क़ुरआने मजीद की इस आयत के ख़िलाफ़ है.

(७) जो दीन पर क़ायम रहे थे.

(८) जिन्होंने सन्यास को छोड़ दिया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दीन से कट गए.

(९) हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर. यह ख़िताब किताब वालों को है उनसे फ़रमाया जाता है.

(१०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(११) यानी तुम्हें दुगना अज्र देगा क्योंकि तुम पहली किताब और पहले नबी पर ईमान लाए और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुरआने पाक पर भी.

(१२) सिरात पर.

(१३) वो उसमें से कुछ नहीं पासकते न दुगना अज्र, न नूर, न मग़फ़िरत, क्योंकि वो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान न लाए तो उनका पहले नबियों पर ईमान लाना भी लाभदायक न होगा. जब ऊपर की आयत उतरी और उसमें किताब वालों के मूमिनों को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊपर ईमान लाने पर दुगने अज्र का वादा दिया गया तो पहले किताब के काफ़िरों ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लाएं तो दुगना अज्र मिले और न लाएं तो एक अज्र तब भी रहेगा. इसपर यह आयत उतरी और उनके इस ख़याल को ग़लत क़रार दिया गया.

पारा सत्ताईस समाप्त

अट्ठाईसवां पारा - क़द समिअल्लाहु

५८ - सूरए मुजादलह

सूरए मुजादलह मदीने में उतरी, इसमें २२ आयतें, तीन रूकू हैं

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) बेशक अल्लाह ने सुनी उसकी बात जो तुम से अपने शौहर के मामले में बहस करती है(२) और अल्लाह से शिकायत करती है और अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा है, बेशक अल्लाह सुनता देखता है﴾१﴿ वो जो तुम में अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कह बैठते हैं(३) वो उनकी माएँ नहीं(४) उनकी माएँ तो वही हैं जिन से वो पैदा हैं(५) और वह बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं (६) और बेशक अल्लाह ज़रूर माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है﴾२﴿ और वो जो अपनी बीबियों को अपनी माँ की जगह कहें(७) फिर वही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके(८) तो उनपर लाज़िम है(९) एक ग़ुलाम आज़ाद करना(१०) पहले इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएं(११) यह है जो नसीहत तुम्हें की जाती है, और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है﴾३﴿ फिर जिसे ग़ुलाम न मिले(१२) तो लगातार दो महीने के रोज़े(१३) पहले इसके कि एक दूसरे को हाथ लगाएं(१४) फिर जिस से रोज़े भी न हो सकें(१५) तो साठ मिस्कीनों(फ़क़ीरों) का पेट भरना(१६) यह इसलिये कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखो(१७) और ये

अट्ठाईसवाँ पारा - क़द समिअल्लाहो

५८ - सूरए मुजादलह - पहला रूकू

(१) सूरए मुजादलह मदनी है, इसमें तीन रूकू, बाईस आयतें, चार सौ तिहत्तर कलिमे और एक हज़ार सात सौ बानवे अक्षर हैं.

(२) वह ख़ूलह बिन्ते सअलबह थीं औस बिन साबित की बीबी. किसी बात पर औस ने उनसे कहा कि तू मुझ पर मेरी माँ की पुश्त की तरह है. यह कहने के बाद औस को शर्मिन्दगी हुई. जिहालत के ज़माने में यह कलिमा तलाक़ था. औस ने कहा मेरे ख़याल में तू मुझ पर हराम हो गई. ख़ूलह ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा हाल अर्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका, माँ बाप गुज़र गए, उम्र ज़्यादा होगई, बच्चे छोटे छोटे हैं, उनके बाप के पास छोड़ दूँ तो हलाक हो जाएं, अपने साथ रखूं तो भूखे मर जाएं. क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शौहर के बीच जुदाई न हो. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तेरे सिलसिले में मेरे पास कोई हुक्म नहीं है यानी अभी तक ज़िहार के बारे में कोई नया हुक्म नहीं उतरा. पुराना तरीक़ा यही है कि ज़िहार से औरत हराम हो जाती है. औरत ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, औस ने तलाक़ का शब्द न कहा, वह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत ही प्यारा है. इसी तरह वह बारबार अर्ज़ करती रही और जवाब अपनी इच्छानुसार न पाया तो आसमान की तरफ़ सर उठाकर कहने लगी, या अल्लाह मैं तुझ से अपनी मोहताजी, बेकसी और परेशानी की शिकायत करती हूँ, अपने नबी पर मेरे हक़ में ऐसा हुक्म उतार जिस से मेरी मुसीबत दूर हो. हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया ख़ामोश हो. देख रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुबारक चेहरे पर वही के आसार हैं. जब वही पूरी हो गई तो फ़रमाया, अपने शौहर को बुला. औस हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने ये आयतें पढ़कर सुनाईं.

(३) यानी ज़िहार करते हैं. ज़िहार उसको कहते हैं कि अपनी बीबी को नसब वाली मेहरमात या रिज़ाई रिश्ते की औरतों के किसी ऐसे अंग से उपमा दी जाए जिसको देखना हराम है. जैसे कि बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ की तरह है या बीबी के किसी अंग को जिससे वह ताबीर की जाती हो या उसके शरीर और उसके अंगों को मेहरम औरतों के किसी ऐसे अंग से मिसाल दे जिसका देखना हराम है जैसे कि यह कहे कि तेरा सर या तेरा आधा बदन मेरी माँ की पीठ या उसके पेट या उसकी रान या मेरी

اللّٰهِ ۚ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ
اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ
اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ ع
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ
مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ
مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا
عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۡ وَاِذَا جَاۗءُوْكَ
حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

अल्लाह की हदें हैं[१८] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अज़ाब है(४) बेशक वो जो मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह और उसके रसूल की, ज़लील किये गए जैसे उनसे अगलों को ज़िल्लत दी गई[१९] और बेशक हमने रौशन आयतें उतारीं[२०] और काफ़िरों के लिये ख़्वारी का अज़ाब है(५) जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा[२१] फिर उन्हें उनके कौतुक जता देगा[२२] अल्लाह ने उन्हें गिन रखा है और वो भूल गए[२३] और हर चीज़ अल्लाह के सामने है(६)

दूसरा रूकू

ऐ सुनने वाले क्या तूने न देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में[१] जहाँ कहीं तीन लोगों की कानाफ़ूसी हो[२] तो चौथा वह मौजूद है[३] और पाँच की[४] तो छटा वह[५] और न उससे कम[६] और न उससे ज़्यादा की मगर यह कि वह उनके साथ है[७] जहाँ कहीं हों, फिर उन्हें क़यामत के दिन बतादेगा जो कुछ उन्होंने किया, बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है(७) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मशविरत से मना फ़रमाया गया था फिर वही करते हैं [८] जिसकी मुमानिअत हुई थी और आपस में गुनाह और हद से बढ़ने[९] और रसूल की नाफ़रमानी के मशविरे करते हैं[१०] और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे एज़ाज़ में न कहे[११] और अपने

बहन या फुफी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट की तरह है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है.

(४) यह कहने से वो माएँ नहीं हो गईं.

(५) और दूध पिलाने वालियां दूध पिलाने के कारण माँ के हुक्म में हैं. और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुक़द्दस बीबियाँ कमाले हुर्मत के कारण माएँ बल्कि माओं से बढ़कर हैं.

(६) जो बीबी को माँ कहते हैं उसको किसी तरह माँ के साथ मिसाल देना ठीक नहीं.

(७) यानी उनसे ज़िहार करें . इस आयत से मालूम हुआ कि दासी से ज़िहार नहीं होता. अगर उसको मेहरम औरतों से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर न होगा.

(८) यानी इस ज़िहार को तोड़ देना और हुर्मत को उठा देना.

(९) कफ़्फ़ारा ज़िहार का, लिहाज़ा उनपर ज़रूरी है.

(१०) चाहे वह मूमिन हो या काफ़िर, छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत, अलबत्ता मुदब्बर और उम्मे वलद और ऐसा मकातिब जायज़ नहीं जिसने किताब के बदल में से कुछ अदा किया हो.

(११) इससे मालूम हुआ कि इस कफ़्फ़ारे के देने से पहले वती (संभोग)और उसके दवाई (संभोग इच्छुक काम) हराम हैं.

(१२) उसका कफ़्फ़ारा.

(१३) जुड़े हुए इसतरह कि न उन दो महीनों के बीच रमज़ान आए न उन पाँच दिनों में से कोई दिन आए जिनका रोज़ा मना है, और न किसी उज़्र से, या बग़ैर उज़्र के, दरमियान कोई रोज़ा छोड़ा जाए. अगर ऐसा हुआ तो नए सिरे से रोज़े रखने पड़ेंगे.

(१४) यानी रोज़ों से जो कफ़्फ़ारा दिया जाए उसका भी हमबिस्तरी से पहले होना ज़रूरी है और जब तक वो रोज़े पूरे हों, शौहर बीवी में से किसी को हाथ न लगाए.

(१५) यानी उसे रोज़े रखने की ताक़त ही न हो, बुढ़ापे या बीमारी के कारण, या रोज़े तो रख सकता हो मगर लगातार एक के बाद एक न रख सकता हो.

(१६) यानी साठ मिस्कीनों का खाना देना और यह इसतरह कि हर मिस्कीन को निस्फ़ साअ गेहूँ या एक साअ ख़जूर या जौ दे और अगर मिस्कीनों को उसकी क़ीमत दी या सुब्ह शाम दोनों समय उन्हें पेट भर खाना खिला दिया तब भी जायज़ है. इस कफ़्फ़ारे में यह शर्त नहीं कि एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले हो, यहाँ तक कि अगर खाना खिलाने के बीच में शौहर और बीवी में क़ुर्बत

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ
وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا
اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ
اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا
اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ
صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अज़ाब क्यों नहीं करता हमारे इस कहने पर(१२) उन्हें जहन्नम बस है, उसमें धंसेंगे तो क्या ही बुरा अंजाम(८) ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मशविरत(परामर्श) करो तो गुनाह और हद से बढ़ने और रसूल की नाफ़रमानी की मशविरत न करो(१३) और नेकी और परहेज़गारी की मशविरत करो, और अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ उठाए जाओगे(९) वह मशविरत तो शैतान ही की तरफ़ से है(१४) इसलिये कि ईमान वालों को रंज दे और वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ख़ुदा के हुक्म के बिना और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये(१५)(१०) ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दो तो जगह दो, अल्लाह तुम्हें जगह देगा(१६) और जब कहा जाए उठ खड़े हो तो उठ खड़े हो(१७) अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उनके जिनको इल्म दिया गया(१८) दर्जे बलन्द फ़रमाएगा, और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है(११) ऐ ईमान वालो ! जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अर्ज़ करना चाहो तो अपने अर्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो(१९) यह तुम्हारे लिये बहुत बेहतर और बहुत सुथरा है, फिर अगर तुम्हें मक़दूर न हो

वाक़े हुई तो नया कफ़्फ़ारा देना लाज़िम न होगा.
(१७) और ख़ुदा और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो और जिहालत के तरीक़े को छोड़ दो.
(१८) उनको तोड़ना और उनसे आगे बढ़ना जायज़ नहीं.
(१९) रसूलों की मुख़ालिफ़त करने के कारण.
(२०) रसूलों की सच्चाई को प्रमाणित करने वाली.
(२१) किसी एक को बाक़ी न छोड़ेगा.
(२२) रूस्वा और शर्मिन्दा करने के लिये.
(२३) अपने कर्म जो दुनिया में करते थे.

सूरए मुजादलह - दूसरा रूकू

(१) उससे कुछ छुपा नहीं.
(२) और अपने राज़ आपस में कानों में कहें और अपनी बात चीत पर किसी को सूचित न होने दें.
(३) यानी अल्लाह तआला उन्हें देखता है, उनके राज़ जानता है.
(४) कानाफ़ूसी हो.
(५) यानी अल्लाह तआला.
(६) यानी पाँच और तीन से.
(७) अपने इल्म और क़ुदरत से.
(८) यह अल्लाह यहूदियों और दोहरी प्रवृत्ति वाले मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी. वो आपस में काना फ़ूसी करते और मुसलमानों की तरफ़ देखते जाते और आँखों से उनकी तरफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसलमान समझें कि उनके ख़िलाफ़ कोई छुपी बात है और इससे उन्हें दुख हो. उनकी इस हरकत से मुसलमानों को दुख होता था और वो कहते थे कि शायद इन लोगों को हमारे उन भाइयों की निस्बत क़त्ल या हार की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और ये उसी के बारे में बातें बनाते और इशारे करते हैं. जब मुनाफ़िक़ों की ये हरकतें ज़्यादा होगईं और मुसलमानों ने सैयदे आलम के हुज़ूर में इसकी शिकायतें कीं तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कानाफ़ूसी करने वालों को मना फ़रमाया लेकिन वो नहीं माने और यह हरकत करते ही रहे इसपर यह आयत उतरी.
(९) गुनाह और हद से बढ़ना यह कि मक्कारी के साथ कानाफ़ूसी करके मुसलमानों को दुख में डालते हैं.

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا بَيْنَ
يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَاتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِم مَّا هُم مِّنكُمْ
وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ لَّن تُغْنِيَ
عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝

तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है﴾१२﴿ क्या तुम इससे डरे कि तुम अपनी अर्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दो[२०] फिर जब तुमने यह न किया और अल्लाह ने अपनी कृपा से तुम पर तवज्जुह फ़रमाई[२१] तो नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल के फ़रमाँबरदार रहो, और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है﴾१३﴿

तीसरा रूकू

क्या तुमने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है[१] वो न तुम से न उनसे[२] वो जानकर झूटी क़सम खाते हैं[३]﴾१४﴿ अल्लाह ने उनके लिये सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं﴾१५﴿ उन्होंने अपनी क़समों को[४] ढाल बना लिया है[५] तो अल्लाह की राह से रोका[६] तो उनके लिये ख़्वारी का अज़ाब है[७]﴾१६﴿ उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न देंगे[८] वो दोज़ख़ी हैं, उन्हें उसमें हमेशा रहना﴾१७﴿ जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा तो उसके हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खाएंगे जैसे तुम्हारे सामने खा रहे हैं[९] और वो यह समझते हैं कि उन्होंने कुछ किया[१०] सुनते हो बेशक वही झूठे हैं[११]﴾१८﴿

(१०) और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमानी यह कि मना करने के बाद भी बाज़ नहीं आते और यह भी कहा गया कि उनमें एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की नाफ़रमानी करो.

(११) यहूदी नबीये अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास आते तो अस्सामो अलैका(तुमपर मौत हो) कहते. साम मौत को कहते हैं. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके जवाब में अलैकुम(और तुपर भी) फ़रमा देते.

(१२) इससे उनकी मुराद यह थी कि अगर हुज़ूर नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआला हमे अज़ाब करता. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(१३) और जो तरीक़ा यहूदियों और मुनाफ़िक़ों का है उससे बचो.

(१४) जिसमें गुनाह और हद से बढ़ना और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमानी हो और शैतान अपने दोस्तों को उसपर उभारता है.

(१५) कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे में नहीं रहता.

(१६) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बद्र में हाज़िर होने वाले सहाबा की इज़्ज़त करते थे. एक रोज़ चन्द बद्री सहाबा ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी. उन्होंने हुज़ूर के सामने खड़े होकर सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर ने जवाब दिया. फिर उन्होंने हाज़िरीन को सलाम किया उन्होंने जवाब दिया फिर वो इस इन्तिज़ार में खड़े रहे कि उनके लिये मजलिस शरीफ़ में जगह की जाए मगर किसी ने जगह न दी. यह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरा लगा तो हुज़ूर ने अपने क़रीब बैठने वालों को उठाकर उनके लिये जगह की. उठने वालों को उठना अच्छा नहीं लगा इसपर यह आयत उतरी.

(१७) नमाज़ के या जिहाद के या और किसी नेक काम के लिये और इसी में ज़िक्रे रसूल की ताज़ीम के लिये खड़ा होना.

(१८) अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी के कारण.

(१९) कि उसमें रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में हाज़िरी की ताज़ीम और फ़क़ीरों का नफ़ा है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में जब मालदारों ने अर्ज़ मअरूज़ का सिलसिला दराज़ किया और नौबत यहाँ तक पहुंची कि फ़क़ीरों को अपनी अर्ज़ पेश करन को मौक़ा कम मिलने लगा, तो अर्ज़ पेश करने वालों को अर्ज़ पेश करने से पहले सदक़ा देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने अमल किया और एक दीनार सदक़ा करके दस मसअले दरियाफ़्त किये अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम वफ़ा क्या है? फ़रमाया, तौहीद और तौहीद की शहादत देना, अर्ज़ किया, फ़साद क्या है? फ़रमाया, कुफ़्र और शिर्क. अर्ज़ किया, हक़ क्या है? फ़रमाया, इस्लाम और क़ुरआन और विलायत, जब तुझे मिले. अर्ज़ किया, हीला क्या है? यानी तदबीर? फ़रमाया, तर्के हीला. अर्ज़ किया, मुझ पर क्या लाज़िम है? फ़रमाया, अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी. अर्ज़ किया, अल्लाह तआला से दुआ कैसे माँगूं? फ़रमाया, सच्चाई

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾

اٰيَاتُهَا ٢٤ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠١) رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ

منزل ٧

उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद भुलादी, वो शैतान के गिरोह हैं, सुनता है बेशक शैतान ही का गिरोह हार में है[12]﴿१९﴾ बेशक वो जो अल्लाह और उसक रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं, वो सबसे ज़्यादा ज़लीलों में हैं﴿२०﴾ अल्लाह लिख चुका[13] कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल[14] बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है﴿२१﴾ तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उनसे जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की[15] अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों[16] ये हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उनकी मदद की[17] और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें उनमें हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी[18] और वो अल्लाह से राज़ी[19] यह अल्लाह की जमाअत है सुनता है अल्लाह ही की जमाअत कामयाब है﴿२२﴾

५९- सूरए हश्र

सूरए हश्र मदीने में उतरी, इसमें २४ आयतें, तीन रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]
अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और

और यक़ीन के साथ. अर्ज़ किया, क्या माँगूं? फ़रमाया, आक़िबत. अर्ज़ किया, अपनी निजात के लिये क्या करूं? फ़रमाया, हलाल खा और सच बोल. अर्ज़ किया, सुरूर क्या है? फ़रमाया, जन्नत. अर्ज़ किया, राहत क्या है? फ़रमाया, अल्लाह का दीदार. जब अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो इन सवालों के जवाब से फ़ारिग़ हो गए तो यह हुक्म मन्सूख़ हो गया और रूख़सत नाज़िल हुई और हज़रत अली के सिवा और किसी को इसपर अमल करने का वक़्त नहीं मिला. (मदारिक व ख़ाज़िन) हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने फ़रमाया, यह इसकी अस्ल है जो औलिया की मज़ारात पर तस्दीक़ के लिये शीरीनी ले जाते हैं.

(२०) अपनी ग़रीबी और नादारी के कारण.

(२१) और सदक़े की पहल छोड़ने की पकड़ तुम पर से उठाली और तुमको इख़्तियार दे दिया.

सूरए मुजादलह - तीसरा रूकू

(१) जिन लोगों पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब है उनसे मुराद यहूदी हैं और उनसे दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़. यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी जिन्हों ने यहूदियों से दोस्ती की और उनकी ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसलमानों के राज़ उनसे कहते.

(२) यानी न मुसलमान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं बीच में लटके हुए.

(३) यह आयत अब्दुल्लाह बिन नबतल मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस में हाज़िर रहता यहाँ की बात यहूदियों के पास पहुंचाता. एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दौलत सराय अक़दस में तशरीफ़ फ़रमा थे. हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आएगा जिसका दिल निहायत सख़्त और शैतान की आँखों से देखता है. थोड़ी ही देर बाद अब्दुल्लाह बिन नबतल आया उसकी आखें नीली थीं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उससे फ़रमाया तू और तेरे साथी हमें क्यों गालियाँ देते हैं. वह क़सम खागया कि ऐसा नहीं करता. और अपने यारों को ले आया उन्होंने भी क़सम खाई कि हमने आपको गाली नहीं दी. इसपर यह आयत उतरी.

(४) जो झूटी हैं.

(५) कि अपना जान माल मेहफ़ूज़ रहे.

(६) यानी मुनाफ़िक़ों ने अपनी इस हीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोका और कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि मानी यह हैं कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोका.

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ
يَخْرُجُوا ۖ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ
اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۖ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ
الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ
فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ
الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ
النَّارِ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ
يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ
مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ
اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ
مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ
وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ

منزل ٧

जो कुछ ज़मीन में, और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है[२] ﴿१﴾ वही है जिसने उन काफ़िर किताबियों को[३] उनके घरों से निकाला[४] उनके पहले हश्र के लिये[५] तुम्हें गुमान न था कि वो निकलेंगे[६] और वो समझते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो अल्लाह का हुक्म उनके पास आया जहाँ से उनका गुमान भी न था[७] और उस ने उनके दिलों में रोब डाला[८] कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों[९] और मुसलमानें के हाथों[१०] तो इबरत लो ऐ निगाह वालो ﴿२﴾ और अगर न होता कि अल्लाह ने उनपर घर से उजड़ना लिख दिया था तो दुनिया ही में उनपर अज़ाब फ़रमाता[११] और उनके लिये[१२] आख़िरत में आग का अज़ाब है ﴿३﴾ यह इसलिये कि वो अल्लाह और उसके रसूल से फटे (जुदा) रहे[१३] और जो अल्लाह और उसके रसूल से फटा रहे, तो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है ﴿४﴾ जो दरख़्त तुमने काटे या उनकी जड़ों पर क़ायम छोड़ दिये यह सब अल्लाह की इजाज़त से था[१४] और इसलिये कि फ़ासिकों को रूसवा करे[१५] ﴿५﴾ और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को उनसे[१६] तो तुमने उनपर न अपने घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट[१७] हाँ अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे[१८]

(७) आख़िरत में.
(८) और क़यामत के दिन उन्हें अल्लाह के अज़ाब से न बचा सकेंगे.
(९) कि दुनिया में मूमिन मुख़्लिस थे.
(१०) यानी वो अपनी उन झूटी क़स्मों को कारआमद समझते हैं.
(११) अपनी क़स्मों में और ऐसे झूटे कि दुनिया में भी झूट बोलते रहे और आख़िरत में भी रसूल के सामने भी और ख़ुदा के सामने भी.
(१२) कि जन्नत की हमेशा की नेअमतों से मेहरूम और जहन्नम के अबदी अज़ाब में गिरफ़्तार.
(१३) लौहे मेहफ़ूज़ म.
(१४) हुज्जत के साथ या तलवार के साथ.
(१५) यानी मूमिनों से यह हो ही नहीं सक्ता और उनकी यह शान ही नहीं और ईमान इसको गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दूश्मन से दोस्ती करे. इस आयत से मालूम हुआ कि बददीनों और बदमज़हबों और ख़ुदा और रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बेअदबी करने वालों से ताल्लुक़ात और मेलजोल जायज़ नहीं.
(१६) चुनांन्चे हज़रत अबूउबैदह बिन जर्राह ने उहुद की जंग में अपने बाप जर्राह को क़त्ल किया और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने बद्र के दिन अपने बेटे अब्दुर्रहमान को लड़ने के लिये पुकारा लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुसअब बिन उमैर ने अपने भाई अब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्होने अपने मामूँ आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह को बद्र के दिन क़त्ल किया और हज़रत अली बिन अबी तालिब व हमज़ा व अबू उबैदह ने रबीआ के बेटों उतबह और शैबह को और वलीद बिन उतबह को बद्र में क़त्ल किया जो उनके रिश्तेदार थे. ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को रिश्तेदारी का क्या लिहाज़.
(१७) इस रूह से या अल्लाह की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिब्रईल या अल्लाह की रहमत या नूर.
(१८) उनके ईमान, इख़्लास और फ़रमाँबरदारी के कारण.
(१९) उसके रहमत और करम से.

५९ - सूरए हश्र - पहला रुकू

(१) सूरए हश्र मदीने में उतरी. इसमें तीन रुकू, ३४ आयतें. ४४५ कलिमे एक हज़ार नौ सौ तेरह अक्षर हैं.
(२) यह सूरत बनी नुज़ैर के हक़ में नाज़िल हुई. ये लोग यहूदी थे. जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए

तैय्यिबह में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो उन्होंने हुज़ूर से इस शर्त पर सुलह की कि न आपके साथ होकर किसी से लड़ें, न आपसे जंग करें. जब जंगे बद्र में इस्लाम की जीत हुई तो बनी नुज़ैर ने कहा कि यह वही नबी हैं जिनकी सिफ़त तौरात में है. फिर जब उहद में मुसलमानों को आरिज़ी हार की सूरत पेश आई तो यो शक में पड़े और उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलहे वसल्लम और हुज़ूर के नियाज़मन्दों के साथ दुश्मनी ज़ाहिर की. और जो मुआहिदा किया था वह तोड़ दिया और उनका एक सरदार कअब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सवारों के साथ मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और काबा मुअज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलहे वसल्लम के ख़िलाफ़ समझौता किया. अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस की ख़बर दे दी थी. और बनी नुज़ैर से एक ख़यानत और भी वाक़े हो चुकी थी कि उन्होंने क़िले के ऊपर से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलहे वसल्लम पर बुरे इरादे से एक पत्थर गिराया था. अल्लाह तआला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और अल्लाह के फ़ज़्ल से हुज़ूर मेहफ़ूज़ रहे. जब बनी नुज़ैर के यहूदियों ने ख़यानत की और एहद तोड़ा और क़ुरैश के काफ़िरों से हुज़ूर के ख़िलाफ़ एहद जोड़ा तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुस्लिमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्होंने कअब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया. फिर हुज़ूर लश्कर के साथ बनी नुज़ैर की तरफ़ रवाना हुए और उनका मुहासिरा कर लिया. यह घिराव २१ दिन चला. उस बीच मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों से हमदर्दी और मदद के बहुत से मुआहिदे किये लेकिन अल्लाह तआला ने उन सबको नाकाम किया. यहूद के दिलों में रोअब डाला. आख़िरकार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जिलावतन होना पड़ा. और वो शाम और अरीहा और ख़ैबर की तरफ़ चले गए.

(३) यानी बनी नुज़ैर के यहूदियों को.

(४) जो मदीनए तैय्यिबह में थे.

(५) यह जिलावतनी उनका पहला हश्र और दूसरा हश्र उनका यह है कि अमीरुल मूमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने उन्हें अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में ख़ैबर से शाम की तरफ़ निकाला था. आख़िरी हश्र क़यामत के दिन का हश्र है कि आग सब लोगों को सरज़मीने शाम की तरफ़ ले जाएगी और वहीं उनपर क़यामत क़ायम होगी. उसके बाद मुसलमानों से ख़िताब किया जाता है.

(६) मदीने से, क्योंकि क़ुव्वत और लश्कर वाले थे. मज़बूत क़िले रखते थे. उनकी संख्या भी काफ़ी थी, जागीरें थीं, दौलत थी.

(७) यानी ख़तरा भी न था कि मुसलमान उनपर हमला कर सकते हैं.

(८) उनके सरदार कअब बिन अशरफ़ के क़त्ल से.

(९) और उनको ढाते हैं ताकि जो लकड़ी वग़ैरह उन्हें अच्छी मालूम हो वो जिलावतन होते वक़्त अपने साथ लेते जाएं.

(१०) कि उनके मकानों के जो हिस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसलमान गिरा देते थे ताकि जंग के लिये मैदान साफ़ हो जाए.

(११) और उन्हें क़त्ल और क़ैद में जकड़ता जैसा कि बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों के साथ किया.

(१२) हर हाल में, चाहे जिलावतन किये जाएं या क़त्ल किये जाएं.

(१३) यानी विरोध पर डटे रहे.

(१४) जब बनी नुज़ैर ने अपने क़िलों में पनाह ले ली तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके पेड़ काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया. इसपर वो बहुत घबराए और रंजीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किताब में इसी का हुक्म है. मुसलमान इस मुद्दे पर अलग अलग राय के हो गए. कुछ ने कहा, पेड़ न काटो कि ये ग़नीमत यानी दुश्मन का छोड़ा हुआ माल हैं जो अल्लाह तआला ने हमें अता किये हैं. कुछ ने कहा, काट डाले जाएं कि इससे काफ़िरों को रुसवा करना और उन्हें गुस्सा दिलाना मक़सूद है. इसपर यह आयत उतरी. और इसमें बताया गया कि मुसलमानों में जो पेड़ काटने वाले हैं उनका कहना भी ठीक है और जो न काटने की कहते हैं उनका ख़याल भी सही है, क्योंकि दरख़्तों का काटना और उनका छोड़ देना ये दोनों अल्लाह तआला के इज़्न और इजाज़त से है.

(१५) यानी यहूदियों को ज़लील करे पेड़ काटने की इजाज़त देकर.

(१६) यानी बनी नुज़ैर के यहूदियों से.

(१७) यानी उसके लिये तुम्हें कोई कोफ़्त या मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ी. सिर्फ़ दो मील का फ़ासला था. सब लोग पैदल चले गए सिर्फ़ रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सवार हुए.

(१८) अपने दुश्मनों में से, मुराद यह है कि बनी नुज़ैर से जो ग़नीमतें हासिल हुईं उनके लिये मुसलमानों को जंग करना नहीं पड़े. अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनपर मुसल्लत कर दिया. ये माल हुज़ूर की मर्ज़ी पर है, जहां चाहें ख़र्च करें. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह माल मुहाजिरों पर तक़सीम फ़रमा दिया. और अन्सार में से सिर्फ़ तीन हाजतमन्द लोगों को दिया वो अबू दुजाना समाक बिन ख़रशाहकी और सहल बिन हनीफ़ और हारिस बिन सुम्मा हैं.

(१९) पहली आयत में ग़नीमत का जो ज़िक्र हुआ इस आयत में उसीकी व्याख्या है और कुछ मुफ़स्सिरों ने इस क़ौल का विरोध किया और फ़रमाया कि पहली आयत बनी नुज़ैर के अमवाल के बारे में उतरी. उनको अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिये ख़ास किया और यह आयत हर उस शहर की ग़नीमतों के बारे में है जिसको मुसलमान अपनी क़ुव्वत से हासिल करें. (मदारिक)

(२०) रिश्तेदारों से मुराद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के एहले क़राबत हैं यानी बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब.

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ
الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ
الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا
نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ
فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى
اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۗ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ

وقف لازم

और अल्लाह सब कुछ कर सकता है(६) जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर वालों से[१९] वह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों[२०] और यतीमों और मिस्कीनों (दरिद्रों) और मुसाफ़िरों के लिये कि तुम्हारे मालदारों का माल न हो जाए[२१] और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फ़रमाएं वह लो[२२] और जिससे मना फ़रमाएं बाज़ रहो, और अल्लाह से डरो[२३] बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है[२४](७) उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए[२५] अल्लाह का फ़ज़्ल[२६] और उसकी रज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल की मदद करते[२७] वही सच्चे हैं[२८](८) और जिन्होंने पहले से[२९] इस शहर[३०] और ईमान में घर बना लिया[३१] दोस्त रखते हैं उन्हें जो उनकी तरफ़ हिजरत करके गए[३२] और अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते[३३] उस चीज़ की जो दिये गए[३४] और अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं[३५] अगरचे उन्हें शदीद (सख़्त) मुहताजी हो[३६] और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया[३७] तो वही कामयाब हैं(९) और वो जो उनके बाद आए[३८] अर्ज़ करते हैं ऐ

(२१) और ग़रीब और फ़क़ीर नुक़सान में रहें जैसा कि इस्लाम से पहले के ज़माने में तरीक़ा था कि ग़नीमत में से एक चौथाई तो सरदार ले लेता था, बाक़ी क़ौम के लिये छोड़ देता था. इसमें से मालदार लोग बहुत ज़ियादा ले लेते थे और ग़रीबों के लिये बहुत थोड़ा बचता था. इसी तरीक़े के अनुसार लोगों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर ग़नीमत में से चौथा हिस्सा ले लें बाक़ी हम आपस में तक़सीम कर लेंगे. अल्लाह तआला ने इसका रद फ़रमाया और तक़सीम का इख़्तियार नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दिया और उसका तरीक़ा इरशाद फ़रमाया.

(२२) ग़नीमत में से क्योंकि वो तुम्हारे लिये हलाल है. या ये मानी हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जो तुम्हें हुक्म दें उसका पालन करो क्योंकि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इताअत हर काम में वाजिब है.

(२३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुख़ालिफ़त न करो और उनके इरशाद पर तअमील में सुस्ती न करो.

(२४) उनपर जो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नाफ़रमानी करे और ग़नीमत के माल में, जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का हक़ है, ऐसा ही.

(२५) और उनके घरों और मालों पर मक्का के काफ़िरों ने क़ब्ज़ा कर लिया. इस आयत से साबित हुआ हे कि काफ़िर इस्तीला (ग़ालिब होने) से मुसलमानों के अमवाल के मालिक हो जाते हैं.

(२६) यानी आख़िरत का सवाब.

(२७) अपने जानो माल से दीन की हिमायत में.

(२८) ईमान और इख़्लास में. क़तादह ने फ़रमाया कि उन मुहाजिरों ने घर और माल और कुंबे अल्लाह तआला और रसूल की महब्बत में छोड़े और इस्लाम को क़ुबूल किया और उन सारी सख़्तियों को गवारा किया जो इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से उन्हें पेश आईं. उनकी हालतें यहां पहुंचीं कि भूक की शिद्दत से पेट पर पत्थर बांधते थे और जाड़ों में कपड़ा न होने के कारण गढ़ों और ग़ारों में गुज़ारा करते थे. हदीस शरीफ़ में आया है कि फ़क़ीर मुहाजिरीन मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में जाएंगे.

(२९) यानी मुहाजिरों से पहले या उनकी हिजरत से पहले बल्कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले.

(३०) मदीनए पाक.

(३१) यानी मदीनए पाक को वतन और ईमान को अपनी मंज़िल बनाया और इस्लाम लाए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाईं उनका यह हाल है कि.

مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ
قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝
لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا
يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا
يُنْصَرُوْنَ ۝ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ
مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَا
يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ
وَّرَاۗءِ جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا

منزل ٧

हमारे रब ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न रख(३९) ऐ रब हमारे ! बेशक तू ही बहुत मेहरबान रहम वाला है(१०)

दूसरा रूकू

क्या तुमने मुनाफ़िक़ों (दोग़लों) को न देखा(१) कि अपने भाइयों काफ़िर किताबियों(२) से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए(३) तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में किसी की न मानेंगे(४) और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाह है कि वो झूटे हैं(५)(११) अगर वो निकाले गए(६) तो ये उनके साथ न निकलेंगे, और उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे(७) अगर उनकी मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर(८) मदद न पाएंगे(१२) बेशक(९) उनके दिलों में अल्लाह से ज़्यादा तुम्हारा डर है(१०) यह इस लिये कि वो नासमझ लोग हैं(११)(१३) ये सब मिलकर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़िलेबन्द शहरों में या धुसों (शहर-पनाह) के पीछे, आपस में उनकी आंच (जोश)

(३२) चुनांन्चे अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें आधे का शरीक करते हैं.

(३३) यानी उनके दिलों में कोई ख़्वाहिश और तलब नहीं पैदा होती.

(३४) यानी मुहाजिरीन को जो ग़नीमत के माल दिये गए, अन्सार के दिल में उनकी कोई ख़्वाहिश पैदा नहीं होती, रश्क तो क्या होता. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बरकत ने दिल ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरों के साथ ये सुलूक करते हैं.

(३५) यानी मुहाजिरों को.

(३६) हदीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में एक भूखा आदमी आया. हुज़ूर ने अपनी पाक मुक़द्दस बीबियों के हुजरों पर मालूम कराया कि क्या खाने की कोई चीज़ है. मालूम हुआ कि किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है तो हुज़ूर ने सहाबा से फ़रमाया जो इस आदमी को मेहमान बनाए, अल्लाह तआला उसपर रहमत फ़रमाए. हज़रत अबू तलहा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त लेकर मेहमान को अपने घर ले गए. घर जाकर बीबी से पूछा, कुछ है? उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं. सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है. हज़रत अबूतलहा ने फ़रमाया बच्चों को बहलाकर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चिराग़ दुरुस्त करने उठो और चिराग़ को बुझा दो ताकि वह अच्छी तरह खाले. यह इस लिये कहा कि मेहमान यह न जान सके कि घर वाले उसके साथ नहीं खा रहे हैं. क्योंकि उसको यह मालूम होगा तो वह इसरार करेगा और खाना कम है, भूखा रह जाएगा. इस तरह मेहमान को खिलाया और आप उन लोगों ने भूखे पेट रात गुज़ारी. जब सुबह हुई और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस ने फ़रमाया, रात फ़लां फ़लां लोगों में अजीब मामला पेश आया. अल्लाह तआला उनसे बहुत राज़ी है और यह आयत उतरी.

(३७) यानी जिसके नफ़्स को लालच से पाक किया गया.

(३८) यानी मुहाजिरों और अन्सार के, इसमें क़यामत तक पैदा होने वाले मुसलमान दाख़िल हैं.

(३९) यानी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा की तरफ़ से. जिसके दिल में किसी सहाबी की तरफ़ से बुग़्ज़ और कदूरत हो और वह उनके लिए रहमत और मग़फ़िरत की दुआ न करे वह मूमिन की क़िस्म से बाहर है क्योंकि यहां मूमिनों की तीन क़िस्में फ़रमाई गई, मुहाजिर, अन्सार और उनके बाद वाले जो उनके ताबेअ हों और उनकी तरफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करें तो जो सहाबा से कदूरत रखे, राफ़िज़ी हो या ख़ारिजी, वह मुसलमानों की इन तीनों क़िस्मों से बाहर है. हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो यह दिया गया कि सहाबा के लिये इस्तिग़फ़ार करें और करते हैं यह, कि गालियां देते हैं.

सूरए हश्र - दूसरा रूकू

(१) अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सुलूल मुनाफ़िक़ और उसके साथियों को.

وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۟
كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۟ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ
لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْۤ
اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۟ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَاۤ اَنَّهُمَا فِي
النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۟
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۟ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ
اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۟ لَا يَسْتَوِيْۤ
اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ
الْفَآئِزُوْنَ ۟ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ
لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ

सख़्त है[१२] तुम उन्हें एक जथा समझोगे और उनके दिल अलग अलग हैं, यह इसलिये कि वो बेअक़्ल लोग हैं[१३] ﴾१४﴿ उनकी सी कहावत जो अभी क़रीब ज़माने में उनसे पहले थे[१४] उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा[१५] और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है[१६] ﴾१५﴿ शैतान की कहावत जब उसने आदमी से कहा कुफ़्र कर, फिर जब उसने कुफ़्र कर लिया, बोला मैं तुझसे अलग हूँ, मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जगत का रब[१७] ﴾१६﴿ तो उन दोनों का[१८] अंजाम यह हुआ कि वे दोनों आग में हैं हमेशा उसमें रहे, और ज़ालिमों की यही सज़ा है ﴾१७﴿

तीसरा रूकू

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो[१] और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा[२] और अल्लाह से डरो[३] बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है ﴾१८﴿ और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे[४] तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं[५] वही फ़ासिक़ हैं ﴾१९﴿ दोज़ख़ वाले[६] और जन्नत वाले[७] बराबर नहीं, जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे ﴾२०﴿ अगर हम यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतारते[८] तो ज़रूर तू उसे देखता झुका

(२) यानी बनी क़ुरैज़ा और बनी नुज़ैर के यहूदी.
(३) मदीना शरीफ़ से.
(४) यानी तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी का कहना न मानेंगे न मुसलमानों का, न रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का.
(५) यानी यहूदियों से मुनाफ़िक़ों के ये सब वादे झूटे हैं. इसके बाद अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों के हाल की ख़बर देता है.
(६) यानी यहूदी.
(७) चुनांन्चे ऐसा ही हुआ कि यहूदी निकाले गए और मुनाफ़िक़ उनके साथ न निकले और यहूदियों से जंग हुई और मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों की मदद न की.
(८) जब ये मददगार भाग निकलेंगे तो मुनाफ़िक़.
(९) ऐ मुसलमानो.
(१०) कि तुम्हारे सामने तो कुफ़्र ज़ाहिर करने में डरते हैं और यह जानते हुए भी कि अल्लाह तआला दिलों की छुपी बातें जानता है, दिल में कुफ़्र रखते हैं.
(११) अल्लाह तआला की अज़मत को नहीं जानते वरना जैसा उससे डरने का हक़ है डरते.
(१२) यानी जब वो आपस में लड़ें तो बहुत सख़्ती और क़ुव्वत वाले हैं लेकिन मुसलमानों के मुक़ाबिले में बुज़दिल और नामर्द साबित होंगे.
(१३) इसके बाद यहूदियों की एक मिसाल इरशाद फ़रमाई.
(१४) यानी उनका हाल मक्के के मुश्रिकों जैसा है कि बद्र में ---
(१५) यानी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ दुश्मनी रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लत और रूस्वाई के साथ हलाक किये गए.
(१६) और मुनाफ़िक़ों का बनी नुज़ैर यहूदियों के साथ सुलूक ऐसा है जैसे --
(१७) ऐसे ही मुनाफ़िक़ों ने बनी नुज़ैर को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उनसे मदद के वादे किये और जब उनके कहे से वो अहले इस्लाम के मुक़ाबले में लड़ने आए तो मुनाफ़िक़ बैठ रहे उनका साथ न दिया.
(१८) यानी उस शैतान और इन्सान का.

सूरए हश्र - तीसरा रूकू

(१) और उसके हुक्म का विरोध न करो.
(२) यानी क़यामत के दिन के लिये क्या कर्म किये.

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ۝
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ
أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا
جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ

हुआ पाश पाश होता, अल्लाह के डर से[९] और ये मिसालें लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वो सोचें﴿२१﴾ वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, हर छुपे ज़ाहिर का जानने वाला [१०] वही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला﴿२२﴾ वही है अल्लाह जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह[११] निहायत(परम) पाक[१२] सलामती देने वाला[१३] अमान बख़्शने वाला[१४] हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला अज़मत वाला तकब्बुर(बड़ाई) वाला[१५] अल्लाह को पाकी है उनके शिर्क से﴿२३﴾ वही है अल्लाह बनाने वाला पैदा करने वाला[१६] हर एक को सूरत देने वाला[१७] उसी के हैं सब अच्छे नाम[१८] उसकी पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वही इज़्ज़त व हिकमत(बोध) वाला है﴿२४﴾

६० - सूरए मुम्तहिनह

सूरए मुम्तहिनह मदीने में उतरी, इसमें १३ आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
ऐ ईमान वालो ! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ[२] तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो दोस्ती से हालांकि वो मुन्किर हैं उस हक़ के जो तुम्हारे पास आया[३] घर से अलग

(३) उसकी ताअत और फ़रमाँबरदारी में सरगर्म रहो.
(४) उसकी ताअत छोड़ दी.
(५) कि उनके लिये फ़ायदा देने वाले और काम आने वाले अमल कर लेते.
(६) जिनके लिये हमेशा का अज़ाब है.
(७) जिनके लिये हमेशा का ऐश और हमेशा की राहत है.
(८) और उसको इन्सान की सी तमीज़ अता करते.
(९) यानी क़ुरआन की अज़मत व शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर समझ होती तो वह बावुजूद इतना सख़्त और मज़बूत होने के टुकड़े टुकड़े हो जाता इससे मालूम होता है कि काफ़िरों के दिल कितने सख़्त है कि ऐसे अज़मत वाले कलाम से प्रभावित नहीं होते.
(१०) मौजूद का भी और मअदूम का भी दुनिया और आख़िरत का भी.
(११) मुल्क और हुकूमत का हक़ीक़ी मालिक कि तमाम मौजूदात उसके तहत मुल्को हुकूमत है और उसकी मालिकिय्यत और सलतनत दायमी है जिसे ज़वाल नहीं.
(१२) हर ऐब से और तमाम बुराइयों से.
(१३) अपनी मख़्लूक़ को.
(१४) अपने अज़ाब से अपने फ़रमाँबरदार बन्दों को.
(१५) यानी अज़मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में और अपनी बड़ाई का इज़्हार उसी के शायाँ और लायक़ है उसका हर कमाल अज़ीम है और हर सिफ़्त आली . मख़्लूक़ में किसी को नहीं पहुंचता कि घमण्ड यानी अपनी बड़ाई का इज़्हार करे. बन्दे के लिये विनम्रता सबसे बेहतर है.
(१६) नेस्त से हस्त करने वाला.
(१७) जैसी चाहे.
(१८) निनानवे जो हदीस में आए हैं.

أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۭ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي
سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۗ تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۗ
وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۭ وَمَنْ يَفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ يَثْقَفُوكُمْ
يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ
وَأَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ
أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ فِي إِبْرٰهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۚ إِذْ قَالُوا
لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ ۡ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَحْدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرٰهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا

منزل ٧

करते हैं(४) रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रज़ा चाहने को, तो उनसे दोस्ती न करो तुम उन्हें ख़ुफ़िया संदेश महब्बत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूँ जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो, और तुम में जो ऐसा करे बेशक वह सीधी राह से बहका(१) अगर तुम्हें पाएं(५) तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ(६) और अपनी ज़बानें(७) बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उनकी तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ(८)(२) हरगिज़ काम न आएंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद(९) क़यामत के दिन तुम्हें उनसे अलग कर देगा(१०) और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है(३) बेशक तुम्हारे लिये अच्छी पैरवी थी(११) इब्राहीम और उसके साथ वालों में(१२) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा(१३) बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उनसे जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो, हम तुम्हारे इन्कारी हुए(१४) और हम में और तुम में दुश्मनी और अदावत ज़ाहिर होगई हमेशा के लिये जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़फ़िरत

६० - सूरए मुम्तहिनह - पहला रूकू

(१) सूरए मुम्तहिनह मदनी है इसमें दो रूकू, तेरह आयतें, तीन सौ अड़तालीस कलिमे, एक हज़ार पाँच सौ दस अक्षर हैं.

(२) यानी काफ़िरों को. बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बाँदी सारह मदीनए तैय्यिबह में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर में हाज़िर हुई जबकि हुज़ूर मक्के की फ़त्ह का सामान फ़रमा रहे थे. हुज़ूर ने उससे फ़रमाया क्या तू मुसलमान होकर आई है? उसने कहा, नहीं. फ़रमाया, क्या हिजरत करके आई? अर्ज़ किया, नहीं. फ़रमाया, फिर क्यों आई ? उसने कहा, मोहताजी से तंग होकर. बनी अब्दुल मुत्तलिब ने उसकी इमदाद की. कपड़े बनाए, सामान दिया. हातिब बिन अबी बलतअह रदियल्लाहो अन्हो उससे मिले. उन्होंने उसको दस दीनार दिये, एक चादर दी और एक ख़त मक्के वालों के पास उसकी मअरिफ़त भेजा जिसका मज़मून यह था कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम पर हमले का इरादा रखते हैं, तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो. सारह यह ख़त लेकर रवाना हो गई. अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इसकी ख़बर दी. हुज़ूर ने अपने कुछ सहाबा को, जिनमें हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो भी थे, घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ामे रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औरत मिलेगी उसके पास हातिब बिन अबी बलतअह का ख़त है जो मक्के वालों के नाम लिखा गया है. वह ख़त उससे ले लो और उसको छोड़ दो. अगर इन्कार करे तो उसकी गर्दन मार दो. ये हज़रात रवाना हुए और औरत को ठीक उसी जगह पर पाया जहाँ हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया था. उससे ख़त माँगा. वह इन्कार कर गई और क़सम खागई. सहाबा ने वापसी का इरादा किया. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो ने क़सम खाकर फ़रमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़बर ग़लत हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औरत से फ़रमाया या ख़त निकाल या गर्दन रख. जब उसने देखा कि हज़रत बिल्कुल क़त्ल करने को तैयार हैं तो अपने जूड़े में से ख़त निकाला. हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत हातिब को बुलाकर फ़रमाया कि ऐ हातिब इसका क्या कारण. उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम मैं जबसे इस्लाम लाया कभी मैंने कुफ़्र नहीं किया और जबसे हुज़ूर की नियाज़मन्दी मयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़यानत न की और जब से मक्के वालों को छोड़ा कभी उनकी महब्बत न आई लेकिन वाक़िआ यह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उनकी क़ौम से न था मेरे सिवा और जो मुहाजिर हैं उनके मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उनके घरबार की निगरानी करते हैं. मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था इसलिये मैंने यह चाहा कि मैं मक्के वालों पर कुछ एहसान रखूँ ताकि वो मेरे घरवालों को न सताएं और यह मैं यक़ीन से जानता हूँ कि अल्लाह तआला मक्के वालों पर अज़ाब उतारने वाला है मेरा ख़त उन्हें बचा न सकेगा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनका यह उज़्र क़ुबूल फ़रमाया और उनकी तस्दीक़ की. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गर्दन मार दूँ. हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उमर अल्लाह तआला ख़बरदार है जब

اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ
فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ
قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ
الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ
الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ

चाहूंगा[१५] और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़े का मालिक नहीं[१६] ऐ हमारे रब ! हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रूजू लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है[१७] (४) ऐ हमारे रब ! हमें काफ़िरों की अज़मायश में न डाल[१८] और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब, बेशक तू ही इज़्ज़त व हिकमत वाला है (५) बेशक तुम्हारे लिये[१९] उनमें अच्छी पैरवी थी[२०] उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीदवार हो[२१] और जो मुंह फेरे[२२] तो बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा (६)

दूसरा रूकू

क़रीब है कि अल्लाह तुम में और उनमें जो उनमें से[१] तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे[२] और अल्लाह क़ादिर (सक्षम) है[३] और बख़्शने वाला मेहरबान है (७) अल्लाह तुम्हें उनसे[४] मना नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से न निकाला कि उनके साथ एहसान करो और उनसे इन्साफ़ का बर्ताव बरतो, बेशक इन्साफ़ वाले अल्लाह को मेहबूब हैं (८) अल्लाह तुम्हें उन्हीं से मना करता है जो तुम से दीन में लड़े या तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उनसे दोस्ती

ही उसने बद्र वालों के हक़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम्हें बख़्श दिया. यह सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के आँसू जारी होगए और ये आयतें उतरीं.

(३) यानी इस्लाम और क़ुरआन.

(४) यानी मक्कए मुकर्रमा से.

(५) यानी अगर काफ़िर तुम पर मौक़ा पा जाएं.

(६) ज़र्ब (हमला) और क़त्ल के साथ.

(७) ज़ुल्म अत्याचार और ----

(८) तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उनसे भलाई की उम्मीद रखना और उनकी दुश्मनी से ग़ाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये.

(९) जिनकी वजह से तुम काफ़िरों से दोस्ती और मेलजोल करते हो.

(१०) कि फ़रमाँबरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर नाफ़रमान जहन्नम में.

(११) हज़रत हातिब रदियल्लाहो अन्हो और दूसरे मूमिनों को ख़िताब है और सब को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अनुकरण करने का हुक्म है कि दीन के मामले में रिश्तेदारों के साथ उनका तरीक़ा इख़्तियार करें.

(१२) साथ वालों से ईमान वाले मुराद हैं.

(१३) जो मुश्रिक थी.

(१४) और हमने तुम्हारे दीन की मुख़ालिफ़त इख़्तियार की.

(१५) यह अनुकरण के क़ाबिल नहीं है क्योंकि वह एक वादे की बिना पर था और जब हज़रत इब्राहीम को ज़ाहिर होगया कि वो कुफ़्र पर अटल है तो आपने उससे बेज़ारी की लिहाज़ा यह किसी के लिये जायज़ नहीं कि अपने बेईमान रिश्तेदार के लिये माफ़ी की दुआ करे.

(१६) अगर तू उसकी नाफ़रमानी करे और शिर्क पर क़ायम रहे. (ख़ाज़िन)

(१७) यह भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की और उन मूमिनों की दुआ है जो आपके साथ थे और मा क़ब्ल इस्तस्ना के साथ जुड़ा हुआ है लिहाज़ा मूमिनों को इस दुआ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अनुकरण करना चाहिये.

(१८) उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वो अपने आपको सच्चाई पर गुमान करने लगें.

(१९) ऐ हबीबे ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत.

(२०) यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके साथ वालों में.

(२१) अल्लाह तआला की रहमत और सवाब और आख़िरत की राहत का तालिब हो और अल्लाह के अज़ाब से डरे.

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ
فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ
لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ
اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاِنْ فَاتَكُمْ
شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا
الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا
جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ

करो[५] और जो उनसे दोस्ती करे तो वही सितमगार हैं(९) ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें कुफ़्रिस्तान से अपने गर छोड़ कर आएं तो उनका इम्तिहान करो[६] अल्लाह उनके ईमान का हाल बेहतर जानता है फिर अगर तुम्हें ईमान वालियाँ मालूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो, न ये[७] उन्हें हलाल[८] न वो इन्हें हलाल[९] और उनके काफ़िर शौहरों को दे दो जो उनका ख़र्च हुआ[१०] और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उनसे निकाह कर लो[११] जब उनके मेहर उन्हें दो[१२] और काफ़िरनियों के निकाह पर जमे न रहो[१३] और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुआ[१४] और काफ़िर मांग लें जो उन्होंने ख़र्च किया[१५] यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम में फ़ैसला फ़रमाता है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है(१०) और अगर मुसलमानों के हाथ से कुछ औरतें काफ़िरों की तरफ़ निकल जाएं[१६] फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो[१७] तो जिनकी औरतें जाती रही थीं[१८] ग़नीमत में से उतना दे दो जो उनका ख़र्च हुआ था[१९] और अल्लाह से डरो जिसपर तुम्हें ईमान है(११) ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों इस पर बैअत करने को कि अल्लाह का कुछ शरीक न ठहराएंगी न

(२२) ईमान से और काफ़िरों से दोस्ती करे.

सूरए मुम्तहिनह - दूसरा रूकू

(१) यानी मक्के के काफ़िरों में से.

(२) इस तरह कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे. चुनांन्चे अल्लाह तआला ने ऐसा किया और फ़त्हे मक्का के बाद उनमें से बहुत से लोग ईमान ले आए और मूमिनों के दोस्त और भाई बन गए और आपसी प्यार बढ़ा. जब ऊपर की आयतें उतरीं तो ईमान वालों ने अपने रिश्तेदारों की दुश्मनी में सख़्ती की, उनसे बेज़ार हो गए और इस मामले में बड़े सख़्त हो गए तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन काफ़िरों का हाल बदलने वाला है. और यह आयत उतरी.

(३) दिल बदलने और हाल तब्दील करने पर.

(४) यानी उन काफ़िरों से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि यह आयत ख़ुज़ाअह के हक़ में उतरी जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस शर्त पर सुलह की थी कि न आपसे लड़ेंगे न आपके विरोधियों का साथ देंगे. अल्लाह तआला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दे दी. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया कि यह आयत उनकी वालिदा अस्मा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में नाज़िल हुई. उनकी वालिदा मदीनए तैय्यिबह उनके लिये तोहफ़े लेकर आई थीं और थीं मुश्रिका. तो हज़रत अस्मा ने उनके तोहफ़े क़ुबूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की आज्ञा न दी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरियाफ़्त किया कि क्या हुक्म है. इसपर यह आयत उतरी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलाएं, उनके तोहफ़े क़ुबूल करें उनके साथ अच्छा सुलूक करें.

(५) यानी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती मना है.

(६) कि उनकी हिजरत ख़ालिस दीन के लिये है ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने शौहरों की दुश्मनी में घर छोड़ा हो. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि उन औरतों को क़सम दी जाए कि वो न शौहरों की दुश्मनी में निकली हैं और न किसी दुनियावी कारण से. उन्होंने केवल अपने दीन और ईमान के लिये हिजरत की है.

(७) मुसलमान औरतें.

(८) यानी काफ़िरों को.

(९) यानी न काफ़िर मर्द मुसलमान औरतों को हलाल. औरत मुसलमान होकर काफ़िर की बीवी होने से बाहर हो गई.

(१०) यानी जो मेहर उन्होंने उन औरतों को दिये थे वो उन्हें लौटा दो. यह हुक्म एहले ज़िम्मा के लिये है जिनके हक़ में यह आयत

بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ
اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ
وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا
مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝

(٦١) سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ
سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ وَاِذْ

منزل ٧

चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी[२०] और न वह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाँवों के बीच यानी मौज़ए विलादत(गुप्तांग) में उठाएं[२१] और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी[२२] तो उनसे बैअत लो और अल्लाह से उनकी मग़फ़िरत चाहो[२३] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.﴾१२﴿ ऐ ईमान वालो ! उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है[२४] वो आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं[२५] जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्रवालों से[२६]﴾१३﴿

६१ - सूरए सफ़

सूरए सफ़ मदीने में उतरी, इसमें १४ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है﴾१﴿ ऐ ईमान वालो ! क्यों कहते हो वह जो नहीं करते[२]﴾२﴿ कैसी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वह बात कि वह कहो जो न करो﴾३﴿ बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उसकी राह में लड़ते हैं परा बांधकर, मानो वो ईमारत है रांगा पिलाई[३]﴾४﴿ और याद करो जब मूसा

उतरी लेकिन हर्बी औरतों के मेहर वापस करना न वाजिब है न सुन्नत. और ये मेहर देना उस सूरत में है जबकि औरत का काफ़िर शौहर उसको तलब करे और अगर तलब न करे तो उसको कुछ न दिया जाएगा. इसी तरह अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को मेहर नहीं दिया था तो भी वह कुछ न पाएगा. यह आयत सुलह हुदैबियह के बाद उतरी. सुलह में यह शर्त थी कि मक्के वालों में से जो शख़्स ईमान लाकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो उसको मक्के वाले वापस ले सकते हैं. इस आयत में यह बयान फ़रमा दिया गया कि यह शर्त सिर्फ़ मर्दों के लिये है औरतों की तसरीह एहदनामे में नहीं न औरतें इस क़रारदाद में दाख़िल हो सकती हैं क्योंकि मुसलमान औरत काफ़िर के लिये हलाल नहीं. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत पहले आदेश को स्थगित करने वाली है यह इस सूरत में है कि औरतें सुलह के एहद में दाख़िल हों मगर औरतों का इस एहद में दाख़िल होना सही नहीं क्योंकि हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो से एहदनामे के ये अल्फ़ाज़ आए हैं कि हम में से जो मर्द आपके पास पहुंचे चाहे वह आप के दीन पर ही हो आप उसको वापस कर देंगे.

(११) यानी हिजरत करने वाली औरतों से अगरचे दारूल हर्ब में उनके शौहर हों. क्योंकि इस्लाम लाने से वो उन शौहरों पर हराम हो गईं और उनकी ज़ौजियत में न रहीं.

(१२) मेहर देने से मुराद उसको ज़िम्मे लाज़िम कर लेना है अगरचे बिलफ़ेअल न दिया जाए. इससे यह भी साबित हुआ कि इन औरतों से निकाह करने पर नया मेहर वाजिब होगा. उनके शौहरों को जो अदा करदिया गया वह उसमें जोड़ा या गिनती नहीं किया जाएगा.

(१३) यानी जो औरतें दारूल हर्ब में रह गईं या इस्लाम से फिर कर दारूल हर्ब में चली गईं उनसे ज़ौजियत का सम्बन्ध न रखो. चुनांन्चे यह आयत उतरने के बाद असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन काफ़िर औरतों को तलाक़ देदी जो मक्कए मुकर्रमा में थीं. अगर मुसलमान की औरत इस्लाम से फिर जाए तो उसके निकाह की क़ैद से बाहर न होगा.

(१४) यानी उन औरतों को तुमने जो मेहर दिये थे वो उन काफ़िरों से वुसूल करलो जिन्होंने उनसे निकाह किया.

(१५) अपनी औरतों पर जो हिजरत करके दारूल इस्लाम में चली आईं उनके मुसलमान शौहरों से जिन्होंने उनसे निकाह किया.

(१६) इस आयत के उतरने के बाद मुसलमानों ने तो मुहाजिरह औरतों के मेहर उनके काफ़िर शौहरों को अदा करदिये और काफ़िरों ने इस्लाम से फिर जाने वाली औरतों के मेहर मुसलमानों को अदा करने से इन्कार किया. इसपर यह आयत उतरी.

(१७) जिहाद में और उनसे ग़नीमत पाओ.

(१८) यानी इस्लाम से फिर कर दारूल हर्ब में चली गई थीं.

(१९) उन औरतों के मेहर देने में. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मूमिन मुहाजिरीन की औरतों में से छ औरतें ऐसी थीं जिन्हों ने दारूल हर्ब को इख़्तियार किया और मुश्रिकों के साथ जुड़ गईं और इस्लाम से फिर गईं. रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनके शौहरों को माले ग़नीमत से उनके मेहर अता फ़रमाए. इन आयतों में मुहाजिर औरतों के इम्तिहान और काफ़िरों ने जो अपनी बीबीयों पर ख़र्च किया हो वह हिजरत के बाद उन्हें देना और मुसलमानों ने जो अपनी बीबीयों पर ख़र्च किया हो वह उनके मुर्तद होकर काफ़िरों से मिल जाने के बाद उनसे मांगना और जिनकी बीबियाँ मुर्तद होकर चली गईं हों उन्होंने जो उनपर ख़र्च किया था वह उन्हें माले ग़नीमत में से देना, ये तमाम अहकाम स्थगित हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से, क्योंकि ये अहकाम जभी तक बाक़ी रहे जब तक ये एहद रहा और जब वह एहद उठ गया तो अहकाम भी न रहे.

(२०) जैसा कि जिहालत के ज़माने में तरीक़ा था कि लड़कियों को शर्मिन्दगी के ख़याल और नादारी के डर से ज़िन्दा गाड़ देते थे. उससे और हर नाहक़ क़त्ल से बाज़ रहना इस एहद में शामिल है.

(२१) यानी पराया बच्चा लेकर शौहर को धोखा दें और उसको अपने पेट से जना हुआ बताएं जैसा कि इस्लाम के पहले के काल में तरीक़ा था.

(२२) नेक बात अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी है.

(२३) रिवायत है कि जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़त्हे मक्का के दिन मर्दों की बैअत लेकर फ़ारिग़ हुए तो सफ़ा पहाड़ी पर औरतों से बैअत लेना शुरू की और हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो नीचे खड़े हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कलामे मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे. हिन्द बिन्ते उतबह अबू सुफ़ियान की बीवी डरी हुई बुर्क़ा पहन कर इस तरह हाज़िर हुई कि पहचानी न जाए. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअत लेता हूँ कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो. हिन्द ने कहा कि आप हम से वह एहद लेते हैं जो हमने आपको मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम और जिहाद पर बैअत की गई थी. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया और चोरी न करेंगी. तो हिन्द ने अर्ज़ किया कि अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है और मैंने उनका माल ज़रूर लिया है, मैं नहीं समझती मुझे हलाल हुआ या नहीं. अबू सुफ़ियान हाज़िर थे उन्होंने कहा जो तूने पहले लिया और जो आगे ले सब हलाल. इसपर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया तू हिन्द बिन्ते उतबह है? अर्ज़ किया जी हाँ, मुझ से जो कुछ क़ुसूर हुए हैं माफ़ फ़रमाइये. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, और न बदकारी करेंगी. तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औरत बदकारी करती है. फिर फ़रमाया, न अपनी औलाद को क़त्ल करें. हिन्द ने कहा, हमने छोटे छोटे पाले जब बड़े होगए तुमने उन्हें क़त्ल कर दिया. तुम जानो और वो जानें. उसका लड़का हन्ज़ला बिन अबी सुफ़ियान बद्र में क़त्ल कर दिया गया था. हिन्द की ये बातचीत सुनकर हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाँवों के बीच कोई लांछन नहीं घड़ेंगी. हिन्द ने कहा ख़ुदा की क़सम बोहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हमको नेक बातों और अच्छी आदतों का हुक्म देते हैं. फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की नाफ़रमानी नहीं करेंगी. इसपर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इसलिये हाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आपकी नाफ़रमानी का ख़याल आने दें . औरतों ने इन सारी बातों का इक़रार किया और चार सौ सत्तावन औरतों ने बैअत की. इस बैअत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुसाफ़हा न फ़रमाया और औरतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया. बैअत की कैफ़ियत में भी यह बयान किया गया है कि एक प्याला पानी में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औरतों ने अपने हाथ डाले और यह भी कहा गया है बैअत कपड़े के वास्ते से लीगई और बईद नहीं कि दोनों सूरतें अमल में आई हों. बैअत के वक़्त कैंची का इस्तेमाल मशायख़ का तरीक़ा है. यह भी कहा गया है कि यह हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो की सुन्नत है. ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशायख़ का मामूल है और कहा गया है कि नबीये करमि सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मन्क़ूल है औरतों की बैअत में अजनबी औरत का हाथ छूना हराम है या बैअत ज़बान से हो या कपड़े वग़ैरह की मदद से.

(२४) इन लोगों से मुराद यहूदी है.

(२५) क्योंकि उन्हें पिछली किताबों से मालूम हो चुका था और वो यक़ीन से जानते थे कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं और यहूदियों ने इसे झुटलाया है इसलिये उन्हें अपनी मग़फ़िरत की उम्मीद नहीं.

(२६) फिर दुनिया में वापस आने की, या ये मानी हैं कि यहूदी आख़िरत के सवाब से ऐसे निराश हुए जैसे कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने हाल को जानकर आख़िरत के सवाब से बिल्कुल मायूस हैं.

६१ - सूरए सफ़ - पहला रूकू

(१) सूरए सफ़ मक्की सूरत है और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा के क़ौल के मुताबिक़ और अक्सर मुफ़स्सिरों के अनुसार मदनी है. इसमें दो रूकू, चौदह आयतें, दो सौ इक्कीस कलिमे और नो सौ अक्षर हैं.

(२) सहाबए किराम की एक जमाअत बातचीत कर रही थी. यह वह वक़्त था जब तक कि जिहाद का हुक्म नहीं उतरा था. इस जमाअत में यह तज़किरा था कि अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा कौन सा अमल प्यारा है. हमें मालूम होता तो हम वही करते चाहे उसमें हमारे जान और माल काम आ जाते. इसपर यह आयत उतरी. इस आयत के उतरने की परिस्थिति में और भी कई क़ौल हैं. उनमें एक यह है कि यह आयत मुनाफ़िक़ों के बारे में उतरी जो मुसलमानों से मदद का झूटा वादा करते थे.

(३) एक से दूसरा मिला हुआ, हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुआ, दुश्मन के मुक़ाबले में सब के सब एक वुजूद की तरह.

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ
قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاِذْ
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ
فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى
اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ
مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ
رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى
الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

منزل ٧

ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यों सताते हो(४) हालांकि तुम जानते हो(५) कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ(६) फिर जब वो(७) टेढ़े हुए अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिये(८) और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को राह नहीं देता(९)﴿५﴾ और याद करो जब ईसा मरयम के बेटे ने कहा, ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुआ(१०) और उन रसूल की बशारत सुनाता हुआ,जो मेरे बाद तशरीफ़ लाएंगे उनका नाम अहमद है(११) फिर जब अहमद उनके पास रौशन निशानियाँ लेकर तशरीफ़ लाए बोले यह खुला जादू है﴿६﴾ और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे(१२) हालांकि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो(१३) और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता﴿७﴾ चाहते हैं कि अल्लाह का नूर(१४) अपने मुंहों से बुझा दें(१५) और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना, पड़े बुरा मानें काफ़िर﴿८﴾ वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे(१६) पड़े बुरा मानें मुश्रिक﴿९﴾

(४) आयतों का इन्कार करके और मेरे ऊपर झूटी तोहमतें लगा कर.

(५) यक़ीन के साथ.

(६) और रसूल आदर के पात्र होते हैं उनका सम्मान और अदब वाजिब होता है . उन्हें तकलीफ़ देना सख़्त हराम और बड़ी ही बदनसीबी है.

(७) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ देकर सच्चाई की राह से मुनहरिफ़ यानी फिरे हुए और --

(८) उन्हें सच्चाई के अनुकरण की तौफ़ीक़ से मेहरूम करके.

(९) जो उसके इल्म में नाफ़रमान हैं. इस आयत में चेतावनी है कि रसूलों को तकलीफ़ देना सख़्त जुर्म है और इसके वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से मेहरूम हो जाता है.

(१०) और तौरात व दूसरी आसमानी किताबों का इक़रार और ऐतिराफ़ करता हुआ और तमाम पहले नबियों को मानता हुआ.

(११) रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म से सहाबा नजाशी बादशाह के पास गए तो उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और वही रसूल हैं जिनकी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुशख़बरी दी अगर सरकारी कामों की पाबन्दियाँ न होतीं तो मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी जूतियाँ उठाता (अबू दाऊद) हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से रिवायत है तौरात में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सिफ़ात दर्ज हैं और यह भी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आप के पास दफ़्न होंगे. अबू दाऊद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है. (तिरमिज़ी) हज़रत कअब अहबार से रिवायत है कि हवारियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया या रूहल्लाह क्या हमारे बाद कोई और उम्मत भी है. फ़रमाया हाँ, अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत. वो लोग हिकमत वाले, इल्म वाले, नेकी वाले, तक़वे वाले हैं और फ़िक़्ह में नबियों के नायब हैं. अल्लाह तआला से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी और अल्लाह तआला उनसे थोड़े अमल पर राज़ी.

(१२) उसकी तरफ़ शरीक और औलाद की निस्बत करके और उसकी आयतों को जादू बता कर.

(१३) जिसमें दोनों जहान की सआदत है.

(१४) यानी सच्चा दीन इस्लाम.

(१५) क़ुरआने पाक को शायरी जादू और तांत्रिक विद्या बता कर.

(१६) चुनांन्चे हर एक दीन अल्लाह की इनायत से इस्लाम से मग़लूब होगया. मुजाहिद से मन्क़ूल है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दोबारा तशरीफ़ लाएंगे तो धरती पर सिवाय इस्लाम के कोई और दीन न होगा.

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो(१) ! क्या मैं बता दूं वह तिजारत जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाले(२)﴿१०﴾ ईमान रखो अल्लाह और उसके रसूल पर और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिये बेहतर है(३) अगर तुम जानो(४)﴿११﴾ वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में हैं, यही बड़ी कामयाबी है﴿१२﴾ और एक नेमत तुम्हें और देगा(५) जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह(६) और ऐ मेहबूब ! मुसलमानों को ख़ुशी सुना दो(७)﴿१३﴾ ऐ ईमान वालो, ख़ुदा के दीन के मददगार रहो जैसे(८) ईसा मरयम के बेटे ने हवारियों से कहा था कौन हैं जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करें, हवारी बोले(९) हम ख़ुदा के दीन के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल से एक गिरोह ईमान लाया(१०) और एक गिरोह ने कुफ़्र किया(११) तो हमने ईमान वालों को उनके दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए(१२)﴿१४﴾

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ تُجَاهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَتْحٌ
قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝ ع

منزل ٧

सूरए सफ़ - दूसरा रूकू

(१) ईमान वालों ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआला को कौन सा अमल बहुत पसन्द है तो हम वही करते. इसपर यह आयत उतरी और इस आयत में उस अमल को तिजारत से ताबीर फ़रमाया गया क्योंकि जिस तरह तिजारत से नफ़े की उम्मीद होती है उसी तरह इन आमाल से बेहतरीन नफ़ा अल्लाह की रज़ा और जन्नत व निजात हासिल होती है.

(२) अब वह तिजारत बताई जाती है.

(३) जान और माल और हर एक चीज़ से.

(४) और ऐसा करो तो.

(५) उसके अलावा जल्द मिलने वाली.

(६) इस फ़त्ह से या मक्के की फ़त्ह मुराद है या फ़ारस और रोम के इलाक़ों की विजय.

(७) दुनिया में विजय की और आख़िरत में जन्नत की.

(८) हवारियों में अल्लाह के दीन की मदद की थी जबकि ---

(९) हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुख़लिसों को कहते हैं, ये बारह लोग थे जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाए, उन्होंने अर्ज़ किया---

(१०) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर.

(११) उन दोनों में लड़ाई हुई.

(१२) ईमान वाले, इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठा लिये गए तो उनकी क़ौम तीन सम्प्रदायों में बँट गई. एक सम्प्रदाय ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की निस्बत कहा कि वह अल्लाह था, आसमान पर चला गया, दूसरे सम्प्रदाय ने कहा वह अल्लाह तआला का बेटा था उसने अपने पास बुला लिया. तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह ताला के बन्दे और उसके रसूल थे उसने उठा लिया. यह तीसरे सम्प्रदाय वाले मूमिन थे. उनकी इन दोनों सम्प्रदायों से लड़ाई रही और काफ़िर गिरोह उन पर ग़ालिब रहे यहाँ तक कि नबियों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ लाए. उस वक़्त ईमानदार सम्प्रदाय उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुआ. इस सूरत में मतलब यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वालों की हमने मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तस्दीक़ करने से मदद फ़रमाई.

६२- सूरए जुमुअह

सूरए जुमुअह मदीने में उतरी, इसमें ११ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है(२). बादशाह कमाल पाकी वाला इज़्ज़त वाला हिकमत वाला(१) वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा(३) कि उनपर उसकी आयतें पढ़ते हैं(४) और उन्हें पाक करते हैं(५) और उन्हें किताब और हिकमत का इल्म अता फ़रमाते हैं(६) और बेशक वो इससे पहले(७) ज़रूर खुली गुमराही में थे(८)(२) और उनमें से(९) औरों को(१०) पाक करते और इल्म अता फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले(११) और वही इज़्ज़त व हिकमत वाला है(३) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है(१२)(४) उनकी मिसाल जिनपर तौरैत रखी गई थी(१३) फिर उन्होंने उसकी हुक्म बरदारी (आज्ञापालन) न की(१४) गधे की मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए(१५) क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतें झुटलाईं, और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं देता(५) तुम फ़रमाओ, ऐ यहूदियो! अगर तुम्हें यह गुमान है कि तुम

६२ - सूरए जुमुअह - पहला रूकू

(१) सूरए जुमुआ मदनी है, इसमें दो रूकू, ग्यारह आयतें, एक सौ अस्सी कलिमे, सात सौ बीस अक्षर हैं.

(२) तस्बीह तीन तरह की है, एक तस्बीहे ख़िलक़त कि हर चीज़ की ज़ात और उसकी पैदाइश हज़रत ख़ालिक़े क़ादिर जल्ला जलालहू की क़ुदरत व हिकमत और उसकी वहदानियत और बेनियाज़ी पर दलालत करती है. दूसरी तस्बीहे मअरिफ़त कि अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी और करम से मख़लूक़ में अपनी मारिफ़त पैदा करे. तीसरी तस्बीह ज़रूरी, वह यह है कि अल्लाह तआला हर एक जौहर पर अपनी तस्बीह जारी फ़रमाता है यह तस्बीह मअरिफ़त पर मुरत्तब नहीं.

(३) जिसके नसब और शराफ़त को वो अच्छी तरह जानते पहचानते हैं. उनका नामे पाक मुहम्मदे मुस्तफ़ा है सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम . हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सिफ़त नबीये उम्मी है इसके बहुत से कारण हैं. एक उनमें से यह है कि आप उम्मते उम्मिया यानी बेपढ़ी उम्मत की तरफ़ भेजे गए. किताबे शइया में है अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं उम्मियों में एक उम्मी नबी भेजूंगा और उसपर नबुव्वत ख़त्म करदूंगा. और एक कारण यह है कि आप उम्मुल क़ुरा यानी मक्कए मुकर्रमा में भेजे गए. और एक वजह यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लिखते और किताब से कुछ पढ़ते न थे और यह आपकी फ़ज़ीलत थी कि हाज़िर इल्म के कारण आपको इसकी कुछ हाजत न थी. ख़त ज़हन का एक काम है जो शरीर के यंत्र से किया जाता है तो जो ज़ात ऐसी हो कि ऊंचे से ऊंचा क़लम उसके हुक्म के तहत हो उसको लिखने की क्या हाजत. फिर हुज़ूर का किताबत न फ़रमाना और किताबत का माहिर होना एक बड़ा चमत्कार है. कातिबों को अक्षर बनाने और शब्द लिखने की तालीम फ़रमाते और अहले हिरफ़त को हिरफ़त की तालीम देते और दुनिया व आख़िरत के हर कमाल में अल्लाह तआला ने आपको सारे जगत में सबसे ज़्यादा जानकार और बुज़ुर्गी वाला किया.

(४) यानी क़ुरआने पाक सुनाते हैं.

(५) ग़लत अक़ीदों और गन्दे आचरण और जिहालत की बातों और बुरे कर्मों से.

(६) किताब से मुराद क़ुरआन और हिकमत से सुन्नत व फ़िक़्ह है या शरीअत के अहकाम और तरीक़त के रहस्य.

(७) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले.

(८) कि शिर्क और झूटे अक़ीदों और बुरे कर्मों में गिरफ़्तार थे और उन्हें कामिल मुर्शिद की सख़्त ज़रूरत थी.

(९) यानी उम्मियों में से.

(१०) औरों से मुराद या तो अजम हैं या वो तमाम लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद क़यामत तक इस्लाम में

لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ
تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ ع
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ
الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ
اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا
رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ
قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ ع

अल्लाह के दोस्त हो और लोग नहीं[१६] तो मरने की आरज़ू न करो[१७] अगर तुम सच्चे हो[१८]﴿६﴾ और वो कभी इसकी आरज़ू न करेंगे, उन कौतुकों के कारण जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं[१९] और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है﴿७﴾ तुम फ़रमाओ वह मौत जिससे तुम भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है[२०] फिर उसकी तरफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुमने किया था﴿८﴾

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुअह के दिन[१] तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो[२] और ख़रीद फ़रोख़्त छोड़ दो[३] यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो﴿९﴾ फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो[४] और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि भलाई पाओ﴿१०﴾ और जब उन्होंने कोई तिजारत या खेल देखा उसकी तरफ़ चल दिये[५] और तुम्हें ख़ुत्बे में खड़ा छोड़ गए[६] तुम फ़रमाओ वह जो अल्लाह के पास है[७] खेल से और तिजारत से बेहतर है और अल्लाह का रिज़्क़ सब से अच्छा﴿११﴾

दाख़िल हों, उनको.

(११) उनका ज़माना न पाया उनके बाद आए या बुज़ुर्गी में उनके दर्जे को न पहुंचे क्योंकि सहाबा के बाद के लोग चाहे ग़ौस व क़ुतुब हो जाएं मगर सहाबियत की फ़ज़ीलत नहीं पा सकते.

(१२) अपनी सृष्टि पर . उसने उनकी हिदायत के लिये अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजा.

(१३) और उसके आदेशों का अनुकरण उनपर लाज़िम किया गया था वो लोग यहूदी हैं.

(१४) और उसपर अमल न किया और उसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नात व सिफ़त देखने के बावुजूद हुज़ूर पर ईमान न लाए.

(१५) और बोझ के सिवा उनसे कुछ भी नफ़ा न पाए और जो उलूम उनमें हैं उनसे कुछ भी वाक़िफ़ न हो, यही हाल उन यहूदियों का है जो तौरात उठाए फिरते हैं उसके शब्द रटते हैं और उससे नफ़ा नहीं उठाते, उसके अनुसार अमल नहीं करते और यही मिसाल उन लोगों पर सादिक़ आती है जो क़ुरआने करीम के मानी न समझें और उसपर अमल न करें और उससे मुंह फेर लें.

(१६) जैसा कि तुम कहते हो कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं.

(१७) कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाए.

(१८) अपने इस दावे में.

(१९) यानी उस कुफ़्र और झुटलाने के कारण जो उनसे सादिर है.

(२०) किसी तरह उससे बच नहीं सकते.

सूरए जुमुअह - दूसरा रूकू

(१) जुमुआ का दिन. इस दिन का नाम अरबी ज़बन में अरूबह था. जुमुआ इसलिये कहा जाता है कि नमाज़ के लिये जमाअतें जमा होती हैं. इसका यह नाम पड़ने के और भी कारण बताए गए हैं. सबसे पहले जिस व्यक्ति ने इस दिन का नाम जुमुआ रखा वह कअब बिन लोई हैं. पहला जुमुआ जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने सहाबा के साथ पढ़ा, सीरत बयान करने वालों का कहना है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब हिजरत करके मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ लाए तो बारहवीं रबीउल अव्वल पीर का दिन चाश्त के वक़्त मक़ामे क़ुबा में ठहरे. पीर, मंगल, बुध, जुमेरात यहाँ क़याम फ़रमाया और मस्जिद की नींव रखी. जुमुआ के दिन मदीनए तैय्यिबह का इरादा किया. बनी सालिम इब्ने औफ़ के बत्ने वादी में जुमुआ का वक़्त आया. इस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वहाँ जुमुआ पढ़ाया और ख़ुत्बा फ़रमाया. जुमुआ का दिन सैयदुल अय्याम यानी

६३ - सूरए मुनाफ़िक़ून

सूरए मुनाफ़िक़ून मदीने में उतरी, इसमें ११ आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं(२) कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है कि तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं(३)(१) और उन्होंने अपनी क़समों को ढाल ठहरा लिया(४) तो अल्लाह की राह से रोका(५) बेशक वो बहुत ही बुरे काम करते हैं(६)(२) यह इसलिये कि वो ज़बान से ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उनके दिलों पर मोहर करदी गई तो अब वो कुछ नहीं समझते(३) और जब तू उन्हें देखे(७) उनके जिस्म तुझे भले मालूम हों और अगर बात करें तो तू उनकी बात ग़ौर से सुने(८) मानो वो कड़ियाँ हैं दीवार से टिकाई हुई(९) हर बलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर लेजाते हैं(१०) वो दुश्मन हैं(११) तो उनसे बचते रहो(१२) अल्लाह उन्हें मारे कहाँ औंधे जाते हैं(१३)(४) और जब उन से कहा जाए कि आओ(१४) अल्लाह के रसूल तुम्हारे लिये माफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो कि ग़ौर करते हुए मुंह फेर लेते हैं(१५)(५)

दिनों का सरदार है जो मूमिन इस दिन मरे, हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला उसे शहीद का सवाब अता फ़रमाता है. और क़ब्र के फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रखता है. अज़ान से मुराद पहली अज़ान है, न दूसरी अज़ान जो ख़ुत्बे से जुड़ी होती है. अगरचे पहली अज़ान हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो के ज़माने में बढ़ाई गई मगर नमाज़ के लिये दौड़ना और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ देने का वाजिब होना इसी से मुतअल्लिक़ है. (दुर्रे मुख़्तार)

(२) दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मतलब यह है कि नमाज़ की तैयारी शुरू करो और अल्लाह के ज़िक्र से जमहूर के नज़्दीक ख़ुत्बा मुराद है.

(३) इससे मालूम हुआ कि जुमुआ की अज़ान होते ही ख़रीदो फ़रोख़्त हराम हो जाती है और दुनिया के सारे काम जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़लत का कारण हों इसमें दाख़िल हैं. अज़ान होने के बाद सब काम छोड़देना लाज़िम है. इस आयत से जुमुआ की नमाज़ की फ़र्ज़ियत और क्रय विक्रय वग़ैरह दुनियावी कामों की हुरमत और नमाज़ की तैयारी का वाजिब होना साबित हुआ और ख़ुत्बा भी साबित हुआ. जुमुआ मुसलमान आक़िल बालिग़ आज़ाद और तन्दुरूस्त मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है. नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता. जुमुआ की सेहत के लिये सात शर्तें हैं. (१) शहर, जहाँ मुक़दमों का फ़ैसला करने का इख़्तियार रखने वाला कोई हाकिम मौजूद हो या फ़नाए शहर जो शहर से जुड़े हों और शहर वाले उसको अपनी ज़रूरतों के काम में लाते हों. (२) हाकिम (३) ज़ोहर का वक़्त (४) वक़्त के अन्दर ख़ुत्बा (५) ख़ुत्बे का नमाज़ से पहले होना, इतनी जमाअत में जो जुमुआ के लिये ज़रूरी है.(६) जमाअत और उसकी कम से कम संख्या तीन मर्द हैं इमाम के अलावा (७) आम इजाज़त कि नमाज़ियों को नमाज़ की जगह आने से न रोका जाए.

(४) यानी अब तुम्हारे लिये जायज़ है कि मआश के कामों में लग जाओ या इल्म हासिल करने में या मरीज़ की देखभाल में या जनाज़े में शिरकत या उलमा की ज़ियारत और इस जैसे कामों में मश्ग़ूल होकर नेकियाँ हासिल करो.

(५) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीनए तैय्यिबह में जुमुआ के दिन ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे इस हाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और दस्तूर के मुताबिक़ ऐलान के लिये नक़्क़ारा बजाया गया. ज़माना बहुत तंगी और मेंहगाई का था लोग इस ख़याल से उसकी तरफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अजनास (चीज़ें) ख़त्म हो जाएं और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, इसपर यह आयत उतरी.

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ ۭ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا
عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۭ وَلِلّٰهِ
خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا
يَفْقَهُوْنَ ۝ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ
لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۭ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ
اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ

منزل ٧

उनपर एक सा है तुम उनकी माफ़ी चाहो या न चाहो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा[१६] बेशक अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता(६) वही हैं जो कहते हैं कि उनपर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं यहाँ तक कि परेशान होजाएं, और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने[१७] मगर मुनाफ़िक़ों को समझ नहीं(७) कहते हैं हम मदीना फिर कर गए[१८] तो ज़रूर जो बड़ी इज़्ज़त वाला है वह उसमें से निकाल देगा उसे जो बहुत ज़िल्लत वाला है[१९] और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों को ख़बर नहीं[२०](८)

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे[१] और जो ऐसा करे[२] तो वही लोग नुक़सान में हैं[३](९) और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो[४] इसके पहले कि तुम में किसी को मौत आए, फिर कहने लगे ऐ मेरे रब ! तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यों मुहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और

---

(६) इससे साबित हुआ कि ख़तीब को खड़े होकर ख़ुत्बा पढ़ना चाहिये.
(७) यानी नमाज़ का अज्र और सवाब और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहने की बरकत और सआदत.

६३ - सूरए मुनाफ़िक़ून - पहला रूकू

(१) सूरए मुनाफ़िक़ून मदनी है, इसमें दो रूकू, ग्यारह आयतें, एक सौ अस्सी कलिमे और नौसौ छिहत्तर अक्षर हैं.
(२) तो अपने ज़मीर के ख़िलाफ़.
(३) उनका बातिन ज़ाहिर के अनुसार नहीं, जो कहते हैं उसके विपरीत अक़ीदा रखते हैं.
(४) कि उनके ज़रिये से क़त्ल और क़ैद से मेहफ़ूज़ रहें.
(५) लोगों को यानी जिहाद से या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने से तरह तरह के वसवसे और संदेह डाल कर.
(६) कि ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र इख़्तियार करते हैं.
(७) यानी मुनाफ़िक़ों को जैसे कि अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सुलूल.
(८) इब्ने उबई मोटा ताज़ा गोरा चिट्टा सुन्दर और अच्छा बोलने वाला आदमी था और उसके साथ वाले मुनाफ़िक़ क़रीब क़रीब वैसे ही थे. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में जब ये लोग हाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी लगतीं.
(९) जिनमें बेजान तस्वीर की तरह न ईमान की रूह न अंजाम सोचने वाली अक़्ल.
(१०) कोई किसी को पुकारता हो या अपनी खोई चीज़ ढूंढता हो या लश्कर में किसी ज़रूरत से कोई बात ऊंची आवाज़ से कहे तो ये अपने नफ़्स की बुराई और बदगुमानी से यही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें यह अन्देशा रहता है कि उनके बारे में कोई ऐसा मज़मून उतरा जिससे उनके भेद खुल जाएं.
(११) दिल में सख़्त दुश्मनी रखते हैं और काफ़िरों के पास यहाँ की ख़बरें पहुंचाते हैं, उनके जासूस हैं.
(१२) और उनके ज़ाहिरी हाल से धोखा न खाओ.
(१३) और रौशन दलीलें क़ायम होने के बावुजूद सच्चाई से मुंह फेरते हैं.
(१४) माफ़ी चाहने के लिये.

الصّٰلِحِيْنَ ⑩ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑪ ع

(٦٤) سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٨) — اٰيَاتُهَا ١٨ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

منزل ٧

नेकों में होता﴿१०﴾ और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मुहलत न देगा जब उसका वादा आजाए[२०] और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है﴿११﴾

६४- सूरए तग़ाबुन

सूरए तग़ाबुन मदीने में उतरी, इसमें १८ आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में, उसी का मुल्क है और उसी की तारीफ़[२] और वह हर चीज़ पर क़ादिर है﴿१﴾ वही है जिसने तुम्हें पैदा किया तो तुममें कोई काफ़िर और तुम में कोई मुसलमान[३] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है﴿२﴾ उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई[४] और उसी की तरफ़ फिरना है[५]﴿३﴾ जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों की बात जानता है﴿४﴾ क्या तुम्हें[६] उनकी ख़बर न आई जिन्होंने तुमसे पहले कुफ़्र किया[७] और अपने काम का वबाल चखा[८] और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब

(१५) ग़ज़वए मरीसीअ से फ़ारिग़ होकर जब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुंए के पास क़याम फ़रमाया तो यहाँ यह वाक़िआ पेश आया कि हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो के अजीर जहजाह ग़िफ़ारी और इब्ने उबई के सहायक सेनान बिन दबर जुहनी के बीच जंग हो गई. जहजाह ने मुहाजिरों को और सेनान ने अन्सार को पुकारा. उस वक़्त इब्ने उबई मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में बहुत ख़राब और अपमान जनक बातें बकीं और यह कहा कि मदीनए तैय्यिबह पहुंचकर हममें से इज़्ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम इन्हें अपना झूठा खाना न दो तो ये तुम्हारी गर्दनों पर सवार न हों. अब इन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि ये मदीने से भाग जाएं . उसकी यह बेहूदा बकवास सुनकर ज़ैद बिन अरक़म को ताब न रही उन्होंने उससे फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम तूही ज़लील है अपनी क़ौम में बुग़्ज़ डालने वाला और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सरे मुबारक पर मेराज का ताज है अल्लाह तआला ने उन्हें इज़्ज़त और क़ुव्वत दी है. इब्ने उबई कहने लगा चुप, मैं तो हंसी से कह रहा था. ज़ैद इब्ने अरक़म ने यह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचाई हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने इब्ने उबई के क़त्ल की इजाज़त चाही. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मना फ़रमाया और इरशाद किया कि लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल करते हैं. हुज़ूर अनवर ने इब्ने उबई से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तूने ये बातें कही थीं, वह इन्कार कर गया और क़सम खागया कि मैंने कुछ भी नहीं कहा .उसके साथी जो मजलिस शरीफ़ में हाज़िर थे वो अर्ज़ करने लगे कि इब्ने उबई बूढ़ा बड़ा आदमी है यह जो कहता है ठीक ही कहता है. ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोखा हुआ हो और बात याद न रही हो. फिर जब ऊपर की आयतें उतरीं और इब्ने उबई का झूट ज़ाहिर होगया तो उससे कहा गया कि जा सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दरख़्वास्त कर कि हुज़ूर तेरे लिये अल्लाह तआला से माफ़ी चाहें. तो गर्दन फेरी और कहने लगा कि तुमने कहा ईमान ला तो ईमान ले आया, तुमने कहा कि ज़कात दे तो मैंने ज़कात दी अब यही बाक़ी रह गया है कि मुहम्मद को सजदा करूं. इसपर यह आयत उतरी.

(१६) इसलिये कि वो दोग़लेपन में पक्के हो चुके हैं.

(१७) वही सबका रिज़्क़ देने वाला है.

(१८) इस ग़ज़वे से लौट कर.

(१९) मुनाफ़िक़ों ने अपने को इज़्ज़त वाला कहा और ईमान वालों को ज़िल्लत वाला. अल्लाह तआला फ़रमाता है.

(२०) इस आयत के उतरने के कुछ ही दिन बाद इब्ने उबई मुनाफ़िक़ अपने दोग़लेपन की हालत पर मर गया.

اَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَ
تَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ
لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ؕ وَ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ
اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ
لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠ مَآ اَصَابَ

है[९]﴾५﴿ यह इसलिये कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लाते[१०] तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएंगे[११] तो काफ़िर हुए[१२] और फिर गए[१३] और अल्लाह ने बेनियाज़ी को काम फ़रमाया और अल्लाह बेनियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा﴾६﴿ काफ़िरों ने बका कि वो हरगिज़ न उठाए जाएंगे. तुम फ़रमाओ क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे कौतुक तुम्हें जता दिये जाएंगे,और यह अल्लाह को आसान है﴾७﴿ तो ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर[१४] जो हमने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है﴾८﴿ जिस दिन तुम्हें इकट्ठा करेगा सब जमा हाने के दिन[१५] वह दिन है हार वालों की हार खुलने का[१६] और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उसकी बुराइयाँ उतार देगा और उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें कि वो, हमेशा उनमें रहें, यही बड़ी कामयाबी है﴾९﴿ और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वो आग वाले हैं हमेशा उसमें रहें, और क्या ही बुरा अंजाम﴾१०﴿

सूरए मुनाफ़िक़ून - दूसरा रूकू

(१) पाँच वक़्त की नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से.

(२) कि दुनिया में मशग़ूल होकर दीन को भुला दे और माल की महब्बत में अपने हाल की पर्वाह न करे और औलाद की ख़ुशी के लिये आख़िरत की राहत से ग़ाफ़िल रहे.

(३) कि उन्होंने फ़ानी दुनिया के पीछे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली नेअमतों की पर्वाह न की.

(४) यानी जो सदक़ात वाजिब हैं वो अदा करो.

(५) जो लौहे मेहफ़ूज़ में दर्ज है.

६४ - सूरए तग़ाबुन - पहला रूकू

(१) सूरए तग़ाबुन अक्सर के नज़्दीक मदनी है और कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि मक्के में उतरी. सिवाय तीन आयतों के जो "या अय्युहल्लज़ीना आमनू इन्ना मिन अज़वाजिकुम" से शुरू होती हैं. इस सूरत में दो रूकू, अठ्ठारह आयतें, दोसौ इक्तालीस कलिमें और एक हज़ार सत्तर अक्षर हैं.

(२) अपने मुल्क में अपनी मर्ज़ी का मालिक है जो चाहता है जैसा करता है, न कोई शरीक न साझी, सब नेअमतें उसी की हैं.

(३) हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआदत और शक़ावत फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से उसी वक़्त लिख देता है जब कि वह अपनी माँ के पेट में होता है.

(४) तो लाज़िम है कि तुम अपनी सीरत भी अच्छी रखो.

(५) आख़िरत में.

(६) ऐ मक्के के काफ़िरो.

(७) यानी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के हालात मालूम नहीं जिन्होंने नबियों को झुटलाया.

(८) दुनिया में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई.

(९) आख़िरत में.

(१०) चमत्कार दिखाते.

(११) यानी उन्होंने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और यह सरासर बेअक़्ली और नादानी है. फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पत्थर का ख़ुदा होना तस्लीम कर लिया.

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَ اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا
عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا
لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا
وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ تُقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

منزل ٧

दूसरा रूकू

कोई मुसीबत नहीं पहुंचती[1] मगर अल्लाह के हुक्म से, और जो अल्लाह पर ईमान लाए[2] अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमादेगा[3] और अल्लाह सब कुछ जानता है ﴿११﴾ और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुंह फेरो[4] तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़ खुला पहुंचा देना है[5] ﴿१२﴾ अल्लाह है जिसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें ﴿१३﴾ ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं[6] तो उनसे एहतियात रखो[7] और अगर माफ़ करो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ﴿१४﴾ तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं[8] और अल्लाह के पास बड़ा सवाब है[9] ﴿१५﴾ तो अल्लाह से डरो जहाँ तक हो सके[10] और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो[11] और अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपने भले को, और जो अपनी जान के लालच से बचाया गया[12] तो वही भलाई पाने वाले हैं ﴿१६﴾ अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे[13] वह तुम्हारे लिये उसके दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और

(१२) रसूलों का इन्कार करके.
(१३) ईमान से.
(१४) नूर से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है क्योंकि इसकी बदौलत गुमराही की तारीकियाँ दूर होती हैं और हर चीज़ की हक़ीक़त वाज़ेह होती है.
(१५) यानी क़यामत के दिन जिसमें सब अगले पिछले जमा होंगे.
(१६) यानी काफ़िरों की मेहरूमी ज़ाहिर होने का.

सूरए तग़ाबुन - दूसरा रूकू

(१) मौत की या बीमारी की या माल के नुक़सान की या और कोई.
(२) और जाने कि जो कुछ होता है अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसके इरादे से होता है और मुसीबत के वक़्त इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजिऊन पढ़े. और अल्लाह तआला की अता पर शुक्र और बला पर सब्र करे.
(३) कि वह और ज़्यादा नेकियों और ताअतों में लगे.
(४) अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी से.
(५) चुनांन्चे उन्होंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया और भरपूर तरीक़े पर दीन की तब्लीग़ फ़रमादी.
(६) कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं.
(७) और उनके कहने में आकर नेकी से बाज़ न रहो. कुछ मुसलमानों ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उनके बाल बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे. तुम चले जाओगे, हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जाएंगे. यह बात उनपर असर कर गई और वो ठहर गए. कुछ समय बाद जब उन्होंने हिजरत की तो उन्होंने रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा को देखा कि वो दीन में बड़े माहिर और फ़क़ीह होगए हैं. यह देखकर उन्होंने अपने बाल बच्चों को सज़ा देने की ठानी और यह निश्चय किया कि उनका ख़र्चा पानी बन्द करदें क्योंकि वही लोग उन्हें हिजरत से रोके हुए थे. जिसका नतीजा यह हुआ कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले सहाबा इल्म और फ़िक़्ह में उनसे कहीं आगे निकल गए. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दरगुज़र करने और माफ़ करने की तरग़ीब फ़रमाई गई. चुनांन्चे आगे इरशाद होता है.
(८) कि कभी आदमी उसकी वजह से गुनाह और गुमराही में जकड़ जाता है और उनमें लगकर आख़िरत के काम करने से ग़ाफ़िल हो जाता है.

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

(٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ (٩٩) — اٰيَاتُهَا ١٢ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۗ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۗ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا

अल्लाह क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है﴿१७﴾ हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला इज़्ज़त वाला हिकमत वाला﴿१८﴾

६५- सूरए तलाक़

सूरए तलाक़ मदीने में उतरी, इसमें बारह आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
ऐ नबी[२] जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत के वक़्त पर उन्हें तलाक़ दो और इद्दत की गिनती रखो[३] और अपने रब अल्लाह से डरो इद्दत में उन्हें उनके घरों से न निकालो और वो आप निकलें[४] मगर यह कि कोई खुली बेहयाई की बात लाएं[५] और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ा, बेशक उसने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम्हें नहीं मालूम शायद अल्लाह इसके बाद कोई नया हुक्म भेजे[६]﴿१﴾ तो जब वो अपनी मीआद तक को पहुंचने को हों[७] तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ जुदा करो[८] और अपने में दो सिक़ह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिये गवाही क़ायम करो,[९] इससे नसीहत फ़रमाई जाती है उसे जो

(९) तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि माल और औलाद में लगकर अज़ीम सवाब खो बैठो.
(१०) यानी अपनी शक्ति और क्षमता के अनुसार ताअत और इबादत करो. यह तफ़सीर है इत्तक़ुल्लाह हक़्क़ा तुक़ातिही (अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिये) की.
(११) अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का.
(१२) और उसने अपने माल को इत्मीनान के साथ शरीअत के आदेश के मुताबिक़ ख़र्च किया.
(१३) यानी ख़ुशदिली से, नेक नियती के साथ हलाल माल से सदक़ा दोगे. सदक़ा देने को लुत्फ़ो करम के साथ क़र्ज़ से ताबीर फ़रमाया . इसमें सदक़े की तरग़ीब है कि सदक़ा देने वाला नुक़सान में नहीं है. उसका इनाम ज़रूर ज़रूर पाएगा.

६५ - सूरए तलाक़ - पहला रूकू

(१) सूरए तलाक़ मदनी है इसमें दो रूकू, बारह आयतें और दो सौ उनचास कलिमे और एक हज़ार साठ अक्षर हैं.
(२) अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिये.
(३) यह आयत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहो अन्हो के हक़ में उतरी, उन्होंने अपनी बीबी को औरतों के ख़ास दिनों में तलाक़ दी थी. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि रजअत करें फिर अगर तलाक़ देना चाहें तो पाकी के दिनों में तलाक़ दें. इस आयत में औरतों से मुराद वो औरतें हैं जो अपने शौहरों के पास गई हों, छोटी, गर्भवती और ऐसी न हों जिनकी माहवारी बुढ़ापे की वजह से बन्द हो गई हो. जिस औरत ने शौहर के साथ हमबिस्तरी न की हो उसपर इद्दत नहीं है बाक़ी तीनों क़िस्म की औरतें, जो बताई गईं , उन्हें माहवारी नहीं होती तो उनकी इद्दत माहवारी से नहीं गिनी जाएगी. जिस औरत से शौहर ने हमबिस्तरी न की हो उसे माहवारी में तलाक़ देना जायज़ है. आयत में जो हुक्म दिया गया उससे मुराद शौहरों के साथ सोई हुई ऐसी औरतें हैं जिनकी इद्दत माहवारी से गिनी जाए, उन्हें तलाक़ देना हो तो ऐसी पाकी के दिनों में तलाक़ दें जिसमें उनसे हमबिस्तरी न की गई हो. फिर इद्दत गुज़रने तक उनसे तअरूज़ न करें इसको तलाक़े अहसन कहते हैं. तलाक़े हसन - यानी जिस औरत से शौहर ने क़ुर्बत न की हो उसको एक तलाक़ देना तलाक़े हसन है चाहे यह तलाक़ माहवारी में हो. और औरत अगर माहवारी वाली हो तो उसे तीन तलाक़ें ऐसी तीन पाकियों में देना जिनमें उससे क़ुर्बत न की हो, तलाक़े हसन है. और अगर औरत माहवारी वाली न हो तो उसको तीन तलाक़ें तीन महीनों में देना तलाक़े हसन है. तलाक़े बिदई - माहवारी की हालत में तलाक़ देना या ऐसी पाकी में तलाक़ देना जिसमें क़ुर्बत की गई हो, तलाक़े बिदई है. ऐसे ही एक पाकी में तीन या दो तलाक़ें एक साथ या दोबार में देना तलाक़े बिदई है अगरचे उस पाकी में क़ुर्बत न की गई हो. तलाक़े बिदई मकरूह है मगर वाक़े हो जाती है और ऐसी तलाक़ देने वाला गुनाहगार होता है.

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ۬ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ
قَدْرًا ۝ وَالّٰٓـِٔیْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ
اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔیْ لَمْ
يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ
يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ
اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا

منزل ٧

अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो(१०) और जो अल्लाह से डरे(११) अल्लाह उसके लिये निजात की राह निकाल देगा(१२)(२) और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ उसका गुमान न हो, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसे काफ़ी है(१३) बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का अन्दाज़ा कर रखा है(३) और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही(१४) अगर तुम्हें कुछ शक हो(१५) तो उनकी इद्दत तीन महीने है और उनकी जिन्हें अभी हैज़ न आया(१६) और हमल वालियों की मीआद यह है कि वो अपना हमल जन लें(१७) और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उसके काम में आसानी फ़रमा देगा(४) यह(१८) अल्लाह का हुक्म है कि उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा, और जो अल्लाह से डरे(१९) अल्लाह उसकी बुराइयाँ उतार देगा और उसे बड़ा सवाब देगा(५) औरतों को वहाँ रखो जहाँ ख़ुद रहते हो अपनी ताक़त भर(२०) और उन्हें ज़रर (कष्ट) न दो कि उनपर तंगी करो,(२१) और अगर(२२) हमल वालियाँ हों तो उन्हें नान

(४) औरत को इद्दत शौहर के घर पूरी करनी लाज़िम है. न शौहर को जायज़ कि तलाक़शुदा औरत को घर से निकाले न उन औरतों को वहाँ से निकलना दुरूस्त.

(५) उनसे कोई खुली बुराई सरज़द हो जिसपर हद आती है जैसे कि ज़िना और चोरी, इसके लिये उन्हें निकालना ही होगा. अगर औरत गालियाँ बकती है और घरवालों को तकलीफ़ देती है तो उसको निकालना जायज़ है. जो औरत तलाक़े रजई या बाइन की इद्दत में हो उसको घर से बाहर निकालना बिल्कुल जायज़ नहीं और जो मौत की इद्दत में हो वह हाजत पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन रात गुज़ारना उसको शौहर के घर में ही ज़रूरी है. जो औरत तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उसके और शौहर के बीच पर्दा ज़रूरी है और ज़्यादा बेहतर यह है कि कोई और औरत उन दोनों के बीच हायल हो. अगर शौहर फ़ासिक़ हो या मकान बहुत तंग हो तो शौहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है.

(६) रजअत का.

(७) यानी इद्दत आख़िर होने के क़रीब हो.

(८) यानी तुम्हें इख़्तियार है अगर तुम उनके साथ अच्छी तरह से रहना चाहते हो तो रजअत कर लो और दिल में फिर दोबारा तलाक़ देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उनके साथ भलाई के साथ बसर करने की उम्मीद न हो तो मेहर वग़ैरह उनके हक़ अदा करके उनसे जुदाई करलो और उन्हें तकलीफ़ न पहुंचाओ इस तरह कि इद्दत ख़त्म होने से ज़रा पहले रजअत करलो, फिर तलाक़ दे दो और इस तरह उन्हें उनकी इद्दत लम्बी करके परेशानी में डालो. ऐसा न करो चाहे रजअत करो या जुदाई इख़्तियार करो, दोनों सूरतों में तोहमत से दूर रहने और झगड़ा दूर रखने के लिये दो मुसलमानों को गवाह कर लेना मुस्तहब है, चुनांन्चे इरशाद होता है.

(९) इससे मक़सूद उसकी रज़ाजूई हो और सच्चाई की स्थापना और अल्लाह के हुक्म की तामील के सिवा अपना कोई बुरा स्वार्थ उसमें न हो.

(१०) इससे इस्तिदलाल किया जाता है कि काफ़िर शरीअत और अहकाम के साथ मुख़ातब नहीं.

(११) और तलाक़ दे तो स्पष्ट शब्दों में तलाक़ दे और इद्दत वाली को तकलीफ़ न पहुंचाए न उसे घर से निकाले और अल्लाह के हुक्म के अनुसार मुसलमानों को गवाह करले.

(१२) जिससे वह दुनिया और आख़िरत के ग़मों से निजात पाए और हर तंगी और परेशानी से मेहफ़ूज़ रहे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से रिवायत है कि जो व्यक्ति इस आयत को पढ़े अल्लाह तआला उसके लिये दुनिया के शुबहात और मौत की तकलीफ़ों और क़यामत की सख़्तियों से निजात की राह निकालेगा. इस आयत की निस्बत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग मेहफ़ूज़ करलें तो उनकी हर ज़रूरत और हाजत के लिये काफ़ी है. औफ़ बिन मालिक के बेटे को मुश्रिकों ने क़ैद करलिया तो औफ़ नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने यह भी अर्ज़ किया कि मेरा बेटा मुश्रिकों

عَلَيْهِنَّ ۚ وَاِنْ كُنَّ اُولٰتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ
حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ۝٦ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ
مِّنْ سَعَتِهٖ ۚ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ
مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ۚ
سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝٧ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ
عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا
شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨ فَذَاقَتْ
وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ
قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا

منزل ٧

नफ़क़ा दो, यहाँ तक कि उनके बच्चा पैदा हो[२३] फिर अगर वो तुम्हारे लिये बच्चे को दूध पिलाएं तो उन्हें उसकी उजरत दो[२४] और आपस में मअक़ूल तौर पर मशवरा करो[२५] फिर अगर आपसी मज़ायक़ा करो (दुशवार समझो)[२६] तो क़रीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी[२७] मक़दूर वाला ﴾६﴿ अपने मक़दूर के क़ाबिल नफ़क़ा दे, और जिस पर उसका रिज़्क़ तंग किया गया वह उसमें से नफ़क़ा दे जो उसे अल्लाह ने दिया, अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है अल्लाह दुशवारी के बाद आसानी फ़रमा देगा[२८] ﴾७﴿

दूसरा रूकू

और कितने ही शहर थे जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उसके रसूलों से सरकशी की तो हमने उनसे सख़्त हिसाब लिया[१] और उन्हें बुरी मार दी[२] ﴾८﴿ तो उन्होंने अपने किये का वबाल चखा और उनके काम का अंजाम घाटा हुआ ﴾९﴿ अल्लाह ने उनके लिये सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो अल्लाह से डरो, ऐ अक़्ल वालो ! जो ईमान लाए हो, बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिये इज़्ज़त उतारी है ﴾१०﴿ वह रसूल[३] कि तुम पर अल्लाह की रौशन आयतें पढ़ता है

ने क़ैद कर लिया है और उसी के साथ अपनी मोहताजी और नादारी की शिकायत क. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का डर रखो और सब्र करो और बहुतात से लाहौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अज़ीम पढ़ते रहो. औफ़ ने घर आकर अपनी बीवी से यह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरू किया. वो पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खटखटाया. दुश्मन ग़ाफ़िल होगया था उसने मौक़ा पाया, क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियाँ भी दुश्मन की साथ ले आया. औफ़ ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया क्या ये बकरियाँ उनके लिये हलाल हैं. हुज़ूर ने इजाज़त दी और यह आयत उतरी.

(१३) दोनों जहान में.

(१४) बूढ़ी होजाने की वजह से कि वो माहवारी से आज़ाद हो गई हों. पाकी की उम्र एक क़ौल में पचपन और एक क़ौल में साट साल की उम्र है और सही यह है कि जिस उम्र में माहवारी बन्द हो जाए वही पाकी की उम्र है.

(१५) इसमें कि उनका हुक्म क्या है. सहाबा ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि माहवारी वाली औरतों की इद्दत तो हमें मालूम होगई. जो माहवारी वाली न हों उनकी इद्दत क्या है. इसपर यह आयत उतरी.

(१६) यानी वो छोटी उम्र की हैं या बालिग़ होने की उम्र तो आगई मगर अभी माहवारी शुरू न हुई, उनकी इद्दत भी तीन माह है.

(१७) गर्भवती औरतों की इद्दत बच्चे की पैदायश है चाहे वह इद्दत तलाक़ की हो या मौत की.

(१८) आदेश जो बयान हुए.

(१९) और अल्लाह तआला के उतारे हुए अहकाम पर अमल करे और अपने ऊपर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उन्हें अच्छी तरह अदा करे.

(२०) तलाक़ दी हुई औरत को इद्दत तक रहने के लिये अपनी हैसियत के मुताबिक़ मकान देना शौहर पर वाजिब है और उस मुद्दत में नान नफ़क़ा देना भी वाजिब है.

(२१) जगह में उनके मकान को घेर कर या किसी ग़लत व्यक्ति को उनके साथ ठहराकर या और कोई ऐसी तकलीफ़ देकर कि वह निकलने पर मजबूर हों.

(२२) वो तलाक़ पाई औरतें.

(२३) क्योंकि उनकी इद्दत जब ही पूरी होगी. नफ़क़ा जैसा गर्भवती को देना वाजिब है ऐसा ही ग़ैर गर्भ वाली को भी चाहे उसको तलाक़े रजई दी हो या बाइन.

(२४) बच्चे को दूध पिलाना माँ पर वाजिब नहीं. बाप के ज़िम्मे है कि वेतन देकर दूध पिलवाए. लेकिन अगर बच्चा माँ के सिवा किसी और औरत का दूध न पिये या बाप फ़क़ीर हो तो उस हालत में माँ पर दूध पिलाना वाजिब हो जाता है. बच्चे की माँ जबतक उसके बाप के निकाह में हो या तलाक़े रजई की इद्दत में, ऐसी हालत में उसको दूध पिलाने की उजरत लेना जायज़ नहीं, इद्दत के बाद जायज़ है. किसी औरत को निर्धारित वेतन पर दूध पिलाने के लिये नियुक्त करना जायज़ है. ग़ैर औरत के मुक़ाबले में उजरत पर दूध पिलाने की माँ ज़्यादा मुस्तहिक़ है. अगर

ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[४] अंधेरियों से[५] उजाले की तरफ़ ले जाए और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे, वह उसे बाग़ में ले जाएगा जिनके नीचे नेहरें बहें जिनमें हमेशा हमेशा रहें, बेशक अल्लाह ने उसके लिये अच्छी रोज़ी रखी[६](११) अल्लाह है जिसने सात आसमान बनाए[७] और उन्हीं के बराबर ज़मीनें[८] हुक्म उनके बीच उतरता है[९] ताकि तुम जान लो कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है अल्लाह का इल्म हर चीज़ को घेरे है(१२)

६६ - सूरए तहरीम

सूरए तहरीम मदीने में उतरी, इसमें बारह आयतें, दो रूकू हैं .

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
ऐ ग़ैब बताने वाले(नबी) ! तुम अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल की[२]

माँ ज़्यादा वेतन तलब करे तो फिर ग़ैर औरत बेहतर है. दूध पिलाई पर बच्चे को नहलाना, उसके कपड़े धोना, उसके तेल लगाना, उसकी ख़ुराक का इन्तिज़ाम रखना लाज़िम है लेकिन इन सब चीज़ों की क़ीमत उसके बाप पर है. अगर दूध पिलाई ने बच्चे को बजाय अपने बकरी का दूध पिलाया या खाने पर रखा तो वह उजरत की मुस्तहिक़ नहीं.

(२५) न मर्द औरत के हक़ में कोताही करे न औरत मामले में सख़्ती.
(२६) जैसे माँ ग़ैर औरत के बराबर उजरत पर राज़ी न हो और बाप ज़्यादा न देना चाहे.
(२७) तलाक़ वाली औरतों को और दूध पिलाने वाली औरतों को.
(२८) यानी मआश की तंगी के बाद.

सूरए तलाक़ - दूसरा रूकू

(१) इससे आख़िरत का हिसाब मुराद है जो होना ही है इसलिये भूत काल का इस्तेमाल फ़रमाया गया.
(२) जहन्नम के अज़ाब की या दुनिया में अकाल और क़त्ल वग़ैरह बलाओं में गिरफ़्तार करके.
(३) यानी वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इज़्ज़त.
(४) कुफ़्र और जिहालत की.
(५) ईमान और इल्म के.
(६) जन्नत, जिसकी नेअमतें हमेशा बाक़ी रहेंगी, कभी मुन्क़तअ न होंगी.
(७) एक के ऊपर एक, हर एक की मोटाई पाँच सौ बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासला पाँच सौ बरस की राह.
(८) यानी सात ही ज़मीनें.
(९) यानी अल्लाह तआला का हुक्म उन सब में जारी और लागू है या ये मानी हैं कि जिब्रईले अमीन आसमान से वही लेकर ज़मीन की तरफ़ उतरते हैं.

६६ - सूरए तहरीम - पहला रूकू

(१) सूरए तहरीम मदनी है . इसमें दो रूकू, बारह आयतें, दो सौ सैंतालीस कलिमे और एक हज़ार साठ अक्षर हैं.
(२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उम्मुल मूमिनीन हज़रत हफ़सह रदियल्लाहो अन्हा के महल में तशरीफ़ ले गए. वो हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो की अयादत के लिये गईं. हुज़ूर ने हज़रत मारियह को ख़िदमत का मौक़ा अता किया.

تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَ
اِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ
فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ
بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ
قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ
الْخَبِيْرُ ۝٣ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ
مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝٤ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ
اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ
مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ

अपनी बीवियों की मर्ज़ी चाहते हो, और अल्लाह बख़्शने वाल मेहरबान है﴾१﴿ बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी क़समों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया(३) और अल्लाह तुम्हारा मौला है, और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है﴾२﴿ और जब नबी ने अपनी एक बीबी(४) से एक राज़ की बात फ़रमाई(५) फिर जब वह(६) उसका ज़िक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया और कुछ से चश्मपोशी फ़रमाई(७) फिर जब नबी ने उसे उसकी ख़बर दी, बोली(८) हुज़ूर को किसने बताया, फ़रमाया मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया(९)﴾३﴿ नबी की दोनों बीबियो अगर अल्लाह की तरफ़ तुम रूजू करो तो(१०) ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं(११) और अगर उन पर ज़ोर बांधो(१२) तो बेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले, और उसके बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं﴾४﴿ उनका रब क़रीब है अगर वो तुम्हें तलाक दे दें कि उन्हें तुम से बेहतर बीबियाँ बदल दे इताअत वालियाँ, ईमान वालियाँ, अदब वालियाँ(१३), तौबह वालियाँ, बन्दगी वालियाँ(१४), रोज़ादार ब्याहियाँ और

यह हज़रत हफ़सह को अच्छा न लगा. हुज़ूर ने उनका दिल रखने के लिये फ़रमाया कि मैंने मारियह को अपने ऊपर हराम किया और मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि मेरे बाद उम्मत के कामों के मालिक अबूबक्र और उमर होंगे. वह इससे ख़ुश होगईं और बड़ी ख़ुशी में उन्होंने यह सारी बात चीत हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा को सुनाई. इसपर यह आयत उतरी और इरशाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ अल्लाह तआला ने आप के लिये हलाल की यानी मारियह क़िब्तियह, आप उन्हें अपने ऊपर क्यों हराम किये लेते हैं, अपनी बीबियों हफ़सह और आयशा रदियल्लाहो अन्हुमा की रज़ा हासिल करने के लिये. और एक क़ौल इस आयत के उतरने की परिस्थितियों में यह भी है कि उम्मुल मूमिनीन ज़ैनब बिन्ते जहश के यहाँ जब हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते तो वह शहद पेश करतीं. इस ज़रिये से उनके यहाँ कुछ ज़्यादा देर तशरीफ़ रखते. यह बात हज़रत आयशा और हज़रत हफ़सह को नागवार गुज़री और उन्हें रश्क हुआ. उन्होंने आपस में मशवरा किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अर्ज़ किया जाए कि दहने मुबारक से मग़ाफ़ीर की बू आती है और मग़ाफ़िर की बू हुज़ूर को नापसन्द थी. चुनांन्चे ऐसा किया गया. हुज़ूर को उनका मक़सद मालूम था, फ़रमाया मग़ाफ़ीर तो मेरे क़रीब नहीं आया. ज़ैनब के यहाँ मैंने शहद पिया है उसको मैं अपने ऊपर हराम किये लेता हूँ. मतलब यह कि ज़ैनब के यहाँ शहद का शग़्ल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शहद ही छोड़े देते हैं. इसपर यह आयत उतरी.

(३) यानी क़फ़्फ़ारा, तो मारियह को ख़िदमत का मौक़ा दीजिये या शहद नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से यह मुराद है कि क़सम के बाद इन्शाअल्लाह कहा जाए ताकि उसके ख़िलाफ़ करने से क़सम न टूटे. मक़ातिल से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत मारियह की तहरीम के कफ़्फ़ारे में एक गुलाम आज़ाद किया और हसन रदियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि हुज़ूर ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया क्योंकि आप मग़फ़ूर हैं. कफ़्फ़ारे का हुक्म उम्मत की तालीम के लिये है. इस आयत से साबित हुआ कि हलाल को अपने ऊपर हराम कर लेना यमीन यानी क़सम है.

(४) यानी हज़रत हफ़सह.

(५) मारियह को अपने ऊपर हराम कर लेने की, और इसके साथ यह फ़रमाया कि इसका इज़्हार किसी पर न करना.

(६) यानी हज़रत हफ़सह हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हुमा से.

(७) यानी मारियह की तहरीम और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिक़ जो दो बातें फ़रमाई थीं उनमें से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुमने यह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात का ज़िक्र न फ़रमाया. यह शाने करीमी थी कि गिरफ़्त फ़रमाने में बअज़ से चश्मपोशी फ़रमाई.

(८) हज़रत हफ़सह रदियल्लाहो अन्हा.

(९) जिससे कुछ भी छुपा नहीं. इसके बाद अल्लाह तआला हज़रत आयशा और हज़रत हफ़सह रदियल्लाहो अन्हुमा को ख़िताब फ़रमाता है.

(१०) यह तुम पर वाजिब है.

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا
يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا
الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً
نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا
نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝

منزل ٧

कुंवारियाँ[१५] ﴾५﴿ ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ[१६] जिसके ईंधन आदमी[१७] और पत्थर हैं[१८] उसपर सख़्त करें (ताक़तवर) फ़रिश्ते मुक़र्रर (तैनात) हैं[१९] जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वही करते हैं[२०] ﴾६﴿ ऐ काफ़िरो, आज बहाने न बनाओ[२१] तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे ﴾७﴿

दूसरा रूकू

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबह करो जो आगे को नसीहत होजाए[१] क़रीब है कि तुम्हारा रब[२] तुम्हारी बुराइयाँ तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिनके नीचे नेहरें बहें जिस दिन अल्लाह रूस्वा न करेगा नबी और उनके साथ के ईमान वालों को[३] उनका नूर दौड़ता होगा उनके आगे और उनके दाएं[४] अर्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे[५] और हमें बख़्श दे बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है ﴾८﴿

(११) कि तुम्हें वह बात पसन्द आई जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नागवार है यानी तहरीमे मारियह अर्थात मारियह को अपने ऊपर हराम कर लेना.
(१२) और आपस में मिलकर ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करो जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नागवार हो.
(१३) जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी और उनकी रज़ा चाहने वालियाँ हों.
(१४) यानी बहुत ज़्यादा इबादत करने वाली.
(१५) यह अज़वाजे मुतह्हिरात को चेतावनी है कि अगर उन्होंने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दुखी किया और हुज़ूर ने उन्हें तलाक़ दी तो हुज़ूर को अल्लाह तआला अपने लुत्फ़ो करम से और बेहतर बीवियाँ अता फ़रमाएगा. इस चेतावनी से अज़वाजे मुतह्हिरात प्रभावित हुईं और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत के शरफ़ को हर नेअमत से ज़्यादा समझा और हुज़ूर का दिल रखने और आपकी रज़ा चाहने को सबसे ज़्यादा अहम समझा. लिहाज़ा आपने उन्हें तलाक़ न दी.
(१६) अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी इख़्तियार करके, इबादतें पूरी करके, गुनाहों से दूर रहकर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मना करके और उन्हें इल्म और अदब सिखाकर.
(१७) यानी काफ़िर.
(१८) यानी बुत वग़ैरह. मुराद यह है कि जहन्नम की आग बहुत ही सख़्त ताप वाली है और जिस तरह दुनिया की आग लकड़ी वग़ैरह से जलती है, जहन्नम की आग इन चीज़ों से जलती है जिनका ज़िक्र किया गया.
(१९) जो अत्यन्त शक्तिशाली और ज़ोरावर हैं और उनकी तबीयत में रहम नहीं.
(२०) काफ़िरों से दोज़ख़ में दाख़िले के वक़्त कहा जाएगा जबकि वो दोज़ख़ की आग की सख़्ती और उसका अज़ाब देखेंगे.
(२१) क्योंकि अब तुम्हारे लिये उज़्र की कोई जगह नहीं बाक़ी रही न आज कोई उज़्र क़ुबूल किया जाए.

सूरए तहरीम - दूसरा रूकू

(१) यानी सच्ची तौबह जिसका असर तौबह करने वाले के कर्मों में ज़ाहिर हो और उसकी ज़िन्दगी ताअतों और इबादतों से भरपूर हो जाए और वह गुनाहों से दूर रहे. हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो ने और दूसरे असहाब ने फ़रमाया तौबए नुसूह यह है कि तौबह के बाद आदमी फिर गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुआ दूध फिर थन में वापिस नहीं होता.
(२) तौबह क़ुबूल फ़रमाने के बाद.
(३) इसमें काफ़िरों पर तअरीज़ है कि वह दिन उनकी रूस्वाई का होगा और नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हुज़ूर के साथ वालों की इज़्ज़त का.

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

وقف لازم

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)[६] काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर[७] जिहाद करो और उनपर सख़्ती फ़रमाओ और उनका ठिकाना जहन्नम है, और क्या ही बुरा अंजाम ﴾९﴿ अल्लाह काफ़िरों की मिसाल देता है[८] नूह की औरत और लूत की औरत, वो हमारे बन्दों में दो नज़दीकी के सज़ावार बन्दों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनसे दग़ा की[९] तो वो अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम न आए और फ़रमा दिया गया[१०] कि तुम दोनों औरतें जहन्नम में जाओ जानेवालों के साथ[११] ﴾१०﴿ और अल्लाह मुसलमानों की मिसाल बयान फ़रमाता है[१२] फ़िरऔन की बीबी[१३] जब उसने अर्ज़ की ऐ मेरे रब, मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना[१४] और मुझे फ़िरऔन और उसके काम से निजात दे[१५] और मुझे ज़ालिम लोगों से निजात बख़्श[१६] ﴾११﴿ और इमरान की बेटी मरयम जिसने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूंकी और उसने अपने रब की बातों[१७] और उसकी किताबों[१८] की तस्दीक़ (पुष्टि) की और फ़रमाँबरदारों में हुई ﴾१२﴿

(४) सिरात पर, और जब मूमिन देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ गया.

(५) यानी इसको बाक़ी रख कि जन्नत में दाख़िले तक बाक़ी रहे.

(६) तलवार से.

(७) सख़्त बात और अच्छी नसीहत और मज़बूत तर्क से.

(८) इस बात में कि उन्हें उनके कुफ़्र और मुमिनीन की दुश्मनी पर अज़ाब किया जाएगा और इस कुफ़्र और दुश्मनी के होते हुए उनका नसब, और ईमान वालों और क़ुर्ब वालों के साथ उनकी रिश्तेदारी और मित्रता उन्हें कुछ फ़ायदा न देगी.

(९) दीन में कुफ़्र इख़्तियार किया. हज़रत नूह की औरत वाहिला अपनी क़ौम से हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की निस्बत कहती थी कि वह पागल हैं और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की औरत वाइला अपना दोग़लापन छुपाती थी और जो मेहमान आपके यहाँ आते थे, आग जलाकर अपनी क़ौम को उनके आने से ख़बरदार करती थी.

(१०) उनसे मरते वक़्त या क़यामत के दिन. भूत काल का इस्तेमाल यह जताने के लिये है कि ऐसा होना है.

(११) यानी अपनी क़ौमों के काफ़िरों के साथ क्योंकि तुम्हारे और इन नबियों के बीच तुम्हारे कुफ़्र के कारण सम्बन्ध बाक़ी न रहा.

(१२) कि उन्हें दूसरे की गुमराही नुक़सान नहीं देती.

(१३) जिनका नाम आसियह बिन्ते मज़ाहिम है. जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जादूगरों को पराजित किया तो यह आसियह आप पर ईमान ले आईं. फ़िरऔन को ख़बर हुई तो उसने उनपर सख़्त अज़ाब किये. उन्हें चौमेख़ा किया और भारी चक्की सीने पर रखी और धूप में डाल दिया. जब फ़िरऔन उनके पास से हटते तो फ़रिश्ते उनपर साया करते.

(१४) अल्लाह तआला ने उनका मकान जो जन्नत में है, उनपर ज़ाहिर फ़रमाया और उसकी ख़ुशी में फ़िरऔन की तकलीफ़ों की सख़्ती उनपर आसान हो गई.

(१५) फ़िरऔन के काम से या उसका शिर्क और कुफ़्र और अत्याचार मुराद है या उसका क़ुर्ब.

(१६) यानी फ़िरऔन के दीन वालों से. चुनांन्चे उनकी यह दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआला ने उनकी रूह क़ब्ज़ फ़रमाई और इब्ने कीसाम ने कहा कि वह ज़िन्दा उठाकर जन्नत में दाख़िल की गईं.

(१७) रब की बातों से शरीअत के क़ानून और एहकाम मुराद हैं जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये निर्धारित किये.

(१८) किताबों से वो किताबें मुराद हैं जो नबियों पर उतरीं थीं.

पारा अट्ठाईस समाप्त

उन्तीसवाँ पारा - तबारकल्लज़ी

६७ - सूरए मुल्क

सूरए मुल्क मक्का में उतरी, इसमें तीस आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला(१) बड़ी बरकत वाला है वह जिसके क़ब्ज़े में सारा मुल्क(२) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है(१) वह जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो(३) तुम में किस का काम ज़्यादा अच्छा है(४) और वही इज़्ज़त वाला बख़्शिश वाला है(२) जिसने सात आसमान बनाए एक के ऊपर दूसरा, तो रहमान के बनाने में क्या फ़र्क़ देखता है(५) तो निगाह उठाकर देख(६) तुझे कोई रख़ना नज़र आता है(३) फिर दोबारा निगाह उठा(७) नज़र तेरी तरफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी(८)(४) और बेशक हमने नीचे के आसमान को(९) चिराग़ों से सजया(१०) और उन्हें शैतानों के लिये मार किया(११) और उनके लिये(१२) भड़कती आग का अज़ाब तैयार फ़रमाया(१३)(५) और जिन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया(१४) उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है और क्या ही बुरा अंजाम(६) जब उसमें डाले जाएंगे, उसका रैंकना सुनेंगे कि जोश मारती है(७) मालूम होता है

उन्तीसवां पारा - तबारकल्लज़ी

६७ - सूरए मुल्क - पहला रूकू

(१) सूरए मुल्क मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, तीस आयतें, तीन सौ तीस कलिमे और एक हज़ार तीन सौ तेरह अक्षर हैं. हदीस में है कि सुरए मुल्क शफ़ाअत करती है. (तिरमिज़ी व अबू दाऊद) एक और हदीस में है रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सहाबा ने एक जगह ख़ैमा लगाया. वहाँ एक क़ब्र थी और उन्हें ख़याल न था कि वह साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते रहे, यहाँ तक कि पूरी की. तो ख़ैमे वाले सहाबी ने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया. मुझे ख़याल न था कि यहाँ क़ब्र है और थी वहाँ क़ब्र और साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहाँ तक कि ख़त्म किया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि यह सूरत निजात दिलाने वाली है, अज़ाबे क़ब्र से निजात दिलाती है. (तिरमिज़ी)

(२) जो चाहे करे, जिसे चाहे इज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़िल्लत.

(३) दुनिया की ज़िन्दगी में.

(४) यानी कौन ज़्यादा फ़रमाँबरदार और दिल का सच्चा है.

(५) यानी आसमानों की पैदाइश से अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर है कि उसने कैसे मुस्तहकम(मज़बूत), उस्तुवार(ठीक ठीक) मुस्तक़ीम(अडिग), और मुतनासिब(संतुलित) बनाए .

(६) आसमान की तरफ़, दोबारा.

(७) और बार बार देख.

(८) कि बार बार की जुस्तजू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी.

(९) जो ज़मीन की तरफ़ सबसे ज़्यादा क़रीब है.

(१०) यानी सितारों से.

(११) कि जब शैतान आसमान की तरफ़ उनकी बातचीत सुनने और बातें चुराने पहुंचें तो तारों से शोले और चिंगारियाँ निकलें जिनसे उन्हें मारा जाए.

كِ शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गिरोह उसमें डाला जाएगा उसके दारोग़ा[१५] उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला नहीं आया था[१६] (८) कहेंगे क्यों नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए[१७] फिर हमने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा, तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में (९) और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते[१८] तो दोज़ख़ वालों में न होते (१०) अब अपने गुनाह का इक़रार किया[१९] तो फिटकार हो दोज़ख़ियों को (११) बेशक वो जो बे देखे अपने रब से डरते हैं[२०] उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है[२१] (१२) और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से, वह तो दिलों की जानता है[२२] (१३) क्या वह न जाने जिसने पैदा किया[२३] और वही है हर बारीकी जानता ख़बरदार (१४)

दूसरा रूकू

वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन राम कर दी तो उसके रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में से खाओ[१] और उसी की तरफ़ उठना है[२] (१५) क्या तुम उससे निडर हो गए जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे[३] जभी वह कांपती रहे[४] (१६) या तुम निडर हो गए उससे जिसकी सल्तनत आसमान में है कि तुम पर पथराव

كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ
نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي
ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا
كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَاعْتَرَفُوا بِذَنْبِهِمْ ۚ
فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَأَسِرُّوا
قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝
أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ ع
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝ أَأَمِنْتُمْ مَنْ
فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ

منزل ٧

(१२) यानी शैतानों के.
(१३) आख़िरत में.
(१४) चाहे वो इन्सानों में से हों या जिन्नों में से.
(१५) मालिक और उनके मातहत, फटकार के तौर पर.
(१६) यानी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब का डर दिलाता है.
(१७) और उन्हों ने अल्लाह के अहकाम पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और आख़िरत के अज़ाब से डराया.
(१८) रसूलों की हिदायत और उसको मानते. इससे मालूम हुआ कि तक्लीफ़ का आधार सुनने और समझने की दलीलों पर है और दोनों हुज्जतें लाज़िम हैं.
(१९) कि रसूलों को झुटलाते थे और इस वक़्त का इक़रार किसी काम का नहीं.
(२०) और उसपर ईमान लाते हैं.
(२१) उनकी नेकियों का इनआम.
(२२) उसपर कुछ छुपा हुआ नहीं. मुश्रिक लोग आपस में कहते थे, चुपके चुपके बात करो, मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) का ख़ुदा न सुन पाए. इसपर यह आयत उतरी और उन्हें बताया गया कि उससे कोई चीज़ छुप नहीं सकती, यह कोशिश बेकार है.
(२३) अपनी मख़लूक़ के हालात को.

सूरए मुल्क - दूसरा रूकू

(१) जो उसने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाई.
(२) क़ब्रों से, जज़ा के लिये.
(३) जैसा क़ारून को धंसाया.
(४) ताकि तुम उसके असफ़ल में यानी आख़िरी गहराई में पहुंचो.

حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۘؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ

منزل ٧

भेजे[५] तो अब जानोगे[६] कैसा था मेरा डराना﴿१७﴾ और बेशक उनसे अगलों ने झुटलाया[७] तो कैसा हुआ मेरा इन्कार[८]﴿१८﴾ और क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते[९] और समेटते, उन्हें कोई नहीं रोकता[१०] सिवा रहमान के[११] बेशक वह सब कुछ देखता है﴿१९﴾ या वह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रहमान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे[१२] काफ़िर नहीं मगर धोखे में[१३]﴿२०﴾ या कौन ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले[१४] बल्कि वो सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं[१५]﴿२१﴾ तो क्या वो जो अपने मुंह के बल औंधा चले[१६] ज़्यादा राह पर है या वह जो सीधा चले[१७] सीधी राह पर[१८]﴿२२﴾ तुम फ़रमाओ[१९] वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आँख और दिल बनाए[२०] कितना कम हक़ मानते हो[२१]﴿२३﴾ तुम फ़रमाओ वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे[२२]﴿२४﴾ और कहते हैं[२३] यह वादा[२४] कब आएगा अगर तुम सच्चे हो﴿२५﴾

(५) जैसा लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम पर भेजा था.
(६) यानी अज़ाब देख कर.
(७) यानी पहली उम्मतों ने.
(८) जब मैंने उन्हें हलाक किया.
(९) हवा में उड़ते वक़्त.
(१०) पर फैलाने और समेटने की हालत में, गिरने से.
(११) यानी इसके बावुजूद कि पक्षी भारी, मोटे जिस्म वाले होते हैं और भारी चीज़ प्राकृतिक तौर से पस्ती की तरफ़ आती है, वह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती, अल्लाह तआला की क़ुदरत है कि वो ठहरे रहते हैं. ऐसे ही आसमानों को जब तक वह चाहे रुके हुए हैं और वह न रोके तो गिर पड़ें.
(१२) अगर वह तुम्हें अज़ाब करना चाहे.
(१३) यानी काफ़िर शैतान के इस धोखे में हैं कि उनपर अज़ाब न उतरेगा.
(१४) यानी उसके सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं.
(१५) कि हक़ से क़रीब नहीं होते. इसके बाद अल्लाह तआला ने काफ़िर और मूमिन के लिये एक उपमा बयान फ़रमाई .
(१६) न आगे देखे न पीछे, न दाएं न बाएं.
(१७) रास्ते को देखता.
(१८) जो अस्ल मंज़िल तक पहुंचाने वाली है. इस उदाहरण का उद्देश्य यह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस तरह हैरान परेशान जाता है कि न उसे मंज़िल मालूम, न राह पहचाने. और मूमिन आँखें खोले सत्यमार्ग देखता पहचाना चलता है.
(१९) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मुश्रिकों से कि जिस ख़ुदा की तरफ़ मैं तुम्हें बुलाता हूँ वह --
(२०) जो विद्या के साधन हैं लेकिन तुमने उन आंगों से फ़ायदा न उठाया . जो सुना वह न माना, जो देखा उससे सबक़ न सीखा, जो समझा उसमें ग़ौर न किया.
(२१) कि अल्लाह तआला के अता फ़रमाए हुए अंगों और समझने की शक्तियों से वो काम नहीं लेते जिसके लिये वो अता हुए. यही कारण है कि शिर्क और कुफ़्र में गिरफ़्तार होते हो.
(२२) क़यामत के दिन, हिसाब और जज़ा के लिये.
(२३) मुसलमानों से, ठट्ठा और हंसी मज़ाक़ के तौर पर.
(२४) अज़ाब या क़यामत का.

إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝
فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا
فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ
الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ
مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ
أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ۝

سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ (٦٨) (٢)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

ن ۚ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ
بِمَجْنُونٍ ۝ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝ وَ
إِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ۝

منزل ٧

तुम फ़रमाओ यह इल्म तो अल्लाह के पास है और मैं तो यही साफ़ डर सुनाने वाला हूँ[२५]﴾२६﴿ फिर जब उसे[२६] पास देखेंगे काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे[२७] और उनसे फ़रमा दिया जाएगा[२८] यह है जो तुम मांगते थे[२९]﴾२७﴿ तुम फ़रमाओ[३०] भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को[३१] हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए[३२] तो वह कौन सा है जो काफ़िरों को दुख के अज़ाब से बचा लेगा[३३]﴾२८﴿ तुम फ़रमाओ वही रहमान है[३४] हम उसपर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया तो अब जान जाओगे[३५] कौन खुली गुमराही में है﴾२९﴿ तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह को तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए[३६] तो वह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता[३७]﴾३०﴿

६८- सूरए क़लम

सूरए क़लम मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

क़लम[२] और उनके लिखे की क़सम[३]﴾१﴿ तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं[४]﴾२﴿ और ज़रूर तुम्हारे लिये बेइन्तिहा सवाब है[५]﴾३﴿ और बेशक तुम्हारी ख़ू-बू बड़ी शान की है[६]﴾४﴿ तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख लोगे और वो भी देख लेंगे[७]﴾५﴿

(२५) यानी अज़ाब और क़यामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूँ. इतने ही का मामूर हूँ. इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है. वक़्त का बताना मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है.
(२६) यानी अज़ाब को, जिसका वादा है.
(२७) चेहरे काले पड़ जाएंगे. वहशत और ग़म से सूरतें बिगड़ जाएंगी.
(२८) जहन्नम के फ़रिश्ते कहेंगे.
(२९) और नबियों से कहते थे कि वह अज़ाब कहाँ है, जल्दी लाओ . अब देख लो, यह है वह अज़ाब जिसकी तुम्हें तलब थी.
(३०) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्के के काफ़िरों से जो आपकी मौत की आर्ज़ू रखते हैं.
(३१) यानी मेरे सहाबा को.
(३२) और हमारी उम्रें लम्बी कर दे.
(३३) तुम्हें तो अपने कुफ़्र के कारण ज़रूर अज़ाब में गिरफ़्तार होना. हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ायदा देगी.
(३४) जिसकी तरफ़ हम तुम्हें बुलाते हैं.
(३५) यानी अज़ाब के वक़्त.
(३६) और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरह से हाथ न आ सके.
(३७) कि उसतक हर एक का हाथ पहुंच सके. यह सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की क़ुदरत में है. तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखें उन्हें क्यों इबादत में उस सच्ची क़ुदरत वाले का शरीक करते हो.

६८ - सूरए क़लम - पहला रूकू

(१) इस सूरत का नाम सूरए नून और सूरए क़लम है. यह सूरत मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, बावन आयतें, तीन सौ कलिमे और एक हज़ार दो सौ छप्पन अक्षर हैं.
(२) अल्लाह तआला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई. इस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिनसे दीन व दुनिया की नेकियाँ और फ़ायदे जुड़े हुए हैं. या क़लमे अअला मुराद है जो नूरी क़लम है और उसकी लम्बाई आसमानों और ज़मीन के बीच

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ○ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِيْلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ○ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِيْنَ ○ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ○ وَلَا
تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۙ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ۙ
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ
زَنِيْمٍ ۙ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۗ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ○ سَنَسِمُهٗ عَلَى
الْخُرْطُوْمِ ○ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ
اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ○
فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ○
فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ
اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ○
فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا

कि तुम में कौन मजनून था﴾६﴿ बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बहके, और वह ख़ूब जानता है जो राह पर है﴾७﴿ तो झुटलाने वालों की बात न सुनना﴾८﴿ वो तो इस आरज़ू में हैं कि किसी तरह तुम नर्मी करो[८]﴾९﴿ तो वो भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला[९]﴾१०﴿ ज़लील बहुत तअने देने वाला, बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला[१०]﴾११﴿ भलाई से बड़ा रोकने वाला[११] हद से बढ़ने वाला गुनहगार[१२]﴾१२﴿ दुरूश्तख़ू[१३] इस सब पर तुर्रा यह कि उसकी अस्ल में ख़ता[१४]﴾१३﴿ उसपर कि कुछ माल और बेटे रखता है﴾१४﴿ जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं[१५] कहता है कि अगलों की कहानियाँ हैं[१६]﴾१५﴿ क़रीब है कि हम उसकी सुअर की सी थूथनी पर दाग़ देंगे[१७]﴾१६﴿ बेशक हमने उन्हें जांचा[१८] जैसा उस बाग़ वालों को जांचा था[१९], जब उन्होंने क़सम खाई कि ज़रूर सुब्ह होते उसके खेत काट लेंगे[२०]﴾१७﴿ और इन्शाअल्लाह न कहा[२१]﴾१८﴿ तो उसपर[२२] तेरे रब की तरफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया[२३] और वो सोते थे﴾१९﴿ तो सुब्ह रह गया[२४] जैसे फल टूटा हुआ[२५]﴾२०﴿ फिर उन्होंने सुब्ह होते एक दूसरे को पुकारा﴾२१﴿ कि तड़के अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है﴾२२﴿ तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे﴾२३﴿ कि

की दूरी के बराबर है. उसने अल्लाह के हुक्म से लौहे मेहफ़ूज़ पर क़यामत तक होने वाले तमाम काम लिख दिये.

(३) यानी आदम की औलाद के कर्मों के निगहबान फ़रिश्तों के लिखे की क़सम.

(४) उसका लुत्फ़ और करम तुम्हारे साथ है. उसने तुम पर एहसान और इनआम फ़रमाए. नबुव्वत और हिकमत अता की, अच्छी ज़बान, भरपूर बुद्धि, पाकीज़ा आदतें, पसन्दीदा आचरण अता किये. मख़्लूक़ के लिये जिस क़द्र कमालात संभव हैं सब ऊंचे दर्जे के और भरपूर तौर पर अता फ़रमाए. हर ऐब से पाक रखा. इसमें काफ़िरों के उस कथन का रद है जो उन्होंने कहा था "या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़िला अलैहिज़ ज़िक्रो इन्नका ल-मजनून" यानी ऐ वह जिनपर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो(सूरए हिजर, आयत ६)

(५) रिसालत की तब्लीग़ और नबुव्वत का इज़्हार और ख़ल्क़ को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाने और काफ़िरों की इन बेहूदा बातों और झूटे इल्ज़ामों और तअनों पर सब्र करने का.

(६) हज़रत उम्मुल मूमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहो अन्हा से पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़ुल्क़ क़ुरआने अज़ीम है. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे अच्छे आचरण और नेक कामों की पूर्ति के लिये भेजा है.

(७) यानी मक्के वाले भी, जब उनपर अज़ाब उतरेगा.

(८) दीन के मामले में उनकी रिआयत करके.

(९) कि झूटी और बातिल बातों पर क़समें खाने में दिलेर है. मुराद इससे या वलीद बिन मुग़ीरह है या असवद बिन यग़ूस या अख़नस बिन शुरैक़. आगे उसकी सिफ़्तों का बयान होता है.

(१०) ताकि लोगों के बीच फ़साद डाले.

(११) कंजूस न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इसके मानी में यह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से तात्पर्य इस्लाम से रोकना है क्योंकि वलीद बिन मुग़ीरह अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुआ तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा.

(१२) फ़ाजिर, बदकार.

(१३) बदमिज़ाज, बदज़बान.

(१४) यानी बदगौहर, तो उससे बुरे कामों का होना क्या तअज्जुब की बात है. रिवायत है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरह ने अपनी माँ से जाकर कहा कि मुहम्मद ने मेरे हक़ में दस बातें फ़रमाई हैं. नौ को तो मैं जानता हूँ कि मुझ में मौजूद

اَلْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾
فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا
تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا
خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ
الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ
النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾
مَا لَكُمْ ٙ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ
تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَكُمْ
اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

हरगिज़ आज कोई मिस्कीन (दरिद्र) तुम्हारे बाग़ में आने न पाए(२४) और तड़के चले अपने इस इरादे पर क़ुदरत समझते[२६] (२५) फिर जब उसे देखा[२७] बोले बेशक हम रास्ता बहक गए[२८](२६) बल्कि हम बेनसीब हुए[२९](२७) उनमें जो सब से ग़नीमत था बोला, क्या मैं तुम से नहीं कहता था कि तस्बीह क्यों नहीं करते[३०](२८) बोले पाकी है हमारे रब को, बेशक हम ज़ालिम थे (२९) अब एक दूसरे की तरफ़ मलामत करता मुतवज्जेह हुआ[३१](३०) बोले हाय ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे[३२](३१) उम्मीद है हमें हमारा रब इससे बेहतर बदल दे, हम अपने रब की तरफ़ रग़बत लाते हैं[३३](३२) मार ऐसी होती है[३४] और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वो जानते[३५](३३)

दूसरा रूकू

बेशक डर वालों के लिये उनके रब के पास[१] चैन के बाग़ हैं[२](३४) क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों का सा कर दें[३](३५) तुम्हें क्या हुआ कैसा हुक्म लगाते हो[४](३६) क्या तुम्हारे लिये कोई किताब है उसमें पढ़ते हो(३७) कि तुम्हारे लिये उसमें जो तुम पसन्द करो(३८) या तुम्हारे लिये हम पर कुछ क़समें हैं क़यामत तक पहुंचती हुई[५] कि तुम्हें

हैं लेकिन दसवीं बात, अस्ल में ख़ता होने की, इसका हाल मुझे मालूम नहीं. तू मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गर्दन मार दूंगा. इसपर उसकी माँ ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था मुझे अन्देशा हुआ कि वह मर जाएगा तो उसका माल ग़ैर ले जाएंगे तो मैं ने एक चरवाहे को बुला लिया, तू उससे है. वलीद ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में एक झूटा कलिमा कहा था, मजनून, उसके जवाब में अल्लाह तआला ने उसके दस वास्तविक ऐब ज़ाहिर फ़रमा दिये. इससे सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़ज़ीलत और मेहबूबियत की शान मालूम होती है.

(१५) यानी क़ुरआने मजीद.

(१६) और इससे उसकी मुराद यह होती है कि झूट है और उसका यह कहना इसका नतीजा है कि हमने उस को माल और औलाद दी.

(१७) यानी उसका चेहरा बिगाड़ देंगे और उसके अन्दर की बुराई के निशान उसके चेहरे पर उभार देंगे ताकि वह किसी को मुंह न दिखा सके. आख़िरत में तो यह सब कुछ होगा ही मगर दुनिया में भी यह ख़बर पूरी होकर रही और उसकी नाक दाग़ीली हो गई. कहते हैं कि बद्र में उसकी नाक कट गई थी. (ख़ाज़िन, मदारिक और जलालैन)

(१८) यानी मक्के वालों को नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ से जो आपने फ़रमाई थी कि या रब उन्हें ऐसे दुष्काल में गिरफ़्तार कर जैसा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में उतरा था. चुनांन्चे मक्के वाले अकाल की ऐसी मुसीबत में गिरफ़्तार किये गए कि वह भूख की सख़्ती में मुर्दार और हड्डियाँ तक खा गए और इस तरह आज़माइश में डाले गए.

(१९) उस बाग़ का नाम ज़रदान था यह बाग़ सनआ यमन से दो फ़रसंग के फ़ासले पर रास्ते के किनारे पर था. उसका मालिक एक नेक आदमी था जो बाग़ के मेवे फ़क़ीरों को देता था. जब बाग़ में जाता फ़क़ीरों को बुला लेता, तमाम गिरे पड़े मेवे फ़क़ीर ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते. जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वो भी फ़क़ीरों को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना हिस्सा होता उसमें से भी दसवाँ हिस्सा फ़क़ीरों को दे देता. इसी तरह खेती काटते वक़्त भी उसने फ़क़ीरों के अधिकार बहुत ज़्यादा निर्धारित किये थे. उसके बाद उसके तीन बेटे वारिस हुए उन्होंने आपस में सलाह की कि माल थोड़ा है, कुटुम्ब बहुत है अगर वालिद की तरह हम भी ख़ैरात जारी रखेंगे तो तंगदस्त हो जाएंगे. आपस में मिलकर क़समें खाईं कि सुब्ह तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चलकर मेवे तोड़ लें. चुनांन्चे इरशाद होता है.

(२०) ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो.

(२१) ये लोग तो क़समें खाकर सो गए.

(२२) यानी बाग़ पर.

(२३) यानी एक बला आई. अल्लाह के हुक्म से एक आग उतरी और बाग़ को तबाह कर गई.

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا
صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ
اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ
وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِىْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا
الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَ
اُمْلِىْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِىْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ اَمْ تَسْئَلُهُمْ اَجْرًا
فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ
فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ
كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾ لَوْلَآ
اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾

मिलेगा जो कुछ दावा करते हो[६] ﴾३९﴿ तुम उनसे पूछो[७] उनमें कौन सा इसका ज़ामिन है[८] ﴾४०﴿ या उनके पास कुछ शरीक हैं[९] तो अपने शरीकों को लेकर आएं अगर सच्चे हैं[१०] ﴾४१﴿ जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिसके मानी अल्लाह ही जानता है)[११] और सज्दे को बुलाए जाएंगे[१२] तो न कर सकेंगे[१३] ﴾४२﴿ नीची निगाहें किये हुए[१४] उनपर ख़्वारी चढ़ रही होगी, और बेशक दुनिया में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे[१५] जब तंदुरूस्त थे[१६] ﴾४३﴿ तो जो इस बात को[१७] झुटलाता है उसे मुझ पर छोड़ दो[१८] क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे[१९] जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी ﴾४४﴿ और मैं उन्हें ढील दूंगा, बेशक मेरी ख़ुफ़िया (छुपवाँ) तदबीर बहुत पक्की है[२०] ﴾४५﴿ या तुम उनसे उजरत मांगते हो[२१] कि वो चट्टी के बोझ में दबे हैं[२२] ﴾४६﴿ या उनके पास ग़ैब है[२३] कि वो लिख रहे हैं[२४] ﴾४७﴿ तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो[२५] और उस मछली वाले की तरह न होना[२६] जब इस हाल में पुकारा कि उसका दिल घुट रहा था[२७] ﴾४८﴿ अगर उसके रब की नेअमत उसकी ख़बर को न पहुंच जाती[२८] तो ज़रूर मैदान पर फैंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुआ[२९] ﴾४९﴿ तो उसे उसके रब ने चुन लिया और अपने क़ुर्ब के ख़ास सज़ावारों (हक़दारों) में कर लिया ﴾५०﴿

(२४) वह बाग़.
(२५) और इन लोगों को कुछ ख़बर नहीं. ये सुब्ह तड़के उठे.
(२६) कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवा अपने क़ब्ज़े में लाएंगे.
(२७) यानी बाग़ को कि उसमें मेवे का नामो निशान नहीं.
(२८) यानी किसी और बाग़ पर पहुंच गए. हमारा बाग़ तो मेवेदार है. फिर जब ग़ौर किया उसके दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़ है तो बोले.
(२९) उसके मुनाफ़े से मिस्कीनों को न देने की नियत करके.
(३०) और इस बुरे इरादे से तौबह क्यों नहीं कर लेते और अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र क्यों अदा नहीं करते.
(३१) और आख़िरकार सबने ऐतिराफ़ किया कि हमसे भूल हुई और हम हद से आगे बढ़ गए.
(३२) कि हमने अल्लाह तआला की नेअमत का शुक्र अदा नहीं किया और बाप दादा के नेक तरीक़े को छोड़ा.
(३३) उसके करम और माफ़ी की उम्मीद रखते हैं. उन लोगों ने सच्चे दिल से तौबह की तो अल्लाह तआला ने उसके एवज़ उससे बेहतर बाग़ अता फ़रमाया जिसका नाम बाग़े हैवान था और उसमें पैदावार की बहुतात और अच्छी आबो-हवा का यह हाल था कि उसके अंगूरों का एक गुच्छा एक गधे पर लादा जाता था.
(३४) ऐ मक्के के काफ़िरो, होश में आओ, यह तो दुनिया की मार है.
(३५) आख़िरत के अज़ाब को और उससे बचने के लिये अल्लाह तआला और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करते.

सूरए क़लम - दूसरा रूकू

(१) यानी आख़िरत में.
(२) मुश्रिकों ने मुसलमानों से कहा था कि अगर मरने के बाद फिर हम उठाए भी गए तो वहाँ भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दर्जा ऊंचा रहेगा जैसा कि दुनिया में हमें ख़ुशहाली हासिल है. इसपर यह आयत उतरी जो आगे आती है.
(३) और उन मुख़्लिस फ़रमाँबरदारों को उन दुश्मन बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे. हमारी निस्बत ऐसा ग़लत गुमान---
(४) जिहालत से.
(५) जो मुक़्ते न हों, इस मज़मून की ---

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝٥١ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٥٢

(٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٧٨) — اٰيَاتُهَا ٥٢ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَآقَّةُ ۝١ مَا الْحَآقَّةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۝٣ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۝٤ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ۝٥ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝٦ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ۝٨ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝٩ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

منزل ٧

और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मालूम होते हैं कि मानो अपनी बुरी नज़र लगाकर तुम्हें गिरा देंगे जब क़ुरआन सुनते हैं[३०] और कहते हैं[३१] ये ज़रूर अक़्ल से दूर हैं(५१) और वह[३२] तो नहीं मगर नसीहत सारे जगत के लिये[३३](५२)

६९ - सूरए हाक़्क़ा

सूरए हाक़्क़ा मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] वह हक़ होने वाली[२](१) कैसी वह हक़ होने वाली[३](२) और तुमने क्या जाना कैसी वह हक़ होने वाली[४](३) समूद और आद ने उस सख़्त सदमा देने वाली को झुटलाया(४) तो समूद तो हलाक किये गए हद से गुज़री हुई चिंघाड़ से[५](५) और रहे आद, वो हलाक किये गए बहुत सख़्त गरजती आंधी से(६) वह उनपर क़ुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन[६] लगातार तो उन लोगों को उनमें[७] देखो बिछड़े हुए[८] मानो वो खजूर के ठूंड हैं गिरे हुए(७) तो तुम उनमें किसी को बचा हुआ देखते हो[९](८) और फ़िरऔन और उससे अगले[१०] और उलटने वाली बस्तियाँ[११] ख़ता लाए[१२](९) तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म

(६) अपने लिये अल्लाह तआला के नज़्दीक ख़ैरो करामत का. अब अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब फ़रमाता है.
(७) यानी काफ़िरों से.
(८) कि आख़िरत में उन्हें मुसलमानों से बेहतर या उनके बराबर मिलेगा.
(९) जो इस दावे में उनकी मुवाफ़िक़त करें और ज़िम्मेदार बनें.
(१०) हक़ीक़त में वो ग़लती पर हैं. न उनके पास कोई किताब जिसमें यह दर्ज हो जो वो कहते हैं न अल्लाह तआला का कोई एहद, न कोई उनका ज़ामिन, न मुवाफ़िक़.
(११) जमहूर के नज़्दीक साक़ खोलना सख़्ती और मुसीबत से इबारत है जो क़यामत के दिन हिसाब और जज़ा के लिये पेश आएगी. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़यामत में वह बड़ा सख़्त वक़्त है. बुज़ुर्गों का यही तरीक़ा है कि वो उसके मानी में ज़बान नहीं खोलते और यह फ़रमाते हैं कि हम उसपर ईमान लाते हैं और उससे जो मुराद है वह अल्लाह तआला पर छोड़ते हैं.
(१२) यानी काफ़िर और दोग़ली प्रवृत्ति वाले लोग, इम्तिहान और फटकार के तौर पर.
(१३) उनकी पीठें तांबे के तख़्ते की तरह सख़्त हो जाएंगी.
(१४) कि उनपर ज़िल्लत और शर्मिन्दगी छाई हुई होगी.
(१५) और अज़ानों और तकबीरों में हय्या अलस सलात, हय्या अलल फ़लाह के साथ उन्हें नमाज़ और सज्दे की दावत दी जाती थी.
(१६) इसके बावुजूद सज्दा न करते थे. उसी का नतीजा है जो यहाँ सज्दे से मेहरूम रहे.
(१७) यानी क़ुरआन शरीफ़ को.
(१८) उसको सज़ा दूंगा.
(१९) अपने अज़ाब की तरफ़ इस तरह कि गुनाहों और नाफ़रमानियों के बावुजूद उन्हें सेहत और रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम बदम अज़ाब क़रीब होता जाएगा.
(२०) मेरा अज़ाब सख़्त है.
(२१) रिसालत की तबलीग़ पर.
(२२) और तावान का उनपर ऐसा भारी बोझ है जिसकी वजह से ईमान नहीं लाते.
(२३) ग़ैब से मुराद यहाँ लौहे मेहफ़ूज़ है.
(२४) उससे जो कुछ कहते हैं.
(२५) जो वह उनके हक़ में फ़रमाए और थोड़ा उनकी यातनाओं पर सब्र करो.

رَّابِيَةً ۝١٠ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝١١
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝١٢
فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣ وَّحُمِلَتِ
الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝١٤
فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ
يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝١٦ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ؕ وَيَحْمِلُ
عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝١٧ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ
كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝١٩
اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ
رَّاضِيَةٍ ۝٢١ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝٢٢ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝٢٣
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ
الْخَالِيَةِ ۝٢٤ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ

न माना[13] तो उसने उन्हें बढ़ी चढ़ी गिरफ़्त से पकड़ा (१०) बेशक जब पानी ने सर उठाया था[14] हमने तुम्हें[15] किश्ती में सवार किया[16] (११) कि उसे[17] तुम्हारे लिये यादगार करें[18] और उसे मेहफ़ूज़ रखे वह कान कि सुन कर मेहफ़ूज़ रखता हो[19] (१२) फिर जब सूर फूंक दिया जाए एक दम (१३) और ज़मीन और पहाड़ उठाकर दफ़अतन (अचानक) चूरा कर दिये जाएं (१४) वह दिन है कि हो पड़ेगी वह होने वाली[20] (१५) और आसमान फट जाएगा, तो उस दिन उसका पतला हाल होगा[21] (१६) और फ़रिश्ते उसके किनारों पर खड़े होंगे[22] और उस दिन तुम्हारे रब का अर्श अपने ऊपर आठ फ़रिश्ते उठाएंगे[23] (१७) उस दिन तुम सब पेश होगे[24] कि तुममें कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी (१८) तो वह जो अपना अअमालनामा (कर्मलेखा) दाएं हाथ में दिया जाएगा[25] कहेगा, लो मेरे अअमालनामे पढ़ो (१९) मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा[26] (२०) तो वह मन मानते चैन में है (२१) बलन्द बाग़ में (२२) जिसके ख़ोशे झुके हुए[27] (२३) खाओ और पियो रचता हुआ सिला उसका जो तुमने गुज़रे दिनों में आगे भेजा[28] (२४) और वह जो अपना अअमालनामा बाएं

(२६) क़ौम पर ग़ुस्से की जल्दी में और मछली वाले से मुराद यूनुस अलैहिस्सलाम हैं.
(२७) मछली के पेट में ग़म से.
(२८) और अल्लाह तआला उनके उज़्र और दुआ को क़ुबूल फ़रमाकर उन पर इनआम न फ़रमाता.
(२९) लेकिन अल्लाह तआला ने रहमत फ़रमाई.
(३०) और बुग़्ज़ और दुश्मनी की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं. रिवायत है कि अरब में कुछ लोग नज़र लगाने में प्रख्यात थे और उनकी हालत यह थी कि दावा कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्होंने नुक़सान पहुंचाने की नज़र से देखा, देखते ही हलाक हो गई. ऐसे बहुत से वाक़िआत उनके अनुभव में आ चुके थे. काफ़िरों ने उनसे कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने हुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उनका किसी चीज़ को देखकर हैरत करना ही सितम होता था लेकिम उनकी यह तमाम जिद्दोजहद कभी मिस्ल उनके और बुरे कामों और हरकतों के जो वो रात दिन करते थे, बेकार गई और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उनके शर से मेहफ़ूज़ रखा और यह आयत उतरी. हसन रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया जिसको नज़र लगे उस पर यह आयत पढ़कर दम की जाए.
(३१) हसद और दुश्मनी और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में जब आपको क़ुरआन करीम पढ़ते देखते हैं.
(३२) यानी क़ुरआन शरीफ़ या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(३३) जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र फ़ज़्ल और बुज़ुर्गी के मानी में है. इस तक़दीर पर मानी ये हैं कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारे जगत के लिये शरफ़ हैं उनकी तरफ़ जुनून की निस्बत करना अन्दर का अंधेरा है. (मदारिक)

६९ - सूरए हाक़्क़ा - पहला रूकू

(१) सूरए हाक़्क़ा मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, बावन आयतें, दो सौ छप्पन कलिमे, एक हज़ार चार सौ तेईस अक्षर हैं.
(२) यानी क़यामत जो अटल और होनी है जिसमें कोई शक नहीं.
(३) यानी वह अत्यन्त अजीब और महान शान वाली है.
(४) जिसकी सख़्ती और भयानकता तक इन्सानी सोच की पहुंच नहीं.
(५) यानी सख़्त भयानक आवाज़ से.
(६) बुध से बुध तक, शव्वाल मास के आख़िर में अत्यन्त तेज़ सर्दी के मौसम में.

فَيَقُولُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا
حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ
اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّىْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾
خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِىْ
سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾
اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ
عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا
حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا
الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا
تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ
بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ
كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ

हाथ में दिया जाएगा[२१] कहेगा, हाय किसी तरह मुझे अपना लिखा न दिया जाता ﴿२५﴾ और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है ﴿२६﴾ हाय किसी तरह मौत ही क़िस्सा चुका जाती[३०] ﴿२७﴾ मेरे कुछ काम न आया मेरा माल[३१] ﴿२८﴾ मेरा सब ज़ोर जाता रहा[३२] ﴿२९﴾ उसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो[३३] ﴿३०﴾ फिर उसे भड़कती आग में धंसाओ ﴿३१﴾ फिर ऐसी जंज़ीर में जिसका नाप सत्तर हाथ है[३४] उसे पिरो दो[३५] ﴿३२﴾ बेशक वह अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था[३६] ﴿३३﴾ और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता[३७] ﴿३४﴾ तो आज यहाँ[३८] उसका कोई दोस्त नहीं[३९] ﴿३५﴾ और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप ﴿३६﴾ उसे न खाएंगे मगर ख़ताकार (पापी)[४०] ﴿३७﴾

दूसरा रूकू

तो मुझे क़स्म उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो ﴿३८﴾ और जिन्हें तुम नहीं देखते[१] ﴿३९﴾ बेशक यह क़ुरआन एक करम वाले रसूल[२] से बातें हैं[३] ﴿४०﴾ और वह किसी शायर की बात नहीं[४] कितना कम यक़ीन रखते हो[५] ﴿४१﴾ और न किसी काहिन की बात[६] कितना कम ध्यान करते हो[७] ﴿४२﴾ उसने उतारा है जो सारे जगत का रब है ﴿४३﴾ और अगर वो हम पर एक बात भी बना कर कहते[८] ﴿४४﴾ ज़रूर हम उन से बक़ुव्वत बदला लेते ﴿४५﴾

(७) यानी उन दिनों में.
(८) कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया.
(९) कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुब्ह को वो सब हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ाकर समन्दर में फैंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा.
(१०) इससे भी पहली उम्मतों के काफ़िर लोग.
(११) नाफ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत की बस्तियों के ये सब.
(१२) बुरे कर्म और गुनाह और शिर्क किये.
(१३) जो उनकी तरफ़ भेजे गए थे.
(१४) और वह दरख़्तों इमारतों और पहाड़ों हर चीज़ से ऊंचा हो गया था. यह बयान तूफ़ाने नूह का है.
(१५) जबकि तुम अपने बापों की पीठ में थे, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ...
(१६) और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को और उनके साथ वालों को जो उनपर ईमान लाए थे, निजात दी और बाक़ियों को डुबो दिया.
(१७) यानी मूमिनीन को निजात देने और काफ़िरों के हलाक करने को.
(१८) कि इब्रत और नसीहत का कारण हो.
(१९) काम की बातों को ताकि उनसे नफ़ा उठाए.
(२०) यानी क़यामत क़ायम हो जाएगी.
(२१) यानी वह बहुत कमज़ोर होगा जबकि पहले मज़बूत था.
(२२) यानी जिन फ़रिश्तों का मस्कन आसमान है वह उसके फटने पर उसके किनारों पर खड़े होंगे. फिर अल्लाह के हुक्म से उतर कर ज़मीन घेर लेंगे.
(२३) हदीस शरीफ़ में है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते आजकल चार हैं क़यामत के दिन उनका साथ देने के लिये चार और बढ़ाए जाएंगे, आठ हो जाएंगे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इससे फ़रिश्तों की आठ क़तारें मुराद है जिनकी तादाद अल्लाह तआला ही जानता है.
(२४) अल्लाह तआला के सामने हिसाब के लिये.
(२५) यह समझ लेगा कि वह निजात पाने वालों में है और बहुत ही ख़ुशी के साथ अपनी जमाअत और अपने साथ वालों

रिश्तेदारों से ----

(२६) यानी मुझे दुनिया में यक़ीन था कि आख़िरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा.

(२७) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में आसानी से ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा.

(२८) यानी जो नेक कर्म कि दुनिया में तुमने आख़िरत के लिये किये.

(२९) जब अपने नामए-अअमाल को देखेगा और उसमें अपने बुरे अअमाल दर्ज पाएगा तो शर्मिन्दा और ज़लील होकर.

(३०) और हिसाब के लिये न उठाया जाता और यह ज़िल्लत व रूसवाई पेश न आती.

(३१) जो मैंने दुनिया में जमा किया था वह ज़रा भी मेरा अज़ाब न टाल सका.

(३२) और मैं ज़लील और मोहताज रह गया. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इससे उसकी मुराद यह होगी कि दुनिया में जो तर्क किया करता था वो सब ग़लत हो गए अब अल्लाह तआला जहन्नम के रख़वालों को हुक्म देगा.

(३३) इस तरह कि उसके हाथ उसकी गर्दन से मिलाकर तौक़ में बाँध दो.

(३४) फ़रिश्तों के हाथ से.

(३५) यानी वह ज़ंजीर उसमें इस तरह दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है.

(३६) उसकी महानता और एक होने को नहीं मानता था.

(३७) न अपने नफ़्स को न अपने घर वालों को न दूसरों को. इसमें इशारा है कि वह दोबारा उठाए जाने को नहीं मानता था क्योंकि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदले की उम्मीद रखता ही नहीं, केवल अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत के सवाब की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो दोबारा उठाए जाने और आख़िरत पर ईमान ही न रखता हो उसे मिस्कीन खिलाने की क्या ग़रज़.

(३८) यानी आख़िरत में.

(३९) जो उसे कुछ नफ़ा पहुंचाए या शफ़ाअत करे.

(४०) बुरे आचरण वाले काफ़िर लोग.

सूरए हाक्क़ा - दूसरा रूकू

(१) यानी सारी सृष्टि की क़सम, जो तुम्हारे देखने में आए उसकी भी, जो न आए उसकी भी. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि "मा तुब्सिरूना" से दुनिया और "मा-ला-तुब्सिरूना" से आख़िरत मुराद है. इसकी तफ़सीर में मुफ़स्सिरों के और भी कई क़ौल हैं.

(२) मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(३) जो उनके रब तआला ने फ़रमाई.

(४) जैसा कि काफ़िर कहते हैं.

(५) बिल्कुल बेईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न यह शेअर है न इसमें कविता की कोई बात पाई जाती है.

(६) जैसा कि तुम में से कुछ काफ़िर अल्लाह की इस किताब की निस्बत कहते हैं.

(७) न इस किताब की हिदायतों को देखते हो न इसकी तालीमों पर ग़ौर करते हो कि इसमें कैसी रूहानी तालीम है न इसकी फ़साहत और बलाग़त और अद्वितीय होने के चमत्कार पर ग़ौर करते हो जो यह समझो कि यह कलाम.

(८) जो हमने न फ़रमाई होती तो --

الْاَقَاوِيْلِ ۝٤٤ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝٤٥ ثُمَّ
لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ۝٤٦ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ
عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ۝٤٧ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨
وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ۝٤٩ وَاِنَّهٗ
لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ۝٥١
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٥٢

(٧٠) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (٧٩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝١ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ
لَهٗ دَافِعٌ ۝٢ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ۝٣ تَعْرُجُ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ
خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝٤ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝٥
اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝٦ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝٧ يَوْمَ

फिर उन की दिल की रग काट देते[९] ﴾४६﴿ फिर तुम में कोई उनका बचाने वाला न हेता ﴾४७﴿ और बेशक यह क़ुरआन डर वालों को नसीहत है ﴾४८﴿ और ज़रूर हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं ﴾४९﴿ और बेशक वह काफ़िरों पर हसरत है[१०] ﴾५०﴿ और बेशक वह यक़ीनी हक़ है[११] ﴾५१﴿ तो ऐ मेहबूब, तुम अपने अज़मत वाले रब की पाकी बोलो[१२] ﴾५२﴿

७० - सूरए मआरिज

सूरए मआरिज मक्का में उतरी, इसमें ४४ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

एक मांगने वाला वह अज़ाब मांगता है ﴾१﴿ जो काफ़िरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं[२] ﴾२﴿ वह होगा अल्लाह की तरफ़ से जो बलन्दियों का मालिक है[३] ﴾३﴿ फ़रिश्ते और जिब्रील[४] उसकी बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं[५] वह अज़ाब उस दिन होगा जिस की मिक़दार पचास हज़ार बरस है[६] ﴾४﴿ तो तुम अच्छी तरह सब्र करो ﴾५﴿ वो उसे[७] दूर समझ रहे हैं[८] ﴾६﴿ और हम उसे नज़्दीक देख रहे हैं[९] ﴾७﴿ जिस दिन आसमान होगा जैसी गली चांदी ﴾८﴿ और पहाड़ ऐसे हल्के हो जाएंगे जैसे

(९) जिसके काटते ही मौत हो जाती है.

(१०) कि वह क़यामत के रोज़ जब क़ुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और उसके इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़सोस करेंगे और हसरत और निदामत में गिरफ़्तार होंगे.

(११) कि इसमें कुछ शक और शुबह नहीं.

(१२) और उसका शुक्र करो कि उसने तुम्हारी तरफ़ अपने इस अज़ीम कलाम की वही फ़रमाई.

७० - सूरए मआरिज - पहला रूकू

(१) सूरए मआरिज मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, चवालीस आयतें, दो सौ चौबीस कलिमे और नौ सौ उन्नीस अक्षर हैं.

(२) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब मक्के वालों को अल्लह के अज़ाब का डर दिलाया तो वो आपस में कहने लगे कि इस अज़ाब के मुस्तहिक़ कौन लोग हैं और यह किन पर आएगा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से पूछो. तो उन्होंने हुज़ूर से दरियाफ़्त किया. इसपर यह आयत उतरी और हुज़ूर से सवाल करने वाला नज़र बिन हारिस था. उसने दुआ की थी कि या रब अगर यह क़ुरआन सच्चा हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा या दर्दनाक अज़ाब भेज. इन आयतों में इरशाद फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अज़ाब जो उनके लिये मुक़द्दर है ज़रूर आना है उसे कोई टाल नहीं सक्ता.

(३) यानी आसमानों का.

(४) जो फ़रिश्तों में विशेष बुज़ुर्गी और सम्मान रखते हैं.

(५) यानी उस मक़ामे क़ुर्ब की तरफ़ जो आसमान में उसके आदेशों के उतरने का स्थान है.

(६) वह क़यामत का दिन है जिसकी सख़्तियाँ काफ़िरों की निस्बत इतनी लम्बी होंगी और मूमिन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी ज़्यादा सरल होंगी.

(७) यानी अज़ाब को.

(८) और यह ख़याल करते हैं कि वाक़े होने वाला ही नहीं.

(९) कि ज़रूर होने वाला है.

تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ
الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۭ بِبَنِيْهِ ۙ
وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۙ
وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ كَلَّا ؕ
اِنَّهَا لَظٰى ۙ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ
وَتَوَلّٰى ۙ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۞ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ
هَلُوْعًا ۙ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ وَّاِذَا مَسَّهُ
الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى
صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَّعْلُوْمٌ ۙ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۙ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ۚ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۞

ऊन[१०]﴾९﴿ और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा[११]﴾१०﴿ होंगे उन्हें देखते हुए[१२] मुजरिम[१३] आरज़ू करेगा कि काश इस दिन के अज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे ﴾११﴿और अपनी जोरू और अपना भाई ﴾१२﴿ और अपना कुंबा जिसमें उसकी जगह है﴾१३﴿ और जितने ज़मीन में हैं सब, फिर यह बदला देना उसे बचा ले﴾१४﴿ हरगिज़ नहीं[१४] वह तो भड़कती आग है﴾१५﴿ खाल उतार लेने वाली, बुला रही है[१५]﴾१६﴿ उसको जिसने पीठ दी और मुंह फेरा[१६]﴾१७﴿और जोड़ कर सैंत रखा[१७]﴾१८﴿बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बेसब्रा लालची﴾१९﴿ जब उसे बुराई पहुंचे[१८] तो सख़्त घबराने वाला﴾२०﴿ और जब भलाई पहुंचे[१९] तो रोक रखने वाला[२०]﴾२१﴿ मगर नमाज़ी﴾२२﴿ जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं[२१]﴾२३﴿ और वो जिनके माल में एक मालूम हक़ है[२२] ﴾२४﴿ उसके लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो मेहरूम रहे[२३]﴾२५﴿ और वो जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं[२४]﴾२६﴿ और वो जो अपने रब के अज़ाब से डर रहे हैं﴾२७﴿ बेशक उनके रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं[२५]﴾२८﴿

(१०) और हवा में उड़ते फिरेंगे.
(११) हर एक को अपनी ही पड़ी होगी.
(१२) कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुब्तिला होंगे कि न उन से हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे.
(१३) यानी काफ़िर.
(१४) यह कुछ उसके काम न आएगा और किसी तरह वह अज़ाब से बच न सकेगा.
(१५) नाम ले लेकर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ, ऐ मुनाफ़िक़ मेरे पास आ.
(१६) सच्चाई के क़ुबूल करने और ईमान लाने से.
(१७) माल को और उसके अनिवार्य हक़ अदा न किये.
(१८) तंगदस्ती और बीमारी वग़ैरह की.
(१९) दौलतमंदी और माल.
(२०) यानी इन्सान की हालत यह है कि उसे कोई नागवार बात पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उसको ख़र्च नहीं करता.
(२१) कि पंजगाना फ़राइज़ उनके समय में पाबन्दी से अदा करते हैं यानी मूमिन हैं.
(२२) मुराद इससे ज़कात है जिसकी मात्रा मालूम है या वह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़्स पर निर्धारित करे तो उसे निर्धारित समय पर अदा किया करे. इससे मालूम हुआ कि मुस्तहब सदक़ात के लिये अपनी तरफ़ से वक़्त निर्धारित करना शरीअत में जायज़ और प्रशंसनीय है.
(२३) यानी दोनों तरह के मुहताजों को दे . उन्हें भी जो हाजत के वक़्त सवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सवाल नहीं करते और उनकी मुहताजी ज़ाहिर नहीं होती.
(२४) और मरने के बाद उठने और हश्र व नश्र व जज़ा व क़यामत सब पर ईमान रखते हैं.
(२५) चाहे आदमी कितना ही पारसा, ताअत और इबादत की बहुतात वाला हो मगर उसे अल्लाह के अज़ाब से बेख़ौफ़ न होना चाहिये.

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِلَّا عَلٰٓى
اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ
مَلُوْمِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْعٰدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ
رٰعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ
الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾ اُولٰٓئِكَ
فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿۳۶﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ
عِزِيْنَ ﴿۳۷﴾ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيْمٍ ﴿۳۸﴾ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ فَلَآ
اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿۴۰﴾ عَلٰٓى
اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۴۱﴾
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ

ع ۵

और वो जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं﴿२९﴾ मगर अपनी बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों (दासियों) से कि उनपर कुछ मलामत नहीं﴿३०﴾ तो जो उन दो[२६] के सिवा और चाहे वही हद से बढ़ने वाले हैं[२७]﴿३१﴾ और वो जो अपनी आमानतों और अपने एहद की हिफ़ाज़त करते हैं[२८]﴿३२﴾ और वो जो अपनी गवाहियों पर क़ायम हैं[२९]﴿३३﴾ और वो जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं[३०]﴿३४﴾ ये हैं जिनका बाग़ों में सत्कार होगा[३१]﴿३५﴾

दूसरा रूकू

तो इन काफ़िरों को क्या हुआ तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं[१]﴿३६﴾ दाएं और बाएं गिरोह के गिरोह﴿३७﴾ क्या इनमें हर व्यक्ति यह लालच करता है कि[२] चैन के बाग़ में दाख़िल किया जाए﴿३८﴾ हरगिज़ नहीं, बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से बनाया जिसे जानते हैं[३]﴿३९﴾ तो मुझे क़सम है उसकी जो सब पूरबों सब पश्चिमों का मालिक है[४] कि ज़रूर हम क़ादिर हैं﴿४०﴾ कि उनसे अच्छे बदल दें[५] और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता[६]﴿४१﴾ तो उन्हें छोड़ दो उनकी बेहूदगियों में पड़े और खेलते हुए, यहाँ

(२६) यानी बीबियों और ममलूकात अर्थात दासियों.

(२७) कि हलाल से हराम की तरफ़ बढ़ते हैं. इस आयत से मुतआ, लौंडेबाज़ी, जानवरों के साथ बदफ़ेअली और हथलस वग़ैरह की हुर्मत साबित होती है.

(२८) शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क़ के साथ जो एहद है उनकी भी और हक़ के जो एहद हैं उनकी भी. नज़रें और क़समें भी इस में दाख़िल हैं.

(२९) सच्चाई और इन्साफ़ के साथ, न उसमें रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बरदस्त को कमज़ोर पर प्राथमिकता देते हैं. न किसी हक़ वाले का हक़ छीनना गवारा करते हैं.

(३०) नमाज़ का ज़िक्र दोबारा फ़रमाया गया. इसमें यह इज़हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या यह कि एक जगह फ़र्ज़ मुराद हैं और दूसरी जगह नफ़्ल, और हिफ़ाज़त से मुराद यह है कि उसके अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहिब्बात को भरपूर तरीक़े से अदा करते हैं.

(३१) जन्नत के.

सूरए मआरिज - दूसरा रूकू

(१) यह आयत काफ़िरों की उस जमाअत के हक़ में उतरी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चारों तरफ़ घेरा बाँध कर गिरोह के गिरोह जमा होते और आपका कलामे मुबारक सुनते और उसको झुटलाते और ठट्ठा करते और कहते कि अगर जन्नत में ये लोग दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर इनसे पहले उसमें दाख़िल होंगे. उनके हक़ में यह आयत उतरी और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आपके पास बैठते भी हैं और गर्दनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आप से सुनते हैं उससे नफ़ा नहीं उठाते.

(२) ईमान वालों की तरह.

(३) यानी नुत्फ़े से जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस कारण से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा. जन्नत में प्रवेश ईमान पर आधारित है.

(४) यानी आफ़्ताब के उदय का हर स्थान और अस्त होने का हर स्थान या हर हर सितारे के पूर्व और पश्चिम का स्थान. तात्पर्य अपने मअबूद होने की क़सम याद फ़रमाता है.

(५) इस तरह कि उन्हें हलाक कर दें. और बजाय उनके अपनी फ़रमाँबरदार मख़्लूक़ पैदा करें.

(६) और हमारी क़ुदरत के घेरे से बाहर नहीं हो सकता.

الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ
سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

(٧١) سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ (٧١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن
قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَا قَوْمِ
إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
وَأَطِيعُونِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ
لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي
لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

منزل ٧

तक कि अपने उस[७] दिन से मिलें जिसका उन्हें वादा दिया जाता है﴾४२﴿ जिस दिन क़ब्रों से निकलगें झपटते हुए[८] मानो वो निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं[९]﴾४३﴿ आँखें नीची किये हुए उनपर ज़िल्लत सवार, यह है उनका वह दिन[१०] जिसका उनसे वादा था[११]﴾४४﴿

७१ - सूरए नूह

सूरए नूह मक्का में उतरी, इसमें २८ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि उनको डरा इससे पहले कि उनपर दर्दनाक अज़ाब आए[२]﴾१﴿ उसने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम, मैं तुम्हारे लिये साफ़ डर सुनाने वाला हूँ ﴾२﴿ कि अल्लाह की बन्दगी करो[३] और उससे डरो[४] और मेरा हुक्म मानो﴾३﴿ वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा[५] और एक निश्चित मीआद तक[६] तुम्हें मुहलत देगा[७] बेशक अल्लाह का वादा जब आता है, हटाया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते[८]﴾४﴿ अर्ज़ की[९] ऐ मेरे रब, मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया[१०]﴾५﴿ तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना ही बढ़ा[११]﴾६﴿

(७) अज़ाब के.
(८) मेहशर की तरफ़.
(९) जैसे झण्डे वाले अपने झण्डे की तरफ़ दौड़ते हैं.
(१०) यानी क़यामत का दिन.
(११) दुनिया में और वो उसको झुटलाते थे.

७१ - सूरए नूह - पहला रूकू

(१) सूरए नूह मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, अट्ठाईस आयतें, दो सौ चौबीस कलिमे और नो सौ निनानवे अक्षर हैं.
(२) दुनिया और आख़िरत का.
(३) और उसका किसी को शरीक न बनाओ.
(४) नाफ़रमानियों से बचकर ताकि वह ग़ज़ब न फ़रमाए.
(५) जो तुमसे ईमान के वक़्त तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के अधिकारों से संबंधित न होंगे.
(६) यानी मौत के वक़्त तक.
(७) कि इस दौरान में तुम पर अज़ाब न फ़रमाएगा.
(८) उसको और ईमान ले आते.
(९) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम.
(१०) ईमान और ताअत की तरफ़.
(११) और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरग़ीब दी गई उतनी ही उनकी सरकशी बढ़ती गई.

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا أَصَابِعَهُمْ
فِيٓ ءَاذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا
اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّيٓ
أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ
اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَآءَ
عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَ
يَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا ۝ مَا لَكُمْ
لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ۝
وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝
وَاللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ
فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝

और मैं ने जितनी बार उन्हें बुलाया[१२] कि तू उनको बख़्शे उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दे लीं[१३] और अपने कपड़े ओढ़ लिये[१४] और हठ की[१५] और बड़ा घमण्ड किया[१६]﴿७﴾ फिर मैं ने उन्हें खुल्लम खुल्ला बुलाया[१७]﴿८﴾ फिर मैं ने उनसे ऐलान से भी कहा[१८] और आहिस्ता छुपवाँ भी कहा[१९]﴿९﴾ तो मैं ने कहा अपने रब से माफ़ी मांगो[२०] वह बड़ा माफ़ फ़रमाने वाला है[२१]﴿१०﴾ तुम पर शर्राटे का मेंह भेजेगा ﴿११﴾ और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा[२२] और तुम्हारे लिये बाग़ बनाएगा और तुम्हारे लिये नेहरें बनाएगा[२३]﴿१२﴾ तुम्हें क्या हुआ अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करने की उम्मीद नहीं करते[२४]﴿१३﴾ हालांकि उसने तुम्हें तरह तरह बनाया[२५]﴿१४﴾ क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने कैसे सात आसमान बनाए एक पर एक ﴿१५﴾ और उनमें चांद को रौशन किया[२६] और सूरज को चिराग़[२७]﴿१६﴾ और अल्लाह ने तुम्हें सब्ज़े की तरह ज़मीन से उगाया[२८]﴿१७﴾ फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा[२९] और दोबारा निकालेगा[३०]﴿१८﴾ और अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया ﴿१९﴾ कि उसके वसीअ (विस्तृत) रास्तों में चलो﴿२०﴾

(१२) तुझ पर ईमान लाने की तरफ़.
(१३) ताकि मेरी दावत को न सुनें.
(१४) और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्योंकि उन्हें अल्लाह के दीन की तरफ़ नसीहत करने वाले को देखना भी गवारा न था.
(१५) अपने कुफ़्र पर.
(१६) और मेरी दावत को क़ुबूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना.
(१७) ज़ोर शोर से मेहफ़िलों में.
(१८) और खुल्लम खुल्ला दावत की तकरार भी की.
(१९) एक एक से और कोई कसर दावत की उठा न रखी. क़ौम लम्बे अर्से तक हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को झुटलाती ही रही तो अल्लाह तआला ने उनसे बारिश रोक दी और उनकी औरतें बांझ कर दीं. चालीस साल तक उनके माल हलाक हो गए, जानवर मर गए. जब यह हाल हुआ तो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने उन्हें तौबह का हुक्म दिया.
(२०) कुफ़्र और शिर्क और ईमान लाकर मग़फ़िरत तलब करो ताकि अल्लाह तआला तुम पर अपनी रहमतों के दर्वाज़े खोल दे क्योंकि ताअतों में मशग़ूल होना ख़ैरो बरकत और रिज़्क़ में कुशादगी का कारण होता है.
(२१) तौबह करने वालों को, अगर तुम ईमान लाए और तुमने तौबह की तो वह.
(२२) माल और औलाद बहुत सी अता फ़रमाएगा.
(२३) हज़रत हसन रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि एक शख़्स आपके पास आया और उसने बारिश की कमी की शिकायत की. आपने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया. दूसरा आया, उसने ग़रीबी की शिकायत की, उसे भी यही हुक्म फ़रमाय. फिर तीसरा आया, उसने औलाद न होने की शिकायत की, उससे भी यही फ़रमाया, फिर चौथा आया, उसने अपनी ज़मीन की पैदावार में कमी की शिकायत की, उससे भी यही फ़रमाया. रबीअ बिन सबीह जो हाज़िर थे, उन्होंने अर्ज़ किया, कुछ लोग आए, तरह तरह की हाजतें बयान कीं, आप ने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो. तो आपने यह आयत पढ़ी. (इन हाजतों के लिये यह क़ुरआनी अमल है.)
(२४) इस तरह कि उसपर ईमान लाओ.
(२५) कभी नुत्फ़ा, कभी अलक़ा, कभी मुदग़ा, यहाँ तक कि तुम्हारी ख़िलक़त पूरी की. उसकी आफ़रीनश (उत्पत्ति) में नज़र करना उसकी ख़ालिक़ियत और क़ुदरत और उसकी वहदानियत पर ईमान लाने को वाजिब करता है.
(२६) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा और हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि सूरज और चाँद के

दूसरा रूकू

نوح ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की(१) और(२) ऐसे के पीछे हो लिये जिसे उसके माल और औलाद ने नुक़सान ही बढ़ाया(३)《२१》 और(४) बहुत बड़ा दाव खेले(५)《२२》 और बोले(६) हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को(७) और हरगिज़ न छोड़ना वद्द और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र को(८)《२३》 और बेशक उन्होंने बहुतों को बहकाया(९) और तू ज़ालिमों का(१०) ज़्यादा न करना मगर गुमराही(११)《२४》 अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए(१२) फिर आग में दाख़िल किये गए(१३) तो उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया(१४)《२५》 और नूह ने अर्ज़ की, ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़《२६》 बेशक अगर तू उन्हें रहने देगा(१५) तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और उनके औलाद होगी तो वह भी न होगी मगर बदकार, बड़ी नाशुक्री(१६)《२७》 ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को(१७) और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही(१८)《२८》

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ
يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا
مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۙ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا
فَأُدْخِلُوا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ
اللَّهِ أَنصَارًا ۝ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى
الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝ إِنَّكَ إِن
تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا
كَفَّارًا ۝ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ
بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

منزل ٧

चेहरे तो आसमानों की तरफ़ है और हर एक की पीठ ज़मीन की तरफ़. तो आसमानों की लताफ़त के कारण उनकी रौशनी तमाम आसमानों में पहुंचती है अगरचे चाँद दुनिया के आसमान में है.

(२७) कि दुनिया को रौशन करता है और उसकी रौशनी चाँद के प्रकाश से अधिक है और सूरज चौथे आसमान में है.

(२८) तुम्हारे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को उससे पैदा करके.

(२९) मौत के बाद.

(३०) उससे क़यामत के दिन.

सूरए नूह - दूसरा रूकू

(१) और मैंने जो ईमान और इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया था उसे उन्होंने नहीं माना.

(२) उनके अवाम ग़रीब और छोटे लोग सरकश मालदारों और माल व औलाद वालों के अनुयायी हुए.

(३) और वह माल के घमण्ड में मस्त होकर कुफ़्र और सरकशी की तरफ़ बढ़ता रहा.

(४) वो मालदार लोग.

(५) कि उन्होंने नूह अलैहिस्सलाम को झुटलाया और उन्हें और उनके मानने वालों को यातनाएं दीं.

(६) काफ़िरों के रईस अपने अवाम से.

(७) यानी उनकी इबादत न छोड़ना.

(८) ये उनके बुतों के नाम हैं जिन्हें वो पूजते थे. बुत तो उनके बहुत थे मगर ये पाँच उनके नज़्दीक बड़ी अज़मत वाले थे. वद्द तो मर्द की सूरत पर था और सुवाअ औरत की सूरत पर और यग़ूस शेर की शक्ल और यऊक़ घोड़े की और नस्र गिध की. ये बुत क़ौमे नूह से मुन्तक़िल होकर अरब में पहुंचे और मुश्रिकों के क़बीलों से एक ने एक को अपने लिये ख़ास कर लिया.

(९) यानी ये बुत बहुत से लोगों के लिये गुमराही का कारण बने या ये मानी हैं कि क़ौम के रईसों ने बुतों की इबादत का हुक्म करके बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया.

(१०) जो बुतों को पूजते हैं.

(११) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ है जब उन्हें वही से मालूम हुआ कि जो लोग ईमान ला चुके, क़ौम में उनके सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आपने यह दुआ की.

(१२) तूफ़ान में.

(१३) डूबने के बाद.

(٧٢) سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (٤٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا
اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿١﴾ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ
فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿٢﴾ وَّاَنَّهٗ
تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿٣﴾
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿٤﴾
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۙ﴿٥﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ﴿٦﴾ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا
كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿٧﴾ وَّاَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ﴿٨﴾
وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ

منزل ٧

७२ - सूरए जिन्न

सूरए जिन्न मक्का में उतरी, इसमें २८ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१] तुम फ़रमाओ[२] मुझे वही हुई कि कुछ जिन्नों ने[३] मेरा पढ़ना कान लगाकर सुना[४] तो बोले[५] हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना[६] ﴾१﴿ कि भलाई की राह बताता है[७] तो हम उसपर ईमान लाए, और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे ﴾२﴿ और यह कि हमारे रब की शान बहुत बलन्द है न उसने औरत इख़्तियार की और न बच्चा[८] ﴾३﴿ और यह कि हम में का बेवक़ूफ़ अल्लाह पर बढ़कर बात कहता था[९] ﴾४﴿ और यह कि हमें ख़याल था कि हरगिज़ आदमी और जिन्न अल्लाह पर झूट न बांधेंगे[१०] ﴾५﴿ और यह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह लेते थे[११] तो उससे और भी उनका घमण्ड बढ़ा ﴾६﴿ और यह कि उन्होंने[१२] गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है[१३] कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा ﴾७﴿ और यह कि हमने आसमान को छुआ[१४] तो उसे पाया कि[१५] सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से भर दिया गया है[१६] ﴾८﴿ और यह कि हम[१७] पहले आसमान में सुनने के लिये कुछ मौक़ों पर बैठा करते थे, फिर अब[१८]

(१४) जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सकता.
(१५) और हलाक न फ़रमाएगा.
(१६) यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को वही से मालूम हो चुका था और हज़रत नूह ने अपने और अपने वालिदैन और मूमिन मर्दों और औरतों के लिये दुआ फ़रमाई.
(१७) कि वो दोनों मूमिन थे.
(१८) अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और उनकी क़ौम के तमाम काफ़िरों को अज़ाब से हलाक कर दिया.

७२ - सूरए जिन्न - पहला रूकू

(१) सूरए जिन्न मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, अठ्ठाईस आयतें, दो सौ पचास कलिमे और आठ सौ सत्तर अक्षर हैं.
(२) ऐ मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(३) नसीबीन के जिनकी संख्या मुफ़स्सिरों ने नौ बयान की.
(४) फ़ज्र की नमाज़ में नख़्लह स्थान पर, मक्कए मुकर्रमा और ताइफ़ के दरमियान.
(५) वो जिन्न अपनी क़ौम में जाकर.
(६) जो अपनी फ़साहत और बलाग़त और विषय सामग्री की सुन्दरता और गहरे अर्थों में ऐसा अछूता है कि मख़लूक़ का कोई कलाम इससे कोई निस्बत नहीं रखता और इस की यह शान है.
(७) यानी तौहीद और ईमान की.
(८) जैसा कि जिन्नों और इन्सानों को काफ़िर कहते हैं.
(९) झूट बोलता था, बेअदबी करता था कि उसके लिये शरीक और औलाद बीबी बताता था.
(१०) और उसपर झूट नहीं बांधेंगे इसलिये हम उनकी बातों की तस्दीक़ करते थे और उसकी तरफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे यहाँ तक कि क़ुरआन शरीफ़ की हिदायत से हमें उनका झूट और बोहतान ज़ाहिर हो गया.
(११) जब सफ़र में किसी भयानक स्थान पर उतरते तो कहते हम इस जगह के सरदार की पनाह चाहते हैं यहाँ के शरीरों से.

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَاۗىِٕقَ قِدَدًا ۙ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۙ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَي الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ۙ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ

منزل ٧

जो कोई सुने वह अपनी ताक में आग का लूका पाए[१९] ﴾९﴿ और यह कि हमें नहीं मालूम कि[२०] ज़मीन वालों से कोई बुराई का इरादा फ़रमाया गया है या उनके रब ने कोई भलाई चाही है ﴾१०﴿ और यह कि हम में[२१] कुछ नेक हैं[२२] और कुछ दूसरी तरह के हैं, हम कई राहें फटे हुए हैं[२३] ﴾११﴿ और यह कि हम को यक़ीन हुआ कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से न निकल सकेंगे और न भाग कर उसके क़ब्ज़े से बाहर हों ﴾१२﴿ और यह कि हमने जब हिदायत सुनी[२४] उस पर ईमान लाए, तो जो अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का डर[२५] और न ज़ियादती का[२६] ﴾१३﴿ और यह कि हम में कुछ मुसलमान हैं और कुछ ज़ालिम[२७] तो जो इस्लाम लाए उन्हों ने भलाई सोची[२८] ﴾१४﴿ और रहे ज़ालिम[२९] वो जहन्नम के ईंधन हुए[३०] ﴾१५﴿ और फ़रमाओ कि मुझे यह वही हुई है कि अगर वो[३१] राह पर सीधे रहते[३२] तो ज़रूर हम उन्हें पर्याप्त पानी देते[३३] ﴾१६﴿ कि उसपर उन्हें जांचें[३४] और जो अपने रब की याद से मुंह फेरे[३५] वह उसे चढ़ते अज़ाब में डालेगा[३६] ﴾१७﴿ और यह कि मस्जिदें[३७] अल्लाह ही की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो[३८] ﴾१८﴿ और यह कि जब अल्लाह का बन्दा[३९] उसकी बन्दगी करने

(१२) यानी क़ुरैश के काफ़िरों ने.
(१३) ऐ जिन्नो !
(१४) यानी आसमान वालों का कलाम सुनने के लिये दुनिया के आसमान पर जाना चाहा.
(१५) फ़रिश्तों के.
(१६) ताकि जिन्नों को आसमान वालों की बातें सुनने के लिये आसमान तक पहुंचने से रोका जाए.
(१७) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने से.
(१८) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तशरीफ़ लाने के बाद.
(१९) जिससे उसको मारा जाए.
(२०) हमारी इस बन्दिश और रोक से.
(२१) क़ुरआन शरीफ़ सुनने के बाद.
(२२) सच्चा मूमिन परहेज़गार और नेक लोग.
(२३) फ़िर्क़े फ़िर्क़े मुख़्तलिफ़.
(२४) यानी क़ुरआने पाक.
(२५) यानी नेकियों या सवाब की कमी का.
(२६) बदियों की.
(२७) सच्चाई या अल्लाह तआला से फिरे हुए काफ़िर.
(२८) और हिदायत व सच्चाई की राह को अपना लक्ष्य ठहराया.
(२९) काफ़िर राहे हक़ से फिरने वाले.
(३०) इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न जहन्नम की आग के अज़ाब में गिरफ़्तार किये जाएंगे.
(३१) यानी इन्सान.
(३२) यानी सच्चे दीन और इस्लाम के तरीक़े पर.
(३३) इससे मुराद रिज़्क़ की बहुतात है और यह वाक़िआ उस वक़्त का है जबकि सात बरस तक वो बारिश से मेहरूम कर दिये गए थे. मानी ये हैं कि अगर वो लोग ईमान लाते तो हम दुनिया में उनपर रिज़्क़ वसीअ करते और उन्हें बहुत सा पानी और ढेर सारी ख़ुशहाली इनायत फ़रमाते.

يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۞ قُلْ اِنَّمَآ
اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۞ قُلْ اِنِّيْ
لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۞ قُلْ اِنِّيْ لَنْ
يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ
مُلْتَحَدًا ۞ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ
يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ۞ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ
مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۞ قُلْ اِنْ
اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ
رَبِّيْٓ اَمَدًا ۞ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ
اَحَدًا ۞ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ
يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۞
لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ

खड़ा हुआ[४०] तो क़रीब था कि वो जिन्न उसपर ठट्ठ के ठट्ठ हो जाएं[४१]﴾१९﴿

दूसरा रूकू

तुम फ़रमाओ, मैं तो अपने रब ही की बन्दगी करता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं ठहराता﴾२०﴿ तुम फ़रमाओ, मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का मालिक नहीं﴾२१﴿ तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे अल्लाह से कोई न बचाएगा[१] और हरगिज़ उसके सिवा कोई पनाह न पाऊंगा﴾२२﴿ मगर अल्लाह के पयाम(आदेश) पहुंचाना और उसकी रिसालतें[२] और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने[३] तो बेशक उनके लिये जहन्नम की आग है जिसमें हमेशा हमेशा रहें﴾२३﴿ यहाँ तक कि जब देखेंगे[४] जो वादा दिया जाता है तो अब जान जाएंगे कि किस का मददगार कमज़ोर और किसकी गिनती कम[५]﴾२४﴿ तुम फ़रमाओ, मैं नहीं जानता कि नज़्दीक है वह जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा[६]﴾२५﴿ ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर[७] किसी को मुसल्लत नहीं करता[८]﴾२६﴿ सिवाय अपने पसन्दीदा रसूलों के[९] कि उनके आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है[१०]﴾२७﴿ ताकि देख ले कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुंचा दिये और जो कुछ उनके पास है

(३४) कि वो कैसी शुक्रगुज़ारी करते हैं.
(३५) क़ुरआन से या तौहीद या इबादत से.
(३६) जिसकी सख़्ती दम ब दम बढ़ेगी.
(३७) यानी वो मकान जो नमाज़ के लिये बनाए गए.
(३८) जैसा कि यहूदियों और ईसाइयों का तरीक़ा था कि वो अपने गिरजाओं और इबादतख़ानों में शिर्क करते थे.
(३९) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बत्ने नख़लह में फ़ज्र के वक़्त.
(४०) यानी नमाज़ पढ़ने.
(४१) क्योंकि उन्हें नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इबादत और तिलावत और आपके सहाबा का अनुकरण अत्यन्त अजीब और पसन्दीदा मालूम हुआ. इससे पहले उन्होंने कभी ऐसा दृश्य न देखा था और ऐसा बेमिसाल कलाम न सुना था.

सूरए जिन्न - दूसरा रूकू

(१) जैसा कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था "फ़मैंय यन्सुरुनी मिनल्लाहे इन असैतुहू" यानी तो मुझे उससे कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूं तो तुम मुझे सिवा नुक़सान के कुछ न बढ़ाओगे. (सूरए हूद, आयत ६३)
(२) यह मेरा फ़र्ज़ है जिसको पूरा करता हूँ.
(३) और उनपर ईमान लाए.
(४) वह अज़ाब.
(५) काफ़िर की या मूमिन की, यानी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मूमिन की मदद अल्लाह तआला और उसके अम्बिया और फ़रिश्ते सब फ़रमाएंगे. नज़र बिन हारिस ने कहा था कि यह वादा कब पूरा होगा, इसके जवाब में अगली आयत उतरी.
(६) यानी अज़ाब के वक़्त का इल्म ग़ैब है जिसे अल्लाह तआला ही जाने.
(७) यानी अपने ख़ास ग़ैब पर, जिसके साथ वह मुनफ़रिद है.(ख़ाज़िन व बैज़ावी वग़ैरह)
(८) यानी सम्पूर्ण सूचना नहीं देता जिससे वास्तविकता की सम्पूर्ण जानकारी विश्वास के सर्वश्रेष्ठ दर्जे के साथ हासिल हो.
(९) तो उन्हें ग़ैबों पर मुसल्लत करता है और भरपूर सूचना और सम्पूर्ण जानकारी अता फ़रमाता है. और यह इल्मे ग़ैब उनके लिये चमत्कार होता है. वलियों को भी अगरचे ग़ैबों की जानकारी दी जाती है मगर नबियों का इल्म वलियों के इल्म से बहुत ऊंचा है और वलियों की जानकारियाँ नबियों ही के माध्यम और उन्हीं के फ़ैज़ से होती हैं. मोअतज़िला एक गुमराह सम्प्रदाय है. वह वलियों के इल्मे ग़ैब को नहीं मानता.

بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

(٧٣) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ (٣) — اٰيَاتُهَا ٢٠ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾ اِنَّا سَنُلْقِىْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِىَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾ اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِىْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا

सब उसके इल्म में है और उसने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है(११)﴾२८﴿

७३ - सूरए मुज़्ज़म्मिल

सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्का में उतरी, इसमें बीस आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१) ऐ झुरमुट मारने वाले(२)﴾१﴿ रात में क़याम फ़रमा(३) सिवा कुछ रात के(४)﴾२﴿ आधी रात या उससे कुछ कम करो﴾३﴿ या उसपर कुछ बढ़ाओ(५) और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो(६)﴾४﴿ बेशक बहुत जल्द हम तुम पर एक भारी बात डालेंगे(७)﴾५﴿ बेशक रात का उठना(८) वह ज़ियादा दबाव डालता है(९) और बात ख़ूब सीधी निकलती है (१०)﴾६﴿ बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं(११)﴾७﴿ और अपने रब का नाम याद करो(१२) और सबसे टूट कर उसी के हो रहो (१३)﴾८﴿ वह पूरब का रब और पश्चिम का रब, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ (१४)﴾९﴿ और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो(१५)﴾१०﴿ और मुझपर छोड़ो उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मुहलत दो(१६)﴾११﴿ बेशक हमारे पास(१७) भारी बेड़ियाँ हैं और भड़कती आग﴾१२﴿ और गले में फंसता खाना
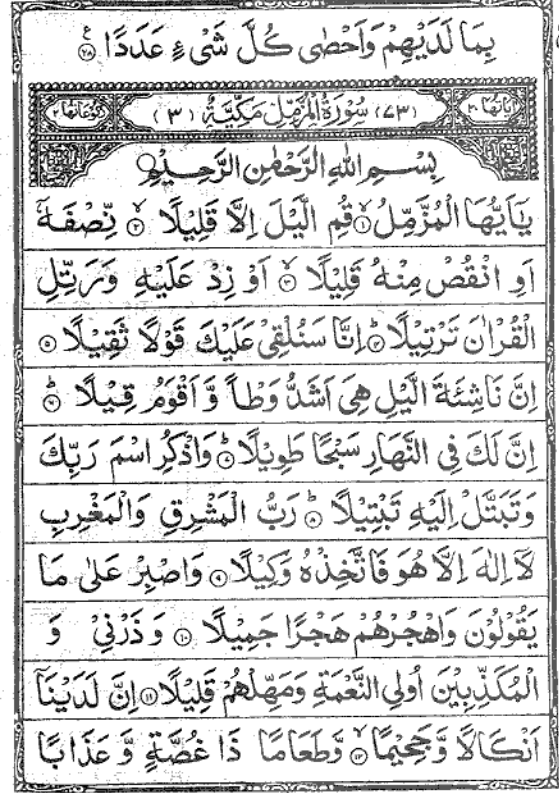
उनका ख़याल बातिल और बहुत सी हदीसों के ख़िलाफ़ है. रसूलों के सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम रसूलों में सबसे श्रेष्ठ हैं. अल्लाह तआला ने आपको सारी चीज़ों की जानकारी अता फ़रमाई जैसा कि सही हदीसों की विश्वसनीय किताबों से साबित है. और यह आयत हुज़ूर के और सारे इज़्ज़त वाले रसूलों के लिये ग़ैब का इल्म साबित करती है.

(१०) फ़रिश्तों को जो उनकी हिफ़ाज़त करते हैं.

(११) इससे साबित हुआ कि सारी चीज़ें सीमित, घिरी हुई और अन्त वाली है.

७३ - सूरए मुज़्ज़म्मिल - पहला रूकू

(१) सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, बीस आयतें, दो सौ पचासी कलिमे, आठ सौ अड़तीस अक्षर हैं.

(२) यानी अपने कपड़ों से लपिटने वाले. इस के उतरने की परिस्थितियों में कई कथन हैं. कुछ मुफ़स्सिरों ने कहा कि वही के दौर की शुरूआत में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लपिट जाते थे. ऐसी हालत में आपको हज़रत जिब्रईल ने ऐ झुरमुट मारने वाले कहकर पुकारा. एक क़ौल यह है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस हालत में आपको पुकारा गया ऐ झुरमुट मारने वाले. बहरहाल यह पुकार बताती है कि मेहबूब की हर अदा प्यारी है. और यह भी कहा गया है कि इसके मानी ये हैं कि नबुव्वत की रिदा और रिसालत की चादर ओढ़ने वाले और उसके योग्य.

(३) नमाज़ और इबादत के साथ.

(४) यानी थोड़ा हिस्सा आराम के लिये हो बाक़ी रात इबादत में गुज़ारिये. अब वह बाक़ी कितनी हो उसकी तफ़सील आगे इरशाद फ़रमाई जाती है.

(५) मुराद यह है कि आपको इख़्तियार दिया गया है कि चाहे क़याम आधी रात से कम हो या आधी रात या उससे ज़्यादा.(बैज़ावी) मुराद इस क़याम से तहज्जुद है जो इस्लाम के प्रारम्भ में वाजिब और कुछ के अनुसार फ़र्ज़ था. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा रात को क़याम फ़रमाते थे और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वह सारी रात क़याम में रहते और सुब्ह तक नमाज़ें पढ़ते इस डर से कि क़याम वाजिब मात्रा से कम न हो जाए यहाँ तक कि उन हज़रात के पाँव सूज जाते थे. फिर यह हुक्म एक साल के बाद मन्सूख़ हो गया और इसका नासिख़ भी इसी सूरत में है ''फ़क़रऊ मा तयस्सरा मिन्हो'' यानी क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो.

اَلِیْمًا ۝١٢ یَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ وَ كَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِیْبًا مَّهِیْلًا ۝١٤ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ
رَسُوْلًا ۙ۬ شَاهِدًا عَلَیْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ
رَسُوْلًا ۝١٥ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا
وَّبِیْلًا ۝١٦ فَكَیْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ یَوْمًا
یَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِیْبًا ۝١٧ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ
كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝١٨ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ
شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِیْلًا ۝١٩ اِنَّ رَبَّكَ یَعْلَمُ اَنَّكَ
تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَیِ الَّیْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ وَ
طَآىِٕفَةٌ مِّنَ الَّذِیْنَ مَعَكَ ؕ وَ اللّٰهُ یُقَدِّرُ الَّیْلَ وَ
النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَیْكُمْ
فَاقْرَءُوْا مَا تَیَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَیَكُوْنُ
مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ یَضْرِبُوْنَ فِی الْاَرْضِ

منزل ٧

और दर्दनाक अज़ाब[१८] ﴾१३﴿ जिस दिन थर थराएंगे ज़मीन और पहाड़[१९] और पहाड़ हो जाएंगे रेते का टीला बहता हुआ ﴾१४﴿ बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे[२०] कि तुम पर हाज़िर नाज़िर हैं[२१] जैसे हमने फ़िरऔन की तरफ़ रसूल भेजे[२२] ﴾१५﴿ तो फ़िरऔन ने उस रसूल का हुक्म न माना तो हमने उसे सख़्त गिरफ़्त से पकड़ा ﴾१६﴿ फिर कैसे बचोगे[२३] अगर[२४] कुफ़्र करो उस दिन[२५] जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा[२६] ﴾१७﴿ आसमान उसके सदमे से फट जाएगा अल्लाह का वादा होकर रहना ﴾१८﴿ बेशक यह नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले[२७] ﴾१९﴿

दूसरा रूकू

बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम क़याम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब, कभी आधी रात, कभी तिहाई, और एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली[१] और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उसे मालूम है कि ऐ मुसलमानो तुम से रात की गिन्ती न हो सकेगी[२] तो उसने अपनी मेहर से तुम पर रूजू फ़रमाई अब क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो[३] उसे मालूम है कि बहुत जल्द कुछ तुम में से बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में

(६) जहाँ रूकना है वहाँ रूकें और एक एक अक्षर की साफ़ और स्पष्ट अदायगी के साथ सही पढ़ना नमाज़ में फ़र्ज़ है.
(७) यानी अत्यन्त बुज़ुर्गी और महानतापूर्ण, इससे क़ुरआने मजीद मुराद है. यह भी कहा गया है कि मानी ये हैं कि हम आप पर क़ुरआन उतारेंगे जिसमें करने और न करने वाले कामों के निर्देश और भारी परिश्रम और कठिनाइयों वाली बातें हैं जिन पर अमल करना लोगों पर भारी होगा.
(८) सोने के बाद.
(९) दिन की नमाज़ के मुक़ाबले में.
(१०) क्योंकि वह वक़्त सुकून और इत्मीनान का है. शोर ग़ुल से अम्न रहता है, एकाग्रता और यकसूई हासिल होती है, दिखावे का मौक़ा नहीं होता.
(११) रात का वक़्त इबादत के लिये ख़ूब फ़ुरसत का है.
(१२) रात और दिन के कुल औक़ात में तस्बीह, तहलील, नमाज़, तिलावते क़ुरआन शरीफ़, दर्से इल्म वग़ैरह के साथ. और यह भी कहा गया है कि इसके मानी ये हैं कि अपनी क़िरअत की शुरूआत में बिस्मिल्लाह पढ़ो.
(१३) यानी इबादत में सबसे अलग हो जाने की सिफ़त हो कि दिल अल्लाह तआला के सिवा और किसी की तरफ़ न लगे. सब इलाक़े सारे सम्बन्ध टूट जाएं, सिर्फ़ अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान रहे.
(१४) और अपने काम उसी को सौंप दो.
(१५) यह क़िताल की आयत से मन्सूख़ है.
(१६) बद्र तक या क़यामत के दिन तक.
(१७) आख़िरत में.
(१८) उनके लिये जिन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाया.
(१९) वह क़यामत का दिन होगा.
(२०) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(२१) मूमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं.
(२२) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम.
(२३) अल्लाह के अज़ाब से.
(२४) दुनिया में.

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ
اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

(٧٤) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ (٤)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝
وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ وَلَا تَمْنُنْ
تَسْتَكْثِرُ ۝ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝
فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ
يَسِيْرٍ ۝ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝ وَّجَعَلْتُ

सफ़र करेंगे अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने[४] और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे[५] तो जितना क़ुरआन मयस्सर हो पढ़ो[६] और नमाज़ क़ायम रखो[७] और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो[८] और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे, और अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है.(२०)

७४ - सूरए मुद्दस्सिर

सूरए मुद्दस्सिर मक्का में उतरी, इसमें ५६ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
ऐ बालापोश ओढ़ने वाले[२](१) खड़े हो जाओ[३] फिर डर सुनाओ[४](२) और अपने रब की ही बड़ाई बोलो[५](३) और अपने कपड़े पाक रखो[६](४) और बुतों से दूर रहो(५) और ज़्यादा लेने की नियत से किसी पर एहसान न करो[७](६) और अपने रब के लिये सब्र किये रहो[८](७) फिर जब सूर फूंका जाएगा[९](८) तो वह दिन कर्रा दिन है(९) काफ़िरों पर आसान नहीं[१०](१०) उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैंने अकेला पैदा किया[११](११) और उसे वसीअ
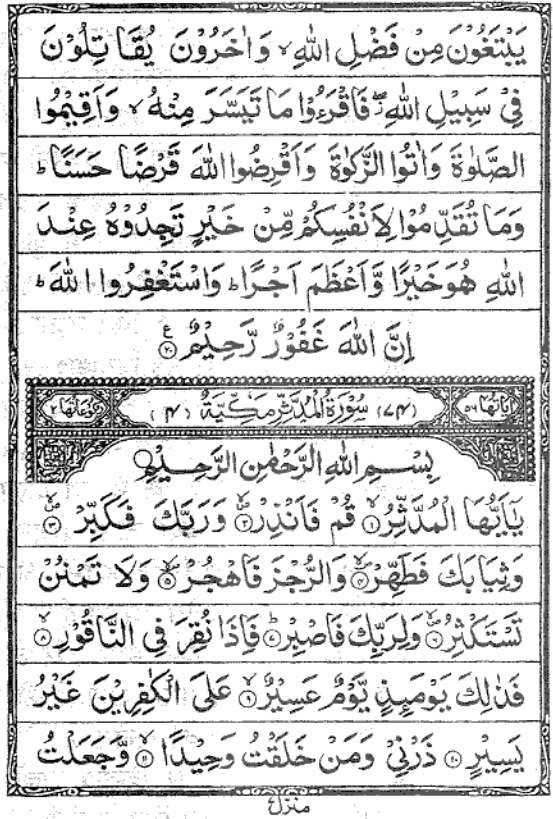
(२५) यानी क़यामत के दिन जो अत्यन्त डरावना होगा.
(२६) अपनी दहशत की तीव्रता से.
(२७) ईमान और ताअत इख़्तियार करके.

सूरए मुज़म्मिल - दूसरा रूकू

(१) तुम्हारे सहाबा की. वो भी रात के क़याम में तुम्हारा अनुकरण करते हैं.
(२) और समय की पाबन्दी न कर सकोगे.
(३) यानी रात का क़याम माफ़ फ़रमाया. इस आयत से नमाज़ में मुतलक़ क़िरअत यानी क़ुरआन पढ़ने की अनिवार्यता सिद्ध हुई. कम से कम क़ुरआन पढ़ने की मात्रा एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं.
(४) यानी तिजारत या इल्म हासिल करने के लिये.
(५) उन सब पर रात का क़याम दुश्वार होगा.
(६) इससे पहला हुक्म मन्सूख़ अर्थात स्थगित हो गया और यह भी पंजगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया.
(७) यहाँ नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं.
(८) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है रिश्तेदारों का ख़याल रखने और मेहमानदारी में. और यह भी कहा गया है कि इससे तमान सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह हलाल माल खुले दिल से ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जाए.

७४ - सूरए मुद्दस्सिर - पहला रूकू

(१) सूरए मुद्दस्सिर मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, छप्पन आयतें, दो सौ पचपन कलिमे, एक हज़ार दस अक्षर हैं.
(२) यह ख़िताब हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है. हज़रत जाबिर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं हिरा पहाड़ पर था कि मुझे पुकारा गया "या मुहम्मदो इन्नका रसूलुल्लाहे" (ऐ मुहम्मद तुम अल्लाह के रसूल हो) मैंने अपने दाएं बाएं देखा, कुछ न पाया. ऊपर देखा एक व्यक्ति आसमान और ज़मीन के बीच बैठा है. (यानी वही फ़रिश्ता जिसने पुकारा था) यह देखकर मुझ पर रोब हुआ और मैं ख़दीजह के पास आया और मैं ने कहा मुझे बालापोश (चादर) उढ़ाओ. उन्होंने उढ़ादी तो जिब्रईल आए और उन्होंने कहा ऐ बालापोश ओढ़ने वाले.

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿۱۲﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿۱۳﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ
تَمْهِيْدًا ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ
كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿۱۶﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ
فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿۱۹﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ وَ
اسْتَكْبَرَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿۲۴﴾ اِنْ
هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿۲۵﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾ وَمَآ
اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿۲۷﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿۲۸﴾ لَوَّاحَةٌ
لِّلْبَشَرِ ﴿۲۹﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿۳۰﴾ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ
النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

منزل ٧

माल दिया[१२]﴿१२﴾ और बेटे दिये सामने हाज़िर रहते[१३]﴿१३﴾ और मैंने उसके लिये तरह तरह की तैयारियाँ कीं[१४]﴿१४﴾ फिर यह लालच करता है कि मैं और ज़्यादा दूँ[१५]﴿१५﴾ हरगिज़ नहीं[१६] वो तो मेरी आयतों से दुश्मनी रखता है﴿१६﴾ क़रीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊद पर चढ़ाऊँ﴿१७﴾ बेशक वह सोचा और दिल में कुछ बात ठहराई﴿१८﴾ तो उसपर लअनत हो कैसी ठहराई﴿१९﴾ फिर उसपर लअनत हो कैसी ठहराई﴿२०﴾ फिर नज़र उठाकर देखा﴿२१﴾ फिर त्योरी चढ़ाई और मुंह बिगाड़ा﴿२२﴾ फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया﴿२३﴾ फिर बोला, यह तो वही जादू है अगलों से सीखा﴿२४﴾ यह नहीं मगर आदमी का कलाम[१७]﴿२५﴾ कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूँ﴿२६﴾ और तुमने क्या जाना दोज़ख़ क्या है﴿२७﴾ न छोड़े न लगी रखे[१८]﴿२८﴾ आदमी की खाल उतार लेती है[१९]﴿२९﴾ उसपर उन्नीस दारोग़ा हैं[२०]﴿३०﴾ और हमने दोज़ख़ के दारोग़ा न किये मगर फ़रिश्ते और हमने उनकी यह गिन्ती न रखी मगर काफ़िरों की जांच को[२१] इसलिये कि किताब वालों को यक़ीन आए[२२] और ईमान वालों का ईमान बढ़े[२३] और किताब वालों और मुसलमानों को कोई शक न रहे और दिल के रोगी[२४] और

(३) अपनी ख़्वाबगाह से.

(४) क़ौम को अल्लाह के अज़ाब का ईमान न लाने पर.

(५) जब यह आयत उतरी तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अल्लाहो अकबर फ़रमाया. हज़रत ख़दीजह ने भी हुज़ूर की तकबीर सुनकर तकबीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुआ कि वही आई.

(६) हर तरह की नापाकी से. क्योंकि नमाज़ के लिये तहारत यानी पाकी ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या ये मानी हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये. ऐसे लम्बे न हों जैसी कि अरबों की आदत है क्योंकि बहुत ज़्यादा लम्बे होने से चलने फिरने में नापाक होने का डर रहता है.

(७) यानी जैसे कि दुनिया में हदिये और न्योते देने का तरीक़ा है कि देने वाला यह ख़याल करता है कि जिसको मैंने दिया है वह उससे ज़्यादा मुझे देगा. इस क़िस्म के न्योते और हदिये शरीअत से जायज़ हैं मगर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इससे मना फ़रमाया गया क्योंकि नबुव्वत की शान बहुत ऊंची है और इस ऊंची उपाधि के योग्य यही है कि जिस को जो दें वह मात्र करम हो उससे लेने या नफ़ा हासिल करने की नियत न हो.

(८) जिन कामों का हुक्म है और जो काम न करने का आदेश है और उन यातनाओं पर जो दीन की ख़ातिर आपको बर्दाश्त करनी पड़ीं.

(९) इससे मुराद सूर का दूसरी बार फूंका जाना है.

(१०) इसमें इशारा है कि वह दिन अल्लाह के फ़ज़्ल से ईमान वालों पर आसान होगा.

(११) उसकी माँ के पेट में बग़ैर माल और औलाद के. यह आयत वलीद बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी के बारे में उतरी वह अपनी क़ौम में वहीद के लक़ब से मशहूर था .

(१२) खेतियाँ और ढेर सारे मवेशी और तिजारतें. मुजाहिद से नक़्ल है कि वह एक लाख दीनार नक़्द की हैसियत रखता था और ताइफ़ में उसका ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फलों से ख़ाली न होता था.

(१३) जिनकी तादाद दस थी और चूंकि मालदार थे उन्हें रोज़ी जुटाने के लिये सफ़र की हाजत न थी इसलिये सब बाप के सामने रहते उनमें से तीन इस्लाम में दाख़िल हुए, ख़ालिद और हिशाम और वलीद इब्ने वलीद.

(१४) इज़्ज़त भी दी और रियासत भी अता फ़रमाई, ऐश भी दिया और लम्बी उम्र भी अता फ़रमाई.

(१५) नाशुक्री के बावुजूद.

(१६) यह न होगा. चुनांन्चे इस आयत के उतरने के बाद वलीद के माल और औलाद और इज़्ज़त में कमी शुरू हुई यहाँ तक कि हलाक हो गया.

(१७) जब "हा-मीम तन्ज़ीलुल किताबे मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम" उतरी और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मस्जिद में

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْکٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ کَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَمَا یَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِیَ اِلَّا ذِکْرٰی لِلْبَشَرِ ۝ کَلَّا وَالْقَمَرِ ۝ وَالَّیْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝ اِنَّهَا لَاِحْدَی الْکُبَرِ ۝ نَذِیْرًا لِّلْبَشَرِ ۝ لِمَنْ شَآءَ مِنْکُمْ اَنْ یَّتَقَدَّمَ اَوْ یَتَاَخَّرَ ۝ کُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا کَسَبَتْ رَهِیْنَةٌ ۝ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْیَمِیْنِ ۝ فِیْ جَنّٰتٍ ؕ یَتَسَآءَلُوْنَ ۝ عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ۝ مَا سَلَکَکُمْ فِیْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ۝ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْکِیْنَ ۝ وَکُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِیْنَ ۝ وَکُنَّا نُکَذِّبُ بِیَوْمِ الدِّیْنِ ۝ حَتّٰۤی اَتٰىنَا الْیَقِیْنُ ۝ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِیْنَ ۝ فَمَا لَهُمْ عَنِ

منزل ٧

काफ़िर कहें इस अचंभे की बात में अल्लाह का क्या मतलब है, यूंही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता, और वह[२५] तो नहीं मगर आदमी के लिये नसीहत.(३१)

दूसरा रूकू

हाँ हाँ चांद की क़सम(३२) और रात की जब पीठ फेरे(३३) और सुब्ह की, जब उजाला डाले[१](३४) बेशक दोज़ख़ बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है(३५) आदमियों को डराओ(३६) उसे जो तुममें चाहे कि आगे आए[२] या पीछे रहे[३](३७) हर जान अपनी करनी में गिरवी है(३८) मगर दाएं तरफ़ वाले[४](३९) बाग़ों में पूछते हैं(४०) मुजरिमों से(४१) तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई (४२) वो बोले हम[५] नमाज़ न पढ़ते थे(४३) और मिस्कीन(दरिद्र) को खाना न देते थे[६](४४) और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे(४५) और हम इन्साफ़ के दिन को[७] झुटलाते रहे(४६) यहाँ तक कि हमें मौत आई(४७) तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी[८](४८) तो उन्हें

तिलावत फ़रमाई, वलीद ने सुना और उस क़ौम की मजलिस में आकर कहा कि ख़ुदा की क़सम मैंने मुहम्मद से अभी एक कलाम सुना, न वह आदमी का, न जिन्न का. ख़ुदा की क़सम, उसमें अजीब मिठास और ताज़गी और फ़ायदे और दिलकशी है, वह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा. क़ुरैश को उसकी इन बातों से बहुत ग़म हुआ और उन में मशहूर हो गया कि वलीद बाप दादा के दीन से फिर गया. अबू जहल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उसके पास आकर बहुत दुखी सूरत बनाकर बैठ गया. वलीद ने कहा, क्या दुख है. अबू जहल ने कहा, ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है, क़ुरैश तेरे ख़र्च के लिये रूपया जमा कर देंगे. उन्हें ख़याल है कि तूने मुहम्मद की तअरीफ़ इसलिये की है कि तुझे उन के दस्तरख़्वान का बचा खाना मिल जाए. इसपर उसे बड़ा गुस्सा आया और कहने लगा कि क्या क़ुरैश को मेरे माल व दौलत का हाल मालूम नहीं है और क्या मुहम्मद और उनके साथियों ने कभी पेट भर के खाना खाया है, उनके दस्तरख़्वान पर क्या बचेगा. फिर अबू जहल के साथ उठा और क़ौम में आकर कहने लगा, तुम्हें ख़याल है कि मुहम्मद पागल हैं, क्या तुमने उनमें कभी दीवानगी की कोई बात देखी. सब ने कहा, हरगिज़ नहीं. कहने लगा, तुम उन्हें तांत्रिक समझते हो, क्या तुमने कभी उन्हें तंत्र विद्या करते देखा है. सबने कहा, नहीं. फिर बोला, तुम उन्हें शायर गुमान करते हो, क्या तुमने कभी उन्हें शेर कहते पाया. सबने कहा, नहीं . कहने लगा, तुम उन्हें झूटा कहते हो, क्या तुम्हारे अनुभव में कभी उन्होंने झूट बोला. सबने कहा, नहीं. और क़ुरैश में आपकी सच्चाई और दयानतदारी मशहूर थी कि क़ुरैश आपको अमीन और सादिक़ कहा करते थे. यह सुनकर क़ुरैश ने कहा, फिर क्या बात है. तो वलीद ने सोचकर कहा कि बात यह है कि वो जादूगर हैं तुमने देखा होगा कि उनकी बदौलत रिश्तेदार रिश्तेदार से, बाप बेटे से अलग हो जाते हैं. बस यही जादूगर का काम है और जो क़ुरआन वह पढ़ते हैं वह दिल में असर कर जाता है इसका कारण यह है कि वह जादू है. इस आयत में इसका ज़िक्र फ़रमाया गया.

(१८) यानी न किसी अज़ाब के मुस्तहिक़ को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त लगी रहने दे बल्कि अज़ाब के मुस्तहिक़ को गिरफ़्तार करे और उसे जलाए और जब जल जाएं फिर वैसे ही कर दिये जाए.

(१९) जलाकर.

(२०) फ़रिश्ते, एक मालिक और अठ्ठारह उनके साथी.

(२१) कि अल्लाह की हिकमत पर विश्वास न करके उस तादाद में कलाम करें और कहें उन्नीस क्यों हुए.

(२२) यानी यहूदियों को यह तादाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देखकर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सच्चाई का यक़ीन हासिल हो.

(२३) यानी एहले किताब में से जो ईमान लाए उनका ऐतिक़ाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ और ज़्यादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वह अल्लाह की वही है इसलिये पिछली किताबों से मुताबिक़ होती है.

(२४) जिनके दिलों में दोग़लापन है.

(२५) यानी जहन्नम और उसकी सिफ़त या क़ुरआन की आयतें.

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ فَرَّتْ
مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ
يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ
الْاٰخِرَةَ ؕ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ؕ
وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى
وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۟

(٧٥) سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَاۤ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ وَلَاۤ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ
اللَّوَّامَةِ ؕ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ؕ
بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۚ بَلْ يُرِيْدُ
الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۚ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ
فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

क्या हुआ नसीहत से मुंह फेरते हैं(९)﴾४९﴿ मानो वो भड़के हुए गधे हों﴾५०﴿ कि शेर से भागे हों (१०)﴾५१﴿ बल्कि उनमें का हर व्यक्ति चाहता है कि खुले सहीफ़े (धर्मग्रन्थ) उसके हाथ में दे दिये जाएं(११)﴾५२﴿ हरगिज़ नहीं, बल्कि उनको आख़िरत का डर नहीं(१२)﴾५३﴿ हाँ हाँ बेशक वो(१३) नसीहत है﴾५४﴿ तो जो चाहे उससे नसीहत ले﴾५५﴿ और वो क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे, वही है डरने के लायक़ और उसी की शान है मग़फ़िरत(क्षमा) फ़रमाना.﴾५६﴿

७५ - सूरए क़ियामह

सूरए क़ियामह मक्का में उतरी, इसमें ४० आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
क़यामत के दिन की क़सम याद फ़रमाता हूँ﴾१﴿ और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे(२)﴾२﴿ क्या आदमी(३) यह समझता है हम हरगिज़ उसकी हड्डियाँ जमा न फ़रमाएंगे﴾३﴿ क्यों नहीं हम क़ादिर हैं कि उसके पोर ठीक बना दें(४)﴾४﴿ बल्कि आदमी चाहता है कि उसकी निगाह के सामने बदी करे(५)﴾५﴿ पूछता है क़यामत का दिन कब होगा﴾६﴿ फिर जिस दिन आँख चौंधियाएगी(६)﴾७﴿ और चांद गहेगा(७)﴾८﴿

सूरए मुद्दस्सिर - दूसरा रूकू

(१) ख़ूब रौशन हो जाए.
(२) भलाई या जन्नत की तरफ़ ईमान लाकर.
(३) कुफ़्र इख़्तियार करके और बुराई और अज़ाब में गिरफ़्तार हो.
(४) यानी मूमिनीन. वो गिरवी नहीं. वो निजात पाने वाले हैं और उन्होंने नेकियाँ करके अपने आपको आज़ाद करा लिया है. वो अपने रब की रहमत के साए में हैं.
(५) दुनिया में.
(६) यानी मिस्कीनों पर सदक़ा न करते थे.
(७) जिसमें अअमाल का हिसाब होगा और जज़ा दी जाएगी. इससे मुराद क़यामत का दिन है.
(८) यानी नबी, फ़रिश्ते, शहीद और नेक लोग, जिन्हें अल्लाह तआला ने शफ़ाअत करने का अधिकार दिया है वो ईमानदारों की शफ़ाअत करेंगे, काफ़िरों की शफ़ाअत न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअत भी मयस्सर न आएगी.
(९) यानी क़ुरआन के उपदेशों से मुंह फेरते हैं.
(१०) यानी मुश्रिक लोग नादानी और मूर्खता में गधे की तरह हैं जिस तरह शेर को देखकर वह भागता है उसी तरह ये नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ुरआन पढ़ने को सुनकर भागते हैं.
(११) क़ुरैश के काफ़िरों ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि हम हरगिज़ आपका अनुकरण न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि यह अल्लाह तआला की किताब है, फ़लाँ बिन फ़लाँ के नाम. हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह के अनुकरण का हुक्म देते हैं.
(१२) क्योंकि अगर उन्हें आख़िरत का डर होता तो दलीलें क़ायम होने और चमत्कार ज़ाहिर होने के बाद इस तरह की सरकशी वाली बहाने बाज़ियाँ न करते.
(१३) क़ुरआन शरीफ़.

وَالْقَمَرُ ۙ يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ
كَلَّا لَا وَزَرَ ۙ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۚ
يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۙ بَلِ
الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۙ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۚ
لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۙ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ
وَقُرْآنَهُ ۙ فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۙ ثُمَّ إِنَّ
عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۙ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۙ وَتَذَرُونَ
الْآخِرَةَ ۙ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ إِلَىٰ رَبِّهَا
نَاظِرَةٌ ۙ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۙ تَظُنُّ أَن
يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۙ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ
وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۙ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ
الْمَسَاقُ ۙ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۙ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۙ

منزل ٧

और सूरज और चांद मिला दिये जाएंगे[८] ﴿९﴾ उस दिन आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊं[९] ﴿१०﴾ हरगिज़ नहीं, कोई पनाह नहीं ﴿११﴾ उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाकर ठहरना है[१०] ﴿१२﴾ उस दिन आदमी को उसका सब अगला पिछला जता दिया जाएगा[११] ﴿१३﴾ बल्कि आदमी ख़ुद ही अपने हाल पर पूरी निगाह रखता है ﴿१४﴾ और अगर उसके पास जितने बहाने हों सब ला डाले, जब भी न सुना जाएगा ﴿१५﴾ तुम याद करने की जल्दी में क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो [१२] ﴿१६﴾ बेशक इसका मेहफ़ूज़ करना[१३] और पढ़ना[१४] हमारे ज़िम्मे है ﴿१७﴾ तो जब हम उसे पढ़ चुकें[१५] उस वक़्त उस पढ़े हुए की इत्तिबाअ (अनुकरण) करो[१६] ﴿१८﴾ फिर बेशक उसकी बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है ﴿१९﴾ कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो, तुम पाँव तले की दोस्त रखते हो[१७] ﴿२०﴾ और आख़िरत को छोड़ बैठे हो ﴿२१﴾ कुछ मुंह उस दिन[१८] तरो ताज़ा होंगे[१९] ﴿२२﴾ अपने रब को देखते[२०] ﴿२३﴾ और कुछ मुंह उस दिन बिगड़े हुए होंगे[२१] ﴿२४﴾ समझते होंगे कि उनके साथ वह की जाएगी जो कमर को तोड़ दे [२२] ﴿२५﴾ हाँ हाँ जब जान गले को पहुंच जाएगी[२३] ﴿२६﴾ और कहेंगे[२४] कि है कोई झाड़ फूंक करे[२५] ﴿२७﴾ और वह[२६] समझ लेगा कि यह जुदाई की घड़ी है[२७] ﴿२८﴾ और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी[२८] ﴿२९﴾ उस दिन तेरे रब ही की तरफ़ हाँकना है[२९] ﴿३०﴾

दूसरा रूकू

उसने[१] न तो सच माना[२] और न नमाज़ पढ़ी ﴿३१﴾ हाँ झुटलाया और मुंह फेरा[३] ﴿३२﴾ फिर अपने घर को अकड़ता

७५ - सूरए क़ियामह - पहला रूकू

(१) सूरए क़ियामह मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, चालीस आयतें, एक सौ निनानवे कलिमे, छ सौ बानवे अक्षर हैं.

(२) तक़वा वाले और बहुत फ़रमाँबरदार होने के बावुजूद तुम मरने के बाद ज़रूर उठाए जाओगे.

(३) यहाँ आदमी से मुराद दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वाला काफ़िर है. यह आयत अदी बिन रबीआ के बारे में उतरी जिसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा था कि अगर मैं क़यामत का दिन देख भी लूँ जब भी न मानूँ और आप पर ईमान न लाऊँ. क्या अल्लाह तआला बिखरी हुई हड्डियाँ जमा कर देगा. इसपर यह आयत उतरी जिसके मानी ये हैं कि क्या उस काफ़िर का यह गुमान है कि हड्डियाँ बिखरने और गलने और कण कण होकर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ जगहों में मुन्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उनका जमा करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है. यह ग़लत ख़याल उसके मन में क्यों आया और उसने क्यों नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वह मरने के बाद दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है.

(४) यानी उसकी उंगलियाँ जैसी थीं बग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दीं और उनकी हड्डियाँ उनके मौक़े पर पहुंचा दीं. जब छोटी हड्डियाँ इस तरह तरतीब दे दी जाएं तो बड़ी का क्या कहना.

(५) इन्सान के दोबारा ज़िन्दा किये जाने का इन्कार संदेह और दलील न होने के कारण नहीं है बल्कि हाल यह है कि वह सवाल की हालत में भी अपने फ़ुजूर पर क़ायम रहना चाहता है कि हंसी के तौर पर पूछता है क़यामत का दिन कब होगा (जुमल) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने इस आयत के मानी में फ़रमाया कि आदमी दोबारा उठाए जाने और हिसाब को झुटलाता है जो उसके सामने है. सईद बिन जुबैर ने कहा कि आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबह को मुअख़्ख़र. यही कहता रहता है अब

तौबह करूंगा, अब अमल करूंगा. यहाँ तक कि मौत आ जाती है और वह अपनी बदियों में मुब्तिला होता है.
(६) और हैरत दामनगीर होगी.
(७) तारीक हो जाएगा और रौशनी ज़ाइल हो जाएगी.
(८) यह मिला देना या उदय में होगा, दोनों पश्चिम से निकलेंगे या बेनूर होने में.
(९) जो इस हाल और दहशत से रिहाई मिले.
(१०) तमाम सृष्टि उसके सामने हाज़िर होगी, हिसाब किया जाएगा. जज़ा दी जाएगी. जिसे चाहेगा अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसे चाहेगा अपने इन्साफ़ से जहन्नम में डालेगा.
(११) जो उसने किया है.
(१२) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिब्रईले अमीन के वही पहुंचाकर फ़ारिग़ होने से पहले याद फ़रमाने की कोशिश करते थे और जल्दी जल्दी पढ़ते और मुबारक ज़बान को हरकत देते. अल्लाह तआला ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मशक़्क़त गवारा न फ़रमाई और क़ुरआने पाक का आपके सीने में मेहफ़ूज़ करना और ज़बाने अक़्दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया और इस आयत के ज़रिये हुज़ूर को मुतमइन फ़रमा दिया.
(१३) आपके सीनए पाक में.
(१४) आपका.
(१५) यानी आपके पास वही आ चुके.
(१६) इस आयत के उतरने के बाद नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वही को इत्मीनान से सुनते और जब वही पूरी हो जाती तब पढ़ते थे.
(१७) यानी तुम्हें दुनिया की चाहत है.
(१८) यानी क़यामत का दिन.
(१९) अल्लाह तआला की नेअमत और करम पर ख़ुश चेहरों से प्रकाश ही प्रकाश, यह मूमिनों का हाल है.
(२०) उन्हें अल्लाह के दीदार की नेअमत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा. इस आयत से साबित हुआ कि आख़िरत में मूमिनों को अल्लाह का दीदार मयस्सर आएगा . यही एहले सुन्नत का अक़ीदा. क़ुरआन और हदीस और इजमाअ की बहुत सी दलीलें इसपर क़ायम हैं और यह दीदार बेकैफ़ और बेजिहत होगा.
(२१) सियाह तारीक, ग़मज़दा, मायूस, यह काफ़िरों का हाल है.
(२२) यानी वह अज़ाब की सख़्ती और भयानक मुसीबतों में गिरफ़्तार किये जाएंगे.
(२३) मौत के वक़्त.
(२४) जो उसके क़रीब होंगे.
(२५) ताकि उसको शिफ़ा हासिल हो.
(२६) यानी मरने वाला.
(२७) कि मक्के वाले और दुनिया सबसे जुदाई होती है.
(२८) यानी मौत की तकलीफ़ और सख़्ती से पाँव बाहम लिपट जाएंगे या ये मानी हैं कि दोनो पाँव कफ़न में लपेटे जाएंगे या ये मानी हैं कि सख़्ती पर सख़्ती होगी, एक दुनिया की जुदाई की सख़्ती, उसके साथ मौत की तकलीफ़, या एक मौत की सख़्ती और उसके साथ आख़िरत की सख़्तियाँ.
(२९) यानी बन्दों का लौटना उसी की तरफ़ है वही उनमें फ़ैसला फ़रमाएगा.

सूरए क़ियामह - दूसरा रूकू

(१) यानी इन्सान ने. मुराद इससे अबू जहल है.
(२) रिसालत और क़ुरआन को.
(३) ईमान लाने से.
(४) घमण्ड के अन्दाज़ से. अब उससे ख़िताब फ़रमाया जाता है.

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝٣٣ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝٣٤ ثُمَّ اَوْلٰى
لَكَ فَاَوْلٰى ۝٣٥ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۝٣٦
اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝٣٧ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً
فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝٣٨ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَ
الْاُنْثٰى ۝٣٩ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ۝٤٠

(٧٦) سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ (٩٨) — اٰيَاتُهَا ٣١ — رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ
شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝١ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ
اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝٢ اِنَّا هَدَيْنٰهُ
السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝٣ اِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝٤ اِنَّ الْاَبْرَارَ
يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝٥ عَيْنًا يَّشْرَبُ

चला[४]《३३》 तेरी ख़राबी आ लगी, अब आ लगी《३४》 फिर तेरी ख़राबी आ लगी, अब आ लगी [५]《३५》 क्या आदमी इस घमण्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा[६]《३६》 क्या वह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए[७]《३७》 फिर ख़ून की फुटक हुआ तो उसने पैदा फ़रमाया[८] फिर ठीक बनाया[९]《३८》 तो उससे[१०] दो जोड़ बनाए[११] मर्द और औरत《३९》 क्या जिसने यह कुछ किया, वह मुर्दे न जिला सकेगा.《४०》

७६ - सूरए दहर

सूरए दहर मदीने में उतरी, इसमें ३१ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

बेशक आदमी पर[१] एक वक़्त वह गुज़रा कि कहीं उसका नाम भी न था [३]《१》 बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से[४] कि वो उसे जांचे[५] तो उसे सुनता देखता कर दिया[६]《२》 बेशक हमने उसे राह बताई[७] या हक़ मानता[८] या नाशुक्री करता[९]《३》 बेशक हमने काफ़िरों के लिये तैयार कर रखी हैं ज़ंजीरें[१०] और तौक़[११] और भड़कती आग[१२]《४》 बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से जिसकी मिलौनी काफ़ूर है《५》 वह काफ़ूर क्या एक चश्मा

(५) जब यह आयत उतरी, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बतहा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उससे फ़रमाया तेरी ख़राबी आ लगी, अब आ लगी. तो अबू जहल ने कहा, ऐ मुहम्मद क्या तुम मुझे धमकाते हो, तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते. मक्के के पहाड़ों के बीच में सबसे ज़्यादा ताक़तवर ज़ोरआवर साहिबे शौकत व क़ुव्वत हूँ. मगर क़ुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का फ़रमाना ज़रूर सच होने वाला था. चुनांन्चे ऐसा ही हुआ और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लत और ख़्वारी के साथ बुरी तरह मारा गया. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत में एक फ़िरऔन होता है, मेरी उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल है. इस आयत में उसकी ख़राबी का ज़िक्र चार बार फ़रमाया गया. पहली ख़राबी बेईमानी की हालत में ज़िल्लत की मौत, दूसरी ख़राबी क़ब्र की सख़्तियाँ और वहाँ की शिद्दतें, तीसरी ख़राबी मरने के बाद उठने के वक़्त मुसीबतों में गिरफ़्तार होना, चौथी ख़राबी जहन्नम का अज़ाब.

(६) कि न उसपर हलाल हराम वग़ैरह के अहकाम हों न वह मरने के बाद उठाया जाए न उससे अअमाल का हिसाब लिया जाए, न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाए, ऐसा नहीं.

(७) गर्भ में. तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उसका घमण्ड करना, इतराना और पैदा करने वाले की नाफ़रमनी करना निहायत बेजा है.

(८) इन्सान बनाया.

(९) उसके अंगों को पूरा किया, उस में रूह डाली.

(१०) यानी वीर्य से या इन्सान से.

(११) दो सिफ़तें पैदा कीं.

७६ - सूरए दहर - पहला रूकू

(१) इस सूरत का नाम सूरए इन्सान भी है. मुजाहिद व क़तादा और जमहूर के नज़्दीक यह सूरत मदनी है. कुछ ने इसको मक्की कहा है. इसमें दो रूकू, इकत्तिस आयतें, दो सौ चालीस कलिमे और एक हज़ार चव्वन अक्षर हैं.

(२) यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर रूह फूंके जाने से पहले चालीस साल का.

(३) क्योंकि वह एक मिट्टी का ख़मीर था, न कहीं उसका ज़िक्र था, न उसको कोई जानता था, न किसी को उसकी पैदाइश की हिकमतें मालूम थीं. इस आयत की तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उसके गर्भ में रहने का ज़माना.

بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَ
يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا
وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ
جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا
عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا
جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ لَا
يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَدَانِيَةً
عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝ وَ
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ
كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۝ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

है[१३] जिसमें से अल्लाह के बहुत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने महलों में उसे जहाँ चाहें बहाकर ले जाएंगे [१४]﴾६﴿ अपनी मन्नतें पूरी करते हैं[१५] और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई[१६] फैली हुई है [१७]﴾७﴿ और खाना खिलाते हैं उसकी महब्बत पर[१८] मिस्कीन (दरिद्र) और यतीम (अनाथ) और असीर (क़ैदी) को﴾८﴿ उनसे कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी (कृतज्ञता) नहीं मांगते ﴾९﴿ बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श (कड़वा) निहायत सख़्त है[१९]﴾१०﴿ तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी﴾११﴿ और उनके सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े इनआम में दिये ﴾१२﴿ जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे, न उसमें धूप देखेंगे न ठटर [२०]﴾१३﴿ और उसके[२१] साए उनपर झुके होंगे और उसके गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे[२२]﴾१४﴿ और उनपर चांदी के बर्तनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे की तरह हो रहे होंगे ﴾१५﴿ कैसे शीशे चांदी के[२३] साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़े पर रखा होगा[२४]﴾१६﴿ और उसमें वो जाम पिलाए जाएंगे[२५] जिसकी

(४) मर्द और औरत की.
(५) पाबन्द करके अपने हलाल और हराम से.
(६) ताकि दलीलों का अवलोकन और आयतों का निरीक्षण कर सकें.
(७) दलीलें क़ायम करके, रसूल भेजकर, किताबें उतार कर, ताकि हो.
(८) यानी मूमिन सईद.
(९) काफ़िर शक़ी.
(१०) जिन्हें बाँधकर दोज़ख़ की तरफ़ घसीटे जाएंगे.
(११) जो गलों में डाले जाएंगे.
(१२) जिसमें जलाए जाएंगे.
(१३) जन्नत में.
(१४) नेकों के सवाब बयान फ़रमाने के बाद उनके अअमाल का ज़िक्र फ़रमाया जाता है जो उस सवाब का कारण हुए.
(१५) मन्नत यह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वह किसी शर्त से अपने ऊपर वाजिब करे. जैसे कि यह कहे कि अगर मेरा मरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफ़िर बख़ैर वापिस आए तो मैं ख़ुदा की राह में इस क़द्र सदक़ा दूंगा या इतनी रकअतें नमाज़ पढूंगा. इस नज़्र की अदायगी वाजिब होती है. मानी ये हैं कि वो लोग ताअत और इबादत और शरीअत के वाजिबात के आमिल हैं यहाँ तक कि जो ग़ैर वाजिब ताअतें अपने ऊपर नज़्र से वाजिब कर लेते हैं उसको भी अदा करते हैं.
(१६) यानी शिद्दत और सख़्ती.
(१७) क़तादह ने कहा कि उस दिन की सख़्ती इतनी फैली हुई है कि आसमान फट जाएंगे, सितारे गिर पड़ेंगे, चाँद सूरज बेनूर हो जाएंगे, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे. कोई इमारत बाक़ी न रहेगी. इसके बाद यह बताया जाता है कि उनके कर्म दिखावे से ख़ाली हैं.
(१८) यानी ऐसी हालत में जबकि ख़ुद उन्हें खाने की हाजत और इच्छा हो. और कुछ मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी लिये हैं कि अल्लाह तआला की महब्बत में खिलाते हैं. यह आयत हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातिमा रदियल्लाहो अन्हा और उनकी कनीज़ फ़िद्दा के हक़ में उतरी. हसनैने करीमैन रदियल्लाहो अन्हुमा (यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन) बीमार हुए, इन हज़रात ने उनकी सेहत पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी. अल्लाह तआला ने सेहत दी. नज़्र की अदायगी का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे. हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो एक यहूदी से तीन साअ (साअ एक पैमाना है) जौ लाए. हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियाँ सामने रखीं तो एक दिन मिस्कीन, एक रोज़ यतीम, एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ ये सब रोटियाँ उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार करके रोज़ा रखा

زَنْجَبِيْلًا ۚ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ وَ
يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ
نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ
خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۡ وَّحُلُّوْۤا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ
كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ
الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۚ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ
مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۚ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
وَّاَصِيْلًا ۚ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيْلًا ۝ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَ
يَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ۝ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ
وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ

منزل ٧

मिलौनी अदरक होगी [२६] ﴾१७﴿ वह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल-सबील कहते हैं[२७] ﴾१८﴿ और उनके आस-पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के[२८] जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए[२९] ﴾१९﴿ और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे[३०] और बड़ी सल्तनत [३१] ﴾२०﴿ उनके बदन पर हैं क्रेब के सब्ज़(हरे) कपड़े[३२] और क़नादीज़ के[३३] और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए गए[३४] और उन्हें उनके रब ने सुथरी शराब पिलाई[३५] ﴾२१﴿ उनसे फ़रमाया जाएगा, यह तुम्हारा इनआम है[३६] और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी[३७] ﴾२२﴿

दूसरा रूकू

बेशक हमने तुम पर[१] क़ुरआन बतदरीज उतारा[२] ﴾२३﴿ तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो[३] और उनमें किसी गुनाहगार या नाशुक्रे की बात न सुनो[४] ﴾२४﴿ और अपने रब का नाम सुब्ह शाम याद करो[५] ﴾२५﴿ और कुछ रात में उसे सज्दा करो[६] और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोलो [७] ﴾२६﴿ बेशक ये लोग[८] पाँव तले की अज़ीज़ रखते हैं[९] और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं [१०] ﴾२७﴿ हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और हम जब चाहें[११] उन जैसे और बदल दें [१२] ﴾२८﴿ बेशक यह नसीहत है [१३] तो जो चाहे अपने रब की तरफ़

लिया गया.

(१९) लिहाज़ा हम अपने अमल की जज़ा या शुक्रगुज़ारी तुम से नहीं चाहते. यह अमल इस लिये कि हम उस दिन ख़ौफ़ से अम्न में रहें.

(२०) यानी गर्मी या सर्दी की कोई तक्लीफ़ वहाँ न होगी.

(२१) यानी जन्नती दरख़्तों के.

(२२) कि खड़े बैठे लेटे हर हाल में ख़ोशे बआसानी ले सकें.

(२३) जन्नती बर्तन चाँदी के होंगे और चाँदी के रंग और उसके हुस्न के साथ आबगीने की तरह साफ़ शाफ़्फ़ होंगे कि उनमें जो चीज़ पी जाएगी वह बाहर से नज़र आएगी.

(२४) यानी पीने वालों की रग़बत के बराबर, न इस से कम न ज़्यादा. यह सलीक़ा जन्नती ख़ुद्दाम के साथ ख़ास है, दुनिया के साक़ियों को मयस्सर नहीं.

(२५) शराबे तहूर के.

(२६) उसकी मिलावट से शराब की लज़्ज़त और बढ़ जाएगी.

(२७) मुक़र्रबीन तो ख़ालिस उसी को पियेंगे और बाक़ी जन्नत वालों की शराबों में उसकी मिलावट होगी. यह चश्मा अर्श के नीचे से जन्नते अदन होता हुआ तमाम जन्नतों में गुज़रता है.

(२८) जो न कभी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उनमें कोई तबदीली आएगी न ख़िदमत से उकताएंगे. उनके हुस्न का यह आलम होगा.

(२९) यानी जिस तरह साफ़ फ़र्श पर चमकता मोती पड़ा हो. इस हुस्न और यौवन के साथ जन्नती ग़िलमान ख़िदमत में मश्ग़ूल होंगे.

(३०) जिसका वस्फ़ और गुण बयान में नहीं आ सकता.

(३१) जिसकी सीमा और अन्त नहीं, न उसको ज़वाल, न जन्नती को वहाँ से कहीं और जाना. वसुअत अर्थात विस्तार का यह आलम कि अदना दर्जे का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता हो. शौकत व शिकोह यह होगा कि फ़रिश्ते बेइजाज़त न आएंगे.

(३२) यानी बारीक रेशम के.

(३३) यानी मोटे रेशम के.

(३४) हज़रत इब्ने मुसय्यिब रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे एक चाँदी का एक सोने

का एक मोती का.

(३५) जो अत्यन्त पाक साफ़, न उसे किसी का हाथ लगा, न किसी ने छुआ, न वह पीने के बाद दुनिया की शराब की तरह बदन के अन्दर सड़कर गन्दगी बने, बल्कि उसकी सफ़ाई का यह हाल है कि बदन के अन्दर उतर कर पाकीज़ा ख़ुश्बू बनकर जिस्म से निकलती है. जन्नत वालों को खाने के बाद शराब पेश की जाएगी. उसको पीने से उनके पेट साफ़ हो जाएंगे और जो उन्होंने खाया है वह पाकीज़ा ख़ुश्बू बनकर उनके जिस्मों से निकलेगा और उनकाइच्छाएं और रुचियाँ फिर ताज़ा हो जाएंगी.

(३६) यानी तुम्हारी फ़रमाँबरदारी का.

(३७) कि तुम से तुम्हारा रब राज़ी हुआ और उसने तुम्हें अज़ीम सवाब अता फ़रमाया.

सूरए दहर - दूसरा रूकू

(१) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(२) आयत-आयत करके और उसमें अल्लाह तआला की बड़ी हिकमें हैं.

(३) रिसालत की तबलीग़ फ़रमाकर और उसमें मशक़्क़तें उठाकर और दीन के दुश्मनों की तकलीफ़ें बर्दाश्त करके.

(४) उतबह बिन रबीआ और वलीद बिन मुग़ीरह ये दोनों नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास आए और कहने लगे आप इस काम से बाज़ आइये, यानी दीन से . उतबह ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आपको ब्याह दूँ और बग़ैर मेहर के आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँ . वलीद ने कहा कि मैं आपको इतना माल दे दूँ कि आप राज़ी हो जाएं. इसपर यह आयत उतरी.

(५) नमाज़ में, सुब्ह के ज़िक्र से फ़ज्र और शाम के ज़िक्र से ज़ोहर और अस्र मुराद हैं.

(६) यानी मग़रिब और इशा की नमाज़ें पढ़ो. इस आयत में पाँचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया.

(७) यानी फ़र्ज़ों के बाद नवाफ़िल पढ़ते रहो. इसमें तहज्जुद की नमाज़ भी आ गई. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि इससे मुराद ज़बानी ज़िक्र है. मतलब यह है कि रात दिन के तमाम औक़ात में दिल और ज़बान से अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहो.

(८) यानी काफ़िर.

(९) यानी दुनिया की महब्बत में गिरफ़्तार हैं.

(१०) यानी क़यामत के दिन को कि जिसकी सख़्तियाँ काफ़िरों पर बहुत भारी होंगी, न उस पर ईमान लाते हैं, न उस दिन के लिये अमल करते हैं.

(११) उन्हें हलाक कर दें और उनके बजाय.

(१२) जो फ़रमाँबरदार हों.

(१३) मख़लूक़ के लिये.

تَبْدِيلًا ۝ إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ
ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ۝ وَمَا تَشَآءُونَ إِلَّآ
أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝
يُدْخِلُ مَن يَشَآءُ فِى رَحْمَتِهِۦ ۚ وَٱلظَّٰلِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًۢا ۝

(٧٧) سُورَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ (٣٣)

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلْمُرْسَلَٰتِ عُرْفًا ۝ فَٱلْعَٰصِفَٰتِ عَصْفًا ۝
وَٱلنَّٰشِرَٰتِ نَشْرًا ۝ فَٱلْفَٰرِقَٰتِ فَرْقًا ۝
فَٱلْمُلْقِيَٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا أَوْ نُذْرًا ۝
إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَٰقِعٌ ۝ فَإِذَا ٱلنُّجُومُ طُمِسَتْ ۝
وَإِذَا ٱلسَّمَآءُ فُرِجَتْ ۝ وَإِذَا ٱلْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝
وَإِذَا ٱلرُّسُلُ أُقِّتَتْ ۝ لِأَىِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۝

منزل ٧

राह ले[१४] ﴾२९﴿ और तुम क्या चाहो मगर यह कि अल्लाह चाहे[१५] बेशक वह इल्म व हिकमत वाला है ﴾३०﴿ अपनी रहमत में लेता है[१६] जिसे चाहे[१७] और ज़ालिमों के लिये उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है[१८] ﴾३१﴿

७७ - सूरए मुर्सलात

सूरए मुर्सलात मक्का में उतरी, इसमें ५० आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१] क़सम उनकी जो भेजी जाती हैं लगातार[२] ﴾१﴿ फिर ज़ोर से झौंका देने वालियाँ ﴾२﴿ फिर उभार कर उठाने वालियाँ[३] ﴾३﴿ फिर हक़ नाहक़ को ख़ूब अलग करने वालियाँ ﴾४﴿ फिर उनकी क़सम जो ज़िक्र का इल्क़ा करती हैं[४] ﴾५﴿ हुज्जत (तर्क) तमाम करने या डराने को ﴾६﴿ बेशक जिस बात का तुम वादा दिये जाते हो[५] ज़रूर होनी है [६] ﴾७﴿ फिर जब तारे महव कर दिये जाएं ﴾८﴿ और जब आसमान में रख़ने पड़ें ﴾९﴿ और जब पहाड़ ग़ुबार करके उड़ा दिये जाएं ﴾१०﴿ और जब रसूलों का वक़्त आए[७] ﴾११﴿ किस दिन के लिये

(१४) उसका कहना, अहकाम पर अमल करके और उसके रसूल का अनुकरण करके.
(१५) क्योंकि जो कुछ होता है उसी की मर्ज़ी से होता है.
(१६) यानी जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है.
(१७) ईमान अता फ़रमा कर.
(१८) ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं.

७७ - सूरए मुर्सलात - पहला रूकू

(१) सूरए मुर्सलात मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, पचास आयतें, एक सौ अस्सी कलिमे और आठ सौ सोलह अक्षर हैं. हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि सूरए मुर्सलात शबे जिन्न में उतरी. हम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हमराह थे जब मिना की गुफ़ा में पहुंचे, वलमुर्सलात नाज़िल हुई . हम हुज़ूर से इसको पढ़ते थे और हुज़ूर इसकी तिलावत फ़रमाते थे, अचानक एक साँप ने छलांग लगाई. हम उसको मारने के लिये लपके. वह भाग गया. हुज़ूर ने फ़रमाया तुम उसकी बुराई से बचाए गए, वह तुम्हारी बुराई से. यह ग़ार मिना में ग़ारे वलमुर्सलात के नाम से मशहूर है.

(२) इन आयतों में जो क़स्में मज़कूर हैं वो पाँच विशेषताएं हैं जिनके धारक या रखने वाले ज़ाहिर में बयान नहीं किये गए हैं. इसी लिये मुफ़स्सिरों ने इसकी तफ़सीर में बहुत सी बातें बयान की हैं. कुछ ने ये पाँचों विशेषताएं हवाओं की क़रार दी हैं, कुछ ने फ़रिश्तों की, कुछ ने क़ुरआनी आयतों की, कुछ ने सम्पूर्ण और कामिल नफ़्सों की जो और ज़्यादा सम्पूर्णता हासिल करने के लिये शरीरों में भेजे जाते हैं फिर ये रियाज़तों या तपस्याओं के झोंकों से अल्लाह के सिवा जो कुछ हो उसे उड़ा देते हैं फिर सारे शरीर में उसका असर फैलाते हैं फिर सत्य और असत्य की छान फटक करते हैं और अल्लाह की ज़ात के सिवा हर चीज़ को जान लेवा और हलाक करने वाली समझते हैं फिर ज़िक्र का इल्क़ा करते हैं इस तरह कि ज़बान और दिल में अल्लाह तआला का ही ज़िक्र होता है. और एक वजह यह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़्तों से हवाएं मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़रिश्ते. इस सूरत में मानी ये हैं कि क़सम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झौंके देती हैं. इनसे मुराद अज़ाब की हवाएं हैं. (ख़ाज़िन, जुमल वग़ैरह)

(३) यानी वो रहमत की हवाएं जो बादलों को उठाती हैं. इसके बाद जो सिफ़्तें बयान की गई हैं, एक दूसरे क़ौल पर, फ़रिश्तों की जमाअतों की हैं. इब्ने कसीर ने कहा कि हक़ नाहक़ को ख़ूब जुदा करने वालियों और ज़िक्र का इल्क़ा करने वालियों से फ़रिश्तों की जमाअतें मुराद होने पर सहमति है.

(४) नबियों और रसूलों के पास वही लाकर.

(५) यानी दोबारा उठाए जाने और अज़ाब और क़यामत के आने का.

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۚ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ۚ
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ۚ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِيْنَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۚ اَلَمْ
نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ
مَّكِيْنٍ ۚ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۚ فَقَدَرْنَا ۚ فَنِعْمَ
الْقٰدِرُوْنَ ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۚ اَلَمْ
نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ۚ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ۚ
وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً
فُرَاتًا ۚ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۚ اِنْطَلِقُوْٓا
اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۚ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى
ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ۚ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ
مِنَ اللَّهَبِ ۚ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۚ

منزل ٧

ठहराए गए थे ﴾१२﴿
फ़ैसले के दिन के लिये﴾१३﴿ और तू क्या जाने वह फैसले का दिन क्या है[८]﴾१४﴿ झुटलाने वालों की उस दिन ख़राबी [९]﴾१५﴿ क्या हमने अगलों को हलाक न फ़रमाया [१०]﴾१६﴿ फिर पिछलों को उनके पीछे पहुंचाएंगे[११]﴾१७﴿ मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं﴾१८﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी﴾१९﴿ क्या हमने तुम्हें एक बेक़द्र पानी से पैदा न फ़रमाया[१२]﴾२०﴿ फिर उसे एक मेहफ़ूज़ जगह में रखा[१३]﴾२१﴿ एक मालूम अन्दाज़े तक[१४]﴾२२﴿ फिर हमने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम क्या ही अच्छे क़ादिर[१५]﴾२३﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी ﴾२४﴿ क्या हम ने ज़मीन को जमा करने वाली न किया ﴾२५﴿ तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की[१६]﴾२६﴿ और हमने उसमें ऊंचे ऊंचे लंगर डाले[१७] और हमने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया [१८]﴾२७﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी [१९]﴾२८﴿ चलो उसकी तरफ़[२०] जिसे झुटलाते थे ﴾२९﴿ चलो उस धुंएं के साए की तरफ़ जिस की तीन शाख़ें[२१]﴾३०﴿ न साया दे[२२] न लपट से बचाए[२३]﴾३१﴿ बेशक दौज़ख़ चिंगारियाँ उड़ाती है[२४] जैसे ऊंचे महल ﴾३२﴿

(६) कि उसके होने में कुछ भी शक नहीं.
(७) वो उम्मतों पर गवाही देने के लिये जमा किये जाएं.
(८) और उसकी दहशत और सख़्ती का क्या आलम है.
(९) जो दुनिया में तौहीद, नबुव्वत, आख़िरत, दोबारा उठाए जाने और हिसाब के इन्कारी थे.
(१०) दुनिया में अज़ाब उतार के, जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया.
(११) यानी जो पहली उम्मतों के झुटलाने वालाकी राह इख़्तियार करके सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाते हैं, उन्हें भी पहलों की तरह हलाक फ़रमाएंगे.
(१२) यानी नुत्फ़े से.
(१३) यानी गर्भ में.
(१४) पैदाइश के समय तक जिसे अल्लाह तआला जानता है.
(१५) अन्दाज़ा फ़रमाने पर (जुमल).
(१६) कि ज़िन्दे उसकी पीठ पर जमा रहते हैं और मुर्दे उसके पेट में.
(१७) ऊंचे पहाड़ों के.
(१८) ज़मीन में चश्मे और स्रोत पैदा करके. ये तमाम बातें मुर्दों को ज़िन्दा करने से ज़्यादा अजीब हैं.
(१९) और क़यामत के दिन काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उसकी तरफ़ जाओ.
(२०) यानी उस अज़ाब की तरफ़.
(२१) इससे जहन्नम का धुंआ मुराद है जो ऊंचा होकर तीन शाख़ों में बँट जाएगा, एक काफ़िरों के सरों पर, एक उनके दाएं और एक उनके बाएं और हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उन्हें इसी धुँए में रहने का हुक्म होगा. जबकि अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे उसके अर्श के साए में होंगे. इसके बाद जहन्नम के धुँए की शान बयान फ़रमाई जाती है कि वह ऐसा है कि---
(२२) जिससे उस दिन की गर्मी से कुछ अम्न पा सकें.
(२३) जहन्नम की आग की.
(२४) इतनी इतनी बड़ी.

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝

منزل ٧

मानो वो ज़र्द रंग के ऊंट हैं﴾३३﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी﴾३४﴿ यह दिन है कि वो न बोल सकेंगे(२५)﴾३५﴿ और न उन्हें इजाज़त मिले कि बहाना करें(२६)﴾३६﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी ﴾३७ट यह है फ़ैसले का दिन, हमने तुम्हें जमा किया(२७) और सब अगलों को(२८)﴾३८﴿ अब अगर तुम्हारा कोई दाव हो तो मुझ पर चला लो(२९)﴾३९﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी.﴾४०﴿

दूसरा रूकू

बेशक डर वाले(१) सायों और चश्मों में हैं﴾४१﴿ और मेवों में जो कुछ उनका जी चाहे(२)﴾४२﴿ खाओ और पियो रचता हुआ(३) अपने कर्मों का इनआम(४)﴾४३﴿ बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं﴾४४﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी(५)﴾४५﴿ कुछ दिन खालो और बरत लो(६) ज़रूर तुम मुजरिम हो(७)﴾४६﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी﴾४७﴿ और जब उनसे कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते﴾४८﴿ उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी﴾४९﴿ फिर उस(८)के बाद कौन सी बात पर ईमान लाएंगे(९)﴾५०﴿

(२५) न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बहुत से मौक़े होंगे, कुछ में कलाम करेंगे, कुछ में ज़रा भी बोल न सकेंगे.

(२६) और हक़ीक़त में उनके पास कोई उज्र ही न होगा क्योंकि दुनिया में हुज्जतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिये कोई उज्र की जगह बाक़ी नहीं रखी गई अलबत्ता उन्हें यह ग़लत ख़याल आएगा कि कुछ बहाने बनाएं. ये बहाने पेश करने की इजाज़त न होगी. जुनैद रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि उसको उज्र ही क्या है जिसने नेअमत देने वाले से मुंह फेरा, उसकी नेअमतों को झुटलाया, उसके एहसानों की नाशुक्री की.

(२७) ऐ सैयदे आलम मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाने वालो.

(२८) जो तुमसे पहले नबियों को झुटलाते थे. तुम्हारा उनका सबका हिसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हें सबको अज़ाब किया जाएगा.

(२९) और किसी तरह अपने आपको अज़ाब से बचा सको तो बचा लो, यह इन्तिहा दर्जे की फटकार है क्योंकि यह तो वो यक़ीनी जानते होंगे कि न आज कोई छलकपट चल सकता है न कोई बहाना काम दे सकता है.

सूरए मुर्सलात - दूसरा रूकू

(१) जो अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ रखते थे, जन्नती दरख़्तों के.

(२) उससे लज़्ज़त उठाते हैं. इस आयत से साबित हुआ कि जन्नत वालों को उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ नेअमतें मिलेंगी दुनिया के विपरीत कि यहाँ आदमी को जो मयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है. और जन्नत वालों से कहा जाएगा --

(३) लज़ीज़ ख़ालिस जिसमें ख़राबी नाम मात्र को नहीं.

(४) उन ताअतों और फ़रमाँबरदारियों का जो तुम दुनियाँ में बजा लाए थे.

(५) इसके बाद तहदीद के तौर पर काफ़िरों को ख़िताब किया जाता है कि ऐ दुनिया में झुटलाने वालो तुम दुनिया में --

(६) अपनी मौत के वक़्त तक.

(७) काफ़िर हो, हमेशा के अज़ाब के मुस्तहिक़ हो.

(८) क़ुरआन शरीफ़.

(९) यानी क़ुरआन शरीफ़ आसमानी किताबों में सबसे आख़िरी किताब है और बहुत ज़ाहिर चमत्कार है उसपर ईमान न लाए तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं.

पारा उन्तीस समाप्त

तीसवाँ पारा : अम्म

७८ - सूरए नबा

सूरए नबा मक्का में उतरी, इसमें ४० आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

ये[२] आपस में काहे की पूछ गछ कर रहे हैं[३]﴾१﴿ बड़ी ख़बर की[४]﴾२﴿ जिसमें वो कई राह हैं[५]﴾३﴿ हाँ हाँ अब जान जाएंगे﴾४﴿ फिर हाँ हाँ जान जाएंगे[६]﴾५﴿ क्या हमने ज़मीन को बिछौना न किया[७]﴾६﴿ और पहाड़ों को मेख़ें[८]﴾७﴿ और तुम्हें जोड़े बनाया[९]﴾८﴿और तुम्हारी नींद को आराम किया[१०]﴾९﴿ और रात को पर्दा पोश किया[११]﴾१०﴿ और दिन को रोज़गार के लिये बनाया[१२]﴾११﴿ और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत चुनाइयाँ चुनीं[१३]﴾१२﴿ और उनमें एक बहुत चमकता चिराग़ रखा[१४]﴾१३﴿ और फिर बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा﴾१४﴿ कि उस से पैदा फ़रमाएं नाज और सब्ज़ा﴾१५﴿ और घने बाग़[१५]﴾१६﴿ बेशक फैसले का दिन[१६] ठहरा हुआ वक़्त है﴾१७﴿ जिस दिन सूर फूंका जाएगा[१७] तो तुम चले आओगे[१८] फ़ौजों की फ़ौजें ﴾१८﴿ और आसमान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा[१९]﴾१९﴿ और पहाड़ चलाए जायेंगे कि हो जाएंगे जैसे चमकता रेता, दूर से पानी का धोखा देता﴾२०﴿ बेशक जहन्नम ताक में है﴾२१﴿ सरकशों का ठिकाना﴾२२﴿ उसमें क़रनों रहेंगे[२०]﴾२३﴿ उसमें किसी तरह की ठण्डक का मज़ा न पाएंगे और न कुछ पीने को﴾२४﴿

तीसवां पारा - अम्म

७८ - सूरए नबा - पहला रूकू

(१) इसको सूरए तसाऊल और सूरए उम्मा यतसाअलून भी कहते हैं. यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें दो रूकू, चालीस या इक्तालीस आयतें, एक सौ तिहत्तर कलिमे और नौ सौ सत्तर अक्षर हैं.

(२) क़ुरैश के काफ़िर.

(३) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब मक्के वालों को तौहीद की तरफ़ बुलाया और मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और क़ुरआने करीम तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उनमें आपस में बात चीत शुरू हुई और एक दूसरे से पूछने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) क्या दीन लाए हैं. इस आयत में उनकी बात चीत का बयान फ़रमाया है और अज़मत के इज़हार के लिये समझाने के अन्दाज़ में बयान फ़रमाया, यानी वह क्या अज़ीमुश्शान बात है जिसमें ये लोग एक दूसरे से पूछ गछ कर रहे हैं. इसके बाद वह बात बयान फ़रमाई जाती है.

(४) बड़ी ख़बर से मुराद या क़ुरआन है या सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नबुव्वत और आपका दीन या मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने का मसअला.

(५) कि कुछ तो बिल्कुल इन्कार करते हैं, कुछ सन्देह में हैं और क़ुरआने करीम को उनमें से कोई तो जादू कहता है कोई शायरी, कोई तंत्र विद्या और कोई कुछ और. इसी तरह सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कोई जादूगर कहता है, कोई शायर, कोई तांत्रिक.

(६) उस झुटलाने और इन्कार के नतीजे को. इस के बाद अल्लाह तआला ने अपने अजायबे क़ुदरत में से कुछ चीज़ें ज़िक्र फ़रमाई ताकि ये लोग उनकी दलालत से अल्लाह तआला की तौहीद को जानें और यह समझें कि अल्लाह तआला आलम को पैदा करने और उसके बाद उसको फ़ना करने और फ़ना के बाद फिर हिसाब और जज़ा के लिये पैदा करने पर क़ादिर है.

मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप﴾२५﴿ जैसे को तैसा बदला[२१]﴾२६﴿ बेशक उन्हें हिसाब का डर न था[२२]﴾२७﴿ और उन्होंने हमारी आयतें हद भर झुटलाईं﴾२८﴿ और हमने[२३] हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है[२४]﴾२९﴿ अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ाएंगे मगर अज़ाब﴾३०﴿

दूसरा रूकू

बेशक डर वालों को कामयाबी की जगह है[१]﴾३१﴿ बाग़ हैं[२] और अंगूर﴾३२﴿ और उठते जोबन वालियाँ एक उम्र की﴾३३﴿ और छलकता जाम[३]﴾३४﴿ जिस में न कोई बेहूदा बात सुनें और न झुटलाना[४]﴾३५﴿ सिला तुम्हारे रब की तरफ़ से[५] निहायत काफ़ी अता﴾३६﴿ वह जो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है रहमान कि उस से बात करने का इख़्तियार न रखेंगे[६]﴾३७﴿ जिस दिन जिब्रील खड़ा होगा और सब फ़रिश्ते परा बांधे, कोई न बोल सकेगा[७] मगर जिसे रहमान ने इज़्न (आज्ञा) दिया[८] और उसने ठीक बात कही[९]﴾३८﴿ वह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह बना ले[१०]﴾३९﴿ हम तुम्हें[११] एक अज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया[१२] जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा[१३] और काफ़िर कहेगा, हाय मैं किसी तरह ख़ाक हो जाता[१४]﴾४०﴿

७९ - सूरए नाज़िआत

सूरए नाज़िआत मक्का में उतरी, इसमें ४६ आयतें, दो रूकू हैं.

पहला रूकू

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

क़सम उनकी[२] कि सख़्ती से जान खींचें[३]﴾१﴿ और नर्मी से बन्द खोलें[४]﴾२﴿

اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ
كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ
مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا
دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً
حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ
مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ
اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ
شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

(٧٩) سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ (٨١) اٰيَاتُهَا ٤٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ

(७) कि तुम उसमें रहो और वह तुम्हारी क़रारगाह हो.
(८) जिन से ज़मीन साबित और क़ायम रहे.
(९) मर्द और औरत.
(१०) तुम्हारे जिस्मों के लिये, ताकि उससे कोफ़्त और थकान दूर हो और राहत हासिल हो.
(११) जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है.
(१२) कि तुम उस में अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और अपनी रोज़ी तलाश करो.
(१३) जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और पुरानापन और बोसीदगी यानी सड़न गलन उन तक राह नहीं पाती, इन चुनाइयों से मुराद सात आसमान हैं.
(१४) यानी सूरज जिसमें रौशनी भी है और गर्मी भी.
(१५) तो जिसने इतनी चीज़ें पैदा कर दीं, वह इन्सान को मरने के बाद ज़िन्दा करे तो क्या तअज्जुब. और इन चीज़ों का पैदा करना हिकमत वाले का काम है और हिकमत वाले का काम हरगिज़ बेकार नहीं होता और मरने के बाद उठने और सज़ा और जज़ा के इन्कार करने से लाज़िम आता है कि इन्कार करने वाले के नज़्दीक तमाम काम बेकार हों और बेकार होना बातिल, तो दोबारा उठाए जाने और जज़ा का इन्कार भी बातिल. इस मज़बूत दलील से साबित हो गया कि मरने के बाद उठना और हिसाब व जज़ा ज़रूर है, इसमें शक नहीं.
(१६) सवाब और अज़ाब के लिये.
(१७) इससे मुराद सूर का आख़िरी बार फूंका जाना है.

سَبْحًا ۙ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ يَوْمَ
تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ قُلُوْبٌ
يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ يَقُوْلُوْنَ
ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ؕ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ
قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ
اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ اِذْهَبْ اِلٰى
فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰۤى اَنْ تَزَكّٰى ۙ وَ
اَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۚ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۖ
فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۖ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۖ
فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۖ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ
وَالْاُوْلٰى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ؕ
ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰىهَا ۫ رَفَعَ سَمْكَهَا

और आसनी से पैरें[५]﴾३﴿ फिर आगे बढ़कर जल्द पहुंचें[६]﴾४﴿ फिर काम की तदबीर करें[७]﴾५﴿ कि काफ़िरों पर ज़रूर अज़ाब होगा जिस दिन थरथराएगी थरथराने वाली[८]﴾६﴿ उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली[९]﴾७﴿ कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे[१०]﴾८﴿ आँख ऊपर न उठा सकेंगे[१०]﴾९﴿ काफ़िर[११] कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाँव पलटेंगे[१२]﴾१०﴿ क्या जब हम गली हड्डियाँ हो जाएंगे[१३]﴾११﴿ बोले यूं तो यह पलटना तो निरा नुक़सान है[१४]﴾१२﴿ तो वह[१५] नहीं मगर एक झिड़की[१६]﴾१३﴿ जभी वो खुले मैदान में आ पड़े होंगे[१७]﴾१४﴿ क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई[१८]﴾१५﴿ जब उसे उसके रब ने पाक जंगल तुवा में[१९] पुकारा﴾१६﴿ कि फ़िरऔन के पास जा उसने सर उठाया[२०]﴾१७﴿ उससे कह, क्या तुझे रग़बत इस तरफ़ है कि सुथरा हो[२१]﴾१८﴿ और तुझे तेरे रब की तरफ़[२२] राह बताऊं कि तू डरे[२३]﴾१९﴿ फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी दिखाई[२४]﴾२०﴿ इस पर उसने झुटलाया[२५]और नाफ़रमानी की﴾२१﴿ फिर पीठ दी[२६] अपनी कोशिश में लगा[२७]﴾२२﴿ तो लोगों को जमा किया[२८] फिर पुकारा﴾२३﴿ फिर बोला, मैं तुम्हारा सबसे ऊंचा रब हूँ[२९]﴾२४﴿ तो अल्लाह ने उसे दुनिया और आख़िरत दोनों के अज़ाब में पकड़ा[३०]﴾२५﴿ बेशक इस में सीख मिलती है उसे जो डरे[३१]﴾२६﴿

दूसरा रूकू

क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना[१] मुश्किल या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया﴾२७﴿ उसकी छत

(१८) अपनी क़ब्रों से हिसाब के लिये हश्र के मैदान की तरफ़.
(१९) और उसमें राहें बन जाएंगी, उनसे फ़रिश्ते उतरेंगे.
(२०) जिनकी हद नहीं यानी हमेशा रहेंगे.
(२१) जैसे अमल, वैसी जज़ा यानी जैसा कुफ़्र बदतरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अज़ाब उनको होगा.
(२२) क्योंकि वो मरने के बाद उठने के इन्कारी थे.
(२३) लौहे मेहफ़ूज़ में.
(२४) उनके तमाम अच्छे बुरे कर्म हमारी जानकारी में हैं हम उनपर जज़ा देंगे और आख़िरत में अज़ाब के वक़्त उनसे कहा जाएगा.

सूरए नबा - दूसरा रूकू

(१) जन्नत में, जहाँ उन्हें अज़ाब से निजात होगी और हर मुराद हासिल होगी.
(२) जिन में क़िस्म क़िस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त.
(३) नफ़ीस शराब का.
(४) यानी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी, न वहाँ कोई किसी को झुटलाएगा.
(५) तुम्हारे कर्मों का.
(६) उसके ख़ौफ़ के कारण.
(७) उसके रोब और जलाल से.
(८) कलाम या शफ़ाअत का.
(९) दुनिया में, और उसी के मुताबिक़ अमल किया. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए तैय्यिबह ला इलाहा

इल्लल्लाह मुराद है.
(१०) नेक कर्म करके ताकि अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहे.
(११) ऐ काफ़िरो !
(१२) इससे मुराद आख़िरत का अज़ाब है.
(१३) यानी हर नेकी बदी उसके अआमाल-नामे में दर्ज होगी जिसको वह क़यामत के रोज़ देखेगा.
(१४) ताकि अज़ाब से मेहफ़ूज़ रहता. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा. अगर सींग वाले ने बेसींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिलाया जाएगा. इसके बाद वो सब ख़ाक कर दिये जाएंगे. यह देखकर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता. कुछ मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी बयान किये हैं कि मूमिनों पर अल्लाह तआला के इनआम देखकर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वह दुनिया में ख़ाक होता यानी विनम्र होता, घमण्डी और सरकश न होता. एक क़ौल मुफ़स्सिरों का यह भी है कि काफ़िर से मुराद इब्लीस है जिसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर तअना किया था कि वो मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर घमण्ड किया था. जब वह हज़रत आदम और उनकी ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आपको अज़ाब की सख़्ती में जकड़ा पाएगा तो कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता यानी हज़रत आदम की तरह मिट्टी से पैदा किया हुआ होता.

७९ - सूरए नाज़िआत - पहला रूकू

(१) सूरए नाज़िआत मक्के में उतरी. इसमें दो रूकू, छियालीस आयतें, एक सौ सत्तानवे कलिमे, सात सौ तिरपन अक्षर हैं.
(२) यानी उन फ़रिश्तों की.
(३) काफ़िरों की.
(४) यानी मूमिनों की जानें नर्मी से निकालें.
(५) जिस्म के अन्दर या आसमान और ज़मीन के बीच मूमिनों की रूहें लेकर.(जैसा कि हज़रत अली रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है)
(६) अपनी ख़िदमत पर जिसके मामूर हैं.(रूहुल बयान)
(७) यानी दुनिया के कामों के इन्तिज़ाम जो उनसे सम्बन्धित हैं, उनको पूरा करें. यह क़सम उस पर है.
(८) ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़, पहली बार सूर फूंके जाने से बेचैन हो जाएगी और तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी.
(९) यानी सूर दूसरी बार फूंका जाएगा जिससे हर चीज़ अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा कर दी जाएगी. इन दोनों सूरों के बीच चालीस साल का अन्तर होगा.
(१०) उस दिन की हौल और दहशत से यह हाल काफ़िरों का होगा.
(११) जो मरने के बाद उठने का इन्कार करते हैं. जब उनसे कहा जाता है कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो --
(१२) यानी मौत के बाद फिर ज़िन्दगी की तरफ़ वापस किये जाएंगे.
(१३) कण कण बिखरी हुई, फिर भी ज़िन्दा किये जाएंगे.
(१४) यानी अगर मौत के बाद ज़िन्दा किया जाना सही है और हम मरने के बाद उठाए गए तो उसमें हमारा बड़ा नुक़सान है क्योंकि हम दुनिया में उसको झुटलाते रहे. यह क़ौल उनका हंसी के तौर पर था. इसपर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बाद ज़िन्दा किये जाने को यह न समझो कि अल्लाह तआला के लिये कुछ दुशवार है क्योंकि सच्ची क़ुदरत वाले पर कुछ भी दुशवार नहीं.
(१५) सूर का आख़िरी बार फूंका जाना.
(१६) जिससे सब जमा कर लिये जाएं और जब आख़िरी बार सूर फूंका जाएगा.
(१७) ज़िन्दा होकर.
(१८) ये सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब है. जब क़ौम का झुटलाना आपको शाक़ और नागवार गुज़रा तो अल्लाह तआला ने आपकी तसल्ली के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने अपनी क़ौम से बहुत तकलीफ़ें उठाई थीं. मुराद यह है कि नबियों को ये बातें पेश आती रहती हैं आप इससे ग़मगीन न हों.
(१९) जो मुल्के शाम में तूर के क़रीब है.
(२०) और वह कुफ़्र और फ़साद में हद से गुज़र गया.
(२१) कुफ़्र और शिर्क और गुमराही और नाफ़रमानी से.
(२२) यानी उसकी ज़ात और सिफ़ात की पहचान की तरफ़.
(२३) उसके अज़ाब से.
(२४) चमकती हथैली और लाठी, दोनों चमत्कार.
(२५) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को.
(२६) यानी ईमान से मुंह फेरा.

فَسَوّٰىهَا ۙ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۪ وَالْاَرْضَ بَعْدَ
ذٰلِكَ دَحٰىهَا ؕ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۪ وَالْجِبَالَ
اَرْسٰىهَا ۙ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ؕ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ
الْكُبْرٰى ۫ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۙ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ
لِمَنْ يَّرٰى ۝ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۙ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ فَاِنَّ
الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ؕ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى
النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۙ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝
اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ۝

(٨٠) سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ (٢٤)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ۙ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

ऊंची की[२] फिर उसे ठीक किया[३]﴾२८﴿ उसकी रात अंधेरी की और उसकी रौशनी चमकाई[४]﴾२९﴿ और उसके बाद ज़मीन फैलाई[५] ﴾३०﴿ उसमें से[६] उसका पानी और चारा निकाला[७]﴾३१﴿ और पहाड़ों को जमाया [८]﴾३२﴿ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे को﴾३३﴿ फिर जब आएगी वह आम मुसीबत सब से बड़ी[९]﴾३४﴿ उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी[१०]﴾३५﴿ और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की जाएगी[११]﴾३६﴿ तो वह जिसने सरकशी की[१२]﴾३७﴿ और दुनिया की ज़िन्दगी को तर्जीह(प्राथमिकता) दी[१३]﴾३८﴿ तो बेशक जहन्नम ही उसका ठिकाना है﴾३९﴿ और वह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा[१४] और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका[१५]﴾४०﴿ तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है [१६]﴾४१﴿ तुम से क़यामत को पूछते हैं कि वह कब के लिये ठहरी हुई है ﴾४२﴿ तुम्हें उसके बयान से क्या तअल्लुक़[१७]﴾४३﴿ तुम्हारे रब ही तक उसकी इन्तिहा है﴾४४﴿ तुम तो फ़क़त(केवल) उसे डराने वाले हो जो उससे डरे﴾४५﴿ मानो जिस दिन वो उसे देखेंगे[१८] दुनिया में न रहे थे मगर एक शाम या उसके दिन चढ़े﴾४६﴿

८० - सूरए अबस

सूरए अबस मक्का में उतरी, इसमें ४२ आयतें, एक रूकू है .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

त्यौरी चढ़ाई और मुंह फेरा[२]﴾१﴿ उसपर कि उसके पास वह नाबीना(अंधा) हाज़िर हुआ[३]﴾२﴿ और तुम्हें क्या मालूम

(२७) फ़साद फैलाया.
(२८) यानी जादूगरों को और अपने लश्करों को.
(२९) यानी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं.
(३०) दुनिया में डुबोया और आख़िरत में दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा.
(३१) अल्लाह तआला से . इसके बाद दोबारा उठाए जाने का इन्कार करने वालों को इताब फ़रमाया जाता है.

सूरए नाज़िआत - दूसरा रूकू

(१) तुम्हारे मरने के बाद.
(२) सुतून या खम्भे के बिना.
(३) ऐसा कि उसमें कोई ख़लल या रूकावट नहीं.
(४) आफ़ताब के नूर को ज़ाहिर फ़रमाकर.
(५) जो पैदा तो आसमान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी.
(६) चश्मे जारी फ़रमाकर.
(७) जिसे जानदार खाते हैं.
(८) धरती पर, ताकि उसको सुकून हो.
(९) यानी दूसरी बार सूर फूंका जाएगा जिसमें मुर्दे उठाए जाएंगे.
(१०) दुनिया में, अच्छी या बुरी.
(११) और तमाम ख़ल्क़ उसको देखे.
(१२) हद से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया.

يَزَّكّٰىٓ ۝٣ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥
فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝٧ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ
يَسْعٰى ۝٨ وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠ كَلَّآ اِنَّهَا
تَذْكِرَةٌ ۝١١ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣ مَّرْفُوْعَةٍ
مُّطَهَّرَةٍ ۝١٤ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۝١٥ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝١٦ قُتِلَ الْاِنْسَانُ
مَآ اَكْفَرَهٗ ۝١٧ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨ مِنْ نُّطْفَةٍ
خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝٢٠ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١
ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝٢٣ فَلْيَنْظُرِ
الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝٢٤ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۝٢٥ ثُمَّ شَقَقْنَا
الْاَرْضَ شَقًّا ۝٢٦ فَاَنْبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝٢٧ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۝٢٨
وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۝٢٩ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝٣٠ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۝٣١
مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٢ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝٣٤ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝٣٥ وَصَاحِبَتِهٖ

وقف لازم

शायद वह सुथरा हो[४]﴿३﴾ या नसीहत ले तो उसे नसीहत फ़ायदा दे ﴿४﴾ वह जो वेपरवाह बनता है[५]﴿५﴾ तुम उसके तो पीछे पड़ते हो[६]﴿६﴾ और तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं इसमें कि वह सुथरा न हो[७]﴿७﴾ और वह जो तुम्हारे हुज़ूर मलकता आया[८]﴿८﴾ और वह डर रहा है[९]﴿९﴾ तो उसे छोड़ कर और तरफ़ मश्ग़ूल होते हो ﴿१०﴾ यूं नहीं[१०] यह तो समझाना है [११]﴿११﴾ तो जो चाहे उसे याद करे [१२]﴿१२﴾ उन सहीफ़ों(धर्मग्रन्थों) में कि इज़्ज़त वाले हैं [१३]﴿१३﴾ बलन्दी वाले[१४] पाकी वाले[१५]﴿१४﴾ ऐसों के हाथ लिखे हुए﴿१५﴾ जो करम वाले नेकोई वाले[१६]﴿१६﴾ आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्रा है[१७]﴿१७﴾ उसे काहे से बनाया﴿१८﴾ पानी की बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे तरह तरह के अन्दाज़ों पर रखा[१८]﴿१९﴾ फिर उसे रास्ता आसान किया[१९]﴿२०﴾ फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में रखवाया[२०]﴿२१﴾ फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला[२१]﴿२२﴾ कोई नहीं उसने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुआ था[२२]﴿२३﴾ तो आदमी को चाहिये अपने खानों को देखे[२३]﴿२४﴾ कि हमने अच्छी तरह पानी डाला[२४]﴿२५﴾ फिर ज़मीन को ख़ूब चीरा﴿२६﴾ तो उसमें उगाया अनाज﴿२७﴾ और अंगूर और चारा﴿२८﴾ और ज़ैतून और खजूर﴿२९﴾ और घने बाग़ीचे﴿३०﴾ और मेवे और दूब﴿३१﴾ तुम्हारे फ़ायदे को और तुम्हारे चौपायों के﴿३२﴾ फिर जब आएगी वह कान फाड़ने वाली चिंघाड़[२५]﴿३३﴾ उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई ﴿३४﴾ और माँ और बाप ﴿३५﴾ और जोरू

(१३) आख़िरत पर, और नफ़्सानियत का पालन किया.
(१४) और उसने जाना कि उसे क़यामत के दिन अपने रब के सामने हिसाब के लिये हाज़िर होना है.
(१५) हराम चीज़ों की.
(१६) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, मक्के के काफ़िर.
(१७) और उसका वक़्त बताने से क्या ग़रज़.
(१८) यानी काफ़िर क़यामत को, जिस का इन्कार करते हैं. तो उसके हौल और दहशत से अपनी ज़िन्दगी की मुद्दत भूल जाएंगे और ख़याल करेंगे कि --

८० - सूरए अबस

(१) सूरए अबस मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, बयालीस आयतें, एक सौ तीस कलिमे और पाँच सौ तैंतीस अक्षर हैं.
(२) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने.
(३) यानी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम. नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उतबह बिन रबीआ, अबू जहल बिन हिशाम और अबब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और उबई बिन ख़लफ़ और उमैया बिन ख़लफ़, इन क़ुरैशी सरदारों को इस्लाम की तरफ़ बुला रहे थे. इस बीच अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नाबीना हाज़िर हुए और उन्होंने नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बार बार पुकार कर अर्ज़ किया कि जो अल्लाह तआला ने आपको सिखाया है, मुझे तालीम फ़रमाइये. इब्ने उम्मे मक्तूम ने यह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से बात कर रहे हैं इससे बात चीत में रूकावट पड़ेगी. यह बात हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बुरी लगी और नागवारी के निशान चेहरए अक़दस पर ज़ाहिर हुए और हुज़ूर अपनी दौलत सराए अक़दस की तरफ़ वापस हुए. इसपर ये आयतें उतरीं और नाबीना फ़रमाने में अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम की मअज़ूरी की तरफ़ इशारा है कि बात काटने की ग़लती उनसे इस कारण वाक़े हुई कि वह देखने से मअज़ूर हैं. इस आयत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की इज़्ज़त फ़रमाते थे.

وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾
وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾
أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾ ع

آياتها ٢٩ (٨١) سُورَةُ التَّكْوِيرِ مَكِّيَّةٌ (٧) ركوعها ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْجِبَالُ
سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾
وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَإِذَا
الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِأَيِّ ذَنبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الصُّحُفُ
نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾
وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾ فَلَا
أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

منزل ٧

और बेटों से[२६] ﴿३६﴾ उनमें से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वही उसे बस है[२७] ﴿३७﴾ कितने मुंह उस दिन रौशन होंगे[२८] ﴿३८﴾ हंसते खुशियाँ मनाते[२९] ﴿३९﴾ और कितने मुंहों पर उस दिन गर्द पड़ी होगी ﴿४०﴾ उनपर सियाही चढ़ रही है[३०] ﴿४१﴾ ये वही हैं काफ़िर बदकार ﴿४२﴾

८१ - सूरए तकवीर

सूरए तकवीर मक्का में उतरी, इसमें २९ आयतें, एक रूकू है .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

जब धूप लपेटी जाए[२] ﴿१﴾ और जब तारे झड़ पड़ें[३] ﴿२﴾ और जब पहाड़ चलाए जाएं[४] ﴿३﴾ और जब थकी ऊंटनियाँ[५] छूटी फिरें[६] ﴿४﴾ और जब वहशी जानवर जमा किये जाएं[७] ﴿५﴾ और जब समन्दर सुलगाए जाएं[८] ﴿६﴾ और जब जानों के जोड़ बनें[९] ﴿७﴾ और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए[१०] ﴿८﴾ किस ख़ता पर मारी गई [११] ﴿९﴾ और जब अअमालनामे खोले जाएं ﴿१०﴾ और जब आसमान जगह से खींच लिया जाए[१२] ﴿११﴾ और जब जहन्नम भड़काया जाए[१३] ﴿१२﴾ और जब जन्नत पास लाई जाए[१४] ﴿१३﴾ हर जान को मालूम हो जाएगा जो हाज़िर लाई[१५] ﴿१४﴾ तो क़सम है उन[१६] की जो उलटे फिरें ﴿१५﴾ सीधे चलें थम रहें[१७] ﴿१६﴾ और रात की जब पीठ दे[१८] ﴿१७﴾

(४) गुनाहों से, आपका इरशाद सुनकर.
(५) अल्लाह तआला से और ईमान लाने से अपने माल के कारण.
(६) और उसके ईमान लाने के लालच में उसके पीछे पड़ते हो.
(७) ईमान लाकर और हिदायत पाकर क्योंकि आपके ज़िम्मे दावत देना और अल्लाह का संदेश पहुंचा देना है.
(८) यानी इब्ने उम्मे मक्तूम.
(९) अल्लाह तआला से.
(१०) ऐसा न कीजिये.
(११) यानी क़ुरआनी आयतें लोगों के लिये नसीहत हैं.
(१२) और उससे सबक़ हासिल करे.
(१३) अल्लाह तआला के नज़्दीक.
(१४) बड़ी इज़्ज़त और क़द्र वाला.
(१५) कि इन्हें पाकों के सिवा कोई न छुए.
(१६) अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार, और वो फ़रिश्ते हैं जो इसको लौहे मेहफ़ूज़ से नक़्ल करते हैं.
(१७) कि अल्लाह तआला की बहुत सी नेअमतों और बेहद एहसानों के बावुजूद कुफ़्र करता है.
(१८) कभी नुत्फ़े की शक्ल में, कभी अलक़े की सूरत में, कभी मुदग़े की शक्ल में, आफ़रीनश यानी उत्पत्ति के पूरे होने तक.
(१९) माँ के पेट से निकल आने का.
(२०) कि मौत के बाद बेइज़्ज़त न हो.
(२१) यानी मरने के बाद हिसाब और जज़ा के लिये फिर उसके वास्ते ज़िन्दगानी मुक़र्रर की.
(२२) उसके रब का, यानी काफ़िर ईमान लाकर अल्लाह का हुक्म बजा न लाया.
(२३) जिन्हें खाता है और जो उसकी ज़िन्दगी का आधार हैं कि उनमें उसके रब की क़ुदरत ज़ाहिर है किस तरह शरीर का अंग बनते हैं और किस अदभुत निज़ाम से काम में आते हैं और किस तरह रब तआला अता फ़रमाता है. इन हिकमतों का बयान फ़रमाया जाता है.
(२४) बादल से.
(२५) यानी क़यामत के दिन दूसरी बार सूर फूंके जाने की हौलनाक आवाज़, जो मख़्लूक़ को बहरा कर देगी.

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ ذِي
قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ
رَجِيمٍ ۝ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝
لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

(٨٢) سُورَةُ الْانْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ (٨٢) آياتها ١٩ ركوعها ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ
فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ
وَأَخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝
الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ

और सुब्ह की जब दम ले[१९] ﴿१८﴾ बेशक यह[२०] इज़्ज़त वाले रसूल[२१] का पढ़ना है ﴿१९﴾ जो क़ुव्वत वाला है अर्श के मालिक के हुज़ूर इज़्ज़त वाला ﴿२०﴾ वहाँ उसका हुक्म माना जाता है[२२] अमानत दार है[२३] ﴿२१﴾ और तुम्हारे साहब[२४] मजनून (पागल) नहीं[२५] ﴿२२﴾ और बेशक उन्होंने[२६] उसे रौशन किनारे पर देखा[२७] ﴿२३﴾ और यह नबी ग़ैब बताने में कंजूस नहीं ﴿२४﴾ और क़ुरआन, मरदूद शैतान का पढ़ा हुआ नहीं ﴿२५﴾ फिर किधर जाते हो[२८] ﴿२६﴾ वह तो नसीहत ही है सारे जगत के लिये ﴿२७﴾ उसके लिये जो तुम में सीधा होना चाहे[२९] ﴿२८﴾ और तुम क्या चाहो मगर यह कि चाहे अल्लाह सारे जगत का रब ﴿२९﴾

८२ - सूरए इन्फ़ितार

सूरए इन्फ़ितार मक्का में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

जब आसमान फट पड़े ﴿१﴾ और जब तारे झड़ पड़ें ﴿२﴾ और जब समन्दर बहा दिये जाएं[२] ﴿३﴾ और जब क़ब्रें कुरेदी जाएं[३] ﴿४﴾ हर जान जान लेगी जो उसने आगे भेजा[४] और जो पीछे[५] ﴿५﴾ ऐ आदमी, तुझे किस चीज़ ने धोखा दिया अपने करम वाले रब से[६] ﴿६﴾ जिसने तुझे पैदा किया[७] फिर ठीक बनाया[८] फिर हमवार फ़रमाया[९] ﴿७﴾ जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब

(२६) उनमें से किसी की तरफ़ न देखेगा, अपनी ही पड़ी होगी.

(२७) क़यामत का हाल और उसकी दहशत बयान फ़रमाने के बाद मुकल्लिफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वो दो क़िस्म हैं - सईद और शक़ी. जो सईद हैं उनका हाल बयान होता है.

(२८) ईमान के नूर से या रात की इबादतों से या वुज़ू के निशानों से.

(२९) अल्लाह तआला की नेअमत और करम और उसकी रज़ा. इसके बाद शक़ी लोगों का हाल बयान फ़रमाया जाता है.

(३०) ज़लील हाल, वहशत ज़दा सूरत.

८१ - सूरए तकवीर

(१) सूरए कुव्विरत मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, उन्तीस आयतें, एक सौ चार कलिमे, पाँच सौ तीस अक्षर हैं. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि क़यामत के दिन को ऐसा देखे गोया वह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए तकवीर और सूरए इज़स्समाउन फ़तरत और सूरए इज़स्समाउन शक़्क़त पढ़े. (तिरमिज़ी)

(२) यानी सूरज का नूर ढल जाए.

(३) बारिश की तरह आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे.

(४) और धूल की तरह हवा में उड़ते फिरें.

(५) जिनके गर्भ को दस महीने गुज़र चुके हों और ब्याहने का वक़्त क़रीब आ गया हो.

(६) न उनको कोई चराने वाला हो न देखभाल करने वाला. उस रोज़ की दहशत का यह आलम हो और लोग अपने हाल में ऐसे मुब्तिला हों कि उनकी परवाह करने वाला कोई न हो.

(७) क़यामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाएं कि एक दूसरे से बदला लें फिर ख़ाक कर दिये जाएं.

(८) फिर वो ख़ाक हो जाएं.

(९) इस तरह कि नेक नेकों के साथ और बुरे बुरों के साथ या ये मानी कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जाएं या यह कि अपने कर्मों से मिला दी जाएं या यह कि ईमानदारों की जानें हूरों के और काफ़िरों की जानें शैतानों के साथ मिला दी जाएं.

(१०) यानी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़्न की गई हो जैसा कि अरब का तरीक़ा था कि जिहालत के ज़माने में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे.

رَكَّبَكَ ۝٨ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝٩ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ
لَحٰفِظِيْنَ ۝١٠ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۝١١ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝١٢
اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝١٣ وَاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۝١٤
يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ۝١٥ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ۝١٦ وَمَا
اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٧ ثُمَّ مَا اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٨
يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۭ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۝١٩

(٨٣) سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ (٨٦) — اٰيَاتُهَا ٣٦ — رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝١ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ
يَسْتَوْفُوْنَ ۝٢ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝٣
اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝٤ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥
يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ
الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝٧ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝٨ كِتٰبٌ

दिया[10]﴾८﴿ कोई नहीं[11] बल्कि तुम इन्साफ़ होने को झुटलाते हो[12]﴾९﴿ और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं[13]﴾१०﴿ इज़्ज़तदार लिखने वाले[14]﴾११﴿ जानते हैं जो कुछ तुम करो[15]﴾१२﴿ बेशक नेकी करने वाले[16] ज़रूर चैन में हैं[17]﴾१३﴿ और बेशक बदकार[18] ज़रूर दोज़ख़ में हैं﴾१४﴿ इन्साफ़ के दिन उसमें जाएंगे ﴾१५﴿ और उससे कहीं छुप न सकेंगे﴾१६﴿ और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन﴾१७﴿ फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन﴾१८﴿ जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी[19] और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है﴾१९﴿

८३ - सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन

सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन मक्का में उतरी, इसमें ३६ आयतें, एक रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]

कम तौलने वालों की ख़राबी ह﴾१ट वो कि जब औरों से माप लें पूरा लें﴾२﴿ और जब उन्हें माप तौल कर दें कम कर दें﴾३﴿ क्या इन लोगों को गुमान नहीं कि इन्हें उठना है﴾४﴿ एक अज़मत वाले दिन के लिये[2]﴾५﴿ जिस दिन सब लोग[3] सारे जगत के रब के हुज़ूर खड़े होंगे﴾६﴿ बेशक काफ़िरों की लिखत[4] सबसे नीची जगह सिज्जीन में है [5]﴾७﴿ और तू क्या

(११) यह सवाल क़ातिल की फटकार के लिये है ताकि वह लड़की जवाब दे कि मैं बेगुनाह मारी गई.
(१२) जैसे ज़िब्ह की हुई बकरी के जिस्म से खाल खींच ली जाती है.
(१३) अल्लाह के दुश्मनों के लिये.
(१४) अल्लाह तआला के प्यारों के.
(१५) नेकी या बदी.
(१६) सितारों.
(१७) ये पाँच सितारे हैं, ज़ुहल, मुश्तरी, मिर्रीख़, ज़ोहरा, अतारुद. (जैसा हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहो अन्हो ने रिवायत किया)
(१८) और उसकी तारीकी हलकी पड़े.
(१९) और उसकी रौशनी ख़ूब फैले.
(२०) क़ुरआन शरीफ़.
(२१) हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम.
(२२) यानी आसमानों में फ़रिश्ते उसकी फ़रमाँबरदारी करते हैं.
(२३) अल्लाह की वही का.
(२४) हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.
(२५) जैसा कि मक्के के काफ़िर कहते हैं.
(२६) यानी जिब्राईले अमीन को उनकी असली सूरत में.
(२७) यानी सूरज के उदय होने की जगह पर.
(२८) और क्यों क़ुरआन से मुंह फेरते हो.
(२९) यानी जिसको हक़ का अनुकरण और उसपर डटे रहना मन्ज़ूर हो.

८२ - सूरए इन्फ़ितार

(१) सूरए इन्फ़ितार मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, उन्नीस आयतें, अस्सी कलिमे और तीन सौ सत्ताईस अक्षर हैं.

(२) और मीठा व ख़ारी सब मिलकर एक हो जाएं.
(३) और उनके मुर्दे ज़िन्दा करके निकाले जाएं.
(४) नेक कर्म या बुरे.
(५) छोड़ी, नेकी या बदी और एक क़ौल यह है कि जो आगे भेजा, उससे सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उससे माल जायदाद और मीरास मुराद हैं.
(६) कि तूने उसकी नेअमत और करम के बावुजूद उसका हक़ न पहचाना और उसकी नाफ़रमानी की.
(७) और नेस्त से हस्त किया, शून्य से अस्तित्व में लाया.
(८) सम्पूर्ण अंगों वाला, सुनता देखता.
(९) अंगों में संतुलन रखा.
(१०) लम्बा या ठिगना, सुन्दर या बदसूरत, गोरा या काला, मर्द या औरत.
(११) तुम्हें अपने रब के करम पर घमण्डी न होना चाहिये.
(१२) और जज़ा के दिन के इन्कारी हो.
(१३) तुम्हारी करनी और कहनी के, और वो फ़रिश्ते हैं.
(१४) तुम्हारे कर्मों के.
(१५) नेकी या बदी, उनसे तुम्हारा कोई कर्म छुपा नहीं.
(१६) यानी सच्चे ईमान वाले मूमिन.
(१७) जन्नत में.
(१८) काफ़िर.
(१९) यानी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़ा न पहुंचा सकेगा. (ख़ाज़िन)

८३ - सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन

(१) सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन एक क़ौल में मक्की है और एक में मदनी, और एक क़ौल यह है कि हिजरत के ज़माने में मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तैय्यिबह के बीच उतरी. इस सूरत में एक रूकू, छत्तीस आयतें, एक सौ उन्हत्तर कलिमे और सात सौ तीस अक्षर हैं. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जब मदीनए तैय्यिबह तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहाँ के लोग नाप तौल में बेईमानी करते थे विशेषकर एक व्यक्ति अबू जुहैना ऐसा था कि वह दो माप रखता था, लेने का और, देने का और. उन लोगों के बारे में ये आयतें नाज़िल हुई और उन्हें माप तौल में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया गया.
(२) यानी क़यामत का दिन. उस रोज़ कण कण का हिसाब किया जाएगा.
(३) अपनी क़ब्रों से उठकर.
(४) यानी उनके अअमाल-नामे.
(५) सिज्जीन सातवीं ज़मीन की तह में एक जगह है जो इब्लीस और उसके लश्करों का स्थान है.

مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ
الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذَا تُتْلَىٰ
عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ
عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ كَلَّا إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُو الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ
يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ
الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾ كِتَابٌ
مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾
عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ
النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾ خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي
ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

منزل ٧

जाने सिज्जीन कैसी है[६]﴿८﴾ वह लिखत एक मुहर किया लेखा है [७]﴿९﴾ उस दिन[८] झुटलाने वालों की ख़राबी है﴿१०﴾ जो इन्साफ़ के दिन को झुटलाते हैं [९]﴿११﴾ और उसे न झुटलाएगा मगर हर सरकश[१०]﴿१२﴾ जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाएं कहे[११] अगलों की कहानियाँ हैं﴿१३﴾ कोई नहीं[१२] बल्कि उनके दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उनकी कमाइयों ने[१३]﴿१४﴾ हाँ हाँ बेशक वो उस दिन[१४] अपने रब के दीदार से मेहरूम हैं [१५]﴿१५﴾ फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना ﴿१६﴾ फिर कहा जाएगा यह है वह[१६] जिसे तुम झुटलाते थे[१७]﴿१७﴾ हाँ हाँ बेशक नेकों की लिखत[१८] सब से ऊंचा महल इल्लीयीन में है [१९]﴿१८﴾ और तू क्या जाने इल्लीयीन कैसी है [२०]﴿१९﴾ वह लिखत एक मुहर किया लेखा है[२१]﴿२०﴾ कि नज़्दीकी वाले[२२] जिसकी ज़ियारत करते हैं ﴿२१﴾ बेशक नेकी वाले ज़रूर चैन में हैं﴿२२﴾ तख़्तों पर देखते हैं[२३]﴿२३﴾ तू उनके चेहरों में चैन की ताज़गी पहचाने [२४]﴿२४﴾ निथरी शराब पिलाई जाएंगे जो मुहर की हुई रखी है[२५]﴿२५﴾ उसकी मुहर मुश्क पर है, और उसी पर चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले [२६]﴿२६﴾ और उसकी मिलौनी तस्नीम से है[२७]﴿२७﴾ वह चश्मा जिससे नज़्दीकी वाले पीते हैं[२८]﴿२८﴾ बेशक मुजरिम लोग[२९] ईमान वालों से[३०] हंसा करते थे﴿२९﴾ और जब वो[३१] उनपर गुज़रते तो ये आपस में उनपर आँखों से इशारे करते[३२]﴿३०﴾

(६) यानी वह अत्यन्त हौल और हैबत की जगह है.
(७) जो न मिट सकता है न बदल सकता है.
(८) जबकि वह लेखा निकाला जाएगा.
(९) और जज़ा के दिन यानी क़यामत के इन्कारी हैं.
(१०) हद से गुज़रने वाला.
(११) उनकी निस्बत, कि ये --
(१२) उसका कहना ग़लत है.
(१३) उन बुराइयों और गुनाहों ने जो वो करते हैं यानी अपने बुरे कर्मों की शामत से उनके दिल ज़ंग वाले और काले पड़ गए. हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब बन्दा कोई गुनाह करता है उसके दिल में एक काला बिन्दु पैदा होता है. जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबह इस्तिग़फ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वह बिन्दु बढ़ता है यहाँ तक कि सारा दिल काला हो जाता है और यही रैन यानी वह ज़ंग है जिसका आयत में ज़िक्र हुआ. (तिरमिज़ी)
(१४) यानी क़यामत का दिन.
(१५) जैसा कि दुनिया में उसकी तौहीद से मेहरूम रहे. इस आयत से साबित हुआ कि मूमिनों को आख़िरत में अल्लाह के दीदार की नेअमत मयस्सर आएगी क्योंकि दीदार से मेहरूमी का ज़िक्र काफ़िरों के सिलसिले में किया गया और जो चीज़ काफ़िरों के लिये सज़ा हो वह मुसलमान के हक़ में साबित नहीं हो सकती तो लाज़िम आया कि मूमिनों के हक़ में यह मेहरूमी साबित न हो. हज़रत इमाम मलिक रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि जब उसने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से मेहरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा.
(१६) अज़ाब.
(१७) दुनिया में.
(१८) यानी सच्चे मूमिनों के अअमाल-नामे.

पारा ३० - सफ़ा ९४३

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا
إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝ فَالْيَوْمَ
الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ
يَنْظُرُونَ ۝ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

سُورَةُ الانْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا
الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ
مَسْرُورًا ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝ فَسَوْفَ
يَدْعُو ثُبُورًا ۝ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ

और जब[३३] अपने घर पलटते ख़ुशियाँ करते पलटते[३४] ﴿३१﴾ और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक ये लोग बहके हुए हैं[३५] ﴿३२﴾ और ये[३६] कुछ उनपर निगहबान बना कर न भेजे गए[३७] ﴿३३﴾ तो आज[३८] ईमान वाले काफ़िरों से हंसते हैं[३९] ﴿३४﴾ तख़्तों पर बैठे देखते हैं[४०] ﴿३५﴾ क्यों कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का[४१] ﴿३६﴾

८४ - सूरए इन्शिक़ाक़

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१] जब आसमान शक़ हो[२] ﴿१﴾ और अपने रब का हुक्म सुने[३] और उसे सज़ावार ही यह है ﴿२﴾ और जब ज़मीन दराज़ की जाए[४] ﴿३﴾ और को कुछ उसमें है[५] डाल दे और ख़ाली हो जाए ﴿४﴾ और अपने रब का हुक्म सुने[६] और जैसे सज़ावार ही यह है[७] ﴿५﴾ ऐ आदमी, बेशक तुझे अपने रब की तरफ़[८] ज़रूर दौड़ना है फिर उससे मिलना[९] ﴿६﴾ तो वह जो अपना अअमाल-नामा दाएं हाथ में दिया जाए[१०] ﴿७﴾ उससे बहुत जल्द सहल हिसाब लिया जाएगा[११] ﴿८﴾ और अपने घर वालों की तरफ़[१२] ख़ुश ख़ुश पलटेगा[१३] ﴿९﴾ और वह जिसका अअमाल-नामा उसकी पीठ के पीछे दिया जाए[१४] ﴿१०﴾ वह जल्द ही मौत मांगेगा[१५] ﴿११﴾ और भड़कती आग में जाएगा ﴿१२﴾ बेशक

(१९) इल्लिय्यीन सातवें आसमान में अर्श के नीचे है.
(२०) यानी उसकी शान अजीब अज़मत वाली है.
(२१) इल्लिय्यीन में, उसमें उनके कर्म लिखे हैं.
(२२) फ़रिश्ते.
(२३) अल्लाह तआला के करम और उसकी नेअमतों को, जो उसने उन्हें अता फ़रमाई और अपने दुश्मनों को जो तरह तरह के अज़ाब में गिरफ़्तार हैं.
(२४) कि वो ख़ुशी से चमकते दमकते होंगे और ख़ुशदिली के निशान उनके चेहरों पर दिखते होंगे.
(२५) कि नेक लोग ही उसकी मोहर तोड़ेंगे.
(२६) फ़रमाँबरदारी की तरफ़ पहल करके और बुराइयों से बाज़ रहकर.
(२७) जो जन्नत की शराबों में उत्तम है.
(२८) यानी मुक़र्रिबीन ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नत वालों की शराब में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है.
(२९) अबू जहल और वलीद बिन मुग़ीरह और आस बिन वाईल वग़ैरह काफ़िरों के सरदारों की तरह.
(३०) हज़रत अम्मार व ख़बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरह ग़रीब मूमिनों की तरह.
(३१) ईमान वाले.
(३२) तअने और ऐब के अन्दाज़ में. नक़्ल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो मुसलमानों की एक जमाअत में तशरीफ़ ले जा रहे थे. मुनाफ़िक़ों ने उन्हें देखकर आँखों से इशारे किये और मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ से हँसे और आपस में उन हज़रात के बारे में बेहूदा कलिमात कहे तो इससे पहले कि अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचें, ये आयतें उतरीं.
(३३) काफ़िर.
(३४) यानी मुसलमानों को बुरा कहकर आपस में उनकी हँसी बनाते और ख़ुश होते हुए.
(३५) कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए और दुनिया की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया. अल्लाह तआला फ़रमाता है.
(३६) काफ़िर.

वह अपने घर में[१६] ख़ुश था[१७]﴾१३﴿ वह समझा कि उसे फिरना नहीं[१८]﴾१४﴿ हाँ क्यों नहीं[१९] बेशक उसका रब उसे देख रहा है﴾१५﴿ तो मुझे क़सम है शाम के उजाले की[२०]﴾१६﴿ और रात की और जो चीज़ें उसमें जमा होती हैं[२१]﴾१७﴿ और चांद की जब पूरा हो[२२]﴾१८﴿ ज़रूर तुम मंज़िल ब मंज़िल चढ़ोगे[२३]﴾१९﴿ तो क्या हुआ उन्हें ईमान नहीं लाते[२४]﴾२०﴿ और जब क़ुरआन पढ़ा जाए सज्दा नहीं करते[२५]﴾२१﴿ बल्कि काफ़िर झुटला रहे हैं[२६]﴾२२﴿ और अल्लाह ख़ूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं[२७]﴾२३﴿ तो तुम उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बशारत(सूचना) दो[२८]﴾२४﴿ मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये वह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा﴾२५﴿

८५ - सूरए बुरूज

सूरए बुरूज मक्का में उतरी, इसमें २२ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
क़सम आसमान की जिसमें बुर्ज हैं[२]﴾१﴿ और उस दिन की जिसका वादा है[३]﴾२﴿ और उस दिन की जो गवाह है[४] और उस दिन की जिसमें हाज़िर होते हैं[५]﴾३﴿ खाई वालों पर लअनत हो[६]﴾४﴿ उस भड़कती आग वाले﴾५﴿ जब वो उसके किनारों पर बैठे थे[७]﴾६﴿ और वो ख़ुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे[८]﴾७﴿ और उन्हें मुसलमानों का क्या बुरा लगा, यही न, कि वो ईमान लाए

(३७) कि उनके अहवाल और अअमाल पर पकड़ करें बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह का हुक्म दिया गया है. वो अपना हाल दुरूस्त करें. दूसरों को बेवक़ूफ़ बताने और उनकी हंसी उड़ाने से क्या फ़ायदा उठा सकते हैं.
(३८) यानी क़यामत के दिन.
(३९) जैसा काफ़िर दुनिया में मुसलमानों की ग़रीबी और मेहनत पर हसंते थे. यहां मामला उलटा है. मूमिन हमेशा के ऐश और राहत में है और काफ़िर ज़िल्लत और ख़्वारी के हमेशा के अज़ाब में. जहन्नम के दरवाज़े की तरफ़ दौड़ते हैं, जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचते हैं, दरवाज़ा बन्द हो जाता है. बार बार ऐसा ही होता है. काफ़िरों की यह हालत देखकर मुसलमान उनसे हंसी करते हैं और मुसलमानों का हाल यह है कि वह जन्नत में जवाहिरात के.
(४०) काफ़िरों की ज़िल्लत और रूस्वाई और अज़ाब की सख़्ती को, और उसपर हंसते हैं.
(४१) यानी उन कर्मों का जो उन्हों ने दुनिया में किये थे.

८४ - सूरए इन्शक़ाक़

(१) सूरए इन्शक़ाक़ मक्के में उतरी. इसमें एक रूकु, पच्चीस आयतें, एक सौ सात कलिमे, चार सौ तीस अक्षर हैं.
(२) क़यामत क़ायम होने के वक़्त.
(३) अपने शक़ होने(फट जाने) के मुतअल्लिक़ और उसकी इताअत करे.
(४) और उसपर कोई इमारत और पहाड़ बाक़ी न रहे.
(५) यानी उसके पेट में ख़ज़ाने और मुर्दे, सबको बाहर.
(६) अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फैंक देने के मुतअल्लिक़ और उसकी इताअत करे.
(७) उस वक़्त इन्सान अपने कर्मों के फल देखेगा.
(८) यानी उसके समक्ष हाज़िरी के लिये. मुराद इससे मौत है (मदारिक)
(९) और अपने कर्मों का बदला पाना.
(१०) और वह मूमिन है.
(११) आसान हिसाब यह है कि उसपर उसके कर्म पेश किये जाएं, वह अपनी फ़रमाँबरदारी और गुमराही को पहचाने फिर

फ़रमाँबरदारी पर सवाब दिया जाए और नाफ़रमानी से तजावुज़ फ़रमाया जाए. यह सरल हिसाब है न इसमें सख़्ती, न यह कहा जाए कि ऐसा क्यों किया, न उज़्र की तलब हो, न उन पर हुज्जत क़ायम की जाए क्योंकि जिससे मुतालिबा किया गया उसे कोई उज़्र हाथ न आएगा. और वह कोई हुज्जत न पाएगा, रूस्वा होगा. (अल्लाह तआला हिसाब की सख़्ती से पनाह दे)

(१२) घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं चाहे वो हूरों में से हों या इन्सानों में से.

(१३) अपनी इस कामयाबी पर.

(१४) और वह काफ़िर है जिसका दायाँ हाथ तो उसकी गर्दन के साथ मिलाकर तौक़ में बाँध दिया जाएगा और बायाँ हाथ पीठ के पीछे कर दिया जाएगा, उसमें उसका अअमाल-नामा दिया जाएगा. इस हाल को देखकर वह जान लेगा कि वह जहन्नम वालों में से है तो ---

(१५) और या सुबूराह कहेगा. सुबूर के मानी हलाक्त के हैं.

(१६) दुनिया के अन्दर.

(१७) अपनी इच्छाओं और वासनाओं में और घमण्डी.

(१८) अपने रब की तरफ़, और वह मरने के बाद उठाया न जाएगा.

(१९) ज़रूर अपने रब की तरफ़ पलटेगा और मरने के बाद उठाया जाएगा और हिसाब किया जाएगा.

(२०) जो लाली के बाद नमूदार होता है और जिसके ग़ायब होने पर इमाम साहिब के नज़्दीक इशा का वक़्त शुरू होता है. यही क़ौल है बहुत से सहाबा का और कुछ उल्मा शफ़क़ से लाली मुराद लेते हैं.

(२१) जानवरों की तरह जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और रात में अपने घौंसलों और ठिकानों की तरफ़ चले आते हैं और तारीकी की तरह और सितारों और उन कर्मों की तरह जो रात में किये जाते हैं जैसे कि तहज्जुद.

(२२) और उसका नूर कामिल हो जाए और ये चाँदनी के दिनों यानी तेरहवीं, चौदहवीं, पंद्रहवीं तारीख़ों में होता है.

(२३) यह ख़िताब या तो इन्सानों को है, उस सूरत में मानी ये हैं कि तुम्हें हाल के बाद हाल पेश आएगा. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मौत की सख़्तियाँ, फिर मरने के बाद उठना, फिर हिसाब के मैदान में पेश होना. और यह भी कहा गया है कि इन्सान के हालात में तदरीज है. एक वक़्त दूध पीता बच्चा होता है, फिर दूध छूटता है, फिर लड़कपन का ज़माना आता है, फिर जवान होता है, फिर जवानी ढलती है, फिर बूढ़ा होता है. और एक क़ौल यह है कि यह ख़िताब नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को है कि आप मेअराज की रात एक आसमान पर तशरीफ़ ले गए, फिर दूसरे पर, इसी तरह दर्जा ब दर्जा क़ुर्ब की मंज़िलों में वासिल हुए. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इस आयत में नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हाल बयान फ़रमाया गया है. मानी ये हैं कि आपको मुश्रिकों पर फ़त्ह हासिल होगी और अंजाम बहुत बेहतर होगा. आप काफ़िरों की सरकशी और उनके झुटलाने से दुखी न हों.

(२४) यानी अब ईमान लाने में क्या उज़्र है. दलीलें ज़ाहिर होने के बावुजूद क्यों ईमान नहीं लाते.

(२५) इस से मुराद तिलावत का सज्दा है. जब सूरए इक़रा में "वस्जुद वक़्तरिब" उतरा तो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह आयत पढ़कर सज्दा किया. मूमिनों ने आपके साथ सज्दा किया और क़ुरैश के काफ़िरों ने सज्दा न किया. उनके इस काम की बुराई में यह आयत उतरी कि काफ़िरों पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वो तिलावत का सज्दा नहीं करते. इस आयत से साबित हुआ कि तिलावत का सज्दा वाजिब है, सुनने वाले पर, और हदीस से साबित है कि पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सज्दा वाजिब हो जाता है. क़ुरआने करीम में सज्दे की चौदह आयतें हैं जिनको पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है चाहें सुनने वाले ने सुनने का इरादा किया हो या न किया हो. तिलावत के सज्दे के लिये भी वही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिये जैसे कि पाकी और क़िबले की तरफ़ मुंह होना और सतरे औरत वग़ैरह. सज्दे के अव्वल और आख़िर अल्लाहो अकबर कहना चाहिये. इमाम ने सज्दे की आयत पढ़ी तो उसपर और मुक़्तदियों पर और जो व्यक्ति नमाज़ में न हो और सुन ले, उसपर सज्दा वाजिब है. सज्दे की जितनी आयतें पढ़ी जाएंगी उतने ही सज्दे वाजिब होंगे. अगर एक ही आयत एक बैठक में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज्दा वाजिब हुआ. बाक़ी की तफ़सील फ़िक़्ह की किताबों में है. (तफ़सीरे अहमदी).

(२६) क़ुरआन को और मरने के बाद उठने को.

(२७) कुफ़्र और नबिये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को झुटलाना.

(२८) उनके कुफ़्र और दुश्मनी पर.

८५ - सूरए बुरूज

(१) सूरए बुरूज मक्के में उतरी. इसमें एक रूकू, बाईस आयतें, एक सौ नब्बे कलिमे, चार सौ पैंसठ अक्षर हैं.

(२) जिनकी संख्या बारह है और उनमें अल्लाह की हिकमत के चमत्कार नमूदार हैं. सूरज चाँद और सितारों की सैर उनमें निर्धारित अन्दाज़े पर है जिसमें अन्तर नहीं पड़ता.

(३) वह क़यामत का दिन है.

(४) इससे मुराद जुमुऐ का दिन है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है.

(५) आदमी और फ़रिश्ते. इससे मुराद अर्फ़े का दिन है.

(६) रिवायत है कि पहले ज़माने में एक बादशाह था, जब उसका जादूगर बूढ़ा हुआ तो उसने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक

अल्लाह इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे पर﴾८﴿ कि उसी के लिये आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है, और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है﴾९﴿ बेशक जिन्होंने तकलीफ़ दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को[९] फिर तौबह न की[१०] उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है[११] और उनके लिये आग का अज़ाब[१२]﴾१०﴿ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनके लिये बाग़ है जिनके नीचे नहरें बहें, यही बड़ी कामयाबी है﴾११﴿ बेशक तेरे रब की गिरफ़्त बहुत सख़्त है[१३]﴾१२﴿ बेशक वह पहले करे और फिर करे[१४]﴾१३﴿ और वही है बख़्शने वाला अपने नेक बन्दों पर प्यारा ﴾१४﴿ इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक﴾१५﴿ हमेशा जो चाहे कर लेने वाला ﴾१६﴿ क्या तुम्हारे पास लश्करों की बात आई[१५]﴾१७﴿ वो लश्कर कौन, फ़िरऔन और समूद[१६]﴾१८﴿ बल्कि[१७] काफ़िर झुटलाने में हैं[१८]﴾१९﴿ और अल्लाह उनके पीछे से उन्हें घेरे हुए है[१९]﴾२०﴿ बल्कि वह बहुत बुज़ुर्गी वाला क़ुरआन है﴾२१﴿ लौहे महफ़ूज़ में﴾२२﴿

८६- सूरए तारिक़

सूरए तारिक़ मक्का में उतरी, इसमें १७ आयतें, एक रूकू है .

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

आसमान की क़सम और रात को आने वाले की[२]﴾१﴿ और कुछ तुम ने जाना वह रात को आने वाला क्या है﴾२﴿ ख़ूब

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ؕ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ
الْحَرِيْقِ ؕ ۝١٠ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ؕ ۝١١ اِنَّ
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ؕ ۝١٢ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣ وَهُوَ
الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥ فَعَّالٌ لِّمَا
يُرِيْدُ ؕ ۝١٦ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝١٧ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ؕ ۝١٨
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ
مُّحِيْطٌ ۝٢٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝٢١ فِىْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢

اٰيَاتُهَا ١٧ (٨٦) سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ (٣٦) رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢ النَّجْمُ

लड़का भेज जिसे में जादू सिखा दूँ. बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया. वह जादू सीखने लगा. राह में एक पादरी रहता था. उसके पास बैठने लगा और उसका कलाम उसके दिल में बैठता गया. अब आते जाते उसने पादरी की सोहबत में बैठना मुक़र्रर कर लिया. एक रोज़ रास्ते में एक ख़तरनाक जानवर मिला. लड़के ने एक पत्थर हाथ में लेकर यह दुआ की कि यारब अगर पादरी तुझे प्यारा हो तो मेरे पत्थर से इस जानवर को हलाक कर दे. वह जानवर उस पत्थर से मर गया. इसके बाद लड़के की दुआओं में असर पैदा हो गया और उसकी दुआ से कोढ़ी और अंधे अच्छे होने लगे. बादशाह का एक मुसाहिब अंधा हो गया था, वह आया, लड़के ने दुआ की, वह अच्छा हो गया और अल्लाह तआला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा. उसने कहा तुझे किसने अच्छा किया. कहा मेरे रब ने. बादशाह ने कहा, मेरे सिवा और भी कोई रब है. यह कहकर उसने उसपर सख़्तियाँ शुरू कीं. यहाँ तक कि उसने लड़के का पता बताया. लड़के पर सख़्तियाँ कीं. उसने पादरी का पता बताया. पादरी पर सख़्तियाँ कीं और उससे कहा कि अपना दीन छोड़. उसने इन्कार किया तो उसके सर पर आरा रखकर चिरवा दिया. फिर मुसाहिब को भी चिरवा दिया. फिर लड़के के लिये हुक्म दिया कि उसे पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए. सिपाही उसको पहाड़ की चोटी पर ले गए. उसने दुआ की, पहाड़ पर ज़लज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए. लड़का सही सलामत चला आया. बादशाह ने कहा सिपाही क्या हुए, कहा सबको ख़ुदा ने हलाक कर दिया. फिर बादशाह ने लड़के को समन्दर में डुबाने के लिये भेजा. लड़के ने दुआ की, किश्ती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सही सलामत बादशाह के पास आगया. बादशाह ने कहा, वो आदमी क्या हुए, कहा सबको अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल ही नहीं कर सकता जब तक वह काम न करे जो मैं बताऊँ. कहा, वह क्या. लड़के ले कहा, एक मैदान में सब लोगों को जमा कर और मुझे खजूर के टुंड पर सूली दे फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर बिस्मिल्लाहे रब्बिल ग़ुलाम कहकर मार. ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा. बादशाह ने ऐसा ही किया. तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा, उसने अपना हाथ उस पर रखा और अल्लाह को प्यारा हो गया. यह देख कर सारे लोग ईमान ले आ. इससे बादशाह को ज़्यादा दुख हुआ और उसने एक खाई खुदवाई और उसमें आग जलवाई और हुक्म दिया जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो. लोग डाले गए यहाँ तक कि एक औरत आई उसकी गोद में बच्चा था. वह ज़रा झिझकी. बच्चे ने कहा ऐ माँ सब्र कर, न झिझक. तू सच्चे दीन पर है. वह बच्चा और माँ भी आग में डाल दिये गए. यह हदीस सही है, मुस्लिम ने इसकी तख़रीज की. इस से औलिया की करामतें साबित होती हैं. आयत में इस वाक़ए का ज़िक्र है.

(७) कुर्सियाँ बिछाए और मुसलमानों को आग में डाल रहे थे.

(८) शाही लोग बादशाह के पास आकर एक दूसरे के लिये गवाही देते थे कि उन्होंने हुक्म की तामील में कोताही नहीं की,

चमकता तारा﴿३﴾ कोई जान नहीं जिसपर निगहबान न हो [3]﴿४﴾ तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया[4]﴿५﴾ जस्त करते पानी से[5]﴿६﴾ जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से[6]﴿७﴾ बेशक अल्लाह उसके वापस कर देने पर[7] क़ादिर है﴿८﴾ जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी[8]﴿९﴾ तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न कोई मददगार[9]﴿१०﴾ आसमान की क़सम जिससे मेंह उतरता है[10]﴿११﴾ और ज़मीन की जो उससे खुलती है[11]﴿१२﴾ बेशक क़ुरआन ज़रूर फ़ैसले की बात है[12]﴿१३﴾ और कोई हंसी की बात नहीं[13]﴿१४﴾ बेशक काफ़िर अपना सा दाँव चलते हैं[14]﴿१५﴾ और मैं अपनी ख़ुफ़िया (छुपवाँ) तदबीर फ़रमाता हूँ[15]﴿१६﴾ तो तुम काफ़िरों को ढील दो[16] उन्हें कुछ थोड़ी मुहलत दो [17]﴿१७﴾

८७ - सूरए अल-अअला

सूरए अल-अअला मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]

अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बलन्द है[2]﴿१﴾ जिसने बनाकर ठीक किया[3]﴿२﴾ और जिसने अन्दाज़े पर रख कर राह दी[4]﴿३﴾ और जिसने चारा निकाला﴿४﴾ फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया﴿५﴾ अब हम तुम्हें पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे[5]﴿६﴾ मगर जो अल्लाह चाहे[6] बेशक वह जानता है हर खुले और छुपे को ﴿७﴾ और हम तुम्हारे लिये आसानी का सामान कर देंगे[7]﴿८﴾

ईमानदारों को आग में डाल दिया गया. रिवायत है कि जो मूमिन आग में डाले गए, अल्लाह तआला ने उनके आग में पड़ने से पहले उनकी रूहें निकाल कर उन्हें निजात दी और आग ने खाई के किनारों से बाहर निकल कर किनारे पर बैठे हुए काफ़िरों को जला दिया. इस वाक़ए में मूमिनों को सब्र और मक्के वालों की यातनाओं पर सब्र और ज़ब्त से काम लेने की तरग़ीब फ़रमाई गई.

(९) आग में जला कर.
(१०) और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए.
(११) आख़िरत में बदला उनके कुफ़्र का.
(१२) दुनिया में, कि उसी आग में उन्हें जला डाला. यह बदला है मुसलमानों को आग में डालने का.
(१३) जब वह ज़ालिमों को अज़ाब में पकड़े.
(१४) यानी पहले दुनिया में पैदा करे फिर क़यामत में कर्मों की जज़ा देने के लिये, मौत के बाद, दोबारा ज़िन्दा करे.
(१५) जिन को काफ़िर, नबियों अलैहिमुस्सलाम के मुक़ाबिल लाए.
(१६) जो अपने कुफ़्र के कारण हलाक किये गए.
(१७) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, आपकी उम्मत के.
(१८) आपको और क़ुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का तरीक़ा था.
(१९) उससे उन्हें कोई बचाने वाला नहीं.

८६ - सूरए तारिक़

(१) सूरए तारिक़ मक्के में उतरी, इसमें एक रूकू, सत्तरह आयतें, इकसट कलिमे, दो सौ उन्तालीस अक्षर हैं.
(२) यानी सितारे की, जो रात को चमकता है. एक रात सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिया लाए. हुज़ूर उसको खा रहे थे. इस बीच में एक तारा टूटा और सारे वातावरण में आग भर गई. अबू तालिब घबरा कर कहने लगे यह क्या है. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया यह सितारा है जिससे शैतान मारे जाते हैं और यह

अल्लाह की क़ुदरत की निशानियों में से है. अबू तालिब को इससे तअज्जुब हुआ और यह सूरत उतरी.
(३) उसके रब की तरफ़ से जो उसके कर्मों की निगहबानी करे और उसकी नेकी बदी सब लिख्र ले. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि मुराद इससे फ़रिश्ते हैं.
(४) ताकि वह जाने कि उसका पैदा करने वाला उसको मौत के बाद जज़ा के लिये ज़िन्दा करने पर क़ादिर है इसलिये उसको जज़ा के दिन के लिये अमल करना चाहिये.
(५) यानी मर्द और औरत के नुत्फ़ों से जो बच्चेदानी में मिल कर एक हो जाते हैं.
(६) यानी मर्द की पीठ से और औरत के सीने के मक़ाम से. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया सीने के उस मक़ाम से जहाँ पर हार पहना जाता है और उन्हीं से मन्क़ूल है कि औरत की दोनों छातियों के बीच से. यह भी कहा गया है कि वीर्य इन्सान के तमाम अंगों से निकलता है और उसका ज़्यादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पीठ में आता है और औरत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी रगों में जो सीने की जगह पर हैं, उतरता है. इसी लिये इन दोनों जगहों का ज़िक्र विशेष रुप से फ़रमाया गया.
(७) यानी मौत के बाद ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर.
(८) छुपी बातों से मुराद अक़ीदे और नियतें और वो कर्म हैं जिनको आदमी छुपाता है. क़यामत के दिन अल्लाह तआला उन सबको ज़ाहिर कर देगा.
(९) यानी जो आदमी दोबारा उठाए जाने का इन्कारी है, न उसको ऐसी क़ुव्वत होगी जिससे अज़ाब को रोक सके, न उसका कोई ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके.
(१०) जो ज़मीनी पैदावार पेड़ पौदों के लिये बाप की तरह है.
(११) और नबातात (वनस्पति) के लिये माँ की तरह है. ये दोनों अल्लाह तआला की अजीब नेअमतें हैं और इनमें अल्लाह की क़ुदरत के अनगिनत निशान मौजूद हैं जिनमें ग़ौर करने से आदमी को मौत के बाद उठाए जाने की बहुत सी दलीलें मिलती हैं.
(१२) कि सत्य असत्य में फ़र्क़ और इम्तियाज़ कर देता है.
(१३) जो निकम्मी और बेकार हो.
(१४) और अल्लाह के दीन को मिटाने और सच्चाई के नूर को बुझाने और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचाने के लिये तरह तरह के दाँव करते हैं.
(१५) जिसकी उन्हें ख़बर नहीं.
(१६) ऐ नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.
(१७) कुछ रोज़, कि वो जल्द ही हलाक किये जाएंगे. चुनांन्चे ऐसा ही हुआ और बद्र में उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने पकड़ा.

८७ - सूरए अल-अअला

(१) सूरए अल-अअला मक्की है. इसमें एक रूकू, उन्नीस आयतें, बहत्तर कलिमे, दो सौ इकानवे अक्षर हैं.
(२) यानी उसका ज़िक्र अज़मत और ऐहतिराम के साथ करो. हदीस में है जब यह आयत उतरी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया इसको अपने सज्दे में दाख़िल करो यानी सज्दे में सुब्हाना रब्बियल अअला कहो. (अबू दाऊद)
(३) यानी हर चीज की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़र्माई जो पैदा करने वाले के इल्म और हिकमत पर दलालत करती है.
(४) यानी सारी बातों के पहले से लिख्र दिया और उनकी तरफ़ राह दी या ये मानी हैं कि रोज़ियाँ मुक़द्दर कीं और उन्हें हासिल करने की तरकीब बताई.
(५) यह अल्लाह तआला की तरफ़ से अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़ुशख़बरी है कि आपको क़ुरआन याद करने की नेअमत बेमेहनत अता फ़रमाई और यह आपका चमत्कार है कि इतनी बड़ी किताब बग़ैर मेहनत व मशक़्क़त और बिना बार बार दोहराए आपको याद हो गई.
(६) मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि ये इस्तसना वाक़े न हुआ और अल्लाह तआला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें. (जुमल)
(७) कि वही तुम्हें बेमेहनत याद रहेगी. मुफ़स्सिरों का एक क़ौल यह है कि आसानी के सामान से इस्लामी शरीअत मुराद है जो

إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۝٩ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۝١٠ وَ
يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۝١١ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۝١٢ ثُمَّ
لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝١٣ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝١٤ وَ
ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝١٥ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝١٦
وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝١٧ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝١٨
صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝١٩

(٨٨) سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٨) آياتها ٢٦ ركوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢
عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى مِنْ
عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ
وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ۝٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨
لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا

منزل ٧

तो तुम नसीहत फ़रमाओ[८] अगर नसीहत काम दे[९] ﴿९﴾ बहुत जल्द नसीहत मानेगा जो डरता है[१०] ﴿१०﴾ और उसे[११] से वह बड़ा बदबख़्त दूर रहेगा ﴿११﴾ जो सब से बड़ी आग में जाएगा[१२] ﴿१२﴾ फिर न उसमें मरे[१३] और न जिये[१४] ﴿१३﴾ बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुआ[१५] ﴿१४﴾ और अपने रब का नाम लेकर[१६] नमाज़ पढ़ी[१७] ﴿१५﴾ बल्कि तुम जीती दुनिया को तरजीह देते हो[१८] ﴿१६﴾ और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली ﴿१७﴾ बेशक यह[१९] अगले सहीफ़ों (धर्मग्रन्थों) में है[२०] ﴿१८﴾ इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में ﴿१९﴾

८८ - सूरए अल-ग़ाशियह

सूरए अल-ग़ाशियह मक्के में उतरी, इसमें २६ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

बेशक तुम्हारे पास[२] उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी[३] ﴿१﴾ कितने ही मुंह उस दिन ज़लील होंगे ﴿२﴾ काम करें मशक़्क़त झेलें ﴿३﴾ जाएं भड़कती आग में[४] ﴿४﴾ निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं ﴿५﴾ उनके लिये कुछ खाना नहीं मगर आग के काँटे[५] ﴿६﴾ कि न मोटापा लाएं और न भूख में काम दें[६] ﴿७﴾ कितने ही मुंह उस दिन चैन में हैं[७] ﴿८﴾ अपनी कोशिश पर राज़ी[८] ﴿९﴾ बलन्द बाग़ में ﴿१०﴾

अत्यन्त सरल और आसान है.

(८) इस क़ुरआने मजीद से.

(९) और कुछ लोग इससे फ़ायदा उठाएं.

(१०) अल्लाह तआला से.

(११) उपदेश और नसीहत.

(१२) कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरह और उतबह बिन रबीआ के हक़ में उतरी.

(१३) कि मर कर ही अज़ाब से छूट सके.

(१४) ऐसा जीना जिससे कुछ भी आराम पाए.

(१५) ईमान लाकर, या ये मानी हैं कि उसने नमाज़ के लिये तहारत की. इस सूरत में आयत से नमाज़ के लिये वुज़ू और स्नान साबित होता है. (तफ़सीरे अहमदी)

(१६) यानी शुरु की तकबीर कहकर.

(१७) पंजगाना. इस आयत से शुरु की तकबीर साबित हुई और यह भी साबित हुआ कि वह नमाज़ का हिस्सा नहीं है क्योंकि नमाज़ का उस पर अत्फ़ किया गया है और यह भी साबित हुआ कि नमाज़ की शुरूआत अल्लाह तआला के हर नाम से जायज़ है. इस आयत की तफ़सीर में यह कहा गया है कि 'तज़क्का' यानी जो सुथरा हुआ से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तकबीरें कहना और नमाज़ से ईद की नमाज़ मुराद है. (मदारिक व अहमदी)

(१८) आख़िरत पर, इसी लिये वो अमल नहीं करते जो वहाँ काम आएं.

(१९) यानी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना.

(२०) जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए.

८८ - सूरए अल-ग़ाशियह

(१) सूरए ग़ाशियह मक्की है इसमें एक रूकू, छब्बीस आयतें, बानवे कलिमे, तीन सौ इकियासी अक्षर हैं.

(२) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(३) ख़ल्क़ पर, इससे मुराद क़यामत है जिसकी सख़्तियाँ हर चीज़ पर छा जाएंगी.

कि उसमें कोई बेहूदा बात न सुनेंगे ﴾११﴿ उसमें बहता चश्मा है[९] ﴾१२﴿ उसमें बलन्द तख़्त हैं ﴾१३﴿ और चुने हुए कूज़े[९] ﴾१४﴿ और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन ﴾१५﴿ और फैली हुई चांदनियाँ[१०] ﴾१६﴿ तो क्या ऊंट को नहीं देखते कैसा बनाया गया ﴾१७﴿ और आसमान को कैसा ऊंचा किया गया[११] ﴾१८﴿ और पहाड़ों को कि कैसे क़ायम किये गए ﴾१९﴿ और ज़मीन को कि कैसे बिछाई गई ﴾२०﴿ तो तुम नसीहत सुनाओ[१२] तुम तो यही नसीहत सुनाने वाले हो ﴾२१﴿ तुम कुछ उनपर करोड़ा नहीं[१३] ﴾२२﴿ हाँ जो मुंह फेरे[१४] और कुफ़्र करे[१५] ﴾२३﴿ तो उसे अल्लाह बड़ा अज़ाब देगा[१६] ﴾२४﴿ बेशक हमारी ही तरफ़ उनका फिरना है[१७] ﴾२५﴿ फिर बेशक हमारी ही तरफ़ उनका हिसाब है ﴾२६﴿

८९ - सूरए फ़ज्र

सूरए फ़ज्र मक्के में उतरी, इसमें ३० आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]

उस सुब्ह की क़सम[२] ﴾१﴿ और दस रातों की[३] ﴾२﴿ और जुफ़्त और ताक़ की[४] ﴾३﴿ और रात की जब चल दे[५] ﴾४﴿ क्यों इसमें अक़्लमन्द के लिये क़सम हुई[६] ﴾५﴿ क्या तुमने न देखा[७] तुम्हारे रब ने आद के साथ कैसा किया ﴾६﴿ वो इरम हद से ज़्यादा लम्बाई वाले[८] ﴾७﴿ कि उन जैसा शहरों

(४) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया इससे वो लोग मुराद हैं जो इस्लाम पर न थे, बुत पूजते थे या किताबी काफ़िर जैसे पादरी और पुजारी. उन्होंने मेहनतें भी उठाईं, मशक़्क़तें भी झेलीं और नतीजा यह हुआ कि जहन्नम में गए.

(५) अज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अज़ाब दिये जाएंगे उनके बहुत तबक़े होंगे. कुछ को ज़क़्क़ूम खाने को दिया जाएगा, कुछ को ग़िस्लीन (दोज़ख़ियों का पीप), कुछ को आग के काँटे.

(६) यानी उनसे ग़िज़ा का नफ़ा हासिल न होगा क्योंकि ग़िज़ा के दो फ़ायदे हैं एक भूख की तकलीफ़ दूर करे दूसरे यह कि बदन को मोटा करे. ये दोनों विशेषताएं जहन्नमियों के खाने में नहीं, बल्कि वो सख़्त अज़ाब है.

(७) ऐश और ख़ुशी में और नेअमत व करामत में.

(८) यानी उस अमल और ताअत पर जो दुनिया में बजा लाए थे.

(९) चश्मे के किनारों पर जिनके देखने से भी लज़्ज़त हासिल हो और जब पीना चाहें तो वो भरे मिलें.

(१०) इस सूरत में जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र सुनकर काफ़िरों ने आश्चर्य किया और झुटलाया तो अल्लाह तआला उन्हें अपने अजायबे सनअत में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वो समझें कि जिस क़ादिर हिकमत वाले ने दुनिया में ऐसी अजीब अनोखी चीज़ें पैदा की हैं उसकी क़ुदरत से जन्नती नेअमतों का पैदा फ़रमाना, किस तरह आश्चर्य जनक और इन्कार के क़ाबिल हो सकता है. चुनांन्चे इरशाद फ़रमाता है.

(११) बग़ैर सुतून के.

(१२) अल्लाह तआला की नेअमतों और उसकी क़ुदरत की दलीलें बयान फ़रमा कर.

(१३) कि जब्र करो. (यह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ हो गई)

(१४) ईमान लाने से.

(१५) नसीहत के बाद.

(१६) आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा.

(१७) मौत के बाद.

८९ - सूरए फ़ज्र

(१) सूरए फ़ज्र मक्की है, इसमें एक रूकू, उन्तीस या तीस आयतें, एक सौ उन्तालीस कलिमे, पाँच सौ सत्तानवे अक्षर हैं.

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝
فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي
أَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا تَحَاضُّونَ
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ۝
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا
دَكًّا ۝ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ
بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۝
يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا

में पैदा न हुआ[9] ﴾८﴿ और समूद जिन्होंने वादी में[10] पत्थर की चट्टानें काटीं[11] ﴾९﴿ और फ़िरऔन कि चौमेख़ा करता[12] ﴾१०﴿ जिन्होंने शहरों में सरकशी की[13] ﴾११﴿ फिर उनमें बहुत फ़साद फैलाया[14] ﴾१२﴿ तो उनपर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा क़ुव्वत से मारा ﴾१३﴿ बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ायब नहीं ﴾१४﴿ लेकिन आदमी तो जब उसे उसका रब आज़माए कि उसको जाह और नअेमत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी ﴾१५﴿ और अगर आज़माए और उसका रिज़्क़ उसपर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया ﴾१६﴿ यूँ नहीं[15] बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते[16] ﴾१७﴿ और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन (दरिद्र) के खिलाने की रग़बत नहीं देते ﴾१८﴿ और मीरास का माल हप हप खाते हो[17] ﴾१९﴿ और माल की बहुत महब्बत रखते हो[18] ﴾२०﴿ हाँ हाँ जब ज़मीन टकराकर पाश पाश कर दी जाए[19] ﴾२१﴿ और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़रिश्ते क़तार क़तार ﴾२२﴿ और उस दिन जहन्नम लाई जाए[20] उस दिन आदमी सोचेगा[21] और अब उसे सोचने का वक़्त कहाँ[22] ﴾२३﴿ कहेगा, हाय किसी तरह मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती ﴾२४﴿ तो इस दिन उसका सा अज़ाब[23] कोई नहीं करता ﴾२५﴿ और उसका सा बांधना कोई नहीं बांधता ﴾२६﴿

(२) इससे मुराद या पहली मुहर्रमुल हराम की सुब्ह है जिससे साल शुरू होता है या पहली ज़िलहज की जिससे दस रातें मिली हैं या ईदुल अदहा की सुब्ह. और कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि इससे मुराद हर दिन की सुब्ह है क्योंकि वह रात के गुज़रने और रौशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के रोज़ी की तलाश में मुन्तशिर होने का वक़्त है और यह मुर्दों के क़ब्रों से उठने के वक़्त के साथ मुशाबिहत और मुनासिबत रखता है.

(३) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि इन से मुराद ज़िलहज की पहली दस रातें हैं क्योंकि यह ज़माना हज के कामों में मश्ग़ूल होने का ज़माना है और हदीस शरीफ़ में इस अशरे की बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं. और यह भी रिवायत है कि रमज़ान के आख़िरी अशरे की रातें मुराद हैं या मुहर्रम के पहले अशरे की.

(४) हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के. और यह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और ताक़ से मुराद अल्लाह तआला है.

(५) यानी गुज़रे. यह पाँचवीं क़िस्म है आम रात की. इससे पहले दस ख़ास रातों की क़िस्म ज़िक्र फ़रमाई गई. कुछ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इससे ख़ास मुज़दलिफ़ा की रात मुराद है. जिसमें अल्लाह के बन्दे अल्लाह की ताअत के लिये जमा होते हैं. एक क़ौल यह है कि इससे शबे क़द्र मुराद है जिसमें रहमत का नुज़ूल होता है और जो सवाब की बहुतात के लिये विशेष है.

(६) यानी ये बातें समझ वालों के नज़्दीक ऐसी अज़मत रखती हैं कि ख़बरों को उनके साथ मुअक्कद करना शायाँ है क्योंकि ये ऐसे अजायब और दलीलों पर आधारित हैं जो अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी रबूबियत पर दलालत करती हैं और जवाबे क़सम यह है कि काफ़िर ज़रूर अज़ाब किये जाएंगे. इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं.

(७) ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम.

(८) जिनके क़द बहुत लम्बे थे उन्हें आदे इरम और आदे ऊला कहते हैं. तात्पर्य इससे मक्के वालों को ख़ौफ़ दिलाना है कि आदे ऊला जिनकी उम्रें बहुत ज़्यादा और क़द बहुत लम्बे और अत्यन्त शक्तिशाली थे उन्हें अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया तो ये काफ़िर अपने आपको क्या समझते हैं और अज़ाबे इलाही से क्यों बेख़ौफ़ हैं.

(९) ज़ोर और क़ुव्वत और क़द की लम्बाई में. आद के बेटों में से शद्दाद भी है जिसने दुनिया पर बादशाहत की और तमाम बादशाह उसके मुतीअ हो गए और उसने जन्नत का ज़िक्र सुनकर सरकशी के तौर पर दुनिया में जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक विशाल शहर बनाया जिसके महल सोने चाँदी की ईंटों से तामीर किये गए और ज़बरजद और याक़ूत के सुतून उसकी इमारतों में लगाए गए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रास्तों में बनाए गए. संगरेज़ों की जगह चमकदार मोती बिछाए गए. हर महल के चारों तरफ़ जवाहरात पर नेहरें जारी की गईं, क़िस्म क़िस्म के दरख़्त सजे सजाए लगाए गए. जब यह शहर पूरा हुआ तो शद्दाद बादशाह

ऐ इत्मीनान वाली जान[२४]﴿२७﴾ अपने रब की तरफ़ वापस हो यूं कि तू उससे राज़ी वह तुझ से राज़ी﴿२८﴾ फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो﴿२९﴾ और मेरी जन्नत में आ﴿३०﴾

९० - सूरए बलद

सूरए बलद मक्के में उतरी, इसमें २० आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
मुझे इस शहर की क़सम[२]﴿१﴾ कि ऐ मेहबूब, तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो[३]﴿२﴾ और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उसकी औलाद की कि तुम हो[४]﴿३﴾ बेशक हमने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया[५]﴿४﴾ क्या आदमी यह समझता है कि हरगिज़ उस पर कोई क़ुदरत नहीं पाएगा[६]﴿५﴾ कहता है मैं ने ढेरों माल फ़ना कर दिया [७]﴿६﴾ क्या आदमी यह समझता है कि उसे किसी ने न देखा[८]﴿७﴾ क्या हमने उसकी दो आँखें न बनाईं[९]﴿८﴾ और ज़बान[१०] और दो होंट[११]﴿९﴾ और उसे दो उभरी चीज़ों की राह बताई [१२]﴿१०﴾ फिर बेझिजक घाटी में न कूदा[१३]﴿११﴾ और तूने क्या जाना वह घाटी क्या है[१४]﴿१२﴾ किसी बन्दे की गर्दन छुड़ाना[१५]﴿१३﴾ या भूख के दिन खाना देना[१६]﴿१४﴾ रिश्तेदार यतीम को﴿१५﴾ या ख़ाकनशीन मिस्कीन को[१७]﴿१६﴾ फिर हो उनसे जो ईमान लाए[१८] और उन्हों ने आपस में सब्र की वसीयतें कीं[१९] और आपस में मेहरबानी की वसीयतें कीं [२०]﴿१७﴾

अपने सरदारों के साथ उसकी तरफ़ रवाना हुआ. जब एक मंज़िल दूरी बाक़ी रही तो आसमान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिससे अल्लाह तआला ने उन सबको हलाक कर दिया. हज़रत अमीरे मुआवियह के एहद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़लाबह अदन के सहरा में अपने खोए हुए ऊंट तलाश करते हुए उस शहर में पहुंचे और उसकी सारी सजावट देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया. थोड़े से जवाहरात वहाँ से लेकर चले आए. यह ख़बर अमीर मुआवियह को मालूम हुई उन्होंने उन्हें बुलाकर हाल पूछा. उन्होंने सारी कहानी सुनाई तो अमीर मुआवियाह ने कअब अहबार को बुलाकर दरियाफ़्त किया कि क्या दुनिया में कोई ऐसा शहर है. उन्होंने फ़रमाया हाँ जिसका ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी आया है. यह शहर शद्दाद बिन आद ने बनाया था. वो सब अल्लाह के अज़ाब से हलाक हो गए. उनमें से कोई बाक़ी न रहा और आपके ज़माने में एक मुसलमान सुर्ख़ रंग, कबूद चश्म, छोटे क़द का जिसकी भौं पर एक तिल होगा अपने ऊँट की तलाश में दाख़िल होगा फिर अब्दुल्लाह बिन क़लाबह को देखकर फ़रमाया ख़ुदा की क़सम यही वह शख़्स है.

(१०) यानी वादिये क़ुरा में.

(११) और मकान बनाए. उन्हें अल्लाह तआला ने किस तरह हलाक किया.

(१२) उसको जिस पर वह गुस्सा होता था. अब आद व समूद और फ़िरऔन, इन सब की निस्बत इरशाद होता है.

(१३) और गुनाहों और गुमराही में इन्तिहा को पहुंचे और अब्दियत की हद से गुज़र गए.

(१४) कुफ़्र और क़त्ल और ज़ुल्म करके.

(१५) यानी इज़्ज़त व ज़िल्लत, दौलत व ग़रीबी पर नहीं. यह उसकी हिकमत है, कभी मुख़लिस बन्दे को मुफ़लिसी में मुब्तिला कर देता है. इज़्ज़त और ज़िल्लत का आधार, ताअत और गुमराही पर है. काफ़िर इस हक़ीक़त को नहीं समझते.

(१६) और दोलतमन्द होने के बावुजूद उनके साथ अच्छा सुलूक नहीं करते और उन्हें उनके अधिकार नहीं देते जिनके वो वारिस हैं. मुक़ातिल ने कहा कि उमैया बिन ख़लफ़ के पास क़दामह बिन मज़ऊन यतीम थे वह उन्हें उनका हक़ नहीं देता था.

(१७) और हलाल हराम का अन्तर नहीं रखते और औरतों और बच्चों को विर्सा नहीं देते, उनके हिस्से ख़ुद खा जाते हो. जिहालत के ज़माने में यही तरीक़ा था.

(१८) उसको ख़र्च करना ही नहीं चाहते.

(१९) और उसपर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नामो निशान न रहे.

ये दाईं तरफ़ वाले हैं[२१]《१८》 और जिन्होंने हमारी आयतों से कुफ़्र किया वो बाएं तरफ़ वाले[२२]《१९》 उनपर आग है कि उसमें डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई[२३]《२०》

९१ - सूरए शम्स

सूरए शम्स मक्के में उतरी, इसमें १५ आयतें, एक रुकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
सूरज और उसकी रौशनी की क़सम《१》 और चांद की जब उसके पीछे आए[२]《२》 और दिन की जब उसे चमकाए[३]《३》 और रात की जब उसे छुपाए[४]《४》 और आसमान और उसके बनाने वाले की क़सम《५》 और ज़मीन और उसके फैलाने वाले की क़सम《६》 और जान की और उसकी जिसने उसे ठीक बनाया[५]《७》 फिर उसकी बदकारी और उसकी परहेज़गारी दिल में डाली[६]《८》 बेशक मुराद को पहुंचाया जिसने उसे[७] सुथरा किया[८]《९》 और नामुराद हुआ जिसने उसे मअसियत में छुपाया《१०》 समूद ने अपनी सरकशी से झुटलाया[९]《११》 जब कि उसका सबसे बदबख़्त[१०] उठ खड़ा हुआ《१२》 तो उनसे अल्लाह के रसूल[११] ने फ़रमाया अल्लाह के नाक़े[१२] (ऊंटनी) और उसके पीने की बारी से बचो[१३]《१३》 तो उन्होंने उसे झुटलाया फिर नाक़े की कूंचें काट दीं तो उनपर उनके रब ने उनके गुनाह के कारण[१४] तबाही डालकर वह बस्ती बराबर कर दी[१५]《१४》 और उसके पीछा करने का उसे डर नहीं[१६]《१५》

(२०) जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी. हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जमा होकर उसको खींचेंगे और वह जोश और ग़ज़ब में होगी यहाँ तक कि फ़रिश्ते उसको अर्श के बाएं तरफ़ लाएंगे. उस रोज़ सब नफ़्सी नफ़्सी कहते होंगे सिवाए हुज़ूर पुरनूर हबीबे ख़ुदा सैयिदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के, कि हुज़ूर यारब्बे उम्मती उम्मती फ़रमाते होंगे. जहन्नम हुज़ूर से अर्ज़ करेगी कि ऐ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, आपका मेरा क्या वास्ता. अल्लाह तआला ने आपको मुझपर हराम किया है. (जुमल)
(२१) और अपनी तक़सीर अर्थात दोष को समझेगा.
(२२) उस वक़्त का सोचना समझना कुछ फ़ायदे का नहीं.
(२३) यानी अल्लाह का सा.
(२४) जो ईमान और यक़ीन पर डटी रही और अल्लाह तआला के हुक्म के आगे इताअत की गर्दन झुकाती रही. यह मूमिन से मौत के वक़्त कहा जाएगा जब दुनिया से उसके सफ़र करने का समय आएगा.

९० - सूरए बलद

(१) सूरए बदल मक्की है, इसमें एक रुकू, बीस आयतें, बयासी कलिमे, तीन सौ बीस अक्षर हैं.
(२) यानी मक्कए मुकर्रमा की.
(३) इस आयत से मालूम हुआ कि यह अज़मत मक्कए मुकर्रमा को सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रौनक़ अफ़रोज़ी की बदौलत हासिल हुई.
(४) एक क़ौल यह भी है कि वालिद से सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और औलाद से आपकी उम्मत मुराद है. (हुसैनी)
(५) कि गर्भ में एक तंग और तारीक मकान में रहे. पैदाइश के वक़्त तकलीफ़ उठाए, दूध पीने, दूध छोड़ने, रोज़ी हासिल करने और ज़िन्दगी और मौत की मशक़्क़तों को बर्दाश्त कर ले.
(६) यह आयत अबुल अशद उसैद बिन किलदह के बारे में उतरी. वह निहायत शक्तिशाली और ज़ोरावर था और उसकी ताक़त का यह आलम था कि चमड़ा पाँव के नीचे दबा लेता था. दस दस आदमी उसको खींचते और वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उसके पाँव के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता. और एक क़ौल यह है कि यह आयत वलीद बिन मुग़ीरह के हक़ में उतरी. मानी यह हैं कि ये काफ़िर अपनी क़ुव्वत पर घमण्ड करने वाला मुसलमानों को कमज़ोर समझता है. किस गुमान में है.

९२ - सूरए लैल

सूरए लैल मक्के में उतरी, इसमें २१ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
और रात की क़सम जब छाए[२]﴾१﴿ और दिन की जब चमके[३]﴾२﴿ और उसी[४]की जिसने नर और मादा बनाए[५]﴾३﴿ बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है[६]﴾४﴿ तो वह जिसने दिया[७] और परहेज़गारी की[८]﴾५﴿ और सबसे अच्छी को सच माना[९]﴾६﴿ तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहैया कर देंगे[१०]﴾७﴿ और वह जिसने कंजूसी की[११] और बेपरवाह बना[१२]﴾८﴿ और सबसे अच्छी को झुटलाया[१३]﴾९﴿ तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहैया कर देंगे[१४]﴾१०﴿ और उसका माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा[१५]﴾११﴿ बेशक हिदायत फ़रमाना[१६] हमारे ज़िम्मे है﴾१२﴿ और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के हमीं मालिक हैं﴾१३﴿ तो मैं तुम्हें डराता हूँ उस आग से जो भड़क रही है﴾१४﴿ न जाएगा उसमें[१७] मगर बड़ा बदबख़्त﴾१५﴿ जिसने झुटलाया[१८] और मुंह फेरा[१९]﴾१६﴿ और बहुत उससे दूर रखा जाएगा जो सबसे बड़ा परहेज़गार﴾१७﴿ जो अपना माल देता है कि सुथरा हो[२०]﴾१८﴿ और किसी का उसपर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए﴾१९﴿ सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सब से बलन्द है[२१]﴾२०﴿ और बेशक क़रीब है कि वह राज़ी होगा[२२]﴾२१﴿

अल्लाह सच्ची क़ुदरत वाले की क़ुदरत को नहीं जानता. इसके बाद उसका क़ौल नक़्ल फ़रमाया.
(७) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी में लोगों को रिश्वतें दे दे कर, ताकि हुज़ूर को आज़ार पहुंचाएं.
(८) यानी क्या उसका यह गुमान है कि उसे अल्लाह तआला ने नहीं देखा और अल्लाह तआला उससे नहीं सवाल करेगा कि उसने यह माल कहाँ से हासिल किया, किस काम में ख़र्च किया. इसके बाद अल्लाह तआला अपनी नेअमतों का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि उसको इब्रत हासिल करने का मौक़ा मिले.
(९) जिनसे देखता है.
(१०) जिससे बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है.
(११) जिनसे मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने पीने और फूंकने में उनसे काम लेता है.
(१२) यानी छातियों की, कि पैदा होने के बाद उनसे दूध पीता और ग़िज़ा हासिल करता रहा. मुराद यह है कि अल्लाह तआला की नेअमतें ज़ाहिर और काफ़ी हैं उनका शुक्र लाज़िम.
(१३) यानी नेक अअमाल बजा लाकर इन बड़ी नेअमतों का शुक्र अदा न किया. इसको घाटी में कूदने की उपमा दी इस मुनासिबत से कि इस राह में चलना नफ़्स पर शाक़ है. (अबुस्सऊद)
(१४) और उसमें कूदना क्या यानी इससे उसके ज़ाहिरी मानी मुराद नहीं बल्कि इसकी तफ़सीर वह है जो अगली आयतों में इरशाद होती है.
(१५) ग़ुलामी से, चाहे इस तरह हो कि किसी ग़ुलाम को आज़ाद कर दे या इस तरह कि मकातिब को इतना माल दे जिससे वह आज़ादी हासिल कर सके या किसी ग़ुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या क़र्ज़दार के रिहा कराने में सहायता दे और ये मानी भी हो सकते हैं कि नेक कर्म इख़्तियार करके अपनी गर्दन आख़िरत के अज़ाब से छुड़ाए. (रूहुल बयान)
(१६) यानी क़हत और मंहगाई के वक़्त कि उस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अज़ीम का मूजिब होता है.
(१७) जो निहायत तंगदस्त और ग़रीब हो, न उसके पास ओढ़ने को हो न बिछाने को. हदीस शरीफ़ में है कि यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला, जिहाद में कोशिश करने वाले और बेतकान रात भर जागने वाले और हमेशा रोज़ा रखने वाले की तरह है.
(१८) यानी ये तमाम काम जब मक़बूल हैं कि काम करने वाला ईमानदार हो और जबही उसको कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं, सब कर्म व्यर्थ, बेकार.

(१९) मुसीबतों से बाज़ रहने और ताअतों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बर्दाश्त करने पर जिन में मूमिन मुब्तिला हो.
(२०) कि ईमान वाले एक दूसरे के साथ महब्बत और शफ़क़त का सुलूक करें.
(२१) जिन्हें उनके अअमाल-नामे दाएं हाथ में दिये जाएंगे और अर्श की दाईं ओर से जन्नत में दाख़िल होंगे.
(२२) कि उन्हें उनके अअमाल-नामे बाएं हाथ में दिये जाएंगे और अर्श की बाईं ओर से जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे.
(२३) कि न उसमें बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धुँआ बाहर जा सके.

९१ - सूरए शम्स

(१) सूरए शम्स मक्की है, इसमें एक रूकू, पन्द्रह आयतें चव्वन कलिमे, दो सौ सैंतालीस अक्षर हैं.
(२) यानी सूर्यास्त के बाद उदय हो. यह क़मरी महीने के पहले पन्द्रह दिन में होता है.
(३) यानी सूरज को ख़ूब वाज़ेह करे क्योंकि दिन सूर्य के प्रकाश का नाम है तो दिन जितना ज़्यादा रौशन होगा उतना ही सूरज का ज़ुहूर ज़्यादा होगा क्योंकि प्रभाव की शक्ति और उसका कमाल प्रभावित करने वाले की शक्ति और कमाल पर दलालत करता है. या ये मानी हैं कि जब दिन दुनिया को या ज़मीन को रौशन करे या रात की तारीकी को दूर करे.
(४) यानी सूरज को और आसमान के किनारे ज़ुलमत और अंधेरे से भर जाएं या ये मानी कि जब रात दुनिया को छुपाए.
(५) और बहुत सी इन्द्रियाँ अता फ़रमाईं, बोलने की, सुनने की, देखने की, सोचने समझने की, सब कुछ अता फ़रमाया.
(६) अच्छाई और बुराई और फ़रमाँबरदारी और सरकशी से उसे बाख़बर कर दिया और अच्छा और बुरा बता दिया.
(७) यानी नफ़्स को.
(८) बुराइयों से.
(९) अपने रसूल हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को.
(१०) क़ेदार बिन सालिफ़, उन सब की मर्ज़ी से ऊंटनी की कूंचें काटने के लिये.
(११) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम.
(१२) को तकलीफ़ पहुंचाने.
(१३) यानी जो दिन उसके पीने का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में छेड़ छाड़ न करो ताकि तुम पर अज़ाब न आए.
(१४) यानी हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाने और ऊंटनी की कूंचें काटने के कारण.
(१५) और सब को हलाक कर दिया. उनमें से कोई न बचा.
(१६) जैसा बादशाहों को होता है क्योंकि वह मालिकुल मुल्क है, जो चाहे करे. किसी को दम मारने की मजाल नहीं. कुछ मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को उनमें से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि अज़ाब उतरने के बाद उन्हें ईज़ा पहुंचा सके.

९२ - सूरए लैल

(१) सूरए वल-लैल मक्की है. इस में एक रूकू, इक्कीस आयतें, इकहत्तर कलिमे, तीन सौ दस अक्षर हैं.
(२) दुनिया पर अपनी तारीकी से, कि वह वक़्त है ख़ल्क़ के सुकून का. हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और हरकत और भाग-दौड़ से साकिन होता है, और अल्लाह के मक़बूल बन्दे सच्चे दिल से स्तुति और मुनाजात में लग जाते हैं.
(३) और रात के अन्धेरे को दूर करे कि वह वक़्त है सोतों के जागने का और जानदारों के हरकत करने का और रोज़ी की तलाश में लग जाने का.
(४) परम क़ुदरत वाला क़ादिर.
(५) एक ही पानी से.
(६) यानी तुम्हारे कर्म अलग अलग हैं, कोई ताअत बजा लाकर जन्नत के लिये अमल करता है, कोई नाफ़रमानी करके जहन्नम के लिये.
(७) अपना माल ख़ुदा की राह में, और अल्लाह तआला के हक़ को अदा किया.
(८) वर्जित और हराम बातों से बचा.
(९) यानी इस्लाम वालों को.
(१०) जन्नत के लिये और उसे ऐसी ख़सलत की तौफ़ीक़ देंगे जो उसके लिये आसानी का सबब और राहत का कारण हो और वह ऐसे अमल करे जिनसे उसका रब राज़ी हो.
(११) और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और अल्लाह तआला के हक़ अदा न किये.
(१२) सवाब और आख़िरत की नेअमत से.
(१३) यानी मिल्लते इस्लाम को.

९३ - सूरए दुहा

सूरए दुहा मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
चाश्त की क़सम[२] ﴾१﴿ और रात की जब पर्दा डाले[३] ﴾२﴿ कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना ﴾३﴿ और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है[४] ﴾४﴿ और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें[५] इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे[६] ﴾५﴿ क्या उसने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी[७] ﴾६﴿ और तुम्हें अपनी महब्बत में ख़ुदरफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी[८] ﴾७﴿ और तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर ग़नी (मालदार) कर दिया[९] ﴾८﴿ तो तुम यतीम पर दबाव न डालो[१०] ﴾९﴿ और मंगता को न झिड़को[११] ﴾१०﴿ और अपने रब की नअेमत का ख़ूब चर्चा करो[१२] ﴾११﴿

(٩٣) سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ (١١) — اٰياتها ١١ — ركوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿۳﴾ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ﴿۵﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪﴿۶﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪﴿۷﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ؕ﴿۹﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ﴿۱۰﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾

९४ - सूरए इन्शराह

सूरए इन्शराह मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
क्या हमने तुम्हारा सीना कुशादा न किया[२] ﴾१﴿ और तुम पर से तुम्हारा वह बोझ उतार लिया ﴾२﴿ जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी[३] ﴾३﴿ और हमने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बलन्द कर दिया[४] ﴾४﴿ तो बेशक दुशवारी के साथ आसानी है ﴾५﴿ बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है[५] ﴾६﴿ तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ में[६] मेहनत करो[७] ﴾७﴿ और अपने रब ही की तरफ़ रग़बत करो[८] ﴾८﴿

(٩٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ (١٢) — اٰياتها ٨ — ركوعها ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿۷﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿۸﴾

منزل ٧

(१४) यानी ऐसी ख़सलत जो उसके लिये दुश्वारी और सख़्ती का कारण हो और उसे जहन्नम में पहुंचाए. ये आयतें हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो और उमैया बिन ख़लफ़ के हक़ में उतरीं जिनमें से एक हज़रत सिद्दीक़ परहेज़गार हैं और दूसरा उमैया बदबख़्त. उमैया इब्ने ख़लफ़ हज़रत बिलाल को, जो उसकी ग़ुलामी में थे, दीन से फेरने के लिये तरह तरह की तकलीफ़ें देता था और इन्तिहाई ज़ुल्म और सख़्तियाँ करता था. एक रोज़ हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने देखा कि उमैया ने हज़रत बिलाल को गर्म ज़मीन पर डालकर तपते हुए पत्थर उनके सीने पर रखे हैं और इस हाल में ईमान का कलिमा उनकी ज़बान पर जारी है. आपने उमैया से फ़रमाया, ऐ बदनसीब, एक ख़ुदापरस्त पर सख़्तियाँ क्यों करता है. उसने कहा, आपको उसकी तकलीफ़ नागवार हो तो ख़रीद लीजिये. आपने भारी क़ीमत पर उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया. इसपर यह सूरत उतरी. इसमें बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें अलग अलग हैं, हज़रत अबूबक्र रदियल्लाहो अन्हो की कोशिश और, उमैया की और. हज़रत सिद्दीक़ अल्लाह की रज़ा के तालिब हैं, उमैया हक़ की दुश्मनी में अन्धा.

(१५) मर कर क़ब्र में जाएगा या जहन्नम के गढ़े में पहुंचेगा.

(१६) यानी हक़ और बातिल की राहों को वाज़ेह कर देना और हक़ पर दलीलें और प्रमाण क़ायम करना और आदेश निर्देश बयान फ़रमाना.

(१७) लाज़िमी तौर से और हमेशा के लिये.

(१८) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को.

(१९) ईमान से.

(२०) अल्लाह तआला के नज़्दीक, यानी उसका ख़र्च करना दिखावे और नुमाइश से पाक है.

(२१) जब सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहो अन्हो ने हज़रत बिलाल को बहुत भारी क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो काफ़िरों को अचंभा हुआ और उन्होंने कहा हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने ऐसा क्यों किया. शायद बिलाल का उनपर कोई एहसान होगा जो उन्होंने इतनी भारी क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद किया. इसपर यह आयत उतरी और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो का यह काम केवल अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है, किसी के एहसान का बदला नहीं और न उनपर हज़रत

बिलाल वग़ैरह का कोई एहसान है, हज़रत सिद्दीक़ रदियल्लाहो अन्हो ने बहुत लोगों को उनके इस्लाम के कारण ख़रीद कर आज़ाद किया.
(२२) उस नेअमत और करम से जो अल्लाह तआला उनको जन्नत में अता फ़रमाएगा.

९३ - सूरए दुहा

(१) सूरए वद्दुहा मक्की है, इसमें एक रूकू, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सौ बहत्तर अक्षर हैं. एक बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि कुछ रोज़ वही न आई तो काफ़िरों ने तअने के तौर पर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को उनके रब ने छोड़ दिया और मकरूह यानी बुरा जाना, इसपर यह सूरत उतरी.
(२) जिस वक़्त कि सूरज बलन्द हो क्योंकि यह वक़्त वही है जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे. चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इसका वक़्त सूरज बलन्द होने से ज़वाल के पहले तक है. इमाम साहिब के नज़्दीक चाश्त की नमाज़ दो रकअतें हैं या चार, एक सलाम के साथ. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि दुहा से दिन मुराद है.
(३) और उसकी तारीकी आम हो जाए. इमाम जअफ़रे सादिक़ रदियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वह चाश्त है जिसमें अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाय. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाल के नूर की तरफ़ और रात किनायह है आपके ख़ुश्बूदार गेसुओं की तरफ़. (रूहुल बयान)
(४) यानी आख़िरत दुनिया से बेहतर, क्योंकि वहाँ आपके लिये मक़ामे मेहमूद और हौज़े कौसर और भलाई और तमाम नबियों और रसूलों पर ऊंचा दर्जा और आपकी उम्मत का सारी उम्मतों पर गवाह होना और आपकी शफ़ाअत से मूमिनों के दर्जे और बलन्द होना, और बेइन्तिहा इज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आ सकतीं. और मुफ़स्सिरों ने इसके ये मानी भी बयान किये हैं कि आने वाले हालात आपके लिये पिछले हालात से बेहतर और बरतर हैं गोया कि हक़ तआला का वादा है कि वह रोज़ बरोज़ आपके दर्जे बलन्द करेगा और इज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़्यादा अता फ़रमाएगा और घड़ी दर घड़ी आपके दर्जे तरक़्क़ियों पर रहेंगे.
(५) दुनिया और आख़िरत में.
(६) अल्लाह तआला का अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से यह बड़ा वादा उन नेअमतों को भी शामिल है जो आपको दुनिया में अता फ़रमाईं यानी कमाले नफ़्स और अगलों पिछलों के उलूम और ज़हूरे अम्र और दीन का ऐलान और वो फ़ुतूहात जो एहदे मुबारक में हुई और सहाबा के ज़माने में हुई और क़यामत तक मुसलमानों को होती रहेंगी और दावत का आम होना और इस्लाम का पूर्व से पश्चिम तक फैल जाना और आपकी उम्मत का बेहतरीन उम्मत होना और आपकी वह बुज़ुर्गी और चमत्कार जिन का इल्म अल्लाह ही को है और आख़िरत की इज़्ज़त और सम्मान को भी शामिल है कि अल्लाह तआला ने आपको आम और ख़ास शफ़ाअत और मक़ामे मेहमूद वग़ैरह बड़ी नेअमतें अता फ़रमाईं. मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दोनों हाथ उठाकर उम्मत के हक़ में रो रो कर दुआ फ़रमाई और अर्ज़ किया अल्लाहुम्मा उम्मती उम्मती (यानी ऐ अल्लाह मेरी उम्मत, मेरी उम्मत) अल्लाह तआला ने जिब्रईल को हुक्म दिया कि मुहम्मदे मुस्तफ़ा(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की ख़िदमत में जाकर पूछो, रोने का क्या कारण है. जबकि अल्लाह तआला हर बात जानता है. जिब्रईल ने हुक्म के अनुसार हाज़िर होकर दरियाफ़्त किया. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन्हें तमाम हाल बताया और उम्मत के ग़म का इज़हार फ़रमाया. जिब्रईले अमीन ने अल्लाह की बारगह में अर्ज़ किया कि तेरे हबीब यह फ़रमाते हैं, जबकि तू ख़ूब जानने वाला है. अल्लाह तआला ने जिब्रईल को हुक्म दिया कि जाओ और मेरे हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहो कि हम आपकी उम्मत के बारे में बहुत जल्द आपको राज़ी करेंगे और आपके दिल को दुखी न होने देंगे. हदीस शरीफ़ में है कि जब यह आयत उतरी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे, मैं राज़ी न होऊंगा. आयत साफ़ प्रमाणित करती है कि अल्लाह तआला वही करेगा जिसमें उसके हबीब राज़ी हों. और शफ़ाअत की हदीसों से साबित है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रज़ा इसी में है कि उम्मत के सारे गुनहगार बख़्श दिये जाएं. तो आयत और हदीसों से यह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअत मक़बूल और आपकी मुबारक मर्ज़ी के मुताबिक़ उम्मत के गुनहगार बख़्शे जाएंगे. सुब्हानल्लाह ! क्या बलन्द दर्जा है कि जिस रब को राज़ी करने के लिये तमाम मुक़र्रब बन्दे तकलीफ़ें बर्दाश्त करते और महनतें करते हैं वह इस हबीबे करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को राज़ी करने के लिये अता आम करता है. इसके बाद अल्लाह तआला ने उन नेअमतों का ज़िक्र फ़रमाया जो आपके शुरू से आप पर फ़रमाईं.
(७) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अभी वालिदा माजिदा के गर्भ में थे. गर्भ दो माह का था कि आपके वालिद साहिब ने मदीना शरीफ़ में वफ़ात पाई और न कुछ माल छोड़ा न कोई जगह छोड़ी. आपकी परवरिश के ज़िम्मेदार आपके दादा अब्दुल-मुत्तलिब हुए. जब आपकी उम्र शरीफ़ चार या छ साल की हुई तो वालिदा साहिबा ने भी वफ़ात पाई. आठ साल की उम्र में दादा अब्दुल-मुत्तलिब का साया सर से उठ गया. उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले अपने बेटे अबू तालिब को जो हुज़ूर के सगे चचा थे आपकी ख़िदमत और देख भाल की वसीयत की. अबू तालिब आपकी ख़िदमत में सरगर्म रहे. यहाँ तक कि आपको अल्लाह तआला ने नबुव्वत से नवाज़ा. इस आयत की तफ़सीर में मुफ़स्सिरों ने एक मानी ये बयान किये हैं कि यतीम यकता और बेनज़ीर के अर्थ में हैं इस सूरत में आयत के मानी ये हैं कि अल्लाह तआला ने आपको सम्मान और बुज़ुर्गी में यकता और बेनज़ीर पाया और आपको

९५ - सूरए तीन.

सूरए तीन मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

इन्जीर की क़सम और ज़ैतून(२)《१》 और तूरे सीना(३)《२》 और उस अमान वाले शहर की(४)《३》 बेशक हमने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया《४》 फिर उसे हर नीची से नीची हालत की तरफ़ फेर दिया(५)《५》 मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें बेहद सवाब है (६)《६》 तो अब(७) क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर बाइस है(८)《७》 क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं《८》

९६ - सूरए अलक़

सूरए अलक़ मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

पढ़ो अपने रब के नाम से(२) जिसने पैदा किया(३)《१》 आदमी को ख़ून की फुटक से बनाया《२》 पढ़ो(४) और तुम्हारा रब ही सबसे बड़ा करीम《३》 जिसने क़लम से लिखना सिखाया(५)《४》 आदमी को सिखाया जो न जानता था(६)《५》 हाँ हाँ बेशक आदमी सरकशी करता है《६》 इसपर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया(७)《७》 बेशक तुम्हारे रब ही की तरफ़ फिरना है(८)《८》 भला देखो तो जो

अपने क़ुर्ब के मक़ाम में जगह दी और अपनी हिफ़ाज़त में आपके दुश्मनों के बीच आपकी परवरिश फ़रमाई और आपको नबुव्वत और रिसालत के ऊंचे मन्सबों के लिये चुना. (ख़ाज़िन, जुमल और रुहुल बयान)

(८) और ग़ैब के रहस्य आप पर खोल दिये और जो हुआ है और जो होने वाला है उसकी जानकारी आपको अता फ़रमाई. अपनी ज़ात और सिफ़ात की पहचान में सबसे बलन्द दर्जा इनायत किया. मुफ़स्सिरों ने एक मानी इस आयत के ये भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआला ने आप को ऐसा वारुफ़्ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने मरतबों की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आप को आपकी ज़ात और सिफ़ात और मरतबों और दर्जों की पहचान अता फ़रमाई. सारे नबी मअसूम होते हैं, नबुव्वत से पहले भी और नबुव्वत के बाद भी, और अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी सिफ़ात के हमेशा से जानकार होते हैं.

(९) क़नाअत यानी सन्तोष की नेअमत अता फ़रमा कर. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि मालदारी माल की बहुतात से नहीं होती. अस्ली मालदारी नफ़्स का बेनियाज़ होना है.

(१०) जैसा कि जाहिलों का तरीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उनपर अत्याचार करते थे. हदीस शरीफ़ में है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के घरों में वह घर बहुत अच्छा है जिसमें यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वह घर बहुत बुरा है जिसमें यतीम के साथ बुरा व्यवहार किया जाता हो.

(११) या कुछ दे दो या हुस्ने अख़्लाक़ और नर्मी के साथ उज़्र कर दो. यह भी कहा गया है कि सवाल करने वाले से विद्यार्थी मुराद है, उसकी इज़्ज़त करनी चाहिये और उसकी जो हाजत हो उसको पूरा करना चाहिये और उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिये.

(१२) नेअमतों से मुराद वो नेअमतें हैं जो अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अता फ़रमाईं और वो भी जिनका हुज़ूर से वादा फ़रमाया. नेअमतों के ज़िक्र का इसलिये हुक्म फ़रमाया कि नेअमत का बयान करना शुक्रगुज़ारी है.

९४ - सूरए इन्शराह

(१) सूरए अलम नशरह मक्की है. इसमें एक रूकू, आठ आयतें, सत्ताईस कलिमे और एक सौ तीन अक्षर हैं.

(२) यानी हमने आपके सीने को कुशादह और वसीअ किया, हिदायत व मअरिफ़त और रहनुमाई व नबुव्वत और इल्म व हिकमत के लिये, यहाँ तक कि ग़ैब और शहादत के आलम उसकी वुसअत में समा गए और जिस्म की सीमाएं रूह के अनवार के लिये रोक न बन सकीं और अल्लाह की तरफ़ से अता किये गए उलूम और अल्लाह के अहकामात और उसकी मअरिफ़तें और हक़ीक़तें सीनए

पाक में जलवा नुमा हुई और ज़ाहिरी तौर पर भी सीने का खोला जाना बार बार हुआ. उम्र शरीफ़ की शुरुआत में, और वही के आरंभ के समय, और मअेराज की रात में जैसा कि हदीसों में आया है. उसकी शक्ल यह थी कि जिब्रईले अमीन ने सीनए पाक को चाक करके क़ल्बे मुबारक निकाला और सोने के थाल में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूर और हिकमत से भरकर उसको उसकी जगह रख दिया.

(३) इस बोझ से मुराद या वह ग़म है जो आपको काफ़िरों के ईमान न लाने से रहता था, या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिस में क़ल्बे मुबारक मशग़ूल रहता था. मुराद यह है कि हमने आपको शफ़ाअत का मन्सब देकर वह बोझ कम कर दिया.

(४) हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत जिब्रईल से इस आयत को दरियाफ़्त फ़रमाया तो उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आपके ज़िक्र की बलन्दी यह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाए, मेरे साथ आपका भी ज़िक्र किया जाए. हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद यह है कि अज़ाब में, तकबीर में, तशह्हुद में, मिम्बरों पर ख़ुत्बों में, तो अगर कोई अल्लाह तआला की इबादत करे, हर बात में उसकी तस्दीक़ करे और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत की गवाही न दे, तो यह सब बेकार. वह काफ़िर ही रहेगा. क़तादह ने कहा कि अल्लाह ताअला ने आपका ज़िक्र दुनिया और आख़िरत में बलन्द किया. हर ख़तीब, हर तशह्हुद पढ़ने वाला अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो के साथ वअशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह पुकारता है. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया कि आपके ज़िक्र की बलन्दी यह है कि अल्लाह तआला ने नबियों से आप पर ईमान लाने का एहद लिया.

(५) यानी जो शिद्दत और सख़्ती कि आप काफ़िरों के मुक़ाबले में बर्दाश्त फ़रमा रहे हैं उसके साथ ही आसानी है कि हम आपको उनपर ग़ल्बा अता फ़रमाएंगे.

(६) यानी आख़िरत की.

(७) कि दुआ नमाज़ के बाद मक़बूल होती है. इस दुआ से मुराद नमाज़ के आख़िर की वह दुआ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वह दुआ जो सलाम के बाद हो, इसमें मतभेद है.

(८) उसी की मेहरबानी चाहते रहो और उसी पर भरोसा रखो.

९५ - सूरए तीन

(१) सूरए वत्तीन मक्की है. इसमें एक रुकू, आठ आयतें, चौंतीस कलिमे, एक सौ पाँच अक्षर हैं.

(२) इन्जीर बहुत बढ़िया मेवा है जिसमें फ़ुज़लह नहीं, जल्दी हज़्म होने वाली, बहुत फ़ायदे वाली, पेट साफ़ रखने वाली, जिगर बदन को स्वस्थ रखने वाली, बलग़म को छाँटने वाली. ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है, इसका तेल रौशनी के काम में भी लाया जाता है और सालन की जगह भी खाया जाता है. यह ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जहाँ तरी बिल्कुल नहीं होती. बग़ैर ख़िदमत के पलता बढ़ता है, हज़ारों बरस रहता है. इन चीज़ों में अल्लाह की क़ुदरत की निशानियाँ ज़ाहिर हैं.

(३) यह वह पहाड़ है जिसपर अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सीना उस जगह का नाम है जहाँ बहुतात से फलदार दरख़्त हों.

(४) यानी मक्कए मुकर्रमा की.

(५) यानी बुढ़ापे की तरफ़ जबकि बदन कमज़ोर, अंग नाकारा, बुद्धि दूषित, पीठ झुकी, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, खाल में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, अपनी ज़रूरत पूरी करने में आदमी बेबस हो जाता है. या ये मानी हैं कि जब उसने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्रगुज़ारी न की और नाफ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के सबसे निचले दर्जों को हमने उसका ठिकाना बना दिया.

(६) अगरचे बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण वह जवानी की तरह ताअतें भरपूर तरीक़े से बजा न ला सकें और उनके कर्म कम हो जाएं. लेकिन अल्लाह के करम से उन्हें वही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माने में अमल करने से मिलता था और उतने ही अमल उनके लिखे जाएंगे.

(७) इस खुले बयान और वाज़ेह तर्क के बाद, ऐ काफ़िर.

(८) और तू अल्लाह तआला की ये क़ुदरतें देखने के बावुजूद क्यों दोबारा उठाए जाने और हिसाब और जज़ा का इन्कार करता है.

९६ - सूरए अलक़

(१) इसे सूरए इक़रा भी कहते हैं. यह सूरत मक्की है. इसमें एक रुकू, उन्नीस आयतें, बानवे कलिमे, दो सौ अस्सी अक्षर हैं. अक्सर मुफ़स्सिरों के नज़्दीक यह सूरत सबसे पहले उतरी और इसकी पहली पाँच आयतें मालम यअलम तक ग़ारे हिरा में उतरीं. फ़रिश्ते ने आकर हज़रत सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया इक़रा यानी पढ़िये. फ़रमाया, हम पढ़े नहीं हैं. उसने सीने से लगाकर बहुत ज़ोर से दबाया फिर छोड़कर कहा, पढ़िये. फिर आपने वही जवाब दिया. तीन बार ऐसा ही हुआ. फिर उसके साथ साथ आपने मालम यअलम तक पढ़ा.

(२) यानी पढ़ने की शुरुआत अदब के तौर पर अल्लाह के नाम से हो. इस सूरत में आयत से साबित होता है कि क़िरअत की शुरुआत बिस्मिल्लाह के साथ मुस्तहब है.

मना करता है﴾९﴿ बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े[९]﴾१०﴿ भला देखो तो अगर वह हिदायत पर होता ﴾११﴿ या परहेज़गारी बताता तो क्या ख़ूब था﴾१२﴿ भला देखो तो अगर झुटलाया[१०] और मुंह फेरा[११]﴾१३﴿ तो क्या हाल होगा क्या न जाना[१२] कि अल्लाह देख रहा है[१३]﴾१४﴿ हाँ हाँ अगर बाज़ न आया[१४] तो ज़रूर हम पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे[१५]﴾१५﴿ कैसी पैशानी झूटी ख़ताकार﴾१६﴿ अब पुकारे अपनी मजलिस को[१६]﴾१७﴿ अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं[१७]﴾१८﴿ हाँ हाँ उसकी न सुनो और सज्दा करो[१८] और हमसे क़रीब हो जाओ﴾१९﴿

९७ - सूरए क़द्र

सूरए क़द्र मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
बेशक हमने उसे[२] क़द्र की रात में उतारा[३]﴾१﴿ और तुमने क्या जाना क्या क़द्र की रात﴾२﴿ क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर﴾३﴿[४] उसमें फ़रिश्ते और जिब्रील उतरते हैं[५] अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये[६]﴾४﴿ वह सलामती है सुब्ह चमकने तक[७]﴾५﴿

९८ - सूरए बय्यिनह

सूरए बय्यिनह मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
किताबी काफ़िर[२] और मुश्रिक[३] अपना दीन छोड़ने को न

(३) तमाम ख़ल्क़ को.
(४) दोबारा पढ़ने का हुक्म ताकीद के लिये है और यह भी कहा गया है कि दोबारा क़िरअत के हुक्म से मुराद यह है कि तब्लीग़ और उम्मत की तालीम के लिये पढ़िये.
(५) इससे किताबत की फ़ज़ीलत साबित होती है और दर हक़ीक़त किताबत में बड़े मुनाफ़े हैं. किताबत ही से इल्म ज़ब्त में आता है गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें और उनके हालात और उनके कलाम मेहफ़ूज़ रहते हैं. किताबत न होती तो दुनिया के काम क़ायम न रह सकते.
(६) आदमी से मुराद यहाँ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम है और जो उन्हें सिखाया उससे मुराद नामों का इल्म. और एक क़ौल यह है कि इन्सान से मुराद यहाँ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं कि आपको अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों की जानकारियाँ अता कीं. (मआलिम और ख़ाज़िन)
(७) यानी ग़फ़लत का कारण दुनिया की महब्बत और माल पर घमण्ड है. ये आयतें अबू जहल के हक़ में उतरीं. उसको कुछ माल हाथ आ गया था तो उसने लिबास और सवारी और खाने पीने में तकल्लुफ़ात शुरू किये और उसका घमण्ड बहुत बढ़ गया.
(८) यानी इन्सान को यह बात पेशे नज़र रखनी चाहिये और समझना चाहिये कि उसे अल्लाह की तरफ़ पलटना है तो सरकशी और बग़ावत और घमण्ड का अंजाम अज़ाब होगा.
(९) यह आयत भी अबू जहल के हक़ में उतरी. उसने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ पढ़ने से मना किया था और लोगों से कहा था कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (मआज़ल्लाह) गर्दन पाँव से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा. फिर वह उसी ग़लत इरादे से हुज़ूर के नमाज़ पढ़ते में आया और हुज़ूर के क़रीब पहुंच कर उलटे पाँव पीछे भागा. हाथ आगे बढ़ाए हुए जैसे कोई मुसीबत को रोकने के लिये हाथ बढ़ाता है, चेहरे का रंग उड़ गया, शरीर काँपने लगा, लोगों ने कहा, क्या हाल है. कहने लगा मेरे और मुहम्मद के बीच एक खाई है जिसमें आग भरी हुई है और दहशतनाक पक्षी पंख फैलाए हुए हैं. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, अगर वह मेरे क़रीब आता तो फ़रिश्ते उसका अंग अंग अलग कर डालते.
(१०) नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को.
(११) ईमान लाने से.
(१२) अबू जहल ने.

(१३) उसके कर्म को, इसलिये जज़ा देगा.
(१४) सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ईज़ा और आपको झुटलाने से.
(१५) और उसको जहन्नम में डालेंगे.
(१६) जब अबू जहल ने नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नमाज़ से मना किया तो हुज़ूर ने उसे सख़्ती से झिड़क दिया, इसपर उसने कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं ख़ुदा की क़सम मैं आपके मुक़ाबिल नौजवान सवारों और पैदलों से इस जंगल को भर दूंगा, आप जानते हैं कि मक्के में मुझसे ज़्यादा बड़े जत्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है.
(१७) यानी अज़ाब के फ़रिश्तों को. हदीस शीफ़ में है कि अगर वह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़रिशते उसको खुल्लम खुल्ला गिरफ़्तार करते.
(१८) यानी नमाज़ पढ़ते रहो.

९७ - सूरए क़द्र

(१) सूरए कद्र मदनी है, और कुछ के अनुसार मक्की है. इसमें एक रुकू, पाँच आयतें, तीस कलिमे, एक सौ बारह अक्षर हैं.
(२) यानी क़ुरआन शरीफ़ को लौहे मेहफ़ूज़ से आसमाने दुनिया की तरफ़ एक साथ.
(३) शबे क़द्र बुज़ुर्गी और बरकत वाली रात है. इसको शबे क़द्र इसलिये कहते हैं कि इस रात में साल भर के एहकाम लागू किये जाते हैं. और फ़रिश्तों को साल भर के वज़ीफ़ों और ख़िदमतों पर लगाया जाता है. यह भी कहा गया है कि इस रात की बुज़ुर्गी और क़द्र के कारण इसे शबे क़द्र कहते हैं और यह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस रात में नेक कर्म मक़बूल होते हैं और अल्लाह की बारगाह में उनकी क़द्र की जाती है इसलिये इसको शबे क़द्र कहते हैं. हदीसों में इस रात की बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि जिसने इस रात जाग कर इबादत की, अल्लाह तआला उसके साल भर के गुनाह बख़्श देता है. आदमी को चाहिये कि इस रात कसरत से इस्तिग़फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे. साल भर में शबे क़द्र एक बार आती है और बहुत सी रिवायतें में है कि वह रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिनों में होती है और अक्सर इसकी भी ताक़ रातों में से किसी रात में. कुछ उलमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं रात शबे-क़द्र होती है. यही हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है. इस रात की फ़ज़ीलतें अगली आयतों में इरशाद फ़रमाई जाती हैं.
(४) जो शबे क़द्र से ख़ाली हों, उस एक रात में नेक अमल करना हाज़ार रातों के अमल से बेहतर है. हदीस शरीफ़ में है कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पिछली उम्मतों के एक व्यक्ति का ज़िक्र फ़रमाया जो सारी रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में लगा रहता था. इस तरह उसने हाज़ार महीने गुज़ारे थे. मुसलमानों को इससे आश्चर्य हुआ तो अल्लाह तआला ने आपको शबे क़द्र अता फ़रमाई और यह आयत उतरी कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है. (इब्ने जरीर) यह अल्लाह तआला का अपने हबीब पर करम है कि आपके उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो पिछली उम्मतों के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़्यादा हो.
(५) ज़मीन की तरफ़ और जो बन्दा खड़ा या बैठा अल्लाह की याद में मशग़ूल होता है उसको सलाम करते हैं और उसके हक़ में दुआ और इस्तिग़फ़ार करते हैं.
(६) जो अल्लाह तआला ने उस साल के लिये लिख दिया.
(७) बलाओं और आफ़तों से.

९८ - सूरए बय्यिनह

(१) इसे सूरए लम यकुन भी कहते हैं. जम्हूर के नज़्दीक यह सूरत मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा की एक रिवायत यह है कि मक्की है. इस सूरत में एक रुकू, आठ आयतें, चौरानवे कलिमे, तीन सौ निनानवे अक्षर हैं.
(२) यहूदी और ईसाई.
(३) बुत परस्त.

थे जब तक उनके पास रौशन दलील न आए[४]﴾१﴿ वह कौन वह अल्लाह का रसूल[५] कि पाक सहीफ़े (ग्रन्थ) पढ़ता है[६]﴾२﴿ उनमें सीधी बातें लिखी हैं[७]﴾३﴿ और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बाद इसके कि वह रौशन दलील[८] उनके पास तशरीफ़ लाए[९]﴾४﴿ और उन लोगों को तो[१०] यही हुक्म हुआ कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर अक़ीदा लाते[११] एक तरफ़ के होकर[१२] और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें और यह सीधा दीन है﴾५﴿ बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुश्रिक सब जहन्नम की आग में हैं हमेशा उसमें रहेंगे, वही तमाम मख़लूक़ में बदतर हैं﴾६﴿ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वही तमाम मख़लूक़ में बेहतर हैं﴾७﴿ उनका सिला उनके रब के पास बसने के बाग़ हैं जिनके नीचे नेहरें बहें उनमें हमेशा हमेशा रहें, अल्लाह उनसे राज़ी[१३] और वो उससे राज़ी[१४] यह उसके लिये है जो अपने रब से डरे[१५]﴾८﴿

९९ - सूरए ज़िलज़ाल

सूरए ज़िलज़ाल मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]

जब ज़मीन थरथरा दी जाए[२] जैसा उसका थरथराना ठहरा है[३]﴾१﴿ और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक

(४) यानी सैयदुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जलवा अफ़रोज़ हों क्योंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले ये सारे यही कहते कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वह नबीये मौऊद तशरीफ़ फ़रमा न हों जिनका तौरात और इन्जील में ज़िक्र है.

(५) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(६) यानी क़ुरआन शरीफ़.

(७) हक़ और इन्साफ़ की.

(८) यानी सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम.

(९) मुराद यह है कि पहले से तो सब इसपर सहमत थे कि जब वादा किये गए नबी तशरीफ़ लाएं तो हम उनपर ईमान लाएंगे लेकिन जब वह नबी जलवा अफ़रोज़ हुए तो कुछ तो आप पर ईमान लाए और कुछ ने हसद और दुश्मनी से कुफ़्र अपनाया.

(१०) तौरात और इन्जील में.

(११) सच्चे दिल से, शिर्क और दोहरी प्रवृत्ति से दूर रहकर.

(१२) यानी सारे दीनों को छोड़ कर ख़ालिस इस्लाम के मानने वाले होकर.

(१३) और उनकी ताअत और इख़्लास से.

(१४) उसके करम और अता से.

(१५) और उसकी नाफ़रमानी से बचे.

९९ - सूरए ज़िलज़ाल

(१) इसे सूरए इज़ा ज़ुलज़िलत और सूरए ज़लज़लह भी कहते हैं. यह सूरत मक्की और कुछ की राय में मदनी है. इसमें एक रूकू, आठ आयतें, पैंतीस कलिमे, एक सौ उन्तालीस अक्षर हैं.

(२) क़यामत क़ायम होने के नज़्दीक या क़यामत के दिन.

(३) और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई पहाड़ बाक़ी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए.

दे(४)﴿२﴾ और आदमी कहे उसे क्या हुआ(५)﴿३﴾ उस दिन वह अपनी ख़बरें बताएगी(६)﴿४﴾ इसलिए कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा(७)﴿५﴾ उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे(८) कई राह होकर(९) ताकि अपना किया(१०) दिखाए जाए ﴿६﴾ तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा﴿७﴾ और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा(११)﴿८﴾

१०० - सूरए आदियात

सूरए आदियात मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)

क़सम उनकी जो दौड़ते हैं सीने से अवाज़ निकलती हुई(२)﴿१﴾ फिर पत्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर(३)﴿२﴾ फिर सुब्ह होते ताराज करते हैं(४)﴿३﴾ फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं,﴿४﴾ फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं﴿५﴾ बेशक आदमी अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है(५)﴿६﴾ और बेशक वह उस पर(६) ख़ुद गवाह है﴿७﴾ और बेशक वह माल की चाहत में ज़रूर कर्रा है(७)﴿८﴾ तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे(८) जो क़ब्रों में हैं﴿९﴾ और खोल दी जाएगी(९) जो सीनें में है﴿१०﴾ बेशक उनके रब को उस दिन(१०) उनकी सब ख़बर है(११)﴿११﴾

(४) यानी ख़ज़ाने और मुर्दे जो उसमें हैं सब निकल कर बाहर आ पड़ें.

(५) कि ऐसी बेचैन हुई और ऐसा भारी ज़लज़लह आया कि जो कुछ उसके अन्दर था, सब बाहर फैंक दिया.

(६) और जो नेकी बदी उस पर की गई सब बयान करेगी. हदीस शरीफ़ में है कि हर मर्द और औरत ने जो कुछ उसपर किया उसकी गवाही देगी, कहेगी, उस दिन यह किया और उस दिन यह. (तिरमिज़ी)

(७) कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो कर्म उस पर किये गए हैं उनकी ख़बरें दे.

(८) हिसाब के मैदान से .

(९) कोई दाईं तरफ़ से होकर जन्नत की तरफ़ जाएगा और कोई बाईं तरफ़ से दोज़ख़ की तरफ़.

(१०) यानी अपने कर्मों की जज़ा.

(११) हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा ने फ़रमाया कि हर मूमिन और काफ़िर को क़यामत के दिन उसके अच्छे बुरे कर्म दिखाए जाएंगे. मूमिन को उसकी नेकियाँ और बदियाँ दिखाकर अल्लाह तआला बदियाँ बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियाँ रद कर दी जाएंगी क्योंकि कुफ़्र के कारण अकारत हो चुकीं और बदियों पर उसको अज़ाब किया जाएगा. मुहम्मद बिन कअब क़र्ज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो उसका बदला दुनिया ही में देख लेगा यहाँ तक कि जब दुनिया से निकलेगा तो उसके पास कोई नेकी न होगी और मूमिन अपनी बदियों की सज़ा दुनिया में पाएगा तो आख़िरत में उसके साथ कोई बदी न होगी. इस आयत में तर्ग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी हो, काम आने वाली है और चेतावनी है कि गुनाह छोटा सा भी हो, वबाल है. कुछ मुफ़स्सिरों ने यह फ़रमाया है कि पहली आयत मूमिनों के हक़ में है और पिछली काफ़िरों के.

१०० - सूरए आदियात

(१) सूरए वल-आदियात हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहो अन्हो के क़ौल के मुताबिक़ मक्की है और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हुमा इसे मदनी बताते हैं. इसमें एक रूकू, गयारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सौ तिरेसठ अक्षर हैं.

(२) उनसे मुराद ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उनके सीनों से आवाज़ें निकलती हैं.

(३) जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं.

(४) दुश्मन को.

(५) कि उसकी नेअमतों से मुकर जाता है.

(६) अपने अमल से.

१०१ - सूरए अल-क़ारिअह

सूरए अल-क़ारिआ मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें, एक रूकू हैं.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]

दिल दहलाने [2]﴾१﴿ क्या वह दहलाने वाली﴾२﴿ और तूने क्या जाना क्या है दहलाने वाली[2]﴾३﴿ जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतिंगे[3]﴾४﴿ और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन[4]﴾५﴿ तो जिसकी तौलें भारी हुईं[5]﴾६﴿ वो तो मन मानते ऐश में हैं[6]﴾७﴿ और जिसकी तौलें हलकी पड़ीं[7]﴾८﴿ वह नीचा दिखाने वाली गोद में है[8]﴾९﴿ और तूने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली﴾१०﴿ एक आग शोले मारती[9]﴾११﴿

१०२ - सूरए तकासुर

सूरए तकासुर मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें, एक रूकू है.

अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [1]

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा[2] माल की ज़ियादा तलबी ने[3]﴾१﴿ यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा[4]﴾२﴿ हाँ हाँ जल्द जान जाओगे[5]﴾३﴿ फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे[6]﴾४﴿ हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो माल की महब्बत न रखते[7]﴾५﴿ बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे[8]﴾६﴿ फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे﴾७﴿ फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नअेमतों की पुछताछ होगी[9]﴾८﴿
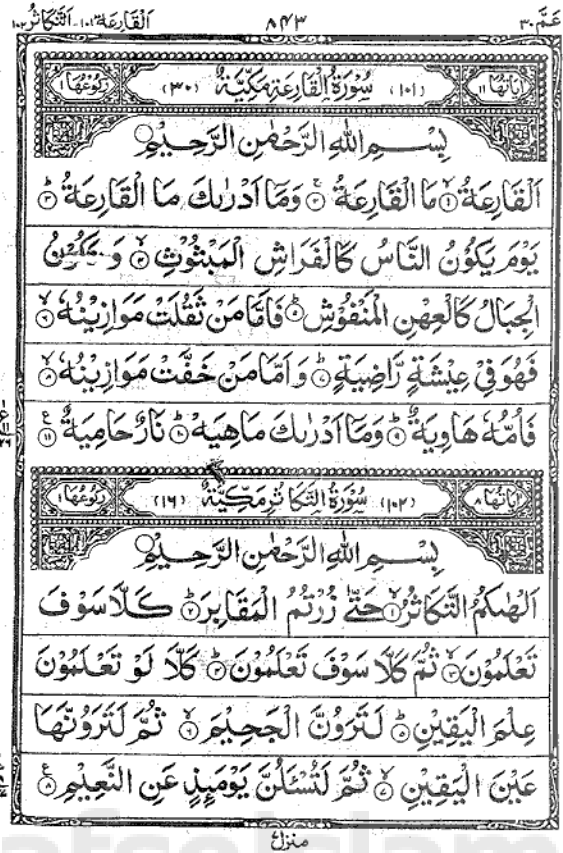
(७) निहायत क़वी और शक्तिशाली है और इबादत के लिये कमज़ोर.
(८) मुर्दे.
(९) वह हक़ीक़त या वह नेकी और बदी.
(१०) यानी क़यामत का दिन, जो फ़ैसले का दिन है.
(११) जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें अच्छे बुरे कर्मों का बदला देगा.

१०१ - सूरए अल-क़ारिअह

(१) सूरए अल-क़ारिअह मक्की है. इसमें एक रूकू, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सौ बावन अक्षर हैं.
(२) इससे मुराद क़यामत है जिसकी हौल और हैबत से दिल दहलेंगे और क़ारिअह क़यामत के नामों में से एक नाम है.
(३) यानी जिस तरह पतिंगे शोले पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उनके लिये कोई एक दिशा निर्धारित नहीं होती, हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिशा से जाता है, यही हाल क़यामत के दिन ख़ल्क़ के बिखराव का होगा.
(४) जिसके टुकड़े अलग अलग होकर उड़ते हैं, यही हाल क़यामत के हौल और दहशत से पहाड़ों का होगा.
(५) और वज़नदार अमल यानी नेकियाँ ज़्यादा हुईं.
(६) यानी जन्नत में मूमिन की नेकियाँ अच्छी सूरत में लाकर मीज़ान पर रखी जाएंगी तो अगर वो भारी हुईं तो उसके लिये जन्नत है. और काफ़िर की बुराइयाँ बदतरीन सूरत में लाकर मीज़ान में रखी जाएंगी और तौल हलकी पड़ेगी क्योंकि काफ़िर के कर्म बातिल हैं उनका कुछ वज़न नहीं. तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा.
(७) क्योंकि वह बातिल का अनुकरण करता था.
(८) यानी उसका ठिकाना दोज़ख़ की आग है.
(९) जिसमें जलन और तेज़ी है, अल्लाह तआला उससे पनाह में रखे.

१०३ - सूरए अस्र

सूरए अस्र मक्के में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
इस ज़मान-ए-महबूब की क़सम(२)(१) बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है(३)(२) मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की(४) और एक दूसरे को सब्र की वसीयत की(५)(३)

१०४ - सूरए हुमुज़ह

सूरए हमज़ा मक्के में उतरी, इसमें ९ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
ख़राबी है उसके लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे(२)(१) जिसने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा(२) क्या यह समझता है कि उसका माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा(३)(३) हरगिज़ नहीं ज़रूर वह रौंदने वाली में फैंका जाएगा(४)(४) और तूने क्या जाना क्या रौंदने वाली(५) अल्लाह की आग भड़क रही है(६) वह जो दिलों पर चढ़ जाएगी(६)(७) बेशक वह उनपर बन्द कर दी जाएगी(७)(८) लम्बे लम्बे सुतूनों (खम्भों) में(८)(९)

१०५ - सूरए फ़ील

सूरए फ़ील मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला (१)
ऐ मेहबूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया(२)(१) क्या उनका दाँव तबाही में न
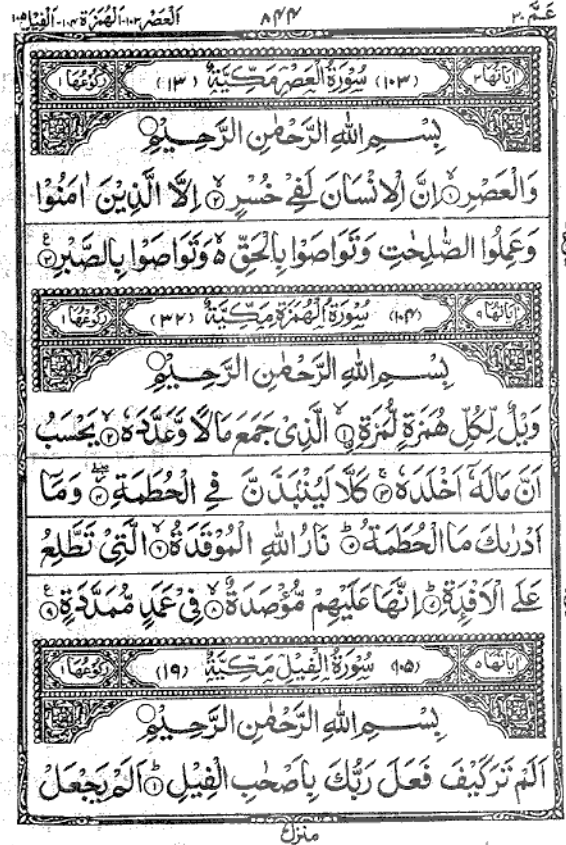
१०२ - सूरए तकासुर

(१) सूरए तकासुर मक्की है. इसमें एक रूकू, आठ आयतें, अठ्ठाईस कलिमे, एक सौ बीस अक्षर हैं.
(२) अल्लाह तआला की ताअतों से.
(३) इससे मालूम हुआ कि माल की कसरत का लालच और उसपर घमण्ड अच्छा नहीं और इसमें गिरफ़्तार होकर आदमी आख़िरत की सआदत से मेहरूम रह जाता है.
(४) यानी मौत के वक़्त तक लालच तुम्हारे साथ जुड़ा रहा. हदीस शरीफ़ में है सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मुर्दे के साथी तीन होते हैं, दो लौट आते हैं एक उसके साथ रह जाता है, एक माल, एक उसके रिश्तेदार, एक उसका अमल. अमल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस आ जाते हैं. (बुख़ारी)
(५) मरने के वक़्त, अपने इस हाल के बुरे नतीजे का.
(६) क़ब्रों में.
(७) और माल के लालच में मुब्तिला होकर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते.
(८) मरने के बाद.
(९) जो अल्लाह तआला ने तुम्हें अता फ़रमाई थीं, सेहत व ख़ुशहाली, अम्न, ऐश और माल वग़ैरह, जिनसे दुनिया में लज़्ज़तें उठाते थे. पूछा जाएगा कि ये चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इनका क्या शुक्र अदा किया और नाशुक्री पर अज़ाब किया जायेगा.

१०३ - सूरए वल-अस्र

(१) सूरए वल-अस्र जम्हूर के नज़्दीक मक्की है. इसमें एक रूकू, तीन आयतें, चौदह कलिमे, अड़सठ अक्षर हैं.
(२) अस्र ज़माने को कहते हैं और ज़माना चूंकि अजाइबात पर आधारित है, इसमें हालात का बदलाव, उतार चढ़ाव देखने वाले के लिये सबक़ पकड़ने का कारण होता है और ये चीज़ें हिक्मत वाले ख़ालिक़ की क़ुदरत और उसकी वहदानियत को प्रमाणित करती

हैं इसलिये हो सकता है कि ज़माने की क़सम मुराद हो. और अस्र उस वक़्त को भी कहते हैं जो सूर्यास्त से पहले होता है. हो सकता है कि ख़सारे वाले के हक़ में उस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाए जैसा कि राबेअ के हक़ में दुहा यानी चाश्त के वक़्त की क़सम याद फ़रमाई थी. और एक क़ौल यह भी है कि अस्र से अस्र की नमाज़ मुराद हो सकती है, जो दिन की इबादतों में सबसे पिछली इबादत है. और सबसे लज़ीज़ और बेहतर तफ़सीर वही है जो इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माने से मख़्सूस ज़माना सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुराद है जो बड़ी ख़ैरो बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सबसे बुज़ुर्गी वाला है. अल्लाह तआला ने हुज़ूर के मुबारक ज़माने की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि लाउक़्सिमो बिहाज़ल बलद में हुज़ूर के मस्कन और मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि 'लउमरका' में आपकी उम्र शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और इसमें शाने मेहबूबियत का इज़हार है.

(३) उसकी उम्र जो उसका रासुल माल है और अस्ल पूंजी है वह हर दम घट रही है.

(४) यानी ईमान और नेक कर्मों की.

(५) उन तकलीफ़ों और मशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं. ये लोग अल्लाह के फ़ज़्ल से टोटे में नहीं हैं क्योंकि उनकी जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअत में गुज़री तो वो नफ़ा पाने वाले हैं.

१०४ - सूरए हुमुज़ह

(१) सूरए हुमुज़ह मक्की है इसमें एक रुकू, नौ आयतें, तीस कलिमे, एक सौ तीस अक्षर हैं.

(२) ये आयतें उन काफ़िरों के बारे में उतरीं जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके सहाबा को बुरा भला कहते थे और इन हज़रात की ग़ीबत करते थे जैसे अख़नस बिन शरीक़ और उमैया बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरह वग़ैरहुम और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिये आम है.

(३) मरने न देगा जो वह माल की महब्बत में मस्त है और नेक कर्मों की तरफ़ तवज्जह नहीं करता.

(४) यानी जहन्नम के उस गढ़े में जहाँ आग हड्डियाँ पसलियाँ तोड़ डालेगी.

(५) और कभी ठण्डी नहीं होती. हदीस शरीफ़ में है जहन्नम की आग हज़ार बरस धौंकी गई यहाँ तक कि सुर्ख़ हो गई फिर हज़ार बरस धौंकी गई यहाँ तक कि सफ़ेद हो गई फिर हज़ार बरस धौंकी गई यहाँ तक कि काली हो गई, तो वह काली है अंधेरी. (तिरमिज़ी)

(६) यानी बाहरी जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी. दिल ऐसी चीज़ है जिसको ज़रा सी गर्मी की ताब नहीं. तो जब जहन्नम की आग उनपर आएगी और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा. दिलों को जलाना इसलिये है कि वो कुफ़्र और ग़लत अक़ीदों और बुरी नियतों के स्थान हैं.

(७) यानी आग में डालकर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे.

(८) यानी दरवाज़ों की बन्दिश लौहे के जलते सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले. कुछ मुफ़स्सिरों ने ये मानी बयान किये हैं कि दरवाज़े बन्द करके जलते हुए सुतूनों से उनके हाथ पाँव बाँध दिये जाएंगे.

१०५ - सूरए फ़ील

(१) सूरए फ़ील मक्की है. इसमें एक रुकू, पाँच आयतें, बीस कलिमे और छियानवे अक्षर हैं.

(२) हाथी वालों से मुराद अबरहा और उसका लश्कर है. अबरहा यमन और हबशा का बादशाह था. उसने सनआ में एक कनीसा (इबादतख़ाना) बनवाया था और चाहता था कि हज करने वाले मक्कए मुकर्रमा के बजाय यहाँ आएं और इसी कनीसा का तवाफ़ करें. अरब के लोगों को यह बात बहुत नागवार थी. क़बीलए बनी कनानह के एक व्यक्ति ने मौक़ा पाकर उस कनीसा में पाख़ाना कर दिया और उसको नापाकी से भर दिया. इस पर अबरहा को बहुत गुस्सा आया और उसने काबे को ढाने की क़सम खाई और इसी इरादे से अपना लश्कर लेकर चला जिसमें बहुत से हाथी थे. और उनका अगुवा एक बड़ा पहाड़ जैसा बदन वाला हाथी था जिसका नाम मेहमूद था. अबरहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंचकर मक्के वालों के जानवर क़ैद कर लिये. उनमें २०० ऊँट हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के भी थे. हज़रत अब्दुल मुत्तलिब अबरहा के पास पहुंचे. अबरहा बड़े भारी डील डौल का रोअबदार आदमी था. उसने हज़रत अबदुल मुत्तलिब का सत्कार किया और अपने पास बिठाया और पूछा कि किस वजह से आना हुआ. आपने फ़रमाया, मैं बस यह कहने आया हूँ कि मेरे ऊँट मुझे वापस कर दे. अबरहा बोला, हैरत है कि मैं ख़ानए काबा को ढाने के लिये आया हूँ और वह तुम्हारे बाप दादा का सम्मान वाला स्थान है. तुम उसके लिये तो कुछ नहीं कहते, अपने ऊँटों की बात करते हो. आपने फ़रमाया, मैं ऊँटों ही का मालिक हूँ, उन्हीं की बात करता हूँ और काबे का जो मालिक है वह ख़ुद ही उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा. अबरहा ने आपके ऊँट वापस कर दिये. अब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को हाल सुनाया और उन्हें सलाह दी कि वो पहाड़ों की घाटियों और चोटियों पर शरण ले लें. चुनांन्चे क़ुरैश ने ऐसा ही किया. अब्दुल मुत्तलिब ने काबे के दरवाज़े पर पहुंचकर अल्लाह की बारगाह में काबे की हिफ़ाज़त की दुआ की और दुआ से फ़ारिग़ होकर आप अपनी क़ौम की तरफ़ चले गए. अबरहा ने सुब्ह तड़के अपने लश्कर को तैयारी का हुक्म दिया और हाथियों को तैयार किया, लेकिन मेहमूद नाम का सरदार हाथी न उठा और काबे की तरफ़ चलने को राज़ी न हुआ.

डाला(२) और उनपर परिन्दों की टुकड़ियाँ भेजीं[३](३) कि उन्हें कंकर के पत्थरों से मारते[४](४) तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती[५](५)

१०६ - सूरए क़ुरैश

सूरए क़ुरैश मक्के में उतरी, इसमें चार आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
इसलिये कि क़ुरैश को मेल दिलाया(१) उनके जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मेल दिलाया[२](२) तो उन्हें चाहिये इस घर के[३] रब की बन्दगी करें(३) जिसने उन्हें भूख में[४] खाना दिया और उन्हें एक बड़े डर से अमान बख़्शी[५](४)

१०७ - सूरए माऊन

सूरए माऊन मक्के में उतरी, इसमें ७ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है[२](१) फिर वह वह है जो यतीम को धक्के देता है[३](२) और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता[४](३) तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है(४) जो अपनी नमाज़ भूल बैठे हैं[५](५) वो जो दिखावा करते हैं[६](६) और बरतने की चीज़[७] मांगे नहीं देते[८](७)

जिस तरफ़ चलाते थे, चलता था. जब काबे की तरफ़ उसका रूख़ करते, वह बैठ जाता था. अल्लाह तआला ने छोटे छोटे पक्षियों को उनपर भेजा जो छोटी छोटी कंकरियाँ गिराते थे, जिनसे वो हलाक हो जाते थे.

(३) जो समन्दर की तरफ़ से फ़ौज दर फ़ौज आई. हर एक के पास तीन तीन कंकरियाँ थीं, दो दोनों पंजों में और एक चौंच में.

(४) जिसपर वह पक्षी कंकरी छोड़ता तो वह कंकरी उसका ख़ोद तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीरकर हाथी में से गुज़र कर ज़मीन पर पहुंचती. हर कंकरी पर उस व्यक्ति का नाम लिखा था जो उससे हलाक किया गया.

(५) जिस साल यह घटना हुई उसी साल, इस घटना के ५० दिन बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत हुई.

१०६ - सूरए क़ुरैश

(१) सूरए क़ुरैश सही क़ौल के मुताबिक़ मक्की है. इसमें एक रूकू, चार आयतें, सत्तरह कलिमे और तिहत्तर अक्षर हैं.

(२) यानी अल्लाह की नेअमतें बेशुमार हैं, उनमें से एक खुली नेअमत यह है कि उसने हर साल दो सफ़रों की तरफ़ रग़बत दिलाई और इनकी महब्बत उनके दिलों में डाली. जाड़े के मौसम में यमन का सफ़र और गर्मी के मौसम में शाम का, कि क़ुरैश तिजारत के लिये इन मौसमों में ये सफ़र करते थे. और हर जगह के लोग उन्हें एहले हरम यानी हरम वाले कहते थे. और उनका आदर सत्कार करते थे. ये अम्न के साथ व्यापार करते और मुनाफ़ा कमाते और मक्कए मुकर्रमा में ठहरने के लिये पूंजी जुटाते जहाँ न खेती है न रोज़ी के और दूसरे साधन. अल्लाह तआला की यह नेअमत ज़ाहिर है और इससे फ़ायदा उठाते हैं.

(३) यानी काबा शरीफ़ के.

(४) जिसमें उनके सफ़रों से पहले अपने वतन में खेती न होने के कारण मुब्तिला थे. उन सफ़रों के ज़रिये से.

(५) हरम शरीफ़ और एहले मक्का होने के कारण कि कोई उनका विरोध नहीं करता जब कि आस पास के इलाक़ों में क़त्ल और लूटमार होती रहती है. क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं. या ये मानी हैं कि उन्हें कोढ़ से अम्न दिया कि उनके शहर में उन्हें कभी कोढ़ न होगी. या यह मुराद है कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बरकत से उन्हें बड़े भारी ख़ौफ़ से अमान अता फ़रमाई.

१०७ - सूरए माऊन

(१) सूरए माऊन मक्की है. और यह भी कहा गया है कि आधी मक्कए मुकर्रमा में उतरी, आस बिन वाइल के बारे में और आधी मदीनए तैय्यिबह में अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल मुनाफ़िक़ के बारे में. इसमें एक रूकू, सात आयतें, पच्चीस कलिमे और एक

१०८ - सूरए कौसर

सूरए कौसर मक्के में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
ऐ मेहबूब बेशक हमने तुम्हें बेशुमार ख़ूबियाँ अता फ़रमाई[२] (१) तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो[३] और क़ुरबानी करो[४] (२) बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर ख़ैर (अच्छाई) से मेहरूम है[५] (३)

१०९ - सूरए काफ़िरून

सूरए काफ़िरून मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो[२] (१) न मैं पूजता हूँ जो तुम पूजते हो (२) और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूँ (३) और न मैं पूजूंगा जो तुमने पूजा (४) और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूँ (५) तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन[३] (६)

११० - सूरए नस्र

सूरए नस्र मदीने में उतरी, इसमें तीन आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
जब अल्लाह की मदद और फ़त्ह आए[२] (१) और लोगों को तुम देखो कि अल्लाह के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं[३] (२) तो अपने रब की सना करते हुए उसकी

सौ पच्चीस अक्षर हैं.
(२) यानी हिसाब और जज़ा का इन्कार करता है. जबकि दलीलें साफ़ हो चुकीं. ये आयतें आस बिन वाईल सहमी यी वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में उतरीं.
(३) और उसपर सख़्ती करता है और उसका हक़ नहीं देता.
(४) यानी न ख़ुद देता है और न दूसरे से दिलाता है, बहुत ही कंजूस है.
(५) इसेस मुराद मुनाफ़िक़ लोग हैं जो तनहाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्योंकि उसके मानने वाले नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आपको नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठक बैठक कर लेते हैं और हक़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं.
(६) इबादतों में. आगे उनकी कंजूसी का बयान फ़रमाया जाता है.
(७) सुई न हाँडी न प्याले की तरह.
(८) उलमा ने फ़रमाया है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी हाजत से ज़्यादा रखे जिनकी पड़ोसियों को हाजत होती है और उन्हें उधार दिया करे.

१०८ - सूरए कौसर

(१) सूरए कौसर तमाम मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक मदनी है. इसमें एक रुकू, तीन आयतें, दस कलिमे और बयालीस अक्षर हैं.
(२) और बहुत सी फ़ज़ीलतें अता करके तमाम ख़ल्क़ पर अफ़ज़ल किया. ज़ाहिरी हुस्न भी दिया और बातिनी भी. ऊंचा ख़ानदान भी, नबुव्वत भी, किताब भी, हिकमत भी, इल्म भी, शफ़ाअत भी, हौज़े कौसर भी, मक़ामे मेहमूद भी, उम्मत की कसरत भी, दीन के दुश्मनों पर ग़लबा भी, फ़त्ह की कसरत भी, और बेशुमार नेअमतें और फ़ज़ीलतें जिनकी सीमा नहीं.
(३) जिसने तुम्हें इज़्ज़त और शराफ़त दी.
(४) उसके लिये उसके नाम पर, बुत परस्तों के विपरीत कि जो बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते हैं. इस आयत की तफ़सीर में एक क़ौल यह भी है कि नमाज़ से ईद की नमाज़ मुराद है.
(५) न आप, क्योंकि आपका सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा. आपकी औलाद में भी कसरत होगी और आपके मानने वालों से दुनिया भर जाएगी. आपका ज़िक्र मिम्बरों पर बलन्द होगा. क़यामत तक पैदा होने वाले आलिम और उपदेशक अल्लाह तआला के ज़िक्र के साथ आपका ज़िक्र करते रहेंगे. बेनामो निशान और हर भलाई से मेहरूम तो आपके दुश्मन हैं. जब सैयदे आलम

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रज़न्द हज़रत क़ासिम का विसाल हुआ तो काफ़िरों ने आपको अबतर यानी नस्ल से कटा हुआ कहा और यह कहा कि अब इनकी नस्ल नहीं रही. इनके बाद अब इनका ज़िक्र भी न रहेगा, यह सब चर्चा ख़त्म हो जाएगा. इसपर यह बुज़ुर्गी वाली सूरत उतरी और अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों को झुटलाया और उनका खुला रद फ़रमाया.

१०९ - सूरए अल-काफ़िरुन

(१) सूरए अल-काफ़िरुन मक्के में उतरी. इसमें एक रुकू, छ आयतें, छब्बीस कलिमे और चौरानवे अक्षर हैं. क़ुरैश की एक जमाअत ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि आप हमारे दीन को मानिये, हम आपके दीन को मानेंगे. एक साल आप हमारे बुतों को पूजें, एक साल हम आपके मअबूद की इबादत करेंगे. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया - अल्लाह की पनाह कि मैं उसके साथ किसी ग़ैर को शरीक करूँ. कहने लगे तो आप हमारे किसी मअबूद को हाथ ही लगा दीजिये, हम आपकी तस्दीक़ कर देंगे. इसपर यह सूरत उतरा. सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए. वहाँ क़ुरैश की वह जमाअत मौजूद थी. हुज़ूर ने यह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वो मायूस हो गए और हुज़ूर और आपके असहाब को तकलीफ़ पहुंचाने पर कमर बांध ली.

(२) सम्बोधन यहाँ विशेष काफ़िरों से है जो अल्लाह के इल्म के अनुसार ईमान से मेहरूम हैं.

(३) यानी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौहीद और मेरा इख़्लास. इसमें जताना है. यह आयत क़िताल की आयत उतरने के बाद स्थगित हो गई.

११० - सूरए नस्र

(१) सूरए नस्र मदीने में उतरी. इसमें एक रुकू, तीन आयतें. सत्तरह कलिमे और सतहत्तर अक्षर हैं.

(२) नबीये करीम सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये दुश्मनों के मुक़ाबले में. इससे या इस्लाम की आम फ़ुतूहात मुराद हैं या ख़ास मक्के की विजय.

(३) जैसा कि मक्के की विजय के बाद हुआ कि लोग दूर दूर से ग़ुलामी के शौक़ में चले आते थे और इस्लाम के दाइरे में दाख़िल होते थे.

पाकी बोलो और उससे बख़्शिश चाहो[४] बेशक वह बहुत तौबह क़ुबूल करने वाला है[५]﴾३﴿

१११ - सूरए लहब

सूरए लहब मक्के में उतरी, इसमें पांच आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वह तबाह हो ही गया[२]﴾१﴿ उसे कुछ काम न आया उसका माल और न जो कमाया[३]﴾२﴿ अब धंसता है लपट मारती आग में वह﴾३﴿ और उसकी जोरू[४] लकड़ियों का गट्ठा सर पर उठाती﴾४﴿ उसके गले में खजूर की छाल का रस्सा[५]﴾५﴿

११२ - सूरए इख़लास

सूरए इख़लास मक्के में उतरी, इसमें चार आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
तुम फ़रमाओ वह अल्लाह है वह एक है[२]﴾१﴿ अल्लाह बेनियाज़ है[३]﴾२﴿ न उसकी कोई औलाद[४] और न वह किसी से पैदा हुआ[५]﴾३﴿ और न उसके जोड़ का कोई[६]﴾४﴿

११३ - सूरए फ़लक़

सूरए फ़लक़ मक्के में उतरी, इसमें पाँच आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला[१]
तुम फ़रमाओ मैं उसकी पनाह लेता हूँ जो सुब्ह का पैदा करने वाला है[२]﴾१﴿ उसकी सब मख़लूक़ के शर से[३]﴾२﴿ और

(४) उम्मत के लिये.
(५) इस सूरत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सुब्हानल्लाहे वबिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाहा व अतूबो इलैहे की बहुत कसरत फ़रमाई. हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि यह सूरत हज्जतुल वदाअ में मिना में उतरी. इसके बाद आयत **अलयौमा अक्मल्तो लकुम दीनकुम** उतरी. इसके उतरने के बाद अस्सी दिन तक सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ रखी. फिर आयत अलकलालता उतरी. इसके बाद हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पचास दिन तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर आयत **वत्तक़ू यौमन तपरजऊना फ़ीहे इलल्लाहे** उतरी, इसके बाद हुज़ूर इक्कीस दिन या सात दिन तशरीफ़ फ़रमा रहे. इस सूरत के उतरने के बाद सहाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब हुज़ूर दुनिया में ज़्यादा तशरीफ़ नहीं रखेंगे. चुनांचे हज़रत उमर रदियल्लाहो अन्हो यह सूरत सुनकर इसी ख़्याल से रोए. इस सूरत के उतरने के बाद सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि एक बन्दे को अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया है चाहे दुनिया में रहे चाहे उसकी महब्बत और क़ुरबत क़ुबूल फ़रमाए. इस बन्दे ने अल्लाह की क़ुरबत क़ुबूल कर ली. यह सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया- आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे माँ बाप, हमारी औलादें सब क़ुरबान.

१११ - सूरए लहब

(१) सूरए अबी लहब मक्के में उतरी. इसमें एक रूकू, पाँच आयतें, बीस कलिमे सतहत्तर अक्षर हैं. जब सफ़ा पहाड़ी पर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अरब के लोगों को दावत दी, हर तरफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उनसे अपनी सच्चाई और अमानत की गवाही लेने के बाद फ़रमाया - **इन्नी लकुम नज़ीरुम बैना यदैय अज़ाबिन शदीदिन** यानी मैं तुम्हें उस अज़ाब का डर दिलाता हूँ जो तुम्हारे बहुत क़रीब है. इसपर अबू लहब ने कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुमने हमें इसी लिये जमा किया था. इसपर यह सूरत उतरी और अल्लाह तआला ने अपने हबीब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ से जवाब दिया.
(२) अबू लहब का नाम अब्दुल उज़्ज़ा है. यह अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का चचा था. बहुत गोरा ख़ूबसीरत आदमी था इसीलिये इसकी कुनियत अबू लहब है और इसी कुनियत से वह मशहूर था. दोनों हाथों से मुराद उसकी ज़ात है.
(३) यानी उसकी औलाद. रिवायत है कि अबूलहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे ने कहा है,

वह अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये माल और औलाद को फ़िदिये कर दूंगा. इस आयत में उसका रद फ़रमाया गया कि यह ख़याल ग़लत है, उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं है.

(४) उम्मे जमील बिन्ते हर्ब बिन उमैया अबू सुफ़ियान की बहन जो सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से काफ़ी जलन और दुश्मनी रखती थी और काफ़ी दौलतमन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुश्मनी में इस हद तक पहुंची हुई थी कि ख़ुद अपने सर पर काँटों का गट्ठा लाकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रास्ते में डालती थी. ताकि हुज़ूर को और आपके असहाब को तकलीफ़ और बेआरामी हो. और हुज़ूर को तकलीफ़ देना उसे इतना प्यारा था ति वह इस काम में किसी दूसरे की मदद लेना भी गवारा नहीं करती थी.

(५) जिससे काँटों का गट्ठा बाँधती थी. एक दिन यह बोझ उठाकर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पत्थर पर बैठ गई. एक फ़रिश्ते ने अल्लाह के हुक्म से उसके पीछे से उसके गट्ठे को खींचा, वह गिरा और रस्सी से गले में फाँसी लग गई. और वह मर गई.

११२- सूरए इख़्लास

(१) सूरए इख़्लास मक्के में उतरी और कुछ ने कहा कि मदीने में नाज़िल हुई. इसमें एक रुकू, चार या पाँच आयतें, पन्द्रह कलिमे और सैंतालीस अक्षर हैं. हदीसों में इस सूरत की बहुत सी फ़ज़ीलतें आई हैं. इसको तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया है यानी इसे तीन बार पढ़ लेने से पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले. एक व्यक्ति ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मेहब्बत है. फ़रमाया, इसकी महब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी. (तिरमिज़ी) अरब काफ़िरों ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अल्लाह तआला के बारे में तरह तरह के सवाल किये. कोई कहता था कि अल्लाह की वंशावली यानी नसब क्या है, कोई कहता कि वह सोने का है कि चांदी का है या लोहे का है या लकड़ी का है, किस चीज़ का है. किसी ने कहा वह क्या खाता है क्या पीता है. रब होना उसने किससे मीरास में पाया है और उसका कौन वारिस होगा. उनके जवाब में अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी और अपनी ज़ात व सिफ़ात का बयान फ़रमाकर मअरिफ़त की राह वाज़ेह कर दी और जिहालत भरे विचारों और वहमों के अंधेरे को जिन में वो लोग गिरफ़्तार थे, अपनी ज़ात और सिफ़ात के अनवार के बयान से निढाल कर दिया.

(२) रबूबियत और उलूहियत में अज़मत और कमाल की सिफ़तों का मालिक है. उस जैसा, उसके बराबर, उससे मिलता जुलता कोई नहीं, उसका कोई शरीक नहीं.

(३) हर चीज़ से, न खाए न पिये, हमेशा से है, हमेशा रहे.

(४) क्योंकि कोई उसका जोड़ा नहीं.

(५) क्योंकि वह क़दीम है और पैदा होना हादिस की शान है.

(६) यानी कोई उसका हमता यानी बराबर वाला नहीं. इस सूरत की कुछ आयतों में अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात के मुतअल्लिक़ उलूम के नफ़ीस और आला अर्थ बयान फ़रमा दिये गए जिनकी तफ़सील से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने भर जाएं.

११३ - सूरए फ़लक़

(१) सुरए फ़लक़ मदनी है और एक क़ौल यह है कि मक्की है लेकिन पहला क़ौल सही है. इस सूरत में एक रुकू पांच आयतें, तेईस कलिमे, चौहत्तर अक्षर हैं. यह सूरत और सूरए नास जो इसके बाद है, उस वक़्त उतरी जबकि लबीद बिन अअसम यहूदी और उसकी बेटीयों ने हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और ज़ाहिरी अंगों पर उसका असर हुआ. दिल, अक़्ल और ऐतिक़ाद पर कुछ न हुआ. कुछ रोज़ के बाद जिब्रईल आए और उन्हों ने अर्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वह फ़लाँ कुएं में एक पत्थर के नीचे दाब दिया है. हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अली मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो को भेजा उन्होंने कुएं का पानी निकालने के बाद पत्थर उठाया उसके नीचे से खजूर के गाभे की थैली मिली उसमें हुज़ूर के बाल जो कंघी से निकले थे और हुज़ूर की कंघी के कुछ दनदाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिसमें ग्यारह गाँठे लगी हुई थीं और एक मोम का पुतला जिसमें ग्यारह सुईयाँ चुभी थीं, यह सब सामान पत्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर किया गया. इसपर अल्लाह तआला ने यह दोनों सूरतें उतारीं. इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं. पाँच सूरए फ़लक़ में, छ सूरए नास में, हर एक आयत के पढ़ने से एक एक गाँट खुलती जाती थी यहाँ तक कि सारी गाँठे खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए. तअवीज़ और अमल जिसमें कोई कलिमा कुफ़्र या शिर्क का न हो, जाइज़ है ख़ासकर वह अमल जो क़ुरआनी आयतों से किये जाएं या हदीसों में आए हों. हदीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते अमीस ने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, जअफ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र हो जाती है क्या मुझे इजाज़त है कि उनके लिए अमल करूं. हुज़ूर ने इजाज़त दे दी. (तिरमिज़ी)

(२) पनाह मांगने में अल्लाह तआला का इस गुण के साथ ज़िक्र इस लिये है कि अल्लाह तआला सुब्ह पैदा करके रात की तारीकी को दूर करता है तो वह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन हालात से ख़ौफ़ है उनको दूर फ़रमा दे. साथ ही जिस तरह अंधेरी

अंधेरी डालने वाले के शर से जब वह डूबे[४] ﴾३﴿ और उन औरतों के शर से जो गाँठों में फूंकती हैं[५] ﴾४﴿ और हसद वाले के शर से जब वह मुझ से जले[६] ﴾५﴿

११४ - सूरए नास

सूरए नास मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें, एक रूकू है.
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला [१]
तुम कहो मैं उसकी पनाह में आया जो सब लोगों का रब[२] ﴾१﴿ सब लोगों का बादशाह[३] ﴾२﴿ सब लोगों का ख़ुदा[४] ﴾३﴿ उसके शर से जो दिल में बुरे ख़तरे डाले[५] और दुबक रहे[६] ﴾४﴿ वो जो लोगों के दिलों में वसवसे डालते हैं ﴾५﴿ जिन्न और आदमी[७] ﴾६﴿

रात में आदमी सुब्ह निकलने का इंतिज़ार करता है ऐसा ही डरने वाला अम्न और राहत की राह देखता रहता है. इसके अतिरिक्त सुब्ह बेचैन और बेक़रार लोगों की दुआओं का और उनके कुबूल होने का वक़्त है तो मुराद यह हुई कि जिस वक़्त दुख दर्द से पीड़ित व्यक्ति को ख़ुशहाली दी जाती है और दुआएं कुबूल की जाती हैं, मै उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूँ. एक क़ौल यह भी है कि फ़लक़ जहन्नम में एक घाटी है.

(३) जानदार हो या बेजान, आक़िल, बालिग़, आज़ाद हो या दीवाना और मजनून. कुछ मुफ़स्सिरों ने फ़रमाया है कि ख़लक़ से मुराद यहाँ ख़ास इब्लीस है जिससे बदतर मख़लूक़ में कोई नहीं और जादू के अमल उसकी और उसके साथी शैतानों की मदद से पूरे होते हैं.

(४) उम्मुल मूमिनीन हज़रत आयशा रदियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चाँद की तरफ़ नज़र करके उनसे फ़रमाया- ऐ आयशा, अल्लाह की पनाह लो उसके शर से यह अंधेरी डालने वाला है जब डूबे. (तिरमिज़ी) यानी आख़िर माह में जब चाँद छुप जाए तो जादू के वो अमल जो बीमार करने के लिए हैं इसी वक़्त में किये जाते हैं.

(५) यानी जादूगर औरतें जो डोरों में गाँठें लगा लगा कर उनमें जादू के मंत्र पढ़ पढ़कर फूंकती हैं जैसे कि लबीद की लड़कियाँ. गन्डे बनाना और उनपर गिरह लगाना, क़ुरआनी आयतें या अल्लाह के नाम दम करना जायज़ है. जम्हूर सहाबा व ताबईन इसी पर हैं और हदीसे आयशा रदियल्लाहो अन्हा में है कि जब हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के घर वालों में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर ये सूरतें पढ़कर उस पर दम फ़रमाते.

(६) हसद वाला वह है जो दूसरे के ज़वाले नेअमत की तमन्ना करे. यहाँ हासिद से यहूदी मुराद हैं जो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से हसद करते थे या ख़ास लबीद बिन अअसम से. हसद बदतरीन ख़सलत है और यही सबसे पहला गुनाह है जो आसमान में इब्लीस से सरज़द हुआ और ज़मीन में क़ाबील से.

११४ - सूरए नास

(१) सुरए अन्नास सही क़ौल के अनुसार मदनी है. इसमें एक रूकू, छह आयतें, बीस कलिमे, उनासी अक्षर हैं.
(२) सब का ख़ालिक़ और मालिक. ज़िक्र में इन्सानों की तख़सीस उनके बड़प्पन के लिये है कि उन्हें अशरफ़ुल मख़लूक़ात किया.
(३) उनके कामों की तदबीर फ़रमाने वाला.
(४) कि इलाह और मअबूद होना उसी के साथ ख़ास है.
(५) इससे मुराद शैतान है.
(६) यह उसकी आदत ही है कि इन्सान जब ग़ाफ़िल होता है तो उसके दिल में वसवसे डालता है और जब इन्सान अल्लाह का

ज़िक्र करता है तो शैतान दुबक रहता है और हट जाता है.

(७) यह बयान है वसवसे डालने वाले शैतान का कि वह जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी जैसा कि शैतान जिन्न इन्सानों को वसवसे में डालते हैं ऐसे ही शैतान इन्सान भी उपदेशक बनकर आदमी के दिल में वसवसे डालते हैं फिर अगर आदमी उन वसवसों को मानता है तो उसका सिलसिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करते हैं और अगर उससे नफ़रत करता है तो हट जाते हैं और दुबक रहते हैं. आदमी को चाहिये कि शैतान जिन्न के शर से भी पनाह मांगे और शैतान इन्सान के शर से भी. बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस में है कि सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम रात को जब बिस्तरे मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो दोनों दस्ते मुबारक जमा फ़रमाकर उनपर दम करते और सूरए क़ुल हुवल्लाहो अहद और क़ुल अउज़ो बिरब्बिल फ़लक़ और क़ुल अऊज़ो बिरब्बिन नास पढ़कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से लेकर तमाम जिस्मे अक़दस पर फेरते जहाँ तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते. यह अमल तीन बार फ़रमाते.

अल्लाह तआला सब से ज़्यादा इल्म रखने वाला है अपने राज़ों का, और अपनी किताब के भेदों का. और आख़िर में हम अपनी दुआओं में अल्लाह की तारीफ़ दोहराते हैं और सबसे उत्तम दरुद और सलाम पेश करते हैं अल्लाह के हबीब व नबीयों के सरदार सैय्यदना मुहम्मद और उनकी आल और उनके सहाबा, सब पर एक साथ.

क़ुरआन का पाठ सम्पूर्ण हो जाने के बाद की दुआ -

अल्लाहुम्मा आनिस वहशती फ़ी क़ब्री, अल्लाहुम्मर हमनी बिल क़ुरआनिल अज़ीमे वज्अल्हु ली ईमानौंव व नूरौंव व हुदौंव व रहमतन. अल्लाहुम्मा ज़क्किरनी मिन्हो मा नसीतु व अल्लिम्नी मिन्हो मा जहिल्तु वर्ज़ुक़नी तिलावतहू आनाअल-लैले व-आनाअन्नहारे वज्अल्हु ली हुज्जतैंय या रब्बल आलमीन. (यानी ऐ ख़ुदा मेरे ! क़ब्र में मेरी परेशानी दूर फ़रमा और क़ुरआने अज़ीम के वसीले से मुझ पर रहम फ़रमा और क़ुरआन को मेरे लिये पेशवा और प्रकाश तथा हिदायत का साधन बना और क़ुरआन में से जो कुछ मैं भूल गया हूँ, वह याद दिला, और जो कुछ क़ुरआन में से मैं नहीं जानता वह सिखला दे और दिन रात मुझे इसकी तिलावत नसीब कर और क़यामत के दिन इसको मेरे लिये दलील बना. ऐ आलम के पालनहार ! मेरी यह दुआ क़ुबूल फ़रमा.)

पारा तीस समाप्त

सज्दा वाली आयतें

नं.	पारा	सूरत	सज्दे वाले शब्द	सज्दे की जगह	आयत
१	९	अलअअराफ़	يَسْجُدُوْنَ	يَسْجُدُوْنَ	२०६
२	१३	अर-रअद	وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ	وَالْاٰصَالِ	१५
३	१४	अन-नहल	وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ	مَا يُؤْمَرُوْنَ	४९/५०
४	१५	बनी इस्राईल	وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ	خُشُوْعًا	१०७/१०९
५	१६	मरयम	خَرُّوْا سُجَّدًا	وَّبُكِيًّا	५८
६	१७	अल-हज	يَسْجُدُ لَهٗ	مَا يَشَآءُ	१८
*	१७	अल-हज (शाफ़ई)	يَسْجُدُ	تُفْلِحُوْنَ	७७
७	१९	अल-फ़ुरक़ान	اَنَسْجُدُ	نُفُوْرًا	६०
८	१९	नम्ल	اَلَّا يَسْجُدُوْا	رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ	२५/२६
९	२१	अस-सज्दा	خَرُّوْا سُجَّدًا	يَسْتَكْبِرُوْنَ	१५
१०	२३	सॉद	وَخَرَّ رَاكِعًا وَّ	وَّاَنَابَ	२४
११	२४	हामीम सज्दा	وَاسْجُدُوْا	لَا يَسْئَمُوْنَ	३७/३८
१२	२७	अन-नज्म	فَاسْجُدُوْا	وَاعْبُدُوْا	६२
१३	३०	अल-इन्शिक़ाक़	لَا يَسْجُدُوْنَ	لَا يَسْجُدُوْنَ	२१
१४	३०	अल - अलक़	وَاسْجُدُوْا	وَاقْتَرِبْ	१९

* सूरए हज में आयत ७७ का सज्दा इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह के नज़्दीक है लेकिन इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के नज़्दीक नहीं है.

क़ुरआन में क्या क्या, कहाँ कहाँ

अल्लाह तआला मअबूद है सब चीज़ों का पैदा करने वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१६३
३	बक़रह	२५५
३	आले इमरान	६२
६	निसा	१७१
६	माइदह	७३
७	अनआम	४६
८	अअराफ़	६५
१३	इब्राहीम	५२
१४	नहल	२२
१४	नहल	५१
१५	बनी इस्राईल	२२
१६	कहफ़	११०
१७	अंबिया	१०८
१७	हज	१३४
१८	मूमिनून	९१
२०	नम्ल	६०
२०	क़सस	७१
२२	सॉद	६५
२४	हामीम सज्दा	६
२५	ज़ुख़रुफ़	८४
२७	तूर	४३

सब चीज़ों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	२९
७	अनआम	१०२
७	,,	१०३
१३	रअद	१६
१७	अंबिया	३३
१८	मूमिनून	१३/१४
१८	नूर	४५
१८	फ़ुरक़ान	२
२१	लुक़्मान	१०
२४	अल-मूमिन	६३
२७	रहमान	४-५
३०	अलक़	१-२

हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआला ही है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	फ़ातिहा	३
३	आले इमरान	२६
२६	फ़त्ह	११
६	माइदा	१७
११	यूनुस	५५
६	माइदा	४०
७	माइदा	१२०
१५	बनी इस्राईल	१११
१८	मूमिनून	८८
२२	फ़ातिर	१३
२४	ज़ुमर	४४
२५	ज़ुख़रुफ़	८२
२५	ज़ुख़रुफ़	८५
२६	फ़त्ह	१४
३०	नास	२

हर नफ़ा नुकसान अल्लाह तआला ही के इख़्तियार में है

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	माइदा	४१
९	अअराफ़	१८८
११	यूनुस	४९
११	यूनुस	१०७
२४	ज़ुमर	३४

मुसीबत टालना, बीमारों को शिफ़ा और बेऔलादों को औलाद ज़ाती तौर से अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं दे सकता

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	१०७
७	अनआम	१७
११	यूनुस	१२
१५	बनी इस्राईल	५२
१७	अंबिया	८४

१९	शुअरा	८०
२४	ज़ुमर	३८
२५	शूरा	४९

अल्लाह तआला के सिवा किसी से दुआ न मांगी जाए.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	४०-४१
८	अअराफ़	२९
११	यूनुस	१०६
१३	रअद	१४
२४	मूमिनून	१४
१९	फ़ुरक़ान	६५

अल्लाह तआला बेक़रारों की दुआ क़ुबूल करता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८६
२०	नम्ल	६२
२४	ज़ुमुर	४९

रिज़्क़ की कमी-बेशी ज़ाती तौर पर अल्लाह तआला के इख़्तियार में है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१२
७	माइदा	८८
१२	हूद	६
१३	रअद	२६
१७	हज	५८
२०	अन्कबूत	१७
२१	अन्नकबूत	६०
२२	फ़ातिर	१३
२४	मूमिन	१३
२५	शूरा	२७
२७	ज़ारियात	५८
२९	मुल्क	२१

इल्मे ग़ैब ज़ाती तौर पर अल्लाह तआला ही के साथ ख़ास है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	३३
७	माइदा	१०९
७	माइदा	११६
७	अनआम	५९
७	अनआम	७५
१०	तौबह	७८
११	तौबह	९२
११	तौबह	१०५
११	यूनुस	२०
१२	हूद	१२३
१५	कहफ़	२६
२२	फ़ातिर	३
२२	सबा	३
२६	हुजुरात	१८

अल्लाह तआला के सिवा कोई ज़ाती तौर पर शिफ़ा नहीं दे सकता.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	८०

अल्लाह तआला की अता से ही क़ुरआन शरीफ़ और दवाओं में शिफ़ा है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	५७
१४	नहल	६९
१५	बनी इस्राईल	८२
२४	हामीम सज्दा	४४

अल्लाह तआला के हुक्म से ही उसके बंदे औलाद देते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	८२
१६	मरयम	१९
३०	नाज़िआत	५

बातिल मअबूदों को कोई इख़्तियार नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	१६
१५	बनी इस्राईल	५६
१८	फ़ुरक़ान	३
२०	अन्कबूत	१७
२२	फ़ातिर	१३
२२	सबा	२२
२४	ज़ुमर	३८

रिसालत का बयान - नबी मअसूम और बे-ऐब होते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	६५
२३	सॉद	८३
१३	यूसुफ़	३५
२७	नज्म	२
८	अअराफ़	६१
२९	हाक्क़ाह	२४
१५	बनी इस्राईल	४४
१२	यूसुफ़	७४
१२	हूद	३८
१	बक़रह	८८
३	आलेइमरान	३३
२१	अहज़ाब	२१

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम गुणों, नबुव्वत के कमालात, रिसालत की विशेषताओं के मालिक हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	४५-४६
१	बक़रह	११९
२	बक़रह	११५
५	निसा	७९
१०	तौबह	३३
१३	रअद	३०
१५	बनी इस्राईल	१०५
१७	अंबिया	१०७
२२	सबा	८
२२	यासीन	३
२२	अहज़ाब	४५-४६

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तमाम नबियों और रसूलों से महान हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९०
१८	फ़ुरक़ान	१
२२	अहज़ाब	४०
२२	सबा	२८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आख़िरी नबी हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	९८
६	मायदह	३
७	अनआम	१९
१०	तौबह	३३
१७	अंबिया	१०७
१८	फ़ुरक़ान	१
२२	अहज़ाब	४०-४५
२३	सबा	२८
२६	फ़त्ह	३८
२८	सफ़	९

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सारी सृष्टि के नबी हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१५८
१७	अंबिया	१०७
१८	फ़ुरक़ान	१
२२	सबा	२८
३०	कौसर	१

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला की दलील हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१७५
२६	फ़त्ह	२८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अदब करना ईमान का अंग है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	६५
६	माइदा	१२
९	अनफ़ाल	२४
९	अआरफ़	१५७
१८	नूर	६३
२२	अहज़ाब	३६
२२	अहज़ाब	५३
२६	फ़त्ह	९
२६	हुजुरात	१-२

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अपमान कुफ़्र है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१०४
१०	तौबह	६१
१०	तौबह	६६
२२	अहज़ाब	५७
२३	नूर	७७
२६	हुजुरात	२

जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से निस्बत हो जाए वह अज़मत वाला है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१४३
४	आले इमरान	११०
१४	अल-हिज्र	७२
२२	अल-अहज़ाब	३२
३०	बलद	१-२
३०	तीन	३
३०	दुहा	१-२

नबी की हर बात पूरी होती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२६
१	बक़रह	१२९
११	यूनुस	८८
१२	यूसुफ़	४१
१३	इब्राहीम	३७
१६	ताँहा	९७
२९	नूह	२६

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ज़ाती तौर पर ग़ैब जानने वाले नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	५०
९	अआराफ़	१८७-१८८
२९	जिन्न	२५-२८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे ग़ैब दिया गया

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१७९
५	निसा	११३
७	अनआम	३८
११	यूनुस	३७
१४	नहल	८९
२७	रहमान	१-२
२९	जिन्न	२६
३०	तकवीर	२४

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के ज़िक्र हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	२८
२८	तलाक़	१०
३०	ग़ाशियह	२१

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नूर हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	माइदा	१५
१०	तौबह	३२

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३५
२२	अहज़ाब	४५-४६
२८	सफ़	८

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हाज़िर नाज़िर हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१४३
४	आले इमरान	१०१
४	आले इमरान	१०३
५	निसा	६४
५	निसा	४१
९	अनफ़ाल	३२
११	तौबह	१२८
२१	अहज़ाब	६
२६	फ़त्ह	८
२९	मुज़्ज़म्मिल	१५

किसी नबी ने भी इन्सानों को अपनी इबादत का हुक्म नहीं दिया.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७९

फ़ज़ायले ख़िलाफ़ते राशिदह व ख़िलाफ़ते अबू बक्र सिद्दीक़

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२०४
८	अअराफ़	२०४
१०	तौबह	४०
१८	नूर	५५
२२	अहज़ाब	४३
२२	अहज़ाब	४३
२४	ज़ुमर	३३
२६	फ़त्ह	१६
२६	हुजुरात	३
२७	हदीद	१०

नबी की पाक बीबियाँ एहलेबैत है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१२१
२२	[illegible]	३३
१७	अंबिया	७६
१२	हूद	७३

एहलेबैत के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३३
३	आले इमरान	६१
२२	अहज़ाब	५६
९	अनफ़ाल	३३
२३	साफ़्फ़ात	७३

आयशा सिद्दीका रदियल्लाहो अन्हा के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३२
५	निसा	४३
१८	नूर	११-२०

फ़ज़ायले हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२५
२	बक़रह	१८७
१०	अनफ़ाल	६४
२८	तहरीम	५
२८	सफ़	१३

फ़ज़ायले हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६१
२२	अहज़ाब	२३

२७	हदीद	७
३०	अअला	१०

फ़ज़ायले मौला अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहो अन्हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	१२
२९	दहर	७

फ़ज़ायले सहाबए किराम रदियल्लाहो अन्हुम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२९
१	बक़रह	१३७
२	बक़रह	२१८
४	आले इमरान	१५५
५	निसा	९५
५	निसा	५४
६	माइदा	७
९	अनफ़ाल	४
९	अनफ़ाल	३३
११	तौबह	११७
११	तौबह	१००
२२	सबा	४
२३	सफ़	२४
२६	हुजुरात	७
२६	फ़त्ह	२९
२८	जुमुआ	३
२८	हश्र	९
३०	बैय्यिनह	८

अल्लाह के वली मुश्किल कुशा और साहिबे अता हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२४८
३	आले इमरान	४९
७	माइदा	११४
१३	इब्राहीम	५
३७	ज़ारियात	३५

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१५३
६	माइदा	२
१०	अनफ़ाल	६४
२६	मुहम्मद	२
२८	तहरीम	४
२८	सफ़	१४

मीलाद शरीफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१६४
६	मायदह	७
११	तौबह	१२८
२८	सफ़	९
२८	सफ़	६
३०	दुहा	११

ज़िन्दगी, मौत के बाद

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	२५
८	अअराफ़	२९
८	अनआम	१३३
१६	तॉहा	५५
१९	नम्ल	२२
२२	यासीन	१२

ज़िन्दा होने की कैफ़ियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तॉहा	५५
१९	शुअरा	८१
१६	तॉहा	५५
१९	रूम	२५
१७	हज	५
२०	नम्ल	६४
३०	अन्कबूत	१९

मौत के बाद ज़िन्दगी का इन्कार करने वाला काफ़िर है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	७
१३	इब्राहीम	४९
१५	बनी इस्राईल	५०
१५	बनी इस्राईल	९८
१६	मरयम	३३
१६	मरयम	६६
२३	सफ़	५९
२२	सबा	३

मुनाफ़िको पर अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२७

शहीद की ज़िन्दगी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१५४
६	निसा	६९

शहीदों के लिये बशारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१५७
४	आले इमरान	१६९

रब के हुज़ूर सब पेश होंगे .

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	१२

अल्लाह की तरफ़ से चमत्कार के तौर पर ज़िन्दगी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२५९

रात को सोने की मिसाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	अनआम	६०

क़ज़ा और क़द्र का बयान ख़ुदा के यहाँ हर चीज़ का अन्दाज़ा मुकर्रर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	हजर	२१
२७	क़मर	४९
२८	तलाक़	३
३०	आला	३

हर बात कुरआन में लिखी है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	हज	२
१७	हज	७०
२२	फ़ातिर	११
२७	क़मर	५२
२७	हदीद	२२-२३
१३	रअद	३९

कुल काम आसमान से उतरते हैं, सब कुछ ख़ुदा की तरफ़ से है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	७८
९	अनफ़ाल	१७
२१	सजदह	१५
२८	तग़ाबुन	७८

इन्सान का दिल ख़ुदा के इख़्तियार में है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	२४

लोगों का इख़्तिलाफ़ और उनका ईमान लाना ख़ुदा की मर्ज़ी से है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११
७	अनआम	२
१०	तौबह	९
११	यूनुस	१९
११	युनूस	९६
११	युनूस	९९-१००
१२	हूद	११८-११९
२२	फ़ातिर	११
२७	वाक़िअह	१४४

मौत का वक़्त बदल नहीं सकता.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	५३
५	निसा	७८
८	अअराफ़	३४
११	यूनुस	४९
१४	हजर	५
१४	नहल	६१
२१	अहज़ाब	१६
२२	सबा	३०
२८	मुनाफ़िक़ून	११
२९	नूह	४

इन्सान की मर्ज़ी पूरी हो सकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	नज्म	२४-२५

नेकी ख़ुदा से बदी इन्सान से .

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	७९
३०	शम्स	८
५	निसा	७८
९	अअराफ़	१३१

अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	नूह	२५
२४	मूमिन	४६

फरिश्तों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	३०
१	बक़रह	३४

तौहीद पर शहादत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	१८

हज़रत ज़करिया को नमाज़ में ख़ुशख़बरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२५

हज़रत मरयम से बातचीत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	४५

हक़ और बातिल की जंग में फ़रिश्तों की भूमिका

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१२४

फ़रिश्ते अपने फ़रायज़ में कोताही नहीं करते

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	६१

फ़रिश्ते पैदायशी सच्चे होते हैं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५०

फ़रिश्तों की सिफ़ात

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	२०६
८	अअराफ़	३७
११	यूनुस	२१
१२	हूद	६९

फ़रिश्ते अल्लाह की तस्बीह करते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	१३

फ़रिश्ते नेकी के गवाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	७८

अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	मूमिन	७

फ़रिश्ते हम्द करते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	शूरा	५

उनका काम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	फ़ातिर	१
२३	साफ़्फ़ात	१
२८	तहरीम	६
३०	नाज़िआत	१
२९	तहरीम	४
२९	मआरिज	४
२९	जिन्न	२७
२९	मुदस्सिर	३१
३०	अबस	१६
३०	इन्फ़ितार	१२
३०	मुतफ़्फ़िफ़ीन	२१
३०	क़द्र	५

उनकी मुख़ालिफ़त कुफ्र है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१०२

रुह निकालना

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९७
७	अनआम	६१

हर आदमी पर निगरानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८

खुल्लमखुल्ला आने की सूरतें

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८

ज़ालिमों की जान कैसे निकालते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९३

मुश्रिकों के अक़ीदों की तरदीद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	१३
१३	रअद	५७
१५	बनी इस्राईल	४०

ख़ुदाई में हिस्सेदार नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	७५

काफ़िर फरिश्तों को देवियाँ कहते

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	नज्म	२६
२२	सबा	४०

गुमराह क़ौम पर अज़ाब लाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	ज़ारियात	२५

काफ़िरों को हाँकेंगे

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	क़ाफ़	२१

हश्र के दिन

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	ज़ुमर	७५

मुश्रिकों ने ख़ुदा की बेटियाँ कहा

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	ज़ुख़्रुफ़	१६

अज़ाब लाना

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	फ़ुरक़ान	२१

आख़िरत में नेकियों का स्वागत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	अंबिया	१०३

रसूल फ़रिश्ते के अर्थ में

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	१७

अपनी मर्ज़ी से वही नहीं लाते

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	६४

फ़रिश्तों की सिफ़ात

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	अंबिया	२०
१७	अंबिया	२६

इन्सानी शक्ल में आते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	६९-७०
१२	हूद	७७
१४	हिज्र	५२
१४	हिज्र	६२
१४	हिज्र	८
१४	नहल	२
१४	नहल	१०२
९	अनफ़ाल	९

फरिश्तों और जिन्न का फ़र्क

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	काहफ़	५०

कुरआने मजीद
कुरआन लोगों के लिए बयान, नसीहत, और हिदायत है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	२
४	आले इमरान	३८
९	अअराफ़	२-३
१९	नम्ल	१

क़ुरआन में शक की गुंजायश नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	२

कुरआन मे इख़्तिलाफ़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	८२

क़ुरआन प्रमाण और नूर है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१७४
२५	शूरा	५२

क़ुरआन मुबारक है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९३
१७	अंबिया	५०
२३	सॉद	२९

क़ुरआन अमल करनेवालों के लिए मार्गदर्शक है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	९१
८	अअराफ़	९

क़ुरआन मुफ़स्सल किताब है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	११४
८	अअराफ़	५२
११	हूद	१
१३	यूसुफ़	१११

क़ुरआन शिफ़ा है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	५७
१५	बनी इस्राईल	८२

क़ुरआन में हर चीज़ का वाज़ेह बयान है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	८५

क़ुरआन सारे जगत के लिये नसीहत है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	क़लम	५२
३०	तक़्वीर	२७

क़ुरआन पाकीज़ा ग्रन्थ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३०	अबसा	१६

क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से उतारा हुआ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	वाक़िअह	७७-८०

क़ुरआन विवरण है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	मुज़म्मिल	१९
२९	मुदस्सिर	५४
२९	दहर	२९

क़ुरआन आसान है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	क़मर	१७

क़ुरआन अगली किताबों की तस्दीक़ करता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३
६	मायदह	४८
२७	अहक़ाफ़	१२
७	अनआम	१२
११	यूनुस	३७
१३	यूसुफ़	१११
२२	फ़ातिर	३१

क़ुरआन सारी किताबों पर अमीन और हाकिम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	४८

क़ुरआन, बुज़ुर्गी वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	क़ाफ़	१
३०	बुरुज	२१

क़ुरआन, करामत वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	वाक़िअह	७७

क़ुरआन, हिकमत वाला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	यासीन	२

क़ुरआन किताबे मुबीन

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	नमल	१
१५	दुख़ान	२

क़ुरआन को पाक लोग छुएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	वाक़िअह	७९

क़ुरआन रुह है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	शूरा	५२

क़ुरआन जैसा मुमकिन नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	८८

क़ुरआन के राज़ों का इल्म अल्लाह तआला को ही है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७

हुक्म वाली आयतें अस्ल मकसूद है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७

कुरआन की आयतें एक दूसरे से मिलती जुलती हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	ज़ुमर	२३

कुरआन बारबार पढ़ा जाता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	ज़ुमर	२३

कुरआन अरबी ज़बान में है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	१०३
१२	यूसुफ़	२
१९	शूअरा	१९५
२३	ज़ुमर	२८
२४	हासीम सजदह	३

कुरआन गूंगा नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	हामीम सजदह	४४

हदीस की ज़रूरत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	२६
१	बक़रह	१३९
३	आले इमरान	३२
५	निसा	८०
५	निसा	६५
६	मायदह	१५
९	अअराफ़	१५७
२५	शूरा	५२
३८	हश्र	७

तहारत का बयान पानी का पाक होना .

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	११
१९	फ़ुरक़ान	४८

इस्तंजे का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१०८

वुज़ू का ज़िक्र

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	६

वुज़ू तोड़नेवाली बातें

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	६

गुस्ल का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२२
५	निसा	४३
६	मायदह	६

तयम्मुम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	४३
६	मायदह	६

माहवारी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२२
२	बक़रह	२२८

अज़ान का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	हामीम सजदह	३३
६	मायदह	५८
२८	जुमुअह	९

नमाज़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	४४
२	बक़रह	२३८

नोट :- नमाज़ का ज़िक्र ज़कात के साथ क़ुरआन में ८२ बार है .

नमाज़ के औक़ात

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०३
१२	हूद	१४४
१५	बनी इस्राईल	७८
१८	मूमिनून	९
२१	रूम	१७

नमाज़ की शर्तें

कपड़ों और बदन की पाकी

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	हज	२६
२९	मुदस्सिर	४

सतरे औरत

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	३१
८	अअराफ़	२६
१८	नूर	३१

क़िबला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१४४

सफ़र में भी क़िबले की तरफ़ मुंह ज़रूरी है, नफ़्ल नमाज़ में भी.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१४९
२	बक़रह	१५०
२	बक़रह	११५

नियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३०	बैयिनह	५
२३	ज़ुमर	३

तकबीरे तहरीमह

पारा	सूरत	आयत नंबर
३०	आला	१५
२९	मुदस्सिर	३
१५	बनी इस्राईल	१११

नमाज़ व क़ियाम के फ़र्ज

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	६
२	बक़रह	२३८
८	अअराफ़	२९

१५	बनी इस्राईल	७८

क़िरअते क़ुरआन (फ़ातिहा ज़रूरी नहीं)

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	७८
१५	बनी इस्राईल	११०
२९	मुज़्ज़म्मिल	२०

रुकू

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	४३
१७	हज	७७

सजदह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	७७

इमाम क़िरअत करे तो मुक़्तदी ख़ामोश रहे

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	२०४

नमाज़ की रकअतों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०१-१०२
३०	फ़ज्र	३

इमामत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	४३
५	निसा	१०२

जमाअत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	४३
५	निसा	१०२

नफ़्ल नमाज़ें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	७९
१९	फ़ुरक़ान	६४
२१	सजदह	१६
२६	क़ाफ़	४०
२७	तूर	४९
२९	मुज़्ज़म्मिल	२०

नमाज़ बेहयाई से रोकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	अनकबूत	४५

मुसाफ़िर की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०१

जुमुए की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	जुमुअह	९

ईद की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	४५
३०	कौसर	२

बारिश की दुआ की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	नूह	१०

ख़ौफ़ की नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३९
५	निसा	१०२

क़ज़ा नमाज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तॉहा	१४

जनाज़े की नमाज़ सिर्फ़ मूमिन की है, काफ़िर और मुनाफ़िक की नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	८४

मस्जिद के अहकाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	जिन्न	१८

मस्जिदें अच्छी बनाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३६

सिर्फ़ मुसलमान मस्जिद तामीर करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	१७-१८

मस्जिद के मुतवल्ली परहेज़गार हों.

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	३४

मस्जिद में अल्लाह के ज़िक्र से रोकना सख़्त जुर्म है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	११४

मस्जिद की बुनियाद तक़्वा पर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१०८-१०९

मुनाफ़िक़ों की मस्जिद में नमाज़ जायज़ नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	११४

ज़कात का बयान
ज़कात का फ़र्ज़ होना.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	३
८	मूमिनून	४

ऱ्नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो़ क़ुरआन में बेशुमार जगहों पर आया है.

ज़कात देनेवाला कामयाब है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३०	आला	१४

ज़कात माल को पाक करती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१०३

ज़कात देनेवाले को अल्लाह बहुत देता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६८
२१	रुम	३९
३	बक़रह	२६१
२७	हदीद	१८

ज़कात नेक नियत से दें .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	रुम	२९

ज़कात में उमदा चीज़ें दें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२२७

ज़कात देकर एहसान न जताएं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६२

जिसके पास न हो वह अच्छी बात कहे

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६३

अपनी महेबूब चीज़ ख़र्च करो

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	९२
२	बक़रह	१७७

ज़कात न देनेवाले और कंजूस पर अज़ाब है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१८०
२६	मुहम्मद	३७
१०	तौबह	३४

बाग़ और खेत पर ज़कात है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१४०
३	बक़रह	२६७

तिजारती माल पर ज़कात

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६७

सख़्ती से मांगना मना है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	१७३

खुले छुपे दोनों तरह से ज़कात दी जा सकती है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२७१
२२	फ़ातिर	२९
६	निसा	१४९

किन लोगों को ज़कात दें .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	६०
१८	नूर	२२

रोज़े का बयान

रोज़े का फ़र्ज़ होना

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८३

रमज़ान मास के रोज़े फ़र्ज़ हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८२
२	बक़रह	१८५

मुसाफ़िर और रोगी पर तुरन्त रोज़ा फ़र्ज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८४

रोज़े का वक़्त

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८७

रमज़ान की रात

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८७

जो शख़्स बुढ़ापे के कारण रोज़ा न रख सके वह कफ़्फ़ारह दे .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८४

क़सम के कफ़्फ़ारे में रोज़ा है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	८९

हलाल को हराम बनालेने में रोज़े का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तहरीम	४

क़त्ले ख़ता में रोज़ा है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	२

जुर्मे हज का कफ़्फ़ारा रोज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	१९६

चाँद देखने का बयान .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८९
२	बक़रह	१८५

शबे क़द्र

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	दुख़ान	३
३०	क़द्र	१

ऐतिकाफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८७
१७	हज	२५-२६

ऐतिकाफ़ में हमबिस्तरी रात में भी हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८७

हज का बयान

बैतुल्लाह, अल्लाह का सबसे पहला घर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१२५
४	आले इमरान	९६
१७	हज	५
१७	हज	२९

हज फ़र्ज़ है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६
४	आले इमरान	९७

हज का वक़्त मुक़र्रर है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९७
२	बक़रह	२००

हज साहिबे इस्तताअत पर फ़र्ज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	९७

एहराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९७
६	मायदह	१
७	मायदह	९५

एहराम की हालत में जानवर का शिकार हराम.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९४-९६

एहराम में पानी का शिकार जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९६
१४	नहल	१४
२२	फ़ातिर	१२

हज व उमरह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६

तमत्तोअ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६

हज और उमरह एक साथ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६

तवाफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२५
१७	हज	२९

मक़ामे इब्राहीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१२५
४	आले इमरान	९७

सफ़ा व मर्वाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१५८

अरफ़ात की हाज़िरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९८-१९९

मुज़दलिफ़ा में क़याम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९८

मिना की हाज़िरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२००
२	बक़रह	२०३
१७	हज	२८-२९

क़ुरबानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६
७	मायदह	१९७
१७	हज	२८
१७	हज	२३
१७	हज	३४
१७	हज	३६-३७

सर के बाल मुंडाने और कतरवाने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६
१७	हज	२९
२७	फ़त्ह	२७

तवाफ़े फ़र्ज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	२९

जुर्म और उनके कफ़्फ़ारे

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६
७	मायदह	९५

मुस्तफ़ा जाने रहमत के दरबार में हाज़िरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	६४

निकाह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	३
५	निसा	२४
१८	नूर	३२

निकाह नबीयों की सुन्नत

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२६
१३	रअद	३८
२२	अहज़ाब	३८-३९

अज़्दवाजी ज़िन्दगी की रुह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	रुम	३७

मेहरम औरतों का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२१
४-५	निसा	२२-२४

चार औरतों तक निकाह जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	४

वली का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३२
१८	नूर	३२

औरत पर किसी का ज़ब्र जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१९

मेहर का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	२०
५	निसा	२३
२२	अहज़ाब	५०
२८	मुमतहिनह	१०
४	निसा	२५
६	निसा	५

दूध पिलाने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२३

पति पत्नी के अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१९
५	निसा	३४
२८	तलाक़	२

अगर औरतें नाफ़रमानी करें तो उनको नसीहत की जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४
२८	तहरीम	२

अगर नसीहत कारगर न हो तो उनके साथ सोना छोड़ दिया जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

अगर अब भी बाज़ न आए तो हलकी मार की इजाज़त है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

अगर बीवी पसन्द न भी हो तब भी भलाई के साथ रखें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१९

मर्द औरत अपनी अपनी कमाई में ख़ुद मुख़्तार हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

औरत अगर खर्च न लेने पर राज़ी हों

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	२८

इद्दत वाली औरत से मंगनी जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२५

इद्दत में निकाह हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३५

ज़िना वाली औरत से निकाह अच्छा नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३

बदकार मर्द औरत से शादी नाजायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३

बालिग़ होने का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	६
१८	नूर	५९

तलाक़ का बयान

तलाक़ जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२९
२८	तलाक़	१

एक या दो तलाक़ के बाद रुजूअ जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२९
२	बक़रह	२४०
२८	तलाक़	२

तलाक़ पर गवाही मुस्तहब है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तलाक़	२३०

इद्दत में रुजू हानि पहुंचाने के लिये हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३१

दो तलाक़ में इद्दत गुज़रने के बाद उसी शौहर से निकाह जायज़ है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३१

केवल तलाक़ में मेहर न देना मना है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२९

अनछुई पत्नी को तलाक़ जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३६
२२	अहज़ाब	४९

तलाक़ औरत को सुपुर्द देने का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	अहज़ाब	२८

गर्भावस्था में तलाक़ जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	तलाक़	२८

रजअत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२८-२३१
२८	तलाक़	२

रजआत में गवाह बनाना

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तलाक़	२

ईला का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३६

ख़ुलअ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२९

ज़िहार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	२-४

ज़िहार का कफ्फ़ारह

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	३-४

लआन का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६-९

पहले मर्द गवाही दे

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६-७

औरत को सज़ा न दी जाए अगर वह भी लआन करे.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	८-९

इद्दत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२८
२	बक़रह	२३४
२८	तलाक़	१
२८	तलाक़	४

निकाह के बाद हमबिस्तरी करने से पहले तलाक़ देने पर इद्दत नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	४९

नफ़क़े का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३३
२८	तलाक़	६-७

सोग का बयान
सोग में मंगनी और निकाह हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३५

ज़ीनत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	१४
८	अअराफ़	३२
८	अअराफ़	३०
१३	रअद	१८
१४	नहल	१४
२२	फ़ातिर	१२
२५	ज़ुख़रुफ़	१८

ज़ेवर उधार लेना जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१३८
१६	ताँहा	८७

मोती और मर्जान के ज़ेवर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	रहमान	२२

औरतें अपने ज़ेवरात की जगहों को गैर मर्दों पर ज़ाहिर न करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३१

पाँव में ज़ेवर पहनना जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३१

पर्दे का बयान
मर्द औरतें निगाह नीची रखें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३०-३१
१८	नूर	६०
२२	अहज़ाब	५९

मकान में जाने की इजाज़त

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३१
१८	नूर	२८
१८	नूर	२७
१८	नूर	२९
१८	नूर	५८
१८	नूर	५९

मिली जुली तालीम और उठना बैठना मना है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३३
२२	अहज़ाब	५३
२२	अहज़ाब	५९

ज़िना का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	फ़ुरक़ान	६८
१८	मूमिनून	६०
१८	बनी इस्राईल	३२
१८	अअराफ़	३३

ज़िना की सज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	२५
५	निसा	२५
१८	नूर	२
१८	नूर	३३

मुतअ हराम है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	मूमिनून	६
२९	मआरिज़	२९-३०

लिवातत हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	८०
२	बक़रह	२२२
१८	मूमिनून	७

ख़ानदानी मन्सूबा बन्दी, बर्थ कंट्रोल

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३१-३२

गर्भपात भी क़त्ल है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७८
५	निसा	९२-९३
६	मायदह	३२
७	अनआम	४५
७	अनआम	१५
७	अनआम	३१
७	अनआम	१३७
२८	मुमतहिनह	१२

जिहाद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९०-१९२
२	बक़रह	१९३
२	बक़रह	२१६
२	बक़रह	१९५
९	अनफ़ाल	५-६
१०	अनफ़ाल	६१
११	तौबह	१२१
११	तौबह	१२०
१७	हज	३९-४०
२६	मुहम्मद	४
२६	मुहम्मद	७
२६	मुहम्मद	४
२६	मुहम्मद	३०
२६	मुहम्मद	२१

मुसलमान ही कामयाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२५

जिहाद में कंजूसी बुरी है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	मुहम्मद	२१

जिहाद की बैअत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२०७
२	बक़रह	१५४
४	आले इमरान	१६९-१७०
१८	नूर	६२
२६	फ़त्ह	१०
२६	फ़त्ह	१८
२६	फ़त्ह	१६
२६	फ़त्ह	१७

जिहाद में कभी हार भी होती है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१३९
४	आले इमरान	१४६-१४८
४	आले इमरान	१५४-१५५
४	आले इमरान	१६५

मुजाहिद के लिये बड़ा सवाब है

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१७२-१७५
४	आले इमरान	१९५
५	निसा	७४
५	निसा	९५-९६

जिहाद में कसरत से ज़िक्र

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	४५

जिहाद की पूरी पूरी तैयारी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	६६

एक मुसलमान पर दो काफ़िरों का मुकाबला फ़र्ज़ है,

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	७४

जिहाद से भागना हराम

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१५-१६
१०	अनफ़ाल	४५

मुजाहिदों से अल्लाह का वादा

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९४
१०	अनफ़ाल	६९
२२	अहज़ाब	२७
२६	फ़त्ह	१५
२६	फ़त्ह	१६-२१
२६	फत्ह	२०

जिहाद की फ़ज़ीलत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	सफ़	४

इस्लाम में जंग का बुनियादी नज़रिया

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
१०	अनफ़ाल	२९
१०	तौबह	२९
१०	तौबह	३८
११	तौबह	१११
११	तौबह	१२०
११	तौबह	१०१
११	तौबह	८१
११	तौबह	४३

जंग और सुलह के कानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
१०	अनफ़ाल	४१
१०	अनफ़ाल	६२
२६	फ़त्ह	२५
२६	हुजुरात	९
२६	हुजुरात	१०
२६	मुहम्मद	३५
२६	फ़त्ह	१
२८	हश्र	५

बग़ावत का कानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३३
२६	हुजुरात	९
२६	फ़त्ह	३४

मुर्तद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१७
६	मायदह	५४
१०	तौबह	६५-६६

इल्म का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	८४
११	तौबह	१२२
११	यूनुस	७२
१२	हूद	५१
१३	यूसुफ़	८६
१३	यूसुफ़	१०४
१३	यूसुफ़	५५
१९	शुअरा	१८०
१९	शुअरा	१६३
१९	शुअरा	१४३
२२	सबा	४७
२२	फ़ातिर	२८
२३	ज़ुमर	८८
२३	ज़ुमर	९
२३	ज़ुमर	८८
२५	शूरा	२२
२८	मुजादलह	११
३०	दुहा	११

सच्चाई जानने के लिये मुनाज़िरह जायज़ है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	१२५
१७	हज	६७
२४	मूमिन	५

औरतों की तालीम घरेलू कामों तक ही हो.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३३
२२	अहज़ाब	३४

पहले किस चीज़ की तालीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	तॉहा	१३२
२१	लुक़मान	१३

तालीम में सख़्ती भी

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४

मुसलमानों की फ़ज़ीलत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१०९

हलाल हराम की पाबन्दी का हुक्म ज़रूरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२०
४	आले इमरान	१०४
७	मायदह	९२
८	अअराफ़	७९
९	अअराफ़	१४२
९	अअराफ़	९३
१०	तौबह	९१
१२	हूद	८८
१२	हूद	३४
१३	रअद	४०
२१	लुक़मान	१६
२२	यासीन	१७
२८	तग़ाबुन	१२

अगर हक़ गोई में मुसीबत आए तो सब्र करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इम्रान	२१
९	अअराफ़	१२६
३०	अस्र	३

नसीहत करने से ग़रज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१६४
९	अअराफ़	१६५

दुनिया के लालच में सच्ची बात से मुंह फेरना बेअक़्ली

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१७५

नसीहत से ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होना चाहीये

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	२-४

नसीहत मूमिन की फ़ज़ीलत है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	११४
१०	तौबह	७
१०	तौबह	१७
११	तौबह	११२

नसीहत कैसे करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४
१०	तौबह	१३
११	यूनुस	२
२८	मुजादलह	९
२८	जुमुअह	११
२९	मुद्दस्सिर	२

कंजूसी और नाजायज़ कामों का हुक्म देनेवाले को अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३७
२७	हदीद	२४

बन्दों के अधिकार -
माँ बाप से नेक सुलूक.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	८३
५	निसा	३६
८	अनआम	१५१
१५	बनी इस्राईल	२३
१६	मरयम	१४
१६	मरयम	३२
२६	अहक़ाफ़	१५

माँ बाप पर ख़र्च

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१५
३	इब्राहीम	४२
५	निसा	१३५
७	मायदह	११०
१५	बनी इस्राईल	२३
१५	बनी इस्राईल	२३
१९	नम्ल	१९
२१	लुक़्मान	१५
२६	अहक़ाफ़	१९

माँ बाप अगर शिर्क और गुनाह करें तो उनकी इताअत नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११४
२०	अनकबूत	८
२१	लुक़्मान	१५

औलाद के कारण माँ बाप को हानि न पहुंचाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२३३

औलाद पर शफ़क़त

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५१
१५	बनी इस्राईल	२४
१६	मरयम	६
२१	लुक़मान	१३-१९

घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म दें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	५५
१६	तॉहा	१३२

माँ बाप की मुहब्बत अल्लाह और रसूल के मुकाबले में कुछ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२४

मुसलमानों के अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७८
२	बक़रह	२२०
४	आले इमरान	१०३
६	मायदह	२
१०	तौबह	११
१२	हिज्र	४७
१८	नूर	६१
२१	अहज़ाब	५
२६	हुजुरात	१०
२८	हश्र	१०

काफ़िर रिश्तेदारों से दोस्ती नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३४
१०	तौबह	२३
१९	फ़ुरक़ान	६३

मुसलमान गुनाहगारों से रिश्ता तोड़ लें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११८

काफ़िरों और मुश्रिकों से रिश्ता नहीं रखें.

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११४
२५	ज़ुख़रुफ़	२६
२९	मुज़्ज़म्मिल	११

यतीमों के माल की हिफ़ाज़त और उनका ख़याल रखना.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२०
४	निसा	३
४	निसा	६
४	निसा	१०
८	अनआम	१५२
१५	बनी इस्राईल	३४
१६	कहफ़	८२
२९	दहर	८
३०	फ़ज्र	१७
३०	दुहा	२
३०	माऊन	२
३०	बलद	१४-१६

यतीमों का काम मुफ़्त करना बेहतर है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	८२

तीजा और चहल्लुम का सुबूत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	८

अल्लाह की मख़्लूख़ पर मेहरबानी

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	२
२६	हुजुरात	१०

बुरी सोहबत से बचो

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१४०
७	अनआम	६८
१०	तौबह	८३
११	तौबह	१०८
१९	फ़ुरक़ान	७२
२४	हामीम सजदह	२५

नेकों का साथ अपनाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	५२
१०	तौबह	६
११	तौबह	१०८
१९	शुअरा	११४

औलाद और बीवी की ग़लतीयों से दरगुज़र

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तग़ाबुन	१४

मुसलमान एक दूसरे के मददगार हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	७१

अल्लाह के लिये दोस्ती-दुश्मनी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२३
२८	मुजादलह	२२
२८	मुजादलह	१४-२५
२८	मुम्तहिनह	१
२८	मुजादलह	१३

मुहाजिरों से दोस्ती

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	हश्र	९

अन्सार की अज़मत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	हश्र	४

अल्लाह के दुश्मनों से खुली दुश्मनी

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	२३
२६	फ़त्ह	२९
२८	मुम्तहिनह	४
२८	तहरीम	९

मुसलमानों पर रहमत

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१५९
११	तौबह	१२८
२६	हुजुरात	२९

तब्लीग़ के वक़्त नर्म गुफ़्तारी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नह्ल	१२५
१६	ताँहा	४४
२४	हामीम सजदह	३४-३५

मआशी मसायल-
मर्द औरत दोनों कमा सकते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६७
५	निसा	३२

रात और दिन में तिजारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२०	क़सस	७३
२९	मुज़म्मील	२०

सूद में बरकत नहीं, हराम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२७५
३	बक़रह	२७८
३	बक़रह	२७९
३	बक़रह	२७६
४	आले इमरान	१३०
४	रुम	३९
६	निसा	१६१

इजारह, मज़दूरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	८२
२०	क़सस	२६
२०	क़सस	२५
२०	क़सस	२७

इस्लामी मईशत का फ़लसफ़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
१३	रअद	३६
१५	बनी इस्राईल	३०
२१	अनकबूत	६२
२१	रुम	३७
२२	सबा	३६
२४	ज़ुमर	५२
२५	शूरा	१२
२५	ज़ुख़रुफ़	३२
२८	तलाक़	७

माल जमा करना

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	३४
१५	बनी इस्राईल	३१
१५	बनी इस्राईल	६७-७०
१९	शुअरा	१८२
१९	शुअरा	१५०
२०	क़सस	७२
२०	क़सस	५७
२१	रुम	३७-४०
२५	ज़ुख़रुफ़	१८

मआशी निज़ाम और सोशलिज़्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	नज्म	३९
२७	वाक़िअह	६४
२८	हश्र	६
२९	दहर	९
२९	मुदस्सिर	४५
२९	क़लम	१७
२९	हाक़्क़ह	२८
३०	हुमज़ह	३
३०	लैल	१८
३०	लैल	११
३०	लैल	६
३०	बलद	६
३०	फ़ज्र	२०
३०	मुतफ़्फ़िफ़ीन	१

सोशलिज़्म की नफ़ी

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	सबा	३९
२४	ज़ुमर	५२
२५	ज़ुख़रुफ़	३३

इस्लामी इस्टेट के फ़रायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	८०
१७	हज	४१
२५	शूरा	१३

इस्लामी स्टेट की तालीमी पॉलीसी

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	१२२
१२	अहज़ाब	३४

आर्थिक व सामाजिक नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३१

आन्तरिक व विदेश नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३४

मुनाफ़िक़ों के बारे में नीति

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	७३
११	तौबह	१२३

इस्लामी रियासत के उसूल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	३६
२५	शूरा	३८
२५	अहज़ाब	१५

हाकिम अल्लाह ही है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	फ़ातिर	१३

हुकूमत के गुण

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सॉद	२६
२५	शूरा	३९

अमीर (हाकिम) की इताअत की सीमा

पारा	सूरत	आयत नंबर
२९	दहर	२४

इस्लामी रियासत की ज़िम्मेदारियां

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	५४-५७

अमीर शराब बन्द कराए

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०

ज़िना को ख़त्म करे

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३२

मुजरिमों को माफ़ी नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	२

इस्लाम के दुश्मनों को पनपने से रोकना

पारा	सूरत	आयत नंबर
२४	अहज़ाब	६०-६२

कर्मचारियों के गुण

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	४१

परिवार का महत्व

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	२६

शासक तिजारत को बेईमानों से पाक रखें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३५

शासक घमण्ड से बचें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३७

विदेश नीति साहसिक हो

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	६२

तहक़ीक के बिना कार्यवाही मना

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	३६

मुआहिदों का सम्मान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९२
१०	तौबह	८
१०	तौबह	९
१०	तौबह	१३
१०	अनफ़ाल	५७
१०	अनफ़ाल	५८
१०	अनफ़ाल	७२
१०	तौबह	४
१०	तौबह	७
१४	नहल	९१
१४	नहल	९५
१५	बनी इस्राईल	३४

अस्ल फ़ैसला अल्लाह का

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	४४-४५
१३	रअद	४१
२०	नम्ल	७८

हुज़ूर के फ़ैसले हमेशा सही

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०५

अल्लाह ने नबीयों को फ़ैसलों का इख़्तियार दिया है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७९
६	मायदह	७२
६	मायदह	४९

फ़ैसला इन्साफ़ से

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	५८
१७	अंबिया	७८-७९

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सॉद	२२
२३	सॉद	२६

जिहालत के दौर के फ़ैसले शून्य

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	१५

सम्मन पर हाज़िर न होना जुर्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	४८

अदालत की इस्लामी कार्यप्रणाली

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१०६
५	निसा	३५

क़ुरआन की रौशनी में फ़ैसला न करने वाले

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	४७

रिश्वत हराम है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८८
६	मायदह	४२
६	मायदह	६२

शहादत (गवाही)

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१४०
३	बक़रह	२८३
३	बक़रह	२८२
७	अनआम	१९
७	मायदह	१०६
७	मायदह	१०७
२६	हुजुरात	६

झुटी गवाही जुर्म है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१७	हज	३०
१९	फ़ुरक़ान	७२

गवाह इन्साफ़ वाले हों.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२८२
३	बक़रह	२९२
५	निसा	१३५
६	मायदह	८
७	मायदह	१०६

ज़िना की गवाही

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	४
१८	नूर	१३

हलफ़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	६२
७	मायदह	१०६
१०	तौबह	४२
१०	तौबह	५६
१०	तौबह	६२
१७	अंबिया	५७

इक़रार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२८२

३	आले इमरान	८१
५	निसा	३५

विकालत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	१९

अस्ल फ़तवा अल्लाह का

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१२७
६	निसा	१७६

उलमा से सवाल करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नम्ल	४३

उलमा जवाब में ग़ौर करें .

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	८३

पंच बनाना

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३५
७	मायदह	९५
२५	शूरा	२१

इस्लामी संविधान में प्राथमिकता अल्लाह और रसूल के हुक्म को है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरत	१
२७	हदीद	२
२८	हश्र	२३

अल्लाह की कानूनी हाकिमियत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	यूसुफ़	४०
१५	बनी इस्राईल	३२
२३	यासीन	८३
२५	शूरा	१०-१२

क़ानून बनाने का अधिकार

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	३१
११	यूनुस	५७
१४	नहल	११६
२२	अहज़ाब	३६
२८	मुजादलह	४

ग़ैर इस्लामी क़ानून बनाना और उन्हें अच्छा समझना कुफ्र है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	मुजादलह	५

किन लोगों की इताअत की जाए

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	२८
१९	फ़ुरक़ान	५२
१९	शुअरा	१५१

ख़िलाफ़त का सही अर्थ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सॉद	२६

इस्लामी समाज की सदस्यता

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११

क़ानूनी व हक़ीक़ी मुसलमान का अन्तर

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	९

रियासत के वाजिबात जनता पर

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	अनफ़ाल	७२

शूरा का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	शूरा	३८

इस्लामी संविधान में नमाज़ रोज़े का महत्व

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	५

हलाल व हराम क़रार देने का हक़

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अअराफ़	१५७
११	यूनुस	३१
१४	नहल	११६

ईमान लाने पर जब्र नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	यूनुस	९९

ज़बरदस्ती कराया हुआ गुनाह जुर्म नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	१०६

अस्ल से ज़्यादा बदला नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	१२६

ज़ालिमों की मदद जायज़ नहीं .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२०	क़सस	१७

कोई व्यक्ति दुसरे के कर्म का ज़िम्मेदार नहीं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
२०	अनकबूत	१२
२२	फ़ातिर	१८
२३	ज़ुमर	७
२७	नज्म	३८

कुरआन अल्लाह का क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	४८
२५	शूरा	१३

क़ानून की बुनियाद न्याय है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	शूरा	१५

अल्लाह व रसूल के सामने राय की आज़ादी का हक़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२२	अहज़ाब	२६

रसूलुल्लहा के नाम से न पुकारें

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३०

कम नाप तौल हराम है

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	८५
१२	हूद	८४
१५	बनी इस्राईल	३५

समाज को बिगाड़ने वाले साधनों की रोक थाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	बनी इस्राईल	१६
१५	बनी इस्राईल	३१

पारस्परिक जीवन

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६१

खेल कूद तमाशे का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	यूसुफ़	१२
२१	लुक़मान	६
२७	हदीद	२०

गुप्त अंगो का छुपाना फ़र्ज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	३१

रात को कपड़े उतारकर सो सकते हैं.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	५८

ज़ेवर औरतों के लिये

पारा	सूरत	आयत नंबर
२५	ज़ुख़रुफ़	१८
१८	नूर	३१

सलाम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	९४
५	निसा	५८
७	अनआम	५४
१२	हूद	४८
१२	हूद	६९
१३	इब्राहीम	२३
१४	नहल	३२
१६	मरयम	४७
१६	मरयम	३३
१८	नूर	६१
२०	क़सस	५५
२८	मुजादलह	२८

अंबिया पर यौमे विलादत, यौमे वफ़ात और यौमे क़यामत सलाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	मरयम	१५
१६	मरयम	३३
२३	साफ़्फ़ात	११९
२३	साफ़्फ़ात	१२०

इलाज का बयान -
अल्लाह ही शिफ़ा देता है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	८०

शहद में शिफ़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	६८-६९

शराब की हुर्मत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१९
५	निसा	४३
७	मायदह	९०-९२
८	अअराफ़	३३
१४	नहल	६७

आरायश और खाने पीने की सारी चीज़ें हलाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	३२

पानी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	६०
९	अअराफ़	१६०
१२	यूसुफ़	१९
१४	नहल	१०
१९	शुअरा	१०५
२३	सॉद	४२
२७	क़मर	२८

ज़ियाफ़त का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	६९
१४	हिज्र	५१
२६	ज़रियात	२४

पानी पीने के लिये है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२४९
१४	नहल	१०

दूध पीना जायज़

पारा	सूरत	आयत नंबर
१४	नहल	६६

पाकीज़ह चीज़ें खाएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७२
१८	मूमिनून	५१

क्रय विक्रम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२७५
५	निसा	२९

ग़लत तरीक़ों से माल खाना जायज़ नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८८
५	निसा	२९
७	मायदह	८८

तिजारत ज़िक्रे इलाही से न रोके

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	३७
१०	तौबह	२४

सही नाप तौल का हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अनआम	१५२
८	अअराफ़	८५
१२	हूद	८४-८५
२७	बनी इस्राईल	३५
२७	रहमान	९
३०	मुतफ़्फ़िफ़ीन	१-३

क्रम विक्रय में गवाही अच्छी

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	३८२
३	बक़रह	२८२

सोना और चांदी लोगों के लिए **मेहबूब कर दी गई**

पारा	सूरत	आयत नंबर
२७	रहमान	९

पाकीज़ा कमाई से ज़कात अदा करें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६७

तिजारत के लिए सफ़र

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२७३
१४	नहल	१४
१५	बनी इस्राईल	६६
२०	क़सस	७३
२२	फ़ातिर	१२
२५	जासियह	१२
२९	मुज़म्मिल	२

हज के ज़माने में तिजारत

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९२

तिजारत ख़ुदा का फ़ज़्ल

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९८
४	आले इमरान	१८०
१४	नहल	१४
१४	नहल	७१
१५	बनी इस्राईल	१२
१५	बनी इस्राईल	६६
२०	क़सस	७३
२१	रूम	२३
२२	फ़ातिर	१२
२५	जासियह	१२
२८	जुमुअह	१०

उधार में लिखा पढ़ी और गवाही

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२८२
३	बक़रह	१८२

तंगदस्त से मोहब्बत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२८०

किफ़ायत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३४
३	आले इमरान	३७
६	तॉहा	४०
१३	यूसुफ़	७२
२०	क़सस	१२

अमानत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८८
३	बक़रह	२८३
५	निसा	५८
९	अनफ़ाल	७२
१८	मूमिनून	६८
२२	अहज़ाब	७२

हलाल व हराम जानवर

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७३
५	निसा	८०
६	मायदह	३
६	मायदह	३०
६	मायदह	४
७	मायदह	१०३
८	अनआम	१३५
८	अनआम	४३
८	अनआम	१२१
८	अनआम	१४५
८	मायदह	५
८	अनआम	११८-११९
९	अअराफ़	५०
१४	नहल	११४-११५
१७	हज	३६
१७	हज	३४
१७	हज	२८
२८	हश्र	७

क़ुरबानी का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	२७
८	अनआम	६२
८	अनआम	१४२
१७	हज	३६-३७
१७	हज	३४
१७	हज	३
१७	हज	२८
२३	सफ़्फ़	१०७
३०	कौसर	२

पाकीज़ह चीज़ें हलाल हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	८७-८८
७	मायदह	१४२
८	अअराफ़	३२
१५	बनी इस्राईल	७०
२८	तहरीम	१-२

अलग अलग खाना जायज़ है.

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	६१

ज़िन्दगी बचाने के लिये खाना फ़र्ज़ है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७३
५	निसा	२९
८	अनआम	१४५
१४	नहल	११५

झूटे पर ख़ुदा की लानत

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	६१
४	आले इमरान	९४
५	निसा	५०
६	मायदह	४१
७	मायदह	३०
११	यूनुस	६९
१४	नहल	११६
१४	नहल	६२
१७	अंबिया	१८
१८	नूर	७
२८	मुजादलह	१५
२८	सफ़्फ़	७

गाली मत दो

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	१०८
२६	हुजुरात	११

जासूसी मना है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरात	१२

पीठ पीछे बुराई हराम है .

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१४८
१५	बनी इस्राईल	३६
२६	हुजुरात	१२

चीख़ना मना है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	लुक़्मान	१९

हासिद के शर से पनाह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१५
५	निसा	३२

गुस्सा पी लेना

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	आले इमरान	१३४
२४	हामीम सजदह	३३-३६
२५	शूरा	३७

तकब्बुर, घमण्ड

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३६
१२	हूद	२१९
१५	बनी इस्राईल	३७
२०	क़सस	७६
२१	लुक़्मान	१८
२५	शूरा	४८
२७	हदीद	२३

काफ़िरों ने घमण्ड के कारण इमान कुबूल न किया

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	८७
८	अअराफ़	७६
११	यूनुस	७५
१८	मूमिनून	४४-४८
१९	फ़ुरक़ान	२१
२२	फ़ातिर	४२-४३
२६	अहक़ाफ़	१०
२९	नूह	७

घमण्ड करनेवालों पर अज़ाब

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	निसा	१७३
८	अअराफ़	३६
१३	इब्राहीम	२१
२०	अनकबूत	३९-४०
२२	सबा	३१-३२
२४	मूमिन	२५
२५	जासियह	३१

माल और जमाअत पर घमण्ड करनेवालों की मिसाल

पारा	सूरत	आयत नंबर
१५	कहफ़	३२-४२
२७	हदीद	२०

घुड़ दौड़ का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	सॉद	३१
३०	आदियात	१

दिखावे का सदक़ा बातिल

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२६४
३	बक़रह	२६९

रियाकार न बनो

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	१४२
१०	अनफ़ाल	४७
१६	कहफ़	१२
२३	ज़ुमर	२
३०	माऊन	८

ज़ुल्म का बयान - शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२९
४	आले इमरान	९४
४	आले इमरान	१५७
६	निसा	१४८
७	अनआम	४१
७	अनआम	१३५
७	अनआम	४५
७	अनआम	९३
१०	तौबह	२३
१२	यूसुफ़	२३
१२	हूद	१०२
१३	इब्राहीम	४२
१५	कहफ़	२९
१८	मूमिनून	९४
१९	फ़ुरक़ान	२७
१९	फ़ुरक़ान	२९
२०	क़सस	५९
२१	लुक़मान	१३
२२	फ़ातिर	३७
२२	सबा	३१-३२
२२	फ़ातिर	४०
२३	सॉद	२२-२४
२४	मूमिन	१८
२४	मूमिन	५२
२५	शूरा	४१-४३
२५	शूरा	४४-४५
२५	शूरा	१२
२५	ज़ुख़रुफ़	७४
२८	हश्र	१७
२६	अहक़ाफ़	१०
२८	सफ़	७
२८	जुमुअह	५
२८	तहरीम	११

शराब की हुर्मत - पहला हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२१९

दूसरा हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	४३

आख़िरी हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०

शराब पीना शैतानी काम

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	मायदह	९०-९१

जुआ - पहला हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१९

आख़िरी हुक्म

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३
६	मायदह	९०

शेअर शायरी

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	२२४-२२६
१९	शुअरा	२२७
२९	मआरिज़	४१

हजामत के अहकाम

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१९६
२६	फ़त्ह	२७

दाढ़ी बढ़ाना नबियों की सुन्नत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	ताँहा	९४

सफ़र के आदाब - दुआएं

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	हूद	४१
२५	ज़ुख़रुफ़	१३

शिकार का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	१
६	मायदह	२
६	मायदह	४
७	मायदह	९५-९६

रहन का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२८३

क़त्ल का बदला

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१७८
२	बक़रह	१७९
५	निसा	९२-९३
६	मायदह	३९
६	मायदह	३२
१९	फ़ुरक़ान	६८

ज़िना की तोहमत

पारा	सूरत	आयत नंबर
१८	नूर	४
२२	अहज़ाब	५८

मुसलमान का मज़ाक न उड़ाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२६	हुजुरात	११

चोर की सज़ा

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	३८-३९
६	मायदह	३३-३४

क़सम को नेक काम न करने का ज़रिया न बनाओ

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२२४
१८	नूर	२२

क़सम के अहकामात

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	७७
७	मायदह	८९
१४	नहल	९१
१४	नहल	९४
१८	मूमिनून	८
२१	अहज़ाब	१५
२८	तहरीम	२

मन्नत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२७०
२१	अहज़ाब	२३
२९	दहर	७

शिरकत का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
१६	कहफ़	७९
१६	कहफ़	८२

दफ़्न और क़ब्र का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	यासीन	५२
२९	दहर	३५-३६
३०	अबसा	२१

शहीद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१५४
४	आले इमरान	१६९

मुर्तद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२१७
६	मायदह	५४
१०	तौबह	६५-६६

सुलह का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	११
५	निसा	१२८
२६	हुजुरात	९

ज़बरदस्ती का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२८
१४	नहल	१०६
१६	तॉहा	७२-७३
१८	नूर	३३

तक़सीम का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	८
२७	क़मर	२८

जिज़ियह

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२९

सिंचाई

पारा	सूरत	आयत नंबर
१९	शुअरा	१५५
२७	क़मर	२८

बारिश

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	ज़ुमर	२१
३०	निसा	१४-१६
३०	नाज़िआत	३१-३२
३०	अबसा	२४

ईसाले सवाब और मग़फ़िरत की दुआ

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११३-११४
१०	तौबह	८४
११	तौबह	८०
१३	इब्राहीम	४०
२४	मूमिन	९
२६	मुहम्मद	९१
२८	हश्र	१०

विरासत का क़ानून

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	१८१
४	निसा	५
४	निसा	८
४	निसा	१४
१०	अनफ़ाल	७५
२१	अहज़ाब	६
२१	अहज़ाब	४
३०	फ़ज्र	१९

विरासत में औरत भी हक़दार

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	७

औलाद के हिस्से

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११

माँ-बाप के हिस्से

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	११

मीरास की तक़सीम

पारा	सूरत	आयत नंबर
४	निसा	१२

मुंह बोले रिश्तों का हिस्सा नहीं

पारा	सूरत	आयत नंबर
५	निसा	३३
४	निसा	१२
५	निसा	७६

जमाअत में शामिल होने की शर्त

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	११

अमीर(हाकिम) की इताअत

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	१
९	अनफ़ाल	२०
९	अनफ़ाल	२४
१०	अनफ़ाल	४६

ग़द्दारी और ख़ियानत से बचें

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	२७

फ़ासिक़ो के साथ सुलूक

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	८४
१०	तौबह	७३
११	तौबह	१२३
११	तौबह	१०५

इस्लाम में क़ौमियत का तसव्वुर

पारा	सूरत	आयत नंबर
१२	यूसुफ़	३५
२१	रूम	१५
२१	अनकबूत	५६

तक़्लीद का बयान

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	बक़रह	२८२-२८६
५	निसा	५९
५	निसा	८३
५	निसा	११५
११	तौबह	१००
११	तौबह	११२
१५	बनी इस्राईल	७१
१७	अंबिया	७
१९	फ़ुरक़ान	७४
२१	लुक़्मान	१५

यहूदियों का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१०९
१	बक़रह	१११
१	बक़रह	१२०
१	बक़रह	१४०
१	बक़रह	१४
१	बक़रह	४४
१	बक़रह	४२
२	बक़रह	१४६
२	बक़रह	१४४
३	आले इमरान	६४
३	आले इमरान	७५
३	आले इमरान	८६
३	आले इमरान	६७
३	आले इमरान	२३
३	आले इमरान	६५
३	आले इमरान	७२
३	आले इमरान	७
३	आले इमरान	७
४	आले इमरान	१८७
६	मायदह	४१
६	मायदह	४३
६	मायदह	६४
६	निसा	१५३
६	मायदह	५७-५८
१०	तौबह	२९-३०
१०	तौबह	३४
१०	तौबह	५६
१५	कहफ़	२१
२४	मूमिन	२६
२५	ज़ुख़रुफ़	५१
२८	हश्र	१
२८	हश्र	२१
२८	जुमुअह	१
२८	सफ़	५
२८	जुमुअह	५
३०	बय्यिनह	१

ईसाइयों का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१३६
१	बक़रह	१४०
३	आले इमरान	४२
३	आले इमरान	५५
३	आले इमरान	६५
३	आले इमरान	५९
३	आले इमरान	३
६	निसा	१७१
६	मायदह	४६
६	मायदह	१५७
६	मायदह	१६

पारा	सूरत	आयत नंबर
६	मायदह	८२
६	मायदह	१७३
७	मायदह	१२
७	मायदह	४७
७	मायदह	११७
१०	तौबह	३
११	यूनुस	६८
१६	मरयम	३५
२१	रुम	३०
२१	रुम	१
२५	ज़ुख़्रुफ़	८१
२५	रुम	५७
२७	हदीद	२७
२८	तहरीम	१२

दहरियत का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
८	अअराफ़	५४
११	यूनुस	३१
१२	हूद	६१
१४	नम्ल	१५
१४	नम्ल	४७
१४	नम्ल	७०
१५	कहफ़	५१
१६	तॉहा	५३
१७	अंबिया	१९
१७	हज	६
१७	हज	१८
१७	हज	७३
१८	मूमिनून	१४
१८	मूमिनून	७८
१८	फ़ुरक़ान	६
१८	फ़ुरक़ान	४५
१९	शुअरा	७
१९	शुअरा	२८
१९	शुअरा	६८
१९	शुअरा	७८
१३	रअद	२
२०	नमल	६०
२०	नमल	६४
२०	अनकबूत	४४
२१	अनकबूत	६१

पारा	सूरत	आयत नंबर
२१	अनकबूत	२९
२१	रुम	४६
२१	रुम	८
२१	रुम	४२
२२	फ़ातिर	११
२२	फ़ातिर	२७
२२	फ़ातिर	४६
२४	मूमिन	६१
२४	हामीम सजदह	३७
२५	शूरा	४९
३०	नबा	८
३०	तारिक़	५

मुनाफ़ि व मुर्तद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१०	तौबह	२३
१०	तौबह	११३

अल्लाह व रसूल के दुश्मनों का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
२८	तहरीम	२२

जिहाद में शामिल न होनेवालों का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
११	तौबह	११८

ज़ालिमों की मजलिस का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	६८
८	अअराफ़	४
९	अअराफ़	१६३
२८	मुजादलह	९
२८	मुम्ताहिनह	१३

ख़ुदा भी हश्र के रोज़ हुज़ूर के दुश्मनों का बहिष्कार करेगा

पारा	सूरत	आयत नंबर
२३	यासीन	५९
२७	हदीद	१३

नाफ़रमान बीवी का बहिष्कार

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	२८
३	आले इमरान	१२०
५	निसा	३४
५	निसा	१४४

मिर्ज़ाइयत का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	५५
६	निसा	१५८
९	अअराफ़	१५८
१८	फ़ुरक़ान	१
२२	सबा	३
२२	अहज़ाब	४०
२५	ज़ुख़रुफ़	६१

शीओं का रद

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	१४
३	आले इमरान	६४
५	निसा	९७
५	निसा	२४
६	मायदह	६७
११	यूनुस	१०४
१४	हिज्र	९४
१७	अंबिया	५१
१८	नूर	३३
२८	मुनाफ़िक़ून	३
२८	अअराफ़	२१
२९	मआरिज	३१

वलियों के फ़ज़ायल

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	३४
११	यूनुस	६२

वलियों के करामतें

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३७
१५	कहफ़	७१
१५	कहफ़	७४
१५	कहफ़	७७
१६	मरयम	२५
१९	नम्ल	४०

बुज़ुर्गों के तबर्रुकात से बला दूर होती है

पारा	सूरत	आयत नंबर
२	बक़रह	२४८
१३	यूसुफ़	९३
१६	मरयम	२६
१६	ताँहा	९६

नबियों और वलियों के क़ुर्ब से दुआ क़ुबुल होती है

पारा	सूरत	आयत नंबर
३	आले इमरान	३८
५	निसा	६४

नबी और वली दूर से सुनते, देखते और मदद करते हैं

पारा	सूरत	आयत नंबर
७	अनआम	७५
८	अअराफ़	२८
१९	नम्ल	४०
२१	सिजदह	११

अच्छों के सदक़े बुरों पर अज़ाब नहीं आता

पारा	सूरत	आयत नंबर
९	अनफ़ाल	३३
१७	हज	३८
२६	फ़त्ह	२५
२७	ज़ारियात	३५
२९	नूह	२७

औलियाअल्लाह का वसीला ज़रुरी है

पारा	सूरत	आयत नंबर
१	बक़रह	६१
१	बक़रह	३७
१	बक़रह	८९
२	बक़रह	१४४
३	आले इमरान	३८
४	आले इमरान	१६४
६	मायदह	३५
९	अअराफ़	१३४
११	तौबह	१०३

क़ुरआन करीम के पारे

(१) अलिफ़ लाम मीम
(२) सयक़ूल
(३) तिलकर्रुसुल
(४) लनतनालू
(५) वलमुहसनात
(६) लायुहिब्बुल्लाह
(७) वइज़ा समिऊ
(८) वलौ अन्नना
(९) क़ालल मलऊ
(१०) वअलमू
(११) यअतज़िरुन
(१२) वमा मिन दाब्बह
(१३) वमा उबर्रिऊ
(१४) रुबुमा
(१५) सुब्हानल्लज़ी
(१६) क़ाला अलम
(१७) इक़तरिबा लिन्नास
(१८) क़दअफ़लहा
(१९) वक़ालल लज़ीना
(२०) अम्मन ख़्लक़
(२१) उत्लोमा ऊहिया
(२२) वमैंय यक़्नुत
(२३) वमा लिया
(२४) फ़मन अज़्लम
(२५) इलैहे युरद्दो
(२६) हामीम
(२७) क़ाला फ़मा ख़्त्बोकुम
(२८) क़द समिअल्लाह
(२९) तबारकल्लज़ी
(३०) अम्म

क़ुरआन पाक की सूरतें

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(१)	अल-फ़ातिहा	मक्का	१	७
(२)	अल-बक़रह	मदीना	४०	२८६
(३)	आले इमरान	मदीना	२०	२००
(४)	अन-निसा	मदीना	२४	१७६
(५)	अल-मायदह	मदीना	१६	१२०
(६)	अल-अनआम	मक्का	२०	१६५
(७)	अल-अअराफ़	मक्का	२४	२०६
(८)	अल-अनफ़ाल	मदीना	१०	७५
(९)	अत-तौबह	मदीना	१६	१२९
(१०)	यूनुस	मक्का	११	१०९
(११)	हूद	मक्का	१०	१२३
(१२)	यूसुफ़	मक्का	१२	१११
(१३)	अर-रअद	मदीना	६	४३
(१४)	इब्राहीम	मक्का	७	५२
(१५)	अल-हिज्र	मक्का	६	९९
(१६)	अल-नहल	मक्का	१६	१२८
(१७)	बनी इस्राईल	मक्का	१२	१११
(१८)	अल-कहफ़	मक्का	१२	१११
(१९)	मरयम	मक्का	६	९८
(२०)	तॉहा	मक्का	८	१३५
(२१)	अल-अम्बिया	मक्का	७	११२
(२२)	अल-हज	मदीना	१०	७८
(२३)	अल-मूमिनून	मक्का	६	११८
(२४)	अन-नूर	मदीना	९	६४
(२५)	अल-फ़ुरक़ान	मक्का	६	७७
(२६)	अश-शुअरा	मक्का	११	२२७
(२७)	अन-नम्ल	मक्का	७	९३
(२८)	अल-क़सस	मक्का	९	८८
(२९)	अल-अनकबूत	मक्का	७	९६
(३०)	अर-रुम	मक्का	६	६०
(३१)	लुक़मान	मक्का	४	३४
(३२)	अस-सजदह	मक्का	३	३०
(३३)	अल-अहज़ाब	मदीना	९	७३
(३४)	सबा	मक्का	६	५४
(३५)	फ़ातिर	मक्का	५	४५
(३६)	यासीन	मक्का	५	८३

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(३७)	अस-साफ़्फ़ात	मक्का	५	१८२
(३८)	सॉद	मक्का	५	८८
(३९)	अज़-ज़ुमर	मक्का	८	७५
(४०)	अल-मूमिन	मक्का	९	८५
(४१)	हामीम सजदह	मक्का	६	५४
(४२)	अश-शूरा	मक्का	५	५३
(४३)	अज़-ज़ुख़रुफ़	मक्का	७	८९
(४४)	अद-दुख़ान	मक्का	३	५९
(४५)	अल-जासियह	मक्का	४	३७
(४६)	अल-अहक़ाफ़	मक्का	४	३५
(४७)	मुहम्मद	मदीना	४	३८
(४८)	अल-फ़त्ह	मदीना	४	२९
(४९)	अल-हुजुरात	मदीना	२	१८
(५०)	क़ाफ़	मक्का	३	४५
(५१)	ज़ारियात	मक्का	३	६०
(५२)	तूर	मक्का	२	४९
(५३)	नज्म	मक्का	३	६२
(५४)	क़मर	मक्का	३	५५
(५५)	रहमान	मक्का	३	७८
(५६)	वाक़िअह	मक्का	३	९६
(५७)	हदीद	मदीना	४	२९
(५८)	मुजादलह	मदीना	३	२२
(५९)	हश्र	मदीना	३	२४
(६०)	मुम्तहिनह	मदीना	२	१३
(६१)	सफ़	मदीना	२	१४
(६२)	जुमुअह	मदीना	२	११
(६३)	मुनाफ़िक़ून	मदीना	२	११
(६४)	तग़ाबुन	मदीना	२	१८
(६५)	तलाक़	मदीना	२	१२
(६६)	तहरीम	मदीना	२	१२
(६७)	मुल्क	मक्का	२	३०
(६८)	क़लम	मक्का	२	५२
(६९)	हाक़्क़ह	मक्का	२	५२
(७०)	मआरिज़	मक्का	२	४४
(७१)	नूह	मक्का	२	२८
(७२)	जिन्न	मक्का	२	२८
(७३)	मुज़्ज़म्मिल	मक्का	२	२०

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(७४)	मुद्दस्सिर	मक्का	२	५६
(७५)	क़ियामह	मक्का	२	४०
(७६)	दहर	मदीना	२	३१
(७७)	मुरसलात	मक्का	२	५०
(७८)	नबा	मक्का	२	४०
(७९)	नाज़िआत	मक्का	१	४६
(८०)	अबसा	मक्का	१	४२
(८१)	तकवीर	मक्का	१	२९
(८२)	इन्फ़ितार	मक्का	१	१९
(८३)	मुतफ़्फ़िफ़ीन	मक्का	१	३६
(८४)	इन्शिक़ाक़	मक्का	१	२५
(८५)	बुरूज	मक्का	१	२२
(८६)	तारिक़	मक्का	१	१७
(८७)	अअला	मक्का	१	१९
(८८)	ग़ाशियह	मक्का	१	२६
(८९)	फ़ज्र	मक्का	१	३०
(९०)	बलद	मक्का	१	२०
(९१)	शम्स	मक्का	१	१५
(९२)	लैल	मक्का	१	२१
(९३)	दुहा	मक्का	१	११
(९४)	अलम नशरह	मक्का	१	८
(९५)	तीन	मक्का	१	८
(९६)	अलक़	मक्का	१	१९
(९७)	क़द्र	मक्का	१	५
(९८)	बय्यिनह	मदीना	१	८
(९९)	ज़िलज़ाल	मदीना	१	८
(१००)	आदियात	मक्का	१	११
(१०१)	क़ारिअह	मक्का	१	११
(१०२)	तकासुर	मक्का	१	८
(१०३)	अस्र	मक्का	१	३
(१०४)	हुमज़ह	मक्का	१	९
(१०५)	फ़ील	मक्का	१	५
(१०६)	क़ुरैश	मक्का	१	४
(१०७)	माऊन	मक्का	१	७
(१०८)	कौसर	मक्का	१	३
(१०९)	काफ़िरून	मक्का	१	६
(११०)	नस्र	मक्का	१	३

सूराह का नम्बर	सूराह का नाम	कहाँ उतरी	रुकू	आयतें
(१११)	लहब	मक्का	१	५
(११२)	इख़्लास	मक्का	१	४
(११३)	फ़लक़	मदीना	१	५
(११४)	नास	मदीना	१	६
		कुल	५५८	६२६४

वो आयतें जिन्हें जानबूझ कर ग़लत पढ़ना कुफ़्र है.

क़ुरआने पाक की तिलावत के दौरान ठहरने के मक़ाम, निशानियाँ और तिलावत के क़ानूनों का पूरे होश के साथ एहतियात बेहद ज़रूरी है. क़ुरआने पाक में बीस जगहें ऐसी हैं कि सही लिखा होने के बावजूद पढ़ने में ज़रा सी लापरवाही से अनजाने में कुछ के कुछ मानी हो जाते हैं और जानबूझ कर पढ़ने से तो कुफ़्र की नौबत पहुंच जाती है. वो बीस जगहें ये हैं.

नंबर	सूरत	आयत	सही	ग़लत
१	फ़ातिहा	४	इय्याका नअबुदु	इयाका नअबुदु (बग़ैर तशदीद)
२	फ़ातिहा	६	अनअम्त अलैहिम	अनअम्तु अलैहिम
३	बक़रह	१२४	इब्राहीमा रब्बुहू	इब्राहीमु रब्बहू
४	बक़रह	२५१	क़तला दाऊदु जालूता	क़तला दाऊदा जालूतू
५	बक़रह	२५५	अल्लाहु लाइलाहा	अल्लाहु लाइलाह
६	बक़रह	२६१	वल्लाहु युदाइफ़ो	वल्लाहु युदाअफ़ो
७	निसा	१६५	मुबश्शिरीना व मुन्ज़िरीना	मुबश्शरीना व मुन्ज़रीना
८	तौबह	३	मिनलमुश्रिकीना व रसूलुह	मिनलमुश्रिकीना व रसूलिही
९	बनी इस्राईल	१५	वमा कुन्ना मुअज़्ज़िबीन	वमा कुन्ना मअज़्ज़बीन
१०	तॉहा	१२१	वअसा आदमो रब्बहू	वअसा आदमा रब्बहू
११	अंबिया	८७	इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन	इन्नी कुन्ता मिनज़्ज़ालिमीन
१२	शुअरा	१९४	लितकूना मिनल मुन्ज़िरीन	लितकूना मिनल मुन्ज़रीन
१३	फ़ातिर	२८	यख़्शल्लाहा मिन इबादी	यख़्शल्लाहु मिन इबादी
१४	साफ़्फ़ात	७२	फ़ीहिम मुन्ज़िरीन	फ़ीहिम मुन्ज़रीन
१५	फ़त्ह	२७	सदक़ल्लाहो रसूलहू	सदक़ल्लाहा रसूलहू
१६	हश्र	२४	मुसव्विरो	मुसव्वरो
१७	हाक़्क़ह	३७	इल्लल ख़ातिऊन	इल्लल ख़ातऊन
१८	मुज़्ज़म्मिल	१६	फ़असा फ़िरऔनुर्रसूला	फ़असा फ़िरऔनर्रसूलो
१९	मुर्सलात	४१	फ़ी ज़िलालिंव	फ़ी ज़लालिंव
२०	नाज़िआत	४५	इन्नमा अन्ता मुन्ज़िरो	इन्नमा अन्ता मुन्ज़रो

क़ुरआने पाक की मंज़िलें

पहली मंज़िल - सूरए फ़ातिहा से सूरए निसा तक

दूसरी मंज़िल - सूरए माइदा से सूरए तौबह तक

तिसरी मंज़िल - सूरए यूनुस से सूरए नहल तक

चौथी मंज़िल - सूरए बनी इस्राईल से सूरए फ़ुरक़ान तक

पाँचवीं मंज़िल - सूरए शुअरा से सूरए यासीन तक

छटी मंज़िल - सूरए वस्साफ़्फ़ात से सूरए हुजुरात तक

सातवीं मंज़िल - सूरए क़ाफ़ से सूरए वन्नास तक

आयतों की क़िस्में

आयाते वअदह	एक हज़ार
आयाते वईद	एक हज़ार
आयाते नहय	एक हज़ार
आयाते अम्र	एक हज़ार
आयाते मिसाल	एक हज़ार
आयाते क़सस	एक हज़ार
आयाते तहलील	ढ़ाई सौ
आयाते तहरीम	ढ़ाई सौ
आयाते तस्बीह	सौ
आयाते मुतफ़र्रिक़ा	छियासठ

क़ुरआन नाज़िल होने की पूरी मुद्दत - २२ साल ५ माह.

जुमला कातिबाने वही - चालीस सहाबए किराम रदियल्लाहो अन्हुम.

पहली वही - इक़्रअ बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ - (सूरए अलक़, १ से ५)
आख़िरी वही - वत्तक़ू यौमन तुर्जऊना फ़ीहि इलल्लाह (सूरए बक़रह - आयत २८१)
अल यौमा अकमल्तु लकुम दीनकुम व अत्मम्तु अलैकुम
निअमती व रदीतु लकुमुल इस्लामा दीना .
(सूरए माइदा - आयत तीन)

ऐराब यानी ज़बर ज़ेर पेश की तफ़सील

ज़बर	५३२२३
ज़ेर	३९५८२
पेश	८८०४
मद	१७७१
तश्दीद	१२७४
नुक़्ते	१०५६८४

हुरुफ़े तहज्जी (मूलअक्षरों) की तफ़सील

अलिफ़	४८,८७२
ब	११,४२८
त	१,१९९
स	१,२७६
जीम	३,२७३
ह	९७३
ख़	२,४१६
दाल	५,६०२
ज़ाल	४,६७७
रे	११,७९३
ज़े	१,५९०
सीन	५,९९१
शीन	२,११५
स्वाद	२,०१२
दुवाद	१,३०७
तॉ	१,२७७
ज़ॉ	८४२
ऐन	९,२२०
ग़ैन	२,२०८
फ़े	८,४९९
क़ाफ़	६,८१३
काफ़	९,५००
लाम	३,४३२
मीम	३,६५३५
नून	४,०१९०
वाव	२,५५३६
हे	१,९०७०
लाम अलिफ़	७२०
य	४.५९१९

कुल हुरुफ़ (अक्षर)	३२३७६०
कुल कलिमे (शब्द)	८६४३०
कुल आयतें	६६६६
कुल रुकू	५५८*

* कुछ बरसों से एक आम ग़लती चली आ रही है वह यह कि रुकू की तादाद ५४० लिखी जाती है. इस्लामी तारीख़ के किस मोड़ पर ये १८ रुकू भूल में पड़े, अल्लाह ही बोहतर जाने.

(आभार - अल-मअजमुल मुफ़हरसुल क़ुरआन - कराची, पाकिस्तान में प्रकाशित)

उन किताबों का परिचय जिनके हवाले तफ़सीरे ख़ज़ाइनल इरफ़ान में मिलते हैं -

१. तनवीरुल मिक़ियास या तफ़सीरे इब्ने अब्बास.
२. जामिउल बयान या तफ़सीरे इब्ने जरीर तबरी.
३. अहकामुल क़ुरआन,
लेखक : इमाम अबूबक़ अहमद बिन अली जस्सास राज़ी हनफ़ी
४. तफ़सीरुल क़ुरआन,
लेखक : अबू इस्हाक़ अहमद बिन मुहम्मद सअलबी.
५. तफ़सीरुल क़ुरआन,
लेखक : बेहक़ी बिन हुसैन
६. तफ़सीरे बसीत,
लेखक : अली उर्फ़ वाहिदी बिन अहमद.
७. जवाहिरुल क़ुरआन,
लेखक : अबू हामिद ज़ैनुद्दीन मुहम्मद ग़ज़ाली
८. मआलिमुत तन्ज़ील, लेखक : हुसैन बिन मसऊद अबू मुहम्मद नक़वी शाफ़ई
९. मफ़ातिहुल ग़ैब या तफ़सीरे कबीर,
लेखक : इमाम फ़ख़रुद्दीन उमर राज़ी.
१०. अल-बहरुल मुहीत,
लेखक : असीरुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यूसुफ़ बिन हय्यान उन्दुलुसी.

११. तफ़सीरे ज़ाहिदी.
१२. अल-जामेउल अहकामिल क़ुरआन या तफ़सीरे क़ुरतबी,
लेखक : अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अन्सारी क़ुरतबी.
१३. मदारिकुत-तन्ज़ील या तफ़सीरे मदारिक,
लेखक : हाफ़िज़ुद्दीन मेहमूद अबुल बरकात अन-नसफ़ी
१४. तफ़सीरे इब्ने कसीर,
लेखक : हाफ़िज़ इमामुद्दीन अबुल इफ़दा इस्माईल इब्ने कसीर दमिश्क़ी.
१५. अन्वारुत तन्ज़ील या तफ़सीरे बैज़ावा,
लेखक : क़ाज़ी नासिरुद्दीन अबू सईद अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ानी.
१६. तफ़सीरुल कश्शाफ़,
लेखक : जारल्लाह मेहमूद बिन उमर ज़मख़शरी.
१७. तफ़सीरे जलालैन,
पहले भाग के लेखक : अल्लामा जलालुद्दीन सियूती बिन अब्दुर्रहमान.
दूसरे भाग के लेखक : जलालुद्दीन महल्ली.
१८. तफ़सीरे ग़राइबुल क़ुरआन या तफ़सीरे नीशापूरी.
१९. दुररुल मन्सूर,
लेखक : जलालुद्दीन सियूती.
२०. तफ़सीरे ख़ाज़िन शरहे मआलिमुत-तन्ज़ील
२१. रुहुल मआना,
लेखक : अल्लामाशहाबुद्दीन सैयद मेहमूद आलूसी.

क़ुरआन शरीफ़ के ग़लत अनुवाद

(आला हज़रत के किये हुए क़ुरआन शरीफ़ के अनुवाद और दुसरे अनुवादों का तुलनात्मक अध्ययन)

आला हज़रत ने जो ख़िदमत की क़ुरआने पाक की
थी सरासर उन पे रहमत साहिबे लौलाक की
नज्दियों से क्या घटेगा रुतबए अहमद रज़ा
हैसियत तूफ़ाँ के आगे क्या ख़सो ख़ाशाक की

कन्ज़े ईमाँ तर्जुमा जो हर जगह मशहूर है
हर वरक़ में जिसके नाते मुस्तफ़ा मस्तूर है
हर सतर में जिसकी इश्क़े मुस्तफ़ा जलवा फ़िग़न
हाँ वह हर सुन्नी के दिलका और नज़र का नूर है

उत्तर प्रदेश के बरेली शहर के एक इज़्ज़त वाले पठान ख़ानदान में एक ऐसी हस्ती ने जन्म लिया जो अल्लाह तआला के दिये हुए इल्म और फ़ज़्ल से इस्लामी जगत के क्षितिज पर चमकता सूरज बनकर छा गया. ये थे अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ाँ जिन्हें दुनिया के मुसलमानों की अक्सरीयत बीसवीं सदी के मुजद्दिद की हैसियत से अपना इमाम मानती है.

यूं तो इमाम अहमद रज़ा के इल्मी कारनामों की सूची काफ़ी लम्बी है - दस हज़ार पन्नों पर आधारित अहम फ़तवों का संग्रह, एक हज़ार से ऊपर रिसाले और किताबें, इश्क़े रसूल में डूबी हुई शायरी - इत्यादि. लेकिन इनमें सबसे बड़ा इल्मी कारनामा है क़ुरआन शरीफ़ का उर्दू अनुवाद. यह अनुवाद नहीं बल्कि अल्लाह तआला के कलाम की उर्दू में व्याख्या है.

मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि क़ुरआन का ठीक ठीक अनुवाद किसी भी ज़बान, यहां तक कि अरबी में भी नहीं किया जा सकता. एक भाषा से दुसरी भाषा में केवल शब्दों को बदल देना मुश्किल नहीं है. लेकिन किसी भाषा की फ़साहत, बलाग़त, सादगी और उसके अन्दर छुपे अर्थ, उसके मुहावरों और दूसरे रहस्यों को समझना, और उसकी पृष्ठभूमि का अध्ययन करके उसकी सही सही व्याख्या करना अत्यन्त कठिन काम है. यही आज तक कोई न कर सका. रसूले अकरम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम, जिन पर क़ुरआन उतरा, ने अल्लाह के कलाम की तशरीह की और वह यही तशरीह थी जो सहाबए किराम, ताबईन, तबए ताबईन और उलमा व मुफ़स्सिरों और मुहद्दिसों से होती हुई हम तक पहुंची.

क़ुरआन शरीफ़ के दूसरी भाषाओं में जो अनुवाद हुए हैं उनके अध्ययन से यह बात साफ़ हो जाती है कि किसी शब्द का अनुवाद उसके मशहूर और प्रचलित अर्थ के अनुसार कर दिया गया है, जब कि हर भाषा में किसी भी शब्द के कई अर्थ होते हैं. इन मुख़्तलिफ़ अर्थों में से किसी एक उचित अर्थ का चुनाव अनुवाद करने वाले की ज़िम्मेदारी होती है. वरना शब्द का ज़ाहिरी अनुवाद तो एक नौसीखिया भी कर सकता है.

इमाम अहमद रज़ा ने क़ुरआन शरीफ़ का जो अनुवाद किया है उसे देखने के बाद जब हम दुनिया भर के क़ुरआन-अनुवादों पर नज़र डालते हैं तो यह वास्तविकता सामने आती है कि अक्सर अनुवादकों की नज़र क़ुरआन के शब्दों की गहराई तक नहीं पहुंच सकी है और उनके अनुवाद से क़ुरआन शरीफ़ का मफ़हूम ही बदल गया है. बल्कि कुछ अनुवादकों से तो जाने अनजाने तहरीफ़ अर्थात कतर-ब्यौत भी हो गई है. यह शब्द के ऊपर शब्द रखने के कारण क़ुरआन की हुरमत और नबीयों के सम्मान को भी ठेस पहुंची है. और इससे भी बढ़कर, अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को हलाल ठहराया है, इन अनुवादों के कारण वह हराम क़रार पा गई है. और इन्हीं अनुवादों से यह भी मालूम होता है कि मआज़ल्लाह कुछ कामों की जानकारी अल्लाह तआला को भी नहीं होती. इस क़िस्म का

अनुवाद करके वो ख़ुद भी गुमराह हुए और मुसलमानों के लिए गुमराही का रास्ता खोल दिया और यहूदियों ईसाइयों और हिन्दुओं के हाथों में (इस तरह का अनुवाद करके) इस्लाम विरोधी हथियार दे दिया गया. आर्य-समाजियों का काफ़ी लिटरेचर इस्लाम पर किये गये तीखे तन्ज़ और कटाक्ष से भरा पडा है.

इमाम अहमद रज़ा ने मशहूर और मुस्तनद तफ़सीरों की रौशनी में क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद किया. जिस आयत की व्याख्या मुफ़स्सिरों ने कई कई पन्नों में की, आला हज़रत ने अल्लाह तआला की प्रदान की हुई विद्या से वही व्याख्या अनुवाद के एक वाक्य या एक शब्द में अदा कर दी. यही वजह है कि आला हज़रत के अनुवाद से हर पढ़ने वाले की निगाह में क़ुरआन शरीफ़ का आदर, नबीयों का सम्मान और इन्सानियत का वक़ार बलन्द होता है.

आइये देखें कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा और दूसरे लोगों के क़ुरआन-अनुवाद के बीच क्या अंतर है.

पारा चार, सूरए आले इमरान, आयत १४२

وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ

अनुवाद :-

- शाह अब्दुल क़ादिर - "और अभी मालूम नहीं किये अल्लाह ने जो लडने वाले हैं तुम में."
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी - "हालांकि अभी ख़ुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं."
- शाह वलीउल्लाह - " व हनोज़ तमीज़ नसाख़्ता अस्त ख़ुदा आँरा कि जिहाद करदा अन्द अज़ शुमा." (फ़ारसी)
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी - "हालांकि अभी अल्लाह ने उन लोगों को तुम में से जाना ही नहीं जिन्हों ने जिहाद किया."
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी - "और अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा जो तुम में से जिहाद करने वाले हैं."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी - " हालांकि हनोज़ अल्लाह तआला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्हों ने तुम में से जिहाद किया हो."
- देवबन्दी मेहमूदुल हसन - "और अभी तक मालूम नहीं किया अल्लाह ने जो लडने वाले हैं तुम में."
- इमाम अहमद रज़ा -"और अभी अल्लाह तआला ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया."

देखा आपने ! आला हज़रत को छोड़कर दूसरे अनुवादक क़ुरआन की व्याख्या करते वक़्त कितने ग़ैर हाज़िर थे कि तफ़सीर के अध्ययन का कष्ट न उठाया और किस सादगी से क़लम चला दिया. एक तरफ़ तो अल्लाह तआला के सर्वज्ञाता, सर्वव्याप्त, सर्व शक्तिमान होने में ईमान, दूसरी तरफ़ उसको ऐसा बेख़बर बताना कि मूमिनों में से कौन लोग जिहाद की भावना से ओत प्रोत हैं, इसकी जानकारी अल्लाह को नहीं, या अभी जाना ही नहीं.

पारा नौ, सूरए अनफ़ाल, आयत नं. ३०

وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ

- शाह अब्दुल क़ादिर -"और वो भी फ़रेब करते थे और अल्लाह भी फ़रेब करता था और अल्लाह का फ़रेब सबसे बेहतर है."
- शाह रफ़ीउद्दीन - "और मक्र करते थे वो और मक्र करता था अल्लाह तआला और अल्लाह तआला नेक मक्र करने वालों का है ."

- शाह वलीउल्लाह - "व ईशाँ बदसगाली मी करदन्द व ख़ुदा बदसगाली मी कर्द (यानी ब-ईशाँ) व ख़ुदा बेहतरीने बदसगाली कुनन्दगान अस्त." (फ़ारसी)
- महमुदुल हसन देवबन्दी - "वो भी दाव करते थे और अल्लाह भी दाव करता था और अल्लाह का दाव सबसे बेहतर है"
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी - "और हाल यह कि काफ़िर अपना दाव कर रहे थे और अल्लाह अपना दाव कर रहा था और अल्लाह सब दाव करने वालों से बेहतर दाव करने वाला है."
- थानवी अशरफ़ अली देवबन्दी - "और वो तो अपनी तदबीर कर रहे थे और अल्लाह मियाँ अपनी तदबीर कर रहे थे और सबसे ज़्यादा मुस्तहकम तदबीर वाला अल्लाह है."
- इमाम अहमद रज़ा - "और वो अपना सा मक्र करते थे और अल्लाह अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे बेहतर."

आला हज़रत के अलावा दूसरे अनुवादकों ने उर्दू में जो शब्द इस्तेमाल किये वो अल्लाह की शान के ख़िलाफ़ हैं. मक्र और फ़रेब की निस्बत उसकी शान में गुस्ताख़ी है. यह बुनियादी ग़लती सिर्फ़ इस वजह से है कि अल्लाह और रसूल के पाक कामों को अपने कामों से जाँचा है.

अल्लाह तआला के आदर के लिये थानवी साहब ने "मियाँ" इस्तेमाल किया है, जो एक बहुत ही साधारण शब्द है और अल्लाह तआला की शान घटाता है.

पारा तीस, सूरए वद-दुहा, आयत नं. ७

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى

अनुवाद :-
- मक़बूल शीआ :- "और तुमको भटका हुआ पाया और मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाया."
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "और पाया तुमको भटकता फिर राह दी."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "और पाया तुमको राह भूला हुआ पस राह दिखाई."
- शाह वलीउल्लाह :- "व याफ़्त तुरा राह गुम कर्दा यानी शरीअत नमी दानिस्ती पर राह नमूद."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "और आपको बेख़बर पाया सो रास्ता बताया."
- देवबन्दी डिप्टी नज़ीर अहमद :- "और तुमको देखा कि राहे हक़ की तलाश में भटके भटके फिर रहे हो तो तुमको दीने इस्लाम का सीधा रास्ता दिखा दिया."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "और अल्लाह तआला ने आपको (शरीअत से) बेख़बर पाया सो आपको (शरीअत का) रास्ता बतला दिया."
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "और तुम्हें अपनी महब्बत में ख़ुदरफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी."

ऊपर की आयत में "दाल्लन" शब्द इस्तेमाल हुआ है. इसके मशहूर मानी गुमराही और भटकना है. चुनान्चे अनुवादकों ने आँख बंद करके यही अर्थ लगा दिये, यह न देखा कि अनुवाद में किसे राह-गुमकर्दा, भटकता, बेख़बर, राह भूला कहा जा रहा है. रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आदर सम्मान बाक़ी रहता है या नहीं, इसकी कोई चिन्ता नहीं. एक तरफ़ तो है "मा वद्दअका रब्बुका वमा क़ला, वलल आख़िरतो ख़ैरुल लका मिनल ऊला " (यानी तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना और बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है ...) इसके बाद ही शान वाले रसूल की गुमराही का वर्णन कैसे आ गया. आप ख़ुद ग़ौर करें, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अगर किसी लम्हा गुमराह होते तो राह पर कौन होता था. यूँ कहिये कि जो ख़ुद गुमराह हो, भटकता फिरा हो, राह भूला हुआ हो, वह हिदायत देने वाला कैसे हो सकता है?

ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ में साफ़ तौर से कहा गया है "मा दल्ला साहिबुकुम वमा ग़वा" (आपके साहिब अर्थात नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न गुमराह हुए और न बेराह चले - पारा सत्ताईस, सूरए नज़्म, आयत दो) जब एक स्थान पर अल्लाह तआला गुमराह और बेराह की नफ़ी फ़रमा रहा है तो दूसरे स्थान पर ख़ुद ही कैसे गुमराह इरशाद फ़रमाएगा ?

पारा छब्बीस, सूरए फ़त्ह. आयत १

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا

अनुवाद :-

- शाह अब्दुल क़ादिर :- "हमने फ़ैसला कर दिया तेरे वास्ते सरीह फ़ैसला ताकि माफ़ करे तुझको अल्लाह जो आगे हुए तेरे गुनाह और जो पीछे रहे."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "तहक़ीक़ फ़त्ह दी हमने तुझको फ़त्हे ज़ाहिर ताकि बख़्शे वास्ते तेरे ख़ुदा जो कुछ हुआ था पहले गुनाहों से तेरे आगे और जो कुछ पीछे हुआ"
- शाह वलीउल्लाह :- "हर आइना मा हुक्म करदन बराए तो बफ़त्हे ज़ाहिर आक़िबते फ़त्ह आनस्त कि बियामुर्ज़ तुरा ख़ुदा आन्चे कि साबिक़ गुज़श्त अज़ गुनाहे तो व आन्चे पसमानद."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "बेशक हमने आपको खुल्लमखुल्ला फ़त्ह दी ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ कर दे."
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दीः- "ऐ मुहम्मद हमने तुमको फ़त्ह दी फ़त्ह भी सरीह व साफ़ ताकि ख़ुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे." (यही अनुवाद मेहमूदुल हसन देवबन्दी का है)
- देवबन्दी डिप्टी नज़ीर अहमद :- "ऐ पैग़म्बर यह हुदैबिय्यह की सुलह क्या हुई दर हक़ीक़त हमने तुम्हारी खुल्लम खुल्ला फ़त्ह करा दी ताकि तुम इस फ़त्ह के शुक्रिये में दीने हक़ की तरक़्क़ी के लिये और ज़्यादा कोशिश करो और ख़ुदा इस के सिले में तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दे."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "बेशक हमने आपको खुल्लम खुल्ला फ़त्ह करा दी ताकि अल्लाह तआला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ फ़रमा दे."
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "बेशक हमने तुम्हारे लिये रौशन फ़त्ह दी ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के."

आम अनुवादकों से ज़ाहिर होता है कि नबीए मअसूम अतीत में भी गुनाहगार था, भविष्य में भी गुनाह करेगा. मगर खुली फ़त्ह के सदक़े में अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो गए और आइन्दा रसूल के गुनाह माफ़ होते रहेंगे.

नबीयों के मअसूम होने का सिद्धांत अगर ईमान का हिस्सा है तो क्या गुनाहगार ख़ताकार नबी हो सकता है ? आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जोशे अक़ीदत नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिये अपने कमाल पर है. उनको भी अनुवाद के समय यह चिन्ता हुई होगी कि अस्मते रसूल पर हर्फ़ न आए और क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद भी सही हो जाए. वह अक़ीदत भरी हुई निगाह जो आस्तानए रसूल पर हर वक़्त बिछी हुई है, उसने देखा कि "लका" में "लाम" सबब के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है लिहाज़ा जब हुज़ूर के सबब से गुनाह बख़्शे गए तो वो शख़्सिय्यतें और हुईं जिनके गुनाह बख़्शे गए.

पारा पच्चीस, सूरए शूरा, आयत २४

فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ

अनुवाद -
- शाह वलीउल्लाह :- "पस अगर ख़्वाहद ख़ुदा मुहर निहाद बर दिले तो."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "पस अगर चाहता अल्लाह, मोहर रख देता ऊपर दिल तेरे के."
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "सो अगर अल्लाह चाहे तो आपके क़ल्ब पर मोहर लगा दे."
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "अगर ख़ुदा चाहे तो ऐ मुहम्मद तुम्हारे दिल पर मोहर लगा दे."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "तो अगर अल्लाह चाहे तो आपके क़ल्ब पर मोहर लगा दे."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "सो ख़ुदा अगर चाहे तो आपके दिल पर बन्द लगा दे (साबिक़ा अनुवाद) दिल पर मोहर लगा दे."
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "और अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत और हिफ़ाज़त की मोहर
लगा दे."

दूसरे अनुवादों से यह अन्दाज़ा होता है कि "ख़तमल्लाहो अला क़ुलूबिहम" के बाद मोहर लगाने की कोई जगह थी तो यही थी कि सिर्फ़ डरा धमका कर छोड़ दिया. कितना भयानक विचार है. वह पाक ज़ात कि जिसके सरे मुबारक पर मेअराज का ताज रखा गया, आज उससे फ़रमाया जा रहा है कि हम चाहें तो तुम्हारे दिल पर मोहर लगा दें !

मोहर दो क़िस्म की होती है एक तो वह जो "ख़तमल्लाहो अला क़ुलूबिहम" में इस्तेमाल हुई है और दूसरी "ख़ातमुन्नबिय्यीन" की. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का क़ल्बे मुबारक कि जिस पर अल्लाह तआला की रहमत और अनवार की बारिश हो रही है, जिस दिल को हर चीज़ से मेहफ़ूज कर दिया गया है, इस मुबारक आयत में इसकी मज़ीद वज़ाहत कर दी गई.

पारा दो, सूरए बक़रह, आयत १४५

وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ

अनुवाद -
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "और कभी चला तू उनकी पसन्द पर बाद उस इल्म के जो तुझको पहुंचा तो तेरा कोई नहीं अल्लाह के हाथ से हिमायत करने वाला न मददगार."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "और अगर पैरवी करेगा तू ख़्वाहिशों उनकी पीछे उस चीज़ से कि आई तेरे पास इल्म से, नहीं वास्ते तेरे अल्लाह से कोई दोस्त और न कोई मददगार."
- शाह वलीउल्लाह :- "अगर पैरवी कर दी आरज़ूहाए बातिल ईशाँरा पस आन्चे आमदह अस्त बतो अज़ दानिश न बाशद तुरा बराए इख़्लास अज़ अज़ाबे ख़ुदा हेच दोस्ते व न यारे दहन्द."
- दरियाबादी देवबन्दी :- "और अगर आप बाद उस इल्म के जो आपको पहुंच चुका है उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगे तो आपके लिए अल्लाह की गिरफ़्त के मुक़ाबले में न कोई यार होगा न मददगार."

- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी और फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "और ऐ पैग़म्बर अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म यानी क़ुरआन आ चुका है उनकी ख़्वाहिशों पर चले तो फिर तुमको ख़ुदा के ग़ज़ब से बचाने वाला न कोई दोस्त और न कोई मददगार."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "और अगर आप इत्तिबाअ करने लगे उनके ग़लत ख़यालात का इल्मे क़तई साबित बिल वही आ चुकने के बाद तो आपका कोई ख़ुदा से बचाने वाला न यार निकले न मददगार."
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "और (ऐ सुनने वाले, जो कोई भी हो) अगर तू उनकी ख़्वाहिशों का पैरो हुआ बाद इसके कि तुझे इल्म आ चुका तो अल्लाह से कोई तेरा बचाने वाला होगा और न मददगार."

पाक पवित्र नबी जिनकी निस्बत तारीफ़ से क़ुरआन के पन्ने भरे हैं, जिनको तॉहा, यासीन, मुज़म्मिल, मुद्दस्सिर जैसे अल्क़ाब व आदाब दिये गए, अचानक इस क़दर सख़्त अल्फ़ाज़ से अल्लाह तआला उनको संबोधित करे ? आला हज़रत ने तफ़सीरे ख़ाज़िन की रौशनी में आयत का अनुवाद किया कि मुख़ातब हर सुनने वाला है न कि पाक पवित्र नबी सल्ललाहो अलैहे वसल्लम.

पारा पच्चीस, सूरए शूरा, आयत ५२

مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ

अनुवाद -
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "तू न जानता था कि क्या है किताब और न ईमान."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "न जानता था तू क्या है किताब और न ईमान."
- शाह वलीउल्लाह :- "नमी दानिस्ती कि चीस्त किताब व नमी दानिस्ती कि चीस्त ईमान."
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान"
- अबुल-अआला मौदूदी देवबन्दी :- "तुम्हें कुछ पता न था कि किताब क्या होती है और ईमान क्या चीज़ है."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "आपको न यह ख़बर थी किताब क्या चीज़ है और न यह कि ईमान क्या चीज़ है."
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी :- "तुम नहीं जानते थे कि किताबुल्लाह क्या चीज़ है और न यह जानते थे कि ईमान किसको कहते हैं."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "आपको न यह ख़बर थी कि किताब (अल्लाह) क्या चीज़ है और न यह ख़बर थी कि ईमान (का इन्तिहाई कमाल) क्या चीज़ है"
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा :- "इससे पहले न तुम किताब जानते थे न एहकामे शरअ की तफ़सील."

लौहो क़लम का इल्म ही नहीं बल्कि जिनको माकाना व मायकून का इल्म है, मआज़ल्लाह, इस आयत के उतरने से पहले मूमिन भी न थे. क्योंकि इन अनुवादकों के अनुवादों के अनुसार ईमान से भी अज्ञान(कोरे) थे, तो ग़ैर मुस्लिम हुए. मुवह्हिद भी नहीं कह सकते कि वह आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले मूमिन होता है (बाद में रिसालत पर ईमान लाना शर्त है) इन अनुवादों से यह मालूम होता है कि ईमान की ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बाद में हुई. आला हज़रत के अनुवाद से इस तरह के सारे ऐतिराज़ात ख़त्म हो गए कि आप शरीअत के एहकाम की तफ़सील न जानते थे. ईमान और शरीअत के एहकाम की तफ़सील में जो अन्तर है वही आला हज़रत और दूसरे अनुवादकों में है.

पारा सत्ताईस, सूरए रहमान , आयत १-४

اَلرَّحۡمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الۡبَيَانَ

अनुवाद :

- शाह अब्दुल क़ादिर :- "रहमान ने सिखाया क़ुरआन, बनाया आदमी, फिर सिखाई उसको बात."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "रहमान ने सिखाया क़ुरआन, पैदा किया आदमी को, सिखाया उसको बोलना."
- शाह वलीउल्लाह :- "ख़ुदा आमोख़्त क़ुरआन रा, आफ़रीद आदमी रा व आमोख़्तश सुख़न गुफ़्तन."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "ख़ुदाए रहमान ही ने क़ुरआन की तालीम दी, उसी ने इन्सान को पैदा किया उसको गोयाई सिखाई."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी और फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "रहमान ने क़ुरआन की तालीम दी. उसने इन्सान को पैदा किया फिर उसको गोयाई सिखाई."
- डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी :- "जिन्नों और आदमियों पर ख़ुदाए रहमान के जहाँ और बेशुमार एहसानात हैं अज़ाँ जुमला यह कि उसीने क़ुरआन पढ़ाया, उसी ने इन्सान को पैदा किया फिर उसको बोलना सिखाया."
- आशिक़े रसूल इमाम अहमद रज़ा :-"रहमान ने अपने मेहबूब को क़ुरआन सिखाया, इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया माकाना व मायकून का बयान उन्हें सिखाया."

ऊपर के अनुवादों को ग़ौर से पढ़िये, फिर आला हज़रत का अनुवाद पढ़ें. आयत नम्बर दो में "अल्लमा " शब्द आया. सारे अनुवादकों ने लिखा "रहमान ने सिखाया क़ुरआन" सवाल पैदा होता है कि किस को क़ुरआन सिखाया. इससे किसे इन्कार हो सकता है. ख़ुद क़ुरआन शाहिद है "अल्लमका मा लम तकुन तअलम" अल्लाह ने आपको हर उस चीज़ का इल्म दिया जो आप न जानते थे.

आयत नंबर तीन का अनुवाद है- आदमी को पैदा किया. वह इन्सान कौन है. अनुवादकों ने शब्द पर शब्द रख के अनुवाद कर दिया. कुछ ने अपनी तरफ़ से भी शब्द जोड़ दिये. फिर भी इन्सान शब्द की व्याख्या न हो सकी. अब आप उस इज़्ज़त वाली ज़ात का तसब्बुर करें जो हर अस्ल की अस्ल है. जिनकी हक़ीक़त सारी हक़ीक़तों की जननी है. जिनपर तख़्लीक़ की नीव रखी गई, जो उत्पत्ति का स्रोत है, कायनात की रुह, इन्सानियत की जान है. आला हज़रत फ़रमाते हैं - इन्सानियत की जान मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को पैदा किया. अल-इन्सान से जब हुज़ूर सरदारे कौनैन के व्यक्तित्व का निर्धारण हो गया तो उनकी शान के लायक़ अल्लाह तआला की तरफ़ से तालीम भी होनी चाहिये. चुनान्चे आम अनुवादकों की रविश से हट कर आला हज़रत फ़रमाते हैं माकाना व मा यकून का बयान उन्हें सिखाया.

इस जगह रसूल की शान में गुस्ताख़ी करने वाले ज़हनों में ज़रूर यह सवाल उभरता है कि यहां माकाना वमा यकून का बयान सिखाना कहाँ से आ गया. यहाँ तो मुराद बोलना सिखाना है. या यह कहिये कि क़ुरआन का इल्म दूसरी आयत ज़ाहिर कर रही है तो उस चौथी आयत में उसका बयान सिखाना मुराद है.

इसका जवाब यह है कि माकाना वमा यकून (जो कुछ हुआ और जो क़यामत तक होगा) का इल्म लौहे महेफ़ूज़ में और लौहे महेफ़ूज़ क़ुरआन शरीफ़ के एक जुज़ में और क़ुरआन का बयान (जिसमें माकाना व मायकून का बयान भी शामिल है) सिखाया.

पारा ३०, सूरए बलद, आयत १

لَآ اُقۡسِمُ بِهٰذَا الۡبَلَدِ

अनुवाद -
- शाह अब्दुल क़ादिर :- "क़सम खाता हूँ इस शहर की और तुझ को क़ैद न रहेगी इस शहर में."
- शाह रफ़ीउद्दीन :- "क़सम खाता हूँ मैं इस शहर की और तू दाख़िल होने वाला है इस शहर में."
- शाह वलीउल्लाह :- "क़सम मी खुरम बईं शहर."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "मैं क़सम खाता हूँ इस शहरे मक्का की."
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- "मैं क़सम खाता हूँ इस शहर की."
- मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- "क़सम खाता हूँ इस शहर की."
- डिप्टी नज़ीर देवबन्दी :- "हम इस शहरे मक्का की क़सम खाते हैं."
- अबुल अअला मौदूदी वहाबी :- "नहीं, मैं क़सम ख़ाता हूँ इस शहर की."
- इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़े बरेलवी :-"मुझे इस शहर की क़सम कि ऐ मेहबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो."

इन्सान क़सम खाता है. उर्दू और फ़ारसी में क़सम खाई जाती है. अल्लाह तआला खाने पीने से बेनियाज़ है. अनुवादकों ने अल्लाह तआला को अपने मुहावरे का क्यों पाबन्द किया ? क्या इसलिये कि उस बेनियाज़ ने कुछ नहीं खाया तो कम से कम क़सम ही खाए ! ऐसी भी क्या बेनियाज़ी कि कुछ नहीं खाता ! आलाहज़रत ने किस उमदा तरीक़े से अनुवाद फ़रमाया - मुझे इस शहर का क़सम.

पारा एक, सूरए फ़ातिहा, आयत चार

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

अनुवाद -
- शाह वलीउल्लाह :- "तुरा मी परस्तम व अज़ तो मदद मी तलबम."
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- "हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं."
- शाह रफ़ीउद्दीन व मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- "तुझ ही को इबादत करते हैं हम और तुझ ही से मदद चाहते हैं हम."
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- "हम आपकी ही इबादत करते हैं और आप ही से दरख़्वास्ते इआनत करते हैं."
- इमाम अहमद रज़ा :- "हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें."

सूरए फ़ातिहा सूरए दुआ है. दुआ के दौरान दुआ के शब्द बोले जाते हैं, ख़बर नहीं दी जाती. इबादत करते हैं, मदद चाहते हैं, जबकि सारे अनुवादों में ख़बर का मफ़हूम है, दुआ का नहीं. इबादत करते हैं, मदद चाहते हैं, ये शब्द दुआ के नहीं, ख़बर के हैं. जबकि आलाहज़रत ने दुआ के शब्दों के साथ अनुवाद किया है.

पारा दस, सूरए अनफ़ाल, आयत ७०

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ

अनुवाद -
- शाह अब्दुल क़ादिर :- ऐ नबी !
- शाह रफ़ीउद्दीन :- ऐ नबी !
- शाह वलीउल्लाह :- ऐ पैग़म्बर !

- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- ऐ नबी !
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- ऐ नबी !
- डिप्टी नज़ीर देवबन्दी :- ऐ पैग़म्बर !
- इमाम अहमद रज़ा :- ऐ ग़ैब की ख़बर बताने वाले !

क़ुरआन शरीफ़ में "रसूल" और "नबी" शब्द कई जगह आया है. अनुवादक की ज़िम्मेदारी है कि वह इसका अनुवाद करे. रसूल का अनुवाद पैग़म्बर तो ज़ाहिर है मगर नबी का अनुवाद पैग़म्बर अधूरा है. आला हज़रत ने नबी शब्द का अनुवाद इस ढंग से किया है कि शब्द की वास्तविकता सामने आ गई. मगर अफ़सोस कि कुछ लोगों को इस अनुवाद से गहरा दुख हुआ है कि उनकी तंगनज़री और बदअक़ीदगी का जवाब आलाहज़रत के अनुवाद से ज़ाहिर हो गया.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अनुवाद -

- शाह अब्दुल क़ादिर :- शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला.
- शाह रफ़ीउद्दीन :- शुरु करता हूँ मैं साथ नाम अल्लाह बख़्शिश करने वाले मेहरबान के.
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी :- शुरु अल्लाह निहायत रहम करने वाले बारबार रहम करने वाले के नाम से.
- अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं.
- इमाम अहमद रज़ा :- अल्लाह के नाम से शुरु जो निहायत मेहरबान रहम वाला.

समस्त उर्दू अनुवाद देखिये, सबने इसी तरह अनुवाद किया है "शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से" या "शुरु साथ नाम अल्लाह के". चुनांचे अनुवादक का कथन ख़ुद अपनी ज़बान से ग़लत हो गया. क्योंकि शुरु करता हूँ से अनुवाद शुरु किया है, अल्लाह के नाम से शुरु नहीं किया. थानवी जी ने आख़िर में "हूँ" बढ़ा दिया उनके चेले या अनुयायी बताएँ कि यह किस शब्द का अनुवाद है ?

पारा दो, सूरए बक़रह, आयत १७३

وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ

अनुवादः

- शाह अब्दुल क़ादिर :- और जिसपर नाम पुकारा अल्लाह के सिवा का.
- शाह रफ़ीउद्दीन :- और जो कुछ पुकारा जावे ऊपर उसके वास्ते ग़ैरुल्लाह के.
- शाह वलीउल्लाह :- व आंचे नामे ग़ैरे ख़ुदा बवक़्ते ज़िब्हे ऊ याद कर्दा शवद.
- मेहमूदुल हसन देवबन्दी :- और जिस जानवर पर नाम पुकारा जाए अल्लाह के सिवा किसी और का.
- अब्दुल माजिद दरियाबादी, अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी :- और जो जानवर ग़ैरुल्लाह के लिये नामज़द कर दिया गया.
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी :- और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए हराम कर दिया है.
- इमाम अहमद रज़ा :- और वह जिसके ज़िब्ह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया हो.

जानवर कभी शादी के लिये नामज़द होता है, कभी अक़ीक़ा, वलीमा, क़ुर्बानी और ईसाले सवाब के लिये, जैसे कि ग्यारहवीं शरीफ़, बारहवीं शरीफ़. तो गोया हर वह जानवर जो इन कामों के लिये नामज़द किया गया है वह अनुवादकों के नज़्दीक हराम है. आला हज़रत ने हदीस, फ़िक़्ह और तफ़सीर के अनुसार अनुवाद किया :"जिसके ज़िब्ह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया है."

क़ुरआन शरीफ़ का तफ़सीर की दृष्टि से अनुवाद, न कि शब्द पर शब्द रख देना.

यदि क़ुरआने करीम का लफ़्ज़ी अनुवाद कर दिया जाए अर्थात क़ुरआन के किसी शब्द के बदले दूसरी भाषा में उसके पर्यायवाची या उसके अर्थ जैसा शब्द रख दिया जाए तो इससे बेशुमार ख़राबियाँ पैदा होंगी. कहीं अल्लाह तआला की शान में बेअदबी होगी तो कहीं नबियों की शान में. और कहीं इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा ज़ख़्मी होगा.

हमने ऊपर जो मिसालें दी हैं उनपर अगर आप ग़ौर करें तो सारे अनुवादकों ने क़ुरआन के शब्द के अनुसार सीधा सीधा उर्दू में अनुवाद कर दिया है. मगर इसके बावुजूद वो अनुवाद कानों पर भारी गुज़रते हैं, और इस्लामी अक़ीदे पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है.

क्या आप पसन्द करेंगे ?
कि कोई कहे "अल्लाह उनसे ठठ्ठा करता है" , "अल्लाह उनसे हंसी करता है ", "अल्लाह उनसे दिल लगी करता है ", "अल्लाह उन्हें बना रहा है", "अल्लाह उनकी हंसी उड़ाता है."

पारा एक, सूरए बक़रह, आयत १५

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ

अल्लाह उनसे इस्तहज़ा फ़रमाता है (जैसा कि उसकी शान के लायक़ है.) इस आयत का अक्सर अनुवादकों ने, जिनमें मशहूर डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी, शेख़ मेहमूदुल हसन देवबन्दी, फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी देवबन्दी, अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी, मिर्ज़ा हैरत देहलवी (ग़ैर मुक़ल्लिद), नवाब वहीदुज़ ज़माँ (ग़ैर मुक़ल्लिद), सर सैयद अहमद ख़ाँ अलीगढ़ी (नेचरी), हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन वग़ैरह हैं.
इसी तरह एक मशहूर आयत है :

" ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ " पारा आठ, सूरए अअराफ़, आयत ५४.

अनुवाद -
- आशिक़ इलाही देवबन्दी : फिर क़ायम हुआ अर्श पर.
- शाह रफ़ीउद्दीन : फिर क़रार पकड़ा ऊपर अर्श के.
- डिप्टी नज़ीर अहमद : फिर अल्लाह अर्शे बरीं पर जा बिराजा.
- शाह अब्दुल क़ादिर : फिर बैठा तख़्त पर.
- नवाब वहीदुज़ जमाँ ग़ैर मुक़ल्लिद : फिर तख़्त पर चढ़ा.
- वह्दी साहब व मुहम्मद यूसुफ़ काकोरवी : फिर अर्श पर दराज़ हो गया.
- इमाम अहमद रज़ा ने "इस्तवा" का उर्दू अनुवाद नहीं किया इसलिये कि इस शब्द को दर्शाने के लिये उर्दू में कोई शब्द है ही नहीं.

इसलिये आला हज़रत ने अनुवाद किया :-
"फिर अर्श पर इस्तवा फ़रमाया (जैसा कि उसकी शान के लायक़ है)"
इसी तरह आयत :

فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ पारा एक, सूरए बक़रह, आयत ११५

में वज्हुल्लाह का अनुवाद अक्सर अनुवादकों ने किया है - "अल्लाह का मुँह" , "अल्लाह का रुख़".

- शाह रफ़ीउद्दीन : पस जिधर को मुँह करो पस वही है मुँह अल्लाह का.
- नवाब वहीदुज़ ज़माँ ग़ैर मुक़ल्लिद व मुहम्मद यूसुफ़ : अल्लाह का चेहरा है.
- शेख़ मेहमूदुल हसन देवबन्दी और अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी : उधर अल्लाह ही का रुख़ है.
- डिप्टी नज़ीर अहमद व मिर्ज़ा हैरत ग़ैर मुक़ल्लिद देहलवी व सैयद फ़रमान अली शीआ : उधर अल्लाह का सामना है.
- आला हज़रत ने "वज्ह" का अनुवाद नहीं किया. आपने लिखा : "तो तुम जिधर मुँह करो उधर वज्हुल्लाह है (ख़ुदा की रहेमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह है.)"

इससे मालूम हुआ कि क़ुरआन शरीफ़ का लफ़्ज़ी अनुवाद करना हर अवसर पर लगभग असंभव है. ऐसे में अनुवाद का हल यही है कि तफ़सीर के अनुसार अनुवाद किया जाए ताकि मतलब भी अदा हो जाए और अनुवाद में किसी प्रकार की त्रुटि बाक़ी न रहे. आला हज़रत के ईमान-वर्धक अनुवाद की ख़ूबियों को देखकर यह कहना मुबालिग़ा न होगा कि सारे अनुवादों में आलाहज़रत का अनुवाद एक उच्चस्तरीय अनुवाद है जो अनुवाद की त्रुटियों से पाक है . दूसरे अनुवादकों ने ख़ालिक़ को मख़लूक़ के दर्जे में ला खड़ा किया है.

पारा पाँच, सूरए निसा आयत १४२

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ

अनुवाद -
- आशिक इलाही मेरठी, मेहमूदुल हसन देवबन्दी व शाह अब्दुल क़ादिर : मुनाफ़िक़ीन दग़ाबाज़ी करते हैं अल्लाह से और अल्लाह भी उनको दग़ा देगा.
- शाह रफ़ीउद्दीन : और अल्लाह फ़रेब देने वाला है उनको.
- डिप्टी नज़ीर अहमद : ख़ुदा उन ही को धोका दे रहा है.
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी : अल्लाह उन्हीं को धोके में डालने वाला है.
- नवाब वहीदुज़ ज़माँ ग़ैर मुक़ल्लिद व मिर्ज़ा हैरत ग़ैर मुक़ल्लिद देहलवी व सैयद फ़रमान अली शीआ : वह उनको फ़रेब दे रहा है.

दग़ाबाज़ी, फ़रेब, धोखा किसी तरह अल्लाह तआला की शान के लायक़ नहीं. आला हज़रत ने इस आयत का तफ़सीर के अनुसार यूँ अनुवाद किया : "बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते हैं और वही उनको ग़ाफ़िल करके मारेगा."

क़ुरआन की तफ़सीरों के अध्ययन के बाद अन्दाज़ा होता है कि इस अनुवाद में आयत का सम्पूर्ण अर्थ अत्यन्त मोहतात तरीक़े पर बयान किया गया है.

पारा ग्यारह, सूरए यूनुस, आयत २१

قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا

अनुवाद :
- शाह अब्दुल क़ादिर, फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी, मेहमूदुल हसन देवबन्दी : कह दो अल्लाह सबसे जल्द बना सकता है हीला.
- शाह रफ़ीउद्दीन : कह दो अल्लाह बहुत जल्द करने वाला है मक्र.
- अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबन्दी : अल्लाह चालों में उनसे भी बढ़ा हुआ है.
- नवाब वहीदुज़ जमाँ ग़ैर मुक़ल्लिद : कह दे अल्लाह की चाल बहुत तेज़ है.

इन अनुवादों में अल्लाह तआला के लिये मक्र करने वाला, चाल चलने वाला, हीला करने वाला कहा गया है हालांकि ये कलिमात किसी तरह अल्लाह तआला की शान के लायक़ नहीं हैं. इमाम अहमद रज़ा ने लफ़्ज़ी अनुवाद फ़रमाया है फिर भी किस क़दर पाकीज़ा ज़बान इस्तेमाल की है, फ़रमाते हैं - "तुम फ़रमा अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है."

पारा दस, सूरए तौबह , आयत ६७

نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ

अनुवाद -
- फ़त्ह मुहम्मद जालन्धरी व डिप्टी नज़ीर अहमद देवबन्दी : ये लोग अल्लाह को भूल गए और अल्लाह ने उनको भुला दिया.
- शाह अब्दुल क़ादिर, शाह रफ़ीउद्दीन, मेहमूदुल हसन देवबन्दी : वो अल्लाह को भूल गए अल्लाह उनको भूल गया.

अल्लाह के लिये भुला देना, भूल जाने के शब्द का इस्तेमाल अपने मानी के ऐतिबार से किसी तरह दुरुस्त नहीं हैं. क्योंकि भूल से इल्म का इन्कार होता है और अल्लाह तआला हमेशा "आलिमुल ग़ैबे वश शहादह" है. आला हज़रत ने इस आयत का तफ़सीर के अनुसार अनुवाद किया है : "वो अल्लाह को छोड़ बैठे तो अल्लाह ने उन्हें छोड़ दिया."

ये कुछ उदारण पाठकों के सामने पेश किये गए. इसके अलावा भी सैंकड़ों मिसाले हैं. इस संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन के बाद आपने अनुवाद के महत्व को महसूस कर लिया होगा.

आला हज़रत मुहद्दिसे बरेलवी अक्सर किसी आयत के अनुवाद के लिये समस्त मशहूर तफ़सीरों का अध्ययन करके मुनासिब और उचित अनुवाद करते थे और यही उनके अनुवाद "कन्ज़ुल ईमान" की सबसे बड़ी ख़ूबी है.

- बशुक्रिया हज़रत अल्लामा रज़ाउल मुस्तफ़ा साहब आज़मी
शहज़ादए हुज़ूर सद्रुश-शरीअह

अलैहिर्रहमतो वर्रिदवान.

हिन्दी अनुवादः सैयद आले रसूल नज़्मी बरकाती

क़ुरआने अज़ीम का ख़ुलासा

पहली सूरत **सूरए फ़ातिहा** कहलाती है जिसे अवाम अल्हम्दु शरीफ़ भी कहते हैं. सूरए फ़ातिहा नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती है दर अस्ल यह एक दुआ है जो अल्लाह तआला ने हर उस इन्सान को सिखाई है जो इस मुक़द्दस किताब का मुतालिआ शुरू कर रहा है. इस में सब से पहले अल्लाह की अहम सिफ़ात ख़ुसूसन तमाम जहानों के रब होने, सब से ज़ियादा रहमान और रहीम होने और साथ साथ इन्साफ़ करने वाले की हैसियत से तारीफ़ की गई है. और उसके एहसानों और नेमतों का शुक्र भी अदा किया गया है. फिर अपनी बन्दगी और आजिज़ी का ऐतिराफ़ करते हुए उससे ज़िन्दिगी के मामलात में सीधे रास्ते की हिदायत तलब की गई है.जो हमेशा से उसके इनामयाफ़्ता और मक़बूल बन्दों को हासिल रही है और जिससे सिर्फ़ वही लोग मेहरूम होते हैं जिन्होंने उसके रास्ते को छोड़ दिया है. या उसकी कोई परवाह ही नहीं की है.

सूरए बक़रह

दूसरी सूरत सूरए बक़रह अलिफ़ लाम मीम से शुरू होती है जिस में दुआ का जवाब दिया गया है कि अल्लाह ने सीधा रास्ता बताने के लिये यह किताब उतारी है. इसमें कोई शक व शुबह नहीं फिर बताया गया कि अल्लाह के नज़दीक इन्सानों की तीन क़िस्में हैं एक वह जो इस किताब पर ईमान लाएं और इसके अहकामात की इताअत करें. यानी नमाज़ क़ायम करें अल्लाह के रास्ते में अपना माल ख़र्च करें, क़ुरआन और इससे पहले की किताबों पर ईमान लाएं और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बताएं उसपर भी ईमान लाएं चाहे वह ज़ाहिरी हवास से जाना जा सके या न जाना जा सके. यानी जन्नत व दोज़ख़ मलाइका और आख़िरत और दूसरे अनदेखे (ग़ैबी) हक़ाइक़ जो इस किताब में बयान किये गए हों. ये लोग मूमिन हैं और यही लोग इस किताब से सही फ़ाइदा उठा सकेंगे. दूसरे वो हैं जो इस किताब का हटधर्मी से इन्कार करें, ये काफ़िर हैं. तीसरी क़िस्म के वो लोग हैं जो समाजी दबाव और दुनियवी फ़ाइदों की ख़ातिर अपने को मुसलमान कहलाते हैं. मगर दिल से इस्लाम की क़द्रों को नहीं मानते बल्कि इस्लाम के बाग़ियों और मुन्किरों की तरफ़ झुकाव रखते हैं. इस तरह इस्लाम की राह में रुकावटों और हराम व नाजाइज़ बातों से परहेज़ की बिना पर पहुंचने वाले ज़ाहरी नुक़सानात से डर कर शक व शुबह में मुब्तिला हैं. ये दोनों गिरोह अपने को दोहरे फ़ाइदे में समझते हैं हालांकि सरासर नुक़सान में हैं.

फिर तमाम इन्सानों को मुख़ातिब करके उन्हें क़ुरआने पाक पर ईमान लाने की दावत दी गई है और कहा गया है कि अपने पैदा करने वाले और परवरिश करने वाले मालिक व आक़ा की बन्दगी इख़्तियार करो. गुमराही का सबसे बड़ा सबब यह बताया कि जो लोग अल्लाह के किये एहद को तोड़ देते हैं और जिन रिश्तों को बांधने का हुक्म अल्लाह ने दिया है उन्हें काटते हैं और वो काम करते हैं जिनसे इन्सान नेकी के बजाय बुराई की तरफ़ चल पड़ते हैं. ऐसे ही लोग हक़ीक़त में फ़सादी हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है.

फिर दुनिया में इन्सान की अस्ल हैसियत को वाज़ेह किया गया है कि अलालह तआला ने उसे अपने ख़लीफ़ा की हैसियत से पैदा किया है और इसको दुनिया की हर चीज़ के बारे में ज़रूरी इल्म समझ और सलाहियत अता करके तमाम मख़लूक़ात पर फ़ज़ीलत बख़्शी है. इस फ़ज़ीलत को फ़रिश्तों और उनके ज़रिये दूसरी मख़लूक़ात ने तसलीम किया मगर शैतान ने तकब्बुर और घमन्ड में आकर इसकी फ़ज़ीलत को मानने से इन्कार कर दिया. इस लिये वह अल्लाह के दरबार से धुत्कार दिया गया.

इसके बाद आदम और हव्वा को जन्नत में रखने का ज़िक्र किया गया है ताकि मालूम हो कि औलादे आदम की अस्ल जगह वही है, मगर शैतान के फ़रेब से आगाह करने के लिये अल्लाह तआला ने आदम और हव्वा को आज़माइश के लिये एक काम से मना किया मगर दोनों शैतान के बहकावे में

आकर अल्लाह का हुक्म भुला बैठे और वह काम कर डाला जिससे मना किया गया था. अल्लाह ने शैतान, आदम और हव्वा तीनों को दुनिया में भेज दिया और फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ से बार बार रसूल अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम हिदायत लेकर आते रहेंगे. जो इस हिदायत पर चले वही कामयाब होकर फिर अपनी जगह वापस आएगा. और जो इन्कार करेगा वह शैतान के साथ जहन्नम का ईंधन बना दिया जाएगा.

इसके बाद तमाम इन्सानों की हिदायत के लिये एहले किताब (यहूदी और ईसाई दोनों) की एक अहम बीमारी का ज़िक्र किया गया कि ये एक दूसरे की निजात के मुन्किर बन गए हैं. यहूदी कहते हैं ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं है और ईसाई कहते हैं कि यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं है. इसी तरह मुश्रिक भी बे सोचे समझे यही कहते हैं कि हम ही हक़ पर हैं और हमारे सिवा सब बातिल हैं. हालांकि निजात याफ़्ता और जन्नत का मुस्तहिक़ होने के लिये इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल में होना या यहूदी या ईसाई होना शर्त नहीं बल्कि शर्त यह है कि आदमी एक तो मुस्लिम यानी अल्लाह का इताअत गुज़ार बने और दूसरे मुहसिन बने यानी नियत और अमल दोनों में ख़ुलूस और एहसान की सिफ़त उसमें पाई जाए. दीन को आबाई नस्ल से वाबस्ता समझने की तर्दीद करते हुए पूरे ज़ोर से फ़रमाया गया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम दोनों ही अल्लाह के पैग़म्बर थे और हज़रत इब्राहीम को जो अअला मक़ाम मिला था वह नस्ल या विरासत की बुनियाद पर नहीं मिला था बल्कि अल्लाह ने मुख़्तलिफ़ इम्तहानों में उनको डाला था और जब वह उनमें कामयाब उतरे तो तमाम इन्सानों की इमामत और पेशवाई का मन्सब इनआम के तौर पर अता फ़रमाया और आइन्दा के लिये भी यही क़ायदा मुक़र्रर किया. यह मन्सब विरासत में नहीं बल्कि उसके लाइक़ होने की शर्त के साथ मिलेगा. इस मौक़े पर उनके हाथों काबतुल्लाह की तामीर का ज़िक्र किया और बताया कि नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस मौक़े पर उनकी मांगी हुई दुआ का मज़हर हैं. और क़यामत तक इन्सानों की हिदायत तालीम और तज़किये के लिये भेजे गए हैं. और इसी लिये अब बैतुल मक़दिस की क़िबले की हैसियत ख़त्म की जाती है और काबतुल्लाह को क़िबला क़रार दिया जाता है. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद रखूंगा और मेरा शुक्र अदा करो, मेरी दी हुई नेमतों का इन्कार न करो. ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लो, अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, ऐसे लोग हक़ीक़त में ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का शऊर नहीं होता और हम ज़रूर तुम्हें ख़ौफ़ो ख़तर, फ़ाक़ाकशी, जान और माल के नुक़सान और आमदनियों के घाटे में मुब्तिला करके तुम्हारी आज़माइश करेंगे. इन हालात में जो लोग सब्र करें उन्हें ख़ुशख़बरी दे दो. ये वो लोग हैं कि जब उन्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ हमें पलट कर जाना है. उनपर उनके रब की तरफ़ से बड़ी इनायात होंगी, उसकी रहमत उनपर साया करेगी और ऐसे ही लोग सीधे रास्ते पर हैं. जो लोग हमारी नाज़िल की हुई रौशन तालीमात और हिदायात को छुपाते हैं जिन्हें हम सारे इन्सानों की रहनुमाई के लिये अपनी किताब में बयान कर चुके हैं. यक़ीन जानो कि अल्लाह उनपर लानत करता है और तमाम लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं अलबत्ता जो इस रविश से बाज़ आ जाएं और अपने तर्ज़े अमल की इस्लाह कर लें और जो कुछ छुपाते थे उसे बयान करने लगें तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा. वह बड़ा दरगुज़र करने वाला और रहम वाला है.

इसके बाद तौहीद का बयान किया गया है जो दीन की अस्ल बुनियाद है. यानी उलूहियत और ज़ाती सिफ़ात में अल्लाह का कोई शरीक नहीं है. वह तन्हा सारी क़ुव्वतों का मालिक और सारे ख़ैर का सरचश्मा है. वह कायनात बनाकर कहीं एक कोने में बैट नहीं गया बल्कि उसका इन्तिज़ाम ख़ुद चला रहा है और जिस तरह सारी कायनात एक मुनज़्ज़म व मरबूत निज़ाम की ताबे है उसी तरह इन्सानों की हिदायत के लिये उसने अपने अहकाम का एक निज़ाम बनाया है और उसे अपने रसूलों और किताबों के ज़रिये इन्सानों तक भेजा है और वह एक ही है जो अल्लाह हर ज़माने के लिये एक किताब एक रसूल और आदम की औलाद तमाम इन्सानों के लिये ज़िन्दा एक ही निज़ामे फ़िक्रो अमल भेजता रहा है.

तौहीद के ज़रूरी तक़ाज़ों और इन्सानी ज़िंदगी में उनके तमाम नताइज वाज़ेह करने के लिये बताया गया है कि अल्लाह के साथ वफ़ादारी और नेकी का हक़ मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ लेने से अदा नहीं होगा जैसा कि एहले किताब ने समझ लिया है. बल्कि ईमानियात यानी अक़ाइद की दुरुस्तगी के साथ अल्लाह के रास्ते में रिश्ते दारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, मक़रूज़ों और क़ैदियों की मदद करना, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, आपस के मुआहिदों को पूरा करना, मुसीबत के वक़्त, तंगी तुरशी दुख बीमारी में और अल्लाह के दुशमन हमला आवर हों तो सब्र और इस्तिक़ामत से काम लेना. यह है अस्ल दीन, सच्चाई और तक़्वा. जो ऐसा नमूना क़ायम करें वो सही माना में दीनदार, सच्चे और मुत्तक़ी हैं. फिर यह बताया कि एक दूसरे के जानो माल का एहतिराम करना भी नेकी और तक़्वा का हिस्सा है. चुनान्चे क़ातिल मुआशिरे का सब से बड़ा दुशमन है और उसका क़िसास सब के ज़िम्मे है इसी में मुआशिरे की ज़िन्दिगी है इसी तरह कमज़ोरों को हक़ देना चाहिये और दिलवाना चाहिये. विरसे के मामलात और वसिय्यत को पूरा करना चाहिये. इसके बाद रोज़ों की फ़ज़ीलत का बयान हुआ और इसके अहकाम बताए गए. यहाँ रोज़ों का ज़िक्र नमाज़ और इन्फ़ाक़ के साथ नहीं बल्कि मामलात के साथ किया गया है. इससे पता चलता है कि रोज़े अस्ल में एहले ईमान को अपनी ज़िन्दगी के मामलात, इन्साफ़ एहसान और तक़्वा के साथ अन्जाम देने की तरबियत देते हैं और आदमी को लालच बुख़्ल और इसी तरह की दूसरी बुराइयों से बचना सिखाते हैं. इसी मौक़े पर रिशवत की बुराई बयान की गई और बताया गया कि यहाँ हुक्काम को रिशवत की चाट सबसे पहले मुआशिरे के लोग ही लगाते हैं. इसी लिये उन्हें ख़ुद पर क़ाबू पाना चाहिये. फिर हज और जिहाद का ज़िक्र किया गया. क्योंकि रोज़ा सब्र सिखाता है और हज और जिहाद भी सब्र की आला क़िस्में हैं.

तलाक़ के तअल्लुक़ से अल्लाह तआला ने इस सूरत में वाज़ेह एहकाम दिये हैं जिनका ख़ुलासा यह है (१) दौराने तलाक़ औरत शौहर के घर क़याम करे, बाहर न निकले, न शौहर उसे निकाले इल्ला यह कि वह बेहयाई की मुरतकिब हुई हो. (२) शौहर को चाहिये कि वह पाकी की हालत में सिर्फ़ एक तलाक़ दे. दौराने इद्दत वह रुजू कर सकता है. इद्दत गुज़र जाने के बाद वह जुदा हो जाएगी अलबत्ता बग़ैर निकाह के उसे दोबारा रख सकता है. हलाले की ज़रूरत नहीं. (३) यही अहकामात उस वक़्त भी होंगे जब वह दूसरे माह दूसरी तलाक़ दे यानी दौराने इद्दत रुजू कर सकता है अगर इद्दत गुज़र जाने के बाद रुजू करता है तो उसे उस औरत के साथ दोबारा निकाह करना पड़ेगा. हलाले की ज़रूरत नहीं. इन दो तलाक़ों के बाद शौहर को चाहिये कि या तो औरत को भले तरीक़े से रख ले रुजू करले और अगर शौहर अपनी बीवी को नहीं रखना चाहता तो उसे दे दिलाकर इज़्ज़त के साथ रुख़सत करे. (४) तीसरी तलाक़ देने के बाद रुजू करने का हक़ ख़त्म हो जाता है अब वह औरत उस शौहर के लिये हलाल नहीं है जब तक कि वह किसी और मर्द से शादी न करे, उसके अज़दवाजी हक़ अदा करे फिर वह मर्द अपनी मर्ज़ी से उसे तलाक़ दे तब वह इद्दत गुज़ारे. इसके बाद ही वह पहले शौहर से निकाह कर सकती है. इसे हलाला कहते हैं. मगर पहले से तयशुदा हलाला शरई तौर से जाइज़ नहीं इसे हदीस में किराए का साँड कहा गया है. और हलाला करने और कराने वालों पर लानत की गई है. (५) मियाँ बीवी में निबाह नहीं हो रहा हो और शौहर तलाक़ न दे रहा हो तो औरत को ख़ुलअ का हक़ है कि वह शौहर को कुछ दे दिलाकर छुटकारा हासिल कर ले अलबत्ता शौहर की ग़ैरत के मनाफ़ी है कि वह औरत से मेहर की रक़म से ज़ियादा का मुतालिबा करे. (६) औरत के लिये यह जाइज़ नहीं है कि वह अपने हमल को छुपाए तलाक़ के बाद अगर वह हामिला है तो उसे बच्चा पैदा होने तक इद्दत गुज़ारनी है. (७) औलाद शौहर की होगी उसके जुमला इख़राजात शौहर को अदा करने होंगे बच्चा अगर दूध पीता है तो मुद्दते रिज़ाअत दो साल है. हक्क़े परवरिश माँ को है बच्चे के समझदार होने तक माँ पालेगी और शौहर इख़राजात उठाएगा. शौहर के लिये यह जाइज़ नहीं कि बच्चे को माँ से अलग करे ख़ास तौर पर जब वह दूध पीता हो. (८) इद्दत की मुद्दत तीन बार हैज़ का आना और पाक होना है.(९) जिन औरतों के शौहरों का इन्तिक़ाल हो जाए उनकी इद्दत चार माह दस दिन है और इस दौरान उन्हें बनाव सिंघार नहीं करना चाहिये. (१०) एक या दो तलाक़ वाली

औरत इद्दत के दौरान शौहर के घर में ही रहेगी और ज़ेबो ज़ीनत करेगी ताकि शौहर रुजू पर आमादा हो. (११) तलाक़ शुदा औरत की इद्दत पूरी होने लगे तो शौहर सन्जीदगी से फ़ैसला कर ले कि वह भले तरीक़े से रुख़सत करदेगा या फिर वह रुजू करना चाहता है तो ख़ुलूसे दिल से रुजू करके औरत के साथ बा इज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारेगा. औरत को सताने के लिये रुजू करना ज़ुल्म है. (१२) इद्दत के बाद जब जुदा हो जाए और कहीं और निकाह करना चाहे तो शौहर के लिये जाइज़ नहीं कि वह रुकावट बने उसे सताए या बदनाम करे. (१३) इन तमाम अहकामात में अल्लाह की हुदूद यही हैं. जो अल्लाह की इन हुदूद की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा, ज़ालिम शुमार किया जाएगा. एक मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि इन अहकामात की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाए.

यहूदियों की तारीख़ के एक वाक़ए का ज़िक्र करते हुए बताया गया कि अल्लाह की याद से ग़फ़लत ने उन्हें बुज़दिल बना दिया था और वो एक मौक़े पर बहुत बड़ी तादाद में होने के बावजूद अपने दुशमनों से डर कर भाग खड़े हुए. और इस तरह उन्होंने अपनी इख़्लाक़ी और सियासी मौत ख़रीद ली. गोया मुसलमानों को बताया जा रहा है कि मक्के से मदीने हिजरत दुशमनों के डर से नहीं बल्कि इस्लाम को बचाने और फिर फैलाने के लिये है. चुनान्चे यही काम सहाबाए किराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन ने अन्जाम दिया. इस तरह क़यामत तक के मुसलमानों को रास्ता दिखाया कि उन्हें भी कभी हिजरत करना पड़े तो इस्लाम को कायम करने का नस्बुल ऐन आँखों से औझल नहीं होना चाहिये. साथ ही तफ़सील से बनी इस्राईल की एक जंग का क़िस्सा बयान किया गया जो तालूत और जालूत में हुई थी. इस तरह मुसलमानों को बताया कि उन्हें भी इन्हीं मरहलों से गुज़रना पड़ेगा. अल्लाह के हाँ काम आने वाली अस्ल चीज़ उसकी राह में जान और माल की क़ुरबानी है. अल्लाह ने अपनी किताब और अपने रसूल के ज़रिये अल्लाह की राह बता दी है अब जिस का जी चाहे हर तरफ़ से कट कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम ले. फिर सूद को हराम करने का ऐलान किया. चूंकि सूदी निज़ाम लोगों में दुनिया परस्ती और माल की पूजा का जज़बा पैदा करता है. पस अगर समाज में नेकियाँ फैलाना, अल्लाह तरसी और बन्दों की इमदाद का निज़ाम लाना है तो सूदी निज़ाम ख़त्म करना होगा.

इसके बाद तीसरी सूरत आले इमरान के दो रुकू में बताया गया है कि यहूद व नसारा ने अल्लाह की तरफ़ से आई हुई किताबों में इख़्तिलाफ़ पैदा करके अस्ल हक़ीक़त को गुम कर दिया अब अल्लाह ने इस गुमशुदा हक़ीक़त को वाज़ेह करने के लिये क़ुरआन उतारा है ताकि लोग इख़्तिलाफ़ात की भूल भुलय्यों से निकल कर हिदायत की शाहराह पर आ जाएं. अब जो लोग इस किताब का इन्कार करेंगे उनके लिये अल्लाह के यहाँ सख़्त अज़ाब है.

नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कहलवाया गया कि ऐ एहले किताब और दूसरे मज़हब वालो ! मैं और मेरे मानने वाले तो सही इस्लाम को अपना चुके जो अल्लाह का अस्ल दीन है। अब तुम बताओ क्या तुम भी अपने और अपने बाप-दादा की बढ़ाई हुई बातों को छोड़कर इसी असली और सच्चे दीन की तरफ़ आते हो। ज़ाहिर है कि हटधर्म लोग किसी तरह भी अपना तरीक़ा नहीं छोड़ा करते। इसलिये फ़रमाया गया जो लोग अलालह की आयतों का इन्कार करते रहे, इसके नबियों को क़त्ल करते रहे और इन लोगों की जान के भी दुशमन बन गए जो लोगों में इन्साफ़ की दावत लेकर उठे, तो ऐसे लोगों को दर्दनाक अज़ाब की चेतावनी दे दो। ये अपने करतूतों पर दुनिया में कितने ही ख़ुश होते रहें, मगर वास्तव में उनके कर्म और कोशिशें सब दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गईं और अल्लाह की पकड़ से उन्हें बचाने वाला कोई न होगा।

एहले किताब की निरन्तर मुजरिमाना हरकतों का कारण बताया गया कि उनके मनघड़त अक़ीदों ने उनको ग़लतफ़हमी में डालकर अल्लाह से बेख़ौफ़ बना दिया है। फिर मुसलमानों को तम्बीह की कि राज़दारी के मामलों में मूमिनों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ। सब के लिये ऐलान कर दिया गया कि ऐ नबी ! आप फ़रमा दीजिये कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो।

अल्लाह भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा । बस अल्लाह की इताअत करो और रसूल की । अगर लोग इससे फिरें तो मालूम हो कि अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता ।

फिर अल्लाह ने ईसाइयों की गुमराही को वाज़ेह करते हुए हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहुमस्सलाम के चमत्कार बयान करके बताया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश बग़ैर बाप के ऐसा ही चमत्कार है जैसा कि अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बग़ैर माँ-बाप के पैदा किया । इस दलील से मालूम हुआ कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ख़ुदाई में शरीक नहीं तो हज़रत मरयम और हज़रत ईसा को कैसे ख़ुदाई में शरीक ठहराते हो ।

एहले किताब पर हुज्जत तमाम करने के बाद उन्हें इसतरह इस्लाम की दावत दी कि आओ उस कलिमे पर जमा हो जाएँ जो हम और तुम दोनों मानते हैं और वह है अल्लाह की तौहीद । अगर अल्लाह की तौहीद का इन्कार करते हो तो गोया पिछली किताबों और नबियों का इन्कार करते हो । फिर हज़रत इब्राहीम का हवाला दिया गया कि उनको अपनी गुमराहियों में शरीक करते हो । वह न तो यहूदी थे न ईसाई थे बल्कि सच्चे और ख़ालिस मुस्लिम थे । तौरैत और इन्जील तो उनके बाद आई हैं । हज़रत इब्राहीम से सही निस्बत के हक़दार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनकी पैरवी करने वाले हैं क्योंकि वही उनके दीन को लेकर उठे हैं ।

यहूदियों की कुछ चालों का ज़िक्र भी किया गया ताकि मुसलमान उनकी साज़िशों से होशियार रहें । उनमें से एक तो यह है कि कुछ लोग पहले तो इस्लाम कुबूल कर लेते हैं फिर कुछ अरसे बाद इस्लाम और मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाकर इस्लाम से निकल जाते हैं । उनकी पूरी तारीख़ इस तरह की चालों से भरी पड़ी है ।

यहूदियों के उलमा और लीडरों को सम्बोधित करके कहा गया कि तुम अपनी क़ौम के अन्दर तअस्सुब को भड़काते हो कि किसी इस्राईली के लिये जाइज़ नहीं कि ग़ैर इस्राईली को नबी माने ।हालांकि अस्ल हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है जिसका तुम्हें तालिब होना चाहिये चाहे वह हिदायत बनी इस्हाक़ पर आए , चाहे बनी इस्माईल पर । तुम अगर समझते हो कि किसी को इज़्ज़त तुम्हारे देने से मिलेगी तो यह तुम्हारी भूल है । इज़्ज़त और बुज़ुर्गी अल्लाह के दस्ते क़ुदरत में है, जिसे चाहे दे ।

इसी तरह ईसाइयों पर उनके अक़ीदे की ग़लती वाज़ेह करते हुए बताया गया कि अल्लाह ने तमाम नबियों से यह एहद लिया है कि जब तुम्हारे पास एक रसूल उन भविष्यवाणियों का सही रूप लेकर आए जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उसपर ईमान लाना और उसकी मदद करना । सूरए बक़रह की तरह सूरएआले इमरान में भी वाज़ेह कर दिया गया कि अल्लाह की वफ़ादारी का मक़ाम केवल झूटी रस्मों पर चलने और दिखावे की दीनदारी से हासिल नहीं हो सकता । इस लिये असमल चीज़ यह है कि अल्लाह की राह में उन चीज़ों में से ख़र्च करो जो तुम्हें मेहबूब हैं । एहले किताब को मलामत की गई कि अल्लाह ने तुम्हें सीधा रास्ता बताने के लिये मुक़र्रर किया था, पर यह किस क़दर अफ़सोस की बात है कि तुम अब लोगों को सीधे रास्ते से रोकने और उन्हें राह से बेराह करने में लगे हुए हो । बस अब तुम्हें मअज़ूल किया जाता है और यह अमानत उम्मते मुहम्मदिया के सुपुर्द की जाती है । साथ ही उम्मते मुहम्मदिया को यह बशारत भी दी गई कि एहले किताब तुम्हारी मुख़ालिफ़त में कितना भी ज़ोर लगा लें, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ पाएंगे । शर्त यह है कि तुम सब्र करते रहो और अल्लाह से डरते रहो ।

जंगे उहद में मुसलमानों को अपनी ही ग़लती से जो तकलीफ़ पहुंची, (जबकि उनकी तादाद बद्र के मुक़ाबले में दुगुनी से भी ज़्यादा थी) उसपर बेलाग तबसिरा फ़रमाया गया और बताया गया कि मुनाफ़िक़ों के साथ छोड़ जाने से कुछ लोगों ने हिम्मत हार दी हालांकि अस्ल भरोसा अल्लाह पर करना चाहिये । जबकि वो पहले भी बद्र में तुम्हारी मदद कर चुका है और अल्लाह ने तो तीन सौ मुनाफ़िक़ों के रास्ते में से कट कर चले जाने पर तीन हज़ार फ़रिश्तों से मदद फ़रमाई । चुनांचे पहले मुसलमान कामयाब हो गए मगर उनके एक दस्ते ने माले ग़नीमत के लालच में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म की नाफ़रमानी की जिस के कारण अल्लाह ने सबक़ सिखाने के लिये जीत को हार में बदल दिया ।

आगे की आयतों में अल्लाह तआला ने सूद की मज़म्मत फ़रमाई और हुक्म दिया कि ऐ ईमान वालो ! बढ़ता चढ़ता सूद न खाओ और अल्लाह से डरते रहो । इससे पहले भी अल्लाह का फ़रमान है जो लोग सूद खाते हैं उनका हाल उस शख़्स जैसा होता है जिसे शैतान ने छू कर बावला कर दिया हो और इस हालत में उसके जकड़े जाने की वजह यह है कि उसका कहना है कि तिजारत भी तो आख़िर सूद ही जैसी चीज़ है । हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम, लिहाज़ा जिस शख़्स को उसके रब की तरफ़ से यह नसीहत पहुंचे और आइन्दा के लिये वह सूद खाने से बाज़ आजाए तो जो कुछ वह पहले खा चुका उसका मामला अल्लाह के हवाले है और जो इस हुक्म के बाद फिर यही काम करे, उसका ठिकाना जहन्नम है, जहाँ वह हमेशा रहेगा । अल्लाह सूद का मुंह मार देता है और सदक़ात को बढ़ावा देता है । अल्लाह किसी नाशुकरे बदअमल इन्सान को पसन्द नहीं फरमाता । हाँ जो लोग ईमान लाएं और नेक अमल करें और नमाज़ें क़ायम करें और ज़कात दें, उनका अज्र बेशक उनके रब के पास है और उनके लिये किसी ख़ौफ़ और रंज का मौक़ा नहीं है । ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा सूद लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर वाक़ई तुम मूमिन हो । अगर तुमने ऐसा न किया तो जान लो कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग का ऐलान है । अब भी तौबह कर लो और सूद छोड़ दो । अपनी अस्ल पूंजी लेने का तुम्हें पूरा हक़ है । न तुम ज़ुल्म करो, न तुमपर ज़ुल्म किया जाए । तुम्हारा क़र्ज़दार अगर तंगदस्त हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत दो और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो ।

आगे क़ुरआने करीम ने सूद की सख़्त बुराई बयान फ़रमाई और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की तरग़ीब दी और फ़रमाया कि अल्लाह की बख़्शिश और उसकी जन्नत को पाने के लिये एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करो । जन्नत का फैलाव आसमानों से भी ज़्यादा है और यह उन लोगों के लिये तैयार की गई है जो हर हाल में अल्लाह की राह में ख़र्च करने, गुस्से को पी जाने और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं । किसी हाल में पस्त हिम्मत न बनो और न ग़म करो । अगर तुम सच्चे मूमिन बन गए तो तुम ही ग़ालिब रहोगे ।

आगे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक अहम सिफ़त यह बताई गई, जो उम्मत के सारे रहबरों के लिये भी ज़रूरी है, कि यह अल्लाह का करम है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम लोगों के साथ नर्मी से पेश आने वाले हैं । अगर सख़्तगीर होते तो फिर ये लोग आपके गिर्द जमा नहीं हो सकते थे । फिर फ़रमाया आप उनसे मामलात में मशवरा लेते रहिये और उनकी मग़फ़िरत की दुआकीजिये । फिर मूमिनों को बताया गया कि उनके अन्दर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेज कर उनपर बहुत बड़ा एहसान किया है । इस लिये आज़माइशों और काफ़िरों से मुक़ाबला करने से मत घबराओ क्योंकि अल्लाह आज़माइशों के ज़रिये पाक लोगों को नापाक लोगों से अलग करके रहेगा।

सूरए बक़रह की तरह सूरए आले इमरान को भी निहायत असरदार दुआ पर ख़त्म किया गया है । दुआ से पहले इस हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है कि अल्लाह की क़ुदरत और हिकमत की निशानियाँ सारे जहान में हर जगह फैली हुई हैं ज़रूरत इस बात की है कि आदमी आँखें खोले, अल्लाह की बातें सुनने के लिये कान लगाए और उसकी हिकमतों पर ग़ौर करने के लिये दिल और दिमाग़ का इस्तेमाल करे । आख़िर में मुसलमानों के हिदायत दी गई है कि चार चीज़ें हैं जो तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाब करवाएंगी, उन्हें अपनाओ । ये हैं - सब्र, दीन की मुख़ालिफ़त करने वालों के मुक़ाबले में साबित क़दमी और हर वक़्त चौकन्ना रहना, दीन की हिफ़ाज़त करना और तक़्वा यानी अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदों की पाबन्दी ।

सूरए निसा में सबसे पहले अल्लाह से डरते रहने की हिदायत, जिसने सबको एक जान से पैदा किया । तमाम मर्द और औरतें एक ही आदम व हव्वा की औलाद हैं । इसी वजह से अल्लाह और रहम यानी ख़ून का रिश्ता सब के बीच मुश्तरक है । इन्हीं दो बुनियादों पर इस्लामी समाज की इमारत क़ायम है । इसके बाद यतीमों के हुक़ूक़ अदा करने की ताकीद की गई और इस मामले में किसी क़िस्म की हेरा

फेरी और रद्दोबदल को सख़्ती से मना किया गया । इस मौक़े पर यतीमों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त के दृष्टिकोण से उनकी माओं से निकाह करने की इजाज़त दी गई । अरबों में बीवियों की तादाद पर कोई पाबन्दी नहीं थी । इस मौक़े पर चार तक तादाद को मेहदूद कर दिया गया । और शर्त लगा दी गई कि उनके हुक़ूक़ की अदायगी और मेहर में कमी नहीं होना चाहिये । विरासत की तक़सीम के ज़ाबते की तफ़सील बताई गई ताकि सबके हुक़ूक़ निश्चित हो जाएं । यह ज़ाबता इस तरह होगा - (१) मीरास में सिर्फ़ मर्दों ही का हिस्सा नहीं, बल्कि औरतें भी इसकी हक़दार हैं अगरचे उनका हिस्सा मर्द से आधा है । (२) मीरास हर हाल में तक़सीम होनी चाहिये चाहे वह कितनी ही कम हो । यहाँ तक कि अगर मरने वाले ने एक गज़ कपड़ा छेड़ा है और दस वारिस हैं तो भी उसे दस हिस्सों में तक़सीम होना चाहिये । (३) वारिस का क़ानून हर प्रकार के माल और जायदाद पर जारी होगा चाहे वो चल हों या अचल, ज़रई (खेती बाड़ी की) हों या ग़ैर ज़रई, आबाई हों या ग़ैर आबाई, सारी जायदाद को वारिसों में शरीअत के हिसाब से तक़सीम किया जाना ज़रूरी है । (४) क़रीब के रिश्तेदार की मौजूदगी में दूर का रिश्तेदार मीरास न पाएगा ।

विरासत में हर एक का हिस्सा निश्चित करने के बाद बताया गया कि यह तक़सीम अल्लाह तआला के कामिल इल्म की बुनियाद पर है । तुम्हें नहीं मालूम कि कौन कितना क़रीब है और कौन कितना दूर है । . एहकामात अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ क़रार दिये गए हैं । यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदें हैं, जो इनपर अमल करेगा और सबको शरई हक़ के मुताबिक़ देगा, अल्लाह तआला उसे अपनी बेशबहा जन्नत में दाख़िल करेगा जो हमेशा रहने की जगह है । और यह एक बड़ी कामयाबी है । और जो अल्लाह के इन आदेशों की ख़िलाफ़वर्ज़ी या अवहेलना करेगा और लोगों को विरासत से मेहरूम करेगा, दूसरों का माल नाजाइज़ तरीक़े से खाएगा, वह गोया अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदों का उल्लंघन करेगा, उसे अल्लाह आग में डालेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा । और उसके लिये ज़िल्लत वाली सज़ा है । ये एहकामात इस लिये हैं कि कोई ताक़तवर पक्ष कमज़ोर पक्ष को उसकते हक़ से मेहरूम न कर सके । और आपस में ज़ुल्म और हक़ मारने के झगड़ों को रोका जा सके ।

फिर फ़रमाया गया कि शरीअत में मर्दों और औरतों के लिये जो हदें और अधिकार निश्चित कर दिये गए हैं , सबको उनके अन्दर रहना चाहिये । हर एक अपनी अपनी हद के अन्दर की हुई हर मेहनत का बदला अल्लाह के यहाँ पाएगा । ख़ानदान और समाज नेतृत्व और सरदारी का मक़ाम मर्द को दिया गया क्योंकि अपनी जन्मजात विशेषताओं और परिवार का पोट भरने का ज़िम्मेदार होने के कारण वही इस के लिये उचित है । नेक बीबियाँ इसका आदर करें और जिन औरतों से सरकशी का डर हो तो उनके शौहर उन्हें नसीहत करें ।अगर ज़रूरत मेहसूस हो तो मुनासिब तम्बीह भी की जा सकती है । और विरोध बहुत बढ़ जाए तो एसी सूरत में शौहर और बीवी दोनों के ख़ानदानों में से एक एक पंच मुक़र्रर किया जाए जो दोनें पक्षों के हालात को सुधारने की कोशिश करें ।

आगे अल्लाह तआला ने माँ-बाप, ख़ून के रिश्ते वाले, यतीम, निर्धन, पड़ोसी (रिश्तेदार हों या न हों) मुसाफ़िर और मातहत सबके अधिकार पहचानने और उन्हें अदा करने की ताकीद फ़रमाई है । अल्लाह को वही बन्दे पसन्द हैं जो सहज प्रकृति और नर्म मिज़ाज वाले हों । अल्लाह उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो अकड़ने वाले, कंजूस और कंजूसी की सलाह देने वाले हों । इसी तरह वो भी पसन्द नहीं हैं जो अल्लाह की ख़ुशनूदी के बजाय लोगों को दिखाने और नाम कमाने के लिये ख़र्च करें । याद रखो लोगों के अधिकार अदा कतरने और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले कभी घाटे में नहीं रहने वाले, उनके लिये अल्लाह के यहाँ बड़ा अज्र है ।

इसके बाद क़ुरआन ने उन लोगों के लिये बड़े अफ़सोस का इज़हार किया जो आख़िरत से बिल्कुल बेपरवाह हो करउसके रसूल की नाफ़रमानी पर अड़े हउुए थे, ईमान और नेक कर्मो की राह न ख़ुद अपनाते थे और न दूसरों को अपनाने देते थे । अल्लाह ने चेतावनी दी कि इस आख़िरी रसूल के ज़रिये तबलीग़ का हक़ अदा हो चुकी है । जो अब भी न सुनेंगे, वो सोच लें कि एक दिन ऐसा आने वाला है जिस दिन

अल्लाह सब रसूलों को उनकी उम्मतों पर गवाह ठहरा कर पूछेगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या दावत दी । और उन्होंने क्या जवाब दिया । फिर यही सवाल इस आख़िरी उम्मत के बारे में आख़िरी रसूल से भी होगा । वह दिन ऐसा होगा कि न किसी के लिये कोई पनाह की जगह होगी और न कोई शख़्स कोई बात छुपा सकेगा ।

इस चेतावनी के बाद अल्लाह के सबसे बड़े हक़ यानी नमाज़ के कुछ संस्कार और शर्तें बताई गई हैं । यहूदियों की कुछ शरारतों का ज़िक्र भी किया गया । ख़ास तौर पर नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में ऐसे शब्द बोलने की आदत जिनके दो दो अर्थ निकलते हों, कि मुसलमान जो अर्थ समझें वो उससे उलट मतलब ही मुराद लें । बताया गया कि ये हरकतें वो हसद के कारण करते हैं लेकिन अल्लाह ने फ़ैसला कर लिया है कि वह रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपकी उम्मत को किताब व हिक्मत और शानदार सल्तनत अता फ़रमाएगा और ये हसदकरने वाले उनका कुछ बिगाड़ न पाएंगे । चुनान्चे दुनिया ने देख लिया कि अरब के बद्दू उठे, रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दामन थामा और ८०० साल दुनिया की इमामत की । यह दीर्घकालीन हुकूमत और सल्तनत इस्लामी समाज क़ायम करने का परिणाम था ।

क़ुरआन मुसलमानों को हिदायत फ़रमाता है कि जब यह अमानत यहूदियों से लेकर तुम्हें सौंपी जा रही है तो तुम इस अमानत में ख़यानत न करना बल्कि इसका हक़ ठीक ठीक अदा करना और हर हाल में इन्साफ़ पर क़ायम रहना । अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और जो तुम में से शासक हों, उनकी आज्ञा का पालन करते रहना और अगर तुम में और शासकों में मतभेद हो जाए तो अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ मामले को लौटाना ताकि झगड़े का सही फ़ैसला हो सके और तुम बिख़रने न पाओ । अल्लाह ने मुनाफ़िक़ों को मलामत की कि वो रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फ़रमाँबरदारी करने के बजाय इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों से मेल जोल रखते हैं और इसको अपनी अक़्लमन्दी समझते हैं । हालांकि ईमान उस वक़्त तक भरोसे का नहीं जब तक वो पूरे तौर पर अपने को नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हवाले न कर दें और हर मामले में उनके हुक्म पर चलें ।

पांचवें पारे के आख़िरी रुकू से सातवें पारे के ५वें रुकू तक का ख़ुलासा. इससे पहले की आयतों में एक यह बात कही गई थी कि जब कोई सलाम करे यानी अस्सलामोअलैकुम कहे तो उससे बेहतर जवाब देना चाहिये वरना कम से कम उतना ही लौटा देना चाहिये । यह इतना अहम मामला है कि अगर कोई सलाम का जवाब सलाम से न दे तो गोया उसने उसका सलाम भी क़ुबूल न किया । इस बात की अगर इजाज़त दे दी जाए तो समाज में एक दूसरे से नफ़रतें बढ़ेंगी, इन्तिशार होगा और शीराज़ा बिख़र जाएगा । इस गुनाह से समाज को मेहफ़ूज़ रखने के लिये छटे पारे ला युहिब्बुल्लाह को इन अल्फ़ाज़ से शुरू किया गया है कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है । मज़लूम होने की सूरत में अगरचे बुराई से उसका ज़िक्र करने की इजाज़त दी गई है लेकिन अगर तुम ज़ाहिर और बातिन में भलाई ही किये जाओ या कम से कम बुराई से दरगुज़र करो तो अल्लाह की सिफ़त भी यही है कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है । हालांकि वह सज़ा देने की पूरी कुदरत रखता है । गोया बताया कि कि माफ़ी और दरगुज़र करने की आदत डालो । जिस अल्लाह से तुम क़रीब होना चाहते हो उसकी शान यह है कि वह निहायत हलीम और बुर्दबार है । सख़्त से सख़्त मुजरिमों को भी रिज़्क़ देता है और बड़े से बड़े क़ुसूर को माफ़ कर देता है । लिहाज़ा उससे क़रीब हेने के लिये तुम भी आली हौसला और वसीउन्नज़र बनो । फिर बताया गया कि जिस तरह ख़ुल्लमख़ुल्ला इन्कार कुफ़्र है उसी तरह अपनी शर्तों पर ईमान लाना भी कुफ़्र है । यानी हम ईमान लाते हैं, फ़लाँ रसूल को मानेंगे और फ़लाँ को न मानेंगे और इस्लाम और कुफ़्र के बीच रास्ता निकालने की कोशिश यह सब भी कुफ़्र ही है ।

आगे की आयतों में यहूदियों की तारीख़ दोहराई जाती है कि वो किस तरह गुनाह करते चले गए मगर हमने फिर भी उनके साथ माफ़ी का सुलूक किया । ऐसे लोगों से अब भलाई की उम्मीद नहीं रखनी

चाहिये। फिर ख़ास तौर पर ईसाइयों को तंबीह फ़रमाई कि अल्लाह ने कुरआन की शक्ल में जो नूरेमुबीन ख़ल्क़ की रहनुमाई के लिये उतारा है उसकी क़द्र करो और गुमराही छोड़कर हिदायत पर आजाओ। ईसाइयों से कहा कि अपने दीन में ग़ुलू न करो (ग़ुलू यह है कि जो चीज़ पाव भर है उसे सेर भर कर दिया जाए) दीन में जो चीज़ मुस्तहब है उसे फ़र्ज़ और वाजिब का दर्जा दे दिया जाए और जो शख़्स मुजतहिद है उसे इमाम मासूम बना दिया जाए। और जिसे अल्लाह ने नबी और रसूल बनाया है उसे अल्लाह की सिफ़तों में शरीक क़रार दिया जाए।और ताज़ीम से बढ़कर उसकी इबादत शुरू कर दी जाए। ये लोग इस ग़ुलू को दीन की ख़िदमत और बुज़ुर्गों से अक़ीदत समझते हैं हालांकि अल्लाह के नज़दीक यह जुर्म है। ईसाइयों की मिसाल अल्लाह ने दी कि उन्होंने मरयम के बेटे मसीह को अल्लाह के रसूल से आगे बढ़ाकर अल्लाह का बेटा बना दिया। मुसलमानों को भी ग़ुलू से बचना चाहिये।

सूरए माइदह में अल्लाह ने ज़िक्र किया है कि उसने आख़िरी उम्मत की हैसियत से मुसलमानों से अपनी आख़िरी कामिल शरीअत पर पूरी पाबन्दी से क़ायम रहने और इसको क़ायम करने का एहद लिया है। यही एहद पहले एहले किताब से लिया गया था। मगर वो इसके एहल साबित नहीं हुए। अब मुसलमानों से एहद लिया जा रहा है कि तुम पिछली उम्मतों की तरह अल्लाह की शरीअत के मामले में ख़यानत और ग़द्दारी न करना। बल्कि पूरी वफ़ादारी से इस एहद को निभाना। इसपर ख़ुद भी क़ायम रहना और दूसरों को भी क़ायम रखने की कोशिश करना। इस राह में पूरे संकल्प और साहस के साथ तमाम आज़माइशों और ख़तरों का सामना करना। सबसे पहले अल्लाह से बांधे हुए एहद की पाबन्दी की ताकीद की गई है। फिर हराम महीनों और तमाम दीनी शिआइर के आदर का हुक्म दिया गया। और फ़रमाया कि हर नेकी और तक़्वा के काम में एक दूसरे की मदद करना और गुनाह और ज़ियादती के कामों में हरगिज़ किसी का साथ न देना। खाने की जो चीज़ें हैं उन्हें गिनाया गया और बताया गया कि दूसरों के कहने की कोई परवाह न करना. अल्लाह के किये हुए हराम और हलाल की पाबन्दी करना। हराम की हुई चीज़ों की तफ़सील यह है - (१) मुरदार जानवर जो तबई मौत मर गया हो। (२) ख़ून जो बहता हुआ हो उसे पीना खाना जाइज़ नहीं। (३) सुअर का गोश्त बल्कि उसकी हर चीज़ हराम है। (४) वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो। (५) वह जानवर भी हराम है जो मुख़्तलिफ़ कारणों से मर गया हो जैसे गला घोंट कर या चोट खाकर या ऊंचाई से गिरकर या टक्कर खाकर मर गया हो या किसी दरिन्दे ने उसे फाड़ा हो। अलबत्ता जिसे हमने ज़िन्दा पाकर अल्लाह के नाम से ज़िब्ह कर लिया वह जानवर हलाल है। (६) पांसों या फ़ालगीरी के ज़रिये जो तक़सीम कर रखा वह भी हराम है। मुश्रिकाना फ़ालगीरी जिसमें किसी देवी देवता से क़िस्मत का फ़ैसला पूछा जाता है या आइन्दा की ख़बर दरयाफ़्त की जाती है या आपसी विवादों का फ़ैसला कराया जाता है। मक्के के मुश्रिकों ने इस मक़सद के लिये काबे के अन्दर हबल देवता को ख़ास कर लिया था उसके स्थान पर सात तीर रखे हुए थे जिन पर अलग अलग शब्द खुदे हुए थे। किसी काम के करने या न करने का सवाल या खोए हुए का पता लगाना हो या ख़ून का फ़ैसला हो, हबल के पाँसेदार के पास पहुंच कर नज़राना देते, दुआ मांगते, फिर तीरों के ज़रिये फ़ाल निकाला जाता, जो तीर भी निकलता उसे हबल का फ़ैसला समझा जाता। तवह्हमपरस्ती पर आधारित फ़ालगीरी जैसे रमल, नुजूम, शगुन, नक्षत्र की चालें भी हराम हैं। इसके आलावा जुए की क़िस्म के वो सारे खेल जिनमें इनाम की तक़सीम हुक़ूक़, ख़िदमात और अक़्ली फ़ैसलों पर रखने की बजाय केवल इत्तिफ़ाक़ी अम्र पर रख दी जाए जैसे लॉटरी, मुअम्मे वग़ैरह। अलबत्ता क़ुरआ-अन्दाज़ी की सिर्फ़ वह सूरत इस्लाम में जाइज़ है जिस में दो बराबर जाइज़ कामों या हुक़ूक़ के बीच फ़ैसला करना हो। इन तफ़सीलात के बाद फ़रमाया गया कि अब यह दीन तुम्हारे लिये मुकम्मल कर दिया गया और अल्लाह ने शरीअत की नेमत तुम पर तमाम कर दी, बस उसी की पैरवी करो।

अगली आयतों में सधाए हुए शिकारी जानवरों के ज़रिये किये जाने वाले शिकार, एहले किताब के

खाने और उनकी औरतों के साथ शादी के बारे में एहकाम बताए गए। साथ ही यह क़ैद भी लगा दी कि इस इजाज़त से फ़ाइदा उठाने वाले को अपने ईमान और इख़्लाक़ की तरफ़ से होशियार रहना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि किताबियह औरत ईमान और इसके किसी तक़ाज़े पर डाका डाल ले। नमाज़ के लिये वुज़ू का हुक्म और मजबूरी की हालत में तयम्मुम की इजाज़त दी गई। बनी इस्राईल से एहद का ज़िक्र किया गया जब उन्होंने शरीअत की पाबन्दी से मुंह मोड़ा तो अल्लाह तआला ने उनपर लानत की। इसी तरह ईसाइयों से एहद लिया था मगर उन्होंने भी एक हिस्सा भुला दिया यानी इबादत के नाम से जो रस्में हैं उनके नज़दीक वो तो दीन का एक हिस्सा हैं मगर बाक़ी के मामले जो दुनिया से सम्बन्धित हैं उनमें ख़ुदाई हिदायत के पाबन्द नहीं रहे। इस वजह से अल्लाह ने उनके अन्दर अहमकार और मत भेद की आग भड़का दी वो आख़िरत तक इसकी सज़ा भुगतेंगे गोया मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि वो एहद की पाबन्दी करें। अगर वो यहूदियों और ईसाइयों के रास्ते पर चले तो फिर उनका भी वही अंजाम होगा इन आयतों की रौशनी में हम तारीख़ को देख सकते हैं और अपने ज़वाल की वजहें भी जान सकते हैं और उससे निकलने का रास्ता भी पा सकते हैं। फिर अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल का वह वाक़िआ दोहराया कि उसने अपने फ़ज़्ल से उन्हें नवाज़ा और फ़त्ह और नुसरत के वादे के साथ उन्हें बशारत दी कि फ़लस्तीन की पाक धरती तुम्हारा इन्तिज़ार कर रही है, जाओ और उस पर क़ब्ज़ा कर लो। मगर क़ौम में बछड़े की पूजा यानी दुनिया परस्ती ने इतनी बुज़दिली पैदा करदी थी कि वो कहने लगे - ऐ मूसा ! तू और तेरा रब जाकर पहले लड़कर जीत हासिल कर लें तो हम आ जाएंगे। इसपर ४० साल के लिये उनपर पाक धरती को हराम कर दिया गया और उन्हें सहरा में भटकने के लिये छोड़ दिया गया। यहाँ मालूम हुआ कि अल्लाह के फ़ैसले भी क़ौमों के तर्ज़े अमल से वाबस्ता हैं। मुसलमानों को ताकीद की गई कि अल्लाह की हदों पर क़ायम रहें और शरीअत की पाबन्दी को अल्लाह से क़रीब होने का ज़रिया बनाएं। अस्ल अल्फ़ाज़ ये हैं -ऐ ईमान लाने वालो ! अल्लाह से डरते रहो और उसके क़ुर्ब का वसीला तलाश करो। यह वसीला ही है जिसका ज़िक्र अल्लाह ने हब्लिल्लाह (अल्लाह की रस्सी) के नाम से किया है। यानी इस्लाम को मज़बूती से मिलकर पकड़ो और पूरी मुस्तइदी से अल्लाह के आदेशों का पालन करो और उसकी राह में अपनी सारी ताक़त लगा दो। ख़ुदा के अज़ाब से यही चीज़ छुटकारा दिलाने वाली है। इसके सिवा कोई चीज़ नफ़ा नहीं पहुंचाएगी।

आज सातवें पारे के छटे रुकू से आठवें पारे के सातवें रुकू तक तिलावत की गई। सूरए माइदह के आख़िरी दो रुकू में क़यामत का नक़्शा खींचा गया है कि सारे नबी अपनी अपनी उम्मतों के बारे में गवाही देंगे कि उन्होंने अल्लाह की तरफ़ से लोगों को क्या क्या बातें बताई थीं और अपने मानने वालों से किन किन बातों के न करने का एदह लिया था ताकि हर उम्मत पर हुज्जत क़ायम हो सके कि जिसने कोई बदएहदी की तो उसकी सारी ज़िम्मेदारी उसी पर होगी, अल्लाह के रसूल पर नहीं। इस गवाही की व्याख्या के तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र तफ़सील से किया गया ताकि वाज़ेह हो सके कि अल्लाह ने अपने रसूलों पर सच्चाई की गवाही की जो ज़िम्मेदारी डाली है वो उसके बारे में जवाबदेह होंगे और उनके वास्ते से उनकी उम्मतों ने अदल और इन्साफ़ का निज़ाम समाज में क़ायम करने का जो एहद ईमान लाकर किया है उनसे उसके बारे में मालूम किया जाएगा आख़िरत में वही फ़लाह और कामयाबी के हक़दार होंगे जो दुनिया में इस एहद को निभाएंगे और इसकी ज़िम्मेदारी पूरी करेंगे।

सूरए माइदह के बाद छटी सूरत **सूरए अनआम** शुरू होती है जो मक्की ज़िन्दगी के बिल्कुल आख़िरी दौर में उस रात में उतरी जब मदीना से अन्सार की एक जमाअत हज के लिये आई हुई थी और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनसे एक पहाड़ी ग़ार में मुलाक़ात की थी। इस सूरत में मक्के के मुश्रिकीन के तवह्हुमात की काट की गई है जो वो खाने पीने की चीज़ों और जानवरों में करते थे। इस्लाम पर उनकी आलोचनाओं का जवाब दिया गया है और उन बड़े बड़े इख़्लाक़ी उसूलों की तलक़ीन की गई है जिनपर इस्लाम एक नई सोसाइटी बनाना चाहता है। इन उसूलों की पैरवी को सिराते मुस्तक़ीम क़रार दिया गया है जिसकी दुआ सूरए फ़ातिहा पढ़ते वक़्त बन्दे करते हैं। फ़रमाया तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के

लिये हैं जिसने ज़मीन आसमान बनाए, अन्धेरा उजाला पैदा किया, फिर भी लोग दूसरों को उसका हमसर क़रार दे रहे हैं । वही तो है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर तुम्हारे लिये ज़िन्दगी की एक मुद्दत मुक़र्रर की और एक दूसरी मुद्दत और भी है जो उसके यहाँ निश्चित है । यानी क़यामत की घड़ी, जब इस दुनिया के कर्मों का हिसाब लिया जाएगा और फ़ैसला कर दिया जाएगा । क्या उन्हों ने देखा नहीं कि उनसे पहले कितनी ऐसी क़ौमें हमने हलाक करदीं जिनका अपने अपने ज़माने में दौर दौरा रहा है । उनको तो हमने ज़माने में इक़तिदार बख़्शा था, तुम्हें नहीं बख़्शा है । पहले हमने उनपर आसमानों से ख़ूब नेमतें उतारीं मगर जब उन्होंने उन नेमतों का इन्कार किया तो आख़िरकार हमने उनके गुनाहों की सज़ा में उन्हें तबाह कर दिया । और उनकी जगह दूसरी क़ौमों को उठाया । काश तुम उस वक़्त की हालत अभी देख सकते जब ये मुश्रिकीन दोज़ख़ के किनारे खड़े किये जाएंगे । उस वक़्त कहेंगे काश कोई सूरत ऐसी होती कि हम फिर से दुनिया में वापस भेजे जाते और अपने रब की निशानियों को न झुटलाते और ईमान लाने वालों में शामिल हो जाते । वास्तव में वो यह बात इस वजह से कहेंगे कि जिस हक़ीक़त पर उन्होंने पर्दा डाल रखा था वह उस वक़्त बे निक़ाब होकर उनके सामने आ चुकी होगी । वरना अगर उन्हें पिछली ज़िन्दगी की तरफ़ यानी दुनिया में वापस भेजा जाए तो वो फिर वही सब कुछ करेंगे जिससे उन्हें मना किया गया है । घाटे में पड़ गए वो लोग जिन्होंने यह समझा कि ज़िन्दगी जो कुछ भी हे बस यही ज़िन्दगी है और अल्लाह के सामने अपनी पेशी की बात को उन्होंने झूट क़रार दिया जब अचानक वह घड़ी आ जाएगी तो उनका यह हाल होगा कि अपनी पीठों पर अपने गुनाहों के बोझ लादे होंगे देखो क्या बुरा बोझ है जो ये उठाए हुए हैं । दुनिया की ज़िन्दगी तो एक खेल और एक तमाशा है । हक़ीक़त में आख़िरत का मक़ाम ही उन लोगों के लिये बेहतर है जो गुनाहों से बचना चाहते हैं । फिर क्या तुम लोग अक़्ल से काम नहीं लोगे । लोग अल्लाह से निशानियाँ मांगते हैं । ज़मीन पर चलने वाले किसी जानवर और हवा में उड़ने वाले किसी परिन्दे को देख लो , ये सब तुम्हारी तरह की जिन्स हैं , ये सब अपने रब की तरफ़ सिमटे जाते हैं । तुम भी इन्हीं की तरह अपने रब की तरफ़ समेटे जाओगे यानी जिस तरह दिन भर चुगने और उड़ते रहने के बावुजूद शाम को ये सब अपने निश्चित समय पर घरों को लौट आते हैं उसी तरह तुम अपनी ज़िन्दगियाँ दुनिया में बसर करके अल्लाह ही की तरफ़ लौट जाते हो जहाँ तुम्हारा हमेशा हमेश का ठिकाना है । मगर जो लोग हमारी निशानियों को झुटलाते हैं वो गूंगे बहरे हैं, अन्धेरों में पड़े हुए हैं । ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास वो लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उनसे कहो सलामती है तुम पर । तुम्हारे रब ने रहमो करम का शेवा अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है । यह उसका रहम और करम ही तो है कि अगर तुम में से कोई नादानी से कोई बुराई कर बैठा हो और उसके बाद तौबह कर ले और अपनी इस्लाह कर ले तो अल्लाह उसे माफ़ कर देता है और नर्मी से काम लेता है ।

अगली आयतों में शिर्क की तर्दीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाक़िआ बयान किया गया है कि किस तरह उन्होंने सितारा परस्ती की काट की । फ़रमाया जो छुप जाए और ज़वाल पज़ीर हो वह कभी ख़ुदा नहीं हो सकता । मेरा ख़ुदा तो वही है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ । अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़िक्र के बाद फ़रमाया - नबुव्वत का सिलसिला काफ़ी लम्बा है । हमने इब्राहीम को इस्हाक़ और यअक़ूब जैसी औलाद दी और हर एक को सीधा रास्ता दिखाया । पहले नूह फिर उनकी नस्ल से दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा व हारून, ज़करिया, यहया, इलियास, अल-यसअ, इस्माईल, यूनुस, लूत इन सभी को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी और नबुव्वत का ताज पहनाया, उन्हें तमाम दुनिया वालों पर बुज़ुर्गी दी, उनके बाप दादा, उनकी औलाद और भाई बन्दों में से बहुतों को नवाज़ा , उन्हें दीन के लिये चुन लिया, सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की । अल्लाह यह हिदायत अपने जिस बन्दे को चाहता है इनायत फ़रमाता है मगर कुफ़्र और शिर्क इतना बड़ा गुनाह है कि अगर ये मुक़र्रब बन्दे भी अल्लाह के साथ शिर्क करते तो इनके सारे कर्म अकारत जाते । लिहाज़ा ये काफ़िर और मुश्रिक लोग अल्लाह की इस हिदायत को कुबूल करने से इन्कार करते हैं तो कर दें, हमने ईमान वालों में एक गिरोह ऐसा पैदा किया है जो इस

नेमत की क़द्र करने वाला है । ये तमाम नबी अल्लाह की तरफ़ से हिदायत पाए हुए थे । ऐ मेहबूब ! आप उन्हीं के रास्ते पर चलिये और कह दीजिये कि मैं तुम से किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ । यह कुरआन तो एक नसीहत और हिदायत है तमाम दुनिया वालों के लिये । ऐ मेहबूब ! कह दीजिये - देखो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत की रौशनी आ गई है, अब जो बीनाई से काम लेगा, अपना भला करेगा और जो अन्धा बना रहेगा, वह ख़ुद नुक़सान उठाएगा । मैं तुम पर कोई पासबान नहीं हूँ ।

इसके बाद कुरआन शरीफ़ ने मुश्रिकों के अपने हलाल और हराम क़रार दिये हुए जानवरों और तवहहुमात का ज़िक्र करके उनकी बेअक़्ली को वाज़ेह किया और जो कुछ अल्लाह तआला ने हराम और हलाल किया है उसे बताते हुए ऐलान किया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़िन्दगी का क्या तरीक़ा उतारा है जिसपर चलना सीधी राह पर चलना है । फ़रमाया - ऐ नबी ! उनसे कहो आओ मैं तुम्हें सुनाऊं तुम्हारे रब ने तुम्हें किन बातों का पाबन्द किया है । (१) उसके साथ किसी को शरीक न ठहराना , (२) माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करना , (३) अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करना, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे, (४) बेशर्मी की बातों के क़रीब भी न फटकना चाहे वो खुली हों या छुपी, (५) किसी जान को जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है, हलाक न करो मगर हक़ के साथ यानी क़ानून के दायरे में, (६) यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतरीन है यहाँ तक कि वो उस उम्र को पहुंच जाए कि अपने अच्छे बुरे में तमीज़ करने लगे, (७) नाप तौल में पूरा इन्साफ़ करो, हम हर शख़्स पर ज़िम्मेदारी का उतना ही बोझ डालते हैं जिसे उठाने की वह ताक़त रखता हो, (८) जब बात कहो इन्साफ़ की कहो चाहे मामला अपनी रिश्तेदारी का ही क्यों न हो, (९) अल्लाह के एहद को पूरा करो ।

इन बातों की हिदायत अल्लाह ने तुम्हें की है शायद कि तुम नसीहत पकड़ो । यही अल्लाह का सीधा रास्ता है इसलिये इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो क्योंकि वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से विचलित करदेंगे । दाने और गुठली को फाड़ने वाला अल्लाह है । वही ज़िन्दा को मुर्दा और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है । सारे काम तो अल्लाह के ही हुक्म से होते हैं फिर तुम कहाँ बहके जाते हो । रात के पर्दे को चाक करके वही तो सुबह को निकालता है, उसी ने रात को सुकून का वक़्त बनाया, उसी ने चाँद सूरज के उदय और अस्त होने का हिसाब निश्चित किया है और वही है जिसने तारों को सहरा और समन्दर के अन्धेरों में रास्ता मालूम करने का ज़रिया बनाया है ।

दुनिया की विभिन्न चीज़ों और इन्सान की पैदाइश का ज़िक्र फ़रमाकर अल्लाह ने फ़रमाया कि इन चीज़ों में निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं । इसपर भी लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहरा दिया है हालांकि वह उनका पैदा करने वाला है । और बे जाने बूझे अल्लाह के लिये बेटियाँ और बेटे बना दिये हैं हालांकि वह पाक और बाला तर है इन बातों से जो ये लोग कहते हैं । वह तो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई शरीके ज़िन्दगी ही नहीं । उसने हर चीज़ को पैदा किया और हर चीज़ का इल्म रखता है । यह है अल्लाह तुम्हारा रब, कोई उसके सिवा पूजे जाने के क़ाबिल नहीं, वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है, लिहाज़ा तुम उसी की बन्दगी करो । निगाहें उसको पा नहीं सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है । बारीक से बारीक चीज़ उस की नज़र में है ।

सूरए अअराफ़ में सब से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी कि कि इस किताब के मुतअल्लिक़ आपकी ज़िम्मेदारी बस इतनी है कि इसके ज़रिये लोगों को ख़बरदार करें ताकि अल्लाह की हुज्जत उनपर तमाम हो जाए । आप पर यह ज़िम्मेदारी नहीं कि लोग इसे क़ुबूल भी करें । हक़ीक़त में इस किताब से फ़ायदा तो सिर्फ़ ईमान वाले ही उठाएंगे । फिर कुरआन ने सबको तम्बीह की कि एक दिन ऐसा ज़रूर आने वाला है जब तुम से तुम्हारी ज़िम्मेदारियों की बाबत पूछा जाएगा और रसूलों से उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में । उस दिन जो इन्साफ की तराज़ू क़ायम की जाएगी वह हर एक के अअमाल को तौल कर बता देगी कि किस के पास कितना हक़ है और कितना बातिल । उस रोज़ सिर्फ़

वही फ़लाह पाएंगे जिनके नेकियों के पलड़े भारी होंगे । बाक़ी सब नामुराद होंगे बल्कि दीवालिया ।

आगे की आयतों में क़ुरैश को और उनके ज़रिये सबको आगाह किया कि तुम्हें जो इक़तिदार हासिल हुआ है वह ख़ुदा का बख़्शा हुआ है । उसी ने तुम्हारे लिये ज़िन्दगी और उसका सामान पैदा किया है लेकिन शैतान ने तुमपर हावी होकर तुमको नाशुक्री की राह पर डाल दिया है । फिर आदम अलैहिस्सलाम और इब्लीस का वाक़िआ बयान करके वाज़ेह किया गया कि जिस तरह शैतान ने हज़रत आदम को धोखा देकर जन्नत से निकलवाया था उसी तरह उसने फ़रेब का जाल फैलाकर तुम्हें भी फंसा लिया है । तुम उसके चकमे में आकर उसकी उम्मीदें पूरी करने के सामान न करो । अल्लाह ने हर मामले में हक़ और इन्साफ़ का हुक्म दिया, अपनी इबादत का हुक्म दिया , और तौहीद का हुक्म दिया । शैतान बेहयाई का रास्ता दिखाता है और तुमने उसकी पैरवी में अपने आप को फ़ित्नों में जकड़ लिया है । और दावा करते हो कि यही सीधी राह है । अल्लाह ने बेहयाई को, लोगों के हुक़ूक़ मारने और सरकशी करने को शिर्क और अल्लाह का नाम लेकर दिल से हराम हलाल बना लेने को हराम ठहराया है । लेकिन आज तुम ये सब हरकतें कर रहे हो । इसके बावुजूद तुम्हें मोहलत दी जा रही है तो इसकी वजह यह है कि अल्लाह के यहाँ हर उम्मत की तबाही के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है ।

अल्लाह ने फ़रमाया ऐ आदम की औलाद ! हमने तुमपर लिबास उतारा है कि तुम्हारे जिस्म के शर्म वाले हिस्सों को ढाँपे और तुम्हारे लिये जिस्म की हिफ़ाज़त और ज़ीनत का ज़रिया भी हो । और बेहतरीन लिबास तक़वा का लिबास है । यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है शायद लोग इससे सबक़ लें । ऐ आदम के बेटो ! ऐसा न हो कि शैतान फिर तुम्हे फ़ित्ने में डाल दे जिस तरह उसने तुम्हारे वालिदैन को जन्नत से निकलवाया था और उनके लिबास उनपर से उतरवा दिये थे ताकि उनकी शर्मगाहें एकदूसरे के सामने खोले । वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते । ऐ आदम की औलाद ! हर इबादत के मौक़े पर अपनी ज़ीनत से आरास्ता रहो और खाओ पियो मगर हद से आगे न बढ़ो । अल्लाह हद उलांघने वालों के पसन्द नहीं करता । ऐ मेहबूब ! इन से कह दो कि किस ने अल्लाह की उस ज़ीनत को हराम कर दिया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लियो बनाया । और किसने अल्लाह की अता की हुई पाक चीज़ों पर प्रतिबन्ध लगा दिया । आप कह दजीजिये कि ये सारी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान लाने वालों के लिये हैं और क़यामत के रोज़ तो सिर्फ़ उन्हीं के लिये होंगी क्योंकि वही वफ़ादार हैं । इस तरह अल्लाह अपनी बात साफ़ साफ़ बयान फ़रमाता है उन लोगों के लिये जो इल्म रखते हैं । ऐ मेहबूब ! इनसे कहिये, मेरे रब ने जो चीज़ें हराम कर दी हैं वो ये हैं - बेशर्मी के काम, चाहे खुले हों या छुपे और गुनाह और हक़ के ख़िलाफ़ ज़ियादती और यह कि अल्लाह के साथ तुम किसी को शरीक करो जिसके लिये उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की और यह कि अल्लाह के नाम पर कोई ऐसी बात कहो जिसके बारे में तुम्हें जानकारी न हो कि वह हक़ीक़त में उसी ने फ़रमाई है । मक़ामे अअराफ़ से, जो जन्नत और दोज़ख़ दोनों के बीच एक ऊंची जगह होगी, एक गिरोह को दोज़ख़ और जन्नत का अवलोकन कराया जायगा ताकि वो देख लें कि अल्लाह ने अपने रसूलों के ज़रिये जिन बातों की ख़बर दी थी वो सब पूरी हुईं । अअराफ़ वाले जन्नत वालों को मुबारकबाद देंगे और दोज़ख़ वालों पर मलामत करेंगे । दोज़ख़ वाले जन्नत वालों से दरख़्वास्त करेंगे कि वो उनपर कुछ करम करें और उनपर थोड़ा सा जन्नत का पानी डाल दें और जो रिज़्क़ उन्हें मिला है उसमें से कुछ उन्हें भी दे दें । जन्नत वाले जवाब देंगे कि अल्लाह ने दोनों चीज़ें क़ुरआन का इन्कार करने वालों पर हराम कर दी हैं अल्लाह की तरफ़ से ऐलान होगा - जिन्हों ने दुनिया में अल्लाह की बातों से आँखें फेरी थीं, आज अल्लाह ने उनको नज़र अन्दाज़ कर दिया है । काफ़िर अपनी बदबख़्ती और मेहरूमी पर अफ़सोस और हसरत के सिवा कुछ न कर सकेंगे ।

इस बात से आगाह किया गया कि पैदा करना और लोगों को हुक्म देना कि क्या करें क्या न करें , यह सब अल्लाह का हक़ है । बस उम्मीद हो या ना उम्मीदी, हर हाल में उसी को पुकारो । ज़मीन में वो काम न करो जिनसे फ़साद फैले । क़यामत ज़रूर आनी है । मौत के बाद ज़िन्दगी का अवलोकन

तुम ख़ुद इस दुनिया में बराबर कर रहे हो कि अल्लाह मुर्दा ज़मीन को बारिश से ज़िन्दा कर देता है। अल्लाह ने हर पहलू से अनी निशानियाँ वाज़ेह कर दी हैं। नूह, सालेह, हूद, लूत और शुएब अलैहुमुस्सलाम की क़ौमों का ज़िक्र किया गया। यह इस बात का तारीख़ी सुबूत है कि जो क़ौमें फ़साद फैलाती हैं और अपने रसूल की दावत को झुटलाती हैं, अल्लाह तआला आख़िरकार उन्हें मिटा देता है। ज़ालिम क़ौमों को तबाह करने का अल्लाह का जो तरीक़ा है, उसे तफ़सील से बताया गया कि कभी ऐसा न हुआ कि हमने किसी बस्ती में नबी भेजा और उसी बस्ती के लोगों को पहले तंगी और सख़्ती में मुब्तिला न किया हो, इस ख़्याल से शायद वो आजिज़ी इख़्तियार करें।

सूरए अन्फ़ाल में अल्लाह तआला ने जंगे बद्र का ज़िक्र फ़रमाया है। यह पहली जंग है जो मक्के के काफ़िरों और मुसलमानों के बीच १७ रमज़ान सन दो हिजरी में बद्र के मक़ाम पर लड़ी गई। इसका पसे मन्ज़र यह था कि मदीनए तैय्यिबह में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आ जाने के बाद मुसलमानों को एक मरकज़ मिल गया था। पूरे अरब से मुसलमान जो वहाँ के क़बीलों में थे, यहाँ आकर पनाह ले रहे थे और मक्का से बड़ी तादाद में हिजरत करके यहाँ आए थे। इस तरह मुसलमानों की बिखरी हुई ताक़त एक जगह जमा हो गई थी और कुरैश के लिये यह बात सख़्त नागवार थी कि मुसलमान इस तरह एक बड़ी ताक़त बन जाएं। इस लिये उन्हों ने फ़ैसला किया कि अपने एक तिजारती क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के बहाने मदीने पर चढ़ाई कर दें और मुसलमानों की मुटट्ठी भर जमाअत का ख़ात्मा कर दें।

इन संगीन हालात में १७ रमज़ान को बद्र के मक़ाम पर मुक़ाबला हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने देखा कि तीन काफ़िरों के मुक़ाबले में एक मुसलमान है और वह भी पूरी तरह मुसल्लह नहीं है। तो अल्लाह की बारगाह में सर झुका दिया और दुआ की - ऐ अल्लाह ! ये कुरैश हैं जो अपने सामान और ताक़त के घमन्ड के साथ आए हैं ताकि तेरे रसूल को झूटा साबित करें। ऐ अल्लाह ! बस आ जाए तेरी वह मद जिसका तूने मुझ से वादा किया था। ऐ अल्लाह ! अगर आज यह मुट्ठी भर जमाअत हलाक हो गई तो रुए ज़मीन पर फिर तेरी इबादत न होगी।

आख़िरकार अल्लाह की तरफ़ से मदद आ गई और क़ुरैश अपने सारे असलहे और ताक़त के बावुजूद इन बे सरो सामान जाँनिसारों के हाथों मात खा गए। काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर क़ैदी बनाए गए। बड़े बड़े सरदारों और अबू जहल का ख़ात्मा हो गया। और काफ़िरों का सारा सामान माले ग़नीमत के तौर पर मुसलमानों के हाथ आया। अल्लाह ने फ़रमाया इस जीत में अल्लाह की ताईद और मदद का कितना बड़ा हाथ था। फ़रमाया, ऐ महबूब ! जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे तो जवाब में उसने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी मदद को एक हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत एक के बाद एक भेज रहा हूँ। बस हक़ीक़त यह है कि तुमने इन्हें क़त्ल नहीं किया, अल्लाह ने उन्हें हलाक किया। और मूमिनों के हाथ जो इस काम में इस्तेमाल हुए तो यह इस लिये था कि अल्लाह मूमिनों को एक बेहतरीन आज़माइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करो और हुक्म सुनने के बाद उससे मुंह न मोड़ो। उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा हमने सुना हालांकि वो नहीं सुनते। यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक बदतरीन क़िस्म के जानवर वो गूंगे बेहरे इन्सान हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते। अगर अल्लाह की मर्ज़ी होती तो वह ज़रूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता। लेकिन भलाई के बिना अगर वह कुछ सुनते तो बे रुख़ी के साथ मुंह फेर जाते।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उसके रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि उसका रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ़ बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शने वाली है यानी जिहाद और बचो उस फ़ितने से जिसकी शामत ख़ास तौर से सिर्फ़ उन्हीं लोगों तक मेहदूद नहीं रहेगी जिन्होंने तुम में से गुनाह किया हो। और जान रखो कि अल्लाह सख़्त सज़ा भी देने वाला है।

मक्के का वह वक़्त भी याद करने जैसा है जबकि सच्चाई का इन्कार करने वाले तुम्हारे ख़िलाफ़ तदबीरें सोच रहे थे कि तुम को क़ैद करदें या क़त्ल कर डालें या जिला वतन कर डालें। वो अपनी चालें

चल रहे थे और अल्लाह अपनी छुपवाँ तदबीर फ़रमा रहा था । और अल्लाह सब से बेहतर तदबीर फ़रमाने वाला है । उस वक़्त वो यह बात भी कह रहे थे कि ख़ुदाया अगर वाक़ई यह हक़ है और तेरी तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या कोई और आज़ाब ले आ । उस वक़्त तो अल्लाह उनपर कोई अज़ाब लाने वाला नहीं था क्योंकि ऐ मेहबूब आप उनके बीच तशरीफ़ फ़रमा थे । यह अल्लाह का क़ायदा नहीं कि उसकी बारगाह में इस्तिग़फ़ार करने वाले मौजूद हों और वह उनपर अज़ाब उतारे ।

लेकिन अब क्यों न वह उनपर अज़ाब नाज़िल करे जबकि वो मस्जिदे हराम का रास्ता रोक रहे हैं । हालांकि वो इस मस्जिद के जाइज़ मुतवल्ली नहीं हैं । इसके जाइज़ मुतवल्ली तो सिर्फ़ तक़वा वाले लोग ही हो सकते हैं । ऐ ईमान वालो ! इन काफ़िरों से जंग करो यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन पूरे का पूरा अल्लाह के लिये हो जाए । फ़िर अगर वो फ़ितने से रुक जाएं तो अल्लाह उनके अअमाल देखने वाला है और अगर न मानें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है और वही बेहतरीन मददगार है ।

इस मौक़े पर यह भी वाज़ेह कर दिया गया कि ग़नीमत का माल हक़ीक़त में लड़ने वालों का ज़ाती माल नहीं है बल्कि अल्लाह का इनाम है । इस लिये अपनी मर्ज़ी से उसके मालिक मत बनो । चुनान्चे उसका ५ वाँ हिस्सा अल्लाह, उसके रसूल और उसके रिश्ते दारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये है । बाक़ी चार हिस्से जंग में हिस्सा लेने वालों के लिये हैं । ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो क़दम मज़बूत रखो और अल्लाह को कसरत से याद करते रहो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करो और आपस में झगड़ो नहीं वरना तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी । और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी । सब्र से काम लो, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है अल्लाह की यह सुन्नत है कि वह किसी नेमत को जो उसने किसी क़ौम को अता की है, उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वह क़ौम ख़ुद अपने व्यवहार के नहीं बदल देती । जिन काफ़िर क़ौमों से मुआहिदा हो उनके बारे में फ़रमाया कि अगर किसी क़ौम से तुम्हें ख़यानत का अन्देशा है तो उसका मुआहिदा खुल्लम खुल्ला उसके आगे फैंक दो । यक़ीनन अल्लाह ख़यानत करने वालों को पसन्द नहीं करता । और तुम लोग जहाँ तक तुम्हारा बस चले अधिक से अधिक ताक़त और तैयार बन्धे रहने वाले घोड़ उनके मुक़ाबले के लिये उपलब्ध कर रखो ताकि उनके ज़रिये अल्लाह के और ख़ुद अपने दुशमनों को और उन दूसरे दुशमनों को भयभीत कर सको जिन्हें तुम नहीं जानते, मगर अल्लाह जानता है । अल्लाह की राह में जो कुछ तुम ख़र्च करोगे उसका पूरा पूरा बदल तुम्हारी तरफ़ पलटाया जाएगा । और तुम्हारे साथ हरगिज़ ज़ुल्म न होगा । और अगर दुशमन सुलह व सलामती की तरफ़ आएं तो तुम भी उसके लिये राज़ी हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो, वह सब कुछ जानने सुनने वाला है और अगर वो धोखे की नियत रखते हों तो तुम्हारे लिये अल्लाह काफ़ी है । वही तो है जिसने अपनी मदद से और मूमिनों के ज़रिये से तुम्हारी ताईद की और मूमिनों के दिल एक दूसरे के साथ जोड़ दिये । तुम धरती की सारी दौलत भी ख़र्च कर डालते तब भी इन लोगों के दिल न जोड़ सकते थे । मगर यह अल्लाह ही है जिसने इनके दिल जोड़े । यक़ीनन वह बड़ा ज़बरदस्त और दाना है । ऐ मेहबूब ! तुम्हारे और तुम्हारे मानने वालों के लिये अल्लाह काफ़ी है ।

ऐ नबी ! मूमिनों को जंग पर उभारो । अगर तुम में से बीस साबिर हों तो वो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर सौ आदमी ऐसे हों तो हक़ के मुख़ालिफ़ों में से बीस हज़ार आदमियों पर भारी होंगे । जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह की रज़ा के लिये अपने घर बार छोड़े और जिद्दोजहद की और जिन्होंने उन्हें पनाह दी और उनकी मदद की, वही सच्चे मूमिन हैं । उनके लिये ख़ताओं से दरगुज़र है और बेहतरीन रिज़्क़ है और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत करके आ गए और तुम्हारे साथ मिल कर दीन के क़याम की जिद्दोजहद करने लगे, वो भी तुम में शामिल हैं ।

सूरए तौबह के बाक़ी के पांच रुकू में जंगे तबूक के मौक़े पर मुनाफ़िक़ों ने जो रवैया अपनाया और कुछ ऐसे मुसलमान जो थे तो मुख़लिस मगर काहिली की बिना पर जंग में शरीक होने से पीछे रह

गए थे, उन सबका ज़िक्र किया गया। पहले यह बताया गया कि जब तुम जंगे तबूक के सफ़र से लौटोगे तो ये मुनाफ़िक़ीन अपने रवैये के बारे में तुम्हें इत्मीनान दिलाने के लिये तरह तरह के उज़्र पेश करेंगे। उन से साफ़ कह देना कि हम तुम्हारे ये मन घड़त बहाने मानने वाले नहीं। अब अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे अमल का जाइज़ा लेंगे। तुम अपने अमल से साबित करने की कोशिश करो कि तुम वास्तव में अल्लाह और रसूल पर ईमान रखते हो। अभी तो इस्लाम से उनकी बदख़्वाही का यह हाल है कि अव्वल तो ये अल्लाह के रास्ते में कुछ ख़र्च नहीं करते और अगर हालात से मजबूर होकर कुछ करना भी पड़े तो इसे अपने ऊपर ज़बरदस्ती का जुर्माना समझते हैं। और चाहते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी गर्दिश आए कि जिस से हमारी जान उन से छूट जाए हालांकि हक़ीक़त में गर्दिश ख़ुद उन पर है और गर्दिश भी बहुत बुरी यानी आख़िरत में निजात से मेहरूमी। कुछ दूसरे लोग थे जिन्होंने अपने गुनाह को स्वीकार कर लिया था। उनके बारे में फ़रमाया गया कि कि उनकी नेकियाँ और बुराइयाँ दोनों तरह की कमाई है, उम्मीद है कि अल्लाह उनपर अपनी रहमत फ़रमाएगा। ऐ नबी ! आप उनसे सदक़ा लेकर उन्हें पाक बना दीजिये और उन के लिये दुआ कीजिये। आपकी दुआ उनके लिये तसकीन का सामान बनेगी। और उन से यह भी कहिये कि अब अल्लाह , उसका रसूल और मूमिनीन तुम्हारे तर्ज़े अमल को देखेंगे और बहरहाल तुम बहुत जल्द अल्लाह के हुज़ूर पेश किये जाने वाले हो। मुनाफ़िक़ों में वो भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई है, इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने, ईमान वालों में फूट डालने और उन लोगों के लिये ख़ुफ़िया अड्डा उपलब्ध कराने के लिये जो अल्लाह और रसूल से पहले जंग कर चुके हैं। और उसमें कभी न खड़े हों आप के खड़े हाने के लिये वह मस्जिद सबसे ज़्यादा हक़दार है जिसकी बुनियाद पहले दिन से ही तक़वा पर रखी गई है। निफ़ाक़ पर बनाई हुई इमारत की मिसाल ऐसी है जैसे किसी समन्दर में निकली हुई कगर पर इमारत बनाई हो, वह किसी भी वक़्त अपने रहने वालों समेत दोज़ख़ में गिर जाएगी। बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान और दिल जन्नत के बदले में ख़रीद लिये हैं। वो अल्लाह की राह में जंग करते हैं, वो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। जन्नत का वादा अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है। तौरात में भी और इन्जील में भी और अब क़ुरआन में भी। अल्लाह से ये जन्नत का सौदा करने वाले दर अस्ल हमेशा तौबह करने वाले इबादत गुज़ार, शुक्र गुज़ार, अपनी इस्लाह और दीन का इल्म हासिल करने के लिये घरों से निकलने वाले, अल्लाह के आगे झुकने वाले, नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदों की हिफ़ाज़त करने वाले लोग हैं। यही सच्चे मूमिन हैं। ऐसे मूमिनों को ख़ुश ख़बरी सुना दीजिये।

सूरत ख़त्म करते वक़्त मुसलमानों को कुछ ख़ास हिदायतें दी गई हैं। पहली हिदायत यह फ़रमाई कि नबी और ईमान वालों के लिये यह जाइज़ नहीं कि वो मुश्रिकों के लिये अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ मांगें, चाहे वो उनके रिश्ते दार ही क्यों न हों। इस हिदायत का मतलब यह है कि मुसलमानों को शिर्क के हर शाइबे से पाक करके सिर्फ़ अल्लाह के लिये जीने और मरने के मक़सद पर क़ायम कर दिया जाए और हक़ के सिवा और किसी तबअ की हिमायत का शाइबा उनमें बाक़ी न रखा जाए क्योंकि सिर्फ़ रिश्तेदारी और तअल्लुक़ की बिना पर जो हिमायत होती है उससे निफ़ाक़ और कुफ़्र की राहें खुलती हैं।

जिन मुसलमानों का सुस्ती और काहिली के कारण जंगे तबूक से पीछे रह जाने पर बायकाट किया गया था उनकी तौबह की क़ुबूलियत की बशारत सुनाई गई और मदीने वालों और बद्दुओं में से जो ताइब हो गए थे उनको नसीहत की गई कि हमेशा सच और हक़ के लिये जीने वालों से ख़ुद को जोड़े रखो ताकि उनकी सोहबत में रहकर तुम्हारी कमज़ोरियों की इस्लाह हो सके।

सूरए यूनुस में कुरैश की उस हालत पर अफ़सोस का इज़हार किया गया कि अल्लाह ने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर यह हिकमत वाली किताब उतारी। चाहिये तो यह था कि वो इसकी क़द्र करते और ईमान लाते। अल्लाह सरकश लोगों को ढील देता है। इसकी वजह यह है कि वह रहमत करने में जल्दी करता है लेकिन क़हर करने में जल्दी नहीं करता। वह ऐसे लोगों को मौक़ा देता है कि वो सरकशी में अच्छी तरह भटक लें , कोई हसरत बाक़ी न रह जाए और अल्लाह की हुज्जत तमाम हो जाए। वरना

अल्लाह जब चाहे उनका क़िस्सा पाक करदे ये पिछली उम्मतों के अंजाम से सबक़ क्यों नहीं लेते ।

कुरैश की एक मांग यह थी कि इस कुरआन के अलावा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ जिसमें हमारी कुछ बातें भी मानी गई हों या अब रद्दोबदल कर लो, कुछ दो , कुछ लो के उसूल पर मामला करलो । इसका जवाब यह दिया गया कि ऐ मेहबूब ! आप बता दीजिये कि मुझे रद्दोबदल या संशोधन करने का कोई इख़्तियार नहीं है । ये तो अल्लाह के आदेश हैं जिनके पालन के लिये मैं भेजा गया हूँ । अगर अल्लाह का हुक्म न होता तो मैं हरगिज़ इसे पेश न करता ।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का अंजाम बयान करने के बाद हूद अलैहिस्सलाम की क़ौमे आद और सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौमे समूद के इब्रत अंगेज़ अंजाम को बताया गया ताकि क़ुरैश को इब्रत और क़यामत तक आने वाले सरकश लोगों की नसीहत हो । फिर लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम का ज़िक्र किया गया । इस मुनासिबत से कि क़ुरैश फ़रिश्तों के उतारे जाने का मुतालबा कर रहे थे । बताया गया कि फ़रिश्तों का आना कोई मामूली बात नहीं होती । वो जब काफ़िर क़ौमों की मांग पर आते हैं तो अपने साथ अज़ाब लाते हैं । फिर हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करते हुए इन क़िस्सों को बयान करने का मक़सद इन शब्दों में बयान किया ।

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं । इनमें से कुछ अभी क़ायम हैं और कुछ मिट चुकी हैं । हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया । तो उनके बनावटी ख़ुदा जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पुकारते थे, तेरे रब का अज़ाब आने पर उनके कुछ काम न आए । तेरे रब की पकड़ इसी तरह होती है । बेशक उसकी पकड़ बड़ी सख़्त और दर्दनाक है ।

हम रसूलों की सरगुज़श्तों में से एक तुम्हें सुना रहे हैं ताकि तुम्हारे दिल को तक़वियत हो और उनके हालात का सही इल्म हो सके । और मूमिनों के लिये इनमें नसीहत और याददिहानी है । तुम सब अल्लाह की बन्दगी करते रहो और उसी पर भरोसा रखो । जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं है ।

अब **सूरए यूसुफ़** शुरु होती है । इसके नुज़ूल का कारण यह हुआ कि क़ुरैश हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़त्ल करने या जिला वतन करने या क़ैद करने के मुतअल्लिक़ सोच रहे थे कि मदीना के यहूदियों ने उन्हें पट्टी पढ़ाई कि मुहम्मद से यह पूछे कि बनी इस्राईल तो शाम में रहते थे, वो मिस्र कैसे चले गए । हज़रत मूसा का सारा वाक़िआ मिस्र से ही तअल्लुक़ रखता है । यहूदी इस गुमान में थे कि जब क़ुरैश नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस तरह का सवाल पूछेंगे तो हुज़ूर ज़रूर किसी न किसी तरह यहूदियों से सम्पर्क करेंगे, इस तरह सारी पोल खुल जाएगी । मगर अल्लाह तआला ने अपने हबीब की ज़बान से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ सुनवा दिया । साथ ही इसे क़ुरैश पर चस्पाँ भी कर दिया कि आप जो कुछ भी बयान करते हैं वो अल्लाह की बताई हुई बातें हैं । इस तरह गोया उन्हें चेतावनी भी दे दी कि यही अंजाम तुम्हारा भी होने वाला है कि तुम एक दिन नबीये करीम के रहमो करम पर होगे ।

इसी वाक़िए में क़ुरआन ने इस्लाम की दावत पेश करते हुए वाज़ेह कर दिया कि हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, हज़रत यअक़ूब और हज़रत यूसुफ़ अलैहिमुस्सलाम का दीन भी वही था जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का है और वो सब भी ज़िन्दगी गुज़ारने के उसी तरीक़े की दावत देते थे जिसकी दावत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दे रहे हैं ।

इस क़िस्से में एक तरफ़ हज़रत यअक़ूब अलैहिस्सलाम और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का किरदार पेश किया गया है तो दूसरी तरफ़ अज़ीज़े मिस्र, उसकी बीवी, मिस्र के दूसरे बड़े घरानों की बेगमात और मिस्र के हाकिमों का किरदार भी मिलता है और दोनों की तुलना करके बताया गया है कि एक तरह का किरदार वह है जो इस्लाम क़ुबूल करके बनता है और दूसरा किरदार वह है जो दुनिया परस्ती और आख़िरत से बेख़ौफ़ी से पैदा होता है । अब तुम ख़ुद अपने ज़मीर से पूछ लो कि कौन सा किरदार

बेहतर है। फिर अल्लाह तआला ने यह बात भी सामने रख दी है कि दर अस्ल अल्लाह तआला जो कुछ करना चाहता है वह पूरा होकर रहता है। इन्सान अपनी तदबीरों से अल्लाह के मन्सूबों को राकने में कभी कामयाब नहीं हो सकता। बल्कि इन्सान अपने मन्सूबों के लिये तदबीर अपनाता है, अल्लाह चाहता है तो उसकी तदबीर के ज़रिये अपना मन्सूबा पूरा कर लेता है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने उन्हें अपने रास्ते से हटाने के लिये कुँवें में फैंका मगर यह कुँवाँ ही हज़रत यूसुफ़ के उरूज का ज़रिया बन गया। इसी तरह अज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलैख़ा ने हज़रत यूसुफ़ को क़ैद ख़ाने भिजवाकर इस बात का बदला लिया कि उन्होंने उसका ग़ुलाम होने के बावजूद उसकी ख़्वाहिश को पूरा करने से इन्कार कर दिया था। मगर यही क़ैद ख़ाना उनके राजसिंहासन पर बैठने का कारण बन गया। और ज़ुलैख़ा को सब के सामने अपनी ग़लती का ऐतिराफ़ करना पड़ा। इसी तरह के बेशुमार तारीख़ी वाक़िआत इस हक़ीक़त का ऐलान करते हैं कि अल्लाह जिसे उठाना चाहता है, सारी दुनिया मिलकर भी उसे गिरा नहीं सकती। इसी तरह अल्लाह जिसे गिराना चाहता है, उसे सारी दुनिया मिलकर भी उठा नहीं सकती।

सूरए यूसुफ़ से पहला सबक़ इन्सान को यह मिलता है कि उसे अपने मक़सद और तदबीर दोनों में अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदों से आगे नहीं जाना चाहिये। कामयाबी और नाकामी दर अस्ल अल्लाह की मर्ज़ी पर है। जो आदमी पाक मक़सद के लिये सीधी सीधी जाइज़ तदबीरें अपनाएगा वह यहाँ कामयाब न भी हो तो किसी रुस्वाई से दोचार नहीं होगा। लेकिन जो आदमी नापाक मक़सद लेकर चलेगा और उसके लिये टेढ़ी तदबीर करेगा, वह आख़िरत में यक़ीनन रुस्वाई का सामना करेगा।

दूसरा सबक़ इस क़िस्से से यह मिलता है कि अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा रखो और अपने सारे काम उसी के सुपुर्द करदो। जो लोग हक़ और सच्चाई के लिये कोशिश करते हैं, चाहे दुनिया उन्हें मिटाने पर तुल जाए तब भी वो इस बात को सामने रखते हैं कि सब कुछ अल्लाह के दस्ते क़ुदरत में है। इस यक़ीन से उन्हें असाधारण तसल्ली मिलती है और वो तमाम दुशवारियों और रुकावटों के मुक़ाबले में अपना काम बराबर करते चले जाते हैं।

सबसे बड़ा सबक़ इस क़िस्से से यह मिलता है कि एक मूमिन अगर हक़ीक़ी इस्लामी सीरत और किरदार रखता हो और हिकमत की सिफ़त भी उस में हो तो वह अकेला सारे मुल्क को फ़तह कर सकता है। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखिये, १७ बरस की उम्र, बिल्कुल अकेले, बे सरो सामान, अजनबी देश और फिर कमज़ोरी की इन्तिहा यह कि ग़ुलाम बनाकर बेचे गए, इस पर मज़ीद ज़ुल्म कि एक इन्तिहाई घिनौने इख़लाक़ी जुर्म का इल्ज़ाम लगाकर जेल में बन्द कर दिया गया जिसकी कोई मीआद भी नहीं थी। इस हालत तक गिरा दिये जाने के बावजूद वो मेहज़ अपने ईमान और अख़लाक़ के बल पर ऊपर उठते हैं और सारा मुल्क उनके क़दमों तले आ जाता है।

सूरए रअद में बताया गया है कि किताबे इलाही की आयतें हैं पवाई बातें नहीं हैं. इसकी हर बात एक हक़ीक़त है और जिन बातों की ख़बर दी जा रही है वो एक एक करके पूरी होकर रहेंगी. लेकिन अक्सर लोग ज़िद पर अड़े हुए हैं ऐसे लोग ईमान नहीं लाएंगे. फिर काइनात की उन निशानियों की तरफ़ तवज्जह दिलाई जो कुरआन की बयान की हुई हक़ीक़तों को वाज़ेह करने वाली हैं और यह यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं कि एक रोज़ उसके सामने पेश होना है जो हर ख़ुली और ढकी चीज़ से वाक़िफ़ है. हर शख़्स के आगे पीछे उसके मुक़र्रर किये हुए निगराँ लगे हुए हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं.

क़ौमों की तबदीली के बारे में बताया गया कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वह क़ौम अपने औसाफ़ को नहीं बदल देती. और जब अल्लाह किसी क़ौम की शामत लाने का फ़ैसला फ़रमा लेता है तो कोई ताक़त इस फ़ैसले को टाल नहीं सकती.

हक़ और बातिल की कशमकश को अजीब मिसाल के ज़रिये समझाया गया कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया और नदी नाले अपनी बिसात के मुताबिक़ उसे लेकर चल निकले फिर जब

सैलाब उठा तो सतह पर झाग भी आ गए और ऐसे ही झाग धातों पर भी उठते हैं जिन्हें ज़ेवर बनाने के लिये पिघलाया जाता है. जो झाग है यानी बातिल वह आख़िर उड़ जाता है और जो चीज़ इन्सान के लिये नफ़ा बख़्श है यानी हक़ वह ज़मीन में ठहर जाता है. इस तरह अल्लाह मिसालों से अपनी बात समझाता है.

भला बताइये यह किस तरह मुमकिन है कि जो शख़्स ख़ुदा की नाज़िल की हुई किताब को हक़ जानता है क्या वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो बिल्कुल ग़ाफ़िल (अन्धा) है. नसीहत तो दानिशमन्द लोग ही कुबूल करते हैं. उनका तर्ज़े अमल यह है कि वो अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा करते हैं उसे तोड़ते नहीं. जो सिला रहमी करते हैं, अपने रब से डरते रहते हैं कि कहीं उनसे बुरा हिसाब न लिया जाए, जो ख़ुदा की रज़ा के लिये सब्र से काम लेते हैं, नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने उन्हें जो रोज़ी दी है उसमें से वो अलानिया और पोशादा ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं, आख़िरत का घर उन्हीं लोगों के लिये है यानी ऐसे बाग़ात जो उनकी अबदी आरामगाह होंगे, वो ख़ुद भी उनमें रहेंगे और उनके साथ उनके बाप दादा बीवी बच्चे जो सालेह हैं वो भी जन्नत में रहेंगे.. फ़रिश्ते हर दरवाज़े से दाख़िल होकर उन्हें सलाम करेंगे और कहेंगे तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया उसकी बदौलत आज तुम इसके मुस्तहिक़ होगए. वो लोग जो अल्लाह से किये हुए वादे को तोड़ते हैं और क़तअ रहमी करते हैं, ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वो लानत के मुस्तहिक़ हैं और उनका बुरा ठिकाना है. गोया सबसे पहले कुरआन की दावत कुबूल करके अल्लाह के रास्ते पर चल खड़े होने वालों के लिये अन्जामेकार में कामयाबी की बशारत दी गई है और उसकी मुख़ालिफ़त और मज़ाहिमत करने वालों पर अल्लाह की लानत की ख़बर दी गई. फिर उस शुबह का जवाब दिया गया कि अगर अल्लाह की तमाम इनायतों के हक़दार सिर्फ़ ईमान वाले ही हैं तो वो लोग क्यों रिज़्क़ और फ़ज़्ल के मालिक बने बैठे हैं जो रात दिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुख़ालिफ़त में सरगर्म हैं.

फ़रमाया गया कि अल्लाह जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है और जिस के लिये चाहता है तंग कर देता है. जिसको वह कुशादगी देता है उससे चाहता है कि वह अपने रब का शुक्र गुज़ार बन्दा बने और जिसके लिये तंगी करता है उससे वह चाहता है कि वह सब्र करे. इसी सब्रो शुक्र पर दीन की इमारत खड़ी है. जो लोग इस दुनिया के कंकर पत्थर पाकर घमन्ड में आख़िरत को भूल बैठे हैं वो जब आख़िरत के दिन सब्र और शुक्र करने वालों के अज्र को देखेंगे तब उन्हें अन्दाज़ा होगा कि निहायत ही हक़ीर चीज़ के लिये उन्होंने आख़िरत की बादशाहत खो दी.

कुफ़्फ़ार के बार बार के इस मुतालिबे पर, कि कोई ऐसा ज़बरदस्त मोअजिज़ा दिखाया जाए कि माने बग़ैर चारा न रहे, वाज़ेह किया गया कि काइनात और ख़ुद इन्सानी ज़िंदगी में जो दलीलें और निशानियाँ अल्लाह ने रखी हैं, उनसे जिन लोगों का इत्मीनान नहीं होता वो दुनिया जहान के मोअजिज़े भी देख लें तो भी अन्धे के अन्धे बने रहेंगे.

फिर कुफ़्फ़ार के ठहराए हुए शरीकों की हक़ीक़त बयान की गई कि उनकी कोई बुनियाद नहीं, ये केवल मन घड़त बातें हैं. इस फ़रेब में मुब्तिला होकर जिन्होंने अल्लाह के रास्ते से मुंह मोड़ा वह इस दुनिया में भी अज़ाब से दोचार होंगे और आख़िरत का अज़ाब तो इस से कहीं ज़ियादा सख़्त होगा, कोई शफ़ीअ या शरीक वहाँ उन्हें बचाने वाला न होगा.

सूरए इब्राहीम में अल्लाह तआला ने शिर्क और इस्लाम के फ़र्क़ को बेहतरीन मिसाल से वाज़ेह फ़रमाया कि शिर्क के जिस निज़ाम पर तुम ज़िंदगी बसर कर रहे हो (कि अपने मन माने अहकाम चला रहे हो), इसकी कोई बुनियाद न ज़मीन में है न आसमान में. इसकी मिसाल गन्दगी के ढेर पर उगे हुए एक नापाक काँटेदार पौदे की है जो ज़री सी हरकत से उखाड़ फैंका जा सकता है. अगर यह अब तक बरक़रार है तो इस वजह से कि अभी कोई हाथ ऐसा नहीं आया जो इसे उखाड़ फैंके. अब अल्लाह ने वो हाथ पैदा कर दिये हैं तो तुम देखोगे कि कितनी जल्दी सारा ख़िरसा पाक हो जाएगा.

इसके मुक़ाबले में इस्लाम की दावत की मिसाल एक पाकीज़ा फलदार दरख़्त की सी है जिसकी जड़ें पाताल में उतरी हुई हैं और शाख़ें आसमान में फैली हुई हैं. अल्लाह तआला ईमान वालों को दुनिया में मज़बूत और मुस्तहकम करेगा और आख़िरत में भी सुर्ख़रूई बख़्शेगा. बशर्तेकि वो सब्र और इस्तिक़ामत के साथ हक़ पर डटे रहें और इस राह में पेश आने वाली आज़माइश का अल्लाह पर भरोसा करते हुए मुक़ाबला करें. इस हक़ीक़त को तारीख़ की रौशनी में वाज़ेह करने के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और दूसरे अम्बियाए किराम के वो वाक़िआत पेश किये जिनसे इस पहलू पर रौशनी पड़ती है सब्र करने वाले और राहे हक़ में डटे रहने वाले ग़ालिब आए, मुख़ालिफ़ीन तबाह कर दिये गए. लेकिन यह भी बताया गया कि ग़लबा उन्हीं को हासिल होगा जो पहले मरहले में सब्रो इस्तिक़ामत दिखाएंगे.

सूरए हिज्र में रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब करके यह इत्मीनान दिलाया गया कि यह कुरआन बजाए ख़ुद एक वाज़ेह हुज्जत है. अगर ये लोग इसको नहीं मान रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है. हमेशा से रसूलों को झुटलाने वालों की यही रविश रही है. आप को तो जो कुछ हुक्म मिला है उसको अलल ऐलान सुनाते रहिये और मुश्रिकों से दामन बचाइये. हम आपकी तरफ़ से उनसे निपटने को काफ़ी हैं. आप तो अपने रब की हम्दो सना करते रहिये और सिज्दा करने वालों के साथ शामिल रहिये और अपने रब की इताअत व इबादत में लगे रहिये, यहाँ तक कि वह यक़ीनी वक़्त आ जाए यानी मौत या क़यामत.

सूरए नह्ल की शुरूआत ही ज़बरदस्त वारनिंग से हुई है - बस आया ही चाहता है अल्लाह का फ़ैसला, अब इसके लिये जल्दी न मचाओ. पाक है वह और बालातर है उस शिर्क से जो ये लोग कर रहे हैं. वह इस रूह यानी वही को अपने जिस बन्दे पर चाहता है, अपने हुक्म से मलाइका के ज़रिये नाज़िल फ़रमा देता है कि आगाह करो मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है, लिहाज़ा तुम मुझी से डरो. उसने आसमान और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया, उसने इन्सान को ज़रा सी बूंद से पैदा किया और देखते ही देखते वह सरीहन एक झगड़ालू हस्ती बन गया. और उन तमाम निशानियों को नज़रअन्दाज़ कर दिया कि अल्लाह ने उसकी ख़ुराक और तरह तरह के बेशुमार फ़ाइदों के लिये जानवर पैदा किये. समन्दर जैसी अज़ीमुश्शान और पुर ख़तर चीज़ को उसके लिये मुसख़्ख़र कर दिया तो क्या वह जिसने इन चीज़ों को पैदा किया और वह जो कुछ भी पैदा नहीं करते, दोनों बराबर हैं. वो जिन्हें लोग ख़ुदा को छोड़ कर पुकारते हैं, ख़ुद मख़लूक़ हैं, मुर्दा हैं न कि ज़िंदा और उनको कुछ नहीं मालूम कि उन्हें कब दोबारा ज़िंदा करके उठाया जाएगा.

इससे पहले बताया गया था कि जो लोग अपने आप को ख़ुदा के हवाले कर दें उनके लिये यह किताब सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ रहनुमाई करेगी इन्साफ़ यह है कि जिसका जो हक़ बनता है हम बिना किसी कमी बेशी के उसको अदा करें . फिर रिश्तेदारों पर अदल और एहसान के अलावा मज़ीद अपना माल ख़र्च करें. इसी तरह बदकारी, बेहयाई के कामों से और हर उस काम से जो एक शरीफ़ाना मुआशिरे में अच्छा नहीं समझा जाता, हमें बचना चाहिये और अपनी ताक़त और असर से कोई नाजाइज़ फ़ायदा नहीं उठाना चाहिये. जो शख़्स भी नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, बशर्तेकि मूमिन हो, हम उसे दुनिया में पाकीज़ा ज़िंदगी अता करेंगे. और आख़िरत में उनके बेहतरीन अअमाल के मुताबिक़ बख़्शेंगे. जब भी कुरआन पढ़ने का इरादा हो तो अऊज़ोबिल्लाह पढ़नी ज़रूरी है यहाँ तक कि बीच में दुनिया की बातचीत हो तो दोबारा शुरू करने के लिये अऊज़ो पढ़नी ज़रूरी है क्योंकि कुरआन हिदायत की किताब है और शैतान कभी न चाहेगा कि बन्दा राहे रास्त पर रहे. अल्लाह ने अऊज़ो बिल्लाह पढ़ने का हुक्म देकर शैतान के शर से मेहफ़ूज़ फ़रमाया. शैतान का तसल्लुत उन लोगों पर नहीं होता जो ईमान लाते हैं और ख़ुदा पर भरोसा करते हैं. शैतान का ज़ोर उन्हीं पर चलता है जो उसे अपना सरपरस्त बनाते हैं और उसके बहाने से शिर्क करते हैं.

सूरए बनी इस्राईल में उन्हें उनकी अपनी तारीख़ की रौशनी में बताया गया कि अगर तुम इस घमन्ड में हो कि अल्लाह के चहीते और मेहबूब हो तो यह ख़ुद को धोखा देना है. तुम्हारी अपनी तारीख़ गवाह है कि जब तुमने ख़ुदा से बग़ावत की तो तुमपर मार भी पड़ी. ख़ुदा की रहमत के मुस्तहिक़ तुम उस वक़्त हुए जब तुमने इस्लाह की राह अपनाई.

साथ ही मेअराज के वाक़ए को बताकर मुश्रिकीन और बनी इस्राईल दोनों पर यह वाज़ेह कर दिया गया कि अब मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक़्सा दोनों अमानतें तुम ख़ाइनों से छीन कर इसी नबी के हवाले कर देने का फ़ैसला हो चुका है. जिसको सुर्ख़रू होना हो वह अपनी रविश बदल कर इस रसूल की हिदायत के मुताबिक़ कर ले वरना अपनी ज़िद और सरकशी के नतीजे भुगतने के लिये तैयार हो जाए.

इसी ज़िम्न में इख़लाक़ और तमद्दुन के दो बड़े उसूल बयान किये गए जिनपर ज़िंदगी के निज़ाम को क़ाइम करने के लिये मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को यह आख़िरी किताब दी गई. यह गोया इस्लाम का मन्शूर है जिसे मदीने में इस्लामी रियासत क़ाइम से एक साल पहले सबके सामने पेश कर दिया गया. मक्के के काफ़िरों के सामने भी और एहले किताब के सामने भी (और अब तमाम इन्सानों के लिये क़यामत तक यही मन्शूर काफ़ी है).

फ़रमाया गया हर इन्सान का शगुन हमने उसके गले में डाल दिया है और क़यामत के दिन हम उसका नामए अअमाल निकालेंगे और कहेंगे ले पढ़ ले अपना नामए अअमाल. आज अपना हिसाब करने के लिये तू ख़ुद ही काफ़ी है. जो सीधी राह पर होगा उसका फ़ायदा उसी को होगा. जो गुमराह होगा उसका वबाल उसी पर होगा. कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा.

फिर फ़रमाया गया हमारा क़ानून यह है कि जब तक हम पैग़म्बर न भेज दें, हम अज़ाब देने वाले नहीं और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशहाल लोगों को हुक्म (ढील) देते हैं वो उसमें नाफ़रमानियाँ करने लगते हैं. तब अज़ाबे इलाही का फ़ैसला उसी बस्ती पर चस्पाँ हो जाता है और हम उसे बरबाद करके रख देते हैं. नूह अलैहिस्सलाम के बाद हमने कितनी ही नस्लों को बरबाद किया. तेरा रब अपने बन्दों के गुनाहों से पूरी तरह बाख़बर है और सब कुछ देख रहा है. जो दुनिया चाहता है, हम जिसको जितना चाहते हैं दे देते हैं फिर उसकी क़िस्मत में जहन्नम लिख देते हैं जिसमें वह दाख़िल होगा. और जो आख़िरत का ख़्वाहिशमन्द हो और उसके लिये वैसी ही कोशिश करे जैसी करनी चाहिये और वह मूमिन हो तो ऐसों की कोशिशें हमारे नज़दीक क़ाबिले क़द्र होंगी इनको भी और उनको भी (दोनों को) हम दुनिया दे रहे हैं. यह तेरे रब का अतिय्या है कोई इसे रोकने वाला नहीं मगर देख लो दुनिया में ही हमने एक गिरोह को दूसरे पर कैसी फ़ज़ीलत दे रखी है और आख़िरत में उसके दर्जे और भी ज़ियादा होंगे और फ़ज़ीलत भी बढ़चढ़ कर होगी. फिर तम्बीह फ़रमाई गई कि ख़ुदा के साथ किसी को मअबूद न बनाया जाए वरना मलामत ज़दा बेयारो मददगार बनकर बैठे रह जाओगे.

फ़रमाया गया तुम्हारे रब ने फ़ैसला फ़रमा दिया है कि (१) इबादत सिर्फ़ अल्लाह की करो.(२) माँ बाप के साथ नेक सुलूक करो.(३)रिश्तेदारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का हक़ दो.(४) फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो.(५) अगर किसी की ज़रूरत पूरी न करो, तो नर्मी से जवाब दे दो. (६) न कंजूसी करो न फ़ुज़ूल ख़र्ची, बीच की राह अपनाओ.(७) अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो.(८) ज़िना के क़रीब भी न फटको.(९) क़ानूनी जवाज़ के बिना किसी को क़त्ल न करो.(१०)क़ानूनी हदों से बाहर यतीम के माल के पास भी न फटको.(११) बाहमी क़ौलो क़रार की पाबन्दी करो.(१२)नाप तौल में कमी बेशी न करो.(१३) जिस बात का तुम्हें इल्म न हो उसके पीछे मत पड़ो.(१४)घमन्ड और तकब्बुर की चाल न चलो. ये वो हिक्मत की बातें हैं जो तुम्हारे रब ने तुमपर वही की हैं. सीधे रास्ते पर साबित-क़दमी के लिये नमाज़ के इहतिमाम की ताकीद की और फ़रमाया नमाज़ क़ाइम करो ज़वाले आफ़ताब से लेकर रात के अन्धेरे तक और फ़ज्र के कुरआन का इल्तिज़ाम करो क्योंकि फ़ज्र में पढ़े जाने वाले कुरआन के ख़ास तौर पर अल्लाह के फ़रिश्ते गवाह बनते हैं. और रात को तहज्जुद पढ़ो ताकि तुम्हारा अल्लाह तुम्हें मक़ामे मेहमूद पर फ़ाइज़ कर दे और दुआ करो कि परवर्दिगार तू मुझे जहाँ भी ले जा, सच्चाई के साथ ले जा और जहाँ

से भी निकाल, सच्चाई के साथ निकाल और अपनी तरफ़ से एक इक़्तिदार को मेरा मददगार बना. और ऐलान कर दो कि हक़ आ गया और बातिल मिट गया बातिल तो है ही मिटने के लिये.

हर ज़माने की जिहालतों में से एक यह है कि लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तिला रहे हैं कि बशर कभी पैग़म्बर नहीं हो सकता. इसी लिये जब कोई रसूल आया तो उन्होंने यह देख कर कि यह तो खाता पीता है, बीवी बच्चे रखता है, गोश्त पोस्त का बना हुआ है, फ़ैसला कर दिया कि यह पैग़म्बर नहीं है क्योंकि यह हमारी तरह एक बशर है. और जब वह गुज़र गया तो एक मुद्दत के बाद उसके मानने वालों में ऐसे लोग पैदा हुए जो कहने लगे वह बशर नहीं था क्योंकि वह पैग़म्बर था. चुनांचे किसी ने अल्लाह का बेटा कहा और किसी ने उसको अल्लाह ही बना लिया. किसी ने कहा अल्लाह इसमें समा गया है. ग़रज़ बशरियत और नबुव्वत का इन जाहिलों के नज़दीक जमा होना एक मुअम्मा बना रहा. हालांकि बात बिल्कुल खुली है कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को पैग़म्बर बनाकर भेजते. जब बशर ज़मीन पर बसते हैं तो उनकी रहनुमाई के लिये बशर ही को रसूल बनाया गया.

आगे बताया गया कि इस दुनिया में बज़ाहिर सरकशों और नाफ़रमानों को ढील मिलती है और एहले हक़ को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की आज़माइशों से गुज़रना पड़ता है. यह सूरते हाल देखकर बहुत से लोग ईमान खो बैठते हैं और उनके लिये सब्र करना और सच्चाई पर डटे रहना मुश्किल हो जाता है. इस आज़माइश में सिर्फ़ वही लोग साबित क़दम रह सकते हैं जिनपर यह बात अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए कि यहाँ जो कुछ हो रहा है सब अल्लाह के इरादे के तहत हो रहा है और उसकी हिकमतों के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हो रहा है. लेकिन इन्सान का इल्म बहुत मेहदूद है वह अल्लाह की हिकमतों और मसलहतों का इहाता नहीं कर सकता. इस वजह से सही तरीक़ा यही है कि हिदायत के रास्ते में नामुआफ़िक़ और मुश्किल हालात भी पेश आएं तो आदमी उनसे हिम्मत न हारे और अल्लाह की हिकमत के ज़ाहिर होने का इन्तिज़ार करे. और यक़ीन रखे कि अगर इस दुनिया में अच्छे नतीजे न भी निकले तो आख़िरत में उसको अच्छा मक़ाम मिल कर रहेगा. इस हिकमते इलाही पर ईमान व यक़ीन और फिर सब्र यही दीन की अस्ल बुनियाद है. इस वजह से अल्लाह तआला ने जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को एक अज़ीम मुहिम यानी फ़िरऔन के मुक़ाबले के लिये मुन्तख़ब किया तो आपको इस सब्र की तरबियत के लिये एक ख़ास बन्दे के पास भेजा जिन्हें आम तौर पर हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम कहा जाता है. इस लिये कि यह चीज़ सिर्फ़ जानने की नहीं बल्कि अमली तरबियत की मुहताज है. यहाँ यह वाक़िआ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके वास्ते से आपके उस दौर के साथियों को इस मक़सद से सुनाया गया कि अल्लाह के बाग़ियों और नाफ़रमानों को जो दनदनाते देख रहे हो उससे हिरासाँ और मरऊब होने की ज़रूरत नहीं. इस दुनिया में अगर किसी मिस्कीन और ग़रीब की किश्ती में छेद कर दिया जाता है तो उसमें आइन्दा उसी की भलाई मक़सूद होती है. और अगर ज़ालिमों की किसी बस्ती में किसी गिरती हुई दीवार को सहारा दिया जाता है तो उसमें भी किसी मज़लूम के लिये भलाई पोशीदा होती है लेकिन इन्सान का मेहदूद इल्म अल्लाह के सारे भेदों का इहाता नहीं कर सकता.

फिर एक सवाल के जवाब में एक आदिल और मुन्सिफ़ बादशाह ज़ुलक़रनैन का ज़िक्र करके क़ुरैश को इब्रत दिलाई जाती है कि एक मूमिन बन्दा ज़ुलक़रनैन था जो मश्रिक़ और मग़रिब के तमाम इलाक़ों को जीत कर भी हर कामयाबी पर अल्लाह का शुक्रगुज़ार होता था और हर क़दम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ उठाता था और एक तुम हो कि ज़रा सा इक़्तिदार मिला हुआ है तो उसके नशे में अल्लाह, आख़िरत और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबका मज़ाक़ उड़ाते हो. बार बार मोजिज़े तलब करने के जवाब में फ़रमाया देखने वाली आँख के लिये तो इस काइनात और ख़ुद तुम्हारी ज़िंदगी में इतनी निशानियाँ इलाह परस्ती, तौहीद और आख़िरत की भरी पड़ी हैं कि अगर समन्दर रौशनाई बन जाएं तब भी उन्हें लिखा नहीं जा सकता. पस जो यह समझता है कि उसे एक दिन अल्लाह के सामने जाना है उसे चाहिये कि किसी को अल्लाह का शरीक बनाए बग़ैर ख़ालिस एक ही ख़ुदा की बन्दगी करे

और उसके एहकामात के मुताबिक़ अमल करे.

सूरए मरयम में सबसे पहले हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की उस दुआ का बयान किया गया जो उन्होंने अपने बुढ़ापे में और अपनी बीवी के बाँझ होने के बावुजूद एक बेटे के लिये की और अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कुबूल करके उन्हें हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के पैदा होने की ख़ुशख़बरी सुनाई. यह वाक़िआ हज़रत मरयम के यहाँ मोजिज़े के तौर पर बग़ैर बाप के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश का वाक़िआ बयान करने से पहले तमहीद के तौर पर बयान किया गया है कि हज़रत यहया अलैहिस्सलाम की विलादत भी आम क़ानून से हटी हुई है कि मर्द बूढ़ा हो गया था और औरत बिल्कुल बाँझ और औलाद पैदा करने के नाएहल थी, मगर जब अल्लाह ने चाहा तो उनके औलाद हो गई. मगर हज़रत यहया ने तो इलाह होने का दावा नहीं किया और न किसी ने उन्हें इलाह बनाया.

फिर हज़रत मरयम की पाकीज़ा ज़िंदगी और उनकी इबादत गुज़ारी का हाल बयान किया गया. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बारे में बताया गया कि लोगों के ऐतिराज़ के जवाब में ख़ुद हज़रत ईसा ने पालने में ही अपने बन्दे होने और अल्लाह की तरफ़ से नमाज़ और ज़कात की हिदायत पाने की मनादी की फिर बताया कि इन बदबख़्तों की हालत पर अफ़सोस है कि ये सब जानते बूझते अल्लाह के एक फ़रमाँबरदार बन्दे को अल्लाह का बेटा और उसकी इबादतगुज़ार माँ को अल्लाह की बीवी बना रहे हैं. ऐ नबी ! जो बातें ये लोग बताते हैं उनपर सब्र करो और अपने रब की हम्दो सना के साथ उसकी तस्बीह करो सूरज निकलने से पहले(फ़ज्र) और डूबने से पहले(अस्र) और रात के औक़ात में तस्बीह करो (इशा) और दिन के किनारों पर भी(ज़ोहर और मग़रिब), शायद कि तुम राज़ी हो जाओ जो तुम्हें आइन्दा मिलने वाला है और निगाह उठाकर भी न देखो दुनियवी ज़िंदगी की उस शानो शौकत की तरफ़ जो हमने उन मुख़्तलिफ़ लोगों को दे रखी है. वह तो हमने इन्हें आज़माने के लिये दी है. और तेरे रब का दिया हुआ रिज़्क़े हलाल ही बेहतर और हमेशा रहने वाला है कि एहले ईमान फ़ासिकों फ़ाजिरों की तरह जाइज़ और नाजाइज़ पैसे जमा करके दुनियावी चमक दमक से मरऊब नहीं होते बल्कि वो तो जो पाक कमाई अपनी मेहनत से कमाते हैं चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो वही उनके लिये बेहतर है जो दुनिया से आख़िरत तक बरक़रार रहेगी. फिर फ़रमाया अपने एहलो अयाल को नमाज़ की तलक़ीन करो और ख़ुद भी इसके पाबन्द रहो. हम तुमसे कोई रिज़्क़ नहीं चाहते. रिज़्क़ तो हम ख़ुद देते हैं और बेहतरीन अंजाम तक़वा इख़्तियार करने वालों का है. यह न समझना कि नमाज़ पढ़ने से अल्लाह की ज़ात को कुछ मिलता है, नमाज़ पढ़ने वाला ही इससे फ़ाइदा उठाता है कि तक़वा की सलाहियत पैदा होती है और यही परहेज़गारी उसे दुनिया और आख़िरत की मुस्तक़िल कामयाबी अता करती है.

सूरए अम्बिया के पहले चार रुकू में इस हक़ीक़त की फिर याददिहानी कराई गई कि मुहासिबे का वक़्त क़रीब आगया है और लोगों का हाल यह है कि ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और जो ताज़ा याददिहानी अल्लाह की तरफ़ से आई है उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं. क्या ये नहीं समझते कि हमने कितनी ही बस्तियों को हलाक कर दिया जिनके लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे. बस जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो भाग खड़े हुए. हमने कहा - अब कहाँ भागते हो. इसपर वो वावेला करने लगे - हाए हमारी कमबख़्ती, बेशक हमही अपनी जानों पर ज़ुल्म ढाने वालों में से थे. वो यही वावेला करते रहे यहाँ तक कि हमने उनको ख़सो ख़ाशाक और राख बनाकर रख दिया.

इन्सान जल्दबाज़ी के ख़मीर से पैदा हुआ इसलिये जल्दी मचा रहा है कि आख़िर अज़ाब का वादा कब पूरा होगा. काश ये कुफ़्र वाले जान सकते कि उस वक़्त जब ये दोज़ख़ के अज़ाब को न अपने चेहरों से दफ़ा कर सकेंगे, न अपनी पीठों से और न कहीं से मदद हासिल कर सकेंगे. बल्कि वह घड़ी उनपर अचानक आ धमकेगी और उनको मबहूत कर देगी. हमने मूसा और हारून को हक़ और बातिल के बीच फ़र्क़ करने वाली कसौटी, रौशनी और याददिहानी अता फ़रमाई उनके लिये जो ग़ैब में रहते हुए रब से डरते हैं और वो क़यामत से लरज़ाँ रहते हैं और यह भी एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने नाज़िल

फ़रमाई है तो क्या तुम इसके मुन्किर बने रहोगे.

आगे का हिस्सा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तज़किरे से शुरू होता है यह बताते हुए कि हम ने उन्हें वह हिदायत व मअरिफ़त अता फ़रमाई जो उनके शायाने शान थी और वह यूंही नहीं बख़्श दी थी. बल्कि बड़े कड़े इम्तिहानों से गुज़ारकर बख़्शी थी जिनके ज़रिये उन्होंने अपने आप को इसका हक़दार साबित कर दिखाया. इस तरह यह बताना मक़सूद है कि तुम लोग अपने अन्दर तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की किसी सुन्नत पर चलने की भी सकत नहीं रखते लेकिन उनके साथ निस्बत के दावेदार हो. और इस निस्बत के बल पर अपने आपको दुनिया और आख़िरत दोनों में बड़े से बड़े मरतबे का हक़दार समझते हो. फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ किसी भी ख़ुशफ़हमी की हौसला अफ़ज़ाई नहीं की जाती. वह जिसको भी अपनी मअरिफ़त और हिक्मत अता करता है उसका ज़र्फ़ और हौसला देखकर अता करता है.

फिर उनकी जवानी का हाल बयान किया कि अगरचे वह एक बुत परस्त क़ौम और मुश्रिक और बुत बनाने वाले ख़ानदान में पैदा हुए थे लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें तौहीद का वह नूर अता फ़रमाया कि जिसकी रौशनी से दुनिया आजतक मुनव्वर है और क़यामत तक मुनव्वर रहेगी. उन्होंने होश संभालते ही अपने घर वालों और अपनी क़ौम के लोगों को दावत दी कि ये मूर्तियां क्या हैं जिनपर तुम धरना दिये बैठे हो. इस कमउमरी में और ऐसे माहौल में वही यह नारा लगा सकता है जिसे अल्लाह की ख़ास इनायत हासिल हो. इस सवाल का उन्हें भी वही जवाब मिला जो हमेशा से गुमराह लोग देते आए हैं कि हमारे बाप दादा इनकी इबादत करते आए हैं. उन्होंने पूरी बेख़ौफ़ी से कहा - तुम और तुम्हारे बाप दादा (जो ख़ुद हज़रत इब्राहीम के भी अजदाद थे) सब खुली गुमराही में रहे और तुम भी हो. कोई गुमराही इस दलील से हिदायत नहीं बन जाती कि वह बाप दादा से होती चली आई है.

फिर हज़रत इब्राहीम ने मौक़ा पाकर सब छोटे बुतों को पाश पाश कर दिया और बड़े बुत को रहने दिया. जब हज़रत इब्राहीम पर शुबह करके उन्होंने बाज़पुर्स की तो आपने कहा - मुझसे क्या पूछते है, इन बुतों से ही पूछो कि इनका यह हाल किसने किया है. बल्कि मैं तो यह समझता हूँ कि यह सारी हरकत इस बड़े बुत की है. हज़रत इब्राहीम ने अपनी हिक्मत से पूरी क़ौम को ऐसे मक़ाम पर ला खड़ा किया कि उन्होंने ख़ुद ऐतिराफ़ किया कि ये बुत क्या बताएंगे, ये तो बोल ही नहीं सकते. तो आपने कहा - फिर ये किस मर्ज़ की दवा हैं. तुम ऐसे बेबस बुतों के पूजते हो.

अपनी ग़लती मानने के बजाए क़ौम ने खिसियाकर आपको आग में डाल दिया. तअस्सुब में लोगों की अक़्लें इसी तरह मारी जाती हैं. मगर अल्लाह ने उस आग को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिये ठन्डक और सलामती बनाया. अल्लाह के लिये यह कुछ मुश्किल नहीं. वही हर चीज़ में तासीर पैदा करता है. क्या देखते नहीं कि एक ही दवा से कितने लोग अच्छे हो जाते हैं और उस दवा से जिसे मरना लिखा होता है उसकी तबीअत उल्टी ख़राब हो जाती है. इस पर भी लोगों की आँखें न खुलीं तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी और चचाज़ाद भाई हज़रत लूत अलैहिस्सलाम हिजरत करके निकल खड़े हुए और अल्लाह ने उन दोनों को अलग अलग ठिकाने दिये. फिर सफ़ाईये तरतीब के साथ नबियों का ज़िक्र किया गया जो सब्र और शुक्र के इम्तिहानों से गुज़रे और उनमें सौ फ़ीसदी कामयाब रहे.

इसके बाद **सूरए हज** है. यह मक्की दौर की आख़िरी सूरत है जब्कि कुरैश के ज़ुल्मो सितम से तंग आकर मुसलमानों ने मदीना हिजरत शुरू कर दी थी और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिजरत का वक़्त भी क़रीब आ गया था. इसमें कुरैश को ख़ुदा के ग़ज़ब से डराते हुए और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत और बैतुल्लाह की तामीर करने के मक़सद की रौशनी में वाज़ेह किया गया कि इस घर के मुतवल्ली होने के अस्ल हक़दार मुश्रिकीन नहीं बल्कि वो मुसलमान हैं जिनको यहाँ से निकालने के लिये उनपर ज़ुल्म ढाए जा रहे हैं. इस तरह कुरैश को ख़ुदा का ग़द्दार और ग़ासिब क़रार दिया गया और मुसलमानों को बशारत दी गई कि अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा. और कुरैश की जगह उनको अपनी अमानत का अमीन बनाएगा. याद करें वह वक़्त जब हमने इब्राहीम को इस घर की तामीर का

हुक्म दिया था इस हिदायत के साथ कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, क़याम, रुकू और सुजूद करने वालों के लिये पाक साफ़ रखना. लोगों में हज का ऐलान करदो कि वो तुम्हारे पास दूर दराज़ मक़ाम से पैदल और सवार होकर आएं तोकि वो फ़ाइदे देखें जो उनके लिये यहाँ रखे गए हैं. और कुछ मुक़र्रर दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे हैं. ख़ुद भी खाएं और ज़रूरत मन्दों को भी खिलाएं. मुराद यह कि कुरबानी का गोश्त ख़ुद भी खा सकते हैं और मोहताज फ़क़ीर के अलावा दोस्त हमसाए और रिश्तेदारों को खिलाना भी जाइज़ है. (ज़मानए जाहिलियत के लोग कुरबानी का गोश्त खाना बुरा समझते थे). फिर अपना मैल कुचैल दूर करें. हज और कुरबानी के बाद एहराम खोल दें हजामत कराएं और नहाएं धोएं. अगर नज़्र मानी हो तो नज़्र पूरी करें और ख़ानए काबा का तवाफ़ करें.

यह था तामीरे काबा का मक़सद कि जो कोई अल्लाह की क़ाइम की हुई हुरमतों का एहतिराम करे तो यह अल्लाह के नज़दीक उसके लिये बेहतर है. फिर बताया गया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये मवेशी जानवर हलाल किये. बहीरा, साइमा, वसीला, हाम - ये मुख़्तलिफ़ जावरों की मुख़्तलिफ़ हालतें थीं, इन्हें छोड़ दिया जाता. एहले अरब इनसे ख़िदमत लेना, ज़िबह करना, फ़ाइदा उटाना हराम समझते थे . अल्लाह ने तमाम मवेशी हलाल किये हैं सिवाए उन जानवरों के जो पहले बताए जा चुके हैं. पस बुतों की गन्दगी से बचो और झूटी बातों से गुरेज़ करो. यकसू होकर अल्लाह के बन्दे बनो, उसके साथ किसी को शरीक न करो. जो कोई अल्लाह के साथ शरीक करे तो गोया वह आसमान से गिर गया और परिन्दों ने उचक लिया. हवा ने उसे ऐसी जगह फैंक दिया जहाँ उसके चीथड़े उड़ जाएं.

जाहिलियत के ज़माने में मुश्रिकीन बुतों के नाम पर जानवर ज़िबह करके उसका ख़ून और गोश्त बुतों पर चढ़ाते थे और अल्लाह के नाम की कुरबानी का ख़ून गोश्त काबे के पास लाकर रखते थे और ख़ून दीवारों पर मलते थे. वो समझते थे कि कुरबानी का यह हिस्सा अल्लाह को पहुंचता है. अल्लाह तआला ने फ़रमाया ख़ून और गोश्त नहीं बल्कि अल्लाह के यहाँ तुम्हारा जज़बए कुरबानी पहुंचता है.

सूरए नूर के तीन रुकू का ख़ुलासा ऊपर पेश किया गया था. यह सूरत मदनी है इससे पहली **सूरए अल मूमिनून** मक्की थी. इसमें ईमान के जो तक़ाज़े जैसे कि नमाज़ों में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ, लग़वियात से परहेज़, तज़कियए नफ़्स, शर्मगाहों की हिफ़ाज़त और जिन्सी जज़बात क़ाबू में रखना, अपनी अमानतों और क़ौलो क़रार की पासदारी, इनके असरात ज़ाहिर है कि मक्का में रहते हुए मुसलमानों की इन्फ़िरादी ज़िंदगियों ही में उभर सकते थे इसलिये कि मक्के में उनकी कोई इज्तिमाई और मुअस्सिर कुव्वत नहीं थी. लेकिन हिजरत के बाद जब मुसलमान मदीने में जमा होगए और उनकी एक इज्तिमाई और सियासी शक्ल बन गई तब वक़्त आया कि उस ईमान के तक़ाज़े उनकी मआशिरती ज़िंदगी में भी नुमायाँ हों. चुनांचे जिस रफ़्तार से हालात साज़गार होते गए, मुआशिरे की इस्लाह के अहकाम नाज़िल होते गए और ईमान की नूरानियत जो अब तक सिर्फ़ अफ़राद तक मेहदूद थी, अब एक पूरे मुआशिरे को मुनव्वर करने लगी. सूरए नूर इसी सिलसिले की एक सूरत है जिसमें ईमान वालों को उन अहकामात और हिदायत से आगाह किया गया है जो उनके नए तशकील पाने वाले मुआशिरे को ईमान के असरात से मज़ीद फ़ायदा पहुंचाने और ईमान की नफ़ी करने वाले अनासिर से मेहफ़ूज़ रखने के लिये ज़रूरी थे.

सूरए नूर की शुरूआत ही में फ़रमाया गया कि यह एक अज़ीम सूरत है. हमारा उतारा हुआ फ़रमान, जो अहकाम दिये जा रहे हैं उनकी हैसियत फ़र्ज़ की सी है जिनकी इताअत बे चूनो चरा की जानी चाहिये. फिर ज़िना का ज़िक्र किया गया क्योंकि समाज के इन्तिशार और ख़राबी में सबसे ज़ियादा इसी का दख़्ल है. समाज के इस्तिहकाम का इन्हिसार इस बात पर है कि रहम के रिश्तों की पाकीज़गी बरकरार रखी जाए, उनका एहतिराम किया जाए और उन्हें हर तरह के ख़लल और बिगाड़ से मेहफ़ूज़ रखा जाए. ज़िना इस पाकीज़गी को ख़त्म करके समाज को बिलआख़िर जानवरों का एक रेवड़ बना कर रख देता है. रिश्तों पर से बाहमी एतिमाद उठ जाता है. इसी लिये इस्लाम ने पहले दिन से इस इन्तिशार को रोकने

के लिये तफ़सील से अहकाम जारी किये और ज़िना की सज़ा को अल्लाह का दीन क़रार दिया. आजकल यह फ़लसफ़ा खड़ा किया गया है कि जो लोग जुर्म करते हैं वह ज़हनी बीमारी के सबब करते हैं इसलिये वो सज़ा के नहीं बल्कि हमदर्दी के मुस्तहिक़ हैं, उनकी तरबियत और इस्लाह की जानी चाहिये. इस फ़लसफ़े की वजह से ख़ुदा की ज़मीन गुन्डों और बदमआशों से भर गई है और चोरों और ज़िना करने वालों की हमदर्दी में लोग यहां तक कि मुसलमान भी नऊज़ोबिल्लाह ख़ुदा से ज़ियादा रहीम बन गए हैं.

समाज को ख़राबियों से बचाने के लिये जो अहकाम दिये गए उनमें से कुछ ये हैं -

(१)मुसलमान मर्द और औरत का हक़ यह है कि दूसरे लोग उनके बारे में अच्छे गुमान रखें और जब तक दलील से किसी का ग़लत होना साबित न हो जाए, सुनी सुनाई बातों पर कोई फ़ैसला नहीं करना चाहिये. (२) शरीर लोगों को भी खुली छूट नहीं मिलनी चाहिये बल्कि उन्हें बुराई से रोकना चाहिये और मसनून तरीक़ों की तलक़ीन करनी चाहिये. (३)बदमआश लोग अच्छे समाज को बरदाश्त नहीं कर सकते इस लिये बेहयाई का चर्चा करते हैं मगर यह बात अल्लाह के नज़दीक बहुत बुरी है. बेहयाई फैलाने वालों के लिये दुनिया और आख़िरत में रुसवा करने वाला अज़ाब है. (४) बे इजाज़त किसी के घर के अन्दर दाख़िल नहीं होना चाहिये. तीन बार इजाज़त मांगने पर भी कोई जवाब न आए तो वापस लौट जाना चाहिये. (५) औरत और मर्द दोनों को आमना सामना होने पर निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया गया क्योंकि दोने के बीच सबसे पहला क़ासिद निगाह होती है. (६) नफ़सियाती इश्तिआल से बचने के लिये बावक़ार लिबास पहनने और दुपट्टा ओढ़ने को ज़रूरी क़रार दिया गया जिससे सर और गला छुपा रहे यहाँ तक कि सीना भी ढक जाए. (७) बेवा औरतों और लौंडी व गुलाम तक का निकाह करने की ताकीद की गई और कहा गया कि जब कोई निकाह की उम्र को पहुंच जाए तो लाज़िमन निकाह का बन्दोबस्त होना चाहिये.

इसके बाद काइनात की निशानियों पर ग़ौर करने की दावत दी गई कि इस काइनात में तमाम इख़्तियारात और तसर्रुफ़ात का मालिक अल्लाह है उसका कोई शरीक नहीं. हर चीज़ उसी की हम्द और तस्बीह करती है. इस लिये इन्सानों का भी फ़र्ज़ है कि उसपर ईमान लाएं, उसकी इबादत और इताअत में किसी को शरीक करके उसके ग़ज़ब के मुस्तहिक़ न बनें. यहाँ इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी की इताअत न की जाए. हमारे यहाँ एक बीमारी यह फैला हुई है कि शौहर अगर बेहयाई आर बेपर्दिगी चाहता है तो औरत यह कहकर वही रविश अपना लेती है कि शौहर की मर्ज़ी यही है, इस का कोई जवाज़ नहीं.

आगे मुनाफ़िक़ों को तम्बीह की गई कि उन्होंने यह रविश अपना रखी है कि अपने मफ़ाद की हद तक ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कहना मानते हैं और मफ़ाद के ख़िलाफ़ उनके हुक्म को टाल जाते हैं. यह रविश अब नहीं चलेगी. मानना है तो पूरी यकसूई से ख़ुदा और रसूल का हुक्म मानो वरना ख़ुदा को तुम्हारी कोई परवाह नहीं है. रसूल के सच्चे साथियों को निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ख़ुशख़बरी दी गई कि ज़मीन की ख़िलाफ़त तुम्हें मिलेगी और दीन के दुश्मन और मुख़ालिफ़ीन तुम्हारा और दीन का कुछ न बिगाड़ सकेंगे. तुम नमाज़ का एहतिमाम करो, ज़कात अदा करते रहो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इताअत पर पूरी दिलजमई से डटे रहो. जल्द वह वक़्त आने वाला है कि ख़ुदा ख़ौफ़ की हालत को अम्न और इत्मीनान से बदल देगा.

सूरत के आख़िर में कुछ मआशिरती अहकामात दिये गए हैं. जैसे कि घर के नौकर चाकर और नाबालिग़ बच्चों को चाहिये कि इन तीन औक़ात में इजाज़त लेकर कमरे में दाख़िल हों (१) फ़ज्र नमाज़ से पहले (२) दोपहर को जब कपड़े उतारकर लेटते हो (३) इशा की नमाज़ के बाद, ये तीन औक़ात तुम्हारे पर्दे के हैं. इन औक़ात के अलावा बिला इजाज़त आएं तो तुम्हारे ऊपर और उनपर कोई गुनाह न होगा.

फिर यह बताया गया कि बच्चे जब बड़े हो जाएं तो चाहिये कि इसी तरह इजाज़त लेकर आया करें जिस तरह उनके बड़े इजाज़त लेते रहे हैं. जो औरतें अधेड़ उम्र की हैं और उन्हें निकाह में दिलचस्पी न

हो वो अगर अपनी चादर उतार कर रख दें तो उनपर कोई गुनाह नहीं. बशर्तेकि ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों. फिर भी वो एहतियात करें और हयादारी बरतें तो उनके हक़ में अच्छा है.

अब **सूरए अल फ़ुरक़ान** निहायत मुअस्सिर अन्दाज़ में शुरू होती है. बड़ी ही बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे पर हक़ और बातिल के बीच फ़र्क़ कर देने वाली किताब उतारी ताकि वह दुनिया वालों को होशियार करदे कि वह ज़ात आसमानों और ज़मीन की बादशाही की मालिक, किसी बेटे या बादशाही में किसी की शिरकत से पाक है. उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की. लोगों ने ऐसी हस्ती को छोड़कर उन्हें मअबूद बना लिया जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि खुद पैदा किये जाते हैं, जो न जिला सकते हैं न मार सकते हैं.

सूरत के खातिमें पर खुदा के अस्ल बन्दे कहलाने के मुस्तहिक़ अफ़राद का नक़्शा खींचा है. रहमान के अस्ल बन्दे वो हैं जो नर्म चाल चलने वाले, जाहिलों से बहस में न उलझने वाले, इबादत गुज़ार, अज़ाब से बचने की दुआएं मांगने वाले, एतिदाल के साथ ख़र्च करने वाले, नाहक़ किसी का हक़ न मारने वले, बदकारी, झूटी गवाही और लग्व बातों से बचने वाले और अपने रब की आयतों का गहरा असर कुबूल करने वाले हैं, ऐसे बन्दों का जन्नतों में शानदार इस्तिक़बाल होगा.

सूरए शुअरा की शुरूआत इन अल्फ़ाज़ से होती है - ऐ मुहम्मद ! क्या आप अपनी जान इस ग़म में खो देंगे कि ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते. हम चाहें तो इनके मुतालिबे के मुताबिक़ आसमान से ऐसी निशानी नाज़िल कर सकते हैं कि इनकी गर्दनें उसके आगे झुक जाएं. मगर इस तरह का जबरी ईमान हमें नहीं चाहिये. हम चाहते हैं कि लोग अक़्ल और समझदारी से काम लेकर ईमान लाएं.

सूरए नम्ल में यह वाज़ेह फ़रमा दिया कि इस किताब को अल्लाह ने हिदायत और बशारत बनाकर नाज़िल किया है लेकिन इसपर ईमान वही लोग लाएंगे जिनके दिलों में आख़िरत का ख़ौफ़ है. जो लोग दुनिया के ऐशो आराम में मगन हैं वो अपने मशग़लों को छोड़ नहीं सकते उनके अअमाल उनकी निगाहों में इस तरह ख़ुशनुमा बना दिये गए हैं कि अब कोई याददिहानी और डर उनपर कारगर नहीं हो सकता. इस सिलसिले में उनके सामने तीन क़िस्म की सीरतों के नमूने रखे गए - एक नमूना फ़िरऔन, क़ौमे समूद के सरदारों और क़ौमे लूत के सरकशों का जिनकी सीरत आख़िरत की जवाबदिही के तसव्वुर से ख़ाली थी और इसके नतीजे में उन्होंने नफ़्स की बन्दिगी इख़्तियार की, किसी निशानी को भी देखकर ईमान लाने को तैयार न हुए बल्कि उल्टे उन लोगों के दुश्मन बन गए जिन्होंने उन्हें नेकी की तरफ़ बुलाया. उन्होंने अपनी बदकारियों पर इसरार किया आख़िर उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने पकड़ा और एक लम्हे पहले भी उन्हें होश न आया.

दूसरा नमूना हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का है जिन्हें अल्लाह ने दौलत, हुकूमत और शौकतो हशमत से इस पैमाने पर नवाज़ा था कि मक्के के कुफ़्फ़ार ख़्वाब भी न देख सकते थे. लेकिन इसके बावुजूद अपने आपको खुदा के हुज़ूर जवाबदेह समझते थे और उन्हें एहसास था कि उन्हें जो कुछ हासिल है वह सब खुदा की अता से हासिल है इसलिये उनका सर हमेशा उस हक़ीक़ी इनाम देने वाले के आगे झुका रहता और नफ़्स के घमन्ड का ज़रा सा शाइबा भी उनकी सीरत में नहीं पाया जाता था.

तीसरा नमूना मल्कए सबा का है जो तारीख़े अरब की निहायत दौलत मन्द क़ौम की हुक्मराँ थी. उसके पास वो तमाम अस्बाब जमा थे जो किसी भी इन्सान को घमन्ड और सरकशी में मुब्तिला कर सकते थे और सरदाराने क़ुरैश के मुक़ाबले में लाखों दर्जे ज़ियादा हासिल थे. फिर वह एक मुश्रिक क़ौम से तअल्लुक़ रखती थी, बाप दादा की तक़लीद की बिना पर भी और अपनी क़ौम में सरदारी बरक़रार रखने की ख़ातिर भी उस के लिये शिर्क के दीन को छोड़कर तौहीद के दीन का अपनाना इससे कहीं ज़ियादा मुश्किल काम था जितना किसी आम मुश्रिक के लिये हो सकता है.लेकिन जब उसपर हक़ वाज़ेह हो गया तो कोई चीज़ उसे हक़ को कुबूल करने से न रोक सकी क्योंकि गुमराही सिर्फ़ इस वजह से थी कि उसकी

आँख ही मुश्रिकाना माहौल में खुली थी लेकिन नफ़्स की बन्दिगी और ख़्वाहिशात की गुलामी का मर्ज़ उसपर मुसल्लत नहीं था. इसलिये ख़ुदा के हुज़ूर जवाबदिही का एहसास उसके ज़मीर में मौजूद था इसी वजह से उसे हक़ कुबूल करने की सआदत हासिल हुई.

इसके बाद काइनात की चन्द नुमायाँतरीन मशहूर हक़ाइक़ की तरफ़ इशारे किये गए हैं. और पूछा गया है कि अल्लाह बेहतर है या वो मअबूद जिन्हें लोग ख़ुदा का शरीक बनाए बैठे हैं. फिर बनावटी मअबूदों के मुतअल्लिक़ जो लोग यह ऐतिक़ाद रखते हैं कि उन्हें ग़ैब का इल्म हासिल है, इसकी तर्दीद की गई. और फ़रमाया गया अल्लाह के सिवा आसमान और ज़मीन में कोई ग़ैब का इल्म नहीं रखता और जिन दूसरों के बारे में यह गुमान किया जाता है कि वो भी ग़ैब का इल्म रखते हैं और इसी बिना पर उन्हें ख़ुदाई में शरीक ठहरा लिया गया है, उन को तो अपने मुस्तक़बिल तक की ख़बर नहीं है. वो नहीं जाते कि क़यामत की घड़ी कब आएगी और कब अल्लाह तआला उनको दोबारा उठाकर खड़ा करेगा, और क्या गुज़रेगी उस रोज़ जब सूर फूंका जाएगा और हौल खा जाएंगे वो सब जो आसमान और ज़मीन में हैं सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह हौल से बचाना चाहेगा और सब कान दबाए उसके हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे. आज तुम पहाड़ों को देखते हो और समझते हो कि वो ख़ूब गड़े हुए हैं मगर उस वक़्त ये बादलों की तरह उड़ रहे होंगे. यह अल्लाह की क़ुदरत का करिश्मा होगा जिसने हर चीज़ को हिकमत के साथ उस्तुवार किया है. वह ख़ूब जानता है कि तुम लोग क्या कर रहे हो. जो शख़्स भलाई लेकर आएगा उसे ज़ियादा बेहतर सिला मिलेगा और ऐसे ही लोग उस दिन हौल से मेहफ़ूज़ होंगे और जो बुराई लेकर आएगा ऐसे सब लोग औंधे मुंह आग में फैंक दिये जाएंगे. क्या तुम लोग इसके सिवा कोई और बदला पा सकते हो, जैसा करो, वैसा भरो.

इन से फ़रमा दीजिये कि मुझे तो यही हुक्म दिया गया है कि इस शहर यानी मक्के के रब की बन्दिगी करूं जिसने इसे हरमे मुहतरम बनाया है और जो हर चीज़ का मालिक है. मुझे हुक्म दिया गया है कि मुस्लिम यानी फ़रमाँबरदार बनकर रहूं और यह कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ अब जो हिदायत इख़्तियार करेगा और जो गुमराह होगा वह अपने किये का ख़ुद ज़िम्मेदार होगा, इन से कह दीजिये कि मैं तो बस ख़बरदार करने वाला हूँ.

सूरए अल-क़सस में उन शुबहात को दूर किया गया है जो एहले मक्का नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रिसालत पर कर रहे थे और उनके उन बहानों रद किया गया है जो ईमान न लाने के लिये पेश कर रहे थे. इस ग़रज़ के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान किया गया और चन्द हक़ाइक़ ज़हन नशीन कराए गए. मसलन जो कुछ अल्लाह तआला करना चाहता है उस के लिये ग़ैर मेहसूस तरीक़े पर अस्बाब फ़राहम कर देता है. जिस बच्चे के हाथों फ़िरऔन का तख़्ता उलटना था, अल्लाह ने उस बच्चे की परवरिश फ़िरऔन के घर में करा दी और फ़िरऔन यह न जान सका कि किसकी परवरिश कर रहा है. अपने ख़ुदा से लड़ करु कौन कामयाब हो सकता है.

इसी तरह बताया गया कि नबुव्वत की ज़िम्मेदारी बड़े जश्न मनाकर और आसमान व ज़मीन में ज़बरदस्त ऐलान करके नहीं दी गई. तुम हैरत करते हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को चुपके से नबुव्वत कैसे मिल गई. मगर मूसा अलैहिस्सलाम को भी इसी तरह रस्ता चलते हमने नबुव्वत दे दी थी कि किसी को कानों कान ख़बर न हुई कि आज तूरे सीना की वादिये ऐमन में क्या वाक़िआ पेश आया. ख़ुद हज़रत मूसा भी एक पल पहले न जानते थे कि उन्हें क्या चीज़ मिलने वाली है. वह आग लेने गए और पैग़म्बरी मिल गई. फिर यह कि जिस बन्दे से अल्लाह कोई काम लेना चाहता है वह बग़ैर किसी लाव लश्कर और सरो सामान के उठता है. बज़ाहिर कोई ताक़त उसकी मददगार नहीं मगर बड़े बड़े लाव लश्कर वाले आख़िर कार उसके मुक़ाबले में बेबस हो जाते हैं. आज जो निस्बत तुम अपने और मुहम्मद के बीच पा रहे हो उससे कहीं ज़ियादा फ़र्क़ मूसा और फिरऔन की ताक़त के दरमियान था, मगर देख लो कौन जीता और कौन हारा.

सीरते इब्ने हिशाम में है कि हिजरते हबशा के बाद जब नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बेअसत

और दावत की ख़बरें हबशा में फैलीं तो वहाँ से बीस के क़रीब ईसाईयों का एक गिरोह आया और नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मस्जिदे हराम में मिला. कुरैश के बहुत से लोग भी वहाँ मौजूद थे. ईसाई वफ़्द ने आपसे सवालात किये. आपने जवाब दिया और कुरआन की आयतें उन्हें सुनाईं. उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वो ईमान ले आए. मजलिस बरख़ास्त होने के बाद अबूजहल और उसके साथियों ने रास्ते में उन्हें जा लिया और उन्हें मलामत की. इसपर उन्होंने कहा - तुमपर सलामती हो, हम जिहालत बाज़ी नहीं कर सकते. हमें हमारे तरीक़े पर चलने दो तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो हम अपने आपको जान बूझ कर भलाई से मेहरूम नहीं रख सकते. इस ज़िम्न में ये आयत नाज़िल हुई कि जिन लोगों को इस से पहले हमने किताब दी थी वो इस कुरआन पर ईमान लाते हैं. उन्हें जब यह कुरआन सुनाया जाता है तो वो कहते हैं हम इसपर ईमान लाए वाक़ई यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, हम तो पहले ही मुस्लिम हैं. ये लोग हैं जिन्हें उनका अज्र दूना दियाजाएगा (पिछले नबी पर और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाने की वजह से) उस साबित क़दमी के बदले जो उन्होंने दिखाई. वो बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं. हम उन्हें जो रोज़ी देते हैं उसमें से वो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं. जब उन्होंने बेहूदा बात सुनी, वो किनाराकश हो गए और कहा हमारा अमल हमारे साथ और तुम्हारा अमल तुम्हारे साथ है. तुमको सलाम है. हम जाहिलों का सा तरीक़ा नहीं अपनाना चाहते. ऐ नबी सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम ! आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते. मगर अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है. वह ख़ूब जानता है कौन हिदायत कुबूल करने वाले हैं.

आगे की आयतें आपके चचा अबूतालिब के बारे में उतरीं. उनका आख़िरी वक़्त आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी हद तक इन्तिहाई कोशिश की कि वह कलिमा पढ़ लें मगर उन्होंने आबाई मज़हब पर ही जान देने को तरजीह दी. ख़ुलासा यह है कि अल्लाह तआला मक्के वालों को ग़ैरत दिला रहा है कि तुम अपने घर आई हुई नेमत को ठुकरा रहे हो हालांकि दूर दूर से लोग इस की ख़बरें सुन सुन कर आ रहे हैं इसकी क़द्र पहचानकर इससे फ़ाइदा उठा रहे हैं. तुम कितने बदनसीब हो कि इससे मेहरूम हो. आपको ख़िताब करके यह बात कही जा रही है कि आप चाहते हैं कि क़ौम के लोग अज़ीज़ो अक़ारिब ईमान ले आएं मगर हिदायत तो अल्लाह के इख़्तियार में है. वह इस नेमत से उन्हीं लोगों को फ़ैज़याब करता है जिनमें वह हिदायत को कुबूल करने की आमादगी पाता है. तुम्हारे रिश्तेदारों में अगर यह जौहर मौजूद न हो तो उन्हें यह फ़ैज़ कैसे नसीब हो सकता है.

सूरए अन्कबूत की आयतों में एहले ईमान में अज़्म और हिम्मत पैदा करने के साथ साथ कुफ्फ़ार को समझाने का पहलू भी छूटने नहीं पाया. तौहीद और आख़िरत दोनों हक़ीक़तों को दलीलों के साथ उनके सामने बयान किया गया. फ़रमाया अगर तुम उन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमान को किसने पैदा किया और चाँद और सूरज को किसने तुम्हारी ख़िदमत पर लगाया है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने ! फिर ये कैसे धोका खा रहे हैं अगर तुम इनसे पूछो कि आसमान से पानी किसने बरसाया और उसके बाद मुर्दा ज़मीन को जिंदगी अता की, तो वो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने ! कहो अल्हम्दु लिल्लाह, यानी जब सारे काम अल्लाह कर रहा है तो फिर हम्द और तारीफ़ और इबादत भी उसी की होनी चाहिये. यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ भी नहीं मगर एक खेल और दिल का बहलावा है. यानी इसकी हक़ीक़त बस इतनी सी है जैसे थोड़ी देर के लिये खेल कूद लें और फिर अपने घर को सिधारें. यहाँ जो बादशाह बन गया वह हक़ीक़त में बादशाह नहीं है बल्कि बादशाही का (ड्रामा) खेल कर रहा है. एक वक़्त आता है जब उसका यह खेल ख़त्म हो जाता है और उसी तरह ख़ाली हाथ रुख़सत हो जाता है जिस तरह दुनिया में आया था. अस्ल ज़िंदगी का घर तो आख़िरत का घर है, काश ये लोग जानते.

क्या ये लोग नहीं देखते कि हमने चारों तरफ़ लूटमार करने वालों के बीच मक्के को पुर अम्न हरम बना दिया है, फिर भी ये बातिल को मानते हैं और अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं. क्या ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम नहीं है. जो लोग हमारी ख़ातिर मुजाहिदा करेंगे, उन्हें हम अपने रास्ते की तरफ़ हिदायत देंगे और यक़ीनन अल्लाह दीन के काम करने वालों के साथ है.

अब **सूरए रूम** शुरू होती है. ६१५ ईसवी में ईरानियों ने रूमियों पर ग़लबा हासिल कर लिया. इसी साल मुसलमानों ने हबशा की तरफ़ हिजरत की. रूम पर आतिशपरस्तों के क़ब्ज़े से लोगों में चर्चा होने लगा कि आसमानी मज़हब मानने वाले आग की पूजा करने वालों से हार गए. इस बात को मुश्रिकों ने अपने मज़हब की सच्चाई की दलील समझा. चुनांचे ईरान के बादशाह ख़ुसरौ परवेज़ ने बैतुल मक़दिस पर क़ब्ज़ा करके हिरक़िल को ख़त लिखा - तू कहता है कि तुझे अपने रब पर भरोसा है, क्यों न तेरे रब ने यरोशलम को मेरे हाथ से बचा लिया. आज भी दुनिया में यही हो रहा है कि कम ज़र्फ़ों को दुनिया में ज़रा सी कामयाबी होती है तो फ़ौरन अल्लाह से मन्सूब मज़हब (दीने इस्लाम) का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं. इसी तरह अरब के मुश्रिक भी कहने लगे थे कि मुसलमानों का दीन भी इसी तरह मिटा दिया जाएगा.

इस पर अल्लाह तआला ने यह सूरत नाज़िल फ़रमाई. फ़रमाया गया - हाँ, क़रीब की सरज़मीन में रूमी मग़लूब हो गए हैं मगर चन्द साल के अन्दर अन्दर वो ग़ालिब आ जाएंगे. और यह दिन वह होगा जब अल्लाह की दी हुई फ़त्ह से एहले ईमान ख़ुश हो रहे होंगे. इसमें दो बातों की पेशीनगोई की गई, एक यह कि रूमी ग़ालिब आएंगे, दूसरी यह कि मुसलमानों को भी फ़त्ह नसीब होगी. किसी को यक़ीन नहीं आता था कि यह पेशीनगोइयाँ पूरी हो सकती हैं. चुनांचे कुफ़्फ़ार ने ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया और आठ साल तक रूमी भी हार पर हार खाते रहे. यहाँ तक कि क़ैसर कुस्तुनतुनिया छोड़ कर त्यूनिस में पनाह लेने पर मजबूर हो गया. और मुसलमानों पर मक्के वालों के ज़ुल्म इन्तिहा को पहुंच गए. ६२२ ईसवी में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए. ६२४ ईसवी में हिरक़िल ने आज़र बाइजान में घुसकर ईरानियों पर पुश्त से हमला किया और ईरान के आतिशकदे की ईंट से ईंट बजा दी. इधर मुसलमानों पर मक्के के मुश्रिकों ने बद्र के मक़ाम पर हमला किया मगर अल्लाह ने उनका ज़ोर तोड़ कर रखदिया और मुसलमानों को तारीख़ की अज़ीमुश्शान फ़त्ह नसीब हुई और इस तरह दोनं पेशीनगोइयाँ सच साबित हुईं.

सूरए रूम से यह बात सामने आ गई कि इन्सान बज़ाहिर वही कुछ देखता है जो उसकी आँखों के सामने होता है मगर इस ज़ाहिर के पर्दे के पीछे जो कुछ है उसकी उसे ख़बर नहीं होती. जब यह ज़ाहिरबीनी दुनिया के ज़रा ज़रा से मामलात में ग़लत अन्दाज़ों का सबब बनकर बाज़ औक़ात इन्सान को बड़े नुक़सान में डाल देती है, तो फिर पूरी ज़िंदगी के पूरे सरमाए, माल, औलाद, जायदाद सबको दाव पर लगा देना - कि ख़ुदा परस्ती के बजाय दुनिया परस्ती पर चलने लगना कितनी बड़ी ग़लती है. रूम और ईरान के मामले का रुख़ आख़िरत के मज़मून की तरफ़ फेरते हुए बहुत अच्छे तरीक़े से समझाया गया है कि आख़िरत मुमकिन भी है और मअक़ूल भी, इसकी ज़रूरत भी है इन्सान की ज़िंदगी के निज़ाम को दुरुस्त रखने के लिये भी यह ज़रूरी है कि आदमी आख़िरत का यक़ीन रखकर मौजूदा ज़िंदगी का प्रोग्राम बनाए वरना वही ग़लती होगी जो ज़ाहिर पर ऐतिमाद करके बड़े बड़े फ़ैसले करने से अक्सर होती है.

सूरए लुक़मान में अल्लाह तआला ने हज़रत लुक़मान की वो नसीहतें बयान की हैं जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं. एहले अरब हज़रत लुक़मान की हिक्मत और दानिश पर फ़ख़्र करते थे. और उनके किस्से सारे अरब में मशहूर थे. अल्लाह ने इसी से इस्तिदलाल करते हुए बताया है कि हज़रत लुक़मान ने भी अपने बेटे को वही नसीहतें कीं जिनकी दावत यह किताब दे रही है. यह इस बात का सुबूत है कि अक़्ले सलीम इस दावत के हक़ में है और जो लोग इसकी मुख़ालिफ़त कर रहे हैं वो दर अस्ल अक़्ले सलीम और फ़ितरत से जंग कर रहे हैं. साथ ही इस बातकी तरफ़ भी इशारा हो गया कि लुक़मान अपने बेटे को जिन बातों पर अमल करने के लिये इस दिल-सोज़ी से नसीहत करते थे आज उन्हीं बातों से रोकने के लिये बापों की तरफ़ से बेटों पर सितम ढाए जा रहे हैं.

सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें बताया गया कि उनके अन्दर भी जो लोग सही फ़िक्र और दानिश रखने वाले गुज़रे हैं उन्होंने भी इन्हीं बातें की तालीम दी है जो पैग़म्बर दे रहे हैं. यानी यही बेतें इन्सानी फ़ितरत के मुताबिक़ हैं. आज भी यह बात मल्हूज़ रहे कि मग़रिबी फ़लसफ़ी जब अख़लाक़ियात पर बहस करते

हैं तो वो भी उसकी बुनियाद आम अक़्ल के जाने पहचाने और जाने माने उसूलों पर ही रखते हैं. मगर आख़िरत और ख़ुदा का इन्कार करने की वजह से वो यह नहीं बता पाते कि इन्सान को आख़िर नेकी क्यों करनी चाहिये और बदी से क्यों बचना चाहिये. अस्ल बुनियाद यानी अपने पैदा करने वाले को राज़ी करना और उसकी नाराज़गी से बचना, बस इससे भागते हैं. इसकी सज़ा मिली है कि तमाम अख़लाक़ियात बेबुनियाद और बेमानी होकर रह गई हैं. इन फ़लसफ़ियों ने बुनियाद यह बताई है कि फ़ायदा पहुंचे, लज़्ज़त मिले, ख़ुशी हासिल हो और ज़ियादा से ज़ियादा यह कि फ़र्ज़ बराए फ़र्ज़, यानी ड्युटी है इसे ड्युटी समझकर अदा करो. नतीजा यह निकला है कि नफ़्स परस्ती और हवसनाकी को ख़ुशी कहा जाता है और इसी को ज़िंदगी का मक़सद बना लिया गया है. महब्बत के रिश्ते भी मअसूमियत और इन्सानियत से ख़ाली हो गए हैं और सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का नाम महब्बत रख लिया गया है. इस फ़लसफ़े ने उनकी सब अच्छी तालीमात का हुलिया बिगाड़ दिया है. ख़ानदानी निज़ाम के बख़िये उधड़ गए हैं और मफ़ाद परस्ती के सिवा कोई रिश्ता क़ाबिले एहतिराम नहीं रह गया है.

इसके बरख़िलाफ़ कुरआन न सिर्फ़ अख़लाक़ियात बल्कि सारे दीन की बुनियाद फ़ितरत पर रखता है. मगर जानवरों की फ़ितरत पर नहीं बल्कि इन्सानी फ़ितरत पर जिसकी गुत्थियां सुलझाने और ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिये उसने किताबें और रसूल भेजे हैं और सही इन्सानी फ़ितरत को उनके ज़रिये वाज़ेह किया है. और बताया है कि अस्ल चीज़ अपने रब को राज़ी करना और उसकी नाराज़गी से बचना है. इसपर मुश्रिकीन ऐतिराज़ करते थे कि इस हक़ीक़त को झुटलाने का अन्जाम क़यामत का आना है, तो वह क्यों नहीं आ जाती. इस का जवाब सूरत के आख़िर में दिया गया है कि क़यामत के आने का वक़्त अल्लाह को मालूम है. अगर आम इन्सानों को मालूम नहीं तो इसका मतलब यह नहीं कि वह हक़ीक़त नहीं है. बारिश एक हक़ीक़त है मगर क्या तुम बता सकते हो कि जो बादल आए हैं वो ज़रूर बरसेंगे या ऐसे ही बढ़ जाएंगे. इसी तरह औरत को हमल से औलाद होगी मगर क्या होगी. यही हाल मौत का है जो ज़बरदस्त हक़ीक़त है मगर किस को कब मौत आएगी कौन जानता है. जब इन चीज़ों का इल्म नहीं जबकि ये हक़ीक़त हैं तो फिर क़यामत का अगर इल्म न हो तो वह कैसे मशकूक हो गई. उस घड़ी का सही इल्म अल्लाह ही के पास है जैसे बारिश, होने वाली औलाद, कल क्या होगा और किस सरज़मीन में इन्सान को मौत आएगी, यह सब अल्लाह ही जानने वाला है.

सूरए अस-सज्दा में है काफ़िर कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे तो फिर क्या हम नए सिरे से पैदा किये जाएंगे. आप उनसे कहिये मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है वह तुम को पूरा पूरा अपने क़ब्ज़े में ले लेगा फिर तुम अपने रब की तरफ़ पलटाए जाओगे. काश आप देखते कि मुजरिम सर झुकाए रब के हुज़ूर खड़े होंगे. उस वक़्त वो कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और सुन लिया अब हमें वापस भेज दे हम अच्छे अमल करेंगे. अब हमें यक़ीन आ गया. जवाब में इरशाद होगा हम चाहते तो हर एक को यह सब दिखाकर हिदायत दे देते मगर हम हक़ीक़त को ओझल रखकर इम्तिहान लेना चाहते थे. और हमारी बात पूरी हो गई कि जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से (जो नाफ़रमानी करेंगे) भर देंगे. आज के दिन भूल जाने का मज़ा चखो. आज अपने करतूतों की वजह से दाइमी अज़ाब चखो. हमारी आयतों पर वो लोग ईमान लाते हैं जिन्हें यह बात सुनाकर नसीहत की जाती है तो वो सज्दे में गिर पड़ते हैं (यह सज्दे की आयत है) और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं. तकब्बुर नहीं करते. उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं. अपने रब को उम्मीद और ख़ौफ़ से पुकारते हैं. हमने जो रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं कोई नहीं जानता कि हमने उनकी आँखों की ठन्डक के लिये क्या कुछ तैयार कर रखा है. यह उनके अअमाल का बदला है. मूमिन और फ़ासिक़ दोनों बराबर नहीं हो सकते. ईमान और नेक अमल वाले के लिये जन्नतुल मावा है. यह उनके अअमाल के बदले उनकी ज़ियाफ़त के तौर पर है. जिन्होंने फ़िस्क़ किया उनका ठिकाना जहन्नम है. जब जब उससे निकलना चाहेंगे, ढकेल दिये जाएंगे. उनसे कहा जाएगा जिस अज़ाब को तुम झुटलाते थे अब उसे चखो. इस बड़े अज़ाब से पहले दुनिया में भी हम छोटे छोटे अज़ाब देते रहेंगे ताकि तुम बाज़ आ जाओ.

सूरए अहज़ाब में तीन अहम वाक़िआत से बहस की गई है. एक ग़ज़वए ख़न्दक़, दूसरा ग़ज़वए बनी कुरैज़ा और तीसरा हज़रत ज़ैनब से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का निकाह, यानी मुंह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई औरत से निकाह.

जंगे उहद में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की एक हिदायत को नज़रअन्दाज़ करने के सबब जो हार हुई उसका असर अरबों पर यह पड़ा कि मुश्रिकीन, यहूद और मुनाफ़िक़ीन तीनों की हिम्मतें बढ़ गईं और वो समझने लगे कि मुसलमानों को ख़त्म करना कुछ ज़ियादा मुश्किल काम नहीं है. चुनांचे उहद की जंग को अभी दो माह भी नहीं हुए थे कि नज्द के एक क़बीले ने मदीने पर छापा मारने की तैयारियां शुरू कर दीं. फिर एक साल बाद तीन क़बीलों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दीन सिखाने के लिये आदमी मांगे. हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ७० के क़रीब मुबल्लिग़ीन उनके क़बीलों में भेजे. मगर उन्हें धोका देकर शहीद कर दिया गया. जिसपर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक माह तक इन क़बीलों के ख़िलाफ़ कुनूते नाज़िलह पढ़ी. इन्हीं हालात में शव्वाल ५ हिजरी मे अरब के बहुत से क़बीलों ने मदीने पर एक मिली जुली कुव्वत के साथ हमला किया. तीन चार हज़ार की बस्ती पर जिनमें कई मुनाफ़िक़ भी शामिल थे, दस बारह हज़ार की तादाद ने हमला किया. अगर यह हमला अचानक हो जाता तो सख़्त तबाहकुन होता मगर तहरीके इस्लामी के हमदर्द और मुतास्सिरीन अफ़राद जो मुख़ालिफ़ क़बीलों में रहते थे, नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सारी कार रवाइयों की ख़बरें देते रहते थे. इस लिये हमले से कुछ दिन पहले आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीने के दो तरफ़ ख़न्दक़ खोद डाली और तीन हज़ार अफ़राद के साथ जंग के लिये तैयार हो गए.

कुफ़्फ़ार के ख़्वाबो ख़याल में भी न था कि उन्हें ख़न्दक़ से पाला पड़ेगा, क्योंकि अरब इससे पहले इस तरीक़े पर कभी नहीं लड़े थे. अरब के मुश्रिकों को जाड़े के मौसम में लम्बे अर्से के मुहासिरे के लिये मजबूर होना पड़ा जिसके लिये वो घरों से तैयार होकर नहीं आए थे. यह मुहासिरा २५ दिनों से ज़ियादा जारी रहा. कुछ तो मुहासिरे की तवालत, कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जंगी तदबीरें और फिर एक रात अल्लाह ने ऐसी आँधी चलाई कि तमाम ख़ेमे उखड़ गए और कोई उनमें न ठहर सका. इस पूरे अर्से में एक बार शदीद हमला हुआ था जो सुब्ह से रात तक जारी रहा और पांचों वक़्त की नमाज़ें रात को जंग से फ़ारिग़ होकर एक साथ पढ़ी गईं.

मुसलमानों ने इन्तिहाई बेजिगरी से मुक़ाबला किया. मअरिकए ख़न्दक़ ख़त्म हुआ तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का हुक्म सुनाया कि अभी हथियार न खोले जाएं बल्कि यहूदी क़बीले बनी कुरैज़ा पर वार करके उनसे निपट लिया जाए. क्योंकि उन्होंने ग़द्दारी की थी. चुनांचे फ़ौरन ही मुसलमान उनके इलाके में पहुंच गए और यहूदियों के मुक़र्रर किये हुए सालिस हज़रत सअद बिन मआज़ के फ़ैसले के मुताबिक़ उनके तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया गया और औरतों बच्चों को ग़ुलाम बना लिया गया.

जंगे उहद से जंगे ख़न्दक़ तक का दो साल का तमाम अर्सा सख़्त बुहरानी ज़माना था मगर इसमें मुआशिरे के इस्तिहकाम और इस्लाह का काम जारी रहा. चुनांचे मुसलमानों के निकाह व तलाक़ के क़ानून इसी ज़माने में मुकम्मल हुए. विरासत का क़ानून नाज़िल हुआ और शराब और जुए को हराम किया गया. और दूसरे भी कई पहलुओं के मुतअल्लिक़ क़वानीन नाज़िल हुए. इस सिलसिले का एक अहम मसअला जो इस्लाह का तक़ाज़ा कर रहा था, वह मुंह बोलो बेटे का मसअला था जिसे लोग असली बेटे जैसा समझते थे, उसे विरासत में हिस्सा मिलता था, उससे मुंह बोली मां और मुंह बोली बहनें इस तरह बेतकल्लुफ़ होती थीं जैसे उसकी सगी मां और सगी बहनें हों. इसी तरह अगर वह मर जाए या अपनी बीवी को तलाक़ दे दे तो उसकी बीवी से उसका मुंह बोला बाप शादी नहीं कर सकता था.

ये बातें क़दम क़दम पर क़ुरआन के उन उसूलों और क़वानीन से टकरा रही थीं जो अल्लाह ने सूरए निसा और सूरए बक़रह में निकाह, तलाक़ और विरासत के बारे में उतारे हैं. साथ ही साथ यह बात अख़लाक़ी पहलू से भी बुरी थी कि कितना ही सगों की तरह समझा जाए, मगर फिर भी यह हक़ीक़ी बेटा या भाई नहीं था. और बहुत से ज़हन बेतकल्लुफ़ी का नाजाइज़ फ़ाइदा उठा लेते थे. ज़रूरत इस बात

की थी कि इन बुराइयों को रोका जाए. मगर यह रास्ता सिर्फ़ क़ानून बनाने से नहीं रुक सकता था. इस लिये अल्लाह ने ऐसे हालात पैदा किये कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़ुद इस रस्म को तोड़ना पड़ा. आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की फुफीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब को उनके शौहर ज़ैद बिन हारिसा ने तलाक़ दे दी जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुंह बोले बेटे थे तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत ज़ैनब से शादी कर लें. जब आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ज़ैद से उनका निकाह पढ़ाया था तो अरबों की यह रस्म तोड़ी थी कि वो आज़ाद किये हुए गुलाम को अपने बराबर का नहीं समझते थे. बल्कि उससे ग़ुलामें जैसा ही सुलूक करते थे. आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी फुफीज़ाद आज़ाद औरत से उनकी शादी करके यह साबित किया कि इस्लाम में आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम भी अशराफ़ का दर्जा रखता है. अब अल्लाह ने चाहा कि इस रस्म को भी तोड़ें कि मुंह बोले बेटे को सगा बेटा न समझा जाए .

इसी तरह पर्दे के अहकाम जारी हुए और क़रीबी रिश्तेदारों के अलावा ग़ैर मर्दों के साथ मेल जोल हराम क़रार दिया गया. अगर उन्हें बात करनी है या कुछ लेना देना हो तो पर्दे के पीछे से लें दें और औरतें ख़याल रखें कि आवाज़ में लोच न पैदा करें. कोई ऐसी हरकत न करें जिससे किसी मर्द को ग़लत फ़हमी हो. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बीवियों को तमाम मुसलमानों की माएं क़रार दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात के बाद उनसे निकाह हराम क़रार दिया गया. आम मुसलमान औरतों को हुक्म दिया गया कि जब भी घर से बाहर निकलें तो चादरों से अपने आप को ढांप कर निकलें, घूंघट निकाल लिया करें. इसी मौक़े पर इस बात का ऐलान किया गया कि नबी आख़िरी नबी हैं और चूंकि आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है लिहाज़ा जाहिलियत के दौर की जो रस्में जड़ पकड़ चुकी हैं उनका ख़ातिमा रसूल के ज़रिये ज़रूरी है. इसी वजह से अल्लाह ने हज़रत ज़ैद के तलाक़ देने के बाद हज़रत ज़ैनब का निकाह आप से कर दिया. अल्लाह तआला ने तरदीद फ़रमा दी कि ज़ैद सिरे से आपके बेटे नहीं हुए फिर उनकी बीवी बहू किस तरह होंगी. अल्लाह ने फ़रमाया कि आप मर्दों में से किसी के बाप नहीं, फिर बहू का सवाल कहाँ पैदा होता है.

दूसरी हैसियत आप की रसूल की थी और रसूल जिहालत की बातें ख़त्म करने के लिये आते हैं. तीसरी बात यह कि आप ख़ातिमुन नबिय्यीन हैं, आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं, लिहाज़ा यह ज़रूरी है कि इस क़बीह रस्म को आप ख़ुद ख़त्म करके जाएं.

कुफ़्फ़ार, मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बदनाम करने की कोशिश करते रहते थे मगर अल्लाह ने वाज़ेह फ़रमा दिया कि दुनिया कुछ भी कहे मगर नबी का मरतबा यह है कि ख़ुद ख़ुदा अपनी तरफ़ से उनपर दुरूद भेजता है, और फ़रिश्तों को भी दुरूद भेजते रहने का हुक्म देता है. इस लिये ईमान वालों को भी ज़रूरी है कि वो अपने नबी से बेहद महब्बत रखें, उनके गिरवीदा हो जाएं, उनकी मदहो सना करें, उनके हक़ में कामिल सलामती की दुआ करें, दिल जान से उनका साथ दें. जो लोग ख़ुदा और रसूल को अज़ियत देते हैं उनपर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह ने लानत फ़रमाई है. उनके लिये रुसवा करने वाला अज़ाब है. फ़रमाया कि जिन्हों ने इन्कार किया उनके लिये जहन्नम की आग है, न तो वो जहन्नम में मरेंगे, न अज़ाब कम होगा. हम हर इन्कार करने वाले को ऐसी ही सज़ा देते हैं. वो वहां चीख़ेंगे - ऐ हमारे रब, हमें यहां से निकाल, अब हम पहले जैसे काम नहीं करेंगे. बल्कि अच्छे अमल करेंगे. उनसे कहा जाएगा कि क्या हम ने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि समझदार सबक़ ले लेता. और तुम्हारे पास तो डराने वाला भी आया था. अब मज़ा चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होता. ज़मीन और आसमान के ख़ुफ़िया राज़ अल्लाह ही जानता है. वह सीनों तक की बातें जानता है. उसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है और जो इन्कार करेगा उसका वबाल उसी के सर पर है. काफ़िरों का कुफ़्र रब की नाराज़गी बढ़ाता है, ख़सारे में इज़ाफ़ा करता है.

सूरत के आख़िर में फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला लोगों के करतूतों पर पकड़ करने लगे तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न बचे. लेकिन यह अल्लाह का करम है कि वह लोगों को एक मुक़र्रर वक़्त

तक मुहलत देता है. जब उनका वक़्त पूरा होगा तो अल्लाह अपने बन्दों को देख लेगा कि उनके साथ कैसा सुलूक करना चाहिये.

सूरए यासीन कुरआन का दिल है, इसमें कुरआन की दावत को पुरज़ोर अन्दाज़ में पेश किया गया है. किसी शख़्स की आख़िरी घड़ियों में सूरए यासीन सुनाने का हुक्म दिया गया है ताकि इस्लामी अक़ीदे ताज़ा हो जाएं और आख़िरत की मन्ज़िल को मरने वाला अपनी आँखों से देख ले. फ़रमाया गया कि जब सूर फूंका जाएगा तो लोग अपनी क़ब्रों से उठ खड़े होंगे, घबरा कर कहेंगे यह किसने हमें हमारी ख़्वाबगाह से उठाया. उनसे कहा जाएगा यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने तुम से वादा किया था और रसूलों की बात सच्ची थी. एक ज़ोर की आवाज़ होगी और सब के सब हमारे सामने हाजिर कर दिये जाएंगे. आज किसी पर ज़र्रा भर ज़ुल्म न किया जाएगा. जैसा तुम अमल करते थे वैसा ही बदला दिया जाएगा. जन्नती लोग मज़े में होंगे. वो और उनकी बीवियां सायों में मसनदों पर तकिया लगाए होंगे. उनके लिये हर तरह की लज़्ज़तें और वो जो कुछ मांगेंगे. रब्बे रहीम की तरफ़ से उनको सलाम कहा जाएगा और मुजरिमों से कहा जाएगा तुम छट कर अलग हो जाओ आदम के बेटो, क्या मैंने तुमको हिदायत न की थी कि शैतान की बन्दिगी न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है. और मेरी बन्दिगी करो कि यह सीधा रास्ता है. मगर इसके बावुजूद उसने तुम में से बहुत सों को गुमराह किया. क्या तुम अक़्ल नहीं रखते. यह वह जहन्नम है जिससे तुमको डराया जाता था. अब इसमें चले जाओ कि तुम इन्कार करते थे. आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे. उनके हाथ बोलेंगे, पाँव गवाही देंगे ये दुनिया में जो कुछ करते थे.

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अजीब अन्दाज़ में तसल्ली दी गई कि लोग आपकी मुख़ालिफ़त में जो कुछ कह रहे हैं उसका ग़म न कीजिये. जो लोग अल्लाह पर फबतियां कसने से बाज़ नहीं आते अगर वो आपका मज़ाक़ उड़ाएं तो क्या तअज्जुब. उनका मामला अल्लाह पर छोड़ दीजिये. फ़रमाया क्या इन्सान ने ग़ौर नहीं किया कि हमने उसे पानी की एक बूंद से पैदा किया. तो वह एक खुला हुआ दुशमन बन कर उठ खड़ा हुआ और उसने हमपर एक फबती चुस्त की और अपनी पैदाइश को भूल गया. कहता है कि भला हड्डियों को कौन ज़िंदा कर सकता है जबकि वो बोसीदा हो जाएंगी. ऐ मेहबूब आप कह दीजिये इनको वही ज़िंदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया था. वही है जिसने तुम्हारे हरे भरे दरख़्त से आग पैदा की और तुम उससे आग जला लेते हो. यानी तुम सरसब्ज़ दरख़्त से दो शाख़ें लेते हो और उनको आपस में रगड़ कर आग जला लेते हो. तो ख़ुदा के लिये राख और मिट्टी के अन्दर से ज़िंदगी नमूदार करते क्या देर लगती है. उसका मामला तो बस यूं है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है हो जा और वह हो जाती है. पस पाक है वह ज़ात जिसके यदे कुदरत में हर चीज़ का इख़्तियार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे.

सूरए साफ़्फ़ात में मक्के के काफ़िरों को बताया गया कि तुम जिस नबी की मुख़ालिफ़त कर रहे हो वह बहुत जल्द तुम पर ग़ालिब आ जाएगा. और तुम अल्लाह के लशकरों को खुद अपने सहन में उतरते देखोगे. तो ऐ नबी, सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम, ज़रा कुछ मुद्दत के लिये इन्हें इनके हाल पर छोड़ दीजिये और देखते रहिये कि बहुत जल्द ये भी ख़ूब देख लेंगे.

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की बेमिसाल कुरबानी का ज़िक्र फ़रमाया गया जब हज़रत ईब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ऐ मेरे परवर्दिगार मुझे एक नेक बेटा अता फ़रमा. फिर हमने उन्हें एक साबिर बेटे की बशारत दी. वह लड़का जब बड़ा हुआ तो एक रोज़ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा बेटा, मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं तुम्हें ज़िब्ह कर रहा हूं. बेटा, तेरा क्या ख़्याल है. हज़रत इस्माईल ने कहा, अब्बाजान जो कुछ आपको हुक्म दिया जा रहा है उसे पूरा कीजिये, इन्शाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में पाएंगे. आख़िर को उन दोनों ने सरे तसलीम ख़म किया और इब्राहीम ने बेटे को माथे के बल ज़मीन पर लिटा दिया ताकि ज़िब्ह करें. हमने उसे निदा दी, कहा ऐ इब्राहीम तूने ख़्वाब सच कर दिखाया. हम नेकी करने वालों को ऐसी ही जज़ा देते हैं यक़ीनन यह एक खुली हुई आज़माइश थी और हमने एक बड़ी कुरबानी

फ़िदिये में देकर उस बच्चे को छुड़ा लिया. और बाद के लोगों में इस सुन्नत को जारी कर दिया. सलामती हो इब्राहीम पर. हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. यक़ीनीन वह हमारे मूमिन बन्दों में से था.

इसी सूरत में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया गया. कि जब वह अल्लाह के हुक्म का इन्तज़ार किये बिना बस्ती छोड़ कर चले गए तो अल्लाह तआला उनसे नाराज़ हुआ. रास्ते में वह किश्ती में सवार हुए और ज़ियादा अफ़राद की वजह से जब वह डगमगाने लगी तो चिट्ठी डाली गई कि किसे किश्ती से उतरना होगा. चिट्ठी हज़रत यूनुस के नाम निकली और वह समन्दर में उतार दिये गए. फिर एक मछली ने उन्हें निगल लिया. उन्हें अपने क़ुसूर का एहसास हुआ और अल्लाह तआला से उन्हों ने तस्बीह पढ़कर माफ़ी मांगी - *ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तो मिनज़ ज़ालिमीन* - अगर यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में इस्तिग़फ़ार न करते तो क़यामत तक मछली के पेट में ही पड़े रहते. आख़िरकार बड़ी ख़राब हालत में मछली ने उन्हें एक चटियल मैदान में ज़मानि पर उगल दिया. और वहीं कुदरती तौर पर अल्लाह ने एक बेलदार दरख़्त उगा दिया जिसका फल उन्होंने ख़ाया. फिर अपनी क़ौम की तरफ़ पलटे, उन्हें इस्लाम की दावत दी, वो सब मुसलमान हुए. आप अपनी क़ौम में एक अर्से तक रहे. पाक है आपका रब, इज़्ज़त का मालिक और सलाम है रसूलों पर और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिये जो सारे जहान वालों का रब है. इन्सान को चाहिये कि ख़ालिस अल्लाह की बन्दिगी इख़्तियार करे और किसी दूसरे की इताअत से अपनी ख़ुदा परस्ती को आलूदा न करे और दीने ख़ालिस यानी बेमेल इताअत सिर्फ़ अल्लाह का हक़ है. रहे वो लोग जिन्होंने उसके सिवा दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं और कहते हैं कि हम उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिये करते हैं कि वो अल्लाह तक हमें पहुंचाने का ज़रिया हैं. अल्लाह यक़ीनन उनके दरमियान उन तमाम बातों का फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं. यानी अल्लाह तक पहुंचाने का ज़रिया बनने वालों के मुतअल्लिक़ भी उनमें कोई इत्तिफ़ाक़ नहीं. कोई चांद सूरज और सितारों को देवता बनाए हुए है, कोई किसी और को. इसका सबब यह है कि उनमें से किसी के पास इल्म नहीं है कि जिसकी बिना पर उनके अल्लाह तक पहुंचाने का ज़रिया होने का यक़ीन हो सके. और न कभी अल्लाह के पास नामों की कोई फ़हरिस्त आई है कि सब उनको इस हैसियत से मान लें. बस अन्धी अक़ीदत में मेहज़ अपने क़यास से अपने पिछलों की तक़लीद करते चले आ रहे हैं. इस लिये इख़्तिलाफ़ होना ज़रूरी है.

फिर अल्लाह तआला ने उन्हें काज़िबुन कुफ़्फ़ार कहा है. और कहा है कि अल्लाह किसी ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूटा और सच्चाई का इन्कार करने वाला हो. यानी ऐसे लोग झूटा घड़ा हुआ अक़ीदा लोगों में फैलाते हैं फिर फ़रमाया कि अगर अल्लाह चाहता कि किसी को अपना बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ ही में से किसी को यह मक़ाम देता (मगर ख़ालिक़ो मख़्लूक़ में यह रिश्ता मुमकिन नहीं.). चुनांचे पाक है वह इससे कि किसी को अपना बेटा बनाए. वह अल्लाह है अकेला ग़ालिब, यह मक़ाम कुरआन के मुश्किल मक़ामात से है. इसका वाज़ेह मतलब यह है कि अल्लाह जिसको भी अपना बेटा बनाता वह बहर हाल मख़्लूक़ होता. और मख़्लूक़ उलूहियत में शरीक नहीं हो सकती. हाँ सिर्फ़ बरगुज़ीदा बुज़ुर्ग हो सकती है इस लिये अल्लाह ने किसी को अपना बेटा नहीं बनाया. बनाता तो वह तुम्हें ज़रूर ख़बर करता. उसने अपने रसूल को बरगुज़ीदा किया है मगर वह भी उसके बन्दे और रसूल हैं, उलूहियत में उसके शरीक नहीं. हमने इस कुरआन में लोगों को तरह तरह की मिसालें दी हैं कि ये होश में आएं. ऐसा कुरआन जो अरबी ज़बान में है जिस में कोई कजी नहीं है.

अल्लाह एक मिसाल देता है. एक शख़्स तो वह जिसके मालिक बहुत से बद मिज़ाज आक़ा हों और हर एक उसको अपनी तरफ़ ख़ींच रहा हो कि वह उसकी ख़िदमत करे. और सब एक दूसरे के ख़िलाफ़ हुक्म जारी करते हों और जिसकी ख़िदमत करने यानी हुक्म मानने में वह कोताही करे. वही उसे डांटने फटकारने लगे और सज़ा देने पर तुल जाएं. इसके बरख़िलाफ़ वह शख़्स है जिसका सिर्फ़ एक ही आक़ा हो और उसे बस एक ही की ख़िदमत करनी हो और उसी एक को राज़ी रखना हो. एक का ग़ुलाम

अच्छा या बहुत से आक़ाओं का गुलाम ! ऐ नबी ! सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम आपको भी अल्लाह के सामने जाना है और इन लोगों को भी वहीं पहुंचना है. आख़िरकार क़यामत के दिन सब अपने रब के हुज़ूर अपना अपना मुक़दमा पेश करेंगे.

सूरए ज़ुमुर में अक़ीदे की इस्लाह का काम जारी है. वह अल्लाह ही है जो मौत के वक़्त रूहें क़ब्ज़ करता है. जो अभी नहीं मरा, उसकी रूह नींद में क़ब्ज़ कर लेता है यानी शऊर, फ़हम और इदराक की कुव्वतों को मुअत्तल कर देता है. फिर जिसपर वह मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ करता है उसे रोक लेता है और जिसे ज़िंदा रखना होता है उनकी रूहें एक मुक़र्ररा वक़्त के लिये वापस भेज देता है. यह कैफ़ियत इन्सान के साथ हर रोज़ होती है यानी वह रोज़ाना मरता है और जीता है. फिर सोने के बाद इन्सान नहीं कह सकता कि वह कल सही सलामत ज़िंदा ही उठेगा, वह मर भी सकता है. इस तरह जो इन्सान ख़ुदा के हाथ में इतना बेबस है वह कैसा सख़्त नादान है अगर उसी ख़ुदा से ग़ाफ़िल और मुहरिफ़ हो.

इसमें कुरआन का इन्कार करने वालों की हालत बयान करते हुए इरशाद फ़रमा दिया कि अल्लाह को छोड़ कर दूसरे सिफ़रशी उन्होंने समझ रखे हैं कि उन्हें ख़ुदा की पकड़ से बचा लेंगे जब्कि उनकी कोई हक़ीक़त नहीं, न वो किसी चीज़ पर इख़्तियार रखते हैं और न ही उन्हें कोई शऊर है. सिफ़ारिश का सारा इख़्तियार तो अल्लाह के हाथ है कि उसकी इजाज़त के बिना न कोई किसी की सिफ़ारिश कर सकेगा और न कोई ग़लत बात किसी के हक़ में कह सकेगा. दूसरी बात यह कि शफ़ाअत के बारे में ग़लत अक़ीदा क़ाइम कर लेने की वजह से उनका ऐतिमाद अपने घड़े हुए सिफ़ारिशियों पर क़ाइम हो गया है, इसी लिये जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र होता है तो आख़िरत पर हक़ीक़ी ईमान न रखने वालों के दिल धड़कने लगते हैं क्योंकि इस तरह उसकी पकड़ का तसब्वुर सामने आ जाता है. मगर जब अल्लाह को छोड़कर दूसरों का ज़िक्र किया जाता है तो उनके चेहरे ख़ुशी से दमकने लगते हैं क्योंकि इस तरह आख़िरत से बे क़ैद ज़िंदगी बसर करने का परवाना उनके हाथ आ जाता है. इस मसअले में फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में फ़रमा दिया गया - फ़रमा दीजिये, ऐ ख़ुदा, आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले, हाज़िरो ग़ाइब के जानने वाले, तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे है.

फ़िर फ़रमाया - ऐ नबी कह दो कि ऐ मेरे बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हों, यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है. वह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है. पलट आओ अपने रब की तरफ़ और मुतीअ हो जाओ इस से पहले कि तुमपर अज़ाब आ जाए. और फिर तुम्हें कहीं से मदद न मिल पाए और पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब की इससे पहले कि तुमपर अचानक अज़ाब आजाए और तुमको ख़बर न हो. कहीं ऐसा न हो कि बाद में कोई शख़्स कहे अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैंने अल्लाह की जनाब में की है बल्कि मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में था, या कहे काश अल्लाह ने मुझे हिदायत बख़्शी होती तो मैं भी परहेज़गार होता, या अज़ाब देख कर कहे काश मुझे एक और मौक़ा मिल जाता तो मैं नेकी करने वाला बन जाता. उससे कह जाएगा क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं फिर तूने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया. तू तो इन्कार करने वालों में था. जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूट बांधा, क़यामत के दिन उनके मुंह काले होंगे. जन्नत में मुतकब्बिरों के लिये कोई जगह नहीं है.

फ़रमाया हक़ का इन्कार करने वालों ने अल्लाह की क़द्र ही न की जैसा कि उसकी क़दर करने का हक़ है. उसकी कुदरते कामिला का हाल तो यह है कि क़यामत के दिन पूरी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे. पाक और बालातर है वह उस शिर्क से जो ये करते हैं. और उसी रोज़ सूर फूंका जाएगा तो वो सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे. जो आसमानों और ज़मीनों में है सिवाए उनके जिन्हें अल्लाह ज़िंदा रखना चाहता है. फिर एक दूसरा सूर फूंका जाएगा और यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे. ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी. अअमाल की किताब लाकर रख दी जाएगी. सारे रसूल और तमाम गवाह हाज़िर कर दिये जाएंगे. लोगों के दरमियान ठीक फ़ैसला

कर दिया जाएगा. और उनपर कोई जुल्म न होगा. और हर मुतनफ़्फ़स को जो कुछ भी उसने अमल किया था उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा. लोग जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है. इस फ़ैसले के बाद वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया था जहन्नम की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हांके जाएंगे और उसके कारिन्दे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे लोगों में से ऐसे रसूल नहीं आए थे जिन्होंने तुमको तुम्हारे रब की आयतें सुनाई हों और तुम्हें इस बात से डराया हो कि एक वक्त तुम्हें यह दिन भी देखना पड़ेगा. वो जवाब देंगे - हाँ आए थे. कहा जाएगा - दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में, यहां अब तुम्हें हमेशा हमेश रहना है. बड़ा ही बुरा ठिकाना है यह इन्कार करने वालों के लिये.

जो लोग अपने रब की नाफ़रमानी से परहेज़ करते थे उन्हें गिरोह दर गिरोह जन्नत की तफ़ ले जाया जाएगा. यहां तक कि जब वो वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े पहले ही खोले जा चुके होंगे तो उसके मुन्तज़िमीन उनसे कहेंगे - सलाम हो तुम पर तुम बहुत अच्छे रहे, दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा हमेशा के लिये. और कहेंगे शुक्र है अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया. अब हम जन्नत में जहां चाहें अपनी जगह बना सकते हैं. यह कितना अच्छा बदला है अमल करने वालों के लिये और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श के गिर्द घेरा डाले अपने रब की हम्द और तस्बीह कर रहे होंगे. और लोगों के दरमियान ठीक ठीक हक़ के साथ फ़ैसला चुका दिया जाएगा और पुकारा जाएगा - हम्द है अल्लाह के लिये जो सारे जहान वालों का रब है.

सूरए ज़ुमुर के बाद **सूरए अल-मूमिन** है और यह उतरी भी इस के बाद ही है. सूरए मूमिन में अल्लाह तआला ने मुसलमानों के एक बड़े एज़ाज़ का ज़िक्र फ़रमाया है वह यह है कि बन्दए मूमिन दुनिया में जिस हाल में भी हो, अल्लाह के नज़दीक इतना बरगुज़ीदा है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते जो अर्श के इर्द गिर्द रहते हैं और जो सब के सब अपने रब की हम्द और तस्बीह करते हैं, वो मुसलमानों के लिये मग़फ़िरत की दुआ मांगते रहते हैं. कि ऐ अल्लाह तू इनकी मग़फ़िरत फ़रमा और इनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले. ऐ हमारे रब, तू इन्हें जन्नते अदन में दाख़िल फ़रमा जिसका तूने इनसे वादा फ़रमाया है. इनके मा बाप और औलाद में से जो नेक हों उन्हें भी दाख़िल फ़रमा. तू क़ादिरे मुतलक़ और हकीम है. तूने इन्हें क़यामत के दिन की बुराइयों से बचा लिया. जिसको तूने इस दिन बचाया उसपर तूने बड़ा रहम किया और यही बड़ी कामयाबी है. अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि उनके लिये अर्श के फ़रिश्ते दुआ करते हैं.

सूरए हामीम सज्दा में फ़रमाया गया - ख़ुदाए रहमानो रहीम ने अरब वालों पर एहसाने अज़ीम किया है कि कुरआन को अरबी ज़बान में उनके लिये ख़ुशख़बरी सुनाने और डराने वाला बना कर उतारा है. इस एहसान का हक़ यह था कि लोग उसकी क़द्र करते लेकिन ये तकब्बुर के साथ उसकी नेमत को ठुकरा रहे हैं. और ईमान लाने की जगह उस अज़ाब का मुतालिबा कर रहे हैं जिससे उन्हें डराया जा रहा है. जवाब मे ऐ मेहबूब आप इन्हें बता दीजिये कि मुझे जिस तौहीद की वही हुई थी वह मैंने तुम तक पहुंचा दी. रहा अज़ाब का मामला तो यह चीज़ मेरे इख़्तियार में नहीं है. मैं एक बशर हूं, अल्लाह नहीं हूं. इस काइनात में जो कुदरत, हिकमत, रहमत, रुबूबियत और जो नज़्म व एहतिमाम तुम्हें नज़र आ रहा है वह गवाह है कि यह किसी खिलन्दड़े का खेल नहीं है न यह मुख़्तलिफ़ देवताओं के खेल या उनकी आपसी जंग का मैदान है. बल्कि यह एक ज़बरदस्त कुदरत और इल्म रखने वाले वाहिद अल्लाह की मन्सूबा बन्दी से वुजूद में आया हुआ कारख़ाना है. इस लिये जो लोग अपने घड़े हुए ख़ुदाओं और सिफ़ारिशियों के भरोसे पर अल्लाह और आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं वो अपनी शामत के मुन्तज़िर हैं. क़यामत के दिन हर एक के कान आँख और हाथ पाँव ख़ुद उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे और उन्हें मालूम हो जाएगा कि उनकी गुमराही का एक सबब यह था कि वो समझते थे कि उनके बहुत से अअमाल की ख़बर अल्लाह को भी नहीं होती.

जो लोग तमाम मुख़ालिफ़तों और साज़िशों के बरख़िलाफ़ तौहीद पर जमे रहेंगे, क़यामत के दिन

उनके पास फ़रिश्ते अल्लाह तआला की अबदी रहमतों और नेमतों की ख़ुशख़बरी लेकर आएंगे और कहेंगे बस अब न कोई अन्देशा है न ग़म, जन्नत में तुम्हारे लिये हर वह चीज़ मौजूद है जिसको तुम्हारा दिल चाहे और जो तुम तलब करो. मुसलमानों के सब्र और इस्तक़लाल को ख़िराजे तहसीन पेश किया गया ति जब हर तरफ़ से हिम्मत शिकन हालात से साबिक़ा हो उस वक़्त एक शख़्स डंके की चोट पर कहे कि मैं मुसलमानों में से हूं और दूसरों को भी वह अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे, उससे बढ़कर और अच्छी बात किस की हो सक्ती है !

सूरए अश-शूरा में एहले ईमान की यह सिफ़त बयान की गई है कि वो आपस में मशवरे से काम करते हैं. शुरूआत इस तरह की गई है कि तुम लोग हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पेश की हुई बातों पर तअज्जुब करते हो, यह कोई नई बात नहीं कि किसी आदमी पर अल्लाह की वही आए. ऐसी ही वही और ज़िंदगी बसर करने की हिदायत इनसे पहले बहुत से नबियों को दी जा चुकी है. इसी तरह यह भी कोई तअज्जुब की बात नहीं है कि आसमान और ज़मीन के मालिक ही को मअबूद माना जाए, बल्कि तअज्जुब की बात तो यह है कि उसके बन्दे होकर उसकी ख़ुदाई में रहते हुए लोग किसी दूसरे को अल्लाह और हाकिम तस्लीम करें. तौहीद पर बिगड़ते हो हालांकि काइनात के मालिक और हक़ीक़ी रिज़्क़ देने वाले के साथ जो शिर्क तुम कर रहे हो तो यह इतना बड़ा जुर्म है कि आसमान इस पर फट पड़ें तो कोई तअज्जुब की बात नहीं. तुम्हारी इस ढिटाई पर फ़रिश्ते भी हैरान हैं और हर वक़्त डर रहे हैं कि न मालूम कब तुम पर अल्लाह का अज़ाब टूट पड़े.

इसके बाद बताया गया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का काम सिर्फ़ ग़ाफ़िल लोगों को ख़बरदार करना और भटके हुओं को रास्ता दिखाना है. उनकी बात न मानने वालों का मुहासबा करना और उन्हें अज़ाब देना अल्लाह का काम है. उनका काम इस तरह के दावे करना नहीं है जिस तरह के दावे तुम्हारे बनावटी मज़हबी पेशवा किया करते हैं कि जो उनकी बात न मानेगा वो उसे भस्म कर देंगे. याद रखो नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तुम्हारी भलाई के लिये आए हैं और इसी लिये तुम्हें बार बार ख़बरदार कर रहे हैं और तुम्हारी सारी बातों को बरदाश्त कर रहे हैं.

इस के बाद बताया गया है जो दीन नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पेश कर रहे हैं वह हक़ीक़त में है क्या. यह वही दीन है जो पहले भी हज़रत नूह, हज़रत ईब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम और दूसरे लेकर आ चुके हैं. गोया अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की पूरी तारीख़ में अल्लाह की तरफ़ से यही एक दीन आता रहा है. और फ़रमाया कि उन सबको यही हुक्म दिया गया था कि अल्लाह के दीन को क़ाइम करना और क़ाइम रखना. और इस मामले में अलग अलग न हो जाना. अल्लाह का दीन कौनसा है. फ़रमाया अल्लाह के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम है. यानी हज़रत आदम व हज़रत नूह से लेकर मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तक एक ही दीन आया है. अगर फ़र्क़ है तो हालात और ज़मानों के लिहाज़ से कुछ जुज़ियात में फ़र्क़ है. इसकी मिसाल ऐसी है जैसे बच्चे के बालिग़ होने तक क़द और जसामत में फ़र्क़ होता चला जाता है. इस फ़र्क़ के लिहाज़ से कपड़े भी छोटे बड़े होते जाते हैं मगर बुनियादी ढांचा एक ही रहता है साथ ही यह भी बताया गया कि तुम लोगों को एहसास नहीं है कि अल्लाह के दीन को छोड़कर ग़ैरुल्लाह के बनाए हुए दीन और क़ानून इख़्तियार करना अल्लाह के मुक़ाबले में कितनी बड़ी ढिटाई है. तुम इसे मामूली बात समझते हो मगर यह अल्लाह की ग़ैरत को ललकारने वाली बात है. और इसकी सज़ा भी उनको भुगतनी पड़ेगी जो ऐसा करेंगे.

रिज़्क़ और मआश के तअल्लुक़ से अल्लाह तआला ने बताया कि अल्लाह बन्दों पर हद दर्जे मेहरबान है, जिसे जो कुछ चाहता है देता है. सबको एक सी चीज़ें नहीं देता. किसी को कोई चीज़ दी तो किसी को कुछ और, किसी को कम, किसी को ज़ियादा. अगर वह ज़मीन में रोज़ी फैला दे और सब बन्दों को खुला रिज़्क़ दे दे तो वो ज़मीन में सरकशी और तूफ़ान बरपा कर देंगे. मगर वह एक हिसाब से जितना चाहता है नाज़िल करता है. यक़ीनन वह अपने बन्दों से बाख़बर है और सब कुछ देख रहा है. अलबत्ता जो सिर्फ़ दुनिया चाहता है, अल्लाह उसे दुनिया दे देता है मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा

नहीं रहता और जो आख़िरत चाहता है, अल्लाह उसे आख़िरत दे देता है और मज़ीद अपनी इनायात निछावर करता है. अब बन्दे का काम कि वह अपनी भलाई के लिये किस चीज़ का इन्तिख़ाब करता है.

फ़रमाया गया तुम्हें जो मुसीबतें पहुंचती हैं तुम्हारे करतूतों की वजह से ही. बहुत सारी कोताहियों को अल्लाह यूंही दरगुज़र कर देता है. तुम ज़मीन में ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते. अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा कोई मददगार नहीं. तुम इन्सानों को जो कुछ दिया गया है वह बहुत मामूली और चन्द रोज़ा फ़ाइदा बख़्श है. ख़ुदा के पास आख़िरत में जो कुछ है वह पायदार और ज़ियादा बेहतर है. वह उन लोगों के लिये है जो ख़ुदा को मानते हैं, उसपर भरोसा करते हैं, बड़े गुनाहों से बचते हैं, बेहयाई के कामों से परहेज़ करते हैं, ग़ुस्सा आ जाए तो दरगुज़र करते हैं, अपने रब का हुक्म मानते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, अपने मामलात आपस के मशवरे से चलाते हैं, हमने जो दिया है उसे हमारी राह में ख़र्च करते हैं, कोई ज़ियादती करे तो मुक़ाबला करते हैं, बुराई का बदला बस उतनी ही बुराई है, जो दर गुज़र कर दे और इस्लाह करे उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है.

अल्लाह ज़ियादती करने वालों को पसन्द नहीं करता. जो लोग जुल्म होने के बाद बदला लें उन्हें मलामत नहीं की जा सकती. मलामत के लायक़ वो हैं जो दूसरों पर जुल्म करते हैं, ज़मीन में नाहक़ ज़ियादतियां करते हैं, उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है. जो शख़्स सब्र से काम ले और दरगुज़र करे तो यह बड़ी हिम्मत का काम है. जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब ख़ुदा का है जिसे चाहता है लड़कियां देता है, जिसे चाहता है लड़के देता है, जिसे चाहता है लड़के और लड़कियां दोनों देता है, जिसे चाहता है बांझ कर देता है. वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर क़ादिर है.

सूए अज़-ज़ुख़रफ़ का मरकज़ी मज़मून भी तौहीद ही है. क़ियामत का ज़िक्र करते हुए मुश्रिकीन के इस अक़ीदे की भी तरदीद की गई है कि वो फ़रिश्तों को उलूहियत में शरीक समझते हैं और उनकी शफ़ाअत का यक़ीन रखते हैं. काफ़िरों के कुफ़्र का अस्ल सबब यह क़रार दिया कि उनकी दुनियावी कामयाबी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है और वो यह समझते हैं कि आख़िरत में भी वही कामयाब होंगे. यह शैतान का धोखा है. अस्ल कामयाबी आख़िरत की कामयाबी है. और इसका मेअयार दुनिया में माल दौलत का मालिक होना या इक्तिदार और कुव्वत मिल जाना नहीं है बल्कि इसका मेअयार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बताए हुए रास्ते पर चलना है.

जो शख़्स ख़ुदा के पैग़ाम से ग़फ़लत बरतता है हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं. वह उसका साथी बन जाता है. ये शैतान ऐसे लोगों को सीधी राह से भटकाते हैं और अपनी जगह यह समझते हैं कि हम सीधी राह जा रहे हैं. आख़िरकार जब यह शख़्स हमारे यहां पहुंचेगा तो अपने शैतान से कहेगा काश मेरे और तेरे बीच मश्रिक़ और मग़रिब की दूरी होती. तू तो बदतरीन साथी निकला. उस वक़्त उनसे कहा जाएगा तुम्हारे पछताने से क्या फ़ाइदा, दुनिया में तुमने अपनी जानों पर जुल्म किया आज तुम और शैतान अज़ाब साथ साथ भुगतोगे. फिर फ़रमाया कि ये ख़ुदा से बेख़ौफ़ लोग आप के साथ जो बेहूदगियां कर रहे हैं आप उनपर सब्र कीजिये और अपने काम में लगे रहिये. ख़ुदा इनसे ख़ुद निपट लेगा और आपको अज्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा.

आख़िरत के बारे में दलीलें देते हुए फ़रमाया गया जिस तरह तुम आप से आप ज़िंदा नहीं हो गए, बल्कि हमारे ज़िंदा करने से ज़िंदा हुए हो उसी तरह तुम आप से आप नहीं मर जाते बल्कि हमारे मौत देने से मरते हो. और एक वक़्त यक़ीनन ऐसा आता है जब तुम सब एक ही वक़्त जमा किये जाओगे. इस बात को तुम अपनी नादानी और जिहालत से आज नहीं मानते तो न मानो, जब वह वक़्त आ जाएगा, तुम ख़ुद अपनी आंखों से देख लोगे कि अपने ख़ुदा के हुज़ूर हाज़िर हो और तुम्हारा पूरा अअमाल नामा बग़ैर किसी कमी बेशी के तैयार है और तुम्हारे एक एक करतूत की गवाही दे रहा है. उस वक़्त तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आख़िरत के अक़ीदे से यह इन्कार और इसका यह मज़ाक़ जो तुम आज उड़ा रहे हो, तुम्हें किस क़दर मेंहगा पड़ा है.

सूरए अहक़ाफ़ हिजरत से तीन साल पहले उस वक़्त नाज़िल की गई जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ताइफ़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे. यह नबुव्वत का दसवां साल था. इसे आमुल हुज़्न यानी रंजो ग़म का साल कहते हैं क्योंकि इसी साल हुज़ूर के चचा जनाब अबू तालिब और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा दोनों का विसाल हो गया जिसके बाद कुरैश बहुत दिलेर हो गए और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बहुत तंग करने लगे. यहां तक कि घर से निकलना दूभर कर दिया. आख़िरकार आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मक्के से ताइफ़ तशरीफ़ ले गए कि शायद वहाँ के तीन बड़े सरदारों में से कोई ईमान ले आए मगर उन्होंने आपकी कोई बात न मानी बल्कि आपके पीछे गुन्डे लगा दिये जो रास्ते के दोनों तरफ़ दूर तक आप पर आवाज़े कसते, गालियां देते और पत्थर मारते चले गए यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ज़ख़्मों से चूर हो गए और आपकी जूतियां ख़ून से भर गईं. इस हालत में ताइफ़ के बाहर एक बाग़ की दीवार से टेक लगाकर बैठ गए और अपने रब से फ़रियाद करने लगे - ऐ अरहमुर राहिमीन, तू सारे कमज़ोरों का रब है और मेरा भी, तू मुझे किसके हवाले कर रहा है. इसके जवाब में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम पहाड़ों के फ़रिश्ते को लेकर आए. उसने अर्ज़ की आप हुक्म दें दोनों तरफ़ के पहाड़ों को इनपर उलट दूं. आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया - नहीं बल्कि मैं उम्मीद रखता हूं कि इनकी नस्ल से आने वाले अल्लाह वहदहू ला शरीक की बन्दिगी कुबूल करलेंगे. इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कुछ रोज़ तक नख़्लह के मक़ाम पर ठहरे रहे. आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम परेशान थे कि मक्का कैसे वापस जाएं. यह ख़बर सुनकर तो वहां के लोग और भी शेर हो जाएंगे.

उन्हीं दिनों एक रात आप नमाज़ में कुरआने मजीद की तिलावत फ़रमा रहे थे कि जिन्नों का एक गिरोह उधर से गुज़रा, उन्होंने कुरआन सुना तो ईमान ले आए और वापस जाकर अपनी क़ौम में इस्लाम की तब्लीग़ शुरू कर दी. अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस सूरत के ज़रिये यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि इन्सान चाहे आपकी दावत से भाग रहे हों मगर बहुत से जिन्न इसके गिरवीदा हो गए हैं और वो इसे अपनी जिन्स में फैला रहे हैं. साथ ही कुफ़्फ़ार को उनकी गुमराहियों के नतीजों से आगाह किया और फ़रमाया कभी सोचा कि अगर कुरआन अल्लाह ही का कलाम है तो इस के इन्कार पर तुम्हारा क्या अंजाम होगा. फिर यह वाज़ेह किया कि मां बाप के हुक़ूक़ की अदाइगी का शऊर इन्सान को ख़ुदा के हुक़ूक़ के शऊर की तरफ़ ले जाता है. चुनांचे फ़रमाया हमने इन्सान को हिदायत की कि वह अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करे. उसकी माँ ने मशक़्क़त उठाकर उसे अपने पेट में रखा और मशक़्क़त उठा कर उसे जना और हमल और दूध छुड़ाने में तीस माह लग गए यहां तक कि वह जवानी को पहुंच गया. अब अगर वह इन नेमतों का शुक्र अदा करता है जो अल्लाह ने उसको और उसके वालिदैन को अता कीं और ऐसे नेक अमल करता है जिससे ख़ुदा राज़ी हो तो इस तरह के लोगों से हम उनके बेहतरीन अआमाल को कुबूल करते हैं और उनकी लग़ज़िशों को दरगुज़र करते हैं. ये जन्नती लोगों में शामिल होंगे और जो नाफ़रमान बनकर अपने मांबाप से झगड़ा करते हैं ख़ुसूसन इस बात पर कि वो उनको अल्लाह की इताअत पर आमादा करें, ये वो लोग हैं जिनपर अज़ाब का फ़ैसला चस्पां हो चुका है. फिर जब ये नाफ़रमान लोग आग के सामने खड़े किये जाएंगे तो इनसे कहा जाएगा तुम अपने हिस्से की नेमतें अपनी दुनिया की ज़िंदगी में ख़त्म कर चुके और तुम ने उनके मज़े उड़ा लिये अब जो तकब्बुर तुम ज़मीन पर बग़ैर किसी हक़ के करते रहे , जो भी नाफ़रमानियां तुमने कीं उनके बदले में आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा.

सूरए अल-हुजुरात दर अस्ल मुसलमानों की बयान कर्दा सिफ़त आपस में रहम दिल हैं की तफ़सीर है. इसमें बताया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के किसी फ़ैसले पर कोई मुसलमान अपनी राय थोपने की कोशिश न करे. मुसलमानों का मामला आपस में भाईचारे पर होना चाहिये न कि पार्टी और गिरोहबन्दी की बुनियाद पर. किसी को अपने से कमतर समझना, बुरे नाम से पुकारना और ग़ीबत करना दिलों में नफ़रत पैदा करने का सबब हैं, इन से बचो. किसी के ऐबों की टोह

में न रहो. अल्लाह के यहां इज़्ज़त और बुज़ुर्गी का मेअयार सिर्फ़ तक़्वा है. इस्लाम कुबूल करके अल्लाह पर एहसान न जताओ. यह तो अल्लाह का एहसान है कि उसने तुम्हें इस्लाम कुबूल करने की और नेकी की तौफ़ीक़ आता की. अगर उसका हक़ अदा करोगे तो भरपूर सिला पाओगे.

इस सूरत में बहुत से मआशिरती एहकामात दिये गए हैं - (१) ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल के आगे पेशक़दमी न करो और अल्लाह से डरो, अल्लाह सुनने और जानने वाला है. (२) ऐ ईमान वालो, नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की आवाज़ पर अपनी आवाज़ ऊंची न करो जैसा कि तुम आपस में बातें करते हो. (३) नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताख़ी सारे अअमाल के अकारत होने का सबब बन सकती है. (४) जो लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखते हैं वो परहेज़गार हैं, उनके लिये मग़फ़िरत और अज्रे अज़ीम है.(५) जो लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें अक्सर नादान हैं किसी को कमरे के पीछे से नहीं दाख़िली दरवाज़े से पुकारना चाहिये. पुकारने के बाद थोड़ा इन्तिज़ार करना चाहिये. (६) ऐ ईमान वालो, जब कोई फ़ासिक़ कोई ख़बर लेकर आए तो तस्दीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अनजाने में कोई नुक़सान पहुंचा बैठो फिर अपने किये पर पछताना पड़े. (७) मुसलमानों के बीच रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात मौजूद है, हर मामले में अपनी बात नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मनवाने की कोशिश न करो न ही किसी बात पर इसरार करो. (८) मूमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो बाक़ी मुसलमानों को तमाशा नहीं देखना चाहिये बल्कि उनके बीच सुलह सफ़ाई में अदल और इन्साफ से काम लेना चाहिये कि अल्लाह अदल को पसन्द करता है, जानिबदारी को नहीं. (९) मुसलमान एक दूसरे का मज़ाक़ न उड़ाएं, हो सकता है जिसका मज़ाक उड़ा रहे हों वह उनसे बेहतर हों. (१०) औरतें भी औरतों का मज़ाक़ न उड़ाएं, हो सकता है जिसका मज़ाक उड़ा रही हों वह उनसे बेहतर हो. (११) किसी मुसलमान भाई को ताना न दिया जाए. अपने भाई को ताना देना ख़ुद को ताना देना है. (१२) किसी को बुरे लक़ब से न पुकारा जाए, मुसलमान होने के बाद बुरे अलक़ाब रखना बहुत बुरी बात है. (१३) बहुत ज़ियादा गुमान करने से परहेज़करना चाहिये कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं. (१४) एक दूसरे की टोह में न रहो कि इससे आपस का एतिमाद ज़ख़्मी होता है. (१५) पीठ पीछे किसी मुसलमान की बुराई नहीं करनी चाहिये, ऐसा करना मरे भाई का गोश्त खाने के बराबर है. (१६) तमाम इन्सानों की अस्ल एक मां बाप हैं. ज़ात बिरादरी की तक़सीम सिर्फ़ पहचान के लिये है, अल्लाह के नज़दीक सबसे मक़बूल वह है जो अल्लाह से डरता है. (१७) ईमान लाने के बाद ईमान का एहसास जताना सही नहीं है जो ईमान लाएगा उसका फ़ायदा उसी को होगा जो अमल करेगा. अल्लाह उसको पूरा पूरा अज्र देगा. अल्लाह ज़मीन और आसमान की हर छुपी हुई चीज़ का इल्म रखता है जो कुछ तुम करते हो वह सब उसकी निगाह में है.

सूरए ज़ारियात की बक़िया आयतों में अपनी शानो शौकत पर मग़रूर क़ौमों की हलाकत के वाकिआत बयान करने के बाद कुरआन का अस्ल पैग़ाम दोहराया गया है. और लोगों को तवज्जह दिलाई गई है कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है. अल्लाह ने उन्हें क्यों पैदा किया है. कुछ फलसफ़ी कहते हैं कि अल्लाह अपनी कुव्वतों का ज़हूर चाहता था कि लोग तरह तरह की मख़लूक़ देख कर उसकी तारीफ़ करें और वह ख़ुश हो जैसा कि ओछा इन्सान चाहा करता है. या फिर वह तमाशा देखना चाहता है...नहीं....फ़रमाया हमने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ इसलिये पैदा किया कि वो हमारी बन्दिगी करें, इबादत करें. न मैं उनसे यह चाहता हूं कि वो रिज़्क़ का सामान करें और न यह चाहता हूं कि वो मुझे खिलाएं. बिला शुबह अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है और क़ुव्वत सारी की सारी उसी के पास है.

सूरए तूर, सूरए नज्म और **सूरए क़मर** के बाद **सूरए रहमान** में इस बात को बार बार दोहराया गया है कि अपने रब की किन किन नेमतों को तुम झुटलाओगे और बताया गया है कि अल्लाह की रहमानियत है कि उसने तुम्हारी तालीम के लिये कुरआन उतारा. जब अल्लाह ने तुम्हें बोलने की

सलाहियत दी है तो तुम बात समझ भी सकते हो. इस आला सलाहियत का हक़ है कि इसी सलाहियत को तुम्हारी तालीम का ज़रिया बनाया जाए न कि अज़ाब के डन्डे को. लेकिन तुम्हारी बदबख़्ती है कि तुम इस नेमत से फ़ाइदा उठाने के बजाए तबाही की निशानी मांग रहे हो.

सूरए वाक़िआ में बताया कि तुम्हें लाज़िमन ऐसे जहान से साबिक़ा पेश आना है जिसमें इज़्ज़त और ज़िल्लत के पैमाने और मेअयार उन पैमानों और मेअयारों से बिल्कुल अलग होंगे जो इस दुनिया में आम तौर से इस्तेमाल होते हैं. वहाँ इज़्ज़त और सरफ़राज़ी ईमान और नेक अअमाल की कमाई होगी ऐसे लोग मुक़र्रबीन और असहाबिल यमीन (दाएं हाथ वालों) का दर्जा पाएंगे. जन्नत की तमाम कामयाबियां और आसाइशें इन्हीं के हिस्से में आएंगी. रहे वो जो इस दुनिया ही के ऐश और राहत में मगन हैं वो असहाबिल शिमाल (बाएं हाथ वाले) होंगे. उनको दोज़ख़ में अबदी अज़ाब से साबिक़ा पेश आएगा.

अल्लाह ने कई सवालात करके ग़ौर करने की दावत दी है. कभी तुमने ग़ौर किया है यह नुत्फ़ा जो तुम डालते हो इस तख़्लीक़ (बच्चे) को तुम बनाते हो या हम बनाने वाले हैं. हमने तुम्हारे बीच मौत रख्री है और इस बात से कमज़ोर नहीं हैं कि तुम्हारी शक्लें बदल दें और किसी और शक्ल में पैदा कर दें जिसको तुम नहीं जानते अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते ही हो फिर क्यों सबक़ नहीं लेते. कभी तुमने सोचा, बीज जो तुम बोते हो उससे खेतियां तुम उगाते हो या हम उगाते हैं. हम चाहें तो इन खेतों को भूसा बना कर रख़दें और तुम बातें बनाते रह जाओ कि हमें नुक़सान हो गया, हमारे नसीब फूटे हैं. कभी तुमने सोचा जो पानी तुम पीते हो उसे तुमने बादल से बरसाया है या उसके बरसाने वाले हम हैं. हम चाहें तो उसे ख़ारा पानी बना दें फिर क्यों तुम शुक्रगुज़ारी नहीं करते. कभी तुमने ख़याल किया जो आग तुम जलाते हो उसका दरख़्त (ईंधन) तुमने पैदा किया या उसके पैदा करने वाले हम हैं. हमने उसको हाजत मन्दों की ज़रूरत का सामान बनाया पस ऐ नबी रब्बे अज़ीम की तस्बीह करते रहिये.

सूरए अल-हदीद में मुसलमानों को ख़िताब करके उनको साबिक़ुल अव्वलून की सिफ़त में अपनी जगह बनाने पर उभारा है यानी वह जो हक़ पहुंचते ही सब से आगे बढ़कर उसे कुबूल करते हैं और उसका तरीक़ा यह बताया है कि जिस ज़माने में हक़ मग़लूब है और उसके ग़ालिब आने का दूर दूर तक पता नहीं, उसी ज़माने में अपनी जान और माल उसके लिये खपा दो. ऐसे लोगों का मरतबा उनसे कहीं ऊंचा होगा जो हक़ को ग़ालिब आता देख कर उस के लिये ख़र्च करें या जानें सुपुर्द करें. अगरचे अल्लाह का वादा दोनों से अच्छा है मगर अल्लाह का कुर्ब हासिल करने के लिये दोनों में बड़ा फ़र्क़ है.

तमाम मुसलमानों को ख़िताब करके कहा अगर दुनिया की महब्बत में फंस कर तुमने आख़िरत की अबदी बादशाहत हासिल करने का हौसला खो दिया तो यहूद की तरह तुम्हारे दिल भी सख़्त हो जाएंगे और तुम्हारा अंजाम भी वही होगा जो उनका हुआ. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना दे और अल्लाह उसको कई गुना करके लौटा दे. क़यामत के दिन मूमिनीन के आगे पीछे नूर दौड़ रहा होगा. उन्हें जन्नत की बशारत दी जाएगी. यह बड़ी कामयाबी है. मुनाफ़िक़ीन अन्धेरे में कहेंगे कि हमें भी थोड़ी सी रौशनी दे दो. जवाब मिलेगा पीछे हट जाओ. उनके बीच एक दीवार हाइल होगी, एक तरफ़ रहमत दूसरी तरफ़ अज़ाब होगा. वो मूमिनों को पुकार के कहेंगे हम तो दुनिया में तुम्हारे साथ थे. वो कहेंगे मगर तुम्हें शक था. झूटी तवक़्क़ुआत में पड़े रहे. धोखेबाज़ शैतान ने तुम्हें धोखे में रखा. आज तुमसे और काफ़िरों से कोई फ़िदिया न लिया जाएगा. तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है. क्या ईमान लाने वालों के लिये अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से पिघल जाएं और हक़ के आगे झुक जाएं. मुसलमानों को उनकी तरह नहीं होना चाहिये जिन्हें किताब दी गई फिर एक लम्बी मुद्दत उनपर गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए और आज उनमें अक्सर फ़ासिक़ हो गए. अफ़सोस कि मुसलमान आज उन्हीं के नक़्शे क़दम पर चल रहे हैं.

उन लोगों के ख़याल की तरदीद की गई है जो मज़हब के रहबानी तसव्वुर के तहत जिहाद और उसके

लिये ख़र्च करने को दुनियादारी समझते थे और मुसलमानों के जिहाद के शौक़ पर लअन तअन करते थे. फ़रमाया, बेशक हमने अपने रसूलों को वाज़ेह दलीलों और हिदायात के साथ भेजा. उनके साथ शरीअत और किताब उतारी ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हो सकें. और लोहा भी उतारा जिसमें बड़ी ताक़त भी है और लोगों के लिये बहुत फ़ाइदे भी हैं और इससे अल्लाह ने यह भी चाहा कि वह उन लोगों को नुमायां कर दे जो बे देखे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं. यानी लोहे की ताक़त से दीन क़ाइम करते हैं हालांकि अल्लाह और रसूल ग़ैब में हैं. बेशक अल्लाह बड़ा ही ज़ोर आवर और ग़ालिब है.

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी उम्मत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया ईसा बिन मरयम और उन लोगों के दिलों में जिन्होंने अल्लाह की पैरवी की, रहमत रखी. रोहबानियत तो उन्होंने ख़ुद ईजाद कर ली. हमने तो उनपर सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी की तलब फ़र्ज़ की थी तो उन्होंने उसकी हुदूद जैसी कि मलहूज़ रखनी चाहिये थीं, नहीं रखीं.

सूरए मुजादिलह में एक ख़ानदान को पेश आने वाली मुश्किल का हल बताते हुए सबक़ दिया गया है कि अगर किसी को इस्लाम के किसी हुक्म के सबब ज़िंदगी में कोई मुश्किल पेश आए तो उसको निहायत ख़ुलूस के साथ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सामने अर्ज़ करे उम्मीद है कि उसकी मुश्किल हल होने की राह निकल आएगी. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद यही काम उन ख़ुदातरस उलमा और फ़ुक़हा के ज़रिये पूरा हो सकता है जो अवाम की मुश्किलात को समझने और हल करने की सलाहियत भी रखते हों. वह अमली मिसाल यह है कि एक ख़ातून के शौहर ने एक दफ़ा ग़ुस्से में यह कह दिया कि अगर मैं तुम्हें हाथ लगाऊं तो ऐसा है जैसे मैंने अपनी मां को हाथ लगाया. अरबों में इन अलफ़ाज़ से तलाक़ हो जाती थी और मियां बीवी में लाज़िमन जुदाई हो जाती थी. चुनांचे ख़ातून बहुत परेशान हुई कि अधेड़ उम्र में शौहर और बच्चों से जुदा होकर कहां जाएंगी. उन्होंने सारा मामला हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आकर बयान किया और बड़ी आजिज़ी से दरख़्वास्त की कि इस मसअले का हल तजवीज़ फ़रमाएं. मगर उस वक़्त तक वही से ऐसी बात के बारे में कोई फ़ैसला नहीं आया था इस लिये आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ामोश रहे. ख़ातून बार बार तवज्जह दिलाती रहीं.

आख़िर में वही नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला इस ने औरत की बात सुन ली जो तुम से झगड़ती थी. तुम में जो लोग अपनी बीवियों को मां कह बैठें तो इस कहने से वो माएं नहीं हो जातीं अलबत्ता इस तरह के लोग एक नागवार और झूटी बात कहते हैं. अब अगर वो पलटना चाहें तो उन्हें हाथ लगाने से पहले कफ़्फ़ारे के तौर पर एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा. अगर ग़ुलाम मयस्सर न हो तो लगातार दो माह के रोज़े रखने होंगे और इसकी ताक़त न हो तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाएं. इसके बाद कुछ ज़रूरी मजलिसी आदाब की तलक़ीन की गई है. फ़रमाया आप जानते हैं कि आसमानों ज़मीनों की हर चीज़ का इल्म अल्लाह को है. जहां कहीं तीन आदमी बात चीत करते हों चौथी ज़ात अल्लाह की होती है. जब पांच होते हैं तो छटी ज़ात अल्लाह की होती है. ख़ुफ़िया बात करने वाले इससे कम हों या ज़ियादा, वो जहां कहीं होते हैं अल्लाह उनके साथ होता है. फिर क़यामत के रोज़ अल्लाह उन्हें बताएगा कि उन्होंने क्या कुछ किया. अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है. जैसा कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और ख़ातून के बीच बात हुई जो अल्लाह ने सुन ली और उसके बारे में हुक्म नाज़िल फ़रमाया. अलबत्ता सरगोशी से मना किया गया ख़ास तौर पर यह कि गुनाह, ज़ुल्म और ज़ियादती और रसूल की नाफ़रमानी के लिये सरगोशियां अल्लाह के नज़दीक कुफ़्र की बात है. ऐसी बातें या हरकतें भी नहीं करना चाहियें जिनसे लोगों के लिये तंगदिली का इज़हार हो या तकलीफ़ पहुंचे.

सूरए हश्र में मुनाफ़िक़ीन से ख़िताब है. उन्हें आगाह किया गया है कि वो इन वाक़िआत से सबक़ लें. जिन दुश्मनों को वो नाक़ाबिले तसख़ीर समझते थे, यानी मदीने के यहूदी, अल्लाह ने किस तरह वो हालात पैदा कर दिये कि वो ख़ुद ही अपने घर उजाड़ कर मदीना छोड़ने पर मजबूर हो गए और कोई भी उनके काम न आ सका. मुसलमानों से कहा गया, ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और हर शख़्स

को फ़िक्रमन्द रहना चाहिये कि उसने कल के लिये क्या सामान तैयार किया है. तुम हर हाल में अल्लाह तआला से डरते रहो वह तुम्हारे सारे अअमाल से बाख़बर है. उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भूल गए. तो अल्लाह ने खुद उन्हें नज़र अंदाज़ कर दिया. यही लोग नाफ़रमान हैं. जन्नती और देज़ख़ी बराबर नहीं हो सकते. जन्नत में जाने वाले ही अस्ल में कामयाब हैं. साथ ही उनके दिलों में नर्मी पैदा करने के लिये बताया कि यह कुरआन वह चीज़ है कि अगर पहाड़ पर नाज़िल किया जाता तो वह भी अल्लाह के ख़ौफ़ से पाश पाश हो जाता. अगर यह भी तुम्हारे दिलों पर असर नहीं कर रहा तो गोया तुम्हारे दिल पत्थर से भी ज़ियादा सख़्त हो चुके हैं और खुद को संगदिली की सज़ा के मुस्तहिक़ बना रहे हो.

सूरए मुम्तहिना में उन मुसलमानों से ख़िताब है जिन्होंने हिजरत के तक़ाज़ों को अच्छी तरह नहीं समझा उन्हें बताया गया कि हिजरत इस तरह होती है जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हिजरत की थी कि पिछले माहौल से बिल्कुल तअल्लुक़ात तोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से वाबस्ता हो जाओ. मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ. तुम उनसे महब्बत की पैंगें बढ़ाते हो जो चाहते हैं कि तुम उलटे काफ़िर हो जाओ. तुम्हारे रिश्ते नाते और आल औलाद क़यामत के दिन कुछ भी तुम्हारे काम न आएंगे.

फिर यह वज़ाहत की कि काफ़िरों से दिली दोस्ती रखने को मना किया जा रहा है. ख़ुसूसन उनसे जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग की हो. अल्लाह तुम्हें उन लोगों के साथ हुस्ने सुलूक और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में न तुमसे जंग की है और न तुम्हें घर से निकाला है. इसी तरह यह भी ऐलान किया गया कि मुसलमान औरत का काफ़िर शहर से और मुसलमान मर्द का काफ़िर औरत से निकाह जाइज़ नहीं है. फिर हिदायत की कि जो औरतें इस्लाम कुबूल करें उनसे आप बड़ी बड़ी बुराइयों से बचने का एहद लें जो उस वक़्त अरब समाज में फैली हुई थीं.

सूरए सफ़ में उन मुसलमानों से ख़िताब है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इताअतगुज़ारी का एहद कर चुकने के बाद अल्लाह की राह में जिहाद से जी चुरा रहे थे उनको ख़बरदार किया गया कि अगर इताअत का एहद यानी कलिमा पढ़ने के बाद तुम्हारी यही रविश रही तो तुम्हारा भी वही हाल होगा जो यहूदियों का हुआ कि अल्लाह तआला ने उनके दिल टेढ़े कर दिये और हमेशा के लिये हिदायत से मेहरूम कर दिये गए. जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उनके पास आए तो मुअजिज़ात के बावुजूद उनका इन्कार कर दिया और अब इस्लाम की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं. हालांकि इस्लाम उनकी (मुश्रिकीन की) मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस सरज़मीन में सारे दीनों पर ग़ालिब आ कर रहेगा. कमज़ोर मुसलमानों को सही राह अपनाने की तलक़ीन की गई कि दीन की राह में जान माल से जिहाद करो कि कामयाबी की यही राह है. आख़िरत में भी और दुनिया में भी अल्लाह की मदद और उसकी फ़त्ह से हमकिनार होंगे जो अब आने वाली है और जो तुम्हारी तमन्ना भी है. जिस तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों के साथ हुआ था कि उन्हें अल्लाह के रास्ते में पुकारा गया तो उन्होंने लब्बैक कहा.

सूरए जुमुआ में हज़रत इब्रहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की तरफ़ इशारा करके मुश्रिकीने मक्का पर वाज़ेह कर दिया गया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बिअसत की शक्ल में अल्लाह ने जिस अज़ीम नेमत से उन्हें नवाज़ा है उसकी क़द्र करें और यहूदियों की साज़िशों का शिकार होकर अपने को इस फ़ेअले अज़ीम से मेहरूम न करें. जिन यहूदियों को तौरात दी गई मगर उन्होंने इसका बार न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जिसपर किताबें लदी हुई हों . इससे भी बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयात को झुटला दिया. अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता. इस आयत में बहुत बड़ी बात कही गई है कि अगर तौरात दी गई और वो उसपर अमल न कर सके या पढ़ना नहीं चाहते उनकी मिसाल गधे पर लदी हुई किताबों जैसी है कि गधा जानता ही नहीं कि उसकी पीठ पर क्या लदा हुआ है. अगर यह मिसाल यहूदियों पर सादिक़ आती है तो क्या मुसलमानों पर सादिक़ नहीं आ सकती जो कुरआन नहीं पढ़ते, न उसपर अमल करते हैं. आख़िर उनपर भी तो यह किताब उतारी गई और वो

भी गधे की तरह इसे उठाए हुए हैं. मगर उन्हें यह नहीं मालूम कि इस किताब के अन्दर क्या है.

जुमुए की अज़ान होते ही नमाज़ की तरफ़ दौड़ने का हुक्म दिया गया है और ख़रीदो फ़रोख़्त मना कर दी गई है. और इस अमल को बेहतरीन अमल क़रार दिया गया है. अलबत्ता नमाज़ के बाद फिर कारोबार करने की इजाज़त है. अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने का हुक्म है साथ ही कसरत से ख़ुदा की याद भी होनी चाहिये. फिर मुसलमानों के एक गिरोह को मलामत की गई कि उसने दुनियावी कारोबार के लालच में जुमुआ और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का एहतिराम मलहूज़ नहीं रखा, इसका मतलब यह है कि उन्होंने उस सौदे की हक़ीक़त को नहीं समझा जो उन्होंने कलिमा पढ़कर अपने रब से किया है.

सूरए मुनाफ़िक़ून के पहले रुकू में मुनाफ़िक़ों का किरदार बताया गया है कि ईमान क़स्में खाकर जताने की नहीं बल्कि अमल करके दिखाने की चीज़ है मगर उनका हाल यह है कि दुनिया की महब्बत में गिरफ़्तार हैं. दूसरे रुकू में मुसलमानों को ख़बरदार किया गया है कि वो माल और औलाद की महब्बत में फंस कर अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न हों. अगर आज उन्होंने अल्लाह की राह में माल ख़र्च न किये तो मरते वक़्त पछताने के सिवा कुछ हाथ न आएगा. गोया मुनाफ़िक़त का जो अस्ल सबब है उससे बचने की ताकीद की गई है.

सूरए तग़ाबुन में बताया गया कि इस दुनिया की ज़िंदगी ही कुल ज़िंदगी नहीं बल्कि अस्ल ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है जो लाज़िमन आकर रहेगी और यह फ़ैसला वहीं होना है कि इस दुनिया में आकर कौन हारा और कौन जीता. पस जो आख़िरत में कामयाबी हासिल करने का हौसला रखता है उस पर वाजिब है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ुशनूदी हासिल करने की राह में हर कुरबानी देने के लिये तैयार रहे. और किसी की मलामत और नसीहत की परवाह न करें.

सूरए तलाक़ और **सूरए तहरीम** दोनों में बताया गया है कि नफ़रत और महब्बत दोनों तरह के हालात में सही रवैया क्या है.

सूरए मुल्क की शुरूआत ही अल्लाह की अज़मत के इज़हार से की गई है. बड़ी ही अज़मत और बरकत वाली है वह ज़ात जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में इस काइनात की बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है. जिसने पैदा किया मौत और ज़िंदगी को ताकि इम्तिहान ले कि तुम में से कौन सबसे अच्छे अअमाल वाला बनता है. काफ़िरों पर अज़ाब की कैफ़ियत बयान करते हुए फ़रमाया कि जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया उनके लिये जहन्नम का अज़ाब है. जो बुरा ठिकाना है. जब उसमें फेंके जाएंगे, हदाड़ने की आवाज़ सुनेंगे, वह जोश खा रही होगी, शिद्दते ग़ज़ब से फटी जा रही होगी. हर बार जब कोई गिरोह डाला जाएगा उससे दारोगा पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था. वो कहेंगे आया था मगर हमने उसे झुटला दिया और कह दिया कि ख़ुदा ने कुछ उतारा ही नहीं, तुम ही लोग भटके हुए हो. यह भी कहेंगे कि काश हम सुनते और समझते तो इस तरह जहन्नमी न बनते. इस तरह वो अपने कुसूर का एतिराफ़ कर लेंगे. लानत है दोज़ख़ियों पर.

रहे वो लोग जो बिना देखे ख़ुदा से डरते हैं, उनके लिये मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है. तुम चुपके से बात करो या बलन्द आवाज़ से, अल्लाह के लिये बराबर है. वह तो दिलों के हाल तक जानता है. क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया. वह तो बहुत ही बारीक बीं और बाख़बर है. फिर नाफ़रमानों को ललकारा गया कि तुम बेख़ौफ़ हो गए हो कि अब तुम्हें ज़मीन में धंसाने और आसमान से पथराव करने वाला अज़ाब नहीं आ सकता. बताओ तुम्हारे पास वह कौनसा लश्कर है जो ख़ुदाए रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सकता है. बताओ वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे सके अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले. इनसे पूछो अगर तुम्हारा पानी उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिये यह साफ़ पाक और शफ़्फ़ाफ़ पानी निकाल कर लाए. कह दो वह रहमान है, हम उसपर ईमान लाए हैं और उसी पर हमने भरोसा किया है.

तुम बहुत जल्द जान लोगे कि खुली गुमराही में कौन है.

सूरए अल-क़लम में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दावत आपकी लाई हुई किताब और आपके आला किरदार का मवाज़ना कुरैश के फ़ासिक़ लीडरों के किरदार से करके यह दिखाया कि वह वक़्त भी दूर नहीं जब दोस्त दुश्मन दोनों पर वाज़ेह हो जाएगा कि किनकी बागडोर फ़ितना पड़े हुए लीडरों के हाथों में है जो उनको तबाही के रास्ते पर ले जा रहे हैं. और कौन लोग हैं जो हिदायत के रास्ते पर हैं और वही फ़लाह पाने वाले बनेंगे. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में गवाही दी कि आप एक आला किरदार पर हैं और कुरैश का किरदार बताया कि झूटी क़समें खाने वाले ज़लील, इशाराबाज़, नेकियों से रोकने वाले, हद से आगे बढ़ने वाले, लोगों का हक़ मारने वाले, पत्थर दिल और शेख़ी बाज़, यह सब इस लिये कि अल्लाह ने उन्हें माल और औलाद अता कर दी है. इस मौक़े पर एक बाग़ वालों की मिसाल देकर समझाया गया कि इस धोखे में न रहो कि अब तुम्हारे ऐश में कोई ख़लल डालने वाला नहीं. जिस ख़ुदा ने तुम्हें दिया है उसके इख़्तियार में है कि वह सब कुछ छीन ले. आख़िरत के अंजाम की तरफ़ तवज्जह दिलाते हुए सवाल किया गया कि आख़िर उन्होंने ख़ुदा को इतना बेइन्साफ़ कैसे समझ रखा है कि वह नेकों और बदों में कोई फ़र्क़ नहीं करेगा. साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को तसल्ली दी गई कि ये लोग जो बातें बना रहे हैं उनका ग़म न कीजिये, सब्र के साथ अपने रब के फ़ैसले का इन्तिज़ार कीजिये और उस तरह की जल्दी दिखाने से बचिये जिसमें हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मुबतिला हो गए थे. और फिर उन्हें आज़माइशों से गुज़रना पड़ा था.

सूरए अलहाक़्क़ह में रसूलों की दावत को झुटलाने वालों का अंजाम बताते हुए क़यामत की हौलनाक तसवीर खींची गई है. फ़रमाया याद रखो जब सूर में एक ही फूंक मारी जाएगी और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में पाश पाश कर दिया जाएगा तो उस दिन तुम्हारी पेशी होगी और तुम्हारी कोई बात ढकी छुपी न रहेगी. पस पेशी के दिन जिसे दाएं हाथ में अअमाल नामा मिलेगा उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहेगा जिसे बाएं हाथ में अअमाल नामा मिलेगा वह हसरत से मौत मांग रहा होगा. आवाज़ आएगी इसको पकड़ो, इसकी गर्दन में तौक़ डाल दो, इसको जहन्नम में झौंक दो और एक ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है जकड़ दो. यह वह है जो ख़ुदाए अज़ीम पर ईमान नहीं रखता और न मिस्कीनों को खाना खिलाने पर आमादा होता था.

सूरए अलमआरिज में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सब्र की तलक़ीन की गई है कि यह बहुत तंग नज़र लोग हैं इस वक़्त ख़ुदा ने इनको ढील दी है तो इनके पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं. ज़रा पकड़ में आ जाएं तो सारी शैख़ी भूल जाएंगे और तमन्ना करेंगे काश इस दिन के अज़ाब से छूटने के लिये अपने बेटों, अपनी बीवी,अपने भाई और अपने कुम्बे को जो उसका मददगार रहा है और तमाम एहले ज़मीन को बदला में देकर अपनी जान छुड़ा ले.

सूरए नूह में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पिछली सूरत में तलक़ीन किये हुए सब्र के लिये नमूने के तौर पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान किया कि उन्होंने कितने लम्बे अर्से तक यानी साढ़े नौ सौ बरस अपनी क़ौम को दावत दी और इतने तवील सब्र और इन्तिज़ार के बाद उनकी क़ौम को अज़ाब में डाला गया. इस तरह हक़ का दावा करने वालों को बताया गया कि अपनी आख़िरी मंज़िल के लिये सब्र और इन्तिज़ार के कितने मरहलों से गुज़रना पड़ता है साथ ही यह बात भी कि अल्लाह तआला जल्दबाज़ों की जल्दबाज़ी और तअनो तशनीअ के बावुजूद उनको अगरचे एक लम्बी मुद्दत तक ढील देता है मगर बिलआख़िर एक रोज़ पकड़ लेता है तो उनको कोई छुड़ाने वाला नहीं होता.

सूरए जिन्न में कुरैश को ग़ैरत दिलाई गई कि जिन्नात जो कुरआन के बराहे रास्त मुख़ातब नहीं हैं, वो जब रास्ता चलते इसको सुन लेते हैं तो तड़प उठते हैं और अपनी क़ौम के अन्दर इसे फैलाने के लियो उठ खड़े होते हैं. एक तुम हो कि इसे ख़ास तुम्हारे लिये उतारा जा रहा है और इसकी बरकतों से

नवाज़ने के लिये ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दिन रात एक किये हुए हैं मगर तुम्हारी बदबख़्ती कि इस तरफ़ ध्यान देना तो दूर तुम उलटे इसके दुशमन बन गए हो.

सूरए मुज़म्मिल और **सूरए मुद्दस्सिर** दोनों सूरतों की शुरूआत ऐ चादर में लपिटने वाले और ऐ चादर लपेटे रखने वाले से की गई है. इससे यह ज़ाहिर करना मक़सूद है कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्साम अल्लाह की मख़्लूक़ के लिये बेइन्तिहा रहम करने वाले,शफ़ीक़ और अपने रब की डाली हुई ज़िम्मेदारियों के मामले में बहुत हस्सास वाक़े होते हैं. वो अपनी जान तोड़ कोशिशों के बावुजूद जब यह देखते हैं कि लोगों की दुशमनी उनसे बढ़ती जा रही है तो उन्हें यह ख़याल होता है कि कहीं उनके काम में कोई कोताही तो नहीं हुई और यह फ़िक्र उन्हें बहुत रंजीदा कर देती है और वो चादर में सिमट कर अपने माहौल से किनारा कशी इख़्तियार करते हुए अन्दर ही अन्दर कोताहियों की तलाश शुरू कर देते हैं.

सूरए अल-मुज़म्मिल में चादर ओढ़ने वाले के प्यारे लफ़्ज़ से नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़िताब करते हुए इस हालत से निकलने का रास्ता बताया गया है कि रात के वक़्त उसके हुज़ूर क़याम का एहतिमाम करें, इसमें ठहर ठहर के कुरआन पढ़ो. इससे दिल को ठहराव मिलेगा और दिमाग़ को बसीरत हासिल होगी. और आगे की ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने की अहलियत पैदा होगी.

सूरए दहर में क़यामत की यह दलील दी गई है कि अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर सुनने और देखने और इनके ज़रिये अच्छे बुरे में तमीज़ करने की जो सलाहियत रखी है उसका तक़ाज़ा यह है कि ऐसा दिन आए जिसमें लोगों को उनके किये का बदला मिल सके वरना फिर नेकी बदी का खड़ाग करने की क्या ज़रूरत थी.

सूरए अल-मुरसलात में तेज़ चलने वाली हवाओं की गवाही पेश की गई है कि यह हर वक़्त के आने की याद दिहानी कराती रहती है जब अल्लाह लगाम छोड़ देता है तो यह अन्धाधुन्ध गुबार उड़ाती बादलों को फैला देती हैं. कहीं पानी बरसाकर तबाही बरपा कर देती हैं और कहीं से उन्हें उड़ा ले जाकर लोगों को तबाही से बचा लेती हैं. इस तरह कहीं नाफ़रमानी के अज़ाब में मुब्तिला किये जाने की याद दिहानी कराती हैं और कहीं अल्लाह की शुक्रगुज़ारी और रबूबियत और आदमी की जवाबदिही की ज़िम्मेदारी को याद दिलाती हैं. बस इस तरह एक दिन आसमान फट पड़ेगा,पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे. वही दिन फ़ैसले का होगा. झुटलाने वालों से कहा जाएगा चलो इस धुंएं की तरफ़ जो तीन तरफ़ से छुपा हुआ है और बस वही तरफ़ बची हुई होगी जिस तरफ़ मुजरिमों को रगेद कर लाया जा रहा होगा. यह है फ़ैसले का दिन. हमने तुमको भी और तुम से पहलों को भी आज जमा कर लिया है. तो क्या है आज तुम्हारे पास बचाव के लिये कोई दाव ! यहाँ जब उनसे कहा जाता है कि अपने रब के आगे झुको तो नहीं झुकते अब इसके बाद किस चीज़ पर ये ईमान लाएंगे.

सूरए नबा में ज़मीन और उस पर पहाड़, ख़ुद इन्सानों में मर्द और औरत के जोड़े, महनत और मशक़्क़त की थकान दूर करने के लिये नींद, आराम के लिये रात और कमाने के लिये दिन, सर पर सात मोहकम आसमान और उसमें एक रौशन चिराग़, पानी से भरे बादल और उनके ज़रिये ग़ल्ला नबातात और घने बाग़ की पैदाइश, क्या ये सब चीज़ें गवाही नहीं दे रही हैं कि इस दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिये यानी आख़िरत और वही है फ़ैसले का दिन. उस दिन सब उथल पुथल हो जाएगा और जहन्नम अचानक सरकशों का ठिकाना बन कर सामने आजाएगी और जिन्होंने रोज़े जज़ा से डरते हुए ज़िंदगी गुज़ारी होगी वो बेअन्दाज़ा ऐश में होंगे और अपनी नेकियों का पूरा पूरा बदला पाएंगे. उस रोज़ अल्लाह के हाँ कोई उसकी इजाज़त के बिना किसी के लिये सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकेगा. और जो इजाज़त के बाद बोलेगा तो बिल्कुल सच सच बोलेगा. सरकश उस रोज़ बदबख़्ती से सर पीट लेंगे काश हम मिट्टी ही में रहे होते, हमारा वुजूद ही न होता. हम तुम्हें उस अज़ाब से डरा रहे हैं जो क़रीब आ लगा

है, जिस रोज़ आदमी वह सब कुछ देख लेगा जो उसने दुनिया में किया है और इन्कार करने वाला काफ़िर कहेगा कि काश मैं मर के मिट्टी में मिला रहता और कभी उठाया न जाता.

सूरए नाज़िआत में बताया गया कि सरकश सिर्फ़ उस वक़्त तक अल्लाह के अज़ाब से मेहफ़ूज़ हैं जब तक उन्हें उसने मोहलत दे रखी है. वह जब हुक्म देगा यही हवाएं और बादल जो ज़िंदगी का लाज़िमा हैं, उसके लिये अल्लाह का क़हर बन जाएंगे. जब वह हंगामए अज़ीम बरपा होगा, इन्सान अपने करतूतों को याद करेगा, जहन्नम खोल कर रख दी जाएगी. जिसने खुदा के मुक़ाबले में सरकशी की दुनियावी ज़िंदगी को तरजीह दी, दोज़ख़ ही उसका ठिकाना होगा. जिसको डर है कि अल्लाह के सामने खड़ा होना है, और इस डर से उसने अपने नफ़्स को बुराइयों से रोके रखा, उसका ठिकाना जन्नत में होगा.

सूरए अबस में फ़रमाया गया जो चाहते हैं कि जब वो मिलने आएं तो आप ग़रीबों को अपने पास से हटा दिया करें, तो आप उनकी नाज़बरदारी में ऐसा न करें. शौक़ से आने वालों का तरबियत आपका फ़र्ज़ है. यह तो एक नसीहत है जिसका जी चाहे कुबूल करे. इन्सान काइनात पर ग़ौर करे, अपनी पैदाइश को सोचे, अपनी खुराक पर ग़ौर करे. जब क़यामत आएगी , आदमी अपने भाई माँ बाप भाई बहन बेटियों और बेटों से दूर भागेगा. हर आदमी अपनी फ़िक्र में रहेगा. कुछ चेहरे चमक रहे होंगे हश्शाश बश्शाश, खुशो खुर्रम होंगे. कुछ चेहरों पर ख़ाक उड़ रही होगी, कलौंस छाई हुई होगी. यही काफ़िर और फ़ाजिर लोग होंगे.

सूरए तकवीर में क़यामत की हौलनाकी बयान की गई है. जब सूरज लपेट दिया जाएगा, जब तारे झड़ जाएंगे, जब पहाड़ हिलने लगेंगे, जब गाभन ऊंटनी से लोग ग़ाफ़िल हो जाएंगे, जब वहशी जानवर जमा किये जाएंगे, जब समन्दर में आग लगा दी जाएगी, जब रूह जिस्मों से जोड़ी जाएगी, जब ज़िंदा दर गोर बच्ची से पूछा जाएगा तुझे किस जुर्म में ज़िंदा दफ़्न किया गया था, जब अअमाल नामे खोले जाएंगे, जब आसमान का पर्दा हटाया जाएगा, जब जहन्नम दहकाई जाएगी, जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी, जब हर तरफ़ नफ़्सी-नफ़्सी होगी, किसी को किसी की ख़बर न होगी, इनसान और वहशी, दोस्त और दुश्मन हौल के मारे इकट्ठे हो जाएंगे और जब जहन्नम दहकाई जाएगी और जन्नत क़रीब ले आई जाएगी उस वक़्त हरशख़्स जान जाएगा कि वह क्या लेकर आया है.

सूरए इन्फ़ितार में है कि ऐसा दिन आना लाज़िमी है जब यह सारा निज़ाम हौलनाकी के साथ ख़त्म हो जाएगा. यहां मुजरिमों को मुहलत से धोखा नहीं खाना चाहिये. यह तो परवर्दिगार की शाने करीमी के सबब है ताकि वो अपनी इस्लाह कर लें. खुदा ने तुमपर लिखने वाले निगराँ मुक़र्रर कर रखे हैं जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं. बेशक नेकियां करने वाले ऐश में होंगे और नाबकार दोज़ख़ में. उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिये कुछ न कर सकेगी. यह फ़ैसला उस दिन सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तियार में होगा.

सूरए मुतफ़्फ़िफ़ीन में इस आम बेईमानी पर गिरफ़्त की गई है कि दूसरों से लेना हो तो पूरा नाप तौल कर लें और देना हो तो डन्डी मार दें. यह बददियानती आख़िरत के हिसाब किताब से ग़फ़लत का नतीजा है. डन्डी मारों के अअमाल पहले ही मुजरिमों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं और उन्हें सख़्त अज़ाब का सामना करना होगा. और नेक लोगों के अअमाल बलन्द पाया लोगों के रजिस्टर में दर्ज हो रहे हैं. आज कुफ़्फ़ार अपने हाल में मगन हैं और ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं. उस दिन ईमान वाले अपनी कामयाबी और ऐश पर खुश होंगे और काफ़िरों का मजाक़ उड़ाएंगे.

सूरए इन्शिक़ाक़ में फ़रमाया ज़मीन और आसमान एक दिन पाश पाश हो जाएंगे, इस लिये कि अल्लाह उन्हें ऐसा हुक्म देगा वो बे चूनो चिरा उसकी तामील करेंगे. उस रोज़ जो कुछ ज़मीन के पेट में है यानी मुर्दा इन्सानों के जिस्म और उनके अअमाल की शहादतें सब को निकाल कर वह बाहर फेंक देगी और उस रोज़ जज़ा और सज़ा का होना इतना यक़ीनी है जितना दिन के बाद रात का आना.

सूरए अल-बुरूज के मुताबिक़ काफ़िर ईमान वालों पर जो ज़ुल्मो सितम तोड़ रहे थे उसपर उन्हें तसल्ली देते हुए असहाबुल उख़दूद का क़िस्सा सुनाया गया. जिन्होंने ईमान लाने वालों को आग से भरे हुए गढ़ों में फैंक फैंक कर जला दिया था. ईमान लाने वालों ने आग में जलना गवारा कर लिया मगर ईमान से फिरना गवारा न किया. इस तरह अब ईमान वालों को चाहिये कि वो भी सख़्तियों को गवारा कर लें मगर ईमान की राह न छोड़ें. अल्लाह देख रहा है, वह ज़ालिमों को सज़ा देकर रहेगा. ज़ालिमों से कहा गया कि वो अपनी ताक़त के घमन्ड में न रहें फ़िरऔन जैसे ताक़त वालों के अंजाम से सबक़ लें.

सूरए अत-तारिक़ में कहा गया कि काइनात के सैयारों का निज़ाम गवाह है कि यहां कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो एक हस्ती की निगहबानी के बिना अपनी जगह क़ाइम रह सके. ख़ुद इन्सान पानी की एक बूंद से पैदा किया गया. पस जो अल्लाह उसे वुजूद में लाया वह यक़ीनन उसे दोबारा भी पैदा कर सकता है ताकि उसके उन तमाम राज़ों की जांच पड़ताल की जाए जिनपर दुनिया में पर्दा पड़ा रह गया था. उस वक़्त अपने अअमाल की सज़ा भुगतने से उसे कोई न बचा सकेगा. ख़ातिमे पर बताया गया कि कुफ़्फ़ार समझ रहे हैं कि अपनी चालों से क़ुरआन वालों को ज़क दे देंगे. मगर उन्हें ख़बर भी नहीं है कि अल्लाह भी तदबीर में लगा हुआ है और उसकी तदबीर के आगे काफ़िरों की चालें धरी की धरी रह जाएंगी.

सूरए अल-अअला में फ़रमाया गया कि अल्लाह के हर काम में एक तरतीब और तदरीज है जो तमामतर उसकी हिक्मत पर मबनी है. जिस तरह ज़मीन की हरियाली धीरे धीरे घनी और हरी भरी होता है उसी तरह अल्लाह की यह नेमत क़ुरआन भी आप पर दर्जा ब दर्जा नाज़िल होगी, याद कराई जाएगी और आप इसके एक हर्फ़ को भी न भूलेंगे. इसी तरह पेश आने वाली मुश्किलात के अन्दर से भी वही आहिस्ता आहिस्ता राह निकालेगा. फिर बताया कि तबलीग़ का तरीक़ा है कि जो नसीहत सुनने और क़ुबूल करने को तैयार हो उसे नसीहत की जाए और जो इसके लिये तैयार न हो उसके पीछे न पड़ा जाए. लोगों को सारी फ़िक्र इस दुनिया के आराम की है हालांकि अस्ल फ़िक्र आख़िरत के अंजाम की होनी चाहिये थी. क्योंकि दुनिया तो फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी है. जिसकी नेमतें दुनिया से कहीं ज़ियादा बेहतर और बढ़कर हैं.

सूरए ग़ाशियह में कहा गया तुम्हें उस वक़्त की भी कुछ ख़बर है जब सारे आलम पर छा जाने वाली एक आफ़त नाज़िल होगी. उस वक़्त इन्सानों का एक गिरोह जहन्नम में जाएगा और दूसरा बलन्द जन्नतों में. ये इन्कार करने वाले अपनी आँखों के सामने की चीज़ पर भी ग़ौर नहीं करते. ये ऊंट जिनके बिना सहरा में उनकी ज़िंदगी मुमकिन नहीं, ये आसमान, ज़मीन, पहाड़ क्या किसी बनाने वाले के बग़ैर बन गए. और जो अल्लाह इन्हें बनाने पर क़ादर है वह क़यामत लाने, इन्सानों को दोबारा पैदा करने और जज़ा और सज़ा देने पर क्यों क़ादिर नहीं.

ऐ नबी, ये लोग नहीं मानते तो न मानें. आप इनपर दोरोग़ा बनाकर नहीं भेजे गए कि ज़बरदस्ती मनवाकर छोड़ें. आपका काम तो नसीहत करना है सो आप नसीहत किये जाइये. आख़िरकार इन्हें आना तो हमारे ही पास है. उस वक़्त हम इनसे पूरा पूरा हिसाब लेंगे.

सूरए अल-फ़ज्र में फ़रमाया गया सुबह से रात तक का सारा निज़ाम गवाह है कि अल्लाह का कोई काम बेमक़सद और मसलिहत से ख़ाली नहीं. तो फिर इन्सान की पैदाइश बे मक़सद कैसे. इन्सान की तारीख़ में आद, समूद और फ़िरऔन जो इन्जीनियरिंग के कमालात और फ़ौजों के मालिक थे, जब उन्होंने सरकशी की और हद से ज़ियादा फ़साद फैलाया तो अल्लाह ने अज़ाब का कोड़ा उनपर बरसा दिया. हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब सरकशों पर निगाह रखे हुए है. यहाँ हर एक का इम्तिहान हो रहा है. जो न ख़ुद यतीमों और बेकसों का ख़याल करता है और न दूसरों को उनकी ज़रूरतें पूरी करने (के फ़लाही निज़ाम को क़ाइम करने) पर उकसाता है वह एक अज़ाब का शिकार हो गया. इन्सान का हाल

यह है कि जब उसका ख़ुदा उसे आज़माता है तो उसे इज़्ज़त और नेमत देता है तो कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़तदार बनाया है और जब वह उसे आज़माइश में डालता है और उसकी रोज़ी तंग करता है तो वह कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया. यह बात हरगिज़ नहीं है. वाक़िआ यह है कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उकसाते, विरासत का माल अकेले ही खा जाते हो, पैसे की महब्बत मे गिरफ़्तार हो, जब ज़मीन कूट कूट कर रेज़ा कर दी जाएगी, तुम्हारा रब जलवा फ़रमा होगा, फ़रिश्ते सफ़ बांधे खड़े होंगे, जहन्नम सामने लाई जाएगी, उस दिन इन्सान की समझ में आ जाएगा मगर अब समझना किस काम का. कहेगा काश अपनी ज़िंदगी में मैंने कुछ नेक कर लिया होता. फिर उस दिन अल्लाह जो अज़ाब देगा वैसा अज़ाब देने वाला कोई नहीं और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसा बांधने वाला कोई नहीं और जो फ़रमांबरदारों में शामिल रहा उसे कहा जाएगा चल अपने रब की तरफ़, अब तू उससे राज़ी और वह तुझ से राज़ी, शामिल हो जा मेरे ख़ास बन्दों में और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में.

सूरए अलक़ की पहली पांच आयतें सब से पहली वही की हैसियत से ग़ारे हिरा में नाज़िल हुईं हैं. इनमें अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुक्म दिया पढ़िये अपने रब के नाम से जो सारे जहानों का ख़ालिक़ है और लोगों को उसका फ़रमान सुना दीजिये कि उसने इन्सान को ख़ून के जमे हुए लोथड़े से पैदा किया और यह फ़ज़्ल फ़रमाया कि इल्म सिखाने के लिये क़लम के ज़रिये उसकी तालीम का मुसतक़िल इन्तिज़ाम किया और उसको वो बातें बताईं जो वह पहले नहीं जानता था.

सूरए क़द्र - क़द्र के दो मानी हैं एक तक़दीर बनाना दूसरे निहायत क़द्र वाली चीज़. वह रात जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ और जो रमज़ान की ताक़ रातों में से एक रात थी. दोनों मानी पर पूरी उतरी है. इस रात में कुरआन को उतार कर इस इन्सानियत की तक़दीर बदलने और इस की बिगड़ी बना देने का फ़ैसला किया गया जो इस ज़मीन पर अपने करतूत से हर जगह ज़लील हो रही थी. और इसी लिये यह रात इन्सानी तारीख़ में सबसे ज़ियादा मोहतरम, काबिले क़द्र और क़ीमती रात है कि इसमें इन्सानीयत के लिये आइन्दा दुनिया में तरक़्क़ी और बलन्दी और आख़िरत में फ़लाह और कामयाबी का वह सामान उतारा गया जो पिछले एक हज़ार महीनों में भी कभी न उतर सका था इस लिये हर साल इस रात को जिब्रईल अलैहिस्सलाम अपने साथ फ़रिश्तों को लिये दुनिया में उतरते हैं और जो लोग इस रात में जाग कर अल्लाह को याद कर रहे होते हैं उनसे मुसाफ़हा करते और मग़फ़िरत की बशारत देते हैं. सुब्ह तक यही चलता रहता है.

सूरए अल-बैय्यिनह में बताया गया कि एहले किताब (यहूदी और ईसाई) और मुश्रिकीन दोनों गठजोड़ करके कुरआन को झुटलाने के लिये उठ खड़े हुए हैं. इसकी वजह यह नहीं है कि कुरआन के बारे में वो शक में मुब्तिला है, बल्कि इसका अस्ल सबब उनका तकब्बुर और घमन्ड है. लोग तारीख़ के आइने में एहले किताब का किरदार देखें तो उनपर यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाएगी कि उनकी तरह उनके बाप दादा भी अपने ज़माने में पैग़म्बरों से मोअजिज़ात तलब करते रहे मगर मोअजिज़ात देख लेने के बावुजूद अल्लाह की किताब और उसके दीन का इनकार किया या फिर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तीन पांच करते रहे हैं. ईमान लाने का अस्ल ज़रिया मोअजिज़ात नहीं, ख़ुदा का ख़ौफ़ है जिससे मेहरूम होने के सबब ख़ुदा के हाँ उनका शुमार बदतरीन मख़्लूक़ में है और बेहतरीन मख़्लूक़ वो हैं जो ईमान लाकर नेक अमल करें. उनकी जज़ा जन्नत है और अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी.

सूरए ज़िलज़ाल में बताया गया कि वह दिन ज़रूर आने वाला है जब इन्सान की हर नेकी बदी चाहे वह कितने ही पर्दों में की गई हो, उसके सामने रख दी जाएगी. तो जिसने ज़र्रा भर नेकी की होगी उसे उस नेकी का भरपूर अज्र दिया जाएगा और जिसने ज़र्रा भर बदी की होगी, उसे उस बदी की पूरी पूरी सज़ा दी जाएगी.

सूरए आदियात में बताया गया कि इन्सान आख़िरत से ग़ाफ़िल होकर कैसी अख़लाक़ी पस्ती में गिर जाता है. उसे समझाने के लिये उस आम बद अमनी को पेश किया गया है जिससे सारा मुल्क तंग आया हुआ था. हर तरफ़ लूटमार का बाज़ार गर्म था. क़बीलों पर क़बीले छापे मारते थे और कोई शख़्स भी रात चैन से नहीं गुज़ार सकता था. क्योंकि हर वक़्त यह धड़का लगा रहता था कि कब कोई दुश्मन सुब्ह सवेरे अचानक उनकी बस्ती पर टूट पड़े यह एक ऐसी हालत थी जिसे सारा अरब मेहसूस कर रहा था, मगर कोई इसे ख़त्म करने के बारे में नहीं सोचता था.

सूरए अल-क़ारिआ में जिस क़यामत से डराया जा रहा है उसका वक़्त अगरचे मालूम नहीं लेकिन उसका आना यक़ीनी है. जिस तरह कोई अचानक आकर दरवाज़े पर दस्तक देता है उस तरह वह भी अचानक आ धमकेगी. उस दिन किसी के पास कोई कुव्वत और जमाअत नहीं होगी. लोग क़बरों से इस तरह सरासीमगी की हालत में निकलेंगे जिस तरह बरसात में पतिंगे निकलते हैं.

सूरए तकासुर में लोगों को इस दुनिया परस्ती के अंजाम से ख़बरदार किया गया है जिसकी वजह से वो मरते दम तक ज़ियादा से ज़ियादा माल दौलत और दुनियावी फ़ाइदे और लज़्ज़तें और जाह व इक़्तिदार हासिल करने और उसमें एक दूसरे से बाज़ी ले जाने और इन्हीं चीज़ों के हुसूल पर फ़ख़्र करने में लगे ररहते हैं.

सूरए अल-अस्र में बताया गया कि ज़िंदगी की अस्ल क़ीमत क्या है, इन्सान की फ़लाह का रास्ता क्या है और तबाही का रास्ता कौनसा है. ज़माने की कसम इन्सान दर अस्ल बड़े घाटे में है सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अअमाल करते रहे और एक दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की तलक़ीन करते रहे. इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अगर लोग इस सूरत पर ग़ौर करें तो यही उनकी अबदी हिदायत के लिये काफ़ी है. सहाबए किराम जब आपस में मिलते तो एक दूसरे को यह सूरत सुनाए बिना अलग न होते.

सूरए अल-हुमज़ा में बताया गया है कि लोगों पर लअन तअन, ऐब जोई माल की हविस और कंजूसी दोज़ख़ का ईंधन बनाने का सबब हैं. फ़रमाया तबाही है हर उस शख़्स के लिये जो मुंह दर मुंह लोगों पर तअन और पीठ पीछे बुराई करने का आदी है. जिसने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा.

सूरए अल-फ़ील में अल्लाह तआला ने दीन की मुख़ालिफ़त करने वालों को बताया कि अगर दीन की मुख़ालिफ़त इसी तरह जारी रही तो हाथियों से काबे की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तुम्हें भी मज़ा चखा देगा. यानी अबरहा की उस फ़ौजकशी की तरफ़ तवज्जह दिलाई है जो उसने बैतुल्लाह को ढाने के नापाक इरादे से साठ हज़ार लश्करे जर्रार के साथ मक्के पर की थी.

सूरए अल-कुरैश में अल्लाह ने कुरैश के लोगों पर अपने ख़ुसूसी फ़ज़्ल और इनायत का तज़किरा किया है कि ख़ानए काबा के मुतवल्ली होने की बिना पर किस तरह बदअमनी के माहौल में भी उनकी जानें और उनकी तिजारतें मेहफ़ूज़ हैं लिहाज़ा उन्हें चाहिये कि वो उन ३६० बातिल मअबूदों के बजाय इस घर के हक़ीक़ी और वाहिद रब की इबादत करें. जिसने उन्हें एक ऐसी वादी में जहां अनाज का एक दाना भी नहीं उगता, वाफ़िर मिक़दार में ग़िज़ा फराहम की. और ऐसे बदअमनी के माहौल में मुकम्मल अमन और सुकून अता किया.

सूरए अल-माऊन की पहली तीन आयतों में उन काफ़िरों का हाल बयान किया गया है जो खुल्लमखुल्ला आख़िरत को झुटलाते हैं. तुमने देखा उसको जो आख़िरत की जज़ा और सज़ा को झुटलाता है वही तो है जो यतीमों को धक्का देता है और लोगों को मिस्कीन को खाना खिलाने पर नहीं उक्साता.

सूरए अल-कौसर में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बराहे रास्त ख़िताब करके बशारत दी है कि अब ख़ैरे कसीर के ख़ज़ाने यानी बैतुल्लाह को उन बदकिरदारों से छीन कर आप के सुपुर्द किया जाने वाला है. जब ऐसा हो तो आप अपने रब ही के लिये नमाज़ पढ़ें और उसके लिये कुरबानी दें और मुश्रिकों की किसी तरह किसी क़िस्म के शिर्क से इसे आलूदा न होने दें. साथ ही मुख़ालिफ़ों को धमकी दी गई कि उन लोगों को अल्लाह की तरफ़ से बरकतें और रहमतें मिली थीं. जब यह घर इन से छिन जाएगा तो वो तमाम बरकतों से मेहरूम हो जाएंगे और नतीजे में इनकी जड़ ही कट जाएगी. यह बशारत पूरी हो कर रही.

सूरए अल-काफ़िरून

इससे पहले की तमाम सूरतों में कुरैश के लीडरों को क़ौमी और इन्सानी बुनियादों पर ख़िताब किया गया है कहीं भी ऐ काफ़िरो कहकर नहीं पुकारा गया है. मगर इस सूरत में साफ़ साफ़ ऐ काफ़िरो कहकर मुख़ातब किया गया है. इस सूरत में बताया गया है कि कुफ़्र और दीने इस्लाम एक दूसरे से बिल्कुल अलग अलग हैं.

सूरए अन-नस्र हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर मिना में नाज़िल हुई थी और इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना वह मशहूर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया जिसमें फ़रमाया कि मैं नहीं जानता शायद इसके बाद मैं तुम से मिल सकूं. ख़बरदार रहो तुम्हारे ख़ून तुम्हारी इज़्ज़तें एक दूसरे पर इसी तरह हराम हैं जिस तरह यह दिन और मक़ाम हराम हैं. इस सूरत का नुज़ूल इस बात की अलामत समझा गया कि अब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आख़िरी वक़्त आ पहुंचा और अब इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह की हम्द और इस्तिग़फ़ार करें.

सूरए लहब सूरए नस्र में मदद और फ़त्ह व ग़लबे की बशारत देने के बाद **सूरए लहब** को रखा ताकि मालूम हो जाए कि अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को ग़लबा दे दिया और आपके दुश्मन को बरबाद कर दिया और यह पेशगोई थी जो अबू लहब की ज़िंदगी में की गई. वह अल्लाह के बजाय माल पर बहुत भरोसा करता था और उसने जंगे बद्र में जंग पर जाने के बजाय माल देकर किराए के आदमियों को अपनी तरफ़ से लड़ने भेज दिया था. ऐसे लोग यहां तक आगे बढ़े जाते हैं कि समझने लगते हैं अगर पैसा है तो उसके ज़रिये ख़ुदा की पकड़ से भी मेहफ़ूज़ रहेंगे. इस सूरत में पैसे की बे हक़ीक़ती को भी वाज़ेह किया है कि वह उसके कुछ काम न आया फिर उसके अअमाल का ज़िक्र किया जो उसने नेकी समझकर किये थे कि वो भी उसके कुछ काम न आएंगे बल्कि वह भड़कती आग में जा पड़ेगा और उसकी बीवी ईंधन ढोती हुई वहीं जाएगी और उसकी गर्दन में आग की तपती हुई रस्सी होगी.

फ़त्हे मक्का के बाद अक़ीदे की पुख़्तगी और साबित क़दमी और इस्तिक़ामत की तरफ़ तवज्जह दिलाते हुए **सूरए इख़लास** में जो कुछ बयान किया गया उसका मन्शा अल्लाह वहदहू ला शरीक पर इस तरह ईमान लाना है कि उसकी ज़ात या सिफ़ात के लाज़मी तक़ाज़ों में किसी पहलू से भी किसी दूसरे की शिरकत का ख़याल ज़हन में न रहे.

सूरए अल-फ़लक़ और सूरए अन-नास

अस्लन आख़िरी सूरत इख़लास है मगर तौहीद के ख़ज़ाने की हिफ़ाज़त के लिये ये दो सूरतें अल-फ़लक़ और अन-नास आख़िर में लगाई गईं. इनमें बन्दों को उन तमाम आफ़तों से अपने रब की पनाह मांगने का हुक्म दिया गया है जो तौहीद के बारे में उसके क़दम डगमगा सकती थीं. शैतान बराबर बहकाने पर लगा हुआ है, वसवसे डाल रहा है और उसकी ज़ुर्रियत भी तरह तरह से उन्हें बहकाने पर लगी हुई है. मज़हबी लोगों के भेस में भी जो टोनों टोटकों और जन्तर मन्तर के ज़रिये उन्हें अपनी राह पर लगाते हैं. इन दोनों सूरतों में ख़ुद शैतान की वसवसा अन्दाज़ी और उसके एजन्टों की फ़नकारियों से पनाह मांगने की तलक़ीन की गई है और बताया गया है कि अल्लाह ही पनाह दे सकता है जो तमाम इन्सनों का रब

उनका इलाह और अस्ल बादशाह है. फ़रमाया कहिये मैं पनाह मांगता हूं माद्दे को फाड़कर अशिया निकालने वाले की हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है और रात की तारीकी के शर से जब वह छा जाए और गांठों में फूंकने वालियों के शर से जब वो हसद करें. कहिये मैं पनाह मांगता हूं इन्सानों के रब इन्सानों के बादशाह इन्सानों के हक़ीक़ी मअबूद की वसवसा डालने वाले के शर से जो बार बार पलट कर आता है जो लोगों में वसवसा डालता है चाहे जिन्नों में से हों या इन्सानों में से.